CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15.6

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्णी वि
ग्रन्थागार
नरिया, वाराणसी-५
आन
मजीद

नेकी थि	लेनेवालेका हस्ताक्षर	लौटानेकी तिथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धान्ताचार्य पं० ... जी शास्त्री,
निदेशक ... संस्थान.
वाराणसी ... ९ ...

क़ुरआन
मजीद

हिन्दी अनुवाद सटीक
मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

अंग्रेज़ी अनुवाद
मारमाड्यूक पिक्थाल

4362

قرآن مجید

ہندی ترجمہ و انگریزی ترجمہ
معہ عربی متن

मक्तबा अल-हसनात रामपुर (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(प्रकाशनाधिकार मक्तबा अलहसनात रामपुर के हित में सुरक्षित)

जनवरी १९६६ से अप्रेल १९७६ तक ४६,०००

सातवीं बार अक्तूबर १९७७ ४,०००

मूल्य ३०.०० रुपया

जे० के० आफसेट प्रिंटर्स दिल्ली में छपा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

قَدْ جَآءَكُم مِّنَ اللّٰهِ نُورٌ وَّكِتَابٌ مُّبِينٌ ○
يَهْدِي بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ
السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ○

(المائدة ١٥ و ١٦)

तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से
प्रकाश और स्पष्ट किताब आ गई है।
उस के द्वारा
अल्लाह उस व्यक्ति को जो उसकी ख़ुशी पर चला
सलामती की राहें दिखाता है।
और
अपने हुक्म से ऐसे लोगों को अँधेरों से निकाल कर
उजाले की ओर लाता है, और उन्हें
सीधा मार्ग दिखाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

آج کل اِسلام مُسلمانوں کا ایک قومی مذہب بن کر رہ گیا ہے محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو مُسلمانوں کا ایک قومی لیڈر اور پیشوا سمجھ لیا گیا ہے اور قرآن کو فقط مُسلمانوں کی ایک مُقدس کتاب کی حیثیت دے دی گئی ہے۔ اس غلط فہمی کا نتیجہ یہ ہے کہ غیر مُسلموں کے ذہن میں اِسلام کی تعلیمات کے خلاف شعوری یا غیر شعوری طور پر ایک قومی اور مذہبی تعصب جاگزیں ہو چکا ہے ایک غیر مُسلم اوّل تو قرآن مجید کی تعلیم سے آشنا ہونے کی زحمت ہی گوارا نہیں کرتا اور اگر وہ کبھی اس کے لیے آمادہ بھی ہوتا ہے تو ایک اجنبیت اور بیگانگی کا پردہ اس کی آنکھوں کے سامنے حائل ہو جاتا ہے اور وہ یہ سمجھتا ہے کہ اپنی چیز کے بجائے وہ کسی پرائی شے کی طرف ہاتھ بڑھا رہا ہے۔

لیکن حقیقت اس کے بالکل برعکس ہے۔ قُرآن بنی نوع انسان کا ایک مشترک رُوحانی ورثہ ہے، بالکل اُسی طرح جس طرح پانی، ہوا اور روشنی ہر فرد بشر کے لیے مشترک مادی متاع ہیں۔ ایک غیر مُسلم جذبہ عقیدت سے نہ سہی، صرف انصاف و حق پرستی کی نظر سے اگر قرآن کا مطالعہ کرلے تو وہ اس کی ہمہ گیر، ابدی، ازلی اور آفاقی تعلیم کا اندازہ نہایت آسانی سے کر سکتا ہے۔

قُرآن کی زبان سے چونکہ بہت سے غیر مُسلم ناواقف ہیں، اس لیے مُسلمانوں کا یہ دینی اور اخلاقی فریضہ ہے کہ وہ قُرآن کے پیغام کو دوسری زبانوں میں منتقل کریں اور فہم قُرآن کی راہ غیر مُسلم بھائیوں کے لیے ہموار بنائیں۔ ہندوستان کی قومی زبان ہندی میں اِسلام کے متعلق لٹریچر اور ترجمۂ قرآن کی کمی ایک مدت سے محسوس کی جا رہی تھی اور ضرورت تھی کہ کم از کم اسلام کا بنیادی لٹریچر اس زبان میں منتقل کر دیا جائے تاکہ ہندی زبان پڑھنے والے لوگ اس دین کے متعلق اصل حقیقت سے واقف ہو سکیں۔ خدا کا شکر ہے کہ اس سلسلہ میں قرآن مجید کا عام فہم ترجمہ مع حواشی شائع کرکے مکتبہ "الحسنات" نے ایک بڑی ضرورت کو پُورا کر دیا ہے۔

دُعا ہے کہ اللہ کی بارگاہ میں یہ کوشش مقبول ہو اور اس کے ذریعے سے ابنائے انسانیت کے مابین یک جہتی اور وحدت صحیح بنیادوں پر استوار ہو۔

خاکسار

اولاد علی

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

(मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी)

आजकल इस्लाम मुसलमानों का एक जातीय धर्म बनकर रह गया है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुसलमानों का एक जातीय लीडर और पेशवा समझ लिया गया है, और क़ुरआन को केवल मुसलमानों के एक पवित्र ग्रन्थ की हैसियत दे दी गई है। इस भ्रान्ति का परिणाम यह है कि ग़ैरमुस्लिमों के मन में इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध चेतन या अचेतन रूप में एक जातीय और धार्मिक पक्षपात बैठ चुका है। एक ग़ैरमुस्लिम एक तो क़ुरआन मजीद की शिक्षा से परिचय प्राप्त करने का कष्ट ही सहन नहीं करता और यदि वह कभी इसके लिए तैयार भी होता है तो एक अपरिचितता और परायेपन का आवरण उसके नेत्रों के समक्ष बाधक बन जाता है और यदि वह उसकी ओर हाथ बढ़ाता है तो यह समझता है कि वह अपनी नहीं किसी पराई वस्तु की ओर हाथ बढ़ा रहा है।

परन्तु वास्तविकता सर्वथा इसके प्रतिकूल है। क़ुरआन मानव जाति की एक सम्मिलित आध्यात्मिक सम्पत्ति है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार जल, वायु और प्रकाश प्रत्येक जन के लिए सम्मिलित भौतिक पूंजी हैं। एक ग़ैरमुस्लिम, श्रद्धाभाव से न सही केवल न्याय एवं सत्यवादिता की दृष्टि से, यदि क़ुरआन का अध्ययन कर ले तो वह उसकी व्यापक, सार्वकालिक, अनादिकालिक और सार्वभौमिक शिक्षा का अन्दाज़ा बड़ी ही आसानी से कर सकता है।

क़ुरआन की भाषा से चूंकि बहुत से ग़ैरमुस्लिम अनभिज्ञ हैं, इसलिए मुसलमानों का यह धार्मिक तथा नैतिक कर्तव्य है कि वे क़ुरआन के सन्देश को अन्य भाषाओं में रूपान्तरित करें और क़ुरआन प्रज्ञा का मार्ग ग़ैरमुस्लिम भाइयों के लिए प्रशस्त करें। भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में इस्लाम से सम्बद्ध साहित्य और क़ुरआन के अनुवाद की कमी एक मुद्दत से महसूस की जा रही थी और आवश्यकता थी कि कम-से-कम इस्लाम का मूल साहित्य इस भाषा में रूपान्तरित कर दिया जाए ताकि हिन्दी भाषा पढ़ने वाले लोग इस धर्म के विषय में मूल तथ्य से परिचित हो सकें। अल्लाह का शुक्र है कि इस सिलसिले में क़ुरआन मजीद का जन-गम्य सटीक अनुवाद प्रकाशित करके मक्तबा अल-हसनात ने एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति कर दी है।

दुआ है कि अल्लाह के यहां यह प्रयत्न स्वीकृति प्राप्त कर सके और इसके द्वारा मानव जाति के बीच एकता एवं अखंडता यथार्थ आधार पर सुदृढ़ हो।

विनीत

अबुल आला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस पवित्र ग्रन्थ को पाक-साफ़ और
शुद्ध होकर पढ़ें।

संकेताक्षरों का विवरण

अ० —अलैहिस्सलाम अर्थात् उन पर सलामती हो ('नबियों' या 'फ़रिश्तों' का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं)।

दे० —देखिए।

रज़ि० —रज़िअल्लाहु अनहु अर्थात् उनसे अल्लाह राज़ी रहे (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के किसी साथी का नाम आता है, तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं)।

सल्ल० —सल-लल-लाहु अलैहि वसल्लम अर्थात् उन पर अल्लाह की 'रहमत' (दयालुता) और सलामती हो (हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नाम लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप क़ुरआन क्यों पढ़ें ?

क़ुरआन एक महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। यह बात वे भी जानते हैं जो क़ुरआन के मानने वाले नहीं हैं। इतिहास साक्षी है कि इसी क़ुरआन के आह्वान ने संसार की एक जाति को जिसे उस युग की सभ्यता एवं संस्कृति में कोई विशेष स्थान प्राप्त न था, देखते-देखते संसार का नायक और नेता बना दिया। इस महत्वपूर्ण क्रान्ति के जो कारण लोगों ने अपने-अपने अनुमानों के अनुसार निर्धारित किये हैं उन में से सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारण यह है कि क़ुरआन उत्तम व्यक्ति पैदा करता है। जब मनुष्य के मन और मस्तिष्क में यह बात भली-भाँति बैठ जाती है कि यह संसार बिना ईश्वर के नहीं है। इसका एक सृष्टिकर्त्ता, स्वामी और आयोजक है। वह अपनी सत्ता और गुण में अकेला है, कोई किसी हैसियत से उसका शरीक नहीं। वही उसका भी स्रष्टा, स्वामी और शासक है तो फिर वह हर ओर से कट कर बिल्कुल एकाग्र हो जाता है और हर प्रकार की परतन्त्रता की बेड़ियां को काट फेंकता है। अब वह न अपनी इच्छाओं और पूर्वजों के रीति-रिवाज का दास बना रहता है और न अपने-जैसे दूसरे मनुष्यों के आगे सिर झुकाता है। उस की विचारधारा और व्यवहार में बिल्कुल एकाग्रता आ जाती है फिर उसका यह विश्वास कि एक दिन अपने स्वामी के समक्ष खड़ा होना है, और अपने जीवन के एक-एक कर्म का हिसाब देना है, उसे अत्यन्त पुण्यात्मा, सच्चरित्र, नियमी, विश्वसनीय और मामलों का खरा बना देता है और ये वे मानवीय गुण हैं जिन के बारे में सब जानते हैं कि इनके बिना मानव, मानव नहीं बन सकता और इन्हीं विशेषताओं का आश्रय लेकर हर युग में मनुष्य ने वास्तविक उन्नति प्राप्त की है। फिर क़ुरआन उसके समक्ष एक उच्चतम और सन्तुलित जीवन व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिसके अन्तर्गत जीवन का समस्त व्यापार आ जाता है और जिसका पूर्ण स्पष्टीकरण और व्यावहारिक व्याख्या अल्लाह के अन्तिम 'रसूल' (दूत) हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की अपार कृपा और दया हो) ने अपने जीवन में प्रस्तुत कर दिया है। मनुष्य को वास्तव में उत्तम मनुष्य बनाने का कोई उपाय आज तक इससे उत्तम और स्थायी और इससे अधिक प्रभावकारी सामने नहीं आ सका। यह एक ऐसा परीक्षित उपाय है जिसे सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य के लिए लाभकारी पाया गया है।

क़ुरआन वास्तव में कोई नई चीज़ नहीं है बल्कि क़ुरआन तो स्वयं अपने कथनानुसार उन ईश्वरीय आदेशों और शिक्षाओं का एक Revised Edition और व्याख्या एवं विस्तार ही है जिनका अवतरण मानव के पथ-प्रदर्शन के लिए हर युग और हर देश में सदैव होता रहा है। हम जानते हैं कि मनुष्य के भौतिक अस्तित्व के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता है उन्हें मनुष्य के सृष्टिकर्त्ता ने संचित कर दिया है और आज तक विज्ञान और शिल्पकला (Technology) का कोई उत्तम-से-उत्तम अन्वेषण भी ऐसा सामने नहीं आया जो इन आवश्यकताओं का बदल संचित कर सके। उदाहरणार्थ सूर्य का प्रकाश, वायु और जल, भूमि में उगने की शक्ति और ऐसी ही बहुत-सी दूसरी चीज़ें ये सब अल्लाह ने पैदा की हैं। और सभी मनुष्यों के लिए पैदा की हैं। बस ऐसा ही मामला मनुष्य के आत्मिक अस्तित्व का भी है। मनुष्य के आत्मिक जीवन के लिए भी अल्लाह ने हर युग में अपने आदेश भेजे हैं। हमारा देश भी इससे वंचित नहीं रहा है, यह हमें क़ुरआन से ही मालूम होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु समय के उलट-फेर ने ईश्वरीय आदेशों को कहीं अपने वास्तविक रूप में शेष नहीं रहने दिया। हाँ, जब मानव सभ्यता एक ऐसे युग में प्रवेश करने लगी कि संसार के समस्त देश एक-दूसरे के निकट होने लगे और स्वयं मनुष्य में इतनी योग्यता पैदा हो गई कि वह अल्लाह के अन्तिम आदेश एवं मार्ग-दर्शन को उसके वास्तविक रूप में सुरक्षित रख सके, तो अल्लाह ने अपना अन्तिम आदेश एवं मार्ग-दर्शन पूर्ण रूप में अवतरित कर दिया—क़ुरआन अल्लाह का अन्तिम और पूर्ण आदेश एवं मार्ग-दर्शन (Guidance) है और आज तक ठीक उसी रूप में सुरक्षित है जिस रूप में वह अवतरित हुआ था। उसमें किसी एक शब्द क्या किसी एक मात्रा की भी कमी-वेशी नहीं हुई है।

अल्लाह का यह आदेश एवं मार्ग-दर्शन—क़ुरआन—हर मनुष्य की अपनी चीज़ है। उसकी आत्मा का आहार है। उसके अपने पालनकर्त्ता का प्रदान किया हुआ उपहार है। उस पर न किसी जाति का स्वामित्व है न किसी देश का। हमारी कोई भी भाषा हो, हम किसी भी देश में रहते हों, किसी भी वंश से हमारा सम्बन्ध हो, हमारा रंग गोरा हो या काला, अल्लाह की यह बहुमूल्य देन हमारी अपनी चीज है। निस्सन्देह यह अरबी भाषा में है। इस संसार की किसी-न-किसी भाषा में तो होना ही था। परन्तु इस कारण यह पराई चीज़ नहीं बन सकती, अल्लाह की दयालुता और उसकी देन को किसी स्थान के साथ परिमित नहीं किया जा सकता। इस पर प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है, क्योंकि यह उसके अपने पालन-कर्त्ता की ओर से आई हुई चीज़ है।

ईश्वर की दी हुई जितनी वस्तुयें हैं उन से लाभान्वित होना या न होना निस्सन्देह हमारे अधिकार में है। उदाहरणार्थ जल को ही लीजिए यह हमारे जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु हमें यह अधिकार प्राप्त है कि हम चाहें तो उस का पान करें या न करें। यही दशा समस्त वस्तुओं की है। परन्तु यह बात हम सब जानते हैं कि यदि हम पानी न पीने का फ़ैसला कर लें या सांस द्वारा वायु का सेवन त्याग दें, तो हमारे फ़ैसले का प्रभाव तुरन्त हमारे भौतिक अस्तित्व पर पड़ेगा और हम जीवित न रह सकेंगे। बस यही हमारे आत्मिक अस्तित्व का भी हाल है। यदि हम अल्लाह के प्रदान किये हुये आदेश और मार्ग-दर्शन को अपनी चीज़ समझकर अपने आत्मिक अस्तित्व के लिए आहार की सामग्री जुटायेंगे तो हमें आत्मिक जीवन प्राप्त होगा। इस लोक में भी हम सफल जीवन व्यतीत करेंगे और इसके पश्चात् प्राप्त होने वाले शाश्वत जीवन में भी हमें सुख और आनन्द प्राप्त होगा; पर यदि हम इससे मुँह मोड़ेंगे तो यह हमारी आध्यात्मिक मृत्यु का कारण बनेगा। इस मृत्यु के परिणामस्वरूप हमारा सांसारिक जीवन भी अनेकानेक समस्याओं में ग्रस्त रहेगा और वर्तमान जीवन के पश्चात् भी हमें सदैव दुख-ही-दुख झेलना पड़ेगा।

ये बातें जो अभी आपके सामने आईं मौलिक रूप से इन्हें हम सब मानते हैं। हाँ, जहाँ से कुछ विभेद होता है वह यह है कि मैं जिस चीज़ को अल्लाह का आदेश, मार्ग-दर्शन और आत्मिक जीवन के लिए आवश्यक आहार समझता हूँ सम्भव है उस चीज़ के बारे में ऐसा विचार आपका न हो। क़ुरआन का उदाहरण हमारे सामने है। क़ुरआन के विषय में मैंने एक प्रकार का विचार व्यक्त किया, हो सकता है कुछ लोगों का विचार क़ुरआन के बारे में यह न हो। अब यदि उनका यह विचार किसी अध्ययन और सोच-विचार पर आधारित है, तो मैं कहूँगा कि वे और अधिक अध्ययन के लिए कुछ समय निकालें क्योंकि हम समझते हैं कि इस फ़ैसले पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। किन्तु यदि आपको अभी तक इस सिलसिले में कुछ सोच-विचार करने और किसी सोचे-समझे फ़ैसले तक पहुँचने का अवसर ही नहीं मिला है, तो हम निवेदन करेंगे कि आप इस आवश्यक विषय के बारे में किसी सोचे-समझे फ़ैसले तक पहुँचने की कोशिश करें, क्योंकि दूसरों की बातें सुनकर या किसी वातावरण से प्रभावित होकर मनुष्य को किसी ऐसे मामले का फ़ैसला नहीं करना चाहिए जिसका सम्बन्ध सीधे उसके अपने व्यक्तित्व से हो और जिसके परिणामस्वरूप उसे या तो शाश्वत सुख मिल सकता हो या वह सदैव के लिए दुखों का भागी हो सकता हो। हममें से प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर के सामने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खड़ा होना है। चाहे वह ईश्वर में विश्वास रखता हो, या न रखता हो, आस्तिक हो या बिल्कुल नास्तिक हो, उसे प्रत्येक दशा में अपने पालनकर्त्ता के समक्ष खड़ा होना है। अपने इस नश्वर जीवन में उसने जो कुछ सोचा, समझा और किया है उसका हिसाब देना है। हमारा पालनकर्त्ता अन्तर्यामी है। हमारे प्रत्येक संकल्प और निश्चय से वह भली-भाँति परिचित है। उसके यहाँ कोई बहाना नहीं चल सकता, वह दिलों तक के भेदों को जानता है।

हमारे विचार में इस विचारणीय विषय का यह पहलू ऐसा है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति को क़ुर-आन को बात समझने के लिए कुछ-न-कुछ समय देना चाहिए। कोई यदि पहले से इस ग्रन्थ का मानने वाला है, इसे ईश्वरीय मार्ग-दर्शन एवं ईश्वरीय आदेश का ग्रन्थ समझता है, तो उसे इस उद्देश्य से क़ुरआन पढ़ना और उसे समझना चाहिए कि वह क़ुरआन के दर्पण में अपना रूप देख सके और अपनी जीवन-दिशा को ठीक रख सके। वास्तव में क़ुरआन को मानने वाले व्यक्तियों की ज़िम्मेदारी है कि वे क़ुरआनी जीवन का आदर्श अपने जीवन से प्रस्तुत करें क्योंकि इसके बिना संसार को ज्ञात नहीं हो सकता कि क़ुरआन किस प्रकार के मनुष्य बनाता है। पर यदि क़ुरआन के मानने वाले अपनी यह ज़िम्मेदारी, जैसी चाहिए, पूरी नहीं करते तो इससे दूसरे मनुष्यों की ज़िम्मेदारी में कोई कमी नहीं आती क्योंकि अल्लाह के यहाँ हर व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी है और इस दृष्टि से हर व्यक्ति को अपने दायित्व को स्वयं समझना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि कल अपने स्वामी के सामने हमसे कोई जवाब न बन पड़े।

पवित्र क़ुरआन अरबी भाषा में है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए अरबी समझना सम्भव नहीं। हर देश की अपनी-अपनी भाषा है। जो लोग अरबी जानते हैं और जिन्हें अल्लाह ने अलग-अलग भागों में पैदा किया है यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे क़ुरआन को बोधगम्य बनायें। ज़िम्मेदारी के इसी एहसास के साथ क़ुरआन का हिन्दी अनुवाद जनता को प्रस्तुत है।

अनुवाद के साथ जो चीज़ें बढ़ा दी गई हैं और जिनके कारण इस किताब को एक प्रकार की प्रमुखता प्राप्त है, उनका संक्षिप्त परिचय इस अवसर पर उचित मालूम होता है।

पहली चीज़ हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पवित्र जीवन का एक संक्षिप्त परिचय है। जिस महान् व्यक्ति द्वारा हमें पवित्र क़ुरआन जैसी अल्लाह की नेमत मिली उसका परिचय स्वयं क़ुरआन को समझने के लिए आवश्यक है, इसीलिए इस बात को सामने रखते हुए आपके जीवन की एक झांकी इस किताब में सम्मिलित कर दी गई है।

इसके बाद अनुवादक की ओर से 'क़ुरआन क्या है ?' नामक भूमिका सम्मिलित है जिसमें क़ुरआन के विषय में आपको बहुत-सी लाभदायक बातें मिलेंगी।

दूसरी चीज़ पवित्र क़ुरआन के विषयों की एक सूची है। इस सूची को यद्यपि किसी प्रकार भी एक पूर्ण सूची नहीं कहा जा सकता बल्कि इसकी हैसियत तो कुछ ऐसी है जैसे किसी एक उद्यान से जिसमें हज़ारों प्रकार के सुन्दर फूल खिले हों, कोई व्यक्ति कुछ फूलों को चुन कर एक गुलदस्ता बना ले। परन्तु इसके बावजूद आप देखेंगे कि यह बड़े काम की चीज़ है। अगर कोई व्यक्ति इस सूची पर एक सरसरी निगाह ही डाल ले तो उसको भली-भाँति अन्दाज़ा हो जाएगा कि क़ुरआन में क्या कहा गया है। फिर इस सूची का एक लाभ यह भी है कि किसी एक विषय पर क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर जो-कुछ कहा है उसे आप एक साथ देख सकते हैं।

अन्त में पारिभाषिक शब्दों की एक सूची भी सम्मिलित है जिसमें ऐसे समस्त शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या कर दी गई है जिनका समझना क़ुरआन समझने के लिए अनिवार्य है। अनुवाद करते समय जहाँ कहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे शब्द आ गए हैं उन को उद्धरण चिह्न[1] के साथ रक्खा गया है। यह इस बात का संकेत है कि पाठक को इस शब्द की व्याख्या अन्त में लगी हुई सूची में देखना चाहिए।

इस ग्रन्थ के तीसरे संस्करण में प्रत्येक आयत अलग-अलग रक्खी गई है। अरबी मूल भाषा (Text) के सामने उस का अनुवाद दिया गया है। तीसरा संस्करण दो प्रकार का प्रकाशित किया गया है, एक में हिन्दी अनुवाद के साथ मारमा ड्यूक पिक्थाल का प्रसिद्ध अंग्रेज़ी अनुवाद भी सम्मिलित किया गया है। दूसरे में हिन्दी अनुवाद के साथ उर्दू अनुवाद भी सम्मिलित है। उर्दू अनुवाद मौलाना फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी का है।

अल्लाह हमारी कोताहियों को क्षमा करे और हमारी इन कोशिशों को क़बूल कर ले।

अबू सलीम मुहम्मद अब्दुल हई
मक्तबा अल-हसनात रामपुर (उ० प्र०)

---

1. अर्थात् " "

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवेदन

क़ुरआन मजीद का हिन्दी अनुवाद पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे बेहद ख़ुशी हो रही है। यह अल्लाह की दया और उसकी कृपा है कि उसने मुझे क़ुरआन के समझने और उसे सरल हिन्दी भाषा में रूपान्तरित करने का अवसर प्रदान किया। यदि इससे लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा उठायें और अल्लाह के यहाँ यह कोशिश क़बूल हो जाये तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूँगा।

इससे पहले कि आप क़ुरआन के अनुवाद का अध्ययन करें, आपको यह बात भली-भाँति समझ लेनी चाहिए कि क़ुरआन का अनुवाद वास्तव में क़ुरआन नहीं है। क़ुरआन तो वही है जो अरबी भाषा में अवतरित हुआ है। अनुवाद से तो आप केवल यह जान सकेंगे कि क़ुरआन की शिक्षा क्या है और उसमें मानव-जाति के लिए क्या आदेश दिये गये हैं। अरबी मूल ग्रन्थ में जो गहराई, प्रबलता, प्रवाह और माधुर्य है उसे रूपान्तरित करना किसी मनुष्य के वश में नहीं। क़ुरआन किसी छन्दोबद्ध गीत से कम संगीतमय नहीं है। उसमें शब्दों का मधुर विन्यास है साथ ही उसमें वह ओज और तेज है जिससे सूरमाओं के दिल भी दहल जायें। परन्तु अनुवाद में न तो शब्दों का वैसा विन्यास सम्भव है और न उसमें वैसा स्वर-प्रवाह और प्रबलता ही ला सकते हैं। यह और इस प्रकार की और भी कितनी ही विवशताएँ हैं जिनके कारण क़ुरआन के अनुवाद में वे विशेषतायें अवशिष्ट नहीं रहतीं जो अरबी मूल ग्रन्थ में पाई जाती हैं। यही कारण है कि एक व्यक्ति ने क़ुरआन के किसी अनुवाद को पढ़कर कहा था : "क्या ख़ुदा इसी तरह बात करता है।" उसे क्या मालूम कि अल्लाह के 'कलाम' में बिजली का सा कड़का, दरिया का-सा प्रवाह, और समुद्र की लहरों का सा ज़ोर पाया जाता है जिससे मानव, हृदय भयभीत हो जाता है; परन्तु साथ ही उसमें वह पूर्णता, वह रस, माधुर्य और जीवन का वह अमर सन्देश भी है कि उससे हृदय-वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं और मनुष्य उसमें अपने वास्तविक स्वरूप की झलक देखने लगता है।

क़ुरआन का अनुवाद करते समय मेरी कोशिश यह रही है कि यह अनुवाद यथासम्भव क़ुरआन का शाब्दिक (Literal) रूपान्तर हो। इस अनुवाद में जो सरसता और प्रवाह सम्भव था इस पाबन्दी के कारण उसमें भी कमी आ गई; परन्तु पाठकों को क़ुरआन के मूलार्थ से अधिक-से-अधिक निकट लाने के लिए मुझे इस कमी को गवारा करना पड़ा। यदि यह पाबन्दी न होती तो क़ुरआन की आयतों के केवल आशय और भावार्थ को लेकर उनका साहित्यिक हिन्दी में अनुवाद किया जा सकता था। परन्तु यह उचित नहीं समझा गया।

किसी भी धार्मिक ग्रन्थ के अपने कुछ पारिभाषिक शब्द होते हैं, ऐसे शब्दों का बड़ा महत्त्व होता है। उन शब्दों की अपनी आत्मा तथा उनका अपना विशेष जीवन होता है। उन्हें इस प्रकार रूपान्तरित करना कि उनकी आत्मा और उनके जीवन में कोई अन्तर न आने पाये अत्यन्त कठिन है। इसीलिए क़ुरआन के अनुवाद में साधारणतः पारिभाषिक शब्दों को ज्यों-का-त्यों ले लिया गया है। किताब के आख़िर में पारिभाषिक शब्दों की सूची व्याख्या सहित सम्मिलित कर दी गई है। आशा है कि आप उससे पूरा फ़ायदा उठायेंगे।

क़ुरआन के अनुवाद के साथ-साथ जहाँ कहीं ज़रूरत समझी गई फ़ुटनोट (Foot-notes) द्वारा आयतों की व्याख्या भी कर दी गई है, इससे क़ुरआन के समझने में मदद मिलेगी। फिर भी यदि किसी आयत का अर्थ समझ में न आये या कहीं मन में कोई शंका या किसी प्रकार का सन्देह उत्पन्न हो या कहीं कोई सवाल पैदा होता हो, तो ऐसे अवसर पर क़ुरआन का ज्ञान रखने वाले किसी व्यक्ति से मिलकर अपना समाधान कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेना चाहिए। बल्कि क़ुरआन के समझने के लिए उचित और आवश्यक बात तो यह है कि आप इस किताब को कम-से-कम एक बार किसी विद्वान से पढ़ लें। इस प्रकार आप बहुत-सी कठिनाइयों और उलझनों से बच सकते हैं और सरलतापूर्वक क़ुरआन को समझ सकते हैं।

हर एक सूरा के आरम्भ में उस 'सूरा' का संक्षिप्त रूप में परिचय भी कराया गया है। किसी सूरा का अध्ययन करने से पूर्व उस सूरा का परिचय अवश्य पढ़ लेना चाहिए। परिचय के अध्ययन से यह अन्दाज़ा हो सकेगा कि अमुक सूरा कब और कैसे वातावरण में उतरी है; और यह चीज़ सूरा के समझने में सहायक होगी।

इस काम की तैयारी में क़ुरआन के मूल अरबी ग्रन्थ (Arabic Text) के अतिरिक्त यों तो कई टीका-भाष्य आदि हमारे सामने रहे हैं और उनसे फ़ायदा उठाने की पूरी कोशिश की गई है परन्तु इस काम में विशेष सहायता मुझे मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी की 'तफ़हीमुल क़ुरआन' और मौलाना हमीदुद्दीन फ़राही की किताबों और क़ुरआन से सम्बन्धित उनके लेखों (Notes) से मिली है। किताबों के अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से भी मैंने क़ुरआन के कुछ प्रमुख विद्वानों से सम्पर्क स्थापित करके उनके सुझाव और सम्मति आदि से पूरा फ़ायदा उठाया है।

मैं इन सब महानुभावों का आभारी हूँ। इस अनुवाद के तीसरे संस्करण में मुझे अनुवाद पर पुनः दृष्टि डालने का अवसर मिला है। जिसके फलस्वरूप मैंने अनुवाद में सुधार और संशोधन किये हैं। अनुवाद की भाषा को भी सरस बनाने की कोशिश की है।

अल्लाह से दुआ है कि वह इस कोशिश को क़बूल करे और इस सिलसिले में मुझ से जो भूल-चूक और कोताही हुई हो उसे क्षमा करे।

भवदीय

जनवरी, १९७०

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ
करपी रामपुर
हमज़ापुर पठान
सुल्तानपुर (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम

		पृष्ठ
१.	हज़रत मुहम्मद सल्ल० का जीवन-परिचय	१७
२.	क़ुरआन क्या है?	४३
३.	क़ुरआन मजीद के प्रमुख विषयों की सूची	५६
४.	दिव्य क़ुरआन हिन्दी अंग्रेज़ी रूपान्तर संक्षिप्त हिन्दी टीका सहित	१२१
५.	पारिभाषिक शब्दावली	१२१६

१. अल-फ़ातिहा	१२२	२९. अल-अनकबूत	६९८
२. अल-बक़रा	१२४	३०. अर-रूम	७१२
३. आल इमरान	१८१	३१. लुक़मान	७२४
४. अन-निसा	२१७	३२. अस-सजदा	७३२
५. अल-माइदा	२५४	३३. अल-अहज़ाब	७३८
६. अल-अनआम	२८१	३४. सबा	७६१
७. अल-आराफ़	३११	३५. फ़ातिर	७७४
८. अल-अनफ़ाल	३४५	३६. या सीन०	७८४
९. अत-तौबा	३६१	३७. अस-साफ़्फ़ात	७९५
१०. यूनुस	३९३	३८. सॉद०	८१४
११. हूद	४१३	३९. अज़-ज़ुमर	८२८
१२. यूसुफ़	४३४	४०. अल-मोमिन	८४३
१३. अर-रअ़्द	४५३	४१. हा मीम० अस-सजदा	८५९
१४. इबराहीम	४६३	४२. अश-शूरा	८७२
१५. अल-हिज्र	४७२	४३. अज़-ज़ुख़रुफ़	८८७
१६. अन-नह्ल	४८३	४४. अद-दुख़ान	९००
१७. बनी इसराईल	५०४	४५. अल-जासिया	९०९
१८. अल-कह्फ़	५२३	४६. अल-अहक़ाफ़	९१८
१९. मरयम	५४२	४७. मुहम्मद	९२७
२०. ताहा०	५५५	४८. अल-फ़त्ह	९३६
२१. अल-अंबिया	५७२	४९. अल-हुजुरात	९४५
२२. अल-हज्ज	५८९	५०. क़ाफ़०	९५३
२३. अल-मोमिनून	६०२	५१. अज़-ज़ारियात	९६१
२४. अन-नूर	६१५	५२. अत-तूर	९६९
२५. अल-फ़ुरक़ान	६३६	५३. अन-नज्म	९७७
२६. अश-शुअरा	६४७	५४. अल-क़मर	९८४
२७. अन-नम्ल	६६७	५५. अर-रहमान	९९२
२८. अल-क़सस	६८२	५६. अल-वाक़िआ	९९९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७. अल-हदीद १००६
५८. अल-मुजादला १०१४
५९. अल-हश्र १०२०
६०. अल-मुम्तहना १०२७
६१. अस-सफ़्फ़ १०३३
६२. अल-जुमआ १०३७
६३. अल-मुनाफ़िकून १०४१
६४. अत-तग़ाबुन १०४४
६५. अत-तलाक़ १०४८
६६. अत-तहरीम १०५२
६७. अल-मुल्क १०५७
६८. अल-क़लम १०६२
६९. अल-हाक़्क़ा १०६८
७०. अल-मआरिज १०७४
७१. नूह १०७९
७२. अल-जिन्न १०८३
७३. अल-मुज़्ज़म्मिल १०८९
७४. अल-मुद्दस्सिर १०९४
७५. अल-क़ियामा ११०१
७६. अद-दह्र ११०७
७७. अल-मुरसलात १११२
७८. अन-नबा १११७
७९. अन-नाज़ियात ११२१
८०. अबस ११२६
८१. अत-तकवीर ११३०
८२. अल-इनफ़ितार ११३४
८३. अत-ततफ़ीफ़ ११३७
८४. अल-इनशिक़ाक़ ११४१
८५. अल-बुरूज ११४४
८६. अत-तारिक़ ११४७
८७. अल-आला ११५०
८८. अल-ग़ाशिया ११५३
८९. अल-फ़ज्र ११५६
९०. अल-बलद ११६०
९१. अश-शम्स ११६३
९२. अल-लैल ११६७
९३. अज़-ज़ुहा ११७०
९४. अल-इनशिराह ११७३
९५. अत-तीन ११७५
९६. अल-अलक़ ११७८
९७. अल-क़द्र ११८१
९८. अल-बय्यिना ११८३
९९. अज़-ज़िलज़ाल ११८६
१००. अल-अदियात ११८८
१०१. अल-क़ारिआ ११९०
१०२. अत-तकासुर ११९२
१०३. अल-अस्र ११९४
१०४. अल-हुमज़ा ११९६
१०५. अल-फ़ील ११९८
१०६. अल-कुरैश १२००
१०७. अल-माऊन १२०२
१०८. अल-कौसर १२०४
१०९. अल-काफ़िरून १२०६
११०. अन-नस्र १२०८
१११. अल-लहब १२१०
११२. अल-इख़लास १२१२
११३. अल-फ़लक़ १२१४
११४. अन-नास १२१६

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्णमालानुसार सूरतों की सूची

पाठकों की सुविधा के लिए नीचे सूरतों की वर्णमालानुसार (Alphabetical) एक सूची दी जा रही है। क़ुरआन की जिस सूरा को देखना हो उसे पहले इस सूची में देख कर यह मालूम कर लें कि वह सूरा किस पृष्ठ से आरम्भ होती है।

क्रम	सूरा	पृष्ठ	क्रम	सूरा	पृष्ठ
२१	अंबिया[1]	५७२	१०९	काफ़िरून	१२०६
६	अनआम	२८१	१०१	क़ारिया	११९०
२९	अनकबूत	६९८	७५	क़ियामा	११०१
८	अनफ़ाल	३४५	१०६	क़ुरैश	१२००
८०	अबस	११२६	१०८	कौसर	१२०४
९६	अलक़	११७८	८८	ग़ासिया	११५६
१०३	अस्र	११९४	५१	ज़ारियात	९६१
४६	अहक़ाफ़	९१८	४५	जासिया	९०९
३३	अहज़ाब	७३८	७२	जिन्न	१०८३
१००	आदियात	११८८	९९	ज़िलज़ाल	११८६
७	आराफ़	३११	४३	ज़ुख़ुरूफ़	८८७
८७	आला	११५०	३९	ज़ुमर	८२८
३	आले इमरान	१८१	६२	जुमुआ	१०३७
११२	इख़लास	१२१२	९३	ज़ुहा	११७०
८२	इनफ़ितार	११३४	८१	तकवीर	११३०
८४	इनशिक़ाक़	११४१	१०२	तकासुर	११९२
९४	इनशिराह	११७३	६४	तग़ाबुन	१०४४
१४	इबराहीम	४६३	८३	ततफ़ीफ़	११३७
९७	क़द्र	११८१	६५	तलाक़	१०४८
५४	क़मर	९८४	६६	तहरीम	१०५२
६८	क़लम	१०६२	८६	तारिक़	११४७
२८	क़सस	६८२	२०	ताहा०	५५५
१८	कहफ़	५८३	९५	तीन	११७५
५०	क़ाफ़०	९५३	५२	तूर	९६९

---

1. क़ुरआन मजीद की अधिकतर सूरतों के साथ अल, अन, अत आदि Article लगे हुए हैं। अल, अन आदि की हैसियत वही है जो अंग्रेज़ी में The की होती है। सूरतों की इस सूची में अल, अन आदि Article को हटा दिया गया है ताकि सूरतों के खोजने में आसानी हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

क्रम	सूरा	पृष्ठ	क्रम	सूरा	पृष्ठ
९	तौबा	२६१	६०	मुम्तहना	१०२७
७६	दह्र	११०७	७७	मुरसलात	१११२
४४	दुख़ान	९००	६७	मुल्क	१०५७
५३	नज्म	९७७	४७	मुहम्मद	९२७
७८	नबा	१११७	४०	मोमिन	८४३
२७	नम्ल	६६७	२३	मोमिनून	६०८
११०	नस्र	१२०८	३६	या सीन०	७८४
१६	नह्ल	४८३	१०	यूनुस	३९३
७९	नाज़िआत	११२१	१२	यूसुफ़	४३४
११४	नास	१२१६	१३	रअ्द	४५३
४	निसा	२१७	५५	रहमान	९९२
२४	नूर	६१५	३०	रूम	७१२
७१	नूह	१०७६	१११	लहब	१२१०
८९	फ़ज्र	११५६	३१	लुक़मान	७२४
४८	फ़त्ह	९३६	९२	लैल	११६७
११३	फ़लक़	१२१४	५६	वाक़िया	९९९
३५	फ़ातिर	७७४	९१	शम्स	११६३
१	फ़ातिहा	१२२	२६	शुअरा	६४७
१०५	फ़ील	११९८	४२	शूरा	८७२
२५	फ़ुरक़ान	६३६	३२	सजदा	७३२
२	बक़रा	१२४	६१	सफ़्फ़	१०३३
१७	बनी इसराईल	५०४	३४	सबा	७६१
९०	बलद	११६०	३८	सॉद	८१४
८५	बुरूज	११४४	३७	साफ़्फ़ात	७९५
९८	बय्यिना	११८३	२२	हज्ज	५८७
७०	मआरिज	१०७२	५७	हदीद	१००६
१९	मरयम	५४२	५९	हश्र	१०२०
१०७	माऊन	१२०२	६९	हाक़्क़ा	१०६८
५	माइदा	२५४	४१	हा मीम. अस-सजदा	८५९
७३	मुज़्ज़म्मिल	१०८९	१५	हिज्र	४७२
५८	मुजादला	१०१४	४९	हुजुरात	९४६
७४	मुद्दस्सिर	१०९४	१०४	हुमज़ा	११९६
६३	मुनाफ़िक़ून	१०४१	११	हूद	४१३

—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
का
जीवन - परिचय

अबूसलीम मुहम्मद अब्दुल हई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—'नुबवत' से पहले

जन्म और पालन-पोषण, सामूहिक कार्यों से लगाव, व्यापार, विवाह ।

२—मक्के में

पहली 'वह्य', वह्य का सिलसिला शुरू हुआ, मक्के का धर्म-प्रचार काल, 'क़ुरआन' का प्रभाव, विरोधियों की पेशकश, अत्याचारों का आरम्भ, हब्शा की हिजरत, हज़रत उमर का ईमान लाना, सामाजिक बहिष्कार, मक्के के बाहर प्रचार, 'इस्लाम' मदीने में ।

३—'हिजरत'

४—मदीने में

भाई-चारा, 'यहूद' से सम्पर्क, मदीने की पहली इस्लामी स्टेट, क़िब्ले में परिवर्तन, बद्र की लड़ाई, उहुद की लड़ाई, ख़न्दक़ की लड़ाई, मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) की समस्या, हुदैबिया का समझौता, ख़ैबर की लड़ाई, मक्के की विजय, हुनैन की लड़ाई, तबूक की लड़ाई, प्रतिनिधि मंडलों का आगमन ।

५—अन्तिम हज्ज और स्वर्गवास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुबूवत से पहले

जन्म और पालन-पोषण

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पिता का नाम अब्दुल्लाह् था जो अब्दुल मुत्तलिब के बेटे थे। आपके वंश का नाम क़ुरैश था। क़ुरैश अरब का एक प्रमुख वंश था जो तमाम वंशों में इज़्ज़त वाला था। कुछ लोगों की खोज के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्ल० १२ रबीउल अव्वल, सोमवार को, तदनुसार ११ नवम्बर ५६९ ई० को मक्के में पैदा हुए।* आपके पिता आपके जन्म से पहले ही सिधार गये थे। आपकोप हले आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने पाला, फिर उनके मरने के बाद आप अपने चाचा हज़रत अबू तालिब के पास रहे।

सबसे पहले आपकी माता हज़रत आमिना ने दूध पिलाया, उसके बाद समय के रिवाज के अनुसार आप गाँव की एक महिला हलीमा सादिया के साथ भेज दिये गये। आप हलीमा सादिया का दूध पीते हुए देहात की खुली और स्वास्थ्यवर्द्धक हवा में पले-बढ़े। मक्के के शिष्ट जन अपने बच्चों को इसी प्रकार गांव भेजा करते थे ताकि उनका स्वास्थ्य भी अच्छा हो जाये और वे शुद्ध अरबी भाषा भी सीख जायें। अरब में शहरों के मुक़ाबले में गाँव की भाषा बहुत शुद्ध मानी जाती थी। आप गाँव में क़रीब छः वर्ष तक रहे। गांव से लौटने के थोड़े ही दिनों के बाद आपकी माता का भी देहान्त हो गया और अब सारी देखभाल हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के ज़िम्मे आ गई और जब आपकी उम्र ८ वर्ष की हुई तो दादा भी गुज़र गये और आपके पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी आपके चचा हज़रत अबू तालिब के ज़िम्मे आ गई। जब आपकी उम्र दस-ग्यारह वर्ष की हुई तो आपने अपनी उम्र के लड़कों के साथ बकरियाँ भी चराईं। अरब में अच्छे भले घरानों के लड़के बकरियाँ चराया करते थे।

अबूतालिब व्यापार करते थे। एक बार सीरिया देश की यात्रा पर जाते हुए हज़रत मुहम्मद सल्ल० भी अपने चचा के साथ एक तिजारती सफ़र पर गये। उस समय आप कोई १२ वर्ष के थे।

सामूहिक कार्यों से लगाव

उस ज़माने में अरब के अनेक क़बीलों में नित लड़ाइयां होती रहती थीं। जिनके कारण लोग बहुत व्याकुल थे। आख़िर तंग आकर कुछ भले लोगों ने अनेक क़बीलों में इस बात का एक समझौता कराया कि देश से अशान्ति दूर की जाये। यात्रियों की रक्षा की जाये। निर्धनों और उत्पीड़ितों की सहायता की जाये, और अन्यायियों को मक्के में रहन न दिया जाये। इस समझौते में हज़रत मुहम्मद सल्ल० भी शरीक थे।

एक बार मक्के में वर्षा कुछ ज़्यादा हुई जिससे 'काबे' के पवित्र घर को हानि पहुँची और यह तै किया गया कि फिर से एक मज़बूत इमारत बनाई जाये। तमाम वंशों ने मिलकर इमारत का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा बनाया परन्तु जब उस मान्य काले पत्थर को जिसे 'हजरे असवद' कहते हैं, उसके स्थान पर रखने का प्रश्न सामने आया तो यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि कौन उस पत्थर को उसके स्थान पर रखे। हर वंश यही चाहता

* यह तिथि एक खोजी पुरुष श्री इसहाक़ुन्नबी अलवी अलीग के प्रमाण पर लिखी गई है, जिनका एक लेख मासिक 'बुरहान' दिल्ली के अप्रेल १९६५ के अंक में छपा है। और जो अपनी दलीलों के कारण भरोसा करने योग्य मालूम होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था कि यह पवित्र काम हम करें। झगड़ा इतना बढ़ा कि ख़ून-ख़राबे का डर पैदा हो गया और जब कई दिन तक इस बात का निर्णय नहीं हुआ, तो सब ने यह बात स्वीकार करली कि अच्छा कल सवेरे जो व्यक्ति सबसे पहले आये उसी से निर्णय करा लिया जाये। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दूसरे दिन सबसे पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही दिखाई पड़े। आपने इस झगड़े को चुकाने के लिए यह उपाय किया कि एक चादर बिछाकर 'हज़रे असवद' को उसपर रखा और हर क़बीले के सरदारों को बुलाकर कहा कि सब मिलकर चादर के कोने पकड़ लें और चादर को ऊपर उठायें। जब पत्थर उस स्थान तक ऊँचा हो गया, जहां उसे रखना था, तो हज़रत ने उसे अपने हाथ से उठाकर रख दिया।

व्यापार

उस ज़माने में अरबों का मुख्य काम व्यापार था, विशेष रूप से क़ुरैश व्यापार का ही काम करते थे। जब आप जवान हुए तो आपने भी यही काम शुरू किया। कारोबारी मामलों में आप इतने खरे और ईमानदार थे कि थोड़े ही दिनों में सब लोग आप पर भरोसा करने लगे। हर व्यक्ति यह चाहता था कि अपनी पूंजी शिरकत के लिए आपको दे। आप वादे का पास करते थे। मामले के साफ़, बड़े सच्चे और बहुत ईमानदार थे, इसके कारण लोग आपका बड़ा आदर किया करते थे, साधारणतः लोग आपको 'सादिक़' (सच्चा) और 'अमीन' (अमानतदार) के नाम से याद करते थे।

विवाह

अभी आपकी उम्र २५ वर्ष की ही हुई थी कि तमाम लोगों में आप अपनी नेकी, सच्चाई और अमानतदारी के कारण प्रसिद्ध हो गये। इसी ज़माने में आपकी शुहरत सुनकर क़ुरैश की एक मान्या और धनी महिला हज़रत ख़दीजा ने भी आपको अपनी व्यापारिक सामग्री देकर यात्रा पर भेजा। ख़दीजा पहले विवाह के बाद विधवा हो गई थीं। इसके बाद उन्हों ने दूसरा विवाह किया था, परन्तु कुछ समय के बाद दूसरे पति भी सिधार गये। और अब वह फिर विधवा थीं। इस समय हज़रत ख़दीजा की उम्र ४० वर्ष की थी। हज़रत ख़दीजा हज़रत मुहम्मद सल्ल० के काम, उनकी सच्चाई और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुईं और आपको शादी का पैग़ाम दिया, आपने स्वीकार कर लिया। शादी के समय हज़रत ख़दीजा के पहले दो पतियों से दो लड़के और एक लड़की मौजूद थे। विवाह के बाद हज़रत ख़दीजा २६ वर्ष तक ज़िन्दा रहीं और इस ज़माने में आपने किसी दूसरी स्त्री से विवाह नहीं किया।

मक्के में

पहली 'वह्य'

अपने इस व्यापारिक और पारिवारिक जीवन में भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० दूसरे लोगों की तरह केवल व्यापारी बनकर न रह गये थे बल्कि आप अपने मन में सदा दूसरी समस्याओं पर भी विचार करते रहते थे। आप अपने देश वालों के दंगे-फ़साद वाले जीवन से बड़े खिन्न थे और यह देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था कि लोगों का आचरण व व्यवहार बहुत ख़राब है। विशेषकर **'शिर्क'** और मूर्ति-पूजा से आपको बड़ी घृणा थी और बराबर सोचा करते थे कि लोगों की इन बुराइयों को कैसे दूर किया जाये। जब भी आप को मौक़ा मिलता आप एकान्त में बैठकर एक अल्लाह का ध्यान करते और उसी की याद में समय बिताते। विशेषकर 'रमज़ान' के महीने में तो आप आबादी से दूर निकल जाते और वहां एकांत में बैठकर अल्लाह का ध्यान करते। इस काम के लिए मक्के से कोई तीन मील दूर पहाड़ी की एक गुफा में जिसका नाम 'हिरा' है जा बैठते और कई-कई दिन अल्लाह की याद में लगे रहते। एक बार रमज़ान का महीना था और आप हिरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में 'इबादत' में लगे हुये थे कि आपको एक शक्ल दिखाई पड़ी, उसने कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ 'फ़िरिश्ता' हूँ। आप ने फ़िरिश्ते को कहते सुना कि "पढ़" आपने कहा : "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।" फ़िरिश्ते ने बार-बार पढ़ने को कहा और आपने यही कहा कि "मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।" तीसरी बार फ़िरिश्ते ने कहा, "अपने 'रब' के नाम से पढ़, जिसने इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया। पढ़ और तेरा 'रब' बड़ा महान् है। जिसने क़लम के द्वारा सिखाया और मनुष्य को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था।" (सूरा ९६, आयत १-५) यह सबसे पहली 'वह्य' (Revelation) थी। इस घटना के तुरन्त बाद आप घर आ गये। उस समय आपका दिल कांप रहा था। हज़रत खदीजा से कहा : मुझे कम्बल उढ़ा दो, आपको कम्बल उढ़ा दिया गया। जब आप को कुछ शांति हुई तो आपने हज़रत खदीजा को सारा हाल सुनाया और कहा, "मुझे अपनी जान का खतरा है।" हज़रत खदीजा ने कहा, "नहीं; कभी नहीं, अल्लाह आपको रुसवा नहीं करेगा, आप सम्बन्धियों का हक़ अदा करते हैं, लोगों के बोझ आप स्वयं उठाते हैं। फ़क़ीरों और अनाथों की आप सहायता करते हैं, मुसाफ़िरों की मेहमान की तरह आवभगत करते हैं। न्याय के लिए आप लोगों की कठिनाइयों में काम आते हैं।" इसके बाद हज़रत खदीजा आपको एक बूढ़े ईसाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं, जिसने सारा हाल सुनकर कहा, "यह वही 'फ़िरिश्ता' है जो हज़रत मूसा के पास आया और मुझे विश्वास है कि आपको अल्लाह ने अपना रसूल बनाया है। काश ! मैं उस समय जीवित रहता, जब आपकी जाति वाले आप के विरोधी बन जायेंगे।"

'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ

इसके बाद आप लगातार हिरा नामक गुफा में जाते रहे, परन्तु लगभग ६ महीने तक कोई 'वह्य' नहीं आई। उसके बाद 'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ। दूसरी वह्य यह थी :

"हे कमली ओढ़ने वाले ! उठ (और लोगों को गुमराही के नतीजे से) डरा और अपने रब की महानता बखान और अपने वस्त्र को पाक कर और नापाकी से दूर रह और अधिक प्राप्त करने के इरादे से किसी के साथ उपकार मत कर और अपने 'रब' के मामले में सब्र से काम ले।" (सूरा ७४, आयत १-७)।

इस प्रकार आप 'नुबूवत' के कार्य पर लगा दिये गये और भटकी हुई मानव-जाति को कल्याण का सीधा मार्ग दिखाने का काम (Duty) आप के ज़िम्मे कर दिया गया। अब यहां से हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन का धर्म-प्रचार काल आरम्भ होता है। इसका एक भाग तो वह है जो १३ वर्ष तक मक्के में बीता और दूसरा वह जो १० वर्ष तक मदीने में रहा।

मक्के का धर्म-प्रचार-काल

प्रचार का वह समय जो मक्के में बीता अपने परिणामों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसी ज़माने में मानवता के ऐसे-ऐसे ऊँचे नमूने तैयार हुये जिन्होंने इस्लामी आन्दोलन का सारे विश्व में परिचय कराया। क़ुरआन का बड़ा हिस्सा इसी ज़माने में उतरा। इस के आरम्भ के तीन सालों में आप अपने सगे-सम्बन्धियों, परिवार वालों और मित्रों को इस्लाम की शिक्षा देते रहे। सबसे पहले आपकी पत्नी हज़रत खदीजा 'ईमान' लाईं इसके बाद नवजवानों में हज़रत अली, ज़्यादा उम्र वालों में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और सेवकों में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा 'ईमान' लाये, इसके बाद आपने खुल कर लोगों को एक अल्लाह की दासता स्वीकार करने और दूसरे पूज्यों के इन्कार करने का आमन्त्रण देना आरम्भ किया, लगभग दो साल तक यह काम होता रहा। इस मुद्दत में साधारणतः लोगों ने हँसी उड़ाई, भांति-भांति के आरोप लगाये, बुरा-भला कहा, झूठे प्रोपगण्डों और विरोध की बातों से 'इस्लाम' के सन्देश को दबाने की चेष्टा की, इसी मुद्दत में आप सफ़ा नामक एक पहाड़ी पर गये और वहां खड़े होकर पुकारा : या सबाहा ! अरब में यह रिवाज था कि कोई खतरा सामने होता तो कोई व्यक्ति किसी ऊँचे स्थान पर चढ़कर ये शब्द कहता था और लोग ये शब्द सुनकर इकट्ठे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो जाते थे, इसी लिए जब सफ़ा की पहाड़ी से ये शब्द सुने तो बहुत से व्यक्ति इकट्ठे हो गये और आपने उन लोगों से कहा कि, "भाइयो ! अगर मैं तुमसे यह कहूँ कि इस पहाड़ी के दूसरी ओर एक बड़ी सेना है जो तुम पर हमला करना चाहती है तो क्या तुम मेरी बात पर विश्वास करोगे ?" लोगों ने कहा, "क्यों नहीं! हमने आपको कभी झूठ बोलते नहीं सुना। आप की बात का विश्वास न करेंगे तो किसकी बात का करेंगे ?" इस पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने उनसे कहा, "देखो भाइयो ! मैं तुमको बताता हूँ कि बन्दगी के योग्य केवल वह अल्लाह है जिसने हम सबको पैदा किया और उसके सिवा दूसरों की पूजा करना ठीक नहीं। मैं तुम्हें एक अल्लाह की दासता की ओर बुलाता हूँ और मूर्ति-पूजा से बचाना चाहता हूँ और साथ ही तुम्हें यह भी बताये देता हूँ कि अगर तुमने मेरी बात न सुनी तो मैं तुम्हें एक बहुत कठोर और भयानक यातना से डराता हूँ।" लोगों ने यह बात सुनी तो बहुत बिगड़े और आपका चचा अबूलहब तो बहुत ही झल्लाकर बोला, "तूने बस इसी लिए हमें पुकारा था ?"

अब इस कालावधि में 'इस्लाम' का सन्देश खुलकर लोगों के सामने आगया था, सबको मालूम हो गया था कि आप क्या कहते हैं और क्या चाहते हैं ? अब साफ़-साफ़ यह एलान हो गया था कि इस पूरे जगत का सृष्टिकर्ता और स्वामी केवल अल्लाह है। मनुष्य को भी उसीने पैदा किया है और वही उस का स्वामी भी है। मनुष्य का स्थान इसके सिवा और कुछ नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा और दास है और उसके लिए ज़रूरी है कि वह अपने पैदा करने वाले स्वामी का ही आज्ञापालन करे, उसी की पूजा करे और किसी दूसरे को उसका साझी न बनाये, उसके सिवा किसी दूसरे के सामने सिर न झुकाये। मनुष्य का यह जीवन वास्तव में एक परीक्षा की अवधि है, इसके बाद उसे अवश्य अल्लाह के पास जाना होगा और वह हर मनुष्य के कर्मों की जांच करके यह निर्णय करेगा कि कौन इस परीक्षा में सफल रहा और कौन असफल हो गया।

यह एलान कोई साधारण एलान न था। इसने क़ुरैश वंश और दूसरे लोगों में आग सी लगा दी, हर ओर इसी की चर्चा होने लगी। पुरोहितों और पुजारियों को अपना कारबार मन्दा होता दिखाई दिया, सरदारों और चौधरियों ने अपनी बात बिगड़ती देखी, और ये लोग पूरे ज़ोर के साथ विरोध के लिए तैयार हो गये। अज्ञानियों को साधारणतः अपने पूर्वजों के धर्म के प्रति अन्ध विश्वास होता है, इसके मुक़ाबले में वह किसी अच्छी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं होते। पुरोहितों और सरदारों ने उन्हीं लोगों को उभारा और विरोध के लिए एक अच्छा मैदान तैयार कर लिया।

क़ुरआन का प्रभाव

क़ुरआन बराबर उतर रहा था जिसमें समय के अनुकूल ठीक-ठीक हिदायतें दी जा रही थीं। एक ओर क़ुरआन के प्रभावों का यह हाल था कि अगर बड़े से बड़ा विरोधी भी क़ुरआन के छोटे-छोटे बोलों को सुनता तो प्रभावित हुए बिना न रहता। उसकी प्यारी भाषा, उसका साहित्यिक रूप, उसकी मिठास बाण की तरह दिलों को भेद जाती और लोगों का मन चाहने लगता कि वे इन बोलों को बार बार दोहरायें। इस समय में जो क़ुरआन उतर रहा था उसमें 'तौहीद' (एकेश्वरबाद) का सन्देश बहुत ही प्रभावकारी ढंग से दिया जारहा था और 'आख़िरत' की जिन्दगी के विश्वास पर कुछ इस तरह बातें सामने आ रही थीं कि वे लोगों के दिलों में उतर जाती थीं। फिर मुसलमानों को इन हालतों में जमे रहने और सब्र और शान्ति के साथ विरोधों को सहने की हिदायतें दी जा रही थीं और आवश्यकतानुसार विरोधियों की आपत्तियों के ठीक और उचित उत्तर भी दिये जा रहे थे। इस प्रकार की हिदायतों का एक नमूना सूरा क़लम के आरम्भ में देखा जा सकता है।

एक ओर मक्के वाले ग़लत-सलत बातें मशहूर करके लोगों को हज़रत मुहम्मद सल्ल० की बात सुनने से रोकते, पर जितना वे रोकते लोगों में उतना ही यह चाव पैदा होता कि देखें तो यह साहब क्या कहते हैं। विशेषकर हज्ज के दिनों में जब लोग इधर-उधर से आते तो आप की सेवा में अवश्य उपस्थित होते। यहां आकर वे देखते कि जिस व्यक्ति के विषय में उन्हें ऐसी-ऐसी बातें बताई गई थीं वह तो बड़ा ही सुशील,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute; Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अति चरित्रवान और विनम्र व्यक्ति है। इस बात का उन पर प्रभाव पड़ता और जब आपकी ज़बान से क़ुरआन सुनते तो झूम झूम जाते, उन्हें ऐसा लगता मानो यह उनके दिल की आवाज़ है।

इस्लामी इतिहास में ऐसी अगणित घटनाओं का वर्णन मिलता है कि कट्टर-से-कट्टर विरोधी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सेवा में बुरे इरादे लेकर आये परन्तु जैसे ही आप पर नज़र पड़ी और उन्हों ने आपका आचरण देखा और आपकी ज़बान से क़ुरआन का कुछ हिस्सा सुना तो उनका दिल कुछ-से-कुछ हो गया। कितनी ही बार ऐसा हुआ कि लोग विरोधी और शत्रु बनकर आये, लेकिन मित्र और साथी बनकर लौटे। एक बार ऐसा हुआ कि ग़िफ़ार क़बीले के कुछ आदमियों ने अनीस नामी एक व्यक्ति को भेजा कि जाओ देखो जो साहब 'नुबूवत' का दावा करते हैं, उन की शिक्षा क्या है और ये कैसे आदमी हैं। अनीस मक्के में आये और आपके बारे में हालात मालूम करके वापस लौटे तो जाकर यही कहा कि वह बहुत उच्च चरित्र वाला व्यक्ति है, बहुत अच्छी बातों की शिक्षा देता है, एक अल्लाह की दासता की ओर बुलाता है और जो कलाम वह पेश करता है वह बहुत ही आश्चर्यजनक है और कविता से बिल्कुल भिन्न। अनीस की बातें सुनकर लोगों को सन्तोष न हुआ और उनके भाई अबूज़र ने कहा कि नहीं, मैं जाता हूँ और पता लगाता हूँ कि ये साहब कैसे हैं। अबूज़र मक्के आये। आपकी सेवा में उपस्थित हुए और आपकी बातों से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने 'इस्लाम' स्वीकार कर लिया। और इसका उनपर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने परिस्थिति की कटुता का अन्दाज़ा किये बिना काबे में आकर लोगों को इस्लाम की ओर बुलाया और अपने मुसलमान होने का एलान कर दिया। ऐसा सुनते ही लोग उनपर टूट पड़े और मारना शुरू किया। वह तो अच्छा यह हुआ कि उसी समय एक व्यक्ति ने यह कह दिया कि यह ग़िफ़ार क़बीले के आदमी हैं और चूंकि मक्केवाले अपनी व्यापारिक यात्रा में जाते हुए उनके गांव के पास से गुज़रते थे इसलिए वे रुक गये और उन्हें जान से नहीं मारा कि कहीं ऐसा न हो कि उस रास्ते पर उनके लिए यात्रा करना दूभर हो जाये।

विरोधियों की पेशकश

इस ज़माने में ऐसी घटनाएँ बहुत सी घटती रहीं और इस्लाम की चर्चा दूर-दूर की बस्तियों में पहुँचती रही, अब विरोधियों ने एक चाल और चली, उन्होंने सोचा कि शायद ये साहब लालच से वश में आ जायें इस लिए एक बार उन्होंने रबीआ के बेटे उतबा को आपकी सेवा में भेजा। उसने आकर कहा, "मुहम्मद! आखिर बताओ तुम चाहते क्या हो, क्या मक्के का शासन चाहते हो? किसी बड़े घराने में शादी की अभिलाषा रखते हो? बहुत सी दौलत की मांग है? अगर ऐसा है तो हम यह सब कुछ कर सकते हैं। हम तुम्हें अपना सरदार भी मान लेंगे और जो चाहोगे कर देंगे परन्तु तुम हमारे धर्म का विरोध करना बन्द कर दो और जो कुछ कहते हो उससे रुक जाओ। वे बेचारे इतना ही सोच सकते थे, वे यही जानते थे कि मनुष्य जो कुछ भी करता है किसी भौतिक लाभ या स्वार्थ के लिए ही करता है, वे इस बात से बिल्कुल बेखबर थे कि अल्लाह की प्रसन्नता भी कोई चीज़ है, और 'आखिरत' के जीवन के लिए भी मनुष्य कुछ कर सकता है, यही कारण है कि उतबा को पूरा विश्वास था कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० उसकी बातें अवश्य मान लेंगे. परन्तु हज़रत ने उतबा की बात सुन कर उसे तसल्ली से बिठाया और उसके सामने क़ुरआन की कुछ ऐसी 'आयतें' पढ़नी आरम्भ कीं जिनमें 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का सन्देश और अपनी 'रिसालत' का वर्णन था (हा० मीम० अस-सजदा. सूरा ४१ की शुरू की आयतें)। उतबा ने क़ुरआन का यह हिस्सा सुना तो बहुत प्रभावित हुआ, चुप-चाप लौट गया और अपने लोगों से जाकर कहा कि भाइयो मुहम्मद सल्ल० जो चीज़ पेश करते हैं वह कविता नहीं, वह कोई और ही वस्तु है। मेरा सुझाव यह है कि तुम उन्हें उनके हालपर छोड़ दो। अगर वे सफल हो गये तो सारे अरब पर उन्हीं का शासन होगा और इसमें तुम्हारा भी सम्मान है और नहीं तो अरब वाले उन्हें ख़ुद ही खत्म कर देंगे। परन्तु अरब के सरदारों ने उतबा के सुझाव को नहीं माना और यह निर्णय किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि अब इस नये आन्दोलन को पूरे ज़ोर के साथ कुचल देना है, इस समय तक आपको इस्लाम का प्रचार करते लगभग पांच वर्ष हो चुके थे।

अत्याचारों का आरम्भ

मक्के के सरदारों ने अपने निर्णय के अनुसार इस्लामी आन्दोलन (Movement) को मिटा डालने के लिए कमर बांध ली और उस समय तक जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनको हर तरह सताने का निर्णय कर लिया। इस ज़माने में मक्के वालों ने नव-मुस्लिमों को जिस-जिस तरह सताया उसकी जो घटनाएं इतिहास में सुरक्षित रह गई हैं उनको पढ़िये तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अरब जैसे गर्म देश की तेज़ धूप में दोपहर के समय जलती हुई रेत पर मुसलमानों को लिटाना, उनके सीनों पर भारी पत्थर रखकर दबाना, लोहा गर्म करके दाग़ देना, पानी में डुबकियां देना; बहुत बेदर्दी से मारना-पीटना; तात्पर्य यह कि इस प्रकार के बहुत से अत्याचारों का विवरण इतिहास में मौजूद है: परन्तु विशेष बात यह है कि इन तमाम बातों के बावजूद किसी ऐसे उदाहरण का उल्लेख नहीं मिलता कि किसी नव मुस्लिम ने इन बातों से परेशान होकर इस्लाम छोड़ दिया हो, हर एक की दृष्टि 'आख़िरत' के जीवन पर जमी हुई थी। और हर एक यह समझता था कि इस जीवन की जो मुसीबत भी है अस्थायी है और अगर इसे सह लिया गया तो फिर उस सदा रहने वाले जीवन में हमारा स्वामी हम से प्रसन्न हो जायेगा और फिर हर प्रकार की नेमतें हमारे लिए होंगी।

हबशा की हिजरत

इसी ज़माने में जब हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने यह अन्दाज़ा लगाया कि अब ये क़ुरैश के अत्याचार कम होने वाले नहीं हैं तो आपने कुछ मुसलमानों के विषय में यह निर्णय कर लिया कि वे हब्शा चले जायें। हब्शा में एक सदाचारी और न्यायशील बादशाह की हुकूमत थी और आपको यह आशा थी कि वहां मुसलमानों पर अत्याचार नहीं होगा और हो सकता है कि उनके द्वारा हब्शा के लोग भी इस्लामी सन्देश से परिचित हो जायें, इसी कारण 'नुबूवत' के पांचवें वर्ष रजब के महीने में पहली बार ग्यारह मर्द और चार औरतें हबशे की ओर चल पड़े।

मक्के के लोगों ने मुसलमानों का पीछा हब्शा तक किया। वहां पहुँच कर हब्शा के बादशाह निजाशी को इन 'मुहाजिरों' के विरुद्ध भड़काया जिसका असर यह हुआ कि बादशाह ने भरे दरबार में उन्हें बुलाकर बात की और हज़रत ईसा के विषय में प्रश्न किये। इस पर मुसलमानों के प्रतिनिधि हज़रत जाफ़र ने उसे सूरा मरयम (सूरा १९) पढ़कर सुनाई जो उस समय उतर चुकी थी। साथ ही इस्लाम की शिक्षा संक्षिप्त शब्दों में रखते हुए निजाशी को बताया कि जो लोग इस सन्देश को स्वीकार करते जा रहे हैं उनके जीवन कैसे कुछ सुधर रहे हैं। हज़रत जाफ़र की बातें और क़ुरआन की 'आयतें' सुनकर निजाशी पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसकी आंखों से आंसू जारी हो गये और वह बोला अल्लाह की क़सम! यह कलाम और इन्जील दोनों एक ही दीप के प्रतिबिम्ब हैं। निजाशी ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' की पुष्टि की और इस्लाम स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे लगभग ८३ मुसलमान हब्शा को 'हिजरत' कर गये।

हज़रत उमर का इस्लाम लाना

संघर्ष के इस ज़माने में विरोधियों को एक धक्का हज़रत उमर के 'ईमान' लाने से भी पहुँचा। हज़रत उमर इस्लाम के कट्टर विरोधियों में से थे। 'नुबूवत' का छटा साल था कि एक दिन हज़रत उमर मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल करने के विचार से घर से निकले। रास्ते में उनके एक मित्र मिले। पूछा, "किधर जा रहे हो।" बोले, "आज मुहम्मद का काम तमाम करने का इरादा है।" उन्होंने कहा, "पहले अपने घर की तो खबर लो, तुम्हारी बहन और बहनोई इस्लाम ला चुके हैं। पहले उन्हें तो सीधा करो।" ऐसा सुनते ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत उमर पलटे और बहन के घर पहुँचे। वह क़ुरआन पढ़ रही थीं। हज़रत उमर को आता देखकर क़ुरआन छिपा लिया परन्तु हज़रत उमर सुन चुके थे कि ये कुछ पढ़ रही थीं। आते ही पूछा, "बताओ तुम क्या पढ़ रही थीं ? मैं ने सुना है तुमने मुहम्मद (सल्ल०) का 'दीन' अपना लिया है ?" और यह कहते हुए अपने बहनोई सईद को मारना आरम्भ कर दिया। बहन फ़ातिमा ने देखा तो वह बचाने के लिए दौड़ीं। हज़रत उमर ने उन्हें भी घायल कर दिया। जब दोनों घायल हो गये तो उन्होंने कहा, "देखो उमर ! हम अल्लाह और उसके रसूल पर 'ईमान' ला चुके हैं और अब कोई चीज़ हमें इस रास्ते से हटा नहीं सकती। तुम्हारा जो जी चाहे, कर लो। इन लोगों के इस दृढ़ संकल्प को देख कर हज़रत उमर बहुत प्रभावित हुए। बोले : "लाओ मुझे भी सुनाओ तुम क्या पढ़ रही थीं ?" हज़रत फ़ातिमा ने कहा कि यह कलाम अपवित्रता की दशा में नहीं सुनाया जा सकता। पहले स्नान करके आओ। हज़रत उमर स्नान कर आये। हज़रत फ़ातिमा ने क़ुरआन का वह हिस्सा सामने लाकर रख दिया। यह सूरा ताहा (सूरा २०) थी। हज़रत उमर ने पढ़ना आरम्भ किया। जैसे-जैसे पढ़ते जाते थे यह कलाम दिल में उतरता जाता था। बार-बार कहते, "कैसा अनोखा कलाम है !" थोड़ी देर बाद कहने लगे, "बिल्कुल सच है अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं।" अब सीधे उठकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पास गये और 'ईमान' ले आये।

सामाजिक बहिष्कार

हज़रत उमर के 'ईमान' लाने के बाद मुसलमानों की शक्ति में अधिक वृद्धि हो गई। मुसलमान अब तक काबे में जाकर 'नमाज़' नहीं पढ़ सकते थे। परन्तु अब स्थिति बदल गई थी। हज़रत उमर ने साफ़ एलान कर दिया कि अब मुसलमानों को काबे में नमाज़ पढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। मुसलमान काबे में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने लगे। क़ुरैश के लिए यह घटना बड़ी जटिल थी और वे बराबर विकल हो रहे थे कि अब इस नये आन्दोलन को दबाने के लिए क्या उपाय किया जाये। अतः उन्होंने अब एक और चाल चली। तमाम क़बीलों से मिलकर यह समझौता किया कि हज़रत मुहम्मद और उनके पूरे वंश का सामाजिक बहिष्कार (Social Boycott) किया जाये। न कोई इनसे मिले और न इनके हाथ कोई कुछ बेचे या खरीदे। यहां तक कि इन्हें खाने पीने का सामान भी न दिया जाये और यह बहिष्कार बाक़ी रहे जब तक मुहम्मद सल्ल० के वंश वाले खुद उन्हें क़त्ल करने के लिए हवाले न करें। यह समझौता लिखकर काबे के दरवाज़े पर लटका दिया गया। अब मुहम्मद सल्ल० के वंश (बनी हाशिम) के लिए दो ही रास्ते थे या तो वे मुहम्मद सल्ल० को क़ुरैश के हवाले करके उन्हें क़त्ल हो जाने दें या फिर इस बहिष्कार के कारण जो विपत्ति भी आयें उसे सहें। अतः अबू तालिब अपने तमाम परिवार वालों को लेकर पहाड़ के एक दर्रे में जा ठहरे और तीन साल तक बड़ी विपत्तियों का सामना किया। इन लोगों को बहुधा पेड़ों के पत्ते खा-खाकर समय बिताना पड़ता था यहाँ तक कि सूखा हुआ चमड़ा तक उबाल कर खाने की नौबत आ गई। जब बच्चे भूख से बिलखते तब क़ुरैश सुन-सुन कर खुश होते। हाँ किसी दयालु को दया आ जाती तो छिपा कर कुछ खाने को भेज देता। तीन वर्ष तक बनी हाशिम विपत्तियों को सहते और झेलते रहे। 'नुबूवत' के दसवें साल समझौता करने वालों में ही फूट पड़ जाने के कारण यह बहिष्कार समाप्त हो गया।

क़ुरआन इस जमाने में भी उतरता रहा। इस जमाने में मुसलमानों को सब्र के साथ तमाम कठिनाइयों को झेलने के लिए कहा जाता रहा। अल्लाह की उपासना और उसकी याद में लगे रहने की ताकीद होती रही और मुसलमानों के व्यक्तिगत चरित्र को ऊँचे से ऊँचे आदर्श तक उठाने के उपाय बताये जाते रहे, अल्लाह का प्रेम, उसकी अप्रसन्नता का भय, नैतिक प्रगति, बुरी आदतों का सुधार, मुसलमानों में परस्पर मेल-जोल और प्रेम और कठिन समय पर जमे रहने के लिए बार-बार ताकीद की गई और दिलों में 'आखिरत' के जीवन का विश्वास और 'जन्नत' का चाव इस प्रकार भर दिया गया कि अब ये लोग हर प्रकार की कठिनाइयां झेलने और हर प्रकार की क़ुरबानी देने के योग्य हो गये। दूसरी ओर विरोधियों को अल्लाह के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक़ाबले में विद्रोह की नीति अपनाने के बुरे परिणाम से बराबर डराया जाता रहा। उन्हें उन जातियों के भयोत्पादक क़िस्से सुनाये जाते रहे जिन्होंने उनसे पहले असावधानी और इन्कार की रीति अपनाई और विनष्ट हुईं। विरोधियों और इन्कार करनेवालों की आपत्तियों और आशंकाओं के समाधान के लिए उचित उत्तर भी दिये गये।

मक्के के बाहर प्रचार

सामाजिक वहिष्कार (Social Boycott) समाप्त होने के कुछ दिन बाद ही अबू तालिब का देहान्त हो गया और कुछ ही दिनों पीछे हज़रत ख़दीजा भी गुज़र गईं। अबू तालिब के देहान्त के बाद मक्के वालों ने अति निर्दयता के साथ बिल्कुल निडर होकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप के साथियों को सताना शुरू कर दिया। इस ज़माने में हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मक्के से बाहर जाकर लोगों को अल्लाह् का सन्देश पहुँचाना शुरू किया। आप ताइफ भी गये और आप ने वहां के बड़े और प्रभावकारी लोगों के सामने 'इस्लाम' का सन्देश रखा। परन्तु ये "बड़े" तो किसी की बात कम ही सुन कर देते हैं, इन लोगों ने आप का उपहास किया और बस्ती के गुन्डों और बदमाशों को उभार दिया जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को पत्थर मार-मार कर घायल कर दिया। इस मौक़े पर भी आपके दिल में अपने विरोधियों के विरुद्ध कोई घृणा और क्रोध पैदा नहीं हुआ बल्कि आप ऐसे कठिन समय में भी अल्लाह् से यही कहते रहे : अल्लाह् ! तू मेरी जाति को सीधा रास्ता दिखा, ये लोग जानते नहीं हैं, अभी बात समझते नहीं। इसी ज़माने में आप आस-पास की ऐसी बस्तियों में भी जाते रहे जहां मेले लगते थे। वहां आपने लोगों को इस्लाम का सन्देश सुनाया। ऐसे मौक़ों पर जब आप क़ुरआन के कुछ हिस्से सुनाते तो इनका बहुत प्रभाव पड़ता। कुछ लोग तो क़ुरआन को सुनकर ही 'ईमान' ले आये। इस प्रकार सारे अरब में इस्लाम की चर्चा होने लगी और दूर-दूर तक आपकी बातें पहुँचने लगीं।

हज्ज के दिनों में आपको बहुत से लोगों से मिलने का मौक़ा मिलता। हज्ज के ज़माने में आप क़बीलों के सरदारों के पास जाते और उन्हें इस्लाम की बातें बताते। 'नुबूवत' का दसवाँ साल था कि आपने अक़बा स्थान के क़रीब मदीने के कुछ लोगों के सामने इस्लाम का सन्देश रखा और क़ुरआन की कुछ आयतें सुनाईं। मदीने में आप की चर्चा पहले से ही हो रही थी। मदीने में कुछ यहूदी भी बसते थे। उन की किताबों में यह लिखा हुआ था कि अल्लाह् के एक और 'नबी' पधारने वाले हैं। मदीने वालों ने ये बातें सुन रखी थीं। जब उन्होंने मुहम्मद सल्ल० की बातें सुनीं तो उनका विचार हुआ कि हो-न-हो वह 'नबी' यही हैं। उन्होंने यह भी सोचा कि जब हमारे यहां के यहूदी उनकी बातें सुन लेंगे तो वे ज़रूर मुसलमान हो जायेंगे। हमें उन से पहल करना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि वे लोग पहले 'ईमान' ले आयें अतः इस मौक़े पर छः आदमियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

इस्लाम मदीने में

इधर धीरे-धीरे लोग इस्लाम क़बूल करते जा रहे थे उधर विरोध तेज़ी के साथ बढ़ता जा रहा था। बहुत कठिन समय था और किसी प्रकार समझ में न आता था कि आख़िर इन मुट्ठी भर मुसलमानों का क्या होगा ? और इतने विरोध के होते हुए लोग अल्लाह् के दीन को कैसे अपना सकेंगे। मक्के में हालात कठिन से कठिनतर होते जा रहे थे, परन्तु मक्के के बाहर बहुत सी बस्तियों में इस्लाम धीरे-धीरे फैल रहा था और मुसलमानों की संख्या बढ़ रही थी। अक़बा के स्थान पर जिन छः आदमियों ने इस्लाम अपनाया था जब वे लौट कर मदीना गये तो उन्होंने सब हाल लोगों को सुनाया। फलस्वरूप बारह आदमियों की एक मण्डली हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सेवा में आई। उन लोगों ने आपकी बातें सुनीं और 'ईमान' ले आये और यहां से अपने साथ एक साहब को लेने गये ताकि वह मदीने वालों को घर-घर पहुँच कर क़ुरआन सुनाएँ और इस्लाम की बातें बताएँ। इस प्रकार मदीने में इस्लाम तेज़ी के साथ फैलता रहा और फल यह निकला कि अगले साल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थात् 'नुबूवत' के बारहवें साल हज्ज के जमाने में अक़बा क स्थान पर ७२ आदमी हज़रत मुहम्मद सल्ल० से मिले और मुसलमान हो गये और उन्होंने हज़रत को यह वचन दिया कि हम हर हाल में आपका साथ देंगे। उन लोगों ने आप से एक समझौता किया जिसमें छः बातों का वचन दिया—

१. अल्लाह के सिवा किसी की दासता स्वीकार न करेंगे।
२. चोरी नहीं करेंगे।
३. ज़िना नहीं करेंगे।
४. अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगे।
५. किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाएंगे और न किसी की पीठ पीछे बुराई करेंगे।
६. हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस भली बात का हुक्म देंगे उससे मुंह न मोड़ेंगे।

क़ुरआन बराबर उतर रहा था और हर मरहले और मौक़े के अनुसार हिदायतें दी जा रही थीं। मक्के के इस अन्तिम युग में जिस बात पर बहुत अधिक ज़ोर दिया गया वह 'ईमान' वालों में धैर्य्य का गुण पैदा करना है। उनके दिलों को दृढ़ बनाने और उन्हें सही रास्ते पर जमाने के लिए विशेष बल दिया जा रहा था। क्योंकि लगभग बारह साल की लगातार कोशिशों के फल ऐसे थे कि एक साधारण दृष्टि रखने वाला मनुष्य उन्हें देखकर साहस छोड़ देता। इस लिए 'मोमिनों' को बार-बार बताया गया कि कठिनाइयां और आज़माइशें तो इस रास्ते की अनिवार्य मंज़िलें हैं! यही वह कसौटी है जिस पर कसने के बाद 'ईमान' के दावे की सच्चाई का पता लग सकता है। उन्हें बताया गया कि अगर इस समय अल्लाह को न मानने वालों का अधिकार है तो इसका यह अर्थ न लेना चाहिए कि यह स्थिति यूंही रहेगी और कभी न बदलेगी। मुसलमानों को पिछली जातियों पर बीती हुई बातें सुनाई गई और इतिहास के प्रकाश में यह बात स्पष्ट कर दी गई कि अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के नेताओं को लगभग हर युग में ऐसी ही समस्याओं से निबटना पड़ा है। इस कालावधि में दिये गए उपदेशों का एक उदाहरण सूरा अनकबूत (सूरा २९) है। इसमें सब्र और जमे रहने की हिदायत भी है और भयोत्पादन के लिए बीती हुई जातियों की कहानियां भी हैं और विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर भी है। साथ ही इस बात की ओर संकेत भी है कि 'ईमान' वाले व्यक्ति के लिए मूल निर्णायक प्रश्न यह है कि वह किस प्रकार अल्लाह के 'दीन' पर क़ायम रहे और किस प्रकार 'दीन' का सन्देश दूसरे मनुष्यों तक पहुँचाता रहे। अगर किसी समय वह यह देखे कि किसी जगह इन दोनों की गुञ्जाइश बाक़ी नहीं रही है तो उसे यह सोचना चाहिए कि अब वह अल्लाह की ज़मीन पर कहां जाकर बसे और किस प्रकार दीन के तक़ाज़ों को पूरा करे, घर, व्यापार, खेती, सगे-सम्बन्धी इन में से कोई वस्तु भी इतना महत्व नहीं रखती कि उसके कारण कोई मुसलमान किसी विशेष स्थान से चिमटा रहे। अतः इस कालावधि में उतरे हुए क़ुरआन में स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि ईमान वालों को अब किस बात के लिए तैयार होना है।

हिजरत

इस्लामी परिभाषा में केवल अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के लिए स्वदेश को छोड़ कर किसी ऐसी जगह चले जाना, जहां दीन के तक़ाज़े पूरे हो सकें 'हिजरत' कहलाता है। इस प्रकार स्वदेश छोड़कर जाने का वास्तविक कारण न जान बचाकर भागना होता है और न किसी दूसरे देश में बेहतर आर्थिक सुविधाओं का विचार। मक्के में स्थिति कुछ ऐसी पैदा हो गई थी कि इस बात की आशा नहीं की जा सकती थी कि कुछ और लोग इस्लाम लायेंगे। हालात का दबाव ही कुछ ऐसा था कि अब आम लोगों का इस्लाम की ओर बढ़ना बहुत कठिन था। फिर इधर मुसलमानों को जिन कठिनाइयों का सामना था उनमें रहते हुए वे 'दीन' के तक़ाज़े भी पूरे नहीं कर सकते थे। इसलिए अब हज़रत मुहम्मद सल्ल० की इजाज़त से कुछ लोगों ने दीन के लिए अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घर, अपने व्यापार, खेतियां और बाग़ छोड़ कर मदीना जाने का निश्चय कर लिया और धीरे-धीरे मुसलमान मक्का छोड़कर जाने लगे।

जब 'नुबूवत' का तेरहवां साल आरम्भ हुआ उस समय तक बहुत से मुसलमान मदीने जा चुके थे और वहां उनके कारण इस्लाम फैल भी रहा था और शक्ति भी प्राप्त कर रहा था। इस बात को मक्के वालों ने बड़ी चिन्ता के साथ देखा और अन्तिम उपाय के रूप में हर क़बीले के बड़े-बड़े सरदारों ने मिलकर यह तय किया कि मुहम्मद सल्ल० का काम तमाम कर दिया जाये और इस काम के लिए हर क़बीले से एक-एक जवान चुना जाये और सब मिलकर एक साथ मुहम्मद सल्ल० पर हमला करें और उन्हें क़त्ल कर दें। इस सूरत में हाशिम के वंश वालों के लिए यह सम्भव न रहेगा कि अपने वंश के एक आदमी के खून के बदले में वे तमाम क़बीलों से अकेले लड़ सकें। दुश्मन की इन चालों का पता हज़रत मुहम्मद सल्ल० को भी चल गया और अल्लाह की ओर से यह हुक्म भी मिल गया कि अब आप मक्का छोड़ कर मदीने चले जायें, अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हज़रत अली को बुला कर लोगों की वे अमानतें उनके सुपुर्द कीं जो आपके पास जमा थीं और जिनमें अधिकतर अमानतें उन्हीं लोगों की थीं जो आप के खून के प्यासे थे। आपने हज़रत अली को हिदायत की कि मेरे जाने के बाद ये अमानतें लोगों को लौटा देना। यह एक आश्चर्य की बात थी कि इतने विरोध के होते हुए भी विरोधी और दुश्मन यही जानते थे कि मुहम्मद से ज़्यादा सच्चा और अमानतदार कोई नहीं और इसलिए वे अपनी अमानतें आप के पास ही रखते थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० हज़रत अबूबक्र के साथ उसी रात मक्के से निकले जिसकी सुबह को दुश्मनों ने आप पर हमला करने का निश्चय किया था। कुछ लोगों की खोज के अनुसार यह तारीख़ २० जून सन् ६२२ ई० थी। इसी वर्ष से मुसलमानों का हिजरी कैलेण्डर शुरू होता है।

मदीने में

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मदीने आने से पूर्व आपके आने की सूचना मदीनेवालों को मिल चुकी थी और सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सबसे पहले आपका स्वागत मदीने से तीन मील दूरी पर क़ुबा के स्थान पर किया गया। यहां आपने सबसे पहले स्वयं अपने हाथ से और तमाम मुसलमानों की सहायता से एक मस्जिद बनाई और कुछ दिन ठहरने के बाद मदीने की ओर रवाना हुए। हर व्यक्ति चाहता था कि हुज़ूर मेरे यहां ठहरें। इसलिए यह निर्णय करना बहुत कठिन हो गया कि आप किसकी प्रार्थना को स्वीकार करें और किसकी स्वीकार न करें। तो आपने फ़रमाया कि अच्छा मेरी ऊँटनी जिस किसी के मकान के सामने जाकर खड़ी हो जाए बस वहीं मैं ठहर जाऊँगा। ऊँटनी को आज़ाद छोड़ दिया गया और वह थोड़ी देर में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के मकान के सामने ठहर गई। यह वही स्थान है जहां अब मस्जिदे नबवी है।

मदीने में आने के बाद भी आपने पहला काम यही किया कि हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के मकान के करीब ही ज़मीन खरीद कर उस पर बहुत सादा तरीक़े से एक मस्जिद बनाई जिसकी दीवारें कच्ची ईंटों की और छत खजूर के पत्तों की थी।

भाईचारा

मक्के से जो लोग घर-बार छोड़कर मदीने आये थे वे लगभग सभी बिना किसी सामान आदि के थे। खाते-पीते लोग भी सब-कुछ छोड़-छाड़कर यूं ही आ गये थे और अब यहां उनके लिए स्थायी स्थान की आवश्यकता थी। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इस समस्या को इस प्रकार सुलझाया कि एक दिन मदीने के सब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुसलमानों को बुलाकर कहा कि, "ये सब मुसलमान जो मक्के से आये हैं तुम्हारे भाई हैं" और फिर आप ने मदीने के एक व्यक्ति को बुलाया और एक मक्के वाले को फ़रमाया : 'आज से तुम एक-दूसरे के भाई हो तुम अपने भाई को अपने घर ले जाओ और अपने साथ रक्खो। आपने मदीने वाले को 'अनसार' (सहायता करने वाले) का नाम दिया और मक्केवाले को 'मुहाजिर' (अल्लाह के लिए घर-बार छोड़नेवाले) का नाम दिया और इस प्रकार सब मुहाजिरों को अन्सार का भाई बना दिया और अल्लाह के ये बन्दे भाई ही क्या भाई से भी कहीं ज़्यादा साथी बन गये। 'अनसार' खुशी-खुशी 'मुहाजिरों' को अपने घर ले गये और अपनी सब जायदाद, सामान और व्यापार में उन्हें शरीक करके भाइयों की भांति हिस्सा बांट दिया। बाग़ों की आय, खेती का उत्पादन, घर का सामान, मकान, जायदाद, सारांश यह कि हर चीज़ इन भाइयों ने परस्पर बांट ली और ये बेघर लोग बहुत सन्तुष्ट हो गये।

यहूद से सम्पर्क

मदीना आने के बाद इस्लामी आन्दोलन को यहूद से मामला पेश आया। ये लोग मक्के वालों की तरह न मूर्तियां पूजते थे और न बहुत-से देवी-देवताओं के उपासक थे। ये 'तौहीद' के मानने वाले थे। अल्लाह के रसूलोंको भी मानते थे और 'आखिरत' 'फ़िरिश्तों' 'वह्य' और 'जन्नत' 'जहन्नम' पर भी ईमान रखते थे, ये लोग हज़रत मूसा अ० को अपना नबी मानते थे और अल्लाह की ओर से आई हुई शरीअत के अनुसार कार्य करते थे। इस प्रकार सिद्धान्तानुसार उनका दीन वही इस्लाम था जिसकी ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल० बुला रहे थे। इनकी खराबी यह थी कि ये ज़बान से तो सब-कुछ मानते थे परन्तु इनके कार्य अल्लाह की शरीअत और उसकी हिदायत से बहुत-कुछ आज़ाद हो चुके थे। इनके पास तौरात नामक आसमानी किताब भी थी परन्तु इन्होंने इसमें बहुत-कुछ अदल-बदल कर दिया था। बहुत-सी इन्सानी मन-गढ़न्त बातें इसके साथ मिला दी थीं और खुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) का बहुत-सा हिस्सा गुम कर दिया था और बहुत सी चीज़ें अपने मन-माने ढंग पर अपना ली थीं। इसके फलस्वरूप इनका नैतिक जीवन बहुत-कुछ खराब हो चुका था और अल्लाह से इनका सम्बन्ध कमज़ोर होते-होते बिल्कुल समाप्त हो गया था। इस प्रकार अब इस्लामी आन्दोलन को बिल्कुल नये लोगों से मामला पड़ा था। यूं कहना चाहिए कि अब मदीने में आकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० को 'मुशरिकों' (बहुदेववादियों) और 'काफ़िरों' से ज़्यादा "इन बिगड़े हुए मुसलमानों" की ओर ध्यान देना था।

मदीने की पहली इस्लामी स्टेट

दूसरा बड़ा परिवर्तन जो मदीना आकर हुआ यह था कि अब मदीने में चारों ओर से आ-आकर मुसलमान इकट्ठा हो रहे थे। मुसलमान अब मक्के की तरह उत्पीड़ित और विवश नहीं थे बल्कि सब कुछ उनके अपने हाथ में था और अब इस बात की आवश्यकता थी कि प्रबन्ध को संभालने के लिए स्वयं मुसलमानों की एक छोटी सी रियासत बनाई जाये और उनसे संबंधित तमाम प्रबन्धों को सँभाला जाये। मुसलानों की यह छोटी सी रियासत जो मदीने में बन रही थी यद्यपि बिल्कुल आज़ाद और स्वतंत्र थी परन्तु चारों ओर से 'कुफ़्र' के क़िलों से घिरी हुई थी और अब मामला केवल सताने और परेशान करने का ही न था बल्कि अब पूरा अरब इस बात पर तुला हुआ था कि इस नई रियासत और इसके मुट्ठी भर मुसलमानों को जल्द-से-जल्द खत्म कर दिया जाये। क्योंकि इस रियासत के ताक़त पकड़ने की शक्ल में सारे अरब वालों को अपने लिए खतरा ही खतरा दीख पड़ता था। इन नये हालात में हज़रत मुहम्मद और आपके साथियों के लिए बहुत आवश्यक था कि वे इस्लाम के प्रचार का काम पूरे जोश के साथ करें और कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इस्लाम के ठीक होने पर संतुष्ट कर दें। ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को अपने से सहमत करलें और अपनी बात को दलीलों से इस प्रकार प्रमाणित करें कि लोग जिन विचारों पर अब तक जमे हुए थे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनका ग़लत होना उनपर स्पष्ट हो जाये। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता थी कि अब मुसलमानों को इस बात के लिए बिल्कुल तैयार कर दिया जाए कि अगर उनके विरोधी उन पर हमला करें तो वे डट कर उनका मुक़ाबला करसकें और अपने धर्म और विश्वास पर जमने और दूसरों को उस पर जमाने के लिए ताक़त का जवाब ताक़त से दे सकें। सूरा अल-बक़रा (सूरा नं० २) का एक बड़ा हिस्सा इसी ज़माने में उतरा जिसमें विशेषकर 'यहूद' को सम्बोधित किया गया है और नई परिस्थितियों से निमटने के लिए मुसलमानों को आदेश दिये गये हैं।

मदीने में इस्लामी आन्दोलन को जिन नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ा उनमें एक समस्या 'मुनाफ़िक़ों' (कपट नीति रखनेवालों) की भी बड़ी महत्वपूर्ण थी। ये वे लोग थे जो दिल से तो मुसलमान नहीं हुए थे परन्तु किसी न किसी कारण इस्लामी गरोह में घुस आये थे। कुछ तो इसलिए आये थे कि गरोह के अन्दर रह कर वे उपद्रव मचा सकें और मुसलमानों के भेद दुश्मनों तक पहुँचा सकें और कुछ इसलिए अपने को मुसलमान प्रकट करते थे कि वे ऐसा करने पर विवश थे। क्योंकि उनके परिवार के अनेक लोग मुसलमान हो गये थे और वे उनसे अलग न रह सकते थे। इनके अलावा कुछ ऐसे अवसर से लाभ उठानेवाले भी मुसलमानों के साथी बन गये थे जो मुसलमानों के साथ रह कर कुछ लाभ उठाना चाहते थे। इस्लामी आन्दोलन के लिए ये आस्तीन के सांप हर मौक़े पर मुश्किलों का कारण बने और क़दम-क़दम पर मुसलमानों को इनसे भी निमटना पड़ा। आगामी परिस्थितियों में इनके कारण जो मुश्किलें पेश आईं उनका उल्लेख अपने-अपने मौक़े पर होगा।

मदीने में बनने वाली मुसलमानों की इस छोटी सी रियासत की दृढ़ता के लिए इस बात की भी आवश्यकता थी कि यह निश्चित हो जाये कि मदीने के आस-पास के यहूदी क़बीलों से मुसलमानों के राजनीतिक सम्बन्ध किस प्रकार के होंगे और मुसलमानों को यह मालूम रहे कि अगर किसी समय उनपर बाहर से कोई हमला हो, तो इन लोगों की क्या नीति रहेगी। अतः मुहम्मद सल्ल० ने जिन क़बीलों से बात-चीत शुरू की उनमें से कुछ ने तो तटस्थ रहने पर समझौता कर लिया और कुछ ने मुसलमानों का साथ देने का वचन दिया।

क़िब्ले में परिवर्तन

अब तक इस्लाम का क़िबला 'बैतुलमक़दिस' था। अर्थात् मुसलमान उसी की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते थे, यही यहूद का क़िब्ला भी था। शाबान सन् २ हिज़री की घटना है कि ठीक नमाज़ की हालत में क़िब्ले को बदलने का आदेश उतरा और बैतुलमक़दिस के बदले काबा को मुसलमानों का क़िब्ला बनाया गया। अतः मुहम्मद सल्ल० ने नमाज़ पढ़ने की दशा ही में अपना मुंह उत्तर में बैतुलमक़दिस की ओर से फेरकर दक्षिण में काबे की ओर कर लिया। इस्लामी इतिहास की यह घटना अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह मानो अल्लाह की ओर से एक एलान था कि अबतक यहूदियों को यह पद प्राप्त था कि वे दुनिया के सामने अल्लाह का दीन पेश करें, अब उन्हें उस पद से हटाया जा रहा है और अब मुसलमानों को यह ज़िम्मेदारी सौंपी जा रही है कि वे अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह के दीन का सन्देश पहुँचाने का काम करेंगे। साथ ही इसमें इस बात की परीक्षा भी थी कि कौन अल्लाह और अल्लाह के रसूल के आदेशों का बिना किसी हुज्जत के पालन करनेवाला है और कौन पुराने पक्षपातों में ग्रस्त है। इस मौक़े पर एक बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि ऐसे लोग जो पूरी तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० का आज्ञापालन करने के लिए तैयार नहीं थे उनका भांडा फूट गया और वे मुसलमानों के गरोह से अलग हो गये।

बद्र की लड़ाई

मदीने में मुसलमानों का ज़ोर पकड़ना यों तो सारे अरब वालों के लिए ही अप्रिय था परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषकर मक्के के क़ुरैश इसे अपने लिए बड़ा ख़तरा समझते थे। कारण यह था कि शाम (Syria) को व्यापार का जो रास्ता लालसागर के किनारे-किनारे जाता था वह मदीने के पास से हो कर गुज़रता था और अब मदीने में मुसलमानों के ज़ोर पकड़ने का अर्थ यह था कि शाम देश से क़ुरैश के व्यापार का सिलसिला उसी रूप में जारी रह सकता था कि या तो वे मुसलमानों से अच्छे सम्बन्ध रक्खें या फिर इस नई उभरती हुई शक्ति को बिल्कुल कुचल दें। क़ुरैश के लिए इस नई शक्ति को दबाना कोई आसान काम न था। फिर इधर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इसी व्यापारिक रास्ते के क़रीब रहनेवाले यहूदी क़बीलों से समझौते भी कर रक्खे थे और क़ुरैश अच्छी तरह समझ गये थे कि अब मुसलमानों को छेड़ने का अर्थ यह भी निकल सकता है कि उन्हें अपने व्यापार से हाथ धोना पड़े। यह बात क़ुरैश को किसी प्रकार गवारा न थी। शाबान सन् २ हिजरी का क़िस्सा है कि क़ुरैश का एक बहुत बड़ा क़ाफ़िला जिसके साथ लगभग पचास हज़ार अशरफ़ी का माल था शाम देश से लौट रहा था। क़ाफ़िले के साथ तीस-चालीस रक्षकों से ज़्यादा लोग न थे इसलिए क़ाफ़िले के सरदार अबूसुफ़यान को यह डर हुआ कि कहीं मदीने के क़रीब पहुँचने पर मुसलमान हमला न कर दें। अबूसुफ़यान ने इस ख़तरे को देखते हुए एक व्यक्ति को मक्का दौड़ा दिया कि वह वहां से लोगों को सहायता के लिये बुला लाये। उस व्यक्ति ने मक्के में आकर दुहाई मचा दी कि मुसलमान क़ाफ़िले को लूटे ले रहे हैं। इस सूचना के साथ हज़ारों आदमियों को दिलचस्पी थी क्योंकि क़ाफ़िले के साथ जो माल था वह मक्के के लगभग तमाम ही व्यापारियों का था। अतः क़ुरैश के पुकारने पर तमाम बड़े-बड़े सरदार लड़ाई के लिए निकल आये और देखते-देखते कोई एक हज़ार जोशीले जवानों की एक सेना तैयार हो गई। इन लोगों ने यह निश्चय कर लिया कि अब मुसलमानों का अन्त ही कर डालना है। क्योंकि इस तरह तो यह रोज़ की झंझट रहेगी और शाम देश के साथ हमारे व्यापारिक सम्बन्धों का बिल्कुल अन्त हो जायेगा। एक ओर माल का प्रेम, व्यापार के संरक्षण का चाव और दूसरी ओर मुसलमानों से पुरानी दुश्मनी और वैर, इन सब चीज़ों ने मिलकर नवजवानों को जोश में दीवाना बना दिया और इन सब ने मदीने पर आक्रमण के लिए प्रस्थान कर दिया।

इधर मुहम्मद सल्ल० को भी हालात का ज्ञान था। आपने महसूस किया कि अब समय आ गया है। अगर इस समय क़ुरैश ने मुसलमानों को नीचा दिखा दिया तो फिर इस्लामी आन्दोलन का अन्त ही हो जायेगा अतः इस मौक़े पर कोई निर्णायक क़दम उठाना चाहिए। इधर मुसलमानों की स्थिति ऐसी न थी कि वे लड़ाई लड़ते। मक्के से जो लोग आये थे वे खाली हाथ थे और अपना सब कुछ छोड़ छाड़ कर आये थे मदीने के लोग साधारणतः खेती-बाड़ी करने वाले थे और युद्ध के मामले में उनका तजरबा न था। 'यहूदियों' के बहुत से क़बीले विरोध पर तुले हुए थे। खुद मदीने में मुसलमानों के दुश्मन मौजूद थे। ऐसी परिस्थिति में इस बात का डर था कि अगर मक्के वाले मदीने पर चढ़ आए तो हो सकता है कि मुसलमानों के मुट्ठी भर गरोह का अन्त हो जाये और यह न भी हो और वे अपने क़ाफ़िले को निकाल ले जायें तो इससे भी मुसलमानों की हवा उखड़ जायगी और फिर भविष्य में हर एक उन्हें दबा लेने का साहस करेगा। इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने 'मुहाजिरों' और 'अनसार' को इकट्ठा किया और तमाम हालात साफ़-साफ़ उनके सामने रख दिये कि देखो एक ओर उत्तर में व्यापारिक क़ाफ़िला है और दूसरी ओर क़ुरैश की सेना चली आ रही है। अल्लाह का वादा है कि इसमें से एक तुम्हें मिल जायेगा, बताओ तुम किसके मुक़ाबले पर चलना चाहते हो। इस पर बहुत से मुसलमानों ने यही चाहा कि क़ाफ़िले पर हमला किया जाये लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल० की निगाहें दूर तक देख रही थीं। आपने फिर अपना प्रश्न दोहराया अब इस पर कुछ मुसलमानों ने कहा: "हे अल्लाह के रसूल! आप फ़ैसला करें आप जिधर जायेंगे हम आपके साथ हैं"। अतः जब रसूल सल्ल० ने मुसलमानों को इस पर तैयार कर लिया कि अब मुक़ाबला क़ुरैश की सेना से करना है तो आपने कूच का एलान किया। इस समय मुसलमानों में केवल ३१३ आदमी ऐसे निकले जो लड़ाई के योग्य थे। इनमें से दो-तीन के पास घोड़े थे और कोई सत्तर ऊँट थे, लड़ाई का सामान भी बहुत थोड़ा था। इसलिए अधिकतर मुसलमानों के दिल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डर रहे थे कि देखिये क्या होता है। इधर रमज़ान का महीना था और रोज़े इसी वर्ष फ़र्ज़ हुए थे। १६ रमज़ान सन् ०२ हिजरी को बद्र नामक गांव में जो मदीने से ८० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है, पहुँचे और यहां हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मुसलमानों को पड़ाव डालने का हुक्म दिया। मुसलमानों के लिए यह कठिन परीक्षा का समय था। अपने से तीन गुनी सेना का मुक़ाबला था जो हर प्रकार से लैस थी। अपने पास सामान की कमी, फिर 'महाजिरों' के लिए एक कठिन परीक्षा यह थी कि जो लोग मुक़ाबले लिए सामने थे उनमें से बहुत से लोग अपने ही नातेदार और सम्बन्धी थे। किसी का मुक़ाबला भाई से था, किसी का बेटे से। किसी का बाप सामने था तो किसी का चाचा और मामूँ। ऐसी दशा में वही लोग इस लड़ाई में ठहर सकते थे जो दिल से सच्चे और पक्के मुसलमान थे। इधर 'अनसार' का हाल यह था कि जब वे मुसलमानों के साथ 'क़ुरैश' के मुक़ाबले के लिए निकल आए तो मानो उन्होंने सारे अरब की दुश्मनी मोल ले ली। यह साहस वही लोग कर सकते थे जिनके दिलों में अल्लाह और उसके रसूल का प्रेम पूर्णतः बैठ गया था और 'ईमान' उनके अन्दर रच-बस गया था।

'ईमान' का यही वह मुक़ाम है जिसके बाद अल्लाह की मदद ज़रूर आती है। ऐसा ही हुआ। जब बद्र की लड़ाई में उन कमज़ोरों और निहत्थे मुसलमानों का मुक़ाबला दुश्मनों से हुआ तो अल्लाह की मदद आई और यही कमज़ोर मुसलमान अपने शक्तिशाली दुश्मन के मुक़ाबले में सफल हुए। क़ुरैश के बड़े-बड़े सरदार मारे गये, कितने ही क़ैद हुए और इस पहले मुक़ाबले में क़ुरैश की कमर टूट गई। लड़ाई में जो लोग क़ैद होकर आये वे दो-दो चार-चार करके मुसलमानों में बांट दिये गये। मुसलमानों को हिदायत कर दी गई कि वे इन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें। इस्लामी इतिहास की यह लड़ाई अपने परिणाम और प्रभाव की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण थी, इसका उल्लेख और इस पर एक अनोखे ढंग से समीक्षा क़ुरआन की सूरा अल-अनफ़ाल (सूरा ८) में की गई है। क़ुरआन को पढ़ने वाले जानते हैं कि यह समीक्षा एक बिल्कुल ही अनोखे ढंग की है और उससे बिल्कुल भिन्न है जैसी समीक्षा साधरणतः संसार के सम्राट किसी लड़ाई के जीतने के बाद किया करते हैं। इस मौक़े पर मुसलमानों की नैतिक शिक्षा-दीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं और उनमें संगठन का आदर, अल्लाह पर भरोसा, उद्देश्य की लगन और सांसारिक धन-दौलत के मोह को दिल से ख़ाली रखने की भावना पूरी तरह जाग्रत की गई।

बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की विजय तो हो गई परन्तु इस घटना ने सारे अरब वालों को मुसलमानों के विरुद्ध चौकन्ना कर दिया। दुश्मन और ज़्यादा भड़क गये। इधर जो सरदार मारे गये उनके ख़ून का बदला लेने के लिए हज़ारों दिल व्याकुल हो गये। अरब में किसी एक व्यक्ति का ख़ून बहुधा पुश्तों तक लड़ाई का कारण बना रहता था और बद्र में तो ऐसे लोग मारे गये थे जिनके ख़ून की क़ीमत सैकड़ों लड़ाइयों से भी अदा नहीं हो सकती थी। मुसलमानों की विजय को देखकर कितने ही 'यहूदी' क़बीले भी पेचताब खाने लगे और समझौतों का पास किये बिना उनकी सहानुभूति 'क़ुरैश' के साथ हो गई और वे भी लोगों को खुल्लमखुल्ला मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध पर उभारने लगे। इस प्रकार मदीने की छोटी-सी बस्ती चारों ओर से ख़तरे में घिर गई।

उहुद की लड़ाई

शव्वाल सन् ०३ हि० में क़ुरैश एक बड़ी सेना लेकर फिर मदीने पर चढ़ आये और मदीने के क़रीब पहुँचकर उहुद की पहाड़ी पर जो मदीने से लगभग ४ मील की दूरी पर है अपना पड़ाव डाला। यह सूचना पाकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० भी अपने साथियों से राय लेने के बाद क़ुरैश के मुक़ाबले के लिए मदीने से निकल पड़े। आपके साथ लगभग एक हज़ार मुसलमान थे, अभी कुछ ही दूर गये थे कि अब्दुल्लाह इब्न उबई ने जो दिखावे के लिए मुसलमान बना था, वास्तव में मुसलमानों का सख़्त दुश्मन था, मुसलमानों को बहकाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुरू किया और लड़ाई के भयंकर पहलू सामने रखे।[1] अतः इस मौक़े पर उससे प्रभावित लगभग तीन सौ व्यक्तियों ने साथ छोड़ दिया और केवल ७०० मुसलमान बाक़ी रह गये। यह बड़ा कठिन समय था परन्तु जिन मुसलमानों के दिल अल्लाह पर 'ईमान, 'आख़िरत' के विश्वास और सच्चाई की राह में शहीद होने की उत्कंठा से परिपूर्ण थे उन्होंने पूरा साहस दिखाया और लड़ाई से मुँह मोड़कर जानेवालों से प्रभावित हुए बिना अल्लाह पर भरोसा करके आगे बढ़े। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपनी फ़ौज को इस प्रकार लगाया कि पहाड़ पीछे था और क़ुरैश की सेना सामने थी। पीछे केवल एक दर्रा ऐसा था जहां से हमला हो सकता था वहां आपने पचास मुसलमानों के एक दल को रक्षा के लिए लगा दिया और यह कह दिया कि तुम लोग किसी हाल में भी अपनी जगह से न हटना।

'क़ुरैश' इस मौक़े पर बहुत-सा सामान और लगभग ३ हज़ार फ़ौज लेकर चढ़ाई के लिए आये थे, जब युद्ध का आरम्भ हुआ तो शुरू में ही मुसलमानों का पल्ला भारी रहा। क़ुरैश के बहुत से लोग मारे गये और सेना में अबतरी फैल गई। मुसलमान यह समझे कि अब हमारी विजय हो गई और उन्होंने दुश्मन को पूरी तरह पराजित करने के बदले अपना ध्यान दुश्मन का माल लूटने की ओर लगा दिया यहां तक कि जो लोग दर्रे की रक्षा के लिए लगाये गये थे, उनमें से कुछ को छोड़कर बाक़ी लोग माल लूटने लग गए। दुश्मन ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाया और पहाड़ी का चक्कर काटकर मुसलमानों पर हमला कर दिया। सहसा स्थिति के बदल जाने से मुसलमान घबरा गये। लड़ाई का पांसा पलट गया और मुसलमान इधर-उधर भागने लगे और किसी तरह यह ख़बर उड़ गई कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० भी शहीद हो गये। इस सूचना से कितने ही मुसलमानों ने साहस छोड़ दिया। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को उस समय दस-बारह जान निछावर कर देने वाले अपने घेरे में लिए हुए थे। आप घायल हो चुके थे, आपने जब यह दशा देखी तो अपने साथियों को लेकर एक पहड़ी पर आ गये और मुसलमानों को मालूम हो गया कि आप जीवित हैं अतः सब मुसलमान सिमट कर आपके पास इकट्ठे हो गए और इसी हंगामे में पता नहीं क्या हुआ कि देखने वालों ने देखा कि 'काफ़िर' लड़ाई के मैदान से भाग रहे हैं और अपनी विजय को पूरा किए बिना मैदान छोड़ रहे हैं। स्वयं 'काफ़िरों' का यह कहना है कि जब वे कई मंज़िल दूर चले गये तब उन्हें होश आया कि यह हमने क्या ग़लती की कि मुसलनानों की शक्ति को बिल्कुल ख़त्म किये बिना इस तरह चले आये। अतः उन्होंने एक जगह ठहरकर विचार-विमर्श किया कि अब फिर हमला करना चाहिए परन्तु कुछ साहस न हुआ और सबके लौट गये। इधर नबी सल्ल० को भी यह ख़याल था कि कहीं दुश्मन पलट कर हमला न कर दे। इसलिए आपने भी मुसलमानों को इकट्ठा करके फ़रमाया कि 'काफ़िरों' का पीछा करना चाहिए। यह बड़ा कठिन समय था। मुसलमानों को सख़्त चोट आई थी, क़रीब सत्तर आदमी 'शहीद' हो चुके थे, बहुत से घायल थे, ऐसी दशा में दुश्मन का पीछा करना आसान काम न था परन्तु जो लोग सच्चे 'ईमान' वाले थे वे अल्लाह के भरोसे पर फिर जान क़ुरबान करने के लिए तैयार हो गये और नबी सल्ल० ने कोई ८ मील तक दुश्मन का पीछा किया। मुसलमानों के इस कार्य से भी 'काफ़िरों' को पलटकर हमला करने का साहस न हुआ।

उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को जो कष्ट उठाना पड़ा उसमें मुसलमानों की अपनी इस कोताही का भी बड़ा हाथ था कि जिस समय उन्हें डटकर मुक़ाबला करना चाहिए था उस समय वे अपनी सफलता पर कुछ सन्तुष्ट हो गए और उनका ध्यान दुश्मन के मुक़ाबले की ओर से हट गया। उनके एक दस्ते ने अपने सरदार के हुक्म को न माना। मुसलमानों की इस कमज़ोरी को सामने रखकर उन्हें उसी समय आदेश दिये गये। सूरा आले इमरान (सूरा ३) के आख़िरी हिस्से में उहुद की लड़ाई पर जिस प्रकार समीक्षा की गई है, उसमें ये सब बातें मौजूद हैं। इसमें मुसलमानों को अल्लाह पर भरोसा करने की ताकीद की गई है। माल का प्रेम

1. उसकी राय यह थी कि मुसलमान मदीने में रहकर केवल अपना बचाव करें और आगे बढ़कर हमला न करें लेकिन चूंकि उसकी यह राय नहीं मानी गई थी इसलिए वह सख़्त नाराज़ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिलों से निकाला गया है। विकट परिस्थितियों में जमे रहने हर उभारा गया है और मौत का डर दिलों से दूर किया गया है।

उहुद की लड़ाई में मुसलमानों की जो पराजय हुई थी उसके कारण उनकी वह धाक जो बद्र की लड़ाई के बाद विभिन्न क़बीलों के दिलों पर बैठी थी कम हो गई और बहुत से क़बीले जो पहले मुसलमानों का साथ देने का रुझान रखते थे वे अब 'क़ुरैश' की ओर झुकने लगे और इसी का यह असर था कि मुसलमानों की जो छोटी-छोटी टोलियां धर्म-प्रचार के लिए इधर-उधर गई हुई थीं, लोगों ने उन्हें भी क़त्ल करना शुरू कर दिया। इसी बीच 'यहूद' के कई क़बीलों ने वचन भंग कर दिया और मुसलमानों के दुश्मनों से मिलकर मुसलमानों को ख़त्म कर डालने के उपाय सोचने लगे। इस मामले में यहूदियों का एक क़बीला बनूनज़ीर बहुत आगे-आगे था। अतः जब उनकी हरकतें हद से बढ़ गईं तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने उनपर दबाव डाला और उन्हें मदीने से इस शर्त पर निकाल दिया कि वे अपने ऊँटों पर जितना माल लादकर ले जा सकें ले जाएँ। ये लोग मदीना छोड़कर ख़ैबर की ओर चले गये।

इन सब विभिन्न हालात ने लगभग सारे अरब में मुसलमानों के विरुद्ध आग लगा दी। विशेषकर बनूनज़ीर के लोगों ने इस्लाम के विरुद्ध बड़ी साज़िश शुरू कर दी और आस-पास के क़बीलों को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काया। मक्के जाकर 'क़ुरैश' को लड़ाई के लिए तैयार किया और यह योजना बनाई कि सब मिलकर हमला करें और इस नये आन्दोलन का अन्त करदें अतः थोड़े ही दिनों के बाद सन् ०५ हि० में अनुमान है कि दस हज़ार की सेना मदीना पर चढ़ाई के लिए तैयार हो गई। इस सेना में तमाम ही अरब वाले सम्मिलित थे।

ख़न्दक़ की लड़ाई

हज़रत मुहम्मद सल्ल० को यह भी मालूम हो गया कि अब इतने बड़े पैमाने पर युद्ध की तैयारियां हो रही हैं। आपने अपने साथियों से राय ली कि अब क्या किया जाये। ईरान के रहने वाले हज़रत सलमान की राय से यह निश्चय पाया कि खुले मैदान में इतनी बड़ी संख्या का मुक़ाबला करना ठीक नहीं है। बल्कि मदीने के चारों ओर एक खन्दक़ खोद दी जाये ताकि दुश्मन प्रत्यक्ष हमला न कर सके। मदीना तीन ओर से घरों और खजूर के बाग़ों से घिरा हुआ था केवल एक ओर से खुला हुआ था। आपने उसी ओर ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया। बीस दिन के अन्दर तीन हज़ार मुसलमानों ने पांच गज़ गहरी खाई तैयार कर ली। इस काम में हज़रत मुहम्मद सल्ल० स्वयं लोगों के साथ काम करते रहे।

'काफ़िरों' की सेना ने मदीने पर तीन ओर से हमला किया। यह बड़ी ही कठिन परीक्षा का समय था। मौसम बहुत ठण्डा था। खाने-पीने के सामान की कमी थी। जान, माल और औलाद सब कुछ खतरे में था। एक बहुत बड़ी सेना का मुक़ाबला था जो हर प्रकार से लैस होकर आई थी। ऐसे हालात में केवल वही लोग जमे रह सकते थे जो 'ईमान' में सच्चे और दृढ़ थे। अतः इस मौक़े पर मुसलमानों के अन्दर जो 'मुनाफ़िक़' कपटी घुसे हुए थे वे खुलकर सामने आ गये। उन्होंने अपनी जान बचाने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाने शुरू कर दिये। दुश्मन लगभग एक महीने तक घेरा डाले पड़ा रहा। घेरा इतना सख़्त था कि मुसलमानों को तीन-तीन दिन तक खाना न मिलता था। मुसलमानों की सेना खाई पर जगह-जगह लगी हुई थी। कभी-कभी इक्का दुक्का हमला भी हो जाता था। घेराव लम्बा होता जा रहा था और दुश्मन की सेना के लिए बराबर कठिनाइयां बढ़ती जा रही थीं। दस हज़ार आदमियों के खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध कोई आसान न था। मौसम बहुत ठण्डा था। इसी बीच एक बार ऐसी सख़्त तूफ़ानी हवा चली कि 'काफ़िरों' के ख़ेमे उखड़ गये। सारी सेना इधर-उधर हो गई और अल्लाह की ओर से भेजा हुआ यह तूफ़ान मुसलमानों के लिए 'रहमत' और 'काफ़िरों' के लिए अज़ाब बन गया। उनकी शक्ति क्षीण हो गई। यहूदी क़बीलों ने साथ छोड़ दिया और जब क़ुरैश अकेले रह गये तो उन्हें भी लौट जाने के सिवा कोई सूरत दीख पड़ी। इस घटना का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्णन और इस सिलसिले के आवश्यक आदेश 'क़ुरआन' की सूरा अल-अहज़ाब (सूरा ३३) में दिये गये हैं।

इस लड़ाई के मौक़े पर मुसलमानों को पूरी तरह यह अन्दाज़ा हो गया कि जिन 'यहूदी' क़बीलों ने उनके साथ समझौते किये थे उनमें किसने अपने समझौते का आदर किया और किसने वचन भंग किया। वचन भंग करने वाले क़बीलों में बनू क़ुरैज़ा भी थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इस लड़ाई के बाद उनकी ओर ध्यान दिया और यह फ़ैसला किया कि उनको इस वचन भंग का दण्ड दिया जाये जो उन्होंने ऐसे कठिन समय पर किया जब मुसलमानों पर तमाम अरब उमड़ आया था। बनूक़ुरैज़ा तो मुसलमानों के लिए खुले दुश्मन से भी ज्यादा ख़तरनाक सिद्ध हुये कि उन्होंने एक ओर समझौता किया और दूसरी ओर समय पड़ने पर आंखें दिखा गए। जब बनूक़ुरैज़ा मुसलमानों के हमले के कारण हथियार डालने पर विवश हो गये और जब यह सवाल सामने आया कि उन्हें उनके वचन भंग करने का क्या दण्ड दिया जाये तो उन्होंने यह प्रार्थना की कि उनकी अपनी धार्मिक किताब 'तौरात' के अनुसार दण्ड निर्धारित करने के लिए एक कमेटी (Committee) बना दी जाये अतः एक कमेटी बना दी गई जिसने यह निर्णय किया कि बनूक़ुरैज़ा के तमाम युद्ध के योग्य लोगों को क़त्ल किया जाये और उनकी औरतें और बच्चे गिरफ़्तार कर लिए जायें। अतः बनूक़ुरैज़ा के मामले में यही किया गया और मुसलमानों को अपने एक बग़ली दुश्मन से नजात मिल गई।

मुनाफ़िक़ों की समस्या

इस्लाम के इस नये उभरते हुए आन्दोलन को जहां बाहर के दुश्मनों और भरोसा न करने योग्य पड़ोसियों की ओर से नित परेशानियों का सामना करना पड़ता था वहां एक बड़ी समस्या 'मुनाफ़िक़ों' की भी जो 'इस्लाम' का दावा करके 'मुस्लिम' समाज में घुस आये थे लेकिन दिल से इस्लाम के दुश्मन थे। हिजरत का अभी छठा ही साल था कि उन लोगों का जोड़-तोड़ और शरारतें हद से बढ़ने लगीं। इसी ज़माने में 'नबी' सल्ल० को ये खबरें पहुँची कि क़बीला बनू मुस्तलिक़ हमले की तैयारी कर रहा है। आपने इस खबर की तसदीक़ के लिए एक व्यक्ति को भेजा और जब यह मालूम हो गया कि खबर सही है तो आपने स्वयं इस क़बीले पर हमला करने का निश्चय किया। मुसलमानों की ओर से इस पेशक़दमी को देखकर क़बीले के बहुत से लोग तो पहले ही भाग खड़े हुये और जिन्होंने कुछ मुक़ाबला भी किया वे पराजित हुए। कुल दस व्यक्ति मारे गये और बाक़ी गिरफ़्तार हुए। यह घटना तो बहुत साधारण-सी थी, परन्तु कुछ ऐतिहासिक कारणों से बड़ी महत्वपूर्ण हो गई। इसकी एक विशेषता तो यह थी कि इस युद्ध में धन-दौलत के लालच से 'मुनाफ़िक़, (कपटाचारी) भी मुसलमानों के साथ शरीक हो गये थे। लेकिन चूँकि ये तो हर समय उपद्रव मचाने के लिए तैयार ही रहते थे इसलिए जब अकस्मात् एक दिन चश्मे से पानी लेने पर एक 'मुहाजिर' और 'अनसार' के बीच तू-तू मैं-मैं हो गई तो इन आस्तीन के सांपों ने इस साधारण घटना को खूब हवा दी और तुरन्त ही इसे 'मुहाजिर' और 'अनसार' के बीच जाति सम्बन्धी झगड़े का रंग दे दिया। इस मौक़े पर 'मुनाफ़िक़ों' के लीडर अब्दुल्लाह इब्ने उबई ने मदीने वालों को भड़काते हुये यह भी कह दिया कि तुमने तो इन 'मुहाजिरों' की बला स्वयं मोल ली है और अब ये तुम्हारे मुँह आते हैं, अगर तुम इनकी सहायता से हाथ उठा लो तो ये स्वयं ही यहां से भाग जाएँगे। हज़रत उमर रज़ि० ने यह बात सुनी तो बिफर गये। हज़रत मुहम्मद सल्ल० से आज्ञा चाही कि आप इशारा कर दें तो मैं अभी इस 'मुनाफ़िक़' की गरदन उड़ा दूँ। आपने हज़रत उमर का गुस्सा ठंडा किया और कहा कि क्या तुम यह चाहते हो कि लोग यह चर्चा करें कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथ वालों को भी क़त्ल कर देते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का यह व्यवहार कि आपने सदा अपने विरोधियों को तलवार के बदले अपने नैतिक बल से जीतने की कोशिश की इतना स्पष्ट है कि इसके उदाहरण हर मौक़े पर सामने आते हैं। इसी अब्दुल्लाह इब्न उबई के मामले को देख लीजिए कि न केवल आपने उसे क़त्ल करा देना पसन्द न फ़रमाया बल्कि उसपर यह मेहरबानी की कि उसके मरने के बाद उसके कफ़न के लिए अपना कुरता दिया और उसके जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी युद्ध के साथ इस्लामी इतिहास की एक और महत्वपूर्ण घटना का सम्बन्ध है वह है हज़रत मुहम्मद सल्ल० की एक धर्मपत्नी हज़रत आइशा (रज़ि०) पर तोहमत लगाने की घटना। 'मुनाफ़िक़ों' ने एक साधारण-सी बात का सहारा लेकर कुछ इस प्रकार की गन्दी बातें उछालने की चेष्टा की कि जिससे हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अपमान हो और मुसलमानों में साधारणतः बेचैनी और बददिली फैले। इस घटना का उल्लेख क़ुरआन की सूरा अन-नूर (सूरा २४) की आयत ११-१८ में किया गया है। सारांश यह है कि इस ज़माने में नबी सल्ल० को 'मुनाफ़िक़ों' के फैलाये हुए कितने ही फ़ितनों से निबटना पड़ा और आपने पूरी हिकमत के साथ इस्लामी आंदोलन को इन अन्दर के दुश्मनों से सुरक्षित रखने के उपाय किए।

हुदैबिया का समझौता

'काबा' इस्लाम का केन्द्र था जिसे हज़रत इबराहीम अ० और उनके सुपुत्र हज़रत इसमाइल अ० ने अल्लाह की 'इबादत' के लिए अल्लाह के हुक्म से बनाया था और हज्ज करना इस्लाम में फ़र्ज़ था। इसलिए मुसलमानों की बड़ी कामना थी कि वे हज्ज करें। काबा छोड़े हुए अब उन्हें लगभग छः वर्ष हो रहे थे। अरब में यह तरीक़ा था कि हज्ज के मौक़े पर ये लोग चार महीने के लिए लड़ाई बन्द कर देते थे ताकि हज्ज के लिए आने-जानेवालों को कोई परेशानी न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने भी सन् ६ हिजरी में काबे की ज़ियारत का इरादा किया। मुसलमानों की तो यह कामना ही थी, ख़बर सुनते ही लगभग १४०० मुसलमान साथ चलने के लिए तैयार हो गये। जब इन लोगों ने प्रस्थान किया तो उन्होंने वही तमाम रसमें अदा कीं जो हाजियों को करनी पड़ती हैं और यह एलान कर दिया कि हम केवल हज्ज के इरादे से जा रहे हैं कोई चढ़ाई हमें नहीं करनी है। परन्तु मक्केवालों ने इसके बावजूद लाड़ई की तैयारियां शुरू कर दीं और मुसलमानों से कहला दिया कि तुम लोग मक्के में नहीं आ सकते। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मक्के से कुछ दूर हुदैबिया के स्थान पर पहुँचकर पड़ाव किया और मक्के वालों के पास यह सन्देश भेजा कि हम केवल काबे के तवाफ़ और ज़ियारत के लिए आये हैं। हमें इसका मौक़ा मिलना चाहिए। परन्तु मक्के वाले किसी प्रकार न माने और अपनी हठ पर अड़े रहे और आख़िरकार इन शर्तों पर मुसलमानों को समझौता करना पड़ा कि मुसलमान इस साल लौट जायें अगले साल आयें। परन्तु तीन दिन से ज़्यादा न ठहरें, हथियार लगाकर न आयें। मक्के में जो मुसलमान बाक़ी रह गये हैं उन्हें न ले जायें। परन्तु अगर कोई 'मुसलमान' मक्का वापस आना चाहे तो उसे आने दें और यह कि अगर मक्के से कोई व्यक्ति भी चाहे वह मुसलमान हो या न हो मदीने चला जाये तो उसे लौटा दिया जाये परन्तु कोई मुसलमान मक्के में आ जाये तो वापस न किया जाये, अरब के हर क़बीले को यह अधिकार दिया जाये कि वह मुसलमानों या 'काफ़िरों' में जिसके साथ चाहे समझौता कर ले—यह समझौता दस साल के लिये हुआ। ये सब शर्तें ऐसी थीं जिन्हें देखकर अन्दाज़ा होता था कि मुसलमानों ने दबकर समझौता किया है। इस मौक़े पर इस्लामी इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना घटी कि अभी इस समझौते पर हस्ताक्षर भी न हुये थे कि मक्के से एक मुसलमान हज़रत अबू जन्दल रज़ि० जिन्हें क़ुरैश ने क़ैद कर रखा था और जो बुरी तरह सताये जा रहे थे किसी-न-किसी तरह भागकर मुसलमानों के कैम्प में आ गये और कहा कि मुझे इन ज़ालिमों से बचाया जाये परन्तु अभी जो समझौता हुआ था, उसके अनुसार मुसलमान विवश थे कि अबूजन्दल को फिर ज़ालिमों को सौंप दें। इस घटना ने मुसलमानों को बेचैन कर दिया, उनका जी चाहता था कि वे हर क़ीमत पर अपने भाई की सहायता करें परन्तु अल्लाह के नबी सल्ल० ने अपने समझौते का आदर करके इस्लामी कीर्ति (Character) का एक उदाहरण प्रस्तुत किया और अबूजन्दल को ढारस बँधाते हुये अल्लाह के भरोसे पर लौटा दिया।

बात तो साधारण थी परन्तु इस समझौते और इसका इस प्रकार पालन करने के कारण मुसलमानों की एक ऐसी नैतिक साख बनी जो भविष्य में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। इस घटना के यही पड़नेवाले प्रभाव थे जिसकी ओर संकेत करते हुए क़ुरआन में इसे मुसलमानों के लिए स्पष्ट विजय कहा गया है। इसका उल्लेख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरा अल-फ़त्ह (सूरा ४८) में हुआ है। इस समझौते का एक बहुत बड़ा फ़ायदा तो यह हुआ कि मुसलमानों और 'काफ़िरों' के बीच लड़ाई का वातावरण नहीं रहा और दोनों को परस्पर मिलने-जुलने के मौक़े मिलने लगे। इस मेल-जोल से ग़ैर-मुस्लिम बहुत प्रभावित होते थे। मुसलमानों का स्वभाव, उनके मामलों, मानुषिक सहानुभूति, सद्व्यवहार, पवित्र जीवन और ईश-भय को देखकर घृणा और क्रोध के बदले प्रेम और चाव पैदा होता था और लोगों के दिल आप-से-आप 'इस्लाम' की ओर खिंचते थे, अतः इस समझौते के बाद डेढ़ दो साल के अन्दर लोगों ने इस्लाम क़बूल किया कि इससे पहले कभी क़बूल नहीं किया था। इसी ज़माने में क़ुरैश के बड़े-बड़े सरदार इस्लाम लाये और 'इस्लाम' की शक्ति इतनी बढ़ गई कि अब पुरानी जाहिलियत (पुरातन अज्ञान) को अपनी मौत साफ़ दिखने लगी। क़ुरैश के सरदार यह सब देखकर बौखला उठे और उन्हें यह महसूस होने लगा कि जिस समझौते के द्वारा उन्होंने मुसलमानों को दबाना चाहा था वह स्वयं उनके लिए हानिकारक सिद्ध हुआ और अब वे यह सोचने लगे कि इस समझौते को किस प्रकार तोड़ा जाये।

ख़ैबर की लड़ाई

बनू नज़ीर जब मदीने से निकाले गये तो वे ख़ैबर में आबाद हो गये जो मदीने से लगभग २०० मील उत्तर-पच्छिम की ओर है। यहां यहूदियों के बड़े मज़बूत क़िले बने हुये थे और ख़ैबर इस्लामी आन्दोलन के विरोध का सबसे बड़ा अड्डा और 'इस्लाम' के लिए सबसे बड़ा ख़तरा था जहां इस सिलसिले में निरन्तर कार्रवाइयां हो रही थीं। पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इस बात की कोशिश की कि किसी प्रकार यहूदियों से कोई उचित समझौता हो जाये और वे अपनी साज़िशों से बाज़ आजायें परन्तु 'यहूद' अपनी साज़िशों से बाज़ न आये और अरब के विभिन्न क़बीलों से इस बात के लिए साज़-बाज़ करने लगे कि सब मिलकर मदीने पर चढ़ाई करें।

इस समय तक मुसलमानों ने अपने उन विरोधियों के हमलों को रोका था जो उन्हें मिटाने के लिए उन पर चढ़-चढ़ कर आरहे थे। 'अल्लाह' ने हर मौक़े पर उनकी सहायता की और उनके दुश्मनों को नीचा देखना पड़ा; परन्तु अब हालात का रुख़ दूसरा था। अब आवश्यकता इस बात की थी कि इस्लामी आन्दोलन के लिए जहां ख़तरा उभरता दीख पड़े, इससे पहले कि वह ख़तरा ज़ोर पकड़ सके आगे बढ़ कर ख़ुद उस पर वार किया जाये और उसे ख़त्म कर दिया जाये। 'इस्लाम' की सुरक्षा के लिए जहां रक्षा-सम्बन्धी युद्ध की आवश्यकता है वहां स्वयं बढ़कर हमला करना भी आवश्यक है। 'इस्लाम' पूर्ण जीवन-व्यवस्था है जीवन के प्रत्येक विभाग के लिए उसमें आदेश दिये गये हैं। इस जीवन व्यवस्था की स्थापना के लिए केवल इतना ही काफ़ी नहीं है कि उसे ग़ैर-इस्लामी जीवन के ध्वजावाहकों के हमले से बचाया जाये बल्कि इसकी स्थापना के लिए ऐसा समय भी आता है जब दूसरी व्यवस्थाओं को उखाड़ने और इसे स्थापित करने के लिए स्वयं आगे बढ़कर विरोधियों पर वार (आघात) भी करना होता है।

इस्लामी आन्दोलन अब इस कालावधि में प्रवेश कर चुका था। अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने ख़ैबर में उभरते हुए ख़तरे को समय पर दबाने के लिए मुहर्रम सन् ७ हि० में ख़ैबर पर हमला किया। पहले समझौते की बात-चीत हुई और जब 'यहूद' इस पर तैयार न हुए तो उन पर हमला किया गया। २० दिन का घेरा डालने, ९३ यहूदियों के क़त्ल और १५ मुसलमानों के शहीद होने के बाद मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई और ख़ैबर पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। इसी समय में हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मुस्लिम समाज को मज़बूत नैतिक सिद्धान्तों पर संगठित करने और सामाजिक और व्यवस्था सम्बन्धी क़ानून को लागू करने की ओर पूरा ध्यान दिया। यद्यपि यह समय बड़े संघर्षों का था; परन्तु इसी समय में अल्लाह की ओर से सूरा अन-निसा (सूरा ४) और सूरा अल-माइदा (सूरा ५) उतरीं। इनके पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि इस्लामी आन्दोलन का लीडर (नबी सल्ल०) अगर एक ओर एक होशियार जरनैल की तरह परिस्थितियों से निबट रहा था तो दूसरी ओर अल्लाह के आदेशानुसार सदाचार की शिक्षा देने वाले, प्रशिक्षित करने वाले और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्माओं को शुद्ध करने वाले के रूप में नये इस्लामी समाज को तथ्यहीन रीति-रिवाज से पाक करके उसे उच्चकोटि के नैतिव व्यवहार, संस्कृति, सामाजिकता और अर्थ के नये नियमों पर व्यवस्थित कर रहा था। पारिवारिक संगठन के नियम विवाह और 'तलाक़' के क़ानून, स्त्रियों और पुरुषों के पारस्परिक सम्बन्धों के नियम, अनाथों और निर्बलों के अधिकारों की रक्षा, विरासत की तक़सीम के नियम लेन-देन के मामलों का सुधार, घरेलू झगड़ों को निपटाने के तरीक़े, शराब पीने पर पाबन्दी, ब्याज, जुआ और सट्टे की रोक-थाम, शुद्धता एवं पवित्रता सम्बन्धी आदेश, सारांश यह कि 'मुस्लिम' समाज के लिए सब नियम इसी अवधि में निर्धारित हुए जिन पर ऊँची संस्कृति एवं सभ्यता की स्थापना होती है, इस्लाम के आन्दोलन (Movement) का सबसे बड़ा विशेष पहलू जो उसे विश्व के प्रत्येक आन्दोलन में प्रमुखता प्रदान करता है यही है कि इसमें व्यक्ति और संघ के सुधार की हर मंज़िल पर पूरा ध्यान रखा गया और इस बात की पूरी कोशिश की गई कि जो लोग अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के संदेश को लेकर आगे बढ़ें उन्हें अपने नतिक बल, ईश भय और उच्चकोटि की मानुषिक विशेषताओं में अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त हो।

ख़ैबर की विजय के बाद 'इस्लाम' की अपनी एक शक्ति बन गई। मदीने के चारों ओर डेढ़ दो सौ मील तक विरोधियों का ज़ोर टूट गया और अब ऐसा लगने लगा कि इस्लाम वास्तव में एक पूर्ण जीवन व्यवस्था है जिसके पास जीवन के सब पहलुओं के लिए एक पूर्ण कार्यक्रम है और जीवन की सारी समस्याओं का उचित समाधान भी।

हुदैबिया की सन्धि की एक शर्त यह भी थी कि मुसलमान अगले साल हज्ज के लिए आयें। इसलिए सन् ७ हि० में हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या के साथ 'काबा' का दर्शन दिया। मुसलमान इस समय बहुत ख़ुशी और जोश में थे और ऐसा लगता था कि शायद मक्केवालों ने हुदैबिया का लगता था कि शायद मक्केवालों ने हुदैबिया का समझौता करके मुसलमानों को दबाने और उन्हें नीचा दिखाने की जो कोशिश की वह बिल्कुल विफल हो गई है। इस चीज़ ने 'क़ुरैश' के दिलों में दबी हुई ईर्ष्या और पक्षपात की अग्नि को और भड़का दिया और उन्हें अपना सन्धि-पत्र तुच्छ और हीन दिखने लगा। इसी समझौते की एक शर्त के अनुसार ख़ुज़ाआ के क़बीले ने मुसलमानों का साथ देने का वचन दिया था परन्तु सन् ७ हि० के आख़िर में एक विशेष घटना घटी कि ख़ुज़ाआ पर एक अन्य क़बीले बनूबक्र ने चढ़ाई कर दी और चूंकि क़ुरैश इस कारण ख़ुज़ाआ से अप्रसन्न थे कि उन्होंने मुसलमानों से समझौता क्यों किया है अतः उन्होंने भी बनूबक्र का साथ दिया और ख़ुज़ाआ के लोगों का क़त्ल करना शुरू कर दिया। ख़ुज़ाआ ने विवश होकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० से अपने समझौते के आधार पर सहायता माँगी और आपने उन उत्पीड़ितों की ओर से 'क़ुरैश' के पास यह सन्देश भेजा कि वे या तो ख़ुज़ाआ के मारे गये लोगों का खूं बहा दें और बनूबक्र की सहायता न करें या फिर इस बात का एलान कर दिया जाये कि हुदैबिया का समझौता समाप्त हो गया। क़ुरैश ने यह सन्देश सुनकर साफ़ कह दिया कि हम सन्धि को समाप्त करते हैं। इसके फलस्वरूप समझौता हो गया यद्यपि इसके बाद क़ुरैश को अपनी ग़लती का एहसास हुआ और उन्होंने अबू सुफ़यान को समझौते को फिर लागू करने के लिए भेजा परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल० को परिस्थिति का ज्ञान हो चुका था इसलिए आपने इसे स्वीकार न किया।

मक्के की विजय

इस्लामी आन्दोलन का एक बड़ा और पुराना केन्द्र मक्का था और यहीं हज़रत इबराहीम अ०,का बनाया हुआ वह उपासना-गृह भी था जो सदा 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का केन्द्र रहा और अब मुश्रिकों के अधिकार में होने के कारण एक बहुत बड़ा बुतख़ाना बना हुआ था। मुसलमानों के लिए इस केन्द्र की ओर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक था। अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने रमज़ान सन् ८ हि० में लगभग दस हज़ार मुसलमानों की सेना लेकर मक्के पर चढ़ाई की। इस मौक़े पर अरब के वे तमाम क़बीले भी आपके साथ थे जिनसे समझौते हो चुके थे। अभी मुसलमानों की सेना मक्के के क़रीब ही पहुँची थी कि क़ुरैश के एक सरदार अबूसुफ़यान जो छुपकर टोह ले रहे थे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरफ़्तार करलिये गये और हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सामने लाये गये। अबू सुफ़यान 'इस्लाम' के विरोध में बहुत बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे थे, यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कराने की साजिश भी उन्होंने ही की थी। युद्ध की दशा में ऐसे दुश्मन के हाथ आजाने के बाद उसकी सज़ा क़त्ल के सिवा और हो ही क्या सकती थी परन्तु इस मौक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपने इस सख़्त दुश्मन पर कृपा-दृष्टि डाली और कहा : "अच्छा जाओ तुम आज़ाद हो अल्लाह तुम्हें क्षमा करे। वह सब दया करने वालों से बढ़कर दया करने वाला है।" अबूसुफ़यान इस व्यवहार से बहुत प्रभावित हुये, उन्हों देखा कि यह व्यक्ति शक्ति और सामर्थ्य रखने के बावजूद न अहंकारी है और न बदला लेने के लिए बेचैन। अबूसुफ़यान मक्के वापस न गये बल्कि 'इस्लाम' लाकर मुसलमानों की सेना में शामिल हो गये।

मक्के पर यह चढ़ाई कुछ अजीब तरह की थी। विरोधी मुक़ाबले के लिए पंक्तिबद्ध तो हुये परन्तु तुरन्त ही लड़े बिना मैदान छोड़ दिया और हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आपकी सेना ने बिना मुक़ाबला किये नगर में प्रवेश किया। एक स्थान पर 'क़ुरैश' के कुछ लोगों ने इधर-उधर से बाणों की वर्षा की और तीन मुसलमानों को शहीद कर दिया। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० को मुक़ाबला करना पड़ा। तेरह आदमी क़त्ल हुए और बाक़ी भाग खड़े हुए। सेना के जिस हिस्से की कमान हज़रत मुहम्मद सल्ल० कर रहे थे उसका किसी से मुक़ाबला न हुआ और आपकी सेना के हाथों कोई क़त्ल न हुआ। मक्के में प्रवेश करते ही हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने एलान कर दिया कि मक्के के हर व्यक्ति को जान की अमान दी जाती है पर छः या सात आदमी जो अपनी शरारत और अपराधों के कारण बहुत मशहूर थे उनकी गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया। इनमें से कुछ तो क़त्ल हुए और कुछ को आख़िर में क्षमा कर दिया गया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० जब मक्के में दाखिल हुये और काबे में गये तो सबसे पहले आपने हुक्म दिया कि तमाम मूर्तियाँ निकाल कर फेंक दी जायें और दीवारों पर जो देवी-देवताओं के चित्र बने हुये थे वे मिटा दिये जायें। इस समय आप की ज़बान पर सूरा बनी इसराईल (सूरा १७) की वह आयत (आयत ८१) थी जिसका अर्थ यह है कि कह दो : सत्य आ गया और असत्य (एवं अनृत) मिट गया। वास्तव में असत्य तो मिटने वाला ही होता है। कहते हैं उस समय काबे में ३६० मूर्तियाँ रखी थीं जो निकाल कर फेंकी गईं।

विजय की पूर्णता के पश्चात् आपने एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भाषण दिया जिसके कुछ हिस्से हदीस की किताबों में लिये गये हैं। इस भाषण में आपने इनसानी बराबरी के महत्व पर ज़ोर दिया और समाज में हर तरह की ऊँच-नीच को ख़त्म करने का एलान किया। आपने एलान किया कि यह वंश और क़बीले केवल इसलिए हैं कि हम इनसे एक-दूसरे को पहचानते हैं। यह किसी प्रकार भी ऊँच-नीच के चिह्न नहीं। अल्लाह के निकट इज़्ज़त वाला वह है जो अल्लाह से ज़्यादा डरने वाला हो। वंश और जाति पर गर्व करना बिल्कुल ग़लत है। आप ने जिस जन-समूह के सामने यह भाषण दिया उसमें वे सब लोग थे जो किसी समय में 'इस्लाम' के सख़्त दुश्मन रह चुके थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने उनकी ओर देखा और पूछा : "आज तुम जानते हो मैं तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करने वाला हूँ?" सब लोग यह देख चुके थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अब तक अपने दुश्मनों के साथ कैसा व्यवहार किया है। वे बोल उठे : "आप सुशील हैं और सुशील भाई के बेटे।" यह सुनकर आपने एलान किया कि जाओ तुम पर कोई आरोप नहीं तुम सब स्वतन्त्र हो। आपने यह भी एलान कर दिया कि जिन लोगों ने मुसलमानों के छोड़े हुये घरों पर क़ब्ज़ा कर लिया है अब उनसे वापस नहीं लिये जायेंगे और न किसी का माल और सम्पत्ति उनसे छीनी जायेगी। आपके असाधारण सद्व्यवहार से लोगों को यह विश्वास हो गया कि वास्तव में आप कोई बादशाह नहीं हैं जिसने देश पर कब्ज़ा जमाने के ध्येय से स्वार्थवश मक्के पर चढ़ाई की हो। बल्कि वास्तव में आप अल्लाह के 'रसूल' हैं।

हुनैन की लड़ाई

यह थी वह मक्के की विजय जिस में ज़मीन, माल और जायदाद को तो नहीं जीता गया, हां इसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वारा दिलों को अवश्य जीत लिया गया और यह बहुत बड़ी जीत थी। मक्के पर तो विजय प्राप्त हो गई परन्तु अभी आस-पास ऐसे लोग थे जिनके दिलों में 'इस्लाम' और इस्लामी आन्दोलन के विरुद्ध द्वेष और क्रोध पाया जाता था। इस विजय की सूचना मिलने पर वे और बेचैन हो गये विशेषकर हवाज़िन और सक़ीफ़ दो क़बीलों ने तो यह समझ लिया कि मक्के के बाद अब हमारी बारी है। उन क़बीलों के सरदारों ने मिलकर एक सख़्त मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इस की ख़बर थी, आपने निश्चय किया कि इस बढ़ते हुये फ़ितने को इसी समय दबा दिया जाय, अतएव शव्वाल सन् ८ हि० में लगभग १२ हज़ार मुसलमानों को साथ लेकर आप दुश्मन के मुक़ाबले के लिए निकले। मुसलमानों को अभी एक बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई थी। सामान आदि भी उनके पास काफ़ी था, उन्हें विश्वास था कि दुश्मन उन्हें देखते ही मैदान छोड़ कर भाग खड़ा होगा, यह बात मुसलमानों के सोचने की न थी। मुसलमान किसी समय भी अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं करता है उसका भरोसा केवल अल्लाह की कृपा पर होता है। शायद इस प्रकार सोचने का ही यह फल मिला कि जब मुसलमान मक्के और तायफ़ के बीच एक घाटी में जिसका नाम हुनैन है पहुँचे तो दुश्मन की सेना से मुक़ाबला हो गया। दुश्मन ने आस-पास की पहाड़ियों से निरन्तर तीर बरसाने शुरू कर दिये। मुसलमान इस के लिए तैयार न थे। थोड़ी ही देर में उनके क़दम उखड़ गये और बहुत से ऐसे मुसलमान जो अभी नये-नये 'ईमान' लाये थे भाग खड़े हुये। इस भगदड़ की हालत में हज़रत मुहम्मद सल्ल० मज़बूती के साथ जमे रहे और मुसलमानों को पुकारते रहे कि वे दुश्मन का मुक़ाबला करें और मैदान से मुंह न मोड़ें। आपकी इस दृढ़ता को देखकर बहुत से लोग पलट पड़े और मुसलमानों के क़दम फिर से जमना शुरू हो गये। मुसलमान पूरी बहादुरी के साथ जमकर लड़े और अल्लाह की कृपा से थोड़ी ही देर में लड़ाई का पांसा पलट गया। मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई। दुश्मन के सत्तर आदमी क़त्ल हुये और हज़ारों क़ैद हुये।

'काफ़िरों' के जो लोग हुनैन के मैदान से भागे उन्हों ने जाकर तायफ़ में पनाह ली परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने दुश्मन का पीछा किया। तायफ़ को घेरे में ले लिया यहाँ तक कि दुश्मन की शक्ति पूरी तरह क्षीण हो गई। मुसलमान कोई २० दिन तक घेरा डाले रहे।

तबूक की लड़ाई

अरब के उत्तर में रूम एक विशाल राज्य था इस राज्य से संघर्ष मक्के की विजय से पहले ही आरम्भ हो गया था। नबी सल्ल० ने प्रतिनिधि मण्डल धर्म प्रचार के ध्येय से उत्तर की ओर उन क़बीलों के पास भेजा था जो सीरिया की सीमा के पास रहते थे। ये लोग अधिकतर ईसाई थे और रूम राज्य से प्रभावित थे। इन लोगों ने प्रतिनिधि मण्डल के १५ आदमियों को क़त्ल कर दिया था। अतएव नबी सल्ल० ने जुमादलऊला सन् ८ हि० में तीन हज़ार मुसलमानों की एक सेना सीरिया की ओर भेजी ताकि इस क्षेत्र में मुसलमानों को विवश समझ कर सताया न जाये। मुसलमानों की इस सेना से मुक़ाबले के लिए रूमी राज्य की ओर से पहले एक लाख फ़ौज भेजी गई परन्तु यह जानते हुये भी मुसलमान आगे बढ़ते रहे यहां तक कि यह फ़ौज दुगनी कर दी गई। इसके बावजूद ये तीन हज़ार योद्धा आगे बढ़ते रहे और रूमी सेना से टकरा गये।

होना तो यह चाहिये था कि रूमी सेना इस थोड़ी सी फ़ौज को पीसकर रख देती, परन्तु 'अल्लाह' की कुछ ऐसी कृपा हुई कि रूमियों की इतनी बड़ी सेना मुसलमानों का कुछ न बिगाड़ सकी। यह एक ऐसी घटना थी कि इससे आस-पास के तमाम क़बीलों पर मुसलमानों की धाक बैठ गई और दूर-दूर तक बसने वाले क़बीले 'इस्लाम' की ओर आकृष्ट हुये। इस घटना का एक प्रभाव यह भी पड़ा कि स्वयं रूमी सेना के कुछ लोग मुसलमान हो गये यहाँ तक कि सेना के एक कमाण्डर फरो इब्नेउमर भी 'ईमान' ले आये और उन्होंने अपने 'ईमान' का ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया कि न अपनी हुकूमत के डराने-धमकाने की परवाह की और न किसी लालच में आये, उन्होंने हर बात यही कहकर ठुकरा दी कि 'आख़िरत' के लाभ और हानि के मुक़ाबले में वे किसी चीज़ को महत्व नहीं दे सकते, अन्त में रूमी हुकूमत ने उन्हें क़त्ल कर दिया। इस घटना से इस्लामी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आन्दोलन की नैतिक साख को बड़ा फ़ायदा हुआ। उन लोगों ने यह समझ लिया कि इस नये आन्दोलन का मुक़ाबला करना कोई आसान काम नहीं।

दूसरे साल रूमी राज्य ने सीरिया की सीमा पर फ़ौजी तैयारियां शुरू कर दीं। नबी सल्ल० को भी सूचना मिली। यह वक़्त इस्लामी आन्दोलन के लिए बड़ा नाजुक था, इस मौक़े पर अगर ज़रा सुस्ती दिखाई जाती तो अरब के वे सब क़बीले जो मुसलमानों के मुक़ाबले में पराजित हुए थे फिर से सिर उठाते। इधर मदीने में 'मुनाफ़िक़ों' (कपट नीति अपनाने वालों) की बन आती और शायद बाहर और अन्दर के दुश्मन मिल कर कोई ऐसा तूफ़ान उठाते कि इसका मुक़ाबला करना मुश्किल हो जाता। इस मौक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने बिना किसी झिझक के कहा कि रूम की ताक़त से टक्कर लेना ही उचित है इसीलिए आपने तुरन्त ही युद्ध की तैयारी का हुक्म दे दिया। मुसलमानों के लिए यह कठिन परीक्षा का समय था, मुल्क में अकाल पड़ा हुआ था, मौसम बहुत गर्म था, फ़सलें तैयार खड़ी थीं, लड़ाई का सामान भी पूरा न था। बहुत दूर का सफ़र और फिर एक बहुत बड़ी शक्ति से मुक़ाबला था। ऐसे मौक़े पर नबी सल्ल० का साथ वही लोग दे सकते थे जो अपने 'ईमान' में पक्के थे। 'मुनाफ़िक़ों' जो दिखाने के लिए 'ईमान' लाये थे या जिनका उद्देश्य ही मुसलमानों के अन्दर प्रवेश करके ख़राबियाँ फैलाना था या जो अभी विश्वास में कच्चे थे वे ऐसे कठिन समय में साथ नहीं दे सकते थे इसीलिए नबी सल्ल० के कहने के बाद तमाम 'मुनाफ़िक़' खुलकर सामने आ गये। जो लोग अपने 'ईमान' के दावे में सच्चे थे वे तो सब कुछ छोड़-छाड़ खुशी के साथ लड़ाई के लिए तैयार हो गये उनके पास जो कुछ था वह सब लाकर दे दिया और हर व्यक्ति को उनकी शुद्ध हृदयता का अनुभव हो गया। रहे वे लोग जिनके अन्दर खोट थी उन्होंने हीले-बहाने करने शुरू किये और युद्ध पर न जाने के लिए इजाज़त लेने लगे परन्तु नबी सल्ल० ने इनकी कोई परवाह न की और केवल ३० हज़ार सच्चे मुसलमानों की एक सेना साथ लेकर रजब सन् ९ हि० में मुक़ाबले के लिए निकले। रूमी राज्य को जब यह पता चला कि उनकी इतनी बड़ी तैयारी के बावजूद मुसलमान बिल्कुल नहीं हिचकिचाये और मुक़ाबले के लिए सिर-धड़ की बाज़ी लगाकर निकल खड़े हुये तो उसे कुछ सोचना पड़ा और इससे पहले मुसलमानों की सेना का जो तजरबा हो चुका था उसने भी उसे परेशानी में डाल दिया और आखिरकार उसने यही उचित समझा कि अपनी फ़ौजें हटा ले। नबी सल्ल० को जब यह मालूम हुआ कि दुश्मन ने मैदान छोड़ दिया है तो आपने इसको काफ़ी समझा और उसका पीछा करने के बदले उस इलाक़े में कुछ दिन ठहर कर सीमा पर स्थित छोटी-छोटी रियासतों को अपना आज्ञाकारी और बाजगुज़ार बना लिया और इस प्रकार अब तक जो अरब क़बीले रूमी राज्य का साथ दे रहे थे, अब इस्लामी राज्य के सहायक बन गये। इस चढ़ाई का उल्लेख पवित्र क़ुरआन की सूरा अत-तौबा (सूरा ९) में किया गया है और मुसलमानों को ऐसे मौक़े के लिए बहुत अच्छी हिदायतें दी गई हैं।

प्रतिनिधि मण्डलों का आगमन

'हिजरत' के नवें वर्ष को प्रतिनिधि मण्डलों (Deputations) का वर्ष भी कहते हैं। क्योंकि अब मदीने में चारों ओर से प्रतिनिधि मण्डलों के आने का सिलसिला शुरू हो गया था। लोग दूर-दूर से आते, 'क़ुरआन' सुनते और नबी सल्ल० के सादा जीवन और आपके स्वभाव से प्रभावित होकर 'इस्लाम' लाते। अपने जीवन के अन्तिम दस वर्षों में जिन लड़ाइयों में नबी सल्ल० स्वयं शरीक हुए उनकी संख्या २७ है। जिन में से ९ में सख़्त लड़ाई हुई। इनके अलावा छोटी-बड़ी ३८ लड़ाइयाँ ऐसी हैं जो आपकी हिदायतों के अन्तर्गत दूसरे सरदारों की अध्यक्षता में लड़ी गईं। इस पूरी मुद्दत में आपने हर-हर घटना की स्वयं निगरानी की। हर मामले का फ़ैसला किया और हर बात पर पूरा ध्यान दिया। इस पूरी मुद्दत में आपने पूरे अरब से मूर्ति-पूजा का नाम व निशान मिटा दिया। स्त्री के मान को बढ़ाया और उसे समाज में ऊँचा स्थान दिया। मद्यपान और दुराचार का अन्त कर दिया। लोगों में 'ईमान,' शुद्ध हृदयता, सच्चाई और अमानतदारी और ऐसी ही अग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णित नैतिक विशेषताएँ पैदा कर दीं जिनसे अरव के लोग शताब्दियों से वंचित थे। जिन अरबों को संस्कृति, नैतिकता और ज्ञान के मैदान में कोई स्थान प्राप्त न था उन्हें अत्यन्त सभ्य और ज्ञान का अनुरागी वना दिया और मानव-इतिहास में पहली वार उस व्यापक बन्धुत्व के सिद्धान्तों से संसार को परिचित कराया जिसकी अब तक उसको हवा भी न लगी थी और यह सब काम उस क़ुरआन की शिक्षाओं के द्वारा हुआ जो आज भी दुनिया में ठीक उसी रूप में मौजूद है जिसमें वह उतरा था और जिसके बारे में यह विश्वास करना कोई असंगत बात नहीं है कि वह 'क़ियामत' तक ऐसे ही सुरक्षित रहेगा।

अन्तिम हज्ज और स्वर्गवास

'हिजरत' के दसवें वर्ष हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हज्ज का इरादा किया, यह आपका आख़िरी हज्ज था। इस मौक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के साथ हज्ज करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण अरब उमड़ आया था। इस मौक़े पर आपने लोगों को ठीक तरीक़े से हज्ज अदा करने की क्रियात्मक रूप से शिक्षा दी और इसी मौक़े पर ६ ज़िलहिज्जा को अरफ़ात के मैदान में वह ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें आपने अत्यन्त महत्वपूर्ण आदेश दिये। इस भाषण में कही हुई बहुत सी बातें अभी तक 'हदीस' की किताबों में मौजूद हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण बातें ये हैं। आपने कहा:—

अरब को ग़ैर अरब पर और ग़ैर अरब को अरब पर कोई बड़ाई नहीं, तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से पैदा हुए थे।

मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं।

तुम्हारे ग़ुलाम ! तुम्हारे ग़ुलाम ! जो ख़ुद खाओ इनको भी खिलाओ, जो ख़ुद पहनो इनको भी पहनाओ।

अज्ञान काल के तमाम ख़ून अनृत ठहरा दिये गये (अर्थात् अब किसी को किसी से पुराने ख़ून का बदला लेने का हक़ नहीं) और सबसे पहले मैं अपने वंश का ख़ून अनृत ठहराता हूँ।

अज्ञान काल के सब ब्याज अनृत ठहरा दिये गये और सबसे पहले मैं अपने वंश के ब्याज को अनृत ठहराता हूँ।

औरतों के मामले में अल्लाह से डरो, तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर हक़ है।

मैं तुम में एक चीज़ छोड़े जाता हूँ अगर तुमने उसे मज़बूत पकड़ लिया तो तुम गुमराह न होगे और वह है—अल्लाह की किताब।

आख़िर में आपने जन-समूह को सम्बोधित करके कहा कि तुम से अल्लाह के यहाँ मेरे बारे में पूछा जायेगा तो तुम क्या कहोगे ? लोगों ने उत्तर दिया: "हम यही कहेंगे कि आपने अल्लाह का संदेश हम तक पहुँचा दिया और अपना कर्तव्य पूरा कर दिया।" आपने आकाश की ओर उँगली उठाई और फ़रमाया : "हे अल्लाह ! तू गवाह रहना।"

सफ़र सन् ११ हिजरी की १८ या १६ तारीख़ थी कि आपकी तबीयत कुछ ख़राब हुई और निरन्तर ख़राब होती चली गई। यह सिलसिला अगले महीने की १०,११ तारीख़ तक चलता रहा। कभी तबीयत कुछ सँभल जाती और कभी बीमारी बढ़ जाती। आख़िरकार १२ रबीउलअव्वल सन् १२ हि० को आप इस संसार से कूच कर गये।

नबी सल्ल० के स्वर्गवास से पहले पूरा क़ुरआन लिपिबद्ध हो चुका था और बहुत से मुसलमानों ने उसे ज़बानी याद कर लिया था। क़ुरआन इस समय जिस क्रम और रूप में हमारे सामने मौजूद है, यह भी नबी सल्ल० के आदेशानुसार संकलित किया जा चुका था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन क्या है ?

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन का परिचय, क़ुरआन का अवतरण, क़ुरआन का संकलन, क़ुरआन एक प्रमाणिक एवं सुरक्षित ग्रन्थ है, वर्णन-शैली और साहित्य, क़ुरआन का दार्शनिक सिद्धान्त, क़ुरआन अल्लाह की किताब है, सोचने की बातें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन का परिचय

क़ुरआन साधारण किताबों की तरह कोई किताब नहीं है, बल्कि यह 'किताब' अपने विषय, वर्णन-शैली, क्रम आदि की दृष्टि से संसार की दूसरी किताबों से बिल्कुल भिन्न है। इस किताब को समझने के लिए जहाँ और बहुत-सी बातें ज़रूरी हैं, वहीं यह भी आवश्यक है कि आदमी इस किताब की वही हैसियत स्वीकार करके इसका अध्ययन करे जो हैसियत इसके पेश करने वाले ने बयान की है। अध्ययन के बाद हर एक व्यक्ति को यह हक़ हासिल है कि वह अपने अध्ययन से जिस नतीजे पर पहुँचा हो उसके अनुसार इस किताब के बारे में राय क़ायम करे। परन्तु यदि कोई व्यक्ति अध्ययन से पहले ही अपनी ओर से इस किताब के बारे में कोई राय क़ायम कर लेता है, तो वह इस किताब के समझने में असमर्थ रहेगा।

इस किताब के पेश करने वाले (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०) का बयान है कि यह किताब अल्लाह की ओर से उतरी है। यह ईश्वरीय ग्रन्थ है। इसका प्रत्येक शब्द अल्लाह की ओर से अवतरित हुआ है। यह 'किताब' मनुष्य को सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए उतारी गई है। धरती में मनुष्य को उसके स्रष्टा ने एक विशेष उद्देश्य के अंतर्गत बसाया है। उसने मनुष्य को सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की। संसार में जीवन-यापन के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता थी उसका उचित प्रबन्ध किया। मानव-जाति को सीधा मार्ग दिखाने, उसे उसके दायित्वों से परिचित कराने और उसे यथार्थ ज्ञान प्रदान करने के लिए आरम्भ से ही 'नबियों' का सिलसिला जारी किया। 'नबियों' पर अपनी किताबें उतारीं। मनुष्य को इस बात की स्वतन्त्रता दी कि वह संसार में जिस प्रकार चाहे रहे परन्तु इस स्वतन्त्रता का अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनुष्य वास्तव में स्वतन्त्र है। उसे यह स्वतन्त्रता केवल इसलिए दी गई है ताकि उसका 'रब' उसकी परीक्षा ले कि वह अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग किस प्रकार करता है। अब यदि उसे अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान है और वह अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग पर चलता है, तो उसे सांसारिक जीवन में भी वास्तविक शान्ति और सुख मिलेगा और 'आख़िरत' में भी जब वह अपने 'रब' के पास हाज़िर होगा, उसे आनन्द का वह स्थान प्राप्त होगा जिसका नाम 'जन्नत' है। परन्तु यदि वह अल्लाह के दिखाये हुए जीवन-पथ को नहीं अपनाता और उसके भेजे हुए आदेशों की अवहेलना करता है, तो ऐसे लोग संसार में भी अशान्ति और बिगाड़ का कारण बनेंगे और 'आख़िरत' में भी वे दण्ड के भागी होंगे। अल्लाह उन्हें यातना और विपदा के आगार में फेंक देगा जिसका नाम 'जहन्नम' है।

अल्लाह के पैग़म्बर प्रत्येक जाति में हुये हैं।[1] समस्त 'नबियों' की शिक्षा एक ही रही है। उनकी मूल शिक्षाओं में कोई अन्तर न था, सब का 'दीन' (धर्म) एक था। सब ने जिस मार्ग की ओर लोगों को बुलाया, वह अल्लाह की बन्दगी का मार्ग था। प्रत्येक 'नबी' का यह कर्त्तव्य रहा है कि वह लोगों को सत्य की ओर बुलाये फिर जो लोग सत्य को अपनायें उन्हें संगठित करके एक ऐसा गरोह बनायें जो स्वयं अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाला हो और उसकी कोशिश यह हो कि दुनिया में अल्लाह के आज्ञापालन की व्यवस्था स्थापित हो, लोगों को अवज्ञा से रोका जाये। 'पैग़म्बरों' ने अपने-अपने समय में इस मिशन को पूरी तरह अदा किया। परन्तु होता यही रहा कि लोगों की एक बड़ी संख्या उनकी बात मानने के लिए तैयार न हुई। और जिन लोगों

---

१. दे० १० : ४७ (अर्थात् सूरा १० आयात ४७); १३ : ७; ३० : ४७; ३५ : २३ : २४; १४ : ४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने सत्य को अपनाया, वे भी धीरे-धीरे बिगड़ने ही गये यहाँ तक कि उनके कुछ समुदायों ने तो अल्लाह के भेजे हुए आदेशों को बिल्कुल ही गुम कर दिया और कुछ ने अल्लाह के आदेशों में बहुत-कुछ परिवर्तन कर डाला। उनमें उन्होंने बहुत-कुछ अपनी ओर से घटा बढ़ा दिया और आज प्रमाणित एवं शुद्ध रूप में उनके पास कुछ नहीं है।

अन्त में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को उसी काम के लिए 'रसूल' बनाकर उठाया जिस काम के लिए पिछले 'नबी' आये थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० सातवीं शताब्दी ईसवी में अरब देश में पैदा हुये। आपको अल्लाह ने संसार के सारे मनुष्यों के लिए 'रसूल' बनाकर भेजा[1]। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का कर्त्तव्य यह था कि लोगों को सत्य की ओर बुलायें और जो लोग सत्य को ग्रहण कर लें उन्हें संघठित करके एक ऐसा गरोह बनाएँ जो न केवल यह कि अपने जीवन को अल्लाह के आदेशानुसार व्यवस्थित करे बल्कि दूसरे लोगों को भी सत्य का आमन्त्रण दे, उन्हें जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाये। और दुनिया से बिगाड़ दूर करने की कोशिश करे। क़ुरआन वास्तव में इसी आमन्त्रण और मार्ग-दर्शन की किताब है जो अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी है।

क़ुरआन का अवतरण

क़ुरआन २३ वर्ष की अवधि में आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा करके विभिन्न अवसरों पर उतरा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अल्लाह ने जब 'नुबूवत' प्रदान की और आपको इस कार्य पर नियुक्त किया कि आप लोगों को सच्चे दीन (सत्य धर्म) की ओर बुलायें, और इस महान् कार्य का आरम्भ अपनी अपनी ही बस्ती से करें, तो इस आरम्भिक समय में जिस प्रकार के आदेशों की आवश्यकता थी उसी प्रकार के आदेशों का अवतरण हुआ। आरम्भिक आदेश और शिक्षायें छोटे-छोटे बोलों के रूप में अवतीर्ण हुये। उनकी भाषा में अत्यन्त मधुरता, सरसता और प्रवाह था। उन्हें सुनने के लिए मानवीय आकांक्षा विह्वल हो उठती थी। उनमें यद्यपि व्यापक सत्यता और नैतिकता के मौलिक एवं व्यापक सिद्धान्तों का वर्णन होता था परन्तु जिस प्रकार अल्लाह की ओर से उतरने वाले इन बोलों की भाषा अरबी थी उसी प्रकार इनमें जो दृष्टान्त और प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे थे वे भी वही थे जिनसे अरब के लोग भली-भांति परिचित थे। समस्त वार्त्ताओं का सम्बन्ध उन्हीं के वातावरण से था। उन्हीं के विचार एवं कल्पना सम्बन्धी ख़राबियों और उन्हीं के नैतिक एवं सामाजिक विगाड़ पर प्रत्यक्षतः प्रकाश डाला जा रहा था।

फिर आगे चलकर सत्य और असत्य में संघर्ष हुआ। सत्य के विरोधियों ने क़ुरआन की आवाज़ को दबाना चाहा। उन्होंने इसकी पूरी कोशिश की कि लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० की बात न सुनें। नबी सल्ल० जिस मिशन को अदा करने को उठे थे उसे असफल बनाने के लिए सारे हथकण्डे अपाये गये। सत्य के अनुयायियों को हर प्रकार की तकलीफ़ें पहुँचाई गईं। उन्हें तरह-तरह से सताया गया, यहाँ तक की उन्हें अपना घर-बार त्याग कर हब्शा (Abyssinia) और मदीना की ओर 'हिजरत' करनी पड़ी। इन आपदाओं और अत्याचारों के बावजूद सत्य का प्रकाश फैलता गया। और सत्य के अनुयायियों की संख्या बढ़ती ही गई। सत्य और असत्य के संघर्ष की लम्बी अवधि में अल्लाह की ओर से क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं वे अत्यन्त प्रभावशाली थे। उनमें वह ओज, बल और प्रवाह था जिसकी मिसाल साहित्य-जगत में नहीं मिलती। एक दरिया था जो पूरे वेग से बह रहा था। एक निर्झर था जिसकी जल-धाराओं का नाद लोगों में नवीनतम जीवन का संचार कर रहा था।

क़ुरआन के जो हिस्से इस कालावधि में उतरे उनमें ईमान वालों को उनके कर्तव्यों का स्मरण कराया गया। उन्हें सफलता की शुभ सूचनायें दी गईं। साहस और आत्म-बल प्रदान किया गया ताकि वे अल्लाह के मार्ग पर हर प्रकार के संकटों और आपदाओं का डट कर मुक़ाबला कर सकें। इसके साथ-साथ उन लोगों को

---

१. ३४ : २८; ७ : १५८; २१ : १०७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो सत्य के विरोधी बनकर खड़ हुये थे चेतावनियाँ दी गईं कि वे सत्य को अपनायें। और सत्य के मार्ग में रुकावटें खड़ी करने से बाज़ आ जायें। उन्हें उन प्राचीन जातियों के परिणामों से डराया गया जिनके इतिहास से वे अपरिचित न थे। फिर उन्हें उस बड़ी यातना की भी सूचना दी गई जो 'आख़िरत' में अपराधियों के लिए तैयार की गई है। उनके आक्षेपों का उत्तर देने और उनकी अपनाई हुई नीति को निन्दनीय ठहराने के साथ-साथ नैतिकता एवं नागरिकता के उन बड़े-बड़े नियमों को भी उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया जिनके आधार पर एक आदर्श समाज का निर्माण होता है।

नबी सल्ल० और आपके साथी 'हिजरत' करके जब मदीना पहुंचे तो वहाँ आपको एक दूसरा वातावरण मिला। मदीना के बहुत से लोग आपके वहाँ पहुँचने से पहले ही मुसलमान हो गये थे। वहाँ इस्लामी राज्य की स्थापना हुई। बहुत-सी नई-नई समस्यायें भी उभर कर सामने आईं। 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' से मामला पेश आया। विभिन्न प्रकार के 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) से निमटना पड़ा। फिर अज्ञान के उपासकों और सत्य के विरोधियों से सशस्त्र मुक़ाबला करने की भी नौबत आई। यह सब-कुछ हुआ परन्तु अल्लाह और पैग़म्बर और उसके साथी सत्य पर डटे रहे। उन्हें कोई चीज़ सत्य से विचलित न कर सकी। फिर वह समय आया कि पूरे अरब पर सत्य को विजय प्राप्त हुई। और इसकी राहें पैदा हुईं कि अरब से बाहर दूसरे देशों तक क़ुरआन की आवाज़ पहुँच सके। आठ-नौ वर्ष की इस लम्बी अवधि में क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं उनमें राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। उनमें स्पष्ट रूप से यह बात बताई गई कि समाज का संघठन किस प्रकार हो और जीवन के विभिन्न विभागों की व्यवस्था किन नियमों के आधार पर होनी चाहिए। 'मुनाफ़िक़ों' से किस प्रकार निमटा जाये। उन ग़ैर-मुस्लिमों से क्या व्यवहार किया जाये जिन्होंने सत्य को स्वीकार नहीं किया परन्तु जो इस्लामी स्टेट (राज्य) के अधीन हैं। 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' से किस प्रकार का सम्बन्ध रक्खा जाये। और उन शत्रुओं के बारे में कौन-सी नीति अपनाई जानी चाहिए जिन से युद्ध हो। और उन धर्म-विरोधियों के प्रति क्या नीति अपनाई जायेगी जिनसे कोई सन्धि और समझौता हो चुका हो।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात भली-भांति स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी आन्दोलन (Islamic Movement) जो नबी सल्ल० के नेतृत्व में चलाया गया था, 'क़ुरआन' के द्वारा अल्लाह ने किस प्रकार उसका पथ-प्रदर्शन किया। जैसी समस्यायें सामने होतीं और जैसी-कुछ परिस्थिति होती उसी के अनुसार क़ुरआन के हिस्सों और उसकी 'सूरतों' का अवतरण होता था। जब तक परिस्थिति में परिवर्त्तन न होता क़ुरआन की वार्त्ताओं और उसके विषयों मे भी कोई परिवर्त्तन न होता था। इसके साथ यह भी आवश्यक था कि इस्लामी आमन्त्रण जिन आधारभूत विचारों, विश्वासों और नियमों पर आधारित है; उन्हें किसी हाल में भी निगाहों से ओझल न होने दिया जाये, उन्हें हर मरहले में दोहराया जाता रहे। यही कारण है कि इस्लामी आन्दोलन के एक मरहले में जितनी 'सूरतों' का अवतरण हुआ है उनमें साधारणतः एक ही प्रकार के विषयों और वार्त्ताओं की पुनरावृत्ति (Repetition) पाई जाती है, परन्तु 'तौहीद' (एकेश्वरवाद), अल्लाह के गुण, 'आख़िरत', 'रिसालत', ईश-भय, धैर्य्य आदि विषयों की पुनरावृत्ति आप पूरे क़ुरआन में पायेंगे। वार्त्ताओं की पुनरावृत्ति (Repetition) के बावजूद क़ुरआन की प्रत्येक 'सूरा' दूसरी सूरतों से भिन्न विशेषतायें रखती हैं। क़ुरआन की किसी दो सूरा पर भी जिनके विषय और वर्णन-शैली में बड़ी समानता पाई जाती हो आप जब विचार करेंगे तो देखेंगे कि वे सूरतें एक-दूसरे का बदल कदापि नहीं हो सकतीं। दोनों की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं और दोनों का अपना अलग-अलग सौन्दर्य है। दोनों ही अपने साहित्य, गुण और प्रभावशीलता की दृष्टि से हमारे लिए अमूल्य निधि हैं।

क़ुरआन का संकलन

क़ुरआन का अवतरण तो उस क्रम से होता रहा जिस क्रम से इस्लामी मिशन और इस्लामी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आन्दोलन का आरम्भ और विकास हुआ है। परन्तु जिस क्रम से 'क़ुरआन' की सूरतों का अवतरण हुआ है उन्हें उस क्रम से संकलित और संगृहीत नहीं किया गया। क़ुरआन की सूरतों और 'आयतों' को हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अल्लाह के आदेशानुसार उस व्यवस्थित क्रम से संकलित किया जिस क्रम के साथ उनका एक किताब के रूप में संकलित होना उचित था। जब कोई 'सूरा' उतरती तो अल्लाह का 'रसूल' उसे उसी समय लिख देता। और कहता कि इसे अमुक सूरा के बाद और अमुक सूरा से पहले रक्खा जाये। इसी प्रकार जब कुछ ऐसी 'आयतें' उतरतीं तो अलग से कोई सूरा बनने वाली न होतीं तो आप बता देते कि वे 'आयतें' किस सूरा में सम्मिलित होंगी और उन्हें किन 'आयतों' के बाद रक्खा जायेगा। फिर लोग इस क्रम के अनुसार उन्हें याद करते और इसी क्रम से 'नमाज़ों' में उन्हें पढ़ा जाता। इस प्रकार जिस दिन सम्पूर्ण 'क़ुरआन' उतर चुका, वास्तव में उसी दिन वह क्रमबद्ध और संकलित भी हो गया।

क़ुरआन एक प्रमाणित एवं सुरक्षित ग्रन्थ है[1]

क़ुरआन केवल खजूर के पत्तों, हड्डी या झिल्ली के टुकड़ों पर ही नहीं लिखा गया बल्कि साथ ही वह 'ईमान' वालों के सीनों में उतरता गया। लोग उसे कण्ठस्थ करते गये। नबी सल्ल० के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० के समय में एक युद्ध में ऐसे बहुत से लोग वीरगति को प्राप्त हुये जिन्हें पूरा 'क़ुरआन' याद था। इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ि० ने अपना यह विचार प्रकट किया कि विभिन्न चीज़ों पर लिखी हुई क़ुरआन की 'आयतों' (Words of Allah) को एक जिल्द में संगृहीत करने का प्रबन्ध किया जाये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस काम पर हज़रत ज़ैद बिन साबित अनसारी को नियुक्त किया। हज़रत ज़ैद नबी सल्ल० के विशेष 'कातिब' रह चुके थे। हज़रत ज़ैद कुछ बड़े 'सहाबा' के साथ इस शुभ कार्य में लग गये। इस बात का एलान कर दिया गया कि जिस किसी के पास भी क़ुरआन का थोड़ा या बहुत हिस्सा लिखित रूप में मौजूद हो ले आये। नबी सल्ल० के लिखाये हुये क़ुरआन के हिस्से भी इकट्ठा कर लिए गये। हज़रत ज़ैद और आपके जो साथी इस महान कार्य में तन्मयता के साथ लगे हुये थे वे सब-के-सब 'क़ुरआन' के हाफ़िज़ थे। पूरा क़ुरआन उन्हें कण्ठस्थ था। फिर भी उन्होंने पूरी सावधानी से काम लिया। उनकी सतर्कता का हाल यह था कि जो-कुछ वे लिखित रूप में पाते उस पर कम-से-कम दो गवाह लेते कि जो-कुछ लिखा गया है वह नबी सल्ल० के सामने लिखा गया है या नहीं ? और अमुक व्यक्ति ने जो कुछ क़ुरआन सुनाया उसने इसी तरह अल्लाह के 'रसूल' से सुना था या नहीं ? जब गवाह गुज़र जाते तो फिर उसे अपने लेख-पत्रों और अपने हाफ़िज़े से मिलाकर मुक़ाबला करते। जब हर प्रकार से इतमीनान हो जाता तब उसे लिपिबद्ध करते। इस तरह जब पूरे क़ुरआन की एक प्रमाणित प्रति तैयार हो गई, तो उसे हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास रख दिया गया इसलिए कि उस समय वही इस्लामी राज्य के सबसे बड़े पद पर थे। आप के बाद क़ुरआन की यह प्रति उनके उत्तराधिकारी हज़रत उमर रज़ि० के पास रही। हज़रत उमर रज़ि० के बाद क़ुरआन की यह प्रति आपकी बेटी हज़रत हफ़सा रज़ि० के पास रखवा दी गई।

---

१. किसी भी धर्म के बारे में विचार करने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि यह जानने की कोशिश की जाये कि वह धर्म अपने वास्तविक रूप में आज शेष भी है या नहीं। यदि वह अपने वास्तविक रूप में शेष नहीं है और उसकी शिक्षाओं में बहुत कुछ परिवर्त्तन और कमी-बेशी हो गई है, तो फिर वह धर्म सुरक्षित ही कहाँ रहा कि उसपर विचार करने का कोई सवाल पैदा हो। किसी धर्म के बारे में यह जानने के लिए कि वह अपने वास्तविक रूप में बाक़ी है या नहीं हमें उसके ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ता है। क्योंकि किसी धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने का मूल साधन उसके ग्रन्थ ही हैं। यदि किसी धर्म के अनुयायी अपने धार्मिक ग्रन्थ को सुरक्षित न रख सके, तो इसका अर्थ यह है कि उनका धर्म ही सुरक्षित न रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगे चलकर जब 'इस्लाम' अरब से निकलकर दूर-दूर तक फैल गया और अधिक संख्या में ऐसे लोग 'इस्लाम' ग्रहण करने लगे जो अरबी भाषा से अनभिज्ञ थे, उनसे क़ुरआन पढ़ने में ग़लतियाँ होने लगीं, उस समय हज़रत उस्मान रज़ि० ने निश्चय किया कि क़ुरआन की जो प्रति हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने तैयार कराई है उसकी नक़लें (प्रतिलिपियाँ) इस्लामी प्रदेशों में भेज दी जायें ताकि लोग उसी के अनुसार क़ुरआन का पाठ करें और क़ुरआन के उच्चारण में कोई विभेद न हो। ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि० ने क़ुरआन की कई एक प्रतियाँ तैयार कराईं और फिर उसकी एक-एक प्रति मिस्र, बसरा, शाम (Syria), यमन और बहरैन के गवरनरों (राज्यपालों) के पास भेज दी। और उन्हें लिखा कि लोग इसी के अनुसार क़ुरआन का पाठ करें। क़ुरआन की एक प्रति आपने अपने पास रख ली। आपकी भेजी हुई प्रतियाँ मक्का, मदीना, दिमश्क़ और मराकश में अब भी मौजूद हैं। आज जो क़ुरआन हमारे हाथों में है वह उन्हीं प्रतियों की प्रतिलिपि (True Copy) है जिन्हें हज़रत उस्मान रज़ि० ने विभिन्न इस्लामी प्रदेशों में भेजा था। यह तो हो सकता है कि किसी को 'क़ुरआन' के ईश्वरीय ग्रन्थ होने में सन्देह हो परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि जो क़ुरआन इस समय हमारे हाथों में है वह वही क़ुरआन नहीं है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने पेश किया था। यदि इस में किसी को सन्देह हो सकता है तो फिर उसे दिन के दिन होने और चमकते हुये सूर्य के प्रकाशमान होने में भी सन्देह हो सकता है।

वर्णन-शैली और साहित्य

क़ुरआन अपनी वर्णन-शैली और साहित्य आदि की दृष्टि से एक महान् एवं मनोरम ग्रंथ है। क़ुरआन की वर्णन-शैली पर विचार करने से पहले मौलिक रूप से यह बात हमारे सामने रहनी चाहिए कि कलाम (वाणी) की यों तो बहुत-सी क़िस्में होती हैं परन्तु शैली (Style), व्यवस्थित क्रम आदि की दृष्टि से हम 'कलाम' को दो क़िस्मों में विभक्त कर सकते हैं। इसकी एक क़िस्म तो वह है जिसमें बात को सीधे-सादे ढंग से रख दिया जाता है। किसी विषय पर प्रकाश डालना ही इस का मूल उद्देश्य होता है। मिसाल में इतिहास, गणित, विज्ञान, क़ानून आदि से सम्बन्ध रखने वाली किताबें पेश की जा सकती हैं। 'कलाम' की दूसरी क़िस्म वह है जिसमें केवल यही अभीष्ट नहीं होता कि लोगों को केवल अपेक्षित बातों का ज्ञान हो जाये बल्कि इसके साथ ही उस का मूल उद्देश्य होता है मनुष्य के मन और मस्तिष्क को प्रभावित करना, मन की वीणा को अपने आघातों से झंकृत करना, कोमल भावनाओं को जगाना, लोगों में उमंग और जोश पैदा करना, उन्हें हर्ष और आनन्द से विभोर करना, शोक, संवेदन आदि मनोभावों को जगा कर लोगों को भावुकता प्रदान करना, विचार, कल्पना और संकल्प के लोक में क्रान्ति की लहर दौड़ानी, प्राणों में कल्याण की भावनाओं का स्रोत प्रवाहित करना, हृदय-नेत्र के आवरण को दूर करना ताकि लोग अपने सच्चे, विशुद्ध एवं निर्मल स्वरूप के दर्शन कर सकें, आदि। इस प्रकार का 'कलाम' अपने क्रम, संविधान, भाषा आदि की दृष्टि से दूसरे कलामों से सर्वथा भिन्न होगा। क़ुरआन वास्तव में इसी दूसरी क़िस्म का 'कलाम' है।

क़ुरआन के बारे में यह विचार कि वह केवल एक क़ानून की किताब है सत्य के प्रतिकूल है। 'क़ुरआन' में क़ानून और नियमों का उल्लेख अवश्य हुआ है परन्तु उनका उल्लेख जिस तरह से हुआ है वह विधिज्ञों के ढंग से सर्वथा भिन्न है, इसी प्रकार क़ुरआन में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है परन्तु वर्णन-शैली नागरिक शास्त्र या अर्थशास्त्र जैसी कदापि नहीं है, क़ुरआन में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख भी हुआ है किन्तु उनके लिए वह ढंग क़ुरआन ने नहीं अपनाया जो साधारणतः एक इतिहासकार अपनाता है।

क़ुरआन छोटे-बड़े ११४ भागों में विभक्त है। क़ुरआन के ये भाग 'सूरा' कहलाते हैं। क़ुरआन की प्रत्येक सूरा मानो 'क़ुरआन' का एक अध्याय है। जिस प्रकार एक सुन्दर कविता में हम देखते हैं कि उसे अनुप्राणित करने वाली एक केन्द्रीय कल्पना होती है। वही केन्द्रीय विचार कविता का मध्य-बिन्दु होता है जिसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविता का प्रत्येक शब्द छू रहा होता है। इसी प्रकार क़ुरआन की प्रत्येक सूरा का भी एक केन्द्रीय विषय या मध्य-विन्दु होता है। 'सूरा' की समस्त वार्त्तायें सूरा के केन्द्रीय विचार से गहरा सम्पर्क रखती हैं। 'सूरा' एक ही केन्द्रीय कल्पना-विन्दु के चारों ओर घूमती है। ऐसा कदापि नहीं है कि क़ुरआन की सूरतें केन्द्रीय कल्पना से रहित हों और वे केवल विखरे हुये भावों को व्यक्त करती हों। यदि ऐसा होता तो चाहे वे बिखरे हुये भाव अपने स्थान पर कितने ही सुन्दर क्यों न होते 'क़ुरआन' की 'सूरतें' गहराई और अनुपम सुन्दरता से रहित हो जातीं। जिस प्रकार कविता का रसास्वादन करने और उसका पूरा आनन्द लेने के लिए आवश्यक है कि पाठक को उसके केन्द्रीय विचार या केन्द्रीय कल्पना का अनुभव हो उसी प्रकार जब पाठक को क़ुरआन की सूरतों की केन्द्रीय कल्पना का अनुभव हो जाता है तो फिर पूरी सूरा एक अखण्ड रूप में दिखाई देती है 'सूरा' का प्रत्येक भाग एक केन्द्रीय विचार की आभा से आलोकित हो उठता है।

अपने केन्द्रीय विषय की दृष्टि से प्रत्येक सूरा का उसकी अगली और पिछली सूरतों से गहरा सम्पर्क है। परन्तु इन बातों का अनुभव गहरे सोच-विचार और अनुशीलन से होता है। यदि कोई क़ुरआन की सूरतों से आनन्द माँगता है तो यह अनुचित नहीं परन्तु उसे यह न भूलना चाहिए कि क़ुरआन की प्रत्येक सूरा हम से साधना की माँग करती है। क़ुरआन के समझने और उसके निहित रहस्यों को पाने के लिए जिस विकसित हृदय और विकसित मस्तिष्क और शुद्ध आत्मा की आवश्यकता है उसके निर्माण में क़ुरआन की सूरतें स्वयं सहायक भी होती हैं।

क़ुरआन में जो साहित्य है उसमें जो संगीत, स्वर-प्रवाह और शब्दों का मधुर विन्यास है वह अनुपम है। क़ुरआन के साहित्य का आनन्द लेने के लिए अरबी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। साहित्य के अतिरिक्त क़ुरआन में जो गहराई और ज्ञान की व्यापकता पाई जाती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यह क़ुरआन की अनुपम विशेषता ही थी जिसके कारण इस्लाम-विरोधी क़ुरआन सुनने से लोगों को रोकते थे। वे समझते थे कि जो क़ुरआन सुनेगा वह क़ुरआन की ओर आकर्षित हो कर रहेगा। इतिहास साक्षी है कि क़ुरआन की आवाज़ जिस किसी के कान तक पहुँची वह उससे प्रभावित हो कर रहा भले ही वह वैमनस्यता के कारण उस पर 'ईमान' न ला सका हो परन्तु उसके दिल ने क़ुरआन की सच्चाई की ही गवाही दी। और कितने ही लोग क़ुरआन सुन कर 'कुफ़्र' के अंधेरे से निकल आये और उन्होंने 'इस्लाम' को स्वेच्छापूर्वक अपना लिया। वही उमर (रज़ि०) जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० का सिर काटने के लिए तलवार लेकर घर से निकलते हैं अन्त में क़ुरआन के शब्दों से प्रभावित हो कर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सच्चे अनुयायियों में सम्मिलित हो जाते हैं। वही तुफ़ैल दौसी जिन्हें मक्के के लोगों ने यह ताकीद की थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की बातें न सुनना, क़ुरआन सुन कर पुकार उठे : "ख़ुदा की क़सम ! इससे अच्छा कलाम मैंने कभी नहीं सुना है।" और फिर सच्चे दिल से क़ुरआन पर 'ईमान' लाते हैं। उतवा बिन रबीआ जो नबी सल्ल० की सेवा में इस लिए गया था कि आप को समझा-बुझाकर राज़ी कर ले और आप धर्म-प्रचार के शुभ-कार्य को छोड़ दें, जब आप के मुख से क़ुरआन की कुछ आयतें सुनता है तो प्रभावित होने से अपने को बचा नहीं पाता है। वह लौटकर आता है और कहता है : "ख़ुदा की क़सम ! आज मैंने ऐसा 'कलाम' सुना है कि इससे पहले कभी न सुना था। न यह काव्य है, न जादू और न 'काहिनों' की वाणी। मेरी बात मानो इस व्यक्ति (अर्थात् मुहम्मद सल्ल०) को इसके हाल पर छोड़ दो, इसकी बातें जो मैंने सुनी हैं रंग लाकर रहने वाली हैं।" इसी प्रकार क़ुरैश का प्रसिद्ध सरदार वलीद बिन मुग़ीरा जब नबी सल्ल० से क़ुरआन का कुछ हिस्सा सुनकर लौटता है तो कहता है :

"ख़ुदा की क़सम ! मैं हर प्रकार की कविता से भली-भाँति परिचित हूँ। ख़ुदा की क़सम ! यह व्यक्ति जो 'कलाम' पेश कर रहा है वह उनमें से किसी के सदृश नहीं हैं। ख़ुदा की क़सम ! इसके 'कलाम' में एक अद्भुत माधुर्य, एक विशेष प्रकार का सौंदर्य है, उसकी शाखायें फलों से लदी हुई हैं और उसकी जड़ें हरी-भरी हैं। निस्सन्देह वह हर 'कलाम' (वाणी) से ऊँचा है, कोई दूसरा 'कलाम उसे नीचा नहीं दिखा सकता।"

इस प्रकार के कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिनसे अन्दाज़ा होता है कि क़ुरआन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने साहित्य और अपनी प्रभावशीलता की दृष्टि से एक महान् ग्रंथ है जिसके तेज शक्ति और सौन्दर्य की प्रशंसा उसके विरोधियों तक ने की है।

क़ुरआन का दार्शनिक सिद्धान्त

क़ुरआन में जहाँ हमें साहित्य का चमत्कार दिखाई देता है और उसमें जहाँ मनुष्य के लिए नियम और क़ानून दिये गए हैं वहीं उसमें जीवन के रहस्यों और गूढ़ अर्थों पर भी प्रकाश डाला गया है और विचार-शील व्यक्तियों की बार-बार प्रशंसा की गई है। क़ुरआन लोगों को ऐसी दृष्टि प्रदान करना चाहता है कि वे सदैव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को अपने सामने रखें। क़ुरआन लोगों को जीवन के पूर्ण और वास्तविक अर्थों का ज्ञान देता है। वह वास्तविकता तक पहुँचने की राह खोलता है। एक असभ्य व्यक्ति तो केवल वहीं तक सोच सकता है जहाँ तक उसके तात्कालिक हानि-लाभ का सम्बन्ध होता है, वह जीवन के प्रत्येक अनुभव और भाव को अलग-अलग करके देखता है। वह उन्हें एक साथ विचार में नहीं लाता। इसलिए सम्पूर्ण जीवन के वास्तविक लाभ-हानि का उसे ज्ञान नहीं होता। वह अपने व्यक्तिगत और सामयिक समस्याओं से आगे बढ़कर सोचने में असमर्थ रह जाता है।

जीवन-सम्बन्धी कुछ आधारभूत प्रश्न हैं जैसे मनुष्य का सच्चा रूप क्या है ? सृष्टि की अन्तिम सत्ता क्या है ? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान है ? आदि इन प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का काम है। अनुभवों के आंतरिक अर्थों की खोज उसका परम लक्ष्य है जो विचार सब सीमाओं को पार करता हुआ अन्तिम अर्थों तक पहुँचने का उद्देश्य लिए हुये न हो, वास्तव में उसे दार्शनिक विचार नहीं कह सकते। अनुभवों के पारस्परिक विरोधों को दूर करना और उनमें अनुरूपता एवं अनुकूलता स्थापित करना दर्शन का मुख्य कार्य है। विज्ञान, जगत और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में एक विशेष सुसंगठित ज्ञान का प्रतिपादन करता है। विज्ञान केवल प्रस्तुत वस्तुओं तथा घटनाओं का वर्णन (Description) है, उनकी व्याख्या करना (Interpretation) यह दर्शन का काम है, दर्शन सम्पूर्ण संसार का एक सामूहिक संगठित ज्ञान प्रदान करता है जिससे मनुष्य को जीवन की वास्तविक सफलता व विफलता का अर्थ मालूम होता है।

क़ुरआन के दृष्टिकोण से वास्तविकता (Reality) के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की दार्शनिक रीति वह नहीं है जिसे साधारणतः दार्शनिक (Philosophers) अपनाते हैं। क़ुरआन का अपना एक दार्शनिक सिद्धान्त है और उसकी अपनी एक दार्शनिक व्यवस्था है। क़ुरआन का कहना है कि लोगों के पथभ्रष्ट होने का मूल कारण यह है कि वे केवल अनुमान से काम लेते हैं। और अटकल और अनुमान ही को सत्य की खोज का एकमात्र साधन समझते हैं और फिर अटकल और अनुमान से वास्तविकता के प्रति जो कुछ विचार वे निर्धारित कर लेते हैं उसके आगे हठधर्मी और पक्षपात के कारण किसी की नहीं सुनते। हालाँकि उनके पास काल्पनिक बातों और अनुमानों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।[1]

क़ुरआन का कहना है कि वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने का सही तरीक़ा यह है कि हम हर प्रकार के पक्षपात से रहित होकर स्वतन्त्रापूर्वक उन पैग़म्बरों का बयान सुनें जिन का दावा है कि वे कोई बात अटकल और अनुमान से नहीं कहते। उनकी कोई बात काल्पनिक नहीं, बल्कि वे जो-कुछ कहते हैं वह उस 'ज्ञान' पर अवलम्बित होता है जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है।[2] 'पैग़म्बरों' ('नबियों') का बयान सुनने के बाद हम इस रहस्यमय जगत पर दृष्टि डालें और इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म संकेतों को व्यवस्थित क्रम में लायें उनसे नतीजा निकाल कर यह देखें कि इस प्रत्यक्ष के पीछे स्थित जिस वास्तविकता की सूचना 'पैग़म्बर'

---

१. दे० २२:८ (सूरा २२ आयत ८); २२:३; २८:५०; ३०:२६; ५३:२८; ३६:६; १०:३६; १२:४०; ६:११६; ६:१४८; ४७:१४; २४:४०।

२. दे० २८:१४; ११:६३; १६:४३; २१:७४; २१:७६; २:१२०; ४:११३; ५३: २—३; १२:१०८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देते हैं, इस प्रत्यक्ष में उसके लक्षण और उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हैं या नहीं। यदि उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हों, और यह जगत उसके यथार्थ होने का साक्षी हो, और उससे उन समस्त समस्याओं का समाधान हो जाता हो जिनका इस मौलिक और वास्तविक समस्या से दूर या निकट का कोई सम्बन्ध है और उस पर कोई आक्षेप न हो सकता हो और न उसके विरुद्ध कोई एक प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता हो, तो फिर 'पैग़म्बरों' को झुठलाने की कोई वजह नहीं। बल्कि उनकी दी हुई सूचना को मानना ही तर्कयुक्त और न्यायसंगत बात होगी।

'क़ुरआन' में विभिन्न स्थानों पर जगत में पाये जाने वाले सूक्ष्म संकेतों को व्यवस्थित क्रम में रखकर उनसे नतीजा निकाल कर वास्तविकता को प्रकाश में लाया गया है।[1]

क़ुरआन अल्लाह की किताब है

पिछले पृष्ठों में क़ुरआन के विषय में जो-कुछ कहा गया है उससे क़ुरआन का एक संक्षिप्त परिचय आपको मिल चुका होगा। क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की किताब है? यह प्रश्न सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और गंभीर है, जिसपर विचार करना हमारा परम कर्तव्य है। इस प्रश्न पर जितना अधिक सोच-विचार कीजिए, यह विश्वास बढ़ता जाता है कि क़ुरआन किसी मनुष्य का 'कलाम' नहीं हो सकता। यह वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसे अल्लाह ने मनुष्य के पथ-प्रदर्शन के लिए अपने एक विशेष बन्दे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा है। क़ुरआन अल्लाह का कलाम' है इसका सबसे बड़ा प्रमाण हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अपना बयान है। आप एक सच्चे व्यक्ति थे। जीवन-भर कभी कोई झूठी बात आपके मुख से नहीं निकली। सभी लोग आपको 'सादिक़' (सत्यवान) और 'अमीन' (विश्वासनीय) कहते थे। सोचने की बात है कि जिस व्यक्ति ने किसी भी मामले में कभी झूठी बात न कही हो, जिसकी सच्चाई और सत्यवादिता का हाल यह हो कि दुश्मन तक उसके सच्चे होने के गवाह हों क्या वह अपने अल्लाह से सम्बन्ध लगाकर झूठ बोल सकता है। और झूठ भी ऐसा जो निरन्तर २३ वर्षों तक बोला गया हो? जिस व्यक्ति ने मनुष्यों के मामले में कभी असत्य बात नहीं कही वह अल्लाह के नाम पर झूठी बात कैसे गढ़ सकता है। क्या ऐसा व्यक्ति कभी कह सकता है कि अल्लाह ने मुझपर अपना 'कलाम' उतारा है जब कि अल्लाह का 'कलाम' उसपर उतरा न हो। फिर क्या अल्लाह इतने बड़े अत्याचार को कभी सफल होने देगा[2]। क्या जीवन में ऐसी सफलता जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपने महान् उद्देश्य में प्राप्त हुई है कभी संसार में किसी झूठे और असत्यवादी व्यक्ति को प्राप्त हो सकी है। ज़ालिमों का ज़ुल्म और झूठों का झूठ कभी छुपा नहीं रहता।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का समय अत्यन्त पवित्र एवं शुभ कार्यों में व्यतीत होता था। आपकी रातें भी पवित्र थीं और आपका दिन भी पवित्र था। आप कभी बुराई के निकट नहीं गये। आप लोगों में होते या अकेले, प्रत्येक दशा में अल्लाह के आगे झुके रहते; उसे याद करते और उससे डरते रहते। विचार कीजिए एक ऐसा व्यक्ति जिसने जो-कुछ कहा सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण और हित के लिए कहा, जिसकी शिक्षाओं में न तो जातीयता एवं सांप्रदायिकता सम्बन्धी भेद-भाव और पक्षपात की कोई झलक पाई जाती है और न किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग के स्वार्थ का उनमें कोई चिह्न मिलता है, जिसने सत्य के लिए जीवन की कठिन राह अपनाई और जीवन के अन्तिम समय तक असत्य से लड़ता रहा, जिसने अपने सम्पूर्ण जीवन को धर्म और जन-सेवा के कार्य में लगा दिया, अपने लिए और अपनी औलाद के लिए जिसने न तो कोई जायदाद

---

१. इस सिलसिले में उदाहरण के लिए दे० १०:५; ६४:३; १३:२-३; १०:२२; ७८:१-१७; ५१:१-६; ७४:३२-३६; ३६:८१; ७५:३६-४०; ६४:३; ८४:१६-१९; ५६:७५-८०; ५३:१-४; ९३:१-४; ६७:१-४; ५१:४७-५०; ५१:१-५।

२. दे० सूरा ६९ आयत ४४-४७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनाई और न किसी कोठी और महल का निर्माण किराया, दुनिया से रुखसत हुआ तो इस हाल में कि घर में तेल तक न था कि चिराग़ जलाया जा सके, जिसकी कामना यह रही हो कि वह एक दिन तृप्त हो और एक दिन भूखा रहे ताकि जब वह भूखा हो तो अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाये और उसे याद करे और जब तृप्त हो तो उसकी प्रशंसा करे और उसके आगे कृतज्ञता दिखलाये, जिसके हृदय की पवित्रता और निःस्वार्थपरता का यह हाल रहा हो कि उसने अपने शत्रुओं को भी क्षमा कर दिया, शत्रु भी ऐसे जिन्होंने केवल यही नहीं कि उसे सताया और तकलीफ़ें पहुँचाई बल्कि जिन्होंने उसे क़त्ल तक करने की साज़िश की, यहाँ तक कि उसे अपना घर-बार सब छोड़ देना पड़ा, इस पर भी उन्होंने चैन न लेने दिया, क्या ऐसा व्यक्ति भी झूठा और मक्कार हो सकता है ? यदि हम उसे झूठा नहीं कह सकते तो निश्चय ही वह अल्लाह का रसूल था और यह क़ुरआन अल्लाह की 'किताब' है जैसा कि उसका अपना बयान है।

एक और पहलू से विचार कीजिए। हज़रत मुहम्मद सल्ल० एक निरक्षर व्यक्ति थे। आपको लोग लगभग ४० वर्ष तक एक सत्यनिष्ठ, सुशील, शान्तिप्रिय व्यक्ति के रूप में जानते-पहचानते थे। ४० वर्ष की आयु तक आपके जीवन में कोई ऐसी बात नहीं देखी गई जिससे कोई यह अनुमान कर सके कि यह व्यक्ति कोई बड़ा दावा करने की तैयारी कर रहा है। ४० वर्ष की आयु प्राप्त होने पर आपने सहसा संसार के समक्ष अपने-आपको एक रसूल के रूप में प्रस्तुत किया। और दुनिया ने उस समय आपके मुख से ऐसा 'कलाम' सुना कि वैसा 'कलाम' कोई पेश न कर सका। क्या यह सम्भव है कि कोई ऐसा व्यक्ति जो अशिक्षित हो उसने न इतिहास और राजनीति का अध्ययन किया हो और न वह दर्शन-शास्त्र और अर्थशास्त्र का ज्ञाता हो वह संसारको एक ऐसा ग्रन्थ प्रदान करे को प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण ही नहीं बल्कि संसार उसकी इस कृति के सदृश कृति प्रस्तुत करने में सर्वथा असमर्थ रहे।

फिर पूरा क़ुरआन २३ वर्ष की दीर्घ अवधि में उतरा है, फिर भी न तो उसकी शिक्षाओं में कहीं कोई विभेद पाया जाता है और न साहित्यिक दृष्टि से उसका स्तर कहीं गिर सका है। क़ुरआन की वार्त्ताओं में अत्यन्त अनुकूलता और तार्किक समन्वय पाया जाता है और साहित्यिक दृष्टि से वह एक मनोरम ग्रन्थ है। किसी मानवीय रचना की यह विशेषता नहीं हो सकती। मनुष्य के विचार और उसकी धारणायें बदलती रहती हैं। उसकी रचना विभिन्न परिस्थितियों में एक कोटि की कभी नहीं हो सकती।

क़ुरआन में कितने ही 'नबियों' और प्राचीन जातियों के वृत्तान्तों का उल्लेख हुआ है, क़ुरआन में नबियों और प्राचीन जातियों के जो क़िस्से बयान हुए हैं वे गल्प कथायें नहीं हैं बल्कि प्राचीन आसमानी किताबों से उनकी पुष्टि होती है। क़ुरआन में उल्लिखित वृत्तान्तों में कितनी ही बातें ऐसी हैं जिनका उल्लेख सिरे से बाइबिल और तलमूद में नहीं मिलता। और कितनी ही घटनायें ऐसी हैं जिनका उल्लेख बाइबिल, और तलमूद में मिलता है परन्तु 'क़ुरआन' के बयान में और बाइबिल और तलमूद के बयान में बड़ा अन्तर पाया जाता है। जो व्यक्ति क़ुरआन और बाइबिल व तलमूद के बयान पर विचार करेगा वह पायेगा कि जहाँ कहीं क़ुरआन और बाइबिल या क़ुरआन और तलमूद के बयान में भिन्नता पाई जाती है वहाँ क़ुरआन का बयान ही तर्कसंगत और सत्य के अनुकूल है। बल्कि क़ुरआन ने तो यहूदियों और ईसाइयों पर उपकार किया है। बाइबिल में अधिकतर 'नबियों' को जिस रंग में पेश किया गया है वह अत्यन्त खेदजनक है। क़ुरआन उतरा तो उन नबियों का निर्मल चरित्र सामने आ सका। उदाहरणार्थ बाइबिल में हज़रत नूह अ० के धर्म-प्रचार का उल्लेख नहीं किया गया है और न बाइबिल से यह मालूम होता है कि जिन लोगों को उनके समय में डूबो दिया गया था उनका वास्तव में क्या अपराध था। परन्तु क़ुरआन में यह सारी बातें स्पष्ट रूप से बयान हुई हैं। क़ुरआन में नूह अ० और हज़रत लूत अ० हमें एक 'नबी' और पवित्राचारी व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं परन्तु बाइबिल में उनके आचारण को कलंकित किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० पढ़े-लिखे व्यक्ति न थे और न कोई यह सिद्ध कर सकता है कि आप (सल्ल०) ने किसी से प्राचीन इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया था। 'वह्य' अथवा ईश्वरीय-संकेत के अतिरिक्त आपके पास कोई साधन न था कि आप पिछली जातियों और पिछले 'नबियों' का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाल मालूम कर सकते। अतः हमें मानना पड़ेगा कि आप वास्तव में अल्लाह के के 'रसूल' थे और क़ुरआन आप पर अल्लाह की ओर से उतरा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए आप के विरोधियों ने आप से सवाल भी किया था कि 'बनी इसराईल' के मिस्र जाने का क्या कारण हुआ ? अरब के लोग इस क़िस्से से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। नबी सल्ल० से भी कभी यह क़िस्सा नहीं सुना गया था। विरोधी लोग यह समझते थे कि आप इस सवाल का उत्तर न दे सकेंगे परन्तु अल्लाह ने इसके जवाब में उसी समय पूरी सूरा यूसुफ़ उतार दी।

क़ुरआन और उसके लानेवाले 'रसूल' के आगमन की शुभ-सूचना पिछली आसमानी किताबों 'तौरात' 'इन्जील' आदि में दी जा चुकी थी। क़ुरआन के जिन गुणों का उल्लेख पिछली किताबों में हुआ था वे पूर्ण रूप से उसमें पाये जाते हैं। 'तौरात' 'इन्जील' आदि ग्रन्थ यद्यपि आज अपने वास्तविक रूप में नहीं हैं उनमें बहुत कछ रिवर्त्तन हो चुका है फिर भी इन किताबों में आज ऐसे वाक्य पाये जाते हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन के गुणों और हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन का उल्लेख हुआ है।[1]

क़ुरआन में जिस प्रकार प्राचीन समय की कितनी हो बातों का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार क़ुरआन ने अनेक ऐसी सूचनायें भी दीं जिनका सम्बन्ध भविष्य से था। ये सूचनायें ऐसे समय पर दी गई थीं जबकि इनके पूरी होन का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता था। परन्तु इतिहास साक्षी है कि 'क़ुरआन' की भविष्य-वाणियाँ पूरी होकर रहीं[2]। क़ुरआन की दी हुई ऐसी सूचनाएं भी हैं जिनके पूरे होने का समय अभी नहीं आया, वे भी अपने समय पर पूरी होकर रहेंगी। इस प्रकार की सूचनायें केवल अल्लाह ही दे सकता है जिसके ज्ञान ने आदि और अन्त सबको घेर रक्खा है। परोक्ष का वास्तविक ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं हो सकता अतः मानना पड़ेगा कि क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' है। वह किसी मनुष्य की रचना नहीं है।

'क़ुरआन' कोई साइंस की 'किताब' नहां है। फिर भी उसमें अल्लाह की निशानियों और चमत्कारों के अन्तर्गत वर्तमान जगत और विश्व के सम्बन्ध में बहुत-सी बातों का उल्लेख हुआ है। शताब्दियाँ बीत गईं, विज्ञान लोक में कितने अनुसन्धान हुये, कितने अन्वेषण सामने लाये गये; परन्तु क़ुरआन की कोई बात असत्य सिद्ध नहीं की जा सकी। बल्कि इससे क़ुरआन ही के चमत्कारों पर प्रकाश पड़ता गया है। 'क़ुरआन' की यह विशेषता भी क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मनुष्य का ज्ञान अत्यन्त सीमित है। आज वह एक बात कहता है परन्तु बाद के नतीजों से वह ग़लत सिद्ध होती है। आज वह एक सिद्धान्त (Theory) निर्धारित करता है परन्तु कुछ ही समय बीतने पर मालूम होता है कि उसका सिद्धान्त वास्तविकता (Fact) के सर्वथा प्रतिकूल था। विज्ञान लोक में इस प्रकार के कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक समय था कि परमाणु या अणु (Atom) को अविभाजनीय समझा जाता था परन्तु आज परमाणु भी अविभाजनीय नहीं रहा। इसी प्रकार कभी पदार्थ (Matter) के बारे में यह समझा जाता था कि पदार्थ नष्ट नहीं होता पर यह विचार भी असत्य सिद्ध हुआ। आज यह सबको मालूम है कि पदार्थ भी नष्ट हो सकता है। वह नष्ट होकर शक्ति (Energy) में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार कितने ही ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिनसे मालूम होता है कि मनुष्य का ज्ञान अत्यन्त सीमित है, अनुसन्धानों और अन्वेषणों के अन्तर्गत उसकी धारणाओं और विचारों में परिवर्तन होता रहता है। यदि क़ुरआन के बयान को आज तक कोई अनुसन्धान और वैज्ञानिक तथ्य (Scientific fact) झूठला न सका तो इसका अर्थ इसके सिवा और क्या हो सकता है कि क़ुरआन एक असाधारण ग्रन्थ है यह मानवीय रचना नहीं। मानवीय रचनाओं में कोई-न-कोई त्रुटि रह ही जाती

---

१. उदाहरणार्थ दे० इस्तिस्ना (Deut.) ३३ : २; १८ : १८-१९; यूहन्ना (John.) १: २०-२१; मत्ता (mtt.) ४ : १७; यसअयाह (Isaiah) ४२ : ९-१७।

२. उदाहरणार्थ देखिए वह भविष्यवाणी जिसका उल्लेख सूरा रूम के आरम्भ में हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। विभिन्न प्रकार की दुर्बलतायें मनुष्य के साथ लगी रहती हैं जिसके कारण किसी सही नतीजे तक पहुँचना उसके लिए सरल नहीं होता।

एक और पहलू से देखिए! मनुष्य संसार में जब पहले-पहल आँखें खोलता है तो वह अपने को एक ऐसे लोक में पाता है जो अत्यन्त विशाल और मनोहर है। उसे अपने चारों ओर नाना प्रकार की वस्तुयें फैली हुई दिखाई देती हैं। हरी-भरी धरती उसे भली लगती है। तारकमय आकाश उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। इस लोक में उसे माता-पिता का प्यार और भाई-बन्धुओं का प्रेम-भरा स्वागत मिलता है। वह यहाँ अपने को कोई अजनबी मुसाफ़िर नहीं समझता। उसे अपनी समस्त आवश्यकतायें पूरी होती दिखाई देती हैं। सूर्य-चन्द्र उसके लिए प्रकाश बनकर चमकते हैं। रात उसके लिए सुख और शान्ति बनकर आती है। धरती उसके लिए अनाज उगाती है। वृक्ष अपने फलों और मेवों से उसका सत्कार करते हैं। हवायें बादलों को उड़ाकर लाती हैं, वर्षा होती है। सूखी और निर्जीव भूमि देखते-देखते हरे-भरे मैदानों के रूप में लहलहाने लगती है। सारांश यह कि यहाँ पूर्णतः वह व्यवस्था पाई जाती है जो धरती पर मनुष्य के आबाद रहने के लिए अभीष्ट है। उसकी ज़रूरत की समस्त वस्तुयें यहाँ पर्याप्त मात्रा में पाई जाती हैं। फिर मनुष्य को बुद्धि और सूझ-बूझ भी दी गई है जिससे काम लेकर वह तरह-तरह के अनुसन्धान करता है और प्राकृतिक शक्तियों को अधिक-से अधिक उपयोगी बनाता है। परन्तु सवाल यह है कि क्या मनुष्य की शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकतायें ही उसकी सबसे बड़ी आश्यकतायें हैं। ऐसा कदापि नहीं है। मनुष्य केवल शरीर ही नहीं रखता उसे आत्मिक दृष्टि भी मिली है। उसे केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से सन्तोष नहीं हो सकता। उसकी कुछ आवश्यकतायें और भी हैं, जब तक मनुष्य की वे आवश्यकतायें पूरी न हों उसे शान्ति नहीं मिल सकती और न उसका जीवन सफल हो सकता है।

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उसे बताया जाये कि वह क्या है? संसार में वह कहां से आया है? और उसे कहां जाना है? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? वह मार्ग कौन सा है जिस पर चलकर वह अपने जीवन को सफल बना सकता है? वे नियम और सिद्धान्त कौन से हैं जिनका पालन करना उसका परम कर्त्तव्य है? उसे अपने जीवन में किन कामों से बचना चाहिए और वे शुभ कर्म कौन से हैं जिनके बिना मनुष्य का साधना पूरी नहीं हो सकती?

जीवन सम्बन्धी इन आधारभूत प्रश्नों का जब तक ठीक-ठीक उत्तर न मिल जाये, मनुष्य अज्ञान के अन्धकार में ही भटकता रहता है[1]। इन प्रश्नों का उत्तर हमें किसी पर्वत-शिखर पर अंकित दिखाई नहीं देता जिसे पढ़कर हम जान सकें कि सृष्टि की अन्तिम सत्ता क्या है? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है? जिस सृष्टि-कर्त्ता ने मनुष्य को पैदा किया, उसके लिए समस्त जीवन-सामग्री संचित की, जिसकी दयालुता नें उसके लिए जल, प्रकाश, वायु आदि का प्रबन्ध किया उस दयावन्त के बारे में यह कैसे सोचा जा सकता है कि वह मनुष्य को पैदा करके यों ही उसे अंधेरे में भटकने के लिए छोड़ देगा। उसके पथ-प्रकाश का कोई प्रबन्ध न करेगा। जब वह हमारी छोटी-छोटी ज़रूरतों को नहीं भूलता, तो हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत को वह कैसे

---

१. अज्ञान के अन्धकार में मानव-आत्मा की क्या दशा होती है इसका अन्दाज़ा डेविड ह्यूम (David Hume) की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है। वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Treatise on Human Nature में लिखता है:

"मैं कहाँ हूँ और क्या हूँ? किस स्रोत से मेरा जीवन प्रवाहित होता है और यह कहाँ जायेगा? किसकी कृपा की मुझे लालसा होगी और किसके प्रकोप का मुझे भय है? मेरे चारों ओर यह क्या है? किस पर मैं प्रभाव रखता हूँ या कौन मुझ पर प्रभाव रखता है? मेरे चारों ओर ये प्रश्न उठने लगते हैं और मैं अत्यन्त नैराश्यपूर्ण अवस्था में सोच में पड़ जाता हूँ। मेरे चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार छा जाता है और मेरी मानसिक शक्ति और सारे अंग शिथिल हो जाते हैं।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूल जायेगा। मानव-इतिहास साक्षी है कि अल्लाह ने आरम्भ से ही मानव-जाति को वास्तविकता का ज्ञान प्रदान करने के लिए 'वह्य' और 'रिसालत' का सिलसिला जारी किया। मानव-जगत में अपने 'नबी' और 'रसूल' भेजे। नबियों को यथार्थ ज्ञान प्रदान करके उन्हें इस महान् कार्य पर नियुक्त किया कि वे लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचायें और उन्हें बतायें कि उनका पैदा करने वाला उनसे क्या चाहता है। 'नबियों' में सबसे अन्तिम 'नबी' हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। आप पर अल्लाह की ओर से जो किताब उतारी गई वह क़ुरआन है। 'वह्य' व 'रिसालत' या क़ुरआन का इन्कार वास्तव में अल्लाह की उस दयालुता का इन्कार है जिसके चमत्कारों की आभा से पृथ्वी और आकाश सभी परिपूर्ण हो रहे हैं। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वह हमारी शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकताओं को पूरी करे परन्तु हमारी वास्तविक और सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति का वह कोई प्रबन्ध न करे। यह कैसे सम्भव है कि शारीरिक विकास के लिए तो उसके पास सामग्री हो परन्तु मनुष्य के आत्मिक विकास और उसके मार्ग-दर्शन के लिए उसके पास कुछ न हो। क़ुरआन का इन्कार करने के बाद मनुष्य के पास वास्तविकता (Reality) के बारे में अटकल और अनुमान के अतिरिक्त और क्या रह जाता है ? और अटकल और अनुमान कभी वास्तविक ज्ञान का काम नहीं दे सकते।

सोचने की बातें

क़ुरआन के बारे में जो कुछ कहा गया है उससे आपको अनुभव हुआ होगा कि क़ुरआन कोई साधारण किताब नहीं है जिसे मानना या न मनाना और जिसकी शिक्षाओं पर विचार करना या न करना मानव-जीवन में कोई विशेष महत्व न रखता हो। क़ुरआन अल्लाह के आदेशों के नवीनतम (Latest) संग्रह के रूप में हमारे सामने आता है। 'क़ुरआन' में क़ुरआन के अपने बयान के अनुसार ज्ञान एवं कर्म की वे समस्त बातें पाई जाती हैं जो पिछली आसमानी किताबों में पाई जाती थीं और जो मानव-कल्याण के लिए अब भी अभीष्ट हैं। जिसने क़ुरआन का अध्ययन कर लिया मानो उसने समस्त आसमानी किताबों का अध्ययन कर लिया चाहे उनकी भाषा कोई भी रही हो और चाहे वे किसी भी देश या जाति में उतरी हों। जो क़ुरआन को मानने से इन्कार करता है वह क़ुरआन का ही इन्कार नहीं करता बल्कि वास्तव में वह सभी आसमानी किताबों का इन्कार करता है। क़ुरआन के अतिरिक्त संसार में और बहुत-से धार्मिक ग्रन्थ पाये जाते हैं परन्तु प्रमाणित रूप में आज केवल क़ुरआन ही मौजूद है। कितनी ही किताबें तो ऐसी हैं जो अल्लाह की ओर से उतरी थीं परन्तु वे आज अपने असली रूप में नहीं हैं। उनमें बहुत कछ परिवर्तन हो चुका है। और कितनी किताबें ऐसी हैं जिनके बारे में निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि अल्लाह की ओर से उतरी थीं। बाइबिल की तरह इन किताबों में भी बहुत-सी परस्पर विरोधी बातें पाई जाती हैं। क़ुरआन समस्त धार्मिक ग्रन्थों के लिए कसौटी है क़ुरआन के द्वारा हम भली-भाँति इसका निर्णय कर सकते हैं कि उनमें कितना सत्य है और कितना असत्य है। कहाँ उनमें सत्य के स्थान को असत्य ने, न्याय के स्थान को पाप और अन्याय ने, पवित्रता और सदाचार के स्थान को अश्लीलता और दुर्व्यवहार ने ग्रहण कर लिया है। उनकी परस्पर विरोधी बातों में हम क़ुरआन के द्वारा निर्णय कर सकते हैं कि उनमें कौन-सी बात सत्य हो सकती है और कौन-सी बात सत्य के प्रतिकूल है।

क़ुरआन की शिक्षा अत्यन्त स्पष्ट और व्यापक है। क़ुरआन लोगों को एक अल्लाह की बन्दगी की की ओर बुलाता है। उसका सन्देश यही है कि लोगो ! उसी अल्लाह की बन्दगी और उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया है और जो सारे संसार का मालिक और स्वामी है। जीवन के प्रत्येक मामले में उसी के दिये हुए आदेशों का पालन करो।, ऐसा करोगे तो दोनों लोक में तुम्हारे लिए भलाई है। संसार से बिगाड़ दूर होगा और मरने के बाप आखिरत में तम्हें ऐसी सदाबहार 'ज न्नतों' में बसाया जायेगा, जहाँ न कोई दुःख होगा न भय होगा। परन्तु यदि तुम अल्लाह का नाता तोड़ते हो या उसके साथ दूसरे देवी-देवताओं को ईश्वरत्व में साझी समझते हो; 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) को छोड़कर 'शिर्क' एवं बहुवाद का मार्ग ग्रहण करते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो तो न तो संसार में तुम वास्तविक सुख और शान्ति पा सकते हो और न 'आख़िरत' में ही तुम्हारे लिए कोई सुख का स्थान है। बल्कि वहाँ तुम्हें 'जहन्नम' की दहकती हुई अग्नि में डाल दिया जायेगा, जिसमें सदैव तुम्हें जलते रहना होगा। अल्लाह के अज़ाब से बच निकलना सम्भव नहीं। क़ुरआन का कहना है कि यही समस्त पिछली आसमानी किताबों की शिक्षा रही है, समस्त ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थों में एकेश्वरवाद की शिक्षा दी गई थी। और 'शिर्क' से लोगों को रोका गया था परन्तु आज जब हम पिछली किताबों का अध्ययन करते हैं तो उनमें हमें बहुत कुछ विगाड़ दिखाई देता है। लेकिन इसके बावजूद हमें उनमें ऐसे स्पष्ट चिह्न मिलते हैं जिनसे क़ुरआन के इस बयान की पुष्टि होती है। 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही वास्तव में सनातन से मानव-जाति का प्रमाणिक एवं ईश-स्वीकृति धर्म रहा है।[1] प्राचीन ग्रंथों में 'तौहीद' का स्पष्ट उल्लेख इस बात का पता देता है कि 'तौहीद' की शिक्षा कोई नवीन शिक्षा नहीं बल्कि यही 'तौहीद' समस्त 'नबियों' की शिक्षाओं का सार और आधार-शिला रही है 'शिर्क' (बहुदेववाद) और अनेकेश्वरवाद की जो प्राचीन बातें गन्थों में पाई जाती हैं, वे लोगों की अपनी गढ़ी हुई हैं। अल्लाह ने कदापि 'शिर्क' का आदेश नहीं दिया था और न 'तौहीद' की शिक्षा से 'शिर्क' का कोई जोड़ है।

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी 'तौहीद' की झलक मिलती है, यह इस बात का खुला प्रमाण है कि क़ुरआन जिस चीज़ की ओर लोगों को आमन्त्रित कर रहा है वह भारतवासियों के लिए भी कोई पराई चीज़ नहीं है। क़ुरआन यदि अल्लाह की 'किताब' है तो उससे फ़ायदा उठाने और उसे अपनी किताब कहने का अधिकार समान रूप से अल्लाह के सारे बन्दों को है। 'शिर्क' तो विकृत मस्तिष्क की उपज है। 'शिर्क' जब मन और मस्तिष्क पर अपनी जड़ जमा लेता है तो फिर उसका प्रदर्शन विभिन्न रूपों में होने लगता है, मनुष्य इतना गिर जाता है कि ख़ालिस 'तौहीद' की बात उसके मन में बैठती ही नहीं। गौतम बुद्ध से पूर्व हिन्दू धर्म की ईश्वर-सम्बन्धी कल्पनाओं ने जो रूप धारण कर लिया था उसपर प्रकाश डालते हुए डॉ० राधाकृष्णन ने लिखा है :

"गौतम बुद्ध के समय में जो धर्म देश पर छाया हुआ था, उसकी प्रत्यक्ष रूप-रेखा यह थी कि लेन-देन का एक सौदा था जो ईश्वर और मनुष्य के बीच ठहर गया था जबकि एक ओर उपनिषद् का ब्रह्म था जो 'ईश्वरत्व' की एक उचित और उच्चतम कल्पना प्रस्तुत करता था, तो दूसरी ओर अगणित प्रभुओं का समूह था जिनके लिए कोई सीमा भी निर्धारित नहीं की जा सकती थी। आकाश के नक्षत्र, पदार्थ के तत्त्व, पृथ्वी के वृक्ष, वन के पशु, पर्वतों की चट्टानें, नदियों के बहाव; सारांश यह कि सृष्टि का कोई प्रकार ऐसा न था जो ईश्वर के राज्य में शरीक न ठहरा लिया गया हो, मानो एक स्वच्छन्द और अपने-आप उगी हुई भावना को आज्ञा-पत्र मिल गया था कि संसार में जितनी वस्तुओं को ईश्वरीय सिंहासन पर बिठाया जा सकता है बेरोक-टोक बिठाते रहें, फिर जैसे प्रभुओं की यह भीड़ भी इस ईश-गढ़न की अभिरुचि के लिए यथेष्ट न हुई हो, भाँति-भाँति के असुर और विचित्र देह की कल्पित आकृतियों का भी उनपर परिवर्द्धन होता रहा। इसमें सन्देह नहीं

---

१. उदाहरणार्थ दे० बाइबिल, 'ख़ुरूज' (Ex.) २०:३-७; ३४:१४-१८; इस्तिसना (Deut.) ६:४-६; १०:२०-२१; २ सलातीन (Sec. the kings) २३:३; हज़क़ियाल (Eze-kiel) ६:६; मत्ता (Matt.) २२:३५-४०।

वेद इतिहास काल से पहले (Pre historical age) के ग्रंथ हैं। बहुत-से ब्रह्मवादी हिन्दुओं का विचार है कि वेद ईश्वरीय ग्रंथ है। वेदों में भी बहुत-से परिवर्तन हुए हैं। दे० (Hinduism Page 90 by Govind Das)। समय के उलट-फेर और इन परिवर्त्तनों के बाद भी वेदों में एकेश्वरवाद के स्पष्ट चिह्न पाए जाते हैं। दे० ऋग्वेद १०-१२१-४; ८-१-१; ६-४५-१६; १-१२१-१०; १-१६४-२०; १-५२-१४; यजु० ३६-३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

• CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि उपनिषद् ने चिन्तन एवं विचार के लोक में इन वस्तुओं की प्रभुता छिन्न-भिन्न कर दी थी; परन्तु व्यवहार क्षेत्र में इन्हें नहीं छोड़ा गया। ये बराबर अपनी प्रभुता के सिंहासन पर जमे रहे[१]।"

यह मनुष्य की दुर्बलता ही है कि जब वह अन्ध-विश्वास (Superstition) और शिर्क आदि के रोगों में ग्रस्त हो जाता है तो फिर वह गिरता ही चला जाता है यहाँ तक कि बुद्धि से स्वतन्त्रतापूर्वक काम लेने की क्षमता उसमें शेष नहीं रहती। सत्य की सीधी और सहज बात समझने में वह असमर्थ रहता है। 'क़ुरआन' सत्य को स्पष्ट और पूर्ण रूप में सम्पूर्ण मानव-जाति के समक्ष प्रस्तुत करता है। और लोगों को उस धर्म की ओर आमन्त्रित करता है जो वास्तव में सदैव से मानव का वास्तविक धर्म रहा है। और जिसके चिह्न आज भी प्राचीन ग्रन्थों, शिला-लेखों और प्राचीन अवशेषों में पाये जाते हैं।

क़ुरआन से पहले बहुत-सी आसमानी किताबें उतर चुकी हैं परन्तु क़ुरआन के बाद अब कोई किताब उतरने वाली नहीं है और न हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बाद अब कोई नया नबी आनेवाला है। क़ुरआन 'अल्लाह' की किताब है या नहीं यह एक गंभीर प्रश्न है इस पर विचार करना हमारा परम कर्तव्य है। यदि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है और हमने उसे स्वीकार न किया तो इसका परिणाम भयंकर रूप में हमारे सामने आयेगा। हम सांसारिक जीवन में उसके प्रकाश और मार्ग-दर्शन से वञ्चित रह जायेंगे और 'आख़िरत' में, जिसके आने की सूचना क़ुरआन ने दी है, हम ऐसे दुखदायिनी यातना के भागी ठहरेंगे जिससे छुटकारा पाना हमारे लिए असंभव होगा।

यदि हम अपना हित चाहते हैं तो हम हर प्रकार के पक्षपात से हट कर यह निर्णय करें कि 'क़ुरआन' ईश्वरीय वाणी है या नहीं। और यदि हम अध्ययन, विचार और अनुशीलन के पश्चात् इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि क़ुरआन किसी मनुष्य की रचना नहीं है बल्कि वास्तव में वह अल्लाह की किताब है जिसको अल्लाह ने मनुष्य की 'हिदायत' (Guidance) के लिए उतारा है तो फिर न्याय और बुद्धिमत्ता की बात यही है कि हम उसे अल्लाह को किताब मानें और उसके आदेशों और शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करें। और अपने दूसरे भाइयों को भी भलाई और कल्याण के वास्तविक स्रोत से परिचित करायें ताकि उन्हें भी अपने कर्तव्यों का ज्ञान हो सके। इस लोक में वे उस काम के लिए खड़े हो सकें जो शुभ काम उनसे उनका पालनकर्त्ता (अल्लाह) लेना चाहता है। वे अपने वर्त्तमान जीवन को सफल बना सकें और भविष्य ('आख़िरत) में उन्हें सुख और आनन्द प्राप्त हो सके और अल्लाह की यातना से वे अपने-आप को बचा सकें।

---

१. Indian Philosophy भाग १ पृष्ठ ४५३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुरआन के

कुछ प्रमुख विषयों की सूची

मुहम्मद अब्दुल हई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—अल्लाह

सत्ता और गुण, सब कुछ जानने वाला, बड़ा उदार, क्षमा करने वाला, करुणामय और कृपाशील, सर्वशक्तिमान और शासक, स्रष्टा, 'रब' (पालनकर्त्ता), बन्दों पर उसके उपकार, अल्लाह के अस्तित्व और उसके एक होने की दलीलें, अल्लाह के अलावा कोई इलाह (उपास्य) नहीं।

२—मुहम्मद (सल्ल०)

चरित्र व आचरण, वे भी एक मनुष्य थे, ज़िम्मेदारी, सत्य मार्ग की कठिनाइयाँ, आप पर 'ईमान', आपका आज्ञापालन, आप पर अल्लाह की विशेष कृपायें।

३—क़ुरआन

विशेषताएं, ईश ग्रन्थ होने की दलील, क़ुरआन पर 'ईमान'।

४—'आख़िरत'

आदमी की मौत, मौत के बाद, उठाया जाना और 'क़ियामत' का आना, मरने के बाद के जीवन का ज़रूरत और उसका प्रमाण, हिसाब-किताब, 'आख़िरत' को न मानने के नतीजे, आख़िरत' की विवशता, 'जहन्नम' 'जन्नत'।

५—'इबादतें'

'नमाज़', 'ज़कात', 'रोज़ा', 'हज्ज'।

६—सदाचरण और समाज व्यवहार

नैतिक दोष जो क़ुरआन मिटाना चाहता है, नैतिक गुण जो क़ुरआन पैदा करना चाहता है, माता-पिता और नातेदारों के हक़, यतीमों, मुहताजों और पड़ोसियों के हक़, पति-पत्नी के हक़ और आदर्श रहन-सहन, उठने-बैठने के तरीक़े।

७—राजनीति

मौलिक दृष्टिकोण, सम्प्रभुत्व, क़ानून और आज्ञापालन, खिलाफ़त, मन्त्रणा परिषद और राज्य के ज़िम्मेदार, संविधान के मूल सिद्धान्त, राज्य की धारणा, मूल अधिकार, विदेशी राजनीति।

८—'जिहाद'

अल्लाह की राह में किये गये 'जिहाद' की वास्तविकता और आवश्यकता, 'जिहाद' की महत्ता, अन्याय और अत्याचार का उत्तर, सत्य मार्ग की रक्षा, छल-कपट की सज़ा, भीतरी शत्रुओं का उन्मूलन, शान्ति की रक्षा, सताये हुए मुसलमानों की हिमायत, सामान्य मानुषिक कल्याण की स्थापना, फ़ितना व फ़साद का दमन।

९—'नबियों' के हालात

हज़रत आदम अ०, हज़रत नूह अ०, हज़रत इदरीस अ०, हज़रत हूद अ०, हज़रत सालेह अ०, हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इस्माईल अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत लूत अ०, हज़रत याक़ूब अ०, हज़रत यूसुफ़ अ०, हज़रत शुऐब अ०, हज़रत मूसा अ०, हज़रत हारून अ०, हज़रत दाउद अ०, हज़रत सुलैमान अ०, हज़रत अय्यूब अ०, हज़रत यूनुस अ०, हज़रत ज़करिया अ०, हज़रत ईसा अ०।

१०—दीन एक ही है

११—क़ुरआन में 'ईमान' वालों का चित्र

१२—दुआएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१. अल्लाह

१. सत्ता और गुण

१ : १-३[1]	कृपाशील व दयावन्त (रह़मान व रह़ीम), न्याय के दिन का मालिक।
२ : १०७	धरती और आकाश का सम्राट।
२ : ११५, ११६	पूरब और पच्छिम का स्वामी, धरती आकाश का पैदा करने वाला।
२ : १३९	हमारा और तुम्हारा 'रब'।
२ : १६३	अकेला 'इलाह़' (इष्ट पूज्य), दयावन्त व कृपाशील।
२ : २५५	सजीव (Alive) और चिरस्थायी, सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला। धरती और आकाश का स्वामी।
३ : २-६	सजीव (Alive) और चिरस्थायी, सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला।
३ : २६, २७	सम्राट, सम्मानित व अपमानित करने वाला।
४ : ८७	अकेला इलाह़ (पूज्य), बात का सच्चा।
६ : १२-१८	दयालुता दर्शाने वाला, खिलाने-पिलाने वाला, संकट को दूर करने वाला, अपने बन्दों को वश में रखने वाला।
६ : ६२	वास्तविक उपास्य, तेज़ हिसाब लेने वाला।
६ : ९५, ९६	बीज और गुठली को फोड़ने वाला। प्रभात का फाड़ निकालने वाला।
७ : १५८	आकाश और धरती का बादशाह़, जीवन-मरण का स्वामी।
९ : १२९	उसके सिवा कोई 'इलाह़' (पूज्य) नहीं, बड़े राज-सिंहासन का स्वामी।
१० : ५५, ५६	आकाश और धरती का मालिक, जिलाने और मारने वाला।
११ : १२३	आकाश और धरती की छिपी हुई चीज़ों को जानने वाला, सारा मामला उसी की ओर पलटता है।
१३ : ६	क्षमा करने वाला और बड़ा दण्ड देने वाला।
१३ : ९	छिपी बातों को जानने वाला, महान् और उच्च।
१३ : ४१	जैसा चाहे हुक्म दे, जल्द हिसाब लेने वाला।
१६ : ७७	धरती और आकाश की छिपी बातों को जानने वाला। हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला।
१७ : १११	उसके कोई बेटा नहीं, उसके राज्य में कोई शरीक नहीं।
१९ : ६४	सब कुछ जानता है, वह भूलता नहीं।
२० : ४-८	धरती और आकाश का पैदा करने वाला और मालिक, छिपे और खुले का जानने वाला, अच्छे नामों वाला।
२० : ५०	हर चीज़ को रूप प्रदान करने वाला, राह दिखाने वाला।
२० : ११०, १११	मनुष्य की ज्ञान-सीमाओं से परे, ज़िन्दा और क़ायम।
२२ : ५८-६६	उत्तम रोज़ी देने वाला, जानने वाला, क्षमा करने वाला आदि।
२२ : ७८	सर्वोत्तम संरक्षक मित्र और सर्वोत्तम सहायक।

---

१. पहला अंक सूरा का नम्बर है। उसके बाद आयतों के नम्बर दिये गये हैं। सूरा का नम्बर हर पृष्ठ पर मिलेगा। 'आयतों' के नम्बर किनारों पर देखिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३ : १७	उसने जो कुछ पैदा किया है वह उससे ग़ाफ़िल नहीं।
२३ : ७८-८०	कान-आँख और दिल देने वाला, जिलाने और मारने वाला।
२३ : ८४-८९	ज़मीन और उसकी हर चीज़ का मालिक, सात आकाशों और 'अर्श' का रब, हर चीज़ का बादशाह।
२३ : ११६	बादशाह, ऊँची शान वाला। अकेला इलाह (इष्ट पूज्य) अर्श का रब।
२४ : ३५	धरती और आकाश का प्रकाश।
२५ : २	धरती और आकाश का मालिक, कोई उसका शरीक नहीं।
२५ : ५९	धरती और आकाश का पैदा करने वाला, कृपाशील।
२६ : २४-२८	आकाश और धरती, तुम और तुम्हारे बाप-दादा पूर्व और पश्चिम सबका रब।
२७ : २५, २६	धरती और आकाश की छिपी चीज़ों को प्रकट करने वाला, सब कुछ जानने वाला अकेला 'इलाह', बड़े राजसिंहासन का 'रब'।
२८ : ६८-७०	जो चाहे पैदा करे, दिलों का भेद जानने वाला, प्रशंसा (हम्द) उसी के लिए है।
२८ : ८८	उसके सिवा हर चीज़ मिटने वाली है, हुक्म उसी का है।
२९ : १९	पहली बार और बार-बार पैदा करने वाला।
३० : ६	अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता।
३० : ११	पहली बार और बार-बार पैदा करने वाला।
३० : ४०	पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, जिलाने और मारने वाला।
३१ : १६	हर छोटी से छोटी चीज़ को जानने वाला और ख़बर रखने वाला।
३२ : ६-८	खुली और छिपी बातों को जानने वाला, जिसने हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह बनाया।
३४ : १, २	प्रशंसा उसी के लिए है, सब कुछ जानता है, 'हिकमत' वाला, दयावान और क्षमा करने वाला।
३४ : २१	हर चीज़ पर निगाह रखने वाला।
३४ : २३-२६	उच्च, भली प्रकार निर्णय करने वाला और ज्ञानवान।
३५ : १,२	आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला, अपार शक्ति का मालिक, तत्वदर्शी।
३६ : ८३	पवित्र सत्ता, जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है।
३७ : ४,५	अकेला 'इलाह' (पूज्य), आसमानों का, ज़मीन का और जो-कुछ उनके बीच में है, और पूर्वों का स्वामी, इज़्ज़त का मालिक।
३७ : १८०	इज़्ज़त का मालिक।
३८ : ६६	आकाशों, धरती और जो-कुछ इनके बीच में है सबका 'रब', अकेला और प्रभुत्वशाली।
३९ : ६	राज्य उसी का है, उसके सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं।
३९ : ६२, ६३	हर चीज़ का पैदा करने वाला, हर एक का संरक्षक, धरती और आकाश की कुंजियां उसी के पास हैं।
३९ : ६७	'क़ियामत' के दिन सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी।
४० : २,३	अपार शक्ति का मालिक, सब-कुछ जानने वाला, पापों (गुनाहों) का क्षमा करने वाला।
४० : १५	ऊँचे दरजों का मालिक और 'अर्श' (सिंहासन) वाला।
४० : १९,२०	आँखों की चोरी और सीने के भेद जानता है, (सबकुछ) सुनने वाला और देखने वाला।
४१ : ४३	क्षमा कर देने वाला और दुखदायिनी यातना देने वाला।
४१ : ५३, ५४	हर चीज़ से सूचित, हर चीज़ को घेरे हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२ : ६	काम बनाने वाला, मरे हुओं को जिलाने वाला।
४२ : ११,१२	उस जैसी कोई चीज़ नहीं, आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं।
४२ : १६	अपने बन्दों पर मेहरबान, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
४२ : २४-३१	झूठ को मिटाता है, 'तौबा' क़बूल करता है, निराशा के बाद वर्षा करता है।
४२ : ४६-५१	जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे।
४३ : ८४, ८५	आसमानों में भी 'इलाह' (पूज्य) और ज़मीन में भी, 'क़ियामत' का ज्ञान उसी को है।
४४ : ६-८	उसके सिवा कोई 'इलाह' नहीं' तुम्हारा और तुम्हारे बाप-दादा का 'रब'।
४५ : ३६, ३७	आकाशों और धरती का 'रब,' पूरे संसार का 'रब'।
४८ : १४	आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, क्षमा करनेवाला, दयावन्त।
५१ : ५८	रोज़ी देने वाला, बलवान और दृढ़।
५३ : ४३-५३	वह हँसाता और रुलाता है, मारता और जिलाता है, धनी और धनहीन बनाता है।
५४ : ५५	हर प्रकार का सामर्थ्य रखनेवाला बादशाह।
५५ : ७८	प्रताप, प्रतिष्ठा और बरकत वाला।
५७ : १-६	अपार शक्ति का मालिक, तत्वदर्शी, सबसे पहला (आदि), सबसे पिछला (अन्त), व्यक्त और अव्यक्त, दिलों के भेद जानने वाला।
५६ : २२-२४	खुले और छिपे का जाननेवाला, कृपाशील, दयावान, बादशाह और हर त्रुटि से पाक, शन्ति प्रदान करनेवाला, संरक्षक, पैदा करने वाला आदि।
६२ : १	उच्च तत्वदर्शी।
६४ : १	राज्य उसी का है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान) है।
६५ : १२	सात आकाश पैदा किये और वैसे ही धरती, उसका ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।
७२ : ३	उसकी कीर्ति बहुत बड़ी है, वह न पत्नी रखता है, न बच्चे।
७३ : ६	पूरब और पश्चिम का मालिक।
८५ : १२-१६	उसकी पकड़ सख्त है, क्षमाशील और दया करने वाला, जो चाहे कर देता है।
८७ : १-५	बड़ी कीर्ति वाला, जिसने पैदा किया, सँवारा और रास्ता दिखाया।
६५ : ८	सबसे बड़ा हाकिम।
११२ : १-४	वह एक है, अनपेक्ष, न किसी का बाप, न किसी का बेटा।
११४ : १-३	'इलाह' (इष्ट पूज्य), वास्तविक सम्राट और 'रब' (पालन कर्त्ता एवं स्वामी)।

(२) सबकुछ जानने वाला

२ : २६	वह सब-कुछ जानता है।
२ : ३०-३३	अल्लाह का ज्ञान 'फ़िरिश्तों से ज्यादा है।
२ : ७४-७७	अल्लाह तुम्हारे कामों से बेखबर नहीं।
२ : ६६	जो तुम करो, अल्लाह देख रहा है।
२ : २३५	तुम्हारे दिलों का हाल अल्लाह को मालूम है।
३ : ५	अल्लाह से धरती और आकाश की कोई चीज़ छिपी हुई नहीं।
३ : २६	तुम अपने मन की बात ज़ाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह जानता है।
६ : ३	तुम्हारी छिपी और खुली सब बातें जानता है।
६ : ५६	उसके पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ : ८०	अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।
१० : ६१	तुम जिस हाल में होते हो और जो कुछ करते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं, उससे छोटी बड़ी कोई चीज़ छिपी हुई नहीं।
११ : ५	वह इनकी खुली और छिपी बातों को जानता है, दिलों के भेद तक उसे मालूम हैं।
११ : १२३	आकाशों और धरती की छिपी चीज़ों का ज्ञान अल्लाह को है, वह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं।
१३ : ८-१०	गर्भ में क्या है, चुपके से बात हो या ज़ोर से, दिन में हो या रात में, सब अल्लाह को मालूम है।
१३ : ४२	प्रत्येक प्राणी जो कुछ कर रहा है, सब अल्लाह को मालूम है।
१५ : २४	जो लोग गुज़र चुके और जो आनेवाले हैं, अल्लाह उन सबके हालात जानता है।
१६ : १९	जो तुम छिपाते हो, और जो तुम ज़ाहिर करते हो, उसे अल्लाह जानता है।
१८ : २६	आकाशों और धरती की छिपी हुई बातें जानता है।
२० : ७	छिपे भेद उसे मालूम हैं।
२० : ११०	जो आगे है और जो पीछे है, वह सब जानता है।
२२ : ७०	धरती और आकाश में जो-कुछ है, वह उसे जानता है, यह बात अल्लाह के लिए सरल है।
२७ : ७४, ७५	तेरा 'रब' जानता है जो ये सीनों में छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं।
३१ : २३	वह दिलों की बातें जानता है।
३१ : ३४	'क़ियामत' का ज्ञान उसी को है, गर्भ में क्या है, कल तुम क्या करोगे और कहाँ मरोगे, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : २	धरती में क्या प्रवेश होता है और क्या बाहर आता है, आकाश से क्या उतरता है और उसमें क्या चढ़ता है, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : ३	धरती और आकाश का कोई कण भी उससे छिपा हुआ नहीं है।
३५ : ११	कोई मादा गर्भवती होती है या जनती है, अल्लाह को उसका ज्ञान है।
३५ : ३८	धरती और आकाश की छिपी बातें और दिलों के भेद को जानता है।
४१ : ४७	'क़ियामत' का ज्ञान उसी को है।
४७ : १९	तुम्हारी चलत-फिरत सब उसे मालूम है।
५० : १६	वह मनुष्य की प्राण-नाड़ी से भी बहुत क़रीब है।
५८ : ७	हर तीन के साथ चौथा और हर चार के बाद पाँचवाँ अल्लाह होता है। वह सब-कुछ जानता है।
६४ : ४	आकाशों और धरती में जो-कुछ है और तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब मालूम है।
६५ : १२	अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।
६७ : १३	तुम बात छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह दिलों के भेद तक जानता है।
७२ : २६-२८	'ग़ैब' का जानने वाला है और हर चीज़ को उसने गिन रखा है।

(३) बड़ा उदार

२ : २३५	अल्लाह क्षमा करनेवाला और सहनशील है।
१० : ११	अगर अल्लाह लोगों की बुराई में जल्दी करता, तो उनका समय पूरा हो चुका होता।
१६ : ६१	अल्लाह लोगों के अत्यचार पर उन्हें एक निश्चित समय तक मुहलत देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ : ५८	अल्लाह लोगों के करतूतों पर उन्हें तुरन्त पकड़ने लगे, तो उनपर झट यातना भेज दे।
३५ : ४५	अगर लोगों के कर्मों पर उनकी पकड़ तुरन्त हो जाये, तो ज़मीन पर अल्लाह किसी चलने वाले को न छोड़े।

(४) क्षमा करनेवाला

२ : ३१	वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।
२ : ३७	वह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १६०	बड़ा क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १७३	अल्लाह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १८७	उसने क्षमा किया।
४ : ४३	वह नर्मी से काम लेने वाला और क्षमा करने वाला है।
४ : ११०	बुरा काम करने वालों को भी अल्लाह क्षमा कर देता है।
६ : ५४	अल्लाह ने दया को अपने ऊपर अनिवार्य ठहरा लिया, वह क्षमा करन वाला दयावन्त है।
१३ : ६	तेरा रब क्षमा करने वाला है।
१५ : ४९	मेरे बन्दों से कह दो कि मैं बड़ा क्षमाशील और दयावन्त हूँ।
२० : ८२	जो 'तौबा' करे, ईमान लाये, नेक काम करे, मैं उसे क्षमा कर देने वाला हूँ।
३३ : ७३	अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान् है।
३९ : ३५	अल्लाह बुराइयों को दूर कर देता है।
३९ : ५३	मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है, अल्लाह की दयालुता से निराश मत हो।
४० : ३	वह गुनाहों का क्षमा करने वाला और 'तौबा' क़बूल करने वाला है।
४२ : २५	वह बन्दों की 'तौबा' क़बूल करता है और उनकी ग़लतियों को क्षमा करता है।
४२ : ३०	वह बहुत-से गुनाहों को क्षमा कर देता है।
५३ : ३२	तेरा 'रब' अत्यन्त क्षमाशील है।

(५) करुणामय और कृपाशील

१ : २	अत्यन्त कृपाशील और दयावन्त।
२ : १०५	अल्लाह बड़ी कृपा करने वाला है।
२ : १४३	अत्यन्त कृपाशील और दयावन्त है।
२ : १८६	पुकारने वाले की पुकार सुनता है।
२ : २०७	अल्लाह बन्दों पर बड़ी दया दर्शाता है।
२ : २५१	अल्लाह संसार वालों पर बड़े फ़ज़्ल वाला है।
२ : २८६	अल्लाह किसी पर उसकी समाई से बढ़ कर ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं डालता।
४ : २९	अल्लाह तुम पर दयावान् है।
४ : १४७	अल्लाह बड़ा गुणग्राहक और जानने वाला है।
६ : ५४	तुम्हारे 'रब' ने अपने ऊपर दयालुता को अनिवार्य कर लिया।
६ : १४७	तुम्हारा 'रब' व्यापक दयालुता वाला है।
७ : १५६	उसकी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है।
११ : ६१	मेरा 'रब' निकट है और दुआओं का क़बूल करन वाला है।
११ : ९०	मेरा रब दयावन्त और प्रेम करने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ : ५६	हम जिस पर चाहते हैं अपनी दया करते हैं।
१२ : ९२	वह अत्यन्त दयावन्त है।
१२ : ८७	अल्लाह की दयालुता से निराश होना 'काफ़िरों' का काम है।
१५ : ५६	अल्लाह की दयालुता से निराश होना गुमराहों का काम है।
२३ : १०९	तू सबसे बढ़कर दयावन्त है।
३३ : ४३	अल्लाह 'ईमान' वालों पर दया दर्शाता है।
३७ : ७५	हम दुआ के कैसे अच्छे क़बूल करने वाले हैं।
४० : ६०	तुम्हारे 'रब' ने कहा, मुझसे दुआ करो, मैं क़बूल करूँगा।
४२ : १९	अल्लाह अपने बन्दों पर दयावन्त है।
४२ : २७,२८	वह अपनी कृपा फैला देता है।
५७ : ९	वह तुम पर स्नेह दर्शाने वाला दयालु है।

(६) सर्वशक्तिमान् और शासक

२ : २०	अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।
२ : १०७	धरती और आकाश का राज्य अल्लाह ही का है।
२ : ११५, ११६	पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह का है, आकाशों और धरती में सब-कुछ उसी का है, सब उसके आज्ञापालक हैं।
२ : १३८	तुम जहां होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा।
२ : १६५	हर तरह की शक्ति अल्लाह ही के लिए है।
२ : २४७	अल्लाह जिसे चाहे, बादशाही दे।
२ : २५३	अल्लाह जो चाहता है करता है।
३ : २६, २७	अल्लाह बादशाही का मालिक है, जिसे चाहे बादशाही दे, सम्मान और अपमान उसी के हाथ में है।
५ : १२०	आकाशों और धरती और जो-कुछ उनमें है, सब पर अल्लाह की बादशाही है।
६ : १३	रात और दिन में जो जीव बसते हैं, सब उसी के हैं।
११ : ५६	धरती पर हर चलने-फिरने वाले की चोटी अल्लाह पकड़े हुए है।
११ : १०७	तेरा 'रब' जो चाहता है, कर देता है।
१२ : २१	अल्लाह का अपने काम पर पूरा अधिकार है।
१२ : ४०	अल्लाह के अलावा किसी का शासन नहीं।
१३ : १३	वह बड़ी शक्ति वाला है।
१६ : ४०	जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो कहता है, हो जा, वह हो जाती है।
२० : ६	आकाशों और धरती में, और इन दोनों के बीच, जो-कुछ है, अल्लाह का है।
२० : ११४	अल्लाह सच्चा बादशाह है उच्च व श्रेष्ठ।
२२ : ६१	रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में।
३२ : २६, २७	वह बंजर भूमि की ओर पानी बहाता है, फिर उससे खेती पैदा करता है।
३५ : १६, १७	अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और नये जीव ला बसाए।
३५ ४१	अल्लाह आकाशों और धरती को थामे रखता है।
३६ : ८०, ८१	उसने हर पेड़ से आग पैदा की, आकाशों और धरती को बनाया, वह बड़ा पैदा करने वाला और जानने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८ : ६५, ६६	आकाशों और धरती और जो-कुछ उसमें है, सब का मालिक।
४३ : ८४	आकाशों और धरती में इलाह' (इष्ट पूज्य) वही है।
३८ : ७	आकाशों और धरती के लश्कर अल्लाह ही के हैं।
५० : ३८	अल्लाह ने आकाश और धरती छः दिन में बनाये और वह थका नहीं।
५४ : ५०	हमारा हुक्म तो आंख की झपकी जैसा है।
६४ : १	वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।
६७ : १	वह अल्लाह बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में बादशाही है।
७४ : ३१	तेरे 'रब' के लश्करों को उसके अलावा और कोई नहीं जानता।
८५ : १६	अल्लाह जो चाहता है करता है।
११४ : २	सब मनुष्यों का बादशाह।

(७) स्रष्टा

२ : २८	तुम बेजान थे, उसने जान डाली, वही मारता है, वही ज़िन्दा करेगा।
२ : ११६, ११७	आकाशों और धरती का पैदा करने वाला, जब कहता है; हो जा, तो हो जाता है।
३ : ६	मां के पेट में, जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप बना देता है।
३ : ४७	जो चाहता है पैदा करता है, कहता है हो जा, तो हो जाता है।
४ : १	उसने तुमको एक व्यक्ति से पैदा किया।
६ : २	उसने तुमको मिट्टी से बनाया।
६ : ९५-१०३	ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दा को जिन्दा से, हर चीज़ का पैदा करने वाला।
१० : ३, ४	आकाश और धरती छः दिन में बनाए, पूर्ण प्रबन्ध वह करता है।
१५ : १६-२३	हमने आकाश में बुर्ज बनाये, धरती में पहाड़ खड़े किये, हम सबके मालिक हैं।
१५ : ८६	तेरा ,रब' सब-कुछ पैदा करने वाला और जानने वाला है।
१६ : ३-८	आकाश और धरती बनाये, मनुष्य को वीर्य्य से पैदा किया, चौपाए, घोड़े और खच्चर पैदा किये और बहुत-सी ऐसी चीज़ें, जिनकी तुम्हें खबर तक नहीं।
२३ : १२-२२	हमने मनुष्य को मिट्टी के सत् से पैदा किया, पहले वीर्य्य फिर मांस का लोथड़ा और हड्डियां, फिर एक नया रूप, अल्लाह सबसे बेहतर पैदा करने वाला और बरकत वाला है, सात आकाश बनाए, आकाश से पानी बरसाया, बहुत-से मेवे पैदा किए, चौपाए जिनमें तुम्हारे लिए बड़े फ़ायदे हैं।
२४ : ४५	हर जानदार को पानी से बनाय।, अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।
२५ : २	हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक अन्दाज़ा ठहराया।
२९ : १९	पहली बार पैदा करता है, फिर बार-बार पैदा करता रहता है।
३० : ५४	उसने तुमको कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर शक्ति दी, फिर कमज़ोरी और बुढ़ापा।
३२ : ४-९	आकाश और धरती छः दिन में बनाए, हर काम की व्यवस्था करता है, हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह बनाया, तुम्हें कान, आंखें और दिल दिए।
३६ : ७९-८१	पहली बार पैदा किया, वह पैदा करने का हर काम जानता है, हरे पेड़ से आग पैदा की।
३७ : ५-११	दुनिया के आकाश को तारों से सजाया, लोगों को चिपकते गारे से पैदा किया।
३७ : ९६	अल्लाह ने तुमको पैदा किया और जो कुछ तुम करते हो उसे भी।
३९ : ५,६	आकाश और धरती पैदा किए, तुमको एक जान से पैदा किया, तुम्हारा जोड़ा बनाया, माताओं के पेट में तुम्हें वही बनाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१ : ४७-४९	आकाश को अपने हाथ से बनाया, धरती को बिछाया, हर चीज़ के जोड़े पैदा किए।
६४ : ३	तुम्हारे रूप बनाए, अच्छे रूप।
६७ : २-५	मृत्यु और जीवन बनाया, ऊपर-तले सात आसमान बनाए, दुनिया के आकाश को तारों से सजाया।

(८) रब (पालनकर्त्ता)

१ : १	पूर्ण सृष्टि का रब (मालिक, स्वामी, पालनेवाला और शासक)।
२ : २१२	जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
६ : १४	वह सबको खाना देता है, किसी से खाना लेता नहीं।
११ : ६	धरती में चलने-फिरने वाले प्रत्येक जीव की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है।
१३ : १६	आकाश और धरती का 'रब'।
१५ : १९-२२	हमने तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई और उनके लिए, जिनके खिलाने का प्रबन्ध तुम नहीं करते।
१७ : २०	तुम्हारे पालनकर्त्ता की बख़्शिश सबके लिए हैं।
१९ : ६५	आकाश और धरती और जो-कुछ उनके बीच है, सबका 'रब'
२४ : ३८	अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
२६ : ७९, ८०	वह खिलाता और पिलाता है।
२९ : ६०	बहुत-से जीव अपनी रोज़ी नहीं उठाये-फिरते, अल्लाह उन्हें और तुम्हें खिलाता है।
२९ : ६२	अल्लाह रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है।
३० : ४०	अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, वही रोज़ी देता है।
३४ : २४	तुमको आकाश और धरती से रोज़ी देता है।
४० : १३	आकाश से रोज़ी उतारता है।
५१ : २२	" " "
४२ : १९	वह अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
५१ : ५८	अल्लाह ही रोज़ी देनेवाला और ताक़त वाला है।
६२ : ११	अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

(९) बन्दों पर उसके उपकार

२ : २२	धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया।
२ : २८	जीवन दिया, मौत देगा और फिर ज़िन्दा करेगा।
२ : ४७-६१	'बनी इसराईल' पर विशेष उपकार।
२ : २५७	अंधेरे से उजाले में लाता है।
३ : १०३	शत्रुओं को मित्र बनाया और भाई-भाई कर दिया।
३ : १६४	अपना पैग़म्बर भेजा।
५ : ३	'दीन' (धर्म) पूर्ण कर दिया।
५ : ६	तुम पर किसी प्रकार की तंगी नहीं करना चाहता, तुम्हें शुद्ध करना चाहता हूँ।
६ : १४१-१४४	बाग़ों को उगाया, फल पैदा किए, बोझा उठाने को चौपाए, आठ क़िस्म के पैदा किए।
७ : १०	धरती में बसाया और रोज़ी जुटाई।
७ : २६	कपड़ा दिया, शर्मगाहों को छिपाने के लिए और शोभा के लिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ : ३२	साज-सज्जा का समान, पाक रोज़ी दी।
८ : ९-१२	'फ़िरिश्ते' भेजकर सन्तोष का साधन जुटाया।
८ : २६	तुम कमज़ोर थे, तुम्हें शक्ति पहुँचाई और पवित्र रोज़ी दी।
१० : ५, ६	सूर्य को ज्योतिर्मय और चांद को रोशन बनाया, दिन-रात की व्यवस्था की।
१० : २२	जंगलों और समुद्रों की सैर कराई।
१० : ५७-६०	अपनी 'हिदायत' भेजी, जो दिल की बीमारियों का इलाज है और 'रहमत' है।
११ . ६१	धरती से पैदा किया और धरती में बसाया।
१४ : ३४	धरती व आकाश पैदा किए, पानी बरसाया, फल और अन्न उगाए। और तुम्हारी ज़रूरत का हर समान जुटाया।
१६ : ५-१८	चौपाए पैदा किए, जिनमें तुम्हारे लिए बहुत से फायदे हैं, और तुम उन्हें खाते हो, पानी बरसाया, खेतियां उगाई; रात-दिन, सूर्य-चन्द्र पैदा किए।
१६ : ५३, ५४	तुम्हें जो नेमतें मिली हैं, सब अल्लाह की ओर से हैं।
१६ : ६५, ६६	आकाश से पानी बरसाया, मुरदा भूमि को ज़िन्दा किया, चौपायों का दूध पिलाया।
१६ : ६७, ६८	खजूर, अंगूर, मेवे और मक्खी के पेट से शहद।
१६ : ७१, ७२	तुम्हारी पत्नियां, बेटे और पोते और पवित्र रोज़ी।
१६ : ७८-८३	तुमको मां के पेट से पैदा किया, कान, आंखें और दिल दिए, रहने को मकान, जानवरों, के ऊन और बाल।
१६ : ८९	ऐसी किताबं उतारी, जिसमें हर चीज़ लिखी हुई है, पूरी की पूरी 'हिदायत' और 'रहमत' (दयालुता)।
१७ : ६६	नदी में नावें चलाई ताकि तुम रोज़ी खोज लो।
१७ : ७०	आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, उसे समुद्रों और शुष्क स्थलों में सवारी दी और पाक रोज़ी।
२२ : ६५, ६६	आकाश से पानी बरसाया, ज़मीन हरी-भरी हो गई, जीवन दिया।
२२ : ७८	धर्म में कोई तंगी नहीं।
२३ : १७-२२	तुम्हारे ऊपर सात आकाश बनाए, आकाश से पानी बरसाया, चौपायों को दूध पिलाया।
२५ : ४७-५०	रात को आराम और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया, वर्षा की शुभ-सूचना देने वाली हवाएँ चलाई।
२५ : ५३-५४	खारी और मीठे पानी के बीच ओट बनाई, मनुष्य को पानी से पैदा किया, वंश और ससुराल के रिश्ते बनाए।
२७ : ७३	अल्लाह लोगों पर कृपा करने वाला है।
२८ : ७३	रात और दिन बनाए, आराम और रोज़ी खोजने को।
२९ : ६७	'हरम' को शन्ति-गृह बनाया।
३१ : २०	आकाश और धरती की हर चीज़ को तुम्हारे वश में कर दिया और अपनी तमाम नमतें पूरी कर दीं।
३१ : ३१	समुद्र में नावें उसकी कृपा से चलती हैं।
३२ : ९	कान, आंखें और दिल दिए।
३२ : २७	बञ्जर भूमि की ओर पानी बहाया और उससे खेती उगाई।
३५ : ३	कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो।
३५ : १२-१३	नदियों से ताज़ा मांस खाते हो, और मोती निकालते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५ : ३९	तुम्हें ज़मीन में उत्तराधिकारी बनाया।
३६ : ३४, ३५	मुरदा भूमि को ज़िन्दा किया, अन्न पैदा किए, बाग़ उगाए, दरिया बहाये।
३६ : ३६	भूमि से उगने वाली हर चीज़ के जोड़े पैदा किये।
३६ : ७२, ७३	तुमको चौपायों का मालिक बनाया, तुम उन पर चढ़ते हो और उनका मांस खाते हो।
३९ : ५-७	तुमको एक जान से पैदा किया, मां की पेट की तीन-तीन अँधियारियों में तुम्हें बनाया।
४० : ६१, ६२	रात आराम के लिए बनाई और दिन रोशन, अल्लाह लोगों पर कृपा करने वाला है।
४० : ८१	चौपाए सवारी और भोजन के लिए और बहुत से फ़ायदों के लिए बनाए।
४२ : ३०-३४	विपत्तियां तुम्हारे ही करतूतों के कारण आती हैं और वह बहुत से पाप क्षमा कर देता है।
४३ : १०-१५	ज़मीन को बिछौना बनाया, पानी बरसाया, मुरदा भू-भाग को ज़िन्दा किया, हर प्रकार के जीव पैदा किए, जिन पर तुम सवार होते हो।
४५ : १२, १३	नदियों पर अधिकार दिया, उसके हुक्म से नावें चलती हैं और तुम रोज़ी ढूंढते हो।
४८ : ४	ईमान वालों के दिल पर तसल्ली उतारी।
५५ : २-२५	'क़ुरश्रान' की शिक्षा दी, बोलना सिखाया, ज़मीन बिछाई, उसमें मेवे, अन्न, सुगन्धित फूल, नदियों से मूँगे और मोती।
५६ : ५८-७४	तुम्हें वीर्य्य से किसने पैदा किया, खेती किसने उगाई, पानी किसने बरसाया, पेड़ किसने लगाए।
५७ : २५	लोहा पैदा किया, उसमें भय भी है और लाभ भी।
६२ : २	अपना पैग़म्बर भेजा, जो अल्लाह की 'आयतें' सुनाए, तुम्हें शुद्ध करे और 'हिकमत' की तालीम दे।
६७ : ५	जगत के आकाश को दीपों से सजाया।
६७ : १५	ज़मीन को नर्म किया, उसके रास्ते में चलो और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ।
६७ : २३, २४	तुम्हें पैदा किया, कान, आंखें और दिल दिए।
७६ : १-३	एक समय मनुष्य वर्णन न करने योग्य एक वस्तु था, उसको सुनता और देखता बनाया और रास्ता दिखाया।
७७ : २०-२८	तुम्हें तुच्छ पानी से बनाया, ज़मीन बनाई, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, मीठा पानी।
७८ : ६-१६	धरती को बिछौना बनाया, पहाड़ों को खूँटे, तुम को जोड़े, नींद को आराम।
७९ : २७-३३	आकाश की छत को ऊँचा किया, रात अँधेरी, दिन को धूप, ज़मीन को फैलाया, पानी निकाला, चारा उगाया।
८० : २४-३२	पानी बरसाया, ज़मीन को फाड़ा, अन्न उगाया, अंगूर-तरकारियां, ज़ैतून, खजूर आदि।
८२ : ६-८	पैदा किया, ठीक-ठाक किया और जिस रूप में चाहा ढाल दिया।
९० : ८-१०	दो आंखें, जिह्वा, दो होंठ, और अच्छाई और बुराई के दोनों रास्ते।
९५ : ४	मनुष्य को सुन्दरतम रूप में पैदा किया।
९६ : २-६	क़लम द्वारा ज्ञान सिखाया, जो कुछ मालूम न था, वह बताया।

(१०) अल्लाह के अस्तित्व और उसके एक होने की दलीलें

२ : १६४	धरती और आकाश का पैदा करना, रात-दिन के उलट-फेर, हवाओं का चलना,
२ : २५८	वह ज़िन्दा करता है और मारता है, सूर्य को पूरब से निकालता है।
६ : १-४	आकाश और धरती को पैदा किया, अँधेरा और उजाला बनाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ : १४-१८	आकाश और धरती का पैदा करने वाला, सबको खिलाता है, खुद नहीं खाता, विपत्तियों को दूर करता है, सब पर छाया हुआ है।
६ : ४०, ४१	अल्लाह का अज़ाब आ जाए तो कौन टाल सकता है।
६ : ६३, ६४	बनों और समुद्रों की अंधियारियों के संकट से कौन तुम्हें बचाता है।
६ : ७५-७९	तारा रब नहीं, वह डूब जाता है, चांद रब नहीं, वह छिप जाता है, सूर्य रब नहीं, वह भी डूब जाता है।
६ : ९५-९६	गुठली को फाड़कर पेड़ बनाता है,……और सूर्य व चन्द्र को दिन गिनने का साधन।
७ : ५४	आकाश और धरती को बनाया, रात को दिन का वस्त्र पहनाता है, चन्द्र, सूर्य सभी उसके वश में हैं।
७ : ५७, ५८	वर्षा से पहले खुशखबरी की हवाएं भेजता है, जो भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं।
७ : १८५	धरती और आकाश की बादशाही, और जो चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं, उन पर नज़र करो।
१० : ३-६	आकाश और धरती को छः दिन में बनाया और पूरा इन्तज़ाम चला रहा है।
१० : २२, २३	वह बन और समुद्र की सैर कराता है और जब तुम तूफ़ान में घिर जाते हो तो उसी को पुकारते हो।
१० : ३१, ३२	तुम्हें ज़मीन और आकाश से वही रोज़ी देता है और पूरा प्रबन्ध कर रहा है।
१२ : १०५, १०६	आकाश और धरती में कितनी निशानियां हैं, जो तुम्हारे सामने आती हैं।
१३ : २	आकाश को बिना स्तम्भ के खड़ा किया, पूरा प्रबन्ध उसी के हाथ में है।
१३ : ३	धरती को फैलाया, पहाड़ खड़े किए और नदियां बहाईं, मेवे पैदा किए।
१३ : ४	एक ही जलवायु में भिन्न- भिन्न प्रकार के फल उगाए।
१३ : १२, १३	वही बिजली चमकाता है जिससे तुम डरते हो और आशाएँ बांधते हो, वह बड़ी शक्तियों वाला है।
१४ : ३२-३४	धरती और आकाश बनाये, पानी बरसाया, फल पैदा किये, जहाज़ों को तुम्हारे वश में कर दिया।
१६ : १०-१८	आकाश से पानी बरसाया, चौपायों के लिए चारा उगाया, खेती और फल, रात और दिन, सूर्य और चन्द्रमा और तारे तुम्हारे काम में लगे हैं, दरयाओं में ताज़ा मांस।
१६ : ५२-५५	धररी और आकाश में जो कुछ है, सब उसी का है, बन्दगी और इबाबत उसी के लिए है।
१६ : ६६-७०	गोबर और खून से भरे पेट से शुद्ध दूध पिलाता है, हर तरह के मेवे, मक्खियों के पेट से शहद।
१६ : ७८	तुम जब पैदा हुए तो कुछ नहीं जानते थे, तुम्हें कान, आंखें, और दिल दिये।
१६ : ७९	चिड़ियां देखो, हवा में कैसे ऊड़ती हैं, उन्हें अल्लाह के अलावा कौन थामे रखता है।
१६ : ८०, ८१	तुम्हारे रहने का घर और खेमे, जानवरों के ऊन और बाल तुम्हारे इस्तेमाल के लिए।
१७ : १२	दिन और रात दो निशानियां हैं। तुम रोज़ी कमाते हो और हिसाब रखते हो।
१७ : ४३, ४४	अल्लाह के अलावा कोई और खुदा होता तो अल्लाह से लड़ पड़ता। उसकी महिमा के प्रतिकूल हैं वे बातें जो ये बनाते हैं।
१७ : ६६, ६७	जब तुम समुद्र में घिर जाते हो, तो उसके अलावा सब को भूल जाते हो, वही तुम्हें डूबने से बचाता है।
२० : ५३, ५४	ज़मीन को फर्श बनाया, पानी बरसाया, भांति-भांति के पेड़-पौधे उगाये, खाओ और चौपायों को खिलाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ : २१, २२	अल्लाह के अलावा कोई और 'इलाह' (इष्ट पूज्य) होता तो पूरी व्यवस्था बिगड़ जाती।
२१ : ३०, ३१	आकाश और धरती एक ही थे 'अल्लाह' ने उन्हें अलग-अलग किया और हर चीज़ को पानी से बनाया।
२१ : ३२, ३३	आकाश को सुरक्षित छत बनाया, सूर्य और चांद अपने-अपने मण्डल (Orbit) में तैर रहे हैं।
२३ : ७८-८१	अल्लाह ने तुम्हारे कान, आंखें और दिल बनाये। तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, जिलाता और मारता है।
२३ : ८४, ८५	धरती और जो कुछ उसमें है, वह किसका है।
२३ : ८६, ८७	सातों आकाशों का रब कौन है।
२३ : ८८-९२	हर चीज़ की बादशाही किसके हाथ में है। वह पनाह देता है, वह शिर्क से पाक है।
२४ : ४१, ४२	धरती आकाश की हर चीज़ अल्लाह का गुण-गान करती है, बादशाही उसी की है।
२४ : ४३, ४४	वह बादलों को चलाता है, फिर उनको मिला देता है, उससे पानी बरसता है रात-दिन को बदलता है।
२४ : ४५, ४६	हर जानदार को पानी से बनाया, जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।
२५ : ४५-४९	छाया को लम्बा करता है, फिर समेट लेता है। रात को पर्दा और नींद को आराम बनाया। पानी बरसाया, मुरदा भूमि को ज़िन्दा कर दिया।
२५ : ६१-६२	आकाशों में बुर्ज बनाये, रोशन और सूर्य और चमकता चांद।
२६ : ७,८	जमीन से कैसी सुन्दर चीज़ उगाई।
२६ : २३-२८	आकाश और धरती और जो कुछ इनके बीच है, उन सबका रब।
२७ : ६०-६२	आकाश और धरती पैदा किए, पानी बरसाया, हरे-भरे बाग़ उगाये, धरती को ठहरने की जगह बनाया, दरिया बहाये, विकल व्यक्तियों की दुआएँ सुनता है।
२७ : ६३-६५	वन और समुद्र की अँधियारियों में रास्ता दिखाता है।
२९ : ४४	धरती और आकाश को 'हिकमत' के साथ पैदा किया।
२९ : ६१-६३	आकाश और धरती बनाये, सूर्य और चन्द्र को तुम्हारे काम पर लगाया।
३० : २०-२७	तुमको मिट्टी से बनाया, तुम्हारे जोड़े पैदा किये और आपसी प्रेम दिया, अलग-अलग बोलियां, अलग-अलग रंग, नींद का आराम, रोज़ी की खोज, बिजली की चमक, भय और आशा के साथ, आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, सब उसके आज्ञापालक हैं, पहली बार पैदा करता है और बार-बार पैदा करता है। उसकी शान बड़ी ऊँची है।
३० : ३७	रोज़ी बढ़ाता है और नपी-तुली करता है।
३० : ४६	हवाओं को शुभ-सूचनाओं के साथ भेजता है, अपनी कृपाओं के फल चखाता है।
३० : ४८-५१	हवाएँ चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, उसमें से पानी निकालता है, मुरदा भूमि को ज़िन्दा करता है।
३० : ५४	तुमको कमज़ोर पैदा किया, फिर शक्ति दी, फिर कमज़ोरी और बुढ़ापा। जो चाहता है पैदा करता है।
३१ : १०, ११	तुम आकाशों को बिना स्तम्भ के देखते हो। ज़मीन पर पहाड़ संतुलन बनाये रखने के लिए, हर तरह के प्राणी।
३१ : २५, ३०	उनसे पूछो कि आकाश और धरती को किसने पैदा किया, तो वे बोल उठेंगे कि अल्लाह ने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१ : ३१, ३२	अल्लाह की कृपा से नवकायें समुद्र में चलती हैं ताकि वह तुमको अपनी कुछ निशानियां दिखाये ।
३२ : २७	तुम देखते नहीं कि अल्लाह बन्जर भूमि की ओर पानी दौड़ाता है और खेती उगाता है ।
३५ : ११-१३	तुमको मिट्टी से बनाया, तुम्हारा जोड़ा पैदा किया, सूर्य और चांद को तुम्हारे काम में लगाया, बादशाही उसी की है ।
३५ : २७, २८	आकाश से पानी बरसाया, भांति-भाति के मेवे पैदा किये, पहाड़ों में सफ़ेद लाल और काले सिलसिले ।
३६ : ३३-३६	मुरदा भूमि एक निशानी है । अल्लाह उसे ज़िन्दा करता है । अनाज उगाता है, बाग़-बग़ीचे हर चीज़ का जोड़ा ।
३६ : ३७-४०	रात एक निशानी है, वह उसमें से दिन खींच लेता है । सूर्य निर्धारित मार्ग पर चलता है और चांद की मंज़िलें निश्चित हैं ।
३६ : ४१-४४	दरिया में नवकाओं का चलना एक निशानी है और दूसरी सवारियां अल्लाह की कृपा, एक निर्धारित समय तक ।
३९ : ४-७	उसने आकाश और धरती को 'हिकमत' के साथ पैदा किया, वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में पैदा करता है ।
३९ : २१	आकाश से पानी बरसाया, फिर उसे स्रोत बनाकर बहाया, भांति-भांति की खेतियां उगती हैं ।
३९ : ४२	अल्लाह मरते समय प्राण निकाल लेता है और सोते में भी ।
४० : ६१, ६२	रात बनाई कि आराम करो, दिन को चमकता बनाया ।
४० : ६७, ६८	तुमको मिट्टी से बनाया, पहले वीर्य्य, फिर लोथड़ा, फिर बच्चा, फिर जवान, फिर बूढ़ा, वही जिलाता है, वही मारता है ।
४० : ७९-८१	चौपाए बनाए, उनपर सवार होते हो और उनका मांस खाते हो और बहुत से लाभ हैं । अल्लाह की निशानियों का इन्कार कैसे करोगे ?
४१ : ३७, ३८	रात-दिन, सूर्य-चन्द्र उसकी निशानियां हैं, सूर्य-चन्द्र को सजदा न करो । उसी अल्लाह को 'सजदा' करो जिसने उन्हें पैदा किया ।
४१ : ३९	उसकी निशानी देखो, भूमि सूखी पड़ी थी, उसी ने पानी बरसाया और वह हरी-भरी हो गई ।
४२ : २९-३१	आकाश और ज़मीन का पैदा करना उसी की निशानी है ।
४२ : ३२-३५	समुद्र में चलने वाले जहाज़ उसी की निशानी हैं ।
४३ : ९-१३	आकाश और धरती उसी ने पैदा किए, ज़मीन को बिछौना बनाया, पानी बरसाया, मुर्दा बस्ती को ज़िन्दा किया ।
४३ : ८७	तुमको अल्लाह ने पैदा किया, फिर तुम कहां बहके फिरते हो ?
४५ : ३-६	आकाश और धरती में 'ईमान' वालों के लिए अल्लाह की निशानियां हैं ।
४५ : १२, १३	उसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, उसपर जहाज़ चलते हैं । विचार करने वालों के लिए निशानियां हैं ।
५० : ६-११	आकाश को देखो कैसा बनाया और कैसा सजाया, धरती, वर्षा, खेतियां और बाग़ ।
५१ : २०-२३	धरती में निशानियां हैं विश्वास करने वालों के लिए ।
५६ : ५७-६२	तुम्हें पैदा किया क्या तुम पैदा करते हो या हम ?
५६ : ६३-६७	खेती तुम उगाते हो या हम ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६ : ६८-७०	पानी तुम बरसाते हो या हम ? यदि यह खारी होता ?
५६ : ७१-७४	आग को देखो इसके लिए पेड़ तुम उगाते हो या हम ?
६७ : १-५	उसने जीवन और मृत्यु को पैदा किया। सात आकाश ऊपर-तले बनाए, उसकी बनावट में कोई खराबी नहीं।
६७ : १९-२१	हवा में चिड़ियों को वही रोके हुए है।
६७ : २३, २४	तुम्हें पैदा किया कान, आंख और दिल दिए, ज़मीन में फैला दिए।
७७ : २०-२८	तुमको तुच्छ पानी से पैदा किया, ज़मीन को समेटने वाली बनाया, तुम्हें मीठा पानी पिलाया।
८८ : १७-२०	ऊँट को देखो, आसमान को देखो, पहाड़ों को देखो, ज़मीन को देखो, देखो उन्हें कैसा बनाया है !

(११) अल्लाह के अलावा कोई इलाह (उपास्य) नहीं

५ : ७५-७६	ऐसी चीज़ की पूजा क्यों करते हो जिसे तुम्हारे हानि-लाभ पर कोई अधिकार नहीं।
६ : ४०-४१	संकट में तुम उसे ही पुकारते हो और उस समय तुम उन्हें भूल जाते हो, जिन्हें तुम उसका साझी बनाते हो।
६ : ४६, ४७	अल्लाह के अलावा कौन है जो तुम्हें आंखें और कान दे सके।
६ : ७१	क्या हम अल्लाह के अलावा उसे पुकारें जो न भला कर सके न बुरा।
६ : १००	उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहराया, हालांकि उनको उसीने पैदा किया है।
७ : १९१-१९४	क्या उन लोगों को अल्लाह का साझी बनाते हो जो कुछ भी पैदा न कर सकें, बल्कि स्वयं पैदा किये जायें।
७ : १९५	न उनके पैर, न हाथ, न आंखें, न कान।
१० : ३४	तुम्हारे बनाये हुए शरीकों में कोई ऐसा नहीं जो पैदा कर सके और बार-बार पैदा कर सके। वह अल्लाह ही है।
१० : ३५, ३६	तुम्हारे बनाये हुए साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो सीधा रास्ता दिखाए। अल्लाह ही सीधा रास्ता दिखाता है।
१० : ६६-६९	अल्लाह के अलावा जो लोग दूसरों को पुकारते हैं, वे अटकल के पीछे चलते हैं।
११ : १०१	वे जिन 'इलाहों' (उपास्यों) को अल्लाह के अलावा पुकारते थे, वे उनके कुछ भी काम न आए।
१२ : ३९, ४०	भला अलग-अलग स्वामी अच्छे या एक अल्लाह।
१३ : १४-१६	अल्लाह के अलावा लोग जिन्हें पुकारते हैं वे उनकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते। उन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया। अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है।
१३ : ३३	अल्लाह हर व्यक्ति के कामों की निगरानी करने वाला है, लोगों ने अल्लाह के ऐसे साझी बना लिए हैं जो अल्लाह जैसे गुण नहीं रखते।
१६ : १७	जो पैदा करे वह उस जैसा नहीं हो सकता जो पैदा न करे।
१६ : २०-२२	अल्लाह के अलावा ये जिन लोगों को पुकारते हैं, वे कुछ पैदा नहीं कर सकते, वे तो स्वयं बनाये जाते हैं।
१७ : ५६, ५७	अल्लाह के अलावा जिन्हें तुम खुदा समझते हो, उन्हें पुकार के देखो, वे कुछ अधिकार नहीं रखते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ : १५	उससे बड़ा अन्यायी कौन है जो अल्लाह के अलावा दूसरों को ख़ुदा बना ले ।
१६ : ४२	जो न सुने, न देखे, न कुछ काम आ सके, वह 'इबादत' के योग्य नहीं कि उसकी इबादत की जाये ।
२१ : २१	अल्लाह के अलावा जिनको पूजते हैं, क्या वे इन्हें दोबारा ज़िन्दा कर सकेंगे ?
२१ : ४३	जो संकटों से छुटकारा न दिला सकें, वे इस योग्य नहीं कि उनकी 'इबादत' की जाये । वे तो आप अपने काम भी नहीं आ सकते ।
२१ : ६६, ६७	जो न लाभ पहुँचा सके और न हानि, उसकी भक्ति करना बड़े अफ़सोस की बात है ।
२२ : ११-१३	यह बड़े घाटे की बात है कि मनुष्य उन्हें 'इलाह' (उपास्य) बनाये जो न हानि पहुँचा सकें और न लाभ ।
२२ : ७३, ७४	अल्लाह के अलावा ये जिनको पुकारते हैं, वे एक मक्खी नहीं बना सकते ।
२५ : ३	जो पैदा न कर सके, जो अपने लाभ-हानि पर अधिकार न रक्खे, न मृत्यु और जीवन उसके अधिकार में हो, वह 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं हो सकता ।
२८ : ७०-७४	वही 'इलाह' (उपास्य) है, उसके अलावा कोई 'इलाह' नहीं । उसके अलावा कोई रात को दिन और दिन को रात नहीं बना सकता ।
३० : ४०	पैदा करे, रोज़ी दे, मौत दे और फिर दोबारा पैदा करे वही अल्लाह है, उसका कोई शरीक नहीं ।
३१ : १०, ११	अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें हर ओर दिखाई देती हैं । जिन्हें तुम उसका शरीक बनाते हो, दिखाओ उन्होंने क्या पैदा किया ।
३४ : २२	जिनको तुम अल्लाह का शरीक समझते हो, वे आकाश और धरती में क्षण-भर भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं ।
३५ : ४०, ४१	आकाश और धरती में अल्लाह के अलावा किसीने कोई एक चीज़ भी पैदा नहीं की । वही आकाश और धरती को थामे हुए है ।
३६ : २३	अल्लाह हानि पहुँचाना चाहे तो कौन ऐसा है, जो छुड़ा सके ।
३६ : ७४, ७५	अल्लाह के अलावा जिन्हें 'इलाह' (उपास्य) बनाते हैं, वे उनकी मदद की ताक़त नहीं रखते ।
३६ : ३८	अल्लाह हानि पहुँचाना चाहे या कृपा करे कोई रोक नहीं सकता ।
४६ : ४, ५	जिनको तुमने 'इलाह' (इष्ट पूज्य) बना लिया है, दिखाओ उन्होंने क्या पैदा किया । उन्हें तो तुम्हारे पुकारने की ख़बर नहीं ।
६७ : ३०	ज़मीन के सोते सूख जायें तो कोई है अल्लाह के अलावा जो उन्हें बहा लाये ।

२. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम

(१) चरित्र व आचरण

३ : १५६-१६१	नम्र स्वभाव वाले, न कठोर न क्रूर, छल-कपट से दूर ।
५ : १५	क्षमा कर देने वाले ।
६ : ४०	अल्लाह पर भरोसा करने वाले ।
६ : ६१	'ईमान' वालों के लिए 'रहमत' ।
६ : १२८	लोगों के कष्टों पर कुढ़ने वाले, उनकी भलाई के इच्छुक, फ़ायदा पहुँचाने वाले ।
१८ : ६	'ईमान' न लाने वालों के ग़म में घुलने वाले ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ : १०७	पूरी दुनिया के लिए 'रहमत'।
२६ : ३	'ईमान' न लाने वालों के ग़म में घुलने वाले।
३३ : २१	पालन योग्य पूर्ण आदर्श।
३३ : ५३	लज्जा करने वाले।
३५ : ८	लोगों के गुमराह होने पर बहुत तकलीफ़ महसूस करने वाले।
६८ : ४	बड़े ऊँचे चरित्र वाले।
७३ : २०	रातों को उठ-उठ कर उपासना करने वाले।

(२) वे भी एक मनुष्य थे

६ : ५०	अल्लाह के ख़ज़ानों के मालिक नहीं, परोक्ष का ज्ञान नहीं रखते और न 'फ़िरिश्ता' हैं।
६ : ५७, ५८	लोगों पर अज़ाब ले आने का अधिकार नहीं रखते।
७ : १८८	अपने निजी हानि-लाभ पर भी कोई अधिकार नहीं, न 'ग़ैब' जानने वाले हैं।
१० : ४६	अपने निज के लिए भी हानि या लाभ का अधिकार नहीं रखते। हां, जो अल्लाह चाहे।
१३ : ३८	आप से पहले जो 'रसूल' आये, उनकी पत्नियां थीं और सन्तानें भी।
१७ : ९३	एक मनुष्य, अल्लाह का सन्देश पहुँचाने वाले।
१७ : ९४, ९५	यदि धरती पर फ़िरिश्ते बसते होते तो 'रसूल' भी 'फ़िरिश्ते' आते।
२१ : ७, ८	आपसे पहले भी जो 'रसूल' आये वे मनुष्य ही थे। वे खाना खाते थे और अमर नहीं थे।
१८ : ११०	तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य।
२५ : २०	पहले भी 'रसूल' आये, वे खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे।
३३ : ६३	उन्हें 'क़ियामत' का समय मालूम नहीं।
४६ : ९	वे नहीं जानते कि उनके साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा।

(३) ज़िम्मेदारी

२ : १५१	अल्लाह की 'आयतों' को पढ़कर सुनना, किताब और 'हिकमत' की शिक्षा देना।
२ : १२०	मुहम्मद सल्ल० लोगों की इच्छाओं का पालन नहीं कर सकते।
२ : १४५	अगर वे लोगों की इच्छाओं का पालन करें तो वे अन्यायी होंगे।
३ : १४४	मुहम्मद बस अल्लाह के 'रसूल' हैं।
३ : १६४	लोगों को अल्लाह की 'आयतें' सुनाना, उनकी आत्मा को शुद्ध करना और उन्हें किताब व 'हिकमत' की शिक्षा देना।
४ : १०५	अल्लाह के क़ानून के अनुसार लोगों के मामलों को तै करना।
५ : १६, १९	लोगों को गुमराही की अँधियारियों से निकालकर सन्मार्ग के प्रकाश में लाना और सीधा मार्ग दिखाना।
५ : २१	शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले।
६ : १९	लोगों को बुराइयों के परिणाम से सचेत करना।
७ : १५७	भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना, पाक चीज़ों को 'हलाल' और ना-पाक को 'हराम' ठहराना। उन बन्धनों को काटना जिनमें लोग जकड़े हुए थे।
७ : १५८	वे सबकी ओर 'रसूल' बनाकर भेजे गए हैं।
१० : १५	अल्लाह की बातों को वे अपनी इच्छा से नहीं बदल सकते।
१३ : ६०	'नबी' का काम सन्देश पहुँचा देना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ : ३६	हर पैग़म्बर ('नबी') ने यही सन्देश दिया कि अल्लाह् की बन्दगी करो और तागूत की बन्दगी करने से बचो।
२७ : ८०, ८१	जो लोग सुनना न चाहें और मुंह फेरकर भागें उन्हें सीधे रास्ते पर डालना आपके ज़िम्मे नहीं।
३३ : ४०	मुहम्मद अल्लाह् के 'रसूल' हैं और 'नबियों' के सिलसिले को समाप्त करने वाले (अन्तिम 'नबी')।
३३ : ४६	शुभ-सूचना देनेवाले और सचेत करनेवाल, अल्लाह् की ओर बुलानेवाले।
३४ : २८	वे तमाम मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गए।
३५ : २२, २३	वे केवल सचेत करनेवाले हैं। अल्लाह ने उन्हें शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा।
३६ : ३	वे पैग़म्बरों में से हैं।
३९ : ४१	लोगों को सीधे मार्ग पर लाने के ज़िम्मेदार नहीं हैं।
४८ : २८	उन्हें सत्य-धर्म के साथ भेजा गया है ताकि वे इस धर्म को तमाम धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान कर दें।
५० : ५४	ज़बरदस्ती करना तुम्हारा काम नहीं।
५४ : ५६	अगले डराने वालों में से वे एक डराने वाले हैं।

(४) सत्य-मार्ग की कठिनाइयां

२ : ९-१४	'ईमान' का झूठा दावा करके धोखा देना, बिगाड़ पैदा करना, मूर्ख कहना और खिल्ली उड़ाना।
२ : ११४	मस्जिदों में अल्लाह् का नाम लेने से रोकना।
३ : २०५	झगड़ा करना और बिगाड़ पैदा करना, खेती और नस्ल को बरबाद करना।
२ : २१२	खिल्ली उड़ाना।
३ : ७२	लोगो को धोखे में डालने के लिए सुबह् को 'ईमान' लाना और शाम को झुठला देना।
३ : ९९	लोगों को सीधे रास्ते पर आने से रोकना और जानते-बूझते उलटी-सीधी बातें निकालना।
६ : १०	तुमसे पहले भी 'रसूलों की खिल्ली उड़ाई गई।
६ : १२३	गुप्त चालें चलना।
८ : ३०	गिरफ्तारी, क़त्ल या देश-परित्याग के लिए गुप्त चालें।
८ : ५६	सन्धि का वचन दे-देकर बार-बार तोड़ना।
९ : ८-१०	न नातेदारी का विचार, न वचन का ध्यान। मुख पर कुछ, मन में कुछ।
९ : १३	क़समें तोड़ीं और स्वदेश से निकाल देने की योजनाएँ बनाईं।
९ : ५०-५८	(आपके विरोधी) खुशी पर दुःखी और संकट पर खुश हुए, माल की तक़सीम पर ताने दिये।
१७ : ७३-७६	बहकाने की कोशिशें और स्वदेश से निकाल देने की योजनाएँ।
२१ : ३६	खिल्ली उड़ाते हैं।
२५ : ३१	बुरे लोगों की शत्रुता का सामना।
२५ : ४१	फबती कसना और खिल्ली उड़ाना।
२७ : ७०	विरोधियों की चालें जिन से दिल कुढ़े।
३१ : ६	उपहास की बातें बनाकर लोगों को गुमराह् करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३ : ४८ 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) का कष्ट पहुँचाना।
३२ : २५ खुली दलीलों के बाद भी झुठलाना।
५७ : ३६ कवि और पागल कहना।
३८ : ५० जादूगर और झूठा कहना।
४० : ३५ बिना किसी दलील के वाद-विवाद करना।
४१ : २६ लोगों को क़ुरआन सुनने से रोकना और हुल्लड़ मचाना।
५८ : ८ 'मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) का कानाफूसी करना और आप के शब्दों का मुँह से निकालना।
६१ : ५१ कोप की दृष्टि से देखना और दीवाना कहना।
९६ : ९, १० 'नमाज़' से रोकना।

(५) आप पर 'ईमान'

२ : १७, १८ आप का इन्कार करनेवाले वास्तव में बहरे, गूँगे और अन्धे हैं।
२ : १०१ आप को न मान कर किताब वाले स्वयं किताब से विमुख हो गए।
३ : ८१ आप पर 'ईमान' लाने का वचन पिछले' नबियों' के अनुयायियों से लिया गया।
३ : ८४ सच्चे 'ईमान' वाले तमाम रसूलों पर 'ईमान' लाते हैं।
३ : ८६ आप को अल्लाह का 'रसूल' समझने वाले परन्तु आप पर 'ईमान' न लाने वाले हिदायत नहीं पा सकते।
३ : ११० 'किताब वालों' के लिए यही बेहतर था कि आप पर 'ईमान' ले आते।
४ : ४२ आपका इन्कार करने वाले 'क़ियामत' के दिन बहुत पछताएँगे।
४ : ११५ 'रसूल' का विरोध करनेवालों का ठिकाना 'जहन्नम' है।
४ : १५०, १५१ जो किसी रसूल को मानें और किसी को न मानें, वे पक्के काफ़िर हैं।
४ : १५२ 'आख़िरत' की सफलता के लिए अनिवार्य है कि ख़ुदा और उसके नबियों पर 'ईमान' लाये और उनमें से किसी में अन्तर न करे।
४ : १७० लोगो ! आप पर 'ईमान' ले आओ। यही तुम्हारे लिए अच्छा है।
५ : १९ आपके आने के बाद 'किताब वालों' के लिए बहाने का कोई मौक़ा नहीं रहा।
६ : २० 'किताब वाले' आपको ख़ूब पहचानते हैं। जो आप पर ईमान न लाये, वह बड़ी हानि उठाएँगे।
७ : १५७ आप वही 'नबी' हैं जिन का वर्णन तौरात और 'इन्जील' में आया है। आप पर 'ईमान' लाने वाले ही सफल हैं।
९ : ८० आपका इन्कार करनेवालों के लिए क्षमा नहीं।
४७ : ३२ रसूल का विरोध करने वालों का किया-धरा सब अकारथ जायेगा।
४८ : १३ जो आप पर ईमान न लायें, उसके लिए 'जहन्नम' है।
५७ : ७ आप पर 'ईमान' लाओ।
५७ : २८ आप पर 'ईमान' लाने वालों के लिए दुहरा बदला है।
५८ : ५ आपका विरोध करने वाले मुंह की खाएँगे।
६४ : ८ अल्लाह पर, 'रसूल' पर और उस प्रकाश पर 'ईमान' ले आओ जो अल्लाह ने उतारा है।

(६) आपका आज्ञापालन

३ : ३१ आपका अनुसरण अल्लाह से प्रेम की पहचान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ : ३२	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करो।
४ : १३, १४	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करने वाले के लिए 'जन्नत' है।
४ : ४२	आपकी अवज्ञा करने वाले 'क़ियामत' के दिन बहुत पछ्ताएंगे।
४ : ५९	मुसलमानो ! अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करो।
४ : ६४	रसूल इसी लिए भेजा जाता है कि उसका आज्ञापालन किया जाये।
४ : ६५	आप के फ़ैसलों को तमाम मामलों में बिना कुछ कहे-सुने मान लेना 'ईमान' की शर्त है।
४ : ६९, ७०	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करनेवालों को उन लोगों का साथ नसीब होगा, जिन पर अल्लाह् अपनी कृपा करेगा।
४ : ८०	जिसने 'रसूल' का आज्ञापालन किया उसने अल्लाह् का आज्ञापालन किया।
५ : ९२	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करो और अवज्ञा से बचो।
७ : १५८	हिदायत के लिए आपकी पैरवी ज़रूरी।
८ : १	अगर 'ईमान' वाले हो तो अल्लाह् और उसके रसूल का आज्ञापालन करो।
८ : २०	मुसलमानो ! अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करो और सुन कर अनसुनी न करो।
८ : २४	मुसलमानो ! अल्लाह् और 'रसूल' की पुकार पर दौड़ो।
८ : ४६	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करो और आपस में झगड़ा न करो।
९ : ६२	हर मूल्य पर अल्लाह् और उसके रसूल को प्रसन्न रक्खो।
९ : ७१	ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें अल्लाह् और रसूल का आज्ञापालन करते हैं।
२४ : ४७-५४	अल्लाह् और 'रसूल' का हुक्म सामने आने पर ईमान वाला पूर्ण आज्ञाकारी बन जाता है।
२४ : ५६	आपके आज्ञापालन से अल्लाह् की दयालुता प्राप्त होती है।
२४ : ६३	आपके हुक्म के खिलाफ़ चलना मुसीबत और अज़ाब को बुलाना है।
२५ : २७	'रसूल' के रास्ते से हटकर चलने वाले 'क़ियामत' के दिन बहुत पछतायेंगे, अल्लाह् और 'रसूल' के फ़ैसले के बाद किसी ईमान वाले को कोई अधिकार बाक़ी नहीं रहता।
३३ : ६६	'जहन्नम' वाले बड़े ही हसरत से कहेंगे, काश ! हमने अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन किया होता।
३३ : ७१	अल्लाह् और 'रसूल' के आज्ञापालन में पूर्ण सफलता है।
४७ : ३३	अल्लाह् और 'रसूल' की आज्ञा का पालन न करने से कर्म व्यर्थ जाते हैं।
४८ : १०	आपके हाथ में हाथ देना मानो अल्लाह् के हाथ में हाथ देना है।
४९ : १४	अल्लाह् और 'रसूल' का आज्ञापालन करोगे तो तुम्हारा कोई कर्म बेकार न जाएगा।

(७) आप पर अल्लाह् की विशेष कृपाएँ

२ : १४४	आपको जो 'क़िबला' पसन्द था, अल्लाह् ने उसी को मुसलमानों का क़िबला बना दिया।
४ : ११३	आप पर अल्लाह् की बहुत बड़ी कृपा रही है।
५ : ३	आपके हाथों 'दीन' (धर्म) को पूर्ण कर दिया और आप पर अपनी नेमतें पूरी कर दीं।
५ : ६७	अल्लाह् ने आपकी विशेष रक्षा की।
३ : १३	लड़ाई के मौक़े पर अल्लाह् की सहायता की विशेष व्यवस्थाएँ।
८ : ९-१८	,, ,, ,,
८ : ३०	शत्रुओं की दुष्टता से सुरक्षित रखना।
८ : ३३	आपकी उपस्थिति अल्लाह् की यातना से बचे रहने का कारण बनी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९ : २६	अनदेखी सेना से सहायता की।
१७ : १	आपको रातों-रात मस्जिदे अक़्सा की सैर कराई।
१७ : ७९	स्तुत्य स्थान प्रदान किया।
२१ : १०७	आपको पूरी दुनिया के लिए 'रहमत' (दयालुता) बनाकर भेजा।
३३ : ६	आपकी पत्नियां मुसलमानों की माँ हैं।
३३ : ४०	आप पर 'नुबूवत' का सिलसिला ख़त्म हुआ।
३३ : ५३	आपकी मृत्यु के बाद आपकी पत्नियों से किसी मुसलमान का विवाह नहीं हो सकता।
३४ : २८	तमाम मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाया।
५३ : ६-१८	इसी जीवन में आपको अपने अत्यन्त निकट बुलाया।
४९ : १-५	आपकी शान में मामूली गुस्ताख़ी से भी तमाम कर्म व्यर्थ हो सकते हैं।
९३ : ३-८	आपको अल्लाह ने दुनिया और 'आख़िरत' की नेमतों से मालामाल कर दिया।
९४ : १-५	आपका नाम ऊँचा किया।
१०८ : १	आपको 'कौसर' दिया।
११० : २	आपको अनुयायियों की एक बड़ी संख्या दी।

३. क़ुरआन

(१) विशेषताएं

२ : २-५	निश्चित रूप से अल्लाह की वाणी और मार्ग-दर्शन।
२ : ९७	पहली किताबों की पुष्टि करने वाला। मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना।
२ : १८५	रास्ता दिखाने वाला और सत्य-असत्य को अलग-अलग करने वाला।
३ : ३, ४	सत्य ग्रन्थ, पहले ईश ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला।
३ : ७	इस ग्रन्थ को अल्लाह ने उतारा है।
३ : १३८	क़ुरआन लोगों के लिए एक सन्देश है, मार्ग-दर्शन और उपदेश।
५ : १५, १६	अल्लाह की ओर से प्रकाश और प्रकाशमान ग्रन्थ, जो लोगों को अन्धेरे से निकालकर उजाले में ले आये।
५ : ४८	अल्लाह की उतारी हुई 'किताब', पहली किताबों की पुष्टि करने वाली और सब की संरक्षिका।
६ : ९०	तमाम दुनिया के लोगों के लिए उपदेश।
६ : ९२	अल्लाह ने उतारा बरकतों वाला और पहली किताबों की पुष्टि करने वाला।
६ : १५५	अल्लाह की उतारी हुई और बरकत वाली किताब।
७ : २, ३	लोगों को कुपरिणामों से डराने वाला और 'ईमान' वालों के लिए नसीहत। अल्लाह का उतारा हुआ ग्रन्थ।
१० : ५७	अल्लाह की ओर से नसीहत (उपदेश) और दिलों की बीमारियों की शिफ़ा। मार्ग-दर्शन और दयालुता।
११ : १२०	मन को स्थिर रखने वाला। 'नसीहत' और याददिहानी।
१२ : २	अरबी भाषा में उतारा हुआ।
१४ : १	लोगों को अँधेरे से निकाल कर प्रकाश में लाता है।
१४ : ५२	लोगों के नाम अल्लाह का सन्देश उन्हें कुपरिणामों से डराने के लिए और उपदेश।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ : ६४	लोगों के मतभेदों का निर्णय करने वाला। मार्ग-दर्शन और दयालुता।
१६ : ८६	हर चीज़ को खोल-खोलकर बयान करने वाला, मार्ग-दर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना।
१७ : ६	यह ग्रन्थ सबसे ज़्यादा सीधा रास्ता दिखाता है। अच्छे काम करने वालों के लिए शुभ-सूचना।
१७ : ८२	इलाज और कृपा 'ईमान' लाने वालों के लिए।
२० : २-४	यह विपत्ति में डालने के लिए नहीं है, बल्कि नसीहत है और ज़मीन-आसमान के स्वामी की ओर से उतरा हुआ है।
२० : ११३	अरबी में उतरा, तरह-तरह के कुपरिणामों से डराता है।
२४ : ३४	खुली-खुली बातें, पहले बीते हुए लोगों की सूचनाएं और संयमी लोगों के लिए नसीहत।
२५ : १	सम्पूर्ण विश्व के लोगों को अल्लाह के अज़ाब से डराने वाला।
२६ : १९२-१९५	सम्पूर्ण विश्व के 'रब' की ओर से उतारा हुआ जिसे अमानतदार 'फ़रिश्ता' लेकर उतरा अरबी भाषा में।
२६ : १९६	इसकी खबर पहले ईश-ग्रन्थों में मौजूद है।
२७ : २	प्रकाशमान ग्रन्थ की 'आयतें' हैं, पथ-प्रदर्शन और शुभ-सूचना 'ईमान' लाने वालों के लिए।
३२ : २	निस्सन्देह यह ग्रन्थ सम्पूर्ण विश्व के स्वामी व मालिक की ओर से उतरा है।
३६ : २,५	यह 'हिकमतों' (तत्वदर्शिता) से भरा है और सत्तारूढ़ व कृपाशील अल्लाह ने उतारा है।
३६ : ६९, ७०	साफ़-साफ़ बातें बयान करने वाला, पूरी तरह नसीहत उसके लिए जो ज़िन्दा हो।
३८ : १	नसीहतों से भरा हुआ।
३८ : २९	बरकत वाली किताब, बुद्धिमानों के लिए नसीहत।
३९ : २३	अल्लाह ने ये उत्तम बातें उतारीं, जिसकी 'आयतें' मिलती-जुलती हैं।
३९ : २७, २८	क़ुरआन में तरह-तरह के उदाहरण दिए गए हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। इस में कोई टेढ़ नहीं।
४१ : २-४	'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह की ओर से उतरा। साफ़ 'आयतें' अरबी भाषा में।
४१ : ४१ ४२	उच्च पद वाला ग्रन्थ, जिसमें किसी तरह भी झूठ का दखल नहीं हो सकता। अल्लाह की ओर से उतरा हुआ।
४३ : ३, ४	क़ुरआन अरबी में है ताकि तुम समझ सको और यह सुरक्षित तख़्तियों में मौजूद है।
४४ : ३	अल्लाह ने क़ुरआन एक मुबारक रात में उतारा।
४५ : २०	सब लोगों के लिए हैं बुद्धिमानी की बातें, मार्ग-दर्शन और दयालुता।
४६ : १२	पहले के ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला, अत्याचारियों को डराने वाला, और अच्छे कार्य करने वालों को शुभ-सूचना देने वाला।
५४ : ५	पूर्ण बुद्धिमानी की किताब।
५४ : २२,३२,४०	नसीहत हासिल करने के लिए आसान।
५६ : ७७,७८	बड़े पद वाला, सुरक्षित तख़्तियों में लिखा हुआ।
५६ : ७९	इसको वही हाथ लगाते हैं जो पाक हैं।
५६ : ८०	सम्पूर्ण विश्व के स्वामी की ओर से उतरा हुआ।
५९ : २१	क़ुरआन अगर पहाड़ पर उतरता तो तुम देखते कि पहाड़ अल्लाह के डर से दबा और फटा जा रहा है।
६५ : १०	अल्लाह की ओर से उतरी हुई नसीहत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९ : ४०,४३	क़ुरआन एक उच्च पद वाले 'फ़रिश्ते' का लाया हुआ सन्देश है। यह किसी कवि की कविता नहीं और न किसी 'काहिन' का कलाम है।
७५ : १७-१९	क़ुरआन का जमा करना, उसका पढ़वाना और समझाना अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया।
७६ : २३	अल्लाह ने क़ुरआन मुहम्मद सल्ल० पर थोड़ा-थोड़ा उतारा।
८० : ११-१६	क़ुरआन एक नसीहत है, जो चाहे नसीहत हासिल करे। सम्मानित पन्नों में लिखा हुआ।
८१ : १९-२१	क़ुरआन एक उच्च पदों वाले 'फ़िरिश्ते' का लाया हुआ सन्देश है, जो अमानतदार है और फ़रिश्तों का सरदार।
८५ : २१, २२	बड़ी शान वाला, सुरक्षित तख़्ती में लिखा हुआ।
८६ : १३, १४	झूठ और सच को अलग-अलग कर देने वाला, हँसी-मज़ाक़ नहीं।
९७ : १	प्रतिष्ठा वाली रात में उतरा।
९८ : २, ३	पवित्र पन्ने, जिनमें पक्की बातें लिखी हुई हैं।

(२) ईश-ग्रन्थ होने की दलीलें

२ : २३, २४	अगर क़ुरआन के ईश-ग्रन्थ होने में सन्देह हो तो कोई उस जैसी एक 'सूरा' ही बना लाओ।
४ : ८२	क़ुरआन पर विचार करो, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की वाणी होती तो इसमें बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।
६ : ११४	'तौरात' का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि 'क़ुरआन' अल्लाह की ओर से उतरा है।
१० : ३७	क़ुरआन अपने से पहले आने वाले ईश-ग्रन्थों की सही शिक्षाओं की पुष्टि करता है।
११ : १३, १४	क़ुरआन जैसी दस 'सूरतें' बना लाओ और इस काम के लिए जिसे चाहो बुला लो।
१७ : ८८, ८९	तमाम मनुष्य और 'जिन्न' मिलकर भी कोशिश करें तो क़ुरआन जैसा ग्रन्थ नहीं बना सकते।
२६ : १९२-१९९	इस ग्रन्थ की ख़बर पहले पैग़म्बरों की किताबों में दी गई। 'बनी इसराईल' के विद्वान यह बात जानते थे।
२८ : ४९, ५०	जीवन का जो सही मार्ग यह ग्रन्थ दिखाता है, कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं दिखाता।
२९ : ४६, ४९	मुहम्मद सल्ल० ने न कभी कोई किताब पढ़ी, न लिखना-पढ़ना सीखा और यह क़ुरआन पेश किया।
३४ : ६	ईश-ग्रन्थों का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह का ग्रन्थ है।
४६ : ८-१०	'बनी इसराईल' के एक जानने वाले ने क़ुरआन के सत्य होने की गवाही दी।
५२ : ३३, ३४	वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने क़ुरआन ख़ुद ही बना लिया है। अगर ऐसा है तो वे भी ऐसा ग्रन्थ बना लाएँ।
६९ : ४३-४८	मुहम्मद सल्ल० अगर क़ुरआन अपनी ओर से ले आते तो अल्लाह उनकी पकड़ करता।

(३) क़ुरआन पर ईमान

२ : ४	'हिदायत' प्राप्त करने के लिए इस किताब पर 'ईमान' लाना भी ज़रूरी है।
२ : २४	इस किताब का इन्कार करने वालों के लिए 'जहन्नम' तैयार है।
२ : ४१	पिछली किताबों का मानने वालों के लिए भी ज़रूरी है कि इस 'किताब' पर 'ईमान' लायें।
२ : ८५	किताब के एक हिस्से को मानना और एक को न मानना अपनी दुनिया और 'आख़िरत' के जीवन को नष्ट करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ : ८९-९१	'किताब वालों' में से जिन लोगों ने इस किताब का इन्कार कर दिया वे अल्लाह के ग़ज़ब का निशाना बने।
२ : ९७-९९	अल्लाह से खुल्म-खुल्ला विद्रोह करने वाले ही इस किताब का इन्कार करते हैं।
२ : १२१	इस किताब को न मानने वालों के लिए घाटा-ही-घाटा है।
२ : १३६-१३७	दूसरी आसमानी किताबों के साथ-साथ जो इस किताब पर 'ईमान' लायेगा वही 'हिदायत' पायेगा।
२ : १७६	इस किताब के सत्य होने का इन्कार हठधर्म लोग ही करते हैं।
३ : ४	अल्लाह की आयतों का इन्कार करने वालों के लिए सख्त अज़ाब है।
३ : १९९	'किताब वालों' में से जिनके दिलों में ख़ुदा का भय है, वे इस 'किताब' पर ईमान लाते हैं।
४ : ६१	अल्लाह की किताब के आदेश को न मानना 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) का काम है।
४ : १६२	ज्ञान में गहराई रखने वाले इस किताब पर 'ईमान' लाते हैं।
५ : ८३, ८४	पिछली किताबों पर सच्चा 'ईमान' रखने वाले इस किताब को सुनकर इस पर 'ईमान' लाये बिना नहीं रहते।
६ : २७	इस किताब को झुठलाने वाले 'क़ियामत' के दिन बहुत पछतायेंगे।
६ : ५०	इस किताब को मानने वाले वास्तव में आँख वाले और न मानने वाले अन्धे हैं।
६ : ९२	'आखिरत' पर 'ईमान' रखने वाले क़ुरआन पर ज़रूर ईमान लाते हैं।
६ : ९३	इस किताब का इन्कार करने वाले मौत के समय सख्त अज़ाब का शिकार होंगे।
६ : १५५-१५७	अल्लाह की कृपाओं का अधिकारी होने के लिए इसका अपनाना आवश्यक है।
७ : ३	अल्लाह की उतारी हुई किताब पर चलो। उसके सिवा किसी दूसरे के पीछे न चलो।
१० : ९४, ९५	इस 'किताब' में सन्देह की कोई जगह नहीं और इसको झुठलाने में घाटा ही घाटा है।
११ : १७	वे लोग क़ुरआन पर ज़रूर 'ईमान' लाते हैं जो अल्लाह की दी हुई सूझ-बूझ से काम लेते हैं।
११ : २४	क़ुरआन के न मानने वाले और मानने वाले दो गरोह हैं। एक अन्धा और बहरा दूसरा देखता और सुनता।
१३ : १९	जिसे यह विश्वास हो कि क़ुरआन सत्य है, वह उन अन्धों जैसा कैसे हो सकता है, जो उसे न मानें।
१६ : ६४	'ईमान' लाने वालों के लिए यह किताब मार्ग-दर्शन और दयालुता है।
१७ : ४५, ४६	जो 'आखिरत' पर 'ईमान' नहीं रखते उनके लिए इस किताब का समझना सम्भव नहीं।
१७ : १०५-१०९	तुम इस 'किताब' को मानो या न मानो लेकिन जिन लोगों के पास ज्ञान है वे तो इसे मानते ही हैं।
२८ : ५०	जो लोग तुच्छ इच्छाओं के दास हैं, वही इस किताब को नहीं मानते।
२८ : ५२-५४	पिछली किताबों का ज्ञान रखने वाले इस किताब को सुनते ही ईमान लाते हैं।
२९ : ४९-५१	'ईमान' लाने वालों के लिए यह किताब 'रहमत' है।
३१ : ७	अल्लाह की 'आयतों' पर कान न धरने वालों के लिए दुखभरा अज़ाब है।
३२ : २२	वह बड़ा ज़ालिम है जो अल्लाह की 'आयतें' सुने और फिर मुंह मोड़ले।
४० : ५६	जिन लोगों के दिल में घमण्ड है वही अल्लाह की 'आयतों' के साथ कठहुज्जती करते हैं।
४१ : ४४	जो लोग क़ुरआन पर 'ईमान' नहीं लाते वे वास्तव में बहरे और अन्धे हैं।
४३ : ६९-७३	क़ुरआन पर 'ईमान' लाने वालों के लिए नेमतों-भरी 'जन्नत' है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७ : २	जो कुछ मुहम्मद सल्ल० पर उतरा उस पर 'ईमान' लाने वालों के लिए शुभ समाचार।
६७ : ८-११	इस किताब को न मानने वाले 'क़ियामत' में वहुत पछतायेंगे।

४. 'आख़िरत'

१. आदमी की मौत

३ : १८५	हर व्यक्ति को मौत का मज़ा चखना है। और तुमको तुम्हारे कामों का पूरा-पूरा बदला 'क़ियामत' के दिन दिया जायेगा।
४ : ७८	कहीं रहो मौत आकर रहेगी। भले ही बड़े-बड़े क़िलो में रहो।
४ : ९७-१००	धर्म के लिए स्वदेश छोड़ना पड़े तो ऐसा न हो कि मौत के डर से तुम रुक जाओ।
६ : ६१	मौत का समय आ जाता है तो जान निकालने वाले 'फ़िरिश्ते' कोताही नहीं करते।
६ : ९३	अल्लाह के मुक़ाबले में उद्दण्डता अपनाने वालों की जानें 'फ़िरिश्ते' कठोरता और अपमान के साथ निकालते हैं।
७ : ३७	'अल्लाह' का इन्कार करने वालों को मौत के समय अपने कुफ़्र का अहसास हो जाता है।
८ : ५०, ५१	'कुफ़्र' करने वालों की जान निकालते समय 'फ़िरिश्ते' उन्हें अज़ाब देते हैं।
१६ : २८	अवज्ञाकारी और उद्दण्ड मौत के समय अपने निष्पाप होने का बहाना करते हैं।
१६ : ३२	अवज्ञाकारियों की जान निकालते समय 'फ़िरिश्ते' उन पर सलामतियाँ भेजते हैं।
२१ : ३५	हर एक को मौत का मज़ा चखना है। अच्छी और बुरी हालतों में मनुष्य की परीक्षा है।
२३ : ९९, १००	अल्लाह से ग़ाफ़िल मौत के समय चाहेंगे कि उन्हें फिर संसार में भेज दिया जाए ताकि वे भला काम कर सकें।
२९ : ५७	हर व्यक्ति को मौत का मज़ा चखना है और लौटकर अल्लाह की ओर जाना है।
३२ : ११	तुम्हारी जान मौत का वह 'फ़िरिश्ता' निकालता है जो तुम पर नियुक्त किया गया है।
४७ : २७, २८	अल्लाह की नाराज़ी की राह पर चलने वालों को जान निकालते समय 'फ़िरिश्ते' कष्ट पहुँचाते हैं।
५० : १९	मौत की बेहोशी छाते ही वास्तविकता सामने आ जायेगी।
५६ : ८३-८७	जब जान गले में आ अटकती है, उस समय मरने वाला तुम्हारे मुक़ाबले में अल्लाह से अधिक निकट होता है।
६३ : १०, ११	मौत के समय मनुष्य की इच्छा होती है कि थोड़ी मुहलत और मिल जाती और मैं भला आदमी बन जाता।
७५ : २६-३०	जब जान गले तक आ पहुँचेगी तो कोई झाड़-फूँक काम न देगी।
१०२ : १, २	बहुत-सी तलब ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया है, यहां तक कि तुम क़ब्रों तक पहुँच जाते हो।

(२) मौत के बाद

२ : १५४	अल्लाह की राह में मरने वालों को मुरदा न कहो। वे ज़िन्दा हैं।
३ : १६९-१७१	जो अल्लाह की राह में मारे गए वे तो ज़िन्दा हैं, उन्हें रोज़ी मिल रही है।
२३ : १००	आदमी मरने के बाद से लेकर 'क़ियामत' तक, इच्छा के बावजूद वापस नहीं आ सकता।
४० : ४६	मरने के बाद से लेकर 'क़ियामत', तक 'क़ाफ़िरों को 'जहन्नम' सुबह व शाम दिखाया जाना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५० : ४	मरने के बाद मानव-शरीर जिस तरह मिट्टी में मिलता है, वह सब अल्लाह जानता है।

(३) उठाया जाना और 'क़ियामत' का आना

२ : ११३	लोग जिन बातों में मतभेद कर रहे हैं, उनका फ़ैसला 'क़ियामत' के दिन हो जाएगा।
२ : १४८	तुम जहां भी हो अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा।
३ : १०६, १०७	'क़ियामत' के दिन बहुत-से चेहरे उज्ज्वल होंगे और बहुत-से काले।
६ : ३६	'क़ियामत' के दिन अल्लाह मुर्दों को उठाएगा, फिर उसी की ओर लौट कर जायेंगे।
६ : ७३	जिस दिन 'सूर' फूँका जाएगा उस दिन बादशाही उसी की होगी।
७ : २९	जैसे तुम्हें पहले पैदा किया था, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।
१० : ४	तुम सबको लौटकर उसी के पास जाना है।
१० : ४५	जिस दिन अल्लाह लोगों को जमा करेगा, तो उन्हें ऐसा जान पड़ेगा जैसे संसार में वे कोई घण्टा-भर रहे हों।
११ : १०३-३०८	'क़ियामत' के दिन सब लोग इकट्ठा किए जायेंगे और सब अल्लाह के सामने पेश होंगे।
१४ : ४८	'क़ियामत' के दिन ये ज़मीन और आसमान बदल दिए जाएँगे और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे।
१५ : २३-२५	अल्लाह 'क़ियामत' के दिन सबको जमा करेगा।
१७ : ५२	जिस दिन लोग अल्लाह की पुकार पर जमा होंगे तो यही समझेंगे कि संसार में हम बहुत कम मुद्दत रहे।
१७ : ७१-७२	'क़ियामत' के दिन सब लोग अपने-अपने लीडरों के साथ बुलाए जायेंगे।
१७ : ९७-९९	भटके हुए लोग 'क़ियामत' के दिन अँधे, गूंगे और बहरे बनकर उठेंगे।
१८ : ४७-४८	'क़ियामत' के दिन पहाड़ हट जाएँगे, ज़मीन साफ़ मैदान होगी और एक-एक आदमी जमा कर लिया जाएगा।
१८ : ४९	'क़ियामत' में कर्म-पत्र सबके सामने होगा, जिसमें हर छोटी-बड़ी बात लिखी होगी।
१८ : ५२-५३	'क़ियामत' के दिन उद्दण्ड लोग 'जहन्नम' से बचने का कोई रास्ता न पाएँगे।
१९ : ६८-७२	सब लोग 'क़ियामत' के दिन ज़रूर जमा होंगे और 'शैतान' भी।
१९ : ८५, ८६	भले लोग अल्लाह के सामने मेहमान के रूप में जमा होंगे, और पापियों को जहन्नम' के घाट उतारा जाएगा।
२० : १०२-११२	'क़ियामत' के दिन 'सूर' फूँका जाएगा और अपराधी जमा होंगे, उनकी आँखें पथराई होंगी।
२० : १२४-१२७	अल्लाह की नसीहत से मुँह मोड़ने वालों का जीवन तंग होगा और वे 'क़ियामत' के दिन अन्धे उठेंगे।
२१ : ४०	'क़ियामत अचानक आ जाएगी, लोगों के होश उड़ जाएँगे, उसे टाल न सकेंगे और न उन्हें छूट मिलेगी।
२३ : १०१	जब 'सूर' में फूँक मारी जाएगी तो नातेदारियां कुछ काम न आ सकेंगी।
२७ : ८७	जब 'सूर' फूँका जाएगा तो सब घबरा उठेंगे और अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाएँगे।
३० : २५	'क़ियामत' के दिन जब तुम्हें पुकारा जाएगा तो तुम तुरन्त निकल पड़ोगे।
३६ : ४९, ५०	जब 'क़ियामत' की चिंघाड़ सुनेंगे तो न कुछ कह सकेंगे न कहीं जा सकेंगे।
३६ : ५१, ५२	सूर फूँका जाएगा तो सब अपनी क़ब्रों से निकल पड़ेंगे।
३७ : १९-२१	एक ज़ोर की आवाज़ होगी और लोग कहेंगे हाय हमारा दुर्भाग्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९ : ६८-७०	जब 'सूर' फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे और दुबारा 'सूर' पर उठ खड़े होंगे।
४२ : ४७	'क़ियामत' का दिन टलेगा नहीं और उस दिन अपने करतूतों से इन्कार करते भी न बन पड़ेगा।
४३ : ६६, ६७	'क़ियामत' अचानक आएगी किसी को खबर न होगी।
५० : ९-११	ज़मीन पर हरियाली आ जाती है, मुरदा ज़मीन में जान आ जाती है इसी तरह 'क़ियामत' के दिन सब लोग निकल पड़ेंगे।
५० : २०	'सूर' फूँका जाएगा, वही यातना का दिन है।
५० : ४१-४३	पुकारने वाला पुकारेगा, लोग एक चीख सुनेंगे, वही निकल पड़ने का दिन है।
५० : ४४	धरती फट जाएगी, सब जमा हो जाएंगे।
५२ : ९, १०	आसमान काँपने लगेगा, पहाड़ ऊन की तरह उड़ने लगेंगे।
५५ : ३७	आसमान फटकर गुलाबी हो जायेगा।
५६ : १-६	ज़मीन भूचाल से कांपने लगेगी। पहाड़ चूरा-चूरा हो जाएँगे।
६९ : १३-१८	जब 'सूर' फूँका जाएगा तो सब टूट-फूटकर बराबर हो जाएगा।
७० : ६-९	आसमान पिघले हुए तांबे की तरह हो जाएगा और पहाड़ धुने हुये ऊन की तरह।
७० : ४३, ४४	उस दिन सब क़ब्र से निकलकर दौड़ेंगे, आंखें झुकी हुई होंगी।
७४ : ८-१०	जब 'सूर' फूँका जाएगा तो वह बड़ी कठिनाई का दिन होगा।
७५ : ६-१३	आंखें चुंधिया जाएँगी, चांद को गहन लगेगा और चांद-सूर्य मिल जायेंगे।
७७ : ७-१५	तारों की चमक जाती रहेगी। आसमान फट जायेगा। पहाड़ उड़े-उड़े फिरेंगे।
७८ : १८-२०	जब 'सूर' फूँका जाएगा तो सब जमा हो जायेंगे, आसमान खोल दिया जायेगा।
७९ : ६-९	भूचाल-पर-भूचाल आयेंगे, आंखें झुकी हुई होंगी।
८० : ३३-३७	जब 'क़ियामत' का शोर मचेगा तो भाई-भाई से भागेगा और बेटा मां से।
८१ : १-१४	सूर्य लपेट दिया जायेगा, तारे प्रकाश-हीन हो जायेंगे आदि। और हर व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।
८२ : १-५	आसमान फट जाएगा, तारे झड़ जायेंगे, क़ब्रें उखेड़ दी जायेंगी।
८४ : १-५	आसमान फट जायेगा, ज़मीन समतल कर दी जायेगी और सब कुछ उगल देगी।
८९ : २१-२४	ज़मीन कूट-कूटकर पस्त कर दी जायेगी, 'फ़िरिश्ते' पंक्तिबद्ध होकर हाज़िर होंगे।
९९ : १-८	ज़मीन भूकम्प से हिला दी जायेगी वह सारे हाल सुना देगी। लोगों के कर्म उनके सामने होंगे।
१०० : ९, १०	मुरदे क़बरों से उठाये जायेंगे और दिलों के भेद ज़ाहिर हो जायेंगे।
१०१ : १-११	उस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुये पतिंगे। पहाड़ धुने हुये ऊन की तरह।

(४) जीवन मृत्यु के पश्चात् की आवश्यकता और उसके प्रमाण

३ : १९१, १९२	अल्लाह ने संसार को बेकार नहीं बनाया है। उसकी 'हिकमत' का तक़ाज़ा है कि 'आख़िरत' ज़रूर हो।
७ : ४-९	कर्मों पर पकड़ करने के लिए 'आख़िरत' की ज़रूरत है और कर्मों पर पकड़ न्याय की मांग है।
७ : २९	जिस तरह उसने तुम्हें अब पैदा किया है. वैसे ही तुम फिर पैदा किये जाओगे।
७ : ५७	मुरदा ज़मीन से वह सब कुछ उगाता है। इसी तरह वह मुरदों को मौत की हालत से निकालता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० : ४	वही जन्म का आरम्भ करता है, वही दोबारा पैदा करेगा है।
१० : ४	सांसारिक जीवन कर्मों के बदले के लिए काफ़ी नहीं, इसके लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।
१० : ७-१०	'आख़िरत' के इन्कार के बाद पूरे जीवन का रुख़ ग़लत हो जाता है। जवाबदेही का विश्वास मनुष्य को सीधी राह चलाता है।
१० : ३४	अल्लाह ने ही पहले पैदा किया, वही दोबारा पैदा करेगा।
११ : ७	बुद्धि, चेतना और अधिकार पाने के बाद कौन अच्छे काम करता है और कौन बुरे, इसकी जांच के लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।
११ : १०२-१०८	इतिहास गवाह है कि बुरे लोगों का परिणाम सदा बुरा हुआ है। इसका तक़ाज़ा है कि 'आख़िरत' ज़रूर हो।
१३ : २	सृष्टि में फैली निशानियों को देखो, अल्लाह की शक्ति और उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है कि यह संसार निरुद्देश्य न हो इसके लिए 'आख़िरत' ज़रूरी है।
१३ : ५	'आख़िरत' का इन्कार सच पूछिये तो अल्लाह की शक्ति और उसकी 'हिकमत' का इन्कार है।
१५ : २३-२५	जीना-मरना अल्लाह के हाथ में है। वही वारिस है। उसके ज्ञान व हिकमत की मांग है कि 'आख़िरत' हो।
१६ : ३८-४०	धर्म के बारे में दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं। इस भिन्नता को दूर करने के लिए 'आख़िरत' की दुनिया का होना ज़रूरी है।
१६ : ६५	अल्लाह मुरदा ज़मीन को बार-बार ज़िन्दा करता है। वही मनुष्य को दोबारा ज़िन्दा करने का सामर्थ्य रखता है।
१७ : ९८, ९९	ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाला यह सामर्थ्य रखता है कि मनुष्य को दोबारा पैदा करे।
१९ : ६६, ६७	मनुष्य कुछ नहीं था, अल्लाह ने उसे पैदा किया। वही उसे दोबारा पैदा करेगा।
२१ : १०४	जिस तरह अल्लाह ने पहली बार पैदा किया, वैसे ही वह दोबारा पैदा करेगा।
२२ : ५-७	वीर्य्य से लेकर पैदा होने तक मनुष्य की बनावट, फिर जन्म से लेकर मौत तक विभिन्न दशाओं से गुज़रना मुरदा ज़मीन से हरे-भरे पेड़-पौधों का उगना, ये तमाम दृश्य मौत के बाद के जीवन का प्रमाण हैं।
२३ : ७९-९०	अल्लाह ने संसार को जिस 'हिकमत' के साथ बनाया है, उसकी माँग है कि यह निरुद्देश्य न हो, इसका कोई परिणाम हो।
२७ : ६७-७३	इतिहास गवाह है कि 'आख़िरत' का इन्कार करने वाली जातियां दुराचारी, ग़ैर ज़िम्मेदार और अत्याचारी बनकर रहीं।
२९ : १९,२०	अल्लाह ने पहली बार पैदा किया, वही दोबारा पैदा कर सकता है।
३० : ९-११	'आख़िरत' का इन्कार करने वालों के चरित्र व आचरण बिगड़े, यह इस बात का प्रमाण है कि 'आख़िरत' यक़ीनी है।
३० : १९	ज़िन्दा से मुरदा और मुरदा से ज़िन्दा को निकालता है। वही तुम्हें दुबारा ज़िन्दा करेगा।
३० : २२-२७	ज़मीन और आसमान के पैदा करने वाले के लिए कोई कठिन काम नहीं कि तुम्हें फिर से ज़िन्दा उठा खड़ा करे।
३० : ५०	जो मुरदा ज़मीन को ज़िन्दा करता है, वह निश्चय ही मुरदों को ज़िन्दा करने में समर्थ है।
३४ : ३-५	अच्छा काम करने वालों को उनका बदला मिलना न्याय की मांग है और इसे पूरा करने के लिए 'आख़िरत' ज़रूरी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५ : ९	जिस तरह मुरदा ज़मीन जी उठती है, उसी तरह मुरदे जी उठेंगे।
३६ : ३३	मुरदा ज़मीन का जी उठना, 'आख़िरत' होने की एक निशानी है।
३६ : ७७-८२	मनुष्य का जन्म, हरे पेड़ से आग निकलना ये सब 'आख़िरत' की निशानियाँ हैं।
३७ : ११-१८	अल्लाह ने कितने प्राणी पैदा किए हैं, उसके लिए मनुष्य को दोबारा पैदा करना क्या कठिन है।
३८ : २७, २८	सृष्टि की रचना निरुद्देश्य नहीं और भले और बुरे मनुष्य बराबर नहीं हो सकते। इस वास्तविकता की मांग है कि 'आख़िरत' होनी चाहिए।
४१ : ३९	अल्लाह सूखी ज़मीन को पानी से हरी-भरी कर देता है। इसी तरह वह मुरदों को जिलाने की शक्ति भी रखता है।
४४ : ३८-४२	ज़मीन-आसमान को खेल के तौर पर पैदा नहीं किया है, इसलिए 'आख़िरत' होना ज़रूरी है।
४५ : २१, २२	अच्छे-बुरे बराबर नहीं हो सकते। न्याय का तक़ाज़ा है कि 'आख़िरत' होनी चाहिए।
४६ : ३३	अल्लाह मुरदों को दुबारा ज़िन्दा करने की शक्ति रखता है।
४९ : १-१४	जातियों पर अज़ाब का आना 'क़ियामत' के होने की दलील है।
७७ : १-७	" " "
५६ : ५७-६२	अल्लाह को सृष्टिकर्त्ता मानना और फिर आ.ख़रत का इन्कार करना सही नहीं।
७५ : ३६-४०	बुद्धि, चेतना और अधिकार देने के वाद मनुष्य को यों ही नहीं छोड़ दिया जाएगा, इसके लिए 'आख़िरत' जरूरी है।
७८ : १-१८	नेमतों के मिलने के बाद पूछ-गछ ज़रूरी है। इसके लिए 'आख़िरत' होगी।
८६ : ५-८	मनुष्य की सृष्टि में उसके मरने के वाद के जीवन का प्रमाण है।
९५ : ७, ८	अल्लाह के सम्प्रभुत्त्व का तक़ाज़ा है कि 'आख़िरत' हो।

(५) हिसाब-किताब

२ : २८४	अल्लाह दिलों की बातों का भी हिसाब लेगा।
३ : ३०	'क़ियामत' के दिन मनुष्य की अच्छाई और बुराई सब सामने आएगी।
७ : ७-९	'क़ियामत' के दिन कर्म तोले जाएँगे।
१० : ४	न्याय के साथ बदला दिया जाएगा।
११ : १११	'क़ियामत' के दिन सबको कर्मों का पूरा-पूरा वदला मिलेगा।
१४ : ५१	अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
१६ : ९३	तुम जो कुछ करते हो, उसके बारे में तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा।
१६ : १११	उस दिन किसी पर ज़्यादती नहीं की जाएगी।
१७ : १३, १४	हर व्यक्ति अपना कर्म-पत्र पढ़कर ख़ुद ही अपना हिसाव समझ लेगा।
१७ : ७१, ७२	जिनके कर्म-पत्र दाँए हाथ में दिए जाएँगे, वे ख़ुशी-ख़ुशी इसे पढ़ेंगे।
१८ : ४९	कर्म-पुस्तक खोलकर दख दी जाएगी। मनुष्य कहेगा कि इसमें तो कुछ भी नहीं छूटा।
१८ : १०४-१०६	'काफ़िरों' के कर्म अकारथ जाएँगे।
२१ : ४७	उस दिन न्याय की तराज़ू खड़ी होगी और किसी का कोई हक़ मारा नहीं जाएगा।
२३ : १०२	जिसकी नेकी के पलड़े भारी होंगे वही सफल होगा।
२३ : १०३, १०४	जिनके पलड़े हल्के होंगे वे 'जहन्नम' में जाएँगे।
२७ : ८९, ९०	जो भले काम करके आएगा, उसके लिए अच्छा वदला तैयार है और जो बुरे काम करके आएगा उसके लिए आग है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ : १२, १३	'क़ियामत' में कोई किसी के कर्मों की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकेगा।
३४ : २५, २६	कोई किसी दूसरे के कामों के बदले नहीं पकड़ा जाएगा।
३६ : ५३, ५४	किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा। हर एक को वैसा ही बदला मिलेगा, जैसे उसने काम किए होंगे।
३६ : ६५	उस दिन ज़बानों पर मुहर होगी और हाथ-पैर गवाही देंगे।
४० : १७	अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
४१ : २०-२४	अपराधियों के ख़िलाफ़ उनके कान, आंखें और त्वचा गवाही देंगे।
४५ : २८, २९	मनुष्य जो कुछ करता है, अल्लाह के 'फ़िरिश्ते' लिखते जाते हैं, यही 'क़ियामत' में उसके सामने पेश होगा।
५० : २३	हर मनुष्य का 'फ़िरिश्ता' उसके कर्म-पत्र पेश कर देगा।
६९ : १८-२९	मनुष्य जब अल्लाह के सामने लाया जाएगा तो उसकी कोई बात उससे छिपी न होगी।
८३ : ६	उस दिन तमाम लोग संसार के पालनहार के सामने खड़े होंगे।
८४ : ७-१४	जिसका कर्म-पत्र दाहिने हाथ में होगा, उससे आसान हिसाब लिया जाएगा।
८६ : ९	उस दिन दिल के भेदों की जांच होगी।
८८ : २५, २६	उन सबको अल्लाह के पास लौट कर जाना है और वह उनका हिसाब लेगा।
९९ : ६	लोगों को उस दिन उनके कर्म दिखा दिए जाएँगे।
१०१ : ६-९	जिसके अच्छे कामों का पलड़ा भारी हुआ, वह आराम में होगा।
१०२ : ८	उस दिन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।

(६) 'आख़िरत' को न मानने के नतीजे

७ : १४७	तमाम कर्म बेकार जाएँगे।
१० : ७, ८	आख़िरी ठिकाना जहन्नम होगा।
१० : ११	मनुष्य अद्दण्डता में बढ़ता ही चला जाता है।
१६ : २२	मनुष्य इन्कार और घमण्ड की रीति पर चल पड़ता है।
१७ : १८	'आख़िरत' को छोड़कर दुनिया को लक्ष्य बनाने वाले के लिए 'जहन्नम' है।
१८ : १०५	'क़ियामत' के दिन सारे कर्म बेकार जाएंगे।
२३ : ७४	आदमी सीधे रास्ते मे हट जाता है।
२५ : ११	'आख़िरत' का इन्कार मनुष्य को जहन्नम तक ले जाता है।
२७ : ४, ५	मनुष्य को अपने करतूत बड़े अच्छे मालूम होते हैं। वह भटक जाता है और 'आख़िरत' में हानि उठाता है।

(७) 'आख़िरत' की विवशता

२ : ४८	कोई किसी के काम न आएगा और न किसी की सिफ़ारिश ही चलेगी।
२ : १६७	हसरत और परेशानी से हाथ मलेंगे, पर 'जहन्नम' से छुटकारा न पा सकेंगे।
२ : २५४	उस दिन न ख़र्च से काम चले, न दोस्ती से और न सिफ़ारिश से।
६ : ९४	संसार में मनुष्य अल्लाह के अलावा जिन-जिन पर भरोसा करता है, उन सबसे सम्बन्ध टूट जाएँगे।
१० : २७	उस दिन अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ : २१, २२	अल्लाह को भूल कर जिन-जिन 'शैतानों' की पैरवी में मनुष्य ने अपनी 'आख़िरत' बिगाड़ी होगी वे सब मदद से हाथ उठा लेंगे।
२० : १०९	उस दिन किसी की सिफ़ारिश की काम न देगी अलावा इसके कि अल्लाह ही किसी को सिफ़ारिश करने की इजाज़त दे दे।
२५ : १९	कोई अल्लाह की यातना को टाल न सकेगा और न कहीं से मदद ही मिलेगी।
२६ : ८८	उस दिन न माल काम आएगा न औलाद।
२८ : ६३, ६४	संसार में अल्लाह के अलावा जिन-जिन की पूजा होती थी; वे सब अपने पुजारियों से उदासीनता का एलान कर देंगे।
३१ : ३३	उस दिन न बाप बेटे के काम आएगा और न बेटा बाप के।
३४ : ३१-३३	जिन 'बड़े लोगों' के पीछे चलकर लोगों ने अपनी 'आख़िरत' बिगाड़ी, वे 'क़ियामत' के दिन उलटा उन्हीं पर आरोप लगाएँगे।
३५ : १८	कोई नातेदार तक ऐसा न होगा जो किसी का बोझ उठाए।
३७ : २४-३३	कोई एक दूसरे की सहायता न करेगा। हरएक दूसरे पर आरोपण करेगा।
४२ : ४६	कोई ऐसा दोस्त न होगा जो अल्लाह के मुक़ाबले में मदद कर सके।
४३ : ६७	आज जो दोस्त हैं, एक-दूसरे के दुश्मन होंगे।
४४ : ४१, ४२	कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आएगा।
६० : ३	उस दिन न नातेदार काम आएँगे और न औलाद।
६९ : २८-३७	उस दिन न धन काम आएगा न हुकूमत और न कोई दोस्त।
७० : १०-१८	मनुष्य चाहेगा कि बेटे, स्त्री, भाई, परिवार बल्कि तमाम मनुष्यों को भेंट चढ़ाये और खुद किसी तरह बच जाए।
८० : ३४-३७	हर व्यक्ति को अपनी-अपनी पड़ी होगी।
८३ : १९	कोई किसी के काम न आ सकेगा।

(८) 'जहन्नम'

२ : २४	'जहन्नम' का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे।
४ : ५६	एक खाल जल जाएगी तो दूसरी दे दी जायेगी ताकि बार-बार यातना का मज़ा चखें।
७ : ३८	दोज़खियों का एक गरोह दूसरे पर लानत भेजेगा।
७ : ४२	आग का बिछौना और आग ही का ओढ़ना।
१० : ४	बड़ा ही गर्म पानी पीने के लिए और दुःख देने वाली यातना।
११ : १०६, १०७	चिल्लाना और दहाड़ना और सदा के लिए वहीं रहना।
१३ : ५	गरदनों में तौक़।
१४ : १६, १७	पीने के लिए पीप का पानी जो गले से न उतरे। हर ओर मौत का सामान लेकिन मर न सके।
१५ : ४४	'जहन्नम' के सात दरवाजे हैं और हर 'जहन्नम' के लिए गरोह बांट दिये गये हैं।
१७ : ९७	'जहन्नम' की आग बुझने न पायेगी।
१८ : २९	आग चारों ओर से घेरे हुए। खौलता हुआ पानी पिघले हुए तांबे की तरह।
२० : ७४	'जहन्नम' में न मनुष्य जियेगा, न मरेगा।
२२ : १९-२२	आग के कपड़े, सिरों पर खौलता हुआ पानी और लोहे के हथौड़े।
२३ : १०३, १०४	मुंह झुलसे हुए और त्योरियां चढ़ी हुईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ : १२, १३	'जहन्नम' का शोर दूर से सुनाई देगा और लोग वहां मौत को पुकारेंगे।
२५ : ६५, ६६	'जहन्नम' का अज़ाब बड़ा ही दुखदायी और वह बड़ी ही बुरी ठहरने की जगह।
३२ : २०	जब कोई निकलना चाहेगा तो उसी में लौटा दिया जायेगा।
३४ : ३३	गर्दनों में तौक़ पड़े हुए।
३५ : ३६, ३७	न मौत ही आये और न यातना ही कम हो।
३७ . ६२-६७	थोहड़ के पेड़ का खाना, ऊपर से खौलता हुआ पानी।
३८ : ५५-५८	बहुत बुरा ठिकाना, गर्म पानी और पीप और ऐसी ही बहुत सी यातनायें।
३९ : १६	ऊपर भी आग का शामियाना और नीचे भी आग का फ़र्श।
४० : ७१, ७२	ज़ंजीरें और तौक़ खौलता हुआ पानी और आग।
४४ : ४४, ५०	थोहड़ का पेड़ पापियों का भोजन होगा।
४७ : १५	गर्म पानी जिससे अँतड़ियां कट जायें।
५६ : ४३-४५	आग की लपट, गर्म पानी और काले धुएँ की छाया।
५६ : ५२-५६	भूख ऐसी कि थोहड़ से पेट भर लें, प्यासे ऊँट की तरह खौलता पानी पी जायें।
६६ : ६	'जहन्नम' के निगरां 'फ़िरिश्ते' बड़े कड़वे स्वभाव वाले और कठोर हैं।
५७ : ७, ८	'जहन्नम' वाले दोज़ख को शोर मचाता और जोश मारता सुनेंगे।
६९ : ३०-३६	तौक़ और ७०-७० गज़ की ज़ंजीरें। पीप खाने के लिए।
७० : १५, १६	भड़कती हुई आग जो खाल उधेड़ कर रख दे।
७३ : १२, १३	बेड़ियां भड़कती हुई आग और हलक़ में फँसने वाला खाना।
७४ : २८-३०	'जहन्नम' शरीर को झुलसा कर रख देगा उसपर १९ दारोग़ा तैनात हैं।
७६ : ४	ज़ंजीरें, तौक़ और भड़कती हुई आग।
७८ : २१-२५	'जहन्नम' सरकशों की घात में है। वहां उनके लिए गर्म पानी और बहती पीप।
८८ : ४-७	भड़कती आग, खौलते सोते, कांटेदार झाड़ी का खाना।

(९) 'जन्नत'

२ : २५	ऐसे बाग़ जिनमें नहरें बह रही होंगी। फल और पाक पत्नियां।
७ : ४३	वहां किसी के मन में किसी की ओर से कोई कपट न होगा।
९ : २०-२२	अल्लाह की कृपा, उसकी प्रसन्नता और सदा रहने वाली नेमतें।
१० : ९, १०	नेमतों भरे बाग़, आपस में सलाम और अल्लाह का गुण-गान।
११ : १०८	सदा रहने वाली नेमतें।
१३ : २४	उत्तम घर जिसमें मनुष्य अपने सदाचारी बाप, पत्नियों और बच्चों के साथ रहे।
१३ : ३५	ऐसे बाग़, जिनमें नहरें जारी हों और उनके फल और साये सदा रहने वाले हों।
१५ : ४५-४८	बाग़ और सोते, पूर्ण, शान्ति का घर, रहने वाले सब भाई-भाई, किसी के मन में कपट नहीं।
१६ : ३०, ३१	वहां जो चाहेंगे, वही पायेंगे, सदा रहने वाले बाग़।
१८ : ३१	सोने के कंगन, उत्तम रेशमी वस्त्र।
१८ : १०७, १०८	सदा रहने वाले बाग़, जहां से जाने को कभी मन न कहे।
१९ : ६०-६३	वहां कोई अपशब्द सुनने को न मिलेगा और सुबह-शाम खाने का प्रबन्ध।
२० : ७५, ७६	उच्च पद, रहने को बाग़, जिसमें नहरें बह रही हों।
२२ : २३, २४	सोने और मोती के कंगन, रेशमी कपड़े और पवित्र वाणी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ : १५, १६	वहां जो चाहेंगे मिलेगा और सदा रहेंगे।
२५ : ७५, ७६	ऊँचे-ऊँचे महल, आपस की दुआ-सलाम, रहने की बहुत अच्छी जगह।
२९ : ५८	ऊँचे महल जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं और वहां सदा रहेंगे।
३० : १५	उस बाग़ में खुशहाल रहेंगें।
३२ : १७, १९	कोई क्या जाने अल्लाह ने 'जन्नत' में आंखों की ठण्डक का कैसा सामान किया है।
३३ : ४४	अल्लाह की ओर से शान्ति और बड़ा अच्छा बदला।
३४ : ३७	इतमीनान से कोठों पर बैठे हुए।
३५ : ३२-३४	सोने के कंगन और मोती, रेशमी कपड़े और ज़बान पर अल्लाह का शुक्र कि उसने दुःख दूर किया।
३६ : ५५-५८	'जन्नत' वालों के लिए सुख-वैभव की चीजें होंगी। वे और उनकी पत्नियां सायों में तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे।
३७ : ४१-४९	भोजन के मेवे, आमने-सामने तख़्तों पर बैठे हुए, उजली-उजली बड़ी ही मज़ेदार पीने की चीज़, जिससे न सिर में दर्द हो न नशा। नीची निगाहों वाली औरतें, बड़ी सुन्दर।
३८ : ४९-५२	अच्छी जगहें, बाग़ों में तकिया लगाये बैठे हुए, खाने को बहुत से मेवे और शराब, नीची निगाह वाली समआयु औरतें।
३९ : २०	ऊँचे-ऊँचे कोठे, नीचे नहरें बहती हुई।
४० : ४०	'जन्नत' में रोज़ी बे हिसाब मिलेगी।
४१ : ८	ऐसा बदला जो खत्म ही न हो।
४१ : ३१, ३२	जो जी चाहेगा मिलेगा, दयावान् क्षमा करने वाले की ओर से मेहमानी।
४३ : ७०-७३	सोने के बरतन इसके अलावा जो जी चाहे और जो आंखों को अच्छा लगे।
४४ : ५१-५७	शान्ति का स्थान, रेशम के बारीक और मोटे कपड़े, बड़ी-बड़ी आंखों वाली 'हूरें' और मौत से सदा के लिए छुटकारा।
४७ : १५	पानी की नहरें जिनमें गन्ध नहीं, दूध की नहरें जिनका मज़ा न बदले। शुद्ध शहद, हर तरह के मेवे और अल्लाह की क्षमा।
५० : ३४, ३५	जो चाहें वह सब कुछ और अल्लाह की तरफ़ से कुछ और ज्यादा।
५१ : १५, १६	बाग़ और सोते और अल्लाह की ओर से नमतें।
५४ : ५५	बाग़ और नहरें और अल्लाह के दरबार में पवित्र स्थान।
५५ : ४६-७८	सब मेवे दो-दो प्रकार के, अतलस के विछौने, बाग़ के मेवे झुके हुए, नीची निगाह वाली अछूती औरतें आदि।
५६ : ८९	सुगन्धित फूल और नेमत भरे बाग़।
७६ : ११-२२	वहां न धूप की तेज़ी और न कड़ी सर्दी, फलों से लदे हुए पेड़ चांदी और शीशे के बरतन।
७७ : ४१, ४२	छांव और सोते, मनचाहे मेवे।
७८ : ३१-३५	अंगूरों के बाग़, एक ही उम्र की नवयुवतियां, छलकते हुए गिलास, कोई अपशब्द और झूठी बात कान में न पड़ेगी।
८३ : २२-२८	चेहरों के ताज़ा रहने से मालूम होगा कि हर प्रकार का सुख प्राप्त है।
८८ : ८-१६	चेहरों पर प्रसन्नता के चिह्न होंगे। कोई गन्दी बात सुनने में न आयेगी। स्रोत, ऊँचे तख़्त और उम्दा मस्नदे।
९८ : ८	अल्लाह उनसे खुश और वे अल्लाह से खुश।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. इबादतें

(१) 'नमाज़'

२ : ३	क़ुरआन से उनको हिदायत मिलती है जो 'नमाज़' क़ायम करते हैं।
२ : ४३	'नमाज़' क़ायम करो, 'ज़कात' दो और 'रुकूअ' करने वालों के साथ रुकूअ करो-
२ : ४५	सब्र और 'नमाज़' से मदद लिया करो।
२ ११०	नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात' दो।
२ : १४९, १५०	'मस्जिदे हराम' (काबा) की ओर मुँह करके 'नमाज़' पढा करो।
२ : १५३	सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो।
२ : २३८	'नमाज़ों' की रक्षा करो।
४ : ४३	नशे की हालत में और नापाकी में 'नमाज़' न पढ़ो।
४ : १०१	यात्रा में 'नमाज़' कम करके पढ़ो।
४ : १४२	मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) नमाज़ के लिए सुस्ती से खड़ा होता है। लोगों को दिखाने के लिए नमाज़ पढ़ता है।
५ : ६	'नमाज़ पढ़ने लगा तो 'वज़ू कर लो, नहाने की ज़रूरत हो तो नहा लो, मजबूरी हो तो 'तयम्मुम' कर लो।
७ : ३१	'नमाज़' पूरे कपड़ों में पढ़ो।
११ : ११४	सुबह-शाम और रात में 'नमाज़' क़ायम करो।
१७ : ७८	सूर्य के ढलने से रात की अँधियारी तक नमाज़ क़ायम करो।
२० : १४	अल्लाह की याद के लिए 'नमाज़' क़ायम करो।
२० : १३२	अपने घर वालों को 'नमाज़' का हुक्म दो और खुद उस पर क़ायम रहो।
२२ : ७७	'रुकूअ' करो 'सजदा' करो और अपने 'रब' की 'इबादत' करो।
२३ : २	ईमान' वाले नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं।
२३ : ९	ईमान वाले 'नमाज़ों' की रक्षा करते हैं।
२४ : ३७	अल्लाह के नेक बन्दे कारोबार में लग कर 'नमाज़' और 'ज़कात' से ग़ाफ़िल नहीं होते।
२४ : ५६	'नमाज़' क़ायम करो और ज़क़ात दो। तुम पर अल्लाह की कृपा होगी।
२९ : ४५	'नमाज़' क़ायम करो। 'नमाज़' गन्दी और निर्लज्जता की बातों से रोक देती हैं।
३० : ३१	'नमाज़' क़ायम करो और 'मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में न हो जाओ।
३१ : १७	'नमाज़' क़ायम करो और लोगों को अच्छे काम करने के लिए कहो और बुरी बातों से रोको।
५० : ३९, ४०	सूर्य निकलने और डूबने से पहले और रात में नमाज़ पढ़ो।
५१ : १७	अल्लाह के नेक बन्दे रात के थोड़े हिस्से में सोते हैं।
५८ : १३	'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' दो। तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह को सब मालूम है।
६२ : ९	जुमे की नमाज की अज़ान हो जाए तो क्रय-विक्रय बन्द कर दो और नमाज़ की ओर लपको।
७३ : २	'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' दो।
७६ : २५, २६	सुबह-शाम अल्लाह का नाम लेते रहो और रात में नमाज़ पढ़ो।
८७ : १४, १५	अल्लाह को याद रखने वाले और 'नमाज़' पढ़ने वाले के लिए सफलता है।
१०७ : ४, ५	'नमाज़' की ओर से ग़ाफ़िल रहने वालों के लिए खराबी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) 'ज़कात'

२ : ४ क़ुरआन से रहनुमाई पाने के लिए अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना ज़रूरी है।
२ : १७७ अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने के रास्ते।
२ : १९५ अल्लाह की राह में माल ख़र्च न करना अपने आपको तबाही में डालना है।
२ : २१५, २१९ क्या ख़र्च किया जाये और कहां ?
२ : २६१-२६८ अल्लाह की राह में ख़र्च किया हुआ माल फलता-फूलता है और अल्लाह की कृपाओं का कारण।
२ : २७१ अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने से बुराइयां दूर होती हैं।
२ : २७२,२७३ इससे तुम्हारा अपना भला होगा।
३ : ९२ अल्लाह की राह में वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हें प्यारी हों।
३ : १८० कंजूसी तुम्हारे लिए हानिप्रद है।
७ : १५६ 'ज़कात' देना अल्लाह की दयालुता का कारण है।
९ : ११ 'ज़कात' देने पर इस्लामी सोसाइटी में अधिकार प्राप्त होते हैं।
९ : ६० 'ज़कात' के ख़र्च करने की मदें।
९ : १०३ 'ज़कात' मन में शुद्धीकरण का एक साधन है।
१४ : ३१ अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करने के लिए 'ज़कात' देना चाहिए।
१९ : ५५ 'ज़कात' पिछली 'शरीअतों' (धर्म-विधानों) में फ़र्ज़ थी।
२१ : ७३ पहले 'नबियों' ने भी ज़कात का हुक्म दिया।
२७ : ३ 'ज़कात' देना 'ईमान' लाने की अनिवार्य विशेषता है।
३० : ३९ 'ज़कात' देने से माल बढ़ता है।
७६ : ८ ग़रीबों और मुहताजों की आवश्तकताओं को पूरी करना 'ईमान' वालों की पहचान है।

(३) 'रोज़ा'

२ : १८३ 'रोज़ा' का अनिवार्य किया जाना और उसका उद्देश्य।
२ : १८४, १८५ यात्री और रोगी को रियायत।
२ : १८५ क़ुरआन जैसी नेमत का शुक्रिया 'रोज़ा' है।
२ : १८७ 'रोज़े' के कुछ हुक्म।

(४) 'हज्ज'

२ : १२५ 'काबा' को अल्लाह की 'इबादत' का केन्द्र बनाया गया।
२ : १५८ सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना हज्ज का एक अंग है।
२ : १९१ 'काबा' में लड़ना 'ह़राम' (अवैध) है।
२ : १९६-२०३ 'हज्ज' से सम्बन्धित आदेश।
३ : ९६, ९७ जो 'काबा' की यात्रा कर सकता हो उस पर हज्ज फ़र्ज़ है।
२ : १, ९५ इहराम की हालत में शिकार करना मना है।
२२ : २५-२९ 'हज्ज' और 'क़ुरबानी' से सम्बन्धित आदेश।
२२ : ३६, ३७ 'क़ुरबानी' से सम्बन्धित कुछ और आदेश और क़ुरबानी का आशय।
२७ : ९१ अल्लाह ने मक्का को प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।
९८ : ५७ अल्लाह ने 'काबा' को शान्ति का स्थान बनाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. सदाचरण और समाज व्यवहार

(१) नैतिक दोष जो कुरआन मिटाना चाहता है

२ : २७	अल्लाह को दिया हुआ वचन भंग न करो। यह सब से बड़ा नुक़्सान है।
२ : ८४	नाहक़ खून न बहाओ और लोगों को घर से बेघर न करो।
२ : १८८	धांधली से एक दूसरे के माल न खाओ और न घूस दो।
२ : २६४	भलाई करके एहसान न धरो और दिखावे से बचो।
४ : २९	बेईमानी से दूसरे के माल न खाओ और नाहक़ खून न बहाओ।
४ : ३६, ३७	घमण्ड करने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं करता और न कंजूसी उसे पसन्द है।
४ : १२८	तंगदिली से बचो।
५ : ९०	शराब और जुआ सब गन्दे शैतानी काम हैं।
६ : १०८	दूसरे के उपास्यों को बुरा न कहो।
६ : १५२	गन्दी बातों के क़रीब न जाओ और नाहक़ किसी की जान न लो।
६ : १५२	अपनी सन्तान को ग़रीबी के डर से क़त्ल न करो।
८ : २७	किसी से खियानत न करो।
१६ : ९०	बुराई और बेहयाई से बचो।
१६ : ९१	कोई वादा करके न तोड़ो।
१७ : २७	फ़ज़ूलखर्ची न करो। फ़ज़ूलखर्ची करने वाले 'शैतान' के भाई हैं।
१७ : ३१	निर्धनता के भय से औलाद को क़त्ल न करो।
१७ : ३२	ज़िना के क़रीब भी न फटको।
१७ : ३३	नाहक़ किसी को क़त्ल न करो।
१७ : ३४, ३५	वादा करके न तोड़ो और नाप-तौल में कमी न करो।
१७ : ३७	अकड़-अकड़ कर न चलो।
२२ : ३०	झूठी बातों से बचो।
२३ : ३, ५	व्यर्थ की बातों से दूर रहो और बदकारी के क़रीब न जाओ।
२४ : २३	किसी पर तोहमत (आरोप) न लगाओ।
२४ : २७-२९	बिना आज्ञा दूसरों के घरों में न घुसो।
२४ : ३०, ३१	मर्द पराई औरतों से और औरतें पराये मर्दों से नज़र बचा कर रक्खें और अपनी शर्मगाहों (गुह्य, इन्द्रियों) की रक्षा करें।
२४ : ३३	'लौंडियों' से वेश्यावृत्ति न कराओ।
२५ : ६७	न फ़ज़ूलखर्ची करो और न कंजूसी। बीच की चाल चलो।
२५ : ६८	ज़िना और नाहक़ क़त्ल से बचो।
२८ : १७	अपराधियों का सहायक बनना कदापि सही नहीं।
२८ : ७६	अल्लाह की दी हुई नेमतों पर फूलो मत।
३१ : १८	लोगों से गाल फुला कर बात न करो और न अकड़ कर चलो।
४२ : ३७	गन्दी और बेहयाई की बातों से बचो।
४९ : ११	किसी की खिल्ली मत उड़ाओ, ऐब न लगाओ और बुरे नाम न रक्खो।
४९ : १२	बदगुमानी से बचो, यह पाप है, किसी की टोह में न लगो।
४९ : १२	पीठ पीछे किसी को बुरा न कहो। यह ऐसा है जैसे मुर्दा भाई का मांस खाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४ : ६	बदले की उम्मीद पर एहसान न धरो।
८३ : १-३	नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए बड़ी ख़रावी है।
९३ : ९	यतीम पर क्रोध न करो।
९३ : १०	मांगने वालों को झिड़को मत।
१०२ : १	किसी को ताने देना और चुग़ली खाना बहुत बुरी बात है।
१०७ : ७	मामूली इस्तेमाल की चीज़ों को देने से इन्कार करना अच्छा नहीं।

(२) नैतिक गुण जो क़ुरआन पैदा करना चाहता है

२ : ८३	माता-पिता, नातेदारों, यतीमों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार और लोगों से भली बात कहना।
२ : १५३	'सब्र' (धैर्य एवं साहस) और 'नमाज़' से मदद लेना।
२ : १७७	नातेदारों, यतीमों, मुहताजों, यात्रियों और मांगने वालों पर अपना माल ख़र्च करना।
२ : २३७	आपसी उदारतापूर्ण व्यवहार को अपनाओ।
२ : २८०	ऋणी के साथ नर्मी का वर्ताव करो।
२ : २८३	अमानत में ख़ियानत न करो और गवाही को न छिपाओ।
३ : १३४	ग़ुस्सा पी जाया करो और लोगों को क्षमा कर दिया करो।
३ : १६५	ग़लती हो जाये तो मान लिया करो।
३ : १४६	अल्लाह के रास्ते में जो कठिनाइयां आयें उन्हें साहस के साथ सह लो और असत्य के आगे हथियार न डालो।
४ : ५८	अमानतदारी पर क़ायम रहो और न्याय करो।
४ : ८६	सलाम करो और सलाम का बेहतर तरीक़े पर जवाब दो।
४ : १३५	सच्चाई पर जमे रहो भले ही मामला अपना हो या अपने मां-बाप और नातेदारों का।
५ : ४८	अच्छी बातों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो।
१३ : २०	जो वादा करो उस पर जमे रहो।
१३ : २२	बुराई का तोड़ भलाई से करो।
१४ : ७	कृतज्ञता दिखलाते रहो।
१६ : ९०, ९१	न्याय करो, लोगों के साथ अच्छा वर्ताव करो और नातेदारों के हक़ पूरे किया करो।
२३ : ३-५	बेकार की बातों से बचो और शर्मगाहों की रक्षा करो।
२३ : ६१	हर भलाई की ओर दौड़ो और उसे अपनाओ।
२४ : २२	लोगों की ग़लतियां क्षमा कर दिया करो।
२४ : ३३	संयम और पाकदामनी अपनाओ।
२५ : ६३	ज़मीन पर नर्म चाल चलो और अज्ञानियों के जवाब में भली बात कहो।
२८ : ५४, ५५	बुराई को भलाई से दूर करो।
२८ : ८३	अल्लाह के नेक बन्दे ज़मीन में अपनी बड़ाई नहीं चाहते और न बिगाड़ पैदा करते हैं।
४१ : ३५	बुराई को भलाई से दूर करो। इससे बड़ी-बड़ी शत्रुता ख़त्म हो सकती है।
४२ : ३७	क्रोध आये तो क्षमा कर दो।
४२ : ३८	आपस के काम मश्विरों से किया करो।
४२ : ४३	'सब्र' करना और अपराध का क्षमा करना बड़े साहस के काम हैं।
४९ : ९, १०	दो लड़ पड़ें तो उन में सुलह-सफ़ाई करा दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५ : ९ — न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो।
६४ : १६ — जहाँ तक बन पड़े अल्लाह से डरो और कंजूसी से बचो।

(३) माता-पिता और नातेदारों के हक़

२ : ८३ — माता-पिता और नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
२ : १७७ — नातेदारों पर अपना माल ख़र्च करो।
२ : २१५ — अपना माल अपने माता-पिता और नातेदारों पर ख़र्च करो।
४ : ३६ — किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ और माता-पिता के साथ उपकार करो और नातेदारों के साथ।
६ : १५१ — माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।
१६ : ९० — अल्लाह हुक्म देता है कि नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये।
१७ : २३, २४ — माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो और उन्हें 'हूँ' तक न कहो।
३७ : २६ — नातेदारों का हक़ अदा करो।
२९ : ८ — 'अल्लाह' ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि माँ-बाप के साथ अच्छे व्यवहार करो।
३० : ३८ — नातेदारों का हक़ अदा करो।
३१ : १४ — अल्लाह ने मां-बाप के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया है।
४६ : १५ — अल्लाह ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे।

(४) यतीमों, मुहताजों और पड़ोसियों के हक़

२ : ८३ — 'यतीमों' और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
२ : १७७ — यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर अपना माल ख़र्च करो।
२ : २१५ — अपना माल यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करो।
२ : २२० — यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
४ : २ — यतीमों का माल उनको वापस कर दो।
४ : ३६ — यतीमों, पड़ोसियों और मुसाफ़िरों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
४ : १२७ — यतीमों के साथ न्याय करो।
६ : १५२ — यतीमों के धन की रक्षा करो।
९ : ६० — 'ज़कात' फ़क़ीरों और मुहताजों के लिए है।
१७ : ३४ — यतीमों के धन की रक्षा करो।
३० : ३८ — मुहताज और मुसाफ़िर का हक़ अदा करो।
८९ : १७, १८ — यतीमों की आव-भगत करो और मुहताजों को खाना खिलाने पर लोगों को उभारो।
९० : १३-१८ — भूखे को खाना खिलाना, वह नातेदार हो या फ़क़ीर, बड़ी नेकी का काम है।
१०७ : २, ३ — यतीमों को धक्के देना और फ़क़ीरों को खाना खिलाने पर लोगों को न उभारना बड़ा दुर्भाग्य है।

(५) दम्पति के हक़ और आदर्श रहन-सहन

२ : १८७ — तुम्हारा और तुम्हारी पत्नियों का सम्बन्ध ऐसा ही क़रीबी है जैसा शरीर का सम्बन्ध कपड़े से।
२ : २२३ — तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिए खेती के समान हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ : १२८	औरतों के लिए भी वैसे ही हक़ हैं जैसे मर्दों के हक़ उन पर हैं ।
२ : २२१	'मुश्रिकों' (बहुदेववादियों) से विवाह सही नहीं ।
२ : २२९	औरतों को भले तरीक़े से अपने पास रक्खो या अलग कर दो, पर तुम उन्हें जो 'मह्र' दे चुके हो, वह वापस नहीं ले सकते ।
२ : २३१	औरतों को सताने के लिए निकाह में न रक्खो ।
२ : २३२	'तलाक़' हो जाने के बाद औरतों को दूसरे विवाह से न रोको ।
२ : २३३	'तलाक़' के बाद जो औरतें तुम्हारे बच्चों को दूध पिलाएँ, उनके ख़र्च बाप के ज़िम्मे होंगे ।
२ : २३७	आपस के सम्बन्ध में उदारता को हाथ से न जाने दो ।
२ : २४०	मरने वाले को वसीयत करना चाहिए कि उनके बाद एक साल तक पत्नियों को ख़र्च दिए जाएँ ।
४ : ३	एक से अधिक पत्नियाँ हों तो उनके बीच न्याय करो, ऐसा न कर सको तो एक ही पत्नी भली ।
४ : ४	औरतों के 'मह्र' खुशी-खुशी अदा करो ।
४ : १९	बलपूर्वक औरतों के वारिस मत बन बैठो और न उन्हें तंग करो ।
४ : १९	पत्नियों के साथ भले तरीक़े से जीवन बिताओ ।
४ : १९, २०	'तलाक़' बिल्कुल अन्तिम उपाय है ।
४ : २०, २२	दिये हुए 'मह्र' में से कुछ भी वापस न लो ।
४ : २२	उन औरतों से कभी विवाह न करो जिनसे तुम्हारे बाप विवाह कर चुके हों ।
४ : २३, २४	वे औरतें जिनसे विवाह हराम है ।
४ : ३४	मर्द औरतों का सिरधरा है ।
४ : ३४	औरतों की सरकशी की स्थिति में उनसे क्या व्यवहार करना चाहिए ।
४ : ३५	पति-पत्नी क सम्बन्धों की ख़राबी दूर करने के लिए पंच का तरीका ।
४ : १२८	पति-पत्नी में अलगाव से समझौता बेहतर है ।
४ : १२९	पत्नियों में से किसी एक ही की ओर मत झुक जाओ, न्याय से काम लो ।
७ : १८९	तुम्हारे जोड़े को तुम्हारे लिए शान्ति का कारण बनाया ।
२४ : ३२	विधवा औरतों का विवाह कर दिया करो ।
३० : २१	अल्लाह ने तुम्हारी पत्नियों को शांति का साधन बनाया और आपसी प्रेम पैदा कर दिया ।
६५ : १	'इद्दत' के दिनों में औरतों को घर से न निकालो ।
६५ : २	उन्हें भली तरह साथ रक्खो या भली रीति से अलग कर दो ।
६५ : ६	औरतों को अपनी हैसियत के अनुसार रक्खो, उन्हें तंग न करो ।

(६) रहन-सहन के तरीक़े

४ : ८६	सलाम करो और सलाम का उत्तर अच्छे शब्दों में दो ।
२४ : २७	दूसरों के घर में इजाज़त ले कर जाओ और सलाम करो ।
२४ : ५८	'फ़ज्र' की 'नमाज़' से पहले, दोपहर के समय और 'इशा' के बाद घर के नौकर और लड़के-लड़कियां भी इजाज़त ले कर आया करें ।
२४ : ६१	घर में जाओ तो अपने घर वालों को सलाम कर के जाओ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४ : ६२	कोई सामूहिक काम हो रहा हो तो बिना इजाज़त न चले जाओ।
२६ : २९	सभाओं में बैठ कर गन्दे काम करना अच्छा नहीं।
३३ : ५३	खानों के बाद ख़ामख़ाह बैठ कर गप्पें हांकने से बचो। इस से मेज़बान को कष्ट होता है।
४९ : २	अपने प्रमुख से ऊँची आवाज़ से चिल्ला-चिल्ला कर बातें न करो।
५८ : ११	कहा जाए तो सभा में खुल कर बैठो और जब उठ खड़े होने को कहा जाए तो उठ खड़े हो।

७. राजनीति

(१) मौलिक दृष्टिकोण

६ : ७३	आसमान और ज़मीन अल्लाह ने पैदा किये।
१३ : १६	हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, वह अकेला है और सब पर छाया हुआ है।
४ : १	उसने तुम सब को एक जीव से पैदा किया।
२ : २९	अल्लाह ने तुम्हारे लिए सब-कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है।
३५ : ३	अल्लाह के अलावा कोई नहीं जो तुम्हें रोज़ी देता हो।
५६ : ५८-७३	वही वीर्य्य से बच्चा पैदा करता है, ज़मीन से खेती उगाता है, पानी बरसाता है।
२० : ६	आकाशों और धरती में, उन दोनों के बीच और धरती के भीतर जो कुछ है, अल्लाह का है।
३० : २६	आसमान और ज़मीन में सब-कुछ अल्लाह का है और सभी उस के आज्ञापालक हैं।
७ : ५४	सूर्य, चांद, तारे सब उस के आज्ञापालक हैं। उसी ने पैदा किया, वही मालिक है।
३२ : ५	आसमान से ज़मीन तक पूरी व्यवस्था अल्लाह के हाथ में है।
२ : १०७	आसमान और ज़मीन में बादशाही अल्लाह ही की है।
२५ : २	बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं।
२८ : ७०	आदेश देने का अधिकार अल्लाह ही को है।
६ : ५७	निर्णय का अधिकार अल्लाह के अलावा किसी को नहीं।
१८ : २६	वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।
३ : १५४	पूर्ण अधिकार अल्लाह ही को है।
३० : ४	अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है। पहले भी और बाद में भी।
५७ : ५	आसमान और ज़मीन की बादशाही उसी की है।
६ : १८	वह अपने बन्दों पर प्रभावपूर्ण अधिकार रखने वाला है।
५९ : २३	उसे सब पर प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त है। अपना आदेश बलपूर्वक लागू कर सकता है और बड़ाई का मालिक है।
४५ : ३७	आसमान और ज़मीन में बड़ाई उसी की है।
६७ : १	उस के हाथ में बादशाही है।
३६ : ८३	हर चीज़ का अधिकार अल्लाह के हाथ में है।
३ : ८३	आसमानों और ज़मीन के सब रहने वाले चाहे-अनचाहे उसी के आज्ञाकारी हैं।
१० : ६५	शक्ति उसी के हाथ में है।
९५ : ८	अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ : २६ सम्मान-अपमान का अधिकार उसी को है।
७ : १२८ ज़मीन अल्लाह की है। अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उस का वारिस बनाता है।

(२) सम्प्रभुत्व

६ : १६४ जो हर चीज़ का 'रब' (पालनकर्त्ता) है, वही मनुष्यों का भी 'रब' है।
७ : ५४ तुम्हारा 'रब' वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया।
११४ : १-३ अल्लाह मनुष्यों का 'रब' है। मनुष्यों का बादशाह है और मनुष्यों का 'इलाह' (इष्ट पूज्य)।
१० : ३१, ३२ तूम्हारा वास्तविक 'रब' वही अल्लाह है। फिर तुम किधर फिराए जा रहे हो।
४२ : १० तुम्हारे मतभेदों में फ़ैसला करना अल्लाह का काम है।
१२ : ४० हुक्म अल्लाह के अलावा किसी के लिए नहीं। यही सही धर्म है।
३ : २५४ अधिकार पूरे का पूरा अल्लाह का है।
७ : ५४ उसी ने पैदा किया, वही हुक्म देने का अधिकार रखता है।
५ : ४० तुम्हें यह मालूम नहीं आसमानों और ज़मीन में बादशाही उसी की है।

(३) क़ानून और आज्ञापालन

३९ : २ 'दीन' (धर्म) को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर के उस की दासता अपनाओ।
३९ : ११, १२ 'दीन' (धर्म) अल्लाह के लिए ख़ालिस है। और आज्ञापालन उसी का किया जाए।
१६ : ३६ हर 'रसूल' की शिक्षा यही थी कि 'इबादत' अल्लाह की करो और 'ताग़ूत' से बचो।
९८ : ५ लोगों को यहा हुक्म दिया गया कि एकाग्र हो कर अल्लाह की बन्दगी करें। धर्म को उसी के लिए ख़ालिस कर के।
७ : ३ पालन उस (क़ानून) का करो जो तुम्हारे रब की ओर से उतरा है।
२ : २२९ अल्लाह ने जो सीमाएँ निश्चित कर दी हैं, उन से बाहर जाने वाले अत्याचारी हैं।
६५ : १ जिस ने अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं से क़दम बाहर निकाला उसने स्वयं अपने साथ अन्याय किया।
५८ : ४ अल्लाह की सीमाओं का पालन करने से इन्कार करने वालों के लिए बड़ा दुःखदायी दण्ड है।
५ : ४४-४६ अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार फ़ैसला न करने वाले 'काफ़िर,' ज़ालिम और सीमोल्लंघन करने वाले हैं।
४ : ६० अल्लाह पर 'ईमान' लाना और फिर ताग़ूत से अपने मामलों के फ़ैसले कराना बड़ी गुमराही है।
३३ : ३६ अल्लाह और उसके 'रसूल' के फ़ैसले के बाद ईमान वाले के लिए कोई अधिकार शेष नहीं रह जाता।
२४ : ४७, ४८ जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' के फ़ैसलों से मुंह मोड़ता है वह कदापि 'ईमान' वाला नहीं।
२४ : ५१ 'ईमान' वाले व्यक्ति का काम यह है कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल का फ़ैसला सुने तो कहे कि मैंने सुना और मान लिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) ख़िलाफ़त

२ : ३०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में (अपना) 'ख़लीफ़ा' बनाया है।
७ : १०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में अधिकार दे कर बसाया।
२२ : ६५	अल्लाह ने ज़मीन की हर चीज़ मनुष्य के वश में कर दी है।
७ : ६९	'आद' को अल्लाह ने 'नूह' की जाति के बाद ख़लीफ़ा बनाया।
७ : ७४	'समूद' को 'आद' के बाद ख़लीफ़ा बनाया गया।
५ : ४८	'नबी' का काम यह है कि वह अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार लोगों के बीच फ़ैसले करे।
३८ : २६	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने अपना 'ख़लीफ़ा' बनाया और हुक्म दिया कि वे लोगों के मामलों को न्याय के साथ निबटाएँ।
७ : १२९	अल्लाह ने 'बनी इसराईल' को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाया कि देखे वे कैसा कर्म करते हैं।
१० : १४	अल्लाह ने तुम को ज़मीन में 'ख़लीफ़ा' बनाया कि देखे तुम कैसा कर्म करते हो।
२४ : ५५	'ईमान' लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों से अल्लाह का वादा है कि वह उन्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा।

(५) मन्त्रणा परिषद और राज्य के ज़िम्मेदार

२ : १५९	(हे नबी !) आप अपने कामों में मन्त्रणा कर लिया करें।
४२ : ३८	(मुसलमानों का) काम आपसी मश्विरों से चलता है।
४ : २९	मुसलमानों को अपने शासकों का आज्ञापालन करना चाहिए।
१८ : २८	उसका आज्ञापालन न करो जिसका दिल अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो।
२६ : १५१, १५२	जो लोग सीमोल्लंघन करते हैं और बिगाड़ पैदा करते हैं, उनका आज्ञापालन न करो।
४९ : १३	सबसे अधिक इज़्ज़त वाला वही है जो अधिक संयमी है।

(६) संविधान के मूल सिद्धान्त

४ : ५९	अल्लाह और 'रसूल' के आज्ञापालन को हर आज्ञापालन पर प्रमुखता प्राप्त है।
४ : ५९	शासकों का आज्ञापालन अल्लाह और 'रसूल' के आज्ञापालन के अन्तगर्त होगा।
४ : ५९	अधिकारपूर्ण शासक को मुसलमान होना चाहिए।
४ : ५९	लोगों को शासकों और शासन से मत-भेद करने का अधिकार है :
४ : ५९	ऐसे मत-भेदों में अन्तिम निर्णय अल्लाह और 'रसूल' के क़ानून से होगा।
५ : ४८	फ़ैसले अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार होने चाहिएँ।
४ : ५८	निर्णय करो तो न्याय के साथ करो।

(७) राज्य का उद्देश्य

५७ : २५	लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और अन्याय व अत्याचार ख़त्म हो जाये।
२२ : ४१	सत्ता पाने पर 'नमाज़' और 'ज़कात' की व्यवस्था स्थापित हो, नेकी का हुक्म दिया जाये और बुराई से रोका जाये।
४२ : १५	अल्लाह का हुक्म है कि लोगों में इन्साफ़ करूँ।
४ : ५८	लोगों के बीच न्याय के साथ फ़ैसला करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ : ११० नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना।
४२ : १३ 'दीन' (धर्म) क़ायम रखना और आपस की फूट रोकना।
८ : ३९ 'दीन' पूरे का पूरा अल्लाह के लिए हो जाये।
९ : ११२ अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाओं की रक्षा।

(८) मूल अधिकार

१७ : ३३ किसी को हक़ के बिना क़त्ल न करो। (जान की रक्षा)
२ : १८८ नाजायज़ तरीक़ों से एक-दूसरे के माल न खाओ। (व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा)
४ : २९ व्यापार या दूसरे जायज़ तरीक़ों के बिना एक-दूसरे के माल खाना ख़ुद अपने को हलाक (विनष्ट) करना है। (व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा)
४९ : ११, १२ कोई किसी की खिल्ली न उड़ाये, ऐब न लगाये, बुरे नाम न रक्खे और न पीठ पीछे बुरा कहे। (मान-रक्षा)
२४ : २७ दूसरे के घरों में बिना आज्ञा न जाओ। (निजी जीवन की रक्षा)
४९ : १२ लोगों के भेद न टटोलो। (निजी जीवन की रक्षा)
२ : २५६ 'दीन' (धर्म) में कोई ज़बरदस्ती नहीं। (विचार और धारणा की स्वतंत्रता)
१० : ९९ किसी को मजबूर करके मुसलमान नहीं किया जा सकता। (विचार और धारणा की स्वतंत्रता)
६ : १०८ दूसरों के उपास्यों को बुरा न कहो।
४९ : ६ पता लगाये बिना किसी के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।
४ : ५८ लोगों के बीच निर्णय न्याय के साथ करो।

(९) विदेशी राजनीति

१७ : ३४ वादा पूरा करो।
१६ : ९१, ९२ समझौता करने के बाद उससे न फिरो।
९ : ७ जब तक दूसरे समझौते पर डटे हों, तुम वादे से नहीं हट सकते।
९ : ४ दूसरे समझौते के विरुद्ध न जावें तो तुम अपने समझौते की मुद्दत तक अपने वादे पर जमे रहो।
८ : ७२ सन्धि का समझौता होते हुए तुम ग़ैर-मुस्लिमों के राज्य में रहने वाले मुसलमानों की सहायता नहीं कर सकते।
८ : ५८ समझौते के बाद कोई जाति धोखा दे तो पहले सन्धि समाप्त करो फिर कोई कार्रवाई करो।
५ : ८ किसी जाति की दुश्मनी में न्याय को हाथ से न जाने दो।
८ : ६१ दुश्मन समझौता करना चाहे तो तुम भी समझौते के लिए तैयार हो जाओ।
६० : ८ जो तुम से न लड़े और हानि न पहुँचाए, उसके साथ भलाई का व्यवहार करो।
६० : ९ जो तुम से लड़े और तुम्हारे दुश्मनों की मदद करे, उसके साथ दोस्ती नहीं हो सकती।
२ : १९४ जो तुम पर ज़्यादती करे तुम उस पर बस उतनी ही ज़्यादती कर सकते हो।
१६ : १२६ बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें सताया गया हो और अगर सब्र करो तो यह बेहतर है।
४२ : ४०-४२ तुम पर ज़्यादती की गई हो और तुम बदला लो तो इसमें कोई दोष नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. जिहाद

(१) अल्लाह की राह में किए गए जिहाद की वास्तविकता और आवश्यकता

१७ : ३३	मानव-प्राण लेना हराम है, किसी को क़त्ल न करो पर उस समय जबकि न्याय की मांग हो।
५ : ३२	किसी का नाहक़ क़त्ल करना ऐसा है जैसे तमाम लोगों को क़त्ल कर दिया।
२ : १९१	'दीन' (धर्म) से गुमराह करने का जुर्म बिगाड़ व क़त्ल से बढ़कर है।
२२ : ४०	अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाया न करता तो गिरजा, मस्जिदें आदि सब ढा दिए जाते।
२ : २५१	अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाया न करता तो ज़मीन बिगाड़ से भर जाती।
२२ : ३९, ४०	जिन लोगों से लड़ाई लड़ी जाए और बिना अपराध के उन्हें घरों से निकाला जाए उन्हें लड़ने की इजाज़त है।
४ : ७५	अल्लाह के रास्ते में कमज़ोरों, औरतों और बच्चों के लिए क्यों युद्ध नहीं करते।
४ : ७६	ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं और अवज्ञाकारिता की राह में।

(२) जिहाद की महत्ता

६१ : १०-१२	वह व्यापार जो पीड़ाजनक अज़ाब से बचाए, अल्लाह की राह में अपने माल और जान से 'जिहाद' करना है।
६१ : ४	अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है, जो उस की राह में पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं।
९ : २०-२२	जो लोग 'ईमान' लाए अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ा और अल्लाह की राह में जान व माल से लड़े, उनका पद उससे ऊँचा है।
९ : २४	'ईमान' वालों को अल्लाह की राह में 'जिहाद' करना संसार की हर चीज़ से ज़्यादा प्यारा होता है।

(३) अन्याय और अत्याचार का उत्तर

२ : १९०-१९३	'दीन' (धर्म) की सुरक्षा और प्रतिरक्षा के लिए लड़ना अनिवार्य है।
२२ : ३९, ४०	अल्लाह को अपना 'रब' कहने पर जो लोग घरों से निकाले जाएं और सताए जाएं उन्हें लड़ने की इजाज़त है।

(४) सत्य मार्ग की रक्षा

८ : ३६	जो लोग अपनी शक्ति अल्लाह के रास्ते से रोकने में लगाएं उनको परास्त किया जाए।
८ : ४७	मुसलमान उन लोगों जैसे न हो जाएं जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।
९ : ९	अल्लाह के रास्ते से रोकने वालों के विरुद्ध लड़ाई की इजाज़त है।
४७ : १, ४	जो लोग अल्लाह की राह से रोकने लगें उनकी शक्ति को कुचल डालो और उनसे लड़ो।

(५) छल-कपट की सज़ा

८ : ५५-५८	जो लोग छल-कपट करें और समझौता भंग करने पर उतर आएं, उनसे युद्ध किया जाये।
९ : १-५	समझौता भंग करने वालों को पहले मुहलत फिर उनसे लड़ाई का एलान।
९ : ७, ८	वादा पूरा न करने वाले जब तक लड़ें, तुम भी लड़ो।
९ : १०-१५	जो न नातेदारी का आदर करे, न वचन व समझौते का और 'दीन' (धर्म) पर वार करे ऐसे लोगों से युद्ध किया जाए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) भीतरी शत्रुओं का उन्मुलन

९ : ७३-७७ 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) से लड़ो और उन पर सख़्ती करो।
३३ : ६०, ६१ अगर 'मुनाफ़िक़' अपनी हरकतों से न रुकें तो उनसे युद्ध करना पड़ेगा।
४ : ८९ 'मुनाफ़िक़ों' में से किसी को अपना मित्र न बनाओ और उनकी पकड़-धकड़ करो।
४ ९१ 'मुनाफ़िक़' जो दोरुख़ी की नीति पर चल रहे हैं, इसी योग्य हैं कि उनसे लड़ा जाए।
४ : ८१ तुम्हारे सामने आते हैं तो आज्ञापालन स्वीकार करते हैं और पीठ पीछे विरोध की योजनाएं तैयार करते हैं।
९ : ४७, ४८ इन लोगों से बिगाड़ के सिवा और कोई आशा नहीं। ये झूठी ख़बरें फैलाते और इधर-उधर की लगाते हैं।
९ : ५६, ५७ ये क़समें खाते हैं कि हम तुम्हारे हैं, हालांकि ऐसा नहीं है।
९ : ६७ 'मुनाफ़िक़' मर्द और 'मुनाफ़िक' औरतें एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। ये बुराई फैलाते हैं और भलाइयों से रोकते हैं।
६३ : १, २ 'मुनाफ़िक़' झूठी क़समें खा-खा कर अपने 'ईमान' का यक़ीन दिलाते हैं, पर वास्तव में ये लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।

(७) शान्ति की रक्षा

५ : ३३ जो लोग अल्लाह और 'रसूल' से लड़ते हैं, और देश में बिगाड़ और द्रोह फैलाते हैं, उनकी सज़ा क़त्ल है।
८ : ६० अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए तुम लड़ाई के सामानों से सजे रहो।

(८) सताये हुए मुसलमानों की हिमायत

४ : ७५ कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए अत्याचारियों से लड़ो।
८ : ७२ ग़ैर मुस्लिम क्षेत्रों में रहने वाले सताए जा रहे मुसलमान अगर 'दीन' (धर्म) के बारे में सहायता मांगें तो उनकी सहायता करनी चाहिए, इस शर्त के साथ कि उस जाति के साथ तुम्हारा कोई समझौता न हुआ हो।

(९) जन-साधारण के कल्याण की स्थापना

२ : १४३ तुम एक उत्तम गरोह हो। तुम्हारा काम है दुनिया के सामने हक़ की गवाही देना।
२२ : ७८ अल्लाह के लिए 'जिहाद' करो जैसा 'जिहाद' करने का हक़ है। तुम दुनिया वालों पर गवाह हो।
२२ : ४१ शक्ति पाने के बाद तुम्हारा काम है कि 'नमाज़' और 'ज़कात' की व्यवस्था की स्थापना करो। नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको।
११ : ११६ नेक काम करने वालों का कर्त्तव्य है कि वे बिगाड़ को रोकें।
५ : ७८ लोगों को बुरी बातों से न रोकने वाले अल्लाह की फिटकार के अधिकारी होते हैं।

(१०) फ़ितना व फ़साद का दमन

२ : १९३ उनसे लड़ो यहां तक कि फ़ितना (उपद्रव) बाक़ी न रहे।
८ : ७३ आवश्यकतानुसार अगर तुम युद्ध न करोगे तो देश में फ़ितना व फ़साद मचेगा।
२ : १९१ फ़ितना क़त्ल से ज़्यादा बुरी चीज़ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. नबियों के हालात

(१) हज़रत आदम अ०

२ : २८-३४	ज़मीन पर मनुष्य के जीवन का आरम्भ तथा फ़िरिश्तों की बात-चीत।
२ : ३५-३९	हज़रत आदम और आपकी पत्नी का 'जन्नत' में रहना, 'शैतान' का धोखा देना और ज़मीन पर आदम अ० का आना।
७ : ११-१८	'शैतान' ने आदम अ० को 'सजदा' करने से इन्कार किया और इस प्रकार वह रुसवा हुआ।
७ : १९-२५	हज़रत आदम और आपकी पत्नी का 'जन्नत' में रहना, 'शैतान' का धोखा देना और धरती में आपका बसना।
४ : १	सब मनुष्य एक जीव हज़रत आदम अ० की सन्तान हैं।
७ : १८९	अल्लाह ने तुमको एक जीव (हज़रत आदम अ०) से पैदा किया।
१५ : २६-३०	मनुष्य को अल्लाह ने सड़ी हुई मिट्टी के गारे से पैदा किया और 'फ़िरिश्तों' से सजदा करने को कहा।
१५ : ३१-४२	'शैतान' ने आदम को 'सजदा' करने से इन्कार किया और वह धुतकारा गया।
१७ : ६१-६५	'शैतान' के सिवा सब फ़िरिश्तों ने आदम को सजदा किया।
१८ : ५०	शैतान के सिवा सब फिरिश्तों ने आदम को सजदा किया, 'शैतान' जिन्नों में से था और उसने आज्ञा को ठुकराया।
२० : ११५	आदम ने जो वचन दिया था उसे भूल गये।
२० : ११६-१२३	'फ़िरिश्तों' ने आदम अ० को सजदा किया, 'शैतान' ने इन्कार कर दिया और आदम को बहकाया।
३८ : ७१-८५	आदम मिट्टी से बनाये गये, 'फ़िरिश्तों' को सजदा करने की आज्ञा दी गई। 'इबलीस' अकड़ गया और सजदा न किया।

(२) हज़रत नूह अ०

७ : ५९-६४	अपनी जाति वालों को अल्लाह की दासता अपनाने का बुलावा, जाति की प्रतिक्रिया और फिर जाति वालों का परिणाम।
१० : ७१-७४	आपके उपदेशों पर जाति का क्रोध, अल्लाह पर भरोसा और यह ऐलान कि लोगो! तुम्हें जो-कुछ करना है कर गुज़रो मुझे तो जो आज्ञा मिली है उस का मुझे पालन करना है। और अन्त में जाति वालों का परिणाम।
११ : २५-३५	जाति को अल्लाह की दासता की ओर बुलाना, जाति की कठहुज्जती और हज़रत नूह अ० का बार-बार समझाना।
११ : ३६, ३९	अल्लाह की ओर से तसल्ली देना पौर ढारस बँधाना और नाव बनाने का हुक्म।
११ : ४०, ४१	तूफ़ान का आरम्भ, नाव में हर प्राणी का एक-एक जोड़ा और तूफ़ान में नाव की दशा।
११ : ४२-४४	हज़रत नूह अ० का अपने बेटे को पुकारना, उसका जवाब और उसका परिणाम।
११ : ४५-४८	बेटे के बारे में हज़रत नूह अ० की प्रार्थना। अल्लाह का जवाब और आपका माफ़ी माँगना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ : ७६, ७७ हज़रत नूह अ० की दुआ, अल्लाह ने स्वीकार की और बुरे लोगों को डुबो दिया।

२३ : २३-२६ आपकी जाति वालों ने अल्लाह की दासता की ओर बुलाने के जवाब में आप पर सत्ता हथियाने का आरोप लगाया और आपको पागल बताया।

२६ : २७-३० आपको नाव बनाने की आज्ञा मिली और अल्लाह ने आपको इसी के द्वारा तूफ़ान से बचा लिया।

२५ : ३७ रसूलों को झुठलाने पर नूह अ० की जाति डुबो दी गई।

२६ : १०५-१२२ नूह अ० की जाति वालों ने रसूलों को झुठलाया, आप के सन्देश पर कान न धरा और आपको मार डालने पर उतारू हो गये। अल्लाह की सहायता आई, आप और आप के साथी बचा लिये गये और बाक़ी सब डुबो दिये गए।

२९ : १४, १५ हज़रत नूह ने अपनी जाति में ५० कम एक हजार वर्ष तक 'इस्लाम' का प्रचार किया।

३७ : ७५-८२ हज़रत नूह अ० ने अल्लाह को पुकारा, आपकी दुआ स्वीकार हुई और आप और आप के साथी बड़े संकट से बच गए।

५४ : ९, १० नूह की जाति ने आप को झुठलाया, दीवाना कहा और डांटा आप ने अल्लाह को पुकारा।

५४ : ११-१६ आसमान से घोर वर्षा हुई, ज़मीन से सोते फूट निकले, आप नाव में सवार हो गए और न मानने वालों को सज़ा दी गई।

७१ : १-२० हज़रत नूह ने अल्लाह के हुक्म से लोगों को हर तरीक़े से अल्लाह की दासता की ओर बुलाया पर जाति ने एक न सुनी।

७१ : २१-२४ जाति के लोगों ने बड़ी-बड़ी चालें चलीं और अपने देवताओं को छोड़ने के लिए तैयार न हुए।

७१ : २५-२८ आख़िर ये लोग अपने अपराधों के कारण डुबो दिए गये और हज़रत नूह की दुआ स्वीकृत हुई।

(३) हज़रत इदरीस अ०

१९ : ५६, ५७ हज़रत इदरीस सच्चे नबी थे और अल्लाह ने उनका पद ऊँचा किया।

२१ : ८३ इदरीस सब्र करने वाले थे।

(४) हज़रत हूद अ०

६ : ६५ हूद ने अपनी जाति से कहा अल्लाह की दासता स्वीकार करो उसके सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं है।

७ : ६७-६९ जाति ने उन्हें मूर्ख कहा और झूठा बताया।

७ : ७० बोले क्या हम उनकी पूजा छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते थे।

७ : ७१, ७२ 'नबी' ने उन्हें अल्लाह की यातना की सूचना दी और वे यातना का शिकार हो गए।

११ : ५०-५२ हूद ने अपनी जाति में 'इस्लाम' का प्रचार किया।

११ : ५२-५७ उनकी जाति वालों ने अपने देवताओं को न त्यागा और 'ईमान' न लाये।

११ : ५८ अन्त में अल्लाह का अज़ाब आया और हूद और 'ईमान' वालों के सिवा सब हलाक (विनष्ट) हो गए।

२६ : १२३-१२७ आद जाति ने हूद को झुठलाया।

२६ : १२८-१३५ हूद ने जाति वालों के अपराधों की सूची उनके सामने रक्खी, उनको समझाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ : १३६-१४० जाति ने एक बात न सुनी और अन्त में नष्ट होकर रही।
५४ : १८-२१ 'आद' जाति पर एक बड़ी मनहूस आँधी आई और वह नष्ट हो गई।
६९ : ६-८ 'आद' जाति पर एक सात रात और आठ दिन तक तूफ़ान आया और कोई बाक़ी न बचा।

(५) हज़रत सालेह अ०

७ : ७३, ७४ हज़रत सालेह ने अपनी जाति 'समूद' को निमन्त्रण दिया।
७ : ७५-७७ जाति के बड़े सरदारों ने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया।
७ : ७८, ७९ एक भूकम्प आया और सब नष्ट हो गए।
११ : ६१ समूद जाति को हज़रत सालेह अ० ने अल्लाह की दासता की ओर बुलाया।
११ : ६२, ६५ जाति के लोगों ने कठहुज्जती की और अल्लाह की ऊँटनी मार डाला।
११ : ६६-६८ अल्लाह का अज़ाब आया और सालेह और उनके साथियों के सिवा सब नष्ट हो गये।
२६ : १४१-१५२ समूद जाति के सामने अल्लाह के 'रसूल' हज़रत सालेह ने 'इस्लाम' का सन्देश रक्खा।
२६ : १५३-१५७ उन्होंने अल्लाह के 'नबी' की बात न मानी और ऊँटनी को मार डाला।
२६ : १५८, १५९ अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा।
५४ : २३-३१ 'समूद' ने हिदायत करने वालों को झुठलाया और वे एक कड़ी आवाज़ की यातना से नष्ट हुए।

[६] हज़रत इबराहीम अ०

२ : १२४ हज़रत इबराहीम जाँच में पूरे उतरे।
२ : १२५ 'काबा' के पवित्र घर को लोगों के इकट्ठा होने की जगह बनाया गया और इसकी ज़िम्मेदारी हज़रत इबराहीम को सौंपी गई।
२ : १२६-१२९ हज़रत इबराहीम और उनके सुपुत्र ने 'काबा' का पवित्र घर बनाया और दुआ मांगी।
२ : १३०-१३२ हज़रत इबराहीम अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हो गये।
२ : २५८ वक़्त के बादशाह को हज़रत इबराहीम ने तौहीद की ओर बुलाया।
२ : २६० अल्लाह ने हज़रत इबराहीम को दिखाया कि मुरदे कैसे ज़िन्दा होते हैं।
३ : ६७, ६८ इबराहीम न 'यहूदी' थे न 'ईसाई'।
४ : ५४ इबराहीम की औलाद को अल्लाह ने 'नुबूवत' भी दी और बादशाही भी।
६ : ७४-७८ इबराहीम ने अपने बाप को 'तौहीद' की ओर बुलाया और दलीलें पेश कीं।
६ : ७९-८३ इबराहीम अ० ने 'शिर्क' (बहुदेववाद) से अपनी विरक्ति घोषित की और अल्लाह ने उनके पद को ऊँचा किया।
६ : ११४ जब उन्हें मालूम हो गया कि उनका बाप अल्लाह का दुश्मन है तो वे उससे विरक्त हो गये।
११ : ६९, ७० हज़रत इबराहीम के पास उन 'फ़िरिश्तों' का आना जो लूत अ० की जाति पर अज़ाब लेकर आये थे।
११ : ७१-७५ बुढ़ापे में सन्तान के शुभ समाचार पर उनकी पत्नी का आश्चर्य।
१४ : ३५-४१ हज़रत इबराहीम की दुआ 'मक्के' और अपनी औलाद के बारे में।
१५ : ५१-५६ मेहमानों के रूप में 'फ़िरिश्ता' का आना और पुत्र का शुभ समाचार देना।
१६ : १२०-१२२ इबराहीम अल्लाह के आज्ञाकारी थे और 'मुशरिक' (बहुदेववादी) नहीं थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९ : ४१-४५ इबराहीम ने अपने बाप को 'इस्लाम' की ओर बुलाया।

१९ : ४६-५० बाप ने मार डालने की धमकी दी और इबराहीम को स्वदेश छोड़ना पड़ा।

२१ : ५१-६७ अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा के विरुद्ध दलीलें रक्खी और 'तौहीद' (एकेश्वर-वाद) की ओर बुलाया।

२१ : ६८-७० इबराहीम का आग में डाला जाना और उन का सुरक्षित रहना।

२२ : २६-३३ इबराहीम को 'काबे' को उपासना गृह बनाने और उन्हें लोगों को 'हज्ज' करने का आमन्त्रण देने का हुक्म मिला।

२६ : ६९-८२ इबराहीम ने अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और 'तौहीद' का सन्देश पहुँचाया।

२९ : १६-१८ इबराहीम ने अपनी जाति वालों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया।

३७ : ८३-९९ इबराहीम ने बुतों (मूर्तियों) को तोड़ा, जाति ने आग में डाला और वह स्वदेश छोड़ने पर मजबूर हुए।

३७ : १०१-१११ इबराहीम अल्लाह के हुक्म पर अपने बेटे की 'क़ुरबानी' के लिए तैयार हो गये।

४३ : २६-२८ इबराहीम ने अपने बाप और अपनी जाति वालों के आराध्यों से विरक्ति की घोषणा की।

५१ : २४-३० मेहमानों के रूप में आने वाले 'फ़रिश्तों' का वृत्तांत, जो पुत्र का शुभ समाचार लेकर आये।

६० : ४-६ इबराहीम और उनके साथियों का पथ तुम्हारे लिए एक आदर्श है।

[७] हज़रत इस्माईल अ०

२ : १२५ 'काबा' के पवित्र घर की देख-रेख और उसे पाक रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

२ : १२७ अपने पिता हज़रत इबराहीम के साथ मिल कर 'काबा' का निर्माण किया।

६ : ८६ हज़रत इस्माईल को अल्लाह ने दुनिया वालों पर महानता दी।

१९ : ५४, ५५ इस्माईल वादे के सच्चे और अल्लाह के रसूल थे।

२१ : ८५ इस्माईल सब्र करने वाले थे।

३७ : १०२-१११ इस्माईल अल्लाह के हुक्म पर अपनी जान की क़ुरबानी के लिए तैयार हो गये।

३८ : ४८ इस्माईल भले लोगों में से थे।

[८] हज़रत इसहाक़ अ०

११ : ७१-७३ आपके जन्म की शुभ सूचना देने 'फ़रिश्ते' आये।

३७ : ११२, ११३ हज़रत इसहाक़ अल्लाह के 'नबी' और सदाचारी थे। इन पर अल्लाह ने अपनी बरकतें उतारीं।

३८ : ४५-४८ इसहाक़ बहुत कार्य-क्षमता रखने वाले, प्रतिभाशाली और भले लोगों में से थे।

[९] हज़रत लूत अ०

६ : ८६ हज़रत लूत को अल्लाह ने दुनिया वालों पर महानता दी।

७ : ८०-८४ हज़रत लूत ने अपनी जाति वालों को एक अश्लील कर्म से रोका। जाति उन्हें बस्ती से निकालने पर उतारू हो गई।

११ : ७७-८३ जो 'फ़रिश्ते' लूत की जाति पर अज़ाब लेकर आये वे सुन्दर लड़कों के रूप में थे। उन्हें देख कर हज़रत लूत की घबराहट और इस मौक़े पर जाति का बर्ताव और फिर यातना में पकड़ा जाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५ : ६१-६७	फ़िरिश्ते लूत ग्र० की जाति पर ग्रज़ाब लेकर ग्राये। जाति के लोग देख कर प्रसन्न हो गये।
१५ : ६८-७७	हज़रत लूत ग्र० ने उन्हें बहुत समझाया। परन्तु ग्रन्त में वह ग्रज़ाब में पकड़े गये।
२१ : ७४, ७५	हज़रत लूत को ग्रल्लाह ने 'नुबूवत' दी ग्रौर उन्हें उन लोगों से बचा लिया जो गन्दे काम करते थे।
२६ : १६०-१६६	लूत ग्र० की जाति वालों ने 'रसूलों' को झुठलाया। हज़रत लूत ने उन्हें ग्रल्लाह की दासता की ग्रोर बुलाया ग्रौर उन्हें उनके गन्दे कार्य पर टोका।
२६ : १६७-१७५	जाति वालों ने बस्ती से निकाल देने की धमकी दी। ग्रल्लाह का ग्रज़ाब ग्राया ग्रौर सब हलाक ग्रौर नष्ट हुए।
२७ : ५४-५८	हज़रत लूत ने जाति को ग्रश्लील कर्म पर टोका तो उन्होंने निकाल देने की धमकी दी ग्रौर ग्रल्लाह की यातना का शिकार हुए।
२९ : २८, २९	लूत की जाति ने ऐसी बेहयाई का काम किया जो उन से पहले किसी ने न किया था।
२९ : ३०-३५	लूत ग्र० की जाति पर ग्रल्लाह की यातना ग्राई। हज़रत लूत ग्रौर ग्रापके साथी बचा लिए गये।
३७ : १३३-१६८	हज़रत लूत ग्रल्लाह के 'पैग़म्बर' (नबी) थे। ग्रल्लाह ने उन्हें ग्रौर उनके घर वालों को ग्रज़ाब से बचा लिया।
५४ : ३३-३९	लूत की जाति ने ग्रल्लाह के 'नबी' को झुठलाया। उनके मेहमानों पर झपटे परन्तु ग्रल्लाह की यातना का शिकार हुए।

(१०) हज़रत याक़ूब ग्र०

२ : १३३	हज़रत याक़ूब की वसीयत ग्रपने बेटों को।
२ : १४०	हज़रत याक़ूब न 'यहूदी' थे, न 'ईसाई'।
४ : १६३	हज़रत याक़ूब पर ग्रल्लाह ने 'वह्य' की।
३८ : ४५-४८	हज़रत याक़ूब बड़ी कार्य-शक्ति रखने वाले, प्रतिभाशाली ग्रौर भले लोगों में से थे।

(११) हज़रत यूसुफ़ ग्र०

१२ : ३-६	हज़रत यूसुफ़ का स्वप्न।
१२ : ७-१५	हज़रत यूसुफ़ के भाइयों ने उन्हें कुवें में ले जाकर डाला।
१२ : १६-१८	भाइयों ने पिता के सामने झूठी रिपोर्ट दी कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया।
१२ : १९, २०	काफ़िले वाले हज़रत यूसुफ़ को मिस्र ले गये।
१२ : २१-२५	ग्रज़ीज़े मिस्र (मिस्र के ग्रधिकारी पुरुष) की पत्नी ने हज़रत यूसुफ़ को फुसलाना चाहा।
१२ : २६-२९	हज़रत यूसुफ़ के निरपराध होने पर गवाही।
१२ : ३०-३४	ग्रज़ीज़े मिस्र की पत्नी के विरुद्ध नगर में चर्चा ग्रौर इस का तोड़।
१२ : ३५	हज़रत यूसुफ़ जेल में।
१२ : ३६-४०	हज़रत यूसुफ़ ने जेल के साथियों के सामने 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का सन्देश रख दिया।
१२ : ४१, ४२	हज़रत यूसुफ़ ने जेल के साथियों के स्वप्न का ग्रर्थ बताया।
१२ : ४३-४९	बादशाह ने स्वप्न देखा, ग्रौर हज़रत यूसुफ़ ने उसका ग्रर्थ बताया।
१२ : ५०-५३	बादशाह के सामने हज़रत यूसुफ़ का निरपराध होना साबित हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ : ५४-५७ हज़रत यूसुफ़ को बादशाह ने अपना ख़ास आदमी बना लिया।
१२ : ५८-६२ हज़रत यूसुफ़ के भाई अनाज लेने मिस्र आये। उनके साथ हज़रत यूसुफ़ का व्यवहार।
१२ : ६३-६९ भाइयों की दुबारा मिस्र की यात्रा।
१२ : ७०-७७ एक भाई पर चोरी का आरोप और उसका पकड़ा जाना।
१२ : ७८-८३ भाइयों की निष्फल सिफ़ारिश, स्वदेश को लौटना और पिता के सामने सफ़ाई।
१२ : ८४-८८ हज़रत याक़ूब के हुक्म पर हज़रत यूसुफ़ की खोज में भाइयों की यात्रा।
१२ : ८९-९६ भाइयों से हज़रत यूसुफ़ का परिचय और स्वदेश से बाप का बुलाना।
१२ : ९७-१०० भाइयों के अपराध की माफ़ी और हज़रत यूसुफ़ के बचपन के स्वप्न का अर्थ।
१२ : १०१ हज़रत यूसुफ़ अ० की दुआ।

(१२) हज़रत शुऐब अ०

७ : ८५-८७ हज़रत शुऐब ने मदयन के लोगों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया और नाप-तोल में छल-कपट करने से रोका।
७ : ८८, ८९ जाति के सरदारों ने बस्ती से निकाल देने की धमकी दी और इस्लाम धर्म को छोड़ने के लिए कहा।
७ : ९०-९३ शुऐब को झुठलाने वाले अल्लाह की यातना का शिकार हुए।
११ : ८४-८६ हज़रत शुऐब ने मदयन वालों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया और नाप-तोल में बेईमानी करने से रोका।
११ : ८७-९० जाति की हठधर्मी और इन्कार, हज़रत शुऐब का समझाना।
११ : ९१-९५ जाति की ओर से मार डालने की धमकी और अन्त में अल्लाह की यातना।
२६ : १७६-१८४ हज़रत शुऐब ने जाति से कहा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और उन्हें 'इस्लाम' की ओर बुलाया।
२६ : १८५-१८८ जाति ने झुठलाया और कहा, तुम पर जादू हो गया है।
२६ : १८९-१९१ अल्लाह की यातना ने उन्हें आ पकड़ा।

(१३) हज़रत मूसा व हारून अ०

२ : ४७-५४ 'बनी इसराईल' पर अल्लाह की नेमतें, हज़रत मूसा को किताब का दिया जाना और जाति का बछड़ा के पूजने में लग जाना।
२ : ५५-६६ जाति ने हज़रत मूसा से अल्लाह को देखने की मांग की। 'बनी इसराईल' के इतिहास की कुछ और महत्वपूर्ण घटनाएं।
२ : ६७-७४ गाय ज़ब्ह करने का आदेश और इस विषय में बनी इसराईल की टाल-मटोल।
२ : ८३-१०१ 'बनी इसराईल' से लिए गये कुछ और वचन और उनके अपराधों की सूची।
४ : १६४ मूसा से अल्लाह ने बातें कीं।
५ : २०-२६ 'बनी इसराईल' ने हज़रत मूसा के आदेश को टाला और सीरिया देश में दाखिल नहीं हुए।
७ : १०३-१०५ मूसा को फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर भेजा और उन्होंने 'बनी इसराईल' को छोड़ देने की मांग की।
७ : १०६-११० मूसा ने फ़िरऔन को अल्लाह की निशानियां दिखाईं।
७ : १११-१२२ जादूगरों से मुक़ाबला हुआ और जादूगर 'ईमान' ले आये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ : १२३-१२६ इन नव-मुस्लिम जादूगरों का 'ईमान' पर जमना और इन की दुआ।

७ : १२७-१२९ 'बनी इसराईल' के विरुद्ध फ़िरऔन का षड़यन्त्र और हज़रत मुसा की ओर से उन्हें अटल रहने का आदेश।

७ : १३०-१३७ फ़िरऔनियों पर अकाल का आना, भांति-भांति की यातना का आना और हज़रत मूसा से दुआ करानी।

७ : १३८-१४१ 'बनी इसराईल' ने हज़रत मूसा से मूर्ति जुटाने की मांग की।

७ : १४२-१४५ हज़रत मूसा को 'तौरात' प्रदान की गई। हज़रत मूसा अल्लाह के दर्शन के अभिलाषी।

७ : १४८-१५३ हज़रत मूसा की जाति ने गहनों से एक बछड़ा बना लिया और उसे पूजना शुरू कर दिया।

७ : १५४-१५५ चुने हुए सत्तर व्यक्तियों को लेकर हज़रत मूसा तूर (पर्वत) पर गये।

७ : १६०-१६२ 'बनी इसराईल' बारह क़बीलों में बांट दिये गये, उन्हें 'मन्न' व 'सलवा' भोजन करने को मिला।

१० : ७५-७८ मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर भेजा गया। उसने अल्लाह की निशानियों को जादू बताया।

१० : ७९-८२ फ़िरऔन ने जादूगर इकट्ठा किये, मुक़ाबला हुआ और जादूगर असफल रहे।

१० : ८३-८६ मूसा पर 'ईमान' लाने वाले कुछ नवजवानों का अल्लाह पर भरोसा और उनकी दुआ।

१० : ८७-९३ मिस्र में हज़रत मूसा ने मुसलमानों को ट्रेनिंग दी। अल्लाह ने उन्हें नजात दी और फ़िरऔन और उसकी सेना डूब गई।

११ : ९६-९९ मूसा अ० फ़िरऔन के पास निशानी लेकर गये। उसकी जाति वालों ने फ़िरऔन का आज्ञापालन किया और उन का बुरा अन्त हुआ।

१४ : ५-८ मूसा को 'बनी इसराईल' की हिदायत का हुक्म दिया गया और उन्होंने जाति वालों को समझाया।

१७ : २ मूसा को 'बनी इसराईल' की हिदायत के लिए पवित्र ग्रन्थ दिया गया।

१७ : १०१-१०४ मूसा को ९ निशानियां दी गईं, फ़िरऔन ने जादूगर कहा।

१८ : ६०-६५ हज़रत मूसा की एक अनोखी यात्रा की रिपोर्ट और एक विशेष व्यक्ति से उनकी भेंट।

१८ : ६६-८२ कुछ अद्भुत घटनाएँ और उनका कारण।

१९ : ५१-५३ मूसा अ० अल्लाह के 'रसूल' थे। अल्लाह ने उन्हें 'तूर पर्वत पर बुलाया और हारून 'नबी' जैसा भाई दिया।

२० : ९-२४ मूसा रास्ते में आग देखकर बढ़े और तूर की पवित्र घाटी में पहुँच गये। अल्लाह ने उन्हें पुकारा और उन्हें अपना 'नबी' बनाया।

२० : २५-३६ हज़रत मूसा की दुआ पर हज़रत हारून को उनका साथी बनाया गया।

२० : ३७-४० हज़रत मूसा पर अल्लाह की कृपाएं जो जन्म से लेकर लड़कपन और जवानी में हुईं।

२० : ४१-४६ 'नुबूवत' का काम करने के लिए कुछ अनिवार्य निर्देश।

२० : ४७-५५ फ़िरऔन के दरबार में धर्म-प्रचार और फ़िरऔन से बातचीत।

२० : ५६-६९ फ़िरऔन निशानियां देखकर भी न माना और जादूगरों को मुक़ाबले के लिए ले आया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० : ७०-७६	जादूगर 'ईमान' ले आये और फ़िरऔन की धमकियों की परवाह न की।
२० : ७७-७९	मूसा अ० 'बनी इसराईल' को लेकर मिस्र से निकले। समुद्र ने उन्हें रास्ता दे दिया और फ़िरऔन अपनी सेना सहित डूब गया।
२० : ८०-८५	सामरी ने विश्वासघात किया और 'बनी इसराईल' ने बछड़े को पूजना शुरू कर दिया।
२० : ९८-९६	हज़रत मूसा का क्रोध हज़रत हारून पर और सामरी के कुकार्यों का विवरण।
२० : ९७, ९८	सामरी को दण्ड दिया गया और बछड़ा जलाकर राख कर दिया गया।
२१ : ४८, ४९	मूसा और हारून को अल्लाह ने प्रकाश और उपदेश की किताब दी।
२३ : ४५-४९	मूसा और उसके भाई हारून को फ़िरऔन की ओर भेजा गया और उसने उन्हें मानने से इन्कार कर दिया।
२५ : ३५, ३६	मूसा को अल्लाह ने किताब दी और हारून को उनका सहायक बनाया।
२६ : १०-१७	मूसा को फ़िरऔन की अत्याचारी जाति की ओर भेजा गया और हारून को उनका साथी बनाया गया और उन्हें धर्म-प्रचार के विषय में अनिवार्य शिक्षा दी गई।
२६ : १८-२९	फ़िरऔन की बात-चीत हज़रत मूसा से, फ़िरऔन ने क़ैद की धमकी दी।
२६ : ३०-४२	हज़रत मूसा ने निशानियां दिखाईं। फ़िरऔन ने जादू कहा और जादू के द्वारा मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो गया।
२६ : ४३-४९	जादूगरों से मुक़ाबला हुआ और वे सब 'ईमान' ले आये। फ़िरऔन ने मार डालने की धमकी दी।
१६ : ५०, ५१	जादूगर 'ईमान' पर जमे रहे और अल्लाह से क्षमा मांगी।
२६ : ५२-६१	मूसा 'बनी इसराईल' को लेकर रातों-रात निकले। फ़िरऔन ने पीछा किया।
२६ : ६२, ६३	हज़रत मूसा ने अपने साथियों की ढारस बँधाई और अल्लाह के हुक्म से लाठी समुद्र पर मारी।
२६ : ६४-६७	समुद्र ने रास्ता दे दिया। फ़िरऔन और उसकी सेना डूब गई।
२७ : १३, १४	फ़िरऔन ने चमत्कारों को जादू बताया। इन्कार किया और वे हलाक (विनष्ट) हो गये।
२८ : ४	'बनी इसराईल' पर फ़िरऔन के अत्याचार।
२८ : ५-७	हज़रत मूसा की मां ने अल्लाह के इशारे से आपको एक बक्स में रखकर दरिया में बहा दिया।
२८ : ८-१०	फ़िरऔन के घर वालों ने आपको पाला।
२८ . ११-१३	हज़रत मूसा की बहन के सुझाव से फ़िरऔन के घर वालों ने आपकी मां को ही दूध पिलाने की सेवा सौंपी।
२८ : १४-२१	हज़रत मूसा के हाथ से एक फ़िरऔनी का संयोग से क़त्ल हो जाना। और आप का मिस्र देश छोड़ देना पड़ा।
२८ : २२-२८	हज़रत मूसा मदयन पहुँच गये। मदयन का जीवन और विवाह।
२८ : २९-३२	मिस्र की ओर यात्रा। रास्ते में तूर पर 'नुबूवत' मिली और चमत्कार भी।
२८ : ३३-३७	आपके भाई हारून को आपका साथी बनाया गया। फ़िरऔन ने जादूगर बताया।
१८ : ३८, ३९	फ़िरऔन ने कहा एक ऊँचा मीनार बनाओ ताकि मैं मूसा के अल्लाह को झांक कर देखूं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८ : ४०-४२	फ़िरऔन पकड़ लिया गया और समुद्र में सेना समेत डूब गया।
२८ : ४३-४८	हज़रत मूसा को अल्लाह ने किताब दी जो हिदायत और अल्लाह की कृपा है।
२९ : ३९, ४०	हज़रत मूसा क़ारून, फ़िरऔन और हामान के पास खुली निशानियां लेकर आये परन्तु उन्होंने घमण्ड किया और सबकी पकड़ हुई।
३२ : २३, २४	मूसा को किताब दी और उसे 'बनी इसराईल' के लिए हिदायत बनाया।
३३ : ६९	मूसा अल्लाह के नज़दीक बड़े रुतबे वाले थे।
३७ : ११६-१२२	मूसा और हारून पर अल्लाह ने उपकार किया, उन्हें और उनकी जाति को बडी मुसीबत से मुक्ति दी।
४० : २३-२७	फ़िरऔन, हामान और क़ारून ने हज़रत मूसा को झूठा बताया और उनके क़त्ल के लिए तैयार हो गये।
४० : २८	फ़िरऔन के दरबार के एक नव-मुस्लिम ने हज़रत मूसा के क़त्ल की योजना पर कड़ी आलोचना की।
४० : २९-३५	इस नव-मुस्लिम ने अल्लाह के 'नबी' के विरोध के तमाम परिणाम खोल-खोल कर बताये।
४० : ३७	फ़िरऔन ने कहा एक ऊँचे महल का निर्माण करो कि उस पर चढ़ कर मूसा के अल्लाह को झाँक कर देखूं।
४० : ३८-४५	'ईमान' लाने वाले व्यक्ति ने अपनी जाति को फिर भी बड़ी विनम्रता से समझाया और बुरे परिणामों से डराया।
४३ : ४६-५३	हज़रत मूसा ने फ़िरऔन को 'इस्लाम' की ओर बुलाया, उसने अपनी बादशाही के नशे में उन्हें जादूगर ठहराया और कहा मैं तुमसे बेहतर हूँ।
४३ : ५४-५६	फ़िरऔन ने अपनी जाति की बुद्धि मार दी लेकिन डूबने के बाद वह सबके लिए शिक्षा-सामग्री बन गया।
४४ : १७-१९	फ़िरऔन के पास एक उच्चकोटि का 'रसूल' आया और उसे सरकशी से रोका।
४४ : २०-२२	फ़िरऔन ने उनके क़त्ल की तैयारियां कीं। हुक्म हुआ कि मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जाओ।
४४ : २५-२९	हज़रत मूसा और उनके साथी समुद्र से पार हो गये और फ़िरऔन की सेना डुबो दी गई।
४४ : ३०-३३	'बनी इसराईल' को रुसवाई की यातना से छुटकारा मिला और उन्हें अल्लाह ने पसन्द कर लिया।
६१ : ५	हज़रत मूसा को उनकी जाति वालों ने सताया और टेढ़े रास्ते पर चले, अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिए।
७९ : १५-१७	मूसा को उसके 'रब' ने तुआ नामक घाटी में पुकारा और 'रसूल' बना कर फ़िरऔन के पास भेजा।
७९ : १८-२०	मूसा ने फ़िरऔन के सामने 'इस्लाम' का सन्देश रक्खा और निशानियां दिखाईं।
७९ : २१-२४	फ़िरऔन ने झुठलाया और एलान कर दिया कि मैं सबसे बड़ा 'रब' हूं।
७९ : २५, २६	अल्लाह ने उसे यातना में पकड़ लिया।

(१४) हज़रत दाऊद अ०

४ : १६३	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने आसमानी किताब (ज़बूर) दी।
१७ : ५५	अल्लाह ने किसी 'नबी' को किसी पर बड़ाई दी और हज़रत दाऊद को 'ज़बूर' दिया।
२१ : ७८	खेती के एक मुक़दमे में हज़रत दाऊद का निर्णय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ : १४, १५	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने 'नुबूवत' दी और हज़रत सुलेमान को उनका उत्तराधिकारी बनाया।
२१ : ७९	हज़रत दाऊद के साथ पर्वत और चिड़ियां भी अल्लाह का गुण गाती थीं।
२१ : ८०	हज़रत दाऊद को कवच बनाना आता था।
३४ : १०	पहाड़ हज़रत दाऊद के साथ अल्लाह का गुण-गान करते थे और लोहा उनके लिए नर्म था।
३८ : १७-१९	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने शक्ति दी थी। पर्वत उनके साथ अल्लाह का गुणगान करते और चिड़ियां भी।
३८ : २०	अल्लाह ने उसकी हुकूमत मज़बूत की और उसे 'हिकमत' और दो-टूक बात कहने की क्षमता प्रदान की।
३८ : २१-२५	दुंबियों के बारे में झगड़ा करने वाले दो व्यक्तियों के मुक़दमे से हज़रत दाऊद ने सबक़ हासिल किया।
३८ : २६	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने न्याय करने के लिए सत्ता दी।

(१५) हज़रत सुलैमान अ०

२ : १०२	सुलैमान के राज्य का नाम लेकर शैतान जादू की चीजें सिखाया करते थे।
२१ : ७८, ७९	खेती के एक मुक़दमे में अल्लाह ने हज़रत सुलैमान को फ़ैसला करने का तरीक़ा समझा दिया।
२१ : ८१, ८२	वायु और बड़े-बड़े जिन्न आदि सुलैमान के आज्ञाकारी थे।
२७ : १६	सुलैमान को अल्लाह ने चिड़ियों की बोली का ज्ञान दिया।
२७ : १७-१९	सुलैमान की सेना के साथ जिसमें 'जिन्न' मनुष्य और चिड़ियां सभी थे च्युंटी की घाटी से गुज़रे।
२७ : २०-२९	हुद-हुद ने सुलैमान को सब की सूचना दी और पत्र सबा की रानी के पास ले गया।
२७ : ३०-३५	हज़रत सुलैमान का पत्र और उसका प्रभाव सबा की रानी पर।
२७ : ३६-४०	सबा की रानी का हज़रत सुलैमान के दरबार में आना और इस्लाम को अपना लेना।
२७ : १२	वायु सुलैमान की आज्ञाकारिणी थी और वे एक महीने की यात्रा कुछ घण्टों में कर लेते थे।
२७ : १२-१४	जिन्न भी हज़रत सुलैमान के आज्ञाकारी थे लेकिन उन्हें 'ग़ैब' (परोक्ष) का कोई ज्ञान न था।
३८ : ३०-३५	हज़रत सुलैमान के सामने 'जिहाद' के घोड़ों का लाया जाना, उनकी जांच और दुआ।
३८ : ३६-४०	हवा और 'जिन्न' हज़रत सुलैमान के आज्ञाकारी थे और उनके बड़े काम करते थे।

(१६) हज़रत अय्यूब अ०

२१ : ८३, ८४	हज़रत अय्यूब अ० ने अपनी बीमारी की हालत में अल्लाह को पुकारा और उनकी दुआ सुन ली गई।
३८ : ४१-४४	अल्लाह के हुक्म से हज़रत अय्यूब ने ज़मीन पर लात मारी, स्रोत बह पड़ा, नहाने से बीमारी दूर हुई।

(१७) हज़रत यूनुस अ०

१० : ९८	हज़रत यूनुस की जाति यातना देख कर 'ईमान' लाई और इस 'ईमान' से उसे फ़ायदा हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ : ८७, ८८ हज़रत यूनुस ने मछली के पेट में अल्लाह को पुकारा और उसने उनकी पुकार सुन ली।

३७ : १३९-१४१ हज़रत यूनुस अल्लाह के 'पैग़म्बर' (नबी) थे, नाव में टास उनके नाम निकला वे नदी में फेंक दिये गये।

३७ : १४२-१४८ हज़रत यूनुस को मछली ने निगल लिया, उन्होंने अल्लाह को याद किया और नजात पाई।

६८ : ४८-५० अगर अल्लाह की कृपा न होती तो हज़रत यूनुस बहुत दुःख पाते।

(१८) हज़रत ज़करिया अ०

३ : ३७-४१ हज़रत ज़करिया ने हज़रत मरयम को पाला-पोसा और अपने लिए एक नेक औलाद की दुआ की।

१९ : २-६ हज़रत ज़करिया ने अपने बाद 'दीन' (धर्म) का काम करने के लिए अपने उत्तराधिकारी के लिए दुआ की।

१९ : ७-११ हज़रत ज़करिया को एक बेटे यहया की शुभ-सूचना दी गई।

२१ : ८९, ९० हज़रत ज़करिया ने दुआ की कि अल्लाह मुझे अकेला न छोड़ और एक उत्तराधिकारी मुझे दे।

(१९) हज़रत ईसा अ०

२ : ८७, २५३ अल्लाह ने हज़रत ईसा को खुली निशानियां दीं और 'रूहुल्क़ुदुस' (पवित्र आत्मा) से उनको मदद दी।

३ : ४२-४७ अल्लाह ने हज़रत मरयम को तमाम दुनिया की औरतों में चुना और उन्हें हज़रत ईसा के जन्म की शुभ-सूचना दी।

३ : ४८-५१ हज़रत ईसा के कुछ चमत्कार और आपकी दी हुई शिक्षाएं।

३ : ५२-५७ 'हवारियों' ने हज़रत ईसा का साथ दिया और अल्लाह ने हज़रत ईसा के दर्जे ऊंचे किये।

३ : ५९ अल्लाह के नज़दीक ईसा अ० का जन्म ऐसा ही है जैसा हज़रत आदम का जन्म।

४ : १५६-१५९ इसराईल की सन्तान का यह दावा कि उन्होंने हज़रत मसीह को क़त्ल कर दिया और इस दावे का खण्डन।

४ : १७१ ईसा मरयम के बेटे, अल्लाह के 'रसूल' और उसी का 'कलमा' थे उन्हें तीन में से एक ख़ुदा न कहो।

४ : १७२ ईसा के लिए अल्लाह का बन्दा होने में कोई लज्जा की बात नहीं।

५ : १७ मरयम के बेटे ईसा को ख़ुदा मानने वाले 'काफ़िर' हैं।

५ : ४६, ४७ हज़रत ईसा ने 'तौरात' की पुष्टि की और 'इंजील' में प्रकाश और मार्ग-दर्शन है।

५ : ७२-७४ जिन्होंने ईसा को ख़ुदा कहा, उन्होंने 'कुफ़्र' किया। ईसा ने तो केवल अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया।

५ : ७५ ईसा अल्लाह के 'रसूल' थे, उनकी मां पुण्यवती थीं और दोनों मनुष्य थे।

५ : ११० हज़रत ईसा ने पालने (झूले) में बात-चीत की। वह मुर्दे को ज़िन्दा कर देते थे। और अल्लाह ने उन्हें कितनी ही निशानियां दीं।

५ : ११२-११५ हज़रत ईसा के 'हवारियों' ने मांग की कि आसमान से दस्तरख़ॉन उतरे।

५ : ११६-११८ 'क़ियामत' के दिन हज़रत ईसा कहेंगे कि मैंने किसी से नहीं कहा कि मुझे या मेरी मां को ख़ुदा बनाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९ : ३०, ३१	'ईसाइयों' ने ईसा को अल्लाह् का बेटा कहा और अपने विद्वानों और महात्माओं को खुदा बना लिया।
१९ : १६-२६	हज़रत मरयम का अल्लाह् के हुक्म से गर्भवती होना और हज़रत ईसा का जन्म।
१९ : २७-३३	हज़रत ईसा ने गोद का बच्चा होते हुए लोगों के आरोपों का खण्डन किया।
१९ : ३४, ३७	हज़रत ईसा का सन्देश।
२३ : ५०	अल्लाह् ने हज़रत ईसा और उनकी माता को अपनी निशानी बताया।
५७ : २७	हज़रत ईसा को अल्लाह् ने इञ्जील दी और उनके मानने वालों के दिलों में नम्रता और स्नेह डाल दिया।
६१ : ६	हज़रत ईसा ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आने की शुभ-सूचना दी।
६१ : १४	'हवारियों' ने हज़रत ईसा का साथ दिया।

१०. दीन एक ही है

२ : १३१-१३३	'इस्लाम' अर्थात् अल्लाह् की आज्ञा का पालन करना, यही अल्लाह् का चाहा हुआ 'दीन' (धर्म) है। इबराहीम और सब नबियों का दीन है।
३ : १९, २०	'दीन' तो अल्लाह् के नज़दीक 'इस्लाम' ही है। इसका जिसने भी विरोध किया उसने हठ के कारण ही विरोध किया।
३ : ६४	अल्लाह् की दासता स्वीकार करना और उसके साथ किसी को साझी न ठहराना, यह वह बात है जिसे वे लोग भी स्वीकार करते हैं जो किताब (को मानने) वाले हैं।
३ : ८१-८३	अल्लाह् ने तमाम 'पैग़म्बरों' (नबियों) के अनुयायियों से यह वचन लिया कि जब भी उनके बाद कोई 'रसूल' अल्लाह् की दी हुई शिक्षा की पुष्टि करता हुआ आये तो वे उसपर 'ईमान' लायें, और उसका साथ दें।
३ : ८४, ८५	मुसलमान सब 'नबियों' पर 'ईमान' लाता है और 'इस्लाम' के सिवा किसी 'दीन' (धर्म) को स्वीकार नहीं करता।
५ : ४६-४८	'ईसा' वही 'दीन' लेकर आये जो पहले पैग़म्बर (नबी) लाये थे। उन्होंने पहली किताबों की पुष्टि की।
६ : ८३-९०	तमाम 'नबियों' को अल्लाह् ने हिदायत दी थी। तुम उन्हीं की हिदायत को मानो।
१६ : ३६	हर गरोह के पास अल्लाह् के 'रसूल' यही सन्देश लाये कि अल्लाह् की दासता अपनाओ और तागूत से बचो।
२१ : २४	जो सन्देश हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने दिया वही पहले पैग़म्बरों (नबियों) का भी सन्देश था।
२१ : ९२	तमाम 'नबियों' का गरोह एक ही है और सब को अल्लाह् की दासता स्वीकार करना है।
२३ : ५१-५३	तमाम 'रसूल' एक ही गरोह से हैं और सब का रब अल्लाह् है।
४२ : १३, १४	अल्लाह् ने 'दीन' (धर्म) का रास्ता वही नियुक्त किया है जो पहले 'नबियों' के लिए था।
४२ : १५, १६	हे मुहम्मद सल्ल०! आप उसी 'दीन' की ओर लोगों को बुलायें। इसके बारे में झगड़ा करना बेकार है।
४३ : ४५	किसी 'रसूल' ने यह नहीं कहा कि दासता अल्लाह् के सिवा किसी और की स्वीकार करो।
५३ : ३६, ३७	मूसा और इबराहीम के 'सहीफ़ों' में एक ही शिक्षा दी गई है।
८७ : १८, १९	" " "

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. क़ुरआन में ईमान वाले का चित्र

२ : २-५	ग़ैब (परोक्ष) पर 'ईमान' लाता है। 'नमाज़' क़ायम करता है। अल्लाह की किताबों और 'आख़िरत' पर 'ईमान' रखता है।
२ : ४६	इसका विश्वास रखता है कि एक दिन अल्लाह से मिलना है।
२ : १२१	अल्लाह की किताब को इस प्रकार पढ़ता है जैसे पढ़ने का हक़ है।
२ : १२५	अल्लाह के घर का 'तवाफ़' करता है, वहां 'एतिकाफ़' करता है और 'रुकूअ' व 'सजदे' करता है।
२ : १३८	अल्लाह के रंग में रंगा हुआ उसकी उपासना करने वाला और केवल उसी का आज्ञापालन स्वीकार करने वाला।
२ : १५५-१५७	सब्र करने वाला और संकट के समय अल्लाह को याद करने वाला।
२ : १६५	सबसे अधिक अल्लाह से प्रेम करने वाला।
२ : ७७	अल्लाह पर, 'आख़िरत' पर, 'फ़िरिश्तों' पर, 'किताबों' और 'नबियों' पर 'ईमान' लाने वाला, अल्लाह के प्रेम में माल ख़र्च करने वाला।
२ : १७७	'नमाज़' क़ायम करने वाला, 'ज़कात' देने वाला, वादे का पूरा करने वाला।
२ : ७७	मुसीबतों में सब्र करने वाला।
२ : २०७	अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए प्राण का सौदा करने वाला।
२ : २०८	अल्लाह के आज्ञापालन में पूरे का पूरा दाखिल और 'शैतान' के पीछे न चलने वाला।
३ : १७	'सब्र' करने वाला, सच्चा, 'इबादत' करने वाला, अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाला और भोर में गुनाहों की माफ़ी चाहने वाला।
३ : १०२, १०३	अल्लाह से डरने वाला, परस्पर भाई-भाई।
३ : १०४	नेकी की ओर बुलाने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।
३ : ११०	तमाम इन्सानों की 'हिदायत' के लिए अपने आप को ज़िम्मेदार समझने वाला।
३ : १३४	ग़रीबी हो या अमीरी, हर हाल में अल्लाह की राह में धन ख़र्च करने वाला।
३ : १३४	ग़ुस्से को पी जाने वाला और माफ़ कर देने वाला।
३ : १३६	कोई काम बुरा हो जाता है तो उसकी माफ़ी चाहता है। उस पर अड़ा नहीं रहता।
३ : १९५	अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के लिए घर-बार छोड़ने वाला और कष्ट सहने वाला।
६ : ५२	सुबह-शाम अल्लाह को याद करने वाला और उसकी प्रसन्नता चाहने वाला।
६ : ८२	'ईमान' में 'शिर्क' (बहुदेववाद) का गड्ड-मड्ड नहीं करता।
६ : ९२	नमाज़ों की पूरी रक्षा करता है।
७ : २०१	'शैतान' के पैदा किये हुए वसवास से होशियार और आंखें खोल कर जीवन बिताने वाला।
८ : २	अल्लाह की याद से दिल कांप जाता है और अल्लाह की 'आयतें' सुन कर 'ईमान' बढ़ जाता है।
८ : ३	अल्लाह पर भरोसा करता है, 'नमाज़' क़ायम करता है और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करता है।
९ : १८	अल्लाह और 'आख़िरत' पर 'ईमान' रखता है।
९ : १९-२२	'दीन' (धर्म) के लिए घर छोड़ देता है और अल्लाह की राह में जान और माल से जिहाद करता है।
९ : ७१	नेकी फैलाने और बुराइयां मिटाने में दूसरे मुसलमानों का साथ देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९ : ७१	'नमाज़' क़ायम करता है, 'ज़कात' देता है और अल्लाह और 'रसूल' का आज्ञापालन करता है।
९ : १०८	वह पवित्रता को पसन्द करता है।
९ : १११	वह अपनी जान और माल को अल्लाह का माल समझता है और उसकी राह में युद्ध करता है।
९ : ११२	'तौबा' करने वाला, 'इबादत' करने वाला और अल्लाह का गुणगान करने वाला।
९ : ११२	अल्लाह की राह में सफ़र करने वाला, 'रोज़ा' रखने वाला।
९ : ११२	नेकी का हुक्म देने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।
११ : २३	'ईमान' और सुकर्मों से आभूषित और अपने 'रब' के सामने विनम्रता दर्शाने वाला।
१३ : २१	वह वादे को नहीं तोड़ता, नातेदारियों को ध्यान में रखता और अल्लाह से डरता है।
१३ : २२	अल्लाह की खुशी के लिए 'सब्र' करता है। 'नमाज़' क़ायम करता है, 'ज़कात' देता है और नेकी से बुराई को दूर करता है।
१३ : २८	उसके मन को अल्लाह की याद से शान्ति मिलती है।
१६ : ४२	वह सब्र करता है और अपने 'रब' पर भरोसा।
१७ : १०७-१०९	वह अल्लाह के आगे सजदे में गिरता है, रोता है और विनम्रता दिखाता है।
२१ : ९०	नेक कामों की ओर लपकता है और अल्लाह को भय और आशा के साथ पुकारता है।
२२ : ३५	अल्लाह का नाम लिया जाए तो उसका दिल डर जाये। 'सब्र' करता है. 'नमाज़' क़ायम करता है और अल्लाह की राह में माल खर्च करता है।
२३ : २, ३	नमाज़ों में विनम्रता दर्शाने वाला और बेहूदा बातों से दूर।
२३ : ४-७	'ज़कात' देने वाला और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करने वाला।
२३ : ८, ९	अमानतदार, वादे का पाबन्द और 'नमाज़ों' की रक्षा करने वाला।
२३ : ५७-५९	अपने 'रब' से डरने वाला और उसके साथ किसी को शरीक न करने वाला।
२३ : ६०, ६१	सुकर्मों में जल्दी करने वाला और आगे बढ़ने वाला।
२४ : ३७, ३८	कारोबार में पड़कर न अल्लाह की याद से गाफ़िल होता है और न 'नमाज़' से।
२४ : ५१, ५२	उसे जब अल्लाह और 'रसूल' की ओर बुलाया जाये तो वह यही कहता है कि मैंने सुन लिया और मान यिया।
२४ : ६२	वह विना अनुज्ञा के किसी सामूहिक कार्य को छोड़ कर नहीं जाता।
२५ : ६३	उसकी चाल नर्म और ज़बान मीठी होती है।
२५ : ६४-६६	रातों को उठकर अल्लाह को याद करता है और क्षमा-याचना करता है।
२५ : ६७-७१	खर्च में सन्तुलन रखता है। अल्लाह के सिवा किसी की वन्दगी नहीं करता है और न बिना हक़ के किसी की जान लेता है।
२५ : ७२, ७३	झूठी गवाही नहीं देता। बेहूदा चीज़ों की ओर ध्यान नहीं देता। अल्लाह की बात पर कान धरता है।
२५ : ७४-७६	अपने घर वालों की नेकी और 'ईमान' के लिए दुआएँ मांगा करता है।
२८ : ५४	'सब्र' करने वाला, बुराई को भलाई से दूर करने वाला और अल्लाह की राह में माल खर्च करने वाला।
२८ : ५५	बेहूदा बातें सुनकर मुँह फेर लेने वाला और जाहिलों के मुँह न लगने वाला।
२८ : ८३	वह न बिगाड़ पैदा करता है और न बड़ा बनता है।
२९ : ५८, ५९	हर मौक़े पर 'सब्र' और (अल्लाह पर) भरोसे से काम लेने वाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१ : २२	अल्लाह का आज्ञाकारी और बहुत नेक।
३२ : १५, १६	रातों को उसके पहलू बिस्तर से अलग रहते हैं।
३३ : ३५	आज्ञापालन करनेवाला, 'ईमान' का पक्का, आज्ञाकारी, सच्चा, सब्र करने वाला, अल्लाह से डरने वाला।
३३ : ३५	दान करने वाला, रोज़ेदार, शर्मगाहों की रक्षा करने वाला और अल्लाह को बहुत याद करने वाला।
३९ : ९	रातों को 'नमाज़ें' पढ़ने वाला और 'आख़िरत' से डरने वाला।
३९ : १७, १८	ताग़ूत की बन्दगी से बचने वाला और भली बातों को स्वीकार करने वाला।
३९ : २२	उसका सीना 'इस्लाम' के लिए खुला हुआ होता है।
४१ : ३३	अल्लाह के दीन की ओर बुलाने वाला, सुकार्य करने वाला और अल्लाह का आज्ञाकारी।
४१ : ३४, ३५	बुराइयों को भलाइयों से दूर करने वाला।
४२ : ३६, ३७	बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचने वाला और ग़ुस्सा आने पर माफ़ कर देने वाला।
४२ : ३८, ३९	'नमाज़' क़ायम करने वाला और सब काम मश्विरों से करने वाला।
५१ : १५-१९	रातों को कम सोने वाला और भोर में क्षमा-याचना करने वाला।
५८ : २२	वह अल्लाह और रसूल के दुश्मनों से दोस्ती नहीं करता, भले ही वे उसके बाप हों या नातेदार।
५९ : ८	वह अल्लाह और 'रसूल' का सहायक होता है और सच्चा।
५९ : ९, १०	वह त्यागी होता है लोभी नहीं होता, 'ईमान' वालों की ओर से साफ़ दिल होता है।
७० : २२-२८	'नमाज़' कभी नहीं छोड़ता। ग़रीबों की सहायता करता है। 'आख़िरत' का विश्वास रखता है।
७० : २९-३४	शर्मगाहों की रक्षा करता है और वादे का पूरा करने वाला होता है।
७६ : ७-१०	मिन्नत पूरी करने वाला, यतीमों, मुहताजों और क़ैदियों को खाना खिलाने वाला।
७९ : ४०	अल्लाह के आगे खड़े होने से डरने वाला और मनोवासनाओं को रोकने वाला।
९२ : १८-२१	जो-कुछ करता है अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए करता है।
१०३ : ३	'ईमान' और सुकर्मों के साथ दूसरों को सत्य पर डटे रहने और 'सब्र' की राह अपनाने पर उकसाता रहता है।

१२. दुआएँ

१ : १-७	हर 'नमाज़' में पढ़ी जाने वाली दुआ।
२ : १२६-१२९	हज़रत इबराहीम की दुआ पवित्र घर 'काबा' के निर्माण के समय और उसी के निकट अपनी नस्ल को बसाते समय।
२ : २०१	दुनिया और 'आख़िरत' की भलाई की दुआ।
२ : २८५-२८६	अल्लाह की राह में आज़माइशों में फँस जाने पर 'ईमान' वालों की दुआ।
३ : ८	'हिदायत' पर जमे रहने की दुआ।
३ : १६	गुनाहों से माफ़ी की दुआ।
३ : ५३	ईसा अ० के 'हवारियों' की दुआ 'ईमान' और 'इस्लाम' के लिए।
३ : १४७	'दीन' (धर्म) की राह पर जमे रहने की दुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ : १९१-१९४	'जहन्नम' से नजात, गुनाहों की माफ़ी और आख़िरत में सफलता की दुआ।
७ : ८९	हज़रत शुऐब अ० की दुआ।
७ : १२६	फ़िरऔन के जादूगरों की दुआ, 'ईमान' लाने के बाद।
७ : १५१	हज़रत मूसा की दुआ।
७ : १५५	हज़रत मूसा की एक और दुआ।
१० : ८५, ८६	मूसा अ० के नौजवान मुसलमानों की दुआ।
१२ : १०१	हज़रत यूसुफ़ अ० की दुआ, मिस्र में सत्ताधारी होने के बाद।
१४ : ३५-४१	हज़रत इबराहीम की दुआ, 'काबे' के निकट अपनी औलाद को बसाते समय।
१७ : २४	मां-बाप के लिए दुआ।
१७ : ८०	'हिजरत' से पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल० को सिखाई हुई दुआ।
१८ : १०	गुफा वालों की दुआ।
१९ : ४-६	हज़रत ज़करिया अ० की दुआ 'दीन' (धर्म) के कामों के लिए अपने उत्ताधिकारी के लिए
२० : २५-३२	'नुबूवत' मिलने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२१ : ८३	हज़रत अय्यूब अ० की दुआ।
२१ : ८७	हज़रत यूनुस की दूआ।
२१ : ८९	हज़रत ज़करिया की दुआ।
२३ : २९	तूफ़ान से नजात पाने पर हज़रत नूह की दुआ।
२३ : ९७, ९८	'शैतान' के धोखों से पनाह मांगने की दुआ।
२३ : १०९	माफ़ी मांगने और कृपा पाने की दुआ।
२३ : ११८	माफ़ी और दया की दुआ।
२५ : ६५, ६६	'जहन्नम' से नजात की दुआ।
२५ : ७४	अपने वाल-बच्चों के सुधार की दुआ।
२६ : ८३, ८७	हज़रत इबराहीम की दुआ अपनी और अपने बाप की माफ़ी के लिए।
२६ : ११८	हज़रत नूह की दुआ अपनी जाति से नजात पाने के लिए।
२६ : १६९	हज़रत लूत की दुआ, जब उनकी जाति पर यातना आई।
२७ : १९	हज़रत सुलैमान की दुआ अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करने के लिए।
२८ : १६, १७, २१	क़िब्ती का क़त्ल हो जाने के बाद हज़रत मूसा की दुआ।
२८ : २४	मदयन पहुँचने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२९ : ३०	हज़रत लूत की दुआ जाति के मुक़ाबले में अल्लाह की सहायता के लिए।
३८ : ३५	हज़रत सुलैमान की दुआ राज्य मिलने के लिए।
४० : ७-९	'ईमान' वालों के लिए 'फ़िरिश्तों' की दुआ।
४६ : १	सुकार्य और औलाद के सुधार के लिए एक ईमान वाले की दुआ।
५९ : १०	दिलों को डाह और जलन से शुद्ध करने की दुआ।
६६ : ११	फ़िरऔन की पत्नी की दुआ।
११३ : १-५	रात के अँधेरे, और इर्ष्या करने वालों की ईर्ष्या (जलन) से बचने की दुआ।
११४ : १-६	'शैतान' के डाले हुए वसवास से बचने की दुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिव्य श्रुतज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—अल-फ़ातिहा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-फ़ातिहा' इसके विषय के अनुकूल है। जिस चीज़ से किसी वस्तु, लेख, पुस्तक आदि का आरम्भ होता है उसे अरबी में फ़ातिहा कहते हैं। यह सूरा वास्तव में 'क़ुरआन' की भूमिका या प्राक्कथन (The Opening of the Book) है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की अपार कृपा हो) की 'नुबूवत' के बिल्कुल आरम्भ-काल में उतरी है।

विषय

इस सूरा का केन्द्रीय विषय 'हम्द' या ईश-प्रशंसा एवं कृतज्ञता प्रदर्शन है। यह सूरा पूरे 'क़ुरआन' का संक्षेप और पूरा क़ुरआन इसी सूरा का विस्तार है।

सूरा अल-फ़ातिहा एक प्रार्थना के रूप में अवतीर्ण हुई है। यही कारण है कि इसके शब्द यद्यपि कहें हुए तो अल्लाह के हैं परन्तु वे मनुष्य के मुख से कहलवाये गये हैं। मनुष्य प्रार्थना उसी चीज़ की करता है जिसकी माँग और इच्छा उसके मन में पाई जाती हो। 'अल्लाह' ने आरम्भ ही में इस प्रार्थना की शिक्षा देकर मनुष्य को यह सीख दी है कि वह इस ग्रन्थ को सत्य-मार्ग की खोज के लिए पढ़े, सत्यान्वेषी की भाँति पढ़े, और इस बात को आरम्भ ही में अच्छी तरह जान ले कि ज्ञान का स्रोत सर्वश्रेष्ठ अल्लाह है। उस की कृपा न हो तो मनुष्य केवल अंधकार में भटक सकता है, जीवन के सच्चे और सहज मार्ग का उसे ज्ञान कदापि नहीं हो सकता।

इस सूरा में अल्लाह से प्रार्थना की गई है कि वह हमें जीवन के सीधे और सही रास्ते पर चलाये। यह मानव-हृदय की वह पुकार और उसके अंतःकरण से निकली हुई वह प्रार्थना है जिस का उत्तर अल्लाह ने 'वह्य' और 'रिसालत' के रूप में दिया है।

इस सूरा में बन्दा अल्लाह से प्रार्थना करता है: प्रभुवर! मुझे उस मार्ग पर चला जो जीवन का सीधा और सरल मार्ग है। इस के उत्तर में उसका स्वामी पूरा क़ुरआन उस के सामने रख देता है कि जिस मार्ग-दर्शन के लिए तुमने मुझ से प्रार्थना की है वह यही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़ातिहा

(मक्का में उतरी – 'आयतें' ७)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. सब प्रशंसा[1] अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का 'रब'[2] है,

२. अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

३. उस दिन का मालिक है जिस दिन बदला दिया जायेगा।[3]

४. (प्रभुवर!) हम तेरी ही बन्दगी[4] करते हैं; और तुझी से सहायता चाहते हैं।

५. हमें सीधा मार्ग दिखा,

६. उन लोगों का मार्ग जिन पर तू ने कृपा की;

७. न कि उन का (मार्ग) जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न उन का जो भटक गये।

THE OPENING

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Praise be to Allah, Lord of the Worlds.

2. The Beneficent, the Merciful.

3. Owner of the Day of Judgement.

4. Thee (alone) we worship; Thee (alone) we ask for help.

5. Show us the straight path:

6. The path of those whom Thou hast favoured;

7. Not (the path) of those who earn Thine anger nor of those who go astray.

سورة الفاتحة مكية وهي سبع آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝١
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ
نَسْتَعِيْنُ ۝٤
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ ۝٦
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧

१. क़ुरआन में 'हम्द' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसमें प्रशंसा के साथ कृतज्ञता-प्रदर्शन का अर्थ भी सम्मिलित है।

२. अर्थात् पालनकर्त्ता प्रभु, शासक।

३. अर्थात् मौत के बाद फ़ैसले के दिन का मालिक है।

४. क़ुरआन में यहाँ 'इबादत' शब्द का प्रयोग हुआ है जिस में विनय भाव, उपासना, दासता, आज्ञापालन का अर्थ पाया जाता है। फिर इसमें प्रेम का अर्थ भी सम्मिलित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२–अल-बक़रा
(परिचय)

नाम (The Title)

अल-बक़रा (गाय) इस 'सूरा' का विषय-शीर्षक नहीं है। यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रक्खा गया है। इसका अर्थ केवल यह है कि वह सूरा जिसमें एक जगह गाय का वर्णन है। नाम रखने की यह रीति अरबों में पहले से प्रचलित थी।

'क़ुरआन' की 'सूरतों' के नाम विभिन्न नियमों के अन्तर्गत रक्खे गये हैं। कुछ सूरतों के नाम उन के प्रारम्भिक शब्दों से लिये गये हैं–जैसे सूरा ता० हा०, 'अन-नाज़िआत' आदि। कुछ के नाम कुछ विशेष शब्दों के आधार पर रक्खे गये हैं जो उन सूरतों में कहीं आये हैं–जैसे 'अश-शुअ्रा', 'अल-हदीद' आदि। कुछ सूरतों के नाम ऐसे शब्दों पर आधारित हैं जो सूरा के किसी महत्त्वपूर्ण विषय या वार्त्ता के सूचक हैं–जैसे 'अन-निसा', 'यूनुस', 'अन-नूर' आदि और कुछ के नाम उस आशय को व्यक्त करते हैं जिन की हैसियत सूरा के केन्द्रीय विषय की है जैसे सूरा 'अल-बराअत' और सूरा 'अल-इख़लास'।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरा का बड़ा भाग हज़रत मुहम्मद सल्ल०[1] के मक्का से मदीना प्रस्थान करने के प्रारम्भिक दो वर्षों में उतरा है। बहुत थोड़ा भाग ऐसा है जो बाद में या इससे पहले अवतीर्ण हुआ है, और विषय की अनुकूलता के कारण इस सूरा में सम्मिलित कर दिया गया है। अनुकूलता ही के कारण ब्याज से सम्बन्धित 'आयतें' भी इस में शामिल हैं, हालाँकि वे पैग़म्बर सल्ल० के जीवन के बिल्कुल अन्तिम समय में उतरी हैं। इसी तरह जिन आयतों पर यह सूरा समाप्त होती है, वे 'हिजरत' (मक्का के परित्याग) से पूर्व मक्का में उतरीं थीं।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

'सूरा' का केन्द्रीय विषय क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 'ईमान' लाना है। इस सूरा में क़ुरआन का अल्लाह की किताब होना और हज़रत मुहम्मद सल्ल० का 'रसूल' होना इस प्रकार सिद्ध किया गया है कि एक सच्चे मनुष्य को इस के मानने में कोई सन्देह नहीं हो सकता।

क़ुरआन के प्राक्कथन अर्थात् सूरा अल-फ़ातिहा के बाद सूरा अल-बक़रा ही वह एक मात्र सूरा है जिस से क़ुरआन का आरम्भ (Prelude) हो सकता था यही कारण है कि इस सूरा को अल-फ़ातिहा के बाद ही रक्खा है। सूरा अल-फ़ातिहा में मार्ग-दर्शन के लिए प्रार्थना की गई है। अल-बक़रा के आरम्भ ही में बताया गया है कि यही अल्लाह की किताब लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने वाली है। इसी के द्वारा लोग जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग पा सकते हैं।

सम्बोधन और वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय के अनुसार इस सूरा में विशेष रूप से 'यहूदियों' को सम्बोधित किया गया है। यहूदियों को उस समय मदीना या उस के आस-पास केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि धर्म-प्रचार की दृष्टि से भी विशेष महत्त्व प्राप्त था। यहूदियों को इस से पहले आसमानी किताब (ईश्वरीय ग्रन्थ) मिल चुकी थी; परन्तु सैकड़ों वर्ष की निरन्तर अवनति के कारण वास्तविक धर्म से वे बहुत दूर हो चुके थे। उन के आचार-विचार में बहुत-सी ऐसी बातें सम्मिलित हो गई थीं जो उन के धर्म-ग्रन्थ 'तौरात' के बिल्कुल विरुद्ध थीं। इसी प्रकार उन के समाज में बहुत सी ऐसी बातों का चलन हो गया था जिन के

१. यह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का संक्षिप्त रूप है। पढ़ते समय पूरा वाक्य पढ़ना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए तौरात से कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था। उन्हों ने तौरात में बहुत सी बातें अपनी ओर से गढ़ कर सम्मिलित कर दी थीं। तौरात में जो ईश्वरीय आदेश मौजूद थे उन को भी उन्हों ने अपनी मनमानी व्याख्याओं से कुछ-से-कुछ कर दिया था।

'हिजरत' के बाद अल्लाह् के 'रसूल' सल्ल० ने यहूदियों को उस सच्चे 'दीन' (धर्म) की ओर बुलाया जिसे वे बिल्कुल भुला चुके थे। सूरा अल-बक़रा में आरम्भ से 'आयत' १४१ तक का भाग इसी विषय से सम्बन्ध रखता है। इसमें यहूदियों के इतिहास, और उनकी नैतिक एवं धार्मिक स्थिति पर आलोचना करते हुये उन के सामने सत्य धर्म के मूल सिद्धान्तों के रक्खा गया है[1]। खेद की बात है कि यहूदियों ने इस सन्देश को ठुकरा दिया। केवल उनके गिने-चुने लोगों ने ही सत्य को स्वीकार किया। यहूदी वास्तव में उसी समय से 'इस्लाम' के वैरी थे जब कि नबी सल्ल० मक्का में लोगों को अल्लाह् का सन्देश सुना रहे थे। मदीना आने के पश्चात् तो शत्रुता की कोई ऐसी चाल न थी जिस के चलने में उन्हें संकोच हुआ हो।

मदीना आने के बाद भी मुसलमानों को यह भय लगा रहता था कि किसी समय दुश्मन उन पर चढ़ाई कर सकते हैं। मक्के वालों ने इस बात की क़सम खा रक्खी थी कि वे 'इस्लाम' को पनपने न देंगे। इसके लिए वे युद्ध की तैयारी में लगे हुए थे। मदीने के यहूदियों और मुसलमानों में समझौता हो चुका था। उन्होंने प्रत्येक बाह्य आक्रमण का मुक़ाबला करने के लिए संयुक्त मोरचा बनाने का वचन दिया था; किन्तु फिर भी 'मुसलमानों' के विरुद्ध मक्का वालों से वे साँठ-गाँठ ही करते रहे। ऐसी परिस्थिति में मुसलमानों को जो आदेश दिये गये वे यही कि उन्हें 'इस्लाम' के प्रचार में लग जाना चाहिए। संकटों और कठिनाइयों के होते हुये भी उन्हें डट कर परिस्थितियों का मुक़ाबला करना चाहिए। उन्हें अपने में इतना साहस और बल पैदा करना चाहिए कि यदि कोई शक्ति उन के मिशन को असफल बनाने के लिए उभर कर सामने आये, तो उसे वीरता के साथ कुचला जा सके। इन सब बातों के सम्बन्ध में केवल प्रारम्भिक आदेश इस सूरा में दिये गये हैं।

मदीने में मुसलमानों को एक और वर्ग से निबटना पड़ा। यह वर्ग 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) का था। मक्का में केवल एक ही प्रकार के 'मुनाफ़िक़' थे, जो इस्लाम को सच्चा धर्म जानते थे, पर उन में इतना साहस न था कि इस्लाम के लिए अपने स्वार्थ को त्याग सकें और उन कठिनाइयों का मुक़ाबला कर सकें, जिन से इस्लाम लाने के साथ ही सामना करना पड़ता था। इस के विपरीत मदीने में विभिन्न प्रकार के मुनाफ़िक़ पैदा हो गये थे। कुछ मुनाफ़िक़ तो ऐसे थे जो इस्लाम में बिल्कुल विश्वास नहीं रखते थे। वे केवल फ़ितना फ़साद और उपद्रव फैलाने के लिए मुसलमानों में सम्मिलित हो गये थे। कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे थे जो मुसलमानों के अधिकार-क्षेत्र में घिरे होने के कारण अपना हित इसी में समझते थे कि एक ओर तो वे मुसलमान बने रहें और दूसरी ओर इस्लाम के विरोधियों से भी अपना नाता जोड़े रक्खें। एक गरोह मुनाफ़िक़ों का ऐसा था जिसे इस्लाम के सच्चा 'दीन' होने का पूरा विश्वास न था; वह केवल इस लिए इस्लाम में दाख़िल हो गया था कि उस के क़बीले और वंश के अधिकतर लोग इस्लाम ग्रहण कर चुके थे। कुछ ऐसे मुनाफ़िक़ भी थे जो यह तो समझ चुके थे कि इस्लाम ही सच्चा 'दीन' है, परन्तु नैतिक नियमों के पालन करने तथा अपनी ज़िम्मेदारियों और दायित्वों का बोझ उठाने से वे घबरा रहे थे। अज्ञान-काल के रीति-रिवाज और अन्धविश्वासों से भी अभी तक वे अपना दामन नहीं छुड़ा सके थे।

सूरा अल-बक़रा जिस समय उतर रही थी वह इन विभिन्न प्रकार के 'मुनाफ़िक़ों' का आरम्भ-काल था। इसी लिए इन मुनाफ़िक़ों के सम्बन्ध में इस सूरा में केवल संक्षिप्त संकेत किये गये हैं। बाद में जैसे-जैसे इन की गति-विधि स्पष्ट होती गई, विस्तारपूर्वक हर प्रकार के 'मुनाफ़िक़ों' के बारे में क़ुरआन में आदेश दिये गये।

मक्का में इस्लाम के मौलिक सिद्धान्त का ही प्रचार किया जा रहा था। जो लोग इस्लाम को अपना लेते उन के नैतिक प्रशिक्षण पर बल दिया जाता था। परन्तु हिजरत के पश्चात् अरब के बहुत से

१. यहूदियों के साथ संक्षिप्त रूप में ईसाइयों पर भी इस सूरा में आलोचना की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़बीलों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। बिखरे हुए मुसलमान अब मदीने में इकट्ठा होने लगे। यहाँ उन्हें एक स्वतन्त्र वातावरण मिला। मदीने के मुसलमानों की सहायता से यहाँ एक छोटे से राज्य की नींव पड़ गई। अब अल्लाह की ओर से नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ नागरिकता, सामाजिकता, अर्थ और राजनीति के सम्बन्ध में भी मौलिक आदेश आने शुरू हो गये। इस सूरा में आयत १४८ से लेकर सूरा के अन्त तक अधिकतर भाग ऐसे ही आदेशों पर अवलम्बित हैं।

इस सूरा में जहाँ एक ओर नैतिकता और आध्यात्मिकता की दृष्टि से 'नमाज़', 'रोज़ा', 'हज्ज' 'उमरा', 'क़ुरबानी', 'सदक़ा', 'ज़कात' आदि के सम्बन्ध में आदेश दिये गये हैं वहीं मानव-हित के लिए जीवन के दूसरे मामलों से सम्बन्ध रखने वाले आदेश भी दिये गये हैं। ब्याज का निषेध किया गया। जुआ और शराब के बारे में बताया गया कि इन में हानि अधिक और लाभ बहुत कम है। यतीमों (अनाथों) के पालन-पोषण और उन के माल की रक्षा के सम्बन्ध में उचित आदेश दिये गये। वसीयत, क़र्ज़, रेहन, दस्तावेज़, गवाही, लेन-देन, व्यापार आदि के सम्बन्ध में उन नियमों को खोल कर बयान किया गया जिन का पालन करना व्यावहारिक जीवन में अनिवार्य है। समाज में शान्ति बनाये रखने और लोगों के प्राणों की रक्षा के लिए 'क़िसास' (ख़ून का बदला) का हुक्म दिया गया और उसके नियम बताये गये।

खाने-पीने के सिलसिले में केवल अशुद्ध और नापाक चीज़ों को हराम ठहराया गया, शुद्ध चीज़ों को खाने की अनुज्ञा दी गई। मुरदार, रक्त और सूअर के मांस को अवैध ठहराया गया और हर ऐसी चीज़ को खाने से रोक दिया गया जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो।

स्त्रियों के साथ न्याय करने पर ज़ोर दिया गया। इस सिलसिले में विवाह, 'मह्र' 'तलाक़', 'इद्दत', क़सम आदि के नियमों का उल्लेख किया गया।

समाप्ति

जिस प्रकार यह सूरा इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं से आरम्भ हुई है उसी प्रकार इसे समाप्त करने से पहले इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं को फिर दोहराया गया है[१]। इस सम्बन्ध में सब से बुनियादी बात यह बताई गई कि ज़मीन और आसमान की समस्त वस्तुओं का मालिक अल्लाह है। इस लिए मनुष्य को उसी के आगे अपना सिर झुकाना चाहिए और अपने जीवन में उसी के आदेशों का पालन करना चाहिए। दूसरी बुनियादी बात इस सिलसिले में यह बताई गई कि अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालता। हर एक को अपने किये का फल पाना है। जो नेकी कमायेगा उस का फल उसी के लिए है और जो बुराई समेटेगा उस का बुरा नतीजा उसी को भुगतना होगा। जिन बातों को मानना हमारे लिए आवश्यक है उन्हें भी बयान किया गया। बताया गया कि अल्लाह का 'रसूल' सल्ल० और ईमान वाले लोग अल्लाह को, उस के 'फ़रिश्तों' को और उस की किताबों को मानते हैं और उस की ओर से आने वाले सभी रसूलों को मानते हैं। रसूलों के बीच वे कोई भेद-भाव नहीं करते और वे इस बात को भी मानते हैं कि अन्त में उन्हें अपने पालन कर्त्ता प्रभु के पास उपस्थित होना है।

यह सूरा दुआ (प्रार्थना) पर समाप्त होती है। इस दुआ से अनुमान होता है कि जिस समय ये आयतें उतरी हैं उस समय मुसलमान बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। ऐसे समय में उन के 'रब' ने उन्हें जो दुआ सिखाई है उस से उन्हें बड़ी शान्ति मिली। इस दुआ ने उन की भावनाओं को उच्चता दी और उन के संकल्पों को पवित्र बनाया।

---

१. दे० आयत २८४-२८६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-बक़रा

(मदीने में उतरी—'आयतें' २८६)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. अलिफ़० लाम० मीम०[१]।

२. यह (अल्लाह की) 'किताब' है इस (के आसमानी किताब होने) में कोई सन्देह नहीं ; उन लोगों के लिए मार्ग-दर्शन है जो अल्लाह का डर रखते हैं[२]।

३. जो बिन देखे 'ईमान' लाते, 'नमाज़' क़ायम करते और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं;

४. (और हे 'पैग़म्बर' !) जो (किताब) तुम पर उतारी गई है और जो तुम से पहले उतारी गई थी[३], सब पर वे ईमान लाते हैं और 'आख़िरत' पर यही लोग विश्वास रखते हैं।

THE COW

Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the beneficent, the Merciful.

1. Alif. Lam. Mim.*

2. This is the Scripture whereof there is no doubt, a guidance unto those who ward off (evil).

3. Who believe in the unseen and establish worship, and spend of that We have bestowed upon them;

4. And who believe in that which is revealed unto thee (Muhammad) and that which was revealed before thee, and are certain of the Hereafter.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ
لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ
وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ
هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۗ

१. ये और इस तरह के दूसरे अक्षर और बहुत सी 'सूरतों' के आरम्भ में आये हैं, इन्हें हुरूफ़ 'मुक़त्तआत' कहते हैं।
२. क़ुरआन में यहाँ 'मुत्तक़ीन' ('तक़वा' वाले) शब्द प्रयुक्त हुआ है।
३. अर्थात् पिछली आसमानी किताबें 'तौरात', 'इन्जील' आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. यही वे लोग हैं जो अपने 'रब' के सीधे मार्ग पर हैं। और यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

६. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं।

७. अल्लाह ने उनके दिलों और कानों पर ठप्पा लगा दिया है,[४] और उन की आँखों पर परदा है; और उन के लिए बड़ी यातना है।

८. और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और अन्तिम दिन[५] पर 'ईमान' रखते हैं, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं।

९. ये अल्लाह और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, परन्तु वे धोखा अपने-आप ही को दे रहे हैं ; और उन्हें इस का ज्ञान नहीं है।

१०. उन के दिलों में एक रोग था, अल्लाह ने उन के रोग को और बढ़ा दिया। और जो झूठ वे बोलते हैं उस के बदले में उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

११. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में बिगाड़ न पैदा करो, तो कहते हैं : हम तो सुधार करने वाले लोग हैं।

१२. जान लो ! वास्तव में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं, परन्तु इन्हें इस का ज्ञान नहीं है।

१३. और जब उन से कहा जाता है कि उस तरह ईमान लाओ जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तो कहते हैं : क्या हम उस तरह ईमान लायें जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाये हैं ? जान लो ! मूर्ख यही लोग हैं, परन्तु ये जानते नहीं।

१४. और जब ईमान लाने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आये हुये हैं; और जब एकान्त में अपने शैतानों (नेताओं) से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं; और हम तो परिहास करते हैं।

१५. अल्लाह उनके साथ परिहास कर रहा है, और उन्हें उन की सरकशी में ढील दिये जाता है और वे भटकते फिर रहे हैं।

5. These depend on guidance from their Lord. These are the successful.

6. As for the disbelievers, whether thou warn them or thou warn them not it is all one for them; they believe not.

7. Allah hath sealed their hearing and their hearts, and on their eyes there is a covering. Theirs will be an awful doom.

8. And of mankind are some who say: We believe in Allah and the Last Day, when they believe not.

9. They think to beguile Allah and those who believe, and they beguile none save themselves; but they perceive not.

10. In their hearts is a disease, and Allah increaseth their disease. A painful doom is theirs because they lie.

11. And when it is said unto them: Make not mischief in the earth, they say: We are peacemakers only.

12. Are not they indeed the mischief-makers? But they perceive not.

13. And when it is said unto them: Believe as the people believe, they say: Shall we believe as the foolish believe? Are not they indeed the foolish? But they know not.

14. And when they fall in with those who believe, they say: We believe; but when they go apart to their devils they declare: Lo! we are with you; verily we did but mock.

15. Allah (Himself) doth mock them, leaving them to wander blindly on in their contumacy.

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٦
خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ
سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٧
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ٨
يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ٩
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ
مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ١٠
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ١١
أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن
لَّا يَشْعُرُونَ ١٢
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ
النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ
السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ
وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ١٣
وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا
وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ
قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِئُونَ ١٤
اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ١٥

४. हर आदमी को अल्लाह ने भले-बुरे की पहचान दी है लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भली बात सुनना ही नहीं चाहते, ऐसे लोगों को 'ईमान' की दौलत नहीं मिलती। अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग को छोड़ कर जो व्यक्ति अपने लिए दूसरा रास्ता पसन्द करता है, अल्लाह उसे सही रास्ते पर चलने के लिए विवश नहीं करता। ऐसे लोगों को वह सदा अंधेरे में भटकने के लिए छोड़ देता है।

५. अर्थात हमेशा रहने वाला 'आख़िरत' का दिन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. यही वे लोग हैं जिन्हों ने 'मार्ग-दर्शन' छोड़ कर पथ-भ्रष्टता का सौदा किया, न तो इन के व्यापार ने इन्हें कोई लाभ दिया, और न ये सीधा मार्ग ही पा सके।

१७. इन की मिसाल उस व्यक्ति की-सी है जिसने आग जलाई, परन्तु जब आग ने उस के आस-पास को प्रकाशमान कर दिया तो अल्लाह ने इन का प्रकाश छीन लिया और इन्हें ऐसे अन्धकार में छोड़ दिया, जिस में इन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है,

१८. ये बहरे हैं, गूंगे हैं अन्धे हैं; अब ये लौटने वाले नहीं हैं।

१९. या (इन की मिसाल) ऐसी है जैसे आकाश से वर्षा हो रही हो, उस में अंधियारियाँ हों, गरज और चमक हो। ये बिजली के कड़ाके के कारण मौत के भय से, अपने कानों में उंगलियाँ ठूंसे ले रहे हों। —हालांकि अल्लाह 'काफ़िरों' को अपने घेरे में लिये हुए है—

२०. मानो जल्द ही बिजली इन की आँखों की ज्योति उचक ले जायेगी। जब-जब इन्हें चमक जाती हो, ये उस में चल पड़ते हों, और जब इन पर अंधेरा छा जाता हो, तो खड़े हो जाते हों— यदि अल्लाह चाहता, तो इन के कान और आँखों को छीन लेता। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

२१. लोगो! 'बन्दगी' करो, अपने उस प्रभुवर ('रब') की जिस ने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच सको।

२२. वही जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया; और आकाश की ओर से पानी उतारा, और उस के द्वारा तुम्हारी रोज़ी के लिए हर तरह के खाद्य-पदार्थ पैदा किये। तो जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समवर्ती न बनाओ।

२३. यदि तुम उस चीज़ के बारे में जो हम ने अपने बन्दे पर उतारी है सन्देह में हो, तो तुम उस जैसी एक 'सूरा' लाओ, और अल्लाह के सिवा जो तुम्हारी सहायता करने वाले हों उन को भी बुला लो यदि तुम सच्चे हो।

16. These are they who purchase error at the price of guidance, so their commerce doth not prosper neither are they guided.

17. Their likeness is as the likeness of one who kindleth fire, and when it sheddeth its light around him Allah taketh away their light and leaveth them in darkness, where they cannot see.

18. Deaf dumb and blind: and they return not.

19. Or like a rainstorm from the sky, wherein is darkness, thunder and the flash of lightning. They thrust their fingers in their ears by reason of the thunder-claps, for fear of death. Allah encompasseth the disbelievers (in His guidance).

20. The lightning almost snatcheth away their sight from them. As often as it flasheth forth for them they walk therein, and when it darkeneth against them they stand still. If Allah willed, He could destroy their hearing and their sight. Lo! Allah is Able to do all things.

21. O mankind! Worship your Lord, Who hath created you and those before you, so that ye may ward off (evil).

22. Who hath appointed the earth a resting place for you, and the sky a canopy; and causeth water to pour down from the sky, thereby producing fruits as food for you. And do not set up rivals to Allah when ye know (better).

23. And if ye are in doubt concerning that which We reveal unto Our slave (Muhammad), then produce a surah of the like thereof, and call your witnesses beside Allah if ye are truthful.

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَٰلَةَ
بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَٰرَتُهُمْ
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ
نَارًا فَلَمَّآ أَضَآءَتْ مَا حَوْلَهُۥ
ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ
فِى ظُلُمَٰتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾
صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا
يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيهِ
ظُلُمَٰتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ
أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ
الصَّوَٰعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ
مُحِيطٌۢ بِالْكَٰفِرِينَ ﴿١٩﴾
يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَٰرَهُمْ
كُلَّمَآ أَضَآءَ لَهُم مَّشَوْا فِيهِ
وَإِذَآ أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ
شَآءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ
وَأَبْصَٰرِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
ع ٢ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾
يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِى خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾
الَّذِى جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَٰشًا وَ
السَّمَآءَ بِنَآءً وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ الثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ فَلَا
تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾
وَإِن كُنتُمْ فِى رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا
عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن
مِّثْلِهِۦ وَادْعُوا شُهَدَآءَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٢٣﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. तो यदि तुम यह न कर सको—और तुम ऐसा कदापि नहीं कर सकते—तो उस आग से डरो जिस का ईंधन, मनुष्य और पत्थर होंगे और जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

२५. और जो लोग 'ईमान' ले आये और अनुकूल कर्म किये, उन्हें यह शुभ-सूचना दो कि उन के लिए ऐसे बाग हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी; जब-जब इन बागों में से कोई फल इन्हें खाने को दिया जायेगा, तो कहेंगे कि यह तो वही है जो इस से पहले हमें मिला था; और दिये जायेंगे एक-दूसरे से मिलते जुलते। उनके लिए वहां पाक-साफ़ जोड़ होंगे;[६] और वे वहां सदैव रहेंगे।

२६. अल्लाह इस बात से नहीं लज्जित होता कि वह कोई उपमा दे, चाहे वह मच्छर की हो या उस से भी किसी तुच्छ चीज़ की। जो लोग ईमान लाये हैं वे जानते हैं कि यही सच है और उन के 'रब' ही की ओर से है; और जिन्होंने 'कुफ़्र' किया वे कहते हैं कि ऐसी उपमा देने से अल्लाह का अभिप्राय क्या है? अल्लाह इस चीज़ से बहुतों को पथ-भ्रष्ट करता है, और इससे बहुतों को मार्ग दिखाता है; और इस से पथभ्रष्ट वह केवल उन्हीं लोगों को करता है जो अवज्ञाकारी होते हैं;

२७. ये वे लोग हैं जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को सुदृढ़ करने के पश्चात् तोड़ देते हैं, और जिन को अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काटते हैं, और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं; यही लोग घाटे में हैं।

२८. तुम अल्लाह के साथ कुफ़्र की नीति कैसे अपनाते हो जब कि तुम निर्जीव थे उसने तुम्हें जीवित किया! फिर वही तुम्हें मारता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।

२९. वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए धरती की सारी वस्तुएँ उत्पन्न कीं। फिर आकाश की ओर रुख किया, और बिल्कुल ठीक और सन्तुलित रूप से सात आकाश[७] बनाये। और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

24. And if ye do it not—and ye can never do it—then guard yourselves against the fire prepared for disbelievers, whose fuel is of men and stones.

25. And give glad tidings (O Muhammad) unto those who believe and do good works; that theirs are Gardens underneath which rivers flow; as often as they are regaled with food of the fruit thereof, they say: This is what was given us aforetime: and it is given to them in resemblance. There for them are pure companions: there for ever they will abide.

26. Lo! Allah disdaineth not to coin the similitude even of a gnat or of aught above it. Those who believe know that it is the truth from their Lord; but those who disbelieve say: What doth Allah wish (to teach) by such a similitude? He misleadeth many thereby, and He guideth many thereby; and He misleadth thereby only miscreants;

27. Those who break the covenant of Allah after ratifying it, and sever that which Allah ordered to be joined, and (who) make mischief in the earth: these are they who are the losers.

28. How disbelieve ye in Allah when ye were dead and He gave life to you! Then He will give you death, then life again, and then unto Him ye will return.

29. He it is Who created for you all that is in the earth. Then turned He to the heaven, and fashioned it as seven heavens. And He is Knower of all things.

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَ
الْحِجَارَةُ ۚ أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ كُلَّمَا رُزِقُوْا
مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا
الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ
مُتَشَابِهًا ۗ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ
مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۗ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا
مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ
كَثِيْرًا ۗ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾
الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ
بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ
بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي
الْاَرْضِ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾
كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا
فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ
سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

६. अर्थात् पुरुषों को वहां अच्छी पत्नियां और स्त्रियों को अच्छे पति प्राप्त होंगे।

७. सात आकाश की वास्तविकता क्या है? यह निश्चित करना कठिन है। बस इतना जान लेना चाहिए कि इस का तात्पर्य या तो यह हो कि पृथ्वी के अलावा और उस से परे जितनी सृष्टि है, अल्लाह ने उसे सात स्थायी वर्गों में बाँट दिया है या फिर इस का तात्पर्य यह हो कि हमारी पृथ्वी सृष्टि के जिस क्षेत्र में स्थित है वह सात वर्गों में बँटा हो।

हर युग में आकाश या आसमान के बारे में मनुष्य के अपने अनुमान और अन्दाज़ के मुताबिक़ भिन्न-भिन्न विचार पाये जाते रहे हैं, उन में से किसी के अनुसार क़ुरआन के इन शब्दों का अर्थ निकालना सही न होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. और याद करो जब तुम्हारे 'रब' ने 'फ़िरिश्तों' से कहा, "मैं धरती में 'ख़लीफ़ा' बनाने वाला हूं", उन्हों ने कहा, "क्या उस में तू उसे नियुक्त करेगा जो उस में बिगाड़ पैदा करेगा और रक्त-पात करेगा ? और हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरा महिमागान ('तसबीह') करते और तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं।" उस ने कहा, "मैं जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।"

३१. और उस ने आदम को सारे नाम सिखायें, फिर उन को 'फ़िरिश्तों' के सामने पेश किया, और कहा : तुम मुझे इनके नाम बताओ यदि तुम सच्चे हो।

३२. वे बोले तू महिमावान् है ! हमें तो बस उतना ही ज्ञान है जितना ज्ञान तूने हमें दिया है। निस्सन्देह तू ही, ज्ञान वाला और तत्त्वदर्शी ('हिकमत' वाला) है।

३३. कहा : हे आदम ! तुम इन को इन के नाम बताओ, जब उस ने उन्हें उन के नाम बताये, तो उस ने कहा : क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं ही आकाशों और धरती की छिपी हुई बातें जानता हूँ ? और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम व्यक्त करते हो और जो कुछ तुम छिपाते थे।[८]

३४. और याद करो जब हम ने 'फ़िरिश्तों' से कहा कि आदम के आगे झुक जाओ, तो 'इबलीस' के सिवा सब झुक गये, उस ने इन्कार किया और घमण्ड किया और हो गया 'काफ़िरों' में से।

३५. और हम ने कहा : हे आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों 'जन्नत' में रहो, और जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ ; और इस वृक्ष के निकट न जाना, नहीं तो तुम ज़ालिम ठहरोगे।

३६. तो 'शैतान' ने दोनों को वहाँ से फिसला दिया और जिस (सुख और चैन) में थे उस से

30. And when thy Lord said unto the angels: Lo! I am about to place a viceroy in the earth, they said: Wilt Thou place therein one who will do harm therein and will shed blood, while we, we hymn Thy praise and sanctify Thee? He said: Surely I know that which ye know not.

31. And He taught Adam all the names, then showed them to the angels, saying: Inform me of the names of these if ye are truthful.

32. They said: Be glorified! We have no knowledge saving that which Thou hast taught us. Lo! Thou, only Thou, art the Knower, the Wise.

33. He said: O Adam! Inform them of their names, and when he had informed them of their names, He said: Did I not tell you that I know the secret of the heavens and the earth? And I know that which ye disclose and which ye hide.

34. And when We said unto the angels. Prostrate yourselves before Adam, they fell prostrate, all save Iblis. He demurred through pride, and so became a disbeliever.

35. And We said: O Adam! Dwell thou and thy wife in the Garden, and eat ye* freely (of the fruits) thereof where ye will; but come not nigh this tree lest ye become wrong-doers.

36. But Satan caused them to deflect therefrom and expelled them from the (happy) state in which they were; and

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي
جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا
أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا
وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ
إِنِّيٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾
وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ
عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنْۢبِـُٔونِي
بِأَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٣١﴾
قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾
قَالَ يٰٓاٰدَمُ أَنْۢبِئْهُمْ بِأَسْمَآئِهِمْ ۖ فَلَمَّآ
أَنْۢبَأَهُمْ بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ
لَكُمْ إِنِّيٓ أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا
كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾
وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ ۖ أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ
وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٤﴾
وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا
وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا
مِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿٣٥﴾
فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا

८. मनुष्य धरती पर किस तरह पैदा हुआ इस विषय में क़ुरआन बताता है कि अल्लाह ने सब से पहले एक मनुष्य को पैदा किया और उसे ज़मीन पर ख़लीफ़ा बना कर भेजने का निश्चय किया। जब अल्लाह ने अपने इस फ़ैसले को 'फ़िरिश्तों' के सामने रक्खा तो उन्हों ने अपनी यह उलझन अल्लाह के सामने पेश की कि जब आप मनुष्य को कुछ अधिकार देकर ज़मीन पर भेजेंगे तो हो सकता है कि वह उन अधिकारों का ग़लत प्रयोग करे और वहाँ फसाद मचाये और रक्त-पात करे। 'फ़िरिश्तों' की यह उलझन इस लिए थी कि उन्हें पूरी तरह यह ज्ञान नहीं था कि मनुष्य को अल्लाह ने यह शक्ति भी दी है कि वह चाहे तो अल्लाह के दिये हुये अधिकारों का ऐसा प्रयोग करे कि वह 'फ़िरिश्तों' से भी बढ़कर हो जाये। अल्लाह ने फ़िरिश्तों को समझाने के लिए उस समय आदम की होने वाली सन्तान में से उन लोगों को प्रस्तुत कर दिया जो 'नबी' और बड़े-बड़े महापुरुष होने वाले थे। आदम से कहा कि ज़रा तुम अपनी सन्तान के इन महापुरुषों का परिचय कराओ। आदम ने उन का परिचय कराया तो फ़िरिश्तों की उलझन दूर हो गई।

तलमूद में है कि जब फ़िरिश्तों ने अल्लाह से पूछा कि मनुष्यों को क्यों पैदा किया जा रहा है, तो अल्लाह ने उत्तर दिया : ताकि उन में नेक लोग पैदा हों। दे० **Talmudic Miscellaney, Paul Isaac Hershon London 1880, P. 294-95.**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें निकलवा कर छोड़ा ; और हम ने कहा, "उतरो, तुम एक-दूसरे के शत्रु होगे ! और तुम्हें एक (निश्चित) समय तक धरती में ठहरना और बिलसना है।"

We said: Fall down, one of you a foe unto the other! There shall be for you on earth a habitation and provision for a time.

مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

३७. फिर आदम ने अपने 'रब' से कुछ शब्द पा लिये, तो उस ने उस की 'तौबा' कबूल की, 'तौबा' कबूल करने वाला और दयाशील है।

37. Then Adam received from his Lord words (of revelation), and He relented toward him. Lo! He is the Relenting, the Merciful.

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

३८. हम ने कहा, "तुम सब यहाँ से उतरो तो यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्ग-दर्शन पहुँचे ; तो जो लोग मेरे मार्ग-दर्शन का अनुसरण करेंगे, तो उन के लिए न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

38. We said: Go down, all of you, from hence; but verily there cometh unto you from Me a guidance; and whoso followeth My guidance, there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

३९. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, वही आग (जहन्नम में रहने) वाले हैं वे उसमें सदैव रहेंगे।"

39. But they who disbelieve, and deny Our revelations, such are rightful owners of the Fire. They will abide therein.

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾ ع

४०. हे[९] 'इसराईल' की सन्तान मेरी उस कृपा एवं उपकार को याद करो जो मैं ने तुम पर किये और मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करो,[१०] मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा और मुझ से ही डरो।

40. O Children of Israel! Remember My favour wherewith I favoured you, and fulfil your (part of the) covenant, I shall fulfil My (part of the) covenant and fear Me.

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾

४१. और उस चीज़ पर 'ईमान' लाओ जो मैं ने उतारी है, जो उस (किताब) की तसदीक़ करने वाली है, जो तुम्हारे पास है और ऐसा न करो कि सब से पहले तुम ही उस के इन्कार करने वाले वन जाओ, और थोड़े मूल्य पर मेरी 'आयतों' को न बेचो, और मेरा डर रक्खो।

41. And believe in that which I reveal, confirming which ye possess already (of the Scripture), and be not first to disbelieve therein, and part not with My revelations for a trifling price, and keep your duty unto Me.

وَآمِنُوا بِمَا أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾

४२. सत्य को असत्य से गड्ड-मड्ड न करो सत्य को छिपाने के लिए, जब कि तुम जानते हो।

42. Confound not truth with falsehood, nor knowingly conceal the truth.

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

४३. 'नमाज़' क़ायम करो, 'ज़कात' दो, और (अल्लाह के सामने) झुकने वालों के साथ तुम भी झुको।

43. Establish worship, pay the poor-due, and bow your heads with those who bow (in worship).

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾

४४. तुम दूसरों को वफ़ादारी और कर्तव्य-पालन का उपदेश देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, यद्यपि तुम 'किताब' पढ़ते हो, क्या तुम समझ से काम नहीं लेते ?

44. Enjoin ye righteousness upon mankind while ye yourselves forget (to practise it)? And ye are readers of the Scripture! Have ye then no sense?

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾

९. पहली 'आयत' से लेकर ३९ वीं 'आयत' तक सूरा अल-बक़रा की भूमिका है। अब यहाँ से एक दूसरी तक़रीर शुरू होती है जो आयत १२१ पर जाकर समाप्त होती है। इस तक़रीर का सम्बन्ध ख़ास तौर से यहूदी वर्ग से है। इस तक़रीर में यह बात खोल कर बयान कर दी गई है कि 'यहूदियों' को अल्लाह ने नायकता का पद प्रदान किया था परन्तु वे अपनी ज़िम्मेदारियों को भुलाते ही रहे जिस के कारण अब वे इस पद से हटाये जा रहे हैं और इस पद पर एक दूसरे गरोह को लाया जा रहा है।

१०. इसराईल की सन्तान ने जो प्रतिज्ञा की थी वह तौहीद अथवा एकेश्वरवाद (**Divine Unity**) की प्रतिज्ञा थी। दे० बाइबिल (**Bible**) 'इस्तिस्ना' (**Deuteronomy**) ४ : २३-२५ और १७ : २-३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. धैर्य और 'नमाज़' से सहायता चाहो; निस्सन्देह यह (नमाज़) बहुत कठिन है परन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिन के दिल (अल्लाह के भय से) पिघले हुए हैं,

४६. जो समझते हैं कि उन्हें अपने 'रब' से मिलना है, और वे उसी की ओर लौटने वाले हैं।

४७. हे 'इसराईल' की सन्तान ! मेरी उस कृपा एवं उपकार को याद करो जो मैं ने तुम पर किये[११] और इस बात को भी कि मैं ने तुम्हें संसार वालों पर बड़ाई दी थी।

४८. और उस दिन का डर रक्खो जब कोई किसी के काम न आयेगा, और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश क़बूल की जायेगी, और न किसी से बदले में कोई चीज़ ली जायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

४९. और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, वे तुम्हें बुरी यातना से पीड़ित करते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे : इस में तुम्हारे 'रब' की ओर से बड़ी ही परीक्षा थी।

५०. और याद करो जब हम ने समुद्र को फाड़ कर तुम्हारे लिए मार्ग निकाला, तो तुम्हें छुटकारा दिया और फ़िरऔन के लोगों को तम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।[१२]

५१. और याद करो जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वादा ठहराया,[१३] तो तुम उस के पीछे बछड़े को अपना देवता बना बैठे,[१४] तुम ने (बड़ा ही) जुल्म किया।

५२. फिर इसके पश्चात् हम ने तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

५३. और याद करो जब हम ने मूसा को 'किताब' और कसौटी[१५] दी, ताकि तुम मार्ग पा सको !

45. Seek help in patience and prayer; and truly it is hard save for the humble-minded,

46. Who know that they will have to meet their Lord, and that unto Him they are returning.

47. O Children of Israel! Remember My favour wherewith I favoured you and how I preferred you to (all) creatures.

48. And guard yourselves against a day when no soul will in aught avail another, nor will intercession be accepted from it, nor will compensation be received from it, nor will they be helped.

49. And (remember) when We did deliver you from Pharaoh's folk, who were afflicting you with dreadful torment, slaying your sons and sparing your women: That was a tremendous trial from your Lord.

50. And when We brought you through the sea and rescued you, and drowned the folk of Pharaoh in your sight.

51. And when We did appoint for Moses forty nights (or solitude), and then ye chose the calf, when he had gone from you, and were wrong-doers.

52. Then, even after that, We pardoned you in order that ye might give thanks.

53. And when We gave unto Moses the Scripture and the Criterion (all right and wrong), that ye might be led aright.

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ
وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخٰشِعِينَ ﴿٤٥﴾
الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلٰقُوا
رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رٰجِعُونَ ﴿٤٦﴾
يٰبَنِي إِسْرَاءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي
أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿٤٧﴾
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن
نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفٰعَةٌ
وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾
وَإِذْ نَجَّيْنٰكُم مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ
وَفِي ذٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ
عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾
وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنٰكُمْ
وَأَغْرَقْنَا ءَالَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ
تَنظُرُونَ ﴿٥٠﴾
وَإِذْ وٰعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظٰلِمُونَ ﴿٥١﴾
ثُمَّ عَفَوْنَا عَنكُم مِّن بَعْدِ ذٰلِكَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾
وَإِذْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾

११. 'इसराईल' की सन्तान पर अल्लाह ने जो उपकार किये हैं बाइबिल में भी उन का उल्लेख किया गया है दे० ज़बूर (Psalms) ७८ : १२-१६, २४-२९ और १०५ : ३७-४५।

१२. दे० ज़बूर ७८ : १३ और १३६ : १३ ख़ुरूज (Exodus) १४ : २१-२२, १७ और १५ : ८।

१३. मिस्र (Egypt) से छुटकारा पाने के बाद बनी 'इसराईल' सीना प्राय द्वीप में आकर बसे तो हज़रत मूसा अ० को अल्लाह ने चालीस दिन-रात के लिए तूर की पहाड़ी पर बुलाया, ताकि उनके अनुयायियों को व्यावहारिक जीवन के लिए आदेश दिये जायें।

१४. दे० ख़ुरूज ३२ : १-७।

१५. वह ज्ञान जिस से सही और ग़लत को परखा जा सके। वह अन्तर्दृष्टि जिस के द्वारा आदमी जीवन के प्रत्येक मोड़ पर यह जान ले कि उसे किधर जाना चाहिए और किधर नहीं जाना चाहिए। कौन-सी राह है जो अल्लाह की ओर जाती है और कौन-सा रास्ता है जो 'शैतान' से मिलाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. और याद करो जब मूसा ने अपने लोगों से कहा : हे मेरी जाति वालो ! तुम ने बछड़े को देवता बना कर अपने ऊपर ज़ुल्म किया तो अब तुम अपने पैदा करने वाले की ओर रुजू करो, और अपने (अपराधी) लोगों को अपने हाथों से क़त्ल करो।[१६] यही तुम्हारे पैदा करने वाले की दृष्टि में तुम्हारे लिए अच्छा है। तो उस ने तुम्हारी 'तौबा' क़बूल की। निस्सन्देह वही 'तौबा' क़बूल करने वाला और दयाशील है।

५५. और याद करो जब तुम ने कहा था : हे मूसा ! हम तुम्हें मानने वाले नहीं हैं जब तक कि अल्लाह को खुल्लम खुल्ला न देख लें ; तो उस समय तुम्हारे देखते तुम्हें कड़क ने आ दबोचा।

५६. फिर तुम्हारे बेजान हो जाने के पश्चात हम ने तुम्हें जिला उठाया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

५७. और हम ने तुम पर बदलियों की छाया की[१७] और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा'[१८] उतारे, (कह दिया) जो पाक-साफ़ चीज़ें हम ने तुम्हें दी हैं उन में से खाओ—और तुम्हारे पूर्वजों ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

५८. और याद करो जब हम ने कहा था कि इस बस्ती में प्रवेश करो फिर उस में से जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ और बस्ती के दरवाज़े में प्रवेश करो सिर झुकाये हुए और कहो, "हम क्षमा चाहते हैं।" हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे और अच्छी तरह आदेश का पालन करनेवालों पर हम और अधिक एहसान करेंगे।

५९. तो जो बात उन से कही गई थी ज़ालिम लोगों ने उसे दूसरी बात से बदल दिया, तो इन ज़ुल्म करने वालों पर हम ने आकाश से यातना उतारी, इस लिए कि वे अवज्ञा करते थे।

54. And when Moses said unto his people: O my people! Ye have wronged your selves by your choosing of the calf (for worship), so turn in penitence to your Creator, and kill (the guilty) yourselves. That will be best for you with your Creator and He will relent toward you. Lo! He is the Relenting, the Merciful.

55. And when ye said: O Moses! We will not believe in thee till we see Allah plainly; and even while ye gazed the lightning seized you.

56. Then We revived you after your extinction, that ye might give thanks.

57. And We caused the white cloud to overshadow you and sent down on you the manna and the quails, (saying): Eat of the good things wherewith We have provided you—We wronged them not, but they did wrong themselves.

58. And when We said: Go into his township and eat freely of that which is therein, and enter the gate prostrate, and say: "Repentance." We will forgive you your sins and will increase (reward) for the right-doers.

59. But those who did wrong changed the word which had been told them for another saying, and We sent down upon the evil-doers wrath from Heaven for their evil-doing.

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ
إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِٱتِّخَاذِكُمُ
ٱلْعِجْلَ فَتُوبُوٓا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ
فَٱقْتُلُوٓا أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾
وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ
لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ
ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٥﴾
ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾
وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ
ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ كُلُوا مِن طَيِّبَٰتِ
مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن
كَانُوٓا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾
وَإِذْ قُلْنَا ٱدْخُلُوا هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ
فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا
وَٱدْخُلُوا ٱلْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا
حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَٰيَٰكُمْ
وَسَنَزِيدُ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾
فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا
غَيْرَ ٱلَّذِى قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى
ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ
ع بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾

१६. दे० ख़ुरूज ३२ : १—७, २५—३०।

१७. दे० बाइबिल 'ज़बूर' (Ps.) १०५ : ३९।

१८. दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (EX.) १६ : १—२१, ३५, 'गिन्ती' (Nubmbers) ११ : ६-९, ३१ इस्तिस्ना (Dut.) ८ : ३, १६, 'यशूअ' (Joshua) ५ : १२, 'नहमियाह' (Nehmiah) ९ : २०, 'ज़बूर' (Ps.) ७८ : २४, २७, २८ और १०५ : ४०, 'यूहन्ना' (John) ६ : ३१, ४९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०. और याद करो जब मूसा ने अपनी जाति वालों के लिए पानी की प्रार्थना की, तो हम ने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो। तो उस से बारह सोते फूट निकले[१९] हर गरोह ने अपना-अपना घाट जान लिया (समझा दिया गया) : अल्लाह की दी हुई रोज़ी में से खाओ-पियो, और धरती में बिगाड़ पैदा करने वाले बन कर न बढ़ो।

६१. और याद करो जब तुम ने कहा था : हे मूसा ! हम एक ही तरह के खाने पर सन्तोष नहीं कर सकते[२०]; अपने 'रब' से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमारे लिए भूमि की उपज—साग, ककड़ी, लहसुन, मसूर, प्याज़ में से निकाले। कहा : क्या तुम एक उत्तम वस्तु को तुच्छ वस्तु से बदलना चाहते हो ?[२१] किसी नगर में जा रहो, तुम ने जो-कुछ माँगा है वह तुम्हें मिल जायेगा। और अपमान और अनुत्साह एवं दशाहीनता उन पर थोप दी गई और वे अल्लाह का प्रकोप ले कर लौटे। ऐसा इस लिए हुआ कि वे अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करते थे और 'नबियों' को नाहक़ क़त्ल करते थे। ऐसा इस लिए हुआ कि उन्हों ने अवज्ञा की और सीमा का उल्लंघन करने लगे थे।

६२. निस्सन्देह जो 'ईमान' लाये और यहूदी हुए और 'नसारा' (ईसाई) और 'साबिई' हों, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर 'ईमान' लाया[२२] और अनुकूल कर्म किया—ऐसे लोगों के लिए उन के 'रब' के पास प्रतिदान है, तो उन के लिए न तो कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

६३. और याद करो, जब हम ने 'तूर' (की चोटियों) को तुम पर उठाते हुए, तुम से तुम्हारा वचन लिया था कि जो चीज़ हम ने तुम्हें दी है, उसे मज़बूती के साथ पकड़ो, और जो कुछ उस में है उसे याद रक्खो, ताकि तुम (प्रकोप से) बच सकों।

60. And when Moses asked for water for his people, We said: Smite with thy staff the rock. And there gushed out therefrom twelve springs (so that) each tribe knew their drinking-place. Eat and drink of that which Allah hath provided, and do not act corruptly, making mischief in the earth.

61. And when ye said: O Moses! We are weary of one kind of food; so call upon thy Lord for us that He bring forth for us of that which the earth groweth—of its herbs and its cucumbers and its corn and its lentils and its onions. He said: Would ye exchange that which is higher for that which is lower? Go down to settled country, thus ye shall get that which ye demand. And humiliation and wretchedness were stamped upon them and they were visited with wrath from Allah. That was because they disbelieved in Allah's revelations and slew the prophets wrongfully. That was for their disobedience and transgression.

62. Lo! those who believe (in that which is revealed unto thee, Muhammad), and those who are Jews, and Christians, and Sabaeans—whoever believeth in Allah and the Last Day and doth right—surely their reward is with their Lord, and there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

63. And (remember, O children of Israel!) when We made a covenant with you and caused the Mount to tower above you, (saying): Hold fast that which We have given you, and remember that which is therein, that ye may ward off (evil).

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ
فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ
فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ
قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ
كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ٦٠
وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ
طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن
بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا
وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي
هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا
مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ
ع بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ٦١
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا
وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ٦٢
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ٦٣

१९. दे० 'ज़बूर' (Ps.) ७८ : १३-१६, २०। ख़ुरूज १५ : २७

२०. 'मन्न' और 'सलवा' की ओर संकेत है जो 'इसराईल' की सन्तान को अल्लाह की ओर से खाने को मिल रहा था।

२१. अर्थात् जिस महान उद्देश्य के लिए तुम से जंगल की ख़ाक छनाई जा रही है उसे छोड़ कर तुम खाने-पीने पर रीझ रहे हो। दे० गिनती (Numb.) ११ : ४—७।

२२. अन्तिम दिन ('आख़िरत') पर 'ईमान' लाने का अर्थ यह है कि मनुष्य अल्लाह से डरते हुये कोई काम ऐसा न करे जो अल्लाह की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. फिर तुम इस सब के बाद फिर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उस की दया न होती तो तुम टोटे वालों में से हो चुके होते।

६५. और तुम्हें अपने उन लोगों का हाल मालूम ही है जिन्होंने 'सब्त'[२३] के विषय में मर्यादा का उल्लंघन किया, तो हम ने उन से कह दिया : बन्दर हो जाओ धिक्कारे और फिटकारे हुए !

६६. तो हम ने इसे इस के आगे और पीछे के लोगों के लिए भी शिक्षा-सामग्री (चेतावनी), और डर रखने वालों के लिए नसीहत बनाया।

६७. और याद करो जब मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा कि अल्लाह हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह करो, कहने लगे : क्या तुम हमारा उपहास करते हो ? उस ने कहा : मैं इस से अल्लाह की पनाह माँगता हूं कि जाहिलों में से बनूं !

६८. बोले : अच्छा अपने 'रब' से कहो कि वह हमें साफ़-साफ़ बता दे कि वह (गाय) कैसी हो ? उस ने कहा : वह कहता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बछिया ; बस इन दोनों के बीच पक्की आयु की हो ; तो करो जो तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।

६९. कहने लगे : अपने 'रब' से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि उस का रंग क्या हो। उस ने कहा : वह कहता है कि वह सुनहरी हो गहरे तेज़ रंग की कि देखने वालों को भली लगे।

७०. बोले : अपने 'रब' से निवेदन करो कि वह हमें खोल कर बता दे कि वह कैसी हो। इस लिए कि गायों में अन्तर करने में घपला हो रहा है; और अल्लाह ने चाहा, तो अब हम पता पा लेंगे।

64. Then, even after that, ye turned away, and if it had not been for the grace of Allah and His mercy ye had been among the losers.

65. And ye know of those of you who broke the Sabbath, how We said unto them: Be ye apes, despised and hated!

66. And We made it an example to their own and to succeeding generations, and an admonition to the God-fearing.

67. And when Moses said unto his people: Lo! Allah commandeth you that ye sacrifice a cow, they said: Dost thou make game of us? He answered; Allah forbid that I should be among the foolish!

68. They said: Pray for us unto thy Lord that He make clear to us what (cow) she is. (Moses) answered: Lo! He saith, Verily she is a cow neither with calf nor immature; (she is) between the two conditions; so do that which ye are commanded.

69. They said: Pray for us unto thy Lord that He make clear to us of what colour she is. (Moses) answered: Lo! He saith: Verily she is a yellow cow. Bright is her colour, gladdening beholders.

70. They said: Pray for us unto thy Lord that He make clear to us what (cow) she is. Lo! cows are much alike to us; and lo! if Allah wills, we may be led aright.

ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم
مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ
فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً
خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾
فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ
يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا بَقَرَةً ط
قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ
بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا
فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ
ذَٰلِكَ ط فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا
مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا
تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا
مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا ط
وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾

इच्छा के विरुद्ध हो। आगे सूरा अल-अनआम आयत ९२ में यह बात आ रही है कि 'आख़िरत' पर सच्चा ईमान लाने वाले वही हैं जो क़ुरआन पर ईमान लाते हैं, इस तरह यह बात साफ़ हो जाती है कि अल्लाह के यहाँ नजात (मोक्ष) पाने के लिए अन्तिम 'रसूल' हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाना ज़रूरी है।

२३. 'सब्त' शनिवार को कहते हैं। बनी 'इसराईल' के लिए यह दिन आराम और 'इबादत' के लिए ख़ास कर दिया गया था। इस दिन सांसारिक कार्य, विशेष रूप से शिकार, बिल्कुल वर्जित था। मुक़ाबले (Comparison) के लिए दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Exodus) २० : ८—१० ; 'अह्बार' (Leviticus) १९ : ३, और 'लूक़ा' (Luka) ६ : ९। जब बनी 'इसराईल' पर नैतिक एवं धार्मिक पतन के दिन आये तो वे खुले तौर पर इस दिन की मर्यादा भंग करने लगे। इसका कुछ विवरण सूरा अल-आराफ़ में आयेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१. उस ने कहा : वह कहता है कि वह गाय न कमेरी हो; और न भूमि जोतती हो और न खेत को पानी देती हो ; बिल्कुल एक रंग हो, उस में किसी दूसरे रंग की मिलावट न हो। बोले : अब तुम ने ठीक स्पष्ट बात बता दी। फिर उन्हों ने उसे ज़ब्ह किया जब कि वे ऐसा करने वाले दीख न पड़ते थे।[२४]

71. (Moses) answered: Lo! He saith: Verily she is a cow unyoked; she plougheth not the soil nor watereth the tilth; whole and without mark. They said: Now thou bringest the truth. So they sacrificed her, though almost they did not.

قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون ﴿٧١﴾

७२. और याद करो जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी फिर उस के बारे में एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे, जब कि अल्लाह ज़ाहिर करने वाला है वह सब, जो तुम छिपाते रहे हो।

72. And (remember) when ye slew a man and disagreed concerning it and Allah brought forth that which ye were hiding.

وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون ﴿٧٢﴾

७३. हम ने हुक्म दिया कि उसे उस के एक हिस्से से मारो। इस तरह अल्लाह मुरदों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम समझो।

73. And We said: Smite him with some of it. Thus Allah bringeth the dead to life and showeth you His portents so that ye may understand.

فقلنا اضربوه ببعضها كذلك يحي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون ﴿٧٣﴾

७४. फिर, तुम्हारे दिल कठोर हो गये तो वे पत्थरों की तरह या उन से भी अधिक कठोर हो गये—पत्थरों में तो कोई ऐसा भी होता है जिस में से नहरें फूट निकलती हैं, और उन में कोई ऐसा होता है जो फट जाता है और उस में से पानी बह निकलता है। और उन में कोई ऐसा भी होता है जो अल्लाह के भय से गिर पड़ता है—और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं है जो कर रहे हो।

74. Then, even after that, your hearts were hardened and became as rocks, or worse than rocks, for hardness. For indeed there are rocks out of which rivers gush, and indeed there are rocks which split asunder so that water floweth from them. And indeed there are rocks which fall down for the fear of Allah. Allah is not unaware of what ye do.

ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهي كالحجارة أو أشد قسوة وإن من الحجارة لما يتفجر منه الأنهار وإن منها لما يشقق فيخرج منه الماء وإن منها لما يهبط من خشية الله وما الله بغافل عما تعملون ﴿٧٤﴾

७५. तो क्या तुम लोग यह आशा रखते हो कि ये तुम्हारी बात मानेंगे? जब कि इन में से एक गरोह अल्लाह का कलाम (वाणी) सुनता रहा है फिर उसे समझने के बाद जानते हुए उसे कुछ का-कुछ करता रहा।

75 Have ye any hope that they will be true to you when a party of them used to listen to the Word of Allah, then used to change it, after they had understood in knowingly?

أفتطمعون أن يؤمنوا لكم وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه وهم يعلمون ﴿٧٥﴾

७६. और जब 'ईमान' लाने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं : हम तो 'ईमान' ला चुके हैं। और जब एक दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वे बातें बता देते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे 'रब' के पास उस के द्वारा तुम से हुज्जत करें? क्या तुम समझते नहीं।

76. And when they fall in with those who believe, they say: We believe. But when they go apart one with another they say: Prate ye to them of that which Allah hath disclosed to you that they may contend with you before your Lord concerning it? Have ve then no sense?

وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا وإذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم أفلا تعقلون ﴿٧٦﴾

७७. क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह ज़ानता है, जो-कुछ वे छिपाते हैं और जो-कुछ व्यक्त करते हैं।

77. Are they then unaware that Allah knoweth that which they keep hidden and that which they proclaim?

أولا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ﴿٧٧﴾

२४. 'बनी इसराईल' जिस देश से निकल कर आये थे वहाँ क़िब्ती जाति का राज्य था जो गाय को अपना देवता समझती थी। 'बनी इसराईल' चूँकि इस जाति के साथ रहते थे इस लिए शासक जाति के आचार-विचार से ये भी प्रभावित हो चुके थे। गाय ज़ब्ह करने का हुक्म, बनी इसराईल के 'ईमान' की एक कठिन परीक्षा थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. और इन में बे-पढ़े हैं, जो किताब को केवल कामनाओं का संग्रह जानते हैं। जब कि वे निरे अटकल के तीर-तुक्के चलाते हैं।

७९. तो तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से 'किताब' (कर्म काण्ड) रचते हैं फिर लोगों से कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है" ताकि उस के द्वारा थोड़ा मूल्य प्राप्त कर लें। तो उन के लिए तबाही है जो कुछ उन के हाथों ने लिखा उस के कारण और उन के लिए तबाही है जो कुछ वे कमाते हैं उस के कारण।

८०. और वे कहते हैं : (जहन्नम की) आग हमें गिनती के कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकती। कहो : क्या तुम अल्लाह के पास कोई प्रतिज्ञा करा चुके हो जिस के विरुद्ध अल्लाह नहीं जा सकता ? या अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर ऐसी बात कहते हो जिसे तुम नहीं जानते ?

८१. हाँ, निस्सन्देह जिसने भी कोई बुराई कमाई और उस के गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया तो ऐसे ही लोग (जहन्नम की) आग (में जाने) वाले हैं ; वे सदैव उसी में रहेंगे।

८२. और जो 'ईमान' लाये और अनुकूल (अच्छे) कर्म किये : वही 'जन्नत' (में जाने) वाले हैं। वे सदैव उसी में रहेंगे।

८३. और याद करो जब हम ने 'इसराईल' की सन्तान से वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करोगे, माता-पिता के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों के और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और यह कि लोगों से भली बात कहो, 'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' दो फिर, थोड़े आदमियों को छोड़ कर, तुम (अपने वादे से) फिर गये और तुम मुँह मोड़ने वाले ही लोग हो।

८४. और याद करो जब हम ने तुम से वचन लिया था कि अपनों का ख़ून न बहाओगे और न अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे। फिर तुम ने (इस का) इक़रार किया था और तुम इस के गवाह हो।

78. Among them are unlettered folk who know the Scripture not except from hearsay. They but guess.

79. Therefore woe be unto those who write the Scripture with their hands and then say, "This is from Allah," that they may purchase a small gain therewith. Woe unto them for that their hands have written, and woe unto them for that they earn thereby.

80. And they say: The fire (of punishment) will not touch us save for a certain number of days. Say: Have ye received a covenant from Allah—truly Allah will not break His covenant—or tell ye concerning Allah that which ye know not?

81. Nay, but whosoever hath done evil and his sin surroundeth him: such are rightful owners of the Fire; they will abide therein.

82. And those who believe and do good works: such are rightful owners of the Garden. They will abide therein.

83. And (remember) when We made a covenant with the Children of Israel, (saying): Worship none save Allah (only), and be good to parents and to kindred and to orphans and the needy, and speak kindly to mankind; and establish worship and pay the poor-due. Then, after that, ye slid back, save a few of you, being averse.

84. And when We made with you a covenant (saying): Shed not the blood of your people nor turn (a party of) your people out of your dwellings. Then ye ratified (Our covenant) and ye were witnesses (thereto).

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ
الْكِتٰبَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ
إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتٰبَ
بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هٰذَا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ
وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾
وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا
مَّعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ
عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗ
أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾
بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّأَحَاطَتْ
بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٨١﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ
أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٨٢﴾
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ لَا
تَعْبُدُونَ إِلَّا اللّٰهَ وَبِالْوٰلِدَيْنِ
إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّ
أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ ثُمَّ
تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ
دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٨٤﴾

क़त्ल के सिलसिले में जब कि हत्यारे का पता न चल रहा हो 'बनी इसराईल' में क़सम लेने का यह तरीक़ा रहा है कि इस अवसर पर गाय ज़ब्ह की जाती थी। और फिर इस ('क़ुरबानी') के बाद विशेष रीति के साथ क़सम ली जाती थी। दे० बाइबिल 'इस्तिस्ना' (Deut.) २१ :१—८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८५. फिर तुम ही लोग हो कि अपनों की हत्या करते हो, और अपने ही एक गरोह को उन की बस्तियों से निकालते हो, उनके विरुद्ध हक़ मार कर और ज़्यादती कर के उन के शत्रुओं की सहायता करते हो फिर यदि वे बन्दी हो कर तुम्हारे पास आते हैं तो 'फ़िदया' (अर्थ दण्ड) दे कर छुड़ाते हो, जब कि उन्हें निकालना ही तुम्हारे लिए हराम था। तो क्या तुम 'किताब' के एक हिस्से पर 'ईमान' रखते हो और दूसरे का इन्कार करते हो? [२५] तुम में से जो लोग ऐसा करते हैं उन की सज़ा इस के सिवा और क्या हो सकती है कि सांसारिक जीवन में रुसवाई हो. और 'क़ियामत' के दिन उन्हें कड़ी-से-कड़ी यातना की ओर भेज दिया जायेगा? अल्लाह उस से बे-खबर नहीं है जो कुछ तुम करते हो।

८६. यही वे लोग हैं जिन्हों ने 'आखिरत' के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन का सौदा किया तो न तो उन की यातना हल्की की जायेगी और न उन्हें कोई सहायता ही पहुँच सकेगी।

८७. और हम ने मूसा को किताब दी, फिर उस के बाद लगातार 'रसूल' भेजे, और मरयम के बेटे ईसा को खुली-खुली निशानियाँ प्रदान कीं, और 'रूहुल्क़ुदुस'[२६] (पवित्र-आत्मा) से उस की सहायता की। तो क्या जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल उन बातों को ले कर आयेगा जो तुम्हारे जी को न भा सकें, तो तुम अकड़ बैठोगे तो तुम ने एक गरोह को झुठलाया और एक गरोह की हत्या करते रहे।

८८. और कहते हैं : हमारे दिल तो बन्द हैं बल्कि उन के 'कुफ़्र' के कारण उन पर अल्लाह की फिटकार पड़ी है। तो वे ईमान थोड़ा ही लाते हैं।

85. Yet ye it is who slay each other and drive out a party of your people from their homes, supporting one another against them by sin and transgression and if they came to you as captives ye would ransom them, whereas their expulsion was itself unlawful for you—Believe ye in part of the Scripture and disbelieve ye in part thereof? And what is the reward of those who do so save ignominy in the life of the world, and on the Day of Resurrection they will be consigned to the most grievous doom! For Allah is not unaware of what ye do.

86. Such are those who buy the life of the world at the price of the Hereafter. Their punishment will not be lightened, neither will they have support.

87. And verily We gave unto Moses the Scripture and We caused a train of messengers to follow after him, and We gave unto Jesus, son of Mary, clear proofs (of Allah's sovereignty), and We supported him with the holy Spirit. Is it ever so, that, when there cometh unto you a messenger (from Allah) with that which ye yourselves desire not, ye grow arrogant, and some ye disbelieve and some ye slay?

88. And they say: Our hearts are hardened. Nay, but Allah hath cursed them for their unbelief. Little is that which they believe.

ثُمَّ أَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ أَنْفُسَكُمْ
وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز
تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ط
وَإِنْ يَّأْتُوْكُمْ أُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ط أَفَتُؤْمِنُوْنَ
بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج
فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ إِلٰٓى أَشَدِّ الْعَذَابِ ط
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ ع
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا
مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَآتَيْنَا عِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَأَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰٓى أَنْفُسُكُمُ
اسْتَكْبَرْتُمْ ج فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ز
وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ط بَلْ لَّعَنَهُمُ
اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

२५. बात यह थी कि 'यहूदियों' के खानदानों में बड़ी फूट पड़ गई थी। वे परस्पर एक-दूसरे को तंग करते और घरों तक से निकाल देते, परन्तु जब वे कहीं जाकर किसी दुश्मन के फन्दे में फँस जाते तब उन्हें बे-कली होती और अर्थ-दण्ड दे कर अपने भाई-बन्धुओं को छुड़ाते ; और कहते कि चूंकि अल्लाह की किताब में यह हुक्म मौजूद है कि क़ैदियों को अर्थ-दण्ड दे कर छुड़ा लेना चाहिए, इस लिए हम ऐसा करते हैं। इस अवसर पर उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि तुम अल्लाह की किताब के अनुसार काम करने का तो यह ढोंग रचाते हो परन्तु तुम्हें यह याद नहीं रहता कि अल्लाह की किताब में भाई-बन्धुओं को घरों से निकालना कहाँ लिखा है।

इस तरह उन्हें अपराधी ठहराया गया है कि वे किताब के एक भाग को मानते हैं और एक भाग का इन्कार करते हैं।

२६. दे० मत्ता (Matt.) १२ : २२-२३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. और जब कि उन के पास एक किताब अल्लाह की ओर से आई है, जो उस चीज़ की तसदीक़ करती है जो उन के पास है। और वे पहले से 'काफ़िरों' के मुक़ाबले में विजय की प्रार्थना कर रहे थे।[२७] तो जब वह चीज उन के पास आ गई जिसे वे जाने-पहचाने हुये थे तो उन्हों नें उस का इन्कार कर दिया। तो इन 'काफ़िरों' पर अल्लाह की फिटकार है।

९०. क्या ही बुरी चीज़ है जिस के बदले उन्हों नें अपनें प्राणों का सौदा किया कि अल्लाह नें जो चीज़ उतारी है उसे वे ज़िद से इस नियम के कारण नहीं मानते कि अल्लाह अपना फ़ज़्ल (कृपा) अपनें बन्दों में से जिस पर चाहे, उतारे। वे प्रकोप-पर-प्रकोप अपनें सिर ले कर लौटे। और 'काफ़िरों' के लिए अपमानित करनें वाली यातना है।

९१. और जब उन से कहा जाता है कि जो-कुछ अल्लाह ने उतारा है उस पर 'ईमान' लाओ, तो कहते हैं, "हम तो उस चीज़ पर ईमान रखते ही हैं जो हम पर उतरी है।" इस के सिवा जो-कुछ है उस का वे इन्कार करते हैं, जब कि वही सत्य है और उस की पुष्टि करता है जो उन के पास है। उन से कहो कि यदि तुम 'ईमान वाले' हो तो इस से पहले अल्लाह के 'नबियों' की क्यों हत्या करते थे?

९२. और मूसा तुम्हारे पास खुली-खुली निशानियाँ ले कर आया फिर तुम उस के बाद ज़ालिम बन कर बछड़े को देवता बना बैठे।

९३. और याद करो जब हम ने 'तूर' (की चोटियों) को तुम पर उठाते हुये, तुम से वचन लिया (और कहा था) कि जो-कुछ हम नें तुम्हें दिया है, मज़बूती से पकड़ो और सुनो (और मानो); उन्होंने कहा कि हम ने सुना और अवज्ञा की। और उन के 'कुफ़्र' के कारण उन के दिलों में बछड़ा बस गया।[२८] कहो: यदि तुम 'ईमान' वाले हो, तो कितनी बुरी बात है जिस का हुक्म तुम्हारा ईमान तुम्हें देता रहा है।

89. And when there cometh unto them a Scripture from Allah, confirming that in their possession—though before that they were asking for a signal triumph over those who disbelieved—and when there cometh unto them that which they know (to be the Truth) they disbelieve therein. The curse of Allah is on disbelievers.

90. Evil is that for which they sell their souls: that they should disbelieve in that which Allah hath revealed, grudging that Allah should reveal of His bounty unto whom He will of His bondmen They have incurred anger upon anger. For disbelievers is a shameful doom.

91. And when it is said unto them: Believe in that which Allah hath revealed, they say: We believe in that which was revealed unto us. And they disbelieve in that which cometh after it, though it is the truth confirming that which they possess. Say (unto them, O Muhammad): Why then slew ye the Prophets of Allah aforetime, if ye are (indeed) believers?

92. And Moses came unto you with clear proofs (of Allah's sovereignty), yet, while he was away, ye chose the calf (for worship) and ye were wrong-doers.

93. And when We made with you a Covenant and caused the Mount to tower above you (saying): Hold fast by that which We have given you, and hear (Our Word), they said: We hear and we rebel. And (worship of) the calf was made to sink into their hearts because of their rejection (of the covenant). Say (unto them): Evil is that which your belief enjoineth on you, if ye are believers.

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ
قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا
كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ
يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ
يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى
غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ
مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا
وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ
تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾
وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا ۤ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ
بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

२७. 'यहूदियों' को उस 'नबी' के आने का इन्तज़ार था जिस के प्रकट होने की ख़बर उन्हें हज़रत मूसा अ० और बनी 'इसराईल' के दूसरे 'नबियों' से मिली थी। वे दुआयें माँगा करते थे कि वह नबी जल्द आये ताकि 'काफ़िरों' का ज़ोर टूटे और उन्हें 'काफ़िरों' की ग़ुलामी से छुटकारा मिल जाये। परन्तु यही यहूदी उस नबी के आ जाने पर उस के सब से बड़े दुश्मन बन गये। यहूदी चाहते थे कि आने वाला नबी उन की अपनी जाति में पैदा हो; परन्तु जब वह दूसरे घराने में पैदा हुआ, तो उन्हों ने उस का इन्कार कर दिया।

२८. दे० ख़ुरूज ३२ : २०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९४. कहो : अल्लाह के यहाँ यदि सच-मुच 'आख़िरत' का घर, सारे लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है, तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो।

९५. किन्तु अपने हाथों इन्होंने जो-कुछ (कमा कर) भेजा है उस के कारण ये कभी उस की कामना न करेंगे। अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

९६. तुम उन्हें जीवन का सब लोगों से बढ़ कर लोभी पाओगे, उन लोगों से भी अधिक, जिन्हों ने 'शिर्क' किया है। उन का प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि हज़ार वर्ष जीता रहे। यद्यपि वे आयु पायें भी तो भी वे अपने आप को यातना से बचाने वाले नहीं बन सकते।[२६] और अल्लाह देख रहा है जो कुछ वे करते हैं।

९७. कह दो : जो 'जिबरील' का शत्रु हुआ तो (उसे मालूम होना चाहिए कि) जिबरील ने तो अल्लाह ही के हुक्म से इस (क़ुरआन) को तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उन (किताबों) की पुष्टि करता है जो इस के पहले से मौजूद हैं, और 'ईमान' वालों के लिए मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना है;

९८. जो कोई अल्लाह, और उस के 'फ़िरिश्तों' और उस के 'रसूलों', और 'जिबरील' और 'मीकाईल' का शत्रु हुआ तो ऐसे 'काफ़िरों' का शत्रु अल्लाह है।

९९. और हमने तुम्हारी ओर खुली-खुली 'आयतें' उतारी हैं, और उन का इन्कार केवल वही लोग करते हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

१००. क्या जब-जब कोई प्रतिज्ञा करेंगे तो इन का एक गरोह उसे उठा फेंकेगा ! बल्कि इन में अधिकतर 'ईमान' नहीं रखते।

१०१. और जब भी उन के पास अल्लाह की ओर से एक 'रसूल' आया जो उस की तसदीक़ करने वाला था जो, उन के पास थी तो उन में से एक गरोह ने, जिन्हें किताब दी गई थी अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे वे जानते ही नहीं,

94. Say (unto them): If the abode of the Hereafter in the providence of Allah is indeed for you alone and not for others of mankind (as ye pretend), then long for death (for ye must long for death) if ye are truthful.

95. But they will never long for it, because of that which their own hands have sent before them. Allah is Aware of evil-doers.

96. And thou wilt find them greediest of mankind for life and (greedier) than the idolaters. (Each) one of them would like to be allowed to live a thousand years. And to live (a thousand years) would by no means remove him from the doom. Allah is Seer of what they do.

97. Say (O Muhammad, to mankind): Who is an enemy to Gabriel! For he it is who hath revealed (this Scripture) to thy heart by Allah's leave, confirming that which was (revealed) before it, and a guidance and glad tidings to believers;

98. Who is an enemy to Allah, and His angels and His messengers, and Gabriel and Michael! Then, lo! Allah (Himself) is an enemy to the disbelievers.

99. Verily We have revealed unto thee clear tokens, and only miscreants will disbelieve in them.

100. Is it ever so that when ye make a covenant a party of you set it aside? The truth is, most of them believe not.

101. And when there cometh unto them a messenger from Allah, confirming that which they possess, a party of those who have received the Scripture fling the Scripture of Allah behind their backs as if they knew not.

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ
عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٩٤
وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ٩٥
وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى
حَيٰوةٍ وَمِنَ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا
يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ
وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ
يُّعَمَّرَ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ٩٦
قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَإِنَّهُ
نَزَّلَهُ عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ٩٧
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَإِنَّ
اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ٩٨
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ٩٩
أَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ١٠٠
وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ
مِّنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ كِتٰبَ اللّٰهِ
وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٠١

२६. एक अनुवाद यह भी हो सकता है : किसी को उसकी आयु की दीर्घता यातना से नहीं बचा सकती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२. और उस चीज़ के पीछे पड़ गये जिसे 'शैतान' सुलैमान की हुकूमत का नाम ले कर पेश करते थे। हालाँकि सुलैमान ने कोई कुफ़ नहीं किया ; बल्कि कुफ़ तो 'शैतानों' ने किया जो लोगों को जादू सिखाते थे—और (उस चीज़ में पड़े) जो बाबिल में दो 'फ़िरिश्तों' हारूत और मारूत पर उतारी गई थी। यद्यपि वे (फ़िरिश्ते) किसी को सिखाते नहीं थे, जब तक कि कह न देते कि हम तो बस एक परीक्षा हैं, तो तुम (इसे सीख कर) 'कुफ़' में न पड़ना। तो ये लोग उन से वह चीज़ सीखते जिस के द्वारा पति-पत्नी में फूट डाल सकें—यद्यपि ये उस से अल्लाह के हुक्म के बिना किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे—और ये वह चीज़ सीखते थे जो उन के लिए हानिकारक थी, लाभदायक न थी। और वे भली-भाँति जानते थे कि जो-कोई इस चीज़ का ग्राहक हुआ उस का 'आख़िरत' में कोई हिस्सा नहीं। क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्हों नें अपनें प्राणों का सौदा किया, क्या ही अच्छा होता कि वे इस को जानते।

102. And they follow that which the devils falsely related against the kingdom of Solomon. Solomon disbelieved not; but the devils disbelieved, teaching mankind magic and that which was revealed to the two angels in Babel, Harut and Marut. Nor did they (the two angels) teach it to anyone till they had said: We are only a temptation, therefore disbelieve not (in the guidance of Allah). And from these two (angels) people learn that by which they cause division between man and wife; but they injure thereby no one save by Allah's leave. And they learn that which harmeth them and profiteth them not. And surely they do know that he who trafficketh therein will have no (happy) portion in the Hereafter; and surely evil is the price for which they sell their souls. if they but knew.

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى
مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ
وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى
الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ
اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ
فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ
بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ
مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۛ
وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

१०३. और यदि वे 'ईमान' लाते और अल्लाह का डर रखते, तो अल्लाह के यहाँ जो बदला मिलता वह कहीं अच्छा था, क्या ही अच्छा होता कि वे इस को जानते।

103. And if they had believed and kept from evil, a recompense from Allah would be better, if they only knew.

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ
ع عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

१०४. हे 'ईमान' लाने वालो ! "राइना" न कहा करो इस की जगह "उनज़ुरना" कहा करो ३० और ध्यान-पूर्वक सुना करो। 'काफ़िरों' के लिए तो दुखदायिनी यातना है।

104. O ye who believe, say not (unto the Prophet): "Listen to us" but say "Look upon us," and be ye listeners. For disbelievers is a painful doom.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا
وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

१०५. जिन लोगों ने 'कुफ़' किया 'किताब वाले' हों या 'मुश्रिक' (बहुदेव वादी) हों, कोई नहीं चाहता कि तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम पर कोई भलाई उतरे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी दयालुता के लिए ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

105. Neither those who disbelieve among the People of the Scripture nor the idolaters love that there should be sent down unto you any good thing from your Lord. But Allah chooseth for His mercy whom He will, and Allah is of infinite bounty.

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾

३०. 'राइना' और 'उन ज़ुरना' का अर्थ एक ही होता है। नबी सल्ल० से बात-चीत करते समय जब यह कहने की आवश्यकता होती कि तनिक ठहरिए, हमें बात समझ लेने दीजिए तो 'राइना' कहा जाता था, अर्थात् हमारी रिआयत कीजिए, हमारी बात सुन लीजिए। 'यहूदी' इस मौक़े पर इस का उच्चारण 'राईना' करते जिसका अर्थ होता है, "हमारे चरवाहे"। इस से मिलता-जुलता एक शब्द उन की धार्मिक भाषा इबरानी (Hebrew) में भी था जिस का अर्थ होता था, "सुन तू बहरा हो जाये"। अल्लाह ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वे इस वाक्य को छोड़ कर 'उनज़ुरना' कहें, ताकि यहूदियों को शरारत का मौक़ा न मिले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६. हम जो कोई 'आयत' मन्सूख (निरस्त) कर देते हैं या भुलवा देते हैं,[३१] तो उस से अच्छी या उस जैसी दूसरी (आयत) लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

१०७. क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है ; और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई संरक्षक-मित्र है और न सहायक।

१०८. फिर क्या तुम अपने 'रसूल' से उसी प्रकार से प्रश्न करना चाहते हो जैसे इस से पहले मूसा से प्रश्न किया जा चुका है ? और जिस किसी ने 'ईमान' के बदले 'कुफ़्र' अपनाया, वह सन्मार्ग से भटक गया।

१०९. 'किताब वालों' में से बहुतेरे अपने दिलों की ईर्ष्या से यह चाहते हैं कि किसी तरह तुम्हारे 'ईमान' के बाद फिर तुम्हें 'काफ़िर' बना दें, जब कि सच्चाई स्पष्ट रूप से उन के सामने आ गई है। तुम क्षमा से काम लो और जाने दो ; यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

११०. और नमाज़ 'क़ायम' करो, और 'ज़कात' देते रहो ; तुम अपने लिए जो भलाई (कमा कर) आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के पास पाओगे। जो-कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है।

१११. और कहते हैं कि कोई व्यक्ति 'जन्नत' में प्रवेश नहीं कर सकता सिवाय उस के जो 'यहूदी' या 'ईसाई' है। ये उन की कामनायें हैं। कहो : यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण प्रस्तुत करो।

११२. हाँ, निस्सन्देह जो कोई भी अपने-आप को अल्लाह के आगे झुका दे, और वह उत्तम रीति से कर्म करने वाला है तो उस के लिए उस के 'रब' के पास उस का प्रतिदान है ; ऐसे लोगों को न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे।

106. Such of Our revelations as We abrogate or cause to be forgotten, We bring (in place) one better or the like thereof. Knowest thou not that Allah is Able to do all things?

107. Knowest thou not that it is Allah unto Whom belongeth the sovereignty of the heavens and earth; and ye have not, beside Allah, any friend or helper?

108. Or would ye question your messenger as Moses was questioned aforetime? He who chooseth disbelief instead of faith, verily he hath gone astray from a plain road.

109. Many of the People of the Scripture long to make you disbelievers after your belief, through envy on their own account, after the truth hath become manifest unto them. Forgive and be indulgent (toward them) until Allah give command. Lo! Allah is Able to do all things.

110. Establish worship, and pay the poor-due,* and whatever of good ye send before (you) for your souls, ye will find it with Allah. Lo! Allah is Seer of what ye do.

111. And they say: None entereth Paradise unless he be a Jew or a Christian. These are their own desires. Say: Bring your proof (of what ye state) if ye are truthful.

112. Nay, but whosoever surrendereth his purpose to Allah while doing good, his reward is with his Lord; and there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ
مِّنْهَا أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾
أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۗ وَمَن
يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾
وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يَرُدُّونَكُم مِّن بَعْدِ إِيمَانِكُمْ
كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم
مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ
فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ
وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ
خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ ۗ إِنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾
وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا
مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ تِلْكَ
أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾
بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

३१. भुलवा देने का तात्पर्य यह है कि जिस जाति के पास अल्लाह की किताब थी उस ने पूरी किताब को या उसके किसी हिस्से को अपनी सुस्ती या शरारत से खो दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११३. और 'यहूद' ने कहा, "ईसाई किसी बुनियाद पर नहीं हैं।" 'ईसाई' कहते हैं, "यहूदी किसी बुनियाद पर नहीं हैं" ; और वे दोनों ही 'किताब' पढ़ते हैं—इसी तरह की बात उन लोगों ने भी कही जिन को ज्ञान नहीं है। तो अल्लाह 'क़ियामत' के दिन उस चीज़ का निर्णय कर देगा जिस में ये विभेद कर रहे हैं।

113. And the Jews say the Christians follow nothing (true), and the Christians say the Jews follow nothing (true); yet both are readers of the Scripture. Even thus speak those who know not. Allah will judge between them on the Day of Resurrection concerning that wherein they differ.

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى
عَلٰى شَيْءٍ ص وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ
الْيَهُودُ عَلٰى شَيْءٍ لا وَّهُمْ يَتْلُوْنَ
الْكِتٰبَ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ج فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١١٣)

११४. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम की याद से रोके, और उन्हें उजाड़ने का प्रयासी हो ? उन को तो बस डरते हुये उन में प्रवेश करना चाहिए था। उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए 'आखिरत' में यातना है।

114. And who doth greater wrong than he who forbiddeth the approach to the sanctuaries of Allah lest His name should be mentioned therein, and striveth for their ruin? As for such, it was never meant that they should enter them except in fear. Theirs in the world is ignominy and theirs in the Hereafter is an awful doom.

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى
فِيْ خَرَابِهَا ط اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ
اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ط لَهُمْ
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ (١١٤)

११५. और पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तो जिस ओर भी रुख़ करो, उसी ओर अल्लाह का रुख है। निस्सन्देह अल्लाह समाई वाला और जानने वाला है।

115. Unto Allah belong the East and the West, and whithersoever ye turn, there is Allah's countenance. Lo! Allah is All-Embracing, All-Knowing.

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ق فَاَيْنَمَا
تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (١١٥)

११६. और कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है। महिमावान् है वह ! बल्कि आकाशों और धरती में जो-कुछ है, सब उसी का है। सब उस के आज्ञाकारी हैं।

116. And they say: Allah hath taken unto Himself a son. Be He glorified! Nay, but whatsoever is in the heavens and the earth is His. All are subservient unto Him.

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا لا سُبْحٰنَهٗ ط
بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط
كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ (١١٦)

११७. वह आकाशों और धरती जैसी अनोखी नई चीज़ों का बनाने वाला है ! और जब वह किसी बात का निर्णय करता है, तो बस उस के लिए कह देता है : हो जा ! तो वह हो जाती है।

117. The Originator of the heavens and the earth! When He decreeth a thing, He saith unto it only: Be! and it is.

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاِذَا
قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ (١١٧)

११८. और जिन्हें ज्ञान नहीं वे कहते हैं : अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती ? इसी प्रकार इन से पहले के लोग भी इन ही की-सी बात कह चुके हैं। इन सब के दिल एक-से हो गये। विश्वास करने वाले लोगों के लिए तो हम निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर चुके हैं।

118. And those who have no knowledge say: Why doth not Allah speak unto us, or some sign come unto us? Even thus, as they now speak, spake those (who were) before them. Their hearts are all alike. We have made clear the revelations for people who are sure.

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا
يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ط كَذٰلِكَ
قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ
قَوْلِهِمْ ط تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ط قَدْ
بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ (١١٨)

११९. हम ने तुम्हें हक़ के साथ, शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। भड़कती हुई आग (जहन्नम' में जाने) वालों के बारे में तुम से कुछ न पूछा जायेगा।

119. Lo! We have sent thee (O Muhammad) with the truth, a bringer of glad tidings and a warner. And thou wilt not be asked about the owners of hell-fire.

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ
نَذِيْرًا لا وَّلَا تُسْــَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ
الْجَحِيْمِ (١١٩)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

१२०. और न 'यहूदी' तुम से राज़ी होने वाले हैं और न 'ईसाई' जब तक कि तुम उन के पन्थ पर न चलने लगो। कह दो : निस्सन्देह अल्लाह का मार्ग-दर्शन ही वास्तविक मार्ग-दर्शन है। और यदि तुम उस ज्ञान के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुका है उन लोगों की इच्छाओं पर चले तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र होगा और न सहायक।

१२१. जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वे उसे इस तरह पढ़ते हैं जैसा कि उसे पढ़ने का हक़ है, यही लोग उस पर 'ईमान' लायेंगे[३२]। और जो उस का इन्कार करते हैं, तो वही घाटे में रहने वाले हैं।

१२२. हे 'सइराईल' की सन्तान ! मेरी उस कृपा को याद करो जो मैं ने तुम पर की थी और यह कि मैं ने तुम्हें संसार वालों पर बड़ाई दी थी।

१२३. और उस दिन से डरो जब कोई किसी के कुछ काम न आयेगा, और न उस से कोई बदला क़बूल किया जायेगा, न कोई सिफ़ारिश ही उसे लाभ पहुँचायेगी ; और न उन (अपराधियों) की कोई सहायता की जायेगी।

१२४. और याद करो जब इब्राहीम की, उस के 'रब' ने कुछ बातों में परीक्षा ली, तो उस ने उन्हें पूरा कर दिखाया, उस ने कहा, "मैं तुझे सब लोगों का नायक बनाने वाला हूँ।" उस ने निवेदन किया, "और मेरी सन्तान में से ?" उस ने कहा, मेरे वचन में अत्याचारी सम्मिलित नहीं हैं।

१२५. और याद करो जब कि हम ने इस घर ('काबा') को लोगों के लिए केन्द्र और शान्ति स्थल बनाया। और हुक्म दिया कि इबराहीम के वास स्थान को 'नमाज़' की एक जगह बनाओ, और इबराहीम और इसमाईल को ज़िम्मेदार बनाया कि मेरे घर को 'तवाफ़' (परिक्रमा) और 'एतकाफ़' और 'रुकूअ' और 'सजदा' करने वालों के लिए पाक रक्खो[३३]।

120. And the Jews will not be pleased with thee, nor will the Christians, till thou follow their creed. Say: Lo! the guidance of Allah (Himself) is Guidance. And if thou shouldst follow their desires after the knowledge which hath come unto thee, then wouldst thou have from Allah no protecting friend nor helper.

121. Those unto whom We have given the Scripture, who read it with the right reading, those believe in it. And whoso disbelieveth in it, those are they who are the losers.

122. O Children of Israel! Remember My favour wherewith I favoured you and how I preferred you to (all) creatures.

123. And guard (yourselves) against a day when no soul will in aught avail another, nor will compensation be accepted from it, nor will intercession be of use to it; nor will they be helped.

124. And (remember) when his Lord tried Abraham with (His) commands, and he fulfilled them, He said: Lo! I have appointed thee a leader for mankind. (Abraham) said: And of my offspring (will there be leaders)? He said: My covenant includeth not wrong-doers.

125. And when We made the House (at Mecca) a resort for mankind and a sanctuary, (saying): Take as your place of worship the place where Abraham stood (to pray). And We imposed a duty upon Abraham and Ishmael, (saying): Purify My House for those who go around and those who meditate therein and those who bow down and prostrate themselves (in worship).

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا
النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۭ قُلْ
اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَلَىِٕنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ
جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ
اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ ١٢٠
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰھُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ
حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ
ھُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ ١٢١
يٰبَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ
الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ
فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝ ١٢٢
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَـيْـــًٔـا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا
ھُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ ١٢٣
وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ
فَاَتَـمَّهُنَّ ۭ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ
لِلنَّاسِ اِمَامًا ۭ قَالَ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِىْ ۭ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي
الظّٰلِمِيْنَ ۝ ١٢٤
وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ
وَاَمْنًا ۭ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ
اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ۭ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى
اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا
بَيْتِىَ لِلطَّاۗىِٕفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝ ١٢٥

३२. यह संकेत 'किताब वालों' में से उन सत्यनिष्ठ व्यक्तियों की ओर है जिन के लिए सच्चाई को स्वीकार करने में कोई चीज़ रुकावट नहीं बन सकी। वे क़ुरआन और क़ुरआन ले आने वाले पर 'ईमान' ले आये।

३३. अर्थात् इस घर को कूड़ा-करकट ही से नहीं बल्कि 'शिर्क' (अनेकेश्वर वाद) की गन्दगियों से भी पाक-साफ़ रक्खा जाये।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२६. और याद करो जब इबराहीम नें कहा, 'हे मेरे 'रब'! इस भू-भाग को शान्ति-भूभाग बना दे और इस के निवासियों को फलों की रोज़ी दे, उन को जो अल्लाह और अन्तिम दिन[३४] पर ईमान रक्खें।" कहा, "और जो कोई 'कुफ़्र' करेगा थोड़ा बरतनें तो मैं उसे भी दूंगा,[३५] फिर उसे आग ('जहन्नम') की यातना की ओर घसीट ले जाऊँगा, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

१२७. और याद करो जब कि इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे (तो उन्हों नें प्रार्थना की), हे हमारे 'रब'! इसे हमारी ओर से स्वीकार कर ले। निस्सन्देह तू सुनने वाला और जानने वाला है।

१२८. हे हमारे 'रब'! हम दोनों को अपना 'मुस्लिम' (आज्ञाकारी) बना और हमारी सन्तान से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय और हमें हमारे 'इबादत' के तरीक़े बता, और हमारी 'तौबा' क़बूल कर। निस्सन्देह तू 'तौबा' कबूल करने वाला और दयाशील है।

१२९. हे हमारे 'रब'! उन लोगों में उन्हीं में से एक 'रसूल'[३६] उठा जो उन्हें तेरी 'आयतें' सुनाये, उन्हें 'किताब' और 'हिकमत' (तत्त्व-दर्शिता) की शिक्षा दे और उन्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करे। निस्सन्देह तू प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

१३०. और कौन है जो इबराहीम के पन्थ से मुँह मोड़ सके सिवाय उस के जो अपने आप को मूर्खता में ग्रस्त कर दे? उस को तो हम नें दुनिया में चुन लिया था, और वह 'आख़िरत' में अच्छे लोगों में से होगा।

१३१. जब उस से उस के 'रब' नें कहा, "'मुस्लिम' हो जा।" वह पुकार उठा, "मैं सारे संसार के 'रब' का मुस्लिम हो गया।"

१३२. इसी की वसीयत इबराहीम ने अपने बेटों को की, और याक़ूब ने भी (अपनी सन्तान को की) कि मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही 'दीन' निर्वाचित किया; तो तुम 'मुस्लिम' ही रह कर मारना।

126. And when Abraham prayed: My Lord! Make this a region of security and bestow upon its people fruits, such of them as believe in Allah and the Last Day, He answered: As for him who disbelieveth, I shall leave him in contentment for a while, then I shall compel him to the doom of Fire—a hapless journey's end!

127. And when Abraham and Ishmael were raising the foundations of the House, (Abraham prayed): Our Lord! Accept from us (this duty), Lo! Thou, only Thou, art the Hearer, the Knower.

128. Our Lord! And make us submissive unto Thee and of our seed a nation submissive unto Thee, and show us our ways of worship, and relent towards us. Lo! Thou, only Thou, art the Relenting, the Merciful.

129. Our Lord! And raise up in their midst a messenger from among them who shall recite unto them Thy revelations, and shall instruct them in the Scripture and in wisdom and shall make them grow. Lo! Thou, only Thou, art the Mighty, wise.

130. And who forsaketh the religion of Abraham save him who befooleth himself; Verily We chose him in the world, and lo! in the Hereafter he is among the righteous.

131. When his Lord said unto him: Surrender! he said: I have surrendered to the Lord of the Worlds.

132. The same did Abraham enjoin upon his sons, and also Jacob, (saying): O my sons! Lo! Allah hath chosen for you the (true) religion; therefore die not save as men who have surrendered (unto Him).

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ
هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ
مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ قَالَ وَمَنْ
كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ
اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٢٦
وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ
الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ رَبَّنَا تَقَبَّلْ
مِنَّا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ١٢٧
رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠
وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ
اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ١٢٨
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ١٢٩ ع
وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ
اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ
اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ١٣٠
اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ
اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٣١
وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ
وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى
لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ
اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ١٣٢ ۭ

३४. देखिए, फ़ुट नोट ५।

३५. अर्थात् थोड़े दिनों के लिए सांसारिक सुख और फ़ायदा तो 'काफ़िरों' को भी पहुँचेगा।

३६. हज़रत मुहम्मद सल्ल० का आगमन वास्तव में हज़रत इबराहीम अ० की इसी प्रार्थना का उत्तर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३३. क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया? जब उस ने अपने बेटों से पूछा ; मेरे बाद तुम किस की बन्दगी करोगे?" वे बोले : हम आप के 'इलाह' (इष्ट प्रभु) और आप के पूर्वज—इबराहाम और इसमाईल और इसहाक़—के 'इलाह' की 'इबादत' करेंगे जो अकेला 'इलाह' (पूज्य प्रभु) है, और हम सब उसी के 'मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

133 Or were ye present when death came to Jacob, when he said unto his sons: What will ye worship after me? They said: We shall worship thy God, the God of thy fathers, Abraham and Ishmael and Isaac, One God, and unto Him we have surrendered.

أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ
يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ
لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ
بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ إِلٰهَكَ
وَإِلٰهَ اٰبَآئِكَ إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ
وَإِسْحٰقَ إِلٰهًا وَّاحِدًا وَنَحْنُ
لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

१३४. यह एक गरोह था जो गुज़र चुका। जो-कुछ उस ने कमाया वह उस के लिए है, और जो-कुछ तुम ने कमाया वह तुम्हारे लिए है। और जों-कुछ वे करते रहे उस के विषय में तुम से न पूछा जायेगा।

134. Those are a people who have passed away. Theirs is that which they earned, and yours is that which ye earn. And ye will not be asked of what they used to do.

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا
مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا
كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْئَلُونَ عَمَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾

१३५. वे कहते हैं : 'यहूदी' या 'ईसाई' हो जाओ, मार्ग पा लोगे। कहो : नहीं, बल्कि इबराहीम का पन्थ अपनाओ जो एक (अल्लाह) का हो रहा था, और वह 'मुश्रिकों' में से न था।

135. And they say: Be Jews or Christians, then ye will be rightly guided. Say (unto them, O Muhammad): Nay, but (we follow) the religion of Abraham, the upright, and he was not of the idolaters.

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصٰرٰى
تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرٰهٖمَ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾

१३६. कह दो : हम 'ईमान लाये' अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतारी गई और उस चीज़ पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब, और उन की सन्तान की ओर उतारी गई, और जो मूसा और ईसा को दी गई, और जो दूसरे सभी 'नबियों' को उन के 'रब' की ओर से मिली हम उन में किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

136. Say (O Muslims): We believe in Allah and that which is revealed unto us and that which was revealed unto Abraham, and Ishmael, and Isaac, and Jacob, and the tribes, and that which Moses and Jesus received, and that which the Prophets received from their Lord. We make no distinction between any of them, and unto Him we have surrendered.

قُولُوا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا
وَمَا أُنْزِلَ إِلٰى إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ
وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا
أُوتِيَ مُوسٰى وَعِيسٰى وَمَا أُوتِيَ
النَّبِيُّونَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

१३७. तो यदि वे वैसे ही 'ईमान' लायें जैसे तुम उन पर ईमान लाये हो, तो उन्हों ने मार्ग पा लिया। और यदि वे मुंह मोड़ें, तो फिर वही विरोध में लीन हैं, तो अल्लाह उन के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए काफ़ी होगा। वह सुनने वाला और जानने वाला है।

137. And if they believe in the like of that which ye believe, then are they rightly guided. But if they turn away, then are they in schism, and Allah will suffice thee (for defence) against them. He is the Hearer, the Knower.

فَإِنْ اٰمَنُوا بِمِثْلِ مَا اٰمَنْتُمْ
بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا وَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ
فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾

१३८. बस अल्लाह का रंग[३७]। और अल्लाह से अच्छा किसका रंग होगा? और हम उसी की बन्दगी करते हैं।

138 (We take our) colour from Allah, and who is better than Allah at colouring? We are His worshippers.

صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ أَحْسَنُ
مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ
لَهُ عٰبِدُونَ ﴿١٣٨﴾

३७. ईसाई-प्रथा के प्रकट होने से पूर्व यहूदियों के यहाँ यह रिवाज था कि जो उन के धर्म को अपनाता उसे स्नान कराते थे। इस स्नान का मतलब उन के यहाँ यह समझा जाता था कि मानो उस के गुनाह धुल गये ; और उस ने जीवन का एक नवीन रंग धारण कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३९. कह दो : क्या तुम अल्लाह के के बारे में हम से हुज्जत करते हो जब कि वही हमारा 'रब' भी है और तुम्हारा रब भी ? हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए। और हम तो बस उसी के हो चुके हैं।

139. Say (unto the People of the Scripture): Dispute ye with us concerning Allah when He is our Lord and your Lord? Ours are our works and yours your works. We look to Him alone.

قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾

१४०. या तुम यह कहते हो कि इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, और याक़ूब और उन की सन्तान के लोग 'यहूदी' थे या 'ईसाई' थे ? कहो : तुम ज़्यादा जानते हो, या अल्लाह ? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस के पास अल्लाह की ओर से एक गवाही[३८] हो और वह उसे छिपाये ? और अल्लाह उस से बे-ख़बर नहीं है जो तुम कर रहे हो।

140. Or say ye that Abraham, and Ishmael, and Isaac, and Jacob and the tribes were Jews or Christians? Say: Do ye know best, or doth Allah? And who is more unjust than he who hideth a testimony which he hath received from Allah? Allah is not unaware of what ye do.

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

१४१. यह एक गरोह था जो गुज़र चुका ; जो-कुछ उस ने कमाया वह उस के लिए है और जो-कुछ तुम ने कमाया वह तुम्हारे लिए है। जो-कुछ वे करते रहे, उस के विषय में तुम से न पूछा जायेगा।

141. Those are a people who have passed away; theirs is that which they earned and yours that which ye earn. And ye will not be asked of what they used to do.

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

१४२. *अब मूर्ख लोग कहेंगे : इन (मुसलमानों) को इन के उस 'क़िबले' से जिस पर ये थे,[३९] किस चीज़ ने फेर दिया ? कहो : पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है।

142. The foolish of the people will say: What hath turned them from the *qiblah*[1] which they formerly observed? Say: Unto Allah belong the East and the West. He guideth whom He will unto a straight path.

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾

(Baptism) है। यह बपतिस्मा बड़ों के
लिया। यह प्रथा बाद में ईसाइयों के यहाँ भी चल पड़ी। इस का नाम उन के यहाँ बपतिस्मा
अतिरिक्त हर नवजात ईसाई बच्चे को भी दिया जाने लगा। इस बपतिस्मा का उन के यहाँ इतना अधिक महत्व था, मानो सारा
दीन-धर्म बस यही है। क़ुरआन कहता है कि इस बपतिस्मा में क्या रक्खा है जो केवल एक रिवाज बन कर रह गया है। अल्लाह
का रंग अपनाओ ; अपना स्वाभाविक और यथार्थ धर्म, अर्थात् अल्लाह की बन्दगी और भक्ति का मार्ग ग्रहण करो। यही तुम्हारे
कल्याण का एक-मात्र साधन है।

बाइबिल में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के बपतिस्मा का उल्लेख किया गया है। उदाहरणार्थ दे० 'मत्ता' ३ : ११ और २० :
२२-२३ और २१ : २५, 'मुरक़ुस' (Mk.) १ : ४ और ११ : ३० ; 'लूक़ा' (Lk.) ७ : २९ और १२ : ५० ; 'यूहन्ना'
(John) १ : २६, ३१ ; 'आमाल' (Acts) २ : ३८, ४१ और ८ : १३ और १३ : २४; 'रोमियों' ६ : ३ 'कोलोस्सियो' (Col.)
२ . १५ ; 'इफ़िसियों' (Ephes.) ४ : ५ ; 'गलतियों' (Gal.) ३ : २७।

३८. 'तौरात' और 'इंजील' में हज़रत इब्राहीम अ० के तरीक़े को और उन के वास्तविक मिशन को खोल-खोल कर बयान कर दिया
गया था। 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' की यह ज़िम्मेदारी थी कि वे लोगों के सामने यथार्थ एवं वास्तविक धर्म को पेश करते। हज़रत
इबराहीम अ० के मक्का आने, काबा का निर्माण करने, उसे सत्य-धर्म का केन्द्र बनाने और एक नबी (सल्ल०) के आने की प्रार्थना
करने आदि सभी बातों का उन्हें ज्ञान दिया था। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के व्यक्तित्व और गुणों के बारे में उन्हें काफ़ी जानकारी
दे दी गई थी। पिछले 'नबियों' के द्वारा उन से वचन भी लिया गया था कि जब वह 'नबी' आये तो उन का यह कर्तव्य होगा कि
दुनिया के सामने उस के नबी होने की गवाही दें।

३९. हिजरत (मक्का के परित्याग) के बाद नबी सल्ल० लग-भग १६-१७ महीने तक 'बैतुल मक़दिस' की ओर मुँह कर के 'नमाज़' पढ़ते रहे।
फिर 'काबा' की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म आया। बैतुल मक़दिस युरोशलम (Jerusalem) की वह इबादतगाह
है जिस का आदर मुसलमान, ईसाई और यहूदी सभी करते हैं। इस पवित्र घर की बुनियाद पैग़म्बर हज़रत दाऊद अ० ने डाली
थी।

* यहाँ से दूसरा पारा (Part) आरम्भ होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४३. और इसी तरह हम ने तुम्हें बीच का (एक उत्तम) समुदाय बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो, और 'रसूल' तुम पर गवाह हो। और तुम जिस ('क़िबले') पर थे उसे तो हम नें केवल इस लिए क़िबला ठहराया था ताकि हम उन लोगों में से जो पीठ पीछे फिर जानें वाले हैं उन लोगों को जान लें जो रसूल का अनुसरण करनें वाले हैं। निस्सन्देह यह बात भारी है किन्तु उन लोगों पर नहीं जिन्हें अल्लाह मार्ग दिखाये। और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारे 'ईमान' को अकारथ कर दे अल्लाह तो मनुष्यों के लिए करुणामय और दयावान् है।

143. Thus We have appointed you a middle nation, that ye may be witnesses against mankind, and that the messenger may be a witness against you. And We appointed the *qiblah* which ye formerly observed only that We might know him who followeth the messenger, from him who turneth on his heels. In truth it was a hard (test) save for those whom Allah guided. But it was not Allah's purpose that your faith should be in vain, for Allah is Full of Pity, Merciful toward mankind.

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ أُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ۚ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾

१४४. हम आकाश की ओर तुम्हारे रुख़ की गर्दिश देखते रहे हैं तो हम उसी 'क़िब्ले' की ओर तुम्हें फेरे देते हैं जिसे तुम पसन्द करते हो तो तुम अपना मुँह 'मसजिदे हराम' (काबा) की ओर फेर दो, और जहाँ-कहीं भी तुम हो ('नमाज़' में) उसी की ओर अपने मुँह करो। जिन लोगों को 'किताब' दी गई वे इस बात को जानते हैं कि यही उन के 'रब' की ओर से हक़ है। और जो-कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उस से बे-ख़बर नहीं है।

144. We have seen the turning of thy face to heaven (for guidance, O Muhammad). And now verily We shall make thee turn (in prayer) toward a *qiblah* which is dear to thee. So turn thy face toward the Inviolable Place of Worship, and ye (O Muslims) where so ever may be, turn your faces (when ye pray) toward it. Lo! those who have received the Scripture know that (this Revalation) is the Truth from their Lord. And Allah is not unaware of what they do.

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾

१४५. और यदि तुम 'किताब वालों' के पास हर प्रकार की भी निशानी ले आओ, तो भी ये तुम्हारे 'क़िबले' का अनुसरण नहीं करेंगे और न तुम उन के क़िबले का अनुसरण करनें वाले हो ; और न वे एक-दूसरे के 'क़िबले' का अनुसरण करनें वाले हैं। और यदि तुम उस ज्ञान के पश्चात् जो तुम्हारे पास आ चुका है, उन की इच्छाओं पर चले, तो. निस्सन्देह तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।

145. And even if thou broughtest unto those who have received the Scripture all kinds of portents, they would not follow thy *qiblah*, nor canst thou be a follower of their *qiblah;* nor are some of them followers of the *qiblah* of others. And if thou shouldst follow their desires after the knowledge which hath come unto thee, then surely wert thou of the evil-doers.

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

१४६. जिन को हम ने 'किताब' दी है वे इस को पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। हाँ, निस्सन्देह उन में से एक गरोह जानते-बूझते हक़ को छिपाता है।

146. Those unto whom We gave the Scripture recognise (this revelation) as they recognise their sons. But lo! a party of them knowingly conceal the truth.

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

१४७. यही हक़ है तुम्हारे 'रब' की ओर से, तो तुम सन्देह करने वालों में से न होना।

147. It is the Truth from thy Lord (O Muhammad), so be not thou of those who waver.

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४८. हर एक के लिए एक दिशा है वह उसी की ओर मुड़ने वाला है ; तो तुम नेकियों में अग्रसरता प्राप्त करो । जहाँ-कहीं भी तुम होगे, अल्लाह तुम सब को इकट्ठा करेगा । निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है ।

148. And each one hath a goal toward which he turneth; so vie with one another in good works. Wheresoever ye may be, Allah will bring you all together. Lo! Allah is Able to do all things.

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا
فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ أَيْنَ مَا
تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا ؕ
إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

१४९. और तुम जहाँ-कहीं से भी निकलो तो अपना मुँह 'मसजिदे हराम' (काबा) की ओर फेरो निस्सन्देह यही हक़ है तुम्हारे 'रब' की ओर से और जो-कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं है ।

149. And whencesoever thou comest forth (for prayer, O Muhammad) turn thy face toward the Inviolable Place of Worship. Lo! it is the Truth from thy Lord. Allah is not unaware of what ye do..

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَإِنَّهُ
لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

१५०. और जहाँ-कहीं से भी निकलो तो अपना मुँह मसजिदे-हराम (काबा) की ओर फेरो और जहाँ-कहीं भी तुम हो उसी की ओर मुँह करो ताकि लोगों के लिए तुम्हारे विरुद्ध कोई हुज्जत न रहे—सिवाय उन लोगों के जो उन में ज़ालिम हैं, तो उन से न डरो, मुझ से ही डरो !—और ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ, और ताकि तुम मार्ग पा लो ।

150. Whencesoever thou comest forth turn thy face toward the Inviolable Place of Worship; and wheresoever ye may be (O Muslims) turn your faces toward it (when ye pray) so that men may have no argument against you, save such of them as do injustice—Fear them not, but fear Me!—and so that I may complete My grace upon you, and that ye may be guided.

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۙ
لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۚ
إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۚ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلِأُتِمَّ
نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾

१५१. तदनुसार हम ने तुम में तुम ही में से एक 'रसूल' भेजा, जो तुम्हें हमारी 'आयतें' सुनाता है, तुम्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करता है, और तुम्हें 'किताब' और 'हिकमत' (तत्त्व-दर्शिता) की शिक्षा देता है, और तुम्हें उन चीज़ों की शिक्षा देता है जो तुम नहीं जानते थे ।

151. Even as We have sent unto you a messenger from among you, who reciteth unto you Our revelations and causeth you to grow, and teacheth you the Scripture and wisdom, and teacheth you that which ye knew not.

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنْكُمْ
يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيٰتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ
وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

१५२. तो तुम मुझे याद रक्खो, मैं तुम्हें याद रक्खूँगा । और मेरा कृतज्ञ बनना, कृतघ्नता न दिखलाना ।

152. Therefore remember Me, I will remember you. Give thanks to Me, and reject not Me.

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي
وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

१५३. हे 'ईमान लाने वालो' ! धैर्य और 'नमाज़' से सहायता चाहो । निस्सन्देह अल्लाह धैर्यवानों के साथ है ।

153. O ye who believe! Seek help in steadfastness and prayer. Lo! Allah is with the steadfast.

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلٰوةِ ؕ إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِينَ ﴿١٥٣﴾

१५४. और उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं, मुरदा न कहो, वे तो जीवित हैं, परन्तु तुम्हें इस की अनुभूति नहीं होती ।

154. And call not those who are slain in the way of Allah "dead." Nay, they are living, only ye perceive not.

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِي
سَبِيلِ اللّٰهِ أَمْوَاتٌ ؕ بَلْ
أَحْيَاءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

१५५. और निस्सन्देह हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे कुछ भय से, कुछ भूख से, कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से ; और धैर्यवानों को शुभ सूचना दे दो ।

155. And surely We shall try you with something of fear and hunger, and loss of wealth and lives and crops; but give glad tidings to the steadfast.

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ
وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ
وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِينَ ﴿١٥٥﴾

१५६. ये वे लोग हैं कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं : निस्सन्देह हम अल्लाह ही के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं ।

156. Who say, when a misfortune striketh them: Lo! we are Allah's and lo! unto Him we are returning.

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۙ
قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رٰجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५७. यही लोग हैं जिन के लिए उन के 'रब' के आशीर्वाद हैं और दयालुता। और यही लोग हैं जो मार्ग पर हैं।

१५८. निस्सन्देह 'सफ़ा' और 'मरवा' (की पहाड़ियाँ) अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जो अल्लाह के घर (काबा) का 'हज्ज' करे या 'उमरा' करे, उस के लिए इस में कोई दोष नहीं कि वह उन की परिक्रमा करे[४०]। और जिस ने स्वेच्छा-पूर्वक कोई नेकी की तो अल्लाह क़बूल करने वाला (गुण-ग्राहक) और जानने वाला है।

१५९. निस्सन्देह जो लोग हमारी उतारी हुई खुली-खुली निशानियों और मार्ग-दर्शन को छिपाते हैं, इस के बाद कि हम उसे लोगों के लिए किताब में खोल कर बयान कर चुके हैं: वही हैं जिन पर अल्लाह की फिटकार पड़ती है और फिटकारने वाले जिन्हें फिटकारेंगे।

१६०. परन्तु जिन लोगों ने 'तौबा' कर ली और (अपने को) सुधार लिया और स्पष्टतः बयान कर दिया, तो मैं उन की 'तौबा' क़बूल करूँगा। और मैं बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और दया करने वाला हूँ।

१६१. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, और 'काफ़िर' ही रह कर मरे; उन पर अल्लाह की और 'फ़िरिश्तों' की और सारे मनुष्यों की फिटकार है।

१६२. इसी (हालत) में वे सदा रहेंगे। न उन की यातना हल्की की जायेगी और न उन्हें अवकाश ही मिलेगा।

१६३. तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य प्रभु) अकेला 'इलाह' है; उस के सिवा कोई भी 'इलाह' नहीं; वह कृपाशील और दयावान् है।

157. Such are they on whom are blessings from their Lord, and mercy. Such are the rightly guided.

158. Lo! (the mountains) As-Safa and Al-Marwah are among the indications of Allah. It is therefore no sin for him who is on pilgrimage to the House (of God) or visiteth it, to go around them (as the pagan custom is). And he who doth good of his own accord, (for him) lo! Allah is Responsive, Aware.

159. Those who hide the proofs and the guidance which We revealed, after We had made it clear to mankind in the Scripture: such are accursed of Allah and accursed of those who have the power to curse.

160. Except such of them as repent and amend and make manifest (the truth) These it is toward whom I relent. I am the Relenting, the Merciful.

161. Lo! those who disbelieve, and die while they are disbelievers; on them is the curse of Allah and of angels and of men combined

162. They ever dwell therein. The doom will not be lightened for them, neither will they be reprieved.

163. Your God is One God; there is no God save Him, the Beneficent, the Merciful.

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن
رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ
اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ
وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ
شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا
مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ
مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ
أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ
اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا
فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ
كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ
وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾
خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾
وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا
ع هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾

४०. 'सफ़ा' और 'मरवा' के बीच चक्कर लगाना हज्ज-सम्बन्धी रीतियों में से एक रीति है। इसे 'सई' करना भी कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६४. निस्सन्देह आकाशों और धरती की बनावट में, रात-दिन के बारी-बारी एक-दूसरे के बाद आने में, उन जहाज़ों में जो समुद्र में लोगों के लिए लाभदायक सामग्री लेकर चलते हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उस के द्वारा भूमि को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवित किया, और हर प्रकार के जीव-जन्तु उस ने उस में फैलाये, और हवाओं की गर्दिश में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच काम पर लगा रक्खे गये हैं : उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं।

१६५. और लोगो में ऐसे भी हैं जो दूसरों को अल्लाह के समवर्ती ठहराते हैं, जिन से वे इस प्रकार प्रेम करते हैं जिस प्रकार अल्लाह से प्रेम करना चाहिए—और जो 'ईमान' रखते हैं वे तो सब से बढ़ कर प्रेम अल्लाह ही से रखते हैं—और यदि ये ज़ुल्म ढाने वाले उस समय को देख सकते जब यातना इन के सामने होगी, कि सारी शक्ति अल्लाह ही के पास है, और यह कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

१६६. उस समय का ध्यान करो जब कि वे लोग जिनके पीछे लोग चले थे अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और यातना उन को समक्ष होगी; और उन के आपस के सारे नाते टूट चुके होंगे।

१६७. और वे लोग जो उन के पीछे चले थे कहेंगे : क्या अच्छा होता कि हमें एक बार (फिर दुनिया में) लौटना होता, तो जिस तरह ये हम से विरक्त हो रहे हैं हम भी इन से विरक्त हो जाते। इस तरह पश्चाताप के रूपों में अल्लाह उन का किया-धरा उन्हें दिखायेगा, और वे आग ('जहन्नम') से कदापि छुटकारा पाने वाले नहीं।

१६८. लोगो ! धरती की चीज़ों में से जो 'हलाल' और पाक हैं उन्हें खाओ, और 'शैतान' के पदचिह्नों का अनुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

१६९. वह तो तुम्हें बस बुरी और अश्लील बातें सुझाएगा और यह कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर ऐसी बातें कहो जिन के बारे में तुम कुछ नहीं जानते।

164. Lo! in the creation of the heavens and the earth, and the difference of night and day, and the ships which run upon the sea with that which is of use to men, and the water which Allah sendeth down from the sky, thereby reviving the earth after its death, and dispersing all kinds of beasts therein, and (in) the ordinance of the winds, and the clouds obedient between heaven and earth: are signs (of Allah's sovereignty) for people who have sense.

165 Yet of mankind are some who take unto themselves (objects of worship which they set as) rivals to Allah, loving them with a love like (that which is the due) of Allah (only)—Those who believe are stauncher in their love for Allah—Oh, that those who do evil had but known, (on the day) when they behold the doom, that power belongeth wholly to Allah, and that Allah is severe in punishment!

166. (On the day) when those who were followed disown those who followed (them), and they behold the doom, and all their aims collapse with them.

167. And those who were but followers will say: If a return were possible for us, we would disown them even as they have disowned us. Thus will Allah show them their own deeds as anguish for them, and they will not emerge from the Fire.

168. O mankind! Eat of that which is lawful and wholesome in the earth, and follow not the footsteps of the devil. Lo! he is an open enemy for you.

169. He enjoineth upon you only the evil and the foul, and that ye should tell concerning Allah that which ye know not.

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ
الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ
النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاءِ
مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ
وَتَصْرِيفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ
بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ أَنْدَادًا يُّحِبُّونَهُمْ
كَحُبِّ اللّٰهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ
حُبًّا لِّلّٰهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيعًا ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾
إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ
الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ
وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾
وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً
فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ
كَذٰلِكَ يُرِيهِمُ اللّٰهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ۖ
وَمَا هُمْ بِخٰرِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾
يٰأَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ
حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٨﴾
إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ
وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७०. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो-कुछ उतारा है उस का अनुसरण करो, तो कहते हैं : नहीं, हम तो उस का अनुसरण करेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या इस दशा में भी जब कि उन के पूर्वज न कुछ बुद्धि से काम लेते रहे हों और न मार्ग पर रहे हों ?

१७१. और उनकी मिसाल जिन्हों ने 'कुफ़' किया ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति उन को पुकार रहा हो जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ भी नहीं सुनते-समझते। ये बहरे हैं, गूंगे हैं और अन्धे हैं, इस लिए ये नहीं समझ सकते।

१७२. हे 'ईमान लाने' वालो ! जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें प्रदान की हैं उन्हें खाओ और अल्लाह के कृतज्ञ बनो, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

१७३. उस ने तुम पर केवल मुरदार को, ख़ून को, सूअर के मांस को,[४१] और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। इस पर भी जो मजबूर हो जाये, न तो उसे कोई इच्छा हो न वह (ज़रूरत की) हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।

१७४. निस्सन्देह जो लोग उस चीज़ को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी 'किताब' में उतारी है, और उन के बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करते हैं, वे अपने पेट को आग के सिवा किसी और चीज़ से नहीं भर रहे हैं। और 'क़ियामत' के दिन न तो अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन्हें पाक करेगा। उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

१७५. यही लोग हैं जिन्हों ने मार्ग-दर्शन के बदले पथ भ्रष्टता और क्षमा के बदले यातना का सौदा किया। तो आग के लिए इन का साहस कितना बढ़ा हुआ है !

१७६. यह इस लिए होगा कि अल्लाह ने तो 'किताब' हक़ के साथ उतारी और जिन लोगों ने 'किताब' के मामले में विभेद किया वे विरोध में बहुत दूर जा पड़े।

170. And when it is said unto them: Follow that which Allah hath revealed, they say: We follow that wherein we found our fathers. What! Even though their fathers were wholly unintelligent and had no guidance?

171. The likeness of those who disbelieve (in relation to the messenger) is as the likeness of one who calleth unto that which heareth naught except a shout and cry. Deaf, dumb, blind, therefore they have no sense.

172. O ye who believe! Eat of the good things wherewith We have provided you, and render thanks to Allah if it is (indeed) He whom ye worship.

173. He hath forbidden you only carrion, and blood, and swineflesh, and that which hath been immolated to (the name of) any other than Allah. But he who is driven by necessity, neither craving nor transgressing, it is nos in for him. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

174. Lo! those who hide aught of the Scripture which Allah hath revealed, and purchase a small gain therewith, they eat into their bellies nothing else than fire. Allah will not speak to them on the Day of Resurrection, nor will He make them grow. Theirs will be a painful doom.

175. Those are they who purchase error at the price of guidance, and torment at the price of pardon. How constant are they in their strife to reach the Fire!

176. That is because Allah hath revealed the Scripture with the truth. Lo! those who find (a cause of) disagreement in the Scripture are in open schism.

وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما ألفينا عليه آباءنا أولو كان آباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ﴿١٧٠﴾

ومثل الذين كفروا كمثل الذي ينعق بما لا يسمع إلا دعاء ونداء صم بكم عمي فهم لا يعقلون ﴿١٧١﴾

يا أيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم واشكروا لله إن كنتم إياه تعبدون ﴿١٧٢﴾

إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم ﴿١٧٣﴾

إن الذين يكتمون ما أنزل الله من الكتاب ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا النار ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم ﴿١٧٤﴾

أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى والعذاب بالمغفرة فما أصبرهم على النار ﴿١٧٥﴾

ذلك بأن الله نزل الكتاب بالحق وإن الذين اختلفوا في الكتاب لفي شقاق بعيد ﴿١٧٦﴾

४१. यहाँ सारे ही जानवरों को सामने रख कर बात नहीं की जा रही है बल्कि बात केवल उन जानवरों के विषय में की जा रही है जिनके बारे में मुसलमानों, यहूदियों और ईसाईयों के बीच मत-भेद था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७७. नेकी और वफ़ादारी यह नहीं है कि बस तुम अपने चेहरे पूर्व या पश्चिम की ओर कर लो; बल्कि वफ़ादारी उन की वफ़ादारी है जो अल्लाह पर, अन्तिम दिन[४२] पर 'फ़िरिश्तों' पर, किताब पर और 'नबियों' पर 'ईमान' लायें; और माल उस का (स्वाभाविक) मोह होने पर भी नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगने वालों को दें और गरदनें छुड़ाने में[४३] ख़र्च करें। और 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें। और जब कोई वचन दें तो अपने वचन को पूरा करने वाले हों। और तंगी, शारीरिक कष्टों और युद्ध के समय धैर्य से काम लेने वाले हों, यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही लोग हैं जो (अल्लाह का) डर रखने वाले हैं।

177. It is not righteousness that ye turn your faces to the East and the West; but righteous is he who believeth in Allah and the Last Day and the angels and the Scripture and the prophets; and giveth his wealth, for love of Him, to kinsfolk and to orphans and the needy and the wayfarer and to those who ask, and to set slaves free; and observeth proper worship and payeth the poor-due. And those who keep their treaty when they make one, and the patient in tribulation and adversity and time of stress. Such are they who are sincere. Such are the God-fearing.

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ
قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى
الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَ
الْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ
وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ
وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

१७८. हे 'ईमान' लाने वालो! मारे गये लोगों के बारे में, (ख़ून का बदला लेने में) बराबरी ('क़िसास') तुम्हारे लिए ज़रूरी ठहरा दी गई; आज़ाद का (बदला) आज़ाद के बराबर, गुलाम का गुलाम के बराबर, स्त्री का स्त्री के बराबर है[४४]। तो यदि किसी को उस के भाई की ओर से कुछ माफ़ी मिल जाये तो सामान्य नियम का पालन करना चाहिए और (ख़ून की क़ीमत या अर्थदण्ड की) अदायगी में उत्तम रीति अपनानी चाहिए।

यह तुम्हारे 'रब' की ओर से एक नर्मी और दयालुता है। इस के बाद भी जिस किसी ने ज़्यादती की उस के लिए दुखदायिनी यातना है।

178. O ye who believe! Retaliation is prescribed for you in the matter of the murdered; the freeman for the freeman, and the slave for the slave, and the female for the female. And for him who is forgiven somewhat by his (injured) brother, prosecution according to usage and payment unto him in kindness. This is an alleviation and a mercy from your Lord. He who transgresseth after this will have a painful doom.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ۗ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ
وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ۗ
فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ
فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ
بِاِحْسَانٍ ۗ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ
اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾

१७९. तुम्हारे लिए 'क़िसास' में हे बुद्धिमानों! जीवन है,[४५] ताकि कि तुम बचते रहो।

179. And there is life for you inretaliation, O men of understanding, that ye may ward off (evil).

وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ
يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾

४२. देखिए फ़ुट नोट ५।

४३. गुलाम आज़ाद कराने में।

४४. आज़ाद और गुलाम या स्त्री और पुरुष में से जिस किसी की हत्या की गई हो, ख़ून सब बराबर है। अन्तर ख़ून में नहीं बल्कि ख़ून की क़ीमत में है। यदि मारे गये व्यक्ति के वारिस ख़ून की कीमत लेने पर राज़ी न हों तो हत्या करने वाले को क़त्ल कर दिया जायेगा, चाहे वह कोई भी हो। इस मामले में आज़ाद और ग़ुलाम स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं किया जायेगा। बल्कि मुस्लिम और अमुस्लिम का भेद भी नहीं करेंगे। और यदि उस व्यक्ति के वारिस जिस की हत्या हुई है ख़ून की कीमत ले कर हत्यारे को छोड़ने पर राज़ी हो जायें, तो क़ातिल से ख़ून की क़ीमत दिला कर उसे छोड़ा जा सकता है। यह बात कि आज़ाद, गुलाम, स्त्री और पुरुष में से हर-एक के ख़ून की क्या क़ीमत ली जायेगी, तो इसे समाज के सामान्य नियम पर छोड़ दिया है। धर्म-विधान में इन की कोई स्थायी क़ीमत निश्चित नहीं की गई है।

४५. अर्थात् इस क़ानून से तुम्हारे प्राणों की रक्षा हो सकेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८०. तुम पर फ़र्ज़ किया गया कि जब तुम में से किसी की मृत्यु का समय आ जाये, और वह कुछ धन छोड़ रहा हो, तो वह माता-पिता और नातेदारों के लिए सामान्य नियम के अनुसार वसीयत कर जाये। अल्लाह का डर रखने वालों पर यह हक़ है।[४६]

१८१. तो जो लोग इस वसीयत को सुनने के बाद इसे बदल डालें, तो इस का गुनाह उन्हीं लोगों पर होगा जो इसे बदल डालेंगे। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

१८२. हाँ जिसे किसी वसीयत करने वाले की ओर से किसी अनुचित पक्षपात या हक़ मारने का भय हो और वह उन के बीच समझौता करा दे तो इस में कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावन्त है।

१८३. हे ईमान लाने वालो! तुम पर 'रोज़ा' फ़र्ज़ किया गया, जिस तरह तुम से पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था, ताकि तुम (अल्लाह का) डर रखने वाले बन जाओ।

१८४. गिनती के कुछ दिन; इस पर भी जो-कोई तुम में बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में संख्या पूरी कर ले; और जो लोग इस का (खाना खिलाने का) सामर्थ्य रखते हों उन पर एक रोज़े का बदला एक मुहताज का खाना[४७]—फिर जो-कोई कुछ और भलाई करे, तो वह उस के लिए अच्छा है: और यह कि तुम रोज़ा रक्खो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, यदि तुम समझो—

१८५. 'रमज़ान' का महीना है जिस में क़ुरआन (पहले-पहल) उतारा गया लोगों के लिए मार्ग-दर्शन बना कर और मार्ग-दर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के स्पष्ट प्रमाणों के साथ। तो जो-कोई तुम में से इस महीने में मौजूद हो, उसे चाहिए कि उस के 'रोज़े' रक्खे,[४८] और जो बीमार हो या

180. It is prescribed for you, when one of you approacheth death, if he leave wealth, that he bequeath unto parents and near relatives in kindness. (This is) a duty for all those who ward off (evil)

181. And whoso changeth (the will) after he hath heard it—the sin thereof is only upon those who change it. Lo! Allah is Hearer, Knower.

182. But he who feareth from a testator some unjust or sinful clause, and maketh peace between the parties (it shall be) no sin for him. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

183. O ye who believe! Fasting is prescribed for you, even as it was prescribed for those before you, that ye may ward off (evil);

184. (Fast) a certain number of days; and (for) him who is sick among you, or on a journey, (the same) number of other days; and for those who can afford it there is a ransom: the feeding of a man in need—But whoso doth good of his own accord, it is better for him: and that ye fast is better for you if ye did but know—

185. The month of Ramadan in which was revealed the Qur'an, guidance for mankind, and clear proofs of the guidance, and the Criterion (of right and wrong). And whosoever of you is present, let him fast the month, and whosoever of you is sick or on a journey, (let him fast

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾
فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا
إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا
أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨٢﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾
أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ
مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ
أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ
فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَنْ
تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ
تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾
شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ
الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ
مِنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ
شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ
وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ

४६. यह आदेश उस समय दिया गया था जब कि मरने वाले की सम्पत्ति के बँटवारे के विषय में कोई क़ानून नहीं उतरा था। बाद में अल्लाह ने इस के लिए एक क़ानून उतार दिया जो आगे सूरा अन-निसा में आ रहा है।

४७. यह हुक्म बाद में बदल गया जैसा कि आगे आ रहा है। इस्लाम के अधिकतर आदेश क्रमानुसार उतरे हैं। रोज़े के आदेश भी एक ही बार में नहीं उतरे हैं, बल्कि धीरे-धीरे उतरे हैं।

४८. यह जो कहा कि, "रमज़ान का महीना वह महीना है जिस में क़ुरआन उतारा गया" इस में इस बात की ओर संकेत है कि क़ुरआन के उद्देश्यों और रोज़े के उद्देश्यों में गहरा सम्बन्ध है। क़ुरआन जिन उद्देश्यों को ले कर उतारा है, रोज़ा उन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। इसी लिए रोज़े के लिए रमज़ान का महीना चुना गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सफ़र पर हो, तो वह दूसरे दिनों में संख्या पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है; वह तुम्हारे लिए सख़्ती नहीं करना चाहता; और चाहता है कि तुम संख्या पूरी करो, और तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उस ने तुम पर राह खोली है, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

the same) number of other days. Allah desireth for you ease; He desireth not hardship for you; and (He desireth) that ye should complete the period, and that ye should magnify Allah for having guided you, and that peradventure ye may be thankful.

فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ
بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ
وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ
عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

१८६. और जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछें, तो मैं निकट हूँ। मैं पुकारने वाले की पुकार का, जब वह मुझे पुकारता है, उत्तर देता हूँ। तो उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार का भी उत्तर दें, मुझ पर 'ईमान' रक्खें, ताकि वे मार्ग पर रहें।

186. And when My servants question thee concerning Me, then surely I am nigh. I answer the prayer of the suppliant when he crieth unto Me. So let them hear My call and let them trust in Me, in order that they may be led aright.

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي
قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا
دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي
وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ
يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

१८७. तुम्हारे लिए 'रोज़े' की रातों में अपनी स्त्रियों के पास जाना अवर्जित है। वे तुम्हारे लिए वस्त्र समान हैं और तुम उन के लिए[४९] वस्त्र समान हो। अल्लाह को मालूम हो गया कि तुम लोग अपने-आप से कपट करते थे[५०] तो उस ने तुम पर कृपा की और तुम्हें क्षमा किया। तो अब तुम स्त्रियों से मिलो और अल्लाह ने जो-कुछ तुम्हारे लिए नियत कर दिया है उस के इच्छुक बनो और खाओ-पियो यहाँ तक कि प्रभात की सफ़ेद धारी तुम्हें रात की काली धारी से स्पष्ट अलग दिखाई देने लगे[५१]। फिर रात के आने तक रोज़ा पूरा करो, और जब तुम मस्जिदों में 'एतकाफ़' में हो तो उन से सम्भोग न करो। यह अल्लाह की (नियत की हुई) सीमायें हैं, इन के निकट न जाना। इस प्रकार अल्लाह अपनी 'आयतें' लोगों के लिए स्पष्ट करता है ताकि वे (अल्लाह का) डर रखने वाले बनें।

187. It is made lawful for you to go unto your wives on the night of the fast. They are raiment for you and ye are raiment for them. Allah is Aware that ye were deceiving yourselves in this respect and He hath turned in mercy toward you and relieved you. So hold intercourse with them and seek that which Allah hath ordained for you, and eat and drink until the white thread becometh distinct to you from the black thread of the dawn. Then strictly observe the fast till nightfall and touch them not, but be at your devotions in the mosques. These are the limits imposed by Allah, so approach them not. Thus Allah expoundeth His revelations to mankind that they may ward off (evil).

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
إِلَىٰ نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ
وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ فَالْآنَ
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ
لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ
لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُّوا
الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ
وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا
كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

४९. अर्थात् तुम में और उन में चोली-दामन का साथ है। स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के लिए शान्ति (mutual Comfort) का कारण बनते हैं।

५०. अर्थात् रमज़ान की रातों में स्त्रियों के पास जाना हराम (अवैध) नहीं था परन्तु तुम उसे हराम समझते हुए ऐसा कर बैठते थे, और अपने को अपराधी समझते थे। इस तरह तुम्हारा दिल गुनाहगार होता था।

५१. इस्लाम 'इबादत' के लिए क्षितिज में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले चिन्हों के अनुसार समय नियत करता है। ध्रुवों के निकट जहाँ रात और दिन कई-कई महीनों के होते हैं वहाँ भी चाहे रात का चक्र हो या दिन का, प्रत्येक अवस्था में प्रातः काल और सन्ध्या के लक्षण नियमित रूप से क्षितिज पर प्रकट होते रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८८. और तुम आपस में एक-दूसरे के धन को अवैध-रूप से न खाओ, और न इसे हाकिमों तक पहुँच प्राप्त करने का साधन बनाओ कि इस तरह तुम जानते-बूझते लोगों के धन का कुछ भाग हक़ मार कर हड़प कर सको।

188. And eat not up your property among yourselves in vanity, nor seek by it to gain the hearing of the judges that ye may knowingly devour a portion of the property of others wrongfully.

وَلَا تَأْكُلُوٓا۟ أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِٱلْبَٰطِلِ وَتُدْلُوا۟ بِهَآ إِلَى ٱلْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا۟ فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ بِٱلْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

१८९. वे तुम से चाँदों (महीनों) के बारे में पूछते हैं। कह दो : ये लोगों के हित और 'हज्ज' के समय हैं। और यह कोई नेकी नहीं है कि तुम घरों में उन के पिछवाड़े से आओ,[५२] बल्कि नेकी तो उन की नेकी है जो (अल्लाह का) डर रक्खें। घरों में उन के दरवाज़ों से प्रवेश करो, और अल्लाह का डर रक्खो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

189. They ask thee, (O Muhammad), of new moons. Say: They are fixed seasons for mankind and for the pilgrimage. It is not righteousness that ye go to houses by the backs thereof (as do the idolaters at certain seasons), but the righteous man is he who wardeth off (evil). So go to houses by the gates thereof, and observe your duty to Allah, that ye may be successful.

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِىَ مَوَٰقِيتُ لِلنَّاسِ وَٱلْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ ٱلْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا۟ ٱلْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنِ ٱتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا۟ ٱلْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَٰبِهَا ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

१९०. और अल्लाह की राह में उन लोगों से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करें और सीमोल्लंघन करने वाले न बनो,[५३] निस्सन्देह अल्लाह सीमोल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता।

190. Fight in the way of Allah against those who fight against you, but begin not hostilities. Lo! Allah loveth not aggressors.

وَقَٰتِلُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱلَّذِينَ يُقَٰتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوٓا۟ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

१९१. और उन को जहाँ-कहीं पाओ क़त्ल करो, और उन्हें निकालो जहाँ से उन्हों ने तुम्हें निकाला है, और फ़ितना[५४] क़त्ल से भी बढ़ कर है। और तुम उन से मस्जिदे हराम ('काबा') के पास न लड़ो जब तक कि वे तुम से वहाँ युद्ध न करें तो यदि वे तुम से युद्ध करें तो उन्हें क़त्ल करो यही 'काफ़िरों' का बदला है।

191. And slay them wherever ye find them, and drive them out of the places whence they drove you out, for persecution is worse than slaughter. And fight not with them at the Inviolable Place of Worship until they first attack you there, but if they attack you (there), then slay them. Such is the reward of disbelievers.

وَٱقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَٱلْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ ٱلْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَٰتِلُوهُمْ عِندَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَٰتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَٰتَلُوكُمْ فَٱقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَآءُ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿١٩١﴾

१९२. फिर यदि वे बाज़ आ जायें, तो निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है।

192. But if they desist, then lo! Allah is Forgiving, Merciful.

فَإِنِ ٱنتَهَوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

५२. अरब के अन्ध-विश्वास ने जिन रीतियों और रिवाजों को जन्म दिया था उन में से एक रिवाज यह भी था कि जब वे 'हज्ज' के लिए 'इहराम' बाँध लेते तो फिर वे अपने घरों में दरवाज़ों से दाखिल न होते। यात्रा से लौट कर भी वे घरों में पिछवाड़े से ही आते थे। इस 'आयत' में इसी निरर्थक प्रथा का खण्डन करते हुये इस का ध्यान दिलाया गया है कि वास्तव में नेकी किस चीज़ का नाम है।

५३. अर्थात् तुम्हारी लड़ाई केवल सत्य के लिए है; इस लिए तुम शक्ति का प्रयोग वहीं तक करो जहाँ तक इस की आवश्यकता हो। तुम्हारा हाथ केवल उन लोगों पर उठे जो सत्य की राह में रुकावटें खड़ी कर रहे हों।

५४. 'फ़ितने' (Persecution) का तात्पर्य है किसी व्यक्ति या गरोह पर केवल इस लिए अत्याचार करना कि उस ने समाज में प्रचलित भावनाओं और धारणाओं के विपरीत कुछ दूसरी भावनाओं और धारणाओं को सत्य समझ कर अपना लिया है; और वह अपने विचारों का प्रचार और ग़लत विचारों और धारणाओं का खण्डन करता है; ताकि समाज का भला हो और लोग जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पालें। 'आयत' का अर्थ यह है कि क़त्ल निस्सन्देह बुरा है परन्तु यह तो हत्या से भी बढ़ कर पाप है कि कोई गरोह अपने आचार-विचार को लोगों से ज़बरदस्ती मनवाये और बलपूर्वक लोगों को सत्य के स्वीकार करने से रोके और सुधार एवं परिवर्त्तन की वैध एवं उचित कोशिशों का भी सहन न कर सके। ऐसे गरोह को हटाने के लिए शक्ति का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। इस में सन्देह नहीं कि लड़ाई में बहुत से प्राणों की हानि होती है परन्तु फ़ितना एक ऐसी मुसीबत है जिस से आख़िरत की ज़िन्दगियाँ तबाह होती हैं। 'ईमान' के छिन जाने की हानि इतनी पड़ी हानि है कि शारीरिक हानि उस के आगे कुछ भी नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९३. और उन से युद्ध करो यहाँ तक कि फ़ितना शेष न रहे और 'दीन' अल्लाह का हो जाये। और यदि ये बाज़ आ जायें,[५५] तो ज़ालिमों के सिवा किसी के विरुद्ध पेश क़दमी जायज़ नहीं।

193. And fight them until persecution is no more, and religion is for Allah. But if they desist, then let there be no hostility except against wrongdoers.

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

१९४. आदर वाला महीना आदर वाले महीने के बराबर है और आदर के विषयों में बराबरी का बदला है[५६]। तो जो तुम पर ज़्यादती करे, तो तुम भी उस की ज़्यादती के बराबर उस के विरुद्ध पेश क़दमी करो। और (अल्लाह का) डर रक्खो, और जान लो कि अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ है जो उस का डर रखते हैं।

194. The forbidden month for the forbidden month, and forbidden things in retaliation. And one who attacketh you, attack him in like manner as he attacked you. Observe your duty to Allah, and know that Allah is with those who ward off (evil).

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

१९५. और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो, और अपने-आप को तबाही में न झोंको; और ख़ूबी के साथ काम करो। निस्सन्देह अल्लाह ख़ूबी के साथ काम करने वालों से प्रेम रखता है।

195. Spend your wealth for the cause of Allah, and be not cast by your own hands to ruin; and do good. Lo! Allah loveth the beneficent.

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ٻ وَاَحْسِنُوْا ڔ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

१९६. और 'हज्ज' और 'उमरा' को अल्लाह के लिए पूरा करो। तो यदि तुम घिर जाओ, तो जो 'क़ुरबानी' (बलिदान का जानवर) सुलभ हो उसे भेंट करो, और अपने सिर का मुंडन न करो जब तक कि क़ुरबानी अपने स्थान पर न पहुँच जाये। हाँ जो-कोई तुम में बीमार हो या उस के सिर में कोई तकलीफ़ हो तो उस के लिए रोज़े या सदक़ा या क़ुरबानी के रूप मे 'फ़िदया' (प्रतिदान) है। और जब निश्चिन्त हो तो जो-कोई 'हज्ज' (का समय आने) तक 'उमरा' से फ़ायदा उठाये, तो वह जो क़ुरबानी सुलभ हो पेश करे, और जिसे सुलभ न हो, तो तीन दिन के 'रोज़े' 'हज्ज' के दिनों में रक्खे और सात जब तुम वापस हो; ये पूरे दस दिन हुए। यह केवल उन के लिए है जिन का परिवार 'मस्जिदे हराम' के निकट (आबाद) न हो। और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

196. Perform the pilgrimage and the visit (to Mecca) for Allah. And if ye are prevented, then send such gifts as can be obtained with ease, and shave not your heads until the gifts have reached their destination. And whoever among you is sick or hath an ailment of the head must pay a ransom of fasting or almsgiving or offering. And if ye are in safety, then whosoever contenteth himself with the visit for the pilgrimage (shall give) such gifts as can be had with ease. And whosoever cannot find (such gifts), then a fast of three days while on the pilgrimage, and of seven when ye have returned; that is, ten in all. That is for him whose folk are not present at the Inviolable Place of Worship. Observe your duty to Allah, and know that Allah is severe in punishment.

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۟ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۭ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَھْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ ع

५५. अर्थात् यदि वे 'कुफ़्' और 'शिर्क' से बाज़ आ जायें। दूसरे 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को यह अधिकार प्राप्त है कि चाहे वे 'इस्लाम' के मार्ग को अपनायें या न अपनायें; परन्तु अरब के 'मुश्रिकों' (बनी इसमाईल) के लिए केवल दो रास्ते हैं या तो वे 'ईमान' लायें या लड़ने के लिए तैयार हो जायें। बनी इसमाईल तक सत्य एक ऐसे 'नबी' के द्वारा पहुँचा है जो उन्हीं में पैदा हुआ है, जो उन्हीं के बीच पला-बढ़ा है, और जिस की हर बात से वे भली-भांति परिचित हैं, और जिस की सत्यवादिता के वे स्वयं साक्षी हैं। उस 'नबी' ने उन्हें सत्य की ओर बुलाने में कोई कोताही नहीं की। इस पर भी यदि वे 'ईमान' नहीं लाते तो फिर उन्हें अल्लाह की यातना से दुनिया और 'आख़िरत' में कौन बचा सकता है। पिछले 'नबियों' के समय में भी 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' पर अल्लाह की यातना उतरती रही है। अन्तिम 'नबी' के समय में यह यातना उन्हें मुसलमानों के द्वारा (युद्ध में) दिये जाने का निश्चय हो चुका है। (देखिए सूरा अत-तौबा आयत १४)।

५६. हज़रत इबराहीम अ० के समय से अरब निवासियों में 'ज़िल्क़ादा' 'ज़िल्हिज्जा' और 'मुहर्रम' के तीन महीने 'हज्ज' के लिए निश्चित थे। 'रजब' का महीना 'उमरा' के लिए ख़ास था। इन महीनों का सभी अरब निवासी आदर करते थे। इन महीनों में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९७. हज्ज के कुछ जाने-पहचाने महीने, हैं तो ज़िस किसी ने इन में 'हज्ज' का निश्चय कर लिया, तो हज्ज के दिनों में न तो विषय-भोग की कोई बात जायज़ है न अवज्ञा की बात और न लड़ाई-झगड़ा। और जो-कुछ भला कार्य तुम करोगे, अल्लाह उसे जानता है। और (ईश-भय की) मार्ग सामग्री ले लो ; क्योंकि सब से अच्छी मार्ग-सामग्री ईश-भय की मार्ग-सामग्री है। तो मेरा डर रक्खो हे बुद्धि वालो !

१९८. और इस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं कि अपने 'रब' का फ़ज़्ल (कृपा) तलाश करो तो जब 'अरफ़ात' से चलो तो 'मशअरे हराम'[५७] के पास अल्लाह को याद करो। जैसा कि उस ने तुम्हें बताया है, इस से पहले निश्चय ही तुम राह भटके हुए लोगों में से थे।

१९९. फिर जहाँ से लोग चलते हैं तुम भी चलो,[५८] और अल्लाह से क्षमा चाहो। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।

२००. फिर जब तुम अपनी 'हज्ज' सम्बन्धित 'इबादतें' (नियमित कार्य) अदा कर चुको, तो अल्लाह को याद करो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे बल्कि स्मरण उस से भी बढ़ कर हो।

फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं, "हमारे 'रब' हमें दुनिया में दे दे", जब कि 'आख़िरत' में उन का कोई हिस्सा नहीं है।

२०१. और उन में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं, हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई दे और 'आख़िरत' में भी भलाई दे, और हमें आग ('जहन्नम') की 'यातना' से बचा।"

197. The pilgrimage is (in) the well-known months, and whoever is minded to perform the pilgrimage therein (let him remember that) there is (to be) no lewdness nor abuse nor angry conversation on the pilgrimage. And whatsoever good ye do Allah knoweth it. So make provision for yourselves (hereafter); for the best provision is to ward off evil. Therefore keep your duty unto Me, O men of understanding.

198. It is no sin for you that ye seek the bounty of your Lord (by trading). But, when ye press on in the multitude from 'Arafat, remember Allah by the sacred monument. Remember Him as He hath guided you, although before ye were of those astray.

199. Then hasten onward from the place whence the multitude hasteneth onward, and ask forgiveness of Allah. Lo! Allah is Forgiving. Merciful.

200. And when ye have completed your devotions, then remember Allah as ye remember your fathers* or with a more lively remembrance. But of mankind is he who saith: "Our Lord! Give unto us in the world" and he hath no portion in the Hereafter.

201. And of them (also) is he who saith: "Our Lord! Giveunto us in the world that which is good and in the Hereafter that which is good, and guard us from the doom of Fire."

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَن
فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا
فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا
تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ
اللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ
الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي
الْأَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا
فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُم
مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ
وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾
ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾
فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا
اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ
ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي
الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾
وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

لूट-मार वर्जित था। रास्ते सुरक्षित रहते थे, ताकि लोग आसानी से 'हज्ज' और 'उमरा' के लिए सफ़र कर सकें। 'आयत' का अर्थ यह है कि यदि 'काफ़िर' इन महीनों का आदर करते हैं, तो मुसलमान भी उन पर हाथ न उठायें; परन्तु यदि वे इन महीनों का आदर नहीं करते तो मुसलमानों को उन से बदला लेने का पूरा हक़ पहुँचता है।

५७. यह एक स्थान है जहाँ 'अरफ़ात' से वापस होते हुये 'हज्ज' करने वाले ठहरते हैं, इसे 'मुज़दल्फ़ा' भी कहते हैं।

५८. क़ुरआन उतरने से पूर्व दूसरे सभी लोग तो 'ज़िल्हिज्जा' की ९ वीं तिथि को 'अरफ़ात्त' तक जाते थे; परन्तु क़ुरैश वंश के लोग 'मुज़दल्फ़ा' नामी स्थान से ही पलट आते थे। 'मुज़दल्फ़ा' से लौट पड़ने को वे जन-साधारण से उच्च और श्रेष्ठ होने की निशानी समझते थे। इस आयत में उन की इस भावना का खण्डन करते हुये बताया जा रहा है कि 'इस्लाम' में इस प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं है, सब की तरह तुम भी 'अरफ़ात' तक जा कर लौटो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०२. यही वे लोग हैं जिन को उन के किये का हिस्सा मिलना है। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है।

२०३. और गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को याद करो[५९]। तो जो दो ही दिनों में जल्दी कर ले, तो उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो और ठहर जाये, तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं; यह उन के लिए है जो (अल्लाह का) डर रक्खें और अल्लाह का डर रक्खो, और जान रक्खो कि तुम उसी की सेवा में इकट्ठे किये जाओगे।[६०]

२०४. और लोगों में कुछ ऐसे हैं जिन की बातें सांसारिक जीवन में तुम्हें बहुत भाती हुई मालूम होती हैं, और जो-कुछ उन के दिल में है उस पर वह अल्लाह को गवाह भी बनाते हैं; हालाँकि वे बड़े झगड़ालू हैं।

२०५. और जब वे वापस होते हैं तो धरती में उन की सारी दौड़-धूप इस लिए होती है कि उस में बिगाड़ पैदा करें और खेती और नस्ल को तबाह करें; और अल्लाह बिगाड़ को पसन्द नहीं करता।

२०६. और जब उन से कहा जाता है : अल्लाह का डर रक्खो । तो अहंकार उन्हें गुनाह पर उद्यत करता है। तो ऐसों के लिए बस 'जहन्नम' काफ़ी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

२०७. और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह की खुशियों की तलाश में अपने-आप को त्याग देते हैं; और अल्लाह अपने बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।

२०८. हे ईमान लाने वालो! तुम पूरे-के-पूरे 'इस्लाम' में दाखिल हो जाओ; और 'शैतान' के पद-चिह्नों का अनुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

२०९. फिर यदि तुम इन खुली हुई निशानियों के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, फिसल गये तो जान रक्खो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

202. For them there is in store a goodly portion out of that which they have earned. Allah is swift at reckoning.

203. Remember Allah through the appointed days. Then whoso hasteneth (his departure) by two days, it is no sin for him, and whoso delayeth, it is no sin for him; that is for him who wardeth off (evil). Be careful of your duty to Allah, and know that unto Him ye will be gathered.

204. And of mankind there is he whose conversation on the life of this world pleaseth thee (Muhammad), and he calleth Allah to witness as to that which is in his heart; yet he is the most rigid of opponents.

205. And when he turneth away (from thee) his effort in the land is to make mischief therein and to destroy the crops and the cattle; and Allah loveth not mischief.

206. And when it is said unto him: Be careful of thy duty to Allah, pride taketh him to sin. Hell will settle his account, an evil resting-place.

207. And of mankind is he who would sell himself, seeking the pleasure of Allah; and Allah hath compassion on (His) bondmen.

208. O ye who believe! Come, all of you, into submission (unto Him); and follow not the footsteps of the devil. Lo! he is an open enemy for you.

209. And if ye slide back after the clear proofs have come unto you, then know that Allah is Mighty, Wise.

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾
وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِيٓ أَيَّامٍ مَّعْدُودَٰتٍ ۚ
فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَآ
إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَآ إِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوٓا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُۥ
فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ
عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِۦ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾
وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ
لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ
الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾
وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ
الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُۥ جَهَنَّمُ ۚ
وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ
ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ
رَءُوفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ادْخُلُوا فِي
السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَٰتِ
الشَّيْطَٰنِ ۚ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾
فَإِن زَلَلْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنَٰتُ
فَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾

५९. गिनती के कुछ दिनों का तात्पर्य 'ज़िल्हिज्जा' की ६ वीं तारीख़ से १३ वीं तिथि तक के दिन हैं। वापसी का तात्पर्य 'मिना' के स्थान से वापसी है, जहाँ १०वीं तिथि को जा कर क़ुरबानी की जाती है; और सिर के बाल मुड़ा कर 'इहराम' खोल दिया जाता है। 'मिना' से दूसरे दिन भी मक्क़ा वापस हो सकते हैं। और यह वापसी तीसरे दिन भी हो सकती है।

६०. इस में इस ओर भी संकेत पाया जाता है कि 'हज्ज' का यह सम्मेलन 'आखिरत' के सम्मेलन और जमघट का एक उदाहरण और अनुस्मारक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१०. क्या ये केवल इस का इन्तज़ार कर रहे हैं कि अल्लाह् बादलों की छाया में (प्रकट हो कर) इन के सामने आ जाये और 'फ़िरिश्ते' भी और मामला चुका दिया जाये ? और मामले अल्लाह् ही की ओर लौटाये जाते हैं।

210. Wait they for naught else than that Allah should come unto them in the shadows of the clouds with the angels? Then the case would be already judged. All cases go back to Allah (for judgment).

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ
فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾

२११. 'इसराईल' की सन्तान से पूछो, हम ने उन्हें कितनी खुली हुई निशानियाँ दीं ! और जो-कोई अल्लाह् की नेमत को उस के पाने के बाद बदल डाले, तो निस्सन्देह अल्लाह् कड़ी सज़ा देने वाला है।

211. Ask of the Children of Israel how many a clear revelation We gave them! He who altereth the grace of Allah after it hath come unto him (for him), lo! Allah is severe in punishment.

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ
نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

२१२. जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया उन के लिए सांसारिक जीवन शोभायमान बना दिया गया है ; और वे 'ईमान लाने वालों' पर हँसते हैं। जब कि वे लोग जो (अल्लाह् का) डर रखते हैं, 'क़ियामत' के दिन वे उन से ऊपर होंगे। और अल्लाह् जिसे चाहे बे-हिसाब रोज़ी दे।

212. Beautified is the life of the world for those who disbelieve; they make a jest of the believers. But those who keep their duty to Allah will be above them on the Day of Resurrection. Allah giveth without stint to whom He will.

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ
يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

२१३. लोग एक ही समुदाय हैं, (उन्हों ने विभेद किया) तो अल्लाह् ने 'नबियों' को भेजा जो शुभ सूचना देते और सचेत करते आये और उन के साथ 'किताब' उतारी हक़ के साथ, ताकि जिन बातों में लोग विभेद कर रहे हैं वह उस का लोगों के बीच फ़ैसला कर दे। इस में विभेद उन्हीं लोगों ने किया जिन्हें वह दी गई थी, इस के बाद कि खुली निशानियाँ उन के पास आ चुकी थीं, परस्पर ज़्यादती करने के लिए ऐसा किया। तो जो लोग 'ईमान ले आये' अल्लाह् ने उन्हें अपनी अनुज्ञा से उस सच्चाई का मार्ग दिखा दिया, जिस में लोगों ने मतभेद किया था। अल्लाह् जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है।

213. Mankind were one community, and Allah sent (unto them) Prophets as bearers of good tidings and as warners, and revealed therewith the Scripture with the truth that it might judge between mankind concerning that wherein they differed. And only those unto whom (the Scripture) was given differed concerning it, after clear proofs had come unto them, through hatred one of another. And Allah by His Will guided those who believe unto the truth of that concerning which they differed. Allah guideth whom He will unto a straight path.

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ
اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪
وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ
بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ
بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ
يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

२१४. क्या तुम ने यह समझ रक्खा है कि 'जन्नत' में दाख़िल हो जाओगे जब कि अभी तुम पर उन लोगों जैसी बीती ही नहीं जो तुम से पहले गुज़रे हैं ? उन पर तंगियाँ और मुसीबतें आईं, और वे ऐसे झंझोड़े गये कि 'रसूल' और उस के साथ 'ईमान' लाने वाले पुकार उठते हैं : अल्लाह् की सहायता कब आयेगी ? जान लो ! अल्लाह् की सहायता निकट है।

214. Or think ye that ye will enter Paradise while yet there hath not come unto you the like of (that which came to) those who passed away before you? Affliction and adversity befell them, they were shaken as with earthquake, till the messenger (of Allah) and those who believed along with him said: When cometh Allah's help? Now surely Allah's help is nigh.

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१५. वे तुम से पूछते हैं कि हम कितना ख़र्च करें ? कह दो कि जो माल भी तुम ख़र्च करो वह माता-पिता, अनाथों, मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए है । और जो भलाई तुम करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।

215. They ask thee, (O Muhammad), what they shall spend. Say: That which ye spend for good (must go) to parents and near kindred and orphans and the needy and the wayfarer. And whatsoever good ye do, lo! Allah is Aware of it.

يَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ ۖ قُلْ
مَآ أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَٰلِدَيْنِ وَٱلْأَقْرَبِينَ
وَٱلْيَتَـٰمَىٰ وَٱلْمَسَـٰكِينِ وَٱبْنِ
ٱلسَّبِيلِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾

२१६. तुम पर युद्ध फ़र्ज़ किया गया, और वह तुम्हें अप्रिय है—और हो सकता है एक चीज़ तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो । अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।

216. Warfare is ordained for you, though it is hateful unto you; but it may happen that ye hate a thing which is good for you, and it may happen that ye love a thing which is bad for you. Allah knoweth, ye know not.

كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ وَهُوَ
كُرْهٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟
شَيْـًٔا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰٓ
أَن تُحِبُّوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ شَرٌّ
لَّكُمْ ۗ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

२१७. वे तुम से आदर के महीने[६१] में युद्ध के बारे में पूछते हैं ? कह दो, उस में युद्ध बहुत बुरा है, परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना, उस का 'कुफ़्र' करना, 'मस्जिदे हराम' (काबा) से रोकना, और उस के लोगों को उस से निकालना, अल्लाह की दृष्टि में इस से भी बढ़ कर है; और फ़ितना[६२] रक्त-पात से भी बढ़ कर है ।

और ये तुम से युद्ध करते रहेंगे यहाँ तक कि यदि उन से हो सके, तो वे तुम्हें तुम्हारे 'दीन' से फेर दें । और तुम में से जो अपने 'दीन' से फिर जाये और 'काफ़िर' हो कर मरे ; तो ऐसे लोगों का सब किया-धरा दुनिया और 'आख़िरत' में अकारथ गया । और यही लोग आग ('जहन्नम' में पड़ने) वाले हैं : वे सदैव उसी में रहेंगे ।

217. They question thee (O Muhammad) with regard to warfare in the sacred month. Say: Warfare therein is a great (transgression), but to turn (men) from the way of Allah, and to disbelieve in Him and in the Inviolable Place of Worship, and to expel His people thence, is greater with Allah; for persecution is worse than killing. And they will not cease from fighting against you till they have made you renegades from your religion, if they can. And whoso becometh a renegade and dieth in his disbelief, such are they whose works have fallen both in the world and the Hereafter. Such are rightful owners of the Fire: they will abide therein.

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلشَّهْرِ ٱلْحَرَامِ قِتَالٍ
فِيهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ
عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَكُفْرٌۢ بِهِۦ
وَٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ
أَهْلِهِۦ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ ٱللَّهِ ۚ
وَٱلْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ ٱلْقَتْلِ ۗ
وَلَا يَزَالُونَ يُقَـٰتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ
يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ
ٱسْتَطَـٰعُوا۟ ۚ وَمَن يَرْتَدِدْ
مِنكُمْ عَن دِينِهِۦ فَيَمُتْ وَهُوَ
كَافِرٌ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَـٰلُهُمْ
فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْـَٔاخِرَةِ ۖ وَأُو۟لَـٰٓئِكَ
أَصْحَـٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَـٰلِدُونَ ﴿٢١٧﴾

२१८. रहे वे लोग जो 'ईमान लाये,' और जिन्हों ने (अल्लाह की राह में अपना) घर-बार छोड़ा और 'जिहाद' किया, वही अल्लाह की दयालुता की आशा करते हैं । और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है ।

218. Lo! those who believe, and those who emigrate (to escape the persecution) and strive in the way of Allah, these have hope of Allah's mercy. Allah is Forgiving, Merciful.

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱلَّذِينَ هَاجَرُوا۟
وَجَـٰهَدُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أُو۟لَـٰٓئِكَ
يَرْجُونَ رَحْمَتَ ٱللَّهِ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

२१९. वे तुम से शराब और जुए के बारे में

219. They question thee about strong drink and games

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْخَمْرِ وَٱلْمَيْسِرِ ۖ

६१. दे० फ़ुट नोट ३६ ।

६२. अर्थात् ज़ुल्म और अत्याचार के द्वारा लोगों को 'दीन' (धर्म) से फेरना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूछते हैं। कह दो : इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं; परन्तु इन का गुनाह इन के फ़ायदे से कहीं बढ़ कर है।[६३]

और वे तुम से पूछते हैं कि कितना ख़र्च करें? कह दो : जो तुम्हारी आवश्यकता से अधिक हो। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतें' स्पष्ट करता है ताकि तुम सोच-विचार से काम लो,

२२०. दुनिया और 'आख़िरत' दोनों के बारे में।

और वे तुम से अनाथों के बारे में पूछते हैं। कहो : जिसमें उनका हित हो वही उत्तम है। और यदि तुम उन्हें अपने साथ मिला लो तो वे तुम्हारे बन्धु ही हैं। और अल्लाह बिगाड़ चाहने वाले को हित चाहने वाले से अलग पहचानता है। और अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

२२१. और 'मुश्रिक' स्त्रियों से जब तक वे 'ईमान' न लायें विवाह न करो; ईमान वाली एक 'लौंडी,' एक मुश्रिक स्त्री से अच्छी है, यद्यपि वह तुम्हें भली लगे। और 'मुश्रिक' पुरुषों से (अपनी स्त्रियों का) विवाह न करो जब तक कि वे 'ईमान' न लायें, ईमान वाला एक 'गुलाम,' एक 'मुश्रिक' पुरुष से अच्छा है, यद्यपि वह भला लगे।

ये लोग आग (जहन्नम) की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह अपनी अनुज्ञा से 'जन्नत' और क्षमा की ओर बुलाता है, और वह अपनी 'आयतों' को लोगों के लिए स्पष्ट करता है, ताकि वे चेतें।

२२२. और वे तुम से स्त्रियों की माहवारी (मासिक धर्म) के बारे में पूछते हैं। कहो : यह नापाकी है, तो स्त्रियों से माहवारी के दिनों में अलग रहो, और जब तक वे पाक-साफ़ न हो जायें (सम्भोग के लिए) उन के पास न जाओ। तो जब वे अच्छी तरह पाक हो जायें, तो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है उन के पास जाओ। निस्सन्देह अल्लाह 'तौबा' करने वालों से प्रेम करता है

of chance. Say: In both is great sin, and (some) utility for men; but the sin of them is greater than their usefulness. And they ask thee what they ought to spend. Say: That which is superfluous. Thus Allah maketh plain to you (His) revelations, that haply ye may reflect.

220. Upon the world and the Hereafter. And they question thee concerning orphans. Say: To improve their lot is best. And if ye mingle your affairs with theirs, then (they are) your brothers. Allah knoweth him who spoileth from him who improveth. Had Allah willed He could have overburdened you. Allah is Mighty, Wise.

221. Wed not idolatresses till they believe; for lo! a believing bondwoman is better than an idolatress though she please you; and give not your daughters in marriage to idolaters till they believe, for lo! a believing slave is better than an idolater though he please you. These invite unto the Fire, and Allah inviteth unto the Garden, and unto forgiveness by His grace, and expoundeth thus His revelations to mankind that haply they may remember.

222. They question thee (O Muhammad) concerning menstruation. Say: It is an illness, so let women alone at such times and go not in unto them till they are cleansed. And when they have purified themselves, then go in unto them as Allah hath enjoined upon you. Truly Allah loveth those who turn unto Him, and loveth those who have a care for cleanness.

قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن
نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا
يُنفِقُونَ ۖ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ
خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ
فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ
مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾
وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ
وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن
مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا
تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ
وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَـٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى
النَّارِ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَ
الْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ
ع لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾
وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ
هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي
الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ
فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ
وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

६३. यह जुए और शराब के बारे में पहला आदेश है। इस में केवल इतनी सी बात बता कर छोड़ दिया गया है कि शराब और जुए में लाभ कम गुनाह अधिक है। बाद में शराब पी कर 'नमाज़' पढ़ने से रोका गया; फिर जुए और शराब और इस प्रकार की समस्त वस्तुओं का बिलकुल निषेध किया गया। (दे० सूरा अन्-निसा:४३ और सूरा अल-माइदा:९०-९२)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और पाक-साफ़ रहनें वालों से प्रेम करता है।

२२३. तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारे लिए खेती-समान हैं तो अपनी खेती में जिस तरह से चाहो, आओ, और अपनें लिए आगे बढ़ाओ, और अल्लाह का डर रक्खो, जान लो कि तुम्हें उस से मिलना है। और 'ईमान' लाने वालों को शुभ सूचना दे दो।

२२४. और अल्लाह को अपनी ऐसी क़समों के लिए निशाना न बनाओ कि नेंकी और वफ़ादारी न करोगे और अल्लाह का डर न रक्खोगे और लोगों के बीच सुधार और बनाव का काम न करोगे। अल्लाह (सब कुछ) सुनता और जानता है।

२२५. अल्लाह तुम्हारी (बे सोचे-समझे खाई हुई) क़समों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा। परन्तु तुम्हें उस पर पकड़ेगा जो तुम्हारे दिलों के निश्चय का फल है।[६४] और अल्लाह बहुत क्षमा करनें वाला और सहनशील है।

२२६. जो लोग अपनी स्त्रियों से न मिलनें की क़सम खा बैठें उन के लिए ज़्यादा से ज़्यादा चार महीनें की मुहलत है ; फिर यदि वे रुजू करलें तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है।

२२७. और यदि वे 'तलाक़' की ठान लें तो अल्लाह सुनने वाला और जाननें वाला है।

२२८. और 'तलाक़' पाने वाली स्त्रियाँ तीन बार माहवारी आने तक अपनें-आप को प्रतीक्षा में

223. Your women are a tilth for you (to cultivate) so go to your tilth as ye will, and send (good deeds) before you for your souls, and fear Allah, and know that ye will (one day) meet Him. Give glad tidings to believers (O Muhammad).

224. And make not Allah, by your oaths, a hindrance to your being righteous and observing your duty unto Him and making peace among mankind. Allah is Hearer, Knower.

225. Allah will not take you to task for that which is unintentional in your oaths. But He will take you to task for that which your hearts have garnered. Allah is Forgiving, Clement.

226. Those who forswear their wives must wait four months; then, if they change their mind, lo! Allah is Forgiving, Merciful.

227. And if they decide upon divorce (let them remember that) Allah is Hearer, Knower.

228. Women who are divorced shall wait, keeping themselves apart, three (monthly) courses. And it is

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۖ فَأْتُوا
حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا
لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنَّكُم مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾
وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَانِكُمْ
أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا
بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾

لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ
وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ
تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَآءُو
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾
وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾
وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ
ثَلَاثَةَ قُرُوٓءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن

६४. अर्थात् तुम्हारी पकड़ उन कसमों पर होगी जो तुम्हारे दिलों की कमाई का नतीजा होती हैं ; जिन्हें तुम सोच-समझ कर खाते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्खें[६५] और यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन[६६] पर 'ईमान' रखती हैं, तो उन के लिए यह जायज़ न होगा कि अल्लाह ने उन के गर्भाशयों में जो कुछ पैदा किया हो उसे छिपायें, और इस बीच में उन के पति उन के लौटा लेने के ज़्यादा हक़दार हैं यदि वे सम्बन्ध ठीक रखने का इरादा करें।

और उन स्त्रियों के भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं जैसे कि स्वयं उन पर हैं, हां पुरुषों को उन पर एक दर्जा प्राप्त है[६७] और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

२२९. 'तलाक़' दो बार है फिर या तो सामान्य नियम के अनुसार (स्त्री को) रोक लेना चाहिए या फिर भले तरीक़े से रुख़सत कर देना चाहिए।

और तुम्हारे लिए यह जायज़ न होगा कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उस में से कुछ ले लो; सिवाय इस के कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं को क़ायम न रख सकेंगे, तो यदि तुम को[६८] यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं को क़ायम न रख सकेंगे, तो जो कुछ दे कर स्त्री छुटकारा प्राप्त करना चाहे[६९] उस में उन दोनों के लिए कोई दोष नहीं, ये अल्लाह की सीमायें हैं। तो इन से आगे न बढ़ना। और जो कोई अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़े: तो वही लोग ज़ालिम हैं।

२३०. तो यदि उसे 'तलाक़' दे दे, तो फिर उस के लिए यह स्त्री जायज़ नहीं है जब तक कि किसी

not lawful for them that they should conceal that which Allah hath created in their wombs if they are believers in Allah and the Last Day. And their husbands would do better to take them back in that case if they desire a reconciliation. And they (women) have rights similar to those (of men) over them in kindness, and men are a degree above them. Allah is Mighty, Wise.

229. Divorce must be pronounced twice and then (a woman) must be retained in honour or released in kindness. And it is not lawful for you that ye take from women aught of that which ye have given them; except (in the case) when both fear that they may not be able to keep within the limits (imposed by) Allah. And if ye fear that they may not be able to keep the limits of Allah; in that case it is no sin for either of them if the woman ransom herself. These are the limits (imposed by) Allah. Transgress them not. For whoso transgresseth Allah's limits: such are wrongdoers.

230. And if he hath divorced her (the third time) then she is not lawful unto

يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ
اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ
الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ
عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ ع
اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ
اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا
اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ
بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ
وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْ بَعْدُ
حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ

६५. अर्थात् अपने आप को रोके रक्खें, दूसरा विवाह न करें।

६६. दे० फ़ुट नोट ५।

६७. पारिवारिक जीवन में पुरुष की हैसियत एक सरपरस्त और संरक्षक की है। वह पारिवारिक व्यवस्था को चलाने वाला और उस की देख-रेख करने वाला है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति का भार भी उसी पर डाला गया है। पुरुष को स्वभावतः ऐसी विशेषतायें और शक्ति प्रदान की गई है कि वह इन दायित्वों का भार उठा सके। यही बात यहां इन शब्दों में कही गई है। "पुरुषों को उन पर एक दर्जा (प्राप्त) है"।
दे० सूरा अन-निसा : ३४।

६८. यह बात समाज के ज़िम्मेदार लोगों से कही जा रही है। समाज का कर्तव्य है कि वह अपने नैतिक दायित्वों को कभी न भूले।

६९. पारिभाषिक शब्दों में इसे 'खुलअ' का नियम कहते हैं। तलाक देने का अधिकार केवल पुरुष को है। परन्तु कभी ऐसा होता है कि पति तलाक़ नहीं देता, और स्त्री को किसी कारण उस के साथ रहना असह्य होता है। ऐसी हालत में इस्लाम ने स्त्री को 'खुलअ' का हक़ दिया है कि पति को कुछ दे कर छुटकारा प्राप्त कर ले। इस सिलसिले में यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि पति बदले के रूप में स्त्री से कुछ रक़म उसी रूप में लेने का अधिकारी है जब कि इस 'खुलअ' का कारण उस की अपनी कोई ज़्यादती या अन्याय न हो। बल्कि स्त्री केवल अपनी अप्रियता के कारण उस से अलग होना चाहती हो। 'खुलअ' उसी समय हो सकता है जब पति इस के लिए तैयार हो या इस्लामी अदालत स्त्री के हक़ में इस का फ़ैसला कर दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरे पति से विवाह न कर ले७०। फिर यदि वह उसे तलाक़ दे दे, तो फिर इन दोनों के लिए एक-दूसरे की ओर पलट आने में कोई दोष न होगा। यदि उन्हें आशा हो कि वे अल्लाह की सीमाओं को क़ायम रख सकेंगे। वे अल्लाह की सीमायें हैं। उन्हें वह ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए स्पष्ट कर रहा है।

२३१. और जब तुम स्त्रियों को 'तलाक़' दे दो, और वे अपने नियत समय ('इद्दत') को पहुँच जायें तो या तो उन्हें सामान्य नियम के अनुसार रोक लो या उन्हें सामान्य नियम के अनुसार रुख़सत कर दो। और उन्हें सताने के लिए न रोको कि ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा तो वह अपने ही ऊपर ज़ुल्म ढायेगा। और अल्लाह की 'आयतों' को मज़ाक़ न बनाओ, और याद करो अल्लाह की जो कृपा तुम पर है और उस किताब और 'हिकमत' को जो उस ने तुम पर उतारी है, जिस के द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और अल्लाह का डर रक्खो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

२३२. और जब तुम स्त्रियों को 'तलाक़' दे चुको और वे अपनी 'इद्दत' पूरी कर लें, तो फिर उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि वे सामान्य नियम के अनुसार आपस में राज़ी हों। यह तुम में से उन लोगों को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन७१ पर 'ईमान' रखते हैं। यह तुम्हारे लिए अधिक पाक और सुथरा तरीक़ा है। अल्लाह जानता है: तुम नहीं जानते।

२३३. और जो चाहे कि बच्चा दूध पीने की पूरी अवधि तक दूध पिये, तो माँयें पूरे दो वर्ष अपने बच्चों को दूध पिलायें। और वह, जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उन स्त्रियों के खाने और उन के कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर उस की समाई से बढ़ कर ज़िम्मेदारी नहीं। न किसी माँ को उस के बच्चे के कारण तकलीफ़ देनी चाहिए और न किसी बाप को उस के बच्चे के कारण——उस के वारिस पर भी इसी तरह की

him thereafter until she hath wedded another husband. Then if he (the other husband) divorce her, it is no sin for both of them that they come together again if they consider that they are able to observe the limits of Allah. These are the limits of Allah. He manifesteth them for people who have knowledge.

231. When ye have divorced women, and they have reached their term, then retain them in kindness or release them in kindness. Retain them not to their hurt so that ye transgress (the limits). He who doth that hath wronged his soul. Make not the revelations of Allah a laughing-stock (by your behaviour), but remember Allah's grace upon you and that which He hath revealed unto you of the Scripture and of wisdom, whereby He doth exhort you. Observe your duty to Allah and know that Allah is Aware of all things.

232. And when ye have divorced women and they reach their term, place not difficulties in the way of their marrying their husbands if it is agreed between them in kindness. This is an admonition for him among you who believeth in Allah and the Last Day. That is more virtuous for you, and cleaner. Allah knoweth: ye know not.

233. Mothers shall suckle their children for two whole years; (that is) for those who wish to complete the suckling. The duty of feeding and clothing nursing mothers in a seemly manner is upon the father of the child. No one should be charged beyond his capacity. A mother should not be made to suffer because of her child, nor should he to whom the child is born (be made to suffer) because of his child. And on the (father's) heir is incumbent

طلقها فلا جناح عليهما أن
يتراجعا إن ظنا أن يقيما
حدود الله وتلك حدود
الله يبينها لقوم
يعلمون ٢٣٠
وإذا طلقتم النساء فبلغن
أجلهن فأمسكوهن بمعروف
أو سرحوهن بمعروف ولا
تمسكوهن ضرارا لتعتدوا ومن
يفعل ذلك فقد ظلم نفسه
ولا تتخذوا آيات الله هزوا و
اذكروا نعمت الله عليكم وما
أنزل عليكم من الكتب والحكمة
يعظكم به واتقوا الله واعلموا
أن الله بكل شيء عليم ٢٣١
وإذا طلقتم النساء فبلغن
أجلهن فلا تعضلوهن أن
ينكحن أزواجهن إذا تراضوا
بينهم بالمعروف ذلك يوعظ
به من كان منكم يؤمن بالله
واليوم الآخر ذلكم أزكى لكم
وأطهر والله يعلم وأنتم لا تعلمون ٢٣٢
والوالدت يرضعن أولادهن
حولين كاملين لمن أراد أن
يتم الرضاعة وعلى المولود له
رزقهن وكسوتهن بالمعروف
لا تكلف نفس إلا وسعها لا تضار
والدة بولدها ولا مولود له
بولده وعلى الوارث مثل ذلك

७०. यह दूसरा पति यदि उसे छोड़ दे या उस की मृत्यु हो जाये तो यह स्त्री अपने पहले पति के साथ फिर से विवाह कर सकती है।

७१. दे० फ़ुट नोट ५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़िम्मेदारी है—और यदि दोनों अपनी ख़ुशी और सम्मति से (दो वर्ष से पूर्व ही) दूध छुड़ाना चाहें तो उनके लिए कोई दोष नहीं; और यदि तुम अपने बच्चों को किसी और से दूध पिलवाना चाहो तो इस में भी कोई दोष नहीं, जब कि तुम्हें जो कुछ देना है सामान्य नियम के अनुसार चुका दो। और अल्लाह का डर रक्खो। और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है।

the like of that (which was incumbent on the father). If they desire to wean the child by mutual consent and (after) consultation, it is no sin for them; and if ye wish to give your children out to nurse, it is no sin for you, provided that ye pay what is due from you in kindness. Observe your duty to Allah and know that Allah is Seer of what ye do.

فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ
أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم
مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا
اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

२३४. और तुम में जिन लोगों का देहान्त हो जाये और पत्नियाँ छोड़ जायें, तो वे स्त्रियाँ अपने-आप को चार महीने दस दिन प्रतीक्षा में रक्खें। फिर जब वे अपनी अवधि को पहुँच जायें तो वे जो-कुछ सामान्य नियम के अनुसार अपने बारे में करें उस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस की ख़बर रखता है।

234. Such of you as die and leave behind them wives, they (the wives) shall wait, keeping themselves apart, four months and ten days. And when they reach the term (prescribed for them), then there is no sin for you in aught that they may do with themselves in decency. Allah is Informed of what ye do.

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَ
يَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ
بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

२३५. इस में तुम्हारे लिए दोष नहीं कि इन स्त्रियों को विवाह का सन्देश संकेत रूप में पहुँचा दो या अपने दिल में इसे छिपाये रक्खो। अल्लाह जानता है कि तुम उन से ज़िक्र करोगे। परन्तु छिप कर उन्हें (विवाह का) वचन न दो। सिवाय इस के कि सामान्य नियम के अनुसार कोई बात कहो। और जब तक यह ('इद्दत' का) क़ानून अपने नियत समय को न पहुँच जाये[७२] विवाह का नाता जोड़ने का निश्चय न करो। जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे जी में है, तो उस का डर रक्खो; और जान लो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमा करने वाला और सहनशील है।

235. There is no sin for you in that which ye proclaim or hide in your minds concerning your troth with women. Allah knoweth that ye will remember them. But plight not your troth with women except by uttering a recognised form of words. And do not consummate the marriage until (the term) prescribed is run. Know that Allah knoweth what is in your minds, so beware of Him; and know that Allah is Forgiving, Clement.

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم
بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ
فِي أَنفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا
تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَن تَقُولُوا
قَوْلًا مَّعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ
أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَ
اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٣٥﴾

२३६. और यदि तुम स्त्रियों को 'तलाक़' दे दो, जब कि न तो अभी तुमने उन्हें हाथ लगाया हो, और न उन का कुछ हक़ ('मह्र') निश्चित किया हो, तो तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। उन्हें सामान्य नियम के अनुसार कुछ दो, समाई रखने वाले के ज़िम्मे अपनी हैसियत के अनुसार और तंगी वाले के ज़िम्मे अपनी हैसियत के अनुसार यह भले लोगों पर हक़ है।

236. It is no sin for you if ye divorce women while yet ye have not touched them, nor appointed unto them a portion. Provide for them, the rich according to his means, and the straitened according to his means a fair provision. (This is) a bounden duty for those who do good.

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن طَلَّقْتُمُ
النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ
تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَ
مَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ
وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا
بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٣٦﴾

७२. अर्थात् जब तक 'इद्दत' की मुद्दत पूरी न हो जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३७. और यदि इस से पहले कि उन्हें हाथ लगाओ, तुम उन्हें तलाक़ दे चुके हो और उन का हक़ ('महू') नियत कर चुके हो, तो जो कुछ तुम नियत कर चुके हो उस का आधा अदा करो, यह और बात है कि वे छोड़ दें या वह पुरुष जिस के हाथ में विवाह का नाता है अपना हक़ छोड़ दे और यह कि तुम अपना हक़ माफ़ करो, यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है। और तुम्हारे बीच एक को दूसरे पर जो श्रेष्ठता प्राप्त है, उसे न भूलो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

237. If ye divorce them before ye have touched them and ye have appointed unto them a portion, then (pay the) half of that which ye appointed, unless they (the women) agree to forgo it, or he agreeth to forgo it in whose hand is the marriage tie. To forgo is nearer to piety. And forget not kindness among yourselves. Allah is Seer of what ye do.

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِىْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

२३८. 'नमाज़ों' का, विशेष रूप से उत्तम नमाज़ का ध्यान रखो,[७३]—और अल्लाह के आगे पूरे भक्ति और विनय-भाव से खड़े हो।

238. Be guardians of your prayers, and of the midmost prayer; and stand up with devotion to Allah.

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۤ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

२३९. और तुम्हें भय हो, तो पैदल या सवार जिस तरह बन पड़े 'नमाज़' पढ़ लो फिर जब निश्चिन्त हो, तो अल्लाह को उस प्रकार से याद करो, जो उस ने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे।

239. And if ye go in fear, then (pray) standing or on horseback. And when ye are again in safety, remember Allah, as He hath taught you that which (heretofore) ye knew not.

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

२४०. और जो तुम में से पत्नियाँ छोड़ कर मृत्यु को प्राप्त हों, उन्हें अपनी पत्नियों के बारे में 'वसीयत' कर जानी चाहिए कि उन्हें एक वर्ष तक गुज़र-बसर की सामग्री दी जाये, वे निकाली न जायें, यदि वे निकल जायें तो वे अपने मामले में सामान्य नियम के अन्तर्गत जो कुछ भी करें उस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

240. (In the case of) those of you who are about to die and leave behind them wives, they should bequeath unto their wives a provision for the year without turning them out, but if they go out (of their own accord) there is no sin for you in that which they do of themselves within their rights. Allah is Mighty, Wise.

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِىْ مَا فَعَلْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

२४१. और तलाक़ पाने वाली स्त्रियों को भी सामान्य नियम के अनुसार सामग्री मिलनी चाहिए: यह (अल्लाह का) डर रखने वालों पर हक़ है।

241. For divorced women a provision in kindness: a duty for those who ward off (evil).

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

२४२. इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतें' स्पष्ट करता है ताकि तुम समझो।

242. Thus Allah expoundeth unto you His revelations so that ye may understand.

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع

७३ अर्थात् तुम्हें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि तुम्हारी 'नमाज़' उत्तम नमाज़ सिद्ध हो; तुम्हारी नमाज़ समस्त बाह्य एवं आन्तरिक सद्गुणों का सुन्दर योग हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४३. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा[७४] जो हज़ारों की संख्या में होने पर भी मृत्यु के भय से अपने घरों से निकल गये थे ? तो अल्लाह ने उन से कहा : मर जाओ, फिर उस ने उन्हें जीवित किया । निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा ही अनुग्रह वाला है । परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते ।

२४४. और अल्लाह की राह मे युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सनने वाला. और जानने वाला है ।

२४५. कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, कि अल्लाह उस को उस के लिए कई गुना बढ़ा दे ? अल्लाह ही तंगी भी देता है और कुशादगी भी देता है । और उसी की ओर तुम्हें लौटना है ।

२४६. क्या तुम ने 'इसराईल' की सन्तान के सरदारों को नहीं देखा[७५] जब कि मूसा के बाद उन्हों ने अपने एक 'नबी' से कहा कि हमारे लिए एक शासक (नायक) नियुक्त कर दो ताकि हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें । उस ने कहा : ऐसा न हो कि तुम पर युद्ध फ़र्ज़ कर दिया जाये तो तुम युद्ध न करो ? कहने लगे : हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध क्यों न करेंगे जब कि हमें अपने घरों और बच्चों से निकाल दिया गया है ? फिर जब उन पर युद्ध फ़र्ज़ कर दिया गया तो उन में से थोड़े लोगों के सिवा सब मुख मोड़ गये । और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है ।

२४७. और उन के 'नबी' नें उन से कहा : अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को शासक नियुक्त किया है । बोले : यह कैसे हो सकता है कि उसे हम पर शासनाधिकार मिल जाये जब कि उस के मुक़ाबले में हम शासन के ज़्यादा हक़दार हैं और जब कि उसे धन की अधिकता भी प्राप्त नहीं है ? उस ने कहा : अल्लाह ने तुम पर उसी को चुना है, और उसे ज्ञान और शरीर (की योग्यता) में अधिक कुशादगी प्रदान की है । और अल्लाह जिसे चाहता है अपना राज्य प्रदान करता है । और अल्लाह बड़ी समाई वाला और बड़ा जानने वाला है ।

243. Bethink thee (O Muhammad) of those of old, who went forth from their habitations in their thousands, fearing death, and Allah said unto them: Die, and then He brought them back to life. Lo! Allah is a Lord of Kindness to mankind, but most of mankind give not thanks.

244. Fight in the way of Allah, and know that Allah is Hearer, Knower.

245. Who is it that will lend unto Allah a goodly loan, so that He may give it increase manifold? Allah straiteneth and enlargeth. Unto Him ye will return.

246. Bethink thee of the leaders of the Children of Israel after Moses, how they said unto a Prophet whom they had: Set up for us a kind and we will fight in Allah's way. He said: Would ye then refrain from fighting if fighting were prescribed for you? They said: Why should we not fight in Allah's way when we have been driven from our dwellings with our children? Yet, when fighting was prescribed for them, they turned away, all save a few of them. Allah is Aware of evil-doers.

247. Their Prophet said unto them: Lo! Allah hath raised up Saul to be a king for you. They said: How can he have kingdom over us when we are more deserving of the kingdom than he is, since he hath not been given wealth enough? He said: Lo! Allah hath chosen him above you, and hath increased him abundantly in wisdom and stature. Allah bestoweth His sovereignty on whom He will. Allah is All-Embracing, All-Knowing.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن
دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ (٢٤٣)
وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (٢٤٤)
مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا
حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً
وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ (٢٤٥)
أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ
مِن بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ
لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ
إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا
تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن
دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا فَلَمَّا كُتِبَ
عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ (٢٤٦)
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ
بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا قَالُوا
أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ
نَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ قَالَ
إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَ
زَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ
وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ (٢٤٧)

७४. अर्थात् उन के हाल पर विचार नहीं किया ?
७५. अर्थात् क्या उन के वृत्तान्त पर विचार नहीं किया गया ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४८. और उन के 'नबी' ने उन से कहा कि उस के शासक नियुक्त होने की निशानी यह है कि वह सन्दूक़ तुम्हारे पास आ जायेगा जिस में तुम्हारे 'रब' की ओर से शान्ति-सामग्री है और मूसा के समुदाय और हारून के समुदाय की छोड़ी हुई याद-गारें हैं। उसे 'फ़रिश्ते' उठाये हुये होंगे।[७६] यदि तुम 'ईमान वाले' हो तो इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।

२४९. फिर जब तालूत सेनायें ले कर चला तो उस ने कहा : अल्लाह एक नदी द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पी लेगा वह मेरा साथी नहीं, और जो उस को नहीं चखे तो वही मेरा साथी है, सिवाय इस के कि कोई अपने हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले।

तो, उन में से थोड़े लोगों के सिवा, सभी ने उस में से पी लिया।

फिर जब वह और 'ईमान लाने' वाले जो उस के साथ थे, नदी पार कर गये तो ये लोग बोले : आज हम में जालूत और उस की सेनाओं के मुक़ा-बले की शक्ति नहीं। उन्हों ने, जो समझते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं, कहा : कितने ही छोटे दल, अल्लाह की अनुज्ञा से, बड़े दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं! और अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

२५०. और जब वे जालूत और उस की सेनाओं के मुक़ाबले में आये तो कहा : हमारे रब! तू हमें अधिक-से-अधिक धैर्य्य प्रदान कर, और हमारे क़दमों को जमा दे, और 'काफ़िर' लोगों पर हमें आधिपत्य प्रदान कर।

248. And their Prophet said unto them: Lo! the token of his kingdom is that there shall come unto you the ark wherein is peace of reassurance from your Lord, and a remnant of that which the house of Moses and the house of Aaron left behind, the angels bearing it. Lo! herein shall be a token for you if (in truth) ye are believers.

249. And when Saul set out with the army, he said: Lo! Allah will try you by (the ordeal of) a river. Whosoever therefore drinketh thereof he is not of me, and whosoever tasteth it not he is of me, save him who taketh (thereof) in the hollow of his hand. But they drank thereof, all save a few of them. And after he had crossed (the river), he and those who believed with him, said: We have no power this day against Goliath and his hosts. But those who knew that they would meet their Lord exclaimed: How many a little company hath overcome a mighty host by Allah's leave! Allah is with the steadfast.

250. And when they went into the field against Goliath and his hosts they said: Our Lord! Bestow on us endurance, make our foothold sure, and give us help against the disbelieving folk.

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ
مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾ ع
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ
إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ
شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ
لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا
جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ
وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ
أَنَّهُمْ مُّلَاقُوا اللَّهِ كَمْ مِّنْ
فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً
بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾
وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا
رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ
أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾

७६. तौरात के बयान से मालूम होता है कि यह सन्दूक एक लड़ाई के अवसर पर फ़लिस्तीन (Palestine) के 'मुश्रिकों' (अनेकेश्वरवादियों) ने 'बनी इसराईल' से छीना था। हज़रत मूसा अ० और हज़रत हारून अ० के समुदाय की छोड़ी हुई चीज़ों में एक तो पत्थर की वे तख़्तियाँ (पटरियाँ) थीं जो तूर सीना पर अल्लाह ने हज़रत मूसा अ० को दी थीं। इस के अलावा इसी प्रकार की कुछ और चीज़ें भी थीं। बाइबिल के कथनानुसार 'बनी इसराईल' इस सन्दूक़ को विजय और सफलता का चिह्न समझते थे। इस सन्दूक़ के वापस मिलने का मतलब यह होता था कि अल्लाह की फिर उन पर दया होने वाली है। इसी को आयत में शान्ति-सामग्री या तसल्ली का सामान कहा गया है। सन्दूक़ के सिलसिले में दे० समोईल (Samuel) ४ : १०, ११, १७-२२ ; ७ : २-६, १०-१४ ; ६ : ७-१३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५१. तो उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें परास्त किया और दाऊद[७७] ने जालूत का वध कर दिया ; और उसे अल्लाह ने राज्य और 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की, और उस ज्ञान में से उसे सिखाया जिस में से वह चाहता है। मनुष्यों के एक गरोह को दूसरे गरोह द्वारा हटाता न रहता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती—परन्तु अल्लाह संसार वालों के लिए बड़ा अनुग्रह वाला है।

251. So they routed them by Allah's leave and David slew Goliath; and Allah gave him the kingdom and wisdom, and taught him of that which He willeth. And if Allah had not repelled some men by others, the earth would have been corrupted. But Allah is a Lord of Kindness to (His) creatures.

فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾

२५२. ये अल्लाह की 'आयतें' हैं जो हम तुम्हें उद्देश्य के साथ सुना रहे हैं, और (हे मुहम्मद !) निस्सन्देह तुम अल्लाह के 'रसूलों' में से हो;

252. These are the portents of Allah which We recite unto thee (Muhammad) with truth, and lo! thou art of the number of (Our) messengers.

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾

२५३. *इन 'रसूलों' में से किसी को हम ने किसी पर श्रेष्ठता प्रदान की, इन में किसी से तो अल्लाह ने बात-चीत की, और किसी के दर्जे ऊँचे किये—और मरयम के बेटे ईसा को हम नें खुली-खुली निशानियाँ दीं और 'रूहुल् क़ुदुस' (पवित्र आत्मा) से उस की सहायता की। और यदि अल्लाह चाहता, तो वे लोग जो इन ('रसूलों') के बाद हुये स्पष्ट प्रमाणों के पा लेने के बाद आपस में न लड़ते। परन्तु उन्हों ने विभेद किया, तो उन में से कुछ तो 'ईमान' लाये और कुछ ने उन में से 'कुफ़्' किया। और यदि अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते ; परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

253. Of those messengers, some of whom We have caused to excel others, and of whom there are some unto whom Allah spake, while some of them He exalted (above others) in degree; and We gave Jesus, son of Mary, clear proofs (of Allah's sovereignty) and We supported him with the holy Spirit. And if Allah had so willed it, those who followed after them would not have fought one with another after the clear proofs had come unto them. But they differed, some of them believing and some disbelieving. And if Allah had so willed it, they would not have fought one with another; but Allah doth what He will.

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَٰكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

२५४. हे 'ईमान' लाने वालो ! जो कुछ हम ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से खर्च करो इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई सौदा होगा, न कोई मित्रता, और न कोई सिफ़ारिश। और जो काफ़िर हैं ज़ालिम वही हैं।

254. O ye who believe! Spend of that wherewith We have provided you ere a day come when there will be no trafficking, nor friendship, nor intercession. The disbelievers, they are the wrong-doers.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾

७७. यही वे दाऊद हैं जिन्हें आगे चल कर अल्लाह ने अपना 'रसूल' बनाया। इस समय आप नवयुवक थे, और एक सैनिक की हैसियत से सेना के साथ थे। दे० बाइबिल 'समोईल (प्रथम)' (First Book of Samuel) अध्याय १७ और १८।

*यहाँ से तीसरा पारा (Part III) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५५. अल्लाह—उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं—वह सजीव[७८] और चिर-स्थायी[७९] है। उसे न ऊँघ लगती है और न नींद आती है। जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है सब उसी का है। कौन है जो उस के सामने बिना उस की अनुज्ञा के सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उन (लोगों) के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और वे उस के ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते सिवाय उस के जितना वह चाहे। उस का प्रभुत्व (कुरसी) आकाशों और धरती पर छाया हुआ है और उन की रक्षा उस के लिए तनिक भी दुष्कर नहीं। और वह उच्च और महान् है।

२५६. 'दीन' (धर्म) के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग हो कर बिल्कुल सामने आ गई है। अब जो 'ताग़ूत' को ठुकरा दे और अल्लाह पर 'ईमान' लाये उस ने मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने का नहीं। और अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

२५७. अल्लाह उन लोगों का संरक्षक-मित्र है जो 'ईमान' लाये। वह उन्हें अँधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है। और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, उन के संरक्षक-मित्र 'ताग़ूत' हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकाल कर अंधेरों की ओर ले जाते हैं। यही आग ('जहन्नम' में जाने) वाले हैं, वे उस में सदैव रहेंगे।

255. Allah! There is no God save Him, the Alive, the Eternal. Neither slumber nor sleep overtaketh Him. Unto Him belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. Who is he that intercedeth with Him save by His leave? He knoweth that which is in front of them and that which is behind them, while they encompass nothing of His knowledge save what He will. His throne includeth the heavens and the earth and He is never weary of preserving them. He is the Sublime, the Tremendous.

256. There is no compulsion in religion. The right direction is henceforth distinct from error. And he who rejecteth false deities and believeth in Allah hath grasped a firm handhold which will never break. Allah is Hearer, Knower.

257. Allah is the Protecting Friend of those who believe. He bringeth them out of darkness into light. As for those who disbelieve, their patrons are false deities. They bring them out of light into darkness. Such are rightful owners of the Fire. They will abide therein.

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ
لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ
مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ
مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ
كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا
یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ
الْعَظِیْمُ ﴿٢٥٥﴾
لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قَدْ تَّبَیَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ
لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿٢٥٦﴾
اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ؕ وَالَّذِیْنَ
كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ
یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَی الظُّلُمٰتِ ؕ
اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

७८. अर्थात् वह सजीव (**Alive**) और अमर है। वही जीवन का मूल स्रोत है। जिस को भी जीवन मिलता है, उसी से मिलता है। बाइबिल में भी ज़िन्दा ख़ुदा का ज़िक्र जगह-जगह हुआ है।

७९. अर्थात् वह अपने अस्तित्व में किसी का मुहताज नहीं है। वह ख़ुद से क़ायम (**Self-subsisting**), सारी सृष्टि का स्थापित करने वाला, और स्थिर रखने वाला है।

इस गुण का उल्लेख भी बाइबिल में किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५८. क्या तुम ने उस को नहीं देखा[८०] जिस ने इवराहीम से उस के 'रव' के वारे में इस कारण से हुज्जत की कि अल्लाह ने उसे राज्य दे रक्खा था ! जब इवराहीम ने कहा : मेरा 'रव' वह है जो जिलाता और मारता है, उस ने कहा : मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ । इवराहीम ने कहा : अच्छा, अल्लाह सूर्य को पूर्व से निकालता है, तो तू उसे पश्चिम से निकाल दे । तो वह 'काफ़िर' हक्का-बक्का रह गया । और अल्लाह ज़ालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता ।

२५९. (यह मिसाल[८१]) या जैसे कि वह जो एक ऐसी वस्ती पर गुज़रा जो अपनी छतों के बल ढही पड़ी थी, उस न कहा : अल्लाह कैसे इस को इस के मर चुकने के पश्चात् जीवित करेगा ? तो अल्लाह ने उसे सौ वर्ष की मौत दे दी, फिर उसे उठा खड़ा किया । कहा : तुम कितने समय तक इस अवस्था में रहे ? उस ने कहा : एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा । कहा : बल्कि तुम सौ वर्ष इस अवस्था में रहे हो । अब अपने खाने और अपने पीने की वस्तुओं को देखो कि उन पर सालों गुज़र जाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा ! और अपने गदहे को देखो ! और (यह हम ने इस लिए किया ताकि तुम्हें विश्वास हो और) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी वना दें, और हड्डियों को देखो कि हम किस प्रकार उन का ढाँचा खड़ा करते हैं फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं ! इस प्रकार जब उस के सामने बात खुल कर आ गई, तो वह पुकार उठा : मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है ।

258. Bethink thee of him who had an argument with Abraham about his Lord, because Allah had given him the kingdom; how, when Abraham said: My Lord is He who giveth life and causeth death, he answered: I give life and cause death. Abraham said: Lo! Allah causeth the sun to rise in the East, so do thou cause it to come up from the West. Thus was the disbeliever abashed. And Allah guideth not wrongdoing folk.

259. Or (bethink thee of) the like of him who, passing by a township which had fallen into utter ruin, exclaimed: How shall Allah give this township life after its death? And Allah made him die a hundred years, then brought him back to life. He said: How long hast thou tarried? (The man) said: I have tarried a day or part of a day. (He) said: Nay, but thou hast tarried for a hundred years. Just look at thy food and drink which have rotted! Look at thine ass! And, that We may make thee a token unto mankind, look at the bones, how We adjust them and then cover them with flesh! And when (the matter) became clear unto him, he said: I know now that Allah is Able to do all things.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرٰهٖمَ
فِي رَبِّهٖٓ أَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ إِذْ
قَالَ إِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ أَنَا أُحْيٖ وَأُمِيْتُ ؕ
قَالَ إِبْرٰهٖمُ فَإِنَّ اللّٰهَ يَأْتِيْ
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا
مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ ۝
أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ
أَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ
فَأَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ
بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ
لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ
قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ
إِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ
وَانْظُرْ إِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ
اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ
كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا
لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ
أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝

८०. अर्थात् क्या तुम ने उस के वृत्तान्त पर विचार नहीं किया ?

८१. दे० हज़क़ीऐल (Ezekiel) नबी का परोक्ष निरीक्षण (हज़क़ीऐल ३७ : १-११) यदि यह मान लिया जाये कि क़ुरआन में यहाँ संकेत इसी निरीक्षण की ओर है, तो इस का अर्थ यह होगा कि यह अल्लाह की निशानियों के निरीक्षण के लिए उसी प्रकार की 'मलकूती सैर' (आत्म लोक का विचरण) थी जिस का एक उच्च उदाहरण हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'मेराज' की घटना है । (दे० सूरा बनी इसराईल फ़ुटनोट २) ।

उस लोक में तो शताब्दियों के मामलों की पूर्ति क्षणों में सम्भव है ।

इस निरीक्षण से एक ओर 'आखिरत' में दोबारा जीवित होने पर पूर्ण विश्वास प्राप्त हो गया और दूसरी ओर इस में निरीक्षक ने यह भी देख लिया कि उन की जाति 'बनी इसराईल' को भविष्य में जीवन प्राप्त होगा, उन की सूखी हड्डियों में जान आयेगी । वे दासता से छुटकारा पायेंगे और उन्हें स्वतन्त्रता और शक्ति प्राप्त होगी ।

दे० हज़क़ीऐल ३७ : ११-१४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६०. और याद करो जब इबराहीम नें कहा : मेरे 'रब' ! मुझे दिखा दे तू मुरदों को कैसे ज़िन्दा करेगा, कहा : क्या तुझे विश्वास नहीं ? उस ने कहा : ईमान तो रखता हूँ परन्तु चाहता हूँ कि मेरे दिल को इतमीनान हो जाये। कहा : अच्छा, तो चार पक्षी ले कर उन्हें अपने साथ हिला-मिला ले, फिर उन का एक-एक भाग एक-एक पहाड़ पर रख दे, फिर उन्हें बुला, वे तेरे पास भागे चले आयेंगे[८२] और जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली और 'हिकमत' वाला है।

२६१. जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उन (के ख़र्च) की उपमा उस दाने की-सी है जिस से सात बालें निकलें, और हर बाल में सौ दाने हों। और अल्लाह जिस के लिए चाहता है ऐसी ही बढ़ोत्तरी प्रदान करता है और अल्लाह बड़ी समाई वाला और जानने वाला है।

२६२. जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर जो ख़र्च करते हैं उस के पीछे न तो एहसान जताते हैं और न दुख पहुँचाते हैं ; उन के लिए उन के 'रब' के पास उन का प्रतिदान है और न तो उन के लिए कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।

२६३. एक भली बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस 'सदक़े' से उत्तम है जिस के पीछे दुख देने की बात हो। और अल्लाह अपेक्षा रहित और सहनशील है।

260. And when Abraham said (unto his Lord): My Lord! Show me how Thou givest life to the dead, He said: Dost thou not believe? Abraham said: Yea, but (I ask) in order that my heart may be at ease. (His Lord) said: Take four of the birds and cause them to incline unto thee, then place a part of them on each hill, then call them, they will come to thee in haste. And know that Allah is Mighty, Wise.

261. The likeness of those who spend their wealth in Allah's way is as the likeness of a grain which groweth seven ears, in every ear a hundred grains. Allah giveth increase manifold to whom He will. Allah is All-Embracing, All-Knowing.

262. Those who spend their wealth for the cause of Allah and afterward make not reproach and injury to follow that which they have spent: their reward is with their Lord, and there shall no fear come upon them, neither shall they grieve.

263. A kind word with forgiveness is better than almsgiving followed by injury. Allah is Absolute Clement.

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ
تُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ
قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ
قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى
كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ
ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ
ع اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾
مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ
سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ
مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾
اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ
اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾
قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ
مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَ
اللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾

८२. मतलब यह है कि जिन पक्षियों को तुम हिला-मिला कर परचा लेते हो वे तुम्हारे बुलाने से भागे चले आते हैं, तो क्या अल्लाह और उस के पैदा किये हुये लोगों के बीच इतना सम्पर्क भी नहीं, क्या उसे अपने पैदा किये हुए लोगों पर इतना भी अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता कि वह उन्हें मरने के बाद फिर मृत्यु से जीवन की ओर पलटा सके। 'जीवन मृत्यु के पश्चात्' के प्रति यह अत्यन्त सूक्ष्म तर्क है ; ज़रूरत इस बात की है कि इसे समझने की कोशिश की जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६४. हे 'ईमान' लाने वालो ! अपने 'सदक़े' को एहसान जता कर और दुख पहुँचा कर, उस व्यक्ति की तरह बरबाद न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और अल्लाह और अन्तिम दिन[८३] पर ईमान नहीं रखता। उस की उपमा यों है कि जैसे एक चट्टान हो। जिस पर कुछ मिट्टी हो ; तो उस पर घोर वर्षा हुई, तो उसे साफ़ चट्टान की चट्टान ही छोड़ गई। ऐसे लोग जो कुछ कमायें उस में से कुछ भी उन के हाथ नहीं आने का। और अल्लाह 'काफ़िरों' को मार्ग नहीं दिखाता।

264. O ye who believe! Render not vain your almsgiving by reproach and injury, like him who spendeth his wealth only to be seen of men and believeth not in Allah and the Last Day. His likeness is as the likeness of a rock whereon is dust of earth; a rainstorm smieth it, leaving it smooth and bare. They have no control of aught of that which they have gained. Allah guideth not the disbelieving folk.

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا
صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي
يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ
فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ
تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ
صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ
مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾

२६५. और उन लोगों की उपमा जो अल्लाह की ख़ुशियों, और अपनी आत्मा की स्थिरता (एवं दृढ़ता) के लिए अपने माल ख़र्च करते हैं, उस बाग़ की सी है जो ऊँची भूमि पर स्थित हो, जिस पर ज़ोर की वर्षा हुई तो दुगना फल लाये। और यदि ज़ोर की वर्षा न हुई तो, हल्की फ़ुहार ही सही। और अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो, उसे देख रहा है।

265. And the likeness of those who spend their wealth in search of Allah's pleasure, and for the strengthening of their souls is as the likeness of a garden on a height. The rainstorm smieth it and it bringeth forth its fruit twofold. And if the rainstorm smite it not, then the shower. Allah is Seer of what ye do.

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا
مِنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ
بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ
أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ
فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾

२६६. क्या तुम में से कोई यह पसन्द करेगा कि उस के पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, नीचे उस के नहरें बह रही हों, उस के लिए उस में हर प्रकार के फल हों ; और उस का बुढ़ापा आ गया हो और उस के बच्चे अभी निर्बल हों ; और उस बाग़ पर एक आग भरा बगोला आ जाये और वह जल कर रह जाये ?

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए 'आयतें' स्पष्ट करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।

266 Would any of you like to have a garden of palm-trees and vines, wtih rivers flowing underneath it, with all kinds of fruit for him therein; and old age hath stricken him and he hath feeble offspring; and a fiery whirlwind striketh it and it is (all) consumed by fire. Thus Allah maketh plain His revelations unto you in order that ye may give thought.

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ
جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ
فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ
الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ
فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ
فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ
ع لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

२६७. हे 'ईमान' लाने वालो ! पाक चीज़ों में से जो तुम ने कमाया हो, और जो कुछ तुम्हारे लिए हम ने भूमि से पैदा किया है उस में से ख़र्च करो, और ख़र्च करते हुये उस के ख़राब ही हिस्से (के छाँट कर देने) का इरादा न करो जब कि तुम उसे कभी न लोगे यह बात दूसरी है कि कम क़ीमत समझ कर ले लो और जान लो, अल्लाह अपेक्षा रहित और प्रशंसा का अधिकारी है।

267. O ye who believe! Spend of the good things which ye have earned and of that which We bring forth from the earth for you, and seek not the bad (with intent) to spend thereof (in charity) when ye would not take it for yourselves save with disdain; and know that Allah is Absolute, Owner of Praise.

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا
مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا
أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا
تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ
وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا
فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ
حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾

८३. दे० फ़ुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६८. 'शैतान' तुम्हें निर्धन होने से डराता और अश्लील बातों पर उकसाता है। और अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से क्षमा और कृपा का वचन देता है। और अल्लाह बड़ी समाई वाला और जानने वाला है।

२६९. जिसे चाहता है 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) प्रदान करता है, और जिसे 'हिकमत' दी गई, उसे बड़ी दौलत दी गई। परन्तु चेतते तो वही हैं जो बुद्धि वाले हैं।

२७०. और जो कुछ भी तुम ख़र्च करोगे और जो कुछ 'नज़्र' मानोगे तो अल्लाह उसे जानता है। और ज़ालिमों का कोई सहायक न होगा।

२७१. और यदि तुम खुले तौर पर 'सदक़ा' दो, तो यह भी अच्छी बात है, और यदि उसे छिपा कर ग़रीबों को दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, और वह तुम्हारी कितनी ही बुराइयों को दूर कर देगा। और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसकी ख़बर रखता है।

२७२. उन्हें राह पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं है बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है राह दिखाता है--और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही लिए है--और तुम जो अल्लाह की ख़ुशी ही की तलाश में ख़र्च करो, वह तुम्हारे अपने लिए है। और तुम अल्लाह की ख़ुशी ही की तलाश में ख़र्च करो, जो माल भी तुम ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा कर दिया जायेगा, और तुम पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

२७३. यह उन मुहताजों के लिए है जो अल्लाह की राह में घिरे हुये हैं कि (जीविका के लिए) धरती में दौड़-भाग नहीं कर सकते। उन के स्वाभिमान[८४] के कारण बेख़बर उन्हें धनवान समझता है। तुम उन के रूप से उन को पहचान सकते हो : वे लोगों से चिमट-चिमट कर नहीं माँगते। और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे तो निस्सन्देह अल्लाह उस का जानने वाला है।

268. The devil promiseth you destination and enjoineth on you lewdness. But Allah promiseth you forgiveness from Himself with bounty. Allah is All-Embracing, All-Knowing.

269. He giveth wisdom unto whom He will, and he unto whom wisdom is given, he truly hath received abundant good. But none remember except men of understanding.

270. Whatever alms ye spend or vow ye vow, lo! Allah knoweth it. Wrong-doers have no helpers.

271. If ye publish your alms-giving, it is well, but if ye hide it and give it to the poor, it will be better for you, and will atone for some of your ill-deeds. Allah is Informed of what ye do.

272. The guiding of them is not thy duty (O Muhammad), but Allah guideth whom He will. And whatsoever good thing ye spend, it is for yourselves, when ye spend not save in search of Allah's countenance; and whatsoever good thing ye spend, it will be repaid to you in full, and ye will not be wronged.

273. (Alms are) for the poor who are straitened for the cause of Allah, who cannot travel in the land (for trade). The unthinking man accounteth them wealthy because of their restraint. Thou shalt know them by their mark: They do not beg of men with importunity. And whatsoever good thing ye spend, lo! Allah knoweth it.

الشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ
بِالْفَحْشَآءِ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً
مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ٢٦٨
يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوْتِيَ خَيْرًا
كَثِيْرًا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ ٢٦٩
وَمَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ
نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهُ
وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ ٢٧٠
إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ
وَإِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ
مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ٢٧١
لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُوْنَ
إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ
لَا تُظْلَمُوْنَ ٢٧٢
لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ أُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي
الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ
أَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ
إِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ٢٧٣

८४. अर्थात् उन के न माँगने के कारण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७४. जो लोग अपने माल को रात-दिन छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, उन के लिए अपना प्रतिदान उन के 'रब' के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे दु:खी होंगे।

२७५. जो लोग ('सदक़ा' नहीं देते बल्कि उल्टे) सूद खाते हैं वे उस तरह उठेंगे जैसे वह आदमी उठता है जिसे 'शैतान' ने छू कर बावला कर दिया हो[८५]। यह इस लिए होगा कि उन्होंने कहा : व्यापार भी तो ब्याज ही जैसी चीज़ है ; जब कि अल्लाह ने व्यापार को 'हलाल' (जायज़) ठहराया है और ब्याज को हराम[८६]। तो जिस के पास उस के 'रब' की ओर से यह नसीहत पहुँची, और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ ले चुका वह उसी का रहा, और मामला उस का अल्लाह के हवाले है। और जिस ने फिर वही काम किया तो ऐसे ही लोग आग ('जहन्नम' में जाने) वाले हैं वे उस में सदा रहेंगे।

२७६. अल्लाह सूद का मठ मार देता है और 'सदक़ों' को बढ़ाता है[८७]। और अल्लाह 'कुफ़्र' करने वाले और हक़ मारने वाले को पसन्द नहीं करता।

274. Those who spend their wealth by night and day, by stealth and openly, verily their reward is with their Lord, and there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

275. Those who swallow usually cannot rise up save as he ariseth whom the devil hath prostrated by (his) touch. That is because they say: Trade is just like usury; whereas Allah permitteth trading and forbiddeth usury. He unto whom an admonition from his Lord cometh, and (he) refraineth (in obedience thereto), he shall keep (the profits of) that which is past, and his affair (hence forth) is with Allah. As for him who returneth (to usury)—such are rightful owners of the Fire. They will abide therein.

276. Allah hath blighted usury and made almsgiving fruitful. Allah loveth not the impious and guilty.

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَوٰا لَا يَقُومُونَ
إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ
الشَّيْطَٰنُ مِنَ الْمَسِّ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ
الرِّبَوٰا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ
الرِّبَوٰا فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن
رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ
إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٧٥﴾
يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَوٰا وَيُرْبِي الصَّدَقَٰتِ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾

८५. न केवल यह कि 'क़यामत' में सूद खाने वाला बावला और पागल व्यक्ति के रूप में उठेगा बल्कि दुनिया में भी उस की दशा एक पागल की सी होती है ; वह धन के पीछे अपनी मर्यादा और मानव-प्रवृत्ति को भूल जाता है। इस्लाम मानव-जाति में परस्पर सहानुभूति और प्रेम-भाव पैदा करना चाहता है। ब्याज लेने की मनोवृत्ति इस के बिल्कुल प्रतिकूल है। ब्याज लेने वाला लोगों की मजबूरियों और उन की दैन्यावस्था को अपनी कमाई का साधन समझता है ; वह किसी के साथ सहानुभूति का व्यवहार नहीं कर सकता।

बाइबिल में भी ब्याज और सूद का निषेध किया गया है। देखिए 'हज़क़ीऐल' (**Ezekiel**) २२ : १२।

८६. चाहे नैतिक दृष्टि से देखा जाये या आर्थिक दृष्टि से व्यापार और ब्याज में कोई सम्पर्क नहीं है। ब्याज पर रुपया देने वाले का लाभ सुरक्षित (**Reserved**) होता है, परन्तु दूसरे व्यक्ति को केवल अवसर मिलता है जिस का लाभदायक होना ज़रूरी नहीं। यदि वह रुपया व्यापार के लिए नहीं बल्कि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ल रहा है, तो लाभ का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। परन्तु यदि वह रुपंया कृषि या व्यापार, उद्योग, आदि में लगाता है, जब भी लाभ यक़ीनी नहीं है। ब्याज का अर्थ केवल लोगों की विवशता और मजबूरी से अनुचित लाभ उठाना है, हालाँकि मजबूर और विवश आदमी हमारी दया और सहानुभूति का भूखा होता है। यदि हम रुपया व्यापार या उद्योग में लगाने के लिए किसी को देते हैं तो लाभ में शरीक होने का हक़ हमें पहुँचता है परन्तु उस समय जब कि लाभ के साथ हम घाटे में भी शरीक हों, और मामला समझौते के रूप में पहले से तै कर लें।

८७. क़ुरआन के निकट ब्याज प्रत्येक दशा में हानिकारक और अकल्याणकारी है ; इस से किसी भलाई की आशा नहीं की जा सकती। ब्याज-व्यवस्था से समाज की नैतिक और आर्थिक प्रगति में बाधा ही नहीं पड़ती, अपितु वह समाज के पतन एवं विनाश का कारण है। इस के विपरीत 'सदक़ा' (दान) से 'आख़िरत' (परलोक) में जो फ़ायदा पहुँचेगा वह तो पहुँचेगा ही, सांसारिक जीवन में भी मनुष्य को उस से बहुत से फ़ायदे पहुँचते हैं। ऐसे समाज में जहाँ 'सदक़ा' और 'ज़कात' देने की प्रथा होगी, वहाँ लोगों में परस्पर स्वार्थपरता का व्यवहार नहीं होगा कि कोई बिना अपने किसी व्यक्तिगत फ़ायदे के किसी के काम ही न आ सके। ऐसे समाज में लोगों के बीच द्वेष, ईर्ष्या और निर्दयता के बदले प्रेम, सहानुभूति और त्याग की भावनाओं का विकास होगा। ऐसा समाज नैतिक और आर्थिक प्रत्येक दृष्टि से उन्नति कर सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७७. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान लाये' और अनुकूल कर्म किये, 'नमाज़' क़ायम की और 'ज़कात' अदा की उन के लिए उन के 'रब' के पास उन का प्रतिदान है और उन के लिए न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।

२७८. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का डर रक्खो। और जो ब्याज बाक़ी रह गया है, उसे छोड़ दो, यदि तुम 'ईमान' वाले हो।

२७९. यदि तुम नें ऐसा न किया, तो अल्लाह और उस के 'रसूल' की ओर से युद्ध के लिए सावधान हो जाओ। यदि 'तौबा' कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम ज़ुल्म करो और न तुम्हारे साथ ज़ुल्म किया जाये।

२८०. और यदि (ऋण लेने वाला) तंगी में है, तो उस का हाथ खुलने तक उसे मुहलत दो ; दान कर दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, यदि तुम जानो।

२८१. और उस दिन का डर रक्खो, जिस में तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे। फिर ऐसा होगा कि प्रत्येक व्यक्ति को जो उस नें कमाया है, पूरा-पूरा मिल जायेगा, और उन पर तनिक ज़ुल्म न होगा।

२८२. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम किसी नियत समय के लिए आपस में उधार का लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो। चाहिए कि कोई लिखने वाला तुम्हारे बीच इन्साफ़ के साथ लिख दे। किसी लिखने वाले के लिए यह सही नहीं है कि जैसा कुछ अल्लाह ने उसे सिखाया है उस के अनुसार लिखने से किनारा खींचे, उसे लिख देना चाहिए, और (दस्तावेज़ का लेख) बोल कर वह लिखाये जिस पर हक़ आता है[८८]। और उस अल्लाह का जो उस का 'रब' है डर रखना चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए, और यदि वह व्यक्ति जिस पर हक़ आता है कमसमझ या कमज़ोर हो, या बोल कर (दस्तावेज़) न लिखा सकता हो, तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ के साथ बोल कर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों की गवाही कर लो। और

277. Lo! those who believe and do good works and establish worship and pay the poor-due, their reward is with their Lord and there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

278. O ye who believe! Observe your duty to Allah, and give up what remaineth (due to you) from usury, if ye are (in truth) believers.

279. And if ye do not, then be warned of war (against you) from Allah and His messenger. And if ye repent, then ye have your principal (without interest). Wrong not, and ye shall not be wronged.

280. And if the debtor is in straitened circumstances, then (let there be) postponement to (the time of) ease; and that ye remit the debt as almsgiving would be better for you if ye did but know.

281. And guard yourselves against a day in which ye will be brought back to Allah. Then every soul will be paid in full that which it hath earned, and they will not be wronged.

282. O ye who believe! When ye contract a debt for a fixed term, record it in writing. Let a scribe record it in writing between you in (terms of) equity. No scribe should refuse to write Allah hath taught him, so let him write, and let him who incurreth the debt dictate, and let him observe his duty to Allah his Lord, and diminish naught thereof. But if he who oweth the debt is of low understanding, or weak, or unable himself to dictate, then let the guardian of his interests dictate in (terms of) equity. And call to witness, from among your men, two witnesses. And if two men be

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا
مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾
فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ
مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَإِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا
تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾
وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ
إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوا
خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾
وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ
إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ
مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ
بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ
وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ
رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ
فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ
أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ
بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ
مِنْ رِجَالِكُمْ ۖ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا

८८. अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह होने के लिए पसन्द करो गवाह हो जायें, ताकि यदि एक ग़लती करे, तो दूसरी उसे याद दिला दे। और जब गवाहों से गवाही के लिए कहा जाये तो उन्हें किनारा नहीं खींचना चाहिए। और मामला छोटा हो या बड़ा, समय की नियुक्ति के साथ उसे लिखने में आलस्य से काम न लो। यह अल्लाह की दृष्टि में सब से अधिक न्यायसंगत और गवाही अधिक ठीक रखने वाला तरीक़ा है और इस में तुम्हारे किसी सन्देह में न पड़ने की अधिक सम्भावना है ; हाँ, यदि नक़्द सौदा हो[८९], तो उस के न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, किसी लिखने वाले को और किसी गवाह को हानि न पहुँचाई जाये। यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारी बड़ी अवज्ञा होगी। अल्लाह का डर रक्खो। अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता रहा है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

२८३. और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखने वाले को न पा सको, तो गिरो हाथ में रख कर मामला कर लेना चाहिए।

फिर यदि एक ने दूसरे पर इतमीनान कर लिया है, तो जिस के पास अमानत रक्खी गई है वह उस की अमानत अदा करे और अल्लाह का जो उस का 'रब' है, डर रक्खे।

और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाये तो निश्चय ही उस का दिल गुनहगार है। और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसे जानता है।

२८४. जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, सब अल्लाह ही का है ; जो कुछ तुम्हारे मन में है, तुम व्यक्त करो या उसे छिपाओ, अल्लाह उस का तुम से हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा क्षमा करेगा और जिसे चाहेगा यातना देगा, अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

२८५. 'रसूल' उस चीज़ पर 'ईमान लाया' जो उस के 'रब' की ओर से उस पर उतारी गई। और 'ईमान' वाले भी ईमान लाये। ये सब अल्लाह पर, उस के 'फ़िरिश्तों' पर, उस की किताबों पर

८९. अर्थात् यदि सौदा हाज़िर माल का हो।

not (at hand) then a man and two women, of such as ye approve as witnesses, so that if the one erreth (through forgetfulness) the other will cause her to recollect. And the witnesses must not refuse when they are summoned. Be not averse to writingdown (the contract) whether it be small or great, with (record of) the term thereof. That is more equitable in the sight of Allah and more sure for testimony, and the best way of avoiding doubt between you; save only in the case when it is actual merchandise which ye transfer among yourselves from hand to hand. In that case it is no sin for you if ye write it not. And have witnesses when ye sell one to another, and let no harm be done to scribe or witness. If ye do (harm to them) lo! it is a sin in you. Observe your duty to Allah. Allah is teaching you. And Allah is Knower of all things.

283. If ye be on a journey and cannot find a scribe then a pledge in hand (shall suffice). And if one of vou entrusteth to another let him who is trusted deliver up that which is entrusted to him (according to the pact between them) and let him observe his duty to Allah. Hide not testimony. He who hideth it, verily his heart is sinful. Allah is Aware of what ye do.

284. Unto Allah (belongeth) whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth; and whether ye make known what is in your minds or hide it, Allah will bring you to account for it. He will forgive whom He will and He will punish whom He will. Allah is Able to do all things.

285. The messenger believeth in that which hath been revealed unto him from his Lord and (so do) the believers. Each one believeth in Allah and His angels and

رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ
تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ
اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا
الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا
مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ
صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ
ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا
اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ
وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا
يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ
تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۲﴾
وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا
كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ
اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ
الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ
اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ
وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۳﴾
لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ
تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾
اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ
مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और उस के 'रसूलों' पर ईमान लाये—(ये कहते हैं : हम अल्लाह के रसूलों में किसी के बीच अन्तर नहीं करते[६०]। और उन्हों ने कहा, "हम ने सुना, और पालन किया। हमारे 'रब' ! हमें तेरी क्षमा चाहिए। और तेरी ही ओर लौटना है।"

२८६. अल्लाह किसी पर उस की शक्ति से बढ़ कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। उस ने जो कमाया उसी का है, और उस ने जो बुराई समेटी उस का वबाल भी उसी पर है।

हमारे 'रब' ! यदि हम भूल जायें, या चूक जायें, तो हमें न पकड़ना; हमारे रब ! हम पर भारी बोझ न डालना जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर बोझ डाले थे। हमारे रब ! हम पर ऐसा बोझ न डाल जिस के उठाने की हमें शक्ति नहीं ! हमें क्षमा कर दे और हमें ढाँक ले और हम पर दया कर, तू हमारा स्वामी है, तो 'काफ़िर' लोगों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।

His scriptures and His messengers—we make no distinction between any of His messengers—and they say: We hear, and we obey. (Grant us) Thy forgiveness, our Lord. Unto Thee is the journeying.

286. Allah tasketh not a soul beyond its scope. For it (is only) that which it hath earned, and against it (only) that which it hath deserved. Our Lord! Condemn us not if we forget, or miss the mark! Our Lord! Lay not on us such a burden as Thou didst lay on those before us! Our Lord! Impose not on us that which we have not the strength to bear! Pardon us, absolve us and have mercy on us, Thou, our Protector, and give us victory over the disbelieving folk!

وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّن رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا
وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾
لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ
أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ
مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا
لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا
وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنتَ
مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

६०. अर्थात् अल्लाह की ओर से जितने भी 'रसूल' आये, चाहे वे किसी देश या जाति में पैदा हुये हों ; हम सब पर 'ईमान' लाते हैं। सत्य के विषय में जाति, देश, भाषा, रंग और वेश-भूषा सम्बन्धी विभेद कोई चीज़ नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३—आले इमरान
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम "आले इमरान" (इमरान के लोग) इस लिए रक्खा गया है कि इस में एक जगह 'आले इमरान' का वर्णन है। इसी को चिह्न के रूप में इस सूरा का नाम दे दिया गया है। इस प्रकार चिह्न के रूप में नाम रखने का रिवाज अरबों में पहले से भी प्रचलित था। इमरान हज़रत मूसा अ० के पिता का नाम था। जिसे बाइबिल में अम्रान (Amran) कहा गया है। इस सूरा में 'रिसालत' और उसकी बरकतों के हज़रत मूसा अ० के घराने ('बनी इसराईल') से दूसरे समुदाय में चले जाने का उल्लेख किया गया है (दे० आयत २१-२६)। इस दृष्टि से देखा जाये तो सूरा का यह नाम यहूदियों के बीते समय की याद दिलाता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' में ४ तक़रीरें शामिल हैं। पहली तक़रीर सूरा के आरम्भ से आयत ३२ तक है, इस के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् किसी निकट समय में उतरी है। 'बद्र' की लड़ाई स० २ हि० में हुई थी। इस युद्ध का विस्तारपूर्वक उल्लेख सूरा अल-अनफ़ाल में किया गया है। दूसरी तक़रीर आयत ३३ से आरम्भ हो कर आयत ६३ पर समाप्त होती है। यह तक़रीर स० ९ हि० में उस अवसर पर उतरी है जब नबी सल्ल० के पास 'नजरान' के ईसाई राज्य का प्रतिनिधि मंडल आया हुआ था। इस अवसर पर अल्लाह ने यह तक़रीर इस लिए उतारी थी कि इस के द्वारा ईसाइयों को 'इस्लाम' की ओर आमंत्रित किया जाये। सूरा की तीसरी तक़रीर जो आयत ६४ से आरम्भ हो कर आयत १२० पर समाप्त होती है, 'बद्र' और 'उहुद' की लड़ाइयों के बीच के समय में उतरी है। चौथी तक़रीर जो आयत १२१ से आरम्भ हो कर सूरा के अन्त तक चली गई है, इस के उतरने का समय 'उहुद' की लड़ाई के पश्चात् है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरा अल-बक़रा का केन्द्रीय विषय 'ईमान' था, इस सूरा का केन्द्रीय विषय 'इस्लाम' है। जो सम्बन्ध ज्ञान और व्यावहारिक जीवन में होता है वही सम्बन्ध 'ईमान' और 'इस्लाम' में पाया जाता है। इस्लाम की मौलिक शिक्षा 'रसूल' की आज्ञा पर चलना और उस का पालन करना है। 'रसूल' की अवज्ञा वास्तव में अल्लाह की 'आयतों' का खुला इन्कार है। इस इन्कार पर दुनिया में भी अल्लाह का प्रकोप है और मनुष्य का पारलौकिक जीवन भी तबाह होता है।

सूरा आले इमरान और सूरा अल-बक़रा में गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। सूरा अल-बक़रा से यदि जीवन के ज्ञान सम्बन्धी पहलू को पूर्णता प्राप्त होती है, तो सूरा आले इमरान से हमारे व्यावहारिक जीवन को पूर्णता मिलती है। ये दोनों 'सूरतें' परस्पर एक-दूसरे की पूर्ति करती हैं। सूरा अल-बक़रा में जिन बातों का उल्लेख संक्षिप्त रूप में किया गया है, उन्हें इस सूरा में विस्तारपूर्वक बयान किया गया है। इसी प्रकार जो बातें वहाँ विस्तारपूर्वक बयान हुई हैं, उन का उल्लेख इस सूरा में संक्षिप्त रूप में ही किया गया है, 'काबा' के निर्माण और 'रिब्बियों' के लड़ने का उल्लेख इस सूरा में संक्षिप्त रूप में किया गया है; परन्तु गत सूरा में सविस्तार इन का वर्णन किया गया है। इस सूरा में अल्लाह के मार्ग में पेश आने वाली मुसीबतों और संकटों का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया गया है;[1] परन्तु गत सूरा में इस के बारे में 'ईमान' वालों को केवल सावधान करके छोड़ दिया गया है[2]। इसी प्रकार गत सूरा में यदि

१. दे० आयत ९६-९७ और आयत १४६-१४८।
२. दे० सूरा अल-बक़रा आयत १५५-१५६ और २१४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'यहूदियों' का वर्णन है; तो इस सूरा मे 'ईसाइयों' का। यहूदी वर्ग व्यावहारिक जीवन में विशेष रूप से सीधे मार्ग से भटक गया था, इस के विपरीत ईसाइयों में विशेषत: ज्ञान और आस्था से सम्बन्ध रखने वाली गुमराहियाँ पैदा हो गई थीं। सूरा अल-बक़रा में 'मुनाफ़िक़ों' के बारे में संक्षेप में कुछ बातें बयान हुई हैं, प्रस्तुत सूरा में उस की अपेक्षा अधिक विस्तार से काम लिया गया है। सूरा अल-बक़रा में इस्लामी समाज के लिए बहुत से नियम और क़ानून दिये गये हैं; प्रस्तुत सूरा में इस प्रकार के क़ानून नहीं दिये गये हैं; परन्तु इस के बाद आने वाली सूरा (अन्-निसा) से यह कमी पूरी हो जाती है।

किन परिस्थितियों में उतरी

सूरा अल-बक़रा में 'ईमान वालों' को समय आने से पूर्व ही जिन कठिनाइयों व आपत्तियों से सूचित किया गया था, वे पूरी तरह सामने आ चुकी थीं। उन से मदीने की आर्थिक स्थिति भी बुरी तरह प्रभावित हो रही थी।

मदीने में आने के पश्चात् नबी सल्ल० नें यहूदियों से जो समझौता (Agreement) किया था उन लोगों नें उसे भंग कर दिया था। मदीनें वालों के साथ यहूदियों की बहुत पहले से मित्रता चली आ रही थी, परन्तु उन्हों ने उस का कुछ भी आदर नहीं किया। 'बद्र' को लड़ाई के बाद तो वे खुल कर क़ुरैश और अरब के दूसरे क़बीलों को मुसलमानों से बदला लेने के लिए उभारने लगे थे।

'उहुद' की लड़ाई

एक वर्ष के बाद ही मक्का वालों नें तीन हज़ार की सेना ले कर मदीना पर आक्रमण कर दिया। सूचना मिलने पर एक हज़ार की सेना ले कर नबी सल्ल० भी मुक़ाबले के लिए निकले। 'शौत' के स्थान पर पहुंच कर अब्दुल्लाह इब्न उबई जो 'मुनाफ़िक़ों' का नायक था, अपने ३०० व्यक्तियों को ले कर अलग हो गया; जिस के कारण मुसलमान घबरा गये यहाँ तक कि क़बीला अबू सल्मा और बनू हारसा के लोगों नें तो हिम्मत हार कर पलटनें का निश्चय कर लिया; परन्तु अल्लाह ने मुसलमानों के दिलों को मजबूत कर दिया और वे वापस नहीं हुये। नबी सल्ल० ने अपनी सेना 'उहुद' की पहाड़ी के दामन में खड़ी की। पीछे की ओर पहाड़ था सामने दुश्मन की सेना थी। पहलू में केवल एक ऐसा दर्रा था जिस से हो कर दुश्मन अचानक मुसलमानों पर हमला कर सकता था। आप (सल्ल०) ने वहाँ अब्दुल्लाह इब्न ज़ुबैर को ५० तीर मारने वाले सैनिकों के साथ नियुक्त कर दिया; और उन्हें ताकीद कर दी कि यहाँ जमे रहना। किसी समय भी यहाँ से न टलना। युद्ध में शत्रु के पाँव उखड़ गये। इस अवसर पर दस आदमियों के अतिरिक्त दर्रे के सभी सैनिक, दुश्मनों के छोड़े हुये माल को एकत्र करने में लग गये; और नबी सल्ल० के आदेश को भुला दिया। शत्रु नें देखा कि दर्रा ख़ाली है तो पलट कर उस ने अचानक पीछे से आक्रमण कर दिया; जिस से मुसलमानों को अधिक हानि पहुँची। यह युद्ध इतिहास में 'उहुद' के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। सूरा आले इमरान में इस युद्ध पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है।

सम्बोधन और वार्त्तायें

इस सूरा में विशेष रूप से दो गरोहों को सम्बोधित किया गया है। पहला गरोह 'किताब वालों' (यहूदियों और ईसाइयों) का है। इस गरोह को उसी प्रकार सत्य की ओर आमंत्रित किया गया है जिस प्रकार सूरा अल-बक़रा में किया गया था। उन के आचार-विचार और नैतिक पतन का उल्लेख करते हुये उन्हें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यह 'रसूल' लोगों को उसी 'दीन' का आमंत्रण दे रहा है जिस का आमंत्रण सनातन से सारे 'नबी' देते आये हैं।

दूसरा गरोह उन लोगों का है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 'ईमान' ला चुके थे; और उन्हें अल्लाह का रसूल मान चुके थे। इस गरोह को इस का ज़िम्मेदार ठहराया गया कि उसे संसार के सामने सत्य को प्रस्तुत करना है और लोगों तक ईश्वर का सन्देश पहुँचाना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस सूरा का आरम्भिक आधा भाग विशेष रूप से 'किताब वालों' से सम्बन्ध रखता है ; शेष आधे भाग का सम्बन्ध 'ईमान' वालों से है। ईमान वालों को जो आदेश सूरा अल-बक़रा में दिये गये थे उस सिलसिले में कुछ और आदेश प्रस्तुत सूरा में दिये गये। ईमान वालों को परस्पर जुड़े रहने और सत्य पर जमे रहने का आदेश दिया गया। उन्हें स्पष्टतः बताया गया कि उन का उन 'किताब वालों' और 'मुनाफ़िक़ों' के साथ क्या व्यवहार होना चाहिए, जो 'इस्लाम' के मार्ग में तरह-तरह की रुकावटें डाल रहे थे। मुसलमानों को अपनी उन दुर्बलताओं के दूर करने का भी आदेश दिया गया जो उन से 'उहुद' की लड़ाई के अवसर पर ज़ाहिर हुई थीं। उन्हें अल्लाह के मार्ग में लड़ने पर उभारा गया और उन्हें इस बात की शुभ सूचना भी दी गई कि विजय उन्हीं को प्राप्त होगी। 'ईमान' वालों के दिलों में विरोधी दल की ओर से जो सन्देह पैदा किये जा रहे थे उस से उन्हें सावधान रहने का हुक्म दिया गया 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को हानि पहुँची थी, इस अवसर पर इस्लाम विरोधी दल ने मुसलमानों के बीच उसी तरह विभेद पैदा करने का प्रयास किया था, जिस तरह हज़रत मूसा अ० की जाति वालों ने किया था, जिस के फलस्वरूप उन लोगों को ४० वर्ष तक उजाड़ मैदानों की ख़ाक छाननी पड़ी थी।

समाप्ति

आयत १९० से 'सूरा' के अन्त का भाग सूरा की समाप्ति वार्ता से सम्बन्ध रखता है। समाप्ति वार्ता का सम्पर्क पूरी 'सूरा' से है। समाप्ति वार्ता को समझने के लिए विशेष रूप से सूरा की पहली तक़रीर —जिसे इस सूरा की भूमिका का स्थान प्राप्त है—हमारे सामने रहनी चाहिए।

सूरा की भूमिका में बताया गया है कि अल्लाह ही हमारी हर प्रकार की ज़रूरतें पूरी करता है। उस ने हमें 'इस्लाम' की शिक्षा दी ; और जीवन का सीधा सच्चा मार्ग दिखाने के लिए अपनी 'किताब' उतारी ; उस ने वह ज्ञान प्रदान किया जिस से हम सत्य और असत्य को परख सकें। जो लोग अल्लाह की किताब का इन्कार करते हैं, और बुद्धि से काम नहीं लेते, वे 'आख़िरत' में ईश-प्रकोप के भागी होंगे। सूरा की भूमिका की तरह सूरा के अन्तिम भाग में भी 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि अल्लाह के यहाँ सफलता प्राप्त करने वाले कौन हैं। उन के बारे में बताया गया है कि बुद्धिमान वही हैं। वे सृष्टि (Creation) में सोच-विचार से काम लेते हैं और खड़े, बैठे और लेटे प्रत्येक दशा में अल्लाह को याद करते हैं। फलतः वे पुकार उठते हैं : "हमारे रब ! तू ने ये सब बेकार और व्यर्थ नहीं बनाया है। तू सर्वश्रेष्ठ है ! तो (हे 'रब' !) तू हमें आग ('जहन्नम') की यंत्रणा से बचा ले।" फिर उन की वह दुआ (प्रार्थना) पेश की गई है जिस का एक-एक शब्द दर्द में डूबा हुआ है। इस दुआ से हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि वह व्यक्ति जो केवल एक दार्शनिक (Philosopher) हो, उस में और एक 'ईमान' वाले व्यक्ति में क्या अन्तर होता है। ईमान वालों की भावनायें और उन के विचार कितने उच्च और निर्मल होते हैं। उन का चिन्तन उन्हें उस ईश्वर से मिला देता है जो आत्मा की शान्ति और सुखमय जीवन का एकमात्र आधार है। वे अपने ईश्वर से जुड़ जाते हैं और उन का जीवन पूर्ण होता है।

अल्लाह की याद से हृदय की असावधानी दूर होती है; और चिन्तन करने से मनुष्य पर यथार्थ ज्ञान के द्वार खुलते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह ईश्वर का स्मरण करे और सृष्टि और उस की रचना में सोच-विचार से काम ले। सत्यता (Reality) की प्राप्ति के लिए ये दोनों बातें आवश्यक हैं।

एक बार 'नबी' (सल्ल०) की सेवा में कुछ अमुस्लिम आये और उन्हों ने आप (सल्ल०) से कहा कि मूसा (अ०) लाठी और चमकते हाथ का चमत्कार ले कर आये थे। ईसा (मसीह अ०) अन्धों और कोढ़ियों को अच्छा करते थे। और दूसरे 'नबी' भी कुछ-न-कुछ चमत्कार ले कर आये थे। आप क्या ले कर आये हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आप (सल्ल०) ने प्रस्तुत सूरा का यही अन्तिम भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़ कर सुनाया और कहा : "मैं तो यह ले कर आया हूँ"। वास्तव में ज्ञान का चमत्कार सब चमत्कारों से बढ़ कर होता है।

सूरा के अन्तिम भाग में ईमान वालों की कई एक विशेषताओं का वर्णन करते हुये उन्हें इस बात पर उभारा गया है कि वे सत्य पर जमे रहें और प्रत्येक अवस्था में अल्लाह से डरते रहें। यही उन की सफलता का एकमात्र साधन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' आले इमरान

(मदीने में उतरी — 'आयतें' २००)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील दयावान् है।

१. अलिफ़० लाम० मीम०[1]।

२. अल्लाह—जिस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं — वह सजीव[2] (और) चिर-स्थायी[3] है।

३. उस ने तुम पर हक़ के साथ 'किताब' उतारी, जो उस की तसदीक़ कर रही है जो कि इस के आगे से मौजूद है, और उस ने 'तौरात' और 'इन्जील' उतारी,

४. इस से पहले लोगों के लिए मार्ग-दर्शन बना कर, और उस ने कसौटी उतारी।

निस्सन्देह जिन लोगों ने अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार किया, उन के लिए कड़ी यातना है। अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और (बुराई का) बदला लेने वाला है।

५. अल्लाह से न धरती में कोई चीज़ छिपी हुई है और न आकाश में।

६. वही है जो गर्भाशयों में जैसा चाहता है तुम्हारे रूप बनाता है। उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं, वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

THE FAMILY OF 'IMRAN

Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Alif. Lam. Mim.

2. Allah! There is no God save Him, the Alive, the Eternal.

3. He hath revealed unto thee (Muhammad) the Scripture with truth, confirming that which was (revealed) before it, even as He revealed the Torah and the Gospel,

4. Aforetime, for a guidance to mankind; and hath revealed the Criterion (of right and wrong). Lo! those who disbelieve the revelations of Allah, theirs will be a heavy doom. Allah is Mighty, Able to Requite the wrong.

5. Lo! nothing in the earth or in the heavens is hidden from Allah.

6. He it is who fashioneth you in the wombs as pleaseth Him. There is no God save Him, the Almighty, the Wise.

سورة آل عمران مدنية وهي مائتا آية وعشرون ركوعا

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۝١ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ
الْقَيُّوْمُ ۝٢

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَ
اَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝٣
مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ
اَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۬ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللهِ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَاللهُ عَزِيْزٌ
ذُو انْتِقَامٍ ۝٤
اِنَّ اللهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي
الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝٥
هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ
كَيْفَ يَشَآءُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट १।
२. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ७८।
३. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ७९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. वही है जिस ने तुम पर 'किताब' उतारी, जिस में कुछ 'आयतें' तो अटल हैं जो किताब की बुनियाद हैं, और दूसरी अस्पष्ट एवं उपलक्षित हैं (जिन के अर्थों में कई पहलू निकलते हैं[४]), तो जिन के दिलों में टेढ़ है वे उसी के पीछे पड़ जाते हैं जो उन में से अस्पष्ट एवं उपलक्षित है, ताकि उस के वास्तविक अर्थ की खोज में पड़ कर फ़ितनां पैदा करें। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग ज्ञान में पक्के हैं वे यों कहते हैं : हम इन पर 'ईमान' लाये; ये सब हमारे 'रब' ही के पास से हैं, और चेतते तो केवल बुद्धि वाले ही हैं।

८. हमारे 'रब' ! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इस के पश्चात् हमारे दिलों को कज न कर, हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निस्सन्देह तू बड़ा दाता है।

९. हमारे 'रब' ! तू एक दिन सब लोगों को इकट्ठा करने वाला है जिस में कोई सन्देह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध जाने वाला नहीं है।

१०. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, अल्लाह के मुक़ाबले में न तो उन का धन उन के कुछ काम आयेगा और न उन की सन्तान। और वही लोग आग ('जहन्नम') का ईंधन हैं।

११. जैसे फ़िरऔन के लोगों और उन से पहले के लोगों का हाल हुआ, उन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया। और अल्लाह (ऐसे लोगों को) कड़ा दण्ड देने वाला है।

7. He it is Who hath revealed unto thee (Muhammad) the Scripture wherein are clear revelations—They are the substance of the Book—and others (which are) allegorical. But those in whose hearts is doubt pursue, forsooth, that which is allegorical seeking (to cause) dissension by seeking to explain it. None knoweth its explanation save Allah. And those who are of sound instruction say: We believe therein; the whole is from our Lord; but only men of understanding really heed.

8. Our Lord! Cause not our hearts to stray after Thou hast guided us, and bestow upon us mercy from Thy Presence. Lo! Thou, only Thou, art the Bestower.

9. Our Lord! it is Thou Who gatherest mankind together to a Day of which there is no doubt. Lo! Allah faileth not to keep the tryst.

10 (On that day) neither the riches nor the progeny of those who disbelieve will aught avail them with Allah. They will be fuel for fire.

11. Like Pharaoh's folk and those who were before them, they disbelieved Our revelations and so Allah seized them for their sins. And Allah is severe in punishment.

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ
مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ
الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ
فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاۗءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاۗءَ تَاْوِيْلِهٖ وَمَا
يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ وَالرّٰسِخُوْنَ
فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ كُلٌّ
مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ
اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٧
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ
هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٨
رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ
لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ۝٩
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١١

४. क़ुरआन की उन 'आयतों' में जिन का मतलब साफ़ और खुला हुआ है, वे सब बातें खोल-खोल कर बता दी गई हैं जिन की ओर लोगों को बुलाने के लिए क़ुरआन उतरा है। जैसे 'ईमान' और अक़ीदे की बातें, भलाई-बुराई का ज्ञान, सत्य क्या है ? और असत्य क्या है ? इस के अतिरिक्त वे सभी बातें जिन का सम्बन्ध हमारे रहन-सहन और व्यावहारिक जीवन से है।

क़ुरआन की दूसरी 'आयतें' जो उपलक्षित (Allegorical) है, उन में वे बातें बयान हुई हैं जिन तक हमारी बुद्धि की पहुँच नहीं हो सकती ; और जिन को हम पूरी तरह नहीं समझ सकते : जैसे अल्लाह की हस्ती (सत्ता), 'आख़िरत' में होने वाली बातें, मृत्यु के पश्चात् का जीवन आदि। मनुष्य के लिए ज़रूरी था कि किसी हद तक इन बातों का भी उसे ज्ञान करा दिया जाये, क्योंकि इन के बारे में जब तक उसे कुछ जानकारी न दे दी जाये, जीवन की कोई राह उसे दिखाई नहीं जा सकती थी ; और न उसे कोई जीवन-दर्शन प्रदान किया जा सकता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है उन से कह दो कि जल्दी ही तुम पराजित होगे और 'जहन्नम' की ओर हाँके जाओगे, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

12. Say (O Muhammad) unto those who disbelieve: Ye shall be overcome and gathered unto Hell, an evil resting-place.

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾

१३. तुम्हारे लिए उन दोनों गरोहों में जिन की (बद्र के युद्ध में) मुठ-भेड़ हुई एक बड़ी निशानी है : एक गरोह अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, और दूसरा 'काफ़िर' था, ये उन्हें (मुसलमानों को) अपनी आँखों से देख रहे थे कि ये इन से दूने हैं। और अल्लाह अपनी सहायता से जिसे चाहता है शक्ति दे देता है। निस्सन्देह इस में उन के लिए सूझ-सामग्री है, जिन के पास आँखें हैं।

13. There was a token for you in two hosts which met; one army fighting in the way of Allah, and another disbelieving, whom they saw as twice their number, clearly, with their very eyes. Thus Allah strengtheneth with His succour whom He will. Lo! herein verily is a lesson for those who have eyes.

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾

१४. लोगों के लिए उन की चाह की चीज़ें, स्त्रियाँ, बेटे, सोना-चाँदी के ढेर, निशान लगे हुये (चुने हुये) घोड़े, चौपाये और खेती शोभायमान बना दी गई हैं; ये सब सांसारिक जीवन में बरतने की चीज़ें हैं। और अल्लाह ही के पास अच्छा ठिकाना है।

14. Beautified for mankind is love of the joys (that come) from women and offspring, and stored-up heaps of gold and silver, and horses branded (with their mark), and cattle and land. That is comfort of the life of the world. Allah! With Him is a more excellent abode.

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾

१५. उन से कहो : मैं तुम्हें इन से उत्तम का पता दूँ ? जो लोग (अल्लाह का) डर रक्खेंगे उन के लिए उन के 'रब' के पास बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रहीं होंगी, उन में सदैव रहेंगे, और पाक-साफ़ जोड़े[५] होंगे और अल्लाह की प्रसन्नता होगी। अल्लाह अपने बन्दों पर पूरी पूरी नज़र रखता है,

15. Say: Shall I inform you of something better than that? For those who keep from evil, with their Lord are Gardens underneath which rivers flow, and pure companions, and contentment from Allah, Allah is Seer of His bondmen.

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

१६. जो कहते हैं : हमारे 'रब' ! हम 'ईमान' लाये तो तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग ('जहन्नम') की यातना से बचा ले ;

16. Those who say: Our Lord! Lo! we believe. So forgive us our sins and guard us from the punishment of Fire;

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

१७. जो धैर्यवान् हैं, सच्चे, आज्ञाकारी (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करने वाले, और रात की अन्तिम घड़ियों में अपने गुनाहों की क्षमा चाहने वाले हैं।

17. The steadfast, and the obedient, those who spend (and hoard not), those who pray for pardon in the watches of Fire;

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾

१८. अल्लाह, 'फ़िरिश्तों' और ज्ञान वालों की गवाही है कि उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। वह इन्साफ़ का क़ायम रखने वाला है, उस के सिवा कोई 'इलाह' नहीं, वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

18. Allah (Himself) is witness that there is no God save Him. And the angels and the men of learning (too are witness). Maintaining His creation in justice, there is no God save Him, the Almighty, the Wise.

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَاۗىِٕمًۢا بِالْقِسْطِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

५. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. 'दीन' तो अल्लाह का 'इस्लाम' है[६]। जिन्हें किताब दी गई थी उन्हों ने तो इस में विभेद इस के पश्चात् किया कि ज्ञान उन के पास आ चुका था, ऐसा उन्हों ने परस्पर एक दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए किया। जो लोग अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करेंगे तो वे जान लें कि अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुकाने वाला है।

२०. तो यदि वे लोग तुम से झगड़ें, तो कह दो, "मैंने और मेरे अनुयायियों ने तो अपने आप को अल्लाह के समर्पण किया।"

और फिर 'किताब वालों' से और 'उम्मियों' से (जिन के पास किताब नहीं है) पूछो : क्या तुम भी आत्मसमर्पण (इस्लाम स्वीकार) करते हो? यदि उन्हों ने भी इस्लाम स्वीकार किया तो उन्हों ने मार्ग पा लिया, और यदि वे इस से मुँह मोड़ें तो तुम पर केवल पहुँचा देने का दायित्व है। अल्लाह अपने बन्दों पर पूरी नज़र रखता है।

19. Lo! religion with Allah (is) the Surrender (to His will and guidance). Those who (formerly) received the Scripture differed only after knowledge came unto them, through transgression among themselves. Whoso disbelieveth the revelations of Allah (will find that) lo! Allah is swift at reckoning.

20. And if they argue with thee (O Muhammad), say: I have surrendered my purpose to Allah and (so have) those who follow me. And say unto those who have received the Scripture and those who read not: Have ye (too) surrendered? If they surrender, then truly they are rightly guided, and if they turn away, then it is thy duty only to convey the message (unto them). Allah is Seer of (His) bondmen.

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ
إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَٰتِ
اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾
فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ
لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَٰبَ وَالْأُمِّيِّينَ ءَأَسْلَمْتُمْ ۚ
فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَإِن
تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَٰغُ ۗ وَاللَّهُ
ع بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

२१. जो लोग अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करते रहे हैं और 'नबियों' को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं, और उन लोगों को क़त्ल करते रहे हैं जो लोगों में इन्साफ़ का आमंत्रण ले कर उठे हैं, तो उन्हें दुखदायिनी यातना की मंगल सूचना दे दो[७]।

21. Lo! those who disbelieve the revelations of Allah, and slay the Prophets wrongfully and slay those of mankind who enjoin equity: promise them a painful doom.

२२. यही लोग हैं जिन के कर्म दुनिया और 'आख़िरत' में अकारथ गये ; और इन का कोई सहायक न होगा।

22. Those are they whose works have failed in the world and the Hereafter; and they have no helpers.

२३. तुम ने देखा नहीं कि जिन लोगों को 'किताब' से कुछ हिस्सा मिला? जब उन्हें अल्लाह की किताब की ओर आमंत्रित किया जाता है ताकि वह उन के बीच फ़ैसला करे ; फिर उन का एक गरोह मुँह फेर लेता है और ये मुँह फेर लेने ही वाले लोग हैं।

23. Hast thou not seen how those who have received the Scripture invoke the Scripture of Allah (in their disputes) that it may judge between them; then a faction of them turn away, being opposed (to it)?

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَٰتِ اللَّهِ
وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ
وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ
مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم
مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٢٢﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِّنَ الْكِتَٰبِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَٰبِ
اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ
فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

६. मतलब यह है कि अल्लाह की ओर से संसार के जिस देश और जिस युग में भी कोई पैग़म्बर आया है उस का 'दीन' (धर्म) यही था कि मनुष्य अपने पूरे जीवन में केवल अल्लाह का दास, और उस का उपासक बन कर रहे। यही 'इस्लाम' है ; और यही सदा से अल्लाह का 'दीन' रहा है।

७. यह व्यंग्यात्मक शैली है। मतलब यह है कि ये अपने जिन करतूतों पर ख़ुश हो रहे हैं, बता दो, इन्हें उन कामों का क्या फल मिलने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. यह इस लिए कि ये कहते हैं : ('जहन्नम' की) आग हमें गिनती के कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकती। ये जो कुछ घड़ते रहे हैं उस ने इन्हें इन के 'दीन' के बारे में धोखे में डाल दिया है।

२५. तो फिर इन का क्या हाल होगा जब हम इन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे जिस में कोई सन्देह नहीं ? और हर एक को जो कुछ उस ने कमायी की होगी पूरी की जायेगी, और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

२६. कहो : हे अल्लाह ! राज-सत्ता के स्वामी ! तू जिसे चाहे राज्य प्रदान करे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले। और जिसे चाहे सम्मानित करे, और जिसे चाहे अपमानित करे। तेरे ही हाथ में भलाई है।[८] निस्सन्देह तुझे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

२७. तू रात को दिन में प्रविष्ट करता है, और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। और जीवित को निर्जीव में से निकालता है, और निर्जीव को जीवित में से निकालता है। और जिसे चाहता है बे हिसाब रोज़ी (कृपा, पारितोषिक) देता है।

२८. 'ईमान' लाने वालों को चाहिए कि वे ईमान वालों के विरुद्ध 'काफ़िरों' को अपना संरक्षक-मित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा तो उस का अल्लाह से कोई भी नाता नहीं। परन्तु यह कि तुम उन से बचो जैसा बचने का हक़ है। और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डराता है और अल्लाह ही की ओर लौटना है।

२९. कह दो कि तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे चाहे तुम छिपाओ या व्यक्त करो, अल्लाह उसे जानता ही है। और वह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

24. That is because they say: The Fire will not touch us save for a certain number of days. That which they used to invent hath deceived them regarding their religion.

25. How (will it be with them) when We have brought them all together to a Day of which there is no doubt, when every soul will be paid in full what it hath earned, and they will not be wronged.

26. Say: O Allah? Owner of Sovereignty! Thou givest sovereignty unto whom Thou wilt, and Thou withdrawest sovereignty from whom Thou wilt. Thou exaltest whom Thou wilt and Thou abasest whom Thou wilt. In Thy hand is the good. Lo! Thou art Able to do all things.

27. Thou causest the night to pass into the day, and Thou causest the day to pass into the night. And Thou bringest forth the living from the dead, and Thou bringest forth the dead from the living. And Thou givest substance to whom Thou choosest, without stint.

28. Let not the believers take disbelievers for their friends in preference to believers. Whoso doth that hath no connection with Allah unless (it be) that ye but guard yourselves against them; taking (as it were) security. Allah biddeth you beware (only) of Himself. Unto Allah is the journeying.

29. Say, (O Muhammad): Whether ye hide that which is in your breasts or reveal it, Allah knoweth it. He knoweht that which is in the heavens and that which is in the earth, and Allah is Able to do all things.

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا
النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۪
وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾
فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۟ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾
قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي
الْمُلْكَ مَنْ تَشَاۗءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ
مِمَّنْ تَشَاۗءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاۗءُ وَ
تُذِلُّ مَنْ تَشَاۗءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ
اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾
تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ
النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ
وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾
لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ
اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾
قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ
اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

८. यह यहूदियों की धारणाओं का खण्डन किया जा रहा है जो यह समझते रहे हैं कि 'नुबूवत' की सारी बरकतों के हक़दार केवल वही हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. जिस दिन हर व्यक्ति अपने किये हुये भले कर्म (के फल) को अपने सामने मौजूद पायेगा और जो बुराई की होगी उस को भी। चाहेगा कि अच्छा होता कि उस के अपने और उस के बीच दीर्घ काल की दूरी होती। और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डराता है। और अल्लाह बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।

३१. कह दो कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो; अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा और तुम्हारे 'गुनाहों' को क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

३२. कह दो : अल्लाह और 'रसूल' की आज्ञा का पालन करो। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो जान लें कि अल्लाह 'काफ़िरों' से प्रेम नहीं करता[६]।

३३. निस्सन्देह अल्लाह ने आदम, नूह, इबराहीम की सन्तान और इमरान की सन्तान को सारे संसार के लोगों में चुना।

३४. ये एक दूसरे की सन्तान हैं। और अल्लाह सुनता और जानता है।

३५. याद करो जब इमरान की स्त्री नें कहा : हे 'रब'! मैं ने उस बच्चे को जो मेरे पेट में है उसे हर चीज़ से छुड़ा॰ कर तेरी नज़्र की। तो तू मेरी ओर से उसे क़बूल कर। निस्सन्देह तू सुनने और जानने वाला है।

३६. तो जब उस के यहाँ बच्ची हुई तो उस ने कहा : मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है—और जो कुछ उस के यहाँ पैदा हुआ था अल्लाह को उस की खूब खबर थी—और लड़का लड़की की तरह नहीं होता; और मैं ने उस का नाम मरयम रक्खा है, और मैं उसे और उस की सन्तान को धिक्कारे हुये 'शैतान' से (बचनें के लिए) तेरी पनाह में देती हूँ।

30. On the day when every soul will find itself confronted with all that it hath done of good and all that it hath done of evil (every soul) will long that there might be a mighty space of distance between it and that (evil). Allah biddeth you beware of Him. And Allah is full of pity for (His) bondmen.

31. Say, (O Muhammad, to mankind): If ye love Allah, follow me; Allah will love you and forgive you your sins. Allah is Forgiving, Merciful.

32. Say: Obey Allah and the messenger. But if they turn away, lo! Allah loveth not the disbelievers (in His guidance).

33. Lo! Allah preferred Adam and Noah and the Family of Abraham and the Family of 'Imran above (all His) creatures.

34. They were descendants one of another, Allah is Hearer, Knower.

35. (Remember) when the wife of 'Imran said: My Lord! I have vowed unto Thee that which is in my belly as a consecrated (offering). Accept it from me. Lo! Thou, only Thou, art the Hearer, the Knower!

36. And when she was delivered she said: My Lord! Lo! I am delivered of a female — Allah knew best of what she was delivered — the male is not as the female; and lo! I have named her Maryam, and lo! I crave Thy protection for her and for her offspring from Satan the outcast.

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۛ وَمَا عَمِلَتْ
مِنْ سُوْٓءٍ ۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا
وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ
اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ (٣٠)
قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ
يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣١)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ (٣٢)

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓي اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ (٣٣)
ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۭ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٣٤) ۚ
اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ
نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ
مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٣٥)

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ
وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ ۭ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ
وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُھَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ (٣٦)

६. इस 'आयत' पर सूरा की पहली तक़रीर समाप्त होती है। यह तक़रीर इस 'सूरा' की भूमिका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. तो उस के 'रब' नें उसे अच्छी स्वीकृति के साथ स्वीकृति प्रदान की और उसे खूब अच्छा उठाया ; और ज़करीया को उस का अभिरक्षक बना दिया।

जब कभी ज़करीया मरयम के 'मेहराब' (उपासना-कोष्ठ) में जाता, तो उस के पास कुछ रोज़ी पाता। उस ने कहा : मरयम ! यह चीज़ तुझे कहाँ से मिलती है ? उस ने कहा : यह अल्लाह के पास से है। निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है[१०]।

३८. उस समय ज़करीया नें अपनें 'रब' को पुकारा : 'रब' ! तू मुझे अपने पास से अच्छी सन्तान प्रदान कर। निस्सन्देह तू प्रार्थना का सुनने वाला है।

३९. तो 'फ़िरिश्तों' ने उसे आवाज़ दी जब कि वह 'मेहराब' में खड़ा 'नमाज़' पढ़ रहा था : अल्लाह तुझे यहया की शुभ सूचना देता है, जो अल्लाह के एक 'कलमे'[११] की तसदीक़ करने वाला, सरदार, संयमी और अच्छे लोगों में से 'नबी' होगा।

४०. उस ने कहा : 'रब' ! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा जब कि मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी स्त्री बाँझ है ? कहा : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है।

४१. उस ने कहा : 'रब' ! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे। कहा : तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिवाय इशारे के बात चीत न कर सकोगे, अपने 'रब' को बहुत ज़्यादा याद करो, और सायंकाल, और प्रातः समय उस की 'तसबीह' करते रहो।

४२. और जब 'फ़िरिश्तों' ने कहा : हे मरयम ! अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे सुथराई दी, और तुझे संसार की स्त्रियों के मुक़ाबले में चुन लिया।

37. And her Lord accepted her with full acceptance and vouchsafed to her a goodly growth; and made Zachariah her guardian. Whenever Zachariah went into the sanctuary where she was, he found that she had food. He said: O Maryam! Whence cometh unto thee this (food)? She answered: It is from Allah. Allah giveth without stint to whom He will.

38. Then Zachariah prayed unto his Lord and said: My Lord! Bestow upon me of Thy bounty goodly offspring. Lo! Thou art the Hearer of Prayer.

39. And the angels called to him as he stood praying in the sanctuary: Allah giveth thee glad tidings of (a son whose name is) John, (who cometh) to confirm a word from Allah, lordly, chaste, a Prophet of the righteous.

40. He said: My Lord! How can I have a son when age hath overtaken me already and my wife is barren? (The angel) answered: So (it will be). Allah doth what He will.

41. He said: My Lord! Appoint a token for me. (The angel) said: The token unto thee (shall be) that thou shalt not speak unto mankind three days except by signs. Remember thy Lord much, and praise (Him) in the early hours of night and morning.

42. And when the angles said: O Maryam! Lo! Allah hath chosen thee and made thee pure, and hath preferred thee above (all) the women of creation.

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَ
أَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا
زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ
قَالَ يٰمَرْيَمُ أَنّٰى لَكِ هٰذَا ۖ قَالَتْ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۖ إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٧
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ
رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝٣٨
فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ
يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ أَنَّ اللّٰهَ
يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّ
نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٣٩
قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ
بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِيْ عَاقِرٌ ۖ
قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝٤٠
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ أٰيَةً ۖ قَالَ
أٰيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ
أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۖ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝٤١ ع
وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَ
اصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٢

१०. रोज़ी से अभिप्रेत यहाँ ज्ञान और तत्त्वदर्शिता है। क़ुरआन में 'वह्य' और मार्ग-दर्शन के लिए भी इस शब्द को कई जगहों पर प्रयोग किया गया है। तौरात और इंजील में भी यह अभिव्यंजना मिलती है। हज़रत मसीह का भी कथन है : मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता बल्कि उस कलमे (शब्द) से जीवित रहता है जो ख़ुदावन्द की ओर से आता है।

११. 'कलमा' का अर्थ होता है हुक्म या फ़रमान। यहाँ अल्लाह का एक 'कलमा' हज़रत ईसा अ० को कहा गया है। उन का जन्म प्राकृतिक नियम के विपरीत अल्लाह के एक विशेष हुक्म से हुआ था इसी लिए उन्हें अल्लाह के 'कलमे' की उपाधि प्रदान की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३. हे मरयम ! अपने 'रब' के आज्ञापालन में निष्ठापूर्वक लगी रहो और (उसे) सजदा और 'रुकू' करने वालों के साथ सजदा और 'रुकू' करती रहो।

43. O Maryam! Be obedient to thy Lord, prostrate thyself and bow with those who bow (in worship).

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

४४. ये परोक्ष की सूचनाओं में से हैं, जो हम तुम को 'वह्य' कर रहे हैं। और तुम उस समय उन के पास नहीं थे जब वे इस बात का फ़ैसला करने के लिए कि मरयम का अभिरक्षण कौन करे अपने क़लम (डाल कर चिट्ठी) डाल रहे थे, और न तुम उस समय उन के पास थे. जब वे आपस में झगड़ रहे थे।

44. This is of the tidings of things hidden. We reveal it unto thee (Muhammad). Thou wast not present with them when they threw their pens (to know) which of them should be the guardian of Maryam, nor wast thou present with them when they quarrelled (thereupon).

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

४५. याद करो जब 'फ़िरिश्तों' ने कहा : हे मरयम ! अल्लाह अपनी ओर से तुझे एक 'कलमे' की शुभ सूचना देता है, जिस का नाम मसीह ईसा सुत मरयम होगा, वह दुनिया और 'आख़िरत' में प्रतिष्ठित होगा, और समीपवर्ती लोगों में से होगा।

45. (And remember) when the angles said: O Maryam! Lo! Allah giveth thee glad tidings of a word from Him, whose name is the Messiah, Jesus, son of Maryam, illustrious in the world and the hereafter, and one of those brought near (unto Allah).

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۙ﴿٤٥﴾

४६. वह लोगों से पालने में भी बात करेगा और अधेड़ हो कर भी, और वह अच्छे लोगों में से होगा।

46. He will speak unto mankind in his cradle and in his manhood and he is of the righteous.

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

४७. वह बोली : 'रब' ! मेरे लड़का कहाँ से पैदा होगा मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं ? कहा : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो उसे कहता है : हो जा ! और वह हो जाती है।

47. She said: My Lord! How can I have a child when no mortal hath touched me? He said: So (it will be). Allah createth what He will. If He decreeth a thing, He saith unto it only: Be! and it is.

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

४८. ('फ़िरिश्तों' ने अपनी बात पूरी करते हुये कहा :) और अल्लाह उसे 'किताब' और 'हिकमत' और 'तौरात' और 'इन्जील' का ज्ञान देगा[१२]।

48. And He will teach him the Scripture and wisdom, and the Torah and the Gospel.

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ﴿٤٨﴾

४९. और 'इसराईल' की सन्तान की ओर 'रसूल' बना कर भेजेगा।

49. And will make him a messenger unto the children

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّىْ

१२. इस 'आयत' से मालूम होता है कि 'तौरात' किताब है जिस में विशेष रूप से क़ानून, नियम आदि की शिक्षा दी गई है ; और इन्जील सर्वथा 'हिकमत' (wisdom) है जिस में धर्म के वास्तविक भाव एवं तत्व का उल्लेख किया गया है, जिस में मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप के दर्शन मिलते हैं। इस का अन्दाज़ा वर्तमान 'तौरात' (Torah) और इन्जील (Gospel) से भी किया जा सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तद्नुसार उस ने इसराईल की सन्तान को आमंत्रित किया कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से निशानी ले कर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से चिड़ियों की आकृति जैसी चीज़ बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो अल्लाह की अनुज्ञा से सच-मुच चिड़िया बन जाती है। और मैं अल्लाह की अनुज्ञा से अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ, और मुरदे को जीवित कर देता हूँ। और मैं तुम्हें बता सकता हूँ जो कुछ तुम खाते और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा कर के रखते हो। यदि तुम 'ईमान' वाले हो, तो निस्सन्देह इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।

of Israel, (saying): Lo! I come unto you with a sign from your Lord. Lo! I fashion for you out of clay the likeness of a bird, and I breathe into it and it is a bird, by Allah's leave. I heal him who was born blind, and the leper, and I raise the dead, by Allah's leave. And I announce unto you what ye eat and what ye store up in your houses. Lo! herein verily is a portent for you, if ye are to be believers.

قد جئتكم بآية من ربكم أني أخلق لكم من الطين كهيئة الطير فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله وأبرئ الأكمه والأبرص وأحي الموتى بإذن الله وأنبئكم بما تأكلون وما تدخرون في بيوتكم إن في ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ﴿٤٩﴾

५०. और मैं 'तौरात' की जो मुझ से पहले की है तसदीक़ करता हूँ और इस लिए आया हूँ कि कुछ ऐसी चीज़ें जो तुम्हारे लिए 'हराम' (वर्जित) कर दी गई थीं उन्हें तुम्हारे लिए 'हलाल' (वैध) कर दूं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की निशानी ले कर आया हूँ, तो तुम अल्लाह का डर रक्खो और मेरा कहना मानो।

50. And (I come) confirming that which was before me of the Torah, and to make lawful some of that which was forbidden unto you. I come unto you with a sign from your Lord, so keep your duty to Allah and obey me.

ومصدقا لما بين يدي من التوراة ولأحل لكم بعض الذي حرم عليكم وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ﴿٥٠﴾

५१. निस्सन्देह अल्लाह ही मेरा भी 'रब' है और तुम्हारा भी 'रब', तो उसी की बन्दगी करो। यह सीधा मार्ग है।

51. Lo! Allah is my Lord and your Lord, so worship Him. That is a straight path.

إن الله ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ﴿٥١﴾

५२. फिर जब ईसा ने उन के कुफ़्र को भाँप लिया, तो कहा "कौन अल्लाह की ओर (बढ़ने में) मेरा मददगार होता है?" हवारियों (मसीह के साथियों और शागिरदों) ने कहा: हम अल्लाह के मददगार हैं। हम अल्लाह पर 'ईमान' लाये, और गवाह रहो कि हम 'मुस्लिम' हैं।

52. But when Jesus became conscious of their disblief, he cried: Who will be my helpers in the cause of Allah? The disciples said: We will be Allah's helpers. We believe in Allah, and bear thou witness that we have surrendered (unto Him).

فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصاري إلى الله قال الحواريون نحن أنصار الله آمنا بالله واشهد بأنا مسلمون ﴿٥٢﴾

५३. हे 'रब'! जो कुछ तू ने उतारा है हम उस पर 'ईमान' लाये और 'रसूल' के अनुयायी हुये। तो तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले।

53. Our Lord! We believe in that which Thou hast revealed and we follow him whom Thou hast sent. Enroll us among those who witness (to the truth)

ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشاهدين ﴿٥٣﴾

५४. और वे गुप्त चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका गुप्त तोड़ किया, और अल्लाह उत्तम तोड़ करने वाला है।

54 And they (the disbelievers) schemed, and Allah schemed (against them): and Allah is the best of schemers.

ومكروا ومكر الله والله خير الماكرين ﴿٥٤﴾ ع

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. जब कि अल्लाह ने कहा : हे ईसा ! अब मैं तुझे वापस बुला लेने वाला हूँ, और तुझे अपनी ओर उठा लेने वाला हूँ, और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है उन से तुझे पाक कर दूंगा। और तेरे अनुयायियों को 'क़ियामत' तक उन लोगों पर प्रभुत्व प्रदान करूँगा, जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है। फिर मेरी ओर तुम सब को पलटना होगा, फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दूंगा जिन के बारे में तुम विभेद करते रहे हो।

५६. तो जिन लोगों नें 'कुफ़्र' किया उन्हें दुनिया और 'आखिरत' में कड़ी यातना दूंगा; और उन का कोई सहायक न होगा।

५७. रहे वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये तो उन को बदला देगा। और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

५८. ये हमारी 'आयतें' और 'हिकमत' भरी वाणी है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

५९. निस्सन्देह अल्लाह के नज़दीक ईसा की मिसाल आदम की-सी है, कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उसे कहा : हो जा ! तो वह हो गया।

६०. यही बात तुम्हारे 'रब' की ओर से सत्य है तो तुम सन्देह करने वालों में से न बनो।

६१. इस के पश्चात् कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है अब जो तुम से इस बारे में हुज्जत करे, तो तुम कहो : आओ ! हम और तुम अपने-अपने बेटों और स्त्रियों को बुला लें, और हम अपने आप को इकट्ठा करें और तुम भी अपने आप को इकट्ठा करो; फिर प्रार्थना करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें।

६२. निस्सन्देह यही सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई 'इलाह' नहीं, और निस्सन्देह अल्लाह ही प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

६३. फिर यदि ये लोग मुँह मोड़ें, तो निस्सन्देह अल्लाह फ़सादियों को जानता है।

55. (And remember) when Allah said: O Jesus! Lo! I am gathering thee and causing thee to ascend unto Me, and am cleansing thee of those who disbelieve and am setting those who follow thee above those who disbelieve until the Day of Resurrection. Then unto Me ye will (all) return, and I shall judge between you as to that wherein ye used to differ

56. As for those who disbelieve, I shall chastise them with a heavy chastisement in the world and the Hereafter; and they will have no helpers.

57. And as for those who believe and do good works, He will pay them their wages in full. Allah loveth not wrongdoers.

58. This (which) We recite unto thee is a revelation and a wise reminder.

59. Lo! the likeness of Jesus with Allah is as the likeness of Adam. He created him of dust, then He said unto him: Be! and he was.

60. (This is) the truth from thy Lord (O Muhammad), so be not thou of those who waver.

61. And whose disputeth with thee concerning him, after the knowledge which hath come unto thee, say (unto him): Come! We will summon our sons and your sons, and our women and your women, and ourselves and yourselves, then we will pray humbly (to our Lord) and (solemnly) invoke the curse of Allah upon those who lie

62. Lo! This verily is the true narrative. There is no God save Allah, and lo! Allah is the Mighty, the Wise.

63. And if they turn away, then lo! Allah is Aware of (who are) the corrupters.

إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسٰى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ
وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ
اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾
فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِنْ نّٰصِرِينَ ﴿٥٦﴾
وَأَمَّا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِينَ ﴿٥٧﴾
ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ
وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾
إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ
اٰدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ
قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾
فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا
نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَ
نِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَ
أَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ
لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ ﴿٦١﴾
إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ
وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. कहो : हे 'किताब वालो' ! उस चीज़ की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य एवं सिद्ध है : यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की 'इबादत' (बन्दगी) न करें और न उस के साथ किसी चीज़ को शरीक ठहरायें, और न हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा 'रब' बनाये,—फिर यदि वे इस से मुँह मोड़ें तो कह दो : गवाह रहो हम तो 'मुस्लिम' हैं।

६५. हे 'किताब वालो' ! तुम इबराहीम के बारे में क्यों हुज्जत करते हो, 'तौरात' और 'इन्जील' तो उस के बाद उतारी गई हैं ? क्या तुम समझते नहीं हो ?

६६. तुम्हीं हो कि उन चीज़ों के बारे में हुज्जत कर के देख लिया जिस का तुम्हें कुछ ज्ञान था : अब उस चीज़ के विषय में क्यों हुज्जत करते हो जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान नहीं ? और अल्लाह जानता है। तुम नहीं जानते।

६७. इबराहीम न 'यहूदी' था, और न 'ईसाई;' बल्कि वह तो सब से कट कर एक (अल्लाह) का हो रहने वाला मुस्लिम था, और वह 'मुश्रिकों' में से न था।

६८. निस्सन्देह इबराहीम से सब से अधिक निकटवर्ती तो वे लोग हैं जिन्हों ने उस का अनुसरण किया, और यह 'नबी' और 'ईमान' लाने वाले लोग; और अल्लाह 'ईमान' वालों का संरक्षक-मित्र है।

६९. 'किताब वालों' में से एक गरोह चाहता है कि क्या अच्छा हो कि तुम्हें मार्ग-भ्रष्ट कर सकें जब कि वे अपने आप को ही भटका रहे हैं, परन्तु वे समझते नहीं हैं।

७०. हे 'किताब वालो' ! अल्लाह की 'आयतों' का क्यों इन्कार करते हो, जब कि तुम गवाह हो।[१३]

64. Say: O People of the Scripture! Come to an agreement between us and you: that we shall worship none but Allah, and that we shall scribe no partner unto Him, and that none of us shall take others for lords beside Allah. And if they turn away, then say: Bear witness that we are they who have surrendered unto Him).

65. O People of the Scripture! Why will ye argue about Abraham, when the Torah and the Gospel were not revealed till after him? Have ye then no sense?

66. Lo! ye are those who argue about that whereof ye have some knowledge: Why then argue ye concerning that whereof ye have no knowledge? Allah knoweth Ye know not.

67. Abraham was not a Jew, nor yet a Christian; but he was an upright man who had surrendered (to Allah), and he was not of the idolaters.

68. Lo! those of mankind who have the best claim to Abraham are those who followed him, and this Prophet and those who believe (with him); and Allah is the Protecting Friend of the believers.

69. A party of the people of the Scripture long to make you go astray; and they make none to go astray except themselves, but they perceive not.

70. O People of the Scripture! Why disbelieve ye in the revelations of Allah, when ye (yourselves) bear witness (to their truth)?

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ
كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا
نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ
شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا
أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟
فَقُولُوا۟ ٱشْهَدُوا۟ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ٦٤
يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ
إِبْرَٰهِيمَ وَمَآ أُنزِلَتِ ٱلتَّوْرَىٰةُ وَٱلْإِنجِيلُ
إِلَّا مِنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٥
هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ حَٰجَجْتُمْ فِيمَا
لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا
لَيْسَ لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ
وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٦٦
مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا
نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا
وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ٦٧
إِنَّ أَوْلَى ٱلنَّاسِ بِإِبْرَٰهِيمَ لَلَّذِينَ
ٱتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا ٱلنَّبِىُّ وَٱلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٦٨
وَدَّت طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ
لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ
أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ٦٩
يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ
ٱللَّهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ٧٠

१३. या जब कि तुम्हारा दिल स्वयं उन के सत्य होने की गवाही दे रहा है और तुम उन के सत्य होने की निशानियाँ अपनी आँखों से देख रहे हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१. हे 'किताब वालो' ! क्यों सत्य को असत्य के साथ गड्ड-मड्ड करते हो और तुम जानते-बूझते सत्य को क्यों छिपाते हो ?

७२. 'किताब वालों' में से एक गरोह कहता है कि 'ईमान' वालों पर जो कुछ उतरा है, उस पर दिन के आरम्भ में 'ईमान' लाओ, और उस के अन्त में (शाम को) इन्कार कर दो, ताकि वे भी फिर जायें ।

७३. और तुम अपने धर्म के अनुयायियों के सिवा किसी और पर विश्वास न करो—(हे मुहम्मद !) उन से कह दो : मार्ग-दर्शन तो बस अल्लाह का मार्ग-दर्शन है—कहीं ऐसा न हो कि जैसी चीज़ तुम्हें दी गई है वह किसी और को भी मिल जाये या वे तुम से तुम्हारे 'रब' के सामने हुज्जत करें । कह दो : फ़ज़्ल (कृपा) तो अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है । और अल्लाह बहुत समाई वाला और जानने वाला है ।

७४. वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता के लिए ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है ।

७५. 'किताब वालों' में ऐसे लोग भी हैं, कि यदि उन के पास धन-दौलत का एक ढेर भी अमानत रख दो, तो वे (माँगते ही) उसे तुम्हें अदा कर देगें । और उन में वे भी हैं कि यदि तुम एक दीनार भी उन की अमानत में रख दो, तो जब तक कि उन के सिर पर सवार न रहो वे कभी अदा नहीं कर सकते । यह इसलिए कि वे कहते हैं कि इन 'उम्मियों' के बारे में हम पर कोई आरोप नहीं । और जानते-बूझते अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर झूठ बोलते हैं, जब कि वे जानते हैं ।

७६. हाँ जो लोग उस की प्रतिज्ञा पूरी करेंगे और (अल्लाह का) डर रक्खेंगे तो अल्लाह डर रखने वालों से प्रेम करता है ।

71. O People of the Scripture! Why confound ye truth with falsehood and knowingly conceal the truth?

72. And a party of the People of the Scripture say: Believe in that which hath been revealed unto those who believe at the opening of the day, and disbelieve at the end thereof, in order that they may return;

73. And believe not save in one who followeth your religion—Say (O Muhammad): Lo! the guidance is Allah's guidance—that any one is given the like of that which was given unto you or that they may argue with you in the presence of their Lord. Say (O Muhammad): Lo! the bounty is in Allah's hand. He bestoweth it on whom He will. Allah is All-Embracing, All-Knowing.

74. He selecteth for His mercy whom He will. Allah is of infinite bounty.

75. Among the People of the Scripture there is he who, if thou trust him with a weight of treasure, will return it to thee. And among them there is he who, if thou trust him with a piece of gold, will not return it to thee unless thou keep standing over him. That is because they say: We have no duty to the Gentiles. They speak a lie concerning Allah knowingly.

76. Nay, but (the chosen of Allah is) he who fulfilleth his pledge and wardeth off (evil); for lo! Allah loveth those who ward off (evil).

يَٰأَهْلَ الْكِتَٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ
بِالْبَٰطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾
وَقَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ
آمِنُوا بِالَّذِي أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ
آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا
آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾
وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ
قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَى اللَّهِ أَن
يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ
يُحَاجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن
يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾
يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾
وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ
بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُم مَّنْ
إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ
إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي
الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ
عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾
بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ
فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. रहे वे लोग, जो अल्लाह् की प्रतिज्ञा[१४] और अपनी क़समों का थोड़े मूल्य पर सौदा करते हैं, उन के लिए 'आख़िरत' में कोई हिस्सा नहीं। और उन से न तो अल्लाह् क़ियामत' के दिन बात करेगा और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करेगा। उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

७८ और उन में कुछ ऐसे लोग हैं, जो किताब पढ़ते हुये अपनी ज़ुबानों का उलट-फेर करते हैं, कि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, जब कि वह किताब में से नहीं होता। और वे कहते हैं : यह अल्लाह की ओर से है, और वह अल्लाह की ओर से नहीं ; वे जान-बूझ कर अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर झूठ बोलते हैं।

७९. किसी मनुष्य को यह शोभनीय नहीं कि अल्लाह उसे 'किताब', निर्णय-शक्ति और 'नुबूवत' प्रदान करे फिर वह लोगों से कहे कि तुम अल्लाह के सिवा मेरे बन्दे हो जाओ ; अपितु वह तो यही कहेगा कि तुम 'रब्बानी' (अल्लाह वाले, धर्माधिकारी) बनो ; इस लिए कि तुम किताब की शिक्षा देते हो, और इस लिए कि तुम स्वयं भी पढ़ते हो।

८०. और वह तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं दे सकता कि तुम 'फ़िरिश्तों' और 'नबियों' को 'रब' बना लो। क्या वह तुम्हें 'कुफ़्' का हुक्म देगा इस के पश्चात् कि तुम मुस्लिम हो।[१५]

77. Lo! those who purchase a small gain at the cost of Allah's covenant and their oaths, they have no portion in the Hereafter. Allah will neither speak to them nor look upon them on the Day of Resurrection, nor will He make them grow. Theirs will be a painful doom.

78. And lo! there is a party of them who distort the Scripture with their tongues, that ye may think that what they say is from the Scripture, when it is from the Scripture., And they say: It is from Allah, when it is not from Allah; and they speak a lie concerning Allah knowingly.

79. It is not (possible) for any human being unto whom Allah had given the Scripture and wisdom and the Prophethood that he should afterwards have said unto mankind: Be slaves of me instead of Allah; but (what he said was): Be ye faithful servants of the Lord by virtue of your constant teaching of the Scripture and of your constant study thereof.

80. And he commanded you not that ye should take the angels and the Prophets for lords. Would he command you to disbelieve after ye had surrenedered (to Allah)?

ان الذين يشترون بعهد
الله وايمانهم ثمنا قليلا
اولئك لا خلاق لهم في
الاخرة ولا يكلمهم الله
ولا ينظر اليهم يوم القيمة
ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم ۝
وان منهم لفريقا يلون
السنتهم بالكتب لتحسبوه من
الكتب وما هو من الكتب و
يقولون هو من عند الله وما هو
من عند الله ويقولون على الله
الكذب وهم يعلمون ۝
ما كان لبشر ان يؤتيه الله الكتب
والحكم والنبوة ثم يقول
للناس كونوا عبادا لي من دون
الله ولكن كونوا ربنيين بما كنتم
تعلمون الكتب وبما كنتم تدرسون ۝
ولا يأمركم ان تتخذوا الملئكة
والنبيين اربابا ايأمركم
بالكفر بعد اذ انتم مسلمون ۝

१४. अर्थात् अल्लाह् से की हुई प्रतिज्ञा।

१५. इस से मालूम होता है कि जिन जातियों में अल्लाह् की पूजा और भक्ति के अतिरिक्त देवी, देवताओं, फ़िरिश्तों, महापुरुषों और दूसरी चीज़ों की पूजा होती है, वह लोगों की अपनी घड़ी हुई हैं; अल्लाह् कब इसे पसन्द कर सकता है कि उस के बन्दे उसे छोड़ कर किसी और को अपना मालिक और पूज्य बना लें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१. और याद करो जब 'नबियों' (द्वारा उन के अनुयायियों) से वचन लिया कि जो कुछ मैं ने तुम्हें 'किताब' और 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की, तो फिर तुम्हारे पास एक 'रसूल' उस की तसदीक़ करता हुआ आयेगा जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम उस पर 'ईमान' लाना और उस की सहायता करना। पूछा, "क्या तुम ने इक़रार किया, और इस में मेरी ओर से डाली हुई भारी ज़िम्मेदारी तुम नें उठाई?" उन्हों नें कहा, "हम ने इक़रार किया।" कहा, "तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।"

८२. तो इस के बाद जो फिर जायेंगे : वही अवज्ञाकारी होंगे [१६] !

८३. क्या ये अल्लाह के 'दीन' [१७] के सिवा कोई और दीन चाहते हैं, जब कि जो आकाशों और धरती में हैं, स्वेच्छापूर्वक या विवशतापूर्वक उसी के आज्ञाकारी हैं, और वे उसी की ओर लौटाए जायेंगे।

८४. कह दो : हम तो अल्लाह पर और उस चीज़ पर 'ईमान' ले आये जो हम पर उतारी गई और उस चीज़ पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान पर उतारी गई, और उस चीज़ पर जो मूसा, ईसा और दूसरे 'नबियों' को उन के 'रब' की ओर से दी गई। हम उन में से किसी के बीच कोई अन्तर नहीं करते, और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

८५. जो 'इस्लाम' के सिवा कोई और 'दीन' चाहेगा तो वह कभी उस से क़बूल नहीं किया जायेगा, और वह 'आखिरत' में टोटा पानें वालों में से होगा।

81. When Allah made (His) covenant with the Prophets (He said): Behold that which I have given you of the Scripture and knowledge. And afterward there will come unto you a messenger, confirming that which ye posses. Ye shall believe in him and ye shall help him. He said: Do ye agree, and will ye take up My burden (which I lay upon you) in this (matter)? They answered: We agree. He said: Then bear ye witness. I will be a witness with you.

82. Then whosoever after this shall turn away, they will be miscreants.

83. Seek they other than the religion of Allah, when unto Him submited whosoever is in the heavens and the earth, willingly, or unwillingly, and unto Him they will be returned.

84. Say (O Muhammad): We believe in Allah and that which is revealed unto us and that which was revealed unto Abraham and Ismael and Isaac and Jacob and the tribes, and that which was vouchsafed unto Moses and Jesus and the Prophets from their Lord. We make no distinction between any of them, and unto Him we have surrendered.

85. And whoso seeketh as religion other than the Surrender (to Allah) it will not be accepted from him, and he will be a loser in the Hereafter.

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ
لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ
ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ
لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَ
لَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَ
أَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا
أَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ
مِنَ الشَّاهِدِينَ ٨١
فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ٨٢
أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ
مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ٨٣
قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ
عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ
وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَ
عِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ٨٤
وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا
فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ٨٥

१६. यह किताब वालों को चेतावनी दी जा रही है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल० का इन्कार कर के उस इक़रार (प्रतिज्ञा) को तोड़ रहे हैं, जो उन से लिया गया है।

१७. अल्लाह के 'दीन' का तात्पर्य अल्लाह का आज्ञापालन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.Ih Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८६. अल्लाह उन लोगों को कैसे मार्ग दिखायेगा जिन्हों ने अपने 'ईमान' के बाद 'कुफ़्' किया जब कि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह 'रसूल' सच्चा है और उन के पास स्पष्ट निशानियाँ भी आ चुकी हैं। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

८७. उन लोगों का बदला यह है कि उन पर अल्लाह और 'फ़िरिश्तों' और सारे मनुष्यों की फिटकार होगी।

८८. वे उस में सदैव रहेंगे। न उन की यातना हल्की होगी, और न कभी उन्हें अवकाश ही दिया जायेगा;

८९. अलबत्ता जिन लोगों ने इस के बाद 'तौबा' की और सुधार लिया तो निस्सन्देह अल्लाह क्षमाशील और दया करने वाला है।

९०. रहे वे लोग जिन्हों ने अपने 'ईमान' के बाद 'कुफ़्' किया, फिर 'कुफ़्' में बढ़ते गये : उन की 'तौबा' कदापि स्वीकार नहीं होगी। और यही राह से भटके हुये लोग हैं।

९१. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया, और 'काफ़िर' ही रह कर मर गये, तो उन में से किसी से धरती भर भी सोना स्वीकार न किया जायेगा चाहे वह ('जहन्नम' से बचने के लिए) बदले में इसे दे भी। उन के लिए दुखदायिनी यातना है और उन का कोई सहायक न होगा।

*९२. तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते जब तक कि अपनी उन चीज़ों में से न ख़र्च करो जो तुम्हें प्रिय हैं। और जो चीज भी तुम ख़र्च करोगे, तो अल्लाह उस का जानने वाला है।

९३. खाने की सारी चीज़ें 'इसराईल' की सन्तान के लिए वैध थीं, उन चीज़ों के अतिरिक्त, जिन्हें 'इसराईल' ने 'तौरात' के उतारे जाने के पूर्व अपने लिए अवैध कर लिया था। कहो : यदि तुम सच्चे हो तो 'तौरात' लाओ और उसे पढ़ो।

९४. तो जो इस के बाद भी अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर झूठ गढ़ें, तो वही लोग ज़ालिम हैं।

*यहाँ से चौथा पारा (Part IV) शुरू होता है।

86. How shall Allah guide a people who disbelieved after their belief and (after) they bore witness that the messenger is true and after clear proofs (of Allah's sovereignty) had come unto them. And Allah guideth not wrongdoing folk.

87. As for such, their guerdon is that on them rests the curse of Allah and of angels and of men combined.

88. They will abide therein. Their doom will not be lightened, neither will they be reprieved;

89. Save those who afterward repent and do right. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

90. Lo! those who disbelieve after their (profession of) belief, and afterward grow violent in disbelief: their repentance will not be accepted. And such are those who are astray.

91. Lo! those who disbelieve, and die in disbelief, the (whole) earth full of gold would not be accepted from such an one if it were offered as a ransom (for his soul). Theirs will be a painful doom and they will have no helpers.

92. Ye will not attain unto piety until ye spend of that which ye love. And whatsoever ye spend, Allah is aware thereof.

93. All food was lawful unto the children of Israel, save that which Israel forbade him self, (in days) before the Torah was revealed. Say: Produce the Torah and read it (unto us) if ye are truthful.

94. And whoever shall invent a falsehood after that concerning Allah, such will be wrongdoers.

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا
بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ
الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾
أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ
اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾
خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٨﴾
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ
وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٨٩﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ
ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ
كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ
مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ
بِهِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٩١﴾
لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنْفِقُوا مِمَّا
تُحِبُّونَ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾
كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِبَنِي
إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ
عَلَىٰ نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ
التَّوْرَاةُ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ
فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾
فَمَنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ
بَعْدِ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५. कहो : अल्लाह ने सच कहा है। तो इबराहीम के पन्थ का पालन करो, जो हर ओर से कट कर एक (अल्लाह) का हो गया था। और मुश्रिकों में से न था।

९६. निस्सन्देह पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, सारे संसार के लिए बरकत और मार्ग-दर्शन का केन्द्र है;

९७. वहाँ स्पष्ट निशानियाँ हैं, इबराहीम का वास स्थान है ; जिस ने उस में प्रवेश किया वह निश्चिन्त हुआ[१८]। और लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जो वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य रखते हैं उस घर का हज्ज करें। और जिस ने 'कुफ़्' किया तो अल्लाह सारे संसार से बे-परवाह है।

95. Say: Allah speaketh truth. So follow the religion of Abraham, the upright. He was not of the idolaters.

96. Lo! the first Sanctuary appointed for mankind was that at Becca, a blessed place, a guidance to the peoples;

97. Wherein are plain memorials (of Allah's guidance); the place where Abraham stood up to pray; and whosoever entereth it is safe. And pilgrimage to the House is a duty unto Allah for mankind, for him who can find a way thither. As for him who disbelieveth, (let him know that) lo! Allah is Independent of (all) creatures.

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌ ۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾

९८. कहो : हे 'किताब वालो' ! तुम अल्लाह की 'आयतों' का क्यों इन्कार करते हो, जब कि जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह वह सब देख रहा है।

98. Say: O People of the Scripture! Why disbelieve ye in the revelations of Allah, when Allah (Himself) is Witnesss of what ye do?

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

९९. कहो : हे 'किताब वालो' ! तुम क्यों 'ईमान' लाने वालों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हो, तुम उस में कजी पैदा करना चाहते हो जब कि तुम गवाह हो और तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से बे-ख़बर नहीं है।

१००. हे 'ईमान' लाने वालो ! यदि तुम ने इन 'किताब वालों' में से एक गरोह की बात मान ली तो ये तुम्हारे 'ईमान' के पश्चात् फिर तुम्हें 'काफ़िर' बना देंगे।

99. Say: O People of the Scripture! Why drive ye back believers from the way of Allah, seeking to make it crooked, when ye are witnesses (to Allah's guidance)? Allah is not unaware of what ye do.

100. O ye who believe! If ye obey a party of those who have received the Scripture, they will make you disbelievers after your belief.

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

१०१. और अब तुम 'कुफ़्' कैसे अपना सकते हो, जब कि तुम्हें अल्लाह की 'आयतें' पढ़ कर सुनाई जा रही हैं, और तुम्हारे बीच उस का 'रसूल' मौजूद है ? और जो अल्लाह को मज़बूती से पकड़ेगा तो वही है जो मार्ग पर लग गया।

१०२. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का डर रक्खो[१९] जैसा कि उस से डर रखने का हक़ है, और मरो तो इस दशा में कि तुम 'मुस्लिम' हो।

101. How can ye disbelieve, when Allah's revelations are recited unto you, and His messenger is in your midst? He who holdeth fast to Allah, he indeed is guided unto a right path.

102. O ye who believe! Observe your duty to Allah with right observance, and die not save as those who have surrendered (unto Him);

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

१८. क़ुरआन उतरने से पहले भी इस घर का इतना आदर किया जाता था कि ख़ून के प्यासे दुश्मन एक-दूसरे को वहाँ देखते थे, परन्तु कोई किसी पर हाथ नहीं उठा सकता था।

१९. अर्थात् तुम्हारे अन्दर उस का 'तक़्वा' होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३. और सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ो और फूट में न पड़ो। और अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो उस ने तुम पर की है : तुम एक-दूसरे के शत्रु थे, तो उस ने तुम्हारे दिलों को परस्पर एक-दूसरे से जोड़ दिया तो तुम उस की कृपा से भाई-भाई हो गये ; और तुम आग के एक गड्ढे के बिल्कुल किनारे खड़े थे,[20] तो अल्लाह ने तुम्हें उस से बचा लिया। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतों' को स्पष्ट करता है, ताकि तुम मार्ग पा लो।

103. And hold fast, all of you together, to the cable of Allah, and do not separate. And remember Allah's favour unto you: how ye were enemies and He made friendship between your hearts so that ye became as brothers by His grace; and (how) ye were upon the brink of an abyss of fire,, and He did save you from it. Thus Allah maketh clear His revelations unto you, that haply ye may be guided.

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

१०४. और चाहिए कि तुम में एक गरोह ऐसा हो जो लोगों को नेकी की ओर बुलाये, और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके। और यही वे लोग हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

104. And there may spring from you a nation who invite to goodness, and enjoin right conduct and forbid indecency. Such are they who are sucessful.

وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

१०५. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन में फूट पड़ गई और इस के बाद कि उन के पास खुली दलीलें आ चुकी थीं वे आपस में विभेद करने लगे। और वही हैं जिन के लिए बड़ी यातना है।

105. And be ye not as those who separated and disputed become unto them. For such after the clear proofs had there is an awful doom.

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

१०६. उस दिन कितने चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने चेहरे काले पड़ जायेंगे ; जिन के मुँह काले पड़ जायेंगे, (उन से कहा जायेगा) : क्या अपने 'ईमान' के बाद तुम ने 'कुफ़्' किया ? तो जो 'कुफ़्' तुम करते थे उस के बदले में 'यातना' का मज़ा चखो।

106. On the day when (some) faces will be whitened and (some) faces will be blackened; and as for those whose faces have been blackened it will be said unto them: Disbelieved ye after your (profession of) belief? Then taste the punishment for that ye disbelieved.

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

१०७. रहे वे लोग जिन के चेहरे उज्ज्वल होंगे, वे अल्लाह की दयालुता की छाया में होंगे वे उसी में सदैव रहेंगे।

107. As for those whose faces have been whitened, lo! in the mercy of Allah they dwell for ever.

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾

१०८. ये अल्लाह की 'आयतें' हैं, जिन्हें हम तुम्हें हक़ के साथ सुना रहे हैं। और अल्लाह दुनिया वालों पर कोई ज़ुल्म करना नहीं चाहता।

108. These are revelations of Allah. We recite them unto thee in truth. Allah willeth no injustice to (His) creatures.

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾

१०९. और जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है सब अल्लाह ही के लिए है ; और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

109. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth; and unto Allah all things are returned.

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿١٠٩﴾

२०. इस्लाम' से पहले अरब के लोगों की जो दशा थी उसकी ओर संकेत किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११०. तुम उत्तम समुदाय हो, जो लोगों में पैदा हुआ, भलाई का हुक्म देते हो, और बुराई से रोकते हो;[२१] और अल्लाह पर 'ईमान' रखते हो। और यदि 'किताब वाले' भी 'ईमान' लाते तो उन के लिए अच्छा होता। उन में 'ईमान' वाले भी हैं; और उन के अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

110. Ye are the best community that hath been raised up for mankind. Ye enjoin right conduct and forbid indecency; and ye believe in Allah. And if the People of the Scripture had believed, it had been better for them. Some of them are believers; but most of them are evil-livers.

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ
تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۗ وَلَوْ
آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا
لَهُمْ ۚ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿١١٠﴾

१११. सिवाय थोड़ा दुख पहुँचाने के वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। और यदि वे तुम से युद्ध करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखायेंगे। फिर उन्हें कहीं से सहायता भी न मिल सकेगी।

111. They will not harm you save a trifling hurt, and if they fight against you they will turn and flee. And afterward they will not be helped

لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۖ وَإِنْ
يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ
ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١١١﴾

११२. वे जहाँ-कहीं पाये गये उन पर अपमान एवं तिरस्कार थोप दिया गया, कहीं अल्लाह के ज़िम्मे या मनुष्यों के ज़िम्मे में शरण मिल गई तो यह और बात है। वे अल्लाह का प्रकोप ले कर लौटे हैं, और उन पर अनुत्साहता एवं दशाहीनता थोप दी गई है। यह इस लिए कि ये अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार और 'नबियों' को नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं। यह इस लिए कि इन्हों ने अवज्ञा की और सीमोल्लंघन करते रहे हैं।

112. Ignominy shall be their portion wheresoever they are found save (where they grasp) a rope from Allah and a rope from men. They have incurred anger from their Lord, and wretchedness is laid upon them. That is because they used to disbelieve the revelations of Allah, and slew the Prophets wrongfully. That is because they were rebellious and used to transgress.

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا
ثُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ
مِنَ النَّاسِ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ
اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ
ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾

११३. सब एक-जैसे नहीं हैं। इन 'किताब वालों' में एक गरोह (अपने वचन पर) क़ायम है, ये रातों में अल्लाह की 'आयतें' पढ़ते हैं और 'सजदे' करते हैं।

113. They are not all alike. Of the People of the Scripture there is a staunch community who recite the revelations of Allah in the night season, falling prostrate (before Him).

لَيْسُوا سَوَاءً ۗ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ
آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾

११४. अल्लाह और अन्तिम[२२] दिन पर 'ईमान' रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और भलाई के कामों में अग्रसर रहते हैं। और ये अच्छे लोगों में से हैं।

114. They believe in Allah and the Last Day, and enjoin right conduct and forbid indecency, and vie one with another in good works. They are of the righteous.

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ
يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ
وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾

११५. और जो नेकी भी ये करेंगे, उस की उपेक्षा नहीं की जायेगी। और अल्लाह डर रखने वालों को भली-भाँति जानता है।

115. And whatever good they do, they will not be denied the meed thereof. Allah is Aware of those who ward off (evil).

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾

११६. रहे वे लोग जिन्हों ने 'कुफ़्' किया तो अल्लाह के मुक़ाबिल न उन के माल उन के कुछ काम आ सकेंगे और न उन की औलाद; और वे आग ('जहन्नम' में जाने) वाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे।

116. Lo! the riches and the progeny of those who disbelieve will not avail them aught against Allah; and such are rightful owners of the Fire. They will abide therein

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ
وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

२१. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अनुयायियों को बताया जा रहा है कि तुम्हें इस पद पर नियुक्त किया गया है कि तुम लोगों को जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाओ। तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास होना चाहिए।

२२. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७. इस सांसारिक जीवन में जो कुछ भी वे ख़र्च करते हैं उस की उपमा ऐसी है जैसे हवा हो जिस में पाला हो, और वह उन लोगों की खेती पर चल जाये जिन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है, और उसे विनष्ट कर के रख दे। और अल्लाह ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ये स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म ढा रहे हैं।

११८. हे 'ईमान' लाने वालो! अपनों के सिवा दूसरों को अपना भेदी न बनाओ, ये तुम्हें क्षति पहुँचाने में कुछ भी उठा नहीं रक्खेंगे[२३] ये उसी चीज़ के इच्छुक हैं जिस बात से भी तुम ज़हमत में पड़ जाओ इन का द्वेष तो इन के मुँह से व्यक्त हो चुका है, और जो कुछ इन के सीने छिपाये हुये हैं वह इस से भी बढ़ कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लो तो हम ने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल कर बयान कर दी हैं।

११९. यह तुम्हीं हो कि जो उन से प्रेम करते हो और वे तुम से प्रेम नहीं करते, जब कि तुम समस्त किताबों पर 'ईमान' रखते हो। और जब वे तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तो 'ईमान' लाये हुये हैं; और जब अलग होते हैं तो तुम पर क्रोध के मारे उँगलियाँ काटते हैं। कह दो : तुम अपने क्रोध में मर रहो! निस्सन्देह अल्लाह सीनों के भेद को भली-भाँति जानता है।

१२०. तुम्हारा कोई भला होता है, तो उन्हें बुरा लगता है, और जब तुम पर कोई तकलीफ़ आ पड़ती है तो उस से ये प्रसन्न होते हैं। और यदि तुम धैर्य से काम लो और (अल्लाह का) डर रक्खो तो इन की चाल तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकती। ये जो कुछ कर रहे हैं निस्सन्देह अल्लाह उसे अपने घेरे में लिये हुये है।

१२१. और याद करो जब तुम सवेरे अपने घर से निकले 'ईमान' वालों को ('उहुद' के मैदान में) युद्ध के लिए मोरचों पर नियुक्त करने के लिए, और अल्लाह सुनता और जानता है।

117. The likeness of that which they spend in this life of the world is as the likeness of a biting, icy wind which smiteth the harvest of a people who have wronged themselves, and devastateth it. Allah wronged them not, but they did wrong themselves.

118. O ye who believe! Take not for intimates others than your own folk, who would spare no pains to ruin you; they love to hamper you. Hatred is revealed by (the utterance of) their mouths, but that which their breasts hide is greater. We have made plain for you the revelations if ye will understand.

119. Lo! ye are those who love them though they love you not and ye believe in all the Scripture. When they fall in with you they say: We believe; but when they go apart they bite their finger tips at you for rage. Say: Perish in your rage! Lo! Allah is Aware of what is hidden in (your) breasts.

120 If a lucky chance befall you, it is evil unto them, and if disaster strike you they rejoice thereat. But if ye persevere and keep from evil their guile will never harm you. Lo! Allah is Surrounding what they do

121. And remember when thou settedest forth at daybreak from thy housefolk to assign to the believers their positions for the battle Alla was Hearer, Knower.

مثل ما ينفقون في هذه الحيوة
الدنيا كمثل ريح فيها صر
اصابت حرث قوم ظلموا انفسهم
فاهلكته ۚ وما ظلمهم الله
ولكن انفسهم يظلمون ﴿١١٧﴾
يايها الذين امنوا لا تتخذوا
بطانة من دونكم لا يالونكم
خبالا ۚ ودوا ما عنتم ۚ قد
بدت البغضاء من افواههم ۚ
وما تخفي صدورهم اكبر ۚ
قد بينا لكم الايت ان كنتم
تعقلون ﴿١١٨﴾
هانتم اولاء تحبونهم ولا
يحبونكم وتؤمنون بالكتب
كله ۚ واذا لقوكم قالوا امنا ۚ
واذا خلوا عضوا عليكم الانامل
من الغيظ ۚ قل موتوا بغيظكم ۚ
ان الله عليم بذات الصدور ﴿١١٩﴾
ان تمسسكم حسنة تسؤهم
وان تصبكم سيئة يفرحوا
بها ۚ وان تصبروا وتتقوا
لا يضركم كيدهم شيئا ۚ
ع ان الله بما يعملون محيط ﴿١٢٠﴾
واذ غدوت من اهلك تبوئ
المؤمنين مقاعد للقتال ۚ
والله سميع عليم ﴿١٢١﴾

२३. यहूदियों की 'औस' और 'ख़ज़रज' के क़बीलों से बहुत पहले से मित्रता चली आ रही थी, जब 'औस' और 'ख़ज़रज' के क़बीले मुसलमान हो गये, तो इस के बाद भी उन्हों ने 'यहूदियों' के साथ अपने सम्बन्ध को बाक़ी रक्खा; परन्तु यहूदी देखने में तो उन के मित्र बने हुये थे लेकिन दिल में उन के साथ बड़ी दुश्मनी रखते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२२. याद करो जब तुम में से दो गरोहों ने साहस छोड़ देना चाहा,[२४] जब कि अल्लाह उन का संरक्षक मित्र था। और 'ईमान वालों' को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

१२३. और 'बद्र' (की लड़ाई) में अल्लाह तुम्हारी मदद कर भी चुका था, जब कि तुम बहुत कमज़ोर थे। तो अल्लाह का डर रक्खो ताकि तुम कृतज्ञता दिखा सको।

१२४. याद करो जब तुम 'ईमान' लाने वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा 'रब' तीन हज़ार 'फ़िरिश्ते' उतार कर तुम्हारी सहायता करे?

१२५. हां, यदि तुम ने धैर्य्य से काम लिया और (अवज्ञा से) बचते रहे और वे तुम पर चढ़ आयें उसी क्षण तुम्हारा 'रब' पांच हज़ार निशान वाले 'फ़िरिश्तों' से तुम्हारी सहायता करेगा।

१२६. और अल्लाह ने इस तुम्हारे लिए केवल शुभ-सूचना बनाया, और ताकि इस से तुम्हारे दिलों को इतमीनान हो जाये। और सहायता तो अल्लाह ही के पास से आती है जो प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

१२७. ताकि 'कुफ़्र' करने वालों के एक हिस्से को काट दे, या उन्हें बुरी तरह परास्त और रुसवा कर दे कि वे असफल हो कर लौटें।

१२८. तुम्हें इस मामले में कोई अधिकार नहीं है—चाहे वह उन्हें क्षमा करे या उन्हें यातना में ग्रस्त करे क्योंकि वे ज़ालिम हैं।

१२९. और जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है सब अल्लाह का है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह क्षमाशील और दया करने वाला है।

122. When two parties of you almost fell away, and Allah was their Protecting Friend. In Allah do believers put their trust.

123. Allah had already given you the victory at Badr, when ye were contemptible. So observe your duty to Allah in order that ye may be thankful.

124. And when thou didst say unto the believers: Is it not sufficient for you that your Lord should support you with three thousand angels sent down (to your help)?

125. Nay but if ye persevere, and keep from evil, and (the enemy) attack you suddenly, your Lord will help you with five thousand angels sweeping on.

126. Allah ordained this only as a message of good cheer for you, and that thereby your hearts might be at rest — Victory cometh only from Allah, the Mighty, the Wise —

127. That He may cut off a part of those who disbelieve, or overwhelm them so that they retire, frustrated.

128. It is no concern at all of thee (Muhammad) whether He relent toward them or punish them; for they are evil-doers.

129. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. He frogiveth whom He will, and punisheth whom He will. Allah is Forgiving, Merciful.

إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ
أَن تَفْشَلَا ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى
اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ
أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾
إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ
أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ
مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ﴿١٢٤﴾
بَلَىٰ ۚ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَ
يَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ
إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾
لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا
خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾
لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ
عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن
يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

२४. यह संकेत क़बीला 'बनू सलमा' और 'बनू हारसा' की ओर है। देखिए 'सूरा' का परिचय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३०. हे 'ईमान' लाने वालो ! यह बढ़ता और चढ़ता ब्याज न खाओ २५ । और अल्लाह का डर रक्खो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो ।

१३१. उस आग से डरो जो 'काफ़िरों' के लिए तैयार है ।

१३२. और अल्लाह और 'रसूल' का कहना मानो ताकि तुम पर दया की जाये ।

१३३. अग्रसर हो अपने 'रब' की क्षमा और उस 'जन्नत' की ओर जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है, यह उन लोगों के लिए तैयार है जो (अल्लाह का) डर रखते हैं ।

१३४. उन लोगों के लिए जो कुशादगी और तंगी प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं, और क्रोध को रोकने वाले हैं और लोगों को क्षमा करने वाले हैं ; और अल्लाह उत्तमकारों से प्रेम करता है ;

१३५. और जिन का हाल यह है कि जब वे कोई अश्लील काम कर गुज़रते हैं या अपने हक़ में कोई ज़ुल्म कर बैठते हैं, तो अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की क्षमा चाहते हैं—और कौन है सिवाय अल्लाह के जो गुनाहों को क्षमा कर सके ? और जानते-बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते ।

१३६. ये लोग हैं कि इन का बदला इन के 'रब' की ओर से क्षमा और ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में सदैव रहेंगे—और क्या ही अच्छा प्रतिदान है काम करने वालों का !

१३७. तुम से पहले कितनी मिसालें२६ बीत चुकी हैं । धरती में चल-फिर कर देखो झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ है ।

130. O ye who believe! Devour not usury, doubling and quadrupling (the sum lent). Observe your duty to Allah, that ye may be successful.

131. And ward off (from yourselves) the Fire prepared for disbelievers.

132. And obey Allah and the messenger, that ye may find mercy.

133. And vie one with another forgiveness from your Lord; and for a Paradise as wide as are the heavens and the earth, prepared for those who ward off (evil);

134. Those who spend (of that which Allah hath given them) in ease and in adversity, those who control their wrath and are forgiving toward mankind; Allah loveth the good; -

135. And those who, when they do an evil thing or wrong themselves, remember Allah and implore forgiveness for their sins—Who forgiveth sins save Allah only?—and will not knowingly repeat (the wrong) they did.

136 The reward of such will be forgiveness from their Lord, and Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide for ever—a bountiful reward for workers!

137. Systems have passed away before you. Do but travel in the land and see the nature of the consequence for those who did deny (the messengers).

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾
وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾
وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾
وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

२५. जिन-जिन चीज़ों से मनुष्य के दिल में कमज़ोरी का रोग पैदा होता है, उन में से एक धन का मोह भी है । ब्याज को हराम ठहराने का एक कारण यह भी है । 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को जो हानि पहुँची थी उस की बड़ी वजह यही थी कि उस अवसर पर कुछ लोगों ने 'रसूल' के हुक्म को भुला दिया और दुश्मनों के छोड़े हुये माल के एकत्र करने में लग गये । देखिए 'सूरा' का परिचय ।

२६. अर्थात् पिछली जातियों के साथ अल्लाह का जो नियम (Manner) रहा है उस की मिसालें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३८. यह लोगों के लिए बयान (और चेतावनी) है, और डर रखने वालों के लिए मार्ग-दर्शन और उपदेश है।

138. This is a declaration for mankind, a guidance and an admonition unto those who ward off (evil).

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّ
مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

१३९. और तुम सुस्त न पड़ो और दुःखी न हो, यदि तुम 'ईमान वाले' हो, तो तुम ही को प्रभुत्व प्राप्त होगा।

139. Faint not nor grieve, for ye will overcome them if ye are (indeed) believers.

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ
الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

१४०. यदि तुम्हें आघात पहुँचे तो उन्हें भी तो ऐसा ही आघात पहुँच चुका है[२७]। और ये दिन हैं जिन को हम लोगों के बीच बदलते रहते हैं; और (तुम पर यह दिन इस लिए लाया गया) ताकि अल्लाह 'ईमान' लाने वालों को जान ले और तुम में से कुछ को शहीद बनाये; और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

140 If ye have received a blow, the (disbelieving) people have received a blow the like thereof. These are (only) the vicissitudes which We cause to follow one another for mankind, to the end that Allah may know those who believe and may choose witnesses from among you; and Allah loveth not wrong-doers.

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ
الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ
الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ
مِنْكُمْ شُهَدَاۗءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

१४१. और (यह इस लिए भी हुआ) ताकि अल्लाह 'ईमान वालों' को निखार दे, और 'काफ़िरों' का ज़ोर तोड़ दे।

141. And that Allah may prove those who believe, and may blight the disbelievers.

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

१४२. क्या तुम ने यह समझ रक्खा है कि 'जन्नत' में प्रवेश करोगे जब कि अल्लाह ने अभी उन्हें तुम में से विभावित ही नहीं किया जिन्हों ने 'जिहाद' (जान तोड़ कोशिश) किया और ताकि विभावित करे धैर्य्य से काम लेने वालों को ?

142. Or deemed ye that ye would enter Paradise while yet Allah knoweth not those of you who really strive, nor knoweth those (of you) who are stead-fast?

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا
مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

१४३. और तुम मृत्यु की,[२८] उस के तुम्हारे अपने सामने आ जाने से पहले कामना कर रहे थे, तो अब वह तुम्हारे सामने आ गई और तुम ने उसे देख लिया !

143. And verily ye used to wish for death before ye met it (in the field). Now ye have seen it with your eyes!

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ
مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ
رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

१४४. और मुहम्मद तो बस एक 'रसूल' हैं, उन से पहले भी 'रसूल' गुज़र चुके हैं। तो क्या यदि वे मर जायें या क़त्ल कर दिये जायें, तो तुम पीठ पीछे फिर जाओगे ? और जो पीठ पीछे फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा, और अल्लाह कृतज्ञता दिखलाने वालों को जल्द बदला देगा।

144. Muhammad is but a messenger, messengers (the like of whom) have passed away before him. Will it be that, when he dieth or is slain, ye will turn back on your heels? He who turneth back doth no hurt to Allah, and Allah will reward the thankful.

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ
اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ
وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ
اللّٰهَ شَـيْـــًٔـا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

२७. 'बद्र' की लड़ाई में।
२८. अर्थात् अल्लाह की राह में शहीद होने और वीर-गति को प्राप्त होने की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४५. और कोई जीव मर नहीं सकता, बिना अल्लाह की अनुज्ञा के एक नियत समय के अनुसार जो लिखा हुआ है। जो दुनिया का बदला चाहते हैं उन्हें हम उस में से देते हैं; और जो 'आख़िरत' का बदला चाहते हैं, उन्हें हम उस में से देंगे[२६] और हम कृतज्ञता दिखलाने वालों को जल्द बदला देंगे।

145. No soul can ever die except by Allah's leave and at a term appointed. Whoso desireth the reward of the world, We bestow on him thereof; and whoso desireth the reward of the Hereafter, We bestow on him thereof. We shall reward the thankful.

وما كان لنفس أن تموت إلا
بإذن الله كتبا مؤجلا ومن
يرد ثواب الدنيا نؤته منها
ومن يرد ثواب الآخرة نؤته
منها وسنجزي الشكرين ١٤٥

१४६. और कितने ही 'नबी' गुज़रे हैं जिन के साथ हो कर बहुत से 'रिब्बियों' (अल्लाह वालों) ने युद्ध किया तो अल्लाह की राह में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उस से न तो उन्हों ने साहस छोड़ा, और न कमज़ोरी दिखाई, और न हथियार डाले। और अल्लाह धैर्यवान लोगों से प्रेम करता है।

146. And with how many a prophet have there been a number of devoted men who fought (beside him). They quailed not for aught that befell them in the way of Allah, nor did they weaken, nor were they brought low. Allah loveth the stead-fast.

وكأين من نبي قتل معه
ربيون كثير فما وهنوا لما
أصابهم في سبيل الله وما ضعفوا
وما استكانوا والله يحب الصبرين ١٤٦

१४७. इन की दुआ तो यही रही कि इन्हों ने कहा कि हमारे 'रब'! हमारे गुनाहों को और हमारे अपने मामले में हम से जो ज़्यादती हो गई हो उसे क्षमा कर दे, हमारे क़दम जमाये रख और 'काफ़िर' गरोह के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।

147. Their cry was only that they said: Our Lord! Forgive us for our sins and wasted efforts, make our foothold sure, and give us victory over the disbelieving folk.

وما كان قولهم إلا أن قالوا
ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا
في أمرنا وثبت أقدامنا وانصرنا
على القوم الكفرين ١٤٧

१४८. तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया में भी बदला दिया और 'आख़िरत' का अच्छा बदला भी और अल्लाह उत्तमकारों से प्रेम करता है।

148. So Allah gave them the reward of the world and the good reward of the Hereafter. Allah loveth those whose deeds are good.

فآتهم الله ثواب الدنيا و
حسن ثواب الآخرة والله
يحب المحسنين ١٤٨

१४९. हे 'ईमान' लाने वालो! यदि तुम उन लोगों के कहने पर चलोगे जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है, तो वे तुम्हें उल्टे पाँव लौटा ले जायेंगे, फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे।

149. O ye who believe! If ye obey those who disbelieve, they will make you turn back on your heels, and ye turn back as losers.

يأيها الذين آمنوا إن تطيعوا
الذين كفروا يردوكم على
أعقابكم فتنقلبوا خسرين ١٤٩

१५०. तुम्हारा संरक्षक–मित्र तो अल्लाह है और वह सब से अच्छा सहायक है।

150. But Allah is your protector, and He is the Best of helpers.

بل الله مولكم وهو
خير النصرين ١٥٠

१५१. हम 'काफ़िरों' के दिलों में जल्द ही धाक बिठा देंगे, इस लिए कि उन्हों ने ऐसी चीज़ों को अल्लाह का शरीक ठहराया है जिनके हक़ में अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। और उन का ठिकाना आग ('जहन्नम') है और ज़ालिमों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

151. We shall cast terror into the hearts of those who disbelieve because they ascribe unto Allah partners, for which no warrant hath been revealed. Their habitation is the Fire, and helpless the abode of the wrong-doers.

سنلقي في قلوب الذين كفروا
الرعب بما أشركوا بالله ما لم
ينزل به سلطنا ومأوىهم
النار وبئس مثوى الظلمين ١٥١

२६. अर्थात् दुनिया ही में जो अपने कामों का बदला चाहेगा उसे अल्लाह दुनिया ही में जो चाहेगा दे देगा; 'आखिरत' में उस का कोई हिस्सा न होगा। और जो लोग 'आखिरत' के लिए काम करेंगे उन्हें अल्लाह 'आखिरत' में अच्छा बदला देगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५२. और अल्लाह ने तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब कि तुम उस के हुक्म से उन्हें क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि तुम स्वयं ढीले पड़ गये और हुक्म में परस्पर झगड़ा किया और अवज्ञा की जब कि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जिस की तुम्हें चाह थी। तुम में कुछ लोग दुनिया चाहते थे; और कुछ 'आख़िरत' के इच्छुक थे, फिर अल्लाह नें तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले। और उस नें तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह 'ईमान वालों' के लिए बड़ा अनुग्रह वाला है।

152. Allah verily made good His promise unto you when ye routed them by His leave, until (the moment) when your courage failed you, and ye disagreed about the order and ye disobeyed, after He had shown you that for which ye long. Some of you desired the world, and some of you desired the Hereafter. Therefore He made you flee from them, that He might try you. Yet now He hath forgiven you. Allah is a Lord of Kindness to believers.

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ
تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ
وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ
ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ
وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ
فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾

१५३. याद करो जब कि तुम भागे चले जा रहे थे और किसी को पलट कर भी न देखते थे, और 'रसूल' तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था, तो अल्लाह ने तुम्हें ग़म के बदले में ग़म दिया ताकि तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ निकल जाये या तुम पर कोई मुसीबत आये, तो तुम दुखी न हो। और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है।

153. When ye climbed (the hill) and paid no heed to any-one, while the messenger, in your rear, was calling you (to fight). Therefor He rewarded you grief for (his) grief, that (He might teach) you not to sorrow either for that which ye missed or for that which befell you. Allah is Informed of what ye do.

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓي
اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا
بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي مَا
فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

१५४. फिर, इस ग़म के बाद, उस ने तुम पर शान्ति उतारी। तुम में से कुछ लोगों को उँघ घेर रही थी और कुछ लोग ऐसे थे जिन्हें अपने प्राणों की चिन्ता थी, ये अल्लाह के प्रति वास्तविकता के विरुद्ध अज्ञान के प्रकार का गुमान करते रहे, वे कहते रहे : भला इन मामलों में हमारा क्या अधिकार। कह दो : मामला तो सारा अल्लाह के अधिकार में है। ये लोग अपने जी में वह कुछ छिपाये हुये हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं कि यदि इस मामले में हमारा भी कुछ अधिकार होता तो हम यहाँ न मारे जाते। कह दो : यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना नियत था निकल कर अपने गिरने के स्थान[३०] तक पहुँच के रहते। और इस लिए कि जो-कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उस की परीक्षा कर ले। और जो-कुछ तुम्हारे दिल में है उसे निखार दे। और अल्लाह को सीनों का सब हाल मालूम है।

154. Then, after grief, He sent down security for you. As slumber did it overcome a party of you, while (the other) party, who were anxious on their own account, thought wrongly of Allah, the thought of ignorance. They said: Have we any part in the cause? Say (O Muhammad): The cause belongeth wholly to Allah. They hide within themselves (a thought) which they reveal not unto thee, saying: Had we had any part in the cause we should not have been slain here. Say Even though ye had been in your houses, those appointed to be slain would have gone forth to the places where they were to lie. (All this hath been) in order that Allah might try what is in your breasts and prove what is in your hearts. Allah is Aware of what is hidden in the breasts (of men).

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى
طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ
مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ
لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا
لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا
هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ
لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ
مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ
قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾

३०. अर्थात् जहाँ मारे गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५५. तुम में से जो लोग दोनों गरोहों की मुठ-भेड़ के दिन पीठ दिखा गये, 'शैतान' ने ही उन की कुछ कमाइयों (कर्मों) के कारण विचलित किया। और अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और सहनशील है।

155. Lo! those of you who turned back on the day when the two hosts met, Satan alone it was who caused them to backslide, because of some of that which they have earned. Now Allah hath forgiven them. Lo! Allah is Forgiving, Clement.

إن الذين تولوا منكم يوم التقى
الجمعن إنما استزلهم الشيطن
ببعض ما كسبوا ولقد عفا الله
عنهم إن الله غفور حليم ١٥٥

१५६. हे 'ईमान' लाने वालो ! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया और जो अपने भाई-बन्धु के बारे में जब कि वे सफ़र में गये हों या लड़ाई में हों और वहाँ मारे जायें तो कहते हैं : यदि वे हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल होते; ताकि अल्लाह इसे उन के दिलों में सन्ताप बना दे। और अल्लाह ही जिलाता और मारता है; और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो सब देखता है।

156. O ye who believe! Be not as those who disbelieved and said of their brethren who went abroad in the land or were fighting in the field: If they had been (here) with us they would not have died or been killed; that Allah may make it anguish in their hearts. Allah giveth life and causeth death; and Allah is Seer of what ye do.

يايها الذين امنوا لا تكونوا
كالذين كفروا وقالوا لإخونهم
إذا ضربوا في الأرض أو كانوا
غزى لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا
ليجعل الله ذلك حسرة في
قلوبهم والله يحي ويميت
والله بما تعملون بصير ١٥٦

१५७. और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गये या मर गये, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उन सब चीज़ों से उत्तम है जिन्हें ये लोग इकट्ठा करते हैं।

157. And what though ye be slain in Allah's way or die therein? Surely pardon from Allah and mercy are better than all that they amass.

ولئن قتلتم في سبيل الله
أو متم لمغفرة من الله و
رحمة خير مما يجمعون ١٥٧

१५८. और चाहे तुम मरे या मारे गये अल्लाह ही के पास इकट्ठे किये जाओगे।

158. What though ye be slain or die, when unto Allah ye are gathered?

ولئن متم أو قتلتم لإلى
الله تحشرون ١٥٨

१५९. (हे 'नबी' !) यह अल्लाह की दयालुता है कि तुम इन लोगों के लिए बहुत ही नर्म हो, यदि तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय वाले होते, तो ये सब तुम्हारे पास से छट जाते। तो तुम इन्हें क्षमा कर दो और इन के लिए क्षमा चाहो और मामलों में इन से परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम ने निश्चय कर लिया, तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सन्देह अल्लाह अपने ऊपर भरोसा करनें वालों से प्रेम करता है।

159. It was by the mercy of Allah that thou wast lenient with them (O Muhammad), for if thou hadst been stern and fierce of heart they would have dispersed from round about thee. So pardon them and ask forgiveness for them and consult with them upon the conduct of affairs. And when thou art resolved, then put thy trust in Allah. Lo! Allah loveth those who put their trust (in Him).

فبما رحمة من الله لنت لهم
ولو كنت فظا غليظ القلب
لانفضوا من حولك فاعف
عنهم واستغفر لهم وشاورهم
في الأمر فإذا عزمت فتوكل على
الله إن الله يحب المتوكلين ١٥٩

१६०. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो तुम पर कोई प्रभुत्व प्राप्त नहीं कर सकता, और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उस के बाद तुम्हारी मदद कर सके ? और अल्लाह के ऊपर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।

160. If Allah is your helper none can overcome you, and if He withdraw His help from you, who is there who can help you? In Allah let believers put their trust.

إن ينصركم الله فلا غالب لكم
وإن يخذلكم فمن ذا الذي ينصركم
من بعده وعلى الله فليتوكل المؤمنون ١٦٠

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६१. और 'नबी' का काम नहीं कि वह अहित चाहे। और जो कोई अहित चाहेगा तो वह 'क़ियामत' के दिन अपने अहित सहित पेश होगा। फिर हर-एक को उस की कमाई का भरपूर बदला दे दिया जायेगा; और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।

161. It is not for any Prophet to deceive (mankind). Whoso deceiveth will bring his deceit with him on the Day of Resurrection. Then every soul will be paid in full what it hath earned; and they will not be wronged.

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ
يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾

१६२. क्या जो व्यक्ति अल्लाह की ख़ुशी पर चला वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह का प्रकोप ले कर लौटा और जिस का ठिकाना 'जहन्नम' है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

162. Is one who followeth the pleasure of Allah as one who had earned condemnation from Allah, whose habitation is the Fire, a hapeless journey's end?

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ
بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾

१६३. अल्लाह के यहाँ इन के विभिन्न दरजे होंगे, और ये जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।

163. There are degrees (of grace and reprobation) with Allah, and Allah is Seer of what ye do.

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾

१६४. अल्लाह ने 'ईमान' लाने वालों पर यह बहुत बड़ा एहसान किया है जब कि उन में उन्हीं में से एक 'रसूल' उठाया जो उन्हें उस की 'आयतें' सुनाता है, उन्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करता है और उन्हें 'किताब' (धर्म काण्ड, धर्म-विधान) और 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है; निस्सन्देह ये इस से पहले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में पड़े हुये थे।

164. Allah verily hath shown grace to the believers by sending unto them a messenger of their own who reciteth unto them His revelations, and causeth them to grow, and teacheth them the Scripture and wisdom; although before (he came to them) they were in flagrant error.

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ
وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

१६५. और क्या जब तुम्हें एक मुसीबत पहुँची जिस की दो गुनी मुसीबत तुम ने पहुँचाई तो तुम ने कहा : यह कहाँ से आ गई? तुम (हे 'नबी'!) कह दो : यह तुम्हारे अपने ही पास से है, निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

165. And was it so, when a disaster smote you, though ye had smitten (them with a disaster) twice (as great), that ye said: How is this? Say (unto them, O, Muhammad): It is from yourselves. Lo! Allah is Able to do all things.

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ
قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ
اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ
اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

१६६. और दोनों गरोहों की मुठ-भेड़ के दिन जो मुसीबत भी तुम्हें पहुँची वह अल्लाह की अनुज्ञा से पहुँची; और ताकि अल्लाह 'ईमान वालों' को विभावित करे।

166. That which befell you, on the day when the two armies met, was by permission of Allah; that He might know the true believers;

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६७. और ताकि उन 'मुनाफ़िक़ों' को भी विभावित करे जिन से कहा गया कि आओ, अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो, या दुश्मनों को हटाओ, उन्हों ने कहा : यदि हम जानते कि लड़ाई होगी तो अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते[३१]। उस दिन वे 'ईमान' की अपेक्षा 'कुफ़्' से अधिक निकट थे। वे अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं है। और अल्लाह उस चीज़ को जिसे ये छिपाते हैं भली-भाँति जानता है।

167. And that He might know the hypocrites, unto whom it was said: Come, fight in the way of Allah, or defend yourselves. They answered: If we knew aught of fighting we would follow you. On that day they were nearer disbelief than faith. They utter with their mouths a thing which is not in their hearts. Allah is best aware of what they hide.

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ
لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ
يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾

१६८. ये हैं जो स्वयं तो बैठ रहे, और अपने भाइयों के बारे में कहा : यदि वे हमारी बात मानते तो मारे न जाते। कहो : यदि तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना।

168. Those who, while they sat at home, said of their brethren (who were fighting for the cause of Allah): If they had been guided by us they would not have been slain. Say (unto them, O Muhammad): Then avert death from yourselves if ye are truthful.

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ
وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ
قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ
الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾

१६९. और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये, उन्हें मरा हुआ न समझो। बल्कि वे अपने 'रब' के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।

169. Think not of those, who are slain in the way of Allah, as dead. Nay, they are living. With their Lord they have provision.

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ
أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾

१७०. जो कुछ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया है उस पर खुशियाँ मनाते हैं, और उन लोगों के बारे में भी शुभ सूचना प्राप्त कर रहे हैं जो उन के पीछे रह गये हैं अभी उन से मिले नहीं हैं : कि उन्हें न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।

170. Jubilant (are they) because of that which Allah hath bestowed upon them of His bounty, rejoicing for the sake of those who have not joined them but are left behind: that there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن
فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ
لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ
أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾

१७१. वे अल्लाह की नेमत और उस के फ़ज़्ल की शुभ सूचना प्राप्त कर रहे हैं, और यह कि अल्लाह 'ईमान वालों' का प्रतिदान अकारथ नहीं करेगा।

171. They rejoice because of favour from Allah and kindness, and that Allah wasteth not the wage of the believers.

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ
وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

१७२. जिन लोगों ने अल्लाह और 'रसूल' की पुकार सुनी; इस के पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँच चुका था, इन लोगों के लिए जो उत्तमकार रहे और (अल्लाह का) डर रक्खा बड़ा प्रतिदान है।[३२]

172. As for those who heard the call of Allah and His messenger after the harm befell them (in the fight); for such of them as do right and ward off (evil), there is great reward.

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ
مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾

३१. अर्थात् हमें लड़ाई की आशा नहीं है, नहीं तो हम अवश्य लड़ने के लिए चलते।

३२. काफ़िर लोग जब 'उहुद' की लड़ाई से मक्का के लिए वापस हुये, तो मार्ग में उन्हों ने सोचा कि हमें मुहम्मद (सल्ल०) की ताक़त को तोड़ देने का अच्छा अवसर मिला था जिसे हम खो कर चले जा रहे हैं; परन्तु उन्हें दुबारा मदीना पर आक्रमण करने का साहस न हो सका। इधर नबी सल्ल० ने सोचा कि कहीं वे मदीना पर दूसरा हमला न कर दें इस लिए 'उहुद' की लड़ाई के दूसरे ही दिन आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को इकट्ठा कर के कहा कि हमें काफ़िरों का पीछा करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे दुबारा हम पर हमला बोल दें। इस कठिन समय पर भी सच्चे ईमान वाले आप (सल्ल०) के साथ काफ़िरों का पीछा करने के लिए तैयार हो गये, और मदीने से ८ मील के फ़ासले तक उन का पीछा किया। इस 'आयत' में उन्हीं आप (सल्ल०) के सत्यनिष्ठ साथियों की प्रशंसा की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७३. ये वे हैं जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिए लोगों ने दल साज रक्खा है, तो उन से डरो, तो इस चीज़ ने उन के 'ईमान' को और बढ़ा दिया और उन्होंने कहा : हमारे लिए अल्लाह बस है ! और वह क्या ही अच्छा कार्य-साधक है !

173. Those unto whom men said: Lo! the people have gathered against you, therefor fear them. (The threat of danger) but increased the faith of them and they cried: Allah is sufficient for us! Most Excellent is He in Whom we trust!

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

१७४. तो वे अल्लाह की नेमत और उस के फ़ज़्ल के साथ लौटे, उन्हें तनिक तकलीफ़ भी नहीं पहुँची और वे अल्लाह की ख़ुशी पर चले और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

174. So they returned with grace and favour from Allah, and no harm touched them. They followed the good pleasure of Allah, and Allah is of infinite bounty.

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾

१७५. यह तो केवल 'शैतान' है जो अपने मित्रों से डराता है। तुम यदि 'ईमान वाले' हो, तो उन से न डरो, मुझ से ही डरो।

175. It is only the devil who would make (men) fear his partisans. Fear them not; fear Me, if ye are true believers.

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

१७६. और जो लोग 'कुफ़्' में अग्रसर रहते हैं उन के कारण तुम दु:खी न होना, ये अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह चाहता है कि उन के लिए 'आख़िरत' में कोई हिस्सा न रक्खे, उन के लिए बड़ी 'यातना' है।

176. Let not their conduct grieve thee, who run easily to disbelief, for lo! they injure Allah not at all. It is Allah's will to assign them no portion in the Hereafter, and theirs will be an awful doom.

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

१७७. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'ईमान' के बदले 'कुफ़्' का सौदा किया है वे अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे, उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

177. Those who purchase disbelief at the price of faith harm Allah not at all, but theirs will be a painful doom.

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

१७८. और यह ढील जो हम उन्हें दिये जाते हैं उसे 'काफ़िर' लोग अपने लिए अच्छा न समझें। हम तो उन्हें केवल इस लिए ढील दे रहे हैं ताकि गुनाहों में वे और अधिक बढ़ जायें। और उन के लिए अपमानजनक यातना है।

178. And let not those who disbelieve imagine that the rein We give them bodeth good unto their souls. We only give them rein that they may grow in sinfulness. And theirs will be a shameful doom.

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾

१७९. यह नहीं होने का कि अल्लाह 'ईमान' वालों को उस तरह रहने दे जैसे कि तुम थे, जब तक कि वह नापाक को पाक से अलग न कर दे। और अल्लाह वह नहीं कि तुम्हें परोक्ष की ख़बर दे, हाँ वह अपने 'रसूलों' में से जिसे चाहता है चुन लेता है। तो अल्लाह और उस के 'रसूलों' पर 'ईमान' लाओ। और यदि तुम 'ईमान' लाये और (अल्लाह का) डर रक्खा तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा प्रतिदान है।

179. It is not (the purpose) of Allah to leave you in your present state till He shall separate the wicked from the goods. And it is not (the purpose of) Allah to let you know the unseen. But Allah chooseth of His messengers whom He will (to receive knowledge thereof). So believe in Allah and His messengers. If ye believe and ward off (evil), yours will be a vast reward.

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّى يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८०. जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें दी है वे यह न समझें कि यह उन के लिए अच्छा है। बल्कि यह उन के हक़ में बुरा है। जिस चीज़ में उन्हों ने कृपणता से काम लिया होगा आगे उसी का क़ियामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जायेगा। आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो, उसे जानता है।

180. And let not those who hoard up that which Allah hath bestowed upon them of His bounty think that it is better for them. Nay, it is worse for them. That which they hoard will be their collar on the Day of Resurrection. Allah's is the heritage of the heavens and the earth, and Allah is Informed of what ye do.

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ
بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ هُوَ
خَيْرًا لَّهُم بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ
سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾

१८१. अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन रक्खी है जिन्हों ने कहा कि अल्लाह निर्धन है और हम धनवान् हैं ! जो कुछ उन्हों ने कहा हम उसे लिख रक्खेंगे और 'नबियों' को जो उन्हों ने नाहक़ क़त्ल किया है वह भी, और हम कहेंगे : जलने की यातना का मज़ा चखो !

181. Verily Allah heard the saying of those who said (when asked for contributions to the war): "Allah, forsooth, is poor, and we are rich!" We shall record their saying with their slaying of the Prophets wrongfully and We shall say: Taste ye the punishment of burning!

لَّقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا
إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنبِيَاءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

१८२. यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने भेजा है। और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है।

182. This is on account of that which your own hands have sent before (you to the judgment). Allah is no oppressor of (His) bondmen.

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَ
أَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾

१८३. जिन्हों ने कहा : अल्लाह ने हमें ताकीद की है कि हम किसी 'रसूल' पर 'ईमान' न लायें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी न करे जिसे अग्नि (आकाश से आ कर) खा ले[३३]।

कहो : तुम्हारे पास मुझ से पहले 'रसूल' खुली निशानियाँ ले कर आ चुके हैं, और वह चीज़ भी लाये थे जिस के लिए तुम कह रहे हो। फिर यदि सच्चे हो तो उन ('रसूलों') को तुम ने क़त्ल क्यों किया ?

183. (The same are) those who say: Lo! Allah hath charged us that we believe not in any messenger until he bring us an offering which fire (from heaven) shall devour. Say (unto them, O Muhammad): Messengers came unto you before me with miracles, and with that (very miracle) which ye describe. Why then did ye slay them? (Answer that) if ye are truthful!

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ
إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ
يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ
قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي
بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ
قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾

३३. यहूदियों के धर्म में बलिदान (क़ुरबानी) के मांस को जलाने की रीति थी। दे० बाइबिल 'अहबार' (Leviticus) के शुरू के अध्याय जिन में दग्ध बलिदान (Burnt sacrifice) का उल्लेख किया गया है। इस के अलावा इस के लिए दे० 'अहबार' (Lev.) ८ : १८ और 'इस्तिस्ना' (Deut.) ३३ : १०। इस के अतिरिक्त बाइबिल में कई स्थानों पर इस का उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के यहाँ किसी 'क़ुरबानी' के क़बूल होने की पहचान यह है कि ग़ैब से एक आग ज़ाहिर हो कर उसे भस्म कर दे। दे० 'क़ुज़ात' (Judges) ६ : २०-२१; १३ : १९-२०। बाइबिल में यह भी लिखा है कि कभी ऐसा भी होता था कि कोई 'नबी' दग्ध क़ुरबानी करता और ग़ैबी आग आ कर उसे खा लेती थी। 'अहबार' (Lev.) ९ : २४ तवारीख़ द्वितीय (The Chronicles II) ७ : १-२।

परन्तु यह कहीं नहीं लिखा है कि 'नबी' होने के लिए यह चमत्कार दिखाना आवश्यक है। फिर इसराईल की सन्तान में कितने ही नबियों ने यह चमत्कार दिखाया फिर भी दुष्ट लोग उन पर 'ईमान' नहीं ला सके। मिसाल के लिए हज़रत इलियास अ० का वृत्तान्त पढ़िए जो बाइबिल में बयान हुआ है, उन्हों ने यह चमत्कार दिखाया परन्तु फिर भी उन्हें कितने कष्ट सहन करने पड़े। दे० 'सलातीन प्रथम' (Kings I) अध्याय १८, १९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८४. यदि ये लोग तुम्हें झुठला रहे हैं तो तुम से पहले भी 'रसूल' झुठलाये जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ, 'ज़बूरें' और प्रकाशमान किताब ले कर आये थे।

184. And if they deny thee, even so did they deny messengers who were before thee, who came with miracles and with the Psalms and with the Scripture giving light.

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ
مِّن قَبْلِكَ جَآءُو بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ
وَالْكِتٰبِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

१८५. हर जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारा भर पूर बदला, 'क़ियामत' के दिन चुका दिया जायेगा। तो जिसे आग ('जहन्नम') से हटा दिया गया और 'जन्नत' में दाखिल कर दिया गया उस का काम बन गया। और सांसारिक जीवन तो केवल एक धोखे की सामग्री है।

185. Every soul will taste of death. And ye will be paid on the Day of Resurrection only that which ye have fairly earned. Whoso is removed from the Fire and is made to enter Paradise, he indeed is triumphant. The life of this world is but comfort of illusion.

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا
تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَن
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ
فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾

१८६. तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा हो कर रहेगी, और तुम्हें उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी जा चुकी है और उन लोगों से जिन्होंने 'शिर्क' किया बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेंगी। और यदि तुम ने धैर्य्य से काम लिया और (अल्लाह का) डर रक्खा तो निस्सन्देह यह महान् साहस के कार्यों में से होगा।

186. Assuredly ye will be tried in your property and in your persons, and ye will hear much wrong from those who were given the Scripture before you, and from the idolaters. But if ye persevere and ward off (evil), then that is of the steadfast heart of things.

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوٰلِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ
مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوٓا
أَذًى كَثِيرًا وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا
فَإِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾

१८७. और याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें 'किताब' दी गई थी यह दृढ़ वचन लिया कि तुम इस 'किताब' को लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे और उसे छिपाओगे नहीं। तो उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और थोड़े मूल्य पर उस का सौदा किया तो क्या बुरा सौदा है जो ये करते हैं।

187. And (remember) when Allah laid a charge on those who had received the Scripture (He said): Ye are to expound it to mankind and not to hide it. But they flung it behind their backs and bought thereby a little gain. Verily evil is that which they have gained thereby.

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثٰقَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ
وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ
وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ
ثَمَنًا قَلِيلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾

१८८. तुम यह न समझना कि ऐसे लोग 'यातना' से बच जायेंगे जो अपने किये पर बहुत खुश हैं, और चाहते हैं कि उन कामों पर उन की सराहना की जाये जो उन्होंने किये नहीं, उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

188. Think not that those who exult in what they have given, and love to be praised for what they have not done — Think not they are in safety from the doom. A painful doom is theirs.

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ
بِمَآ أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا
بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ
مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾

१८९. और आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह के लिए है। और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

189. Unto Allah belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth. Allah is Able to do all things.

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९०. निस्सन्देह[३४] आकाशों और धरती की रचना में और रात-दिन के एक दूसरे के पश्चात् बारी-बारी से आने में बुद्धिमानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

190. Lo! In the creation of the heavens and the earth and (in) the difference of night and day are tokens (of His sovereignty) for men of understanding.

إن في خلق السموت والأرض
واختلاف اليل والنهار لايت
لأولي الألباب ١٩٠

१९१. उन के लिए जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर अल्लाह को याद करते हैं, और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं, (और कहते हैं) : हमारे 'रब'! तू ने ये सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महिमा हो तेरी! तो तू हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।

191. Such as remember Allah, standing, sitting, and reclining, and consider the creation of the heavens and the earth, (and say): Our Lord! Thou createdst not this in vain. Glory be to Thee! Preserve us from the doom of Fire!

الذين يذكرون الله قيما
وقعودا وعلى جنوبهم ويتفكرون
في خلق السموت والأرض ربنا
ما خلقت هذا باطلا سبحنك فقنا
عذاب النار ١٩١

१९२. हमारे 'रब'! तू नें जिसें आग (जहन्नम) में डाला निस्सन्देह उसे रुसवा कर दिया। और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं होगा।

192. Our Lord! Whom Thou causest to enter the Fire: him indeed Thou hast confounded. For evildoers there will be no helpers.

ربنا إنك من تدخل النار فقد
أخزيته وما للظلمين من أنصار ١٩٢

१९३. हमारे 'रब'! हमने एक पुकारने वाले को 'ईमान' की ओर बुलाते सुना कि अपने 'रब' पर 'ईमान' लाओ। तो हम 'ईमान' ले आये। हमारे 'रब'! तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर दे, और हमें मृत्यु वफ़ादारों के साथ दे।

193. Our Lord! Lo! we have heard a crier calling unto Faith: "Believe ye in your Lord!" So we believed. Our Lord! Therefor forgive us our sins, and remit from us our evil deeds, and make us die the death of the righteous.

ربنا إننا سمعنا مناديا ينادي
للإيمن أن ءامنوا بربكم
فامنا ربنا فاغفر لنا ذنوبنا
وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع
الأبرار ١٩٣

१९४. हमारे 'रब'! जिस चीज़ का वादा तू ने अपने 'रसूलों' के द्वारा हम से किया है वह हमें प्रदान कर। और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न करना। निस्सन्देह तू अपने वादे के विरुद्ध जाने वाला नहीं है।

194. Our Lord! And give us that which Thou hast promised to us by Thy messengers. Confound us not upon the Day of Resurrection. Lo! Thou breakest not the tryst.

ربنا وءاتنا ما وعدتنا على
رسلك ولا تخزنا يوم القيمة
إنك لا تخلف الميعاد ١٩٤

१९५. तो उनके 'रब' ने उनकी विनय सुन ली कि मैं तुम में से किसी कर्म करने वाले का कर्म अकारथ नहीं करूँगा, पुरुष हो या स्त्री, तुम सब एक दूसरे से हो।

तो जिन लोगों ने घर-बार छोड़ा, और जो अपने घरों से निकाले गये और मेरे मार्ग में सताये गये, और लड़े और मारे गये, मैं उन की बुराइयाँ उन से दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी—यह अल्लाह के पास से उनका बदला होगा। और अल्लाह के ही पास अच्छा बदला है।

195. And their Lord hath heard them (and He saith): Lo! I suffer not the work of any worker, male or female, to be lost. Ye proceed one from another.* So those who fled and were driven forth from their homes and suffered damage for My cause, and fought and were slain, verily I shall remit their evil deeds from them and verily I shall bring them into Gardens underneath which rivers flow — A reward from Allah. And with Allah is the fairest of rewards.

فاستجاب لهم ربهم أني لا
أضيع عمل عمل منكم من
ذكر أو أنثى بعضكم من بعض
فالذين هاجروا وأخرجوا من
ديارهم وأوذوا في سبيلي
وقتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم
سيئاتهم ولأدخلنهم جنت
تجري من تحتها الأنهر ثوابا من
عند الله والله عنده حسن الثواب ١٩٥

३४. यह 'सूरा' की समाप्ति सम्बन्धी वार्त्ता है। इस का सम्पर्क क़रीबी 'आयतों' से नहीं पूरी 'सूरा' से है। इसे समझने के लिए विशेष रूप से सूरा की पहली तक़रीर—जिस की हैसियत सूरा की भूमिका की है—सामने रहनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९६. और देश में 'काफ़िरों' की चलत-फिरत तुम्हें किसी धोखे में न डाले।

१९७. यह थोड़ी सुख-सामग्री है। फिर तो उन का ठिकाना 'जहन्नम' है, और वह क्या बुरा ठिकाना है!

१९८. अलबत्ता जो लोग अपने 'रब' से डरते रहे, उन के लिए ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उस में सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से आवभगत के लिए होगा। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह वफ़ादारों के लिए कहीं अच्छा है।

१९९. और निस्सन्देह किताब वालों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर 'ईमान' रखते हैं और उस चीज़ पर जो तुम पर उतारी गयी है और उस पर जो उन पर उतारा गया, अल्लाह से डरते हुये। वे अल्लाह की 'आयतों' का थोड़े मूल्य पर सौदा नहीं करते। उन के लिए उन के 'रब' के पास उन का प्रतिदान है, निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है।

२००. हे 'ईमान' वालो! धैर्य्य से काम लो और बढ़ चढ़ कर धैर्य्य दिखाओ और डटे रहो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम सफल हो जाओ।

196. Let not the vicissitude (of the success) of those who disbelieve, in the land, deceive thee (O Muhammad).

197. It is but a brief comfort. And afterwards their habitation will be hell, an ill abode.

198. But those who keep their duty to their Lord, for them are Gardens underneath which rivers flow, wherein they will be safe for ever. A gift of welcome from their Lord. That which Allah hath in store is better for the righteous.

199. And lo! of the People of the Scripture there are some who believe in Allah and that which is revealed unto you and that which was revealed unto them, humbling themselves before Allah. They purchase not a trilling gain at the price of the revelations of Allah. Verily their reward is with their Lord, and lo! Allah is Swift to take account,

200. O ye who believe! Endure, outdo all others in endurance, be ready, and observe your duty to Allah, in order that ye may succeed.

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا
فِي الْبِلَادِ ١٩٦
مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ١٩٧
لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ١٩٨
وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ
لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ١٩٩
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا
وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ٢٠٠

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४—अन–निसा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में स्त्रियों और उन के हक़ और अधिकार (Women's rights) के सबन्ध में बहुत से आदेश दिये गये हैं, इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अन-निसा' (स्त्रियाँ) रक्खा गया है। क़ुरआन की और बहुत-सी सूरतों के नामों की तरह यह नाम भी सूरा के केन्द्रीय विषय का सूचक नहीं है।

उतरने का समय (Date of Revelation)

इस सूरा में कई-एक तक़रीरें सम्मिलित हैं, जो विभिन्न अवसरों पर उतरी हैं। अनुमान है कि पूरी सूरा सन् ३ हिज० के अन्त से ले कर सन् ४ हिज० के अन्त या सन् ५ हिज० के आरम्भ काल तक उतरी है। पहली तक़रीर जिस में विरासत की तक़सीम और यतीमों (अनाथों) से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं, अनुमान है कि 'उहुद' की लड़ाई के पश्चात् उतरी है; जब कि इस लड़ाई में मुसलमानों के ७० व्यक्ति 'शहीद' हो गये थे; और लोगों के सामने यह समस्या खड़ी हो गई थी कि शहीद होने वालों की विरासत का बँटवारा कैसे हो ? और जो यतीम बच्चे उन्हों ने छोड़े हैं उन का पालन-पोषण और उन के हक़ की रक्षा किस प्रकार की जाये ?

युद्ध के अवसर पर 'नमाज़' कैसे पढ़ी जाये ? इस का उल्लेख हमें इतिहास में 'ज़ातुर्रिक़ाअ' के युद्ध में मिलता है; इस से अनुमान होता है कि इस सूरा की वह तक़रीर जिस में युद्ध के अवसर पर नमाज़ पढ़ने की विधि सिखाई गई है, इसी समय के लगभग उतरी होगी। यह युद्ध सन् ४ हिज० में हुआ था।

सूरा की जिस तक़रीर में यहूदियों को यह चेतावनी दी गई है : "ईमान लाओ, इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे की ओर कर दें"। (आयत ४७)—उस के बारे में अनुमान यही है कि वह उस समय के लगभग उतरी होगी जब मदीने से यहूदियों के एक विशेष क़बीले 'बनू नज़ीर' को निकाला गया है। अर्थात् सन् ४ हिज० के लगभग।

जिस तक़रीर में पानी न मिलने पर यह हुक्म दिया गया है कि लोग पाक-साफ़ मिट्टी से ही काम चलायें अर्थात् 'तयम्मुम' कर लें, वह सन् ५ हिज० में उतरी होगी; इस लिए कि पानी न मिलने पर 'तयम्मुम' का आदेश 'बनी मुस्तलिक़' की लड़ाई के अवसर पर दिया गया है। और यह लड़ाई सन् ५ हिज० में हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

पिछली सूरा के अन्तिम भाग में 'उहुद' की लड़ाई का उल्लेख किया गया है; वर्तमान सूरा उस वातावरण से सम्बन्ध रखने वाले आदेशों के साथ आरम्भ होती है जो 'उहुद' की लड़ाई के परिणाम-स्वरूप पैदा हो गया था। 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों के ७० व्यक्ति शहीद हो गये थे, शहीद होने वालों की विधवा स्त्रियाँ और उन के यतीम बच्चों की समस्या लोगों के सामने खड़ी हो गई थी। वर्तमान सूरा के प्रारम्भिक भाग में विशेष रूप से इसी समस्या का समाधान किया गया है।

इस सूरा का केन्द्रीय विषय हक़ अथवा स्वत्व एवं अधिकार (Rights) की रक्षा है। इस सूरा में विभिन्न प्रकार के हक़ और अधिकार के विषय में इस्लामी शिक्षा का उल्लेख हुआ है। इस सूरा में अनाथों के अधिकारों और निर्बल व्यक्तियों के 'दीन' और 'ईमान' की रक्षा पर बल देते हुये यतीमों से सम्बन्धित आदेशों और 'जिहाद' के आदेशों को समान रूप से प्रस्तुत किया गया है। जिस प्रकार अनाथों के सम्बन्ध में दिये गये आदेशों से उन के अधिकारों की रक्षा होती है उसी प्रकार 'जिहाद' से कमज़ोर और निर्बल व्यक्तियों के 'दीन' और 'ईमान' की रक्षा होती है। इस सूरा में नातेदारों और स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा पर भी ज़ोर देते हुये उन से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वार्त्तायें (Subject matter)

मुसलमानों को बहुत से सामाजिक आदेश सूरा अल-बक़रा में दिये जा चुके थे परन्तु अब इस्लामी समाज को उन के अतिरिक्त और बहुत- से आदेशों कीआवश्यकता थी सूरा अन-निसा में विस्तारपूर्वक सामाजिक नियमों से सम्बन्धित आदेश दिये गये। मुसलमानों को बताया गया कि वे अपने समाज को 'इस्लाम' के आधार पर किस प्रकार संगठित करें। पारिवारिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले नियमों को खोल-खोल कर बयान किया गया। विवाह और समाज में स्त्रियों और पुरुषों के सम्पर्कसे सम्बन्धित सीमा को निर्धारित किया गया। विरासत के बँटवारे के सम्बन्ध में बताया गया कि उस में किस का कितना हिस्सा होता है। यतीमों (अनाथों) के अधिकार की रक्षा पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। घरेलू झगड़ों के समाधान के लिए न्याय संगत नियमों की शिक्षा दी गई। दण्ड-विधान की नींव डाली गई। शराब (मदिरा) पर पाबन्दी लगाई गई। शारीरिक शुद्धता एवं स्वच्छता के प्रति आदेश दिये गये। इसी के साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया गया कि मुसलमान अपने जीवन सम्बन्धी दूसरे कामों में भी पवित्रता का पालन करें। जो कमज़ोरी भी उन में दिखाई दी उस पर उन्हें टोका गया।

'मुनाफ़िक़ों' की नीतियों और उन की कृतियों पर आलोचना करते हुये यह बताया गया कि 'ईमान' और 'निफ़ाक़' में कोई सम्पर्क नहीं है। 'मुनाफ़िक़ों' के विभिन्न गरोह थे। मुसलमानों को बताया गया कि 'मुनाफ़िक़ों' के किस गरोह के साथ उन का क्या व्यवहार होना चाहिए।

'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को हानि पहुँची थी; उस से धर्म-विरोधियों का साहस बहुत बढ़ गया था। मुसलमान चारों ओर से ख़तरे में घिरे हुये थे। पास-पड़ोस के 'मुश्रिक' कबीलों और यहूदियों के अलावा घर के 'मुनाफ़िक़' भी मुसलमानों के लिए बड़ी मुसीबत बने हुये थे। ऐसी विकट परिस्थिति में अल्लाह ने जोशीली तक़रीरों से मुसलमानों का साहस बढ़ाया और उन्हें मुक़ाबले के लिए उभारा। मुसलमानों को ऐसे आदेश भी दिये गये जो लड़ाई की हालत में उन के काम आने वाले थे। मदीने में 'मुनाफ़िक़' और दूसरे कमज़ोर 'ईमान' वाले लोग प्रायः भय की ख़बरें उड़ाया करते थे। हुक्म दिया गया कि ऐसी ख़बरें पहले ज़िम्मेदारों तक पहुँचाई जायें। जब तक वे उन की जाँच-पड़ताल न कर लें उन्हें फैलने न दिया जाये।

अरब के विभिन्न भागों में मुसलमान 'काफ़िर' क़बीलों के बीच बिखरे हुये थे। वे प्रायः लड़ाई की लपेट में भी आ जाते थे। उन के मामले में विस्तारपूर्वक आदेश दिये गये और उन्हें 'हिजरत' करने पर उभारा गया।

निष्पक्ष एवं तटस्थ क़बीलों और उन क़बीलों के बारे में जिन से मुसलमानों का समझौता हो गया था, बताया गया कि उन के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए। मुसलमानों को युद्ध में बार-बार जाना पड़ता था; इसके अलावा वे दूसरे कामों से भी सफ़र करते थे। प्रायः उन्हें ऐसे रास्तों से जाना पड़ता जहाँ पानी का अभाव होता। हुक्म दिया गया कि युद्ध के अवसर पर या सफ़र में यदि पानी न मिले तो स्नान और 'वज़ू' के बदले 'तयम्मुम' कर लिया जाये। सफ़र में संक्षिप्त रूप से 'नमाज़' पढ़ने की इजाज़त भी उन्हें दी गई। और इस का तरीक़ा भी उन्हें सिखाया गया कि भय और ख़तरे के समय वे अपनी 'नमाज़' किस तरह अदा करें।

यहूदियों में 'बनू नज़ीर' के लोग विशेष रूप से मुसलमानों के विरुद्ध शत्रुता की नीति अपनाये हुये थे। वे खुले तौर पर इस्लाम-दुश्मनों का साथ दे रहे थे। मदीने में भी इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध जोड़-तोड़ करने में वे सब से आगे थे। हालांकि यहूदियों और मुसलमानों के बीच यह समझौता हुआ था कि यदि किसी ने मदीने पर आक्रमण किया, तो वे मुसलमानों के साथ मिलकर उस का मुक़ाबला करेंगे। उन की अनुचित नीति पर उन्हें टोका गया; और खुले शब्दों में उन्हें अन्तिम चेतावनी भी दी गई; और अन्त में मदीने से उन को निकाल दिया गया।

यहूदियों और ईसाइयों के नैतिक एवं धार्मिक पतन पर प्रकाश डाला गया। उन के आचार-विचार पर आलोचना की गई। और उन्हें सच्चे धर्म की ओर आमंत्रित किया गया। और यह बात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खोल कर बयान कर दी गई कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के 'रसूल' हैं; आप (सल्ल०) के पास उसी तरह अल्लाह की ओर से 'वह्य' आती है जिस तरह आप (सल्ल०) से पहले बहुत से 'नबियों' के पास आती थी। अब यह लोगों का अपना कर्तव्य है कि वे आप (सल्ल०) की 'रिसालत' पर 'ईमान' लायें और आप (सल्ल०) के दिखाये हुये मार्ग पर चल कर अपना जीवन सफल बनायें।

समाप्ति

सूरा को समाप्त करते हुये कहा गया : "हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से खुली दलील आ चुकी है, और हम ने तुम्हारी ओर प्रत्यक्ष प्रकाश उतारा है; तो जो लोग अल्लाह पर 'ईमान' लाये, और उस से चिमटे रहे, उन्हें अल्लाह अपनी दयालुता और फ़ज़्ल (कृपा) के दामन में ले लेगा, और उन्हें अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखायेगा।" —आयत १७४-१७५

यह वास्तव में सारे आदेशों का सारांश है जो सूरा के अन्त में प्रस्तुत किया गया है। इस से मालूम होता है कि क़ुरआन जिस मार्ग की ओर हमें बुलाता है वह स्पष्ट और सरल मार्ग है। इस मार्ग को अपनाने के बाद मनुष्य पूर्णरूप से उजाले में आ जाता है। उसे एक ऐसा अन्धकाररहित वातावरण प्राप्त हो जाता है जहाँ सत्यता उस पर अपना दिव्य प्रकाश डालती है। उस की बुद्धि और विवेक को बढ़ावा और प्रोत्साहन मिलता है; उस की समस्त शंकाओं का समाधान हो जाता है, उस की चेतना जाग उठती है और वह सत्य और असत्य, सुन्दर और असुन्दर का पारखी बन जाता है।

सूरा के आरम्भ में नातेदारों के हक़ और अधिकार से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये थे; सूरा की अन्तिम आयत में भी इसी के आदेश दे कर इस सूरा को समाप्त कर दिया गया है। सूरा की अन्तिम आयत इस सूरा में परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन–निसा
(मदीना में उतरी — 'आयत' १७६)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. हे लोगो ! अपने 'रब' का डर रक्खो जिस नें तुम्हें एक ही जीव से पैदा किया[१] और उसी से[२] उस का जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से पुरुषों और स्त्रियों को फैला दिया। और उस अल्लाह का डर रक्खो जिस के वास्ते से तुम एक दूसरे से सहायता चाहते हो, और रिश्तों और नातों (को तोड़ने) से डरो। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।

२. और 'यतीमों' को उन का धन दो और न बुरी चीज़ को (उन की) अच्छी चीज़ से बदलो और न उन के माल को अपने माल के साथ गड्ड-मड्ड कर के उसे हड़प करो। निस्सन्देह यह बहुत बड़ा गुनाह है।

३. और यदि तुम्हें भय हो कि यतीमों के मामले में न्याय न कर सकोगे तो स्त्रियों में से जो तुम्हारे लिए जायज़ हो दो-दो, तीन-तीन, और चार-चार तक विवाह कर लो;[३] और यदि तुम्हें इस का भय हो कि उन के साथ समता का व्यवहार न कर सकोगे तो फिर एक ही पर बस करो या वह लौंडी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो उसी पर बस करो। इस में तुम्हारे ज्यादती से बचे रहने की अधिक सम्भावना है।

४. और स्त्रियों को उन के 'मह्र' दो मह्र की हैसियत से : हाँ यदि वे अपनी इच्छा से उस में से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें, तो उसे तुम खाओ कि वह तुम्हारे लिए अनुकूल और सुखकर है।

WOMEN
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah the Beneficent, the Merciful.

1. O mankind! Be careful of your duty to your Lord Who created you from a single soul and from it created its mate and from them twain hath spread abroad a multitude of men and women. Be careful of your duty toward Allah in Whom ye claim (your rights) of one another, and toward the wombs (that bare you). Lo! Allah hath been a Watcher over you.

2. Give unto orphans their wealth. Exchange not the good for the bad (in your management thereof) nor absorb their wealth into your own wealth. Lo! that would be a great sin.

3. And if ye fear that ye will not deal fairly by the orphans, marry of the women, who seem good to you, two or three or four; and if ye fear that ye cannot do justice (to so many) then one (only) or (the captives) that your right hands possess. Thus it is more likely that ye will not do injustice.

4. And give unto the women (whom ye marry) free gift of their marriage portions; but if they of their own accord remit unto you a part thereof, then ye are welcome to absorb it (in your wealth).

سُورَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَسِتٌّ وَسَبْعُونَ آيَةً وَأَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ
خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا
رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①
وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۠ وَلَا تَاْكُلُوْٓا
اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ۭ اِنَّهٗ
كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ②
وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ
النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ ذٰلِكَ
اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ③

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۭ
فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـــًٔا مَّرِيْٓـــًٔا ④

१. सब मनुष्य एक ही बाप (हज़रत आदम अ०) की सन्तान है।
२. अर्थात् उसी वर्ग और जाति का (of the same kind) उस के लिए जोड़ा बनाया।
३. अर्थात् यदि तुम्हें यह-भय हो कि यतीमों के साथ इन्साफ़ न कर सकोगे तो उन की माओं से तुम विवाह कर लो; ताकि तुम उन की ठीक तौर पर सरपरस्ती कर सको। एक समय में तुम एक से लेकर चार विवाह तक कर सकते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. और अपने उस धन को जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन-यापन का साधन बनाया है, बे-समझ लोगों को न सौंप दो; हाँ उन्हें उस में से खिलाते और पहनाते रहो, और उन से भली बात करो।

5. Give not unto the foolish (what) is in your (keeping of their) wealth, which Allah hath given you to maintain; but feed and clothe them from it, and speak kindly unto them.

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي
جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ
فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ
قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٥﴾

६. और यतीमों को जाँचते रहो यहाँ तक कि वे विवाह की अवस्था को पहुँच जायें; फिर यदि तुम देखो कि उन में सूझ-बूझ आ गई है, तो उन्हें उन का धन सौंप दो; और इस भय से कि बड़े हो जायेंगे उन के माल को ज़रूरत से अधिक और जल्दी-जल्दी न खा जाओ और जो धनवान् हो उसे (ऐसे माल से) बचना चाहिए; और जो ग़रीब हो वह उचित ढंग से खाये। फिर जब उन के माल उन्हें सौंपने लगो, तो उन की मौजूदगी में गवाह बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।

6. Prove orphans till they reach the marriageable age; then, if ye find them of sound judgement, deliver over unto them their fortune; and devour it not by squandering and in haste lest they should grow up. Whoso (of the guardians) is rich, let him abstain generously (from taking of the property of orphans); and whoso is poor, let him take thereof in reason (for his guardianship). And when ye deliver up their fortune unto orphans, have (the transaction) witnessed in their presence. Allah sufficeth as a Reckoner.

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا
النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا
فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا
تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ
يَكْبَرُوا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا
فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ فَإِذَا دَفَعْتُمْ
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٦﴾

७. पुरुषों का उस माल में हिस्सा है जो माता-पिता और नातेदारों ने छोड़ा हो, और स्त्रियों का भी उस में हिस्सा है जो माता-पिता और नातेदारों नें छोड़ा हो, चाहे वह थोड़ा हो, या वह अधिक हो ––यह हिस्सा निश्चित किया हुआ है।

7. Unto the men (of a family) belongeth a share of that which parents and near kindred leave, and unto the women a share of that which parents and near kindred leave, whether it be little or much — a legal share.

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ
أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿٧﴾

८. और जब बाँटने के समय नाते वाले और यतीम और मुहताज आ जायें, तो उन्हें भी उस में से कुछ दे दिया करो और भली रीति से उन से बात करो।

8. And when kinsfolk and orphans and the needy are present at the division (of the heritage), bestow on them therefrom and speak kindly unto them.

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُمْ
مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا
مَعْرُوفًا ﴿٨﴾

९. और लोगों को डरना चाहिए कि यदि वे अपने पीछे निर्बल बच्चे छोड़ते तो उन्हें उन के लिए कितना भय होता। तो उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए, और सीधी बात कहनी चाहिए।

9. And let those fear (in their behaviour toward orphans) who if they left behind them weak offspring would be afraid for them. So let them mind their duty to Allah, and speak justly.

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ
خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا
عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا
قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾

१०. जो लोग यतीमों के माल ज़ुल्म से खाते हैं, वास्तव में वे तो अपने पेट आग से भरते हैं, और वे जल्द भड़कती हुई अग्नि में पड़ेंगे।

10. Lo! Those who devour the wealth of orphans wrongfully, they do but swallow fire into their bellies, and they will be exposed to burning flame.

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ
نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾ ع

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. अल्लाह तुम्हारी औलाद के बारे में तुम्हें वसीयत करता है : पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के हिस्से के बराबर हो, यदि केवल दो से अधिक लड़कियाँ ही हों, तो उन का हिस्सा उस माल का दो तिहाई है[४] जो (मरने वाले ने) छोड़ा हो, और यदि अकेली होतो उस के लिए आधा है। यदि उस के औलाद हो तो उस के माता-पिता में से हरएक के लिए उस के छोड़े हुए माल का छठा भाग है; और यदि उस के औलाद न हो और उस के माता-पिता ही उस के वारिस हों, तो उस की माता का हिस्सा तिहाई होगा[५]; और यदि उस के भाई-बहिन भी हों, तो उस की माता का हिस्सा छठा होगा। ये हिस्से, वसीयत जो वह कर जाये, पूरी करने,[६] या ऋण (जो उस पर हो; चुका देने) के बाद हैं। तुम नहीं जानते कि फ़ायदा पहुँचाने में तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटों में से कौन तुम से ज़्यादा क़रीब है। ये हिस्से अल्लाह ने निश्चित किये हैं। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

11. Allah chargeth you concerning (the provision for) your children: to the male the equivalent of the portion of two females, and if there be women more than two, then theirs is two-thirds of the inheritance, and if there be one (only) then the half. And to his parents a sixth of the inheritance, if he have a son; and if he have no son and his parents are his heirs, then to his mother appertaineth the third; and if he have brethren, then to his mother appertaineth the sixth, after any legacy he may have bequeathed, or debt (hath been paid). Your parents or your children: Ye know not which of them is nearer unto you in usefulness. It is an injunction from Allah. Lo! Allah is Knower,, Wise.

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ
لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ
فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ
فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ
وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ
لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا
تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ
يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ
فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُ
إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ ۚ مِن
بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ
آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ
أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِّنَ
اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑪

१२. और तुम्हारी पत्नियों ने जो कुछ छोड़ा हो उस में तुम्हारा आधा है, यदि उन के औलाद न हो; यदि उन के औलाद हो तो तुम्हारा चौथाई होगा, वसीयत जो वे कर जायें पूरी करने, या ऋण (जो उन पर हो, चुका देने) के बाद। और जो कुछ तुम छोड़ जाओ उस में उन का हिस्सा चौथाई होगा यदि तुम्हारे कोई औलाद नहीं है, और यदि तुम्हारे औलाद है तो उन का हिस्सा आठवाँ होगा,[७] वसीयत जो तुम कर जाओ पूरी करने, या ऋण (जो तुम पर रह गया हो, उसे अदा करने) के बाद।

12. And unto you belongeth a half of that which your wives leave, if they have no child; but if they have a child then unto you the fourth of that which they leave, after any legacy they may have bequeathed, or debt (they may have contracted, hath been paid). And unto them belongeth the fourth of that which ye leave if ye have no child,, but if ye have a child then the eighth of that which ye leave, after any legacy ye may have bequeathed, or debt (ye may have contracted, hath been paid). And if a man or a

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ
إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْنَ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ
بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ
فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم ۚ مِّن بَعْدِ
وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ

४. दो लड़कियों के बारे में भी यही आदेश है।
५. यदि माता-पिता के अतिरिक्त और कोई वारिस न हो, तो पिता को दो तिहाई मिलेगा, और यदि दूसरे वारिस भी हैं तो वे इसी दो तिहाई में शरीक होंगे।
६. आदमी अपने कुल माल के केवल तिहाई भाग के बारे में वसीयत कर सकता है। यह वसीयत का नियम खास तौर पर इस लिए रक्खा गया है कि विरासत के क़ानून से जिन नातेदारों को हिस्सा न पहुँच रहा हो; और जिन लोगों को आदमी सहायता के योग्य जाने, उन के लिए वह स्वयं हिस्सा ठहरा दे जैसे यतीम पोता-पोती आदि; या ऐसा कोई नातेदार जो सहारे का मुहताज हो। भलाई के दूसरे कामों में खर्च करने के लिए भी वसीयत की जा सकती है। यदि कोई वसीयत में ज़्यादती कर जाता है, तो घर वाले स्वयं या अदालत द्वारा उसे बदल सकते हैं।
७. चाहे एक पत्नी हो या कई पत्नियाँ हों यदि औलाद है, तो उन में बराबरी के साथ माल का आठवाँ हिस्सा बाँट दिया जायेगा; और यदि औलाद नहीं है, तो बराबरी के साथ उन में माल का चौथाई भाग बाँटा जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और यदि ऐसा हो कि किसी पुरुष या स्त्री के न तो औलाद हो और न उस के माता-पिता ही जीवित हों, और उस के एक भाई या एक बहिन हो तो उन दोनों में से प्रत्येक का छठा हिस्सा होगा, और यदि वे (भाई-बहन) इस से अधिक हों, तो फिर एक तिहाई[८] में वे सब शरीक होंगे, वसीयत जो की गई हो पूरी कर देने और ऋण चुका देने के बाद जब कि वह हानि पहुँचाने वाला न हो[९]। यह वसीयत अल्लाह की ओर से है। और अल्लाह जानने वाला और सहनशील है।

१३. ये अल्लाह की (निश्चित की हुई) सीमायें हैं। और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वह सदैव रहेगा। और यही बड़ी सफलता है।

१४. और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' की अवज्ञा करेगा और उस की सीमाओं से आगे बढ़ेगा, उसे अल्लाह आग ('जहन्नम') में डालेगा, जहाँ उसे सदा रहना होगा; और उस के लिए अपमानजनक यातना है।

१५. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार में ग्रस्त हों, उन पर अपने में से चार की गवाही लो। फिर यदि वे गवाही दें तो उन्हें घरों में बन्द रक्खो यहाँ तक कि उन्हें मृत्यु ग्रस्त ले या अल्लाह उन के लिए कोई राह निकाले।

१६. और तुम में से जो दोनों यह कर्म करें, तो उनकी ताड़ना करो। फिर यदि वे 'तौबा' करें और सुधर जायें, तो उन्हें छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह 'तौबा' क़बूल करने वाला और दयावन्त है।[१०]

woman have a distant heir (having left neither parent nor child), and (he or she) have a brother or a sister (only on the mother's side) then to each of them twain (the brother and the sister) the sixth, and if they be more than two, then they shall be shares in the third, after any legacy that may have been bequeathed or debt (contracted) not injuring (the heirs by willing away more than a third of the heritage) hath been paid. A commandment from Allah. Allah is Knower, Indulgent.

13. These are the limits (imposed by) Allah. Whoso obeyeth Allah and His messenger, He will make him enter Gardens underneath which rivers flow, where such will dwell for ever. That will be the great success.

14. And whoso disobeyeth Allah and His messenger and transgresseth His limits, He will make him enter Fire, where such will dwell for ever; his will be a shameful doom.

15. As for those of your women who are guilty of lewdness, call to witness four of you against them. And if they testify (to the truth of the allegation) then confine them to the houses until death take them or (until) Allah appoint for them a way (through new legislation).

16. And as for the two of you who are guilty thereof, punish them both. And if they repent and improve, then let them be. Lo! Allah is Relenting, Merciful.

وَإِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَٰلَةً
أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ
فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ
فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ
فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِن بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ
مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَلِيمٌ ⑫
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَن يُطِعِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑬
وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَ
يَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا
خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ
مُّهِينٌ ⑭
وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِن
نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ
أَرْبَعَةً مِّنكُمْ فَإِن شَهِدُوا
فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ
الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ⑮
وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا فَإِن
تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ⑯

८. यदि कोई और वारिस हो तो शेष ⅚ या ⅔ भाग उसे मिलेगा और यदि कोई दूसरा वारिस न हो तो इस पूरे शेष भाग के बारे में उस व्यक्ति को वसीयत करने का अधिकार होगा।

इस आयत में भाई-बहिनों का तात्पर्य जो केवल माता की ओर से मरने वाले के भाई-बहिन हों, पिता उन का दूसरा हो। सगे भाई-बहिन और ऐसे सौतेले भाई-बहिन, बाप के सम्बन्ध से जिन का मरने वाले के साथ नाता हो, उन के बारे में सूरा के अन्त में आदेश दिया गया है।

९. अर्थात् जब कि मरने वाले ने न तो वसीयत में किसी तरह का अन्याय किया हो; और न हक़दारों को हक़ से वंचित करने के लिए कर्ज़ का कोई झूठा इक़रार किया हो। इसी आधार पर नबी सल्ल० ने वसीयत को तिहाई माल तक सीमित कर दिया है।

१०. आयत १५ और १६ में कुकर्म के बारे में प्रारम्भिक आदेश दिया गया है, बाद में इस की सज़ा निश्चित कर दी गई। देखिए सूरा अन-नूर, आयत २-१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. उन्हीं लोगों की 'तौबा' क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है जो अज्ञानता से प्रेरित हो कर कोई बुराई कर बैठते हैं फिर जल्द ही 'तौबा' करते हैं। वही हैं जिन्हें अल्लाह क्षमा कर देता है। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

17. Forgiveness is only incumbent on Allah toward those who do evil in ignorance (and) then turn quickly (in repentance) to Allah. These are they toward whom Allah relenteth. Allah is ever Knower, Wise.

إنما التوبة على الله للذين يعملون
السوء بجهالة ثم يتوبون من
قريب فأولئك يتوب الله عليهم ط
وكان الله عليما حكيما ۱۷

१८. और ऐसे लोगों की 'तौबा' नहीं जो बुरे कर्म करते रहे यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मृत्यु का समय आ गया, तो उस ने कहा : अब मैं ने 'तौबा' की; और न उन की 'तौबा' है जो मरते दम तक 'काफ़िर' रहें। उन के लिए हम ने दुखद यातना तैयार कर रक्खी है।

18. The forgiveness is not for those who do ill deeds until, when death attendeth upon one of them, he saith: Lo! I repent now; nor yet for those who die while they are disbelievers. For such We have prepared a painful doom.

وليست التوبة للذين يعملون
السيئات ج حتى إذا حضر أحدهم
الموت قال إني تبت الآن
ولا الذين يموتون وهم كفار ط
أولئك أعتدنا لهم عذابا أليما ۱۸

१९. हे 'ईमान' लाने वालो! तुम्हारे लिए 'वैध' नहीं कि स्त्रियों के ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और न यह वैध है कि उन्हें इस लिए रोको कि जो कुछ तुम ने उन्हें दिया है उस में से कुछ हिस्सा ले लो, हाँ यदि वे खुले रूप से अश्लील कर्म करें तो दूसरी बात है। और उन के साथ भले तरीक़े से रहो-सहो, यदि वे तुम्हें नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम नापसन्द करते हो और अल्लाह उस में बहुत कुछ भलाई पैदा कर दे।

19. O ye who believe! It is not lawful for you forcibly to inherit the women (of your deceased kinsmen) nor (that) ye should put constraint upon them that ye may take away a part of that which ye have given them, unless they be guilty of flagrant lewdness. But consort with them in kindness, for if ye hate them it may happen that ye hate a thing wherein Allah hath placed much good.

يا أيها الذين آمنوا لا يحل
لكم أن ترثوا النساء كرها ط
ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض
ما آتيتموهن إلا أن يأتين
بفاحشة مبينة ج وعاشروهن
بالمعروف ج فإن كرهتموهن فعسى
أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه
خيرا كثيرا ۱۹

२०. और यदि तुम एक पत्नी को छोड़ कर उस की जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो तो चाहे तुम ने उन में से एक को ढेरों माल दे दिया हो, उस में से कुछ न लेना। क्या तुम उस पर झूठा आरोप लगा कर और स्पष्टत: हक़ मार कर उसे लोगे?

20. And if ye wish to exchange one wife for another and ye have given unto one of them a sum of money (however great), take nothing from it. Would ye take it by the way of calumny and open wrong?

وإن أردتم استبدال زوج مكان
زوج لا وآتيتم إحداهن قنطارا فلا
تأخذوا منه شيئا ط أتأخذونه بهتانا
وإثما مبينا ۲۰

२१. और तुम उसे किस तरह ले सकते हो जब कि तुम एक दूसरे के आगे अनावरित हो चुके हो, और वे तुम से दृढ़ प्रण ले चुकी हैं?

21. How can ye take it (back) after one of you hath gone in unto the other, and they have taken a strong pledge from you?

وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم
إلى بعض وأخذن منكم ميثاقا غليظا ۲۱

२२. और उन स्त्रियों से विवाह न करो जिन से तुम्हारे पिता विवाह कर चुके हों, परन्तु जो हो चुका। निस्सन्देह यह एक अश्लील कर्म और घृणित बात है, और बुरी रीति है :

22. And marry not those women whom your fathers married except what hath already happened (of that nature) in the past. Lo! it was ever lewdness and abomination, and an evil way.

ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء
إلا ما قد سلف ط إنه كان فاحشة
ومقتا ط وساء سبيلا ۲۲ ع

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. तुम पर हराम की गईं तुम्हारी मातायें[११], तुम्हारी बेटियाँ,[१२], तुम्हारी बहिनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी ख़ालायें, तुम्हारी भतीजियाँ, और भानजियाँ, और तुम्हारी वे मातायें जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया, और तुम्हारी दूध-शरीक बहिनें[१३], और तुम्हारी स्त्रियों की मातायें, और उन की (तुम्हारी स्त्रियों की) बेटियाँ जो तुम्हारी गोदों में पलीं—तुम्हारी उन स्त्रियों की बेटियाँ जिन से तुम संभोग कर चुके हो परन्तु यदि संभोग नहीं किया है, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं—और तुम्हारे उन बेटों की स्त्रियाँ जो तुम्हारे वीर्य्य से हों। और यह कि एक समय में दो बहिनों को इकट्ठा करो,[१४] परन्तु पहले जो हो चुका। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।

*२४. और विवाहित स्त्रियाँ भी तुम पर हराम हैं जो किसी के निकाह में हों, सिवाय उन के जो ('लौंडी' के रूप में) तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। ये अल्लाह के आदेश हैं जो तुम्हें दिये गये हैं। इन के अतिरिक्त और स्त्रियाँ तुम्हारे लिए वैध हैं, कि तुम अपने माल द्वारा उन्हें प्राप्त करो इस तरह कि तुम उन से विवाह कर लो, न कि व्यभिचार करने लगो। फिर उन में से जिन से तुम दाम्पत्य-जीवन का जो फ़ायदा उठाओ, उस के बदले उन का निश्चित किया हुआ हक़ ('मह्र') अदा करो। और यदि हक़ निश्चित हो जाने के पश्चात् तुम आपस में अपनी प्रसन्नता से कोई समझौता कर लो, तो इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

23. Forbidden unto you are your mothers, and your daughters and your sisters and your father's sisters, and your mother's sisters, and your brother's daughters and your sister's daughters, and your foster-mothers, and your foster-sisters, and your mothers-in-law, and your step-daughters who are under your protection (born) of your women upto whom ye have gone in — but if ye have not gone in unto them, then it is no sin for you (to marry their daughters) — and the wives of your sons who (spring) from your own loins. And (it is forbidden unto you) that ye should have two sisters together, except what hath already happened (of that nature) in the past. Lo! Allah is ever Forgiving, Merciful.

24. And all married women (are forbidden) unto you save those (captives) whom your right hands possess. It is a decree of Allah for you. Lawful unto you are all beyond those mentioned, so that ye seek them with your wealth in honest wedlock, not debauchery. And those of whom ye seek content (by marrying them), give unto them their portions as a duty. And there is no sin for you in what ye do by mutual agreement after the duty (hath been done). Lo! Allah is ever Knower, Wise.

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ
وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْأَخِ وَبَنٰتُ
الْأُخْتِ وَأُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَ
أَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ
وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِي فِي حُجُورِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ
الّٰتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَّمْ تَكُونُوا
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز
وَحَلَآئِلُ أَبْنَآئِكُمُ الَّذِينَ مِنْ
أَصْلَابِكُمْ ۙ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ
الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ط إِنَّ
اللّٰهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٣﴾
وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ إِلَّا مَا الجزء الخامس ٥
مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ج كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ج
وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ أَنْ
تَبْتَغُوا بِأَمْوٰلِكُمْ مُّحْصِنِينَ غَيْرَ
مُسٰفِحِينَ ط فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ
مِنْهُنَّ فَاٰتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ط
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرٰضَيْتُمْ
بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ط إِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٢٤﴾

११. इसी हुक्म में बाप की माता और माता की माता सब आ गईं।

१२. बेटी में पोती और नतिनी भी आ जाती है।

१३. जिस स्त्री का दूध पिया हो वह माता-समान है, और उस का पति पिता-समान होता है। इस नाते से भी वे सभी रिश्ते हराम ठहरेंगे जो माता-पिता के नाते से हराम हैं।

१४. इसी प्रकार ख़ाला (मौसी) और भानजी, फूफी और भतीजी से भी एक साथ विवाह नहीं किया जा सकता। ऐसी स्त्रियों से एक साथ विवाह करना हराम है जिन में से यदि कोई पुरुष होती, तो उस का दूसरी के साथ विवाह न हो सकता।

* यहाँ से पाँचवाँ पारा (**Part V**) शुरू होता है'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. और तुम में से जिस किसी में इतना सामर्थ्य न हो कि 'ईमान' वाली महिलाओं से विवाह करे, तो तुम्हारी वे 'लौंडियाँ' ही सही जो तुम्हारे अधिकार में हों, जो 'ईमान वाली' हों। और अल्लाह तुम्हारे 'ईमान' को भली-भाँति जानता है। तुम सब आपस में सहजाति हो; तो उन के मालिकों की अनुमति से तुम उन से विवाह कर लो, और सामान्य नियम के अनुसार उन्हें उन के 'मह्र' अदा करो, इस तरह से कि वे विवाहिता बनाई जायें, न वे व्यभिचार करने वाली हों और न चोरी-छिपे प्रेम करने वाली हों।

फिर जब वे विवाहिता बना ली जायें और उस के पीछे कोई व्यभिचार कर बैठें तो जो दण्ड महिलाओं के लिए है उस का आधा उन के लिए होगा।[१५] यह तुम में उस के लिए है जिसे आपत्ति में पड़ जाने का भय हो। और यह कि तुम सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

25. And whoso is not able to afford to marry free, believing women, let them marry from the believing maids whom your right hands possess. Allah knoweth best (concerning) your faith. Ye (proceed) one from another; so wed them by permission of their folk, and give unto them their portions in kindness, they being honest, not debauched nor of loose conduct. And if when they are honourably married they commit lewdness they shall incur the half of the punishment (prescribed) for free women (in that case). This is for him among you who feareth to commit sin. But to have patience would be better for you. Allah is Forgiving, Merciful.

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ
مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ
تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾

२६. अल्लाह चाहता है कि तुम पर स्पष्ट कर दे और उन्हीं के तरीक़ों पर तुम्हें चलाये जो तुम से पहले थे, और तुम पर दया-दृष्टि करे। अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

26. Allah would explain to you and guide you by the examples of those who were before you, and would turn to you in mercy. Allah is Knower, Wise.

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾

२७. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया-दृष्टि करे; और वे लोग जो तुच्छ इच्छाओं (वासनाओं) का पालन करते हैं चाहते हैं कि तुम भारी कजी में पड़ जाओ।

27. And Allah would turn to you in mercy; but those who follow vain desires would have you go tremendously astray.

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۫ وَ
يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

२८. अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे, और मनुष्य निर्बल बनाया गया है।

28. Allah would make the burden light for you, for man was created weak.

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ
خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

२९. [१६]हे ईमान लाने वालो! परस्पर एक दूसरे के माल अवैध रूप से न खाओ, सिवाय इस के कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो, और अपनों की हत्या न करो। निस्सन्देह अल्लाह तुम पर दयावान् है।

29. O ye who believe! Squander not your wealth among yourselves in vanity, except it be a trade by mutual consent, and kill not one another. Lo! Allah is ever Merciful unto you.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۫ وَلَا
تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾

१५. अर्थात् सूरा अन-नूर में जो दण्ड महिलाओं के लिए निर्धारित किया है अर्थात् १०० कोड़े उस की आधी सज़ा इन्हें दी जायेगी।
१६. यहाँ से हक़ अथवा स्वत्व (Rights) की रक्षा का दूसरा बयान शुरू होता है। जिस का सम्बन्ध विशेष रूप से समाज और सामाजिक मामलों से है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. और जो कोई ज़्यादती और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, उसे हम जल्द ही कठिन आग में झोंक देंगे और यह अल्लाह के लिए बहुत ही सरल है।

३१. यदि तुम उन बड़ी-बड़ी चीज़ों से बचते रहो जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारी छोटी-छोटी बुराइयों को तुम से दूर कर देंगे और तुम्हें आदर के स्थान में प्रवेश करायेंगे।

३२. जो कुछ अल्लाह ने तुम में से किसी को दूसरों के मुक़ाबले में अधिक दिया है उस की कामना न करो—पुरुषों ने जो कुछ कमाया है उस के अनुसार उन का हिस्सा है, और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है उस के अनुसार उन का हिस्सा है—और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल माँगो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

३३. और हम ने हर ऐसे माल के, जिसे माता-पिता और नातेदार छोड़ जायें वारिस ठहरा दिये हैं; और जिन लोगों को तुम वचन दे चुके हो, उन्हें भी उन का हिस्सा दो। निस्सन्देह हर चीज़ अल्लाह के समक्ष है।

३४. पुरुष स्त्रियों के सिरधरे हैं, इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है,[१७] और इस लिए भी कि उन्हों ने अपने माल ख़र्च किये हैं। तो जो नेक स्त्रियाँ होती हैं वे आज्ञापालन करने वाली और रहस्यों की रक्षा करने वाली होती हैं इस लिए कि अल्लाह ने भी रहस्यों की रक्षा की है। और जो स्त्रियाँ ऐसी हों जिन की सरकशी का तुम्हें भय हो, उन्हें समझाओ, बिस्तरों में उन्हें तनहा छोड़ दो और उन्हें मारो। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगें, तो उन के विरुद्ध कोई राह न ढूंढो। निस्सन्देह अल्लाह सब से उच्च और महान् है।

30. Whoso doth that through aggression and injustice, We shall cast him into Fire, and that is ever easy for Allah.

31. If ye avoid the great (things) which ye are forbidden, We will remit from you your evil deeds and make you enter at a noble gate.

32. And covet not the thing in which Allah hath made some of you excel others. Unto men a fortune from that which they have earned, and unto women a fortune from that which they have earned. (Envy not one another) but ask Allah of His bounty. Lo! Allah is ever Knower of all things.

33. And unto each We have appointed heirs of that which parents and near kindred leave and as for those with whom your right hands have made a covenant, give them their due. Lo! Allah is ever Witness over all things.

34. Men are incharge of women, because Allah hath made the one of them to excel the other, and because they spend of their property (for the support of women). So good women are the obedient, guarding in secret that which Allah hath guarded. As for those from whom ye fear rebellion, admonish them and banish them to beds apart, and scourge them. Then if they obey you, seek not a way against them. Lo! Allah is ever High, Exalted, Great.

ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما
فسوف نصليه نارا ط وكان ذلك
على الله يسيرا ﴿٣٠﴾
إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه
نكفر عنكم سيئاتكم وندخلكم
مدخلا كريما ﴿٣١﴾
ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم
على بعض ط للرجال نصيب مما
اكتسبوا ط وللنساء نصيب مما
اكتسبن ط وسئلوا الله من فضله ط
إن الله كان بكل شيء عليما ﴿٣٢﴾
ولكل جعلنا موالي مما ترك
الوالدان والأقربون ط والذين
عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم ط
ع إن الله كان على كل شيء شهيدا ﴿٣٣﴾
الرجال قوامون على النساء بما
فضل الله بعضهم على بعض و
بما أنفقوا من أموالهم ط فالصالحات
قانتات حافظات للغيب بما حفظ
الله ط واللاتي تخافون نشوزهن
فعظوهن واهجروهن في
المضاجع واضربوهن ج فإن
أطعنكم فلا تبغوا عليهن
سبيلا ط إن الله كان عليا
كبيرا ﴿٣٤﴾

१७. अर्थात् पुरुष को अल्लाह ने स्वभावतः कुछ ऐसी शक्तियाँ और गुण प्रदान किये हैं जिस के कारण पारिवारिक जीवन में सरपरस्त और सिरधरे का पद उसी को प्राप्त है। स्त्री को स्वभावतः पुरुष के संरक्षण में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस में स्त्री का कोई अपमान नहीं है, बल्कि इसी में स्त्री के स्त्रीत्व का रहस्य निहित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. और यदि तुम्हें उन पति-पत्नी के बीच बिगाड़ का डर हो, तो एक पंच पुरुष के लोगों में से और एक स्त्री के लोगों में से नियुक्त करो। यदि वे दोनों सुधार चाहेंगे तो अल्लाह दोनों में अनुकूलता पैदा कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।

३६. और अल्लाह ही की 'बन्दगी' करो। और उस के साथ किसी को साझी न ठहराओ। और अच्छा व्यवहार करो। माता-पिता के साथ और नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, नातेदार पड़ोसियों के साथ और उन पड़ोसियों के साथ जिन से सम्बन्ध न हो, और पास के व्यक्ति के साथ और राह चलने वाले के साथ और उन ('लौंडी'–गुलामों) के साथ जो तुम्हारे अधिकार में हों निस्सन्देह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो इतराने वाला और डींग मारने वाला हो।

३७. वे जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी करने की सम्मति देते है, और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो कुछ उन्हें दे रक्खा है उसे छिपाते हैं। और हम ने 'काफ़िरों' (अकृतज्ञों) के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रक्खी है;

३८. वे जो अपने माल केवल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, और न अल्लाह पर 'ईमान' रखते हैं और न अन्तिम दिन पर। और जिस किसी का साथी-शैतान' हुआ तो वह बहुत ही बुरा साथी है।

३९. उन का क्या बिगड़ जाता यदि वे अल्लाह पर और अंन्तिम दिन पर 'ईमान' लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उस में से ख़र्च करते। और अल्लाह उन्हें भलीभाँति जानता है।

४०. अल्लाह किसी के साथ तनिक भी अन्याय नहीं करता; यदि एक नेकी हो, तो उसे कई गुना बढ़ायेगा और अपनी ओर से बड़ा बदला प्रदान करेगा।

४१. फिर क्या हाल होगा जब हम हर गरोह में से एक गवाह लायेंगे, और तुम्हें (हे पैग़म्बर!) इन लोगों पर गवाह बना कर लायेंगे।

35. And if ye fear a breach between them twain (the man and wife), appoint an arbiter from his folk and an arbiter from her folk. If they desire amendment Allah will make them of one mind. Lo! Allah is ever Knower, Aware.

36. And serve Allah. Ascribe nothing as partner unto Him. (Show) kindness unto parents, and unto near kindred, and orphans, and the needy, and unto the neighbour who is of kin (unto you) and the neighbour who is not of kin, and the fellow-traveller and the wayfarer and (the slaves) whom your right hands possess. Lo! Allah loveth not such as are proud and boastful:

37 Who hoard their wealth and enjoin avarice on others, and hide that which Allah hath bestowed upon them of His bounty. For disbelievers We prepare a shameful doom;

38. And (also) those who spend their wealth in order to be seen of men, and believe not in Allah nor the Last Day. Whoso taketh Satan for a comrade, a bad comrade hath he.

39. What have they (to fear) if they believe in Allah and the Last Day and spend (aright), of that which Allah hath bestowed upon them, when Alah is ever Aware of them (and all they do)?

40. Lo! Allah wrongeth not even of the weight of an ant; and if there is a good deed, He will double it and will give (the doer) from His presence an immense reward.

41. But how (will it be with them) when We bring of every people a witness, and We bring the (O Muhammad) a witness against these?

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا
حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ
أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا
يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ
شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَ
الْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ
وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ﴿٣٦﴾
الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ
مِنْ فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٣٧﴾
وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ
الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٨﴾
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ
وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٣٩﴾
إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَ
إِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾
فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ
وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. उस दिन वे लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया होगा और 'रसूल' की बात न मानी होगी यही इच्छा करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि उन सहित धरती बराबर कर दी जाती और वे अल्लाह से कोई बात भी न छिपा सकेंगे।

42. On that day those who disbelieved and disobeyed the mesenger will wish that they were level with the ground, and they can hide no fact from Allah.

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ
عَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ
الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللّٰهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

४३. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम नशे में हो तो 'नमाज़' के निकट न जाओ,[१८] जब तक कि तुम यह न जानने लगो कि क्या कह रहे हो, और न नापकी[१९] की दशा में नमाज़ के निकट जाओ, जब तक कि स्नान न कर लो, सिवाय इस के कि बस गुज़र जाना इच्छित हो।[२०] और यदि तुम बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई शौच कर के आये, या तुम स्त्रियों के पास गये हो, फिर तुम्हें पानी न मिले, तो शुद्ध जगह देखो और अपने चेहरे और हाथों को मलो[२१]। निस्सन्देह अल्लाह नर्मी से काम लेने वाला और अत्यन्त क्षमाशील है।

43. O ye who believe! Draw not near unto prayer when ye are drunken, till ye know that which ye utter, nor when ye are polluted, save when journeying upon the road, till ye have bathed. And if ye be ill, or on a journey, or one of you cometh from the closet, or ye have touched women, and ye find not water, then go to high clean soil and rub your faces and your hands (therewith). Lo! Allah is Benign, Forgiving..

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ
وَأَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوا مَا
تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي
سَبِيلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى أَوْ عَلٰى سَفَرٍ أَوْ جَآءَ أَحَدٌ
مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَآءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا
طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

४४. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया ? वे गुमराही मोल लेते हैं, और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ।

44. Seest thou not those unto whom a portion of the Scripture hath been given, how they purchase error, and seek to make you (Muslims) err from the right way?

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ
الْكِتٰبِ يَشْتَرُونَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيدُونَ
أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾

४५. और अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। और अल्लाह एक संरक्षक-मित्र की हैसियत से काफ़ी है, और अल्लाह एक सहायक की हैसियत से काफ़ी है।

45. Allah knoweth best (who are) your enemies. Allah is sufficient as a Friend, and Allah is sufficient as a Helper.

وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَآئِكُمْ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

१८. शराब (मदिरा) के बारे में यह दूसरा आदेश है। सूरा अल-बक़रा आयत २१९ में केवल इतनी बात कही गई थी कि शराब बुरी चीज़ है। इस दूसरे हुक्म के कुछ समय बाद शराब बिल्कुल हराम कर दी गई। देखिये सूरा अल-माइदा आयत ९०।

१९. यहाँ नापाकी का तात्पर्य वह नापाकी है जब आदमी के लिए नहाना ज़रूरी हो जाता है।

२०. जब नहाने की ज़रूरत हो तो आदमी को मस्जिद में भी न जाना चाहिए परन्तु यदि किसी मजबूरी से मस्जिद में से गुज़रना ही पड़े तो इस वाक्य से इस की इजाज़त निकलती है।

२१. अर्थात् पाक मिट्टी पर दोनों हाथ मारे फिर सारे मुँह पर अच्छी तरह मले। इसी तरह फिर दुबारा हाथ मार कर दोनों हाथों को कुहनियों तक मले। इस का पारिभाषिक नाम तयम्मुम है। यह नमाज़ का आदर और पवित्रता की भावना बाक़ी रखने का एक उत्तम उपाय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. ये लोग जो 'यहूदी' हैं शब्दों को उन की जगहों से फेर देते हैं और कहते हैं : 'समेअना व असैना'[२२]; और 'इस्मअ ग़ैर मुस्मइन'[२३] और 'राइना'[२४] !—अपनी ज़ुबानों को तोड़-मरोड़ कर, और अल्लाह के 'दीन' पर चोट करते हुये। और यदि वे कहते, 'समेअना व अतअना'[२५]; और 'इस्मअ'[२६] और 'उनज़ुरना'[२७] तो यह उन के लिए अच्छा था, और बात भी ठीक होती। परन्तु उन पर तो उन के 'कुफ़' के कारण अल्लाह ने लानत की है, इस लिए वे कम ही 'ईमान' लाते हैं।

46. Some of those who are Jews change words from their context and say: "We hear and disobey; hear thou as one who heareth not" and 'Listen to us!'"* distorting with their tongues and slandering religion. If they had said: "We hear and we obey; hear thou, and look at us" it had been better for them, and more upright. But Allah hath cursed them for their disbelief, so they believe not, save a few.

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا
لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ وَلَوْ
اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ
وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ
وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

४७. हे वे लोगो जिन्हें किताब दी गई, उस चीज़ पर जिसे हम ने उतारा है और जो उस चीज़ की पुष्टि करती है जो स्वयं तुम्हारे पास है, 'ईमान' लाओ इस से पहले कि हम चेहरों को बिगाड़ दें और उन्हें उन के पीछे की ओर फेर दें, या उन पर लानत कर दें जिस तरह 'सब्त'[२८] वालों पर लानत की थी। और अल्लाह का हुक्म तो हो कर रहने वाला है।

47. O ye unto whom the Scripture hath been given! Believe in what We have revealed confirming that which ye possess, before We destroy countenances so as to confound them, or curse them as We cursed the Sabbath-breakers (of old time). The commandment of Allah is always executed.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا
نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى
اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ
السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

४८. निस्सन्देह अल्लाह इस को क्षमा नहीं करेगा कि उस का सहभागी ठहराया जाये। और इस के सिवा जो कुछ है उसे जिस के लिए चाहेगा क्षमा कर देगा। और जो कोई अल्लाह का सहभागी ठहराये, उस ने बहुत बड़ा गुनाह गढ़ा।

48. Lo! Allah fogivrth not that a partner should be ascribed unto Him. He forgiveth (all) save that to whom He will. Whoso ascribeth partners to Allah, he hath indeed invented a tremendous sin.

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ
مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

४९. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने पवित्रात्मा होने का दम भरते हैं? बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है पवित्रता प्रदान करता है, और उन के साथ बाल बराबर अन्याय नहीं किया जायेगा।

49. Hast thou not seen those who praise themselves for purity? Nay, Allah purifieth whom He will, and they will not be wronged even the hair upon a date-stone.

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ
بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا
يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

२२. इस वाक्य का अर्थ है 'हम ने सुना और नहीं माना'। यहूदियों का हाल यह था कि जब उन्हें अल्लाह के आदेश सुनाये जाते, तो ये कहते कि 'समेअना' (हम ने सुना) परन्तु साथ ही यह भी कहते कि 'असैना' अर्थात् हम मानने वाले नहीं हैं।

२३. जब ये यहूदी नबी सल्ल० से बात-चीत करते समय 'इस्मअ' कहते अर्थात् आप हमारी बात सुनिए, तो साथ ही 'ग़ैर मुस्मइन' भी कहते जिस के कई अर्थ होते हैं। इस का एक अर्थ तो यह है कि आप को कोई बुरी और अनुचित बात नहीं सुनाई जा सकती। इस का दूसरा अर्थ यह होता है कि तुम इस योग्य नहीं कि तुम्हें कोई बात सुनाई जाये। इस का एक अर्थ यह भी होता है कि तुम बहरे हो जाओ।

२४. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट न० ३०।

२५. अर्थात् हम ने सुना और माना।

२६. अर्थात् आप हमारी बात सुन लीजिए।

२७. अर्थात् हमारी ओर ध्यान दीजिए या हमें समझ लेने दीजिए।

२८. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट न० २३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ गढ़ते हैं ! स्पष्ट हुआ गुनाह होने के लिए तो यही पर्याप्त है।

50. See, how they invent lies about Allah! That of itself is flagrant sin.

انظر كيف يفترون على الله الكذب
وكفى به إثما مبينا ﴿٥٠﴾

५१. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया ? वे 'जिब्त'[२९] और 'तागूत' पर 'ईमान' लाते हैं, और 'काफ़िरों' को कहते हैं कि ये 'ईमान लाने वालों' से बढ़ कर सीधे मार्ग पर हैं।

51. Hast thou not seen those unto whom a portion of the Scripture hath been given, how they believed in idols and false deities, and how they say of those (idolaters) who disbelieve: "These are more rightly guided than those who believe?"

ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا
من الكتب يؤمنون بالجبت والطاغوت
ويقولون للذين كفروا هؤلاء
أهدى من الذين آمنوا سبيلا ﴿٥١﴾

५२. ये लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है, और जिस पर अल्लाह ने लानत की, तुम किसी को उस का सहायक नहीं पा सकते।

52. Those are they whom Allah hath cursed, and he whom Allah hath cursed, thou (O Muhammad) wilt find for him no helper.

أولئك الذين لعنهم الله ومن
يلعن الله فلن تجد له نصيرا ﴿٥٢﴾

५३. क्या राज-सत्ता में इन का कोई हिस्सा है ? फिर तो ये लोगों को रत्ती भर भी कुछ न देते।

53. Or have they even a share in the Sovereignty? Then in that case, they would not give mankind even the speak on a date-stone.

أم لهم نصيب من الملك فإذا لا
يؤتون الناس نقيرا ﴿٥٣﴾

५४. या फिर ये लोगों से इस लिए ईर्ष्या करते हैं कि अल्लाह ने उन पर अपना फ़ज़्ल किया है ? तो हम ने इबराहीम की सन्तान को 'किताब' और 'हिकमत' दी, और उन्हें बड़ा राज्य प्रदान किया[३०]।

54. Or are they jealous of mankind because of that which Allah of His bounty hath bestowed upon them? For We bestowed upon the house of Abraham (of old) the Scripture and Wisdom, and We bestowed on them a mighty kingdom.

أم يحسدون الناس على ما آتاهم
الله من فضله فقد آتينا آل
إبراهيم الكتب والحكمة وآتيناهم
ملكا عظيما ﴿٥٤﴾

५५. फिर उन में से कोई तो उस पर 'ईमान' लाया और किसी ने उस से मुँह मोड़ लिया। और ऐसों के लिए 'जहन्नम' की दहकती हुई अग्नि काफ़ी है।

55. And of them were (some) who believed therein and of them were (some) who disbelieved therein. Hell is sufficient for (their) burning.

فمنهم من آمن به ومنهم من
صد عنه وكفى بجهنم سعيرا ﴿٥٥﴾

५६. जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' का इन्कार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उन की खालें पक जायेंगी तो हम उन्हें और दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वदर्शी है।

56. Lo! Those who disbelieve Our revelations, We shall expose them to the Fire. As often as their skins are consumed We shall exchange them for fresh skins that they may taste the torment. Lo! Allah is ever Mighty, Wise.

إن الذين كفروا بآياتنا سوف
نصليهم نارا كلما نضجت جلودهم
بدلناهم جلودا غيرها ليذوقوا
العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ﴿٥٦﴾

५७. और जो लोग 'ईमान' लाये और अच्छे काम किये, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी जहाँ वे सदैव रहेंगे ; उन के लिए पाक जोड़े होंगे[३१]— और उन्हें हम घनी छाँव में दाखिल करेंगे।

57. And as for those who believe and do good works, We shall make them enter Gardens underneath which rivers flow—to dwell therein for ever; there for them are pure companions—and We shall make them enter plenteous shade.

والذين آمنوا وعملوا الصلحت
سندخلهم جنت تجري من
تحتها الأنهر خلدين فيها أبدا
لهم فيها أزواج مطهرة وندخلهم
ظلا ظليلا ﴿٥٧﴾

२९. 'जिब्त' का मूल अर्थ है तथ्यहीन और बेफ़ायदा चीज़ें (Superstition), यहाँ जादू, टोने-टोटके, शकुन, फ़ाल, और ऐसी ही दूसरी बातों को 'जिब्त' कहा गया है।

३०. अपनी इस कृपा का वचन अल्लाह ने पहले ही दिया था, दे० बाइबिल पैदाइश (Genesis) १२ : १-४ और- १७ : ६-७।

३१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतों को उन के मालिकों को अदा कर दिया करो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो, तो न्यायपूर्वक निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें कितना अच्छा उपदेश देता है। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।

58. Lo! Allah commandeth you that ye restore deposits to their owners, and, if ye judge between mankind, that ye judge justly. Lo! comely is this which Allah admonisheth you. Lo! Allah is ever Hearer, Seer.

إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات
إلى أهلها وإذا حكمتم بين الناس
أن تحكموا بالعدل إن الله نعما
يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا ﴿٥٨﴾

५९. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का आदेश मानो, और 'रसूल' का आदेश मानो और उनका जो तुम में अधिकारी लोग हैं; फिर यदि तुम्हारे बीच किसी बारे में झगड़ा हो जाये, तो उसे अल्लाह और 'रसूल' की ओर लौटाओ।[३२] यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन[३३] पर 'ईमान' रखते हो। यही तरीक़ा उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी बहुत अच्छा है।

59. O ye who believe! Obey Allah, and obey the messenger and those of you who are in authority; and if ye have a dispute concerning any matter, refer it to Allah and the messenger if ye are (in truth) believers in Allah and the Last Day. That is better and more seemly in the end.

يا أيها الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا
الرسول وأولي الأمر منكم فإن
تنازعتم في شيء فردوه إلى الله و
الرسول إن كنتم تؤمنون بالله واليوم
الآخر ذلك خير وأحسن تأويلا ﴿٥٩﴾

६०. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि वे उस चीज़ पर 'ईमान' रखते हैं जो तुम्हारी ओर उतारी गई है और जो तुम से पहले उतारी गई है, चाहते हैं कि फ़ैसला कराने के लिए 'तागूत' के पास जायें, हालाँकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उस का इन्कार करें। और 'शैतान' उन्हें भटका कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।

60. Hast thou not seen those who pretend that they believe in that which is revealed unto thee and that which was revealed before thee, how they would go for judgement (in their disputes) to false deities when they have been ordered to abjure them? Satan would mislead them far astray.

ألم تر إلى الذين يزعمون أنهم
آمنوا بما أنزل إليك وما أنزل
من قبلك يريدون أن يتحاكموا
إلى الطاغوت وقد أمروا أن
يكفروا به ويريد الشيطان أن
يضلهم ضلالا بعيدا ﴿٦٠﴾

६१. और जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारी है और 'रसूल' की ओर, तो तुम 'मुनाफ़िक़ों' को देखते हो कि वे तुम से कतराते जाते हैं।

61. And when it is said unto them: Come unto that which Allah hath revealed and unto the messenger, thou seest the hypocrites turn from thee with aversion.

وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل
الله وإلى الرسول رأيت المنافقين
يصدون عنك صدودا ﴿٦١﴾

६२. तो क्या होगा जब उन के अपने ही करतूतों के बदले उन पर कोई मुसीबत पहुँचेगी ? फिर तो वे तुम्हारे पास आकर अल्लाह की क़समें खायेंगे कि हम ने तो केवल भलाई और बनाव चाहा था।

62. How would it be if a misfortune smote them because of that which their own hands have sent before (them)? Then would they come unto thee, swearing by Allah that they were seeking naught but harmony and kindness.

فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما
قدمت أيديهم ثم جاءوك
يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا
وتوفيقا ﴿٦٢﴾

६३. ये वे लोग हैं कि इन के मन में जो कुछ है अल्लाह उसे भलि-भाँति जानता है। तो इन से उलझो नहीं और इन्हें समझाओ, और इन से स्वयं इन के बारे में वह बात कहो जो इन के मन में उतरने वाली हो।

63. Those are they, the secrets of whose hearts Allah knoweth. So oppose them and admonish them, and address them in plain terms about their souls.

أولئك الذين يعلم الله ما في قلوبهم
فأعرض عنهم وعظهم وقل
لهم في أنفسهم قولا بليغا ﴿٦٣﴾

३२. अर्थात् अल्लाह की किताब (क़ुरआन) और रसूल सल्ल० के दिये हुये आदेशों के अनुसार फ़ैसला करो।
३३. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. और हम ने जो 'रसूल' भी भेजा इसी लिए भेजा कि अल्लाह की अनुज्ञा से उस के आदेशों का पालन किया जाये। यदि ये, उस समय जब कि इन्हों ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करते और 'रसूल' भी इन के लिए क्षमा की प्रार्थना करता, तो निश्चय ही ये अल्लाह को 'तौबा' क़बूल करने वाला और दयावान् पाते।

64. We sent no messenger save that he should be obeyed by Allah's leave. And if, when they had wronged themselves, they had but come unto thee and asked forgiveness of Allah, and asked forgiveness of the messenger, they would have found Allah Forgiving, Merciful.

وما ارسلنا من رسول الا ليطاع
باذن الله ولو انهم اذ ظلموا
انفسهم جاءوك فاستغفروا الله
واستغفر لهم الرسول لوجدوا
الله توابا رحيما ٦٤

६५. तो नहीं, तुम्हारे 'रब' की क़सम, ये 'ईमान वाले' नहीं हो सकते जब तक कि यह बात न हो कि इन के बीच जो झगड़ा उठे उस में ये तुम से फ़ैसला करायें फिर जो फ़ैसला तुम कर दो उस पर ये अपने मन में कोई तंगी न पायें, और पूर्ण रूप से मान लें।

65. But nay, by thy Lord, they will not believe (in truth) until they make thee judge of what is in dispute between them and find within themselves no dislike of that which thou decidest, and submit with full submission.

فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك
فيما شجر بينهم ثم لا يجدوا في
انفسهم حرجا مما قضيت و
يسلموا تسليما ٦٥

६६. और यदि हम ने इन्हें आदेश दिया होता कि अपने आप को क़त्ल करो या अपने घरों से निकल जाओ, तो इन में से थोड़े ही ऐसा करते; और यदि ये उस का पालन करते जो इन्हें समझाया जाता है तो यह बात इन के लिए अच्छी होती, और ज़्यादा जमाव पैदा करने वाली भी होती।

66. And if We had decreed for them: Lay down your lives or go forth from your dwellings, but few of them would have done it; though if they did what they are exhorted to do it would be better for them, and more strengthening;

ولو انا كتبنا عليهم ان اقتلوا
انفسكم او اخرجوا من دياركم
ما فعلوه الا قليل منهم ولو
انهم فعلوا ما يوعظون به لكان
خيرا لهم واشد تثبيتا ٦٦

६७. और उस समय हम इन्हें अपनी ओर से बड़ा प्रतिदान प्रदान करते,

67. And then We should bestow upon them from Our presence an immense reward

واذا لاتينهم من لدنا اجرا عظيما ٦٧

६८. और इन्हें हम सीधे मार्ग पर लगा देते।

68. And should guide them unto a straight path.

ولهدينهم صراطا مستقيما ٦٨

६९. जो अल्लाह और 'रसूल' का आदेश मानेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने कृपा की है, जो 'नबी', 'सिद्दीक़', 'शहीद' और नेक लोग हैं। और ये कैसे अच्छे साथी हैं!

69. Whoso obeyeth Allah and the messenger, they are with those unto whom Allah hath shown favour, of the Prophets and the saints and the martyrs and the righteous. The best of company are they!

ومن يطع الله والرسول فاولئك
مع الذين انعم الله عليهم من
النبين والصديقين والشهداء و
الصلحين وحسن اولئك رفيقا ٦٩

७०. यह अल्लाह का फ़ज़्ल (देन और कृपा) है, और जानने वाले की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

70. Such is the bounty of Allah, and Allah sufficeth as Knower.

ع ذلك الفضل من الله وكفى بالله عليما ٧٠

७१. हे 'ईमान' लाने वालो! अपने हथियार सँभालो, फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो, या इकट्ठे होकर निकलो।

71. O ye who believe! Take your precautions, then advance the proven ones, or advance all together.

يايها الذين امنوا خذوا حذركم
فانفروا ثبات او انفروا جميعا ٧١

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. और तुम में ऐसे लोग भी है[३४] जो ढीले पड़ जाते हैं फिर यदि तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े, तो कहते हैं : अल्लाह ने मुझ पर कृपा की कि मैं इन लोगों के साथ हाज़िर न था।

७३. और यदि तुम पर अल्लाह की ओर से फ़ज़्ल हो, तो जैसे तुम्हारे और उन के बीच मित्रता ही नहीं, कहते हैं : क्या अच्छा होता कि मैं भी इन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त करता।

७४. तो जो लोग सांसारिक जीवन के बदले 'आख़िरत' का सौदा करें उन्हें चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेगा, तो चाहे वह मारा जाये या विजयी हो, उसे जल्द हम बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।

७५. और तुम अल्लाह के मार्ग में उन कमज़ोर पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए क्यों नहीं लड़ते जो प्रार्थनायें कर रहे हैं कि हमारे 'रब' ! तू हमें इस बस्ती[३५] से निकाल जहाँ के लोग अत्याचारी हैं ! और तू अपनी ओर से हमारे लिए कोई संरक्षक-मित्र पैदा कर ! और अपनी ओर से किसी को हमारा सहायक बना।

७६. जो लोग 'ईमान' लाये वे अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते है; और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया वे 'ताग़ूत' के मार्ग में युद्ध करते हैं। तो तुम 'शैतान' के साथियों से लड़ो। निस्सन्देह 'शैतान' की चाल बहुत कमज़ोर होती है।

72. Lo! among you there is he who loitereth; and if disaster overtook you, he would say: Allah hath been gracious unto me since I was not present with them.

73. And if a bounty from Allah befell you, he would surely cry, as if there had been no love between you and him: Oh, would that I had been with them, then should I have achieved a great success!

74. Let those fight in the way of Allah who sell the life of this world for the other. Whoso fighteth in the way of Allah, be he slain or be victorious, on him We shall bestow a vast reward.

75. How should ye not fight for the cause of Allah and of the feeble among men and of the women and the children who are crying: Our Lord! Bring us forth from out this town of which the people are oppressors! Oh, give us from Thy presence some protecting friend! Oh, give us from Thy presence some defender!

76. Those who believe do battle for the cause of Allah; and those who disbelieve do battle for the cause of idols. So fight the minions of the devil. Lo! the devil's strategy is ever weak.

وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ ۚ فَإِنْ
أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ
عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ﴿٧٢﴾
وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ
كَأَنْ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ
يَا لَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾
فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَ
مَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ
يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾
وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَ
النِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا
وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾
الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ
الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ
إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

३४. यह मुनाफ़िक़ों की अवज्ञा का हाल बताया जा रहा है।
३५. अर्थात् मक्का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन से कहा गया था कि अपने हाथ (लड़ाई से) रोके रक्खो, और 'नमाज़' क़ायम रक्खो और 'ज़कात' देते रहो, फिर जब उन्हें लड़ाई का आदेश दिया गया तो उन में से एक गरोह का हाल यह है कि वे लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह का डर हो या इस से भी बढ़ कर डर हो, कहने लगे : हमारे 'रब्ब' तू ने हमें युद्ध का आदेश क्यों दिया ? क्यों न थोड़ा अवकाश तू ने हमें और दे दिया ! कह दो : दुनिया की पूँजी थोड़ी है; और 'आख़िरत' ऐसे व्यक्ति के लिए ज़्यादा अच्छी है जो अल्लाह का डर रखता हो; और तुम्हारे साथ तनिक भी अन्याय न किया जायेगा।

77. Hast thou not seen those unto whom it was said: Withhold your hands, establish worship and pay the poor-due, but when fighting was prescribed for them behold! a party of them fear mankind even as their fear of Allah or with greater fear, and say: Our Lord! Why hast Thou ordained fighting for us? If only Thou wouldst give us respite yet a while! Say (unto them, O Muhammad): The comfort of this world is scant: the Hereafter will be better for him who wardeth off (evil); and ye will not be wronged the down upon a date-stone.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا
أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ
مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ
أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ
كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا
إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا
قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى
وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾

७८. तुम जहाँ कहीं भी रहोगे, मृत्यु तो तुम्हें आकर रहेगी, यद्यपि तुम मज़बूत बुर्जों के भीतर ही रहो।

और यदि उन्हें कोई फ़ायदा पहुँचता है तो कहते हैं : यह अल्लाह की ओर से है; और यदि उन्हें कोई हानि पहुँचती है तो कहते हैं : यह तुम्हारी ओर से है।[३६] कह दो : हर एक अल्लाह की ओर से है। तो इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात हो, समझ-बूझ के निकट भी नहीं होते ?

78. Wheresoever ye may be, death will overtake you, even though ye were in lofty towers. Yet if a happy thing befalleth them they say: This is from Allah; and if an evil thing befalleth them they say: This is of thy doing (O Muhammad). Say (unto them): All is from Allah. What is amiss with these people that they come not nigh to understand a happening?

أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ
فِي بُرُوجٍ مُشَيَّدَةٍ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ
يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِكَ
قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ
الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾

७९. जो भलाई भी तुझे हासिल हो वह अल्लाह की ओर से है, और जो आपत्ति तुझ पर आये वह तेरी ओर से है। (हे मुहम्मद !) हम नें तुम्हें लोगों के लिए 'रसूल' बना कर भेजा है और (इस पर) गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

79. Whatever of good befalleth thee (O man) it is from Allah, and whatever of ill befalleth thee it is from thyself. We have sent thee (Muhammad) as a messenger unto mankind and Allah is sufficient as witness.

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا
أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ وَ
أَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٧٩﴾

८०. जिस ने 'रसूल' का आदेश माना वास्तव में उस ने अल्लाह का आदेश माना, और जिस ने मुँह मोड़ा, तो हम ने तुम्हें ऐसे लोगों पर कोई रखवाला बना कर तो भेजा नहीं है।

80. Whoso obeyeth the messenger obeyeth Allah and whoso turneth away: We have not sent thee as a warder over them.

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ
وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ﴿٨٠﴾

८१. और वे दावा तो आज्ञापालन का करते हैं; फिर जब तुम्हारे पास से हटते हैं तो उन में एक गरोह अपने कहे के विरुद्ध गुप्त मंत्रणा करता है। जो कुछ वे गुप्त मंत्रणा करते हैं अल्लाह उसे लिख रहा है। तो तुम उनकी ओर ध्यान न दो और अल्लाह पर भरोसा रक्खो और कार्य-साधक की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

81. And they say: (It is) obedience; but when they have gone forth from thee a party of them spend the night in planning other than what thou sayest. Allah recordeth what they plan by night. So oppose them and put thy trust in Allah. Allah is sufficient as Trustee.

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ
عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي
تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٨١﴾

३६. अर्थात् तुम्हारे कारण है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८२. और क्या वे क़ुरआन पर सोच-विचार नहीं करते ? और यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो निश्चय ही वे इस में बहुत विभेद पाते।

82. Will they not then ponder on the Qur'an? If it had been from other than Allah they would have found therein much incongruity.

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾

८३. और जब उन के पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है, तो वे उसे फैला देते हैं, और यदि वे उसे 'रसूल' और अपने ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाते, तो उसे वे लोग जान लेते जो उन के बीच उस से सही नतीजा निकाल सकते हैं। और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता न होती तो थोड़े लोगों के सिवा, तुम सब 'शैतान' के पीछे चलने लग जाते।

83. And if any tidings, whether of safety or fear, come unto them, they noise it abroad, whereas if they had referred it to the messenger and such of them as are in authority, those among them who are able to think out the matter would have known it. If it had not been for the grace of Allah and His mercy ye would have followed Satan, save a few (of you).

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٣﴾

८४. तो तुम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो—तुम पर अपने सिवा किसी और का दायित्व नहीं—और 'ईमान' वालों को भी इस के लिए उभारो ! हो सकता है अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। अल्लाह बड़ा ज़ोर वाला है और वह सब से कड़ा दण्ड देने वाला है।

84. So fight (O Muhammad) in the way of Allah — Thou art not taxed (with the responsibility for anyone) except for thyself and—urge on the believers. Peradventure Allah will restrain the might of those who disbelieve. Allah is stronger in might and stronger in inflicting punishment.

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٨٤﴾

८५. जो कोई भली बात की सिफ़ारिश करेगा उस का उस में से हिस्सा होगा, और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा उस का उस में हिस्सा होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखने वाला है।

85. Whoso interventh in a good cause will have the reward thereof, and whoso interveneth in an evil cause will bear the consequence thereof. Allah overseeth all things.

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ﴿٨٥﴾

८६. और तुम्हें सलामती की कोई दुआ दी जाये तो तुम भी सलामती की उस से अच्छी दुआ दो या वही दोहरा दो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है।

86. When ye are greeted with a greeting, greet ye with a better than it or return it. Lo! Allah taketh count of all things.

وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾ النصف

८७. अल्लाह वह सत्ता है कि उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। वह तुम्हें 'क़ियामत' के दिन की ओर ले जाकर रहेगा जिस (के आने) में कोई सन्देह नहीं। और अल्लाह से बढ़ कर बात में सच्चा कौन हो सकता है ?

87. Allah! There is no God save Him. He gathereth you all unto a Day of Resurrection whereof there is no doubt. Who is more true in statement than Allah?

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾ ع

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८. फिर तुम्हें क्या हो गया कि 'मुनाफ़िक़ों' के बारे में तुम दो गरोह हो रहे हो, अल्लाह ने तो उन के करतूतों के कारण उन्हें उल्टा फेर दिया है? क्या तुम उसे मार्ग पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने मार्ग से हटा दिया है[३७]? और जिसे अल्लाह मार्ग से हटा दे, तुम उस के लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते।

88. What aileth you that ye are become two parties regarding the hypocrites when Allah cast them back to disbelief) because of what they earned? Seek ye to guide him whom Allah hath sent astray? He whom Allah sendeth astray, for him thou (O Muhammad) canst not find a road.

فما لكم في المنفقين فئتين والله
اركسهم بما كسبوا اتريدون
ان تهدوا من اضل الله
ومن يضلل الله فلن تجد
له سبيلا ﴿٨٨﴾

८९. वे चाहते हैं कि जिस तरह वे 'काफ़िर' हुए हैं उसी तरह तुम भी 'काफ़िर' हो जाओ, फिर तुम एक-जैसे हो जाओ: तो उन में से किसी को साथी न बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में 'हिजरत' न करें; और यदि वे इस से फिर जायें तो उन्हें जहाँ कहीं पाओ पकड़ो और उनका बध करो।[३८] और उन में से किसी को साथी और सहायक न बनाना।

89. They long that ye should disbelieve even as they disbelieve, that ye may be upon a level (with them). So choose not friends from them till they forsake their homes in the way of Allah; if they turn back (to enmity) then take them and kill them wherever ye find them, and choose no friend nor helper from among them.

ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون
سواء فلا تتخذوا منهم اولياء حتى
يهاجروا في سبيل الله فان تولوا
فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم
ولا تتخذوا منهم وليا ولا نصيرا ﴿٨٩﴾

९०. सिवाय उन लोगों के जो ऐसे लोगों से सम्बन्ध रखते हों कि तुम्हारे और उन के बीच सन्धि और समझौता हो, या वे तुम्हारे पास इस दशा में आयें कि न अपने अन्दर तुम से लड़ने का साहस पाते हों न अपने लोगों से। यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर प्रभुत्व दे देता, तो वे भी तुम से लड़ते। तो यदि वे तुम से अलग रहें और तुम से न लड़ें और सन्धि के लिए तुम्हारी ओर हाथ बढ़ायें, तो उन के विरुद्ध कुछ करने के लिए अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रक्खा है।

90. Except those who seek refuge with a people between whom and you there is a covenant, or (those who) come unto you because their hearts forbid them to make war on you or make war on their own folk. Had Allah willed He could have given them power over you so that assuredly they would have fought you. So, if they hold aloof from you and wage not war against you and offer you peace, Allah alloweth you no way against them.

الا الذين يصلون الى قوم بينكم
وبينهم ميثاق او جاءوكم حصرت
صدورهم ان يقاتلوكم او يقاتلوا
قومهم ولو شاء الله لسلطهم
عليكم فلقاتلوكم فان اعتزلوكم
فلم يقاتلوكم والقوا اليكم السلم
فما جعل الله لكم عليهم سبيلا ﴿٩٠﴾

९१. और दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुम्हारी ओर से भी निश्चिन्त होकर रहें, और अपने लोगों की ओर से भी निश्चिन्त हो कर रहें। परन्तु जब वे फ़ितना-(उपद्रव) की ओर लौटा कर ले जाये जाते हैं तो उस में जा पड़ते हैं। तो यदि वे तुम से अलग न रहें और तुम से सन्धि करनी न चाहें और अपने हाथ न रोकें, तो जहाँ कहीं उन्हें पाओ उन्हें पकड़ो और उनका बध करो। ये वे लोग हैं जिन के विरुद्ध हम ने तुम्हें खुला अधिकार दे दिया है।

91. Ye will find others who desire that they should have security from you, and security from their own folk. So often as they are returned to hostility they are plunged therein. If they keep not aloof from you nor offer you peace nor hold their hands, then take them and kill them wherever ye find them. Against such We have given you clear warrant.

ستجدون اخرين يريدون ان
يامنوكم ويامنوا قومهم كلما
ردوا الى الفتنة اركسوا فيها
فان لم يعتزلوكم ويلقوا اليكم
السلم ويكفوا ايديهم فخذوهم
واقتلوهم حيث ثقفتموهم واولئكم
جعلنا لكم عليهم سلطانا مبينا ﴿٩١﴾

३७. अर्थात् जिसे अल्लाह ने उस के अपने करतूतों के कारण सीधा मार्ग नहीं दिखाया।
३८. यह हुक्म उन 'मुनाफ़िक़ों' के लिए है जो इस्लामी हुकूमत के खिलाफ़ लड़ने वाले दुश्मनों से मिल जायें और तोड़-फोड़ के कामों में हिस्सा लें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९२. और यह किसी 'ईमान' वाले का काम नहीं है कि वह किसी 'ईमान' वाले का बध करे सिवाय भूल-चूक के। और जो भूल से किसी 'ईमान' वाले का बध कर दे तो एक 'ईमान' वाले व्यक्ति को ग़ुलामी से आज़ाद करना चाहिए, और उस (मारे गये व्यक्ति) के घर वालों को ख़ून के बदले में धन देना होगा, हाँ यदि वे क्षमा कर दें तो और बात है। तो यदि वह उन लोगों से जो तुम्हारे शत्रु हों और वह स्वयं 'ईमान' वाला हो, तो एक 'ईमान' वाले व्यक्ति को ग़ुलामी से आज़ाद करना चाहिए। और यदि वह उन लोगों में से हो कि तुम्हारे उन के बीच सन्धि और समझौता हो चुका हो, तो उस के घर वालों को ख़ून के बदले में धन देना होगा और एक 'ईमान' वाले को ग़ुलामी से आज़ाद करना होगा। फिर जो (ग़ुलाम) न पाये वह दो महीने निरन्तर रोज़े रक्खे। यह अल्लाह की ओर से ठहराई हुई 'तौबा' है। और अल्लाह जानने वाला और तत्वदर्शी है।

92. It is not for a believer to kill a believer unless (it be) by mistake. He who hath killed a believer by mistake must set free a believing slave, and pay the blood-money to the family of the slain, unless they remit it as a charity. If he (the victim) be of a people hostile unto you, and he is a believer, then (the penance is) to set free a believing slave. And if he cometh of a folk between whom and you there is a covenant, then the blood-money must be paid unto his folk and (also) a believing slave must be set free. And whoso hath not the wherewithal must fast two consecutive months. A penance from Allah. Allah is Knower, Wise.

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا
إِلَّا خَطَأً ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ
إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ وَإِنْ كَانَ
مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ
فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾

९३. और जो जान बूझ कर किसी 'ईमान' वाले की हत्या करे, तो उस का बदला 'जहन्नम' है जिस में वह सदा रहेगा। और उस पर अल्लाह का प्रकोप और उस की फिटकार है और उस के लिए अल्लाह ने बड़ी यातना तैयार कर रक्खी है।

93. Whoso slayeth a believer of set purpose, his reward is Hell for ever. Allah is wroth against him and He hath cursed him and prepared for him an awful doom.

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ
جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ
عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا
عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

९४. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम अल्लाह के मार्ग में निकलो, तो अच्छी तरह पता लगा लो और जो तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू 'मोमिन' नहीं है, और इस से तुम्हारा ध्येय यह हो कि सांसारिक जीवन का माल प्राप्त करो, अल्लाह के पास तो बहुत-सी ग़नीमतें हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे; फिर अल्लाह ने तुम पर अनुग्रह किया। तो अच्छी तरह पता लगा लिया करो, तुम जो कुछ करते हो निस्सन्देह अल्लाह उस की खबर रखता है।

94. O ye who believe! When ye go forth (to fight) in the way of Allah, be careful to discriminate, and say not unto one who offereth you peace: "Thou art not a believer," seeking the chance profits of this life (so that ye may despoil him). With Allah are plenteous spoils. Even thus (as he now is) were ye before; but Allah hath since then been gracious unto you. Therefore take care to discriminate. Allah is ever informed of what ye do.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا
لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا
تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ
كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

९५. बिना किसी आपत्ति के बैठ रहने वाले 'मोमिन' और अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठ रहने वालों की अपेक्षा अपने धन और अपने प्राणों से 'जिहाद' करने वालों का एक दर्जा बड़ा रक्खा है। और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है, परन्तु अल्लाह ने बैठ रहने वालों की अपेक्षा 'जिहाद' करने वालों का बदला बड़ा रक्खा है।

95. Those of the believers who sit still, other than those who have a (disabling) hurt, are not on an equality with those who strive in the way of Allah with their wealth and lives. Allah hath conferred on those who strive with their wealth and lives a rank above the sedentary. Unto each Allah hath promised good, but He hath bestowed on those who strive a great reward above the sedentary;

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ
الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६. उस की ओर से दर्जे हैं, और क्षमा और दयालुता है। और अल्लाह् बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

96. Degrees of rank from Him, and forgiveness and mercy. Allah is ever Forgiving, Merciful.

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٩٦

९७. जो लोग अपने-आप पर ज़ुल्म कर रहे थे जब 'फ़िरिश्तों' ने उन (के प्राण) को ग्रस्त लिया, तो पूछा : तुम किस दशा में पड़े रहे? उन्हों ने कहा : हम धरती में बेबस थे। कहा : क्या अल्लाह् की धरती विशाल न थी कि तुम उस में कहीं 'हिजरत' कर जाते? यही लोग हैं जिन का ठिकाना 'जहन्नम' है और वह क्या ही बुरा ठिकाना है!

97. Lo! as for those whom the angels take (in death) while they wrong themselves, (the angels) will ask: In what were ye engaged? They will say: We were oppressed in the land. (The angels) will say: Was not Allah's earth spacious that ye could have migrated therein? As for such their habitation will be hell, an evil journey's end;

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ قَالُوْا كُنَّا
مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ قَالُوْٓا اَلَمْ
تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا
فِيْهَا فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَسَآءَتْ
مَصِيْرًا ۝٩٧

९८. सिवाय बेबस पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के, जिन के बस में कोई उपाय नहीं और न कोई राह पा रहे हैं,

98. Except the feeble among men, and the women, and the children, who are unable to devise a plan and are not shown a way.

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩٨

९९. ये लोग, क़रीब है कि अल्लाह् ऐसे लोगों को क्षमा कर दे। और अल्लाह् नर्मी से काम लेने वाला और बड़ा क्षमाशील है।

99. As for such it may be that Allah will pardon them. Allah is ever Clement, Forgiving.

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ
وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝٩٩

१००. और जो कोई अल्लाह् के मार्ग में 'हिजरत' करेगा वह धरती में शरण लेने की बहुत जगह और समाई पायेगा; और जो कोई अपने घर से अल्लाह् और उस के 'रसूल' की ओर 'हिजरत' कर के निकले, फिर उस की मृत्यु आ जाये, तो उस का प्रतिदान अल्लाह् के ज़िम्मे हो गया। और अल्लाह् बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

100. Whoso migrateth for the cause of Allah will find much refuge and abundance in the earth, and whoso forsaketh his home, a fugitive unto Allah and His messenger, and death overtaketh him, his reward is then incumbent on Allah. Allah is ever Forgiving, Merciful.

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ
فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً وَمَنْ
يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠٠

१०१. और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो, तो इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं यदि 'नमाज़' में 'क़स्र'[३९] करो, यदि तुम्हें इस बात का भय हो कि 'कुफ़्' करने वाले तुम्हें सतायेंगे। निस्सन्देह 'काफ़िर' तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

101. And when ye go forth in the land, it is no sin for you to curtail (your) worship if ye fear that those who disbelieve may attack you. In truth the disbelievers are an open enemy to you.

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ
اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝١٠١

३९. 'क़स्र' का मतलब यह है कि 'फ़र्ज़' नमाज़ यदि चार 'रकअत' हो, तो दो ही रकअत पढ़ी जाये। और युद्ध के अवसर पर जैसी परिस्थिति हो उस के अनुसार नमाज़ अदा की जाये। जमाअत के साथ (सामूहिक रूप से) यदि नमाज़ न पढ़ सकते हों, तो लोग अकेले-अकेले ही पढ़ लें। 'क़िबला' की ओर मुंह करना सम्भव न हो तो जिधर मुंह कर सकते हों, उधर ही मुंह करके नमाज़ अदा कर ली जाये। 'रुकूअ' और 'सजदा' यदि न कर सकते हों, तो इशारों ही से काम चलायें। इसी तरह ज़रूरत पड़ने पर सवारी पर बैठ कर भी नमाज़ पढ़ सकते हैं। यदि आवश्यकता हो तो नमाज़ की हालत में चला भी जा सकता है। और यदि किसी तरह भी नमाज़ अदा न की जा सकती हो तो फिर उसे बाद ही में अदा की जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२. और जब तुम उन के बीच हो और (लड़ाई की हालत में) उन्हें 'नमाज़' पढ़ाने के लिए खड़े हो, तो चाहिए कि उन में से एक गरोह तुम्हारे साथ खड़ा हो जाये और अपने हथियार साथ लिये रहे। फिर जब वह 'सजदा' कर ले तो तुम्हारे पास से हट जाये और दूसरा गरोह जिस ने अभी 'नमाज़' नहीं पढ़ी है आये, वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, और यह भी अपने बचाव के सामान और अपने हथियार लिये रहे। 'काफ़िर' चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और अपने सामानों से असावधान हो जाओ तो वे तुम पर एक-बारगी टूट पड़ें। और यदि वर्षा के कारण तुम्हें तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो, तो तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार उतार दो। परन्तु अपने बचाव का सामान लिये रहो। निस्सन्देह अल्लाह ने 'काफ़िरों' के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रक्खी है।

102. And when thou (O Muhammad) art among them and arrangest (their) worship for them let only a party of them stand with thee (to worship) and let them take their arms. Then when they have performed their prostrations let them fall to the rear and let another party come that hath not worshipped and let them worship with thee, and let them take their precaution and their arms. Those who disbelieve long for you to neglect your arms and your baggage that they may attack you once for all. It is no sin for you to lay aside your arms, if rain impedeth you or ye are sick. But take your precaution, Lo! Allah prepareth for the disbelivers shameful punishment.

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَآئِكُمْ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰ أَن تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

१०३. फिर जब तुम 'नमाज़' पूरी कर चुको, तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करो। फिर जब तुम्हें इतमीनान हो जाये तो पूरी नमाज़ 'क़ायम' करो। निस्सन्देह 'ईमान' वालों पर समय की पाबन्दी के साथ 'नमाज़' अदा करनी अनिवार्य है।

103. When ye have performed the act of worship, remember Allah, standing, sitting and reclining. And when ye are in safety, observe proper worship. Worship at fixed hours hath been enjoined on the believers.

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

१०४. और इस गरोह का पीछा करने में साहस न छोड़ो। यदि तुम दुख उठाते हो तो वे भी तो दुख उठाते हैं, जिस तरह तुम दुख उठाते हो और तुम अल्लाह से उस चीज़ की आशा करते हो जिस की वे आशा नहीं करते। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

104. Relent not in pursuit of the enemy. If ye are suffering, lo! they suffer even as ye suffer and ye hope from Allah that for which they cannot hope. Allah is ever Knower, Wise.

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾ ع

१०५. हम ने यह 'किताब' हक़ के साथ तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिखा दिया है उस के अनुसार तुम लोगों के बीच निर्णय करो। और तुम विश्वासघात करने वालों की ओर से झगड़ने वाले न बनो;

105. Lo! We reveal unto thee the Scripture with the truth, that thou mayst judge between mankind by that which Allah showeth thee. And be not thou a pleader for the treacherous;

إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرَىٰكَ اللَّهُ وَلَا تَكُن لِّلْخَآئِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

१०६. और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

106. And seek forgiveness of Allah. Lo! Allah is ever Forgiving, Merciful.

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७. और तुम उन की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हैं।[४०] निस्सन्देह अल्लाह ऐसे व्यक्ति से प्रेम नहीं करता जो विश्वासघात करने वाला और हक़ मारने वाला हो।

107. And plead not on behalf of (people) who deceive themselves. Lo! Allah loveth not one who is treacherous and sinful.

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝١٠٧

१०८. वे लोगों से तो छिपते हैं और अल्लाह से नहीं छिपते, हालाँकि वह उन के साथ होता है जब वे ऐसी बात की गुप्त मन्त्रणा करते हैं जिसे वह पसन्द नहीं करता। जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुये है।

108. They seek to hide from men and seek not to hide from Allah. He is with them when by night they hold discourse displeasing unto Him. Allah ever surroundeth what they do.

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ
مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ
مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝١٠٨

१०९. ये तुम हो जिन्हों ने सांसारिक जीवन में इन की ओर से झगड़ा कर लिया। तो 'क़यामत' के दिन इन की ओर से अल्लाह से कौन झगड़ा करेगा, या कौन इन का ज़िम्मेदार होगा?

109. Lo! ye are they who pleaded for them in the life of the world. But who will plead with Allah for them on the Day of Resurrection, or who will then be their defender?

هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝١٠٩

११०. और जो कोई बुरा कर्म कर बैठे या अपने आप पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करे, तो वह अल्लाह को बड़ा क्षमाशील और और दया करनें वाला पायेगा।

110. Yet whoso doth evil or wrongeth his own soul, then seeketh padron of Allah, will find Allah Forgiving, Merciful.

وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ
يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝١١٠

१११. और जो कोई गुनाह की कमाई करता है तो वह अपने ही हक़ में कमाता है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

111. Whoso committeth sin committeh it only against himself. Allah is ever Knower, Wise.

وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ
عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝١١١

११२. और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह की कमाई करे, फिर उसे किसी निर्दोष व्यक्ति पर थोप दे; तो उस ने झूठा आरोप और खुला गुनाह अपने सिर ले लिया।

112. And whoso committeth a delinquency or crime, then throweth (the blame) thereof upon the innocent, hath burdened himself with falsehood and a flagrant crime.

وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ
بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝١١٢

११३. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता न होती, तो उन में से एक गरोह तो यह निश्चय कर ही चुका था कि तुम्हें राह से भटका दे, हालाँकि वे अपने ही को पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं और वे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा रहे हैं। और अल्लाह ने तुम पर 'किताब' और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) उतारी, और उस ने तुम्हें वह कुछ ज्ञान दिया जो तुम नहीं जानते थे। और अल्लाह का तुम पर बहुत बड़ा अनुग्रह है।

113. But for the grace of Allah upon thee (Muhammad), and His mercy a party of them had resolved to mislead thee, but they will mislead only themselves and they will hurt thee not at all. Allah revealeth unto thee the Scripture and wisdom, and teacheth thee that which thou knowest, not. The grace of Allah towards thee hath been infinite.

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ
لَهَمَّت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا
يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ
مِن شَيْءٍ ۚ وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ
وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝١١٣

४०. जो व्यक्ति किसी के साथ विश्वासघात करता है वह वास्तव में सब से पहले अपने साथ विश्वासघात करता है। वह अपनी नैतिक प्रवृत्ति को दूषित करता और अपनी 'आख़िरत' की ज़िन्दगी को तबाह करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११४. इन की अधिकतर काना-गोसी करने में कोई भलाई नहीं होती, भलाई की काना-गोसी तो बस उस की है जो दान करने की सलाह दे या भले काम करने के लिए या लोगों के बीच सुधार करने की बात करे । और जो कोई यह काम अल्लाह की प्रसन्नताएँ प्राप्त करने के लिए करेगा, तो हम उसे जल्द बड़ा बदला देंगे ।

There is no good in much of their secret conferences save (in) him who enjoineth almsgiving and kindness and peace-making among the people. Whoso doth that, seeking the good pleasure of Allah, We shall bestow on him a vast reward.

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا
مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ
إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

११५. और जो कोई इस के बाद भी कि मार्ग-दर्शन खुल कर उस के सामने आ गया है, 'रसूल' का विरोध करेगा और 'ईमान वालों' के मार्ग के सिवा किसी और मार्ग का अनुगमन करेगा, हम उसे उसी के हवाले करेंगे जिस को उस ने अपनाया और उसे 'जहन्नम' में झोंकेंगे । और वह बुरा ठिकाना है ।

115. And whoso opposeth the messenger after the guidance (of Allah) hath been manifested unto him, and followeth other than the beliver's way, We appoint for him that unto which he himself hath turned, and expose him unto hell—a hapless journey's end!

وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ
الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ
جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾

११६. निस्सन्देह अल्लाह इस बात को क्षमा नहीं करेगा कि उस के साथ किसी को शरीक किया जाये । और इस के नीचे जिस के लिए चाहेगा क्षमा कर देगा । और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा ।

116. Lo! Allah pardoneth not that partners should be ascribed unto him. He pardoneth all save that to whom He will. Whoso ascribeth partners unto Allah hath wandered far astray.

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ
مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن
يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

११७. वे अल्लाह के सिवा बस देवियों को पुकारते हैं;[४१] और बस सरकश 'शैतान' को पुकारते हैं ।

117. They invoke in His stead only females; they pray to none else than Satan, a rebel.

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا
وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾

११८. उस पर अल्लाह की फिटकार है, उस ने अल्लाह से कहा था : मैं तेरे बन्दों में से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा ।

118. Whom Allah cursed, and he said: Surely I will take of Thy bondmen an appointed portion,

لَّعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ
عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

४१. जो 'मुश्रिक' विभिन्न शक्तियों, गुणों आदि को देवताओं का नाम देकर अल्लाह का शरीक ठहराते हैं, वे 'शैतान' के बहकावे में आ कर ऐसा करते हैं । वास्तव में 'लात', 'उज़्ज़ा', 'लक्ष्मी', 'सरस्वती' आदि मन-गढ़न्त नामों के पीछे किसी का कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है । ये केवल कुछ कल्पित नाम हैं जो लोगों ने गढ़ लिये हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११९. उन्हें बहकाऊँगा, उन्हें कामनाओं के माया-जाल में फँसाऊँगा उन्हें समझाऊँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे (और उन्हें अपने देव-ताओं के नाम पर छोड़ेंगे), और मैं उन्हें सुझाव दूँगा तो वे अल्लाह की रचना में परिवर्तन करेंगे[४२]। और जिस ने अल्लाह के सिवा 'शैतान' को अपना संरक्षक-मित्र बनाया वह स्पष्ट घाटे में पड़ गया।

119. And surely I will lead them astray, and surely I will arouse desires in them, and surely I will command them and they will cut the cattle's ears, and surely I will command them and they will change Allah's creation. Whoso chooseth Satan for a patron instead of Allah is verily a loser and his loss is manifest.

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ
الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ
خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾

१२०. वह उन से वादे करता है और उन्हें कामना में उलझाता है, और 'शैतान' उन से जो-कुछ वादे करता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं है।

120. He promiseth them and stirreth up desires in them, and Satan promiseth them only to beguile.

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

१२१ ये वे लोग हैं जिन का ठिकाना 'जह-न्नम' है, और वे उस से बचने की कहीं जगह न पायेंगे।

121. For such, their habitation will be hell, and they will find no refuge therefrom.

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ
عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

१२२. रहे वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन्हें जल्द ही हम ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का वादा है; और अल्लाह से बढ़ कर बात में सच्चा कौन हो सकता है?

122. But as for those who believe and do good works, We shall bring them into gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide for ever. It is a promise from Allah in truth; and who can be more truthful than Allah in utterance?

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا
وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ
اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

१२३. न तुम्हारी कामनाओं पर निर्भर है, और न 'किताब वालों' की कामनाओं पर। जो भी बुराई करेगा उसे उस का फल मिलेगा, और वह अल्लाह के मुक़ाबले में अपना कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न पा सकेगा।

123. It will not be in accordance with your desires, nor the desires of the People of the Scripture. He who doth wrong will have the recompense thereof, and will not find against Allah any protecting friend or helper.

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ
الْكِتَابِ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا
يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾

१२४. और जो नेक काम करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, यदि वह 'मोमिन' है, तो ऐसे लोग 'जन्नत' में दाखिल होंगे और उन का तनिक भी हक़ न मारा जायेगा।

124. And whoso doth good works, whether of male or female, and he (or she) is a believer, such will enter paradise and they will not be wronged the dint in a datestone,

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ
أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٤﴾

४२. अर्थात् वे ऐसा काम करेंगे जो उन के अपने और दूसरी वस्तुओं के प्राकृतिक स्वभाव के प्रतिकूल होगा; जो प्रकृति के उद्देश्य को पूरा नहीं करेगा। इस में वे सभी काम आ जाते हैं जिन्हें मनुष्य ने प्राकृतिक नियमों को भंग कर के अपनाया है। जैसे, स्त्रियों को छोड़ कर अप्राकृतिक रीति से पुरुषों से ही सम्भोग की इच्छा पूरी करली, सन्तान-निरोध (Birth control) की योजनायें, पुरुषों और स्त्रियों को बाँझ बनाना और आजीवन ब्रह्मचर्य आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२५. और 'दीन' की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिस ने अपने आप को अल्लाह के आगे झुका दिया और वह उत्तम रीति से कर्म करने वाला भी हो और वह इबराहीम के पन्थ पर चला, जो सब से कट कर एकका हो गया था ? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था ।

125. Who is better in religion than he who surroundeth his purpose to Allah while doing good (to men) and followeth the tradition of Abraham, upright? Allah (Himself) chose Abraham for friend.

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ
وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ
إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾

१२६. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है ।

126. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. Allah ever surroundeth all things.

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ﴿١٢٦﴾

१२७. और लोग तुम से स्त्रियों के बारे में हुक्म मालूम करना चाहते हैं। कहो : अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म देता है,[४३] और उस आदेश के बारे में भी जो तुम्हें 'किताब' में सुनाया जाता है;[४४] जो उन स्त्रियों के यतीमों के बारे में हैं जिन के हक़ तुम अदा नहीं करते[४५] और चाहते हो कि उन के साथ विवाह कर लो, और कमज़ोर बच्चों के बारे में (यह हुक्म देता है कि उन स्त्रियों के मह्र दो) और यह कि तुम 'यतीमों' के बारे में इन्साफ़ पर क़ायम रहो। जो भलाई तुम करोगे, अल्लाह उस का जानने वाला है ।

127. They consult thee concerning women. Say: Allah giveth you decree concerning them, and the Scripture which hath been recited unto you (giveth decree) concerning female orphans unto whom ye give not that which is ordined for them though ye desire to marry them and (concerning) the weak among children, and that ye should deal justly with orphans. Whatever good ye do, lo! Allah is ever Aware of it.

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۖ قُلِ اللَّهُ
يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ
فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا
تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ
أَن تَنكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ
مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَن تَقُومُوا لِلْيَتَامَىٰ
بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾

१२८. और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से बुरे बरताव, या बेरुख़ी का भय हो, तो इस में उन के लिए कोई दोष नहीं कि वे दोनों आपस में कोई समझौता कर के मेल-मिलाप कर लें। मेल-मिलाप सब से अच्छा है। और लोभ जीवों के सामने रक्खा होता है, परन्तु यदि तुम अच्छा बरताव करो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखने वाला है ।

128. If a woman feareth ill-treatment from her husband or desertion, it is no sin for them twain if they make terms of peace between themselves. Peace is better. But greed hath been made present in the minds (of men). If ye do good and keep from evil, lo! Allah is ever Informed of what ye do.

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِن بَعْلِهَا
نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا أَن يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ
وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ
الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

४३. जो आगे चल कर आ रहा है ।
४४. सूरा के आरम्भ में ही यतीम लड़कों और विशेषतः यतीम लड़कियों के बारे में आदेश दिये गये हैं; उन आदेशों के महत्व के कारण यहाँ उन के पालन करने पर पुनः ज़ोर दिया जा रहा है ।
४५. आयत ३ की ओर संकेत है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२९. चाहे तुम कितना ही चाहो, तुम स्त्रियों के बीच पूर्ण रूप से न्याय नहीं कर सकते । तो ऐसा भी न करना कि एक ही ओर बिल्कुल झुक जाओ और दूसरी को इस तरह छोड़ दो जैसे कोई अधर में लटकी हो । और यदि तुम अपना व्यवहार ठीक रक्खो और अल्लाह से डरते रहो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है ।

129. Ye will not be able to deal equally between (your) wives, however much ye wish (to do so). But turn not altogether away (from one), leaving her as in suspence. If ye do good and keep from evil, Lo! Allah is ever Forgiving, Merciful.

ولن تستطيعوا ان تعدلوا بين النساء
ولو حرصتم فلا تميلوا كل الميل
فتذروها كالمعلقة وان تصلحوا
وتتقوا فان الله كان غفورا رحيما ١٢٩

१३०. और यदि दोनों अलग ही हो जायें, तो अल्लाह अपनी समाई से हर एक को बे-परवाह कर देगा । अल्लाह बड़ी समाई वाला और तत्त्व-दर्शी है ।

130. But if they separate, Allah will compensate each out of His abundance. Allah is ever All-Embracing, All-Knowing.

وان يتفرقا يغن الله كلا
من سعته وكان الله واسعا
حكيما ١٣٠

१३१. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है । और जिन लोगों को तुम से पहले 'किताब' दी गई थी, उन्हें और तुम्हें, हम नें यही ताकीद की है कि अल्लाह से डरते रहो । और यदि तुम 'कुफ़' करते हो तो जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है सब अल्लाह ही का है, और अल्लाह परम स्वतन्त्र और प्रशंसा का अधिकारी है ।

131. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. And We charged those who received the Scripture before you, and (We charge) you, that ye keep your duty toward Allah. And if ye disbelieve, lo! unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth, and Allah is ever Absolute, Owner of Praise.

ولله ما في السموت وما في الارض
ولقد وصينا الذين اوتوا الكتب
من قبلكم واياكم ان اتقوا الله
وان تكفروا فان لله ما في السموت
وما في الارض وكان الله غنيا
حميدا ١٣١

१३२. और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है । और भरोसे के लिए अल्लाह काफ़ी है ।

132. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. And Allah is sufficient as Defender.

ولله ما في السموت وما في الارض
وكفى بالله وكيلا ١٣٢

१३३. हे लोगो ! यदि वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और दूसरों को ले आये । अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है ।

133. If He will, He can remove you, O people, and produce others (in your stead). Allah is Able to do that.

ان يشا يذهبكم ايها الناس ويات
باخرين وكان الله على ذلك قديرا ١٣٣

१३४. जो कोई दुनिया का प्रतिफल चाहता है, तो अल्लाह के पास दुनिया का प्रतिफल भी है और 'आखिरत' का भी । और अल्लाह सुननें और देखनें वाला है ।

134. Whoso desireth the reward of the world (let him know that) with Allah is the reward of the world and the Hereafter. Allah is ever Hearer, Seer.

من كان يريد ثواب الدنيا
فعند الله ثواب الدنيا والاخرة
وكان الله سميعا بصيرا ١٣٤

१३५. हे 'ईमान' लानें वालो ! (अल्लाह के लिए) इन्साफ़ पर मजबूती के साथ जमे रहनें वाले बनो; अल्लाह के लिए (इन्साफ़ की) गवाही देते हुये, यद्यपि वह गवाही तुम्हारे अपने या माता-पिता और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो, कोई धनवान् हो या निर्धन, अल्लाह उन दोनों से ज़्यादा क़रीब है ।

135. O ye who believe! Be ye staunch in justice, witnesses for Allah, even though it be against yourselves or (your) parents or (your) kindred, whether (the case be of) a rich man or a poorman for Allah is nearer unto both

يايها الذين امنوا كونوا قوامين
بالقسط شهداء لله ولو على
انفسكم او الوالدين والاقربين
ان يكن غنيا او فقيرا فالله اولى

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो तुम न्याय करने में (अपनी तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो यदि तुम कज करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखने वाला है।

(than ye are). So follow not passion lest ye lapse (from truth) and if ye lapse or fall away, then lo! Allah is ever Informed of what ye do.

بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰىٓ اَنْ
تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

१३६. हे 'ईमान' लाने वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के 'रसूल' पर और उस 'किताब' पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, और उस 'किताब' पर जिसे वह इस से पहले उतार चुका है। और जिस-किसी ने अल्लाह और उस के 'फ़रिश्तों' और उस की 'किताबों' और उस के 'रसूलों' और अन्तिम दिन[४६] का इन्कार किया, वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा।

136. O ye who believe! Believe in Allah and His messenger and the Scripture which He hath revealed unto His messenger, and the Scripture which He revealed aforetime. Whoso disbelieveth in Allah and His angels and His scriptures and His messengers and the Last Day, he verily hath wandered far astray.

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا
ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ
لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾
بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَا ﴿١٣٨﴾

१३७. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये, फिर 'कुफ़्' किया, फिर 'ईमान' लाये, फिर 'कुफ़्' किया, फिर कुफ़् में बढ़ते चले गये, अल्लाह उन को कभी क्षमा न करेगा और न उन्हें राह दिखायेगा।

137 Lo! those who believe, then disbelieve and then (again) believe, then disbelieve, and then increase in disbelief, Allah will never pardon them, nor will He guide them unto a way.

१३८. 'मुनाफ़िक़ों' (कपटाचारियों) को मंगल सूचना दे दो कि उन के लिए दुखद यातना है;

138. Bear unto the hypocrites the tidings that for them there is a painful doom.

اِلَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ
دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ
الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾
وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا
سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا
فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ
غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ﴿١٤٠﴾

१३९. उन के लिए जो 'ईमान' वालों के मुक़ाबले में 'काफ़िरों' को अपना मित्र बनाते हैं! क्या ये लोग उन के यहाँ इज़्ज़त ढूंढते हैं? इज़्ज़त तो सब अल्लाह ही के लिए है।

139. Those who choose disbelievers for their friends instead of belivers! Do they look for power at their hands? Lo! all power appertaineth to Allah.

१४०. और वह किताब में तुम पर यह आदेश उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की 'आयतों' के साथ 'कुफ़्' किया जा रहा है और उन की हँसी उड़ाई जा रही है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जायें, उन के साथ न बैठो। अन्यथा तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे[४७]। निश्चय ही अल्लाह 'मुनाफ़िक़ों' और 'काफ़िरों' सब को 'जहन्नम' में इकट्ठा करने वाला है।

140. He hath already revealed unto you in the Scripture that, when ye hear the revelations of Allah rejected and derided, (ye) sit not with them (who disbelieve and mock) until they engage in some other conversation. Lo! in that case (if ye stayed) ye would be like unto them. Lo! Allah will gather hypocrites and disbelievers, all together, into hell;

४६. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।
४७. जिस हुक्म की ओर इस आयत में संकेत किया गया है वह सूरा अल-अनआम आयत ६८-७० में बयान हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४१. उन को जो तुम्हारे लिए गर्दिशों की प्रतीक्षा करते हैं, यदि अल्लाह् की ओर से तुम्हारी विजय हुई, तो कह् दिया कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? और यदि 'काफ़िरों' का पल्ला कुछ भारी रहा तो कह् दिया : क्या हम ने तुम्हें घेर नहीं लिया था, और तुम्हें 'ईमान' वालों से बचाया नहीं था ?--तो अल्लाह् तुम्हारे बीच 'क़ियामत' के दिन निर्णय कर देगा और अल्लाह् कभी 'काफ़िरों' को 'ईमान' वालों के मुक़ाबले में कोई राह नहीं देगा ।

141. Those who wait upon occasion in regard to you and, if a victory cometh unto you from Allah, say: Are we not with you? and if the disbelievers meet with a success, say: Had we not the mastery of you, and did we not protect you from the believers?—Allah will judge between you at the Day of Resurrection, and Allah will not give the disbelievers any way (of success) against the believers.

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ
كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ
نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ
نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ
وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ
ع لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾

१४२. 'मुनाफ़िक़' अल्लाह् को धोखा देना चाहते हैं, हालांकि वही उन्हें धोखे में डाले रखने वाला है[४८] । जब वे 'नमाज़' के लिए खड़े होते हैं तो कसमसाते हुये केवल लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं, और अल्लाह् को थोड़ा ही याद करते हैं ;

142. Lo! the hypocrites seek to beguile Allah, but it is Allah Who beguileth them. When they stand up to worship they perform it languidly and to be seen of men, and are mindful of Allah but little;

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ
خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ
قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا
يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾

१४३. बीच ही में डांवां-डोल हैं, न इधर के हैं और न उधर के । और जिसे अल्लाह् ही भटका दे उस के लिए तुम मार्ग नहीं पा सकते[४९] ।

143. Swaying between this (and that), (belonging) neither to these nor to those. He whom Allah causeth to go astray, thou (O Muhammad) wilt not find a way for him.

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ
هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَمَن يُضْلِلِ
اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾

१४४. हे 'ईमान' लाने वालो ! ईमान वालों के मुक़ाबले में 'काफ़िरों' को मित्र न बनाओ । क्या तुम अपने ही विरुद्ध अल्लाह् के लिए एक स्पष्ट तर्क संचित करना चाहते हो ?

144. O ye who believe! Choose not disbelievers for (your) friends in place of believers. Would ye give Allah a clear warrant against you?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ
أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَتُرِيدُونَ
أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾

१४५. निश्चय ही 'मुनाफ़िक़' आग (जहन्नम) के सब से निचले कक्ष में होंगे, और तुम कदापि उन का कोई सहायक न पाओगे ;

145. Lo! the hypocrites (will be) in the lowest deep of the fire, and thou wilt find no helper for them;

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ
مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾

१४६. सिवाय उन लोगों के जिन्हों ने 'तौबा' कर ली, और सुधर गये और अल्लाह् को मज़बूती से पकड़ लिया और अपने 'दीन' में अल्लाह् ही के हो रहे । वे 'ईमान' वालों के साथ हैं । और अल्लाह् 'ईमान' वालों को जल्द ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा ।

146. Save those who repent and amend and hold fast to Allah and make thier religion pure for Allah (only). Those are with the believers. And Allah will bestow on the believers an immense reward.

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا
بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾

४८. अर्थात् उन को मुहलत पर मुहलत दिये जा रहा है और वे इस मुहलत को धोखे में अपनी सफलता समझ रहे हैं ।

४९. अर्थात् जिस के अधर्म और असत्यप्रियता के कारण अल्लाह् ने उस पर मार्ग-दर्शन के द्वार बन्द कर दिये हों, उसे कौन मार्ग पर ला सकता है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४७. अल्लाह को तुम्हें यातना देकर क्या करना है यदि तुम कृतज्ञता दिखलाओ और 'ईमान' लाओ ? अल्लाह तो क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) और (सब कुछ) जानने वाला है।

147. What concern hath Allah for your punishment if ye are thankful (for His mercies) and believe (in Him)? Allah was ever Responsive, Aware.

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

*१४८. अल्लाह बदज़बानी को पसन्द नहीं करता सिवाय इस के कि किसी पर ज़ुल्म किया गया हो। और अल्लाह सुननें वाला और जाननें वाला है।

148. Allah loveth not the utterance of harsh speech save by one who hath been wronged.. Allah is ever Hearer, Knower.

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾

१४९. यदि तुम खुले रूप से कोई भलाई करो या उसे छिपाओ, या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो अल्लाह भी क्षमा करनें वाला और सामर्थ्य रखनें वाला है।[५०]

149. If ye do good openly or keep it secret, or forgive evil, lo! Allah is Forgiving, Powerful.

إِنْ تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾

१५०. जो अल्लाह और उस के 'रसूलों' के साथ 'कुफ़्' करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूलों के बीच विच्छेद करना चाहते हैं, और कहते हैं : हम किसी को मानते हैं और किसी को नहीं मनाते और चाहते हैं कि इस बीच कोई राह निकालें;

150. Lo! those who disbelieve in Allah and His messengers, and seek to make distinction between Allah and His messengers, and say: We believe in some and disbelieve in others, and seek to choose a way in between;

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾

१५१. यही लोग पक्के 'काफ़िर' हैं; और काफ़िरों के लिए हम ने (अपमानजनक) यातना तैयार कर रक्खी है।

151. Such are disbelievers in truth; and for disbelievers We prepare a shameful doom.

أُولٰئِكَ هُمُ الْكٰفِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٥١﴾

१५२. रहे वे लोग जो अल्लाह पर 'ईमान' लाये और उस के 'रसूलों' पर और उन के बीच कोई विच्छेद नहीं किया, ऐसे लोगों को अल्लाह जल्द ही उन के कर्म-फल देगा, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करनें वाला है।

152. But those who believe in Allah and His messengers and make no distinction between any of them, unto them Allah will give their wages; and Allah was ever Forgiving, Merciful.

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٥٢﴾

*यहाँ से छटवाँ पारा (Part vi) शुरू होता है।

५०. अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह अपार शक्ति का मालिक रहा हुये अत्यन्त धैर्य्यवान् और सहनशील है कि लोगों को क्षमा करता है और बड़े-बड़े अपराधियों तक को रोज़ी पहुँचाता रहता है; उसी प्रकार तुम्हें भी धैर्य्यवान् और सहनशील होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५३. 'किताब वालों'[५१] की तुम से माँग है कि तुम उन पर प्रत्यक्षत: कोई 'किताब' आकाश से उतरवाओ। ये मूसा से इस से भी बड़ा सवाल कर चुके हैं, इन्हों ने कहा था : हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखा दो। इन के इस अपराध पर बिजली की कड़क ने आ दबोचा[५२]। फिर इन्हों नें बछड़े को अपना देवता बना लिया जबकि इन के पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं। हम नें इसे भी क्षमा कर दिया। और मूसा को स्पष्ट प्रभावपूर्ण हुज्जत (तर्क) प्रदान की[५३]।

153. The People of the Scripture ask of thee that thou shouldst cause an (actual) Book to descend upon them from heaven. They asked a greater thing of Moses aforetime, for they said: Show us Allah plainly. The storm of lightning seized them for their wickedness. Then (even after that) they chose the calf (for worship) after clear proofs (of Allah's Sovereignty) had come unto them. And We for gave them that! And We bestowed on Moses evident authority.

يَسْـَٔلُكَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا
مُوْسٰى أَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا
أَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ
بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ
ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

१५४. और उन लोगों से वचन लेने के साथ हम ने तूर (पर्वत) को इन पर उठा दिया[५४] : और इन्हें कहा कि दरवाज़े में[५५] सिर झुकाए प्रवेश करो! और इन से कहा कि 'सब्त' (के सम्बन्ध) में ज़्यादती न करना![५६] और इन से पक्का वादा लिया।

154. And We caused the Mount to tower above them at (the taking of) their covenant: and We bade them: Enter the gate, prostrate! and We bade them: Transgress not the Sabbath! and We took from them a firm covenant.

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ
وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ
قُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَ
أَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

१५५. तो इन के अपने वचनभंग करनें, अल्लाह की 'आयतों' के साथ इन के 'कुफ़्' के कारण, और इन के नाहक़ 'नबियों' की हत्या करने, और इन के इस कहने के कारण कि हमारे दिल ढके हुए हैं—हालाँकि वास्तव में, इन के 'कुफ़्' के कारण अल्लाह ने इन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया है, तो ये ईमान थोड़ा ही लाते हैं—

155. Then because of their breaking of their covenant, and their disbelieving in the revelations of Allah, and their slaying of the Prophets wrongfully and their saying: Our hearts are hardened—Nay, but Allah hath set a seal upon them for their disbelief, so that they believe not save a few—

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ
حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ
طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ۠ ﴿١٥٥﴾

१५६. और इन के 'कुफ़्' के कारण और मरयम के विरुद्ध इन के ऐसी बात कहने पर जो बड़े ही कलंक की बात थी;

156. And because of their disbelief and of their speaking against Mary a tremedous calumny;

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ ﴿١٥٦﴾

५१. किताब वालों से अभिप्रेत यहाँ मदीने के यहूदी हैं।
५२. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ४८-५४।
५३. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ४८-५४।
५४. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ६३।
५५. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ५८।
५६. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ६५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५७. और इन के इस कहने पर कि हम ने मरयम के बेटे ईसा मसीह का जो अल्लाह के रसूल थे बध कर डाला—हालांकि न तो इन्हों ने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि ये घपले में पड़ गये;[५७] और जिन लोगों ने इस के बारे में विभेद किया है निश्चय ही वे इस बारे में सन्देह में पड़े हैं; अटकल पर चलने के सिवा उन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं है;[५८] निस्सन्देह इन्हों ने मसीह का बध नहीं किया,

157. And because of their saying: We slew the Messiah Jesus son of Mary, Allah's messenger—They slew him not nor crucified, but it appeared so unto them; and lo! those who disagree concerning it are in doubt thereof; they have no knowledge thereof save pursuit of a conjecture; they slew him not for certain.

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿١٥٧﴾

१५८. बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

158. But Allah took him up unto Himself. Allah was ever Mighty, Wise.

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾

१५९. और किताब वालों में ऐसा कोई न होगा जो उस की मृत्यु से पूर्व उस पर 'ईमान' न लाये,[५९] और वह 'क़ियामत' के दिन उन पर गवाह होगा[६०]।

159. There is not one of the People of the Scripture but will believe in him before his death, and on the Day of Resurrection he will be a witness against them—

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾

१६०. तो यहूदी होने वालों के अपराधों के कारण हम ने बहुत सी पाक चीज़ें उन पर 'हराम' कर दीं जो उन के लिए वैध थीं, और उन के प्राय: अल्लाह के मार्ग से रोकने के कारण,

160. Because of the wrongdoing of the Jews We forbade them good things which were (before) made lawful unto them and because of their much hindering from Allah's way:

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ﴿١٦٠﴾

१६१. और उन के ब्याज लेने के कारण जब कि उन्हें इस से रोका गया था, और उन के अवैध रूप से लोगों के माल खाने के कारण ऐसा किया गया। और उस में से जो लोग 'काफ़िर' हैं हम ने उन के लिए दुखद यातना तैयार कर रक्खी है।

161. And of their taking usury when they were forbidden it, and of their devouring people's wealth by false pretences. We have prepared for those of them who disbelieve a painful doom.

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦١﴾

५७. इस आयत से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० सूली पर चढ़ाये जाने से पहले ही उठा लिये गये जैसा की आगे आ रहा है। ईसाइयों और यहूदियों का यह कहना कि उन्हें सूली दी गई, सही नहीं है। इन्हें इस बारे में भ्रम हुआ है। यहूदियों ने जिस व्यक्ति को सूली पर चढ़ाया वह मसीह अ० न थे कोई और था जिसे इन्हों ने मसीह समझ लिया था।

५८. ईसाई लोग हजरत मसीह अ० के सूली पर चढ़ाये जाने के बारे में विभिन्न बातें कहते हैं। कोई कहता है कि जिसे सूली पर चढ़ाया गया वह मसीह न थे कोई और था। कोई कहता है कि उन्हें सूली तो दी गई परन्तु तीसरे दिन वे जीवित होकर आकाश पर चले गये। ये और इस प्रकार की और बहुत सी बातें वे केवल अटकल और अनुमान से करते हैं; उन के पास इस के बारे में कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है।

५९. हज़रत मसीह अ० की जब मृत्यु होगी तो उस समय जितने 'किताब वाले' मौजूद होंगे वे सभी उन के 'नबी' होने पर ईमान ला चुके होंगे। इस आयत का एक अर्थ यह भी होता है कि किताब वालों पर मरने से ठीक पहले यह बात खुल जाती है कि मसीह अ० अल्लाह के 'रसूल' थे। वे उन के 'नबी' होने पर ईमान लाते हैं; परन्तु उस समय का 'ईमान' उन के लिए कुछ भी लाभदायक नहीं।

६०. अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों ने हज़रत मसीह अ० और आप के लाये हुये सन्देश के साथ जैसा कुछ व्यवहार किया है, मसीह अ० अल्लाह के सामने उस की गवाही देंगे। इस गवाही का कुछ विवरण सूरा अल-माइदा आयत ११६-१२० में मिलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६२. परन्तु उन में जो लोग ज्ञान में परिपक्व और 'ईमान' वाले हैं वे उस पर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है, और जो तुम से पहले उतारा गया, और जो विशेष रूप से 'नमाज़' क़ायम करने वाले और 'ज़कात' देने वाले हैं, और अल्लाह और अन्तिम दिन[६१] पर 'ईमान' रखते हैं। ये लोग हैं जिन्हें हम जल्द ही बड़ा कर्म-फल प्रदान करेंगे।

162. But those of them who are firm in knowledge and the believers believe in that which is revealed unto thee, and that which was revealed before thee, especially the diligent in prayer and those who pay the poor-due, the believers in Allah and the Last Day. Upon these We shall bestow immense reward.

لكن الراسخون في العلم منهم و
المؤمنون يؤمنون بما أنزل
إليك وما أنزل من قبلك و
المقيمين الصلوة والمؤتون الزكوة
والمؤمنون بالله واليوم الآخر
أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما ١٦٢

१६३. हम ने तुम्हारी ओर उसी तरह 'वह्य' की है जिस तरह नूह और उस के बाद के नबियों की ओर 'वह्य' की और हम ने इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान, और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर 'वह्य' भेजी, और हम ने दाऊद को 'ज़बूर' प्रदान किया;

163. Lo! We inspire thee as We inspired Noah and the prophets after him, as We inspired Abraham and Ishmael and Issac and Jacob and the tribes and Jesus and Job and Jonah and Aaron and Solomon, and as We imparted unto David the Psalm;

إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى
نوح والنبيين من بعده وأوحينا
إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق و
يعقوب والأسباط وعيسى وأيوب
ويونس وهرون وسليمن وآتينا
داود زبورا ١٦٣

१६४. कितने 'रसूल' हैं जिन का वृत्तान्त हम पहले तुम से बयान कर चुके हैं और कितने 'रसूल' हैं जिन का वृत्तान्त हम ने तुम से नहीं बयान किया;

और मूसा से अल्लाह ने इस तरह बात-चीत की जिस तरह बात-चीत की जाती है;

164. And messengers We have mentioned unto thee before and messengers We have not mentioned unto thee; and Allah spake directly unto Moses;

ورسلا قد قصصنهم عليك من
قبل ورسلا لم نقصصهم عليك
وكلم الله موسى تكليما ١٦٤

१६५. 'रसूल' शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले बना कर भेजे गये, ताकि 'रसूलों' के बाद लोगों के पास (अपने निर्दोष होने का) अल्लाह के मुक़ाबले में कोई तर्क न रहे। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

165. Messengers of good cheer and of warning, in order that mankind might have no argument against. Allah after the messengers. Allah was ever Mighty, Wise.

رسلا مبشرين ومنذرين لئلا
يكون للناس على الله حجة بعد
الرسل وكان الله عزيزا حكيما ١٦٥

१६६. परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि उस ने जो कुछ तुम पर उतारा है; अपने ज्ञान से उतारा है; 'फ़रिश्ते' भी गवाही देते हैं। यद्यपि अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।

166. But Allah (Himself) testifieth concerning that which He hath revealed unto thee; in His knowledge hath He revealed it; and the Angels also testify. And Allah is sufficient witness.

لكن الله يشهد بما أنزل إليك
أنزله بعلمه والملئكة يشهدون
وكفى بالله شهيدا ١٦٦

१६७. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, वे भटक कर बहुत दूर जा पड़े।

167. Lo! those who disbelieve and hinder (others) from the way of Allah, they verily have wandered far astray.

إن الذين كفروا وصدوا عن
سبيل الله قد ضلوا ضللا بعيدا ١٦٧

६१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६८. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और ज़ुल्म पर उतर आये, अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, और न उन्हें कोई मार्ग दिखायेगा,

१६९. सिवाय 'जहन्नम' के मार्ग के जिस में वे सदा पड़े रहेंगे। और यह अल्लाह के लिए बहुत ही सरल है।

168. Lo! those who disbelieve and deal in wrong, Allah will never forgive them, neither will He guide them unto a road,

169. Except the road of hell wherein they will abide for ever And that is ever easy for Allah.

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ
اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۝
إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ
وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

१७०. हे लोगो ! 'रसूल' तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से सत्य ले कर आ गया है तो तुम 'ईमान' लाओ; यह तुम्हारे लिए ही अच्छा है। और यदि तुम 'कुफ़्' करते हो, तो आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है। औरअल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

१७१. हे किताब वालो ! अपने 'दीन' में हद से न बढ़ो[६२] और अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा और कुछ न कहो। मरयम का बेटा, मसीह इस के सिवा और कुछ नहीं कि अल्लाह का 'रसूल' है और उस का एक 'कलमा'[६३] है जिसे उस ने मरयम की ओर भेजा था, और उस की ओर से एक आत्मा है। तो तुम अल्लाह पर और उस के 'रसूलों' पर 'ईमान' लाओ, और यह न कहो कि तीन हैं[६४]— बाज़ आ जाओ ! यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है !— अल्लाह तो केवल अकेला 'इलाह' (इष्ट पूज्य) है। यह उस की महिमा के प्रतिकूल बात है कि उस के कोई बेटा हो।[६५] आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। और अल्लाह का कार्य-साधक होना काफ़ी है।

170. O mankind! The messenger hath come unto you with the truth from your Lord. Therefor believe; (it is) better for you. But if ye disbelieve, still, lo ! unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and the earth, Allah is ever Knower, Wise.

171. O People of the Scripture! Do not exaggerate in your religion nor utter aught concerning Allah save the truth. The Messiah, Jesus son of Mary was only a messenger of Allah, and His word which He conveyed unto Mary, and a spirit from Him. So believe in Allah and His messengers, and say not "Three"—Cease! (it is) better for you!—Allah is only One God. Far is it removed from His transcendant majesty that He should have a son. His is all that is in the heavens and all that is in the earth. And Allah is sufficient as Defender.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ ۚ
وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ
وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا
الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ
وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ
مِنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا
تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انْتَهُوا خَيْرًا لَكُمْ ۚ
إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحَانَهُ أَنْ
يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

६२. अर्थात् अत्युक्ति से काम न लो।

६३. दे० सूरा आले इमरान फ़ुट नोट ११।

६४. ईसाई अल्लाह को एक भी मानते हैं और उसे तीन भी कहते हैं।

६५. ईसाई हज़रत मसीह अ० को अल्लाह का इकलौता बेटा कहते हैं, उन की इसी धारणा का यहाँ खण्डन किया जा रहा है। आज ईसाइयों के पास जो इन्जील पाई जाती है उस से भी केवल इतना मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० ने अल्लाह और बन्दों के सम्बन्ध की ओर विशेष रूप से अल्लाह और उस के नेक बन्दों के सम्बन्ध की बाप-बेटे के सम्बन्ध से उपमा दी है। अल्लाह के लिए बाप शब्द का केवल व्यञ्जनात्मक रूप में प्रयोग किया गया है, परन्तु ईसाइयों ने इस से आगे बढ़ कर मसीह अ० को अल्लाह का इकलौता बेटा ठहरा कर उन्हें ईश्वर के पद पर ला खड़ा किया। देखिए बाइबिल 'इस्तिस्ना' (Deut.) १४ : १; 'लूक़ा' (Luke) ६ : ३६; 'मत्ता' (Mathew) ५ : ९, ४३-४८; ७ : ७-११; १८ : ३५।

हम बाइबिल के कुछ वाक्य यहाँ दे रहे हैं। इन से आप समझ सकते हैं कि बाइबिल में अल्लाह को बाप की केवल उपमा दी गई थी न कि वास्तव में अल्लाह को मनुष्य का बाप ठहराया गया था : "तुम अपने ख़ुदावन्द (प्रभु) के बेटे हो।" ('इस्तिस्ना' १४ : १) "जैसा तुम्हारा बाप दयालु है तुम भी दयालु हो।" ('लूक़ा' ६ : ३६) "जबकि तुम बुरे हो कर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा ?" (मत्ता ७ : ११)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७२. मसीह अल्लाह का बन्दा होने का तिरस्कार कभी नहीं करेगा, और न सामीप्य प्राप्त 'फ़रिश्ते' ही उस का तिरस्कार करेंगे। जो कोई अल्लाह की बन्दगी का तिरस्कार करता और घमण्ड करता है, तो अल्लाह सब को अपने पास इकट्ठा कर के रहेगा ;

१७३. तो, जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, तो उन्हें अल्लाह उन का पूरा-पूरा बदला देगा, और अपने अनुग्रह से उन्हें और अधिक भी प्रदान करेगा ; और जिन लोगों ने तिरस्कार और घमण्ड किया, तो उन्हें वह दुखद यातना देगा।

१७४. वे अल्लाह के सिवा अपना कोई संरक्षक–मित्र और सहायक न पायेंगे।

१७५. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुका है, और हम ने तुम्हारी ओर एक प्रत्यक्ष प्रकाश उतारा है;

१७६. तो जो लोग अल्लाह पर 'ईमान' लाये, और उस से चिमटे रहे, उन्हें वह जल्द ही अपनी दयालुता और अनुग्रह (की छाया) में प्रवेश करेगा, और उन्हें वह अपने तक (पहुँचने) का सीधा मार्ग दिखा देगा।

१७७.[६६] वे हुक्म मालूम करना चाहते हैं। कह दो : अल्लाह तुम्हें ऐसे व्यक्ति के बारे में जिस के न औलाद हो और न माता-पिता, हुक्म देता है।

यदि कोई मर जाये जिस के औलाद न हो (न माता-पिता ही हों) और उस के एक बहिन हो, तो जो कुछ उस ने छोड़ा है उस का आधा उस बहिन का होगा और वह उस बहिन का वारिस होगा, यदि उस के कोई औलाद न हो। और यदि दो बहिनें हों (या दो से अधिक), तो जो कुछ उस ने छोड़ा है उस में से उन के लिए दो तिहाई होगा और यदि कई भाई-बहिन पुरुष और स्त्रियाँ हैं, तो एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के बराबर होगा। अल्लाह तुम्हारे लिए ये आदेश खोल कर बयान करता है, ताकि तुम भटकते न फिरो। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

172. The Messiah will never scorn to be a slave unto Allah, nor will the favoured angels Whoso scorneth His service and is proud, all such will He assemble unto Him;

173. Then, as for those who believed and did good works, unto them will He pay their wages in full, adding unto them of His bounty; and as for those who were scornful and proud, them will He punish with a painful doom.

174. And they will not find for them, against Allah, any protecting friend or helper.

175. O mankind! Now hath a proof from your Lord come unto you, and We have sent down unto you a clear light;

176. As for those who believe in Allah, and hold fast unto Him, them He will cause to enter into His mercy and grace, and will guide them unto Him by a straight road.

177. They ask thee for a pronouncement, say: Allah hath pronounced for you concerning distant kindred. If a man die childless and he have a sister, hers is half the heritage, and he would have inherited from her had she died childless. And if there be two sisters, then theirs are two-thirds of the heritage, and if they be brethren, men and women, unto the male is the equivalent of the share of two females. Allah expoundeth unto you, so that ye err not. Allah is Knower of all things.

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ
عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ
يَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ
مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا
وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧٣﴾
وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٤﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ
نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٥﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ
فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ
وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٦﴾
يَسْتَفْتُوْنَكَ ۭ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي
الْكَلٰلَةِ ۭ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ
وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا
تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ
لَّهَا وَلَدٌ ۭ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ
فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۭ وَاِنْ
كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ۭ وَاللّٰهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ ع

वर्तमान इन्जीलों में अल्लाह को केवल हज़रत मसीह अ० ही का नहीं बल्कि सारे मनुष्यों का बाप कहा गया है। और उसे आसमानी बाप के नाम से याद किया गया है। इन्जील की मूल भाषा तो इबरानी (Hebrew) थी। इबरानी भाषा में 'अब' शब्द बाप और 'रब' दोनों के लिए प्रयोग होता है और इसी तरह 'इब्न' शब्द बेटे और बन्दे दोनों के लिए आता है। ज़ाहिर है कि जब हज़रत मसीह अ० ने 'अब' और 'इब्न' के शब्द प्रयोग किये होंगे तो लोगों ने इन का अर्थ 'रब' और बन्दा ही समझा होगा।

६६. यह आयत सूरा अन-निसा के बहुत बाद उतरी है। इस आयत को परिशिष्ट अथवा पूरक के रूप में अन्त में रक्खा गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५—अल-माइदा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरा का नाम 'अल-माइदा' 'खाने से भरा दस्तरख़ान' (The Table Spread with Food) सूरा की आयत ११२ से लिया गया है। यह नाम सूरा का केन्द्रीय विषय नहीं है; बल्कि यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रक्खा गया है।

सूरा के अन्तिम भाग में हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों से सम्बन्धित एक विशेष घटना का उल्लेख किया गया है[1]। हज़रत मसीह अ० से उन के अनुयायियों ने कहा था कि उन के लिए आकाश से खाने से भरा दस्तरख़ान उतारा जाये। उन्हों ने यह भी निवेदन किया था कि हम यह भोजन केवल इस लिए माँग रहे हैं ताकि उसे खायें और हमें यह पूरा विश्वास हो जाये कि आप ने जो कुछ हम से कहा है वह सत्य है। और हम इस पर गवाह हो जायें। इस सूरा का नाम 'अल-माइदा' इसी घटना से सम्बन्ध रखता है। यह नाम केवल एक विशेष घटना की याद ही नहीं दिलाता बल्कि यह अल्लाह के हर उस उपकार का सूचक है जो उस ने किसी गरोह पर किया हो। यह नाम हमें हर उस वचन की याद दिलाता है जो किसी समुदाय ने अल्लाह को दिया हो।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरा की वार्त्ताओं और दूसरे ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि यह सूरा 'हुदैबिया' की सन्धि के पश्चात् सन् ६ हिज० के अन्तिम समय में या सन् ७ हिज० के आरम्भिक काल में उतरी है। इस सूरा के उतरने के समय तक परिस्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन आ चुका था। मदीना के आस-पास बसने वाले इस्लाम विरोधी क़बीलों की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। 'यहूदी' दल का उन्मूलन हो चुका था। मदीने के अतिरिक्त हिजाज़ के दूसरे स्थानों पर रहने वाले यहूदी भी इस्लामी राज्य के बाज गुज़ार बन गये थे। मुसलमानों के विरुद्ध मक्के वालों की अन्तिम चेष्टा भी जो उन्हों ने 'खन्दक़' की मुहिम के अवसर पर की थी, विफल हो चुकी थी। अब इस्लामी राज्य का क्षेत्र केवल मदीना तक सीमित न रह कर बहुत विस्तृत हो चुका था। नज्द से ले कर शाम (Syria) तक और लाल सागर के तट से ले कर मक्का के निकट तक इस्लामी राज्य स्थापित हो चुका था। अल्लाह की कृपा से मुसलमानों को इस का अवसर मिल गया था कि वे धर्मानुसार अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का निर्माण कर सकें।

'हुदैबिया' की सन्धि से इस्लामके प्रचार में बड़ी सहायता मिली। नबी सल्ल० ने इस अवसर पर ईरान, रोम, मिस्र और अरब के सम्राटों को पत्र लिखे और उन्हें इस्लाम का आमंत्रण दिया। बहुत से मुसलमान भिभिन्न क़बीलों और जातियों में अल्लाह के 'दीन' को ले कर फैल गये ताकि उन्हें अल्लाह के 'दीन' से परिचित करायें और उन्हें जीवन के सच्चे और सुगम मार्ग की ओर बुलायें।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

इस सूरा का केन्द्रीय विषय सूरा की पहली ही आयत से विदित है। 'प्रण एवं प्रतिज्ञा को पूरा करना और सामाजिक तथा अन्य धार्मिक प्रतिबन्धनों का पूर्ण रूप से पालन करना' यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। इस सूरा में सामाजिक तथा अन्य धार्मिक प्रतिबन्धों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। अल्लाह को दिये हुये वचन को पूरा करना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व बताया गया।

१. दे० आयत ११२-११५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरा अन-निसा और प्रस्तुत सूरा में गहरा सम्पर्क है। सूरा अन-निसा में यदि इस का उल्लेख किया गया है कि प्रतिज्ञा भंग करना बहुत बड़ा अपराध है (आयात १५०-१६०) तो प्रस्तुत सूरा में अल्लाह को दिये हुये अपने वचनों को पूरा करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। अन-निसा में यदि अल्लाह का डर रखने पर विशेष वल दिया गया है तो इस सूरा से ईश-भय और धर्मपरायणता की पूर्ति होती है। प्रस्तुत सूरा वास्तविक रूप से 'तक़वा' (अल्लाह का डर रखने) ही का सजीव और विस्तृत वर्णन है। गत सूरा में यदि विशेष रूप से 'मुनाफ़िक़ों' और यहूदियों का उल्लेख किया गया है, तो इस सूरा में विशेष रूप से उन लोगों का उल्लेख हुआ है जिन की इस्लाम-शत्रुता विल्कुल स्पष्ट थी। सूरा अल-माइदा पर सूरतों का एक सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) समाप्त हो जाता है। आगे आने वाली सूरा (अल-अनआम) से सूरतों का एक दूसरा सिलसिला आरम्भ होता है।

वार्त्तायें (Subject matter)

इस सूरा में मुसलमानों को यह हुक्म दिया गया कि उन्हों ने अल्लाह के आदेशों के पालन करने की जो प्रतिज्ञा की है वे उस प्रतिज्ञा पर जमे रहें। 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' की तरह अपनी प्रतिज्ञा को भंग न करें और न 'मुनाफ़िक़ों' की ही नीतियों का अनुसरण करें। प्रतिज्ञा-भंग करने के बुरे परिणामों से उन्हें सचेत किया गया, (आयत १२-१४) यहूदियों के प्रतिज्ञा-भंग करने का उल्लेख करने के अतिरिक्त (आयत २०-२४) इस सूरा में धर्म से मुनाफ़िक़-यहूदियों के फिर जाने का भी उल्लेख किया गया। (आयत ४१) धर्म से फिर जाना और प्रतिज्ञा-भंग करना वास्तव में एक ही बात है।

इस सूरा में पवित्रता के महत्व पर प्रकाश डाला गया। पवित्रता का वास्तविक आधार ईश-भय और 'तक़वा' है। अपवित्रता वास्तव में उन सिद्धान्तों के पालन न करने में है जिन का पालन करना मनुष्य का कर्तव्य वताया गया है। आत्मा को पवित्र रखने के लिए सत्य पर जमे रहना, प्रतिज्ञा का पालन करना, 'हराम' खानें से बचना और शरीर को शुद्ध रखने के लिए 'वुज़ू', स्नान, 'तयम्मुम' आदि के जो नियम बताये गये हैं उन का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। झूठ, विश्वासघात, वचन भंग करना, हराम माल खाना आदि ऐसे कर्म हैं जिन से मनुष्य की आत्मा दूषित और विकृत हो जाती है। खाने की चीज़ों में जो चीज़ें शुद्ध और पवित्र हैं उन का उल्लेख किया गया, फिर जिन स्त्रियों से विवाह करना वैध है उन का और फिर 'वुज़ू' का उल्लेख किया। इन तीनों चीज़ों में गहरा सम्पर्क है। 'ज़ब्ह़' से जानवर पाक होते हैं, 'मह्र' और विवाह से स्त्रियाँ और वुज़ू 'नमाज़' की पाकी और शुद्धता के लिए अनिवार्य है। फिर अन्त में खोल कर बता दिया : अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता, परन्तु वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे ; और अपनी नेमत तुम पर पूरी करे। (आयत ६)।

इस सूरा में खानें-पीनें और विवाह के सिलसिले में जो चीज़ें अवैध हैं उन्हें निश्चित कर दिया गया। मुसलमानों को 'किताब वालों' के साथ खाने-पीनें और उन की स्त्रियों से विवाह करनें की अनुज्ञा दी गई। 'हज्ज' यात्रा के नियमों का उल्लेख किया गया। अज्ञान-काल के तथ्यहीन आचार-विचार का तर्कयुक्त खण्डन किया गया। 'वुज़ू', स्नान और 'तयम्मुम' का ढंग बताया गया। विद्रोह, फ़साद और चोरी के दण्ड निर्धारित किये गए और क़सम खाने का 'कफ़्फ़ारा' (प्रायश्चित) नियत किया गया। मदिरा और जुये का निषेध किया गया। गवाही से सम्बन्ध रखने वाले कुछ नियमों की शिक्षा पहले दी गई थी, इस सूरा में इस सिलसिले के कुछ और नियम भी दिये गये।

यहूदियों और 'ईसाइयों' को सीधे और सच्चे धर्म का बुलावा दिया गया। उन के तथ्यहीन आचार-विचार का खण्डन करते हुए उन्हें आमन्त्रित किया गया कि वे नबी सल्ल० पर 'ईमान' लायें।

मुसलमान अब एक शासक गरोह बन चुके थे; उन के हाथ में शासन-शक्ति थी। उन्हें आदेश दिया गया कि वे किसी दशा में भी न्याय और इन्साफ़ से न हटें। उन्हें प्रत्येक अवस्था में इन्साफ़ पर क़ायम रहने का निश्चय कर लेना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल–माइदा

(मदीना में उतरी -- 'आयतें' १२०)

THE TABLE SPREAD

Revealed at Al-Madinah

سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. हे 'ईमान' लानें वाले! प्रतिबन्धनों एवं प्रतिज्ञाओं का पूर्ण रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए चौपायों की जाति[1] के जानवर वैध किये गये, सिवाय उन के जो तुम्हें बताये जायेंगे, परन्तु जब कि तुम 'इहराम' की दशा में हो, शिकार को हलाल न समझना। निस्सन्देह अल्लाह जो चाहता है आदेश देता है।

1. O ye who believe! Fulfil your undertakings. The beast of cattle is made lawful unto you (for good) except that which is announced unto you (herein), game being unlawful when ye are on pilgrimage. Lo! Allah ordaineth that which pleaseth Him.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۭ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ①

२. हे 'ईमान' लाने वालो! अल्लाह के (बन्दगी के) प्रतीकों का अनादर न करो, न आदर के महीनों[2] का, न 'क़ुरबानी' के जानवरों का, न उन जानवरों का जिन की गरदनों में (चिह्न के रूप में) पट्टे पड़े हों (कि ये क़ुरबानी के जानवर हैं), और न उन लोगों का जो अपने 'रब' के अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की चाह में प्रतिष्ठित घर (काबा) को जाते हों[3]।

और जब 'इहराम' की हालत से बाहर आओ, तो शिकार करो। और ऐसा न हो कि एक गरोह का वैर कि उस ने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लग जाओ; हक़ अदा करने और 'तक़्वा' (ईश-भय के काम) में एक दूसरे को सहयोग दो। और गुनाह और ज़्यादती के काम में सहयोग न दो, अल्लाह से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी सज़ा देनें वाला है।

2. O ye who believe! Profane not Allah's monuments nor the Sacred Month nor the offerings nor the garlands, nor those repairing to the Sacred House, seeking the grace and pleasure of Allah. But when ye have left the sacred territory, then go hunting (if ye will). And let not your hatred of a folk who (once) stopped your going to the Inviolable Place of Worship seduce you to transgress; but help ye one another unto righteousness and pious duty Help not one another unto sin and transgression, but keep your duty to Allah. Lo! Allah is severe in punishment.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَاۗىِٕرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَاۗىِٕدَ وَلَآ اٰۗمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۭ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ۭ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَي الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ②

---

१. इस के लिए मूल ग्रन्थ (Text) में 'अनआम' शब्द आया है जो ऊंट, गाय, भैड़ और बकरी के लिए बोला जाता है। इस हुक्म से वे सभी जानवर हलाल ठहरते हैं जो मांसाहारी न हों बल्कि चरने-चुगने वाले जानवर हों, और अपनी दूसरी विशेषताओं में ऊंट, गाय, भेड़ और बकरी से मिलते-जुलते हों।

२. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५६।

३. अर्थात् न 'क़ुरबानी' के जानवरों पर हाथ डालो और न उन लोगों को छेड़ो जो 'काबा' के दर्शन को जा रहे हों।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. तुम पर 'हराम' किया गया मुरदार, रक्त, सुअर का मांस, वह जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, वह जो घुट कर या चोट खा कर या ऊँचाई से गिर कर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो, सिवाय उस के जिसे तुम (ज़िन्दा पा कर) ज़ब्ह कर लो, और वह जो किसी (देवी-देवता के) स्थान पर ज़ब्ह किया गया हो। और यह कि तीरों के द्वारा क़िसमत मालूम करो। यह आज्ञा का उल्लंघन करना है।

आज 'कुफ़्' करने वाले तुम्हारे 'दीन' की ओर से निराश हो गये; तो उन से न डरो, बल्कि मुझ से ही डरो! आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे 'दीन' को पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को 'दीन' की हैसियत से पसन्द किया। तो जो कोई भूख से विवश हो जाये, परन्तु गुनाह की ओर उस की रुचि न हो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

3. Forbidden unto you (for food) are carrion and blood and swin-flesh, and that which hath been dedicated unto any other than Allah, and the strangled, and the dead through beating, and the dead through falling from a height, and that which hath been killed by (the goring of) horns, and the devoured of wild beasts, saving that which ye make lawful (by the death-stroke), and that which hath been immolated unto idols. And (forbidden is it) that ye swear by the divining arrows. This is an abomination. This day are those who disbelieve in despair of (ever harming) your religion; so fear them not, fear Me! This day have I perfected your religion for you and completed My favour unto you, and have chosen for you as religion AL-ISLAM. Whoso is forced by hunger, not by will, to sin: (for him) lo! Allah is Forgiving, Merciful.

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَ
لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ
بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ
وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا
ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ
وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ
فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ
اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ
اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ
لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ
فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ③

४. वे तुम से पूछते हैं कि उन के लिए क्या वैध निर्धारित किया गया है। कह दो कि तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें वैध निर्धारित की गई हैं। और जिन शिकारी जानवरों को तुम ने सधे हुये शिकारी जानवर के रूप में सधा रक्खा हो, जिन को जैसा कुछ अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, सिखाते हो; वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़े रक्खें तुम उसे खाओ और उस पर अल्लाह का नाम लो, अल्लाह का डर रक्खो। निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है।

4. They ask thee (O Muhammad) what is made lawful for them. Say: (all) good things are made lawful for you. And those beasts and birds of prey which ye have trained as hounds are trained, ye teach them that which Allah taught you; so eat of that which they catch for you and mention Allah's name upon it, and observe your duty to Allah. Lo! Allah is swift to take account.

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ
اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ
مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز فَكُلُوْا مِمَّآ
اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ④

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. आज तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें वैध निर्धारित कर दी गईं । और जिन्हें 'किताब' दी गई उन का भोजन[४] तुम्हारे लिए वैध है और तुम्हारा भोजन उन के लिए वैध है । और 'ईमान' वाली महिलायें भी तुम्हारे लिए वैध है और वे महिलायें भी जो उन लोगों में से हों जिन्हें तुम से पहले 'किताब' दी गई थी जब कि तुम उन्हें उन का 'मह्र' अदा कर के विवाहिता बना लो, न तो व्यभिचार करो और न चोरी-छिपे प्रेम करो । और जिस ने 'ईमान' का इन्कार किया, उस का सारा किया-धरा अकारथ गया और वह 'आख़िरत' में घाटा उठाने वालों में से होगा ।

६. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम 'नमाज़' के लिए उठो, तो अपने मुँह और हाथ कुहनियों तक धो लिया करो, और अपने सिरों का 'मस्ह' कर लो[५] और अपने दोनों पाँव टख़नों तक धो लो । और यदि नापाक हो, तो (नहा कर) पाक हो लो । और यदि बीमार हो या सफ़र में हो, या तुम में से कोई शौच करके आया हो, या तुम ने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न पाओ, तो पाक जगह देख कर उस से अपने मुँह और हाथों पर 'मस्ह' कर लो[६] । अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता, परन्तु वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी 'नेमत' तुम पर पूरी कर दे, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

७. और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद रक्खो जो उस ने तुम पर किया है और उस की उस प्रतिज्ञा को भी जिस का वह तुम से पक्का वादा ले चुका है जब कि तुम ने कहा था : "हम ने सुना और माना"; और अल्लाह का डर रक्खो । निस्सन्देह अल्लाह सीनों तक की बातें जानता (अंतर्यामी) है ।

5. This day are (all) good things made lawful for you. The food of those who have received the Scripture is lawful for you, and your food is lawful for them. And so are the virtuous women of the believers and the virtuous women of those who received the Scripture before you (lawful for you) when ye give them their marriage portions and live with them in honour, not in fornication nor taking them as secret concubines. Whoso denieth the faith, his work is vain and he will be among the losers in the Hereafter.

6. O ye who believe! When ye rise up for prayer, wash your faces, and your hands up to the elbows, and lightly rub your heads and (wash) your feet up to the ankles. And if ye are unclean, purify yourselves. And if ye are sick or on a journey, or one of you cometh from the closet, or ye have had contact with women, and ye find not water, then go to clean, high ground and rub your faces and your hands with some of it. Allah would not place a burden on you, but He would purify you and would perfect His grace upon you, that ye may give thanks.

7. Remember Allah's grace upon you and His covenant by which He bound you when ye said: We hear and we obey; and keep your duty to Allah. Lo! Allah knoweth what is in the breasts (of men).

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ
وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ
مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ
وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ز
ع وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ
وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ
مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ
وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦
وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ
الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

४. भोजन में 'किताब वालों' का ज़ब्ह किया हुआ जानवर भी सम्मिलित है । उन के भोजन में यदि कोई हराम चीज मौजूद हो या वे जानवर को ज़ब्ह करते समय अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लें तो उसे खाना जायज न होगा । 'किताब वालों' के अतिरिक्त हमारे और दूसरे अमुस्लिमों के बीच भी कोई छूत-छात नहीं है, किन्तु 'किताब वालों' के सिवा दूसरे लोगों के ज़ब्ह किये हुये जानवरों का खाना हमारे लिए जायज़ न होगा ।

५. अर्थात् अपने भीगे हुये हाथ अपने सिरों पर फेर लो ।

६. अर्थात् उस पर हाथ मार कर अपने मुंह और हाथों पर फेर लो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह के लिए इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले बनो इन्साफ़ की गवाही देते हुये और ऐसा न हो कि किसी गरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो। इन्साफ़ करो, यही 'तक़्वा' (धर्म परायणता) से लगती हुई बात है। अल्लाह से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसकी ख़बर रखता है।

8. O ye who believe! Be steadfast witnesses for Allah in equity, and let not hatred of any people seduce you that ye deal not justly. Deal justly, that is nearer to your duty. Observe your duty to Allah. Lo! Allah is Informed of what ye do.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝٨

९. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन से अल्लाह का वादा है कि उन के लिए क्षमा और बड़ा कर्म-फल है।

9. Allah hath promised those who believe and do good works: Theirs will be forgiveness and immense reward.

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝٩

१०. और जिन्हों ने 'कुफ़्' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, वही लोग 'जहन्नम' वाले हैं।

10. And they who disbelieve and deny Our revelations, such are rightful owners of hell.

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝١٠

११. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का जो अनुग्रह तुम पर हुआ है उसे याद करो, जब कि एक गरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर लिया था, तो अल्लाह ने उन के हाथ तुम (पर उठने) से रोक दिये; अल्लाह से डरते रहो। और 'ईमान' वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

11. O ye who believe! Remember Allah's favour unto you, how a people were minded to stretch out their hands against you but He withheld their hands from you; and keep your duty to Allah. In Allah let believers put their trust.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١١

१२. अल्लाह ने 'इसराईल' की सन्तान से पक्का वादा लिया था और उन में हम ने[७] बारह सरदार नियुक्त किये थे, और अल्लाह ने कहा था : मैं तुम्हारे साथ हूँ। यदि तुम ने 'नमाज़' क़ायम रक्खी और 'ज़कात' अदा करते रहे, और मेरे 'रसूलों' पर 'ईमान' लाये और उन की सहायता की, और अल्लाह को उत्तम ऋण दिया, तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयाँ तुम से दूर कर दूँगा, और तुम्हें निश्चय ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इस के बाद जिस ने तुम में 'कुफ़्' किया तो वास्तव में वह सीधे और सुगम मार्ग से भटक गया।

12. Allah made a covenant of old with the Children of Israel and We raised among them twelve chieftains, and Allah said: Lo! I am with you. If ye establish worship and pay the poor-due, and believe in My messengers and support them, and lend unto Allah a kindly loan, surely I shall remit your sins, and surely I shall bring you into gardens underneath which rivers flow. Whoso among you disbelieveth after this will go astray from a plain road.

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝١٢

७. अर्थात् अल्लाह ने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. फिर उन के वचन भंग करनें के कारण, हम ने उन पर लानत की और हम नें उन के दिलों को कठोर बना दिया। वे शब्दों को उन के स्थानों से बदल देते हैं और जिस के द्वारा उन्हें स्मरण कराया गया था उस का एक भाग वे भुला बैठे।

और तुम्हें निरन्तर उन के किसी-न-किसी विश्वासघात का पता चलता रहेगा, उन में बहुत थोड़े हैं जो ऐसा नहीं करते। तुम उन को क्षमा कर दो और उन की कोताहियों पर ध्यान न दो। निस्सन्देह अल्लाह एहसान करनें वालों से प्रेम करता है।

13. And because of their breaking their covenant, We have cursed them and made hard their hearts. They change words from their context and forget a part of that whereof they were admonished. Thou wilt not cease to discover treachery from all save a few of them. But bear with them and pardon them. Lo! Allah loveth the kindly.

فبما نقضهم ميثاقهم لعنهم وجعلنا
قلوبهم قسية يحرفون الكلم عن
مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا
به ولا تزال تطلع على خائنة
منهم الا قليلا منهم فاعف
عنهم واصفح ان الله يحب
المحسنين ﴿١٣﴾

१४. और हम नें उन लोगों से भी दृढ़ वचन लिया था, जिन्हों ने कहा था : "हम 'नसारा' हैं", किन्तु जो कुछ उन्हें जिस के द्वारा स्मरण कराया गया था उसका एक भाग भुला बैठे। फिर हम ने उन के बीच 'क़ियामत' के दिन तक के लिए वैमनस्य और द्वेष की आग भड़का दी, और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे हैं।

14. And with those who say: "Lo! we are Christians," We made a covenant, but they forgot a part of that whereof they were admonished. Therefor We have stirred up enmity and hatred among them till the Day of Resurrection, when Allah will inform them of their handiwork.

ومن الذين قالوا انا نصرى اخذنا
ميثاقهم فنسوا حظا مما ذكروا
به فاغرينا بينهم العداوة والبغضاء
الى يوم القيمة وسوف ينبئهم الله
بما كانوا يصنعون ﴿١٤﴾

१५. हे 'किताब वालो'! तुम्हारे पास हमारा 'रसूल' आ गया है, 'किताब' में से जो कुछ तुम छिपाते थे उस में से बहुत-सी बातें वह तुम्हारे सामनें खोल रहा है, और बहुत-सी बातों को छोड़ देता है। अब अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास प्रकाश और एक स्पष्ट किताब आ गई है।

15. O people of the Scriptuer! Now hath Our messenger come unto you, expounding unto you much of that which ye used to hide in the Scripture, and forgiving much. Now hath come unto you light from Allah and a plain Scripture.

يأهل الكتب قد جاءكم رسولنا
يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون
من الكتب ويعفوا عن كثير قد
جاءكم من الله نور وكتب مبين ﴿١٥﴾

१६. उस के द्वारा अल्लाह उस व्यक्ति को जो उस की ख़ुशी पर चला सलामती की राहें दिखाता है। और अपने हुक्म से ऐसे लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की ओर लाता है, और उन्हें सीधा मार्ग दिखाता है।

16. Whereby Allah guideth him who seeketh His good pleasure unto path of peace. He bringeth them out of darkness unto light by His decree, and guideth them unto a straight path.

يهدي به الله من اتبع رضوانه
سبل السلم ويخرجهم من الظلمت الى
النور باذنه ويهديهم الى صراط مستقيم ﴿١٦﴾

१७. निश्चय ही उन लोगों नें 'कुफ़्र' किया जिन्हों ने कहा : अल्लाह तो वही मसीह सुत मरयम है। कहो : अल्लाह के आगे किस का कुछ बस चल सकता है, यदि वह मसीह सुत मरयम को और उस की माता को और उन सब को जो धरती पर हैं विनष्ट करना चाहे?

17. They indeed have disbelieved who say: Lo! Allah is the Messiah, son of Mary.. Say: Who then can do aught against Allah, if He had willed to destroy the Messiah, son of Mary, and his mother and everyone on

لقد كفر الذين قالوا ان الله هو
المسيح ابن مريم قل فمن يملك
من الله شيئا ان اراد ان يهلك
المسيح ابن مريم وامه ومن

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और अल्लाह के लिए आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है, सब का राज्य है। वह जो चाहता है पैदा करता है । और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है ।

earth? Allah's is the Sovereignty of the heavens and the earth and all that is between them. He createth what He will. And Allah is Able to do all things.

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۗ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

१८. 'यहूदी' और 'ईसाई' कहते हैं : "हम अल्लाह के बेटे और उस के चहेते हैं" कहो : फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर दण्ड क्यों देता है ? बल्कि तुम मनुष्य हो जिस को उस ने पैदा किया है। वह जिसे चाहता है क्षमा करता है, और जिसे चाहता है यातना देता है । अल्लाह के लिए आकाशों और धरती का और जो कुछ उन के बीच है, सब का राज्य है और उसी की ओर सब को लौटना है।

18. The Jews and Christians say: We are sons of Allah and His loved ones. Say: Why then doth He chastise you for your sins? Nay, ye are but mortals of His creating. He forgiveth whom He will, and chastiseth whom He will. Allah's is the Sovereignty of the heavens and the earth and all that is between them, and unto Him is the journeying.

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا
اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۗ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ
بِذُنُوْبِكُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ
خَلَقَ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

१९. हे 'किताब वालो' ! 'रसूलों' के आने का सिलसिला एक समय तक बन्द रहने के पश्चात् हमारा 'रसूल' तुम्हारे पास आया है जो तुम्हारे लिए (हमारे आदेश) खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम यह न कह सको कि हमारे पास कोई शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला नहीं आया। देखो ! अब तुम्हारे पास शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला आ गया है। और अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

19. O people of the Scripture! Now hath Our messenger come unto you to make things plain after an interval (of cessation) of the messengers, lest ye should say: There came not unto us a messenger of cheer nor any warner. Now hath a messenger of cheer and a warner come unto you. Allah is Able to do all things.

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ
اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا
نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۗ
ع وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾

२०. याद करो जब मूसा ने अपने लोगों से कहा था : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह के अनुग्रह को याद करो जो उस ने तुम पर किया है, उस ने तुम में 'नबी' पैदा किये और तुम्हें शासक बनाया, और तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था।

20. And (remember) when Moses said unto his people: O my people! Remember Allah's favour unto you, how He placed among you Prophets, and He made you kings, and gave you that (which) He gave not to any (other) of (His) creatures.

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ
اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ
مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾

२१. हे जाति वालो ! तुम पवित्र भूमि[८] में प्रवेश करो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और पीछे न हटो, नहीं तो तुम घाटे में पड़ जाओगे।

21. O my people! Go into the holy land which Allah hath ordained for you. Turn not in flight, for surely ye turn back as losers:

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ
الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى
اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾

२२. उन्हों ने कहा : हे मूसा ! उस में तो बड़े शक्तिशाली लोग हैं, हम तो वहाँ जा नहीं सकते जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जाएँ तो हम प्रवेश करने के लिए तैयार हैं।

22. They said: O Moses! Lo! a giant people (dwell) therein and lo! we go not in till they go forth from thence. When they go forth, then we will enter (not till then).

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ
وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ
فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

८. यहाँ पवित्र भूमि से अभिप्रेत फ़लिस्तीन (Palestine) की पवित्र भूमि है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. उन डरने वालों में से ही दो आदमियों ने, जिन पर अल्लाह का अनुग्रह था, कहा : उन के मुक़ाबले में दरवाज़े से घुस जाओ, जब तुम उस में घुस जाओगे, तो तुम्हीं विजयी होगे। यदि तुम 'ईमान' वाले हो तो अल्लाह पर भरोसा करो।

२४. उन्हों ने कहा : हे मूसा ! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जा सकते। तो जाओ तुम और तुम्हारा 'रब', दोनों लड़ो ! हम तो यहाँ बैठे हैं।

२५. मूसा ने कहा : मेरे 'रब' ! मेरा सिवाय अपने और अपने भाई के किसी पर अधिकार नहीं है, तो तू हमें इन अवज्ञाकारी लोगों से अलग कर दे।

२६. (अल्लाह ने) कहा : अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष के लिए इन पर हराम है, ये भूमि में मारे-मारे फिरेंगे। तुम इन अवज्ञाकारी लोगों पर अफ़सोस न करो।

२७. और इन्हें आदम के दो बेटों का हाल हक़ के साथ सुना दो, जब कि दोनों ने 'क़ुरबानी' की, तो उन में से एक की क़बूल हुई और दूसरे की क़बूल न हुई। उस ने कहा : मैं तुझे क़त्ल कर डालूंगा। कहा : अल्लाह तो उन्हीं की (क़ुरबानी) क़बूल करता है जो (उस का) डर रखते हैं।

२८. यदि तू मुझे क़त्ल करने को मेरी ओर अपना हाथ बढ़ायेगा, तो मैं तुझे क़त्ल करने को तेरी ओर अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ, मैं तो अल्लाह से जो सारे संसार का 'रब' है, डरता हूँ।

२९. मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले फिर आग ('जहन्नम') वालों में से हो जाये। और यही ज़ालिमों का कर्म फल है।

३०. उस के जी ने उसे अपने भाई की हत्या पर आमादा कर दिया, तो उस ने उस की हत्या कर डाली और घाटा उठाने वालों में से हो गया।

23. Then outspake two of those who feared (their Lord, men) unto whom Allah had been gracious: Enter in upon them by the gate, for if ye enter by it, lo! ye will be victorious. So put your trust (in Allah) if ye are indeed believers.

24. They said: O Moses! We will never enter (the land) while they are in it. So go thou and thy Lord and fight! We will sit here.

25. He said: My Lord! I have control of none but myself and my brother, so distinguish between us and the wrongdoing folk.

26. (Their Lord) said: For this the land will surely be forbidden them for forty years that they will wander in the earth, bewildered. So grieve not over the wrongdoing folk.

27. But recite unto them with truth the tale of the two sons of Adam, how they offered each a sacrifice, and it was accepted from the one of them and it was not accepted from the other. (The one) said: I will surely kill thee. (The other) answered: Allah accepteth only from those who ward off (evil).

28. Even if thou stretch out thy hand against me to kill me, I shall not stretch out my hand against thee to kill thee; lo! I fear Allah, the Lord of the Worlds.

29. Lo! I would rather thou shouldst bear the punishment of the sin against me and thine own sin and become one of the owners of the Fire. That is the reward of evildoers.

30. But (the other's) mind imposed on him the killing of his brother, so he slew him and became one of the losers.

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ
اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ
فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ
وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾
قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا
مَّا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ
فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ﴿٢٤﴾
قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَ
أَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾
قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ
سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ
عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ ۘ
إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ
لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ
مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾
لَئِن بَسَطتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا
أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ إِنِّي
أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾
إِنِّي أُرِيدُ أَن تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ
فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾
فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ
فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. तब अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो भूमि खोदता था, ताकि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई का शव कैसे छिपाये। कहने लगा : अफ़सोस मुझ पर! क्या मैं इस काक जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव तो छिपा देता? फिर वह लज्जित हुआ।[९]

31. The Allah sent a raven scratching up the ground, to show him how to hide his brother's naked corpse. He said: Woe unto me! Am I not able to be as this raven and so hide my brother's naked corpse? And He became repentant.

فبعث الله غرابا يبحث في الأرض
ليريه كيف يواري سوأة أخيه
قال يويلتى أعجزت أن أكون مثل
هذا الغراب فأواري سوأة أخي
فأصبح من النادمين ﴿٣١﴾

३२. इसी लिए हम ने 'इसराईल' की सन्तान के लिए लिख दिया था कि "जिस ने किसी व्यक्ति को किसी के ख़ून का बदला लेने या ज़मीन में फ़साद फैलाने के सिवा किसी और कारण से क़त्ल किया तो मानो उस ने समस्त मनुष्यों की हत्या कर डाली, और जिस ने उसे जीवन प्रदान किया,[१०] उस ने मानो समस्त मनुष्यों को जीवन प्रदान किया।"

और उन के पास हमारे 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण ले कर आये फिर भी उन में अधिकतर लोग इस के बाद भी धरती में ज़्यादती करने वाले ही हैं।

32. For that cause We decreed for the Children of Israel that whosoever killeth a human being for other than man slaughter or corruption in the earth, it shall be as if he had killed all mankind, and whoso saveth the life of one, it shall be as if he had saved the life of all mankind. Our messengers came unto them of old with clear proofs (of Allah's Sovereignty) but afterwards, lo! many of them became prodigals in the earth.

من أجل ذلك كتبنا على بني
إسرائيل أنه من قتل نفسا بغير
نفس أو فساد في الأرض فكأنما
قتل الناس جميعا ومن أحياها
فكأنما أحيا الناس جميعا ولقد
جاءتهم رسلنا بالبينت ثم إن
كثيرا منهم بعد ذلك في الأرض
لمسرفون ﴿٣٢﴾

३३. जो लोग अल्लाह और उस के 'रसूल' से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं उन की सज़ा यही है कि बुरी तरह क़त्ल किये जायें, या सूली पर चढ़ाये जायें, या उन के हाथ और उन के पाँव विपरीत दिशाओं से काट डाले जायें। या उन को देश निकाला दे दिया जाये। यह रुसवाई तो उन के लिए दुनिया में है और 'आख़िरत' में उन के लिए बड़ी यातना है;

33. The only reward of those who make war upon Allah and His messenger and strive after corruption in the land will be that they will be killed or crucified or have their hands and feet on alternate sides cut off, or will be expelled out of the land. Such will be their degradation in the world, and in the Hereafter theirs will be an awful doom;

إنما جزؤا الذين يحاربون الله و
رسوله ويسعون في الأرض فسادا
أن يقتلوا أو يصلبوا أو تقطع أيديهم
وأرجلهم من خلف أو ينفوا
من الأرض ذلك لهم خزي في الدنيا
ولهم في الآخرة عذاب عظيم ﴿٣٣﴾

३४. परन्तु जिन लोगों ने इस से पहले कि तुम्हें उन पर अधिकार प्राप्त हो 'तौबा' कर ली, तो जान लो कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

34. Save those who repent before ye overpower them. For know that Allah is Forgiving, Merciful.

إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا
عليهم فاعلموا أن الله غفور رحيم ﴿٣٤﴾

३५. हे 'ईमान' लाने वालो! अल्लाह से डरते रहो और उस तक (पहुँचने का) साधन ढूँढ़ो, और उस की राह में 'जिहाद' करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

35. O ye who believe! Be mindful of your duty to Allah, and seek the way of approach unto Him and strive in His way in order that ye may succeed.

يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا
إليه الوسيلة وجاهدوا في سبيله
لعلكم تفلحون ﴿٣٥﴾

९. यहूदियों ने नबी सल्ल० और आप के मुख्य साथियों को क़त्ल करने की साजिश की थी। हज़रत आदम अ० के बेटों का हाल बयान करने का उद्देश्य वास्तव में यहूदियों की ऐसी ही नीतियों का तिरस्कार करना है।

१०. अर्थात् किसी के प्राण की रक्षा की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, यदि उन के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, और उतना ही उस के साथ और भी हो, कि वे उसे दे कर 'क़ियामत' के दिन यातना से बच जायें, तब भी वह उन से क़बूल नहीं किया जायेगा । उन के लिए दुखदायिनी यातना है ।

36. As for those who disbelieve, lo! if all that is in the earth were theirs, and as much again therewith, to ransom them from the doom on the Day of Resurrection, it would not be accepted from them. Theirs will be a painful doom.

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ
لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ٣٦

३७. वे चाहेंगे कि ('जहन्नम' की) आग से निकल जायें, परन्तु वे उस से निकल नहीं सकेंगे । उन के लिए स्थायी यातना है ।

37. They will wish to come forth from the Fire, but they will not come forth from it. Theirs will be a lasting doom.

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم
بِخَارِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ٣٧

३८. और चोरी करने वाले और चोरी करने वाली के हाथ काट दो, उस के बदले के रूप में जो उन्हों ने कमाया और एक शिक्षाप्रद दण्ड के रूप में अल्लाह की ओर से । अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।

38. As for the thief, both male and female, cut off their hands. It is the reward of their own deeds: an exemplary punishment from Allah. Allah is mighty, Wise

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا
أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٣٨

३९. फिर जो कोई ज़ुल्म करने के बाद 'तौबा' कर ले और अपने को सुधार ले, तो निश्चय ही अल्लाह उस पर कृपा करेगा, निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील ओर दया करने वाला है ।

39. But whoso repenteth after his wrongdoing and amendeth, lo! Allah will relent toward him. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ
فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٣٩

४०. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही है जिस के लिए आकाशों और धरती का राज्य है ? वही जिसे चाहे यातना दे और जिसे चाहे क्षमा कर दे । और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है ।

40. Knowest thou not that unto Allah belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth? He punisheth whom He will, and forgiveth whom He will. Allah is Able to do all things.

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ
وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَغْفِرُ
لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٤٠

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria,.Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. हे 'रसूल' ! जो लोग 'कुफ़्' में दौड़-दौड़ कर गिरते हैं उन के कारण तुम दुःखी न होना[११], उन लोगों में से जिन्हों ने अपने 'मुँह से कहा कि हम 'ईमान' ले आये, हालाँकि उन के दिल 'ईमान' नहीं लाये, और उन लोगों में से जो 'यहूदी' हुये : ये झूठ के लिए कान लगाते हैं, और दूसरे लोगों की सुनते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आये, शब्दों को उन का स्थान निश्चित होने के बाद भी उस के स्थान से हटा देते हैं, कहते हैं : यदि तुम्हें यह (हुक्म) मिले, तो इसे लेना, और यदि (हुक्म) न दिया जाये, तो बचना[१२]। जिसे अल्लाह ही (गुनाह के) फ़ितने (आपदा) में डालना चाहे, तो उस के लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारी कुछ भी नहीं चल सकती। ये वे लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने पाक करना नहीं चाहा[१३]। इन के लिए संसार में भी अपमान है, और 'आख़िरत' में इन के लिए बड़ी यातना है;

41. O Messenger! Let not them grieve thee who vie one with another in the race to disbelief, of such as say with their mouth: "We believe," but their hearts believe not, and of the Jews: listeners for the sake of falsehood, listeners on behalf of other folk who come not unto thee, changing words from their context and saying: If this be given unto you, receive it, but if this be not given unto you, then beware! He whom Allah doometh unto sin, thou (by thine efforts) will avail him naught against Allah. Those are they for whom the will of Allah is that He cleanse not their hearts. Theres in the world will be ignominy, and in the Hereafter an awful doom;

يَاأَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ
يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ
قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ
سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ
آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ
مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۖ يَقُولُونَ إِنْ
أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ
تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ
فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ
قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَ
لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾

४२. ये झूठ के लिए कान लगाने वाले, और बड़े हराम का माल खाने वाले हैं,

तो यदि ये तुम्हारे पास आयें तो चाहे तुम इन के बीच फ़ैसला कर दो या इन्हें टाल दो। यदि तुम इन्हें टाल दो तो ये तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। परन्तु यदि फ़ैसला करो, तो इन के बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। निस्सन्देह अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से प्रेम करता है।

42. Listerners for the sake of falsehood! Greedy for illicit gain! If then they have recourse unto thee (Muhammad) judge between them or disclaim jurisdiction. If thou disclaimest jurisdiction, then thev cannot harm thee at all. But if thou judges, judge between them with equity. Lo! Allah loveth the equitable.

سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ
فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ
عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ
يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾

४३. ये तुम से कैसे फ़ैसला कराते हैं जब कि इन के पास 'तौरात' है, जिस में अल्लाह का आदेश मौजूद है ? फिर इस के बाद भी ये मुँह मोड़ते हैं। ये कदापि 'ईमान' वाले नहीं हैं।

43 How come they unto thee for judgment when they have the Torah, wherein Allah hath delivered judge ment (for them)? Yet even after that they turn away. Such (folk) are not believers.

وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَاةُ
فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ
ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾

—

११. अर्थात् तुम उन के लिए दुःखी न होना।

१२. यहूदी लोगों से कहते थे कि मुहम्मद सल्ल० यदि वही हुक्म दें जो हम तुम्हें बताते हैं, तो मान लेना और यदि वे कुछ और हुक्म दें तो उनका हुक्म न मानना।

१३. ये लोग गुनाह पर अड़े रहे, अल्लाह ज़बरदस्ती इन्हें पाक क्यों करता; और इन्हें फ़ितने से क्यों बचाता। अल्लाह ने इन के करतूतों से ही इन्हें फ़ितने में डालने का निश्चय किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. निस्सन्देह हम ने 'तौरात' उतारी, जिस में मार्ग-दर्शन और प्रकाश है, 'नबी' जो हुक्म मानने वाले थे, इसी के अनुसार 'यहूदियों' का फ़ैसला करते रहे, और 'रब्बानी' (धर्माधिकारी) और धर्म-ज्ञाता लोग भी, इस लिए कि उन्हें अल्लाह की किताब का संरक्षक बनाया गया था, और वे उस पर गवाह थे कि तुम लोगों से न डरो, मुझ से डरो। और मेरी 'आयतों' को थोड़े मूल्य पर न बेच डाला करो। जो लोग उस के अनुसार फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है तो वही 'काफ़िर' हैं।

44. Lo! We did reveal the Torah wherein is guidance and a light, by which the Prophets who surrendered (unto Allah) judged the Jews, and the rabbis and the priests (judged) by such of Allah's Scripture as they were bidden to observe, and thereunto were they witnesses. So fear not mankind, but fear Me. And barter not My revelations for a little gain. Whoso judgeth not by that which Allah hath revealed: such are disbelievers.

إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ
يَحْكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسْلَمُوا۟
لِلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلرَّبَّٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ
بِمَا ٱسْتُحْفِظُوا۟ مِن كِتَٰبِ ٱللَّهِ وَكَانُوا۟
عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا۟ ٱلنَّاسَ
وَٱخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِى ثَمَنًا
قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ
فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿٤٤﴾

४५. हम ने उस ('तौरात') में उन्हें हुक्म दिया था कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और सब आघातों का इसी तरह (बराबर का) बदला है[१४]। तो जो उसे क्षमा कर दे तो यह उस के लिए प्रायश्चित होगा। और जो उस के अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग ज़ुल्म करने वाले हैं।

45. And We prescribed for them therein: The life for the life, and the eye for the eye, and the nose for the nose, and the ear for the ear, and the tooth for the tooth, and for wounds retaliation. But whoso forgoeth it (in the way of charity) it shall be expiation for him. Whoso judgeth not by that which Allah hath revealed: such are wrongdoers.

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفْسَ
بِٱلنَّفْسِ وَٱلْعَيْنَ بِٱلْعَيْنِ وَٱلْأَنفَ
بِٱلْأَنفِ وَٱلْأُذُنَ بِٱلْأُذُنِ وَٱلسِّنَّ
بِٱلسِّنِّ وَٱلْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن
تَصَدَّقَ بِهِۦ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُۥ ۚ وَمَن لَّمْ
يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٤٥﴾

४६. और इन के पीछे इन के पद-चिह्नों पर हम ने ईसा सुत मरयम को भेजा जो अपने से अगली किताब 'तौरात' की तसदीक़ करने वाला था, और हम ने उसे 'इन्जील' प्रदान की जिस में पथ-प्रदर्शन और प्रकाश है, और वह अपने से अगली किताब 'तौरात' की तसदीक़ करने वाली है—और वह अल्लाह का डर रखने वालों के लिए पथ-प्रदर्शन और उपदेश है।

46. And We caused Jesus, son of Mary, to follow in their footsteps, confirming that which was (revealed) before him, and We bestowed on him the Gospel wherein is guidance and a light confirming that which was (revealed) before it in the Torah—a guidance and an admonition unto those who ward off (evil).

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِعِيسَى ٱبْنِ
مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ ۖ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾

४७. इन्जील वालों को चाहिए कि उस के अनुसार फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उतारा है। और जो उस के अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

47. Let the People of the Gospel judge by that which Allah hath revealed therein. Whoso judgeth not by that which Allah hath revealed; such are evil-livers.

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ ٱلْإِنجِيلِ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ
فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ
فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٤٧﴾

१४. दे० तौरात : किताब 'ख़ुरूज' (Exodus) २१ : २३-२५ और 'इस्तिस्ना' (Deuteronomy) १९ : २१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. और हम ने तुम्हारी ओर यह 'किताब' हक़ के साथ उतारी हैं, उसकी तसदीक़ करने वाली है, जो कोई 'किताब' कि इस से पहले थी, और उस की संरक्षक (एवं कसौटी) है[१५]। तो तुम लोगों के बीच उस के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़ कर उन की इच्छाओं का पालन न करना।

हम ने तुम में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक गरोह बना देता। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया ताकि जो कुछ उस ने तुम्हें दिया है उस में तुम्हारी परीक्षा ले। तो भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम सब को अल्लाह की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जिस में तुम विभेद करते रहे हो।

48. And unto thee have We revealed the Scripture with the truth confirming whatever Scripture was before it and a watcher over it. So judge between them by that which Allah hath revealed, and follow not their desires away from the truth which hath come unto thee. For each We have appointed a divine law and a traced-out way. Had Allah willed, He could have made you one community. But that He may try you by that which He hath given you (He hath made you as ye are). So vie one with another in good works. Unto Allah ye will all return, and He will then inform you of that wherein ye differ.

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا
عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ
مِنَ الْحَقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً
وَّمِنْهَاجًا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ
مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ اِلَى
اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾

४९. और यह कि तुम उन के बीच उस के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की इच्छाओं का पालन न करो, और उन से बचते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर भेजा है उस के किसी हुक्म से वे तुम्हें बहका दें। फिर यदि वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह ही उन्हें उन के कुछ गुनाहों के कारण, संकट में डालना चाहता है। और बहुत से लोग अवज्ञाकारी ही हैं।

49. So judge between them by that which Allah hath revealed, and follow not their desires, but beware of them lest they seduce thee from some part of that which Allah hath revealed unto thee. And if they turn away, then know that Allah's will is to smite them for some sin of theirs. Lo! many of mankind are evil-livers.

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا
تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ
يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ
وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

५०. क्या ये अज्ञान ('कुफ़्') का फ़ैसला चाहते हैं ? विश्वास रखने वालों के लिए अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन है ?

50. Is it a judgement of the time of (pagan) ignorance that they are seeking? Who is better than Allah for judgement to a people who have certainty (in their belief)?

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ وَمَنْ
اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

५१. हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' को मित्र न बनाओ। ये आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं। और जो कोई तुम में उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में से होगा। निस्सन्देह अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता।

51. O ye who believe! Take not the Jews and Christians for friends. They are friends one to another. He among you who taketh them for friends is (one) of them. Lo! Allah guideth not wrongdoing folk.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ
وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ
مِنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾

१५. अर्थात् इस किताब के द्वारा पिछली समस्त किताबों की पुष्टि होती है पिछली आसमानी किताबों (Heavenly Books) की मूल शिक्षाओं को इस किताब ने अपने अन्दर सुरक्षित कर लिया है। पिछली किताबें आज अपने वास्तविक रूप में नहीं पाई जातीं; उन में बड़ा परिवर्तन हो चुका है और बहुत सी किताबें काल के चक्र से खो भी गई हैं। पिछली किताबों की मूल शिक्षाओं के मालूम करने का साधन अब यही अल्लाह की अन्तिम किताब 'क़ुरआन' रह जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है वे दौड़ कर उन में मिल जाते हैं, कहते हैं : हमें भय है कि कहीं हम पर कोई गर्दिश (विपत्ति) न आ पड़े। तो हो सकता है कि जल्द ही अल्लाह जीत कर दे, या उस की ओर से कोई और बात ज़ाहिर हो[१६]। और ये लोग जो कुछ अपने जी में छिपाये हुये हैं उस पर लज्जित हों।

52. And thou seest those in whose hearts is a disease race toward them, saying: We fear lest a change of fortune befall us. And it may happen that Allah will vouchsafe (unto thee) the victory, or a commandment from His presence. Then will they repent of their secret thoughts.

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ
أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن
يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا
عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ﴿٥٢﴾

५३. और तब 'ईमान' लाने वाले कहेंगे : क्या यही वे लोग हैं जिन्हों ने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाई थीं कि हम तुम्हारे साथ हैं ? —इन का किया-धरा सब अकारथ गया, और ये घाटे में पड़ कर रह गये।

53. Then will the believers say (unto the people of the Scripture): Are these they who swore by Allah their most binding oaths that they were surely with you? Their works have failed and they have become the losers.

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ
إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ﴿٥٣﴾

५४. हे 'ईमान' लाने वालो ! जो कोई तुम में से अपने 'दीन' से फिरेगा, तो जल्द अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि उन से उसे प्रेम होगा और उस से उन्हें प्रेम होगा, 'ईमान' वालों पर नर्म, 'काफ़िरों' पर सख़्त होंगे[१७], अल्लाह की राह में 'जिहाद' करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ी समाई वाला और जानने वाला है।

54. O ye who believe! Whoso of you becometh a renegade from his religion, (know that in his stead) Allah will bring a people whom He loveth and who love Him humble toward believers, stern toward disbelievers, striving in the way of Allah, and fearing not the blame of any blamer. Such is the grace of Allah which He giveth unto whom He will. Allah is All-Embracing, All-Knowing.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ
عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ
ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

५५. तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उस के 'रसूल' और 'ईमान' वाले लोग हैं, जो 'नमाज़' क़ायम करते और 'ज़कात' देते हैं, और वे (अल्लाह के आगे) झुकने वाले हैं।

55. Your friend can be only Allah; and His messenger and those who believe, who establish worship and pay the poor-due, and bow down (in prayer).

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَ
يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

५६. और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' और 'ईमान' लाने वालों को अपना मित्र बनाये, तो (वह अल्लाह का गरोह है) अल्लाह ही का गरोह प्रभुत्व प्राप्त करने वाला है।

56. And whoso taketh Allah and His messenger and those who believe for friend (will know that), lo! the party of Allah, they are the victorious.

وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

५७. हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम से पहले जिन को 'किताब' दी गई थी, जिन्हों ने तुम्हारे 'दीन' को हँसी और खेल बना लिया है उन्हें, और 'काफ़िरों' को अपना मित्र न बनाओ। और अल्लाह से डरते रहो यदि तुम 'ईमान' वाले हो।

57. O ye who believe! Choose not for friends such of those who received the Scripture before you, and of the disbelievers as make a jest and sport of your religion. But keep your duty to Allah if ye are true believers.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ
اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ
أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

१६. यह बात ज़ाहिर हो कर रही। इन 'मुनाफ़िक़ों' की मित्रता मदीने के 'यहूदियों' और मक्का के 'मुश्रिकों' से थी। मुसलमानों को मक्का पर विजय प्राप्त हुई ; और यहूदियों को देश-निकाला दिया गया।

१७. अर्थात् धर्म-विरोधियों के मुक़ाबले में वे चट्टान होंगे, उन्हें किसी तरह धर्म-पथ से विचलित नहीं किया जा सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. जब तुम 'नमाज़' के लिए पुकारते हो तो वे उसे हँसी और खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते ।

58. And when ye call to prayer they take it for a jest and sport. That is because they are a folk who understand not.

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا
وَّلَعِبًا ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾

५९. कहो : हे 'किताब वालो' ! क्या इस के सिवा हमारी कोई और बात तुम को बुरी लगती है कि हम अल्लाह पर और उस चीज़ पर 'ईमान' लाये जो हमारी ओर उतारी गई और उस चीज़ पर जो पहले उतारी जा चुकी है और यह कि तुम में से बहुतेरे अवज्ञाकारी हैं ?

59. Say: O People of the Scripture! Do ye blame us for aught else than that we believe in Allah and that which is revealed unto us and that which was revealed aforetime, and because most of you are evil-livers?

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّآ إِلَّآ
أَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ
أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُونَ ﴿٥٩﴾

६०. कहो : क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ इस के मुक़ाबले में निकृष्टतर बदला पाने वाले कौन हैं ? वे हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिन पर उस का प्रकोप हुआ ! और जिन में से उस ने बन्दर और सुअर बनाये और जिन्हों ने 'ताग़ूत' की बन्दगी की। ऐसे लोगों का दर्जा भी बहुत बुरा है और सीधे मार्ग से भी वे बहुत अधिक भटक गये हैं।

60. Shall I tell thee of a worse (case) than theirs for retribution with Allah? Worse (is the case of him) whom Allah hath cursed, him on whom His wrath hath fallen! Worse is he of whose sort Allah hath turned some to apes and swine, and who serveth idols. Such are in worse plight and further astray from the plain road.

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ
مَثُوبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ
غَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ
وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولٰٓئِكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾

६१. और जब ये तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं : हम 'ईमान' लाये; हालांकि 'कुफ़्र' ही लिये हुये आये थे और उसी को लिये हुये चले गये; और जो कुछ ये छिपाते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

61. When they come unto you (Muslims), they say: We believe; but they came in in unbelief and they went out in the same; and Allah knoweth best what they were hiding.

وَإِذَا جَآءُوكُمْ قَالُوٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوا
بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهٖ ۚ وَاللّٰهُ
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

६२. तुम देखते हो कि उन में बहुत से दौड़-दौड़ कर गुनाह और ज़्यादती के काम और हराम खाने पर गिरते हैं। क्या ही बुरा है जो ये कर रहे हैं।

62. And thou seest many of them vying one with another in sin and transgression and their devouring of illicit gain. Verily evil is what they do.

وَتَرٰى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِى
الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

६३. इन के 'रब्बानी' (धर्माधिकारी) और धर्म-ज्ञाता इन्हें गुनाह की बात बकने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते ? क्या ही बुरे काम हैं जो ये कर रहे हैं।

63. Why do not the rabbis and the priests forbid their evil-speaking and their devouring of illicit gain? Verily evil is their handiwork.

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ
عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. और 'यहूदी' लोग कहते हैं : अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है। इन्हीं के हाथ बाँधे जायें, और फ़िटकार है इन पर, उस के कारण जो बकवास ये करते हैं। उस के तो दोनों हाथ खुले हुये हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। तुम्हारे 'रब' की ओर से जो कुछ तुम्हारी ओर उतारा गया है वह इन में से बहुतों की सरकशी और 'कुफ़्' को और बढ़ा देगा[१८], और हम ने इन के बीच 'क़ियामत' तक के लिए वैमनस्य और द्वेष डाल दिया है। ये जब कभी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। ये ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़े फिरते हैं, और अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।

६५. यदि 'किताब वाले' 'ईमान' लाते और (अल्लाह का) डर रखते तो हम इन की बुराइयाँ इन से दूर कर देते और इन्हें 'नेमत' भरी 'जन्नतों' में पहुँचा देते।

६६. और यदि ये 'तौरात' और 'इन्जील' को और जो कुछ इन के 'रब' की ओर से इन पर उतारा गया है क़ायम रखते, तो इन्हें खाने को मिलता ऊपर से भी और पाँव के नीचे से भी। इन में एक गरोह सीधे रास्ते पर चलने वाला है, परन्तु इन में बहुत से ऐसे हैं कि जो कुछ करते हैं, वह बहुत बुरा है।

६७. हे 'रसूल'! तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम पर जो कुछ उतारा गया है उसे अच्छी तरह पहुँचा दो, यदि ऐसा न किया तो तुम ने उस का सन्देश कुछ नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचायेगा। निस्सन्देह अल्लाह 'काफ़िर' लोगों को राह नहीं दिखाता।

६८. कह दो : "हे 'किताब वालो'! तुम किसी बुनियाद पर नहीं हो जब तक कि 'तौरात' और 'इन्जील' को और जो कुछ तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उसे क़ायम न रखो" और (हे नबी) तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम पर जो कुछ उतारा गया है वह अवश्य ही इन में से बहुतों की सरकशी और 'कुफ़्' को और अधिक बढ़ा देने वाला है[१९]। तो तुम इन 'काफ़िर' लोगों पर अफ़सोस न करना।

64. The Jews says: Allah's hand is fettered. Their hands are fettered and they are accursed for saying so. Nay, but both His hands are spread out wide in bounty. He bestoweth as He will. That which hath been revealed unto thee from thy Lord is certain to increase the contumacy and disbelief of many of them, and We have cast among them enmity and hatred till the Day of Resurrection. As often as they light a fire for war, Allah extinguisheth it. Their effort is for corruption in the land, and Allah loveth not corrupters.

65 If only the People of the Scripture would believe and ward off (evil), surely We should remit their sins from them and surely We should bring them into Gardens of Delight.

66. If they had observed the Torah and the Gospel and that which was revealed unto them from their Lord, they would surely have been nourished from above them and from beneath their feet. Among them there are people who are moderate, but many of them are of evil conduct

67. O Messenger! Make known that which hath been revealed unto thee from thy Lord, for if thou do it not, thou wilt not have conveyed His message. Allah will protect thee from mankind. Lo! Allah guideth not the disbelieving folk.

68. Say: O People of the Scripture! Ye have naught (of guidance) till ye observe the Torah and the Gospel and that which was revealed unto you from your Lord. That which is revealed unto thee (Muhammad) from thy Lord is certain to increase the contumacy and disbelief of many of them. But grieve not for the disbelieving folk.

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ
غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ
بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ
يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ
كُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ
الْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ
اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا
لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾
وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾
يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ
رِسٰلَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾
قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ
حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ
وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ
فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

१८. इस का कारण इन की असत्यप्रियता और सच्चाई के प्रति इन के द्वेष-भाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं।
१९. दे० फ़ुट नोट १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. निस्सन्देह वे लोग जो 'ईमान' लाये हैं, और वे जो 'यहूदी' हुये हैं, और 'साबिई', और 'ईसाई' जो कोई भी अल्लाह और अन्तिम दिन[२०] पर 'ईमान' लाया और अनुकूल कर्म करता रहा तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे[२१]।

69. Lo! those who believe, and those who are Jews, and Sabaeans, and Christians—Whosoever believeth in Allah and the Last Day and doth right—there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

७०. हम ने 'इसराईल' की सन्तान से दृढ़ वचन लिया और उन की ओर बहुत से 'रसूल' भेजे। जब भी उन के पास कोई 'रसूल' वह-कुछ ले कर आया जिस को उन के जी न चाहते थे, तो कितनों को तो उन्हों ने झुठला दिया और कितनों की हत्या करने लगे।

70. We made a covenant of old with the Children of Israel and We sent unto them messengers. As often as a messenger came unto them with that which their souls desired not (they became rebellious). Some (of them) they denied and some they slew.

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

७१. और समझा कि (इस अपराध पर) कोई आपदा न आयेगी, इस लिए वे अन्धे और बहरे बन गये। फिर अल्लाह ने उन पर दया-दृष्टि डाली, फिर उन में बहुत से अन्धे और बहरे बन गये। और अल्लाह देखता है जो-कुछ वे करते हैं।

71. They thought no harm would come of it, so they were wilfully blind and deaf. And afterward Allah turned (in mercy) toward them. Now (even after that) are many of them wilfully blind and deaf. Allah is Seer of what they do.

وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

७२. निश्चय ही उन लोगों ने 'कुफ़' किया जिन्हों ने कहा कि अल्लाह मसीह सुत मरयम ही है; हालाँकि मसीह ने कहा था : हे 'इसराईल' की सन्तान ! अल्लाह की 'इबादत' करो, जो मेरा 'रब' भी है और तुम्हारा 'रब' भी। जो कोई अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक करेगा, उस पर अल्लाह ने 'जन्नत' हराम कर दी है। और उस का ठिकाना आग ('जहन्नम') है। और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं।

72. They surely disbelieve who say: Lo! Allah is the Messiah, son of Mary. The Messiah (himself) said: O Children of Israel! worship Allah, my Lord and your Lord. Lo! whoso ascribeth partners unto Allah, for him Allah hath forbidden Paradise. His abode is the Fire. For evil-doers there will be no helpers.

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

७३. निश्चय ही उन लोगों ने 'कुफ़' किया जिन्हों ने कहा : "अल्लाह तो तीन में का एक है;"[२२] हालाँकि अकेले 'इलाह' (पूज्य) के सिवा कोई 'इलाह' नहीं है। जो-कुछ ये कहते हैं यदि उस से बाज़ न आये, तो इन लोगों को जिन्हों ने 'कुफ़' किया है दुख देने वाली यातना ग्रस्त लेगी।

73. They surely disbelieve who say: Lo! Allah is the third of three; when there is no God save the One God. If they desist not from so saying, a painful doom will fall on those of them who disbelieve.

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

२०. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट ५।
२१. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट २२।
२२. दे० सूरा अन्-निसा फुट नोट ६४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. क्या ये लोग अल्लाह के आगे 'तौबा' नहीं करेंगे और उस से क्षमा नहीं माँगेंगे जबकि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

74. Will they not rather turn unto Allah and seek forgiveness of Him? For Allah is Forgiving, Merciful.

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾

७५. मसीह सुत मरयम कुछ नहीं बस एक 'रसूल' है, उस से पहले भी बहुत से 'रसूल' गुज़र चुके हैं। उस की माता बहुत ही सच्ची (पुण्यवती महिला) थी। दोनों भोजन करते थे। देखो हम कैसे उन के लिए 'आयतें' खोल कर बयान करते हैं, फिर देखो ये कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हैं!

75. The Messiah, son of Mary, was no other than a messenger; messengers (the like of whom) had passed away before him. And his mother was a saintly woman. And they both used to eat (earthly) food. See how We make the revelations clear for them, and see how they are turned away!

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ
خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ
كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ
لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

७६. कह दो : क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारा न कुछ बिगाड़ सकता है और न बना सकता है? और अल्लाह ही है जो सुनने और जानने वाला है।

76. Say: Serve ye in place of Allah that which possesseth for you neither hurt nor use? Allah it is Who is the Hearer, the Knower.

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

७७ कह दो : हे 'किताब वालो'! अपने 'दीन' में नाहक़ हद से न बढ़ो[२३], और उन लोगों की इच्छाओं का पालन न करो जो इस से पहले ख़ुद पथ-भ्रष्ट हुये और बहुतों को पथ-भ्रष्ट किया, और सीधे मार्ग से भटक गये[२४]।

77. Say: O People of the Scripture! Stress not in your religion other than the truth, and follow not the vain desires of folk who erred of old and led many astray, and erred from a plain road.

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ
قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا
وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

७८. 'बनी इसराईल' में से जिन लोगों ने 'कुफ़' किया उन पर दाऊद, और मरयम सुत ईसा की ज़बान से लानत पड़ी। इस कारण कि उन्हों ने अवज्ञा की और वे हद से आगे बढ़ने लगे थे।

78. Those of the children of Israel who went astray were cursed by the tongue of David, and of Jesus, son of Mary. That was because they rebelled and used to transgress.

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ
عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

७९. जो बुरा काम वे करते थे उस से वे एक-दूसरे को रोकते नहीं थे। क्या ही बुरी बात थी जो वे कर रहे थे।

79. They restrained not one another from the wickedness they did. Verily evil was that they used to do!

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾

८०. तुम उन में से बहुतों को देखते हो जो 'कुफ़' करने वालों को मित्र बनाते हैं। क्या ही बुरा है जो-कुछ उन्हों ने अपने लिए आगे भेजा है कि अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ और यातना में वे सदैव ग्रस्त रहेंगे।

80. Thou seest many of them making friends with those who disbelieve. Surely ill for them is that which they themselves send on before them: that Allah will be wroth with them and in the doom they will abide.

تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ
أَن سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾

२३. अर्थात् अत्युक्ति से काम न लो।

२४. यह संकेत उन गुमराह जातियों की ओर है जिन के आचार-विचार से प्रभावित हो कर ईसाइयों ने असत्य एवं तथ्यहीन धारणाओं को ग्रहण किया और ग़लत मार्ग पर चल पड़े। ईसाइयों पर विशेष रूप से जिन लोगों के विचारों की छाप पड़ी है वे यूनानी दार्शनिक हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१. यदि वे अल्लाह और 'नबी' पर और उस चीज़ पर 'ईमान' लाते जो उस की ओर उतारी गई है, तो वे उन ('काफ़िरों') को मित्र न बनाते। परन्तु उन में अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

८२. तुम 'ईमान' वालों की दुश्मनी में सब लोगों से बढ़ कर 'यहूदियों' और 'शिर्क' करने वालों को पाओगे। और 'ईमान' लाने वालों के लिए मित्रता में सब से निकट उन लोगों को पाओगे जिन्हों ने कहा कि हम 'नसारा' हैं। यह इस कारण कि उन में बहुत-से उपासक, विद्वान और संसार त्यागी सन्त पाये जाते हैं, और इस कारण कि वे घमण्ड नहीं करते।

*८३. जब वे उस चीज़ को सुनते हैं जो 'रसूल' की ओर उतारी गई है, तो तुम देखते हो कि उन की आँखें आँसुओं से बह पड़ती हैं, इस लिए कि उन्हों ने सत्य को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं: हमारे 'रब'! हम 'ईमान' ले आये, तू हमारा नाम (सत्य की) गवाही देने वालों में लिख ले।

८४. और हम अल्लाह पर, और जो सत्य हमारे पास पहुँचा है उस पर, क्यों न 'ईमान' लायें, और इस की आशा क्यों न रक्खें कि हमारा 'रब' हमें अच्छे लोगों में दाखिल कर ले?

८५. अल्लाह ने उन के ऐसा कहने के बदले में उन्हें ऐसी 'जन्नतें' प्रदान कीं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे सदैव रहेंगे। और यही सत्कर्मी लोगों का बदला है।

८६. रहे वे लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, तो ऐसे लोग भड़कती आग (जहन्नम) वाले हैं।

८७. हे 'ईमान' लाने वालो! जो पाक चीज़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए 'हलाल' (वैध) की है उसे 'हराम' न कर लो, और हद से आगे न बढ़ो। निस्सन्देह अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।

81. If they believed in Allah and the Prophet and that which is revealed unto him, they would not choose them for their friends. But many of them are of evil conduct.

82. Thou wilt find the most vehement of mankind in hostility to those who believe (to be) the Jews and the idolaters. And thou wilt find the nearest of them in affection to those who believe (to be) those who say: Lo! We are Christians. That is because there are among them priests and monks and because they are not proud.

83. When they listen to that which hath been revealed unto the messenger, thou seest their eyes overflow with tears because of their recognition of the Truth. They say: Our Lord! we believe. Inscribe us as among the witnesses.

84. How should we not believe in Allah and that which hath come unto us of the Truth. And (how should we not) hope that our Lord will bring us in along with righteous folk?

85. Allah hath rewarded them for that their saying—Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide for ever. That is the reward of the good.

86. But those who disbelieve and deny Our revelations, they are owners of hell-fire.

87. O ye who believe! Forbid not the good things which Allah hath made lawful for you, and transgress not. Lo! Allah loveth not transgressors.

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا
أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَ
لٰكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿٨١﴾
لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ
اٰمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ وَلَتَجِدَنَّ
أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا الَّذِينَ
قَالُوا إِنَّا نَصٰرٰى ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ
قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ
تَرٰى أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ
مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا
اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِينَ ﴿٨٣﴾

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ أَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا
مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِينَ ﴿٨٤﴾
فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنّٰتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ
وَذٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا أُولٰئِكَ
أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبٰتِ
مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

*यहाँ से सातवाँ पारा (Part VII) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८. जो-कुछ अल्लाह ने 'हलाल' और पाक रोज़ी तुम्हें दी है उसे खाओ, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम्हारा 'ईमान' है।

८९. तुम्हारी व्यर्थ और बिना सोचे-समझे खाई हुई क़समों पर अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता, परन्तु जो पक्की क़समें तुम खाओ उन पर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इस का प्रायश्चित्त दस मुहताजों को औसत दर्जे का वह खाना खिला देना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना, या एक गरदन छुड़ानी[२५] होगी। और जो न पाये तो तीन दिन के रोज़े हैं[२६]। यह तुम्हारी क़समों का प्रायश्चित्त है जब कि तुम क़सम खा बैठो[२७]; अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह अल्लाह अपनी 'आयतों' को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

९०. हे 'ईमान' लाने वालो! यह मदिरा और जुआ और ये (देवताओं और बुतों आदि के) थान और पाँसे शैतान के गन्दे काम हैं तो इन से बचो ताकि तुम सफल हो सको।

९१. 'शैतान' तो यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच वैमनस्य और द्वेष पैदा कर दे, और तुम्हें अल्लाह की याद और 'नमाज़' से रोक दे। फिर क्या तुम बाज़ आ जाओगे?

९२. अल्लाह का हुक्म मानो और 'रसूल' का हुक्म मानो, और बचते रहो! यदि तुम ने मुँह मोड़ा, तो जान लो कि हमारे 'रसूल' पर केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।

88. Eat of that which Allah hath bestowed on you as food lawful and good, and keep your duty to Allah in Whom ye are believers.

89. Allah will not take you to task for that which is unintentional in your oaths, but He will take you to task for the oaths which ye swear in earnest. The expiation thereof is the feeding of ten of the needy with the average of that wherewith ye feed your own folk, or the clothing of them, or the liberation of a slave, and for him who findeth not (the wherewithal to do so) then a three days' fast. This is the expiation of your oaths when ye have sworn; and keep your oaths. Thus Allah expoundeth unto you His revelations in order that ye may give thanks.

• 90. O ye who believe! Strong drink and games of chance and idols and divining arrows are only an infamy of Satan's handiwork. Leave it aside in order that ye may succeed

91. Satan seeketh only to cast among you enmity and hatred by means of strong drink and games of chance, and to turn you from remembrance of Allah and from (His) worship. Will ye then have done?

92. Obey Allah and obey the messenger, and beware! But if ye turn away, then know that the duty of Our messenger is only plain conveyance (of the message).

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ
وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ
الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ
اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ
ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ
وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾
اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ فِي الْخَمْرِ وَ
الْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

२५. अर्थात् एक गुलाम आज़ाद करना।
२६. अर्थात् वह तीन दिन के रोज़े रक्खे।
२७. यदि किसी ने जान-बूझ कर किसी गुनाह की क़सम खा ली हो या अपने ऊपर किसी 'हलाल' चीज़ को क़सम खा कर 'हराम' कर लिया हो, तो उसे क़सम तोड़ कर 'कफ़्फ़ारा' अदा करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९३. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये वे जो कुछ खा-पी चुके उस के लिए उन पर कोई गुनाह नहीं, जब कि वे (आगे के लिए) डरे, और 'ईमान' लाये, और अनुकूल कर्म किये; फिर डरे, और 'ईमान' लाये; फिर डरे, और ख़ूबी के साथ हक़ अदा किया और अल्लाह उत्तम-कारों से प्रेम करता है।

93. There shall be no sin (imputed unto those who believe and do good works for what they may have eaten (in the past). So be mindful of your duty (to Allah), and do good works; and again: be mindful of your duty, (to Allah), and do good works; and again: be mindful of your duty, and believe; and once again: be mindful of your duty, and do right. Allah loveth the good.

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

९४. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह उस शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य कुछ परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह यह जान ले कि कौन बिना देखे उस से डरता है[२८]। फिर जो कोई इस के बाद हद से आगे बढ़ा, उस के लिए दुखदायिनी यातना है।

94. O ye who believe! Allah will surely try you somewhat (in the matter) of the game which ye take with your hands and your spears, that Allah may know him who feareth Him in secret. Whoso transgresseth after this, for him there is a painful doom.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ
مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ
اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾

९५. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम 'इहराम' की हालत में हो तो शिकार न मारो। तुम में जो कोई जान-बूझ कर उसे मारे तो जो जानवर उस ने मारा हो चौपाग्रों में से उसी जैसा एक जानवर—जिस का फ़ैसला तुम में से दो न्याय-शील व्यक्ति कर दें—'काबा' पहुँचा कर क़ुरबान किया जाये; या 'कफ़्फ़ारा' है मुहताजों का खाना या उस के बराबर रोज़े रखने, ताकि वह अपने किये का मज़ा चख ले। जो हो चुका उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया, परन्तु जिस किसी ने फिर ऐसा किया, तो उस से अल्लाह बदला लेगा। अल्लाह प्रभुत्वशाली और बदला लेने वाला है।

95. O ye who believe! Kill no wild game while ye are on the pilgrimage. Whoso of you killeth it of set purpose he shall pay its forfeit in the equivalent of that which he hath killed, of domestic animals, the judge to be two men among you known for justice, (the forfeit) to be brought as an offering to the Ka'bah; or, for expiation, he shall feed poor persons, or the equivalent thereof in fasting, that he may taste the evil consequences of his deed. Allah forgiveth whatever (of this kind) may have happened in the past, but whoso relapseth, Allah will take retribution from him. Allah is Mighty, Able to Requite (the wrong).

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَ
اَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ
بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ
اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ
اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

९६. तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उस का खाना 'हलाल' है, कि वह तुम्हारे लिए उपभोग की सामग्री हो और क़ाफ़िले के लिए भी; परन्तु थल का शिकार, जब तक तुम 'इहराम' की हालत में हो तुम पर 'हराम' किया गया है। अल्लाह से डरते रहो, जिस की ओर तुम को इकट्ठे हो कर जाना है।

96. To hunt and to eat the fish of the sea is made lawful for you, a provision for you and for seafarers; but to hunt on land is forbidden you so long as ye are on the pilgrimage. Be mindful of your duty to Allah, unto Whom ye will be gathered.

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا
لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ
الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾

२८. 'इहराम' की हालत में शिकार को वर्जित करके वह यह देखना चाहता है कि कौन अल्लाह से डर कर इस हालत में शिकार करने से अपना हाथ रोके रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७. अल्लाह ने आदर वाले घर, 'काबा' को लोगों के क़ायम रहने का साधन (केन्द्र) ठहराया और आदर के महीनों[२९] और क़ुरबानी के जानवरों को भी जिन के गले में (चिह्न के रूप में) पट्टे बँधे हों (इस काम में सहायक बना दिया)। यह इस लिए ताकि तुम जान लो कि अकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह को सब मालूम है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

97. Allah hath appointed the Ka'bah, the Sacred House, a standard for mankind, and the Sacred Month and the offerings and the garlands. That is so that ye may know that Allah knoweth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth, and that Allah is Knower of all things.

جعل الله الكعبة البيت الحرام
قيما للناس والشهر الحرام والهدي
والقلائد ذلك لتعلموا ان الله يعلم
ما في السموت وما في الارض وان
الله بكل شيء عليم ٩٧

९८. जान रक्खो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है, और यह कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

98. Know that Allah is Severe in punishment, but Allah (also) is Forgiving, Merciful.

اعلموا ان الله شديد العقاب و
ان الله غفور رحيم ٩٨

९९. 'रसूल' पर पहुँचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं। और अल्लाह सब जानता है जो-कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो-कुछ छिपाते हो।

99. The duty of the messenger is only to convey (the message) Allah knoweth what ye proclaim and what ye hide.

ما على الرسول الا البلغ والله يعلم
ما تبدون وما تكتمون ٩٩

१००. कह दो : नापाक और पाक बराबर नहीं होते चाहे नापाक की बहुतायत तुम्हें कितनी ही क्यों न भाती हो। तो हे बुद्धि रखने वालो ! अल्लाह से डरते रहो, कदाचित् तुम सफलता प्राप्त कर सको।

100. Say: The evil and the good are not alike even through the plenty of the evil attract thee. So be mindful of your duty to Allah, O men of understanding, that ye may succeed.

قل لا يستوي الخبيث والطيب ولو
اعجبك كثرة الخبيث فاتقوا الله
ع يا ولي الالباب لعلكم تفلحون ١٠٠

१०१. हे 'ईमान' लाने वालो ! ऐसी बातें न पूछो कि यदि वे तुम पर खोल दी जायें, तो तुम्हें बुरी लगें; यदि तुम उन्हें ऐसे समय में पूछोगे जब कि 'क़ुरआन' उतर रहा है, तो वे तुम पर खोल दी जायेंगी[३०]। अल्लाह ने ऐसी बातों को क्षमा कर दिया (आगे के लिए तुम्हें सावधान रहना चाहिए), अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और सहनशील है।

101. O ye who believe! Ask not of things which, if they were made known unto you, would trouble you; but if ye ask of them when the Qur'an is being revealed, they will be made known unto you, Allah pardoneth this, for Allah is forgiving, Clement.

يايها الذين امنوا لا تسئلوا عن اشياء
ان تبد لكم تسؤكم وان
تسئلوا عنها حين ينزل القران
تبد لكم عفا الله عنها والله
غفور حليم ١٠١

१०२. तुम से पहले एक गरोह ने ऐसी ही बातें पूछी थीं। फिर वे उन का इन्कार करने वाले हो गये।

102. A folk before you asked (for such disclosures) and then disbelieved therein.

قد سالها قوم من قبلكم ثم اصبحوا
بها كفرين ١٠٢

२९. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट ५६।

३०. मतलब यह है कि 'नबी' से व्यर्थ प्रश्न करने से बचो। ऐसी बात न पूछो जिस से न 'दीन' (धर्म) का कोई काम रुकता हो और न दुनिया का। 'दीन' की ज़रूरी बातें तुम्हें बता ही दी गई हैं। जो-कुछ छोड़ दिया गया है, उस में तुम्हारे लिए आसानी रक्खी गई है। प्रश्न कर-कर के 'दीन' के दायरे को तंग करना स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३. अल्लाह ने न कोई 'बहीरा' ठहराया है और न 'सायबा' और न 'वसीला' और न 'हाम', परन्तु ये काफ़िर लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं[३१]। और उन में अधिकतर ऐसे ही हैं जो सोच-समझ से काम नहीं लेते।

103. Allah hath not appointed anything in the nature of a *Bahirah* or a *Saibah* or a *Wasilah* or *Hami*, but those who disbelieve invent a lie against Allah. Most of them have no sense.

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ
وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

१०४. और जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारी है, और 'रसूल' की ओर, तो वे कहते हैं : हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यदि उन के पूर्वज कुछ भी न जानते हों, और न रास्ते पर हों तो भी ?

104. And when it is said unto them: Come unto that which Allah hath revealed and unto the messenger, they say: Enough for us is that wherein we found our fathers. What! Even though their fathers had no knowledge whatsoever, and no guidance?

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا
وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ
اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْــًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

१०५. हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम्हें अपनी चिन्ता होनी चाहिए। यदि तुम रास्ते पर हो तो किसी के पथ-भ्रष्ट हो जाने से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता[३२]। अल्लाह की ओर तुम सब को लौट कर जाना है; फिर वह तुम्हें बता देगा जो-कुछ तुम करते रहे हो।

105. O ye who believe! Ye have charge of your own souls. He who erreth cannot injure you if ye are rightly guided. Unto Allah ye will all return; and then He will inform you of what ye used to do.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا
يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

१०६. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम में किसी की मृत्यु का समय आ जाये तो वसीयत के समय तुम में से दो न्यायशील व्यक्ति गवाह हों, या तुम्हारे ग़ैरों में से दो दूसरे हों, यदि तुम कहीं सफ़र में गये हो और मौत की मुसीबत तुम्हें आ पहुँचे। यदि तुम्हें कोई सन्देह हो तो 'नमाज़' के बाद उन दोनों को रोक लो, वे अल्लाह की क़सम खायें कि हम किसी मूल्य पर भी इस का सौदा करने वाले नहीं हैं, चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो हम अल्लाह की गवाही नहीं छिपाते, यदि ऐसा किया तो हम गुनाहगारों में से होंगे।

106. O ye who believe! Let there be witnesses between you when death draweth nigh unto one of you, at the time of bequest—two witnesses, just men from among you or two others from another tribe in case ye are campaigning in the land and the calamity of death befall you. Ye shall empanel them both after the prayer, and, if ye doubt, they shall be made to swear by Allah (saying): We will not take a bribe, even though it were (on behalf of) a near kinsman nor will we hide the testimony of Allah, for then indeed we should be of the sinful.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ
الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ
اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ
فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ
تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ
بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا
وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ
اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

३१. अरब के 'मुश्रिक' लोग अपने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे। फिर न वे उन से कोई काम लेते और न उन्हें ज़ब्ह करते। 'बहीरा' उस ऊँटनी को कहते थे जो पाँच बच्चे दे चुकी हो और उस का अन्तिम बच्चा नर पैदा हुआ हो। उस का कान फाड़ कर उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। फिर न तो कोई उस का दूध पी सकता था और न उसे सवारी आदि के कामों में ला सकता था।

'सायबा'—उस ऊँट या ऊँटनी को कहते थे जिसे किसी मन्नत के पूरा होने पर या किसी ख़तरे से बच जाने या किसी बीमारी से अच्छे होने पर बुतों के नाम पर छोड़ते थे। इसी प्रकार उस ऊँटनी को भी वे छोड़ देते थे जिस ने दस बच्चे दिये हों और दसों मादा हों।

'वसीला'—बकरी का पहला बच्चा यदि नर होता, तो उसे बुतों के नाम पर ज़ब्ह कर देते थे; और यदि पहली बार मादा बच्चा देती तो उसे अपने पास रहने देते थे। यदि नर और मादा एक साथ पैदा होते तो नर को ज़ब्ह नहीं करते थे बल्कि उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और उसे वसीला कहा जाता था।

'हाम'—जिस ऊँट की नस्ल से दस बच्चे पैदा हो जाते उसे छोड़ देते थे। उसे हाम कहा जाता था। 'मुश्रिकों' ने ये सब-कुछ स्वयं गढ़ लिया था, अल्लाह ने उन्हें इन बातों का कोई हुक्म नहीं दिया था।

३२. अर्थात् किसी दूसरे की गुमराही से तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७. फिर यदि पता चल जाये कि उन दोनों ने (झूठ बोल कर) हक़ मारा है तो उन की जगह दूसरे दो उन में से खड़े हों जिन का हक़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे अल्लाह की क़सम खायें कि हम दोनों की गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्ची है और हम ने कोई उल्लंघन नहीं किया है, यदि हम ऐसा करें तो ज़ालिमों में से होंगे।

१०८. इस तरीक़े से अधिक आशा की जा सकती है कि वे ठीक-ठीक गवाही देंगे या डरेंगे कि उन की क़समों के बाद क़समें ली जायेंगी। और अल्लाह से डरते रहो और सुनो: अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता।

१०९. जिस दिन अल्लाह 'रसूलों' को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा: तुम्हें क्या जवाब मिला था[३३]? वे कहेंगे: हमें कुछ मालूम नहीं। तू ही छिपी बातों का जानने वाला है।

११०. जब अल्लाह कहेगा: हे ईसा सुत मरयम! मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैं ने तुझ पर और तेरी माता पर किया है; जब कि मैं ने 'रूहुल्क़ुदुस' (पवित्रात्मा) से तेरी सहायता की, तू पालने में भी लोगों से बात करता था और बड़ी आयु को प्राप्त हो कर भी;

और याद करो जब कि मैं ने तुझे 'किताब' और 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) और 'तौरात' और 'इन्जील' की शिक्षा दी; और जब तू मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया-जैसी आकृति बनाता था फिर उस में फूंक मारता था तो वह मेरे हुक्म से चिड़िया बन जाती थी, और तू मेरे हुक्म से (जन्मजात) अन्धे और कोढ़ी को अच्छा करता था; और जब कि तू मेरे हुक्म से मुरदों को निकालता था,[३४] और जब कि मैं ने तुझ से 'इसराईल' की सन्तान को रोका जब कि तू उन के पास खुली निशानियाँ ले कर पहुँचा था, तो उन में जो लोग 'काफ़िर' थे उन्हों ने कहा था: यह तो स्पष्ट जादू के सिवा कुछ भी नहीं;

107. But then, if it is afterwards ascertained that both of them merit (the suspicion of) sin, let two others take their place of those nearly concerned and let them swear by Allah, (saying): Verily our testimony is truer than their testimony and we have not transgressed (the bounds of duty), for then indeed we should be of the evildoers.

108. Thus it is more likely that they will bear true witness or fear that after their oath the oath (of others) will be taken. So be mindful of your duty (to Allah) and hearken. Allah guideth not the forward folk.

109. In the day when Allah gathereth together the messengers, and saith: What was your response (from mankind)? they say: We have no knowledge. Lo! Thou, only Thou art the Knower of Things Hidden.

110. When Allah saith: O Jesus, son of Mary! Remember My favour unto thee and unto thy mother; how I strengthened thee with the holy Spirit, so that thou spakest unto mankind in the cradle as in maturity; and how I taught thee the Scripture and Wisdom and the Torah and the Gospel; and how thou didst shape of clay as it were the likeness of a bird by My permission, and didst blow upon it and it was a bird by My permission, and thou didst heal him who was born blind and the leper by My permission; and how thou didst raise the dead by My permission; and how I restrained the Children of Israel from (harming) thee when thou camest unto them with clear proofs, and those of them who disbelieved exclaimed: This is naught else than mere magic.

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا
فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ
ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَـٰنِ فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ
لَشَهَـٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَـٰدَتِهِمَا وَمَا
ٱعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿١٠٧﴾
ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَـٰدَةِ عَلَىٰ
وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟ أَن تُرَدَّ أَيْمَـٰنٌۢ بَعْدَ
أَيْمَـٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ
لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَـٰسِقِينَ ﴿١٠٨﴾
يَوْمَ يَجْمَعُ ٱللَّهُ ٱلرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَآ
أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا۟ لَا عِلْمَ لَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ
عَلَّـٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾
إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَـٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱذْكُرْ
نِعْمَتِى عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَٰلِدَتِكَ إِذْ
أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ تُكَلِّمُ
ٱلنَّاسَ فِى ٱلْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ
ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ ۖ
وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ ٱلطِّينِ كَهَيْـَٔةِ ٱلطَّيْرِ
بِإِذْنِى فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًۢا بِإِذْنِى ۖ
وَتُبْرِئُ ٱلْأَكْمَهَ وَٱلْأَبْرَصَ بِإِذْنِى ۖ
وَإِذْ تُخْرِجُ ٱلْمَوْتَىٰ بِإِذْنِى ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ
بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم
بِٱلْبَيِّنَـٰتِ فَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْهُمْ
إِنْ هَـٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٠﴾

३३. अर्थात् तुम ने जो लोगों को सच्चे 'दीन' की ओर बुलाया था उस का लोगों ने क्या जवाब दिया? और हमारे आदेशों पर वे कहाँ तक चले?
३४. अर्थात् मौत की हालत से निकाल कर उन्हें जीवित करता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११. और जब कि मैं ने 'हवारियों' के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे 'रसूल' पर 'ईमान' लाओ, उन्हों ने कहा : हम 'ईमान' लाये। गवाह रहो कि हम 'मुस्लिम' हैं।

111. And when I inspired the disciples, (saying): Believe in Me and in My messenger, they said: We believe. Bear witness that we have surrendered (unto Thee).

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّنَ أَنْ آمِنُوا
بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ
بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

११२. याद करो जब 'हवारियों' ने कहा : हे ईसा सुत मरयम ! क्या तुम्हारा 'रब' हम पर आसमान से खाने से भरा दस्तरखान उतार सकता है ? उस ने कहा : अल्लाह से डरो यदि तुम 'ईमान' वाले हो।

112. When the disciples said: O Jesus, son of Mary! Is thy Lord able to send down for us a table spread with food from heaven? He said: Observe your duty to Allah, if ye are true believers.

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ
مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا
اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

११३. वे बोले : हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को इतमीनान हो जाये और हम जान लें कि तू ने हम से सच कहा है, और हम उस पर गवाह हों।

113. They said: We wish to eat thereof, that we may satisfy our hearts and know that thou has spoken truth to us, and that thereof we may be witnesses.

قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَ
نَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾

११४. ईसा सुत मरयम ने कहा : हे अल्लाह ! हमारे 'रब' ! हम पर आसमान से खाने से भरे दस्तरखान उतार, कि यह हमारे लिए, हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद (यादगार), और तेरी ओर से एक निशानी हो। हमें रोज़ी दे और तू सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है।

114. Jesus, son of Mary, said: O Allah, Lord of us! Send down for us a table spread with food from heaven that it may be a feast for us, for the first of us and for the last of us, and a sign from Thee. Give us sustenance, for Thou art the best of Sustainers.

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا
أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ
لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ
وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٤﴾

११५. अल्लाह ने कहा : निश्चय ही मैं उसे तुम पर उतारने वाला हूँ, परन्तु इस के बाद जो कोई तुम में 'कुफ़्र' करेगा, तो मैं अवश्य उसे ऐसी यातना दूँगा जो संसार में किसी को न दी होगी।

115. Allah said: Lo! I send it down for you. And whoso disbelieveth of you afterward, him surely will I punish with a punishment wherewith I have not punished any of (My) creatures.

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا
لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

११६. और याद करो जब अल्लाह कहेगा : हे ईसा सुत मरयम ! क्या तू ने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा दो 'इलाह' (पूज्य) मुझे और मेरी माता को बना लो[३५] ? वह कहेगा : तू महिमावान् है ! मुझ से यह नहीं हो सकता कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कुछ भी हक़ नहीं। यदि मैं यह कहता, तो तुझे यह मालूम होता। तू जानता है जो-कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता जो-कुछ तेरे मन में है। तू ही छिपी बातों का जानने वाला है।

116. And when Allah said: O Jesus: son of Mary! Didst thou say unto mankind: Take me and my mother for two gods beside Allah? he saith: Be glorified! It was not mine to utter that to which I had no right. If I used to say it, then Thou knewest it. Thou knowest what is in my mind, and I know not what is in Thy mind. Lo! Thou, only Thou art the Knower of Things Hidden.

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ
إِلَٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ
مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي
بِحَقٍّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ
تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي
نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

३५. ईसाइयों ने अल्लाह के साथ हज़रत मसीह अ० और 'रूहुल्क़ुदुस' ही को ख़ुदा बनाने पर बस नहीं किया बल्कि हज़रत मसीह अ० की माता हज़रत मरयम को भी ख़ुदा बना लिया। हालांकि बाइबिल (Bible) से इस के लिए कोई प्रमाण भी नहीं प्रस्तुत किया जा सकता। हज़रत मसीह अ० के तीन सौ वर्ष के बाद ईसाई जगत् में इस कल्पना ने जन्म लिया कि मसीह के साथ उन की माता मरयम का स्थान भी मनुष्य के स्थान से उच्च है। अन्त में उन्हें भी ईसाइयों ने सब से बड़ी देवी बना लिया।

Ganesh Varnī Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७. मैं ने उन से उस के सिवा और कुछ नहीं कहा जिस का तू ने मुझे आदेश दिया था, यह कि अल्लाह की 'इबादत' करो, जो मेरा भी 'रब' है और तुम्हारा भी 'रब' है, मैं जब तक उन में रहा उन की ख़बर रखता रहा, जब तू ने मुझे वापस बुला लिया तो तू उन का निरीक्षक था। और तू हर चीज़ की पूरी ख़बर रखने वाला है।

117. I spake unto them only that which Thou commandedst me, (saying): Worship Allah, my Lord and your Lord. I was a witness of them while I dwelt among them. and when Thou tookest me Thou wast the Watcher over them. Thou art witness over all things.

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ
فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ
عَلَيْهِمْ ۗ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۱۷﴾

११८. यदि तू उन्हें यातना में ग्रस्त करे, तो वे तो तेरे बन्दे ही हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे तो तू प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

118. If Thou punish them, lo! they are Thy slaves, and if Thou forgive them (lo! they are Thy slaves). Lo! Thou, only Thou art the Mighty, the Wise.

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ
اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾

११९. अल्लाह कहेगा : यह वह दिन है कि सच्चों को उन की सच्चाई काम आयेगी, उन के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहां वे सदैव रहेंगे।

अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे उस से प्रसन्न हुये। यही बड़ी सफलता है।

119. Allah saith: This is a day in which their truthfulness profiteth the truthful, for theirs are Gardens underneath which rivers flow, wherein they are secure for ever, Allah taking pleasure in them and they in Him That is the great triumph.

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ
صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾

१२०. आकाशों और धरती और जो-कुछ उन के बीच है सब का राज्य अल्लाह ही के लिए है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

120. Unto Allah belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth and whatsoever is therein and He is Able to do all things.

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
ع فِيْهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۲۰﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६—अल-अनआम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में एक जगह (आयत १३६-१५०) कुछ पशुओं (अनआम) के 'ह़रांम' होने और कुछ के 'ह़लाल' होने के बारे में अरब 'मुश्रिकों' के अन्ध-विश्वासों (Superstitions) का खण्डन किया गया है। इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' का नाम 'अल-अनआम' रक्खा गया है। 'इस्लाम' 'तौह़ीद' (एकेश्वरवाद) का धर्म है; वह 'तौह़ीद' ही को मनुष्य के व्यावहारिक जीवन का मूल आधार मानना है। 'इस्लाम' में 'शिर्क' (सहवाद अथवा अनेकेश्वरवाद) की कोई गुन्जाइश नहीं है। इसी लिए वह जीवन में पाये जाने वाले समस्त 'मुश्रिकाना' अथवा सहवाद सम्बन्धी आचार-विचार का उन्मूलन करना चाहता है। इस प्रकार सूरा का यह नाम 'तौह़ीद' (Divine Unity) और व्यावहारिक जीवन (Practical Life) से 'तौह़ीद' का जो सम्बन्ध है, दोनों को व्यक्त कर रहा है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा पूरी-की-पूरी एक ही बार में उतरी है। जिस रात यह सूरा उतरी है, उसी रात को नबी सल्ल० ने इसे लिखवा दिया था। जिस समय यह 'सूरा' उतर रही थी आप (सल्ल०) ऊँटनी पर सवार थे और बोझ के कारण ऐसा मालूम हो रहा था कि उस की हड्डियाँ टूट जायेंगी। सूरा के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा नबी सल्ल० के मक्की जीवन के अन्तिम समय में उतरी है।

किस परिस्थिति में उतरी

इस सूरा के उतरने के समय नबी सल्ल० को 'इस्लाम' का प्रचार करते हुये १२ वर्ष बीत चुके थे। 'क़ुरैश' का ज़ुल्म और उन का वैमनस्य हद से आगे बढ़ चुका था। मुसलमानों की एक बड़ी संख्या उनके अत्याचार से तंग आ कर देश छोड़ चुकी थी। और उसने हब्शा (Abyssinia) में जा कर निवास ग्रहण कर लिया था। नबी सल्ल० की कोशिशों के फलस्वरूप मक्का और मक्का के पास-पड़ोस के क़बीलों में से अच्छे लोग निरन्तर 'इस्लाम' स्वीकार करते जा रहे थे; परन्तु सामूहिक रूप से आप (सल्ल०) की जाति के लोग 'इस्लाम' का विरोध ही कर रहे थे। जो कोई व्यक्ति 'ईमान' लाता उसे शारीरिक यातनाओं और जाति वालों की डाँट-फिटकार के अतिरिक्त सामाजिक एवं आर्थिक बाई-क़ाट का कष्ट भी सहन करना पड़ता था। इसी अन्धकारमय परिस्थिति में 'यसरिब' (मदीना) के क़बीले 'औस' और 'ख़ज़रज' के कुछ प्रमुख व्यक्ति न केवल यह कि मक्का आ कर नबी सल्ल० पर 'ईमान' ला चुके थे बल्कि उन्हों ने आप (सल्ल०) को इस बात का दृढ़ वचन भी दिया था कि वे प्रत्येक अवस्था में आप (सल्ल०) का साथ देंगे। मदीना में 'इस्लाम' बिना किसी रोक-टोक के फैल रहा था परन्तु 'इस्लाम' के भविष्य के बारे में अभी निश्चयपूर्वक कोई बात नहीं कही जा सकती थी।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय 'तौह़ीद' अथवा एकेश्वरवाद (Divine Unity) है। दूसरी समस्त वार्त्तायें सूरा के इसी केन्द्रीय विषय से सम्पर्क रखती हैं। इस सूरा से सूरतों का एक नया सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) शुरू होता है। सूरतों का पहला क्रम जो सूरा अल-फ़ातिहा से शुरू हुआ था, सूरा अल-माइदा पर समाप्त हो जाता है। सूरा अल-अनआम का मूल सम्बन्ध अल-माइदा से नहीं बल्कि सूरा अल-फ़ातिहा से है। परन्तु इस का यह अर्थ नहीं होता कि सूरा का अपनी पिछली सूरा से कोई सम्पर्क ही नहीं है। गत सूरा 'ईसाइयों' के 'मुश्रिकाना' (सहवादयुक्त) मतों का खण्डन करती हुई समाप्त हुई थी। प्रस्तुत सूरा 'तौह़ीद' (एकेश्वरवाद) के साथ आरम्भ हो रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वार्त्तायें

यह सूरा, सूरा अन-नह्ल से मिलती-जुलती है। इस सूरा में 'शिर्क' का खण्डन किया गया और लोगों को एक ईश्वर की ओर बुलाया गया। लोगों के सामने यह बात रक्खी गई कि जीवन केवल यही सांसारिक जीवन ही नहीं है बल्कि 'आखिरत' सत्य है। इस के अतिरिक्त अज्ञान-काल के अन्धविश्वासों (Superstitions) का तर्कयुक्त खण्डन किया गया और नैतिकता के बड़े-बड़े नियमों की शिक्षा दी गई जिन के आधार पर इस्लामी समाज का निर्माण होना है। लोगों के आक्षेपों की समालोचना की गई।

इस सूरा में उन लोगों के सन्देहों का समाधान किया गया जो चाहते थे कि नबी सल्ल० उन्हें कोई ऐसा चमत्कार दिखायें जिस से उन्हें विश्वास हो जाये कि आप (सल्ल०) लोगों को जो सन्देश पहुँचा रहे हैं वह ईश्वरीय सन्देश ही हैं। बताया गया कि यह दुनियां केवल परीक्षा के लिए है; परोक्ष का पूर्ण ज्ञान तो 'आखिरत' ही में प्राप्त हो सकेगा। चमत्कार एक अन्तिम चीज़ है; चमत्कार देख लेने के बाद सोचने-समझने और सँभलने की मुहलत बाक़ी नहीं रहती। चमत्कार देख लेने के बाद यदि वे 'ईमान' नहीं लाते तो फिर उन पर अल्लाह का प्रकोप हो कर रहेगा। इतिहास साक्षी है कि चमत्कार देखने के बाद भी बहुत सी जातियाँ 'ईमान' न ला सकीं; और अल्लाह के प्रकोप ने उन्हें विनष्ट कर दिया। यह अल्लाह की दयालुता है कि वह उन्हें चमत्कार के बदले सोच-विचार से काम लेने और सँभलने की मुहलत दे रहा है। फिर अल्लाह का 'रसूल' 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को बुलाता है जिस के सत्य और तर्क संगत होने में किसी को सन्देह न होना चाहिए। इस के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता ही क्या है? 'रसूल' जो क़ुरआन पेश कर रहा है वह स्वयं इस का सब से बड़ा प्रमाण है कि वह किसी मनुष्य की रचना नहीं बल्कि ईश्वरीय वाणी है। 'तौहीद' और 'आख़िरत' की धारणाओं में गहरा सम्पर्क है; 'रिसालत' हमें इन्हीं दोनों की शिक्षा देती है। यदि 'आख़िरत' का निषेध कर दिया जाये तो इस से हमारी ईश-कल्पना भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकती। आख़िरत के इन्कार का अर्थ यह है कि तात्कालिक एवं लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त इस वर्तमान लोक का कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं है; और यह बात अल्लाह की महानता के सर्वथा प्रतिकूल है।

इस सूरा में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को आश्वासन दिया गया कि यद्यपि उन की कोशिशों का जो वे एक लम्बे समय से कर रहे हैं कोई उत्साह जनक परिणाम सामने नहीं आ रहा है फिर भी उन्हें दुःखी न होना चाहिए। अल्लाह से कोई चीज़ और किसी व्यक्ति या गरोह का कर्म छिपा नहीं रह सकता। 'काफ़िरों' और विरोधी दल के लोगों को समझाने-बुझाने के साथ-साथ उन की असावधानी पर उन्हें डराया भी गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल–अनआम

(मक्का में उतरी -- 'आयतें' १६५)

CATTLE
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَخَمْسٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया, अँधियारियाँ और उजाला[1] बनाया। फिर भी वे लोग जिन्हों ने 'कुफ्र' किया है दूसरों को अपने 'रब' के बराबर ठहरा रहे हैं।

1. Praise be to Allah Who hath created the heavens and the earth, and hath appointed darkness and light. Yet those who disbelieve ascribe rivals unto their Lord.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ
ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ①

२. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर (जीवन के लिए) एक समय निश्चित कर दिया। और उस के यहाँ एक मुद्दत और निश्चित है[2]। फिर भी तुम हो कि सन्देह करते हो।

2. He it is Who hath created you from clay, hath decreed a term for you. A term is fixed with Him. Yet still ye doubt!

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى
اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ
اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ②

३. वही अल्लाह है आकाशों में भी और धरती में भी। वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली सब बातें जानता है, और जो कुछ तुम करते हो वह उसे जानता है।

3. He is Allah in the heavens and in the earth. He knoweth both your secret and your utterance, and He knoweth what ye earn.

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ
يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا
تَكْسِبُوْنَ ③

४. उनके 'रब' की निशानियों में कोई निशानी भी ऐसी नहीं जो उन के पास आई हो और उन्हों ने उस से मुँह न मोड़ लिया हो।

4. Never came there unto them a revelation of the revelations of Allah but they did turn away from it.

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ
اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ④

५. उन्हों ने हक़ को झुठला दिया जब वह उन के पास पहुँचा। जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते रहे हैं जल्द ही उस के बारे में उन्हें कुछ खबरें पहुँचेंगी[3]।

5. And they denied the truth when it came unto them. But there will come unto them the tidings of that which they used to deride.

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ
فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑤

६. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि उन से पहले हम कितने ही गरोह को विनष्ट कर चुके हैं, उन्हें हम ने धरती में ऐसा प्रभुत्व प्रदान किया था कि वह प्रभुत्व तुम्हें प्रदान नहीं किया, उन पर हम ने आकाश को खूब बरसता छोड़ा, और उन के नीचे नहरें बहाई। फिर हम ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण विनष्ट कर दिया, और उन की जगह दूसरे गरोह को उठाया।

6. See they not how many a generation We destroyed before them, whom We had established in the earth more firmly than We have established you, and We shed on them abundant showers from the sky, and made the rivers flow beneath them. Yet We destroyed them for their sins, and created after them another generation.

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ
قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ
لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪
وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ⑥

१. अँधियारी वास्तव में उजाले के अभाव का दूसरा नाम है। उजाले के अभाव के बहुत से दर्जे हैं। इसी लिए यहाँ अँधियारी बहुवचन और उजाला एक वचन प्रयोग हुआ है। जिस तरह उजाले के मुक़ाबले में अँधेरे के बहुत से दर्जे होते हैं ठीक उसी तरह सत्य तो एक ही है परन्तु उस के मुक़ाबले में असत्य और गुमराहियाँ बहुत हैं।

२. अर्थात् 'क़ियामत' की घड़ी जब कि अगले-पिछले सब लोग जीवित किये जायेंगे; और उन्हें उन के कर्मों का बदला चुकाया जायेगा।

३. इस में उन सफलताओं की ओर संकेत किया गया है जो 'हिजरत' के पश्चात् 'इस्लाम' को प्राप्त हुई हैं; जिन की पहले से किसी को कोई खबर न थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और यदि हम तुम्हारे ऊपर कोई काग़ज़ में लिखी-लिखाई 'किताब' भी उतारते, फिर उसे लोग अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है वे यही कहते : यह तो बस स्पष्ट जादू है।

7. Had We sent down unto thee (Muhammad) (actual) writing upon parchment, so that they could feel it with their hands, those who disbelieve would have said: This is naught else than mere magic.

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَٰبًا فِى قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٧

८. और वे कहते हैं : इस ('नबी') पर कोई 'फ़िरिश्ता' क्यों नहीं उतारा गया ? यदि हम ने 'फ़िरिश्ता' उतारा होता, तब तो निर्णय हो जाता; फिर उन्हें कोई मुहलत न दी जाती।

8. They say: Why hath not an angel been sent down unto him? If We send down an angel, then the matter would be judged; no further time would be allowed them (for reflection).

وَقَالُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ ٱلْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ۝٨

९. और यदि उस को भी 'फ़िरिश्ता' तजवीज़ करते तो आदमी ही बनाते;[4] और उन्हें उसी भ्रम में डालदेते जिस भ्रम में वे इस समय पड़े हुये हैं।

9. Had We appointed an angel (Our messenger), We assuredly had made him (as) a man (that he might speak to men); and (thus) obscured for them (the truth) they (now) obscure.

وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَٰهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ۝٩

१०. और तुम से पहले भी बहुत से 'रसूलों' की हँसी उड़ाई गई है, परन्तु जिन लोगों ने हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाते थे।

10. Messengers (of Allah) have been derided before thee, but that whereat they scoffed surrounded such of them as did deride.

وَلَقَدِ ٱسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِٱلَّذِينَ سَخِرُوا۟ مِنْهُم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ۝١٠

११. कहो : धरती में चल-फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ !

11. Say (unto the disbelievers): Travel in the land, and see the nature of the consequence for the rejecters.

قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ۝١١

१२. कहो : आकाशों और धरती में जो कुछ है वह किस का है ? कहो : अल्लाह ही का है। उस ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है, वह तुम्हें 'क़ियामत' के दिन अवश्य इकट्ठा करेगा, जिस में कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगों ने अपने आप को घाटे में डाला है वही 'ईमान' नहीं लायेंगे।

12. Say: Unto whom belongeth whatsoever is in the heavens and the earth? Say: Unto Allah. He hath prescribed for Himself mercy, that He may bring you all together to a Day whereof there is no doubt. Those who ruin their own souls will not believe.

قُل لِّمَن مَّا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝١٢

१३. रात और दिन के बीच जो कुछ ठहरा हुआ है सब उसी का है। वह सुनने वाला और जानने वाला है।

13. Unto Him belongeth whatsoever resteth in the night and the day. He is the Hearer, the Knower.

وَلَهُۥ مَا سَكَنَ فِى ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ۝١٣

१४. कहो : क्या मैं अल्लाह के सिवा जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है, किसी और को संरक्षक-मित्र बना लूं, वह खाने को देता है और खाने को लेता नहीं ? कह दो : मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले अपने को अर्पण कर दूं[5]। और तुम कभी 'शिर्क' करने वालों में से न होना।

14. Say: Shall I choose for a protecting friend other than Allah, the Originator of the heavens and the earth, who feedeth and is never fed? Say: I am ordered to be the first to surrender (unto Him). And be not thou (O Muhammad) of the idolaters.

قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّىٓ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ۝١٤

४. ताकि परोक्ष पर 'ईमान' लाने की परीक्षा ली जा सके; और 'रसूल' का जीवन पूर्ण रूप से लोगों के लिए आदर्श बन सके।

५. अर्थात् 'मुस्लिम' हो जाऊँ; आत्मसमर्पण ही का दूसरा नाम 'इस्लाम' है। मनुष्य जब अपनी स्वाधीनता त्याग कर अपना सर्वस्व ईश्वर के अर्पण कर देता और पूर्ण रूप से ईश्वर का दास बन जाता है तो उसे 'मुस्लिम' कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. कहो : यदि मैं अपने 'रब' का हुक्म न मानूं, तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

15. Say: I fear, if I rebel against my Lord, the retribution of an Awful Day.

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑮

१६. उस दिन जिस से उसे हटा दिया जाये, उस पर (अल्लाह ने बड़ी) दया की। और यही स्पष्ट सफलता है।

16. He from whom (such retribution) is averted on that day, (Allah) hath in truth had mercy on him. That will be the signal triumph.

مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ⑯

१७. और यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं, और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाये तो उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

17. If Allah touch thee with affliction, there is none that can relieve therefrom save Him, and if He touch thee with good fortune (there is none that can impair it); for He is Able to do all things.

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑰

१८. और उसे अपने बन्दों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है, वह तत्त्वदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

18. He is the Omnipotent over His slaves, and He is the Wise, the Knower.

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ⑱

१९. कहो : सबसे बढ़ कर गवाही किसकी है? कहो : अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है। और यह क़ुरआन मेरी ओर 'वह्य' किया गया है, ताकि मैं इस से तुम्हें और जिस किसी को यह पहुँचे सब को सचेत कर दूं। क्या वास्तव में तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे 'इलाह' (पूज्य) भी हैं? कहो : मैं तो (इस की) गवाही नहीं देता। कहो : वह तो बस अकेला 'इलाह' है। और तुम जो 'शिर्क' करते हो मैं तो उस से विरक्त हूँ।

19. Say (O Muhammad): What thing is of most weight in testimony? Say: Allah is witness between you and me. And this Qur'an hath been inspired in me, that I may warn therewith you and whomsoever it may reach. Do ye in sooth bear witness that there are gods beside Allah? Say: I bear no such witness. Say: He is only One God. Lo! I am innocent of that which ye associate (with Him).

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ⑲

२०. जिन लोगों को हम ने 'किताब' दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। परन्तु जिन लोगों ने अपने-आप को घाटे में डाला है वही 'ईमान' नहीं लायेंगे।

20. Those unto whom We gave the Scripture recognise (this Revelation) as they recognise their sons. Those who ruin their own souls will not believe.

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑳

२१. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े[६] या उस की 'आयतों' को झुठलाये? निश्चय ही ज़ालिम लोग कभी सफल नहीं हो सकते।

21. Who doth greater wrong than he who inventeth a lie against Allah and denieth His revelations? Lo! the wrongdoers will not be successful.

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ㉑

२२. और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों से जिन्हों ने 'शिर्क' किया होगा कहेंगे : तुम्हारे ठहराये हुये शरीक कहाँ हैं जिन (के शरीक होने) का तुम दावा करते थे?

22. And on the day We gather them together, We shall say unto those who ascribed partners (unto Allah): Where are (now) those partners of your make-believe?

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ㉒

६. अर्थात् यह दावा करे कि अल्लाह के साथ कुछ दूसरे भी उस के प्रभुत्व में उस के सहभागी हैं। यह भी अल्लाह पर आरोप है कि कोई यह कहे कि अल्लाह ने यह आदेश दिया है कि अमुक व्यक्तियों को ईश्वरीय गुणों से युक्त माना जाये; और उन के साथ ऐसा सम्पर्क माना जाये जो सम्पर्क केवल ख़ुदा और बन्दों के बीच पाया जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. फिर इस के सिवा वे कोई 'फ़ितना' (उपद्रव) न उठा सकेंगे कि कहेंगे : हमारे 'रब' ! अल्लाह की क़सम, हम 'मुश्रिक' न थे ।

23. Then will they have no contention save that they will say: By Allah, our Lord, we never were idolaters.

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَ
اللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

२४. देखो कैसा ये अपने बारे में झूठ बोलने लगे, और जो कुछ ये गढ़ा करते थे वह सब इन से गुम हो गया[७] ।

24. See how they lie against themselves, and (how) the thing which they devised hath failed them!

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

२५. और कुछ उन में ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं और हम ने उन के दिलों पर परदे डाल रक्खे हैं कि वे उसे समझ नहीं सकते, और उन के कानों में डाट रख दी है[८] । और चाहे सब निशानियाँ देख लें तब भी वे उन पर 'ईमान' लाने के नहीं हैं : यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आ कर तुम से झगड़ते हैं, तो ये लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है कहते हैं : यह तो बस कुछ वे सनद बातें हैं जो पिछले लोगों से चली आ रही हैं ।

25. Of them are some who listen unto thee, but We have placed upon their hearts veils, lest they should understand, and in their ears a deafness. If they saw every token they would not believe therein; to the point that when they come unto thee to argue with thee, the disbelievers say: This is naught else than fables of the men of old.

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي
آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ
لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ
يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ
هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

२६. और वे इस से (लोगों को) रोकते हैं और इस से दूर रहते हैं, और वे केवल अपने-आप को तबाही में डाल रहे हैं, यद्यपि उन्हें इस का ज्ञान नहीं है ।

26. And they forbid (men) from it and avoid it, and they ruin none save themselves, though they perceive not.

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ
وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

२७. और यदि तुम देखते (तो उन्हें अजीब हाल में पाते) जब वे आग ('जहन्नम') के पास खड़े किये जायेंगे और कहेंगे : हाय, क्या अच्छी बात हो कि हम फिर (दुनिया में) लौटा दिये जायें ! और अपने 'रब' की 'आयतों' को न झुठलायें बल्कि 'ईमान' वालों में सम्मिलित हो जायें !

27. If thou couldst see when they are set before the Fire and say: Oh, would that we might return! Then would we not deny the revelations of our Lord but we would be of the believers!

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا
وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

२८. बल्कि (ऐसा वे इस लिए कहेंगे कि) जो कुछ वे पहले छिपाते थे वह उन के समक्ष आ गया । और यदि लौटा दिये जायें तो फिर वही कुछ करने लगें जिस से उन्हें रोका गया है । और निस्सन्देह वे बिल्कुल झूठे हैं ।

28. Nay, but that hath become clear unto them which before they used to hide. And if they were sent back they would return unto that which they are forbidden Lo! they are liars.

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ
قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا
عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

२९. और कहते हैं : जो कुछ है बस यही सांसारिक जीवन है, और हम फिर (जीवित कर के) उठाये जाने वाले नहीं हैं ।

29. And they say. There is naught save our life of the world, and we shall not be raised (again).

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

७. जो दावा ये किया करते थे वह कुछ भी इन के काम न आया; इन के देवी-देवता सभी गुम हो कर रह गये ।

८. स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत संसार में जो कुछ होता है उसे अल्लाह अपना काम बताता है, क्योंकि प्राकृतिक नियमों का बनाने वाला और उन्हें चलाने वाला वास्तव में वही है । यह एक स्वाभाविक बात है कि जब आदमी हठधर्मी और पक्षपात से काम लेता है और असत्य पर अड़ा रहता है, तो सच्चाई के लिए उस के दिल के द्वार बन्द हो जाते हैं; वह ऐसी चीज़ के मानने से इन्कार कर देता है जो उस की इच्छा के प्रतिकूल हो, फिर तो उस की दशा यह हो जाती है कि वह सब कुछ सुनने के बाद भी कुछ नहीं सुन पाता । उस के दिल में सच्चाई की कोई बात भी नहीं उतरती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/éGangotri

३०. और यदि तुम देखते (तो उन्हें अजीब हाल में पाते) जब वे अपने 'रब्ब' के सामने खड़े किये जायेंगे ! वह कहेगा : क्या यह (दोबारा जीवित कर के उठाया जाना) सत्य नहीं है ? कहेंगे : क्यों नहीं, हमें अपने 'रब्ब' की क़सम ! वह कहेगा : अच्छा तो अब उस 'कुफ़्' के बदले जो तुम करते थे यातना का मज़ा चखो।

30. If thou couldst see when they are set before their Lord. He will say: Is not this real? They will say: Yea, verily, by our Lord! He will say. Taste now the retribution for that ye used to disbelieve.

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ
أَلَيْسَ هَٰذَا بِٱلْحَقِّ ۚ قَالُوا۟ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ
قَالَ فَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُونَ ٣٠

३१. निश्चय ही वे लोग घाटे में पड़े जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जायेगी तो वे कहेंगे : हाय अफ़सोस, हम से इस बारे में कैसी भूल हुई ! और वे अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों का) बोझ उठाये होंगे। देखो, कितना बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं !

31. They indeed are losers who deny their meeting with Allah until when the hour cometh on them suddenly, they cry: Alas for us, that we neglected it! They bear upon their backs their burdens. Ah, evil is that which they bear!

قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ ۖ
حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمُ ٱلسَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا۟
يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ
يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ
أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ٣١

३२. और सांसारिक जीवन तो एक खेल और तमाशे के सिवा और कुछ भी नहीं[९]। और 'आख़िरत' का घर उन लोगों के लिए अधिक अच्छा है जो डरने वाले हैं। क्या तुम समझते नहीं हो ?

32. Naught is the life of the world save a pastime and a sport. Better far is the abode of the Hereafter for those who keep their duty (to Allah). Have ye then no sense?

وَمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ
وَلَلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٣٢

३३. हम जानते हैं कि जो कुछ वे लोग कहते हैं वह तुम्हारे लिए दुःख का कारण बनता है, तो वे तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि वे ज़ालिम तो अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करते हैं।

33. We know well how their talk grieveth thee, though in truth they deny not thee (Muhammad) but evil-doers flout the revelations of Allah.

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُۥ لَيَحْزُنُكَ ٱلَّذِى يَقُولُونَ ۖ
فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ
بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ يَجْحَدُونَ ٣٣

३४. और तुम से पहले भी बहुत से 'रसूल' झुठलाये गये हैं, तो उन्होंने लोगों के झुठलाने और तकलीफ़ पहुँचाने पर सब्र किया, यहाँ तक कि उन्हें हमारी मदद पहुँच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और 'रसूलों' के वृत्तान्त तुम्हें पहुँच ही चुके हैं[१०]।

34. Messengers indeed have been denied before thee, and they were patient under the denial and the persecution till Our succour reached them. There is none to alter the decisions of Allah. Already there hath reached thee (somewhat) of the tidings of the messengers (We sent before).

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا۟
عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا۟ وَأُوذُوا۟ حَتَّىٰٓ أَتَىٰهُمْ
نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِ ۚ وَلَقَدْ
جَآءَكَ مِن نَّبَإِى۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ٣٤

३५. और यदि उन का मुँह मोड़ लेना तुम पर भारी है, तो यदि तुम से हो सके कि धरती में कोई सुरंग या आकाश में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो और उन के पास कोई निशानी ले आओ (तो अपनी-सी कर देखो) ! और यदि अल्लाह चाहता, तो उन सब को सीधी राह पर इकट्ठा कर देता,[११] तो तुम नादान न बनो।

35. And if their aversion is grievous unto thee, then if thou canst, seek a way down into the earth or a ladder unto the sky that thou mayst bring unto them a portent (to convince them all)! — If Allah willed, He could have brought them all together to the guidance — So be not thou among the foolish ones.

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ
فَإِنِ ٱسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِىَ نَفَقًا فِى
ٱلْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِى ٱلسَّمَآءِ فَتَأْتِيَهُم
بِـَٔايَةٍ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
ٱلْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
ٱلْجَٰهِلِينَ ٣٥

९. अर्थात् 'आख़िरत' के मुक़ाबले में दुनिया की हैसियत खेल-तमाशे से ज़्यादा नहीं है। समझदार लोग वही हैं जो अपने सांसारिक जीवन को 'आख़िरत' की तैयारी में लगाते हैं।

१०. अर्थात् 'रसूलों' को जो-कुछ पेश आया उस का ज्ञान तुम्हें हो ही चुका है।

११. अर्थात् वह ऐसा कर सकता था कि सब लोग एक ही सीधे और सच्चे रास्ते पर होते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. मानते तो वही लोग हैं जो सुनते हैं। और मुर्दों[१२] को तो अल्लाह ('क़ियामत' ही के दिन) उठायेगा: फिर वे उसी की ओर पलटाये जायेंगे।

36. Only those can accept who hear. As for the dead, Allah will raise them up; then unto Him they will be returned.

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

३७. और वे कहते हैं: इस ('नबी') पर इस के 'रब' की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? कहो: अल्लाह तो इस का सामर्थ्य रखता है कि कोई निशानी उतार दे परन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

37. They say: Why hath no portent been sent down upon him from his Lord? Say: Lo! Allah is Able to sent down a portent. But most of them know not.

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

३८. और धरती में चलने वाला कोई भी जीवधारी और अपने दो परों से उड़ने वाला कोई भी पक्षी हो, इन सब के तुम्हारे जैसे ही गरोह हैं। हम ने किताब में कोई चीज़ छोड़ी नहीं है। फिर वे अपने 'रब' की ओर इकट्ठे किये जायेंगे।

38. There is not an animal in the earth, nor a flying creature flying on two wings, but they are peoples like unto you. We have neglected nothing in the Book (of Our decrees). Then unto their Lord they will be gathered.

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

३९. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं अँधेरे में पड़े हुये हैं। अल्लाह जिसे चाहता है पथ-भ्रष्ट करता है[१३], और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है।

39. Those who deny Our revelations are deaf and dumb in darkness. Whom Allah will He sendeth astray, and whom He will He placeth on a straight path.

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

४०. कहो: क्या तुम ने यह भी सोचा कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना आ पड़े या वह घड़ी ('क़ियामत') तुम्हारे सामने आ जाये, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? (बताओ) यदि तुम सच्चे हो।

40. Say: Can ye see yourselves, if the punishment of Allah come upon you or the Hour come upon you calling upon other than Allah? Do ye then call (for help) any other than Allah? (Answer that) if ye are truthful.

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

४१. बल्कि (संकट के समय तो) तुम उसी को पुकारते हो—जिस (संकट) पर तुम उसे पुकारते हो वह चाहता है तो उसे दूर कर देता है—और तुम उन्हें भूल जाते हो जिन्हें (अल्लाह का) सहभागी ठहराते हो।

41. Nay, but unto Him ye call, and He removeth that because of which ye call unto Him if He will, and ye forget whatever partners ye ascribed unto Him.

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

४२. तुम से पहले कितनी ही जातियों की ओर हम ने 'रसूल' भेजे, और उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, कदाचित् वे (हमारे सामने) गिड़गिड़ायें।

42. We have sent already unto people that were before thee, and We visited them with tribulation and adversity, in order that they might grow humble.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

१२. मुर्दों से अभिप्रेत यहाँ 'काफ़िर' लोग हैं जिन के दिल बिल्कुल ही मुर्दा हो चुके होते हैं; जो अपनी चेतन-शक्ति से कुछ भी काम नहीं लेते।

१३. गुमराह करने का मतलब इस के सिवा और कुछ नहीं कि हठ-धर्म और सत्य से वैर रखने वालों को अल्लाह उन की असत्य-प्रियता के कारण सीधी राह नहीं दिखाता; उन्हें अन्धकार में भटकने के लिए छोड़ देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३. फिर क्यों न जब हमारी ओर से उन पर तंगियाँ आईं, तो वे गिड़गिड़ाये ! परन्तु उन के हृदय तो कठोर हो गये थे और जो कुछ वे करते थे 'शैतान' ने उसे उन के लिए शोभायमान बना दिया था।

43. If only, when our disaster came on them, they had been humble! But their hearts were hardened and the devil made all that they used to do seem fair unto them!

فلولا اذ جاءهم باسنا تضرعوا
ولكن قست قلوبهم وزين لهم
الشيطن ما كانوا يعملون ﴿٤٣﴾

४४. फिर जब ऐसा हुआ कि जिस से उन्हें याददिहानी कराई गई थी उन्हों ने उसे भुला दिया, तो हम ने उन पर हर तरह की नेमतों के दरवाज़े खोल दिये, यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें दिया गया था जब वे उस से ख़ूब ख़ुश हो गये, तो अचानक हम ने उन्हें पकड़ लिया, फिर तो अब वे बिल्कुल निराश थे।

44. Then, when they forgot that whereof they had been reminded. We opened unto them the gates of all things till, even as they were rejoicing in that which they were given, We seized them unawares, and lo! they were dumbfounded.

فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا
عليهم ابواب كل شيء حتى اذا
فرحوا بما اوتوا اخذنهم بغتة
فاذا هم مبلسون ﴿٤٤﴾

४५. तो उन लोगों की जड़ कट गई जिन्हों ने ज़ुल्म किया था। प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का 'रब' है।

45. So of the people who did wrong the last remnant was cut off. Praise be to Allah, Lord of the Worlds!

فقطع دابر القوم الذين ظلموا
والحمد لله رب العلمين ﴿٤٥﴾

४६. कहो : क्या तुम ने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति छीन ले और तुम्हारे दिलों पर ठप्पा लगा दे, तो अल्लाह के सिवा और कौन 'इलाह' (पूज्य) है जो तुम्हें यह ला दे ?

देखो हम किस प्रकार 'आयतें' तरह-तरह से बयान करते हैं ? फिर भी वे किनारा ही खींचते जाते हैं।

46. Say: Have ye imagined, if Allah should take away your hearing and your sight and seal your hearts, who is the God who could restore it to you save Allah? See how We display the revelations unto them? Yet still they turn away.

قل ارءيتم ان اخذ الله سمعكم
وابصاركم وختم على قلوبكم
من اله غير الله ياتيكم به انظر
كيف نصرف الايت ثم هم يصدفون ﴿٤٦﴾

४७. कहो : क्या तुम ने यह भी सोचा कि यदि अचानक अथवा प्रत्यक्ष रूप में तुम पर अल्लाह की यातना आ जाये तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई दूसरा विनष्ट किया जायेगा ?

47. Say: Can ye see yourselves, if the punishment of Allah come upon you unawares or openly? Would any perish save wrongdoing folk?

قل ارءيتكم ان اتكم عذاب الله
بغتة او جهرة هل يهلك الا القوم الظلمون ﴿٤٧﴾

४८. और हम 'रसूलों' को केवल शुभ सूचना देने वाले और सचेत करने वाले के रूप में ही भेजते हैं। फिर जो कोई 'ईमान' लाये और सुधर जाये, तो ऐसे लोगों के लिए न तो कोई भय की बात है और न वे कभी दुःखी होंगे।

48. We send not the messengers save as bearers of good news and warners. Whoso believeth and doth right, there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

وما نرسل المرسلين الا مبشرين
ومنذرين فمن امن واصلح فلا
خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٤٨﴾

४९. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया उन्हें यातना पहुँच के रहेगी इस लिए कि वे अवज्ञा करते हैं।

49. But as for those who deny Our revelations, torment will afflict them for that they used to disobey.

والذين كذبوا باياتنا يمسهم العذاب
بما كانوا يفسقون ﴿٤٩﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. (हे 'नवी' !) कह दो : मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं परोक्ष की सारी बातें जानता हूँ ; और न मैं तुम से यह कहता हूँ कि मैं 'फ़िरिश्ता' हूँ । मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी ओर 'वह्य' की जाती है । कहो : क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों बराबर होते हैं ? क्या तुम सोच-विचार से काम नहीं लेते ?

50. Say (O Muhammad, to the disbelievers): I say not unto you (that) I posess the treasures of Allah nor that I have knowledge of the unseen; and I say not unto you: Lo! I am an angel. I follow only that which is inspired in me. Say: Are the blind man and the seer equal? Will ye not then take thought?

قُل لَّآ أَقُولُ لَكُمْ عِندِى خَزَآئِنُ ٱللَّهِ
وَلَآ أَعْلَمُ ٱلْغَيْبَ وَلَآ أَقُولُ لَكُمْ إِنِّى
مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِى ٱلْأَعْمَىٰ وَٱلْبَصِيرُ
أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

५१. और तुम इस ('किताब') से उन लोगों को सचेत कर दो जिन्हें इस बात का भय है कि वे अपने 'रब' के पास इकट्ठे किये जायेंगे कि उस के सिवा न तो उन का कोई संरक्षक-मित्र होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वे डरने लग जायें ।

51. Warn hereby those who fear (because they know) that they will be gathered unto their Lord, for whom there is no protecting friend nor intercessor beside Him, that they may ward off (evil):

وَأَنذِرْ بِهِ ٱلَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوٓا۟
إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِۦ وَلِىٌّ
وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

५२. और जो लोग अपने 'रब' को प्रातः काल और सन्ध्या समय पुकारते रहते हैं चाहते हैं कि उस की प्रसन्नता प्राप्त हो ऐसे लोगों को न भगाओ,[१४] उन के हिसाब की तुम पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है और न तुम्हारे हिसाब की उन पर कोई ज़िम्मेदारी है, फिर भी यदि तुम उन्हें भगाओगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगे ।

52. Repel not those who call upon their Lord at morn and evening, seeking His countenance. Thou art not accountable for them in aught, nor are they accountable for thee in aught, that thou shouldst repel them and be of the wrong-doers.

وَلَا تَطْرُدِ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم
بِٱلْغَدَوٰةِ وَٱلْعَشِىِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُۥ
مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَىْءٍ وَمَا
مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَىْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٥٢﴾

५३. और इसी तरह हम ने इन में कुछ (लोगों) को कुछ (लोगों) के द्वारा आज़माइश में डाला है,[१५] ताकि वे कहें : क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे बीच अल्लाह ने एहसान किया है ? क्या अल्लाह उन लोगों से भली-भाँति परिचित नहीं जो कृतज्ञता दिखलाने वाले हैं ?

53. And even so do We try some of them by others, that they say: Are these they whom Allah favoureth among us? Is not Allah best aware of the thanksgivers?

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوٓا۟
أَهَـٰٓؤُلَآءِ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنۢ بَيْنِنَآ
أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَعْلَمَ بِٱلشَّـٰكِرِينَ ﴿٥٣﴾

५४. और जब तुम्हारे पास वे लोग आयें जो हमारी 'आयतों' पर 'ईमान' लाते हैं, तो कहो : तुम पर सलाम है ! तुम्हारे 'रब' ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है, कि तुम में जो कोई नादानी से कोई बुराई कर बैठे फिर 'तौबा' कर ले और सुधर जाये तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है ।

54. And when those who believe in Our revelations come unto thee, say: Peace be unto you! Your Lord hath prescribed for Himself mercy, that whoso of you doth evil and repenteth afterward thereof and doth right, (for him) lo! Allah is Forgiving, Merciful.

وَإِذَا جَآءَكَ ٱلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَـٰتِنَا
فَقُلْ سَلَـٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ
نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ أَنَّهُۥ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ
سُوٓءًۢا بِجَهَـٰلَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنۢ بَعْدِهِۦ وَ
أَصْلَحَ فَأَنَّهُۥ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

१४. यद्यपि वे ग़रीब और निर्धन हैं ।
१५. अर्थात् ग़रीबों और निर्धनों को 'ईमान' की दौलत दे कर हम ने उन लोगों को आज़माइश में डाला है जिन्हें अपने धन और गौरव का गर्व है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. और इस तरह हम अपनी 'आयतें' खोल-खोल कर बयान करते हैं (ताकि लोग समझें) और ताकि अपराधियों की राह बिल्कुल ज़ाहिर हो जाये।

55. Thus do We expound the revelations that the way of the unrighteous may be manifest.

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ ع

५६. (हे 'नबी' !) कह दो : मुझे इस से रोका गया है कि मैं उन की 'इबादत' करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कह दो : मैं तुम्हारी इच्छाओं का पालन करने वाला नहीं, यदि मैं ने ऐसा किया तो मार्ग से भटक गया और मार्ग पाने वालों में न रहा।

56. Say: I am forbidden to worship those on whom ye call instead of Allah. Say: I will not follow your desires, for then should I go astray and should not be of the rightly guided.

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَاۗءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

५७. कह दो : मैं अपने 'रब' की ओर से एक खुली दलील पर हूँ, जब कि तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो वह कोई मेरे पास नहीं है। फ़ैसले का अधिकार तो अल्लाह ही को है। वह हक़ बात बयान करता है और वही सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।

57. Say: I am (relying) on clear proof from my Lord, while ye deny Him: I have not that for which ye are impatient. The decision is for Allah only. He telleth the truth and He is the Best of Deciders.

قُلْ اِنِّيْ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۭ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾

५८. कह दो : जिस की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है कहीं वह चीज़ मेरे अधिकार में होती, तो मेरे और तुम्हारे बीच कब का फ़ैसला हो चुका होता। और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

58. Say: If I had that for which ye are impatient, then would the case (ere this) have been decided between me and you. Allah is Best Aware of the wrong-doers.

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. और उसी के पास परोक्ष की कुञ्जियाँ हैं जिन्हें उस के सिवा और कोई नहीं जानता। और वह जानता है जो कुछ भूमि और समुद्र में है। और कोई पत्ती नहीं जो गिरे और वह उसे न जानता हो, अँधयारियों में कोई दाना, और कोई भी आर्द्र और शुष्क वस्तु ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में (अंकित) न हो।

59. And with Him are the keys of the invisible. None but He knoweth them. And He knoweth what is in the land and the sea. Not a leaf falleth but He knoweth it, not a grain amid the darkness of the earth, naught of wet or dry but (it is noted) in a clear record.

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾

६०. और वही है जो रात को तुम्हें (अर्थात् तुम्हारे प्राण को एक हद तक) ग्रस्त लेता है[१६] और दिन को जो कुछ तुमने किया उसे जानता है। फिर तुम्हें उस में (दिन में) उठाता है, ताकि ठहराई हुई मुद्दत पूरी हो जाये। फिर उसी की ओर तुम सब को पलट कर जाना है। फिर वह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम कर रहे हो।

60 He it is Who gathereth you at night and knoweth that which ye commit by day. Then He raiseth you again to life therein, that the term appointed (for you) may be accomplished. And afterward unto Him is your return. Then He will proclaim unto you what ye used to do.

وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

१६. सोते समय मनुष्य अपने आस-पास की वस्तुओं और अपने शरीर तक से बे-खबर हो जाता है उस समय उस से उस की बाह्य चेतन-शक्ति छिन जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. और उसे अपने बन्दों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है, वह तुम पर रखवाली करने वाले ('फ़िरिश्ते') भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मृत्यु आती है, तो हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') उस (के प्राण) को ग्रस्त लेते हैं; और वे कोई कोताही नहीं करते।

61. He is the Omnipotent over His slaves. He sendeth guardians over you until, when death cometh unto one of you, Our messengers receive him, and they neglect not.

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ
حَفَظَةً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ
تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

६२. फिर सब अल्लाह की ओर, जो उन का वास्तविक स्वामी है, लाये जायेंगे। जान लो! फ़ैसले का अधिकार उसी को है और वह बहुत ही तेज़ हिसाब चुकाने वाला है।

62. Then are they resorted unto Allah, their Lord, the Just. Surely His is the judgement. And He is the Most Swift of reckoners.

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ اَلَا
لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

६३. कहो : कौन है जो भूमि और समुद्र की अँधयारियों (मुसीबतों) से तुम्हें छुटकारा देता है ? जिसे तुम गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारते हो कि यदि तू ने इस (संकट) से हमें छुटकारा दिया तो हम अवश्य कृतज्ञ लोगों में से हो जायेंगे।

63. Say: Who delivereth you from the darkness of the land and the sea? Ye call upon Him humbly and in secret, (saving): If we are delivered from this (fear) we truly will be of the thankful.

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً
لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

६४. कहो : अल्लाह तुम्हें इस से और हर पीड़ा से छुटकारा देता है फिर तुम (औरों को उस का) सहभागी ठहराते हो।

64. Say: Allah deliverth you from this and from all affliction. Yet ye attribute partners unto Him!

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ
ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

६५. कहो : वह इस का सामर्थ्य रखता है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाँव के नीचे से कोई यातना भेज दे, या तुम्हें टोलियों में बाँट कर परस्पर भिड़ा दे और एक को दूसरे की लड़ाई (एवं क्रूरता) का मज़ा चखाये।

देखो हम अपनी 'आयतों' को किस प्रकार तरह-तरह से बयान करते हैं ताकि वे समझें।

65. Say: He is Able to send punishment upon you from above you or from beneath your feet, or to bewilder you with dissension and make you taste the tranny one of another. See how We display the revelation so that they may understand.

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا
مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ
يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ
بَعْضٍ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

६६. और तुम्हारी जाति ने उसे झुठला दिया, हालांकि वह सत्य है। कह दो : मैं तुम पर कोई हवालेदार नहीं हूँ।

66. The people (O Muhammad) have denied it, though it is the Truth. Say: I am not put in charge of you.

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ
لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾

६७. हर खबर (के पूरा होने) का एक निश्चित समय है, तुम जल्द ही जान लोगे।

67. For every announcement there is a term, and ye will come to know.

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

६८. और जब ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयतों पर नुकताचीनी करने में लगे हों, तो उन से अलग हो जाओ यहाँ तक कि वे किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि कभी ऐसा हो कि 'शैतान' तुम्हें भुलावे में डाल दे, तो याद आ जाने के बाद ऐसे ज़ालिम लोगों के पास न बैठो।

68. And when thou seest those who meddle with Our revelations, withdraw from them until they meddle with another topic. And if the devil cause thee to forget, sit not, after the remembrance, with the congregation of wrong-doers.

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ
غَيْرِهٖ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا
تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. और उन के हिसाब के बारे में उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है जो डरते हैं, परन्तु समझाना (उन का काम है) कदाचित् वे डरने लगें।

69. Those who ward off (evil) are not accountable for them in aught, but the Reminder (must be given them) that haply they (too) may award off (evil).

وما على الذين يتقون من حسابهم
من شيء ولكن ذكرى لعلهم يتقون ۝

७०. छोड़ो ऐसे लोगों को जिन्होंने अपने 'दीन' को खेल और तमाशा बना लिया है, और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रक्खा है। और इस (क़ुरआन) के द्वारा उन्हें चेताते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि कोई अपनी कमाई के कारण इस तरह फँस जाये कि उस का अल्लाह के सिवा न तो कोई संरक्षक-मित्र हो, और न सिफ़ारिश करने वाला, और यदि वह छूटने के लिए बदले के रूप में सब-कुछ देने लगे तो वह भी उस से न लिया जाये[१७]। ये वे लोग हैं जो अपनी कमाई के कारण फँस गये। इन के लिए, पीने को खौलता हुआ पानी है और (भोगने को) दुःख देने वाली यातना, इस लिए कि ये 'कुफ़्' करते थे।

70. And forsake those who take their religion for a pastime and a jest, and whom the life of the world beguileth. Remind (mankind) hereby lest a soul be destroyed by what it earneth. It hath beside Allah no friend nor intercessor and though it offer every compensation it will not be accepted from it. Those are they who perish by their own deserts. For them is drink of boiling water and a painful doom because they disbelieved.

وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا و
لهوا وغرتهم الحيوة الدنيا وذكر
به أن تبسل نفس بما كسبت ليس لها
من دون الله ولي ولا شفيع وإن
تعدل كل عدل لا يؤخذ منها أولئك
الذين أبسلوا بما كسبوا لهم شراب
من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون ۝

७१. कहो : क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारने लग जायें, जो न तो हमारा कुछ बना सकते हैं और न हमारा कुछ बिगाड़ सकते हैं, और उलटे पाँव फिर जायें जब कि अल्लाह ने हमें मार्ग दिया है, जैसे कि किसी व्यक्ति को 'शैतानों' ने भूमि में भटका दिया हो और वह हैरान हो, उस के कुछ साथी हों जो उसे मार्ग की ओर बुला रहे हों कि हमारे पास चला आ! कह दो : अल्लाह का मार्ग-दर्शन ही मार्ग-दर्शन है, और हमें हुक्म मिला है कि हम संसार के 'रब' के लिए अपने को अर्पण कर दें[१८]।

71. Say: Shall we cry, instead of unto Allah, unto that which neither profiteth us nor hurteth us, and shall we turn back after Allah hath guided us, like one bewildered whom the devils have infatuated in the earth, who hath companions, who invite him to the guidance (saying): Come unto us? Say: Lo! the guidance of Allah is Guidance, and we are ordered to surrender to the Lord of the Worlds.

قل أندعوا من دون الله ما لا
ينفعنا ولا يضرنا ونرد على أعقابنا
بعد إذ هدنا الله كالذي استهوته
الشيطين في الأرض حيران له
أصحب يدعونه إلى الهدى ائتنا
قل إن هدى الله هو الهدى و
أمرنا لنسلم لرب العلمين ۝

७२. और यह कि 'नमाज़' क़ायम करो और उस से डरते रहो, वही है जिस के पास तुम इकट्ठे किये जाओगे।

72. And to establish worship and ward off (evil), and He it is unto Whom ye will be gathered.

وأن أقيموا الصلوة واتقوه وهو
الذي إليه تحشرون ۝

७३. और वही है जिस ने आकाशों और धरती को 'हक़' के साथ पैदा किया। और जिस दिन कहेगा : हो जा! यह हो जायेगा[१९]।

73. He it is Who created the heavens and the earth in truth. In that day when He saith: Be! it is.

وهو الذي خلق السموت والأرض
بالحق ويوم يقول كن فيكون ۝

७४. उसी की बात सत्य है। और जिस दिन 'सूर' फूंका जायेगा राज्य उसी का होगा। वह छिपी और खुली हर चीज़ का जानने वाला है, और वह तत्त्वदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

74. His word is the truth, and His will be the Sovereignty on the day when the trumpet is blown. Knower of the invisible and the visible, He is the Wise, the Aware.

قوله الحق وله الملك يوم ينفخ
في الصور علم الغيب والشهادة
وهو الحكيم الخبير ۝

१७. अर्थात् वह भी क़बूल न किया जाये।

१८. दे० फुट नोट ५।

१९. अर्थात् अल्लाह की इच्छा के अनुसार 'क़ियामत' खड़ी होने लगेगी, मुरदे जी उठेंगे, और वे अल्लाह के सामने इकट्ठे कर दिये जायेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७५. और याद करो जब इबराहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था : क्या तू मूर्तियों को 'इलाह' (पूज्य) बनाता है ? मैं तो देखता हूँ कि तू और तेरी जाति सभी खुली गुमराही में पड़े हुये हैं ।

75. (Remember) when Abraham said unto his father Azar: Takest thou idols for gods? Lo! I see thee and thy folk in error manifest.

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ لِأَبِيهِ ءَازَرَ أَتَتَّخِذُ
أَصْنَامًا ءَالِهَةً إِنِّيٓ أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
فِى ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾

७६. और इसी तरह हम इबराहीम को आकाशों और धरती के राज्य का निरीक्षण कराते थे[२०] ताकि वह विश्वास रखने वालों में से हो जाये :

76. Thus did We show Abraham the kingdom of the heavens and the earth that he might be of those possessing certainty.

وَكَذٰلِكَ نُرِىٓ إِبْرٰهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾

७७. जब रात उस पर छा गई तो उस ने एक तारा देखा । उस ने कहा : यह मेरा 'रब' है[२१] । परन्तु जब वह डूब गया, तो बोला : डूब जाने वालों से मुझे प्रेम नहीं ।

77. When the night grew dark upon him he beheld a star. He said: This is my Lord. But when it set, he said: I love not things that set.

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَءَا كَوْكَبًا قَالَ
هٰذَا رَبِّى فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَآ أُحِبُّ
الْأٰفِلِينَ ﴿٧٦﴾

७८. फिर जब उस ने चाँद चमकता देखा तो कहा : यह मेरा रब है। परन्तु जब वह डूब गया तो कहा : यदि मेरा 'रब' मुझे मार्ग न दिखाये तो मैं भटके हुए लोगों में से हो जाऊँ ।

78. And when he saw the moon uprising, he exclaimed: This is my Lord. But when it set, he said: Unless my Lord guide me, I surely shall become one of the folk who are astray.

فَلَمَّا رَءَا الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّى
فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِى رَبِّى
لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّينَ ﴿٧٧﴾

७९. फिर जब सूरज को चमकते हुये देखा, तो कहने लगा : यह मेरा 'रब' है ! यह सब से बड़ा है ! फिर जब वह डूब गया तो कहा : हे मेरी जाति ! मैं उन से विरक्त हूँ जिन्हें तुम (अल्लाह का) सहभागी ठहराते हो ।

79. And when he saw the sun uprising, he cried: This is my Lord! This is greater! And when it set he exclaimed: O my people! Lo! I am free from all that ye associate (with Him).

فَلَمَّا رَءَا الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا
رَبِّى هٰذَآ أَكْبَرُ فَلَمَّآ أَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾

८०. मैं ने तो हर ओर से कट कर अपना रुख उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया, और मैं 'शिर्क' करने वालों में से नहीं हूँ ।

80. Lo! I have turned my face toward Him Who created the heavens and the earth, as one by nature upright, and I am not of the idolaters.

إِنِّى وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِى فَطَرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَآ أَنَا۠ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾

८१. और उस की जाति उस से झगड़ने लगी । उस ने कहा : क्या तुम मुझ से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो हालाँकि उस ने मुझे मार्ग दिखाया है ? और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम उस का शरीक ठहराते हो, हाँ यदि मेरा 'रब' कुछ चाहे तो दूसरी बात है । मेरा 'रब' हर चीज़ को ज्ञान से घेरे हुये है । फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ?

81. His people argued with Him. He said: Dispute ye with me concerning Allah when He hath guided me? I fear not at all that which ye set beside Him unless my Lord willeth. My Lord includeth all things in His knowledge. Will ye not then remember?

وَحَآجَّهُۥ قَوْمُهُۥ قَالَ أَتُحَٰٓجُّوٓنِّى فِى
اللَّهِ وَقَدْ هَدٰىنِ وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ
بِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَشَآءَ رَبِّى شَيْـًٔا وَسِعَ رَبِّى
كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

२०. अर्थात् उन्हों ने सूरज, चाँद, तारे आदि अल्लाह की निशानियों को उन लोगों की तरह नहीं देखा जो बुद्धिहीन और ज्ञान के अन्धे होते हैं । उन्हों ने खुली आँखों देख लिया कि सम्पूर्ण जगत अल्लाह का राज्य है । धरती और आकाश की समस्त वस्तुयें उसी के क़ानून में जकड़ी हुई हैं ।

२१. हज़रत इबराहीम अ० ने अपनी जाति के लोगों को समझाने के लिए कहा कि तुम्हारे विश्वास के अनुसार यह मेरा और तुम्हारा 'रब' है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

८२. और मैं तुम्हारे ठहराये हुये शरीकों से कैसे डरूँ जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह का सहभागी ठहराया है जिस की उस ने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी ? अब दोनों फ़रीक़ों में कौन निश्चिन्तता का अधिक अधिकारी है ? (बताओ) यदि तुम जानते हो।

82. How should I fear that which ye set up beside Him, when ye fear not to set up beside Allah that for which He hath revealed unto you no warrant? Which of the two factions hath more right to safety? (Answer me that) if ye have knowledge.

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ
أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ
عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ
بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

८३. जो लोग 'ईमान' लाये और अपन 'ईमान' को कुछ ज़ुल्म ('शिर्क') के साथ सम्मिश्रित नहीं किया, उन्हीं लोगों के लिए निश्चिन्तता है; और वही राह पाये हुये लोग हैं।

83. Those who believe and obscure not thier belief by wrongdoing, theirs is safety; and tney are rightly guided.

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ
أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

८४. और यह है हमारा तर्क जो हम ने इबराहीम को उस की जाति के मुक़ाबले में दिया था। हम जिस किसी के चाहते हैं दर्जे ऊँचे कर देते हैं। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' तत्त्वदर्शी और सब कुछ जानने वाला है।

84. That is Our argument. We gave it unto Abraham against his folk. We raise unto degrees of wisdom whom We will. Lo! thy Lord is Wise, Aware.

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ
نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

८५. और हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिये;[२२] हर एक को मार्ग दिखाया—और नूह को हम ने इस से पहले मार्ग दिखाया था; और उस की सन्तान में दाऊद, और सुलैमान, और अय्यूब, और यूसुफ़, और मूसा, और हारून को भी। और हम इसी तरह उत्तमकारों को बदला देते हैं।

85. And We bestowed upon him Issac and Jacob; each of them We guided; and Noah did We guide aforetime; and of his seed (We guided) David and Solomon and Job and Joseph and Moses and Aaron. Thus do We reward the good.

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ
وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ
دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ
وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

८६. और (उसी की सन्तान से) ज़करीया और यहया और ईसा और इलयास को भी (मार्ग दिखाया) ये सब-के-सब अच्छे लोगों में से थे,

86. And Zachariah and John and Jesus and Elias. Each one (of them) was of the righteous.

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ
كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

८७. और (उसी की सन्तान से) इसमाईल, और अल्यसअ, और यूनुस और लूत को भी (सीधा मार्ग दिखाया)। और इन में से हर एक को हम ने संसार के लोगों की अपेक्षा बड़ाई दी,

87. And Ishmael and Elisha and John and Lot. Each one of them did We prefer above (Our) creatures.

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾

८८. और उन के पूर्वजों और उन की सन्तान और उन के भाई-बन्धुओं में भी कितनों को (हम ने सम्मानित किया); और हम ने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।

88. With some of their forefathers and their offspring and their brethern; and We chose them and guided them unto a straight path.

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَ
اجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

२२. हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के बेटे और हज़रत याक़ूब अ० उन के पोते थे।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. यह अल्लाह का मार्ग-दर्शन है जिस के साथ वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है राह दिखाता है। और यदि उन्हों ने कहीं 'शिर्क' किया होता, तो उन का सब किया-धरा अकारथ जाता।

89. Such is the guidance of Allah wherewith He guideth whom He will of His bondmen. But if they had set up (for worship) aught beside Him, (all) that they did would have been vain.

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

९०. ये वे लोग थे जिन्हें हम ने 'किताब', निर्णय-शक्ति और 'नुबूवत'[२३] दी थी। अब यदि ये लोग इसे मानने से इन्कार करें, तो (कुछ परवा नहीं) हम ने इस को कुछ ऐसे लोगों को सौंपा है जो इस का इन्कार करने वाले नहीं हैं।

90. Those are they unto whom We gave the Scripture and command and prophethood. But if these disbelieve therein then indeed We shall entrust it to a people who will not be disbelievers therein.

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ
وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

९१. ये (अगले पैग़म्बर) वे लोग थे जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया, तुम इन्हीं के मार्ग पर चलो।

कह दो : मैं तुम से इस का बदला नहीं माँगता। यह तो बस सारे संसार के लोगों के लिए एक याददिहानी है।

91. Those are they whom Allah guideth, so follow their guidance. Say (O Muhammad, unto mankind): I ask of you no fee for it. Lo! It is naught but a Reminder to (His) creatures.

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْــَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾

९२ और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र नहीं जानी उस की जैसी क़द्र जाननी चाहिए थी[२४] जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ नहीं उतारा है। (उन 'यहूदियों' से) कहो : फिर वह 'किताब' किस ने उतारी जिसे मूसा ले कर आया, प्रकाश और मार्ग-दर्शन लोगों के लिए, जिसे तुम अलग-अलग पन्नों के रूप में रखते हो जिन्हें दिखाते हो, परन्तु बहुत-कुछ छिपा जाते हो, तुम्हें वह-कुछ सिखाया गया जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज ?—कह दो : अल्लाह ने। फिर उन्हें छोड़ दो कि वे अपनी दलीलबाजियों से खेलते रहें।

92. And they measure not the power of Allah its true measure when they say: Allah hath naught revealed unto human being. Say (unto the Jews who speak thus): who revealed the Book which Moses brought, a light and guidance for mankind, which ye have put on parchments which ye show, but ye hide much (thereof), and by which ye were taught that which ye knew not yourselves nor (did) your fathers (know it)? say: Allah. Then leave them to their play of cavilling.

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ
مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ
مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ
قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ
قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾

९३. और यह[२५] एक 'किताब' है जिसे हम ने उतारा है, बरकत वाली है, उस की तसदीक़ करने वाली है जो-कुछ कि इस से पहले था। (और इस लिए उतारी गई है) ताकि तुम केन्द्रीय बस्ती[२६] और उस के आस-पास वालों को सचेत करो। और जो लोग 'आख़िरत' पर 'ईमान' रखते हैं वे इस पर 'ईमान' लाते हैं, और वे अपनी 'नमाज़' की रक्षा करते हैं।

93. And this is a blessed Scripture which We have revealed, confirming that which (was revealed) before it that thou mayst warn the Mother of Villages and those around her. Those who believe in the Hereafter believe herein, and they are careful of their worship.

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى
وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾

२३. नुबूवत (पैग़म्बरी) देने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने उन्हें इस पद पर नियुक्त किया था कि वे उस की 'किताब' के अनुसार जो उन पर उतारी गई थी, लोगों को सच्चा और सीधा मार्ग दिखायें।

२४. अर्थात् इन लोगों ने अल्लाह का मान घटा दिया।

२५. अर्थात् क़ुरआन।

२६. उद्गम स्थान अर्थात् मक्का नगर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९४. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, या कहे कि मुझ पर 'वह्य' की गई है, हालाँकि उस पर कोई 'वह्य' न की गई हो; और यह कहे कि मैं भी ऐसी चीज़ उतार दूंगा जैसी अल्लाह ने उतारी है ? और यदि तुम उन्हें देखते, (तो उन्हें अजीब हाल में पाते) जब ज़ालिम मृत्यु-यातनाओं में होते हैं और 'फ़िरिश्ते' अपने हाथ बढ़ा रहे होते हैं कि अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जायेगी इस के बदले में कि तुम अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर असत्य बात बकते थे, और उस की 'आयतों' के मुक़ाबले में अकड़ते थे।

94. Who is guilty of more wrong than he who forgeth a lie against Allah, or saith: I am inspired when he is not inspired in aught; and who saith: I will reveal the like of that which Allah hath revealed? If thou couldst see, when the wrong-doers reach the pangs of death and the angels stretch their hands out, saying: Deliver up your souls. This day ye are awarded doom of degradation for that ye spake concerning Allah other than the truth, and scorned His portents.

ومن اظلم ممن افترى على الله كذبا
او قال اوحي الي ولم يوح اليه شيء ومن
قال سانزل مثل ما انزل الله ولو ترى
اذ الظلمون في غمرت الموت والملئكة
باسطوا ايديهم اخرجوا انفسكم اليوم
تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون
على الله غير الحق وكنتم عن ايته تستكبرون ﴿۹۴﴾

९५. और (अल्लाह कहेगा) अब तुम वैसे ही अकेले हमारे पास आ गये जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, और जो कुछ हम ने तुम्हें दिया था वह अपने पीछे छोड़ आये, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिन के बारे में तुम्हारा कहना था कि तुम्हारे मामले में वे भी (अल्लाह के) शरीक हैं। तुम्हारे आपस के सारे नाते टूट चुके, और जिन का तुम दावा करते थे वे सब तुम से गुम हो गये।

95. Now have ye come unto Us solitary as We did create you at the first, and ye have left behind you all that We bestowed upon you, and We behold not with you those your intercessors of whom ye claimed that they possessed a share in you. Now is the bond between you severed and that which ye presumed hath failed you.

ولقد جئتمونا فرادى كما خلقنكم
اول مرة وتركتم ما خولنكم
وراء ظهوركم وما نرى معكم
شفعاءكم الذين زعمتم انهم
فيكم شركؤا لقد تقطع بينكم و
ضل عنكم ما كنتم تزعمون ﴿۹۵﴾ ع

९६. निस्सन्देह अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला[२७] है। जानदार को बे-जान से निकालता है, और बे-जान को जानदार से निकालने वाला[२८] है। यह है अल्लाह, फिर तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो ?

96. Lo! Allah (it is) Who splitteth the grain of corn and the date-stone (for sprouting). He bringeth forth the living from the dead, and is the bringer-forth of the dead from the living. Such is Allah. How then are ye perverted?

ان الله فالق الحب والنوى يخرج
الحي من الميت ومخرج الميت
من الحي ذلكم الله فانى تؤفكون ﴿۹۶﴾

९७. अरुणोदय (प्रभात) का फाड़ निकालने वाला है, और रात को आराम के लिए, और सूर्य और चन्द्रमा को हिसाब से बनाया है। यह प्रभुत्वशाली और जानने वाले का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है।

97. He is the Cleaver of the Daybreak, and He hath appointed the night for stillness, and the sun and the moon for reckoning. That is the measuring of the Mighty, the Wise.

فالق الاصباح وجعل اليل سكنا
والشمس والقمر حسبانا ذلك
تقدير العزيز العليم ﴿۹۷﴾

९८. और वही है जिस ने तुम्हारे लिए तारे बनाये ताकि तुम उन के द्वारा भूमि और समुद्र की अँधयारियों में मार्ग पा सको। जानने वालों के लिए हम ने 'आयतें' खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।

98. And He it is Who hath set for you the stars that ye may guide your course by them amid the darkness of the land and the sea. We have detailed Our revelations for a people who have knowledge.

وهو الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا
بها في ظلمت البر والبحر قد
فصلنا الايت لقوم يعلمون ﴿۹۸﴾

२७. अर्थात् वही गुठलियों और दानों को फाड़ कर उन से पेड़-पौधों की कोपलें निकालता है।

२८. अर्थात् वही बे-जान चीज़ों से विभिन्न जीवों को पैदा करता है; और वही है जो सजीव शरीर से निर्जीव पदार्थों को निकालता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९. और वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, फिर एक ठहरने का स्थान है और एक सौंपे जाने की जगह। समझ-बूझ रखने वालों के लिए हम ने 'आयतें' खोल-खोल कर कर बयान कर दी हैं।

99. And He it is Who hath produced you from a single being, and (hath given you) a habitation and a repository. We have detailed Our revelations for a people who have understanding.

وهو الذي أنشأكم من نفس
واحدة فمستقر ومستودع ط
قد فصلنا الآيت لقوم يفقهون ﴿٩٨﴾

१००. और वही है जिस ने आकाश से पानी बरसाया, फिर हम ने उस से हर प्रकार की वनस्पति उगाई; फिर हम ने उस से हरे-हरे खेत और पेड़-पौधे पैदा किये जिन से हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं—और खजूर के गाभों से गुच्छे लटकते होते हैं—और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाये, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं, और एक-दूसरे से नहीं भी मिलते-जुलते[२९]। उन के फल को देखो, जब वह फलता है, और उस के पकने को भी देखो। निस्सन्देह इन चीज़ों में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो 'ईमान' लाते हैं।

100. He it is Who sendeth downn water from the sky, and therewith We bring forth buds of every kind; We bring forth the green blade from which we bring forth the thick-clustered grain: and from the date-palm, from the pollen thereof, spring pendant bunches; and (We bring forth) gardens of grapes, and the olive and the pomegranate, alike and unlike. Look upon the fruit thereof, when they bear fruit, and upon its ripening. Lo! herein verily are portents for a people who believe.

وهو الذي أنزل من السماء ماء
فأخرجنا به نبات كل شيء فأخرجنا
منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا
ومن النخل من طلعها قنوان دانية
وجنت من أعناب والزيتون و
الرمان مشتبها وغير متشابه
انظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه
إن في ذلكم لآيت لقوم
يؤمنون ﴿٩٩﴾

१०१. और लोगों ने अल्लाह के सहभागी ठहराये 'जिन्नों' को—जब कि उन्हें उसी ने पैदा किया है—और बेजाने-बूझे उस के लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं। महिमावान् है वह ! और उस से उच्च है जो गुण ये बयान करते हैं।

101. Yet they ascribe as parterners unto Him the jinn, although He did create them, and impute falsely, without knowledge, sons and daughters unto Him. Glorified be He and high exalted above (all) that they ascribe (unto Him):

وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم
وخرقوا له بنين وبنت بغير علم ط
سبحنه وتعلى عما يصفون ﴿١٠٠﴾

१०२. वह आकाशों और धरती जैसी अनोखी चीज़ों का बनाने वाला है ! उस का कोई बेटा कैसे हो सकता है, जब कि उस की कोई संगिनी (पत्नी) ही नहीं है, और उस ने हर चीज़ पैदा की है और वह हर चीज़ का जानने वाला है ?

102. The Originator of the heavens and the earth! How can He have a child, when there is for Him no consort, when He created all things and is Aware of all things?

بديع السموت والأرض أنى يكون
له ولد ولم تكن له صحبة وخلق
كل شيء وهو بكل شيء عليم ﴿١٠١﴾

१०३. यह है अल्लाह, तुम्हारा 'रब'। उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं, वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तो तुम उसी की 'इबादत' करो। और वह हर चीज़ का भार-धारक है।

103. Such is Allah, your Lord. There is no God save Him, the Creator of all things, so worship Him. And He taketh care of all things.

ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو ج
خلق كل شيء فاعبدوه وهو
على كل شيء وكيل ﴿١٠٢﴾

१०४. (लौकिक) निगाहें उसे नहीं पातीं, परन्तु वह निगाहों को पा लेता है। वह अति सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

104. Vision comprehendeth Him not, but He comprehendeth (all) vision. He is the Subtile, the Aware.

لا تدركه الأبصر وهو يدرك
الأبصر وهو اللطيف الخبير ﴿١٠٣﴾

२९. अर्थात् वे एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं परन्तु फिर भी हर फल की विशेषताएँ अलग-अलग हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०५. तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से सूझ-बूझ की बातें आ चुकी हैं, तो जिस किसी ने सूझ से काम लिया, तो इस में उस का अपना ही भला है, और जो कोई अन्धा बना रहा तो उस ने अपना ही बुरा किया । और मैं तुम पर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ ।

105. Proofs have come unto you from your Lord, so whoso seeth, it is for his own good, and whoso is blind is blind to his own hurt. And I am not a keeper over you.

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿١٠٥﴾

१०६. और इसी प्रकार हम अपनी 'आयतों' को तरह-तरह से बयान करते हैं और ताकि ये लोग कहें कि तुम नें किसी से पढ़ लिया है; और ताकि ज्ञान वाले लोगों पर हम इसे खोल दें[३०] ।

106. Thus do We display Our revelations that they may say (unto thee, Muhammad): "Thou hast studied," and that We make (it) clear for people who have knowledge.

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُونَ ﴿١٠٦﴾

१०७. तुम पर जो 'वह्य' तुम्हारे 'रब' की ओर से की गई है तुम उसी पर चलो; उस के सिवा कोई 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं; और 'मुश्रिकों' के पीछे न पड़ो ।

107. Follow that which is inspired in thee from thy Lord; there is no God save Him; and turn away from the idolaters.

اِتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٧﴾

१०८. और यदि अल्लाह चाहता, तो ये 'शिर्क' न करते । और हमने तुम्हें इन का कोई रखवाला नहीं बनाया है, और न तुम इन के कोई हवालेदार हो ।

108. Had Allah willed, they had not been idolatrous. We have not set thee as a keeper over them, nor art thou responsible for them.

وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

१०९. और अल्लाह के सिवा ये जिन्हें पुकारते हैं तुम लोग उन्हें गाली न दो, कहीं ऐसा न हो कि ये लोग हद से आगे बढ़ कर अज्ञान के कारण अल्लाह को गाली देने लगें । इसी तरह तो हम ने हर गरोह के लिए उस के कर्म को शोभायमान बना दिया है । फिर उन्हें अपने 'रब' की ओर लौट कर जाना है, फिर वह उन्हें जता देगा जो कुछ वे करते थे ।

109. Revile not those unto whom they pray beside Allah lest they wrongfully revile Allah through ignorance. Thus unto every nation have We made their deed seem fair. Then unto their Lord is their return, and He will tell them what they used to do.

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٩﴾

११०. और ये लोग अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि यदि उन के पास कोई निशानी आये तो वे उस पर अवश्य 'ईमान' लायेंगे । कह दो : निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं और तुम्हें क्या पता कि यदि वे[३१] आ भी जायें जब भी ये 'ईमान' लाने वाले नहीं हैं ।

110. And they swear a solemn oath by Allah that if there come unto them a portent they will believe therein. Say: Protents are with Allah and (so is) that which telleth you that if such came unto them they would not believe.

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١٠﴾

३०. अर्थात् जो समझ-बूझ से काम लेने वाले हैं वे तो सच्चाई को पा लेंगे; परन्तु वे लोग जिन्हें सच्चाई से कोई लगाव ही नहीं है, जो अन्धकार ही में भटकना चाहते हैं, वे यही कहेंगे कि यह व्यक्ति जो अपने को अल्लाह का 'नबी' कहता है, इस तरह की बातें स्वयं तो पेश नहीं कर सकता था क्योंकि यह कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं है, अतः अवश्य यह किसी से सीख-पढ़ कर ही क़ुरआन जैसा ग्रन्थ हमारे सामने प्रस्तुत कर हा है ।

३१. अर्थात् कोई निशानी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११. और हम इन के दिलों और इन की निगाहों को फेर देंगे जिस तरह ये पहली बार इस पर 'ईमान' नहीं लाये थे, और हम इन्हें छोड़ देंगे कि ये अपनी सरकशी ही में भटकते रहें[३२]।

111. We confound their hearts and their eyes. As they believed not therein at the first, We let them wander blindly on in their contumacy.

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١١﴾

*११२. यदि हम इन की ओर 'फ़िरिश्ते' भी उतार देते, और मुरदे इन से बातें करते, और सारी चीज़ें इन के सामने ला कर मौजूद कर देते, तो भी ये 'ईमान' न लाते, सिवाय इस के कि अल्लाह ही चाहे। फिर भी इन में अधिकतर लोग नादानी करते हैं।

112. And though We should send down the angels unto them, and the deads should speak unto them, and We should gather against them all things in array, they would not believe unless Allah so willed. Howbeit, most of them are ignorant.

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَٰئِكَةَ
وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا
أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
يَجْهَلُونَ ﴿١١٢﴾

११३. और इसी तरह हम ने हर 'नबी' के दुश्मन बनाये, मनुष्यों में के 'शैतानों' को और 'जिन्नों' में के (शैतानों को) भी जो चिकनी-चुपड़ी बात एक दूसरे के जी में डाल कर धोखे में डालते थे यदि तुम्हारा 'रब' चाहता तो वे ऐसा न करते; तो तुम उन्हें और जो कुछ वे झूठ गढ़ रहे हैं, उसे छोड़ो :

113. Thus have We appointed unto every Prophet an adversary—devils of humankind and jinn who inspire in one another plausible discourse through guile. If thy Lord willed, they would not do so; leave them alone with their devising;

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا
شَيَاطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ
إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا
وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ
وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٣﴾

११४. और ताकि जो लोग 'आख़िरत' पर 'ईमान' नहीं रखते उन के दिल इस की ओर झुकें, और वे इस पर राज़ी हो जायें, और जो कुछ कि वे बुरे काम करने वाले हैं कर लें।

114. That the hearts of those who believe not in the Hereafter may incline thereto, and that they may take pleasure therein, and that they may earn what they are earning.

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَ
لِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٤﴾

११५. क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और फ़ैसला करने वाला ढूँढूं, जब कि उस ने तुम्हारी ओर ऐसी 'किताब' उतार दी है जिस में बात खोल-खोल कर बता दी गई है? और जिन लोगों को हम ने 'किताब' दीं थी वे जानते हैं कि यह तुम्हारे 'रब' ही की ओर से हक़ के साथ उतरी है। तो तुम सन्देह करने वालों में से न होना।

115. Shall I seek other than Allah for judge, when He it is Who hath revealed unto you (this) Scripture, fully explained? Those unto whom We gave the Scripture (aforetime) know that it is revealed from thy Lord in truth. So be not thou (O Muhammad) of the waverers.

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي
أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَ
الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ
مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٥﴾

११६. और तुम्हारे 'रब' की बात सच्चाई और इन्साफ़ में पूरी है। कोई उस की बातों को बदलने वाला नहीं। वह सुनने और जानने वाला है।

116. Perfected is the Word of thy Lord in truth and justice. There is naught that can change His words. He is the Hearer, the Knower

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ
لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٦﴾

११७. और धरती में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उन के कहने पर चले तो वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे। वे तो केवल गुमान पर चलते हैं और निरे अटकल दौड़ाते हैं।

117. If thou obeyedst most of those on earth they would mislead thee far from Allah's way. They follow naught but an opinion, and they do but guess.

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٧﴾

३२. इन की मनोवृत्ति अब भी वही है जो पहले थी। जिस प्रकार इन्हों ने पहली बार मुहम्मद सल्ल० के लाये हुये सन्देश को मानने से इन्कार किया था उसी तरह ये अब भी सरकशी ही में भटकते रहेंगे। अल्लाह का तरीक़ा यह नहीं है कि वह ज़बरदस्ती किसी को राह पर लगा दे।

*यहाँ से आठवाँ पारा (Part. VIII) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११८. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' उसे भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटकता है; और वह उसे भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर है।

118. Lo! thy Lord, He knoweth best who erreth from His way; and He knoweth best (who are) the rightly guided.

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٨﴾

११९. यदि तुम उस की 'आयतों' पर 'ईमान रखने वाले हो तो फिर जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ।

119. Eat of that over which the name of Allah hath been mentioned, if ye are believers in His revelations.

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٩﴾

१२०. और क्या कारण है कि तुम उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जब कि जो कुछ उस ने तुम पर 'हराम' किया है उसे खोल-खोल कर वह तुम्हें बता चुका है,[३३] यह और बात है कि कभी तुम्हें उस के लिए मजबूर होना पड़े। और बहुतेरे तो ज्ञान के बिना केवल अपनी इच्छाओं से बहकाते रहते हैं। निश्चय ही तुम्हारा 'रब' सीमोल्लंघन करने वालों को भली-भाँति जानता है।

120. How should ye not eat of that over which the name of Allah hath been mentioned, when He hath explained unto you that which is forbidden unto you, unless ye are compelled thereto? But lo! many are led astray by their own lusts through ignorance. Lo! thy Lord, He is best aware of the transgressors.

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१. और तुम खुले गुनाह को भी छोड़ दो और छुपे को भी। निश्चय ही वे लोग जो गुनाह कमाते हैं अपने किये का जल्द फल पायेंगे।

121. Forsake the outwardness of sin and the inwardness thereof. Lo! those who garner sin will be awarded that which they have earned.

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢١﴾

१२२. और जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम न लिया जाये उसे न खाओ, यह अवज्ञा होगी। और निश्चय ही 'शैतान' अपने साथियों के दिलों में यह बात डालते हैं कि वे तुम से झगड़ें। और यदि तुम उन के कहने पर चले, तो निश्चय ही तुम 'मुश्रिक' हुये।

122. And eat not of that whereon Allah's name hath not been mentioned, for lo! it is abomination. Lo! the devils do inspire their minions to dispute with you. But if ye obey them ye will be in truth idolaters.

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३. क्या वह व्यक्ति जो मुरदा था फिर हम ने उसे जीवित किया, और उस के लिए प्रकाश कर दिया जिस को लिये हुये वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अँधेरों में पड़ा हुआ हो उन से निकलने वाला ही न हो? इसी तरह 'काफ़िरों' के लिए वही कुछ शोभायमान बना दिया गया जो वे कर रहे हैं।

123. Is he who was dead and We have raised him unto life, and set for him a light wherein he walketh among men, as him whose similitude is in utter darkness whence he cannot emerge? This is their conduct made fair-seeming for the disbelievers.

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

१२४. और इसी तरह हम ने हर बस्ती में उस के बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है कि वे वहाँ चाल चलें[३४] और वे अपने ही साथ चाल चलते हैं, परन्तु उन्हें इस का ज्ञान नहीं।

124. And thus have We made in every city great ones of its wicked ones, that they should plot therein. They do but plot against themselves, though they perceive not.

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٤﴾

३३. दे० सूरा अन-नह्ल आयत ११५।

३४. अर्थात् उन्हें इस का मौक़ा दिया है कि वे छल-कपट के जाल फैला सकें, और यह मुहलत उन्हें केवल उन की परीक्षा के लिए दी गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२५. और जब उन के पास कोई 'आयत' आती है, तो कहते हैं, "हम कभी 'ईमान' नहीं लायेंगे जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाये जो अल्लाह के 'रसूलों' को दी गई है।" उसे अल्लाह ख़ूब जानता है जहाँ अपना सन्देश भेजता है। जिन्हों ने अपराध किया उन्हें जल्द ही अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत पेश आयेगी और कठोर यातना, इस लिए कि वे चाल चलते थे।

१२६. जिसे अल्लाह सीधे रास्ते पर लाना चाहता है; उस का सीना 'इस्लाम' के लिए खोल देता है, और जिसे पथ-भ्रष्ट करना चाहता है,[३५] उस के सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर नापाकी डाल देता है जो 'ईमान' नहीं लाते।

१२७. और यह तुम्हारे 'रब' का मार्ग है बिल्कुल सीधा। हम ने अपनी 'आयतें' ध्यान देने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।

१२८. उन के लिए उन के रब के यहाँ सलामती का घर[३६] है। और वह उन का संरक्षक-मित्र है उस के कारण जो वे करते थे।

१२९. और जिस दिन वह इन सब को घेर कर इकट्ठा करेगा, (कहेगा) : हे 'जिन्नों' के गरोह[३७]! तुम ने तो मनुष्यों पर ख़ूब हाथ साफ़ किया। और मनुष्यों में से जो उन के साथी रहे होंगे कहेंगे : हमारे 'रब'! हम में एक, दूसरे से लाभ उठा चुका है, और हम अपने उस नियत समय को पहुँच गये जो तू ने हमारे लिए ठहराया था। वह कहेगा : आग ('जहन्नम') तुम्हारा निवास-स्थान है। जिस में तुम्हें सदा रहना है, हाँ यदि अल्लाह ही चाहे तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' तत्त्वदर्शी और जानने वाला है।

125. And when a token cometh unto them, they say: We will not believe till we are given that which Allah's messengers are given. Allah knoweth best with whom to place His message. Humiliation from Allah and heavy punishment will smite the guilty for their scheming.

126. And whomsoever it is Allah's will to guide, He expandeth his bosom unto the Surrender, and whomsoever it is His will to send astray, He maketh his bosom close and narrow as if he were engaged in sheer ascent. Thus Allah layeth ignominy upon those who believe not.

127. This is the path of thy Lord, a straight path. We have detailed Our revelations for a people who take heed

128. For them is the abode of peace with their Lord. He will be their Protecting Friend because of what they used to do.

129. In the day when He will gather them together (He will say): O ye assembly of the jinn! Many of humankind did ye seduce. And their adherents among humankind will say: Our Lord! We enjoyed one another, but now we have arrived at the appointed term which Thou appointedst for us. He will say: Fire is your home. Abide therein for ever save him whom Allah willeth (to deliver). Lo! thy Lord is Wise, Aware.

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ
حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِىَ رُسُلُ
اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُۥ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌۢ
بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٥﴾

فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ
صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن
يُضِلَّهُۥ يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجًا
كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ
اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٦﴾
وَهَٰذَا صِرَٰطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ
فَصَّلْنَا الْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٧﴾

لَهُمْ دَارُ السَّلَٰمِ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ
وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٨﴾
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ ۖ وَقَالَ
أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ
بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَآ أَجَلَنَا الَّذِىٓ
أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَىٰكُمْ
خَٰلِدِينَ فِيهَآ إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ
رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٩﴾

३५. गुमराही में वह उसी को डालता है जिसे सत्य से बैर होता है। जो सच्ची बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता। ऐसे व्यक्तियों को अल्लाह भटकने के लिए छोड़ देता है। वह ज़बरदस्ती किसी को राह पर लाना नहीं चाहता। दे० इसी सूरा का फुट नोट ८।

३६. अर्थात् 'जन्नत', जहाँ मनुष्य को किसी प्रकार का संकट नहीं पहुँचेगा।

३७. जिन्नों से अभिप्रेत यहाँ प्रत्येक जिन्न नहीं, केवल शैतान जिन्न हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३०. और इस तरह हम ज़ालिमों को एक-दूसरे का साथी बना देंगे उस कमाई के कारण जो वे करते थे।

130. Thus We let some of the wrong-doers have power over others because of what they are wont to earn.

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾

१३१. (पूछेगा :) हे 'जिन्नों' और मनुष्यों के गरोह ! क्या तुम्हारे पास स्वयं तुम्हीं में से 'रसूल' नहीं आये थे जो तुम्हें मेरी 'आयतें' सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे ? कहेंगे : हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देते हैं[३८]। और सांसारिक जीवन ने उन्हें बहकाये रक्खा। और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे 'काफ़िर' थे।

131. O ye assembly of the jinn and humankind! Came there not unto you messengers of your own who recounted unto you My tokens and warned you of the meeting of this your Day? They will say: We testify against ourselves. And the life of the world beguiled them. And they testify against themselves that they were disbelievers.

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ
وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ
قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ
اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

१३२. यह इस कारण कि तुम्हारा 'रब्ब' बस्तियों को ज़ुल्म के साथ विनष्ट करने वाला न था, जब कि उन के निवासी बिल्कुल बे-ख़बर हों।

132. This is because thy Lord destroyeth not the townships arbitrarily while their people are unconcious (of the wrong they do).

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

१३३. और हर एक के दर्जे हैं जो कुछ कि उस ने किया है उस के अनुसार। और जो कुछ वे करते हैं उस से तुम्हारा 'रब' बे-ख़बर नहीं है।

133. For all there will be ranks from what they did. Thy Lord is not unaware of what they do.

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

१३४. और तुम्हारा 'रब' अपेक्षारहित, और दयालुता वाला है। यदि वह चाहे, तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारी जगह जिस को चाहे ले आये, जिस तरह उस ने तुम्हें कुछ और लोगों की सन्तति से उठाया है।

134. Thy Lord is the Absolute, the Lord of Mercy. If He will, He can remove you and can cause what He will to follow after you, even as He raised you from the seed of other folk.

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا
يَشَآءُ كَمَاۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

१३५. तुम से जिस का वादा किया जाता है वह निश्चय ही आने वाला है,[३९] और तुम बच निकलने वाले नहीं हो।

135. Lo! that which ye are promised will surely come to pass, and ye cannot escape.

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَاۤ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

१३६. (हे 'नबी' !) कह दो : लोगो ! तुम अपनी जगह काम करते रहो। मैं भी काम कर रहा हूँ। तो जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि उस घर का (अच्छा) परिणाम किस के लिए होगा। निस्सन्देह ज़ालिम कभी सफल नहीं हो सकते।

136. Say (O Muhammad): O my people! Work according to your power. Lo! I too am working. Thus ye will come to know for which of us will be the happy sequel. Lo! the wrongdoers will not be sucessful.

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ
لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

३८. अर्थात् हम अपने अपराधों को स्वीकार करते हैं। आप की ओर से 'रसूल' अवश्य आये, परन्तु हम ने ही उन की बातों को मानने से इन्कार कर दिया।

३९. अर्थात् 'क़ियामत' का दिन और अल्लाह की यातना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३७. और इन लोगों ने अल्लाह के लिए, उसी की पैदा की हुई खेती और पशुओं में से, एक भाग निश्चित किया, और ये अपने ख़याल से कहते हैं : यह अल्लाह का है और यह हमारे ठहराये हुए शरीकों का है । फिर जो उन के ठहराये हुये शरीकों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है । कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं[४०] ।

137. They assign unto Allah, of the crops and cattle which He created, a portion, and they say: "This is Allah's"—in their make-believe—"and this is for (His) partners in regard to us." Thus that which (they assign) unto his partners in them reacheth not Allah and that which (they assign) unto Allah goeth to their (so-called) partners. Evil is their ordinance.

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ج فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ج وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ط سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

१३८. और इसी तरह बहुतेरे 'मुशरिकों' के लिए उन के शरीकों ने अपनी औलाद की हत्या को शोभायमान बना दिया है, ताकि उन्हें तबाही में डाल दें और उन के लिए उन के धर्म को भ्रामक बना कर छोड़ें । और यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते । तो तुम उन्हें और जो कुछ वे झूठ गढ़ रहे हैं उसे छोड़ो ।

138. Thus have their (so-called) partners (of Allah) made the killing of their children to seem fair unto many of the idolaters, that they may ruin them and make their faith obscure for them. Had Allah willed (it otherwise), they had not done so. So leave them alone with their devices.

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

१३९. और वे अपने ख़याल से कहते हैं : ये जानवर और ये खेत वर्जित हैं । इन्हें बस वही खा सकता है जिसे हम चाहें । और कुछ पशु ऐसे हैं जिन की पीठों को हराम कर दिया गया है,[४१] और कुछ जानवर ऐसे हैं जिन पर (ज़ब्ह करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते । ये उन्हों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है । अल्लाह उन्हें जल्द उस का बदला देगा जो कुछ झूठ वे गढ़ते हैं ।

139. And they say: Such cattle and crops are forbidden. No one is to eat of them save whom We will—in their make-believe—cattle whose backs are forbidden, cattle over which they mention not the name of Allah. (All that is) a lie against Him. He will repay them for that which they invent.

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ق لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ط سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

१४०. और कहते हैं : जो कुछ इन (मन्नत के) जानवरों के पेट में है वह ख़ास हमारे पुरुषों के लिए है और वह हमारी स्त्रियों पर हराम है; परन्तु यदि वह मुरदा हो, तो उस में वे शरीक हैं । वह उन्हें जल्द ही उन के बात गढ़ने का बदला देगा । निस्सन्देह वह तत्त्वदर्शी और जानने वाला है ।

140. And they say: That which is in the bellies of such cattle is reserved for our males and is forbidden to our wives; but if it be born dead, then they (all) may be partakers thereof. He will reward them for their attribution (of such ordinances unto Him). Lo, He is Wise, Aware.

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ج وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ط سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ط اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾

४०. वे जो कुछ अपने ठहराये हुए शरीकों के नाम से निकालते थे वह अल्लाह के यहाँ क्या पहुँचता, वे जो कुछ अल्लाह के लिए निकालते थे उसे भी वह क़बूल नहीं कर सकता था । इस लिए कि 'मुशिरकों' की कोई नेकी अल्लाह के यहाँ क़बूल नहीं होती । अरब के 'मुशिरक' लोग खेती की पैदावार और जानवरों में से दो हिस्से निकालते थे । एक हिस्सा तो वे अल्लाह के नाम निकालते थे; दूसरा हिस्सा उन के अपने बुतों और देवताओं के लिए होता था । अल्लाह का हिस्सा गरीबों और मुहताजों को देते थे परन्तु शरीकों के हिस्से का माल पुजारी लोग स्वयं हड़प कर लेते थे । अल्लाह के हिस्से में यदि कमी होती तो इस की कोई परवाह न करते; किन्तु शरीकों के हिस्से को हाथ लगाते हुए डरते थे ।

४१. अर्थात् न वे उन से सवारी का काम लेते हैं और न उन पर सामान लादते हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४१. निश्चय ही वे लोग घाटे में पड़ गये जिन्हों ने मूर्खता से बिना ज्ञान के अपनी औलाद की हत्या की, और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें रोज़ी दी उसे अल्लाह पर झूठ गढ़ कर हराम ठहराया। वास्तव में वे भटक गये और वे मार्ग पाने वाले न हुये।

141. They are losers who besottedly have slain their children without knowledge, and have forbidden that which Allah bestowed upon them, inventing a lie against Allah. They indeed have gone astray and are not guided.

قد خسر الذين قتلوا اولادهم سفها
بغير علم وحرموا ما رزقهم الله افتراء
على الله قد ضلوا وما كانوا مهتدين ﴿١٤٠﴾

१४२. और वही है जिस ने बाग़ पैदा किये, टट्टियों पर चढ़ाये हुये[४२] भी, और बिना चढ़ाये हुये, और खजूर, और खेती भी जिन के फल विभिन्न प्रकार के होते हैं, और ज़ैतून और अनार भी, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं, और (कुछ बातों में) नहीं भी मिलते-जुलते। जब ये फलें तो इन की पैदावार खाओ और इन की फ़स्ल की कटाई के दिन उस का (अल्लाह का) हक़ अदा करो और हद से न गुज़रो। निस्सन्देह अल्लाह मर्यादाहीन लोगों को पसन्द नहीं करता।

142. He it is Who produceth gardens trellised and untrellised and the date-palm, and crops of divers flavour, and the olive and the pomegranate, like and unlike. Eat ye of the fruit thereof when it fruiteth, and pay the due thereof upon the harvest day, and be not prodigal. Lo! Allah loveth not the prodigals.

وهو الذي انشا جنت معروشت
وغير معروشت والنخل والزرع
مختلفا اكله والزيتون والرمان
متشابها وغير متشابه كلوا من ثمره
اذا اثمر واتوا حقه يوم حصاده
ولا تسرفوا انه لا يحب
المسرفين ﴿١٤١﴾

१४३. और पशुओं में से कुछ बोझ उठाने वाले, और कुछ धरती से लगे हुये जानवर[४३] पैदा किये। अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उस में से खाओ, और 'शैतान' के क़दमों का अनुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

143. And of the cattle (He produceth) some for burdens, some for food. Eat of that which Allah hath bestowed upon you, and follow not the footsteps of the devil, for lo! he is an open foe to you.

ومن الانعام حمولة وفرشا كلوا
مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوت
الشيطن انه لكم عدو مبين ﴿١٤٢﴾

१४४. ये (नर और मादा) आठ क़िस्में (पैदा की) हैं : दो (नर-मादा) भेड़ की जाति से, दो बकरी की जाति से। कहो : "दोनों (जाति के) नरों को (अल्लाह ने) 'हराम' किया है या दोनों (जाति की) मादा को, या उस को जो इन दोनों (जाति की) मादा के पेट में हो? ज्ञानपूर्वक मुझे इस की खबर दो, यदि तुम सच्चे हो"।

144. Eight pairs: Of the sheep twain, and of the goats twain. Say: Hath He forbidden the two males or the two females, or that which the wombs of the two females contain? Expound to me (the case) with knowledge, if ye are truthful.

ثمنية ازواج من الضان اثنين
ومن المعز اثنين قل ءالذكرين
حرم ام الانثيين اما اشتملت
عليه ارحام الانثيين نبئوني بعلم
ان كنتم صدقين ﴿١٤٣﴾

१४५. और दो (नर और मादा) ऊँट की जाति से हैं और दो गाय की जाति से। कहो : "दोनों (जाति के) नरों को (अल्लाह ने) 'हराम' किया है या दोनों (जाति की) मादा को, या उस को जो इन दोनों (जाति की) मादा के पेट में हो; या तुम हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस के बारे में हुक्म दिया था"? फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो लोगों को गुमराह करने के लिए बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ गढ़े, निस्सन्देह अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

145. And of the camels twain and of the oxen twain. Say! Hath He forbidden the two males or the two females, or that which the wombs of the two females contain; or were ye by to witness when Allah commanded you (all) this? Then who doth greater wrong than he who deviseth a lie concerning Allah, that he may lead mankind astray without knowledge? Lo! Allah guideth not wrongdoing folk.

ومن الابل اثنين ومن البقر اثنين
قل ءالذكرين حرم ام الانثيين
اما اشتملت عليه ارحام الانثيين
ام كنتم شهداء اذ وصكم الله
بهذا فمن اظلم ممن افترى على
الله كذبا ليضل الناس بغير علم
ان الله لا يهدي القوم الظلمين ﴿١٤٤﴾

४२. जैसे अंगूर जिन की लतायें टट्टर आदि पर चढ़ाई जाती हैं।

४३. अर्थात् छोटे क़द के जानवर (जैसे भेड़, बकरी आदि) जो बोझ ढोने या सवारी के काम नहीं आते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४६. कह दो : जो 'वह्य' मेरे पास आई है उस में तो मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता कि किसी खाने वाले पर उस का खाना 'हराम' हो, सिवाय इस के कि वह मुरदार हो, या बहाया हुआ रक्त हो, या सुअर का मांस हो—कि वह निश्चय ही नापाक है—या मर्यादा से हटी हुई चीज़ हो कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे का नाम उस पर लिया गया हो। परन्तु जो व्यक्ति कि मजबूर हो जाये, (और जान बचाने के लिए इन चीज़ों को खाये वह भी इस प्रकार) न तो उसे कोई इच्छा हो, न वह हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो निश्चय ही तुम्हारा 'रब' बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

146. Say: I find not in that which is revealed unto me aught prohibited to an eater that he eat thereof, except it be carrion, or blood poured forth, or swineflesh—for that verily is foul—or the abomination which was immolated to the name of other than Allah. But whoso is compelled (thereto), neither craving nor transgressing, (for him) lo! your Lord is Forgiving, Merciful.

قُلْ لَّآ أَجِدُ فِي مَآ أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا
عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّآ أَن يَكُونَ
مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ
فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ
بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ
فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

१४७. और उन लोगों पर जो 'यहूदी' हुये हम ने प्रत्येक नाख़ून वाला जानवर 'हराम' कर दिया था। और गाय और बकरी में से इन दोनों की चरबियाँ उन पर 'हराम' कर दी थीं सिवाय उस के जो उन की पीठों या आँतों से लगी हुई हो, या हड्डी से मिली हो। यह हम ने उन्हें उन की सरकशी का बदला दिया था[४४]। और निस्सन्देह हम सच्चे हैं।

147. Unto those who are Jews We forbade every animal with claws. And of the oxen and the sheep forbade We unto them the fat thereof save that upon the backs or the entrails, or that which is mixed with the bone. That we awarded them for their rebellion. And lo! We verily are Truthful.

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي
ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا
أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَٰلِكَ
جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

१४८. फिर यदि वे तुम्हें झुठलायें तो कहो : तुम्हारा 'रब' व्यापक दयालुता वाला है, और अपराधी लोगों पर से उस की यातना को टाला नहीं जा सकता।

148. So if they give the lie to thee (Mohammad), say: Your Lord is a Lord of all-embracing mercy, and His wrath will never be withdrawn from guilty folk.

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ
وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

४४. इस विषय का उल्लेख इस के अतिरिक्त क़ुरआन में दो और स्थानों (सूरा आले इमरान आयत ९४ और सूरा अन-निसा आयत १६०) पर भी हुआ है। इन तीनों जगहों पर जो कुछ कहा गया है उस पर एक साथ विचार करने से ऐसा मालूम होता है कि मुसलमानों और यहूदियों के धर्मशास्त्र में इस बारे में जो अन्तर पाया जाता है उस के दो कारण हैं :—

एक यह कि 'तौरात' अवतीर्ण होने से बहुत पहले हज़रत याक़ूब अ० ने किसी कारण से कुछ चीज़ों को उपयोग में लाना छोड़ दिया था। उन के बाद उन की औलाद ने भी उन चीज़ों को छोड़े रक्खा। यहूदियों ने उन चीज़ों को हराम समझ लिया और उन के हराम होने के हुक्म को अपनी किताब में दाख़िल कर दिया इन में ऊँट, ख़रगोश और साफ़ान (Coney, ख़रगोश की तरह का एक जानवर) सम्मिलित हैं। देखिए अहबार (Lev.) ११ : ४-६; इस्तिस्ना (Deut.) १४ : ७।

दूसरे यह कि 'यहूदियों' ने अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन किया और अनुचित खोद-कुरेद कर के स्वयं ही बहुत सी चीज़ों को अपने ऊपर हराम कर लिया। इन में एक तो नाख़ून वाले जानवर हैं: जैसे शुतुरमुर्ग़, काज़, बत्तख़ आदि दूसरे गाय और बकरी की चरबी। इन चीज़ों के हराम होने के हुक्म को भी उन्हों ने 'तौरात' के आदेशों में दाख़िल कर लिया। देखिए अहबार (Lev.) ३ : १७; ७ : २२-२३; ११ : १६-१८; इस्तिस्ना (Deut.) १४ : १५-१७।

ये चीज़ें वास्तव में हराम न थीं, ये चीज़ें हज़रत मसीह अ० के बाद हराम हुई हैं। इतिहास भी इसी बात का साक्षी है। वर्त्तमान यहूदी धर्मशास्त्र के संकलन की पूर्ति दूसरी शताब्दी ईसवी के अन्त में रिब्बी यहूदाह के हाथों हुई है।

यहाँ और सूरा अन-निसा में अल्लाह ने यह जो कहा है कि ये चीज़ें हम ने हराम कर दी थीं, तो इस का मतलब यही होता है कि अल्लाह ने उन की सरकशी के कारण उन में ऐसे लोग उठाये जिन्हों ने पाक चीज़ों को भी उन पर हराम कर दिया। यह जो कुछ हुआ वास्तव में उस नियम के अनुसार हुआ जिस के अन्तर्गत अल्लाह किसी जाति को उस की सरकशी की सज़ा देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४९. 'मुश्रिक' लोग कहेंगे : यदि अल्लाह चाहता तो न हम 'शिर्क' करते और न हमारे पूर्वज और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। ऐसे ही इन से पहले के लोगों ने भी झुठलाया था यहाँ तक कि उन्हों ने हमारी यातना का मजा चख लिया । कहो क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है कि उसे हमारे सामने पेश कर सको ? तुम लोग केवल गुमान पर चलते हो और निरी अटकल की बातें करते हो।

149. They who are idolaters will say: Had Allah willed, we had not ascribed (unto Him) partners neither had our fathers, nor had we forbidden aught. Thus did those who were before them give the lie (to Allah's messengers) till they tasted of the fear of Us. Say: Have ye any knowledge that ye can adduce for us? Lo! ye follow naught but an opinion, Lo! ye do but guess.

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٩﴾

१५०. कह दो : बस तर्क तो पहुँचा हुआ अल्लाह का रहा तो यदि वह चाहता तो तुम सब को मार्ग पर लगा देता[४५]।

150. Say—For Allah's is the final argument—Had He willed He could indeed have guided all of you.

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٥٠﴾

१५१. कह दो : अपने उन गवाहों को लाओ जो इस की गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है। फिर यदि वे गवाही दे दें तो तुम उन के साथ गवाही न देना। और उन लोगों की इच्छाओं का पालन न करना जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया, और जो 'आख़िरत' पर 'ईमान' नहीं रखते और दूसरों को अपने 'रब' के बराबर ठहराते हैं।

151. Say: Come, bring your witnesses who can bear witness that Allah forbade (all) this.' And if they bear witness, do not thou bear witness with them. Follow thou not the whims of those who deny Our revelations, those who believe not in the Hereafter and deem (others) equal with their Lord.

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِن شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥١﴾ ع

१५२. कह दो : आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे 'रब' ने तुम पर क्या चीज़ें हराम की हैं[४६] : यह कि उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, और ग़रीबी के कारण अपनी औलाद की हत्या न करो, हम ही तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के पास भी न फटको चाहे वे खुली हों या छिपी, और किसी जीव को जिस (की हत्या) को अल्लाह ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करो, सिवाय इस के कि हक़ के कारण ऐसा करना पड़े[४७]। ये बातें हैं जिन की उस ने तुम्हें ताकीद की है, ताकि बुद्धि से काम लो।

152. Say: Come, I will recite unto you that which your Lord hath made a sacred duty for you: that ye ascribe nothing as partner unto Him and that ye do good to parents and that ye slay not your children because of penury—We provide for you and for them—and that ye draw not nigh to lewd things whether open or concealed. And that ye slay not the life which Allah hath made sacred, save in the course of justice. This He hath commanded you, in order that ye may discern.

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُم مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥٢﴾

४५. परन्तु अल्लाह का फ़ैसला तो यही है कि जिस गुमराही को तुम अपने लिए पसन्द कर रहे हो वह तुम्हें उसी में पड़ा रहने दे। वह बलपूर्वक किसी को सीधे मार्ग पर नहीं चलाता।

४६. अर्थात् वे कौन सी बातें हैं जिन का करना तुम्हारे लिए हराम है; और वे कौन से काम हैं जिन का करना तुम्हारे लिए आवश्यक है; जिन्हें छोड़ना या जिन की उपेक्षा करना तुम्हारे लिए हराम है।

४७. अर्थात् बिना किसी ऐसे अपराध के जिस की सज़ा 'इस्लाम' में क़त्ल है, किसी को क़त्ल नहीं किया जा सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५३. और यह कि अनाथ के माल के निकट भी न जाओ परन्तु उस तरह जो उत्तम हो,[४८] यहाँ तक कि वह युवावस्था को पहुँच जाये। और तुम इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तोलो। हम किसी व्यक्ति पर उस की समाई से बढ़ कर बोझ नहीं डालते। और जब बात कहो तो न्याय से काम लो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो;

और अल्लाह के (साथ किये हुये) वादे को पूरा करो। ये बातें हैं जिन की उस ने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम ध्यान रक्खो।

153. And approach not the wealth of the orphan save with that which is better, till he reach maturity. Give full measure and full weight, in justice. We task not any soul beyond its scope. And if ye give your word, do justice thereunto even though it be (against) a kinsman; and fulfil the covenant of Allah. This He commandeth you that haply ye may remember.

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا
وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ
ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٣﴾

१५४. और यह (ताकीद की है) कि यह मेरा मार्ग है बिल्कुल सीधा, अतः तुम इसी पर चलो। और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उस के मार्ग से हटा कर बिखेर देंगे। यह बात है जिस की उस ने तुम्हें ताकीद की है, कदाचित् तुम डरते रहो।

154. And (He commandeth you, saying): This is My straight path, so follow it. Follow not other ways, lest ye be parted from His way. This hath He ordained for you, that ye may ward off (evil).

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ
وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ
سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٤﴾

१५५. फिर, हम ने मूसा को 'किताब' दी थी जो सुकर्मी व्यक्ति के लिए पूर्ण (नेमत) और हर एक (ज़रूरी) चीज़ का सविस्तार वर्णन थी और मार्ग-दर्शन और दयालुता, ताकि वे अपने 'रब' से मिलने पर 'ईमान' लायें।

155. Again, We gave the Scripture unto Moses, complete for him who would do good, an explanation of all things, a guidance and a mercy, that they might believe in the meeting with their Lord.

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى
الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ
رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٥﴾

१५६. और यह 'किताब' (अर्थात् क़ुरआन) भी हम ने उतारी है जो बरकत वाली है। तो तुम इस पर चलो और डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

156. And this is a blessed Scripture which We have revealed. So follow it and ward off (evil), that ye may find mercy.

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ
وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٦﴾

१५७. (किताब उतारी कि ऐसा न हो) कि कहीं कह बैठो कि 'किताब' तो हम से पहले के दो गरोहों[४९] पर ही उतारी गई थी, और हम तो उन के पढ़ने-पढ़ाने से बिल्कुल ही बेख़बर थे;

157. Lest ye should say: The Scripture was revealed only to two sects before us, and we in sooth were unaware of what they read;

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ
طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا
عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٧﴾

४८. उत्तम रीति से—जिस से उन्हें कोई हानि न पहुँचे—उन के धन, सम्पत्ति की देख-रेख, प्रबन्ध आदि में कोई दोष नहीं।
४९. अर्थात् 'यहूदी' और 'ईसाई' समुदाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५८. या यह कहने लगो कि यदि हम पर किताब उतारी गई होती, तो हम उन से कहीं अधिक सीधे मार्ग पर होते। तो अब आ गई है तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से एक खुली दलील और मार्ग-दर्शन और दयालुता; तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह की 'आयतों' को झुठला दे, और उन से अपना मुँह मोड़ ले? जो लोग हमारी आयतों से मुँह मोड़ते हैं उन के मुँह मोड़ने के कारण हम उन्हें जल्द बुरी यातना का बदला देंगे।

158. Or lest ye should say: If the Scripture had been revealed unto us, we surely had been better guided than are they. Now hath there come unto you a clear proof from your Lord, a guidance and a mercy; and who doth greater wrong than he who denieth the revelations of Allah, and turneth away from them? We award unto those who turn away from Our revelations an evil doom because of their aversion.

أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتب
لكنا أهدى منهم فقد جاءكم
بينة من ربكم وهدى ورحمة
فمن أظلم ممن كذب بايت الله
وصدف عنها سنجزي الذين
يصدفون عن ايتنا سوء العذاب
بما كانوا يصدفون (١٥٧)

१५९. क्या ये लोग बस इसी बात का इन्तज़ार कर रहे हैं कि इन के सामने फ़िरिश्ते आ जायें, या स्वयं तुम्हारा 'रब' ही आ जाये, या तुम्हारे 'रब' की कोई निशानी आ जाये? जिस दिन तुम्हारे 'रब' की कुछ (विशेष) निशानियाँ[५०] आ जायेंगी फिर किसी ऐसे व्यक्ति का 'ईमान' उस के काम न आयेगा जो पहले से ईमान' न लाया हो, या जिस ने अपने 'ईमान' में कोई भलाई न कमाई हो। कह दो : तुम भी प्रतीक्षा करो! हम भी प्रतीक्षा करते हैं।

159. Wait they, indeed, for nothing less than that the angels should come unto them or thy Lord should come, or there should come one of the portents from thy Lord? In the day when one of the portents from Thy Lord cometh, its belief availeth naught a soul which therefore believed not, nor in its belief earned good (by works). Say: Wait ye! Lo! We (too) are waiting.

هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملئكة
أو يأتي ربك أو يأتي بعض ايت ربك
يوم يأتي بعض ايت ربك لا ينفع
نفسا إيمانها لم تكن امنت من
قبل أو كسبت في إيمانها خيرا
قل انتظروا إنا منتظرون (١٥٨)

१६०. जिन लोगों ने अपने 'दीन' के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और गरोहों में बँट गये, तुम को उन से कुछ काम नहीं। उन का मामला तो बस अल्लाह के हवाले है, वही उन्हें जतायेगा कि वे क्या कुछ करते थे।

160. Lo! As for those who sunder their religion and become schismatics, no concern at all hast thou with them. Their case will go to Allah, Who then will tell them what they used to do.

إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا
لست منهم في شيء إنما أمرهم إلى
الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون (١٥٩)

१६१. जो कोई नेकी ले कर आयेगा उस के लिए उस का दस गुना बदला है, और जो कोई बुराई ले कर आयेगा उसे उस का उतना ही बदला दिया जायेगा;[५१] और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा।

161. Whoso bringeth a good deed will receive tenfold the like thereof, while whoso bringeth an ill-deed will be awarded but the like thereof; and they will not be wronged.

من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها
ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا
مثلها وهم لا يظلمون (١٦٠)

१६२. कहो दो : निश्चय ही मेरे 'रब' ने मुझे सीधा मार्ग दिखाया है, बिल्कुल ठीक 'दीन' इबराहीम का पंथ, जो सब से कट कर एक ही का हो रहा था, और वह 'मुश्रिकों' में से न था।

162. Say: Lo! As for me, my Lord hath guided me unto a straight path, a right religion, the community of Abraham the Upright; who was no idolater.

قل إنني هدىني ربي إلى صرط
مستقيم دينا قيما ملة إبرهيم
حنيفا وما كان من المشركين (١٦١)

५०. अर्थात् वे चमत्कार जिन के प्रकट होने के पश्चात् मनुष्य की परीक्षा का अवसर ही शेष नहीं रहता, जैसे किसी स्पष्ट यातना का आना या परोक्ष की किसी चीज़ का प्रकट हो कर सामने आ जाना आदि।

५१. अर्थात् जितनी बुराई या बदी उस ने की होगी उतना ही उसे दण्ड मिलेगा, उस से अधिक दण्ड किसी को नहीं दिया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६३. कह दो : मेरी 'नमाज़' और मेरी 'क़ुरबानी' मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का 'रब' है।

१६४. उस का कोई शरीक नहीं। इसी का मुझे हुक्म हुआ है, और सब से पहले आत्मार्पण करने वाला[५२] मैं हूँ।

१६५. कहो : क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और 'रब' तलाश करूँ, हालाँकि वही हर चीज़ का 'रब' है? और प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ कमाई करता है उस का वह स्वयं उत्तरदायी है, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता। फिर तुम्हें अपने 'रब' की ओर पलट कर जाना है फिर वह तुम्हें जता देगा जिस में तुम विभेद करते थे।

१६६. वही है जिस ने धरती में तुम्हे 'ख़लीफ़ा' बनाया और तुम में एक के दूसरे पर दर्जे बढ़ाये, ताकि जो कुछ उस ने तुम्हें दिया है उस में तुम्हारी परीक्षा ले। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' सज़ा देने में बहुत तेज़ है, और निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

163. Say: Lo! my worship and my sacrifice and my living and my dying are for Allah, Lord of the Worlds.

164. He hath no partner. This am I commanded, and I am first of those who surrender (unto Him).

165. Say: Shall I seek another than Allah for Lord, when He is Lord of all things? Each soul earth only on its own account, nor doth any laden bear another's load. Then unto your Lord is your return and He will tell you that wherein ye differed.

166. He it is Who hath placed you as viceroys of the earth and hath exalted some of you in rank above others, that He may try you by (the test of) that which He hath given you. Lo! the Lord is swift in prosecution, and lo! He is Forgiving Merciful.

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَ
مَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾
لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا
أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ
كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا
عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ
لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ
الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

५२. अर्थात् 'मुस्लिम'। दे० फ़ुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७–अल-आराफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में एक जगह 'अल–आराफ़' (Heights) वालों का हाल बयान हुआ है,[1] इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम अल–आराफ़ रक्खा गया है। अल–आराफ़ वास्तव में वे उच्च स्थान (Elevated places) हैं जहाँ 'क़ियामत' के दिन उन लोगों को जगह मिलेगी जो अल्लाह के सब से ज़्यादा क़रीबी बन्दे होंगे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरा के अध्ययन से मालूम होता है कि इस सूरा के अवतीर्ण होने का समय लगभग वही है जो सूरा अल-अनआम का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली सूरा के अन्तिम भाग में क़ुरआन के अवतीर्ण होने का उल्लेख किया गया है, इस सूरा का आरम्भ उस मूल उद्देश्य के वर्णन से हुआ है जिस के अन्तर्गत 'किताब' का अवतरण हुआ है।

यह सूरा वास्तव में डरावा और चेतावनी की सूरा है। और यही इस का केन्द्रीय विषय है। इस सूरा में लोगों को इस बात की चेतावनी दी गई कि वे अल्लाह की उस यातना से डरें जो दुनिया में अल्लाह के 'रसूलों' की पुकार पर कान न धरने वाली जातियों पर आती रही है और उस दण्ड से भी डरें जो 'क़ियामत' में ऐसी जातियों को दिया जायेगा।

इस सूरा में बताया गया कि 'क़ियामत' में हर एक से पूछा जायेगा कि उस ने अपनी ज़िम्मेदारियों का हक़ कहाँ तक अदा किया और 'रसूलों' का जो सन्देश उस तक पहुँचा था उस पर उस ने कितना ध्यान दिया। 'रसूलों' से भी पूछा जायेगा कि जिन लोगों के पास अल्लाह ने उन्हें भेजा था उन की ओर से उन्हें क्या जवाब मिला[2]।

प्रस्तुत सूरा में साफ़ तौर पर यह बात बताई गई कि जो व्यक्ति अल्लाह से डरता रहेगा उस के लिए 'आख़िरत' में न तो कोई भय की बात है और न उसे कोई दुःख पहुँचेगा। रहे वे लोग जो अल्लाह की 'आयतों' को झुठलायेंगे और उन के मुक़ाबले में अकड़ेंगे वही 'जहन्नम' की अग्नि में जलेंगे;[3] और उस से कभी छुटकारा न पा सकेंगे।

इस सूरा में विशेष रूप से इस का उल्लेख किया गया कि अल्लाह ही इस का अधिकारी है कि मनुष्य उसे अपना संरक्षक–मित्र बनाये। उसे छोड़ कर 'शैतानों' को अपना मित्र बनाना घोर अन्याय है। 'कुफ़्' और 'शिर्क' के मार्ग पर चल कर मनुष्य किसी और का कुछ नहीं बिगाड़ता बल्कि वह स्वयं अपने साथ और अपनी उस प्रकृति के साथ अन्याय करता है जिसे ले कर वह इस लोक में आया है।

१. दे० आयत ४६-४९।
२. दे० सूरा की शुरू की आयतें (२-९)।
३. दे० आयत ३५-३६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्लाह के इस उपकार का भी इस सूरा में उल्लेख किया गया है कि उस ने हमारे लिए वस्त्र उतारा है जो हमारे लिए शोभनीय वस्तु भी है और हम उस से अपने शरीर के ढकने का काम भी लेते हैं। यदि वह हमारे लिए वस्त्र न उतारता तो हम बिल्कुल नग्न अवस्था में रहते। इस उपयोगी वस्त्र के सम्पर्क से हमें एक और प्रकार के वस्त्र का परिचय दिया गया। वह है ईश-भय और पुण्यता का वस्त्र। जिस प्रकार हमारे कपड़े हमारे शरीर को शोभा हैं और उन से हमारे शरीर की रक्षा होती है, ठीक उसी प्रकार 'तक़वा' और संयम हमारे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन की शोभा हैं और उन से हमारे आध्यात्मिक जीवन की रक्षा होती है। 'इस्लाम' की दृष्टि में आध्यात्मिकता का मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से अटूट सम्बन्ध है। सच्ची आध्यात्मिकता वास्तव में मनुष्य की आन्तरिक और बाह्य शक्तियों के सन्तुलित सम्बन्ध में ही है। सच्चाई को हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता। मनुष्य का जीवन न तो निरुद्देश्य है और न हम उसे अनेक असंगतियों का योग कह सकते हैं। आन्तरिक जगत हो या बाह्य जगत मनुष्य को दोनों जगह सत्य ही का पालन करना चाहिए। मनुष्य आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से जैसा कुछ होता है उसी का वह अपने व्यावहारिक जीवन में परिचय देता है। प्रस्तुत सूरा में लोगों को सचेत किया गया कि उन का 'रब' हर मामले में इन्साफ़ का हुक्म देता है; और इस बात का कि लोग केवल उसी एक के आगे झुकें। अल्लाह ने अच्छी और स्वच्छ चीज़ें अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं; उस ने केवल खुली और छिपी अश्लील बातों को हराम किया है न कि स्वच्छ और शुद्ध चीज़ों को।

इस सूरा में जहाँ मक्का के लोगों को डरावा दिया गया है वहीं 'यहूदियों' को भी सम्बोधित किया गया है। और उन के सामने यह बात खोल कर रख दी गई है कि 'पैग़म्बर' पर 'ईमान' लाने के पश्चात् कपट-नीति अपनाने और उस के आदेशों को सुनने और उन के अनुसार आचरण करने का वचन देने के पश्चात् उस से फिर जाने का क्या परिणाम हुआ करता है। इस सूरा में एक जगह संसार के सभी लोगों को सम्बोधित किया गया है यह इस बात की ओर संकेत है कि अब 'हिजरत' का समय बिल्कुल निकट आ गया है।

सूरा के अन्तिम भाग में 'नबी' सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को इस बारे में कुछ आदेश दिये गये हैं कि वे धर्म-प्रचार का महान् कार्य करते समय किन बातों का ध्यान रक्खें। इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि वे विरोधियों के अत्याचार और उन की हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के बावजूद धैर्य्य और सहनशीलता से काम लें; और अपने कर्तव्य को एक क्षण के लिये भी न भूलें।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-आराफ़
(मक्का में उतरी — 'आयतें' २०६)

THE HEIGHTS
Revealed at Mecca

سورة الأعراف مكية وهي مائتان وست آيات وأربع وعشرون ركوعا

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़० लाम० मीम० साद०[1]।

1.Alif. Lam. Mim. Sad.

الٓمّٓصٓ ①

२. यह एक 'किताब' है जो तुम्हारी ओर उतारी गई है—तो इस से तुम्हारे सीने में कोई संकोच न हो—ताकि तुम इस के द्वारा सचेत करो, और 'ईमान' वालों के लिए याददिहानी हो।

2. (It is) a Scripture that is revealed unto thee (Muhammad)—so let there be no heaviness in thy heart therefrom—that thou mayest warn thereby, and (it is) a Reminder unto believers.

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ②

३. जो कुछ तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उस पर चलो, और उस[2] के सिवा दूसरे संरक्षक मित्रों के पीछे न चलो—तुम लोग कम ही ध्यान देते हो!

3. (Saying): Follow that which is sent down unto you from your Lord, and follow no protecting friends beside Him. Little do ye recollect!

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ③

४. और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने विनष्ट कर दिया! उन पर हमारी यातना रात को सोते समय आ पहुँची, या जब कि वे दोपहर को आराम कर रहे थे।

4. How many a township have We destroyed! As a raid by night, or while they slept at noon, Our terror came unto them.

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ④

५. जब उन पर हमारी यातना आ गई, तो उन से कुछ भी दावा करते न बन पड़ा, सिवाय इस के कि वे बोल उठे : वास्तव में हम ज़ालिम थे।

5. No plea had they, when Our terror came unto them, save that they said: Lo! we were wrong-doers.

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ⑤

६. तो हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे जिन की ओर 'रसूल' भेजे गये थे, और 'रसूलों' से भी हम अवश्य पूछेंगे[3]।

6. Then verily We shall question those unto whom (Our message) hath been sent, and verily We shall question the messengers.

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ⑥

७. फिर हम पूरे ज्ञान के साथ उन्हें सब हाल सुना कर रहेंगे, क्योंकि हम कहीं ग़ायब नहीं थे।

7. Then verily We shall narrate unto them (the event) with knowledge, for verily We were not absent (when it came to pass).

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ⑦

८. और तोल उस दिन ठीक होगी। फिर जिन के पलड़े भारी होंगे, वही सफलता प्राप्त करने वाले होंगे।

8. The weighing on that day is the true (weighing). As for those whose scale is heavy, they are the successful.

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ٍ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑧

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट १।
२. अर्थात् अपने 'रब' को छोड़ कर।
३. अर्थात् 'रसूलों' से भी यह पूछा जायेगा कि उन्हों ने अल्लाह का सन्देश लोगों को ठीक-ठीक पहुँचाया या नहीं; यदि पहुँचाया तो लोगों की ओर से उन्हें क्या उत्तर मिला?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और जिन के पलड़े हल्के होंगे तो यही वे लोग होंगे जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाला इस लिए कि वे हमारी 'आयतों' के साथ ज़ुल्म करते थे।

9. And as for those whose scale is light: those are they who lose their souls because they disbelieved Our revelations.

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا
بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ⑨

१०. और हमने तुम्हें धरती में जगह दी, और हम ने तुम्हारे लिए उस में जीवन-निर्वाह की सामग्री संचित की। तुम कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो !

10. And We have given you (mankind) power in the earth, and appointed for you therein a livelihood. Little give ye thanks!

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا
لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑩

११. और हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत बनाई, फिर 'फ़िरिश्तों' से कहा : आदम के आगे झुक जाओ ! तो 'इबलीस' के सिवा सब झुक गये, वह झुकने वालों में से नहीं हुआ।

11. And We created you, then fashioned you, then told the angels: Fall ye prostrate before Adam! and they fell prostrate, all save Iblis, who was not of those who make prostration.

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ
قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ⑪

१२. कहा : तुझे किस चीज़ ने झुकने से रोका जब कि मैं ने तुझे हुक्म दिया था ?

बोला : मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया है और उसे मिट्टी से पैदा किया है।

12. He said: What hindered thee that thou didst not fall postrate when I bade thee? (Iblis) said: I am better than him. Thou createdst me of fire while him Thou didst create of mud.

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ⑫

१३. कहा : तू यहाँ से नीचे उतर जा ! तुझे हक़ नहीं कि यहाँ घमण्ड करे, निकल दूर हो ! निश्चय ही तू अपमानित लोगों में से है।

13. He said: Then go down hence! It is not for thee to show pride here, so go forth! Lo! thou art of those degraded.

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن
تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ⑬

१४. बोला : मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब कि लोग (मरने के पश्चात्) दोबारा उठाये जायेंगे।

14. He said: Reprieve me till the day when they are raised (from the dead).

قَالَ أَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ⑭

१५. कहा : तुझे मुहलत है।

15. He said: Lo! thou art of those reprieved.

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ⑮

१६. बोला : जैसा तू ने मुझे बदराह किया है, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर इन की घात में बैठूँगा[४]।

16. He said: Now, because Thou hast sent me astray, verily I shall lurk in ambush for them on Thy Right Path.

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ⑯

१७. फिर इन के आगे और पीछे, दायें और बायें, हर ओर से इन पर आक्रमण करूँगा और तू इन में से बहुतों को कृतज्ञ न पायेगा।

17. Then I shall come upon them from before them and from behind them and from their right hands and from their left hands, and Thou wilt not find most of them beholden (unto Thee).

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ
وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ⑰

४. अर्थात् जिस तरह तू ने आदम के आगे झुकने का आदेश दे कर मुझे आज़माइश में डाल दिया, जिस में मैं पूरा नहीं उतर सका और पथ-भ्रष्ट हो गया उसी तरह मैं भी आदम की सन्तान को पथ-भ्रष्ट करूँगा और इस के लिए सारे यत्न कर डालूँगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. कहा : निकल जा यहाँ से, धिक्कारा और ठुकराया हुआ। इन में से जो कोई तेरा कहना मानेगा, मैं अवश्य तुम सब से[५] 'जहन्नम' को भर कर रहूँगा।

18. He said: Go forth from hence, degraded, banished. As for such of them as follow thee, surely I will fill hell with all of you.

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن
تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

१९. और हे आदम ! तू और तेरी पत्नी दोनों 'जन्नत' में रहो, तो जहाँ से चाहो खाओ, परन्तु इस पेड़ के निकट न जाना नहीं तो ज़ालिमों में से हो जाओगे।

19. And (unto man): O Adam! Dwell thou and thy wife in the Garden and eat from whence ye will, but come not nigh this tree lest ye become wrong-doers.

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

२०. फिर 'शैतान' ने दोनों को बहकाया ताकि उन की शर्मगाहों को जो उन दोनों से छिपाई गई थीं उन के सामने खोल दे, और उस ने कहा : तुम्हारे 'रब' ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है तो केवल इस लिए कि कहीं तुम 'फ़रिश्ते' न बन जाओ या तुम अमर न हो जाओ।

20. Then Satan whispered to them that he might manifest unto them that which was hidden from them of their shame, and he said: Your Lord forbade you from this tree only lest ye should become angels or become of the immortals.

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا
مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ
مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا
أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾

२१. और उस ने उन दोनों के आगे क़सम खाई कि मैं तुम्हारा हित चाहने वाला हूँ।

21. And he swore unto them (saying): Lo! I am a sincere adviser unto you.

وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢١﴾

२२. इस तरह धोखा दे कर वह उन दोनों को नीचे ले आया। जब उन्हों ने उस पेड़ का मज़ा चखा तो उन की शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गईं और वे दोनों अपने ऊपर 'जन्नत' के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे।

तब उन के 'रब' ने उन्हें पुकारा : क्या मैं ने तुम दोनों को इस पेड़ से रोका नहीं था और तुम दोनों से कह नहीं दिया था कि 'शैतान' तुम्हारा खुला दुश्मन है ?

22. Thus did he lead them on with guile. And when they tasted of the tree their shame was manifest to them and they began to hide (by heaping) on themselves some of the leaves of the Garden. And their Lord called them (saying): Did I not forbid you from that tree and tell you: Lo! Satan is an open enemy to you?

فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ
عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَنَادَاهُمَا
رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ
وَأَقُل لَّكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٢﴾

२३. दोनों बोले : हमारे 'रब' ! हम ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया। यदि तू ने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की, तो निश्चय ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जायेंगे।

23. They said: Our Lord! We have wronged ourselves. If Thou forgive us not and have not mercy on us, surely we are of the lost!

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ
تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

२४. कहा : उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो। तुम्हारे लिए एक नियत समय तक धरती में ठिकाना और जीवन-निर्वाह की सामग्री है।

24. He said: Go down (from hence), one of you a foe unto the other. There will be for you on earth a habitation and provision for a while.

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ
وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ
إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾

२५. कहा : वहीं तुम्हें जीना, और वहीं तुम्हें मरना है, और उसी में से अन्त में तुम (जीवित कर के) निकाले जाओगे।

25. He said: There shall ye live, and there shall ye die, and thence shall ye be brought forth.

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَ
مِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾

५. अर्थात् तुझ से और तेरा कहना मानने वाले मनुष्यों से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ हे आदम की सन्तान ! हम ने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को ढके, और रक्षा और शोभा का साधन हो, और 'तक़वा' (ईश-भय एवं पुण्यता) का वस्त्र सब से उत्तम है । यह अल्लाह की निशानियों में से है, कदाचित् लोग चेतें ।

26. O Children of Adam! We have revealed unto you raiment to conceal your shame, and splendid vesture, but the raiment of restraint from evil, that is best. This is of the revelations of Allah, that they may remember.

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَٰرِى سَوْءَٰتِكُمْ وَرِيشًا ۖ وَلِبَاسُ ٱلتَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

२७. हे आदम की सन्तान ! कहीं 'शैतान' तुम्हें फ़ितने में न डाल दे[६] जिस तरह उस ने तुम्हारे माता-पिता को 'जन्नत' से निकलवा दिया था और उन के वस्त्र उन से उतरवा दिये थे ताकि उन की शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोले। वह और उस का गरोह तो तुम्हें वहाँ से देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते । निश्चय ही हम ने 'शैतानों' को उन लोगों का संरक्षक मित्र बना दिया है जो 'ईमान' नहीं लाते ।

27. O Children of Adam! Let not Satan seduce you as he caused your (first) parents to go forth from the Garden and tore off from them their robe (of innocence) that he might manifest their shame to them. Lo! he seeth you, he and his tribe, from whence ye see them not. Lo! We have made the devils protecting friends for those who believe not.

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ كَمَآ أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ ٱلْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْءَٰتِهِمَآ ۗ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾

२८. और जब ये लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं : हम ने अपने पूर्वजों को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया है ।

कह दो : अल्लाह कभी अश्लील बातों का हुक्म नहीं देता । क्या तुम अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर ऐसी बात कहते हो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं ?

28. And when they do some lewdness they say: We found our fathers doing it and Allah hath enjoined it on us. Say: Allah, verily, enjoineth not lewdness. Tell ye concerning Allah that which ye know not?

وَإِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً قَالُوا۟ وَجَدْنَا عَلَيْهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

२९. कह दो : मेरे 'रब' ने तो इन्साफ़ का हुक्म दिया है और यह कि 'इबादत' के हर अवसर पर अपना रुख ठीक रक्खो और उसी को पुकारो, 'दीन' को उस के लिए ख़ालिस कर के । जिस तरह उस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया उसी तरह तुम फिर पैदा होगे ।

29. Say: My Lord enjoineth justice. And set your faces upright (toward Him) at every place of worship and call upon Him, making religion pure for Him (only). As He brought you into being, so return ye (unto Him).

قُلْ أَمَرَ رَبِّى بِٱلْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا۟ وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَٱدْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

३०. एक गरोह को उस ने मार्ग दिखा दिया, परन्तु दूसरे गरोह पर गुमराही साबित हो चुकी, क्योंकि उन्हों ने अल्लाह के सिवा 'शैतानों' को अपना संरक्षक मित्र बनाया और समझते हैं कि हम सीधे मार्ग पर हैं ।

30. A party hath He led aright, while error hath just hold over (another) party, for lo! they choose the devils for protecting friends instead of Allah and deem that they are rightly guided

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلضَّلَٰلَةُ ۗ إِنَّهُمُ ٱتَّخَذُوا۟ ٱلشَّيَٰطِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

६. तुम्हें गुमराह न कर दे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. हे आदम की सन्तान ! 'इबादत' के हर अवसर पर अपनी शोभा को धारण कर लो[७] और खाओ पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निस्सन्देह अल्लाह मर्यादाहीन लोगों से प्रेम नहीं करता।

31. O Children of Adam! look to your adornment at every place of worship and eat and drink, but be not prodigal. Lo! He loveth not the prodigals.

يٰبَنِيٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣١

३२. कहो : अल्लाह की उस शोभा[८] को जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली है, और रोज़ी की अच्छी चीज़ों को किस ने 'हराम' कर दिया है ? कह दो : ये सांसारिक जीवन में भी 'ईमान' लाने वाले लोगों के लिए हैं और 'क़ियामत' के दिन तो केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम आयतों को उन लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं।

32. Say: Who hath forbidden the adornment of Allah which He hath brought forth for His bondmen and the good things of His providing? Say: Such, on the Day of Resurrection, will be only for those who believed during the life of the world. Thus do We detail Our revelations for people who have knowledge.

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ
لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ
هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣٢

३३. कह दो : मेरे 'रब' ने जो चीज़ें 'हराम' की हैं वे तो ये हैं : अश्लील कर्म—जो उन में खुले हुये हों वे भी, और जो छुपे हों वे भी——और गुनाह, नाहक़ की ज़्यादती, और यह बात कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिस के लिए उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और यह कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर ऐसी बात कहो जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न हो।

33. Say: My Lord forbiddeth only indecencies, such of them as are apparent and such as are within, and sin and wrongful oppression, and that ye associate with Allah that for which no warrant hath been revealed and that ye tell concerning Allah that which ye know not.

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٣٣

३४. और हर जाति के लिए एक नियत समय है, फिर जब उन का नियत समय आ गया, तो उस से न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं[९]।

34. And every nation hath its term and when its term cometh they cannot put it off an hour nor yet advance (it).

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ
لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٣٤

३५. हे आदम की सन्तान ! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से 'रसूल' आयें जो तुम्हें मेरी 'आयतें' सुनायें, तो जो कोई डरे और अपना सुधार कर ले तो ऐसे लोगों को न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।

35. O Children of Adam! If messengers of your own come unto you who narrate unto you My revelations, then whosoever refraineth from evil and amendeth—there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَ
اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝٣٥

३६. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया और उन के मुक़ाबले में अकड़ गये वही लोग आग ('जहन्नम' में पड़ने) वाले हैं; जहाँ वे सदा रहेंगे।

36. But they who deny Our revelations and scorn them—such are rightful owners of the Fire; they will abide therein.

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٣٦

७. अर्थात् अपने पूरे वस्त्र पहन लिया करो। उपयुक्त और उचित वस्त्र तुम्हारे लिए शोभा और सभ्यता की निशानी है।
८. अर्थात् कपड़े और वस्त्र आदि को।
९. संसार में हर जाति के काम करने के लिए नैतिक नियम के अन्तर्गत एक अवधि नियत होती है। किसी भी जाति या वर्ग के लिए संसार में उसी समय तक काम करने की मुहलत बाक़ी रहती है जब तक कि वह बुराई की उस सीमा को न पहुँच जाये जो अल्लाह की ओर से जातियों और गरोहों के विनाश के लिए नियत की गई है। जब कोई भी जाति बुराई की इस निश्चित सीमा को पहुँच जाती है, तो इस के बाद उसे कुछ मुहलत नहीं दी जाती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ घड़े या उस की 'आयतों' को झुठलाये । ऐसे लोगों को उन का हिस्सा जो लिखा हुआ है मिलेगा यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') उन (की जान) को ग्रस्त लेने के लिए उन के पास आयेंगे, कहेंगे : वे कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे ? कहेंगे : वे सब हम से गुम हो गये । और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वास्तव में वे 'कुफ़्' करने वाले थे ।

37. Who doeth greater wrong than he who inventeth a lie concerning Allah or denieth Our tokens? (For such) their appointed portion of the Book (of destiny) reacheth them till, when Our messengers* come to gather them, they say: Where (now) is that to which ye cried beside Allah? They say: They have departed from us. And they testify against themselves that they were disbelievers.

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم
مِّنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا
يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

३८. कहेगा : 'जिन्नों' और मनुष्यों के जो गरोह तुम से पहले गुज़रे हैं उन्हीं के साथ तुम भी आग में चले जाओ । हर जमात जब दाखिल होगी, तो अपनी बहिन (अपनी जैसी दूसरी जमात) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे, तो उन में से बाद में आने वाला गरोह पहले गरोह के बारे में कहेगा : हमारे 'रब' ! इन्हीं ने हमें गुमराह किया, तो इन्हें आग की दोगुनी यातना दे । कहेगा : हर एक के लिए दोगुनी यातना है, परन्तु तुम जानते नहीं हो[१०] ।

38. He saith: Enter into the Fire among nations of the jinn and humankind who passed away before you. Every time a nation entereth, it curseth its sister (nation) till, when they have all been made to follow one another thither, the last of them saith unto the first of them: Our Lord! These led us astray, so give them double torment of the Fire. He saith: For each one there is double (torment), but ye know not.

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن
قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا
دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا
ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ
لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

३९. और उन में से बाद में आने वाला गरोह कहेगा : अब तो तुम्हें हम पर कोई बड़ाई प्राप्त नहीं है, तो जैसी कुछ कमाई करते रहे हो उस के बदले में अब यातना का मज़ा चखो ।

39. And the first of them saith unto the last of them: Ye were no whit better than us, so taste the doom for what ye used to earn.

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا
مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

४०. निस्सन्देह जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया और उन के मुक़ाबले में अकड़ गये, उन के लिए आकाश (स्वर्ग) के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वे 'जन्नत' में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सूई के नाके में से न गुज़रे[११] ।

और ऐसे ही हम अपराधियों को बदला देते हैं ।

40. Lo! they who deny Our revelations and scorn them, for them the gates of Heaven will not be opened nor will they enter the Garden until the camel goeth through the needle's eye. Thus do We requite the guilty.

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا
عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ
فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

४१. उन के लिए बिछौना भी 'जहन्नम' का होगा, और उन के ऊपर से ओढ़ना भी । इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं ।

41. Theirs will be a bed of Hell, and over them coverings (of Hell). Thus do We requite wrong-doers.

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

१०. हर गुमराह जमात ने अपने बाद आने वालों के लिए गुमराही के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं छोड़ा है । अतः हर एक को दोहरी यातना का मज़ा चखना होगा : एक यातना स्वयं अपनी गुमराही की, और दूसरी दूसरे लोगों को गुमराह करने की ।

११. अर्थात् जिस तरह ऊँट का सूई के नाके से निकलना असम्भव है उसी तरह उन का 'जन्नत' में दाखिल होना भी असम्भव है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये—हम किसी पर उस की समाई से बढ़ कर बोझ नहीं डालते ऐसे ही लोग 'जन्नत' वाले हैं। वे उस में सदैव रहेंगे।

42. But (as far) those who believe and do good works—We tax not any soul beyond its scope—Such are rightful owners of the Garden. They abide therein.

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾

४३. उन के सीने में एक दूसरे के प्रति जो कुछ मन-मुटाव होगा उसे हम दूर कर देंगे। उन के नीचे नहरें बह रही होंगी। और वे कहेंगे: प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें इस का मार्ग दिखाया। और यदि अल्लाह हमें मार्ग न दिखाता, तो हम मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे 'रब' के 'रसूल' वास्तव में हक़ ले कर आये थे। और उन्हें आवाज़ दी जायेगी: यह 'जन्नत' है जिस के तुम उन कर्मों के बदले में वारिस बनाये गये जो तुम करते थे।

43. And We remove whatever rancour may be in their hearts. Rivers flow beneath them. And they say: The praise to Allah, Who hath guided us to this. We could not truly have been led aright if Allah had not guided us. Verily the messengers of our Lord did bring the Truth. And it is cried unto them: This is the Garden. Ye inherit it for what ye used to do.

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ
لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ
لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ
الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

४४. और 'जन्नत' वाले आग वालों को पुकारेंगे कि हम से हमारे 'रब' ने जो कुछ वादा किया था हम ने उसे ठीक पाया। तो तुम से तुम्हारे 'रब' ने जो कुछ वादा किया था क्या तुम ने भी उसे ठीक पाया ? वे कहेंगे: हाँ, इतने में एक पुकारने वाला उन के बीच पुकार उठेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की धिक्कार है,

44. And the dwellers of the Garden cry unto the dwellers of the Fire: We have found that which our Lord promised us (to be) the Truth. Have ye (too) found that which your Lord promised the truth? They say: Yea, verily. And a crier in between them crieth: The curse of Allah is on evil?doers,

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ
قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ
وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ
فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ
عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

४५. जो अल्लाह के रास्ते से रोकते और उसे कज करना चाहते हैं, और जो 'आखिरत' का इन्कार करने वाले हैं।

45. Who debar (men) from the path of Allah and would have it crooked, and who are disbelievers in the Last Day.

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ
يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

४६. और इन दोनों (गरोहों) के बीच एक ओट होगी। और ऊँचाइयों ('अल-आराफ़') पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उस के लक्षण से पहचान रहे होंगे, और वे 'जन्नत' वालों को पुकारेंगे कि तुम पर सलाम हो ! वे अभी उस में दाखिल तो नहीं हुये फिर भी आशा करते हैं[१२]।

46. Between them is a veil. And on the Heights are men who know them all by their marks. And they call unto the dwellers of the Garden: Peace be unto you! They enter it not although they hope (to enter).

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ
يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰىهُمْ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ
اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾

४७. और जब उन की निगाहें आग ('जहन्नम') वालों की ओर फिरेंगी, तो कहेंगे: हमारे 'रब' ! हमें ज़ालिम लोगों में से न करना।

47. And when their eyes are turned toward the dwellers of the Fire, they say: Our Lord! Place us not with the wrong-doing folk.

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ
النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

४८. और ये 'आराफ़' वाले कुछ लोगों को जिन्हें उन के लक्षण से पहचानते होंगे पुकार कर कहेंगे: तुम्हारे जत्थे तुम्हारे कुछ काम न आ सके और न वह (काम आ सका) जो तुम अपने को बड़ा समझते थे।

48. And the dwellers on the Heights call unto men whom they know by their marks, (saying): What did your multitude and that in which ye took your pride avail you?

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ
بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

१२. कुछ लोगों को अल्लाह के यहाँ बड़ा ऊँचा पद प्राप्त होगा वे अल्लाह के बहुत ही क़रीबी बन्दे होंगे। जन्नती लोगों को देख कर पहचान लेंगे कि ये 'जन्नत' में जाने वाले लोग हैं; हालाँकि अभी वे 'जन्नत' में दाखिल नहीं हुये होंगे; हाँ 'जन्नत' में पहुँचने की आशा वे अवश्य कर रहे होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९. क्या ये ('जन्नत' वाले) वही लोग नहीं हैं जिन के बारे में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह इन को अपनी दयालुता में से कुछ भी न देगा? (उन्हें हुक्म होगा) : 'जन्नत' में दाखिल हो जाओ। तुम्हें न तो कोई भय होगा और न तुम दुःखी होगे।

49. Are these they of whom ye swore that Allah would not show them mercy? (Unto them it hath been said): Enter the Garden. No fear shall come upon you nor is it ye who will grieve.

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ
بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ
وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

५०. और आग (जहन्नम) वाले 'जन्नत' वालों को पुकारेंगे कि थोड़ा पानी हम पर डाल दो या जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी है उस में से कुछ दे दो। वे कहेंगे : निस्सन्देह ये दोनों चीज़ें अल्लाह ने 'काफ़िरों' पर हराम कर दी हैं,

50. And the dwellers of the Fire cry out unto the dwellers of the Garden: Pour on us some water or some of that wherewith Allah hath provided you. They say: Lo! Allah hath forbidden both to disbelievers (in His guidance),

وَنَادَىٰ أَصْحَٰبُ النَّارِ أَصْحَٰبَ الْجَنَّةِ
أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا
عَلَى الْكَٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾

५१. जिन्हों ने अपने धर्म को खेल-तमाशा बना लिया था, और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाले रक्खा। तो आज हम भी इन्हें भुला देंगे जिस तरह ये इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और हमारी 'आयतों' का इन्कार करते रहे।

51. Who took their religion for a sport and pastime, and whom the life of the world beguiled. So this day We have forgotton them even as they forgot the meeting of this Day and as they used to deny Our tokens.

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَ
غَرَّتْهُمُ الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ
نَنْسَىٰهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا
وَمَا كَانُوا بِـَٔايَٰتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾

५२. और हम इन के पास एक 'किताब' ले आये हैं जिसे हम ने ज्ञानपूर्वक खोल-खोल कर बयान कर दिया है,[१३] वह 'ईमान' वालों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता है।

52. Verily We have brought them a Scripture which We expound with knowledge, a guidance and a mercy for a people who believe.

وَلَقَدْ جِئْنَٰهُمْ بِكِتَٰبٍ فَصَّلْنَٰهُ عَلَىٰ
عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

५३. क्या ये लोग इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उस की वास्तविकता[१४] ज़ाहिर हो जाये? जिस दिन उस की वास्तविकता सामने आ जायेगी, तो वे लोग जो इस से पहले उसे भूले हुए थे कहेंगे : वास्तव में हमारे 'रब' के 'रसूल' हक़ ले कर आये थे! तो क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश कर दें? या हमें फिर (सांसारिक जीवन की ओर) वापस भेज दिया जाये कि जो-कुछ हम करते थे उस के बदले दूसरे काम करें। उन्हों ने अपने आप को घाटे में डाल दिया, और जो झूठ वे गढ़ते थे वह सब उन से गुम हो गया।

53. Await they aught save the fulfilment thereof? On the day when the fulfilment thereof cometh, those who were before forgetful thereof will say: The messengers of our Lord did bring the Truth! Have we any intercessors, that they may intercede for us? Or can we be returned to life on earth, that we may act, otherwise than we used to act? They have lost their souls, and that which they devised hath failed them.

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي
تَأْوِيلُهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ
قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ
لَنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ
فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾ ع

१३. अर्थात् उस में विस्तारपूर्वक बता दिया गया है कि सच्चाई क्या है; संसार में मनुष्य किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करे, जीवन का वास्तविक मार्ग कौन-सा है। फिर ये सब बातें अटकल और अनुमान पर नहीं, पूर्ण ज्ञान पर आधारित हैं।

१४. अर्थात् 'आखिरत' की वास्तविकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. वास्तव में तुम्हारा 'रब' अल्लाह है जिस ने आकाशों और धरती को छः दिनों में[१५] पैदा किया, और फिर राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ[१६]। वह रात को दिन के साथ ढकता है, जो इस का पीछा करने को तेज़ी में है और सूरज और चाँद और तारों को ऐसे तौर पर पैदा किया कि वे उस के हुक्म से काम में लगे हुए हैं। जान लो! उसी की सृष्टि है और हुक्म भी। अल्लाह, सारे संसार का 'रब' बड़ी बरकत वाला है।

54. Lo! your Lord is Allah Who created the heavens and the earth in six Days, then mounted He the Throne. He covereth the night with the day, which is in haste to follow it, and hath made the sun and the moon and the stars subservient by His command. His verily is all creation and commandment. Blessed be Allah, the Lord of the Worlds!

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ
يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَ
النُّجُومَ مُسَخَّرٰتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْأَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ﴿٥٤﴾

५५. अपने 'रब' को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो। निस्सन्देह वह हद से आगे बढ़ने वालों से प्रेम नहीं करता।

55. (O mankind!) Call upon your Lord humbly and in secret. Lo! He loveth not aggressors.

اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً إِنَّهُ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

५६. और धरती में उस के सुधार के पश्चात् फ़साद न मचाओ, और भय और लालसा से उसे पुकारो। निस्सन्देह अल्लाह की दयालुता उत्तम-कारों के समीप है।

56. Work not confusion in the earth after the fair ordering (thereof), and call on him in fear and hope. Lo! the mercy of Allah is nigh unto the good.

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلٰحِهَا
وَادْعُوهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

५७. और वही है जो अपनी दयालुता (वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को खुशखबरी के रूप में भेजता है, यहाँ तक कि जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं, तो उन्हें हम किसी निर्जीव भूमि की ओर चला देते हैं, फिर वहाँ पानी बरसाते हैं, फिर उस से तरह-तरह के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुरदों को निकाल खड़ा करेंगे। (ये 'आयतें' इस लिए बयान की जाती हैं) कदाचित् तुम चेतो।

57. And He it is Who sendeth the winds as tidings heralding His mercy, till, when they bear a cloud heavy (with rain), We lead it to a dead land, and then cause water to descend thereon and thereby bring forth fruits of every kind. Thus bring We forth the dead. Haply ye may remember.

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتّٰى إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا
ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا
بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

१५. छः दिन का तात्पर्य छः युग (Six Periods) है।

१६. हम ने यहाँ 'अर्श' शब्द का अनुवाद राज्य-सिंहासन किया है। अर्श या सिंहासन पर विराजमान होने की वास्तविकता को विस्तार-पूर्वक समझना हमारे लिए अत्यन्त कठिन है। यह भी सम्भव है कि अल्लाह ने किसी विशेष स्थान को अपने विशाल राज्य का केन्द्र ठहराया हो; और वहीं से अल्लाह की ओर से सम्पूर्ण विश्व में शक्ति और सत्ता की व्याप्ति होती हो; और सारे विश्व के प्रबन्ध का सम्बन्ध भी वहीं से हो। और यह भी हो सकता है कि 'अर्श' से अभिप्रेत राजसत्ता एवं शासन हो। और उस पर विराजमान होने का तात्पर्य यह हो कि अल्लाह केवल विश्व का निर्माता ही नहीं है बल्कि वास्तव में वही इस सम्पूर्ण जगत के कारखाने का चलाने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. और जो भूमि अच्छी है उस के पेड़-पौधे अपने 'रब' के हुक्म से निकलते हैं; और जो भूमि ख़राब होती है, उस से निकम्मी पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता[१७]। इसी तरह हम 'आयतों' को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं जो कृतज्ञता दिखलाने वाले हैं।

58. As for the good land, its vegetation cometh forth by permission of its Lord; while as for that which is bad, only evil cometh forth (from it). Thus do We recount the tokens for people who give thanks.

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

५९. [१८]हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर भेजा, उस ने कहा: हे मेरी जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक भारी दिन की यातना से डरता हूँ।

59. We sent Noah (of old) unto his people, and he said: O my people! Serve Allah. Ye have no other God save Him. Lo! I fear for you the retribution of an Awful Day.

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾

६०. उस की जाति के सरदारों ने कहा: हम तो देख रहे हैं कि तुम खुली गुमराही में पड़े हुये हो।

60. The chieftains of his people said: Lo! we see thee surely in plain error.

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٦٠﴾

६१. कहा: हे मेरी जाति वालो! मैं किसी गुमराही में नहीं हूँ, बल्कि मैं सारे संसार के 'रब' का एक 'रसूल' हूँ।

61. He said: O my people! There is no error in me, but I am a messenger from the Lord of the World.

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾

६२. तुम्हें अपने 'रब' के सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हित चाहता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

62. I convey unto you the messages of my Lord and give good counsel unto you, and know from Allah that which ye know not.

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

६३. क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे 'रब' की याददिहानी आई, ताकि तुम्हें सचेत कर दे और ताकि तुम डरने लगो, और ताकि तुम पर दया की जाये?

63. Marvel ye that there should come unto you a Reminder from your Lord by means of a man among you, that he may warn you and that ye may keep from evil, and that haply ye may find mercy.

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

६४. तो उन्हों ने उसे झुठलाया, तो हम ने उसे और जो लोग उस के साथ नौका में थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया था उन्हें हम ने डुबा दिया। निश्चय ही वे अन्धे लोग थे।

64. But they denied him, so We saved him and those with him in the ship, and We drowned those who denied Our tokens. Lo! they were blind folk.

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾

१७. यहाँ उपमा के रूप में यह बात समझाई गई है कि जिस तरह वर्षा से निर्जीव भूमि में जान आ जाती है उसी तरह 'नुबूवत' की बरकतों से लोगों को नवीन जीवन मिलता है। लोग अल्लाह से डरने वाले बन जाते हैं। परन्तु जिस तरह वर्षा केवल उपजाऊ भूमि के लिए ही लाभदायक सिद्ध होती है; कंकरीली पथरीली भूमि को उस से विशेष लाभ नहीं होता उसी तरह 'नुबूवत' की बरकतों से भी केवल वही लोग लाभ उठाते हैं जो नेक और शुद्ध प्रकृति वाले हों।

१८. यहाँ से ऐतिहासिक दृष्टान्त प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि किस तरह प्रत्येक युग में 'नबियों' के आने पर लोग दो गरोहों में बँटते रहे हैं: जिन में से एक गरोह उन लोगों का था जिन्हों ने 'नूबुवत' की बरकतों से पूरा लाभ उठाया; और दूसरा गरोह उन दुराचारियों का था जिन्हों ने 'नबियों' की बात नहीं मानी; और अल्लाह के मार्ग-दर्शन और उस की शिक्षा की अमृत-धार से सर्वथा वंचित रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५. और 'आद' की ओर उनके भाई हूद को भेजा। उस ने कहा : हे मेरा जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं ?

६६. उस की जाति के सरदारों ने, जिन्हों ने 'कुफ़्' का मार्ग अपनाया था, कहा : हम तो तुम्हें देखते हैं कि मूढ़ता में ग्रस्त हो, और निश्चयपूर्वक हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

६७. उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो! मुझ में कुछ भी मूढ़ता नहीं, बल्कि मैं सारे संसार के 'रब' का एक 'रसूल' हूँ।

६८. तुम्हें अपने 'रब' के सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हितैषी विश्वसनीय हूँ।

६९. क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे 'रब' की यादहिानी आई ताकि तुम्हें सचेत कर दे? और याद करो जब अल्लाह ने नूह की जाति के बाद तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया, और डील-डौल में तुम्हें अधिक विशालता दी,[१९] तो अल्लाह के चमत्कारों को याद रक्खो, कदाचित् तुम सफल हो जाओ।

७०. बोले : क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले अल्लाह ही की 'इबादत' करने लगें, और उन्हें छोड़ दें जिन्हें हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं? यदि तुम सच्चे हो तो जिस की हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले आओ।

७१. उस ने कहा : तुम पर तुम्हारे 'रब' की फिटकार पड़ गई और प्रकोप टूट पड़ा। क्या तुम मुझ से उन नामों के लिए झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, जिन के लिए अल्लाह ने कोई सनद नहीं उतारी? अच्छा तो (आने वाले समय की) तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।

65. And unto (the tribe of) A'ad (We sent) their brother, Hud. He said: O my people! Serve Allah. Ye have no other God save Him. Will ye not ward off (evil)?

66. The chieftains of his people, who were disbelieving, said: Lo! we surely see thee in foolishness and lo! we deem thee of the liars.

67. He said: O my people! There is no foolishness in me, but I am a messenger from the Lord of the Worlds.

68. I convey unto you the messages of my Lord and am for you a true adviser.

69. Marvel ye that there should come unto you a Reminder from your Lord by means of a man among you, that he may warn you? Remember how He made you viceroys after Noah's folk, and gave you growth of stature. Remember (all) the bounties of your Lord, that haply ye may be successful.

70. They said: Hast come unto us that we should serve Allah alone, and forsake what our fathers worshipped? Then bring upon us that wherewith thou threatenest us if thou art of the truthful!

71. He said: Terror and wrath from your Lord have already fallen on you. Would ye wrangle with me over names which ye have named, ye and your fathers, for which no warrant from Allah hath been revealed? Then await (the consequence), lo! I (also) am of those awaiting (it).

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ
فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾

قَالَ يَٰقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي
رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٦٧﴾
أُبَلِّغُكُمْ رِسَٰلَٰتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ
أَمِينٌ ﴿٦٨﴾
أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ
عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا
إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ
نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً ۖ
فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَ
نَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا
تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿٧٠﴾

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ
وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَٰدِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ
سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ
بِهَا مِن سُلْطَٰنٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم
مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٧١﴾

१९. अर्थात् तुम्हें अधिक हृष्ट-पुष्ट किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. फिर हम ने अपनी दया से हूद को और उन लोगों को जो उस के साथ थे बचा लिया, और उन लोगों की जड़ काट कर रख दी जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया था और 'ईमान' वाले न थे।

72. And We saved him and those with him by a mercy from Us, and We cut the root of those who denied Our revelations and were not believers.

فَأَنجَيْنَٰهُ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا
وَقَطَعْنَا دَابِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا
وَمَا كَانُوا۟ مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾ ع

७३. और 'समूद' की ओर उस के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: मेरी जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से एक खुली दलील आ चुकी है। यह अल्लाह की ऊँटनी, तुम्हारे लिए एक निशानी है; तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाये, और तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो एक दु:ख देने वाली यातना तुम्हें आ लेगी।

73. And to (the tribe of) Thamud (We sent) their brother Salih. He said: O my people! Serve Allah. Ye have no other God save Him. A wonder from your Lord hath come unto you. Lo! this is the camel of Allah, a token unto you; so let her feed in Allah's earth, and touch her not with hurt lest painful torment seize you.

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۗ قَالَ
يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ
هَٰذِهِۦ نَاقَةُ ٱللَّهِ لَكُمْ ءَايَةً ۖ فَذَرُوهَا
تَأْكُلْ فِىٓ أَرْضِ ٱللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

७४. और वह समय याद करो जब अल्लाह ने 'आद' के बाद तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया और तुम्हें धरती में ठिकाना दिया। तुम उस के समतल मैदानों में महल खड़े करते हो और पहाड़ों को काट-छाँट कर उन से घर बनाते हो। तो अल्लाह के चमत्कारों को याद रक्खो और धरती में फ़साद मचाते न फिरो।

74. And remember how He made you viceroys after A'ad and gave you station in the earth. Ye choose castles in the plains and hew the mountains into dwellings. So remember (all) the bounties of Allah and do no evil, making mischief in the earth.

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ
عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن
سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ ٱلْجِبَالَ
بُيُوتًا ۖ فَٱذْكُرُوٓا۟ ءَالَآءَ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟
فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾

७५. उस की जाति के सरदार, जो बड़े बने हुये थे, कमज़ोर लोगों से जो उन में से 'ईमान' ला चुके थे, कहने लगे: क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने 'रब' का 'रसूल' है? उन्हों ने कहा: निश्चय ही जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है हम उस पर 'ईमान' रखते हैं।[२०]

75. The chieftains of his people, who were scornful, said unto those whom they despised, unto such of them as believed: Know ye that Salih is one sent from his Lord? They said: Lo! in that wherewith he hath been sent we are believers.

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ
لِلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ
أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ
قَالُوٓا۟ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

७६. उन लोगों ने कहा जो अपनें को बड़ा समझते थे: जिस पर तुम 'ईमान' लाये हो हम तो उसे नहीं मानते।

76. Those who were scornful said: Lo! in that which ye believe we are disbelievers.

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا بِٱلَّذِىٓ ءَامَنتُم
بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿٧٦﴾

२०. अर्थात् जो सच्चाई और सन्देश दे कर उसे उस के 'रब' ने भेजा है हम उसे मानते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. फिर उन्हों ने उस ऊँटनी को उस की कूँचे काट कर मार डाला और पूरी ढिठाई के साथ अपने 'रब' के हुक्म की अवहेलना की, और कहने लगे : हे सालेह ! तू हमें जिस की धमकी देता है, यदि तू 'रसूलों' में से है, तो उसे हम पर ले आ।

77. So they hamstrung the she-camel, and they flouted the commandment of their Lord, and they said: O Salih! Bring upon us that thou threatenest if thou art indeed of those sent (from Allah).

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
وَقَالُوا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧٧

७८. तो ऐसा हुआ कि एक दहला देनें वाली आपत्ति नें उन्हें आ लिया, और वे अपने घर में औंधे पड़े रह गये।

78. So the earthquake seized them, and morning found them prostrate in their dwelling-place.

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝٧٨

७९. और सालेह उन के यहाँ से यह कहता हुआ फिरा : हे मेरी जाति वालो ! मैं ने तुम्हें अपनें 'रब' का सन्देश पहुँचा दिया और मैं ने तुम्हारा हित चाहा, परन्तु तुम हित चाहने वालों को पसन्द नहीं करते।

79. And Salih turned from them and said: O my people! I delivered my Lord's message unto you and gave you good advice, but ye love not good advisers.

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ
رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَا
تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ۝٧٩

८०. और लूत को भेजा जब कि उस ने अपनी जाति वालों से कहा : क्या तुम वह अश्लील कर्म करते हो जिसे दुनिया में तुम से पहले किसी ने नहीं किया ?

80. And Lot! (Remember) when he said unto his folk: Will ye commit abomination such as no creature ever did before you?

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ أَتَأْتُونَ
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِينَ ۝٨٠

८१. तुम कामेच्छा के साथ स्त्रियों के सिवा पुरुषों के पास आते हो। बल्कि तुम मर्यादाहीन लोग हो।

81. Lo! ye come with lust unto men instead of women. Nay, but ye are wanton folk.

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ
دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝٨١

८२. और उस की जाति वालों का उत्तर इस के सिवा और कुछ न था कि निकाल बाहर करो इन लोगों को अपनी बस्ती से, ये बड़े पाक-साफ़ बनते हैं।

82. And the answer of his people was only that they said (one to another): Turn them out of your township. They are folk, forsooth, who keep pure.

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُونَ ۝٨٢

८३. तो हम नें लूत को और उस के लोगों को बचा लिया, सिवाय उस की स्त्री के कि वह पीछे रह जानें वालों में थी।

83. And We rescued him and his household, save his wife, who was of those who stayed behind.

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَهْلَهٗ إِلَّا امْرَأَتَهٗ ۖ كَانَتْ
مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝٨٣

८४. और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक वर्षा की, तो देखो कि उन अपराधियों का क्या परिणाम हुआ।

84. And We rained a rain upon them. See now the nature of the consequence for evildoers!

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝٨٤ ع

Ganesh Varṅi Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८५. और 'मदयन' की ओर हम नें उन के भाई शुऐब को भेजा । उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की 'इबादत' करो उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं । तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की खुली दलील आ चुकी है; तो तुम पूरा-पूरा नापो और तोलो और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो, और धरती में फ़साद न मचाओ जब कि उस का सुधार हो चुका हो । यदि तुम 'ईमान' वाले हो, तो यही तुम्हारे लिए अच्छा होगा ।

85. And unto Midian (We sent) their brother, Shu'eyb. He said: O my people! Serve Allah. Ye have no other God save Him. Lo! a clear proof hath come unto you from your Lord; so give full measure and full weight and wrong not mankind in their goods, and work not confusion in the earth after the fair ordering thereof. That will be better for you, if ye are believers.

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

८६. और हर मार्ग पर (बटमार बन कर) न बैठो कि जो कोई अल्लाह पर 'ईमान' रखता हो उसे धमकियाँ दो और अल्लाह के मार्ग से रोकनें लगो, और उसे टेढ़ा करने में लग जाओ । और याद करो जब कि तुम थोड़े थे फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा कर दिया । और देखो कि फ़साद मचाने वालों का क्या परिणाम हुआ ।

86. Lurk not on every road to threaten (wayfarers), and to turn away from Allah's path him who believeth in Him, and to seek to make it crooked. And remember, when ye were but few, how He did multiply you. And see the nature of the consequence for the corrupters!

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

८७. और यदि तुम में एक गरोह उस चीज़ पर जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ 'ईमान' लाया है, और दूसरा गरोह 'ईमान' नहीं लाया, तो धैर्य्य से काम लो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे । और वह सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है ।

87. And if there is a party of you which believeth in that wherewith I have been sent, and there is party which believeth not, then have patience until Allah judge between us. He is the best of all who deal in judgment.

وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

*८८. उस की जाति के सरदारों ने, जो अपने को बड़ा समझते थे, कहा : हे शुऐब ! हम तुझे और उन लोगों को जो तेरे साथ 'ईमान' लाये हैं, अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे या तो तुम्हें हमारे पन्थ में लौट आना होगा । उस ने कहा : क्या हम अनिष्ट समझते हों तो भी ?

88. The chieftains of his people, who were scornful, said: Surely we will drive thee out, O Shu'eyb, and those who believe with thee, from our township, unless ye return to our religion. He said: Even though we hate it?

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

८९. हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे यदि तुम्हारे पन्थ में पलट आयें जब कि अल्लाह हमें उस से छुटकारा दे चुका है । हमारे लिए यह सम्भव नहीं कि उस में पलट कर जावें यह और बात है कि अल्लाह जो हमारा 'रब' है वही ऐसा चाहे । हमारा 'रब' ज्ञान से हर चीज़ का आच्छादन किए हुए है । हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है । हमारे 'रब' ! हमारे और हमारी जाति वालों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दे, और तू सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है ।

89. We should have invented a lie against Allah if we returned to your religion after Allah hath rescued us from it. It is not for us to return to it unless Allah should (so) will. Our Lord comprehendeth all things in knowledge. In Allah do we put our trust. Our Lord! Decide with truth between us and our folk, for Thou art the best of those who make decision.

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾

* यहाँ से नवाँ पारा (1X Part) शुरू होता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९०. और उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने 'कुफ़्' अपनाया था, कहने लगे : यदि तुम शुऐब के अनुयायी हुये, तो निश्चय ही तुम घाटे में पड़ जाओगे[२१]।

९१. तो ऐसा हुआ कि एक दहला देने वाली आपत्ति ने उन्हें आ लिया और वे अपने घर में औंधे पड़े रह गये।

९२. जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था उन की दशा यह हुई मानो वे कभी यहाँ बसे ही नहीं थे। जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था, वही घाटे में पड़े।

९३. तब वह उन के यहाँ से यह कहता हुआ फिरा कि हे मेरी जाति वालो! मैं ने अपने 'रब' के सन्देश तुम्हें पहुँचा दिये और मैं ने तुम्हारा हित चाहा। फिर मैं 'काफ़िर' लोगों पर क्यों अफ़सोस करूँ।

९४. और ऐसा कभी नहीं हुआ कि हम ने किसी बस्ती में कोई 'नबी' भेजा हो और वहाँ के लोगों को तंगी और मुसीबत में न डाला हो इस ध्येय से ताकि वे (हमारे आगे) गिड़गिड़ायें।

९५. फिर हम ने उन की दुरावस्था को खुशहाली से बदल दिया यहाँ तक कि वे खूब फले-फूले और कहने लगे कि इस तरह के दुःख और सुख तो हमारे पूर्वजों को भी पहुँच चुके हैं। तो अचानक हम ने उन्हें धर पकड़ा, जब कि वे बेखबर थे।

९६. यदि बस्तियों के लोग 'ईमान' लाते और डरते तो हम उन पर आकाश और धरती की बरकतों को खोल देते। परन्तु उन्हों ने तो झुठलाया, तो जो कुछ कमाई वे करते थे उस के बदले में मैं ने उन्हें पकड़ लिया।

९७. तो क्या बस्तियों के लोग इस से निश्चिन्त हैं कि हमारी यातना रात में उन पर आ जाये जब कि वे पड़े सो रहे हों?

90. But the chieftains of his people, who were disbelieving, said: If ye follow Shu'eyb, then truly ye shall be the losers.

91. So the earthquake seized them and morning found them prostrate in their dwelling-place.

92. Those who denied Shu'eyb, became as though they had not dwelt there. Those who denied Shu'eb they were the losers.

93. So he turned from them and said: O my people! I delivered my Lord's messages unto you and gave you good advice; then how can I sorrow for a people that rejected (truth)?

94. And We sent no prophet unto any township but We did afflict its folk with tribulation and adversity that haply they might grow humble.

95. Then changed We the evil plight for good till they grew affluent and said: Tribulation and distress did touch our fathers. Then We seized them unawares, when they perceived not.

96. And if the people of the townships had believed and kept from evil, surely We should have opened for them blessings from the sky and from the earth. But (unto every messenger) they gave the lie, and so We seized them on account of what they used to earn.

97. Are the people of the townships then secure from the coming of Our wrath upon them as a night-raid while they sleep?

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝٩٠

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝٩١

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا
فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا
هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝٩٢

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ
رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ
آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝٩٣

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا
أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ۝٩٤

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ
حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا
الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٩٥

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا
لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَ
الْأَرْضِ وَلَٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝٩٦

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝٩٧

२१. अर्थात इस में तो हमें सांसारिक घाटा ही दिखाई देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८. या बस्तियों के लोग इस से निश्चिन्त हैं कि हमारी यातना दिन चढ़े उन पर आ जाये जब कि वे खेल रहे हों[२२]।

९९. तो क्या ये लोग अल्लाह की चाल (छिपी तदबीर) से निश्चिन्त हो गये हैं? तो अल्लाह की चाल से तो केवल घाटे में पड़ने वाले लोग ही निश्चिन्त होते हैं।

98. Or are the people of the townships then secure from the coming of Our wrath upon them in the day-time while they play?

99. Are they then secure from Allah's scheme? None deemeth himself secure from Allah's scheme save folk that perish.

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾
أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ
إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

१००. क्या उन लोगों को जो धरती के—उस के (पूर्व) अधिकारियों के बाद—वारिस होते हैं यह सूझ नहीं आई कि यदि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर धर लें? और हम उन के दिलों पर ठप्पा लगा देते हैं फिर वे कुछ नहीं सुनते।

१०१. ये हैं बस्तियां जिन के क़िस्से हम तुम्हें सुनाते हैं। और उन में उन के 'रसूल' खुली निशानियां ले कर आये, परन्तु वे ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों उस पर 'ईमान' ले आयें। इसी तरह अल्लाह 'काफ़िरों' के दिलों पर ठप्पा लगा देता है[२३]।

१०२. और हम ने उन के बहुतों में कोई वचन का निर्वाह नहीं पाया बल्कि उन के बहुतों को तो हम ने अवज्ञाकारी ही पाया।

१०३. फिर उन के बाद हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, परन्तु उन्हों ने उन (निशानियों) के साथ ज़ुल्म किया, तो देखो उन फ़सादियों का क्या परिणाम हुआ!

100. Is it not an indication to those who inherit the land after its people (who thus reaped the consequence of evil doing) that, if We will, We can smite them for their sins and print upon their hearts so that they hear not?

101. Such were the townships. We relate some tidings of them unto thee (Muhammad). Their messengers verily came unto them with clear proofs (of Allah's Sovereignty), but they could not believe because they had before denied. Thus doth Allah print upon the hearts of disbelievers (that they hear not).

102. We found no (loyalty to any) covenant in most of them. Nay, most of them We found wrong-doers.

103. Then, after them, We sent Moses with Our tokens unto Pharaoh and his chiefs, but they repelled them. Now, see the nature of the consequence for the corrupters!

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ
مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ
بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾
تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ
وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ
قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ
الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾
وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ
وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

१०४. और मूसा ने कहा: हे फ़िरऔन! निश्चय ही मैं सारे संसार के 'रब' का 'रसूल' हूँ,

१०५. इस पर क़ायम हूँ कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से खुली दलील ले कर आया हूँ, तो तू 'इसराईल' की सन्तान को हमारे साथ भेज दे[२४]।

104. Moses said: O Pharaoh! Lo! I am a messenger from the Lord of the Worlds,

105. Approved upon condition that I speak concerning Allah nothing but the truth. I come unto you (lords of Egypt) with a clear proof from your Lord. So let the Children of Israel go with me.

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾
حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا
الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾

२२. अर्थात् दुनिया के कामों तथा दूसरे निरर्थक कार्यों में लगे हों। वास्तव में 'काफ़िरों' के सारे कामों को खेल-तमाशे से अधिक कुछ महत्व प्राप्त नहीं। उन के कामों का कोई वास्तविक अर्थ नहीं होता। वे संसार के क्षणिक आनन्द को ही जीवन का अन्तिम ध्येय समझते हैं।

२३. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट ४।

२४. हज़रत मूसा अ० ने फ़िरऔन को जहाँ अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया वहीं उस से यह भी कहा कि वह 'बनी इसराईल' को—जिसे उस ने अपना ग़ुलाम बना रक्खा था—रिहा कर दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६. (फ़िरऔन ने) कहा : यदि तू कोई निशानी ले कर आया है, तो उसे पेश कर, यदि तू सच्चे लोगों में से है।

106. (Pharaoh) said: If thou comest with a token, then produce it, if thou are of those who speak the truth.

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٦﴾

१०७. तब उस ने अपनी लाठी (धरती पर) डाल दी क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर था;

107. Then he flung down his staff and lo! it was a serpent manifest;

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

१०८. और उस ने अपना हाथ बाहर निकाला, तो देखने वालों ने क्या देखा कि वह चमक रहा है।

108. And he drew forth his hand (from his bosom), and lo! it was white for the beholders.

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٠٨﴾

१०९. फ़िरऔन की जाति के सरदार कहने लगे : निश्चय ही यह बड़ा जानकार जादूगर है,

109. The chiefs of Pharaoh's people said: Lo! this is some knowing wizard.

قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾

११०. तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल देना चाहता है, तो अब तुम क्या कहते हो ?

110. Who would expel you from your land. Now what do ye advise?

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

१११. उन्हों ने कहा : इसे और इस के भाई (हारून) को प्रतीक्षा में रख और इकट्ठा करने वालों को नगरों मे भेज दे

111. They said (unto Pharaoh): Put him off (a while)—him and his brother—and send into the cities summoners,

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾

११२. कि वे हर जानकार जादूगर को तेरे पास ले आयें[२५]।

112. To bring each knowing wizard unto thee.

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

११३. और (ऐसा ही हुआ) जादूगर फ़िरऔन के पास आ गये। उन्हों ने कहा : यदि हम जीत गये तो हमें अवश्य इस का बदला मिलेगा।

113. And the wizards came to Pharaoh, saying: Surely there will be a reward for us if we are victors.

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾

११४. कहा : हां, और निश्चय ही तुम क़रीबी लोगों में से हो जाओगे।

114. He answered: Yea, and surely ye shall be of those brought near (to me).

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

११५. उन्हों ने कहा : हे मूसा ! या तो तुम (अपना अंछर) फेंको या हम फेंकें।

115. They said: O Moses. Either throw (first) or let us be the first throwers.

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

११६. उस ने कहा : तुम ही फेंको। तो उन्हों ने फेंका तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें डरा दिया, और उन्हों ने बहुत बड़ा जादू दिखाया।

116. He said: Throw! And when they threw they cast a spell upon the people's eyes, and overawed them, and produced a mighty spell.

قَالَ أَلْقُوا ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

११७. और हम ने मूसा की ओर 'वह्य' की कि अपनी लाठी (धरती पर) डाल दो ! फिर क्या था वह उन के रचे हुये स्वाँग को निगलने लगी।

117. And We inspired Moses (saying): Throw thy staff! And lo! it swallowed up their lying show.

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

२५. ताकि वह मूसा को अपने जादू के ज़ोर से हरा दें और जनता मूसा के किसी चक्कर में न पड़ने पाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११८. इस तरह सच्चाई साबित हो गई और जो कुछ वे करते थे मिथ्या हो कर रहा।

118. Thus was the Truth vindicated and that which they were doing was made vain.

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

११९. इस तरह वे वहाँ परास्त हुये और उल्टे अपमानित हो गये।

119. Thus were they there defeated and brought low.

فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَاغِرِينَ ﴿١١٩﴾

१२०. और जादूगर सजदे में गिर पड़े,

120. And the wizards fell down prostrate,

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१. कहने लगे : हम सारे संसार के 'रब' पर 'ईमान' लाये,

121. Crying: We believe in the Lord of the Worlds,

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾

१२२. जो मूसा और हारून का 'रब' है!

122. The Lord of Moses and Aaron.

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३. फ़िरऔन ने कहा : इस के पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं तुम उस पर 'ईमान' लाये! निश्चय ही यह चाल है जो तुम लोग इस नगर में चले हो ताकि इस के लोगों को यहाँ से निकाल दो, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा!

123. Pharaoh said: Ye believe in Him before I give you leave! Lo! this is the plot that ye have plotted in the city that ye may drive its people hence. But ye shall come to know!

قَالَ فِرْعَوْنُ آمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

१२४. मैं तुम्हारे हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूंगा। फिर तुम सब को सूली पर चढ़ा दूंगा।

124. Surely I shall have your hands and feet cut off upon alternate sides. Then I shall crucify you every one.

لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٤﴾

१२५. बोले : हम तो अपने 'रब' की ओर पलटने वाले ही हैं।

125. They said: Lo! We are about to return unto our Lord!

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾

१२६. तुम हम से केवल इस लिए वैर रखते हो कि हमारे 'रब' की निशानियाँ जब हमारे पास आ गईं तो हम उन पर 'ईमान' ले आये।

हमारे 'रब'! हम पर 'सब्र' के दहाने खोल दे और हमें (इस लोक से) इस दशा में उठा, कि हम 'मुस्लिम' हों।

126. Thou takest vengeance on us only forasmuch as we believed the tokens of our Lord when they came unto us. Our Lord! Vouchsafe unto us steadfastness and make us die as men who have surrendered (unto Thee).

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ﴿١٢٦﴾

१२७. और फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा : क्या तू मूसा और उस की जाति वालों को ऐसे ही छोड़ देगा कि वे धरती में फ़साद फैलायें और वह तुझे और तेरे 'इलाहों' (देवताओं) को छोड़ बैठे? उस ने कहा : हम उन के बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, और हमें उन पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त है।

127. The chiefs of Pharaoh's people said: (O King), wilt thou suffer Moses and his people to make mischief in the land, and flout thee and thy gods? He said: We will slay their sons and spare their women, for lo! we are in power over them.

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२८. मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा : अल्लाह से मदद माँगो और 'सब्र' करो। धरती तो अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उस का वारिस बना देता है। और अन्तिम परिणाम तो उन्हीं लोगों के हक़ में है जो डरने वाले हैं।

128. And Moses said unto his people: Seek help in Allah and endure. Lo! the earth is Allah's, He giveth it for an inheritance to whom He will. And lo! the sequel is for those who keep their duty (unto Him).

قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلّٰهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾

१२९. उन्हों ने कहा : (हे मूसा!) तेरे अपने पास आने से पहले भी हम सताये गये हैं और तेरे अपने पास आने के बाद भी। उस ने कहा : क़रीब है कि तुम्हारा 'रब' तुम्हारे शत्रु को विनष्ट कर दे और तुम्हें धरती में 'ख़लीफ़ा' बनाये और देखे कि तुम कैसा कर्म करते हो।

129. They said: We suffered hurt before thou camest unto us, and since thou hast come unto us. He said: It may be that your Lord is going to destroy your adversary and make you viceroys in the earth, that He may see how ye behave.

قَالُوا أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

१३०. और हम ने फ़िरऔन के लोगों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त लिया, कदाचित् वे ध्यान दें।

130. And We straitened Pharaoh's folk with famine and the dearth of fruits, that peradventure they might heed.

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

१३१. परन्तु जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती, तो कहते : हम इसी के हक़दार हैं; और जब उन्हें कोई बुरी हालत पेश आती तो वे इसे मूसा और उस के साथियों की नहूसत ठहराते। हालांकि वास्तव में उन की नहूसत तो अल्लाह के पास है[२६]। परन्तु उन में बहुतों को मालूम नहीं।

131. But whenever good befell them they said: This is ours; and whenever evil smote them they ascribed it to the evil auspices of Moses and those with him. Surely their evil auspice was only with Allah. But most of them knew not.

فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هٰذِهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسٰى وَمَنْ مَعَهُ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

१३२. और उन्हों ने कहा : (हे मूसा!) तू कोई भी निशानी ला कर उस के द्वारा हम पर जादू चला, हम तो तुझ पर 'ईमान' लाने वाले नहीं हैं।

132. And they said: Whatever portent thou bringest wherewith to bewitch us, we shall not put faith in thee.

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

१३३. फिर हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और (अहितकारी) कृमि[२७] और मेंढक और रक्त, कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग कर के भेजीं। परन्तु उन्हों ने सरकशी ही की और वे थे ही अपराधी लोग।

133. So We sent them the flood and the locusts and the vermine and the frogs and the blood—a succession of clear signs. But they were arrogant and became guilty.

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

२६. अर्थात् यह शकुन और अपशकुन या अमंगलता अल्लाह के निश्चित किये हुये नियमों के अनुसार ही सामने आती है।

२७. क़ुरआन में इस के लिए 'क़ुम्मल' शब्द आया है। अरबी में यह शब्द जूँ, छोटी मक्खी, छोटी टिड्डी, मच्छर आदि सभी के लिए प्रयोग होता है। आयत में तूफ़ान, टिड्डियों, मेंढक, रक्त आदि का अल्लाह की जिन निशानियों और उस की जिन यातनाओं का उल्लेख किया गया है उन का उल्लेख बाइबिल में भी मिलता है। ज़बूर (Psalm) में इन यातनाओं का उल्लेख इस प्रकार किया गया है, "उस ने मिस्र में अपने निशान (Signs) दिखाये और ज़ोन (Zoan) के क्षेत्र में अपने चमत्कार। और उन की नदियों को रक्त बना दिया और वे अपनी नदियों से पी न सके। उस ने उन पर मच्छरों के झुण्ड भेजे जो उन को खा गये। और मेंढक जिन्हों ने उन्हें तबाह कर दिया। उस ने उन की पैदावार कीड़ों को और उन की मेहनत का फल टिड्डियों को दे दिया (७८ : ४३-४६)।"

इस के अतिरिक्त इन यातनाओं का उल्लेख बाइबिल में और दूसरे स्थानों पर भी किया गया है। उदाहरणार्थ देखिए : ख़ुरूज (Ex.) ७ : २१-२४ और ८ : २-४; २१-२४ और १० : ४, ५; १२-१५; अह्बार (Leviticus) ११ : २२ ज़बूर (Ps.) १०५ : २९-३१, ३४; अमसाल (Prov.) ३० : २७; मुकाशफा (Revel.) १६ : ३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ولما وقع عليهم الرجز قالوا يموسى
ادع لنا ربك بما عهد عندك لئن
كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك و
لنرسلن معك بني اسراءيل (١٣٤)

134. And when the terror fell on them, they cried: O Moses! Pray for us unto thy Lord, because He hath a covenant with thee. If thou removest the terror from us, we verily will trust thee and will let the Children of Israel go with thee.

१३४. और जब उन पर यातना आई तो कहने लगे : हे मूसा ! अपनें 'रब' से हमारे लिए प्रार्थना कर, इस लिए कि उस ने तुझ से प्रतिज्ञा कर रक्खी है। यदि तू नें हम पर से यह यातना हटा दी तो हम अवश्य तेरी बात मान लेंगे और 'इसराईल' की सन्तान को तेरे साथ भेज देंगे।

فلما كشفنا عنهم الرجز الى اجل هم
بالغوه اذا هم ينكثون (١٣٥)

135. But when We did remove from them the terror for a term which they must reach, behold! they broke their covenant.

१३५. फिर जब हम ने एक नियत समय के लिए जिस तक उन्हें पहुँचना ही था, उन पर से उस यातना को हटा दिया उसी समय उन्हों नें प्रतिज्ञा भग कर दी।

فانتقمنا منهم فاغرقنهم في اليم
بانهم كذبوا بايتنا وكانوا عنها غفلين (١٣٦)

136. Therefore We took retribution from them; therefore We drowned them in the sea: because they denied Our revelations and were heedless of them.

१३६. तब हम ने उन से बदला लिया और उन्हें दरिया में डुबो दिया : क्योंकि उन्हों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उन से ग़ाफ़िल हो गये थे।

واورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون
مشارق الارض ومغاربها التي بركنا
فيها وتمت كلمت ربك الحسنى على
بني اسراءيل بما صبروا ودمرنا
ما كان يصنع فرعون وقومه وما
كانوا يعرشون (١٣٧)

137. And We caused the folk who were despised to inherit the eastern parts of the land and the western parts thereof which We had blessed. And the fair word of the Lord was fulfilled for the children of Israel because of their endurance; and We annihilated (all) that Pharaoh and his folk had done and that they had contrived.

१३७. और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे हम ने उन्हें उस भू-खण्ड के पूर्व और पश्चिम का उत्तराधिकारी बना दिया जिसे हम ने बरकत दी थी। और तुम्हारे 'रब' का शुभ-वचन 'इसराईल' की सन्तान के हक़ में पूरा हुआ इस लिए कि उन्हों ने 'सब्र' किया था; और फ़िरऔन और उस की जाति वालों का वह सब कुछ हम ने नष्ट कर दिया जो वे बनाते और चढ़ाते थे।

وجاوزنا ببني اسراءيل البحر فاتوا
على قوم يعكفون على اصنام لهم
قالوا يموسى اجعل لنا الها كما لهم
الهة قال انكم قوم تجهلون (١٣٨)

138. And We brought the Children of Israel across the sea and they came unto a people who were given up to idols which they had. They said: O Moses! Make for us a god even as they have gods. He said: Lo! ye are a folk who know not.

१३८. और 'इसराईल' की सन्तान को हम ने समुद्र से पार उतार दिया; फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी मूर्तियों से लगे बैठे रहते थे। कहने लगे : हे मूसा ! हमारे लिए भी कोई ऐसा ही 'इलाह' (देवता) बना दे जैसे इन के 'इलाह' हैं। उस ने कहा : निश्चय ही तुम लोग अज्ञान की बातें करते हो।

ان هؤلاء متبر ما هم فيه وبطل
ما كانوا يعملون (١٣٩)

139. Lo! as for these, their way will be destroyed and all that they are doing is in vain.

१३९. ये लोग जिस में लगे हुये हैं वह तो बरबाद हो कर रहने वाला है और जो कुछ ये कर रहे हैं मिथ्या है।

قال اغير الله ابغيكم الها وهو
فضلكم على العلمين (١٤٠)

140. He said: Shall I seek for you a god other than Allah when He hath favoured you above (all) creatures?

१४०. उस ने कहा : क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और 'इलाह' (पूज्य) तुम्हारे लिए ढूँढूँ हालाँकि वही है जिस ने तुम्हें सारे संसार की अपेक्षा बड़ाई दी ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४१. और वह समय याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिया वे तुम्हें बुरी यातना देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर डालते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे। इस में तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी।

141. And (remember) when We did deliver you from Pharaoh's folk who were afflicting you with dreadful torment, slaughtering your sons and sparing your women. That was a tremendous trial from your Lord.

وَإِذْ أَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ
سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾

१४२. और हम ने मूसा से तीस रात का वादा ठहराया, और हम ने दस और बढ़ा कर उसे पूरा किया इस तरह उस के 'रब' की ठहराई हुई मुद्दत चालीस रात हो गई;[२८] और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा : मेरे पीछे तुम मेरी जाति वालों में मेरी जगह रहना और ठीक काम करते रहना और बिगाड़ पैदा करने वालों के मार्ग पर न चलना।

142. And when We did appoint for Moses thirty nights (of solitude), and added to them ten, and he completed the whole time appointed by his Lord of forty nights; and Moses said unto his brother: Take my place among the people. Do right, and follow not the way of mischief-makers.

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ
وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِىْ
فِىْ قَوْمِىْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾

१४३. और जब मूसा हमारे निश्चित किये हुए समय पर पहुँचा और उस के 'रब' ने उस से बात-चीत की तो वह कहने लगा : हे 'रब'! मुझे दिखा, मैं तुझे देखूं। उस ने कहा : तू मुझे नहीं देख सकता, हाँ, पर्वत की ओर देख ! यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, तो तू मुझे देख लेगा। फिर जब उस का 'रब' पहाड़ पर आलोकित हुआ तो उसे चकनाचूर कर दिया। और मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़ा[२९]।

जब होश आया तो कहा : महिमा हो तेरी ! मैं तेरे आगे 'तौबा' करता हूँ, और सब से पहला 'ईमान' लाने वाला मैं हूँ।

143. And when Moses came to Our appointed tryst and his Lord had spoken unto him, he said: My Lord! Show me (Thy self) that I may gaze upon Thee. He said: Thou wilt not see Me, but gaze upon the mountain! If it stand still in its place, then thou wilt see Me. And when his Lord revealed (His) glory to the mountain He sent it crashing down, and Moses fell down senseless. And when he woke he said: Glory unto Thee! I turn unto Thee repentant, and I am the first of (true) believers.

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ
رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِىْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ
قَالَ لَنْ تَرٰىنِىْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ
فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ
تَرٰىنِىْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ
دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ
قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

१४४. उस ने कहा : हे मूसा ! मैं ने समस्त लोगों के मुक़ाबले में तुझे चुन लिया कि मेरी पैग़म्बरी करे और मुझ से बात-चीत करे। तो जो कुछ मैं तुझे दूं उसे ले और कृतज्ञ हो।

144. He said: O Moses! I have preferred thee above mankind by My messages and by My speaking (unto thee). So hold that which I have given thee, and be among the thankful.

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ
اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

२८. मिस्र से निकलने के बाद जब 'बनी इसराईल' को स्वतन्त्रता मिली तो अल्लाह ने हज़रत मूसा अ० को सीना पर्वत पर बुलाया ताकि 'बनी इसराईल' के लिए 'शरीअत' (धर्म-विधान) प्रदान की जाये। इस सिलसिले में हज़रत मूसा अ० को पहली बार चालीस रातों के लिए बुलाया गया था। ताकि चालीस दिन-रात वे अपना समय पर्वत पर ही बितायें और रोज़ों और 'इबादतों' के द्वारा अल्लाह के महान् आदेशों को ग्रहण करने की पूरी तैयारी कर लें।

२९. हज़रत मूसा० पर्वत की दशा देखने, और अल्लाह के आलोकित होने के स्थान से किसी हद तक सम्पर्क रखने के कारण मूर्छित हो कर गिरे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४५. और हम ने उस के लिए तख़्तियों पर हर (ज़रूरी) चीज़ लिख दी, उपदेश और हर (ज़रूरी) चीज़ का विस्तृत वर्णन, फिर (कहा) : इसे मज़बूती के साथ पकड़; और अपनी जाति वालों को हुक्म दे कि उस की उत्तम बातों को अपनायें। मैं जल्द ही तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा।

145. And We wrote for him, upon the tablets, the lesson to be drawn from all things and the explanation of all things, then (bade him): Hold it fast; and command thy people (saying): Take the better (course made clear) therein. I shall show thee the abode of evil-livers.

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا
بِأَحْسَنِهَا سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفٰسِقِينَ ١٤٥

१४६. जो लोग धरती में नाहक़ बड़े बनते हैं मैं अपनी निशानियों से उन (की निगाहों) को फेर दूंगा, वे चाहे कोई निशानी देख लें उस पर 'ईमान' नहीं लायेंगे, और यदि (चेतनता का) सीधा मार्ग देख लें तो भी उसे मार्ग नहीं बनायेंगे, और यदि गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे मार्ग बना लेंगे। यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उन से ग़ाफ़िल रहे।

146. I shall turn away from My revelations those who magnify themselves wrongfully in the earth; and if they see each token, believe it not, and if they see the way of righteousness, choose it not for (their) way, and if they see the way of error, choose it for (their) way. That is because they deny Our revelations and are used to disregard them.

سَأَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِن يَرَوْا
كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِن يَرَوْا
سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِن
يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ١٤٦

१४७. और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को और 'आख़िरत' की मुलाक़ात को झुठलाया, उन का सारा किया-धरा अकारथ गया। जो कुछ कि वे करते रहे हैं क्या उस के सिवा वे किसी और चीज़ का बदला पायेंगे ?

147. Those who deny Our revelations and the meeting of the Hereafter, their works are fruitless. Are they requited aught save what they used to do?

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٤٧

१४८. और मूसा के पीछे उस की जाति वालों ने (पूजने के लिए) अपने ज़ेवरों से एक बछड़े का पुतला बनाया, जिस में से बछड़े की सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्हों ने देखा नहीं कि न तो वह उन से बोलता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है ? उन्हों ने उसे देवता बना लिया, और वे ज़ुल्म करने वाले थे।

148. And the folk of Moses, after (he had left them), chose a calf (for worship), (made) out of their ornaments, of saffron hue, which gave a lowing sound. Saw they not that it spake not unto them nor guided them to any way? They chose it, and became wrongdoers.

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسٰى مِنْ بَعْدِهِ مِنْ
حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ أَلَمْ
يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ
سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظٰلِمِينَ ١٤٨

१४९. और जब उन्हें पछतावा हुआ और उन्हों ने देख लिया कि वे वास्तव में मार्ग से भटक गये हैं, तो कहने लगे : यदि हमारे 'रब' ने हम पर दया न की और उस ने हमें क्षमा न कर दिया तो हम घाटे में पड़ जाने वालों में से हो जायेंगे।

149. And when they feared the consequences thereof and saw that they had gone astray, they said: Unless our Lord have mercy on us and forgive us, we verily are of the lost.

وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ
قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا
وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ١٤٩

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५०. और जब मूसा अत्यन्त क्रुद्ध और दुःखी हो कर अपनी जाति वालों की ओर पलटा, तो उस ने कहा : तुम लोगों ने मेरे पीछे बहुत बुरा किया। क्या तुम अपने 'रब' के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे ? उस ने तख़्तियाँ डाल दीं, और अपने भाई (हारून) के सिर को पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। (हारून ने) कहा : हे मेरी माता के बेटे ! इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डालते। तो दुश्मनों को मुझ पर न हँसा और ज़ालिम लोगों में मुझे न मिला[३०]!

150. And when Moses returned unto his people, angry and grieved, he said: Evil is that (course) which ye took after I had left you. Would ye hasten on the judgement of your Lord? And he cast down the tablets and he seized his brother by the head, dragging him toward him. He said: Son of my mother! Lo! the folk did judge me weak and almost killed me. Oh! make not mine enemies to triumph over me and place me not among the evil-doers!

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ
أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي
أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَ
أَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ
ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا
يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا
تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

१५१. (मूसा ने) कहा : रब ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर; और हमें अपनी दयालुता में प्रविष्ट कर ले, तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है।

151. He said: My Lord! Have mercy on me and on my brother; bring us into Thy mercy, Thou the Most Merciful of all who show mercy.

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا
فِي رَحْمَتِكَ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ ع

१५२. (अल्लाह ने कहा :) जिन लोगों ने बछड़े को देवता बनाया है उन पर जल्द उन के 'रब' की ओर से प्रकोप और अपमान इस सांसारिक जीवन में पड़ेगा। और झूठ गढ़ने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

152. Lo! those who chose the calf (for worship), terror from their Lord and humiliation will come upon them in the life of the world. Thus do. We requite those who invent a lie.

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ
غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝

१५३. और जिन लोगों ने बुरे कर्म किये फिर उस के बाद 'तौबा' कर ली और 'ईमान' ले आये—तो निश्चय ही इस के बाद, तेरा 'रब' बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला है।

153. But those who do ill deeds and afterward repent and believe—lo! for them, afterward, Allah is Forgiving, Merciful.

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن
بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا
لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

१५४. और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ, तो उस ने उन तख़्तियों को उठाया, उन के लेख में उन लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता थी जो अपने 'रब' से डरते हैं।

154. Then, when the anger of Moses abated, he took up the tablets, and in their inscription there was guidance and mercy for all those who fear their Lord.

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ
الْأَلْوَاحَ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝

३०. क़ुरआन की दूसरी जगहों पर यह बात स्पष्ट शब्दों में बताई गई है कि हज़रत हारून अ० इस बड़े अपराध से दूर रहे हैं। उन्हों ने न तो बछड़े को अपना देवता बनाया था; और न उन लोगों को उसे पूजने का हुक्म दिया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५५. और मूसा ने अपनी जाति के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किये हुये समय पर लाने के लिए चुना,[३१] तो जब इन लोगों को एक भूकम्प ने आ लिया, तो मूसा ने कहा : हे 'रब' ! यदि तू चाहता तो पहले ही इन को और मुझे विनष्ट कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया क्या उस के लिए तू हमें विनष्ट कर देगा ? यह तो तेरी ओर से एक आज़माइश है इस के द्वारा जिसे चाहे तू भटका दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू हमारा संरक्षक-मित्र है, तो हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, तू सब से बढ़ कर क्षमा करने वाला है।

१५६. और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे, और 'आख़िरत' में भी, हम तेरी ओर पलटे। कहा : अपनी यातना तो मैं उसी को पहुँचाता हूँ, जिसे चाहता हूँ परन्तु मेरी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है,[३२] तो उसे मैं उन लोगों के हक़ में लिखूंगा जो डरते हैं और 'ज़कात' देते हैं, और हमारी 'आयतों' पर 'ईमान' लाते हैं;

१५७. जो उस 'रसूल', 'उम्मी' 'नबी' के पीछे चलते हैं जिसे वे अपने यहाँ 'तौरात' और 'इन्जील' में लिखा हुआ पाते हैं[३३]। जो उन्हें नेक बातों का हुक्म देता और बुरी बातों से रोकता है। उनके लिए उत्तम चीज़ें वैध और निकृष्ट चीज़ें अवैध ठहराता है; और दूर करता है उन से उन का बोझ और फन्दे जो उन पर थे। तो जो लोग उस पर 'ईमान' लाये और उस की हिमायत की, और उस की मदद की, और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उस के साथ उतारा गया है; ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

१५८. (हे मुहम्मद !) कहो : हे लोगो ! निश्चय ही मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का 'रसूल' हूँ जो आकाशों और धरती के राज्य का मालिक है। उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है। वही जिलाता और मारता है, तो अल्लाह और उस के 'रसूल', 'उम्मी' 'नबी' पर 'ईमान' लाओ, जो अल्लाह और उस की बातों पर 'ईमान' रखता है, और उस के अनुयायी बनो कदाचित् तुम मार्ग पा लो।

155. And Moses chose of his people seventy men for Our appointed tryst and, when the trembling came on them, he said: My Lord! If Thou hadst willed Thou hadst destroyed them long before, and me. With them wilt Thou destroy us for that which the ignorant among us did? It is but Thy trial (of us). Thou sendest whom Thou wilt astray and guidest whom Thou wilt. Thou art our Protecting Friend, therefore forgive us and have mercy on us. Thou, the Best of all who show forgiveness.

156. And ordain for us in this world that which is good, and in the Hereafter (that which is good), Lo! We have turned unto Thee. He said: I smite with My punishment whom I will, and My mercy embraceth all things, therefore I shall ordain it for those who ward off (evil) and pay the poor-due, and those who believe Our revelations;

157. Those who follow the messenger, the Prophet who can neither read nor write, whom they will find described in the Torah and the Gospel (which are) with them. He will enjoin on them that which is right and forbid them that which is wrong. He will make lawful for them all good things and prohibit for them only the foul; and he will relieve them of their burden and the fetters that they used to wear. Then those who believe in him, and honour him and help him, and follow the light which is sent down with him: they are the successful.

158. Say (O Muhammad): O mankind! Lo! I am the messenger of Allah to you all—(the messenger of) Him unto whom belongeth the Sovereignty of the heavens and earth. There is no God save Him. He quickeneth and He giveth death. So believe in Allah and His messenger, the Prophet who can neither read nor write, who believeth in

وَاخْتَارَ مُوسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا
لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ
وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ
مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ
وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾
وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ
عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ
هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾
اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ
الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ؗ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ
وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ
وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
جَمِيْعَا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

३१. ये सत्तर व्यक्ति इस लिए बुलाये गये थे कि वे सीना पर्वत पहुँच कर सब की ओर से अल्लाह से प्रार्थना करें कि जो अपराध उन्हों ने बछड़ा पूज कर किया था उसे क्षमा कर दिया जाये।

३२. अल्लाह जिस प्रकार अपना राज्य-शासन चला रहा है उस में मौलिक स्थान उस के प्रकोप को नहीं बल्कि उस की दयालुता को ही प्राप्त है। यह सृष्टि उस की दयालुता के ही बल पर स्थिर है। उस का प्रकोप तो केवल उस समय उतरता है जब लोगों की सरकशी और उन का अत्याचार हद से आगे बढ़ जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Allah and in His words and follow him that haply ye may be led aright.

१५९. और मूसा की जाति में एक गरोह ऐसा भी है जो हक़ के अनुसार मार्ग दिखाता और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है[३४]।

159. And of Moses' folk there is a community who led with truth and establish justice therewith.

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

१६०. और हम ने उन्हें[३५] बारह घरानों में बाँट कर (स्थायी रूप से) कई गरोह बना दिये थे; और हम ने मूसा की ओर 'वह्य' की, जब उस से उस की जाति वालों ने पानी माँगा, कि अपनी लाठी अमुक चट्टान पर मारो ! तो उस चट्टान से बारह सोते फूट निकले, हर गरोह ने अपने पानी लेने का स्थान मालूम कर लिया। और हम ने उन पर बादल की छाया की और उन पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा[३६] (यह कहते हुये कि) : हम ने तुम्हें जो उत्तम चीज़ें प्रदान की हैं उन्हें खाओ। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे अपने आप ही पर ज़ुल्म करते रहे।

160. We divided them into twelve tribes, nations; and We inspired Moses, when his people asked him for water, saying, Smite with thy staff the rock! And there gushed forth therefrom twelve springs, so that each tribe knew their drinking-place. And We caused the white cloud to overshadow them and sent down for them the manna and the quails (saying): Eat of the good things wherewith We have provided you. They wronged Us not, but they were wont to wrong themselves.

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهُ
أَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ
أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ
وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا
وَلٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾

१६१. और याद करो जब उन से कहा गया था : इस बस्ती में रहो और इस (की पैदावार) में से जहाँ से चाहो खाओ, और कहते जाना : हम क्षमा की प्रार्थना करते हैं, और (बस्ती के) दरवाज़े में 'सजदा' करते हुए प्रवेश करना ; हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे; उत्तमकारों को हम और अधिक देंगे।

161. And when it was said unto them: Dwell in this township and eat therefrom whence ye will, and say "Repentance," and enter the gate prostrate; We shall forgive you your sins; We shall increase (reward) for the right-doers.

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ
وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطِيٓـٰٔتِكُمْ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

१६२. परन्तु फिर जो बात उन से कही गई थी ज़ालिम लोगों ने उसे बदल कर कुछ और कर दिया, तो हम ने उन पर उस समय ज़ुल्म के कारण जो वे कर रहे थे आकाश से यातना भेज दी।

162. But those of them who did wrong changed the word which had been told them for another saying, and We sent down upon them wrath from heaven for their wrong-doing.

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا
يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾ ع

३४. क़ुरआन के उतरने के समय यहूदियों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 'ईमान' लाये और सच्चाई को अपनाया। इस 'आयत' का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि हज़रत मूसा अ० के समय में, जब कि यहूदियों ने बछड़े को अपना देवता बनाया था और वे सीधे रास्ते से भटक गये थे, उन में एक गरोह सदाचारी लोगों का भी था जो सच्चाई को अपनाये हुये था।

३५. अर्थात् 'बनी इसराईल' को।

३६. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १७ और १८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nária, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६३. और इन से उस वस्ती के बारे में पूछो जो समुद्र के तट पर थी, जब कि वे 'सब्त'[३७] की मर्यादा भंग करते थे, जब उन के 'सब्त' का दिन होता उन की मछलियाँ पानी के ऊपर उभर कर उन के सामने आ जाती थीं और जब उन के 'सब्त' का दिन न होता तो वे उन के पास न आती थीं। इस तरह हम उन्हें उन के मर्यादा का उल्लंघन करने के कारण आज़माइश में डाल रहे थे।

163. Ask them (O Muhammad) of the township that was by the sea, how they did break the sabbath, how their big fish came unto them visibly upon their sabbath day and on a day when they did not keep sabbath came they not unto them. Thus did We try them for that they were evil-livers.

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ
إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا
وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَٰلِكَ
نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ١٦٣

१६४. और जब उन के एक गरोह ने कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह विनष्ट करने वाला या कड़ी यातना देने वाला है, उन्हों ने कहा : तुम्हारे 'रब' के सामने उज़्र पेश करने को, और कदाचित् वे डरने लग जायें।

164. And when a community among them said: Why preach ye to a folk whom Allah is about to destroy and punish with an awful doom, they said: In order to be free from guilt before your Lord, and that haply they may ward off (evil).

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ
قَوْمًا اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا
شَدِيدًا قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ١٦٤

१६५. फिर जब ऐसा हुआ कि जो याददिहानी उन्हें कराई गई थी उन्हों ने उसे भुला दिया, तो हम ने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे, और ज़ुल्म करने वालों को हम ने उन की अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया।

165. And when they forgot that whereof they had been reminded, We rescued those who forbade wrong, and visited those who did wrong with dreadful punishment because they were evil-livers.

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ
يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ
ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ١٦٥

१६६. फिर जब वे पूरी ढिठाई के साथ वही काम किये चले गये जिस से उन्हें रोका गया था, तो हम ने उन से कह दिया : बन्दर हो जाओ धिक्कारे हुये[३८] !

166. So when they took pride in that which they had been forbidden, We said unto them: Be ye apes despised and loathed!

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ١٦٦

१६७. और याद करो कि जब तेरे 'रब' ने जता दिया था कि वह उन के विरुद्ध[३९] 'क़ियामत' के दिन तक ऐसे लोगों को उठाता रहेगा जो उन्हें बुरी यातना देंगे[४०]। निश्चय ही तेरा 'रब' सज़ा भी जल्द देता है और निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला भी है।

167. And (remember) when thy Lord proclaimed that He would raise against them till the day of Resurrection those who would lay on them a cruel torment. Lo! verily thy Lord is Swift in prosecution and lo! verily He is Forgiving, Merciful.

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ
لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٦٧

३७. 'सब्त' का अर्थ क्या है, इस के लिए देखिए सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट २३।

३८. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ७२।

३९. अर्थात् 'बनी इसराईल' के विरुद्ध।

४०. यह चेतावनी 'बनी इसराईल' को बहुत पहले से, लगभग आठवीं शताब्दी पूर्व मसीह से दी जाती रही है। इसइयाह (Isiah) और यरमियाह (Jeremiah) और उन के बाद आने वाले 'नबियों' की सभी किताबों में यह चेतावनी मौजूद है। इन्जील से मालूम होता है कि हज़रत ईसा मसीह अ० ने भी उन्हें यह चेतावनी दी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६८. और हम ने उन्हें धरती में टुकड़े-टुकड़े करके कितने ही गरोहों में बाँट दिया। कुछ लोग उन में नेक थे, और कुछ लोग उन में इस से भिन्न थे। और हम ने उन्हें अच्छी और बुरी हालतों में डाल कर आजमाया कदाचित् वे पलट आयें।

168. And We have sundered them in the earth as (separate), nations. Some of them are righteous, and some far from that. And We have tried them with good things and evil things that haply they might return.

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

१६९. फिर उन के पीछे ऐसे लोगों नें उन की जगह ली जो 'किताब' के वारिस हो कर इसी तुच्छ जीवन का सामान समेटते हैं और कहते हैं : हमें अवश्य क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि वैसा ही और सामान उन के पास आ जाता है तो उसे भी ले लेते हैं[४१]। क्या इन से किताब का वचन नहीं लिया गया था कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर 'हक़' के सिवा और कोई बात न कहें ? और ये स्वयं उसे पढ़ चुके हैं जो उस में है। और 'आख़िरत' का घर उन लोगों के लिए कहीं अधिक अच्छा है, जो डरते हैं। क्या तुम समझते नहीं हो ?

169. And a generation hath succeeded them who inherited the Scriptures. They grasp the goods of this low life (as the price of evil-doing) and say: It will be forgiven us. And if there came to them (again) the offer of the like, they would accept it (and would sin again). Hath not the covenant of the Scripture been taken on their behalf that they should not speak aught concerning Allah save the truth? And they have studied that which is herein. And the abode of the Hereafter is better, for those who ward off (evil) Have ye then no sense?

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَأْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْأَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَإِنْ يَّأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَأْخُذُوْهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ أَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ۗ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾

१७०. और जो लोग 'किताब' को मज़बूती से पकड़े हुए हैं,[४२] और जिन्होंने 'नमाज़' क़ायम रक्खी है—निश्चय ही हम ऐसे सुधार करने वालों के कर्म-फल को नष्ट नहीं करेंगे।

170. And as for those who make (men) keep the Scripture, and establish worship—lo! We squander not the wages of reformers.

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

१७१. और (वह समय भी याद करनें योग्य है) जब हम नें पर्वत को (हिला कर) छत की तरह उन के ऊपर कर दिया, और उन्हों ने समझा कि बस वह उन के ऊपर आ गिरा। (हम ने कहा) : जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है[४३] उसे मज़बूती के साथ थामो, और जो कुछ उस में है उसे याद रक्खो ताकि डरने लग जाओ।

171. And when We shook the Mount above them as it were a covering, and they supposed that it was going to fall upon them (and We said): Hold fast that which We have given you, and remember that which is therein, that ye may ward off (evil).

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْا أَنَّهٗ وَاقِعٌ ۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَا اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ ع

४१. इन का हाल यह है कि ये सांसारिक लाभ के लिए लोगों को धर्म के विरुद्ध बातें बताते हैं; और अल्लाह की किताब का कुछ भी आदर नहीं करते। ये केवल दुनिया के पुजारी बन कर रह गये हैं।

४२. अर्थात् उस के आदेशों का पालन करते हैं।

४३. अर्थात् जो किताब (तौरात) हम ने तुम्हें दी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७२. और (याद करो) जब तुम्हारे 'रब' ने आदम के बेटों से, (अर्थात्) उन की पीठों से, उन की सन्तान को निकाला, और उन्हें स्वयं उन के ऊपर गवाह बनाया (पूछा) : क्या मैं तुम्हारा 'रब' नहीं हूं ? उन्हों ने कहा : अवश्य है। हम गवाही देते हैं[४४]। यह इस लिए किया कि तुम कहीं 'क़ियामत' के दिन यह कहने लगो कि हम तो इस से बे ख़बर थे;

172. And (remember) when thy Lord brought forth from the Children of Adam, from their reins, their seed, and made them testify of themselves, (saying): Am I not your Lord? They said: Yea, verily. We testify. (That was) lest ye should say at the Day of Resurrection: Lo! of this we were unaware;

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِىٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا۟ بَلَىٰ شَهِدْنَآ أَن تَقُولُوا۟ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾

१७३. या यह कहने लगो कि 'शिर्क' तो पहले ही हमारे पूर्वजों ने किया हम तो उन के बाद उन की सन्तान में हुये हैं। तो क्या तू हमें उस के बदले विनष्ट करता है जो कुछ कि मिथ्यावादियों ने किया था ?

173. Or lest ye should say: (It is) only (that) our fathers ascribed partners to Allah of old and we were (their) seed after them. Wilt Thou destroy us on account of that which those who follow falsehood did?

أَوْ تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أَشْرَكَ ءَابَآؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

१७४. इस तरह हम अपनी 'आयतों' को खोल-खोल कर पेश करते हैं, और इस से आशा है कि कदाचित् ये लोग पलट आयें।

174. Thus We detail Our revelations, that haply they may return.

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾

१७५. और इन्हें उस व्यक्ति का हाल पढ़ कर सुनाओ जिसे हम ने अपनी 'आयतें' दी थीं, परन्तु वह उन्हें छोड़ निकला, फिर 'शैतान' उस के पीछे पड़ गया तो वह गुमराहों में से हो गया।

175. Recite unto them the tale of him to whom We gave Our revelations, but he sloughed them off, so Satan overtook him and he became of those who lead astray.

وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ٱلَّذِىٓ ءَاتَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا فَٱنسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ ٱلشَّيْطَٰنُ فَكَانَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾

१७६. और यदि हम चाहते तो उन ('आयतों') के द्वारा उसे उच्चता प्रदान कर देते, परन्तु वह तो धरती की ओर झुक गया और अपनी इच्छा पर चलता रहा। तो उस की मिसाल एक कुत्ते जैसी है; यदि तुम उस पर बोझ लादो जब भी वह हांपे, और उसे छोड़ दो तब भी हाँपे। यही मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया। तो ये क़िस्से इन्हें सुनाते रहो, कदाचित् ये सोच-विचार से काम लें।

176. And had We willed We could have raised him by their means, but he clung to the earth and followed his own lust. Therefore his likeness is as the likeness of a dog; if thou attackest him he panteth with his tongue out, and if thou leavest him he panteth with his tongue out. Such is the likeness of the people who deny Our revelations. Narrate unto them the history (of the men of old) that haply they may take thought.

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَٰهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُۥٓ أَخْلَدَ إِلَى ٱلْأَرْضِ وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث ذَّٰلِكَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱقْصُصِ ٱلْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

४४. यह मामला हज़रत आदम अ० के पैदा किये जाने के समय पेश आया था। अल्लाह ने उन सब मनुष्यों को जो 'क़ियामत' तक पैदा होने वाले थे, एक साथ अपने सामने उपस्थित कर के, इस का ज्ञान प्रदान किया था कि उन का 'रब' केवल एक अल्लाह है; और उन से इस का इक़रार भी कराया था कि वास्तव में एक अल्लाह के सिवा उन का कोई दूसरा 'रब' नहीं है। यद्यपि यह इक़रार आज हमें याद नहीं है फिर भी ज्ञान और इस इक़रार की छाप आज भी हमारी अन्तरात्मा और अन्तर्ज्ञान (Intuition) में वर्तमान है। अल्लाह के 'रब' होने का इक़रार मानव-प्रकृति में समाया हुआ है। यह तो उस के अन्तरात्मा की पुकार है। अल्लाह के 'नबी' वास्तव में इसी इक़रार की याद दिलाते रहे हैं। 'क़ियामत' में अल्लाह उन अपराधियों को पकड़ेगा जिन्हों ने अपने हृदय की पुकार सुनने की चेष्टा नहीं की और 'नबियों' की बात का इन्कार कर के 'कुफ़्र' और 'शिर्क' को अपने लिए पसन्द किया।

वर्तमान जीवन में यदि हमारे मस्तिष्क में अल्लाह के सामने किये हुये इक़रार की याद को बाक़ी नहीं रक्खा गया तो केवल इस लिए कि इस दुनिया में हमारी परीक्षा ली जा सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७७. बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया, और वे आप अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

177. Evil as an example are the folk who denied Our revelations, and were wont to wrong themselves.

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾

१७८. जिसे अल्लाह मार्ग दिखाये, वही मार्ग पाने वाला है, और जिसे वह मार्ग से भटका दे[४५]— तो ऐसे ही लोग घाटा उठाने वाले हैं।

178. He whom Allah leadeth, he indeed is led aright while he whom Allah sendeth astray—they indeed are losers.

مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

१७९. और निश्चय ही हम ने बहुत से 'जिन्नों' और मनुष्यों को 'जहन्नम' ही के लिए फैला रक्खा है, उन के पास दिल हैं वे उन से समझते नहीं, और उन के पास आँखें हैं वे उन से देखते नहीं, और उन के पास कान हैं वे उन से सुनते नहीं। वे पशुओं की तरह हैं—बल्कि ये उन से भी ज्यादा बेराह हैं! यही लोग हैं जो अचेतावस्था में पड़े हुये हैं!

179. Already have We urged unto hell many of the jinn and humankind, having hearts wherewith they understand not, and having eyes wherewith they see not, and having ears wherewith they hear not. These are as the cattle—nay, but they are worse! These are the neglectful.

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

१८०. और अच्छे नाम (गुण) अल्लाह ही के लिए हैं। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों के विषय में कुटिलता ग्रहण करते हैं[४६]। जो कुछ वे करते हैं उस का फल वे जल्द पायेंगे।

180. Allah's are the fairest names. Invoke Him by them. And leave the company of those who blaspheme His names. They will be requited what they do.

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

१८१. और जिन लोगों को हम ने पैदा किया है उन में एक गरोह ऐसे लोगों का भी है जो 'हक़' के साथ मार्ग दिखाते और उसी के साथ इन्साफ़ करते हैं।

181. And of those whom We created there is a nation who guide with the Truth and establish justice therewith.

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾

१८२. और जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया हम उन्हें धीरे-धीरे (विनाश की ओर) ले जायेंगे इस तरह कि उन्हें खबर तक न होगी।

182. And those who deny Our revelations—step by step We lead them on from whence they know not.

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

१८३. और मैं उन्हें ढील देता हूँ निस्सन्देह मेरी चाल दृढ़ है।

183. I give them rein (for) lo! My scheme is strong.

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

१८४. क्या इन लोगों ने विचार नहीं किया? इन के साथी[४७] को कोई उन्माद नहीं हो गया है? वह तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला है।

184. Have they not bethought them (that) there is no madness in their comrade? He is but a plain warner.

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾

४५. अर्थात् जिन पर वह सच्चाई की राह न खोले। सच्चाई की राह वह उन्हीं लोगों पर नहीं खोलता जो उस की पुकार पर कान नहीं धरते, और उस के सन्देश की उपेक्षा करते हैं।

४६. अर्थात् वे अल्लाह के ऐसे नाम रखते हैं, और उसे ऐसे गुणों से युक्त समझते हैं जो उस की महानता और मान-मर्यादा के प्रतिकूल हैं। या वे सृष्टि के जीव आदि में किसी का ऐसा नाम रखते हैं जो केवल अल्लाह ही के लिए उचित है।

४७. अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०, इस लिए कि आप (सल्ल०) इन्हीं लोगों में पैदा हुये और इन्हीं लोगों के बीच आप (सल्ल०) का रहना-सहना सब कुछ रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८५. क्या इन्हों ने आकाशों और धरती के राज्य पर, और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है उस पर निगाह नहीं डाली और न इस बात पर कि कदाचित् इन का नियत समय क़रीब आ गया हो ? तो इस के बाद कौन सी बात ऐसी हो सकती है जिस पर ये 'ईमान' लायेंगे ?

185. Have they not considered the dominion of the heavens and the earth, and what things Allah hath created, and that it may be that their own term draweth nigh? In what fact after this will they believe?

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِن شَيْءٍ وَ
أَنْ عَسٰى أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ
أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

१८६. जिसे अल्लाह मार्ग से भटका दे,[४८] उसे कोई मार्ग पर लाने वाला नहीं। वह इन्हें इन की सरकशी में भटका हुआ छोड़ देता है।

186. Those whom Allah sendeth astray there is no guide for them. He leaveth them to wander blindly on in their contumacy.

مَن يُضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

१८७. वे तुम से उस घड़ी ('क़ियामत') के बारे में पूछते हैं कि उस का ठहराव[४९] कब है। कहो : उस का ज्ञान तो मेरे 'रब' ही को है। उसे उस के समय पर सिवाय उस के कोई ज़ाहिर नहीं करेगा। वह (घड़ी) आकाशों और धरती में भारी है। वह तुम पर अचानक आ जायेगी।

लोग तुम से इस तरह पूछते हैं मानो तुम उस की खोज में लगे हुये हो। कह दो : इस का ज्ञान तो बस अल्लाह को है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

187. They ask thee of the (destined) Hour, when wilt it come to port. Say: Knowledge thereof is with my Lord only. He alone will manifest it at its proper time. It is heavy in the heavens and the earth. It cometh not to you save unawares. They question thee as if thou couldst be well informed thereof. Say: knowledge thereof is with Allah only, but most of mankind know not.

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰهَا
قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا
لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً يَسْـَٔلُونَكَ
كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا
عِندَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

१८८. कहो : मैं न तो अपने भले का मालिक हूँ, और न बुरे का, बस अल्लाह ही जो चाहता है होता है। यदि मैं परोक्ष की बात जानता, तो बहुत से फ़ायदे समेट लेता, और मुझे कोई हानि न पहुँचती। मैं तो 'ईमान' लाने वालों के लिए बस एक सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ।

188. Say: For myself I have no power to benefit, nor power to hurt, save that which Allah willeth. Had I knowledge of the Unseen, I should have abundance of wealth, and adversity would not touch me. I am but a warner, and a bearer of good tiding unto folk who believe.

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا
مَا شَاءَ اللّٰهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ
لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾

१८९. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, और उसी से[५०] उस का जोड़ा बनाया ताकि वह उस के पास चैन पाये। फिर जब उस ने उसे (स्त्री को) ढाँक लिया, तो उसे हल्का सा गर्भ रह गया, जिसे लिये हुये वह चलती-फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अल्लाह, अपने 'रब' से प्रार्थना की कि यदि तू ने हमें भला चंगा बच्चा दिया तो हम कृतज्ञ होंगे।

189. He it is Who did create you from a single soul, and therefrom did make his mate that he might take rest in her. And when he covered her she bore a light burden and she passed (unnoticed) with it but when it became heavy they cried unto Allah, their Lord, saying: If Thou givest unto us aright we shall be of the thankful

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ
وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا
فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ
بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ
آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشّٰكِرِينَ ﴿١٨٩﴾

४८. दे० इसी सूरा का फ़ुटनोट ४५।
४९. अर्थात् वह कब आयेगी।
५०. दे० सूरा अन-निसा फ़ुटनोट २।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९०. परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें भला-चंगा बच्चा दे दिया, तो जो कुछ उस ने उन्हें दिया था उस में वे दूसरों को उस का शरीक ठहराने लगे[५१]। जैसा कुछ 'शिर्क' वे करते हैं अल्लाह उस से बहुत उच्च है।

190. But when He gave unto them aright they ascribed unto Him partners in respect of that which He had given them High is He exalted above all that they associate (with Him).

فلما اتاهما صالحا جعلا له شركاء فيما اتاهما فتعالى الله عما يشركون ﴿١٩٠﴾

१९१. क्या वे उन को सहभागी ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करते, बल्कि स्वयं वे पैदा किये जाते हैं,

191. Attribute they as partners to Allah those who created naught but are themselves created,

ايشركون ما لا يخلق شيئا وهم يخلقون ﴿١٩١﴾

१९२. और उन्हें न उन की मदद करनें का सामर्थ्य प्राप्त है, और न वे अपनी ही मदद कर सकते हैं।

192. And cannot give them help, nor can they help themselves?

ولا يستطيعون لهم نصرا ولا انفسهم ينصرون ﴿١٩٢﴾

१९३. और यदि तुम उन्हें मार्ग की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारे पीछे न आयें। तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें बुलाओ या चुप रहो।

193. And if ye call them to the Guidance, they follow you not. Whether ye call them or are silent is all one to them.

وان تدعوهم الى الهدى لا يتبعوكم سواء عليكم ادعوتموهم ام انتم صامتون ﴿١٩٣﴾

१९४. तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं। तो तुम उन्हें पुकार कर देखो, यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें (तुम्हारी पुकार का) जवाब देना चाहिए[५२]!

194. Lo! those on whom ye call beside Allah are slaves like unto you. Call on them now, and let them answer you, if ye are truthful!

ان الذين تدعون من دون الله عباد امثالكم فادعوهم فليستجيبوا لكم ان كنتم صادقين ﴿١٩٤﴾

१९५. क्या उन के पाँव हैं जिन से वे चलें, या उन के हाथ हैं जिन से वे पकड़ें, या उन के आँखें हैं जिन से वे देखें, या उन के कान हैं जिन से वे सुनें? कहो: तुम अपने ठहराये हुये शरीकों को बुला लो, फिर मेरे विरुद्ध चालें चलो, और मुझे मुहलत न दो।

195. Have they feet wherewith they walk, or have they hands wherewith they hold or have they eyes wherewith they see, or have they ears wherewith they hear? Say Call upon your (so-called) partners (of Allah), and then contrive against me, spare me not!

الهم ارجل يمشون بها ام لهم ايد يبطشون بها ام لهم اعين يبصرون بها ام لهم اذان يسمعون بها قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ﴿١٩٥﴾

१९६. मेरा संरक्षक-मित्र अल्लाह है जिस ने यह 'किताब' उतारी है। और वह नेक लोगों का संरक्षण करता है।

196. Lo! my Protecting Friend is Allah who revealth the Scripture. He befriendeth the righteous.

ان ولي الله الذي نزل الكتب وهو يتولى الصلحين ﴿١٩٦﴾

१९७. और जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो उन्हें न तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य प्राप्त है, और न वे अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

197. They on whom ye call beside Him have no power to help you, nor can they help themselves.

والذين تدعون من دونه لا يستطيعون نصركم ولا انفسهم ينصرون ﴿١٩٧﴾

१९८. और यदि तुम उन्हें मार्ग की ओर बुलाओ तो वे सुनते नहीं; तुम उन्हें देखते हो कि वे तुम्हारी ओर ताक रहे हैं परन्तु उन्हें कुछ सूझता नहीं।

198. And if ye (Muslim) call them to the Guidance they hear not; and thou (Muhammad) seest them looking toward thee, but they see not.

وان تدعوهم الى الهدى لا يسمعوا وترىهم ينظرون اليك وهم لا يبصرون ﴿١٩٨﴾

५१. यह अरब के 'मुश्रिकों' का हाल था।

५२. अर्थात् उन्हें कोई जवाबी कार्रवाई करनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९९. नर्मी और क्षमा से काम लो, भले काम का हुक्म दो, और अज्ञानी लोगों से न उलझो।

199. Keep to forgiveness (O Muhammad), and enjoin kindness, and turn away from the ignorant.

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ
عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝١٩٩

२००. और यदि 'शैतान' की कोई उकसाहट तुम्हें उकसाये, तो अल्लाह की पनाह माँगो। निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

200. And if a slander from the devil wound thee, then seek refuge in Allah. Lo! He is Hearer, Knower.

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ
فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٠٠

२०१. वास्तव में जो लोग डरने वाले हैं, उन्हें जब 'शैतान' की ओर से कोई ख़्याल छू जाता है, तो वे सचेत हो जाते हैं और उन्हें सूझ आ जाती है[५३]!

201. Lo! those who ward off (evil), when a glamour from the devil troubleth them, they do but remember (Allah's guidançe) and behold them seers.

إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ
مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَإِذَا هُمْ
مُّبْصِرُوْنَ ۝٢٠١

२०२. रहे उन ('शैतानों') के भाई-बन्धु तो वे उन्हें गुमराही में खींचे लिये जाते हैं और फिर इस में कोई कमी नहीं करते।

202. Their brethern plunge them further into error and cease not.

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ
لَا يُقْصِرُوْنَ ۝٢٠٢

२०३. और जब तुम इन लोगों के सामने कोई 'आयत' पेश नहीं करते तो ये कहते हैं कि क्यों नहीं तुम उसे छाँट लाये? कह दो: मैं तो केवल उस पर चलता हूँ जो मेरे 'रब' की ओर से मुझ पर 'वह्य' की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे 'रब' की ओर से, और मार्ग-दर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाते हैं।

203. And when thou bringest not a verse for them, they say: Why hast thou not chosen it? Say: I follow only that which is inspired in me from my Lord, This (Qur'an) is insight from your Lord, and a guidance and a mercy for a people that believe.

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ
قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ
هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٢٠٣

२०४. जब 'क़ुरआन' पढ़ा जाये तो उसे ध्यान-पूर्वक सुनो, और चुप रहो कदाचित् तुम पर दया हो जाये।

204. And when the Qur'an is recited, give ear to it and pay heed that ye may obtain mercy.

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ
أَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٢٠٤

२०५. अपने 'रब' को प्रातः काल और सन्ध्या समय याद किया करो, अपने जी में गिड़गिड़ाते और डरते हुये, और धीमी आवाज़ के साथ। और उन लोगों में से न हो जाओ जो अचेतावस्था में पड़े हुये हैं।

205. And do thou (O Muhammad) remember the Lord within thyself humbly and with awe below thy breath, at morn and evening. And be thou not of the neglectful.

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ
خِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٢٠٥

२०६. निस्सन्देह जो तुम्हारे 'रब' के निकट ('फ़िरिश्ते') हैं वे कभी अपनी बड़ाई के घमण्ड में आ कर उस की 'इबादत' से मुँह नहीं मोड़ते, और उस की 'तसबीह' (गुणगान) करते हैं और उसे 'सजदा' करते हैं।

206. Lo! those who are with thy Lord are not too proud to do Him service, but they praise Him and adore Him.

إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ۝٢٠٦

५३. अर्थात् उन पर यह बात खुल जाती है कि सच्चाई क्या है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८–अल–अनफ़ाल
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरा का आरम्भ 'अनफ़ाल' की समस्या से हुआ है। चिह्न के रूप में यही 'अल-अनफ़ाल' (The Accessions) इस सूरा का नाम रक्खा गया है। 'अनफ़ाल' का तात्पर्य यहाँ लड़ाई में दुश्मनों का छोड़ा हुआ धन है, जिसे 'ग़नीमत' भी कहते हैं। 'ग़नीमत' के बारे में किये गये प्रश्नों का जो उत्तर इस सूरा में दिया गया है; और इस सिलसिले में मुसलमानों को जो शिक्षा दी गई है, उस का इस्लामी जीवन में बड़ा महत्व है। इस तरह सूरा के इस नाम में बड़ी सार्थकता पाई जाती है। इस नाम के सामने आते ही स्वभावत: उन समस्त शिक्षाओं और आदेशों की ओर हमारा ध्यान जाता है जो इस सम्बन्ध में 'मुस्लिम' गरोह को दिये गये हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा सन् २ हि० में 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् उतरी है।

'बद्र' की लड़ाई वह पहली लड़ाई है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन-काल में 'कुफ़्' और 'इस्लाम' के बीच लड़ी गई है। नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के मक्का छोड़ कर मदीना चले जाने के बाद भी मक्का वालों ने आप (सल्ल०) को चैन से रहने न दिया। वे मुसलमानों का उन्मूलन करने का निश्चय किये हुये थे। "क़ुरैश" इस बात को कभी भी पसन्द नहीं कर सकते थे कि मुसलमानों की शक्ति बढ़े और वे आराम और चैन से रह सकें। इस के अलावा यमन से शाम (Syria) की ओर जो व्यापारिक मार्ग लाल-सागर के किनारे-किनारे हो कर जाता था वह मदीना के रास्ते में पड़ता था। 'क़ुरैश' के तिजारती क़ाफ़िले इस मार्ग से हो कर गुज़रते थे। उन्हें मदीना के लोगों से सदा डर लगा रहता था कि कहीं वह उन के किसी क़ाफ़िले पर हमला न कर दें। 'क़ुरैश' ने यह निश्चय किया कि जिस तरह भी हो इस ख़तरे को सदैव के लिए दूर कर देना चाहिए। 'क़ुरैश पर दबाव डालने के लिए इस के सिवा और कोई उपाय न था कि मुसलमान उस रास्ते पर कब्ज़ा कर लें जिस से हो कर 'क़ुरैश' के तिजारती क़ाफ़िले शाम (Syria) को जाया करते थे। नबी सल्ल० ने इस रास्ते के निकट बसने वाले विभिन्न क़बीलों से कई प्रकार के समझौते किये। और फिर 'क़ुरैश' के क़ाफ़िलों को धमकी देने के लिए छोटे-छोटे दस्ते भी भेजे, कुछ दस्तों के साथ आप (सल्ल०) स्वयं भी गये।

'बद्र' की लड़ाई

'शाबान' सन् २ हि० में 'क़ुरैश' का एक बहुत बड़ा क़ाफ़िला जिस के पास लगभग ५० हज़ार अशरफ़ियों का माल था, शाम (Syria) से लौट रहा था। क़ाफ़िले वालों को डर हुआ कि कहीं मुसलमान उन पर हमला न कर दें। क़ाफ़िले के सरदार अबूसुफ़यान ने एक आदमी को मक्का दौड़ाया कि वह वहाँ से मदद ले कर आये। उस ने मक्के में जा कर यह शोर मचाया कि क़ाफ़िले को मुसलमान लूट लेना चाहते हैं। इस पुकार पर 'क़ुरैश' के बड़े-बड़े सरदार मुसलमानों से लड़ने के लिए निकल आये। लग भग एक हज़ार की सेना तैयार हो गई। जिस में 'क़ुरैश' के सौ सरदार भी शरीक थे।

इधर नबी सल्ल० ने यह निश्चय किया कि जो शक्ति भी उन्हें प्राप्त है उसे ले कर वे मैदान में क़ुरैश के हमले का मुक़ाबला करेंगे। आप (सल्ल०) ने 'अनसार' और 'मुहाजिरों' को इकट्ठा कर के उन के सामने यह बात रक्खी कि एक ओर उत्तर में तिजारती क़ाफ़िला है और दूसरी ओर दक्षिण से क़ुरैश की सेना आ रही है। अल्लाह का वादा है कि तुम्हें इन दोनों में से एक मिल कर रहेगा। फ़ैसला करो कि तुम किस के मुक़ाबले पर चलने का निश्चय करते हो। एक बड़े गरोह ने अपनी यह इच्छा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकट की कि हमें आक्रमण क़ाफ़िले पर करना चाहिए। नबी सल्ल० ने अपना सवाल फिर दोहराया। इस पर 'मुहाजिरों' में से मिक़दाद इब्न अमर रज़ि० उठे और कहा : "हे अल्लाह के 'रसूल' ! जिधर आप (सल्ल०) के 'रब' की आज्ञा हो उसी ओर चलिए। हम आप (सल्ल०) के साथ हैं। हम 'बनी इसराईल' की तरह यह कहने वाले नहीं हैं कि जाओ तुम और तुम्हारा ख़ुदा दोनों लड़ें हम तो यहाँ बैठे हैं"। परन्तु अभी 'अनसार' की राय नहीं मालूम हो सकी थी। नबी सल्ल० ने 'अनसार' को सम्बोधित करते हुये अपना सवाल फिर दोहराया। इस पर सअ्द इब्न मुआज़ रज़ि० उठे और कहा : "हम आप (सल्ल०) पर 'ईमान' ला चुके हैं। आप की तसदीक़ कर चुके हैं। और इस की गवाही दे चुके हैं कि आप जो कुछ लाये हैं वह हक़ है। और आप का हुक्म मानने का वचन दे चुके हैं। हे अल्लाह के 'रसूल' ! आप ने जो निश्चय किया है उसे कीजिए; क़सम है उस सत्ता की जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है कि यदि आप हमें ले कर समुद्र पर जा पहुँचे और उस में उतर जायें तो हम आप के साथ कूदेंगे और हम में से कोई एक व्यक्ति भी पीछे न रहेगा। हम लड़ाई में डटे रहेंगे और मुक़ाबले में हम प्राणों की बाज़ी लगा देने में अपने-आप को सच्चा सिद्ध करेंगे। और यह असम्भव नहीं कि अल्लाह आप को हम से वह कुछ दिखाये जिसे देख कर आप की आँखें ठण्डी हो जायें अतः आप (सल्ल०) अल्लाह की बरकत के भरोसे हमें ले चलें"।

इस के बाद फ़ैसला हो गया कि मुक़ाबला 'क़ुरैश' की सेना ही का करना है। नबी सल्ल० अल्लाह के भरोसे पर ३०० से कुछ अधिक मुसलमानों को ले कर मदीना से निकल खड़े हुये। मुसलमानों के पास न तो अधिक लड़ाई का सामान था और न उन की सेना में अधिक सैनिक ही थे। थोड़े लोगों को छोड़ कर बाक़ी लोग डरे हुये थे। उन्हें ऐसा लग रहा था, मानो जानते-बूझते अपने-आप को मौत के मुँह में झोंक रहे हैं।

१६ 'रमज़ान' को आप (सल्ल०) 'बद्र' नामक गाँव के निकट पहुँचे। यह बस्ती मदीना से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग ८० मील की दूरी पर है। जिस समय दोनों सेनाओं का मुक़ाबला हुआ तो नबी सल्ल० ने देखा कि मुसलमान बहुत थोड़े हैं और उन के पास लड़ाई का सामान भी ठीक से नहीं है। आप (सल्ल०) ने अल्लाह से प्रार्थना की : "हे अल्लाह ! ये 'क़ुरैश' हैं, अपनी सर्व-सामग्री के साथ आये हैं ताकि तेरे 'रसूल' को झूठा सिद्ध करें। हे अल्लाह ! तेरी वह मदद आ जाये जिस का तू ने वादा किया है। हे अल्लाह ! यदि यह मुट्ठी भर गरोह विनष्ट हो गया तो धरती पर फिर तेरी 'इबादत' न होगी"।

इस लड़ाई में सब से कड़ी परीक्षा मक्का के 'मुहाजिर' मुसलमानों की थी। उन्हें अपने ही भाई-बन्धुओं और नातेदारों का मुक़ाबला करना था। किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का भाई, किसी का मामूँ उस की तलवार के सामने आ रहा था। इस कड़ी परीक्षा में वही लोग पूरे उतर सकते थे जिन्हों ने वास्तव में समझ-बूझ कर सत्य को ग्रहण किया हो और असत्य से अपने सारे नाते तोड़ चुके हों। 'अनसार' के लिए भी यह कोई साधारण परीक्षा न थी। वे 'इस्लाम' की ओर से लड़ कर सारे अरब को अपना दुश्मन बना रहे थे। यह साहस वे उसी समय कर सकते थे जब कि अल्लाह और 'रसूल' उन्हें सारे संसार से बढ़ कर प्रिय हो गये हों।

इस लड़ाई में अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। उन के मुक़ाबले में एक हज़ार से अधिक की सेना परास्त हो कर रह गई। 'क़ुरैश' के ७० व्यक्ति मारे गये और इतने ही क़ैद हुये। 'क़ुरैश' के जितने बड़े-बड़े सरदार थे क़रीब-क़रीब वे सभी ख़त्म हो गये। सूरा अल-अनफ़ाल में इस लड़ाई पर विस्तारपूर्वक विवेचना की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस सूरा का केन्द्रीय विषय है पूर्ण रूप से अल्लाह् का हुक्म मानना और अपने 'रब' पर पूरा भरोसा रखना। इस सूरा की समस्त वार्त्तायें इसी केन्द्रीय विषय से सम्पर्क रखती हैं।

जैसा कि ऊपर यह बात कही जा चुकी है कि इस सूरा में 'बद्र' की लड़ाई पर पूर्ण रूप से विवेचना की गई है। 'बद्र' की लड़ाई को 'क़ुरआन' नें 'फ़ुरक़ान' अथवा फ़ैसला (Distinction) की उपाधि दी है। इस लड़ाई ने 'रसूल' के मिशन (Mission) की सत्यता को पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिया। पिछली सूरा में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार पिछले 'नबियों' के शत्रुओं को अन्त में अल्लाह् ने उन के किये का मज़ा चखाया है। प्रस्तुत सूरा में इस का उल्लेख किया गया है कि पिछले 'नबियों' के दुश्मनों की तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० के विरोधियों को भी मुंह की खानी पड़ी।

इस सूरा में 'बद्र' की लड़ाई पर विवेचना करते हुये मुसलमानों को विशेष आदेश दिये गये हैं। उन्हें बताया गया है कि जब वे 'इस्लाम' को अपना चुके हैं तो उन्हें अल्लाह् की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। और उन्हें अपने 'रब' पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। 'ईमान' और 'इस्लाम' की पूर्णता का अर्थ ही यह होता है कि मनुष्य आत्मार्पण द्वारा यह सिद्ध कर दे कि वह अपने ईश्वर का हर हुक्म मानने के लिए तैयार है और उसे उस पर पूरा भरोसा तथा विश्वास है।

इस सूरा में सब से पहले उन कमज़ोरियों को दूर करने पर ज़ोर दिया गया है जो नैतिक दृष्टि से मुसलमानों में पाई जाती थीं। मुसलमानों को बताया गया कि मुसलमान तलवार उठाता है तो केवल अल्लाह् और उस के 'दीन' के लिए। उस की लड़ाई लौकिक लाभों के लिए नहीं होती।

मुसलमानों को बताया गया कि इस लड़ाई में उन्हें जो भी सफलता प्राप्त हुई है वह अल्लाह् की कृपा और दया का परिणाम है। इस लिए उन्हें अपनी शक्ति और अपने साधनों पर नहीं बल्कि अपने अल्लाह् पर भरोसा करना चाहिए, उसी का उन्हें कृतज्ञ होना चाहिए और प्रत्येक अवस्था में उन्हें अल्लाह् और उस के 'रसूल' का आदेश मानना चाहिए। 'बद्र' की लड़ाई का दिन 'इस्लाम' के इतिहास में एक ऐसा दिन था जो सदैव याद रहेगा। मुसलमानों को सचेत किया गया कि यह लड़ाई वास्तव में 'इस्लाम' के विरुद्ध किये जाने वाले संघर्षों की पहली कड़ी है। इस लिए उन्हें आगे के लिए तैयार रहना चाहिए[1]।

मुसलमानों को बताया गया कि वह वास्तविक ध्येय क्या था जिस के लिए यह लड़ाई लड़नी पड़ी है। और उन नैतिक विशेषताओं को भी खोल कर बयान किया गया जिन के कारण मुसलमानों को इस लड़ाई में सफलता प्राप्त हुई है।

फिर उन 'मुश्रिकों' और 'मुनाफ़िक़ों' को जो इस लड़ाई में क़ैद हुये थे अत्यन्त अच्छे ढंग से सम्बोधित किया गया ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर सकें।

मुसलमानों को बताया गया कि इस लड़ाई में जो कुछ उन के हाथ आया है उसे अपना धन न समझें बल्कि उसे अल्लाह् का माल और उस का दिया हुआ एक पुरस्कार समझें। उस में जो हिस्सा अल्लाह् नें उन के लिए निश्चित किया है उसे अल्लाह् का उपकार समझते हुये लें और उस का जो भाग अल्लाह् ने अपने 'दीन' के लिए या ग़रीबों और मुहताजों की सहायता के लिए निश्चित किया है उसे ख़ुशी से मान लें।

१. इस लड़ाई के दूसरे ही वर्ष 'काफ़िरों' ने तीन हज़ार की सेना ले कर मुसलमानों पर आक्रमण कर दिया (दे० सूरा ३)। सन् ५ हि० में तो उन्हों ने १०,००० की सेना लेकर मदीना पर धावा बोल दिया। यह लड़ाई इतिहास में 'ख़न्दक़ की लड़ाई' के नाम से प्रसिद्ध है (दे० सूरा अल-अहज़ाब)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें लड़ाई और सन्धि के बारे में नैतिक आदेश दिये गये। उन्हें आदेश दिया गया कि वे लड़ाई और सन्धि से अज्ञान-काल की रीति से बचें और संसार को 'इस्लाम' की नैतिक महानता का परिचय दें।

उन्हें कुछ राजनीतिक क़ानूनों अथवा नियमों की भी शिक्षा दी गई और यह बताया गया कि 'दारुलइस्लाम' (इस्लामी राज्य) के मुसलमानों की क़ानूनी हैसियत उन मुसलमानों से भिन्न है जो 'दारुलइस्लाम' की सीमा से बाहर रहते हों और 'हिजरत' कर के 'दारुलइस्लाम' में न आ गये हों।

इस सूरा में एक ओर 'मुस्लिम' गरोह को विजय की शुभ-सूचना दी गई है और साफ़ तौर पर बता दिया गया है कि विरोधी दल का जत्था चाहे कितना ही बढ़ा हुआ क्यों न हो वह उस के काम नहीं आयेगा (दे० आयत १९)। दूसरी ओर मुसलमानों को 'जिहाद' पर उकसाया गया है और बताया गया है कि अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ है जो सब्र करने वाले अथवा धैर्य्यवान् हैं[1]।

'जिहाद' के अतिरिक्त 'हिजरत' पर भी इस सूरा में विशेष ज़ोर दिया है[2]। 'जिहाद' और 'हिजरत' को 'ईमान' वालों की पहचान बताई गई है। सूरा को समाप्त करते हुये कहा गया है कि जो लोग 'ईमान' लाये परन्तु 'हिजरत' नहीं की उन से तुम्हारा संरक्षण और मैत्री आदि का कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि वे 'हिजरत' न करें। इस प्रकार सूरा की अन्तिम 'आयतों' में भारमुक्ति (Immunity) अथवा पार्थक्य का उल्लेख किया गया है[3] जो इस सूरा के बाद आने वाली सूरा का केन्द्रीय विषय है जिस में 'मुश्रिकों' और उन 'काफ़िरों' के प्रति भारमुक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा की गई है जो 'किताब वालों' में से थे।

———

१. दे० आयत ६५।
२. दे० आयत ७२-७४।
३. दे० आयत ७२-७५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अनफ़ाल

(मक्का में उतरी -- 'आयतें' ७५)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. (हे 'नबी' !) लोग तुम से 'अनफ़ाल' के बारे में पूछते हैं। कहो : 'अनफ़ाल' अल्लाह और उस के 'रसूल' के हैं,[1] तो तुम अल्लाह का डर रक्खो, और आपस के सम्बन्धों को ठीक रक्खो, और अल्लाह और उस के 'रसूल' का हुक्म मानो, यदि तुम 'ईमान' वाले हो।

२. 'ईमान' वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाये तो उन के दिल कांप उठें, और जब उन के सामने उस की 'आयतें' पढ़ी जायें तो वे उन के 'ईमान' को और बढ़ा दें, और वे अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं;

३. 'नमाज़' क़ायम करते हैं और हम ने जो कुछ उन्हें दिया है उस में से खर्च करते हैं।

४. ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे 'ईमान' वाले हैं। उन के लिए उन के 'रब' के पास दर्जे हैं, क्षमा और सम्मानित आजीविका है।

५. (इस ग़नीमत के माल के मामले को भी वैसा ही समझो) जिस तरह तेरा 'रब' ('बद्र' के अवसर पर) तुझे हक़ के साथ तेरे घर से निकाल लाया था, और 'ईमान' वालों के एक गरोह को यह बहुत ही नापसन्द था,

६. वे सत्य के मामले में तुझ से झगड़ रहे थे जब कि वह बिल्कुल खुल कर सामने आ चुका था, मानो वे आँखों देखे मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हैं।

SPOILS OF WAR

Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah the Beneficent, the Merciful.

1. They ask thee (O Muhammad) of the spoils of war. Say: The spoils of war belong to Allah and the messenger, so keep your duty to Allah, and adjust the matter of your difference, and obey Allah and His messenger, if ye are (true) believers.

2. They only are the (true) believers whose hearts feel fear when Allah is mentioned and when the revelations of Allah are recited unto them they increase their faith, and who trust in their Lord;

3. Who establish worship and spend of that We have bestowed on them.

4. Those are they who are in truth believers. For them are grades (of honour) with their Lord, and pardon, and a bountiful provision.

5. Even as thy Lord caused thee (Muhammad) to go forth from thy home with the Truth, and lo! a party of the believers were averse (to it),

6. Disputing with thee of Truth after it had been made manifest as if they were being driven to death visible.

سورة الأنفال مدنية وهي خمس وسبعون آية وعشر ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ
لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ
بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١﴾
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ
قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٢﴾
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ﴿٤﴾
كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ﴿٥﴾
يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا
يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾

१. 'अनफ़ाल' से अभिप्रेत यहाँ लड़ाई में दुश्मनों का छोड़ा हुआ माल है। जिसे 'ग़नीमत' भी कहते हैं। 'बद्र' की लड़ाई में जो माल मुसलमानों के हाथ आया था उस के बाँटने के अवसर पर मुसलमानों में बड़ा मत-भेद पैदा हो गया था। इस सूरा में इस समस्या का समाधान किया गया।

लड़ाई में हाथ आये हुये धन को 'अनफ़ाल' का नाम दे कर अल्लाह ने ग़नीमत के माल की हैसियत निश्चित कर दी। 'अनफ़ाल' 'नफ़्ल' का बहुवचन है। जो चीज़ हक़ से अधिक हो अरबी भाषा में उसे 'नफ़्ल' कहते हैं। मालिक की ओर से बन्दे को उस के हक़ से अधिक जो कुछ प्रदान किया जाये वह 'नफ़्ल' है। 'ग़नीमत' को 'अनफ़ाल' कहने का मतलब यह हुआ कि यह माल वास्तव में अल्लाह की देन ओर उस का इनाम है। इस लिए अल्लाह ही को यह अधिकार प्राप्त है कि वह फ़ैसला करे कि इस में किस को कितना मिलना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और (याद करो) जब अल्लाह तुम से वादा कर रहा था कि दो गरोहों में से एक[२] तुम्हारे हाथ आ जायेगा, तुम चाहते थे कि वैभवहीन (निरस्त्र) गरोह तुम्हारे हाथ आ जाये। और अल्लाह चाहता था कि अपने वचनों द्वारा हक़ को हक़ कर दिखाये, और 'काफ़िरों' की जड़ काट कर रख दे;

८. ताकि हक़ को हक़ और नाहक़ को नाहक़ कर दे, चाहे अपराधियों को कितना ही अप्रिय हो;

९. (याद करो) जब तुम अपने 'रब' से फ़रियाद कर रहे थे तो वह तुम्हारी फ़रियाद को पहुँचा कि मैं एक हज़ार लगातार आने वाले 'फ़िरिश्तों' से तुम्हारी मदद करूँगा।

१०. और अल्लाह ने इसे केवल खुश-खबरी बनाई, और ताकि इस में तुम्हारे दिलों को इतमीनान हो। और मदद तो अल्लाह ही के यहाँ से होती है। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

११. (याद करो) जब वह तुम्हें ऊँघ से ढाँक रहा था कि यह उस की ओर से निश्चिन्तता और इतमीनान का सामान था और आकाश से तुम्हारे ऊपर पानी बरसा रहा था, ताकि तुम्हें उस के द्वारा पाक करे, और 'शैतान' की नापाकी को तुम से दूर करे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और क़दम जमा दे[३]।

१२. जब तुम्हारा 'रब' 'फ़िरिश्तों' की ओर 'वह्य' कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो तुम उन लोगों को जो 'ईमान' ला चुके हैं जमाये रक्खो। मैं अभी 'काफ़िरों' के दिलों में रोब डाले देता हूँ। तो तुम उन की गरदनों पर मारो और उन के हर जोड़ पर चोट लगाओ।

7. And when Allah promised you one of the two bands (of the enemy) that it should be yours and ye longed that other than the armed one might be yours. And Allah willed that He should cause the Truth to triumph by His words, and cut the root of the disbelievers;

8. That He might cause the Truth to triumph and bring vanity to naught, however much the guilty might oppose;

9. When ye sought help of your Lord and He answered you (saying): I will help you with a thousand of the angels, rank on rank.

10. Allah appointed it only as good tidings, and that your hearts thereby might be at rest. Victory cometh only by the help of Allah. Lo! Allah is Mighty, Wise.

11. When he made the slumber fall upon you as a reassurance from Him and sent down water from the sky upon you, that thereby He might purify you and remove from you the fear of Satan, and make strong your hearts and firm (your) feet thereby.

12. When thy Lord inspired the angels (saying): I am with you. So make those who believe stand firm. I will throw fear into the hearts of those who disbelieve. Then smite the necks and smite of them each finger.

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

२. अर्थात् तिजारती क़ाफ़िला अथवा 'क़ुरैश' की सेना। दे० इस सूरा की भूमिका।

३. ऐसा उस रात को पेश आया जिस की सुब्ह को 'बद्र' की लड़ाई हुई है। मुसलमानों को इस वर्षा से कई फ़ायदे पहुँचे, उन्हें नहाने-धोने और पीने के लिए अधिक मात्रा में पानी मिल गया। रेत जम गई जिस के कारण भूमि पर चलने-फिरने में आसानी हो गई। जिधर 'क़ाफ़िरों' की सेना थी, उधर भूमि नीची थी वर्षा के कारण वहाँ कीचड़ हो गया जिस से उन के पाँव धँसने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. यह इस लिए कि इन लोगों ने अल्लाह और उस के 'रसूल' का विरोध* किया। और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' का विरोध करे, तो निस्सन्देह अल्लाह भी कड़ी सजा देने वाला है।

13. That is because they opposed Allah and His messenger. Whoso opposeth Allah and His messenger, (for him) lo! Allah is Severe in punishment.

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

१४. यह है (तुम्हारी सज़ा), इस का मज़ा चखो, और यह भी (जान लो) कि 'काफ़िरों' के लिए आग ('जहन्नम') की यातना है।

14. That (is the award), so taste it, and (know) that for disbelievers is the torment of the Fire.

ذٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

१५. हे 'ईमान' लाने वालो! जब तुम एक सेना के रूप में 'काफ़िरों' से भिड़ो, तो उन से पीठ न फेरो।

15. O ye who believe! When ye meet those who disbelieve in battle, turn not your backs to them.

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

१६. जो कोई इस अवसर पर उन से पीठ फेरेगा--सिवाय इस के कि युद्धरीति के रूप में ऐसा करे या दूसरी सेना में जा मिलने के लिए-- तो वह अल्लाह के प्रकोप का भागी हुआ, उस का ठिकाना 'जहन्नम' है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

16. Whoso on that day turneth his back to them, unless manoeuvring for battle or intent to join a company, he truly hath incurred wrath from Allah and his habitation will be hell, a hapless journey's end.

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللّٰهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

१७. तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया। और तू ने नहीं फेंका बल्कि अल्लाह ने फेंका,[४] (ताकि 'काफ़िरों' को उन के किये का मज़ा चखाये) और ताकि वह 'ईमान' वालों को अपनी ओर से एक अच्छी आज़माइश से गुज़ारे। निस्सन्देह अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

17. Ye (Muslims) slew them not, but Allah slew them. And thou (Muhammad) threwest not when thou didst throw, but Allah threw, that He might test the believers by a fair test from Him. Lo! Allah is Hearer, Knower.

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

१८. यह है (मामला), और यह (जान लो) कि अल्लाह 'काफ़िरों' की चालों को कमज़ोर करने वाला है।

18. That (is the case); and (know) that Allah (it is) Who maketh weak the plan of disbelievers.

ذٰلِكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِينَ ﴿١٨﴾

१९. (कह दो) : यदि तुम फ़ैसला चाहते थे, तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया[५]। यदि तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है, और यदि फिर वही चाल चलोगे तो हम भी चलेंगे। और तुम्हारा जत्था चाहे वह कितना ही अधिक हो तुम्हारे कुछ काम न आयेगा, और यह कि अल्लाह तो 'ईमान' वालों के साथ है।

19. (O Qureysh)! If ye sought a judgement, now hath the judgement come unto you. And if ye cease (from persecuting the believers) it will be better for you, but if ye return (to the attack) We also shall return. And your host will avail you naught, however numerous it be, and (know) that Allah is with the believers (in His guidance).

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾ ع

४. 'बद्र' की लड़ाई में जब मुसलमानों और 'काफ़िरों' की सेनायें एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुई तो उस समय नबी सल्ल० ने मुट्ठी भर रेत हाथ में ले कर यह कहते हुये कि 'चेहरे बिगड़ जायें' उसे काफ़िरों की ओर फेंका था। इस के साथ ही मुसलमानों ने एक साथ 'काफ़िरों' पर हमला किया था। यहाँ इसी घटना की ओर संकेत किया गया है।

५. मक्का से चलते समय 'काफ़िरों' ने 'काबा' के परदे को पकड़ कर विन्ती की थी कि हे अल्लाह! दोनों गरोहों में जो हक़ पर हो उसे विजय प्राप्त हो। अबू जह्ल ने खास तौर पर कहा था कि हे अल्लाह! हम में जो सत्य पर हो उसे विजय प्रदान कर और जो ज़ालिम हो उसे ज़लील और रुसवा कर दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. हे 'ईमान' लानें वालो ! अल्लाह और उस के 'रसूल' के हुक्म पर चलो, और सुन लेने के बाद उस से मुंह न मोड़ो ।

20. O ye who believe! Obey Allah and His messenger, and turn not away from him when ye hear (him speak).

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝٢٠

२१. और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा कि हम ने सुना, हालाँकि वे नहीं सुनते ।

21. Be not as those who say, We hear, and they hear not.

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ۝٢١

२२. निस्सन्देह अल्लाह की दृष्टि में (भूमि पर) चलने वाले सब से बुरे जीव वे बहरे-गूंगे लोग हैं, जो कुछ समझते नहीं ।

22. Lo! the worst of beasts in Allah's sight are the deaf, the dumb who have no sense.

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ
الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝٢٢

२३. यदि अल्लाह जानता कि उन में कुछ भी भलाई है तो वह अवश्य उन्हें सुनाता,[६] और यदि वह उन्हें सुनवाता तो वे मुंह फेर कर भागते ।

23. Had Allah known of any good in them He would have made them hear, but had He made them hear they would have turned away, averse.

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ
وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝٢٣

२४. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह और 'रसूल' की पुकार का जवाब दो जब कि वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाये जो तुम्हें जीवन प्रदान करनें वाली है, और जान लो कि अल्लाह आदमी और उस के दिल के बीच आड़े आ जाता है, और यह कि वही है जिस की ओर तुम समेटे जाओगे ।

24. O ye who believe! Obey Allah, and the messenger when He calleth you to that which quickeneth you and know that Allah cometh in between the man and his own heart, and that He it is unto Whom ye will be gathered.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَ
لِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَ
اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ
قَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝٢٤

२५. और बचो उस फ़ितने से जो अपनी लपेट में ख़ास उन्हीं लोगों को नहीं लेगा जिन्हों नें तुम में से ज़ुल्म किया हो। और जान रक्खो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है ।

25. And guard yourselves against a chastisement which cannot fall exclusively on those of you who are wrong-doers, and know that Allah is severe in punishment.

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝٢٥

२६. और याद करो, जब तुम थोड़े थे, धरती में तुम्हें बे ज़ोर समझा जाता था, तुम डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उचक न ले जायें, फिर उस ने तुम्हें ठिकाना दिया, और अपनी सहायता से तुम्हें शक्ति प्रदान की, और तुम्हें पाक (और अच्छी) चीज़ों की रोज़ी दी, ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।

26. And remember, when ye were few and reckoned feeble in the land and were in fear lest men should extirpate you, how He gave you refuge, and strengthened you with His help, and made provision of good things for you, that haply ye might be thankful.

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ
فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ
النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ
مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝٢٦

२७. हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम अल्लाह और 'रसूल' के साथ विश्वासघात न करो, और न अपनी अमानतों (और ज़िम्मेदारियों) के सिलसिले में कपट से काम लो जब कि तुम जानते हो ।

27. O ye who believe! Betray not Allah and His messenger, nor knowingly betray your trusts.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَ
الرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٢٧

२८. और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा बदला है ।

28. And know that your possessions and your children are a test, and that with Allah is immense reward.

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝٢٨

६. अर्थात् उन्हें सुनने का सौभाग्य प्रदान करता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. हे 'ईमान' लाने वालो ! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो वह तुम्हारे लिए कसौटी[७] संचित कर देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयों को दूर करेगा, और तुम्हें क्षमा करेगा। और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

29. O ye who believe! If ye keep your duty to Allah, He will give you discrimination (between right and wrong) and will rid you of your evil thoughts and deeds and will forgive you. Allah is of infinite bounty.

يا أيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم والله ذو الفضل العظيم ۝

३०. और (वह समय याद करो) जब 'काफ़िर' लोग तेरे बारे में चालें चल रहे थे कि तुझे क़ैद कर दें, या तुझे क़त्ल कर डालें या तुझे निकाल दें; और वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी चाल चल रहा था; और अल्लाह सब से उत्तम चाल चलने वाला है।[८]

30. And when those who disbelieve plot against thee (O Muhammad) to wound thee fatally, or to kill thee or to drive thee forth; they plot, but Allah (also) plotteth; and Allah is the best of plotters.

وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك أو يخرجوك ويمكرون ويمكر الله والله خير الماكرين ۝

३१. और जब उन्हें हमारी 'आयतें' पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं : हम ने सुन लिया। यदि हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी कह लें। यह तो केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं।

31. And when Our revelations are recited unto them they say: We have heared. If we wish we can speak the like of this. Lo! this is naught but fables of the men of old.

وإذا تتلى عليهم آياتنا قالوا قد سمعنا لو نشاء لقلنا مثل هذا إن هذا إلا أساطير الأولين ۝

३२. और (याद करो) जब उन्होंने कहा था : हे अल्लाह ! यदि यही ('दीन') तेरे यहाँ से सत्य है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई दु:ख देने वाली यातना ले आ !

32. And when they said: O Allah! If this be indeed the truth from Thee, then rain down stones on us or bring on us some painful doom!

وإذ قالوا اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم ۝

३३. और यह नहीं होने का कि तुम उन के बीच हो और अल्लाह उन्हें यातना देने लग जाए और न यह होने का है कि लोग क्षमा की प्रार्थना कर रहे हों और अल्लाह उन्हें यातना दे।

33. But Allah would not punish them while thou wast with them, nor will He punish them while they seek forgiveness.

وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون ۝

३४. परन्तु अब वह उन्हें क्यों न यातना दे, जब कि वे 'मस्जिदे हराम' ('काबा') का रास्ता रोकते हैं, हालाँकि वे उस के कोई अधिकारी नहीं हैं। उस के अधिकारी तो केवल डर रखने वाले लोग हैं। परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

34. What (plea) have they that Allah should not punish them, when they debar (His servants) from the Inviolable Place of Worship, though they are not its fitting guardians. Its fitting guardians are those only who keep their duty to Allah. But most of them know not.

وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام وما كانوا أولياءه إن أولياؤه إلا المتقون ولكن أكثرهم لا يعلمون ۝

३५. और उन की 'नमाज़' 'काबा' के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती। तो (उन से कहा गया) ; अब यातना का मज़ा चखो[९] उस 'कुफ़्' के बदले में जो तुम करते रहे हो।

35. And their worship at the (holy) House is naught but whistling and hand-clapping. Therefore (it is said unto them): Taste of the doom because ye disbelieve.

وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ۝

७. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १५।
८. अर्थात् उस की छिपी तदबीरें सब से बढ़ कर होती हैं।
९. अल्लाह की यातना आकाश से पत्थरों के रूप में ही नहीं आया करती; 'बद्र' की लड़ाई 'काफ़िरों' के लिए अल्लाह की यातना ही है। इस लड़ाई से उन की शक्ति क्षीण हो गई; उन्हें अति अधिक हानि पहुँची; उन के बड़े-बड़े सरदार इस लड़ाई में विनष्ट हो गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. निश्चय ही जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है वे अपने माल अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए ख़र्च कर रहे हैं। तो वे और ख़र्च करते रहेंगे, फिर यही चीज़ उन के लिए पछतावा बनेगी, फिर वे पराजित हो कर रहेंगे। और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है वे 'जहन्नम' की ओर घेर लाये जायेंगे।

36. Lo! those who disbelieve spend their wealth in order that they may debar (men) from the way of Allah. They will spend it, then it will become an anguish for them, then they will be conquered. And those who disbelieve will be gathered unto hell,

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

३७. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँट कर अलग करे और नापाक को एक-दूसरे पर रख कर एक ढेर बनाये, फिर उसे 'जहन्नम' में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटा उठाने वाले हैं।

37. That Allah may separate the wicked from the good. The wicked will He place piece upon piece, and heap them all together, and consign them unto hell. Such verily are the losers.

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है उन से कह दो कि यदि वे बाज़ आ जायें तो जो कुछ पहले हो चुका है उस के लिए उन्हें क्षमा कर दिया जायेगा; और यदि वे फिर वही कर्म करने लगें तो पिछले लोगों की रीतियाँ बीत चुकी हैं[10]।

38. Tell those who disbelieve that if they cease (from persecution of believers) that which is past will be forgiven them; but if they return (thereto) then the example of the men of old hath already gone (before them for a warning).

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنتَهُوا يُغْفَرْ لَهُم مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِن يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

३९. और तुम उन से लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना (उपद्रव) बाक़ी न रहे, और 'दीन' (धर्म) पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो जाये। फिर यदि वे बाज़ आ जायें[11] तो जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उस का देखने वाला है।

39. And fight them until persecution is no more and religion is all for Allah. But if they cease, then lo! Allah is Seer of what they do.

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

४०. और यदि वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा प्रभु और संरक्षक-मित्र है, क्या ही अच्छा संरक्षक है और कैसा अच्छा सहायक है!

40. And if they turn away, then know that Allah is your Befriender—a transcendent Patron, a transcendent Helper!

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

*४१. और जान लो कि जो चीज़ 'ग़नीमत' के रूप में तुम ने प्राप्त की है, उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह का, और 'रसूल' का, और ('रसूल' के) नातेदारों का, और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िर का है, यदि तुम 'ईमान' लाये हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो फ़ैसले के दिन[12]—जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठ-भेड़ हुई थी—हम ने अपने बन्दे पर उतारी थी। और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

41. And know that whatever ye take as spoils of war, lo! a fifth thereof is for Allah, and for the messenger and for the kinsman (who hath need) and orphans and the needy and the wayfarer. If ye believe in Allah and that which We revealed unto Our slave on the Day of Discrimination, the day when the two armies met. And Allah is Able to do all things.

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

१०. दे० सूरा आले इमरान फ़ुटनोट २६।
११. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ५४ और ५५।
* यहाँ से दसवाँ पारा (Part X) शुरू होता है।
१२. अर्थात् 'बद्र' की लड़ाई के दिन, जिस दिन कि अल्लाह ने युद्ध-क्षेत्र में हक़ और नाहक़ का फ़ैसला कर दिया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. और (याद करो) जब तुम (घाटी के) इस ओर थे और वे दूसरी ओर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे की ओर था। यदि कहीं तुम ने आपस में (मुक़ाबले का) कोई वादा ठहराया होता तो तुम में अवश्य इस वादे के बारे में मतभेद हो जाता (जो कुछ हुआ वह इस लिए हुआ) ताकि जिस बात का होना निश्चय पा चुका था अल्लाह उसे पूरा कर दे; ताकि जिसे विनष्ट होना है खुली दलील के साथ विनष्ट हो और जिसे जीना है वह खुली दलील के साथ जीवित रहे। निस्सन्देह अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

४३. (याद करो) जब अल्लाह तुझे स्वप्न में उन्हें थोड़ा दिखा रहा था, और यदि कहीं वह उन्हें ज़्यादा दिखा देता, तो अवश्य तुम साहस छोड़ बैठते और इस (लड़ाई के) मामले में परस्पर झगड़ने लग जाते। परन्तु अल्लाह ने इस से बचा लिया। निश्चय ही वह सीनों तक का हाल जानता है।

४४. और (याद करो) जब तुम एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुये, तो अल्लाह उन्हें तुम्हारी निगाहों में थोड़ा दिखा रहा था, और उन की निगाहों में तुम्हें कम करके दिखा रहा था, ताकि जो बात होनी थी अल्लाह उसे पूरा कर दे। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

४५. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब किसी गरोह से तुम्हारी मुठ-भेड़ हो, तो जमे रहो और अल्लाह को अधिक याद करो, ताकि तुम्हें सफ-लता प्राप्त हो।

४६. और अल्लाह और उस के 'रसूल' के हुक्म पर चलो, और आपस में न झगड़ो नहीं तो तुम में कमज़ोरी आ जायेगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी; और धैर्य से काम लो ! निश्चय ही अल्लाह धैर्य से काम लेने वालों के साथ है।

४७. और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते हुये निकले, और जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, और जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उसे घेरे हुये है।

42. When ye were on the near bank (of the valley) and they were on the yonder bank, and the caravan was below you on the (coast plain). And had ye trysted to meet one another ye surely would have failed to keep the tryst, but (it happened, as it did without the forethought of either of you) that Allah might conclude a thing that must be done; that he who perished (on that day) might perish by a clear proof (of His sovereignty) and he who survived might survive by a clear proof (of His sovereignty). Lo! Allah in truth is Hearer, Knower.

43. When Allah showed them unto thee (O Muhammad) in thy dream as few in number, and if he had shown them to thee as many, ye (Muslims) would have faltered and would have quarrelled over the affair. But Allah saved (you). Lo! He knoweth what is in the breasts (of men).

44. And when He made you (Muslims), when ye met (them), see them with your eyes as few, and lessened you in their eyes, (it was) that Allah might conclude a thing that must be done. Unto Allah all things are brought back.

45. O ye who believe! When ye meet an army, hold firm and think of Allah much, that ye may be successful.

46. And obey Allah and His messenger, and dispute not one with another lest ye falter and your strength depart from you; but be steadfast! Lo! Allah is with the steadfast.

47. Be not as those who came forth from their dwellings boastfully and to be seen of men, and debar (men) from the way of Allah, while Allah is surrounding all they do.

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ
الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ۚ وَلَوْ
تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ ۙ وَلَٰكِنْ
لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۙ
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ
مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ
أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ
فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ
قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ
أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا
وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا
فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. और (याद करो) जब 'शैतान' ने उन के करतूतों को उन के लिए शोभायमान बना दिया था और कहा था कि आज लोगों में से कोई भी तुम पर प्रभुत्त्व प्राप्त नहीं कर सकता, और यह कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो जब दोनों गरोहों का आमना-सामना हुआ, तो वह उलटे पाँव फिर गया, और कहने लगा : मेरा तुम से कोई नाता नहीं। मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। और अल्लाह कड़ी सजा देने वाला है।

48. And when Satan made their deeds seem fair to them and said: No one of mankind can conquer you this day, for I am your protector. But when the armies came in sight of one another, he took flight, saying: Lo! I am guiltless of you. Lo! I see that which ye see not. Lo! I fear Allah. And Allah is Severe in punishment.

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ وَ
قَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ
إِنِّي جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتٰنِ
نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ
مِّنْكُمْ إِنِّيٓ أَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّيٓ أَخَافُ
اللّٰهَ وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

४९. याद करो जब 'मुनाफ़िक़' और वे लोग जिन के दिलों में रोग था कह रहे थे : इन लोगों को तो इन के 'दीन' ने भुलावे में डाल रक्खा है। हालाँकि जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है तो निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

49. When the hypocrites and those in whose hearts is a disease said: Their religion hath deluded these. Whoso putteth his trust in Allah (will find that) lo! Allah is Mighty, Wise.

إِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

५०. और यदि तुम देखते (कि उन का क्या हाल होता है) जब 'फ़िरिश्ते' 'काफ़िरों' (के प्राणों) को ग्रस्त लेते हैं! वे उन के चेहरों और उन की पीठों पर मारते जाते हैं कि लो अब जलने की यातना का मज़ा चखो।

50. If thou couldst see how the angels receive those who disbelieve, smiting their faces and their backs and (saying): Taste the punishment of burning!

وَلَوْ تَرٰٓى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ
يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا
عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

५१. यह उसी का बदला है जो तुम ने अपने हाथों पहले से भेजा है, और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं है।

51. This is for that which your own hands have sent before (to the Judgement), and (know) that Allah is not a tyrant to His slaves.

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ
لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

५२. (यह सब कुछ इन के साथ उसी तरह पेश आया) जैसे फिरऔन के लोगों और उन से पहले के लोगों का हाल हुआ; उन्हों ने अपने 'रब' की 'आयतों' का इन्कार किया, तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली और कड़ी सजा देने वाला है।

52. (Their way is) as the way of Pharaoh's folk and those before them; they disbelieved the revelation of Allah, and Allah took them in their sins. Lo! Allah is Strong, Severe in punishment.

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ
إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

५३. यह इस लिए कि अल्लाह उस नेमत को जो उस ने किसी जाति को प्रदान की हो बदलने वाला नहीं है जब तक कि लोग स्वयं अपनी हालत न बदलें, और इस लिए भी कि अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

53. That is because Allah never changeth the grace He hath bestowed on any people until they first change that which is in their hearts, and (that is) because Allah is Hearer, Knower.

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
أَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ
وَأَنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. जैसे फ़िरऔन के लोगों और उन से पहले के लोगों का हाल हुआ कि उन्हों ने अपने 'रब' की 'आयतों' को झुठलाया, तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण विनष्ट कर दिया और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया। वे सभी ज़ालिम थे।

54. (Their way is) as the way of Pharaoh's folk and those before them; they denied the revelations of their Lord, so We destroyed them in their sins. And We drowned the folk of Pharaoh. All were evildoers.

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

५५. निश्चय ही (भूमि पर) चलने वाले सब से बुरे जीव अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्हों ने 'कुफ़्' किया फिर वे 'ईमान' नहीं लाते;

55. Lo! the worst of beasts in Allah's sight are the ungrateful who will not believe;

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

५६. वे लोग कि जिन से तू ने सन्धि की, फिर वे हर बार अपने वचन भंग कर देते हैं, और डरते नहीं[१३]।

56. Those of them with whom thou madest a treaty, and then at every opportunity they break their treaty, and they keep not duty to (Allah).

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾

५७. तो यदि ये लोग तुम्हें लड़ाई में मिल जायें तो (इन की ख़बर ले कर) इन के द्वारा उन लोगों को भगा दो जो इन के पीछे हैं,[१४] कदाचित् वे चेतें।

57. If thou comest on them in the war, deal with them so as to strike fear in those who are behind them, that haply they may remember.

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

५८. और यदि तुम्हें किसी गरोह से विश्वास-घात का भय हो, तो उन के वचन को बराबरी का ध्यान रखते हुये उन के आगे फेंक दो[१५]। निस्सन्देह अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसन्द नहीं करता।

58. And if thou fearest treachery from any folk, then throw back to them (their treaty) fairly. Lo! Allah loveth not the treacherous.

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया वे यह न समझें कि वे बाज़ी ले गये। वे कभी हरा नहीं सकते।

59. And let not those who disbelieve suppose that they can outstrip (Allah's purpose). Lo! they cannot escape.

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

६०. जहाँ तक हो सके तुम लोग (सेना) शक्ति और तैयार बँधे हुये घोड़े उन के लिए तैयार रक्खो, ताकि इस के द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और इन के सिवा औरों को भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और अल्लाह के मार्ग में जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे उस का पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा, और तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं किया जायेगा।

60. Make ready for them all you can of (armed) force and of horses tethered, that thereby ye may dismay the enemy of Allah and your enemy, and others beside them whom ye know not. Allah knoweth them. Whatsoever ye spend in the way of Allah it will be repaid to you in full, and ye will not be wronged.

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾

१३. यहाँ संकेत विशेष रूप से 'यहूदियों' की ओर है। मदीना पहुँचने के साथ ही नबी सल्ल० ने यहूदियों से समझौता किया था। परन्तु यहूदी हमेशा यही कोशिश करते रहे कि जिस तरह भी सम्भव हो मुसलमानों का उन्मूलन कर दिया जाये।

१४. मतलब यह है कि इन्हें ऐसा मज़ा चखाओ कि इन के पिछले लोग इन की दशा को देख कर इधर-उधर भाग खड़े हों।

१५. बराबरी का ध्यान रखने का अर्थ यह है कि उन्हें पहले से जता दिया जाये कि हमारे तुम्हारे बीच जो सन्धि हुई थी अब वह सन्धि बाक़ी नहीं रही, ताकि दोनों गरोह समान रूप से लड़ाई की तैयारी कर सकें। बिना सूचना दिये उन के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती। क़ुरआन ने हर मामले में यहाँ तक कि युद्ध और लड़ाई में भी सच्चाई और न्याय-प्रियता का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह कितना उच्च और महान् है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. और यदि वे लोग सन्धि और सलामती की ओर झुकें, तो तुम भी इस के लिए झुक जाओ, और अल्लाह पर भरोसा रक्खो। निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

61. And if they incline to peace, incline thou also to it, and trust in Allah. Lo! He is the Hearer, the Knower.

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

६२. और यदि वे यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें, तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है। वही तो है जिस ने तुम्हें अपनी सहायता से और 'ईमान' वालों के द्वारा शक्ति प्रदान की,

62. And if they would deceive thee, then lo! Allah is sufficient for thee. He it is Who supporteth thee, with His help and with the believers,

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

६३. और उन ('ईमान' वालों) के दिल एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये। यदि तुम धरती में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तो भी उन के दिलों को एक-दूसरे के साथ जोड़ न सकते, परन्तु अल्लाह ने उन्हें परस्पर जोड़ दिया। निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

63. And (as for the believers) hath attuned their hearts. If thou hadst spent all that is in the earth thou couldst not have attuned their hearts, but Allah hath attuned them. Lo! He is Mighty, Wise.

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

६४. हे 'नबी'! तुम्हारे लिए और जिस किसी 'ईमान' वाले ने तुम्हारा अनुसरण किया उस के लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है।

64. O Prophet! Allah is sufficient for thee and those who follow thee of the believers.

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾ ع

६५. हे 'नबी'! 'ईमान' वालों को लड़ाई पर उभारो। यदि तुम में बीस जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, और यदि तुम में सौ हों तो वे एक हज़ार 'काफ़िरों' पर भारी रहेंगे, क्यों कि वे ऐसे लोग हैं जो समझ-बूझ नहीं रखते।

65. O Prophet! Exhort the believers to fight. If there be of you twenty steadfast they shall overcome two hundred, and if there be of you a hundred steadfast they shall overcome a thousand of those who disbelieve, because they (the disbelievers) are a folk without intelligence.

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

६६. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और उस ने जाना कि तुम में कमज़ोरी है। तो यदि तुम में सौ जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे, और यदि तुम में हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से भारी रहेंगे[१६]। और अल्लाह उन लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं।

66. Now hath Allah lightened your burden, for He knoweth that there is weakness in you. So if there be of you a steadfast hundred they shall overcome two hundred, and if there be of you a thousand (steadfast) they shall overcome two thousand by permission of Allah. Allah is with the steadfast.

الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾

१६. यह आदेश सन् २ हि० का है जब कि 'इस्लाम' में बहुत से लोग अभी नये-नये दाख़िल हुये थे। अभी पूर्ण रूप से इस्लामी शिक्षा-दीक्षा का अवसर उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था; इस लिए उन्हें छूट दी गई और कहा गया कि कम-से-कम अपने से दो गुनी ताक़त से टकरा जाने में तुम्हें कोई संकोच न होना चाहिए। 'ईमान वालों' और 'काफ़िरों' के बीच वास्तविक अनुपात एक और दस का होता है। बीस 'ईमान वाले' दो सौ 'काफ़िरों' पर भारी होते हैं। आगे चल कर जब कि मुसलमानों को अपने नबी (सल्ल०) की शिक्षा-दीक्षा से पूरा फ़ायदा उठाने का अवसर प्राप्त हुआ, तो उन के और 'काफ़िरों' के बीच यही एक और दस का अनुपात स्थापित हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६७. किसी 'नबी' के लिए यह सम्भव नहीं कि उस के पास क़ैदी हों जब तक कि वह धरती में (विरोधी दल को) कुचल कर न रख दे। तुम लोग दुनिया की सुख-सामग्री चाहते हो और अल्लाह 'आख़िरत' चाहता है, और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

67. It is not for any Prophet to have captives until he hath made slaughter in the land. Ye desire the lure of this world and Allah desireth (for you) the Hereafter, and Allah is Mighty, Wise.

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى
حَتَّى يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَضَ
الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ وَاللَّهُ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

६८. यदि (इस के बारे में) अल्लाह पहले से न लिख चुका होता, तो जो कुछ तुम ने किया है उस पर तुम्हें कोई बड़ी यातना पहुँचाता[१७]।

68. Had it not been for an ordinance of Allah which had gone before, an awful doom had come upon you on account of what ye took.

لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ
فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

६९. तो जो कुछ 'ग़नीमत' तुम ने हासिल की है उसे 'हलाल' और पाक समझ कर खाओ, और अल्लाह से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

69. Now enjoy what ye have won as lawful and good, and keep your duty to Allah. Lo! Allah is Forgiving Merciful.

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا وَ
اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٩﴾

७०. हे 'नबी'! जो क़ैदी तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने जाना कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें उस से बढ़-चढ़ कर देगा जो तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

70. O Prophet! say unto those captives who are in your hands: If Allah knoweth any good in your hearts He will give you better than that which hath been taken from you, and will forgive you. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ
مِنَ الْأَسْرَى إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ
خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٠﴾

७१. और यदि वे तेरे साथ विश्वासघात करना चाहते हैं, तो इस से पहले वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं, तो उस ने उन पर अधिकार दे दिया। अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

71. And if they would betray thee, they betrayed Allah before, and He gave (thee) power over them. Allah is Knower, Wise.

وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا
اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

१७. यहाँ वास्तव में विरोधियों के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है। यहूदी, 'मुशिरक', और 'मुनाफ़िक़' लोग 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् नबी सल्ल० पर चोटें करने लगे थे कि यह कैसा 'नबी' है कि अपनी जाति और बिरादरी के लोगों तक से लड़ता और उन्हें क़त्ल करता है। फिर उन्हें बन्दी बनाता और उन से 'फ़िदया' लेता है। और 'ग़नीमत' के माल को हलाल ठहराता है। जवाब में कहा गया कि नबी का यही कर्तव्य है कि वह धर्म-विरोधियों को भली-भाँति कुचल दे। वह और उस के साथी यदि युद्ध-क्षेत्र में उतरे हैं तो केवल सत्य के लिए उतरे हैं। उन की लड़ाई दुनिया के लिए कदापि नहीं है। वे जो कुछ करते हैं 'आख़िरत' के लिए करते हैं। फिर 'मुशिरकों' से कहा गया कि यदि अल्लाह का फ़ैसला यह न होता कि लड़ाई के द्वारा 'मुशिरकों' को उन के करतूत का मज़ा चखाया जाये, तो तुम ने जो नीति अपनाई है उस पर उस तरह की बड़ी यातना आ जाती जो पिछली जातियों पर आती रही है। फिर तो तुम्हारा बिल्कुल ही उन्मूलन हो जाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. निश्चय ही जो लोग 'ईमान' लाये और 'हिजरत' की और अल्लाह के मार्ग में अपनी जान और अपने माल से 'जिहाद' किया, और जिन लोगों ने ('हिजरत' करने वालों को) जगह दी और सहायता की; वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं। और जो लोग 'ईमान' ले आये परन्तु 'हिजरत' नहीं की, तो उन से तुम्हारा संरक्षण (और मैत्री आदि) का कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि वे 'हिजरत' न करें; परन्तु यदि वे 'दीन' (धर्म) के मामले में तुम से मदद चाहें तो मदद करनी तुम्हारे लिए आवश्यक है परन्तु किसी ऐसे गरोह के मुक़ाबले में नहीं जिस से तुम्हारी सन्धि हो। और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखता है।

72. Lo! those who belived and left their homes and strove with their wealth and their lives for the cause of Allah, and those who took them in and helped them; these are protecting friends one of another. And those who believed but did not leave their homes, ye have no duty to protect them till they leave their homes; but if they seek help from you in the matter of religion then it is your duty to help (them) except against a folk between whom and you there is a treaty. Allah is Seer of what ye do.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ
يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ
حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي
الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ ٧٢
وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

७३. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं—यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो धरती में फ़ितना (उपद्रव) और बड़ा फ़साद फैलेगा।

73. And those who disbelieve are protectors one of another —If ye do not so, there will be confusion in the land, and great corruption.

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا
تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ٧٣

७४. और जो लोग 'ईमान' लाये और 'हिजरत' की और अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' किया, और जिन लोगों ने जगह दी और सहायता की—ऐसे ही लोग सच्चे 'ईमान' वाले हैं। उन के लिए क्षमा, और सम्मानित आजीविका है।

74. Those who believed and left their homes and strove for the cause of Allah, and those who took them in and helped them—these are the believers in truth. For them is pardon, and a bountiful provision.

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم
مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ٧٤

७५. और जो लोग बाद में 'ईमान' लाये और 'हिजरत' की और तुम्हारे साथ हो कर 'जिहाद' किया, तो वे भी तुम में से हैं ; और नातेदार अल्लाह की 'किताब' में एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं[१८]। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

75. And those who afterwards believed and left their homes and strove along with you, they are of you; and those who are akin are nearer one to another in the ordin ance of Allah. Lo! Allah is Knower of all things.

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا
وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ
وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ٧٥

१८. 'हिजरत' के बाद नबी सल्ल० ने 'मुहाजिरों' और 'अनसार' के बीच भाई-चारा करा दिया था जिस के कारण कुछ लोग यह समझने लगे थे कि ये दीनी (धर्म सम्बन्धी) भाई एक-दूसरे के वारिस भी होंगे। इस 'आयत' में यह बात बताई गई कि जो नातेदार हैं और जिन में परस्पर ख़ून का रिश्ता है, उन का हक़ सब से ज़्यादा है; उन का हक़ मारा नहीं जा सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९—अत-तौबा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तौबा' (Repentance) सूरा की 'आयत' १०४ से लिया गया है। 'तबूक' की घटना के अवसर पर कुछ मुसलमानों से चूक हो गई थी;[1] फिर अल्लाह ने उन की 'तौबा' क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया। इस सूरा में अल्लाह ने उन की 'तौबा' स्वीकार करने की घोषणा की है।

इस सूरा का एक दूसरा नाम 'अल-बरअत' (The Immunity) है। यह नाम सूरा के आरम्भिक बयान (The Opening Statement) से लिया गया है। नाम रखने का यह भी एक नियम है कि इस के लिए आरम्भिक शब्दों को प्रयोग में लाया जाये। क़ुरआन की और बहुत सी 'सूरतों' के नाम इस नियम के अनुसार रक्खे गये हैं। इस नियम के अनुसार यहूदियों के यहाँ भी 'सहीफ़ों' के नाम रक्खे गये हैं।

'बरअत' अथवा भारमुक्ति इस सूरा का केन्द्रीय विषय भी है फिर इससे बढ़ कर उपयुक्त नाम और क्या हो सकता है। सूरा के आरम्भ में जिस बात की घोषणा की गई है 'इस्लाम' के इतिहास में उस का बड़ा महत्व है। इस घोषणा के द्वारा इस्लामी राज्य की आन्तरिक नीति को खोल कर लोगों के सामने रख दिया गया। इस सिलसिले में यह आदेश दिया गया कि 'मुश्रिकों' से कोई नाता और सम्बन्ध न रक्खा जाये; उन के प्रति अब मुसलमानों पर कोई भी जिम्मेदारी नहीं है। हाँ, जिन लोगों ने अपनी उस सन्धि और समझौते का पालन किया है जो उन्हों ने अल्लाह के 'रसूल' से किया था, उन के साथ समझौते के नियत समय तक वही मामला किया जाना चाहिए जो उन के साथ तै पाया हो।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरा में तीन तक़रीरें सम्मिलित हैं। पहली तक़रीर जो सूरा के आरम्भ से आयत ३७ तक चली जाती है, उस के उतरने का समय 'जिल्क़ादा' सन् ९ हिज० या इस के लगभग है। नबी सल्ल० इस साल हज़रत अबू बक्र रज़ि० को 'हज्ज' के लिए जाने वालों का अमीर (नायक) बना कर मक्का भेज चुके थे। जब यह तक़रीर उतरी तो आप (सल्ल०) ने हज़रत अली रज़ि० को भेजा ताकि 'हज्ज' के अवसर पर वे इसे लोगों को सुना दें।

दूसरी तक़रीर आयत ३८ से ले कर आयत ७२ तक चली गई है। यह तक़रीर 'रजब' सन् ९ हिज० या इस से कुछ पहले उतरी है। यह वह समय है जब नबी सल्ल० 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी में लगे हुये थे। इस तक़रीर में 'ईमान' वालों को लड़ाई पर उभारा गया है और उन लोगों की निन्दा की गई है, जो 'ईमान' की कमज़ोरी के कारण अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में निकलने से जी चुरा रहे थे।

तीसरी तक़रीर आयत ७३ से ले कर सूरा के अन्त तक चली गई है। यह तक़रीर 'तबूक' से लौटने पर उतरी है; इस में कुछ ऐसी आयतें भी सम्मिलित हैं जो उन ही दिनों में विभिन्न अवसरों पर उतरी हैं, परन्तु विषय की अनुकूलता के कारण वे भी अल्लाह की आज्ञा से इस में मिला दी गई हैं। इस तक़रीर में 'मुनाफ़िक़ों' को उन की कपट नीति पर चेतावनी दी गई है। और जो लोग 'तबूक' की मुहिम के अवसर पर पीछे रह गये थे उन्हें मलामत की गई है; और उन लोगों को जो 'ईमान' में सच्चे थे परन्तु इस मुहिम में पीछे रहे उन पर मलामत के साथ इस की भी घोषणा कर दी गई कि अल्लाह ने उन की 'तौबा' क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया।

१. 'तबूक' की घटना का विस्तार-पूर्वक वर्णन आगे आ रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किन परिस्थितियों में उतरी :—

हुदैबिया के स्थान पर नबी सल्ल० ने 'क़ुरैश' से जो सन्धि की थी, 'इस्लाम' के प्रचार पर उस का अच्छा प्रभाव पड़ा। लोगों को मुसलमानों से स्वतन्त्रता पूर्वक मिलने-जुलने का अवसर मिला। कितनों का वह सन्देह जो उन्हें 'इस्लाम' और मुसलमानों के बारे में था, मिलने-जुलने से ही दूर हो गया। इस समझौते के बाद केवल डेढ़-दो वर्ष में ही इतने लोगों ने 'इस्लाम' धर्म को स्वीकार किया कि इस से पहले कभी इतने लोग इस्लाम नहीं लाये थे। इसी बीच 'क़ुरैश' के कुछ प्रसिद्ध सरदार भी मुसलमान हो गये हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० और हज़रत अमर इबनुल्आस रज़ि० इसी समय में मुसलमान हुये थे। 'क़ुरैश' ने जब यह हाल देखा तो वे इस का सहन न कर सके। उन्हों ने 'हुदैबिया' की सन्धि को तोड़ डाला और अपने वचन से फिर गये। इस के बाद नबी सल्ल० ने अचानक दस हज़ार की सेना ले कर मक्का पर आक्रमण कर दिया और 'रमज़ान' सन् ८ हिज० में मक्का पर विजय प्राप्त कर ली। मक्का की विजय के बाद बहुत से क़बीले आ-आ कर 'इस्लाम' क़बूल करने लगे।

'हुनैन' की लड़ाई

'इस्लाम' की उन्नति का हाल देख कर, मक्का की विजय के बाद ही 'हवाज़िन' 'सक़ीफ़' 'बनी नज़्र' और कुछ दूसरे क़बीलों ने मिल कर मुसलमानों पर धावा बोल दिया। नबी सल्ल० मक्का से मुक़ाबले के लिए निकले। 'हुनैन' की घाटी में मुक़ाबला हुआ। इस लड़ाई में मुसलमानों की संख्या शत्रुओं से तीन गुनी थी। इस लड़ाई में १२ हज़ार मुसलमान सम्मिलित थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि शत्रु उन का कुछ भी मुक़ाबला नहीं कर सकते। बल्कि कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया, "आज हम पर कौन विजय प्राप्त कर सकता है!" अल्लाह को यह चीज़ पसन्द नहीं आई। इस लिए कि मुसलमान का भरोसा तो अपनी शक्ति पर नहीं होता, वह तो सदा अपने अल्लाह पर भरोसा रखता है। नतीजा यह निकला कि उन की अपनी ताक़त कुछ काम न आई। इस्लामी सेना जब सामने आई तो शत्रुओं ने क़रीब की पहाड़ियों से तीर बरसाने शुरू कर दिये। अचानक तीरों की वर्षा से मुसलमानों के क़दम उखड़ गये। इस विकट अवसर पर भी नबी सल्ल० और अपनी जान से खेल जाने वाले थोड़े से आप (सल्ल०) के साथी मैदान में जमे रहे और डट कर 'काफ़िरों' का मुक़ाबला करते रहे। ४ हज़ार की सेना आप (सल्ल०) पर टूटी पड़ रही थी। परन्तु अल्लाह जो सब से बड़ा सहायक है वह आप (सल्ल०) के साथ था। अल्लाह ने आप पर और आप के उन गिने-चुने साथियों पर जिन्हों ने इस अवसर पर भी आप का साथ नहीं छोड़ा था, शान्ति और धैर्य्य की दिव्य वर्षा की। आप की सवारी का रुख शत्रुओं ही की ओर था। उसी ओर और आगे बढ़ने के लिए आप (सल्ल०) अपनी सवारी को बढ़ाये जा रहे थे। आप के शुभ मुख से ये शब्द निकल रहे थे, "निस्सन्देह मैं सच्चा 'नबी' हूँ; और अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ"। इसी दशा में आप ने 'सहाबा' (अपने साथियों) को पुकारा, "अल्लाह के बन्दो! इधर आओ। यहाँ आओ कि मैं अल्लाह का 'रसूल' हूँ।" फिर आप (सल्ल०) के हुक्म से हज़रत अब्बास रज़ि० ने उन लोगों को आवाज़ दी जिन्हों ने पेड़ के नीचे नबी सल्ल० के हाथ पर लड़ने की 'बैअत' (प्रतिज्ञा) की थी[1]। आवाज़ के कानों में पड़ते ही लोग फिर मैदान की ओर बढ़े। नबी सल्ल० और आप के साथ वालों के धैर्य्य और उन की वीरता और साहस को देख कर मुसलमानों के क़दम जमने लगे; थोड़ी ही देर में लड़ाई का पाँसा पलट गया और मुसलमानों ने मैदान जीत लिया।

इस युद्ध में मुसलमानों को जिस संकट का सामना करना पड़ा वह वास्तव में अल्लाह की ओर से एक चेतावनी थी कि मुसलमानों को अपनी शक्ति और बल पर नहीं, भरोसा अल्लाह पर रखना चाहिए।

१. यह हुदैबिया' की सन्धि से पहले की बात है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'तबूक़' की मुहिम

'हुदैबिया' की सन्धि के बाद नबी सल्ल० ने जहाँ बहुत से सम्राटों के नाम पत्र भेजे थे और उन्हें 'इस्लाम' की ओर बुलाया था वहीं आप ने अपने बहुत से प्रतिनिधि-मंडल अरब के विभिन्न भागों में इस्लाम के प्रचार के लिए भेजे। आप का भेजा हुआ एक प्रतिनिधि-मंडल उत्तर की ओर उन क़बीलों के पास भी गया जो शाम (Syria) की सीमा के निकट आबाद थे। इन के अधिकतर लोग ईसाई थे; और रोम-राज्य के अधीन थे। इन लोगों ने प्रतिनिधि-मंडल के १५ व्यक्तियों को क़त्ल कर दिया। केवल मंडल के अध्यक्ष हज़रत कअ्ब बिन उमैर ग़िफ़ारी रज़ि० बच कर वापस आ सके। नबी सल्ल० ने बुसरा के हाकिम शुरहबील बिन अमर के पास भी एक निमन्त्रण-पत्र भेजा था जिस में उसे 'इस्लाम' का आमंत्रण दिया था। उस ने आप (सल्ल०) के दूत हज़रत हारिस बिन उमैर को क़त्ल कर दिया। बुसरा का यह हाकिम भी रोम-राज्य के आदेशों के अधीन था। नबी सल्ल० ने 'जुमादलऊला' सन् ८ हिज० में तीन हज़ार मुसलमानों की एक सेना शाम (Syria) की सीमा की ओर भेजी ताकि इस क्षेत्र के लोग मुसलमानों को कमज़ोर समझ कर उन पर अत्याचार न करें। शुरहबील को जब इस की सूचना मिली तो वह लगभग एक लाख की सेना ले कर मुक़ाबले के लिए चल पड़ा। मुसलमानों को उस के आने की सूचना मिल गई परन्तु वे आगे ही बढ़ते गये। क़ैसरे-रोम[1] उस समय 'हिम्स' के स्थान पर मौजूद था। उस ने भी शुरहबील की सहायता के लिए अपने भाई की अध्यक्षता में एक लाख की सेना भेज दी। परन्तु इस्लामी सेना आगे ही बढ़ती गई। 'मूता' नामक स्थान पर शुरहबील की सेना से मुसलमानों की टक्कर हुई। दोनों सेनाओं में १ और ३३ का अनुपात था; परन्तु विजय इस्लामी सेना ही को प्राप्त हुई। यह एक ऐसी घटना थी जिस ने आस-पास के समस्त क़बीलों को चौंका दिया। हज़ारों की संख्या में लोगों ने 'इस्लाम' क़बूल किया। उसी समय में रोम की सेना का एक कमान्डर फ़रवा बिन अमर मुसलमान हो गया। क़ैसर ने उसे पकड़वा कर अपने दरबार में बुलवाया! जब उन्हें दरबार में लाया गया तो क़ैसर ने कहा: तुम दो में से अपने लिए एक चीज़ चुन लो। यदि तुम 'इस्लाम' को त्याग देते हो तो तुम अपने पद पर फिर पहुँच जाओगे नहीं तो मृत्यु-दण्ड के लिए तैयार हो जाओ। उन्हों ने अपने लिए इस्लाम को चुन लिया और सत्य के लिए अपने प्राण दे दिये। इस घटना से बहुतों को 'इस्लाम' की नैतिक शक्ति और उस की महानता का अनुभव हुआ। उन्हों ने समझ लिया कि 'इस्लाम' का मुक़ाबला कोई साधारण बात नहीं है।

दूसरे ही वर्ष क़ैसर ने 'मूता' की लड़ाई का बदला लेने के लिए शाम (Syria) की सीमा पर सेना इकट्ठी करनी शुरू कर दी। उस की मातहती में ग़स्सानी और दूसरे अरब सरदार भी सेनायें इकट्ठी करने लगे। नबी सल्ल० को जब उन की तैयारियों का हाल मालूम हुआ तो आप (सल्ल०) ने बिना किसी संकोच के 'क़ैसर' की ताक़त से टकराने का निश्चय कर लिया। आप ने मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का हुक्म दे दिया। और उन्हें साफ़-तौर पर बता दिया कि शाम (Syria) की ओर चलना है; और मुक़ाबला रोम-राज्य से है। मुसलमानों के लिए यह बड़ी परीक्षा का समय था। देश में अकाल था। गर्मी ज़ोरों की थी। फ़स्ल पकने के बिल्कुल क़रीब थी। सफ़र लम्बा था। सवारियों और दूसरे सामानों की बहुत कमी थी। मुक़ाबला एक शक्तिशाली राज्य से था। परन्तु अल्लाह के 'रसूल' सल्ल० का हुक्म मिलना था कि मुसलमानों ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। हर एक ने अपनी हैसियत के अनुसार सामानों के संचित करने में हिस्सा लिया। इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी सारी कमाई का आधा भाग ला-कर पेश कर दिया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी समस्त पूँजी ला कर हाज़िर कर दी। जब उन से नबी सल्ल० ने पूछा कि बच्चों के लिए क्या छोड़ आये हो तो उन्हों ने जवाब दिया, "अल्लाह और उस के 'रसूल' (सल्ल०) को" मतलब यह था कि मैं ने वह सब-कुछ हाज़िर कर दिया है, जो मेरे पास था। हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ़

१. रोम-राज्य के सम्राट की उपाधि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज़ि० ने बड़ी-बड़ी रक़में दीं। ग़रीब 'सहाबा' ने मेहनत-मज़दूरी कर के जो कुछ मिला ला कर नबी सल्ल० के सामने रख दिया। स्त्रियों ने अपने ज़ेवर तक उतार कर दे डाले। गरोह के गरोह लोग आते थे और लड़ाई में चलने के लिए अपने को पेश करते थे। मुसलमानों के पास सवारियों की बड़ी ही कमी थी जिस के कारण बहुत से लोग इस सफ़र में न चल सके। जिन लोगों के लिए सवारी का प्रबन्ध न हो सका वे वापस हुये तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उन का यह हाल देख कर स्वयं नबी सल्ल० का दिल भर आया। इस कठिन अवसर पर 'मुनाफ़िक़ों' का सारा भ्रम खुल गया। वे नबी सल्ल० के पास आ-आ कर हीले-बहाने करने लगे ताकि उन्हें लड़ाई पर न जाना पड़े। नबी सल्ल० ने ऐसे सभी लोगों को छुट्टी दे दी।

'रजब' सन् ९ हिज० में नबी सल्ल० ३० हज़ार की सेना ले कर शाम (Syria) की ओर चल पड़े। यह बड़े ही संकट का सफ़र था। गर्मी तेज़ थी; पानी की अलग कमी थी। सवारी के ऊँट संख्या में बहुत ही थोड़े थे, जिस के कारण एक-एक ऊँट पर बारी-बारी कई-कई आदमियों को सवार होना पड़ता था। मुसलमानों ने इस अवसर पर अपनी जिस वीरता, धैर्य्य और 'ईमान' का परिचय दिया अल्लाह ने उसे कबूल कर लिया। और बिना लड़े ही वे अपने ध्येय में सफल हो गये। जब आप (सल्ल०) मदीना से चल कर 'तबूक'[1] पहुँचे तो मालूम हुआ कि क़ैसर और उस की मातहती में दूसरे जिन लोगों ने अपनी सेनायें सीमा पर इकट्ठी की थीं सब ने अपनी सेनायें वहाँ से हटा लीं। नबी सल्ल० ने दुश्मन के पीछे हट जाने को ही इस अवसर पर काफ़ी समझा। आप (सल्ल०) १० दिन तक वहाँ रुके रहे और बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को जो अब तक रोम के आधीन थे, इस्लामी राज्य के आधीन कर लिया। 'तबूक' में मुसलमानों को बिना लड़े ही जो विजय प्राप्त हुई उस ने इस्लाम के विरोधी दल की रही-सही आशा पर पानी फेर दिया; अब करीब-क़रीब समस्त अरब देश पर मुसलमानों का अधिकार था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली सूरा की अन्तिम आयतों में भारमुक्ति (immunity) अथवा पार्थक्य का उल्लेख किया गया है प्रस्तुत सूरा का केन्द्रीय विषय ही विरक्ति अथवा भारमुक्ति है। प्रस्तुत सूरा के आरम्भिक भाग में 'मुश्किरों' और उन 'काफ़िरों' के प्रति भारमुक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा की गई है जो 'किताब वालों' (यहूदियों और इसाईयों) में से थे[2]। इस घोषणा का अर्थ यह है कि अब उन के साथ अल्लाह और उस के 'रसूल' का कोई नाता नहीं रहा। अब उन के विरुद्ध स्वतन्त्रतापूर्वक उचित कारंवाई की जा सकती है। क़रीब-क़रीब पूरे अरब पर 'इस्लाम' को अधिकार प्राप्त हो चुका था इस लिए अब वह समय आ गया था कि इस्लामी राज्य (दारुस्सलाम) की आन्तरिक नीति लोगों के सामने खोल कर रख दी जाये। इस सिलसिले में जो आदेश दिये गये हैं वे ये हैं:—

अरब से 'शिर्क' को बिल्कुल मिटा दिया जाये। और इस की घोषणा कर दी जाय कि 'मुश्रिकों' के प्रति हम पर अब कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। उन के साथ जो समझौते हुये हों उन्हें खत्म कर देने की घोषणा कर दी जाये। इसी लिए हज़रत अली रज़ि० ने आप (सल्ल०) की आज्ञा से क़ुरआन के आदेशानुसार 'हज्ज' के अवसर पर जहाँ इस की घोषणा की कि इस साल के बाद कोई 'मुश्रिक' 'काबा' के 'हज्ज' के लिए न आये वहीं इस बात की घोषणा भी की कि जिन लोगों के साथ अल्लाह के 'रसूल' (सल्ल०) ने कोई समझौता किया है और वे उस समझौते पर क़ायम रहे हैं उन के साथ निश्चित अवधि तक वही मामला किया जायेगा जिस के बारे में उन से समझौता हुआ है। परन्तु जिन लोगों ने समझौते के विरुद्ध 'इस्लाम' के खिलाफ़ किसी जोड़-तोड़ में हिस्सा लिया है उन के लिए ४ महीने की मुहलत है इस मुद्दत में चाहे तो वे सोच-समझ कर 'इस्लाम' क़बूल कर लें या देश छोड़ कर बाहर चले जायें या फिर इस्लाम के अनुयायियों से लड़ कर अपना फ़ैसला कर लें।

१. मदीना और दमिश्क़ के बीच एक स्थान है। मदीना से इस की दूरी ६१० किलोमीटर है।
२. दे० आयत १-३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुक्म दिया गया कि अब 'काबा' का प्रबन्ध केवल मुसलमानों के हाथ में होगा। 'काबा' को 'शिर्क' की गन्दगियों से पाक रक्खा जाये। कोई 'मुश्रिक' इस घर के निकट न फटकने पाये। अरब-समाज में अज्ञान काल के जो रीति-रिवाज या प्रथा चली आ रही थी उस के उन्मूलन का आदेश दिया गया। अरब में सबसे बढ़ कर एक कुरीति 'नसी' की चली आ रही थी उसका निषेध किया गया[१]। 'ईमान' वालों की शिक्षा-दीक्षा पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। ताकि 'ईमान' वालों का यह गरोह उस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठा सके जो जल्द ही उस के ऊपर डाली जाने वाली थी। 'ईमान' वालों को आगे चल कर अरब देश से बाहर अमुस्लिम-जगत तक अल्लाह के सन्देश को पहुँचाना और धरती को जुल्म और फ़साद से पाक कर के न्याय स्थापित करना था।

'मुनाफ़िक़ों' के बारे में अब तक नर्मी बरती जा रही थी। हुक्म दिया गया कि अब उनके साथ कोई नर्मी न बरती जाये। इसी नीति के अन्तर्गत 'तबूक' से लौटने के बाद ही नबी सल्ल० ने 'मुनाफ़िक़ों' की बनाई हुई मस्जिद 'मस्जिदे ज़रार' को ढाने और जलाने का हुक्म दे दिया। 'मुनाफ़िक़ों' ने यह मस्जिद नमाज़ के लिए नहीं बल्कि इस लिए बनाई थी कि उस में बैठ कर मुसलमानों के विरुद्ध विचार-विमर्श करें। इस मस्जिद का ढाया जाना वास्तव में इस बात की घोषणा थी कि मुनाफ़िक़ों के साथ अब किसी प्रकार की नर्मी नहीं बरती जायेगी[२]।

'तबकू' की मुहिम के अवसर पर 'मुनाफ़िक़ों' के अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी पीछे रह गये थे जो मुनाफ़िक़ न थे केवल अपनी सुस्ती और कमज़ोरी के कारण उन से यह चूक हुई थी। ऐसे लोगों के साथ सख्ती की गई ताकि इस तरह की कमज़ोरी दूर हो फिर अल्लाह ने उन की 'तौबा' क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया[३]।

समाप्ति

आयत ११६ से ले कर १२६ तक सूरा की समाप्ति का भाग है। सूरा के इस भाग में समस्त सूरा का सारांश आ गया है। इस में 'ईमान' वालों को आदेश दिया गया है कि वे अल्लाह से डरें और सच्चे लोगों के साथ रहें। मदीना के आस-पास रहने वाले बद्दुओं के बारे में कहा गया है कि उन्हें नबी सल्ल० का साथ देना चाहिए उन के लिए यह कदापि उचित नहीं कि वे अल्लाह के 'रसूल' को छोड़ कर घर बैठे रहें और केवल अपनी ही चिन्ता में लगे रहें। यदि वे 'नबी' सल्ल० का साथ देते हैं और अपने प्राणों और अपने मालों के साथ अल्लाह के मार्ग में निकलते हैं तो अल्लाह उन्हें अवश्य इस का बदला प्रदान करेगा उन की कोई भी नेकी अकारथ नहीं जायेगी।

'दीन' (धर्म) में समझ प्राप्त करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। इस्लामी समाज में इस का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। जब तक लोगों में धर्म की समझ और 'दीन' का वास्तविक ज्ञान न होगा वे असत्य मार्ग की ओर जाने से न बच सकेंगे। 'मुनाफ़िक़ों' की नीतियों का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि उन का वास्तविक रोग यह है कि वे समझ नहीं रखते।

१. दे० आयत ३७।

२. 'मुनाफ़िक़ों' के बारे में विस्तारपूर्वक वार्त्ता के लिए देखिए आयत ३८-११०।

३. 'तौबा' के सिलसिले में देखिए आयत १११-११८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरा को समाप्त करने से पहले समस्त लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम्हारे पास एक 'रसूल' आया है जो अत्यन्त कोमल हृदय वाला है उसे तुम्हारे हित की लालसा है। फिर 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित करते हुए इस सूरा को समाप्त किया गया है। आप (सल्ल०) से कहा गया है कि यदि लोग तुम से मुँह मोड़ लें तो कह दो : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वही बड़े राज्य-सिंहासन का 'रब' है। इस तरह आप (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अल्लाह के अवज्ञाकारी लोगों से अलग हो जाने का जो आदेश आप को मिला है (जिस का विस्तारपूर्वक वर्णन इस सूरा में हुआ है) उस से आप (सल्ल०) को कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए; आप (सल्ल०) के लिए अल्लाह काफ़ी है।

इस 'सूरा' पर 'सूरतों' का वह सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) जो सूरा अल-अनआम से चला था समाप्त हो जाता है। इस के बाद वाली 'सूरा' (सूरा यूनुस) से 'सूरतों' का एक नया सिलसिला आरम्भ होता है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत–तौबा

(मदीना में उतरी – 'आयतें' १२९)

REPENTANCE
Revealed at Al-Madinah

سورة التوبة مدنية وهي مائة وتسع وعشرون آية وست عشرة ركوعا

१. [1]'अल्लाह्' और उस के 'रसूल' की ओर से उन 'मुश्रिकों' को साफ़ जवाब है जिन के साथ तुम ने सन्धि की थी[2]।

1. Freedom from obligation (is proclaimed) from Allah and His messenger toward those of the idolaters with whom ye made a treaty.

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

२. तो (हे 'मुश्रिको' !) इस भू-भाग में चार महीने और चल-फिर लो,[3] और जान लो कि तुम अल्लाह् को हरा नहीं सकते और यह कि अल्लाह 'काफ़िरों' को अपमानित करने वाला है।

2. Travel freely in the land four months and know that ye cannot escape Allah and that Allah will confound the disbelievers (in His guidance.)

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢

३. और अल्लाह् और उस के 'रसूल' की ओर से बड़े 'हज्ज' के दिन[4] लोगों के लिए मुनादी की जाती है कि अल्लाह् 'मुश्रिकों' (के प्रति ज़िम्मेदारी) से बरी है, और उस का 'रसूल' भी। तो, यदि तुम लोग 'तौबा' कर लो, तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है; परन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो, तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते। और जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया है उन्हें दुःख देने वाली यातना की मंगल सूचना दे दो।

3. And a proclamation from Allah and His messenger to all men on the day of the Greater Pilgrimage that Allah is free from obligation to the idolaters and (so is) His messenger. So if ye repent it will be better for you; but if ye are averse, then know that ye cannot escape Allah. Give tidings (O Muhammad) of a painful doom to those who disbelieve.

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۗ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣

४. सिवाय उन 'मुश्रिकों' के जिन से तुम ने सन्धि की, फिर उन्हों ने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की सहायता की। तो उन के समझौते को उन के नियत समय तक[5] पूरा करो। निस्सन्देह अल्लाह डर रखने वालों से प्रेम रखता है।

4. Excepting those of the idolaters with whom ye (Muslims) have a treaty, and who have since abated nothing of your right nor have supported anyone against you. (As for those), fulfil their treaty to them till their term. Lo! Allah loveth those who keep their duty (unto Him.)

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٤

१. इस सूरा के आरम्भ में नबी सल्ल० ने 'बिस्मिल्लाह्' (अल्लाह् के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है) नहीं लिखवाई थी, इस लिए न तो 'सहाबा' (नबी सल्ल० के साथियों, रज़ि०) ने लिखी और न बाद के लोगों ने लिखी।

२. अर्थात् जब 'मुश्रिकों' ने मुसलमानों से किये हुये समझौते का पालन नहीं किया, और अपने वचन भंग कर दिये, तो तुम उन्हें सूचित कर दो कि अब हमारे-तुम्हारे बीच कोई सन्धि और समझौता नहीं रहा।

३. यह घोषणा 'ज़िलहिज्जा' की दसवीं तारीख़ को की गई थी। उन्हें चार महीने की मुहलत दी गई थी कि वे सोच-समझ कर अपने बारे में कोई फ़ैसला कर लें। मुसलमानों से लड़ना चाहें तो इस के लिए तैयार हो जायें; देश छोड़ना चाहें तो अपना ठिकाना खोज लें; और यदि 'इस्लाम' धर्म को अपनाना चाहें तो अच्छी तरह सोच-समझ कर उसे अपना लें।

४. अर्थात् 'ज़िलहिज्जा' की दसवीं तिथि।

५. अर्थात् उस मुद्दत तक जो उन के साथ ठहर चुकी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. फिर, जब हराम महीने[६] बीत जायें, तो 'मुश्रिकों' को जहाँ-कहीं पाओ क़त्ल करो, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उन की ताक में बैठो। फिर यदि वे 'तौबा' कर लें और 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें, तो उन का मार्ग छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

5. Then, when the sacred months have passed, slay the idolaters wherever ye find them, and take them (captive) and besiege them, and prepare for them each ambush. But if they repent and establish worship and pay the poor-due, then leave their way free. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا
المشركين حيث وجدتموهم
وخذوهم واحصروهم واقعدوا
لهم كل مرصد فإن تابوا وأقاموا
الصلوٰة وآتوا الزكوٰة فخلوا
سبيلهم إن الله غفور رحيم ⑤

६. और यदि 'मुश्रिकों' में से कोई व्यक्ति तुम से शरण का इच्छुक हो, तो उसे शरण दे दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले, फिर उसे उस के सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह इस लिए कि ये ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं[७]।

6. And if anyone of the idolaters seeketh thy protection (O Muhammad), then protect him so that he may hear the Word of Allah, and afterward convey him to his place of safety. That is because they are a folk who know not.

وإن أحد من المشركين استجارك
فأجره حتى يسمع كلام الله
ثم أبلغه مأمنه ذلك بأنهم
قوم لا يعلمون ⑥

७. इन 'मुश्रिकों' के लिए अल्लाह और उस के 'रसूल' के नज़दीक कोई सन्धि कैसे हो सकती है सिवाय उन लोगों के जिन से तुम ने 'मस्जिदे हराम' ('काबा') के पास सन्धि की थी? तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तुम भी उन के साथ सीधे रहो। निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो डरने वाले हैं।

7. How can there be a treaty with Allah and with His messenger for the idolaters save those with whom ye made a treaty at the Inviolable Place of Worship? So long as they are true to you, be true to them. Lo! Allah loveth those who keep their duty.

كيف يكون للمشركين عهد عند
الله وعند رسوله إلا الذين عاهدتم
عند المسجد الحرام فما استقاموا
لكم فاستقيموا لهم إن الله يحب
المتقين ⑦

८. कैसे (यह हो सकता है[८]!) जब कि यदि उन्हें तुम पर अधिकार प्राप्त हो जाये, तो न वे तुम्हारे बारे में किसी नाते-रिश्ते की परवा करें और न किसी प्रतिज्ञा की? वे अपने मुँह से तो तुम्हें राज़ी करते हैं परन्तु उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

8. How (can there be any treaty for the other) when, if they have the upperhand of you, they regard not pact nor honour in respect of you? They satisfy you with their mouths the while their hearts refuse. And most of them are wrong-doers.

كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا
فيكم إلا ولا ذمة يرضونكم
بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم
فاسقون ⑧

९. उन्हों ने अल्लाह की 'आयतों' के बदले थोड़े मूल्य (सांसारिक लाभ) का सौदा किया, तो वे अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे। निश्चय ही बुरा काम है जो वे करते रहे हैं।

9. They have purchased with the revelations of Allah a little gain, so they debar (men) from His way. Lo! evil is that which they are wont to do.

اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا
عن سبيله إنهم ساء ما كانوا يعملون ⑨

१०. किसी 'ईमान' वाले के बारे में न नाते-रिश्ते की परवा करते हैं और न किसी प्रतिज्ञा की। यही लोग हैं जो सीमा से आगे बढ़ जाते हैं।

10. And they observe toward a believer neither pact nor honour. These are they who are transgressors.

لا يرقبون في مؤمن إلا ولا ذمة
وأولئك هم المعتدون ⑩

६. अर्थात् वे चार महीने जिन की मुहलत 'मुश्रिकों' को दी गई है।

७. इस लिए इन्हें 'इस्लाम' के बारे में सोचने-समझने की पूरी मुहलत मिलनी चाहिए।

८. अर्थात् इन के सिवा दूसरे 'मुश्रिकों' से तुम्हारा समझौता कैसे हो सकता है!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. तो यदि ये 'तौबा' कर लें और 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें, तो तुम्हारे दीनी भाई हैं। और जानने वालों के लिए हम अपनी 'आयतें' खोल-खोल कर बयान करते हैं।

11. But if they repent and establish worship and pay the poor-due, then are they your brethern-in-religion. We detail Our revelations for a people who have knowledge.

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَآتَوُا
الزَّكٰوةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ
الْآيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

१२. और यदि अपने वचन देने के बाद ये अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे 'दीन' (धर्म) पर चोट करने लगें, तो 'कुफ़्र' के नेताओं से युद्ध करो—निश्चय ही उन की क़समें कुछ नहीं—कदाचित् वे बाज़ आ जायें।

12. And if they break their pledges after their treaty (hath been made with you) and assail your religion, then fight the heads of disbelief—Lo! they have no binding oaths—in order that they may desist.

وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾

१३. क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्हों ने अपनी क़समों को तोड़ा, और 'रसूल' को निकाल देने की फ़िक्र की और उन्हों नें ही तुम से पहले छेड़ भी की ? क्या ! तुम उन से डरते हो ? यदि तुम 'ईमान' वाले हो, तो अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उस से डरो।

13. Will ye not fight a folk who broke their solemn pledges, and purposed to drive out the messenger and did attack you first? What! Fear ye them? Now Allah hath more right that ye should fear Him if ye are believers.

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ
وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ
بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ
فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

१४. उन से लड़ो ! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा और उन के मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करेगा, और 'ईमान' वाले लोगों के दिल ठण्ढे करेगा।

14. Fight them! Allah will chastise them at your hands, and He will lay them low and give you victory over them, and He will heal the breasts of folk who are believers.

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ
صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

१५. और उन के दिलों की जलन मिटायेगा। और अल्लाह जिस पर चाहेगा मेहरबान होगा। और अल्लाह जानने वाला, और तत्वदर्शी है।

15. And He will remove the anger of their hearts. Allah relenteth toward whom He will Allah is Knower, Wise.

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

१६. क्या तुम लोगों नें यह समझ रक्खा है कि यों ही छोड़ दिये जाओगे हालाँकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्हों नें तुम में से जान लड़ाई, और अल्लाह और उस के 'रसूल' और 'ईमान' वालों के सिवा किसी को भेदी (दिली दोस्त) नहीं बनाया ? और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस की खबर रखता है।

16. Or deemed ye that ye would be left (in peace) when Allah yet knoweth not those of you who strive, choosing for familiar none save Allah and His messenger and the believers? Allah is informed of what ye do.

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ
الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

१७. 'मुश्‍रिकों' का यह काम नहीं है कि वे अल्लाह की 'मस्जिदों' को आबाद करें, जब कि वे अपने विरुद्ध स्वयं 'कुफ़्र' की गवाही दे रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन का किया-धरा सब अकारथ हुआ और आग ('जहन्नम') में वे सदा रहेंगे।

17. It is not for the idolaters to tend Allah's sancturies, bearing witness against themselves of disbelief. As for such, their works are vain and in the Fire they will abide.

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسٰجِدَ
اللَّهِ شٰهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ
أُولٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِي النَّارِ
هُمْ خٰلِدُونَ ﴿١٧﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. अल्लाह की 'मस्जिदों' को आबाद करना तो उस का काम है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन[९] पर 'ईमान' लाये और 'नमाज़' क़ायम करे और 'ज़कात' दे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। तो ऐसे ही लोग, आशा है कि मार्ग पाने वालों में से होंगे।

18. He only shall tend Allah's sanctuaries who believeth in Allah and the Last Day and observeth proper worship and payeth the poor-due and feareth none save Allah. For such (only) is it possible that they can be of the rightly guided.

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

१९. क्या तुम लोगों ने 'हाजियों' को पानी पिलाने और 'मस्जिदे हराम' ('काबा') के आबाद करने को उस व्यक्ति जैसा ठहरा लिया है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन[१०] पर 'ईमान' लाया, और जिस ने अल्लाह के मार्ग में जान लड़ाई? अल्लाह की दृष्टि में तो ये बराबर नहीं हैं। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

19. Count ye the slaking of a pilgrim's thirst and tendance of the Inviolable Place of Worship as (equal to the worth of him) who believeth in Allah and the Last Day, and striveth in the way of Allah? They are not equal in the sight of Allah. Allah guideth not wrongdoing folk.

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

२०. जो लोग 'ईमान' लाये, और 'हिजरत' की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से 'जिहाद' किया अल्लाह के यहाँ (उन के लिए) बड़ा दर्जा है। और वही हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

20. Those who belive, and have left their homes and striven with their wealth and their lives in Allah's way are of much greater worth in Allah's sight, These are they who are triumphant.

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

२१. उन्हें उन का 'रब' शुभ-सूचना देता है अपनी दयालुता और रज़ामन्दी की, और ऐसे बाग़ों की जिन में उन के लिए स्थायी सुख है;

21. Their Lord giveth them good tidings of mercy from Him, and acceptance, and Gardens where enduring pleasure will be theirs;

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾

२२. उन में वे सदैव रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह के पास बड़ा बदला है।

22. There they will abide for ever. Lo! with Allah there is immense reward.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

२३. हे 'ईमान' लाने वालो! अपने बापों और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे 'ईमान' की अपेक्षा 'कुफ़्र' को पसन्द करें। और तुम में से जो कोई उन से मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे।

23. O ye who believe! Choose not your fathers nor your brethern for friends if they take pleasure in disbelief rather than faith. Whoso of you taketh them for friends such are wrong-doers.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

९. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।
१०. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. कह दो : यदि तुम्हारे बाप, और तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे घराने के लोग, और माल जो तुम ने कमाये हैं, और कार-बार जिस के मांँद पड़ जाने का तुम्हें भय है, और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो तुम्हें अल्लाह और उस के 'रसूल' और उस के मार्ग में 'जिहाद' करने से अधिक प्रिय हैं : तो प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला तुम्हारे सामने ले आये। और अल्लाह उन लोगों को मार्ग नहीं दिखाता जो अवज्ञाकारी हैं।

24 Say: If your fathers and your sons, and your brethern, and your wives, and your tribe and the wealth ye have acquired, and merchandise for which ye fear that there will be no sale and dwellings ye desire are dearer to you than Allah and His messenger and striving in His way: then wait till Allah bringeth His command to pass. Allah guideth not wrongdoing folk.

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا
وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا
أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ
فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾

२५. अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और हुनैन[11] (की लड़ाई) के दिन भी, जब कि तुम अपनी अधिकता पर फूल गये थे तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, और धरती विशाल होते हुये भी तुम पर तंग हो गई; और तुम पीठ फेर कर भाग निकले;

25. Allah hath given you victory on many fields and on the day of Huneyn, when ye exulted in your multitude but it availed you naught, and the earth, vast as it is, was straitened for you; then ye turned back in flight;

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

२६. फिर अल्लाह ने अपने 'रसूल' पर और 'ईमान' वालों पर शान्ति उतारी, और सेनायें उतारीं जिन्हें तुम देख नहीं सके, और उन लोगों को यातना दी जिन्हों ने 'कुफ़्' किया था। और यही 'काफ़िरों' का बदला है।

26. Then Allah sent His peace of reassurance down upon His messenger and upon the believers and sent down hosts ye could not see, and punished those who disbelieved. Such is the reward of disbelievers.

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا
وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾

२७. फिर इस के बाद अल्लाह जिस पर चाहे मेहरबान हो; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

27. Then afterward Allah will relent toward whom He will; for Allah is Forgiving, Merciful.

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن
يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

२८. हे 'ईमान' लाने वालो ! 'मुश्रिक' तो नापाक हैं।[12] तो इस वर्ष के पश्चात् ये 'मस्जिदे हराम' ('काबा') के पास न फटकने पायें। और यदि तुम्हें मुहताजी का भय हो तो अल्लाह ने चाहा तो जल्द ही वह अपने अनुग्रह से तुम्हें धनवान् कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

28. O ye who belive! The idolaters only are unclean. So let them not come near the Inviolable Place of worship after this their year. If ye fear poverty (from the loss of their merchandise) Allah shall preserve you of His bounty if he will. Lo! Allah is Knower, Wise.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ
يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ إِن شَاءَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

११. दे० सूरा की भूमिका।

१२. अर्थात् 'शिर्क' की नापाकी उन के साथ लगी हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. 'किताब वाले' जो न अल्लाह पर 'ईमान' लाते हैं और न अन्तिम दिन[१३] पर, और न उसे 'हराम' करते हैं जिसे अल्लाह और उस के 'रसूल' ने हराम ठहराया है, और न सच्चे 'दीन' को अपना 'दीन' बनाते हैं, उन से लड़ो यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित हो कर अपने हाथ से 'जिज़या' देने लगें।

29. Fight against such of those who have been given the Scripture as believe not in Allah nor the Last Day, and forbid not that which Allah hath for-bidden by His messenger, and follow not the religion of truth, until they pay the tribute readily, being brought low.

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٢٩﴾

३०. और 'यहूदियों' ने कहा : उज़ैर[१४] अल्लाह का बेटा है, और 'ईसाइयों' ने कहा : मसीह अल्लाह का बेटा है। ये उन की (तथ्य-हीन) बातें हैं जो वे अपनी ज़बानों से निकालते हैं। ये उन लोगों की-सी बातें करते हैं जो (इन से) पहले 'कुफ़्' में पड़ चुके हैं। अल्लाह की मार इन पर ये कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हैं।

30. And the Jews say: Ezra is the son of Allah, and the Christian say: The Messiah is the son of Allah. That is their saying with their mouths. They imitate the saying of those who disbelieved of old. Allah (Himself) fighteth against them. How preverse are they!

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾

३१. इन्हों ने अल्लाह के सिवा अपने धर्म-ज्ञाताओं और संसार त्यागी सन्तों को 'रब' बना लिया[१५] और मसीह सुत मरयम को भी, हालाँकि इन्हें इस के सिवा और कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अकेले इलाह (पूज्य) के सिवा और किसी की 'इबादत' (बन्दगी) न करें। उस के सिवा और कोई 'इलाह' नहीं। उस की महिमा के प्रतिकूल है वह 'शिर्क' जो ये लोग करते हैं!

31. They have taken as lords beside Allah their rabbis and their monks and the Messiah son of Mary, when they were bidden to worship only One God. There is no god save Him. Be He glorified from all that they ascribe as partner (unto Him).

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

३२. ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से बुझा दें, और अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, चाहे 'काफ़िरों' को नापसन्द ही क्यों न हो।

32. Fain would they put out the light of Allah with their mouths, but Allah disdaineth (aught) save that He shall perfect His light, however much the disbelievers are averse.

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾

१३. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट ५।

१४. उज़ैर (Ezra) वही है जिन्हें 'यहूदी' अपने धर्म का नवीन संस्थापक मानते हैं। यहूदियों के कथनानुसार हज़रत सुलैमान अ० के बाद जब 'इसराईल' की सन्तान पर संकट और विपत्ति के दिन आये तो केवल यही नहीं कि 'तौरात' संसार से लुप्त हो गई बल्कि बाबिल (Babel) में क़ैद होने के बाद 'बनी इसराईल' की नई नस्ल अपना धर्म-शास्त्र और अपनी भाषा इबरानी (Hebrew) तक भूल गई। अन्त में उज़ैर ने तौरात को संकलित किया; और धर्म-विधान की फिर से स्थापना की। इसी कारण 'बनी इसराईल' उन का बड़ा आदर करते हैं। बल्कि उन में कुछ गरोह ऐसे भी पैदा हुवे जिन्हों ने उन्हें अल्लाह का बेटा तक बना डाला।

१५. अर्थात् जिस चीज़ को ये लोग 'हराम' कह दें, उसे हराम मान लेते हैं; और जिसे ये लोग 'हलाल' ठहरा दें उसे हलाल समझने लगते हैं, चाहे अल्लाह की किताब से इस के लिए कोई एक भी प्रमाण न प्रस्तुत किया जा सकता हो। किसी चीज़ को 'हलाल' या 'हराम' ठहराना केवल अल्लाह का काम है। किसी दूसरे व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता कि अल्लाह ने जिस चीज़ को हलाल ठहराया हो उसे वह हराम करने लग जाये या जिसे अल्लाह ने हराम कर दिया हो उसे वह लोगों के लिए हलाल ठहराने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३. वही है जिस ने अपने 'रसूल' को मार्ग-दर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य-धर्म) के साथ भेजा, ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे 'मुश्रिकों' को नापसन्द ही क्यों न हो[१६]।

33. He it is Who hath sent His messenger with the guidance and the Religion of Truth, that He may cause it to prevail over all religion, however much the idolaters may be averse.

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ
دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝

३४. हे 'ईमान' लाने वालो ! 'किताब वालों' के अधिकतर धर्मज्ञाता और संसार त्यागी सन्त लोगों का माल अवैध रूप से खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। जो लोग सोना और चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दुःख देने वाली यातना की मंगल सूचना दे दो[१७],

34. O ye who believe! Lo! many of the (Jewish) rabbis and the (Christian) monks devour the wealth of mankind want only and debar (men) from the way of Allah. They who hoard up gold and silver and spend it not in the way of Allah, unto them give tidings (O Muhammad) of a painful doom.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ
وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ
وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا
يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝
يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا
مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ ۝

३५. जिस दिन इस (सोने-चाँदी के ढेर) पर 'जहन्नम' की आग दहकाई जायेगी, फिर उस से इन के ललाट और इन के पहलू और इन की पीठें दाग़ी जायेंगी (और कहा जायेगा) : यह वही है जिसे तुम ने अपने लिए एकत्र किया था। तो अब जो कुछ तुम एकत्र कर के रखते थे उस का मज़ा चखो।

35. On the day when it will (all) be heated in the fire of hell and their foreheads and their flanks and their backs will be branded therewith (and it will be said unto them): Here is that which ye hoarded for yourselves. Now taste of what ye used to hoard.

३६. निस्सन्देह महीनों की गिनती—अल्लाह की किताब में उस दिन से कि उस ने आकाशों और धरती को पैदा किया—अल्लाह की दृष्टि में बारह महीनों की है[१८]। इन में चार आदर के हैं[१९] यही सीधा 'दीन' (धर्म) है। तो तुम इन में (युद्ध और रक्तपात कर के) अपने-आप पर ज़ुल्म न करो। और तुम सब मिल कर 'मुश्रिकों' से लड़ो जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं। और जान लो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो डरने वाले हैं।

36. Lo! the number of the months with Allah is twelve months by Allah's ordinance in the day that He created the heavens and the earth. Four of them are sacred: that is the right religion. So wrong not yourselves in them. And wage war on all the idolaters as they are waging war on all of you. And know that Allah is with those who keep their duty (unto Him).

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا
فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۗ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ
فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ ۛ وَقَاتِلُوا
الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ۗ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝

१६. अल्लाह का यह इरादा पूरा हो कर रहा। अल्लाह ने 'इस्लाम' को शक्ति एवं अधिकार प्रदान किया। 'काफ़िरों' की सारी कोशिशें अकारथ गईं। वे अपनी फूंकों से सत्य के प्रकाशमान दीप को बुझाने में असमर्थ रहे।

१७. यह बात व्यंग्यात्मक रूप में कही गई है।

१८. अर्थात् महीने तो साल में बारह ही बनते आ रहे हैं। महीने में चाँद एक ही बार दूज का चाँद बन कर निकलता है; एक से अधिक बार नहीं निकला। इस प्रकार साल के बारह ही महीने होते है। यहाँ वास्तव में अरबों की एक ग़लत प्रथा 'नसी' का खण्डन किया गया है। अरब के लोग 'नसी' के महीनों की संख्या १२ से अधिक १३ या १४ बना लेते थे। 'नसी' की व्याख्या के लिए फ़ुट नोट २० देखें।

१९. आदर के चार महीनों का तात्पर्य 'ज़ीक़अदा' 'ज़िलहिज्जा' 'मुहर्रम' और 'रजब' के चार महीने हैं। जिन में लड़ना वर्जित था। इन महीनों में 'हज्ज' 'उमरा', व्यापार आदि के लिए लोग हर भय से निश्चिन्त हो कर चला करते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. (आदर के) महीने का हटाना केवल 'कुफ़्र' में एक वृद्धि है[२०] जिस से 'काफ़िर' लोग गुमराह किये जाते हैं,[२१] किसी वर्ष वे उसे[२२] 'हलाल' (वैध) ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उस को 'हराम' कर देते हैं, ताकि अल्लाह ने जो (महीने) 'हराम' किये हैं उन की गिनती पूरी कर लें, और इस तरह अल्लाह ने जो 'हराम' किया है उसे वे 'हलाल' कर लें। उन के बुरे कर्म उन के लिए शोभायमान बना दिये गये हैं। अल्लाह 'काफ़िर' लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

३८. [२३]हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम्हें क्या हो गया कि जब तुम से कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में निकलो, तो तुम धरती पर ढह गये। क्या तुम 'आख़िरत' को छोड़ कर सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गये ? तो सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री 'आख़िरत' की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।

३९. यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें दुख देने वाली यातना देगा, और तुम्हारे सिवा किसी और गरोह को लायेगा। और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

37. Postponement (of a sacred month) is only an excess of disbelief whereby those who disbelieve are misled, they allow it one year and forbid it (another) year, that they may makes up the number of the months which Allah hath hallowed, so that they allow that which Allah hath forbidden. The evil of their deeds is made fair-seeming unto them. Allah guideth not the disbelieving folk.

38. O ye who believe! What aileth you that when it is said unto you: Go forth in the way of Allah ye are bowed down to the ground with heaviness? Take ye pleasure in the life of the world rather than in the Hereafter? The comfort of the life of the world is but little in the Hereafter.

39. If ye go not forth He will afflict you with painful doom, and will choose instead of you folk other than you. You cannot harm Him at all. Allah is Able to do all things.

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَّيُحَرِّمُونَهُ
عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوا
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٧﴾ ع

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ
لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ
إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾
إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ
وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْـًٔا ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

२०. अरबों की 'नसी' नामक प्रथा का निषेध किया जा रहा है। 'नसी' (Postponement) का तात्पर्य महीने को उस की जगह से पीछे हटाना है। अरब के लोग लड़ने-लूटने और ख़ून का बदला लेने के लिए 'हराम' महीने (Sacred month) को भी जिन में लड़ना-झगड़ना वर्जित था, हलाल कर लेते थे, और उस के बदले में किसी 'हलाल' महीने को 'हराम' कर लेते थे ताकि हराम महीनों की गिनती पूरी हो जायें। इस के अलावा वे यह भी चाहते थे कि 'हज्ज' सदा एक ही मौसम में आता रहे ताकि विभिन्न ऋतुओं में 'हज्ज' के चक्कर लगाते रहने से जो कठिनाइयाँ पेश आती हैं उन से छुटकारा मिल जाये। इस के लिए वे चाँद के हिसाब से जो वर्ष होता है उस में एक महीना कबीसा का बढ़ा देते थे। इस तरह केवल ३३वें या ३४वें वर्ष जा कर 'हज्ज' अपने असली समय पर अदा किया जाता था। शेष ३२ साल तक 'हज्ज' अपने वास्तविक समय पर नहीं बल्कि दूसरी तिथियों में होता रहता था।

२१. अर्थात् इस तरह वे गुमराही में पड़ते हैं।

२२. अर्थात् हराम या आदर के महीने को।

२३. यहाँ से वह तक़रीर शुरू होती है जो 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी के समय उतरी थी। दे० सूरा की भूमिका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. यदि तुम उस की (रसूल की) सहायता न भी करो तो (क्या हो जायेगा), अल्लाह उस की सहायता उस समय कर चुका है जब कि 'कुफ़्' करने वालों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया था, वह दो में का दूसरा था; जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था, "ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है"२४। तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शान्ति उतारी और उस की सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम ने नहीं देखा, और 'कुफ़्' करने वालों का बोल नीचा कर दिया, और अल्लाह ही का बोल ऊँचा रहने वाला है। और अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

40. If ye help him not, still Allah helped him when those who disbelieve drove him forth, the second of two; when they two were in the cave, when he said unto his comrade: Grieve not. Allah is with us. Then Allah caused His peace of reassurance to descend upon him and supported him with hosts ye cannot see, and made the word of those who disbelieved the nethermost, while Allah's word it was that became the uppermost. Allah is Mighty, Wise.

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

४१. निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या बोझल,२५ और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करो! यह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम जानो।

41. Go forth, light-armed and heavy-armed, and strive with your wealth and your lives in the way of Allah! That is best for you if ye but knew.

انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

४२. यदि आसानी के साथ कुछ मिलने वाला होता और सफ़र भी हल्का होता तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे हो लेते, परन्तु उन पर तो यह मार्ग बहुत कठिन हो गया। अब वे अल्लाह की क़समें खायेंगे कि यदि हम चल सकते तो अवश्य तुम्हारे साथ चलते। वे अपने-आप को तबाही में डाल रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि वे निश्चय ही झूठे है।

42. Had it been a near adventure and an easy journey they had followed thee, but the distance seemed too far for them. Yet will they swear by Allah (saying): If we had been able we would surely have set out with you. They destroy their souls, and Allah knoweth that they verily are liars.

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾ ع

४३. (हे 'नबी'!) अल्लाह तुम्हें क्षमा करे! तुम ने उन्हें (पीछे रह जाने की) इजाज़त क्यों दे दी (तुम उन्हें अनुज्ञा न देते) यहाँ तक कि वे लोग खुल कर तुम्हारे सामने आ जाते जो सच्चे हैं और तुम झूठों को भी जान लेते?

43. Allah forgive thee O Muhammad)! Wherefor didst thou grant them leave ere those who told the truth were manifest to thee and thou didst know the liars?

عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ﴿٤٣﴾

२४. जब नबी सल्ल० 'हिजरत' करने के लिए मक्का से निकले तो आप (सल्ल०) के साथ केवल हज़रत अबू बक्र रज़ि० थे आप (सल्ल०) जानते थे कि दुश्मन आप (सल्ल०) का पीछा अवश्य करेंगे। इस लिए उत्तर का मार्ग छोड़ कर जो मदीना जाता था आप दक्षिण के मार्ग से निकले और एक गुफा में जा कर पनाह ली। तीन दिन तक उसी गुफा में छिपे रहे। दुश्मन आप (सल्ल०) के क़त्ल का निश्चय कर चुके थे। आप को ढूँढ़ते-ढूंढ़ते उस गुफा के दहाने पर भी पहुँचे जिस में आप छिपे हुए थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० डरे कि यदि किसी ने गुफा में झाँक कर देखा तो वह हमें देख लेगा। परन्तु नबी सल्ल० तनिक भी नहीं डरे। उस समय आप ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० को यह कह कर तसल्ली दी: ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है।

२५. अर्थात् जब लड़ाई के लिए निकलने का हुक्म हो गया तो निकल पड़ो। हथियार और सामान तुम्हारे पास अधिक हो या कम, ग़रीबी हो या खुशहाली, निर्बल हो या बलवान् तुम्हें प्रत्येक दशा में 'जिहाद' के लिए निकलना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. जो लोग अल्लाह पर और अन्तिम दिन[२६] पर 'ईमान' रखते हैं वे क़भी तुम से इस की इजाज़त नहीं माँगेंगे कि अपने माल और अपनी जानों के साथ 'जिहाद' न करें। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो डरने वाले हैं।

44. Those who believe in Allah and the Last Day ask no leave of thee lest they should strive with their wealth and their lives. Allah is Aware of those who keep their duty (unto Him).

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَ
الْيَوْمِ الْآخِرِ أَن يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ٤٤

४५. तुम से इजाज़त केवल वही लोग चाहते हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन[२७] पर 'ईमान' नहीं रखते, और जिन के दिल सन्देह में पड़े हैं, तो वे अपने सन्देह में पड़े संकोच में हैं।

45. They alone ask leave of thee who believe not in Allah and the Last Day, and whose hearts feel doubt, so in their doubt they waver.

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ
فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ٤٥

४६. और यदि वे निकलने का इरादा करते तो उस के लिए कुछ तैयारी करते, परन्तु अल्लाह ने उन का उठना पसन्द ही नहीं किया तो उस ने उन्हें सुस्त कर दिया और कह दिया गया : बैठने वालों के साथ बैठे रहो !

46. And if they had wished to go forth they would assuredly have made ready some equipment, but Allah was averse to their being sent forth and held them back and (it was said unto them): Sit ye with the sedentary!

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ
فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ
الْقَاعِدِينَ ٤٦

४७. यदि वे तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुम्हारे अन्दर ख़राबी के सिवा और कुछ न बढ़ाते, और वे तुम्हारे बीच उपद्रव मचाने के लिए दौड़-धूप करते; और तुम में ऐसे लोग भी हैं जो उन की कान लगा कर सुनते हैं और अल्लाह इन ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

47. Had they gone forth among you they had added to you naught save trouble and had hurried to and fro among you, seeking to cause sedition among you; and among you there are some who would have listened to them. Allah is Aware of evil-doers.

لَوْ خَرَجُوا فِيكُم مَّا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ
وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ٤٧

४८. इन्हों ने तो इस से पहले भी उपद्रव मचाना चाहा है और तुम्हारे विरुद्ध कार्रवाइयों का उलट-फेर कर चुके हैं यहां तक कि 'हक़' आ गया और अल्लाह का काम हो कर रहा, और वे बुरा ही मानते रहे।

48. Aforetime they sought to cause sedition and raised difficulties for thee till the Truth came and the decree of Allah was made manifest, though they were loth.

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِن قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ
الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كَارِهُونَ ٤٨

४९. और इन में से कोई ऐसा है जो कहता है : मुझे (घर में पड़े रहने की) इजाज़त दे दो और मुझे फ़ितना (गुमराही के ख़तरे) में न डालो[२८]। जान लो ! फ़ितना में तो ये लोग पड़ चुके हैं[२९]। और निस्सन्देह 'जहन्नम' इन 'काफ़िरों' को घेरे हुये है।

49. Of them is he who saith: Grant me leave (to stay at home) and tempt me not. Surely it is into temptation that (thus) have fallen. Lo! hell is all around the disbelievers.

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي
أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ
بِالْكَافِرِينَ ٤٩

२६. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।

२७. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुट नोट ५।

२८. अल्लाह की राह से पीछे हटने के लिए 'मुनाफ़िक़' लोग जहाँ और बहुत से बहाने गढ़ कर लाते थे वहीं उन के एक व्यक्ति ने नबी सल्ल० से यह भी कहा था कि मुझे लड़ाई में न ले चलिए रोम की स्त्रियाँ बहुत सुन्दर होती हैं। मुझ में बड़ी कमज़ोरी है। सम्भव है कि उन्हें देख कर मैं किसी ख़राबी में पड़ जाऊँ। नैतिक दृष्टि से मेरे लिए यही उचित होगा कि आप मुझे वहाँ न ले जायें।

२९. अर्थात् 'कुफ़्', 'निफ़ाक़', झूठ आदि की आपदा में तो तुम पहले ही ग्रस्त हो चुके हो। इस से बढ़ कर आपदा और क्या हो सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. यदि तुम्हारा भला हो तो इन्हें दु:ख होगा, और यदि तुम पर कोई मुसीबत आये, तो कहेंगे : हम ने अपना काम पहले ही सँभाल लिया था, और ये ख़ुश हो कर पलटेंगे।

50. If good befalleth thee (O Muhammad) it afflicteth them, and if calamity befalleth thee, they say: We took precaution, and they turn away well pleased.

إِن تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن
تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا
أَمْرَنَا مِن قَبْلُ وَيَتَوَلَّوا وَّهُمْ فَرِحُونَ ٥٠

५१. कह दो : हमें कुछ पेश नहीं आता सिवाय उस के जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है। वह हमारा प्रभु और संरक्षक-मित्र है । और 'ईमान' वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए !

51. Say: Naught befalleth us save that which Allah hath decreed for us. He is our Protecting Friend. In Allah let believers put their trust!

قُل لَّن يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ
مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ٥١

५२. कहो : तुम हमारे लिए जिस बात की प्रतीक्षा करते हो वह इस के सिवा क्या है कि दो भलाइयों (अल्लाह की राह में मृत्यु अथवा विजय) में से एक है ? जब कि हमें तुम्हारे हक़ में जिस चीज़ की प्रतीक्षा है वह यह है कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई यातना देता है या हमारे हाथों दिलवाता है। अच्छा तो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करते हैं।

52. Say: Can ye await for us aught save one of two good things (death or victory in Allah's way)? while we await for you that Allah will afflict you with a doom from Him or at our hands. Await then! Lo! we are awaiting with you.

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَن
يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِندِهِ أَوْ
بِأَيْدِينَا فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُم
مُّتَرَبِّصُونَ ٥٢

५३. कह दो : तुम चाहे स्वेच्छापूर्वक ख़र्च करो या अनिच्छापूर्वक, वह तुम से कभी क़बूल नहीं किया जायेगा। निस्सन्देह तुम अवज्ञाकारी लोग हो।

53. Say: Pay (your contribution), willingly or unwillingly, it will not be accepted from you. Lo! ye were ever froward folk.

قُلْ أَنفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ
مِنكُمْ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ٥٣

५४. और इन के ख़र्च क़बूल न होने का कोई कारण इस के सिवा नहीं है कि इन्हों ने अल्लाह और उस के 'रसूल' के साथ 'कुफ़्र' किया, और 'नमाज़' को आते हैं तो बस हारे जी, और ख़र्च करते हैं तो अनिच्छापूर्वक।

54. And naught preventeth that their contributions should be accepted from them save that they have disbelieved in Allah and in His messenger, and they come not to worship save as idlers, and pay not (their contribution) save reluctantly.

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا
أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ
الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ
إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ٥٤

५५. तो इन के माल तुम्हारे लिए अचम्भे का कारण न बनें और न इन की औलाद। अल्लाह तो चाहता है कि इन चीज़ों के द्वारा इन्हें सांसारिक जीवन में यातना दे और इन के प्राण इस दशा में निकलें कि ये 'काफ़िर' हों।

55. So let not their riches nor their children please thee (O Muhammad). Allah thereby intendeth but to punish them in the life of the world and that their souls shall pass away while they are disbelievers.

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا
يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ٥٥

५६. और वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हम तुम्हीं में से हैं, हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं, बल्कि वे लोग डर रहे हैं।

56. And they swear by Allah that they are in truth of you, when they are not of you, but they are folk who are afraid.

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم
مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ٥٦

५७. यदि वे कोई शरण पा लें या कोई गुफा, या घुस बैठने की जगह, तो अवश्य उस की ओर बगटुट भाग जायें।

57. Had they but found a refuge, or caverns, or a place to enter, they surely had resorted thither swift as runaways.

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا
لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ٥٧

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो 'सदक़ों' के बारे में तुम पर चोट करते हैं (कि तुम ने बे-इन्साफ़ी की)। तो यदि उन्हें उस में से दे दिया जाये, तो ख़ुश हो जायें, और यदि न दिया जाये, तो नाख़ुश होने लगते हैं।

58. And of them is he who defameth thee in the matter of the alms. If they are given thereof they are content, and if they are not given thereof behold! they are enraged.

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ٥٨

५९. क्या अच्छा होता कि जो कुछ अल्लाह और उस के 'रसूल' ने उन्हें दिया था उसी पर राज़ी रहते और कहते कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह हमें जल्द अपने अनुग्रह से देगा, और उस का 'रसूल' भी। हम तो अल्लाह की ओर प्रवृत्त हैं।

59. (How much more seemly had they been content with that which Allah and His messenger had given them and had said: Allah sufficeth us. Allah will give us of His bounty and (also) His messenger. Unto Allah we are suppliants.

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ٥٩

६०. 'सदक़े' ('ज़कात') तो वास्तव में ग़रीबों और मुहताजों के लिए हैं, और उन कर्मचारियों के लिए जो इस (सदक़े के काम) पर लगे हों,[३०] और उन के लिए जिन के दिलों को परचाना हो,[३१] और गरदनों को छुड़ाने में,[३२] और क़र्ज़-दारों की सहायता करने में, और अल्लाह के मार्ग में, और मुसाफ़िर की सहायता में लगाने के लिए हैं; यह अल्लाह का ठहराया हुआ हुक्म है। अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

60. The alms are only for the poor and the needy, and those who collect them, and those whose hearts are to be reconciled and to free the captives and the debtors, and for the cause of Allah, and (for) the wayfarers; a duty imposed by Allah. Allah is Knower, Wise.

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٦٠

६१. और इन में कुछ लोग ऐसे हैं जो 'नबी' को दु:ख देते हैं और कहते हैं: वह तो निरा कान है[३३]। कह दो: वह निरा कान तुम्हारे भले के लिए है, अल्लाह पर 'ईमान' रखता है और 'ईमान' वालों पर विश्वास करता है, और उन लोगों के लिए दयालुता है जो तुम में 'ईमान' लाये हैं। और जो लोग अल्लाह के 'रसूल' को दु:ख देते हैं, उन के लिए दु:ख देने वाली यातना है।

61. And of them are those who vex the Prophet and say: He is only a hearer. Say: A hearer of good for you who believeth in Allah and is true to the believers, and a mercy for such of you as believe. Those who vex the messenger of Allah, for them there is a painful doom.

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٦١

३०. अर्थात् वे लोग जो इस काम पर लगाये गये हों कि 'सदक़ा' वसूल करें, और उस का हिसाब-किताब रखें; और राज्य की ओर से उस का वितरण करें।

३१. 'इस्लाम' के विरोधियों के विरोध और उन की शत्रुता को यदि माल दे कर कम किया जा सकता हो, तो इस के लिए 'ज़कात' का माल भी ख़र्च किया जा सकता है। इसी तरह जो लोग नये-नये मुसलमान हुये हों या जिन का 'ईमान' कमज़ोर हो और 'कुफ़्र' की ओर उन के पलट जाने का भय हो, ऐसे लोगों पर माल ख़र्च कर के उन की भावना को बदला जा सकता है। इस के लिए दूसरे मालों के अलावा 'ज़कात' का माल भी ख़र्च कर सकते हैं।

३२. अर्थात् गुलामों को आज़ाद कराने में।

३३. 'मुनाफ़िक़' लोग जहाँ और बहुत-सी बातें कहते वहीं वे नबी सल्ल० के बारे में यह भी कहते थे कि आप तो निरा कान या कानों के कच्चे हैं कि हर एक की बात सुन लेते हैं। जो बात भी हमारे विरुद्ध कह दी जाती है आप झट उस को मान लेते हैं, जो चाहता है आप के कान भरता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. ये लोग तुम्हारे सामनें अल्लाह की क़सम खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर लें, हालांकि अल्लाह और उस के रसूल इस का ज़्यादा हक़ रखते हैं कि यदि ये 'ईमान' वाले हैं तो उसे राज़ी करें।

62. They swear by Allah to you (Muslims) to please you, but Allah with His messenger, hath more right that they should please Him if they are believers.

يحلفون بالله لكم ليرضوكم والله
ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا
مؤمنين ٦٢

६३. क्या ये जानते नहीं कि जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' का विरोध करता है, उस के लिए 'जहन्नम' की आग है, उस में उसे सदा रहना होगा ? यह बहुत बड़ी रुसवाई है।

63. Know they not that whoso opposeth Allah and His messenger, his portion verily is hell, to abide therein? That is the extreme abasement.

ألم يعلموا أنه من يحادد الله و
رسوله فأن له نار جهنم خالدا فيها
ذلك الخزي العظيم ٦٣

६४. 'मुनाफ़िक़' डर रहे हैं कि कहीं उन के बारे में कोई ऐसी 'सूरा' न उतार दी जाये, कि जो कुछ उन के दिलों में है उन (मुसलमानों) पर खोल दे। कह दो : हँसी उड़ाओ निश्चय ही अल्लाह उस चीज़ को खोल देनें वाला है जिस का तुम्हें डर है।

64. The hypocrites fear lest a surah should be revealed concerning them, proclaiming what is in their hearts. Say: Scoff (your fill)! Lo! Allah is disclosing what ye fear.

يحذر المنافقون أن تنزل عليهم
سورة تنبئهم بما في قلوبهم قل
استهزءوا إن الله مخرج ما تحذرون ٦٤

६५. और यदि इन से पूछो तो कह देंगे : हम तो बस बातों में लगे हुये थे और हँसी दिल्लगी कर रहे थे। कहो : क्या तुम अल्लाह और उस की 'आयतों' और उस के 'रसूल' के साथ हँसी कर रहे थे ?

65. And if thou ask them (O Muhammad) they will say: We did but talk and jest. Say: Was it at Allah and His revelations and His messenger that ye did scoff?

ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض
ونلعب قل أبالله وآياته ورسوله
كنتم تستهزءون ٦٥

६६. बहाने न बनाओ। तुम नें अपने 'ईमान' के पश्चात् 'कुफ़्' किया है। यदि हम तुम में से एक गरोह को क्षमा भी कर दें, तो भी एक गरोह को यातना देके ही रहेंगे। इस लिए कि वे अपराधी हैं।

66. Make no excuse. Ye have disbelieved after your (confession of) belief. If We forgive a party of you, a party of you We shall punish because they have been guilty.

لا تعتذروا قد كفرتم بعد إيمانكم
إن نعف عن طائفة منكم نعذب
طائفة بأنهم كانوا مجرمين ٦٦

६७. 'मुनाफ़िक़' पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब परस्पर सजाति हैं। बुराई का हुक्म देते हैं, और भलाई से रोकते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं[३४]। वे अल्लाह को भूल गये, तो उस ने भी उन्हें भुला दिया। निस्सन्देह ये 'मुनाफ़िक़' ही हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

67. The hypocrites, both men and women, proceed one from another. They enjoin the wrong, and they forbid the right, and they withhold their hands (from spending for the cause of Allah). They forget Allah, so He hath forgotten them. Lo! the hypocrites they are the transgressors.

المنافقون والمنافقات بعضهم من بعض
يأمرون بالمنكر وينهون عن المعروف
ويقبضون أيديهم نسوا الله فنسيهم
إن المنافقين هم الفاسقون ٦٧

६८. अल्लाह नें इन 'मुनाफ़िक़' पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों और 'काफ़िरों' से 'जहन्नम' की आग का वादा किया है जिस में वे सदा रहेंगे। यही उन्हें बस है। अल्लाह नें उन्हें लानत की और उन के लिए स्थायी यातना है—

68. Allah promiseth the hypocrites, both men and women, and the disbelievers fire of hell for their abode. It will suffice them. Allah curseth them and theirs is lasting torment.

وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار
نار جهنم خالدين فيها هي حسبهم
ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ٦٨

३४. अर्थात् भलाई से ये अपने हाथ रोके रखते हैं। न ये नेक कामों की ओर लपकते हैं और न नेकी और भलाई के कामों में कुछ खर्च करना जानते है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. उन लोगों की तरह जो तुम से पहले थे वे तुम से शक्ति में बढ़ कर थे, और ज़्यादा माल और औलाद वाले थे। फिर उन्हों ने अपने हिस्से के मज़े लूट लिये, और तुम ने भी अपने हिस्से के मज़े उसी तरह लूटे जिस तरह तुम से पहले के लोगों ने लूटा था। और उसी प्रकार बहसों में पड़े जिस प्रकार बहसों में वे पड़े थे। ये, वे लोग हैं जिन का किया-धरा दुनिया और 'आख़िरत' में अकारथ गया। और यही घाटा उठाने वाले हैं——

69. Even as those before you were mightier than you in strength, and more affluent than you in wealth and children. They enjoyed their lot awhile so ye enjoy your lot awhile even as those before you did enjoy their lot awhile. And ye prate even as they prated. Such are they whose works have perished in the world and the Hereafter. Such are they who are the losers.

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ
قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ
كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

७०. क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इन से पहले थे—'नूह की जाति' वाले, और 'आद', और 'समूद', और इबराहीम की जाति वाले, और 'मदयन वाले' और वे बस्तियाँ जो उलट दी गईं? उन के 'रसूल' उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर यह नहीं होने का कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करता, परन्तु वे आप ही अपने पर ज़ुल्म करते थे।

70. Hath not the fame of those before them reached them—the fork of Noah, A'ad Thamud, the folk of Abraham, the dwellers of Midian and the disasters (which befell them)? Their messengers (from Allah) came unto them with proofs (of Allah's sovereignty). So Allah surely wronged them not, but they did wrong themselves.

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ
نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾

७१. और 'ईमान' वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ ये सब एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं; भलाई का हुक्म देते हैं, और बुराई से रोकते हैं, और 'नमाज़' क़ायम करते हैं, और 'ज़कात' देते हैं, और अल्लाह और उस के 'रसूल' का कहना मानते हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह दया करेगा। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

71. And the believers, men and women, are protecting friends one of another; they enjoin the right and forbid the wrong, and they establish worship and they pay the poor-due, and they obey Allah and His messenger. As for these, Allah will have mercy on them. Lo! Allah is Mighty, Wise.

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ
بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

७२. इन 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिन में वे सदैव रहेंगे—सदा-बहार बाग़ों में रहने के पाक घर होंगे —और अल्लाह की ख़ुशी और रज़ामन्दी तो सब से बड़ी चीज़ है! यही बड़ी सफलता है।

72. Allah promiseth to the believers, men and women. Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide—blessed dwellings in Gardens of Eden. And—greater (far)!—acceptance from Allah. That is the supreme triumph.

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ وَرِضْوَانٌ
مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

७३. हे 'नबी'! 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' से 'जिहाद' करो! और उन के साथ सख़्ती से पेश आओ। उन का ठिकाना 'जहन्नम' है और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

73. O Prophet! Strive against the disbelievers and the hypoorites! Be harsh with them. Their ultimate abode is hell, a hapless journey's end.

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَ
بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हम नें नहीं कहा, हालाँकि इन्हों ने निश्चय ही 'कुफ़' की बात कही है, और अपने 'इस्लाम' के पश्चात् 'कुफ़' किया है। और उस की फ़िक्र की जिसे प्राप्त न कर सके,[३५] और इन्हों ने केवल इस का बदला दिया है कि अल्लाह और उस के 'रसूल' ने अपनें अनुग्रह से इन्हें धनी कर दिया[३६]। तो यदि ये 'तौबा' कर लें तो इन्हीं के लिए अच्छा होगा; और यदि इन्हों नें मुँह मोड़ा, तो अल्लाह इन्हें दुनिया और 'आख़िरत' में दु:ख देने वाली यातना देगा, और धरती में इन का कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न होगा।

74. They swear by Allah that they said nothing (wrong); yet they did say the word of disbelief, and did disbelieve after their Surrender (to Allah). And they purposed that which they could not attain, and they sought revenge only that Allah by His messenger should enrich them of His bounty. If they repent it will be better for them; and if they turn away, Allah will afflict them with a painful doom in the world and the Hereafter, and they have no protecting friend nor helper in the earth.

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

७५. और इन में कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हों ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि उस ने हमें अपने अनुग्रह से दिया तो हम अवश्य 'सदक़ा' करेंगे और निश्चय ही नेक लोगों में से हो जायेंगे।

75. And of them is he who made a covenant with Allah (saying); If He give us of His bounty We will give alms and become of the righteous.

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

७६. परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया, तो वे उस में कंजूसी करनें लगे और बे-परवाह हो कर (अपने किये हुये वादे से) फिर गये;

76. Yet when He gave them of His bounty, they hoarded it and turned away, averse;

فَلَمَّا آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾

७७. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उस ने उन के दिलों में 'निफ़ाक़' डाल दिया उस दिन तक के लिए जब कि वें उस से मिलेंगे, इस लिए कि उन्हों नें प्रणोल्लंघन किया अल्लाह से उस प्रण में जो उन्हों ने उस से किया था, और इस लिए कि वे झूठ बोलते थे।

77. So He hath made the consequence (to be) hypocrisy in their hearts until the day when they shall meet Him because they broke their word to Allah that they promised Him, and because they lied.

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

७८. क्या उन्हों नें नहीं जाना कि अल्लाह उन का भेद और उन की काना-फूसी को अच्छी तरह जानता है, और यह कि अल्लाह परोक्ष की बातों का बड़ा जानने वाला है?

78. Know they not that Allah knoweth both their secret and the thought that they confide, and that Allah is the Knower of Things Hidden?

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾

---

३५. अर्थात् इन की सारी चालें और योजनायें असफल हो कर रह गईं।

३६. धनी करने का अर्थ यह है कि अब पहले की-सी दशा इन की नहीं रही। अब मदीना अरब देश की राजधानी बन गया, 'औस' और 'ख़ज़रज' के लोगों को जो केवल किसान थे राज-काज में भाग लेने का अवसर मिल रहा है। और इस नगर पर ईश-कृपा की वर्षा होने लगी है; इन के हाथ 'ग़नीमत' आ रही है। व्यापार की सुविधायें अलग प्राप्त होने लगी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७९. जो लोग, स्वेच्छापूर्वक 'सदक़ा' करने वाले 'ईमान' वालों पर चोटें करते हैं और उन लोगों की हँसी उड़ाते हैं जिन के पास (ख़र्च करने को) उस के सिवा और कुछ नहीं जो वे अपने ऊपर मशक़्क़त बरदाश्त कर लें—अल्लाह ने उन (हँसी उड़ाने वालों) की हँसी उड़ाई है[३७]। और उन के लिए दुःख देने वाली यातना है।

79. Those who point at such of the believers as give the alms willingly and such as can find naught to give but their endeavours, and deride them—Allah (Himself) derideth them. Theirs will be a painful doom.

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِينَ لَا
يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ
سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٧٩

८०. (हे 'नबी' !) तुम उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो, या क्षमा की प्रार्थना न करो; यदि तुम सत्तर बार भी उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करोगे तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के 'रसूल' से 'कुफ़्र' किया है, और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

80. Ask forgiveness for them (O Muhammad), or ask not forgiveness for them; though thou ask forgiveness for them seventy times Allah will not forgive them. That is because they disbelieved in Allah and His messenger, and Allah guideth not wrong doing folk.

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللّٰهِ
وَرَسُولِهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ٨٠

८१. पीछे रह जाने वाले, अल्लाह के 'रसूल' का साथ छोड़ कर अपने बैठे रहने पर ख़ुश हुये, उन्हें यह नापसन्द हुआ कि अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपने प्राणों से 'जिहाद' करें। और उन्हों ने कहा : इस गर्मी में न निकलो ! कह दो : 'जहन्नम' की आग बहुत अधिक गर्म है, क्या ही अच्छा होता यदि वे समझते।

81. Those who were left behind rejoiced at sitting still behind the messenger of Allah and were averse to striving with their wealth and their lives in Allah's way. And they said: Go not forth in the heat! Say: The heat of hell is more intense of heat, if they but understood.

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُولِ اللّٰهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ
وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ
جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ٨١

८२. अब चाहिए कि ये हँसे कम और रोवें अधिक उस के बदले में जिसे ये कमाते रहे हैं।

८३. तो यदि अल्लाह तुम्हें इन के किसी गरोह की ओर वापस ले जाये फिर ये लोग तुम से ('जिहाद' के लिए) निकलने की इजाज़त चाहें, तो कह देना : तुम मेरे साथ कभी नहीं निकल सकते और न मेरे साथ हो कर किसी शत्रु से लड़ सकते हो। तुम ने तो पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया तो अब पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

82. Then let them laugh a little: they will weep much, as the reward of what they used to earn.

83. If Allah bring thee back (from the campaign) unto a party of them and they ask of thee leave to go out (to fight), then say unto them: Ye shall never more go out with me nor fight with me against a foe. Ye were content with sitting still the first time. So sit still, with the useless.

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۚ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ٨٢
فَإِنْ رَجَعَكَ اللّٰهُ إِلٰى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ
فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا
مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ
رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا
مَعَ الْخٰلِفِينَ ٨٣

३७. 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी के समय 'ईमान' वालों में जो लोग बढ़-चढ़ कर चन्दा (सामूहिक अनुदान) देने का सामर्थ्य रखते थे वे बढ़-चढ़ कर चन्दा देने लगे। 'मुनाफ़िक़' उन पर चोटें करने लग गये कि ये केवल लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च कर रहे हैं। और यदि कोई ग़रीब मुसलमान मेहनत-मज़दूरी कर के कुछ खजूरें लाता और नबी 'सल्ल०' की सेवा में हाज़िर करता या अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट काट कर एक छोटी-सी रक़म पेश करता तो 'मुनाफ़िक़' उस की हँसी उड़ाते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. और (हे 'नबी' !) इन में से जो कोई मरे तुम कभी उस पर (जनाज़े की) नमाज़ न पढ़ना, और न उस की क़ब्र पर खड़े होना। निस्सन्देह इन्हों ने अल्लाह और उस के 'रसूल' के साथ 'कुफ़्' किया, और मरे तो इस दशा में कि अवज्ञाकारी थे।

84. And never (O Muhammad) pray for one of them who dieth, nor stand by his grave. Lo! they disbelieved in Allah and His messenger, and they died while they were evil-doers.

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰٓ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا
وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِۦٓ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِٱللَّهِ
وَرَسُولِهِۦ وَمَاتُوا۟ وَهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٨٤﴾

८५. और उन के माल और उन की औलाद तुम्हारे लिए अचम्भे का कारण न बनें ! अल्लाह तो यही चाहता है कि इन चीज़ों के द्वारा उन्हें दुनिया में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वे 'काफ़िर' हों।

85. Let not their wealth nor their children please thee! Allah purposeth only to punish them thereby in the world, and that their souls shall pass away while they are disbelievrs.

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَٰلُهُمْ وَأَوْلَٰدُهُمْ ۚ
إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِى
ٱلدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٨٥﴾

८६. और जब कभी कोई 'सूरा' उतरती है कि अल्लाह पर 'ईमान' लाओ और उस के 'रसूल' के साथ हो कर 'जिहाद' करो, तो जो लोग उन में सामर्थ्यवान् हैं वही तुम से इजाज़त चाहने लगते हैं और कहते हैं : हमें छोड़ दो कि हम बैठने वालों के साथ रहें।

86. And when a surah is revealed (which saith): Believe in Allah and strive along with His messenger, the men of wealth among them still ask leave of thee and say: Suffer us to be with those who sit (at home).

وَإِذَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ ءَامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَ
جَٰهِدُوا۟ مَعَ رَسُولِهِ ٱسْتَـْٔذَنَكَ أُو۟لُوا۟
ٱلطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا۟ ذَرْنَا نَكُن مَّعَ ٱلْقَٰعِدِينَ ﴿٨٦﴾

८७. उन्हों ने पसन्द किया कि घर बैठने वालियों के साथ रह जायें और उन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया गया, इस लिए वे कुछ भी नहीं समझते।

87. They are content that they should be with the useless and their hearts are sealed, so that they apprehend not.

رَضُوا۟ بِأَن يَكُونُوا۟ مَعَ ٱلْخَوَالِفِ وَطُبِعَ
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

८८. परन्तु 'रसूल' नें और उन लोगों नें जो उस के साथ 'ईमान' लाये थे अपने मालों और अपने प्राणों से 'जिहाद' किया। यही लोग हैं जिन के लिए भलाइयाँ हैं। और यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

88. But the messenger and those who believe with him strive with their wealth and their lives. Such are they for whom are the good things. Such are they who are the successful.

لَٰكِنِ ٱلرَّسُولُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ
جَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ
لَهُمُ ٱلْخَيْرَٰتُ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

८९. अल्लाह ने उन के लिए बाग़ तैयार कर रक्खे हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वे सदैव रहेंगे। यही सब से बड़ी सफलता है।

89. Allah hath made ready for them Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide. That is the supreme triumph.

أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا
ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ
ع ٱلْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

९०. बद्दू अरबों में से भी उज़्र करने वाले आये ताकि उन्हें (घर रहने की) इजाज़त दे दी जाये। और जो लोग अल्लाह और उस के 'रसूल' से झूठ बोले थे वे बैठ रहे। इन लोगों को जिन्हों ने 'कुफ़्' किया है जल्द ही दुःख देने वाली यातना पहुँचेगी।

90. And those among the wandering Arabs who had an excuse came in order that permission might be granted them. And those who lied to Allah and His messenger sat at home. A painful doom will fall on those of them who disbelieve.

وَجَآءَ ٱلْمُعَذِّرُونَ مِنَ ٱلْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ
لَهُمْ وَقَعَدَ ٱلَّذِينَ كَذَبُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ ۚ
سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९१. न तो कमज़ोरों के लिए (घर पर ठहरे रहने में) कोई दोष है और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन के पास ख़र्च करने को कुछ नहीं है। जब कि वे अल्लाह और उस के 'रसूल' के प्रति निष्ठा रखने वाले हों। ऐसे सत्कर्मी लोगों के विरुद्ध (इलज़ाम की) कोई राह नहीं। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

91. Not unto the weak nor unto the sick nor unto those who can find naught to spend is any fault (to be imputed though they stay at home) if they are true to Allah and His messenger. Not unto the good is there any road (of blame). Allah is Forgiving, Merciful.

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ ﴿٩١﴾

९२. और न उन लोगों के विरुद्ध (इलज़ाम की कोई राह है) कि जब तुम्हारे पास आये कि तुम उन के लिए सवारी का प्रबन्ध कर दो, तुम नें कहा : मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं कि तुम्हें उस पर सवार करूँ। वे लौट गये, इस ग़म में उन की आँखों से आँसू बह रहे थे कि उन्हें कुछ प्राप्त नहीं जिसे (अल्लाह के लिए) ख़र्च कर सकें।

92. Nor unto those whom when they came to thee (asking) that thou shouldest mount them thou didst tell: I cannot find whereon to mount you. They turned back with eyes flowing with tears, for sorrow that they could not find the means to spend.

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ؕ ﴿٩٢﴾

९३. (इलज़ाम की) राह तो केवल उन के विरुद्ध है जो धनवान् होते हुये तुम से (घर रहने की) इजाज़त चाहते हैं। उन्हों ने पसन्द किया कि पीछे रह जाने वालों के साथ रह जायें। और अल्लाह ने उन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया तो वे कुछ नहीं जानते।

93. The road (of blame) is only against those who ask for leave of thee (to stay at home when they are rich. They are content to be with the useless. Allah hath sealed their hearts so that they know not.

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

*९४. जब तुम पलट कर उन के पास पहुँचोगे तो वे तुम्हारे सामने उज्र पेश करेंगे। तुम कह देना : बहाने न करो, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। हमें अल्लाह ने तुम्हारे वृत्तान्त बता दिये हैं। अभी अल्लाह और उस का 'रसूल' तुम्हारे काम देखेगा, फिर तुम उस की ओर पलटाये जाओगे जो छिपे और खुले सब का जानने वाला है, फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम्हें बतायेगा।

94. They will make excuse to you (Muslims) when ye return unto them. Say: Make no excuse, for we shall not believe you. Allah hath told us tidings of you. Allah and His messenger will see your conduct, and then ye will be brought back unto Him Who knoweth the invisible as well as the visible, and He will tell you what ye used to do.

الجزء الحادي عشر ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

९५. जब तुम पलट कर उन के पास जाओगे, तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खायेंगे ताकि तुम उन्हें छोड़ दो। तो तुम उन्हें छोड़ ही दो! वे नापाक हैं, और जो कुछ वे कमाते रहे हैं उस के बदले में उनका ठिकाना 'जहन्नम' है।

95. They will swear by Allah unto you, when ye return unto them, that ye may let them be. Let them be, for lo! they are unclean, and their abode is hell as the reward for what they used to earn.

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

९६. वे तुम्हारे सामने क़समें खायेंगे ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ। तो यदि तुम उन से राज़ी हो भी गये, तो अल्लाह कभी भी ऐसे लोगों से राज़ी न होगा जो अवज्ञाकारी हैं।

96. They swear unto you, that ye may accept them. Though ye accept them, Allah verily accepteth not wrong-doing folk.

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

* यहाँ से ग्यारहवाँ पारा (Part XI) शुरु होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७. ये अरब बद्दू 'कुफ़्र' और 'निफ़ाक़' में बहुत ही सख़्त हैं, और ये इसी बात के अधिक योग्य हैं कि उस की सीमाओं को न जान सकें जिसे अल्लाह नें अपने 'रसूल' पर उतारा है। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

97. The wandering Arabs are more hard in disbelief and hypocrisy and more likely to be ignorant of the limits which Allah hath revealed unto His messenger. And Allah is Knower, Wise.

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَ
أَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا
أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

९८. और अरब बद्दुओं में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि वे जो कुछ खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं, और तुम्हारे हक़ में गर्दिशों (आपत्तियों) की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बुरे चक्कर में तो वही फँसने वाले हैं। और अल्लाह सुनता और जानता है।

98. And of the wandering Arabs there is he who taketh that which he expendeth (for the cause of Allah), as a loss, and awaiteth (evil) turns of fortune for you (that he may be rid of it). The evil turn of fortune will be theirs. Allah is Hearer, Knower, Wise.

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ
مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ
دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

९९. और अरब बद्दुओं में वे लोग भी हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन[३८] पर 'ईमान' रखते हैं, और जो कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह से क़रीब होने और 'रसूल' की दुआयें (आशीर्वाद) लेने का साधन बनाते हैं। हाँ! अवश्य वह उन के लिए सामीप्य (का साधन) है। अल्लाह उन्हें जल्द अपनी दयालुता में प्रविष्ट करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

99. And of the wandering Arabs there is he who believeth in Allah and the Last Day, and taketh that which he expendeth and also the prayers of the messenger as acceptable offerings in the sight of Allah. Lo! verily it is an acceptable offering for them. Allah will bring them into His mercy. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ
لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾

१००. ('ईमान' की पुकार पर) आगे बढ़ने वाले 'मुहाजिर'[३९] और 'अनसार'[४०] अग्रसर रहे और वे लोग जिन्हों ने अच्छी तरह उन का अनुवर्तन किया—अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वे उस से राज़ी हुये, और उस ने (अल्लाह ने) उन के लिए बाग़ तैयार कर रक्खे हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे उन में सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

100. And the first to lead the way, of the Muhajirin and the Ansar, and those who followed them in goodness—Allah is well pleased with them and they are well pleased with Him, and he hath made ready for them Gardens underneath which rivers flow wherein they will abide for ever. That is the supreme triumph.

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَ
الْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

१०१. और तुम्हारे आस-पास के बहुत से बद्दू 'मुनाफ़िक़' हैं, और मदीना के लोगों में भी कुछ ऐसे हैं जो 'निफ़ाक़' (कपट-नीति) में पक्के हो गये हैं तुम उन्हें नहीं जानते। हम उन्हें जानते हैं, जल्द ही हम उन्हें दोहरी सज़ा देंगे; फिर वे बड़ी यातना की ओर लौटाये जायेंगे।

101. And among those around you of the wandering Arabs there are hypocrites, and among the townspeople of Al-Madinah (there are some who) persist in hypocrisy whom thou (O Muhommad) knowest not. We, We know them and We shall chastise them twice, then they will relegated to a painful doom.

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ
وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ
لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُمْ
مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

३८. देखो सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ५।
३९. 'हिजरत' करने वाले।
४०. मदीना के वे मुसलमान जिन्हों ने नबी सल्ल० और अपने 'मुहाजिर' भाइयों का स्वागत किया, और आप (सल्ल०) के लाये हुये 'दीन' (धर्म) की सेवा में तन-मन-धन से लग गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२. कुछ और लोग हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया। उन्हों ने मिले-जुले कर्म किये कुछ अच्छे और कुछ बुरे। हो सकता है कि अल्लाह उन पर मेहरबान हो जाये। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

102. And (there are) others who have acknowledged their faults. They mixed a righteous action with another that was bad. It may be that Allah will relent toward them. Lo! Allah is Relenting, Merciful.

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

१०३. (हे 'नबी'!) तुम उन के मालों में से 'सदक़ा' ले कर उन्हें पाक करो और उन (की आत्मा) को विकसित करो, और उन के लिए दुआ करो। निस्सन्देह तुम्हारी दुआ उन के लिए सन्तोष-निधि है। और अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

103. Take alms of their wealth wherewith thou mayst purify them and mayst make them grow, pray for them. Lo! thy prayer is an assuagement for them. Allah is Hearer, Knower.

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

१०४. क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की 'तौबा' क़बूल करता है और वही 'सदक़ों' को क़बूल करता है, और यह कि अल्लाह बहुत 'तौबा' क़बूल करने वाला और दयावान् है।

104. Know they not that Allah is He Who accepteth repentance from His bondmen and taketh the alms, and that Allah is He Who is the Relenting, the Merciful.

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

१०५. और कह दो कि तुम कर्म करो! अभी अल्लाह और उस का 'रसूल' और 'ईमान' वाले तुम्हारे कर्म देखेंगे, फिर तुम छिपे और खुले सब के जानने वाले की ओर पलटाये जाओगे, फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम्हें बता देगा।

105. And say (unto them): Act! Allah will behold your actions, and (so will) His messengers, and the believers, and ye will be brought back to the Knower of the invisible and the visible and He will tell you what ye used to do.

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۚ ﴿١٠٥﴾

१०६. और कुछ दूसरे लोग हैं जिन का मामला अल्लाह के हुक्म पर ठहरा हुआ है वह चाहे उन्हें सज़ा दे या चाहे उन पर फिर से मेहरबान हो जाये। अल्लाह जानने वाला और तत्वदर्शी है।

106. And (there are) others who await Allah's decree, whether He will punish them or will forgive them. Allah is Knower, Wise.

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७. और कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हों ने इस लिए एक मस्जिद बनाई कि हानि पहुँचायें और 'कुफ़' करें, और 'ईमान' वालों के बीच फूट डालें,[४१] और उस व्यक्ति के लिए थाँग (घात-स्थल) बनायें जो इस से पहले अल्लाह और उस के 'रसूल' से लड़ चुका है,[४२] और वे अवश्य कसमें खायेंगे कि भलाई के सिवा हम ने कोई दूसरा इरादा नहीं किया था। परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं।

107. And as for those who chose a place of worship out of opposition and disbelief, and in order to cause dissent among the believers and as an outpost for those who warred against Allah and His messenger aforetime, they will surely swear: We purposed naught save good. Allah beareth witness that they verily are liars.

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

१०८. तुम कदापि उस (मस्जिद) में न खड़े होना। हाँ वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से ईश-भय पर रक्खी गई है वही इस का ज़्यादा हक़ रखती है कि तुम उस में खड़े हो, उस में ऐसे पुरुष हैं जो पाक रहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह पाक रहने वालों ही को पसन्द करता है।

108. Never stand (to prav) there. A place of worship which was founded upon duty (to Allah) from the first dav is more worth that thou shouldst stand (to pray therein, wherein are men who love to purify themselves. Allah loveth the purifiers.

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ﴿١٠٨﴾

१०९. क्या वह मनुष्य अच्छा है जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के भय ('तक़वा') और (उस की) खुशी और रज़ामन्दी पर रक्खी; या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद किसी खाई के खोखले कगर पर उठाई जो गिरने ही को है फिर वह उसे ले कर 'जहन्नम' की आग में जा गिरा ? ऐसे ज़ालिमों को अल्लाह मार्ग नहीं दिखाता।

109. Is he who founded his building upon duty to Allah and his good pleasure better; or he who founded his building on the brink of a crumbling, overhanging precipice so that it toppled with him into the fire of hell? Allah guideth not wrongdoing folk.

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

११०. उन की यह इमारत जो उन्हों ने बनाई है निरन्तर उन के दिलों में सन्देह (की जड़) बनी रहेगी सिवाय इस के कि उन के दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें। अल्लाह जानने वाला और तत्व-दर्शी है।

110. The building which they built will nevr cease to be a misgiving in their hearts unless their hearts be torn to pieces. Allah is Knower, Wise.

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ ع

४१. 'मुनाफ़िक़ों' ने मदीने में अपनी एक अलग मस्जिद बनाई थी ताकि मुसलमानों से बच कर अपना अलग जत्था बना सकें। और वहाँ मुसलमानों के विरुद्ध विचार-विमर्श के लिए एकत्र हो सकें। उस समय मदीने में दो मस्जिदें और थीं। किसी तीसरी मस्जिद की ज़ुरूरत नहीं थी। मुनाफ़िक़ों ने इस बहाने से कि बीमारों और बूढ़ों को उन दोनों मस्जिदों तक पहुँचने में तकलीफ होती है यह मस्जिद बनाई और नबी सल्ल० से कहा कि आप (सल्ल०) उस में एक बार 'नमाज़' पढ़ दें। नबी सल्ल० ने कहा कि इस समय तो हम लड़ाई की तैयारी में लगे हुये हैं वापसी पर देखा जायेगा। जब आप (सल्ल०) वापस हुये तो मार्ग ही में ये 'आयतें' उतरीं। आप (सल्ल०) ने उसी समय कुछ आदमियों को भेजा कि वे आप (सल्ल०) के मदीना पहुँचने से पहले ही उस मस्जिद को ढा दें।

४२. 'उस व्यक्ति' से यहाँ अबू आमिर नामक एक ईसाई सन्यासी की ओर संकेत किया गया है। 'इस्लाम' के विरोध में इस व्यक्ति ने वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था। इस ने 'क़ुरैश' और अरब के दूसरे क़बीलों को इस्लाम का दुश्मन बनाने में अपना पूरा ज़ोर लगा दिया। जब इस ने देखा कि मक्का वाले 'इस्लाम' को नहीं दबा सके, तो इस ने रोम देश की यात्रा की ताकि क़ैसर को इस्लाम के मुक़ाबले के लिए खड़ा कर सके। इसी मौक़े पर नबी सल्ल० को यह ख़बर मिली थी कि क़ैसर अरब पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा है। इसी की रोक-थाम के लिए नबी सल्ल० को तबूक की मुहिम पर जाने की ज़रूरत पेश आई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११. निस्सन्देह अल्लाह ने 'ईमान' वालों से उन के प्राणों और उन के मालों को इस के बदले में ख़रीद लिया है कि उन के लिए 'जन्नत' है : वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह अल्लाह के ज़िम्मे ('जन्नत' का) एक पक्का वादा है 'तौरात' और इन्जील और क़ुरआन में[४३]। और अल्लाह से बढ़ कर अपने वादे का पूरा करने वाला कौन हो सकता है ?

तो अपने उस सौदे पर ख़ुशी मनाओ जो सौदा तुम ने उस से किया है, और यही बड़ी सफलता है।

111. Lo! Allah hath bought from the believers their lives and their wealth because the Garden will be theirs: they shall fight in the way of Allah and shall slay and be slain. It is a promise which is binding on Him in the Torah and the Gospel and the Quran. Who fulfilleth His covenant better than Allah? Rejoice then in your bargain that ye have made, for that is the supreme triumph.

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا
عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ
وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ وَذَٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

११२. 'तौबा' करने वाले, 'इबादत' करने वाले, 'हम्द' (गुण-गान) करने वाले, (अल्लाह के मार्ग में) भ्रमण करने वाले, (अल्लाह के आगे) झुकने वाले, 'सजदा' करने वाले, भलाई का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले (ऐसे होते हैं वे ईमान वाले जो अल्लाह के हाथ सौदे का मामला करते हैं)—और इन 'ईमान' वालों को शुभ-सूचना दे दो।

112. (Triumphant) are those who turn repentant (to Allah) those who serve (Him), those who praise (Him), those who fast, those who bow down, those who fall prostrate (in worship), those who enjoin the right and who forbid the wrong and those who keep the limits (ordained) of Allah —And give glad tiding to believers!

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ
الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ
اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

११३. 'नबी' के लिए, और 'ईमान' वालों के लिए, उचित नहीं कि वे 'मुश्रिकों' के लिए क्षमा की प्रार्थना करें चाहे वे उन के नातेदार ही क्यों न हों जब कि उन पर यह बात खुल गई कि वे भड़कती आग ('जहन्नम') वाले हैं।

113. It is not for the Prophet, and those who believe, to pray for the forgiveness of idolaters even though they may be near of kin (to them) after it hath become clear that they are people of hell-fire.

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِن
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

४३. दे० इन्जील (Gospel) 'मत्ता' (Matthew) ५ : १० और १० : ३९ और १९ : २१, २९।
वर्तमान 'तौरात' (Torah) में इस वादे का उल्लेख नहीं है। परन्तु इस का मतलब यह कदापि नहीं कि तौरात इस बयान से ख़ाली थी। इस का कारण केवल यह है कि क़ुरआन के सिवा दूसरी आसमानी किताबें आज अपने वास्तविक रूप में पाई नहीं जाती; उन में लोगों ने बहुत कुछ अपनी ओर से घटा-बढ़ा दिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११४. और इबराहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी वह तो केवल एक वादे के कारण की थी जो वादा उस ने उस से कर लिया था,[४४] पर जब उस पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उस से विरक्त हो गया। निस्सन्देह इबराहीम बहुत ही कोमल-हृदय वाला और सहनशील था।

114. The prayer of Abraham for the forgiveness of his father was only because of a promise he had promised him but when it had become clear unto him that he (his father) was an enemy to Allah, he (Abraham) disowned him. Lo! Abraham was soft of heart, long-suffering.

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرٰهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا
عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ
لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ط إِنَّ
إِبْرٰهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

११५. और यह नहीं होने का कि अल्लाह लोगों को मार्ग दिखाने के पश्चात् फिर पथ-भ्रष्ट कर दे जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें बता न दे जिस से उन्हें बचना है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

115. It was never Allah's (part) that He should send a folk astray after He had guided them until He had made clear unto them what they should avoid. Lo! Allah is Aware of all things.

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ
هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُونَ إِنَّ
اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

११६. निस्सन्देह आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। वही जिलाता और मारता है। अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक।

116. Lo! Allah! Unto Him belongeth the sovereignty of the heavens and the earth. He quickeneth and He giveth death. And ye have insted of Allah no protecting friend nor helper.

إِنَّ اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط
يُحْيِي وَيُمِيتُ ط وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

११७. अल्लाह 'नबी' पर मेहरबान हो गया, और 'मुहाजिरों' और 'अनसार'[४५] पर जिन्हों ने कठिन समय में 'नबी' का साथ दिया। यद्यपि उन में से एक गरोह के दिल कजी की ओर झुक जाने के क़रीब थे,

फिर वह उन पर मेहरबान हुआ। निस्सन्देह वह इन लोगों के लिए करुणामय और दयाशील है।

117. Allah hath turned in mercy to the Prophet, and to the Muhajirin and the Ansar who followed him in the hour of hardship. After the hearts of a party of them had almost swerved aside, then turned He unto them in mercy. Lo! He is Full of Pity, Merciful for them.

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِينَ
وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ
الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ
فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ط إِنَّهُ
بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

४४ यह संकेत उस बात की ओर है जो हज़रत इबराहीम अ० ने अपने 'मुशरिक' बाप से अलग होते समय कही थी। दे० सूरा मरयम आयत ४७। हज़रत इबराहीम अ० ने अपने बाप के लिए जो प्रार्थना की थी उस का वर्णन सूरा अश-शु अरा आयत ८६-८९ में मिलता है।

४५. दे० फ़ुटनोट ३९ व ४०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११८. और उन तीनों पर भी (मेहरबान हो गया) जो पीछे छोड़ दिये गये थे,[४६] जब धरती विशाल होते हुए भी, उन पर तंग हो गई, और उन की जानें उन पर दूभर हो गईं और उन्हों ने समझा कि अल्लाह (की पकड़) से कहीं और शरण नहीं मिल सकती, मिल सकती है तो उसी के यहाँ। तो वह (अल्लाह) अपनी मेहरबानी से उन की ओर पलटा ताकि वे (भी उस की ओर) पलट आयें[४७]। निस्सन्देह अल्लाह तो बड़ा 'तौबा' कबूल करने वाला है। और दया करने वाला है।

118. And to the three also (did He turn in mercy) who were left behind, when the earth, vast as it is, was straitened for them, and their own souls were straitened for them till they bethought them that there is no refuge from Allah save toward Him. Then turned He unto them in mercy that they (too) might turn (repentant unto Him). Lo! Allah! He is the Relenting, the Merciful.

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾

११९. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह से डरते रहो, और सच्चे लोगों के साथ रहो।

119. O ye who believe! Be careful of your duty to Allah, and be with the truthful.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾

१२०. मदीने के निवासियों और उन के आस-पास के अरब बद्‌दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के 'रसूल' को छोड़ कर पीछे रह जायें और न यह कि उन्हें उस की जान के मुक़ाबले में अपनी जानें प्रिय हों। यह इस लिए कि वे अल्लाह के मार्ग में प्यास या थकान या भूख की कोई भी तकलीफ़ झेलें या कोई ऐसा क़दम उठायें जो 'काफ़िरों' के क्रोध का कारण बने या शत्रु को कोई क्षति पहुँचायें इस पर उन के हक़ में एक सुकर्म लिख लिया जाता है। निस्सन्देह अल्लाह उमत्तकारों का कर्म-फल अकारथ नहीं करता।

120. It is not for the townsfolk of Al-Madinah and for those around them of the wandering Arabs to stay behind the messenger of Allah and prefer their lives to his life. That is because neither thirst nor toil nor hunger afflicteth them in the way of Allah, nor step they any step that angereth the disbelievers, nor gain they from the enemy a gain, but a good deed is recorded for them therefor. Lo! Allah loseth not the wages of the good.

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

१२१. और वे थोड़ा या ज़्यादा जो भी ख़र्च करें, या (अल्लाह की राह में) कोई घाटी पार करें उन के हक़ में लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उन के अच्छे कर्मों का बदला प्रदान करे।

121. Nor spend they any spending, small or great, nor do they cross a valley, but it is recorded for them that Allah may repay them the best of what they used to do.

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾

४६. अर्थात् जिन के मामले को स्थगित कर दिया गया था।

४७. नबी सल्ल० जब 'तबूक' से मदीना लौट कर आये तो पीछे रह जाने वाले आप (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुये ताकि मुहिम पर न जाने का उज़्र पेश करें। उज़्र पेश करने वालों में जहाँ ८० से कुछ अधिक 'मुनाफ़िक़' थे वहीं तीन ऐसे व्यक्ति भी थे जो अल्लाह और 'रसूल' पर सच्चे दिल से 'ईमान' रखते थे, परन्तु अपनी ग़फ़लत और सुस्ती के कारण मुहिम पर नहीं जा सके थे। इन तीनों व्यक्तियों के नाम हैं : कअ्ब-बिन-मालिक, हिलाल-बिन-उमय्या और मुरारा बिन रुबैअ। मुनाफ़िक़ों ने झूठे उज़्र पेश किये जिसे नबी सल्ल० ने क़बूल कर लिया। परन्तु जब इन तीनों आदमियों की बारी आई तो इन लोगों ने अपनी ग़लती मान ली। नबी सल्ल० ने इन तीनों आदमियों के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया। और मुसलमानों को हुक्म दे दिया कि जब तक अल्लाह का कोई आदेश न आये इन से किसी प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध न रक्खा जाये। कोई इन से सलाम-कलाम न करे। ४० दिन बीतने के बाद इन की पत्नियों को भी इन से अलग रहने का हुक्म दे दिया गया। नतीजा यह हुआ कि ये जीने से तंग आ गये। दुनिया में इन के लिए ख़ुशी की कोई चीज़ बाक़ी न रही। अन्त में जब ५० दिन इसी दशा में गुज़र गये तब क्षमा का यह आदेश उतरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२२. यह तो नहीं हो सकता था कि 'ईमान' वाले सब-के-सब निकल खड़े होते। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उन के हर गरोह में से, एक टोली निकलती, ताकि वे दीन (धर्म) में समझ पैदा करते, और ताकि वे लोग अपने लोगों को सचेत करते जब कि वे उन की ओर पलटते, ताकि वे (बुरे कर्मों से) बचते[४८]।

122. And the believers should not all go out to fight. Of every troop of them, a party only should go forth, that they (who are left behind) may gain sound knowledge in religion, and that they may warn their folk when they return to them so that they may beware.

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३. हे 'ईमान' लाने वालो ! उन 'काफ़िरों' से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं,[४९] और चाहिए कि वे तुम में सख़्ती पायें, और जान रक्खो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो डर रखने वाले हैं

123. O ye who believe! Fight those of the disbelievers who are near to you and let them find harshness in you, and know that Allah is with those who keep their duty (unto Him.)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

१२४. और जब कोई 'सूरा' उतरती है तो उन ('मुनाफ़िक़ों') में से कुछ लोग कहते हैं: तुम में से किस का 'ईमान' इस ('सूरा') ने बढ़ाया ? तो जो लोग 'ईमान' लाये हैं उन का 'ईमान' तो इस ने बढ़ाया है और वे ख़ुश हो रहे हैं।

124. And whenever a surah is revealed there are some of them who say: Which one of you hath thus increased in faith? As for those who believe, it hath increased them in faith and they rejoice (therefor).

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

१२५. और जिन लोगों के दिलों में रोग है, उन की नापाकी पर उस ने एक और नापाकी बढ़ा दी, और वे मरते समय तक 'काफ़िर' ही रहे।

125. But as for those in whose hearts is disease, it only addeth wickedness to their wickedness and they die while they are disbelievers.

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

१२६. क्या ये लोग देखते नहीं कि प्रत्येक वर्ष ये एक या दो बार आज़माये जाते हैं ? परन्तु फिर भी ये 'तौबा' नहीं करते, और न चेतते हैं।

126. See they not that they are tested once or twice in every year? Still they turn not in repentance neither pay they heed.

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

४८. आयत ९७ में यह बात आ चुकी है, "ये अरब बद्दू 'कुफ़्' और 'निफ़ाक़' (कपट-नीति) में बहुत ही सख़्त हैं और ये इसी बात के अधिक योग्य हैं कि उस की सीमाओं को न जान सकें जिसे अल्लाह ने अपने 'रसूल' पर उतारा है।" यहाँ कहा जा रहा है कि देहाती आबादी (ग्रामीण) को अज्ञान की दशा में न रहने देना चाहिए। बल्कि उन के अज्ञान को दूर करने और उन में इस्लामीय चेतना जागृत करने का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। इस के लिए यह उचित रहेगा कि देहात के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक बस्ती और क़बीले में से कुछ आदमी निकल कर मक्का, मदीना आदि केन्द्रीय स्थानों पर आ जायें और यहाँ 'दीन' (धर्म) में समझ (Sound knowledge) पैदा करें और फिर 'दीन' सीख कर अपनी-अपनी बस्तियों में जायें, और लोगों को उस सच्चे ज्ञान से परिचित करायें जिस के बिना मनुष्य का जीवन उच्च लक्ष्य और उच्च उद्देश्य से सर्वथा वंचित रह जाता है।

४९. यहाँ काफ़िरों से अभिप्रेत वे 'मुनाफ़िक़' लोग हैं जो मुसलमानों के साथ रहते थे। जिन का 'कुफ़्' और जिन की इस्लाम-दुश्मनी अब बिल्कुल खुल कर सामने आ गई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२७. और जब कोई 'सूरा' उतरती है, तो ये एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है ? फिर मुँह फेर कर निकल खड़े होते हैं। अल्लाह नें इन के दिलों को फेर दिया है क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।

१२८. तुम्हारे पास तुम ही में से एक 'रसूल' आया हुआ है, तुम्हारा ज़हमत में पड़ना उस के लिए असह्य है, वह तुम्हारा लालसी है,[५०] 'ईमान' वालों के लिए करुणामय और दयाशील है।

१२९. अब यदि ये लोग मुँह मोड़ लें तो कह दो : मुझे अल्लाह काफ़ी है। उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वही बड़े राज-सिंहासन का 'रब' (स्वामी) है।

127. And whenever a surah is revealed, they look one at another (as who should say): Doth anybody see you? Then they turn away. Allah turneth away their hearts because they are a folk who understand not.

128. There hath come unto you a messenger (one) of yourselves, unto whom aught that ye are overburdened is grievous, full of concern for you, for the believers full of pity, merciful.

129. Now, if they turn away (O Muhammad) say: Allah sufficeth me. There is no God save Him. In Him have I put my trust and He is Lord of the Tremendous Throne.

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَظَرَ بَعْضُهُمْ
إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ١٢٧
لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ
رَءُوفٌ رَحِيمٌ ١٢٨
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ١٢٩

---

५०. अर्थात् तुम्हारे 'ईमान' लाने का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०—यूनुस

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'यूनुस' चिह्न के रूप में 'आयत' ९८ से लिया गया है। इस सूरा में हज़रत मूसा अ० और हज़रत नूह अ० का क़िस्सा विस्तारपूर्वक बयान हुआ है, परन्तु 'सूरा' की वार्त्ताओं का विशेष सम्पर्क ईश्वर के प्रकोप की अपेक्षा उस की कृपा और दया से है, ईश-कृपा का हज़रत यूनुस अ० के वृत्तान्त से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है; इस लिए इस सूरा का नाम 'यूनुस' अत्यन्त उचित है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरा के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा 'नबी' सल्ल० के मक्की जीवन के अन्तिम समय में उतरी होगी जब कि 'इस्लाम'-विरोधियों का विरोध अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था। उन के बीच नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों का रहना उन के लिए असह्य हो गया था। अब उन से इस की आशा नहीं की जा सकती थी कि वे नबी सल्ल० की पुकार पर कान धरेंगे। अब वह समय आ गया था कि उन्हें उस परिणाम से सूचित कर दिया जाये जिस से वे दो-चार होने वाले थे। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए 'सूरा' अल-अनआम की भूमिका देखें।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

'सूरा' यूनुस से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अन-नूर पर समाप्त होता है।

सूरा यूनुस और आगे आने वाली सूरा हूद में बड़ी समानता और एकात्मता पाई जाती है। इस सूरा में 'ईमान' वालों के लिए शुभ सूचना[1] और 'काफ़िरों' के लिए डरावा[2] है। यही इस सूरा का मूल विषय भी है। सूरा का केन्द्रीय विषय क्या है इस के लिए सूरा की आयत २ पर विचार करना चाहिए।

इस सूरा में सत्य को अपनाने की प्रेरणा दी गई है; और सत्य की उपेक्षा करने के बुरे परिणामों से लोगों को डराया गया है। इस सिलसिले में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'आख़िरत' (पारलौकिक जीवन) के प्रति ऐसी तर्कसंगत वार्त्ता प्रस्तुत की गई है जिस से मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय दोनों को शान्ति मिल सकती है, साथ ही उन भ्रामक विचारों का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है जो 'तौहीद' और 'आख़िरत' को मानने में बाधक थे। इस के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' और आप के लाये हुये सन्देश से सम्बन्धित शंकाओं और आक्षेपों का उत्तर दिया गया है।

आने वाले जीवन में जो कुछ पेश आने वाला है उस से सूचित कर दिया गया ताकि लोग उस की तैयारी कर के अपने-आप को अल्लाह की यातना से बचा सकें। बताया गया कि वर्तमान जीवन केवल परीक्षा के लिए है। जिस ने इस अवसर को खो दिया वह सदा पछताता ही रहेगा। सफलता का एकमात्र साधन यह है कि इस 'नबी' और इस की लाई हुई 'किताब' के द्वारा यथार्थज्ञान प्राप्त करने का जो सुअवसर मिल रहा है उस से पूरा-पूरा लाभ उठाया जाये।

लोगों में पाई जाने वाली अज्ञानपूर्ण बातों और गुमराहियों की ओर भी संकेत किया गया। इन गुमराहियों का कारण यही था कि लोग अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग से बहुत दूर जा पड़े थे।

१. दे० आयत २, ९, २६, ६२, ६४ और ६५।
२. दे० आयत ८ और १३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत नूह अ० और हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुनाया गया ताकि 'ईमान' वालों के लिए खुशख़बरी हो। फ़िरऔन और हज़रत नूह अ० की जाति के विनाश का हाल भी सुनाया गया ताकि 'कुफ़्' करने वालों के लिए डरावा हो। हज़रत मूसा अ० और नूह अ० के क़िस्सों में इस बात की ओर भी संकेत है कि 'काफ़िरों' को 'ईमान' वालों की वर्तमान अवस्था को देख कर धोखा न खाना चाहिए; जिस तरह हज़रत मूसा अ० और नूह अ० के साथ उन का अल्लाह था, उसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप के अनुयायियों के साथ भी अल्लाह की शक्ति है; 'ईमान' वालों की यह दयनीय दशा सदा नहीं रहेगी। यह मुहलत जो 'काफ़िरों' को प्राप्त है इस में यदि वे सँभल न सके तो उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई न होगा। उस समय यदि वे 'तौबा' भी करेंगे तो उस से उन्हें कुछ भी लाभ न होगा जिस प्रकार कि फिरऔन को ऐसी 'तौबा' से कोई लाभ नहीं पहुँच सका। फिर इस में 'ईमान' वालों के लिए भी बड़ी शिक्षा है कि उन्हें भी हज़रत नूह अ० और हज़रत मूसा अ० की तरह धैर्य्य और साहस से काम लेना चाहिए; शत्रुओं के मुक़ाबले में अपनी विवशता देख कर उन्हें क़दापि हताश नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने कर्त्तव्यों का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए। और जब अल्लाह की कृपा से उन के दिन फिरें तो वे वह नीति न अपनायें जो 'बनी इसराईल' ने मिस्र से निकलने के बाद अपनाई थी।

अन्त में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को आमन्त्रित किया गया है; और स्पष्ट रूप से यह बात बता दी गई है कि इस 'दीन' (धर्म) में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता; जो इसे ग्रहण करेगा वह अपना ही भला करेगा और जो कोई दूसरी नीति अपनायेगा वह दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ेगा अपना ही बुरा करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' यूनुस

(मक्का में उतरी --- 'आयतें' १०९)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. अलिफ़० लाम० रा०[1] — ये 'हिकमत' वाली 'किताब' की आयतें हैं।

२. क्या लोगों के लिए यह एक अचम्भे की बात हो गई कि हम ने उन्हीं में से एक आदमी पर 'वह्य' की, कि लोगों को सचेत कर दे और जो लोग 'ईमान' ले आयें उन्हें शुभ-सूचना दे दे कि उन के लिए उन के 'रब' के पास ऊँचा दर्जा है? 'काफ़िर' कहने लगे: निस्सन्देह यह व्यक्ति तो खुला जादूगर है।

३. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' वही अल्लाह है जिस ने आकाशों और धरती को छ: दिनों में पैदा किया,[3] फिर राज-सिंहासन[2] पर विराजमान हो कर इन्तज़ाम चला रहा है।[4] बिना उस की अनुज्ञा के कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। यह अल्लाह, तुम्हारा 'रब' है, अत: तुम उसी की 'इबादत' करो। क्या तुम चेतते नहीं?

४. उसी की ओर तुम सब को लौटना है, अल्लाह का वादा सच्चा है। निस्सन्देह वह पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन्हें न्यायपूर्वक बदला दे; और, जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, उन के लिए पीने को खौलता हुआ पानी मिलेगा और दु:ख देने वाली यातना होगी उस 'कुफ़्र' के बदले में जो वे करते थे।

JONAH
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Alif Lam. Ra.
These are verses of the wise Scripture.

2. Is it a wonder for mankind that We have inspired a man among them saying: Warn mankind and bring unto who believe the good tidings, that they have a sure footing with their Lord? The disbelievers say: Lo! this is a mere wizard.

3. Lo! your Lord is Allah Who created the heavens and the earth in six Days,* then He established Himself upon the Throne, directing all things. There is no intercessor (with Him) save after His permission. That is Allah, your Lord, so worship Him. Oh, will ye not remind?

4. Unto Him is the return of all of you; it is a promise of Allah in truth. Lo! He produceth creation, then reproduceth it, that He may reward those who believe and do good works with equity; while as for those who disbelieve, theirs will be a boiling drink and painful doom because they disbelieved.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الۤرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ①

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى
رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ②

اِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ
شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللهُ
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ③

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللهِ حَقًّا ؕ
اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ
وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ④

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १७।
३. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १८
४. दे० ज़बूर (Ps.) ६:४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. वही है जिस ने सूर्य को प्रकाशमान् किया और चन्द्रमा को उजियाला बनाया, और चन्द्रमा (के घटने-बढ़ने) की मंज़िलें ठहराईं, ताकि तुम वर्षों की गिनती, और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह ने ये सब कुछ हक़ (उद्देश्य) के साथ ही पैदा किया है। वह अपनी 'आयतें' खोल-खोल कर बयान करता है उन लोगों के लिए जो जानने वाले हैं।

5. He it is Who appointed the sun a splendour and the moon a light, and measured for her stages, that ye might know the number of the years and the reckoning. Allah created not (all) that save in truth. He detaileth the revelations for people who have knowledge.

هو الذي جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل لتعلموا عدد السنين والحساب ما خلق الله ذلك الا بالحق يفصل الايت لقوم يعلمون ⑤

६. निश्चय ही रात और दिन के उलट-फेर में और हर उस चीज़ में जो अल्लाह ने आकाशों और धरती में पैदा की है, डरने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

6. Lo! in the difference of day and night and all that Allah hath created in the heavens and the earth are portents, verily, for folk who ward off (evil).

ان في اختلاف اليل والنهار وما خلق الله في السموت والارض لايت لقوم يتقون ⑥

७. जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते और वे दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये हैं और उसी से उन्हें सन्तोष हो गया है, और जो लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं,

7. Lo! those who expect not the meeting with Us but desire the life of the world and feel secure therein, and those who are neglectful of Our revelations,

ان الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحيوة الدنيا واطمانوا بها والذين هم عن ايتنا غفلون ⑦

८. ये वे लोग हैं जिन का ठिकाना आग ('जहन्नम') है, उस के बदले में जो वे कमाते रहे।

8. Their home will be the Fire because of what they used to earn.

اولئك ماوىهم النار بما كانوا يكسبون ⑧

९. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन का 'रब' उन्हें उन के 'ईमान' के कारण मार्ग दिखा देगा। उन के नीचे नेमत भरी 'जन्नतों' में[५] नहरें बह रही होंगी।

9. Lo! those who believe and do good works, their Lord guideth them by their faith. Rivers will flow beneath them in the Gardens of Delight,

ان الذين امنوا وعملوا الصلحت يهديهم ربهم بايمانهم تجري من تحتهم الانهر في جنت النعيم ⑨

१०. वहाँ उन की पुकार यह होगी : महिमा हो तेरी ! हे हमारे अल्लाह ! और वहाँ उन का अभिवादन 'सलाम' होगा। और उन की अन्तिम पुकार होगी : प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो संसार का 'रब' है।

10. Their prayer therein will be: Glory be to Thee, O Allah! and their greeting therein will be: Peace. And the conclusion of their prayer will be; Praise be to Allah, Lord of the Worlds!

دعوىهم فيها سبحنك اللهم وتحيتهم فيها سلم واخر دعوىهم ان الحمد لله رب العلمين ⑩ ع

११. और यदि अल्लाह लोगों के साथ बुरा मामला करने में जल्दी करता जिस तरह वे (उस बुराई की) जल्दी मचाते हैं (वे उस की ऐसी जल्दी मचाते हैं) जैसे भलाई की जल्दी मचाते हों, तो उन की मुहलत कभी समाप्त कर दी गई होती। हम तो उन लोगों को जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते उन की सरकशी में बहकने के लिए छोड़ देते हैं।

11. If Allah were to hasten on for men the ill (that they have earned) as they would hasten on the good, their respite would already have expired. But We suffer those who look not for the meeting with Us to wander blindly on in their contumacy.

ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضي اليهم اجلهم فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم يعمهون ⑪

५. अर्थात् रमणीय और आनन्ददायक बाग़ों में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो लेटे, या बैठे या खड़े (हर हाल में), हमें पुकारता है, परन्तु जब हम उस की आपत्ति उस से दूर कर देते हैं तो इस तरह चल देता है मानो कभी अपने ऊपर आपत्ति आने पर उस ने हमें पुकारा ही नहीं था। इसी प्रकार मर्यादाहीन लोगों के लिए उन के करतूत शोभायमान बना दिये गये हैं।

12. And if misfortune touch a man he crieth unto Us (while reclining) on his side or sitting or standing, but when We have relieved him of the misfortune he goeth his way as though he had not tried unto Us because of a misfortune that afflicted him. Thus is, what they do, made (seeming) fair unto the prodigal.

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾

१३. और तुम से पहले कितनी ही जातियों को हम नें विनष्ट कर दिया जब उन्हों ने ज़ुल्म किया; और उन के 'रसूल' उन के पास खुली-खुली निशानियाँ ले कर आये परन्तु वे ऐसे न थे कि 'ईमान' लाते। इसी तरह हम अपराधी लोगों को बदला दिया करते हैं।

13. We destroyed the generations before you when they did wrong; and their messengers (from Allah) came unto them with clear proofs (of His Sovereignty) but they would not believe. Thus do We reward the guilty folk.

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾

१४. अब उन के बाद हम नें तुम्हें धरती में उन की जगह दी है, ताकि देखें तुम कैसे कर्म करते हो।

14. Then We appointed you viceroys in the earth after them, that We might see how ye behave.

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

१५. और जब उन के सामने हमारी खुली हुई 'आयतें' पढ़ी जाती हैं, तो वे लोग जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते कहते हैं: इस के सिवा कोई और 'क़ुरआन' लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। कह दो: मुझ से यह नहीं हो सकता कि अपनी ओर से इस में कोई परिवर्तन करूँ। मैं तो बस उस का पालन करता हूँ जो मेरी ओर 'वह्य' की जाती है। यदि मैं अपने 'रब' का हुक्म न मानूँ तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का डर है।

15. And when Our clear revelations are recited unto them they who look not for the meeting with Us say: Bring a Lecture* other than this or change it. Say (O Muhammad): It is not for me to change it of my own accord. I only follow that which is inspired in me. Lo! if disobey my Lord I fear the retribution of an awful Day.

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۗ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

१६. कह दो: यदि अल्लाह चाहता (कि तुम्हें 'किताब' का ज्ञान न हो) तो मैं यह पढ़ कर तुम्हें सुनाता ही नहीं और न तुम्हें इस की ख़बर ही देता। आख़िर इस से पहले मैं तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ (और इस तरह का कोई कलाम नहीं प्रस्तुत किया)। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

16. Say: If Allah had so willed I should not have recited it to you nor would He have made it known to you. I dwelt among you a whole lifetime before it (came to me). Have ye then no sense?

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस की 'आयतों' को झुठलाये। निश्चय ही अपराधी लोग सफल नहीं हो सकते।

17. Who doeth greater wrong than he who inventeth a lie concerning Allah and denieth His revelation? Lo! the guilty never are successful.

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾

१८. और ये लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो न इन्हें हानि पहुँचा सकती हैं और न कुछ फ़ायदा ही पहुँचा सकती हैं, और कहते हैं : ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं। कह दो : क्या तुम अल्लाह को उस बात की ख़बर दे रहे हो जिसे न वह आकाशों में जानता है और न धरती में[६]। महिमावान् है वह और उच्च है उस 'शिर्क' से जो ये लोग कर रहे हैं !

18. They worship besides Allah that which neither hurteth them nor profiteth them and they say: These are our intercessors with Allah. Say: Would ye inform Allah of (something) that He knoweth not in the heavens or in the earth? Praised be He and high exalted above all that ye associate (with Him)!

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

१९. और सब मनुष्य एक ही गरोह हैं; फिर उन्हों ने विभेद किया; और यदि तेरे 'रब' की ओर से एक बात पहले से न निश्चय पा गई होती तो जिस चीज़ में वे विभेद कर रहे हैं उस का उन के बीच फ़ैसला कर दिया जाता[७]।

19. Mankind were but one community; then they differed; and had it not been for a word that had already gone forth from thy Lord it had been judged between them in respect of that wherein they differ.

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

२०. और वे लोग कहते हैं : क्यों न इस पर इस के 'रब' की ओर से कोई निशानी उतारी गई ! तो कह दो : परोक्ष का स्वामी तो अल्लाह ही है। अच्छा प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।

20. And they will say: If only a portent were sent down upon him from his Lord! Then say (O Muhammad)! The Unseen belongeth to Allah So wait! Lo! I am waiting with you.

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

२१. और जब (ऐसा होता है कि) हम लोगों को उन के संकट में पड़ने के पश्चात् दयालुता का रसास्वादन कराते हैं, तो वे हमारी 'आयतों' के बारे में चालें चलने लगते हैं। कहो : अल्लाह चाल में ज़्यादा तेज़ है। जो मक्कारियाँ तुम कर रहे हो हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') उन को लिखते जा रहे हैं।

21. And when We cause mankind to taste of mercy after some adversity which had afflicted them, behold! they have some plot against Our revelations. Say: Allah is more swift in plotting. Lo! Our messengers write down that which ye plot.

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

६. अर्थात् न वह आकाश में मौजूद है न धरती में कहीं पाई जाती है।

७. अर्थात् यदि अल्लाह पहले से ही यह निश्चय न कर चुका होता कि दुनिया में सत्य (Reality) को लोगों की अनुभव-शक्ति से छिपा कर उन की बुद्धि, विवेक और अन्तरात्मा की परीक्षा ली जायेगी; और जो लोग इस परीक्षा में असफल हो कर ग़लत दिशाओं में जाना चाहेंगे उन्हें ग़लत दिशाओं में जाने दिया जायेगा—तो आज ही लोगों के बीच उन के मतभेदों का निर्णय कर दिया जाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. वही है जो तुम्हें, भूमि और समुद्र में चलाता है यहाँ तक कि जब तुम नौका में होते हो और वे (नौकायें) लोगों को ले कर अनुकूल वायु के द्वारा चलती हैं और लोग उन से प्रसन्न होते हैं, अचानक उन पर प्रचण्ड वायु का झोंका आता है और हर ओर से लहरें उन पर चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि अब हम घिर गये; उस समय वे अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, 'दीन' को उसी के लिए खालिस कर के कि यदि तू ने इस से हमें बचा लिया, तो हम अवश्य कृतज्ञता दिखलायेंगे।

22. He it is Who maketh you to go on the land and the sea till, when ye are in the ships and they sail with them with a fair breeze and they are glad therein, a storm-wind reacheth them and the wave cometh unto them from every side and they deem that they are overwhelmed therein; (then) they cry unto Allah making their faith pure for Him only: If Thou deliver us from this we truly will be of the thankful.

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ
إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ
طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ
وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

२३. फिर जब उन्हें बचा लेते हैं, तो वे हक़ से हट कर धरती में सरकशी करने लग जाते हैं। हे लोगो ! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रही है। सांसारिक जीवन का सुख है (भोगं लो); फिर हमारी ओर तुम्हें लौट कर आना है उस समय हम तुम्हें बता देंगे जो कुछ तुम करते रहे हो।

23. Yet when He hath delivered them, behold! they rebel in the earth wrongfully. O mankind! your rebellion is only against yourselves. (Ye have) enjoyment of the life of the world; then unto Us is your return and We shall proclaim unto you what ye used to do.

فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ
عَلَىٰ أَنفُسِكُم مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ
إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

२४. सांसारिक जीवन की मिसाल तो ऐसी है जैसे हम ने आकाश से पानी बरसाया, तो धरती की वनस्पति जिसे मनुष्य और चौपाये सब खाते हैं, खूब घनी उगी यहाँ तक कि जब धरती ने अपना श्रृंगार कर लिया और सँवर गई, और उस के मालिक समझने लगे कि हमें उस पर पूरा अधिकार प्राप्त है कि अचानक रात में या दिन में हमारा आदेश आ पहुँचा और हम ने उसे कटी हुई खेती की तरह कर दिया मानो कल वहाँ आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करते हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।

24. The similitude of the life of the world is only as water which We send down from the sky, then the earth's growth of that which men and cattle eat migleth with it till, when the earth hath taken on her ornaments and is embellished, and her people deem that they are masters of her, Our commandment cometh by night or by day and We make it as reaped corns as if it had not flourished yesterday. Thus do We expound the revelations for people who reflect.

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ
إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا
أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا
حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

२५. और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है,[८] और जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है।

25. And Allah summoneth to the abode of peace, and leadeth whom He will to a straight path.

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي
مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾

८. अर्थात् 'जन्नत' की ओर बुलाता है जहाँ हर तरह की सलामती है; जहाँ न किसी को कोई कष्ट पहुँचेगा; और न किसी पर कोई आपत्ति आ सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और इस के सिवा और भी। और उन के चेहरों पर न तो कालिख छायेगी और न रुसवाई ऐसे ही लोग 'जन्नत' वाले हैं; जहाँ वे सदैव रहेंगे।

26. For those who do good is the best (reward) and more (thereto). Neither dust nor ignominy cometh near their faces. Such are rightful owners of the Garden; they will abide therein.

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا
يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾

२७. और वे लोग जिन्हों ने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला भी वैसा ही होगा; रुसवाई उन पर छाई होगी—कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा—उन के चेहरों पर मानो अँधेरी रात का कोई टुकड़ा उढ़ा दिया गया है। यही लोग हैं जो आग ('जहन्नम' में जाने) वाले हैं, जहाँ वे सदा रहेंगे।

27. And those who earn ill deeds, (for them) requital of each ill deed by the like thereof: and ignomity overtaketh them—They have no protector from Allah—as if their faces had been covered with a cloack of darkest night. Such are rightful owners of the Fire; they will abide therein.

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ
بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ
اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ
قِطَعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾

२८. और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर उन सब लोगों से जिन्हों ने 'शिर्क' किया है कहेंगे : अपनी जगह ठहरो, तुम भी और तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीक भी ! फिर हम उन के बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उन के ठहराये हुए शरीक कहेंगे : तुम हमारी 'इबादत' नहीं करते थे।

28. On the day when We gather them all together, then We say unto those who ascribed partners (unto Us): Stand back, ye and your (pretended) partners (of Allah)! And We separate them, the one from the other, and their (pretended) partners say: It was not us ye worshipped.

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ
أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ
وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

२९. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है कि हमें तो तुम्हारी 'इबादत' की खबर ही न थी।

29. Allah sufficeth as a witness between us and you, that we were unaware of your worship.

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا
عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿٢٩﴾

३०. वहाँ हर व्यक्ति अपने अगले किये हुए कर्मों को स्वयं जाँच-परख लेगा, और सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर फेरे जायेंगे और जो कुछ झूठ वे गढ़ा करते थे सब उन से जाता रहेगा।

30. There doth every soul experience that which it did aforetime and they are returned unto Allah, their rightful Lord, and that which they used to invent hath failed them.

هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ ۚ وَ
رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾ ع

३१. कहो : तुम्हें कौन आकाशों और धरती में रोज़ी देता है, या कान और आँखों पर किस का अधिकार है; कौन है जो बेजान में से जानदार को निकालता है और जानदार में से बेजान को निकालता है; कौन है जो यह सारा इन्तज़ाम चला रहा है ? वे बोल उठेंगे : अल्लाह। कहो : फिर तुम क्यों नहीं डर रखते ?

31. Say (unto them, O Muhammad): Who provideth for you from the sky and the earth, or Who owneth hearing and sight; and who bringeth forth the living from the dead and bringeth forth the dead from the living; and Who directeth the course? They will say: Allah. Then say: Will ye not then keep your duty (unto Him)?

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ
فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. यही अल्लाह, तो तुम्हारा वास्तविक 'रब' है। फिर हक़ के बाद गुमराही के सिवा और क्या रह गया ? फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

32. Such, then, is Allah, your rightful Lord. After the Truth what is there saving error? How then are ye turned away!

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ٣٢

३३. इसी तरह अवज्ञाकारियों पर तुम्हारे 'रब' की बात साबित हो कर रही कि वे 'ईमान' लाने के नहीं हैं।

33. Thus is the Word of thy Lord justified concerning those who do wrong: that they believe not.

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ٣٣

३४. कहो : क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर उसे दोबारा भी पैदा करे ? कहो : अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस की पुनरावृत्ति करेगा[९] फिर तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो !

34. Say: Is there of your partners (whom ye ascribe unto Allah) one that produceth Creation and then reproduceth it? Say: Allah produceth Creation, then reproduceth it. How, then, are ye misled!

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ٣٤

३५. कहो : क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई है जो 'हक़' का मार्ग दिखा सकता हो ? कहो : अल्लाह ही हक़ का मार्ग दिखाता है। फिर जो हक़ का मार्ग दिखाता हो वह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उस का अनुसरण किया जाये, या वह जो स्वयं ही मार्ग न पाये जब तक कि उसे मार्ग न दिखाया जाये। तो तुम्हें क्या हो गया है ? तुम कैसे फ़ैसले करते हो ?

35. Say: Is there of your partners (whom ye ascribe unto Allah) one that leadeth to the Truth? Say: Allah leadeth to the Truth. Is He Who leadeth to the Truth more deserving that He should be followed, or he who findeth not the way unless he (himself) be guided? What aileth ye? How judge ye?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ٣٥

३६. और उन में से अधिकतर लोग तो बस अटकल पर चलते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि अटकल हक़ (की आवश्यकता की पूर्ति) में कुछ काम नहीं आती। जो कुछ ये कर रहे हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

36. Most of them follow naught but conjecture. Assuredly conjecture can by no means take the place of truth. Lo! Allah is Aware of what they do.

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ٣٦

३७. और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई अपनी ओर से गढ़ लाये; बल्कि यह तो जो कुछ इस से पहले (आ चुका) है उस की तसदीक़ और (अल्लाह की) 'किताब' का विस्तार है[१०]—इस में कोई सन्देह नहीं—सारे संसार के 'रब' की ओर से है।

37. And this Qur'an is not such as could ever be invented in despite of Allah; but it is a confirmation of that which was before it and an exposition of that which is decreed for mankind—Therein is no doubt—from the Lord of the Worlds.

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٣٧

९. अर्थात् दोबारा पैदा करेगा।

१०. अर्थात् क़ुरआन किसी नवीन धर्म की ओर नहीं बुलाता। वह तो उन्हीं मौलिक शिक्षाओं की पुष्टि करता है जो शिक्षायें मानव-कल्याण के लिए सदैव से अल्लाह के 'नबी' देते आये हैं। और यह क़ुरआन तो समस्त आसमानी किताबों (Heavenly Books) की मौलिक शिक्षाओं को विस्तारपूर्वक बयान करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. क्या ये लोग कहते हैं कि इस ने उसे स्वयं गढ़ लिया है ? कहो : यदि तुम सच्चे हो तो एक ही 'सूरा' उस की तरह बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जिस को बुला सको बुला लो।

38. Or say they: He hath invented it! Say: Then bring a surah like unto it, and call (for help) on all ye can besides Allah if ye are truthful.

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ
مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٣٨

३९. बात यह है कि जिस चीज़ के ज्ञान पर वे हावी न हो सके, और जिस की वास्तविकता अभी उन के सामने नहीं आ सकी है उसे इन्हों ने झुठला दिया। इसी तरह वे लोग भी झुठला चुके हैं जो इन से पहले गुज़रे हैं। तो देख लो उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ !

39. Nay, but they denied that, the knowledge whereof they could not compass, and whereof the interpretation (in events) hath not yet come unto them. Even so did those before them deny. Then see what was the consequence for the wrong-doers!

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا
يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ٣٩

४०. और इन में से कुछ तो इस पर 'ईमान' लायेंगे, और कुछ इन में से 'ईमान' नहीं लायेंगे, और तेरा 'रब' बिगाड़ पैदा करने वालों को भली-भाँति जानता है।

40. And of them is he who believeth therein, and of them is he who believeth not therein, and thy Lord is best aware of the corrupters.

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا
يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ
ع بِالْمُفْسِدِينَ ٤٠

४१. और यदि ये तुझे झुठलाते हैं, तो कह दे : मेरा काम मेरे लिए है, और तुम्हारा काम तुम्हारे लिए है। मैं जो कुछ करता हूँ उस से तुम्हारा कोई सम्पर्क नहीं,[११] और न उस से मेरा कोई सम्पर्क है जो कुछ तुम कर रहे हो।

41. And if they deny thee, say: Unto me my work, and unto you your work. Ye are innocent of what I do, and I am innocent of what ye do.

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ
عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ
وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ٤١

४२. और उन में बहुतेरे ऐसे हैं जो तेरी ओर कान लगाते हैं। परन्तु क्या तू सुनायेगा बहरों को चाहे वे कुछ भी न समझ सकते हों ?

42. And of them are some who listen unto thee. But canst thou make the deaf to hear even though they apprehend not?

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ٤٢

४३. और उन में से बहुतेरे ऐसे हैं जो तेरी ओर देखते हैं। परन्तु क्या तू मार्ग दिखायेगा अन्धों को चाहे उन्हें कुछ भी सुझाई न देता हो ?

43. And of them is he who looketh toward thee. But canst thou guide the blind even though they see not?

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي
الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ٤٣

४४. बात यह है कि अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता; परन्तु लोग स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करते हैं।

44. Lo! Allah wrongeth not mankind in aught; but mankind wrong themselves.

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ
النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ٤٤

११. अर्थात् उस की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. और जिस दिन अल्लाह उन्हें इकट्ठा करेगा, तो ऐसा जान पड़ेगा मानो (दुनिया में) ये केवल दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे, वे आपस में (एक-दूसरे को) पहचान रहे होंगे, निश्चय ही वे लोग घाटे में रहे जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे मार्ग पाने वाले न थे।

45. And on the day when He shall gather them together (when it will seem) as though they had tarried but an hour of the day, recognising one another, those will verily have perished who denied the meeting with Allah and were not guided.

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوٓا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَآءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

४६. जिस की हम इन्हें धमकी दे रहे हैं उस में से कुछ हम तुझे दिखा दें या (इस से पहले) हम तुझे उठा लें, इन्हें तो हमारी ओर लौट कर आना है,[12] फिर जो कुछ ये कर रहे हैं, उस पर अल्लाह गवाह है।

46. Whether We let thee (O Muhammad) behold something of that which We promise them or (whether We) cause thee to die still unto Us is their return, and Allah, moreover, is Witness over what they do.

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِى نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

४७. और हर समुदाय के लिए एक 'रसूल' है। तो जब उन के पास उन का 'रसूल' आ जाता है, तो उन का फ़ैसला न्यायपूर्वक कर दिया जाता है, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता।

47. And for every nation there is a messenger. And when their messenger cometh (on the Day of Judgement) it will be judged between them fairly, and they will not be wronged.

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَآءَ رَسُولُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और कहते हैं : यदि तुम सच्चे हो, तो यह धमकी कब पूरी होगी?

48. And they say: When will this promise be fulfilled, if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٨﴾

४९. कह दो : मुझे न तो अपने बुरे का अधिकार है और न भले का, बस जो अल्लाह चाहे वही होता है। हर जाति के लिए एक नियत समय है। जब उन का नियत समय आ गया, तो उस से न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं[13]।

49. Say: I have no power to hurt or benefit myself, save that which Allah willeth. For every nation there is an appointed time. When their time cometh, then they cannot put it off an hour, nor hasten (it).

قُل لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِى ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَـْٔخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

५०. कहो : सोचो तो सही, यदि तुम पर अल्लाह की यातना रात को, या दिन को आ जाये; तो उस में कौन चीज़ ऐसी है जिस के लिए अपराधी लोग जल्दी मचा रहे हैं?

50. Say: Have ye thought: When His doom cometh unto you as a raid by night, or in the (busy) day; what is there of it that the guilty ones desire to hasten?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُهُ بَيَٰتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

५१. क्या जब वह आ जायेगी, तब तुम उसे मानोगे?—क्या अब! तुम तो इस के लिए जल्दी मचा रहे थे?

51. Is it (only) then, when it hath befallen you, that ye will believe? What! (Believe) now, when (until now) ye have been hastening it on (through disbelief)?

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ ءَامَنتُم بِهِۦٓ ءَآلْـَٔـٰنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِۦ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

५२. फिर उन लोगों से जिन्हों ने ज़ुल्म किया होगा कहा जायेगा : सदा रहने वाली यातना का मज़ा चखो। तुम्हें बदला उसी का तो मिलेगा जो कुछ तुम कमाते रहे हो।

52. Then will it be said unto those who dealt unjustly: Taste the torment of eternity. Are ye requited aught save what ye used to earn?

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

१२. दे० सूरा अल-मोमिन आयत ७७, अर-रअद आयत ४०।

१३. लोगों तक जब अल्लाह का सन्देश पहुँच जाता है तो अल्लाह हर व्यक्ति को उस की व्यक्तिगत हैसियत से और हर गरोह को समुदायगत हैसियत से सोचने-समझने और सँभलने के लिए काफ़ी मुहलत देता है। जातियों और समुदायों के लिए तो यह मुहलत की अवधि शताब्दियों तक चली जाती है। परन्तु जब फ़ैसले का समय आ जाता है तो फिर उसे कोई टाल नहीं सकता; और न यही सम्भव है कि निश्चित अवधि से पहले किसी का फ़ैसला कर दिया जाये। दे० सूरा अल-आराफ़ फुटनोट ९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. तुझ से पूछते हैं : क्या यह सच है ? कह दो : हाँ, मेरे 'रब' की क़सम, यह बिल्कुल सच है, और तुम बच निकलने वाले नहीं हो ।

53. And they ask thee to inform them (saying): Is it true? Say: Yea, by my Lord, verily it is true, and ye cannot escape.

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي
إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

५४. यदि हर जीव के पास जिस ने ज़ुल्म किया है वह सब कुछ हो जो धरती में है तो अपनी जान बचाने के लिए वह उसे दे डालेगा; जब वे यातना को देखेंगे, तो मन-ही-मन में पछतायेंगे । और उन के बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला किया जायेगा और उन के साथ कुछ भी अन्याय नहीं किया जायेगा ।

54. And if each soul that doeth wrong had all that is in the earth it would seek to ransom itself therewith; and they will feel remorse within them, when they see the doom But it hath been judged between them fairly and they are not wronged

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ
لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

५५. जान लो ! आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है । सुन रक्खो ! अल्लाह का वादा सच्चा है । परन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते ।

55. Lo! verily all that is in the heavens and the earth is Allah's. Lo! Verily Allah's promise is true. But most of them know not.

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

५६. वही जिलाता है और मारता है, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे ।

56. He quickeneth and giveth death and unto Him ye will be returned.

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

५७. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से उपदेश आ गया है; सीनों में जो कुछ (बीमारी) है उस के लिए शिफ़ा और 'ईमान' वालों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता ।

57. O mankind! There hath come unto you an exhortation from your Lord, a balm for that which is in the breasts, a guidance and a mercy for believers.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ
وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

५८. कह दो : यह अल्लाह के अनुग्रह और उस की दया से है तो इस पर प्रसन्न होना चाहिए । यह उन सब चीज़ों से उत्तम है जिसे लोग समेटने में लगे हुए हैं ।

58. Say: In the bounty of Allah and in His mercy: therein let them rejoice. It is better than what they hoard.

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

५९. कह दो : तुम लोगों ने कभी इस पर भी विचार किया कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी, उस में तुम ने स्वयं 'हराम' और 'हलाल' ठहरा लिया । कहो : क्या अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है, या अल्लाह पर झूठ-मूठ दोष लगा रहे हो ?

59. Say: Have ye considered what provision Allah hath sent down for you, how ye have made of it lawful and unlawful? Say: Hath Allah permitted you, or do ye invent a lie concerning Allah?

قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن
رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ
آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾

६०. और जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं 'क़ियामत' के दिन को वे क्या समझते हैं ? अल्लाह तो लोगों के लिए अनुग्रह वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते ।

60. And what think those who invent a lie concerning Allah (will be their plight) upon the Day of Resurrection? Lo! Allah truly is Bountiful toward mankind, but most of them give not thanks.

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. और तुम जिस अवस्था में भी होते हो और 'क़ुरआन' से जो कुछ भी पढ़ कर सुनाते हो, और (हे लोगो !) तुम कोई सा काम भी करते हो, हम तुम्हें देख रहे होते हैं जब तुम उस में लगे होते हो। और कण भर भी कोई चीज़, या उस से भी छोटी या बड़ी धरती और आकाशों में ऐसी नहीं है जो तेरे 'रब' से छिपी हुई हो, सब कुछ एक स्पष्ट 'किताब' में है।

61. And thou (Muhammad) are not occupied with any business and thou recitest not a lecture from this (Scripture) and ye (mankind) perform no act, bet We are witness of you when ye are engaged therein. And not an atom's weight in the earth or in the sky escapeth your Lord, nor what is less than that or greater than that, but it is (written) in a clear Book.

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ
مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ
إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ
وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ
ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا
أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾

६२. सुनो ! अल्लाह के मित्रों को न तो कोई भय होगा, और न वे दुःखी होंगे।

62. Lo! verily the friends of Allah are (those on whom fear (cometh) not, nor do they grieve.

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

६३. ये वे लोग हैं जो 'ईमान' लाये और डरते रहे,

63. Those who believe and keep their duty (to Allah),

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

६४. उन के लिए सांसारिक जीवन में शुभ-सूचना है और 'आखिरत' में भी—अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं—यही बड़ी सफलता है।

64. Theirs are good tindings in the life of the world and in the Hereafter—There is no changing the Words of Allah —that is the Supreme Triumph.

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾

६५. और इन की बात तुझे ग़म में न डाल दे। प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है। वह सुनने वाला और जानने वाला है।

65. And let not their speech grieve thee (O Muhammad). Lo! power belongeth wholly to Allah. He is the Hearer, the Knower.

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

६६. जान रखो ! आकाशों के रहने वाले हों या धरती के रहने वाले हों सब अल्लाह के हैं। जो लोग अल्लाह के सिवा (अपने ठहराये हुए) शरीकों को पुकारते हैं, वे किस चीज़ के पीछे चल रहे हैं ? वे केवल गुमान के पीछे चलते हैं, और केवल अटकल से काम लेते हैं।

66. Lo! is it not unto Allah that belongeth whosoever is in the heavens and whosoever is in the earth? Those who follow aught instead of Allah follow not (His) partners. They follow only a conjecture, and they do but guess.

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

६७. वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उस में चैन पाओ और दिन को प्रकाशमान् किया। निस्सन्देह इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं।

67. He it is Who hath appointed for you the night that ye should rest therein and the day giving sight. Lo! herein verily are portents for a folk that heed.

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

६८. लोगों का कहना है : 'अल्लाह ने अपना एक बेटा बनाया है—महिमावान् है वह ! वह अपेक्षारहित है ! आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते ?

68. They say: Allah hath taken (unto Him) a son—Glorified be He! He hath no needs! His is all that is in the heavens and all that is in the earth. Ye have no warrant for this. Tell ye concerning Allah that which ye know not?

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ
لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ
عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ
عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. कह दो : जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगाते हैं वे सफल नहीं होते।

69. Say: Verily those who invent a lie concerning Allah will not succed.

قل إن الذين يفترون على الله الكذب
لا يفلحون ٦٩

७०. दुनिया का सुख है (भोग लें) फिर हमारी ओर उन्हें पलट कर आना है। फिर जो 'कुफ़' वे करते हैं उस के बदले में हम उन्हें यातना का मज़ा चखायेंगे।

70. This world's portion (will be theirs), then unto Us is their return. Then We make taste a dreadful doom because they used to disbelieve.

متاع في الدنيا ثم إلينا مرجعهم ثم
نذيقهم العذاب الشديد بما كانوا
يكفرون ٧٠

७१. उन्हें नूह (पैग़म्बर) का हाल पढ़ कर सुनाओ, जब उस ने अपनी जाति वालों से कहा : हे मेरी जाति के लोगो ! यदि मेरा खड़ा होना और मेरा अल्लाह की 'आयतों' के द्वारा चेताना तुम्हारे लिए भारी (असह्य) हो, तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है, तुम अपनी बात ठहरा लो, और अपने साथ अपने (ठहराये हुये) शरीकों को भी ले लो। फिर तुम्हारी बात तुम पर छिपी न रहे। फिर (तुम्हें जो कुछ करना है) मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मुहलत न दो।

71. Recite unto them the story of Noah, when he told his people: O my people! If my sojurn (here) and my reminding you by Allah's revelations are an offence unto you, in Allah have I put my trust, so decide upon your course of action, you and your partners. Let not your course of action be in doubt for you. Then have at me give me no respite.

واتل عليهم نبأ نوح إذ قال لقومه يقوم
إن كان كبر عليكم مقامي وتذكيري
بآيت الله فعلى الله توكلت فأجمعوا
أمركم وشركاءكم ثم لا يكن أمركم عليكم
غمة ثم اقضوا إلي ولا تنظرون ٧١

७२. यदि तुम ने मुँह फेर लिया तो मैं ने तुम से कुछ बदला तो माँगा नहीं था। मेरा कर्म-फल तो अल्लाह के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं 'मुस्लिमों' में शामिल रहूँ।

72. But if ye are averse, I have asked of you no wage. My wage is the concern of Allah only, and I am commanded to be of those who surrender (unto Him).

فإن توليتم فما سألتكم من أجر
إن أجري إلا على الله وأمرت أن
أكون من المسلمين ٧٢

७३. फिर उन्हों ने उसे झुठलाया, तो हम ने उसे और उन लोगों को जो उस के साथ नौका में थे बचा लिया, और उन्हीं को हम ने 'ख़लीफ़ा' बनाया, और उन सब को डुबो दिया जिन्हों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया था[१४]। तो जिन्हें चेतावनी दी जा चुकी थी उन का कैसा परिणाम हुआ।

73. But they denied him, so We saved him and those with him, in the ship, and made them viceroys (in the earth), while We drowned those who denied Our revelations. See then the nature of the consequence for those who had been warned.

فكذبوه فنجينه ومن معه في الفلك
وجعلنهم خلئف وأغرقنا الذين
كذبوا بآيتنا فانظر كيف كان عاقبة
المنذرين ٧٣

१४. हज़रत नूह अ० की जाति पर तूफ़ान अथवा जल की बाढ़ की यातना आई थी। यातना आने से पहले-पहले हज़रत नूह अ० ने अल्लाह के आदेश से एक नौका बना कर तैयार कर लिया था; यातना आ जाने पर आप अपने अनुयायियों को ले कर नाव में सवार हो गये थे। अल्लाह ने आप को और आप के साथियों को बचा लिया। और दूसरे सारे लोग जलमग्न हो कर रह गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. फिर, उस के बाद, कितने ही 'रसूल' हम नें उन की जातियों की ओर भेजे, ये उन के पास खुली-खुली निशानियाँ ले कर आये। परन्तु वे ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे उस पर 'ईमान' लाते। इसी तरह हम सीमा से आगे बढ़ जाने वालों के दिलों पर ठप्पा लगा देते हैं[१५]।

74. Then, after him. We sent messengers unto their folk, and they brought them clear proofs. But they were not ready to believe in that which they before denied. Thus print We on the hearts of the transgressors.

ثم بعثنا من بعده رسلا الى قومهم
فجاءوهم بالبينت فما كانوا ليؤمنوا
بما كذبوا به من قبل كذلك نطبع
على قلوب المعتدين ﴿٧٤﴾

७५. फिर, उन के बाद, हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर भेजा, परन्तु वे अकड़ बैठे और वे अपराधी लोग थे।

75. Then, after them, We sent Moses and Aaron unto Pharaoh and his chiefs with Our revelations, but they were arrogant and were a guilty folk.

ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون
الى فرعون وملايه بايتنا فاستكبروا
وكانوا قوما مجرمين ﴿٧٥﴾

७६. जब हमारी ओर से 'हक़' उन के सामने आया, तो कहने लगे : यह तो खुला जादू है।

76. And when the truth from Our presence came unto them, they said: This is mere magic.

فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا
ان هذا لسحر مبين ﴿٧٦﴾

७७. मूसा ने कहा : क्या तुम 'हक़' के बारे में ऐसी बात कहते हो जब कि वह तुम्हारे सामने आ गया है ? क्या यह कोई जादू है ? हालांकि जादूगर सफल नहीं होते।

77. Moses said: Speak ye (so) of the Truth when it hath come unto you? Is this magic? Now magicians thrive not.

قال موسى اتقولون للحق لما جاءكم
اسحر هذا ولا يفلح السحرون ﴿٧٧﴾

७८. उन्हों ने कहा : क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, और धरती में तुम दोनों (भाइयों) की बड़ाई हो ? हम तो तुम दोनों पर 'ईमान' लाने वाले नहीं हैं।

78. They said: Hast thou come unto us to pervert us from that (faith) in which we found our fathers, and that you two may own the place of greatness in the land? We will not believe you two.

قالوا اجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه
اباءنا وتكون لكما الكبرياء في الارض
وما نحن لكما بمؤمنين ﴿٧٨﴾

७९. और फ़िरऔन ने कहा : हर जानकार जादूगर को हमारे पास ला हाज़िर करो।

79. And Pharaoh said: Bring every cunning wizard unto me.

وقال فرعون ائتوني بكل سحر عليم ﴿٧٩﴾

८०. जब जादूगर आ गये, तो मूसा ने उन से कहा : तुम जो कुछ फेंकने वाले हो फेंको।

80. And when the wizards came, Moses said unto them: Cast your cast!

فلما جاء السحرة قال لهم موسى القوا
ما انتم ملقون ﴿٨٠﴾

८१. फिर जब उन्हों नें (अपने अनछर) फेंके, तो मूसा ने कहा : ये जो कुछ तुम बना लाये हो जादू है। अल्लाह अभी इसे मलिया-मेट किये दे रहा है। निस्सन्देह अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों का काम बनने नहीं देता।

81. And when they had cast, Moses said: That which ye have brought is magic. Lo! Allah will make it vain. Lo! Allah upholdeth not the work of mischief-makers.

فلما القوا قال موسى ما جئتم به
السحر ان الله سيبطله ان الله لا
يصلح عمل المفسدين ﴿٨١﴾

१५. अर्थात् जो लोग हठधर्मी और पक्षपात के कारण अपनी ग़लती पर अड़े रहते हैं अल्लाह भी उन्हें उन के हाल पर छोड़ देता है; यहाँ तक कि उन के हृदय कठोर हो जाते हैं और सच्ची बात से वे कुछ भी प्रभावित नहीं होते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८२. और अल्लाह अपने वचन द्वारा हक़ को हक़ कर दिखाता है, चाहे यह बात अपराधी लोगों को बुरी ही क्यों न लगे।

82. And Allah will vindicate the Truth by His words, however much the guilty be averse.

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُوْنَ ٨٢

८३. फिर मूसा पर उस की जाति की कुछ सन्तति ही 'ईमान' लाई फ़िरऔन और उन के सरदारों के इस भय के होते हुये कि कहीं वह उन्हें किसी आज़माइश में न डाल दे। और निश्चय ही फ़िरऔन धरती में बहुत सिर उठाये हुये था, और निश्चय ही वह मर्यादाहीन लोगों में से था।

83. But non truster Moses save some scions of his people (and they were) in fear of Pharaoh and their chiefs, that they would persecute them. Lo! Pharaoh was verily tyrant in the land, and lo! he verily was of the wanton.

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ
عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ
اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۗ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى
الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ٨٣

८४. और मूसा ने कहा : हे मेरी जाति के लोगो! यदि तुम अल्लाह पर 'ईमान' रखते हो तो उस पर भरोसा करो, यदि तुम 'मुस्लिम' हो!

84. And Moses said: O my people! If ye have believed in Allah then put trust in Him, if ye have indeed surrendered (unto Him)!

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ
بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ٨٤

८५. उन्हों ने कहा : हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, हे 'रब' ! हमें ज़ालिम लोगों के लिए आज़माइश का कारण न बना;[१६]

85. They said: In Allah we put trust. Our Lord! Oh, make us not a lure for the wrongdoing folk!

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ٨٥

८६. और अपनी दया से, हमें 'काफ़िर' लोगों से छुटकारा दिला।

86. And, of Thy mercy save us from the folk that disbelieve.

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ٨٦

८७. और हम ने मूसा और उस के भाई को ओर 'वह्य' की कि अपने लोगों के लिए मिस्र में कुछ मकान ठहरा लो और अपने मकानों को क़िबला (मस्जिदें) बना लो, और 'नमाज़' क़ायम करो[१७]। और 'ईमान' वालों को शुभ-सूचना दे दो।

87. And We inspired Moses and his brother (saying): Appoint houses for your people in Egypt and make your hoses oratories, and establish worship. And give good news to the believers.

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ
قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ٨٧

८८. और (आगे चल कर) मूसा ने कहा : हमारे 'रब' ! तू ने फ़िरऔन और उस के सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा (-सामग्री) और माल दिये हैं, हमारे 'रब' ! यह इस लिए है कि वे तेरे मार्ग से भटकायें ! हमारे 'रब' ! उन के मालों को नष्ट कर दे और उन के दिलों को सख़्त कर दे कि 'ईमान' न लायें[१८] यहाँ तक कि वे दुःख देने वाली यातना को देख लें।

88. And Moses said: Our Lord! Lo! Thou hast given Pharaoh and his chiefs splendour and riches in the life of the world. Our Lord! They may lead men astray from Thy way. Our Lord! Destroy their riches and harden their hearts so that they believe not till they see the painful doom.

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ
رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ
عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ٨٨

१६. अर्थात् हमें ग़लतियों और कमज़ोरियों से बचा ले। और हमें सफलता प्रदान कर। कहीं ऐसा न हो कि हमारी कोई ग़लती और कमज़ोरी या सच्चाई की राह में पेश आने वाली मुसीबत लोगों को आज़माइश में डाल दे; और उन की गुमराही और अधिक बढ़ जाये। और वे यह कहने लगें कि ये लोग सत्य पर होते तो संकट में क्यों पड़ते।

१७. अर्थात् उन मकानों को तुम्हारे बीच केन्द्र का स्थान प्राप्त हो; तुम वहाँ सामूहिक रूप से 'नमाज़' पढ़ो।

१८. अर्थात् जब उन्हें 'ईमान' से बैर है, तो तू उन्हें ऐसा ही कर दे कि उन्हें 'ईमान' लाने का श्रेय प्राप्त न हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. कहा : तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई। तो तुम जमे रहो, और उन लोगों के मार्ग पर न चलना जो जानते नहीं।

89. He said: Your prayer is heard. Do ye twain keep to the straight path, and follow not the road of those who have no knowledge.

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا
وَلَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ٨٩

९०. और हम ने 'बनी इसराईल' को समुद्र पार करा दिया, फिर फ़िरऔन और उस की सेना ने ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से उन का पीछा किया, यहाँ तक कि वह (फ़िरऔन) डूबने लगा, तो पुकार उठा : मैं 'ईमान' लाया कि उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं जिस पर 'इसराईल' की सन्तान 'ईमान' लाई है, और अब मैं 'मुस्लिमों' में से हूँ !

90. And We brought the Children of Israel across the sea, and Pharaoh with his hosts pursued them in rebellion and transgression, till, when the (fate of) drowning overtook him, he exclaimed: I believe that there is no God save Him in whom the Children of Israel believe, and I am of those who surrender (unto Him).

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا حَتَّىٰ
إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنتُ أَنَّهُ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو
إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ٩٠

९१. क्या अब ! हालाँकि इस से पहले तू ने अवज्ञा की और बिगाड़ फैलाने वालों में से था ?

91. What! Now! When hitherto thou hast rebelled and been of the wrong-doers?

آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنتَ
مِنَ الْمُفْسِدِينَ ٩١

९२. आज हम तेरे (मृत-) शरीर को बचायेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो[१९]। और निस्सन्देह अधिकतर लोग तो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।

92. But this day We save thee in thy body that thou mayest be a portent for those after thee. Lo! most of mankind are heedless of Our portents.

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ
خَلْفَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ
عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ٩٢

९३. हम ने 'इसराईल' की सन्तान को बहुत अच्छा ठिकाना दिया, और उन्हें उत्तम सामग्री दी; फिर उन्हों ने उस समय विभेद किया जब कि उन के पास ज्ञान आ चुका था[२०]। निश्चय ही तेरा 'रब' 'क़ियामत' के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद करते थे।

93. And We verily did allot unto the Children of Israel a fixed abode, and did provide them with good things; and they differed not until knowledge came unto them. Lo! thy Lord will judge between them on the Day of Resurrection concerning that wherein they used to differ.

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ
وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا
حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ٩٣

९४. यदि तुझे उस चीज़ के बारे में कोई सन्देह हो जो हम ने तुझ पर उतारी है, तो उन लोगों से पूछ ले जो तुझ से पहले से 'किताब' पढ़ रहे हैं। वास्तव में तेरे पास तेरे 'रब' की ओर से हक़ आया है। तो तू सन्देह करने वालों में न हो।

94. And if thou (Muhammad) art in doubt concerning that which We reveal unto thee, then question those who read the Scripture (that was) before thee. Verily the Truth from thy Lord hath come unto thee. So be not thou of the waverers.

فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ
فَاسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتَابَ مِن
قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ٩٤

१९. प्रायद्वीप सीना के पश्चिमी तट पर वह जगह आज भी मौजूद है जहाँ फ़िरऔन की लाश समुद्र में तैरती हुई पाई गई थी। प्राचीन मिस्री लोग अपने सम्राटों और सरदारों की लाशों को एक विशेष प्रकार का मसाला लगा कर सुरक्षित अवस्था में रख देते थे। १८वीं शताब्दी से ले कर आज तक बहुत सी लाशें मिस्र में निकल चुकी हैं। और दुनिया के लगभग सभी अजायब घरों (Museum) में दो चार लाशें रक्खी गई हैं। यदि वर्तमान समय की खोज सही है तो फ़िरऔन की लाश आज तक नष्ट नहीं हुई है बल्कि क़ाहेरा के अजायब घर में आज भी उसे देख कर हम शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

२०. अर्थात् उन्हों ने विभेद अज्ञान के कारण नहीं किया बल्कि विभेद उन्हों ने अपनी दुष्टता के कारण ज्ञान के पश्चात् किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५. और न उन लोगों में सम्मिलित हो जिन्हों ने अल्लाह् की 'आयतों' को झुठलाया, नहीं तो तू घाटा उठाने वालों में से हो जायेगा।

95. And be not thou of those who deny the revelations of Allah, for then wert thou of the lossers.

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِ
اللّٰهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٥﴾

९६. जिन लोगों पर तेरे 'रब' की बात[२१] साबित हो चुकी है वे 'ईमान' नहीं लायेंगे,

96. Lo! those for whom the word of thy Lord (concerning sinners) hath effect, will not believe.

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

९७. चाहे उन के सामने हर एक निशानी क्यों न आ जाये; जब तक कि दुःख देने वाली यातना को वे न देख लें।

97. Though every token come unto them, till they see the painful doom.

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا
الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

९८. फिर ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई कि (यातना देख कर) 'ईमान' लाई हो और उस का 'ईमान' लाना उस के लिए लाभदायक हुआ हो सिवाय यूनुस की जाति वालों के! जब वे 'ईमान' लाये तो हम ने सांसारिक जीवन में उन पर से अपमानजनक यातना टाल दी थी[२२] और हम ने उन्हें एक अवधि तक जीवन-सुख प्रदान किया।

98. If only there had been a community (of all those that were destroyed of old) that believed and profited by its belief as did the folk of Jonah When they believed We drew off from them the torment of disgrace in the life of the world and gave them comfort for a while.

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ
إِيمَانُهَآ إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّآ اٰمَنُوا
كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ﴿٩٨﴾

९९. और यदि तेरा 'रब' चाहता, तो धरती में जितने लोग हैं सब-के-सब 'ईमान' ले आते, फिर क्या तू लोगों को विवश करेगा कि वे 'ईमान' वाले हो जायें?

99. And if thy Lord willed all who are in the earth would have believed together. Wouldst thou (Muhammad) compel men until they are believers?

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ
كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۚ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ
حَتّٰى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾

१००. और कोई जीव बिना अल्लाह् के आदेश के 'ईमान' नहीं ला सकता। और वह उन लोगों पर ('कुफ़्' और 'शिर्क' की) गन्दगी डाल देता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते[२३]।

100. It is not for any soul to belive save by the permission of Allah. He hath set uncleanness upon those who have no sense.

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

२१. अर्थात् उस की यह बात कि जो व्यक्ति हर प्रकार के पक्षपात, हठधर्मी और दुराग्रह से रहित हो कर सत्य का प्रेमी न बनेगा उस के हिस्से में 'ईमान' की दौलत कभी नहीं आ सकती।

२२. हज़रत यूनुस अ० का नाम बाइबिल में योनाह (Jonah) है। आप 'बनी इसराईल' के 'नबियों' में से हैं; आप को असीरिया (Assyria) वालों को सच्चाई का बुलावा देने के लिए इराक़ भेजा गया था। इस जाति का केन्द्र उस समय नैनुवा नगर था। दजला नदी के पूर्वी तट पर आज भी इस नगर के खँडर पाये जाते हैं। यह प्रश्न कि हज़रत यूनुस अ० की जाति वालों पर से यातना क्यों टाल दी गई, तो विचार करने से इतना मालूम होता है कि हज़रत यूनुस अ० से कुछ भूल हो गई थी; उन्हों ने समय आने से पहले ही बस्ती छोड़ दी थी। इस लिए अल्लाह् ने भी उन की जाति के लोगों को यातना से बचा लिया। यातना के लक्षण दिखाई पड़ते थे जिसे देख कर लोग 'तौबा' करने लग गये; अल्लाह् ने उन्हें क्षमा कर दिया।

२३. मतलब यह है कि अल्लाह् का तरीक़ा यह नहीं है कि किसी नियम और 'हिकमत' के बिना जिस के बारे में चाहा 'ईमान' का हुक्म दे दिया और उसे 'ईमान' की दौलत मिल गई; और जिसे चाहा 'ईमान' से वंचित कर दिया। उस का एक नियम और क़ानून है जो 'हिकमत' और बुद्धिमत्ता के सर्वथा अनुकूल है, और वह नियम यह है कि आदमी अपने को हर पक्षपात से बचा कर अल्लाह् की दी हुई बुद्धि से काम ले। ऐसे व्यक्ति के लिए ईमान की राह आसान कर दी जाती है; और वह सत्य को पा लेता है। परन्तु जो लोग बुद्धि और अपनी सूझ-बूझ को पक्षपात और टठधर्मी आदि से स्वतन्त्र नहीं रख सकते, या जो सत्य की खोज में बुद्धि से काम ही नहीं लेते, उन के हिस्से में गुमराही, अज्ञान और अधर्म की गन्दगियों के अतिरिक्त और क्या आ सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१. कहो : देखो तो आकाशों और धरती में क्या कुछ है ! परन्तु निशानियाँ और डरावे उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो 'ईमान' नहीं लाते।

101. Say: Behold what is in the heavens and the earth! But revelations and warnings avail not the folk who will not believe.

قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

१०२. फिर ये लोग सिवाय उन लोगों के-से (बुरे) दिनों के और किस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो इन से पहले गुज़र चुके हैं ? कह दो : अच्छा प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ :

102. What expect they save the like of the days of those who passed away before them? Say: Expect then! I am with you among the expectant.

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

१०३. फिर (यातना के समय) हम अपने 'रसूलों' को और उन लोगों को बचा लेते हैं जो 'ईमान' लाये हुये हों, ऐसा ही होता है[२४]। हम पर यह हक़ है कि हम 'ईमान' वालों को बचा लें।

103. Then shall We save Our messengers and the believers, in like manner (as of old). It is incumbent upon Us to save believers.

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ ع

१०४. कह दो : हे लोगो ! यदि तुम्हें मेरे 'दीन' (धर्म) के बारे में कोई सन्देह हो, तो मैं उन की 'इबादत' नहीं करता जिन की तुम अल्लाह के सिवा 'इबादत' करते हो, बल्कि उस अल्लाह की 'इबादत' करता हूँ जो तुम (सब के प्राणों) को पूर्णतः ग्रस्त लेता है,[२५] मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं 'ईमान' वालों में से हूँ।

104. Say (O Muhammad): O mankind! If ye are in doubt of my religion then (know that) I worship not those whom ye worship instead of Allah, but I worship Allah Who causeth you to die, and I have been commanded to be of the believers.

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

१०५. और यह कि हर ओर से कट कर अपना रुख (अल्लाह के) 'दीन' की ओर कर ले, और कदापि 'मुश्रिकों' में सम्मिलित न हो।

105. And, (O Muhammad) set thy purpose resolutely for religion, as a man by nature upright, and be not of those who ascribe partners (to Allah).

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾

१०६. और अल्लाह के सिवा किसी ऐसे को न पुकार, जो न तुझे लाभ पहुँचा सके और न हानि, यदि तू ने ऐसा किया तो तू ज़ालिमों में से होगा।

106. And cry not, beside Allah, unto that which cannot profit thee nor hurt thee, for if thou didst so, then wert thou of the wrong-doers.

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

२४. अर्थात् हम ऐसा ही करते हैं।

२५. अर्थात् जिस के क़ब्ज़े में तुम्हारा जीवन है कि जब तक चाहता है तुम्हें जीवित रखता है। जब चाहता है तुम्हारी मृत्यु आ जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७. यदि अल्लाह तुझे किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उस के सिवा कोई उस को टालने वाला नहीं है; और यदि वह तेरे लिए किसी भलाई का इरादा करे, तो कोई उस के अनुग्रह को फेरने वाला नहीं। वह इस को अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है पहुँचाता है। और वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

107. If Allah afflicteth thee with some hurt, there is none who can remove it save Him: and if He desireth good for thee, there is none who can repel His bounty. He striketh with it whom He will of His bondmen. He is the Forgiving, the Merciful.

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ
إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ١٠٧

१०८. कह दो : लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से हक़ आ चुका है। तो जो कोई सीधा मार्ग अपनाये, वह अपने ही लिए सीधा मार्ग अपनायेगा, और जो कोई भटके उस के भटकने का ववाल भी उसी पर पड़ेगा, और मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार नहीं हूँ[२६]।

108. Say: O mankind! Now hath the Truth from your Lord come unto you. So whosoever is guided, is guide only for (the good of) his soul, and whosoever erreth, erreth only against it. And I am not a warder over you.

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن
رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ١٠٨

१०९. जो कुछ तुम पर 'वह्य' की जा रही है, तुम उस पर चलो और धैर्य्य से काम लो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे। और वही फ़ैसला करने वालों में सब से उत्तम है।

109. And (O Muhammad) follow that which is inspired in thee, and forbear until Allah give judgement. And He is the Best of Judges.

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ
حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
الْحَاكِمِينَ ١٠٩

२६. दे० आयत ९९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११–हूद
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम आयत ५० से लिया गया है जिस में अल्लाह् के एक विशेष पैग़म्बर हज़रत हूद अ० का हाल बयान हुआ है। हज़रत हूद अ० अरब के पैग़म्बरों में से थे; आप का हाल इबरानी धार्मिक ग्रन्थों में नहीं मिलता। आप वह पहले पैग़म्बर मालूम होते हैं जिन्हें प्रायद्वीप अरब के निवासियों की ओर अल्लाह् ने भेजा था। इस 'सूरा' में अरब के दो और पैग़म्बरों (हज़रत सालेह अ० और हज़रत शुऐब अ०) का हाल भी बयान हुआ है; परन्तु वे हज़रत हूद अ० के बाद हुये हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की अन्तिम सूरतों में से है। अनुमान है कि इस के उतरने का समय लगभग वही है जो सूरा यूनुस के उतरने का समय है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

यह सूरा नागरिकों के लिए डरावा है जब कि वे 'शिर्क' करें और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें[1]। इस सूरा में मक्का वालों को चेतावनी दी गई है कि वे 'शिर्क' को छोड़ कर एक अल्लाह् के आगे झुकने वाले बनें; और उन सारी बातों से दूर रहें जिन से धरती में बिगाड़ पैदा होता है।

नबी सल्ल० और 'ईमान' वालों को सब्र और धैर्य्य से काम लेने और प्रत्येक अवस्था में सत्य-मार्ग पर डटे रहने का प्रोत्साहन दिया गया है। यह सूरा उन लोगों के लिए शुभ-सूचना है जो अल्लाह् से डरें और उस की अवज्ञा से बचने की कोशिश करें।

प्रस्तुत 'सूरा' का पिछली सूरा (सूरा यूनुस) से गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरा में कुछ बस्तियों का हाल बयान किया गया है। यह सूरा कई बस्तियों के वृत्तान्त हमारे सामने प्रस्तुत करती है। पिछली सूरा में 'ईमान' वालों को तसल्ली दी गई थी; उन्हें उन के अच्छे परिणामों के द्वारा शुभ-सूचना दी गई थी; और 'काफ़िरों' को उन के बुरे परिणाम से डराया गया था। प्रस्तुत सूरा पिछली सूरा की पूरक है। इस में चेतावनी और डरावा पिछली सूरा से बढ़ कर है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में लोगों को आमन्त्रित किया गया है कि वे 'रसूल' की बात पर 'ईमान' लायें; 'शिर्क' को छोड़ दें और एक अल्लाह् के बन्दे बन कर रहें। उन्हें एक दिन अल्लाह् के सामने हाज़िर होना है, जहाँ उन्हें अपने एक-एक काम का हिसाब देना होगा।

फिर लोगों के सामने यह बात भी रक्खी गई है कि संसार की जो जातियाँ इसी वर्तमान जीवन को सब कुछ समझ कर भोग-विलास में पड़ी रहीं और 'नबियों' की पुकार को ठुकरा दिया उन का क्या परिणाम हुआ।

इस्लाम विरोधियों को चेतावनी दी गई है कि तुम्हारी अधर्म-नीतियों पर यदि अभी यातना नहीं आ रही है, तो इस का कारण यह नहीं है कि तुम सत्य मार्ग पर हो; बल्कि यह तो अल्लाह् की कृपा और दया है कि वह तुम्हें सोचने और सँभलने की पूरी मुहलत दिये जा रहा है। इस से लाभ उठा कर यदि तुम सँभलते नहीं हो, तो अल्लाह् की यातना से तुम बच न सकोगे; फिर कोई न होगा

१. दे० आयत १००।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो उस की यातना को टाल सके। इन सारी बातों को समझाने के लिए हज़रत नूह अ० की जाति का क़िस्सा, 'आद', 'समूद' और हज़रत लूत अ० की जाति वालों, मदयन वालों और फ़िरऔन की जाति के वृत्तान्त खोल कर बयान किये गये हैं।

सूरा अल-आराफ़ की तरह यह सूरा भी लोगों के लिए विशेष उपदेश और शिक्षा प्रस्तुत करती है। इस में विभिन्न जातियों के जो क़िस्से बयान हुए हैं उन पर विचार करने से ध्यान देने योग्य कई बातें सामने आती हैं। इन क़िस्सों के अध्ययन से मालूम होता है कि उन समस्त जातियों की दशा क़रीब-क़रीब एक-सी रही है जिन्हें 'नबियों' ने सत्य सन्देश सुनाते हुये अल्लाह की अवज्ञा के बुरे परिणामों से डराया था। फिर हम यह भी देखते हैं कि समस्त 'नबियों' की मूल शिक्षा सदा एक ही रही है। सभी ने अल्लाह की भक्ति और बन्दगी का निमन्त्रण दिया और 'शिर्क' और 'कुफ़्' से लोगों को रोका है। विभिन्न जातियों का व्यवहार भी अपने-अपने 'नबियों' के साथ एक-सा रहा है। समस्त 'नबियों' और 'रसूलों' को अपनी जाति वालों के हाथ यातनाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। जिन लोगों ने 'नबियों' की बात मानी और उन पर 'ईमान' लाये उन की धारणा भी सदा एक-सी रही है। सत्य और असत्य के संघर्षों का परिणाम भी सदा एक ही सामने आता रहा है। 'काफ़िर' और सरकश जातियों को अन्त में बुरे दिन देखने ही पड़े हैं।

दुनिया में बहुत सी जातियाँ गुज़री हैं, 'नबी' भी अल्लाह की ओर से बहुत से आये हैं; परन्तु 'क़ुरआन' में न तो समस्त 'नबियों' का हाल बयान हुआ है[1] और न संसार की समस्त जातियों के वृत्तान्त ही प्रस्तुत किये गये हैं। इस की आवश्यकता भी नहीं थी कि संसार की समस्त जातियों और 'नबियों' के क़िस्से 'क़ुरआन' में बयान किये जायें। जो क़िस्से 'क़ुरआन' में बयान हुये हैं शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए बहुत हैं। 'क़ुरआन' में जिन ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है वे घटनायें और वृत्तान्त वही हैं जिन से किसी-न-किसी हद तक 'क़ुरआन' के सर्वप्रथम श्रोता[2] परिचित थे। सत्य की पुष्टि के लिए ऐतिहासिक प्रमाण संचित करने और प्राचीन उदाहरणों के द्वारा लोगों को चेतावनी देने के लिए यह ज़रूरी भी था कि उन के सामने इतिहास की उन्हीं जातियों और उन्हीं 'नबियों' के क़िस्से बयान किये जायें जिन से वे बिल्कुल ही अनभिज्ञ न हों। कम-से-कम उन की भनक कानों में अवश्य पड़ चुकी हो या न पड़ी हो तो पास के लोगों से उन के बारे में पूछ सकते हों। कितनी ही उजड़ी हुई बस्तियों से जिन का उल्लेख क़ुरआन में किया गया है, अरब वालों का गुज़र होता था। अरब में 'यहूदी' और 'ईसाई' भी बसते थे 'क़ुरआन' ने उन्हें भी सम्बोधित किया है। ये 'यहूदी' और 'ईसाई' अपने धर्म-ग्रन्थों में उन 'नबियों' और जातियों के विषय में बहुत कुछ पढ़ चुके थे जिन का उल्लेख क़ुरआन ने उदाहरण के रूप में किया है। हाँ यह बात ज़रूर है कि जिन प्राचीन घटनाओं और वृत्तान्तों का उल्लेख 'तौरात' में मिलता था उन में से कितनों की वास्तविकता पर परदे पड़ चुके थे। 'तौरात' के अपने वास्तविक रूप से सुरक्षित न रहने के कारण किसी घटना के बारे में सही और ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करनी अत्यन्त कठिन बल्कि असम्भव थी। यह 'क़ुरआन' का बहुत बड़ा उपकार है कि उस ने सत्य को असत्य से अलग कर के दिखा दिया। जिस से मामला अपने असली रूप में सामने आ गया। आधुनिक खोजों और प्राचीन अवशेषों से भी क़ुरआन के बयान की पूर्ण रूप से पुष्टि होती है।

इस 'सूरा' में मुसलमानों के लिए भी डरावा है जब कि वे बिगाड़ फैलाने और परस्पर विभेद करने लग जायें। इस सूरा में उन ख़राबियों की ओर भी संकेत मिलता है, मुस्लिम गरोह में जिन के पैदा होने की सम्भावना थी। उन से छुटकारा पाने का उपाय जो इस सूरा से मालूम होता है वह यह है कि रात के समय अल्लाह के सामने 'नमाज़' में खड़ा हुआ जाये और सख़्ती और संकट में धैर्य्य से काम लिया जाये। इस सिलसिले में पूर्वकालीन जातियों के वृत्तान्त भी प्रस्तुत किये गये हैं। यही वह विकट समस्या है जिस के कारण नबी सल्ल० ने कहा था कि सूरा हूद और इस जैसी 'सूरतों' ने मुझे बूढ़ा कर दिया।

१. दे० सूरा अल-मोमिन आयत ७८, सूरा इबराहीम आयत ९।
२. अर्थात् अरब के 'मुश्रिक' तथा 'यहूदी' और 'ईसाई' लोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' हूद
(मक्का में उतरी — 'आयतें' १२३)

HUD
Revealed at Mecca

[illegible]

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़० लाम० रा०[१]। यह एक 'किताब' है जिस की 'आयतें' पक्की (जँची हुई) हैं फिर विस्तारपूर्वक बयान हुई हैं[२] एक तत्त्वदर्शी और ख़बर रखने वाले की ओर से,

1. Alif. Lam. Ra. (This is) a Scripture the revelations where of are perfected and then expounded. (It cometh) from One Wise, Informed:

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ
فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ
خَبِيْرٍ (١)

२. कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की 'इबादत' न करो। मैं तो उसी की ओर से तुम्हें सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ।

2. (Saying): Serve none but Allah. Lo! I am unto you from Him a warner and a bringer of good tidings:

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ
نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ (٢)

३. और यह कि तुम अपने 'रब' से क्षमा माँगो और उस की ओर पलट आओ। वह तुम्हें, एक नियत समय तक अच्छा जीवन-सुख प्रदान करेगा[३]। और हर फ़ज़्ल वाले को अपना फ़ज़्ल प्रदान करेगा[४] और यदि तुम मुँह फेरते हो तो निस्सन्देह मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।

3. And (bidding you): Ask pardon of your Lord and turn to Him repentant. He will cause you to enjoy a fair estate until a time appointed. He giveth His bounty unto every bountiful one. But if ye turn away, lo! (then) I fear for you the retribution of an awful Day.

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ
يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيْرٍ (٣)

४. तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है, और वह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

4. Unto Allah is your return and He is able to do all things.

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ (٤)

५. देखो ये अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि उस से छिप जायें[५]। जान रक्खो जब ये अपने कपड़ों से अपने-आप को ढाँपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ ये छिपाते हैं और जो कुछ खोलते हैं। वह तो सीनों तक के भेदों का जानने वाला है।

5. Lo! now they fold up their breasts that they may hide (their thoughts) from Him. At the very moment when they cover themselves with their clothing, Allah knoweth that which they keep hidden and that which they proclaim. Lo! He is Aware of what is in the breasts (of men).

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا
مِنْهُ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٥)

*६. धरती में चलने वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं है जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो और जिस के रहने की जगह और जिस के सौंपे जाने की जगह वह न जानता हो। सब कुछ एक स्पष्ट 'किताब' में है।

6. And there is not a beast in the earth but the sustenance thereof dependeth on Allah. He knoweth its habitation and its repository. All is in a clear record.

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا
عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا
وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٦)

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. अर्थात् इस 'किताब' या फ़रमान की जो बातें बयान हुई हैं वे पक्की, अटल और जँची-तुली हैं। इस के बयान में कोई उलझाव नहीं है। इस की एक-एक बात खोल कर बयान की गई है।
३. अर्थात् उसे सच्ची ख़ुशी और शान्ति प्राप्त होगी। दुनिया में जो कुछ उसे प्राप्त होगा उस से वह धोखे में नहीं पड़ेगा; उसे वह 'आख़िरत' की सफलता का साधन बनायेगा।
४. अर्थात जो अपने स्वभाव और चरित्र में जितना आगे होगा उसे उसी के अनुसार उच्च पद प्रदान किया जायेगा।
५. मक्के में बहुत से इस्लाम-विरोधी लोग नबी सल्ल० की बात सुनने से कतराते थे; आप (सल्ल०) को देखते तो मुँह मोड़ कर चल देते, या कपड़े में अपने को छिपा लेते ताकि आप (सल्ल०) को कुछ कहने-सुनने का मौक़ा न मिल सके।

* यहाँ से बारहवाँ पारा (Part XII) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और वही है जिस ने आकाशों और धरती को छः दिनों[६] में पैदा किया——और उस का सिंहासन पानी पर था[७]——ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में कौन अच्छा कर्म करता है।
और यदि तुम कहते हो : निश्चय ही तुम मरने के बाद उठाये जाओगे ! तो 'काफ़िर' लोग कहते हैं : यह तो बस खुला जादू है।

7. And He it is Who created the heavens and the earth in six Days —and His Throne was upon the water — that He might try you, which of you is best in conduct. Yet if thou (O Muhammad) sayest: Lo! ye will be raised again after death! those who disbelieve will surely say: This is naught but mere magic.

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ
لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ
إِنَّكُمْ مَّبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

८. और यदि हम एक निश्चित समय तक उन से यातना को टालें रक्खें तो वे कहने लगेंगे : आखिर किस चीज़ ने उसे रोक रक्खा है ? सुन लो ! जिस दिन वह उन पर आ जायेगी, तो वह उन पर से टाली न जायेगी, और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे।

8. And if We delay for them the doom until a reckoned time they will surely say: What withholdeth it? Verily on the day when it cometh unto them it cannot be averted from them, and that which they derided will surround them.

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ
مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ
يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ
ع مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨﴾

९. और यदि कभी हम मनुष्य को अपनी दयालुता का रसास्वादन कराने के पश्चात् फिर इस को उस से छीन लेते हैं, तो वह निराश, और अकृतज्ञ हो जाता है[८]।

9. And if We cause man to taste some mercy from Us and afterward withdraw it from him lo! he is despairing thankless.

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ
نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ﴿٩﴾

१०. और यदि कभी उसे हम नेमत का मज़ा चखाते हैं, इस के बाद कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो तो कहने लगता है : अब तो मेरा सब क्लेश दूर हो गया वह फूला नहीं समाता और डींगें मारने लगता है;

10. And if We cause him to taste grace after some misfortune that had befallen him, he saith: The ills have gone from me. Lo! he is exultant, boastful;

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ
لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ
لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١٠﴾

११. सिवाय उन लोगों के जो 'सब्र' करने वाले हैं और अनुकूल कर्म करते हैं। यही हैं जिन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है[९]।

11. Save those who persevere and do good works. Theirs will be forgiveness and a great reward.

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ
أُولٰئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾

१२. तो (हे 'नबी' !) कहीं ऐसा न हो कि तुम उस में से कोई चीज़ छोड़ दो जो तुम्हारी ओर 'वह्य' की जा रही है, और इस बात पर तंग-दिल हो, कि वे कहेंगे : इस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया, या इस के साथ कोई 'फ़िरिश्ता' क्यों न आया ? तुम तो केवल सचेत करने वाले हो, और हर चीज़ का हवालेदार तो अल्लाह है।

12. A likely thing, that thou wouldst forsake aught of that which hath been revealed unto thee and that thy breast should be straitened for it, because they say! Why hath not a treasure been sent down for him, or an angel come with him? Thou art but a warner, and Allah is in charge of all things.

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ
إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيلٌ ﴿١٢﴾

६. अर्थात छः युग (Period) में।
७ यहाँ पानी का तात्पर्य क्या है, निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता; सम्भव है यह शब्द पदार्थ की उस द्रव्य अवस्था के लिए प्रयुक्त हुआ हो, जो अवस्था उस को वर्तमान रूप देने से पहले थी। दे० बाइबिल 'पैदाइश' (Gen.) १ : २।

८. दे० सूरा यूनुस आयत ११-१३।
९. दे० सूरा अल-मआरिज आयत १९-३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. क्या ये कहते हैं : उस ने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो : अच्छा तो तुम इस जैसी, गढ़ी हुई, दस 'सूरतें' ले आओ[१०] और अल्लाह के सिवा जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सच्चे हो[११]।

13. Or they say: He hath invented it. Say: Then bring ten surahs the like thereof, invented, and call on everyone ye can beside Allah, if ye are truthful!

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾

१४. फिर यदि वे तुम्हारा कहना न कर सकें तो जान लो कि यह ('क़ुरआन') अल्लाह के ज्ञान के साथ उतरा है; और यह कि उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है। तो क्या अब तुम 'मुस्लिम' होते हो!

14. And if they answer not your prayer, then know that it is revealed only in the knowledge of Allah; and that there is no God save Him. Will ye then be (of) those who surrender?

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾

१५. जो लोग इसी सांसारिक जीवन और इस की शोभा के इच्छुक होते हैं, उन लोगों को उन के कर्मों का बदला हम यहीं दे देते हैं, और इस में उन के साथ कोई कमी नहीं की जाती।

15. Whoso desireth the life of the world and its pomp, We shall repay them their deeds herein, and therein they will not be wronged.

مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

१६. यही वे लोग हैं, जिन के लिए 'आखिरत' में ('जहन्नम' की) आग के सिवा और कुछ नहीं। और उन्हों ने यहाँ जो कुछ बनाया सब अकारथ गया और उन का किया-धरा सब मिथ्या ही होता है।

16. Those are they for whom is naught in the Hereafter save the Fire. (All) that they contrive here is vain and (all) that they are wont to do is fruitless.

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

१७. भला वह व्यक्ति जो अपने 'रब' की खुली दलील पर हो, और उस के बाद एक गवाह भी उस की ओर से आ गया हो,[१२] और इस से पहले मूसा की 'किताब' भी नायक और दयालुता के रूप में हो (क्या वह दुनियादारों की तरह इस का इन्कार कर सकता है)? ऐसे लोग तो इस पर 'ईमान' लाते हैं, और दूसरे गरोहों में से जो कोई इस का इन्कार करे, तो उस के लिए जिस जगह का वादा है, वह ('जहन्नम' की) आग है।

तो तुझे इस के बारे में कोई सन्देह न हो। यह तेरे 'रब' की ओर से 'हक़' है; परन्तु अधिकतर लोग 'ईमान' नहीं लाते।

17. Is he (to be counted equal with them) who relieth on a clear proof from his Lord, and a witness from Him reciteth it, and before it was the Book of Moses, an example and a mercy? Such believe therein, and Whoso disbelieveth therein of the clans, the Fire is his appointed place. So be not thou in doubt concerning it. Lo! it is the Truth from thy Lord! But most of mankind believe not.

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

१०. सूरा यूनुस आयत ३८ में कहा गया है कि एक ही सूरा इस जैसी बना लाओ; इस से मालूम होता है कि यह सूरा, सूरा यूनुस के बाद उतरी है। जब 'काफ़िर' लोग १० सूरतें बना कर लाने में असमर्थ रहे तो उन से कहा गया कि अच्छा इस जैसी एक ही सूरा गढ़ कर दिखा दो।

११. दे० सूरा यूनुस आयत १५-१७।

१२. यहाँ गवाह से अभिप्रेत क्या है इस के लिए सूरा की इन 'आयतों' पर विचार कीजिए : आयत २८, ५८, ६३, ६६, ८८, ९४ और ९६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. और उस व्यक्ति से बढ़ कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ? ऐसे लोग अपने 'रब' के सामने पेश होंगे, और गवाह होंगे : यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपने 'रब' पर झूठ गढ़ा था। सुन लो ! ज़ालिमों पर अल्लाह का धिक्कार है,[१३]

18. Who doth greater wrong than he who inventeth a lie concerning Allah? Such will be brought before their Lord, and the witness will say: These are they who lied concerning their Lord. Now the curse of Allah is upon wrongdoers,

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ
كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ
وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا
عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿۱۸﴾

१९. जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे कज करना चाहते हैं, और निश्चय ही ये 'आख़िरत' का इन्कार करने वाले हैं।

19. Who debar (men) from the way of Allah and would have it crooked, and who are disbelievers in the Hereafter.

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَ
يَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿۱۹﴾

२०. ऐसे लोग धरती में बच निकलने वाले नहीं हैं, और न अल्लाह के सिवा उन का कोई संरक्षक-मित्र है। उन्हें दोहरी यातना दी जायेगी। वे न तो सुन सकते थे, और न देख सकते थे।

20. Such will not escape in the earth, nor have they any protecting friends beside Allah. For them the torment will be double. They could not bear to hear, and they used not to see.

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا
كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا
يُبْصِرُونَ ﴿۲۰﴾

२१. यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाला, और वह सब कुछ इन से जाता रहा जो ये गढ़ा करते थे।

21. Such are they who have lost their souls and that which they used to invent hath failed them.

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿۲۱﴾

२२. निश्चय ही यही 'आख़िरत' में सब से बढ़ कर घाटे में रहेंगे।

22. Assuredly in the Hereafter they will be the greatest losers.

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿۲۲﴾

२३. निस्सन्देह वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये और अपने 'रब' की ओर क़रार पकड़ा, ऐसे ही लोग 'जन्नत' वाले हैं; वे उस में सदैव रहेंगे।

23. Lo! those who believe and do good works and humble themselves before their Lord: such are rightful owners of the Garden; they will abide therein.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَ
أَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۲۳﴾

२४. दोनों फरीक़ों की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और एक देखने और सुनने वाला। क्या दोनों की दशा बराबर हो सकती है ? क्या तुम सोचते नहीं।

24. The similitude of the two parties is as the blind and the deaf and the seer and the hearer. Are they equal in similitude? Will ye not then be admonished?

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ
وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۲۴﴾

२५. और (ऐसी ही परिस्थितियों में) हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर भेजा था (उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा) : मैं तुम्हें साफ सचेत करने वाला हूँ।

25. And We sent Noah unto his folk (and he said): Lo! I am a plain warner unto you.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ
نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿۲۵﴾

२६. यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की 'इबादत' न करो। मैं तुम्हारे बारे में एक दुःखमय दिन की यातना से डरता हूँ[१४]।

26. That ye serve none save Allah. Lo! I fear for you the retribution of a painful Day.

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿۲۶﴾

१३. दे० सूरा यूनुस आयत १७।

१४. दे० आयत ३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. इस पर उस की जाति के सरदार जिन्हों ने 'कुफ़्' किया था, कहने लगे : मेरी दृष्टि में तो तुम केवल हम जैसे मनुष्य हो, और हम देखते हैं कि बस हमारे यहाँ के कुछ कमीने लोग सतही राय से तुम्हारे अनुयायी हुये हैं और हम तो अपने मुक़ाबले में तुम में कोई बड़ाई नहीं देखते—बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।

27. The chienftains of his folk who disbelieved, said: We see thee but a mortal like us, and we see not that any follow thee save the most abject among us, wihtout reflection. We behold in you no merit above us — nay, we deem you liars.

فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نرىك إلا بشرا مثلنا وما نرىك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادي الرأي وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كذبين ﴿٢٧﴾

२८. उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! सोचो तो सही, यदि मैं अपने 'रब' के स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उस ने मुझे अपने पास से दयालुता प्रदान की है, फिर उसे तुम्हारी आँखों से छिपा रक्खा,[१५] तो तुम न मानना चाहो जब भी क्या हम ज़बरदस्ती तुम्हारे सिर उसे चिपेक दें[१६]।

28. He said: O my people! Bethink you, if I rely on a clear proof from my Lord and there hath come unto me a mercy from His Presence, and it hath been made obscure to you, can we compel you to accept it when ye are averse thereto?

قال يقوم أرءيتم إن كنت على بينة من ربي وآتىني رحمة من عنده فعميت عليكم أنلزمكموها وأنتم لها كرهون ﴿٢٨﴾

२९. और हे मेरी जाति वालो ! मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है, और मैं उन लोगों को जो 'ईमान' ला चुके हैं धुतकारने वाला भी नहीं हूँ—वे तो अपने 'रब' से मिलने वाले हैं—परन्तु मैं देखता हूँ कि तुम लोग जिहालत कर रहे हो।

29. And O my people! I ask of you no wealth therefor. My reward is the concern only of Allah, and I am not going to thrust away those who believe—Lo! they have to meet their Lord—but I see you a folk that are ignorant.

ويقوم لا أسئلكم عليه مالا إن أجري إلا على الله وما أنا بطارد الذين آمنوا إنهم ملقوا ربهم ولكني أرىكم قوما تجهلون ﴿٢٩﴾

३०. और हे मेरी जाति वालो ! यदि मैं उन्हें धुतकार दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा ? तो क्या तुम सोचते नहीं ?

30. And O my people! who would deliver me from Allah if I thrust them away? Will ye not then reflect?

ويقوم من ينصرني من الله إن طردتهم أفلا تذكرون ﴿٣٠﴾

३१. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं परोक्ष की ख़बर रखता हूँ; और न मैं यह कहता हूँ कि मैं तो 'फ़िरिश्ता' हूँ ! और न उन लोगों के प्रति यह कह सकता हूँ जो तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं कि उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। जो कुछ उन के जी में है उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है—(यदि मैं ऐसा कहूँ) तब तो मैं ज़ालिमों में हूँगा।

31. I say not unto you: "I have the treasures of Allah" nor "I have knowledge of the Unseen," nor say I: "Lo! I am an angel!" Nor say I unto those whom your eyes scorn that Allah will not give them good—Allah knoweth best what is in their hearts—Lo! then indeed I should be of the wrong-doers.

ولا أقول لكم عندي خزائن الله ولا أعلم الغيب ولا أقول إني ملك ولا أقول للذين تزدري أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا الله أعلم بما في أنفسهم إني إذا لمن الظلمين ﴿٣١﴾

१५. अर्थात् तुम्हें वह सुझाई न देती हो। दे० सूरा अर-रअद आयत १९।

१६. दे० आयत १७, ६३, ८८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. उन्हों ने कहा : हे नूह ! तुम हम से झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके; अब तो जिस चीज़ की तुम हमें धमकी देते हो वही हम पर ले लाओ, यदि तुम सच्चे हो।

32. They said: O Noah! Thou hast disputed with us and multiplied disputation with us; now bring upon us that wherewith thou threatenest us, if thou art of the truthful.

قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾

३३. उस ने कहा : वह तो अल्लाह ही तुम पर लायेगा यदि चाहेगा और तुम बच निकलने वाले नहीं हो।

33. He said: Only Allah will bring it upon you if He will, and ye can by no means escape.

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

३४. और यदि मैं तुम्हारा हित भी चाहूँ तो मेरा हित चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता, यदि अल्लाह ही तुम्हें भटका देना चाहता हो[१७]। वही तुम्हारा 'रब' है और उसी की ओर तुम्हें पलट कर जाना है।

34. My counsel will not profit you if I were minded to advise you, if Allah's will is to keep you astray. He is your Lord and unto Him ye will be brought back.

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

३५. क्या ये लोग कहते हैं : इस ने स्वयं इस (क़ुरआन) को गढ़ लिया है ? कह दो : यदि मैं ने इसे गढ़ा है, तो मेरे अपराध की ज़िम्मेदारी मुझ पर है, और जो अपराध तुम कर रहे हो उस की ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।

35. Or say they (gain): He hath invented it? Say: If I have invented it upon me be my crimes, but I am innocent of (all) that ye commit.

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾

३६. और नूह की ओर 'वह्य' की गई कि जो लोग 'ईमान' ला चुके उन के सिवा तुम्हारी जाति में अब कोई 'ईमान' नहीं लायेगा, तो जो कुछ ये कर रहे हैं उस के लिए तुम दुःखी न हो।

36. And it was inspired in Noah (saying): No one of thy folk will believe save him who hath believed already. Be not distressed because of what they do.

وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

३७. और हमारी निगाहों के सामने[१८] और हमारी 'वह्य' के अनुसार एक नाव बनाओ, और उन लोगों के बारे में जिन्हों ने ज़ुल्म किया मुझ से कुछ न कहना। निश्चय ही वे डूबने वाले हैं।

37. Build the ship under Our eyes and by Our inspiration, and speak not unto Me on behalf of those who do wrong. Lo! they will be drowned.

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

३८. और वह नाव बनाने लगा, और जब कभी उस की जाति के सरदार उस के पास से गुज़रते, वे उस की हँसी उड़ाते। उस ने कहा : यदि तुम मुझ पर हँसते हो, तो हम भी तुम पर हँस रहे हैं, जिस तरह तुम हँस रहे हो।

38. And he was building the ship and every time that chieftain of his people passed him, they made mock of him. He said: Though ye make mock of us, yet we mock at you even as ye mock.

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

१७. अर्थात जब अल्लाह ने तुम्हारी हठधर्मी को देख कर तुम्हारे बारे में यही फ़ैसला कर लिया हो कि तुम जिस डगर पर स्वयं चलना चाहते हो उसी पर तुम्हें भटकने के लिए छोड़ दिया जाये; और सीधे मार्ग पर चलने का श्रेय तुम्हें प्राप्त न हो, तो तुम्हारी भलाई और हित के लिए मैं कितनी ही क्यों न कोशिशें करूँ परन्तु उन कोशिशों से होता क्या है।

१८. अर्थात् हमारी निगरानी में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन है जिस पर वह यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और उस पर स्थायी यातना टूट पड़ती है।

39. And ye shall know to whom a punishment that will confound him cometh, and upon whom a lasting doom will fall.

فسوف تعلمون من يأتيه عذاب
يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ﴿٣٩﴾
حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا
احمل فيها من كل زوجين اثنين
وأهلك إلا من سبق عليه القول
ومن آمن وما آمن معه إلا
قليل ﴿٤٠﴾

४०. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया और वह तनूर उबल पड़ा,[१९] तो हम ने कहा : हर प्रकार के (जानवरों में से नर और मादा) एक-एक जोड़ा उस (नाव) में चढ़ा लो, और अपने घर वालों को भी—सिवाय उस के जिस के बारे में बात निश्चित हो चुकी थी (कि वह विनष्ट हो कर रहेगा)—और जो कोई 'ईमान' लाया हो उसे भी ले लो। और बस थोड़े ही लोग थे जो उस के साथ 'ईमान' लाये थे[२०]।

40. (Thus it was) till when Our commandment came to pass and the oven gushed forth water, We said: Load therein two of every kind, a pair (the male and female), and thy household, save him against whom the word hath gone forth already, and those who believe. And but a few were they who believed with him.

४१. और (नूह ने) कहा : सवार हो जाओ इस में ! अल्लाह के नाम से इस का चलना भी है और इस का ठहरना भी। निस्सन्देह मेरा 'रब' बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

41. And he said: Embark therein! In the name of Allah be its course and its mooring. Lo! my Lord is Forgiving, Merciful.

وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها
ومرسها إن ربي لغفور رحيم ﴿٤١﴾

४२. और वह उन्हें लिये पहाड़ जैसी ऊँची लहरों के बीच चलने लगी, और नूह ने अपने बेटे को पुकारा—वह अलग था—हे मेरे बेटे ! हमारे साथ सवार हो जा, और 'काफ़िरों' के साथ न रह।

42. And it sailed with them amid waves like mountains, and Noah cried unto his son —and he was standing aloof —O my son! Come ride with us, and be not with the disbelievers.

وهي تجري بهم في موج كالجبال
ونادى نوح ابنه وكان في معزل
يبني اركب معنا ولا تكن مع الكفرين ﴿٤٢﴾

४३. उस ने कहा : मैं किसी पहाड़ की शरण ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा। कहा : आज अल्लाह के आदेश से कोई बचाने वाला नहीं परन्तु उस को जिस पर वह दया करे। इतने में लहर दोनों के बीच आ गई, और वह भी डूबने वालों में हो गया[२१]।

43. He said: I shall betake me to some mountain that will save me from the water. (Noah) said: This day there is none that saveth from the commandment of Allah save him on whom He hath had mercy. And the wave came in between them, so he was among the drowned.

قال سآوي إلى جبل يعصمني من
الماء قال لا عاصم اليوم من أمر الله
إلا من رحم وحال بينهما الموج
فكان من المغرقين ﴿٤٣﴾

४४. और कहा गया : "हे भूमि ! अपना पानी निगल जा और हे आकाश ! थम जा" ! तो पानी धरती में बैठ गया। और फ़ैसला चुका दिया गया। और वह (नाव) अल-जूदी (नामक पर्वत) पर टिक गई[२२] और कह दिया गया : दूर हों ज़ालिम लोग !

44. And it was said: O earth! Swallow thy water and, O sky! be cleared of clouds! And the water was made to subside. And the commandment was fulfilled. And it (the ship) came to rest upon (the mount) Al-Judi and it was said: A far removal for wrong-doing folk!

وقيل يأرض ابلعي ماءك ويسماء
أقلعي وغيض الماء وقضي الأمر و
استوت على الجودي وقيل بعدا
للقوم الظلمين ﴿٤٤﴾

१९. अर्थात् मामला सख़्त और मुश्किल हो गया।
२०. अर्थात् 'ईमान' ला कर उद्देश्य-मार्ग में उस के साथी बन गये थे।
२१. इस शिक्षाप्रद घटना का उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता।
२२. यह तूफ़ान कहाँ आया था : और नूह अ० की जाति के लोग भूमि में कहाँ बसते थे ? इस के लिए नूह अ० की 'जाति' से सम्बन्धित नोट देखिए जो पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या के अन्तर्गत अन्त में मिलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. और नूह ने अपने 'रब' को पुकारा और कहा : हे 'रब' ! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है ! और निश्चय ही तेरा वादा सच्चा है[२३] और तू ही सब से बड़ा हाकिम है।

45. And Noah cried unto his Lord and said: My Lord! Lo! my son is of my household! surely Thy promise is the Truth and Thou art the Most Just of Judges.

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ ﴿٤٥﴾

४६. कहा : हे नूह ! वह तेरे घर वालों में से नहीं; वह तो (सर्वथा) अशिष्ट कर्म है, तो तू ऐसी चीज़ का मुझ से सवाल न कर जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं है। मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू अज्ञानी लोगों में से न हो जा।

46. He said: O Noah! Lo! he is not of thy household; lo! he is of evil conduct, so ask not of Me that whereof thou hast no knowledge. I admonish thee lest thou be among the ignorant.

قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾

४७. कहा : हे 'रब' ! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस से कि मैं तुझ से ऐसी चीज का सवाल करूँ जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं। और यदि तू ने मुझे क्षमा न किया और मुझ पर तू ने दया न की तो मैं घाटा उठाने वालों में से हो जाऊँगा।

47. He said: My Lord! Lo! in Thee do I seek refuge (from the sin) that I should ask of Thee that whereof I have no knowledge. Unless Thou forgive me and have mercy on me I shall be among the lost.

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٤٧﴾

४८. कहा गया : हे नूह ! (इस पर्वत से) उतर जा इस हाल में कि हमारी ओर से सलामती और बरकतें हैं तुझ पर और उन गरोहों पर जो उन लोगों में से होंगे जो तेरे साथ हैं। और (आगे पैदा होने वालों में) कितने गरोह ऐसे हैं जिन्हें हम जीवन-सुख प्रदान करेंगे फिर उन्हें हमारी ओर से दुःख देने वाली यातना आ पहुँचेगी।

48. It was said (unto him): O Noah! Go thou down (from the mountain) with peace from Us and blessings upon thee and some nations (that will spring) from those with thee. (There will be other) nations unto whom We shall give enjoyment a long while and then a painful doom from Us will overtake them.

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

४९. (हे मुहम्मद !) ये परोक्ष की ख़बरें हैं जो हम तेरी ओर 'वह्य' कर रहे हैं। इस से पहले न तू इन को जानता था, और न तेरी जाति वाले ही। तो 'सब्र' करो। निस्सन्देह अन्तिम परिणाम उन्हीं लोगों के हक़ में है जो डरने वाले हैं।

49. This is of the tidings of the Unseen which We inspire in thee (Muhammad). Thou thyself knewest it not, nor did thy folk (know it) before this. Then have patience. Lo! the sequal is for those who ward of (evil).

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

५०. और 'आद' की ओर उन के भाई हूद को भेजा, उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की 'इबादत' करो ! उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं तुम तो बस झूठ गढ़ने वाले हो[२४]!

50. And unto (the tribe of) Aad (We sent) their brother, Hud. He said: O my people! Serve Allah! Ye have no other God save Him. Lo! ye do but invent!

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

२३. अर्थात् तेरा वादा था कि तू मेरे घर वालों को बचा लेगा, तो मेरा बेटा भी तो मेरे घर वालों में से है।

२४. अर्थात् अल्लाह के सिवा तुम लोगों ने जितने ख़ुदा गढ़ रक्खे हैं उन में से किसी में भी ईश्वरीय शक्ति नहीं पाई जाती; वे केवल तुम्हारे अपने गढ़े हुये देवता हैं उन्हें ईश्वरीय पद प्राप्त नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१. हे मेरी जाति वालो ! इस काम पर मैं तुम से कोई बदला नहीं माँगता। मेरा कर्म-फल तो बस उस के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

51. O my people! I ask of you no reward for it. Lo! my reward is the concern only of Him Who made me. Have ye then no sense?

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۗ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾

५२. और हे मेरी जाति वालो ! अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थना करो, फिर उसी की ओर पलट चलो; वह तुम पर आकाश को ख़ूब बरसता छोड़ देगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ायेगा। अपराधी बन कर मुँह न फेरो।

52. And, O my people! Ask forgiveness of your Lord, then turn unto Him repentant; He will cause the sky to rain abundance on you and will add unto you strength to your strength. Turn not away, guilty!

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا
اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ
يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

५३. उन्हों ने कहा : हे हूद ! तू हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण ले कर नहीं आया है और हम तेरे कहने से अपने 'इलाहों' (पूज्य देवताओं) को छोड़ने वाले नहीं हैं और हम तेरी बात मानने वाले नहीं।

53. They said: O Hud! Thou hast brought us no clear proof and we are not going to forsake our gods on thy (mere) saying, and we are not believers in thee.

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ
لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

५४. हमारा कहना यही है कि हमारे 'इलाहों' (देवताओं) में से किसी की तुझ पर मार पड़ गई है (कि तू ऐसी बहकी बातें करता है)। उस ने कहा : मैं तो अल्लाह को गवाह बनाता हूँ, और तुम भी गवाह रहो कि मैं उस से विरक्त हूँ जिस किसी को तुम (प्रभुत्व में) सहभागी ठहराते हो।

54. We say naught save that one of our gods hath possessed thee in an evil way. He said: I call Allah to witness, and do ye (too) bear witness, that I am innocent of (all) that ye ascribe as partners (to Allah).

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا
بِسُوْٓءٍ ۗ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا
اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

५५. सिवाय उस (एक अल्लाह) के[२५], तो तुम सब मिल कर मेरे साथ दाँव-घात कर देखो, फिर मुझे मुहलत न दो।

55. Beside Him. So (try to) circumvent me, all of you, give me no respite.

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ
لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾

५६. मैं ने तो अल्लाह पर भरोसा किया, जो मेरा 'रब' भी है और तुम्हारा 'रब' भी। कोई भी जीवधारी ऐसा नहीं है जिस की चोटी उस ने पकड़ न रक्खी हो ! निस्सन्देह मेरा 'रब' सीधे मार्ग पर है[२६]।

56. Lo! I have put my trust in Allah, my Lord and your Lord. Not an animal but He doth grasp it by the forelock! Lo! my Lord is on a straight path.

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۗ
مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۗ
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

२५. अर्थात् सिवाय अल्लाह के मैं और किसी की 'इबादत' नहीं करता।

२६. अर्थात् उस का हर काम सीधा और सही होता है। वह कोई अन्यायी राजा नहीं है कि उचित और अनुचित का उस के यहाँ कोई अन्तर न हो। यह किसी तरह सम्भव नहीं कि कोई व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करे और जीवन में सीधे और सही मार्ग को अपनाये फिर भी वह घाटे ही में रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७. तो यदि तुम मुँह फेरते हो तो जो कुछ दे कर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था, वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका हूँ, और मेरा 'रब' तुम्हारी जगह दूसरे किसी गरोह को लायेगा। और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्सन्देह मेरा 'रब' हर चीज़ का निगहबान है।

57. And if ye turn away, still I have conveyed unto you that wherewith I was sent unto you, and my Lord will set in place of you a folk other than you. Ye cannot injure Him at all. Lo! my Lord is Guardian over all things.

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

५८. और जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने हूद को और उन लोगों को जो उस के साथ 'ईमान' लाये थे[२७] अपनी दयालुता से बचा लिया; और उन्हें कठोर यातना से बचाया।

58. And when Our commandment came to pass We saved Hud and those who believed with him by a mercy from Us; We saved them from a harsh doom.

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

५९. ये हैं आद। इन्हों ने अपने 'रब' की 'आयतों' का इन्कार किया और उस के 'रसूलों' की अवज्ञा की और हर जब्र करने वाले हठी के पीछे चले।

59. And such were 'Aad. They denied the revelations of their Lord and flouted His messengers and followed the command of every froward potentate.

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾

६०. इस दुनिया में भी लानत इन के साथ लग गई और 'क़ियामत' के दिन भी। सुनो! 'आद' ने अपने 'रब' से 'कुफ़्र' किया। सुन लो! दूर कर दिये गये आद, हूद की जाति वाले।

60. And a curse was made to follow them in the world and on the Day of Resurrection. Lo! 'Aad disbelieved in their Lord. A far removal for 'Aad the folk of Hud!

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

६१. और 'समूद' की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है। उस ने तुम्हें भूमि से पैदा किया और तुम्हें उस में आबाद किया। तो उस से क्षमा की प्रार्थना करो और उस की ओर पलट आओ। निस्सन्देह मेरा 'रब' क़रीब है, दुआओं का क़बूल करने वाला है।

61. And unto (the tribe of) Thamud (We sent) their brother Salih. He said: O my people! Serve Allah, ye have no other God save Him. He brought you forth from the earth and hath made you husband it. So ask forgiveness of Him and turn unto Him repentant. Lo! my Lord is Nigh, Responsive.

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾

६२. उन्हों ने कहा: हे सालेह! इस से पहले तू हम में ऐसा था कि तुझ से बड़ी आशायें थीं। क्या तू हमें उस चीज़ के पूजने से रोकता है जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं? जिस की ओर तू हमें बुलाता है उस के बारे में तो हम बड़े दुविधा एवं विकलताजनक सन्देह में पड़ गये हैं।

62. They said: O Salih! Thou hast been among us hitherto as that wherein our hope was placed. Dost thou ask us not to worship what our fathers worshipped? Lo! we verily are in grave doubt concerning that to which thou callest us.

قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا أَتَنْهَانَا أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾

२७. दे० फ़ुटनोट २०।
२८ अर्थात् 'नुबूवत'।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३. (उस ने) कहा : हे मेरी जाति वालो ! सोचो तो सही, यदि मैं अपने 'रब' के एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उस ने मुझे अपनी दयालुता[२८] प्रदान की है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करेगा यदि मैं उस की अवज्ञा करूँ ? अत: तुम घाटे में डालने के सिवा और मुझे कुछ नहीं दे सकते ।

63. He said: O my people! Bethink you: if I am (acting) on clear proof from my Lord and there hath come unto me a mercy from Him, who will save me from Allah if I disobey Him? Ye would add to me naught save perdition.

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ
فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾

६४. और हे मेरी जाति वालो ! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में (जहाँ चाहे) खाये, और तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो तात्कालिक यातना तुम्हें आ लेगी ।

64. O my people! This is the camel of Allah, a token unto you, so suffer her to feed in Allah's earth, and touch her not with harm lest a near torment seize you.

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً
فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا
تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

६५. परन्तु उन्हों ने उस को उस की कूँचें काट कर मार डाला, तो उस ने कहा : बस तीन दिन और आनन्द ले लो ! यह ऐसा वादा है जिस में कुछ भी झूठ नहीं ।

65. But they hamstrung her, and then he said: Enjoy life in your dwelling-place three days! This is a threat that will not be belied.

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ
ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾

६६. फिर जब हमारा आदेश आ गया, तो हम ने अपनी दयालुता से सालेह को, और उन लोगों को जो उस के साथ 'ईमान' लाये थे,[२९] बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से उन्हें बचाये रक्खा । निस्सन्देह तेरा 'रब' ही बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है ।

66. So when Our commandment came to pass, We saved Salih and those who believed with him, by a mercy from Us, from the ignominy of that day. Lo, thy Lord! He is the Strong, the Mighty.

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

६७. और उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया था एक (भयंकर) चीख ने आ लिया, और वे अपने निवास-स्थानों में औंधे पड़े रह गये,

६८. (और ऐसे मिटे) मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे । सुन लो ! 'समूद' ने अपने 'रब' से 'कुफ़्' किया । सुन लो ! दूर कर दिये गये समूद !

67. And the (Awful) Cry overtook those who did wrong, so that morning found them prostrate in their dwellings,

68. As though they had not dwelt there. Lo! Thamud disbelieved in their Lord. A far removal for Thamud!

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا
فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع

६९. और देखो हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') इबराहीम के पास शुभसूचना ले कर पहुँचे । कहा : तुम पर सलाम हो ! उस ने कहा : सलाम हो ! फिर कुछ देर न की, एक भुना हुआ बछड़ा ले आया ।

69. And Our messengers came unto Abraham with good news. They said: Peace! He answered: Peace! and delayed not to bring a roasted calf.

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا
سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

२८. अर्थात 'नुबूवत' ।
२९. दे० फ़ुटनोट २० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०. परन्तु जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते, तो उसे उन से अजनबीयत का आभास हुआ और दिल में उन से डरा[३०]। वे बोले : डरो नहीं ! हम तो लूत की जाति वालों की ओर भेजे गये हैं।

70. And when he saw their hands reached not to it, he mistrusted them and conceived a fear of them. They said: Fear not! Lo! we are sent unto the folk of Lot.

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٠﴾

७१. और उस की (इबराहीम की) स्त्री भी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी फिर हम ने उसे इसहाक़ और इसहाक़ के पीछे, याक़ूब की शुभसूचना दी।

71. And his wife, standing by, laughed when We gave her good tidings (of the birth) of Isaac and after Isaac, of Jacob.

وَامْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾

७२. वह बोली : हाय मेरा अभाग्य[३१] ! क्या मेरे सन्तान होगी जब कि मैं बूढ़ी हूँ, और ये मेरे पति हैं बूढ़े ! यह तो बड़े आश्चर्य की बात है !

72. She said: Oh, woe is me! Shall I bear a child when I am an old woman, and this my husband is an old man? Lo! this is a strange thing!

قَالَتْ يَا وَيْلَتَىٰ أَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَٰذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾

७३. वे बोले : क्या अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य करती हो ? घर वालो ! तुम पर अल्लाह की दयालुता और उस की बरकतें हैं, निस्सन्देह वह प्रशंसा का अधिकारी, और गौरव वाला है !

73. They said: Wonderest thou at the commandment of Allah? The mercy of Allah and His blessings be upon you, O people of the house! Lo! He is Owner of Praise, Owner of Glory!

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۖ رَحْمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۚ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ﴿٧٣﴾

७४. फिर जब इबराहीम का भय दूर हो गया और उसे (औलाद की) शुभसूचना भी मिली, तो वह लूत की जाति वालों के बारे में हम से झगड़ने लगा[३२]।

74. And when the awe departed from Abraham, and the glad news reached him, he pleaded with Us on behalf of the folk of Lot.

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

७५. निश्चय ही इबराहीम बड़ा ही सहनशील, हृदय का कोमल, और हमारी ओर रुजू (प्रवृत्त) होने वाला था।

75. Lo! Abraham was mild, imploring, patient.

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾

७६. (कहा गया) हे इबराहीम ! इसे छोड़ो ! तुम्हारे 'रब' का हुक्म आ चुका, और निश्चय ही इन पर वह यातना आने वाली है जो टलने की नहीं।

76. (It was said) O Abraham! Forsake this! Lo! thy Lord's commandment hath gone forth and lo! there cometh unto them a doom which cannot be repelled.

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

७७. और जब हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') लूत के पास पहुँचे, तो वह उन के कारण मलीन हुआ और उन के बारे में अपने को असमर्थ पाया; और कहा : यह बड़ा कठिन दिन है[३३]।

77. And when Our messengers came unto Lot, he was distressed and knew not how to protect them. He said: This is a distressful day.

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

३०. हज़रत इबराहीम अ० ने पहचाना नहीं कि ये 'फ़िरिश्ते' हैं; जो खाते-पीते नहीं। वे फ़िरिश्ते मानव-रूप में उन के पास पहुँचे थे। इसी लिए उन के लिए आप ने तुरन्त ही भोजन का प्रबन्ध किया।

३१. अपना आश्चर्य प्रकट करने के लिए ऐसा कहा।

३२. अर्थात् अल्लाह से आग्रह करने लगे कि लूत (अ०) की जाति वालों को अभी विनष्ट न कर; उन्हें अभी कुछ मुहलत और दे कदाचित वे राह पर आ जायें। 'झगड़ने' के शब्द से प्रतीत होता है कि हज़रत इबराहीम (अ०) को अपने 'रब' से अत्यधिक प्रेम था। बाइबिल में भी इस आग्रह का उल्लेख किया किया गया है दे० 'पैदाइश' (Genesis) १८ : २३-३२।

३३. 'फ़िरिश्ते' लूत अ० के यहाँ सुन्दर लड़कों के रूप में पहुँचे थे। हज़रत लूत अ० को इस की खबर न थी कि वे 'फ़िरिश्ते' हैं। उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। उन की जाति वाले बहुत ही बदचलन और आचरणहीन थे। हज़रत लूत अ० जानते थे कि लोग हमारे मेहमानों के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. उस की जाति वाले भागे हुये उस (के घर) की ओर आये—ये लोग पहले से ही दुष्कर्म करते ही रहते थे—(लूत ने) कहा : हे मेरी जाति वालो ! ये मेरी बेटियाँ हैं[३४]। ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाक हैं। तो अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के मामले में रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं ?

78. And his people came unto him, running towards him — and before then they used to commit abomination —He said: O my people! Here are my daughters! They are purer for you. Beware of Allah and degrade me not in (the presence of) my guests. Is there not among you any upright man?

وَجَاۤءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۤءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِىْ ضَيْفِىْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿۷۸﴾

७९. उन्हों ने कहा : मुझे तो मालूम है कि तेरी बेटियों में हमारा कोई हिस्सा नहीं है,[३५] और तू तो भली-भाँति जानता है कि हम क्या चाहते हैं।

79. They said: Well thou knowest that we have no right to thy daughters and well thou knowest what we want.

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِىْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿۷۹﴾

८०. उस ने कहा : क्या अच्छा होता कि मुझ में तुम से निमटने की शक्ति होती या मैं किसी मज़बूत सहारे का आश्रय ले सकता !

80. He said: Would that I had strength to resist you or had some strong support (among you)!

قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِىْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿۸۰﴾

८१. ('फ़िरिश्तों' ने) कहा : हे लूत ! हम तो तेरे 'रब' के भेजे हुये हैं; ये तुझ तक कदापि नहीं पहुँच सकते। तो तू रात के किसी हिस्से में अपनी स्त्री के सिवा अपने लोगों को ले कर निकल जा, और तुम में कोई पीछे पलट कर न देखे। उस पर भी[३६] वही कुछ बीतने वाला है जो इन पर बीतेगा। इन का निश्चित समय प्रातःकाल है। क्या प्रातःकाल निकट नहीं है ?

81. (The messengers) said: O Lot! we are messengers of thy Lord; they shall not reach thee. So travel with thy people in a part of the night, and let not one of you turn round —(all) save thy wife. Lo! that which smiteth them will smite her (also). Lo! their tryst is (for) the morning. Is not the morning nigh?

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾

८२. फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने उस (बस्ती) को तल-पट कर दिया उस पर पक्की मिट्टी के पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाये।

82. So when Our commandment came to pass, we overthrew (that township) and rained upon it stones of clay, one after another.

فَلَمَّا جَاۤءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾

८३. जिन पर तेरे 'रब' के यहाँ से निशान किया हुआ था। और यह ज़ालिमों[३७] से कुछ दूर नहीं है[३८]।

83. Marked with fire in the providence of thy Lord (for the destruction of the wicked). And they are never far from the wrong-doers.

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ ع

३४. अर्थात् तुम अपनी कामेच्छा की तृप्ति के लिए कुमार्ग और अधर्म को न अपनाओ; इस के लिए मेरे घर, अथवा समाज की स्त्रियाँ मौजूद हैं उन से विवाह कर के अपने को दुराचरण से बचाओ।

३५. अर्थात् तू अपनी समझ से हमें जिस पवित्रता की ओर बुलाता है वह राह तो हमारे लिए बनी ही नहीं है।

३६. अर्थात् तेरी स्त्री पर।

३७. अर्थात् आज जो ज़ुल्म की राह अपनाये हुये हैं उन से।

३८. अर्थात यह यातना इन पर भी आ सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. और 'मदयन' (वालों) की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की 'इबादत' करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं ! और तुम नाप और तौल में कभी न किया करो। मैं तो तुम्हें अच्छी दशा में देख रहा हूँ, और मुझे तुम्हारे बारे में एक घेर लेने वाले दिन की यातना का भय है।

84. And unto Midian (We sent) their brother Shu'eyb. He said: O my people! Serve Allah. Ye have no other God save Him! And give not short measure and short weight. Lo! I see you well-to-do, and lo: I fear for you the doom of a besetting Day.

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ
إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾

८५. और हे मेरी जाति वालो ! नाप और तौल न्यायपूर्वक पूरी-पूरी किया करो, और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो। और धरती में फ़साद फैलाते न फिरो।

85. O my people! Give full measure and full weight in justice, and wrong not people in respect of their goods. And do not evil in the earth causing corruption.

وَيَٰقَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

८६. यदि तुम 'ईमान' वाले हो (व्यापार में) अल्लाह की दी हुई बचत ही तुम्हारे लिए उत्तम है; और मैं तुम पर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।

86. That which Allah leaveth with you is better for you if ye are believers; and I am not a keeper over you.

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

८७. वे बोले : हे शुऐब ! क्या तेरी 'नमाज़' तुझे यही हुक्म देती है कि हम उसे छोड़ दें जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं, या हम यह छोड़ दें कि अपने माल के साथ जो चाहें करें ? एक तू ही तो सहिष्णु और भला पुरुष रह गया है।

87. They said: O Shu'eyb! Doth thy way of prayer command they that we should forsake that which our fathers (used to) worship or that we (should leave off) doing what we will with our own property, Lo! thou art the mild, the guide to right behaviour.

قَالُوا يَٰشُعَيْبُ أَصَلَوٰتُكَ تَأْمُرُكَ أَن
نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَٰلِنَا مَا نَشَٰٓؤُا ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ
الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

८८. उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! देखो तो, यदि मैं अपने 'रब' के स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उस ने मुझे अपनी ओर से अच्छी रोज़ी[३६] प्रदान की है (तो मैं कैसे तुम्हारी तुच्छ इच्छाओं का पालन कर सकता हूँ) ? और मैं नहीं चाहता कि जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ उस से तुम्हें तो रोकूँ और स्वयं इस के विरुद्ध चलूँ। मैं तो अपने बस भर सुधार चाहता हूँ। और मेरा काम बनना तो बस अल्लाह ही के सहारे सम्भव है। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं रुजू (प्रवृत्त) हूँ।

88. He said: O my people! Bethink you: if I am (acting) on a clear proof from my Lord and He sustaineth me with fair sustenance from Him (how can I concede aught to you)? I desire not to do behind your backs that which I ask you not to do. I desire naught save reform so far as I am able. My welfare is only in Allah. In Him I trust and unto Him I turn (repentant.)

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ
وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا
أَنْهَىٰكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا
الْإِصْلَٰحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي
إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ
أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

३६. अर्थात् मुझे जीवन-निर्वाह के लिए 'हलाल' रोज़ी दी और 'हराम' खाने से बचाया; और हमें सच्चाई का ज्ञान दिया जो उस की सब से बड़ी और उत्तम देन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. और हे मेरी जाति वालो ! मेरे साथ तुम्हारा विरोध कहीं यह नौबत न पहुँचा दे कि तुम पर वही कुछ बीते जो नूह की 'जाति' वालों पर बीत चुका है, या हूद की जाति वालों पर, या सालेह की जाति वालों पर और लूत की जाति वाले तो तुम से कुछ दूर भी नहीं हैं[४०]।

89. And, O my people! Let not the schism with me cause you to sin so that there befall you that which befell the folk of Noah and the folk of Hud, and the folk of Salih; and the folk of Lot are not far off from you.

ويقوم لا يجرمنكم شقاقي أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح أو قوم هود أو قوم صلح وما قوم لوط منكم ببعيد ﴿٨٩﴾

९०. अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थना करो फिर उसी की ओर पलट आओ। निस्सन्देह मेरा 'रब' दया करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है।

90. Ask pardon of your Lord and then turn unto Him (repentant). Lo! my Lord is Merciful, Loving.

واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود ﴿٩٠﴾

९१. उन्हों ने कहा : हे शुऐब ! तेरी बहुत सी बातें तो हमारी समझ ही में नहीं आतीं, और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमज़ोर है। और यदि तेरे भाई-बन्धु न होते, तो हम तो तुझ पर पथराव कर देते, तू इतने बल-बूते वाला नहीं है कि हम पर भारी हो।

91. They said: O Shu'eyb! We understand not much of that thou tellest, and lo! we do behold thee weak among us. But for thy family, we should have stoned thee, for thou art not strong against us.

قالوا يشعيب ما نفقه كثيرا مما تقول وإنا لنرىك فينا ضعيفا ولولا رهطك لرجمنك وما أنت علينا بعزيز ﴿٩١﴾

९२. उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! क्या मेरे भाई-बन्धु तुम पर अल्लाह से भी ज़्यादा भारी हैं कि तुम ने उस को (अल्लाह को) अपने पीछे डाल दिया ? तुम जो कुछ करते हो निश्चय ही मेरा 'रब' उसे घेरे हुये है।

92. He said: O my people! Is my family more to be honoured by you than Allah? And ye put Him behind you, neglected! Lo! my Lord surroundeth what ye do.

قال يقوم أرهطي أعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا إن ربي بما تعملون محيط ﴿٩٢﴾

९३. हे मेरी जाति वालो ! तुम अपनी जगह कर्म करते रहो मैं भी कर्म करता रहूँगा। जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और कौन झूठा है। प्रतीक्षा करो ! मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

93. And, O my people! Act according to your power; lo! I (too) am acting. Ye will soon know on whom there cometh a doom that will abase him, and who it is that lieth. And watch! Lo! I am a watcher with you.

ويقوم اعملوا على مكانتكم إني عامل سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب وارتقبوا إني معكم رقيب ﴿٩٣﴾

९४. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने अपनी दयालुता से शुऐब को और उन लोगों को जो उस के साथ 'ईमान' लाये थे बचा लिया; और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें एक (भयंकर) चीख ने आ लिया, और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये,

94. And when Our commandment came to pass, We saved Shu'yeb and those who believed with Him by a mercy from Us; and the (Awful) Cry seized those who did injustice, and morning found them prostrate in their dwellings,

ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة منا وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا في ديارهم جثمين ﴿٩٤﴾

९५. (ऐसे मिटे) मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुन लो ! 'मदयन वाले' दूर कर दिये गये, जैसे 'समूद' दूर किये गये थे !

95. As though they had not dwelt there. A far removal for Midian, even as Thamud had been removed afar!

كأن لم يغنوا فيها ألا بعدا لمدين كما بعدت ثمود ﴿٩٥﴾

४०. अर्थात् उन्हें दुनिया से मिटे अभी कोई अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ है; और वह स्थान भी तुम्हारे यहाँ से कुछ अधिक दूर नहीं है जहाँ उन पर अल्लाह की यातना आई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६. और मूसा को हम ने अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा,

96. And verily We sent Moses with Our revelations and a clear warrant

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾

९७. फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास, परन्तु वे[४१] फ़िरऔन के कहने पर चले, हालाँकि फ़िरऔन की बात कोई सही बात न थी।

97. Unto Pharaoh and his chiefs but hey did follow the command of Pharaoh, and the command of Pharaoh was no right guide.

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾

९८. 'क़ियामत' के दिन वह अपनी जाति वालों के आगे-आगे होगा और उन्हें आग में जा उतारेगा और क्या ही बुरा घाट है जहाँ वे उतारे गये।

98. He will go before his people on the Day of Resurrection and will lead them to the Fire for watering-place. Ah, hapless is the watering-place (whither they are) led.

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

९९. और यहाँ भी लानत उन के साथ लग गई और 'क़ियामत' के दिन भी। क्या ही बुरा पुरस्कार है जो मिला !

99. A curse is made to follow them in the world and on the Day of Resurrection. Hapless is the gift (that will be) given (them).

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

१००. ये कुछ बस्तियों के वृत्तान्त हैं जो हम तुम से बयान करते हैं। इन में कोई तो खड़ी है और किसी की फ़स्ल कट चुकी है[४२]।

100. That is (something) of the tidings of the townships* (which were destroyed of old). We relate it unto thee (Muhammad). Some of them are standing and some (already) reaped.

ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

१०१. और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म किया; जब तेरे 'रब' का हुक्म आ गया तो उन के 'इलाह' (देवी-देवता आदि) जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे उन के कुछ काम न आये; और उन्हों ने विनाश के अतिरिक्त और कुछ न दिया।

101. We wronged them not, but they did wrong themselves; and their gods on whom they call beside Allah availed them naught when came thy Lord's command; they added to them naught save ruin.

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

१०२. और तेरे 'रब' की पकड़ ऐसी ही होती है जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्सन्देह उस की पकड़ दुःख देने वाली, और सख्त है।

102. Even thus is the grasp of thy Lord when he graspeth the townships while they are doing wrong. Lo! His grasp is painful, very strong.

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

१०३. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी है उस व्यक्ति के लिए जो 'आखिरत' की यातना से डरे। यह एक दिन होगा जब सारे लोग इकट्ठा होंगे, और यह ऐसा दिन होगा जिसे सब देखेंगे[४३]।

103. Lo! herein verily there is potent for those who fear the doom of the Hereafter. That is a day unto which mankind will be gathered, and that is a day that will be witnessed.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

४१. फ़िरऔन के सरदार।

४२. अर्थात् कोई बिल्कुल ही तहस-नहस हो चुकी है।

४३. मानव-जाति का इतिहास केवल विभिन्न घटनाओं का वृत्तान्त नहीं है; बल्कि हज़ारों वर्ष के इतिहास में जातियों और गरोहों का उन्नति और उन के पतन में जो नियम और क्रम दिखाई देता है; और इस उन्नति और पतन में जिस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से कुछ नैतिक कारणों का पता चलता है; और इस के अतिरिक्त नीति-पथ से गिरने वाली जातियों का जो भयंकर परिणाम होता रहा है इस से भली-भाँति यह बात समझी जा सकती है कि यह दुनिया केवल प्राकृतिक नियमों के बल पर नहीं चल रही है; बल्कि इस के पीछे कोई नैतिक नियम और कोई महान् उद्देश्य काम कर रहा है। इस संसार का निश्चय ही कोई सृष्टिकर्ता और संचालक है; और निश्चय ही एक दिन दुनिया का कोई अन्तिम और वास्तविक परिणाम सामने आने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४. और हम उसे केवल थोड़े नियत समय के लिए टाल रहे हैं।

104. And We defer it only as a term already reckoned.

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ١٠٤

१०५. जिस दिन वह आयेगा तो बिना उस की (अल्लाह की) अनुज्ञा के कोई बात न करेगा; फिर कोई उन में अभागा होगा, और कोई भाग्यवान्।

105. On the day when it cometh no soul will speak except by His permission; some among them will be wretched, (others) glad.

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ١٠٥

१०६. तो जो अभागे होंगे वे आग में होंगे; जहाँ उन के लिए साँस खींचना और फिर फुंकार मारना होगा,

106. As for those who will be wretched (on that day) they will be in the Fire; sighing and wailing will be their portion therein,

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا
زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ١٠٦

१०७. वे सदैव उसी में रहेंगे जब तक आकाश और धरती स्थिर हैं[४४], हाँ यदि तेरा 'रब' ही चाहे[४५] तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तेरा 'रब' जो चाहे कर डाले।

107. Abiding there so long as the heavens and the earth endure save for that which thy Lord willeth. Lo! thy Lord is Doer of what He will.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ
اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا
يُرِيْدُ ١٠٧

१०८. और रहे वे लोग जो भाग्यवान् होंगे तो वे 'जन्नत' में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक कि आकाश और धरती स्थिर हैं; हाँ, यदि तेरा 'रब ही चाहे तो दूसरी बात है: एक देन है जिस का सिलसिला कभी न टूटेगा।

108. And as for those who will be glad (that day) they will be in the Garden, abiding there so long as the heavens and the earth endure save for that which thy Lord willeth: a gift unfailing.

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ١٠٨

१०९. तो जिस चीज़ को ये पूजते रहे हैं उस की ओर से तुझे कोई सन्देह न हो। ये तो बस उसी तरह पूजा किये जा रहे हैं जिस तरह पहले इन के पूर्वज पूजते रहे हैं। और निश्चय ही हम इन्हें इन का हिस्सा बिना किसी कमी के पूरा-पूरा देने वाले हैं।

109. So be not thou in doubt concerning that which these (folk) worship. They worship only as their fathers worshipped aforetime. Lo! We shall pay them their whole due unabated.

فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰۤؤُلَآءِ ؕ
مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ
مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ
غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ١٠٩ ع

११०. और हम ने मूसा को भी 'किताब' दी थी, तो उस में भी विभेद किया गया था; यदि तेरे 'रब' की ओर से एक बात पहले ही से निश्चय न हो चुकी होती, तो इन के बीच फ़ैसला कर दिया गया होता, निश्चय ही ये लोग उस की ओर से दुविधा एवं विकलताजनक सन्देह में पड़े हुये हैं[४६]।

110. And We verily gave unto Moses the Scripture and there was strife thereupon; and had it not been for a Word that had already gone forth from thy Lord, the case would have been judged between them, and lo! they are in grave doubt concerning it.

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ
وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ١١٠

४४. "जब तक आकाश और धरती स्थिर है;" यह मुहावरा है; मतलब यह है कि उन्हें सदा के लिए 'जहन्नम' में झोंक दिया जायेगा। और यदि आकाश और धरती से आकाश और धरती ही समझा जाये तो मानना पड़ेगा कि यहाँ "आकाश और धरती" से अभिप्रेत परलोक के आकाश और धरती हैं जो सदैव स्थिर रहेंगे; क्योंकि क़ुरआन के बयान से मालूम होता है कि वर्त्तमान धरती और आकाश 'क़ियामत' के दिन बदल डाले जायेंगे। दे०सूरा इबराहीम आयत ४८।

४५. उसे तो पूरा अधिकार है, वह चाहे तो 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को हमेशा की यातना न दे बल्कि कुछ समय के बाद उन्हें 'जहन्नम' से निकाल ले; परन्तु वह ऐसा नहीं करेगा जैसा कि उस ने अपनी किताब में हमें इस से सूचित कर दिया है।

४६. दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ४५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११. और निश्चय ही उन सब को तेरा 'रब' उन के कर्मों का भरपूर बदला दे कर रहेगा। जो कुछ भी ये करते हैं निस्सन्देह वह उस की खबर रखता है।

111. And lo! unto each thy Lord will verily repay his works in full. Lo! He is Informed of what they do.

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

११२. तो सीधे मार्ग पर जमे रहो जैसा कि तुझे हुक्म हुआ है, और वे लोग भी जो 'तौबा' कर के तेरे साथ हो गये हैं और हद से आगे न बढ़ना। जो कुछ तुम करते हो निश्चय ही वह उस पर निगाह रखता है।

112. So tread thou the straight path as thou art commanded, and those who turn (unto Allah) with thee, and transgress not. Lo! He is Seer of what ye do.

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

११३. और उन लोगों की ओर न झुकना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है नहीं तो ('जहन्नम' की) आग तुम्हें आ लगेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र न होगा, फिर तुम्हें कोई सहायता न मिलेगी।

113. And incline not toward those who do wrong lest the Fire touch you, and ye have no protecting friends against Allah and afterward ye would not be helped.

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ﴿١١٣﴾

११४. और 'नमाज़' क़ायम करो, दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में[४७]। वास्तव में नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं। यह याद रखने वालों के लिए एक याददिहानी है।

114. Establish worship at the two ends of the day and in some watches of the night. Lo! good deeds annul ill deeds. This is a reminder for the mindful.

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ ﴿١١٤﴾

११५. और 'सब्र' करो कि निस्सन्देह अल्लाह उत्तमकारों का बदला अकारथ नहीं करता।

115. And have patience. (O Muhammad) for lo! Allah loseth not wages of the good.

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

११६. फिर तुम से पहले की जातियों में ऐसे भले लोग क्यों न हुये जो लोगों को धरती में बिगाड़ फैलाने से रोकते उन थोड़े से व्यक्तियों के सिवा जिन को उन में से हम ने बचा लिया! ज़ालिम लोग उस सुख-सामग्री के पीछे लगे जो उन्हें दी गई थी और ये अपराधी ही रहे।

116. If only there had been among the generations before you men possessing a remnant (of good sense) to warn (their people) from corruption in the earth, as did a few of those whom We saved from them! The wrong-doers followed that by which they were made sapless, and were guilty.

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُو بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

११७. और यह नहीं होने का कि तेरा 'रब' बस्तियों को नाहक़ विनष्ट कर दे जब कि वहाँ के लोग सुधरने वाले हों।

117. In truth thy Lord destroyed not the townships tyranously while folk were doing right.

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

११८. और यदि तेरा 'रब' चाहता, तो निश्चय ही सारे लोगों को एक गरोह बना देता, परन्तु अब तो वे सदैव विभेद करते रहेंगे,[४८]

118. And if thy Lord had willed, He verily would have made mankind one nation, yet they cease not differing.

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

४७. इस में पाँचों नमाज़ें आ गई। दे० सूरा ता० हा० आयत ३०।
४८. अर्थात वे अब विभिन्न मार्गों पर ही चलते रहेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११९. सिवाय उस के जिस पर तेरा 'रब' दया करे; और इसी के लिए उस ने उन्हें पैदा किया है[४९]। और तेरे 'रब' की बात पूरी हो कर रही (उस ने कहा था) कि मैं 'जहन्नम' को 'जिन्नों' और मनुष्यों सब से भर दूंगा[५०]।

119. Save him on whom thy Lord hath mercy; and for that He did create them. And the Word of thy Lord hath been fulfilled: Verily I shall fill hell with the jinn and mankind together.

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

१२०. और 'रसूलों' के क़िस्सों (वृत्तान्तों) में हर वह किस्सा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उस के द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं। और उस में तुम्हारे पास हक़ पहुँचा और उपदेश और याद-दिहानी 'ईमान' वालों के लिए।

120. And all that We relate unto thee of the story of the messengers is in order that thereby We may make firm thy heart. And herein hath come unto thee the Truth and an exhortion and a reminder for believers.

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१. और उन लोगों से जो 'ईमान' नहीं लाते कह दो : तुम अपनी जगह कर्म करते रहो। हम भी कर्म कर रहे हैं।

121. And say unto those who believe not: Act according to your power. Lo! we (too) are acting.

وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

१२२. और प्रतीक्षा करो ! हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

122. And wait! Lo! we (too) are waiting.

وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३. आकाशों और धरती की छिपी हुई चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं,[५१] और सारा मामला उसी की ओर पलटता है। तो (हे 'नबी' !) तू उसी की 'इबादत' (बन्दगी) कर और उसी पर भरोसा रख। जो कुछ तुम लोग करते हो तेरा 'रब' उस से बेख़बर नहीं है।

123. And Allah's is the Invisible of the heavens and the earth, and unto Him the whole matter will be returned. So worship Him and put thy trust in Him. Lo! thy Lord is not unaware of what ye (mortals) do.

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

---

४९. उन्हें इसी लिए पैदा किया गया है कि वे स्वतन्त्र रक्खे जायें। यह लोगों की अपनी इच्छा पर है कि चाहें तो परस्पर विभेद कर के विभिन्न मार्गों में भटकते फिरें; और चाहें तो सत्य धर्म को—जो सनातन से एक ही रहा है—ग्रहण कर के लोक-परलोक दोनों में अपने को सफल बनायें।

५०. यह बात अल्लाह ने हज़रत आदम अ० की सृष्टि के अवसर पर 'इबलीस' को सम्बोधित करते हुये कही थी। दे० सूरा साद० आयत ७१-८५। यहाँ 'जिन्नों' और मनुष्यों से अभिप्रेत केवल 'शैतान' और शैतानों के अनुयायी लोग हैं।

५१. अर्थात आकाशों और धरती में जो कुछ छिपा हुआ (Invisible) है वह सब अल्लाह के अधिकार-क्षेत्र में है; और उसे सब का ज्ञान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२–यूसुफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में हज़रत यूसुफ़ अ०[1] का जीवन-वृत्तान्त (life story) बयान हुआ है; इसीलिए इस का नाम यूसुफ़ रक्खा गया है। सूरा के प्रारम्भिक भाग विशेष रूप से आरम्भ की तीन आयतों से पता चलता है कि हज़रत यूसुफ़ अ० के जीवन-वृत्तान्त के वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य क्या है। वास्तव में यह केवल एक क़िस्सा-कहानी नहीं है, बल्कि हज़रत यूसुफ़ अ० के क़िस्से के रूप में नबी सल्ल० के भविष्य के बारे में एक भविष्यवाणी है। और इस के साथ ही उन लोगों के लिए एक बड़ी चेतावनी भी है जो आप (सल्ल०) के विरुद्ध जोड़-तोड़ और साज़िशें कर रहे थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' हूद की तरह इस सूरा के बारे में भी यही अनुमान है कि यह मक्का में उतरने वाली अन्तिम 'सूरतों' में से है। अनुमान है कि यह सूरा हिजरत (मक्का छोड़ने) से दो-डेढ़ वर्ष पहले उतरी होगी। यह सूरा उस समय की होगी जब 'क़ुरैश' का विरोध हद से आगे बढ़ चुका था। उसी ज़माने में मक्का के कुछ 'काफ़िरों' ने नबी सल्ल० से यह सवाल किया कि 'बनी इसराईल' मिस्र क्यों गये? यह प्रश्न उन्हों ने आप की परीक्षा लेने के लिए 'यहूदियों' के इशारे से ही किया होगा। अरब के लोगों को इस क़िस्से का कोई ज्ञान न था। वे समझते थे कि आप (सल्ल०) इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ रहेंगे; और हम, लोगों से यह कह सकेंगे कि आप अपने 'नबी' होने का झूठा दावा करते हैं। यदि आप नबी होते, तो आप (सल्ल०) हमारे प्रश्न का अवश्य उत्तर दे सकते। परन्तु नतीजा बिल्कुल इस के खिलाफ़ निकला; अल्लाह ने सूरा यूसुफ़ उतार कर आप (सल्ल०) को इस क़िस्से का पूरा-पूरा ज्ञान करा दिया[2]।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरा हूद में मक्का वालों के लिए डरावा है; और सूरा यूसुफ़ नबी सल्ल० के लिए विजय की शुभ-सूचना है। दोनों सूरतों में जो सम्पर्क है वह बिल्कुल प्रत्यक्ष है।

'सब्र' और 'तक़्वा' (ईश-भय) से काम लेने वालों के लिए विजय की शुभ-सूचना' यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है[3]।

वार्तायें (Subject-matter)

कहने को तो इस सूरा में हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा बयान हुआ है; परन्तु 'क़ुरआन' ने इस क़िस्से को केवल एक कहानी या ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं प्रस्तुत किया है; बल्कि क़ुरआन इस क़िस्से के द्वारा लोगों को सच्चाई का आमन्त्रण देता है। इस सूरा से यह बात खुल कर सामने आती है कि आज हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस धर्म की ओर लोगों को बुला रहे हैं वही वास्तव में हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० का धर्म भी रहा है।

१. हज़रत यूसुफ़ अ० हज़रत याक़ूब अ० के बेटे थे। हज़रत याक़ूब अ० हज़रत इसहाक़ के बेटे और हज़रत इबराहीम अ० के पोते थे। हज़रत याक़ूब अ० का निवास-स्थान फ़लस्तीन (Palestine) में हिबरून नामक घाटी में था, यही वह स्थान है जहाँ हज़रत इसहाक़ अ० और उन से पहले हज़रत इबराहीम अ० रहा करते थे। इस के अतिरिक्त कुछ ज़मीन हज़रत याक़ूब की 'सिक्किम' में भी थी।

२. हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा 'बाइबिल' और 'तलमूद' (Talmud) में भी सविस्तार बयान हुआ है परन्तु क़ुरआन का बयान उन से बहुत हद तक भिन्न और एक 'नबी' के जीवन-चरित्र के अनुकूल है। क़िस्से की महत्वपूर्ण बातों में इन तीनों किताबों के बयान में कोई विभेद नहीं पाया जाता।

३. दे० आयत ९०-९१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस सूरा से हमें इस का भी ज्ञान होता है कि साधारण लोगों की अपेक्षा ईश-भक्तों और विशेष रूप से अल्लाह के 'नबियों' का चरित्र कितना महान् और पवित्र होता है। स्वार्थपरता और अहंकार नाममात्र को भी उन में नहीं पाया जाता।

इस सूरा से इस वास्तविक तथ्य का भी परिचय प्राप्त होता है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है वह हो कर ही रहता है; कोई भी उसे रोक नहीं सकता। ऐसा होता है कि आदमी अल्लाह के फ़ैसले के विरुद्ध अपनी सोची-समझी स्कीम के अन्तर्गत एक काम करता है और समझता है कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो जायेंगे; परन्तु जब परिणाम सामने आता है तो मालूम होता है कि उस ने जो कुछ किया वास्तव में वह अपनी स्कीम के प्रतिकूल और अल्लाह की स्कीम के अनुकूल था। और उस के अपने हिस्से में सिवाय रुसवाई, पछतावा और अफ़सोस के और कुछ भी न आ सका। यदि मनुष्य इस बात को भली-भाँति समझ ले कि सफलता और विफलता दोनों अल्लाह के हाथ में है, तो वह कभी भी अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन नहीं कर सकता।

प्रस्तुत सूरा के अध्ययन से यह बात भी ख़ुल कर हमारे सामनें आ जाती है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० सुनी-सुनाई बातें नहीं बयान करते; बल्कि आप (सल्ल०) जो कुछ पेश करते हैं, अल्लाह की ओर से पेश करते हैं, और जो कुछ बयान करते हैं 'वह्य' के द्वारा बयान करते हैं।

इस सूरा में हज़रत यूसुफ़ अ० और उन के भाइयों का जो किस्सा बयान हुआ है वह पूर्ण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्ल० और 'क़ुरैश' के मामले पर चस्पाँ होता है। यह सूरा उतार कर अल्लाह ने 'क़ुरैश' के लोगों को सचेत किया है कि तुम अपने भाई (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के साथ जो व्यवहार कर रहे हो वह वही है जो यूसुफ़ अ० के साथ उन के भाइयों ने किया था। जिस प्रकार यूसुफ़ अ० के भाइयों को अन्त में यूसुफ़ अ० के क़दमों में आना पड़ा; उसी तरह तुम भी एक दिन अपने उसी भाई से दया की भिक्षा माँगोगे जिस की दुश्मनी आज तुम्हें अन्धा किये दे रही है। हज़रत यूसुफ़ अ० के वृत्तान्त में 'क़ुरैश' के लिए बड़ी शिक्षा थी; परन्तु उन्हों ने उस से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की; इस का परिणाम यह हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अ० का वृत्तान्त आरम्भ से अन्त तक पूर्ण रूप से उन पर चस्पाँ हो कर रहा। हज़रत यूसुफ़ अ० को उंन के भाइयों ने बड़ी निर्दयता के साथ कुवें में फेंका था.परन्तु अल्लाह ने उन्हें मिस्र में अधिकारी पुरुष बना दिया। और वह समय आया कि उन के भाई विवशता की दशा में उन के सामने खड़े थे और कह रहे थे, "हम पर सदक़ा कीजिए, अल्लाह सदक़ा करने वालों को अच्छा बदला देता है।" ठीक इसी तरह 'क़ुरैश' वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मक्का छोड़ने पर विवश किया और आप (सल्ल०) मदीना को ओर 'हिजरत' कर गये, तो अल्लाह ने आप (सल्ल०) को वह राज-सत्ता और अधिकार प्रदान किया कि मक्का विजय होने के अवसर पर हम देखते हैं कि 'क़ुरैश' विवशता की हालत में आप सल्ल० के सामनें खड़े हैं। शर्म और लज्जा से आँखें भूमि की ओर झुकी हुई हैं; और वे अपने अपराधों की क्षमा की आशा किये हुये हैं। जिस प्रकार हज़रत यूसुफ़ अ० ने अपने भाइयों को क्षमा कर दिया था उसी तरह आप सल्ल० ने भी अपने भाइयों को क्षमा कर दिया। इस अवसर पर हज़रत यूसुफ़ अ० की तरह आप (सल्ल०) ने यही कहा : आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं (तुम्हें हम ने क्षमा किया)।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' यूसुफ

(मक्का में उतरी -- 'आयतें' १११)

JOSEPH
Revealed at Mecca

سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَّاِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّاثْنَتَا عَشَرَ رُكُوْعًا

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. अलिफ़० लाम० रा०[१]। ये खुली हुई[२] 'किताब' की 'आयतें' हैं।

1. Alif. Lam. Ra. These are verses of the Scripture that maketh plain.

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ①

२. हम ने इसे अरबी में, 'क़ुरआन' के रूप में, उतारा है ताकि तुम समझ सको (और फिर तुम्हारे द्वारा दूसरे लोग समझ सकें)।

2. Lo! We have revealed it, a Lecture in Arabic, that ye may understand.

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ②

३. इस क़ुरआन को तुम्हारी ओर 'वह्य' कर के हम तुम्हारे सामने उत्तम ढंग से बयान करते हैं, इस से पहले तो तुम बिल्कुल बे-ख़बर थे।

3. We narrate unto thee (Muhammad) the best of narratives in that We have inspired in thee this Qur'an though aforetime thou wast of the heedless.

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ③

४. जब ऐसा हुआ कि यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा : हे पिता ! मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चाँद स्वप्न में देखे हैं, उन सब को देखता हूँ कि वे मुझे 'सजदा' कर रहे हैं।

4. When Joseph said unto his father: O my father! Lo! I saw in a dream eleven planets and the sun and the moon, I saw them prostrating themselves unto me.

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ④

५. उस ने कहा : मेरे बेटे ! अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न बयान करना, नहीं तो वे तेरे हक़ में कोई चाल चलेंगे[३]। निश्चय ही 'शैतान' मनुष्य का खुला हुआ शत्रु है।

5. He said: O my dear son! Tell not thy brethren of thy vision, lest they plot against thee. Lo! Satan is for man an open foe.

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ⑤

६. और ऐसा ही होगा तेरा 'रब' तुझे चुन लेगा और तुझे बातों की तह तक पहुँचने की सीख देगा, और तुझ पर और याक़ूब के घराने पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इस से पहले इस को तेरे पूर्वज इबराहीम और इसहाक़ पर पूरी कर चुका है। निस्सन्देह तेरा 'रब' जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

6. Thus thy Lord will prefer thee and will teach thee the interpretation of events and will perfect His grace upon thee and upon the family of Jacob as He perfected it upon thy fore-fathers, Abraham and Issac. Lo! thy Lord is Knower, Wise.

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑥

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. अर्थात् ऐसी किताब जो अपना अभिप्राय स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है।
३. यहाँ भाई से संकेत हज़रत यूसुफ़ अ० के उन दस भाइयों की ओर है जो दूसरी माताओं से थे। हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता (हज़रत याक़ूब अ०) जानते थे कि सौतेले भाई यूसुफ़ (अ०) के प्रति अपने मन में ईर्ष्या की भावना रखते हैं; इसी लिए उन्हों ने रोका कि भाइयों से अपने स्वप्न की बात न कहना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाइयों के क़िस्से में इन पूछने वालों[४] के लिए निशानियाँ हैं।

7. Verily in Joseph and his brethren are signs (of Allah's Sovereignty) for the inquiring,

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِلسَّائِلِينَ ⑦

८. जब ऐसा हुआ कि उन्हों ने कहा : यूसुफ़ और उस का भाई[५] हमारे बाप को हम सभी से अधिक प्रिय है,[६] हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। निश्चय ही हमारे पिता खुली ग़लती में पड़े हुये हैं।

8. When they said: Verily Joseph and his brother are dearer to our father than we are, many though we be, Lo! our father is in plain aberration

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ⑧

९. मार डालो यूसुफ़ को या फेंक दो उसे किसी भू-भाग में, कि तुम्हारे बाप का रुख़ केवल तुम्हारी ओर रहे, और हो रहना इस के बाद भले लोग।

9. (One said)! Kill Joseph or cast him to some (other) land, so that your father's favour may be all for you, and (that) ye may afterward be righteous folk.

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ⑨

१०. उन में एक बोलने वाला बोल पड़ा : यूसुफ़ को क़त्ल न करो, और यदि तुम कुछ करने वाले ही हो तो उसे किसी गहरे कूप की तह में डाल दो; क़ाफ़िले का कोई व्यक्ति उसे उठा ले जायेगा।

10. One among them said: Kill not Joseph but if ye must be doing, fling him into the depth of the pit; some caravan will find him.

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ⑩

११. बोले : हे हमारे पिता ! क्या बात है कि यूसुफ़ के बारे में हम पर आप भरोसा नहीं करते, हालाँकि हम तो उस का हित चाहने वाले हैं ?

11. They said: O our father! Why wilt thou not trust us with Joseph, when, lo! we are good friends to him?

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ⑪

१२. कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि कुछ चर-चुग और खेल-कूद ले। निश्चय ही हम उस की रक्षा के लिए मौजूद हैं।

12. Send him with us tomorrow that he may enjoy himself and play. And lo! we shall take good care of him.

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ⑫

१३. उस ने कहा : इस बात से तो मुझे दुःख हो रहा है कि तुम उसे ले जाओ, और मैं डरता हूँ कि कहीं तुम उस से ग़ाफ़िल हो जाओ और उसे कोई भेड़िया खा जाये।

13. He said: Lo! in truth it sadens me that ye should take him with you, and I fear lest the wolf devour him while ye are heedless of him.

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ⑬

१४. वे बोले : यदि हमारे एक जत्था के होते हुये उसे भेड़िये ने खा लिया तब तो हम ने सब कुछ गँवा दिया।

14. They said: If the wolf should devour him when we are (so strong) a band, then surely we should have already perished!

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَاسِرُونَ ⑭

४. अर्थात् 'क़ुरैश' वालों के लिए जिन्हों ने यहूदियों के इशारे से नबी सल्ल० से यह प्रश्न किया था कि इबराहीम अ० का वतन तो शाम (Syria) था उन की सन्तान ('बनी इसराईल') मिस्र कैसे पहुँची कि मूसा (अ०) को 'बनी इसराईल' की स्वतन्त्रता के लिए चेष्टा करनी पड़ी।

५. अर्थात् बिन यामीन जो हज़रत यूसुफ़ अ० के सगे भाई थे। दोनों की माँ एक थी।

६. हज़रत यूसुफ़ अ० के छोटे भाई बिन यामीन की पैदाइश के समय उन की माता का देहान्त हो गया था। इसी कारण हज़रत याक़ूब अ० इन दोनों बे-माँ के बच्चों का ज़्यादा ख़्याल रखते थे। इस के अलावा हज़रत यूसुफ़ अ० उन्हें अधिक सुयोग्य और होनहार मालूम होते थे; इस लिए यूसुफ़ अ० से उन का हार्दिक लगाव एक स्वाभाविक बात थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. फिर, जब ये लोग उसे ले गये, और इस बात पर सहमत हो गये कि उसे एक गहरे कूप की तह में डाल दें,[७] तो हम ने उस की ओर 'वह्य' की : (घबराओ नहीं एक समय में) तू इन्हें इन की यह बात जतायेगा और इन्हें कुछ भी ख़बर न होगी।

15. Then, when they led him off, and were of one mind that they should place him in the depth of the pit, We inspired in him: Thou wilt tell them of this deed of theirs when they know (thee) not.

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ
فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ
بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑮

१६. और अँधेरा हो जाने पर वे रोते हुये अपने बाप के पास पहुँचे।

16. And they came weeping to their father in the evening.

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ⑯

१७. कहने लगे : हे हमारे पिता ! हम दौड़ का मुक़ाबला करने में लग गये, और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया, कि इतने में भेड़िये ने उसे खा लिया, आप तो हमारा विश्वास करेंगे नहीं चाहे हम सच्चे ही क्यों न हों।

17. Saying: O our father! We went racing one with another, and left Joseph by our things, and the wolf devoured him, and thou believest not our sayings even when we speak the truth.

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا
يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ
وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ⑰

१८. और वे उस के कुरते पर झूठ-मूठ का ख़ून लगा लाये थे। उस ने कहा : (बात यह नहीं है) बल्कि तुम्हारे जी ने पट्टी पढ़ा कर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है अब श्रीवान सन्तोष है ! जो बात तुम कह रहे हो उस में अल्लाह ही सहायक है।

18. And they came with false blood on his shirt. He said: Nay, but your minds have be-guiled you into something. (My course is) comely patience. And Allah it is whose help is to be sought in that (predicament) which ye describe.

وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ
بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ⑱

१९. और एक क़ाफ़िला आया और उन्हों ने अपने पानी भरने वाले को भेजा। उस ने अपना डोल डाला। वह पुकार उठा : क्या ही ख़ुशी की बात है ! यह तो एक लड़का है। और उन्हों ने उसे माल समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह जानता था जो वे कर रहे थे।

19. And there came a caravan, and they sent their waterdrawer. He let down his pail (into the pit). He said: Good luck! Here is a youth. And they did him as a treasure, and Allah was Aware of what they did.

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ
فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ
وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ⑲

२०. और उन्हों ने उसे कम दाम पर, कुछ दिरहमों के बदले बेच दिया; और उस से उन्हें कोई विशेष लगाव न था[८]।

20. And they sold him for a low price, a number of silver coins; and they attached no value to him.

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ
وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ⑳

२१. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा उस ने अपनी स्त्री से कहा : इसे अच्छी तरह आदर-सत्कार के साथ रखना। बहुत सम्भव है कि यह हमारे काम आये या हम इसे बेटा ही बना लें।

21. And he of Egypt who purchased him said unto his wife: Receive him honourably. Perchance he may prove useful to us or we may adopt him as a son. Thus We estab-

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ
أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ
وَلَدًا وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ

७. बाइबिल से मालूम होता है कि जब हज़रत यूसुफ़ अ० को कुएँ में डाला गया, उस समय उन की आयु केवल १७ वर्ष की थी। बाइबिल के ज्ञाताओं के अनुसन्धान के अनुसार हज़रत यूसुफ़ अ० के स्वप्न देखने और उन के कुएँ में डाले जाने की घटना हज़रत ईसा मसीह अ० से लगभग १८६० वर्ष पूर्व की है।

८. अर्थात् उस से बिल्कुल बे-परवाह और उदासीन थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस तरह हम ने (मिस्र की) धरती में यूसुफ़ को जगह दी और उसे बातों (अथवा मामलों) की तह तक पहुँचने की सीख देने का प्रबन्ध किया। अल्लाह को अपने काम पर पूरा अधिकार है, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

lished Joseph in the land that We might teach him the interpretation of events. And Allah was predominant in his career but most of mankind know not.

وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٢١

२२. और जब वह अपनी प्रौढ़ता (युवावस्था) को प्राप्त हुआ तो हम ने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया[९]। और उत्तमकारों को इसी तरह हम बदला दिया करते हैं।

22. And when he reached his prime We gave him wisdom and knowledge. Thus We reward the good.

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ٢٢

२३. जिस स्त्री के घर में वह रहता था, वह उस पर डोरे डालने लगी। और द्वार बन्द कर के कहने लगी : लो आ जाओ ! उस ने कहा : अल्लाह की पनाह ! मेरे 'रब' ने मुझे अच्छा ठिकाना प्रदान किया है। निश्चय ही ऐसे ज़ालिम कभी सफल नहीं होते।

23. And she, in whose house he was, asked of him an evil act. She bolted the doors and said: Come! He said: I seek refuge in Allah! Lo! he is my Lord, who hath treated me honourably. Wrong-doers never prosper.

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ٢٣

२४. उस ने उस का इरादा कर लिया, और यदि उस के 'रब' की एक दलील'[१०] उस के सामने न आ गई होती तो वह भी उस की ओर बढ़ता। ऐसा हुआ, ताकि हम बुराई और अश्लीलता को उस से दूर रक्खें। निस्सन्देह वह हमारे चुने हुये बन्दों में से था।

24. She verily desired him, and he would have desired her if it had not been that he saw the argument of his lord. Thus it was that We might ward off from him evil and lewdness. Lo! he was of Our chosen slaves.

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَن رَّأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ٢٤

२५. और वे दोनों आगे-पीछे द्वार की ओर भागे, और उस ने यूसुफ़ का कुरता पीछे से फाड़ डाला, दोनों ने द्वार पर उस के पति को मौजूद पाया।

वह बोली : जो कोई तेरी घर वाली के साथ बुरा इरादा करे, उस का दण्ड इस के सिवा और क्या हो सकता है कि उसे क़ैद किया जाये या कोई दु:खदायी दण्ड दिया जाये ?

25. And they raced with one another to the door, and she tore his shirt from behind, and they met her lord and master at the door. She said: What shall be his reward, who wisheth evil to thy folk, save prison or a painful doom?

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَن يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٥

२६. कहा : यही मुझ पर डोरे डाल रही थी। और उस के घर वालों में से एक गवाह ने यह गवाही दी कि यदि उस का कुरता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और वह झूठा है[११]।

26. (Joseph) said: She it was who asked of me an evil act. And a witness of her own folk testified: If his shirt is torn from before, then she speaketh truth and he is of the liars.

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَن نَّفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا إِن كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ٢٦

९. क़ुरआन में ये शब्द साधारण: 'नुबूवत' के लिए प्रयुक्त हुये हैं।

१०. यह प्रमाण वही है जिसे हज़रत यूसुफ़ अ० ने स्त्री के सामने इन शब्दों में पेश किया था : मेरे 'रब' ने मुझे अच्छा स्थान दिया है (मैं ऐसा बुरा कर्म नहीं कर सकता)। निश्चय ही ऐसे ज़ालिम कभी सफल नहीं होते (दे० आयत २३)।

११. इस गवाही का उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. और यदि उस का कुरता पीछे से फटा है तो, यह झूठी है और वह सच्चा है ।

27. And if his shirt is torn from behind, then she hath lied and he is of the truthful.

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ
وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾

२८. फिर जब देखा कि उस का कुरता पीछे से फटा है, तो उस ने कहा : ये तुम स्त्रियों की चाल है। वास्तव में तुम्हारी चाल ग़ज़ब की होती है।[१२]

28. So when he saw his shirt torn from behind, he said: Lo! this is of the guile of you women. Lo! the guile of you is very great.

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ
مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

२९. यूसुफ़ ! इस बात को जाने दे, और तू (हे स्त्री !) अपने गुनाह की माफ़ी माँग । निश्चय ही तू ख़ताकारों में से है ।

29. O Joseph! Turn away from this, and thou (O woman), ask forgiveness for thy sin. Lo! thou art of the sinful.

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ
لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾

३०. और नगर में स्त्रियाँ कहने लगीं कि 'अज़ीज़' की स्त्री अपने नवयुवक दास पर डोरे डालना चाहती है । उस का प्रेम उस के मन में घर कर चुका है । हम तो उसे देखते हैं कि खुली गुमराही में पड़ गई है ।

30. And women in the city said: The ruler's wife is asking of her slave-boy an ill deed. Indeed he has smitten her to the heart with love. We behold her in plain aberration.

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ
تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ
اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

३१. उस ने जब उन की मक्कारी की बात सुनी, तो उन्हें बुला भेजा और उन के लिए तकियादार मजलिस सजाई और हर एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ़ से) कहा : तू उन के सामने निकल आ ! जब स्त्रियों ने उसे देखा तो उसे बड़ा पाया और अपने हाथ काट डाले । और बोल उठीं : धन्य है अल्लाह ! यह मनुष्य नहीं है । यह तो कोई भला 'फ़िरिश्ता' है ।

31. And when she heard of their sly talk she sent to them and prepared for them a cushioned couch (to lie on at the feast) and gave to every one of them a knife and said (to Joseph): Come out unto them! And when they saw him they exalted him and cut their hands, exclaiming: Allah Blameless! This is not a human being. This is no other than some gracious angel.

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ
وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ
اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۫ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ
مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾

३२. (अज़ीज़ की स्त्री ने) कहा : यह वही है जिस के मामले में तुम ने मेरी निन्दा की थी । वास्तव में मैं ने इसे रिझाने का प्रयास किया था, परन्तु यह बच निकला, मैं इस से जो बात कहती हूँ यदि इस नें न मानी तो क़ैद किया जायेगा, और अपमानित होगा ।

32. She said: This is he on whose account ye blamed me, I asked of him an evil act, but he proved continent, but if he do not my behest he verily shall be imprisoned, and verily shall be of those brought low.

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ وَ
لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ
وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ
وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

१२. स्त्री जाति के स्वभाव और चरित्र के बारे में क़ुरआन का यह कोई फ़ैसला नहीं है । यह तो मिस्र के अज़ीज़ का कथन है । उस ने यह बात अपने नगर की स्त्रियों के बारे में कही थी । क़ुरआन ने तो स्त्री और पुरुष दोनों का उल्लेख जहाँ किया है समान रूप से किया है । नैतिकता एवं मान्यता की दृष्टि से क़ुरआन इन दोनों में कोइ भेद नहीं करता; नैतिक और आध्यात्मिक विकास के द्वार दोनों ही के लिए समान रूप से खुले हुये हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३. (यूसुफ़ ने) कहा : मेरे 'रब'! जिस बात की ओर ये लोग मुझे बुला रहे हैं उस से अधिक तो मुझे क़ैद ही पसन्द है, यदि तू ने उन के दाँव-घात से मुझे न बचाया तो उन की ओर झुक जाऊँगा और जाहिलों में[१३] से हो रहूँगा।

33. He said: O my Lord! Prison is more dear than that unto which they urge me, and if Thou fend not off their wiles from me I shall incline unto them and become of the foolish.

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِيٓ
إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ
أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَٰهِلِينَ ﴿٣٣﴾

३४. तो उस के 'रब' ने उस की दुआ क़बूल कर ली और उस से उन के दाँव-घात को दूर रक्खा[१४]। निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

34. So his Lord heard his prayer and fended off their wiles from him. Lo! He is Hearer, Knower.

فَاسْتَجَابَ لَهُۥ رَبُّهُۥ فَصَرَفَ عَنْهُ
كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

३५. फिर उन लोगों को यही सूझा कि उसे एक मुद्दत के लिए क़ैद कर दें यद्यपि वे खुली निशानियाँ देख चुके थे।

35. And it seemed good to them (the men-folk) after they had seen the signs (of his innocence) to imprison him for a time.

ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّنۢ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْءَايَٰتِ
لَيَسْجُنُنَّهُۥ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾ ع

३६. और बन्दीगृह में दो युवक उस के साथ और भी प्रविष्ट हुये। उन में से एक ने (एक दिन) कहा : मैं ने स्वप्न देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा : मैं ने देखा कि अपने सिर पर रोटियाँ लिये हूँ, चिड़ियाँ उसे खा रही हैं। हमें इस का अर्थ बता दीजिए। हमें तो आप उत्तमकारों में से जान पड़ते हैं[१५]।

36. And two young men went to prison with him. One of them said: I dreamed that I was presing wine. The other said: I dreamed that I was carrying upon my head bread whereof the birds were eating. Announce unto us the interpretation, for we see thee of those good (at interpretation)

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ
أَحَدُهُمَآ إِنِّيٓ أَرَىٰنِيٓ أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ
الْءَاخَرُ إِنِّيٓ أَرَىٰنِيٓ أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي
خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا
بِتَأْوِيلِهِۦٓ ۖ إِنَّا نَرَىٰكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾

३७. (यूसुफ़ ने) कहा : जो भोजन तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास नहीं आ पायेगा, मैं उस के आने से पहले ही तुम्हें इस का अर्थ बता दूँगा। यह उन बातों में से है जिन की शिक्षा मुझे मेरे 'रब' ने दी है। मैं ने तो उन लोगों का पन्थ छोड़ दिया जो अल्लाह पर 'ईमान' नहीं रखते और 'आख़िरत' का वे इन्कार करते हैं।

37. He said: The food which ye are given (daily) shall not come unto you but I shall tell you the interpretation ere it cometh unto you. This is of that which my lord hath taught me. Lo! I have forsaken the religion of folk who believe not in Allah and are disbelievers in the Hereafter.

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِۦٓ إِلَّا
نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِۦ قَبْلَ أَن يَأْتِيَكُمَا ۚ
ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّيٓ ۚ إِنِّي
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُم
بِالْءَاخِرَةِ هُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. मैं ने अपने पूर्वज, इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब का पन्थ अपनाया है। हमारे लिए उचित नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का सहभागी ठहरायें यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का अनुग्रह है; परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

38. And I have followed the religion of my fathers, Abraham and Issac and Jacob. It never was for us to attribute aught as partner to Allah. This is of the bounty of Allah unto us (the seed of Abraham) and unto mankind; but most men give not thanks.

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ ءَابَآءِيٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَٰقَ
وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَآ أَن نُّشْرِكَ بِاللَّهِ
مِن شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ مِن فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

३९. हे क़ैदखाने के मेरे दोनों साथियो! क्या अनेक 'रब' अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह, जो प्रभुत्वशाली है?

39. O my two fellow-prisoners! Are divers lords better, or Allah the One, the Almighty?

يَٰصَٰحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ
خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَٰحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

१३. अर्थात् उन लोगों में जो जानते-बूझते अपनी तुच्छ इच्छाओं के वशीभूत हो कर अपने आप को तबाही के गड्ढे में गिरा लेते हैं।
१४ अर्थात् उन स्त्रियों के दाँव-घात से उसे बचा लिया।
१५. वे इस से पहले देख चुके थे कि यूसुफ़ अ० का चरित्र अत्यन्त पवित्र है, दोष यदि है तो स्त्रियों का है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. तुम उस के सिवा जिन की 'इबादत' करते हो वे इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि निरे नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन के लिए कोई सनद नहीं उतारी। हुक्म (शासनाधिकार) तो बस अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया है कि उस के सिवा किसी की 'इबादत' न करो। यही सही और सीधा 'दीन' (धर्म) है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते[१६]!

40. Those whom ye worship besides Him are but names which ye have named, ye and your fathers. Allah hath revealed no sanction for them. The decision rests with Allah only, Who hath commanded you that ye worship none save Him. This is the right religion, but most men know not.

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِۦٓ إِلَّآ أَسْمَآءً
سَمَّيْتُمُوهَآ أَنْتُمْ وَآبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا
لِلّٰهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّآ إِيَّاهُ ۚ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

४१. हे क़ैदखाने के मेरे दोनों साथियो! तुम में से एक तो अपने स्वामी को शराब पिलायेगा; रहा दूसरा, तो उसे सूली पर चढ़ा दिया जायेगा और चिड़ियाँ उस का सिर खायेंगी। उस का फ़ैसला हो चुका जिस के बारे में तुम दोनों मुझ से पूछ रहे थे।

41. O my two fellow-prisoners! As for one of you, he will pour out wine for his lord to drink; and as for the other he will be crucified so that the birds will eat from his head. Thus is the case judged concerning which ye did inquire.

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا
فَيَسْقِيْ رَبَّهُۥ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ
فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّأْسِهِۦ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ
الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾

४२. और उन दोनों में से जिस के बारे में समझा था कि वह रिहा हो जायेगा उस से कहा: अपने स्वामी से मेरी चर्चा करना। परन्तु 'शैतान' ने यह बात भुला दी कि वह अपने स्वामी से चर्चा करता, तो वह[१७] कई वर्ष तक क़ैदखाने ही में रहा।

42. And he said unto him of the twain who he knew would be released: Mention me in the presence of thy lord. But Satan caused him to forget to mention it to his lord so he (Joseph) stayed in prison for some years.

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ أَنَّهُۥ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۖ فَأَنْسٰهُ
الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهِۦ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ
بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

४३. और बादशाह ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुर्बल गायें खा रही हैं, और अनाज की सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे सरदारो! यदि तुम स्वप्न का अर्थ बताते हो तो मेरे स्वप्न का अर्थ मुझे बताओ।

43. And the king said: Lo! I saw in a dream seven fat kine which seven lean were eating, and seven green ears of corn and other (seven) dry. O notables! Expound for me my vision, if ye can interpret dreams.

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّيْٓ أَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ
سُنْبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّأُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۖ يٰٓأَيُّهَا
الْمَلَأُ أَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا
تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

४४. बोले: यह तो उड़ते स्वप्न हैं! और हम ऐसे उड़ते स्वप्नों का अर्थ नहीं जानते।

44. They answered: Jumbled dreams! And we are not knowing in the interpretation of dreams.

قَالُوْٓا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيْلِ
الْأَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

४५. और उन दोनों में से जो रिहा हो गया था, और एक मुद्दत के बाद उसे याद पड़ा, वह बोल उठा: मैं इस का अर्थ आप लोगों को बताता हूँ, मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए।

45. And he of the two who was released, and (now) at length remembered, said: I am going to announce unto you the interpretation, therefore send me forth.

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيْلِهِۦ فَأَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

१६. इस उपदेश का उल्लेख बाइबिल और तलमूद में नहीं मिलता।
१७. अर्थात यूसुफ़।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. उस ने कहा : यूसुफ़ ! हे परम सत्य-निष्ठ ! हमें इस का अर्थ बताइए कि सात मोटी गायों को सात दुर्बल गायें खा रही हैं और सात बालें हरी हैं और सात सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौट कर जाऊँ, कदाचित् वे जान लें[१८] ।

46. (And when he came to Joseph in the prison, he exclaimed); Joseph! O thou truthful one! Expound for us the seven fat kine which seven lean were eating and the seven green ears of corn and other (seven) dry, that I may return unto the people, so that they may know.

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ
بَقَرَٰتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ
وَسَبْعِ سُنۢبُلَٰتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَٰتٍ
لَّعَلِّيٓ أَرْجِعُ إِلَى ٱلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

४७. उस ने कहा : सात वर्ष तक तुम लगातार खेती-बाड़ी करते रहो, तो जो कुछ काटो, उसे उस की बालियों ही में रहने देना, सिवाय थोड़े हिस्से के जिसे तुम खाओ ।

47. He said: Ye shall sow seven years as usual, but that which ye reap, leave it in the ear, all save a little which ye eat.

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا
فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِي سُنۢبُلِهِۦٓ
إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾

४८. फिर इस के बाद सात (वर्ष) बड़े कठिन आयेंगे जो वह सब खा जायेंगे जो पहले से तुम ने उन के लिए इकट्ठा कर रक्खा होगा, बस वही थोड़ा रह जायेगा जो तुम रख छोड़ोगे ।

48. Then after that will come seven hard years which will devour all that ye have prepared for them, save a little of that which ye have stored.

ثُمَّ يَأْتِي مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا
مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

४९. फिर, उस के बाद, एक साल ऐसा आयेगा जिस में लोगों की फ़रियाद सुन ली जायेगी (ईश्वर की दया से उन पर घोर वर्षा होगी) और वे उस में रस निचोड़ेंगे[१९] ।

49. Then, after that will come a year when the people will have plenteous crops and when they will press (wine and oil).

ثُمَّ يَأْتِي مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ
يُغَاثُ ٱلنَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

५०. और (स्वप्न का मतलब सुन कर) बादशाह ने कहा : उसे मेरे पास लाओ । जब दूत उस के पास पहुँचा, तो उस ने कहा : अपने स्वामी के पास लौट जा और उस से पूछ कि उन स्त्रियों का क्या मामला है जिन्हों ने अपने हाथ काट डाले थे । निस्सन्देह मेरा 'रब' उन की मक्कारी को भली-भाँति जानता है ।

50. And the king said: Bring him unto me. And when the messenger came unto him, he (Joseph) said: Return unto thy lord and ask him what was the case of the women who cut their hands. Lo! my lord knoweth their guile.

وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِي بِهِۦ فَلَمَّا
جَآءَهُ ٱلرَّسُولُ قَالَ ٱرْجِعْ إِلَىٰ
رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ ٱلنِّسْوَةِ ٱلَّٰتِي
قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

५१. उस ने पूछा : तुम्हें क्या मामला पेश आया जब तुम ने यूसुफ़ को रिझाना चाहा ? वे बोल उठीं : धन्य है अल्लाह ! हम ने तो उस में कोई बुराई नहीं पाई । 'अज़ीज़'[२०] की स्त्री ने कहा : अब सच्ची बात खुल गई है । वह मैं ही थी जिस ने उसे फ़ुसलाना चाहा था, और निस्सन्देह वह सच्चों में से है ।

51. He (the king) (then sent for those women and) said: What happened when ye asked an evil act of Joseph? They answered: Allah Blameless! We know no evil of him. Said the wife of the ruler: he is surely of the truthful.

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَٰوَدتُّنَّ يُوسُفَ
عَن نَّفْسِهِۦ قُلْنَ حَٰشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ
مِن سُوٓءٍ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ ٱلْـَٰٔنَ
حَصْحَصَ ٱلْحَقُّ أَنَا۠ رَٰوَدتُّهُۥ عَن
نَّفْسِهِۦ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٥١﴾

१८. अर्थात इस तरह कदाचित् वे आप की श्रेष्ठता को जान सकें ।

१९. अकाल दूर हो जायेगा । हर ओर हरियाली छा जायेगी । रसदार फल और तेल वाले बीज खूब पैदा होंगे । अच्छा चारा मिलने से मवेशियों के थन भी दूध से भर जायेंगे ।

२० 'अज़ीज़' का अर्थ होता है प्रमुख अधिकारी व्यक्ति । यह बादशाह की पदवी थी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. (यूसुफ़ ने) कहा : इस से उद्देश्य यह था कि वह (अज़ीज़) जान ले कि मैं ने उस के पीठ पीछे उस के साथ कोई विश्वासघात नहीं किया है, और यह कि अल्लाह विश्वासघात करने वालों की चाल को चलने नहीं देता।

52. (Then Joseph said: I asked for) this, that he (my lord) may know that I betrayed him not in secret, and that surely Allah guideth not the snare of the betrayers.

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّىْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

*५३. मैं यह तो नहीं कहता कि मैं बरी हूँ। जी तो बुराई पर उभारता ही है, यह और बात है कि मेरा 'रब' ही दया करे। निस्सन्देह मेरा 'रब' बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

53. I do not exculpate myself. Lo! the (human) soul enjoineth unto evil, save that whereon my Lord hath mercy. Lo! my Lord is Forgiving, Merciful.

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌ ۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىْ ؕ اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾

५४. और बादशाह ने कहा : उसे मेरे पास ले आओ मैं उसे अपने लिए ख़ास कर लूंगा।
जब उस से बात-चीत की तो उस ने कहा : अब तू हमारे यहाँ बड़ा ही मरतबे वाला और अमानतदार है।

54. And the king said: Bring him unto me that I may attach him to my person. And when he had talked with him he said: Lo! thou art today in our presence established and trusted.

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِىْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾

५५. उस ने कहा : धरती[21] के ख़ज़ाने मुझे सौंप दीजिए[22]। निश्चय ही मैं रक्षक और ज्ञान रखने वाला हूँ।

55. He said: Set me over the storehouses of the land. Lo! I am a skilled custodian.

قَالَ اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

५६. और इस प्रकार हम ने उसे (मिस्र की) धरती में अधिकार प्रदान किया। स्वतन्त्रापूर्वक उस में जहाँ चाहे रहे-सहे। हम जिस पर चाहते हैं अपनी दया करते हैं। और हम उत्तमकारों का बदला कभी अकारथ नहीं करते।

56. Thus gave We power to Joseph in the land. He was the owners of it where he pleased. We reach with Our mercy whom We will. We lose not the reward of the good.

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

५७. और जो लोग 'ईमान' लाये और डरते रहे, उन के लिए 'आख़िरत' का बदला ज़्यादा अच्छा है।

57. And the reward of the Hereafter is better for those who believe and ward off (evil).

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

५८. और (अकाल का समय आया तो) यूसुफ़ के भाई आये फिर उस के पास हाज़िर हुये, तो वह उन्हें पहचान गया परन्तु वे उसे पहचान नहीं रहे थे।

58. And Joseph's brethren came and presented themselves before him, and he knew them but they knew him not.

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

* यहाँ से तेरहवाँ पारा (Part XIII) शुरू होता है।
२१. अर्थात मिस्र देश।
२२. अर्थात हुकूमत की बागडोर मेरे हाथ में दे दीजिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९. जब उस ने उन का सामान तैयार करा दिया तो उन से कहा : बाप की ओर से तुम्हारा जो एक भाई है[२३] उसे मेरे पास लाना। देखते नहीं हो कि मैं पूरी नाप से देता हूँ और मैं एक अच्छा अतिथि-सत्कार करने वाला भी हूँ।

59. And when he provided them with their provision he said: bring unto me a brother of yours from your father. See ye not that I fill up the measure and I am the best of hosts?

ولما جهزهم بجهازهم قال ائتوني
بأخ لكم من أبيكم ألا ترون أني
أوفي الكيل وأنا خير المنزلين ٥٩

६०. यदि तुम उसे मेरे पास न लाये, तो तुम्हारे लिए मेरे पास न तो कोई माप होगी और न तुम मेरे क़रीब फटकने पाओगे।

60. And if ye bring him not unto me, then there shall be no measure for you with me, nor shall ye draw near.

فإن لم تأتوني به فلا كيل لكم
عندي ولا تقربون ٦٠

६१. उन्हों ने कहा : हम उस के लिए उस के बाप को बहला-फुसला कर तैयार करेंगे और हम को तो यह काम करना ही है।

61. They said: We will try to win him from his father: that we will surely do.

قالوا سنراود عنه أباه وإنا
لفاعلون ٦١

६२. और उस ने अपने नवयुवक सेवकों से कहा : इन का माल (जिस के बदले में अनाज लिया है) इन के सामान ही में रख दो, जब ये अपने घर की ओर लौटेंगे तो कदाचित् ये उसे पहचान जायें, कदाचित् ये फिर पलटें।

62. He said unto his young men: Place their merchandise in their saddlebags, so that they may know it when they go back to their folk, and so will come again.

وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم
في رحالهم لعلهم يعرفونها
إذا انقلبوا إلى أهلهم لعلهم
يرجعون ٦٢

६३. जब वे अपने बाप के पास लौट कर गये तो कहा : हे हमारे पिता ! अब तो अनाज की माप हमारे लिए बन्द कर दी गई है, इस लिए आप हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम तौलवा लायें; निश्चय ही हम उस की रक्षा के लिए मौजूद हैं।

63. So when they went back to their father they said: O our father! The measure is denied us, so send with us our brother that we may obtain the measure, surely we will guard him well.

فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع
منا الكيل فأرسل معنا أخانا نكتل
وإنا له لحافظون ٦٣

६४. उस ने कहा : क्या मैं इस के मामले में तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इस से पहले इस के भाई के मामले में तुम पर भरोसा कर चुका हूँ ? अल्लाह ही अच्छा रक्षक है, और वह सब दयावानों से बढ़ कर दयावान है।

64. He said: Can I entrust him to you save as I entrusted his brother to you aforetime? Allah is better at guarding, and He is the Most Merciful of those who show mercy.

قال هل آمنكم عليه إلا كما
أمنتكم على أخيه من قبل فالله
خير حافظا وهو أرحم الراحمين ٦٤

६५. और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो देखा कि उन का माल उन्हें लौटा दिया गया है। बोले : हे हमारे पिता ! हमें और क्या चाहिये ? यह हमारा माल भी हमें लौटा दिया गया है। अब हम अपने घर वालों के लिए रसद लायेंगे, और अपने भाई की रक्षा करेंगे, और एक ऊँट का बोझ और अधिक लेंगे। यह माप सहज है।

65. And when they opened their belongings they discovered that their merchandise had been returned to them. They said: O our father! What (more) can we ask? Here is our merchandise returned to us. We shall get provision for our folk and guard our brother, and we shall have the extra measure of a camel (load). This (that we bring now) is a light measure.

ولما فتحوا متاعهم وجدوا بضاعتهم
ردت إليهم قالوا يا أبانا ما نبغي هذه
بضاعتنا ردت إلينا ونمير أهلنا و
نحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ذلك
كيل يسير ٦٥

२३. यह संकेत बिन यामीन की ओर है जो दूसरी माँ से थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६६. उस ने कहा : मैं उसे तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता जब तक कि तुम अल्लाह के नाम से मुझे पक्का वचन न दे दो कि उसे मेरे पास अवश्य ले आओगे, हाँ यदि कहीं तुम घेर लिये जाओ तो दूसरी बात है।

जब उसे उन्हों ने अपना वचन दे दिया तो उस ने कहा : हम जो कुछ कह रहे हैं इस पर अल्लाह निगहबान है।

66. He said: I will not send him with you till ye give me an undertaking in the name of Allah that ye will bring him back to me, unless ye are surrounded. And when they gave him their undertaking he said: Allah is the Warden over what we say.

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ
مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن
يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ
اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

६७. और उसने कहा : मेरे बच्चो! (मिस्र पहुँच कर) एक ही दरवाज़े से प्रवेश न करना;[२४] बल्कि विभिन्न दरवाज़ों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें अल्लाह के मुकाबले में किसी चीज़ से बचा नहीं सकता। हुक्म तो अल्लाह का चलता है। और उसी पर मेरा भरोसा है, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।

67. And he said: O my sons! Go not in by one gate; go in by different gates. I can naught avail you as against Allah. Lo! the decision rests with Allah only. In him do I put my trust, and in Him let all the trusting put their trust.

وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ
وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي
عَنكُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

६८. जब उन्हों ने (नगर में) प्रवेश किया, जैसे उन के पिता ने उन्हें हुक्म दिया था, तो यह चीज़ अल्लाह के मुक़ाबले में कुछ भी उन के काम आने वाली न थी; बस याक़ूब के जी की एक इच्छा थी जिसे उस ने पूरी कर ली; निश्चय ही वह ज्ञान वाला था। इस लिए कि हम ने उसे ज्ञान दिया था; परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

68. And when they entered in the manner which their father had enjoined, it would have naught availed them as against Allah; it was but a need of Jacob's soul which he thus satisfied: and lo! he was a lord of knowledge because We had taught him, but most of mankind know not.

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم
مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ
إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ
وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ
ع أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

६९. और ये लोग यूसुफ़ के पास हाज़िर हुये, तो उस ने अपने भाई (बिन यामीन) को अपने पास ठहराया, और कहा : निश्चय ही मैं तेरा भाई हूँ, तो जो कुछ ये लोग करते रहे हैं उस से जी न तोड़।

69. And When they went in before Joseph, he took his brother unto himself, saying: Lo! I, even I, am thy brother, therefore sorrow not for what they did.

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ
أَخَاهُ ۖ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

७०. और जब उन का सामान तैयार करा दिया, तो अपने भाई की खुरजी में पानी पीने का बरतन रख दिया, और फिर पुकारने वाले ने पुकार कर कहा : हे क़ाफ़िले वालो! तुम लोग निश्चय ही चोर हो!

70. And when he provided them with their provision, he put the drinking-cup in his brother's saddlebag, and then a crier cried: O camel-riders! Ye are surely thieves!

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ
فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا
الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿٧٠﴾

७१. वे उन की ओर पलटते हुए बोले : तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है?

71. They cried, coming toward them: What is it ye have lost?

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِم مَّاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾

२४. शायद उन्हों ने यह बात इस लिए कही कि एक ही फाटक से नगर में दाखिल होने पर लोगों को यह भय होगा कि यह जत्था अकाल के समय लूट-मार के लिए आया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. बोले : बादशाह का पैमाना हमें नहीं मिल रहा है, जो व्यक्ति उसे ला दे उसे एक ऊँट का बोझ (अनाज इनाम में) मिलेगा, और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।

72. They said: We have lost the king's cup, and he who bringeth it shall have a camelload, and I (said Joseph) am answerable for it.

قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء
به حمل بعير وانا به زعيم ٧٢

७३. वे बोले : अल्लाह की क़सम, तुम्हें मालूम है कि हम इस लिए नहीं आये हैं कि देश में बिगाड़ पैदा करें, और न हम चोर हैं।

73. They said: By Allah, well ye know we came not to do evil in the land, and are no thieves.

قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد
في الارض وما كنا سارقين ٧٣

७४. उन्हों ने कहा : यदि तुम झूठे निकले, तो उस (चोर) की सज़ा क्या है?

74. They said: And what shall be the penalty for it, if ye prove liars?

قالوا فما جزاؤه ان كنتم كاذبين ٧٤

७५. वे बोले : उस की सज़ा! जिस की खुरजी में वह निकले वही उस का बदला! हम ज़ालिमों को इसी तरह दण्ड देते हैं।

75. They said: The penalty for it! He in whose bag (the cup) is found, he is the penalty for it. Thus we requite wrongdoers.

قالوا جزاؤه من وجد في رحله فهو
جزاؤه كذلك نجزي الظالمين ٧٥

७६. फिर उस के भाई की खुरजी से पहले उन की खुरजियों से (तलाश करना) शुरू किया, फिर उस के भाई (बिन यामीन) की खुरजी से उसे निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए उपाय किया। वह बादशाह के क़ानून से अपने भाई को हासिल नहीं कर सकता था यह और बात है कि अल्लाह ऐसा चाहता। हम जिस के चाहते हैं दरजे ऊँचे कर देते हैं, और एक जानने वाला ऐसा भी है जो हर जानने वाले से उच्च है।

76. Then he (Joseph) began the search with their bags before his brother's bag, then he produced it from his brother's bag. Thus did We contrive for Joseph. He could not have taken his brother according to the king's law unless Allah willed. We raise by grades (of mercy) whom We will, and over every lord of knowledge there is one more knowing.

فبدا باوعيتهم قبل وعاء اخيه ثم
استخرجها من وعاء اخيه كذلك كدنا
ليوسف ما كان لياخذ اخاه في دين
الملك الا ان يشاء الله نرفع درجت
من نشاء وفوق كل ذي علم عليم ٧٦

७७. उन्हों ने कहा : यदि यह चोरी करता है, तो इस से पहले इस का एक भाई[२५] भी चोरी कर चुका है[२६]।

यूसुफ़ ने इसे अपने जी ही में रक्खा और इसे उन पर ज़ाहिर नहीं किया, कहा : तुम लोग बड़े ही बुरे हो। और जो कुछ तुम बयान करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

77. They said: If he stealeth a brother of his stole before. But Joseph kept it secret in his soul and revealed it not unto them. He said (within himself): Ye are in worse case and Allah knoweth best (the truth of) that which ye allege.

قالوا ان يسرق فقد سرق اخ له
من قبل فاسرها يوسف في نفسه
ولم يبدها لهم قال انتم شر
مكانا والله اعلم بما تصفون ٧٧

७८. उन्हों ने कहा : हे अज़ीज़ (अधिकारी पुरुष)! इस का बाप बहुत बूढ़ा है, इस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए। हम तो देखते हैं कि आप उत्तमकारों में से हैं।

78. They said: O ruler of the land! Lo! he hath an aged father, so take one of us instead of him. Lo! we behold thee of those who do kindness.

قالوا يايها العزيز ان له ابا شيخا
كبيرا فخذ احدنا مكانه انا نرىك
من المحسنين ٧٨

२५. यूसुफ़ (अ०) की ओर संकेत है।
२६. यह बात उन्हों ने अपनी लज्जा दूर करने के लिए गढ़ कर कही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७९. उस ने कहा : इस बात से अल्लाह बचाये कि जिस के पास हम ने अपना माल पाया उसे छोड़ कर किसी और को हम पकड़ लें; यदि हम ऐसा करें तो निश्चय ही हम ज़ालिम होंगे।

79. He said: Allah forbid that we should seize save him with whom we found our property; then truly we should be wrong-doers.

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا
مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

८०. फिर जब वे उस से निराश हो गये, तो विचार-विमर्श के लिए अलग हो बैठे। उन में जो बड़ा था उस ने कहा : क्या तुम नहीं जानते कि किस तरह तुम्हारा बाप तुम से अल्लाह का वचन ले चुका है[२७] और इस से पहले तुम यूसुफ़ के मामले में कोताही कर चुके हो ? तो मैं तो इस जगह से कदापि नहीं जा सकता जबतक कि मेरे पिता मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह ही मेरे हक़ में कोई फ़ैसला न करे। और वह सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।

80. So, when they despaired of (moving) him, they conferred together apart. The eldest of them said: Know ye not how your father took an undertaking from you in Allah's name and how ye failed in the case of Joseph aforetime? Therefore I shall not go forth from the land until my father giveth leave or Allah judgeth for me. He is the Best of Judges.

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ
كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ
اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ
قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِىْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ
اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِىْۤ اَبِىْۤ اَوْ
يَحْكُمَ اللّٰهُ لِىْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾

८१. तुम अपने बाप के पास पलट जाओ और कहो : हे हमारे पिता ! आप के बेटे ने चोरी की है। हम ने तो वही बयान किया जो हमें मालूम हो सका है; हम कोई परोक्ष की निगहबानी करने वाले तो हैं नहीं।

81. Return unto your father and say: O our father! Lo! thy son hath stolen. We testify only to that which we know; we are not guardians of the unseen.

اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ
ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا
عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾

८२. उस बस्ती से पूछ लीजिए जहाँ हम थे, और उस क़ाफ़िले से भी जिस के साथ हो कर हम आये हैं। और निश्चय ही हम सच्चे हैं।

82. Ask the township where we were, and the caravan with which we travelled hitherto. Lo! we speak the truth.

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِىْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِىْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

८३. (बाप से ये बातें कहीं तो) उस ने कहा : नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने तुम्हें पट्टी पढ़ा कर एक बात बना दी है अब श्रीवान सन्तोष है ! बहुत सम्भव है कि अल्लाह उन सब को मुझ से मिला दे। वह तो जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

83. (And when they came unto their father and had spoken thus to him) he said: Nay, but your minds have beguiled you into something. (My course is) comely patience! It may be that Allah will bring them all unto me. Lo! He, only He is the Knower, the Wise.

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ
اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ
يَّاْتِيَنِىْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾

८४. और वह उन लोगों की ओर से मुँह फेर कर बैठ गया और कहने लगा : हाय, यूसुफ़ ! ग़म के मारे उस की दोनों आँखें सफ़ेद पड़ गईं और वह घुटता जा रहा था।

84. And he turned away from them and said: Alas, my grief for Joseph! And his eyes were whitened with the sorrow that he was suppressing.

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾

८५. कहने लगे : अल्लाह की क़सम, आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे यहाँ तक कि अपने-आप को घुला देंगे या प्राण ही दे देंगे।

85 They said: By Allah, thou wilt never cease remembering Joseph till thy health is ruined or thou art of those who perish !

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى
تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

२७. अर्थात् अल्लाह को गवाह ठहरा कर तुम प्रतिज्ञापूर्वक कह चुके हो कि हम बिन यामीन की रक्षा करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८६. उस ने कहा : मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ और अल्लाह की ओर से मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

86. He said: I expose my distress and anguish only unto Allah, and I know from Allah that which ye know not.

قَالَ إِنَّمَآ أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِيٓ إِلَى
ٱللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ٨٦

८७. मेरे बेटो ! जाओ, यूसुफ़ और उस के भाई की टोह लगाओ, और अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। अल्लाह की दयालुता से तो 'काफ़िर' लोग ही निराश होते हैं।

87. Go, O my sons, and ascertain concerning Joseph and his brother, and despair not of the Spirit of Allah. Lo! none despaireth of the Spirit of Allah save disbelieving folk.

يَٰبَنِيَّ ٱذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِن يُوسُفَ
وَأَخِيهِ وَلَا تَاْيْـَٔسُوا مِن رَّوْحِ ٱللَّهِ
إِنَّهُۥ لَا يَاْيْـَٔسُ مِن رَّوْحِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْقَوْمُ
ٱلْكَٰفِرُونَ ٨٧

८८. फिर जब ये लोग उस के पास हाज़िर हुये, तो कहा : हे अज़ीज़ ! हम पर और हमारे घर वालों पर बड़ी तकलीफ़ पहुँची है, और हम कुछ साधारण पूंजी ले कर आये हैं, तो, आप हमें पूरी नाप से दे दीजिए। और हम पर 'सदक़ा' कीजिए। निस्सन्देह अल्लाह 'सदक़ा' करने वालों को बदला देता है।

88. And when they came (again) before him (Joseph) they said: O ruler! Misfortune hath touched us and our folk, and we bring but poor merchandise, so fill for us the measure and be charitable unto us. Lo! Allah will requite the charitable.

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَٰٓأَيُّهَا ٱلْعَزِيزُ
مَسَّنَا وَأَهْلَنَا ٱلضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَٰعَةٍ
مُّزْجَىٰةٍ فَأَوْفِ لَنَا ٱلْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ
عَلَيْنَآ إِنَّ ٱللَّهَ يَجْزِي ٱلْمُتَصَدِّقِينَ ٨٨

८९. उस ने कहा : तुम्हें यह भी मालूम है कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे।

89. He said: Know ye what ye did unto Joseph and his brother in your ignorance?

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ
وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَٰهِلُونَ ٨٩

९०. वे बोल पड़े : क्या यूसुफ़ तुम ही हो ? उस ने कहा : मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह (बिन यामीन) मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान किया। सच तो यह है कि जो कोई डर रखता है और धैर्य्य से काम लेता है, तो अल्लाह ऐसे उत्तमकारों का बदला अकारथ नहीं करता[२८]।

90. They said: Is it indeed thou who art Joseph? He said: I am Joseph and this is my brother. Allah hath shown us favour. Lo! he who wardeth off (evil) and endureth (findeth favour); for verily Allah loseth not the wages of the kindly.

قَالُوٓا أَءِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ قَالَ
أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَآ أَخِي قَدْ مَنَّ
ٱللَّهُ عَلَيْنَآ إِنَّهُۥ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ
فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ٩٠

९१. उन्हों ने कहा : अल्लाह की क़सम, तुम्हें अल्लाह ने हमारे मुक़ाबले मे पसन्द किया, और निश्चय ही ख़ताकार हम ही थे।

91. They said: By Allah, verily Allah hath preferred thee above us, and we were indeed sinful.

قَالُوا تَٱللَّهِ لَقَدْ ءَاثَرَكَ ٱللَّهُ عَلَيْنَا
وَإِن كُنَّا لَخَٰطِـِٔينَ ٩١

९२. उस ने कहा : आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं ! अल्लाह तुम्हें क्षमा करे, वह सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है।

92. He said: Have no fear this day! May Allah forgive you, and He is the Most Merciful of those who show mercy.

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ ٱلْيَوْمَ
يَغْفِرُ ٱللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ
ٱلرَّٰحِمِينَ ٩٢

९३. मेरा यह कुरता ले कर जाओ और इसे मेरे बाप के मुँह पर डाल दो, वे देखने लगेंगे; और अपने सब घर वालों को मेरे पास ले आओ।

93. Go with this shirt of mine and lay it on my father's face, he will become (again) a seer; and come to me with all your folk.

ٱذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ
وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ
أَجْمَعِينَ ٩٣

२८. दे० सूरा हूद आयत ४९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९४. जब क़ाफ़िला चला तो उन के बाप ने कहा : यदि तुम मुझे सठियाया हुआ न समझो तो मुझे तो यूसुफ़ की महक आ रही है।

94. When the caravan departed their father had said: Truly I am conscious of the breath of Joseph, though ye call me dotard.

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾

९५. लोग बोले : अल्लाह की क़सम, आप तो अभी तक अपने पुराने भ्रम में पड़े हुये हैं।

95. (Those around him) said: By Allah, lo! thou art in thine old aberration.

قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾

९६. फिर, जब शुभसूचना देने वाला आया, तो उस ने उस (कुरते) को उस के मुँह पर डाल दिया तो वह देखने लग गया। उस ने कहा : क्या मैं ने तुम से कहा न था कि मैं अल्लाह की ओर से वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ?

96. Then, when the bearer of glad tidings came, he laid it on his face and he became a seer once more. He said: Said I not unto you that I know from Allah that which ye know not?

فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

९७. वे बोले : हे हमारे पिता ! आप हमारे गुनाहों के लिए क्षमा की प्रार्थना कीजिए, हम सचमुच खताकार थे।

97. They said: O our father! Ask forgiveness of our sins for us, for lo! we were sinful.

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾

९८. उस ने कहा : मैं अपने 'रब' से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

98. He said: I shall ask forgiveness for you of my Lord. Lo! He is the Forgiving, the Merciful.

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

९९. फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे, तो उस ने अपने माता-पिता को अपने पास जगह दी, और कहा : मिस्र चलो, अल्लाह ने चाहा ! तो तुम्हारे लिए हर तरह की सलामती है।

99. And when they came in before Joseph, he took his parents unto him, and said: Come into Egypt safe, if Allah will!

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾

१००. और (मिस्र पहुँचे तो) उस ने अपने माता-पिता को सिंहासन पर बिठाया और सब उस के आगे सजदे में गिर पड़े[२९]

उस ने कहा : हे पिता ! यह मेरे पूर्वकालिक स्वप्न का अर्थ है। मेरे 'रब' ने उसे सच्चा कर दिया, उस ने मुझ पर एहसान किया, जब कि मुझे क़ैद से निकाला और आप लोगों को देहात से लाया यद्यपि 'शैतान' ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच उकसाहट डाल दी थी। निस्सन्देह मेरा 'रब' जो चाहता है उस के लिए उत्तम तदबीर करता है। निस्सन्देह वह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

100. And he placed his parents on the dais and they fell down before him prostrate, and he said: O my father! This is the interpretation of my dream of old. My Lord hath made it true, and He hath shown me kindness, since He took me out of the prison and hath brought you from the desert after Satan had made strife between me and my brethren. Lo! my Lord is Tender unto whom He will. He is the Knower, the Wise.

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

२९. सजदा का मूल अर्थ झुकना (To bow) होता है। मतलब यह है कि सब आदर और सम्मान के साथ हज़रत यूसुफ़ अ० के आगे झुक गये। यहाँ सजदा से अभिप्रेत वह सजदा कदापि नहीं है जो केवल एक अल्लाह ही को किया जा सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१. 'रब' ! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे बातों की तह तक पहुँचने की सीख दी —आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया और 'आख़िरत' में मेरा संरक्षक-मित्र है। मुझे इस अवस्था में उठा कि मैं 'मुस्लिम' हूँ, और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।

101. O my Lord! Thou hast given me (something) of sovereignty and hast taught me (something) of the interpretation of events—Creator of the heavens and the earth! Thou are my Protecting Friend in the world and the Hereafter. Make me to die submissive (unto Thee), and join me to the righteous.

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ
بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

१०२. (हे मुहम्मद !) यह (यूसुफ़ का वृत्तान्त) परोक्ष की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारी ओर 'वह्य' कर रहे हैं। तुम उन के पास तो नहीं थे जब उन्होंने[30] छिपी तदबीरें करते हुये एक मन हो कर अपना फ़ैसला किया[31]।

102. This is of the tidings of the Unseen which We inspire in thee (Muhammad). Thou wast not present with them when they fixed their plan and they were scheming.

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

१०३. चाहे तुम कितनी ही क्यों न लालसा करो अधिकतर लोग ऐसे ही हैं कि वे 'ईमान' नहीं ला सकते।

103. And though thou try much, most men will not believe.

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

१०४. तुम उन से इस का कोई बदला भी तो नहीं माँगते। यह तो सारे संसार के लिए एक याददिहानी है।

104. Thou askest them no fee for it. It is naught else than a reminder unto the people.

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ هُوَ
اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

१०५. आकाशों और धरती में कितनी ही निशानियाँ हैं जिन पर से इन का गुज़र होता है और ये उन पर कुछ ध्यान नहीं देते।

105. How many a portent is there in the heavens and the earth which they pass by with face averted!

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

१०६. इन में से अधिकतर लोग अल्लाह पर 'ईमान' भी रखते हैं तो इस तरह कि 'शिर्क' भी करते हैं।

106. And most of them believe not in Allah except that they attribute partners (unto Him).

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ
مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

१०७. क्या ये निश्चिन्त हैं कि अल्लाह की ओर से कोई यातना इन्हें ढक नहीं सकती, या अचानक इन पर वह ('क़ियामत' की) घड़ी नहीं आ सकती जब कि ये बिल्कुल बे-ख़बरी की दशा में पड़े हों ?

107. Deem they themselves secure from the coming on them of a pall of Allah's punishment, or the coming of the Hour suddenly while they are unaware?

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ
اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

१०८. कह दो : मेरा मार्ग तो यह है कि मैं पूरी सूझ-बूझ के साथ अल्लाह की ओर बुलाता हूँ और जो मेरे अनुयायी हैं वे भी—और अल्लाह महिमावान् है—और मैं 'शिर्क' करने वालों में से नहीं हूँ।

108. Say: This is my Way: I call on Allah with sure knowledge, I and whosoever followeth me—Glory be to Allah!—and I am not of the idolaters.

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ
عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

३०. अर्थात् हज़रत यूसुफ़ अ० के भाई।
३१. मतलब यह है कि यदि आप (सल्ल०) 'नबी' न होते तो ये ग़ैब की बातें आप (सल्ल०) को कैसे मालूम हो सकतीं। आप (सल्ल०) के इन बातों के जानने का एक 'वह्य' के अलावा और कोई भी साधन न था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०९. और (हे मुहम्मद !) तुम से पहले भी हम ने जिन लोगों को (पैग़म्बर बना कर) भेजा वे सब बस्तियों ही के रहने वाले पुरुष थे हम उन की ओर 'वह्य' भेजते रहे हैं—फिर क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? जो लोग डरते रहे, उन के लिए 'आख़िरत' का घर ज़्यादा अच्छा है। क्या तुम लोग बुद्धि से काम नहीं लेते—

109. We sent not before thee (any messengers) save men whom We inspired from among the folk of the townships—Have they not travelled in the land and seen the nature of the consequence for those who were before them? And verily the abode of the Hereafter, for those who ward off (evil), is best. Have ye then no sense?—

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِىٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰٓ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ ٱلْـَٔاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾

११०. यहाँ तक कि जब वे 'रसूल' निराश हो गये और समझा कि उन से झूठ बोला गया था, तो अचानक उन्हें हमारी मदद पहुँच गई, फिर जिसे चाहा हम ने बचा लिया। और अपराधी लोगों पर से तो हमारी यातना टाली ही नहीं जा सकती।

110. Till, when the messengers despaired and thought that they were denied, then came unto them Our help, and whom We would was saved. And Our wrath cannot be warded from the guilty.

حَتَّىٰٓ إِذَا ٱسْتَيْـَٔسَ ٱلرُّسُلُ وَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا۟ جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ ٱلْقَوْمِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

१११. इस में सन्देह नहीं कि इन के (वृत्तान्त के) बयान में बुद्धि वालों के लिए शिक्षा-सामग्री है। यह ('क़ुरआन') कोई मन-गढ़न्त बात नहीं है बल्कि उस (कलाम) की तसदीक़ है जो इस से पहले है[३२] और हर चीज़ का विस्तार[३३] और 'ईमान' लाने वाले लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता है।

111. In their history verily there is a lesson for men of understanding. It is no invented story but a confirmation of the existing (Scripture) and a detailed explanation of everything, and a guidance and a mercy for folk who believe.

لَقَدْ كَانَ فِى قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَـٰبِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَـٰكِن تَصْدِيقَ ٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

३२. क़ुरआन से पिछली सभी ईश्वरीय ग्रन्थों की तसदीक़ और पुष्टि होती है। यह किताब पिछली किताबों की दी हुई सूचना के सर्वथा अनुकूल है।

३३. अर्थात् क़ुरआन में वे सभी बातें खोल-खोल कर बयान कर दी गई हैं जो मनुष्यों के मार्ग-दर्शन के लिए आवश्यक थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३–अर-रअ्द
(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' का नाम 'अर-रअ्द' (The thunder) 'आयत' १३ से लिया गया है। 'अर-रअ्द' बादल की गरज को कहते हैं। सूरा का यह नाम केवल चिह्न के रूप में रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा भी सूरा यूनुस, हूद और अल-आराफ़ की तरह मक्का में उतरने वाली अन्तिम सूरतों में से है। यह वह समय है जब कि लोगों को 'इस्लाम' की ओर बुलाते एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी; परन्तु 'काफ़िर' लोग नबी सल्ल० के विरुद्ध तरह-तरह की चालें ही चले जा रहे थे।

वार्त्तायें

'सूरा' का अभिप्राय पहली ही 'आयत' में यह बताया गया है कि मुहम्मद सल्ल० पर जो कुछ उन के 'रब' की ओर से उतारा गया है वह सत्य है। इस सिलसिले में विभिन्न रूप से 'तौहीद' (एकेश्वरवाद), 'आख़िरत', और 'रिसालत' की सत्यता सिद्ध की गई है। प्रस्तुत सूरा में सत्य और असत्य की वास्तविकता और उन के पारस्परिक संघर्ष के उस क़ानून और नियम का उल्लेख किया गया है जिस से दैवी (Divine) न्याय का प्रदर्शन और उस का प्रमाणीकरण होता है।

इस 'सूरा' में 'आयत' ४ तक की वार्त्ताओं का सम्बन्ध 'आख़िरत' से है। हम देखते हैं कि विश्व में हर वस्तु का एक विशेष प्रयोजन और एक मुख्य उद्देश्य है। जब विश्व की प्रत्येक वस्तु और उस के प्रत्येक अंश का कोई-न-कोई प्रयोजन अवश्य होता है तो अखिल विश्व का भी कोई लक्ष्य व उद्देश्य होना चाहिए। 'आख़िरत' को माने बिना हम इस जगत और वर्त्तमान जीवन की कोई वास्तविक व्याख्या नहीं कर सकते। सत्य को संकीर्ण वर्त्तमान में सीमित समझना घोर अन्याय है।

इस सूरा में 'काफ़िरों' के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है और 'ईमान' वालों को जो तरह-तरह के संकटों और यातनाओं को सहते आ रहे थे तसल्ली दी गई है। उन्हें यह भी समझाया गया है कि यदि 'काफ़िर' लोग सत्य का तिरस्कार कर रहे हैं तो इस से घबराना नहीं चाहिए; अल्लाह का सदैव से यह नियम रहा है कि पहले वह 'काफ़िरों' को ढील देता है फिर जब वे अल्लाह की दी हुई मुहलत से फ़ायदा नहीं उठाते और अपने 'कुफ़्' में आगे ही बढ़ते जाते हैं, तो फिर वह समय आ जाता है जब अल्लाह उन्हें पकड़ लेता है फिर कोई उन का सहायक नहीं होता जो उन्हें तबाही से बचा सके।

—·—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अर-रअ्द
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ४३)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. अलिफ़० लाम० मीम० रा०[1]। ये 'किताब' की 'आयतें' हैं। और जो कुछ तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम पर उतारा गया है वह सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग 'ईमान' नहीं लाते।

२. अल्लाह ही है जिस ने आकाशों को बिना सहारे के ऊँचा किया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो, फिर वह राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ,[2] और उस ने सूरज और चांद को काम पर लगाया, हर चीज़ एक नियत समय के लिए चल रही है; वही इस काम का इन्तज़ाम चला रहा है; वह निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करता है, कदाचित् तुम अपने 'रब' से मिलने का विश्वास करो[3]।

३. और वही है जिस ने धरती को फैलाया और उस में जमे हुए पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और हर प्रकार की पैदावार की दो-दो क़िस्में (नर और मादा) बनाईं। वही रात से दिन को छिपा देता है। निस्सन्देह इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं।

४. और धरती में कई तरह के भू-भाग पाये जाते हैं जो परस्पर मिले हुये हैं, अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरों के पेड़ हैं, एकहरे भी और दोहरे[4] भी, सब को एक ही पानी दिया जाता है। फिर भी हम पैदावार में किसी को किसी की अपेक्षा बढ़ा देते हैं। निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं।

THE THUNDER
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Alif. Lam. Mim. Ra. These are verses of the Scripture. That which is revealed unto thee from thy Lord is the Truth, but most of mankind believe not.

2. Allah it is Who raised up the heavens without visible supports, then mounted the Throne, and compelled the sun and the moon to be of service, each runneth unto an appointed term; He ordereth the course; He detaileth the revelations, that haply ye may be certain of the meeting with your Lord.

3. And He it is Who spread out the earth and placed therein firm hills and flowing streams, and of all fruits he placed therein two spouses (male and female). He covereth the night with the day. Lo! herein verily are portents for people who take thought.

4. And in the Earth are neighbouring tracts, vineyards and ploughed lands, and date palms, like and unlike which are watered with one water. And We have made some of them to excel others in fruit. Lo! herein verily are portents for people who have sense.

سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَالَّذِيْٓ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①
اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْ
لِاَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ
تُوْقِنُوْنَ ②
وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ③
وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ
مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ
وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَ
نُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ④

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।
३. अर्थात् शायद तुम्हें इस का विश्वास हो जाये कि तुम्हें एक दिन अपने 'रब' के सामने हाज़िर होना है। जिस अल्लाह ने इतने विशाल विश्व की रचना कर के अपने ज्ञान, दया, शक्ति आदि का परिचय दिया है, उस के बारे में यह समझना कदापि सही न होगा कि उस ने मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वह धरती में कुछ दिनों रह बस ले और फिर सदा के लिए उस का अन्त हो जाये, जीवन का कोई वास्तविक परिणाम उस के सामने न आये।
४. अर्थात् कुछ वृक्ष एक तने वाले होते है और कुछ ऐसे होते हैं जिन की जड़ों से दो या दो से अधिक तने निकलते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. और यदि तुम आश्चर्य करना चाहो, तो आश्चर्य की बात तो उन का यह कहना है : "जब हम मिट्टी हो गये, तो क्या हम नये सिरे से पैदा होंगे ?"

ये वही लोग हैं जिन्हों ने अपने 'रब' के साथ 'कुफ़्र' किया; ये वही लोग हैं जिन की गरदनों में तौक़ पड़े हुये हैं[५] यही आग ('जहन्नम' में जाने) वाले है, जहाँ ये सदा रहेंगे ।

5. And if thou wonderest, then wonderous is their saying: When we are dust, are we then forsooth (to be raised) in a new creation? Such are they who disbelieve in their Lord; such have carcans on their necks; such are rightful owners of the Fire, they will abide therein.

وان تعجب فعجب قولهم ءاذا كنا
ترابا ءانا لفي خلق جديد اولئك
الذين كفروا بربهم واولئك
الاغلل في اعناقهم واولئك اصحب
النار هم فيها خلدون ٥

६. और ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के लिए जल्दी मचा रहे हैं,[६] हालाँकि इन से पहले कितनी यातनाएँ गुज़र चुकी हैं । परन्तु तेरा 'रब' लोगों को उन के ज़ुल्म के होते हुये क्षमा कर देता है, और निस्सन्देह तेरा 'रब' कड़ा दण्ड देने वाला भी है ।

6. And they bid thee hasten on the evil rather than the good, when exemplary punishments have indeed occurred before them. But lo! thy Lord is rich in pardon for mankind despite their wrong, and lo! thy Lord is Strong in punishment.

ويستعجلونك بالسيئة قبل الحسنة
وقد خلت من قبلهم المثلت وان
ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم
وان ربك لشديد العقاب ٦

७. और 'कुफ़्र' करने वाले कहते हैं : इस पर इस के 'रब' की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई[७] ! —तुम तो केवल एक सचेत करने वाले हो, और हर जाति के लिए एक मार्ग बताने वाला हुआ है ।

7. Those who disbelieve say: If only some portent were sent down upon him from his Lord! Thou art a warner only, and for every folk a guide.

ويقول الذين كفروا لولا انزل
عليه اية من ربه انما انت منذر
ولكل قوم هاد ٧

८. किसी भी स्त्री जाति को, जो गर्भ रहता है अल्लाह उसे जानता है और उसे भी जो गर्भाशयों में कमी और बेशी होती है । और उस के यहाँ हर चीज़ एक अन्दाज़े पर है ।

8. Allah knoweth that which every female beareth and that which the wombs absorb and that which they grow. And everything with Him is measured.

الله يعلم ما تحمل كل انثى وما
تغيض الارحام وما تزداد وكل
شيء عنده بمقدار ٨

९. वह जानने वाला है परोक्ष का भी और प्रत्यक्ष का भी, वह महान् और उच्च है ।

9. He is the Knower of the invisible and the visible, the Great, the High Exalted.

علم الغيب والشهادة الكبير المتعال ٩

१०. तुम में से कोई चुपके से बात करे या उच्च स्वर से, कोई रात (के अँधेरे) में छिपा हो या दिन को रास्ते में चल रहा हो उस के लिए सब एक समान है ।

10. Alike of you is he who hideth the saying and he who noiseth it abroad, he who lurketh in the night and he who goeth freely in the daytime.

سواء منكم من اسر القول ومن
جهر به ومن هو مستخف باليل
وسارب بالنهار ١٠

५. अर्थात् ये अपराधियों और क़ैदियों के समान हैं । गुमराही की बेड़ियों में जकड़े हुये हैं । अज्ञान और हठधर्मी के कारण इन्हें इस का अवसर ही नहीं मिलता कि ये धर्म और जीवन की वास्तविक समस्या पर सोच-विचार कर सकें । इस वर्तमान जीवन में यदि ये अज्ञान और वासनाओं के बन्दी बन कर रह गये हैं, तो कल 'क़ियामत' के दिन इन की गरदनों में आग का तौक़ होगा ।

६. अर्थात् इन्हें सँभलने के लिए जो मुहलत दी जा रही है उस से फ़ायदा नहीं उठाते बल्कि इस की जल्दी मचा रहे हैं कि जिस यातना की धमकी इन्हें दी जा रही है वह आ क्यों नहीं जाती ?

७. अर्थात् यह 'नबी' अल्लाह की ओर से चमत्कार क्यों नहीं दिखाता कि हमें विश्वास हो जाये कि यह वास्तव में अल्लाह का भेजा हुआ 'रसूल' है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. उस के (मानव के) आगे और उस के पीछे उस के निरीक्षक ('फ़िरिश्ते') लगे हुये हैं, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा करते हैं। निस्सन्देह अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं अपने-आप को नहीं बदलती: और जब अल्लाह किसी जाति पर बुराई (यातना) का फ़ैसला कर ले, तो फिर वह टल नहीं सकती, और न उस के सिवा ऐसे लोगों का कोई सहायक ही हो सकता है।

11. For him are angels ranged before him and behind him, who guard him by Allah's command. Lo! Allah changeth not the condition of a folk until they (first) change that which is in their hearts; and if Allah willeth misfortune for a folk there is none that can repel it, nor have they a defender beside Him.

لَهُ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ يَحْفَظُونَهُۥ مِنْ أَمْرِ ٱللَّهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِقَوْمٍ سُوٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُۥ ۚ وَمَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَالٍ ﴿١١﴾

१२. वही है जो तुम्हें (बिजली की) चमक दिखाता है, जिस से भय होता है, और आशा भी होती है.[८] वही है जो (पानी से) लदे हुये बादलों को उठाता है।

12. He it is Who showeth you the lightning, a fear and a hope and raiseth the heavy clouds.

هُوَ ٱلَّذِى يُرِيكُمُ ٱلْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنشِئُ ٱلسَّحَابَ ٱلثِّقَالَ ﴿١٢﴾

१३. और (बादलों की) गरज और 'फ़िरिश्ते' उस के भय के कारण उसी की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते हैं[९]। वह कड़कती बिजलियाँ भेजता है फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिरा देता है और लोग हैं कि अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, और वह प्रबल शक्ति वाला है।

13. The thunder hymneth His praise and (so do) the angels for awe of Him. He launcheth the thunderbolts and smiteth with them whom He will while they dispute (in doubt) concerning Allah and He is Mighty in wrath.

وَيُسَبِّحُ ٱلرَّعْدُ بِحَمْدِهِۦ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِۦ وَيُرْسِلُ ٱلصَّوَٰعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَآءُ وَهُمْ يُجَٰدِلُونَ فِى ٱللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ ٱلْمِحَالِ ﴿١٣﴾

१४. उसी को पुकारना हक़ है। जिन्हें ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं वे इन की पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते, (उन्हें पुकारना) बस ऐसा ही है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इस लिए फैलाये कि वह उस के मुँह में पहुँच जाये, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। 'काफ़िरों' की पुकार तो बस ऐसे ही बे-ठिकाने होती है।

14. Unto Him is the real prayer. Those unto whom they pray beside Allah respond to them not at all, save as (is the response to) one who stretcheth forth his hands toward water (asking) that it may come unto his mouth and it will never reach it. The prayer of disbelievers goeth (far) astray.

لَهُۥ دَعْوَةُ ٱلْحَقِّ ۖ وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَىْءٍ إِلَّا كَبَٰسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى ٱلْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَٰلِغِهِۦ ۚ وَمَا دُعَآءُ ٱلْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ ﴿١٤﴾

१५. आकाशों और धरती में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक उसी को 'सजदा' कर रहा है, और उन के साये भी प्रातः काल और सन्ध्या के समयों में[१०]।

15. And unto Allah falleth prostrate whosoever is in the heavens and the earth willingly or unwillingly as do their shadows in the morning and the evening hours.

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَٰلُهُم بِٱلْغُدُوِّ وَٱلْءَاصَالِ ۩ ﴿١٥﴾

८. अर्थात् उस से तुम्हें वर्षा की आशा होने लगती है।

९. दूसरी जगह आया है : "कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उस की प्रशंसा ('हम्द') के साथ (उस की) 'तसबीह' न करती हो, परन्तु तुम उस की 'तसबीह' को समझते नहीं हो" (सूरा 'बनी इसराईल' आयत ४४)। संसार की प्रत्येक वस्तु से अल्लाह के गुणों और उस की महिमा की अभिव्यक्ति होती है। यहाँ की एक-एक चीज़ बता रही है कि उस का बनाने वाला समस्त गुणों और विशेषताओं का मालिक है, वह महान और सर्वश्रेष्ठ है वही समस्त प्रशंसाओं का अधिकारी है। बादलों की गरज इस बात की घोषणा करती है कि जो हवाओं को चलाता, बादलों को उठाता और बिजलियाँ चमकाता है और जो वर्षा कर के भुमि में हरियाली लाता है, वह अपने गुणों में पूर्ण है; उस का ज्ञान और उस की शक्ति अपरम्पार है। ईश्वरत्व में कोई भी उस का शरीक नहीं। वही है जिस की प्रशंसा की जाये और वही है जिस के गुण गाये जायें।

१०. हर चीज़ की छाया का प्रातः समय और सायंकाल पूर्व और पश्चिम की ओर गिरना इस वास्तविकता को साकार करता है कि सारी चीज़ें किसी के नियम-बन्धन में जकड़ी हुई हैं; सब पर उस को पूर्ण अधिकार है यहाँ जो है उसी के आगे झुक रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. इन से कहो : आकाशों और धरती का 'रब' कौन है ?—कहो : अल्लाह ! कहो : तो क्या तुम लोगों ने उस के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें स्वयं अपने लिए भी किसी लाभ और हानि का अधिकार प्राप्त नहीं है ? कहो : क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हुआ करता है, या बराबर होते हैं अँधेरे और उजाला ? या इन्हों ने जिन को अल्लाह का शरीक ठहराया है उन्हों ने भी अल्लाह की तरह कुछ पैदा किया है जिस के कारण पैदाइश का मामला इन के लिए गड्ड-मड्ड हो गया है ?— कहो : हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और वह अकेला और प्रभुत्वशाली है।

16. Say (O Muhammad): Who is Lord of the heavens and the earth? Say: Allah! Say: Take ye then (others) beside Him for protectors which, even for themselves, have neither benefit nor hurt? Say: Is the blind man equal to the seer, or is darkness equal to light? Or assign they unto Allah partners who created the like of His creation so that creation (which they made and His creation) seemed alike to them? Say: Allah is the Creator of all things, and He is the One, the Almighty.

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ
اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّ
لَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ
وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ
خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

१७. उस ने आकाश से पानी बरसाया, फिर नदी-नाले अपनी समाई के अनुसार उसे ले कर बह निकले, फिर बहता हुआ पानी फूले हुये झाग (और मैल-कुचैल) को ऊपर उठा लाया—और उन चीज़ों में भी जिन्हें लोग ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही (मैल-कुचैल का) झाग होता है—इस तरह अल्लाह सत्य और असत्य की मिसाल बयान करता है। फिर जो झाग है वह तो सूख कर विनष्ट हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाने वाली होती है, वह धरती पर ठहर जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है।

17. He sendeth down water from the sky, so that valleys flow according to their measure and the flood beareth (on its surface) swelling foam —from that which they smelt in the fire in order to make ornaments and tools riseth a foam like unto it—thus Allah coineth (the similitude of) the true and the false. Then, as for the foam, it passeth away as scum upon the banks, while, as for that which is of use to mankind, it remaineth in the earth. Thus Allah coineth the similitudes.

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا
رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ
فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿١٧﴾

१८. जिन लोगों ने अपने 'रब' का कहना मान लिया उन के लिए भलाई है; और जिन लोगों ने उस का कहना नहीं माना, यदि उन के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है बल्कि उस के साथ इतना ही और भी हो, तो उसे 'फ़िदया' (मुक्ति-प्रतिदान) के रूप में दे डालें। ये वे लोग हैं जिन का बुरा हिसाब होगा,[११] उन का ठिकाना 'जहन्नम' है, और वह कितना बुरा विश्राम-स्थल है।

18. For those who answered Allah's call is bliss; and for those who answered not His call, if they had all that is in the earth, and therewith the like thereof, they would proffer it as ransom. Such will have a woeful reckoning and their habitation will be hell, a dire abode.

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕؔ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ
مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ
لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ
وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

१९. क्या वह व्यक्ति जो जानता है कि जो कुछ तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम पर उतरा है सत्य है कभी उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है ? ध्यान तो वही देते हैं जो बुद्धि रखने वाले हैं;

19. Is he who knoweth that what is revealed unto thee from thy Lord is the truth like him who is blind? But only men of understanding heed;

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ
رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا
يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ ﴿١٩﴾

११. अर्थात् उन की सख़्त पकड़ होगी, वे छुटकारा नहीं पा सकेंगे, उन से बुरी तरह हिसाब लिया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. (ये ऐसे लोग हैं) जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को[१२] पूरा करते हैं; और इक़रार को तोड़ नहीं डालते;

20. Such as keep the pact of Allah, and break not the covenant;

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾

२१. और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिन नातों को जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें जोड़ते हैं,[१३] अपने 'रब' से डरते हैं, और बुरे हिसाब का उन्हें भय लगा रहता है;

21. Such as unite that which Allah hath commanded should be joined, and fear their Lord and dread a woeful reckoning;

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

२२. और जो अपने 'रब' की प्रसन्नता की चाह में (संकट के समय) धैर्य्य से काम लेते हैं और 'नमाज़' क़ायम करते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से छिपा कर भी, और खुले रूप में भी ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दूर करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए घर (लोक) का परिणाम है,[१४]

22. Such as persevere in seeking their Lord's countenance and are regular in prayer and spend of that which We bestow upon them secretly and openly, and overcome evil with good. Theirs will be the sequel of the (heavenly) Home.

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

२३. सदैव रहने के बाग़ हैं जिन में वे प्रवेश करेंगे, और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तानों में से जो नेक होंगे वे भी (उन के साथ प्रवेश करेंगे)। और 'फ़िरिश्ते' हर दरवाज़े से उन के पास (बधाइ देने) आयेंगे,

23. Gardens of Eden which they enter, along with all who do right of their fathers and their helpmates and their seed. The angels enter unto them from every gate.

جَنَّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ ءَابَائِهِمْ وَأَزْوَٰجِهِمْ وَذُرِّيَّٰتِهِمْ وَالْمَلَٰٓئِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

२४. तुम पर सलाम है यह तुम्हारे 'सब्र' का बदला है—तो क्या ही अच्छा है घर (लोक) का परिणाम!

24. (Saying): Peace be unto you because ye persevered. Ah, passing sweet will be the sequal of the (heavenly) Home.

سَلَٰمٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

२५. और वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को[१५] उसे दृढ़ करने के पश्चात् भङ्ग कर देते हैं, और उन नातों को तोड़ डालते हैं जिन्हें जोड़े रखने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं: ऐसे लोगों पर फिटकार है और उन के लिए बुरा घर है।

25. And those who break the covenant of Allah after ratifying it, and sever that which Allah hath commanded should be joined, and make mischief in the earth: theirs is the curse and theirs the ill abode.

وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَٰقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

२६. अल्लाह जिस की रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है, और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है; और ये लोग सांसारिक जीवन पर फूल रहे हैं, हालाँकि सांसारिक जीवन 'आख़िरत' की अपेक्षा थोड़ी सुख-सामग्री[१६] के सिवा कुछ भी नहीं।

26. Allah enlargeth livelihood for whom He will and straiteneth (it for whom He will); and they rejoice in the life of the world, whereas the life of the world is but brief comfort as compared with the Hereafter.

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا فِي الْءَاخِرَةِ إِلَّا مَتَٰعٌ ﴿٢٦﴾

१२. अर्थात् अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को।

१३. अर्थात् वे सामाजिक और समस्त नागरिकता सम्बन्धी नातों और सम्पर्कों का पूरा आदर करते हैं।

१४. इस में लोक-परलोक दोनों घरों की भलाइयाँ आ गईं।

१५. अर्थात् अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को।

१६. अर्थात् अनित्य लाभ (Passing goods)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. और 'कुफ़्र' करने वाले कहते हैं : इस पर इस के 'रब' की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई ! कहो : अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है,[१७] और वह अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होता है,

27. Those who disbelieve say: If only a portent were sent down upon him from his Lord! Say: Lo! Allah sendeth whom He will astray, and guideth unto Himself all who turn (unto Him).

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾

२८. ऐसे ही लोग हैं वे, जो 'ईमान' लाये और जिन के दिलों को अल्लाह की याद से सन्तोष होता है। सुन लो ! अल्लाह की याद से दिलों को सन्तोष होता है[१८] !

28. Who have believed and whose hearts have rest in the remembrance of Allah. Verily in the remembrance of Allah do hearts find rest!

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

२९. वे जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये : उन के लिए परम आनन्द है, और उन के लौटने की जगह भी उत्तम है।

29. Those who believe and do right: Joy is for them, and bliss (their) journey's end.

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

३०. (हे मुहम्मद !) इसी तरह हम ने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में ('रसूल' बना कर) भेजा है, जिस से पहले कितने ही समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि हम ने तुम्हारी ओर जो 'वह्य' की है उसे इन को सुना दो, जबकि ये 'रहमान'[१९] के साथ 'कुफ़्र' कर रहे हैं। कह दो : वही मेरा 'रब' है; कोई 'इलाह' (पूज्य) उस के सिवा नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मुझे पलट कर जाना है।

30. Thus We sent thee (O Muhammad) unto a nation, before whom other nations have passed away, that thou mayst recite unto them that which We have inspired in thee, while they are disbelievers in the Beneficent. Say: He is my Lord; there is no God save Him. In Him do I put my trust and unto Him is my recourse.

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

१७. गुमराह वह उन लोगों को करता है—जैसा कि आगे आ रहा है— जो उस की ओर रुजू नहीं करते; उस से मुंह मोड़ते हैं। ऐसे लोगों को ज़बरदस्ती मार्ग पर लाने का उस के यहां कोई नियम नहीं है। जो स्वयं भटकना चाहता है उसे वह छोड़ देता है कि जहां तक वह भटकना चाहे भटक ले।

१८. हमारे आत्मनिहित प्रयोजन अल्लाह से ही पूरे हो सकते हैं। वास्तव में हमारा आत्मनिहित प्रयोजन वह स्वयं है। इस लिए आत्म-सन्तोष उसी के स्मरण से मिलता है। ज्ञानी इसे ब्रह्म-विहार कहते हैं। भौतिक आनन्दों की परिधि छोटी और सीमित होती है; मनुष्य की परम सम्पत्ति केवल अल्लाह है। उस के बिना जीवन की परिभाषा अनिश्चित ही रहती है; जीवन और अमृत उसी की छाया में है। (यस्य छायाऽमृतं)।

१९. अर्थात् अल्लाह ने तो—जो 'रहमान' (अत्यन्त कृपाशील) है—अपना 'रसूल' भेजा और 'किताब' उतारी; परन्तु ये लोग हैं कि 'कुफ़्र' पर अड़े हुये हैं। दयावान् ईश्वर का हक़ अदा करना तो अलग रहा इन्हें तो 'रहमान' के नाम ही से चिढ़ है (दे० सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ६०)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. और यदि कोई ऐसा 'क़ुरआन' होता जिस के द्वारा पहाड़ चला दिये जाते, या धरती फट जाती, या उस के द्वारा मुरदे बोलने लगते (तो क्या हो जाता, जब भी ये लोग 'ईमान' न लाते) बल्कि बात यह है कि हर काम का अधिकार अल्लाह ही को प्राप्त है। फिर क्या 'ईमान' लाने वाले (अभी तक इस आशा में हैं कि कोई निशानी उतरेगी और ये 'काफ़िर' लोग 'ईमान' लायेंगे क्या वे यह जान कर) निराश नहीं हो गये कि यदि अल्लाह चाहता, तो सारे ही मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगा देता[२०] ?

और 'कुफ़्र' करने वालों पर तो उन के करतूतों के बदले में, कोई-न-कोई आपत्ति आती ही रहती है या उन के घर के निकट कहीं उतरती है ऐसा ही होता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पूरा हो। निश्चय ही अल्लाह वादे के विरुद्ध नहीं जाता।

31. Had it been possible for a Lecture to cause the mountains to move, or the earth to be torn asunder, or the dead to speak, (this Qur'an would have done so.) Nay, but Allah's is the whole command. Do not those who believe know that, had Allah willed, He could have guided all mankind? As for those who disbelieve disaster ceaseth not to strike them because of what they do, or it dwelleth near their home until the threat of Allah come to pass. Lo! Allah faileth not to keep the tryst.

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ
بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ
بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ
دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِىَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾

३२. और तुम से पहले भी कितने 'रसूलों' की हँसी उड़ाई जा चुकी है, परन्तु मैं ने 'काफ़िरों' को ढील दी। फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरी सज़ा कैसी सख़्त थी!

३३. भला वह जो प्रत्येक जीव की कमाई पर निगाह रखता है[२१] (क्या उस जैसा वह हो सकता है जो ऐसा नहीं) ? फिर भी लोगों ने अल्लाह के सहभागी ठहराये हैं। उन से कहो : तनिक उन के नाम तो लो। या फिर तुम अल्लाह को उस चीज़ की ख़बर दे रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता ? या यों ही एक ऊपरी बात है ? नहीं बल्कि 'कुफ़्र' करने वालों के लिए उन की मक्कारी शोभायमान बना दी गई है और वे मार्ग से रोक दिये गये हैं[२२]। फिर जिसे अल्लाह गुमराही में रक्खे, उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं।

32. And verily messengers (of Allah) were mocked before thee, but long I bore with those who disbelieved. At length I seized them and how (awful) was my punishment!

33. Is He Who is aware of the deserts of every soul (as he who is aware of nothing)? Yet they ascribe unto Allah partners. Say: Name them. Is it that ye would inform Him of something which He knoweth not in the earth? Or is it but a way of speaking? Nay, but their contrivance is made seeming fair for those who disbelieve and they are kept from the right road. He whom Allah sendeth astray, for him there is no guide.

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾
اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ
سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ
بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ
وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

२०. अर्थात् यदि अल्लाह को लोगों से कोई ऐसा चेतनारहित 'ईमान' और 'इस्लाम' अभीष्ट होता जिस में किसी सूझ-बूझ की आवश्यकता नहीं होती तो अल्लाह सारे मनुष्यों को 'ईमान वाला' बना कर ही पैदा कर देता; इस के लिए तो किसी निशानी और चमत्कार की भी कोई आवश्यकता नहीं थी।

२१. दे० सूरा इबराहीम आयत ४२।

२२. अर्थात् उन्हें अपनी मक्कारियाँ ही भली मालूम होती हैं; सीधे मार्ग पर चलने की कामना और सत्य की चाह उन में लेश-मात्र को नहीं रही; और यह सब कुछ उन के 'कुफ़्र' के कारण स्वाभाविक नियम के अनुसार हुआ है। यह अल्लाह की ओर से उनके साथ कोई अन्याय नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. उन के लिए सांसारिक जीवन ही में यातना है, और 'आख़िरत' की यातना तो बहुत ही सख़्त है, और कोई नहीं जो उन्हें अल्लाह (की पकड़) से बचाने वाला हो।

34. For them is torment in the life of the world and verily the doom of the Hereafter is more painful and they have no defender from Allah.

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

३५. डरने वालों के लिए जिस 'जन्नत' का वादा है उस का हाल यह है कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उस के फल सदैव बाक़ी रहने वाले हैं, और उस की छाया भी; यह उन लोगों का परिणाम है जो डर रखने वाले हैं, जबकि 'काफ़िरों' का परिणाम आग है।

35. A similitude of the Garden which is promised unto those who keep their duty (to Allah): Underneath it rivers flow; its food is everlasting, and its shade; this is the reward of those who keep their duty while the reward of disbelievers, is the Fire.

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۚ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۚ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

३६. और जिन लोगों को हम ने 'किताब' दी है[२३] वे उस ('किताब') से प्रसन्न हैं जो हम ने तुम पर उतारी है। और कुछ गरोह ऐसे भी हैं जो उस की कुछ बातों का इन्कार करते हैं।

कह दो : मुझे तो बस यह हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की 'इबादत' करूँ और उस के साथ किसी को साझी न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे लौटना है।

36. Those unto whom We gave the Scripture rejoice in that which is revealed unto thee. And of the clans there are who deny some of it. Say: I am commanded only that I serve Allah and ascribe unto Him no partner. Unto Him I cry, and unto Him is my return.

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۚ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۚ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾

३७. और इसी तरह हमने इस ('क़ुरआन') को अरबी में फ़रमान बना कर, तुम पर उतारा है; और यदि तुम उस ज्ञान के बाद भी जो तुम तक पहुँच चुका है उन की इच्छाओं के पीछे चले, तो अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र होगा और न कोई बचाने वाला।

37. Thus have We revealed it a decisive utterance in Arabic; and if thou shoudst follow their desires after that which hath come unto thee of knowledge, then truly wouldst thou have from Allah no protecting friend nor defender.

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

३८. और तुम से पहले भी हम कितने 'रसूलों' को भेज चुके हैं, उन्हें हम ने पत्नियाँ और बच्चे भी दिये थे,[२४] और किसी भी 'रसूल' को यह अधिकार प्राप्त न था कि वह अल्लाह के आदेश के बिना कोई निशानी ला देता। हर वादा लिखा हुआ है।

38. And verily We sent messengers (to mankind) before thee, and We appointed for them wives and offspring, and it was not (given) to any messenger that he should bring a portent save by Allah's leave. For everything there is a time prescribed.

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

२३. अर्थात् वे 'किताब वाले' (यहूदी या ईसाई) जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' पर ईमान' ले आये।

२४. 'काफ़िर' लोग कहते थे कि यह कैसा 'नबी' है कि नबी भी है और स्त्री और बच्चे भी रखता है; 'नबियों' का भला स्त्री और बच्चों से क्या मतलब ! यहाँ 'काफ़िरों' की इसी बात का उत्तर दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटा देता है, और (जो कुछ चाहता है) क़ायम रखता है,[२५] और उसी के पास मूल किताब है[२६]।

39. Allah effaceth what He will, and establisheth (what He will), and with Him is the source of ordinance.

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ أُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾

४०. और हम (यातना का) जो वादा इन से कर रहे हैं हो सकता है कि उस में से कुछ हम तुम्हें दिखा दें, या तुम्हें उठा लें, तुम्हारे ज़िम्मे तो बस (मेरा सन्देश) पहुँचा देना है, और हमारे ज़िम्मे हिसाब है।

40. Whether we let thee see something of that which We have promised them, or make thee die (before its happening), thine is but conveyance (of the message). Ours the reckoning.

وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

४१. क्या ये देखते नहीं कि हम इस धरती (भू-भाग) को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं[२७]? और अल्लाह फ़ैसला करता है कोई नहीं जो उस के फ़ैसले को टाल सके, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है।

41. See they not how We visit the land, reducing it of its outlaying parts? (When) Allah doometh there is none that can postpone His doom, and He is swift at reckoning.

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِى الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

४२. और इन से पहले जो लोग गुज़रे हैं वे भी चाल चल चुके हैं; परन्तु सब चाल तो अल्लाह ही के हाथ में है। प्रत्येक जीव जो कमाई कर रहा है उसे वह जानता है। जल्दी ही 'काफ़िरों' को ज्ञान हो जायेगा कि घर (लोक) का (अच्छा) परिणाम किस के लिए है[२८]।

42. Those who were before them plotted; but all plotting is Allah's. He knoweth that which each soul earneth. The disbelievers will come to know for whom will be the sequal of the (heavenly) Home.

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

४३. और ये 'कुफ़्' करने वाले कहते हैं: तुम भेजे हुये ('रसूल') नहीं हो। कह दो: मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है और वह जिस के पास 'किताब' का ज्ञान है।

43. They who disbelieve say: Thou art no messenger (of Allah). Say: Allah and whosoever hath true knowledge of the Scripture, is sufficient witness between me and you.

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

———

२५. आप (सल्ल०) के विरोधी लोग कहते थे कि पहले की आई हुइ आसमानी किताबों के होते हुये किसी नवीन ग्रन्थ के उतरने की क्या आवश्यकता थी? यदि पहले की किताबें अपने वास्तविक रूप में शेष नहीं हैं या उन के कुछ आदेश अब मन्सूख़ (निरस्त) हो गये हैं, तो यह बात भी हमारी समझ में आने की नहीं है। अल्लाह अपनी भेजी हुई किताबों की रक्षा क्यों नहीं कर सका? क्या कोई ईश्वरीय किताब भी मन्सूख़ हो सकती है? 'काफ़िरों' की इन्हीं बातों का यहाँ संक्षेप में उत्तर दिया गया है।

२६. अर्थात् वह स्रोत और उद्गम जिस से समस्त ईश्वरीय ग्रन्थों का आविर्भाव हुआ है।

२७. अर्थात् क्या इन्हें दिखाई नहीं देता कि 'इस्लाम' का प्रभाव हर ओर बढ़ता जा रहा है; और इस्लाम के शत्रु का प्रभाव-क्षेत्र चारों ओर से सिमटता ही जा रहा है; इन्हें क्या हो गया है कि ये इस से कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

२८. दे० फुटनोट १४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४–इबराहीम
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में हज़रत इबराहीम अ० की एक विशेष प्रार्थना का उल्लेख किया गया है[1]। सूरा का नाम इसी प्रार्थना से लिया गया है। हज़रत इबराहीम अ० ने यह प्रार्थना उस समय की थी जब उन्हों ने अपने बेटे हज़रत इसमाईल अ० को मक्का की कृषि के अयोग्य घाटी (Uncultivable Valley) में बसाया था। इस महत्वपूर्ण प्रार्थना से इस वर्ग की दूसरी 'सूरतों' की अपेक्षा इस सूरा में एक प्रकार की विशेषता आ गई है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा मक्का में उतरने वाली अन्तिम 'सूरतों' में से है[2]। अनुमान है कि इस के उतरने का समय लगभग वही होगा जो सूरा अर-रअ्द के उतरने का समय है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

'सूरा' का केन्द्रीय विषय 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) है' 'तौहीद' को एक प्रकार के आन्तरिक त्याग और 'हिजरत' की हैसियत से इस सूरा में पेश किया गया है। 'तौहीद' ही वह दिव्य प्रकाश है जिस की ओर बुलाने के लिए अल्लाह ने अपने 'रसूलों' को भेजा। 'तौहीद' का मार्ग ही उस महान् ईश्वर का मार्ग है जो अपार शक्ति का मालिक और समस्त प्रशंसाओं का अधिकारी है।

इस से पहले की सूरतों में 'काफ़िरों' को समझाने-बुझाने का हक़ अदा कर दिया गया था परन्तु फिर भी 'क़ुरैश' अपनी चाल से बाज़ नहीं आये। इस 'सूरा' में उन्हें 'कुफ़्' और इन्कार, के बुरे परिणाम से डराते हुए एक अल्लाह की बन्दगी और भक्ति की ओर बुलाया गया है। प्रस्तुत सूरा अपने बयान की दृष्टि से पिछली सूरा से कहीं ज़्यादा सख़्त है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में लोगों को एकेश्वरवाद (Divine Unity) की ओर बुलाया गया है। और उन लोगों को सख़्त धमकी दी गई है जो नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तुले हुये थे।

प्रस्तुत सूरा में 'नबियों' की 'हिजरत' का उल्लेख किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'हिजरत' की ओर भी इस सूरा में संकेत मिलता है 'नबी' की 'हिजरत' वास्तव में इस बात का पता देती है कि विरोधी लोगों को बहुत जल्द विफलता के दिन देखने पड़ेंगे। 'रसूलों' की हिजरत 'काफ़िरों' के लिए इस बात की धमकी होती है कि यदि वे 'नबी' की पुकार पर कान नहीं धरते, तो बुरे परिणाम से उन्हें कोई नहीं बचा सकता।

१. दे० आयत ३५-४१।
२. 'सूरा' की आयत १३-१४ और ४६ में विशेष रूप से इस ओर संकेत मिलता है।
३. दे० 'सूरा' की अन्तिम आयत जो पूरी सूरा का सारांश है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' इबराहीम
(मक्का में उतरी – 'आयतें' ५२)

ABRAHAM
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ اِبْرٰهِیْمَ مَکِّیَّۃٌ وَّھِیَ اثْنَتَانِ وَّخَمْسُوْنَ اٰیَۃً وَّسَبْعُ رُکُوْعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

१. अलिफ़० लाम० रा०[1]। यह एक 'किताब' है जिसे हम ने तुम्हारी ओर उतारा है ताकि तुम लोगों को उन के 'रब' के दैव-योग से अँधेरों से निकाल कर उजाले की ओर ले आओ, अर्थात् प्रभुत्वशाली और प्रशंसा के अधिकारी के मार्ग की ओर,

1. Alif. Lam. Ra. (This is) a Scripture which We have revealed unto thee (Muhammad) that thereby thou mayst bring forth mankind from darkness unto light, by the permission of their Lord, unto the path of the Mighty the Owner of Praise.

الٓرٰ کِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ
اِلٰی صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ ۙ ①

२. अल्लाह, जिस की सम्पत्ति है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और 'काफ़िरों' के लिए कठोर यातना की खराबी है;

2. Allah, unto Whom belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. And woe unto the disbelievers from an awful doom;

اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی
الْاَرْضِ ؕ وَوَیْلٌ لِّلْکٰفِرِیْنَ مِنْ
عَذَابٍ شَدِیْدِ ۙ ②

३. उन के लिए जिन्हें 'आखिरत' के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन प्रिय है, जो अल्लाह के मार्ग से रोकते और उसे कज करना चाहते हैं: ये लोग परले दरजे की गुमराही में पड़े हुये हैं[2]।

3. Those who love the life of the world more than the Hereafter, and debar (men) from the way of Allah and would have it crooked: such are far astray.

الَّذِیْنَ یَسْتَحِبُّوْنَ الْحَیٰوۃَ الدُّنْیَا
عَلَی الْاٰخِرَۃِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ
اللّٰهِ وَیَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِیْ
ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ ③

४. और हम ने जो भी कोई 'रसूल' भेजा तो उस की अपनी जाति की भाषा के साथ भेजा, ताकि वह उन से खोल-खोल कर बयान करे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है,[3] और जिसे चाहता है मार्ग पर लगा देता है। और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

4. And We never sent a messenger save with the language of his folk, that he might make (the message) clear for them. Then Allah sendeth whom He will astray, and guideth whom He will. He is the Mighty, the Wise.

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ
قَوْمِهٖ لِیُبَیِّنَ لَهُمْ ؕ فَیُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ
یَّشَآءُ وَیَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَهُوَ
الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ④

५. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था, कि अपनी जाति को अँधेरों से निकाल कर उजाले की ओर ला। और उन्हें अल्लाह के दिवस[4] याद दिला। निश्चय ही इस में हर 'सब्र' से काम लेने वाले और कृतज्ञता दिखलाने वाले के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

5. We verily sent Moses with Our revelations, saying: Bring thy people forth from darkness unto light. And remind them of the days of Allah. Lo! therein are revelations for each steadfast, thankful (heart).

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ
قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ۙ وَذَکِّرْهُمْ
بِاَیّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّکُلِّ
صَبَّارٍ شَکُوْرٍ ⑤

१. दे० 'सूरा' अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० आयत १८, २१, २७, २८।
३. दे० आयत २७ और सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट ३५।
४. 'अल्लाह के दिवस' से अभिप्रेत वे ऐतिहासिक दिन हैं जिन में अल्लाह ने पिछले युग की जातियों या व्यक्तियों को उन के कर्मों के अनुसार अच्छा बदला या दण्ड दिया है। दे० सूरा अल-जासिया फ़ुटनोट ६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. और याद करो जब मूसा ने अपनी जाति से कहा : अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो उस ने तुम पर किया है[५] जब उस ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, वे तुम्हें बुरी यातना दे रहे थे, तुम्हारे लड़कों को जब्ह कर डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे; इस में तुम्हारे 'रब' की ओर से बड़ी आज़माइश थी।

6. And (remind them) how Moses said unto his people: Remember Allah's favour unto you when He delivered you from Pharaoh's folk who were afflicting you with dreadful torment, and were slaying your sons and sparing your women; that was a tremendous trial from your Lord.

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ
ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝

७. और याद करो जब तुम्हारे 'रब' ने तुम्हें सूचित कर दिया था कि तुम ने कृतज्ञता दिखलाई तो मैं तुम्हें और अधिक दूंगा; और यदि अकृतज्ञ बने, तो मेरी यातना बहुत सख्त है।

7. And when your Lord proclaimed: If ye give thanks, I will give you more; but if ye are thankless lo! my punishment is dire.

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ
لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ
لَشَدِيْدٌ ۝

८. और मूसा ने कहा : यदि तुम और वे लोग जो धरती में बसते हैं सब मिल कर 'कुफ़्' करने लगो, तो अल्लाह तो अपेक्षारहित और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है।

8. And Moses said: Though ye and all who are in the earth prove thankless, lo! Allah verily is Absolute, Owner of Praise.

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ
فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ۝

९. क्या तुम तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुम से पहले गुज़रे हैं : नूह की 'जाति' और 'आद' और 'समूद' और उन के बाद आने वाले ? जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। उन के 'रसूल' उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आये, तो उन्हों ने अपने हाथ अपने मुँह में दे लिए, और कहने लगे : जो कुछ दे कर तुम्हें भेजा गया है हम तो उसे नहीं मानते, और जिस बात की ओर तुम हमें बुला रहे हो उस के बारे में तो हम बड़े दुविधा एवं विकलताजनक सन्देह में पड़ गये हैं।

9. Hath not the history of those before you reached you; the folk of Noah, and the tribes of Aad and Thamud, and those after them? None save Allah knoweth them. Their messengers came unto them with clear proofs but they thrust their hands into their mouths, and said: Lo! we disbelieve in that wherewith ye have been sent, and lo! we are in grave doubt concerning that to which ye call us.

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڛ وَالَّذِيْنَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ ڔ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۭ
جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا
اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا
بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا
تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝

१०. उन के 'रसूलों' ने कहा : क्या अल्लाह के बारे में सन्देह है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है ? वह तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और तुम्हें एक नियत समय तक मुहलत दे। उन्हों ने कहा : तुम तो बस हमारे जैसे मनुष्य हो, तुम हमें उस से रोकना चाहते हो ज़िसे हमारे पूर्वज पूजते आये हैं। अच्छा तो कोई खुली हुई सनद पेश करो।

10. Their messengers said: Can there be doubt concerning Allah, the Creator of the heavens and the earth? He calleth you that He may forgive you your sins and reprieve you unto an appointed term. They said: Ye are but mortals like us, who would fain turn us away from what our fathers used to worship. Then bring some clear warrant.

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ۭ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۭ
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
اٰبَاۗؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

५. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ११।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. उन के 'रसूलों' ने उन से कहा : हम तो वास्तव में बस तुम्हारे जैसे मनुष्य हैं, परन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है। और हमारे बस में नहीं कि अल्लाह के हुक्म के बिना तुम्हें कोई सनद ला सकें। और 'ईमान वालों' को तो अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए !

11. Their messengers said unto them: We are but mortals like you, but Allah giveth grace unto whom He will of His slaves. It is not ours to bring you a warrant unless by the permission of Allah. In Allah let believers put their trust!

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ
نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ
عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾

१२. और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जब कि उस ने हम पर हमारे मार्ग खोले ? जो तकलीफ़ तुम हमें पहुँचा रहे हो उस पर हम 'सब्र' करेंगे। और भरोसा करने वालों को तो अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए।

12. How should we not put our trust in Allah when He hath shown us our ways? We surely will endure that hurt ye do us. In Allah let the trusting put their trust.

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا
سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ
ع وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾

१३. और 'कुफ़्र' करने वालों ने अपने 'रसूलों' से कहा : हम तुम्हें अपनी धरती से निकाल कर रहेंगे, या तो फिर तुम हमारे पन्थ में लौट आओ। तो उन के 'रब' ने उन की ओर 'वह्य' की कि हम इन ज़ालिमों को विनष्ट कर के रहेंगे,

13. And those who disbelieved said unto their messengers: Verily we will drive you out from our land, unless ye return to our religion. Then their Lord inspired them (saying): Verily We shall destroy the wrong-doers.

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ
فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳﴾

१४. और इन के बाद तुम्हें इस धरती में बसायेंगे। यह उस के लिए है जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरी चेतावनी से डरे।

14. And verily We shall make you to dwell in the land after them. This is for him who feareth My Majesty and feareth My threats.

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ
وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾

१५. और उन्हों ने फ़ैसला चाहा और हर जब्र करने वाला हठी असफल हो कर रहा;

15. And they sought help (from their Lord) and every froward potentate was brought to naught;

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۱۵﴾

१६. उस के आगे 'जहन्नम' है, और उसे कचलहू का पानी पिलाया जायेगा,

16. Hell is before him, and he is made to drink a festering water,

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ
صَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾

१७. जिसे वह घूंट-घूंट कर के पियेगा और सरलतापूर्वक उसे नहीं उतार सकेगा, और मृत्यु उस पर हर ओर से आती होगी परन्तु वह मरेगा नहीं, और उस के आगे एक कठिन यातना होगी।

17. Which he sippeth but hardly swallow, and death cometh unto him from every side while yet he cannot die, and before him is a harsh doom.

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ
وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾

१८. जिन्हों ने अपने 'रब' के साथ 'कुफ़्र' किया उन की मिसाल ऐसी है मानो उन के कर्म राख हैं जिस पर आँधी के दिन ज़ोरों से हवा चले। जो कुछ उन्हों ने कमाया उस में से कुछ भी उन के हाथ न आ सकेगा। यही परले दरजे की पथ-भ्रष्टता है[६] :

18. A similitude of those who disbelieve in their Lord: Their works are as ashes which the wind bloweth hard upon a stormy day. They have no control of aught that they have earned. That is the extreme failure.

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ
كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ
عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى
شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾

६. दे० आयत ३ और सूरा अन-नूर आयत ३९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ, पैदा किया? यदि वह चाहे, तो तुम सब को ले जाये और एक नया जन-समूह ले आये;

19. Hast thou not seen that Allah hath created the heavens and the earth with truth? If He will He can remove you and bring (in) some new creation:

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾

२०. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं[८]।

20. And that is no great matter for Allah.

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾

२१. और ये सब जब अल्लाह के सामने खुल कर आ गये तो कमज़ोर लोग[९] उन लोगों से जो बड़े बने हुये थे कहेंगे : हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम अल्लाह की कुछ यातना हम से दूर कर सकते हो?

वे कहेंगे : यदि अल्लाह हमें मार्ग दिखाता, तो हम तुम्हें भी दिखाते। हम अधीर और व्याकुल हों या सन्तोष से काम लें हमारे लिए दोनों बराबर हैं; हमारे लिए बचने की कोई जगह नहीं।

21. They all come forth unto their Lord. Then those who were despised say unto those who were sconful: We were unto you a following, can ye then avert from us aught of Allah's doom? They say: Had Allah guided us we should have guided you. Whether we rage or patiently endure is (now) all one for us; we have no place of refuge.

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدٰىنَا اللَّهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۖ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ﴿٢١﴾ ع

२२. और जब फ़ैसला हो चुकेगा तब 'शैतान' कहेगा : निस्सन्देह अल्लाह ने तुम से वादा किया था सच्चा वादा और मैं ने भी तुम से वादा किया था, फिर मैं ने तुम से प्रणोल्लंघन किया। और मेरा तुम पर कोई अधिकार न था केवल इतनी बात थी कि मैं ने तुम्हें बुलाया और तुम ने मेरा कहना मान लिया। तो मुझे मलामत न करो, बल्कि अपने आप को मलामत करो न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ, और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। इस से पहले तुम ने जो मुझे सहभागी ठहराया[१०] मैं उस से विरक्त हूँ। निस्सन्देह ऐसे ज़ालिमों के लिए दुःख देने वाली यातना है।

22. And Satan saith, when the matter hath been decided: Lo! Allah promised you a promise of truth; and I promised you, then failed you. And I had no power over you save that I called unto you and ye obeyed me. So blame me not, but blame yourselves. I cannot help you, nor can ye help me. Lo! I disbelieved in that which ye before ascribed to me. Lo! for wrong-doers is painful doom.

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ إِلَّآ أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوٓا أَنْفُسَكُمْ ۖ مَآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ ۗ إِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

२३. और वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये ऐसे बाग़ों में दाखिल किये जायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वे अपने 'रब' की अनुमति से सदैव रहेंगे, वहाँ उन का अभिवादन 'सलाम' होगा।

23. And those who believed and did good works are made to enter Gardens underneath which rivers flow, therein abiding by permission of their Lord, their greeting therein: Peace!

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

७. अर्थात् उन्हें किसी विशेष उद्देश्य और वास्तविक प्रयोजन के अन्तर्गत पैदा किया गया है; इस संसार का निर्माण सत्यानुकूल हुआ है निरर्थक और उद्देश्यरहित इस का निर्माण नहीं है।

८. दे० सूरा फ़ातिर आयत १५-१६।

९. अर्थात् उन में जो दुनिया में कमज़ोर और निर्बल थे।

१०. अर्थात् तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करने के बदले मेरी बात मानते रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने शुभ बात[11] की कैसी उपमा दी है, वह एक शुभ वृक्ष के सदृश है, जिस की जड़ गहरी जमी हुई हो, उस की शाखायें आकाश तक पहुँची हुई हों[12]।

24. Seest thou not how Allah coineth a similitude: A goodly saying, as a goodly tree, its root set firm, its branches reaching into heaven,

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً
طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ
وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

२५. अपने 'रब' की आज्ञा से वह हर समय अपना फल दे रहा हो[13]? अल्लाह ये मिसालें इस लिए बयान करता है ताकि वे ध्यान दें।

25. Giving its fruit at every season by permission of its Lord? Allah coineth the similitudes for mankind in order that they may reflect.

تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

२६. और अशुभ (और अशुद्ध) बात[14] की मिसाल, एक अशुभ वृक्ष की है, जिसे भूमि के ऊपर ही से उखाड़ फेंका जाये, उस के लिए कुछ भी स्थिरता नहीं।

26. And the similitude of a bad saying is as a bad tree, uprooted from upon the earth, possessing no stability.

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ
اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا
مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

२७. 'ईमान' लाने वालों को अल्लाह एक पक्की बात के द्वारा सांसारिक जीवन और 'आख़िरत' में दृढ़ता प्रदान करता है, और ज़ालिमों को अल्लाह भटका देता है[15]। और अल्लाह जो चाहता है करता[16] है।

27. Allah confirmeth those who believe by a firm saying in the life of the world and in the Hereafter and Allah sendeth wrong-doers astray. And Allah doth what He will.

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ
اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾ ع

२८. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को 'कुफ़' से बदल डाला और अपनी जाति को तबाही के घर में झोंक दिया,

28. Hast thou not seen those who gave the grace of Allah in exchange for thanklessness and led their people down to the Abode of Loss.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ
دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

२९. जो 'जहन्नम' है उस में वे प्रवेश करेंगे। और वह कितना बुरा ठिकाना है !

29. (Even to) hell? They are exposed thereto. A hapless end!

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

३०. और उन्हों ने अल्लाह के प्रतिद्वन्दी ठहराये ताकि उस के मार्ग से भटका दें। कह दो : थोड़ा आनन्द ले लो फिर पहुँचना तो तुम्हें आग ('जहन्नम') ही की ओर है।

30. And they set up rivals to Allah that they may mislead (men) from His way. Say: Enjoy life (while ye may) for lo! your journey's end will be the Fire.

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ
سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ
إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

११. ऐसी बात जिस में मौलिक वास्तविकताओं को मान्यता दी गई हो। ऐसी बातें क़ुरआन के दृष्टिकोण से वही हो सकती है जिस में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद), 'रिसालत' और 'आख़िरत' आदि सच्चाइयों को माना गया हो।

१२. अर्थात् धरती से आकाश तक पूरा विश्व उस के सत्य होने का साक्षी हो।

१३. अर्थात् यदि मनुष्य उसी सच्ची और शुभ बात के अन्तर्गत अपना जीवन व्यतीत करे तो उस से अच्छे ही परिणाम निकलते रहेंगे। उस से न केवल यह कि विचार में सुलझाव, स्वभाव में सरलता और आत्मा में पवित्रता आ जायेगी बल्कि मनुष्य के पूरे व्यक्तिगत और व्यावहारिक जीवन में सन्तुलन और सत्यवादिता का प्रदर्शन होने लगेगा।

१४. अर्थात् ऐसी बात जो मौलिक वास्तविकताओं के इन्कार पर आधारित हो, हर वह विचारधारा जो 'नबियों' की शिक्षाओं से टकराती हो चाहे वह नास्तिकता हो या 'शिर्क' हो या और कोई तथ्यहीन कल्पना।

१५. यह वास्तव में उन के ज़ुल्म की सज़ा होती है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए छोड़ देता है कि जितना चाहें भटक लें। उन पर सच्चाई की राह नहीं खोली जाती।

१६. परन्तु उस का कोई भी काम वास्तविक प्रयोजन और उद्देश्य से वंचित नहीं होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. मेरे जो बन्दे 'ईमान' लाये हैं उन से कह दो कि वे 'नमाज़' क़ायम करें और हम ने उन्हें जो कुछ दिया है उस में से, छिपा कर और खुले रूप में खर्च करें, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई सौदा होगा और न कोई मित्रता होगी।

31. Tell My bondmen who believe to establish worship and spend of that which We have given them secretly and publicly, before a day cometh wherein there will be neither traffick nor befriending.

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا
الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ
لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾

३२. वह अल्लाह ही है जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया, और आकाश से पानी बरसाया, फिर उस के द्वारा तुम्हारी रोज़ी के रूप में फल निकाले, और नौका (या जहाज़) को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया कि दरिया में उस के हुक्म से चले, और नदियों को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया;

32. Allah is He Who created the heavens and the earth and causeth water to descend from the sky, thereby producing fruits as food for you, and maketh the ships to be of service unto you that they may run upon the sea at His command, and hath made of service unto you the rivers;

اَللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ
مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ
لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

३३. और सूरज और चाँद को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया कि निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं, और रात और दिन को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया।

33. And maketh the sun and the moon, constant in their courses, to be of service unto you, and hath made of service unto you the night and the day.

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

३४. और तुम्हें वह कुछ दिया जो तुम ने उस से माँगा,[१७] यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन नहीं सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अन्यायी और अकृतज्ञ है।

34. And He giveth you of all ye ask of Him, and if ye would count the bounty of Allah ye cannot reckon it. Lo! man is verily a wrong-doer, an ingrate.

وَآتٰكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِنْ
تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ
الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

३५. और याद करो जब इब्राहीम ने कहा: 'रब'! इस नगर को शान्ति वाला बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को इस से बचा कि मूर्तियों को पूजने लग जायें।

35. And when Abraham said, My Lord! Make safe this territory, and preserve me and my sons from serving idols.

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا
الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ
الْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

३६. 'रब'! इन्हों ने (इन मूर्तियों ने) बहुतेरे लोगों को गुमराह किया है[१८]। तो जो कोई मेरे पीछे चले, वह मेरा है ही। और जो मेरा कहना न माने तो जब भी तू बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[१९]।

36. My Lord! Lo! they have led many of mankind astray. But whoso followeth me, he verily is of me. And whoso disobeyeth me — Still Thou art Forgiving, Merciful.

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِنَ
النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي
وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿٣٦﴾

१७. अर्थात् तुम्हारी स्वाभाविक और प्राकृतिक हर माँग को उस ने पूरा किया। तुम्हारे जीवन के लिए जिन चीज़ों की भी आवश्यकता थी, उस ने वे सब चीज़ें संचित कीं।

१८. अर्थात् बहुत से लोगों की गुमराही का कारण बनीं कि वे अल्लाह को छोड़ कर उन्हीं पर मोहित हो कर रह गये।

१९. हज़रत इबराहीम अ० का हृदय कितना कोमल था, इस का अनुमान उन की इस प्रार्थना से किया जा सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. हमारे 'रब' ! मैं ने एक ऐसी घाटी में जो खेती के योग्य नहीं[२०] अपनी सन्तान का एक हिस्सा तेरे प्रतिष्ठित घर के पास बसा दिया है,[२१] हमारे 'रब' ! ताकि वे 'नमाज़' क़ायम करें; तो तू लोगों के दिलों को उन की ओर झुका दे, और उन्हें पैदावार की रोज़ी प्रदान कर कदाचित् वे कृतज्ञता दिखलायें[२२]।

37. Our Lord! Lo! I have settled some of my posterity in an uncultivable valley near unto Thy holy House, our Lord! that they may establish proper worship; so incline some hearts of men that they may yearn toward them, and provide Thou them with fruits in order that they may be thankful.

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ
غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ
رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً
مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ
مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. हमारे 'रब' ! तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज़ न धरती में छिपी है और न आकाश में।

38. Our Lord! Lo! Thou knowest that which we hide and that which we proclaim. Nothing in the earth or in the heavens is hidden from Allah.

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ
وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾

३९. प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे, इस बुढ़ापे में, इसमाईल और इसहाक दिये ! निस्सन्देह मेरा 'रब' दुआ का सुनने वाला है।

39. Praise be to Allah Who hath given me, in my old age, Ishmael and Issac! Lo! my Lord is indeed the Hearer of Prayer.

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ
إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

४०. रब ! मुझे 'नमाज़' क़ायम रखने वाला बना, और मेरी औलाद को भी; हमारे 'रब' ! और दुआ क़बूल कर ले।

40. My Lord! Make me to establish proper worship, and some of my posterity (also); our Lord! and accept the prayer.

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾

४१. हमारे 'रब' ! मुझे और मेरे माता-पिता को और 'ईमान' वालों को उस दिन क्षमा कर देना जब कि हिसाब क़ायम होगा।

41. Our Lord! Forgive me and my parents and believers on the day when the account is cast.

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

४२. और ये ज़ालिम[२३] जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह को उस से बे ख़बर न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन के लिए टाल रहा है जब कि आँखें फटी-की-फटी रह जायेंगी।

42. Deem not that Allah is unaware of what the wicked do. He but giveth them a respite till a day when eyes will stare (in terror).

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ
الظَّالِمُونَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

४३. अपने सिर उठाये दौड़ते होंगे, इन की निगाहें (ऊपर ही जमी होंगी) इन की ओर लौट न सकेंगी, और इन के दिल उड़े जाते होंगे।

43. As they come hurrying on in fear, their heads upraised, their gaze returning not to them. and their hearts as air.

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا
يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ
هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾

४४. और लोगों को उस दिन से सचेत कर दो जब कि यातना उन्हें आ लेगी, तब ये ज़ुल्म करने वाले कहेंगे : हमारे 'रब' ! हमें थोड़ी सी मुहलत दे दे। हम तेरे बुलावे (आमन्त्रण) को स्वीकार करेंगे और 'रसूलों' के पीछे चलेंगे। (कहा जायेगा) : क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे कि तुम्हारा पतन न होगा !

44. And warn mankind of a day when the doom will come upon them, and those who did wrong will say: Our Lord! Reprieve us for a little while. We will obey Thy call and will follow the messengers. (It will be answered); Did ye not swear before that there would be no end for you?

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا
إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَ
نَتَّبِعِ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ
مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾

२०. अर्थात् मक्का की घाटी में।

२१. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत २६।

२२. इस प्रार्थना का चमत्कार आज भी हम खुली आँखों देख रहे हैं। यह इसी प्रार्थना का नतीजा है कि समस्त अरब और सम्पूर्ण जगत के लोग खिंच कर मक्का पहुँचते हैं; और हर समय हर प्रकार के फल और अनाज और दूसरे खाद्य पदार्थ वहाँ पहुँचते रहते हैं।

२३. दे० आयत २७, ३४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. और तुम उन लोगों की बस्तियों में रह-बस चुके थे जिन्हों ने अपने आप पर ज़ुल्म किया था और तुम पर अच्छी तरह खुल चुका था कि उन के साथ हम ने कैसा मामला किया, और हम ने तुम्हारे लिए बहुत-सी मिसालें बयान की थीं।[२४]

45. And (have ye not) dwelt in the dwellings of those who wronged themselves (of old) and (hath it not) become plain to you how We dealt with them, and made examples for you?

وَسَكَنْتُمْ فِي مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ
وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾

४६. वे अपनी चाल चल चुके हैं, और उन की चाल अल्लाह के पास हैं,[२५] यद्यपि उन की चाल ऐसी थी कि उस से पहाड़ भी टल जायें।

46. Verily they have plotted their plot, and their plot is with Allah though their plot were one whereby the mountains should be moved.

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ
وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾

४७. तो यह न समझना कि अल्लाह अपने 'रसूलों' से किये हुये वादे के विरुद्ध जायेगा। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और बदला लेने वाला है[२६]।

47. So think not that Allah will fail to keep His promise to His messengers. Lo! Allah is Mighty, Able to Requite (the wrong).

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾

४८. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जायेगी, और (इसी तरह) आकाश भी (बदल दिये जायेंगे) और सब-के-सब उस अल्लाह के सामने खुल कर आ जायेंगे जो अकेला और प्रभुत्वशाली है।

48. On the day when the earth will be changed to other than the earth, and the heavens (also will be changed) and they will come forth unto Allah, the One, the Almighty.

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَ
السَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

४९. और तुम अपराधियों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुये हैं।

49. Thou wilt see the pitch, on that day linked together in chains.

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ
فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

५०. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और आग (की अपट) उन के चेहरों पर छा रही होगी,

50. Their raiment of pitch, and the Fire covering their faces.

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

५१. ताकि अल्लाह हर जीव को उस की कमाई का बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

51. That Allah may repay each soul what it hath earned. Lo! Allah is Swift at reckoning.

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ اِنَّ
اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

५२. यह मानव के लिए यथेष्ट सन्देश है और इस लिए भेजा गया है ताकि उन्हें इस के द्वारा सचेत कर दिया जाये और ताकि वे जान लें कि वह केवल अकेला 'इलाह' (पूज्य) है ताकि बुद्धि रखने वाले ध्यान दें।

52. This is a clear message for mankind in order that they may be warned thereby, and that they may know that He is only One God, and that men of understanding may take heed.

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

———

२४. अर्थात् पिछली जातियों अथवा ज़ालिमों की मिसालें दे दे कर भी हम तुम्हें समझा चुके थे कि अल्लाह की अवज्ञा का परिणाम कितना बुरा होता है। दे० आयत २७, ४२।

२५. अर्थात् उसे उन की चाल का पूरा ज्ञान है, और उस का हिसाब वही लेगा। हर चीज़ पर उसी का अधिकार (Control) है।

२६. दे० आयत १३, १४, ४२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५–अल-हिज्र

(परिचय)

नाम (The Title)

'अल-हिज्र' 'समूद' जाति का केन्द्रीय नगर था। इस 'सूरा' में आयत ८० से ८४ तक इस नगर के निवासियों के अपराधों और उन के विनाश का उल्लेख किया गया है; इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अल-हिज्र' रक्खा गया है। 'अल-हिज्र' वालों का परिणाम उन लोगों के लिए एक चेतावनी और डरावा था जो नबी सल्ल० की हत्या करने के यत्न में लगे हुये थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं और उस की वर्णन-शैली से ऐसा लगता है कि इस के उतरने का समय सूरा इबराहीम के अवतीर्ण होने के समय से मिला हुआ है। यह वह समय है जब कि नबी सल्ल० को अल्लाह के 'दीन' की ओर बुलाते हुये एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी परन्तु लोग थे कि उन की ओर से इस का उत्तर निरन्तर 'कुफ़्' इन्कार, हठधर्मी और उपहास ही के रूप में मिल रहा था।

वार्त्तायें

इस 'सूरा' में उन लोगों के लिए डरावा है जो 'रिसालत' को न मानें। यह सूरा अपने बयान में सूरा इबराहीम से कहीं ज़्यादा सख़्त है। 'सूरा' इबराहीम की अपेक्षा इस के बयान में सार्विकता (Generality) भी अधिक पाई जाती है। इस सूरा का सम्पर्क 'मुश्रिक' गरोह और 'किताब वालों,' दोनों से है।

प्रस्तुत 'सूरा' में एक ओर उन 'काफ़िरों' को सख़्त धमकी दी गई है जो नबी सल्ल० की शत्रुता में हद से आगे बढ़े हुये थे। और आप के लाये हुये सन्देश का इन्कार ही नहीं कर रहे थे बल्कि आप (सल्ल०) का उपहास करने से भी बाज़ नहीं आते थे। दूसरी ओर इस 'सूरा' में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को तसल्ली दी गई है। धमकियों और मलामतों के साथ-साथ विरोधी दल को समझाने-बुझाने में भी कोई कमी नहीं की गई है। और यह वह विशेषता है जो हमें पूरे 'क़ुरआन' में दिखाई देती है। वह अवज्ञाकारी लोगों को केवल धमकी नहीं देता बल्कि उन्हें हर प्रकार से समझाने-बुझाने की कोशिश करता है। फिर भी यदि लोग मार्ग पर न आयें तो इस के ज़िम्मेदार वे स्वयं हैं, दूसरा कोई इस का उत्तरदायी नहीं हो सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हिज्र
(मक्का में उतरी – 'आयतें' ९९)

AL-HIJR
Revealed at Mecca

سورة الحجر مكية وهي تسع وتسعون آية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. अलिफ़० लाम० रा०[१] । यह 'किताब' अर्थात् प्रत्यक्ष 'क़ुरआन' की आयतें हैं।

1. Alif. Lam. Ra. These are verses of the Scripture and a plain Reading.

الٓر تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ①

*२. किसी-न-किसी समय 'कुफ़्र' करने वाले कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि 'मुस्लिम' होते।

2. It may be that those who disbelieve wish ardently that they were Muslims.

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ②

३. छोड़ो इन्हें कि ये खायें और मज़े उड़ायें, और आशा इन्हें भुलावे में डाले रहे। इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

3. Let them eat and enjoy life, and let (false) hope beguile them. They will come to know!

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ③

४. और हम ने जिस बस्ती को भी विनष्ट किया है उस के लिए एक निश्चित फ़ैसला था[२]।

4. And We destroyed no township but there was a known decree for it.

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ④

५. कोई गरोह न अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है[३]।

5. No nation can outstrip its term nor can they lag behind.

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ⑤

६. और ये ('काफ़िर' लोग) कहते हैं : हे वह व्यक्ति जिस पर याददिहानी[४] उतरी है, तू अवश्य दीवाना है !

6. And they say: O thou unto whom the Reminder is revealed, lo! thou art indeed a madman!

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ⑥

७. तो यदि तू सच्चा है, तो हमारे सामने 'फ़िरिश्तों' को क्यों नहीं ले आता ?

7. Why bringest thou not angels unto us, if thou art of the truthful?

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑦

८. 'फ़िरिश्तों' को तो हम केवल 'हक़' के साथ उतारते हैं,[५] उस समय उन्हें (लोगों को) मुहलत नहीं दी जाती।

8. We send not down the angels save with the Fact and in that case (the disbelievers) would not be tolerated.

مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ⑧

९. निस्सन्देह यह याददिहानी (क़ुरआन) हम ने उतारी है, और निस्सन्देह हम ही इस के रक्षक हैं।

9. Lo! We, even We, reveal the Reminder, and lo! We verily are its Guardian.

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ⑨

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

* यहाँ से चौदहवाँ पारा (Part XIV) शुरू होता है।

२. अर्थात् उस के सँभलने और काम करने की मुहलत पहले से निश्चित थी।

३. अर्थात् न तो कोई गरोह समय आने से पहले विनष्ट हो सकता है और न उस के विनाश का समय आ जाने के बाद उसे छूट मिल सकती है। दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट ९।

४. अर्थात् क़ुरआन।

५. अर्थात् 'फ़िरिश्तों' को तो अल्लाह केवल उस समय भेजता है जब कि वह किसी गरोह का फ़ैसला चुका देने का निश्चय कर लेता है। इस से पहले परोक्ष की कोई चीज़ प्रत्यक्ष रूप से सामने नहीं लाई जाती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. और हम तुम से पहले कितने ही पिछले गरोहों में 'रसूल' भेज चुके हैं।

10. We verily sent (messengers) before thee among the factions of the men of old.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾

११. और कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन के पास कोई 'रसूल' आया हो और उन्हों ने उस की हँसी न उड़ाई हो।

11. And never came there unto them a messenger but they did mock him.

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾

१२. इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में से उसे (हक़ बात को) गुज़ार देते हैं[६]।

12. Thus do We make it traverse the hearts of the guilty:

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

१३. ये उस पर[७] 'ईमान' नहीं लायेंगे, और पहले लोगों की रीति बीत चुकी है।

13. They believe not therein, though the example of the men of old hath gone before.

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

१४. और यदि हम इन पर आकाश का कोई दरवाज़ा खोल दें और ये दिन-दहाड़े उस में चढ़ने लगें,

14. And even if We opened unto them a Gate of Heaven and they kept mounting through it:

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

१५. फिर भी ये यही कहेंगे : हमारी आँखें धोखा खा रही हैं—बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है।

15. They would say: Our sight is wrong — nay, but we are folk bewitched.

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

१६. और हम ने ही आकाश में बहुत से बुर्ज[८] बनाये, और हम ने उसे देखने वालों के लिए सुसज्जित किया[९]।

16. And verily in the heaven We have set mansions of the stars, and We have beautified it for beholders.

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

१७. और हर फिटकारे हुये 'शैतान' से उस की रक्षा की है,[१०]

17. And We have guarded it from every outcast devil,

وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

६. अर्थात् हक़ बात उन के दिलों में नहीं जमती। यह उन के अपराधी होने का स्वाभाविक परिणाम है।

७. अर्थात् स्मारक अथवा क़ुरआन पर।

८. 'बुर्ज' का मूल अर्थ है प्रदर्शन और प्रकट होना। फिर क़िला, अथवा गढ़, अट्टालिका और मज़बूत भवन आदि के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होने लगा; क्योंकि ये चीज़ें प्रत्यक्ष एवं प्रकट ही होती हैं। प्राचीन नक्षत्र विज्ञान में यह शब्द उन बारह राशियों के लिए प्रयोग हुआ है जिन पर सूर्य के चक्कर काटने के मार्ग का विभाजन किया गया है। अरब के लोग सूर्य की बारह राशियों से परिचित थे। (दे० किताब अल-अनवाऽ, अल-अज़मिना वल-अमकिना आदि। कुछ लोग समझते हैं कि यहाँ बड़े-बड़े प्रकाशमान तारों को 'बुर्ज' कहा गया है; इस विषय में यह विचार भी प्रकट किया गया है कि 'बुर्ज' आकाश के उन क्षेत्रों को कहा गया है जिन्हें अप्रत्यक्ष और मज़बूत सरहदों ने एक दूसरे से अलग कर रक्खा है। उन क्षेत्रों को पार कर के किसी चीज़ का दूसरे क्षेत्र में जाना अत्यन्त कठिन है।

९. अर्थात् हर क्षेत्र में कोई न कोई ऐसा चमकता तारा या ग्रह अवश्य पाया जाता है जो आकाश की शोभा है। यह विश्व कोई भयानक और डरावना लोक नहीं है; अल्लाह ने इसे तुम्हारे लिए अत्यन्त शोभायमान बनाया है।

१०. ऊपरी लोक तक 'शैतानों' की कदापि पहुँच नहीं होती; वे बस केवल एक निश्चित सीमा तक ही पहुँच सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. यह और बात है कि कोई (शैतान) चोरी-छिपे कुछ सुन-गुन ले ले,[११] (वह ऐसा करता है) तो फिर एक प्रत्यक्ष अग्नि-शिखा[१२] उस का पीछा करती है।

18. Save him who stealeth the hearing, and them doth a clear flame pursue.

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ⑱

१९. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में अटल पहाड़ डाल दिये, और उस में हर प्रकार की चीज़ एक अन्दाज़े के साथ उगाई।

19. And the earth have We spread out, and placed therein firm hills, and caused each seemly thing to grow therein.

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ⑲

२०. और उस में तुम्हारी जीविका के सामान संचित किये, (तुम्हारे लिए भी) और उन के लिए भी जिन के रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो।

20. And We have given unto you livelihoods therein, and unto those for whom ye provide not.

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَن لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ⑳

२१. और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों। और हम उस को एक निश्चित अन्दाज़े के साथ ही उतारते हैं[१३]।

21. And there is not a thing but with Us are the stores thereof. And We send it not down save in appointed measure.

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ㉑

२२. और हम वर्षा लाने वाली हवायें (समीर) भेजते हैं, फिर आकाश से पानी बरसाते हैं, और उस से तुम्हें सिंचित करते हैं। और तुम्हारे पास उस का ख़ज़ाना नहीं है।

22. And We send the winds fertilising, and cause water to descend from the sky, and give it you to drink. It is not ye who are the holders of the store thereof.

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ㉒

२३. निस्सन्देह हम ही जीवित करते और मारते हैं, और हम ही वारिस हैं[१४]।

23. Lo! and it is We, even We Who quicken and give death and We are the Inheritor.

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ㉓

११. वे 'शैतान' जो ग़ैब या परोक्ष की ख़बरें हासिल करने का प्रयत्न करते हैं, मनुष्यों की अपेक्षा उन की सृष्टि 'फ़रिश्तों' से अधिक मिलती-जुलती है इस लिए सुन-गुन लेने की कोशिश वे अवश्य करते हैं; परन्तु वास्तव में उन के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता। इन 'शैतानों' की दी हुई खबरों के आधार पर यदि कोई योगी या तान्त्रिक इस का दावा करता है कि उसे परोक्ष का ज्ञान प्राप्त है तो वह झूठा है। उस के पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिस के द्वारा वास्तव में उसे ग़ैब की बातें मालूम हो सकें।

१२. यहाँ मूल ग्रन्थ (Text) में 'शिहाब-मुबीन' शब्द प्रयुक्त हुआ है। सूरा अस-साफ़्फ़ात (आयत : १०) में इस के लिए 'शिहाब-साक़िब' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है अँधेरों को छेदने वाली 'अग्नि-शिखा'। हो सकता है इस का तात्पर्य यही तारों का टूटना या उल्कापात हो जिस का निरीक्षण हम रात्रि के समय करते रहते हैं। दूरदर्शक यन्त्र से देखे जाने वाले टूटते तारे जो विस्तृत गगन से पृथ्वी की ओर गिरते हुये दिखाई देते हैं उन की संख्या का औसत १० खरब प्रतिदिन है। ऊपरी वायुमण्डल में इन की गति लगभग २६ मील प्रति सेकण्ड है; कभी-कभी यह गति ५० मील प्रति सेकण्ड तक भी देखी गई है। टूटने वाले तारे जल कर भस्म हो जाते हैं; मुश्किल ही से कोई ज़मीन तक पहुँच पाता है।

यह भी सम्भव है कि 'शिहाब' से अभिप्रेत किसी और ही प्रकार की अग्नि-शिखायें या किरणें हों जिन का हमें अभी ज्ञान न हो सका हो।

१३. यहाँ हर चीज़ और हर शक्ति के लिए नियत परिणाम और एक निश्चित सीमा है जिस से न तो वह आगे बढ़ सकती है और न घट सकती है यही कारण है कि विश्व में अत्यन्त समता और सन्तुलन पाया जाता है।

१४. अर्थात् तुम्हारे पास कोई चीज़ सदा बाक़ी रहने वाली नहीं है; तुम हमारी दी हुई चीज़ें छोड़ कर दुनिया से कूच करते हो; तुम्हारे पीछे हम ही हैं जो बाक़ी रहने वाले हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं।

24. And verily We know the eager among you and verily We know the laggards.

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

२५. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' उन्हें इकट्ठा करेगा। निस्सन्देह वह तत्त्वदर्शी और जानने वाला है।

25. Lo! thy Lord will gather them together. Lo! He is Wise, Aware.

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

२६. और हम ने मनुष्य को सड़ी काली मिट्टी के सूखे गारे से—जो बजने लगता है—बनाया,[१५]।

26. Verily We created man of potter's clay of black mud altered,

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

२७. और 'जिन्नों' को इस से पहले लू की लपट से पैदा किया।

27. And the Jinn did We create aforetime of essential fire.

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

२८. याद करो जब तुम्हारे 'रब' ने 'फ़िरिश्तों' से कहा : निश्चय ही मैं सड़ी काली मिट्टी के सूखे बजने वाले गारे से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ।

28. And (remember) when thy Lord said unto the angels: Lo! I am creating a mortal out of potter's clay of black mud altered,

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

२९. तो जब मैं उसे नख-शिख से दुरुस्त कर चुकूँ और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूंक दूँ[१६] तो तुम उस के आगे 'सजदे' में गिर जाना।

29. So, when I have made him and have breathed into him of My spirit, do ye fall down, prostrating yourselves unto him.

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

३०. तो उन सभी 'फ़िरिश्तों' ने 'सजदा' किया

30. So the angels fell prostrate, all of them together,

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

३१. सिवाय 'इबलीस' के। उस ने 'सजदा' करने वालों में शामिल होने से इन्कार कर दिया।

31. Save Iblis. He refused to be among the prostrate.

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

३२. कहा : हे 'इबलीस' ! तू क्यों 'सजदा' करने वालों में सम्मिलित नहीं हुआ ?

32. He said: O Iblis! What aileth thee that thou art not among the prostrate?

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

३३. उस ने कहा : मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ जिसे तू ने सड़ी काली मिट्टी के सूखे गारे से बनाया ?

33. He said: Why should I prostrate myself unto a mortal whom Thou hast created out of potter's clay of black mud altered?

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

३४. कहा : निकल जा यहाँ से, निश्चय ही तू फिटकारा हुआ है।

34. He said: Then go thou forth from hence, for verily thou art outcast.

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

१५. अर्थात् हज़रत आदम अ० को जो सारे मनुष्य के बाप हैं अल्लाह ने एक तुच्छ मिट्टी से पैदा किया, जो हमेशा पददलित होती रहती है। फिर उन्हें वह स्थान प्रदान किया कि 'फ़िरिश्तों' तक को उन के आगे झुकना पड़ा।

१६. इस से मालूम होता है कि मनुष्य के भीतर जो रूह (आत्मा) फूंकी गई है वह वास्तव में अल्लाह के गुणों की एक प्रतिच्छाया है। हम में जो ज्ञान, संकल्प और सामर्थ्य आदि गुण पाये जाते हैं वे वास्तव में अल्लाह ही के गुणों की छाया मात्र हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. और निश्चय ही तुझ पर बदला दिये जाने के दिन[१७] तक फिटकार है।

35. And lo! the curse shall be upon thee till Day of Judgement.

وان عليك اللعنة الى يوم الدين ﴿٣٥﴾

३६. उस ने कहा : 'रब' ! मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब कि वे उठाये जायेंगे।

36. He said: My Lord! Reprieve me till the day when they are raised.

قال رب فانظرني الى يوم يبعثون ﴿٣٦﴾

३७. कहा : जा तुझे मुहलत है

37. He said: Then lo! thou art of those reprieved

قال فانك من المنظرين ﴿٣٧﴾

३८. उस दिन तक के लिए जिस का समय निश्चित है[१८]।

38. Till an appointed time.

الى يوم الوقت المعلوم ﴿٣٨﴾

३९. उस ने कहा : 'रब' ! जैसा तू ने मुझे बहकाया, उसी तरह मैं उन के लिए धरती में मनोहरता का आयोजन कर के उन सब को बहकाऊँगा,

39. He said: My Lord! Because Thou hast sent me astray, I verily shall adorn the path of error for them in the earth, and shall mislead them every one,

قال رب بما اغويتني لازينن لهم في الارض ولاغوينهم اجمعين ﴿٣٩﴾

४०. सिवाय उस के जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।

40. Save such of them as are Thy perfectly devoted slaves.

الا عبادك منهم المخلصين ﴿٤٠﴾

४१. कहा : यही एक सीधा मार्ग है जो मुझ तक पहुँचता है :

41. He said: This is a right course incumbent upon Me:

قال هذا صراط علي مستقيم ﴿٤١﴾

४२. निस्सन्देह मेरे बन्दों पर तेरा कोई बस न चल सकेगा सिवाय उस व्यक्ति के जो बहके हुये लोगों में से तेरे पीछे हो ले,

42. Lo! as for my slaves, thou hast no power over any of them save such of the froward as follow thee.

ان عبادي ليس لك عليهم سلطان الا من اتبعك من الغاوين ﴿٤٢﴾

४३. और निश्चय ही 'जहन्नम' उन सब के वादे की जगह है।

43. And lo! for all such, hell will be the promised place.

وان جهنم لموعدهم اجمعين ﴿٤٣﴾

४४. उस के सात द्वार हैं, हर द्वार के लिए उन (लोगों) में से एक निश्चित हिस्सा है।

44. It hath seven gates, and each gate hath an appointed portion.

لها سبعة ابواب لكل باب منهم جزء مقسوم ﴿٤٤﴾

४५. निस्सन्देह डर रखने वाले बाग़ों और स्रोतों के बीच होंगे।

45. Lo! those who ward off (evil), are among gardens and watersprings.

ان المتقين في جنت وعيون ﴿٤٥﴾

४६. (बाग़ों में आते समय कहा जायेगा) : दाखिल हो जाओ इन में सलामती के साथ, निश्चिन्त हो कर।

46. (And it is said unto them): Enter them in peace, secure.

ادخلوها بسلم امنين ﴿٤٦﴾

४७. और उन के सीनों में जो मलिनता होगी उसे हम दूर कर देंगे। वे भाइयों की तरह, आमने-सामने, तख़्तों पर होंगे।

47. And We remove whatever rancour may be in their breasts. As brethern, face to face, (they rest) on couches raised.

ونزعنا ما في صدورهم من غل اخوانا على سرر متقبلين ﴿٤٧﴾

४८. वहाँ न उन्हें किसी तकलीफ़ का सामना करना पड़ेगा, और न वे वहाँ से कभी निकाले जायेंगे।

48. Toil cometh not unto them there, nor will they be expelled from thence.

لا يمسهم فيها نصب وما هم منها بمخرجين ﴿٤٨﴾

१७. दे० सूरा अल-फ़ातिहा आयत ३।
१८. अर्थात् 'क़ियामत' तक के लिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९. मेरे बन्दों (सेवकों) को सूचना दे दो कि मैं बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला हूँ,

49. Announce, (O Muhammad) unto My slaves that verily I am the Forgiving, the Merciful,

نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

५०. और यह कि मेरी यातना दुःख देने वाली यातना है।

50. And that My doom is the dolorous doom

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

५१. और उन्हें इबराहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ,

51. And tell them of Abraham's guests

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

५२. जब वे उस के यहाँ आये, और कहा : सलाम हो। उस ने कहा : हम तो तुम से डरते हैं।

52. (How) when they came in unto him, and said: Peace, He said: Lo! we are afraid of you.

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

५३. वे बोले : डरो नहीं ! हम तुम्हें एक बड़े ज्ञानी लड़के की शुभ-सूचना देते हैं[१९]।

53. They said: Be not afraid Lo! we bring thee good tidings of a boy possessing wisdom.

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

५४. उस ने कहा : क्या तुम मुझे शुभ-सूचना दे रहे हो जब कि मेरा बुढ़ापा आ गया है ? तो अब किस पर शुभ-सूचना दे रहे हो[२०] ?

54. He said: Bring ye me good tidings (of a son) when old age hath overtaken me? Of what then can ye bring good tidings?

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

५५. उन्हों ने कहा : हम तुम्हें सच्चाई के साथ शुभ-सूचना दे रहे हैं। तो तुम निराश होने वालों में से न हो।

55. They said: We bring thee good tidings in truth. So be not thou of the despairing.

قَالُوا بَشَّرْنَٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

५६. उस ने कहा : और अपने 'रब' की दयालुता से गुमराहों के सिवा और कौन निराश हो सकता है ?

56. He said: and who despaireth of the mercy of his Lord save those who are astray?

قَالَ وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا الضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾

५७. उस ने कहा : हे (अल्लाह के) भेजे हुये ! तुम किस मुहिम पर आये हो ?

57. He said: And afterward what is your business O ye messengers (of Allah)?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾

५८. बोले : हम एक अपराधी गरोह[२१] की ओर भेजे गये हैं,

58. They said: We have been sent unto a guilty folk.

قَالُوٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾

५९. सिवाय लूत के घर वालों के। हम उन सब को बचा लेंगे,

59. (All) save the family of Lot. Them we shall deliver everyone,

إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾

६०. सिवाय उस की स्त्री के, (उस के लिए अल्लाह कहता है कि) हमारा फ़ैसला हो चुका है कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।

60. Except his wife, of whom We had decreed that she should be of those who stay behind.

إِلَّا امْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَآ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾

६१. फिर जब ये भेजे हुये (दूत) लूत के परिवार में पहुँचे,

61. And when the messengers came unto the family of lot,

فَلَمَّا جَآءَ ءَالَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

१९. अर्थात् हम हज़रत इसहाक़ अ० के पैदा होने की शुभ-सूचना तुम्हें दे रहे हैं।
२०. दे० बाइबिल 'पैदाइश' (Gen.) १७ : १७।
२१. अर्थात् लूत अ० की जाति वालों की ओर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. उस ने कहा : तुम तो अपरिचित लोग हो।

62. He said: Lo! ye are folk unknown (to me).

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ٦٢

६३. उन्हों ने कहा : नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वही चीज़ ले कर आये हैं जिस में ये सन्देह किया करते थे,

63. They said: Nay, but we bring thee that concerning which they keep disputing.

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ٦٣

६४. हम तुम्हारे पास 'हक़' के साथ आये हैं और निस्सन्देह हम सच्चे हैं।

64. And bring thee the Truth, and lo! we are truth-tellers.

وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ٦٤

६५. तो अब तुम अपने घर वालों को ले कर रात के किसी हिस्से में निकल जाओ, और स्वयं उन के पीछे-पीछे चलो। तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे, बस चले जाओ जहाँ का तुम्हें हुक्म दिया गया है।

65. So travel with thy household in a portion of the night, and follow thou their backs. Let none of you turn round, but go whither ye are commanded.

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ٦٥

६६. और उसे हम ने अपना यह फ़ैसला पहुँचा दिया, कि प्रातःकाल होते उन की जड़ कट गई होगी।

66. And We made plain the case to him that the root of them (who did wrong) was to be cut at early morn.

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ٦٦

६७. और इतने में नगर के लोग हर्षित हो कर आ पहुँचे।

67. And the people of the city came, rejoicing at the news (of new arrivals).

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ٦٧

६८. (लूत ने) कहा : ये मेरे मेहमान हैं। तो मेरी फ़ज़ीहत न करो।

68. He said: Lo! they are my guests. Affront me not!

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ٦٨

६९. अल्लाह से डरो, और मुझे बे आबरू न करो!

69. And keep your duty to Allah, and shame me not!

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ٦٩

७०. वे कहने लगे : क्या हम ने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से रोका नहीं था (कि उन का ठीका न लो)?

70. They said: Have we not forbidden you from (entertaining) anyone?

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ٧٠

७१. कहा : यदि तुम कुछ करने ही वाले हो, तो ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं[२२]।

71. He said: Here are my daughters, if ye must be doing (so).

قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ٧١

७२. तेरे जीवन की क़सम (हे मुहम्मद!) वे अपनी मस्ती में खोये हुये थे।

72. By thy life (O Muhammad) they moved blindly in the frenzy of approaching death.

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ٧٢

७३. फिर पौ फटते ही एक (भयंकर) चीख ने उन्हें आ लिया।

73. Then the (Awful) Cry overtook them at the sunise.

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ٧٣

२२. दे० सूरा हूद फ़ुटनोट ३४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. तो हम ने उस (बस्ती) को तल-पट कर के छोड़ा, और उन पर पकी मिट्टी के पत्थर बरसाये[२३]।

74. And We utterly confounded them and We rained upon them stones of heated clay.

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾

७५. निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो तथ्य को लक्षणों से समझ लेते हैं।

75. Lo! therein varily are portents for those who read the signs.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾

७६. और वह (स्थान जहाँ की यह घटना है) सीधे मार्ग पर है (जो अब भी चालू है[२४])।

76. And lo! it is upon a road still uneffaced.

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾

७७. निस्सन्देह इस में 'ईमान' वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

77. Lo! therein is indeed a portent for believers.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

७८. और अल-ऐका[२५] के निवासी ज़ालिम थे।

78. And the dwellers in the wood indeed were evil-doers.

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

७९. तो हम ने उन से बदला ले लिया; और निश्चय ही ये दोनों (भू-भाग) खुले मार्ग में पड़ते हैं[२६]।

79. So We took vengeance on them; and lo! they both are on a highroad plain to see.

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾

८०. और अल-हिज्र[२७] के लोग भी 'रसूलों' को झुठला चुके हैं।

80. And the dwellers in Al-Hijr indeed denied (Our) messengers.

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾

८१. और हम ने उन्हें अपनी 'आयतें' प्रदान कीं, परन्तु वे उन से किनारा खींचते रहे।

81. And We gave them Our revelations, but they were averse to them.

وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

८२. और वे पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते थे और अपनी जगह निश्चिन्त थे।

82. And they used to hew out dwellings from the hills, (wherein they dwelt) secure.

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾

८३. फिर उन्हें प्रातःकाल होते एक प्रचण्ड चीख़ ने आ लिया,

83. But the (Awful) Cry overtook them at the morning hour.

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾

८४. तो वह कुछ उन के काम न आया जो वे कमाते रहे हैं।

84. And that which they were wont to count as gain availed them not.

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

२३. यह पाषाण-वर्षा आँधी के द्वारा हुई है। फिर यह आँधी इतनी तेज़ हो गई कि उन के घर भी उलट गये। 'तौरात' से मालूम होता है कि प्रचण्ड वायु के साथ-साथ बिजली और कड़क की यातना भी आई।

२४. हिजाज़ से शाम (Syria) जाते हुये और मिस्र से इराक़ जाते हुये मार्ग ही में यह भू-भाग पड़ता है। यह भू-भाग अत्यन्त उजाड़ और भयानक मालूम होता है।

२५. अल-ऐका का अर्थ होता है घना जंगल। अल-ऐका वालों से संकेत हज़रत शुऐब अ० की जाति वालों की ओर है। उन के पूरे अधिक्षेत्र को मदयन कहते थे। उन के केन्द्रीय नगर का नाम भी मदयन था; और अल-ऐका 'तबूक' का प्राचीन नाम है।

२६. हज़रत लूत अ० की जाति वालों की उजड़ी हुई बस्ती की तरह मदयन का भू-भाग भी हिजाज़ से फ़लिस्तीन (Palestine) और शाम (Syria) जाते हुये मार्ग ही में पड़ता है।

२७. यह 'समूद' जाति का केन्द्रीय नगर था। मदीना से 'तबूक' जाते हुये यह स्थान मार्ग ही में पड़ता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८५. और हम ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन के बीच है केवल 'हक़' के साथ पैदा किया है,[२८] और निस्सन्देह वह घड़ी ('क़यामत') आने वाली है। तो तुम (हे मुहम्मद!) श्रीवान् क्षमा से काम लो।

85. We created not the heavens and the earth and all that is between them save with truth, and lo! the Hour is surely coming. So forgive, O Muhammad, with a gracious forgiveness.

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ۸۵

८६. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' ही बड़ा रचयिता और जानने वाला है।

86. Lo! Thy Lord! He is the All-Wise Creator.

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۸۶

८७. और हम ने तुम्हें सात दोहराई जाने वाली[२९] प्रदान कीं और तुम्हें महान् क़ुरआन प्रदान किया है।

87. We have given thee seven of the oft-repeated (verses) and the great Qur'an.

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۸۷

८८. जो कुछ सुख-सामग्री हम ने इन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है तुम उस की ओर आंख उठा कर न देखो, और न उन की दशा पर ग्लानि करो, और अपना बाज़ू (भुजायें) 'ईमान' वालों के लिए झुका दो।

88. Strain not thine eyes toward that which We cause some wedded pairs among them to enjoy, and be not grieved on their account, and lower thy wing (in tenderness) for the believers.

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۸۸

८९. और कह दो : मैं तो साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ,

89. And say: Lo! I, even I, am a plain warner.

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ۸۹

९०. (हम ने उसी तरह यह 'किताब' तुम पर उतारी है) जिस तरह हम ने विभाजन करने वालों पर[३०] उतारा था,

90. Such as We send down for those who make division,

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ۹۰

९१. जिन्हों ने क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये[३१]।

91. Those who break the Qur'an into parts.

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ۹۱

९२. तो तुम्हारे 'रब' की क़सम, हमें अवश्य उन लोगों से पूछना है,

92. Them, by thy Lord, We shall question every one,

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔـلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۹۲

९३. उस के बारे में जो कुछ कि वे करते थे।

93. Of what they used to do.

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۹۳

९४. तो तुम्हें जिस बात का हुक्म मिला है उसे खोल कर सुना दो और 'शिर्क' करने वालों की ओर ध्यान न दो।

94. So proclaim that which thou art commanded, and withdraw from the idolaters.

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۹۴

२८. अर्थात् वास्तविक उद्देश्य के साथ पैदा किया है (दे० सूरा अल-अंबिया आयत १६-१८)।
आयत ८५ से ले कर 'सूरा' के अन्त तक सूरा की समाप्ति सम्बन्धी वार्त्ता अथवा सूरा का सारांश है।

२९. इस से अभिप्रेत सूरा अल-फ़ातिहा की आयतें हैं। सूरा अल-फ़ातिहा पूरे क़ुरआन का संक्षेप है। कुछ दूसरे लोगों के विचार में इस से अभिप्रेत क़ुरआन की ७ सूरतें हैं। और यह विचार भी प्रकट किया गया है कि इस से अभिप्रेत पूरा क़ुरआन है।

३०. अर्थात् यहूद समुदाय पर। यहूदियों ने धर्म का मनमानी विभाजन कर डाला था; और तरह-तरह के पन्त और फ़िरक़े बना लिये थे।

३१. अर्थात् क़ुरआन की कुछ बातों को मानते हैं; और कुछ का इन्कार करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५. हँसी उड़ाने वालों के लिए तुम्हारी ओर से हम बस हैं,

95. Lo! We defend thee from the scoffers,

إِنَّا كَفَيْنَٰكَ ٱلْمُسْتَهْزِءِينَ ﴿٩٥﴾

९६. जो अल्लाह के साथ दूसरे 'इलाह' (पूज्य) गढ़ते हैं। तो उन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

96. Who set some other god along with Allah. But they will come to know.

ٱلَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

९७. और हम जानते हैं कि जो कुछ ये लोग कहते हैं उस से तुम दिल-तंग होते हो,

97. Well know We that thy bosom is at times oppressed by what they say,

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

९८. तो तुम अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते रहो, और 'सजदा' करने वालों में सम्मिलित रहो।

98. But hymn the praise of thy Lord, and be of those who make prostration (unto Him).

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٩٨﴾

९९. और अपने 'रब' की 'इबादत' में लगे रहो यहाँ तक कि यक़ीनी चीज़[३२] तुम्हारे सामने आ जाये।

99. And serve thy Lord till the inevitable cometh unto thee.

وَٱعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

——:——

३२. अर्थात् अल्लाह का वादा जिस का आना अवश्यम्भावी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६–अन-नह्ल
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' की आयत ६८-६९ मे 'अन-नह्ल' अर्थात् मधु-मक्खी और उस के कामों को एक निशानी के रूप में पेश किया गया है; इसी सम्पर्क से सूरा का नाम 'अन-नह्ल' रक्खा गया है। यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रक्खा गया है। मधु-मक्खी और उस के कार्यों से पता चलता है कि अल्लाह अपनी सृष्टि का प्रबन्ध कितनी तत्परता के साथ कर रहा है इस लिए यह सम्भव नहीं कि वह मानव-जाति को जीवन का सीधा मार्ग न दिखाये। और उसे वास्तविक ज्ञान से वंचित रक्खे। अल्लाह की इस निशानी में 'काफ़िरों' के लिए भी यह चेतावनी है कि अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग को छोड़ना मनुष्य के लिए बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कोई खाना-पीना छोड़ दे बल्कि इस से भी बढ़ कर घातक है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं और वर्णन-शैली से पता चलता है कि यह सूरा मक्का के अन्तिम समय की 'सूरतों' में से है। इस सूरा के अवतीर्ण होने के समय 'काफ़िरों' का अत्याचार उग्र रूप धारण कर चुका था[1] जिस के कारण बहुत से मुसलमान स्वदेश त्याग कर हब्शा (Abyssinia) जा चुके थे[2]। नबी सल्ल० की 'नुबूवत' के समय में जो सप्तवर्षीय अकाल पड़ा था वह गुज़र चुका था[3]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय अथवा मध्य विन्दु एकेश्वरवाद–धर्म का प्रमाणीकरण है। इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' में पूर्ण रूप से 'शिर्क' अर्थात् अनेकेश्वरवाद का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। और 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के प्राकृतिक (Natural) प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। बाह्य जगत और मनुष्य के अन्तःकरण की खुली-खुली निशानियों को पेश कर के एकेश्वरवाद की पुष्टि की गई है। 'काफ़िरों', 'मुश्रिकों' और 'किताब वालों' के आक्षेपों का उत्तर दे कर उन के सन्देहों का समाधान किया गया है। असत्य पर अड़े रहने और सत्य के मुक़ाबले में सरकशी करने के बुरे परिणामों से लोगों को डराया गया है। इस बात पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है कि लोग अल्लाह से डरें और जीवन में अपने सत्कर्मी होने का परिचय दें। 'नबी' सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों की ढारस बँधाई गई है; और उन्हें बताया गया है कि ऐसी विकट परिस्थिति में जब कि धर्म-द्रोहियों का अत्याचार हद से आगे बढ़ चुका है उन्हें क्या नीति अपनानी चाहिए।

---

१. दे० आयत १०६।
२. दे० आयत ४१, ११०।
३. दे० आयत ११२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नह्ल
(मक्का में उतरी -- 'आयतें' १२८)

THE BEE
Revealed at Mecca

سورة النحل مكية

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. अल्लाह का हुक्म आ गया,[1] तो अब उस की जल्दी न मचाओ। वह महिमावान् और उच्च है उस 'शिर्क' से जो ये कर रहे हैं।

1. The commandments of Allah will come to pass, so seek not ye to hasten it. Glorified and Exalted be He above all that they associate (with Him).

أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحنه
وتعلى عما يشركون ١

२. वह 'फ़िरिश्तों' को रूह्[2] के साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है, कि सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं, अतः मुझ से डरो।

2. He sendeth down the angels with the Spirit of His command unto whom He will of His bondmen, (saying): Warn mankind that there is no god save Me, so keep your duty unto Me.

ينزل الملئكة بالروح من أمره
على من يشاء من عباده أن
أنذروا أنه لا إله إلا أنا فاتقون ٢

३. उस ने आकाशों और धरती को 'हक़' के साथ पैदा किया[3]। वह उच्च है उस 'शिर्क' से जो ये कर रहे हैं।

3. He hath created the heavens and the earth with truth. High be He exalted above all that they associate (with Him).

خلق السموت والأرض بالحق
تعلى عما يشركون ٣

४. उस ने मनुष्य को एक बूंद (वीर्य) से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष झगड़ालू (अनुचित वाद-विवाद करने वाला) बन गया।

4. He hath created man from a drop of fluid, yet behold! he is an open opponent.

خلق الإنسان من نطفة فإذا هو
خصيم مبين ٤

५. और उस ने पशु पैदा किये, जिन (की खाल और ऊन) में तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान है और दूसरे फ़ायदे भी हैं, और उन में से तुम खाते भी हो;

5. And the cattle hath He created, whence ye have warm clothing and uses and whereof ye eat;

والأنعام خلقها لكم فيها دفء و
منافع ومنها تأكلون ٥

६. और उन में तुम्हारे लिए शोभा भी है, जब कि (सन्ध्या समय) तुम उन्हें घर लाते हो, और जब कि (सवेरे) तुम उन्हें चराने के लिए बाहर ले जाते हो।

6. And wherein is beauty for you, when ye bring them home, and when ye take them out to pasture.

ولكم فيها جمال حين تريحون
وحين تسرحون ٦

७. और वे तुम्हारे बोझ ढो कर ऐसी-ऐसी जगहों तक ले जाते हैं जहाँ तुम बिना जान-तोड़ मशक़्क़त के नहीं पहुँच सकते थे। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' करुणामय और दया करने वाला है।

7. And they bear your loads for you unto a land ye could not reach with great trouble yourselves. Lo! your Lord is Full of Pity, Merciful.

وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا
بلغيه إلا بشق الأنفس إن ربكم
لرءوف رحيم ٧

१. अर्थात् अब जल्द ही नबी सल्ल० को 'हिजरत' का आदेश मिलने वाला है। हिजरत का आदेश विरोधी दल के भाग्य का निर्णय कर देगा। इस लिए कि 'हिजरत' के बाद 'नबी' के दुश्मनों पर अल्लाह की यातना आ कर रहती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि 'हिजरत' के बाद ज़ालिमों को अपने किये की सज़ा मिल कर रही। 'बद्र' की लड़ाई में 'काफ़िरों' के बड़े-बड़े सरदार मारे गये। और हिजरत के आठ वर्ष के भीतर ही पूरे अरब देश से 'कुफ़्र' और 'शिर्क' की जड़ें उखाड़ फेंकी गईं। दे० आयत ३३, सूरा हूद आयत ४०, ५८, ६६, ८२, ९४, १०१, सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत २५।

२. अर्थात् 'वह्य'।

३. अर्थात् ठीक-ठीक उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. और घोड़े और ख़च्चर और गदहे (पैदा किये) कि तुम उन पर सवार हो, और शोभा के लिए भी (उन्हें पैदा किया)। और वह कुछ पैदा करता है जिसे तुम नहीं जानते।

8. And horses and mules and asses (hath He created) that ye may ride them, and for ornament. And He createth that which ye know not.

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا
وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑧

९. और अल्लाह तक सीधा मार्ग जाता है, और कुछ (मार्ग) टेढ़े भी हैं। और यदि वह चाहता तो तुम सब को सीधा मार्ग दिखा देता[४]।

9. And Allah's is the direction of the way, and some (roads) go not straight. And had He willed He would have led you all aright.

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ۚ
وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ⑨

१०. वही है जिस ने आकाश से पानी बरसाया, जिस से तुम्हें पीने को मिलता है और उसी से पेड़-पौधे (उगते) हैं जहाँ तुम जानवरों को चराते हो।

10. He it is who sendeth down water from the sky, whence ye have drink and whence are trees on which ye send your beasts to pasture.

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ لَكُمْ
مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ⑩

११. उसी (पानी) से वह तुम्हारे लिए खेती उगाता है, और ज़ैतून और खजूरों और अंगूरों को और हर प्रकार के फल (पैदा करता है)। निश्चय ही इस में सोच-विचार करने वालों के लिए एक बड़ी निशानी है।

11. Therewith He causeth crop to grow for you, and the olive and the date-palm and grapes and all kinds of fruit. Lo! herein is indeed a portent for people who reflect.

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَ
النَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑪

१२. और उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन को और सूरज और चाँद को काम में लगा रक्खा है, और उसी के हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुये हैं। निश्चय ही इस में बुद्धि से काम लेने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

12. And He hath constrained the night and the day and the sun and the moon to be of service unto you, and the stars are made subservient by His command. Lo! herein indeed are portents for people who have sense.

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑫

१३. और जो तुम्हारे लिए धरती में रंग-बिरंग की चीज़ें पैदा की हैं, निश्चय ही इस में भी ध्यान देने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है।

13. And whatsoever He hath created for you in the earth of divers hues, lo! therein is indeed a portent for people who take heed.

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۗ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ⑬

१४. और वही तो है जिस ने समुद्र को सेवा-कार्य में लगा रक्खा है ताकि तुम उस से ताज़ा मांस (मछलियाँ) ले कर खाओ, और उस से आभूषण (मोती, मूंगा आदि) निकालो जिसे तुम पहनते हो। तुम देखते हो कि नौका उस (समुद्र) का सीना चीरती हुई चलती है (ताकि तुम अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँचो) और ताकि उस का[५] अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि कृतज्ञता दिखलाओ।

14. And He it is Who hath constrained the sea to be of service that ye eat fresh meat from thence, and bring forth from thence ornaments which ye wear. And thou seest the ships ploughing it that ye (mankind) may seek of His bounty, and that haply ye may give thanks.

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ
لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً
تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ
وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑭

४. अर्थात् अल्लाह तो ऐसा कर सकता था कि मनुष्य की स्वतन्त्रता को छीन लेता और सब लोगों को सीधे मार्ग पर चलने के लिए बाध्य कर देता; परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया क्योंकि इस तरह उन ऊँचे-से-ऊँचे दर्जों तक पहुँचना मनुष्य के लिए सम्भव न होता जिन तक मनुष्य केवल अपनी स्वतन्त्रता के सदुपयोग के फलस्वरूप पहुँच सकता है।

५. अर्थात् अपने 'रब' का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. और उस ने धरती में अटल पहाड़ डाल दिये कि वह[६] तुम्हें ले कर लुढ़क न जाये,[७] और नदियाँ और (प्राकृतिक) मार्ग बनाये ताकि तुम मार्ग पा सको।

15. And He hath cast into the earth firm hills that it quake not with you, and streams and roads that ye may find a way.

وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ
وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

१६. और (बहुत से मार्ग बताने वाले) चिह्न भी बनाये, और तारे के द्वारा भी लोग मार्ग पा लेते हैं।

16. And landmarks (too), and by the star they find a way.

وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

१७. तो क्या जो पैदा करता है वह उस जैसा है जो कुछ भी पैदा नहीं करता ? क्या तुम सोचते नहीं हो ?

17. Is He then Who createth as him who createth not? Will ye not then remember?

أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

१८. और यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला है।

18. And if ye would count the favour of Allah ye cannot reckon it. Lo! Allah is indeed Forgiving, Merciful..

وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨﴾

१९. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ व्यक्त करते हो।

19. And Allah knoweth that which ye keep hidden and that which ye proclaim.

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

२०. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किये जाते हैं।

20. Those unto whom they cry beside Allah created naught, but are themselves created.

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا
يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾

२१. मुरदे हैं, न कि ज़िन्दा। उन्हें कुछ मालूम नहीं कि कब वे उठाये जायेंगे[८]।

21. (They are) dead, not living. And they know not when they will be raised.

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ
أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾

२२. तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य) अकेला 'इलाह' है। परन्तु जो लोग 'आखिरत' पर 'ईमान' नहीं रखते उन के दिल इन्कार करते हैं, और वे अपने को बड़ा समझते हैं।

22. Your God is One God. But as for those who believe not in the Hereafter their hearts refuse to know, for they are proud.

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُم مُّنكِرَةٌ
وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾

२३. निश्चय ही अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ व्यक्त करते हैं।

निस्सन्देह वह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो अपने को बड़ा समझते हैं।

23. Assuredly Allah knoweth that which they keep hidden and that which they proclaim. Lo! He loveth not the proud.

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

६. अर्थात् धरती।

७. पहाड़ों को धरती में जमाने का विशेष लाभ यह है कि उन के द्वारा पृथ्वी की गति और उस की चाल को व्यवस्थित (Regulate), और उस के भार को सन्तुलित रखने का प्रबन्ध किया गया है।

८. अर्थात् अपने जिन महान् पुरुषों की मूर्तियाँ बना कर वे लोग पूजते हैं; और उन्हें अपनी सहायता के लिए पुकारते हैं वे तो मर चुके हैं; वे जीवित नहीं हैं कि तुम्हारी पुकार पर ध्यान दे सकें।

क़ुरआन के उतरने के समय 'ईसाई' और 'यहूदी' अपने 'नबियों' और महापुरुषों की पूजा में बुरी तरह लगे हुये थे ही, अरब के 'मुश्रिकों' (Idolaters) ने भी बहुत से ऐसे देवता गढ़ लिये थे जो वास्तव में गुजरे हुये मनुष्य थे जिन्हें बाद की पीढ़ियों ने अपना आराध्य बना लिया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. और जब उन से कहा जाता है : तुम्हारे 'रब' ने क्या उतारा है ? वे कहते हैं : (ये तो) पहलों की कहानियाँ हैं।

24. And when it is said unto them: what hath your Lord revealed? they say: (Mere) fables of the men of old,

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوٓا۟ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

२५. ताकि 'क़ियामत' के दिन अपने बोझ भी पूरे उठायें, और उन के बोझ भी जिन्हें वे बिना ज्ञान के पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। कितना बुरा है वह बोझ जो वे उठा रहे हैं !

25. That they may bear their burdens undiminished on the Day of Resurrection, with somewhat of the burdens of those whom they mislead without knowledge. Ah! evil is that which they bear!

لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ ٱلَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

२६. जो इन से पहले थे वे भी मक्कारी कर चुके हैं, तो अल्लाह ने उन की इमारत जड़ से ढा दी, और उन के ऊपर से छत उन पर आ गिरी, और ऐसे रुख़ से उन पर यातना आई जिस की उन्हें ख़बर तक न थी;

26. Those before them plotted, so Allah struck at the foundations of their building, and then the roof fell down upon them from above them, and the doom came on them whence they knew not.

قَدْ مَكَرَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى ٱللَّهُ بُنْيَٰنَهُم مِّنَ ٱلْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ ٱلسَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

२७. फिर 'क़ियामत' के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा : मेरे वे शरीक कहाँ हैं, जिन के लिए तुम झगड़ते थे ? जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे कहेंगे : निश्चय ही आज रुसवाई और ख़राबी है 'काफ़िरों' की,

27. Then on the day of Resurrection He will disgrace them and will say: Where are My partners, for whose sake ye opposed (My Guidance)? Those who have been given knowledge will say: Disgrace this day and evil are upon the disbelievers,

ثُمَّ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تُشَٰٓقُّونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ إِنَّ ٱلْخِزْىَ ٱلْيَوْمَ وَٱلسُّوٓءَ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٧﴾

२८. जिन (के प्राणों) को 'फ़िरिश्ते' इस अवस्था में ग्रस्त लेते हैं कि वे अपने आप पर जुल्म कर रहे होते हैं। तब वे डगें डाल देते हैं कि हम तो कोई बुराई नहीं करते थे। ('फ़िरिश्ते' कहते हैं) : क्यों नहीं, निस्सन्देह अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते थे[६]।

28. Whom the angels cause to die while they are wronging themselves. Then will they make full submission (saying): We used not to do any wrong. Nay! Surely Allah is Knower of what ye used to do.

ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا۟ ٱلسَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوٓءٍۭ ۚ بَلَىٰٓ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌۢ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

२९. तो अब 'जहन्नम' के दरवाज़ों में घुस जाओ, वहीं तुम को सदा रहना है। कितना बुरा निवास-स्थान है उन लोगों का जो अपने को बड़ा समझते हैं।

29. So enter the gates of hell, to dwell therein for ever. Woeful indeed will be the lodging of the arrogant.

فَٱدْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى ٱلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

३०. और डर रखने वालों से कहा जाता है : तुम्हारे 'रब' ने क्या उतारा है ? वे कहते हैं : उत्तम चीज़। जिन्हों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और 'आख़िरत' का घर तो बहुत अच्छा है। और क्या ही अच्छा है घर डर रखने वालों का।

30. And it is said unto those who ward off (evil): What hath your Lord revealed? They say: Good. For those who do good in this world there is a good (reward) and the home of the Hereafter will be better. Pleasant indeed will be the home of those who ward off (evil).

وَقِيلَ لِلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ مَاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا۟ خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ فِى هَٰذِهِ ٱلدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

६. यह 'आयत' 'क़ुरआन' की उन 'आयतों' में से है जिन से यह ज्ञात होता है कि मृत्यु के बाद ऐसा नहीं होता कि मनुष्य का कोई अस्तित्व ही शेष न रहे बल्कि मृत्यु वास्तव में शरीर से आत्मा के वियुक्त हो जाने का नाम है। शरीर से अलग हो जाने के बाद भी आत्मा अपने व्यक्तित्व के साथ जीवित रहती है। 'देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य' (यह आत्मा सब के शरीर में सदा ही अवध्य है)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. हमेशा रहने के बाग़ जिन में वे प्रवेश करेंगे, उन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन के लिए वहाँ वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे। अल्लाह ऐसा ही बदला डर रखने वालों को देता है,

31. Gardens of Eden which they enter, underneath which rivers flow, wherein they have what they will. Thus Allah repayeth those who ward off (evil).

جنت عدن يدخلونها تجري من
تحتها الانهر لهم فيها ما يشاءون
كذلك يجزي الله المتقين ﴿٣١﴾

३२. जिन (के प्राणों) को 'फ़िरिश्ते' इस अवस्था में ग्रस्त लेते हैं कि वे पाक होते हैं। कहते हैं : तुम पर सलाम हो ! जो कुछ तुम कर रहे हो उस के बदले 'जन्नत' में प्रवेश करो।

32. Those whom the angels cause to die (when they are) good. They say: Peace be unto you! Enter the Garden because of what ye used to do.

الذين تتوفهم الملئكة طيبين
يقولون سلم عليكم ادخلوا الجنة
بما كنتم تعملون ﴿٣٢﴾

३३. क्या ये लोग अब इसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि 'फ़िरिश्ते' इन के पास आ पहुँचें या तेरे 'रब' का आदेश (अर्थात् यातना) आ जाये ? ऐसी ही हरकत उन्हों ने भी की थी जो इन से पहले थे। अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने आप पर ज़ुल्म करते रहे,

33. Await they aught save that the angels should come unto them or thy Lord's command should come to pass? Even so did those before them. Allah wronged them not but they did wrong themselves.

هل ينظرون الا ان تاتيهم الملئكة
او ياتي امر ربك كذلك فعل الذين
من قبلهم وما ظلمهم الله ولكن
كانوا انفسهم يظلمون ﴿٣٣﴾

३४. तो उन के करतूतों की बुराइयाँ उन के ही सिर आ लगीं, और जिस (यातना) की वे हँसी उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

34. So that the evil of what they did smote them, and that which they used to mock surrounded them.

فاصابهم سيات ما عملوا وحاق
ع بهم ما كانوا به يستهزءون ﴿٣٤﴾

३५. और 'शिर्क' करने वाले कहते हैं : यदि अल्लाह चाहता, तो उस के सिवा किसी और की 'इबादत' न हम करते, और न हमारे पूर्वज ही, और न हम उस के (हुक्म के) बिना किसी चीज़ को हराम ठहराते[१०]। ऐसी ही हरकत उन्हों ने भी की थी जो इन से पहले थे। तो क्या साफ़-साफ़ पहुँचा देने के सिवा 'रसूलों' पर कोई ज़िम्मेदारी और भी होती है ?

35. And the idolaters say: Had Allah willed, we had not worshipped aught beside Him, we and our fathers, nor had we forbidden aught without (command from) Him. Even so did those before them. Are the messengers charged with aught save plain conveyance (of the message)?

وقال الذين اشركوا لو شاء الله
ما عبدنا من دونه من شيء نحن
ولا اباؤنا ولا حرمنا من دونه من
شيء كذلك فعل الذين من قبلهم
فهل على الرسل الا البلغ المبين ﴿٣٥﴾

३६. और हम ने हर गरोह में कोई-न-कोई 'रसूल' भेजा कि अल्लाह की 'इबादत' करो और 'तागूत' से बचो। तो उन में से किसी को अल्लाह ने मार्ग दिखा दिया, और उन में किसी पर गुमराही ही साबित हो कर रही। तो धरती में चल-फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ !

36. And verily We have raised in every nation a messenger, (proclaiming): Serve Allah and shun false gods. Then some of them (there were) whom Allah guided, and some of them (there were) upon whom error had just hold. Do but travel in the land and see the nature of the consequence for the deniers!

ولقد بعثنا في كل امة رسولا
ان اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت
فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت
عليه الضللة فسيروا في الارض فانظروا
كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٣٦﴾

१०. दे० आयत ११६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. यदि तुम्हें उन के मार्ग पर आने की लालसा हो, तो अल्लाह जिस को भटका देता है उसे मार्ग नहीं दिखाया करता[11]। और ऐसे लोगों का कोई भी सहायक नहीं।

37. Even if thou (O Muhammad) desirest their right guidance still Allah assuredly will not guide him who misleadeth. Such have no helpers.

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا
يَهْدِي مَن يُضِلُّ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

३८. और वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि जो कोई मर जाता है उसे अल्लाह फिर से न उठावेगा। क्यों नहीं, यह तो एक वादा है जिसे पूरा करना उस के लिए आवश्यक है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते,

38. And they swear by Allah their most binding oaths (that) Allah will not raise up him who dieth. Nay, but it is a promise (binding) upon Him in truth but most of mankind know not.

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ
اللَّهُ مَن يَمُوتُ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

३९. (मुरदों को उठाना इस लिए ज़रूरी है) ताकि अल्लाह उन पर उस (की वास्तविकता) को खोल दे जिस के बारे में वे विभेद करते हैं और ताकि जिन लोगों ने 'कुफ़' किया है वे जान लें कि वे झूठे थे।

39. That he may explain unto them that wherein they differ, and that those who disbelieved may know that were liars.

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَ
لِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

४०. किसी चीज़ के लिए हमारी उक्ति जब हम उस का इरादा करें यही है कि उस से कहते हैं : हो जा ! बस वह हो जाती है।

40. And Our word unto a thing, when We intend it, is only that We say unto it: Be! and it is.

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ
لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

४१. और जिन लोगों ने ज़ुल्म का सहन करने के पश्चात् अल्लाह के लिए 'हिजरत' की है, उन्हें हम दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे, और 'आखिरत' का बदला तो बहुत ही बड़ा है, क्या अच्छा होता कि उन्हें मालूम होता।

41. And those who became fugitives for the cause of Allah after they had been oppressed, We verily shall give them goodly lodging in the world, and surely the reward of the Hereafter is greater, if they but knew;

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ
مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

४२. वे ऐसे हैं जिन्हों ने धैर्य्य से काम लिया और अपने 'रब' पर भरोसा करते हैं।

42. Such as are steadfast and put their trust in Allah.

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

४३. और हम ने तुम से पहले भी पुरुष ही को 'रसूल' बना कर भेजा है उन की ओर हम 'वह्य' करते रहे हैं—यदि तुम नहीं जानते तो ज़िक्र वालों (अर्थात् 'किताब वालों') से पूछ लो !—

43. And We sent not (as Our messengers) before thee other than men whom We inspired—Ask the followers of the Remembrance if ye know not:—

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا
نُّوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن
كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

४४. खुली निशानियों और 'ज़बूरों' के साथ; और (हे मुहम्मद !) हम ने तुम पर अनुस्मारक[12] उतारा है ताकि तुम लोगों के सामने खोल-खोल कर बयान कर दो जो कुछ उन की ओर उतारा गया है, और ताकि वे सोच-विचार करें।

44. With clear proofs and writings; and We have revealed unto thee the Remembrance that thou mayst explain to mankind that which hath been revealed for them, and that haply they may reflect.

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ
لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

११. अल्लाह उन्हीं लोगों को भटकाता है जो सरकश और नादान होते हैं; और वास्तव में यह उन की सरकशी, 'कुफ़' और, ज़ुल्म की सज़ा होती है। दे० सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट १३।

१२. अर्थात् 'क़ुरआन'।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. फिर क्या वे लोग जो बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं इस से निश्चिन्त हो गये हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे, या ऐसे रुख से उन पर यातना लाये जिस की उन्हें खबर न हो"[13] ?

45. Are they who plan ill deeds then secure that Allah will not cause the earth to swallow them, or that the doom will not come on them whence they know not?

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن
يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

४६. या चलते-फिरते उन्हें पकड़ ले, वे बच निकलने वाले नहीं हैं ?

46. Or that He will not seize them in their going to and fro so that there be no escape for them?

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

४७. या उन्हें ऐसी अवस्था में पकड़े जब कि उन्हें (आने वाले संकट-का) खटका लगा हो ? निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' बड़ा ही करुणामय और दया करने वाला है।

47. Or that He will not seize them with a gradual wasting? Lo! thy Lord is indeed full of Pity, Merciful.

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

४८. क्या जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है उसे उन्हों ने नहीं देखा, उस के साये अल्लाह को 'सजदा' करते हुये दायें और बायें ढलते हैं, इस अवस्था में कि नम्रता प्रकट करते हैं[14] ?

48. Have they not observed all things that Allah hath created, how their shadows incline to the right and to the left, making prostration unto Allah, and they are lowly?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ
يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ
سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

४९. और जानदार जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं[15] सब अल्लाह को 'सजदा' करते हैं, और 'फ़िरिश्ते' भी, और वे अपने को बड़ा नहीं समझते।

49. And unto Allah maketh prostration whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth of living creatures, and the angels (also), and they are not proud.

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

५०. अपने 'रब' से जो उन के ऊपर है डरते रहते हैं, और उन्हें जो हुक्म दिया जाता है करते हैं।

50. They fear their Lord above them, and do what they are bidden.

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ
مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

५१. और अल्लाह ने कहा है : दो-दो 'इलाह' (पूज्य) न बनाओ। वह तो बस अकेला 'इलाह' है। अतः मुझ से ही डरो।

51. Allah hath said: Choose not two gods. There is only One God. So of Me, Me only, be in awe.

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ
إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

५२. जो कुछ आकाशों और धरती में है सब उसी का है, और उसी का 'दीन' (धर्म) स्थायी है। फिर क्या अल्लाह के सिवा किसी और से डरोगे ?

52. Unto him belongeth whatsoever is in the heavens and the earth and religion is His for ever. Will ye then fear any other than Allah?

وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ
الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

१३. 'बद्र' की लड़ाई में यही हुआ। सामान और असबाब से खाली मुसलमानों के द्वारा उन्हें सज़ा दी जिस की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

१४. यहाँ एक बड़े तथ्य का उल्लेख किया गया है; वह यह कि संसार की कोई वस्तु अल्लाह की बन्दगी से आज़ाद नहीं है। संसार की प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व और अपने गुणों की दृष्टि से अल्लाह के आगे झुकी हुई है। यहाँ प्रत्येक वस्तु स्वयं अपने स्वभाव से ही अपनी विवशता, नम्रता और अपनी अपूर्णता का परिचय कराती है। किसी चीज़ की छाया का होना उस के भौतिक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भौतिक वस्तुयें स्वयं अपनी सृष्टिकर्ता नहीं हो सकतीं; उन का कोई ईश्वर अवश्य होगा जिस के नियमों के पालन से ही वे स्थिर रह सकती हैं।

१५. इस से मालूम होता है कि जीवधारी केवल धरती में ही नहीं हैं बल्कि गगन में भी जीवधारी पाये जाते हैं चाहे वे किसी नक्षत्र और तारे में हों या कहीं और।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. तुम्हारे पास जो नेमत भी है अल्लाह ही की ओर से है। फिर, जब कोई संकट तुम पर आता है, तो तुम उसी की ओर फ़रियाद लिये दौड़ते हो[१६]।

53. And whatever of comfort ye enjoy, it is from Allah. Then, when misfortune reacheth you, unto Him ye cry for help.

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾

५४. परन्तु जब वह उस आपत्ति को तुम से टाल देता है, तो क्या देखते हैं कि तुम में एक गरोह अपने 'रब' के साथ दूसरों को शरीक ठहराने लगता है,

54. And afterward, when He hath rid you of the misfortune behold! a set of you attribute partners to their Lord,

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

५५. ताकि जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस के साथ 'कुफ़्र' करें। अच्छा जीवन का थोड़ा आनन्द ले लो तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

55. So as to deny that which We have given them. Then enjoy life (while ye may), for ye will come to know.

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

५६. और हम ने इन्हें जो रोज़ी दी है ये उस में उस का हिस्सा लगाते हैं[१७] जिस के बारे में नहीं जानते[१८]। अल्लाह की क़सम ! जो झूठ तुम गढ़ते हो उस के बारे में तुम से अवश्य पूछा जायेगा।

56. And they assign a portion of that which We have given them unto what they know not. By Allah! but ye will indeed be asked concerning (all) that ye used to invent.

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

५७. और ये अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं[१९]—महिमावान् है वह !—और इन के लिए वह जो ये चाहें;[२०]

57. And they assign unto Allah daughters—Be He glorified!—and unto themselves what they desire;

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

५८. और (इन का हाल यह है कि) जब इन में किसी को बेटी होने की शुभ-सूचना मिलती है, तो उस के चेहरे पर कलौंस छा जाती है, और वह जी-ही-जी में कुढ़ कर रह जाता है।

58. When if one of them receiveth tidings of the birth of a female, his face remaineth darkened, and he is wroth inwardly.

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

५६. जो शुभ-सूचना उसे दी गई वह ऐसी बुराई की बात हुई कि लोगों से छिपता फिरता है, (सोचता है): अपमान स्वीकार कर के उसे रहने दे, या उसे मिट्टी में दबा दे। क्या ही बुरा फ़ैसला है जो ये करते हैं[२१]।

59. He hideth himself from the folk because of the evil of that whereof he hath had tidings, (asking himself): Shall he kept it in contempt, or bury it beneath the dust? Verily evil is their judgment.

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

१६. मुसीबत के समय तुम्हारा वास्तविक स्वभाव और तुम्हारी चेतना थोड़ी देर के लिए जाग उठती है यह वास्तव में 'तौहीद' (Divine Unity) का एक प्रमाण है जो स्वयं तुम्हारे अन्दर मौजूद है।

१७. अर्थात् अपनी पैदावार और अपनी आय का एक हिस्सा उस की नज़्र, भेंट और चढ़ाने के रूप में निकालते रहते हैं।

१८. अर्थात् जिन के बारे में प्रमाणित रूप से उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं कि वास्तव में वे अल्लाह के शरीक हैं।

१६. अरब के 'मुश्रिक' लोग जिन की पूजा करते थे उन में अधिकतर देवियाँ ही थीं जिन्हें वे अल्लाह की बेटियाँ समझते थे।

२०. अर्थात् बेटे।

२१. अल्लाह के बारे में इन की कल्पना कितनी गिर चुकी है कि जिन बेटियों को ये स्वयं अपने लिए लज्जा और अपमान का लक्षण समझते हैं उन का नाता अल्लाह से जोड़ने में इन्हें कुछ भी संकोच नहीं होता। यदि ये बुद्धि से काम लेते तो यह बात आसानी से इन की समझ में आ सकती थी कि अल्लाह के लिए औलाद ठहराना स्वयं एक नीचता और अज्ञान की बात है चाहे बेटी के बदले कोई अल्लाह के लिए बेटा ही क्यों न ठहराये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०. जो लोग 'आख़िरत' पर 'ईमान' नहीं रखते उन की बुरी मिसाल है, और अल्लाह की सब से ऊँची मिसाल है। और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

60. For those who believe not in the Hereafter is an evil similitude, and Allah's is the Sublime Similitude. He is the Mighty, the Wise.

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ
السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ
ع الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾

६१. और यदि अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म पर पकड़ने लग जाये (और उन्हें मुहलत न दे) तो धरती पर एक जानदार को भी न छोड़े, परन्तु वह उन्हें एक नियत समय तक ढील देता है, फिर जब उन का नियत समय आ जाता है तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे।

61. If Allah were to take mankind to task for their wrong-doing, He would not leave hereon a living creature, but He reprieveth them to an appointed term, and when their term cometh they cannot put (it) off an hour nor (yet) advance (it).

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ
يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً
وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

६२. ये अल्लाह के लिए वह कुछ ठहराते हैं जिसे (स्वयं अपने लिए) नापसन्द करते हैं, और इन की ज़बानें झूठ कहती हैं कि इन के लिए (हर तरह की) अच्छाई है। निश्चय ही इन के लिए ('जहन्नम' की भड़कती) आग है, और ये आगे बढ़ाये जायेंगे।

62. And they assign unto Allah that which they (themselves) dislike, and their tongues expound the lie that the better portion will be theirs. Assuredly theirs will be the Fire, and they will be abandoned.

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ
اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ
لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ
مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

६३. अल्लाह की क़सम हम तुम से पहले भी कितनी ही जातियों के पास 'रसूल' भेज चुके हैं, परन्तु 'शैतान' ने उन के करतूतों को उन के लिए शोभायमान बना दिया। तो वही ('शैतान') आज इन का संगी-साथी है, और इन के लिए दुःख देने वाली यातना है।

63. By Allah, We verily sent messengers unto the nations before thee, but the devil made their deeds fair-seeming unto them. So he is their patron this day, and theirs will be a painful doom.

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

६४. और हम ने तुम पर यह 'किताब' इसी लिए उतारी है कि जिस विषय में वे विभेद कर रहे हैं तुम उस को इन पर खोल दो, और 'ईमान' लाने वाले लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता है।

64. And We have revealed the Scripture unto thee only that thou mayst explain unto them that wherein they differ, and (as) a guidance and a mercy for a people who believe.

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ
لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

६५. और अल्लाह ने आकाश से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा भूमि में उस के मुरदा हो जाने के पश्चात् जान डाल दी। निस्सन्देह इस में सुनने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है।

65. Allah sendeth down water from the sky and therewith reviveth the earth after her death. Lo! herein is indeed a portent for a folk who hear.

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
ع لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

६६. और निस्सन्देह तुम्हारे लिए पशुओं में भी एक शिक्षा-सामग्री है। जो कुछ उन के पेट में है उस में से, गोबर और रक्त के बीच में से हम तुम्हें शुद्ध दूध पिलाते हैं,[२२] जो पीने वालों के लिए अत्यन्त सुखकर है।

66. And lo! in the cattle there is a lesson for you. We give you to drink of that which is in their bellies from betwixt the refuse and the blood, pure milk palatable to the drinkers.

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ
مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ
لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

२२. पशु जो कुछ खाते हैं उस से एक ओर तो रक्त बनता है दूसरी ओर मल और गोबर; परन्तु अल्लाह इन के अतिरिक्त एक तीसरी चीज़ भी उन की मादा के पेट में तैयार करता है; और वह है शुद्ध दूध जो रंग, गन्ध और उपयोगिता में इन दोनों से भिन्न होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६७. और खजूरों, और अंगूरों के फलों से भी, (हम तुम्हें एक चीज़ पिलाते हैं) जिस से तुम नशा भी तैयार करते हो और अच्छी रोज़ी भी"। निस्सन्देह इस में बुद्धि से काम लेने वालों के लिए एक बड़ी निशानी है।

67. And of the fruits of the date-palm, and grapes, whence ye derive strong drink and (also) good nourishment. Lo! therein is indeed a portent for people who have sense.

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ
تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

६८. और देखो तुम्हारे 'रब' ने मधु मक्खी पर 'वह्य' कर दी[२४] कि पहाड़ों में और पेड़ों में और उन टट्टियों में जिन्हें बाँधते हैं घर बना;

68. And thy Lord inspired the bee, saying: Choose thou habitations in the hills and in the trees and in that which they hatch;

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ
وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

६९. फिर हर प्रकार के फल-फूलों का रस चूस और अपने 'रब' के (ठहराये हुये) मार्गों पर आज्ञापालन करते हुए चल। उस के पेट से एक पेय निकलता है जिस के रंग भिन्न होते हैं, जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है[२५]। निस्सन्देह इस में सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है।

69. Then eat of all fruits, and follow the ways of thy Lord, made smooth (for thee). There cometh forth from their bellies a drink diverse of huse, wherein is healing for mankind. Lo! herein is indeed a portent for people who reflect.

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ
سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا
شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ
لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

७०. और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें ग्रस्त लेता है,[२६] और तुम में से किसी को (बुढ़ापे की) निकृष्टतम आयु को पहुँचा दिया जाता है, ताकि वह ज्ञान के बाद फिर कुछ न जाने। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और बड़ा सामर्थ्यवान है।

70. And Allah createth you, then causeth you to die, and among you is he who is brought back to the most abject stage of life, so that he knoweth nothing (after having had) knowledge. Lo! Allah is Knower, Powerful.

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ؕ وَمِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا
يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
ع قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾

७१. और अल्लाह ने तुम में किसी को किसी पर रोज़ी में बड़ाई दी है। फिर जिन को बड़ाई दी गई है वे ऐसे नहीं हैं कि अपनी रोज़ी उन की ओर फेर दिया करते हों जो उन के क़ब्ज़े में हैं कि वे इस में बराबर हो जायें। तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं[२७] ?

71. And Allah hath favoured some of you above others in provision. Now those who are more favoured will by no means hand over their provision to those (slaves) whom their right hands possess, so that they may be equal with them in respect thereof. Is it then the grace of Allah that they deny?

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي
الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ
رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

२३. इस 'आयत' में शराब (मदिरा) के हराम होने की ओर भी सूक्ष्म संकेत पाया जाता है।

२४. अर्थात् उस के मन में यह भावना उत्पन्न कर दी।

२५. मधु कुछ रोगों में औषध का काम करता है। मधु सड़ता नहीं दूसरी चीज़ों को सड़ने से बचाता भी है। इसी लिए मधु को पहले अलकोहल (Alcohol) की जगह प्रयोग में लाते थे। यदि किसी भू-भाग में कोई विशेष जड़ी-बूटी पाई जाती है तो वहाँ के मधु को उस जड़ी-बूटी का सत समझना चाहिए।

२६. अर्थात् तुम्हें मौत देता है।

२७. अर्थात् जब तुम अपने ग़ुलामों और सेवकों को अपनी सम्पत्ति में बराबर का दर्जा देने के लिए तैयार नहीं हो, तो फिर यह कैसे उचित हो सकता है कि अल्लाह ने जो कुछ उपकार तुम पर किया है उस के प्रति अल्लाह के सिवा उस के बे-बस ग़ुलामों के आगे कृतज्ञता प्रकट करने लग जाओ। हक़ और अधिकार में अल्लाह के बन्दे उस के बराबर कैसे हो सकते हैं। ठीक यही बात 'सूरा' रूम आयत २८ में भी बयान हुई है। अल्लाह के उपकारों के प्रति अल्लाह के सिवा किसी और का आभारी होना वास्तव में अल्लाह के उपकार का इन्कार करना है। दे० आयत ८३, सूरा रूम आयत २८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम में से जोड़े बनाये, और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किये, और तुम्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी। तो क्या ये निःसत्व पर 'ईमान' लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं ?

72. And Allah hath given you wives of your own kind, and hath given you, from your wives, sons and grandsons, and hath made provision of good things for you. Is it then in vanity that they believe and in the grace of Allah that they disbelieve?

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝٧٢

७३. और अल्लाह के सिवा उन की पूजा करते हैं जो आकाशों और धरती से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं रखते, और न उन्हें कोई सामर्थ्य ही प्राप्त है।

73. And they worship beside Allah that which owneth no provision whatsoever for them from the heavens or the earth, nor have they (whom they worship) any power.

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٧٣

७४. तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो[२८]। निस्सन्देह अल्लाह जानता है; और तुम नहीं जानते।

74. So coin not similitudes for Allah, Lo! Allah knoweth; ye know not.

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧٤

७५. अल्लाह एक मिसाल बयान करता है : एक है ग़ुलाम जो दूसरे के अधिकार में है, किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं, और एक वह है जिसे हम ने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी है, और वह उस में से छिपे और खुले ख़र्च करता है। तो क्या ये बराबर हैं ? प्रशंसा अल्लाह के लिए है ! परन्तु इन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

75. Allah coineth a similitude (on the one hand) a (mere) chattel slave, who hath control of nothing, and (on the other hand) one on whom We have bestowed a fair provision from Us, and he spendeth thereof secretly and openly. Are they equal? Praise be to Allah! But most of them know not.

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا
يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا ۭ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥

७६. और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है : दो आदमी हैं उन में एक गूंगा है, किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं, वह अपने स्वामी पर एक बोझ है; उसे वह जहां भेजता है, कुछ भला कर के नहीं लाता। क्या वह उस के बराबर है जो इन्साफ़ का हुक्म देता है और स्वयं सीधे मार्ग पर है ?

76. And Allah coineth a similitude: Two men, one of them dumb, having control of nothing, and he is a burden on his owner; whithersoever he directeth him to go, he bringeth no good. Is he equal with one who enjoineth justice and followeth a straight path (of conduct)?

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ
اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ
كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ
لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ
وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٧٦ ع

७७. आकाशों और धरती की छिपी बात अल्लाह ही के लिए ख़ास है, और उस घड़ी का मामला तो बस ऐसा है जैसे आँख का झपकना[२९], या वह और अधिक निकट है। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।

77. And unto Allah belongeth the Unseen of the heavens and the earth and the matter of the Hour (of Doom) is but as a twinkling of the eye, or it is nearer still. Lo! Allah is Able to do all things.

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَآ
اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ
اَقْرَبُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٧٧

२८. अर्थात् अल्लाह को दुनिया के सम्राटों और हाकिमों जैसा न समझो, वह सब की बिना किसी वसीले के सुनता है और हर एक की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

२९. अर्थात् 'क़ियामत' तो बस अचानक आँख झपकते आ जायेगी; फिर तुम्हें सँभलने का कोई अवसर न मिल सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला, तुम कुछ नहीं जानते थे, उस ने तुम्हें कान और आँखें और दिल दिये कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

78. And Allah brought you forth from the wombs of your mothers knowing nothing, and gave you hearing and sight and hearts that haply ye might give thanks.

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

७९. क्या इन्हों ने पक्षियों को नभमण्डल में हुक्म के अधीन नहीं देखा? अल्लाह के सिवा कोई दूसरा उन्हें नहीं थामे रखता है[३०]। निस्सन्देह इस में 'ईमान' लाने वाले लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

79. Have they not seen the birds obedient in mid air? None holdeth them save Allah. Lo! herein, verily, are portents for a people who believe.

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ
السَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

८०. और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह बनाया, और उस ने जानवरों की खालों से, तुम्हारे लिए घर (ख़ेमे) बनाये जिन को तुम अपने प्रस्थान करने के दिन और अपने ठहरने के दिन हलका पाते हो;[३१] और उन (जानवरों) के ऊन और उन के रोओं और उन के बालों से कितने ही सामान और बरतन की चीज़ें एक अवधि तक के लिए[३२] बना दीं।

80. And Allah hath given you in your houses an abode, and hath given you (also), of the hides of cattle, houses which ye find light (to carry) on the day of migration and on the day of pitching camp; and of their wool and their fur and their hair, caparison and comfort for a while.

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ
بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ
اِقَامَتِكُمْ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا
وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾

८१. और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई चीज़ों से तुम्हारे लिए छायों का प्रबन्ध किया; और पहाड़ों में तुम्हारे लिए छिपने की जगह बनाई, और तुम्हें ऐसे वस्त्र दिये जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और कुछ दूसरे वस्त्र जो तुम्हारी अपनी लड़ाई में तुम्हारी रक्षा करते हैं[३३]। इस तरह वह तुम पर अपनी नेमत पूरी करता है, कदाचित् तुम 'मुस्लिम' बनो।

81. And Allah hath given you, of that which He hath created, shelter from the sun, and hath given you places of refuge in the mountains, and hath given you coats to ward off the heat from you, and coats (of armour) to save you from your own foolhardiness. Thus doth He perfect His favour unto you, in order that ye may surrender (unto Him).

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ
جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَ
سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

८२. फिर भी, यदि ये मुँह मोड़ते हैं; तो तुम्हारी ज़िम्मेदारी केवल साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है।

82. Then, if they turn away, thy duty (O Muhammad) is but plain conveyance (of the message.)

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾

८३. ये अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं[३४]। और इन में अधिकतर लोग 'काफ़िर' (अकृतज्ञ) हैं।

83. They know the favour of Allah and then deny it. Most of them are ingrates.

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا
وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

३०. अर्थात् अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जिस ने उन समस्त साधनों को संचित किया हो जिन के कारण वायुमण्डल में पक्षियों का ठहरना सम्भव हो सका है।

३१. अर्थात् हलका होने के कारण उन्हें सफ़र में अपने साथ रखते हो; और कहीं जब ठहरना चाहते हो तो आसानी से उन्हें खड़ा कर देते हो।

३२. अर्थात् वे एक निश्चित समय तक तुम्हारे काम आती हैं।

३३. अर्थात् कवच और बकतर आदि।

३४. अर्थात् अल्लाह ने इन पर जो एहसान किया है उस के लिए ये अल्लाह के साथ अपने दूसरे देवी-देवताओं के आगे कृतज्ञता दिखलाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. और (उस दिन इन का क्या हाल होगा) जिस दिन हम हर गरोह में से एक गवाह खड़ा करेंगे,[३५] फिर जिन्हों ने 'कुफ़्' किया उन को इजाज़त नहीं दी जायेगी (कि ज़बान खोल सकें), और न उन्हें इस का अवसर दिया जायेगा कि उसे ख़ुश करने की प्रार्थना करें।

84. And (bethink you of) the day when We raise up of every nation a witness, then there is no leave for disbelievers, nor are they allowed to make amends.

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

८५. और जब ज़ुल्म करने वाले लोग यातना को देखेंगे, तो न उन की यातना में कोई कमी की जायेगी, और न उन्हें मुहलत दी जायेगी।

85. And when those who ascribed partners to the doom, it will not be made light for them, nor will they be reprieved.

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

८६. और जब 'शिर्क' करने वाले लोग अपने (ठहराये हुये) शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे : हमारे 'रब'! ये हमारे (ठहराये हुये) शरीक हैं जिन को हम तेरे सिवा पुकारते थे। परन्तु वे[३६] बात उन की ओर फेंक मारेंगे कि तुम बिल्कुल झूठे हो!

86. And when those who ascribed partners to Allah behold those partners of theirs, they will say: Our Lord! these are our partners unto whom we used to cry instead of Thee. But they will fling to them the saying: Lo! ye verily are liars!

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِن دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

८७. और उस दिन वे अल्लाह के आगे आ पड़ेंगे, और जो झूठ वे गढ़ा करते थे सब उन से गुम हो कर रह जायेगा।

87. And they proffer unto Allah submission on that day, and all that they used to invent hath failed them.

وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ ۖ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

८८. जिन्हों ने 'कुफ़्' किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका, उन को हम यातना पर यातना देंगे इस लिए कि वे बिगाड़ पैदा करते थे।

88. For those who disbelieve and debar (men) from the way of Allah, We add doom to doom because they wrought corruption.

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

८९. जिस दिन हम हर गरोह में स्वयं उन्हीं में से एक गवाह उन के मुक़ाबले में खड़ा करेंगे। और इन (लोगों) के मुक़ाबले में गवाह के रूप में तुम्हें लायेंगे। और हम ने तुम पर ऐसी 'किताब' उतारी है जो हर चीज़ को खोल-खोल कर बयान करने वाली है, और 'मुस्लिमों' के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता और शुभ-सूचना है।

89. And (bethink you of) the day when We raise in every nation a witness against them of their own folk and We bring thee (Muhammad) as a witness against these. And We reveal the Scripture unto thee as an exposition of all things and a guidance and a mercy and good tidings for those who have surrendered (to Allah).

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

९०. निस्सन्देह अल्लाह न्याय और भलाई करने, और नातेदारों को (उन का हक़) देने का हुक्म देता है, और अश्लील कर्म और बुराई और सरकशी से रोकता है[३७]। वह तुम्हें सदोपदेश देता है ताकि तुम ध्यान दो।

90. Lo! Allah enjoineth justice and kindness, and giving to kinsfolk, and forbiddeth lewdness and abomination and wickedness. He exhorteth you in order that ye may take heed.

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

३५. हर गरोह का 'नबी' या कोई व्यक्ति जिस ने 'नबी' के बाद उस गरोह को सत्य-धर्म की ओर बुलाया होगा गवाही के लिए खड़ा किया जायेगा कि उस ने लोगों तक सत्य-सन्देश पहुँचा दिया था, लोगों ने सत्य के विरुद्ध जो काम भी किया जानते-बूझते किया; इस लिए ये निश्चय ही अपराधी हैं।

३६. अर्थात् उन के ठहराये हुये शरीक।

३७. यह क़ुरआन का एक विशेष वाक्य है; किसी समाज के सुधार और जीवन में सरलता, माधुर्य और सौंन्दर्य लाने का इस से बढ़ कर दूसरा और कोई उपाय नहीं हो सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९१. और अल्लाह के इक़रार को पूरा करो जब कि तुम ने कोई इक़रार किया हो, और अपनी क़समों को उन्हें पक्की करने के बाद तोड़ न डालो जब कि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहरा चुके हो[३८]। निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

91. Fulfil the covenant of Allah when ye have covenanted, and break not your oaths after the asseveration of them and after ye have made Allah surety over you. Lo! Allah knoweth what ye do.

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ
وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

९२. और तुम उस स्त्री की तरह न हो जाओ जिस ने अपना सूत परिश्रम से कातने के बाद, टुकड़े-टुकड़े कर डाला, कि तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का साधन बनाने लगो ताकि एक गरोह दूसरे गरोह से बढ़ जाये। बात केवल यह है कि अल्लाह इस (इक़रार) के द्वारा तुम्हें आज़माता है और जिस बात में तुम विभेद करते हो 'क़ियामत' के दिन उस (की वास्तविकता) को वह तुम पर अवश्य खोल देगा।

92. And be not like unto her who unravelleth the thread, after she hath made it strong, to thin filaments, making your oaths a deceit between you because of a nation being more numerous than (another) nation. Allah only trieth you thereby, and He verily will explain to you on the Day of Resurrection that wherein ye differed.

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَّخِذُونَ
أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ
أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ
اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

९३. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक गरोह बना देता परन्तु वह जिसे चाहता है गुमराही में डालता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है[३९] और तुम जो कुछ भी करते हो उस के बारे में तुम से अवश्य पूछा जायेगा।

93. Had Allah willed He could have made you (all) one nation, but He sendeth whom He will astray and guideth whom He will, and ye will indeed be asked of what ye used to do.

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَٰكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ
يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

९४. और तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का साधन न बना लेना कहीं ऐसा न हो कि कोई क़दम जमने के बाद उखड़ जाये और फिर तुम्हें अल्लाह के मार्ग से रोकने के अपराध में तकलीफ़ भोगनी पड़े और तुम एक बड़ी यातना के भागी ठहरो।

94. Make not your oaths a deciet between you lest a foot should slip after being firmly planted and ye should taste evil for as much as ye debarred (men) from the way of Allah, and yours should be an awful doom.

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ
فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا
السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾

९५. और अल्लाह के इक़रार[४०] को थोड़े से मूल्य के बदले न बेच डालो[४१]। निस्सन्देह जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम जानो।

95. And purchase not a small gain at the price of Allah's covenant. Lo! that which Allah hath is better for you if ye did but know.

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ
إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

३८. दे० 'सूरा' आले इमरान आयत ७६, ७७।

३९. संसार में मनुष्य को स्वतन्त्रता प्राप्त है कि वह जिस रास्ते को भी पसन्द करे, अपना ले। यह स्वतन्त्रता मनुष्य को अल्लाह ही की ओर से मिली है, यही कारण है कि मनुष्य संसार में विभिन्न मार्गों पर चलता रहा है। जब कोई गुमराही की ओर जाना चाहता है तो अल्लाह उस के लिए गुमराही का मार्ग सुलभ कर देता है; और जब कोई सीधे मार्ग पर चलना चाहता है, तो उसे सीधा मार्ग दिखा देता है। मनुष्य को वर्तमान जगत में जो स्वतन्त्रता प्राप्त है इस में उस की इस बात की परीक्षा है कि वह अपने लिए कौन सा मार्ग पसन्द करता है, वह मार्ग जिस पर चलने से अल्लाह खुश होता है और 'जन्नत' का वरदान देता है या वह मार्ग जिस पर चल कर मनुष्य सीधा नरक में जा पड़ता है।

४० अर्थात् उस इक़रार (प्रतिज्ञा) को जो तुम ने अल्लाह के नाम पर किया हो।

४१. दे० सूरा आले-इमरान आयत ७६, ७७, सूरा अत-तौबा आयत ९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६. जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जायेगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने धैर्य्य से काम लिया हम उन्हें उन का बदला अवश्य देंगे जो कुछ अच्छे काम वे करते थे उस के बदले में।

96. That which ye have wasteth away, and that which Allah hath remaineth. And verily We shall pay those who are steadfast a recompense in proportion to the best of what they used to do.

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوٓا أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

९७. जिस किसी ने अच्छा काम किया, पुरुष हो या स्त्री, यदि वह 'ईमान' पर है, तो हम उसे अवश्य अच्छा जीवन प्रदान करेंगे, और हम उन्हें उन का बदला अवश्य देंगे जो कुछ अच्छे काम वे करते थे उस के बदले में।

97. Whosoever doth right, whether male or female, and is a believer, him verily We shall quicken with good life, and We shall pay them a recompense in proportion to the best of what they used to do.

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

९८. तो जब तुम 'क़ुरआन' पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए 'शैतान' से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँग लिया करो[४२]।

98. And when thou recitest the Quran, seek refuge in Allah from Satan the outcast.

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

९९. निस्सन्देह उस का उन पर कुछ भी ज़ोर नहीं चलता जो 'ईमान' ले आये और अपने 'रब' पर भरोसा करते हैं।

99. Lo! he hath no power over those who believe and put trust in their Lord.

إِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

१००. उस का ज़ोर तो केवल उन लोगों पर चलता है जो उस से ('शैतान' से) मित्रता का नाता जोड़ते, और जो उस के साथ (अल्लाह के साथ) 'शिर्क' करते हैं।

100. His power is only over those who make a friend of him, and those who ascribe partners unto Him (Allah).

إِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهٗ
وَالَّذِينَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

१०१. और जब हम एक 'आयत' की जगह दूसरी 'आयत' बदल कर लाते हैं—और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वह उतारता है—तो वे कहते हैं : तुम तो बस स्वयं गढ़ लेने वाले हो। नहीं, बल्कि उन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

101. And when We put a revelation in place of (another) revelation,—and Allah knoweth best what He revealeth — they say: Lo! thou art but inventing. Most of them know not.

وَإِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ وَّاللّٰهُ
أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوٓا إِنَّمَآ أَنْتَ
مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

१०२. कह दो : उसे तो 'रूहुल्क़ुदुस' (पवित्र आत्मा) ने तेरे 'रब' की ओर से 'हक़' के साथ उतारा है, ताकि 'ईमान' वालों को दृढ़ रक्खे, और 'मुस्लिमों' के लिए मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना हो।

102. Say: The holy Spirit hath revealed it from thy Lord with truth, that it may confirm (the faith) those who believe, and as guidance and good tidings for those who have surrendered (to Allah).

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾

१०३. और (हे 'नबी'!) हम जानते हैं कि वे (तुम्हारे बारे में) कहते हैं : उस को तो बस एक आदमी सिखाता-पढ़ाता है[४३]। हालाँकि जिस की ओर वे संकेत करते हैं उस की भाषा विदेशी है, और यह भाषा[४४] स्पष्ट अरबी है।

103. And We know well that they say: Only a man teacheth him. The speech of him at whom they falsely hint is outlandish, and this is clear Arabic speech.

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ
بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٠٣﴾

४२. दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ३६।
४३. ऐतिहासिक कथनों में कई एक नाम आये हैं जिन में से किसी एक के बारे में मक्का वाले यह कहते थे कि वह हज़रत मुहम्मद सल्ल० को सिखाता-पढ़ाता है।
४४. अर्थात् 'क़ुरआन' की भाषा। दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ४४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४. सच्ची बात यह है कि जो लोग अल्लाह की 'आयतों' पर 'ईमान' नहीं लाते, अल्लाह उन्हें मार्ग नहीं दिखाता और उन के लिए दुःख देने वाली यातना है।

104. Lo! those who disbelieve the revelations of Allah Allah guideth them not and theirs will be a painful doom.

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

१०५. झूठ तो बस वही गढ़ते हैं जो अल्लाह की 'आयतों' पर 'ईमान' नहीं लाते, और वही झूठे हैं।

105. Only they invent falsehood who believe not Allah's revelations and (only) they are the liars.

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

१०६. जिस किसी ने अपने 'ईमान' के बाद अल्लाह के साथ 'कुफ़्र' किया—सिवाय उस के जो (इस के लिए) विवश कर दिया गया हो और दिल उस का 'ईमान' पर सन्तुष्ट हो—बल्कि वह जिस ने सीना कुफ़्र के लिए खोल दिया,[४५] तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है। और उन के लिए बड़ी यातना है[४६]।

106. Whoso disbelieveth in Allah after his belief — save him who is forced thereto and whose heart is still content with Faith — but whoso findeth ease in disbelief: On them is wrath from Allah. Theirs will be an awful doom.

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

१०७. यह इस लिए कि उन्हों ने 'आखिरत' के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन को पसन्द किया, और इस लिए कि अल्लाह 'काफ़िर' लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

107. That is because they have chosen the life of the world rather than the Hereafter and because Allah guideth not the disbelieving folk.

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾

१०८. ये वे लोग हैं जिन के दिलों और जिन के कान और जिन की आँखों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है[४७]। और ये वे लोग हैं जो बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं।

108. Such are they whose hearts and ears and eyes Allah hath sealed. And such are the heedless.

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾

१०९. निश्चय ही यही 'आखिरत' में घाटा उठाने वाले हैं।

109. Assuredly in the Hereafter they are the losers.

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٩﴾

४५. अर्थात् स्वेच्छापूर्वक 'कुफ़्र' के मार्ग को अपना लिया।

४६. यह 'आयत' उन मुसलमानों के बारे में उतरी है जिन्हें मक्का में तरह-तरह से सताया जा रहा था। उन्हें अत्यन्त कष्ट पहुँचा कर 'कुफ़्र' ग्रहण करने पर विवश किया जा रहा था। इस 'आयत' में बताया जा रहा है कि यदि कोई व्यक्ति जान बचाने के लिए ज़बान पर 'कुफ़्र' की कोई बात ला दे और दिल उस 'कुफ़्र' से पाक हो, तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा; परन्तु यदि उस ने दिल से 'कुफ़्र' को अपना लिया, तो फिर अल्लाह की यातना से उसे कोई नहीं बचा सकता। इस 'आयत' में मुसलमानों को छूट दी गई है कि दिल में 'ईमान' रखते हुये यदि आदमी विवशतापूर्वक कोई ऐसी बात कह दे जो 'ईमान' के प्रतिकूल हो, तो उस की पकड़ न होगी; परन्तु साहस और दृढ़ संकल्प की बात यह है कि आदमी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले जायें फिर भी सत्य वचन के सिवा उस के मुँह से कोई और बात न निकले; वह अन्तिम समय तक सत्य ही की घोषणा करता रहे और मुँह से कोई ऐसी बात न निकाले जो 'ईमान' के विरुद्ध हो। इतिहास में हमें साहस और दृढ़ संकल्प के बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

४७ दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११०. फिर निश्चय ही तेरा 'रब'—उन के लिए जिन्हों ने इस के बाद कि आज़माइश में पड़ चुके थे 'हिजरत' की, फिर (अल्लाह के मार्ग की) कठिनाइयाँ झेलीं और धैर्य से काम लिया[४८]—निश्चय ही तेरा 'रब' इन बातों के बाद (उन के लिए) बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है,[४९]

110. Then lo! thy Lord — for those who become fugitives after they had been persecuted, and then fought and were steadfast — lo! thy Lord afterward is (for them) indeed Forgiving, Merciful.

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٠﴾

१११. जिस दिन प्रत्येक जीव अपने ही लिए झगड़ रहा होगा,[५०] और प्रत्येक जीव को जो कुछ उस ने किया होगा उस का पूरा-पूरा बदला चुका दिया जायेगा, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

111. On the Day when every soul will come pleading for itself, and every soul will be repaid what it did, and they will not be wronged.

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

११२. और अल्लाह एक मिसाल देता है : एक बस्ती थी जो निश्चिन्त और सन्तुष्ट (चली आ रही) थी, हर जगह से उस की रोज़ी बहुतायत के साथ चली आ रही थी, फिर उस ने अल्लाह की नेमतों के साथ 'कुफ़्र' किया, तो अल्लाह ने उस (के निवासियों) को उन के करतूतों के बदले में भूख (के भोजन) का मज़ा चखाया और भय का वस्त्र पहनाया[५१]।

112. Allah coineth a similitude: a township that dwelt secure and well content, its provision coming to it in abundance from every side, but it disbelieved in Allah's favours, so Allah made it experience the grab of dearth and fear because of what they used to do.

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

११३. और उन के पास उन में से ही एक 'रसूल' आया, परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, फिर यातना ने उन्हें आ लिया इस अवस्था में कि वे ज़ालिम थे।

113. And verily there had come unto them a messenger from among them, but they had denied him, and so the torment seized them while they were wrong-doers.

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

११४. तो जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक रोज़ी दी है उसे खाओ, और अल्लाह की नेमत का आभार स्वीकार करो यदि तुम उसी की 'इबादत' करते हो।

114. So eat of the lawful and good food which Allah hath provided for you, and thank the bounty of your Lord if it is Him ye serve.

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

४८. हबशा की ओर मुसलमानों ने 'हिजरत' की थी यह संकेत उसी की ओर है।

४९. 'ईमान' और अच्छे कामों के कारण उन के गुनाह और जो कुछ उन्हों ने पहले 'कुफ़्र' और 'शिर्क' किया होगा सब क्षमा कर दिया जायेगा।

५०. अर्थात् हर एक को अपनी चिन्ता होगी।

५१. यहाँ जिस बस्ती की उपमा दी गई ऐसा लगता है कि उस से अभिप्रेत मक्का नगर ही है। यदि मक्का को यहाँ मिसाल में पेश किया गया है तो 'आयत' में जिस भूख और भय के छा जाने का उल्लेख किया गया है उस से उस अकाल की ओर संकेत होगा जिस से कई वर्षों तक मक्का वाले पीड़ित रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११५. उस ने तुम पर केवल मुरदार को, रक्त को, और सुअर के मांस को, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है; फिर जो कोई विवश हो जाये, (और जान बचाने के लिए इन को खाये इस तरह कि) न तो उसे कोई इच्छा हो न वह (आवश्यकता की) हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[५२]।

115. He hath forbidden for you only carrion and blood and swine-flesh and that which hath been immolated in the name of any other than Allah; but he who is driven thereto, neither craving nor transgressing, lo! then Allah is Forgiving, Merciful.

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ
بِهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٥﴾

११६. और तुम अपनी ज़बानों के बयान किये हुये झूठ के आधार पर यह न कहो कि : "यह 'हलाल' है और यह 'हराम' है," कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़ने लगो। निस्सन्देह जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे सफल नहीं होते।

116. And speak not, concerning that which your own tongues qualify (as clean or unclean), the falsehood: This is lawful, and this is forbidden", so that ye invent a lie against Allah. Lo! those who invent a lie against Allah will not succeed.

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ
الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا حَرَامٌ
لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾

११७. आनन्द थोड़ा है और उन के लिए दुख:दायिनी यातना है।

117. A brief enjoyment (will be theirs); and theirs a painful doom.

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

११८. और जो लोग यहूदी[५३] हैं उन पर हम ने वह कुछ 'हराम' किया था जो इस से पहले हम तुम से बयान कर चुके हैं[५४]। हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने आप पर जुल्म करते थे।

118. And unto those who are Jews We have forbidden that which We have already related unto thee. And We wronged them not, but they were wont to wrong themselves.

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ
كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

११९. फिर निस्सन्देह तेरा 'रब'—उन के लिए जिन्हों ने नादानी से (प्रबल इच्छा के वशीभूत हो कर) बुरा काम किया फिर इस के बाद 'तौबा' कर ली और सुधर गये—निस्सन्देह तेरा 'रब' इन बातों के बाद (उन के लिए) बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला है।

119. Then lo! the Lord — for those who do evil in ignorance and afterward repent and amend — lo! (for them) thy Lord is afterward indeed Forgiving, Merciful.

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَ
أَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿١١٩﴾ ع

५२. यह आदेश 'सूरा' अल-बक़रा आयत १७३, सूरा अल-माइदा आयत ३ और सूरा अल-अनआम आयत १४५ में बयान हो चुका है।

५३. यहाँ मक्का के 'काफ़िरों' के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है। मक्का के 'काफ़िर' यह आक्षेप करते थे कि 'बनी इसराईल' के धर्म-विधान में तो बहुत सी ऐसी चीज़ें 'हराम' थीं जिन्हें तुम 'हलाल' ठहरा रहे हो। जब उन का धर्म-शास्त्र भी अल्लाह ही की ओर से था तो फिर यह कैसा विभेद पाया जाता है? 'बनी इसराईल' के यहाँ सब्त (शनिवार) के दिन का जो आदर किया जाता था तुम ने उसे भी बाक़ी नहीं रक्खा; अल्लाह के नियमों में यह अन्तर कैसे हो सकता है।

५४. यह संकेत 'सूरा' अल-अनआम की आयत १४६ की ओर है। जिस में यह बताया गया है कि 'यहूदियों' की अवज्ञा के कारण विशेष रूप से उन पर कौन-कौन सी चीज़ें 'हराम' ठहरा दी गई थीं। परन्तु इस का अर्थ यह नहीं होता कि सूरा अल-अनआम इस सूरा से पहले उतरी है; वास्तव में 'काफ़िरों' ने जब सूरा अन-नह्ल की इन 'आयतों' पर 'हराम' और 'हलाल' के विषय में यह आक्षेप किया तो उस समय सूरा अल-अनआम उतर चुकी थी इस लिए 'काफ़िरो' के आक्षेप का उत्तर यह दिया गया कि हम पहले सूरा अल-अनआम में बता चुके हैं कि ये चीज़ें विशेष रूप से 'यहूदियों' पर हराम की गई थीं। फिर यह उत्तर सूरा अन-नह्ल में व्यवहित वाक्य के रूप में सम्मिलित कर दिया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०. निश्चय ही इब्राहीम एक पेशवा, अल्लाह के आगे पूरे अदब (भक्ति और विनय-भाव) से रहने वाला था, सब से कट कर एक (अल्लाह) का हो गया था, और वह 'शिर्क' करने वालों में से न था;

120. Lo! Abraham was a nation obedient to Allah by nature upright, and he was not of the idolaters!

إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ
حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ١٢٠

१२१. वह उस की (अर्थात् अल्लाह की) नेमतों का आभार स्वीकार करने वाला था; उस ने (अल्लाह ने) उसे चुन लिया और उसे सीधा मार्ग दिखाया।

121. Thankful for His bounties; He chose him and He guided him unto a straight path.

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ٱجْتَبَٰهُ وَهَدَىٰهُ إِلَىٰ
صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ١٢١

१२२. और हम ने उसे दुनिया में भलाई दी, और 'आख़िरत' में वह निश्चय ही अच्छे लोगों में से होगा।

122. And We gave him good in the world, and in the Hereafter he is among the righteous.

وَءَاتَيْنَٰهُ فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُۥ فِى
ٱلْءَاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ١٢٢

१२३. फिर हम ने तुम्हारी ओर 'वह्य' की कि हर ओर से कट कर, इब्राहीम के पन्थ पर चलो। और वह 'शिर्क' करने वालों में से न था।

123. And afterward We inspired thee (Muhammad, saying): Follow the religion of Abraham, as one by nature upright. He was not of the idolaters.

ثُمَّ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ أَنِ ٱتَّبِعْ مِلَّةَ
إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ
ٱلْمُشْرِكِينَ ١٢٣

१२४. 'सब्त'[५५] (का नियम) तो हम ने केवल उन लोगों के लिए ठहराया था जिन्हों ने उस के बारे में विभेद किया,[५६] और निस्सन्देह तेरा 'रब' 'क़ियामत' के दिन उन के बीच उस का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।

124. The Sabbath was appointed only for those who differed concerning it, and lo! thy Lord will judge between them on the Day of Resurrection concerning that wherein they used to differ.

إِنَّمَا جُعِلَ ٱلسَّبْتُ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱخْتَلَفُوا۟
فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ١٢٤

१२५. 'हिकमत' और सदुपदेश के साथ अपने 'रब' के मार्ग की ओर बुलाओ, और उन से ऐसी रीति से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो[५७]। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' उसे भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटक गया, और वह मार्ग पाने वालों को भी भली-भाँति जानता है।

125. Call unto the way of thy Lord with wisdom and fair exhortation, and reason with them in the better way Lo! thy Lord is best aware of him who strayeth from His way, and He is Best Aware of those who go aright.

ٱدْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِٱلْحِكْمَةِ وَ
ٱلْمَوْعِظَةِ ٱلْحَسَنَةِ وَجَٰدِلْهُم بِٱلَّتِى
هِىَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن
ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ١٢٥

५५. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट २३।

५६. यह मक्का वालों के दूसरे आक्षेप का उत्तर दिया गया है। हज़रत इब्राहीम के तरीक़े में 'सब्त' के आदर का आदेश सिरे से था ही नहीं। 'सब्त' के क़ानून की कठिनाइयों में तो 'यहूदी' अपनी शरारतों के कारण डाले गये हैं। 'यहूदियों' ने किस किस तरह 'सब्त' की मर्यादा का उल्लंघन किया है इस के लिए बाइबिल का अध्ययन उचित रहेगा। उदाहरणार्थ दे० बाइबिल, 'यरमियाह' (Jermiah) १७ : २१-२७। 'हिज़क़ियाल' (Ezekiel) २० : १२-२४।

५७. दे० सूरा बनी इसराईल आयत ५३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२६. और यदि तुम (किसी से) बदला लो, तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हें कष्ट पहुँचाया गया हो। और यदि 'सब्र' करो तो यह सब्र करने वालों के लिए अधिक अच्छा है।

126. If ye punish, then punish with the like of that wherewith ye were afflicted. But if ye endure patiently, verily it is better for the patient.

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم
بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ١٢٦

१२७. और 'सब्र' करो — तुम्हारा सब्र अल्लाह ही के सहारे होगा—और उन पर दुःखी न हो, और जो चाल वे चलते हैं उस से दिल तंग न हो।

127 Endure thou patiently (O Muhammad) Thine endurance is only by (the help of) Allah. Grieve not for them, and be not in distress because of that which they devise.

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ١٢٧

१२८. निस्सन्देह अल्लाह उन के साथ है जो डरते हैं और जो उत्तमकार हैं।

128. Lo! Allah is with those who keep their duty unto Him and those who are doers of good.

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ
هُم مُّحْسِنُونَ ١٢٨

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७—बनी इसराईल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'बनी इसराईल' सूरा की चौथी 'आयत' से लिया गया है। 'सूरा' के आरम्भ और अन्त में 'बनी इसराईल' से सम्बन्धित कुछ बातें बयान हुई हैं, इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' का नाम 'बनी इसराईल' रक्खा गया है। सूरा का यह नाम दूसरी और बहुत सी सूरतों की तरह केवल एक चिह्न के रूप में रक्खा गया है। इस सूरा को 'अल-इसरा' (The Night Journey) भी कहते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की पहली 'आयत' ही बताती है कि यह सूरा मेअ्राज'[1] (Ascension) के अवसर पर अवतीर्ण हुई है। नबी सल्ल० को मेअ्राज 'हिजरत' से एक वर्ष पहले हुई थी। यह वह समय था जब कि लोगों को सत्य की ओर बुलाते १२ वर्ष बीत चुके थे। सत्य की आवाज़ देश के प्रत्येक भाग तक पहुँच चुकी थी। मदीना में 'औस' और 'खज़रज' नामक शक्तिशाली क़बीलों की एक बड़ी संख्या नबी सल्ल० के साथ हो चुकी थी। वह समय निकट आ गया था जब आप (सल्ल०) अल्लाह के हुक्म से 'हिजरत' कर के मक्का से मदीना पहुँचे हैं; और मुसलमानों को एकत्र कर के एक आदर्श समाज का निर्माण किया है; और इस्लामी सिद्धान्तों पर आधारित एक राज्य की स्थापना का आप (सल्ल०) को सुअवसर प्राप्त हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'अल्लाह पर भरोसा रखना' यही इस 'सूरा' का मध्य विन्दु अथवा केन्द्रीय विषय है। दूसरी समस्त वार्त्ताओं का वास्तविक सम्पर्क इसी केन्द्रीय विषय से है।

यह 'सूरा' अपने से पहली सूरा की तरह चेतावनी तथा शुभ-सूचना की सूरा है। प्रस्तुत सूरा में 'यहूद' के लिए चेतावनी है और आगे आने वाली सूरा में 'नसारा' (ईसाइयों) के लिए।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में काफ़िरों को सचेत किया गया है कि वे 'बनी इसराईल' के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करें। और उन्हें जो थोड़ी मुहलत मिल रही है उस में सँभल जायें; और उस सत्य मार्ग को अपना लें जिस की ओर उन्हें बुलाया जा रहा है। यदि वे सँभलते नहीं तो वह समय दूर नहीं कि अल्लाह उन की जगह दूसरे लोगों को आबाद करेगा।

१. दे० इस 'सूरा' का फ़ुटनोट २। 'मेअ्राज' के अवसर पर अल्लाह ने क्या कुछ निशानियाँ आप (सल्ल०) को दिखाई हैं इस का उल्लेख क़ुरआन में नहीं किया गया। स्वयं नबी सल्ल० ने जो कुछ बयान किया उस का सारांश यह है। रात के समय 'जिब्रील' अ० आप (सल्ल०) को 'मस्जिदे हराम' (काबा) से "बैतुल मक़दिस" तक बुर्राक़ नामक सवारी पर ले गये। वहाँ आप (सल्ल०) ने स्वर्गीय नबियों के साथ 'नमाज़' पढ़ी। इस के बाद आप (सल्ल०) हज़रत जिबरील अ० के साथ ऊपरी लोक की ओर गये। विभिन्न आसमानी क्षेत्रों में विभिन्न महान 'नबियों' से आप (सल्ल०) मिले। अन्त में आप (सल्ल०) अत्यन्त उच्च स्थानों पर पहुँच कर अपने 'रब' की सेवा में हाज़िर हुये। इस अवसर पर दूसरे महत्वपूर्ण आदेशों के साथ-साथ ५ वक़्त की 'नमाज़ों' के अनिवार्य होने का आदेश दिया गया। इस यात्रा में आप (सल्ल०) को 'जन्नत' और 'जहन्नम' भी दिखाये गये। इस के बाद आप (सल्ल०) 'बैतुलमक़दिस' की ओर पलट आये। और वहाँ से 'मस्जिदे हराम' (काबा) वापस आ गये।

लौकिक आवरणों को बीच से हटा कर 'नबियों' को अलौकिक वास्तविकताओं का निरीक्षण करा देने में विशेष रहस्य यह है कि इस प्रकार 'नबियों' का स्थान दार्शनिकों (Philosophers) और दूसरे लोगों की अपेक्षा बहुत ऊँचा हो जाता है। 'नबी' जिन अन-देखी बातों पर 'ईमान' लाने के लिए हमें आमन्त्रित करते हैं उन से वे प्रत्यक्षतः परिचित होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तुत 'सूरा' में 'बनी इसराईल' को भी चेतावनी दी गई है कि उन्हें अल्लाह की अवज्ञा के कारण जो सज़ायें पहले मिल चुकी हैं उन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए । जिस सत्य धर्म की ओर उन्हें बुलाया जा रहा है स्वेच्छापूर्वक उसे स्वीकार करना चाहिए। परन्तु यदि उन्हों ने इस अवसर को भी खो दिया; और सत्य के विरोधी ही बने रहे, तो फिर उन्हें उन के बुरे परिणामों से कोई नहीं बचा सकता ।

इस 'सूरा' में इस पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है कि किस बात में मनुष्य की सफलता और उस का कल्याण है, और कौन सी बातें हैं जो मनुष्य के विनाश का कारण हैं। "तौहीद" (एकेश्वर-वाद), 'आखिरत', 'रिसालत' और 'क़ुरआन' की यथार्थता के प्रमाण दिये गये हैं; और 'काफ़िरों' के सन्देहों का पूर्णतः समाधान किया गया है। और उन्हें उन की कुचेष्टाओं पर डराया गया है।

इस 'सूरा' में नैतिकता एवं नागरिकता के बड़े-बड़े नियमों का उल्लेख कर के बता दिया गया है कि वास्तव में वे कौन से मौलिक सिद्धान्त हैं जिन के आधार पर इस्लामी समाज का निर्माण होता है ।

नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि वह संकटों और कठिनाइयों का सहन करते हुये सत्य पर डटे रहें। 'कुफ़' के मुक़ाबले में किसी प्रकार की नर्म पालिसी कदापि न अपनायें। आप (सल्ल०) के अनुयायियों को भी यही आदेश दिया गया कि वे हर प्रकार के संकटों और यातनाओं का मुक़ाबला करने में अपनी उदारता और सहनशीलता का परिचय दें। प्रत्येक अवस्था में अल्लाह पर भरोसा रक्खें। धर्म-प्रचार के कामों में धैर्य्य से काम लें। उन की ज़बान से जो बात भी निकले वह जँची-तुली हो; और उन का सम्पूर्ण जीवन सद्‌गुणों से परिपूर्ण हो ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' बनी इसराईल

(मक्का में उतरी – 'आयतें' १११)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

*१. महिमावान् है वह (अल्लाह) जो एक रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को 'मस्जिदे हराम' से अक़सा की मस्जिद तक[1] ले गया जिस के वातावरण को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखायें[2]! निस्सन्देह वह सुनने और देखने वाला है।

२. और हम ने मूसा को 'किताब' दी और उसे 'इसराईल' की सन्तान के लिए मार्ग-दर्शन ठहराया कि मेरे सिवा किसी को कार्य-साधक न बनाना।

३. वे थे उन की सन्तति जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया था। निश्चय ही वह एक कृतज्ञ बन्दा था।

४. और हम ने 'किताब' में इसराईल की सन्तान को साफ़ कह सुनाया था कि तुम धरती में दो बार फ़साद मचाओगे, और बड़ी सरकशी दिखाओगे[4]।

THE CHILDREN OF ISRAEL
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Glorified be He Who carried His servant by night from the Inviolable Place of Worship to the Far Distant Place of Worship** the neighbourhood whereof We have blessed, that We might show him of Our tokens! Lo! He, only He, is the Hearer, the Seer.

2. We gave unto Moses the Scripture, and We appointed it a guidance for the Children of Israel, saying: Choose no guardian beside Me.

3. (They were) the seed of those whom We carried (in the ship) along with Noah. Lo! he was a grateful slave.

4. And We decreed for the Children of Israel in the Scripture: Ye verily will work corruption in the earth twice, and ye will become great tyrants.

سُورَةُ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَإِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً وَّاثْنَا عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ؕ ②

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④

---

* यहाँ से पन्द्रहवाँ पारा (Part XV) शुरू होता है।

१. इस का शब्दार्थ है 'दूर की मस्जिद तक' अक़सा की मस्जिद से अभिप्रेत 'बैतुलमक़दिस' (Sacred Place of Jerusalem) है।

२. यह घटना 'मेअ्राज' और 'इसरा' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ केवल 'मस्जिदे हराम' ('काबा') से "बैतुलमक़दिस" तक नबी सल्ल० के जाने का उल्लेख कर के इस सफ़र का उद्देश्य यह बताया गया है कि अल्लाह अपने बन्दे (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) को अपनी कुछ निशानियाँ और चमत्कार दिखाना चाहता था। सूरा अन-नज्म आयत १८ में कहा गया है : "उस ने (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०) ने अपने 'रब' की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।" नबी सल्ल० ने इस यात्रा के बारे में जो बातें बयान की हैं उस के लिए 'सूरा' के परिचय का फ़ुटनोट १ देखिए।

३. यहाँ से 'बनी इसराईल' के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करने की ओर प्रेरित किया जा रहा है। आरम्भ में 'मेअराज' के वृत्तान्त का उल्लेख कर के सचेत कर दिया गया है कि ये बातें जो तुम से कर रहा है कोई साधारण व्यक्ति नहीं है कि उस की बातों पर तुम ध्यान ही न दो; बल्कि वह अभी-अभी अपने 'रब' की बड़ी-बड़ी निशानियाँ और चमत्कार देख कर आया है।

४. बाइबिल में यह चेतावनी विभिन्न स्थानों पर मिलती है। पहले फ़साद और उस के बुरे परिणामों से बाइबिल में जिस प्रकार सचेत किया गया है उस के लिए देखिए : 'ज़बूर' (Ps.) १०६ : ३४-४१; 'यसइयाह' (Isaiah) १ : ४-५, २१-२४; २ : ६-८; ३ : १६-२८; ८ : ७; और ३० : ६-१४; 'यरमियाह' (Jermiah) २ : ५-२८; ३ : ६-६; ५ : १-६, १५-१७; ७ : ३३-३४ और १५ : २-३; 'हज़्क़ियाल' (Ezekiel) २२ : ३-१६।
दूसरे फ़साद और उस के कठोर दण्ड की चेतावनी हज़रत मसीह अ० ने दी है। इस के लिए दे० 'मत्ता' (Matthew) २३ : ३७-३८ और २४ : २; 'लूक़ा' (Luke) २१ : २४ और २३ : २८-३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. फिर जब इन दोनों में से पहला मौक़ा आया, तो हम ने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दे उठाये जो बड़े ही प्रबल थे, वे बस्तियों में घुस कर हर ओर फैल गये, और यह वादा पूरा ही होना था[५]।

5. So when the time for the first of the two came, We roused against you slaves of Ours of great might who ravaged (your) country, and it was a threat performed.

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ
عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا
خِلٰلَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ⑤

६. फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी लौटाई, और माल और बेटों से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बड़ा जत्था वाला बनाया,[६]

6. Then We gave you once again your turn against them, and We aided you with wealth and children and made you more in soldiery,

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَ
أَمْدَدْنٰكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِينَ وَجَعَلْنٰكُمْ
أَكْثَرَ نَفِيرًا ⑥

७. यदि तुम ने भलाई की, तो अपने ही जानों के लिए भलाई की, और यदि बुराई की, तो भी उन्हीं (अपनी जानों) के लिए ही।

फिर, जब दूसरे वादे का मौक़ा आया (तो हम ने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने दूसरे बन्दे उठाये) ताकि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद ('बैतुलमक़दिस') में घुस जायें जिस तरह पहली बार घुसे थे, और जिस चीज़ पर क़ाबू पायें उसे तबाह कर के रख दें[७]।

7. (Saying): If ye do good, ye do good for your own souls, and if ye do evil, it is for them (in like manner). So when the time for the second (of the judgements) came (We roused against you others of Our slaves) to ravage you, and to enter the Temple even as they entered it the first time, and to lay waste all that they conquered with an utter wasting.

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ
وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ
الْآخِرَةِ لِيَسُوءُا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ
لِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ⑦

८. सम्भव है कि तुम्हारा 'रब' तुम पर दया करे, परन्तु यदि तुम फिर उसी पहली नीति की ओर पलटे, तो हम भी वही पहला-सा व्यवहार करेंगे, और हम ने 'जहन्नम' को 'काफ़िरों' के लिए बन्दी घर बना रक्खा है।

8. It may be that your Lord will have mercy on you, but if ye repeat (the crime) We shall repeat (the punishment) and We have appointed hell a dungeon for the disbelievers

عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُدْتُّمْ
عُدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِينَ
حَصِيرًا ⑧

५. यह संकेत उस भयंकर तबाही की ओर है जो आशोरियों (Assyrians) और बाबिल वालों (Babylonians) के हाथों 'बनी इसराईल' को पहुँची थी। आशोरियों का आक्रमण ७२१ ई० पू० में हुआ था जिस ने इसराईली राज्य को तहस-नहस कर के रख दिया था। बाबिल वालों का आक्रमण ५६८ ई० पू० में हुआ था। इस आक्रमण के बाद इसराईली राज्य 'यहूदियों' के हाथ से बिल्कुल निकल ही गया। यह वास्तव में 'बनी इसराईल' के उन अपराधों (अर्थात् 'शिर्क', पारस्परिक वैमनस्य, सांसारिक लोभ और उन के दुराचरण आदि) की सज़ा थी जिन से दूर रहने का उपदेश निरन्तर उन के 'नबी' उन्हें देते रहे हैं। परन्तु नैतिक दृष्टि से वे इतने गिर चुके थे कि सँभल न सके और उन पर अल्लाह की यातना आ कर रही। बाबिल के सम्राट बख़्तनस्सर (Nobuchadnezzar) के युरुशलम (Jerusalem) पर आक्रमण करने, और नगर को तबाह करने, और लोगों को बहुत बड़ी संख्या में बन्दी बना कर बाबिल ले जाने आदि का उल्लेख इतिहास के अतिरिक्त बाइबिल में भी किया गया है। दे० 'सलातीन' द्वितीय (Kings II) २४ : ६-२०; २५ : ७-२२।

६. 'यहूदियों' को बाबिल की क़ैद से रिहाई पाने के बाद जो मुहलत मिली थी जिस में उन्हें उन्नति करने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ, यह संकेत उसी की ओर है। यहूदियों को बाबिल की क़ैद से छुटकारा ५४० ई० पू० बाबिल राज्य के पतन के बाद मिला है। जब कि ईरानी विजेता ख़ुसरू अर्थात् साइरस (cyrus) ने बाबिल को विजय कर के 'बनी इसराईल' को अपने देश वापस जाने और वहाँ पुनः आबाद होने की इजाज़त दे दी थी।

७. यह संकेत उस भयंकर तबाही की ओर है जो रूमियों (Romans) के आक्रमण से 'फ़लिस्तीन (Palestine) नगर और यहूदियों को पहुँची थी। यह आक्रमण टीटुस (Titus) की अध्यक्षता में हुआ था। यह तबाही वास्तव में 'यहूदियों' की अपनी ही सरकशी और नैतिक एवं धार्मिक गिरावट की सज़ा थी। यहूदियों की तबाही और उन के नगर के उजड़ जाने के भयंकर और करुणा-जनक वृत्तान्त का विस्तारपूर्वक उल्लेख ऐतिहासिक ग्रन्थों और पुरातन 'सहीफ़ों' (The Old Testament) में किया गया है। इस सिलसिले में दे० Ferrar Early Days of Christianity PP 488-89।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. वास्तव में यह 'क़ुरआन' वह मार्ग दिखाता है जो सब से ज़्यादा सीधा है, और 'ईमान' वालों को जो अच्छे काम करते हैं शुभसूचना देता है कि उन के लिए बड़ा बदला है।

9. Lo! this Qur'an guideth unto that which is straightest, and giveth tidings unto the believers who do good works that theirs will be a great reward.

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ
اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾

१०. और यह कि जो 'आख़िरत' पर 'ईमान' नहीं लाते, हम ने उन के लिए दुःखदायिनी यातना तैयार कर रक्खी है।

10. And that those who believe not in the Hereafter, for them We have prepared a painful doom.

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٠﴾ ع

११. और मनुष्य बुराई माँगता है जैसा कि वह भलाई माँगता है; और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।

11. Man prayeth for evil as he prayeth for good; for man was ever hasty.

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ
بِالْخَيْرِ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

१२. और हम ने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है। फिर रात की निशानी को तो हम ने अन्धकारमय किया, और दिन की निशानी को प्रकाशमान बनाया, ताकि तुम अपने 'रब' का अनुग्रह (रोज़ी) ढूँढो, और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब जान सको, और हम ने हर चीज़ को खोल-खोल कर अलग-अलग स्पष्ट कर दिया है।

12. And We appoint the night and the day two portents. Then We make dark the portent of the night, and We make the portent of the day sight-giving, that ye may seek bounty from your Lord, and that ye may know the computation of the years, and the reckoning; and everything have We expounded with a clear expounding.

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ
النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَىْءٍ فَصَّلْنٰهُ
تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾

१३. और प्रत्येक मनुष्य का शकुन (अपशगुन) हम ने उस की अपनी गरदन से बाँध दिया है,[८] और 'क़ियामत' के दिन हम उस के लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला पायेगा।

13. And every man's augury have We fastened to his own neck, and We shall bring forth for him on the Day of Resurrection a book which he will find wide open.

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۤئِرَهٗ فِىْ
عُنُقِهٖ ۚ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا
يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾

१४. (कहा जायेगा) : अपनी किताब पढ़। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वयं काफ़ी है।

14. (And it will be said unto him): Read thy book. Thy soul sufficeth as reckoner against thee this day.

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۚ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ
عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ ۚ

१५. जो कोई (सीधे) मार्ग पर चला, तो वह अपने ही लिए चला, और जो भटक गया उस के भटकने का वबाल भी उसी के सिर आयेगा। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

और हम (लोगों को) यातना नहीं देते जब तक कि (उन्हें सचेत करने के लिए) कोई 'रसूल' न भेज दें।

15. Whosoever goeth right it is only for (the good of) his own soul that he goeth right, and whosoever erreth, erreth only to its hurt. No laden soul can bear another's load. We never punish until We have sent a messenger.

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا
تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ وَمَا كُنَّا
مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

८. अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपने परिणाम की भलाई अथवा बुराई का स्वयं ज़िम्मेदार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो हम वहाँ के सुख-भोगी लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उस में अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उस बस्ती पर वह (यातना की) बात साबित हो जाती है, फिर हम उसे बिल्कुल जड़ से उखाड़ फेंकते हैं।

16. And when We would destroy a township We send commandment to its folk who live at ease, and afterward they commit abomination therein, and so the word (of doom) hath effect for it, and We annihilate it with complete annihilation.

وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها فحق عليها القول فدمرناها تدميرا ﴿١٦﴾

१७. और नूह के बाद हम ने कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर दिया ! तुम्हारा 'रब' अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने और देखने को काफ़ी है।

17. How many generations have We destroyed since Noah! And Allah sufficeth as Knower and Beholder of the sins of His slaves.

وكم أهلكنا من القرون من بعد نوح وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا ﴿١٧﴾

१८. जो कोई शीघ्र मिलने वाली चीज़ (दुनिया) का इच्छुक हो, उसे हम इसी में शीघ्र दे देते हैं जो कुछ जिसे देना चाहते हैं। फिर उस के लिए हम ने 'जहन्नम' तैयार कर रक्खा है; जिस में वह धिक्कारा और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा।

18. Whoso desireth that (life) which hasteneth away, We hasten for him therein that We will for whom We please. And afterward We have appointed for him hell; he will endure the heat thereof, condemned, rejected.

من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذموما مدحورا ﴿١٨﴾

१९. और जो कोई 'आख़िरत' का इच्छुक हुआ और उस के लिए कोशिश की जैसी कि उस के लिए कोशिश करनी चाहिए, और वह 'ईमान' वाला भी है, तो ऐसे लोगों की कोशिश की क़द्र की जायेगी।

19. And whoso desireth the Hereafter and striveth for it with the effort necessary, being a believer; for such, their effort findeth favour (with their Lord).

ومن أراد الآخرة وسعى لها سعيها وهو مؤمن فأولئك كان سعيهم مشكورا ﴿١٩﴾

२०. और इन्हें भी और इन को भी, हर एक को हम तेरे 'रब' की देन में से दिये जा रहे हैं। और तेरे 'रब' की देन बन्द नहीं है।

20. Each do We supply, both these and those, from the bounty of thy Lord. And the bounty of thy Lord can never be walled up.

كلا نمد هؤلاء وهؤلاء من عطاء ربك وما كان عطاء ربك محظورا ﴿٢٠﴾

२१. देखो कैसा हम ने किसी को किसी से बढ़ाया है, और 'आख़िरत' के दरजे तो सब से बड़े हैं और प्रतिष्ठा में भी सब से बढ़-चढ़ कर हैं[६]।

21. See how We prefer one above another and verily the Hereafter will be greater in degrees and greater in preferment.

انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض وللآخرة أكبر درجات وأكبر تفضيلا ﴿٢١﴾

२२. अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) न बना नहीं तो धिक्कारा हुआ और असहाय हो कर बैठ रहेगा।

22. Set not up with Allah any other god (O man) lest thou sit down reproved, forsaken.

لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا ﴿٢٢﴾

६. दुनिया में भी उन लोगों को जो 'आख़िरत' के इच्छुक होते हैं दूसरों के मुक़ाबले बड़ाई प्राप्त होती है। उन का जीवन वास्तविक सुख-शान्ति, सौजन्य, सदाचरण आदि गुणों से परिपूर्ण होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. और तेरे 'रब' ने फ़ैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की 'इबादत' न करो, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जायें, तो उन्हें 'हूँ' तक न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उन से भली बात करो।

23. Thy Lord hath decreed, that ye worship none save Him, and (that ye show) kindness to parents. If one of them or both of them attain old age with thee, say not "Fie" unto them nor repulse them, but speak unto them a gracious word.

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَ
قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾

२४. और दयालुता के साथ उन के लिए विनम्रता की भुजा झुका दो, और कहो : 'रब' ! जिस तरह इन्हों ने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर।

24. And lower unto them the wing of submission through mercy, and say: My Lord! Have mercy on them both as they did care for me when I was little.

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ
الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ ۭ

२५. जो कुछ तुम्हारे जी में है तुम्हारा 'रब' उसे भली-भाँति जानता है। यदि तुम नेक हुये, तो निस्सन्देह वह रुजू करने वालों के लिए बड़ा क्षमाशील है।

25. Your Lord is best aware of what is in your minds. If ye are righteous, then lo! He was ever Forgiving unto those who turn (unto Him).

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ
تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ
غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

२६. और नातेदार को उस का हक़ दो, और मुहताज और राह चलने वाले को भी, और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो।

26. Give the kinsman his due, and the needy, and the wayfarer, and squander not (thy wealth) in wantonness.

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾

२७. निस्सन्देह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले 'शैतानों' के भाई हैं, और 'शैतान' अपने 'रब' का कृतघ्न है।

27. Lo! the squanderers were ever brothers of the devils, and the devil was ever an ingrate to his Lord.

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

२८. और यदि तुम्हें अपने 'रब' की दयालुता की खोज में,[10] जिस की तुम आशा रखते हो उन ('नातेदारों,' मुहताजों और मुसाफ़िरों) से कतराना पड़े तो उन से नर्म बात कहो[11]।

28. But if thou turn away from them, seeking mercy from thy Lord, for which thou hopest, then speak unto them a reasonable word.

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا
مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

२९. और अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बांध रक्खो (कि किसी को कुछ भी न दो) और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि निन्दित और निःसहाय हो कर बैठ रहो।

29. And let not thy hand be chained to thy neck nor open it with a complete opening, lest thou sit down rebuked, denuded.

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ
وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ
مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

३०. तेरा 'रब' जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस के लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है, निस्सन्देह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन्हें देखने वाला है।

30. Lo! thy lord enlargeth the provision for whom He will, and straiteneth (if for whom He will). Lo, He was ever Knower, Seer of His slaves.

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ
وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا
ع بَصِيْرًا ﴿٣٠﴾ ۧ

१०. अर्थात् रोज़ी की तलाश में।

११. अर्थात् यदि तुम स्वयं तंगी में हो और रोज़ी तलाश कर रहे हो और उन की सहायता नहीं कर सकते, तो उन्हें नर्म जवाब दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. और दरिद्रता के भय से अपनी औलाद की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी। वास्तव में उन की हत्या एक बड़ी ख़ता है[१२]।

31. Slay not your children, fearing a fall to poverty, We shall provide for them and for you. Lo! the slaying of them is great sin.

ولا تقتلوا اولادكم خشية املاق
نحن نرزقهم واياكم ان قتلهم
كان خطا كبيرا ﴿٣١﴾

३२. और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब न फटको। वह एक अश्लील कर्म और बुरा मार्ग है।

32. And come not near unto adultery. Lo! it is an abomination and an evil way.

ولا تقربوا الزنى انه كان فاحشة
وساء سبيلا ﴿٣٢﴾

३३. किसी जान को क़त्ल न करो जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है सिवाय हक़ के[१३]। और जो ज़ुल्म से क़त्ल किया गया हो, उस के वारिस को हम ने अधिकार दिया है (वह हत्यारे से बदला ले सकता है), परन्तु उसे क़त्ल में हद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए। निश्चय ही उस की सहायता की जायेगी[१४]।

33. And slay not the life which Allah hath forbidden save with right. Whoso is slain wrongfully, We have given power unto his heir, but let him not commit excess in slaying. Lo! he will be helped.

ولا تقتلوا النفس التي حرم الله الا
بالحق ومن قتل مظلوما فقد
جعلنا لوليه سلطنا فلا يسرف
في القتل انه كان منصورا ﴿٣٣﴾

३४. और यतीम (अनाथ) के माल के क़रीब न फटको सिवाय ऐसी रीति के जो उत्तम हो यहां तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुंच जाये (उस समय तुम उस का माल उसे सौंप दो); और प्रतिज्ञा पूरी करो। निश्चय ही प्रतिज्ञा के विषय में पूछा जायेगा।

34. Come not near the wealth of the orphan save with that which is better till he come to strength; and keep the covenant. Lo! of the covenant it will be asked.

ولا تقربوا مال اليتيم الا بالتي
هي احسن حتى يبلغ اشده و
اوفوا بالعهد ان العهد كان
مسـٔولا ﴿٣٤﴾

३५. और जब नाप कर दो तो नाप को पूरा भरा करो, और (जब तोल कर दो तो) ठीक तराज़ू से तोलो; यही उत्तम है, और इस का परिणाम भी अच्छा है।

35. Fill the measure when ye measure and weigh with a right balance; that is meet, and better in the end.

واوفوا الكيل اذا كلتم وزنوا
بالقسطاس المستقيم ذلك خير
واحسن تاويلا ﴿٣٥﴾

३६. और जिस चीज़ की तुम्हें ख़बर न हो उस के पीछे न पड़ो। निस्सन्देह कान और आँख और दिल—इन सब के बारे में हर व्यक्ति से पूछा जायेगा[१५]।

36. (O man), follow not that whereof thou hast no knowledge. Lo! the hearing and the sight and the heart—of each of these it will be asked.

ولا تقف ما ليس لك به علم ان
السمع والبصر والفؤاد كل اولئك
كان عنه مسـٔولا ﴿٣٦﴾

१२. दरिद्रता का भय पहले बच्चों की हत्या और गर्भपात का कारण बनता था और आज सन्तान निरोध की ओर यह लोगों को परिवार-नियोजन (Family Planning) के सुन्दर नाम से ले जा रहा है। आर्थिक संकट के भय से नस्ल को बढ़ने से रोकना हत्या के अपराध से कम नहीं है। सन्तान-निरोध की दुर्भावना नास्तिकता और अल्लाह से निर्भय हो जाने के कारण ही उभरी है।

१३. केवल पाँच मौक़े ऐसे हैं जिन में मनुष्य को क़त्ल करना अवैध नहीं रहता—(१) यदि किसी ने जान बूझ कर किसी की हत्या की हो तो ख़ून का बदला लेने के लिए। (२) धर्म के मार्ग में रुकावट डालने वाले को युद्ध में। (३) इस्लामी हुकूमत का तख़्ता उलटने वाले को सज़ा के रूप में। (४) विवाहित पुरुष या स्त्री को ज़िना (व्यभिचार) की सज़ा में। (५) इस्लामी धर्म ग्रहण कर के फिर उस से फिर जाने की सज़ा में।

१४. उस समय यह बात नहीं बताई गई कि सहायता कौन करेगा परन्तु जब इस्लामी राज्य स्थापित हो गया, तो बता दिया गया कि किसी व्यक्ति या गरोह को यह अधिकार प्राप्त नहीं कि वह स्वयं हत्या करने वाले से ख़ून का बदला लेने लग जाये; बल्कि यह अधिकार केवल राज्य को प्राप्त है कि न्याय के लिए उस की ओर मामला ले जाया जाये; और उस से मदद चाही जाये।

१५. अल्लाह के 'रसूल' सनातन से लोगों को ज्ञान ही की ओर बुलाते आ रहे हैं। 'रसूल' के झुठलाने का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं कि मनुष्य अपने कान, आँख और हृदय सब को झुठला रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. और धरती में अकड़ते हुए न चलो। न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो, और न (तन कर) पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो।

37. And walk not in the earth exultant. Lo! thou canst not rend the earth, nor canst thou stretch to the height of the hills.

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

३८. ये सारे बुरे कर्म तुम्हारे 'रब' की दृष्टि में अप्रिय हैं।

38. The evil of all that is hateful in the sight of thy Lord.

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

३९. ये तत्त्वदर्शिता की वे बातें हैं जो तेरे 'रब' ने तेरी ओर 'वह्य' की हैं। और अल्लाह के साथ कोई दूसरा 'इलाह' (पूज्य) न गढ़ना,[१६] नहीं तो निन्दित और ठुकराया हुआ 'जहन्नम' में झोंक दिया जायेगा।

39. This is (part) of that wisdom wherewith thy Lord hath inspired thee (O Muhammad). And set not up with Allah any other god, lest thou be cast into hell reproved, abandoned.

ذٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ﴿٣٩﴾

४०. ('शिर्क' करने वालो !) क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम्हें तो बेटों के लिए ख़ास किया, और स्वयं अपने लिए 'फ़िरिश्तों' को बेटियाँ बना लिया? निश्चय ही तुम बड़ी (भारी) बात कहते हो।

40. Hath your Lord then distinguished you (O men of Mecca) by giving you sons, and hath chosen for Himself females from among the angels? Lo! verily ye speak an awful word!

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾ ع

४१. और हम ने इस 'क़ुरआन' में तरह-तरह से समझाया ताकि वे चेतें, परन्तु इस से उन की नफ़रत ही बढ़ती है।

41. We verily have displayed (Our warnings) in this Qur'an that they may take heed, but it increaseth them in naught save aversion.

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

४२. कह दो : यदि उस के साथ दूसरे 'इलाह' (पूज्य) भी होते, जैसा कि ये कहते हैं, तो 'अर्श' (सिंहासन) वाले तक पहुँचने का मार्ग तलाश करते[१७]।

42. Say (O Muhammad, to the disbelievers): If there were other gods along with Him, as they say, then had they sought a way against the Lord of the Throne.

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

४३. महिमावान् है वह, और अत्यन्त उच्च है उस से जो कुछ ये कहते हैं।

43. Glorified is He, and High Exalted above what they say!

سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

४४. सातों आकाशों और धरती और जो कोई उन के बीच है सब उस की 'तसबीह' करते हैं, और कोई चीज़ नहीं जो उस की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' न करती हो; परन्तु तुम उन की 'तसबीह' को समझते नहीं हो। निस्सन्देह वह बड़ा ही सहनशील और क्षमा करने वाला है।

44. The seven heavens and the earth and all that is therein praise Him, and there is not a thing but hymneth His praise; but ye understand not their praise. Lo! He is ever Clement, Forgiving.

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾

४५. और जब तुम 'क़ुरआन' पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन के बीच एक ढका हुआ परदा (कठिन रोक) डाल देते हैं;

45. And when thou recitest the Qur'an We place between thee and those who believe not in the Hereafter a hidden barrier.

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ﴿٤٥﴾

१६. दे० आयत २२। यह बात 'तौहीद' की महानता के कारण दोहराई गई है।
१७. अर्थात् वे स्वयं 'अर्श' अथवा सिंहासन पर अधिकार प्राप्त करने की कोशिश करते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. और उन के दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि उसे न समझ सकें, और उन के कानों में डाट हैं;[१८] और जब तुम 'क़ुरआन' में केवल अकेले अपने 'रब' ही का ज़िक्र करते हो, तो वे बिदक कर अपनी पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

46. And We place upon their hearts veils lest they should understand it, and in their ears a deafness; and when thou makest mention of thy Lord alone in the Qur'an, they turn their backs in aversion.

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ
يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِذَا
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ
وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

४७. जब वे तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे सुनना चाहते हैं और जब वे परस्पर काना-फूसी करते हैं, जब वे ज़ालिम कहते हैं: तुम तो बस जादू मारे हुये आदमी के पीछे चल रहे हो[१९]।

47. We are best aware of what they wish to hear when they give ear to thee and when they take secret counsel, when the evil-doers say: Ye follow but a man bewitched.

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ
يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى
اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ
اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾

४८. देखो ये कैसी मिसालें तुम पर चस्पाँ करते हैं, तो ये भटक गये कोई मार्ग नहीं पा सकते।

48. See what similitudes they coin for thee and thus all astray, and cannot find a road!

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾

४९. वे कहते हैं: जब हम (मर कर) हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण हो जायेंगे, तो क्या हम नये सिरे से पैदा कर के उठाये जायेंगे?

49. And they say: When we are bones and fragments, shall we, forsooth, be raised up as a new creation?

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾

५०. कह दो: तुम पत्थर हो जाओ या लोहा।

50. Say: Be ye stones or iron.

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾

५१. या और कोई चीज़ जो तुम्हारे जी में बड़ी हो (जिस में जीवन-संचार तुम्हारे विचार में असम्भव हो)! तब वे कहेंगे: कौन हमें (जीवन की ओर) पलटा कर लायेगा? कह दो: वही जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया। तब वे तुम्हारे आगे सिर हिला-हिला कर कहेंगे: अच्छा तो यह कब होगा? कह दो: कदाचित् वह क़रीब ही हो।

51. Or some created thing that is yet greater in your thoughts! Then they will say: Who shall bring us back (to life). Say: He Who created you at the first. Then will they shake their heads at thee, and say: When will it be? Say: It will perhaps be soon;

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ
فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ
اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ
قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

५२. जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा और तुम पुकार सुनते ही उस की प्रशंसा के साथ चले आओगे, और समझोगे कि तुम इस अवस्था में बस थोड़ी ही देर रहे हो[२०]।

52. A day when He will call you and ye will answer with His praise, and ye will think that ye have tarried but a little while.

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ
وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾

१८. यह 'आख़िरत' पर 'ईमान' न लाने का एक स्वाभाविक परिणाम है कि आदमी के हृदय-पट सत्य के लिए बन्द हो जाते हैं, और उस के कान बहरे हो जाते हैं। 'क़ुरआन' का आमन्त्रण 'आख़िरत' ही पर आधारित है, जो व्यक्ति 'आख़िरत' को मानने के लिए तैयार न हो उस के दिल तक 'क़ुरआन' की आवाज़ कैसे पहुंच सकती है।

१९. मक्का के सरदार छिप कर 'क़ुरआन' सुनते और आपस में सोचते कि इस का तोड़ क्या हो। उन्हें जब अपने किसी व्यक्ति के बारे में सन्देह होता कि वह 'क़ुरआन' से कुछ प्रभावित हो गया है, तो उसे समझाते कि कहाँ बहके जा रहे हो वह तो एक जादू मारा हुआ आदमी है। उस की बातों में क्यों आते हो?

२०. अर्थात् मरने के बाद से ले कर 'क़ियामत' में उठाये जाने तक की अवधि कुछ घंटों से अधिक प्रतीत न होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. और मेरे बन्दों से कह दो : बात वही कहें जो उत्तम हो। 'शैतान' तो उन के बीच उकसाहट डाल देता है। निस्सन्देह 'शैतान' मनुष्य का खुला शत्रु है।

53. Tell My bondmen to speak that which is kindlier. Lo! the devil soweth discord among them. Lo! the devil is for man an open foe.

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ
أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ
إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾

५४. तुम्हारा 'रब' तुम्हें भली-भाँति जानता है। वह चाहे, तो तुम पर दया करे, और चाहे, तो तुम्हें यातना दे। और (हे 'नबी' !) हम ने तुझे उन पर कोई हवालेदार बना कर नहीं भेजा है[२१]।

54. Your Lord is best aware of you. If He will, He will have mercy on you, or if He will, He will punish you. We have not sent thee (O Muhammad) as a warden over them.

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِنْ يَّشَأْ يَرْحَمْكُمْ
أَوْ إِنْ يَّشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

५५. और तेरा 'रब' उसे भली-भाँति जानता है जो कोई आकाशों और धरती में है। और हम ने कुछ 'नबियों' को दूसरों पर बड़ाई दी और हम ने दाऊद को 'ज़बूर' प्रदान की।

55. And thy Lord is best aware of all who are in the heavens and the earth. And We preferred some of the Prophets above others, and unto David We gave the Psalms.

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ
عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

५६. कहो : तुम उन के सिवा जिन को भी (कार्यसाधक) समझ बैठे हो उन्हें पुकार देखो उन्हें न तो तुम से किसी तकलीफ़ के दूर करने का अधिकार प्राप्त है और न (उसे) बदलने का।

56. Say: Cry unto those (saints and angels) whom ye assume (to be gods) beside Him yet they have no power to rid you of misfortune nor to change.

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ
وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

५७. जिन को ये पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने 'रब' तक पहुँचने का साधन ढूंढते हैं कि कौन उन में ज़्यादा-से-ज़्यादा क़रीब हो जाये; और वे उस की दयालुता की आशा रखते हैं और उस की यातना से डरते हैं[२२]! वास्तव में तेरे 'रब' की यातना डरने ही की चीज़ है।

57. Those unto whom they cry seek the way of approach to their Lord which of them shall be the nearest; they hope for His mercy and they fear His doom. Lo! the doom of thy Lord is to be shunned

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ إِلٰى
رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ
رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۚ إِنَّ عَذَابَ
رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

५८. और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम 'क़ियामत' से पहले विनष्ट न कर दें, या उसे कठोर यातना न दें। यह बात 'किताब' में लिखी जा चुकी है।

58. There is not a township but We shall destroy it ere the Day of Resurrection, or punish it with dire punishment. That is set forth in the Book (of Our decrees).

५९. और हमें निशानियां भेजने से इस के सिवा और किसी चीज़ ने नहीं रोका कि पहलों ने उन्हें झुठलाया है। और 'समूद' को हम ने ऊँटनी दी—एक खुली निशानी[२३]—परन्तु उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया। और हम निशानियां लोगों को डराने ही के लिए भेजते हैं।

59. Naught hindereth Us from sending portents save that the folk of old denied them. And We gave Thamud the shecamel — a clear portent—but they did wrong in respect of her. We send not portents save to warn.

وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا
قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا
شَدِيْدًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾
وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ إِلَّا أَنْ
كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُوْنَ ۚ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ
مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ
بِالْاٰيٰتِ إِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾

२१. अर्थात् 'नबी' का काम लोगों को केवल सत्य की ओर बुलाना है; लोगों के मार्ग पर आने न आने का वह ज़िम्मेदार नहीं होता।

२२. यहाँ 'मुश्रिकों' के जिन उपास्यों की ओर संकेत किया गया है उन से अभिप्रेत या तो 'फ़रिश्ते' और 'जिन्न' हैं या बीते हुये समय के महापुरुष हैं, जिन्हें ये अज्ञानता के कारण अपना कष्ट-निवारक और दाता समझ बैठे थे; और मूर्तियां बना कर उन की उपासना करने लग गये थे।

२३. दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ७३ से ७८ तक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०. और (हे मुहम्मद !) याद करो हम ने तुम से कहा था कि तेरे 'रब' ने इन लोगों को घेर रक्खा है, और जो दृश्य हम ने तुझे दिखाया है[२४] उसे तो बस हम ने इन लोगों के लिए आज़माइश बना दिया है, और उस वृक्ष को भी जिस पर 'क़ुरआन' में लानत की गई है[२५]। हम इन्हें डराते हैं, परन्तु इस से इन की बड़ी सरकशी ही बढ़ती है।

60. And (it was a warning) when We told thee: Lo! thy Lord encompasseth mankind, and We appointed the vision which We showed thee as an ordeal for mankind and (likewise) the Accursed Tree in the Qur'an We warn them, but it increaseth them in naught save gross impiety.

وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس
وما جعلنا الرؤيا التي أريناك إلا
فتنة للناس والشجرة الملعونة
في القرآن ونخوفهم فما يزيدهم
إلا طغيانا كبيرا ٦٠

६१. और याद करो जब हम ने 'फ़िरिश्तों' से कहा : आदम को 'सजदा' करो, तो उन सब ने 'सजदा' किया सिवाय 'इबलीस' के, उस ने कहा : क्या मैं उसे 'सजदा' करूँ जिस को तू ने मिट्टी से बनाया है[२६] ?

61. And when We said unto the angels: Fall down prostrate before Adam and they fell prostrate all save Iblis, he said: Shall I fall prostrate before that which Thou hast created of clay?

وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا
إلا إبليس قال أأسجد لمن خلقت طينا ٦١

६२. कहने लगा : उसे देखता भी है जिसे तू ने मेरे मुक़ाबले में श्रेष्ठता प्रदान की है ? यदि तू मुझे 'क़ियामत' के दिन तक मुहलत दे दे तो मैं उस की सन्तति को अपने वश में कर लूंगा, सिवाय थोड़े के।

62. He said: Seest Thou this (creature) whom Thou hast honoured above me, if Thou give me grace until the Day of Resurrection I verily will seize his seed, save but a few.

قال أرأيتك هذا الذي كرمت
علي لئن أخرتن إلى يوم القيامة
لأحتنكن ذريته إلا قليلا ٦٢

६३. कहा : जा, उन में से जो भी तेरे पीछे चलेंगे—तो तुम सब का बदला 'जहन्नम' है, भरपूर बदला।

63. He said: Go, and whosoever of them followeth thee—lo! hell will be your payment, ample payment.

قال اذهب فمن تبعك منهم فإن
جهنم جزاؤكم جزاء موفورا ٦٣

६४. उन में से जिस किसी को बन पड़े अपनी आवाज़ से घबरा ले, उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला, माल और औलाद में उन के साथ साझा लगा[२७] उन से (झूठे-झूठे) वादे कर— और 'शैतान' उन से जो वादे करता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं—

64. And excite any of them whom thou canst with thy voice, and urge thy horse and foot against them, and be a partner in their wealth and children, and promise them. Satan promiseth them only to deceive.

واستفزز من استطعت منهم بصوتك
وأجلب عليهم بخيلك ورجلك وشاركهم
في الأموال والأولاد وعدهم وما
يعدهم الشيطان إلا غرورا ٦٤

२४. दृश्य (Vision) से संकेत 'मेअ्राज' की ओर है (दे० फुटनोट २) जिस से 'काफ़िर' लोग बड़ी आज़माइश में पड़ गये; और जिस की उन्हों ने हँसी उड़ाई।

२५. अर्थात् 'ज़क़्क़ूम' (थूहर) इसे 'जहन्नम' में फिटकारे हुये लोग खायेंगे। यह वृक्ष अल्लाह की दयालुता का नहीं बल्कि उस की लानत का निशान होगा। और यह जहन्नमी लोगों के पेट में आग लगायेगा जैसे उन के पेट में पानी खौल रहा हो। दे० सूरा अद-दुख़ान आयत ४३-४६, सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ६२-६३, सूरा अल-वाक़िआ आयत ५२।

'ज़क़्क़ूम' भी 'काफ़िरों' की गुमराही का कारण बना, वे उपहास करने लगे कि 'जहन्नम' खूब जगह है जहाँ अग्नि की लपटों के बीच पेड़ उगेंगे। यदि उन्हें सत्य की खोज होती तो वे कभी गुमराही में न पड़ते।

२६. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ३०-३६, अन-निसा आयत ११६-१२६, अल-आराफ़ आयत १०-२५, अल-हिज्र आयत २६-४४ और इबराहीम आयत २२-२७।

२७. अर्थात् माल और औलाद तो उन की हो परन्तु तू उन्हें ऐसा बहका दे कि माल वे तेरे इशारों पर खर्च करने लगें; और औलाद को तेरी सरपस्ती में दे दें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५. निश्चय ही जो मेरे (खास) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता, और तेरा 'रब' काफ़ी है इस के लिए कि उसे अपना मामला सौंप दिया जाये।

65. Lo! My (faithful) bondmen — over them thou hast no power, and thy Lord sufficeth as (their) guardian.

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾

६६. तुम्हारा 'रब' वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका (और जहाज़ आदि) चलाता है ताकि तुम उस का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो। निस्सन्देह वह तुम पर दयावान् है।

66. (O mankind), your Lord is He Who driveth for you the ship upon the sea that ye may seek of His bounty. Lo! He was ever Merciful toward you.

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٦﴾

६७. और जब समुद्र में तुम पर कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो उस (एक अल्लाह) के सिवा वे सब जिन्हें तुम पुकारते हो गुम हो जाते है, परन्तु जब वह तुम्हें बचा कर स्थल पर पहुँचा देता है, तो तुम किनारा खींच लेते हो, मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

67. And when harm toucheth you upon the sea, all unto whom ye cry (for succour) fail save Him (alone), but when He bringeth you safe to land, ye thankless.

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

६८. क्या तुम इस से निश्चिन्त हो कि वह कभी शुष्कभूमि ही के किसी हिस्से में तुम्हें धँसा दे, या तुम पर पथराव करने वाली आंधी भेज दे, और तुम अपने लिए कोई ज़िम्मा लेने वाला (संरक्षक) न पाओ?

68. Feel ye then secure that He will not cause a slope of the land to engulf you, or sent a sand-storm upon you, and then ye will find that ye have no protector?

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾

६९. या तुम इस से निश्चिन्त हो कि वह फिर तुम्हें उस में दोबारा ले जाये, और तुम पर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दे और तुम्हें तुम्हारे 'कुफ़्र' (अकृतज्ञता) के कारण डुबो दे, फिर तुम को ऐसा कोई न मिले जो इस के बारे में हमारे पीछे पड़ने वाला हो[२८]?

69. Or feel ye secure that He will not return you to that (plight) a second time, and send against you a hurricane of wind and drown you for your thanklessness, and then ye will not find therein that ye have any avenger against Us?

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

७०. और हम ने आदम की औलाद को श्रेष्ठता प्रदान की। और उसे भूमि और समुद्र में सवारी दी, और उसे पाक चीज़ों की रोज़ी दी, और उसे ऐसे बहुतों की अपेक्षा जिन्हें हम ने पैदा किया है बड़ाई दी।

70. Verily We have honoured the children of Adam. We carry them on the land and the sea, and have made provision of good things for them, and have preferred them above many of those whom We created with a marked perferment.

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿٧٠﴾

७१. जिस दिन हम समस्त लोगों को उन के नेताओं के साथ बुलायेंगे, तो जिस की 'किताब' उस के दाहिने हाथ में दी गई तो ऐसे लोग अपनी 'किताब' पढ़ेंगे[२९] और उन पर बाल बराबर भी ज़ुल्म न होगा।

71. On the day when We shall summon them with their record, whoso is given his book in his right hand—such will read their book and they will not be wronged a shred.

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

२८. अर्थात् जो हम पर दावा कर सके; हम से पूछ-गछ कर सके।

२९. दे० सूरा अल-हाक़्क़ा आयत १९-२८ और सूरा अल-इनशिक़ाक़ आयत ७-१३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. और जो यहाँ अन्धा (बना) रहा 'आख़िरत' में भी वह अन्धा ही रहेगा, और मार्ग से बहुत ज़्यादा भटका हुआ होगा।

72. Whoso is blind here, will be blind in the Hereafter, and yet further from the road.

وَمَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾

७३. और ये तो इसी में लगे थे कि हम ने जो 'वह्य' तुम्हारी ओर की है उस से तुम्हें फेर दें, ताकि तुम हम से सम्बन्ध लगा कर उस के सिवा कुछ और ही गढ़ो; और तब तो वे तुम्हें घनिष्ठ मित्र बना लेते[३०]।

73. And they indeed strove hard to beguile thee (Muhammad) away from that wherewith We have inspired thee, that thou shouldst invent other than it against Us; and then would they have accepted thee as a friend.

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ
وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾

७४. यदि हम तुम्हें सँभाले न रखते[३१] तो तुम उन की ओर कुछ-न-कुछ झुकने के निकट जा पहुँचते।

74. And if We had not made thee wholly firm thou mightest almost have inclined unto them a little.

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ
اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

७५. तब हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा मज़ा चखाते और मृत्यु के बाद भी दोहरा मज़ा चखाते फिर तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई सहायक न पाते।

75. Then had We made thee taste a double (punishment) of living and a double (punishment) of dying, then hadst thou found no helper against Us.

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ
الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا
نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

७६. और ये तो इस भू-भाग से तुम्हें घबरा देने ही पर लगे रहे हैं ताकि तुम्हें यहाँ से निकाल दें, (यदि इन्हों ने ऐसा किया) तब तुम्हारे बाद ये भी बहुत ही कम ठहर सकते हैं[३२]।

76. And they indeed wished to scare thee from the land that they might drive thee forth from thence, and then they would have stayed (there) but a little after thee.

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ
الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا
يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾

७७. यही रीति रही है उन हमारे 'रसूलों' की[३३] जिन्हें हम ने तुम से पहले भेजा था, और तुम हमारी रीति (और नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे।

77. (Such was Our) method in the case of those whom We sent before thee (to mankind) and thou wilt not find for Our method aught of power to change.

سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ
رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾

३०. 'मुशिरकों' ने एक से अधिक बार इस बात की कोशिश की कि पैग़म्बर (सल्ल०) उन से समझौता कर लें और विशुद्ध एकेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाना छोड़ दें।

३१. दे० सूरा अन-नह्ल आयत १०२।

३२. यह भविष्य वाणी पूरी हो कर रही। मक्के के 'काफ़िरों' ने जब नबी (सल्ल०) को 'हिजरत' करने पर विवश किया, तो आप (सल्ल०) के मक्का छोड़ देने के बाद वे भी चैन से न रह सके। लगभग डेढ़ वर्ष के बाद ही मक्का के बड़े-बड़े सरदार घरों से निकल कर 'बद्र' के रण-क्षेत्र में विनष्ट हुये। अभी 'हिजरत' को आठ वर्ष से अधिक नहीं हुये थे कि मक्का पर 'इस्लाम' को विजय प्राप्त हुई; और दो वर्ष के भीतर ही समस्त अरब देश 'मुशिरकों' से पाक हो गया। कोई 'मुशिरक' भी बाक़ी न रहा; जो रहा भी वह 'मुस्लिम' हो कर रहा।

३३. अर्थात् 'रसूलों' के मामले में हमारी यही रीति (Manner of acting) रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. 'नमाज़' क़ायम करो जब सूर्य ढले रात के अँधेरे तक,[३४] और प्रातःकाल को क़ुरआन[३५] भी (ज़रूरी ठहरा लो)। निस्सन्देह प्रातःकाल का क़ुरआन साक्षात् होता है।

78. Establish worship at the going down of the sun until the dark of night, and (the recital of) the Qur'an at dawn. Lo! (the recital of) the Qur'an at dawn is ever witnessed.

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾

७९. और कुछ रात इस (क़ुरआन) के साथ जागते रहो,[३६] यह तुम्हारे लिए तद्अधिक ('नफ़्ल') है, क़रीब है कि तुम्हारा 'रब' तुम्हें प्रशंसा पूर्ण स्थान पर खड़ा करे[३७]।

79. And some part of the night awake for it, a largess for thee. It may be that thy Lord will raise thee to a praised estate.

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿٧٩﴾

८०. और कहो : 'रब' ! तू मुझे जहाँ कहीं ले जा सच्चाई के साथ ले जा और जहाँ कहीं से निकाल सच्चाई के साथ निकाल[३८]। और अपनी ओर से मुझे सहायक सत्ता (अधिकार) प्रदान कर।

80. And say: My Lord! Cause me to come in with a firm incoming and to go out with a firm outgoing. And give me from Thy presence a sustaining Power.

وَقُل رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ﴿٨٠﴾

८१. और कह दो : सत्य आ गया और असत्य (एवं अनृत) मिट गया। वास्तव में असत्य तो मिटने वाला ही होता है[३९]।

81. And say: Truth hath come and falsehood hath vanished away. Lo! falsehood is ever bound to vanish.

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾

८२ और हम उतारते हैं वह 'क़ुरआन' जो 'ईमान' वालों के लिए शिफ़ा और दयालुता है परन्तु ज़ालिमों का उस से घाटा ही बढ़ता है।

82. And We reveal of the Qur'an that which is a healing and a mercy for believers though it increase the evil-doers in naught save ruin.

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

---

३४. इस आदेश में चार वक्त की 'नमाज़ें' आ जाती है। सूर्य पहली बार दोपहर के बाद ढलता है वह 'ज़ुह्र' की 'नमाज़' का समय होता है। सूर्य का दूसरा ढलना पहाड़ों और ऊँचे टीलों आदि से होता है और 'अस्र' की 'नमाज़' का समय आरम्भ हो जाता है। फिर उस के पश्चात् सूर्य पृथ्वी के धरातल से ढलता हुआ छुप जाता है जो 'मग़रिब' का समय है। सूर्य का एक ढलना इस के बाद भी होता है जबकि क्षितिज पर उस की लालिमा तक शेष नहीं रहती, और बिल्कुल अँधेरा छा जाता है और 'इशा' की 'नमाज़' का समय आरम्भ हो जाता है। पाँचवीं 'नमाज़' 'फ़ज्र' की है जिस का समय पौ फटने से ले कर सूर्य उदय होने तक है। इस का उल्लेख आगे आ रहा है।

सूर्य और तारों के उपासकों की पूजा का जो समय होता है उस से हट कर 'नमाज़' का समय नियत किया गया है। यह बात इस 'आयत' से भी ज़ाहिर है और 'क़ुरआन' की दूसरी आयतों से भी। उदाहरण के लिए देखिए सूरा अन-नूर आयत ४६।

३५. प्रातःकाल के क़ुरआन (Qur'an at dawn) से अभिप्रेत 'फ़ज्र' (प्रातःकाल) की 'नमाज़' है। क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर 'नमाज़' के अंगों ('तसबीह', 'हम्द', 'ज़िक्र,' 'क़ियाम', 'रुकूअ' और 'सजदा' आदि) में से किसी एक का नाम ले कर पूरी 'नमाज़' की ओर संकेत किया गया है।

३६. "तहज्जुद" की 'नमाज़' में क़ुरआन पढ़ कर।

३७. अर्थात् दोनों लोकों में तुम्हारा सम्मान हो; समस्त लोग तुम्हारी प्रशंसा करें।

'क़ियामत' के दिन नबी (सल्ल०) अल्लाह के हुक्म से गुनहगार लोगों के लिए अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगे, इस में भी आप (सल्ल०) के गौरव का प्रदर्शन होगा।

३८. इस प्रार्थना से मालूम होता है कि 'हिजरत' का समय बिल्कुल क़रीब आ गया था। यह प्रार्थना 'हिजरत' करने वालों की है।

३९. सत्य के मुक़ाबले में असत्य कभी ठहरने वाला नहीं होता। इस भविष्य वाणी के ९ वर्ष के बाद ही नबी सल्ल० को मक्का पर विजय प्राप्त हुई और आप (सल्ल०) ने 'काबा' को मूर्तियों से पाक किया। दे० हा० मीम० अस-सजदा आयत ४१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८३. और जब हम मनुष्य को नेमत देते हैं, तो वह कतराता और अपना पहलू बचाता है; और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो निराश हो जाता है।

83. And when We make life pleasant unto man, he turneth away and is averse; and when ill toucheth him he is in despair.

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَٰنِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِۦ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوسًا ﴿٨٣﴾

८४. कह दो : हर एक अपने ढंग पर काम कर रहा है, तो तुम्हारा 'रब' भली-भाँति जानता है कि कौन अधिक सीधे मार्ग पर है।

84. Say: Each one doth according to his rule of conduct, and thy Lord is best aware of him whose way is right.

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِۦ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿٨٤﴾

८५. और ये तुझ से रूह ('वह्य') के विषय में पूछते हैं कह दो : यह रूह मेरे 'रब' के हुक्म से है, और तुम्हें बस थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है[४०]।

85. They will ask thee concerning the Spirit. Say: The Spirit is by command of my Lord, and of knowledge ye have been vouchsafed but little.

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾

८६. और (हे मुहम्मद!) यदि हम चाहें तो वह सब छीन लें जो हम ने तुम्हारी ओर 'वह्य' की है, फिर इस के लिए हमारे मुक़ाबले में अपना कोई ज़िम्मा लेने वाला नहीं पाओगे।

86. And if We willed We could withdraw that which We have revealed unto thee, then wouldst thou find no guardian for thee against Us in respect thereof.

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِۦ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾

८७. बस तुम्हारे 'रब' की दयालुता है। वास्तव में उस का अनुग्रह तुम पर बहुत बड़ा है।

87. (It is naught) save mercy from thy Lord. Lo! His kindness unto thee was ever great.

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُۥ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

८८. कह दो : यदि मनुष्य और 'जिन्न' इस के लिए इकट्ठा हो जायें कि इस 'क़ुरआन'-जैसी कोई चीज़ लायें, तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जायें।

88. Say: Verily, though mankind and the Jinn should assemble to produce the like of this Qur'an, they should not produce the like thereof though they were helpers one of another.

قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

८९. और हम ने इस 'क़ुरआन' में लोगों के (समझने) के लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु अधिकतर लोगों के लिए 'कुफ़्' के सिवा हर चीज़ अमान्य ही रही।

89. And verily We have displayed for mankind in this Qur'an all kinds of similitudes but most of mankind refuse aught save disbelief.

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا الْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

९०. और उन्हों ने कहा : हम तुझ पर 'ईमान' नहीं ला सकते जब तक कि तू हमारे लिए धरती से एक स्रोत न प्रवाहित कर दे;

90. And they say: We will no put faith in thee till thou cause a spring to gush forth from the earth for us;

وَقَالُوا۟ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنۢبُوعًا ﴿٩٠﴾

९१. या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो; और तू उस के बीच नहरें निकाल दे;

91. Or thou have a garden of date-palms and grapes and cause rivers to gush forth therein abundantly;

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَٰرَ خِلَٰلَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

९२. या आकाश के टुकड़े-टुकड़े कर के हम पर गिरा दे, जैसा कि तेरा दावा है, या अल्लाह और 'फ़िरिश्तों' को सामने ले आये;

92. Or thou cause the heaven to fall upon us piecemeal, as thou hast pretended, or bring Allah and the angels as a warrant;

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِىَ بِاللَّهِ وَالْمَلَٰٓئِكَةِ قَبِيلًا ﴿٩٢﴾

४०. यहाँ 'रूह' से अभिप्रेत या तो 'वह्य' है या फिर इस से अभिप्रेत 'वह्य' लाने वाला 'फ़िरिश्ता' हज़रत जिबरील अ० हैं। 'रूह' शब्द के प्रयोग के दृष्टान्त के लिए देखिए सूरा अल-बक़रा आयत ९७, अन-नह्ल आयत २, १०२, अल-मोमिन आयत १५, अश-शूरा आयत ५२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९३. या तेरे लिए स्वर्ण का एक घर हो जाये; या तू आकाश पर चढ़ जाये, और हम तेरे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे जब तक कि तू हम पर एक 'किताब' न उतार लाये जिसे हम पढ़ सकें—

कह दो : महिमावान् है मेरा 'रब'! क्या मैं इस के सिवा और भी कुछ हूँ कि एक मनुष्य हूँ जो 'रसूल' भी है?

93. Or thou have a house of gold; or thou ascend up into heaven, and even then we will put no faith in thine ascension till thou bring down for us a book that we can read. Say (O Muhammad): My Lord be glorified! Am I naught save mortal messenger?

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ
تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ
حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرَؤُهُ قُلْ
سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٣﴾

९४. और लोगों को जब कभी उन के पास मार्गदर्शन आया तो इस बात से कि वे 'ईमान' लायें सिवाय इस के किसी चीज़ ने नहीं रोका कि वे कहने लगे : क्या अल्लाह ने आदमी को 'रसूल' बना कर भेज दिया है?

94. And naught prevented mankind from believing when the guidance came unto them save that they said: Hath Allah sent a mortal as (His) messenger?

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ
الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا
رَّسُولًا ﴿٩٤﴾

९५. कह दो : यदि धरती में 'फ़िरिश्ते' चलते-फिरते और आबाद होते, तो हम उन के लिए आकाश से किसी 'फ़िरिश्ते' ही को 'रसूल' बना कर भेजते।

95. Say: If there were in the earth angels walking secure, We had sent down for them from heaven an angel as messenger.

قُل لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ
يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم
مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾

९६. कह दो : मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों की खबर रखने वाला और देखने वाला है।

96. Say: Allah sufficeth for a witness between me and you. Lo! He is Knower, Seer of His slaves.

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

९७. जिसे अल्लाह मार्ग दिखाये, वही मार्ग पाने वाला है; और जिसे वह भटका दे,[४१] ऐसे लोगों के लिए उस के सिवा तू किसी को संरक्षक-मित्र नहीं पा सकता, 'क़ियामत' के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में घसीट लायेंगे कि वे अन्धे, और गूँगे और बहरे होंगे; उन का ठिकाना 'जहन्नम' है; जब कभी (उस की आँच) धीमी होने लगेगी, हम उसे उन के लिए और अधिक दहका देंगे

97. And he whom Allah guideth, he is led aright; while, as for him whom He sendeth astray for them thou wilt find no protecting friends beside Him, and We shall assemble them on the Day of Resurrection on their faces, blind, dumb and deaf; their habitation will be hell; whenever it abateth, We increase the flame for them.

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن
يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن
دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ
وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا
مَّأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ
سَعِيرًا ﴿٩٧﴾

९८. यह उन का बदला है इस लिए कि उन्हों ने हमारी 'आयतों' के साथ 'कुफ़्र' किया और कहा : क्या हम जब (मर कर) हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण हो जायेंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा कर के हमें उठाया जायेगा?

98. That is their reward because they disbelieved Our revelations and said: When we are bones and fragments shall we, forsooth, be raised up as a new creation?

ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا
وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا
لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

४१. दे० सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट ८, १३, ३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९. क्या उन्हें यह नहीं सूझा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया है वह उन जैसों को भी पैदा करने का सामर्थ्य रखता है, और उस ने उन के लिए एक मुद्दत नियत कर रक्खी है जिस में कोई सन्देह नहीं है? परन्तु ज़ालिमों के लिए तो 'कुफ़्र' के सिवा हर चीज़ अमान्य ही रही।

99. Have they not seen that Allah Who created the heavens and the earth is able to create the like of them, and hath appointed for them an end whereof there is no doubt? But the wrong-doers refuse aught save disbelief.

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى
الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

१००. कहो : यदि कहीं मेरे 'रब' की दयालुता के ख़जानों पर तुम्हारा अधिकार होता, तो तुम व्यय हो जाने के भय से उन को रोके ही रहते[४२] और मनुष्य बड़ा ही दिल का तंग है।

100. Say (unto them): If ye possessed the treasures of the mercy of my Lord, ye would surely hold them back for fear of spending, for man was ever grudging.

قُل لَّوْ أَنتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ
رَبِّي إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنفَاقِ
وَكَانَ الْإِنسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

१०१. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ प्रदान की थीं[४३]। तो तुम 'बनी इसराईल' से पूछ लो कि जब वह उन के पास आया, तो 'फ़िरऔन' ने उस से कहा : हे मूसा ! मैं तो तुम्हें जादू का मारा हुआ समझता हूँ।

101. And verily We gave unto Moses nine tokens, clear proofs (of Allah's Sovereignty). Do but ask the Children of Israel how he came unto them, then Pharaoh said unto him: Lo! I deem thee one bewitched, O Moses.

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ
فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ
لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾

१०२. कहा : तू जान चुका है कि आकाशों और धरती के 'रब' के सिवा किसी और ने इन (निशानियों) को दलील बना कर नहीं उतारा है, और हे फ़िरऔन ! मैं समझता हूँ कि तेरे लिए विनाश है।

102. He said: In truth thou knowest that none sent down these (portents) save the Lord of the heavens and the earth as proofs, and lo! (for my part) I deem thee lost, O Pharaoh.

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا
رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي
لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾

१०३. फिर उस ने चाहा कि उन्हें[४४] उस भूमि से घबरा दे, परन्तु हम ने उसे और उस के साथ वालों को, इकट्ठा डुबो दिया।

103. And he wished to scare them from the land, but We drowned him and those with him, all together.

فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم مِّنَ الْأَرْضِ
فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾

१०४. और उस के बाद 'इसराईल' की सन्तान से कहा : तुम धरती में बसो; फिर जब 'आख़िरत' का वादा आ जायेगा तो हम तुम सब को एक साथ ला हाज़िर करेंगे।

104. And We said unto the Children of Israel after him: Dwell in the land; but when the promise of the Hereafter cometh to pass We shall bring you as a crowd gathered out of various nations.

وَقُلْنَا مِن بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا
الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا
بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾

४२. 'मुश्रिक' लोग अपनी विशेष मनोवृत्ति के कारण 'नबी' सल्ल० की 'रिसालत' का इन्कार करते थे। वे कहते थे कि अल्लाह ने उन को पैग़म्बरी के लिए क्यों चुना।

४३. 'सूरा' अल-आराफ़ में इन निशानियों का उल्लेख हुआ है : (१) हज़रत मूसा अ० का 'असा' (लाठी) जो अजगर बन जाता था, (२) 'यदे बैज़ा' हज़रत मूसा का हाथ जो बग़ल से निकलते ही सूर्य के समान चमकने लगता था, (३) जादूगरों के जादू को असफल कर देना, (४) एक घोषणा के अनुसार समस्त देश का अकाल से पीड़ित होना और फिर क्रमशः (५) तूफ़ान, (टिड्डी दल), (६) छोटे कीड़े-मकोड़ों, (८) मेंढक और (९) रक्त की आपत्ति का आना।

४४. अर्थात् मूसा (अ०) और 'बनी इसराईल' को।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०५. और इस ('क़ुरआन') को हम ने सत्य के साथ उतारा है, और सत्य ही के साथ यह उतरा है। और (हे मुहम्मद!) तुम्हें हम ने केवल शुभसूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है।

105. With truth have We sent it down, and with truth hath it descended. And We have sent thee as naught else save a bearer of good tidings and a warner.

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝۱۰۵

१०६. और 'क़ुरआन' को हम ने हिस्से-हिस्से किया, ताकि तुम ठहर-ठहर कर इसे लोगों के सामने पढ़ो और इसे हम ने अत्यन्त उत्तम रीति से उतारा है।

106. And (it is) a Qur'an that We have divided that thou mayest recite it unto mankind at intervals, and We have revealed it by (successive) revelation.

وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ۝۱۰۶

१०७. कह दो : तुम इस पर 'ईमान' लाओ या 'ईमान' न लाओ, जिन्हें इस से पहले ज्ञान दिया गया है,[४५] उन्हें जब यह सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल 'सजदे' में गिर जाते हैं,

107. Say: Believe therein or believe not, lo! those who were given knowledge before it, when it is read unto them, fall down prostrate on their faces, adoring,

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ۝۱۰۷

१०८. और पुकार उठते हैं : महिमावान् है हमारा 'रब' ! निस्सन्देह हमारे 'रब' का वादा तो पूरा हो कर रहने वाला है।

108. Saying: Glory to our Lord! Verly the promise of our Lord must be fulfilled.

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝۱۰۸

१०९. और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं, और यह (क़ुरआन) उन की विनम्रता को और बढ़ा देता है[४६]।

109. They fall down on their faces, weeping and it increaseth humility in them.

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۝۱۰۹

११०. कह दो : तुम अल्लाह कह कर पुकारो, या 'रहमान' कह कर पुकारो, जो भी कह कर पुकारो उस के लिए अच्छे नाम हैं। और अपनी 'नमाज़' न तो बहुत पुकार कर पढ़ो और न बहुत चुपके-चुपके से, बल्कि इस के बीच की राह अपनाओ।

110. Say (unto mankind): Cry unto Allah, or cry unto the Beneficent,* unto which soever ye cry (it is the same). His are the most beautiful names. And thou (Muhammad) be not loud voiced in thy worship nor yet silent therein, but follow a way between.

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝۱۱۰

१११. और कहो : प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिस ने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न कोई राज्य में उस का सहभागी है, और न इस कारण कि कमज़ोर और विवश है कोई उस का संरक्षक-मित्र है[४७]। उस की अच्छी तरह बड़ाई करो।

111. And say: Praise be to Allah, Who hath not taken unto Himself a son, and Who hath no partner in the Sovereignty, nor hath He any protecting friend through dependence. And magnify Him with all magnificence.

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝۱۱۱

———

४५. यह संकेत 'किताब वालों' में से उन लोगों की ओर है जो सत्य-प्रिय थे। और 'क़ुरआन' पर 'ईमान' ले आये।

४६. ऐसे सत्यवादी महापुरुषों की सराहना क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की गई है। उदाहरणत: दे० सूरा आले इमरान आयत ११३-११५, १९९, सूरा अल-माइदा आयत ८२-८४ और अल-क़सस आयत ५२-५३।

४७. अर्थात् वह कमज़ोर और विवश नहीं है कि किसी सहायक का मुहताज हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८–अल-कह्फ़
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-कह्फ़' अर्थात् गुफा (The Cave) उन नवयुवकों की कहानी से लिया गया है जिन्हों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए एक गुफा में पनाह ली थी[1]। गुफा में पनाह लेने वाले नवयुवक ह़ज़रत मसीह़ अ० के अनुयायियों में से थे। उन के वृत्तान्त में सब के लिए और विशेषत: ईसाइयों के लिए बड़ी शिक्षा है। वे नवयुवक ह़ज़रत मसीह़ अ० के सच्चे अनुयायियों में से थे; उन का धर्म वह नहीं था जिसे आज हम बिगड़ी हुई ईसाइयत (Christianity) के रूप मे देख रहे हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा मक्का में उस समय उतरी है जब 'काफ़िरों' का ज़ुल्म और अत्याचार बहुत बढ़ चुका था। 'इस्लाम' के अनुयायियों को तरह्-तरह् की यातनाओं और कष्टों का सामना करना पड़ रहा था। गुफा वालों की कहानी सुना कर 'ईमान' वालों की ढारस बँधाई गई। और उन्हें बताया गया कि पहले के 'ईमान' वालों को अपने 'ईमान' की रक्षा के लिए क्या कुछ करना पड़ा है। अनुमान है कि यह सूरा ह़बशा (Abyssinia) की 'हिजरत' से कुछ ही पहले उतरी होगी।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

यह डरावा और शुभसूचना की 'सूरा' है। इस का केन्द्रीय विषय 'क़ियामत' है और वह 'सब्र' और 'नमाज़' पर आधारित है। इस सूरा में विशेष रूप से 'सब्र' का दिग्दर्शन कराया गया है और आगे आनें वाली सूरा में 'नमाज़' पर जोर दिया गया है। पिछली सूरा में यहूदियों के लिए डरावा था, प्रस्तुत सूरा में ईसाइयों के लिए चेतावनी है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

यह सूरा 'मुश्रिकों' के कुछ प्रश्नों के जवाब में उतरी है। मक्का के 'मुश्रिकों' ने ये प्रश्न 'नबी' सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किये थे। और ये प्रश्न 'किताब वालों' के सिखाये हुये थे। उन का पहला प्रश्न गुफा वालों के विषय में था। उन के बारे में उन्हें बताया गया कि वे उस 'तौह़ीद' (एकेश्वरवाद) के मानने वाले थे, जिस का आमन्त्रण आज तुम्हें अल्लाह् का यह 'रसूल' दे रहा है। उन की जाति वालों ने उन के साथ वही कुछ व्यवहार किया था जो व्यवहार आज 'मुस्लिम' गरोह् के साथ तुम कर रहे हो। 'ईमान' वालों के लिए भी इस में शिक्षा है कि उन्हें प्रत्येक दशा में सत्य पर जमे रहना चाहिए, चाहे इस के लिए उन्हें घर-बार सब छोड़ देना पड़े। इस क़िस्से से 'आख़िरत' की भी पुष्टि होती है। अल्लाह् यदि गुफा वालों को मृत्यु की नींद सुला कर एक लम्बी अवधि के बाद फिर जगा सकता है, तो वह मरने के बाद दोबारा लोगों को जीवित भी कर सकता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से गुफा वालों के क़िस्से का सब से पुरातन प्रमाण वे लेख हैं जो सीरिया के एक पादरी ने सुरयानी भाषा में लिखे थे। यह व्यक्ति गुफा वालों के देहान्त के कुछ ही वर्षों के बाद पैदा हुआ था। इस के लेखों में गुफा वालों के वृत्तान्त का विस्तारपूर्वक उल्लेख मिलता है। इन लेखों के आधार पर पश्चिम के लेखकों ने भी अपने यहाँ गुफा वालों का क़िस्सा लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन (Gibbon) भी सात सोने वालों (Seven Sleepers) के नाम से इस क़िस्से का उल्लेख

१. दे० आयत १०-२७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता है[1]। क़िस्से का संक्षेप यह है : रूम राज्य के शासक डीसियस (Decius) के समय में हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों पर ज़ुल्म और अत्याचार हो रहा था। उन्हें तरह-तरह के कष्ट पहुँचाये जा रहे थे। उस समय सात युवक अपने 'ईमान' की रक्षा के लिए एक गुफा में जा बैठे थे। वे उस गुफा में एक लम्बी अवधि तक पड़े रहे यहाँ तक कि अल्लाह ने उस समय उन्हें जिला उठाया जबकि रूम राज्य मसीही धर्म को स्वीकार कर चुका था। जिस रूमी शासक के समय में वे जगे हैं उस का नाम थ्यवडोसियस (Theodosius) था।

मक्का के 'मुश्रिकों' ने दूसरा प्रश्न जो 'नबी' सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किया था वह हज़रत मूसा अ० की एक विशेष यात्रा के सम्बन्ध में था जिस में वे एक विशेष व्यक्ति से मिले थे[2]। इस क़िस्से से जो मूल शिक्षा हमें मिलती है वह यही कि यह वर्तमान संसार जिन हिकमतों और उद्देश्यों के अन्तर्गत चल रहा है वह लोगों की दृष्टि से ओझल हैं। यही कारण है यहाँ क़दम-क़दम पर लोगों को आश्चर्य होने लगता है कि अमुक बात इस तरह क्यों हुई ? और यह तो बड़ा ही बुरा हुआ। हालाँकि यदि परोक्ष का परदा हटा दिया जाये, तो लोगों का भ्रम दूर हो जाये; और उन की समझ में यह बात आ जाये कि यहाँ जो कुछ हो रहा है वह न्याय और 'हिकमत' के सर्वथा अनुकूल है।

'मुश्रिकों' का तीसरा प्रश्न 'ज़ुलक़रनैन' के बारे में था। इस क़िस्से के द्वारा भी लोगों को और विशेष रूप से मक्का के 'काफ़िरों' को समझाया गया है कि 'ज़ुलक़रनैन' की तरह उन्हें भी अपने वास्तविक स्वामी को न भूलना चाहिए, बल्कि उन्हें उस के आदेशों का पालन करना चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो 'क़ुरआन' के अवतरित होने से पूर्व जितने प्रसिद्ध विजेता हुये हैं उन में सब से अधिक जिस व्यक्ति में 'ज़ुलक़रनैन' की वे विशेषतायें पाई जाती हैं, जिन का उल्लेख 'क़ुरआन' में हुआ है वह ईरान के राज्याधिकारी ख़ोरस अथवा ख़ुसरू (Darius) या साइरस (Syrus) है। इस लिए सम्भव है कि क़ुरआन में जिस 'ज़ुलक़रनैन' का हाल बयान हुआ है वह यही ईरानी राज्याधिकारी साइरस ही हो। 'ज़ुलक़रनैन' का अर्थ होता है "दो सींगों वाला" (The Two Horned One) यह पदवी सरलतापूर्वक साइरस पर चस्पाँ होती है; क्योंकि बाइबिल में दानियाल (Daniel) 'नबी' के जिस स्वप्न का उल्लेख किया गया है उस स्वप्न में उन्हें यूनानियों की उन्नति से पूर्व मेडिया और फ़ारस (Media and Persia) के संयुक्त राज्य को एक मेंढे के रूप में दिखाया गया है जिस के दो सींग थे[3]। साइरस ने मेडिया और फ़ारस के राज्यों को मिला कर एक बड़े राज्य की स्थापना की। 'यहूदियों' में इस 'दो सींग वाले' की बड़ी चर्चा थी। क्योंकि इसी व्यक्ति ने बाबिल जैसे राज्य को परास्त कर के 'बनी इसराईल' को उस की क़ैद से छुटकारा दिलाया था।

साइरस एक महान् विजेता था; और बाइबिल से यह भी मालूम होता है कि वह ईशभक्त और अल्लाह से डरने वाला भी था[4]। क़ुरआन में 'ज़ुलक़रनैन' की तीसरी मुहिम का उल्लेख किया गया है; परन्तु अभी तक उत्तर या दक्षिण में साइरस की किसी बड़ी मुहिम का पता नहीं चल सका है। फिर भी यह कोई असम्भव बात नहीं है कि कोई इस तरह की बड़ी मुहिम भी पेश आई हो जबकि इतिहास से पता चलता है कि साइरस का राज्य उत्तर में काकेशिया (Caucasia) तक फैला हुआ था। 'ज़ुलक़रनैन' के बारे में 'क़ुरआन' में यह भी बताया गया है कि 'याजूज' और 'माजूज' से बचाव के लिए उस ने मज़बूत दीवार का निर्माण कराया था। यह बात क़रीब-क़रीब साबित हो चुकी है कि 'याजूज' और 'माजूज' से अभिप्रेत तातारी, मंगोल आदि क़बीले हैं जो प्राचीन समय से सभ्य देशों पर आक्रमण कर के लूट-मार

१. दें० Gibbon's Decline and Fall, chxxxiii।
२. यह क़िस्सा बाइबिल में नहीं है। तलमूद (Talmud) में इस का उल्लेख है किन्तु बिगड़े हुये रूप में।
३. दे० दानियाल (Daniel) अध्याय ८। इस सिलसिले में Tr. Tanith, fol. 32. Hottinger Bible, Orient, 109 भी देखना चाहिए।
४. दे० बाइबिल की किताब 'अज़्रा' (Ezra)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मचाते रहे हैं; और यह भी मालूम है कि उन्हीं से बचने के लिए काकेशिया (Caucasia) के दक्षिणी क्षेत्र में दरबन्द (Wall at Derbent or Darband) और दारयाल की दीवारों का निर्माण हुआ था। परन्तु अभी तक यह बात सिद्ध नहीं हो सकी है कि ये दीवारें साइरस ही की निर्माण कराई हुई थीं। सारांश यह कि सम्भव है 'जुलक़रनैन' 'क़ुरआन' में साइरस ही को कहा गया हो परन्तु निश्चित रूप से अभी यह नहीं कहा जा सकता कि साइरस ही 'जुलक़रनैन' था; इस के लिए जैसा कि ऊपर संकेत किया गया अभी कुछ और प्रमाण अभीष्ट हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' के तीनों क़िस्सों से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० वास्तव में अल्लाह के 'रसूल' हैं। यदि आप (सल्ल०) 'रसूल' न होते तो इन पुरातन कथाओं का ज्ञान आप (सल्ल०) को कैसे हो सकता। न आप (सल्ल०) स्वयं पढ़े-लिखे थे और न ऐसे लोगों के साथ रहने का आप (सल्ल०) को अवसर मिल सका था, जो शिक्षित या इतिहासकार हों।

प्रस्तुत 'सूरा' में मक्का के सरदारों और 'काफ़िरों' को समझाया गया है कि उन्हें वर्तमान जीवन पर कदापि गर्व नहीं करना चाहिए। उन्हें जीवन के उस लक्ष्य की प्राप्ति की चेष्टा करनी चाहिए जो मानव-जीवन का एकमात्र वास्तविक और महान् लक्ष्य है। और उन्हें उन भलाइयों की इच्छा होनी चाहिए जो स्थायी और शाश्वत हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-कह्फ़
(मक्का में उतरी -- 'आयतें' ११०)

THE CAVE
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ آيَاتٍ وَفِيهَا اثْنَا عَشَرَ رُكُوعًا

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर यह 'किताब' उतारी, और उस में कोई टेढ़ नहीं रक्खी,

1. Praise be to Allah who hath revealed the Scripture unto His slave, and hath not placed therein any crookedness.

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ
الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۜ ١

२. ठीक और सीधी है,[1] ताकि एक कठोर यातना से (लोगों को) सचेत कर दे जो उस की ओर से[2] होगा, और 'ईमान' वालों को जो अनुकूल कर्म करते हैं शुभसूचना दे दे कि उन के लिए अच्छा बदला है।

2. (But hath made it) straight to give warning of stern punishment from Him, and to bring unto the believers who do good works the news that theirs will be a fair reward.

قَيِّمًا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِنْ لَدُنْهُ
وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ٢

३. जिस में वे सदैव रहेंगे;

3. Wherein they will abide for ever.

مَاكِثِينَ فِيهِ أَبَدًا ٣

४. और उन को सचेत कर दे जो कहते हैं: अल्लाह ने बेटा बनाया है,[3]

4. And to warn those who say Allah hath chosen a son,

وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ٤

५. इस का ज्ञान न उन को है, और न उन के पूर्वजों को था। बड़ी बात है जो उन के मुँह से निकलती है। वे बस झूठ बोलते हैं।

5. (A thing) whereof they have no knowldge, nor (had) their fathers. Dreadful is the word that cometh out of their mouths. They speak naught but a lie.

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ۚ
كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ
إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ٥

६. अच्छा, तो (हे 'नबी'!) शायद तुम उन के पीछे अफ़सोस के मारे अपने प्राण ही विनष्ट कर देने वाले हो, यदि वे इस कथन पर 'ईमान' न लाये।

6. Yet it may be, if they believe not in this statement, that thou (Muhammad) wilt torment thy soul with grief over their foot-steps.

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ
إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ٦

७. निश्चय ही धरती पर जो कुछ है उसे हम ने उस की[4] शोभा बनाई है ताकि हम उन की परीक्षा लें कि कौन उन में कर्म की दृष्टि से सब से अच्छा है।

7. Lo! We have placed all that is in the earth as an ornament thereof that We may try them: which of them is best in conduct.

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا
لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ٧

८. और जो कुछ उस पर है हम उसे चटियल भूमि बना देने वाले हैं।

8. And lo! We shall make all that is therein a barren mound.

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا
جُرُزًا ٨

१. और लोगों को सीधे मार्ग पर चलाने वाली है।
२. अर्थात् अल्लाह की ओर से।
३. अल्लाह के लिए औलाद गढ़ने के अपराध में 'ईसाई', 'यहूदी', और अरब के 'मुश्रिक' सभी लोग सम्मिलित हैं।
४. अर्थात् धरती की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. क्या तुम समझते हो कि गुफा और 'अर-रक़ीम' वाले[५] हमारी अद्‌भुत निशानियों में से हैं ?

9. Or deemest thou that People of the Cave and the Inscription are a wonder among Our portents?

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ⑨

१०. जब उन नवयुवकों ने गुफा में जा कर शरण लिया और कहा : हमारे 'रब' ! हमें अपने यहाँ से दयालुता प्रदान कर, और हमारे लिए हमारे मामले को ठीक कर दे ।

10. When the young men fled for refuge to the Cave and said: Our Lord! Give us mercy from Thy presence, and shape for us right conduct in our plight:

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا
رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا
مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ⑩

११. तब हम ने उसी गुफा में उन के कान कई वर्षों के लिए थपक दिये[६] ।

11. Then We sealed up their hearing in the Cave for a number of years.

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ
سِنِينَ عَدَدًا ⑪

१२. फिर उन्हें उठाया कि मालूम करें कि दोनों गरोहों में से किस ने उस (कालावधि) को सही तरीक़े से याद रक्खा जिस कालावधि तक वे ठहरे रहे ।

12. And afterward We raised them up that We might know which of the two parties would best calculate the time that they had tarried.

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ
ع أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ⑫

१३. हम उन का क़िस्सा तुझे हक़ के साथ सुनाते हैं । वे कुछ नवयुवक थे जो अपने 'रब' पर 'ईमान' लाये थे, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन की दृष्टि से और बढ़ा दिया ।

13. We narrate unto thee their story with truth. Lo! they were young men who believed in their Lord, and We increased them in guidance.

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ بِالْحَقِّ
إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ
هُدًى ⑬

१४. और हम ने उन के दिलों को मज़बूत कर दिया जब वे उठे तो उन्हों ने कहा : हमारा 'रब' आकाशों और धरती का 'रब' है । हम उस के सिवा किसी 'इलाह्' (पूज्य) को न पुकारेंगे, (क्योंकि) तब तो हम बहुत ही ज़्यादती की बात करेंगे ।

14. And We made firm their hearts when they stood forth and said: Our Lord is the Lord of the heavens and the earth. We cry unto no god beside Him, for then should we utter an enormity.

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا
فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَنْ نَدْعُوَ مِنْ دُونِهِ إِلَٰهًا لَقَدْ
قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ⑭

१५. (उन्होंने परस्पर कहा) : ये, हमारी ज़ाति वालों ने तो उस (एक 'रब') के सिवा दूसरे 'इलाह्' (पूज्य) बना लिये हैं, ये उन (झूठे उपास्यों) के हक़ में खुली सनद क्यों नहीं लाते ? फिर उस से बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह् से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़े ?

15. These, our people, have chosen (other) gods beside Him though they bring no clear war-rant (vouchsafed) to them. And who doth greater wrong than he who inventeth a lie concerning Allah?

هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ
آلِهَةً لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ
بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا ⑮

१६. और जबकि तुम ने इन से और उस से जिस की ये अल्लाह् के सिवा 'इबादत' करते हैं किनारा कर लिया है, तो अमुक गुफा में चल कर शरण लो; तुम्हारा 'रब' अपनी दयालुता को तुम्हारे लिए विस्तीर्ण कर देगा और तुम्हारे लिए काम की आसानी संचित कर देगा[७] ।

16. And when ye withdraw from them and that which they worship except Allah, then seek refuge in the Cave, your Lord will spread for you of His mercy and will prepare for you a pillow in your plight.

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ
إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ
رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ
مِنْ أَمْرِكُمْ مِرْفَقًا ⑯

५. वह घाटी या पहाड़ी जहाँ वह गुफा थी । इस सिलसिले में दे० Fundgreiben des Orients, iii, 347-381. Gibbon's Decline and Fall, ch. xxxiii.
६. अर्थात् उन्हें कई वर्षों के लिए गहरी नींद सुला दिया ।
७. इस के बाद ये लोग नगर से निकल कर पहाड़ों के बीच एक गुफा में जा कर छुप गये ताकि उन्हें लोग सच्चे धर्म से ज़बरदस्ती फेर न सकें और इस प्रकार अपने प्राणों की भी रक्षा कर सकें । उन्हों ने दुनिया छोड़ दी परन्तु सत्य से विचलित न हुये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. और तुम सूर्य को देखते हो कि जब वह उदय होता है तो उन की गुफा से दाहिनी ओर को हट जाता है, और जब वह अस्त होता है तो उन से बाईं ओर कतरा कर निकल जाता है,[८] और वे हैं कि उस (गुफा) के (भीतर) एक कुशादा स्थान में पड़े हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे अल्लाह मार्ग दिखाये, वही मार्ग पाने वाला है, और जिसे वह भटका दे,[९] तुम उस का कोई मार्गदर्शक-मित्र नहीं पा सकते।

17. And thou mightest have seen the sun when it rose move away from their cave to the right, and when it set go past them on the left, and they were in the cleft thereof. That was (one) of the portents of Allah. He whom Allah guideth, he indeed is led aright, and he whom He sendeth astray, for him thou wilt not find a guiding friend.

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَإِذَا غَرَبَتْ
تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ
مِّنْهُ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ
تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

१८. और तुम (उन्हें देख कर) समझते कि वे जाग रहे हैं हालांकि वे सो रहे थे, हम उन्हें दायें और बायें करवट दिलवाते रहते थे, और उन का कुत्ता ड्योढ़ी (प्रवेश-मार्ग) पर अपने दोनों हाथ फैलाये हुये था। यदि तुम उन्हें झाँक कर देखते तो उन के पास से उलटे पाँव भाग खड़े होते और तुम में उन का भय समा जाता।

18. And thou wouldst have deemed them waking though they were asleep, and We caused them to turn over to the right and the left, and their dog stretching out his paws on the threshold.

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ
وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ
الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ
بِالْوَصِيْدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ
مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

१९. और इसी तरह हम ने उन्हें उठाया ताकि वे आपस में पूछ-ताछ करें। उन में एक कहने वाले ने कहा : तुम कितनी देर रहे ? वे बोले : हम रहे होंगे एक दिन या एक दिन का कुछ भाग, उन्होंने कहा : जितनी देर तुम यहाँ रहे हो तुम्हारा 'रब' ही उसे भली-भाँति जानता है। अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का दे कर नगर भेजो, वह देखे कि कौन सा भोजन शुद्ध है तो उस में से वह तुम्हारे पास कुछ भोजन-सामग्री ले आये। और चाहिए कि वह नर्मी और होशियारी से काम ले और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे।

19. If thou hadst observed them closely thou hadst assuredly turned away from them in flight, and hadst been filled with awe of them. And in like manner We awakened them that they might question one another. A speaker from among them said: How long have ye tarried? They said: We have tarried a day or some part of a day, (Others) said: Your Lord best knoweth what ye have tarried. Now send one of you with this your silver coin unto the city, and let him see what food is purest there and bring you a supply thereof. Let him be courteous and let no man know of you.

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوْا
لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوْا رَبُّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوْا أَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖ إِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ
أَيُّهَا أَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ
مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿١٩﴾

२०. वे लोग यदि तुम्हारी खबर पा लें, तो वे तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे या फिर तुम्हें अपने पन्थ की ओर फेर ले जायेंगे, और तुम कभी सफल न हो सकोगे।

20. For they, if they should come to know of you, will stone you or turn you back to their religion; then ye will never prosper.

إِنَّهُمْ إِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ أَوْ
يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾

८. अर्थात् गुफा की स्थिति (Situation) ही कुछ ऐसी थी कि सूर्य की किरणें उन तक नहीं पहुँच सकती थीं। यहाँ भूत को वर्तमान का रूप दे कर वास्तविक स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

९. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ४, सूरा अन-निसा फ़ुटनोट ३६, ४९, सूरा हूद फ़ुटनोट १७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. और इस तरह हम ने (नगर वालों को) उन की ख़बर कर दी[१०] ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि उस घड़ी ('क़ियामत') में कोई सन्देह नहीं है। जब वे परस्पर अपने मामले में झगड़ रहे थे, उन्हों ने कहा : उन पर एक इमारत बना दो; उन का 'रब' उन के बारे में भली-भाँति जानता है। जिन की बात सब पर भारी रही[११] उन्हों ने कहा : हम तो उन पर एक मस्जिद (उपासना गृह) बनायेंगे।

21. And in like manner We disclosed them (to the people of the city) that they might know that the promise of Allah is true, and that, as for the Hour, there is no doubt concerning it. When (the people of the city) disputed of their case among themselves, they said: Build over them a building; their Lord knoweth best concerning them. Those who won their point said: We verily shall build a place of worship over them.

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَآ إِذْ يَتَنَٰزَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا۟ ٱبْنُوا۟ عَلَيْهِم بُنْيَٰنًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ ٱلَّذِينَ غَلَبُوا۟ عَلَىٰٓ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

२२. (कुछ लोग) कहेंगे : वे तीन थे, चौथा उन का कुत्ता था। और कुछ यह भी कहेंगे : वे पाँच थे, छठा उन का कुत्ता था; यह बिना देखे पत्थर चलाना है,[१२] और कुछ यह भी कहेंगे : वे सात थे, और आठवाँ उन का कुत्ता था। कहो : मेरा 'रब' भली-भाँति उन की गिनती जानता है। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। तो तुम सिवाय ऊपरी बात के उन के बारे में न झगड़ो, और उन में किसी से उन के बारे में कुछ न पूछो[१३]—

22. (Some) will say: They were three, their dog the fourth, and (some) say: Five, their dog the sixth, guessing at random; and (some) say: Seven, and their dog the eighth. Say (O Muhammad): My Lord is best aware of their number. None knoweth them save a few. So contend not concerning them except with an outward contending, and ask not any of them to pronounce concerning them.

سَيَقُولُونَ ثَلَٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِٱلْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّىٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَٰهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

२३. और किसी चीज़ के बारे में कभी यह न कहा करो कि मैं कल इसे कर दूंगा।

23. And say not of anything: Lo! I shall do that tomorrow

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَا۟ىْءٍ إِنِّى فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

२४. परन्तु यह कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। जब भूल जाओ तो अपने 'रब' को याद कर लो, और कहो : बहुत सम्भव है मेरा 'रब' इस से ज़्यादा सुपथ से निकटतम बात मुझे सुझा दे[१४]—

24. Except if Allah will. And remember thy Lord when thou forgettest, and say: It may be that my Lord guideth me unto a nearer way of truth than this.

إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ وَٱذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

१०. जब वह खाना लेने के लिए नगर पहुँचा तो वहाँ दुनिया ही दूसरी थी। रूम राज्य को ईसाई हुये एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी। पुराने युग का यह आदमी अपने को छुपा नहीं सका। सुरयानी कथन से मालूम होता है कि जिस दुकानदार को इस व्यक्ति ने अपना चाँदी का सिक्का भोजन लेने के लिये दिया उस ने यह समझा कि शायद इस को पुराने युग का कोई दबा हुआ ख़ज़ाना मिल गया है। जब इस व्यक्ति को अधिकारी लोगों के सामने लाया गया तो मालूम हुआ कि यह हज़रत मसीह अ० के उन अनुयायियों में से है जो आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व अपने प्राण और अपने 'ईमान' की रक्षा के लिए नगर छोड़ कर भाग गये थे। यह ख़बर सारे नगर में फैल गई। लोगों की एक भीड़ थी जो गुफा के पास जा पहुँची। गुफा में पनाह लेने वालों को जब मालूम हुआ कि वे सैकड़ों वर्ष के बाद सो कर उठे हैं, तो उन्हों ने नये युग के लोगों को सलाम किया और फिर सदैव के लिए सो गये; उन का देहान्त हो गया।

११. अर्थात् जिन लोगों को उन पर प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त था।

१२. अर्थात् यह अटकल-पच्चू हांकना है।

१३. अर्थात् आदमी को जिस चीज़ की खोज में पड़ना चाहिए वह उन की संख्या नहीं है बल्कि वह मौलिक शिक्षा है जो हमें इस क़िस्से से मिलती है।

१४. यह एक व्यवहित वाक्य है। आगे की बात बताने से पहले 'नबी' सल्ल० और 'ईमान' वालों को शिक्षा दी गई है कि उन्हें कभी इस का दावा न करना चाहिए कि मैं अमुक कार्य कल कर दूंगा। अल्लाह के सिवा किसी को न परोक्ष का ज्ञान है और न उसे यह अधिकार ही प्राप्त है कि वह जो चाहे कर सके। लोगों को अल्लाह पर भरोसा करते हुये यह कहना चाहिए कि यदि अल्लाह ने चाहा तो यह काम हो जायेगा; और यों कहना चाहिए कि हो सकता है मेरा 'रब' मुझे इस से अधिक उचित और बुद्धिमत्ता की बात सुझा दे। दे० आयत २८, ३६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे और नौ (वर्ष) और बढ़ाये।

25. And (it is said) they tarried in their Cave three hundred years and add nine.

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

२६. कह दो : अल्लाह भली-भाँति जानता है जितनी मुद्दत वे रहे। आकाशों और धरती का अन्तर्द्धान उसी का है। क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला ! उस के सिवा उन का कोई संरक्षक-मित्र नहीं, और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है।

26. Say: Allah is best aware how long they tarried. His is the invisible of the heavens and the earth. How clear of sight is He and keen of hearing! They have no protecting friend beside Him. and He maketh none to share in His government.

قُلِ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ
دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

२७. और अपने 'रब' की 'किताब' को जो तुम्हारी ओर 'वह्य' की गई है सुना दो। कोई उस की बातों को बदलने वाला नहीं, और तुम उस के सिवा कोई पनाह की जगह नहीं पाओगे।

27. And recite that which hath been revealed unto thee of the Scripture of thy Lord. There is none who can change His words, and thou wilt find no refuge beside Him.

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ
لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ
دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

२८. और अपने जी को उन लोगों के साथ थाम रक्खो जो प्रातःकाल और सन्ध्या समय अपने 'रब' को पुकारते हैं उस की मुखाकांक्षा लिये हुये;[१५] और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में उन को छोड़ कर तुम्हारी निगाहें आगे न बढ़ें,[१६] और ऐसे व्यक्ति का कहना न मानना जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है, और जो अपनी इच्छा के पालन में लगा है और जिस का मामला हद से निकला हुआ है।

28. Restrain thyself along with those who cry unto their Lord at morn and evening, seeking His countenance; and let not thine eyes overlook them, desiring the pomp of the life of the world; and obey not him whose heart We have made heedless of Our remembrance, who followeth his own lust and whose case hath been abandoned.

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ
وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ
زِينَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ
أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ
وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

२९. और कह दो : यह सत्य है तुम्हारे 'रब' की ओर से। अब जो कोई चाहे, मान ले, और जो चाहे, इन्कार कर दे : हम ने ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रक्खी है। उस की क़नातों[१७] ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे (प्यास के मारे) फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे पानी से उन की फ़रियाद-रसी की जायेगी[१८] जो पिघले हुये ताँबे[१९] जैसा होगा जो मुखों को भून डालेगा। क्या ही बुरा है वह पेय और (वह 'जहन्नम') क्या ही बुरा विश्राम-स्थल है !

29. Say: (It is) the truth from the Lord of you (all). Then whosoever will, let him believe, and whosoever will, let him disbelieve. Lo! We have prepared for disbelievers Fire. Its tent encloseth them. If they ask for showers, they will be showered with water like to molten lead which burneth the faces. Calamitous the drink and ill the resting-place!

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيَكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ
يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي
الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

१५. यहाँ वास्तव में 'वज्ह' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का शब्दार्थ 'मुख' (Face or Countenace) है। अल्लाह के मुख से अभिप्रेत उस की ख़ुशी और रज़ामन्दी है।

१६. 'क़ुरैश' के सरदार नबी सल्ल० से कहते थे कि तुम्हारे साथ ग़रीब और निर्धन लोग बैठा करते हैं, उन के साथ हम नहीं बैठ सकते; उन्हें हटा दो तो हम तुम्हारे पास आ कर सुन सकते हैं कि तुम क्या कहना चाहते हो।

१७. क़नातों से अभिप्रेत यहाँ वे बाह्य सीमायें हैं जहाँ तक अग्नि की लपटें पहुँच रही होंगी।

१८. अर्थात् उन की फ़रियाद सुनी जायेगी तो इस तरह कि ठण्डे पानी के बदले उन्हें जैसा कि आगे आ रहा है पीने को पिघले हुये ताँबे जैसा पानी दिया जायेगा।

१९. मूल ग्रन्थ (Text) में यहाँ 'मुह्ल' शब्द प्रयुक्त हुआ है, कोश में इस के कई अर्थ—तेल की तलछट, पिघली धातु, ताँबा, लावा, पीप, रक्त आदि बताये गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये तो निस्सन्देह हम ऐसे व्यक्ति का बदला जिस ने अनुकूल कर्म किया हो अकारथ नहीं करते।

30. Lo! as for those who believe and do good works, — Lo! We suffer not the reward of one whose work is goodly to be lost.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝٣٠

३१. ऐसे लोगों के लिए सदाबहार 'जन्नतें' हैं, उन लोगों के लिए नीचे नहरें बह रही होंगी; वहाँ वे स्वर्ण के कङ्गनों से आभूषित किये जायेंगे[२०] और वे हरे (रंग के) बारीक और दबीज़ रेशमी कपड़े पहनेंगे, ऊँची मसनदों पर तकिया लगाये होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या खूब विश्रामस्थल है !

31. As for such, theirs will be Gardens of Eden, wherein rivers flow beneath them; therein they will be given armlets of gold and will wear green robes of finiest silk and gold embroidery reclining upon thrones therein. Blest the reward, and fair the resting-place.

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝٣١

३२. और उन से ऐसे दो आदमियों की मिसाल बयान करो जिन में से एक को हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये, और उन के चारों ओर हम ने खजूरों की बाढ़ लगाई और उन के बीच हम ने खेती रक्खी थी।

32. Coin for them a similitude: Two men unto one of whom We had assigned two gardens of grapes, and We had surrounded both with datepalms and had put between them tillage.

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝٣٢

३३. दोनों बाग़ अपने खूब फल लाये और इस में कोई कमी नहीं की। और हम ने उन दोनों (बाग़ों) के बीच नहर जारी कर दी थी।

33. Each of the gardens gave its fruit and withheld naught thereof. And We caused a river to gush forth therein.

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ۝٣٣

३४. और उस के लिए काफ़ी फल आये थे। वह अपने साथी से बात करते हुये बोला : मैं तुझ से माल में बढ़ कर हूँ, और जन-समूह में भी अधिक बलिष्ठ हूँ।

34. And he had fruit. And he said unto his comrade, when he spake with him: I am more than thee in wealth, and stronger in respect of men.

وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۝٣٤

३५. और अपने हक़ में ज़ुल्म करता हुआ उसने अपने बाग़ मे प्रवेश किया। कहने लगा : मैं ऐसा नहीं समझता कि यह कभी तबाह हो।

35. And he went into his garden, while he (thus) wronged himself. He said: I think not that all this will ever perish.

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَٰذِهِ أَبَدًا ۝٣٥

३६. और मैं नहीं समझता कि वह ('क़ियामत' की) घड़ी आयेगी, और यदि वास्तव में मुझे मेरे 'रब' के पास लौटाया गया तो मैं अवश्य इस से अच्छी पलटने की जगह (ठिकाना) पाऊँगा।

36. I think not that the Hour will ever come, and if indeed I am brought back unto my Lord I surely shall find better than this as a resort.

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۝٣٦

३७. उस के साथी ने उस से बात करते हुये कहा : क्या तू उस के साथ 'कुफ़्र' करता है जिस ने तुझे मिट्टी से, फिर वीर्य्य से पैदा किया, फिर तुझे नख-शिख से दुरुस्त कर के एक आदमी बनाया?

37. And his comrade, while he disputed with him, exclaimed: Disbelievest thou in Him Who created thee of dust, then of a drop (or seed), and then fashioned thee a man?

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ۝٣٧

२०. प्राचीन समय के सम्राट स्वर्ण के कंगन पहनते थे। आशय यह है कि 'जन्नत' में लोगों का वस्त्र आदि सब राजसी होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. रहा मैं, तो मेरा 'रब' तो वही अल्लाह है, और मैं किसी को अपने 'रब' का सहभागी नहीं बनाता।

38. But He is Allah, my Lord and I ascribe unto my Lord no partner.

لٰكِنَّا هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

३९. और जब तू ने अपने बाग़ में प्रवेश किया तो तू ने यह क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहे (वही होता है)! बिना अल्लाह के कोई शक्ति नहीं! यदि तू मुझे माल और औलाद में अपने से कम पा रहा है,

39. If only, when thou enteredst thy garden, thou hadst said: That which Allah willeth (will come to pass)! There is no strength save in Allah! Though thou seest me as less than thee in wealth and children.

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

४०. तो हो सकता है कि मेरा 'रब' मुझे तेरे बाग़ से अच्छा प्रदान करे, और उस (तेरे बाग़) पर आकाश से कोई आपत्ति भेज दे, फिर वह साफ़ मैदान हो कर रह जाये,

40. Yet it may be that my Lord will give me better than thy garden, and will send on it a bolt from heaven and some morning it will be a smooth hillside,

فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾

४१. या उस का पानी बिल्कुल नीचे उतर जाये फिर तू उसे किसी तरह ढूंढ़ कर न ला सके।

41. Or some morning the water thereof will be lost in the earth so that thou canst not make search for it.

اَوْ يُصْبِحَ مَاۗؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

४२. और (ऐसा ही हुआ) उस का सारा फल बरबाद कर दिया गया। तो जो कुछ उस ने उस में लागत लगाई थी उस पर हाथ मलता रह गया, जब कि वह (अंगूरों का बाग़) अपनी टट्टियों पर ढहा पड़ा था, और कहने लगा : क्या अच्छा होता यदि मैं किसी को अपने 'रब' का सहभागी न बनाता!

42. And his fruit was beset (with destruction). Then began he to wring his hands for all that he had spent upon it, when (now) it was all ruined on its trellises, and to say: Would that I had ascribed no partner to my Lord!

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰي مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾

४३. और अल्लाह के सिवा उस का कोई जत्था न हुआ जो उस की सहायता करता, और न वह स्वयं बदला ले सकेगा।

43. And he had no troop of men to help him as against Allah, nor could he save himself.

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾

४४. यहाँ संरक्षण का अधिकार सत्य रूप, अल्लाह ही के लिए है, वही सब से अच्छा है पारितोषिक की दृष्टि से, और सब से अच्छा है परिणाम की दृष्टि से।

44. In this case is protection only from Allah, the True. He is best for reward, and best for consequence.

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

४५. और उन से सांसारिक जीवन की मिसाल बयान करो कि जैसे पानी हो जिसे हम ने आकाश से बरसाया, तो उस से धरती की वनस्पति अत्यन्त घनी हो गई फिर वह भुस हो कर रह गई जिसे हवायें उड़ाये लिये फिरती हैं[२१]। अल्लाह को हर चीज़ पर पूरा प्रभुत्व प्राप्त है।

45. And coin for them the similitude of the life of the world as water which We send down from the sky, and the vegetation of the earth mingleth with it and then becometh dry twigs that the winds scatter. Allah is Able to do all things.

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

२१. पुराने ग्रन्थ (Old Testament) में भी इस प्रकार की उपमा मिलती है। 'होसीअ' (Hosea) में है : "इस लिए वे प्रात के बादल की भाँति होंगे, और उस ओस की भाँति जो जल्द जाती रहती है और भूसी की भाँति जो बगोला के साथ खलिहान पर से उड़ाई जाती है और उस धुयें की भाँति जो चिमनी से निकला चला जाता है" (दे० १३ : ३)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. ये माल और बेटे सांसारिक जीवन की एक शोभा हैं और शेष रहने वाली नेकियाँ ही तेरे 'रब' की दृष्टि में फल की दृष्टि से उत्तम हैं और आशा की दृष्टि से भी उत्तम हैं।

46. Wealth and children are an ornament of life of the world. But the good deeds which endure are better in thy Lord's sight for reward, and better in respect of hope.

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

४७. और (चिन्ता करो उस दिन की) जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे और तुम धरती को खुली हुई (नग्न) देखोगे, और हम उन्हें (लोगों को) घेर कर इकट्ठा करेंगे तो उन में किसी एक को न छोड़ेंगे।

47. And (bethink you of) the Day when We remove the hills and ye see the earth emerging, and We gather them together so as to leave not one of them behind.

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۚ ﴿٤٧﴾

४८. और वे तुम्हारे 'रब' के सामने पंक्ति में लाये जायेंगे (कहा जायेगा) : तुम हमारे पास आ पहुँचे जैसा कि हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। परन्तु तुम ने तो यह समझ लिया था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा न ठहरायेंगे।

48. And they are set before thy Lord in ranks (and it is said unto them): Now verily have ye come unto Us. We created you at the first. But thought that We had set tryst for you.

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

४९. और 'किताब' (कर्म-पत्र) रक्खी जायेगी, और तुम देखोगे कि जो कुछ उस में होगा उस से अपराधी भयभीत हैं, और कह रहे हैं : हाय हमारा दुर्भाग्य ! यह कैसी किताब है कि न कोई छोटी बात छोड़ती है और न बड़ी बल्कि इसे गिन लिया है ! और जो कुछ उन्हों ने किया था सब को हाज़िर पायेंगे और तेरा 'रब' किसी पर ज़ुल्म न करेगा।

49. And the Book is placed, and thou seest the guilty fearful of that which is therein, and they say: What kind of a book is this that leaveth not a small thing nor a great thing but hath counted it! And they find all that they did confronting them, and thy Lord wrongeth no one.

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۧ ﴿٤٩﴾ ع

५०. याद करो जब हम ने 'फ़रिश्तों' से कहा : आदम के आगे झुक जाओ, तो 'इबलीस' के सिवा सब झुक गये। वह 'जिन्नों' में से था,[22] तो उस ने अपने 'रब' के आदेश का उल्लंघन किया। तो अब क्या तुम मेरे सिवा उसे और उस की सन्तति को संरक्षक-मित्र बनाते हो, जबकि वे तुम्हारे शत्रु हैं ? क्या ही बुरा बदला है ज़ालिमों के लिए !

50. And (remember) when We said unto the angels: Fall prostrate before Adam, and they fell prostrate, all save Iblis. He was of the Jinn, so he rebelled against his Lord's command. Will ye choose him and his seed for your protecting friends instead of Me, when they are an enemy unto you? Calamitous is the exchange for evil-doers!

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

५१. मैं ने न तो उन्हें आकाशों और धरती के पैदा करते समय बुलाया, और न स्वयं उन्हें पैदा करते समय ही; और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को बाज़ू (सहायक) बनाऊँ।

51. I made them not to witness the creation of the heavens and the earth, nor their own creation; nor choose I misleaders for (My) helpers.

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

२२. यदि वह 'फ़रिश्तों' में से होता तो कभी भी अल्लाह के आदेश का उल्लंघन न करता इस लिए कि गुनाह करना 'फ़रिश्तों' की प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है (दे० सूरा अत-तहरीम 'आयत' ६ और सूरा अन-नह्ल आयत ४९-५०)। रहे 'जिन्न' तो मनुष्य की तरह वे भी इस के लिए स्वतन्त्र हैं कि स्वेच्छापूर्वक अपने लिए जो मार्ग चाहें ग्रहण करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. और याद करो जिस दिन (अल्लाह) कहेगा : बुलाओ मेरे सहभागियों को जिन के बारे में तुम ने गुमान किया था (कि वे मेरे सहभागी हैं)। तो ये उन को पुकारेंगे परन्तु वे इन्हें कोई उत्तर न देंगे, और हम उन के बीच ध्वंसपात[२३] रख देंगे।

52. And (be mindful of) the Day when He will say: Call those partners of Mine whom ye pretended. Then they will cry unto them, but they will not hear their prayer, and We shall set a gulf of doom between them.

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

५३. और अपराधी आग ('जहन्नम') देखेंगे तो समझ लेंगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं, और उस से बच निकलने की कोई जगह न पायेंगे।

53. And the guilty behold the Fire and know that they are about to fall therein, and they find no way of escape thence.

وَرَاَ الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوٓا أَنَّهُم
مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ ع ١٩

५४. हम ने इस 'क़ुरआन' में लोगों के लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु मनुष्य सब से बढ़ कर झगड़ालू है।

54. And verily We have displayed for mankind in this Qur'an all manner of similitudes but man is more than anything contentious.

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ
مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

५५. और लोगों को जबकि उन के पास मार्ग-दर्शन आ गया, तो इस बात से कि वे 'ईमान' लायें और अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थना करें किसी चीज़ ने नहीं रोका सिवाय इस के कि (उन्हें इस का इन्तज़ार हो कि) अगलों की रीति (क्रिया-विधि) इन पर भी लागू हो[२४] या वह यातना इन के सामने आ जाये।

55. And naught hindereth mankind from believing when the guidance cometh unto them, and from asking forgiveness of their Lord, unless (it be that they wish) that the judgement of the men of old should come upon them or (that) they should be confronted with the Doom.

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوٓا إِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّآ أَن
تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

५६. और 'रसूलों' को हम ने केवल शुभसूचना देने वाले और सचेतकर्त्ता बना कर भेजा है। परन्तु जिन्हों ने 'कुफ़्' किया वे अनृत बात के द्वारा झगड़ते हैं ताकि उस से सत्य को उस की जगह से हटायें। और उन्हों ने मेरी 'आयतों' का और जो डरावा उन्हें दिया गया था उस का मज़ाक़ बना लिया है।

56. We send not the messengers save as bearers of good news and warners. Those who disbelieve contend with falsehood in order to refute the Truth thereby. And they take Our revelations and that wherewith they are threatened as a jest.

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوٓا
آيَاتِي وَمَآ أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

२३. या उन के बीच हम एक आड़ कर देंगे।
२४. अर्थात् अल्लाह के नियम और (क्रिया-विधि, Manner of acting) के अन्तर्गत जो कुछ उन के साथ हुआ वही इन के साथ भी हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७. और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के 'रब' की 'आयतों' से चेताया गया, तो उस ने उन से मुँह फेर लिया और उसे भूल गया जो उस के हाथों ने (कमा कर) आगे भेजा है ? निस्सन्देह हम ने उन के दिलों पर परदे डाल रक्खे हैं कि उसे न समझें,[२५] और उन के कानों में डाट लगा दी है[२६]। और यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ, तो वे कदापि इस अवस्था में कभी मार्ग पर नहीं आयेंगे।

57. And who doth greater wrong than he who hath been reminded of the revelations of his Lord, yet turneth away from them and forgetteth what his hands sent forward (to the Judgement)? Lo! on their hearts We have placed coverings so that they understand not, and in their ears a deafness. And though thou call them to the guidance, in that case they cannever be led aright.

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

५८. और तेरा 'रब' बड़ा क्षमाशील और दयालुता वाला है। यदि वह उन्हें उस पर पकड़ता जो कुछ कि उन्हों ने कमाया है, तो तुरन्त ही उन पर यातना ला देता; परन्तु उन के लिए वादे का एक समय नियत है उसे छोड़ कर वे कोई हट कर जाने का मार्ग न पायेंगे।

58. Thy Lord is the Forgiver, Full of Mercy. If He took them to task (now) for what they earn, He would hasten on the doom for them; but there is an appointed term from which tney will find no escape.

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

५९. और ये बस्तियाँ[२७]! जब उन्हों ने ज़ुल्म किया तो हम ने उन्हें विनष्ट कर दिया, और हम ने उन के विनाश के वादे का एक समय नियत कर रक्खा था।

59. And (all) those townships! We destroyed them when they did wrong, and We appointed a fixed time for their destruction.

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ﴿٥٩﴾

६०. और याद करो जब कि मूसा ने अपने युवक सेवक से कहा[२८]: जब तक कि मैं दो दरियाओं के संगम पर न पहुँच जाऊँ हटने का नहीं, अन्यथा मैं एक दीर्घ समय तक चलता रहूँगा।

60. And when Moses said unto his servant: I will not give up until I reach the point where the two rivers meet, though I march on for ages.

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

६१. तो जब वे संगम पर पहुँचे दोनों (दरियाओं) के बीच, तो वे अपनी मछली भूल गये, और उस (मछली) ने दरिया में सुरङ्ग बना कर अपनी राह ली।

61. And when they reached the point where the two met, they forgot their fish and it took its way into the waters, being free.

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

२५. ऐसा अल्लाह ने उन के करतूतों के कारण ही किया इस लिए कि अल्लाह ज़बरदस्ती किसी को मार्ग पर लाना नहीं चाहता; वह तो हम से उस भक्ति और प्रेम का इच्छुक है जिसे हम ने स्वतन्त्र अवस्था में स्वेच्छापूर्वक अपनाया हो।

२६. दे० सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट ८।

२७. यह संकेत 'सबा', समूद, मदयन और लूत (अ०) की जाति की उजड़ी बस्तियों की ओर है जिन्हें 'क़ुरैश' के लोग व्यापार के लिए आते-जाते देखा करते थे।

२८. हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुनाने का उद्देश्य वास्तव में लोगों को इस बात से सचेत करना है कि वास्तविकता केवल उतनी ही नहीं है जो हम अपनी आँखों से देखते हैं संसार की अनेक घटनाओं के पीछे अल्लाह की जो हिकमत और उद्देश्य काम कर रहा होता है वह साधारणतः हमारी आँखों से ओझल होता है। यदि इस संसार में अत्याचारियों को फलने-फूलने का अवसर मिल जाता है और नेक लोगों को कष्टों का सहन करना पड़ता है तो इस का यह अर्थ कदापि नहीं कि इस संसार का कोई ईश्वर ही नहीं है; या यहाँ केवल अन्धेरगर्दी है। बल्कि यहाँ जो कुछ हो रहा है वह अल्लाह की हिकमत के अन्तर्गत महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. फिर जब वे आगे चले, तो (मूसा ने) अपने युवक सेवक से कहा : हमारा दिन का भोजन हमें लाओ। अपने इस सफ़र में तो हमें बड़ी थकावट पहुँची।

62. And when they had gone further, he said unto his servant: Bring us our breakfast. Verily we have found fatigue in this our journey.

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا
لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

६३. उस ने कहा : क्या आप ने देखा, जब हम उस चट्टान के पास ठहरे हुये थे, तो मैं मछली भूल गया—और 'शैतान' ही ने मुझे भुला दिया कि मैं उस का जिक्र करता—और उस ने दरिया में अद्भुत रीति से अपनी राह ली।

63. He said: Didst thou see, when we took refuge on the rock, and I forgot the fish — and none but Satan caused me to forget to mention it — it took its way into the waters by a marvel.

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ
فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ اَنْسٰىنِيْهُ اِلَّا
الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ
فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

६४. (मूसा ने) कहा : यही है जो हम चाहते थे।[२९] फिर वे दोनों अपने पद-चिह्नों को देखते हुये वापस हुये।

64. He said: This is that which we have been seeking. So they retraced their steps again.

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلٰٓى
اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

६५. तो उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे हम ने अपने यहाँ से दयालुता प्रदान की थी, और जिसे अपने यहाँ से ज्ञान दिया था।

65. Then found they one of Our slaves, unto whom We had given mercy from Us, and had taught knowledge from Our presence.

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

६६. मूसा ने उस से कहा : क्या मैं आप के साथ रह सकता हूँ, ताकि आप मुझे उस सूझ-बूझ और भली बात की शिक्षा दें जिस की शिक्षा आप को दी गई है।

66. Moses said unto him: May I follow thee, to the end that thou mayst teach me right conduct of the which thou hast been taught?

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ
تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

६७. उस ने कहा : आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे।

67. He said: Lo! thou canst not bear with me.

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

६८. और जो चीज़ आप की ज्ञान-परिधि से बाहर हो उस पर आप सब्र कर भी कैसे सकते है?

68. How canst thou bear with that whereof thou canst not compass any knowledge?

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

६९. (मूसा ने) कहा : अल्लाह ने चाहा, तो आप मुझे धैर्य्यवान् पायेंगे और मैं आप के किसी आदेश को न टालूँगा।

69. He said: Allah willing, thou shalt find me patient and I shall not in aught gainsay thee.

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ
اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

७०. उस ने कहा : अच्छा, यदि आप मेरे साथ चलते हैं, तो मुझ से कोई बात न पूछें, जब तक कि मैं स्वयं आप से उस का जिक्र न करूं।

70. He said: Well, if thou go with me, ask me not concerning aught till I myself mention of it unto thee.

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ
شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

२९. अर्थात् यही मछली का गुम होना ही उस व्यक्ति के पाने की निशानी है जिस की तलाश में हम अल्लाह के हुक्म से निकले हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१. अब दोनों चले, यहाँ तक कि जब नौका में सवार हुये, तो उस ने उस में शिगाफ़ (दर्ज) डाल दिया। (मूसा ने) कहा : क्या आपने शिगाफ़ डाल दिया ताकि उस (नौका) के लोगों को डुबो दें ? आप ने तो आश्चर्यपूर्ण और अवैध कर्म कर डाला।

71. So the twain set out till, when they were in the ship, he made a hole therein. (Moses) said: Hast thou made a hole therein to drown the folk thereof? Thou verily hast done a dreadful thing.

فَانْطَلَقَا حَتّٰىٓ اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـــًٔا اِمْرًا ٧١

७२. उस ने कहा : क्या मैं ने कहा नहीं था कि आप मेरे साथ 'सब्र' न कर सकेंगे ?

72. He said: Did I not tell thee thou couldst not bear with me?

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ٧٢

७३. (मूसा ने) कहा : जो भूल-चूक मुझ से हुई उस पर मुझे न पकड़िए, मेरे मामले में आप मुझ पर सख़्ती न कीजिए।

73. (Moses) said: Be not wroth with me that I forgot, and be not hard upon me for my fault.

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ٧٣

७४. फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि वे एक लड़के से मिले, तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया। (मूसा ने) कहा : क्या आप ने एक निर्दोष जीव की बिना किसी जीव (की हत्या) के बदले हत्या कर डाली ? आप ने बहुत ही बुरा कर्म किया।

74. So they twain journeyed on till, when they met a lad, he slew him. (Moses) said: What! Hast thou slain an innocent soul who hath slain no man? Verily thou hast done a horrid thing.

فَانْطَلَقَا حَتّٰىٓ اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـــًٔا نُّكْرًا ٧٤

*७५. उस ने कहा : क्या मैं ने आप से कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे ?

75. He said: Did I not tell thee that thou couldst not bear with me?

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ٧٥

७६. (मूसा ने) कहा : इस के बाद यदि मैं आप से कुछ पूछूं, तो आप मुझे साथ न रक्खें। अब तो मेरी ओर से आप पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके हैं।

76. (Moses) said: If I ask thee after this concerning aught, keep not company with me. Thou hast received an excuse from me.

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ٧٦

७७. फिर वे दोनों चलें, यहाँ तक कि एक बस्ती के लोगों तक पहुँचे, तो वहाँ के लोगों से खाना माँगा, परन्तु उन्हों ने इन्हें मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया। फिर वहाँ उन्हों ने एक दीवार पाई जो गिरा चाहती थी, तो उस ने उस दीवार को सीधा खड़ा कर दिया। (मूसा ने) कहा : यदि आप चाहते, तो इस की उजरत ले सकते थे।

77. So the twain journed on till, when they came unto the folk of a certain township they asked its folk for food, but they refused to make them guests. And they found therein a wall upon the point of falling into ruin, and he repaired it. (Moses) said: If thou hadst wished, thou couldst have taken payment for it.

فَانْطَلَقَا حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ٧٧

७८. उस ने कहा : यह मेरे और आप के बीच जुदाई है ! मैं आप को उस की वास्तविकता बता दे रहा हूँ जिस पर आप सब्र न कर सके।

78. He said: This is the parting between thee and me: I will announce unto thee the interpretation of that thou couldst not bear with patience.

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ٧٨

७९. वह जो नौका थी, वह मुहताजों की थी जो दरिया में काम-धन्धा करते थे, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, क्यों कि उन के परे एक सम्राट था जो प्रत्येक नौका को छीन लेता था।

79. As for the ship, it belonged to poor people working on the river, and I wished to mar it, for there was a king behind them who is taking every ship by force.

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَاۗءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ٧٩

*यहाँ से सोलहवाँ पारा (Part. XVI) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८०. और रहा वह लड़का, तो उस के माता-पिता 'ईमान' वाले थे हम डरे कि वह (अपनी) सरकशी और 'कुफ़्' से उन्हें तंग करेगा।

80. And as for the lad, his parents were believers and We feared lest he should oppress them by rebellion and disbelief.

وَأَمَّا الْغُلَٰمُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾

८१. तो हम ने चाहा कि उन का 'रब' उन्हें इस के बदले और (बच्चा) प्रदान करे जो शुद्धता में इस से अच्छा हो और दयाशीलता से अधिक निकट हो।

81. And We intended that their Lord should change him for them for one better in purity and nearer to mercy.

فَأَرَدْنَآ أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ
زَكَوٰةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

८२. और रही यह दीवार, तो यह दो अनाथ लड़कों की है जो इस नगर में रहते हैं, और इस (दीवार) के नीचे उन (बच्चों) का एक ख़ज़ाना है, और उन का बाप नेक था, तो आप के 'रब' ने चाहा कि वे (लड़के) अपनी युवावस्था को प्राप्त हो जायें और अपना ख़ज़ाना निकाल लें, यह तुम्हारे 'रब' की दयालुता के कारण हुआ; और मैं ने कुछ अपने अधिकार से नहीं किया। यह है वास्तविकता उस चीज़ की जिस पर आप सब्र न कर सके[30]।

82. And as for the wall, it belonged to two orphan boys in the city, and there was beneath it a treasure belonging to them, and their father had been righteous, and thy Lord intended that they should come to their full strength and should bring forth their treasure as a mercy from their Lord; and I did it not upon my own command. Such is the interpretation of that wherewith thou couldst not bear.

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَٰمَيْنِ يَتِيمَيْنِ
فِى الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا
وَكَانَ أَبُوهُمَا صَٰلِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ
أَن يَبْلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا
رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِى
ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

८३. और (हे मुहम्मद !) वे तुम से 'ज़ुलक़रनैन'[31] के बारे में पूछते हैं। कह दो : मैं उस का कुछ ज़िक्र तुम से बयान करता हूँ।

83. They will ask thee of Dhu'l-Qarneyn. Say: I shall recite unto you a remembrance of him.

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَن ذِى الْقَرْنَيْنِ قُلْ
سَأَتْلُوا۟ عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

८४. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया था और उसे हर प्रकार की सामग्री दे रक्खी थी।

84. Lo! We made him strong in the land and gave him unto everything a road.

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِى الْأَرْضِ وَءَاتَيْنَٰهُ مِن
كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

८५. तो उस ने पश्चिम की ओर (एक मुहिम का) आयोजन किया।

85. And he followed a road.

فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

८६. यहाँ तक कि वह सूर्यास्त की जगह पहुँचा, उस ने उसे एक कृष्ण सागर में अस्त होते पाया,[32] और उस के निकट उसे एक जाति मिली : हम ने कहा : हे ज़ुलक़रनैन ! (तुम्हें इस की शक्ति प्राप्त है कि) चाहे तुम इन्हें तकलीफ़ दो और चाहे इन के साथ अच्छा व्यवहार करो[33]।

86. Till, when he reached the setting-place of the sun, he found it setting in a muddy spring, and found a people thereabout: We said: O Dhu'l-Qarneyn! Either punish or show them kindness.

حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَغْرُبُ فِى عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا
قَوْمًا قُلْنَا يَٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّآ أَن تُعَذِّبَ
وَإِمَّآ أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

३०. इस वृत्तान्त से मालूम होता है कि हज़रत मूसा अ० की जिस बन्दे से मुलाक़ात कराई गई थी वह या तो 'फ़िरिश्ता' रहा हो या उसी तरह का कोई और परोक्षीय व्यक्ति। इस लिए कि इस तरह के नैसर्गिक कार्य करने का आदेश केवल "फ़िरिश्तों" ही को दिया जा सकता है। मनुष्य को तो प्रत्येक अवस्था में नियम और अनुशासन (Law & Order) के अन्तर्गत रहने का आदेश दिया गया है।

३१. 'ज़ुलक़रनैन' के बारे में देखिए 'सूरा' की भूमिका।

३२. अर्थात् उसे ऐसा दिखाई दे रहा था कि सूर्य काले गँदले पानी में डूब रहा है।

३३. यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह ने यह बात 'वह्य' के द्वारा 'ज़ुलक़रनैन' से कही हो। इस का यह अर्थ भी हो सकता है कि अल्लाह ने 'ज़ुलक़रनैन' के दिल में यह बात डाल दी हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८७. उस ने कहा : (इन लोगों में से) जो कोई ज़ुल्म करेगा, उसे हम दण्ड देंगे, फिर वह अपने 'रब' की ओर पलटाया जावेगा, तो वह उसे कठोर यातना देगा।

87. He said: As for him who doth wrong, we shall punish him, and then he will be brought back unto his Lord, Who will punish him with awful punishment!

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ
ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾

८८. और जो कोई 'ईमान' लाया और अनुकूल कर्म किया, उस के लिए अच्छा बदला है, और हम उसे अपना नर्म आदेश देंगे।

88. But as for him who believeth and doth right, good will be his reward, and We shall speak unto him a mild command.

وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً
الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

८९. फिर उस ने एक (दूसरी मुहिम का) आयोजन किया।

89. Then he followed a road.

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

९०. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान पर जा पहुँचा, उस ने उसे एक ऐसी जाति पर उदय होते पाया जिन के लिए हम ने उस के (सूर्य के) वरे कोई आड़ नहीं रक्खी[३४]।

90. Till, when he reached the rising-place of the sun, he found it rising on a people for whom We had appointed no shelter therefrom.

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ
دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

९१. ऐसा ही (हम ने किया)। उस के पास जो कुछ था उस को हम ज्ञान द्वारा घेरे हुये थे।

91. So (it was). And We knew all concerning him.

كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

९२. फिर उस ने एक (और मुहिम का) आयोजन किया।

92. Then he followed a road.

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

९३. यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचा,[३५] तो उसे उन के पास एक जाति मिली जो कोई बात समझ ही नहीं पाती थी।

93. Till, when he came between the two mountains, he found upon their hither side a folk that scarce could understand a saying.

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ
دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

९४. उन्हों ने कहा : हे ज़ुलक़रनैन ! याजूज और माजूज[३६] इस भूमि में फ़साद (उत्पात) मचाते हैं। तो क्या हम तुझे कोई कर इस काम के लिए दें कि तू हमारे और उन के बीच एक रोक बना दे ?

94. They said: O Dhu'l-Qarneyn! Lo! Gog and Magog are spoiling the land. So may we pay thee tribute on condition that thou set a barrier between us and them?

قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَ
مَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

३४. अर्थात् वह जाति बिल्कुल असभ्य थी; उसे घर, खेमा आदि बनाना नहीं आता था।

३५. इन दोनों पहाड़ों के उस पार याजूज-माजूज का देश था जैसा कि आगे के बयान से विदित है; इस से पता चलता है कि इन पहाड़ों से अभिप्रेत काकेशिया (Caucasua) की वे पर्वत मालायें हैं जो कैस्पियन सागर और कृष्ण सागर के मध्य में पड़ती हैं।

३६. याजूज और माजूज (Gog and Mogog) से अभिप्रेत एशिया के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्र की असभ्य जातियाँ हैं जो तातारी, मंगोल, हूण, सेथीन (Scythians) आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। यह जातियाँ प्राचीन काल से सभ्य देशों पर आक्रमण कर के लूट-मार मचाती रही हैं। ये लूट-मार के लिए एशिया और योरोप दोनों ओर धावा करती रही हैं। बाइबिल में रूस, तूबल (Tubal) और मेसेक (Meshech) को याजूज और माजूज का अधिक्षेत्र बताया गया है। दे० हेज़कीएल (Ezekiel) अध्याय ३८ और ३९। तूबल और मेसेक को वर्तमान समय में मास्को और तोबाल्क (Moscow and Tobalsk) कहते हैं। यूसिफस ने (Josephus) ने जो एक इबरानी इतिहासकार है सेथीन (Scythians) जाति को याजूज और माजूज कहा है। जिस का अधिक्षेत्र कृष्ण सागर (Black sea) के उत्तर और पूर्व में था। जिरोम (Jeromo) का कहना है कि माजूज की आबादी काकेशिया (Caucasus) के उत्तर, कैसपियन सागर (Caspian sea) के निकट पड़ती थी। इब्न बतूता के विचार में याजूज और माजूज से अभिप्रेत पूर्वी एशिया की असभ्य जातियाँ हैं (दे० Ibn Batoutah's Travels, iv. P. 274 Par. ed)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५. उस ने कहा : मेरे 'रब' ने जो कुछ मुझे सामर्थ्य प्रदान किया है वह उत्तम है। तुम बस (आदमियों के) बल से मेरी सहायता करो, मैं तुम्हारे और उन के बीच एक मजबूत दीवार बना दूंगा।

95. He said: That wherein my lord hath established me is better (than your tribute). Do but help me with strength (of men), I will set between you and them a bank.

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

९६. मुझे लोहे के टुकड़े ला दो—यहाँ तक कि जब दोनों पहाड़ों के बीच (के खाली स्थान) को पाट दिया, तो कहा : फूंकों !—यहाँ तक कि जब उसे (धौंक कर) आग कर दिया, तो कहा : मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो कि उस पर उँडेल दूं।

96. Give me pieces of iron — till, when he had levelled up (the gap) between the cliffs, he said: Blow! — till, when he had made it a fire, he said: Bring me molten copper to pour thereon.

آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

९७. तो वे (याजूज और माजूज) न तो उस पर चढ़ आ सकते थे, और न वे उस में नक़ब लगा सकते थे[३७]।

97 And (Gog and Magog) were not able to surmount, nor could they pierce (it).

فَمَا اسْطَاعُوا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

९८. (ज़ुलक़रनैन ने) कहा : यह मेरे 'रब' की दयालुता है, परन्तु जब मेरे 'रब' का वादा आ पूरा होगा, तो वह उसे ढा कर बराबर कर देगा, और मेरे 'रब' का वादा सच्चा है।

98. He said: This is a mercy from my Lord; but when the promise of my Lord cometh to pass, He will lay it low, for the promise of my Lord is true.

قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾

९९. और छोड़ दिया हम ने कि उस दिन वे एक-दूसरे के बीच मौजों की तरह घुसे जाते होंगे और 'सूर' में फूंक मारी जायेगी। फिर हम सब को एक साथ इकट्ठा कर लेंगे।

99. And on that day We shall let some of them surge against others, and the Trumpet will be blown. Then We shall gather them together in one gathering.

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

१००. और उस दिन हम 'जहन्नम' को 'काफ़िरों' के सामने ला देंगे,

100. On that day We shall present hell to the disbelievers, plain to view.

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

१०१. जिन के नेत्र हमारे अनुस्मारक की ओर से परदे में थे,[३९] और जो कुछ सुन नहीं सकते थे।

101. Those whose eyes were hoodwinked from My reminder and who could not bear to hear.

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

१०२. तो क्या इन लोगों ने जिन्हों ने 'कुफ़्' किया है यह समझ रक्खा है कि मेरे सिवा मेरे बन्दों को हिमायती बना लें ? हम ने 'काफ़िरों' की आवभगत के लिए 'जहन्नम' तैयार कर रक्खा है।

102. Do the disbelievers reckon that they can choose My bondmen as protecting friends beside Me? Lo! We have prepared hell as a welcome for the disbelievers.

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

३७. इतिहास से पता चलता है कि असभ्य जातियों से रक्षा के लिए कफ़क़ाज़ के दक्षिणी क्षेत्र में दरबन्द (Derbent or Darband) और दर्रा दारयाल (Darial Pass) की दीवारें उठाई गई थीं। बहुत सम्भव है दर्रा दारयाल की दीवार ही वह दीवार हो जिस का निर्माण ज़ुलक़रनैन के हाथों हुआ था। यह दो पहाड़ी चोटियों के बीच पड़ती है। इस दीवार के बनाने में लोहे को भी उपयोग में लाया गया था।

३८. अर्थात् समुद्र की लहरों की भाँति परस्पर गुत्थम-गुत्था।

३९. अर्थात् जो हमारी याद-दिहानी और चेतावनी की ओर से बिल्कुल अन्धे बने रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३. कह दो : क्या हम तुम्हें ऐसे लोगों की खबर दें जो किये-धरे में सब से बढ़ कर घाटा उठाने वाले हैं ?

103. Say: Shall We inform you who will be the greatest losers by their work?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا

१०४. वे कि सांसारिक जीवन में जिन का प्रयास गुम हो कर रह गया, और वे समझते हैं कि अच्छा कर्म कर रहे हैं ।

104. Those whose effort goeth astray in the life of the world, and yet they reckon that they do good work:

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

१०५. ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपने 'रब' की 'आयतों' का और उस के मिलने का इन्कार किया। तो उन का किया–धरा अकारथ गया, तो हम 'क़ियामत' के दिन उन के लिए कोई वज़्न क़ायम न करेंगे ।

105. Those are they who disbelieve in the revelations of their Lord and in the meeting with Him. Therefore their works are vain, and on the Day of Resurrection We assign no weight to them.

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا

१०६. यह है उन का बदला : 'जहन्नम', इस कारण कि उन्हों ने 'कुफ़्र' किया, और मेरी 'आयतों' और मेरे 'रसूलों' की हँसी उड़ाई ।

106. That is their reward: hell, because they disbelieved, and made a jest of Our revelations and Our messengers.

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوٓا اٰيٰتِي وَرُسُلِي هُزُوًا

१०७. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन की आव-भगत के लिए फ़िरदौस[४०] के बाग़ होंगे,

107. Lo! those who believe and do good works, theirs are the Gardens of Paradise for welcome.

إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا

१०८. जिन में वे सदैव रहेंगे, वहाँ से कहीं और जाना न चाहेंगे ।

108. Wherein they will abide, with no desire to be removed from thence.

خٰلِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا

१०९. कहो : यदि समुद्र मेरे 'रब' की बातों[४१] के (लिखने के) लिए रोशनाई हो जाये, तो इस से पहले कि मेरे 'रब' की बातें समाप्त हों समुद्र शून्य हो जायेगा, यद्यपि उस की तरह हम और मदद को लायें ।

109. Say: Though the sea became ink for the Words of my Lord, verily the sea would be used up before the Words of my Lord were exhausted, even though We brought the like thereof to help.

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمٰتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا

११०. (हे मुहम्मद !) कहो : मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ तुम्हारी तरह। मेरी ओर 'वह्य' की जाती है कि तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य) बस अकेला 'इलाह' है। तो जो कोई अपने 'रब' से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अनुकूल कर्म करे, और अपने 'रब' की 'इबादत' में किसी को सहभागी न बनाये ।

110. Say: I am only a mortal like you. My Lord inspireth in me that your God is only One God. And whoever hopeth for the meeting with his Lord, let him do righteous work, and make none sharer of the worship due unto his Lord.

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحٰىٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا

———

४० 'जन्नत' के लिए लगभग समस्त प्राचीन भाषाओं में 'फ़िरदौस' (Paradise) से मिलते-जुलते शब्द पाये जाते है ।

४१. 'रब' की बातों (Words of Lord) से अभिप्रेत 'रब' के गुण, चमत्कार, 'हिकमत' आदि हैं। समस्त विश्व और विश्व की प्रत्येक वस्तु को अल्लाह के 'कलमा' से ही अस्तित्व मिला है । सारा संसार उस के 'कलमों' (Words of Lord) का साकार रूप है (दे० सूरा अल-बक़रा आयत ११७) । अल्लाह के कलमों अथवा शब्दों से किस प्रकार विभिन्न लोकों और वस्तुओं का आविर्भाव हुआ है यह एक रहस्य है जिस का समझना मनुष्य के लिए अत्यन्त कठिन है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६—मरयम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में एक जगह हज़रत मसीह अ० की माता हज़रत मरयम का हाल बयान हुआ है इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' का नाम मरयम रक्खा गया है।[1]

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा 'हब्शा' (Abyssinia) की 'हिजरत' से पहले उतरी है। हब्शा के सम्राट निजाशी (The Negus) के दरबार में जब मुसलमान बुलाये गये थे उस समय हज़रत जअ्फ़र रज़ि० ने जो हज़रत अली रज़ि० के भाई थे, भरे दरबार में इस सूरा का पाठ किया था।

यह वह समय था जबकि मुसलमानों को तरह-तरह से सताया जा रहा था। यहाँ तक कि मक्का में उन के लिए रहना दूभर हो गया था। वे मुसलमान जो ग़रीब और ग़ुलाम थे और जो 'क़ुरैश' के अधीन हो कर रह रहे थे विशेष रूप से सताये गये। किसी को तपती हुई रेत पर लेटाया गया; किसी के सीने पर भारी पत्थर रक्खे गये; किसी को भूखा-प्यासा तड़पाया गया। कार-बारी लोगों के कार-बार को हानि पहुँचाने की कोशिश की गई। भले और सज्जन लोगों का निरादर किया गया। जब 'क़ाफ़िरों' की शरारत हद से आगे बढ़ गई तो 'नबी' सल्ल० ने अपने साथियों से कहा कि अच्छा हो कि तुम हब्शा चले जाओ वहाँ एक ऐसा सम्राट है जिस के यहाँ किसी व्यक्ति पर जुल्म नहीं होता, वह भलाई की भूमि है, तुम लोग वहाँ ठहरे रहो यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे लिए कोई राह पैदा करे।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली 'सूरा' में विशेष रूप से 'सब्र' (सहनशीलता और धैर्य्य) पर उभारा गया है। प्रस्तुत सूरा में जिस बात पर विशेष बल दिया गया है वह है 'नमाज़' की पाबन्दी। 'सब्र' और 'नमाज़' में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। 'आख़िरत' पर 'ईमान' रखने वालों का जीवन सब्र और 'नमाज़' पर ही निर्भर करता है। सब्र के बिना 'नमाज़' नहीं और 'नमाज़' के बिना मनुष्य को वास्तविक रूप से सब्र की दौलत नहीं हासिल हो सकती। प्रस्तुत सूरा में 'नमाज़' की ताकीद करते हुये उस पर जमने और क़ायम रहने पर विशेष ज़ोर दिया गया है[1] यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। इस सूरा को एक विशेषता यह भी प्राप्त है कि इस में अल्लाह का एक गुणवाचक नाम 'रहमान' बार-बार आया है।

प्रस्तुत सूरा के प्रथम भाग में[2] हज़रत ज़करीया अ० और हज़रत यहया अ० के बाद विशेष रूप से हज़रत ईसा मसीह अ० और उन की माता हज़रत मरयम का हाल बयान किया गया है। हज़रत मसीह अ० के बारे में ईसाइयों की धारणाओं का पूर्णतः खण्डन किया गया है। बताया गया है कि हज़रत मसीह अ० अल्लाह के बेटे नहीं बल्कि उस के बन्दे, और 'नबी' थे। अल्लाह ने उन्हें अपने चमत्कार से बिना बाप ही के पैदा किया था। अल्लाह सर्वशक्तिमान् है। वह जो चाहे कर सकता है। हज़रत मसीह अ० लोगों को अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी की ओर बुलाने आये थे न कि लोग उन्हीं को अपना पूज्य और प्रभु बना लें। वे स्वयं इस बात के पाबन्द थे कि अल्लाह की बन्दगी में लगे

१. दे० आयत ३१, ५८, ५९।
२. दे० आयत ५-४०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहें, 'नमाज़' और 'ज़कात' की पाबन्दी करें। परन्तु लोगों ने उन के दिखाये हुये मार्ग को छोड़ कर परस्पर विभेद किया और 'कुफ़्र' के मार्ग पर चल पड़े।

इस के बाद[1] हज़रत इबराहीम अ० और उन की सन्तान का क़िस्सा सुनाया गया है। बताया गया है कि हज़रत इबराहीम अ० जिस 'दीन' (धर्म) के अनुयायी थे वह 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का 'दीन' था। हज़रत इबराहीम अ० को सच्चाई के लिए घर-बार और अपने देश तक को छोड़ना पड़ा परन्तु अल्लाह् की उन पर कृपा हुई; अल्लाह् ने उन की सन्तान में 'नबी' पैदा किये जो एक अल्लाह् को मानने वाले और उसी के आगे सजदा करने वाले थे। परन्तु तद्पश्चात् ऐसे लोग आये जो अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने और 'नमाज़ों' को बरबाद किया और गुमराही में बहुत दूर जा पड़े।

सूरा के अन्तिम भाग[2] में 'क़ियामत' का उल्लेख किया गया है। मक्का के 'काफ़िरों' की गुमराहियों पर उन्हें डरावा दिया गया है। और 'ईमान' वालों को शुभसूचना दी गई है कि 'काफ़िर' लोग देर तक तुम्हारा मार्ग नहीं रोक सकते; वह समय बहुत जल्द आने वाला है कि लोगों के दिल तुम्हारी ओर खिंच कर रहेंगे।

———

१. दे० आयत ४१-६३।
२. दे० आयत ६४-७३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' मरयम
(मक्का में उतरी – 'आयतें' ९८)

MARY
Revealed at Mecca

سورة مريم مكية وهي ثمان وتسعون آية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. काफ़० हा० या० ऐअ्न० सॉद०[1]

1. Kaf. Ha. Ya. A'in. Sad.

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝١

२. ज़िक्र (वर्णन) है तेरे 'रब' की दयालुता का जो उस ने अपने बन्दे ज़करीया पर दर्शाया।[2]

2. A mention of the mercy of thy Lord unto His servant Zachariah.

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢

३. जबकि उस ने अपने 'रब' को चुपके-चुपके पुकारा,

3. When he cried unto his Lord a cry in secret,

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣

४. उस ने कहा : 'रब'! मेरी हड्डियाँ निर्बल हो गईं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा, 'रब'! तुझे पुकार कर मैं कभी बेनसीब नहीं रहा।

4. Saying: My Lord! Lo! the bones of me wax feeble and my head is shining with grey hair, and I have never been unblest in prayer to Thee, my Lord.

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤

५. मैं अपने पीछे अपने भाई-बन्धुओं (की अवज्ञा) से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है। तो तू मुझे अपने पास से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर

5. Lo! I fear my kinsfolk after me, since my wife is barren. Oh, give me from Thy presence a successor.

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥

६. जो मेरा वारिस हो और याकूब के कुल का भी वारिस हो। और उसे 'रब'! मन चाहता बना।

6. Who shall inherit of me and inherit (also) of the house of Jacob. And make him, my Lord, acceptable (unto Thee).

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦

७. (कहा गया) : हे ज़करीया! हम तुझे एक लड़के की शुभसूचना देते हैं जिस का नाम यहया होगा; हमने किसी को पूर्वकाल में उस का नाम राशि नहीं बनाया[3]।

7. (It was said unto him): O Zachariah! Lo! We bring thee tidings of a son whose name is John; We have given the same name to none before (him).

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧

८. उस ने कहा : 'रब'! मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जब कि मेरी स्त्री बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अन्तिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ?

8. He said: My Lord! How can I have a son when my wife is barren and I have reached infirm old age?

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨

९. कहा : ऐसे ही होगा। तेरे 'रब' ने कहा है कि यह तो मेरे लिए सहज है, इस से पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ, जबकि तू कोई चीज़ न था।

9. He said: So (it will be). Thy Lord saith: It is easy for Me, even as I created thee before, when thou wast naught.

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩

१. दे० 'सूरा' अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा आले इमरान आयत ३८-४१।
३. अर्थात् कोई उस जैसा अर्थात् उस का सहगुणी और समवर्ती पैदा नहीं किया। दे० आयत ६५। बाइबिल में है : "तेरे घराने में किसी का यह नाम नहीं" दे० लूका (Luke) १ : ६१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. (ज़करीया ने) कहा : 'रब' ! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे। कहा : तेरे लिए निशानी यह है कि भला-चंगा रह कर भी तीन रात (-दिन) तू लोगों से बात न कर सकेगा।

10. He said: My Lord! Appoint for me some token. He said: Thy token is that thou, with no bodily defect, shalt not speak unto mankind three nights.

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾

११. तब वह हुजरे (एकान्त में रहने के घर) से निकल कर अपनी जाति वालों के पास आया, और उन से संकेतों में कहा : प्रातःकाल और सन्ध्या समय (अपने 'रब' की) 'तसबीह' करो।

11. Then he came forth unto his people from the sanctuary, and signified to them: Glorify your Lord at break of day and fall of night.

فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

१२. (उस के बेटे से कहा गया) : हे यहया ! 'किताब' को मज़बूत थाम ले।

और हम ने उसे बचपन में ही 'हुक्म' प्रदान किया।

12. (And it was said unto his son): O John! Hold fast the Scripture. And We gave him wisdom when a child,

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾

१३. और अपनी ओर से अनुकम्पा और पवित्रता भी, और वह डरने वाला था,

13. And compassion from Our presence, and purity; and he was devout,

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

१४. और अपने माता-पिता का हक़ पहचानता था।

और वह जब्र करने वाला, अवज्ञाकारी न था।

14. And dutiful toward his parents. And he was not arrogant, rebellious.

وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

१५. सलाम उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन उस की मृत्यु हो और जिस दिन जीवित कर के उठाया जाये[४] !

15. Peace on him the day he was born, and the day he dieth and the day he shall be raised alive!

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

१६. और इस 'किताब' में मरयम का ज़िक्र (शुभचर्चा) करो, जबकि वह अपने लोगों से अलग हो कर पूर्व की ओर एक स्थान पर चली गई,

16. And make mention of Mary in the Scripture, when she had withdrawn from her people to a chamber looking East.

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

१७. फिर उन की ओर से[५] परदा कर लिया। तब हम ने उस के पास अपनी 'रूह' को ('फ़िरिश्ते' को) भेजा और उस ने उस के सामने एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।

17. And had chosen seclusion from them. Then We sent unto her Our spirit and it assumed for her the likeness of a perfect man.

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

१८. मरयम बोली : यदि तू कोई अल्लाह का डर रखने वाला है तो मैं तुझ से अल्लाह की पनाह माँगती हूँ।

18. She said: Lo! I seek refuge in the Beneficent One from thee, if thou art God-fearing.

قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

४. 'इन्जील' (Gospel) में भी हज़रत यहया अ० (John) के उत्तम चरित्र का कई जगहों पर उल्लेख किया गया है।
५. अर्थात् लोगों की ओर से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. उस ने कहा : मैं तो बस तेरे 'रब' का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पवित्रात्मा लड़का दूँ।

19. He said: I am only a messenger of thy Lord, that I may bestwo on thee a faultless son.

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ
لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

२०. (मरयम ने) कहा : मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जब कि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं है, और न मैं कोई बदकार हूँ ?

20. She said: How can I have a son when no mortal hath touched me, neither have I been unchasts?

قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي
بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

२१. (फ़िरिश्ते' ने) कहा : ऐसा ही होगा। तेरे 'रब' ने कहा है कि यह मेरे लिए सरल है। और (ऐसा इस लिए होगा) ताकि उस (लड़के) को लोगों के लिए एक निशानी बनायें और अपनी ओर से एक दयालुता, और यह बात निश्चय हो चुकी है।

21. He said: So (it will be). Thy Lord saith: It is easv for Me. And (it will be) that We may make of him a revelation for mankind and a mercy from Us, and it is a thing ordained.

قَالَ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ
هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً
مِنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ﴿٢١﴾

२२. फिर उसे उस (बच्चे) का गर्भ रह गया, और वह उसे लिये हुये एक दूर के स्थान पर अलग चली गई।

22. And she conceived him, and she withdrew with him to a far place.

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

२३. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। कहने लगी : क्या ही अच्छा होता कि मैं इस से पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती[६] !

23. And the pangs of childbirth drove her unto the trunk of the palm tree. She said: Oh, would that I had died ere this and had become a thing of naught, forgotten!

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ
قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنْتُ
نَسْيًا مَنْسِيًّا ﴿٢٣﴾

२४. तब (नवजात शिशु ने) उसे उस (वृक्ष) के नीचे से पुकारा : दुःखी न हो ! तेरे 'रब' ने तेरे नीचे एक बहता स्रोत पैदा कर दिया है,

24. Then (one) cried unto her from below her, saying: Grieve not! Thy Lord hath placed a rivulet beneath thee.

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ
جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

२५. और तू खजूर के इस वृक्ष के तने को पकड़ कर हिला ले, तेरे ऊपर ताज़ा पक्की-पक्की खजूरें टपक पड़ेंगी।

25. And shake the trunk of the palm-tree toward thee, thou wilt cause the dates to fall upon thee.

وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ
عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

२६. तो तू खा और पी और आँखें ठण्ढी कर फिर यदि तू किसी आदमी को देखे, तो (इशारे से) कह देना : मैं ने तो 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) के लिए 'रोज़े' की नज़्र मानी है, तो मैं आज किसी आदमी से न बोलूंगी।

26. So eat and drink and be consoled. And if thou meet est any mortal, say: Lo! I have vowed a fast unto the Beneficent, and may not speak this day to any mortal.

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا فَإِمَّا
تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي
نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ
الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

२७. फिर वह उस को लिये हुये अपनी जाति वालों में आई, वे बोले : हे मरयम ! तू ने बड़ा ही आश्चर्य का काम कर डाला।

27. Then she brought him to her own folk, carrying him. They said: O Mary! Thou hast come with an amazing thing.

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوا يَا مَرْيَمُ
لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

६. और लोगों को कलंक लगाने का अवसर न मिल सकता। गर्भ को तो किसी तरह छिपाया इस लड़के को ले कर कहाँ जायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. हे हारून की बहिन[७] ! न तेरा पिता कोई बुरा आदमी था और न तेरी माता कोई बदकार थी।

28. Oh sister of Aaron ! Thy father was not a wicked man nor was thy mother a harlot.

يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ
وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

२९. तब उस ने उस (बच्चे) की ओर इशारा कर दिया। वे कहने लगे : हम उस से कैसे बात करें जो पालने में पड़ा हुआ, एक बच्चा है ?

29. Then she pointed to him They said: How can we talk to one who is in the cradle, a young boy?

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ
كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

३०. वह (बच्चा) बोल उठा[८] : मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने मुझे 'किताब' प्रदान की और मुझे 'नबी' बनाया,

30. He spake: Lo! I am the slave of Allah. He hath given me the Scripture and hath appointed me a Prophet;

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ
وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

३१. और मुझे बरकत वाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और मुझे 'नमाज़' और 'ज़कात' की ताकीद की जब तक कि मैं जीवित रहूँ,

31. And hath made me blessed wheresoever I may be, and hath enjoined upon me prayer and almsgiving so long as I remain alive;

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي
بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

३२. और (मुझे) अपनी माता के साथ नेक व्यवहार करने वाला बनाया, और मुझे जब्र करने वाला, बदनसीब नहीं बनाया।

32. And (hath made me) dutiful toward her who bore me, and hath not made me arrogan, unblest.

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا
شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

३३. और सलाम है मुझ पर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ, और जिस दिन कि मैं मरूँ, और जिस दिन कि जीवित कर के उठाया जाऊँ ! —

33. Peace on me the day I was born, and the day I die, and the day I shall be arised alive!

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ
أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾

३४. यह[९] है ईसा, मरयम का बेटा : (यह है) सच्ची बात जिस में वे झगड़ते हैं[१०]।

34. Such was Jesus, son of Mary: (This is) a statement of the truth concerning which they doubt.

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٣٤﴾

३५. अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को (अपना) बेटा बनाये। महिमावान् है वह ! वह जब किसी चीज़ का निश्चय करता है, तो बस कह देता है : होजा ! वह हो जाती है—

35. It befitteth not (the Majesty of) Allah that He should take unto himself a son. Glory be to Him! When He decreeth a thing, He saith unto it only: Be! and it is.

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ ۖ
سُبْحَانَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٣٥﴾

३६. और (मसीह ने कहा था) : निस्सन्देह अल्लाह मेरा 'रब' भी है और तुम्हारा 'रब' भी। तो तुम उसी की 'इबादत' करो। यही सीधा मार्ग है।

36. And lo! Allah is my Lord and your Lord. So serve Him. That is the right path.

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾

७. अर्थात् हे हारून के घराने की बेटी !

८. अल्लाह ने उस बच्चे को बोलने की शक्ति प्रदान कर दी और वह बोल पड़ा।

९. यहाँ से ले कर 'आयत' ४० के अन्त तक की आयतें व्यवहित हैं इसी लिए मूल ग्रन्थ में इन की सज (क़ाफ़िया अथवा अन्त्यानुप्रास) बदल गई है।

१०. हज़रत मसीह ने अपने बारे में जो कुछ कहा वही सत्य है परन्तु ईसाइयों को उन के अल्लाह का बन्दा होने में सन्देह ही रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. परन्तु फिर उन में कितने ही गरोहों ने परस्पर विभेद किया[11] : तो जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया तबाही होगी उन के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से[12]।

37. The sects among them differ: but woe unto the disbelievers from the meeting of an awful Day.

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٣٧

३८. कितने बड़े सुनने वाले और कितने बड़े देखने वाले होंगे जिस दिन वे हमारे सामने आयेंगे ! परन्तु ये ज़ालिम आज खुली गुमराही में पड़े हुये हैं।

38. See and hear them on the Day they come unto Us! Yet the evil-doers are to-day in error manifest.

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٣٨

३९. उन्हें पश्चात्ताप के दिन से डराओ जब कि मामले का फ़ैसला कर दिया जायेगा। और उन का हाल यह है कि वे अचेतनावस्था में पड़े हुये हैं, और 'ईमान' नहीं लाते हैं।

39. And warn them of the Day of anguish when the case hath been decided. Now they are in a state of carelessness, and they believe not.

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٣٩

४०. हम धरती और जो कोई उस पर है उस के वारिस होंगे, और हमारी ओर वे अवश्य पलटाये जायेंगे।

40. Lo! We inherit the earth and all who are thereon, and unto Us they are returned.

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝٤٠

४१. और इस 'किताब' में इबराहीम का ज़िक्र (शुभचर्चा) करो। निस्सन्देह वह बड़ा सच्चा और एक 'नबी' था।

41. And make mention (O Muhammad) in the Scripture of Abraham. Lo! he was a saint, a Prophet.

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۝٤١

४२. जब उस ने अपने बाप से कहा : हे बाप ! आप क्यों उस चीज़ को पूजते हैं जो न सुने और न देखे, और न आप के किसी काम आये ?

42. When he said unto his father: O my father! Why worshippest thou that which heareth not nor seeth, nor can in aught avail thee?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْئًا ۝٤٢

४३. हे बाप ! मेरे पास ऐसा ज्ञान आया है जो आप के पास नहीं आया अत: आप मेरे पीछे चलिए मैं आप को सीधा मार्ग दिखाऊँगा।

43. O my father! Lo! there hath come unto me of knowledge that which came not unto thee. So follow me, and I will lead thee on a right path.

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝٤٣

४४. हे बाप ! 'शैतान' की बन्दगी न कीजिए। 'शैतान' तो 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) का अवज्ञाकारी है।

44. O my father! Serve not the devil. Lo! the devil is a rebel unto the Beneficent.

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ۝٤٤

४५. हे बाप ! मैं डरता हूँ कि कहीं आप को 'रहमान' की यातना न आ पकड़े और आप 'शैतान' के साथी हो कर रहें।

45. O my father! Lo! I fear lest a punishment from the Beneficent overtook thee so that thou become a comrade of the devil.

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۝٤٥

११. कुछ लोगों ने उन्हें अल्लाह का बेटा बना लिया; कुछ ने उन्हें पूज्य और 'इलाह' बनाया और कुछ इन दोनों के बीच दुविधा में पड़ गये।

१२ अर्थात् जब वह बड़ा दिन आयेगा तो वह इन के लिए तबाही और विनाश का दिन होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. उस ने कहा : हे इबराहीम ! क्या तू मेरे 'इलाहों' (पूज्य देवताओं) से फिर गया है ? यदि तू बाज़ न आया, तो मैं तुझ पर पथराव कर दूंगा। तू मुझ से दीर्घ काल के लिए अलग हो जा !

46. He said: Rejectest thou my gods, O Abraham? If thou cease not, I shall surely stone thee. Depart from me a long while!

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

४७. (इब्राहीम ने) कहा : सलाम है आप को ! मैं अपने 'रब' से आप के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा । निस्सन्देह वह मुझ पर बहुत मेहरबान है।

47. He said: Peace be unto thee! I shall ask forgiveness of my Lord for thee. Lo! He was ever gracious unto me.

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

४८. मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, और मैं अपने 'रब' को पुकारूँगा । आशा है कि मैं अपने 'रब' को पुकार कर बेनसीब नहीं रहूंगा।

48. I shall withdraw from you and that unto which ye pray beside Allah, and I shall pray unto my Lord. It may be that, in prayer unto my Lord, I shall not be unblest.

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

४९. तो, जब वह उन लोगों से और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे उन से अलग हो गया, तो हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब (जैसे बेटे) प्रदान किये। और हर एक को हम ने 'नबी' बनाया।

49. So, when he had withdrawn from them and that which they were worshipping beside Allah, We gave him Isaac and Jacob. Each of them We made a Prophet.

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

५० और उन्हें अपनी दयालुता से (हिस्सा) दिया और उन्हें एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान की।

50. And We gave them of Our mercy, and assigned to them a high and true renown.

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

५१. और इस 'किताब' में मूसा का ज़िक्र करो। निस्सन्देह वह (अल्लाह का) चुना हुआ था, और वह एक 'रसूल' और 'नबी' था।

51. And make mention in the Scripture of Moses. Lo! he was chosen, and he was a messenger (of Allah), a Prophet.

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

५२. हम ने उसे तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर से आवाज़ दी, और उसे हम ने वार्त्तालाप की दशा में अपने से समीप किया।

52. We called him from the right slope of the Mount, and brought him nigh in communion.

وَنَادَيْنَاهُ مِن جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

५३. और अपनी दयालुता से उस के भाई हारून को 'नबी' बना कर उसे (सहायक के रूप में) दिया।

53. And We bestowed upon him of Our mercy his brother Aaron, a Prophet (likewise).

وَوَهَبْنَا لَهُ مِن رَّحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

५४. और इस 'किताब' में इसमाईल का ज़िक्र करो। निस्सन्देह वह वादे का सच्चा था, और एक 'रसूल' और 'नबी' था।

54. And make mention in the Scripture of Ismael. Lo! he was a keeper of his promise, and he was a messenger (of Allah) a Prophet.

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. और वह अपने लोगों को 'नमाज़' और 'ज़कात' का हुक्म देता था, और वह अपने 'रब' के यहाँ पसन्द किया हुआ व्यक्ति था।

55. He enjoined upon his people worship and almsgiving, and was acceptable in the sight of his Lord.

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۖ
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۝٥٥

५६. और इस 'किताब' में इदरीस[13] का ज़िक्र करो। निस्सन्देह वह बड़ा सच्चा और एक 'नबी' था।

56. And make mention in the Scripture of Irdis Lo! he was a saint, a Prophet.

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُ كَانَ
صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۝٥٦

५७. और उसे हम ने एक उच्च स्थान पर उठाया था।

57. And We raised him to high station.

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝٥٧

५८. ये वे 'नबी' हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की, आदमी की सन्तान में से और उन लोगों में से जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया, और इबराहीम की सन्तान में से और 'इसराईल' की (सन्तान में से), और उन में से जिन को हम ने मार्ग दिखाया और चुन लिया। जब उन्हें हमारी 'आयतें' सुनाई जातीं, तो वे रोते हुये 'सजदे' में गिर जाते थे[14]।

58. These are they unto whom Allah showed favour from among the Prophets, of the seed of Adam and of those whom We carried (in the ship) with Noah, and of the seed of Abraham and Israel, and from among those whom We guided and chose. When the revelations of the Beneficent were recited unto them, they fell down adoring and weeping.

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ
النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ
حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرٰهِيمَ
وَإِسْرَآءِيلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ
إِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ
خَرُّوا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝٥٨ السجدة

५९. फिर उन के बाद बुरे लोग उन के उत्तराधिकारी हुये कि उन्हों ने 'नमाज़' गँवाई और (तुच्छ) इच्छाओं के पीछे चले। तो जल्द ही (उन की) गुमराही उन के सामने आयेगी[15]।

59. Now there hath succeeded them a later generation who have ruined worship and have followed lusts. But they will meet deception.

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ
يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝٥٩

६०. सिवाय उस के जिस ने 'तौबा' कर ली और 'ईमान' ले आया और अनुकूल कर्म किया। तो ऐसे लोग 'जन्नत' में प्रवेश करेंगे, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा[16]—

60. Save him who shall repent and believe and do right. Such will enter the garden, and they will not be wronged in aught —

إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ
شَيْـًٔا ۝٦٠

६१. सदैव रहने वाली (सदाबहार) 'जन्नतें', जिन का 'रहमान' ने अपने बन्दों से परोक्षतः वादा कर रक्खा है। निश्चय ही उस का वादा पूरा हो कर रहना है—

61. Gardens of Eden, which the Beneficent hath promised to His slaves in the Unseen. Lo! His promise is ever sure of fulfilment —

جَنّٰتِ عَدْنِ ٱلَّتِي وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهُ
بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝٦١

१३. हज़रत इदरीस अ० के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि वे 'बनी इसराईल' में से कोई 'नबी' हुये हैं। परन्तु अधिकतर लोगों का मत उन के बारे में यही है कि उन का समय हज़रत नूह अ० से पहले का है। बाइबिल में हनोक (Enoch) नामक जिन महा पुरुष का ज़िक्र किया गया है साधारणतः यही समझा जाता है कि वही हज़रत इदरीस अ० हैं। हनोक के बारे में बाइबिल का बयान है कि अल्लाह ने उन्हें उठा लिया दे० 'पैदाइश' (Gen.) ५ : २१-२४। तलमूद (Talmud) में विस्तारपूर्वक उन का हाल बयान हुआ है। बाइबिल और तलमूद दोनों से मालूम होता है कि उन का समय हज़रत नूह अ० से पहले ही का है।
१४. ऐसे अवसर पर 'काफ़िरों' का क्या हाल होता है इस के लिए दे० आयत ७३।
१५. अर्थात् वे अपनी गुमराही का बुरा परिणाम देख लेंगे।
१६. अर्थात् उन का कुछ भी हक़ न मारा जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. वहाँ वे सलाम के सिवा कोई बकवाद न सुनेंगे,[१७] और वहाँ प्रातः समय और सायंकाल उन की रोज़ी उन के लिए संचित रहेगी।

62. They hear therein no idle talk, but only Peace; and therein they have food for morn and evening.

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَٰمًا ۖ وَلَهُمْ
رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

६३. यह है वह 'जन्नत' जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उसे बनायेंगे जो डरने वाला हो।

63. Such is the Garden which We cause the devout among Our bondmen to inherit.

تِلْكَ ٱلْجَنَّةُ ٱلَّتِى نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَن كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

६४. (हे मुहम्मद !) हम ('फ़िरिश्ते') तुम्हारे 'रब' के हुक्म के बिना नहीं उतरते[१८]। और जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ इस के बीच है सब उसी का है, और तुम्हारा 'रब' भूलने वाला नहीं है—

64. We (angels) come not down save by commandment of the Lord. Unto him belongeth all that is before us and all that is behind us and all that is between those two, and thy Lord was never forgetful—

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُۥ مَا بَيْنَ
أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

६५. आकाशों और धरती का 'रब' है और उस का जो कुछ कि इन दोनों के बीच है ! अतः तुम उसी की 'इबादत' करो और उस की 'इबादत' पर जमे रहो। क्या तुम उस के किसी नामराशि को जानते हो[१९] ?

65. Lord of the heavens and the earth and all that is between them! Therefore worship thou Him and be thou steadfast in His service. Knowest thou one that can be named along with Him?

رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَٱعْبُدْهُ
وَٱصْطَبِرْ لِعِبَٰدَتِهِۦ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُۥ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

६६. और मनुष्य (आश्चर्य से) कहता है: क्या जब मैं मर गया, तो फिर जीवित कर के निकाल लाया जाऊँगा ?

66. And man saith: When I am dead, shall I forsooth be brought forth alive?

وَيَقُولُ ٱلْإِنسَٰنُ أَءِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ
أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

६७. क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी नहीं था ?

67. Doth not man remember that We created him before, when he was naught?

أَوَلَا يَذْكُرُ ٱلْإِنسَٰنُ أَنَّا خَلَقْنَٰهُ مِن
قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾

६८. और तेरे 'रब' की क़सम, हम अवश्य उन्हें और 'शैतानों' को भी घेर लायेंगे, फिर हम उन्हें घुटनों के बल गिरे हुये, 'जहन्नम' के चारों ओर हाज़िर करेंगे[२०]।

68. And, by thy Lord, verily We shall assemble them and the devils, then We shall bring them, crouching around hell.

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَٱلشَّيَٰطِينَ ثُمَّ
لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

६९. फिर हर गरोह में से हम उसे खींच निकालेंगें जो उन में 'रहमान' के मुक़ाबले में सरकशी में सख़्त था।

69. Then We shall pluck out from every sect whichever of them was most stubborn in rebellion to the Beneficent.

ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ
أَشَدُّ عَلَى ٱلرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

१७. अर्थात् वहाँ का समाज अतयन्त पवित्र और सुखमय होगा। न तो वहाँ कोई अनुचित, व्यर्थ और अश्लील बात सुनने को मिलेगी, और न वहाँ के समाज में कोई गन्दगी और बुराई पाई जायेगी।

१८. यह 'सूरा' उस समय उतरी है जबकि नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी 'वह्य' की प्रतीक्षा कर रहे थे। ये कुछ शब्द अल्लाह ने 'जिबरील' अ० के मुख से कहलवाये हैं, ताकि 'ईमान' वालों को ढारस और उन्हें धैर्य से काम करने की प्रेरणा भी मिले।

१९. अर्थात् उस जैसा, उस के जैसे गुणों का स्वामी। यदि उस जैसा कोई और नहीं है तो उसे छोड़ कर दूसरों को क्यों पूज्य बनाने लग जाते हो।

२०. दे० सूरा अल-क़सस 'आयत' ६२-७५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०. फिर हम उन को भली-भाँति जानते हैं जो उस ('जहन्नम') में झोंके जाने के अधिक योग्य हैं।

70. And surely We are best aware of those most worthy to be burned therein.

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

७१. तुम में कोई नहीं जिसे उस ('जहन्नम') पर पहुँचना न हो[21]। यह एक निश्चित बात है जो तेरे 'रब' पर लाज़िम है[22]।

71. There is not one of you but shall approach it. That is a fixed ordinance of thy Lord.

وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

७२. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।

72. Then We shall rescue those who kept from evil, and leave the evil-doers crouching there.

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

७३. जब उन्हें हमारी खुली हुई 'आयतें' सुनाई जाती हैं, तो वे लोग जिन्होंने 'कुफ़्र' किया 'ईमान' लाने वालों से कहते हैं : (हमारे-तुम्हारे) दोनों फ़रीक़ों में कौन जगह की दृष्टि से उत्तम और मजलिस की दृष्टि से[23] अच्छा है ?

73. And when Our clear revelations are recited unto them, those who disbelieve say unto those who believe: Which of the two parties (yours or ours) is better in position, and more imposing as an army?

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ اٰمَنُوٓا ۙ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾

७४. हालाँकि इस से पहले कितनी ही नस्लों (जातियों) को हम विनष्ट कर चुके हैं, जो सामग्री और भव्यता में कहीं अच्छी थीं !

74. How many a generation have We destroyed before them who were more imposing in respect of gear and outward seeming!

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾

७५. कह दो : जो कोई गुमराही में पड़ा हुआ है उसे 'रहमान' ढील दिये जाता है, यहाँ तक कि जब ऐसे लोग वह चीज़ देख लेंगे जिस का उन से वादा किया जाता है—चाहे वह (अल्लाह की) यातना हो या वह ('क़ियामत' की) घड़ी हो—तो जान लेंगे कि कौन स्थिति में बुरा है और एक जत्थे की हैसियत से अधिक कमज़ोर।

75. Say: As for him who is in error, the Beneficent will verily prolong his span of life until, when they behold that which they were promised, whether it be punishment (in the world), or the Hour (of Doom) they will know who is worse in position and who is weaker as an army.

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰىٓ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۗ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

७६. और जिन लोगों ने मार्ग पा लिया है, अल्लाह उन पर और अधिक मार्ग खोल देता है, और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ ही तेरे 'रब' के यहाँ कर्म-फल की दृष्टि से उत्तम हैं, और परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं।

76. Allah increaseth in right guidance those who walk aright, and the good deeds which endure are better in thy Lord's sight for reward, and better for resort.

وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾

७७. तो क्या तू ने उस को देखा जिस ने हमारी 'आयतों' के साथ 'कुफ़्र' किया और कहा : मुझे तो अवश्य ही दिया जायेगा माल और औलाद ?

77. Hast thou seen him who disbelieveth in Our revelations and saith: Assuredly I shall be given wealth and children?

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ۗ ﴿٧٧﴾

२१. अर्थात् 'जहन्नम' पर से सभी को गुज़रना होगा। परन्तु 'ईमान' वाले उस में डाले नहीं जायेंगे। अल्लाह उन्हें 'जहन्नम' की यातना से बचा लेगा।

२२. अर्थात् यह एक ऐसी बात है जो निश्चय पा चुकी है, इस का पूरा करना अल्लाह के ज़िम्मे है।

२३. अर्थात् किस के मददगार और सहायक अच्छे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. क्या उस ने परोक्ष को झाँक कर देख लिया है, या उस ने 'रहमान' से कोई वादा ले लिया है ?

78. Hath he perused the Unseen, or hath he made a pac with the Beneficent?

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

७९. कदापि नहीं, जो कुछ यह कहता है हम उसे लिख लेते हैं, और इस के लिए यातना बढ़ाते चले जायेंगे।

79. Nay, but We shall record that which he saith and prolong for him a span of torment.

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

८०. और जो यह बताता है उस के वारिस हम होंगे, और यह अकेला हमारे सामने आयेगा[२४]।

80. And We shall inherit from him that whereof he spake, and he will come unto Us, alone without his wealth and children).

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

८१. इन्होंने अल्लाह के सिवा और 'इलाह' (पूज्य) बना रक्खा है ताकि वे इन की शक्ति (का कारण) हों[२५]।

81. And they have chosen (other) gods beside Allah that they may be a power for them.

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

८२. कदापि नहीं, वे इन की 'इबादत' का इन्कार करेंगे, और (उलटे) इन के विरोधी हो जायेंगे।

82. Nay, but they will deny their worship of them, and become opponents unto them.

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

८३. क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने इन 'काफ़िरों' पर शैतानों को छोड़ रक्खा है जो इन्हें उकसाते रहते हैं ?

83. Seest thou not that We have set the devils on the disbelievers to confound them with confusion?

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾

८४. तो तू इन के बारे में जल्दी न कर। हम तो इन के लिए (बुराइयाँ) गिन-गिन रख रहे हैं।

84. So make no haste against them (O Muhammad). We do but number unto them a sum (of days).

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

८५. जिस दिन कि हम डर रखने वालों को बुलाये मेहमान के रूप में 'रहमान' के पास इकट्ठा करेंगे।

85. On the Day when We shall gather the righteous unto the Beneficent a goodly company.

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

८६. और अपराधियों को 'जहन्नम' की ओर हाँक कर उस के घाट पहुँचा देंगे।

86. And drive the guilty unto Hell, a weary herd,

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

८७. उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा, सिवाय उस के जिस ने 'रहमान' से वचन ले लिया हो[२६]।

87. They will have no power of intercession, save him who hath made a covenant with his Lord.

لَّا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

८८. और उन्हों ने ('ईसाइयों' ने) कहा : 'रहमान' ने किसी को बेटा बनाया है—

88. And they say: The Beneficent hath taken unto Himself a son.

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

२४. माल, औलाद और सारे सामान पर केवल हमारा ही अधिकार रह जायेगा।

२५. अर्थात् वे इन के सहायक और पृष्ठ-पोषक हो जायें।

२६. ये 'नबी' और 'शहीद' हैं जिन्हें सिफ़ारिश की इजाज़त प्राप्त होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. भारी चीज़ है जो तुम (गढ़) लाये हो,

89. Assuredly ye utter a disastrous thing,

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾

९०. क़रीब है कि इस से आकाश फट पड़ें और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाये और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर ढह पड़ें,

90. Whereby almost the heavens are torn, and the earth is spite asunder and the mountains fall in ruins:

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

९१. कि उन्हों ने 'रहमान' के लिए औलाद होने का दावा किया,

91. That ye ascribe unto the Beneficent a son!

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

९२. जबकि यह 'रहमान' की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल बात है कि वह किसी को बेटा बनाये।

92. When it is not meet for (the Majesty of) the Beneficent that He should choose a son.

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

९३. आकाशों और धरती में कोई नहीं कि वह बन्दा हो कर उस के पास न आये।

93. There is none in the heavens and the earth but cometh unto the Beneficent as a slave.

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

९४. उस ने उन्हें घेर रक्खा है और उस ने उन्हें गिन रक्खा है।

94. Verily He knoweth them and numbereth them with (right) numbering.

لَقَدْ أَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

९५. और उन में का हर एक 'क़ियामत' के दिन उस के सामने अकेला आने वाला है।

95. And each one of them will come unto Him on the Day of Resurrection, alone.

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

९६. निश्चय ही जो लोग 'ईमान' लाये और अच्छे कर्म किये, जल्द ही 'रहमान' उन के लिए प्रेम पैदा कर देगा।

96. Lo! those who believe and do good works, the Beneficent will appoint for them love.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

९७. तो (हे मुहम्मद!) हम ने इस (कलाम) को तुम्हारी भाषा में केवल इस लिए सरल कर दिया है,[२७] ताकि तुम इस से डरने वालों को शुभ-सूचना दो, और इस से हठी झगड़ालू लोगों को सचेत कर दो।

97. And We make (this Scripture) easy in thy tongue (O Muhammad) only that thou mayst bear good tidings therewith unto those who ward off (evil), and warn therewith the froward folk.

فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا ﴿٩٧﴾

९८. और इन से पहले हम कितनी ही नस्लों (जातियों) को विनष्ट कर चुके हैं! क्या तुम उन में से किसी की आहट पाते हो, या उन की कोई भनक तुम सुनते हो?

98. And how many a generation before them have We destroyed! Canst thou (Muhammad) see a single man of them, or hear from them the slightest sound.

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

———

२७. सरल करने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि क़ुरआन में गहराइयाँ और चिन्तन करने योग्य उच्च विषयों का उल्लेख नहीं है, क़ुरआन में यह सब कुछ है। सरल करने का अर्थ यह है कि जिस उद्देश्य के अन्तर्गत यह क़ुरआन उतारा गया है उस उद्देश्य के लिए यह सर्वथा अनुकूल है। यह अपने उद्देश्य भली-भाँति पूरा करता है।

'सूरा' अल-क़मर में कहा गया है कि हम ने 'क़ुरआन' के नसीहत के लिए सरल कर दिया है तो इस का अर्थ भी यही है कि यदि कोई क़ुरआन से नसीहत हासिल करनी चाहे तो वह क़ुरआन को इस के लिए हर पहलू से अनुकूल पायेगा। क़ुरआन नसीहत और शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग को बिल्कुल समतल कर देता है। वह बिल्कुल सहज और स्वाभाविक रूप से हमें सत्य की प्रेरणा देता और हमें ऊँचा उठाता है। और इस के लिए वह समस्त मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक उपाय करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०–ता०हा०
(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' के आरम्भ में 'मुक़त्तअ अक्षर (Arabic letters) आयें हैं, उन्हीं को इस सूरा का नाम दे दिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा, सूरा मरयम के अवतीर्ण होने के निकट ही उतरी है। हो सकता है यह सूरा उस समय उतरी हो जब हब्शा (Abyssinia) की 'हिजरत' पेश आई है; यह भी सम्भव है कि यह सूरा इस 'हिजरत' के पश्चात् उतरी हो। परन्तु यह निश्चय है कि यह सूरा हज़रत उमर रज़ि० के 'इस्लाम' धर्म को स्वीकार करने से पहले उतर चुकी थी। ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि यह सूरा हज़रत उमर रज़ि० के 'इस्लाम' ग्रहण करने का कारण बनी है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली 'सूरा' में विशेष रूप से हज़रत ईसा मसीह अ० का क़िस्सा बयान हुआ है, इस सूरा में विस्तारपूर्वक हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुनाया गया है।

पिछली सूरा को तरह प्रस्तुत सूरा में भी 'नमाज़' की ताकीद की गई है और उस पर क़ायम रहने पर विशेष बल दिया गया है[1]। यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है।

इस सूरा में पहले अल्लाह का ज़िक्र किया गया है और उस की नेमतों, उस की 'आयतों' और निशानियों का उल्लेख किया गया है। फिर आगे 'क़ियामत' का वर्णन है। 'दीन' (धर्म) में इन सब का मौलिक महत्व है। अल्लाह के ज़िक्र और उस के स्मरण में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) भी सम्मिलित है। मनुष्यों पर अल्लाह के उपकार अत्यधिक हैं। उस ने हमें पैदा किया; हमारे पालन-पोषण का प्रबन्ध किया। हमें जीवन का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाया। मरने के पश्चात् वह हमें दोबारा जीवित करेगा; और हमें हमारे कर्मों का बदला देगा।

इन बातों का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करने और इन्हें पूर्ण रूप से मानने का अर्थ यह होता है कि इन मौलिक सच्चाइयों की ओर दूसरे लोगों को भी बुलाया जाये। क़ुरआन वास्तव में इसी लिए उतरा है कि मनुष्य इन धारणाओं का स्वयं आदर करे और दूसरों के सामने भी इन्हें प्रस्तुत करे और लोगों को उन के कर्तव्यों का स्मरण कराये।

इस 'सूरा' में 'नबी सल्ल० को इस बात की शिक्षा दी गई है कि आप (सल्ल०) सब्र और सन्तोष से काम लें और अल्लाह के फ़ैसले की प्रतीक्षा करें यद्यपि आप (सल्ल०) को तरह-तरह की यातनाओं और कष्टों को सहन करना पड़ रहा है। मुसलमानों के लिए इस सूरा में इस बात की शुभ-सूचना है कि विजय और सफलता अन्त में उन्हीं को प्राप्त होगी। फिर विस्तारपूर्वक हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुना कर एक ऐतिहासिक प्रमाण भी संचित कर दिया है कि जो कुछ आज हज़रत

१. दे० आयत १४, ३३, ३४, ४२, १३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुहम्मद (सल्ल०) प्रस्तुत कर रहे हैं हज़रत मूसा अ० का जीवन भी उस के सत्य होने पर साक्षी है। हज़रत मूसा अ० के क़िस्से में शुभ-सूचनायें भी हैं और डरावा भी। इस में उन लोगों के लिए बड़ी चेतावनी है जो नबी सल्ल० की शत्रुता पर उतर आये हैं। मुस्लिम गरोह के लिए इस क़िस्से में ढारस और तसल्ली है।

फिर हज़रत आदम अ० का क़िस्सा बयान हुआ है इस क़िस्से में अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा पर सब्र न करने पर लोगों के लिए डरावा है। 'नमाज़' भी जिस की ताकीद इस सूरा में जगह-जगह की गई है एक पहलू से प्रतिज्ञा है और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को याद भी दिलाती है। इस के अतिरिक्त 'नमाज़' में वे समस्त विशेषतायें पाई जाती हैं जिन के महत्व पर इस सूरा में प्रकाश डाला गया है और जिन के लिए वास्तव में क़ुरआन अवतरित हुआ है। अर्थात् अल्लाह का स्मरण; उस की नेमतों को याद करना और उस की 'आयतों' पर सोच-विचार करना आदि। सूरा को समाप्त करते हुये भी 'नमाज़' पर विशेष बल दिया गया है ताकि 'ईमान' वालों में धैर्य्य, सहनशीलता आदि गुण पैदा हों और वे धर्म-प्रचार का महान् कार्य करने के योग्य बन सकें।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' ता० हा०
(मक्का में उतरी — 'आयतें' १३५)

TA HA
Revealed at Mecca

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. ता० हा०[१]।

1. Ta Ha.

طه ①

२. (हे 'नबी'!) हम ने तुम पर यह 'क़ुरआन' इस लिए नहीं उतारा है कि तुम मुसीबत (मशक़्क़त) में पड़ जाओ,[२]

2. We have not revealed unto thee (Muhammad) this Quran that thou shouldst be distressed,

ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى ②

३. बस यह तो एक अनुस्मारक है उस के लिए जो डरे,

3. But as a reminder unto him who feareth.

إلا تذكرة لمن يخشى ③

४. अवतरण है उस की ओर से जिस ने पैदा किया है धरती को और ऊँचे आकाशों को,

4. A revelation from Him Who created the earth and the high heavens.

تنزيلا ممن خلق الأرض والسماوات العلى ④

५. वह 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर), जो सिंहासन पर विराजमान हुआ[३]।

5. The Beneficent One, who is established on the Throne.

الرحمن على العرش استوى ⑤

६. उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और जो कुछ इन दोनों (आकाश और धरती) के बीच है, और जो कुछ मिट्टी के नीचे है।

6. Unto Him belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth, and whatsoever is between them, and whatsoever is beneath the sod.

له ما في السماوات وما في الأرض وما بينهما وما تحت الثرى ⑥

७. और चाहे तुम बात उच्च स्वर में कहो (या धीमे स्वर में), वह तो छिपी हुई बातों और अत्यन्त निहित बात को भी जानता है।

7. And if thou speakest aloud, then lo! He knoweth the secret (thought) and (that which is yet) more hidden.

وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ⑦

८. अल्लाह! उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। उस के लिए अच्छे नाम हैं[४]।

8. Allah! There is no God save Him. His are the most beautiful names.

الله لا إله إلا هو له الأسماء الحسنى ⑧

९. और क्या तुम्हें मूसा की बात (ख़बर) पहुँची?

9. Hath there come unto thee story of Moses?

وهل أتاك حديث موسى ⑨

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. अर्थात् तुम्हारा काम केवल यह है कि तुम इस 'क़ुरआन' के द्वारा लोगों को सचेत कर दो; 'क़ुरआन' उतार कर अल्लाह तुम से कोई ऐसा काम नहीं लेना चाहता जो तुम्हारे लिए असम्भव हो।
३. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।
४. अर्थात् वह अच्छे गुणों का मालिक है; वह अमृतमय और कल्याण रूप है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. जबकि उस ने एक आग देखी[५] और अपने घर वालों से कहा : तनिक ठहरो ! मैं ने एक आग देखी है। कदाचित् तुम्हारे लिए उस में से कोई अङ्गारा ले आऊँ या उस आग पर मैं मार्ग का पता पा लूँ।

10. When he saw a fire and said unto his folk: Wait! Lo! I see a fire afar off. Peradventure I may bring you a brand therefrom or may find guidance at the fire.

إذ را نارا فقال لأهله امكثوا إني
آنست نارا لعلي آتيكم منها بقبس
أو أجد على النار هدى ⑩

११. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया : हे मूसा !

11. And when he reached it he was called by name: O Moses!

فلما أتاها نودي يموسى ⑪

१२. मैं ही तेरा 'रब' हूँ। अपने जूते उतार दे, तू पवित्र घाटी 'तुवा' में है।

12. Lo! I, even I, am thy Lord. So take off thy shoes, for lo! thou art in the holy valley of Tuwa.

إني أنا ربك فاخلع نعليك إنك
بالواد المقدس طوى ⑫

१३. और मैं ने तुझे चुन लिया है, तो सुन जो कुछ 'वह्य' की जाती है।

13. And I have chosen thee, so hearken unto that which is inspired.

وأنا اخترتك فاستمع لما يوحى ⑬

१४. निस्सन्देह मैं अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। अतः तू मेरी 'इबादत' कर और मेरी याद (स्मरण) के लिए 'नमाज़' क़ायम कर।

14. Lo! I, even I, am Allah. There is no God save Me. So serve Me and establish worship for Me remembrance.

إنني أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدني
وأقم الصلوة لذكري ⑭

१५. निश्चय ही वह ('क़ियामत' की) घड़ी आने वाली है। मैं उस (के समय) को छिपाये रहूँगा, ताकि प्रत्येक जीव को उस प्रयास का जो वह करता है[६] बदला दिया जाये।

15. Lo! the Hour is surely coming. But I will to keep it hidden, that every soul may be rewarded for that which it striveth (to achieve).

إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى
كل نفس بما تسعى ⑮

१६. तो जो कोई उस पर 'ईमान' नहीं लाता और अपनी इच्छा के पीछे पड़ा है, तुझे (तेरी जाति वालों को) उस से (नमाज़ से) रोक न दे, नहीं तो तू तबाह हो जायेगा—

16. Therefore, let not him turn thee aside from (the thought of) it who believeth not therein but followeth his own desire, lest thou perish.

فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها
واتبع هوىه فتردى ⑯

१७. और हे मूसा ! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ?

17. And what is that in thy right hand, O Moses?

وما تلك بيمينك يموسى ⑰

१८. उस ने कहा : यह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इस से मेरे और दूसरे काम भी निकलते हैं।

18. He said: This is my staff whereon I lean, and wherewith I beat down branches for my sheep, and wherein I find other uses.

قال هي عصاي أتوكؤا عليها و
أهش بها على غنمي ولي فيها مارب
أخرى ⑱

१९. कहा : फेंक दे उसे, हे मूसा !

19. He said: Cast it down, O Moses!

قال ألقها يموسى ⑲

२०. तो उस ने उसे डाल दिया, तो क्या देखते हैं कि वह एक साँप है, दौड़ता।

20. So he cast it down, and lo! it was a serpent, gliding.

فألقاها فإذا هي حية تسعى ⑳

५. यह क़िस्सा उस समय का है जब हज़रत मूसा अ० मदयन से अपनी पत्नी को ले कर आ रहे थे। हज़रत मूसा अ० के हाथों एक मिस्री व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी, पकड़े जाने के भय के आप मिस्र से मदयन चले गये थे। वहीं आप का विवाह हुआ। वहाँ कुछ वर्ष रह कर आप वापस हुये हैं (दे० सूरा अल-क़सस १४-२९)।

६. समय को छिपाने का उद्देश्य यही है कि इस प्रकार इस बात की परीक्षा ली जा सके कि कौन दुनिया में 'आख़िरत' की चिन्ता करता है जबकि वह ग़ैब के परदे में छिपी हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. कहा : पकड़ ले उसे और भय न कर। हम उसे अभी उस की पहली हालत पर कर देंगे।

21. He said: Grasp it and fear not. We shall return it to its former state.

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾

२२. और अपना हाथ अपने बाज़ू में दबा ले, वह उज्ज्वल हो कर निकलेगा बिना किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है[७]।

22. And thrust thy hand within thine armpit, it will come forth white without hurt. (That will be) another token.

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾

२३. ताकि तुझे हम अपनी बड़ी निशानियाँ दिखायें,

23. That We may show thee (some of Our greater portents.

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾

२४. तू फ़िरऔन के पास जा! वह सरकश हो गया है।

24. Go thou unto Pharaoh! Lo! he hath transgressed (the bounds).

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾

२५. (मूसा ने) कहा : 'रब' मेरा सीना खोल दे[८]

25. (Moses) said: My Lord! Relieve my mind.

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

२६. और मेरे काम को मेरे लिए सहज कर दे;

26. And ease my task for me;

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

२७. और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे,[९]

27. And loose a knot from my tongue.

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

२८. ताकि वे मेरी बात समझ सकें।

28. That they may understand my saying.

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

२९. और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर (सहयोगी) नियुक्त कर दे,

29. Appoint for me a henchman from my folk.

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾

३०. हारून, जो मेरा भाई है[१०]।

30. Aaron, my brother.

هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾

३१. उस के द्वारा मुझे शक्ति दे।

31. Confirm my strength with him.

اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾

३२. और उसे मेरे काम में शरीक कर दे।

32. And let him share my task,

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾

३३. ताकि हम खूब तेरी 'तसबीह' करें।

33. That we may glorify Thee much.

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾

३४. और खूब तुझे याद करें।

34. And much remember Thee.

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾

३५. निस्सन्देह तू हमारी निगरानी करता है।

35. Lo! Thou art ever Seeing us.

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

३६. कहा : दिया गया तुझे जो तू ने माँगा, हे मूसा!

36. He said: Thou art granted thy request, O Moses.

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

३७. और निस्सन्देह हम तुझ पर (इस से पूर्व) एक बार और एहसान कर चुके हैं,

37. And indeed, another time, already We have shown thee favour,

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾

३८. याद करो जब हम ने तेरी माता को संकेत किया जो कुछ कि संकेत किया,

38. When We inspired in thy mother that which is inspired,

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾

७. पहली निशानी (चमत्कार) तो वह थी कि तेरी लाठी को हम ने जीता-जागता सर्प बना दिया।
८. अर्थात् मेरे लिए कोई मानसिक रुकावट न रहे; मुझे चित्त और हृदय की शान्ति, धैर्य्य और सन्तोष प्रदान कर।
९. अर्थात् सुभाषण की क्षमता तू मुझे प्रदान कर कि तेरे सन्देश को लोगों तक पहुँचा सकूँ।
१०. बाइबिल से मालूम होता है कि हज़रत हारून अ० हज़रत मूसा अ० से आयु में तीन वर्ष बड़े थे। दे० खुरूज (Ex.) ७ : ७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. कि इस (बच्चे) को सन्दूक़ में डाल दे, फिर उसे दरिया में छोड़ दे, दरिया उसे तट पर डाल देगा, इसे मेरा शत्रु और इस (बच्चे) का शत्रु उठा ले। मैं ने अपनी ओर से तुझ पर प्रेम डाल दिया (और अच्छा प्रबन्ध किया) ताकि तू मेरी आँखों के सामने[11] पाला जाये,

४०. याद कर जब तेरी बहिन चल रही थी फिर (जा कर) कहती है : क्या मैं तुम्हें उस का पता दूँ जो इस (बच्चे) का भली-भाँति पालन-पोषण करे ? तो हम ने तुझे फिर तेरी माता के पास पहुँचा दिया[12] ताकि उस की आँखें ठण्डी हों और वह दुःखी न हो। और (याद कर) तू ने एक व्यक्ति को मार डाला था फिर हम ने तुझे इस ग़म से छुटकारा दिया, और कितनी आज़माइशों से तुझे गुज़ारा। फिर तू मदयन वालों में कई वर्ष ठहरा रहा। फिर हे मूसा ! तू नियत अन्दाज़े पर आ गया है,

४१. और हम ने तुझे अपने (काम के) लिए चुन लिया है।

४२. जा, तू और तेरा भाई, मेरी निशानियों के साथ, और मेरे स्मरण में सुस्ती न दिखाना।

४३. जाओ, दोनों, फ़िरऔन के पास। निश्चय ही वह सरकश हो गया है।

४४. उस से नर्म बात कहना, कदाचित् वह चेते या डरे।

४५. दोनों ने कहा : हमारे 'रब' ! हमें भय है कि वह हम पर ज़्यादती न करे या सरकशी न करने लगे।

४६. कहा : डरो नहीं। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ।

39. Saying: Throw him into the ark, and throw it into the river, then the river shall throw it on the bank, and there an enemy to Me and an enemy to him shall take him. And I endued thee with love from Me that thou mightest be trained according to My will.

40. When thy sister went and said: Shall I show you one who will nurse him? and We restored thee to thy mother that her eyes might be refreshed and might not sorrow. And thou didst kill a man and We delivered thee from great distress, and tried thee with a heavy trial. And thou didst tarry years among the folk of Midian. Then camest thou (hither) by (My) providence, O Moses.

41. And I have attached thee to Myself.

42. Go, thou and thy brother with My tokens, and be not faint in remembrance of Me.

43. Go, both of you, unto Pharaoh. Lo! he hath transgressed (the bounds).

44. And speak unto him a gentle word, that peradventure he may heed or fear.

45. They said: Our Lord! Lo! We fear that he may be beforehand with us or that he may play the tyrant.

46. He said: Fear not, Lo! I am with you twain, Hearing and seeing.

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ﴿٤٠﴾

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿٤١﴾

اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿٤٢﴾

اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

११. अर्थात् हमारी निगरानी और रक्षा में।

१२. हज़रत मूसा अ० की बहिन ने जा कर कहा कि मेरी माँ इस बच्चे का पालन-पोषण अच्छी तरह कर सकती है। उस की बात मान ली गई; इस प्रकार हज़रत मूसा अ० फिर अपनी माता की गोद में आ गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७. तो जाओ उस के पास और कहो : हम दोनों तेरे 'रब' के 'रसूल' हैं। तो 'बनी इसराईल' को हमारे साथ भेज दे, और उन्हें तकलीफ़ न दे। हम तेरे पास तेरे 'रब' की निशानी ले कर आये हैं। और सलामती है उस के लिए जो मार्ग पर चले।

47. So go ye unto him and say: Lo! we are two messengers of thy Lord. So let the Children of Israel go with us, and torment them not. We bring thee a token from thy Lord. And peace will be for him who followeth right guidance.

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ
قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ وَالسَّلَامُ
عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

४८. हमारी ओर 'वह्य' की गई है कि यातना है उस के लिए जो झुठलाये और मुँह मोड़े।

48. Lo! it hath been revealed unto us that the doom will be for him who denieth and turneth away.

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ
مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

४९. (फ़िरऔन ने) कहा : अच्छा, तो फिर तुम दोनों का 'रब' कौन है, हे मूसा ?

49. (Pharaoh) said: Who then is the Lord of you twin, O Moses?

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

५०. कहा : हमारा 'रब' वह है जिस ने हर चीज़ को उस की गढ़न (बनावट) प्रदान की, फिर और (नैसर्गिक) मार्ग दिखाया[१३]।

50. He said: Our Lord is He Who gave unto everything its nature, then guided it aright.

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ
ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

५१. (फ़िरऔन ने) कहा : तो फिर उन की अगली नस्लों की क्या हालत है ?

51. He said: What then is the state of the generations of old?

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

५२. कहा : इस का ज्ञान मेरे 'रब' के पास एक 'किताब' में (सुरक्षित) है,[१४]

52. He said: The knowledge thereof is with my Lord in a Record. My Lord neither erreth nor forgetteth,

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَّا يَضِلُّ
رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾

५३. [१५]वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए मार्ग जारी किये और आकाश से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की वनस्पति निकाली,

53. Who hath appointed the earth as a bed and hath threaded roads for you therein and hath sent down water from the sky and thereby We have brougt forth divers kinds of vegetation.

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَ
سَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

१३. संसार में हर चीज को जो बनावट, गठन, रंग-रूप, गुण (Nature), विशेषता आदि प्राप्त है वह अल्लाह ही की देन है। और वही सब चीजों को उन की राह पर भी लगाता है। चिड़ियों ने हवा में उड़ना उसी से सीखा है। मछलियाँ नदियों और झीलों में उसी के सिखाये से तैरती हैं। मनुष्यों में भलाई-बुराई की भावना उसी ने रक्खी है। यदि वह राह न दिखाये तो कोई भी चीज अपनी सृष्टि के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती। फिर न तो वन-उपवन में फूल खिल सकेंगे और न भूमि में कहीं हरियाली दिखाई देगी। फूलों से महक जाती रहेगी; कोयल अपनी सुन्दर बोली भूल जायेगी। हमारे शरीर में रुधिर-संचार उसी के संकेत से हो रहा है। हमारे मस्तिष्क, पाचन-यन्त्र तथा अन्य अवयवों को अविश्राम कार्य करना उसी ने सिखाया है। फिर यह कैसे सही हो सकता है कि आदमी अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना 'रब' और स्वामी बनाने लग जाये। फिर यह भी सोचने की बात है कि जो अल्लाह हर चीज को उस की स्थिति के अनुसार मार्ग पर लगा रहा है उस से हम यह कैसे आशा कर सकते हैं कि वह मनुष्य के लिए मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध न करेगा।

१४. हज़रत मूसा अ० ने अत्यन्त उचित उत्तर दिया कि पिछले लोग जैसे कुछ भी थे और उन्हों ने जो कुछ भी किया है, अल्लाह को सब मालूम है। हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिस से हम उन के कामों और उन की नीयतों का ठीक-ठीक हाल मालूम कर सकें। हमें इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए कि उन का क्या होगा, हमें तो अपनी चिन्ता होनी चाहिए। वे जैसे कुछ भी थे अल्लाह के पास जा चुके।

फ़िरऔन यह प्रश्न कर के हज़रत मूसा अ० को उलझाना चाहता था और साथ ही वह लोगों को इस बात पर भड़काना चाहता था कि मूसा (अ०) उन के पूर्वजों को गुमराह और नारकी समझते हैं। परन्तु हज़रत मूसा अ० ने उसे ऐसा उत्तर दिया कि उस की यह चाल चल न सकी।

१५. आयत ५३ से ५६ तक की आयतें अव्यवहित जान पड़ती हैं। आयत ५६ के बाद फिर मूसा अ० और फ़िरऔन का सम्वाद आरम्भ होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ निस्सन्देह इस में कितनी ही निशानियां हैं बुद्धि रखने वालों के लिए।

54. (Saying): Eat ye and feed your cattle. Lo! herein verily are portents for men of thought.

كلوا وارعوا انعامكم ان في ذلك لايت لاولي النهى ٥٤

५५. इसी (धरती) से हम ने तुम्हें पैदा किया है, और इसी में तुम्हें लौटायेंगे, और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

55. Thereof We created you, and thereunto we return you, and thence We bring forth a second time.

منها خلقنكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة اخرى ٥٥

५६. और हम ने उसे (फ़िरऔन को) अपनी सब निशानियां दिखाईं, परन्तु उस ने झुठलाया और इन्कार किया।

56. And We verily did show him all Our tokens, but he denied them and refused.

ولقد ارينه ايتنا كلها فكذب وابى ٥٦

५७. उस ने कहा : हे मूसा ! क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि अपने जादू से हम को हमारी भूमि से निकाल दे ?

57. He said: Hast thou come to drive us out from our land by thy magic, O Moses?

قال اجئتنا لتخرجنا من ارضنا بسحرك يموسى ٥٧

५८. अच्छा, हम भी तेरे मुक़ाबले में वैसा ही जादू लाते हैं; तो हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा ले, न हम उस के विरुद्ध जायें और न तू, एक साफ़ खुले मैदान में (आ जा)।

58. But we surely can produce magic the like thereof; so appoint a tryst between us and you, which neither we nor thou shall fail to keep, at a place convenient (to us both).

فلناتينك بسحر مثله فاجعل بيننا وبينك موعدا لا نخلفه نحن ولا انت مكانا سوى ٥٨

५९. मूसा ने कहा : तुम्हारे (मुक़ाबले के) वादे का समय जश्न (उत्सव) का दिन है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जायें।

59. (Moses) said: Your tryst shall be the day of the feast, and let the people assemble when the sun hath risen high.

قال موعدكم يوم الزينة وان يحشر الناس ضحى ٥٩

६०. तब फ़िरऔन पलटा और उस ने अपने सारे हथकण्डे जुटाये और (मुक़ाबले के लिए) आ गया।

60. Then Pharaoh went and gathered his strength, then came (to the appointed tryst)

فتولى فرعون فجمع كيده ثم اتى ٦٠

६१. मूसा ने उन (लोगों) से कहा : तबाही है तुम्हारी ! अल्लाह पर झूठी तोहमत न बांधो, नहीं तो वह यातना से तुम्हारा विध्वस कर देगा। और झूट जिस किसी ने गढ़ा वह (अपने मनोरथ में) विफल हुआ।

61. Moses said unto them: Woe unto you! Invent not a lie against Allah, lest He extirpate you by some punishment. He who lieth faileth miserably.

قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب وقد خاب من افترى ٦١

६२. इस पर वे परस्पर अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे।

62. Then they debated one with another what they must do, and they kept their counsel secret.

فتنازعوا امرهم بينهم واسروا النجوى ٦٢

६३. कहने लगे : ये दोनों जादूगर ही हैं चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी भूमि से निकाल दें, और तुम्हारी उत्तम रीति (आदर्श परम्परा) को उठा डालें (नष्ट कर दें);

63. They said: Lo! these are two wizards who would drive you out from your country by their magic and destroy your best traditions;

قالوا ان هذن لسحرن يريدن ان يخرجكم من ارضكم بسحرهما ويذهبا بطريقتكم المثلى ٦٣

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. तो तुम अपना उपाय जुटाओ, फिर पंक्तिबद्ध हो कर आओ। आज जो ऊपर रहा वही जीत गया।

64. So arrange your plan, and come in battle line. Whoso is uppermost this day will be indeed successful.

فاجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد
افلح اليوم من استعلى ٦٤

६५. (जादूगर) बोले : हे मूसा ! या तो तुम (अपना अंछर) फेंको, या फिर हम पहले फेंकें ?

65. They said: O Moses! Either throw first, or let us be the first to throw.

قالوا يموسى اما ان تلقي واما ان
نكون اول من القى ٦٥

६६. (मूसा ने) कहा : नहीं, तुम ही फेंको ! तो सहसा उन की रस्सियाँ और उन की लाठियाँ, उन के जादू से, उसे (मूसा को) ऐसी प्रतीत हुईं कि वे दौड़ रही हैं।

66. He said: Nay, do ye throw! Then lo! their cords and their staves, by their magic, appeared to him as though they ran.

قال بل القوا فاذا حبالهم و
عصيهم يخيل اليه من سحرهم
انها تسعى ٦٦

६७. तो मूसा अपनें जी में डरा।

67. And Moses conceived a fear in his mind.

فاوجس في نفسه خيفة موسى ٦٧

६८. हम ने कहा : मत डर ! तू ही ऊपर होगा।

68. We said: Fear not! Lo! thou art the higher.

قلنا لا تخف انك انت الاعلى ٦٨

६९. फेंक जो तेरे दाहिने हाथ में है जो कुछ इन्हों ने बनाया है उसे निगल जायेगा। इन्हों ने जो कुछ बनाया है वह तो बस जादूगर का स्वाँग है, और जादूगर सफल नहीं होता चाहे वह जिधर से भी आये।

69. Throw that which is in thy right hand! It will eat up that which they have made. Lo! that which they have made is but a wizard's artifice, and a wizard shall not be successful to whatever point (of skill) he may attain.

والق ما في يمينك تلقف ما صنعوا
انما صنعوا كيد سحر ولا يفلح
الساحر حيث اتى ٦٩

७०. तब जादूगर 'सजदे' में गिर पड़े, बोले : हम हारून और मूसा के 'रब' पर 'ईमान' ले आये।

70. Then the wizards were (all) flung down prostrate, crying: We believe in the Lord of Aaron and Moses.

فالقي السحرة سجدا قالوا امنا
برب هرون وموسى ٧٠

७१. (फ़िरऔन ने) कहा : क्या तुम 'ईमान' ले आये इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुज्ञा देता। निश्चय ही यह तुम्हारा बड़ा (प्रधान पुरुष) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। अब निश्चय ही मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और निश्चय ही खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा, और तब तुम जान लोगे कि हम दोनों में किस की यातना अधिक कठोर और अधिक स्थायी है'[१६]।

71. (Pharaoh) said: Ye put faith in him before I give you leave. Lo! he is your chief who taught you magic. Now surely I shall cut off your hands and your feet alternately, and I shall crucify you on the trunks of palm trees, and ye shall know for certain which of us hath sterner and more lasting punishment.

قال امنتم له قبل ان اذن لكم
انه لكبيركم الذي علمكم السحر
فلاقطعن ايديكم وارجلكم من
خلاف ولاوصلبنكم في جذوع
النخل ولتعلمن اينا اشد عذابا وابقى ٧١

७२. बोले : जो स्पष्ट प्रमाण हमारे सामने आ चुके हैं उन के मुक़ाबले में, और उस के मुक़ाबले में जिस ने कि हमें पैदा किया है, हम कदापि तुझे प्रधानता नहीं दे सके। तो जो कुछ तू करने वाला है कर ले। तू बस इसी सांसारिक जीवन का फ़ैसला कर सकता है।

72. They said: We choose thee not above the clear proofs that have come unto us, and above Him Who created us. So decree what thou wilt decree. Thou wilt end for us only the life of the world.

قالوا لن نؤثرك على ما جاءنا من
البينت والذي فطرنا فاقض ما انت
قاض انما تقضي هذه الحيوة
الدنيا ٧٢

१६. इस के साथ आयत १२७ भी सामने रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३. निश्चय ही हम अपने 'रब' पर 'ईमान' ले आये, ताकि वह हमारी ख़ताओं को क्षमा कर दे और इस जादू को भी जिस पर तू ने हमें विवश किया था। अल्लाह उत्तम और अधिक स्थायी (चिरस्थायी) है।

73. Lo! we believe in our Lord, that He may forgive us our sins and the magic unto which thou didst force us. Allah is better and more lasting.

إِنَّآ ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَٰيَٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ ٱلسِّحْرِ ۗ وَٱللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿٧٣﴾

७४. वास्तव में जो अपने 'रब' के पास अपराधी बन कर आया, उस के लिए 'जहन्नम' है। जिस में न वह मरेगा और न जियेगा।[१७]

74. Lo! whoso cometh guilty unto his Lord, verily for him is hell. There he will neither die nor live.

إِنَّهُۥ مَن يَأْتِ رَبَّهُۥ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُۥ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

७५. और जो कोई उस के पास 'ईमान' वाला हो कर आयेगा, जिस ने अनुकूल कर्म किये होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे दरजे हैं;

75. But whoso cometh unto Him a believer, having done good works, for such are the high stations;

وَمَن يَأْتِهِۦ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلدَّرَجَٰتُ ٱلْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾

७६. शाश्वत (सदाबहार) 'जन्नतें' हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उस का जिस ने अपनी आत्मा को शुद्ध कर के उसे विकसित होने का अवसर संचित किया।

76. Gardens of Eden underneath which rivers flow, wherein they will abide for ever. That is the reward of him who groweth.

جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ مَن تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

७७. [१८]और हम ने मूसा की ओर 'वह्य' की कि रातों-रात मेरे बन्दों को ले कर चल पड़ फिर उन के लिए दरिया में सूखा मार्ग बना दे, न तो तुझे किसी के आ लेने का भय हो, और न तुझे डर लगे।

77. And verily We inspired Moses, saying: Take away My slaves by night and strike for them a dry path in the sea, fearing not to be overtaken, neither being afraid (of the sea.)

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِى فَٱضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِى ٱلْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَٰفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٧٧﴾

७८. तब फ़िरऔन अपनी सेना ले कर उन के पीछे चला फिर दरिया में से वह चीज़ उन पर छा गई जो छा गई।

78. Then Pharaoh followed with his hosts and there covered them that which did cover them of the sea.

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُم مِّنَ ٱلْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

७९. फ़िरऔन ने अपनी जाति वालों को पथ-भ्रष्ट किया, मार्ग न दिखाया[१९]।

79. And Pharaoh led his folk astray, he did not guide them.

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾

१७. अर्थात् न तो उस की मृत्यु होगी कि उस की तकलीफ़ों और मुसीबतों का अन्त हो जाये और न उसे जीने का कोई आनन्द ही प्राप्त होगा; वह मृत्यु और जीवन दोनों के बीच लटकता रहेगा।

१८. जादूगरों के 'ईमान' लाने वाली घटना के पश्चात् हज़रत मूसा अ० मिस्र में एक लम्बी मुद्दत तक रहे। देखिए सूरा अल-आराफ़ आयत १२७, १४१, सूरा यूनुस आयत ८३-९२, सूरा अल-मोमिन आयत २३-४५ और सूरा अज़ ज़ुख़रुफ़ आयत ४६-५६।

१९. हज़रत मूसा अ० 'बनी इसराईल' के मुसलमानों और उन मुस्लिमों को ले कर जो 'बनी इसराईल' में से न थे एक जन-समूह के रूप में निकल पड़े। यह क़ाफ़िला अभी समुद्र के तट पर ही था कि फ़िरऔन अपनी सेना ले कर पीछे से आ पहुँचा। हज़रत मूसा अ० को हुक्म हुआ कि अपनी लाठी समुद्र पर मारें। लाठी मारते ही समुद्र फट गया और उस ने अपने बीच से काफ़िले के गुज़रने का रास्ता दे दिया। फ़िरऔन भी काफ़िले के पीछे अपनी सेना सहित समुद्र के इस बीच वाले रास्ते में उतर आया। हज़रत मूसा अपने साथियों को ले कर पार हो गये परन्तु समुद्र ने फ़िरऔन और उस की सेना को अपनी लपेट में ले लिया और वे उसी समुद्र में डूब कर रह गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८०. हे 'इसराईल' की सन्तान ! हम ने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से छुटकारा दिया, और ('तौरात' देने को) वादा किया था तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर, और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा[२०]

80. O Children of Israel! We delivered you from your enemy, and We made a covenant with you on the holy mountain's side, and sent down on you the manna and the quails,

يٰبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ قَدْ أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَٰعَدْنَٰكُمْ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾

८१. खाओ जो कुछ हम ने तुम्हें अच्छी चीजें प्रदान की हैं, और उस के बारे में सरकशी न करना कि टूट पड़े तुम पर मेरा प्रकोप; और जिस किसी पर मेरा प्रकोप टूटा, फिर वह विनष्ट हुआ।

81. (Saying): Eat of the good things wherewith We have provided you, and transgress not in respect thereof lest My wrath come upon you; and he on whom My wrath cometh, he is lost indeed.

كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا۟ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِى فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾

८२. और जिस किसी ने 'तौबा' की और 'ईमान' लाया और अनुकूल कर्म किया, फिर मार्ग पर रहा, उस के लिए निश्चय ही मैं अत्यन्त क्षमाशील हूँ—

82. And, lo! verily I am Forgiving toward him who repenteth and believeth and doth good, and afterward walked aright.

وَإِنِّى لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾

८३. और क्या चीज तुम्हें अपनी जाति वालों से पहले ले आई, हे मूसा[२१] ?

83. And (it was said): What hath made thee hasten from thy folk, O Moses?

وَمَآ أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٨٣﴾

८४. उस ने कहा : वे मेरे पीछे ही (आ रहे) हैं और मैं जल्दी बढ़ आया तेरी ओर मेरे 'रब' ! ताकि तू राज़ी हो जाये।

84. He said: They are close upon my track. I hastened unto Thee that Thou mightest be well pleased.

قَالَ هُمْ أُو۟لَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِى وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾

८५. कहा : अच्छा तो हम ने तुम्हारे पीछे तुम्हारी जाति वालों को आज़माइश में डाल दिया, और सामिरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर डाला।

85. He said: Lo! We have tried thy folk in thine absence, and As-Samiri hath misled them.

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾

८६. फिर मूसा अत्यन्त क्रोध और रञ्ज की दशा में अपनी जाति वालों की ओर लौटा।

कहा : हे मेरी जाति वालो ! क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था ? क्या तुम पर बड़ी मुद्दत गुज़र गई, या तुम ने यह चाहा कि तुम पर तुम्हारे 'रब' का प्रकोप ही उतरे, कि तुम ने मेरे वादे के विरुद्ध आचरण किया।

86. Then Moses went back unto his folk, angry and sad. He said: O my people! Hath not your Lord promised you a fair promise? Did the time appointed then appear too long for you, or did ye wish that wrath from your Lord should come upon you, that ye broke tryst with me?

فَرَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ ٱلْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِى ﴿٨٦﴾

८७. उन्हों ने कहा : हम ने आप के वादे के विरुद्ध आचरण कुछ अपने अधिकार से नहीं किया है, बल्कि लोगों के ज़ेवरों के बोझ से हम लद गये थे, तो हम ने उन्हें (आग में) फेंक दिया— फिर इस तरह सामिरी ने डाला,

87. They said: We broke not tryst with thee of our own will, but we were laden with burdens of ornaments of the folk, then cast them (in the fire), for thus As-Samiri proposed.

قَالُوا۟ مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ ٱلْقَوْمِ فَقَذَفْنَٰهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٧﴾

२०. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १८।

२१. 'बनी इसराईल' से अल्लाह ने यह वादा किया था कि वे तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर ठहरें (आयत ८०), चालीस दिन की मुद्दत बीतने पर 'किताब' प्रदान की जायेगी। हज़रत मूसा अ० अपनी जाति वालों से पहले ही वहाँ पहुँच गये। इस अवसर पर हज़रत मूसा अ० ने अपने 'रब' से जो बात-चीत की है, और जो कुछ मामला उन्हें वहाँ पेश आया है उस का उल्लेख सूरा अल-आराफ़ आयत १४३-१४५ में किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८. और उस ने बना निकाली उन के लिए एक बछड़े की मूर्ति,[२२] जिस में से बछड़े की-सी आवाज़ निकलती थी। लोग कहने लगे : यही है 'इलाह' (इष्ट पूज्य) तुम्हारा और 'इलाह' मूसा का, परन्तु वह भूल गया।

88. Then he produced for them a calf, of saffron hue, which gave forth a lowing sound. And they cried: This is your God and the God of Moses, but he hath forgotten.

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ
فَقَالُوا هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ
فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

८९. क्या वे देखते न थे कि न वह उन की किसी बात का उत्तर देता है और न उन के बुरे का उसे कुछ अधिकार प्राप्त है और न भले का ?

89. See they not, then, that it returneth no saying unto them and possesseth for them neither hurt nor use?

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا
يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

९०. और हारून पहले ही उन से कह चुका था कि लोगो ! तुम इस के कारण आज़माइश में पड़ गये हो, तुम्हारा 'रब' तो 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) है, अतः तुम मेरे पीछे चलो और मेरा हुक्म मानो।

90. And Aaron indeed had told them beforehand: O my people! Ye are but being seduced therewith, for lo! your Lord is the Beneficent, so follow me and obey my order.

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ
يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ
الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٠﴾

९१. वे बोले : जब तक कि मूसा हमारे पास पलट कर न आ जाये हम तो इस से लगे बैठे ही रहेंगे[२३]।

91. They said: We shall by no means cease to be its votaries till Moses return unto us.

قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ
يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩١﴾

९२. (मूसा ने) कहा : हे हारून ! जब तुम ने देखा कि ये पथभ्रष्ट हो गये हैं तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका,

92. He (Moses) said: O Aaron! What held thee back when thou didst see them gone astray.

قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ
ضَلُّوا ﴿٩٢﴾

९३. कि तुम मेरा अनुसरण न करो ? क्या तुम ने मेरे आदेश को टाल दिया ?

93. That thou followedst me not? Hast thou then disobeyed my order?

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾

९४. (हारून ने) कहा : हे मेरी माँ के बेटे ! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर पकड़। मुझे यह डर हुआ कि कहीं तू यह न कहे कि तुम ने 'इसराईल' की सन्तान में फूट डाल दी, और मेरी बात का ध्यान नहीं रक्खा।

94. He said: O son of my mother! Clutch not my beard nor my head! I feared lest thou shouldst say: Thou hast caused division among the Children of Israel, and hast not waited for my word.

قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي
وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ
فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ
تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

९५. (मूसा ने) कहा : और हे सामिरी ! तेरा क्या मामला है ?

95. (Moses) said: And what hast thou to say, O Samiri?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

९६. उस ने कहा : मैं ने वह कुछ देखा जिसे औरों ने नहीं देखा, फिर मैं ने 'रसूल' के पद-चिह्नों से एक मुट्ठी उठा ली, फिर उस को (उस में) डाल दिया। मेरे जी ने मुझे ऐसी ही पट्टी पढ़ाई[२४]।

96. He said: I perceived what they perceive not; so I seized a handful from the footsteps of the messenger, and then threw it in. Thus my soul commended to me.

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَ
كَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾

२२. अर्थात् हमारा अपराध इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि हम ने ज़ेवरों को फेंक दिया था हमारा इरादा बछड़ा बना कर पूजने का नहीं था। बाद में जो कुछ हुआ है हमें पहले से उस का कोई ज्ञान न था। 'शिर्क' हम से अनायास बेजाने में हुआ है।

२३. अर्थात् हम तो इसी बछड़े की उपासना में लगे रहेंगे; हम इस से टलने के नहीं हैं।

२४ अधिक सम्भव है कि सामिरी ने यह बात यों ही मक्कारी से गढ़ कर कह दी हो जिस तरह उस ने मूर्ति में किसी विधि से बछड़े की-सी आवाज़ पैदा कर के लोगों को धोखे में डाला था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७. (मूसा ने) कहा : अच्छा तो जा ! अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे : मुझे कोई छूता नहीं ! और निश्चय ही तेरे लिए ('आख़िरत' में यातना का) एक ठहराया हुआ वादा है जो तुझ से कदापि नहीं टलेगा । और देख अपने 'इलाह' (इष्ट देव) को जिस से तू लगा बैठा हुआ था । निश्चय ही हम उसे जला डालेंगे फिर उसे चूरा-चूरा कर के दरिया में बहा देंगे ।

97. (Moses) said: Then go! And lo! in this life it is for thee to say! Touch me not! and lo! there is for thee a tryst thou canst break. Now look upon thy god of which thou hast remained a votary. Verily we will burn it and will scatter its dust over the sea.

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ أَنْ
تَقُولَ لَا مِسَاسَ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا
لَّنْ تُخْلَفَهُ وَانْظُرْ إِلَى إِلٰهِكَ الَّذِي
ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

९८. (लोगो !) तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य) तो बस वही अल्लाह है, जिस के सिवा कोई 'इलाह' नहीं । अपने ज्ञान से वह हर चीज़ को व्याप्त है ।

98. Your God is only Allah, than Whom there is no other God. He embraceth all things in His knowledge.

إِنَّمَا إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

९९. [25](हे मुहम्मद !) इस तरह हम जो कुछ पहले बीत चुका है उस के वृत्तान्त तुम्हें सुनाते हैं, और हम ने अपने यहाँ से तुम्हें "ज़िक्र"[26] (अनुस्मारक) प्रदान किया है ।

99. Thus relate We unto thee (Muhammad) some tidings of that which happend of old, and We have given thee from Our presence a Reminder.

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا
قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

१००. जिस किसी ने उस से मुँह मोड़ा, वह निश्चय ही 'क़ियामत' के दिन एक बोझ उठायेगा ।

100. Whoso turneth away from it, he verily will bear a burden on the Day of Resurrection,

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

१०१. ऐसे लोग सदा इसी (दशा) में रहेंगे— और 'क़ियामत' के दिन उन के लिए यह बोझ बुरा होगा,

101. Abiding under it—an evil burden for them on the Day of Resurrection,

خٰلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
حِمْلًا ﴿١٠١﴾

१०२. जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जायेगी । और उस दिन हम अपराधियों को इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि उन की आँखें पथराई होंगी,

102. The day when the Trumpet is blown. On that day We assemble the guilty white-eyed (with terror).

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ
يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

१०३. वे परस्पर चुपके-चुपके कहेंगे : तुम बस दस ही दिन ठहरे हो—

103. Murmuring among themselves: Ye have tarried but ten (days).

يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

१०४. हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे बातें करेंगे जब कि उन का सब से अच्छे मार्ग वाला कहेगा : तुम बस एक ही दिन ठहरे हो—

104. We are best aware of what they utter when their best in conduct say: Ye have tarried but a day.

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

१०५. तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि उस दिन वे कहाँ चले जायेंगे) । तो कह दो : मेरा 'रब' उन्हें चूरा-चूरा कर के उड़ा देगा ।

105. They will ask thee of the mountains (on that day). Say: My Lord will break them into scattered dust.

وَيَسْئَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا
رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

२५. यहाँ से तक़रीर फिर उसी विषय की ओर मुड़ती है जिस से इस 'सूरा' का आरम्भ हुआ था ।
२६. दे० आयत ११३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६. और इस (धरती) को परपट मैदान कर के छोड़ेगा,

106. And leave it as an empty plain,

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

१०७. तुम उस में न तो कोई बल देखोगे और न सलवट—

107. Wherein thou seest neither curve nor ruggedness.

لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾

१०८. उस दिन लोग पुकारने वाले की पुकार पर चलें आवेंगे कोई कुछ भी अकड़ न दिखा सकेगा, और आवाज़ें 'रहमान' के आगे दब जायेंगी, एक हल्की आवाज़ के सिवा तुम कुछ न सुनोगे[२७]।

108. On that day they follow the summoner who deceiveth not, and voices are hushed for the Beneficent, and thou hearst but a faint murmur.

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

१०९. उस दिन सिफ़ारिश काम न आयेगी सिवाय इस के कि किसी को 'रहमान' अनुज्ञा दे और उस की बात को पसन्द करे।

109. On that Day no intercession availeth save (that of) him unto whom the Beneficent hath given leave and whose word He accepteth.

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

११०. वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और वे ज्ञान द्वारा उस को घेर नहीं सकते।

110. He knoweth (all) that is before them and (all) that is behind them, while they cannot compass it in knowledge.

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

१११. और चेहरे उस सजीव[२८] और चिर-स्थायी[२९] के आगे झुके होंगे। और वह विफल हुआ जिस ने ज़ुल्म (का बोझ) उठाया।

111. And faces humble themselves before the Living, the Eternal. And he who beareth (a burden of) wrongdoing is indeed a failure (on that Day).

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

११२. और जो कोई अनुकूल कर्म करे, और इस के साथ वह 'ईमान' वाला भी हो, उसे न तो किसी ज़ुल्म का भय होगा और न किसी हक़ के मारे जाने का।

112. And he who hath done some good works, being a believer, he feareth not injustice nor begrudging (of his wage).

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

११३. और इसी तरह हम ने इसे अरबी 'क़ुरआन' के रूप में उतारा है, और इस में तरह-तरह से चेतावनी दी है कदाचित् वे डरें या यह उन के लिए ध्यान देने का कारण बने।

113. Thus We have revealed it as a Lecture in Arabic, and have displayed therein certain threats, that peradventure they may keep from evil or that it may cause them to take heed.

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

११४. तो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट्!

और (हे मुहम्मद!) 'क़ुरआन' पढ़ने में—इस से पहले कि तुम्हारी ओर उस की 'वह्य' पूरी हो—जल्दी न किया करो,[३०] और कहो: 'रब'! मुझे ज्ञान और बढ़ा दे।

114. Then exalted be Allah, the True King! And hasten not (O Muhammad) with the Qur'an ere its revelation hath been perfected unto thee, and say, My Lord! Increase me in knowledge.

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

२७. वहाँ पैरों की चाप और चुपके-चुपके बात करने वालों की फुसफुसाहट के अतिरिक्त और तुम्हें कुछ सुनाई न देगा। उस दिन सब लोग डरे सहमे होंगे।

२८. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ७८।

२९. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ७९।

३०. अर्थात् जब 'वह्य' उतर रही हो, तो उसे याद करने की चिन्ता में न पड़ो। अल्लाह तुम्हें सब स्मरण करा देगा। 'वह्य' उतरने के आरम्भिक काल में नबी सल्ल० को कई बार टोका गया है कि 'वह्य' को याद करने की जल्दी में न पड़ो। सूरा क़ियामा के अवतीर्ण होने के समय भी ऐसा ही हुआ था (दे० सूरा क़ियामा आयत १६-१९)। सूरा अल-आला में आप (सल्ल०) को इतमीनान दिलाया गया है कि हम इसे आप को पढ़वा देंगे, आप भूलेंगे नहीं (दे० आयत ६)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११५. "और हम ने इस से पहले आदम से एक वचन लिया था, परन्तु वह भूल गया, और हम ने उस में इरादे की मज़बूती न पाई।

115. And verily We made a covenant of old with Adam, but he forgot, and We found no constancy in him.

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ
فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

११६. याद करो जब हम ने 'फ़िरिश्तों' से कहा : आदम के आगे 'सजदा' करो तो उन्हों ने 'सजदा' किया सिवाय 'इबलीस' के; वह इन्कार कर बैठा।

116. And when We said unto the angels: Fall prostrate before Adam, they fell prostrate (all) save Iblis, he refused.

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ
فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ ﴿١١٦﴾

११७. इस पर हम ने कहा : हे आदम! निश्चय ही यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है, तो यह कहीं तुम दोनों को 'जन्नत' से न निकलवा दे फिर तुम दुर्भाग्य में ग्रस्त हो जाओ।

117. Therefore We said: O Adam! This is an enemy unto thee and unto thy wife, so let him not drive you both out of the Garden so that thou come to toil.

فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ ٱلْجَنَّةِ
فَتَشْقَىٰٓ ﴿١١٧﴾

११८. तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहाँ भूखे रहो और न नंगे रहो,

118. It is (vouchsafed) unto thee that thou hungerest not therein nor art naked.

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾

११९. और यह कि न यहाँ प्यासे रहो और न धूप की तकलीफ़ उठाओ।

119. And thou thirstest not therein nor art exposed to the sun's heat.

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا۟ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾

१२०. परन्तु 'शैतान' ने उसे बहकाया, कहने लगा : हे आदम! क्या मैं तुम्हें अमरता के वृक्ष का पता बता दूँ और उस राज्य का जो क्षीण न हो?

120. But the Devil whispered to him, saying: O Adam! Shall I show thee the tree of immortality and power that wasteth not away?

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ ٱلشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ
هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ ٱلْخُلْدِ وَمُلْكٍ
لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾

१२१. तब उन दोनों (पति-पत्नी) ने उस (वृक्ष) में से खा लिया, फिर उन की शर्मगाहें (गुह्य इन्द्रियाँ) उन के आगे खुल गई,[३२] और वे दोनों अपने ऊपर 'जन्नत' के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे। और आदम ने अपने 'रब' की अवज्ञा की, और भटक गया।

121. Then they twain ate thereof, so that their shame became apparent unto them, and they began to hide heaping on themselves some of the leaves of the Garden. And Adam disobeyed his Lord, so went astray.

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا
وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ
ٱلْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ
فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾

१२२. फिर उस के 'रब' ने उसे चुन लिया, और उस पर मेहरबान हुआ, और उसे मार्ग दिखाया।

122. Then his Lord chose him and relented toward him, and guided him.

ثُمَّ ٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ
وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾

१२३. कहा : तुम दोनों-के-दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्ग-दर्शन पहुँचे, तो जो कोई मेरे मार्ग-दर्शन का पालन करेगा, वह न भटकेगा और न वह दुर्भाग्य में ग्रस्त होगा।

123. He said: Go down hence, both of you, one of you a foe unto the other. But if there come unto you from Me a guidance, then whoso followeth My guidance, he will not go astray nor come to grief.

قَالَ ٱهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًۢا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَنِ
ٱتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾

३१. यहाँ से एक दूसरी तक़रीर शुरू होती है।
३२. अर्थात् वे दोनों एक दूसरे के आगे नग्न अवस्था में हो गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२४. और जिस ने मेरी याद[33] से मुँह मोड़ा तो उस का जीवन संकीर्ण होगा,[34] और 'क़ियामत' के दिन हम उसे अन्धा उठायेंगे।

124. But he who turneth away from remembrance of Me, his will be a narrow life, and I shall bring him blind to the assembly on the Day of Resurrection.

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

१२५. वह कहेगा : 'रब' ! तू ने मुझे क्यों अन्धा उठाया, जब कि मैं आँखों वाला था?

125. He will say: My Lord! Wherefor hast Thou gathered me (hither) blind, when I was wont to see?

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

१२६. वह कहेगा : ऐसे ही पहुँची थीं तुझ को 'आयतें' हमारी तो तू ने उन्हें भुला दिया था। इसी तरह आज तू भुलाया जा रहा है—

126. He will say: So (it must be). Our revelations came unto thee but thou didst forget them. In like manner thou art forgotten this Day.

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

१२७. इस तरह हम उसे बदला देते हैं[35] जो हद से निकल गया और अपने 'रब' की 'आयतों' पर 'ईमान' न लाया; और 'आखिरत' की यातना अत्यन्त कठोर और अधिक स्थायी है।

127. Thus do We reward him who is prodigal and believeth not the revelations of his Lord; and verily the doom of the Hereafter will be sterner and more lasting.

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

१२८. फिर क्या यह चीज़ भी इन्हें[36] मार्ग न दिखा सकी कि इन से पहले कितनी ही नस्लों (जातियों) को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिन के निवास-स्थानों में ये गुज़रते रहते हैं? निस्सन्देह इस में बुद्धि वालों के लिए निशानियाँ हैं।

128. Is it not a guidance for them (to know) how many a generation We destroyed before them, amid whose dwellings they walk? Lo! therein verily are signs for men of thought.

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع

१२९. और यदि तेरे 'रब' की ओर से पहले एक बात निश्चय न पा गई होती, और एक ठहराई मुद्दत न होती, तो अवश्य ही (इन्हें यातना) आ घेरती।

129. And but for a decree that had already gone forth from thy Lord, and a term already fixed, the judgement would (have) been inevitable (in this world).

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ ط

१३० अतः (हे मुहम्मद!), जो कुछ ये बकते हैं उस पर सब्र करो, और अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करो सूर्य उदय होने से पहले और उस के अस्त होने से पहले। और रात की कुछ घड़ियों में भी 'तसबीह' करो[37] और दिन के किनारों पर भी, कदाचित् तुम राज़ी हो जाओ[38]।

130. Therefor (O Muhammad) bear with what they say, and celebrate the praises of thy Lord ere the rising of the sun and ere the going down thereof. And glorify Him some hours of the night and at the two ends of the day, that thou mayst find acceptance.

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾

३३. दे० आयत १०० और १२६।
३४. अर्थात् ऐसे व्यक्ति को संसार में कभी भी वास्तविक सुख और शान्ति प्राप्त न होगी। चाहे वह कितना ही धनी-मानी व्यक्ति क्यों न हो। उस का जीवन कलह और असन्तोष का जीवन होगा; उसे कभी चैन और आराम नहीं मिल सकता। सुखमय जीवन तो उन्हीं लोगों का होता है जो अपने वास्तविक स्वामी को पहचानते और उस की आज्ञा का पालन करते हैं। चाहे वे निर्धन और ग़रीब ही क्यों न हों।
३५. यह संकेत है उस "संकीर्ण जीवन" की ओर जिस का उल्लेख आयत १४४ में हुआ है।
३६. अर्थात् मक्का वालों को।
३७. यहाँ 'हम्द' (प्रशंसा) के साथ 'तसबीह' करने से अभिप्रेत 'नमाज़' पढ़नी है। 'नमाज़' के वक़्तों की ओर भी यहाँ संकेत कर दिया गया है। सूर्य उदय होने से पूर्व 'फ़ज्र' की नमाज़ पढ़ी जाती है। रात की घड़ियों में जो 'नमाज़े पढ़ते हैं वे 'इशा' और 'तहज्जुद' की नमाज़ें हैं।
३८. दे० सूरा अज़-ज़ुहा आयत ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३१. और जो कुछ कि हम ने सांसारिक जीवन की चमक-दमक, इन नाना प्रकार के लोगों को बरतने को दे रक्खी है, ताकि उस के द्वारा इन को आज़माइश में डालें, कदापि उस की ओर आँख उठा कर न देखो[३९] । और तेरे 'रब' की रोज़ी ही उत्तम और अधिक स्थायी है ।

131. And strain not thine eyes toward that which We cause some wedded pairs among them to enjoy, the flower of the life of the world, that We may try them thereby. The provision of thy Lord is better and more lasting.

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

१३२. और अपने लोगों को 'नमाज़' का हुक्म दो, और उस पर जमे रहो। हम तुम से कोई रोज़ी नहीं माँगते : रोज़ी तुम्हें हम देते हैं[४०] । और परिणाम 'तक़्वा' (ईश-भय) के लिए है ।

132. And enjoin upon thy people worship, and be constant therein. We ask not of thee a provision: We provide for thee. And the sequel is for righteousness.

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾

१३३. और वे कहते हैं : यह ('रसूल') अपने 'रब' की ओर से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं लाता ! क्या उन के पास उस की खली दलील नहीं आ गई जो कुछ कि अगले 'सहीफ़ों' (आसमानी किताबों) में है[४१] ?

133. And they say: If only he would bring us a miracle from his Lord! Hath there not come unto them the proof of what is in the former Scriptures?

وَقَالُوا۟ لَوْلَا يَأْتِينَا بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّهِۦٓ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ﴿١٣٣﴾

१३४. और यदि हम उस के (आने से) पहले इन्हें किसी यातना से विनष्ट कर देते, तो ये कहते : हमारे 'रब' ! तू ने हमारे पास कोई 'रसूल' क्यों न भेजा कि हम इस से पहले कि अपमानित और रुसवा हों तेरी 'आयतों' का पालन करते !

134. And if We had destroyed them with some punishment before it, they would assuredly have said: Our Lord! If only thou hadst sent unto us a messenger, so that we might have followed Thy revelations before we were (thus) humbled and disgraced!

وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴿١٣٤﴾

१३५. कह दो : हर एक प्रतीक्षा में है; तो तुम भी प्रतीक्षा करो ! जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्ग (पर चलने) वाला है, और किस ने मार्ग पा लिया है ।

135. Say: Each is awaiting; so await ye! Ye will come to know who are the owners of the path of equity, and who is right.

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا۟ ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَٰبُ ٱلصِّرَٰطِ ٱلسَّوِىِّ وَمَنِ ٱهْتَدَىٰ ﴿١٣٥﴾

———

३९. दे० सूरा अल-हिज्र आयत ८८ । आशय यह है कि यदि धनवान लोग 'ईमान' नहीं लाते हैं तो इस की चिन्ता न करो ।

४०. "अनन्श्रनन्यो अभिचाकशीति" (ऋ० १-१६४-२०) अर्थात् वह खाता नहीं, जीवों के लिए खाने की व्यवस्था करता है ।

४१. अर्थात् क्या यह किसी चमत्कार से कम है कि उन्हीं में से एक ऐसे व्यक्ति ने जिसे पढ़ने-लिखने और शिक्षा प्राप्त करने का जीवन में कभी अवसर नहीं मिल सका, एक ऐसा ग्रन्थ प्रस्तुत कर दिया है जिस ने अपने में अगली समस्त 'किताबों' को समो लिया है । जिस में वे सभी मूल शिक्षायें आ गई हैं जो अगली 'किताब़ों' में दी गई थीं । मनुष्य को सीधा मार्ग दिखाने के लिए उन 'किताबों' में जो कुछ भी था वह इस 'किताब' में न केवल यह कि संचित कर दिया गया है बल्कि उसे स्पष्ट रूप से इस प्रकार बयान किया गया है कि उसे एक बद्दू और बिना पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी समझ कर अपने जीवन को सफल बना सकता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१—अल-अंबिया
(परिचय)

नाम (The Title)

'अंबिया' 'नबी' का बहुवचन है। इस 'सूरा' में बहुत से नबियों का जिक्र आया है, इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' का नाम अल-अंबिया रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं और उस की वर्णन-शैली से अनुमान होता है कि यह 'सूरा' मक्का के मध्य काल की सूरतों में से है।

वार्त्तायें

इस से पहले की दो सूरतों में क्रमशः हज़रत मसीह अ० और हज़रत मूसा अ० के क़िस्से बयान हुये हैं, प्रस्तुत 'सूरा' में विशेष रूप से हज़रत इबराहीम अ० का किस्सा विस्तारपूर्वक बयान हुआ है। पिछली सूरतों में विशेषतः अवज्ञाकारी लोगों की यातना का उल्लेख हुआ है, प्रस्तुत 'सूरा' में विशेष रूप से अल्लाह के नेक बन्दों के मुक्ति पाने का उल्लेख किया गया है।

इस 'सूरा' में लोगों को सावधान करते हुये कहा गया है कि अल्लाह की दृष्टि से हिसाब का समय बहुत निकट आ गया है; परन्तु 'रसूल' का इन्कार करने वाले हैं कि खेल-तमाशे में पड़े हुये हैं। 'नबी' सल्ल० के विरुद्ध परस्पर कानाफूसी करते हैं। कहते हैं कि यदि वह अल्लाह का 'रसूल' है तो कोई निशानी ला कर दिखाये जिस तरह पिछले 'रसूलों' ने निशानियाँ पेश की थीं। उन्हें इस का भी इन्कार है कि एक दिन अल्लाह अपने बन्दों के बीच फ़ैसला करने वाला है। वे समझते हैं कि अल्लाह ने केवल खेल-तमाशे और मनोरंजन लीला के तौर पर इस संसार की रचना की है। हानि-लाभ देवताओं के हाथ में है। प्रस्तुत 'सूरा' में मक्का वालों की इस तरह की धारणाओं का तर्कसिद्ध खण्डन किया गया है। उन्हें 'नबियों' के जीवन-वृत्तान्त सुना कर समझाया गया है कि इस लोक में जितने भी 'नबी' आये हैं सब-के-सब मनुष्य और अल्लाह के बन्दे थे। उन पर मुसीबतें आईं, उन के शत्रुओं ने उन का उन्मूलन करना चाहा परन्तु अल्लाह ने असाधारण रीति से उन की सहायता की; और उन्हें और उन के अनुयायियों को कष्टों और मुसीबतों से छुटकारा दिया।

यह बात भी उन के सामने रक्खी गई कि समस्त 'नबियों' का 'दीन' (धर्म) एक ही था। उसी 'दीन' का निमन्त्रण आज मुहम्मद सल्ल० दे रहे हैं। मानव-जाति का वास्तविक 'दीन' यही है।

सूरा के अन्त में बताया गया है कि मनुष्य के लिए मुक्ति-मार्ग यही है कि वह उस 'दीन' (धर्म) का पालन करे जिसे अल्लाह का 'रसूल' लोगों के सामने पेश कर रहा है। जो लोग इस 'दीन' को अपनायेंगे वही अल्लाह के यहाँ सफल हो सकेंगे और वही धरती के उत्तराधिकारी होंगे। इस 'सूरा' में यह संकेत भी किया गया है कि मक्का वालों के करतूतों का परिणाम जल्द ही उन के सामने आयेगा। वह समय दूर नहीं कि 'इस्लाम' को विजय प्राप्त होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अंबिया

(मक्का में उतरी –– 'आयतें' ११२)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

*१. क़रीब आ गया लोगों का हिसाब,[1] और वे हैं कि ग़फ़लत में मुँह मोड़े हुये हैं।

२. उन के पास जो नवीन अनुस्मारक[2] भी उन के 'रब' की ओर से आता है उसे खेल में लगे हुये सुनते हैं।

३. दिल उन के असावधान होते हैं। और इन ज़ुल्म करने वालों ने चुपके-चुपके काना-फूसी की कि यह व्यक्ति इस के सिवा क्या है कि तुम्हीं जैसा एक आदमी है? फिर क्या देखते-भालते तुम जादू में फँसे जा रहे हो[3]?

४. ('रसूल' ने) कहा: मेरा 'रब' हर उस बात को जानता है जो आकाश और धरती में (की जाती) हो। वह सुनने वाला और जानने वाला है।

५. बल्कि, वे कहते हैं: ये उड़ते स्वप्न हैं; बल्कि, इस ने इसे स्वयं गढ़ लिया है; बल्कि, यह एक कवि है। तो फिर चाहिए कि हमारे पास कोई निशानी लें आये जैसे कि पहले 'रसूल' (निशानियों के साथ) भेजे गये थे।

६. और इन से पहले कोई बस्ती जिसे हम ने विनष्ट किया 'ईमान' न लाई फिर क्या ये 'ईमान' लायेंगे?

७. और (हे मुहम्मद!) तुम से पहले भी हम ने आदमियों ही को 'रसूल' बना कर भेजा जिन की ओर हम 'वह्य' भेजते थे यदि तुम नहीं जानते तो 'ज़िक्र' वालों ('किताब' का ठीक ज्ञान रखने वालों) से पूछ लो।

THE PROPHETS
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Their reckoning draweth nigh for mankind, while they turn away in heedlessness.

2. Never cometh there unto them a new reminder from their Lord but they listen to it while they play,

3. With hearts preoccupied. And they confer in secret. The wrong-doers say: Is this other than a mortal like you? Will ye then succumb to magic when ye see (it)?

4. He saith: My Lord knoweth what is spoken in the heaven and the earth. He is the Hearer, the Knower.

5. Nay, say they, (these are but) muddled dreams: nay, he hath but invented it; nay, he is but a poet. Let him bring us a portent even as those of old (who were God's messengers) were sent (with portents).

6. Not a township believed of those which We destroyed before them (though We sent them portents): would they then believe?

7. And We sent not (as Our messengers) before thee other than men whom We inspired. Ask the followers of the Reminder if ye know not?

سورة الأنبياء مكية وهي مائة واثنتا عشرة آية وسبع ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١
مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢
لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣
قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤
بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥
مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْــَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧

* यहाँ से १७वाँ पारा (Part XVII) शुरू होता है।

१. अर्थात् वह समय जब कि उन से उन का हिसाब लिया जायेगा।

२. अर्थात् क़ुरआन, 'किताब'।

३. 'नबी' सल्ल० के बारे में मक्का के 'काफ़िर' सरदार कहते थे कि उस के व्यक्तित्व और उस की बातों में यदि कोई आकर्षण है तो वह जादू के प्रभाव से है। तुम यदि अपना भला चाहते हो तो उस से सम्पर्क न रक्खो और न उस की बात सुनो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. और हम ने उन ('रसूलों') को कोई ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे खाना न खायें, और न वे सदैव रहने वाले थे।

९. फिर हम ने उन के साथ वादा सच्चा कर दिया[४] तो उन्हें और जिस किसी को हम ने चाहा बचा लिया, और मर्यादाहीन लोगों को हम ने विनष्ट कर दिया।

१०. लो, हम ने तुम्हारी ओर एक 'किताब' उतार दी है जिस में तुम्हारे लिए 'ज़िक्र' है।[५] तो क्या तुम समझते नहीं हो ?

११. कितनी ही बस्तियों को जो ज़ालिम थीं हम ने पीस कर रख दिया, और उन के बाद दूसरी किसी जाति को उठाया !

१२. फिर, जब उन्हें हमारी यातना की अनुभूति हुई, तो लग वहाँ से भागने !

१३. (कहा गया) : भागो नहीं, लौट चलो जहाँ तुम्हें आनन्द मिला था और अपने घरों को, कदाचित् तुम से पूछा जाये[६]।

१४. कहने लगे : अफ़सोस हम पर ! वास्तव में हम ज़ालिम (पापी) थे।

१५. फिर उन की निरन्तर यही पुकार रही यहाँ तक कि हम ने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे कटी खेती और बुझा हुआ अंगारा हो[७]।

१६. और हम ने इस आकाश और धरती को और जो कुछ इन दोनों के बीच है इस तौर पर नहीं बनाया है कि हम कोई खेल (निरर्थक-कार्य) करने वाले थे।

8. We gave them not bodies that would not eat food, nor were they immortals.

9. Then We fulfilled the promise unto them. So We delivered them and whom We would, and We destroyed the prodigals.

10. Now We have revealed unto you a Scripture wherein is your Reminder. Have ye then no sense?

11. How many a community that dealt unjustly have We shattered, and raised up after them another folk!

12. And, when they felt Our might, behold them fleeing from it!

13. (But it was said unto them): Flee not, but return to that (existence) which emasculated you and to your dwellings, that we may be questioned.

14. They cried: Alas for us! Lo! we were wrong-doers.

15. And this their crying ceased not till We made them as reaped corn, extinct.

16. We created not the heaven and the earth and all that is between them in play.

وَمَا جَعَلْنَٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ
ٱلطَّعَامَ وَمَا كَانُوا۟ خَٰلِدِينَ ⑧

ثُمَّ صَدَقْنَٰهُمُ ٱلْوَعْدَ فَأَنجَيْنَٰهُمْ وَمَن
نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا ٱلْمُسْرِفِينَ ⑨

لَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتَٰبًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑩

وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً
وَأَنشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا ءَاخَرِينَ ⑪

فَلَمَّآ أَحَسُّوا۟ بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا
يَرْكُضُونَ ⑫

لَا تَرْكُضُوا۟ وَٱرْجِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَآ
أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسَٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تُسْـَٔلُونَ ⑬

قَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ⑭

فَمَا زَالَت تِّلْكَ دَعْوَىٰهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَٰهُمْ
حَصِيدًا خَٰمِدِينَ ⑮

وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لَٰعِبِينَ ⑯

४. अर्थात् उन की सहायता और उन के शत्रुओं को विनष्ट करने का जो वादा हम ने उन से किया था उसे हम ने पूरा किया।

५. अर्थात् तुम्हारे लिए सत्य की याददिहानी है यदि तुम 'ईमान' नहीं लाये तो अल्लाह का वादा तुम पर पूरा हो कर रहेगा; तुम अल्लाह की यातना से नहीं बच सकते। दे० आयत २ और २४।

६. यह व्यंग्यात्मक शैली है। मतलब यह है कि उधर चलो जहाँ तुम सुख और भोग-विलास में पड़े रहे हो। कदाचित् तुम से पूछा जाये कि तुम्हारा वह वैभव कहाँ गया जिस पर तुम्हें बड़ा गर्व था। सम्भव है तुम्हारे सेवक अब भी तुम्हारे सामने हाथ बाँधे खड़े हों और पूछें कि सरकार का क्या हुक्म है। हो सकता है लोगों को अब भी तुम्हारी सलाह और सम्मति की आवश्यकता हो और वे इस के लिए तुम्हारे पास आवें।

७. जिस 'हिसाब' का उल्लेख सूरा की पहली आयत में किया गया है उसे आयत १ से ले कर आयत १५ तक इतिहास द्वारा प्रमाणित किया गया है; आगे आयत १६ से १८ तक अल्लाह के गुणों से उसे प्रमाणित किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. यदि हम कोई खेलवाड़ बनाना चाहते, तो उसे अपने पास से बना लेते[८]—और यदि हम ऐसा करने वाले होते।

17. If We had wished to find a pastime, We could have found it in Our presence—if We ever did.

لَوْ أَرَدْنَا أَن نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنَاهُ مِن لَّدُنَّا إِن كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٧﴾

१८. परन्तु हम तो असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं, तो वह उस का सिर तोड़ देता है फिर देखते-देखते वह मिट जाता है। और जो गुण तुम बयान करते हो उस के कारण विनाश है तुम्हारे लिए[९]।

18. Nay, but We hurl the true against the false, and it doth break its head and lo! it vanisheth. And yours will be woe for that which ye ascribe (unto Him).

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

१९. आकाशों और धरती में जो कोई है उसी का है। और जो ('फ़िरिश्ते') उस के पास हैं वे न तो अपने को बड़ा समझ कर उस की 'इबादत' से मुँह फेरते हैं, और न थकते हैं;

19. Unto Him belongeth whosoever is in the heavens and the earth. And those who dwell in His presence are not too proud to worship Him, nor do they weary;

وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِندَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾

२०. रात और दिन 'तसबीह' करते रहते हैं; ठहरते नहीं।

20. They glorify (Him) night and day; they flag not.

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾

२१. क्या इन्हों ने धरती (की चीज़ों में) से 'इलाह' (इष्ट देव) बनाये हैं कि वे (बेजान में जान डाल कर) उठा खड़ा करेंगे?

21. Or have they chosen gods from the earth who raise the dead?

أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾

२२. यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा और दूसरे 'इलाह' (पूज्य) भी होते, तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। तो अल्लाह की महिमा के, जो राजसिंहासन का 'रब' हैं, प्रतिकूल है जो गुण ये बयान करते हैं।

22. If there were therein gods beside Allah, then verily both (the heavens and the earth) had been disordered. Glorified be Allah, the Lord of the Throne, from all that they Ascribe (unto Him).

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾

२३. वह जो कुछ करता है उस की पूछ-ताछ उस से नहीं की जा सकती, और उन से (उन के कर्मों के बारे में) पूछा जायेगा।

23. He will not be questioned as to that which He doth, but they will be questioned.

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾

२४. क्या उसे छोड़ कर इन्हों ने दूसरे 'इलाह' (पूज्य) बना लिये हैं? कह दो: लाओ अपना प्रमाण। यह है अनुस्मारक उन का जो मेरे साथ हैं और उन का जो मुझ से पहले थे,[१०] परन्तु इन में अधिकतर लोग सत्य को नहीं जानते अत: मुँह मोड़े हुये हैं।

24. Or have they chosen other gods beside Him? Say: Bring your proof (of their godhead). This is the Reminder of those with me and those before me, but most of them know not the Truth and so they are averse.

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

८. अर्थात् यदि हमें खेल ही अभीष्ट होता तो इस का हम अपने तौर पर प्रबन्ध कर लेते; दूसरों को इस के लिए संसार के नाना प्रकार के संघर्षों के अन्तर्गत तकलीफ़ में क्यों डालते।

९. यहाँ असत्य ज़्यादा दिनों तक नहीं फल-फूल सकता, सत्य से उस का टकराव हो कर ही रहता है जिस के फलस्वरूप उसे मुँह की खानी पड़ती है। और वह मलियामेट हो कर रह जाता है।

१०. क़ुरआन और पिछली किताबें तौरात और इन्जील आदि किसी से भी यह मालूम नहीं होता कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और भी है जिसे ईश और पूज्य होने का कुछ भी हक़ हासिल हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. और हम ने तुम से पहले जो 'रसूल' भी भेजा उसे हम ने यही 'वह्य' की कि मेरे सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं, तो तुम मेरी ही 'इबादत' करो।

25. And We sent no messenger before thee but We inspired him, (saying): There is no God save Me (Allah), so worship Me.

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ
إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠
فَٱعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

२६. और ये कहते हैं : 'रहमान' औलाद रखता है। महिमावान् है वह ! बल्कि (जिन्हें ये बेटे समझ रहे हैं) वे तो सम्मानित बन्दे ('फ़िरिश्ते') हैं;

26. And they say: The Beneficent hath taken unto Himself a son. Be He glorified! Nay, but (those whom they call sons) are honoured slaves;

وَقَالُوا۟ ٱتَّخَذَ ٱلرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۚ
بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

२७. उस के आगे बढ़ कर नहीं बोलते, और वे उस के हुक्म पर काम करते हैं।

27. They speak not until He hath spoken, and they act by His command.

لَا يَسْبِقُونَهُۥ بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ
يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

२८. वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और वे किसी की सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उस के जिस से वह (अल्लाह) राज़ी हो, और वे उस के भय से डरते रहते हैं।

28. He knoweth what is before them and what is behind them, and they cannot intercede except for him whom He accepteth, and they quake for awe of Him.

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم
مِّنْ خَشْيَتِهِۦ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

२९. और जो कोई उन में से कह दे कि अल्लाह के सिवा मैं एक 'इलाह' (पूज्य) हूँ, तो यही है वह व्यक्ति जिसे हम 'जहन्नम' का बदला देंगे। जालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

29. And one of them who should say: Lo! I am a god beside Him, that one We should repay with hell. Thus We repay wrong-doers.

وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّىٓ إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِۦ
فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى
ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾

३०. क्या उन लोगों ने जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया देखा नहीं[11] कि ये आकाश और धरती पहले (सब-के-सब) परस्पर मिले हुये थे, फिर हम ने उन्हें अलग-अलग किया,[12] और पानी से हर जानदार चीज़ बनाई ? तो क्या वे मानते नहीं ?

30. Have not those who disbelieve known that the heavens and the earth were of one piece, then We parted them, and We made every living thing of water? Will they not then believe?

أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَٰهُمَا ۖ وَ
جَعَلْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ ۖ أَفَلَا
يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

३१. और हम ने धरती में अटल पहाड़ रख दिये ताकि वह लोगों को ले कर (एक ओर) ढलक न जाये,[13] और हम ने उन में ऐसे दर्रे बनाये कि रास्तों का काम देते हैं ताकि लोग मार्ग पायें[14]।

31. And We have placed in the earth firm hills lest it quake with them, and We have placed therein ravines as roads that haply they may find their way.

وَجَعَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ رَوَٰسِىَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ
وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

११. अर्थात् क्या उन्हों ने विचार नहीं किया।

१२. अर्थात् यह विश्व वर्तमान रूप में आने से पूर्व पूरा-का-पूरा एक ही पदार्थ के रूप में था। एक ही प्रकार की एक विशेष चीज़ जो परस्पर मिली हुई थी अल्लाह ने उसे विभिन्न भागों में बाँट दिया। और उन से विभिन्न ग्रह-नक्षत्र आदि पैदा किये। यह पदार्थ कैसा था ? यह एक प्रकार का धुआँ अर्थात् गैस (Gas) था। दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ११।

१३. दे० सूरा अन-नह्ल फुट नोट ८।

१४. पहाड़ों के बीच दर्रे रख दिये जिन के कारण पहाड़ों को पार करने के लिए रास्ते निकल आये। इसी तरह ज़मीन की बनावट भी ऐसी रक्खी कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए रास्ते निकल आते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. और हम नें आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया[१५]। परन्तु वे हैं कि उस (गगन के बीच) की निशानियों की ओर से मुंह मोड़े हुये हैं।

32. And We have made the sky a roof withheld (from them). Yet they turn away from its portents.

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

३३. और वही है जिस ने रात और दिन बनाये, और सूरज और चांद। सब (तारागण) एक-एक मण्डल में तैर रहे हैं[१६]।

33. And He it is Who created the night and the day, and the sun and the moon. They float, each in an orbit.

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

३४. और (हे मुहम्मद !) हम नें तुम से पहले भी किसी मनुष्य के लिए (संसार में) अमरता नहीं रक्खी। फिर क्या ! यदि तुम्हें मृत्यु आई, तो ये सदैव रहने वाले हैं ?

34. We appointed immortality for no mortal before thee. What! if thou diest, can they be immortal?

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

३५. हर जीव को मौत का मज़ा चखना है, और हम अच्छी, और बुरी हालतों में डाल कर तुम सब की परीक्षा करते हैं। और तुम्हें हमारी ओर पलट कर आना है।

35. Every soul must taste of death, and We try you with evil and with good, for ordeal. And unto Us ye will be returned.

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

३६. और जिन लोगों ने 'कुफ़' किया जब वे तुम्हें देखते हैं, तो बस तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) : क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे 'इलाहों' (पूज्यों) का (बुराई के साथ) ज़िक्र करता है ? और उन का हाल यह है कि वे 'रहमान' के ज़िक्र से इन्कार करते हैं।

36. And when those who disbelieve behold thee, they but choose thee out for mockery, (saying), Is this he who maketh mention of your gods? And they would deny all mention of the Beneficent.

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

३७. मनुष्य उतावला पैदा किया गया है। मैं जल्द ही तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूं, तो तुम जल्दी न मचाओ।

37. Man is made of haste. I shall show you My portents, but ask Me not to hasten.

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

३८. और वे कहते हैं : यह (यातना का) वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो ?

38. And they say: When will this promise (be fulfilled), if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

३९. क्या ही अच्छा होता कि इन लोगों को जिन्हों ने 'कुफ़' किया है उस समय का ज्ञान होता जब कि ये न तो अपने चेहरों पर से आग को रोक सकेंगे और न अपनी पीठों पर से, और न इन्हें सहायता मिल सकेगी !

39 If those who disbelieved but knew the time when they will not be able to drive off the fire from their faces and from their backs, and they will not be helped!

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

१५. दे० सूरा अल-हिज्र फुटनोट ९, १०, ११ और १२।

१६. प्रत्येक नक्षत्र अपने नभ-मण्डल में गतिशील है। ऐसा नहीं कि ये तारे किसी ठोस आकाश में जड़े हों और वह इन्हें लिये हुए घूमता हो, जैसा कि प्राचीन काल में ज्योतिषियों (Astronomers) का मत रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. बल्कि वह ('क़ियामत') अचानक इन पर आयेगी और इन के होश उड़ा देगी, फिर न तो ये उसे हटा सकेंगे, और न इन्हें मुहलत मिलेगी।

40. Nay, but it will come upon them unawares so that it will stupefy them, and they will be unable to repel it, neither will they be reprieved.

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

४१. तुम से पहले भी कितने ही 'रसूलों' की हँसी उड़ाई जा चुकी है, परन्तु जिन लोगों ने उन की हँसी उड़ाई उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिस का वे मज़ाक़ उड़ा रहे थे[१७]।

41. Messengers before thee, indeed, were mocked, but that whereat they mocked surrounded those who scoffed at them.

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

४२. (हे 'नबी'!) कहो : 'रहमान' को छोड़ कर कौन है जो रात और दिन को तुम्हारी रक्षा करता हो ? बल्कि ये अपने 'रब' के ज़िक्र से मुँह मोड़े हुये हैं !

42. Say: Who guardeth you in the night or in the day from the Beneficent? Nay, but they turn away from mention of their Lord!

قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

४३. क्या हमारे सिवा उन के और 'इलाह' (पूज्य) हैं जो उन्हें बचाते हों ? वे (उन के पूज्य) स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकते हैं और न हमारे मुक़ाबले में उन की रक्षा की जा सकती है।

43. Or have they gods who can shield them from Us? They cannot help themselves nor can they be defended from Us.

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

४४. बल्कि हम ने इन्हें और इन के पूर्वजों को जीवन-सामग्री दी यहाँ तक कि आयु इन पर दीर्घ हो गई[१८]। तो क्या ये देखते नहीं कि हम भूमि को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं[१९] ? तो क्या ये जीतने वाले हैं ?

44. Nay, but We gave these and their fathers ease until life grew long for them. See they not how We visit the land, reducing it of its outlying parts? Can they then be the victors?

بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

४५. कह दो : मैं तो केवल 'वह्य' के द्वारा तुम्हें सचेत करता हूँ। और बहरे पुकार को सुनते नहीं हैं जब कि उन्हें सचेत किया जाये।

45. Say (O Muhammad, unto mankind): I warn you only by the Inspiration. But the deaf hear not the call when they are warned.

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

४६. और यदि तेरे 'रब' की यातना का तनिक सा झोंका भी इन्हें लग जाये, तो कहने लगें : अफ़सोस हम पर ! निस्सन्देह हम ज़ालिम (पापी) थे।

46. And if a breath of thy Lord's punishment were to touch them, they assuredly would say: Alas for us! Lo! we were wrong-doers.

وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾

४७. और 'क़ियामत' के दिन हम इन्साफ़ के तराज़ू रक्खेंगे फिर किसी व्यक्ति पर तनिक भी ज़ुल्म न किया जायेगा। और यदि राई के दाने के बराबर भी कुछ (किया-धरा) होगा हम उसे ला हाज़िर करेंगे। और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।

47. And We set a just balance for the Day of Resurrection so that no soul is wronged in aught. Though it be of mustard seed, We bring it. And We suffice for reckoners.

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾

१७. अर्थात् अल्लाह की यातना ने उन्हें अपनी लपेट में ले लिया।
१८. अर्थात् आयु उन्हें दीर्घ जान पड़ी और वे ग़ाफ़िल हो गये; समझने लगे कि जो कुछ उन्हें प्राप्त है वह उन से छिन नहीं सकता।
१९. दे० सूरा अर-रअ्द आयत ४१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. और हम ने मूसा और हारून को कसौटी और प्रकाश और अनुस्मारक प्रदान किया था डर रखने वालों के लिए,

48. And We verily gave Moses and Aaron the Criterion (of right and wrong) and a light and a Reminder for those who keep from evil.

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

४९. जो बिना देखे अपने 'रब' से डरते हैं और जिन्हें उस (आने वाली) घड़ी का डर लगा हुआ है।

49. Those who fear their Lord in secret and who dread the Hour (of doom).

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُم
مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

५०. यह एक बरकत वाला अनुस्मारक है जिसे हम ने उतारा है तो क्या तुम इस से इन्कार करते हो ?

50. This is a blessed Reminder that We have revealed: Will ye then reject it?

وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَاهُ ۚ أَفَأَنتُمْ
لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٠﴾

५१. और इस से पहले हम ने इब्राहीम को उस की चेतनता (सूझ-बूझ) प्रदान की थी, और हम उसे भली-भाँति जानते थे।

51. And We verily gave Abraham of old his proper course, and We were Aware of him,

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن
قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ﴿٥١﴾

५२. याद करो जब उस ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : ये मूर्तियाँ कैसी हैं जिन के साथ तुम लगे बैठे हो ?

52. When he said unto his father and his folk: What which ye pay devotion?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَٰذِهِ التَّمَاثِيلُ
الَّتِي أَنتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٢﴾

५३. उन्हों ने कहा : हम ने अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते पाया है।

53. They said: We found our fathers worshippers of them.

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾

५४. उस ने कहा : तुम भी और तुम्हारे पूर्वज भी स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में पड़े रहे।

54. He said: Verily ye and your fathers were in plain error.

قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾

५५. उन्हों ने कहा : क्या तू हमारे पास सच्ची बात ले कर आया है, या तू हँसी-खेल करने वालों में से है[२०] ?

55. They said: Bringest thou unto us the truth, or art thou some jester?

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

५६. उस ने कहा : नहीं, बल्कि, वास्तव में तुम्हारा 'रब' आकाशों और धरती का 'रब' है जिस ने उन्हें पैदा किया है; और मैं इस पर तुम्हारे आगे गवाह हूं।

56. He said: Nay, but your Lord is the Lord of the heavens and the earth, Who created them; and I am of those who testify unto that.

قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ
الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾

५७. और अल्लाह की क़सम, इस के बाद कि तुम पीठ फेर कर लौटोगे मैं तुम्हारी मूर्तियों के साथ एक चाल चलूंगा।

57. And, by Allah, I shall circumvent your idols after ye have gone away and turned your backs.

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُم بَعْدَ أَن
تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾

५८. अतएव उस ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, सिवाय उन के एक बड़े (बुत) के,[२१] कदाचित् वे उन की ओर पलटें।

58. Then he reduced them to fragments, all save the chief of them, that haply they might have recourse to it.

فَجَعَلَهُمْ جُذَاذًا إِلَّا كَبِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ
إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾

२०. अर्थात् वास्तव में तेरा यही विचार है या ये बातें यों ही हंसी-मज़ाक में कह रहा है ?

२१. जब लोग चले गए तो अवसर पा कर हज़रत इबराहीम अ० ने समस्त मूर्तियों को तोड़ डाला केवल एक बड़ी मूर्ति को रहने दिया। ताकि लोग देख लें कि उन के देवता कितने विवश हैं वे कुछ भी अधिकार नहीं रखते; वे स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९. (उन्होंने आ कर मूर्तियों की यह दशा देखी तो) कहने लगे : यह हमारे देवताओं के साथ किस ने किया है ? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है।

59. They said: Who hath done this to our gods? Surely it must be some evil-doer.

قَالُوا مَن فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ٥٩

६०. (कुछ लोग) बोले : हम ने एक नवयुवक को इन की चर्चा करते सुना है, जिसे इब्राहीम कहा जाता है।

60. They said: We heard a youth make mention of them, who is called Abraham.

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ٦٠

६१. उन्हों ने कहा : तो उसे ले आओ लोगों के सामने ताकि वे देखें।

61. They said: Then bring him (hither) before the people's eyes that they may testify.

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ٦١

६२. (इब्राहीम के आ जानें पर) उन्हों ने कहा : क्या तू ने हमारे देवताओं के साथ यह कर्म किया है, हे इब्राहीम ?

62. They said: Is it thou who hast done this to our gods, O Abraham?

قَالُوا أَأَنتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ٦٢

६३. उस नें कहा : बल्कि, इन में के इस बड़े नें किया है। इन्हीं से पूछ लो, यदि ये बोलते हों[२२]।

63. He said: But this, their chief hath done it. So question them, if they can speak.

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِن كَانُوا يَنطِقُونَ ٦٣

६४. वे अपने अन्तरात्मा की ओर पलटे और (अपने जी में) कहने लगे : वास्तव में तुम स्वयं ज़ालिम हो।

64. Then gathered they apart and said: Lo! ye yourselves are the wrong doers.

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنتُمُ الظَّالِمُونَ ٦٤

६५. फिर वे औंधा दिये गए अपने सिरों के बल,[२३] (बोले) : यह तो तू जानता है कि ये बोलते नहीं।

65. And they were utterly confounded, and they said: Well thou knowest that these speak not.

ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰؤُلَاءِ يَنطِقُونَ ٦٥

६६. (इब्राहीम ने) कहा : फिर क्या तुम अल्लाह के सिवाय उस चीज़ को पूजते हो जो न तुम्हारा कुछ बना सके, और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सके ?

66. He said: Worship ye then instead of Allah that which cannot profit you at all, nor harm you?

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ٦٦

६७. धिक्कार है तुम पर और उन पर जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो ! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

67. Fie on you and all that ye worship instead of Allah! Have ye then no sense?

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٧

६८. उन्हों ने कहा : जला डालो इसे और सहायक हो अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ करना है।

68. They cried: Burn him and stand by your gods, if ye will be doing.

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ٦٨

६९. हम ने कहा : हे आग ! ठण्डी हो जा और सलामती बन जा इब्राहीम पर।

69. We said: O fire be coolness and peace for Abraham!

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ٦٩

२२. यह बात हज़रत इब्राहीम अ० ने कोई झूठ बोलने के ध्येय से नहीं कही बल्कि यह बात उन्हों ने केवल तर्क और उपहास के रूप में कही ताकि वे यह सोचने पर मजबूर हों कि उन के ये देवता बिल्कुल विवश हैं।

२३. अर्थात् वे लज्जित हुए, उन के सिर लज्जावश झुक गए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०. उन्हों ने उस के साथ साज़िश करनी चाही, परन्तु हम ने उन्हें अत्यन्त घाटे में डाल दिया।

70. And they wished to set a snare for him, but We made them the greater losers.

وَأَرَادُوا بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾

७१. और हम उसे और लूत को उस भूमि की ओर निकाल ले गए जिस में हम ने संसार वालों के लिए बरकत रक्खी है[२४]।

71. And We rescued him and Lot (and brought them) to the land which We have blessed for (all) peoples.

وَنَجَّيْنَٰهُ وَلُوطًا إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا فِيهَا لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٧١﴾

७२. और हम ने उसे इसहाक़ (जैसा बेटा) दिया, और तद् अधिक याक़ूब। और प्रत्येक को हम ने नेक बनाया।

72. And We bestowed upon him Isaac, and Jacob as a grandson. Each of them We made righteous.

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾

७३. और हम ने उन्हें नायक बनाया, जो हमारे हुक्म से (लोगों को सीधा) मार्ग दिखाते थे और हम ने उन की ओर नेक कामों के करने और 'नमाज़' क़ायम करने और 'ज़कात' देने की 'वह्य' की, और वे हमारे (उपासक) थे।

73. And We made them chiefs who guide by Our command, and We inspired in them the doing of good deeds and the right establishment of worship and the giving of alms, and they were worshippers of Us (alone).

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ ۖ وَكَانُوا لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾

७४. और लूत को हम ने 'हुक्म' और ज्ञान प्रदान किया, और उसे उस बस्ती से छुटकारा दिया जो गन्दे कर्म करती थी—वास्तव में वे बड़े ही बुरे, अवज्ञाकारी थे—

74. And unto Lot We gave judgement and knowledge, and We delivered him from the community that did abominations, Lo! they were folk of evil, lewd:

وَلُوطًا ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَرْيَةِ ٱلَّتِى كَانَت تَّعْمَلُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَٰسِقِينَ ﴿٧٤﴾

७५. और उसे (लूत को) हम ने अपनी दयालुता (की छाया) में प्रविष्ट किया। निस्सन्देह वह अच्छे लोगों में से था।

75. And We brought him in unto Our mercy. Lo! he was of the righteous.

وَأَدْخَلْنَٰهُ فِى رَحْمَتِنَآ ۖ إِنَّهُۥ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾

७६. और नूह (पर भी हमारी कृपा हुई है), याद करो जब कि उस ने पूर्वकाल में पुकारा था,[२५] तो हम ने उस की सुन ली और उसे और उस के लोगों को महा पीड़ा[२६] से छुटकारा दिया।

76. And Noah, when he cried of old, We heard his prayer and saved him and his house-hold from the great affliction.

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ فَنَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥ مِنَ ٱلْكَرْبِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

७७. और उस जाति के मुक़ाबले में उस की सहायता की जिस ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया था। वास्तव में वे बड़े ही बुरे लोग थे, तो हम ने उन सब को डुबो दिया।

77. And delivered him from the people who denied Our revelations. Lo! they were folk of evil, therefor did We drown them all.

وَنَصَرْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾

२४. शाम (Syria) और फ़लिस्तीन के भू-भाग की ओर संकेत है। यह भू-भाग संसार के उपजाऊ भूमि में से है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी इस भू-भाग पर अल्लाह की बड़ी कृपा रही है। जितने अधिक 'नबी' यहाँ हुए हैं दुनिया में कहीं और नहीं हुए। यहाँ दो हज़ार वर्ष तक 'नबियों' के आने का सिलसिला रहा है।

२५. यह उस प्रार्थना की ओर संकेत है जो हज़रत नूह अ० ने निरन्तर एक लम्बे समय तक अपनी जाति वालों को अल्लाह के 'दीन' (धर्म) की ओर बुलाने के पश्चात् की थी जबकि उन की जाति के नोग उन्हें झुठलाते ही जा रहे थे। दे० सूरा अल-क़मर आयत ९-१५ और सूरा नूह आयत २१-२८।

२६ महापीड़ा का तात्पर्य या तो वह यातना है जो तूफ़ान के रूप में हज़रत नूह अ० की जाति वालों पर आया था या फिर इस से अभिप्रेत वह कष्ट है जो एक मर्यादाहीन और दुश्चरित्र जाति के बीच जीवन व्यतीत करने से एक शिष्ट और भले व्यक्ति को पहुँचता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. और दाऊद और सुलैमान (पर भी हमारी कृपा रही), याद करो जब वे दोनों खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जब कि उस (खेती) में (रात के समय) कुछ लोगों की बकरियाँ फैल पड़ी थीं; और हम उन का फ़ैसला देख रहे थे।

78. And David and Solomon, when they gave judgement concerning the field, when people's sheep had strayed and browsed therein by night; and We were witnesses to their judgement.

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

७९. तो हम ने उस (मामले) की समझ सुलैमान को दी; और यों तो हर एक को हम ने 'हुक्म' और ज्ञान प्रदान किया था और दाऊद के साथ हम ने पहाड़ों को आधीन कर दिया था कि वे 'तसबीह' करते (दाऊद के साथ) और पक्षियों को भी। और ऐसा करने वाले हम ही थे।

79. And We made Solomon to understand (the case); and unto each of them We gave judgement and knowledge. And We subdued the hills and the birds to hymn (His) praise along with David. We were the doers (thereof).

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

८०. और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक पहनावा (कवच) बनाना सिखा दिया था ताकि तुम को तुम्हारी मार-काट से बचाए[२७]। फिर क्या तुम कृतज्ञता दिखलाते हो?

80. And We taught him the art of making garments (of mail) to protect you in your daring. Are ye then thankful?

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

८१. और सुलैमान के लिए हम ने वायु अधीन कर दी, प्रचण्ड वायु जो हुक्म से उस भू-भाग की ओर चलती थी। जिस में हम ने बरकत रक्खी है[२८]। और हम हर चीज़ के जानने वाले हैं।

81. And unto Solomon (We subdued) the wind in its raging. It set by His command toward the land which We had blessed. And of everything We are aware.

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

८२. और कितने ही 'शैतानों' को (अधीन किया था) जो उस के लिए डुबकी लगाते थे और इस के अतिरिक्त वे दूसरा काम भी करते थे, और उन की रखवाली करने वाले हम ही थे।

82. And of the evil ones (subdued We unto him) some who dived (for pearls) for him and did other work, and We were warders unto them.

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ۙ

८३. और अय्यूब (पर भी मैं ने कृपा की है) याद करो जब कि उस ने अपने 'रब' को पुकारा: मुझे बीमारी लग गई है, और तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है।

83. And Job, when he criep unto his Lord, (saying): Lo! adversity afflicteth me, and Thou art Most Merciful of all who show mercy.

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ۚۖ

२७. दे० सूरा अस-सबा। ऐतिहासिक और पुरातत्व खोजों के द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि मनुष्य ने १२०० और १००० ई० पू० से लोहे को प्रयोग में लाना शुरू किया है और हज़रत दाऊद अ० का समय भी यही है। खुदाइयों से लोहा पिघलाने की जो भट्टियाँ मिली हैं उन से अनुमान किया जाता है कि उस युग में लोहा पिघलाने आदि का उद्योग बहुत उन्नति पर था।

२८ दे० सूरा अस-सबा आयत १२ और सूरा सॉद० आयत ३६।

ऐतिहासिक खोजों और बाइबिल के अध्ययन से मालूम होता है कि हज़रत सुलैमान अ० ने अपने युग में बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार का सिलसला शुरू किया था। उन के जहाज़ लाल सागर से यमन और दूसरे दक्षिणी और पूर्वी देशों की ओर जाते थे। और दूसरी ओर रूम सागर के द्वारा पश्चिमी देशों की ओर भी उन के जहाज़ जाते रहते थे। उस समय में जहाज़ों का समुद्र में चलना अनुकूल वायु पर ही निर्भर था। यह अल्लाह की कृपा थी कि हज़रत सुलैमान अ० को अपने दोनों ही समुद्री बेड़े के लिए अनुकूल वायु मिल जाती थी। यह भी सम्भव है कि अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को वायु पर कोई विशेष अधिकार दिया हो और वे उस से इच्छानुसार काम लेते रहे हों।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. तो हम ने उस की (पुकार) सुन ली और जो तकलीफ़ उसे थी उस को दूर कर दिया, और उसे उस का परिवार दिया और उन के साथ वैसे ही और भी दिये दयालुता के रूप में अपने यहाँ से, और उपासकों के लिए अनुस्मारक के ध्येय से।

84. Then We heard his prayer and removed that adversity from which he suffered, and We gave him his household (that he had lost) and the like thereof along with them, a mercy from Our store, and a remembrance for the worshippers;

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

८५. और इस्माईल, और इदरीस, और ज़ुल-किफ़्ल[२९] (पर भी हमारी कृपा रही है)। ये सब 'सब्र' करने वाले थे।

85. And (mention) Ishmael, and Idris, and Dhu'l-Kifl. All were of the steadfast.

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

८६. और इन्हें हम ने अपनी दयालुता (की छाया) में प्रविष्ट किया। निस्सन्देह ये अच्छे लोगों में से थे।

86. And We brought them in unto Our mercy. Lo! they are among the righteous.

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

८७. और ज़ुन्नून[३०] (पर भी हमारी कृपा हुई), याद करो जब वह क्रुद्ध हो कर चला गया और समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे,[३१] फिर उस ने अँधियारियों[३२] में से पुकारा: नहीं है कोई 'इलाह' (पूज्य) सिवाय तेरे। महिमा हो तेरी! निस्सन्देह मैं ही अन्यायियों में से हूँ।

87. And (mention) Dhu'n-Nun, when he went off in anger and deemed that We had no power over him, but he cried out in the darkness, saying: There is no God save Thee. Be Thou glorified! Lo! I have been a wrong-doer.

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ڰ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

८८. तो हम ने उस की सुन ली और उसे ग़म से छुटकारा दिया। और इसी तरह हम 'ईमान' वालों को छुटकारा देते हैं।

88. Then We heard his prayer and saved him from the anguish. Thus We save believers.

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

८९. और ज़करिया (पर भी हमारी कृपा हुई), याद करो जब कि उसने अपने 'रब' को पुकारा: 'रब'! मुझे अकेला न छोड़,[३३] और सब से अच्छा वारिस तो तू ही है।

89. And Zachariah, when he cried unto his Lord: My Lord! leave me not childless, though Thou art the best of inheritors.

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

९०. तो हम ने उस की सुन ली, और उसे यहया (जैसा बेटा) दिया, और उस के लिए उस की पत्नी को दुरुस्त कर दिया। निश्चय ही वे नेक कामों में दौड़ते थे, और हमें चाह और भय के साथ पुकारते थे, और हमारे आगे दबे रहते थे।

90. Then We heard his prayer and bestowed upon him John, and adjusted his wife (to bear a child) for him. Lo! they used to vie one with the other in good deeds, and they cried unto Us in longing and in fear, and were submissive unto Us.

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

२९. 'ज़ुलकिफ़्ल' उपनाम या उपाधि है। इस का अर्थ होता है 'भाग्यवान'। मतलब यह है कि 'आख़िरत' में उन्हें जो दरजा प्राप्त होगा उस की दृष्टि से और अपनी नैतिक महानता की दृष्टि से वे बड़े ही सौभाग्यशाली थे। कुछ लोगों के मतानुसार ये वही महान् व्यक्ति हैं जिन्हें बाइबिल में हिज़क़ीएल (Ezekiel) कहा गया है।

३०. अर्थात् मछली वाले' इस से अभिप्रेत हज़रत यूनुस अ० हैं। इन्हें 'मछली वाले' इस लिए कहा गया है कि इन्हें एक मछली ने अल्लाह के हुक्म से निगल लिया था। (दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ११९-१४४)।

३१. उन्हों ने समझ लिया कि हमारी जाति वालों पर अल्लाह की यातना आ कर रहेगी उन के पास से हट चलूँ ताकि मैं यातना की लपेट में न आ जाऊँ।

३२. मछली के पेट में तो अँधेरा था ही समुद्र की अंधयारियाँ अलग ऊपर से छाई हुई थीं।

३३. अर्थात् मुझे औलाद दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९१. और वह महिला जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की,[३४] हम ने उस के अन्दर अपनी रूह फूंकी[३५] और उसे और उस के बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बनाया।

91. And she who was chaste, therefor We breathed into her (something) of Our spirit and made her and her son a token for (all) peoples.

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا
مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾

९२. निश्चय ही, यह है तुम्हारा गरोह, एक ही गरोह और मैं तुम्हारा 'रब' हूँ अतः तुम मेरी 'इबादत' करो।

92. Lo! this, your religion, is one religion, and I am your Lord, so worship Me.

إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

९३. और लोग अपने बीच अपने कृत्य में अलग-अलग हो गये—सब को हमारी ओर पलटना है।

93. And they have broken their religion (into fragments) among them, (yet) all are returning unto Us.

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ كُلٌّ إِلَيْنَا
رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾

९४. फिर जो अनुकूल कर्म करेगा इस हालत में कि वह 'ईमान' वाला हो, तो उस के प्रयास की कोई उपेक्षा न होगी। और उसे हम लिख कर रखने वाले हैं!

94. Then whoso doth good works and is a believer, there will be no rejection of his effort. Lo! We record (it) for him.

فَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾

९५. और हराम (असम्भव) था हर उस बस्ती के लिए (पलटना) जिस को हम ने विनष्ट कर दिया था। निश्चय ही वे पलटने वाले न थे[३६]।

95. And there is a ban upon any community which We have destroyed: that they shall not return.

وَحَرَامٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ
لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾

९६. यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज[३७] खोल दिये जायेंगे, और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ेंगे।

96. Until, when Gog and Magog are let loose, and they hasten out of every mound.

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ
وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ ﴿٩٦﴾

९७. और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा,[३८] तो तत्काल उन की आँखें फटी-की-फटी रह जायेंगी जिन्हों ने 'कुफ़्' किया था! (कहेंगे) : अफ़सोस हम पर! हम इस को ओर से ग़फ़लत में रहे। बल्कि, हम ही ज़ालिम (पापी) थे!

97. And the True Promise draweth night; then behold them staring wide (in terror), the eyes of those who disbelieve! (They say): Alas for us! We (lived) in forgetfulness of this. Ah, but we were wrong-doers!

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ
شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا
يَا وَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا
بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾

३४. यह संकेत हज़रत मरयम की ओर है जिन्हों ने अपने को बुराई से दूर रक्खा।
३५. दे० सूरा अन-निसा आयत १७१।
३६. इस आयत में पलटने से अभिप्रेत 'कुफ़्' से अल्लाह की ओर पलटना है। अल्लाह ने जिस बस्ती को भी तबाह किया उस समय तबाह किया जबकि उस बस्ती के लोग 'कुफ़' पर इस प्रकार आरूढ़ हो गये कि उन का 'ईमान' लाना असम्भव हो गया। दे० सूरा यूनुस आयत १३ और सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत २७।
३७. दे० सूरा अलकह्फ़ फ़ुटनोट ४१।
३८. याजूज व माजूज के निकल पड़ने के बाद 'क़ियामत' बिल्कुल क़रीब आ जायेगी। इस के अतिरिक्त नबी सल्ल० की बताई हुई 'क़ियामत' क़रीब आ जाने की कुछ और बडी-बड़ी निशानियाँ भी हैं। धुवाँ, 'दज्जाल', 'दाब्बतुल अर्ज़,' पश्चिम से सूर्य का निकलना, ईसा मसीह अ० का उतरना, पूर्व, पश्चिम में और अरब में भूमि का धँसाया जाना, यमन से आग का उठना जो सब को प्रलय-क्षेत्र की ओर हाँकेगी आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८. (कहा जायेगा) : निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे 'जहन्नम का ईंधन हो'[३९]। तुम अवश्य उस के घाट उतरोगे।

98. Lo! ye (idolaters) and that which ye worship beside Allah are fuel of hell. Thereunto ye will come.

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ﴿٩٨﴾

९९. यदि ये 'इलाह' (ख़ुदा) होते तो वहाँ न जाते, और वे सब उस में सदैव रहेंगे।

99. If these had been gods they would not have come thither, but all will abide therein.

لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَّا وَرَدُوهَا
وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾

१००. उन्हें वहाँ (कष्ट और जलन आदि के कारण) साँस खींचना है, और दशा यह होगी कि उन्हें वहाँ कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देगी।

100. Therein wailing is their portion, and therein they hear not.

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا
يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

१०१. रहे वे लोग जिन के लिए पहले ही हमारी ओर से भलाई का निश्चय हो चुका है, वे उस ('जहन्नम') से दूर रक्खे जायेंगे।

101. Lo! those unto whom kindness hath gone forth before from Us, they will be far removed from thence.

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

१०२. उस की हल्की आवाज़ (सनसनाहट) भी नहीं सुनेंगे। वे अपनी मनचाही चीज़ों के बीच सदैव रहेंगे।

102. They will not hear the slightest sound thereof, while they abide in that which their souls desire.

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي
مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

१०३. ('क़ियामत' के दिन की) वह सब से बड़ी दहशत उन्हें ग़म में न डालेगी, और 'फ़िरिश्ते' उन्हें लेने आवेंगे, (कहेंगे) : यह तुम्हारा वही दिन है जिस का तुम से वादा किया जाता था;

103. The Supreme Horror will not grieve them, and the angels will welcome them, (saying): This is your Day which ye were promised;

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ
تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

१०४. वह दिन जब कि हम आकाश को लपेट लेंगे जैसे पंजी में पन्नों को लपेट दिया जाता है। जिस तरह हम ने (सृष्टि की) प्रथम रचना का आरम्भ किया था, उसी तरह हम फिर उस की पुनरावृत्ति करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है। निश्चय ही हमें यह करना है।

104. The day when We shall roll up the heavens as a recorder rolleth up a written scroll. As We began the first creation, We shall repeat it. (It is) a promise (binding) upon Us. Lo! We are to perform it.

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ
كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ وَعْدًا
عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾

१०५. और 'ज़बूर' में हम अनुस्मारक के बाद लिख चुके हैं कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे नेक बन्दे होंगे[४०];

105. And verily We have written in the Scripture, after the Reminder: My righteous slaves will inherit the earth:

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ
أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾

१०६. निस्सन्देह इस में उपासक लोगों के लिए एक दिल में उतर जाने वाला सन्देश है।

106. Lo! there is a plain statement for folk who are devout.

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿١٠٦﴾

३९. पत्थर, पीतल आदि की मूर्तियों और दूसरी पूजा-सामग्री को 'जहन्नम' में झोंक देंगे ताकि वे भी उन पर 'जहन्नम' की अग्नि के भड़कने का कारण बनें और उन्हें देख कर मानसिक कष्ट भी हो कि इन्हीं की वजह से आज हमें यह दिन देखना पड़ रहा है।

४०. दे० बाइबिल, ज़बूर (Ps.) ३७ : ९-११, १८, २९।
दे० सूरा अल-मोमिनून, आयत ११, सूरा अज़-ज़ुमर आयत ७४।
इस आयत में ज़मीन के वारिस होने का तात्पर्य 'जन्नत' का वारिस होना है। आने वाले शाश्वत जीवन में 'जन्नत' के वारिस केवल वही लोग होंगे, जो नेक और अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग पर चलने वाले लोग होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७. और (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हें सारे संसार के लिए दयालुता ही बना कर भेजा है।

107. We sent thee not save as a mercy for the peoples.

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِينَ ﴿١٠٧﴾

१०८. (हे 'नबी' !) कहो : मेरे पास तो बस यह 'वह्य' आती है कि तुम्हारा 'इलाह' (इष्ट पूज्य) अकेला 'इलाह' है। तो क्या तुम 'मुस्लिम' होते हो ?

108. Say: It is only inspired in me that your God is One God. Will ye then surrender (unto Him)?

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾

१०९. यदि वे मुँह फेरें, तो कह दो : मैं ने तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सूचित कर दिया है, और मैं यह नहीं जानता कि जिस की तुम्हें धमकी दी जा रही है वह क़रीब है या दूर।

109. But if they are averse, then say: I have warned you all alike, although I know not whether nigh or far is that which ye are promised.

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ وَإِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

११०. निश्चय ही वह पुकार कर कही हुई बात को जानता है, और उसे भी वह जानता है जो (बात) तुम छिपाते हो।

110. Lo! He knoweth that which is said openly, and that which ye conceal.

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

१११. और क्या मालूम कदाचित् तुम्हारे लिए एक परीक्षा हो, और एक नियत समय के लिए जीवन-सुख।

111. And I know not but that this may be a trial for you, and enjoyment for a while.

وَإِنْ أَدْرِى لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾

११२. ('रसूल' ने) कहा : 'रब' ! हक़ के साथ फ़ैसला कर दे। और (लोगो !) हमारा 'रब' 'रहमान' है, जिस से उन बातों के विरुद्ध जो तुम बनाते हो सहायता माँगी जाती है।

112. He saith: My Lord! Judge Thou with truth, Our Lord is the Beneficent, Whose help is to be implored against that which ye ascribe (unto Him).

قٰلَ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२–अल-हज्ज
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-हज्ज' सूरा की आयत २६-३८ से लिया गया है जो 'हज्ज' से सम्बन्ध रखती हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

प्रस्तुत 'सूरा' में मक्की और मदनी दोनों प्रकार की सूरतों की विशेषतायें पाई जाती हैं। कुछ लोग इस की गणना मदनी सूरतों में करते हैं। एक विचार के अनुसार यह सूरा मक्की है। एक और विचार के अनुसार 'सूरा' का कुछ भाग मक्का में उतरा है और कुछ मदीना में अवतरित हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' में उन लोगों के लिए डरावा और चेतावनी है जो अल्लाह के बारे में झगड़ते थे। झगड़ने और वाद-विवाद करने वालों से अभिप्रेत 'क़ुरैश' के लोग भी हैं और 'किताब' वालों का गरोह भी। 'सूरा' की अन्तिम दो आयतें 'सूरा' के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश डालती हैं।

पिछली 'सूरा' में सामान्य रूप से इस का उल्लेख हुआ है कि विजय अन्त में सत्य ही को प्राप्त होती है; प्रस्तुत 'सूरा' में विशेष रूप से उस विजय का उल्लेख किया गया जिस की सूचना नबी सल्ल० ने मक्का में दी थी, जहाँ से आप (सल्ल०) को निकलने पर विवश किया गया था।

इस 'सूरा' में हज्ज की घोषणा की गई जिस में 'इस्लाम' के स्थापन की ओर खुला संकेत है।

मक्का के 'मुश्रिकों' को सचेत किया गया कि तुम ने नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के विरुद्ध जो नीति ग्रहण की है उस का परिणाम तुम्हारे सामने आ कर रहेगा। तुम्हारे देवी-देवता तुम्हारी कदापि रक्षा न कर सकेंगे।

मक्का के 'मुश्रिकों' की इस पर भी पकड़ की गई कि उन्हों ने मुसलमानों के लिए 'मस्जिदे हराम' का मार्ग बन्द कर दिया है हालांकि उन्हें इस का कोई अधिकार प्राप्त नहीं कि वे किसी को 'हज्ज' से रोकें। 'मस्जिदे हराम' (काबा) का इतिहास प्रस्तुत करते हुये बताया गया कि हज़रत इबराहीम अ० ने अल्लाह के हुक्म से इस घर का निर्माण 'शिर्क' और मूर्ति-पूजा के लिए नहीं किया था। एक अल्लाह की 'इबादत' के लिए ही इस पवित्र घर का निर्माण हुआ था। यह घर बनाने के बाद सब लोगों को सामान्य रूप से 'हज्ज' का हुक्म दिया गया था। प्रारम्भ ही से स्थानीय निवासियों और बाहर से आने वालों को समान रूप से यहाँ अधिकार प्रदान हुये थे।

ऐसे मुसलमान जो सत्य मार्ग में पेश आने वाली मुसीबतों और संकटों का सहन करने के लिये तैयार न थे, और जो अभी संकोच में पड़े हुये थे उन पर सख़्ती की गई कि उन्हें अपनी नीति बदलनी होगी क्योंकि उन की इस नीति का 'ईमान' और 'इस्लाम' से कोई जोड़ नहीं है।

मुसलमानों को इजाज़त दी गई कि वे क़ुरैश के अत्याचार का उत्तर शक्ति से दे सकते हैं[1]। इस इजाज़त के कुछ ही समय के पश्चात् मुसलमानों को उन से लड़ने का हुक्म भी दिया गया। और यह हुक्म 'बद्र' की लड़ाई से कुछ ही पहले उतरा है[2]।

१. दे० आयत ३८-४०।
२. दे० सूरा अल-बक़रा आयत १९०-१९३, २१६, २४४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस 'सूरा' में यह भी बताया गया कि अल्लाह जब 'ईमान' वालों को धरती में शक्ति और राज्याधिकार प्रदान करता है तो वे अपनी शक्ति और अधिकार से क्या काम लेते हैं[1]। बताया गया कि राज्य-सत्ता स्वयं ध्येय नहीं बल्कि ध्येय की प्राप्ति का साधन मात्र है।

'ईमान' वालों के विशेष नाम 'मुस्लिम' की घोषणा करते हुये बताया गया कि यह गरोह संसार वालों पर गवाह बना कर उठाया गया है। 'आख़िरत' में इसे इस की गवाही देनी होगी कि अल्लाह का सन्देश लोगों तक पहुँचा दिया गया था। फिर भी यदि 'काफ़िर' लोग मार्ग पर न आ सके, तो इस के उत्तरदायी वे स्वयं हैं। लोगों तक सत्य सन्देश पहुँचाना महत्वपूर्ण और बड़े उत्तरदायित्व का कार्य है, यदि इस में 'मुस्लिम' गरोह से कोताही हुई, तो इस के लिए अल्लाह के यहाँ उस की सख़्त पकड़ होगी।

———

१. दे० आयत ४१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हज्ज
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ७८)

THE PILGRIMAGE
Revealed at Al-Medinah

سورة الحج مدنية وهي ثمان وسبعون آية وعشر ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. हे लोगो! अपने 'रब' का डर रक्खो। निश्चय ही उस घड़ी का भूकम्प बड़ी (भयानक) चीज़ है।

1. O mankind! Fear your Lord. Lo! the earthquake of the Hour (of Doom) is a tremendous thing.

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِیْمٌ ①

२. जिस दिन तुम उसे देखोगे, (हाल यह होगा कि) हर दूध पिलाने वाली (भय से) उस से असावधान हो जायेगी जिसे दूध पिलाया था, और हर गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी, और लोगों को तुम देखोगे कि मतवाले हैं, यद्यपि वे मतवाले न होंगे, बल्कि अल्लाह की यातना ही कठोर है।

2. On the day when ye behold it, every nursing mother will forget her nursling and every pregnant one will be delivered of her burden, and thou (Muhammad) wilt see mankind as drunken, yet they will not be drunken, but the Doom of Allah will be strong (upon them).

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰی وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰی وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِیْدٌ ②

३. और लोगों में कोई ऐसा है जो ज्ञान के बिना अल्लाह के बारे में झगड़ता है, और हर 'शैतान' सरकश के पीछे हो लेता है;

3. Among mankind is he who disputeth concerning Allah without knowledge and followeth each froward devil;

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّیَتَّبِعُ كُلَّ شَیْطٰنٍ مَّرِیْدٍ ③

४. जबकि उसके लिए लिख दिया गया है कि जो कोई उस से मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो वह उसे पथभ्रष्ट कर के रहेगा और उसे दहकती आग ('जहन्नम') की यातना की ओर राह दिखायेगा।

4. For him it is decreed that whoso taketh him for friend, he verily will mislead him and will guide him to the punishment of the Flame.

كُتِبَ عَلَیْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ یُضِلُّهٗ وَیَهْدِیْهِ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ④

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. हे लोगो ! यदि तुम्हें (मृत्यु के पश्चात् पुनः) जी उठने में कोई सन्देह है, तो (देखो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य्य से, फिर रक्त के लोथड़े से, फिर मांस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण भी होती है और अपूर्ण भी,[1] ताकि हम तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दें। और हम जिस (वीर्य्य) को चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराये रखते हैं, फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं, फिर (तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं) ताकि तुम अपनी युवावस्था को पहुँचो। और तुम में से किसी (के प्राण) को पहले ही ग्रस्त लिया जाता है, और तुम में से किसी को (बुढ़ापे की) निकृष्टतम आयु की ओर फेर दिया जाता है, ताकि ज्ञान के बाद कुछ न जाने[2]। और तुम भूमि को देखते हो कि सूखी पड़ी है, फिर जहाँ हम ने उस पर पानी बरसाया कि उस में ताजगी आ गई और वह उभर आई और उस ने हर प्रकार की शोभायमान वस्तुयें उगाईं।

5. O mankind! If ye are in doubt concerning the Resurrection, then lo! We have created you from dust, then from a drop of seed, then from a clot, then from a little lumb of flesh shapely and shapeless, that We may make (it) clear for you. And We cause what We will to remain in the wombs for an appointed time, and afterward We bring you forth as infants, then (give you growth) that ye attain your full strength. And among you there is he who dieth (young), and among you there is he who is brought back to the most abject time of life, so that, after knowledge, he knoweth naught. And thou (Muhammad) seest the earth barren, but when We send down water thereon, it doth thrill and swell and put forth every lovely kind (of growth).

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ
الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ
مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ
فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ
اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ
عِلْمٍ شَيْـًٔا وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً
فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَ
رَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝٥

६. यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है। और वही मुरदों को जीवित करता है, और वही हर चीज़ का सामर्थ्य रखने वाला है;

6. That is because Allah, He is the Truth and because He quickeneth the dead, and because He is Able to do all things;

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ
الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

७. और यह कि वह घड़ी ('क़ियामत') आने वाली है, इस में कोई सन्देह नहीं है; और अल्लाह उन्हें उठायेगा जो क़बरों में (पड़े हुये) हैं।

7. And because the Hour will come, there is no doubt thereof; and because Allah will raise those who are in the graves.

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا
وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٧

८. और लोगों में कोई ऐसा है जो किसी ज्ञान और मार्ग-दर्शन और प्रकाशमान 'किताब' के बिना अल्लाह के बारे में झगड़ता है,

8. And among mankind is he who disputeth concerning Allah without knowledge or guidance or a Scripture giving light,

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨

९. (गर्व से) अपने पहलू को मोड़ते हुये ताकि अल्लाह के मार्ग से भटका दे। उस के लिए दुनिया में रुसवाई है, और 'क़ियामत' के दिन हम उसे जलने की यातना का मज़ा चखायेंगे।

9. Turning away in pride to beguile (men) from the way of Allah. For him in this world is ignomity, and on the Day of Resurrection We make him taste the doom of burning.

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهٗ
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩

१. यह संकेत उन विभिन्न स्थितियों की ओर किया गया है जिन से बच्चे को माँ के पेट में गुज़रना पड़ता है। गर्भाधान के बाद आरम्भ में जमे हुये रक्त का एक लोथड़ा-सा होता है; फिर वह मांस की एक बोटी के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो पहले रूपहीन और अपूर्ण होता है आगे चल कर उस में मानवीय रूप और आकार स्पष्ट होता चला जाता है। यहाँ केवल उन बड़े-बड़े परिवर्तनों का उल्लेख किया गया है जिन से सभी लोग परिचित हैं। यहाँ उन बातों का उल्लेख नहीं किया गया जो सूक्ष्मदर्शक यन्त्रों के द्वारा ही जानी जा सकती हैं।

२. बृद्धावस्था में मनुष्य के होश व हवास ठीक नहीं रहते, यहाँ इसी बात की ओर संकेत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. (कहा जायेगा) : यह उस का बदला है जो तुम्हारे दोनों हाथों ने आगे भेजा था, और अल्लाह बन्दों पर कुछ भी ज़ुल्म करने वाला नहीं।

10. (And unto him it will be said:) This is for that which thy two hands have sent before, and because Allah is no oppressor of His slaves.

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾

११. और लोगों में कोई ऐसा है जो किनारे पर रह कर अल्लाह की बन्दगी करता है[३] यदि उसे फायदा पहुँचा तो उस से सन्तुष्ट हो गया, और यदि उसे कोई आजमाइश पेश आ गई, तो उलटा फिर गया। दुनिया भी गई और 'आख़िरत' भी। यही है खुला हुआ घाटा।

11. And among mankind is he who worshippeth Allah upon a narrow marge so that if good befalleth him he is content therewith, but if a trial befalleth him, he falleth away utterly. He loseth both the world and the Hereafter. That is the sheer loss.

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ٱطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ٱنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

१२. वह अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारता है, जो उस का न तो कुछ बिगाड़ सके और न उस का कुछ बना सके। यही है परले दरजे की गुमराही।

12. He calleth, beside Allah, unto that which hurteth him not nor benefiteth him That is the far error.

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾

१३. वह उसे पुकारता है जिस की हानि उस के लाभ से अधिक समीप है;[४] क्या ही बुरा संरक्षक-मित्र है और क्या ही बुरा साथी है!

13. He calleth unto him whose harm is nearer than his benefit; verily an evil patron and verily an evil friend!

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۗ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾

१४. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ चाहता है करता है।

14. Lo! Allah causeth those who believe and do good works to enter the Gardens underneath which rivers flow. Lo! Allah doth what He intendeth.

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾

१५. जो कोई यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और 'आख़िरत' में उस की कदापि सहायता नहीं करेगा, तो उसे चाहिए कि वह आकाश की ओर रस्सी फैलाये फिर पूरी कोशिश कर डाले फिर देख ले कि उस का उपाय उस के क्रोध और बेचैनी को दूर कर सकता है!

15. Whoso is wont to think (through envy) that Allah will not give him (Muhammad) victory in the world and the Hereafter (and is enraged at the thought of his victory), let him stretch a rope up to the roof (of his dwelling), and let him hang himself. Then let him see whether his strategy dispelleth that whereat he rageth!

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

१६. और इस तरह हम ने (क़ुरआन) को खुली 'आयतों' के रूप में उतारा है, और यह कि अल्लाह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है।

16. Thus We reveal it as plain relevations, and verily Allah guideth whom He will.

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

३. अर्थात् 'इस्लाम' में पूरे तौर पर दाखिल नहीं होता बल्कि 'कुफ़्र' और 'इस्लाम' की सीमा पर खड़ा रहता है।

४. अर्थात् अल्लाह को छोड़ कर वह जिन्हें पुकारता और जिन के आगे अपने हाथ फैलाता है वे कदापि किसी हानि-लाभ के मालिक नहीं हैं। उन्हें पुकार कर आदमी अपने 'ईमान' और धर्म को तो निश्चय ही नष्ट कर देता है रहा वह फ़ायदा और लाभ जिस के लिए उस ने उन्हें पुकारा है तो जाहिर है कि यह आवश्यक नहीं कि उस की इच्छा पूरी हो जाये। हो सकता है उसे परखने के लिए अल्लाह ऐसे अवसर पर उस की कामना पूरी कर दे; और यह भी सम्भव है कि धर्म और 'ईमान' को नष्ट करने के बाद भी वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सके। दे० सूरा अल-अनआम आयत ३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये, और जो 'यहूदी' हुये, और 'साबिई' और 'नसारा' (ईसाई) और 'मजूस' और जिन लोगों ने 'शिर्क' किया—इन सब के बीच अल्लाह 'क़ियामत' के दिन फ़ैसला कर देगा[५]। निस्सन्देह हर चीज़ अल्लाह की निगाह में है।

17. Lo! those who believe (this Revelation), and those who are Jews, and the Sabaeans and the Christians and the Magians and the idolaters —Lo! Allah will decide between them on the Day of Resurrection. Lo! Allah is Witness over all things.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

१८. क्या तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह ही को सजदा करता है जो कोई कि आकाशों में है और जो धरती में है, और सूर्य, और चन्द्रमा और तारे, और पर्वत, और वृक्ष, और पशु, और बहुत से मनुष्य, और बहुतेरे ऐसे हैं जिन पर यातना साबित हो चुकी है।

और जिसे अल्लाह सम्मानरहित करे, उसे कोई सम्मानित करने वाला नहीं। निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ चाहता है करता है[६]।

18. Hast thou not seen that unto Allah payeth adoration whosoever is in the heavens and whosoever is in the earth, and the sun, and the moon, and the stars, and the hills, and the trees, and the beasts, and many of mankind, while there are many unto whom the doom is justly due. He whom Allah scorneth, there is none to give him honour. Lo! Allah doth what He will.

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾

१९. ये ('ईमान' वाले और 'काफ़िर') दो प्रतिवादी हैं जो अपने 'रब' के बारे में झगड़ते हैं। तो जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, उन के लिए अग्नि के वस्त्र काटे जा चुके हैं; उन के सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जायेगा।

19. These twain (the believers and the disbelievers) are two opponents who contend concerning their Lord. But as for those who disbelieve, garments of fire will be cut out for them; boiling fluid will be poured down on their heads.

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾

२०. जिस से जो कुछ उन के पेटों में है वह और (उन की) खालें गल जायेंगी,

20. Whereby that which is in their bellies, and their skins too, will be melted;

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾

२१. और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ (गदायें) होंगे (जिन से उन की गत बनाई जायेगी)।

21. And for them are hooked rods of iron.

وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾

२२. जब कभी वे दुःख के कारण उस ('जहन्नम') से निकलना चाहेंगे फिर उसी में लौटा दिये जायेंगे और (कहा जायेगा): चखो मज़ा जलने की यातना का।

22. Whenever, in their anguish, they would go forth from thence they are driven back therein and (it is said unto them): Taste the doom of burning.

كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

२३. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ वे स्वर्ण के कंगनों, और मोती से आभूषित किये जायेंगे,[७] और वहाँ उन का वस्त्र रेशम होगा।

23. Lo! Allah will cause those who believe and do good works to enter Gardens underneath which rivers flow, wherein they will be allowed armlets of gold, and pearls, and their raiment therein will be silk.

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾

५. अर्थात् वह इस का निर्णय कर देगा कि कौन सत्य पर है और कौन असत्य का पालन करता है।
६. यहाँ अल्लाह को सजदा करना अनिवार्य है।
७. अर्थात् उन का ठाट-बाट राजसी होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. उन्हें अच्छी बात का मार्ग दिखाया गया और उन्हें प्रशंसा के अधिकारी (अल्लाह) का मार्ग दिखाया गया।

24. They are guided unto gentle speech; they are guided unto the path of the Glorious One.

وَهُدُوٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

२५. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उस 'मस्जिदे हराम' (प्रतिष्ठित मस्जिद) से, जिसे हम ने लोगों के लिए बनाया है, बराबर उस में रहने वाला और बाहर से आने वाला;[८] जो कोई भी उस में (सत्य से कतरा कर) जुल्म से टेढ़ी राह चाहेगा, उसे हम दुःख देनें वाली यातना का मज़ा चखायेंगे[९]।

25. Lo! those who disbelieve and bar (men) from the way of Allah and from the Inviolable Place of Worship, which We have appointed for mankind together, the dweller therein and the nomad: whosoever seeketh wrongful partiality therein, him We shall cause to take a painful doom.

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۗ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ ۢبِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ ع

२६. याद करो जब हम ने इबराहीम के लिए इस घर ('काबा') की जगह ठहराई, (यह कहते हुये) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करो, और मेरे घर को 'तवाफ़' (परिक्रमा) करने वालों और ('इबादत' में) खड़े होने वालों और झुकने और 'सजदा' करने वालों के लिए पाक-साफ़ रक्खो।

26. And (remember) when We prepared for Abraham the place of the (holy) House, saying, Ascribe thou nothing as partner unto Me, and purify My House for those who make the round (thereof) and those who stand and those who bow and make prostration.

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

२७. और लोगों में 'हज्ज' के लिए पुकार दो कि वे प्रत्येक गहरे मार्गों से, पैदल और हल्के शरीर की (छरहरी) ऊँटनियों पर तेरे पास आयें[१०]।

27. And proclaim unto mankind the Pilgrimage. They will come unto thee on foot and on every lean camel; they will come from every deep ravine,

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

२८. ताकि वे अपने फ़ायदों को देखें, (जो यहाँ उन के लिए रक्खे गये हैं) और कुछ मालूम (निश्चित) दिनों[११] में उन मवेशी चौपायों पर अल्लाह का नाम लें[१२] जो उस ने उन्हें दिये हैं। फिर उस में से स्वयं खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ।

28. That they may witness things that are of benefit to them, and mention the name of Allah on appointed days over the beast of cattle that He hath bestowed upon them. Then eat thereof and feed therewith the poor unfortunate.

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ ۢبَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾

८. मस्जिदेहराम से अभिप्रेत केवल मस्जिद ही नहीं बल्कि पूरा हरमे मक्का है जहाँ सब का हक़ बराबर है। उस की भूमि किसी की मिल्क नहीं है; प्रत्येक तीर्थ-यात्री को यह समान रूप से हक़ प्राप्त है कि उसे जहाँ कहीं जगह मिले ठहर जाये।

९. हर वह कर्म जो सत्यता के विरुद्ध हो 'हरम' की सीमा में उस से बचना अनिवार्य है। यों तो जुल्म और ज़्यादती हर हाल में गुनाह है परन्तु 'हरम' में ऐसे कामों का करने वाला और अधिक गुनाह का भागी होगा।

१०. इस में उन तीर्थ-यात्रियों का चित्र खींचा गयाहै जो दूरवर्ती स्थानों से 'हज्ज' के लिए चले आते हों और उन की सवारी के ऊँट सधाये हुये शरीर वाले हों। और मक्का में हर ओर से दाखिल हों। यहाँ तक कि उन के अधिक आने-जाने के कारण रास्ते गहरे हो जायें।

यहाँ वह आदेश समाप्त होता है जो हज़रत इबराहीम अ० को दिया गया था।

११. 'मालूम दिनों' से अभिप्रेत कुछ लोगों के विचार में 'ज़िलहिज्जा' के पहले दस दिन हैं, कुछ लोगों के विचार में इस से अभिप्रेत ज़िलहिज्जा की दसवीं तिथि और उस के बाद के तीन दिन हैं, और कुछ लोगों का कहना है कि इस से अभिप्रेत तीन दिन हैं ज़िल-हिज्जा की दसवीं तिथि और उस के बाद के दो दिन।

१२. अर्थात् अल्लाह का नाम ले कर उन्हें ज़ब्ह करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. फिर अपना मैल-कुचैल दूर करें[13] और अपनी मन्नतों को पूरा करें और इस पुरातन घर[14] (काबा) का 'तवाफ़' (परिक्रमा) करें।

29. Then let them make an end of their unkemptness and pay their vaws and go around the ancient House.

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

३०. यह बात हुई। और जो कोई अल्लाह की (निश्चित की हुई) मर्यादाओं का आदर करेगा, तो यह उस के 'रब' के यहाँ उसी के लिए अच्छा होगा। और तुम्हारे लिए चौपाये हलाल (अवर्जित) हैं सिवाय उस के जो तुम्हें बता दिया गया है। तो बचो मूर्तियों की (पूजा की) गन्दगी से, और बचो झूठी बात से,

30. That (is the command). And whoso magnifieth the sacred things of Allah, it will be well for him in the sight of his Lord. The cattle are lawful unto you save that which hath been told you. So shun the filth of idols, and shun lying speech,

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿٣٠﴾

३१. अल्लाह ही के हो कर, उस के साथ शरीक न ठहरा कर; और जो कोई अल्लाह के साथ 'शिर्क' करे तो मानो वह आकाश से गिर पड़ा फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जायें या हवा उसे दूरवर्ती स्थान पर फेंक दे।

31. Turning unto Allah (only), not ascribing partners unto Him; for whoso ascribeth partners unto Allah, it is as if he had fallen from the sky and the birds had snatched him or the wind had blown him to a far-off place.

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾

३२. बात यह है। और जो कोई अल्लाह की (भक्ति से सम्बन्धित) निशानियों का आदर करे, तो यह दिलों के 'तक़वा' (धर्मपरायणता) की बात है।

32. That (is the command). And whoso magnifieth the offerings consecrated to Allah, it surely from devotion of the hearts.

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾

३३. उन ('क़ुरबानी' के जानवरों) में एक नियत समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं;[15] फिर उन्हें 'बैते अतीक़' (पुरातन घर 'काबा') तक पहुँचना है।

33. Therein are benefits for you for an appointed term; and afterward they are brought for sacrifice unto the ancient House.

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾

३४. और प्रत्येक गरोह के लिए हम ने 'क़ुरबानी' का एक तरीक़ा ठहरा दिया है, ताकि वे उन मवेशी जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उस ने उन्हें प्रदान किये हैं; तो तुम्हारा 'इलाह' (इष्ट पूज्य) अकेला 'इलाह' है, तो अपने को उस के अर्पण कर दो[16]। और विनयशील लोगों को शुभ-सूचना दे दो।

34. And for every nation have We appointed a ritual, that they may mention the name of Allah over the beast of cattle that He hath given them for food; and your God is One God, therefore surrender unto Him. And give good tidings (O Muhammad) to the humble,

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾

१३. अर्थात् 'इहराम' खोल दें, बाल बनवायें, नाखून कतरवायें और स्नान करें अब उन पर वह पाबन्दियाँ नहीं रहीं जो पाबन्दियाँ 'इहराम' की हालत में उन पर थीं।

१४. क़ुरआन में 'अतीक़' शब्द का प्रयोग हुआ है जिस के तीन अर्थ होते हैं : एक पुरातन, दूसरे स्वाधीन और स्वतन्त्र जिस पर किसी की मिल्कियत न हो, तीसरे सम्मानित और प्रतिष्ठित।

१५. क़ुरबानी (बलिदान) की जगह पहुँचने तक उन से फ़ायदा उठाया जा सकता है। उन से सवारी का काम भी लिया जा सकता है और उन पर सामान आदि भी लादा जा सकता है। और उन का दूध पीने में भी कोई दोष नहीं है।

१६. अर्थात् हर समुदाय के लिए हम ने क़ुरबानी का एक खास तरीक़ा ठहराया परन्तु तुम सब का पूज्य और 'इलाह' एक ही है इस लिए तुम और पिछले समुदाय वास्तव में एक ही गरोह हो। दे० सूरा अल-अंबिया आयत ९२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. जिन के दिल उस समय काँप उठते हैं जब (उन के सामने) अल्लाह को याद किया जाता है,[१७] और जो मुसीबत भी उन पर आती है उस पर 'सब्र' करते हैं, और 'नमाज़' क़ायम करते हैं और जो कुछ रोज़ी हम ने उन्हें दी है उस में से (हमारी राह में) खर्च करते हैं।

35. Whose hearts fear when Allah is mentioned, and the patient of whatever may befall them, and those who establish worship and who spend of that We have bestowed on them.

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ
وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي
الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ٣٥

३६. और (क़ुरबानी के) ऊँटों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह की (भक्ति की) निशानियाँ ठहराया है। तुम्हारे लिए उन में भलाई है। तो उन पर अल्लाह का नाम लो एक पंक्ति में खड़ा कर के[१८]। तो जब ('क़ुरबानी' के बाद) उन के पहलू (भूमि से) आ लगें, तो उन में से स्वयं भी खाओ और सन्तोष से बैठे हुये को भी खिलाओ (जो माँगने से बचता हो) और माँगने वाले को भी। इस तरह हम ने उन (जानवरों) को तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया है, कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखाओ।

36. And the camels! We have appointed them among the ceremonies of Allah. Therein ye have much good. So mention the name of Allah over them when they are drawn up in line. Then when their flanks fall (dead), eat thereof and feed the beggar and the suppliant. Thus have We made them subject unto you, that haply ye may give thanks.

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُم مِّن شَعَائِرِ اللَّهِ
لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ
عَلَيْهَا صَوَافَّ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا
فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ
كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٣٦

३७. न उन के मांस अल्लाह को पहुँचते हैं और न उन के रक्त, परन्तु उसे तुम्हारा 'तक़वा' (धर्मनिष्ठा) पहुँचता है[१९]। इस तरह उस ने उन्हें तुम्हारे काम में लगा रक्खा है ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उस ने तुम्हें (सीधा) मार्ग दिखाया और उत्तमकारों को शुभ-सूचना दे दो।

37. Their flesh and their blood reach not Allah, but the devotion from you reacheth Him. Thus have We made them subject unto you that ye may magnify Allah that He hath guided you. And give good tidings (O Muhammad) to the good.

لَن يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا
وَلَٰكِن يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنكُمْ كَذَٰلِكَ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ
وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ٣٧

३८. निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों का निवारण करता है जो 'ईमान' लाये हैं। निस्सन्देह अल्लाह किसी विश्वासघाती, कृतघ्न को पसन्द नहीं करता।

38. Lo! Allah defendeth those who are true. Lo! Allah loveth not each treacherous ingrate.

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ
اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ٣٨

३९. इजाज़त दी गई उन लोगों को जिन से लड़ाई की जाती है इस लिए कि उन पर ज़ुल्म किया गया;[२०] और निस्सन्देह अल्लाह उन की सहायता का पूरा सामर्थ्य रखता है;

39. Sanction is given unto those who fight because they have been wronged; and Allah is indeed Able to give them victory;

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا
وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ٣٩

१७. ऐसे अवसर पर 'काफ़िरों' की क्या दशा होती है ? दे० आयत ७२।

१८. ऊँट को 'क़िबला' रुख खड़ा कर के उस की क़ुरबानी की जाती है।

१९. अज्ञान काल में अरब के लोग यदि मूर्तियों की क़ुरबानी का मांस मूर्तियों पर चढ़ाया करते थे, तो वह क़ुरबानी जो अल्लाह के नाम की होती थी उस का मांस 'काबा' के सामने ला कर रखते थे और उस का रक्त 'काबा' की दीवारों पर लुथेड़ते थे। यहाँ बताया जा रहा है कि अल्लाह के यहाँ जो चीज़ पहुँचती है वह तुम्हारे दिल का 'तक़वा' है न कि तुम्हारी क़ुरबानियों का रक्त और मांस। यही बात 'नबी' सल्ल० ने इस तरह बयान की है कि अल्लाह तुम्हारे रूप और तुम्हारे रंगों को नहीं देखता बल्कि वह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे कामों को देखता है। यहाँ यह बात भी जान लेनी चाहिए कि क़ुरबानी का जो हुक्म यहाँ दिया गया है वह केवल मक्का में 'हज्ज' ही के अवसर पर अदा करने के लिए नहीं बल्कि क़ुरबानी करने का सामर्थ्य रखने वाले 'मुस्लिम' जहाँ भी हों इस अवसर पर उन्हें क़ुरबानी करनी चाहिए। नबी सल्ल० जब तक मदीना में रहे हर साल 'क़ुरबानी' करते रहे।

२०. अल्लाह की राह में लड़ने के बारे में यह सब से पहली 'आयत' है, इस आयत में लड़ने की केवल अनुज्ञा दी गई है। इस के बाद सूरा अल-बक़रा की वे आयतें उतरी हैं जिन में 'ईमान' वालों को लड़ाई का आदेश दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. वे लोग कि नाहक़ अपने घरों से निकाल दिये गये केवल इस लिए कि वे कहते हैं, "हमारा 'रब' अल्लाह है"। और यदि अल्लाह लोगों को एक दूसरे से हटाता न रहता, तो (सन्तों, संन्यासियों आदि के) आश्रम और गिरजा और (यहूदियों के) उपासना-गृह और मस्जिदें, जिन में अल्लाह का अधिक नाम लिया जाता है, सब ढा दी जातीं"। निश्चय ही अल्लाह उस की सहायता करेगा जो उस की सहायता करेगा"। निस्सन्देह अल्लाह बलवान् और प्रभुत्वशाली है।

40. Those who have been driven from their homes unjustly only because they said, Our Lord is Allah — For had it not been for Allah's repelling some men by means of others, cloisters and churches and oratories and mosques, wherein the name of Allah is oft mentioned, would assuredly have been pulled down. Verily Allah helpeth one who helpeth Him. Lo! Allah is Strong, Almighty —

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ
حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَلَوْلَا
دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ
لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ
وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا
وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

४१. वे लोग कि यदि हम धरती में उन्हें अधिकार (राज-सत्ता) प्रदान करें, तो वे 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें और भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकें। और सब मामलों का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है।

41. Those who, if We give them power in the land, establish worship and pay the poor-due and enjoin kindness and forbid iniquity. And Allah's is the sequel of events.

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ وَلِلَّهِ
عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

४२. (हे 'नबी'!) यदि उन्हों ने तुम्हें झुठलाया है, तो उन से पहले नूह की 'जाति' वाले, और 'आद' और 'समूद', भी झुठला चुके हैं;

42. If they deny thee (Muhammad), even so the folk of Noah, and (the tribes of) Aad and Thamud, before thee denied (Our messengers);

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

४३. और इबराहीम की जाति वाले और लूत की जाति वाले भी;

43. And the folk of Abraham and the folk of Lot;

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾

४४. और 'मदयन वाले' भी। और मूसा भी झुठलाया जा चुका है; तो मैं ने 'काफ़िरों' को ढील दी," फिर उन्हें पकड़ लिया, तो कैसी रही मेरी नागवारी!

44. (And) the dwellers in Midian. And Moses was denied; but I indulged the disbelievers a long while, then I seized them, and how (terrible) was My abhorrence!

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ
فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾

४५. तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने विनष्ट कर दिया इस अवस्था में कि वे ज़ालिम थीं, तो वे अपनी छतों के बल ढह गई हैं, और (इसी तरह) कितने ही बेकार कुएँ और कितने ही मजबूत महल भी!

45. How many a township have We destroyed while it was sinful, so that it lieth (to this day) in ruins, and (how many) a deserted well and lofty tower!

فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ
ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٥﴾

४६. क्या ये धरती में चले-फिरे नहीं हैं, कि इन के दिल होते जिन से समझते या कान होते जिन से सुनते? बात यह है कि आँखें अन्धी नहीं हो जातीं, बल्कि वे दिल अन्धे हो जाते हैं, जो सीनों में हैं।

46. Have they not travelled in the land, and have they hearts wherewith to feel and ears wherewith to hear? For indeed it is not the eyes that grow blind, but it is the hearts which are within the bosoms, that grow blind.

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ
قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ
بِهَا فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِن
تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

२१. अल्लाह की इस कृपा का उल्लेख सूरा अल-बक़रा आयत २५१ में भी किया गया है।
२२. अर्थात् उस के 'दीन' (धर्म) के कामों में सहायक बनेगा।
२३. अर्थात् उन्हें इस का अवसर प्रदान किया गया कि चाहे वे सूझ-बूझ से काम लें और सँभल जायँ; चाहे 'कुफ़्र' और अत्याचार में और आगे बढ़ जायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७. ये तुम से यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध न करेगा, परन्तु तेरे 'रब' के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना के हज़ार वर्ष जैसा है[२४]।

47. And they will bid thee hasten on the Doom, and Allah faileth not His promise, but lo! a Day with Allah is as a thousand years of what ye reckon.

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾

४८. कितनी ही बस्तियाँ हैं मैं ने उन्हें मुहलत दी इस अवस्था में कि वे ज़ालिम थीं ! फिर उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर लौट कर आना है।

48. And how many a township did I suffer long though it was sinful! Then I grasped it. Unto Me is the return.

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾

४९. (हे 'नबी'!) कह दो : हे लोगो ! मैं तो बस तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला हूँ।

49. Say: O mankind! I am only a plain warner unto you.

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٩﴾

५०. तो जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है;

50 Those who believe and do good works, for them is pardon and a rich provision;

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾

५१. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' के बारे में हमें हराने के लिए विरोध-भाव से दौड़-धूप की, वही भड़कती आग ('जहन्नम' में रहने) वाले हैं।

51. While those who strive to thwart Our revelations, such are rightful owners of the Fire.

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

५२. और (हे 'मुहम्मद'!) तुम से पहले जो 'रसूल' और 'नबी' भी हम ने भेजा 'शैतान' ने उस की कामना (सत्य) में (असत्य) मिला दिया। तो (इस प्रकार) 'शैतान' जो कुछ मिलता है अल्लाह उसे मन्सूख कर देता है। फिर अल्लाह अपनी 'आयतों' को पुख्ता कर देता है। अल्लाह जानने वाला और तत्वदर्शी है;[२५]

52. Never sent We a messenger or a prophet before thee but when He recited (the message), Satan proposed (opposition) in respect of that which he recited thereof. But Allah abolisheth that which Satan proposeth. Then Allah establisheth His revelations. Allah is Knower, Wise;

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

५३. ताकि उस (मिथ्या) को जो 'शैतान' (सत्य में) मिला देता है उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में रोग है, और जिन के हृदय कठोर हैं—और निस्सन्देह ज़ालिम विरोध में बहुत दूर निकल गये हैं[२६]—

53. That He may make that which the devil proposeth a temptation for those in whose hearts is a disease, and those whose hearts are hardened — Lo! the evil-doers are in open schism—

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

२४. मतलब यह है कि अल्लाह का फ़ैसला तुम्हारी घड़ियों और दिन-पत्रों (Calendar) के अन्तर्गत नहीं होता। कभी-कभी जातियों को एक-दो दिन तो क्या वह शताब्दियों तक मुहलत देता है। दे० सूरा अल-मआरिज आयत १-७, अस-सजदा आयत ५।

२५. अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले जितने भी 'नबी' भेजे जब उन्हों ने लोगों को सत्य का बुलावा दिया तो शैतानों अर्थात् उन की जाति के 'काफिर' सरदारों ने उस सत्य में असत्य बातें मिलानी शुरू कर दीं। ऐसा उन्हों ने 'नबियों' के जीवन-काल में भी किया और उन के बाद भी। अपनी इस चाल से वे जन-साधारण को सत्य से फेरना चाहते थे। 'यहूदियों' के धर्माधिकारियों और 'मुश्रिकों' के नेताओं की यही नीति रही है। क़ुरआन में विभिन्न स्थलों पर 'किताब वालों' (यहूदियों और ईसाइयों) और मुश्रिकों की बहुत सी मनमानी और धर्म-विरुद्ध बातों का उल्लेख किया गया है जो उन्हों ने अपनी ओर से गढ़ ली थीं। अब जब क़ुरआन उतरा तो उस ने उन की गढ़ी हुई बातों को मन्सूख कर दिया और उन शिक्षाओं को लोगों के सामने प्रस्तुत किया जो वास्तव में अगले 'नबियों' की शिक्षायें थीं। इस 'आयत' में विशेष रूप से उन मनगढ़न्त बातों और उन परिवर्तनों की ओर संकेत है जिन का सम्पर्क 'काबा' और 'हज्ज' सम्बन्धी रीति-रिवाज से है।

२६. जिन के दिलों में रोग है उन से अभिप्रेत 'मुनाफ़िक़' लोग हैं। कठोर हृदय यहूदियों को कहा गया। ज़ालिम लोगों से अभिप्रेत यहाँ 'मुश्रिक' लोग हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४. और ताकि वे लोग जिन्हें (आसमानी 'किताबों' का) ज्ञान प्रदान किया गया है[२७] जान लें कि यह (क़ुरआन) सत्य है[२८] तेरे 'रब' की ओर से, तो वे इस पर 'ईमान' लायें और उस के सामने उन के दिल झुक जायें। निस्सन्देह अल्लाह 'ईमान' लाने वालों को (सीधा) मार्ग दिखाता है।

54. And that those who have been given knowledge may know that it is truth from thy Lord, so that they may believe therein and their hearts may submit humbly unto Him. Lo! Allah verily is guiding those who believe unto a right path.

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

५५. 'कुफ़्' (और इन्कार) करने वाले सदा इस की ओर से सन्देह ही में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि वह घड़ी ('क़ियामत') अचानक उन पर आ जाये, या एक अशुभ[२९] दिन की यातना उन पर आ पहुँचे[३०]।

55. And those who disbelieve will not cease to be in doubt thereof until the Hour come upon them unawares, or there come unto them the doom of a disastrous day.

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

५६. राज्य उस दिन अल्लाह का होगा। वह उन के बीच फ़ैसला करेगा। तो जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये वे नेमत भरी 'जन्नतों' में होंगे,

56. The Sovereignty on that day will be Allah's. He will judge between them. Then those who believed and did good works will be in Gardens of Delight.

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۗ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۗ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾

५७. और जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, उन के लिए अपमानजनक यातना होगी।

57. While those who disbelieved and denied Our revelations, for them will be a shameful doom.

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ ع

५८. और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ा फिर क़त्ल कर दिये गये या मर गये, अल्लाह अवश्य उन्हें अच्छी रोज़ी प्रदान करेगा। और निस्सन्देह अल्लाह ही सब से उत्तम रोज़ी देने वाला है।

58. Those who fled their homes for the cause of Allah and then were slain or died, Allah verily will provide for them a good provision. Lo! Allah, He verily is Best of all who make provision.

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. वह उन्हें ऐसी जगह दाखिल करेगा जिस से वे प्रसन्न हो जायेंगे। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और अत्यन्त सहनशील है।

59. Assuredly He will cause them to enter by an entry that they will love. Lo! Allah verily is Knower, Indulgent.

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾

६०. यह (तो उन का हाल हुआ)। और जो कोई बदला ले वैसा ही जैसा उस के साथ किया गया फिर उस पर ज़्यादती की गई, तो अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत नर्मी से काम लेने वाला और बड़ा क्षमाशील है।

60. That (is so). And whoso hath retaliated with the like of that which he was made to suffer and then hath (again) been wronged, Allah will succour him. Lo! Allah verily is Mild, Forgiving.

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

२७. यह संकेत उन 'ईमान' वालों की ओर है जो 'किताब वालों' में से थे।

२८. ऊपर की 'आयत' में जिस मन्सूखी का उल्लेख किया गया है उस से एक विशेष लाभ यह होता है कि खरे लोग खोटों से अलग हो जाते हैं। खोटे लोगों के लिए 'शैतानो' की गढ़ी हुई बातें फ़ितना बन जाती हैं, वे क़ुरआन पर आक्षेप करने लग जाते हैं; परन्तु 'किताब' वालों में से जो सत्यप्रिय लोग हैं वे इस बात को भली-भाँति समझते हैं कि क़ुरआन जो कुछ ले कर उतरा है वही सत्य है इस लिए वे उस पर 'ईमान' लाते हैं।

२९. यहाँ 'अक़ीम' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का शब्दार्थ बाँझ होता है। किसी व्यक्ति के लिए किसी विशेष दिन के बाँझ होने का अर्थ यह है कि उस दिन उसे निराशा और विनाश के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई न दे।

३०. ऊपर आयत ५३ और ५४ में जिन गरोहों का उल्लेख हुआ है अन्त में उन्हें "ईमान वाले" और "कुफ़्र करने वाले"—दो गरोहों में समेट दिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. यह इस लिए कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता ले आता है, और यह कि अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।

61. That is because Allah maketh the night to pass into the day and maketh the day to pass into the night, and because Allah is Hearer, Seer.

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾

६२. यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है, जिसे वे उस के सिवा पुकारते हैं, वही अनृत है, और यह कि अल्लाह ही उच्च, और महान् है।

62. That is because Allah, He is the True, and that whereon they call instead of Him, it is the False, and because Allah, He is the High, the Great.

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

६३. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है तो धरती हरी (-भरी) हो जाती है? निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्म-दर्शी और खबर रखने वाला है।

63. Seest thou not how Allah sendeth down water from the sky and then the earth becometh green upon the morrow? Lo! Allah is Subtile, Aware.

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾

६४. उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। निस्सन्देह अल्लाह ही अपेक्षा-रहित और अपने-आप प्रशंसा का अधिकारी है।

64. Unto Him belongeth all that is in the heavens and all that is in the earth. Lo! Allah, He verily is the Absolute, the Owner of Praise.

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

६५. क्या तुम ने देखा नहीं कि धरती में जो कुछ है अल्लाह ने उसे तुम्हारे काम में लगा रक्खा है? और नौका को भी जो उस के हुक्म से दरिया में चलती है, और उस ने आकाश[३१] को धरती पर गिरने से रोक रक्खा है यह और बात है कि उसी का हुक्म हो जाये। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए अत्यन्त करुणामय और दयावन्त है।

65. Hast thou not seen how Allah hath made all that is in the earth subservient unto you? And the ship runneth upon the sea by His command, and He holdeth back the heaven from falling on the earth unless by His leave. Lo! Allah is, for mankind, Full of Pity, Merciful.

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

६६. वही है जिस ने तुम्हें जीवन प्रदान किया, फिर तुम्हें मृत्यु देता है, फिर तुम्हें (पुनः) जीवित करेगा। निश्चय ही मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

66. And He it is Who gave you life, then He will cause you to die, and then will give you life (again). Lo! man is verily an ingrate.

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

६७. प्रत्येक गरोह[३२] के लिए हम ने 'इबादत' की एक रीति ठहरा दी है जिस पर वे चलते हैं; तो (हे मुहम्मद!) वे इस मामले में तुम से न झगड़ें, तुम अपने 'रब' की ओर बुलावा दो। निस्सन्देह तुम सीधे मार्ग पर हो।

67. Unto each nation have We given sacred rites which they are to perform; so let them not dispute with thee of the matter, but summon thou unto thy Lord. Lo! thou indeed followest right guidance.

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾

६८. और यदि वे तुम से झगड़ा करें तो कह दो : जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे अच्छी तरह जानता है।

68. And if they wrangle with thee, say: Allah is best aware of what ye do.

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾

६९. अल्लाह 'क़ियामत' के दिन तुम्हारे बीच उस का फैसला कर देगा जिस में तुम विभेद करते हो।

69. Allah will judge between you on the Day of Resurrection concerning that wherein ye used to differ.

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

३१. आसमान से अभिप्रेत यहाँ ऊपरी लोक है जिस की हर एक चीज़ को अल्लाह सँभाले और थामे हुये है चाहे वे सूर्य और चन्द्रमा हों या दूसरे नक्षत्र और तारे हों या उस लोक की ओर दूसरी चीज़ें।

३२. यहाँ विशेष रूप से संकेत ईसाइयों और यहूदियों की ओर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाश और धरती में है ? निश्चय ही यह एक 'किताब' में (अंकित) है। निस्सन्देह अल्लाह के लिए यह आसान है।

70. Hast thou not known that Allah knoweth all that is in the heaven and the earth? Lo! it is in a record. Lo! that is easy for Allah.

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

७१. और वे अल्लाह के सिवा उस की 'इबादत' करते हैं जिस के लिए न तो उस ने कोई प्रमाण उतारा, और न उन्हें उस के बारे में कोई ज्ञान है। ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है।

71. And they worship instead of Allah that for which He hath sent down no warrant, and that whereof they have no knowledge. For evil-doers there is no helper.

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ ۗ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾

७२. और जब उन्हें हमारी प्रत्यक्ष 'आयतें' सुनाई जाती हैं, तो तुम 'कुफ़्' करने वालों के चेहरों पर नागवारी देखते हो; ऐसा जान पड़ता है कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी 'आयतें' सुनाते हैं। कह दो : क्या मैं तुम्हें इस से भी बुरी चीज़ बताऊँ ? वह आग ('जहन्नम') है ! अल्लाह ने 'कुफ़्' करने वालों के लिए उस का वादा कर रक्खा है। और वह क्या ही बुरा ठिकाना है ?

72. And when Our revelations are recited unto them, thou knowest the denial in the faces of those who disbelieve; they all but attack those who recite Our revelations unto them. Say: Shall I proclaim unto you worse than that? The Fire! Allah hath promised it for those who disbelieve, a hapless journey's end!

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ
تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم
بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

७३. हे लोगो ! एक मिसाल दी जाती है, तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो : अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि इस के लिए वे सब इकट्ठा हो जायें। और यदि मक्खी उन में से कोई चीज़ छीन ले जाये, तो वे उस से उस को वापस नहीं ले सकते। चाहने वाला भी कमज़ोर और जिसे चाहे वह भी !

73. O mdnkind! A similitude is coined, so pay ye heed to it: Lo! those on whom ye call beside Allah will never create a fly though they combine together for the purpose. And if the fly took something from them, they could not rescue it from it. So weak are (both) the seeker and the sought!

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن
يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ
مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾

७४. उन्हों ने अल्लाह का मान (माहात्म्य) नहीं समझा जैसा कि उस का मान है। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त बलवान् और प्रभुत्वशाली है।

74. They measure not Allah His rightful measure, Lo! Allah is Strong, Almighty.

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

७५. अल्लाह 'फ़िरिश्तों' में से सन्देश पहुँचाने वाला चुन लेता है,[३३] और मनुष्यों में से भी। निस्सन्देह वह सुनने वाला और देखने वाला है।

75. Allah chooseth from the angels mesesngers, and (also) from mankind. Lo! Allah is Hearer, Seer.

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَ
مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾

७६. वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

76. He knoweth all that is before them and all that is behind them and unto Allah all things are returned.

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

३३. जैसे अल्लाह के विशेष 'फ़िरिश्ते' हज़रत 'जिबरील' अ०, जो अल्लाह की ओर से नबी सल्ल० के पास 'वह्य' लाया करते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. हे 'ईमान' लानें वालो ! (अल्लाह के आगे) झुको और 'सजदा' करो, और अपनें 'रब' की 'इबादत' करो, और नेक काम करो ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

७८. और 'जिहाद' (जान तोड़ कोशिश) करो अल्लाह (के मार्ग) में ठीक-ठीक जिहाद। उस ने तुम्हें चुन लिया है—और 'दीन' में तुम पर कोई तंगी नहीं रक्खी; तुम्हारे बाप इबराहीम का पन्थ (तुम्हारा पन्थ है) उस ने तुम्हारा नाम 'मुस्लिम' रक्खा था पहले भी[३४] और इस में भी—ताकि 'रसूल' तुम पर गवाह हो, और तुम लोगों पर गवाह हो।[३५] तो 'नमाज़' क़ायम करो, और 'ज़कात' दो, और अल्लाह (के दामन) को मज़बूती से पकड़े रहो[३६]। वही तुम्हारा स्वामी और संरक्षक-मित्र है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक !

77. O, ye who believe! Bow down and prostrate yourselves, and worship your Lord, and do good, that haply ye may prosper?

78. And strive for Allah with the endeavour which is His right. He hath chosen you and hath not laid upon you in religion any hardship; the faith of your father Abraham (is yours). He hath named you Muslims of old time and in this (Scripture), that the messenger may be a witness against you, and that ye may be witnesses against mankind. So establish worship, pay the poordue, and hold fast to Allah. He is your Protecting Friend. A blessed Patron and a blessed Helper!

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَ
اعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿٧٧﴾
وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ
وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ
مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ
مِنْ قَبْلُ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ
شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ
فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا
بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

———

३४. यह हज़रत इबराहीम अ० की उस दुआ की ओर संकेत है जिस का उल्लेख सूरा अल-बक़रा आयत १२८ में मिलता है।
३५. दे० सूरा अल-बक़रा आयत १४३।
३६. अर्थात् उस पर भरोसा करो, उस के मार्ग में धैर्य्य से काम लो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३–अल-मोमिनून
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मोमिनून' ('ईमान' वाले) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। इस सूरा में इस का उल्लेख हुआ है कि काफ़िर असफल और यातना के भागी होंगे; सफलता तो 'ईमान' वालों के लिए है[1]।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं से मालूम होता है कि यह सूरा मक्का के मध्यकाल में उतरी है। यह वही समय है जब कि काफ़िरों और 'ईमान वालों' के बीच संघर्ष आरम्भ हो चुका था। परन्तु 'काफ़िरों' का विरोध अभी अपनी चरम सीमा को नहीं पहुँच सका था। 'सूरा' की आयत ७५-७६ से मालूम होता है कि यह उस समय की सूरा है जब कि वह अकाल उग्र रूप धारण कर चुका था जो ऐतिहासिक कथनों के अनुसार इसी मध्य काल में पड़ा था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' में 'काफ़िरों' और सत्य का इन्कार करने वालों को 'क़ियामत' की यातना और दुनिया के विनाश को प्राप्त होने की धमकी दी गई है। सूरा की आयत ११५ से सूरा के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश पड़ता है। 'काफ़िरों' और सत्य के न मानने वालों के लिए यातना की धमकी ही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। प्रस्तुत सूरा और पिछली सूरा में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। पिछली सूरा (अल-हज्ज) की अन्तिम आयत में एकेश्वरवादियों की सफलता का उल्लेख हुआ है और स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अल्लाह 'मुस्लिम' गरोह का सहायक और संरक्षक है। प्रस्तुत सूरा 'ईमान' वालों को शुभ-सूचना देती हुई आरम्भ होती है।

इस के अतिरिक्त पिछली सूरा में एक गरोह के उठाये जाने का और उस के कर्तव्यों का उल्लेख हुआ है। और उस प्रतिज्ञा का उल्लेख भी किया गया है जिस पर उस गरोह को खड़ा किया गया है। प्रस्तुत सूरा में उल्लिखित प्रतिज्ञा और कर्तव्यों का विस्तार पाया जाता है।

इस 'सूरा' में इस बात पर बल दिया गया है कि मनुष्य विचार करे कि वह किस तरह पैदा हुआ है। इस के अतिरिक्त धरती और आकाश में फैली हुई निशानियों पर भी उसे सोच-विचार करना चाहिए ताकि अल्लाह के एक होने और 'आख़िरत' के सत्य होने का उसे पूर्ण विश्वास हो। वह भली-भाँति जान ले कि अल्लाह का 'रसूल' जिन बातों के मानने की शिक्षा देता है उन के सत्य होने पर न केवल यह कि मनुष्य का अपना अस्तित्व बल्कि अखिल विश्व साक्षी है।

इस 'सूरा' में 'नबियों' के क़िस्से भी बयान किये गये हैं जिन से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिन बातों की ओर लोगों को आमन्त्रित करते हैं उन्हीं बातों की ओर पिछले सभी 'नबी' लोगों को बुलाते रहे हैं। 'दीन' और धर्म समस्त 'नबियों' का सनातन से एक ही रहा है। जिन जातियों ने 'नबियों' का विरोध किया वे विनष्ट हो कर रहीं।

बताया गया कि सुख-सामग्री, धन-सम्पत्ति, और राज्य-वैभव आदि ऐसी चीज़ें नहीं हैं कि इन्हें किसी व्यक्ति या गरोह के सत्य पर होने का प्रमाण कहा जा सके। जिस जीज़ के कारण मनुष्य अल्लाह के यहाँ प्रिय बनता है वह मनुष्य के अपने 'ईमान' और उस की सत्यवादिता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मक्का वालों को विभिन्न रूप से समझाया गया कि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' पर 'ईमान' लायें।

विरोधियों को 'आख़िरत' की यातना से डराया गया और उन्हें सचेत किया गया कि सत्य के विरुद्ध तुम ने जो नीति अपनाई है उस के लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारी पकड़ हो कर रहने वाली है।

'नबी' सल्ल० को हुक्म दिया गया कि आप (सल्ल०) बुराई का उत्तर भलाई से दें। शत्रु बुरी नीति अपनाते हैं परन्तु आप (सल्ल०) का तरीक़ा वही होना चाहिए जो उत्तम है।

१. दे० आयत १ और ११७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मोमिनून
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ११८)

THE BELIEVERS
Revealed at Mecca

سورة المؤمنون مكية وهي مائة وثماني عشرة آية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

१. निश्चय ही सफलता प्राप्त की 'ईमान' वालों ने।

1. Successful indeed are the believers

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١

२. जो अपनी 'नमाज़' में नम्रता ग्रहण करते हैं,

2. Who are humble in their prayers,

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝٢

३. और जो व्यर्थ बातों से बचने वाले हैं,

3. And who shun vain conversation,

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣

४. और जो 'ज़कात' के नियम का पालन करते हैं।

4. And who are payers of the poor-due,

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝٤

५. और जो अपनी शर्मगाहों (गुह्य इन्द्रियों) की रक्षा करते हैं—

5. And who guard their modesty —

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٥

६. सिवाय अपनी पत्नियों के और उन (लौडियों) के जो उन की मिल्क में हों, कि वे निन्दनीय नहीं हैं,[1]

6. Save from their wives or the (slaves) that their right hands possess, for then they are not blameworthy,

إِلَّا عَلٰى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٦

७. परन्तु जो कोई इस के अतिरिक्त कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं'—

7. But whoso craveth beyond that, such are transgressors —

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٧

८. और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं,[2]

8. Andwho are shepherds of their pledge and their covenant,

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٨

९. और जो अपनी 'नमाज़ों' की रक्षा करते हैं[3]।

9. And who pay heed to their prayers.

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩

१०. यही लोग वारिस (उत्तराधिकारी) हैं।

10. These are the heirs.

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝١٠

११. जो विरासत से 'फ़िरदौस' पायेंगे। वे उस में सदैव रहेंगे।

11. Who will inherit Paradise. There they will abide.

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١

यहां से अठारहवां पारा (Part XVIII) आरम्भ होता है।

१. काम-वासना अथवा सहवास की इच्छा कोई बुरी चीज़ नहीं जैसा कि बहुत से लोगों का विचार है; हां इस इच्छा की पूर्ति अवैध रूप से नहीं होनी चाहिए।

२. 'नबी' सल्ल० कहा करते थे: वह व्यक्ति 'ईमान' नहीं रखता जो अमानतदार नहीं और वह कोई 'दीन' (धर्म) नहीं रखता जो प्रतिज्ञा का पालन नहीं करता।

३. अर्थात् ठीक तौर पर जैसा कि चाहिए अदा करते हैं। 'नमाज़' का उल्लेख आरम्भ में भी किया गया था; अन्त में फिर उसे लाया गया है। एक 'मुस्लिम' के जीवन का आरम्भ और अन्त 'नमाज़' ही है। यदि उस की नमाज़ ठीक है तो फिर उस का पूरा जीवन ठीक होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. निश्चय ही हम ने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया;

12. Verily We created man from a product of wet earth;

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ﴿١٢﴾

१३. फिर उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूंद (वीर्य्य) के रूप से रक्खा;

13. Then placed him as a drop (of seed) in a safe lodging;

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ﴿١٣﴾

१४. फिर उस बूंद (वीर्य्य) को लोथड़े का रूप दिया, फिर उस लोथड़े को एक (मांस की) बोटी का रूप दिया, फिर बोटीकी हड्डियाँ बनाईं, फिर उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया,[४] फिर उसे एक दूसरा ही सृजन रूप दे कर खड़ा किया[५]। तो बहुत बरकत वाला है अल्लाह, सब से उत्तम सृष्टिकर्त्ता !

14. Then fashioned We the drop a clot, then fashioned We the clot a little lump, then fashioned We the little lump bones, then clothed the bones with flesh, and then produced it as another creation. So blessed be Allah, the Best of Creators!

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٤﴾

१५. फिर इस के बाद तुम अवश्य ही मरने वाले हो।

15. Then lo! after that ye surely die.

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾

१६. फिर 'क़ियामत' के दिन तुम निश्चय ही उठाये जाओगे।

16. Then lo! on the Day of Resurrection ye are raised (again).

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

१७. और तुम्हारे ऊपर हम ने सात गुज़रगाहें बनाईं, और हम सृष्टि के काम से ग़ाफ़िल नहीं।

17. And We have created above you seven paths, and We are never unmindful of creation.

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾

१८. और आकाश से हम ने एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उसे धरती में ठहरा दिया, और उसे हम लुप्त करने का सामर्थ्य रखते हैं।

18. And We send down from the sky water in measure, and We give it lodging in the earth and lo! We are able to withdraw it.

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾

१९. फिर उस (पानी) के द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये, तुम्हारे लिये उन (बाग़ों) में बहुत से स्वादिष्ट फल हैं[६] और उन (बाग़ों) से तुम खाते हो;

19. Then We produce for you therewith gardens of date-palms and grapes, wherein is much fruit for you and whereof ye eat.

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾

२०. और वह वृक्ष भी (हम ने पैदा किया) जो तूर सैना से निकलता है[७] तेल लिये हुये उगता है और खाने वालों के लिए सालन[८]।

20. And a tree that springeth forth from Mount Sinai that groweth oil and relish for the eaters.

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْآكِلِينَ ﴿٢٠﴾

४. दे० सूरा अल-हज्ज फ़ुटनोट १।
५. अर्थात् उसे एक जीता-जागता मनुष्य बना दिया जो पहले की अपेक्षा बिल्कल एक और ही चीज़ प्रतीत होता है। फिर उस की इस अवस्था में भी परिवर्तन होता है; वह बच्चे से युवा और युवावस्था से फिर बुढ़ापे को पहुंचता है।
६. अर्थात् खजूरों और अंगूरों के अतिरिक्त और भी विभिन्न प्रकार के फल और मेवे।
७. अर्थात् जैतून का वृक्ष जो रूम सागर के निकटवर्ती क्षेत्रों की विशेष उपज है। जैतून के वृक्ष दीर्घ काल तक चलते हैं। इस की आयु डेढ़-दो हज़ार वर्ष तक पहुंचती है। फ़लस्तीन के कुछ पेड़ों के बारे में अनुमान है कि वे हज़रत मसीह के समय से चले आ रहे हैं। जैतून जिस भू-भाग की विशेष उपज है उस का प्रसिद्ध स्थान "तूर सैना" ही है।
८. अर्थात् वह तेल सालन का काम देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. और निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में एक शिक्षा-सामग्री है। उन के पेटों में जो कुछ है उस में से हम तुम्हें एक चीज़ पिलाते हैं,[९] और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ायदे हैं, और उन्हें तुम खाते हो;

21. And lo! in the cattle there is verily a lesson for you. We give you to drink of that which is in their bellies, and many uses have ye in them, and of them do ye eat:

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾

२२. और उन पर और नावों पर सवार भी किये जाते हो।

22. And on them and on the ship ye are carried.

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

२३. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर भेजा, तो उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो। उस के सिवा तुम्हारा और कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है। क्या तुम डर नहीं रखते?

23. And We verily sent Noah unto his folk, and he said: O my people! Serve Allah. Ye have no other god save Him. Will ye not ward off (evil)?

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾

२४. इस पर उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने 'कुफ़्' किया था, कहने लगे : यह तो बस तुम्हीं जैसा एक आदमी है चाहता है कि तुम पर श्रेष्ठता प्राप्त करे। और यदि अल्लाह चाहता, तो 'फ़िरिश्ते' भेजता। यह तो हम ने अपने अगले पूर्वजों में नहीं सुना।

24. But the chieftains of his folk, who disbelieved, said: This is only a mortal like you who would make himself superior to you. Had Allah willed, He surely could have sent down angels. We heard not of this in the case of our fathers of old.

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

२५. कुछ नहीं, यह तो बस एक आदमी है जिसे उन्माद हो गया है, तो एक समय तक इस की प्रतीक्षा कर लो।

25. He is only a man in whom is a madness, so watch him for a while.

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ ۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

२६. (नूह ने) कहा : 'रब'! इन्हों ने मुझे झुठलाया है इस पर तू मेरा सहायक हो[१०]।

26. He said: My Lord! Help me because they deny me.

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾

२७. तब हम ने उस की ओर 'वह्य' की कि हमारी आँखों के सामने और हमारी 'वह्य' के अनुसार नौका बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ जाये और वह तनूर उबल पड़े[११] तो हर क़िस्म (के जानवरों) में से एक-एक जोड़ा, उस में ले ले, और अपने घर वालों को भी सिवाय उस के जिस के विरुद्ध पहले ही बात निश्चित हो चुकी है। और ज़ुल्म करने वालों के प्रति मुझ से बात न करना। वे अवश्य डूब कर रहने वाले हैं।

27. Then We inspired in him saying: Make the ship under Our eyes and Our inspiration. Then, when Our command cometh and the oven gusheth water, introduce therein of every (kind) two spouses, and thy household save him thereof against whom the Word hath already gone forth. And plead not with Me on behalf of those who have done wrong. Lo! they will be drowned.

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

९. अर्थात् दूध। दे० सूरा अन-नह्ल फ़ुटनोट २४।
१०. अर्थात् ये जो मुझे झुठलाये जा रहे हैं तू इस का बदला इन से ले ले। दे० सूरा अल-क़मर आयत १०, सूरा नूह आयत २१-२८।
११. दे० सूरा हूद फ़ुटनोट १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. फिर जब तू अपने साथियों के साथ नौका पर सवार हो जाये, तो कह : प्रशंसा अल्लाह के लिए जिस ने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया !

28. And when thou art on board the ship, thou and whoso is with thee, then say: Praise be to Allah who hath saved us from the wrongdoing folk!

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ٢٨

२९. और कह : रब ! मुझे बरकत वाली जगह उतार, और तू अच्छा उतारने वाला[12] है।

29. And say: My Lord! Cause me to land at a blessed landing-place, for Thou art best of all who bring to land.

وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ٢٩

३०. निस्सन्देह इस में बड़ी निशानियाँ हैं, और हम निश्चय ही आज़माने वाले हैं।

30. Lo! herein verily are portents, for lo! We are ever putting (mankind) to the test.

إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ٣٠

३१. फिर, उन के बाद, हम ने एक दूसरी नस्ल को[13] उठाया;

31. Then, after them We brought forth another generation;

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِينَ ٣١

३२. फिर उन में हम ने उन्हीं में का एक 'रसूल' भेजा कि अल्लाह की 'इबादत' करो उस के सिवा तुम्हारा और कोई 'इलाह' नहीं है। क्या तुम डरते नहीं ?

32. And We sent among them a messenger of their own, saying: Serve Allah. Ye have no other god save Him. Will ye not ward off (evil)?

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ٣٢

३३. और उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया और 'आख़िरत' की मुलाक़ात को झुठलाया, और जिन्हें हम ने सांसारिक जीवन में सुखानन्द दिया था, कहने लगे : यह तो बस तुम्हीं जैसा एक आदमी है, जो कुछ तुम खाते हो वही कुछ यह भी खाता है और जो कुछ तुम पीते हो वही यह भी पीता है।

33. And the chieftains of his folk, who disbelieved and denied the meeting of the Hereafter, and whom We had made soft in the life of the world, said: This is only a mortal like you, who eateth of that whereof ye eat and drinketh of that ye drink.

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ٣٣

३४. यदि तुम ने अपने ही जैसे एक मनुष्य की आज्ञा का पालन किया, तो निश्चय ही तुम घाटे में रहे।

34. If ye were to obey a mortal like yourselves, then, lo! ye surely would be losers.

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُونَ ٣٤

३५. क्या यह तुम्हें डराता है कि जब तुम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जाओगे, तो तुम (क़बरों से) निकाले जाओगे ?

35. Doth he promise you that you, when ye are dead and have become dust and bones, will (again) be brought forth?

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا أَنَّكُمْ مُّخْرَجُونَ ٣٥

३६. दूर है, बहुत दूर, जिस का तुम से वादा किया जा रहा है !

36. Begone, begone, with that which ye are promised!

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ٣٦

३७. जीवन तो बस यही सांसारिक जीवन है; हम मरते और जीते हैं, और हम पुनः उठाये जाने वाले नहीं हैं।

37. There is naught but our life of the world; we die and we live, and we shall not be raised (again).

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ٣٧

१२. अरबी मुहावरे के अनुसार "उतारने" में आतिथ्य का अर्थ भी पाया जाता है।
१३. अर्थात् एक दूसरे दौर की जाति को। यह संकेत 'आद' की ओर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. यह तो बस ऐसा आदमी है जिस ने अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़ा है। और हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

38. He is only a man who hath invented a lie about Allah. We are not going to put faith in him.

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ
كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ٣٨

३९. (रसूल ने) कहा : 'रब' ! इन्हों ने मुझे झुठलाया है इस पर तू मेरा सहायक हो,

39. He said: My Lord! Help me because they deny me.

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ٣٩

४०. कहा : जल्द ही ये (अपने किये पर) लज्जित होंगे।

40. He said: In a little while they surely will become repentant.

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ٤٠

४१. तो सत्य के अनुसार उन्हें[१४] एक (भयंकर) चीख ने आ लिया, और हम ने उन्हें कचरा[१५] बना कर रख दिया। तो दूरी ज़ालिम लोगों के लिए !

41. So the (Awful) Cry overtook them rightfully, and We made them like as wreckage (that a torrent hurleth). A far removal for wrongdoing folk!

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ
غُثَاءً فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٤١

४२. फिर हम ने उन के बाद दूसरी नस्ल को उठाया।

42. Then after them We brought forth other generations.

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ٤٢

४३. कोई गरोह न तो अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकता है, और न पीछे रह सकता है।

43. No nation can outstrip its term, nor yet postpone it.

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ٤٣

४४. फिर हम ने लगातार अपने 'रसूल' भेजे। जब कभी भी किसी समुदाय के पास उस का 'रसूल' आया (लोगों ने) उसे झुठला दिया, तो हम एक को दूसरे के पीछे (विनाश के लिए) चलाते गये और उन्हें कहानियाँ बना डाला। दूरी उन लोगों के लिए जो 'ईमान' नहीं लाते !

44. Then We sent our messengers one after another. Whenever its messenger came unto a nation they denied him; so We caused them to follow one another (to disaster) and We made them bywords. A far removed folk who believe not.

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّمَا جَاءَ
أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ
بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا
لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ٤٤

४५. फिर हम ने मूसा और उस के भाई हारून को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।

45. Then We sent Moses and his brother Aaron with Our tokens and a clear warrant,

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ
بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ٤٥

४६. फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर, परन्तु उन्हों ने अपने को बड़ा समझा और वे थे बड़े सरकश लोग।

46. Unto Pharaoh and his chiefs, but they scorned (them) and they were despotic folk.

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا عَالِينَ ٤٦

४७. कहने लगे : क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों पर 'ईमान' लायें, इस दशा में कि उन की जाति वाले हमारे दास हैं ?

47. And they said: Shall we put faith in two mortals like ourselves, and whose folk are servile unto us?

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا
لَنَا عَابِدُونَ ٤٧

१४. यह संकेत 'आद' और 'समूद' की ओर है।
१५. क़ुरआन में 'ग़ुसा' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'ग़ुसा' उस कूड़ा-करकट को कहते हैं जो बाढ़ के अवसर पर बहता हुआ आता है और फिर किनारों से लग कर पड़ा सड़ा करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. तो उन्हों ने उन दोनों को झुठला दिया, और विनष्ट होने वालों में से हो गये।	48. So they denied them and became of those who were destroyed.	فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾
४९. और हम ने मूसा को 'किताब' प्रदान की थी, कदाचित् वे लोग मार्ग पा लें।	49. And We verily gave Moses the Scripture, that haply they might go aright.	وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾
५०. और मरयम के बेटे और उस की माता को हम ने एक निशानी बनाया, और उन दोनों को एक ऊँची जगह पर रक्खा, जहाँ ठहराव था और बहता हुआ स्रोत[१६]।	50. And We made the son of Mary and his mother a portent, and We gave them refuge on a height, a place of flocks and water-springs.	وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَّآوَيْنٰهُمَا إِلَى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ ع
५१. हे 'रसूलो' ! पाक चीज़ें खाओ, और अनुकूल कर्म करो। निस्सन्देह जो कुछ तुम करते हो मैं उसे जानता हूँ[१७]।	51. O ye messengers! Eat of the good things, and do right. Lo! I am Aware of what ye do.	يٰأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾
५२. और निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा 'रब' हूँ, तो तुम मेरा ही डर रक्खो।	52. And lo! this your religion is one religion and I am your Lord, so keep your duty unto Me.	وَإِنَّ هٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾
५३. परन्तु लोग अपने बीच अपने कृत्य में टुकड़े-टुकड़े हो गये, हर गरोह उसी में मग्न है जो कुछ कि उन के पास है[१८]।	53. But they (mankind) have broken their religion among them into sects, each group rejoicing in its tenets.	فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾
५४. अच्छा, तो छोड़ो उन्हें उन की असावधानी की दशा में एक समय तक।	54. So leave them in their error till a time.	فَذَرْهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِينٍ ﴿٥٤﴾
५५. क्या ये समझते हैं कि हम जो इन्हें माल और औलाद से मदद दिये जाते हैं,	55. Think they that in the wealth and sons wherewith We provide them,	أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِينَ ﴿٥٥﴾
५६. तो यह इन की भलाइयों में जल्दी करते हैं ? नहीं, बल्कि ये ज्ञान ही नहीं रखते।	56. We hasten unto them with good things? Nay, but they percieve not.	نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۚ بَلْ لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾
५७. निश्चय ही, जो लोग अपने 'रब' के भय से डरते हैं,	57. Lo! those who go in awe for fear of their Lord,	إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾
५८. और जो अपने 'रब' की 'आयतों' पर ईमान रखते हैं,	58. And those who believe in the revelations of their Lord,	وَالَّذِينَ هُمْ بِآيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

१६. अर्थात् जहाँ हर तरह की सुविधायें थीं। इस आयत में किस स्थान की ओर संकेत है इस के बारे में निश्चित रूप से कोई बात नहीं कही जा सकती। ईसाइयों के कथनों से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० के पैदा होने के बाद उन की रक्षा के ध्येय से हज़रत मरयम दो बार स्वदेश छोड़ने पर विवश हुई हैं। पहली बार वह मिस्र गईं; यह हीरोदीस (Herod) सम्राट का समय था। दूसरी बार अरखिलऊस (Archelaus) के राज्य-काल में गलील (Galilee) के नगर नासिरा (Nazareth) में उन्हों ने शरण ली। दे० मत्ता (Matt.) २ : १३-२३।

१७. दे० सूरा अल-अहज़ाब आयत ७, ७२। "हे रसूलो !" का सम्बोधन कर के वास्तव में यह बताना अभीष्ट है कि समस्त रसूलों को यही आदेश दिया गया था, चाहे वे कहीं भी 'रसूल' बना कर भेजे गये हों; और चाहे उन का समय कोई रहा हो।

१८. इस से मालूम होता है कि मानव-जाति का वास्तविक धर्म यही 'इस्लाम' ही है जिस की ओर यह क़ुरआन बुला रहा है। संसार के दूसरे धर्म जो आज पाये जाते हैं वे इसी वास्तविक धर्म के बिगड़े हुये रूप हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९. और जो अपने 'रब' का सहभागी नहीं बनाते,

59. And those who ascribe not partners unto their Lord:

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

६०. और जो देते हैं जो कुछ कर के देते हैं इस हाल में कि दिल उन के काँप रहे होते हैं[१९] कि वे अपने 'रब' की ओर पलटने वाले हैं,

60 And those who give that which they give with hearts afraid because they are about to return unto their Lord:

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

६१. यही लोग हैं जो भलाइयों में जल्दी करते हैं, और उन (भलाइयों) के लिए अग्रसर रहने वाले हैं।

61. These race for the good things, and they shall win them in the race.

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

६२. और हम किसी व्यक्ति पर उस की समाई से बढ़ कर ज़िम्मेदारी नहीं डालते, और हमारे पास एक 'किताब' है जो बोलती है ठीक-ठीक, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

62. And We task not any soul beyond its scope, and with Us is a Record which speaketh the truth, and they will not be wronged.

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

६३. परन्तु, इन के दिल इस की ओर से ग़फ़लत में हैं, और इन के कर्म उस से भिन्न हैं (जिन का ऊपर उल्लेख हुआ है), वे उन्हीं (कर्मों) को करते रहेंगे;

63. Nay, but their hearts are in ignorance of this (Qur'an), and they have other works, besides, which they are doing:

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾

६४. यहाँ तक कि जब हम उन के सुख-भोगियों को यातना में पकड़ेंगे, तो फिर वे चिल्लाने और फ़रियाद करने लगेंगे।

64. Till when We grasp their luxurious ones with the punishment, behold! they supplicate.

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ ﴿٦٤﴾

६५. (कहा जायेगा) : मत चिल्लाओ और फ़रियाद करो आज! तुम्हें हमारी ओर से कोई सहायता मिलने की नहीं।

65. Supplicate not this day! Assuredly ye will not be helped by Us.

لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُنْصَرُونَ ﴿٦٥﴾

६६. मेरी 'आयतें' तुम्हें सुनाई जाती थीं, तो तुम उलटे पाँव फिर जाते थे,

66. My revelations were recited unto you, but ye used to turn back on your heels.

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُونَ ﴿٦٦﴾

६७. अकड़ते हुये, उसे बकवास करता हुआ छोड़ते थे[२०]।

67. In scorn thereof, nightly did ye rave together.

مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سَامِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

६८. क्या इन्हों ने इस कलाम पर चिन्तन नहीं किया, या इन के पास कोई ऐसी चीज़ आई है जो इन के अगले पूर्वजों के पास न आई थी[२१]?

68. Have they not pondered the Word, or hath that come unto them which came not unto their fathers of old?

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

१९. यहाँ "देना" से अभिप्रेत केवल भौतिक वस्तुओं को देना नहीं है, अरबी भाषा में "देना" (ईता) शब्द आन्तरिक अथवा अभौतिक वस्तुओं के देने के लिए भी प्रयुक्त होता है। मतलब यह हुआ कि वे जो कुछ भी खर्च करते हैं और जो नेकी और 'इबादत' भी वे करते हैं उस पर उन्हें गर्व नहीं होता। वे डरते रहते हैं कि मालूम नहीं हमारी नेकियाँ अल्लाह के यहाँ क़बूल भी होती हैं या नहीं, पता नहीं 'आखिरत' में हमारी नेकियों का पलड़ा भारी होता है या हमारे गुनाहों का बोझ भारी रहता है।

२०. अर्थात् वे 'रसूल' को ऐसा छोड़ देते हैं जैसे वह कोई बकवास करने वाला व्यक्ति हो। ऐसा लगता है जैसे क़ुरआन की हैसियत उन की दृष्टि में बकवास के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

२१. अर्थात् क्या यह कोई ऐसी अद्भुत और निराली बात है जिससे ये बिल्कुल ही अनभिज्ञ हों? 'नबियों' का आना, लोगों को अल्लाह का कलाम सुनाना और उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुलाना आदि मानव-इतिहास में कोई ऐसी बात नहीं है जो लोगों के लिए बिल्कुल नई और अनोखी हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. या ये अपने 'रसूल' से परिचित न थे कि उस से बिदकते हैं[२२] ?

69. Or know they not their messenger, and so reject him?

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ٦٩

७०. या ये कहते हैं कि उसे उन्माद हो गया है ? नहीं, बल्कि वह इन के पास सत्य लाया है; और इन में के अधिकतर सत्य को नापसन्द करते हैं।

70. Or say they: There is a madness in him? Nay, but he bringeth them the Truth; and most of them are haters of the Truth.

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ٧٠

७१. और यदि कहीं सत्य इन की तुच्छ इच्छाओं के पीछे चलता, तो आकाशों और धरती और जो कोई उन में है सब की व्यवस्था बिगड़ जाती। नहीं, बल्कि हम उन के पास उन का अनुस्मारक लाये हैं, परन्तु वे अपने अनुस्मारक से किनारा खींच रहे हैं।

71. And if the Truth had followed their desires, verily the heavens and the earth and whosoever is therein had been corrupted. Nay, We have brought them their Reminder, but from their Reminder they now turn away.

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَاهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ ٧١

७२. क्या तू इन से कुछ शुल्क माँग रहा है ? तेरे 'रब' का दिया ही उत्तम है, और वह सब से उत्तम रोज़ी देने वाला है।

72. Or dost thou ask of them (O Muhammad) any tribute? But the bounty of thy Lord is better, for He is Best of all who make provision.

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ٧٢

७३. और तू तो उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाता है।

73. And lo! thou summonest them indeed unto a right path.

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ٧٣

७४. और जो लोग 'आखिरत' पर 'ईमान' नहीं रखते वे इस मार्ग से पूरी तरह कतराये हुये हैं।

74. And lo! those who believe not in the Hereafter are indeed astray from the path.

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ٧٤

७५. और यदि हम इन पर दया करें और जो तकलीफ़ इन पर है उसे दूर कर दें, तो ये अपनी सरकशी में बराबर बहकते रहें[२३]।

75. Though We had mercy on them and relieved them of the harm afflicting them, they still would wander blindly on in their contumacy.

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ٧٥

७६. यद्यपि हम ने इन्हें यातना में पकड़ा, फिर भी ये अपने 'रब' के आगे न दबे, और न गिड़गिड़ाये,

76. Already have We grasped them with punishment, but they humble not themselves unto their Lord, nor do they pray.

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ٧٦

७७. यहाँ तक कि जब हम इन पर कठोर यातना का दरवाज़ा खोल दें, तो तत्काल ये उस में निराश हो कर रह जायेंगे।

77. Until, when We open for them the gate of extreme punishment, behold! they are aghast threat.

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ٧٧

२२. अर्थात् जिस 'रसूल' के द्वारा इन लोगों को हमारा सन्देश पहुँच रहा है वह इन्हीं के बीच पैदा हुआ है। उस का चरित्र दोषरहित है, उस की सच्चाई के सभी लोग साक्षी हैं। उस ने अपने 'नबी' होने की घोषणा करने से एक दिन पहले तक भी कोई ऐसी बात नहीं कही जिस के आधार पर कोई यह कह सकता कि वह पहले से इस की तैयारी कर रहा था। जिस दिन से उस ने अपने 'नबी' होने का एलान किया उस के बाद से आज तक वह एक ही बात कहता आ रहा है; उस में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फ़िर जिस बात की वह दूसरों को शिक्षा देता है पहले वह स्वयं उस का पालन करता है।

२३. यह संकेत है उस संकट की ओर जिस में वे अकाल के कारण ग्रस्त हुये थे। जब मक्का के लोग 'नबी' सल्ल० का निरन्तर इन्कार ही करते गये और आप (सल्ल०) की राह में रुकावटें ही डालते रहे, तो आप (सल्ल०) ने प्रार्थना की : हे अल्लाह ! इन के मुक़ाबले में यूसुफ़ (अ०) के सप्तवर्षीय अकाल जैसे सात वर्षों से मेरी सहायता कर। अल्लाह ने आप (सल्ल०) की विनती सुन ली। ऐसा अकाल पड़ा कि मुरदार जानवर तक खाने की नौबत आ गई। यह अकाल 'हिजरत' से पूर्व 'नुबूवत' के आरम्भ काल के कुछ ही मुद्दत के बाद पड़ा था। इस अकाल की ओर मक्का में उतरने वाली अधिकतर सूरतों में संकेत किये गये हैं, मिसाल के लिए देखें : सूरा अल-अनआम आयत ४२-४३, अल-आराफ़ आयत ९४-९६, यूनुस आयत २१, अन-नह्ल आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाये । तुम कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो !

78. He it is Who hath created for you ears and eyes and hearts. Small thanks give ye!

وَهُوَ الَّذِيٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨

७९. और वही है जिस ने तुम्हें धरती में फैलाया, और उसी की ओर तुम समेटे जाओगे ।

79. And He it is Who hath sown you broadcast in the earth, and unto Him ye will be gathered.

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ
وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩

८०. और वही है जो जीवित करता और मौत देता है, और रात और दिन का उलट-फेर उसी का है । क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

80. And He it is Who giveth life and causeth death, and His is the difference of night and day. Have ye then no sense?

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠

८१. नहीं, बल्कि इन्हों ने वही कुछ कहा जो इन के अगले कह चुके हैं;

81. Nay, but they say the like of that which said the men of old;

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١

८२. कहते हैं : क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायेंगे, तो हमें पुनः (जीवित कर के) उठाया जायेगा ?

82. They say: When we are dead and have become (mere) dust and bones, shall we then, forsooth, be raised again?

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢

८३. यह वादा तो हम से और इस से पहले हमारे पूर्वजों से होता आ रहा है । यह तो बस पिछले लोगों की कहानियाँ (बेसनद बातें) हैं ।

83. We were already promised this, we and our forefathers. Lo! this is naught but fables of the men of old.

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا مِنْ
قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣

८४. कहो : यह ज़मीन और जो कोई इस में है वह किस का है, बताओ यदि तुम जानते हो ।

84. Say: Unto Whom (belongeth) the earth and whosoever is therein, if ye have knowledge?

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٤

८५. वे बोल उठेंगे : अल्लाह का । कहो : फिर तुम क्यों नहीं चेतते ?

85. They will say: Unto Allah. Say: Will ye not then remember?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٥

८६. कहो : सातों आकाशों का 'रब', और महान् (राज्य-) सिंहासन का 'रब' (स्वामी) कौन है ?

86. Say: Who is Lord of the seven heavens, and Lord of the Tremendous Throne?

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٦

८७. कहेंगे : अल्लाह ही का (सब है) । कहो : फिर तुम डरते क्यों नहीं ?

87. They will say: Unto Allah (all that belongeth), Say: Will ye not then keep duty (unto Him)?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٨٧

८८. कहो : हर चीज़ की बादशाही किस के हाथ में है जो शरण देता है, जिस के मुक़ाबले में शरण नहीं दी जा सकती, बताओ यदि तुम जानते हो ?

88. Say: In Whose hand is the dominion over all things and He protecteth, while against Him there is no protection, if ye have knowledge?

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ
يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٨

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. कहेंगे : (यह बात तो) अल्लाह ही के लिए है। कहो : फिर कहाँ से तुम पर जादू कर दिया जाता है[२४] ?

89. They will say: Unto Allah (all that belongeth). Say: How then are ye bewitched?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

९०. नहीं, बल्कि हम उन के पास हक़ लाये हैं, और निश्चय ही ये झूठे हैं।

90. Nay, but We have brought them the Truth, and lo! they are liars.

بَلْ أَتَيْنَاهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾

९१. अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया,[२५] और न उस के साथ कोई दूसरा 'इलाह' (पूज्य) है; ऐसा होता तो हर 'इलाह' अपनी सृष्टि को ले कर अलग हो जाता, और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते[२६]। अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है जो कुछ ये (उस के) गुण बताते हैं!

91. Allah hath not chosen any son, nor is there any god along with Him; else would each god have assuredly championed that which he created, and some of them would assuredly have overcome others. Glorified be Allah above all that they allege!

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾

९२. खुले और छुपे का जानने वाला है! वह उस से उच्च है जो 'शिर्क' ये कर रहे हैं!

92. Knower of the Invisible and the Visible! and Exalted be He over all that they ascribe as partners (unto Him)!

عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

९३. (हे 'नबी' !) कहो : रब! जो (यातना का) वादा इन से किया जा रहा है यदि तू मुझे दिखाये,

93. Say: My Lord! If Thou shouldst show me that which they are promised.

قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

९४. तो 'रब' ! मुझे इन ज़ालिम लोगों में सम्मिलित न करना।

94. My Lord! then set me not among the wrong doing folk.

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

९५. और निश्चय ही हमें इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि हम जिस का इन से वादा कर रहे हैं उस को तुम्हें दिखा दें।

95. And verily We are Able to show thee that which We have promised them.

وَإِنَّا عَلَىٰ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ﴿٩٥﴾

९६. बुराई को उस तरह से दूर करो जो अत्यन्त उत्तम हो। हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ गुण ये बताते हैं।

96. Repel evil with that which is better. We are best Aware of that which they allege.

ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

९७. और कहो : 'रब' ! मैं 'शैतानों' की उकसाहटों से तेरी पनाह माँगता हूँ,

97. And say: My Lord! I seek refuge in Thee from suggestions of the evil ones.

وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ﴿٩٧﴾

९८. और मैं इस से भी तेरी पनाह माँगता हूँ, रब! कि वे मेरे पास आयें,

98. And I seek refuge in Thee, my Lord, lest they be present with me.

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾

२४. अर्थात् जब ये स्वयं इस बात को मानते हैं कि आकाशों और धरती का मालिक अल्लाह है और उस के अधिकार में ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुयें हैं; तो दूसरे ईश्वर ये कहाँ से गढ़ लेते हैं। जब इस बात के मानने से इन्कार नहीं है कि अल्लाह इस महान् विश्व का सृष्टिकर्त्ता है, तो दूसरी तरफ़ इन का यह कहना कि अल्लाह अपने पैदा किये हुये जन-समूह को दोबारा पैदा नहीं कर सकता सर्वथा बुद्धि के प्रतिकूल बात है।

२५. अरब के 'मुशिरक' लोग भी ईसाइयों की तरह अपने देवी-देवताओं को अल्लाह की औलाद ठहराते थे।

२६. यही बात क़ुरआन के और दूसरे स्थानों पर भी कही गई है। देखिए सूरा अल-अंबिया आयत २२, सूरा बनी इसराईल आयत ४२। यदि विश्व के कई ईश्वर होते तो उन में परस्पर किसी-न-किसी बात में मतभेद भी हो सकता था। उन में लड़ाई और युद्ध भी होता। जिस के कारण यह दुनिया तबाह हो कर रह जाती। यह जगत रूपी कारखाना सुचारु रूप से कभी न चल सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९. (ये लोग मानने वाले नहीं हैं) यहाँ तक कि जब इन में से किसी को मौत आ जायेगी, तो वह कहेगा : 'रब' ! मुझे (संसार में) लौटा दो,

99. Until, when death cometh unto one of them, he saith: My Lord! Send me back,

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

१००. ताकि जिस (संसार) को मैं छोड़ आया हूँ उस में अनुकूल कर्म करूँ ! कदापि नहीं[२७] यह तो बस एक बात है जो वह बक रहा है; और उन सब (मरने वालों) के पीछे एक बरज़ख़ (परदा) है उन के पुन: जीवित कर के उठाये जाने वाले दिन तक[२८]।

100. That I may do right in that which I have left behind! But, nay! It is but a word that he speaketh; and behind them is a barrier until the day when they are raised.

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۭ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾

१०१. फिर जैसे ही 'सूर' में फूंक मार दी जायेगी उन के बीच उस दिन कोई नाता न रहेगा,[२९] और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे ।

101. And when the trumpet is blown there will be no kinship among them that day, nor will they ask of one another.

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

१०२. फिर जिस किसी के पलड़े भारी हुये तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले होंगे।

102. Then those whose scales are heavy, they are the successful.

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾

१०३. और जिस किसी के पलड़े हल्के हुये तो यही लोग होंगे जिन्हों ने अपने आप को घाटे में डाल लिया, वे 'जहन्नम' में सदा रहेंगे ।

103. And those whose scales are light are those who lose their souls, in hell abiding.

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

१०४. आग उन के चेहरों को झुलस देगी, और वे उस में कुरूप हो रहे होंगे ।

104. The fire burneth their faces, and they are glum therein.

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

१०५. (कहा जायेगा) : क्या मेरी 'आयतें' तुम्हें सुनाई नहीं जाती थीं, और तब तुम उन्हें झुठलाते थे ?

105. (It will be said): Were not My revelations recited unto you, and then ye used to deny them?

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

१०६. वे कहेंगे : हमारे 'रब' ! हमारा अभाग्य हम पर छा गया था, और हम भटके हुये लोग थे ।

106. They will say: Our Lord! Our evil fortune conquered us, and we were erring folk.

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۗلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾

१०७. हमारे 'रब' ! हमें यहाँ से निकाल दे ! यदि फिर हम ऐसा करें, तो निश्चय ही हम ज़ालिम होंगे ।

107. Our Lord! Oh, bring us forth from hence! If we return (to evil) then indeed we shall be wrong-doers.

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾

१०८. (अल्लाह) कहेगा : धिक्कारे हुये पड़े रहो इसी में और मुझ से बात न करो ।

108. He saith: Begone therein, and speak not unto Me.

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾

२७. इसे वापस नहीं भेजा जा सकता । इस लिए कि सांसारिक जीवन के पश्चात् 'ग़ैब' (परोक्ष) का परदा उठा दिये जाने के बाद किसी परीक्षा का अवसर ही शेष नहीं रहता कि उस के लिए इस को फिर दुनिया में भेजा जाये । और यदि उन समस्त अनुभवों को जो इसे मरने से पूर्व और मरने के पश्चात् प्राप्त हुये हैं उस की अज्ञात चेतना और मस्तिष्क से बिल्कुल मिटा भी दिया जाये जब भी उस को दुनिया में भेजना व्यर्थ है । वह फिर वही कुछ करेगा जो पहले कर चुका है । आज़माये हुये को आज़माना व्यर्थ है ।

२८. इस से मालूम हुआ कि अब ये दुनिया में नहीं आ सकते आगे 'आख़िरत' ही की मंज़िल है । इस से यह बात भी मालूम हुई कि यह विचार असत्य है कि मरने के बाद आदमी फिर दुनिया में दूसरा जन्म लेता है । 'नबियों' की शिक्षाओं और उपदेशों और उन की लाई हुई किताब में पुनर्जन्म और आवागमन का उल्लेख नहीं मिलता । वेदों में भी इस का उल्लेख नहीं हुआ है । वास्तव में यह धारणा कि मनुष्य दुख-सुख भोगने को बार-बार इस दुनिया में जन्म लेता है, लोगों की अपनी एक काल्पनिक धारणा है ।

२९. अर्थात् कोई किसी के काम न आयेगा । दे० सूरा अल-मआरिज आयत १०-१४ और सूरा अबस आयत ३४-३७ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०९. हमारे बन्दों में कुछ लोग थे जो कहते थे हमारे 'रब' ! हम 'ईमान' लाये, तो तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर तू सब से उत्तम दयावन्त है;

109. Lo! there was a party of My slaves who said: Our Lord! We believe, therefore forgive us and have mercy on us for Thou art best of all who show mercy.

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

११०. तो तुम ने उन की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उन के पीछे तुम मेरी याद को भुला बैठे, और तुम उन पर हँसते रहे ।

110. But ye chose them for a laughing-stock until they caused you to forget remembrance of Me, while ye laughed at them.

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾

१११. आज मैं ने उन के 'सब्र' करने का यह बदला प्रदान किया कि वही सफल हुये ।

111. Lo! I have rewarded them this day for as much as they were steadfast; and they verily are the triumphant.

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾

११२. (अल्लाह) कहेगा : तुम वर्षों की गिनती (हिसाब) से धरती में कितना रहे ?

112. He will say: How long tarried ye in the earth, counting by years?

قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

११३. वे कहेंगे : एक दिन या एक दिन का कुछ भाग । गणना करने वालों से पूछ लीजिए !

113. They will say We tarried but a day or part of a day. Ask of those who keep count!

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾

११४. वह कहेगा : तुम बस थोड़ी ही देर रहे क्या अच्छा होता कि तुम जानते होते[३०] ।

114. He will say: Ye tarried but a little if ye only knew.

قُلْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

११५. क्या तुम ने यह समझा था कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है, और यह कि तुम्हें हमारी ओर पलटना नहीं है[३१] ?

115. Deemed ye then that We had created you for naught, and that ye would not be returned unto Us?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

११६. तो सर्वोच्च है अल्लाह,[३२] वास्तविक शासक ! उस के सिवा कोई 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं, 'रब' (स्वामी) है महिमाशाली सिंहासन का[३३] ।

116. Now Allah be exalted, the true King! There is no God save Him, the Lord of the Throne of Grace.

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

११७. और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और 'इलाह' को पुकारे उस के लिए अपने इस कर्म के पक्ष में कोई प्रमाण नहीं । तो बस उस का हिसाब उस के 'रब' के यहाँ है[३४] । निश्चय ही ऐसे 'काफ़िर' कभी सफल नहीं हो सकते[३५] ।

117. He who crieth unto any other god along with Allah hath no proof thereof. His reckoning is only with his Lord. Lo! disbelievers will not be successful.

وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

११८. (हे 'नबी' !) कहो 'रब' ! क्षमा कर और दया कर, और तू सब से उत्तम दयावन्त है[३६] ।

118. And (O Muhammad) say: My Lord! Forgive and have mercy, for Thou art best of all who show mercy.

وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

---

३०. अर्थात् यदि तुम ने 'नबियों' की यह बात मानी होती कि लौकिक जीवन अस्थायी है वास्तविक जीवन तो 'आख़िरत' ही है और 'आख़िरत' आकर रहेगी, तो तुम आज के दिन की तैयारी करते; परन्तु अब क्या होता है अब तो तुम्हें अपने 'कुफ़्र' और इन्कार का मज़ा चखना होगा ।

३१. यह 'आयत' सूरा के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश डालती है ।

३२. वह व्यर्थ काम कदापि नहीं कर सकता ।

३३. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६ ।

३४. अल्लाह की पकड़ से बच कर वह कहीं नहीं जा सकता ।

३५. सफलता तो 'ईमान' वालों के लिए है । दे० आयत १ ।

३६. अर्थात् जिस 'दुआ' और पुकार की 'काफ़िर' लोग हँसी उड़ाते हैं (दे० आयत १०९-११०) तुम वही 'दुआ' और प्रार्थना मुख से करो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४—अन-नूर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नूर' (प्रकाश) सूरा की आयत ३५-४० से लिया गया है। आयत ३५-४० में अल्लाह के प्रकाश (Divine light) का वर्णन हुआ है जिस से 'ईमान' वालों के घर प्रकाशित होते हैं[1]। इस सूरा में ऐसी सुव्यवस्था और ऐसे नियमों का उल्लेख किया गया है जो गृहस्थ जीवन (Home life) और समाज को पवित्र और उज्ज्वल बनाते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' सन् ६ हिज० के पूर्वार्द्ध में सूरा अल-अहज़ाब के अवतीर्ण होने के कई महीनों के पश्चात् उतरी है। सूरा के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा उस अपयश के सिलसिले में अवतीर्ण हुई है जो नबी सल्ल० की धर्मपत्नी हज़रत आइशा रज़ि० के प्रति 'मुनाफ़िक़ों' ने फैलाया था[2]। यह खेदजनक अपयश उस समय फैलाया गया था जब कि नबी सल्ल० बनी मुस्तलिक़ की लड़ाई से लौट रहे थे; यह लड़ाई 'शाबान' सन् ६ हिज० में हुई थी।

किस परिस्थिति में उतरी

'बद्र' की लड़ाई के बाद से 'इस्लाम' की उन्नति ही होती गई यहाँ तक कि ख़न्दक़ की लड़ाई के अवसर पर भी विरोधी दल के लोग असफल ही रहे और उन्हें विवशतापूर्वक लौट जाना पड़ा हालाँकि उन्हों ने १० हज़ार की सेना के साथ मदीना पर चढ़ाई की थी। इस के बाद भी इस्लाम-विरोधी अपनी कुनीतियों से बाज़ न आ सके। वे नबी सल्ल० और मुसलमानों के विरुद्ध अत्यन्त नीचता पर उतर आये। वे मुसलमानों के बीच ऐसी बातें फैलाते जिन से 'इस्लाम' को हानि पहुँच सके। वे नबी सल्ल० की धर्मपत्नी तक पर तोहमत लगाने से न चूक सके। यह कलंक उन्हों ने बनी मुस्तलिक़ की लड़ाई की वापसी के अवसर पर लगाया। बनी मुस्तलिक़, क़बीला बनी ख़ुज़ाआ की एक शाखा थी जो लाल सागर के तट पर क़ुदैद के क्षेत्र में रहती थी।

'शाबान' सन् ६ हिज० में नबी सल्ल० को यह सूचना मिली कि बनी मुस्तलिक़ के लोग मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं और दूसरे क़बीलों को भी इस के लिए एकत्र कर रहे हैं। सूचना मिलते ही नबी सल्ल० सेना के साथ उन की ओर चल पड़े। इस मुहिम में अब्दुल्लाह इब्न उबई (मुनाफ़िक़ों का नायक) भी मुनाफ़िक़ों की एक बड़ी संख्या के साथ सम्मिलित हो गया। नबी सल्ल० ने मामूली लड़ाई के बाद बनी मुस्तलिक़ के पूरे क़बीले को क़ैद कर लिया। इस लड़ाई से वापस हुये तो रास्ते में एक पड़ाव पर हज़रत उमर रज़ि० के एक सेवक और ख़ज़रज क़बीले के एक शपथधारी व्यक्ति के बीच पानी पर झगड़ा हो गया। एक ने 'अनसार' को पुकारा दूसरे ने 'मुहाजिरों' को आवाज़ दी। दोनों तरफ़ के लोग आ गये और बीच-बचाव कर दिया। परन्तु अब्दुल्लाह इब्न उबई ने बात का बतंगड़ बना कर 'अनसार' को भटकाना शुरू कर दिया और उस ने क़सम खा कर यहाँ तक कहा कि मदीना पहुँचने के बाद जो हम में इज़्ज़त वाला है वह तुच्छ लोगों को निकाल बाहर कर

१. दे० आयत ३५-४०।
२. दे० आयत ११-२१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देगा'। हज़रत उमर रज़ि० ने नबी सल्ल० से कहा कि इसे क़त्ल करा देना चाहिए। परन्तु नबी सल्ल० ने कहा : उमर ! लोग क्या कहेंगे कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने ही साथियों को क़त्ल कर रहा है। फिर आप (सल्ल०) ने तुरन्त ही वहाँ से प्रस्थान करने का आदेश दे दिया और दूसरे दिन दोपहर तक कहीं पड़ाव नहीं लिया ताकि लोग थक कर सो जायें और उन्हें इधर-उधर की बातें करने का अवसर न मिल सके।

इस सफ़र में अब्दुल्लाह् इब्न उबई ने नबी सल्ल० की पत्नी हज़रत आइशा रज़ि० पर झूठी तोहमत लगाई। नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी यदि धैर्य और बुद्धिमानी से काम न लेते तो बहुत सम्भव था कि मुसलमानों में अचानक गृह-युद्ध छिड़ जाता।

हज़रत आइशा रज़ि० पर जो आरोप लगाया गया था उस का क़िस्सा हज़रत आइशा ने स्वयं बयान किया है। नबी सल्ल० जब कहीं सफ़र पर जाते तो चिट्ठी डाल कर यह फ़ैसला करते कि अपनी पत्नियों में से किसे साथ ले जायें। बनी मुस्तलिक़ की मुहिम के अवसर पर चिट्ठी हज़रत आइशा रज़ि० के नाम निकली। आप इस सफ़र में नबी सल्ल० के साथ गईं। यह सफ़र उस समय पेश आया था जब कि परदे का हुक्म उतर चुका था। इस लड़ाई से लौटते समय जब नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी मदीना के निकट पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने रात में एक जगह पड़ाव किया, अभी कुछ रात बाक़ी थी कि कूच की तैयारियाँ होने लगीं। हज़रत आइशा रज़ि० उठ कर ज़रूरत से बाहर गईं, जब लौट कर पड़ाव के निकट पहुँचीं तो मालूम हुआ कि गले का हार कहीं रास्ते में टूट कर गिर गया है। हार की तलाश में आप को देर हो गई। इतने में क़ाफ़िले ने कूच कर दिया। कूच के समय आप ऊँट के कजावे में बैठ जाती थीं और चार आदमी उसे उठा कर ऊँट पर रख दिया करते थे। लोगों ने समझा कि आप कजावे में बैठ चुकी हैं उन्हों ने उसे उठा कर ऊँट पर रख दिया। जब आप वापस हुईं और देखा कि लोग जा चुके हैं, तो चादर ओढ़ कर वहीं लेट गईं और सोचा कि आगे चल कर जब मालूम हो जायेगा कि मैं पीछे रह गई हूँ तो लोग स्वयं ढूंढ़ने के लिए आयेंगे। इतने में आप को नींद आ गई। सवेरे के समय सफ़वान बिन मुअत्तल सलमी उस जगह से गुज़रे जहाँ आप सो रही थीं। उन्हों ने आप को पहचान लिया इस लिए कि परदे का हुक्म आने से पूर्व वे आप को देख चुके थे। आप ने उन्हें देख कर तुरन्त अपने मुँह पर चादर डाल ली। उन्हों ने अपना ऊँट आप के निकट बिठा दिया और स्वयं अलग हट कर खड़े हो गये। आप ऊँट पर सवार हो गईं और वे ऊँट की नकेल पकड़ कर चल पड़े। यहाँ तक कि दोपहर के क़रीब क़ाफ़िले का साथ पकड़ लिया जब कि वह एक जगह पहुँच कर अभी ठहरा ही था। इसी पर तोहमत लगाने वालों ने आप पर तोहमत लगाई और इस में सब से बढ़ कर जिस ने हिस्सा लिया वह अब्दुल्लाह् इब्न उबई था। परन्तु हज़रत आइशा रज़ि० को इस की कुछ भी ख़बर न हो सकी कि लोग आप के बारे में क्या कह रहे हैं।

मदीना पहुँचने के बाद आप बीमार हो गईं और लगभग एक महीने तक बीमार रहीं। नगर में आप के बारे में खबरें उड़ रही थीं; नबी सल्ल० के कानों तक बात पहुँच चुकी थी परन्तु हज़रत आइशा रज़ि० इस से बिल्कुल बेखबर रहीं। यह आप अवश्य सोचती थीं कि नबी सल्ल० की वह कृपा-दृष्टि मुझ पर क्यों न रही जो पहले बीमारी के समय में रहा करती थी। फिर आप नबी सल्ल० से आज्ञा ले कर अपनी माता के घर चली गईं।

एक रात ज़रूरत से बाहर गईं; आप के साथ मिसतह बिन उसासा की माँ भी थीं। रास्ते में उन्हें ठोकर लगी तो उन के मुँह से निकला : बरबाद हो मिसतह। आप ने कहा : आप ऐसे व्यक्ति को कोसती हैं जो 'बद्र' की लड़ाई में सम्मिलित हुआ है। उन्हों ने कहा : क्या सुना नहीं कि उस ने क्या कहा है? फिर उन्हों ने सारा क़िस्सा सुनाया[2]। आप को सुन कर बहुत दुःख हुआ; रात भर रोती रहीं।

१. दे० सूरा अल-मुनाफ़िक़ून आयत ८।
२. 'मुनाफ़िक़ों' के सिवा मुसलमानों में से भी कुछ लोग इस अपयश के फैलाने में शरीक हो गये थे। उन मुसलमानों में एक मिसतह बिन उसासा भी थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और उसामा बिन ज़ैद को बुलाया और उन से इस के बारे में राय ली। उसामा बिन ज़ैद रज़ि० नें कहा : हे अल्लाह के 'रसूल' ! भलाई के सिवा हम नें और कोई चीज़ आप (सल्ल०) की पत्नी में नहीं पाई। हज़रत अली रज़ि० नें कहा : हे अल्लाह के 'रसूल' ! अल्लाह ने आप पर तंगी नहीं की है, स्त्रियाँ और बहुत हैं। और जाँच करनी चाहें तो आप अपनी लौंडी को बुला कर पूछें वह सच-सच बयान कर देगी। नबी सल्ल० ने लौंडी से पूछा तो उस नें कहा : क़सम है उस की जिस ने आप को सत्य के साथ भेजा है मैं ने उन में कोई ऐसी बात नहीं देखी कि उस पर दोष लगाऊँ। बस इतना अवगुण है कि मैं आटा गूंध कर किसी काम को जाती हूँ और कह जाती हूँ कि आटे को देखियेगा परन्तु वह सो जाती हैं और बकरी आ कर आटा खा जाती है। उसी दिन नबी सल्ल० ने भाषण दिया और मुसलमानों के सामने अपना दुःख प्रकट किया।

इस तोहमत की अफ़वाहें लगभग एक महीने तक नगर में उड़ती रहीं। नबी सल्ल० अत्यन्त दुःखी रहे। हज़रत आइशा रज़ि० रोती रहीं। उन के माता-पिता अलग दुःखी थे। एक दिन नबी सल्ल० आप के पास आये और सलाम कर के बैठ गये। और कहा : आइशा ! मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी खबरें पहुँची हैं, यदि तुम निर्दोष हो तो आशा है कि अल्लाह तुम्हारे निर्दोष होने को ज़ाहिर कर देगा और यदि तुम से गुनाह हुआ हो तो अल्लाह से 'तौबा' करो और क्षमा माँगो, बन्दा जब अपने गुनाह को स्वीकार कर के 'तौबा' कर लेता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। यह सुन कर हज़रत आइशा के आँसू शुष्क हो गये। उन्हों ने अपने पिता से कहा कि वे नबी सल्ल० की बात का उत्तर दें। उन्हों नें कहा कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि अल्लाह के 'रसूल' सल्ल० से क्या कहूँ। फिर आप ने अपनी माता से कहा कि वे उत्तर दें। उन्हों ने भी यही कहा कि समझ में कुछ नहीं आता क्या कहूँ। फिर हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा कि आप लोगों के कानों में एक बात पड़ गई है और वह दिलों में बैठ चुकी है, यदि मैं कहूँ कि मैं बेगुनाह हूँ तो आप लोग नहीं मानेंगे और यदि मैं एक ऐसी बात का इक़रार कर लूँ जो मैं ने नहीं की तो आप लोग मान लेंगे। तो अल्लाह की क़सम ! ऐसी हालत में मैं वही बात कहती हूँ जो हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता ने कही थी कि 'फ़. सबरुन जमील' (अब तो श्रीवान सन्तोष है।)[1] यह कह कर हज़रत आइशा रज़ि० लेट गईं और दूसरी ओर करवट ले ली। हज़रत आइशा उस समय अपने दिल में कह रही थीं कि अल्लाह जानता है कि मैं निर्दोष हूँ, वह अवश्य हक़ बात को खोल देगा। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि मैं इस की तो कल्पना नहीं कर सकती थी कि मेरे हक़ में क़ुरआन की आयतें उतरेंगी जो 'क़ियामत' तक पढ़ी जायेंगी। मैं समझती थी कि नबी सल्ल० कोई स्वप्न देखेंगे जिस में अल्लाह मेरे निर्दोष होने को ज़ाहिर कर देगा।

नबी सल्ल० अभी वहीं थे कि आप (सल्ल०) पर 'वह्य' उतरनी शुरू हो गई। ऐसे अवसर पर शरद ऋतु में भी आप (सल्ल०) के चेहरे से पसीने की बूँदे टपकने लगती थीं। सब चुप हो गये कि देखिए अल्लाह क्या भेद खोलता है। हज़रत आइशा रज़ि० निश्चिन्त थीं। 'वह्य' उतरने के समय नबी सल्ल० की जो हालत हो जाती थी जब वह हालत दूर हुई तो आप (सल्ल०) अत्यन्त प्रसन्न थे। आप (सल्ल०) ने कहा : हे आइशा ! प्रसन्न हो जाओ, अल्लाह ने तुम्हारे बेगुनाह होने को ज़ाहिर कर दिया। फिर आप (सल्ल०) ने सूरा अन-नूर की १० आयतें सुनाईं जो उस समय आप (सल्ल०) पर उतरी थीं[2]। हज़रत आइशा रज़ि० की माता ने हज़रत आइशा रज़ि० से कहा : उठो और अल्लाह के 'रसूल' (सल्ल०) को धन्यवाद दो। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा : मैं न उन्हें धन्यवाद दूँगी और न आप दोनों को, बल्कि अल्लाह को धन्यवाद देती हूँ कि उस ने 'वह्य' के द्वारा मेरा निर्दोष होना ज़ाहिर कर दिया।

१. जब हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता हज़रत याक़ूब अ० के सामने उन के बेटे बिन यमीन पर चोरी का आरोप लगाया गया, तो आप ने यही कहा था (दे० सूरा यूसुफ़ आयत ८०-८३)।
२. अर्थात् आयत ११ से ले कर २१ तक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय स्त्रियों से सम्बन्धित शिष्ट एवं सभ्य आचरण तथा उत्तम व्यवहार की शिक्षा है। इसी लिए नबी सल्ल० ने हुक्म दिया है कि यह सूरा स्त्रियों को पढ़ाई जाये ताकि उन्हें अपने उत्तरदायित्वों के बारे में भली-भाँति ज्ञान हो सके। यह सूरा वास्तव में अपनी पिछली सूरा (अल-मोमिनून) की प्रारम्भिक आयतों की व्याख्या एवं विस्तार है।

इस सूरा के तीन भाग हैं जिन में परस्पर गहरा सम्पर्क है। पहली आयत से ३३ वीं आयत तक सूरा का पहला भाग है। दूसरा भाग आयत ३४ से चलता है और आयत ४५ पर समाप्त होता है। सूरा का तीसरा भाग आयत ४६ से सूरा के अन्त तक चला गया है।

वार्तायें

इस सूरा की आयत ३५ जिस में अल्लाह के दिव्य प्रकाश का वर्णन है सब से अधिक उभरी हुई है। इस के अतिरिक्त इस सूरा की एक विशेषता यह है कि इस में अल्लाह के एक विशेष गुण 'मुबीन' (प्रकट, प्रकट करने वाला) का उल्लेख हुआ है। किसी और सूरा में इस गुण का उल्लेख नहीं किया गया है। हम कह सकते हैं कि यह 'सूरा' दिव्य प्रकाश (Divine light) के वर्णन पर आधारित है। इस लोक में दिव्य प्रकाश की ज्योति जहाँ और बहुत से रूप में प्रतिबिम्बित दिखाई देती है वहीं इस ज्योति का दिग्दर्शन विशेषतः न्याय के रूप में होता है। यदि न्याय का अस्तित्व न होता तो यह सृष्टि वास्तविक उद्देश्य से वंचित रह जाती। फिर संसार में हम किसी ज्ञान और हिकमत (Wisdom) की कल्पना नहीं कर सकते थे[1] और न अल्लाह के अस्तित्व के लिए कोई प्रमाण ही हमें मिल सकता था। और न इस अवस्था में 'आख़िरत' की कोई आशा ही की जा सकती थी। हर ओर भयानक अन्धकार होता। सदैव के लिए विनाश के मुख में चले जाने की भावना से बढ़ कर अन्धकार और क्या हो सकता है।

अल्लाह के प्रकाश से आकाश और धरती परिपूर्ण हैं। यदि इस प्रकाश से वंचित हैं तो वे लोग जो 'ईमान' नहीं रखते। अल्लाह उन्हीं लोगों को अपने प्रकाश की ओर ले जाता है जो 'ईमान' लाते हैं; अल्लाह को याद करते और उस की अवज्ञा से बचते हैं। 'ईमान' वालों के लिए तो प्रकाश-ही-प्रकाश है। उन के घर अल्लाह की अन्धकारहीन आभा से चमक रहे होते हैं। उन के हृदय में स्वभावतः जो दिव्य ज्योति पाई जाई है वह 'वह्य' के प्रकाश से आलोकित हो उठती है। परन्तु जिन के दिल में 'ईमान' नहीं उन के लिए कोई प्रकाश नहीं। उन के लिए जीवन में अन्धकार-ही-अन्धकार है। उन की दृष्टि में यह भूमि एक अपरिचित ग्रह के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

इस सूरा में अल्लाह ने ऐसे नियमों की शिक्षा दी है जिन से हमारा गृहस्थ जीवन दीप्तिमान् हो सकता है। हमारे घर और व्यवहार में पूर्ण रूप से न्याय की स्थापना हो सकती है। हमारा जीवन सुखी हो सकता है। कलह-विग्रह और असन्तोष से हमें मुक्ति मिल सकती है।

यह सूरा जिस परिस्थिति में उतरी है उसे सामने रखते हुये उन आदेशों का अध्ययन कीजिए जो इस सूरा में दिये गये हैं। 'मुस्लिम' समाज और मुस्लिम घरों को बुराइयों से पाक रखने के लिए ज़रूरी है कि इस सूरा में दिये गये आदेशों और नियमों का पूर्णरूप से पालन किया जाये। इस सूरा में दिये गये आदेशों और नियमों का सारांश यह है :—

हज़रत आइशा रज़ि० पर लगाये गये आरोप के झूठे होने का एलान करते हुये कहा गया कि जिस समय तुम लोगों ने उसे सुना था, तो क्यों न 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों ने अपने-आप से नेक गुमान कर के कह दिया : "यह तो एक खुली हुई झूठी तोहमत है[2]।" इस तरह आँखें

१. बल्कि न्याय के बिना तो संसार की सृष्टि ही सम्भव न थी।
२. दे० आयत १२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन्द कर के किसी की लगाई हुई तोहमत को मान लेना उचित नहीं। तुम्हें देखना चाहिए कि तोहमत लगाने वाला कौन है और वह किस पर तोहमत लगा रहा है। जो लोग बुरी अफ़वाहें और उड़ती खबरें फैलाते और अश्लीलता का प्रचार करते हैं वे दण्ड के भागी हैं। मुसलमानों के लिए जो बात उचित है वह यही कि वे सदाशा और सदभाव को अपने पारस्परिक सम्बन्धों का आधार बनायें; बिना प्रमाण के किसी व्यक्ति को कदापि अपराधी न ठहरायें।

बताया गया कि वे खुले हुये लक्षण क्या हैं जिन से यह पहचाना जा सके कि सच्चे 'मुस्लिम' कौन लोग हैं और समाज के वे कौन लोग हैं जो वास्तव में 'मुनाफ़िक़' अथवा कपटाचारी हैं। अनुशासन पर विशेष ज़ोर दिया गया और इस सिलसिले में कुछ नियम भी निश्चित किये गये जिन का पालन करना मुसलमानों का कर्तव्य बताया गया।

ज़िना (व्यभिचार) के बारे में आदेश दिया गया कि अपराधी को १०० कोड़ों की सज़ा दी जाये चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। 'ईमान' वालों को रोका गया कि वे ऐसे पुरुषों या स्त्रियों से विवाह का नाता कदापि न जोड़ें जो बदकार हों। ऐसे व्यक्ति के लिए ८० कोड़ों की सज़ा निश्चित की गई जो दूसरे पर व्यभिचार का आरोप लगाये परन्तु अपने लगाये हुये आरोप के सिलसिले में ४ गवाह न ला सके। पति यदि अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाये तो इस के लिए 'लिआन' का नियम निर्धारित किया गया। बताया गया कि समाज में स्त्रियों और पुरुषों का अविवाहित अवस्था में रहना उचित नहीं है। 'लौंडी' और ग़ुलामों को भी अविवाहित अवस्था में बैठाये रखना ठीक नहीं, उन का विवाह कर देना चाहिए।

स्त्रियों और पुरुषों दोनों ही को यह हुक्म दिया गया कि वे अपनी निगाहें नीची रखें। एक-दूसरे को घूरने और ताक-झाँक करने से बचें। स्त्रियों को हुक्म दिया गया कि वे अपने घरों में अपने सिर और सीने को ढांके रहें। बाप, पति, बेटे और अपने भाई आदि क़रीबी नातेदारों और घर के सेवकों के अतिरिक्त किसी के सामने बन-ठन कर कदापि न आयें। बाहर निकलें तो इस तरह कि उन का बनाव और श्रृंगार छिपा रहे। और भूमि पर इस तरह पाँव न रक्खें कि उन के ज़ेवरों की झंकार दूसरों के कानों तक पहुँचे। बूढ़ी स्त्रियाँ यदि अपने घरों में सिर से ओढ़नी उतार कर रख दें तो इस में कोई दोष नहीं है परन्तु उन्हें बन-ठन कर अपने-आप को दिखाने से बचना चाहिए। और यदि वे इस अवस्था में भी अपने पूरे वस्त्र के साथ रहें और अपने सिर पर ओढ़नी डाले रहें तो यह अधिक उचित होगा।

घरेलू जीवन में घर के सेवकों और उन बच्चों के लिए भी जो अभी युवावस्था को न पहुँचे हों यह नियम ठहराया गया कि वे प्रातः काल, दोपहर को रात्रि के समय घर की किसी स्त्री या पुरुष के कमरे में अचानक प्रवेश न करें बल्कि प्रवेश करने से पहले उन्हें इजाज़त लेनी चाहिए इस लिए कि मालूम नहीं कौन किस दशा में है।

इस बात का एलान किया गया कि क़रीबी नातेदार या घनिष्ट मित्र यदि एक-दूसरे के यहाँ बिना आज्ञा लिये कुछ खा-पी लें जिस तरह वे अपने घर खाते-पीते हैं तो इस में कोई दोष नहीं। अन्धे, लूले, लंगड़े और बीमार आदि विवश और असहाय लोग हर घर और हर जगह से खा सकते हैं, विवशता के कारण उन का हक़ पूरे ही समाज पर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'लौंडी' और ग़ुलामों के बारे में यह आदेश दिया गया कि यदि वे नेक हों तो उन्हें अविवाहित अवस्था में न रहने दो बल्कि उन का विवाह कर दो। और यदि वे अपनी स्वाधीनता के लिए लिखा-पढ़ी करनी चाहें तो लिखा-पढ़ी कर लेनी चाहिए[1]। उन के मालिकों के अतिरिक्त दूसरों को भी उन 'लौंडियों' और ग़ुलामों की माली सहायता करनी चाहिए।

'सूरा' को समाप्त करते हुये इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि 'ईमान' वालों को अल्लाह के 'रसूल' (सल्ल०) की बात दिल से माननी चाहिए। जब वे किसी सामूहिक क़ाम के अवसर पर 'रसूल' के साथ हों तो 'रसूल' से आज्ञा लिये बिना कदापि न जायें। उन्हें अपने बीच 'रसूल' के बुलाने को आपस में एक-दूसरे का-सा बुलाना नहीं समझना चाहिए। आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है। तुम्हारी जो नीति भी हो अल्लाह उसे जानता है। फिर तुम्हारे अच्छे-बुरे कर्मों का सम्बन्ध केवल इसी वर्तमान लोक से नहीं है बल्कि जब तुम अल्लाह के पास लौटोगे तो वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो। वहाँ तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार बदला दिया जायेगा।

———

१. दे० आयत ३३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नूर
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ६४)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. यह एक 'सूरा' है जिसे हम ने उतारा है और इसे हम ने अनिवार्य ठहराया है, और इस में हम ने साफ़-साफ़ 'आयतें' उतारी हैं, कदाचित् तुम चेतो।

२. ज़िना (व्यभिचार) करने वाली स्त्री और ज़िना करने वाला पुरुष, दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो[1]। और अल्लाह के 'दीन' (धर्म) के मामले में तुम्हें उन पर तरस न आये, यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर 'ईमान' रखते हो। और उन्हें सज़ा देते समय 'ईमान' वालों का एक गरोह मौजूद रहे।

LIGHT
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. (Here is) a Surah which We have revealed and enjoined, and wherein We have revealed plain tokens, that haply ye may take heed.

2. The adulterer and the adulteress, scourage ye each one of them (with) a hundred stripes. And let not pity for the twain withhold you from obedience to Allah, if we believe in Allah and the Last Day. And let a party of believers witness their punishment.

سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَتِسْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ
اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ①

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ
بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ
عَذَابَهُمَا طَاۤىِٕفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ②

१. यह सज़ा उन स्त्रियों और पुरुषों के लिए है जिन का विवाह न हुआ हो। यदि यह काम करने वाली स्त्री या पुरुष स्वतन्त्र न हो बल्कि किसी की दासता में जीवन व्यतीत करता हो, तो उस की सज़ा इस सज़ा की आधी होगी; उसे केवल पचास कोड़े मारेंगे (दे० सूरा अन-निसा आयत २५)। जो व्यक्ति बुद्धिहीन हो या अभी वह प्रौढ़ावस्था को प्राप्त न हुआ हो, उसे दण्ड नहीं देंगे।

रहे वे स्त्री-पुरुष जिन का विवाह हो चुका हो तो जो लोग प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हो चुके हैं, बुद्धिहीन भी नहीं हैं, स्वतन्त्र हैं, किसी की दासता में जीवन व्यतीत नहीं करते, उन का विवाह भी हो गया है और संभोग भी कर चुके हैं, ऐसे स्त्री या पुरुष को 'नबी' सल्ल० ने और आप (सल्ल०) के बाद आप (सल्ल०) के चारों ख़लीफ़ा (रज़ि०) ने अपने-अपने समय में 'रज्म' की सज़ा दी है। 'रज्म' की सज़ा में अपराधी पर पथराव करते हैं यहां तक कि उस की मृत्यु हो जाती है। ऐसे अपराधियों को 'रज्म' की सज़ा इस लिए दी जाती है कि उन का अपराध हद दरजा बढ़ा हुआ है। वे वैध-रूप से कामेच्छा की पूर्ति कर सकते थे परन्तु उन्हों ने अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए मर्यादा का उल्लंघन किया, उन्हों ने वह मार्ग अपनाया जो बिगाड़ और विनाश का मार्ग है, जिस से मानव-समाज और सभ्यता की दीवारें ढह जाती हैं। ऐसे फ़सादियों और बिगाड़ पैदा करने वालों को कठोर दण्ड मिलना ही चाहिए ताकि दूसरे लोग इस से शिक्षा ग्रहण करें और समाज इस तरह की बुराइयों से पाक रह सके। सूरा अल-माइदा आयत ३३ में कहा गया है : जो लोग अल्लाह और उस के 'रसूल' से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़-धूप करते हैं उन की सज़ा यही है कि बुरी तरह क़त्ल किये जायें या सूली पर चढ़ाये जायें, या उन के हाथ और उन के पांव विपरीत दिशाओं से काट डाले जायें, या उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। ज़िना किसी बिगाड़ और फसाद से कम नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. ज़िना (व्यभिचार) करने वाला विवाह नहीं करता है परन्तु ज़िना करने वाली के साथ या 'शिर्क' करने वाली के साथ, और ज़िना करने वाली के साथ विवाह नहीं करता है परन्तु ज़िना करने वाला या 'शिर्क' करने वाला । और यह 'ईमान' वालों पर हराम हुआ है[२] ।

3. The adulterer shall not marry save an adulteress or an idolatress, and the adulteress none shall marry save an adulterer or an idolater. All that is forbidden unto believers.

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ
مُشْرِكَةً ۡ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا
زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ ٣

४. और जो लोग सतवन्ती स्त्रियों पर तोहमत लगायें फिर चार गवाह न लायें, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और कभी भी उन की गवाही स्वीकार न करो—और वही अवज्ञाकारी हैं[३]—

4. And those who accuse honourable women but bring not four witnesses, scourage them (with) eighty stripes and never (afterward) accept their testimony—They indeed are evildoers—

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ
يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ
ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً
اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۞ ٤

५. सिवाय उन लोगों के जिन्हों ने इस के बाद 'तौबा' कर ली और सुधर गये। तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावन्त है।

5. Save those who afterward repent and make amends. (For such) lo! Allah is Forgiving, Merciful.

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ
اَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ ٥

६. और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगायें और उन के पास स्वयं उन के अपने सिवा गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही चार गवाही देना है अल्लाह की क़सम खा कर कि वह (आरोप लगाने में) सच्चा है;

6. As for those who accuse their wives but have no witnesses except themselves; let the testimony of one of them be four testimonies, (swearing) by Allah that he is of those who speak the truth;

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ
اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۞ ٦

७. और पाँचवीं बार, यह कि उस पर अल्लाह की फिटकार हो यदि वह झूठा हो।

7. And yet a fifth, invoking the curse of Allah on him if he is of those who lie.

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ
كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۞ ٧

२. अर्थात् ज़िना करने वाला जब तक 'तौबा' न कर ले उस के लिए व्यभिचारिणी स्त्री ही उचित है या वह स्त्री जो 'शिर्क' की गन्दगी में गिरी हुई हो। इस 'आयत' में ज़िना (व्यभिचार) करने वाले पुरुष या स्त्री और 'शिर्क' करने वाले पुरुष या स्त्री का उल्लेख एक साथ किया गया है। ज़िना और 'शिर्क' में परस्पर बड़ी अनुकूलता पाई जाती है! यही कारण है कि बाइबिल में अधिकतर स्थानों पर 'शिर्क' की उपमा ज़िना (व्यभिचार) से दी गई है। उदाहरण के लिए देखें : 'ख़ुरूज' (Ex.) २० : ३-७, ३४ : १४-१८, 'अहबार' (Lev.) २० : ५-८, 'इस्तिस्ना' (Deut.) ५ : ८-१०, 'यसइयाह' (Isaiah) ५७ : ३-६, 'यरमियाह' (Jermiah) २ : ५-२८, ३ : १-६।

'शिर्क' को क़ुरआन में "बहुत बड़ा ज़ुल्म" कहा गया है (दे० सूरा लुक़मान आयत १३)। ज़ुल्म का अर्थ होता है अन्याय, हक़ मारना या हक़तलफ़ी करना। मनुष्य पर सब से बड़ा हक़ अल्लाह का है, उस के हक़ में किसी को शरीक करना सब से बड़ा ज़ुल्म है। 'ज़िना' (व्यभिचार) भी हक़ मारने और स्वत्वहरण ही का दूसरा नाम है; चाहे यह बेवफ़ाई और विश्वासघात स्त्री की ओर से हो या पुरुष की ओर से। स्वत्वहरण और हक़तलफ़ी अत्यन्त नीच कर्म और नैतिकता के विरुद्ध है। जिस प्रकार पुरुष अपनी पत्नी के दूसरे अपराधों को तो क्षमा कर सकता है परन्तु वह उस की बदचलनी और बेवफ़ाई को क्षमा नहीं कर सकता, ठीक इसी प्रकार अल्लाह भी लोगों के और गुनाहों को तो क्षमा कर सकता है परन्तु 'शिर्क' को वह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। 'शिर्क' करने वाले सदा 'जहन्नम' की अग्नि में जलते रहेंगे (दे० सूरा अन-निसा आयत ४८)। 'शिर्क' उस के गौरव और आत्मप्रतिष्ठा के सर्वथा प्रतिकूल है। ज़िना और 'शिर्क' की इसी पारस्परिक अनुरूपता के कारण क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर 'शिर्क' को 'रिज्स' अर्थात् नापाकी (गन्दगी) और शिर्क करने वालों को 'नज्स' अर्थात् नापाक कहा गया है।

३. इसी तरह सच्चरित्र पुरुषों पर यदि कोई झूठा कलंक लगाये तो उस का भी यही हुक्म है कि कलंक लगाने वाला या तो चार गवाह पेश करे नहीं तो उस पर अस्सी कोड़े मारे जायेंगे। यदि कोई व्यक्ति किसी पर ज़िना (व्यभिचार) का आरोप लगाता है तो उसे चाहिए कि चार गवाह पेश कर के पूर्ण रूप से अपने लगाये हुये आरोप को सिद्ध करे। यदि वह चार गवाह पेश नहीं करता तो उस पर अस्सी कोड़े बरसाओ ताकि बिना गवाही के किसी को इस तरह की बात कहने का साहस न हो सके। यदि किसी व्यक्ति ने किसी को बदकारी करते हुये देखा भी हो जब भी उसे चुप रहना चाहिए। हाँ, यदि उस के साथ चार और आदमियों ने देखा हो और वे गवाही देने के लिए तैयार हों तो वह इस मामले को हाकिम के सामने ला सकता है। ज़िना के आरोप के लिए पारिभाषिक शब्द 'क़ज़्फ़' प्रयुक्त होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. और उस स्त्री से सज़ा[४] इस तरह टल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर गवाही दे कि निश्चय ही यह झूठा है,

8. And it shall avert the punishment from her if she bear witness before Allah four times that the thing he saith is indeed false.

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ
شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ⑧

९. और पाँचवीं बार कहे कि उस पर अल्लाह का प्रकोप हो यदि वह सच्चा हो[५]।

9. And a fifth (time) that the wrath of Allah be upon her if he speaketh truth.

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ
كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑨

१०. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया न होती, (तो आपत्ति में पड़ जाते) निस्सन्देह अल्लाह बड़ा मेहरबान और तत्त्व-दर्शी है।

10. And had it not been for the grace of Allah and His mercy unto you, and that Allah is Clement, Wise, (ye had been undone).

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَ
أَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ⑩

११. जो लोग यह झूठा कलंक (तोहमत) गढ़ लाये हैं[६] यह तुम में से ही एक टोली है[७]। इसे अपने हक़ में बुरा न समझो; बल्कि यह तुम्हारे हक़ में अच्छा ही है। उन में से प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही है जो कुछ उस ने गुनाह कमाया; और उन में से जिस व्यक्ति ने इस (झूठे कलंक) के बड़े हिस्से का ज़िम्मा अपने सिर लिया,[८] उस के लिए बड़ी यातना है।

11. Lo! they who spread the slander are a gang among you. Deem it not a bad thing for you; nay, it is good for you. Unto every man of them (will be paid) that which he hath earned of the sin; and as for him among them who had the greater share therein, his will be an awful doom.

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ
لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ
لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ
وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑪

१२. जिस समय तुम लोगों ने उसे सुना था, तो क्यों न 'ईमान' वाले पुरुषों, और 'ईमान' वाली स्त्रियों ने अपने बारे में अच्छा गुमान कर के कह दिया : यह तो एक खुली हुई झूठी तोहमत है ?

12. Why did not the believers men and women, when ye heard it, think good of their own folk, and say: It is a manifest untruth?

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَ
الْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا
إِفْكٌ مُبِينٌ ⑫

१३. वे इस (आरोप) पर चार गवाह क्यों नहीं लाये ? तो जब वे गवाह नहीं लाये, तो अल्लाह की दृष्टि में वही झूठे हैं।

13. Why did they not produce four witnesses? Since they produce not witnesses, they verily are liars in the sight of Allah.

لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ ⑬
يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ

४. इस से अभिप्रेत वही १०० कोड़ों की सज़ा है जिस का उल्लेख ऊपर हो चुका है।

५. ऊपर आयत ४ में ज़िना की तोहमत लगाने के बारे में जो हुक्म बयान हुआ है उस हुक्म के उतरने के बाद लोगों में यह प्रश्न उठा कि किसी दूसरे पुरुष और स्त्री की बदचलनी को देख कर तो आदमी चुप रह सकता है परन्तु यदि किसी ने अपनी स्त्री को कुकर्म करते हुये देख लिया तो वह कैसे चुप रह सकता है ? फिर यह 'आयत' उतरी जिस में अल्लाह ने बताया है कि ऐसे किसी मामले का निपटारा कैसे किया जायेगा। निर्णय का जो नियम इस आयत में निर्धारित किया गया है उस के लिए पारिभाषिक शब्द 'लिआन' प्रयुक्त होता है। 'लिआन' के बाद पति-पत्नी को एक-दूसरे से अलग कर दिया जायेगा। जब पति और पत्नी दोनों ने 'लिआन' कर दिया, तो दोनों में से किसी को सज़ा नहीं दी जायेगी। पति यदि कहता है कि बच्चा उस का नहीं है तो वह बच्चा माँ का समझा जायेगा। वह माँ का वारिस होगा और माँ उस की वारिस होगी, बाप से वह मीरास नहीं पायेगा। उसे हरामी या वर्ण-संकर कहने का हक़ किसी को नहीं होगा। पति को स्त्री का 'मह्र' अदा करना होगा, स्त्री को 'मह्र' से वंचित नहीं किया जायेगा।

६. यह संकेत उस झूठे कलंक की ओर है जो नबी सल्ल० की धर्म-पत्नी हज़रत आइशा रज़ि० पर लगाया गया था (दे० सूरा की भूमिका)।

७. इस बात के फैलाने वाले कुछ तो 'मुनाफ़िक़' लोग थे और कुछ वे मुसलमान थे जो अपनी कमज़ोरी और भूल के कारण इस फ़ितने से न बच सके।

८. यह संकेत मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह इब्न उबई की ओर है जो इस तुहमत का गढ़ने वाला और इस फ़ितने का उठाने वाला था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. और यदि तुम लोगों पर दुनिया और 'आखिरत' में अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता न होती तो जिस चर्चा में तुम पड़ गये उस के बदले में तुम्हें एक बड़ी यातना आ लेती।

14. Had it not been for the grace of Allah and His mercy unto you in the world and the Hereafter, an awful doom had overtaken you for that whereof ye murmured.

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾

१५. (सोचो तो) जब तुम उस (झूठ) को अपनी ज़बानों पर लेते जा रहे थे, और तुम अपने मुंह से वह कुछ कहे जा रहे थे जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न था, तुम उसे एक साधारण बात समझ रहे थे, हालांकि अल्लाह की दृष्टि में वह बहुत भारी बात थी।

15. When ye welcome it with your tongues, and uttered with your mouths that whereof ye had no knowledge, ye counted it a trifle. In the sight of Allah it is very great.

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

१६. और जब तुम ने उसे सुना था, क्यों न कह दिया: हमें उचित नहीं कि ऐसी बात ज़बान से निकालें। तू महिमावान् है (हे अल्लाह!), यह तो एक बहुत बड़ा झूठा कलंक है।

16. Wherefor, when ye heard it, said ye not: It is not for us to speak of this, Glory be to Thee (O Allah); This is awful calumny.

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

१७. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, यदि तुम 'ईमान' वाले हो।

17. Allah admonisheth you that ye repeat not the like thereof ever, if ye are (in truth) believers.

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

१८. और अल्लाह 'आयतों' को तुम्हारे लिए स्पष्ट रूप से बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

18. And he expoundeth unto you His revelations. Allah is Knower, Wise.

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

१९. जो लोग चाहते हैं कि 'ईमान' लाने वालों में अश्लीलता फैले, उन के लिए दुनिया और 'आखिरत' में दुखदायिनी यातना है। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

19. Lo! those who love that slander should be spread concerning those who believe, theirs will be painful punishment in the world and the Hereafter. Allah knoweth. Ye know not.

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

२०. और यदि अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता तुम पर न होती, (तो क्या कुछ न होता) और यह कि अल्लाह करुणामय और दया करने वाला है।

20. Had it not been for the grace of Allah and His mercy unto you, and that Allah is Clement, Merciful, (ye had been undone).

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

२१. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! 'शैतान' के क़दमों का अनुसरण न करो। और जो कोई 'शैतान' के क़दमों का अनुसरण करेगा, तो वह तो उसे अश्लीलता और बुराई ही का आदेश देगा। और यदि अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता तुम पर न होती, तो तुम में से कोई एक भी कभी पाक न होता। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है। और अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

21. O ye who believe! Follow not the footsteps of the devil. Unto whomsoever followeth the footsteps of the devil, lo! he commandeth filthiness and wrong. Had it not been for the grace of Allah and His mercy unto you, not one of you would ever have grown pure. But Allah causeth whom He will to grow. And Allah is Hearer, Knower.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. तुम में जो श्रेष्ठ और सामर्थ्यवान् हैं वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि अपने नातेदारों, मुहताजों, और अल्लाह के मार्ग में 'हिजरत' करने वालों को कुछ न देंगे। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और छोड़ दें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[९]।

22. And let not those who possess dignity and ease among you swear not to give to the near of kin and to the needy, and to fugitives for the cause of Allah.* Let them forgive and show indulgence. Yearn ye not that Allah may forgive you? Allah is Forgiving, Merciful.

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ
أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَ
الْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا
وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ
لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

२३. जो लोग सतवन्ती, बेखबर[१०] 'ईमान' वाली स्त्रियों पर झूठा कलंक लगाते हैं, उन पर दुनिया और 'आख़िरत' में धिक्कार की गई। और उन के लिए बड़ी यातना है।

23. Lo! as for those who traduce virtuous, believing women (who are) careless, cursed are they in the world and the Hereafter. Theirs will be an awful doom.

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ص
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

२४. (वे उस दिन को न भूल जायें) जिस दिन कि उन की ज़ुबानें और उन के हाथ और उन के पाँव उन के विरुद्ध उस चीज़ की गवाही देंगे जो कुछ वे करते थे,

24. On the day when their tongues and their hands and their feet testify against them as to what they used to do.

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

२५. उस दिन अल्लाह उन्हें उन का ठीक बदला पूरा-पूरा दे देगा, और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही प्रकट सत्य है।

25. On that day Allah will pay them their just due and they will know that Allah, He is the Manifest Truth.

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَ
يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

२६. बुरी बातें बुरे लोगों के लिए हैं और बुरे लोग बुरी बातों के लिए। और भली बातें भले लोगों के लिए हैं और भले लोग भली बातों के लिए। ये लोग उस से पाक हैं जो वे कहते हैं, इन के लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है।

26. Vile women are for vile men, and vile men for vile women. Good women are for good men, and good men for good women; such are innocent of that which people say: For them is pardon and a bountiful provision.

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ
لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَ
الطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ
مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾ ع

२७. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में न प्रवेश किया करो जब तक कि रज़ामन्दी न ले लो और उन (घरों) के रहने वालों पर सलाम न भेज लो, यह तुम्हारे लिए अच्छा है। कदाचित् तुम याद रक्खो।

27. O ye who believe! Enter not houses other than your own without first announcing your presence and invoking peace upon the folk thereof. That is better for you, that ye may be heedful.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا
عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

९. जब ऊपर की 'आयतें' उतरीं और यह बात खुल गई कि हज़रत आइशा रज़ि० पर कलंक लगाने वाले झूठे हैं, तो हज़रत अबू बक्र ने जो हज़रत आइशा के पिता होते थे यह क़सम खा ली कि अब हम आगे मिस्तह बिन उसासा की सहायता नहीं करेंगे। मिस्तह हज़रत अबूबक्र रज़ि० के नातेदारों में से थे, वे ग़रीब थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० उन की माली सहायता किया करते थे। संयोग से तोहमत की चर्चा में वह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने क़सम खा ली कि उन की सहायता नहीं करेंगे, तो इस पर यह 'आयत' उतरी। इसे सुनते ही हज़रत अबूबक्र रज़ि० बोल उठे : अल्लाह की क़सम, हम अवश्य चाहते हैं हे हमारे 'रब' कि तू हमें क्षमा कर दे। फिर आप उन की सहायता करने लग गये। हज़रत अबूबक्र के अतिरिक्त कुछ और 'सहाबा' ने भी क़सम खाई थी कि जो लोग तोहमत लगाने में शरीक रहे हैं उन की सहायता न करेंगे। इस 'आयत' के उतरने के बाद सब के दिल साफ़ हो गये।

१०. अर्थात् वे सीधी-सादी स्त्रियाँ जिन के दिल पाक होते हैं; जो बदचलनी की बातों से बेखबर होती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. फिर यदि उन में किसी को न पाओ, तो उन में प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें इजाज़त न दी जाये। और यदि तुम से कहा जाये कि लौट जाओ, तो लौट जाया करो, यह तुम्हारे लिए अधिक शुद्धता की बात है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

28. And if ye find no one therein, still enter not until permission hath been given. And if it be said unto you: Go away again, then go away, for it is purer for you. Allah knoweth what ye do.

فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا
حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا
فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

२९. इस में तुम पर कोई दोष नहीं है कि तुम ऐसे घरों में प्रवेश करो जिन में कोई रहता न हो, जिन में तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो! और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।

29. (It is) no sin for you to enter uninhabited houses wherein is comfort for you. Allah knoweth what ye proclaim and what ye hide.

لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

३०. (हे 'नबी'!) 'ईमान' वालों से कहो: वे अपनी निगाहें नीची रक्खें[11] और अपनी शर्मगाहों (गुह्य अंगों) की रक्षा करें। यह उन के लिए अधिक शुद्धता की बात है। निस्सन्देह अल्लाह उस की खबर रखता है जो कुछ वे करते हैं।

30. Tell the believing men to lower their gaz and be modest. That is purer for them. Lo! Allah is Aware of what they do.

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ
وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

११. अर्थात् पराई स्त्रियों को न देखें, दूसरों की शर्मगाहों पर निगाह न डालें और बेशर्मी की चीज़ों पर निगाह न जमायें। नबी सल्ल० के कथन से मालूम होता है कि आदमी अपनी समस्त इन्द्रियों से व्यभिचार करता है। देखना आँखों का व्यभिचार है, लगावट की बात-चीत जिह्वा का व्यभिचार है, आवाज़ से आनन्द लेना कानों का व्यभिचार है, हाथ लगाना और अनुचित और अवैध उद्देश्य से चलना हाथ-पाँव का व्यभिचार है। बदकारी की ये समस्त प्रारम्भिक बातें जब पूरी हो चुकती हैं तब शर्मगाहें या तो इस की पूर्ति कर देती हैं या पूर्ति करने से रह जाती हैं।

हिन्दू शास्त्र-विधि के अनुसार भी अपनी स्त्री या अपने पति के अतिरिक्त दूसरे का चिन्तन करना स्त्री-पुरुष दोनों के लिए व्यभिचार है। यही कारण है कि आठ प्रकार के मैथुन बतला कर उन का निषेध किया गया है:

श्रवणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षण गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च कार्यनिष्पत्तिरेव च ॥

अर्थात् पर-तिरिया सम्बन्धित चर्चा सुनना, कहना, पर स्त्री के संग खेलना, उन्हें देखना, गुप्त बात करना, संकल्प करना, प्रयत्न करना और अंग-संग करना—ये आठ प्रकार के मैथुन हैं।

नबी सल्ल० ने कहा है कि अल्लाह कहता है: निगाह 'इबलीस' (शैतान) के ज़हरीले तीरों में से एक तीर है। जो व्यक्ति मुझ से डर कर उसे छोड़ देगा मैं उस के बदले उसे ऐसा 'ईमान' प्रदान करूंगा जिस की मिठास वह अपने दिल में पायेगा—(तबरानी)। आप (सल्ल०) ने कहा है: जिस मुसलमान की निगाह किसी स्त्री की सुन्दरता पर पड़े और वह अपनी निगाह नीची कर ले तो अल्लाह उसकी 'इबादत' में मिष्ठता पैदा कर देता है (मुसनद अहमद)।

अल्लाह के भय से जब मनुष्य क्षणिक आनन्द के वशीभूत न हो कर अपनी निगाहें बचा लेता है तो अल्लाह उसे इस लोक में भी 'ईमान' का स्थायी और यथार्थ आनन्द प्रदान करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. और (हे 'नबी') 'ईमान' वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रक्खें[१२] और अपनी शर्मगाहों (गुह्य इन्द्रियों) की रक्षा करें, और अपना शृंगार न दिखायें सिवाय उस के जो उस में से ज़ाहिर रहे, और अपने सीनों (वक्ष-स्थल) पर अपनी ओढ़नियों के अञ्चल डाले रहें,[१३] और वे अपना शृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पति के या अपने पिता[१४] के या अपने पति के पिता के, या अपने बेटों[१५] के या अपने पति के बेटों के, या अपने भाई के या अपने भाइयों[१६] के बेटों के या अपनी बहिनों के बेटों[१७] के या अपनी स्त्रियों[१८] के, या जिन पर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो[१९] उन के या उन अधीन पुरुषों (नौकर-चाकर) के जो कोई प्रयोजन न रखते हों,[२०] या उन बच्चों के जो स्त्रियों की छिपी बातों से परिचित न हों। और वे अपने पाँव भूमि पर मारती हुई न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रक्खा हो लोगों को उस की ख़बर हो जाये।[२१] और हे ईमान वालो! तुम सब मिल कर अल्लाह से 'तौबा' करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

31. And tell the believing women to lower their gaze and be modest, and to display of their adornment only that which is apparent, and to draw their veils over their bosoms and not to reveal their adornment save to their own husbands or fathers or husband's fathers, or their sons or their husbands' sons, or their brothers or their brothers' sons or sisters' sons, or their women, or their slaves, or male attendants who lack vigour or children who know naught of women's nakedness. And let them not stamp their feet so as to reveal what they hide of their adornment. And turn unto Allah together, O believers, in order that ye may succeed.

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ
اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا
يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ
اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ
اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ
اُولِى الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ
الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ
وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ
مِنْ زِيْنَتِهِنَّ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا
اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

१२. जिस प्रकार पुरुष को पराई स्त्री को देखना न चाहिए उसी प्रकार स्त्रियों को भी पराये पुरुष को नहीं देखना चाहिए। और यदि निगाह पड़ जाये तो तुरन्त ही हटा लेनी चाहिए। पुरुषों की तरह उन्हें भी दूसरों के छुपे अंगों के देखने से बचना चाहिए। वेद की भी शिक्षा है:

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लौ दृश्यन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ॥

अर्थात् साध्वी नारी! तुम नीचे देखा करो; ऊपर न देखो। पैरों को परस्पर मिलाये रक्खो। वस्त्र इस प्रकार पहनो जिस से तुम्हारे ओष्ट तथा कटि के नीचे के भाग पर किसी की दृष्टि न पड़े।

१३. अज्ञान काल में अरब स्त्रियाँ अपने सिरों पर एक प्रकार का रूमाल बाँधे रहती थीं जिस की गिरह जूड़े की भाँति पीछे की ओर चोटी पर लगती थी। पीछे दो-दो, तीन-तीन चोटियाँ लहराती रहती थीं; गला और सीने का ऊपरी भाग खुला रहता था। छातियों पर क़मीस के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था।

१४. 'पिता' में दादा, परदादा और नाना, परनाना भी सम्मिलित हैं।

१५. 'बेटों' में पोते, परपोते और नाती, परनाती भी सम्मिलित हैं। इस मामले में सगे और सौतेले में कोई भेद नहीं करेंगे।

१६. भाई में सगे और सौतेले और माँजाये भाई सब आ जाते हैं।

१७. भाई-बहिनों के बेटों में उन के पोते, पर पोते और नाती, पर नाती सब आ जाते हैं। भाई-बहिनों में तीनों प्रकार के भाई-बहिन सम्मिलित हैं।

जिन नातेदारों से विवाह करना हराम है उन से परदा नहीं, जैसे चचा, मामा और दामाद आदि। रहे वे नातेदार जिन से विवाह हो सकता है उन से न तो उस प्रकार का परदा किया जायेगा जिस प्रकार पराये लोगों से किया जाता है और न स्त्रियाँ बे-झिझक उन के सामने शृंगार के साथ आ सकती हैं जिस प्रकार कि वे अपने पिता, और बेटों आदि के सामने आती हैं। इस की सीमायें विभिन्न नातेदारों के मामले में उन के नाते-रिश्ते, उन की आयु, स्त्री की आयु, उन के पारस्परिक सम्पर्क और सामयिक स्थिति आदि का विचार करते हुये भिन्न होंगी। इस सिलसिले में परदे की आवश्यकता भी हो सकती है और सामने भी हुआ जा सकता है परन्तु स्त्री मुँह और हाथ के अतिरिक्त अपने पूरे शरीर और शृंगार को छिपाये रक्खे। और रिश्ते और नाते में जहाँ किसी प्रकार का सन्देह हो जाये वहाँ परदा ही करना चाहिए।

१८. अर्थात् अपनी जानी-बूझी और मेल-जोल की स्त्रियाँ।

१९. अर्थात् लौंडी। एक गरोह के विचार में ग़ुलाम (दास) भी इस हुक्म में दाखिल हैं।

२०. अर्थात् अधीनता, बुद्धि-हीनता, अयोग्यता, आदि के कारण जिस में यह साहस न हो कि घर की स्त्रियों के प्रति कोई बुरी भावना मन में ला सके।

२१. इस हुक्म को नबी सल्ल० ने ज़ेवरों की झंकार तक ही सीमित नहीं रक्खा बल्कि आप (सल्ल०) ने इन्द्रियों को उत्तेजित करने वाली दूसरी चीज़ों से भी रोका है। आप (सल्ल०) ने इसे पसन्द नहीं किया कि बिना किसी विशेष आवश्यकता के परायी स्त्रियों की आवाज़ पुरुषों के कानों तक पहुँचे। आप (सल्ल०) ने हुक्म दिया है कि स्त्रियाँ ख़ुशबू लगा कर बाहर न निकलें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. तुम में जो एकाकी (अर्थात् बे-जोड़े के अविवाहित अवस्था में) हों और तुम्हारे 'ग़ुलामों' और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक हों उन का विवाह कर दो। यदि वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह अपने अनुग्रह से उन्हें सम्पन्न कर देगा। अल्लाह समाई वाला और जानने वाला है।

32. And marry such of you as are solitary and the pious of your slaves and maid-servants. If they be poor, Allah will enrich them of His bounty. Allah is of ample means Aware.

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ
عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ۭ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ
يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾

३३. और जिन्हें विवाह का अवसर प्राप्त न हो उन्हें चाहिए कि अपने-आप को बचाये रक्खें (संयमपूर्वक रहें) यहाँ तक कि अल्लाह अपने अनुग्रह से उन्हें सम्पन्न कर दे। और उन लोगों में जिन पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो जो (अपनी स्वाधीनता के लिए) लिखा-पढ़ी करनी[२२] चाहें, उन से लिखा-पढ़ी कर लो यदि तुम्हें मालुम हो कि उन में भलाई हैं, और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने दिया है[२३]। और अपनी लौंडियों को सांसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करने के लिए दुश्चरित्रता[२४] पर विवश न करो, जब कि वे सतवन्ती (और विवाहिता हो कर) रहना चाहती हों। और जो कोई उन्हें विवश करेगा, तो निश्चय ही अल्लाह उन के विवश किये जाने के बाद बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[२५]।

33. And let those who cannot find a match keep chaste till Allah give them independence by His grace. And such of your slaves as seek a writing (of emancipation), write it for them if ye are aware of aught of good in them, and bestow upon them of the wealth of Allah which He hath bestowed upon you. Force not your slave-girls to whoredom that ye may seek enjoyment of the life of the world, if they would preserve their chastity. And if one force them, then (unto them), after their compulsion, Lo! Allah will be Forgiving, Merciful.

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى
يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ
الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ
عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ڰ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ
اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ۭ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ
عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ
مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾

३४. और हम ने तुम्हारी ओर खुली हुई 'आयतें' उतार दी हैं, और उन लोगों की (शिक्षा-प्रद) मिसालें भी जो तुम से पहले गुज़रे हैं। और एक उपदेश डर रखने वालों के लिए।

34. And verily We have sent down for you revelations that make plain, and the example of those who passed away before you. An admonition unto those who ward off (evil).

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا
مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾

२२. अर्थात् कोई 'ग़ुलाम' या 'लौंडी' यदि स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अपने स्वामी को बदले में कुछ देना चाहे और स्वामी उसे मान ले तो दोनों के बीच जो शर्तें ठहरी हों उन की लिखा-पढ़ी हो जानी चाहिए। यह कोई ज़रूरी नहीं है कि बदले में माल ही दिया जाये। अपनी स्वाधीनता के लिए वह कोई विशेष सेवा आदि का काम भी कर सकता है यदि उस का स्वामी इस पर राज़ी हो जाये।

२३. अर्थात् उस के स्वामी को भी चाहिए कि बदले में मिलने वाले निश्चित धन में से कुछ-न-कुछ अवश्य छोड़ दे। दूसरे मुसलमानों को भी चाहिए कि 'लौंडी' 'ग़ुलामों' को स्वतन्त्र कराने में अपना माल खर्च करें। मुसलमान अपनी 'ज़कात' से भी दास-दासियों की सहायता कर सकते हैं (दे० सूरा अत-तौबा आयत ६०)। लौंडी-ग़ुलामों को आज़ाद करने को बड़ी नेकी कहा गया है (दे० सूरा अल-बलद आयत १०-१६)। जन-साधारण के अतिरिक्त राज्य का भी यह कर्तव्य है कि वह 'बैतुलमाल' अथवा राज्य-कोष में जो 'ज़कात' एकत्र हो उस में से एक हिस्सा ग़ुलामों की रिहाई के लिए भी खर्च करे।

२४. क़ुरआन में 'बिग़ा' शब्द प्रयुक्त हुआ है। साधारणतः इस का अर्थ बदकारी और व्यभिचार लिया जाता है। अबू उबैद और क़ुरआन के विशेष टीकाकार मौलाना हमीदुद्दीन फ़राही के विचार में 'बिग़ा' से अभिप्रेत 'मुतअ्' की रीति और नियम है। अरब अपनी लौंडियों को 'मुतअ्' के लिए देते थे और उन के 'मह्र' ले लिया करते थे। यह उन की आमदनी का एक साधन था। 'इस्लाम' ने शराब की तरह इसे भी हराम कर दिया (दे० सूरा अन-निसा आयत २५)। 'मुतअ्' के हराम होने से वेश्यावृत्ति आदि सब का निषेध हो जाता है।

२५. अनुचित और बुरी चीज़ प्रत्येक अवस्था में बुरी है; लौंडियों की इच्छा के विरुद्ध उन से यह काम लेना और अधिक बुरा है। यदि उन्हें अनुचित काम पर विवश किया जायेगा, तो अल्लाह उन्हें तो क्षमा कर देगा परन्तु जो उन्हें बुराई के लिए विवश करेगा, उस की बड़ी पकड़ होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है[२६]। उस के प्रकाश की मिसाल[२७] ऐसी है जैसे एक ताक़ हो जिस में एक चिराग़ हो। वह चिराग एक फ़ानूस में हो। वह फ़ानूस ऐसा हो मानो वह चमकता हुआ तारा है। वह (चिराग़) ज़ैतून के एक बरकत वाले वृक्ष (के तेल) से प्रदीप्त किया जाता हो, जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी,[२८] जिस का तेल भड़का चाहता हो यद्यपि आग उसे न लगी हो। (इस प्रकार) प्रकाश-पर-प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन संचित हो गये हों), अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है[२९]। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

35. Allah is the Light of the heavens and the earth. The similitude of His light is as a niche wherein is a lamp. The lamp is in a glass. The glass is as it were a shining star. (This lamp is) kindled from a blessed tree, an olive neither of the East nor of the West, whose oil would almost glow forth (of itself) though no fire touched it. Light upon light, Allah guideth unto His light whom He will. And Allah speaketh to mankind in allegories, for Allah is Knower of all things.

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌؕ اَلْمِصْبَاحُ فِىْ زُجَاجَةٍؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِىْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۙ﴿۳۵﴾

३६. (उस के प्रकाश से प्रकाशित लोग) उन घरों में प्रातःकाल और सन्ध्या समय उस की 'तसबीह' करते हैं जिन्हें ऊँचा करने का और जिन में अपने नाम के याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है।

36. (This lamp is found) in houses which Allah hath allowed to be exalted and that His name shall be remembered therein. Therein do offer praise to Him at morn and evening.

فِىْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ﴿۳۶﴾

३७. ऐसे लोग जिन्हें अल्लाह के स्मरण और 'नमाज़' क़ायम करने और 'ज़कात' देने से न व्यापार असावधान करता है; और न सौदा करना; जो उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जायेंगे दिल और आँखें;

37. Men whom neither merchandise nor sale beguileth from remembrance of Allah and constancy in prayer and paying to the poor their due; who fear a day when hearts and eyeballs will be overturned.

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ﴿۳۷﴾

३८. ताकि अल्लाह उन्हें उन के उत्तम कर्मों का बदला प्रदान करे, और उन्हें और अधिक अपने अनुग्रह से दे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।

38. That Allah may reward them with the best of what they did, and increase reward for them of His bounty. Allah giveth blessings without stint to whom He will.

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾

२६. अर्थात् अल्लाह ही वह महान् ज्योति है जिस की अन्धकारहीन आभा से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है। जगत में जो कुछ है उसी से आच्छादित है। सम्पूर्ण जगत में उसी की छवि व्याप्त हो रही है। जगत में सब कुछ उसी से व्याप्त है। वह सर्वव्यापी है। वही है जो सब प्राणियों में कल्याण रूप हो कर बसता है। वही विश्व-चेतना का स्रोत है।

२७. अर्थात् अल्लाह के प्रकाश से प्रकाशित 'ईमान' वालों की मिसाल जिन्हें देख कर वास्तव में अल्लाह याद आता है।

२८. अर्थात् जो ऐसी खुली जगह या उच्च स्थान पर हो जहाँ वह सवेरे से सन्ध्या समय तक सूर्य के साफ़ प्रकाश में रहे। ज़ैतून के ऐसे वृक्ष का तेल अत्यन्त साफ़ और उत्तम होता है; उस का प्रकाश भी तेज होता है।

२९. अल्लाह अपने प्रकाश की सूझ उन्हीं लोगों को प्रदान करता है जो ग़ाफ़िल नहीं होते बल्कि अल्लाह को हर समय याद रखते हैं। दे० आयत ४६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. और वे लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया, उन के कर्मों की मिसाल ऐसी है जैसे चटियल मैदान में मरीचिका[३०]। प्यासा उसे पानी समझता है परन्तु जब उस के पास पहुँचा तो उसे कुछ भी न पाया, और अल्लाह को ('क़ियामत' में) अपने पास पाया, जिस ने उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया;[३१] और अल्लाह जल्द हिसाब करता है।

39. As for those who disbelieve, their deeds are as a mirage in a desert. The thirsty one supposeth it to be water till he cometh unto it and findeth it naught, and findeth, in the place thereof, Allah, Who payeth him his due; and Allah is swift at reckoning.

وَالَّذِينَ كَفَرُوٓا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ
يَحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰىٓ إِذَا جَآءَهُ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهُ فَوَفّٰىهُ
حِسَابَهُ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

४०. या फिर जैसे अँधियारियाँ हैं, एक गहरे समुद्र में। जिस पर एक मौज (लहर) छाई हुई है, उस के ऊपर एक और मौज, उस के ऊपर बादल। तह-पर-तह अँधियारियाँ जमी हैं। जब अपना हाथ निकाले तो उसे देख न पाये। जिसे अल्लाह ने प्रकाश न दिया, उस के लिए कोई प्रकाश नहीं।

40. Or as darkness on a vast, abysmal sea. There covereth him a wave, above which is a wave, above which is a cloud. Layer upon layer of darkness. When he holdeth out his hand he scarce can see it. And he for whom Allah hath not appointed light, for him there is no light.

أَوْ كَظُلُمٰتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ۗ
ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ إِذَآ أَخْرَجَ
يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ
ع لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ ﴿٤٠﴾

४१. क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कोई आकाशों और धरती में है, अल्लाह की 'तसबीह' करता है, और पंख फैलाये हुये पक्षी भी (उसी की 'तसबीह' करते हैं)? हर एक अपनी 'नमाज़' और अपनी 'तसबीह' से परिचित है; और अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं।

41. Hast thou not seen that Allah, He it is Whom all who are in the heavens and the earth praise, and the birds in their flight? Of each He knoweth verily the worship and the praise; and Allah is Aware of what they do.

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۗ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ
صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِمَا
يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾

४२. और आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह ही की ओर जाना है।

42. And unto Allah belongeth the sovereignty of the heavens and the earth, and unto Allah is the journeying.

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى
اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

४३. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को हँकाता है, फिर उन (के टुकड़ों) को परस्पर मिलाता है, फिर उसे तह-पर-तह करता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच से मेंह बरसता है; और आकाश से उस में जो (ओलों के) पहाड़ हैं उन से ओले उतारता है,[३२] फिर जिस पर चाहता है उस को बरसा देता है, और जिस से चाहता है उसे हटा देता है। उस की बिजली की चमक निगाहों (की ज्योति) को उचके लिये जाती है।

43. Hast thou not seen how Allah wafteth the clouds, then gathereth them, then maketh them layers and thou seest the rain come forth from between them; He sendeth down from the heaven mountains wherein is hail, and smiteth therewith whom He will, and averteth it from whom He will. The flashing of His lightning all but snatcheth away the sight.

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ
بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهِ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ
يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

३०. मृगतृष्णा (Mirage) अर्थात् जल की लहरों की वह भ्रान्ति जो रेगिस्तानों और मरुस्थलों में कड़ी धूप पड़ने पर किरणवक्रता (Refraction of light) के कारण होती है।

३१. अर्थात् जैसे एक प्यासा मैदान में मरीचिका को देख कर प्रसन्न हो जाता है; समझता है कि पानी लहरें ले रहा है, कोशिश कर के वहाँ पहुँचता है ताकि ठण्डे जल से अपनी प्यास बुझाये। परन्तु वहाँ उसे पानी के बदले साफ़ मैदान दिखाई देता है। ठीक इसी तरह 'काफ़िर' लोग समझते हैं कि हम अच्छे कर्म कर रहे हैं परन्तु वे 'क़ियामत' के दिन देखेंगे कि उन की समस्त कामनायें और आशायें सुहाने स्वप्न के अतिरिक्त और कुछ न थीं। वहाँ वे अल्लाह को अपने पास पायेंगे जो उन का हिसाब चुका देगा। उन्हें अपने करतूतों का पूरा बदला मिल जायेगा।

३२. सरदी से आकाश में बादल जमने लगते हैं उन्हें पहाड़ कहा गया; फिर ओलों के रूप में भूमि पर वर्षा होने लगती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. अल्लाह ही रात और दिन का उलट-फेर कर रहा है। निश्चय ही इस में एक शिक्षा-सामग्री है आँखों वालों के लिए।

44. Allah causeth the revolution of the day and the night. Lo! herein is indeed a lesson for those who see.

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

४५. और अल्लाह ने प्रत्येक जीवधारी को (एक प्रकार के) पानी से पैदा किया। तो कोई उन में अपने पेट के बल चलता है और उन में कोई दो टाँगों पर चलता है और उन में कोई चार पर। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

45. Allah hath created every animal of water. Of them is (a kind) that goeth upon its belly and (a kind) that goeth upon two legs and (a kind) that goeth upon four. Allah createth what He will. Lo! Allah is Able to do all things.

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ
عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾

४६. हम नें खुली हुई 'आयतें' उतार दी हैं। अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर राह दिखाता है।

46. Verily We have sent down revelations and explained them. Allah guideth whom He will unto a straight path.

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾

४७. और कहते हैं : हम अल्लाह और 'रसूल' पर 'ईमान' लाये, और हम ने (उन का) हुक्म माना; फिर इस के बाद उन में से एक गरोह मुँह मोड़ जाता है। ऐसे लोग 'ईमान' वाले नहीं।

47. And they say: We believe in Allah and the messenger, and we obey: then after that a faction of them turn away. Such are not believers.

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا
ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۗ
وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

४८. और जब उन्हें अल्लाह और उस के 'रसूल' की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उन के बीच (उन के मामलों का) फ़ैसला करे, तो क्या देखते हैं कि उन में से एक गरोह कतरा जाता है;

48. And when they appeal unto Allah and His messenger to judge between them, lo! a faction of them are averse;

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾

४९. और यदि हक़ उन का हो तो वे हुक्म मानते और क़बूल करते हुये चले आयेंगे।

49. But if right had been with them they would have come unto him willingly.

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾

५०. क्या उन के दिलों में रोग (कपट) है, या वे सन्देह में पड़े है, या वे डरते हैं कि अल्लाह और उस का 'रसूल' उन पर ज़्यादती करेगा? नहीं, बल्कि वही लोग ज़ालिम हैं।

50. Is there in their hearts a disease, or have they doubts or fear they lest Allah and His messenger should wrong them in judgement? Nay but such are evil-doers.

اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ
اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۗ بَلْ
ع اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

५१. 'ईमान' वालों की बात तो यह है कि जब अल्लाह और उस के 'रसूल' की ओर बुलाये जायें ताकि वह उन के बीच (उन के मामलों का) फ़ैसला करे, तो वे कहें : हम ने सुना और माना। यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

51. The saying of (all true) believers when they appeal unto Allah and His messenger to judge between them is only that they say: We hear and we obey. And such are the successful.

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا
سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾

५२. और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' का हुक्म माने, और अल्लाह से डरे, और उन की अवज्ञा से बचे, तो ऐसे ही लोग मनोरथ को प्राप्त होने वाले हैं।

52. He who obeyeth Allah and His messenger, and feareth Allah, and keepeth duty (unto Him): such indeed are the victorious.

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ
وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. और वे ('मुनाफ़िक़') अल्लाह की कड़ी क़समें खाते हैं, कि यदि आप उन्हें हुक्म दें, तो वे निकल खड़े हों। कह दो : क़समें न खाओ, जाना-पहचाना आज्ञापालन (अभीष्ट है)। निस्सन्देह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है।

53. They swear by Allah, solemnly that, if thou order them, they will go forth. Say: Swear not; known obedience (is better). Lo! Allah is Informed of what ye do.

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ قُل لَّا تُقْسِمُوا طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ٥٣

५४. कहो : अल्लाह का हुक्म मानो और 'रसूल' का हुक्म मानो और यदि तुम मुँह मोड़ते हो, तो वह बस उसी का ज़िम्मेदार है जो बोझ उस पर डाला गया है, और तुम उस के ज़िम्मेदार हो जो बोझ तुम पर डाला गया है। और यदि तुम उस का हुक्म मानते हो, तो मार्ग पा लोगे। 'रसूल' पर तो बस साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।

54. Say: Obey Allah and obey the messenger. But if ye turn away, then (it is) for him (to do) only that wherewith he hath been charged, and for you (to do) only that wherewith ye have been charged. If ye obey him, ye will go aright. But the messenger hath no other charge than to convey (the message) plainly.

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ
فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ
عَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ وَإِن تُطِيعُوهُ
تَهْتَدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ٥٤

५५. अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में से 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये वादा किया है कि वह उन्हें धरती में 'ख़लीफ़ा' (राज्याधिकारी) बनायेगा[३३] जैसे वह उन से पहले के लोगों को 'ख़लीफ़ा' (राज्याधिकारी) बना चुका है; और उन के लिए अवश्य उन के उस 'दीन' (धर्म) को स्थायित्व प्रदान करेगा जिसे उस ने उन के लिए पसन्द किया है, और उन के (वर्त्तमान) भय के पश्चात् उन्हें निश्चिन्तता की दशा में बदल देगा। वे मेरी 'इबादत' करेंगे। और मेरे साथ किसी को शरीक न करेंगे। और जो कोई इस के बाद 'कुफ़्' करे, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

55. Allah hath promised such of you as believe and do good works that He will surely make them to succeed (the present rulers) in the earth even as He caused those who were before them to succeed (others); and that He will surely establish for them their religion which He hath approved for them, and will give them, in exchange, safety after their fear. They serve Me. They ascribe nothing as partner unto Me. Those who disbelieve henceforth, they are the miscreants.

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ
كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَ
لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا
يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَن
كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ٥٥

५६. 'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' दो और 'रसूल' का हुक्म मानो, ताकि तुम पर दया की जाये।

56. Establish worship and pay the poor-due and obey the messenger that haply ye may find mercy.

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ٥٦

५७. यह न समझो कि जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया है वे धरती में हरा देने वाले हैं। उन का ठिकाना 'आग' है—और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।

57. Think not that the disbelievers can escape in the land. Fire will be their home — a hapless journey's end!

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي
الْأَرْضِ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ٥٧

३३. अर्थात् तुम्हें वह हकूमत प्रदान की जायेगी जिस के सब काम अल्लाह के दिये हुये धर्म-विधान के अनुसार होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. हे 'ईमान' लाने वालो ! जिन पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त है उन्हें, और तुम में जो प्रौढ़ता को नहीं प्राप्त हुये हैं उन को, चाहिए कि (तुम्हारे पास आने के लिए) तीन बार तुम से अनुज्ञा लिया करें: 'फ़ज्र' (प्रातःकाल) की 'नमाज़' से पहले, और जब दोपहर को तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो, और 'इशा' की 'नमाज़' के बाद। ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं[३४]। इन के बाद (इन समयों के अतिरिक्त दूसरे समयों में बिना आज्ञा लिये हुये उन के आने में) न तो तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर, तुम्हें एक-दूसरे के पास बार-बार आना-जाना होता है। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतें' बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्व-दर्शी है।

58. O ye who believe! Let your slaves, and those of you who have not come to puberty, ask leave of you at three times (before they come into your presence): Before the prayer of dawn, and when ye lay aside your raiment for the heat of noon, and after the prayer of night. Three times of privacy for you. It is no sin for them or for you at other times, when some of you go round attendant upon others (if they come into your presence without leave). Thus Allah maketh clear the revelations for you. Allah is Knower, Wise.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾

५९. और जब तुम में बच्चे प्रौढ़ता को प्राप्त हो जायें तो उन्हें चाहिए कि (तुम्हारे पास आने के लिए) अनुज्ञा लिया करें जैसे उन से अगले लोग अनुज्ञा लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतें' बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

59. And when the children among you come to puberty then let them ask leave even as those before them used to ask it. Thus Allah maketh clear His revelations for you. Allah is Knower, Wise.

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾

६०. और जो स्त्रियां (जवानी से गुज़र कर) बैठ चुकी हों, जिन्हें विवाह की आशा न हो, तो उन पर इस में कोई गुनाह नहीं कि वे अपने कपड़े उतार कर रख दें जब कि वे बनाव-शृंगार दिखाने वाली न हों। और इस से भी बचें तो उन के लिए उत्तम है[३५]। और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

60. As for women past child-bearing, who have no hope of marriage, it is no sin for them if they discard their (outer) clothing in such a way as not to show adornment. But to refrain is better for them. Allah is Hearer, Knower.

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

३४. अर्थात् इन वक़्तों में तुम लोग अकेले या अपनी पत्नियों के साथ ऐसी हालतों में रहते हो जिन में बच्चों या सेवकों का अचानक तुम्हारे पास आ जाना कदापि उचित नहीं हो सकता।

३५. अर्थात् बूढ़ी स्त्रियां यदि थोड़े ही वस्त्र में रहें तो रह सकती हैं; परन्तु यदि वे अपने पूरे वस्त्र में रहें तो यह उन के लिए ज़्यादा अच्छा होगा। बूढ़ी स्त्रियां अपने किस कपड़े को उतार सकती हैं इस के बारे में सभी एकमत हैं कि जिस कपड़े को वे उतार सकती हैं वह उन की चादर है जिस से अपने को छिपाने का हुक्म स्त्रियों को सूरा अल-अहज़ाब आयत ५९ में दिया गया है। इस सिलसिले में सूरा अल-अहज़ाब की ५३ से ६२ तक की आयतें भी सामने रहनी चाहिएं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. न अन्धे पर कोई दोष है और न लंगड़े पर कोई दोष है और न बीमार पर कोई दोष है और न तुम्हारे अपनें ऊपर, इस में कि अपनें घरों से खाओ, या अपने बापों के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहिनों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामाओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से, या (उस घर से) जिस की कुन्जियों के तुम मालिक हुये हो, या अपने मित्र के (घरों से)[१६]। इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं है कि मिल कर खाओ या अलग-अलग। हाँ, जब घरों में जाया करो, तो अपनों पर सलाम भेजा करो अभिवादन अल्लाह की ओर से (निश्चित किया हुआ), बरकत वाला और उत्तम। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी 'आयतें' बयान करता है, कदाचित् तुम समझ-बूझ से काम लो।

61. No blame is there upon the blind nor any blame upon the lame nor any blame upon the sick nor on yourselves if ye eat from your houses, or the houses of your fathers, or the houses of your mothers, or the houses of your brothers, or the houses of your sisters, or the houses of your fathers' brothers, or the houses of your fathers' sisters, or the houses of your mothers' brothers, or the houses of your mothers' sisters, or (from that) whereof ye hold the keys, or (from the house) of a friend. No sin shall it be for you whether ye eat together or apart. But when ye enter houses, salute one another with a greeting from Allah, blessed and sweet. Thus Allah maketh clear His revelations for you that haply ye may understand.

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰى
أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوْا مِنْ بُيُوْتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ
اٰبَآئِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أُمَّهٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ إِخْوَانِكُمْ
أَوْ بُيُوْتِ أَخَوٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَعْمَامِكُمْ
أَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ
بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗ أَوْ
صَدِيْقِكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ
تَأْكُلُوْا جَمِيْعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۭ فَإِذَا دَخَلْتُمْ
بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ
عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ۭ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
ع تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾

६२. 'ईमान' वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' लाये, और जब किसी सामूहिक कार्य के अवसर पर उस के साथ हों, तो चले न जायें जब तक उस से अनुज्ञा न ले लें। जो लोग तुम से अनुज्ञा माँगते हैं, वही वे लोग हैं जो अल्लाह और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' रखते हैं। तो, जब वे अपने किसी काम के लिए तुम से अनुज्ञा माँगें, तो तुम उन में से जिसे चाहो अनुज्ञा दे दिया करो, और उन के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

62. They only are the true believers who believe in Allah and His messenger and, when they are with him on some common errand, go not away until they have asked leave of him. Lo! those who ask leave of thee, those are they who believe in Allah and His Messenger. So, if they ask thy leave for some affair of theirs, give leave to whom thou wilt of them and ask for them forgiveness of Allah. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ
إِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى
يَسْتَأْذِنُوْهُ ۭ إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَأْذِنُوْنَكَ
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ
لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ
اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

६३. (हे 'ईमान' लाने वालो !) अपने बीच 'रसूल' के बुलाने को तुम परस्पर एक-दूसरे का-सा बुलाना न समझो। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो तुम में से चुपके खिसक जाते हैं। उन लोगों को जो उस के आदेश की अवहेलना करते हैं डरना चाहिए कि उन पर कोई आजमाइश न आ पड़े या उन पर दुःख देने वाली यातना न आ जाये।

63. Make not the calling of the Messenger among you as your calling one of another. Allah knoweth those of you who steal away, hiding themselves. And let those who conspire to evade orders beware lest grief or painful punishment befall them.

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ
كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۭ قَدْ يَعْلَمُ
اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ
فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ أَمْرِهٖٓ
أَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

३६. अन्धे, लंगड़े आदि विवश और असहाय लोग हर घर और हर जगह से खा सकते हैं। विवशता के कारण उन का हक़ पूरे समाज पर है। रहे दूसरे लोग तो वे जिस तरह अपने घर खा सकते है उसी तरह उन लोगों के घर भी खा सकते हैं जिन का उल्लेख इस 'आयत' में किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. जान रक्खो आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है। वह जानता है तुम जिस (नीति) पर हो। और जिस दिन वे उस की ओर लौटाये जायेंगे तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ कि उन्हों ने किया होगा। अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

64. Lo! verily unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and the earth. He knoweth your conditior And (He knoweth) the Day when they are returned unto Him so that He may inform them of what they did. Allah is Knower of all things.

أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾ ع

ركوع ٩

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५—अल-फ़ुरक़ान
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-फ़ुरक़ान' (Distinction) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है क़ुरआन की और बहुत सी सूरतों की तरह यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है फिर भी सूरा की वार्त्ताओं से इस का सम्बन्ध है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा नबी सल्ल० के मक्की जीवन के मध्य काल में उतरी है। यह वह समय है जब कि मुसलमान अत्यन्त कमज़ोर थे और उन के शत्रुओं का गर्व और अहंकार बहुत बढ़ चुका था।

वार्त्तायें

इस 'सूरा' से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अल-अहज़ाब पर समाप्त होता है।

इस 'सूरा' का मूल विषय है : सब्र, अल्लाह पर भरोसा रखना, अल्लाह का आश्रय ले कर शक्ति और आत्मबल प्राप्त करना, दुनिया ही को अपना जीवन-उद्देश्य बनाने वालों के धन-सम्पत्ति की उपेक्षा आदि।

'सूरा' के आरम्भिक भाग में उन लोगों के अवगुणों का उल्लेख किया गया है जो 'ईमान' नहीं लाये और 'कुफ़्' और अहंकार ही की नीति पर जमे रहे। ये वही लोग हैं जो स्वयं पथभ्रष्ट थे और दूसरों को भी पथभ्रष्ट करने में लगे रहे। अल्लाह ने इन के अज्ञानी होने की घोषणा की और बताया कि ये पशुओं से भी अधिक राह से भटके हुये हैं। ये अपनी तुच्छ इच्छाओं ही के उपासक हैं। ये 'क़ियामत' को नहीं मानते और नबी सल्ल० से वैर-भाव रखते हैं। प्रस्तुत सूरा में संक्षिप्त रूप से वे सभी बातें आ गई हैं जिन का सविस्तार वर्णन हमें आगे आने वाली सूरा में मिलता है।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'ईमान' वालों से वादा किया गया है कि सफलता उन्हीं को प्राप्त होगी; उन का 'रब' उन के 'नबी' का सहायक है। अल्लाह 'काफ़िरों' और 'नबी' के शत्रुओं को इस बात की मुहलत दे रहा है कि वे सँभल जायें और अल्लाह की ओर पलटें। यह अल्लाह की कृपा और उस की दयालुता है। 'काफ़िरों' को यातना देने का सामर्थ्य तो उसे हर समय प्राप्त है; परन्तु वह उन्हें अपनी कृपा से ढील दिये जा रहा है। इस सूरा में 'काफ़िरों' के उन आक्षेपों का उत्तर भी दिया गया है जो वे क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' पर करते थे, इस के साथ-साथ सत्य से मुँह मोड़ने के बुरे परिणामों से उन्हें डराया भी गया है।

इस सूरा में 'आयत' १ से ले कर ६२ तक की 'आयतों' के क़ाफ़ियों (अन्त्यानुप्रास) में बड़ी समानता है परन्तु इस के बाद 'आयतों' का क़ाफ़िया बदल गया है। सूरा का यह अन्तिम भाग एक प्रकार से पूरक की हैसियत रखता है। सूरा के पहले भाग में अहंकारी व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो कहते थे कि 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) क्या होता है[1]? सूरा के इस दूसरे भाग[2] में अहंकारी लोगों के मुक़ाबले में उन लोगों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जो अहंकारी नहीं बल्कि 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) के विनम्र बन्दे हैं।

१. दे० आयत ६०।
२. दे० आयत ६३-७७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़ुरक़ान
(मक्का में उतरी – 'आयतें' ७७)

THE CREATION (OF RIGHT AND WRONG)
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अत्यन्त बरकत[1] वाला है वह जिस ने यह फ़ुरक़ान[2] अपने बन्दों पर उतारा,[3] ताकि वह सारे संसार के लिए सचेत करने वाला हो—

1. Blessed is He Who hath revealed unto His slave the Criterion (of right and wrong), that he may be a warner to the peoples.

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ ﴿١﴾

२. वह जो आकाशों और धरती के राज्य का मालिक है, उस ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया है और न कोई राज्य में उस का सहभागी है। और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया फिर उस का ठीक-ठीक अन्दाज़ा ठहराया।[4]

2. He unto Whom belongeth the soveriegnty of the heavens and the earth. He hath chosen no son nor hath He any partner in the sovereignty. He hath created everything and hath meted out for it a measure.

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾

३. लोगों ने उसे छोड़ कर ऐसे 'इलाह' (पूज्य) बना लिये जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वे स्वयं पैदा किये जाते हैं, और न उन्हें अपने बुरे का अधिकार प्राप्त है और न भले का, और न उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है, और न जीवन का और न (मरने के पश्चात् पुनः) जी उठने का।

3. Yet they choose beside Him other gods who create naught but are themselves created, and possess not hurt nor profit for themselves, and possess not death nor life, nor power to raise the dead.

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾

४. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया वे कहते हैं : यह तो बस एक मनगढ़न्त चीज़ है, जिसे इस (व्यक्ति) ने स्वयं गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने इस काम में इस की सहायता की है, तो ये ज़ुल्म और झूठ पर उतर आये हैं।

4. Those who disbelieve say: This is naught but a lie that he hath invented, and other folk have helped him with it, so that they have produced a slander and a lie.

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ ١فْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿٤﴾

५. और कहते हैं : ये पहले लोगों की कहानियाँ (बेसनद बातें) हैं जिन्हें इस ने लिखा लिया है और वे इसे प्रातःकाल और सन्ध्या समय सुनाई जाती हैं।

5. And they say: Fables of the men of old which he hath had written down so that they are dictated to him morn and evening.

وَقَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾

१. अर्थात् अत्यन्त उच्च, महान, सामर्थ्य रखने वाला, परोपकारी, शुभ और पवित्र है।

२. अर्थात् क़ुरआन। 'फ़ुरक़ान' का अर्थ होता है अलग-अलग करना या एक ही वस्तु के भागों का अलग-अलग होना। क़ुरआन को 'फ़ुरक़ान' (Distinction) कहने का कारण यह है कि वह सत्य और असत्य को अलग करने की कसौटी और निर्णायक और निश्चयात्मक आदर्श है। फिर उस के विभिन्न भाग भी हैं और उस के विभिन्न टुकड़े विभिन्न अवसर पर अवतीर्ण हुये हैं।

३. इस-के लिए 'नज़्ज़ला' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है थोड़ा-थोड़ा कर के उतारना। इस आरम्भिक वार्ता के साथ दे० आयत ३२-३३।

४. अल्लाह ने हर चीज़ को केवल पैदा ही नहीं किया बल्कि उस ने हर चीज़ के लिए रंग, रूप, शक्ति, गुण, विशेषतायें और विकास की सीमा आदि सभी चीज़ें निश्चत कीं। और संसार में वे समस्त साधन और कारण-समूह संचित कर दिये जिस से प्रत्येक वस्तु अपने क्षेत्र में कार्यरत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. कहो : इसे उतारा है उस ने जो आकाशों और धरती का भेद जानता है। निस्सन्देह वह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।

७. और वे कहते हैं : यह कैसा 'रसूल' है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है[५] ? क्यों न इस के पास कोई 'फ़रिश्ता' उतारा गया कि इस के साथ रह कर (न मानने वालों को) धमकाता।

८. या (ऐसा क्यों न हुआ कि) इस के पास कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता, या इस के पास कोई बाग़ होता[६] जिस से यह खाता ? और ज़ालिम कहते हैं : तुम लोग तो बस एक ऐसे पुरुष का अनुवर्तन करने लगे हो जो जादू का मारा हुआ है।

९. देखो वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें बयान करते हैं, तो वे बहक गये हैं और मार्ग नहीं पा सकते।

१०. बरकत वाला है वह, जो यदि चाहे, तो तुम्हें इस से भी उत्तम प्रदान करे—बहुत से बाग़ जिन के नीचे नहरें बह रही हों—और तुम्हें प्रदान करे बहुत से महल।

११. नहीं, बल्कि वे उस घड़ी[७] ('क़ियामत') को झुठला चुके हैं और जो उस घड़ी को झुठला दे उस के लिए हम ने ('जहन्नम' की) दहकती आग तैयार कर रक्खी है।

१२. वह जब उन्हें दूर से देखेगी तो वे उस के प्रकोप और साँस खींचने की आवाज़ें सुनेंगे।

१३. और जब वे उस की किसी तंग जगह जकड़े हुये डाले जायेंगे, तो वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

१४. (कहा जायेगा) : आज एक विनाश को नहीं, बहुत से विनाश को पुकारो !

१५. कहो : यह (परिणाम) अच्छा है या वह शाश्वत 'जन्नत' जिस का वादा डरने वालों से किया गया है ? यह उन का बदला और ठिकाना होगा।

6. Say (unto them, O Muhammad): He Who knoweth the secret of the heavens and the earth hath revealed it. Lo! He ever is Forgiving, Merciful.

7. And they say: What aileth this messenger (of Allah) that he eateth food and walketh in the markets? Why is not an angel sent down unto him, to be a warner with him?

8. Or (why is not) a treasure thrown down unto him, or why hath he not a paradise from whence to eat? And the evil-doers say: Ye are but following a man bewitched.

9. See how they coin similitudes for thee, so that they are all astray and cannot find a road!

10. Blessed is He Who, if He will, will assign thee better than (all) that — Gardens underneath which rivers flow — and will assign the mansions.

11. Nay, but they deny (the coming of) the Hour, and for those who deny (the coming of) the Hour We have prepared a flame.

12. When it seeth them from after, they hear the cracking and the roar thereof.

13. And when they are flung into a narrow place thereof, chained together, they pray for destruction there.

14. Pray not that day for one destruction, but pray for many destructions!

15. Say: Is that (doom) better or the Garden of Immortality which is promised unto those who ward off (evil)? It will be their reward and journey's end.

قُلْ أَنزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑥

وَقَالُوا مَالِ هٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ
الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا
أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ⑦

أَوْ يُلْقٰى إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ
يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظّٰلِمُونَ إِن
تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ⑧

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ⑨

تَبٰرَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا
مِّن ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهٰرُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا ⑩

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَن
كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ⑪

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا
لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ⑫

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ⑬

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
ثُبُورًا كَثِيرًا ⑭

قُلْ أَذٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي
وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَ
مَصِيرًا ⑮

५. इन की इस बात का उत्तर 'आयत' २० में दिया गया है।
६. इस के उत्तर के लिए दे० आयत १५।
७. अर्थात् 'क़ियामत' की घड़ी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. उन के लिए उस में वह सब-कुछ होगा, जो वे चाहेंगे, वे सदैव रहेंगे। यह तुम्हारे 'रब' के ज़िम्मे ऐसा वादा है जिस के पूरा करने की माँग की जा सकती है[८]।

16. Therein abiding, they have all that they desire. It is for thy Lord a promise that must be fulfilled.

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾

१७. और जिस दिन वह उन्हें घेर लायेगा और उन्हें भी जिन्हें वे अल्लाह को छोड़ कर पूजते हैं[९] फिर वह कहेगा : क्या मेरे इन बन्दों को पथभ्रष्ट तुम ने किया था या वही मार्ग से भटक गये थे[१०] ?

17. And on the day when He will assemble them and that which they worship instead of Allah and will say: Was it ye who misled these my slaves or did they (themselves) wander from the way?

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ ءَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾

१८. वे कहेंगे : तू महिमावान् है ! यह हम से नहीं हो सकता था कि तेरे सिवा दूसरे संरक्षक-मित्र बनाते; परन्तु तू ने उन्हें और उन के पूर्वजों को सुख-सामग्री दी यहाँ तक कि वे अनुस्मारक को भुला बैठे और ये विनष्ट होने वाले लोग थे।

18. They will say: Be Thou glorified! It was not for us to choose any protecting friends beside Thee; but Thou didst give them and their fathers ease till they forgot the warning and became lost folk.

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

१९. तो उन्हों ने तो तुम्हें तुम्हारी बात में झुठला दिया, फिर तुम न तो (यातना को) टाल सकते हो और न सहायता पा सकते हो। और जो कोई भी तुम में से ज़ुल्म[११] करने वाला हो, उसे हम बड़ी यातना का मज़ा चखायेंगे।

19. Thus they will give you the lie regarding what ye say, then ye can neither avert (the doom) nor obtain help. And whoso among you doth wrong, We shall make him taste great torment.

فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

२०. और तुम से पहले हम ने जितने 'रसूल' भेजे हैं निस्सन्देह वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे। हम ने तुम्हें एक-दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया है[१२] : क्या तुम 'सब्र' करते हो[१३] ? तुम्हारा 'रब' देखता है।

20. We never sent before thee any messengers but lo! they ate food and walked in the markets. And We have appointed some of you a test for others: Will ye be steadfast? And thy Lord is ever Seer.

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

*२१ और जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं : क्यों न 'फ़िरिश्ते' हम पर उतारे गये या फिर हम अपने 'रब' को देखते ? इन्हों ने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा, ये सरकशी में हद से बहुत दूर निकल गये।

21. And those who look not for a meeting with Us say: Why are angels not sent down unto us and (why) do we not see our Lord? Assuredly they think too highly of themselves and are scornful with great pride.

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

८. अर्थात् तुम्हारा 'रब' जिसे अवश्य पूरा करेगा।
९. अर्थात् ये अल्लाह को छोड़ कर जिन फ़िरिश्तों, महापुरुषों आदि को देवता मान कर उन की पूजा करते हैं।
१०. क़ुरआन में यह वार्त्ता विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत की गई है। उदाहरण के लिए दे० सूरा अल-माइदा आयत ११६-११७ और सूरा अस-सबा आयत ४०-४२।
११. ज़ुल्म से अभिप्रेत यहाँ सच्चाई और वास्तविकता के विरुद्ध जाना है अर्थात् 'कुफ़्र' और 'शिर्क'।
१२. अर्थात् तुम्हारे 'ईमान' वाले व्यक्तियों को तुम्हारे 'काफ़िरों' के लिए आज़माइश बना दिया है।
१३. सम्बोधन नबी सल्ल० से है परन्तु सुनाना औरों को अभीष्ट है।

*यहाँ से उन्नीसवाँ पारा (Part XIX) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. जिस दिन ये 'फ़िरिश्तों' को देखेंगे, उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ-शूचना न होगी; वे कहेंगे : कोई आड़ कर दी जाये।

२३. और हम बढ़े उन के किये-धरे की ओर फिर उसे बिखरी धूल कर डाला।

२४. उस दिन 'जन्नत' वालों के ठहरने की जगह भी उत्तम होगी और दोपहर में आराम करने का स्थान भी बहुत अच्छा होगा;[१४]

२५ और उस दिन आकाश बदली के साथ फटेगा[१५] और 'फ़िरिश्ते' उतारे जायेंगे।

२६. उस दिन वास्तविक राज्य 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) का होगा, और वह दिन 'काफ़िरों' के लिए कठिन होगा।

२७. और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबायेगा, कहेगा : क्या ही अच्छा होता कि मैंने 'रसूल' के साथ मार्ग ग्रहण किया होता!

२८. हाय मेरा अभाग्य! क्या ही अच्छा होता कि मैंने अमुक व्यक्ति को घनिष्ट मित्र न बनाया होता।

२९. उस ने मुझे अनुस्मारक से[१६] भटका दिया जब कि वह मेरे पास आ चुका था। 'शैतान' तो आड़े वक्त में मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।

३०. और 'रसूल' कहेगा : हे 'रब'! निश्चय ही मेरी जाति वालों ने इस 'क़ुरआन' को उपहास का विषय ठहरा लिया था।

३१. और (हे मुहम्मद!) हम ने इसी तरह अपराधियों को हर 'नबी' का शत्रु बनाया है[१७]; और तुम्हारा 'रब' पथ-प्रदर्शन और सहायता के लिए काफ़ी है।

22. On the day when they behold the angels, on that day there will be no good tidings for the guilty; and they will cry: A forbidding ban!

23. And We shall turn unto the work they did and make it scattered motes.

24. Those who have earned the Garden on that day will be better in their home and happier in their place of noon-day rest:

25. A day when the heaven with the clouds will be rent asunder and the angels will be sent down, a grand descent.

26. The Sovereignty on that day will be the True (Sovereignty) belonging to the Beneficent One, and it will be a hard day for disbelievers.

27. On the day when the wrong-doer gnaweth his hands he will say: Ah, would that I had chosen a way together with the messenger (of Allah)!

28. Alas for me! Ah, would that I had never taken such a one for friend!

29. He verily led me astray from the Reminder after it had reached me. Satan was ever man's deserter in the hour of need.

30. And the messenger saith: O my Lord! Lo! mine own folk make this Qur'an of no account.

31. Even so have We appointed unto every Prophet an opponent from among the guilty; but Allah sufficeth for a Guide and Helper.

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾
وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ
فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾
وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ
الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾
وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾
يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا
خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾
لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾
وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا
هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ
الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

१४. इस के मुक़ाबले में 'काफ़िरों' की जो जगह होगी उस का उल्लेख 'आयत' ३४ में किया गया।
१५. अर्थात् आकाश फटेगा और बदली ज़ाहिर होगी।
१६. अर्थात् अल्लाह की किताब से।
१७. दे० सूरा अल-अनआम आयत ११२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. और जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया वे कहते हैं : इस पर पूरा 'क़ुरआन' एक ही बार में क्यों न उतार दिया गया ? ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके द्वारा तुम्हारे दिल को जमाव प्रदान करें; और हम ने इसे एक उचित क्रम में रक्खा।

32. And those who disbelieve say: Why is the Qur'an not revealed unto him all at once? (It is revealed) thus that We may strengthen thy heart therewith; and We have arranged it in right order.

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ٣٢

३३. और (इस में यह फ़ायदा भी है कि) जब भी वे तुम्हारे पास कोई निराली बात (अथवा अद्भुत प्रश्न) ले कर आते हैं हम ठीक बात तुम्हें पहुँचा देते हैं, और भली-भाँति बात खोल देते हैं।[१८]

33. And they bring thee no similitude but We bring thee the Truth (as against it), and better (than their similitude) as argument.

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ٣٣

३४. जो अपने मुँह के बल 'जहन्नम' की ओर घेर लाये जायेंगे। वही बुरे स्थान वाले हैं और मार्ग से भी बहुत भटक गये हैं।

34. Those who will be gathered on their faces unto Hell: such are worse in plight and further from the right road.

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ٣٤

३५. और हम ने मूसा को 'किताब' प्रदान की और उस के भाई हारून को सहायक के रूप में उस के साथ कर दिया।

35. We verily gave Moses the Scripture and placed with him his brother Aaron as henchman.

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ٣٥

३६. फिर कहा : तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी 'आयतों' को झुठलाया।[१९] फिर हम ने उन्हें तबाह कर के रख दिया।

36. Then We said: Go together unto the folk who have denied Our revelations. Then We destroyed them, a complete destruction.

فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ٣٦

३७. और नूह की 'जाति' को भी, जब उन्होंने 'रसूलों' को झुठलाया,[२०] हम ने उन्हें डुबो दिया और लोगों (की शिक्षा) के लिये उन्हें एक निशानी बना दिया। और ज़ालिमों के लिए हमने एक दुखदायिनी यातना तैयार कर रक्खी है।

37. And Noah's folk, when they denied the mesesngers, We drowned them and made of them a portent for mankind. We have prepared a painful doom for evil-doers.

وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ٣٧

३८. और 'आद' और 'समूद' और 'अर-रस्स' वालों और इस बीच की बहुत-सी नस्लों को (विनष्ट कर के रख दिया)।

38. And (the tribes of) 'Aad and Thamud, and the dwellers in Ar-Rass, and many generations in between.

وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ٣٨

३९. और हर एक (को सचेत करने) के लिए हमने मिसालें बयान कीं, और हर एक को हमने तहस-नहस कर दिया।

39. Each (of them) We warned by examples, and each (of them) We brought to utter ruin.

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ٣٩

१८. आयत ३२-३३ में इस का उल्लेख किया गया है कि क़ुरआन को एक ही बार में क्यों नहीं उतारा गया। क़ुरआन साधारण किताबों की तरह कोई किताब नहीं है बल्कि इसे अल्लाह ने आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा है। नबी सल्ल० की 'नुबुव्वत' के आरम्भ से अल्लाह ने क़ुरआन के द्वारा जहाँ 'ईमान' वालों को समय-समय पर आवश्यकतानुसार उचित शिक्षायें दी हैं और उन्हें जीवन-पथ का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाया है वहीं दूसरी ओर वह उन आक्षेपों, उलझनों और प्रश्नों का उत्तर भी देता रहा है जो इस्लाम-विरोधी गरोह की ओर से पेश किये जाते रहे हैं। ये और इस तरह के दूसरे फ़ायदे इसी तरह हासिल हो सकते थे कि पूरे क़ुरआन का अवतरण एक साथ न हो कर थोड़ा-थोड़ा कर के होता।

१९. अर्थात् उन 'आयतों' को जो हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० के द्वारा उन तक पहुँची थीं; जिन का प्रचार एक मुद्दत तक 'बनी इसराईल' के धर्मात्मा लोग भी करते रहे हैं।

२०. हज़रत नूह अ० को झुठला कर उन्होंने समस्त 'नबियों' का इन्कार किया इस लिए कि किसी एक 'नबी' का झुठलाना भी वास्तव में समस्त नबियों को झूठा ठहराना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. और उस बस्ती पर से तो ये गुज़र चुके हैं जिस पर बुरी वर्षा की गई।[२१] क्या इन्होंने उसे देखा न होगा? नहीं, बल्कि ये दोबारा जी उठने की आशा नहीं रखते।[२२]

40. And indeed they have passed by the township whereon was rained the fatal rain. Can it be that they have not seen it? Nay, but they hope for no resurrection.

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

४१. और ये जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारी हँसी ही उड़ाते हैं, (कहते हैं) : क्या यही है जिसे अल्लाह ने 'रसूल' बना कर उठाया है?

41. And when they see thee (O Muhammad) they treat thee only as a jest (saying): Is this he whom Allah sendeth as a messenger?

وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾

४२. इस ने तो हमें भटका कर अपने 'इलाहों' (देवताओं) से फेर ही दिया होता यदि हम उन (की आस्था) पर जम न गये होते। ये जल्द ही जान लेंगे, जब यातना को देखेंगे कि कौन मार्ग से अधिक भटका हुआ था।

42. He would have led us far away from our gods if we had not been staunch to them. They will know, when they behold the doom, who is more astray as to the road.

إِن كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

४३. क्या तुम ने उसे देखा[२३] जिस ने अपना 'इलाह' (पूज्य) अपनी (तुच्छ) इच्छा को बना रक्खा है? तो क्या तुम उस (को सीधे मार्ग पर लाने) के ज़िम्मेदार हो सकते हो?

43. Hast thou seen him who chooseth for his god his own lust? Wouldst thou then be guardian over him?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

४४. क्या तुम समझते हो कि इन में अधिकतर सुनते या समझते हैं? ये तो बस चौपायों की तरह हैं—बल्कि ये और बढ़ कर मार्ग से भटके हुये है!

44. Or deemest thou that most of them hear or understand? They are but as the cattle — nay, but they are farther astray!

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

४५. क्या तुम ने अपने 'रब' को नहीं देखा कि वह कैसे छाया फैलाता है—और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर कर देता[२४]—फिर हम ने सूर्य को उस का पता देने वाला बनाया;[२५]

45. Hast thou not seen how thy Lord hath spread the shade — And if He willed He could have made it still — then We have made the sun its pilot:

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

४६. फिर (जैसे-जैसे सूर्य उठता है) हम उस (छाया) को धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं?[२६]

46. Then We withdraw it unto Us, a gradual withdrawal?

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

२१. लूत अ० की जाति वालों की बस्ती की ओर संकेत है।
२२. इसीलिए प्राचीन अवशेषों से ये कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करते।
२३. अर्थात् उस की दशा पर विचार किया।
२४. दे० आयत ६२।
२५. अर्थात् छाये का बढ़ना और घटना सूर्य ही के उदय होने, चढ़ने और ढलने के अधीन होता है।
२६. अर्थात् उसे लुप्त कर देते हैं। हर वस्तु जो लुप्त होती है अल्लाह की ओर जाती है। हर चीज़ आती भी उसी की ओर से है और उसी की ओर पलटती भी है। प्रत्येक वस्तु का मूल आधार वही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिए वस्त्र बनाया,[२७] और निद्रा को विश्राम, और दिन को जी उठना ठहराया ।[२८]

47. And He it is Who maketh night a covering for you, and sleep repose, and maketh day a resurrection.

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّ
النَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

४८. और वही है जो अपनी दयालुता के आगे हवाओं को शुभ-सूचना के रूप में भेजता है,[२९] और हम ने आकाश से पाक पानी[३०] उतारा

48. And He it is Who sendeth the winds, glad tidings heralding His mercy, and We send down purifying water from the sky,

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿٤٨﴾

४९. ताकि हम उस से निर्जीव भूमि को जीवन प्रदान करें, और उसे अपने पैदा किये हुये बहुत से पशुओं और मनुष्यों को पिलायें।

49. That We may give life thereby to a dead land, and We give many beasts and men that We had created to drink thereof.

لِّنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا
أَنْعَامًا وَّأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿٤٩﴾

५०. और इसे हम तरह-तरह से उन के सामने लाते हैं ताकि चेतें; परन्तु अधिकतर लोगों के लिए 'कुफ़्' के सिवा हर चीज़ अमान्य ही रही ।[३१]

50. And verily We have repeated it among them that they may remember, but most of mankind begrudge aught save ingratitude.

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ۖ فَأَبٰى
أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٠﴾

५१. यदि हम चाहते, तो हर बस्ती में एक सचेत करने वाला खड़ा करते ।

51. If We willed, We could raise up a warner in every village.

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿٥١﴾

५२. तो 'काफ़िरों' की बात न मानना, और इस ('क़ुरआन') से तुम उन से बड़ा 'जिहाद' करो ।[३२]

52. So obey not the disbelievers, but strive against them herewith with a great endeavour.

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ
جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾

५३. और वही है जिसने दो दरिया मिला रक्खे हैं (कि वे मिले हुये चलते हैं); यह है स्वादिष्ट, और मीठा, और यह है खारी, और कड़ुआ; और दोनों के बीच एक आड़ और पृथक् करने वाली रोक रख दी है ।[३३]

53. And He it is Who hath given independence to the two seas (though they meet); one palatable, sweet, and the other saltish, bitter; and hath set a bar and a forbidding ban between them.

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ
فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ
بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٥٣﴾

५४. और वही है जिस ने पानी से एक आदमी पैदा किया, फिर उसे वंश और ससुराली रिश्ते वाला कर दिया; तेरा 'रब' बड़ा सामर्थ्यवान है ।[३४]

54. And He it is Who hath created man from water, and hath appointed for him kindred by blood and kindred by marriage; for thy Lord is ever Powerful.

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ
نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

२७. अर्थात् ढांकने और छिपाने वाली चीज़ बनाया ।

२८. सोच-विचार करने वालों के लिए इस में इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि मरने के बाद अल्लाह अवश्य लोगों को दुबारा जीवित कर के उठायेगा । दे० सूरा अन-नम्ल आयत ८६ ।

२९. अर्थात् वर्षा होने से पहले हवा चलाता है जो इस बात की खुशखबरी देती है कि जल्द ही वर्षा होने वाली है ।

३०. पाक पानी से अभिप्रेत वह पानी है जो हर प्रकार की गन्दगियों से पाक हो, और उस में रोगों के कीटाणु और विषैले तत्व आदि भी न पाये जाते हों ।

३१. हालांकि अल्लाह अपनी निशानियाँ और चमत्कार इस लिए दिखाता है कि लोग चेतें और अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखायें ! दे० आयत ६२ ।

३२. अर्थात् क़ुरआन के द्वारा असत्य का मुक़ाबला करो । सत्य को प्रकाश में लाओ और क़ुरआन के द्वारा असत्य का असत्य होना इस प्रकार खोल कर रख दो कि निर्लज्ज और नीच प्रकृति के लोगों के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति के लिए उसमें कोई आकर्षण शेष न रहे ।

३३. समुद्र में विभिन्न स्थानों पर मीठे पानी के स्रोत मिलते हैं जिनका पानी समुद्र के खारी जल के बीच मीठा ही रहता है । और मीठे पानी की धार समुद्र के जल से इस तरह अलग होती है कि समुद्र में सफ़र करने वाले उस में से पीने के लिए मीठा जल ले सकते हैं । समुद्र में जहाँ कोई बड़ा दरिया आकर गिरता है वहाँ भी हमें यह चमत्कार दिखाई देता है कि खारी पानी मीठे पानी से अलग है यद्यपि दोनों एक साथ हैं ।

३४. आयत ४५ से ५४ तक १० आयतों में अल्लाह ने अपने चमत्कारों का उल्लेख किया है ताकि लोग ध्यान दें और अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलायें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. और अल्लाह को छोड़ कर वे उसको पूजते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। और 'काफ़िर' अपने 'रब' के मुक़ाबले में (विद्रोहियों का) पृष्ठपोषक बना हुआ है।

55. Yet they worship instead of Allah that which can neither benefit them nor hurt them. The disbeliever was ever a partisan against his Lord.

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ
وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ
ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

५६. और (हे मुहम्मद !) तुम को तो हम ने बस एक शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है।

56. And We have sent thee (O Muhammad) only as a bearer of good tidings and a warner.

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

५७. (लोगों से) कह दो : मैं इस (काम) पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय इस के कि जो कोई चाहे अपने 'रब' की ओर (जाने का) मार्ग ग्रहण कर ले।[३५]

57. Say: I ask of you no reward for this, save that whoso will may choose a way unto his Lord.

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا
مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

५८. और (हे 'नबी' !) तुम उस पर भरोसा रक्खो जो सजीव है और कभी मरने वाला नहीं, और उस की 'हम्द' के साथ 'तसबीह' करो वह अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार है।

58. And trust thou in the Living One Who dieth not, and hymn His praise. He sufficeth as the Knower of His bondmen's sins.

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَ
سَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ
خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

५९. जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन के बीच है छः दिनों में[३६] पैदा किया, फिर राज्यसिंहासन पर विराजमान हुआ।[३७] 'रहमान'! तो उस के प्रति सवाल करो उस से जो ख़बर रखता है!

59. Who created the heavens and the earth and all that is between them in six Days, then He mounted the Throne. The Beneficent! Ask any one informed concerning Him!

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾

६०. इन लोगों से जब कहा जाता है कि उस 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) को 'सजदा' करो ! तो कहते हैं : और 'रहमान' क्या होता है ? क्या जिसे तू हम से कह दे उसे हम 'सजदा' करें ? इस चीज़ ने उन की नफ़रत और बढ़ा दी।

60. And when it is said unto them: Adore the Beneficent! they say: And what is the Beneficent? Are we to adore whatever thou (Muhammad) biddest us? And it increaseth aversion in them.

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا
وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَ
زَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ﴿٦٠﴾

६१. बड़ा बरकत वाला है वह जिस ने आकाश में बुर्ज[३८] बनाये, और उस में एक चिराग़[३९] और एक चमकता चाँद रक्खा !

61. Blessed be He Who hath placed in the heaven mansions of the stars, and hath placed therein a great lamp and a moon giving light!

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَ
جَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾

३५. और एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति से काम ले, दूसरों का सहायक हो, दीन-दुखियों को 'सदक़ा' दे। दे० सूरा अद-दह्र। अल्लाह का 'नबी' लोगों से अपने लिए कोई बदला नहीं चाहता, उसके कामों का बदला तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है। लोग यदि 'नबी' की बात मानते हैं तो इस में उन का अपना ही फ़ायदा है।

३६. अर्थात् छः युग (Periods) में। दे० सूरा अल-हज्ज आयत ४७, अल-मआरिज आयत ४।

३७. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।

३८. दे० सूरा अल-हिज्र फ़ुटनोट ८।

३९. अर्थात् सूर्य। दे० सूरा नूह आयत १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. और वही है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए जो चेतना चाहे, या कृतज्ञ होना चाहे।

62. And He it is Who hath appointed night and day in succession, for him who desireth to remember, or desirest thankfulness.

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

६३. और 'रहमान' के (वास्तविक) बन्दे वही लोग हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं, और जब अज्ञानी उन से (अज्ञानता की) बातें करते हैं तो कहते हैं : सलाम (है तुम पर);[३९]

63. The (faithful) slaves of the Beneficent are they who walk upon the earth modestly and when the foolish ones address them answer: Peace;

وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾

६४. और जो अपने 'रब' के आगे, 'सजदे' में और खड़े, रातें काटते हैं,[४०]

64. And who spend the night before their Lord, prostrate and standing.

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾

६५. जो कहते हैं : हमारे 'रब' ! 'जहन्नम' की यातना को हम से दूर रख; निश्चय ही उस की यातना चिमट जाने वाली है;

65. And who say: Our Lord! Avert from us the doom of hell; lo! the doom thereof is anguish;

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

६६. निश्चय ही वह ठहरने की जगह और स्थान दोनों ही दृष्टि से बुरा है।

66. Lo! it is wretched as abode and station;

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾

६७. जो ख़र्च करते हैं, तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता से काम लेते हैं, बल्कि दोनों के बीच माध्यमिकता पर स्थिर रहते हैं;

67. And those who, when they spend, are neither prodigal nor grudging; and there is ever a firm station between the two;

وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

६८. जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे 'इलाह' (इष्ट पूज्य) को नहीं पुकारते, और उस जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है क़त्ल नहीं करते परन्तु हक़ के साथ,[४१] और न ज़िना (व्यभिचार) करते हैं[४२]—जो कोई यह काम करे वह गुनाह की सज़ा पायेगा;

68. And those who cry not unto any other god along with Allah, nor take the life which Allah hath forbidden save in (course of) justice, nor commit adultery—and whose doth this shall pay the penalty.

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

६९. 'क़ियामत' के दिन उसे बढ़ी-चढ़ी यातना दी जायेगी, और उसी में वह सदा अपमानित हो कर पड़ा रहेगा;

69. The doom will be doubled for him on the Day of Resurrection, and he will abide therein disdained for ever.

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

३९. वे गाली और झूठ का जवाब गाली और झूठ से नहीं देते बल्कि सलाम कर के अलग हो जाते हैं; अज्ञानी और दुर्जन लोगों से उलझना उन्हें पसन्द नहीं। दे० सूरा अल-क़सस आयत ५५, सूरा अल-मोमिनून आयत ३।

४०. अर्थात् दिन की तरह उन की रातें भी पवित्र होती हैं। वे अपनी रातें भोग-विलास, नाच-रंग और बेहूदा कामों में नहीं गुज़ारते और न रातों में वे चोरी करने और डाके मारने के लिए निकलते हैं। उन की रातों का अधिक भाग अल्लाह की 'इबादत' और उसी को लेटे-बैठे प्रत्येक अवस्था में पुकारने और याद करने में व्यतीत होता है। दे० सूरा अस-सजदा आयत १५-१६, सूरा अज़-ज़ुमर आयत ९ और सूरा अज़-ज़ारियात आयत १७।

४१. अर्थात् यदि क़त्ल किया जाता है तो विधान के अन्तर्गत उन्हीं लोगों को जो इसी सज़ा के भागी होते हैं।

४२. 'रहमान' के बन्दे और दूसरे गुनाहों से भी बचते हैं यहाँ उदाहरण के रूप में तीन बड़े गुनाहों का उल्लेख किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०. सिवाय उस के जो (अल्लाह की ओर) पलटा और 'ईमान' लाया और अनुकूल कर्म किया, तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।

70. Save him who repenteth and believeth and doth righteous work; as for such, Allah will change their evil deeds to good deeds. Allah is ever Forgiving, Merciful.

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا
صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ
حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ٧٠

७१. जो कोई 'तौबा' कर के अनुकूल कर्म करता है, वही वास्तव में अल्लाह की ओर पलटता है—

71. And whosoever repenteth and doth good, he verily repenteth toward Allah with true repentance—

وَمَن تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ
إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ٧١

७२. और (रहमान के बन्दे वे हैं) जो झूठ के साक्षी नहीं बनते और जब कभी बेहूदा कर्म के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जन व्यक्ति की तरह गुज़र जाते हैं।

72. And those who will not witness vanity, but when they pass near senseless play, pass by with dignity.

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا
مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ٧٢

७३. वे लोग कि जब उन्हें उन के 'रब' की 'आयतों' के द्वारा चेताया जाता है, तो उन ('आयतों') पर वे अन्धे और बहरे बन कर नहीं गिरते।[४३]

73. And those who, when they are reminded of the revelations of their Lord, fall not deaf and blind thereat.

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ
يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ٧٣

७४. जो कहते हैं : हमारे 'रब'! हमें अपनी पत्नियों और अपनी सन्तति से आँखों की ठण्डक दे,[४४] और हमें डर रखने वालों का नायक बना।[४५]

74. And who say: Our Lord! Vouchsafe us comfort of our wives and of our offspring, and make us patterns for (all) those who ward off (evil).

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ
أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ٧٤

७५. यही लोग हैं जो बदले में ऊँचे भवन पायेंगे इस लिये कि इन्हों ने सब्र[४६] किया, और वहाँ इन का अभिवादन होगा और इन्हें सलाम पहुँचाया जायेगा,

75. They will be awarded the high place forasmuch as they were steadfast, and they will meet therein with welcome and the word of peace,

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا
وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ٧٥

७६. वहाँ ये सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छी है ठहरने की जगह और (रहने का) स्थान!

76. Abiding there for ever. Happy is it as abode and station!

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ٧٦

७७. (हे 'नबी'!) कह दो : मेरे 'रब' को तुम्हारी क्या परवा यदि तुम उसे न पुकारो। अब जब कि तुम ने झुठला दिया है, तो जल्द ही इस की सज़ा चिमट जाने वाली होगी।

77. Say (O Muhammad, unto the disbelievers): My Lord would not concern Himself with you but for your prayer. But now ye have denied (the Truth), therefore there will be judgement.

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ
فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ٧٧

———

४३. अर्थात् वे ऐसे नहीं हैं कि उन्हें अल्लाह की 'आयतें' सुनाई जायें और वे अन्धे और बहरे बन कर रह जायें और अल्लाह की 'आयतों' का उन पर कोई प्रभाव न पड़े और वे उन से कोई फ़ायदा न उठायें।

४४. अर्थात्–उन्हें 'ईमान' लाने और अच्छे काम करने का सौभाग्य प्रदान कर। वे अल्लाह से डरने लगें और उन का जीवन उच्च चरित्र और सदाचार का जीवन हो। उन्हें देख कर ठण्डक और वास्तविक सुख और शान्ति प्राप्त हो। ये 'आयतें' जिस समय उतरी हैं वह समय वही था जब कि मक्का में कोई मुसलमान भी ऐसा न था जिस के प्रिय-से-प्रिय नातेदार 'कुफ़्र' और 'शिर्क' में ग्रस्त न रहे हों। बाप मुसलमान है तो औलाद 'काफ़िर'। कोई बेटा 'ईमान' लाया है तो उस के माता-पिता और भाई-बहन अभी 'कुफ़्र' में ही पड़े हुये हैं। पति यदि 'ईमान' ला चुका है तो अभी उस की पत्नी 'कुफ़्र' ही की दशा में है। कोई पत्नी यदि 'ईमान' ला चुकी है तो उस का पति अभी 'काफ़िर' ही है।

४५. अर्थात् परहेज़गारी और भलाई और नेकी के कामों में हम सब से आगे हों। हम स्वयं नेक हों और हमारे द्वारा संसार में नेकी और भलाई का प्रचार हो। हम नेक लोगों के नायक और नेकियों के प्रचारक हों।

४६. मालूम हुआ कि सब्र एक ऐसा गुण है जिस से जीवन में बहुत से नैतिक गुणों और विशेषताओं का प्रादुर्भाव होता है। 'रहमान' के बन्दों की जिन विशेषताओं का उल्लेख ऊपर की 'आयतों' में किया गया है उन का आविर्भाव सब्र ही के कारण हो सका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६—अश—शु, अरा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अश-शु, अरा' (Poets) सूरा की आयत २२४ से लिया गया है। विरोधियों की ओर से 'नबी' सल्ल० के बारे में जहाँ और बहुत सी बातें कही जाती थीं वहीं वे आप (सल्ल०) के बारे में यह भी कहते थे कि आप एक कवि हैं और जो किताब आप लोगों के सामने पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की उतारी हुई किताब नहीं है बल्कि वह आप की अपनी रचना है। उन के इस आरोप का खण्डन करते हुए संक्षेप में बताया गया है कि एक 'नबी' और कवि में क्या अन्तर होता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन और ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि यह 'सूरा' मक्का के मध्यकाल में अवतीर्ण हुई है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

सूरा २५ से लेकर सूरा २८ तक के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है। पिछली सूरा में जो कुछ बयान हुआ है उसका विस्तारपूर्वक वर्णन प्रस्तुत सूरा में किया गया है। यह सूरा और इसके बाद वाली सूरा दोनों पिछली सूरा के अधीन प्रतीत होती हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' अल्लाह के दो नामों 'अज़ीज़' और 'रहीम' पर आधारित है[1]। अल्लाह के इन दोनों गुणवाचक नामों से विभिन्न बातों पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरणार्थ वह 'रहीम' (दयावन्त) है इस लिये वह यातना में जल्दी नहीं करता बल्कि लोगों को सोचने, समझने और सँभलने की पूरी मुहलत देता है। वह 'अज़ीज़' अर्थात् प्रभुत्त्वशाली है इस लिए कोई उसके हाथ से निकल नहीं सकता। मुहलत की घड़ी पूरी होने पर उस की यातना को रोका नहीं जा सकता। वह प्रभुत्वशाली है इस लिए 'ईमान' वालों का भरोसा उसी पर होना चाहिए।

इस 'सूरा' की एक विशेषता यह है कि इस में कुछ वाक्य ठेका (Refrain) के रूप में कई बार आये हैं। जिनके कारण 'सूरा' का प्रभाव अत्यन्त बढ़ गया है।

इस 'सूरा' में 'नबी' सल्ल० को तसल्ली देते हुए कहा गया है कि आप उन लोगों के पीछे अपनी जान क्यों घुलाते हैं जो आप पर 'ईमान' नहीं ला रहे हैं। उन के 'ईमान' न लाने का कारण यह नहीं है कि उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाई गई है। उन के इन्कार का मूल कारण उन की हठधर्मी और दुराग्रह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सत्यप्रिय लोगों के लिए तो इस संसार में चारों ओर पृथ्वी से लेकर नक्षत्र-लोक तक निशानियाँ-ही-निशानियाँ फैली हुई हैं जिन्हें देख कर वे सत्य को पा लेते हैं। परन्तु जो लोग बुद्धिहीन और हठधर्म हैं उन के लिए कोई भी चीज़ ऐसी नहीं हो सकती जिसे देख कर वे 'ईमान' ला सकें। न वे पृथ्वी और आकाश में फैली हुई निशानियों को देख कर 'ईमान' ला सकते हैं। और न 'नबियों' के चमत्कार को देख कर ही वे 'ईमान' ला सकते हैं। ऐसे लोग 'कुफ़्र', 'शिर्क' और गुमराही में ही पड़े रहते हैं यहाँ तक कि अल्लाह की यातना आ कर उन्हें अपनी लपेट में ले लेती है।

१. 'अज़ीज़' अर्थात् प्रभुत्त्वशाली (Mighty) 'रहीम' अर्थात् दयावान्। दे० आयत ६, ६८, १०४, १२२, १४०, १५६, १७५, १९१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगों को 'नबियों' के क़िस्सों और प्राचीन जातियों के वृत्तान्त द्वारा चेतावनी दी गई है। लोगों को इस बात पर उभारा गया है कि वे इन क़िस्सों के द्वारा शिक्षा ग्रहण करें। 'नबियों' और प्राचीन जातियों के जो क़िस्से इस 'सूरा' में बयान किये गये हैं वे एक विशेष ऐतिहासिक क्रम के साथ बयान किये गये हैं। 'नबियों' के वृत्तान्त के आरम्भ में भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' का उल्लेख किया गया है और अन्त में भी आप (सल्ल०) की 'नुबूवत' का उल्लेख किया गया है। यह इस बात की ओर संकेत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह की ओर से वही शिक्षा ले कर आये हैं जो दूसरे सभी 'नबियों' की शिक्षा रही है। आप को जिन संकटों और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है इन संकटों और बाधाओं का सामना पिछले 'नबियों' को भी करना पड़ा है। उन की जातियों ने उन्हें भी सुख और चैन से रहने नहीं दिया। उनके मार्ग में तरह-तरह की रुकावटें खड़ी हो गईं। आप (सल्ल०) की तरह उन्हें भी अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक यन्त्रणायें सहन करनी पड़ी हैं।

'सूरा' के अन्त में 'काफ़िरों' को समझाते हुये कहा गया है कि वे क़ुरआन को देखें जो उनकी अपनी ही भाषा में है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को देखें; और विचार करें कि क्या यह 'कलाम' किसी 'शैतान' या 'जिन्न' आदि का कलाम हो सकता है? क्या ऐसा 'कलाम' पेश करने वाला कोई 'काहिन' हो सकता है? क्या मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथियों का जीवन और उनका आचरण वैसा ही है जैसा कवियों और कवियों के सहगामियों का होता है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अश-शु, अरा
(मक्का में उतरी—'आयतें' २२७)

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. ता० सीन० मीम०[1]।

२. ये खुली हुई 'किताब' की आयतें हैं।

३. (हे मुहम्मद !) शायद तुम (ग़म के मारे) अपने-आपको विनष्ट कर दोगे इस लिए कि ये लोग ईमान नहीं लाते[2]।

४. यदि हम चाहें, तो उन पर आकाश से एक निशानी उतार दें कि उन की गरदनें उसके आगे झुक जायें[3]।

५. और इन लोगों के पास 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) की ओर से जो नया अनुस्मारक भी आता है, ये उस से मुँह मोड़ लेते हैं।

६. अब कि ये झुठला चुके हैं; तो जल्द ही इन्हें उसकी वास्तविकता प्रतीत हो जायेगी जिस की ये हँसी उड़ाते रहे।

७. क्या इन्हों ने धरती को नहीं देखा कि हम ने कितनी उस में हर प्रकार की वनस्पति उगाई है[4] ?

८. निश्चय ही इस में एक निशानी है[5] परन्तु इन में अधिकतर मानने वाले नहीं।

THE POETS
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Ta, Sin, Mim.

2. These are revelations of the Scripture that maketh plain.

3. It may be that thou tormentest thyself (O Muhammad) because they believe not.

4. If We will, We can send down on them from the sky a portent so that their necks would remain bowed before it.

5. Never cometh there unto them a fresh reminder from the Beneficent One, but they turn away from it.

6. Now they have denied (the Truth); but there will come unto them tidings of that whereat they used to scoff.

7. Have they not seen the earth, how much of every fruitful kind We make to grow therein?

8. Lo! herein is indeed a portent; yet most of them are not believers.

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ

المنزل الخامس

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

طٰسٓمٓ ①
تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②
لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ③
اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً
فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ④
وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ
مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ⑤
فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥
اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا
مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ⑦
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ⑧

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

२. क़ुरआन की और दूसरी 'सूरतों' में भी नबी सल्ल० की इस हालत का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए देखिए सूरा अल-कह्फ़ आयत ६ और सूरा फ़ातिर ८।

३. अर्थात् अल्लाह चाहे तो सब को 'ईमान' लाने पर विवश होना पड़े परन्तु ऐसा 'ईमान' अल्लाह को अभीष्ट नहीं। वह तो चाहता है कि लोग अपनी बुद्धि से काम ले कर अल्लाह की निशानियों के द्वारा सत्य से परिचित् हों और स्वेच्छापूर्वक सत्य मार्ग को ग्रहण करें। इसी में मनुष्य की परीक्षा भी है और यही मनुष्य के मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास का एकमात्र साधन भी है। मनुष्य को 'ईमान' लाने पर बाध्य करना मानव-जाति की सृष्टि के वास्तविक उद्देश्य के सर्वथा प्रतिकूल है। क़ुरआन में इस तथ्य की ओर जगह-जगह संकेत किया गया है। उदाहरण के लिए दे० 'सूरा' यूनुस आयत ९९ और 'सूरा' हूद आयत ११८-११९।

४. दे० सूरा लुक़मान आयत १०।

५. दे० सूरा अस-सजदा आयत २७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और निस्सन्देह तेरा 'रब' ही प्रभुतत्वशाली और दयावन्त है[६]।

१०. और याद करो जब कि तुम्हारे 'रब' ने मूसा को पुकारा[७] : ज़ालिम लोगों के पास जा—

११. फ़िरऔन की जाति वालों के पास —क्या वे डरते नहीं ?

१२. उसने कहा : 'रब' ! मुझे भय है कि वे मुझे झुठला देंगे,

१३. और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान नहीं चलती, इस लिए हारून के पास 'रिसालत' भेज दीजिए।

१४. और मुझ पर उनका एक गुनाह (अपराध) है,[८] तो मैं डरता हूँ कि मुझे क़त्ल कर डालेंगे।

१५. (अल्लाह ने) कहा : कदापि नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर[९] जाओ। हम तुम्हारे साथ हैं सुनते रहेंगे।

१६. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो : हम सारे संसार के 'रब' के भेजे हुए हैं,

१७. (और इस लिए आये हैं) कि तू 'इसराईल' की सन्तान को हमारे साथ जाने दे।[१०]

१८. (फ़िरऔन ने) कहा : क्या हम ने तुझे अपने यहाँ बच्चा-सा नहीं पाला था ? और तू अपनी आयु के कितने वर्षों तक हम में रहा,

१९. और तू कर गया अपना वह काम जो कर गया, और तू कृतघ्नों में से है,

9. And lo! thy Lord! He is indeed the Mighty, the Merciful.

10. And when thy Lord called Moses, saying, Go unto the wrongdoing folk:

11. The folk of Pharaoh. Will they not ward off (evil)?

12. He said: My Lord! Lo! I fear that they will deny me.

13. And I shall be embarrassed, and tongue will not speak plainly, therefor send for Aaron (to help me).

14. And they have a crime against me, so I fear that they will kill me.

15. He said: Nay, verily. So go ye twain with Our tokens. Lo! We shall be with you, Hearing.

16. And come together unto Pharaoh and say: Lo! we bear a message of the Lord of the Worlds.

17. (Saying): Let the Children of Israel go with us.

18. (Pharaoh) said (unto Moses): Did we not rear thee among us as a child? And thou didst dwell many years of thy life among us.

19. And thou didst that thy deed which thou didst, and thou wast one of the ingrates.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٩

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ١٠

قَوْمَ فِرْعَوْنَ أَلَا يَتَّقُونَ ١١

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ١٢

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ١٣

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ١٤

قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ١٥

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٦

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ١٧

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ١٨

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ١٩

६. उस की शक्ति तो ऐसी है कि यदि वह किसी को उस के अपराध पर सजा देने का निश्चय कर ले तो क्षण भर में उसे मिटा कर रख दे। यह उस की दया है कि लोगों को उन के अपराधों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन को सोचने-समझने और सँभलने की पूरी मुहलत देता है।

७. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १०३-१३७, सूरा यूनुस आयत ७५-९२, सूरा बनी इसराईल आयत १०१-१०४ और सूरा ता० हा० आयत ९-७८।

८. हज़रत मूसा अ० ने फ़िरऔन के एक आदमी को 'बनी इसराईल' के एक व्यक्ति से लड़ते देख कर एक घूँसा मार दिया था जिस से उस की मृत्यु हो गई। जब हज़रत मूसा को यह सूचना मिली कि फ़िरऔन के लोगों को इस घटना की सूचना मिल चुकी है और वे उस के बदले में क़त्ल की तैयारी में हैं तो वे देश छोड़ कर मदयन की ओर चले गये थे, अब कई वर्षों के पश्चात् उन्हें हुक्म दिया जा रहा है कि तुम फ़िरऔन के पास हमारा सन्देश ले कर जाओ (दे० सूरा अल-क़सस आयत १४-२२)।

९. दे० सूरा ता० हा० आयत १७-२४, सूरा अन-नम्ल आयत ८-१२, और सूरा अल-क़सस आयत ३०-३२।

१०. हज़रत मूसा अ० को फ़िरऔन के पास दो उद्देश्यों से भेजा था। फ़िरऔन को अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाने के लिए (दे० सूरा अन-नाज़ियात) और 'बनी इसराईल' को उस की गुलामी से छुटकारा दिलाने के लिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. (मूसा ने) कहा : वह काम मैं ने उस समय (बहुत पहले) किया था, और मुझ से ग़लती हुई थी।[11]

20. He said: I did it then, when I was of those who are astray.

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾

२१. फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया, फिर मेरे 'रब' ने मुझे 'हुक्म' प्रदान किया और मुझे 'रसूलों' में सम्मिलित कर लिया।

21. Then I fled from you when I feared you, and my Lord vouchsafed me a command and appointed me (of the number) of those sent (by Him).

فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾

२२. और यही एहसान है जो तू मुझ पर जताता है कि तू ने 'इसराईल' की सन्तान को दास बना रक्खा है।

22. And this is the past favour wherewith thou reproachest me: that thou hast enslaved the Children of Israel.

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَاءِيلَ ﴿٢٢﴾

२३. फ़िरऔन ने कहा : और यह सारे संसार का 'रब' क्या होता है[12] ?

23. Pharaoh said: And what is the Lord of the Worlds?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٢٣﴾

२४. (मूसा ने) कहा : आकाशों और धरती का 'रब', और जो कुछ इन दोनों के बीच है उस का, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।

24. (Moses) said: Lord of the heavens and the earth and all that is between them, if ye had but sure belief.

قَالَ رَبُّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿٢٤﴾

२५. (फ़िरऔन ने) उन लोगों से जो उस के चतुर्दिक थे कहा : क्या तुम सुनते नहीं ?

25. (Pharaoh) said unto those around him: Hear ye not?

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٥﴾

२६. (मूसा ने) कहा : तुम्हारा 'रब' भी और तुम्हारे अगले पूर्वजों का 'रब' भी।

26. He said: Your Lord and the Lord of your fathers.

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾

२७. (फ़िरऔन ने लोगों से) कहा : निश्चय ही यह तुम्हारा 'रसूल' जो तुम्हारी ओर भेजा गया है बिल्कुल ही पागल है !

27. (Pharaoh) said: Lo! your messenger who hath been sent unto you is indeed a madman!

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿٢٧﴾

२८. (मूसा ने) कहा : पूर्व और पश्चिम और जो कुछ इन के बीच है सब का 'रब', यदि तुम बुद्धि से काम लो।

28. He said: Lord of the East and the West and all that is between them, if ye did but understand.

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

२९. (फ़िरऔन ने) कहा : यदि तू ने मेरे सिवा किसी और को 'इलाह' बनाया, तो मैं तुझे क़ैदियों में सम्मिलित कर दूँगा।

29. (Pharaoh) said: If thou choosest a god other than me, I assuredly shall place thee among the prisoners.

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾

३०. (मूसा ने) कहा: चाहे मैं तेरे सामने ले आऊँ एक खुली चीज़ (जब भी) ?

30. He said: Even though I show thee something plain?

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

३१. (फ़िरऔन ने) कहा : अच्छा तो वह ले आ, यदि तू सच्चे लोगों में से है !

31. (Pharaoh) said: Produce it then, if thou art of the truthful!

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿٣١﴾

११. अर्थात् मैं ने उसे जान बूझ कर क़त्ल नहीं किया। उसे जान से मारने के लिए घूँसा नहीं मारा था; यह तो संयोग की बात है कि इस से उस की मृत्यु हो गई।

१२. अर्थात् हे मूसा ! तू अपने को जिस का 'रसूल' कह रहा है और जिस का सन्देश ले कर तू मेरे पास आया है वह 'सारे संसार का रब' आख़िर कौन है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. फिर (मूसा ने) अपनी लाठी फेंकी क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष बड़ा सर्प है,[१३]

32. Then he flung down the staff and it became a serpent manifest.

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

३३. और उसने अपना हाथ बाहर निकाला तो देखने वालों ने क्या देखा कि वह चमक रहा है।

33. And he drew forth his hand and lo! it was white to the beholders.

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّـٰظِرِينَ ﴿٣٣﴾

३४. (फ़िरऔन ने) सरदारों से जो उस के चतुर्दिक थे कहा : निश्चय ही यह बड़ा भिज्ञ जादूगर है

34. (Pharaoh) said unto the chiefs about him: Lo! this is verily a knowing wizard,

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَـٰذَا لَسَـٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

३५. चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे, अब तुम्हारी क्या सम्मति है ?

35. Who would drive you out of your land by his magic. Now what counsel ye?

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِ
فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾

३६. उन्हों ने कहा : इसे और इसके भाई को प्रतीक्षा में रखिए, और एकत्र करने वालों को नगरों में भेजिए,

36. They said: Put him off (him) and his brother, and send them into the cities summoners,

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَٱبْعَثْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ
حَـٰشِرِينَ ﴿٣٦﴾

३७. वे हर भिज्ञ जादूगर को आप के पास ले आयें।

37. Who shall bring unto thee every knowing wizard.

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

३८. तो एक निश्चित दिन नियत समय पर[१४] जादूगर इकट्ठे कर लिऐ गये,

38. So the wizards were gathered together at a set time on a day appointed.

فَجُمِعَ ٱلسَّحَرَةُ لِمِيقَـٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

३९. और लोगों से कहा गया : तुम भी इकट्ठे होते हो ?

39. And it was said unto the people: Are ye (also) gathering?

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

४०. कदाचित, हम जादूगरों के ही अनुवर्ती रहें यदि वही विजयी हों।

40. (They said): Aye, so that we may follow the wizards if they are the winners.

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ ٱلسَّحَرَةَ إِن كَانُوا۟ هُمُ ٱلْغَـٰلِبِينَ ﴿٤٠﴾

४१. जब जादूगर आये तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा : हमें तो बदला (पुरस्कार) मिलेगा ही यदि हम विजयी रहे ?

41. And when the wizards came they said unto Pharaoh: Will there surely be a reward for us if we are the winners?

فَلَمَّا جَآءَ ٱلسَّحَرَةُ قَالُوا۟ لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ
لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَـٰلِبِينَ ﴿٤١﴾

४२. उसनें कहा : हाँ, और निश्चय ही तुम उस समय समीपवर्ती लोगों में से हो जाओगे।

42. He said: Aye, and ye will then surely be of those brought near (to me).

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

४३. मूसा ने उनसे कहा : फेंको जो कुछ तुम्हें फेंकना है !

43. Moses said unto them: Throw what ye are going to throw!

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا۟ مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

४४. तब उन्हों ने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ फेंक दीं[१५] और बोले : फ़िरऔन के प्रताप की क़सम हम ही विजयी रहेंगे।

44. Then they threw down their cords and their staves and said: By Pharaoh's might, lo! we verily are the winners.

فَأَلْقَوْا۟ حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا۟ بِعِزَّةِ
فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ ٱلْغَـٰلِبُونَ ﴿٤٤﴾

१३. यहाँ और सूरा अल-आराफ़ में सर्प के लिए 'सुअ़बान' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो बड़े सर्प अजगर के लिए बोला जाता है। सूरा अन-नम्ल में इस के लिए 'जान' शब्द लाया गया है जो साधारण अथवा छोटे साँपों के लिए प्रयुक्त होता है। इस का कारण शायद यह हो कि सर्प आकार में अजगर जैसा था परन्तु तेज़ी और फ़ुरती में वह छोटे साँपों की तरह था। सूरा ता० हा० में 'दौड़ते हुए साँप' कहा भी गया है।

१४. मुक़ाबले के लिए क़िब्तियों के त्योहार का दिन निश्चित हुआ था ताकि अधिक-से-अधिक संख्या में लोग इस मुक़ाबले को देख सकें। दे० सूरा ता० हा० आयत ५९।

१५. वे रस्सियाँ और लाठियाँ साँप के रूप में दीख पड़ने लगीं यहाँ तककि हज़रत मूसा अ० को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन की रस्सियाँ और लाठियाँ दोड़ी चली आ रही हैं। दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ११६ और सूरा ता० हा० आयत ६६-६७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. फिर मूसा ने लाठी फेंकी तो क्या देखते हैं कि जो कुछ उन्होंने स्वांग बनाया था वह सब को निगलती जा रही है।

४६. इस पर जादूगर सजदे में गिर पड़े,

४७. और बोल उठे : हम सारे संसार के 'रब' पर 'ईमान' ले आये —

४८. मूसा और हारून के 'रब' पर।

४९. (फ़िरऔन ने) कहा : तुम उस पर 'ईमान' ले आये इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुज्ञा देता। निश्चय ही वह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है! अच्छा जल्द ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है। मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा।

५०. उन्हों ने कहा : कुछ परवा नहीं, निश्चय ही हम अपने 'रब' की ओर लौट कर जाने वाले हैं।

५१. हम आशा रखते हैं कि हमारा 'रब' हमारी भूलों को क्षमा कर देगा इसलिए कि हम सब से पहले 'ईमान' ले आये हैं।

५२. हमने मूसा को 'वह्य' की कि रातों-रात मेरे बन्दों को ले कर निकल जाओ, निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जायेगा।

५३. तब फ़िरऔन ने इकट्ठा करने वाले लोगों को नगरों में भेजा,

५४. (और कहला दिया कि) यह एक टोली है थोड़े से लोगों की,

५५. और ये हमें गुस्सा दिला रहे हैं।

५६. और हम एक गरोह हैं बचाव कर सकने वाले।

५७. इस तरह हम उन्हें[१९] बाग़ों और स्रोतों में से निकाल लाये,

५८. और ख़ज़ानों और अच्छे स्थानों से।

45. Then Moses threw his staff and lo! it swallowed that which they did falsely show.

46. And the wizards were flung prostrate,

47. Crying: We believe in the Lord of the Worlds.

48. The Lord of Moses and Aaron.

49. (Pharaoh) said: Ye put your faith in him before I give you leave. Lo! he doubtless is your chief who taught you magic! But verily ye shall come to know. Verily I will cut off your hands and your feet alternately, and verily I will crucify you every one.

50. They said: It is no hurt, for lo! unto our Lord we shall return.

51. Lo! We ardently hope that our Lord will forgive us our sins because we are the first of the believers.

52. And We inspired Moses, saying: Take away My slaves by night, for ye will be pursued.

53. Then Pharaoh sent into the cities summoners.

54. (Who said): Lo! these indeed are but a little troop.

55. And lo! they are offenders against us.

56. And lo! we are a ready host.

57. Thus did We take them away from gardens and watersprings:

58. And treasures and a fair estate.

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ
مَا يَأْفِكُونَ ٤٥

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ٤٦
قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٤٧

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ٤٨
قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ
إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
أَجْمَعِينَ ٤٩

قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ٥٠

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا
أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ٥١

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي
إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ٥٢

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ٥٣
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ٥٤

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ٥٥
وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ٥٦

فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ٥٧
وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ٥٨

१९. अर्थात् फ़िरऔन के लोगों को।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९. इस तरह (किया उनके साथ) और 'बनी इसराईल 'को हमने इन (सब चीज़ों) का उत्तराधिकारी बना दिया[१७]।

59. Thus (were those things taken from them) and We caused the Children of Israel to inherit them.

كَذٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَاءِيلَ ﴿٥٩﴾

६०. सवेरा होते उन के पीछे जा पहुँचे।

60. And they overtook them at sunrise.

فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾

६१. फिर जब दोनों गरोहों ने एक दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा : हम तो पकड़े गये।

61. And when the two hosts saw each other, those with Moses said: Lo! we are indeed caught.

فَلَمَّا تَرَاءَا الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحٰبُ مُوسٰى إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾

६२. (मूसा ने) कहा : कदापि नहीं, निस्सन्देह मेरे साथ मेरा 'रब' है। वह मुझे मार्ग दिखायेगा[१८]।

62. He said: Nay, verily! for lo! my Lord is with me. He will guide me.

قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

६३. तब हमने मूसा की ओर 'वह्य' की कि अपनी लाठी समुद्र पर मारो। तो वह फट गया, और (उसका) हर टुकड़ा एक महान् पर्वत जैसा हो गया।

63. Then We inspired Moses, saying: Smite the sea with thy staff. And it parted, and each part was as a mountain vast.

فَأَوْحَيْنَا إِلٰى مُوسٰى أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

६४. और हमने दूसरों को वहीं क़रीब कर दिया[१९]।

64. Then brought We near the others to that place.

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾

६५. और मूसा को और उन सब लोगों को जो उसके साथ थे हम ने बचा लिया।

65. And We saved Moses and those with him, every one.

وَأَنجَيْنَا مُوسٰى وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

६६. और दूसरों को डुबो दिया।

66. We drowned the others.

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾

६७. निश्चय ही इस में एक निशानी है परन्तु उन में अधिकतर लोग मानने वाले नहीं हैं।

61. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers.

إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

६८. और निस्सन्देह तेरा 'रब' प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

68. And lo, thy Lord! He is indeed the Mighty, the Merciful.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

६९. और इन्हें इबराहीम का वृत्तान्त सुनाओ[२०] :

69. Recite unto them the story of Abraham.

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرٰهِيمَ ﴿٦٩﴾

७०. जब कि उसने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : तुम क्या पूजते हो ?

70. When he said unto his father and his folk: What worship ye?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

७१. उन्हों ने कहा : हम मूर्तियों को पूजा करते हैं, और हम उन्हीं से लगे बैठे रहते हैं।

71. They said: We worship idols, and are ever devoted unto them.

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِينَ ﴿٧١﴾

७२. (इबराहीम ने) कहा : क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो ?

72. He said: Do they hear you when ye cry?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾

७३. या ये तुम्हारा कुछ बनाते या बिगाड़ते हैं ?

73. Or do they benefit or harm you?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾

१७. फ़िरऔन ने तो दूर-दूर से सेनायें एकत्र की थीं 'बनी इसराईल' को दुनिया से मिटाने के लिए परन्तु जब उन्हों ने बनी इसराईल' का पीछा किया तो अल्लाह ने जैसा कि आगे आ रहा है उन्हें दरिया में डुबो दिया। फिर उन्हें इस का अवसर न मिल सका कि वे अपने बाग़ों, स्रोतों और अपने निवास-स्थानों आदि में सुख भोगने के लिए लौट सकें। अल्लाह ने 'बनी इसराईल' को फ़लिस्तीन (Palestine) में वह सब कुछ प्रदान किया जो कभी फ़िरऔन के लोगों को प्राप्त था। वे फ़लिस्तीन में बाग़ों, स्रोतों आदि सभी चीज़ों के मालिक हुए। मुक़ाबले के लिए दे० सूरा अद-दुख़ान आयत २५-२८।

१८. अर्थात् मुझे इस संकट से बचने की राह दिखायेगा।

१९. अर्थात् फ़िरऔन और उस की सेना को।

२०. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-बक़रा आयत २५८, सूरा अल-अनआम आयत ७४-८४, सूरा मरयम आयत ४१-५०, सूरा अल-अंबिया आयत ५१-७३, सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ८३-११३ और सूरा अल-मुमतहना आयत ४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. उन्हों ने कहा नहीं, बल्कि हमने अपने पूर्वजों को ऐसा ही करते पाया है।

74. They said: Nay, but we found our fathers acting on this wise.

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾

७५. (इबराहीम ने) कहा : क्या तुमने (आँखें खोल कर) इन्हें देखा भी[२१] जिन की पूजा तुम करते हो,

75. He said: See now that which ye worship,

قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

७६. तुम और तुम्हारे अगले पूर्वज !

76. Ye and your forefathers!

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾

७७. ये तो मेरे शत्रु हैं,[२२] सिवाय 'सारे ससार के रब' के,[२३]

77. Lo! they are (all) an enemy unto me, save the Lord of the Worlds,

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾

७८. जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दिखाता है,

78. Who created me, and He doth guide me.

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾

७९. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

79. And Who feedeth me and watereth me,

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾

८०. और जब बीमार होता हूँ, तो मुझे अच्छा करता है,

80. And when I sicken, then He health me.

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾

८१. और जो मुझे मारेगा, फिर जिलायेगा,

81. And Who causeth me to die, then giveth me life (again).

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾

८२. और जिससे में आशा रखता हूँ कि वह बदला दिये जाने के दिन[२४] मेरी भूल को क्षमा कर देगा।

82. And Who, I ardently hope, will forgive me my sin on the Day of Judgement.

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾

८३. 'रब' ! मुझे 'हुक्म'[२५] प्रदान कर और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।

83. My Lord! Vouchsafe me wisdom and unite me to the righteous.

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾

८४. और बाद के आने वालों में मुझे एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान कर।

84. And give unto me a good report in later generations.

وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

८५. और मुझे नेमतों भरी 'जन्नत' के उत्तराधिकारियों में सम्मिलित कर,

85. And place me among the inheritors of the Garden of Delight.

وَاجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾

८६. और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निस्सन्देह वह गुमराहों में से है[२६]

86. And forgive my father. Lo! he is of those who err.

وَاغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

८७. और मुझे उस दिन रुसवा न कर जब कि लोग जीवित करके उठाये जायेंगे,

87. And abase me not on the day when they are raised.

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾

२१. या यों ही आँखें बन्द कर के बिना सोचे-समझे उन की पूजा किये जा रहे हो।

२२. यदि हम इन की पूजा करें तो 'जहन्नम' में डाल दिये जायें। और इस जीवन में सत्य से अनभिज्ञ रह जायें। तुम में यदि कुछ भी बुद्धि है तो अपने भले-बुरे के बारे में सोच-विचार से काम लो।

२३. एक अल्लाह ही ऐसा है जिस की पूजा और बन्दगी में मुझे भलाई दीख पड़ती है।

२४. दे० सूरा अल-फ़ातिहा फ़ुटनोट १।

२५. अर्थात् 'हिकमत' (Wisdom) ज्ञान, तत्त्वदर्शिता, निर्णय-शक्ति आदि।

२६. हज़रत इबराहीम अ० जब बाप के अत्याचार से विवश हो कर घर से निकलने लगे थे तो उन्हों ने अपने बाप से कहा था कि मैं अपने 'रब' से आप के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा (दे० सूरा मरयम आयत ४७)। इस वादे को आप ने पूरा किया और बाप के लिए अल्लाह से उन्हों ने क्षमा की प्रार्थना की परन्तु बाद में उन्हें स्वयं इस का एहसास हुआ कि वह सत्य का विरोधी है यद्यपि वह अपना बाप है। वह इस का हक़ नहीं रखता कि उस के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना की जा सके (दे० सूरा अत-तौबा आयत ११४)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८. जिस दिन न माल काम आयेगा और न औलाद।	88. The day when wealth and sons avail not (any man)	يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾
८९. सिवाय इस के कि कोई भला-चंगा[२७] दिल लिये हुये अल्लाह के पास आये।	89. Save him who bringetl unto Allah a whole heart.	اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾
९०. और (उस दिन) 'जन्नत' डर रखने वालों के निकट ले आई जायेगी।	90. And the Garden will be brought nigh for those who ward off (evil).	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾
९१. और भड़कती हुई ('जहन्नम' की) आग बहके हुये लोगों के सामने खोल दी जायेगी।	91. And hell will appear plainly to the erring.	وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾
९२. और उनसे कहा जायेगा : कहाँ हैं वे जिन्हें तुम पूजते थे।	92. And it will be said unto them: Where is (all) that ye used to worship.	وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾
९३. अल्लाह को छोड़कर, क्या वे तुम्हारी सहायता करते हैं या वे अपना ही बचाव कर सकते हैं?	93. Instead of Allah? Can they help you or help themselves?	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾
९४. फिर भर दिये गये ऊपर-तले उस में वे और बहके हुये लोग	94. Then they will be hurled therein, they and the seducers:	فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾
९५. और 'इबलीस' की सेनायें, सब के सब।	95. And the hosts of Iblis, together.	وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾
९६. कहेंगे, जब कि वे वहाँ झगड़ रहे होंगे :	96. And they will say, when they are quarrelling therein:	قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾
९७. अल्लाह की क़सम, निश्चय ही हम खुली गुमराही में थे	97. By Allah, of a truth we were in error manifest.	تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾
९८. जब कि हम तुम्हें 'सारे संसार के रब' के बराबर ठहरा रहे थे।	98. When we made you equal with the Lord of the Worlds.	اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾
९९. और हमें तो बस इन अपराधियों ने गुमराह किया[२८]।	99. It was but the guilty who misled us.	وَمَا اَضَلَّنَا اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾
१००. अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है	100. Now we have no intercessors.	فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾
१०१. और न कोई घनिष्ट मित्र[२९]।	101. Nor any loving friend.	وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾
१०२. क्या ही अच्छा होता कि हमें एक बार फिर (संसार में) पलटना होता, तो हम 'ईमान' वालों में सम्मिलित होते[३०]!	102. Oh! that we had anohter turn (on earth), that we might be of the believers!	فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

२७. अर्थात् ऐसा दिन जो 'कु.फ़', 'शिर्क' और बुराइयों से पाक हो।

२८. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ३९, सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत २९ और सूरा अल-अह्ज़ाब आयत ६७-६८।

२९. 'आखिरत' में केवल उन लोगों की मित्रता बाक़ी रहेगी जो 'ईमान' वाले होंगे। गुमराहों की मित्रता उस दिन बाक़ी नहीं रहेगी। वे एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे और एक-दूसरे को अपराधी ठहराने लगेंगे (दे० सूरा अज़-ज़ुखरुफ़ आयत ३७)।

३०. परन्तु इन्हें इस का अवसर प्राप्त नहीं हो सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३. निश्चय ही इस में एक बड़ी निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान' वाले नहीं हैं !

103. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers!

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

१०४. और निस्संदेह तेरा रब प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

104. And lo! thy Lord! He is indeed the Mighty, Merciful.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

१०५. 'नूह[३१] की जाति' वालों ने रसूलों को झुठलाया,[३२]

105. Noah's folk denied the messengers (of Allah).

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

१०६. याद करो जब उन से उन के भाई नूह ने कहा : क्या तुम डरते नहीं हो ?

106. When their brother Noah said unto them: Will ye not ward off (evil)?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

१०७. निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ,

107. Lo! I am a faithful messenger unto you.

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾

१०८. तो अल्लाह से डरो, और मेरा हुक्म मानो[३३]।

108. So keep your duty to Allah, and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾

१०९. मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब' के ज़िम्मे है।

109. And I ask of you no wage therefor: my wage is the concern only of the Lord of the Worlds.

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

११०. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

110. So keep your duty to Allah, and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾

१११. उन्हों ने कहा : क्या हम तुझ पर ईमान लायें, जबकि नीच लोग तेरे अनुयायी हुये हैं ?

111. They said: Shall we put faith in thee, when the lowest of the (people) follow thee?

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾

११२. (नूह ने) कहा : जो कुछ वे करते हैं मैं उसे क्या जानूँ ?

112. He said: And what knowledge have I of what they may have been doing (in the past)?

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

११३. उन का हिसाब तो बस मेरे 'रब' के ज़िम्मे है, क्या अच्छा होता कि तुम्हें ज्ञान होता ;

113. Lo! their reckoning is my Lord's concern, if ye but knew;

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

११४. और मैं 'ईमान' वालों को धुतकारने वाला नहीं हूँ।

114. And I am not (here) to repulse believers.

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

११५. मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ।

115. I am only a plain warner.

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

३१. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ५९-६४, सूरा यूनुस आयत ७१-७३, सूरा हूद आयत २५-४८, सूरा अल-अंबिया आयत ७६-७७ सूरा अल-मोमिनून आयत २३-३०, सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ३७, सूरा अल अनकबूत आयत १४-१५, सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ७५-८२, सूरा अल-क़मर आयत ९-१६ और सूरा नूह।

३२. अल्लाह के भेजे हुये नबी हज़रत नूह अ० को झुठला कर मानो उन्हों ने सभी 'नबियों' को झुठला दिया इस लिए कि सभी 'नबियों' की शिक्षा और सन्देश एक ही है।

३३. इसलिए कि मैं तुम्हें जो हुक्म दे रहा हूँ वह अल्लाह ही की ओर से दे रहा हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११६. उन्हों ने कहा : हे नूह ! यदि तू बाज़ न आया, तो तू फटकारे हुये लोगों में सम्मिलित हो कर रहेगा।

116. They said: If thou cease not, O Noah! thou wilt surely be among those stoned (to death).

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَٰنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

११७. (नूह ने) कहा : 'रब'! मेरी जाति वालों ने मुझे झुठला दिया।

117. He said: My Lord! Lo! my own folk deny me.

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

११८. अब मेरे और उनके बीच फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो 'ईमान' वाले मेरे साथ हैं उन्हें बचा लें।

118. Therefore judge Thou between us, a (conclusive) judgement, and save me and those believers who are with me.

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

११९. तो हमने उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका[३४] में थे बचा दिया।

119. And We saved him and those with him laden ship.

فَأَنجَيْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

१२०. फिर इस के बाद बाक़ी रहने वालों को डुबो दिया।

120. Then afterward We drowned the others.

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१. निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान वाले' नहीं हैं।

121. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

१२२. और निस्सन्देह तेरा रब प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

122. And lo! thy Lord, He is indeed the Mighty, the Merciful.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

१२३. 'आद' ने रसूलों को झुठलाया,[३५]

123. (The tribe of) 'Aad denied the messengers (of Allah).

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

१२४. याद करो जबकि उन के भाई हूद ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं हो ?

124. When their brother Hud said unto them: Will ye not ward off (evil);

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

१२५. निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ,

125. Lo! I am a faithful messenger unto you,

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

१२६. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

126. So keep your duty to Allah and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾

१२७. और मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता ; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब' के ज़िम्मे है।

127. And I ask of you no wage therefor; my wage is the concern only of the Lord of the Worlds.

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٢٧﴾

१२८. क्या तुम हर ऊँची जगह व्यर्थ एक स्मारक बनाते हो[३६] ?

128. Build ye on every high place a monument for vain delight?

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

३४. नौका ईमान लाने वाले लोगों और सारे जानवरों से भरी हुई थी जिन का एक-एक जोड़ा साथ रख लेने का आदेश अल्लाह की ओर से हुआ था। दे० सूरा हूद आयत ४०।

३५. मुक़ाबले के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ६५-७२, सूरा हूद आयत ५०-६०, सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत १३-१६, सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत २१-२५, सूरा अज़-ज़ारियात ४१-४५, सूरा अल-क़मर आयत १८-२१, सूरा अल-हाक़्क़ा आयत ६-८ और सूरा अल-फ़ज्र आयत ६-८।

३६. अर्थात् केवल अपने वैभव और धन-सम्पत्ति के प्रदर्शन के लिए ऊँचे-ऊँचे भवनों के निर्माण में अपनी शक्ति लगाते हो; यह अपनी योग्यता और धन-सम्पत्ति का कोई उचित उपयोग नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२९. और बड़े-बड़े भवनों का निर्माण करते हो, शायद तुम सदा रहोगे ?

129. And seek ye out strongholds, that haply ye may last for ever?

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

१३०. और जब किसी पर हाथ डालते हो, तो अत्यन्त जाबिर वन कर हाथ डालते हो ?

130. And if ye seize by force, seize ye as tyrants?

وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

१३१. तो अल्लाह् से डरो और मेरा हुक्म मानो।

131. Rather keep your duty to Allah, and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾

१३२. डरो उस से जिसने वह कुछ तुम्हें दिया जो तुम जानते हो,

132. Keep your duty toward Him Who hath aided you with (the good things) that ye know.

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

१३३. उसने दिए तुम्हें चौपाये और बेटे,

133. Hath aided you with cattle and sons.

أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾

१३४. और बाग़ और स्रोत।

134. And gardens and watersprings,

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾

१३५. मुझे तो तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।

135. Lo! I fear for you the retribution of an awful day.

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾

१३६. उन्हों ने कहा : तू उपदेश दे या उपदेश देने वालों में न हो हमारे लिए सब बराबर है;

136. They said: It is all one to us whether thou preachest or art not of those who preach;

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٦﴾

१३७. यह तो बस अगले लोगों की आदत है,

137. This is but a fable of the men of old,

إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾

१३८. और हम यातना में ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

138. And we shall not be doomed.

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾

१३९. तो उन्हों ने उसे झुठलाया, तो हम ने उन्हें विनष्ट कर के रख दिया।

निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान वाले' नहीं हैं।

139. And they denied him; therefor We destroyed them. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers.

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

१४०. और निस्सन्देह तेरा रब प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

140. And lo! thy Lord, He is indeed the Mighty, the Merciful.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

१४१. 'समूद' ने 'रसूलों' को झुठलाया,[३७]

141. (They tribe of) Thamud denied the messengers (of Allah).

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

१४२. याद करो जबकि उनके भाई सालेह ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं ?

142. When their brother Salih said unto them: Will ye not ward off (evil)?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

१४३. निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ,

143. Lo! I am a faithful messenger unto you,

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

१४४. तो तुम अल्लाह् से डरो और मेरा हुक्म मानो।

144. So keep your duty to Allah and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾

३७. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ७३-७९, सूरा हूद आयत ६१-६८, सूरा अल-हिज्र आयत ७०-८४, सूरा बनी इसराईल आयत ५९, सूरा अन-नम्ल आयत ४५-५३, सूरा अज-जारियात आयत ४३-४५, सूरा अल-क़मर आयत २३-३१, सूरा अल-हाक़्क़ा आयत ५, सूरा अल-फ़ज्र और सूरा अश-शम्स।

'आद' के बाद अल्लाह ने जिस जाति को उन्नति दी थी वह यही समूद जाति के लोग थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४५. मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

145. And I ask of you no wage therefor; my wage is the concern only of the Lord of the Worlds.

وَمَآ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؕ‏ ﴿۱۴۵﴾

१४६. क्या तुम उन चीज़ों के बीच जो यहाँ हैं निश्चन्ततापूर्वक रहने दिये जाओगे

146. Will ye be left secure in that which is here before us,

اَتُتۡرَكُوۡنَ فِىۡ مَا هٰهُنَاۤ اٰمِنِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۴۶﴾

१४७. बाग़ों और स्रोतों में

147. In gardens and water-springs.

فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۙ‏ ﴿۱۴۷﴾

१४८. और खेतों और खजूरों में जिन का गाभा गुँथा हुआ है,

148. And tilled fields and heavy-sheathed palmtrees,

وَّزُرُوۡعٍ وَّنَخۡلٍ طَلۡعُهَا هَضِيۡمٌ‌ۚ‏ ﴿۱۴۸﴾

१४९. और तुम पर्वतों को काट-काट कर[३८] कुशलतापूर्वक घर बनाते हो[३९] ?

149. Though ye hew out dwellings in the mountain, being skilful?

وَتَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا فٰرِهِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۱۴۹﴾

१५०. तो अल्लाह से डरो, और मेरा हुक्म मानो,

150. Therefore keep your duty to Allah and obey me.

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ‌ۚ‏ ﴿۱۵۰﴾

१५१. और उन मर्यादाहीन लोगों का हुक्म न मानो,

151. And obey not the command of the prodigal,

وَلَا تُطِيۡعُوۡۤا اَمۡرَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۵۱﴾

१५२. जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं, और सुधार नहीं करते।

152. Who spread corruption in the earth, and reform not.

الَّذِيۡنَ يُفۡسِدُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا يُصۡلِحُوۡنَ‏ ﴿۱۵۲﴾

१५३. उन्हों ने कहा : तू तो बस उन लोगों में से है जो जादू के मारे हुये हों;[४०]

153. They said: Thou art but one of the bewitched!

قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مِنَ الۡمُسَحَّرِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۱۵۳﴾

१५४. तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है। तो ला कोई निशानी[४१] यदि तू सच्चे लोगों में से है।

154. Thou art but a mortal like us. So bring some token if thou art of the truthful.

مَاۤ اَنۡتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ‌ۖۚ فَاۡتِ بِاٰيَةٍ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ‏ ﴿۱۵۴﴾

१५५. (सालेह ने) कहा : यह एक ऊँटनी है।[४२] पानी पीने की एक बारी इसकी है, और एक निश्चित दिन की बारी पानी लेने की तुम्हारे लिए है[४३]।

155. He said: (Behold) this she-camel. She hath the right to drink (at the well), and ye have the right to drink (each) on an appointed day.

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرۡبٌ وَّلَـكُمۡ شِرۡبُ يَوۡمٍ مَّعۡلُوۡمٍ‌ۚ‏ ﴿۱۵۵﴾

१५६. तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो एक बड़े दिन की यातना तुम्हें आ लेगी।

156. And touch her not with ill lest there come on you the retribution of an awful day.

وَلَا تَمَسُّوۡهَا بِسُوۡٓءٍ فَيَاۡخُذَكُمۡ عَذَابُ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ‏ ﴿۱۵۶﴾

३८. दे० सूरा अल-हिज्र आयत ८२।
३९. समूद के निर्माण किए हुए भवनों में से कुछ अब भी शेष रह गये हैं। समूद के क्षेत्र में ऐसे पहाड़ दिखाई पड़ते हैं जो बिल्कुल चकनाचूर हो गये हैं, साफ़ जान पड़ता है कि किसी भीषण भूकम्प ने उन्हें झँझोड़ कर रख दिया है।
४०. जिस के कारण तेरी अक़्ल मारी गई कि ठिकाने की कोई बात नहीं करता।
४१. अर्थात् कोई चमत्कार दिखा कि हमें विश्वास हो कि तू वास्तव में अल्लाह का 'रसूल' है।
४२. चमत्कार के रूप में अल्लाह ने एक ऊँटनी पैदा कर दी (दे० सूरा हूद आयत ६३-६४ और सूरा बनी इसराईल आयत ५९)।
४३. इस तरह अल्लाह ने उन्हें आज़माइश में डाल दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५७. परन्तु उन्हों ने उसे उस की कूँचें काट कर मार डाला, फिर पछताते रह गये।

157. But they hamstrung her, and then were penitent.

فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَادِمِينَ ﴿١٥٧﴾

१५८. तो यातना ने उन्हें आ लिया। निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान' वाले नहीं हैं।

158. So the retribution came on them. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers.

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾

१५९. और निस्सन्देह तेरा 'रब' प्रभुत्त्वशाली और दया करने वाला है।

159. And lo! thy Lord! He is indeed the Mighty, the Merciful.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾

१६०. लूत की जाति वालों ने 'रसूलों' को झुठलाया,[४४]

160. The folk of Lot denied the messenger (of Allah).

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾

१६१. याद करो जब कि उन के भाई लूत ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं ?

161. When their brother Lot unto them: Will ye not ward off (evil)?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾

१६२. निश्चय ही मैं एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ,

162. Lo! I am a faithful messenger unto you.

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

१६३. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

163. So keep your duty to Allah and obey me.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾

१६४. मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब' के ज़िम्मे है।

164. And I ask of you no wage therefor; my wage is the concern only of the Lord of the Worlds.

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

१६५. क्या तुम संसार के लोगों में से पुरुषों के पास आते हो,[४५]

165. What! Of all creatures do ye come unto the males.

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

१६६. और तुम अपनी पत्नियों को जिन्हें तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए पैदा किया छोड़ देते हो ? बल्कि तुम सीमा से आगे बढ़ जाने वाले लोग हो।

166. And leave the wives your Lord created for you? Nay, but ye are forward folk.

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُم مِّنْ أَزْوَاجِكُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

१६७. उन्हों ने कहा : हे लूत, यदि तू बाज़ न आया तो तू निकाले हुए लोगों में सम्मिलित हो कर रहेगा।

167. They said: If thou cease not, O Lot, thou wilt soon be of the outcast.

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

१६८. (लूत ने) कहा : मैं तो उन लोगों में सम्मिलित हूँ जो तुम्हारे करतूत से बेज़ार हैं।

168. He said: I am in truth of those who hate your conduct.

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُم مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

१६९. 'रब'! मुझे और मेरे लोगों को उस से बचा जो कुछ कि ये करते हैं।

169. My Lord! Save me and my household from what they do.

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

४४. मुक़ाबले के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ८०-८४, सूरा हूद आयत ७४-८३ सूरा अल-हिज्र आयत ६१-७७, सूरा अल-अंबिया आयत ७४-७५, सूरा अन-नम्ल आयत ५४-५८, सूरा अल-अनकबूत आयत २६-३५, सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत १३४-१३६ और सूरा अल-क़मर आयत ३३-३९।

४५. अर्थात् प्रकृति के विरुद्ध आचरण करते हो, अप्राकृतिक रूप से पुरुषों के साथ व्यभिचार करते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७०. तो हम ने उसे और उस के सब लोगों को बचा लिया,

170. So We saved him and his household, every one,

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝١٧٠

१७१. सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में थी[४६]

171. Save an old woman among those who stayed behind.

اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ۝١٧١

१७२. फिर हम ने और दूसरे लोगों को विनष्ट कर दिया।[४७]

172. Then afterward We destroyed the others.

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝١٧٢

१७३. और उन पर एक वर्षा की। तो क्या ही बुरी वर्षा थी[४८] उन डराये जाने वालों को[४९]।

173. And We rained on them a rain. And dreadful is the rain of those who have been warned.

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٣

१७४. निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान' वाले नहीं हैं।

174. Lo! herein is indeed a portent, yet most of them are not believers.

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧٤

१७५. और निस्सन्देह तेरा 'रब' प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

175. And lo! thy Lord, He is indeed the Mighty, Merciful.

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٧٥

१७६. 'अल-ऐका' वालों ने 'रसूलों' को झुठलाया,[५०]

176. The dwellers in the wood (of Midian) denied the messengers (of Allah).

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧٦

१७७. याद करो जबकि शुऐब ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं[५०] ?

177. When Shu'eyb said unto them: Will ye not ward off (evil)?

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٧٧

१७८. निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ,

178. Lo! I am a faithful messenger unto you.

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٧٨

१७९. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

179. So keep your duty to Allah and obey me.

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٧٩

१८०. मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

180. And I ask of you no wage for it; my wage is the concern only of the Lord of the Worlds.

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٠

४६. यह संकेत हज़रत लूत अ० की पत्नी की ओर है। हज़रत नूह अ० और हज़रत लूत अ० की पत्नियों के बारे में आता है कि इन दोनों स्त्रियों ने अल्लाह के 'रसूल' का साथ नहीं दिया (दे० सूरा अत-तहरीम आयत १०) बल्कि अपनी जाति वालों का साथ दिया जिस के फलस्वरूप उन का भी वही परिणाम हुआ जो उन की जाति वालों का हुआ।

४७. दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत १३५-१३६।

४८. दे० सूरा अल-हिज्र आयत ७४, फ़ुटनोट २६। एक भीषण भूकम्प ने उन की बस्तियों को तलपट कर के रख दिया। और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थरों की वर्षा की गई।

४९. अर्थात् वह कितनी बुरी वर्षा थी जो उन लोगों पर हुई जिन्हें अल्लाह की यातना से पहले ही सचेत कर दिया गया था।

५०. तुलनात्मक गफ़िरों' ने भी हज अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ८५-९३, सूरा हूद आयत ८४-९५, सूरा अल-हिज्र आयत ७८-८४ और सूरा अल-अनकबूत आयत ३६-३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८१. तो तुम नाप पूरा-पूरा दो, और घाटा देने वालों में सम्मिलित न हो।

१८२. और सीधी तराज़ू से तोलो।

१८३. और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो, और धरती में फ़साद न फैलाते फिरो।

१८४. डरो उस से जिस ने तुम्हें और अगली नस्लों को पैदा किया।

१८५. उन्हों ने कहा : तू तो बस उन लोगों में से है जो जादू के मारे हुए हों;

१८६. तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है, और हम तो तुझे झूठे लोगों में से समझते हैं।

१८७. यदि तू सच्चे लोगों में से है, तो हम पर कोई आकाश का टुकड़ा गिरा दे[५१]।

१८८. (शुऐब ने) कहा : मेरा 'रब' भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

१८९. उन्हों ने उसे झुठला दिया, तो छतरी वाले दिन को यातना[५२] ने उन्हें आ लिया। निश्चय ही वह बड़े (सख़्त) दिन की यातना थी।

१९०. निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर 'ईमान' वाले नहीं हैं।

१९१. और निस्सन्देह तेरा 'रब' प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

१९२. और निस्सन्देह यह (क़ुरआन) 'सारे संसार के रब' का उतारा हुआ है[५३]।

१९३. जिसे लेकर एक विश्वसनीय आत्मा[५४] उतरी है

१९४. (उतरी है) तेरे दिल पर, ताकि तू सचेत करने वालों में से हो,

181. Give full measure, and be not of those who give less (than the due).

182. And weigh with the true balance.

183. Wrong not mankind in their goods, and do not evil, making mischief, in the earth.

184. And keep your duty unto Him Who created you and the generations of the men of old.

185. They said: Thou art but one of the bewitched;

186. Thou art but a mortal like us, and lo! we deem thee of the liars.

187. Then make fragments of the heaven fall upon us, if thou art of the truthful.

188. He said: My Lord is best aware of what ye do.

189. But they denied him, so there came on them the retribution of the day of gloom. Lo! it was the retribution of an awful day.

190. Lo! herein is indeed a portent; yet most of them are not believers.

191. And lo! thy Lord! He is indeed the Mighty, the Merciful.

192. And lo! it is a revelation of the Lord of Worlds.

193. Which the True Spirit hath brought down.

194. Upon thy heart, that thou mayest be (one) of the warners,

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ
لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨٦﴾

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٧﴾

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ
إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

५१. मक्का के 'काफ़िरों' ने भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० से यही कहा था कि हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो (दे० सूरा बनी इसराईल आयत ९२)।

५२. हो सकता है उन पर कोई बादल भेजा गया हो जो उन पर छतरी की तरह छा गया हो; और उस समय तक छाया रहा हो जब तक कि अल्लाह की यातना ने उन्हें विनष्ट कर के रख नहीं दिया।

५३. ऊपर ऐतिहासिक वृत्तान्त समाप्त हुआ। यहाँ से फिर उसी विषय पर प्रकाश डाला जा रहा है जिस से 'सूरा' का आरम्भ हुआ था।

५४. अर्थात् हज़रत 'जिबरील' (दे० सूरा अल-बक़रा आयत ९७)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९५. साफ़-साफ़ अरबी भाषा में।

195. In plain Arabic speech.

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾

१९६. और यह अगले लोगों की किताबों में भी है[५५]।

196. And lo, it is in the Scriptures of the men of old.

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

१९७. क्या इन (मक्का वालों) के लिए यह कोई निशानी नहीं है। कि 'बनी इसराईल' के विद्वान् इसे जानते हैं[५६]?

197. Is it not a token for them that the doctors of the Children of Israel know it?

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

१९८. और (इन के दुराग्रह का तो यह हाल है कि) यदि हम इसे अरब के अतिरिक्त किसी दूसरी जाति के व्यक्ति पर उतारते,

198. And if We had revealed it unto one of any other nation than the Arabs,

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

१९९. और वह इस (उत्तम वाणी) को इन्हें सुनाता, तब भी ये लोग इस के मानने वाले न होते।

199. And he had read it unto them, they would not have believed in it.

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾

२००. इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में से उसे (हक़ बात को) गुज़ार देते हैं[५७]।

200. Thus do We make it traverse the hearts of the guilty,

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾

२०१. वे इस पर 'ईमान' नहीं लाते जब तक कि दुःख देने वाली यातना न देख लें,

201. They will not believe in it till they behold the painful doom:

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾

२०२. फिर जब वह अचानक आ जायेगी, जब कि उन्हें खबर न होगी।

202. So that it will come upon them suddenly, when they perceive not.

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾

२०३. तब वे कहेंगे: क्या हमें कुछ मुहलत मिल सकती है[५८]?

203. Then they will say: Are we to be reprieved?

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

२०४. तो क्या ये लोग हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

204. Would they (now) hasten on our doom?

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾

२०५. क्या तू ने देखा, यदि हम इन्हें वर्षों सुख भोगने दें,

205. Hast thou then seen, if We content them for (long) years.

أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾

२०६. और फिर इन पर वह चीज़ आये जिस से इन्हें डराया जाता है,

206. And then cometh that which they were promised.

ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾

२०७. तो जो कुछ सुख इन्हों ने भोगा वह इन के कुछ काम नहीं आ सकता।

207. (How) that wherewith they were contented naught availeth them!

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾

५५. क़ुरआन कोई नई चीज़ नहीं पेश कर रहा है, क़ुरआन की शिक्षा वही है जो पिछली आसमानी किताबों की शिक्षा रही है। क़ुरआन के द्वारा आज उसी बात की याददिहानी कराई जा रही है जिस की याददिहानी पहले लोगों को कराई जा चुकी है।

५६. अर्थात् बनी इसराईल के विद्वान जानते हैं कि क़ुरआन की शिक्षा वही है जो इस से पूर्व आसमानी किताबों (Heavenly Books) में दी गई है।

५७. अर्थात् 'ईमान' वालों के दिलों की तरह इनके दिलों में यह 'कलाम' और हक़ बात, शान्ति, परितोष और शीतलता बन कर नहीं उतरती और जमती। यह इन के अपराधी होने का स्वाभाविक परिणाम है।

५८. हालाँकि मुहलत का समय समाप्त हो चुका होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०८. और हमने कोई बस्ती भी विनष्ट नहीं की जिस के सचेत करने वाले न रहे हों[५९]

208. And We destroyed no township but it had its warners.

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

२०९. चेताने को, हम ज़ालिम नहीं।

209. For reminder, for We never were oppressors.

ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾

२१०. इस (क़ुरआन) को 'शैतान' ले कर नहीं उतरे हैं[६०]।

210. The devils did not bring it down.

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢١٠﴾

२११. न यह उन्हें फबता है और न वे (इस का) सामर्थ्य रखते हैं[६१],

211. It is not meet for them nor is it in their power.

وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾

२१२. वे तो इस के सुनने से भी दूर रक्खे गये हैं।

212. Lo! verily they are banished from the hearing.

إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

२१३. अतः (हे मुहम्मद!) अल्लाह के साथ दूसरे 'इलाह' (पूज्य) को न पुकारना, नहीं तो तुम यातना पाने वालों में से हो जाओगे[६२]।

213. Therefore invoke not with Allah another god, lest thou be one of the doomed.

فَلَا تَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

२१४. और अपने निकटतम नातेदारों को सचेत करो,

214. And warn thy tribe of near kindred.

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

२१५. और जो 'ईमान' वाले तुम्हारे अनुयायी हो गये हैं उनके लिए अपना बाज़ू (भुजा) झुका दो[६३]।

215. And lower thy wing (in kindness) unto those believers who follow thee.

وَٱخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

२१६. फिर यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें, तो कह दो : जो कुछ तुम करते हो उस से मैं विरक्त हूँ।

216. And if they (thy kinsfolk) disobey thee, say: Lo! I am innocent of what they do.

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

२१७. और भरोसा करो। प्रभुत्वशाली और दया करने वाले (अल्लाह) पर।

217. And put thy trust in the Mighty, the Merciful.

وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

२१८. जो तुम्हें देख रहा होता है जब तुम उठते हो

218. Who seeth thee when thou standest up (to pray).

ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

५९. अर्थात् यों ही हमने किसी बस्ती को विनष्ट नहीं कर दिया; पहले उसे राह पर लाने की पूरी कोशिश की गई जब उस ने अपने समझाने और सचेत करने वालों को झुठला दिया और उन की बात मानने से इन्कार कर दिया तब हम ने उस पर यातना उतारी।

६०. जैसा कि 'काफ़िर' लोगों ने समझ रक्खा है कि यह 'नबी' 'काहिन' (दैवज्ञ) है साधारण 'काहिनों' की तरह 'शैतान' इस पर यह 'कलाम' ले कर आता है। मुक़ाबले के लिये दे० आयत १९२।

६१. यदि ये तनिक भी विचार करते तो समझ लेते कि क़ुरआन में जो ज्ञान और धर्म की बातें बयान की जा रही हैं वे 'शैतान' के मुँह पर फबने की नहीं हैं। 'काहिनों' (Soothsayers) को व्यापक सत्यता और उच्च जीवन-लक्ष्य से क्या सम्पर्क हो सकता है? 'नबी' को 'काहिन' समझना घोर अन्याय है। नबी तो मानव-उपवन के पुष्प होते हैं। उनकी शिक्षा और उपदेश से मानव-आत्मा अपने चरम लक्ष्य को पाती है।

६२. यहाँ वास्तव में 'काफिरों' को सचेत किया गया है।

६३. अर्थात् उनके साथ तुम्हारा व्यवहार नम्रता का होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१९. और 'सजदा' करने वालों में तुम्हारी गतिविधि को भी (वह देख रहा होता है)।

219. And (seeth) thine abasement among those who fall prostrate (in worship).

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

२२०. निस्सन्देह वह सुनने और जानने वाला है।

220. Lo! He only He is the Hearer, the Knower.

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

२२१. (लोगो !) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि 'शैतान' किस पर उतरते हैं ?

221. Shall I inform you upon whom the devils descend?

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِينُ ﴿٢٢١﴾

२२२. वे हर जाल रचने वाले अधर्मी पर उतरा करते हैं।

222. They descend on every sinful, false one.

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

२२३. वे कान लगाते हैं और उन में से अधिकतर झूठे होते हैं।

223. They listen eagerly, but most of them are liars.

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كٰذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

२२४. रहे कवि, तो उनके पीछे बहके हुए लोग चला करते हैं—

224. As for poets, the erring follow them.

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُنَ ﴿٢٢٤﴾

२२५. क्या तुमने देखा नहीं कि वे हर घाटी में चक्कर लगाते फिरते हैं[६४],

225. Hast thou not seen how they stray in every valley;

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

२२६. और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं ?—

226. And how they say that which they do not?

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾

२२७. न कि वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किए, और अल्लाह को अधिक याद किया, और इसके बाद कि उन पर ज़ुल्म किया गया उन्हों ने मुक़ाबला किया[६५] और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही मालूम हो जायेगा कि वे किस करवट पलटते हैं !

227. Save those who believe and do good works, and remember Allah much, and vindicate themselves after they have been wronged. Those who do wrong will come to know by what a (great) reverse they will be overturned!

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ
ذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيرًا وَّانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا ظُلِمُوا وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾ ع

६४. इसलिए क़ुरआन के लाने वाले पर काव्य का आरोप लगाने को घोर अन्याय के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। नबी सल्ल० और आपके साथियों के जीवन में जिस पवित्रता, नैतिक आदर्श, शान्ति, समता, कल्याण, भक्ति और प्रेम की भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है वह नैतिकता और पवित्रता कवियों और कवियों के पीछे चलने वालों के जीवन में कहाँ पाई जाती है। कवियों का हाल तो यह होता है कि कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ। उनकी बातों और उनके विचारों में समता और दृढ़ता नहीं पाई जाती है। फिर जो कुछ वे कहते हैं उसमें और उनके व्यावहारिक जीवन में बड़ा अन्तर होता है। इसके विपरीत एक 'नबी' और उसके सच्चे अनुयायियों का हाल यह होता है कि वे जो कुछ कहेंगे उनका सम्पूर्ण जीवन उसी का साक्षी होगा।

क़ुरआन के अवतीर्ण होने के समय अरब कवियों की जो दशा थी वह इससे कुछ भी भिन्न न थी जिसका उल्लेख इस 'आयत' में किया गया है। यों तो यह कमज़ोरियाँ किसी-न-किसी दरजे में सभी कवियों में पाई जाती हैं परन्तु अरब के कवियों का हाल उस समय अत्यन्त खेदजनक था। उनकी कविता साधारणतः मद्यपान, पार्थिव प्रेम, वैर, गोत्रीय गर्व, युद्ध आदि विषयों से सम्बन्ध रखती थी, उनकी कविताओं में नेकी और भलाई की बातें कम ही पाई जाती थीं।

६५. यह 'ईमान' वालों का चरित्र होता है जो उन बहके हुये लोगों की तरह नहीं होते जिनके जीवन का कोई उच्च और महान् लक्ष्य नहीं होता। 'ईमान' वाले उनकी तरह राग-रंग में अपना समय नष्ट नहीं करते। वे अल्लाह को सदा याद करते हैं। अल्लाह का स्मरण ही उनके लिए परम सम्पत्ति है; अल्लाह ही में विराम पा कर उनकी समस्त गतियों और विविध प्रवृत्तियों का प्रयोजन पूरा होता है। उनके पास चरित्र-बल होता है; वे ज़ुल्म और अत्याचार से तंग आ कर—सत्य को त्याग नहीं देते बल्कि ज़ुल्म का डट कर मुक़ाबला करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७—अन-नम्ल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' की 'आयत' १८ में 'नम्ल' (च्यूँटियों) की घाटी का उल्लेख हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अन-नम्ल' रक्खा गया है। सूरा का यह नाम केवल चिह्न के रूप में रक्खा गया है। यह सूरा का केन्द्रीय विषय नहीं है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' क अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा मक्का के मध्यकाल में अवतीर्ण होने वाली सूरतों से मिलती-जुलती है। इब्न अब्बास रजि० और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से पता चलता है कि यह सूरा अश-शु, अरा के बाद उतरी है और इस के वाद सूरा अल-क़सस का अवतरण हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह 'ईमान' वालों को विजय की शुभसूचना देने वाली सूरा है। यह सूरा अल्लाह के एक विशेष गुणवाचक नाम 'अलीम' (सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला) पर उसी तरह आधारित है जिस प्रकार पिछली सूरा अल्लाह के गुणवाचक नाम 'अज़ीज़'[1] और 'रहीम'[2] पर अवलम्बित है। पिछली दो सूरतों की तरह प्रस्तुत सूरा में भी इस पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि 'ईमान' वाले 'सब्र' और धैर्य्य से काम लें, अल्लाह पर भरोसा रक्खें। उसी का सहारा ले कर आत्म-बल और शक्ति प्राप्त करें। जो लोग इसी वर्तमान लोक के पुजारी बने हुये हें उन क धन-वैभव को कवल उपेक्षा की दृष्टि से देखें।

प्रस्तुत सूरा में दो तक़रीरें सम्मिलित हैं। हपली तक़रीर सूरा के आरम्भ से ले कर आयत ५८ तक चली गई है। दूसरी तक़रीर आयत ५९ से ले कर सूरा के अन्त तक है।

पहली तक़रीर में वताया गया है कि क़ुरआन के दिखाये हुये मार्ग पर चलने में जो चीज़ सब से बढ़ कर रुकावट बनती है वह 'आख़िरत' का इन्कार है। 'आख़िरत' का इन्कार कर के आदमी अपने को अनुत्तरदायी ठहरा लेता है फिर ऐसे व्यक्ति से इस को आशा नहीं की जा सकती कि वह जीवन-सम्बन्धी गम्भीर विषयों पर सोच-विचार करेगा और अपने को नैतिक नियन्त्रणों का पाबन्द बनायेगा।

फ़िरऔन, समूद-जाति और हज़रत लूत की जाति वालों के विनाश का यही मूल कारण हुआ कि वे 'आख़िरत' की ओर से निश्चिन्त हो गये थे और अपनी तुच्छइच्छाओं की दासता पर ही जमे रहे जिन लोगों ने उन्हें अन्धकार से निकालना चाहा उन के शत्रु बन गये।

सूरा की पहली तक़रीर में फ़िरऔन, समूद-जाति और हज़रत लूत अ० की जाति वालों के अतिरिक्त हज़रत मूसा अ०, हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से भी बयान हुये हैं। इन क़िस्सों में अल्लाह के प्रभुत्त्व और उसकी 'हिकमत' (Wisdom) का प्रदर्शन हुआ है। अल्लाह ने हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० को 'हिकमत' प्रदान की थी। यह 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) ही का चमत्कार था कि हज़रत सुलैमान अ० को अल्लाह ने जब सुख-सामग्री और राज्य प्रदान किया तो वे

१. अर्थात् परम प्रभुत्वशाली।
२. अर्थात् दयावन्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्लाह के कृतज्ञ बने;[1] स्वच्छन्द और अवज्ञाकारी नहीं बने। हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से से यह भी ज्ञात होता है कि समस्त उत्तमता का मूल आधार ज्ञान ही है। और ज्ञान की विशेष देन 'शुक्र' (कृतज्ञता-प्रकाशन) है। 'शुक्र' का एक विशेष गुण यह भी है कि जिस प्रकार मनुष्य पर अल्लाह क कृपा होती है उसी प्रकार वह भी कमज़ोरों पर दया करता है और अच्छे कर्मों के द्वारा अपने जीवन को पवित्र बनाता है। इस के विपरीत 'कुफ़्र' और 'शिर्क' की विशेषता है बिगाड़, फ़साद, छल-कपट और अन्धापन आदि। इस का भली-भाँति अनुमान हमें उन जातियों की कथाओं से होता है जो अपने 'कुफ़्र' और 'शिर्क' के कारण तबाह हो चुकी हैं।

इस तक़रीर में 'सबा' (Sheba) की शासिका का क़िस्सा भी बयान हुआ है जो अरब-इतिहास की एक प्रसिद्ध जाति पर शासन करती थी। 'सबा' की शासिका एक 'मुशिरक' स्त्री थी परन्तु उस के 'शिर्क' का कारण केवल यह था कि उस ने एक 'मुशिरक' वातावरण में होश सँभाला था। पक्षपात और अपनी तुच्छइच्छाओं की दासता का रोग उसे नहीं लगा था। 'आख़िरत' की ओर से वह निश्चिन्त नहीं थी। यही कारण है कि जब सत्य उस के सामने स्पष्ट रूप में आ गया तो उसे स्वीकार करने में कोई चीज़ भी बाधक न बन सकी। बाइबिल के अध्ययन से मालूम होता है कि हज़रत सुलमान अ० 'हिकमत' (तत्त्व-ज्ञान) में प्रसिद्ध थे। 'सबा' की शासिका उन के पास हिकमत की बातें सुनने के लिए आई थी। वह हज़रत सुलैमान अ० के ज्ञान और प्रताप से बहुत प्रभावित हुई और कहा: भाग्यवान् हैं तेरे लोग और भाग्यवान् हैं तेरे सेवक जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते हैं और तेरी हिकमत (Wisdom) सुनते हैं[2]।

सूरा की दूसरी तक़रीर में प्राकृतिक प्रमाणों द्वारा 'तौहीद' अथवा एकेश्वरवाद की उसी प्रकार पुष्टि की गई है जिस प्रकार सूरा की पहली तक़रीर में पिछली जातियों के वृत्तान्त और 'नबियों' के क़िस्सों से उसे प्रमाणित किया गया है। दूसरी तक़रीर आयत ५९ से आरम्भ होती है। आयत ५९ पहली तक़रीर का सारांश और दूसरी तक़रीर की आरम्भिका है और आयत ६४ 'तौहीद' और 'आख़िरत' के बीच सम्पर्क स्थापित करती है।

इस तक़रीर में 'काफ़िरों' का मूल रोग यह बताया गया है कि वे 'आख़िरत' को नहीं मानते जिस के कारण वे इस योग्य नहीं कि गम्भीर समस्याओं पर विचार कर सकें। 'आख़िरत' का इन्कार कर देने के बाद तो आदमी के लिए सत्य और असत्य में कोई अन्तर नहीं रहता। क्योंकि फिर तो उस की दृष्टि में चाहे आदमी सत्य को अपनाये या असत्य को दोनों अवस्था में अन्त में उसे मिट्टी ही में मिलना है। फिर कोई क्यों सत्य और असत्य के झगड़े में पड़े।

'सूरा' को समाप्त करने से पहले लोगों को सावधान किया गया है। उन्हें बताया गया है कि 'आख़िरत' से निश्चिन्त होने का क्या परिणाम होने वाला है। फिर स्पष्ट रूप से यह बात लोगों के सामने रख दी गई है कि जो कोई 'तौहीद' और अल्लाह की बन्दगी का सीधा मार्ग ग्रहण करेगा वह ऐसा अपने ही भले के लिए करेगा और जो अपने लिए गुमराही को ही पसन्द करेगा वह अपना ही बुरा करेगा। 'नबी' का काम केवल यह है कि वह लोगों को सावधान कर दे।

---

१. दे० आयत १९ और ४०।
२. दे० बाइबिल '१ सलातीन' (1 Kings) १० : ८ और '२ तवारीख़' (2 Chronicles) ९ : ७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन--नम्ल

(मक्का में उतरी--'आयतें' ९३)

THE ANT
Revealed at Mecca

سورة النمل مكية وهي ثلث وتسعون اية وسبع ركوعات

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. ता० सीन०[1]। ये 'आयतें' हैं 'क़ुरआन' की और एक खुली (स्पष्ट) किताब की;

1. Ta. Sin. These are revelations of the Qur'an and a Scripture that maketh plain.

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١

२. पथ-प्रदर्शन और शुभ सूचना 'ईमान' वालों के लिए[2]

2. A guidance and good tidings for believers.

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

३. जो 'नमाज़' क़ायम करते और 'ज़कात' देते हैं और वे ऐसे हैं कि जो 'आखिरत' पर विश्वास रखते हैं।

3. Who establish worship and pay the poordue and are sure of the Hereafter.

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣

४. निश्चय ही जो लोग 'आखिरत' पर 'ईमान' नहीं रखते, उनके लिए हम ने उनके कर्मों को शोभायमान बना दिया है[3] अत: वे भटकते फिरते हैं।

4. Lo! as for those who believe not in the Hereafter, We have made their works fair-seeming unto them so that they are all astray.

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٤

५. ये वे लोग हैं जिन के लिए बुरी यातना है, और यही हैं, जो 'आख़िरत' में अत्यन्त घाटा उठाने वाले हैं।

5. Those are they for whom is the worst of punishment, and in the Hereafter they will be the greatest losers.

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥

६. और (हे मुहम्मद !) निस्सन्देह तुम यह 'क़ुरआन' एक तत्त्वदर्शी और जानने वाले की ओर से पा रहे हो।

6. Lo! as for thee (Muhammad), thou verily receivest the Qur'an from the presence of One Wise, Aware.

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुट नोट १।

२. दे० आयत ७७।

३. 'आख़िरत' के न मानने का स्वाभाविक परिणाम यही होता है कि आदमी को जीवन का यही रंग-ढंग भला मालूम होने लगता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ
قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑦

7. (Remember) when Moses said unto his household: Lo! I spy afar off a fire, I will bring you tidings thence, or bring to you a borrowed flame that ye may warm yourselves.

७. याद करो जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा : मैं ने एक आग देखी है;[४] मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले कर आता हूँ, या तुम्हारे पास कोई दहकता अंगारा लाता हूँ ताकि तुम तापो[५]।

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي
النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧

8. But when he reached it, he was called, saying, Blessed is Whosoever is in the fire and whosoever is round about it! And glorified be Allah, the Lord of the Worlds!

८. जब वह उसके पास पहुँचा, तो उसे आवाज़ दी गई कि बरकत वाला है वह जो इस आग में है और जो इसके वातावरण में है! और महिमावान् है अल्लाह, सारे संसार का 'रब'[६]!

يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑨

9. O Moses! Lo! it is I Allah, the Mighty the Wise.

९. हे मूसा! यह तो मैं हूँ अल्लाह,[७] अपार शक्ति का मालिक और 'हिकमत' वाला।

وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا
جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ
لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ⑩

10. And throw down thy staff! But when he saw it writhing as it were a demon, he turned to flee headlong; (but it was said unto him); O Moses! Fear not! Lo! the emissaries fear not in My presence.

१०. और तू अपनी लाठी फेंक! तो जब मूसा ने देखा कि वह (लाठी) बल खा रही है जैसे कोई सर्प हो, तो पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़ कर भी न देखा; (कहा गया) : हे मूसा! डरो नहीं! मेरे पास रसूल डरा नहीं करते,

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ
فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪

11. Save him who hath done wrong and afterward hath changed evil for good. And lo! I am Forgiving, Merciful.

११. परन्तु (इतना ही नहीं) जिस ने कोई ज़्यादती कर दी हो फिर बुराई के बाद उसे भलाई से बदल लिया तो निस्सन्देह मैं बड़ा क्षमाशील और दयावन्त हूँ।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ
مِنْ غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ⑫

12. And put thy hand into the bosom of thy robe, it will come forth white but unhurt. (This will be one) among nine tokens unto Pharaoh and his people. Lo! they were ever evil-living folk.

१२. और (हे मूसा!) अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, उज्ज्वल (हो कर) निकलेगा बिना किसी ख़राबी के। ये (दो निशानियाँ) नौ निशानियों में से हैं फ़िरऔन और उस की जाति वालों की ओर (जाने के लिए)[८]। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।

४. यह उस समय की बात है जब हज़रत मूसा अ० मदयन में कई वर्ष रहने के पश्चात् अपने घर वालों को साथ ले कर प्रायद्वीप सीना के दक्षिणी भाग में उस स्थान पर पहुँचे थे जिसका नाम क़ुरआन के अवतीर्ण होने के समय 'तूर' था। अब यह सीना-पर्वत और मूसा-पर्वत कहलाता है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए दे० सूरा ता० हा० आयत १० और सूरा अल-क़सस आयत २९।

५. जिस स्थान पर हज़रत मूसा अ० को आग दिखाई दी थी वह स्थान समुद्र-तल से लगभग ५००० फ़ीट की ऊँचाई पर है।

६. यह आवाज़ एक वृक्ष से आ रही थी (दे० सूरा अल-क़सस आयत ३०)। ऐसा मालूम होता है कि वहाँ एक आग सी लगी हुई थी परन्तु न धुवाँ था और न कोई चीज़ वहाँ जल रही थी। आग के बीच खड़े हुये एक हरे-भरे वृक्ष से सहसा हज़रत मूसा अ० को पुकारा गया।

७. दे० सूरा ता० हा० आयत ११-१४।

८. हज़रत मूसा अ० को अल्लाह की ओर से नौ खुली निशानियाँ दी गईं थीं (दे० सूरा बनी इसराईल आयत १०१)। इन निशानियों का सविस्तार उल्लेख सूरा अल-आराफ़ में हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. फिर जब हमारी खुली-खुली निशानियाँ उन के पास आईं, तो उन्होंने कहा : यह तो खुला जादू है,

13. But when Our tokens came unto them, plain to see, they said: This is mere magic.

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ ءَايَٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾

१४. उन्हों ने ज़ुल्म और सरकशी से उसका इन्कार किया, यद्यपि उन के जी को उन का विश्वास हो चुका था। तो देखो उन बिगाड़ पैदा करने वालों का कैसा परिणाम हुआ!

14. And they denied them, though their souls acknowledged them, for spite and arrogance. Then see the nature of the consequence for the wrong-doers!

وَجَحَدُوا بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۚ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾

१५. और हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया, और उन्होंने (कृतज्ञता प्रकट करते हुये) कहा : प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत से 'ईमान' वाले बन्दों पर बड़ाई दी!

15. And We verily gave knowledge unto David and Solomon, and they said: Praise be to Allah, Who hath preferred us above many of His believing slaves?

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ عِلْمًا ۖ وَقَالَا ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

१६. और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ[९]। और उसने कहा : हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखाई गई है[१०], और हमें हर (आवश्यक) वस्तु प्रदान की गई है। निश्चय ही यह स्पष्ट अनुग्रह है।

16. And Solomon was David's heir. And he said: O mankind! Lo! we have been taught the language of birds, and have been given (abundance) of all things. This surely is evident favour.

وَوَرِثَ سُلَيْمَٰنُ دَاوُۥدَ ۖ وَقَالَ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ عُلِّمْنَا مَنطِقَ ٱلطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَىْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ ٱلْفَضْلُ ٱلْمُبِينُ ﴿١٦﴾

१७. सुलैमान के लिए उस की सेनायें एकत्र की गईं जिन में 'जिन्न'[११] भी थे और मानव भी, और पक्षी भी, और उन्हें नियन्त्रित रक्खा जाता था;

17. And there were gathered together unto Solomon his armies of the jinn and human-kind, and of the birds, and they were set in battle order;

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَٰنَ جُنُودُهُۥ مِنَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ وَٱلطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾

१८. यहाँ तक कि जब वे सब च्यूँटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक च्यूँटी ने कहा : हे च्यूँटियो! अपने घरों (बिलों) में घुस जाओ ऐसा न हो कि सुलैमान और उसकी सेनायें तुम्हें कुचल डालें, और उन्हें ख़बर भी न हो।

18. Till, when they reached the Valley of the Ants, and ant exclaimed: O ants! Enter your dwellings, lest Solomon and his armies crush you, unperceiving.

حَتَّىٰٓ إِذَآ أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ ٱلنَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّمْلُ ٱدْخُلُوا مَسَٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَٰنُ وَجُنُودُهُۥ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

१९. तो वह[१२] उस की बात पर मुस्कराते हुए हँस पड़ा[१३] और कहा : 'रब'! मुझे इस में लगाये रख कि मैं तेरी उस कृपा पर जो तू ने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की है कृतज्ञता दिखलाऊँ, और यह कि अनुकूल कर्म करूँ जो तुझे पसंद आये, और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाखिल कर।

19. And (Solomon) smiled, laughing at her speech, and said: My Lord, arouse me to be thankful for Thy favour wherewith Thou hast favoured me and my parents, and to do good that shall be pleasing unto Thee, and include me in (the number of) Thy righteous slaves.

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِىٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلَىٰ وَٰلِدَىَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَٰلِحًا تَرْضَىٰهُ وَأَدْخِلْنِى بِرَحْمَتِكَ فِى عِبَادِكَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٩﴾

९. अर्थात् हज़रत दाऊद अ० के बाद अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को 'नुबूवत' के पद पर खड़ा किया।

१०. इसका उल्लेख बाइबिल में नहीं किया गया है कि हज़रत सुलैमान अ० को अल्लाह ने पशुओं और पक्षियों की बोली सिखाई थी। परन्तु 'यहूदियों' की पुरातन कथाओं में इसका उल्लेख मिलता है।

११. 'जिन्न' हज़रत सुलैमान अ० की सेना में थे और हज़रत सुलैमान अ० उनसे काम लेते थे। इसका उल्लेख बाइबिल में नहीं है। परन्तु बनी इसराईल की पुरातन कथाओं में इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।

१२. अर्थात् सुलैमान अ०।

१३. च्यूँटियों की बात कोई सुन नहीं पाता; परन्तु अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को च्यूँटियों की आवाज़ सुनने की शक्ति प्रदान की थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. और उसने[१४] पक्षियों की जाँच-पड़ताल की और कहा : क्या बात है कि मैं अमुक हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह ग़ायब हो गया है ?

20. And he sought among the birds and said: How is it that I see not the hoopoe, or is he among the absent?

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾

२१. मैं उसे कठोर दण्ड दूँगा, या उसे ज़ब्ह कर दूँगा, या उसे मेरे पास खुली दलील (उज्र) लानी होगी।

21. I verily will punish him with hard punishment or I verily will slay him, or he verily shall bring me a plain excuse.

لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٢١﴾

२२. तो कुछ ज़्यादा देर नहीं की कि उसने (आ कर) कहा : मैंने वह बात मालूम की है जो आप को मालूम नहीं, मैं सबा[१५] से आप के पास एक सच्ची ख़बर ले कर आया हूँ।

22. But he was not long in coming, and he said: I have found out (a thing) that thou apprehendest not, and I come unto thee from Sheba with sure tidings.

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾

२३. मैं ने एक स्त्री देखी जो उन पर[१६] शासन करती है, और उसे हर चीज़ प्राप्त है, और उस का एक बड़ा सिंहासन है।

23. Lo! I found a woman ruling over them, and she hath been given (abundance) of all things, and hers is a mighty throne.

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

२४. मैं ने उसे और उस की जाति वालों को देखा कि वे अल्लाह को छोड़ कर सूर्य को 'सजदा' करते हैं; और[१७] 'शैतान' ने उन के कर्मों को उन के लिए शोभायमान बना दिया है, और उन्हें मार्ग से रोक दिया है, तो वे मार्ग नहीं पाते :

24. I found her and her people worshipping the sun instead of Allah; and Satan maketh their works fair-seeming unto them, and debarreth them from the way (of Truth), so that they go not aright:

وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

२५. (रोक दिया) कि अल्लाह को 'सजदा' न करें, जो आकाशों और धरती में छिपी चीज़ निकालता है और जानता है जो कुछ भी तुम छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हो,

25. So that they worship not Allah, Who bringeth forth the hidden in the heavens and the earth, and knoweth what ye hide and what ye proclaim.

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

२६. अल्लाह कि जिस के सिवा कोई 'इलाह' नहीं, जो महान् सिंहासन का 'रब' (स्वामी) है[१८]।

26. Allah: there is no God save Him, the Lord of the tremendous Throne.

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

२७. उस ने[१९] कहा : अभी हम देख लेते हैं कि तू ने सच कहा है या तू झूठों में से है।

27. (Solomon) said: We shall see whether thou speakest truth or whether thou art of the liars.

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

१४. अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० ने।

१५. 'सबा' (Sheba) दक्षिणी अरब की एक प्रसिद्ध जाति थी। इसकी राजधानी 'सनआ' से उत्तर-पूर्व की ओर ५५ मील की दूरी पर थी। यमन, हज़्र मूत और अफ़रीक़ा में हब्श (Abyssinia) क्षेत्र पर इसका अधिकार था। यह एक व्यापार करने वाली जाति थी। पूर्वी अफ़रीक़ा, भारत, सुदूरपूर्व, मिस्र, सीरिया, यूनान और रूम के साथ यह व्यापार करती थी। यह जाति अत्यन्त सम्पन्न थी। सिंचाई का प्रबन्ध कर के सबाइयों ने अपने देश को हरा-भरा बना रखा था। लगभग ११०० ईसा पूर्व से ले कर ११५ ईसा पूर्व तक अरब देश में इस जाति का डंका बजता रहा है।

१६. सबा वालों पर।

१७. ऐसा लगता है कि यहाँ से ले कर आयत २६ के अन्त तक हुदहुद की बात नहीं है; उस की बात "सूर्य को सजदा करते हैं" पर पूरी हो जाती है। इस के बाद अल्लाह ने मक्का वालों को सम्बोधित करते हुये ये बातें अपनी ओर से बढ़ा दी हैं। यह क़िस्सा भी मक्का के 'मुश्रिकों' ही को सुनाया जा रहा है ताकि वे इस से शिक्षा ग्रहण करें।

१८. दे० सूरा अल-आराफ़ फुट नोट १६।

१९. अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० ने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. मेरा यह पत्र ले कर जा और उसे उन की ओर डाल दे; फिर उन के पास से पलट आ देख कि वे क्या उत्तर देते हैं,

28. Go with this my letter and throw it down unto them: then turn away and see what (answer) they return.

اذهب بكتابي هذا فألقه إليهم
ثم تول عنهم فانظر ماذا يرجعون ٢٨

२९. वह (शासिका) बोली : हे सरदारो ! मेरी ओर एक माननीय पत्र फेंका गया है;

29. (The Queen of Sheba) said (when she received the letter): O chieftains! Lo! there hath been thrown unto me a noble letter.

قالت يا أيها الملؤا إني ألقي إلي كتب
كريم ٢٩

३०. वह सुलैमान की ओर से है और वह है : अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है;

30. Lo! it is from Solomon, and lo! it is: In the name of Allah the Beneficent, the Merciful.

إنه من سليمن وإنه بسم الله الرحمن
الرحيم ٣٠

३१. यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, और 'मुस्लिम' होकर मेरे पास हाज़िर हो जाओ।

31. Exalt not yourselves against me, but come unto me as those who surrender.

ع ألا تعلوا علي وأتوني مسلمين ٣١

३२. उस (शासिका) ने कहा : हे सरदारो ! मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती जब तक कि तुम मेरे पास हाज़िर न हो।

32. She said: O chieftains! Pronounce for me in my case. I decide no case till ye are present with me.

قالت يا أيها الملؤا أفتوني في أمري
ما كنت قاطعة أمرا حتى تشهدون ٣٢

३३. उन्हों ने कहा : हम शक्तिशाली और सख़्त लड़ने वाले हैं, आगे फ़ैसले का अधिकार आप को है; तो आप देख लें क्या हुक्म देती हैं।

33. They said: We are lords of might and lords of great prowess, but it is for thee to command; so consider what thou wilt command.

قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد
والأمر إليك فانظري ماذا تأمرين ٣٣

३४. (शासिका ने) कहा : सम्राट जब किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं, तो उसे ख़राब और वहाँ के प्रतिष्ठित लोगों को अपमानित करते हैं। वे ऐसे ही किया करते हैं।

34. She said: Lo! kings, when they enter a township, ruin it and make the honour of its people shame. Thus will they do.

قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية
أفسدوها وجعلوا أعزة أهلها أذلة
وكذلك يفعلون ٣٤

३५. मैं उन लोगों के पास एक उपहार भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि दूत क्या (उत्तर) ले कर पलटते हैं।

35. But lo! I am going to send a present unto them, and to see with what (answer) the messengers return.

وإني مرسلة إليهم بهدية فنظرة بم
يرجع المرسلون ٣٥

३६. जब वह (दूत) सुलैमान के पास पहुँचा, तो उस ने कहा : क्या तुम माल से मुझे मदद पहुँचाओगे ? जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया है वह उस से उत्तम है जो तुम्हें दिया है। तुम ही अपने उपहार से ख़ुश रहो।

36. So when (the envoy) came unto Solomon, (the King) said: What! would ye help me with wealth? But that which Allah hath given me is better than that which He hath given you. Nay it is ye (and not I) who exult in your gift.

فلما جاء سليمن قال أتمدونن بمال
فما آتن الله خير مما آتكم بل أنتم
بهديتكم تفرحون ٣٦

३७. उन के पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसी सेनायें लेकर आयेंगे[20] जिन का मुक़ाबला उनसे न हो सकेगा, और हम उन्हें अपमानित कर के वहाँ से निकाल देंगे, और वे सम्मानहीन हो कर रहेंगे।

37. Return unto them. We verily shall come unto them with hosts that they cannot resist, and we shall drive them out from thence with shame, and they will be abased.

ارجع إليهم فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها
ولنخرجنهم منها أذلة وهم صاغرون ٣٧

२०. अर्थात् यदि वे हमारी बात नहीं मानते तो हम उन पर सेना ले कर आयेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. (सुलैमान ने) कहा : हे सरदारो ! तुम में कौन उसका सिंहासन ले कर मेरे पास आता है इससे पहले कि वे लोग आज्ञाकारी हो कर मेरे पास आयें ?

38. He said: O chiefs! Which of you will bring me her throne before they come unto me, surrendering?

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾

३९. 'जिन्नों' में से एक बलिष्ट ने कहा : मैं उसे ले आऊँगा इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें। मुझ में उस (के उठा लाने) की शक्ति है और मैं विश्वसनीय हूँ।

39. A stalwart of the Jinn said: I will bring it thee before thou canst rise from thy place. Lo! I verily am strong and trusty for such work.

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

४०. जिस के पास 'किताब' का एक ज्ञान था उस ने कहा : मैं आप की पलक झपकने से पहले उसे लाऊँगा। फिर जब उसने उसे अपने पास रक्खा हुआ देखा, उस ने कहा : यह मेरे 'रब' का अनुग्रह है,[२१] ताकि वह मेरी परीक्षा करे कि मैं कृतज्ञता दिखलाता हूँ[२२] या 'कुफ़्र'[२३] करता हूँ। जो कोई कृतज्ञता दिखलाता है वह अपने ही लिए कृतज्ञता दिखलाता है; और जिस किसी ने 'कुफ़्र' किया[२४] तो निस्सन्देह मेरा 'रब' अपेक्षारहित और महानुभाव है[२५]।

40. One with whom was knowledge of the Scripture said: I will bring it thee before thy gaze returneth unto thee. And when he saw it set in his presence (Solomon) said: This is of the bounty of my Lord, that He may try me whether I gave thanks or am ungrateful. Whosoever giveth thanks he only giveth thanks for (the good of) his own soul: and whosoever is ungrateful (is ungrateful only to his own soul's hurt). For lo! my Lord is Absolute in independence, Bountiful.

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۣ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۭ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾

४१. (सुलैमान ने) कहा : अपरिचित रूप से उस के सामने उस का सिंहासन लाओ देखें वह राह पाती है या उन लोगों में से होती है जो राह नहीं पाते।

41. He said: Disguise her throne for her that we may see whether she will go aright or be of those not rightly guided.

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾

४२. जब वह आई, तो कहा गया : क्या तेरा सिंहासन ऐसा ही है ? उस ने कहा यह तो जैसे वही है। और हमें तो इससे पहले ही ज्ञान प्राप्त हो चुका था और हम 'मुस्लिम' हो गये थे।

42. So, when she came, it was said (unto her): Is thy throne like this? She said: (It is) as though it were the very one. And (Solomon said): We were given the knowledge before her and we had surrounded (to Allah).

فَلَمَّا جَاۗءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾

४३. अल्लाह के सिवा वह जो कुछ पूजती थी उसी ने उसे ('ईमान' लाने से) रोक रक्खा था, निश्चय ही वह 'काफ़िर' लोगों में से थी।

43. And (all) that she was wont to worship instead of Allah hindered her, for she came of disbelieving folk.

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾

२१. सबा की राजधानी 'मारिब' से 'बैतुल मक़दिस' तक राज-सिंहासन का उठ कर आ जाना यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उस की कृपा से ही सम्भव हो सका।

२२. दे० आयत १९।

२३. यहाँ 'कुफ़्र' से अभिप्रेत अकृतज्ञ बनना है।

२४. अर्थात् अकृतज्ञ बना और अल्लाह का उपकार मानने से इन्कार किया।

२५. अल्लाह तो परम स्वतन्त्र है अल्लाह का उपकार न मानने वाला अपना ही बुरा करेगा अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. उस से कहा गया : महल में दाख़िल हो। जब उस ने उसे देखा तो उसे जल-सरोवर समझा और (उस में उतरने के लिए) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। (सुलैमान ने) कहा : यह तो महल है, जिस में शीशे जड़े हुये हैं। बोली 'रब'! मैं ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया था और अब मैं ने सुलैमान के साथ अपने-आप को अल्लाह के समर्पण किया जो 'सारे संसार का रब' है[२६]।

44. It was said unto her: Enter the hall. And when she saw it she deemed it a pool and bared her legs. (Solomon) said: Lo! it is a hall, made smooth, of glass. She said: My Lord! Lo! I have wronged myself, and I surrender with Solomon unto Allah, the Lord of the Worlds.

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَأَتْهُ
حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ
قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ ۚ
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ
مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٤٤﴾ ع

४५. और समूद[२७] की ओर हमने उनके भाई सालेह को (यह सन्देश देकर) भेजा कि अल्लाह की 'इबादत' करो। तो वे दो जत्थे हो कर झगड़ने लगे।

45. And We verily sent unto Thamud their brother Salih, saying: Worship Allah. And, lo! they (then) became two parties quarrelling.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلٰى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا
أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقٰنِ
يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

४६. (सालेह ने) कहा : हे मेरी जाति के लोगो! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? क्यों नहीं अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करते, कदाचित् तुम पर दया की जाये।

46. He said: O my people! Why will ye hasten on the evil rather than the good? Why will ye not ask pardon of Allah, that ye may receive mercy.

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

४७. उन्हों ने कहा : हम ने तुझे और जो कोई तेरे साथ है उसे अपशकुन का प्रतीक पाया है। उस ने कहा : तुम्हारा शकुन-अपशकुन तो अल्लाह के पास है। बल्कि तुम वे लोग हो जो आज़माइश में डाल दिये गये हो।

47. They said: We augur evil of thee and those with thee. He said: Your evil augury is with Allah. Nay, but ye are folk that are being tested.

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ
طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾

४८. उस नगर में नौ आदमियों का जत्था था[२८] जो देश में बिगाड़ पैदा करते थे और सुधार का काम न करते थे।

48. And there were in the city nine persons who made mischief in the land and reformed not.

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾

२६. अर्थात् मैं 'मुस्लिम' हो गई। हज़रत सुलैमान अ० और सबा की शासिका का क़िस्सा बाइबिल और 'बनी इसराईल' की पुरातन कथाओं में मिलता है; परन्तु क़ुरआन का बयान इन सब के बयान से भिन्न है। तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० बाइबिल '१ सलातीन' (1 Kings) १० : १–१३; २ 'तवारीख़' (2 Chronicles) ६ : १–१२। मत्ता और लूक़ा की इञ्जीलों में केवल हज़रत मसीह अ० के भाषण का यह वाक्य नक़ल किया गया है : "दक्षिण की रानी इस युग के लोगों के साथ उठ कर उन्हें अपराधी ठहरायेगी क्योंकि वह दुनिया के किनारे से सुलैमान की हिकमत (Wisdom) सुनने को आई और देखो यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है"। दे० मत्ता (Mtt.) १२ : ४२ और लूक़ा (Luke) ११ : ३१। यहूदी पुरातन कथाओं में हज़रत सुलैमान अ० और सबा की शासिका का जो क़िस्सा बयान हुआ है उस का अधिकांश क़ुरआन से मिलता-जुलता है परन्तु शासिका का उपहार मिलने पर हज़रत सुलैमान अ० ने जो उत्तर दिया है उस का और रानी के सिंहासन के मँगवाने का उल्लेख सिरे से उस में किया ही नहीं गया है। इस के अलावा हज़रत सुलैमान अ० की भक्ति और प्रत्येक अवसर पर अल्लाह के आगे उन का झुकते रहना और सबा की शासिका का 'ईमान' लाना, ये सब बातें उन में नहीं मिलतीं।

२७. दे० सूरा अश-शु, अरा फुट नोट ३७।

२८. अर्थात् क़बीलों के ६ सरदार थे जिन में से प्रत्येक एक बड़े जत्थे का मालिक था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९. उन्हों ने कहा : परस्पर अल्लाह की कसम खाओ कि हम अवश्य उस पर और उस के घर वालों पर रात को छापा मारेंगे, फिर उसके वली से कह देंगे कि हम इस के घर वालों के विनाश के अवसर पर न थे[२९]। और निश्चय ही हम सच्चे हैं।

49. They said: Swear one to another by Allah that we verily will attack him and his household by night, and afterward we will surely say unto his friend: We witnessed not the destruction of his household, And lo! we are truth-tellers.

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ
لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

५०. वे एक चाल चले : और हम भी एक चाल चले, और उन्हें ख़बर न हुई[३०]।

50. So they plotted a plot: and We plotted a plot, while they perceived not.

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾

५१. अब देख लो कि उन की चाल का कैसा परिणाम हुआ, हम ने उन को और उनकी जाति को नष्ट कर के रख दिया।

51. Then see the nature of the consequence of their plotting, for lo! We destroyed them and their people, every one.

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا
دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾

५२. ये उन के घर उन के ज़ुल्म के कारण उजड़े पड़े हैं। निस्सन्देह इस में एक निशानी है उन लोगों के लिए जो जानते हैं[३१]।

52. See, younder are their dwellings empty and in ruins because they d d wrong. Lo! herein is indeed a portent for a people who have knowledge.

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾

५३. और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो 'ईमान' लाये थे और डरते थे।

53. And we saved those who believed and used to ward off (evil).

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

५४. और लूत[३२] को (हम ने भेजा) जब कि उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा : क्या तुम आँखों देखते अश्लील कर्म करते हो?

54. And Lot! when he said unto his folk: will ye commit abomination knowingly?

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

५५. क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास कामेच्छा से जाते हो? बल्कि तुम अज्ञानता का कार्य करने वाले लोग हो।

55. Must ye needs lust after men instead of women? Nay, but ye are folk who act senselessly.

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

५६. परन्तु उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कुछ न था कि उन्हों ने कहा : निकाल बाहर करो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से, वे बड़े पाक-साफ़ (पवित्राचारी) बनते हैं!

56. But the answer of his folk was naught save that they sa'd: Expel the household of Lot from your township, for they (forsooth) are folk who would keep clean?

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا
آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ
يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

५७. फिर हमने उसे और उस के घर वालों को बचा लिया सिवाय उस की स्त्री के; जिस के बारे में हम ने ठहरा दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।

57. Then We saved him and his household save his wife; We destined her to be of those who stayed behind.

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا
مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾

२९. वली से अभिप्रेत हज़रत सालेह अ० के क़बीले के सरदार थे जिन्हें क़बीलों की रीति के अनुसार यह अधिकार प्राप्त था कि वे उन के खून का दावा करें। बिल्कुल ऐसी ही साजिश मक्का के 'काफ़िरों' ने 'नबी' सल्ल० को क़त्ल करने के लिए की थी। उन्हों ने यह निश्चय किया था कि सब क़बीले आप के क़त्ल में सम्मिलित हों ताकि आप का कबीला 'बनू हाशिम' किसी एक क़बीले को अपराधी न ठहरा सके और एक साथ सब क़बीलों से वे लड़ नहीं सकते।

३०. अर्थात् अल्लाह ने उन पर अपना अज़ाब उतार दिया वे सब-के-सब तबाह हो कर रह गये।

३१. अर्थात् जिन के पास ज्ञान है।

३२. दे० सूरा अल-अअराफ़, फ़ुट नोट ४४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. और हमने उन लोगों पर बुरी वर्षा की तो वह क्या ही बुरी वर्षा थी उन लोगों के हक़ में जिन्हें सचेत किया जा चुका था।

58. And We rained a rain upon them. Dreadful is the rain of those who have been warned.

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿٥٨﴾ ع

५९. [33] (हे 'नबी'!) कहो : प्रशंसा है अल्लाह के लिए, और सलाम उस के उन बन्दों पर जिन्हें उस ने चुन लिया! (उन से पूछो) क्या अल्लाह अच्छा है, या जिसे वे (अल्लाह का) सहभागी ठहराते हैं?

59. Say (O Muhammad): Praise be to Allah, and peace be on His slaves whom He hath chosen! Is Allah best, or (all) that ye ascribe as partners (unto Him)?

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ
اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

* ६०. भला वह कौन है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा हमने शोभायमान बाग़ उगाये। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के वृक्षों को उगाते। क्या अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) है? नहीं, बल्कि यही लोग मार्ग से अलग हो रहे हैं!

60. Is not He (best) Who created the heavens and the earth, and sendeth down for you water from the sky wherewith We cause to spring forth joyous orchards, whose trees it never hath been yours to cause to grow. Is there any God beside Allah? Nay, but they are folk who ascribe equals (unto Him)!

الجزء العشرون
أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ
لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ
ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۗ
أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾

६१. वह कौन है जिस ने धरती को ठहराव[34] बनाया, और उसके बीच-बीच में नहरें[35] जारी कीं, और उस के लिए अचल पर्वत बनाये, और दो दरियाओं के बीच आड़ रक्खी[36]? क्या अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) है? नहीं, बल्कि उन में अधिकतर जानते नहीं!

61. Is not He (best) Who made the earth a fixed abode, and placed rivers in the folds thereof, and placed firm hills therein, and hath set a barrier between the two seas? Is there any God beside Allah? Nay, but most of them know not!

أَمَّن جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا
أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

६२. कौन है जो व्याकुल की विनय सुनता है जब कि वह उसे पुकारे और तकलीफ़ को दूर करता है, और (कौन है जो) तुम्हें धरती में अधिकार देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) है? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो!

62. Is not He (best) Who answereth the wronged one when he crieth unto Him and removeth the evil, and hath made you viceroys of the earth? Is there any God beside Allah? Little do they reflect!

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَ
يَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ
أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

३३. यहाँ से दूसरी तक़रीर शुरू होती है। आयत ५९ वास्तव में इस तक़रीर (वार्त्ता) की आरम्भिका है। इस तक़रीर में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के प्राकृतिक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

* यहाँ से बीसवाँ पारा (Part x x) शुरू होता है।

३४. अर्थात् उसे ऐसा बनाया कि उस में मनुष्य रह-बस सके। इस भू-मण्डल को जिस तरह अन्तरिक्ष में रक्खा गया है; और पृथ्वी और सूर्य-चन्द्र तथा विश्व के प्राकृतिक नियमों के बीच जो एकीकरण (Co-ordination) और अनुकूलता पाई जाती है उसे देख कर कोई बुद्धि रखने वाला व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि यह सब-कुछ एक सर्वशक्तिमान् अल्लाह के बिना सम्भव हो सका है। जिस अनुकूलता और एकीकरण का नियम हमें इस विश्व में दिखाई देता है उस के बिना यह सम्भव ही न था कि यह पृथ्वी प्राणियों का निवास-स्थान बन सके।

३५. अर्थात् नदियाँ।

३६. दे० सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ५३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३. कौन है जो भूमि और समुद्र को अँधियारियों में तुम्हें राह दिखाता है, और कौन अपनी दयालुता (वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को शुभ-सूचना के रूप में भेजता है[३७] ? क्या अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) है ? अल्लाह उस 'शिर्क' से उच्च है जो ये लोग करते हैं !

63. Is not He (best) Who guideth you in the darkness of the land and the sea. He Who sendeth the winds as heralds of His mercy? Is there any God beside Allah? High exalted be Allah from all that they ascribe as partner (unto Him)!

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾

६४. कौन है जो पहली बार पैदा करता हो, फिर उसे दोबारा भी पैदा करे, और कौन तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी (जीविका) देता है[३८] ? क्या अल्लाह के साथ कोई और 'इलाह' (पूज्य) है ? कहो : लाओ अपनी दलील (प्रमाण), यदि तुम सच्चे हो !

64. Is not He (best) Who produceth creation, then reproduceth it, and Who provideth for you from the heaven and the earth? Is there any God beside Allah? Say: Bring your proof, if ye are truthful!

أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾

६५. (उन से) कहो : आकाशों और धरती में कोई अल्लाह के सिवा परोक्ष की बात नहीं जानता; और न उन्हें इस बात का ज्ञान है कि वे कब उठाये जायेंगे[३९] ।

65. Say (O Muhammad): None in the heavens and the earth knoweth the Unseen save Allah; and they know not when they will be raised (again).

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

६६. बल्कि 'आख़िरत' के प्रति इन का ज्ञान गड्ड-मड्ड हो गया। बल्कि ये उस की ओर से सन्देह में हैं। बल्कि ये उस से अन्धे हैं[४०] ।

66. Nay, but doth their knowledge reach to the Hereafter? Nay, for they are in doubt concerning it. Nay, for they cannot see it.

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾ ع

६७. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया वे कहते हैं : क्या जब हम और हमारे पूर्वज मिट्टी हो चुके होंगे, तो क्या वास्तव में हम निकाले जायेंगे ?

67. Yet those who disbelieve say: When we have become dust like our fathers, shall we verily be brought forth (again)?

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ءَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

६८. इसका वादा तो हम से इस से पहले भी किया जा चुका है, हम से भी और हमारे पूर्वजों से भी, ये तो पहले लोगों की कहानियाँ (बे-सनद बातें) हैं।

68. We were promised this forsooth, we and our fathers. (All) this is naught but fables of the men of old.

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ إِنْ هٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

३७. हवायें वर्षा आने के पहले ही उस के आगमन की हर्षजनक सूचना देने लगती हैं।

३८. अल्लाह ही ने मनुष्य के लिए रोज़ी की सामग्री संचित की है। रोज़ी का प्रबन्ध उस के अतिरिक्त कोई दूसरा कर नहीं सकता। ज़मीन और आसमान की कितनी ही शक्तियाँ क्रियाशील हैं जिन के फलस्वरूप मनुष्य को रोज़ी प्राप्त होती है। ताप, प्रकाश और वायु आदि का मालिक अल्लाह ही है। ज़मीन और आसमान की समस्त शक्तियों को मिल-जुल कर काम करना उसी ने सिखाया है।

३९. दे० सूरा अन-नह्ल आयत २०।

४०. 'आख़िरत' पर 'ईमान' न रखने के कारण ही ये जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं करते। यदि वे अपनी ज़िम्मेदारी को समझते तो सच्चाई कोई ढकी-छिपी चीज़ न थी; ये सच्चाई को अवश्य पा लेते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. कहो : धरती में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ है[४१] !

69. Say (unto them, O Muhammad): Travel in the land and see the nature of the sequel for the guilty!

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

७०. (हे 'नबी' !) उन पर दुःखी न हो, और न उस चाल से तंगदिल हो जो वे चलते हैं।

70. And grieve thou not for them, nor be in distress because of what they plot (against thee).

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ
مِمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

७१. और वे कहते है : यह धमकी कब (पूरी होगी) यदि तुम सच्चे हो ?

71. And they say: When (will) this promise (be fulfilled), if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٧١﴾

७२. कहो : जिस (यातना) की तुम जल्दी मचा रहे हो कदाचित् उस का एक भाग तुम्हारे निकट आ लगा हो[४२]।

72. Say: It may be that a part of that which ye would hasten on is close beh.nd you.

قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ
الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾

७३. निस्सन्देह तेरा 'रब' तो लोगों के लिए अनुग्रह वाला है, परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञता नहीं दिखलाते[४३]।

73. Lo! thy Lord is full of bounty for mankind, but most of them do not give thanks.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

७४. और निस्सन्देह तेरा 'रब' जानता है जो कुछ कि उन के सीनें छिपाये हुये हैं और जो कुछ कि वे लोग ज़ाहिर करते हैं।

74. Lo! thy Lord knoweth surely all that their bosoms hide, and all that they proclaim.

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

७५. आकाश और धरती में कोई छिपी चीज़ ऐसी नहीं है जो एक (स्पष्ट) 'किताब' में (अंकित) न हो[४४]।

75. And there is nothing hidden in the heaven or the earth but it is in a clear Record.

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٧٥﴾

७६. निस्सन्देह यह 'क़ुरआन' 'इसराईल' की सन्तान को अधिकांश ऐसी बातें सुनाता है जिस में वे विभेद करते हैं[४५]।

76. Lo! this Qur'an narrateth unto the Children of Israel most of that concerning which they differ.

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

७७. और निस्सन्देह यह पथ-प्रदर्शन और दयालुता है 'ईमान' वालों के लिए।

77. And lo! it is a guidance and a mercy for believers.

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

७८. निश्चय ही तेरा 'रब' उन के बीच अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा[४६] और वह प्रभुत्त्वशाली और जानने वाला है[४७]।

78. Lo! thy Lord will judge between them of His wisdom, and He is the Mighty, the Wise.

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

४१. अपराधी जातियों का जो परिणाम हुआ है; उन्हें जिस तरह अल्लाह ने तबाह और बरबाद किया है, उस से साफ़ मालूम होता है कि इस संसार में केवल भौतिक नियम ही नहीं काम कर रहा है बल्कि इस के साथ ही नैतिक नियम भी काम कर रहा है। जिस के अन्तर्गत अपराधी जातियों को कठोर-से-कठोर दण्ड दिया जाता है। यह नैतिक नियम इस बात का खुला प्रमाण है कि 'आख़िरत' अवश्य आयेगी और लोगों को अपने अच्छे-बुरे कर्मों का बदला मिल कर रहेगा। अपराधी जातियों की तबाही से उन के ज़ुल्म और अत्याचार का सिलसिला टूट जाता है परन्तु न्याय और इन्साफ़ के सारे तक़ाज़े तो 'आख़िरत' ही में पूरे होंगे।

४२. अर्थात् यदि तुम अपनी चालों से बाज न आये तो जिस के लिए जल्दी मचा रहे हो उसे अवश्य देख लोगे।

४३. यह उस का फ़ज़्ल और उस की कृपा ही है कि वह तुम्हें सँभलने की पूरी मुहलत देता है।

४४. अर्थात् वह अल्लाह के रिकार्ड में मौजूद है। अल्लाह के रिकार्ड से कोई एक चीज़ भी बाहर नहीं हो सकती।

४५. और यह क़ुरआन के आसमानी किताब होने का खुला हुआ प्रमाण है।

४६. अर्थात् 'ईमान वालों' और 'काफ़िरों' के बीच।

४७. अतः उस के फ़ैसले को कोई रोक नहीं सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७६. अतः (हे 'नबी' !) अल्लाह पर भरोसा रक्खो निश्चय ही तुम खुली हुई सच्चाई पर हो।

79. Therefor (O Muhammad) put thy trust in Allah, for thou (standest) on the plain Truth.

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

८०. तुम मुरदों को नहीं सुना सकते, और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो[४८] जब कि वे पीठ फेर कर भाग जायें;

80. Lo! thou canst not make the dead to hear, nor canst thou make the deaf to hear the call when they have turned to flee;

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

८१. और न तुम अंधों को उन की गुमराही से मार्ग पर ला सकते हो। तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी 'आयतों' पर 'ईमान' लाते हैं तो वे 'मुस्लिम' हैं।

81. Nor canst thou lead the blind out of their error. Thou canst make none to hear, save those who believe Our revelations and who have surrendered.

وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ
إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم
مُّسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

८२. और जब हमारी बात उन पर पूरी (होने को) होगी,[४९] तो हम उनके लिए एक जानवर धरती से निकालेंगे जो बात करेगा[५०] कि लोग हमारी 'आयतों' पर विश्वास नहीं करते थे[५१]।

82. And when the word is fulfilled concerning them, We shall bring forth a beast of the earth to speak unto them because mankind had not faith in Our revelations.

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ
دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ
كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾ ع

८३. और जिस दिन हम हर समुदाय में से उन लोगों का एक गरोह एकत्र करेंगे जो हमारी 'आयतों' को झुठलाते थे फिर उनको (श्रेणियों के अनुसार) क्रम में रक्खा जायेगा।

83. And (remind them of) the Day when We shall gather out of every nation a host of those who denied Our revelations, and they will be set in array;

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن
يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

८४. यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे, तो (उन का 'रब') कहेगा : क्या तुम ने मेरी 'आयतों' को झुठलाया जब कि ज्ञान की दृष्टि से तुम उन पर हावी नहीं हुए थे, यह नहीं तो और तुम क्या कर रहे थे ?

84. Till, when they come (before their Lord), He will say: Did ye deny My revelations when ye could not compass them in knowledge, or what was it that ye did?

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي
وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

८५. और हमारी बात उन पर पूरी हो कर रहेगी इसलिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया फिर वे बोल न सकेंगे।

85. And the Word will be fulfilled concerning them because they have done wrong, and they will not speak.

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾

८६. क्या तुम्हें सुझाई नहीं दिया कि हम ने रात बनाई कि वे उस में चैन पायें, और दिन को प्रकाशमान किया ! निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं[५२] उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाते हैं।

86. Have they not seen how We have appointed the night that they may rest therein, and the day sight-giving? Lo! therein verily are portents for a people who believe.

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

४८. अर्थात् ये लोग मुरदों, बहरों और अन्धों के समान हैं अतः इनसे कोई आशा रखनी व्यर्थ है।

४९. अर्थात् जब 'क़ियामत' का दिन क़रीब आ जायेगा। जिसका हमने वादा कर रक्खा है।

५०. दे० सूरा अर-रूम आयत ३५।

५१. इस जानवर का निकलना 'क़ियामत' की बड़ी निशानियों में से है। नबी सल्ल० ने इस जानवर के अलावा 'क़ियामत' के क़रीब में प्रकट होने वाली और बहुत सी निशानियों की खबर दी है जैसे 'दज्जाल' का निकलना, धुवाँ और सूर्य का पश्चिम दिशा से उदय होना आदि।

५२. दे० सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ४७; सूरा अल-क़सस आयत ७३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८७. और जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जायेगी, तो जो आकाशों में है और जो कोई धरती में है हौल खायेगा–सिवाय उस के जिसे अल्लाह ने (इस हौल से बचाना) चाहा। और सब उस के समक्ष दबे और झुके हुये उपस्थित हो जायेंगे।

87. And (remember) the Day when the Trumpet will be blown, and all who are in the heavens and the earth will start in fear, save him whom Allah willeth. And all come unto Him, humbled.

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾

८८. और तू पहाड़ों को देखता है उन्हें समझता है कि जमे हुये हैं हालांकि वे गुज़र रहे होंगे जैसे बादल गुज़रते हैं : अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ साधी है। निस्सन्देह वह उस की ख़बर रखता है जो कुछ कि तुम करते हो।

88. And thou seest the hills thou deemest solid flying with the flight of clouds: the doing of Allah Who perfecteth all things. Lo! He is Informed of what ye do.

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ اِنَّهٗ خَبِيْرٌ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

८९. जो कोई भलाई ले कर आया उस के लिए उस से अच्छा बदला होगा; और ऐसे लोग हौल से उस दिन निश्चिन्त होंगे।

89. Whoso bringeth a good deed will have better than its worth; and such are safe from fear that Day.

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

९०. और जो कोई बुराई ले कर आयेगा, ऐसे लोग औंधे मुँह ('जहन्नम' की) आग में डाल दिये जायेंगे। जो कुछ कि तुम करते रहे हो क्या उस के सिवा तुम किसी और चीज़ का बदला पाओगे?

90. And whoso bringeth an ill deed, such will be flung down on their faces in the Fire. Are ye rewarded aught save what ye did?

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾

९१. (हे मुहम्मद! कहो) : मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि इस नगर के 'रब' की 'इबादत' करूँ जिस ने इसे 'हरम' बनाया[५३] और हर चीज़ उसी की है[५४]। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उन लोगों में सम्मिलित हूँ जो अपने को (उसके) अर्पण करने वाले हैं,

91. (Say): I (Muhammad) am commanded only serve the Lord of this land which He hath hallowed, and unto Whom all things belong. And I am commanded to be of those who surrender (unto Him).

اِنَّمَا اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾

९२. और यह 'क़ुरआन' पढ़ कर सुनाऊँ। अब जो कोई मार्ग पर आया, वह अपने ही (भले के) लिए मार्ग पर आयेगा; और जो कोई गुमराह हुआ तो कह दो : मैं तो बस सचेत करने वालों में से हूँ।

92. And to recite the Qur'an. And whoso goeth right, goeth right only for (the good of) his own soul; and as for him who goeth astray—(Unto him) say: Lo! I am only a warner.

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَا اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

९३. और कहो : प्रशंसा अल्लाह के लिए है जल्द ही वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा देगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा 'रब' उस से बे ख़बर नहीं है जो कुछ कि तुम करते हो।

93. And say; Praise be to Allah Who will show you His portents so that ye shall know them. And thy Lord is not unaware of what ye (mortals) do.

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

५३. अर्थात् यह अल्लाह की कृपा ही है कि इस नगर का सम्पूर्ण अरब के लोग आदर करते हैं। जबकि पूरे अरब में अशान्ति का राज्य है। अल्लाह ने इस नगर को शान्ति-निकेतन बना दिया है। यह सूरा मक्का नगर में उतरी है; उस समय आप (सल्ल०) मक्का वालों को ही अल्लाह की ओर बुला रहे थे।

५४. दे० सूरा अल-क़सस आयत ५७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८—अल—क़सस

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-क़सस' सूरा की आयत २५ से लिया गया है। क्रमानुसार घटनाओं और वृत्तान्तों के वर्णन को 'क़सस' कहते हैं। इस सूरा में हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा विस्तारपूर्वक बयान हुआ है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरा अल-क़सस सूरा अन-नम्ल के बाद अवतीर्ण हुई है और सूरा अन-नम्ल से पहले सूरा अश-शु, अरा का अवतरण हुआ है। इसका पता हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से भी चलता है और इन सूरतों की भाषा, वर्णन-शैली और वार्त्ताओं से भी इसी की पुष्टि होती है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

सूरा अश-शु, अरा की भूमिका में यह बात बताई जा चुकी है कि सूरा २५ से सूरा २८ तक के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है। इस सूरा को आयत ८३ सूरा के केन्द्रीय विषय की सूचक है।

यह सूरा इसका स्मरण कराती है कि अल्लाह अपने बन्दों के लिए 'रहमान' (अत्यन्त कृपाशील) और 'रऊफ़' (करुणामय) है। वह चाहता है कि उन लोगों को अपने उपकार से अधिकार प्रदान करे जो धरती में निर्बल हैं और उन लोगों को उन के करतूतों का मज़ा चखाये और उन से बदला ले जिन्हों ने धरती में सरकशी की और उस के बन्दों पर अत्याचार किया। सूरा के अन्त में भी यह बात खोल-कर बयान कर दी गई है कि अन्त में ज़ालिम लोग घाटा उठायेंगे।

प्रस्तुत सूरा से मालूम होता है कि धन-वैभव और राज-सत्ता पर गर्व करने का परिणाम कितना भयंकर और प्रलयकारी होता है। अहंकारी लोग धरती को अशान्ति से भर देते हैं। और लोगों को अत्याचार करना उन का स्वभाव बन जाता है। इस सिलसिले में दो दृष्टान्त प्रस्तुत सूरा में हमारे सामने आते हैं। एक दृष्टान्त तो फ़िरऔन, उस के सरदारों और उस की सेना का है। और दूसरा दृष्टान्त क़ारून का है जो एक धनाढ्य व्यक्ति था। क़ारून और फ़िरऔन का उस की सेना सहित जो परिणाम हुआ उस से पता चलता है कि परिणाम की दृष्टि से केवल वही लोग सफल और कृतार्थ होते हैं जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की नाख़ुशी से डरते हैं। इसमें 'ईमान' वालों के लिए ढारस भी है और उन के विजयी होने की शुभ-सूचना भी। और वास्तव में यही इस सूरा का मूलविषय है।

इस सूरा से 'नबी' सल्ल० की 'नुबूवत' भी भली-भाँति सिद्ध हो जाती है। हज़रत मूसा अ० के क़िस्से से साफ़ मालूम होता है कि 'नबी' सल्ल० को जो कुछ पेश आ रहा है और आप (सल्ल०) को जिन विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है वह कोई नई बात नहीं है हज़रत मूसा अ० को इस से पहले ये सारी बातें पेश आ चुकी हैं।

'नबी' सल्ल० के 'नबी' होने का एक प्रत्यक्ष प्रमाण इस सूरा में यह प्रस्तुत किया गया है कि आप (सल्ल०) दो हज़ार वर्ष पूर्व के ऐतिहासिक वृत्तान्त का वर्णन सविस्तार कर रहे हैं हालाँकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह सब जानते हैं कि आप न तो पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं और न आप के पास ऐसा कोई साधन है जिस के द्वारा ऐतिहासिक जानकारी की प्राप्ति आप के लिए सम्भव हो सके।

मक्का के 'काफ़िर' लोग कहते थे कि यदि हम एकेश्वरवाद को ग्रहण कर के अरब वालों के धर्म को त्याग देते हैं तो इस भू-भाग से हम उचक लिए जायेंगे। हमें कहीं शरण न मिल सकेगी। इस में हमें राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक प्रत्येक दृष्टि से हानि ही दिखाई देती है। सूरा के अन्त में उन की इस बात का विस्तारपूर्वक उत्तर दिया गया। और समस्याओं पर केवल भौतिक दृष्टि से विचार करने वालों के दृष्टिकोण का तर्कयुक्त खण्डन किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल—क़सस

(मक्का में उतरी—'आयतें' ८८)

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. ता० सीन० मीम०[१]।

२. ये खुली 'किताब' की 'आयतें' हैं[२]।

३. हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ वृत्तान्त ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लायें[३]।

४. निश्चय ही फ़िरऔन ने धरती में सिर उठाया और उस के निवासियों के कई जत्थे कर दिये[४]। उन में से एक गरोह को[५] कमज़ोर करता था, उन के बेटों को ज़बह् करता और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देता[६]। निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करने वालों में से था।

५. और हम यह इरादा रखते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो धरती में कमज़ोर कर के रक्खे गये थे, और उन्हें नायक बनायें और उन्हें (धरती का) वारिस बनायें।

६. और उन्हें धरती में आधिपत्य प्रदान करें, और उन से फ़िरऔन और हामान और उन की सेनाओं को वह कुछ दिखायें जिस से वे डरते थे।

THE STORY
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Ta. Sin. Mim.

2. These are revelations of the Scripture that maketh plain.

3. We narrate unto thee (somewhat) of the story of Moses and Pharaoh with truth, for folk who believe.

4. Lo! Pharaoh exalted himself in the earth and made its people castes. A tribe among them he oppressed, killing their sons and sparing their women. Lo! he was of those who work corruption.

5. And We desired to show favour unto those who are oppressed in the earth, and to make them examples and to make them the inheritors.

6. And to establish them in the earth, and to show Pharaoh and Haman and their hosts that which they feared from them.

سورة القصص مكية وهي ثمان وثمانون آية وتسع ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓمّٓ ①

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ
بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ③

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا
شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ
اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ
كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ④

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا
فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ⑤

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ
وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ⑥

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा अश-शु, अरा आयत १-२।
३. दे० सूरा अश-शु, अरा. फ़ुटनोट ७।
४. सब के साथ समान रूप से न्याय नहीं करता था।
५. अर्थात् 'बनी इसराईल' को।
६. दे० बाइबिल, 'ख़ुरूज' (Deut.) १ : ८-१६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. हम ने मूसा की माँ को 'वह्य' की[७] कि उसे दूध पिला, फिर जब तुझे उस के प्रति भय हो, तो उसे दरिया में डाल दे[८] और न तो तुझे कोई भय हो और न तू दुःखी हो। निश्चय ही हम उसे तेरे पास पलटा लायेंगे और उसे 'रसूलों' में सम्मिलित करेंगे।

7. And We inspired the mother of Moses, saying: Suckle him and when thou fearest for him, then cast him into the river and fear not nor grieve. Lo! We shall and shall make him (one) of Our messengers.

وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه فإذا خفت عليه فألقيه في اليم ولا تخافي ولا تحزني إنا رادوه إليك وجاعلوه من المرسلين ﴿٧﴾

८. अन्त में फ़िरऔन के घर वालों ने उसे (दरिया से) निकाल लिया, ताकि वह उन का शत्रु और (उन के लिए) दुःख (का कारण) हो[९]। निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उन के दल[१०] से बड़ी चूक हुई।

8. And the family of Pharaoh took him up, that he might become for them an enemy and a sorrow. Lo! Pharaoh and Haman and their hosts were ever sinning.

فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين ﴿٨﴾

९. फ़िरऔन की स्त्री ने (उस से) कहा : यह मेरे और तेरे लिए आँखों की ठण्डक है। इसे क़त्ल न करो। कदाचित् हमारे काम आवे, या हम इसे बेटा बना लें। और उन्हें (परिणाम की) ख़बर न थी।

9. And the wife of Pharaoh said: (He will be) a consolation for me and for thee. Kill him not. Peradventure he may be of use to us, or we may choose him for a son. And they perceived not.

وقالت امرأت فرعون قرت عين لي ولك لا تقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا وهم لا يشعرون ﴿٩﴾

१०. और मूसा की माँ का हृदय अधीर हो गया वह उस का भेद खोल देती यदि हम उस के दिल को मज़बूत न कर देते, ताकि वह 'ईमान' रखने वालों में से हो।

10. And the heart of the mother of Moses became void, and she would have betrayed him if We had not fortified her heart, that she might be of the believers.

وأصبح فؤاد أم موسى فارغا إن كادت لتبدي به لولا أن ربطنا على قلبها لتكون من المؤمنين ﴿١٠﴾

११. और उस ने उस की बहिन से कहा : उस के पीछे-पीछे जा। तो वह उसे दूर-ही-दूर से देखती रही, और उन्हें ख़बर न हो सकी।

11. And she said unto his sister: Trace him. So she observed him from afar, and they perceived not.

وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب وهم لا يشعرون ﴿١١﴾

१२. और हम ने उस (बच्चे) पर पहले ही से दूध पिलाने वालियों (के स्तनों) को हराम कर रक्खा था[११], तो उस (लड़की) ने कहा : क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस के पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और जो इस के हितैषी हों ?

12. And We had before forbidden foster-mothers for him so she said Shall I show you a household who will rear him for you and take care of him?

وحرمنا عليه المراضع من قبل فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم وهم له ناصحون ﴿١٢﴾

१३. इस प्रकार हम उस (बच्चे) को उस की माता के पास पलटा लाये ताकि उस की आँखें ठण्डी हों और वह दुःखी न हो, और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

13. So We restored him to his mother that she might be comforted and not grieve, and that she might know that the promise of Allah is true. But most of them know not.

فرددناه إلى أمه كي تقر عينها ولا تحزن ولتعلم أن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون ﴿١٣﴾ ع

७. अर्थात् दैवी भावना उत्पन्न की, संकेत किया।

८. अर्थात् यदि तुझे इस का भय हो कि अब दुश्मनों को बच्चे के जन्म लेने की खबर हो जायेगी और वे उसे मार डालेंगे, तो निर्भय हो कर उसे एक सन्दूक़ में रख कर दरिया में तैरा देना; उस की रक्षा हम करेंगे।

९. अर्थात् उन के इस काम का यही परिणाम होने वाला था यद्यपि वे इस बात को नहीं जानते थे।

१०. अर्थात् सेनायें।

११. अर्थात् स्तन-पान के लिए जिस स्त्री को भी बुलाया जाता बच्चा उस के स्तन को मुँह न लगाता था।—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा ओर भर-पूर हो गया, तो हमने उसे 'हुक्म' और ज्ञान प्रदान किया। और इस तरह हम उत्तम-कारों को बदला देते हैं।

14. And when he reached his full strength and was ripe, We gave him wisdom and knowledge. Thus do We reward the good.

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

१५. और (एक दिन) वह नगर में दाखिल हुआ जब कि उस के लोग बेख़बर थे[१२], वहाँ उस ने दो आदमियों को लड़ते पाया, एक उसकी अपनी जाति का था, और दूसरा उसके शत्रुओं में से था; उस व्यक्ति ने जो उस के जत्थे में से था उस से उस व्यक्ति (के ज़ुल्म) की फ़रियाद की जो उस के शत्रुओं में से था। मूसा ने, उसे एक घूँसा मारा और उस का काम तमाम कर दिया[१३]। (इस पर मूसा ने) कहा : यह 'शैतान' की कृति है। निश्चय ही वह शत्रु और खुला हुआ गुमराह करने वाला है।

15. And he entered the city at a time of carelessness of its folk, and he found therein two men fighting, one of his own caste, and the other of his enemies; and he who was of his caste asked him for help against him who was of his enemies. So Moses struck him with his fist and killed him. He said: This is of the devil's doing. Lo! he is an enemy, a mere misleader.

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِن شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَزَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

१६. उस ने कहा : 'रब'! निश्चय ही मैं ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया, तो मुझे क्षमा कर दे। फिर उस ने उसे क्षमा कर दिया। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

16. He said: My Lord! Lo! I have wronged my soul, so forgive me. Then He forgave him. Lo! He is the Forgiving, the Merciful.

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

१७. उस ने कहा : 'रब'! जैसे तू ने मुझ पर कृपा की है, मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।

17. He said: My Lord! Forasmuch as Thou hast favoured me, I will never more be a supporter of the guilty.

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾

१८. प्रातःकाल डरता खतरा भाँपता हुआ, नगर में गया इतने में क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिस ने कल उस से मदद माँगी थी उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहा : तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ आदमी है[१४]।

18. And morning found him in the city, fearing, vigilant, when behold! he who had appealed to him the day before cried out to him for help. Moses said unto him: Lo! thou art indeed a mere hothead.

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

१२. अर्थात् जब कि लोग ग़ाफ़िल पड़े सो रहे थे; चाहे रात का समय रहा हो या दोपहर का।

१३. अर्थात् संयोग से उस की मृत्यु हो गई। बाइबिल और तलमूद (Talmud) का बयान है कि हज़रत मूसा अ० ने जान-बूझ कर उस व्यक्ति को मार डाला था। परन्तु यह बात किसी तरह सही नहीं हो सकती। एक ऐसा ज्ञानी व्यक्ति जिसे आगे चल कर अल्लाह का 'रसूल' होना था कभी भी ऐसा अपराध नहीं कर सकता था। 'बनी इसराईल' ने अपने महापुरुषों के चरित्र को कलंकित करने में कोई कमी नहीं की परन्तु क़ुरआन उन समस्त कलंकों को दूर करता है जो 'बनी इसराईल' ने अपने 'नबियों' पर लगाये थे। इस पर वे क़ुरआन का उपकार तो क्या मानते उलटे क़ुरआन के दुश्मन बन गये। उन के कुछ ही लोग थे जो क़ुरआन पर 'ईमान' ला सके।

१४. अर्थात् तू बड़ा ही झगड़ालू आदमी मालूम होता है जब देखिए किसी-न-किसी से तेरा झगड़ा रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. फिर जब (मूसा ने) निश्चय किया कि उस पर जो उन दोनों का[१५] शत्रु था हाथ डाले तो उस ने[१६] कहा : हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि मुझे क़त्ल करे जिस तरह कल एक जीव की हत्या कर चुका है। बस तू देश में जाबिर बन कर रहना चाहता है, और यह नहीं चाहता है कि सुधार करने वालों में से हो।

19. And when he would have fallen upon the man who was an enemy unto them both, he said: O Moses! Wouldst thou kill me as thou didst kill a person yesterday. Thou wouldst be nothing but a tyrant in the land, thou wouldst not be of the reformers.

فَلَمَّآ أَنْ أَرَادَ أَن يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ
عَدُوٌّ لَّهُمَا قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ أَتُرِيدُ أَن
تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا بِالْأَمْسِ إِن
تُرِيدُ إِلَّآ أَن تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ
وَمَا تُرِيدُ أَن تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾

२०. एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, कहा : सरदार तेरे बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं कि तुझे क़त्ल कर डालें; अतः तू निकल जा। मैं तेरा हित चाहने वाला हूँ।

20. And a man came from the uttermost part of the city, running. He said: O Moses! Lo! the chiefs take counsel against thee to slay thee; therefore escape. Lo! I am of those who give thee good advice.

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ
قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ
لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّٰصِحِينَ ﴿٢٠﴾

२१. फिर वह वहाँ से, डरता और खतरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ। उस ने कहा : 'रब' ! मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे।

21. So he escaped from thence, fearing, vigilant. He said: My Lord! Deliver me from the wrongdoing folk.

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ
نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّٰلِمِينَ ﴿٢١﴾

२२. और (मिस्र से निकल कर) जब उस ने मदयन की ओर रुख किया, तो उस ने कहा; आशा है कि मेरा 'रब' मुझे ठीक मार्ग पर डाल देगा।

22. And when he turned his face toward Midian, he said: Peradventure my Lord will guide me in the right road.

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّيٓ
أَن يَهْدِيَنِي سَوَآءَ السَّبِيلِ ﴿٢٢﴾

२३. जब वह मदयन के पानी पर पहुँचा तो उस पर लोगों के एक गरोह को पाया, जो (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे थे।

और उन से अलग एक ओर दो स्त्रियों को पाया जो अपने जानवरों को रोके हुये थीं। (मूसा ने) कहा : तुम्हारा क्या हाल है ? उन दोनों ने कहा : हम (अपने जानवरों को) पानी नहीं पिला सकते जब तक ये चरवाहे (अपने जानवरों को) वापस न ले जावें; और हमारे पिता एक बहुत बूढ़े आदमी हैं।

23. And when he came unto the water of Midian he found there a whole tribe of men, watering. And he found apart from them two women keeping back (their flocks). He said: What aileth you? The two said: We cannot give (our flocks) to drink till the shepherds return from the water: and our father is a very old man.

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً
مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِن دُونِهِمُ
امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا
قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَآءُ وَأَبُونَا
شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

२४. तो उस ने उन के जानवरों को पानी पिला दिया। फिर एक छाया की ओर हट आया, और कहा : 'रब' ! जो अच्छी चीज़ भी तू मेरी ओर उतार दे मैं उसका मुहताज हूँ।

24. So he watered (their flock) for them. Then he turned aside into the shade and said: My Lord! I am needy of whatever good Thou sendest down for me.

فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰٓ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ
رَبِّ إِنِّي لِمَآ أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ
فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

१५. अर्थात् हज़रत मूसा अ० और उस व्यक्ति का जिस ने हज़रत मूसा अ० को सहायता के लिए पुकारा था।

१६. जिस की सहायता के लिए हज़रत मूसा अ० बढ़े थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. फिर उन दोनों (स्त्रियों) में से एक लज्जा के साथ चलती हुई उस के पास आई। उस ने कहा : मेरे पिता आप को बुला रहे हैं, ताकि आप ने जो हमारे जानवरों को पानी पिलाया है उस का बदला आप को दें। जब, वह उस के पास पहुँचा और उसे सारा क़िस्सा सुनाया, उस ने कहा : डरो नहीं ! तुम ज़ालिम लोगों से छुटकारा पा गये हो ।

25. Then there came unto him one of the two women, walking shyly. She said: Lo! my father biddeth thee, that he may reward thee with a payment for that thou didst water (the flock) for us. Then, when he came unto him and told him the (whole) story, he said: Fear not! Thou hast escaped from the wrongdoing folk.

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۪ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

२६. उन दोनों (स्त्रियों) में से एक ने कहा : हे पिता जी ! इस व्यक्ति को नौकर रख लीजिए ! अच्छा व्यक्ति जिसे आप नौकर रक्खें वही है जो बलिष्ट और विश्वसनीय हो।

26. One of the two women said: O my father! Hire him! For the best (man) that thou canst hire is the strong, the trustworthy.

قَالَتْ إِحْدٰىهُمَا يٰٓأَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۟ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْأَمِيْنُ ﴿٢٦﴾

२७. (उस के बाप ने मूसा से) कहा : मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का तुम्हारे साथ विवाह कर दूँ इस (शर्त्त) पर कि तुम आठ वर्ष मेरे यहाँ नौकरी करो। और यदि दस वर्ष पूरे कर दो तो यह तुम्हारी ओर से है, मैं तुम पर सख़्ती नहीं करना चाहता। यदि अल्लाह ने चाहा, तो तुम मुझे अच्छे लोगों में से पाओगे[१७]।

27. He said: Lo! I fain would marry thee to one of these two daughters of mine on condition that thou hirest thyself to me for (the term of) eight pilgrimages. Then if you completest ten it will be of thine own accord, for I would not make it hard for thee. Allah willing, thou wilt find me of the righteous.

قَالَ إِنِّىْٓ أُرِيْدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى أَنْ تَأْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ أُرِيْدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۭ سَتَجِدُنِىْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

२८. (मूसा ने) कहा : यह मेरे और आप के बीच (निश्चय) हो चुका। इन दोनों अवधि में से जो भी मैं पूरी कर दूँ, तो फिर कोई ज़्यादती मुझ पर न हो, और अल्लाह उस पर निगहबान है जो कुछ हम कह रहे हैं।

28. He said: That (is settled) between thee and me. Whichever of the two terms I fulfil, there will be no injustice to me, and Allah is surety over what we say.

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ۭ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾ ع

२९. फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी, और अपने घर वालों को ले कर चला, तो उसे 'तूर' की ओर से एक आग दिखाई दी। उस ने अपने घर-वालों से कहा : ठहरो, मैं ने एक आग देखी है; शायद मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊँ, या आग का अंगारा ताकि तुम ताप सको।

29. Then, when Moses had fulfilled the term, and was travelling with his housefolk, he saw in the distance a fire and said unto his housefolk: Bide ye (here). Lo! I see in the distance a fire; peradventure I shall bring you tidings thence, or a brand from the fire that ye may warm yourselves.

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوْٓا إِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

३०. फिर जब वह वहाँ पहुँचा, तो मैदान के दाहिने किनारे से[१८] बरकत वाले क्षेत्र में[१९], वृक्ष से उसे पुकारा गया कि हे मूसा ! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का 'रब';

30. And when he reached it, he was called from the right side of the valley in the blessed field, from the tree: O Moses! Lo! I, am Allah, the Lord of the Worlds;

فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُوْدِىَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِى الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يّٰمُوْسٰٓى إِنِّىْٓ أَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ ۙ

१७. अर्थात् तुम मुझे नेक आदमी पाओगे।
१८. अर्थात् उस किनारे से जो हज़रत मूसा अ० की दाहिनी ओर था।
१९. उस क्षेत्र में जो ईश-दीप्ति की आभा से प्रज्वलित हो रहा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. और यह कि फेंक दे अपनी लाठी। फिर जब (मूसा ने) उसे देखा कि वह बल खा रही है जैसे कोई सर्प हो, तो वह पीठ फेर कर भागा और उस ने पीछे न देखा, (कहा गया) हे मूसा! आगे आ और डर मत। निश्चय ही तू सुरक्षित लोगों में से है।

31. Throw down thy staff. And when he saw it writhing as it had been a demon, he turned to flee headlong (and it was said unto him): O Moses! Draw nigh and fear not. Lo! thou art of those who are secure.

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

३२. अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, बिना किसी ख़राबी के उज्ज्वल (दीप्तिमान) हो कर निकलेगा। और डर से अपनी भुजा को भींच ले। ये दो निशानियाँ हैं तेरे 'रब' की ओर से फ़िरऔन और उस के सरदारों के सामने पेश करने के लिए। निश्चय ही वे अवज्ञाकारी लोग हैं।

32. Thrust thy hand into the bosom of thy robe, it will come forth white without hurt. And guard thy heart from fear. Then these shall be two proofs from your Lord unto Pharaoh and his chiefs: Lo! they are evil-living folk.

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

३३. (मूसा ने) कहा : 'रब'! मैंने उन के एक व्यक्ति को क़त्ल किया है डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे।

33. He sa d: My Lord! Lo! I killed a man among them and I fear that they will kill me.

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

३४. और मेरा भाई हारून मुझ से बढ़ कर व्याख्यान देने वाला है। अतः उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरा समर्थन करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठलायेंगे।

34. My brother Aaron is more eloquent than me in speech. Therefor send him with me as a helper to confirm me. Lo! I fear that they will give the lie to me.

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾

३५. (अल्लाह ने) कहा : हम तेरे भाई के द्वारा तेरी भुजा को बल प्रदान करेंगे, और तुम दोनों को ऐसा प्रताप प्रदान करेंगे कि वे तुम तक न पहुँच सकेंगे हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों और जो तुम दोनों के अनुयायी होंगे ऊपर रहेंगे[२०]।

35. He said: We will strengthen thine arm with thy brother, and We w ll give unto you both power so that they cannot reach you for Our portents. Ye twain, and those who follow you, will be the winners.

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَآ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

३६. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ ले कर पहुँचा, तो उन्हों ने कहा : यह[२१] तो बस बनावटी जादू है। और यह[२२] तो हम ने अपने अगले पूर्वजों में कभी सुनी नहीं।

36. But when Moses came unto them with Our clear tokens, they said: This is naught but invented magic. We never heard of this among our fathers of old.

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾

३७. और मूसा ने कहा : मेरा 'रब' उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उस की ओर से मार्ग-दर्शन ले कर आया है, और उस व्यक्ति को भी जिस के लिए घर (लोक) का (अच्छा) परिणाम है[२३]। निस्सन्देह ज़ालिम सफल नहीं होते।

37. And Moses said: My Lord is best aware of him who br ngeth guidance from His presence, and whose will be the sequel of the Home (of bliss). Lo! wrong-doers will not be successful.

وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

२०. अर्थात् तुम्हारी और तुम्हारे अनुयायियों ही की विजय होगी।
२१. अर्थात् वे निशानियाँ और चमत्कार जिन्हें हज़रत मूसा (अ०) उन के सामने पेश कर रहे थे।
२२. यह संकेत है उन बातों की ओर जिन्हें हज़रत मूसा अ० ने ईश-सन्देश के रूप में फ़िरऔन के सामने पेश की थीं।
२३. दे० सूरा अर-रअ्द फुटनोट १४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. और फ़िरऔन ने कहा : हे सरदारो ! मैं तो अपने अतिरिक्त तुम्हारे किसी 'इलाह' को नहीं जानता, अच्छा तो हे हामान ! तू हमारे लिए मिट्टी (को ईंटों) को आग में पका; फिर मेरे लिए एक ऊँचा भवन बनवा कदाचित् मैं मूसा के 'इलाह' को झाँक कर देखूँ[२४]; और मैं तो इसे झूठों में से समझता हूँ।

३९. उस ने और उस की सेनाओं ने धरती में बिना किसी हक़ के घमण्ड किया, और समझा कि उन्हें हमारी ओर पलटना न होगा।

४०. तो हम ने उसे और उस की सेनाओं को पकड़ा, और उन्हें दरिया में फेंक दिया। अब देख लो उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ।

४१. और हम ने उन्हें नायक बनाया जिन का काम ('जहन्नम' की) आग की ओर बुलाना है[२५], और 'क़ियामत' के दिन वे कोई मदद न पा सकेंगे।

४२. और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत (फिटकार) लगा दी, और 'क़ियामत' के दिन वे बद-हाल लोगों में से होंगे।

४३. और अगली नस्लों को विनष्ट कर देने के बाद हम ने मूसा को 'किताब' दी; लोगों के लिए अन्तर्दृष्टियों की सामग्री, और मार्ग-दर्शन और दयालुता बना कर, कदाचित् वे चेतें।

४४. और (हे मुहम्मद !) तुम (उस समय) पश्चिमी किनारे पर[२६] नहीं थे जब हम ने कर डाला मूसा के सम्बन्ध में वह काम (जो करना था), और न तुम साक्षी लोगों में थे[२७];

38. And Pharaoh said: O chiefs! I know not that ye have a god other than me, so kindle for me (a fire), O Haman, to bake the mud; and set up for me a lofty tower in order that I may survey the god of Moses; and lo! I deem him of the liars.

39. And he and his hosts were haughty in the land without right, and deemed that they would never be brought back to Us.

40. Therefor We seized him and his hosts, and abandoned them unto the sea. Behold the nature of the consequence for evil-doers!

41. And We made them patterns that invite unto the Fire, and on the Day of Resurrection they will not be helped.

42. And We made a curse to follow them in this world, and on the Day of Resurrection they will be among the hateful.

43. And We verily gave the Scripture unto Moses after We had destroyed the generations of old; clear testmonies for mankind, and a guidance and a mercy, that haply they might reflect.

44. And thou (Muhammad) wast not on the western side (of the Mount) when We expounded unto Moses the commandment, and thou wast not among those present;

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ
لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ
عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ
اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾
وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾
وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾
وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ
مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ
لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ
اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾

२४. दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ४७।

२५. उन्हों ने अपने कर्म और कुनीतियों से जो राह दिखाई है वह आदमी को 'जहन्नम' की ओर ले जाने वाली है। उन्हों ने सत्य का विरोध किया और असत्य के लिए लड़े। अब जो कोई उन का अनुसरण करेगा उस का ठिकाना 'जहन्नम' ही है।

२६. अर्थात् सीना (Sinai) प्रायद्वीप का वह पर्वत जिस पर अल्लाह ने हज़रत मूसा को धर्म-विधान सम्बन्धी आदेश प्रदान किये थे। यह स्थान हिजाज़ के पश्चिम ओर पड़ता है।

२७. अर्थात् तुम उन लोगों के साथ वहाँ मौजूद नहीं थे जिन्हें हज़रत मूसा के साथ इस लिए बुलाया गया था ताकि वे वहाँ इस बात की प्रतिज्ञा करें कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन करेंगे। ये सब ७० व्यक्ति थे (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १५५)। तुलनात्मक अध्ययन (Comparative) के लिए दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) अध्याय २४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. बल्कि (उस के पश्चात्) हम ने बहुत सी नस्लें उठाईं, फिर उन पर बहुत समय बीत चुका है। और न तुम मदयन वालों में रहते थे कि उन्हें हमारी 'आयतें' सुना रहे होते[२८], परन्तु हम 'रसूल' भेजने वाले थे।

45. But We brought forth generations, and their lives dragged on for them. And thou wast not a dweller in Midian, reciting unto them Our revelations, but We kept sending (messengers to men).

ولكنا انشانا قرونا فتطاول عليهم
العمر وما كنت ثاويا في اهل مدين
تتلوا عليهم ايتنا ولكنا كنا
مرسلين ٤٥

४६. और तुम 'तूर' के किनारे मौजूद न थे जब हम ने (मूसा को पहली बार) पुकारा था; परन्तु यह तुम्हारे 'रब' की दयालुता है (कि तुम्हें जानकारी प्रदान की जा रही है) ताकि तुम उन लोगों को सचेत करो जिन के पास तुम से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया[२९], कदाचित् वे चेतें।

46. And thou wast not beside the Mount when We did call; but (the knowledge of it is) a mercy from thy Lord that thou myest warn a folk unto whom no warner came before thee, that haply they may give heed.

وما كنت بجانب الطور اذ نادينا
ولكن رحمة من ربك لتنذر قوما
ما اتىهم من نذير من قبلك لعلهم
يتذكرون ٤٦

४७. और (यह हम ने इस लिए किया कि) कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ उन के हाथ आगे भेज चुके हों[३०], उस के कारण जब उन पर कोई मुसीबत आये, तो वे कहें : हमारे 'रब'! तू ने क्यों न हमारी ओर कोई 'रसूल' भेजा कि हम तेरी 'आयतों' का अनुसरण करते और 'ईमान' वालों में से होते?

47. Otherwise, if disaster should afflict them because of that which their own hands have sent before (them) they might say: Our Lord! Why sentest Thou no messenger unto us, that we might have followed Thy revelations and been of the believers?

ولولا ان تصيبهم مصيبة بما قدمت
ايديهم فيقولوا ربنا لولا ارسلت الينا
رسولا فنتبع ايتك ونكون من
المؤمنين ٤٧

४८. फिर जब हमारे यहाँ से हक़ उन के पास आ गया, तो वे कहने लगे : मूसा को जो कुछ दिया गया था क्यों न उसी के समान इसे दिया गया[३१]? क्या उस का इन्कार नहीं कर चुके हैं जो कुछ इस से पहले मूसा को दिया गया था[३२]? कहने लगे : दोनों जादू हैं जो एक दूसरे की मदद करते हैं : और कहने लगे : हम हर एक का इन्कार करते हैं।

48. But when there came unto them the Truth from Our presence, they said: Why is he not given the like of what was given unto Moses? Did they not disbelieve in that which was given unto Moses of old? They say: Two magics that support each other; and they say: Lo! in both we are disbelievers.

فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا
اوتي مثل ما اوتي موسى اولم يكفروا
بما اوتي موسى من قبل قالوا سحران
تظاهرا وقالوا انا بكل كفرون ٤٨

४९. (हे मुहम्मद!) कहो : अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई 'किताब' जो इन दोनों से बढ़ कर मार्ग दिखाने वाली हो कि मैं उस पर चलूँ, यदि तुम सच्चे हो।

49. Say (unto them, O Muhammad): Then bring a Scripture from the presence of Allah that giveth clearer guidance than these two (that) I may follow it, if ye are truthful.

قل فاتوا بكتب من عند الله هو
اهدى منهما اتبعه ان كنتم صدقين ٤٩

२८. अर्थात् तुम उस समय मदयन में नहीं थे जब मूसा (अ०) मदयन पहुँचे हैं और १० वर्ष रह कर वापस हुये हैं। तुम उस समय मदयन में वह काम नहीं कर रहे थे जो आज मक्का में कर रहे हो। तुम जो कुछ बयान कर रहे हो उस का ज्ञान तुम्हें 'वह्य' के द्वारा ही हो सका है। और दूसरा कोई साधन तुम्हें प्राप्त नहीं कि जिस के द्वारा तुम बीते हुये समय की बातें बता सको।

२९. हज़रत इसमाईल अ० और हज़रत शुऐब अ० के बाद लगभग दो हज़ार वर्ष से अरब में कोई 'नबी' नहीं आया था। हाँ इस लम्बी अवधि में बाहर के नबियों जैसे हज़रत मूसा अ०, हज़रत सुलेमान अ० और हज़रत ईसा अ० की शिक्षायें यहाँ अवश्य पहुँची थीं।

३०. अर्थात् जो कुछ वे दुनिया में आगे के लिये कमाई कर चुके हैं।

३१. अर्थात् हज़रत मूसा अ० को जो चमत्कार अल्लाह की ओर से प्रदान हुये थे उसी तरह के चमत्कार हज़रत मुहम्मद सल्ल० को क्यों नहीं दिये गये?

३२. यह उन के आक्षेप का उत्तर दिया जा रहा है कि जब तुम मानते हो कि हज़रत मूसा अ० को चमत्कार मिले थे, तो उन पर 'ईमान' ला कर क्यों न तुम ने उन के दिखाये हुये मार्ग को अपना लिया, 'शिर्क' की गन्दगी में क्यों पड़े रहे?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

.CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. अब यदि वे तुम्हारी माँग पूरी नहीं करते, तो जान लो कि वे केवल अपनी इच्छाओं पर चलते हैं। और उस व्यक्ति से बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह के मार्ग-दर्शन के बिना अपनी इच्छा पर चले। निस्सन्देह अल्लाह ऐसे ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

50. And if they answer thee not, then know that what they follow is their lusts. And who goeth farther astray than he who followeth his lust without guidance from Allah. Lo! Allah guideth not wrongdoing folk.

فان لم يستجيبوا لك فاعلم انما يتبعون اهواءهم ومن اضل ممن اتبع هوىه بغير هدى من الله ان الله لا يهدي القوم الظلمين ⑤⓪

५१. और हम उन तक लगातार बात पहुँचाते रहे हैं, कदाचित् वे ध्यान दें।

51. And now verily We have caused the Word to reach them, that haply they may give heed.

ولقد وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون ⑤①

५२. जिन लोगों को इस से पहले हम ने 'किताब' दी थी, वे इस पर 'ईमान' लाते हैं,

52. Those unto whom We gave the Scripture before it, they believe in it.

الذين اتينهم الكتب من قبله هم به يؤمنون ⑤②

५३. और जब यह (क़ुरआन) उन्हें सुनाया जाता है, तो वे कहते हैं : हम इस पर 'ईमान' लाये। यह निश्चय ही सत्य है हमारे 'रब' की ओर से। हम तो इस के पहले से 'मुस्लिम' हैं[33]।

53. And when it is recited unto them, they say: We believe in it. Lo! it is the Truth from our Lord. Lo! even before it we were of those who surrender (unto Him).

واذا يتلى عليهم قالوا امنا به انه الحق من ربنا انا كنا من قبله مسلمين ⑤③

५४. ये वे लोग हैं जिन्हें उन का बदला दो बार दिया जायेगा, इस लिए कि उन्हों ने 'सब्र' किया और वे भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से (हमारे मार्ग में) ख़र्च करते हैं।

54. These will be given their reward twice over, because they are steadfast and repel ev'l with good, and spend of that wherewith We have provided them.

اولئك يؤتون اجرهم مرتين بما صبروا ويدرءون بالحسنة السيئة ومما رزقنهم ينفقون ⑤④

५५. और जब उन्हों ने (उन की) बकवाद सुनी तो यह कहते हुये उस से किनारा खींच लिया कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम को सलाम है! हम अज्ञानियों के ग्राहक नहीं[34]।

55. And when they hear vanity they withdraw from it and say: Unto us our works and unto you your works. Peace be unto you! We desire not the ignorant.

واذا سمعوا اللغو اعرضوا عنه وقالوا لنا اعمالنا ولكم اعمالكم سلم عليكم لا نبتغي الجهلين ⑤⑤

५६. (हे 'नबी'!) तुम जिसे चाहो मार्ग पर नहीं ला सकते, परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग पर लाता है। और वह मार्ग पाने वालों को भली-भाँति जानता है।

56. Lo! thou (O Muhammad) guidest not whom thou lovest, but Allah guideth whom He will. And He is best aware of those who walk aright.

انك لا تهدي من احببت ولكن الله يهدي من يشاء وهو اعلم بالمهتدين ⑤⑥

३३. हब्शा (Abyssinia) की 'हिजरत' के बाद लगभग २० ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मण्डल वहाँ से मक्का आ कर नबी सल्ल० पर 'ईमान' लाया, यह संकेत इसी घटना की ओर है।

यह मण्डल आप (सल्ल०) से 'मस्जिदे हराम' में मिला और आप (सल्ल०) से कुछ प्रश्न किये। आप ने मण्डल के लोगों को 'इस्लाम' की ओर आमन्त्रित किया और उन्हें क़ुरआन की कुछ 'आयतें' भी पढ़ कर सुनाईं। क़ुरआन सुन कर उन के नेत्रों से आँसू बहने लगे। वे नबी सल्ल० पर 'ईमान' लाये और क़ुरआन के ईश-वाणी होने का समर्थन किया। बाद में अबू जह्ल और उस के कुछ साथियों ने मण्डल के लोगों को रास्ते में जा लिया और उन्हें धिक्कारने लगे कि, "ऐसे मूर्खों का गरोह कभी नहीं देखा। तुम्हारे धर्म वालों ने तो तुम्हें इस लिए भेजा था कि इस व्यक्ति के बारे में सही बात मालूम करो; और उन्हें ठीक-ठीक सूचना दो, और तुम हो कि अभी इस के पास बैठे ही थे कि अपना धर्म त्याग कर उस पर 'ईमान' ले आये।" इस पर मण्डल के लोगों ने कहा : तुम पर सलाम है। हमें क्षमा करो हम तुम्हारे साथ जिहालत नहीं कर सकते हमारे लिए हमारी राह है तुम्हारे लिए तुम्हारी राह है। हम अपने को भलाई से वंचित नहीं रख सकते।

दे० सूरा अल-अनआम आयत २०।

३४. यह संकेत उस बकवाद और बेहूदा बात की ओर है जो अबू जह्ल और उस के साथियों ने हब्शा से आये हुये ईसाई प्रतिनिधि-मण्डल के लोगों से की थी। दे० फ़ुटनोट ३३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७. और वे कहते हैं : यदि हम तुम्हारे साथ इस मार्ग-दर्शन का अनुसरण करें तो अपनी भूमि से उचक लिये जायें[३५]। क्या[३६] हम ने इन्हें जगह नहीं दी एक शान्तिपूर्ण 'हरम' की जिस की ओर हर एक चीज़ की पैदावार खिंची चली आती है, हमारी ओर से रोज़ी? परन्तु उन में से अधिकतर लोग जानते नहीं।

57. And they say: If we were to follow the Guidance with thee we should be torn out of our land. Have We not established for them a sure sanctuary, whereunto the produce of all things is brought (in trade), a provision from Our presence? But most of them know not.

وَقَالُوٓا إِن نَّتَّبِعِ ٱلْهُدَىٰ مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَآ ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ
حَرَمًا ءَامِنًا يُجْبَىٰٓ إِلَيْهِ ثَمَرَٰتُ كُلِّ
شَىْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝٥٧

५८. और कितनी ही बस्तियाँ हम विनष्ट कर चुके हैं जो अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गई थीं। तो (देखो) ये उन के घर (उजाड़ पड़े हुये) हैं, जिन में उन के पीछे कम ही कोई बसा है। और हम ही वारिस हो कर रहे।

58. And how many a community have We destroyed that was thankless for its means of livelihood! And yonder are their dwellings, which have not been inhabited after them save a little. And We, even We, were the inheritors.

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ
فَتِلْكَ مَسَٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّنۢ بَعْدِهِمْ
إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ ٱلْوَٰرِثِينَ ۝٥٨

५९. और तेरा 'रब' बस्तियों को विनष्ट करने वाला नहीं, जब तक कि उन के केन्द्र में एक 'रसूल' न भेज ले, जो उन्हें हमारी 'आयतें' सुनाये। और हम बस्तियों को विनष्ट करने वाले नहीं परन्तु उसी दशा में जब कि वहाँ के लोग ज़ालिम हों।

59. And never did thy Lord destroy the townships, till He had raised up in their mother (-town) a messenger reciting unto them Our revelations. And never did We destroy the townships unless the folk thereof were evil-doers.

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ ٱلْقُرَىٰ حَتَّىٰ
يَبْعَثَ فِىٓ أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ
ءَايَٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى ٱلْقُرَىٰٓ إِلَّا
وَأَهْلُهَا ظَٰلِمُونَ ۝٥٩

६०. जो चीज़ भी तुम्हें दी गई है वह सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री और उस की शोभा है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और अधिक स्थायी है। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

60. And whatsoever ye have been given is a comfort of the life of the world and an ornament thereof; and that which Allah hath is better and more lasting. Have ye then no sense?

وَمَآ أُوتِيتُم مِّن شَىْءٍ فَمَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ
ٱلدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ
وَأَبْقَىٰٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝٦٠

६१. भला वह व्यक्ति जिस से हम ने अच्छा वादा किया है और वह उसे पाने वाला है, उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जिसे हम ने इसी सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री दी हो, फिर वह 'क़ियामत' के दिन उन लोगों में से होने वाला है जो (सज़ा के लिए) उपस्थित किये जायेंगे?

61. Is he whom We have promised a fair promise which he will find (true) like him whom We suffer to enjoy awhile the comfort of the life of the world, then on the Day of Resurrection he will be of those arraigned?

أَفَمَن وَعَدْنَٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَٰقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَٰهُ مَتَٰعَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا
ثُمَّ هُوَ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ مِنَ ٱلْمُحْضَرِينَ ۝٦١

६२. और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा[३७]: कहाँ हैं मेरे वे सहभागी[३८] जिन का तुम गुमान रखते थे?

62. On the Day when He will call unto them and say: Where are My partners whom ye imagined?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ
ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝٦٢

३५. अर्थात् हमें तो 'इस्लाम' धर्म के अपनाने में बड़ा घाटा दीख पड़ता है। यदि हम तुम्हारी बात मानते हैं तो सारे अरब के लोग हमारे वैरी हो जायेंगे। 'काबा' का प्रबन्ध जो हमारे हाथों में है वह हम से छिन जायेगा। विभिन्न क़बीलों से हमारा जो समझौता है वह बाक़ी नहीं रहेगा फिर हमारे व्यापार को बड़ा धक्का लगेगा। पितृ-धर्म के नाते हमारा जो आदर-सत्कार होता है उसे जो हानि पहुँचेगी वह अलग है।

यहाँ यह बात सामने रहनी चाहिए कि उस समय क़बीला 'क़ुरैश' को अरब में ऊँचा स्थान प्राप्त था; अरब के समस्त क़बीले 'क़ुरैश' का आदर करते थे। व्यापार में भी इस क़बीले ने बड़ी उन्नति कर ली थी। रूम और ईरान के राजनीतिक संघर्ष के कारण इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान मिल गया था। दे० सूरा अल-अनकबूत आयत ६७।

३६. यहाँ से उस आक्षेप का उत्तर दिया जा रहा है जो उन के 'ईमान' लाने की राह में सब से बड़ी रुकावट बना हुआ था।

३७. दे० आयत ७४।

३८. दे० हा० मीम० अस-सजदा आयत ४७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३. बात जिन पर साबित हो चुकी वे[३९] कहेंगे : हमारे 'रब' ! यही वे लोग हैं जिन्हें हम ने बहकाया था। इन्हें हम ने बहकाया जैसे हम स्वयं बहके थे। हम आप के आगे (अपने) बरी होने की घोषणा करते हैं[४०]। ये हमारी बन्दगी नहीं करते थे[४१]।

६४. और कहा जायेगा : पुकारो अपने (ठहराये हुये) सहभागियों को। ये उन्हें पुकारेंगे, तो वे इन्हें कोई उत्तर न देंगे, और ये यातना देख लेंगे। क्या ही अच्छा होता कि ये मार्ग पाये होते !

६५. और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा : जो 'रसूल' भेजे गये थे उन्हें तुम ने क्या उत्तर दिया था[४२] ?

६६. तो उस दिन उन्हें बातें न सूझेंगी वे फिर परस्पर एक-दूसरे से न पूछेंगे।

६७. हाँ जिस किसी ने 'तौबा' कर ली और 'ईमान' लाया और अनुकूल कर्म किया, तो आशा है कि वह सफलता प्राप्त करने वालों में से होगा।

६८. और तेरा 'रब' पैदा करता है जो कुछ चाहता है और (अपने काम के लिए जिसे चाहता है) चुन लेता है। यह निर्वाचन इन लोगों के हाथ में नहीं है[४३]। महिमावान् है अल्लाह और उच्च है उस 'शिर्क' से जो ये लोग करते हैं।

६९. और तेरा 'रब' जानता है जो कुछ इन के सीने छिपाते हैं, और जो कुछ ये व्यक्त करते हैं।

७०. और वही अल्लाह है; उस के सिवा कोई 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं। इस लोक और 'आख़िरत' में उसी के लिए प्रशंसा है, और उसी के लिए शासन है, और उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा।

63. Those concerning whom the Word will have come true will say: Our Lord! These are they whom we led astray. We led them astray even as we ourselves were astray. We declare our innocence before Thee: us they never worshipped.

64. And it will be said: Cry unto your (so-called) partners (of Allah). And they will cry unto them, and they will give no answer unto them, and they will see the Doom. Ah, if they had but been guided!

65. And on the Day when He will call unto them and say: What answer gave ye to the messengers?

66. On that day (all) tidings will be dimmed for them, nor will they ask one of another.

67. But as for him who shall repent and believe and do right, he haply may be one of the successful.

68. Thy Lord bringeth to pass what He willeth and chooseth. They have never any choice. Glorified be Allah and exalted above all that they associate (with Him)!

69. And thy Lord knoweth what their breasts conceal, and what they publish.

70. And He is Allah; there is no god save Him. His is all praise in the former and the latter (state), and His is the command, and unto Him ye will be brought back

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۚ أَغْوَيْنٰهُمْ
كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوٓا
إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ٦٣
وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ
لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ٦٤
وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَآ أَجَبْتُمُ
الْمُرْسَلِينَ ٦٥
فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ
لَا يَتَسَآءَلُونَ ٦٦
فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صٰلِحًا فَعَسٰٓى أَنْ يَكُونَ مِنَ
الْمُفْلِحِينَ ٦٧
وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا
كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُونَ ٦٨
وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ٦٩
وَهُوَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ
فِي الْأُولٰى وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٧٠

३९. इस से अभिप्रेत वे 'शैतान' हैं जिन्हें दुनिया में अल्लाह का शरीक ठहराया गया होगा; जिन की बात के मुक़ाबले अल्लाह और रसूल की बात का तिरस्कार किया गया होगा। ये 'शैतान' चाहे 'जिन्नों' में से रहे हों चाहे मनुष्यों में से हों।

४०. अर्थात् हम इन के ज़िम्मेदार नहीं हैं; गुमराह तो ये लोग स्वयं हुये हैं हम ने तो केवल इन्हें गुमराही की ओर बुलाया था असत्य-मार्ग को तो इन्हों ने स्वेच्छापूर्वक स्वयं अपनाया। हमें इस का अधिकार ही कहाँ प्राप्त था कि बलपूर्वक हम ने इन्हें पथ भ्रष्ट किया हो।

४१. ये स्वयं अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने थे, ये हमारी दासता नहीं करते थे।

४२. दे० सूरा अल-माइदा आयत १०९।

४३. दे० आयत ७०, ८८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१. कहो : क्या तुम ने सोचा, यदि अल्लाह 'क़ियामत' के दिन तक तुम पर सदैव के लिए रात कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन 'इलाह' (पूज्य) है जो तुम्हें प्रकाश ला दे ? क्या तुम सुनते नहीं हो ?

71. Say: Have ye thought, if Allah made night everlasting for you till the Day of Resurrection, who is a God beside Allah who could bring you light? Will ye not then hear?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمُ ٱلَّيْلَ
سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ
ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَآءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ٧١

७२. कहो : क्या तुम ने सोचा यदि अल्लाह 'क़ियामत' के दिन तक तुम पर सदैव के लिए दिन कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन 'इलाह' है जो तुम्हें रात ला दे जिस में तुम चैन पाओ ? तो क्या तुम्हें सूझता नहीं ?

72. Say: Have ye thought, if Allah made day everlasting for you till the Day of Resurrection, who is a God beside Allah who could bring you night wherein ye rest? Will ye not then see?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمُ
ٱلنَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ مَنْ إِلَٰهٌ
غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ
أَفَلَا تُبْصِرُونَ ٧٢

७३. और उस ने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाये, ताकि तुम उस में चैन पाओ, और (दिन को) अपने 'रब' का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ ।

73. Of His mercy hath He appointed for you night and day, that therein ye may rest, and that ye may seek His bounty, and that haply ye may be thankful.

وَمِن رَّحْمَتِهِۦ جَعَلَ لَكُمُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ
لِتَسْكُنُوا۟ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٧٣

७४. और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा : कहाँ हैं वे मेरे सहभागी जिन का तुम गुमान रखते थे ?

74. And on the Day when He shall call unto them and say: Where are My partners whom ye pretended?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ
ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ٧٤

७५. और हम हर समुदाय में से एक गवाह[४४] निकाल लायेंगे फिर कहेंगे : लाओ अपना प्रमाण । तब वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और जो झूठ वे गढ़ते थे, वह सब उन से गुम हो जायेगा ।

75. And We shall take out from every nation a witness and We shall say: Bring your proof. Then they will know that Allah hath the Truth, and all that they invented will have failed them.

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا
هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ فَعَلِمُوٓا۟ أَنَّ ٱلْحَقَّ لِلَّهِ
ع وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ٧٥

७६. निस्सन्देह क़ारून मूसा की जाति में से था[४५], फिर उस ने उन पर[४६] अत्याचार किया और हम ने उसे इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उन की कुञ्जियों से एक पूरा जत्था शक्तिशालियों का थका जाता था । जब उस से उस की जाति वालों ने कहा : फूल न जा, निश्चय ही अल्लाह फूलने वालों को पसन्द नहीं करता ।

76. Now Korah was of Moses' folk, but he oppressed them; and We gave him so much treasure that the stores thereof would verily have been a burden for a troop of mighty men. When his own folk said unto him: Exult not; lo! Allah loveth not the exultant:

إِنَّ قَٰرُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ
عَلَيْهِمْ وَءَاتَيْنَٰهُ مِنَ ٱلْكُنُوزِ مَآ إِنَّ
مَفَاتِحَهُۥ لَتَنُوٓأُ بِٱلْعُصْبَةِ أُو۟لِى ٱلْقُوَّةِ
إِذْ قَالَ لَهُۥ قَوْمُهُۥ لَا تَفْرَحْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا
يُحِبُّ ٱلْفَرِحِينَ ٧٦

७७. और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है उस के द्वारा 'आख़िरत' का घर बनाने का उपाय कर और संसार में से अपना हिस्सा मत भूल, एहसान कर जिस प्रकार अल्लाह ने तेरे साथ एहसान किया है, और धरती में बिगाड़ का इच्छुक न हो; निस्सन्देह अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसन्द नहीं करता ।

77. But seek the abode of the Hereafter in that which Allah hath given thee and neglect not thy portion of the world, and be thou kind even as Allah hath been kind to thee, and seek no corruption in the earth; lo! Allah loveth not corruptors.

وَٱبْتَغِ فِيمَآ ءَاتَىٰكَ ٱللَّهُ ٱلدَّارَ ٱلْءَاخِرَةَ وَلَا
تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَأَحْسِن كَمَآ
أَحْسَنَ ٱللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ ٱلْفَسَادَ فِى
ٱلْأَرْضِ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْمُفْسِدِينَ ٧٧

४४. दे० सूरा मरयम आयत ६९ ।
४५. दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) ६ : १८-२१ ।
४६. अर्थात् अपनी जाति के लोगों पर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८. उस ने कहा : यह तो मुझे केवल ज्ञान के कारण दिया गया है जो मुझे प्राप्त है—क्या उस ने नहीं जाना कि अल्लाह उस से पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुका है उन लोगों को जो शक्ति में उस से बहुत अधिक प्रबल थे और जत्थे में बढ़ कर थे? और अपराधियों से तो उन के गुनाह पूछे नहीं जाते।

78. He said: I have been given it only on account of knowledge I possess. Knew he not that Allah had destroyed already of the generations before him men who were mightier than him in strength and in respect of following? The guilty are not questioned of their sins.

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي ۚ
أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن
قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ
قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَن
ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

७९. फिर वह (एक दिन) अपनी जाति वालों के सामने अपने पूरे ठाठ-बाट में निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के चाहने वाले थे कहने लगे : क्या ही अच्छा होता कि जैसा कुछ क़ारून को दिया गया है हमारे पास भी होता! वह तो बड़ा भाग्यवान् है।

79. Then went he forth before his people in his pomp. Those who were desirous of the life of the world said: Ah, would that unto us had been given the like of what hath been given unto Korah! Lo! he is lord of rare good fortune.

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ
يُرِيدُونَ الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا يَٰلَيْتَ لَنَا
مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ
عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾

८०. परन्तु जिन्हें ज्ञान दिया गया था उन लोगों ने कहा : अफ़सोस तुम पर! अल्लाह का प्रतिदान उत्तम है उस व्यक्ति के लिए जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म करे—और यह बात 'सब्र' करने वालों को ही प्राप्त होती है।

80. But those who had been given knowledge said: Woe unto you! The reward of Allah for him who believeth and doth right is better, and only the steadfast will obtain it.

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ۚ
وَلَا يُلَقَّىٰهَا إِلَّا الصَّٰبِرُونَ ﴿٨٠﴾

८१. फिर हम ने उसे और उस के घर को धरती में धँसा दिया। फिर उस का कोई गरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उस की मदद करता, और न वह आप ही अपनी मदद कर सका।

81. So We caused the earth to swallow him and his dwelling-place. Then he had no host to help him against Allah, nor was he of those who can save themselves.

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ
لَهُ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ﴿٨١﴾

८२. और अब वे लोग जो कल उस जैसा होने की कामना कर रहे थे कहने लगे : अरे बात तो यह है! अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है। यदि अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी धँसा देता। अरे बात तो यह है! 'काफ़िर' सफल नहीं हुआ करते।

82. And morning found those who had coveted his place but yesterday crying: Ah, welladay! Allah enlargeth the provision for whom He will of His slaves and straiteneth it (for whom He will). If Allah had not been gracious unto us He would have caused it to swallow us (also). Ah, welladay! the disbelievers never prosper.

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ
يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا
أَن مَّنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُ
لَا يُفْلِحُ الْكَٰفِرُونَ ﴿٨٢﴾ ع

८३. वह आख़िरत का घर[४७] हम उन लोगों के लिए ठहरा देंगे जो न तो धरती में अपनी बड़ाई चाहते हैं, और न बिगाड़[४८]। और अन्तिम परिणाम तो उन ही लोगों के हक़ में है जो डरने वाले हैं।

83. As for that Abode of the Hereafter We assign it unto those who seek not oppression in the earth, nor yet corruption. The sequel is for those who ward off (evil).

تِلْكَ الدَّارُ الْءَاخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ
لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ
وَالْعَٰقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾

४७. अर्थात् 'जन्नत'।

४८. अर्थात् जो न तो दुनिया में सरकश और अभिमानी बन कर रहना चाहते हैं और न भूमि में बिगाड़ और अशान्ति फैलाना चाहते हैं। जो शान्तिप्रिय और लोक-हित के इच्छुक होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. जो कोई भलाई ले कर आयेगा, उस के लिए उस से उत्तम (बदला) है; और जो कोई बुराई ले कर आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुराइयाँ की होंगी वही बदला दिया जायेगा जो कुछ वे करते थे।

84. Whoso bringeth a good deed, he will have better than the same; while as for him who bringeth an ill deed, those who do ill deeds will be requited only what they did.

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ
عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

८५. (हे 'नबी'!) जिस (अल्लाह) ने इस 'क़ुरआन' को तुम्हारे ज़िम्मे किया है[४९] वह तुम्हें एक बहुत ही उत्तम परिणाम की ओर पलटाने वाला है। कहो : मेरा 'रब'! उसे भली-भाँति जानता है जो मार्ग-दर्शन ले कर आया है और (उसे भी) जो खुली गुमराही में पड़ा है।

85. Lo! He who hath given thee the Qur'an for a law will surely bring thee home again.* Say: My Lord is best aware of him who bringeth guidance and him who is in error manifest.

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ
إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَاءَ
بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾

८६. (हे 'नबी'!) तुम इस की आशा नहीं रखते थे कि तुम्हारी ओर 'किताब' उतारी जायेगी; यह तो बस तुम्हारे 'रब' की दयालुता है, अतः तुम 'काफ़िरों' के पृष्ठ-पोषक न होना।

86. Thou hadst no hope that the Scripture would be inspired in thee; but it is a mercy from thy Lord, so never be a helper to the disbelievers.

وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ
ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

८७. और ऐसा न होने पाये कि वे तुम्हें अल्लाह की 'आयतों' से बाज़ रक्खें जब कि वे तुम्हारी ओर उतारी जा चुकी हों; अपने 'रब' की ओर (लोगों को) बुलावा दो, और कदापि 'मुश्रिकों' में से न हो।

87. And let them not divert thee from the revelations of Allah after they have been sent down unto thee; but call (mank nd) unto thy Lord, and be not of those who ascribe partners (unto Him).

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ
أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾

८८. और अल्लाह के साथ किसी दूसरे 'इलाह' को न पुकारो। उस के सिवा कोई 'इलाह' नहीं। हर चीज़ नश्वर है सिवाय उस के स्वरूप के उसी का शासन है, और तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है।

88. And cry not unto any other god along with Allah. There is no god save Him. Everything will perish save His countenance. His is the command, and unto Him ye will be brought back.

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

४९; अर्थात् तुम्हें क़ुरआन की ज़िम्मेदारी सौंपी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९—अल—अनकबूत

(परिचय)

नाम (The Title)

'अनकबूत' मकड़ी (Spider) को कहते हैं। इस सूरा में एक जगह उन लोगों की मिसाल मकड़ी और उस के घर से दी गई है जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों का आश्रय लेते और उन्हें अपना संरक्षक समझते हैं। इस सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अल-अनकबूत' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरा उस समय उतरी है जब कि धर्म-विरोधी लोग 'ईमान वालों' को तरह-तरह से सता रहे थे। मुसलमानों को शारीरिक एवं मानसिक हर प्रकार की यातनाओं और कष्टों का सामना करना पड़ रहा था। सूरा की कुछ 'आयतों'[1] से साफ़ पता चलता है कि यह सूरा हब्शा (Abyssinia) की 'हिजरत' से कुछ पहले अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रिय विषय तथा वार्त्तायें

यह सूरा 'जिहाद', 'हिजरत', आज़माइश और विजय की सूचना आदि विषयों पर आधारित है। जैसा कि ऊपर यह बात आ चुकी है कि यह सूरा उस समय उतरी है जब कि 'ईमान' वालों को 'मुश्रिक' लोग तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुँचा रहे थे। विरोधी गरोह के लोग 'ईमान' वालों पर जो अत्याचार कर रहे थे उस का मूल कारण वह 'शिर्क' था जिस में वे पड़े हुये थे। यही 'शिर्क' उन्हें परस्पर जोड़े हुये था। उनका पारस्परिक सम्बन्ध और मित्रता 'शिर्क' पर अवलम्बित थी। 'शिर्क' के रोग में वे बुरी तरह इस लिए ग्रस्त थे कि उन का 'आख़िरत' पर 'ईमान' न था। वे इस बात को नहीं मानते थे कि उन्हें एक दिन अपने 'रब' के सामने हाज़िर होना है। उनका वास्तविक रोग यही था। जब किसी का इस पर 'ईमान' ही न हो कि उसे एक दिन अपने 'रब' से मिलना है तो स्वभावत: वह निरंकुश और स्वेच्छाचारी बन कर रहेगा। फिर कोई चीज़ न होगी जो तुच्छ इच्छाओं के पीछे चलने और बुरे कर्मों से अपनें चरित्र को दूषित करने से उस को रोक सके। समाज और समाज के नियमों और मर्यादाओं का आदर भी मनुष्य उसी समय करता है जब वास्तव में वह अल्लाह से डरता हो और उसे विश्वास हो कि एक दिन उसे अल्लाह के सामने खड़ा होना होगा जो सब कुछ जानने वाला और 'हिकमत' वाला है। 'मुश्रिकों' ने अपने अन्तिम परिणाम की ओर से आँखें बन्द कर ली थीं अपने आप को तुच्छ इच्छाओं और वासनाओं के समर्पित कर दिया था। उन की जीवन-चर्या इस के अतिरिक्त और कुछ न थी कि वे बिगड़े हुये समाज और अपने पूर्वजों का अन्धानुकरण किये चले जा रहे थे। वे व्यर्थ कामों में अपना समय नष्ट कर रहे थे, उन्हें केवल इस संसार के बाह्य रूप का ज्ञान था; परिणाम से वे बिल्कुल बेख़बर थे।

प्रस्तुत सूरा में विभिन्न जातियों के क़िस्से बयान हुये हैं। उन क़िस्सों से मालूम होता है कि 'शिर्क' एक ऐसी बुराई है जो आदमी को नाना प्रकार की बुराइयों की ओर ले जाती है। इन क़िस्सों से पता चलता है 'शिर्क' और 'आख़िरत' के इन्कार में गहरा सम्बन्ध है। जिन जातियों के क़िस्से इस सूरा में बयान हुये हैं वे 'मुश्रिक' थीं और आख़िरत का भी इन्कार करती थीं। इन क़िस्सों में 'ईमान

१. दे० आयत ५६ से ६० तक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वालों' के लिए वड़ी ढारस है। इन में इस की ओर संकेत किया गया है कि अल्लाह 'ईमान वालों' का सहायक है वह उन की अवश्य सहायता करेगा। यदि 'काफ़िरों' की पकड़ नहीं हो रही है तो इस से यह नहीं समझना चाहिए कि उन की पकड़ कभी होगी ही नहीं। उन जातियों के अवशेषों को देखो जिन्हें अल्लाह की यातना ने आ घेरा और वे विनष्ट हो कर रह गईं। इन क़िस्सों से यह बात भी मालूम होती है कि लोगों को छोड़ कर अल्लाह की ओर 'हिजरत' करना यह नतीजा होता है 'सब्र' का और अल्लाह पर विश्वास रखने और उस पर भरोसा करने का। और 'हिजरत' करने का अर्थ यह है कि लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचाने की जो ज़िम्मेदारी थी वह पूरी हो चुकी; अब सत्य से मुँह मोड़ने वाले अल्लाह के यहाँ यह नहीं कह सकते कि हमें सत्य की ओर बुलाने वाला कोई आया ही नहीं यदि हम सत्य पर नहीं चले तो इस में हमारा कोई दोष नहीं है।

प्रस्तुत 'सूरा' में यह आदेश दिया गया है कि माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो परन्तु यदि वे तुम पर दबाव डालें कि अल्लाह के साथ 'शिर्क' करो तो इस में उन की बात न मानो[1]। यह बात सूरा लुक़मान की आयत १५ में भी दोहराई गई है। ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि जब हज़रत सअ्द बिन वक़्क़ास रज़ि० 'ईमान' ले आये तो उस समय आप की आयु १८–१९ वर्ष से अधिक न थी। उन की माता को जब मालूम हुआ कि बेटा मुसलमान हो गया, तो उस ने आप से कहा कि जब तक तू मुहम्मद (सल्ल०) का इन्कार नहीं करता न तो मैं कुछ खाऊँगी और न पीऊँगी और न छाया में बैठूँगी। माता की आज्ञा मानने का आदेश तो अल्लाह ने दिया है यदि मेरी बात नहीं मानेगा तो तू अल्लाह का भी अवज्ञाकारी होगा। हज़रत सअ्द नबी 'सल्ल०' की सेवा में पहुँचे और सारा क़िस्सा आप से बयान किया। इस पर इस सूरा की 'आयत' ८ अवतीर्ण हुई। माँ-बाप का यह हक़ तो अवश्य है कि औलाद उन की सेवा और आदर करे; परन्तु उन्हें इसका हक़ कदापि प्राप्त नहीं कि वे इस पर विवश करने लगें कि आदमी अपनी आँखें बन्द कर के अपने ज्ञान के विरुद्ध उन के पीछे चलता रहे। औलाद को यदि ज्ञात हो जाये कि उस के माता-पिता का धर्म सत्य के प्रतिकूल है तो उस का कर्त्तव्य है कि वह अपने माता-पिता के धर्म को त्याग कर सत्य को ग्रहण करे। माता-पिता का हक़ अपनी जगह पर है परन्तु सच्चाई का हक़ सब से बढ़ कर है।

जो लोग नये-नये 'मुस्लिम' हुये थे उन से सत्य के विरोधी 'काफ़िर' कहते थे कि तुम मुहम्मद (सल्ल०) का साथ छोड़ दो, हमारी बात मानो, जो कुछ अज़ाब होगा उसे हम अपने ऊपर ले लेंगे। यदि अल्लाह पकड़ेगा तो हम कह देंगे कि इस में इन का कोई दोष नहीं है, इन के बदले हमें 'जहन्नम' की अग्नि में डाल दिया जाये। इन का 'ईमान' हमने छुड़वाया था। धर्म-विरोधियों की इस बात का उत्तर देते हुये कहा गया है कि वे अपनी बात में झूठे हैं। वे 'क़ियामत' के दिन दूसरों का बोझ नहीं उठा सकते। किसी पर से यातना टाल देना उन के अधिकार में नहीं। हर एक अपने कर्मों का उत्तरदायी है। परन्तु ऐसे 'काफ़िरों' को दोहरी यातना अवश्य दी जायेगी[2]।

'ईमान' वालों को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि अल्लाह की धरती विशाल है यदि तुम 'काफ़िरों' के अत्याचारों का सहन नहीं कर सकते तो घर-बार छोड़ कर निकल जाओ; और वहाँ जा कर रहो जहाँ तुम अपने 'ईमान' की रक्षा कर सको और जहाँ अल्लाह की बन्दगी करने में कोई रुकावट न हो।

इस 'सूरा' में 'तौहीद' और 'आख़िरत' की पुष्टि करते हुये 'शिर्क' का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है ताकि 'मुश्रिक' लोग यदि सँभलना चाहें तो सँभल जायें। वे भली-भाँति ये जान लें कि अल्लाह का 'रसूल' जिस सच्चाई की ओर उन्हें बुला रहा है उस की पुष्टि प्राचीन जातियों के इतिहास से तो होती ही है विश्व की प्रत्येक वस्तु भी उसी की साक्षी है।

१. दे० आयत ८।
२. दे० १० आयत १२–१३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल—अनकबूत

(मक्का में उतरी—'आयतें' ६९)

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. अलिफ़० लाम० मीम०[1]

२. क्या लोगों ने समझ रक्खा है कि वे बस इतना कहने से छोड़ दिये जायेंगे कि, "हम 'ईमान' लाये", और उन्हें आज़माया न जायेगा ?

३. हालाँकि हम उन लोगों को आज़मा चुके हैं जो इन से पहले थे। अल्लाह तो उन लोगों को जान कर रहेगा[2] जो सच्चे हैं, और वह झूठों को भी जान कर के रहेगा।

४. क्या वे लोग जो बुरे कर्म करते हैं यह समझ बैठे हैं कि वे हम से बाज़ी ले जायेंगे ? बुरा है जो हुक्म ये लगा रहे हैं।

५. जो कोई अल्लाह से मिलने की आशा रखता हो तो अल्लाह का नियत समय आने ही वाला है, और वह सुनने वाला और जानने वाला है।

६. और जिस ने कष्ट किया वह अपने ही लिए कष्ट करेगा, निस्सन्देह अल्लाह सारे संसार से अपेक्षारहित है।

७. और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, हम उन की बुराइयों को उन से दूर कर देंगे और उन्हें उन के अच्छे कामों का बदला देंगे।

८. और हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है; परन्तु यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा सहभागी ठहराये जिस के बारे में तुझे कोई ज्ञान नहीं है, तो उन का कहना न मानना। मेरी ही ओर तुम्हें पलट कर आना है फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते थे[3]।

THE SPIDER

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Alif Lam. Mim.

2. Do men imagine that they will be left (at ease) because they say, We believe, and will not be tested with affliction?

3. Lo! We tested those who were before you, Thus Allah knoweth those who are sincere, and knoweth those who feign.

4. Or do those who do ill-deeds imagine that they can outstrip Us? Evil (for them) is that which they decide.

5. Whoso looketh forward to the meeting with Allah (let him know that) Allah's reckoning is surely nigh, and He is the Hearer, the Knower.

6. And whosoever striveth, striveth only for himself, for lo! Allah is altogether Independent of (His) creatures.

7. And as for those who believe and do good works, We shall remit from them their evil deeds and shall repay them the best that they did.

8. We have enjoined on man kindness to parents; but if they strive to make thee join with Me that of which thou hast no knowledge, then obey them not. Unto Me is your return and I shall tell you what ye used to do.

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ①
اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ
يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ②
وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ
لَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ③
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ
اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ④
مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ
اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ⑤
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ
لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ⑥
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑦
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ
وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ⑧

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १।
२. दे० आयत १०-११।
३. इसी प्रकार यदि हम को यह बात मालूम हो जाये कि हमारे पूर्वजों ने जो धर्म अपनाया था वह सत्य-धर्म न था तो हमें उसे छोड़ कर सत्य-धर्म का ही पालन करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, हम उन्हें अच्छे लोगों में दाखिल करेंगे।

9. And as for those who believe and do good works, We verily shall make them enter in among the righteous.

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾

१०. और लोगों में कोई तो ऐसा है कि जो कहता है हम 'ईमान' लाये अल्लाह पर, परन्तु जब वह अल्लाह के बारे में सताया गया, तो उस ने लोगों की (डाली हुई) आज़माइश को अल्लाह की यातना जैसी ठहरा लिया; और यदि तेरे 'रब' की ओर से मदद आ गई, तो कहेगा : "हम तो तुम्हारे साथ थे।" क्या जो कुछ दुनिया वालों के सीनों में[४] है उसे अल्लाह भली-भाँति जानता नहीं।

10. Of mankind is he who saith: We believe in Allah, but if he be made to suffer for the sake of Allah, he mistaketh the persecution of mankind for Allah's punishment; and then, if victory cometh from thy Lord, will say: Lo! we were with you (all the while). Is not Allah best aware of what is in the bosoms of (His) creatures?

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾

११. और अल्लाह तो उन लोगों को जान कर के रहेगा जो 'ईमान' लाये, और वह 'मुनाफ़िक़ों' को भी जान कर के रहेगा[५]।

11. Verily Allah knoweth those who believe, and verily He knoweth the hypocrites.

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾

१२. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया उन्हों ने 'ईमान' लाने वालों से कहा : तुम हमारे मार्ग पर चलो और तुम्हारी ख़ताओं को हम अपने ऊपर ले लेंगे[६]। हालाँकि वे उन की ख़ताओं में से कुछ भी अपने ऊपर लेने वाले नहीं हैं। निश्चय ही वे झूठे हैं।

12. Those who disbelieve say unto those who believe: Follow our way (of religion) and we verily will bear your sins (for you): They cannot bear aught of their sins. Lo! they verily are liars.

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

१३. हाँ अवश्य वे अपने बोझ भी उठायेंगे और अपने बोझों के साथ दूसरे बोझ भी;[७] और 'क़ियामत' के दिन अवश्य उन से उन के बारे में पूछा जायेगा जो कुछ कि झूठ वे गढ़ते रहे हैं।

13. But they verily will bear their own loads and other loads besides their own, and they verily will be questioned on the Day of Resurrection concerning that which they invented.

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾ ع

१४. और हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर भेजा, और वह पचास साल कम एक हज़ार वर्ष उन में रहा;[८] फिर उन लोगों को तूफ़ान ने आ लिया, इस दशा में कि वे ज़ालिम थे।

14. And verily We sent Noah (as Our messenger) unto his folk, and he continued with them for a thousand years save fifty years; and the flood engulfed them, for they were wrongdoers.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾

४. अर्थात् दिलों में।

५. अर्थात् अल्लाह से कुछ भी छुप नहीं सकता। अच्छे-बुरे सभी लोग उस के सामने होते हैं।

६ उन के इस कथन का अर्थ यह है कि ये 'क़ियामत', 'जहन्नम' और 'जन्नत' की बातें सब ढकोसला हैं। न तो हमें मर कर पुनः जीवित होना है और न हमें अल्लाह के सामने अपने कर्मों का कोई हिसाब देना है। वे 'ईमान' वालों से कहते थे कि यदि कोई और जीवन है भी तो हम तुम्हारे गुनाहों को अपनी गरदन पर ले लेंगे; तुम पितृ-धर्म की ओर पलट आओ। अपने बाप-दादा के धर्म को न छोड़ो।

७. अर्थात् वे दूसरों का बोझ तो हल्का न कर सकेंगे परन्तु दोहरा बोझ उठाने से वे बच भी नहीं सकते। उन पर अपनी गुमराही का बोझ तो होगा ही दूसरे लोगों को गुमराह करने का बोझ भी उन की गरदन पर लादा जायेगा (दे० सूरा अन-नह्ल आयत २५)।

८. हज़रत नूह अ० को अल्लाह ने दीर्घ आयु प्रदान की थी। अल्लाह सर्वशक्तिमान् है जो चाहे कर सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. फिर हमने उसे और नौका वालों को बचा लिया, और उसको[9] दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया[10]।

15. And We rescued him and those with him in the ship, and made of it a portent for the peoples.

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَصْحَٰبَ ٱلسَّفِينَةِ وَجَعَلْنَٰهَآ
ءَايَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ⑮

१६. और इबराहीम को (भेजा) जब कि उस ने अपनी जाति वालों से कहा : अल्लाह की 'इबादत' करो, और उस से डरो; यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है यदि तुम्हें ज्ञान हो।

16. And Abraham! (Remember) when he said unto his folk: Serve Allah, and keep your duty unto Him; that is better for you if ye did but know.

وَإِبْرَٰهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ⑯

१७. तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों को पूज रहे हो, और तुम एक झूठ रचते हो। वास्तव में अल्लाह को छोड़ कर तुम जिन्हें पूजते हो वे तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं। अतः अल्लाह ही के यहाँ रोज़ी चाहो, और उसकी 'इबादत' करो, और उस के कृतज्ञ बनो। उसी की ओर तुम्हें लौटना होगा।

17. Ye serve instead of Allah only idols, and ye only invent a lie. Lo! those whom ye serve instead of Allah own no provision for you. So seek your provision from Allah, and serve Him, and give thanks unto Him, (for) unto Him ye will be brought back.

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْثَٰنًا وَ
تَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ ٱلَّذِينَ تَعْبُدُونَ
مِن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا
فَٱبْتَغُوا۟ عِندَ ٱللَّهِ ٱلرِّزْقَ وَٱعْبُدُوهُ
وَٱشْكُرُوا۟ لَهُۥٓ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑰

१८. और यदि तुम झुठलाते हो, तो तुम से पहले बहुत से समुदाय झुठला चुके हैं। और 'रसूल' पर साफ़-साफ़ पहुँचा देने के अतिरिक्त कोई ज़िम्मेदारी नहीं है—

18. But if ye deny, then nations have denied before you. The messenger is only to convey (the Message) plainly.

وَإِن تُكَذِّبُوا۟ فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى ٱلرَّسُولِ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ
ٱلْمُبِينُ ⑱

१९. "क्या इन लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह कैसे पहली बार पैदा करता है, फिर उस की पुनरावृत्ति करता है? निश्चय ही यह (पुनरावृत्ति) अल्लाह के लिए सरल है[12]।

19. See they not how Allah produceth creation, then reproduceth it? Lo! for Allah that is easy.

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ كَيْفَ يُبْدِئُ ٱللَّهُ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُۥٓ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ⑲

२०. कहो : धरती में चलो-फिरो और देखो कि उस ने कैसे पहली बार पैदा किया है, फिर अल्लाह ही दूसरी बार उठायेगा। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

20. Say (O Muhammad): Travel in the land and see how He originated creation, then Allah bringeth forth the later growth. Lo! Allah is Able to do all things.

قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ
بَدَأَ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ ٱللَّهُ يُنشِئُ ٱلنَّشْأَةَ ٱلْءَاخِرَةَ
إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ⑳

२१. वह जिसे चाहे यातना दे और जिस पर चाहे दया करे, और उसकी ओर तुम्हें पलटना होगा।

21. He punisheth whom He will and showeth mercy unto whom He will, and unto Him ye will be turned.

يُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَآءُ
وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ㉑

९. अर्थात् उस नौका को या उस घटना को।

१०. दे० सूरा अल-क़मर आयत १३–१५।

११. यहाँ से क़िस्से को छोड़ कर अल्लाह ने मक्का के काफ़िरों को चेतावनी दी है कि यदि वे अपना भला चाहते हैं तो अपनी बुरी नीति को त्याग कर सच्चाई को ग्रहण करें।

१२. अर्थात् जब तुम पहली बार पैदा होने का निरीक्षिण कर रहे हो, तो फिर दोबारा पैदा होने को असम्भव कैसे समझते हो? जिस तरह उस ने पहली बार पैदा किया है उसी तरह दोबारा पैदा करने का सामर्थ्य भी उसे प्राप्त है। दोबारा पैदा करने का अर्थ पुनरावृत्ति के सिवा आख़िर और क्या है जो तुम्हें असम्भव प्रतीत हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२· तुम न तो धरती में बच निकलने वाले हो और न आकाश में,[13] और अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक—मित्र है और न कोई सहायक[14]।

22. Ye cannot escape (from Him) in the earth or in the sky, and beside Allah there is for you no friend nor helper.

وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فِى
ٱلسَّمَآءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن
وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

२३. जिन लोगों ने अल्लाह की 'आयतों' का और उस से मिलने का इन्कार किया, वे मेरी दयालुता से निराश हो चुके हैं। और उन के लिए दुखदायिनी यातना है—

23. Those who disbelieve in the revelations of Allah and in (their) meeting with Him, such have no hope of My mercy. For such there is a painful doom.

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ وَلِقَآئِهِۦٓ
أُو۟لَـٰٓئِكَ يَئِسُوا۟ مِن رَّحْمَتِى وَأُو۟لَـٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

२४. [15]फिर उस की जाति वालों का उत्तर इस के सिवा और कुछ न था कि उन्हों ने कहा : "क़त्ल कर दो इसे" या "जला दो इसे"। फिर अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाते हैं।

24. But the answer of his folk was only that they said: "Kill him" or "Burn him." Then Allah saved him from the fire. Lo! herein verily are portents for folk who believe.

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا۟
ٱقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَىٰهُ ٱللَّهُ مِنَ
ٱلنَّارِ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

२५. और उस ने कहा : तुम ने अल्लाह को छोड़ कर बस कुछ मूर्तियों को ग्रहण कर लिया है, सांसारिक जीवन में परस्पर मित्रता के कारण। परन्तु 'क़ियामत' के दिन तुम एक दूसरे से विरक्त हो जाओगे, और तुम एक दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना ('जहन्नम' की) आग है, और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

25. He said: Ye have chosen idols instead of Allah. The love between you is only in the life of the world. Then on the Day of Resurrection ye will deny each other and curse each other, and your abode will be the Fire, and ye will have no helpers.

وَقَالَ إِنَّمَا ٱتَّخَذْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ
أَوْثَـٰنًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ
ثُمَّ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ
وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَىٰكُمُ
ٱلنَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّـٰصِرِينَ ﴿٢٥﴾

२६. तो लूत ने उसे माना, और उस ने[16] कहा : मैं अपने 'रब' की ओर 'हिजरत' करता हूँ। निस्सन्देह वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

26. And Lot believed him, and said: Lo! I am a fugitive unto my Lord. Lo! He, only He, is the Mighty, the Wise.

فَـَٔامَنَ لَهُۥ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّى مُهَاجِرٌ إِلَىٰ
رَبِّىٓ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

१३. अर्थात् तुम धरती और आकाश में किसी ऐसी जगह भाग कर नहीं जा सकते जहाँ तुम अपने-आप को अल्लाह की पकड़ से बचा सको।

१४. दे० सूरा अश-शूरा आयत ३१।

१५. यहाँ से फिर हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा शुरू होता है।

१६. अर्थात् हज़रत इबराहीम अ० ने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. और हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिये,[१७] और उस की सन्तति में 'नुबूवत' और 'किताब'[१८] रख दी,[१८] और उसे दुनिया में उस का बदला प्रदान किया,[१९] और निश्चय ही वह 'आख़िरत' में अच्छे लोगों में से होगा।

27. And We bestowed on him Isaac and Jacob, and We established the Prophethood and the Scripture among his seed, and We gave him his reward in the world, and lo! in the Hereafter he verily is among the righteous.

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا
فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ
أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ
لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

२८. [२०]और लूत को (हम ने भेजा) जब कि उस ने अपनी जाति वालों से कहा : तुम तो अश्लील कर्म करते हो जिसे तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया।

28. And Lot! (Remember) when he said unto his folk: Lo! ye commit lewdness such as no creature did before you.

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ
مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

२९. क्या तुम (संभोग के लिए) पुरुषों के पास जाते हो ! और बट-मारी करते, और अपनी बैठकों (और चौपालों) में बुरा कर्म करते हो ? फिर कोई उत्तर उस की जाति वालों का इस के सिवा न था कि उन्हों ने कहा : ले आ हम पर अल्लाह की यातना यदि तू सच्चा है !

29. For come ye not in unto males, and cut ye not the road (for travellers), and commit ye not abomination in your meetings? But the answer of his folk was only that they said: Bring Allah's doom upon us if thou art a truth-teller!

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ
السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ فَمَا
كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ
اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾

३०. (लूत ने) कहा : हे 'रब' ! इन बिगाड़ पैदा करने वाले लोगों के मुक़ाबले में तू मेरा सहायक हो।

30. He said: My Lord! Give me victory over folk who work corruption.

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

३१. और जब हमारे भेजे हुये ('फ़िरिश्ते') इबराहीम के पास शुभ-सूचना ले कर पहुँचे,[२१] तो उन्हों ने कहा : हम इस वस्ती[२२] के लोगों को विनष्ट करने वाले हैं, निश्चय ही इस के लोग ज़ालिम हैं।

31. And when Our messengers brought Abraham the good news, they said: Lo! we are about to destroy the people of that township, for its people are wrong-doers.

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ
قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُو أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾

१७. हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के बेटे और हज़रत याक़ूब अ० उन के पोते थे। हज़रत इबराहीम अ० की सन्तान की मदयानी शाखा में केवल हज़रत शुऐब अ० 'नबी' हुये हैं। और इसमाईली शाखा में हज़रत मुहम्मद सल्ल० तक लगभग ढाई हज़ार वर्ष की अवधि में कोई 'नबी' नहीं हुआ। 'नुबूवत' और 'किताब' हज़रत मसीह अ० तक निरन्तर जिस शाखा को मिलती रही है वह वही शाखा है जो हज़रत इसहाक़ अ० से चली थी। इसी लिए इस 'आयत' में केवल एक शाखा का जो हज़रत इसहाक़ से चली थी उल्लेख किया गया।

१८. इस में वे सभी 'नबी' आ गये जो हज़रत इबराहीम अ० की सन्तति में हुए हैं चाहे उन का सम्बन्ध हज़रत इबराहीम अ० की सन्तति की किसी भी शाखा से रहा हो।

१९. आप के शत्रुओं ने तो चाहा था कि आप को जला कर राख कर दें परन्तु अल्लाह ने आप को वह सम्मान प्रदान किया कि ४००० वर्ष से आप का नाम उज्ज्वल है और 'क़ियामत' तक रहेगा। आप को यहूदी भी अपना नायक मानते हैं और ईसाई और मुसलमान भी आप को अपना नायक समझते हैं।

२०. दे० सूरा अश-शु, अरा फ़ुटनोट ५०।

२१. जो 'फ़िरिश्ते' हज़रत लूत अ० की जाति वालों को विनष्ट करने के लिए भेजे गये थे वे पहले हज़रत इबराहीम अ० के पास पहुँचे और उन्हें हज़रत इसहाक़ अ० और हज़रत याक़ूब अ० के पैदा होने की शुभ-सूचना दी फिर बताया कि उन्हें हज़रत लूत अ० की जाति वालों को विनष्ट करने के लिए भेजा गया है (दे० सूरा हूद आयत ६९-७६; सूरा अल-हिज्र आयत ५१-६०)।

२२. यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की बस्ती की ओर है। हज़रत इबराहीम उस समय फ़लिस्तीन के नगर हिबरून में रहते थे। इस नगर के दक्षिण-पूर्व में कुछ ही मील की दूरी पर Dead sea का वह भाग स्थित है जहाँ पहले हज़रत लूत अ० की जाति वाले बसते थे। अब इस पर पानी फैला हुआ है। हिबरून की ऊँची पहाड़ियों से यह भाग प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. (इबराहीम ने) कहा : वहाँ तो लूत मौजूद है[२३]। उन्हों ने कहा : जो कोई वहाँ है हम भली-भाँति जानते हैं। हम उसे और उस के घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उस की स्त्री के, वह पीछे रह जाने वालों में से थी।

32. He said: Lo! Lot is there. They said: We are best aware of who is there. We are to deliver him and his household, all save his wife, who is of those who stay behind.

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٢﴾

३३. और जब हमारे भेजे हुये ('फ़रिश्ते') लूत के पास पहुँचे, तो वह उन के कारण मलीन हुआ और उन के बारे में अपने को असमर्थ पाया; उन्हों ने कहा : न डरो, और न दुःखी हो! हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी स्त्री के। वह पीछे रह जाने वालों में से थी।

33. And when Our messengers came unto Lot, he was troubled upon their account, for he could not protect them; but they said: Fear not, nor grieve! Lo! we are to deliver thee and thy household (all) save thy wife, who is of those who stay behind.

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٣﴾

३४. हम बस्ती के लोगों पर आकाश से यातना उतारने वाले हैं क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं।

34. Lo! we are about to bring down upon folk of this township a fury from the sky because they are evil-livers.

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾

३५. और हम ने उस (बस्ती) को खुली निशानी छोड़ दी है[२४] उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

35. And verily of that We have left a clear sign for people who have sense.

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

३६. और मदयन की ओर उन ने भाई शुऐब को (भेजा), उस ने कहा : मेरी जाति वालो! अल्लाह की 'इबादत' करो और 'अन्तिम दिन'[२५] की आशा रक्खो, और धरती में बिगाड़ पैदा करते न फिरो।

36. And unto Midian We sent Shu'eyb, their brother. He said: O my people! Serve Allah, and look forward to the Last Day, and do not evil, making mischief, in the earth.

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾

३७. परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, तो एक प्रचण्ड भूकम्प ने उन्हें आ लिया, और वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गये।

37. But they denied him, and the dreadful earthquake took them, and morning found them prostrate in their dwellingplace.

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٣٧﴾

२३. पहले हज़रत इबराहीम अ० ने पूरी जाति के लिए दया-याचना की परन्तु जब कह दिया गया कि यह अज़ाब टलने वाला नहीं तब आप को लूत अ० की चिन्ता हुई (दे० सूरा हूद आयत ६९-७६)।

२४. इस खुली निशानी से अभिप्रेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों का वह निवास-स्थान है जिसे अल्लाह के अज़ाब ने तहस-नहस कर दिया। Dead sea का दक्षिणी भाग पहले एक हरा-भरा भू-भाग था। इसी भू-भाग में हज़रत लूत अ० की जाति वालों का केन्द्रीय नगर सुद्दूम '(Sodom) स्थित था। परन्तु अब शताब्दियों से यह भू-भाग मानव के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बना हुआ है। अरब के लोग सीरिया की ओर व्यापार के लिए जाते समय इस के पास से गुज़रा करते थे।

२५. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. और 'आद' और 'समूद' को (हम ने विनष्ट किया)! और यह उन के (उजड़े) घरों से तुम्हारे सामने खुल कर आ गया है। 'शैतान' ने उन के कर्मों को उन के लिएं शोभायमान बना दिया और उन्हें मार्ग से रोक दिया, यद्यपि वे सूझ-बूझ रखने वाले थे[२६]।

38. And (the tribes of) 'Aad and Thamud! (Their fate) is manifest unto you from their (ruined and deserted) dwellings. Satan made their deeds seem fair unto them and so debarred them from the Way, though they were keen observers:

وَعَادًا وَثَمُودَا۟ وَقَد تَّبَيَّنَ لَكُم مِّن مَّسَـٰكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَـٰنُ أَعْمَـٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَكَانُوا۟ مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾

३९. और क़ारून और हामान को (हम ने विनष्ट किया)! मूसा उन के पास प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर आया, परन्तु उन्हों ने धरती में घमण्ड किया यद्यपि वे बाज़ी ले जाने वाले न थे[२७]।

39. And Korah, Pharaoh and Haman! Moses came unto them with clear proofs (of Allah's sovereignty), but they were boastful in the land. And they were not winners (in the race).

وَقَـٰرُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَـٰمَـٰنَ ۖ وَلَقَدْ جَآءَهُم مُّوسَىٰ بِٱلْبَيِّنَـٰتِ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا كَانُوا۟ سَـٰبِقِينَ ﴿٣٩﴾

४०. तो हर एक को हम ने उस के गुनाह में पकड़ा; फिर उन में से किसी पर हम ने पथराव करने वाली हवा भेजी,[२८] और उन में से किसी को एक प्रचण्ड धमाके ने आ लिया,[२९] और उन में से किसी को हम ने धरती में धँसा दिया,[३०] और उन में से किसी को डुबो दिया[३१]। अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, परन्तु वे स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करते थे[३२]।

40. So We took each one in his sin; of them was he on whom We sent a hurricane, and of them was he who was overtaken by the (Awful) Cry, and of them was he whom We caused the earth to swallow, and of them was he whom We drowned. It was not for Allah to wrong them, but they wronged themselves.

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنۢبِهِۦ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ ٱلصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ ٱلْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَـٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

४१. जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे संरक्षक—मित्र बना लिये हैं उन की मिसाल ऐसी है जैसे मकड़ी हो जिस ने एक घर बना रखा है, और निश्चय ही सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर होता है, क्या ही अच्छा होता यदि ये लोग जानते।

41. The likeness of those who choose other patrons than Allah is as the likeness of the spider when she taketh unto herself a house, and lo! the frailest of all houses is the spider's house, if they but knew.

مَثَلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ ٱلْعَنكَبُوتِ ٱتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ ٱلْبُيُوتِ لَبَيْتُ ٱلْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

४२. निस्सन्देह अल्लाह जानता है उसे छोड़ कर जिस चीज़ को भी ये पुकारते हैं। और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

42. Lo! Allah knoweth what thing they invoke instead of Him. He is the Mighty, the Wise.

إِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مِن شَىْءٍ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾

४३. ये मिसालें, हम लोगों (को समझाने) के लिए देते हैं, परन्तु इन्हें ज्ञान वाले ही समझते हैं।

43. As for those similitudes, We coin them for mankind, but none will grasp their meaning save the wise.

وَتِلْكَ ٱلْأَمْثَـٰلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَآ إِلَّا ٱلْعَـٰلِمُونَ ﴿٤٣﴾

४४. अल्लाह ने आकाशों और धरती को 'हक़' के साथ पैदा किया है। निस्सन्देह इस में 'ईमान' वालों के लिए एक निशानी है।

44. Allah created the heavens and the earth with truth. Lo! therein is indeed a portent for believers.

خَلَقَ ٱللَّهُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ بِٱلْحَقِّ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

२६. अर्थात् वे अनभिज्ञ और मूर्ख न थे परन्तु अपनी तुच्छ इच्छाओं के वशीभूत हो कर वे स्वयं अन्धे और नासमझ बन गये।
२७. अर्थात् न वे अल्लाह से बच कर निकल सकते थे और न अल्लाह की तदबीरों का उन के पास कोई तोड़ था।
२८. यह संकेत 'आद' जाति की ओर है। दे० सूरा अल-हाक़्क़ा आयत ७।
२९. यह संकेत 'समूद' जाति की ओर है।
३०. क़ारून की ओर संकेत है।
३१. यह संकेत फ़िरऔन और हामान की ओर है।
३२. दे० सूरा अर-रूम आयत ९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* ४५. ('हे नबी' !) उस 'किताब' को पढ़ो जो तुम्हारी ओर 'वह्य' की जा रही है, और 'नमाज़' क़ायम करो। निश्चय ही 'नमाज़' अश्लीलता और बुरे कर्म से रोकती है, और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

45. Recite that which hath been inspired in thee of the Scripture, and establish worship. Lo! worship preserveth from lewdness and iniquity, but verily rememberance of Allah is more important. And Allah knoweth what ye do.

اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْکَ مِنَ الْکِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ ؕ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ؕ وَاللّٰہُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾

४६. [33]और 'किताब' वालों से वाद-विवाद न करो--किन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो[34]--सिवाय उन लोगों के जो ज़ुल्म करें[35]--और कहो : हम 'ईमान' लाये उस चीज़ पर जो हम पर भी उतारी गई है और तुम पर भी उतारी गई; और हमारा 'इलाह' (पूज्य) और तुम्हारा 'इलाह' एक ही है, और हम उसी के 'मुस्लिम' (आज्ञाकारी) हैं[36]।

46. And argue not with the People of the Scripture unless it be in (a way) that is better, save with such of them as do wrong; and say: We believe in that which hath been revealed unto us and revealed unto you; our God and your God is One, and unto Him we surrender.

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَھْلَ الْکِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ ٭ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْھُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْکُمْ وَاِلٰھُنَا وَاِلٰھُکُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَہٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾

* यहाँ से इक्कीसवाँ पारा (Part xxI) शुरू होता है।

३३. आगे चल कर इसी सूरा में 'ईमान' वालों को 'हिजरत' करने पर उभारा गया है। उस समय हब्शा (Abyssinia) ही एक ऐसी जगह थी जहाँ मुसलमानों की रक्षा हो सकती थी इस लिए वे 'हिजरत' कर के वहीं जा सकते थे। हब्शा में उस समय ईसाई-राज्य था। इन 'आयतों' में मुसलमानों को यह शिक्षा दी जा रही है कि जब 'किताब' वालों से मामला पड़े तो उन से धर्म के विषय में किस प्रकार वाद-विवाद करें।

३४. अर्थात् बात-चीत का अच्छे से अच्छा ढंग अपनाओ। तुम्हारी चेष्टा उस व्यक्ति को जिस से तुम्हारी बात-चीत हो रही हो नीचा दिखाने की नहीं बल्कि इस बात की होनी चाहिए कि उस का हृदय-पट खुल जाये और सत्य का उसे ज्ञान हो जाये। तुम्हें उस के रोगों की चिकित्सा करनी चाहिए और इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि रोगी को कम से कम कष्ट पहुँचे और उस का रोग दूर हो जाये। दे० सूरा अन-नह्ल आयत १२५, सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ३४। सूरा अल-मोमिन आयत ९६ और सूरा अल-आराफ़ आयत १९८-२००।

३५. अर्थात् जो लोग ज़ुल्म ही पर उतर आये हों उन के मुक़ाबले में प्रत्येक अवस्था में नर्म ही बने रहना ज़रूरी नहीं।

३६. वाद-विवाद करने की उत्तम रीति इसे कहते हैं। मालूम हुआ कि ऐसे अवसर पर बात-चीत का आरम्भ उन चीज़ों से नहीं करना चाहिए जिन में दोनों पक्षों के बीच मतभेद पाया जाता है बल्कि वार्त्ता का आरम्भ सदा ऐसी चीज़ों से करना चाहिए जिन में दोनों पक्ष के लोग सहमत हों। फिर उन बातों के आधार पर जिन को दोनों पक्ष के लोग मानते हैं बात-चीत आगे बढ़ानी चाहिए और विधिपूर्वक यह समझाने की कोशिश करनी चाहिए कि जिन बातों में मतभेद पाया जाता है उन में किस का मत सर्वमान्य आधार के अनुकूल है और किस पक्ष के विचार उस के प्रतिकूल हैं।

'किताब' वाले और मुसलमान दोनों ही पक्ष के लोग 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'नुबूवत' को मानते थे। यदि मतभेद था तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' और 'क़ुरआन' के ईश-वाणी होने के विषय में। आयत में 'किताब' वालों (ईसाइयों और यहूदियों) के सामने यह बात रखने की शिक्षा दी गई है कि हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है। जो किताबें तुम्हारी ओर भेजी गई थीं और जो 'रसूल' भी तुम्हारे यहाँ आये हैं हम उन्हें भी मानते हैं और जो कुछ हमारी ओर भेजा जा रहा है हम उस पर 'ईमान' लाते हैं। हम तो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं उस का हुक्म और उस की शिक्षा जहाँ-कहीं भी उतरी है हम उसे मानते हैं। आखिर एक 'मुस्लिम' अथवा ईश-भक्त के लिए यह बात कैसे उचित हो सकती है कि अल्लाह का सन्देश एक जगह आये तो उस पर 'ईमान' लाये और उसी का सन्देश दूसरी जगह आये, तो वह उसका इन्कार करने लग जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७. (हे 'नबी' !) हम ने इसी तरह तुम्हारी ओर 'किताब' उतारी है, तो वे लोग जिन्हें हम ने 'किताब' दी थी इस पर 'ईमान' लाते हैं;[३७] और इन में भी ऐसे हैं जो इस पर 'ईमान' लाते हैं[३८]। और हमारी 'आयतों' का इन्कार केवल 'काफ़िर' ही करते हैं।

47. In like manner We have revealed unto thee the Scripture, and those unto whom We gave the Scripture aforetime will believe therein; and of these (also) there are some who believe therein. And none deny Our revelations save the disbelievers.

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَٰؤُلَاءِ مَن يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और (हे 'नबी' !) तुम इस से पहले कोई 'किताब' नहीं पढ़ते थे, और न उसे हाथ से लिखते थे, (यदि ऐसा होता) जब तो मिथ्यावादी लोग सन्देह में पड़ सकते थे[३९]।

48. And thou (O Muhammad) wast not a reader of any scripture before it, nor didst thou write it with thy right hand, for then might those have doubted, who follow falsehood.

وَمَا كُنتَ تَتْلُو مِن قَبْلِهِ مِن كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ ۖ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

४९. वे तो निशानियाँ हैं बिल्कुल खुली हुई उन लोगों के सीनों में जिन्हें ज्ञान दिया गया है, और हमारी 'आयतों' का इन्कार केवल ज़ालिम करते हैं।

49. But it is clear revelations in the hearts of those who have been given knowledge, and none deny our revelations save wrong-doers.

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾

५०. और इन का कहना है : क्यों न उतारी गई इस पर निशानियाँ[४०] इस के 'रब' की ओर से ? कहो : निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और मैं तो बस एक खुला सचेत करने वाला हूँ।

50. And they say: Why are not portents sent down upon him from his Lord? Say: Portents are with Allah only, and I am but a plain warner.

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

५१. क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो इन्हें पढ़ कर सुनाई जाती है[४१] ? निश्चय ही इस में दयालुता है, और अनुस्मारक उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाते हैं।

51. Is it not enough for them that We have sent down unto thee the Scripture which is read unto them! Lo! herein verily is mercy, and a reminder for folk who believe.

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

३७. यहाँ 'किताब' वालों से अभिप्रेत सभी किताब वाले नहीं हैं बल्कि केवल वे 'किताब वाले' हैं जो वास्तव में अल्लाह की किताब का ज्ञान रखने वाले और उस का आदर करने वाले थे। जब क़ुरआन—जो अल्लाह की अन्तिम किताब है—आया तो उन्हों ने किसी हठ-धर्मी और पक्षपात से काम नहीं लिया बल्कि स्वेच्छापूर्वक उस पर 'ईमान' लाये और उन्हों ने इस का उसी प्रकार समर्थन किया जिस प्रकार वे पिछली आसमानी किताबों का समर्थन करते थे।

३८. यह संकेत अरब वालों की ओर है। सत्यप्रिय लोग जहाँ भी थे 'क़ुरआन' की सच्चाई पर 'ईमान' ला रहे थे।

३९. मतलब यह है कि जब इस बात को सभी मानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं हैं। और न 'किताब' वालों के साथ आप को रहने-सहने का अवसर प्राप्त हुआ है तो क्या यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के सच्चे 'रसूल' हैं। पिछले 'नबियों' के वृत्तान्त, आसमानी किताबों की शिक्षाओं का सविस्तार वर्णन, पिछली जातियों का इतिहास और जीवन के मौलिक विषयों पर आखिर एक अशिक्षित व्यक्ति 'वह्य' (ईश-प्रेरणा) के बिना कैसे प्रकाश डाल सकता है। अब यदि आप (सल्ल०) को 'नबी' मानने से कोई इन्कार करता है, तो वह अपने ज्ञान का नहीं बल्कि वह अपने अज्ञान और पक्षपात का परिचय दे रहा है।

४०. अर्थात् चमत्कार जिन्हें देख कर हमें यह विश्वास हो कि मुहम्मद (सल्ल०) वास्तव में अल्लाह के 'रसूल' हैं।

४१. अर्थात् इस से बड़ा चमत्कार और क्या होगा कि एक अशिक्षित व्यक्ति उन के सामने क़ुरआन जैसा महान् ग्रन्थ प्रस्तुत कर रहा है। क्या यह चमत्कार उस अशिक्षित व्यक्ति के 'नबी' होने का खुला प्रमाण नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. (हे 'नबी' !) कहो : मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है। वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है। वे लोग जो मिथ्यात्व पर 'ईमान' लाये हैं और अल्लाह से 'कुफ़्र' किया, वही घाटे में हैं।

52. Say (unto them, O Muhammad): Allah sufficeth for witness between me and you. He knoweth whatsoever is in the heavens and the earth. And those who believe in vanity and disbelieve in Allah, they it is who are the losers.

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ٥٢

५३. ये लोग तुम से यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं। यदि एक नियत समय (यातना के लिए) न होता, तो इन पर यातना आ जाती। और वह अचानक इन पर आ कर रहेगी और इन्हें ख़बर भी न होगी।

53. They bid thee hasten on the doom (of Allah). And if a term had not been appointed, the doom would assuredly have come unto them (ere now). And verily it will come upon them suddenly when they perceive not.

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ٥٣

५४. ये तुम से यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि 'जहन्नम' 'काफ़िरों' को घेरे में लिये हुये है।

54. They bid thee hasten on the doom, when lo! hell verily will encompass the disbelievers,

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ٥٤

५५. जिस दिन यातना इन्हें इन के ऊपर से ढाँक लेगी और इन के पाँव के नीचे से भी, और कहेगा : चखो मज़ा उस का जो कुछ तुम करते थे!

55. On the day when the doom will overwhelm them from above them and from underneath their feet, and He will say: Taste what ye used to do!

يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٥٥

५६. हे मेरे बन्दो जो 'ईमान' लाये हो! मेरी धरती विशाल है। अतः तुम मेरी ही 'इबादत' करो[४८]।

56. O my bondmen who believe! Lo! My earth is spacious. Therefore serve Me only.

يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ٥٦

५७. हर एक जीव को मौत का मज़ा चखना है। फिर तुम्हें हमारी ओर पलट कर आना होगा।

57. Every soul will taste of death. Then unto Us ye will be returned.

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ٥٧

५८. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन्हें हम 'जन्नत' के भवनों में बसायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ वे सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों के लिए!—

58. Those who believe and do good works, them verily We shall house in lofty dwellings of the Garden underneath which rivers flow. There they will dwell secure. How sweet the guerdon of the toilers,

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ٥٨

५९. जिन्हों ने 'सब्र' किया और अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं!

59. Who persevere, and put their trust in their Lord!

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ٥٩

४८. यह 'हिजरत' की ओर संकेत है। मतलब यह है कि यदि 'काफ़िरों' की शत्रुता के कारण मक्के में अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी करनी मुश्किल हो गई है, तो अल्लाह की ज़मीन कोई तंग नहीं है तुम स्वदेश त्याग कर कहीं दूसरी जगह चले जाओ जहाँ स्वतन्त्रता पूर्वक अल्लाह की बन्दगी और 'इबादत' कर सको। अल्लाह की बन्दगी और भक्ति के मुक़ाबले में देश, जाति आदि कोई चीज़ नहीं। अपनी जाति और देश की माया में पड़ कर 'ईमान' को छोड़ना बड़े ही घाटे का सौदा होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०. और कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाये नहीं फिरते ! अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला और जानने वाला है[४३]।

60. And how many an animal there is that beareth not its own provision! Allah provideth for it and for you. He is the Hearer, the Knower.

وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم وهو السميع العليم ﴿٦٠﴾

६१. [४४]और तुम इन लोगों से पूछो कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया, और सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रक्खा है ? तो अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। फिर कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हैं ?

61. And if thou wert to ask them: Who created the heavens and the earth, and constrained the sun and the moon (to their appointed work)? they would say: Allah. How then are they turned away!

ولئن سألتهم من خلق السموت والأرض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله فأنى يؤفكون ﴿٦١﴾

६२. अल्लाह जिस की चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस की चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

62. Allah maketh the provision wide for whom He will of His bondmen, and straiteneth it for whom (He will). Lo! Allah is Aware of all things.

الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له إن الله بكل شيء عليم ﴿٦٢﴾

६३. और यदि तुम इन से पूछो[४५] : किस ने आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा भूमि को उस के मुरदा हो जाने के पश्चात् जीवित किया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। कहो : प्रशंसा अल्लाह के लिए है ! परन्तु अधिकतर लोग समझते नहीं।

63. And if thou wert to ask them: Who causeth water to come down from the sky, and therewith reviveth the earth after its death? they verily would say: Allah. Say: Praise be to Allah! But most of them have no sense.

ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض من بعد موتها ليقولن الله قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ﴿٦٣﴾

४३. अर्थात् 'हिजरत' करने में तुम्हें इस की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि स्वदेश से निकल कर हम क्या खायेंगे। तुम देखते ही हो कितने ही जीव-जन्तु और पशु-पक्षी को अल्लाह पाल रहा है। ये जहाँ-कहीं जाते हैं किसी-न-किसी तरह इन की जीविका का प्रबन्ध होता ही है। क्या इन में से हर एक अपनी रोज़ी उठाये फिरता है ? नबी सल्ल० ने भी कहा है : "यदि तुम अल्लाह पर सच-मुच भरोसा रखते तो वह तुम्हें रोज़ी देता जिस तरह चिड़ियों को देता है वे प्रातःकाल भूखी निकलती हैं तो पेट खाली होते हैं और सन्ध्या को लौटती हैं तो पेट भरे होते हैं"।

यही बात एक ऐसे ही वातावरण में हज़रत मसीह ने भी कही थी जैसी परिस्थिति में अल्लाह ने ये आयतें उतारी हैं। हज़रत मसीह अ० ने कहा था :

"कोई व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। क्योंकि या तो एक से वैर रक्खे और दूसरे से प्रेम, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा। तुम अल्लाह और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। इस लिए मैं कहता हूँ कि अपने प्राण की चिन्ता न करना कि हम क्या खायेंगे, और न अपने शरीर की कि क्या पहनेंगे। क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़ कर नहीं ? हवा के पक्षियों को देखो कि न बोते हैं न काटते हैं, न कोठियों में इकट्ठा करते हैं। फिर भी तुम्हारा आसमानी बाप उन को खिलाता है। क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते ? तुम में से कौन है जो चिन्ता कर के अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सके ? और वस्त्र के लिए क्यों चिन्ता करते हो ? जंगली सोसन के वृक्षों (Lillies) को ध्यान से देखो कि वे किस प्रकार बढ़ते हैं वे न परिश्रम करते हैं और न कातते हैं, फिर भी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी अपनी सारी भव्यता के होते हुये भी इन में से किसी के समान वस्त्र धारण किये हुये न था। तो जब अल्लाह मैदान की घास को जो आज है और कल तनूर में झोंकी जायेगी ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्प-विश्वासी लोगो ! तुम को क्यों न पहनायेगा। इस लिए चिन्तित न हो कि हम क्या खायेंगे या क्या पहनेंगे। इन सब चीज़ों की खोज में तो पराई जातियाँ रहती हैं। तुम्हारा आसमानी बाप (Heavenly Father) जानता है कि तुम इन सब चीज़ों के मुहताज हो। तुम पहले उस के राज्य (Kingdom) और उस की सत्य-परायणता की खोज करो। ये सब चीज़ें तुम्हें मिल जायेंगी। कल के लिए चिन्ता न करो कल का दिन आप अपनी चिन्ता कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुःख काफ़ी है।"

दे० बाइबिल मत्ता (Mtt.) ६ : २४-३४। हज़रत मसीह का इसी प्रकार का एक भाषण 'लूक़ा' (Luke) की इञ्जील में भी मिलता है (दे० १२ : २२-३४)।

४४. यहाँ से सम्बोधन मक्का वालों से है।

४५. दे० सूरा लुक़मान आयत २५, सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. और यह सांसारिक जीवन तो केवल एक मनवहलाव और खेल है[४६]। और 'आखिरत' का घर ही वास्तव में जीवनमय है, क्या ही अच्छा होता यदि ये लोग जानते[४७]।

64. This life of the world is but a pastime and a game. Lo! the home of the Hereafter—that is Life, if they but knew.

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

६५. जब ये लोग नौका में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, 'दीन' को उस के लिए खालिस कर के, फिर जब वह इन्हें बचा कर थल की ओर ले आता है, तो तत्काल 'शिर्क' करने लगते हैं,

65. And when they mount upon the ships they pray to Allah, making their faith pure for Him only, but when He bringeth them safe to land, behold! they ascribe partners (unto) Him)

فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

६६. ताकि (इस तरह) जो कुछ हम ने इन्हें दिया है उस के साथ 'कुफ्र' करें[४८], और ताकि (इस तरह) सुख भोगें। अच्छा, जल्द ही ये जान लेंगे।

66. That they may disbelieve in that which We have given them, and that they may take their ease. But they will come to know.

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

६७. क्या इन्हों ने नहीं देखा कि हम ने एक शान्तिपूर्ण 'हरम' बना दिया है, हालाँकि इन के आस-पास से लोग उचक लिये जाते हैं[४९]? तो क्या ये मिथ्यात्व को मानते हैं और अल्लाह की नेमत के साथ 'कुफ्र' करते हैं?

67. Have they not seen that We have appointed a sanctuary immune (from violence), while mankind are ravaged all around them? Do they then believe in falsehood and disbelieve in the bounty of Allah?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

६८. उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़े, या सत्य को झुठलाये जब कि वह उस के सामने आ चुका हो? क्या 'काफ़िरों' का 'जहन्नम' में ठिकाना नहीं है?

68. Who doth greater wrong than he who inventeth a lie concerning Allah, or denieth the truth when it cometh unto him? Is not there a home in hell for disbelievers?

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

६९. जिन लोगों ने हमारे हेतु कष्ट किया हम उन्हें अपने मार्ग दिखा देंगे[५०], और निस्सन्देह अल्लाह उत्तमकारों के ही साथ है।

69. As for those who strive in Us, We surely guide them to Our paths, and lo! Allah is with the good.

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

४६. इस सांसारिक जीवन का हाल कुछ उस खेल से भिन्न नहीं जो बच्चे अपने मनबहलाव के लिए खेलते हैं। जिस तरह बच्चे थोड़ी देर तक खेल-कूद कर अपने घर को सिधार जाते हैं उसी प्रकार एक समय आता है कि हमारे जीवन का खेल भी समाप्त हो जाता है और हम एक दूसरी दुनिया की ओर चले जाते हैं। हम वास्तव में दूसरी ही दुनिया की आत्मायें हैं।

४७. यदि ये लोग इस बात को समझ लेते, तो अपने समय को व्यर्थ कामों में नष्ट न करते बल्कि उसे 'आखिरत' की तैयारी में लगाते।

४८. अर्थात् उस पर हमारा एहसान न मानें और अकृतज्ञ हो कर रहें। दे० सूरा अर-रूम आयत ३४।

४९. यदि ये हमारे इसी उपकार पर सोच-विचार करते तो सत्य को पा सकते थे। अरब के बिगड़े हुये वातावरण में भी हम ने मक्का को अशान्ति से सुरक्षित रक्खा है इस नगर के आदर को स्थायित्व प्रदान करने वाला मेरे सिवा और कौन हो सकता है? क्या पत्थर की मूर्तियों और इन के देवताओं में यह शक्ति है कि वे इस नगर की प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकें?

५०. अर्थात् वे भटक नहीं सकते। उन्हें अपने जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सही मार्ग दिखायेंगे। अपनी ओर आने के मार्ग हम उन के लिए बन्द नहीं करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०—अर–रूम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अर–रूम' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के आरम्भ में कहा गया है : "रूमी पराजित हो गये हैं निकटस्थ प्रदेश में"। उस समय अरब से निकट रूमियों को जहाँ अधिकार प्राप्त था वे, उरदुन, शाम (Syria) और फ़लिस्तीन (Palestine) के क्षेत्र थे। इन पर ईरानियों को पूर्ण-रूप से विजय सन् ६१५ ई० (हिजरत से ६ वर्ष पूर्व) प्राप्त हुई है। इस लिए निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि इसी वर्ष यह सूरा अवतीर्ण हुई है। इसी वर्ष 'काफ़िरों' के अत्याचार से तंग आ कर एक बड़ी संख्या में मुसलमानों ने हब्शा (Abyssinia) को 'हिजरत' की थी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ईरानियों और रूमियों में युद्ध का आरम्भ एक विशेष घटना से हुआ था परन्तु इस युद्ध ने आगे चल कर धर्म-युद्ध का रंग धारण कर लिया। नबी सल्ल० को 'नुबूवत' से ८ वर्ष पहले की बात है कि रूम के क़ैसर (Caesar of Rome) मारीस (Maurice) के विरुद्ध विद्रोह हुआ। फ़ोकास (Phocas) नामक एक व्यक्ति ने न केवल यह कि क़ैसर से उस का राज्य छीन लिया बल्कि उस की आँखों के सामने उस के पाँच बेटों को मरवा डाला। और फिर क़ैसर को भी मरवा दिया। इस के थोड़े ही दिनों के बाद क़ैसर की पत्नी और उस की तीन लड़कियों को क़त्ल करा दिया। ईरान के सम्राट ख़ुसरू परवेज़ (Khosrou Parviz) को जब इस घटना की सूचना मिली तो उस ने निश्चय कर लिया कि वह फ़ोकास से उस के ज़ुल्म का बदला ले कर रहेगा। मारीस का उस पर एहसान था उसी की सहायता से उसे ईरान की राज-गद्दी मिली थी। सन् ६०३ ई० में उस ने फ़ोकास के विरुद्ध लड़ाई आरम्भ कर दी और फोकास की सेना को निरन्तर पराजित करता हुआ आगे ही बढ़ता गया। जब रूम राज्य के उच्च अधिकारियों ने यह हाल देखा तो उन्हों ने अफ़रीक़ा के गवर्नर से मदद माँगी। उस ने अपने बेटे हिरक़्ल (Heraclius) को एक शक्तिशाली बेड़े के साथ भेज दिया। उस के क़ुस्तुनतुनिया पहुँचते ही फ़ोकास को राज-सिंहासन से उतार दिया गया और उस की जगह हिरक़्ल को रूम राज्य सौंप दिया गया। हिरक़्ल ने फ़ोकास के साथ वही व्यावहार किया जो वह मारीस के साथ कर चुका था। यह सन् ६१० ई० की बात है।

परवेज़ ने अब भी युद्ध से अपना हाथ नहीं रोका बल्कि उस ने इस लड़ाई को ईसाइयत और मजूसियत के धार्मिक युद्ध का रंग दे दिया इस लड़ाई में यहूदियों के अतिरिक्त उन ईसाई सम्प्रदायों ने भी ईरानियों का साथ दिया जिन्हें रूम राज्य के बड़े पादरी (the Head of the Roman Church) ने विधर्मी ठहराया था और जिन पर वर्षों से अत्याचार हो रहा था। हरक्ल ईरानियों को पराजित करने में असफल रहा। ईरानियों का साहस बहुत बढ़ चुका था वे आगे ही बढ़ते जा रहे थे। सन् ६१३ ई० में ईरानियों ने दिमश्क़ पर विजय प्राप्त कर ली सन् ६१४ ई० में 'बैतुल मक़दिस' भी रूमियों के हाथ से निकल गया। ईरानियों ने इस नगर को तहस-नहस कर दिया। नगर के समस्त बड़े-बड़े गिरजाघर ढा दिये गये। जिन ईसाइयों की हत्या इस नगर में को गई उन की संख्या ९० हज़ार तक पहुँचती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परवेज़ पर गर्व और अहंकार का भूत सवार था। उस ने हरक़ल को 'बैतुल-मक़दिस' से लिखा: "तू कहता है कि तुझे अपने 'रब' पर भरोसा है। तेरे 'रब' ने मेरे हाथ से यूरुशलम को क्यों नहीं बचाया"। इस के एक वर्ष के बाद ही उरदुन, फ़लिस्तीन और प्रायद्वीप सीना के सम्पूर्ण भाग रूमियों के हाथ से निकल गये। और रूमी सेना मिस्र की सीमा में घुस गई।

अरब के 'मुश्रिक' रूमियों के पराजित होने से बहुत खुश थे। कहते थे कि जिस तरह ईरानी 'वह्य' और 'रिसालत' को मानने वाले ईसाइयों को परास्त करते जा रहे हैं उसी तरह हम भी मुहम्मद (सल्ल०) और उन के अनुयायियों के धर्म का सत्तानाश कर के रहेंगे। इसी परिस्थिति में सूरा अर-रूम अवतीर्ण होती है और भविष्य के प्रति यह सूचना देती है कि कुछ ही वर्षों में रूमियों को विजय प्राप्त होगी। और वह ऐसा दिन होगा कि 'ईमान' वालों को अल्लाह की मदद से खुशी होगी। हालांकि जैसी कुछ परिस्थिति थी उस में इस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि रूमी ईरानियों को कभी पराजित कर सकेंगे। रूमी सेना निरन्तर परास्त होती जा रही थी यहाँ तक कि क़ैसर ने विवश हो कर ईरान से सन्धि कर लेने का निश्चय कर लिया और ईरान के सम्राट के पास अपना दूत भी भेज दिया। परन्तु परवेज़ ने कहा कि मेरी ओर से क़ैसर को उस समय तक सुरक्षा नहीं मिल सकती जब तक वह जंजीर में बँधा हुआ मेरे सामने हाज़िर न हो और अपने ख़ुदा को छोड़ कर अग्नि की पूजा न करने लग जाये।

क़ुरआन ने जब इस बात की घोषणा की कि रूमी विजयी होंगे तो मक्का के 'काफ़िरों' ने इस की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उबई बिन ख़लफ़ ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से यह शर्त्त बदी कि यदि तीन वर्ष के भीतर रूमियों ने विजय प्राप्त कर ली तो मैं दस ऊँट हार जाऊँगा नहीं तो दस ऊँट तुम्हें देने पड़ेंगे। जब नबी सल्ल० को यह बात मालूम हुई तो आप ने कहा कि क़ुरआन में 'बिज़्अ सिनीन' के शब्द आये हैं, 'बिज़्अ' शब्द अरबी भाषा में दस से कम के लिए आता है। इस लिए इस के भीतर शर्त्त कर लो और ऊँट की संख्या बढ़ा कर १०० कर दो। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फिर से बात की और शर्त्त यह ठहरी कि १० वर्ष के भीतर दोनों में से जिस की बात असत्य सिद्ध होगी वह १०० ऊँट देगा। क़ुरआन की इस भविष्यवाणी के ७-८ वर्ष के बाद भी इस की कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि रूम को विजय प्राप्त हो सकती है।

सन् ६२२ ई० में नबी सल्ल० मक्का से 'हिजरत' कर के मदीना जाते हैं। उधर हरक़ल चुपके से क़ुस्तुनकुनिया से कृष्ण सागर (Black sea) के मार्ग से तराबज़ून की ओर चल पड़ा। जहाँ उस ने ईरान पर पीछे की ओर से आक्रमण करने की तैयारी की। हरक़ल ने सन् ६२३ ई० में अरमीनिया (Armenia) से आक्रमण का आरम्भ किया। सन् ६२४ ई० में उस ने आज़र बीजान (Azerbeidian) में पहुँच कर अरमियाह को जो ज़रतुश्त का जन्म-स्थान था तहस-नहस किया और ईरानियों के सब से बड़े अग्नि-कुण्ड को तबाह कर दिया। इसी वर्ष मुसलमानों ने 'बद्र' की लड़ाई में 'मुश्रिकों' को परास्त किया। इस तरह क़ुरआन की भविष्यवाणी १० वर्ष की अवधि समाप्त होने से पहले पूर्णतः पूर्ण हुई।

रूमी सेना ईरानियों को परास्त करती गई। उधर परवेज़ के विरुद्ध घर में विद्रोह हुआ। वह क़ैद हुआ और उस की आँखों के सामने उस के १८ बेटों का वध किया गया, कुछ ही दिन के भीतर वह भी क़ैद के कष्टों से मृत्यु के घाट उतरा।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

'सूरा' का आरम्भ करते हुये बताया गया है कि रूमी पराजित हो गये हैं परन्तु वह दिन दूर नहीं कि उन्हें विजय प्राप्त होगी। साधारणतः मनुष्य वही देखता है जो उसे अपनी आँखों से दिखाई देता है वह नहीं जानता कि भविष्य में क्या होने वाला है और आज की अपेक्षा उस का "कल" कैसा रहेगा। रूम और ईरान की समस्या से स्वभावतः तक़रीर का रुख 'आख़िरत' की ओर फिर गया है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और फिर आगे 'आख़िरत' से 'तौहीद' के विषय की ओर तक़रीर का रुख फिर जाता है।

इस 'सूरा' और पिछली सूरा में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। पिछली सूरा को समाप्त करते हुये जिस चीज़ का वादा किया गया है[1] प्रस्तुत सूरा में उस का स्पष्ट रूप से उल्लेख हुआ है। सत्य की विजय होती है यह अल्लाह का वादा है। अन्याय और अत्याचार की आयु अधिक नहीं होती। बुराई और बिगाड़ का कारण लोगों के अपने ही करतूत होते हैं[2]। यह ससार न्याय ही के आधार पर चल रहा है। एक गरोह का दूसरे गरोह के बाद आना और एक का दूसरे पर विजय प्राप्त करना विशेषतः उस समय जब कि उस के विजयी होने की कोई आशा न हो यह विचारशील व्यक्तियों के लिए इस बात का खुला प्रमाण है कि यह संसार कोई अन्धेर नगरी नहीं है कि यहाँ अराजकता का ही राज्य हो। बल्कि इस लोक का एक स्वामी और शासक है जो सब कुछ सुनने और देखने वाला है। जो एक को दूसरे से हटाता रहता है। यदि ऐसा न होता तो संसार में मनुष्य का जीना असम्भव होता। इसी तरह अल्लाह यदि 'ईमान' वालों की सहायता करता और मुश्रिकों को विनष्ट करता है तो यह इस बात का प्रमाण है कि इस "आज" का अवश्य एक "कल" है। अल्लाह का वादा अवश्य पूरा हो कर रहेगा। 'क़ियामत' आयेगी। 'मुश्रिकों' के देवीं-देवता उन के कुछ काम न आ सकेंगे। वे न उन की सिफ़ारिश कर सकेंगे और न अल्लाह की पकड़ से उन्हें बचा सकेंगे।

'सूरा' की आयत ११ और २७ में बड़ी समानता पाई जाती है। आयत ११ आख़िरत के प्रमाणीकरण के सिलसिले में है और आयत २७ 'तौहीद' के प्रमाणीकरण की प्रस्तावना है। आयत २६ से आयत २७ तक का भाग व्यवहित वर्णन के रूप में है परन्तु यही भाग सूरा का मूल और केन्द्रीय विषय है।

'तौहीद' पर प्रकाश डालते हुये इस सूरा में विशेष रूप से यह बात प्रस्तुत की गई है कि मनुष्य का प्राकृतिक और स्वाभाविक धर्म 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के अतिरिक्त दूसरा नहीं है। यदि वह 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) को त्याग कर 'शिर्क' (अनेकेश्वरवाद) की ओर जाता है, तो वह स्वयं आत्म-घात का अपराधी है।

---

१. दे० पिछली सूरा की अन्तिम आयत।
२. दे० आयत ६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अर-रूम

(मक्का में उतरी—'आयतें' ६०)

THE ROMANS
Revealed at Mecca

سورة الروم مكية وهي ستون آية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़० लाम० मीम०[1]।

1. Alif. Lam. Mim.

الٓمّٓ ۚ (١)

२. रूमी पराजित हुये

2. The Romans have been defeated,

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ (٢)

३. निकटस्थ प्रदेश में, और अपनी पराजय के पश्चात्, वे विजयी हो जायेंगे।

3. In the nearer land, and they, after their defeat, will be victorious,

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۙ (٣)

४. कुछ वर्षों के भीतर[2]—अल्लाह ही का अधिकार है पहले भी और बाद में भी[3]—और उस दिन 'ईमान वाले' प्रसन्न हो जायेंगे[4]

4. Within ten years—Allah's is the command in the former case and in the latter—and in that day believers will rejoice,

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ (٤)

५. अल्लाह की मदद से। वह मदद देता है जिसे चाहता है। और वह प्रभुत्वशाली और दया करने वाला है।

5. In Allah's help to victory. He helpeth to victory whom He will. He is the Mighty, the Merciful.

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ (٥)

६. यह वादा अल्लाह का है[5]। अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

6. It is a promise of Allah, Allah faileth not His promise, but most of mankind know not.

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٦)

७. वे सांसारिक जीवन के केवल ज़ाहिर को जानते हैं, और वे 'आखिरत' से तो ग़ाफ़िल ही हैं।

7. They know only some appearance of the life of the world, and are heedless of the Hereafter.

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ (٧)

८. क्या उन्हों ने अपने-आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को, और जो कुछ उन के बीच है केवल 'हक़' के साथ और नियत समय के लिए पैदा किया है। परन्तु अधिकतर लोग अपने 'रब' से मिलने को नहीं मानते।

8. Have they not pondered upon themselves? Allah created not the heavens and the earth, and that which is between them, save with truth and for a destined end. But truly many of mankind are disbelivers in the meeting with their Lord

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۫ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ (٨)

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा का परिचय।
३. अर्थात् हुक्म और अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है उठाता है और जिसे चाहता गिराता है।
४. रूम (The Romans) को सन् ६२४ ई० में ईसाइयों पर विजय प्राप्त हुई है यह समय वही है जब मुसलमानों ने 'बद्र' की लड़ाई में 'मुश्रिकों' को परास्त किया। इस लिए मुसलमानों की दोहरी खुशी हासिल हुई एक अपने विजयी होने की दूसरे रूमियों के विजय प्राप्त करने की। रूम और ईरान के युद्ध में स्वभावतः मुसलमानों को रूमी लोगों के साथ सहानुभूति थी (दे० सूरा का परिचय)।
५. दे० आयत ४७, ६०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं हैं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? वे शक्ति में इन से बढ़े हुए थे, और उन्हों ने धरती को उथल-पुथल किया[६] और उसे उस से अधिक आबाद किया जितना इन्हों ने उसे आबाद किया है। उन के पास उन के 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण ले कर आये। फिर यह नहीं होने का कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करे, परन्तु वे स्वयं अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

9. Have they not travelled in the land and seen the nature of the consequence for those who before them? They were stronger than these in power, and they dug the earth and built upon it more than these have built. Messengers of their own came unto them with clear proofs (of Allah's Sovereignty). Surely Allah wronged them not, but they did wrong themselves.

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا
أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَ
عَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

१०. फ़िर जिन लोगों ने बुराई की थी उन का परिणाम बुरा हुआ, इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह की 'आयतों' को झुठलाया और वे उन की हँसी उड़ाते थे।

10. Then evil was the consequence to those who dealt in evil, because they denied the revelations of Allah and made a mock of them.

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ
ع أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

११. अल्लाह पहली बार पैदा करता है, फिर वह इस की पुनरावृत्ति करेगा,[७] फिर उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा।

11. Allah produceth creation, then He reproduceth it, then unto Him ye will be returned.

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

१२. और जिस दिन वह घड़ी[८] क़ायम होगी अपराधी लोग नैराश्य से अवाक् हो कर रह जायेंगे[९]।

12. And in the day when the Hour riseth the unrighteous will despair.

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾

१३. उन के (ठहराये हुये) सहभागियों में कोई उन का सिफ़ारिशी न होगा। और वे अपने (ठहराये हुये) सहभागियों का इन्कार करने वाले हो जायेंगे।

13. There will be none to intercede for them of those whom they made equal with Allah. And they will reject their partners (whom they ascribed unto Him).

وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ﴿١٣﴾

१४. और जिस दिन वह घड़ी[१०] क़ायम होगी, उस दिन लोग अलग-अलग हो जायेंगे[११]।

14. In the day when the Hour cometh, in that day they will be sundered.

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ ﴿١٤﴾

१५. तो जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, वे एक बाग़ में रक्खे जायेंगे प्रफुल्ल।

15. As for those who believed and did good works, they will be made happy in a Garden.

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ
فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾

१६. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया और हमारी 'आयतों' को, और 'आख़िरत' की मुलाक़ात को झुठलाया, वे यातना में हाज़िर रक्खे जायेंगे।

16. But as for those who disbelieved and denied Our revelations, and denied the meeting of the Hereafter, such will be brought to doom.

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُونَ ﴿١٦﴾

६. अर्थात् ज़मीन पर धूम मचा दी। कहीं खेतियाँ की जा रही है, तो कहीं से खनिज पदार्थ निकाले जा रहे हैं, तो कहीं नहरों के निकालने की योजना है और कहीं किसी पर चढ़ाई की जा रही है।

७. अर्थात् वह फिर दोबारा पैदा करेगा। और एक किये हुये काम को दोहराना कुछ भी मुश्किल नहीं।

८. अर्थात् 'क़ियामत' की घड़ी।

९. अर्थात् वे निराश और भयभीत होकर रह जायेंगे और सारी चौकड़ी भूल जायेंगे।

१०. दे० फुटनोट ८।

११. अर्थात् अच्छे और बुरे लोग अलग-अलग कर दिये जायेंगे। जैसा कि अगली 'आयत' में आ रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. तो अब अल्लाह की 'तसबीह' करना है[12] जब कि तुम सन्ध्या करो और जब सुबह करो —

17. So glory be to Allah when ye enter the night and when ye enter the morning—

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ⑰

१८. उसी के लिए प्रशंसा है आकाशों में और धरती में !—और तीसरे पहर और जब तुम 'ज़ुह्र' करो[13]।

18. Unto Him be praise in the heavens and the earth!—and at the sun's decline and in the noonday.

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَ
عَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ⑱

१९. वह सजीव को निर्जीव में से निकलता है, और निर्जीव को सजीव में से, और धरती को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। इसी तरह तुम भी (मृत्यु की दशा से) निकाले जाओगे।

19. He bringeth forth the living from the dead, and He bringeth forth the dead from the living, and He reviveth the earth after her death. And even so will ye be brought forth.

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ
كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑲

२०. और उस की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि तुम मनुष्य हो चलते-फिरते हो !

20. And of His signs is this: He created you of dust, and behold you human beings, ranging widely!

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ⑳

२१. और उस की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम ही में से जोड़े पैदा किये[14] ताकि तुम उन के पास आराम और चैन पाओ, और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता रख दी। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

21. And of His signs is this: He created for you helpmeets from yourselves that ye might find rest in them, and He ordained between you love and mercy. Lo! herein indeed are portents for folk who reflect.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ㉑

२२. और उस की निशानियों में से आकाशों और धरती का पैदा करना, और तुम्हारी भाषाओं और रंगों की भिन्नता है। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं ज्ञान वालों के लिए।

22. And of His signs is the creation of the heavens and the earth, and the difference of your languages and colours. Lo! herein indeed are portents for men of knowledge.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ㉒

२३. और उस की निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन को सोना, और उस के अनुग्रह[15] को तलाश करना। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं[16]।

23. And of His signs is your slumber by night and by day, and your seeking of His bounty. Lo! herein indeed are portents for folk who heed.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
ابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ㉓

१२. अर्थात् 'नमाज़' पढ़ो और अपनी नमाज़ों के द्वारा अल्लाह की बड़ाई करो।
१३. इस 'आयत' में 'नमाज़' के चार वक़्तों, 'फ़ज्र', 'मग़रिब', 'अस्र' और 'ज़ुह्र'—की ओर संकेत है। क़ुरआन की दूसरी आयतों में 'इशा' की 'नमाज़' की ओर भी संकेत किया गया है (दे० सूरा हूद आयत ११४, बनी इसराईल आयत ११४ और ता० हा० आयत १३०)। इस प्रकार क़ुरआन ने पाँचों वक़्तों की नमाज़ की ओर संकेत किया है।
१४. अर्थात् तुम्हारे ही वर्ग और जाति से (of the same kind) तुम्हारे लिए जोड़े बनाये; स्त्री के लिए पुरुष और पुरुष के लिए स्त्री। जिन में परस्पर गहरा सम्पर्क, अनुकूलता और एकात्मता पाई जाती है। दोनों एक-दूसरे की मनोवस्था और प्राकृतिक-प्रेरणाओं का पूर्ण उत्तर हैं। दोनों एक-दूसरे से मिल कर ही चैन और आराम पाते हैं। स्त्री-पुरुष के योग के बिना न तो मानव-समाज का निर्माण सम्भव है और न इस के बिना किसी सभ्यता और संस्कृति की स्थापना की कल्पना की जा सकती है।
१५. अर्थात् आजीविका।
१६. अर्थात् ध्यान देते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. और उस की निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है डर के साथ भी और आशा के साथ भी,[१७] और आकाश से जल बरसता है, फिर उस के द्वारा धरती को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

24. And of His signs is this: He showeth you the lightning for a fear and for a hope, and sendeth down water from the sky, and thereby quickeneth the earth after her death. Lo! herein indeed are portents for folk who understand.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

२५. और उस की निशानियों में से यह है कि आकाश और धरती उस के हुक्म से क़ायम हैं, फिर ज्यों ही, उस ने तुम्हें एक आवाज़ दी धरती से तुम निकल पड़ोगे —

25. And of His signs is this: The heavens and the earth stand fast by His command, and afterward, when He calleth you, lo! from the earth ye will emerge.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾

२६. [१८]आकाशों और धरती में जो कोई भी है उसी का है! सभी उस की आज्ञा का पालन करने वाले हैं।

26. Unto Him belongeth whosoever is in the heavens and in the earth. All are obedient unto Him.

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾

२७. और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उस की पुनरावृत्ति करेगा,[१९] और यह उस के लिए अधिक सरल है। आकाशों और धरती में उस की मिसाल सर्वोच्च है। और वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

27. He it is Who produceth creation then reproduceth it, and it is easier for Him. His is the Sublime Similitude in the heavens and in the earth. He is the Mighty, the Wise.

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

२८. वह तुम्हारे लिए स्वयं तुम में से एक मिसाल देता है। क्या ऐसा है कि जिन (गुलामों) के तुम मालिक हो, उन में से कुछ लोग उस (धन-सम्पत्ति) में जिसे हम ने तुम्हें प्रदान किया है, तुम्हारे साथ बराबर के सहभागी हों तुम्हें उन का डर रहता हो जैसा कि तुम्हें अपनों का डर रहता है[२०]? इस तरह 'आयतों' को हम खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

28. He coineth for you a similitude of yourselves. Have ye, from among those whom your right hands possess, partners in the wealth We have bestowed upon you, equal with you in respect thereof, so that ye fear them as ye fear each other (that ye ascribe unto Us partners out of that which We created)? Thus We display the revelations for people who have sense.

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

१७. अर्थात् गरज-चमक से यह आशा होती है कि वर्षा होगी, खेतियाँ हरी-भरी हो जायेंगी और यह भय भी होता है कि कहीं बिजली न गिर पड़े, ओले न पड़ने लगें।

१८. यहाँ से आयत ४५ तक व्यवहित वर्णन है। आयत ४६ आयत २५ से सम्बद्ध है।

१९. दे० आयत ११।

२०. सारांश यह है कि अल्लाह के दिये हुये धन-सम्पत्ति में जब तुम अपने दासों को शरीक नहीं समझते, तो फिर यह कौन सा न्याय है कि अल्लाह ही की सृष्टि के जीव आदि को उस का शरीक बनाते हुये तुम्हें कुछ भी संकोच नहीं होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. नहीं, बल्कि जो ज़ालिम हैं वे बिना ज्ञान के अपनी इच्छाओं पर चलते हैं। तो कौन उसे मार्ग दिखा सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो ? ऐसे लोगों का कोई सहायक नहीं[२१]।

29. Nay, but those who do wrong follow their own lusts without knowledge. Who is able to guide him whom Allah hath sent astray? For such there are no helpers.

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

३०. अतः हर ओर से कट कर अपना रुख इस 'दीन' की ओर जमा दो[२२]—वही अल्लाह की (बनाई हुई) प्रकृति जिस पर उस ने मनुष्य की सृष्टि की है[२३] ! अल्लाह की सृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं होने का। यही ठीक 'दीन' (धर्म) है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते—

30. So set thy purpose (O Muhammad) for religion as a man by nature upright—the nature (framed) of Allah, in which He hath created man. There is no altering (the laws of) Allah's creation. That is the right religion, but most men know not—

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

३१. उस की ओर[२४] रुजू (प्रवृत्त) होते हुये और डरो उस से और 'नमाज़' क़ायम करो, और 'मुश्रिकों' में से न हो;

31. Turning unto Him (only); and be careful of your duty unto Him, and establish worship, and be not of those who ascribe partners (unto Him):

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾

३२. जिन्हों ने अपना 'दीन' अलग-अलग कर लिया, और जत्थों में बँटे हुये हैं, हर एक समुदाय के पास जो कुछ है उसी में वह मग्न है।

32. Of those who split up their religion and became schismatics, each sect exulting in its tenets.

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

३३. लोगों को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने 'रब' को उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होकर पुकारते हैं; फिर जब, वह उन्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराता है, तो झट उन में से कुछ लोग अपने 'रब' के साथ 'शिर्क' करने लग जाते हैं

33. And when harm toucheth men they cry unto their Lord, turning to Him in repentance; then, when they have tasted of His mercy, behold! some of them attribute partners to their Lord.

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

२१. जिन लोगों को सत्य से वैर होता है और जो अपने लिए गुमराही को पसन्द करते हैं, ऐसे लोगों को अल्लाह ज़बरदस्ती सीधे मार्ग पर नहीं लाता; उन्हें वह भटकने के लिए छोड़ देता है। उन्हें सत्य की अपेक्षा असत्य ही प्रिय हो जाता है। सीधे मार्ग के मुक़ाबले में टेढ़ा मार्ग ही उन्हें सुगम और सहज प्रतीत होने लगता है। अल्लाह हम सब को इस बुरी दशा से बचाये कि हम सत्य को छोड़ कर असत्य के उपासक बन कर रहें।

२२. अर्थात् उस 'दीन' पर जम जाओ जिसे क़ुरआन तुम्हारे सामने पेश करता है और जो समस्त 'नबियों' और महापुरुषों का 'दीन' रहा है चाहे वे किसी भी देश में हुये हों और चाहे उन की भाषा कोई भी रही हो। सत्य एक ही है जिस की ओर अल्लाह के 'नबियों' ने अपने-अपने समय में लोगों को बुलाया है। उसी सत्य की ओर आज क़ुरआन लोगों को बुला रहा है।

२३. अर्थात् क़ुरआन जिस 'दीन' की ओर मनुष्य को बुलाता है वह मानव-जाति का स्वाभाविक एवं प्राकृतिक (Natural) 'दीन' है। यह 'दीन' हमारी प्रकृति को नष्ट नहीं करता। इस 'दीन' (धर्म) का ज्ञान वास्तव में अपनी ही प्रकृति और अस्तित्व के वास्तविक प्रयोजन का ज्ञान है। इस के विरुद्ध कार्य करना अपनी सच्ची प्रकृति और अपने निर्मल स्वरूप को नष्ट करना है। नबी सल्ल० ने कहा है। "हर बच्चा जो पैदा होता है अपनी प्रकृति पर पैदा होता है फिर उस के माता-पिता उसे 'यहूदी' या 'ईसाई' या 'मजूसी' बना देते हैं जैसे हर जानवर के पेट से पूरा-पूरा भला-चंगा जानवर पैदा होता है कोई बच्चा भी कटे हुए कान ले कर नहीं आता बाद में 'मुश्रिक' लोग अन्धविश्वास के कारण उस के कान काटते हैं"। 'नबी' सल्ल० ने समझाने के लिए जो मिसाल बयान की है उस से मालूम होता है कि मनुष्य अपने प्राकृतिक धर्म को त्याग कर अपने ही को क्षति और आघात पहुँचाता है।

२४. अर्थात् अल्लाह की ओर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. ताकि हम ने जो कुछ उन्हें दिया है उस के साथ 'कुफ़्र' करें। अच्छा, सुख भोग लो, जल्द ही तुम जान लोगे।

34. So as to disbelieve in thatwhich We have given them. (Unto such it is said): Enjoy yourselves awhile, but ye will come to know.

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

३५. क्या हम ने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उस 'शिर्क' के हक़ में बोलती हो जो ये उस के[२५] साथ करते हैं?

35. Or have We revealed unto them any warrant which speaketh of that which they associate with Him?

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾

३६. और जब हम लोगों को दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे उस पर फूल जाते हैं; और जो कुछ उन के हाथों ने आगे भेजा है यदि उस के कारण उन पर कोई मुसीबत आती है, तो वे निराश होने लगते हैं!

36. And when We cause mankind to taste of mercy they rejoice therein; but if an evil thing befall them as the consequence of their own deeds, lo! they are in despair!

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

३७. क्या इन लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है। दिस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाते हैं।

37. See they not that Allah enlargeth the provision for whom He will, and straiteneth (it for whom He will). Lo! herein indeed are portents for folk who believe.

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

३८. तो नातेदार को उस का हक़ दो, और मुहताज, और मुसाफ़िर को (उस का हक़)। यह उत्तम है उन के लिए जो अल्लाह की ख़ुशी चाहते हैं। और वही सफल हैं।

38. So give to the kinsman his due, and to the needy, and to the wayfarer. That is best for those who seek Allah's countenance. And such are they who are successful.

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾

३९. और जो ब्याज तुम देते हो ताकि लोगों के मालों में सम्मिलित होकर बढ़ जाये तो अल्लाह की दृष्टि में वह बढ़ता नहीं;[२६] और जो 'ज़कात' तुम अल्लाह की शुभाकांक्षा के लिए, देते हो, तो ऐसे ही लोग कई गुना पाने वाले हैं[२७]।

39. That which ye give in usury in order that it may increase on (other) people's property hath no increase with Allah; but that which ye give in charity, seeking Allah's countenance, hath increase manifold.

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

४०. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) सहभागियों में भी कोई है जो इन कामों में से कुछ कर सके? महिमावान् है वह! और उच्च है 'शिर्क' उस से जो ये लोग करते हैं!

40. Allah is He Who created you and then substained you, then causeth you to die, then giveth life to you again. Is there any of your (so-called) partners (of Allah) that doth aught of that? Praised and exalted be He above what they associate (with Him)!

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ع

२५. अर्थात् अल्लाह के साथ।

२६. यह क़ुरआन में पहली आयत है जिस में ब्याज की निन्दा की गई है। फिर आगे चल कर मदीना में साफ़-साफ़ ब्याज के 'हराम' होने का आदेश दिया गया। और बताया गया कि अल्लाह सूद (ब्याज) का मठ मार देता और 'सदक़ों' (की बरकत) को, बढ़ाता है (दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ६७)।

२७. जितनी ही अधिक मन की पवित्रता और सद्भावना के साथ मनुष्य अपने धन को अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करेगा अल्लाह उतना ही अधिक बदला उसे प्रदान करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. जल और थल में बिगाड़ फैल गया[२८] स्वयं लोगों के ही हाथों की कमाई से,[२९] ताकि उन्हें उन के कुछ करतूतों का मज़ा चखाये, कदाचित् वे बाज़ आ जायें।

41. Corruption doth appear on land and sea because of (the evil) which men's hands have done, that He may make them taste a part of that which they have done, in order that they may return.

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾

४२. कहो : धरती में चल-फिर कर देखो कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो (तुम से) पहले गुज़रे हैं! उन में अधिकतर 'मुश्रिक' ही थे।

42. Say (O Muhammad, to the disbelievers): Travel in the land, and see the nature of the consequence for those who were before you! Most of them were idolaters.

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

४३. तो अपना रुख़ इस सीधे 'दीन' की ओर रक्खो, इस से पहले कि वह दिन आये जो टलने का नहीं, अल्लाह की ओर से होगा। उस दिन लोग फट कर एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे—

43. So set thy purpose resolutely for the right religion, before the inevitable day cometh from Allah. On that day mankind will be sundered—

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴿٤٣﴾

४४. जिस ने 'कुफ़्र' किया तो उस का 'कुफ़्र' उसी पर पड़ेगा, और जिन लोगों ने अनुकूल कर्म किये तो वे अपने ही भले के लिए सामान कर रहे हैं।

44. Whoso disbelieveth must (then) bear the consequences of his disbelief, while those who do right make provision for themselves—

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾

४५. ताकि अल्लाह उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये अपने अनुग्रह से बदला प्रदान करे। निस्सन्देह वह 'काफ़िरों' को पसन्द नहीं करता—

45. That He may reward out of His bounty those who believe and do good works. Lo! He loveth not the disbelievers (in His guidance).

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

४६. [३०]और उस की निशानियों में से यह है कि वह शुभ सूचना देने वाली हवायें भेजता है[३१] ताकि तुम्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराये, और ताकि उस के हुक्म से नौकायें चलें,[३२] और ताकि तुम उस का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो,[३३] और ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ[३४]।

46. And of His signs is this: He sendeth herald winds to make you taste His mercy, and that the ships may sail at His command, and that ye may seek His favour, and that haply ye may be thankful.

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

४७. और हम तुम से पहले कितने ही 'रसूलों' को उन की जाति की ओर भेज चुके हैं। और वे उन के पास स्पष्ट प्रमाण ले कर आये। फिर जिन्हों ने अपराध किया[३५] उन से हम ने बदला लिया। और 'ईमान' वालों की मदद करना हम पर हक़ है।

47. Verily We sent before thee (Muhammad) messengers to their own folk. They brought them clear proofs (of Allah's Sovereignty). Then We took vengeance upon those who were guilty (in regard to them). To help believers is incumbent upon Us.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

२८. यह संकेत उस युद्ध की ओर है जो रूम और ईरान के बीच हो रहा था।

२९. हाथों की कमाई से अभिप्रेत है 'कुफ़्र', 'शिर्क', नास्तिकता, अन्याय, दुराचरण, परलोक का इन्कार आदि और मनुष्य का वह आचरण और व्यावहार जिसे वह ईश्वर को भुला कर अपनाता है।

३०. यह 'आयत' सूरा की आयत २५ से सम्बद्ध है बीच में व्यवहित वर्णन आ गया है।

३१. अर्थात् वह ऐसी हवायें भेजता है जो वर्षा की शुभ सूचना देती हैं।

३२. प्राचीन काल में पाल से चलने वाली नौकायें और जहाज़ होते थे जो हवाओं के सहारे चलते थे। यदि अनुकूल वायु न चलती तो समुद्रीय यात्रा असम्भव होती।

३३. अर्थात् रोज़ी प्राप्त करने के लिए व्यापार आदि के ध्येय से यात्रा करो।

३४. यह जीवन का सब से उच्च लक्ष्य है जो हमारे व्यक्तित्व को महानता एवं पवित्रता प्रदान करता है।

३५. अर्थात् इन निशानियों से कुछ भी शिक्षा ग्रहण न की 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का इन्कार ही करते रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर वह इन्हें आकाश में फैलाता है जिस तरह चाहता है, और उन्हें टुकड़ियों में बाँट देता है फिर तू देखता है कि उन के बीच से मेह निकला चला आता है। तो जब वह इसे अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है बरसाता है, तो वे प्रसन्न हो जाते हैं;

४९. य पि वे अभी-अभी इस के उन पर उतरने के पहले तक निराश थे।

५०. देखो, अल्लाह की दयालुता के निशान : वह कैसे धरती को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। निस्सन्देह वह मुरदों को जीवन प्रदान करने वाला है। और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

५१. और यदि हम एक हवा भेज दें और वे इसे[३६] देखें कि पीली पड़ गई, तो वे इस के पश्चात् 'कुफ़्र' करने लग जायें[३७]।

५२. (हे 'नबी'!) तुम मुरदों को[३८] नहीं सुना सकते हो, और न बहरों को[३९] आवाज़ सुना सकते हो जब कि वे पीठ फेरे भागें।

५३. और न तुम अन्धों को उन की गुमराही से मार्ग पर ला सकते हो। तुम तो केवल उन ही को सुना सकते हो जो हमारी 'आयतों' पर 'ईमान' लाते हैं तो वे 'मुस्लिम' होते हैं।

५४. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें बनाया इस तरह कि निर्बलता रक्खी, फिर निर्बलता के पश्चात् शक्ति रक्खी, फिर शक्ति के पश्चात् निर्बलता और बुढ़ापा रक्खा। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। और वह जानने वाला और सामर्थ्यवात् है।

48. Allah is He who sendeth the winds so that they raise clouds, and spreadeth them along the sky as pleaseth Him, and causeth them to break and thou seest the rain downpouring from within them. And when He maketh it to fall on whom He will of His bondmen, lo! they rejoice;

49. Though before that, even before it was sent down upon them, they were in despair.

50. Look, therefore, at the prints of Allah's mercy (in creation): how He quickeneth the earth after her death. Lo! He verily is the Quickener of the Dead, and He is Able to do all things.

51. And if We sent a wind and they beheld it yellow, they verily would still continue in their disbelief.

52. For verily thou (Muhammad) canst not make the dead to hear, nor canst thou make the deaf to hear the call when they have turned to flee.

53. Nor canst thou guide the blind out of their error. Thou canst make none to hear save those who believe in Our revelations so that they surrender (unto Him).

54. Allah is He who shaped you out of weakness, then appointed after weakness strength, then, after strength, appointed weakness and grey hair. He createth what He will. He is the Knower, the Mighty.

اللّٰهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا
فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ
كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهِ
فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾
وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾
فَانْظُرْ إِلٰى أَثَرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ
الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾
وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا
لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾
فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾
وَمَا أَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ
إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾
اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضُعْفٍ ثُمَّ
جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ
جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَشَيْبَةً
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

३६. अर्थात् खेती को।
३७. अर्थात् अकृतज्ञ बन जायें।
३८. अर्थात् जिन के दिल मुरदा हो चुके हैं।
३९. अर्थात् जो दिल के बहरे हैं। जो बातों से कुछ भी प्रभावित नहीं होते। सब कुछ सुनने के बाद भी जिन में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। ऐसा लगता है जैसे उन्हों ने कुछ भी नहीं सुना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. और जिस दिन वह घड़ी[40] क़ायम होगी अपराधी क़समें खायेंगे कि एक घड़ी से अधिक नहीं ठहरे[41] इसी तरह वे उलटे भटके चले जाते थे।

५६. परन्तु जिन लोगों को ज्ञान और 'ईमान' दिया गया था वे कहेंगे : अल्लाह के लिखे में, तो तुम जी उठने के दिन तक ठहरे रहे हो। तो यह वही जी उठने का दिन है, परन्तु तुम जानते न थे।

५७. तो उस दिन उन लोगों को जिन्होंने जुल्म किया उज्र करना काम न देगा और उन्हें इस का अवसर मिलेगा कि मना लें।

५८. और हम इस 'क़ुरआन' में लोगों के लिए हर एक मिसाल बयान कर चुके हैं; यदि तुम कोई भी निशानी इन के पास ले आओ, जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है वे यही कहेंगे : तुम तो निरे मिथ्यावादी हो!

५९. इस तरह अल्लाह ठप्पा लगा देता है[42] उन लोगों के दिलों पर जो जानते नहीं।

६०. अतः 'सब्र' करो! निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है,[43] और कदापि तुझे हल्का न पायें वे लोग जो विश्वास नहीं करते।

55. And on the day when the Hour riseth the guilty will vow that they did tarry but an hour — thus were they ever deceived.

56. But those to whom knowledge and faith are given will say: The truth is, ye have tarried, by Allah's decree, until the Day of Resurrection. This is the Day of Resurrection, but ye used not to know.

57. In that day their excuses will not profit those who did injustice, nor will they be allowed to make amends.

58. Verily We have coined for mankind in the Qur'an all kinds of similitudes; and indeed if thou camest unto them with a miracle, those who disbelieve would verily exclaim: Ye are but tricksters!

59. Thus doth Allah seal the hearts of those who know not.

60. So have patience (O Muhammad)! Allah's promise is the very truth, and let not those who have no certainty make thee impatient.

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ
مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ٥٥
وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ
لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ
فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ٥٦
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ٥٧
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ
مِن كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِن جِئْتَهُم بِآيَةٍ لَّيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ٥٨
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ٥٩
فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ
الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ٦٠

४०. अर्थात् 'क़ियामत' की आने वाली घड़ी जिस के आने की तुम्हें सूचना दी जा रही है।

४१. मृत्यु से 'क़ियामत' के समय तक चाहे जितना समय बीत चुका हो परन्तु उन्हें ऐसा ही लगेगा जैसे हम थोड़ी ही देर पहले सोये थे और हमें अचानक उठना पड़ा है।

४२. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ४।

४३. दे० आयत ४७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१—लुक़मान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में हकीम लुक़मान के उन उपदेशों का उल्लेख हुआ है जो उन्हों ने अपने बेटे को दिये थे इस सम्पर्क से इस का नाम लुक़मान रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा उस समय उतरी हैं जब 'इस्लाम' के विरुद्ध विरोधी दल की ओर से ज़ुल्म और अत्याचार शुरू हो गया था। अनुमान है कि यह सूरा और सूरा अल-अनकबूत एक ही समय की सूरतें हैं; परन्तु सूरा लुक़मान पहले उतरी है। दोनों सूरतों में नवयुवकों से कहा गया है कि माता-पिता का हक़ बहुत अधिक है परन्तु यदि वे इस बात पर ज़ोर डालें कि अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक ठहराओ तो कदापि उनकी बात न मानो। सूरा लुक़मान के अध्ययन से पता चलता है कि जिस समय यह 'सूरा' उतरी है विरोधियों की शत्रुता और उन का विरोध अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सका था; परन्तु सूरा अल-अनकबूत के अवतीर्ण होने के समय उन का वैमनस्य बहुत बढ़ चुका था।

वार्त्तायें (Subject-matter)

यह 'सूरा' अल्लाह की निशानियों और उस की उक्तियों के बारे में है जिन पर कोई हावी नहीं हो सकता। इस सूरा में अल्लाह को पालन-क्रिया के द्वारा 'क़ियामत' और 'तौहीद', (एकेश्वरवाद) की पुष्टि की गई है। और बताया गया है कि 'शिर्क' सर्वथा सत्य के प्रतिकूल है। लोगों का यह कर्तव्य है कि वे आँखें बन्द कर के अपने माता-पिता के पीछे न चलें बल्कि उस शिक्षा पर पक्षपात से रहित हो कर विचार करें जो शिक्षा अल्लाह के 'रसूल' की ओर से उन्हें दी जा रही है। उन्हें खुली आँखों से देखना चाहिए कि वर्तमान लोक की समस्त वस्तुयें और स्वय मानव की अन्तरात्मा किस प्रकार उस सच्चाई की गवाह है जिस की ओर अल्लाह का 'रसूल' लोगों को आमन्त्रित कर रहा है।

फिर बताया गया है कि जिस बात की ओर 'रसूल' लोगों को बुला रहा है वह कोई अद्‌भुत और अनोखी बात नहीं है बल्कि वह तो जानी-पहचानी सच्चाई है जिसे पहले भी लोगों ने अपनाया था। ज्ञानी लोगों ने पहले भी ये बातें कही हैं जो आज मुहम्मद सल्ल० तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं। लुक़मान जैसे ज्ञानी और सिद्ध पुरुष से तुम भली-भांति परिचित हो जिस के ज्ञान और बुद्धिमत्ता को तुम भी मानते हों जिस के प्रवचनों का तुम आदर करते हो उस की शिक्षा भी वही थी जिस का विरोध करने के लिए आज तुम खड़े हो रहे हो।

हकीम लुक़मान जिन के सिद्ध पुरुष होने पर क़ुरआन साक्षी है कौन थे? इस के बारे में बड़ा मतभेद है। कुछ पुरातन उल्लेखों से पता चलता है कि लुकमान नोबा के रहने वाले थे; नोबा उस क्षेत्र का नाम है जो मिस्र के दक्षिण और सूडान के उत्तर पड़ता है। रहा यह प्रश्न कि एक सूडानी व्यक्ति की बातें अरब में कैसे फैलीं तो कुछ पुरातन उल्लेखों से इस बात का पता चलता है कि लुक़मान वास्तव में तो नोबी थे परन्तु निवासी वे मदयन और ऐला क्षेत्र[१] के थे। यही कारण है कि उन की भाषा अरबी

१. वर्तमान अक़बा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थी और उन की 'हिकमत' की बातों का अरब में प्रचार हुआ। हज़रत इब्न अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा और कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि लुक़मान हब्शी ग़ुलाम थे। परन्तु इस से यह ज़रूरी नहीं कि लुक़मान हब्शा के रहने वाले रहे हों; उस समय अरब लोग काले रंग वालों को साधारणत: हबशी कहते थे। सईद बिन मुसय्यिब के कथन से पता चलता है कि लुक़मान काले रंग वालों में से थे।

यूनान वाले जिस व्यक्ति को Aesop (Aethiops) कहते हैं साधारणत: लोगों का विचार है कि उस से अभिप्रेत लुक़मान ही हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' लुक़मान

(मक्का में उतरी—'आयतें' ३४)

LUQMAN
Revealed at Mecca.

سُورَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَثَلٰثُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़० लाम० मीम०[1]।

1. Alif. Lam. Mim.

الٓمّٓ ﴿١﴾

२. ये तत्त्वदर्शिता वाली 'किताब' की 'आयतें' हैं,

2. These are revelations of the wise Scripture:

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

३. मार्ग-दर्शन और दयालुता उत्तमकारों के लिए,

3. A guidance and a mercy for the good:

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

४. जो 'नमाज़' क़ायम करते हैं और 'ज़कात' देते हैं और 'आख़िरत' पर विश्वास रखते हैं[2]।

4. Those who established worship and pay the poor-due and have sure faith in the Hereafter

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

५. ये लोग अपने 'रब' की ओर से मार्ग पर हैं। और यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

5. Such have guidance from their Lord. Such are the successful.

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

६. और लोगों में से कोई तो ऐसा भी है जो सौदा करता है बहलावे की बातों का,[3] ताकि अल्लाह के मार्ग से भटका दे, बिना ज्ञान के और इन ('आयतों') की हँसी उड़ाये। ऐसे लोगों के लिए अपमानित करने वाली यातना है।

6. And of mankind is he who payeth for mere pastime of discourse, that he may mislead from Allah's way without knowledge, and maketh it the butt of mockery. For such there is a shameful doom.

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾

७. जब उसे हमारी 'आयतें' सुनाई जाती हैं तो वह बड़े गर्व के साथ मुँह मोड़ लेता है मानो उस ने इन्हें सुना ही नहीं, मानो उस के कानों में डाट है। अच्छा उसे एक दुखदायिनी यातना की सूचना दे दो।

7. And when Our revelations are recited unto him he turneth away in his pride as if he heard them not, as if there were a deafness in his ears. So give him tidings of a painful doom.

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾

८. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए नेमतों भरी 'जन्नतें' हैं,

8. Lo! those who believe and do good works, for them are gardens of delight.

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा अन-नम्ल आयत ३।
३. अर्थात् ऐसी बात का खरीदार बनता है जो आदमी को अपने में व्यस्त कर के उसे हर दूसरी चीज़ की ओर से बेसुध कर दे।
ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि नज़्र बिन हारिस नामक एक व्यक्ति ने जब देखा कि नबी सल्ल० की बातें लोगों के दिलों में घर करती जा रही हैं और 'क़ुरैश' के विरोध के बावजूद 'इस्लाम' फैलता ही जा रहा है, तो वह मक्का से इराक़ गया और वहाँ से वह रुस्तुम और इसफ़ेन्दियार आदि की कथायें ले आया। ताकि इन कहानियों के द्वारा लोगों के ध्यान को क़ुरआन की ओर से फेर दे। नज़्र ने अपने ध्येय की सिद्धि के लिए गाने वाली लौंडियाँ भी खरीदी थीं। जिस किसी के बारे में सुनता कि वह नबी सल्ल० की बातों से प्रभावित हो रहा है, उस के पीछे अपनी एक लौंडी लगा देता और कहता: उसे खूब खिला-पिला और संगीत सुना ताकि वह तेरी ओर आकृष्ट हो जावे और उस का मन मुहम्मद (सल्ल०) की बातों की ओर से हट जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. जिन में वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है। और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

9. Wherein they will abide. It is a promise of Allah in truth. He is the Mighty, the Wise.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑨

१०. उस ने आकाशों को बिना सहारे के पैदा किया जैसा कि तुम देखते हो, और धरती में पहाड़ डाल रक्खे हैं, कि वह तुम्हें ले कर ढलक न जावे;[४] और उस में हर तरह के जानवर फैला दिये। और आकाश से जल बरसाया और उस में हर प्रकार की उत्तम चीज़ें उगाईं।

10. He hath created the heavens without supports that ye can see, and hath cast into the earth firm hills, so that it quake not with you; and He hath dispersed therein all kinds of beasts. And We send down water from the sky and We cause (plants) of every goodly kind to grow therein.

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ ۭ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ⑩

११. यह अल्लाह का बनाया है। अब मुझे दिखाओ जो कुछ बनाया है औरों ने जो उस के सिवा हैं[५]। नहीं, बल्कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुये हैं!

11. This is the Creation of Allah. Now show me that which those (ye worship) beside Him have created. Nay, but the wrong-doers are in error manifest!

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ⑪

१२. और हम ने लुक़मान को 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की[६] कि अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखला;[७] जो कोई कृतज्ञता दिखलायेगा, तो वह अपने ही लिए कृतज्ञता दिखलायेगा। और जिस किसी ने 'कुफ़्र' किया तो निस्सन्देह अल्लाह अपेक्षा-रहित और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है[८]।

12. And verily We gave Luqman wisdom, saying: Give thanks unto Allah; and whoso ever giveth thanks, he giveth thanks for (the good of) his soul. And whosoever refuseth — Lo! Allah is absolute, Owner of Praise.

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑫

१३. और याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे से कहा, जब कि वह उसे[९] सदुपदेश दे रहा था: हे मेरे बेटे! अल्लाह के साथ 'शिर्क' न करना। निश्चय ही शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है—

13. And (remember) when Luqman said unto his son, when he was exhorting him: O my dear son! Ascribe no partners unto Allah. Lo! to ascribe partners (unto Him) is a tremendous wrong —

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ⑬

४. दे० सूरा अन-नह्ल फ़ुटनोट ८।

५. जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक समझते हो।

६. अरब के लोग लुक़मान से भली-भाँति परिचित थे। अरब कवियों के काव्यों में उन का उल्लेख मिलता है। अरब के लोग उन्हें एक ज्ञानी और तत्त्वदर्शी पुरुष समझते थे। बल्कि कुछ शिक्षित व्यक्तियों के पास उन के कथनों का एक संग्रह भी था।

यहाँ मक्का वालों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह का 'रसूल' (सल्ल०) तुम्हें जिस बात की ओर बुला रहा है वह कोई नई बात नहीं है पहले के ज्ञानी और दार्शनिक लोग भी यही बात कहते आये हैं। तुम्हारे प्रसिद्ध हकीम और तत्त्व-ज्ञानी लुक़मान ने भी यही कुछ कहा है।

७. जो व्यक्ति अल्लाह का कृतज्ञ भक्त न बन सका, यदि वह कहता है कि उसे ज्ञान मिल गया है तो वह झूठा है। सब से बढ़ कर तत्त्व-ज्ञान की बात (Wisdom) यह है कि मनुष्य अपने सृष्टि-कर्त्ता का आभार स्वीकार करे।

८. 'कुफ़्र' करने वाला अपना ही बुरा करता है, उस के 'कुफ़्र' से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता।

९. अर्थात् अपने बेटे को।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. ''और हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता के बारे में ताकीद की है— उस की माता उसे (पेट में) लिये-लिये निढाल होती रही, और उस का दूध छूटता है दो वर्ष में''—मेरा और अपने माता-पिता का कृतज्ञ हो। मेरी ही ओर आना है।

14. And We have enjoined upon man concerning his parents — His mother beareth him in weakness upon weakness and his weaning is in two years — Give thanks unto Me and unto thy parents. Unto Me is the journeying.

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ
أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَالُهُ فِي
عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ؕ
إِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿١٤﴾

१५. परन्तु यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी चीज़ को मेरा सहभागी ठहराये जिस का तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं,[12] तो उन का कहना न मानना[13] और दुनिया में उन के संग भले तरीक़े से रहना, और चल उस व्यक्ति के मार्ग पर जिस ने मुझ से लौ लगाई। फिर तुम को मेरी ओर पलटना है। फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ कि तुम करते थे—

15. But if they strive with thee to make thee ascribe unto Me as partner that of which thou hast no knowledge, then obey them not. Consort with them in the world kindly, and follow the path of him who repenteth unto Me. Then unto Me will be your return, and I shall tell you what ye used to do—

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا
لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ
صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۖ وَاتَّبِعْ
سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

१६. (लुक़मान ने कहा) : हे मेरे बेटे ! यदि कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, और वह किसी चट्टान में हो, या आकाशों में, या धरती में (छिपी हुई) हो, अल्लाह उसे निकाल लायेगा। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

16. O my dear son! Lo! though it be but the weight of a grain of mustard-seed, and though it be in a rock, or in the heavens, or in the earth, Allah will bring it forth. Lo! Allah is Subtile, Aware.

يَا بُنَيَّ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ
خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَاوَاتِ أَوْ
فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾

१७. हे मेरे बेटे ! 'नमाज़' क़ायम कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक, और जो मुसीबत भी तुझ पर पड़े उस पर 'सब्र' कर। निश्चय ही ये बड़े साहस के काम हैं।

17. O my dear son! Establish worship and enjoin kindness and forbid iniquity, and persever whatever may befall thee. Lo! that is of the steadfast heart of things.

يَا بُنَيَّ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ إِنَّ
ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٧﴾

१८. और लोगों के सामने अपना मुँह टेढ़ा न कर, और न धरती में अकड़ कर चल। निस्सन्देह अल्लाह किसी आत्मश्लाघी और डींगें मारने वाले को पसन्द नहीं करता।

18. Turn not thy sheek in scorn toward folk, nor walk with pertness in the land. Lo! Allah loveth not each braggart boaster.

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

१९. सीधी-सीधी चाल चल और अपनी आवाज़ को नीची कर। निश्चय ही सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गदहों की आवाज़ होती है।

19. Be modest in thy bearing and subdue thy voice. Lo! the harshest of all voices is the voice of the ass.

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ
صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ
الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾

१०. यहाँ से आयत १५ के अन्त तक व्यवहित वर्णन है जिसे अल्लाह ने लुक़मान की बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से बढ़ा दिया है।

११. सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत १५ में कहा गया है कि, "उस का पेट में रहना और उस का दूध छुटना ३० महीनों में हुआ।" इस से इब्न अब्बास ने यह नतीजा निकाला है कि गर्भावस्था की कम-से-कम मुद्दत ६ मास है। दूसरे विद्वानों ने भी इस से अपनी सहमति प्रकट की है।

१२. अर्थात् जिस के बारे में तुझे यह नहीं मालूम कि वह मेरा शरीक और साझी है।

१३. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत ८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. क्या तुम ने देखा नहीं[१४] कि अल्लाह ने आकाशों और धरती में जो कुछ है सब को तुम्हारे काम में लगा दिया है और अपनी खुली और छिपी नेमतें तुम पर पूरी कर दी हैं ? फिर भी लोगों में से कोई तो ऐसा है जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है, बिना इस के कि (उस के पास) कोई ज्ञान हो या मार्ग-दर्शन या प्रकाशमान् 'किताब'।

20. See ye not how Allah hath made serviceable unto you whatsoever is in the skies and whatsoever is in the earth and hath loaded you with His favours both without and within? Yet of mankind is he who disputeth concerning Allah, without knowledge or guidance or a Scripture giving light.

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ
ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ
يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا
كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

२१. और जब उन से कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है, तो कहते हैं : नहीं, बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या ! यद्यपि 'शैतान' उन्हें दहकती हुई आग ('जहन्नम') की ओर बुलाता रहा हो तो भी ?

21. And if it be said unto them: Follow that which Allah hath revealed, they say: Nay, but we follow that wherein we found our fathers. What! Even though the devil were inviting them unto the doom of flame?

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا
بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ
كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ إِلٰى
عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

२२. और जो कोई अपने-आप को अल्लाह के अर्पण कर दे और वह सत्कर्मी हो, उस ने निश्चय ही भरोसे के योग्य सहारा थाम लिया। और सब मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

22. Whosoever surrendereth his purpose to Allah while doing good, he verily hath grasped the firm hand-hold. Unto Allah belongeth sequel of all things.

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ وَإِلَى
اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُوْرِ ﴿٢٢﴾

२३. और जो कोई 'कुफ़्र' करे, तो उस का 'कुफ़्र' तुम्हें ग़म में न डाले। हमारी ही ओर तो उन्हें पलट कर आना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्हों ने किया। निस्सन्देह अल्लाह सीनों तक की बात[१५] को जानता है।

23. And whosoever disbelieveth, let not his disbelief afflict thee (O Muhammad). Unto Us is their return, and We shall tell them what they did. Lo! Allah is Aware of what is in the breasts (of men).

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهُ ۗ إِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ إِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾

२४. हम उन्हें थोड़ा सुख देंगे। फिर उन्हें विवश करके एक सख़्त यातना की ओर खींच ले जायेंगे।

24. We give them comfort for a little, and then We drive them to a heavy doom.

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى
عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

२५. और यदि तुम उन से पूछो कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया है ? वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। कहो : प्रशंसा अल्लाह के लिए है ! परन्तु उन में से अधिकतर लोग जानते नहीं[१६]।

25. If thou shouldst ask them: Who created the heavens and the earth? they would answer: Allah. Say Praise be to Allah! But most of them know not.

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

२६. आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है। निस्सन्देह अल्लाह अपेक्षारहित और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है।

26. Unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and the earth. Lo! Allah, He is the Absolute, the Owner of Praise.

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

१४. अर्थात् तुम ने इस पर विचार नहीं किया।

१५. अर्थात् दिलों तक की बात।

१६. अर्थात् अधिकतर लोग नहीं जानते कि अल्लाह को विश्व का सृष्टि-कर्त्ता मानने का तक़ाज़ा क्या होता है ? जब आकाशों और धरती का सृष्टि-कर्त्ता अल्लाह ही है तो फिर केवल वही 'इलाह' (पूज्य) और 'रब' भी है; उस के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जिस की बन्दगी और उपासना की जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ और धरती में जितने वृक्ष हैं यदि वे सब लेखनी हो जायें, और यह समुद्र हो जिसे सात और समुद्र रोशनाई पहुँचायें, तब भी अल्लाह की बातें (लिखने से) समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

२८. तुम सब को पैदा करना और पुनः जिला उठाना तो (उस के लिए) बस ऐसा है जैसे एक जीव को (पैदा करना और जिला उठाना)। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है[१७]।

२९. क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है, उस ने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रक्खा है, हर एक एक नियत समय तक चल रहा है; और यह कि तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है।

३०. यह इस कारण से कि अल्लाह ही सत्य है, और उसे छोड़ कर जिसे ये लोग पुकारते हैं मिथ्या है, और अल्लाह ही उच्च और महान् है।

३१. क्या तुमने देखा नहीं कि नौका दरिया में अल्लाह के अनुग्रह (कृपा) से चलती है, ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाये? निश्चय ही इस में हर 'सब्र' करने वाले और कृतज्ञ व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं।

३२. और जब (दरिया में) इन लोगों पर मौज छत्र की तरह छा जाती है, तो ये अल्लाह को पुकारते हैं, अपने 'दीन' को उसी के लिए ख़ालिस कर के। फिर जब वह इन्हें बचा कर स्थल तक पहुँचा देता है, तो इन में से कोई तो सन्मार्ग पर होता है। और हमारी निशानियों का इन्कार तो बस वह व्यक्ति ही करता है जो वचन भंग करने वाला और कृतघ्न है।

27. And if all the trees in the earth were pens, and the sea, with seven more seas to help it (were ink), the words of Allah could not be exhausted. Lo! Allah is Mighty, Wise.

28. Your creation and your raising (from the dead) are only as (the creation and the raising of) a single soul. Lo! Allah is Hearer Knower.

29. Hast thou not seen how Allah causeth the night to pass into the day and causeth the day to pass into the night, and hath subdued the sun and the moon (to do their work), each running unto an appointed term; and that Allah is Informed of what ye do?

30. That (is so) because Allah, He is the True, and that which they invoke beside Him is the False, and because Allah, He is the Sublime, the Great.

31. Hast thou not seen how the ships glide on the sea by Allah's grace, that He may show you of His wonders? Lo! therein indeed are portents for every steadfast, grateful (heart).

32. And if a wave enshroudeth them like awnings, they cry unto Allah, making their faith pure for Him only. But when He bringeth them safe to land, some of them compromise. None denieth Our signs save every traitor ingrate.

وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۫ كُلٌّ يَّجْرِىْۤ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

१७. वह एक साथ सब की आवाज़ें अलग-अलग सुन रहा है कोई आवाज़ उस के लिए बाधक नहीं बन सकती कि उसे सुनते हुये वह कोई दूसरी आवाज़ न सुन सके। इसी प्रकार वह क्षण-भर में समस्त मनुष्यों को एक साथ पुनः पैदा कर देने का सामर्थ्य रखता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३. हे लोगो ! अपने 'रब' का डर रक्खो और उस दिन से डरो जब कि कोई बाप अपने बेटे की ओर से बदला न देगा, और न कोई बेटा अपने बाप की ओर से कुछ बदला देने वाला होगा[१८]।

निश्चय ही अल्लाह का वादा[१९] सच्चा है। अतः यह सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाले, और न धोखे में डालने वाला[२०] तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाये।

33. O mankind! Keep your duty to your Lord and fear a Day when the parent will not be able to avail the child in aught, nor the child to avail the parent. Lo! Allah's promise is the very truth. Let not the life of the world beguile you, nor let the deceiver beguile you, in regard to Allah.

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٣٣

३४. निस्सन्देह उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है। वही मेंह बरसाता है, और वही जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है। कोई जीव नहीं जानता कि कल वह क्या कमायेगा, और न कोई जीव यह जानता है कि किस भू-भाग में वह मरेगा। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है[२१]।

33. Lo! Allah! With Him is knowledge of the Hour. He sendeth down the rain, and knoweth that which is in the wombs. No soul knoweth what it will earn to-morrow, and no soul knoweth in what land it will die. Lo! Allah is Knower, Aware.

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝٣٤ ع

१८. दूसरे लोग तो अलग रहे बाप-बेटे भी वहाँ एक दूसरे के काम न आवेंगे।

१९. अर्थात् अल्लाह का यह वादा कि 'क़ियामत' आने वाली है; हर एक को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा।

२०. छली और धोखेबाज़ चाहे 'शैतान' हो या कोई और।

२१ मनुष्य तो उन बातों को भी नहीं जानता जिन से उस के जीवन का गहरा सम्पर्क होता है। वह नहीं जानता कि वर्षा कब और कितनी होगी। वह इस के बारे में बेख़बर होता है कि उस की पत्नियों के गर्भाशय में क्या है। उसे यह तक पता नहीं कि कल उस के साथ क्या पेश आने वाला है और उस के जीवन का अन्त कहाँ और किस तरह होगा। ठीक इसी तरह उसे 'क़ियामत' की घड़ी के बारे में भी अल्लाह के फ़ैसले पर भरोसा रखना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२—अस-सजदा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अस-सजदा' **(The Prostration)** 'आयत' १५ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा उस समय उतरी है जब कि 'इस्लाम' के विरुद्ध विरोधियों की वैमनस्यता और अत्याचार अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सका था; परन्तु उन की शत्रुता और वैमनस्यता का आरम्भ हो चुका था।

वार्त्तायें

प्रस्तुत सूरा और पिछली सूरा में गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरा में 'तौहीद', 'रिसालत' और आख़िरत' आदि जिन मौलिक बातों का उल्लेख हुआ है प्रस्तुत सूरा में भी उन ही की पुष्टि की गई है। इस सूरा में एक ओर ऐतिहासिक घटनाओं और वृत्तान्तों के द्वारा 'आख़िरत' को साबित किया गया है, दूसरी ओर इस के लिए प्राकृतिक (Natural) प्रमाण भी संचित किये गये हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'इस्लाम' के भविष्य की झलक देखी जा सकती है। इस सूरा में लोगों को सावधान किया गया है। 'ईमान' वालों और 'काफ़िरों' के परिणामों का मुक़ाबला करके दिखाया गया है कि 'ईमान' वालों का जीवन ही सफल है। और फिर फ़ैसले का वादा किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अस-सजदा

(मक्का में उतरी—'आयतें' ३०)

THE PROSTRATION

Revealed at Mecca

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़० लाम० मीम०[१]।

1. Alif. Lam. Mim.

الٓمّٓ ۝١

२. इस 'किताब' का अवतरण—इस में कोई सन्देह नहीं—सारे संसार के 'रब' की ओर से है।

2. The revelation of the Scripture whereof there is no doubt is from the Lord of the Worlds.

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢

३. क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसे स्वयं गढ़ लिया? नहीं, बल्कि यह सत्य है तेरे 'रब' की ओर से, ताकि तू सचेत करे एक ऐसी जाति को जिस के पास तुझ से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया[२] कदाचित् वे मार्ग पा जायें।

3. Or say they: He hath invented it? Nay, but it is the Truth from thy Lord, that thou mayst warn of a folk to whom no warner came before thee, that haply they may walk aright.

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٣

४. वह अल्लाह ही है जिस ने आकाशों और धरती को, और जो कुछ इन दोनों के बीच है छः दिनों में पैदा किया[३]। फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ[४]। उस के सिवा न तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न सिफ़ारिश करने वाला। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं?

4. Allah it is Who created the heavens and the earth, and that which is between them, in six Days. Then He mounted the throne. Ye have not, beside Him, a protecting friend or mediator. Will ye not then remember?

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

२. अर्थात् एक दीर्घ काल से इस जाति में कोई 'रसूल' नहीं आया।

अरब के लोगों को धर्म के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी अज्ञान-काल में भले ही न रही हो परन्तु उस समय भी लोगों से यह बात ढकी-छुपी न थी कि वास्तविक धर्म 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही है और 'नबियों' ने कभी भी 'शिर्क' और मूर्ति-पूजा की शिक्षा नहीं दी थी। यह बात वे अपने निकटस्थ देश में आये हुये 'नबियों' (हज़रत मूसा अ०, हज़रत दाऊदअ०, हज़रत सुलैमान अ० और हज़रत ईसा अ०) की शिक्षाओं के द्वारा भी जानते थे। वे जानते थे कि अरब वालों का अपना धर्म वही था जो हज़रत इबराहीम अ० लेकर आये थे; मूर्ति-पूजा की प्रथा का आरम्भ तो उनके यहाँ अमर इब्न लुहय्य नामक एक व्यक्ति ने किया था। अरब में विभिन्न स्थानों पर ऐसे लोग पाये जाते थे जो खुले रूप में 'शिर्क' का इन्कार करते थे। नबी सल्ल० के युग के बिल्कुल निकट समय में भी ऐसे कितने ही व्यक्ति एकेश्वरवादी थे। इतिहास में हमें ऐसे बहुत से लोगों के नाम मिलते हैं जो 'मुश्रिकों' के धर्म से कोई सम्पर्क नहीं रखते थे। प्राचीन अवशेषों से भी इसकी पुष्टि होती है कि पिछले 'नबियों' की शिक्षाओं के स्मारक चिह्न बिल्कुल मिट नहीं गये थे।

३. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १५।

४. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. वह आकाश से धरती तक हर कार्य की व्यवस्था करता है; फिर यह ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में, जिस की मिक़दार (मुद्दत) तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष है[५]।

5. He directeth the ordinance from the heaven unto the earth; then it ascendeth unto Him in a Day, whereof the measure is a thousand years of that ye reckon.

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ⑤

६. वही है परोक्ष और साक्ष्य का जानने वाला, प्रभुत्वशाली और दया करने वाला,

6. Such is the Knower of the invisible and the visible, the mighty the merciful

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

७. जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब ही बनाई, और मनुष्य की सृष्टि का आरम्भ गारे से किया;[६]

7. Who made all things good which He created, and He began the creation of man from clay;

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ⑦

८. फिर उस का वंशज एक-निचुड़े हुए तुच्छ पानी से चलाया;

8. Then He made his seed from a draught of despised fluid;

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِينٍ ⑧

९. फिर उसे नख-शिख से दुरुस्त किया और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूंकी;[७] और तुम्हें कान और आंखें और दिल दिये। तुम लोग कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो।

9. Then He fashioned him and breathed into him of His spirit; and appointed for you hearing and sight and hearts. Small thanks give ye!

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْـِٕدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑨

१०. और ये लोग कहते हैं: जब हम भूमि में रल-मिल जायेंगे, तो क्या हम फिर नये सिरे से पैदा किये जायेंगे? नहीं, बल्कि ये अपने 'रब' से मिलने को नहीं मानते[८]।

10. And they say: When we are lost in the earth, how can we then be re-created? Nay but they are disbelievers in the meeting with their Lord.

وَقَالُوٓا ءَإِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ ءَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُونَ ⑩

५. अर्थात् जिसे तुम हज़ार वर्ष का इतिहास समझते हो वह अल्लाह के यहां मानो एक दिन का काम है जिसकी योजना आज 'फ़रिश्तों' के सामने रक्खी जाती है और कल वे अल्लाह के सामने उससे सम्बन्धित विवरण पेश करते हैं ताकि दूसरे दिन का काम—जो तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष का काम है—उन्हें सौंपा जाये।

इस्लाम-विरोधी लोग कहते थे कि वह यातना हम पर क्यों नहीं आ जाती जिसकी धमकी हमें दी जाती है। उन्हें समझाया जा रहा है कि अल्लाह के फ़ैसले को कोई रोक नहीं सकता। परन्तु अल्लाह का फ़ैसला मनुष्यों की गणना और कलेण्डर का पाबन्द नहीं। दिन और वर्ष तो क्या कभी-कभी शताब्दियों तक अल्लाह ज़ालिमों को सँभलने की मुहलत देता है। दे० सूरा अल-हज्ज आयत ४७ और सूरा अल-मआरिज आयत १-७।

६. इस आयत से डारविन (Darwin) के विकास-सिद्धान्त (theory of evolution) का खण्डन होता है। मनुष्य की रचना ईश्वर ने की है न यह कि वह किसी विकास की उत्पत्ति है। फिर मानवीय शरीर में ऐसी शक्ति रख दी कि वह अपने वंशज को चला सके। यह कहना कि जगत में जीवन का आरम्भ एक आकस्मिक घटना के रूप में हुआ है एक अवैज्ञानिक (unscientific) बात है। एक कोषाणु (Cell) वाले जीव में भी जीवन का सरलतम रूप भी इतना अधिक जटिल और सूक्ष्म युक्तियों से परिपूर्ण है कि उसे किसी आकस्मिक घटना का परिणाम समझना स्वयं विज्ञान के प्रतिकूल बात होगी।

७. अर्थात् उसे चेतना प्रदान की। मनुष्य में जो चेतना-शक्ति पाई जाती है वह पदार्थों के भौतिक अथवा रसायनिक मिश्रण या प्रक्रिया की देन नहीं है, बल्कि उसका मूल स्रोत अल्लाह की सत्ता है; मानवीय चेतना वास्तव में अल्लाह के गुणों की एक हल्की सी प्रतिच्छाया है। उपनिषद् में एक वाक्य अत्यन्त सुन्दर आया है: यदिद किंच प्राण एजति निःसृतम्। अर्थात् जो कुछ भी है उसी अमर, व्यापक जीवन से प्रागित हुआ है और हो रहा है।

८. अर्थात् मनुष्य का दोबारा जिला उठाया जाना कोई असम्भव और अद्भुत बात नहीं है कि इन की समझ में न आ सके बल्कि जो चीज़ इनके लिये यह बात समझने में बाधक बन रही है वह इनका अल्लाह से मिलने का इन्कार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. कहो : मौत का 'फ़िरिश्ता' जो तुम पर लगा दिया गया है, तुम्हें ग्रस्त लेता है,[९] फिर तुम अपने 'रब' की ओर पलटाये जाते हो।

11. Say: The angel of death, who hath charge concerning you, will gather you, and afterward unto your Lord ye will be returned.

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ ع

१२. और यदि कहीं तुम देख लेते जब कि ये अपराधी अपने 'रब' के सामने सिर झुकाये होंगे : हमारे 'रब' ! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब हमें वापस भेज दे; हम अनुकूल कर्म करेंगे, हमें अब विश्वास हो गया है !

12. Couldst thou but see when the guilty hang their heads before their Lord, (and say): Our Lord! We have now seen and heard, so send us back; we will do right, now we are sure.

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

१३. और (कहा जायेगा) : यदि हम चाहते, तो हर जीव को उस का मार्ग-दर्शन प्रदान कर देते,[१०] परन्तु मेरी (बुरे कर्म करने वालों के बारे में) वह बात पूरी हो कर रही कि मैं 'जहन्नम' को 'जिन्नों' और मनुष्य, सब से भर दूँगा"।

13. And if We had so willed, We could have given every soul its guidance, but the word from Me concerning evil-doers took effect: that I will fill hell with the jinn and mankind together.

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾

१४. अब चखो मज़ा—इस कारण कि तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था—और चखो मज़ा सदा रहने वाली यातना का जो कुछ तुम करते रहे हो उस के बदले में।

14. So taste (the evil of your deeds). For as much as ye forgot the meeting of this your day, lo! We forget you. Taste the doom of immortality because of what ye used to do.

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

१५. हमारी 'आयतों' पर तो बस वे लोग 'ईमान' लाते हैं, जिन्हें इन ('आयतों') के द्वारा जब चेताया जाता है, तो 'सजदे' में गिर पड़ते हैं और अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते हैं, और बड़े नहीं बनते,

15. Only those believe in Our revelations who, when they are reminded of them, fall down prostrate and hymn the praise of their Lord, and they are not scornful.

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ السجدة

१६. उन के पहलू विस्तरों से अलग रहते हैं[१२] कि वे अपने 'रब' को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से खर्च करते हैं।

16. Who forsake their beds to cry unto their Lord in fear and hope, and spend of what We have bestowed on them.

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾

१७. फिर जैसी कुछ आँखों की ठण्डक (की सामग्री) उन के कर्मों के बदले में उन के लिए छुपा रखी गई है[१३] उस की किसी जीव को खबर नहीं।

17. No soul knoweth what is kept hid for them of joy, as a reward for what they used to do.

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾

९. इससे मालूम हुआ कि मृत्यु का अर्थ केवल यह है कि प्राण शरीर से अलग हो जाता है और 'फ़िरिश्ता' उसे अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। अपराधी आत्मा के साथ 'फ़िरिश्तों' का व्यवहार कुछ और होता है, और 'ईमान' रखने वाली शुद्ध आत्मा के साथ उनका व्यवहार कुछ और होता है। दे० सूरा अन-निसा आयत ९७; अल-अनआम आयत ९३; अन-नह्ल आयत २८; अल-वाक़िआ आयत ८३-९४।

१०. परन्तु हमें तो तुम्हारी परीक्षा लेनी थी जिसमें तुम असफल हो चुके हो। यदि यथार्थ का निरीक्षण करा कर राह पर लाना अभीष्ट होता, तो तुम्हें इतनी बड़ी परीक्षा में डाला ही क्यों जाता; हम तुम्हें पहले ही सीधा मार्ग दिखा सकते थे।

११. दे० सूरा हूद फुटनोट ५०।

१२. अर्थात् रातों का एक हिस्सा वे अल्लाह की याद और उसकी 'इबादत' में गुज़ारते हैं।

१३. नबी सल्ल० ने कहा है कि अल्लाह कहता है : मैंने अपने अच्छे बन्दों के लिए वह-कुछ संचित कर रक्खा है जिसे न कभी किसी आँख ने देखा और न कभी किसी कान ने सुना और न कोई मनुष्य कभी उसकी कल्पना कर सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. भला जो व्यक्ति कि 'ईमान' वाला हो वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अवज्ञाकारी हो ? ये दोनों बराबर नहीं हो सकते ।

18. Is he who is a believer like unto him who is an evil-liver? They are not alike.

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ
لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

१९. जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए 'जन्नतों' का ठिकाना है, अतिथि-सत्कार के रूप में उस के बदले में जो कुछ कि वे करते थे ।

19. But as for those who believe and do good works, for them are the Gardens of Retreat — a welcome (in reward) for what they used to do.

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ
جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

२०. और वे लोग जिन्हों ने अवज्ञा की, उन का ठिकाना आग ('जहन्नम') है। जब कभी वे चाहेंगे कि उस से निकल जायें, उसी में लौटा दिये जायेंगे । और उन से कहा जायेगा : चखो उस आग ('जहन्नम') की यातना का मज़ा जिसे तुम झुठलाते थे ।

20. And as for those who do evil, their retreat is the Fire. Whenever they desire to issue forth from thence, they are brought back thither. Unto them it is said: Taste the torment of the Fire which ye used to deny.

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا
أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

२१. उस बड़ी यातना[14] से पहले कम दरजे की यातना[15] का मज़ा इन्हें चखा देंगे, कदाचित् ये पलट आवें ।

21. And verily We make them taste the lower punishment before the greater, that haply they may return.

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

२२. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के 'रब' की 'आयतों' के द्वारा चेताया जाये, और फिर वह उन से मुँह फेर ले । निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है ।

22. And who doth greater wrong than he who is reminded of the revelations of his Lord, then turneth from them. Lo! We shall requite the guilty.

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ
ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ
مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

२३. और हम ने मूसा को 'किताब' दी है— अतः उस से मिलने में[16] तुम किसी सन्देह में न रहना—और हम ने उसे 'इसराईल' की सन्तान के लिए मार्ग-दर्शन बनाया ।

23. We verily gave Moses the Scripture; so be not ye in doubt of his receiving it; and We appointed it a guidance for the Children of Israel.

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى
لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

२४. और जब उन्हों ने 'सब्र' किया और हमारी 'आयतों' पर विश्वास करते रहे, तो हम ने उन में नायक बनाये जो हमारे हुक्म से मार्ग दिखाते थे ।

24. And when they became steadfast and believed firmly in Our revelations, We appointed from among them leaders who guided by Our command.

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا
لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

२५. निश्चय ही तेरा 'रब' 'क़ियामत' के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में ये विभेद करते रहे हैं ।

25. Lo! thy Lord will judge between them on the Day of Resurrection concerning that wherein they used to differ.

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

१४ अर्थात् 'आख़िरत' की यातना ।

१५. अर्थात् दुनिया में पहुँचने वाली तकलीफें और आपत्तियाँ जैसे अकाल, युद्ध, अशान्ति, भू-कम्प, जल की बाढ़, संक्रामक रोग आदि ।

१६. आख़िरत के आने में जब कि हर एक व्यक्ति को उसके कर्मों का बदला दिया जायेगा । क़ुरआन के टीकाकारों ने इसके विभिन्न अर्थ लिये हैं परन्तु विचार करने से मालूम होता है कि यहाँ 'उससे मिलने' से अभिप्रेत 'आख़िरत' का पेश आना ही है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. क्या इन्हें इस चीज़ ने भी राह न सुझाई कि इन से पहले कितनी जातियों को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिन के निवास स्थानों में ये चलते-फिरते हैं[१७] ? निश्चय ही इस में बड़ी निशानियाँ हैं ! क्या ये सुनते नहीं ?

26. Is it not a guidance for them (to observe) how many generations We destroyed before them, amid whose dwelling-places they do walk? Lo, therein verily are portents! Will they not then heed?

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

२७. क्या इन्हों ने नहीं देखा कि हम चटियल धरती की ओर पानी पहुँचाते हैं फिर उस से खेती पैदा करते हैं जिस में से उन के चौपाये भी खाते हैं और वे भी ? तो क्या इन्हें कुछ सूझता नहीं ?

27. Have they not seen how We lead the water to the barren land and therewith bring forth crops whereof their cattle eat, and they themselves? Will they not then see?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

२८. और ये लोग कहते हैं : यह फ़ैसला कब होगा यदि तुम सच्चे हो ?

28. And they say: When cometh this victory (of yours) if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

२९. कह दो : फ़ैसले के दिन उन का 'ईमान' (लाना) उन के कुछ काम न आयेगा जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है, और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

29. Say (unto them): On the day of the victory the faith of those who disbelieve (and who then will believe) will not avail them, neither will they be reprieved.

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

३०. अच्छा, इन्हें छोड़ दे, और प्रतीक्षा कर। ये भी प्रतीक्षा करते हैं।

30. So withdraw from them (O Muhammad), and await (the event). Lo! they (also) are awaiting (it).

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

* * * *

१७. अर्थात् क्या ये लोग इतिहास से शिक्षा ग्रहण नहीं करते। क्या इन्हें मालूम नहीं कि 'रसूलों, को झुठलाने वाली जातियों को अल्लाह ने विनष्ट करके रख दिया। अल्लाह की यातना से केवल वही लोग बच सके हैं जो 'रसूलों' को मानने वाले और अल्लाह की बन्दगी करने वाले थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३---अल-अहज़ाब

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-अहज़ाब' (The Clans) 'आयत' २० से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' में तीन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं[१] का उल्लेख किया गया है निश्चित रूप से जिन से मालूम होता है कि यह सूरा सन् ५ हिज० में अवतीर्ण हुई है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

'उहुद' की लड़ाई[२] (सन् ३ हिज०) में मुसलमानों को जो हानि पहुँची थी उस से अरब के 'मुश्रिकों', 'यहूदियों' और 'मुनाफ़िक़ों' का साहस बहुत बढ़ गया था। यही कारण है कि 'उहुद' के एक वर्ष के बाद ही नज्द का 'बनी असद' क़बीला मदीना पर छापा मारने की तैयारियों में लग गया। नबी सल्ल० को इस की सूचना मिल गई। आप (सल्ल०) ने हज़रत अबू सलमा रज़ि० की अध्यक्षता में डेढ़ सौ आदमियों की एक सेना उन के दमन के लिए भेज दी। अचानक इस्लामी सेना के पहुँच जाने के कारण वे अपना सब-कुछ छोड़ कर भाग खड़े हुये।

'सफ़र' सन् ४ हि० में 'अज़ल' और 'क़ारा' के क़बीलों ने नबी सल्ल० से कुछ आदमी माँगे ताकि वे उन के यहाँ जा कर लोगों को 'इस्लाम' की शिक्षा दें; परन्तु उन्हों ने विश्वासघात किया, नबी सल्ल० के भेजे हुये छः आदमियों में से चार को क़त्ल कर दिया। बचे हुये दो आदमियों[३] को ले जा कर मक्का में शत्रुओं के हाथ बेच दिया जिन्हें शत्रुओं ने शहीद कर डाला। फिर इस महीने में क़बीला बनी आमिर के सरदार की इच्छा पर नबी सल्ल० ने ४० या ७० नवयुवकों को नज्द की ओर भेजा था कि वे वहाँ जा कर लोगों को 'इस्लाम' की शिक्षा दें; परन्तु उन के साथ भी विश्वासघात किया गया और वे सब-के-सब शहीद कर दिये गये।

'यहूदियों' के एक विशेष क़बीला 'बनू नज़ीर' का साहस बहुत बढ़ गया था वह निरन्तर अपने किये हुये समझौतों के विरुद्ध चालें चलता आ रहा था। 'रबीउल अव्वल' सन् ४ हिज० में उस ने नबी सल्ल० को शहीद कर देने तक की साज़िश की परन्तु अल्लाह ने उस की साज़िश को विफल कर दिया। और उन्हें मदीना छोड़ कर निकल जाना पड़ा।

'जुमादल ऊला' सन् ४ हि० में 'बनी ग़तफ़ान' के दो क़बीलों (बनू सअ्लबा और बनू मुहारिब) ने भी मदीने पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कीं। उन की रोक-थाम के लिए आप (सल्ल०) स्वयं ४०० आदमियों की सेना ले कर निकले और ज़ातुर्रिकाअ् के स्थान पर उन्हें जा लिया। व भय से बिना लड़े-भिड़े ही अपना सब-कुछ छोड़ कर पहाड़ों में तितर-बितर हो गये।

'उहुद' की लड़ाई से पलटते हुये अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को चैलेंज दिया था कि अगले साल 'बद्र' के स्थान पर फिर मुक़ाबला होगा। 'शाबान' सन् ४ हि० में १५०० की सेना ले कर नबी

१. अर्थात् अहज़ाब की घटना, बनी क़ुरैज़ा की मुहिम और हज़रत ज़ैनब रज़ि० का नबी सल्ल० से विवाह।
२. 'उहुद' की लड़ाई के लिए देखिए सूरा आले इमरान की भूमिका।
३. अर्थात् हज़रत खुबैब बिन अदी और हज़रत ज़ैद बिन दसिना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सल्ल० इस चैलेंज का जवाब देने के लिए 'बद्र' की ओर बढ़े। अबू सुफ़यान भी २००० की सेना ले कर चला परन्तु 'बद्र' तक पहुँचने का साहस न हो सका। नबी सल्ल० ने 'बद्र' पहुँच कर आठ दिन तक उस का इन्तज़ार किया फिर लौटे। इस के बाद 'इस्लाम' की धाक बैठ गई।

अहज़ाब की लड़ाई

यही परिस्थिति थी कि अहज़ाब की घटना पेश आई है। बनू नज़ीर मदीने से निकल कर भी अपनी चालों से बाज़ न आ सके। उन के सरदारों ने क़ुरैश, ग़तफ़ान और हुज़ैल आदि क़बीलों को तैयार किया कि वे सब मिल कर मदीने पर आक्रमण कर दें। 'शव्वाल' सन् ५ हि० में अरब के विभिन्न क़बीलों ने बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठा हो कर मदीना की छोटी सी बस्ती पर धावा बोल दिया। इन सब की संख्या दस-बारह हज़ार तक पहुँच रही थी। नबी सल्ल० को इस की सूचना मिल गई। हज़रत सलमान रज़ि० ने ख़न्दक़ (Trench) खोदने की राय दी और कहा कि फ़ारस (Persia) के लोग लड़ाई के अवसर पर बचाव के लिए ख़न्दक़ खोदते हैं। नबी सल्ल० ने ख़न्दक़ खोदने का हुक्मदेदिया। स्वयं नबी सल्ल० भी ख़न्दक़ खोदने वालों के साथ काम में लगे रहे। मदीना के दक्षिण में इतने अधिक बाग़ थे कि उधर से शत्रु आक्रमण नहीं कर सकते थे। और दूसरी दिशाओं में लावे की चट्टानें थीं हमला केवल उहुद पर्वत के पूर्वी और पश्चिमी कोनों से ही हो सकता था। इस लिए आप (सल्ल०) ने इस रुख़ पर ख़न्दक़ खोदने का आदेश दिया। ख़न्दक़ तैयार हो गई। 'काफ़िरों' को यह नहीं मालूम था कि मदीना के बाहर उन्हें ख़न्दक़ का सामना करना होगा। अरब के लोग बचाव की इस विधि से परिचित न थे। 'काफ़िरों' के लिए बस एक ही उपाय बाक़ी था कि वे यहूदी कबीला बनू क़ुरैज़ा को तोड़ कर अपनी ओर मिला लें। बनू क़ुरैज़ा के लोग नबी सल्ल० से समझौता कर चुके थे। उन का कर्त्तव्य था कि इस अवसर पर वे मुसलमानों के साथ मिल कर शत्रु का मुक़ाबला करते। मुसलमान बनू क़ुरैज़ा की ओर से निश्चिन्त थे। बल्कि रक्षा के उद्देश्य से अपने बाल-बच्चों को उन गढ़ियों में भेज दिया था जो बनू क़ुरैज़ा ही की ओर थीं। बनू क़ुरैज़ा को विद्रोह पर आमादा करने के लिए 'काफ़िरों' ने बनू नज़ीर के एक यहूदी सरदार को भेजा। बनू क़ुरैज़ा ने पहले तो इन्कार किया और कहा कि हमारा मुहम्मद (सल्ल०) से समझौता है और आज तक उन से कोई शिकायत पैदा नहीं हुई है। परन्तु यहूदी सरदार ने उन्हें समझा-बुझा कर अपनी ओर कर लिया।

नबी सल्ल० को जब इस की सूचना मिली तो आप (सल्ल०) ने अपने आदमियों को भेजा। नबी सल्ल० के भेजे हुये आदमी जब उन के पास पहुँचे तो उन्हों ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हमारे और मुहम्मद (सल्ल०) के बीच कोई समझौता नहीं है। नबी सल्ल० ने ताकीद की थी कि यदि बनू क़ुरैज़ा अपने दिये हुए वचन पर रहें, तो आ कर स्पष्टत: सब के सामने इस की ख़बर कर देना। और यदि वे विश्वासघात ही करना चाहते हैं तो केवल मुझे ही इशारे में सूचित कर देना ताकि इस बात से लोगों में घबराहट न फैलने पाये। नबी सल्ल० के आदमियों ने लौट कर इशारे में नबी सल्ल० को उन के इरादे की ख़बर दे दी। परन्तु यह बात बहुत जल्द सारे नगर में फैल गई, लोग घबरा उठे। 'मुनाफ़िक़' अलग ऐसी बातें कहने लगे जिस से लोग हताश हो कर साहस छोड़ बैठें। इस कठिन परीक्षा के अवसर पर मालूम हो गया कि कौन वास्तव में दिल से अल्लाह और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' रखता है और कौन 'मुनाफ़िक़' है। यह युद्ध इतिहास में अहज़ाब की लड़ाई के अतिरिक्त ख़न्दक़ की लड़ाई के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस लड़ाई में कोई ख़ास मुक़ाबला नहीं हुआ। कभी-कभी आपस में कुछ झड़पें हो जाती थीं। कभी पथराव हो जाता। कभी-कभी तीर चलते। कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई।

इस कठिन अवसर पर जब कि सारा अरब मदीना की छोटी बस्ती पर पिल पड़ा था अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। ग़तफ़ान के एक व्यक्ति नईम बिन् मसऊद मुसलमान हो कर नबी सल्ल० की सेवा में पहुँचे और कहा है कि मेरे 'ईमान' लाने की ख़बर किसी को नहीं है। यदि आप (सल्ल०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझ से कोई काम लेना चाहते हों तो ले सकते हैं। फिर नईम बिन मसऊद ने नबी सल्ल० की अनुमति से कुछ ऐसे उपाय से काम लिया कि शत्रुओं में फूट पड़ गई। शत्रुओं को घेरा डाले लगभग एक मास हो रहा था। सर्दियों के दिन थे। इतनी बड़ी सेना के खाने-पीने का प्रबन्ध कोई आसान बात न थी। फूट पड़ जाने के कारण अब उन में वह साहस न रहा जिस साहस के साथ उन्हों ने मदीना पर हमला किया था। फिर अचानक एक रात बड़ी ही तेज़ आँधी आई जिस में सर्दी, कड़क और चमक थी ऐसा अन्धकार छा गया कि कुछ भी सुझाई न देता था। इस आँधी ने शत्रुओं के ख़ेमे उलट दिये। चूल्हों पर जो हाँडियाँ चढ़ी थीं वे भी उलट गईं। 'काफ़िर' तितर-बितर हो गये। रातों-रात सब भाग खड़े हुये। सवेरे मैदान शत्रुओं से बिल्कुल ख़ाली था। नबी सल्ल० ने कहा : क़ुरैश के लोग इस साल के बाद तुम पर चढ़ाई न कर सकेंगे बल्कि अब तुम उन पर चढ़ाई करोगे।

ख़न्दक से पलट कर नबी सल्ल० घर आये तो हज़रत 'जिबरील' अ० ने आकर यह हुक्म सुनाया कि इस समय बनू क़ुरैज़ा से निमट लेना चाहिए। नबी सल्ल० ने इस बात की घोषणा कर दी कि जब तक बनू क़ुरैज़ा के क्षेत्र तक न पहुँच जाओ 'अस्र' की नमाज़ न पढ़ी जाये। इसके साथ हज़रत अली रज़ि० को एक दस्ते के साथ बनू क़ुरैज़ा की ओर भेज दिया। जब वे बनू क़ुरैज़ा के यहाँ पहुँचे तो 'यहूदी' नबी सल्ल० और मुसलमानों को गालियाँ देने लग गये। फिर जब नबी सल्ल० की अध्यक्षता में पूरी इस्लामी सेना आ पहुँची और उस ने उन की बस्ती को अपने घेरे में ले लिया तो तंग आकर उन्हों ने इस शर्त पर अपने-आप को नबी सल्ल० के हवाले कर दिया कि औस कबीले के सरदार सअ्द बिन मुआज़ रज़ि० उन के बारे में जो फ़ैसला कर देंगे उसे दोनों फ़रीक़ मान लेंगे। हज़रत सअ्द उन की चालों से भली-भाँति परिचित हो चुके थे; उन्हों ने देखा था किस तरह इन लोगों ने उस कठिन समय पर विश्वासघात किया जब कि सारा अरब मदीना पर पिल पड़ा था। हज़रत सअ्द रज़ि० ने फ़ैसला किया कि इन के पुरुषों को क़त्ल कर दिया जाये और इन की स्त्रियों और बच्चों को ग़ुलाम बना लिया जाये। और इनकी सम्पत्ति मुसलमानों में बाँट दी जाये[1]। इसी फ़ैसले को कार्य-रूप में लाया गया[2]। इस तरह बनू क़ुरैज़ा को अल्लाह ने उन के करतूतों की सज़ा दे दी। उन की गढ़ियों में जब मुसलमानों ने जा कर देखा तो पता चला कि उन्हों ने लड़ाई की पूरी तैयारी कर रक्खी थी। लड़ने के लिए उन्होंने १५०० तलवारें, ३०० कवचें, २००० भाले और १५०० ढालें संचित कर ली थीं।

'उहुद' की लड़ाई से लेकर अहज़ाब की लड़ाई तक का समय अत्यन्त अशान्ति का समय था। परन्तु इस ज़माने में भी इस्लामी समाज के निर्माण का काम बराबर होता रहा। बहुत से सामाजिक और आर्थिक सुधार हुये।

वार्त्तायें (Subject-matter)

'नुबूवत', आज्ञापालन का प्रण और सत्य का प्रचार यही इस 'सूरा' के मूल विषय हैं। आयत ७२ और उसके बाद का हिस्सा इस सूरा का केन्द्रीय विषय है।

इस 'सूरा' के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो अल्लाह अपने नबी और 'ईमान' वालों को एक साथ सम्बोधित कर रहा है। एक बार वह नबी (सल्ल०) की ओर रुख करता है, एक बार मुसलमानों की ओर। इस सूरा में नबी सल्ल० को पाँच बार सम्बोधित किया गया है और पाँच बार मुसलमानों को भी।

प्रस्तुत 'सूरा' में अहज़ाब और बनू क़ुरैज़ा की लड़ाई पर विवेचना की गई[3]।

१. दे० आयत २६ और २७।
२. हज़रत सअ्द रज़ि० का यह फ़ैसला 'तौरात' के आदेश के अनुसार था। दे० इस्तिसना (Deut.) २० : १०-१४।
३. दे० आयत ९-२७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरब में एक बुरी प्रथा मुँह बोले बेटे के सिलसिले में चली आ रही थी उस प्रथा का इस 'सूरा' में निषेध किया गया। अरब लोग मुँह-बोले बेटे (दत्तक) अर्थात् मुतबन्ना (Adopted son) को बिल्कुल सगे बेटे की तरह समझते थे। मुँह-बोली मायें और मुँह बोली बहनें उस से उसी तरह मिलती-जुलती थीं जैसे सगे बेटे या भाई से मिलना-जुलना होता है। मुँह-बोले बेटे को विरासत में हिस्सा मिलता था। मुँह बोले बेटे के साथ मुँह बोले बाप की बेटियों के विवाह को उसी प्रकार हराम समझते थे जैसे सगी बहिन के साथ विवाह हराम होता है। इसी तरह मुँह-बोले बाप की पत्नी भी उस के लिए माता की तरह हराम समझी जाती थी। यदि मुतबन्ना मर जाये या अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे तो मुँह-बोला बाप उस स्त्री से विवाह नहीं कर सकता था। इस्लाम के दिये हुये क़ानून और नियमों से यह प्रथा टकराती थी।

इस बुरी प्राथा के उन्मूलन के लिए ज़रूरी था कि अल्लाह का 'रसूल' स्वयं बढ़ कर इस प्रथा को तोड़े। और किसी को इस के बारे में किसी तरह का संकोच न हो। नबी सल्ल० ने अपने मुँह-बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० की पत्नी हज़रत ज़ैनब रज़ि० से जिन्हें हज़रत ज़ैद ने तलाक़ दे दिया था विवाह कर लिया। इस तरह इस बुरी प्रथा को आप सल्ल० ने सदैव के लिए तोड़ दिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० कबीला कल्ब के एक व्यक्ति हारसा बिन शराहील के बेटे थे। हज़रत ज़ैद रज़ि० ८ वर्ष के थे। उन को माता उन्हें ले कर अपने मैके गई। वहाँ उनके पड़ाव पर बनी क़ैन बिन जस्र के लोगों ने छापा मारा और लूट-मार के साथ जिन आदमियों को वे पकड़ ले गये उनमें हज़रत ज़ैद रज़ि० भी थे। हज़रत ज़ैद को उन्हों ने उकाज़ के मेले में बेच डाला। उन्हें हज़रत ख़दीजा रज़ि० के भतीजे ने ख़रीद लिया और मक्का ला कर उन्हें हज़रत ख़दीजा रज़ि० को दे दिया। फिर जब हज़रत ख़दीजा रज़ि० का नबी सल्ल० से विवाह हुआ, तो हज़रत ज़ैद नबी सल्ल० की सेवा में पहुँच गये। इस समय हज़रत ज़ैद रज़ि० की आयु केवल १५ वर्ष की थी। कुछ समय के बाद जब उन के पिता और चचा अपने बच्चे को खोजते हुये नबी सल्ल० के पास पहुँचे और कहा कि आप (सल्ल०) जो 'फ़िदया' कहें हम देने को तैयार हैं। हमारा बच्चा हमें दे दीजिए। नबी सल्ल० ने कहा कि लड़का यदि तुम्हारे साथ जाना चाहेगा तो मैं उसे यों ही छोड़ दूँगा; मैं कोई 'फ़िदया' न लूँगा। हज़रत ज़ैद को बुला कर नबी सल्ल० ने पूछा कि इन दोनों आदमियों को जानते हो? हज़रत ज़ैद ने कहा कि हाँ, ये मेरे पिता हैं और ये मेरे चचा होते हैं। आप (सल्ल०) ने कहा: चाहो तो इन के साथ चले जाओ और चाहो तो मेरे साथ रहो। हज़रत ज़ैद ने आप के साथ रहना पसन्द किया। उनके पिता और चचा ने कहा: ज़ैद! तू स्वतन्त्रता के मुक़ाबले में दासता को पसन्द करता है और अपने माता-पिता और घराने के लोगों को छोड़ कर तू दूसरों के पास रहना चाहता है? हज़रत ज़ैद ने उत्तर दिया, मैं इस व्यक्ति में ऐसे गुण और विशेषतायें देख चुका हूँ कि उन का अनुभव करने के बाद इस व्यक्ति के मुक़ाबले में अब संसार के किसी भी व्यक्ति को पसन्द नहीं कर सकता। नबी सल्ल० ने उसी समय ज़ैद रज़ि० को आज़ाद कर के अपना मुँह-बोला बेटा बना लिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० उन लोगों में से हैं जिन्हें नबी सल्ल० की 'नुबुवत' पर 'ईमान' लाने में क्षण भर के लिये भी संकोच और किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ। नबी सल्ल० को जब अल्लाह ने 'नुबुवत' प्रदान की, तो उस समय हज़रत ज़ैद ३० वर्ष के थे उन्हें आप (सल्ल०) की सेवा में रहते हुये १५ वर्ष बीत चुके थे। हज़रत ज़ैद रज़ि० पर अल्लाह और उस के 'रसूल' (सल्ल०)[1] ने बड़ा उपकार किया। अल्लाह ने उन्हें अपने नबी (सल्ल०) की सेवा में रहने का मौक़ा प्रदान किया। उन्हें 'इस्लाम' की दौलत दी। अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने उन्हें स्वतन्त्र कर के अपना बेटा बना लिया और सन् ४ हिज० में हज़रत ज़ैनब रज़ि० से जो आप (सल्ल०) की फूफी की बेटी थीं विवाह कर दिया। उनका 'महर' स्वयं अदा किया और घर के लिए आवश्यक सामग्री भी उन्हें दी। जब हज़रत ज़ैद ने अपनी पत्नी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ दे दिया

१. दे० आयत ३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो अल्लाह के हुक्म से आप (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० से विवाह कर लिया। इस तरह शताब्दियों से जो एक अनुचित प्रथा चली आ रही थी उसे आप (सल्ल०) ने तोड़ दिया।

'मुनाफ़िक़ों', और शत्रुओं को मौक़ा हाथ आया वे अल्लाह के 'रसूल' (सल्ल०) पर चोटें करने लगे। बल्कि झूठ-मूठ का यह किस्सा भी गढ़ा गया कि (अल्लाह की पनाह!) मुहम्मद (सल्ल०) बहू को देख कर आसक्त हो गये। बेटे को जब इसका पता चला तो उस ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। और इसके बाद आप ने बहू से विवाह रचा लिया। सूरा की आयत ३६ से ४८ तक इस विवाह के बारे में लोगों के सन्देहों को दूर किया गया है। और लोगों के आपेक्षों का उत्तर दिया गया है।

सामाजिक सुधार के सिलसिले में कई एक आदेश दिये गये। तलाक़ के सिलसिले में एक विशेष नियम दिया गया[1]। नबी सल्ल० की पत्नियों को यह आदेश दिया गया कि अपने घरों में टिकी रहें; सज-धज कर कदापि बाहर न निकलें। दूसरे पुरुषों से बात-चीत करने में सावधानी से काम लें; दबी ज़बान से बात न करें कि कोई व्यक्ति जिसके दिल में रोग हो किसी लालच में पड़ जाये। हुक्म दिया गया कि कोई व्यक्ति बिना इजाज़त लिये नबी सल्ल० के घरों में प्रवेश न करे। किसी को यदि नबी सल्ल० की पत्नियों से कोई चीज माँगनी हो, तो वह परदे के पीछे से माँगे। हुक्म दिया गया कि आज़ादी के साथ नबी सल्ल० के घरों में केवल वही लोग आ जा सकते हैं जो नबी सल्ल० की पत्नियों के बहुत ही क़रीबी नातेदार हैं जिनसे उन का पर्दा नहीं है। फिर समस्त मुसलमान स्त्रियों को हुक्म दिया गया कि जब वे बाहर निकलें तो चादरों से अपने-आप को ढाँक कर घूँघट डाल कर निकलें। परदे के आरम्भिक आदेश जो इस सूरा में दिये गये हैं इन की पूर्ति सूरा अन-नूर उतरने के बाद हुई। सूरा अन-नूर इस सूरा के एक वर्ष बाद अवतीर्ण हुई है।

नबी सल्ल० की पत्नियों को सचेत किया गया कि एक ओर दुनिया और उस की शोभा है और दूसरी ओर अल्लाह और 'रसूल' और 'आख़िरत' है; वे अपने लिए किसी एक को पसन्द कर लें यदि वे दुनिया को पसन्द करती हैं, तो उन्हें तंगी में नहीं रक्खा जायेगा बल्कि रुख़सत कर दिया जायेगा और यदि वे अल्लाह और 'रसूल' और आख़िरत को चाहती हैं, तो उन्हें धैर्य्य से काम लेना चाहिए और अल्लाह और 'रसूल' का साथ देना चाहिए।

'ईमान' वालों को बताया गया कि नबी सल्ल० की पत्नियाँ तुम्हारी मायें हैं और वे तुम पर उसी प्रकार हराम हैं जिस तरह सगी मायें हराम होती हैं। फिर 'ईमान' वालों को यह आदेश भी दिया गया कि उन का कर्त्तव्य है कि 'नबी' पर रहमत[2] और सलाम भेजें। उन से नबी सल्ल० को कोई तकलीफ़ न पहुँचे। शत्रु जो नबी सल्ल० पर, नबी सल्ल० के घरेलू जीवन पर आक्षेप कर रहे हैं उस से उन्हें दूर रहना चाहिए। 'ईमान' वालों का कर्त्तव्य है कि वे मुसलमानों का आदर करें। उन्हें किसी प्रकार की तुहमत न लगायें।

विवाह के सिलसिले में नबी सल्ल० के लिए एक विशेष ज़ाब्ता दिया गया और खोल कर यह बात बता दी गई कि आप (सल्ल०) को विवाह के मामले में उन बहुत से प्रतिबन्धों से विलग रक्खा गया है जिन का पालन करना दूसरे मुसलमानों के लिए ज़रूरी है फिर इस विशेष ज़ाब्ते की 'हिकमत' भी बयान की गई।[3] नबी सल्ल० ने जो विवाह किये वह केवल व्यक्तिगत आवश्यकता की पूर्ति के लिए न थे बल्कि वे या तो समाज के सुधार के लिए किये गये हैं या राजनीतिक एवं सामाजिक उद्देश्यों के अन्तर्गत किये गये हैं। इस का अन्दाज़ा इस से भी किया जा सकता है कि जब आप की आयु २५ वर्ष की थी तो आप ने ४० वर्ष की विधवा स्त्री हज़रत ख़दीजा रज़ि० से विवाह किया और पूरे २५ वर्ष उन ही के साथ व्यतित

१. दे० आयत ४६।
२. (Blessing)
३. दे० आयत ५०-५२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किये। कई विवाह तो आप ने उस समय किये हैं जब कि जीवन के ५३ वर्ष बीत चुके थे। यह वह समय था जबकि आप को लड़ाई आदि के कारण आराम का अवसर बहुत कम मिलता था। बढ़ते हुए राज्य-काज की अनेकों समस्याओं के समाधान में आप व्यस्त रहते थे। यदि आप कामेच्छा के वशीभूत होते तो २५ वर्ष की आयु में आप ४० वर्ष की विधवा स्त्री से विवाह न करते। फिर हम देखते हैं कि पूरे २५ वर्ष तक आपने अपना दूसरा विवाह नहीं किया। आप का यह २५ वर्ष का दाम्पत्य-जीवन अत्यन्त सन्तोष-जनक और सुखमय रहा है। जब आप की पहली पत्नी का देहान्त हो गया तब आप ने दूसरा विवाह किया। दूसरा विवाह भी आप ने एक दीर्घायु स्त्री हज़रत सौदा रज़ि० से किया और पूरे ४ वर्ष तक अकेली उन ही को आप की जीवन-संगिनी होने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। जब आप (सल्ल०) यौवन-काल में इतने त्यागी और सन्तोषी थे तो अब यह समझना कैसे सही हो सकता है कि अपने जीवन के ५३ वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् सहसा आप की कामेच्छा इतनी तीव्र हो गई कि आप को कई-एक स्त्रियों से विवाह करना पड़ा। वास्तव में आप (सल्ल०) ने जो विवाह किए हैं उनका धर्म और गम्भीर समस्याओं से गहरा सम्बन्ध है। आप (सल्ल०) ने जो विवाह किये हैं उनसे 'इस्लाम' और आप के अनुयायियों को अनेकों प्रकार के लाभ पहुँचे हैं। विभिन्न आयु और योग्यता की स्त्रियों से विवाह करने का एक बड़ा लाभ यह हुआ कि इस प्रकार उन्हों ने नबी सल्ल० से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर के दूसरी स्त्रियों को धर्म की बातें बताने की योग्यता अपने अन्दर पैदा कर ली। और वे दूसरी स्त्रियों को आचार-विचार और रहन-सहन के इस्लामी नियमों से भली-भाँति परिचित कराने के योग्य हो गईं। घरेलू-जीवन सम्बन्धी कितने ही नियमों का ज्ञान लोगों को आप की पत्नियों द्वारा हुआ है।

फिर इस्लामी जीवन-व्यवस्था की स्थापना के लिये यह अत्यन्त आवश्यक था कि अज्ञान-काल के अनुचित रीति-रिवाज को ख़त्म किया जाये। हज़रत ज़ैनब रज़ि० से आप का विवाह इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ।

शान्ति की स्थापना और शत्रुओं की दुश्मनी का ज़ोर तोड़ने और मित्रों के सम्बन्धों को और अधिक दृढ़ करने के लिए जहाँ और दूसरे उपाय थे वहीं एक उत्तम उपाय यह भी था कि आप (सल्ल०) विभिन्न घरानों में विवाह करें। अरबों में यह बात चली आ रही थी कि जिस किसी व्यक्ति से क़बीले की बेटी का विवाह होता उसे पूरे क़बीले का दामाद समझा जाता। और दामाद से लड़ने को वे लज्जा की बात समझते थे। आपकी पत्नियों में हज़रत आइशा रज़ि० आपके मित्र हज़रत अबू बक्र रज़ि० की बेटी थीं और हज़रत हफ़सा रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की बेटी थीं। कई-एक पत्नियाँ आपके शत्रु घरानों की थीं। हज़रत उम्म सलमा उस घराने की बेटी थीं जिस से अबू जह्ल और ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) का सम्बन्ध था। हज़रत उम्म हबीबा रज़ि० अबू सुफ़यान की बेटी थीं। हज़रत सुफ़ीया रज़ि०, जोयरिया रज़ि० और रैहाना रज़ि० यहूदी कुल से थीं। आप ने इन्हें स्वतन्त्र करके इन के साथ विवाह कर लिया। इस से यहूदी बड़ी हद तक ठण्डे पड़ गये। यहाँ यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि यदि नबी सल्ल० के लिए ४ से अधिक पत्नियाँ हलाल थीं और दूसरे मुसलमान यदि एक साथ ४ से अधिक पत्नियाँ नहीं रख सकते तो उनके लिये यह आसानी है कि उन्हें यदि अपनी किसी पत्नी को तलाक़ देनी पड़ जाये तो वे तलाक़ दे सकते हैं; और उस के बदले किसी दूसरी स्त्री से विवाह कर सकते हैं परन्तु नबी सल्ल० के लिए अपनी पत्नियों को तलाक़ देना हराम था।

इस सूरा में 'तक़वा' (ईश-भय एवं धर्मनिष्ठा) पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अहज़ाब
(मदीना में उतरी—'आयतें' ७३)

THE CLANS
Revealed at Al-Madinah

سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَتِسْعُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे 'नबी'! अल्लाह का डर रक्खो और 'काफ़िरों'[1] और 'मुनाफ़िक़ों' का कहना न मानो। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

1. O Prophet! Keep thy duty to Allah and obey not the disbelievers and the hypocrites. Lo! Allah is Knower, Wise.

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١

२ और चलो उस पर जिस की 'वह्य' तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम्हें की जा रही है। निस्सन्देह अल्लाह उस की खबर रखता है जो तुम लोग करते हो।

2. And follow that which is inspired in thee from thy Lord. Lo! Allah is Aware of what ye do.

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝٢

३. और अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह बकील होने के लिए काफ़ी है।[2]

3. And put thy trust in Allah, for Allah is sufficient as Trustee.

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٣

४. अल्लाह ने किसी आदमी के धड़ में दो दिल नहीं रक्खे हैं,[3] और न उस ने तुम लोगों की पत्नियों को जिन से तुम 'ज़िहार' करते हो[4] तुम्हारी माँ बना दिया है, और न उस ने तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को सच-मुच तुम्हारा बेटा बनाया है। यह तो बस तुम्हारे मुँह में आया और तुम ने कह दिया। परन्तु अल्लाह सच्ची बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है।

4. Allah hath not assigned unto any man two hearts within his body, nor hath He made your wives whom ye declare (to be your mothers) your mothers, nor hath He made those whom ye claim (to be your sons) your sons. This is but a saying of your mouths. But Allah sayeth the truth and He showeth the way.

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰۤـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝٤

१. दे० आयत ४८।
२. सूरा की प्रारम्भिक तीन 'आयतें' प्राक्कथन के रूप में हैं।
३. अर्थात् आदमी एक समय में 'ईमान' वाला और 'मुनाफ़िक़', सत्कर्मी और दुराचारी, झूठा और सच्चा दोनों नहीं हो सकता।
४. 'ज़िहार' अरब का एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। प्राचीन समय में अरब के लोग अपनी पत्नी से झगड़ते हुये कभी यह कह दिया करते थे कि तेरी पीठ मेरे लिए मेरी माता की पीठ जैसी है। जब यह बात किसी के मुँह से निकल जाती तो यह समझा जाता था कि उस की पत्नी अब उस की पत्नी नहीं रही क्योंकि उस ने उसे माता की उपमा दे दी। 'ज़िहार' के सम्बन्ध में इस्लामी आदेश सूरा अल-मुजादला आयत २-४ में देखिए। मुँह-बोले बेटे के बारे में हुक्म आगे आ रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. उन (मुँह-बोले बेटों) को उन के बापों के नाम से पुकारो। यही अल्लाह की दृष्टि में अधिक न्यायोचित बात है। और यदि उन के बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे भाई हैं 'दीन' (धर्म) के नाते और तुम्हारे सम्बन्धी हैं। और तुम से जो चूक हो जाये उस में तुम पर कोई दोष नहीं, परन्तु जिस का निश्चय तुम्हारे दिल ने किया (उस में तुम्हारी पकड़ है)। अल्लाह बड़ा क्षमा-शील और दयावान् है।

5. Proclaim their real parentage. That will be more equitable in the sight of Allah. And if ye know not their fathers, then (they are) your brethren in the faith, and your clients. And there is no sin for you in the mistakes that ye make unintentionally, but what your hearts purpose (that will be sin for you). Allah is Forgiving, Merciful.

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ
فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ
فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَٰكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ
قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑤

६. 'नबी' का सम्बन्ध 'ईमान' वालों के साथ उस से अधिक है जितना उन लोगों का अपने-आप से है,[५] और उसकी पत्नियाँ उन की मातायें हैं[६]। और अल्लाह की 'किताब' के अनुसार दूसरे 'ईमान' वालों और मुहाजिरों की अपेक्षा नातेदारों का आपस में एक-दूसरे से सम्बन्ध अधिक है,[७] यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। यह 'किताब' में लिखा हुआ है।

6. The Prophet is closer to the believers than their selves, and his wives are (as) their mothers. And the owners of kinship are closer one to another in the ordinance of Allah than (other) believers and the fugitives (who fled from Mecca), except that ye should do kindness to your friends. This is written in the Book (of nature).

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ
مَعْرُوفًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑥

७. और (हे 'नबी'!) याद करो जब हम ने 'नबियों' से उन का इक़रार[८] लिया, तुम से भी और नूह और इबराहीम और मूसा और ईसा सुत मरयम से भी। इन सब से हम ने कड़ा वचन लिया है;

7. And when We exacted a covenant from the Prophets, and from thee (O Muhammad) and from Noah and Abraham and Moses and Jesus son of Mary. We took from them a solemn covenant,

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ
وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى
ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ⑦

५. अर्थात् नबी सल्ल० का मुसलमानों से गहरा सम्बन्ध है। कोई दूसरा सम्बन्ध या सम्पर्क इस के तुल्य नहीं हो सकता। अल्लाह का 'रसूल' माता-पिता से भी बढ़ कर मुसलमानों का हित चाहने वाला है। आदमी अपने को गुमराही में डाल कर अपने-आप को तबाह कर सकता है; परन्तु अल्लाह का 'नबी' उसे उसी राह पर लगाना चाहेगा जिस पर चल कर वह अपने जीवन को सफल बना सकता है। मुसलमानों का भी कर्त्तव्य होता है कि वे अल्लाह के 'नबी' को अपने माता-पिता, अपनी औलाद और अपने प्राणों से बढ़कर प्रिय समझें, संसार की हर चीज़ से अधिक आप (सल्ल०) से प्रेम करें। आप (सल्ल०) के हर हुक्म के आगे अपना सिर झुका दें। नबी सल्ल० ने कहा है : तुम में से कोई व्यक्ति 'ईमान' वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के लिए उस के पिता और उस की औलाद से बढ़ कर प्रिय न हो जाऊँ।

६. अर्थात् माता के समान उन का आदर करना मुसलमानों का कर्त्तव्य है। नबी सल्ल० की पत्नियाँ उन के लिए उसी तरह हराम हैं जिस तरह उन की मातायें उन पर हराम हैं। उन के साथ किसी मुसलमान का विवाह नहीं हो सकता (दे० आयत ५३)। और दूसरे मामलों में वे माता की तरह नहीं हैं। उदाहरणतः उन के लिए यह ज़रूरी है कि अपने करीबी नातेदारों के अतिरिक्त दूसरे मुसलमानों से परदा करें। उन की बेटियाँ मुसलमानों के लिए माँ-जाई बहिनें नहीं हैं कि उन से भी मुसलमानों का विवाह न हो सके।

७. बताया यह जा रहा है कि 'नबी' सल्ल० के साथ मुसलमानों का एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध है। परन्तु मुसलमानों के आपस के सम्बन्धों में नातेदारों का हक़ सब से बढ़ कर है। इसलिए यह सही न होगा कि आदमी बाहर तो अपना माल लुटाता फिरे और अपने क़रीबी लोगों की आवश्यकताओं की उसे कुछ भी चिन्ता न हो। इसी प्रकार विरासत में उन्हीं लोगों को हिस्सा मिलेगा जो क़रीबी नातेदार होंगे। 'हिजरत' के बाद मदीना पहुँच कर 'नबी' सल्ल० ने मुसलमानों और उन लोगों के बीच जो मक्का से 'हिजरत' करके मदीना पहुँचे थे भाई-चारा करा दिया था। इस भाई-चारे के सम्पर्क के आधार पर 'मुहाजिर' और 'अनसार' आपस में एक-दूसरे के वारिस समझे जाते थे। अल्लाह ने बता दिया कि विरासत नातेदारों ही में तक़सीम होगी। हाँ यदि कोई भेंट-उपहार और वसीयत, हिब्बा और वक़्फ़ आदि के द्वारा दूसरे लोगों की मदद करनी चाहे तो कर सकता है; परन्तु इस रूप में कि वारिस अपने हक़ से वञ्चित न रह जायें।

८. दे० आयत ७२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. ताकि सच्चे लोगों से (उन का 'रब') उन की सच्चाई के बारे में प्रश्न करे। और 'काफ़िरों' के लिए उस ने दुखदायिनी यातना तैयार कर रक्खी है।[६]

8. That He may ask the loyal of their loyalty. And He hath prepared a painful doom for the unfaithful.

ليسئل الصدقين عن صدقهم واعد للكفرين عذابا اليما ٨

९. "हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! अल्लाह के एहसान को याद करो जो उसने तुम पर किया है जब सेनायें तुम पर चढ़ आईं, तो हम ने उन पर एक आंधी भेज दी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा[११]। और अल्लाह वह सब-कुछ देख ही रहा है जो कुछ तुम करते हो।

9. O ye who believe! Remember Allah's favour unto you when there came against you hosts, and We sent against them a great wind and hosts ye could not see. And Allah is ever Seer of what ye do.

يايها الذين امنوا اذكروا نعمة الله عليكم اذ جاءتكم جنود فارسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها وكان الله بما تعملون بصيرا ٩

१०. जब वे तुम्हारे ऊपर की ओर और तुम्हारे नीचे की ओर से तुम पर चढ़ आये,[१२] और जब आँखें डगने लगीं और हृदय घाँटी तक आ गये, और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे[१३]।

10. When they came upon you from above you and from below you, and when eyes grew wild and hearts reached to the throats, and ye were imagining vain thoughts concerning Allah.

اذ جاءوكم من فوقكم ومن اسفل منكم واذ زاغت الابصار وبلغت القلوب الحناجر وتظنون بالله الظنونا ١٠

११. उस समय 'ईमान' वाले आज़माये गये और बुरी तरह हिला मारे गये।

11. There were the believers sorely tried, and shaken with a mighty shock.

هنالك ابتلي المؤمنون وزلزلوا زلزالا شديدا ١١

१२. याद करो जब 'मुनाफ़िक़' और वे लोग जिन के दिलों में रोग था, कहने लगे: अल्लाह और उस के 'रसूल' ने हम से वादा नहीं किया था धोखा दिया था[१४]।

12. And when the hypocrites, and those in whose hearts is a disease, were saying: Allah and His messenger promised us naught but delusion.

واذ يقول المنفقون والذين في قلوبهم مرض ما وعدنا الله ورسوله الا غرورا ١٢

९. दे० आयत ७३।

१०. यहाँ से लेकर आयत २७ तक का हिस्सा उस समय उतरा है जबकि 'नबी' सल्ल० 'ख़न्दक़' और 'बनी क़ुरैज़ा' की मुहिम से निवृत्त हो चुके थे। (दे० सूरा की भूमिका) सूरा के इस हिस्से में इन दोनों मुहिमों पर विवेचना की गई है।

११. दे० सूरा की भूमिका।

१२. अर्थात् हर ओर से चढ़ आये या यह कि मदीना के पूर्व की ओर से आने वाले ऊपर से आये, और पश्चिम की ओर से आने वाले नीचे की ओर से आये।

१३. यहाँ 'ईमान' वालों से अभिप्रेत वे सभी लोग हैं जो मुहम्मद सल्ल० को 'रसूल' मान कर आप (सल्ल०) के अनुयायियों में सम्मिलित थे। इसमें वे लोग भी थे जो आप (सल्ल०) के सच्चे अनुयायी थे और वे लोग भी जो वास्तव में 'मुनाफ़िक़' थे।

१४. यह वादा कि अल्लाह 'ईमान' वालों की सहायता करेगा और अन्त में विजय उन्हीं को प्राप्त होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. और जब उन में से एक गरोह ने कहा : हे यसरिब के लोगो ! तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मौक़ा नहीं, सब पलट चलो । और उन में से कुछ लोग 'नबी' से यह कह कर (घर रहने की) इजाज़त माँगने लगे : हमारे घर ख़तरे में हैं[१५] । हालाँकि वे खुले नहीं पड़े थे । वे तो बस (रण-क्षेत्र से) भागना चाहते थे ।

13. And when a party of them said: O folk of Yathrib! There is no stand (possible) for you, therefore turn back. And certain of them even sought permission of the Prophet, saying: Our homes lie open (to the enemy). And they lay not open. They but wished to flee.

وَإِذْ قَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يَـٰٓأَهْلَ يَثْرِبَ
لَا مُقَامَ لَكُمْ فَٱرْجِعُوا۟ ۚ وَيَسْتَـْٔذِنُ فَرِيقٌ
مِّنْهُمُ ٱلنَّبِىَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۛ
وَمَا هِىَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾

१४. यदि उस के किनारों से शत्रु घुस आते फिर इन से उपद्रव (फ़ितना) मचाने के लिए कहा जाता,[१६] तो ये ऐसा कर डालते, और इस में देर थोड़ा ही लगाते ।

14. If the enemy had entered from all sides and they had been exhorted to treachery, they would have committed it, and would have hesitated thereupon but little.

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ
سُئِلُوا۟ ٱلْفِتْنَةَ لَـَٔاتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا۟ بِهَآ
إِلَّا يَسِيرًا ﴿١٤﴾

१५. और निश्चय ही ये लोग इस से पहले अल्लाह से इक़रार कर चुके हैं कि ये पीठ न फेरेंगे । और अल्लाह से किये हुये इक़रार के बारे में पूछ होनी ही है[१७] ।

15. And verily they had already sworn unto Allah that they would not turn their backs (to the foe). An oath to Allah must be answered for.

وَلَقَدْ كَانُوا۟ عَـٰهَدُوا۟ ٱللَّهَ مِن قَبْلُ لَا
يُوَلُّونَ ٱلْأَدْبَـٰرَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ ٱللَّهِ مَسْـُٔولًا ﴿١٥﴾

१६. (हे 'नबी' !) कहो : यदि तुम मौत या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगा, और फिर भी जीवन का सुख थोड़ा ही भोगने पाओगे ।

16. Say: Flight will not avail you if ye flee from death or killing, and then ye dwell in comfort but a little while.

قُل لَّن يَنفَعَكُمُ ٱلْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ
ٱلْمَوْتِ أَوِ ٱلْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿١٦﴾

१७. कहो : कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता हो यदि वह तुम्हें हानि पहुँचानी चाहे, या वह तुम्हारे साथ दयालुता का इरादा करे (तो कौन उसे रोक सकता है) । ये लोग अल्लाह के सिवा अपना कोई संरक्षक-मित्र और सहायक नहीं पा सकते ।

17. Say: Who is he who can preserve you from Allah if He intendeth harm for you, or intendeth mercy for you? They will not find that they have any friend or helper other than Allah.

قُلْ مَن ذَا ٱلَّذِى يَعْصِمُكُم مِّنَ ٱللَّهِ إِنْ
أَرَادَ بِكُمْ سُوٓءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا
يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾

१८. अल्लाह तुम में से उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो (युद्ध के काम में) रुकावट डालने वाले हैं, और अपने भाइयों से कहते हैं : "आओ हमारी ओर[१८] !" और वे लड़ाई में थोड़ा ही आते हैं ।

18. Allah already knoweth those of you who hinder, and those who say unto their brethern: "Come ye hither unto us!" and they come not to the stress of battle save a little:

۞ قَدْ يَعْلَمُ ٱللَّهُ ٱلْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَٱلْقَآئِلِينَ
لِإِخْوَٰنِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ ٱلْبَأْسَ
إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾

१५. अर्थात् हमें भय है कि बनी क़ुरैज़ा के लोग जिन्हों ने विश्वासघात किया है और शत्रुओं से मिल गये हैं कहीं हमारे बाल-बच्चों पर हाथ न डालें । यह वास्तव में एक बहाना था जिस की आड़ ले कर 'मुनाफ़िक़' लोग लड़ाई के मैदान से भागना चाहते थे । नगर के निवासियों की रक्षा के बारे में उचित प्रबन्ध करना 'नबी' सल्ल० की ज़िम्मेदारी थी न कि किसी सैनिक की ।

१६. अर्थात् यदि वे दुश्मन इन्हें फ़ितना और फ़साद करने के लिये बुलाते ।

१७. उहुद की लड़ाई के बाद इन्हों ने यह इक़रार किया था कि अब लड़ाई के अवसर पर हम कमज़ोरी न दिखायेंगे बल्कि वीरता के साथ डट कर दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे । परन्तु दो ही वर्षों के पश्चात् जब परीक्षा का समय आया तो इन का भेद खुल गया; ये अपनी प्रतिज्ञा में सच्चे न निकले ।

१८. और इस 'नबी' का साथ छोड़ दो, लड़ाई में जाकर क्यों अपनी जान गँवाओगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. तुम्हारे साथ कृपणता से काम लेते हैं[१९]। फिर जब भय का समय आ जायें, तो तुम उन्हें देखते हो कि वे इस तरह आँखें फिरा-फिरा कर तुम्हारी ओर देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो। परन्तु, जब भय जाता रहता है, तो यही लोग माल के लोभी हो कर तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे स्वागत को आ पहुँचते हैं। ये लोग कदापि 'ईमान' नहीं लाये। अतः अल्लाह ने इन के कर्मों को अकारथ कर दिया। और यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है।

19. Being sparing of their help to you (believers). But when the fear cometh, then thou (Muhammad) seest them regarding thee with rolling eyes like one who fainteth unto death. Then, when the fear departeth, they scald you with sharp tongues in their greed for wealth (from the spoil). Such have not believed. Therefore Allah maketh their deeds fruitless. And that is easy for Allah.

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ
يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي
يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا ذَهَبَ
الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً
عَلَى الْخَيْرِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ ١٩
اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

२०. ये समझ रहे हैं कि (आक्रमणकारी) दल अभी गये नहीं हैं; और यदि वे दल फिर आ जायें, तो ये चाहें कि क्या ही अच्छा होता कि वे कहीं बाहर बद्दुओं में होते, और (वहीं से) तुम्हारे समाचार पूछते रहते, और यदि ये तुम्हारे बीच होते भी, तो लड़ाई में हिस्सा थोड़ा ही लेते।

20. They hold that the clans have not retained (for good); and if the clans should advance (again), they would fain be in the desert with the wandering Arabs, asking for the news of you, and if they were among you, they would not give battle, save a little.

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِن
يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ
فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ
وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا قَاتَلُوا إِلَّا
ع قَلِيلًا ٢٠

२१. निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के 'रसूल' में एक उत्तम आदर्श था[२०] उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो, और अल्लाह को अधिक याद करे।

21. Verily in the messenger of Allah ye have a good example for him who looketh unto Allah and the Last Day, and remembereth Allah much.

لَّقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ٢١

२२. और जब 'ईमान' वालों ने (सेना-) दलों को देखा, तो पुकार उठे : यह वही चीज़ है जिस का अल्लाह और उसके 'रसूल' ने हम से वादा किया था। और अल्लाह और उस के 'रसूल' ने सच कहा था[२१]। इस ने उन के 'ईमान' और आत्मसमर्पण ही को और अधिक बढ़ाया।

22. And when the true believers saw the clans, they said: This is that which Allah and His messenger promised us. Allah and His messenger are true. It did but confirm them in their faith and resignation.

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا
هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَتَسْلِيمًا ٢٢

२३. 'ईमान' वालों में कितने ही ऐसे लोग हैं कि जो वादा उन्हों ने अल्लाह से किया था उसे सच्चा कर दिखाया। उन में से कुछ ने तो अपना अरमान पूरा कर लिया,[२२] और कुछ राह देख रहे हैं; और उन्हों ने कुछ भी परिवर्तित नहीं किया।

23. Of the believers are men who are true to that which they covenanted with Allah. Some of them have paid their vow by death (in battle), and some of them still are waiting; and they have not altered in the least;

مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا
اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم
مَّن يَنتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ٢٣

१९. तुम्हारा साथ खुले दिल से नहीं देते।
२०. अर्थात् मुसलमानों का परम कर्त्तव्य है कि वे आप (सल्ल०) के जीवन को आदर्श-जीवन समझें और उसी के अनुसार अपने चरित्र का निर्माण करें। जिस प्रकार अल्लाह का 'रसूल' सत्य-मार्ग पर डटा रहा और कष्टों और कठिनाइयों का मुक़ाबला करता रहा उसी प्रकार तुम्हें भी हर संकट को झेलते हुये सत्य पर जमे रहना चाहिए।
२१. दे० सूरा अल-बक़रा आयत २१४ सूरा अल-अनकबूत आयत २-३।
२२. अर्थात् अल्लाह के मार्ग में अपनी जान दे चुके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. (यह सब कुछ इस लिए हुआ) ताकि अल्लाह सच्चों को उन की सच्चाई का बदला दे, और 'मुनाफ़िक़ों' को यदि चाहे तो यातना दे, या उन पर दया करे। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

२५. अल्लाह ने 'कुफ़्र' करने वालों का उन की क्रोधित दशा में मुँह फेर दिया; वे कोई भलाई हासिल न कर सके। और लड़ाई में 'ईमान' वालों की ओर से अल्लाह ही काफ़ी हो गया। और अल्लाह बलवान् और प्रभुत्वशाली है।

२६. और 'किताब वालों' में से जिन लोगों ने उन (आक्रमण करने वालों) का साथ दिया था[२३] (अल्लाह) उन्हें उन की गढ़ियों से उतार लाया, और उन के दिलों में रोब डाल दिया—एक गरोह को तुम क़त्ल कर रहे हो, और एक गरोह को क़ैद कर रहे हो।

२७. और उस ने तुम्हें उन की धरती और उन के घरों और उन के मालों का वारिस बना दिया, और उस भूमि का भी जिस पर तुम ने पग नहीं रक्खा[२४]। अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

२८. हे 'नबी'! अपनी पत्नियों से कहो: यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो, तो आओ! मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर भली रीति से तुम्हें रुख़सत कर दूँ[२५]।

24. That Allah may reward the true men for their truth, and punish the hypocrites if He will or relent toward them (if He will). Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

25. And Allah repulsed the disbelievers in their wrath; they gained no good. Allah averted their attack from the believers. Allah is Strong, Mighty.

26. And He brought those of the People of the Scripture who supported them down from their strongholds, and cast panic into their hearts. Some ye slew, and ye made captive some.

27. And He caused you to inherit their land and their houses and their wealth, and land ye have not trodden. Allah is Able to do all things.

28. O Prophet! Say unto thy wives: If ye desire the world's life and its adornment, come! I will content you and will release you with a fair release.

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ
يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۚ ﴿٢٤﴾
وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ
لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۚ ﴿٢٥﴾
وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ
وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا
تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۚ ﴿٢٦﴾
وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَ
اَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۚ ﴿٢٧﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ
تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا
جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

२३. यह संकेत यहूदी क़बीला बनी क़ुरैज़ा की ओर है।

२४. यह भविष्यवाणी है जिस में यह शुभ-सूचना 'ईमान वालों' को दी जा रही है कि आगे और बहुत सी ज़मीनें उनके क़ब्ज़े में आ जायेंगी विशेष रूप से इस में संकेत ख़ैबर की विजय की ओर है जो इस से कुछ ही समय के बाद हुई है।

२५. जिस समय ये आयतें उतरी हैं नबी सल्ल० माली हैसियत से बहुत तंगहाल थे। 'हिजरत' के बाद ४ वर्ष तक तो आप (सल्ल०) की आमदनी का कोई साधन न था। सन् ४ हि० में जब यहूदी क़बीला बनी नज़ीर को देश-निकाला दिया गया तो उनकी छोड़ी हुई ज़मीनों का एक भाग अल्लाह ने आप (सल्ल०) की आवश्यकताओं के लिए निश्चित कर दिया परन्तु वह आप (सल्ल०) के घर वालों के लिए काफ़ी न था। नबी सल्ल० की पत्नियों ने जब बेसब्र और अधीर हो कर आप (सल्ल०) से खर्च माँगा तो अल्लाह ने उन्हें यह नोटिस दी कि तुम्हें यदि सांसारिक जीवन और उस की शोभा प्रिय है तो तुम्हें रुखसत कर दिया जायेगा, तुम्हें तंगी में नहीं रक्खा जायेगा और यदि तुम अल्लाह और 'रसूल' को चाहती हो और तुम्हें दुनिया की अपेक्षा 'आख़िरत' प्रिय है, तो धैर्य्य से काम लो और तंगी और संकट में अल्लाह के 'रसूल' का साथ दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public.Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. और यदि तुम अल्लाह और उस के 'रसूल' और 'आख़िरत' का घर चाहती हो तो निम्सन्देह अल्लाह ने तुम में से उत्तमकार स्त्रियों के लिए बड़ा बदला तैयार कर रक्खा है[२६]।

३०. हे 'नबी' की स्त्रियो ! तुम में से जो कोई प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करेगी, उसे दोहरी यातना दी जायेगी,[२७] और अल्लाह के लिए यह बहुत सरल है।

* ३१. और जो तुम में से अल्लाह और उस के 'रसूल' का सादर आज्ञापालन करेगी और अनुकूल कर्म करेगी, उसे हम दोहरा बदला देंगे, और हम ने उस के लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रक्खी है।

29. But if ye desire Allah and His messenger and the abode of the Hereafter, then lo! Allah hath prepared for the good among you an immense reward.

30. O ye wives of the Prophet! Whosoever of you committeth manifest lewdness, the punishment for her will be doubled, and that is easy for Allah.

31. And whosoever of you is submissive unto Allah and His messenger and doth right, We shall give her reward twice over, and We have prepared for her a rich provision.

وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ
وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَإِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ
مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝٢٩
يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ
مُبَيِّنَةٍ يُضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ۝٣٠
وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ
رَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صٰلِحًا نُؤْتِهَا
أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا
كَرِيمًا ۝٣١

الجزء الثاني والعشرون

२६. जिस समय यह 'आयत' उतरी आप (सल्ल०) ने सब से पहले हज़रत आइशा रज़ि० से इस के बारे में बात-चीत की। आप (सल्ल०) ने कहा : "मैं तुम से एक बात कहता हूँ, उत्तर देने में जल्दी न करना, अपने माँ-बाप से राय ले लो फिर फ़ैसला करो।" फिर आप (सल्ल०) ने उन्हें बताया कि अल्लाह का यह आदेश आया है और यह 'आयत' सुनाई। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा : क्या इस मामले में मैं अपने माता-पिता से पूछूँ मैं तो अल्लाह, उस के 'रसूल' और 'आख़िरत' को चाहती हूँ। आप (सल्ल०) की दूसरी पत्नियों ने भी वही जवाब दिया जो हज़रत आइशा रज़ि० ने दिया।

पत्नी को इस बात का अधिकार देना कि वह पति के साथ रहने या न रहने का निर्णय स्वयं करे इस के लिए 'तख़ईर' का पारिभाषिक शब्द प्रयोग होता है।

२७. यह वास्तव में नबी सल्ल० की धर्म-पत्नियों को बताया जा रहा है कि समाज में उन का स्थान बहुत ऊँचा है। इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि उन से किसी अश्लील कर्म का भय था।

* यहाँ से बाईसवाँ पारा (Part xxii) शुरू होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. [२८]"हे 'नबी' की स्त्रियो ! तुम दूसरी स्त्रियों में से किसी की तरह नहीं हो। यदि तुम परहेज़गार रहना चाहती हो, तो दबी ज़बान से बात न किया करो कि वह व्यक्ति जिस के दिल में रोग है लालच में पड़ जाये, बल्कि साफ़-सीधी बात करो[२९]।

३३. और अपने घरों के अन्दर रहो[३०]। और भूतपूर्व अज्ञान-काल की सज-धज न दिखाती फिरो 'नमाज़' क़ायम करो, 'ज़कात' अदा करती रहो, और अल्लाह और उसके 'रसूल' का हुक्म मानती रहो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम ('रसूल' के) घर वालों से गन्दगी को दूर करे, और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ कर दे।

32. O ye wives of the Prophet! Ye are not like any other women. If ye keep your duty (to Allah), then be not soft of speech, lest he is whose heart is a disease aspire (to you), but utter customary speech.

33. And stay in your houses. Bedizen not yourselves with the bedizenment of the Time of Ignorance. Be regular in prayer, and pay the poor-due, and obey Allah and His messenger. Allah's wish is but to remove uncleanness far from you, O Folk of the Household, and cleanse you with a thorough cleaning.

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ
اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ
فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾
وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ
الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾

२८. यहाँ से ले कर आयत ३४ तक वे आयतें हैं जिन से 'इस्लाम' में परदे के आदेशों का आरम्भ हुआ है। यद्यपि सम्बोधिन इन आयतों में नबी सल्ल० की पत्नियों से है परन्तु वास्तव में अभीष्ट यह है कि समस्त मुस्लिम घरानों में इन आदेशों का पालन किया जाये।

२९. अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर स्त्री किसी पुरुष से बात तो कर सकती है परन्तु इस का ध्यान रहे कि बोलने में कोई लोच और बातों में कोई लगावट न होनी चाहिए और न जानते-बूझते स्वर में कोमलता और माधुर्य्य आने पावे कि सुनने वाले पुरुष के मन में यह भावना उत्पन्न हो कि इस स्त्री से कोई दूसरी आशा भी की जा सकती है और जिस से उस पुरुष को जिस के मन में कोई विकार हो इस से आगे क़दम बढ़ाने का साहस हो सके। इसी प्रकार का एक आदेश सूरा अन-नूर (आयत ३१) में भी दिया गया है, जिस में कहा गया है : "वे अपने पाँव (भूमि पर) मारती हुई न चलें कि अपना जो शृङ्गार उन्हों ने छिपा रक्खा हो लोगों को उस की खबर हो।" जिस तरह औरत के लिए परदा आवश्यक है उसी प्रकार औरत की आवाज़ भी औरत है इस लिए स्त्रियों को बिना ज़रूरत अपनी आवाज़ दूसरों को नहीं सुनानी चाहिए और न अपने ज़ेवरों की आवाज़ दूसरों के कानों तक पहुँचने देना चाहिए। ज़रूरत पड़ने पर यदि वे किसी से बात करें भी तो बहुत सावधान होकर बात करें। इसी लिए इस की इजाज़त नहीं है कि कोई स्त्री मस्जिद में 'अज़ान' दे और न उसे इस की इजाज़त है कि 'नमाज़' में जिस प्रकार इमाम की किसी भूल पर पुरुष 'सुबहानल्लाह' कहते हैं वह भी कहे। वह इमाम को उस की भूल पर सचेत करने के लिए केवल हाथ पर हाथ मार कर आवाज़ पैदा कर सकती है।

अब आप स्वयं समझ सकते हैं कि रंगमंच पर स्त्रियों का नाचना-गाना, अपने नृत्य और अपनी छवि और सौन्दर्य से लोगों को रिझाना, रेडियो पर अपने मधुर स्वरों से गाना, फिल्म-जगत में अभिनेत्री बन कर हिस्सा लेना। क्लबों और सिनेमा-घरों में पुरुषों के साथ बन-ठन कर आना, स्कूलों और कालेजों में पुरुष छात्रों के साथ एक ही क्लास में शिक्षा प्राप्त करना—ये सब कैसे जायज़ हो सकता है। जिस कलचर में ये सब बातें जायज़ ही नहीं बल्कि उन्नति का चिह्न समझी जायें उसे इस्लामी कलचर कहने का साहस वही व्यक्ति कर सकता है जो अत्यन्त निर्लज्ज और दुस्साहसी हो चुका हो।

३०. इस से मालूम हुआ कि स्त्री का कार्य-क्षेत्र उस का अपना घर है न कि राज्य-सभा और संसद (Parliament), वह घर की देख-भाल और बच्चों के पालन-पोषण के लिए है न कि कारखानों और कार्यालयों में पुरुषों के साथ काम करने और राज-काज सँभालने के लिए। 'नबी सल्ल०' ने कहा है : "स्त्री छिपी रहने के योग्य चीज़ है जब वह निकलती है तो उसे शैतान ताकता है; अल्लाह की दयालुता से अधिक निकट वह उस समय रहती है जब कि वह अपने घर में हो।"

परदे के विरोधी परदे को मध्यकालीन युग की प्रथा बताते हैं हालाँकि अनुसन्धानात्मक दृष्टि से जिन लोगों ने विचार किया है वे जानते हैं कि परदे को केवल मध्यकालीन युग की प्रथा कहना सही नहीं। परदे का द्योतक 'अवगुण्ठन' शब्द संस्कृत के प्राचीनतम ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। संस्कृत के नाटक-साहित्यों में स्त्रियों के 'अवगुण्ठनवती' होने का बार-बार उल्लेख मिलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. याद रक्खो ये अल्लाह की 'आयतें' और 'हिकमत' की बातें, जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

३५. 'मुस्लिम' पुरुष और 'मुस्लिम' स्त्रियाँ, 'ईमान' वाले पुरुष और 'ईमान' वाली स्त्रियाँ आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादिनी स्त्रियाँ, 'सब्र' करने वाले पुरुष और 'सब्र' करने वाली स्त्रियाँ, (अल्लाह के आगे) विनम्रता प्रकट करने वाले पुरुष, और विनम्रता प्रकट करने वाली स्त्रियाँ,[३१] 'सदक़ा' देने वाले पुरुष और सदक़ा देने वाली स्त्रियाँ, 'रोज़ा' रखने वाले पुरुष और 'रोज़ा' रखने वाली स्त्रियाँ, अपनी शर्मगाहों (गुप्त इन्द्रियों) की रक्षा करने पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियाँ,[३२] और अल्लाह का अधिक स्मरण करने वाले पुरुष और स्मरण करने वाली स्त्रियाँ- निश्चय ही इन के लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा बदला तैयार कर रक्खा है।

३६. [३३]और न किसी 'ईमान' वाले पुरुष को और न किसी 'ईमान' वाली स्त्री को यह हक़ है कि जब अल्लाह और उसका 'रसूल' किसी बात का फ़ैसला कर दें, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार रहे; और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' की अवज्ञा करे, तो वह खुला गुमराही में पड़ गया[३४]।

34. And bear in mind that which is recited in your houses of the revelations of Allah and wisdom. Lo! Allah is Subtile, Aware.

35. Lo! men who surrender unto Allah, and women who surrender, and men who believe and women who believe, and men who obey and women who obey, and men who speak the truth and women who speak the truth, and men who perserve (in righteousness) and women who perserve, and men who are humble and women who are humble, and men who give alms and women who give alms, and men who fast and women who fast, and men who guard (their modesty), and women who guard (their modesty), and men who remember Allah much and women who remember — Allah hath prepared for them forgiveness and a vast reward.

36. And it becometh not a believing man or a believing woman, when Allah and His messenger have decided an affair (for them), that they should (after that) claim any say in their affair; and whoso is rebellious to Allah and His messenger, he verily goeth astray in error manifest.

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾ ع

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٥﴾

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا ﴿٣٦﴾

३१. विमम्रता प्रकट करने का विशेष अवसर वह होना है जब कि वे 'नमाज़' में खड़े होते हैं।

३२. अर्थात् वे व्यभिचार से दूर रहते और नग्नता से बचते हैं। नंगा होने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि आदमी बिल्कुल वस्त्रहीन हो जाये बल्कि ऐसा वस्त्र पहनना भी नग्नता ही है जो इतना पतला हो कि शरीर उस में झलकता हो या वह इतना कसा हुआ हो कि शरीर की बनावट आदि सब उस में से ज़ाहिर हो।

३३. यहाँ से हज़रत ज़ैनब रज़ि० के विवाह से सम्बन्धित 'आयतें' आ रही हैं (दे० सूरा की भूमिका)।

३४. नबी सल्ल० ने जब हज़रत ज़ैद रज़ि० के लिए विवाह का सन्देश भेजा तो हज़रत ज़ैनब रज़ि० और उन के नातेदारों ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस पर यह 'आयत' उतरी, इसे सुनते ही हज़रत ज़ैनब रज़ि० और उन के नातेदार विवाह पर राज़ी हो गये। और हज़रत ज़ैनब रज़ि० के साथ हज़रत ज़ैद रज़ि० का विवाह हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. [35]और (हे 'नवी' !) याद करो जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने एहसान किया था और तुम ने भी जिस पर एहसान किया [36] : अपनी पत्नी को अपने पास रहने दे (उसे न छोड़), और अल्लाह से डर [37]। और तुम अपने जी में वह बात छिपाये हुये थे जिसे अल्लाह खोलने वाला था,[38] तुम लोगों से डर रहे थे[39] हालांकि अल्लाह इस का ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो। फिर जब ज़ैद को उस से कोई सरोकार न रहा,[40] तो हम ने तुझ से उस स्त्री का विवाह कर दिया,[41] ताकि 'ईमान' वालों पर अपने मुँह-बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे, जबकि उन का उन स्त्रियों से कोई सरोकार न रह जाये[42]। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर ही रहता है।

37. And when thou saidst unto him on whom Allah hath conferred favour and thou hast conferred favour: Keep thy wife to thyself, and fear Allah. And thou didst hide in thy mind that which Allah was to bring to light, and thou didst fear mankind whereas Allah had a better right that thou shouldst fear Him. So when Zeyd had performed the necessary formality (of divorce) from her, We gave her unto thee in marriage, so that (henceforth) there may be no sin for believers in respect of wives of their adopted sons, when the latter have performed the necessary formality (of release) from them. The commandment of Allah must be fulfilled.

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيْٓ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ
أَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ
وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ
مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ أَحَقُّ
أَنْ تَخْشٰىهُ ۖ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا
زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
حَرَجٌ فِيْٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ
مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾

३८. 'नबी' पर किसी ऐसे काम में कोई रुकावट नहीं जो अल्लाह ने उस के लिए नियत कर दिया हो। यही अल्लाह का नियम उन सब ('नबियों') के मामले में रहा है जो पहले गुज़र चुके हैं—और अल्लाह का हुक्म (पहले से) सोच-समझ कर तै किया हुआ होता है—

38. There is no reproach for the Prophet in that which Allah maketh his due. That was Allah's way with those who passed away of old — and the commandment of Allah is certain destiny —

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ
اللّٰهُ لَهٗ ۖ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ﴿٣٨﴾

३९. (यह नियम उन लोगों के लिए है) जो अल्लाह के सन्देश पहुँचाते हैं और उस से डरते हैं, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।

39. Who delivered the messages of Allah and feared Him, and feared none save Allah. Allah keepeth good account.

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ
وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللّٰهَ ۗ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾

३५. यहाँ से आयत ४८ तक जो कुछ बयान हुआ है उस का सम्पर्क उस समय से है जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० से 'नबी' सल्ल० का विवाह हो चुका था।

३६. 'उस व्यक्ति' से संकेत हज़रत ज़ैद रज़ि० की ओर है। हज़रत ज़ैद रज़ि० पर अल्लाह और उस के 'रसूल' सल्ल० ने क्या एहसान किया था इस के लिए सूरा की भूमिका देखिए।

३७. जब हज़रत ज़ैद रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० में निर्वाह होना मुश्किल हो गया, तो हज़रत ज़ैद रज़ि० ने आप (सल्ल०) से कहा था कि मैं उन्हें तलाक़ देना चाहता हूँ, तो उस समय आप (सल्ल०) ने ऐसा करने से हज़रत ज़ैद रज़ि० को रोका था।

३८. अल्लाह की ओर से नबी सल्ल० को इस बात का इशारा मिल चुका था कि ज़ैद (रज़ि०) हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) को तलाक़ दे देंगे और वह आप (सल्ल०) की पत्नियों में शामिल होंगी; परन्तु आप (सल्ल०) ने इस बात को छुपाया और ज़ैद (रज़ि०) से यही कहा कि अपनी पत्नी को तलाक़ न दो।

३९. लोगों से डर रहे थे कि वे कीचड़ उछालेंगे कि देखो इस व्यक्ति ने अपने मुँह-बोले बेटे की तलाक़ दी हुई पत्नी से विवाह रचा लिया।

४०. अर्थात् जब हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ दे दी और 'इद्दत' भी पूरी हो गई; और कोई नाता और लगाव बाक़ी नहीं रहा।

४१. मालूम हुआ कि यह विवाह अल्लाह के आदेशानुसार हुआ है!

४२. अर्थात् ताकि इस प्रकार इस बुरी प्रथा का अन्त हो जाये जो अरब में प्रचलित थी कि कोई व्यक्ति अपने मुँह-बोले बेटे की पत्नी से जिसे वह तलाक़ दे चुका हो विवाह ही नहीं कर सकता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं,[४३] परन्तु वे अल्लाह के 'रसूल' और 'नबियों' के समापक हैं;[४४] और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।

40. Muhammad is not the father of any man among you, but he is the messenger of Allah and the Seal of the Prophets; and Allah is Aware of all things.

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

४१. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! अल्लाह को अधिक याद करो।

41. O ye who believe! Remember Allah with much remembrance.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾

४२. और प्रातः समय और सायंकाल उस की 'तसबीह' करते रहो।

42. And glorify Him early and late.

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

४३. वही है जो तुम पर 'रहमत'[४५] भेजता है और उस के 'फ़रिश्ते' भी, ताकि वह तुम्हें अँधियारियों से प्रकाश की ओर निकाल लाये; वह 'ईमान' वालों पर दया करता है।

43. He it is who blesseth you, and His angels (bless you), that He may bring you forth from darkness unto light; and He is Merciful to the believers.

هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾

४४. जिस दिन वे उस से मिलेंगे उन का अभिवादन 'सलाम' होगा और उस ने उन के लिए सम्मानित बदला तैयार कर रक्खा है।

44. Their salutation on the day when they shall meet Him will be. Peace! And He hath prepared for them a goodly recompense.

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾

४५. हे 'नबी'! हम ने तुम्हें गवाही देने वाला[४६] और शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है,

45. O Prophet! Lo! We have sent thee as a witness and a bringer of good tidings and a warner:

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾

४६. और अल्लाह की ओर बुलाने वाला उस के हुक्म से, और प्रकाशमान् प्रदीप बना कर।

46. And as a summoner unto Allah by His permission, and as a lamp that giveth light.

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿٤٦﴾

४७. शुभ-सूचना दे दो 'ईमान' वालों को कि उन के लिए अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

47. And announce unto the believers the good tidings that they will have great bounty from Allah.

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾

४३. फिर वे ज़ैद (रज़ि०) के पिता कैसे होते कि उन की छोड़ी हुई पत्नी से आप (सल्ल०) का विवाह करना हराम होता।

४४. वे अल्लाह के 'रसूल' हैं; उन का कर्त्तव्य है कि स्वय अपने वचन और कर्म द्वारा अनुचित रीतियों और प्रथाओं का उन्मूलन कर दें। आप (सल्ल०) 'नबियों' के समापक हैं; आप के बाद कोई 'नबी' आने वाला नहीं इस लिए यह आप (सल्ल०) के लिए और अधिक आवश्यक हो जाता है कि अज्ञानपूर्ण रीतियों का उन्मूलन स्वयं कर के जायें। 'समापक' के लिए मूल ग्रन्थ में 'ख़ातम' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ मोहर (Seal) भी होता है, मतलब यह कि आप (सल्ल०) सबसे अन्तिम 'नबी' हैं। आप के आ जाने के बाद 'नबियों' के सिलसिले पर मुहर कर दी गई। 'नबी' सल्ल० ने भी इस की घोषणा कर दी है कि मेरे बाद कोई 'नबी' न होगा। अब संसार के कल्याण का एकमात्र साधन आप (सल्ल०) पर विश्वास करना और आप के आदेशों का पालन करना है। आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम 'रसूल' हैं और सम्पूर्ण संसार के लिए आप (सल्ल०) को 'रसूल' बना कर भेजा गया है।

४५. दे० आयत ५६।

४६. अर्थात् सत्य की गवाही देने वाला, संसार के लोगों को साफ़-साफ़ यह बात बताने वाला कि अल्लाह का भेजा हुआ 'दीन' ही सत्य है उस के अतिरिक्त जो कुछ है असत्य और तथ्यहीन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. और 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' का कहना न मानो। और उन्हें सताने दो,[४७] और अल्लाह पर भरोसा करो। अल्लाह इस के लिए बहुत है कि अपना मामला उसे सौंप दिया जाये।

48. And include not to the disbelievers and the hypocrites. Disregard their noxious talk, and put thy trust in Allah. Allah is sufficient as Trustee.

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾

४९. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! जब तुम 'ईमान' वाली स्त्रियों से विवाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले[४८] 'तलाक़' दे दो, तो तुम्हारी उन पर कोई 'इद्दत' नहीं[४९] जिस की गिनती उन से पूरी कराओ। अतः उन्हें कुछ माल दे कर[५०] भले तरीक़े से रुख़सत कर दो।

49. O ye who believe! If ye wed believing women and divorce them before ye have touched them, then there is no period that ye should reckon. But content them and release them handsomely.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ
ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ
فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

५० हे 'नबी' ! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नियाँ हलाल (अवर्जित) कर दी हैं जिन के 'मह्र' तुम ने दे दिये हैं, और तुम्हारी 'लौंडियाँ' जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत के माल में दी हैं, और तुम्हारे चचा की बेटियाँ, तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामूँ की बेटियाँ, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ 'हिजरत' की है,[५१] और वह 'ईमान' वाली स्त्री जो अपने-आप को 'नबी' के लिए हिबा कर दे[५२] यदि 'नबी' उस से विवाह करना चाहे—यह (विशेष अधिकार हे मुहम्मद !) केवल तुम्हारे लिए है, दूसरे 'ईमान' वालों के लिए नहीं है—हम को मालूम है जो कुछ हम ने उन की पत्नियों और 'लौंडियों' के बारे में उन के लिए ज़ाब्ता बनाया है—ताकि तुम्हारे ऊपर कोई तंगी न रहे,[५३] और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावन्त है।

50. O Prophet! Lo! We have made lawful unto thee thy wives unto whom thou hast paid their dowries, and those whom thy right hand possesseth of those whom Allah hath given thee as spoils of war, and the daughters of thine uncle on the father's side and the daughters of thine aunts on the father's side, and the daughters of thine uncle on the mother's side and the daughters of thine aunts on the mother's side who emigrated with thee, and a believing woman if she give herself unto the Prophet and the Prophet desire to ask her in marriage — a privilege for thee only, not for the (rest of) bel'evers — We are aware of that which We enjoined upon them concerning their wives and those whom their right hands possess — that thou mavst be free from blame, for Allah is Forgiving. Merciful.

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ
الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ
مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ
عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ
هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ
نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۤ
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ قَدْ
عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

४७. अर्थात् उन के सताने की परवा न करो।

४८. अर्थात् सहवास और संभोग से पहले।

४९. वह 'तलाक़' पाते ही अपना दूसरा विवाह कर सकती है, पुरुष का उस पर कोई हक़ बाक़ी नहीं रहता। 'इद्दत' से अभिप्रेत वह मुद्दत है जिस के गुज़रने से पहले स्त्री अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकती। यदि पुरुष ने सहवास के बाद तलाक दिया है तो स्त्री को 'इद्दत' गुज़ारनी होती है। यदि पुरुष ने तलाक़ तो नहीं दिया परन्तु सहवास से पूर्व उस का देहान्त हो गया तो स्त्री को 'इद्दत' की मुद्दत गुज़ारनी होगी (दे० सूरा अल-बक़रा आयत २३४)।

५०. दे० सूरा अल-बक़रा आयत २३६-२३७।

५१. आप (सल्ल०) के साथ 'हिजरत' करने का अर्थ यह नहीं है कि 'हिजरत' के सफ़र में वे आप (सल्ल०) के साथ रही हों।

५२. अर्थात् 'मह्र' के बिना नबी सल्ल० से विवाह करने पर राज़ी हुई हों। हज़रत मैमूना रज़ि० ने 'मह्र' के बिना आप (सल्ल०) से विवाह किया था परन्तु आप ने उन्हें भी 'मह्र' अदा किया।

५३. इस उद्देश्य के अन्तर्गत नबी सल्ल० के लिए ४ से अधिक पत्नियों की इजाज़त दी गई। "तंगी न रहे" इस का यह अर्थ कदापि नहीं है कि कामेच्छा की पूर्ति में आप (सल्ल०) के लिए तंगी न रहे। आप (सल्ल०) के लिए ४ से अधिक पत्नियों की जो इजाज़त दी गई इस का धर्म और दूसरी गम्भीर समस्याओं से गहरा सम्बन्ध था। दूसरे मुसलमानों के लिए एक साथ ४ से अधिक पत्नियों की इजाज़त नहीं है (दे० सूरा अन-निसा आयत ३); परन्तु उन के लिए यह आसानी है कि यदि उन्हें 'तलाक़' देनी पड़ जाये तो उन के लिये तंगी नहीं वे तलाक़ दे सकते हैं और दूसरा विवाह कर सकते हैं। परन्तु नबी सल्ल० पर 'तलाक़' हराम थी क्योंकि आप की पत्नियाँ दूसरों के लिए माता के समान थीं अतः उन्हें 'तलाक़' नहीं दी जा सकती थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१. तुम उन में से जिसे चाहो अपने से अलग रक्खो और जिसे चाहो अपने साथ रक्खो, और जिन को तुम ने अलग कर दिया हो यदि उन में से किसी को अपने पास बुला लो, तो इस में तुम पर कोई दोष नहीं, इस प्रकार इस की अधिक सम्भावना है कि उन की आँखें ठण्डी रहेंगी और वे दुःखी न होंगी, और जो कुछ तुम उन्हें दोगे उस पर वे सब राज़ी रहेंगी[५४]। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है और अल्लाह जानने वाला और सहनशील है।

51. Thou canst defer whom thou wilt of them and receive unto thee whom thou wilt, and whomsoever thou desirest of those whom thou hast set aside (temporarily), it is no sin for thee (to receive her again); that is better; that they may be comforted and not grieved, and may all be pleased with what thou givest them. Allah knoweth what is in your hearts (O men) and Allah is Forgiving, Clement.

تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾

५२. इस के बाद तुम्हारे लिए दूसरी स्त्रियाँ हलाल (अवर्जित) नहीं, और न यह (जायज़ है) कि तुम उनकी जगह और पत्नियाँ ले आओ चाहे उन की सुन्दरता तुम्हें कितनी ही क्यों न भाये, सिवाय उन के जो तुम्हारी लौंडियाँ हों[५५]। अल्लाह हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है।

52. It is not allowed thee to take (other) women henceforth, nor that thou shouldst change them for other wives even though their beauty pleased thee, save those whom thy right hand possesseth. And Allah is Watcher over all things.

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ﴿٥٢﴾ ع

५४. इस तरह अल्लाह ने नबी सल्ल० को यह अधिकार प्रदान किया कि आप (सल्ल०) अपनी पत्नियों में से जिस के साथ जो व्यवहार करना चाहें करें इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि अल्लाह ने अपने 'रसूल' को अनुचित छूट दे दी वास्तव में ये अधिकार आप (सल्ल०) को महान् उद्देश्य के अन्तर्गत प्रदान किये थे। ये अधिकार अल्लाह ने आप (सल्ल०) को इस लिए प्रदान किये थे ताकि आप (सल्ल०) उन घरेलू उलझनों से छुटकारा पा सकें जो कई पत्नियों की मौजूदगी में प्रायः पैदा हो जाया करती हैं जैसे स्त्रियों के पारस्परिक झगड़े, प्रतिद्वन्दिता आदि। आप (सल्ल०) को घरेलू उलझनों से बचाने की आवश्यकता इस लिए थी ताकि आप (सल्ल०) एकाग्रचित हो कर धर्म के महान् कार्य में लग सकें। परन्तु यह अधिकार पा लेने के बाद भी आपने अपनी पत्नियों के बीच पूरा इन्साफ़ किया। बारी-बारी सब के यहाँ आप (सल्ल०) जाते रहे।

५५. अर्थात् 'लौंडियों' की इजाज़त है। दे० सूरा अन-निसा आयत ३, सूरा अल-मोमिनून आयत ६ और सूरा अल-मआरिज ३०। 'लौंडियों' के बारे में विशेष जानकारी के लिए पारिभाषिक शब्दों की सूची देखिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! 'नबी' के घरों में मत जाया करो[५६] यह और बात है कि कभी तुम्हें खाने पर आने को कहा जाये और यह नहीं कि खाने के समय ताकते रहो, हां जब तुम्हें बुलाया जाये, तो अन्दर जाओ; और, जब खा चुको, तो उठ पड़ो बातों में न लगे रहो। यह बात 'नबी' को तकलीफ़ देती है, परन्तु वे तुम से शर्माते हैं (कुछ कहते नहीं); और अल्लाह सच्ची बात से नहीं शर्माता[५७]।

और जब उन ('नबी' की पत्नियों) से कोई चीज़ माँगो, तो परदे के पीछे से माँगो। यह तुम्हारे दिलों और उन के दिलों के लिए बहुत सुथराई है[५८]। तुम्हारे लिए यह कदापि जायज़ नहीं कि अल्लाह के 'रसूल' को तकलीफ़ दो, और न यह जायज़ है कि उन के बाद उन की पत्नियों से विवाह करो। निश्चय ही यह अल्लाह की दृष्टि में भारी बात है[५९]।

53. O ye who believe! Enter not the dwellings of the Prophet for a meal without waiting for the proper time, unless permission be granted you. But if ye are invited, enter, and, when your meal is ended, then disperse. Linger not for conversation. Lo! that would cause annoyance to the Prophet, and he would be shy of (asking) you (to go); but Allah is not shy of the truth. And when ye ask of them (the wives of the Prophet) anything, ask it of them from behind a curtain. That is purer for your hearts and for their hearts. And it is not for you to cause annoyance to the messenger of Allah, nor that ye should ever marry his wives after him. Lo! that in Allah's sight would be an enormity.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ
النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ
غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ
فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا
مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ
مِنَ الْحَقِّ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ
مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ
قُلُوْبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ
اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ
اَبَدًا اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾

५४. तुम चाहे कोई चीज़ ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

54. Whether ye divulge a thing or keep it hidden, lo! Allah is ever Knower of all things.

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٥٤﴾

५५. उन ('नबी' की पत्नियों) पर अपने बापों से (परदा न करने में) कोई दोष नहीं, और न अपने बेटों से, और न अपने भाइयों से, और न अपने भतीजों से, और न अपने भानजों से,[६०] और न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों से,[६१] और न उन से जिन पर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो[६२]। (हे 'नबी' की पत्नियो !) अल्लाह से डरती रहो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

55. It is no sin for them (thy wives) (to converse freely) with their fathers, or their sons, or their brothers, or their brother's sons, or the sons of their sisters or of their own women, or their slaves. O women! Keep your duty to Allah. Lo! Allah is Witness over all things.

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ
وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ
اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾

५६. लगभग एक वर्ष के बाद इस नियम को सभी मुसलमानों के घरों में प्रचलित करने का आदेश दे दिया गया (दे० सूरा अन-नूर आयत २७)।

५७. हज़रत ज़ैनब रज़ि० के 'वलीमे' (विवाह सम्बन्धी भोज) के अवसर पर सब लोग तो खाना खा कर चले गये; परन्तु दो-तीन आदमी बैठ कर बातें करते रहे जिस से नबी सल्ल० को तकलीफ़ हुई किन्तु शर्म के कारण आप (सल्ल०) कुछ कह नहीं सके।

५८. इस आयत में परदे का आदेश दिया गया। इस आदेश के बाद नबी सल्ल० की पत्नियों के घरों में दरवाज़ों पर परदे लटका दिये गये। और दूसरे मुसलमानों के घरों में भी दरवाज़ों पर परदे लटक गये।

५९. यही बात सूरा के आरम्भ में इन शब्दों में कही गई थी कि नबी सल्ल० की पत्नियाँ 'ईमान' वालों की माँयें हैं (दे० आयत ६)।

६०. इस में वे सभी नातेदार आ गये जिन के साथ स्त्री का विवाह नहीं हो सकता।

६१. दे० सूरा अन-नूर फ़ुटनोट १८।

६२. दे० सूरा अन-नूर फ़ुटनोट १९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६. निश्चय ही अल्लाह और उस के 'फ़िरिश्ते' 'नबी' पर 'रहमत' भेजते हैं[६३]। हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! तुम भी उन पर 'रहमत' भेजो और ख़ूब सलाम भेजो।

56. Lo! Allah and His angels shower blessings on the Prophet. O ye who believe! Ask blessings on him and salute him with a worthy salutation.

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟
تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

५७. जो लोग अल्लाह और उसके 'रसूल' को दुःख पहुँचाते हैं,[६४] उन पर अल्लाह ने दुनिया और 'आख़िरत' में लानत की है, और उन के लिए रुसवा करने वाली (अपमानजनक) यातना तैयार कर रक्खी है।

57. Lo! those who malign Allah and His messenger, Allah hath cursed them in the world and the Hereafter, and hath prepared for them the doom of the disdained.

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُۥ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِى الدُّنْيَا وَالْءَاخِرَةِ وَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾

५८. और जो लोग 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों को बिना इस के कि उन्हों ने कुछ किया हो (तोहमत लगा कर) दुःख पहुँचाते हैं, उन्हों ने झूठी तोहमत और प्रत्यक्ष गुनाह का बोझ उठा लिया।

58. And those who malign believing men and believing women undeservedly, they bear the guilt of slander and manifest sin.

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ
بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا۟ فَقَدِ احْتَمَلُوا۟
بُهْتَٰنًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾

५९. हे 'नबी' ! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और 'ईमान' वालों की स्त्रियों से कह दो कि वे (बाहर निकलें तो) अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें[६५]। इस में इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जायें[६६] और सताई न जायें[६७]। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

59. O Prophet! Tell thy wives and thy daughters and the women of the believers to draw their cloaks close round them (when they go abroad). That will be better, so that they may be recognised and not annoyed. Allah is ever Forgiving, Merciful.

يَٰٓأَيُّهَا النَّبِىُّ قُل لِّأَزْوَٰجِكَ
وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ
عَلَيْهِنَّ مِن جَلَٰبِيبِهِنَّ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ
أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾

६३. अल्लाह 'नबी' सल्ल० पर 'रहमत' भेजता है अर्थात् अल्लाह आप (सल्ल०) पर दयालुता (Blessing) दरशाता है आप (सल्ल०) की प्रशंसा करता, आप (सल्ल०) का नाम ऊँचा करता और आप पर बरकतें उतारता है। आप (सल्ल०) पर उस की कृपा-दृष्टि है। अल्लाह के 'फ़िरिश्ते' भी आप (सल्ल०) पर 'रहमत' भेजते हैं अर्थात् उन्हें भी आप से अत्यन्त प्रेम है, वे आप की प्रशंसा करते और आप (सल्ल०) के लिए अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह आप को अधिक-से-अधिक ऊँचा दरजा प्रदान करे और आप (सल्ल०) के 'दीन' को उन्नति दे। अल्लाह की दयालुता और उस की बरकतें आप (सल्ल०) के साथ हों।

६४. अल्लाह को दुःख पहुँचाते हैं अर्थात् उसकी अवज्ञा करते हैं उस के 'रसूल' का विरोध करते हैं।

६५. अर्थात् अपनी चादरें अच्छी तरह ओढ़ कर उन का एक हिस्सा अथवा उन का पल्लू अपने ऊपर से लटका लें ताकि उन के सिर और चेहरे छिपे रहें।

६६. अर्थात् हर व्यक्ति देख कर यह समझ ले कि ये सती, सदाचारिणी और कुलीन स्त्रियाँ हैं, इन से कोई अनुचित आशा नहीं की जा सकती।

६७. अर्थात् उन्हें कोई छेड़े नहीं; उन के साथ कोई बुरा व्यवहार न करे।

क़ुरआन के इन आदेशों के साथ सूरा अन-नूर की आयत ३१ भी सामने रहे। क़ुरआन के इन आदेशों से मालूम होता है कि स्त्री के लिये अभीष्ट गुण यह है कि वह पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करे। यही उस की विशेषता है। यदि उस ने अपने सतीत्व को नष्ट कर दिया, तो उस से बढ़ कर नीच और कोई नहीं। अब आप स्वयं विचार कर सकते हैं, स्त्रियों का बन-ठन कर बाहर निकलना और सात शृङ्गार करके पराये पुरुषों की सभाओं में पहुँचना, जिसे आज सभ्यता की निशानी समझा जाता है, क़ुरआन की दृष्टि में कितनी अशिष्ट और मान-मर्यादा एवं सभ्यता से गिरी हुई बात है, फिर इस से जिस तरह बुराई की राहें खुलती हैं और पारिवारिक जीवन नष्ट होता है उसे कौन नहीं जानता। समाज को यदि बुराइयों से दूर रखना है तो समाज में परदे का अस्तित्व बना रहने देना चाहिए। परन्तु यदि समाज में स्त्री-पुरुष का स्वच्छन्द-सम्पर्क ही आप को अभीष्ट है तो फिर तज्जन्य भ्रष्टाचार को देखने के लिए भी आप को तैयार रहना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०. यदि 'मुनाफ़िक़' और वे लोग जिन के दिलों में रोग है, और जो मदीना में खलबली डालते हैं (अपनी कुचेष्टाओं से) बाज़ न आये, तो हम उन के विरुद्ध तुम्हें उकसा देंगे, फिर वे इस (नगर) में तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पावेंगे।

60. If the hypocrites, and those in whose hearts is a disease, and the alarmists in the city do not cease, We verily shall urge thee on against them, then they will be your neighbours in it but a little while.

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾

६१. फिटकारे हुये, जहाँ कहीं पाये जायेंगे पकड़े जायेंगे और बुरी तरह क़त्ल किये जायेंगे।

61. Accursed, they will be seized wherever found and slain with a (fierce) slaughter.

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

६२. अल्लाह की यही रीति उन लोगों के बारे में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं; और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे।

62. That was the way of Allah in the case of those who passed away of old; thou wilt not find for the way of Allah aught of power to change.

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

६३. (हे 'नबी'!) लोग तुम से उस घड़ी[६८] के बारे में पूछते हैं। कहो : उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। तुम्हें क्या ख़बर कदाचित् वह निकट ही आ लगी हो।

63. Men ask you of the Hour. Say: The knowledge of it is with Allah only. What can convey (the knowledge) unto thee? It may be that the Hour is nigh.

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾

६४. निश्चय ही अल्लाह ने 'काफ़िरों' पर लानत की है, और उन के लिए ('जहन्नम' की) दहकती आग तैयार कर रक्खी है,

64. Lo! Allah hath cursed the disbelievers, and hath prepared for them a flaming fire·

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾

६५. जिस में वे सदा रहेंगे। कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न पायेंगे।

65. Wherein they will abide for ever. They will find (then) no protecting friend nor helper.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾

६६. जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट-पलट किये जायेंगे, वे कहेंगे : क्या ही अच्छा होता कि हमने अल्लाह का कहा माना होता और 'रसूल' का कहा माना होता!

66. On the day when their faces are turned over in the fire, they say: Oh, would that we had obeyed Allah and had obeyed His messenger!

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾

६७. और कहेंगे : हमारे 'रब'! हम ने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था, और उन्हों ने हमें राह से बे-राह कर दिया।

67. And they say: Our Lord! Lo! we obeyed our princes and great men, and they misled us from the Way.

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاۗءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

६८. हमारे 'रब'! उन्हें दोहरी यातना दे और उन पर सख़्त लानत कर[६९]।

68. Our Lord! Oh, give them double torment and curse them with a mighty curse.

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

६८. अर्थात् 'क़ियामत'।

६९. यह बात क़ुरआन में दूसरे स्थानों पर भी बयान हुई है। उदाहरणार्थ दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १८७, अल-हिज्र आयत २-३, अल-फ़ुरक़ान आयत २७-२९; हा० मीम० सजदा आयत २६-२९; सबा आयत ३-५; अल-मुल्क आयत २४-२७; अन-नाज़ि-यात आयत ४२-४६ और अत-ततफ़ीफ़ आयत १०-१७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! उन लोगों जैसे न हो जाना जिन्हों ने मूसा को दुःख पहुँचाया था,[७०] फिर अल्लाह ने उन बातों से जो उन्हों ने कहीं उसे बरी (साबित) कर दिया, और वह अल्लाह की दृष्टि में सम्मानित था।

७०. हे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! अल्लाह का डर रक्खो, और ठीक-ठीक बात कहो;

७१. वह तुम्हारे कामों को सुधार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। जो कोई अल्लाह और उसके 'रसूल' का कहना माने उस ने बड़ी सफलता प्राप्त की।

७२. हम ने अमानत[७१] को आकाशों और धरती और पहाड़ों के सामने रक्खा पर वे उसे उठाने को तैयार न हुये और उस से काँप उठे और मानव ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम और बड़ा जाहिल है[७२]।

७३. ताकि अल्लाह 'मुनाफ़िक़' पुरुषों और 'मुनाफ़िक़' स्त्रियों और 'मुश्रिक' पुरुषों और 'मुश्रिक' स्त्रियों को दण्ड दे। और 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों की 'तौबा' स्वीकार करे,[७३] अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

69. O ye who believe! Be not as those who slandered Moses, but Allah proved his innocence of that which they alleged, and he was well esteemed in Allah's sight.

70. O ye who believe! Guard your duty to Allah, and speak words straight to the point;

71. He will adjust your works for you and will forgive you your sins. Whosoever obeyeth Allah and His messenger, he verily hath gained a signal victory.

72. Lo! We offered the trust unto the heavens and the earth and the hills, but they shrank from bearing it and were afraid of it. And man assumed it. Lo! he hath proved a tyrant and a fool.

73. So Allah punisheth hypocritical men and hypocritical women, and idolatrous men and idolatrous women. But Allah pardoneth believing men and believing women, and Allah is Forgiving, Merciful.

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ط وَ
كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا
قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾
يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ ط وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾
اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا
وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ط
اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾
لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع

७० अर्थात् तुम अपने 'नबी' (सल्ल०) के साथ वह व्यवहार न करना जो 'यहूदियों' ने अपने 'नबी' मूसा (अ०) के साथ किया था। 'यहूदियों' का हज़रत मूसा अ० के साथ जो व्यवहार रहा है उस का उल्लेख क़ुरआन में भी हुआ है और बाइबिल में भी उसका उल्लेख मिलता है। दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) ५ : २०–२१; १४ : ११–१२; १६ : २–३ और १७ : ३–४। 'गिनती' (Num.) ११ : १–१५; १४ : १–१०, अध्याय १६ और २० : १–५।

७१. अमानत से अभिप्रेत यहाँ स्वतन्त्र-भक्ति और आज्ञापालन तथा 'ख़िलाफ़त' (प्रतिनिधित्व) है। ऐसी भक्ति और आज्ञापालन जिसे कोई स्वेच्छापूर्वक स्वयं स्वीकार करे, उसे इस के लिए विवश न किया जाये। वह यदि भक्ति के बदले शत्रुता की नीति अपनानी चाहे तो उसे इसका अवसर प्राप्त हो। उस में जहाँ भलाई से प्रेम पाया जाता हो वहीं उस में बुराई की ओर बढ़ने की भी क्षमता हो। ज़ाहिर बात है कि यह विशेषता केवल मनुष्य ही को प्राप्त है। आकाशों और पहाड़ों को नहीं। मनुष्य को अल्लाह ने उस की छोटी सी दुनिया में स्वतन्त्र कार्य करने का स्वामित्व दिया है ताकि मनुष्य को स्वतन्त्र-सेवा और भक्ति का अवसर मिल सके। परन्तु अत्याचारी और अज्ञानी लोग इसे स्वार्थ-सिद्धि का उपकरण मात्र समझते और अल्लाह के आदेशों की अवहेलना ही में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

७२. इस आयत में ज़ालिम, जाहिल ऐसे लोगों को कहा गया है, जिन्हें अल्लाह की अमानत का कुछ भी ध्यान नहीं है, जो संसार में इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं मानो उन पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है मानो वे बिल्कुल स्वतन्त्र हैं जो चाहें करें और जिस प्रकार चाहें दुनिया में रहें-सहें।

७३. अर्थात् इस अमानत के बोझ को उठाने का परिणाम यह है कि जो लोग कपट-नीति से काम लेंगे और अल्लाह की अमानत का आदर नहीं करेंगे वे दण्ड के भागी होंगे और जो इस अमानत का पूर्ण रूप से आदर करेंगे उन पर अल्लाह की कृपा होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४—सबा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'सबा' 'आयत' १५ से लिया गया है। 'सबा' अरब की प्राचीन जाति का नाम है। इस सूरा में एक जगह 'सबा' का क़िस्सा बयान हुआ है।[1]

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह सूरा मक्के के प्रारम्भिक अथवा माध्यमिक कालावधि में अवतीर्ण हुई होगी।

वार्त्तायें

इस सूरा से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अल-हुजुरात पर समाप्त होता है।

इस सूरा से 'क़ियामत', 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) तथा 'क़ुरआन' की पुष्टि होती है। 'रिसालत' का विषय इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। यह सूरा आगे आने वाली सूरा से बहुत-सी बातों में मिलती-जुलती है।

'तौहीद', 'आख़िरत' और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'रिसालत' पर 'काफ़िर' लोग जो आक्षेप करते थे उन का इस सूरा में उत्तर दिया गया है। इस सूरा में 'काफ़िरों' को समझाया गया है और उन की हठधर्मी पर उन्हें बुरे परिणामों से डराया गया है।

इस सूरा में हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से बयान किये गये हैं कि अल्लाह ने उन्हें राज्य-सत्ता प्रदान की परन्तु वे अपने 'रब' के कृतज्ञ ही रहे। अपने 'रब' के उपकारों को भूल कर उस के अवज्ञाकारी नहीं बने। 'सबा' का क़िस्सा भी इस सूरा में बयान किया गया है जिसे अल्लाह ने धन-सम्पत्ति सब कुछ दिया था; परन्तु अल्लाह की नेमतों को पा कर यह जाति फूल गई; इस का परिणाम यह हुआ कि अल्लाह ने इसे तितर-बितर कर के रख दिया। दुनिया में अब केवल इस के क़िस्से रह गये हैं। इस तरह ऐतिहासिक दृष्टान्तों के द्वारा भली-भाँति यह बात समझाई गई है कि मनुष्य के लिए कल्याणकारी जीवन-प्रणाली यही है कि वह 'तौहीद' और 'आख़िरत' पर 'ईमान' ला कर अल्लाह का कृतज्ञ बने। 'कुफ़्र' और 'शिर्क' से दूर रहे। दुनिया के भोग-विलास में पड़ कर 'आख़िरत' से असावधान न हो।

इतिहास से पता चलता है कि 'सबा' दक्षिणी अरब की एक बहुत बड़ी जाति थी। अरब का दक्षिणी-पश्चिमी कोना जिसे आज यमन कहते हैं यही इस जाति का वतन था। यह जाति प्राचीन काल से प्रसिद्ध रही है। उर, असोरिया, बाबिल आदि के प्राचीनतम शिलालेखों में इस जाति का उल्लेख मिलता है। यमन में भी लगभग ३००० ऐसे शिलालेख मिले हैं जिन से इस जाति के इतिहास के बारे में महत्त्व-पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। बाइबिल में भी इस का उल्लेख विभिन्न स्थानों पर किया गया है। यूनान और रूम के इतिहासकार और भूगोल के लेखक भी २८८ ई० पू० से ले कर हज़रत मसीह अ० के बाद की कई शताब्दियों तक निरन्तर इस का उल्लेख अपने ग्रन्थों में करते रहे हैं। 'सबा' की उन्नति का समय

१. दे० आयत ३४-५४।

•Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०० ई० पू० में आरम्भ होता है। हज़रत दाऊद अ० के समय में यह जाति अपने धन और वैभव के लिए बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी। आरम्भ में यह जाति 'मुश्रिक' थी। इस के यहाँ सूर्य की पूजा होती थी। इस की अधिक सम्भावना है कि जब 'सबा' की रानी हज़रत सुलैमान अ० के हाथ पर 'ईमान' ले आई[1] तो इस जाति के अधिकांश लोग 'मुस्लिम' हो गये थे। परन्तु बाद में इन के यहाँ फिर 'शिर्क' घुस पड़ा। जिस का भली-भाँति पता उन शिलालेखों से चलता है जो यमन में बड़ी संख्या में प्राप्त हुये हैं। परन्तु इन में एक गरोह आरम्भ से ही ऐसा रहा है जो एक अल्लाह का मानने वाला था। क़ुरआन[2] के अतिरिक्त इस की पुष्टि प्राचीन अवशेषों अथवा शिलालेखों से भी होती है।

'सबा' वालों ने दो चीज़ों में विशेष उन्नति की थी। एक तो उन्होंने व्यापार को बड़ी उन्नति दी थी दूसरे खेती में वे बहुत आगे थे। उन्होंने सिंचाई का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा था। उन के यहाँ नदियाँ न थीं। बरसात में पहाड़ों से जो बरसाती नाले बह निकलते थे उन नालों पर देश भर में स्थान-स्थान पर बन्ध बाँध दिया गया था। इस प्रकार उन्होंने बहुत से तालाब बना लिये थे। जिन से नहरें निकाल कर देश की भूमि को उन लोगों ने उपजाऊ बना लिया था। मआरिब नगर के निकट एक घाटी में पानी का बहुत बड़ा भण्डार था। यह भण्डार भी उन्होंने बन्ध बाँध कर ही तैयार किया था।

व्यापार में इस के मुक़ाबले की कोई जाति न थी। एक हज़ार वर्ष से अधिक समय तक संसार के व्यापार पर यही जाति छाई रही। इन के बन्दरगाहों में चीन का रेशम, इण्डोनेशिया के गर्म मसाले, भारत के कपड़े और तलवारें, पूर्वी अफ़रीक़ा के जंगी ग़ुलाम, बन्दर, शुतुरमुर्ग़ के पंख और हाथी-दाँत आदि पहुँचते थे फिर इन के द्वारा ये चीज़ें मिस्र और सीरिया के बाज़ारों में पहुँचती थीं। जहाँ से ये माल रूम और यूनान तक भेजे जाते थे। सबाई लोग अपने यहाँ की पैदा होने वाली चीज़ों का व्यापार भी करते थे। इन लोगों का व्यापार जल-मार्ग से भी होता था और थल-मार्ग से भी। समुद्रीय व्यापार तो एक हज़ार वर्ष तक इन्हीं लोगों के हाथ में रहा है। लाल सागर में इन के सिवा कोई दूसरी जाति जहाज़ चलाने का साहस नहीं कर सकती थी। जल-मार्ग से ये अपना माल उरदुन और मिस्र के बन्दरगाहों तक पहुँचाया करते थे। अदन और हज़्रमूत से थल-मार्ग मआरिब पर जा कर मिलते थे। फिर वहाँ से एक मार्ग मक्का, जद्दा, यसरिब (मदीना), अलउला, तबूक और ऐला से होता हुआ पिटरा तक पहुँचता था उस के बाद एक मार्ग मिस्र की ओर और दूसरा मार्ग शाम (Syria) की ओर जाता था। इस मार्ग में यमन से ले कर शाम (Syria) तक सबाइयों की नई आबादियाँ पाई जाती थीं। रात-दिन इन के तिजारती क़ाफ़िले यहाँ से आते-जाते रहते थे। आज भी इस भू-भाग में इन की आबादियों के चिह्न पाये जाते हैं और इन की भाषा में शिलालेख भी प्राप्त हुये हैं।

अपनी उन्नति के समय में यह जाति संसार की समस्त जातियों से बढ़ कर धनाढ्य थी। इन के बरतन सोने-चाँदी के होते थे। घर की छतों और दरवाज़ों तक में सोने-चाँदी और हाथी-दाँत का काम किया होता था। इन की भूमि अत्यन्त हरी-भरी और खेतों, बाग़ों और पशुओं से भरी हुई थी। इन के यहाँ सुगन्धित वस्तुओं की पैदावार बहुत थी। सुगन्ध की लपटें समुद्र-तट तक पहुँच रही थीं। परन्तु ये लोग भोग-विलास में लीन हो गये। सोने-चाँदी के बरतन इस्तेमाल करते। जलाने के लिए साधारण लकड़ी के बदले दारचीनी, चन्दन और दूसरी सुगन्धित लकड़ियाँ काम में लाते। इन्होंने सनआ के उच्च पहाड़ी स्थान पर ऐसे गगनचुम्बी भवन का निर्माण किया जो शताब्दियों तक 'क़स्र गुमदान' के नाम से प्रसिद्ध रहा है। अरब के इतिहासकारों के कथनानुसार उस की २० मंज़िलें थीं और प्रत्येक मंज़िल की ऊँचाई २० फ़ीट थी।

१. सूरा अन-नम्ल आयत १६-४४।
२. दे० आयत २०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन् ११५ ई० पू० से इस जाति के पतन का आरम्भ हुआ, सन् ३०० ई० से ले कर इस्लाम के आरम्भ तक का समय इस जाति की तबाही और विनाश का समय है। इस मुद्दत में यह जाति निरन्तर पारस्परिक लड़ाइयों में उलझी रही। बाहर की दूसरी जातियों को प्रवेश का अवसर मिला तो इन के व्यापार पर भी तबाही आई और इन की खेती पर भी। और फिर यह जाति स्वतन्त्रता तक से हाथ धो बैठी। सन् ३४० से ३७८ ई० तक यमन पर हब्शियों का अधिकार रहा। फिर इस के बाद स्वतन्त्रता तो मिली परन्तु दोबारा यह जाति उभर न सकी। सन् ४५० ई० या ४५१ ई० में मआरिब का प्रसिद्ध बन्ध टूट गया जिस का उल्लेख क़ुरआन में किया गया है[1]। इस बन्ध के टूट जाने के कारण सिंचाई और खेती की व्यवस्था बिगड़ गई। और इन की आबादी तितर-बितर हो कर रह गई।

---

१. दे० आयत १५-१९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' सबा

(मक्का में उतरी---'आयतें' ५४)

SABA

Revealed at Mecca

سورة سبا مكية وهي اربع وخمسون اية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो हर उस चीज़ का मालिक है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और 'आख़िरत' में भी उसी के लिए प्रशंसा है, वह तत्त्वदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

1. Praise be to Allah, unto Whom belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. His is the praise in the Hereafter, and He is the Wise, the Aware.

الحمد لله الذي له ما في السموت وما في الارض وله الحمد في الاخرة وهو الحكيم الخبير ①

२. वह जानता है जो कुछ धरती में जाता है और जो कुछ उस से निकलता है, और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उस में चढ़ता है, वह दया करने वाला और बड़ा क्षमाशील है।

2. He knoweth that which goeth down into the earth and that which cometh forth from it, and that which descendeth from the heaven and that which ascendeth into it. He is the Merciful, the Forgiving.

يعلم ما يلج في الارض وما يخرج منها وما ينزل من السماء وما يعرج فيها وهو الرحيم الغفور ②

३. जिन्हों ने 'कुफ़' किया वे कहते हैं : हम पर तो वह घड़ी ('क़ियामत') नहीं आयेगी। कहो : क्यों नहीं, मेरे 'रब' की क़सम---वह तुम पर आ कर रहेगी---परोक्ष के जानने वाले की (क़सम)। उस से कण-भर भी कोई चीज़ ओझल नहीं आकाशों में न धरती में, न इस से छोटी और न बड़ी सब कुछ खुली किताब में (अंकित) है,

3. Those who disbelieve say: The Hour will never come unto us. Say: Nay, by my Lord, but it is coming unto you surely. (He is) the Knower of the Unseen. Not an atom's weight, or less than that or greater, escapeth Him in the heavens or in the earth but it is in a clear Record:

وقال الذين كفروا لا تاتينا الساعة قل بلى وربي لتاتينكم علم الغيب لا يعزب عنه مثقال ذرة في السموت ولا في الارض ولا اصغر من ذلك ولا اكبر الا في كتب مبين ③

४. (क़ियामत आयेगी) ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये। ये वे लोग हैं जिन के लिए क्षमा है और सम्मानित रोज़ी।

4. That He may reward those who believe and do good works. For them is pardon and a rich provision.

ليجزي الذين امنوا وعملوا الصلحت اولئك لهم مغفرة ورزق كريم ④

५. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप की, उन के लिए बहुत ही बुरी यातना है दुःख भरी।

5. But those who strive against Our revelations, challenging (Us) theirs will be a painful doom of wrath.

والذين سعو في ايتنا معجزين اولئك لهم عذاب من رجز اليم ⑤

६. (हे 'नबी' !) जिन्हें ज्ञान दिया गया है वे देखते हैं कि जो कुछ तुम्हारे 'रब' की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह सत्य है और उस अल्लाह का मार्ग दिखाता है जो प्रभुत्वशाली और प्रशंसा का अधिकारी है।

6. Those who have been given knowledge see that what is revealed unto thee from thy Lord is the truth and leadeth unto the path of the Mighty, the Owner of Praise.

ويرى الذين اوتوا العلم الذي انزل اليك من ربك هو الحق ويهدي الى صراط العزيز الحميد ⑥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और जिन्होंने 'कुफ़्' किया वे कहते हैं : हम बतायें तुम्हें ऐसा व्यक्ति जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल चूर्ण-विचूर्ण हो जाओगे, तो तुम्हें नये सिरे से पैदा होना है !

८. क्या उस ने अल्लाह् से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़ा है, या उसे उन्माद[१] है ? नहीं, बल्कि जो लोग 'आख़िरत' को नहीं मानते वे यातना और परले दरजे की गुमराही में हैं।

९. क्या ये जो इन के आगे और पीछे आकाश और धरती हैं इन्हों ने नहीं देखा[२] यदि हम चाहें, तो इन्हें धरती में धँसा दें, या आकाश के कुछ टुकड़े गिरा दें[३] निश्चय ही इस में हर उस बन्दे के लिए निशानी है जो (अल्लाह् की ओर) रुजू करने वाला हो[४]।

१०. और हम ने दाऊद पर अपना बड़ा अनुग्रह किया था, (हम ने हुक्म दिया) : हे पहाड़ो ! उस के साथ भजन गाओ ! और साथ-साथ चिड़ियाँ भी[५] ! और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया,[६]

११. कि पूरी-पूरी कवचें बना और कुण्डलों को ठीक अन्दाज़े से जोड़[७]। और (हे दाऊद के अनुयायियो !) अनुकूल कर्म करो। जो कुछ तुम करते हो मैं उसे देखता हूँ।

7. Those who disbelieve say: Shall we show you a man who will tell you (that) when ye have become dispersed in dust with most complete dispersal, still, even then, ye will be created anew?

8. Hath he invented a lie concerning Allah, or is there in him a madness? Nay, but those who disbelieve in the Hereafter are in torment and far error.

9. Have they not observed what is before them and what is behind them of the sky and the earth? If We will, We can make the earth swallow them, or cause obliteration from the sky to fall on them. Lo! herein surely is a portent for every slave who turneth (to Allah) repentant.

10. And assuredly We gave David grace from Us, (saying): O ye hills and birds, echo his psalms of praise! And We made the iron supple unto him:

11. Saying: Make thou long coats of mail and measure the links (thereof). And do ye right. Lo! I am Seer of what ye do.

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ
اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿٧﴾
اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِى
الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿٨﴾
اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ
نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ
كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٩﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ
اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾
اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ
وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿١١﴾

१. दे० आयत ४३।
२. दे० सूरा फ़ातिर आयत ४१।
३. अर्थात् वह इस का सामर्थ्य रखता है कि आकाश से कोई यातना तुम पर उतार दे। वह तुम पर बिजलियाँ बरसा सकता है वह ऐसी वर्षा कर सकता है कि तुम्हें कहीं शरण न मिल सके।
४. परन्तु जिस का दिल ही अल्लाह् से फिरा हुआ हो वह इस लोक में सब कुछ देखने के बाद भी अन्धा ही रहता है उसे कोई निशानी सुझाई नहीं देती जिस के द्वारा वह सत्य को पा सके।
५. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ७९।
६. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८।
७. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और सुलैमान के लिए हम ने हवा को वशीभूत कर दिया, प्रातः समय उस का चलना एक महीने की राह तक और सायंकाल को उस का चलना एक महीने की राह तक,[८] और हम ने उस के लिए पिघले हुये ताँबे का स्रोत बहा दिया, और कितने 'जिन्न (उस के वशीभूत कर दिये) जो उस के 'रब' के हुक्म से उस के आगे काम करते थे[९]। और उन में से जो हमारे हुक्म से फिरेगा, उसे हम दहकती आग का मज़ा चखायेंगे।

12. And unto Solomon (We gave) the wind, whereof the morning course was a month's journey, and the evening course a month's journey and We caused the fount of copper to gush forth for him, and (We gave him) certain of the jinn who worked before him by permission of his Lord. And such of them as deviated from Our command, them We caused to taste the punishment of flaming fire.

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ
رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ
وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ
بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا
نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

१३. वे उस के लिए बनाते थे। जो-कुछ वह चाहता : ऊँचे-ऊँचे भवन और चित्र,[१०] और लगन (थाल) जैसे हौज़ हों और देगें (भारी-भारी) जो एक ही जगह जमी रहतीं—हे दाऊद के लोगों! कर्म करो कृतज्ञता दिखलाने को, मेरे बन्दों में कम ही हैं जिन्हें कृतज्ञ कहें।

13. They made for him what he willed: synagogues and statues, basins like wells and boilers built into the ground. Give thanks, O House of David! Few of My bondmen are thankful.

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ
وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ
رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَ
قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

१४. फिर जब उस के लिए[११] हम ने मौत का फ़सला दिया, तो उन ('जिन्नों') को उस की मृत्यु का पता बस उस घुन से चला जो उस की लाठी को खा रहा था। तो जब वह गिर पड़ा तब 'जिन्नों' पर हाल खुल गया कि यदि वे परोक्ष के जानने वाले होते, तो इस अपमानजनक यातना में न पड़े रहते।

14. And when We decreed death for him, nothing showed his death to them save a creeping creature of the earth which gnawed away his staff. And when he fell the jinn saw clearly how, if they had known the unseen, they would not have continued in despised toil.

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ
عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ
مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ
لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾

८. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८१।

९. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८२।

१०. अर्थात् पेड़-पौधों और बेल-बूटों के चित्र, मनुष्यों और जानवरों के चित्र और मूर्तियाँ नहीं क्योंकि जानवरों और मनुष्यों के चित्र और मूर्तियाँ (Statue) बनाना आज भी हराम (अवैध) है और हज़रत मूसा अ० के धर्म-शास्त्र में भी हराम था। दे० 'ख़ुरूज' (Ex.) २० : ४, 'अहबार' (Lev.) २६ : १, इस्तिसना (Deut.) ४ : १६-१८ और २७ : १५।

हज़रत सुलैमान अ० उसी धर्म-शास्त्र के अनुयायी थे जो हज़रत मूसा अ० लेकर आये थे फिर यह कैसे सम्भव है कि इस 'आयत' में जिस चित्र का उल्लेख किया गया है उस से अभिप्रेत मनुष्यों और जानवरों के चित्र हों। ये चित्र और मूर्तियाँ 'शिर्क' और मूर्ति-पूजा ही का कारण नहीं बनतीं बल्कि ये दूसरी बहुत सी बुराइयों का भी कारण बनती हैं। चित्रों से काम-वासना को उत्तेजित कर के लोगों के चरित्र को भ्रष्ट करने का काम पहले भी लिया गया है और आज के समाज में यह बुराई जिस सीमा तक पहुँच चुकी है वह आप के सामने है। इसी तरह चित्र उन बड़े साधनों में एक विशेष साधन है जिन के द्वारा सम्राटों, डिक्टेटरों और राजनीतिक नेताओं की महानता का सिक्का जन-साधारण के मस्तिष्कों पर बैठाने की चेष्टा की गई है और आज भी की जा रही है। फिर यही नहीं बल्कि लोगों को धोखा देने उन का अपमान करने और विभिन्न जातियों और गरोहों के बीच वैमनस्य का बीज बोने का काम भी चित्रों और कारटूनों से लिया जाता है।

११. अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० के लिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. [१२] सबा वालों के लिए उन के अपने निवास-स्थान ही में एक निशानी थी : दो बाग़ दायें और बायें ! खाओ अपने 'रब्ब' का दिया और उस के कृतज्ञ बनो। भूमि है अच्छी सी और 'रब' है क्षमाशील !

15. There was indeed a sign for Sheba in their dwelling-place: Two gardens on the right hand and the left (as who should say): Eat of the provision of your Lord and render thanks to Him. A fair land and an indulgent Lord!

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ جَنَّتَانِ
عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ كُلُوا مِنْ رِزْقِ
رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ
وَرَبٌّ غَفُورٌ ١٥

१६. परन्तु वे मुँह मोड़ गये, तो हम ने उन पर बन्ध तोड़ (जल की) बाढ़ भेज दी,[१३] और उन्हें उन के दोनों बाग़ों की जगह पर दूसरे दो बाग़ दिये जिन में कड़ुवे-कसैले फल, और झाऊ के पेड़ थे और कुछ थोड़ी सी बेरियाँ।

16. But they were froward, so We sent on them the flood of 'Iram, and in exchange for their two gardens gave them two gardens bearing bitter fruit, the tamarisk and here and there a lote tree.

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ
أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِنْ
سِدْرٍ قَلِيلٍ ١٦

१७. यह बदला दिया हम ने उन्हें इस लिए कि उन्हों ने 'कुफ़्र' किया। और हम भर-पूर सज़ा अकृतज्ञ ही को तो देते हैं !

17. This We awarded them because of their ingratitude. Punish We ever any save the ingrates?

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ١٧

१८. और हम उन के बीच और उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकत दे रक्खी थी,[१४] प्रत्यक्ष बस्तियाँ बसा दी थीं, और उन में सफ़र के फ़ासले एक अन्दाज़े पर रक्खे थे,[१५] सफ़र करो उन में कई-कई रात और कई-कई दिन तक निश्चिन्त हो कर।

18. And We set, between them and the towns which We had blessed, towns easy to be seen, and We made the stage between them easy, (saying): Travel in them safely both by night and day.

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي
بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا
السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ١٨

१२. हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० का क़िस्सा बयान करने के बाद सबा का क़िस्सा बयान किया जा रहा है। ये क़िस्से वास्तव में इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि इस संसार का एक स्वामी है। जो लोगों के कर्म के अनुसार उन के साथ व्यवहार करता है। जो जाति अथवा जो लोग कृतज्ञता दिखलाते हैं उन के साथ वह कुछ और मामला करता है; और जो उस के साथ 'कुफ़्र' की नीति अपनाते हैं उन के साथ उस का मामला कुछ और होता है। अल्लाह के राज्य में भलाई और बुराई एक समान कदापि नहीं हैं। अतः उस के न्याय और उस की दयालुता से यही आशा की जानी चाहिए कि एक समय ऐसा अवश्य आयेगा जब लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

सबाइयों का क्षेत्र वही था जो आज यमन के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात् अरब का दक्षिणी और पश्चिमी कोना। बाइबिल में भी सबाइयों का उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ दे० 'अय्यूब' (Job) ६ : १९, 'ज़बूर' (Ps.) ७२ : १५, 'यरमियाह' (Jeremiak) ६ : २०, हज़क़ियाल (Ezekiel) २७ : २२ और ३८ : १३। व्यापार और कृषि सबा वालों का मूल व्यवसाय था। दे० सूरा की भूमिका।

१३. पहाड़ों के बीच बंध बाँध कर नहरें निकाली गई थीं बन्ध के टूट जाने के बाद नहरें ख़त्म हो गईं; सिंचाई की व्यवस्था बाक़ी न रह सकी। फिर न सबा के बाग़ रहे और न बाग़ों के मीठे फल। उन की ज़मीन जंगली पेड़-पौधों और झाड़ियों से भर गई।

१४. यह संकेत शाम (Syria) और फ़लिस्तीन के क्षेत्र की ओर है (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १३७; बनी इसराईल आयत १; अल-अंबिया आयत ७१, ८१)।

१५. अर्थात् मार्ग की एक बस्ती से दूसरी बस्ती की दूरी जानी-बूझी और निश्चित थी। यमन से शाम तक आबाद क्षेत्रों से हो कर सफ़र किया जाता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. परन्तु उन्हों ने कहा हमारे 'रब' ! हमारे सफ़र दूर-दूर कर दे। और उन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया, फिर हम ने उन्हें कहानियां बना दिया, और उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर डाला[१६]। निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो बड़ा 'सब्र' करने वाला कृतज्ञ हो।

19. But they said: Our Lord! Make the stage between our journeys longer. And they wronged themselves, therefore We made them by-words (in the land) and scattered them abroad, a total scattering. Lo! herein verily are portents for each steadfast, grateful (heart).

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَ
ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ
وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑲

२०. इबलीस ने अपना गुमान उन पर सच कर दिखाया[१७] वे उसी के पीछे चले, सिवाय थोड़े से गरोह के जो 'ईमान' वाला था[१८]।

20. And Satan indeed found his calculation true concerning them, for they follow him, all save a group of true believers.

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ
فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑳

२१. उस का उन पर कोई ज़ोर न था, हमें तो बस यह जानना था कि कौन 'आख़िरत' को मानता है और कौन उस की ओर से सन्देह में पड़ा हुआ है; तेरा 'रब' हर चीज़ की निगरानी करने वाला है।

21. And he had no warrant whatsoever against them, save that We would know him who believeth in the Hereafter from him who is in doubt thereof: and thy Lord (O Muhammad) taketh note of all things.

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ
مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ㉑ ع ٢

२२. (हे 'नबी' ! इन 'मुश्रिकों' से) कह दो : अल्लाह की सिवा जिन का तुम्हें गुमान है, उन्हें पुकार देखो ! वे न आकाशों में कण-भर चीज़ के मालिक हैं और न धरती में, और न उन (आकाशों और धरती) में उन का कोई साझा है, और न उन में से कोई उस का सहायक है।

22. Say (O Muhammad); Call upon those whom ye set up beside Allah! They possess not an atom's weight either in the heavens or the earth, nor have they any share in either, nor hath He an auxiliary among them.

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ
وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ
شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ㉒

२३. और उस के यहाँ किसी के लिए सिफ़ारिश काम नहीं आती सिवाय उस व्यक्ति के जिस के लिए वह इजाज़त दे दे[१९]। यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वे (आपस में) कहते हैं : तुम्हारे 'रब' ने क्या कहा ? कहते हैं : सत्य। और वह उच्च और महान् है।

23. No intercession availeth with Him save for him whom He permitteth. Yet, when fear is banished from their hearts, they say: What was it that your Lord said? They say: The Truth. And He is the Sublime, the Great.

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ
لَهٗ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ
قَالَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيْرُ ㉓

२४. (हे 'नबी' !) कहो : कौन तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी देता है ? कहो : अल्लाह। और या तो हम हैं या तुम 'हिदायत' ही पर या फिर खुली गुमराही में[२०]।

24. Say: Who giveth you provision from the sky and the earth? Say: Allah. Lo! we or you assuredly are rightly guided or in error manifest.

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى
هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ㉔

१६. सबा वाले तितर-बितर हो गये। विभिन्न क़बीले अरब के विभिन्न क्षेत्रों में जा बसे। सबा नाम की कोई जाति बाक़ी न रह सकी। केवल क़िस्से-कहानियों और इतिहास के पृष्ठों पर ही इस का नाम बाक़ी रह गया।

१७. दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १६-१७; बनी इसराईल आयत ६२।

१८. इतिहास से भी मालूम होता है कि प्राचीन समय से सबा वालों में कुछ लोग ऐसे रहे हैं जो एक अल्लाह के मानने वाले थे; इस की पुष्टि शिलालेखों से भी होती है जो यमन के खंडरों से प्राप्त हुये हैं।

१९. दे० सूरा अल-बक़रा आयत २५५; सूरा अन-नबा आयत ३८।

२०. अर्थात् हम में और तुम में से कोई एक ही 'हिदायत' पर है और दूसरा निश्चय ही गुमराही में पड़ा हुआ है। दोनों तो सीधे मार्ग पर हो नहीं सकते। या तो अल्लाह की 'इबादत' करने वाले सत्य पर होंगे या अन्य देवताओं और मूर्तियों को पूजने वाले सत्य पर होंगे। सोचने की बात यह है कि जब हमारा पैदा करने वाला अल्लाह है और वही हमें रोज़ी भी देता है तो 'इबादत' और उपासना भी उसी की होनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. कहो : तुम से उस की पूछ न होगी जो अपराध हम ने किया हो, और न उस की पूछ हम से होगी जो कुछ तुम करते हो[२१]।

25. Say: Ye will not be asked of what we committed, nor shall we be asked of what ye do.

قُلْ لَا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

२६. कहो : हमारा 'रब' हम सब को इकट्ठा करेगा, फिर हमारे बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर देगा। वह खूब ही फ़ैसला करने वाला और जानने वाला है।

26. Say: Our Lord will bring us all together, then He will judge between us with truth. He is the All-Knowing Judge.

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

२७. कहो : मुझे दिखाओ तो जिन्हें उस के साथ शरीक लगा रक्खा है। कदापि नहीं, बल्कि वही अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

27. Say: Show me those whom ye have joined unto Him as partners. Nay (ye dare not!) For He is Allah, the Mighty, the Wise.

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

२८. और (हे 'नबी' !) हम ने तो तुम्हें समस्त मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है;[२२] परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

28. And We have not sent thee (O Muhammad) save as a bringer of good tidings and a warner unto all mankind; but most of mankind know not.

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

२९. और (ये लोग) कहते हैं : यह 'क़ियामत' का वादा कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो ?

29. And they say: When is this promise (to be fulfilled) if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

३०. कहो : तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का निश्चित वादा है जिस में न एक घड़ी-भर पीछे रहोगे और न घड़ी-भर आगे बढ़ोगे।

30. Say (O Muhammad): Yours is the promise of a Day which ye cannot postpone nor hasten by an hour.

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾ ع

२१. आयत २४ और २५ से मालूम हुआ कि 'हिकमत', सरलता और नर्मी आदि का ध्यान रखना धर्म-प्रचार के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस किसी को आप सत्य-धर्म की ओर बुला रहे हों; उसे यदि आप साफ़-साफ़ गुमराह कहने लग जायें तो इस का परिणाम यह होगा कि उस की हठधर्मी बढ़ जायेगी और सच्चाई के लिए उस के हृदय के द्वार बन्द हो जायेंगे।

आयत २५ में भी अत्यन्त नर्मी से काम लेने का आदेश दिया गया है। अपने लिए तो "हम ने जो अपराध किया हो" कहने की अनुमति दी गई; परन्तु विरोधी के लिए "जो कुछ तुम करते हो" कहने का आदेश दिया गया ताकि सच्चाई के लिए उस के दिल के दरवाज़े खुले रहें।

२२. मालूम हुआ कि नबी सल्ल० को सम्पूर्ण संसार का 'रसूल' बना कर भेजा गया है। सूरा अल-अहज़ाब की आयत ४० से मालूम होता है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम 'नबी' हैं। आप (सल्ल०) को अल्लाह ने 'क़ियामत' तक के लिए 'नबी' बना कर भेजा है। यह बात कि आप (सल्ल०) को 'क़ियामत' तक के लिए सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए 'नबी' बना कर भेजा गया है, क़ुरआन की दूसरी बहुत सी आयतों से मालूम होती है। उदाहरण के लिए दे० सूरा अल-अनआम आयत १९; अल-आराफ़ आयत १५८; अल-अंबिया आयत १०७; अल-फ़ुरक़ान आयत १।

इस के अतिरिक्त स्वयं 'नबी' सल्ल० ने भी साफ़-साफ़ बता दिया है कि मैं सारे लोगों की ओर भेजा गया हूँ; और आप (सल्ल०) ने यह भी कहा है कि मेरे बाद कोई 'नबी' न होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है वे कहते हैं : हम कदापि इस क़ुरआन को न मानेंगे और न उस को जो इस से पहले (उतरा) है;[२३] और यदि कहीं तुम देख लेते वह समाँ कि ज़ालिमों को उन के 'रब्ब' के सामने खड़ा कर रक्खा गया है, वे आपस में एक-दूसरे से बातें कर रहे हैं; वे लोग जो कमज़ोर पड़ते थे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कह रहे हैं : यदि तुम न होते तो निश्चय ही हम 'ईमान' वाले होते।

३२. उन लोगों ने जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर पड़ते कहा : क्या हम ने तुम्हें उस मार्ग-दर्शन से रोका था जब वह तुम्हारे पास आ चुका था ? नहीं, बल्कि तुम स्वयं अपराधी थे।

३३. उन लोगों ने जो कमज़ोर पड़ते थे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहा : नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी थी, जब तुम हम से कहते थे कि हम अल्लाह के साथ 'कुफ़्र' करें और उस के प्रतिद्वन्दी ठहरायें। जब इन लोगों ने यातना देखी तो मन-ही-मन पछताये; और हम इन 'कुफ़्र' करने वालों की गरदनों में तौक़ डाल देंगे। वे जैसा कुछ करते थे वैसा ही तो बदला पायेंगे ?

३४. और हम ने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के सुख-भोगी लोगों ने यही कहा : जो कुछ दे कर तुम्हें भेजा गया है हम उसे नहीं मानते।

३५. उन्हों ने कहा : हम तुम से अधिक माल और औलाद वाले हैं। और हम यातना पाने वाले नहीं हैं !

३६. कहो मेरा 'रब' जिस की रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जसे चाहता है) नपी-तुली देता है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

३७. और ये न तुम्हारे माल हैं और न तुम्हारी औलाद जो तुम्हें हम से निकट कर दें. हाँ जो कोई 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म करे, तो ऐसे ही लोगों को उन के किये का बदला बढ़ा-चढ़ा कर मिलेगा, और वे ऊँचे भवनों में निश्चिन्त हो कर रहेंगे।

31. And those who disbelieve say: We believe not in this Qur'an nor in that which was before it; but oh, if thou couldst see, when the wrong-doers are brought up before their Lord, how they cast the blame one to another; how those who were despised (in the earth) say unto those who were proud: But for you, we should have been believers.

32. And those who were proud say unto those who were despised: Did we drive you away from the guidance after it had come unto you? Nay, but ye were guilty.

33. Those who were despised say unto those who were proud: Nay but (it was your) scheming night and day, when ye commanded us to disbelieve in Allah and set up rivals unto Him And they are filled with remorse when they behold the doom; and We place carcans on the necks of those who disbelieved. Are they required aught save what they did?

34. And We sent not unto any township a warner, but its pampered ones declared: Lo! we are disbelievers in that which ye bring unto us.

35. And they say: We are more (than you) in wealth and children. We are not the punished!

36. Say (O Muhammad): Lo! my Lord enlargeth the provision for whom He will and narroweth it (for whom He will). But most of mankind know not.

37. And it is not your wealth nor your children that will bring you near unto Us, but he who believeth and doeth good (he draweth near). As for such, theirs will be twofold reward for what they did, and they will dwell secure in lofty halls.

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ
تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨ الْقَوْلَ ۚ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا
اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ
جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ
نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا
الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ
يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ
وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾
قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع
وَمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ
عِنْدَنَا زُلْفٰۤى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ
بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

२३. अरब के 'काफ़िरों' की ओर संकेत है जो आसमानी किताबों को नहीं मानते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. और वे लोग जो हमारी 'आयतों' को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप करते हैं, तो वे यातना में पड़े रहेंगे।

38. And as for those who strive against Our revelations, challenging, they will be brought to the doom.

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾

३९. कहो : मेरा 'रब' अपने बन्दों में से जिस की चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस की चाहता है नपी-तुली कर देता है। और तुम जो कुछ ख़र्च करते हो उस की जगह तुम्हें और देता है। वह सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है।

39. Say: Lo! my Lord enlargeth the provision for whom He will of His bondmen, and narroweth (it) for him. And whatsoever ye spend (for good) He replaceth it. And He is the Best of Providers.

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾

४०. और जिस दिन वह सब को इकट्ठा करेगा, फिर 'फ़िरिश्तों' से कहेगा : क्या ये लोग तुम्हारी ही 'इबादत' करते थे ?

40. And on the day when He will gather them all together, He will say unto the angels: Did these worship you?

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

४१. वे कहेंगे : महिमावान् है तू ! हमारा सम्बन्ध तो तुझ से है, न कि इन से ! बल्कि बात यह है कि ये 'जिन्न' की 'इबादत' करते थे,[२४] इन में से अधिकतर उन पर 'ईमान' लाये हुये थे।

41. They will say: Be Thou glorified. Thou art our Protector from them! Nay, but they worshipped the jinn; most of them were believers in them.

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

४२. तो आज तुम एक-दूसरे के न भले के मालिक हो और न बुरे के। और हम उन लोगों से जिन्हों ने ज़ुल्म किया कहेंगे : उस आग ('जहन्नम') की यातना का मज़ा चखो जिसे तुम झुठलाते थे।

42. That day ye will possess no use nor hurt one for another. And We shall say unto those who did wrong: Taste the doom of the Fire which ye used to deny.

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

४३. इन लोगों को जब साफ़-साफ़ 'आयतें' सुनाई जाती हैं, तो ये कहते हैं : "यह तो बस एक ऐसा आदमी है जो यह चाहता है कि तुम्हारे पूर्वज जो कुछ पूजते थे तुम्हें उस से रोक दे"; और कहते हैं : "यह ('क़ुरआन') तो बस एक झूठ है गढ़ा हुआ (और कुछ नहीं)"। इन 'कुफ़्र' करने वालों ने 'हक़' के बारे में कहा जब वह इन के पास आया : यह तो बस एक खुला जादू है।

43. And if Our revelations are recited unto them in plain terms they say: This is naught else than a man who would turn you away from what your fathers used to worship; and they say: This is naught else than an invented lie. Those who disbelieve say of the truth when it reacheth them: This is naught else than mere magic.

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٤٣﴾

४४. और हमने इन्हें न तो 'किताबें' दी थीं जिन्हें ये पढ़ते-पढ़ाते हों, और न तुम से पहले, इन की ओर कोई सचेत करने वाला भेजा था[२५]।

44. And We have given them no Scriptures which they study, nor sent We unto them, before thee, any warner.

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾

२४. अर्थात् ये जिन्न-शैतानों के उपासक थे। 'शैतान' ही ने इन्हें 'शिर्क' की राह सुझाई थी। उसी ने इन्हें इस बात की शिक्षा दी थी कि ये अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को सहायता के लिए पुकारें और उस की उपासना में लग जायें; उन्हें भेंट चढ़ायें।

२५. अर्थात् ये सत्य का इन्कार किसी सनद और आसमानी 'किताब' के आधार पर नहीं कर रहे हैं; इन के 'कुफ़्र' और 'शिर्क' का मूल कारण इन का अज्ञान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. और जो लोग इन से पहले गुज़रे हैं उन्हों ने भी झुठलाया था—और जो कुछ हम ने उन्हें दिया था उस के दशम भाग को भी ये नहीं पहुँचे हैं—तो जब उन्हों ने मेरे 'रसूलों' को झुठलाया तो कैसी रही मेरी सज़ा !

45. Those before them denied, and these have not attained a tithe of that which We bestowed on them (of old); yet they denied My messengers. How intense then was My abhorrence of them)!

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾

४६. (हे 'नबी' !) कहो : मैं तुम्हें बस एक नसीहत करता हूँ : यह कि अल्लाह के लिए उठ खड़े हो, दो-दो और एक-एक, फिर विचार करो तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नहीं है[२१]। वह तो तुम्हें सचेत करने वाला है एक कठोर यातना के आगे-आगे।

46. Say (unto them, O Muhammad): I exhort you unto one thing only: that ye awake, for Allah's sake, by twos and singly, and then reflect: There is no madness in your comrade. He is naught else than a warner unto you in face of a terrific doom.

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾

४७. (हे 'नबी' ! इन से) कहो : मैं ने तुम से जो कुछ बदला माँगा है वह तुम्हारा[२२]। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है। और वह हर चीज़ पर गवाह है।

47. Say: Whatever reward I might have asked of you is yours. My reward is the affair of Allah only. He is witness over all things.

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾

४८. कहो : मेरा 'रब' हक़ की चोट लगाता रहता है। वह ग़ैबों (छिपे तथ्यों) का जानने वाला है।

48. Say: Lo! my Lord hurleth the truth. (He is) the Knower of Things Hidden.

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

४९. कहो : हक़ आ गया, और झूठ से न पहले कुछ बन पड़ता है न बाद में।

49. Say: The truth hath come, and falsehood showeth not its face and will not return.

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾

यह संकेत 'नबी' सल्ल० की ओर है जिन से मक्का के लोग भली-भाँति परिचित थे। आप (सल्ल०) का रहना-सहना सब उन ही लोगों के साथ था। लोगों के सामने आप (सल्ल०) का बचपन भी था और आप की जवानी भी।

. अर्थात् ऐसा लगता है जैसे हम तुम से कोई बदला माँग रहे हैं हालाँकि हम कुछ बदला नहीं माँगते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. कहो : यदि मैं गुमराह हो गया हूँ,[२८] तो गुमराह हो कर अपना ही बुरा करूँगा, और यदि मैं ने मार्ग पाया है तो इस कारण कि वह 'वह्य' है जो मेरा 'रब' मेरी ओर भेजता है। निस्सन्देह वह सुनने वाला और निकट है।

50. Say: If I err, I err only to my own loss, and if I am rightly guided it is because of that which my Lord hath revealed unto me. Lo! He is Hearer, Nigh.

قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلَىٰ
نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِيٓ إِلَيَّ
رَبِّيٓ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

५१. और कहीं तुम देख लेते वह समाँ कि ये घबराये हुये हैं पर कहीं बच कर न जा सके, और निकट ही से धर लिये गये,

51. Couldst thou but see when they are terrified with no escape, and are seized from near at hand.

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ فَزِعُوا۟ فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا۟
مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

५२. और इन्हों ने कहा : हम ने इसे मान लिया। और अब इतनी दूर से इन का हाथ कहाँ पहुँच सकता है,

52. And say: We (now) believe therein. But how can they reach (faith) from afar off?

وَقَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِهِۦ وَأَنَّىٰ لَهُمُ ٱلتَّنَاوُشُ
مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

५३. पहले तो ये उस का इंकार कर चुके हैं। और दूर से बिन देखे फेंकते रहे हैं।

53. When they disbelieved in it of yore. They aim at the unseen from afar off.

وَقَدْ كَفَرُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ
بِٱلْغَيْبِ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

५४. इन के और उस के बीच जो कुछ कि ये चाहते हैं, रुकावट खड़ी कर दी गई, जैसा कि पहले इन जैसे दूसरों लोगों के साथ किया गया। निश्चय ही ये दुविधा एवं विकलताजनक सन्देह में पड़े हुये थे।

54. And a gulf is set between them and that which they desire, as was done for people of their kind of old. Lo! they were in hopeless doubt.

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا
فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ
كَانُوا۟ فِى شَكٍّ مُّرِيبٍۭ ﴿٥٤﴾

* * * *

२८. जैसा कि तुम कहते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५—फ़ातिर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'फ़ातिर' (**Creator**) सूरा की पहली ही 'आयत' से लिया गया है। इस सूरा का एक दूसरा नाम 'अल-मलाइका' (**The Angels**) भी है यह शब्द भी पहली ही 'आयत' में आया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह सूरा मक्का के माध्यमिक काल में अवतीर्ण हुई होगी। जब कि विरोधियों का सत्य से विरोध बहुत बढ़ चुका था और वे 'नबी' सल्ल० के प्रयासों को असफल कर देने के लिए हर प्रकार की चालें चल रहे थे।

वार्त्तायें (Subject-matter)

'तौहीद' और 'क़ियामत' की पुष्टि करने में यह सूरा सबा के समान है। सूरा सबा में 'जिन्नों' के 'इलाह' (पूज्य) होने का निषेध किया गया है; और प्रस्तुत सूरा में फ़िरिश्तों के 'इलाह' (पूज्य) होने का निषेध पाया जाता है।

'नबी' सल्ल० 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को बुला रहे थे इस के मुक़ाबले में मक्का वालों ने और उन के सरदारों ने जो नीति अपना रक्खी थी उस पर उन्हें समझाने-बुझाने के साथ-साथ चेतावनी भी दी गई है। 'नबी' सल्ल० को बार-बार तसल्ली दी गई है कि आप (सल्ल०) का काम केवल सत्य को पूरी तरह पहुँचा देना है इस के बाद भी जो लोग सत्य-मार्ग पर चलने के लिए तैयार न हों उन की इस सरकशी की आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। 'ईमान' वालों को शुभ-सूचनायें दी गईं, बताया गया कि उन्हें अल्लाह की 'किताब' का वारिस (उत्तराधिकारी) होने का श्रेय प्राप्त है, ताकि उन के दिल मज़बूत हों और सत्य-मार्ग में दृढ़ता के साथ वे आगे बढ़ सकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' फ़ातिर

(मक्का में उतरी—'आयतें' ४५)

THE ANGELS

Revealed at Mecca

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों और धरती का स्रष्टा, और 'फ़िरिश्तों' को सन्देश-वाहक नियुक्त करने वाला है (ऐसे 'फ़िरिश्ते') जिन के दो-दो, और तीन-तीन, और चार-चार बाज़ू हैं[1]। वह सृष्टि-रचना में जो चीज़ चाहता है बढ़ा देता है[2]। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

1. Praise be to Allah, the Creator of the heavens and the earth, who appointeth the angels messengers having wings two, three and four. He multiplieth in creation what He will. Lo! Allah is Able to do all things.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ
مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ
مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ①

२. अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकने वाला नहीं; जिसे रोक ले उसे उस के बाद कोई भेजने वाला नहीं। और वह प्रभुत्व-शाली और तत्त्वदर्शी है।

2. That which Allah openeth unto mankind of mercy none can withhold it; and that which He withholdeth none can release thereafter. He is the Mighty, the Wise.

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ
لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

३. हे लोगो! अल्लाह की तुम पर जो कृपा है उसे याद करो! क्या अल्लाह के सिवा कोई और पैदा करने वाला है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता हो?—कोई 'इलाह' (पूज्य) उस के सिवा नहीं। तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो?

3. O mankind! Remember Allah's grace toward you! Is there any creator other than Allah who provideth for you from the sky and the earth? There is no God save Him. Whither then are ye turned?

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ
مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ③

४. और यदि (हे 'नबी'!) ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं, तो तुम से पहले भी कितने ही 'रसूल' झुठलाये जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

4. And if they deny thee (O Muhammad), messengers (of Allah) were denied before thee. Unto Allah all things are brought back.

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ
قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ④

१. 'फ़िरिश्तों' के परों और बाज़ुओं की वास्तविकता को पूर्णरूप से जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। परन्तु अल्लाह ने उन के लिए जो शब्द प्रयोग किया है वह वही है जो हमारी भाषा में चिड़ियों के बाज़ुओं (Wings) के लिए प्रयोग होता है इस से किसी हद तक हम 'फ़िरिश्तों' के बाज़ुओं के बारे में कल्पना कर सकते हैं।

२. इस से मालूम होता है कि 'फ़िरिश्तों' के बाज़ुओं की संख्या चार ही तक सीमित नहीं है बल्कि कुछ 'फ़िरिश्तों' को अल्लाह ने इस से भी अधिक बाज़ू प्रदान किये हैं। नबी सल्ल० ने एक बार हज़रत 'जिबरील' अ० को इस रूप में देखा कि उन के छः सौ बाज़ू थे। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि आप (सल्ल०) ने हज़रत जिबरील अ० को दो बार उन के वास्तविक रूप में देखा है, उन के छः सौ बाज़ू थे और वे पूरे क्षितिज पर छाये हुये थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. हे लोगो ! निश्चय ही अल्लाह का वादा[3] सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाल दे, और न वह बड़ा धोखेबाज़[4] तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाये।

5. O mankind! Lo! the promise of Allah is true. So let not the life of the world beguile you, and let not the (avowed) beguiler beguile you with regard to Allah.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم
بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿٥﴾

६. निश्चय ही 'शैतान' तुम्हारा शत्रु है, अतः तुम भी उसे शत्रु ही समझो। वह तो अपने (अनुयायियों के) गरोह को बुलाता है ताकि वे दहकती आग ('जहन्नम') वालों में से होजायें।

6. Lo! the devil is an enemy for you, so treat him as an enemy. He only summoneth his faction to be owners of the flaming Fire.

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا
إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾

७. जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, उन के लिए कठोर यातना है। और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

7. Those who disbelieve, theirs will be an awful doom; and those who believe and do good works, theirs will be forgiveness and a great reward.

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ
ع وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾ ع

८. क्या वह व्यक्ति, जिस के लिए उस का बुरा कर्म शोभायमान बना दिया गया हो और वह उसे अच्छा समझ रहा हो, (कहीं 'ईमान' वाले सत्कर्मी व्यक्ति के समान हो सकता है ?) बात यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में डाल देता है,[5] और जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है; तो (हे 'नबी' !) इन पर अफ़सोस करते-करते तुम्हारी जान न घुले ! निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ ये कर रहे हैं !

8. Is he, the evil of whose deeds is made fairseeming unto him so that he deemeth it good, (other than Satan's dupe)? Allah verily sendeth whom He will astray, and guideth whom He will; so let not thy soul expire in sighings for them. Lo! Allah is Aware of what they do!

أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا
فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن
يَشَاءُ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسَرَاتٍ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٨﴾

९. और अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है फिर वे बादल उठाती हैं; फिर हम उसे एक निर्जीव भू-भाग की ओर ले जाते हैं और उस से धरती को उस के मुरदा हो जाने के पश्चात् जिला उठाते हैं। इसी प्रकार (मरे हुये लोगों का) जी उठना है।

9. And Allah it is who sendeth the winds and they raise a cloud; then We lead it unto a dead land and revive there with the earth after its death. Such is the Resurrection.

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ
سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا
بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَٰلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾

१०. जो कोई इज़्ज़त (शक्ति एवं अधिकार) चाहता है तो (उसे मालूम होना चाहिए कि) इज़्ज़त तो सब-की-सब अल्लाह की है[6]। उसी की ओर अच्छे शब्द चढ़ते हैं, और अच्छा कर्म उन्हें ऊपर चढ़ाता है; रहे वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं, उन के लिए कठोर यातना है; और उन की चालबाज़ी मटियामेट हो कर रहेगी।

10. Whoso desireth power (should know that) all power belongeth to Allah. Unto Him good words ascend, and the pious deed doth He exalt; but those who plot iniquities, theirs will be an awful doom; and the plotting of such (folk) will come to naught.

مَن كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا
إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾

३. वादा से अभिप्रेत 'आख़िरत' का वादा है।

४. अर्थात् 'शैतान'।

५. दे० सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट १३; अल-बक़रा फ़ुटनोट ४।

६. क़ुरैश के सरदार नबी सल्ल० के विरोध में जो कुछ कर रहे थे वह अपनी झूठी इज़्ज़त के लिए कर रहे थे। यहां बताया जा रहा है कि इज़्ज़त अल्लाह के लिए है; अल्लाह की अवज्ञा कर के जो इज़्ज़त और शक्ति बनाये रखने की चेष्टा की जायेगी उसे नष्ट ही होना है। सच्ची और बाक़ी रहने वाली इज़्ज़त तो वही है जो अल्लाह की बन्दगी में प्राप्त होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य्य से,[७] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया[८]। बिना उस के (अल्लाह के) ज्ञान के न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न जनती है। कोई आयु पाने वाला आयु नहीं पाता, और न किसी की आयु में कमी होती है, परन्तु ये सब एक 'किताब' में होता है[९]। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है।

11. Allah created you from dust, then from a little fluid, then He made you pairs (the male and female). No female beareth or bringeth forth save with His knowledge. And no one groweth old who groweth old, nor is aught lessened of his life, but it is recorded in a Book. Lo! that is easy for Allah.

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى
وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ
وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

१२. और दोनों सागर एक समान नहीं हैं: यह, मीठा, खूब मीठा कि इसे मज़े से पी ले, और यह (दूसरा) खारी, कड़ुआ है। और तुम हर एक में से ताज़ा मांस[१०] खाते हो और आभूषण निकालते हो जिसे पहनते हो[११]। और तुम नौका को उस में देखते हो कि (उस का सीना) चीरती चली जा रही है ताकि तुम उस का (अल्लाह का) अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ।

12. And two seas are not alike: this, fresh, sweet, good to drink, this (other) bitter, salt. And from them both ye eat fresh meat and derive the ornament that ye wear. And thou seest the ship cleaving them with its prow that ye may seek of His bounty, and that haply ye may give thanks.

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ
سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ
كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً
تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

१३. वह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता हुआ लाता है। उस ने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा दिया है। हर-एक एक नियत समय तक चला जा रहा है। यही अल्लाह (जिस के ये सब चमत्कार हैं), तुम्हारा 'रब' है। राज्य उसी का है; उसे छोड़ कर जिन को तुम पुकारते हो वे एक क़ितमीर[१२] के भी मालिक नहीं है।

13. He maketh the night to pass into the day and He maketh the day to pass into the night. He hath subdued the sun and moon to service Each runneth unto an appointed term. Such is Allah, your Lord; His is the Sovereignty; and those unto whom ye pray instead of Him own not so much as the white spot on a date-stone.

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي
الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ
يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾

१४. यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेंगे नहीं, और यदि सुनते तो भी तुम्हारा जवाब न देते[१३]। और 'क़ियामत' के दिन वे तुम्हारे 'शिर्क' का इन्कार कर देंगे[१४]। कोई न बतायेगा तुम्हें जैसा बताने खबर रखने वाला।

14. If ye pray unto them they hear not your prayer, and if they heard they could not grant it you. On the Day of Resurrection they will disown association with you. None can inform you like Him Who is Aware.

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ
سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾

७. अर्थात् पहले मिट्टी से मनुष्य की रचना की फिर वीर्य्य के द्वारा उस की नस्ल चलाई।
८. अर्थात् तुम्हें स्त्री और पुरुष में विभक्त कर दिया।
९. अर्थात् जो कुछ होना है अल्लाह के ज्ञान और उसके फ़ैसले के अन्तर्गत होता है।
१०. मछली और जलीय जानवरों का मांस।
११. मोती, मूंगा आदि और कुछ दरियाओं से सोना और हीरे भी निकाले जाते हैं।
१२. वह पतली सी झिल्ली जो खजूर के भीतर गुठली पर चढ़ी होती है मतलब यह है कि वे तनिक भी अधिकार नहीं रखते।
१३. अर्थात् वे तुम्हारी प्रार्थना पर कोई कार्रवाई करने का सामर्थ्य नहीं रखते।
१४. वे कदापि तुम्हारा साथ नहीं देंगे। वे माफ़ कह देंगे कि हम ने यह कब कहा था कि तुम हमें अल्लाह का शरीक ठहराओ। तुम्हारा न कोई चढ़ावा हम तक पहुँचा और न तुम्हारी कोई पुकार हम तक पहुँची है। तुम्हारे 'शिर्क' से हमारा कोई भी सम्पर्क नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. हे लोगो ! तुम अल्लाह के मुहताज हो। और अल्लाह तो अपेक्षारहित (परम स्वतन्त्र) और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है।

15. O mankind Ye are the poor in your relation to Allah. And Allah! He is the Absolute, the Owner of Praise.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللّٰهِ
وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

१६. यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा कर (तुम्हारी जगह) कोई नई सृष्टि ले आये।

16. If He will, He can be rid of you and bring (instead of you) some new creation.

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

१७. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं।

17. That is not a hard thing for Allah.

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

१८ और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा,[१५] और यदि कोई लदा हुआ अपने बोझ की ओर (सहायता के लिए) पुकारेगा, तो उस में से कुछ भी बोझ न बटाया जायेगा चाहे वह (जिस को वह पुकारेगा) नातेदार ही क्यों न हो[१६]। (हे 'नबी' !) तुम तो केवल उन लोगों को सचेत कर सकते हो जो बिन देखे अपने 'रब' से डरते हैं, और 'नमाज़' क़ायम करते हैं। और जो कोई अपने को निखारता है तो वह अपनी ही भलाई के लिए निखारता है, और अल्लाह ही की ओर (सब को) पहुँचना है।

18. And no burdened soul can bear another's burden, if one heavy laden crieth for (help with) his load, naught of it will be lifted even though he (unto whom he crieth) be of kin. Thou warnest only those who fear their Lord in secret, and have established worship. He who groweth (in goodness), groweth only for himself, (he cannot by his merit redeem others). Unto Allah is the journeying.

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرٰى وَإِنْ
تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ
شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى إِنَّمَا تُنْذِرُ
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَمَنْ تَزَكّٰى فَإِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهِ
وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

१९. और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं हैं;[१७]

19. The blind man is not equal with the seer;

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾

२०. और न अँधियारियाँ और न उजाला;

20. Nor is darkness (tantamount to) light;

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾

२१. और न छाया और न तपन;

21. Nor is the shadow equal with the sun's full heat;

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿٢١﴾

२२. और न बराबर हैं सजीव और न मृतक। निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है सुनवा देता है[१८]। और (हे 'नबी' !) तुम उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़बरों में हैं[१९]।

22. Nor are the living equal with the dead. Lo! Allah maketh whom He will to hear. Thou canst not reach those who are in the graves.

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ إِنَّ
اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ
مَنْ فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾

१५. मक्का में जो लोग 'ईमान' लाते और 'इस्लाम' के मार्ग को अपना लेते उन से उन के नातेदार कहते कि तुम इस नवीन धर्म को त्याग कर बाप-दादा के धर्म में लौट आओ तुम्हारी यातना हम अपने सिर ले लेते हैं। यहाँ यह बात बताई जा रही है कि अल्लाह के यहाँ हर व्यक्ति अपने कर्मों का ज़िम्मेदार ख़ुद होगा; वहाँ कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता।

१६. वहाँ हर एक को अपनी पड़ी होगी। भाई भाई से विमुख — बाप बेटे की ओर से मुँह मोड़ लेगा। 'जहन्नम' की अग्नि में जलने के लिए कोई भी किसी की ओर से जाने के लिए तैयार न होगा।

१७. दे० सूरा अन-नम्ल आयत ७९-८१।

१८. यहाँ जो उपमा और मिसालें दी गई हैं उन से 'मुस्लिम' और 'काफ़िर' का अन्तर दृष्टिगोचर कराना अभीष्ट है। इन मिसालों की सार्थकता को समझने के लिए इन पर विचार करने की आवश्यकता है।

१९. अर्थात् 'रसूल' का काम यह नहीं है कि वह उन लोगों के दिलों में भी अपनी बात उतार दे जो बिल्कुल मुरदा हो चुके हैं जिन के दिल मर चुके हैं जिन्हें जीवित समझना स्वयं जीवन का अपमान करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. तुम तो बस एक सचेत करने वाले हो[२०]।

23. Thou art but a warner.

إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾

२४. निस्सन्देह हम ने तुम्हें हक़ के साथ, शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है; और कोई गरोह ऐसा नहीं जिस में कोई सचेत करने वाला न गुज़रा हो[२१]।

24. Lo! We have sent thee with the Truth, a bearer of glad tidings and a warner: and there is not a nation but a warner hath passed among them.

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾

२५. और ये लोग यदि तुम्हें झुठलाते हैं, तो वे लोग भी झुठला चुके हैं जो इन से पहले थे। उनके पास उन के 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण और 'ज़बूरें' और प्रकाशमान् 'किताब' ले आये थे।

25. And if they deny thee, those before them also denied. Their messengers came unto them with clear proofs (of Allah's sovereignty), and with the Psalms and the Scripture giving light.

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

२६. फिर मैं ने उन लोगों को जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया (और मानने से इन्कार किया) पकड़ लिया, तो कैसी रही मेरी सज़ा !

26. Then seized I those who disbelieved, and how intense was My abhorrence!

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

२७. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है, और फिर उस के द्वारा हम ने फल निकाले जिन के रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं; और पहाड़ों में श्वेत, और लाल सिलसिले पाये जाते हैं, जिन के रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं, और कुछ गहरे काले होते हैं;

27. Hast thou not seen that Allah causeth water to fall from the sky, and We produce therewith fruit of divers hues: and among the hills are streaks white and red, of divers hues, and (others) raven black;

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾

२८. और मनुष्यों और इसी तरह, जानवरों और मवेशियों के रंग भी विभिन्न प्रकार के हैं ? अल्लाह से तो उस के बन्दों में बस ज्ञान वाले[२२] ही डरते हैं। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली और बड़ा क्षमाशील है।

28. And of men and beasts and cattle, in like manner, divers hues? The erudite among His bondsmen fear Allah alone. Lo! Allah is Mighty, Forgiving.

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

२०. दे० आयत ३७, ४२।

२१. हर जाति में अल्लाह की ओर से डराने वाले और लोगों को सीधा मार्ग दिखाने वाले आये हैं। यह बात क़ुरआन में और दूसरी जगहों पर भी कही गई है। दे० सूरा अल-हिज्र आयत १०; अन नह्ल आयत ३६; अश-शुअरा आयत २०८। परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि प्रत्येक बस्ती और हर एक जाति के लिए अलग-अलग ही 'नबियों' को भेजा गया हो। एक नबी का सन्देश जहाँ तक पहुँच सकता हो वहाँ के लिए वही नबी काफ़ी होगा। इसी प्रकार यह भी ज़रूरी नहीं कि जातियों की हर पीढ़ी और हर नस्ल के लिए अलग-अलग नबी आया हो। एक 'नबी' की शिक्षा जब तक शेष और सुरक्षित रहे उस समय तक किसी नये 'नबी' के आने की आवश्यकता नहीं रहती।

२२. अर्थात् वे लोग जो अल्लाह की महानता और उस के गुणों का पूरा ज्ञान रखते हैं; और जो वास्तविक रूप से अपने अल्लाह को पहचानते हैं भले ही उन्हों ने किसी पाठशाला या विश्वविद्यालय में शिक्षा न पाई हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. जो लोग अल्लाह् की किताब पढ़ते हैं, और 'नमाज़' क़ायम करते हैं[२३]; और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से छुपे और खुले खर्च करते हैं, वे ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी घाटा न देगा,[२४]

29. Lo! those who read the Scripture of Allah, and establish worship, and spend of that which We have bestowed on them secretly and openly, they look forward to imperishable gain.

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَٰبَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَٰرَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

३०. (इस व्यापार में उन्हों ने अपना सब कुछ इस लिए खपाया है) ताकि अल्लाह उन्हें उन का बदला पूरा-पूरा दे और अपनी कृपा से उन्हें और बढ़ा कर दे। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) है।

30. That He will pay them their wages and increase them of H's grace. Lo! He is Forgiving, Responsive.

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

३१. और जो 'किताब' हम ने तुम्हारी ओर 'वह्य' की है, वही हक़ (सत्य) है वह उस की पुष्टि करती है जो उस से पहले (अवतीर्ण हुआ) है। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों को पूरी खबर रखने वाला और देखने वाला है।

31. As for that which We inspire in thee of the Scripture, it is the Truth confirming that which was (revealed) before it. Lo! Allah is indeed Observer, Seer of His slaves.

وَالَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِۦ لَخَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

३२. फिर हम ने इस किताब' का वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिया उन लोगों को जिन्हें हम ने अपने बन्दों में चुन लिया। अब कोई उन में अपने-आप पर ज़ुल्म करने वाला है और कोई उन में बीच की रास है, और कोई उन में अल्लाह की अनुमति से नेकियों में अग्रसर रहने वाला है। यही बहुत बड़ा अनुग्रह है[२५]!

32. Then We gave the Scripture as inheritance unto those whom We elected of our bondsmen. But of them are some who wrong themselves and of them are some who are lukewarm, and of them are some who outstrip (others) through good deeds, by Allah's leave. That is the great favour!

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرَٰتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

२३. दे० आयत १८।

२४. यहाँ 'ईमान' वालों के कर्मों की उपमा अल्लाह ने व्यापार से दी है। परन्तु यह ऐसा व्यापार है जिस में घाटे का कोई भय नहीं 'ईमान' वाला व्यक्ति इस लोक में जो अच्छे कर्म करता है और अल्लाह के 'दीन' के लिए अपना जो माल और अपना जो समय लगाता है इस आशा पर लगाता है कि अल्लाह के यहाँ वह इन सब का पूरा-पूरा बदला पायेगा; और उसे कदापि किसी प्रकार का घाटा नहीं होगा।

२५. इस आयत में अल्लाह की 'किताब' का वारिस (उत्तराधिकारी) हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अनुयायियों को कहा गया है, जिन्हें अल्लाह ने सम्पूर्ण मानव-जाति में से छांट लिया है ताकि वे अल्लाह की 'किताब' को ले कर उठें और उसे दुनिया के सामने पेश करें। परन्तु उस मुस्लिम गरोह में जिसे अल्लाह ने अपनी 'किताब' का वारिस बनाया है तीन तरह के लोग पाये जाते हैं। एक तो वे लोग हैं जो 'ईमान' तो रखते हैं परन्तु अपने-आप पर ज़ुल्म करने वाले अर्थात् गुनहगार हैं। ऐसे लोग संख्या में अधिक हैं। कुछ बीच के लोग हैं जो आज्ञाकारी भी हैं अवज्ञाकारी भी। जिन के कर्म अच्छे भी हैं और बुरे भी। इन की संख्या भी अधिक है परन्तु पहले लोगों से कम। तीसरे वे लोग हैं जो वास्तव में इस विरासत का हक़ अदा करते हैं। ये संख्या में दोनों तरह के लोगों से कम हैं परन्तु सब से श्रेष्ठ यही लोग हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३. सदैव रहने के बाग़ ! जिन में ये लोग प्रवेश करेंगे[२६] । वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जायेगा और उन का वस्त्र वहाँ रेशम होगा ।

33. Gardens of Eden! They enter them wearing armlets of gold and pearl and their raiment therein is silk.

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

३४. और वे कहेंगे : प्रशंसा ('हम्द' और शुक्र) है उस अल्लाह के लिए जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया । निस्सन्देह हमारा 'रब' बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) है,

34. And they say: Praise be to Allah who hath put grief away from us. Lo! Our Lord is Forgiving, Bountiful.

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾

३५. जिस ने हमें अपनी कृपा से, सदैव रहने की जगह ठहराया, जहाँ न हमें कोई मशक़्क़त उठानी पड़ती है और न हमें कोई थकान आती है ।

35. Who, of His grace, hath installed us in the manison of eternity, where toil toucheth us not, nor can weariness affect us.

الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾

३६. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, उन के लिए 'जहन्नम' की आग है; न उन का क़िस्सा पाक कर दिया जायेगा कि वे मर जायें, और न उन से उस ('जहन्नम') की यातना ही हल्की की जायेगी । इस तरह हम हर एक 'कुफ़्र' करने वाले को बदला देते हैं ।

36. But as for those who disbelieve, for them is fire of hell; it taketh not complete effect upon them so that they can die, nor is its torment lightened for them. Thus We punish every ingrate.

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾

३७. और वे वहाँ चिल्लायेंगे कि हमारे 'रब' ! हमें निकाल ले; हम अनुकूल कर्म करेंगे, उस के विपरीत जो (पहले) करते थे। (कहा जायेगा) : क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु न दी थी जिस में कोई सोचना-समझना चाहता तो सोच-समझ लेता[२७] ? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था। अब मज़ा चखो (अपने किये का), ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है ।

37. And they cry for help there, (saying): Our Lord! Release us: we will do right, not (the wrong) that we used to do. Did not We grant you a life long enough for him who reflected to reflect therein? And the warner came unto you. Now taste (the flavour of your deeds), for evil-doers have no helper.

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

२६. 'नबी' सल्ल० ने कहा है कि जो लोग नेकियों में अग्रसर रहे वे 'जन्नत' में बिना किसी हिसाब के प्रवेश करेंगे । और वे जो बीच की रास वाले हैं उन से हिसाब लिया जायेगा परन्तु हल्का हिसाब । रहे वे लोग जिन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है वे 'महशर' के पूरे दीर्घ काल में रोक रक्खे जायेंगे फिर वही हैं जिन्हें अल्लाह अपनी रहमत (दयालुता) में ले लेगा और वही हैं जो कहेंगे प्रशंसा ('हम्द') है उस अल्लाह के लिए जिस ने हम से ग़म (व्यथा) को दूर कर दिया ।

२७. इस से अभिप्रेत हर वह आयु है जिस में आदमी इस योग्य हो कि यदि सत्य और असत्य में अन्तर करना चाहे तो कर सके; और गुमराही को त्याग कर सत्य-मार्ग पर चलना चाहे तो चल सके । इस आयु को प्राप्त होने से पूर्व यदि किसी की मृत्यु आ गई, तो उस की पकड़ न होगी । परन्तु जो इस आयु को प्राप्त हो चुका हो कि सत्य को पहचान सके वह अल्लाह के यहाँ अपने कर्मों का उत्तरदायी होगा । और फिर जितनी ज़्यादा मुद्दत तक वह जीवित रहेगा और उसे समझने-बूझने और संभलने के जितने भी अवसर मिलते रहेंगे उसकी ज़िम्मेदारी बढ़ती चली जायेगी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. निस्सन्देह अल्लाह आकाशों और धरती की छुपी चीज़ का जानने वाला है। वह तो सीनों तक की बात को जानता है।

38. Lo! Allah is the Knower of the Unseen of the heavens and the earth. Lo! He is Aware of the secret of (men's) breasts.

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

३९. वही तो है जिस ने तुम्हें धरती में 'ख़लीफ़ा' बनाया है; अब जो कोई 'कुफ़्र' करेगा, उसके 'कुफ़्र' का वबाल उसी पर पड़ेगा। और 'काफ़िर' 'कुफ़्र' कर के अपने 'रब' के यहाँ प्रकोप के सिवा और कुछ नहीं पायेंगे। और 'काफ़िरों' को उन के 'कुफ़्र' से बस घाटा-ही-घाटा होगा।[२८]

39. He it is Who hath made you regents in the earth; so he who disbelieveth, his disbelief be on his own head. Their disbelief increaseth for the disbelievers, in their Lord's sight, naught save abhorrence. Their disbelief increaseth for the disbelievers naught save loss.

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ
كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا وَلَا يَزِيدُ
الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

४०. (हे 'नबी'!) कहो : क्या तुम ने अपने (ठहराये हुए) उन सहभागियों को देखा भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्हों ने धरती में क्या पैदा किया है! या आकाशों में उन का कुछ साझा है[२९]? या हम ने इन्हें कोई 'किताब' दी है कि ये उस के स्पष्ट प्रमाण पर क़ायम हैं? नहीं, बल्कि ये ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से जो वादा करते हैं वह निरा धोखा है।

40. Say: Have ye seen your partner-gods to whom ye pray beside Allah? Show me what they created of the earth! Or have they any portion in the heavens? Or have We given them a Scripture so that they act on clear proof therefrom? Nay, the evil-doers promise one another only to deceive.

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ
أَمْ ءَاتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِنْهُ
بَلْ إِنْ يَعِدُ الظّٰلِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا
إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

४१. निस्सन्देह अल्लाह ही आकाशों और धरती को रोके हुये है कि टल न जायें, और यदि वे टल जायें तो उस के बाद कोई नहीं जो उन्हें थाम सके। निस्सन्देह वह बड़ा सहनशील और क्षमा करने वाला है[३०]।

41. Lo! Allah graspeth the heavens and the earth that they deviate not, and if they were to deviate there is not one that could grasp them after Him. Lo? He is ever Clement, Forgiving.

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ
تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ
أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

४२. और ये लोग अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते थे कि यदि कोई सचेत करने वाला इन के पास आ गया होता तो ये हर जाति से बढ़ कर मार्ग पर होते;[३१] परन्तु जब इन के पास सचेत करने वाला आया, तो इस से ये और दूर भागे—

42. And they swore by Allah, their most binding oath, that if a warner came unto them they would be more tractable than any of the nations; yet, when a warner came unto them it aroused in them naught save repugnance.

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمٰنِهِمْ لَئِنْ
جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْدٰى مِنْ
إِحْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ
مَا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾

२८. दे० आयत ४३।
२९. दे० सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत ४।
३०. दे० आयत ४५।
३१. यह बात अरब के लोग और विशेष रूप से क़ुरैश क़बीले के लोग 'नबी' सल्ल० की 'नुबूवत' से पहले 'यहूदियों' और ईसाइयों की बिगड़ी हुई दशा को देख कर कहते थे। दे० सूरा अल-अनआम आयत १५६-१५७ और सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत १६७-१६९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३. इस लिए कि धरती में बड़े बन कर रहें— और बुरी-बुरी चालें चलने लगे;[32] और बुरी चाल अपने ही लोगों को ले बैठती है। अब, क्या ये लोग उसी रीति की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो अगले लोगों के साथ रही[33]? तो तुम यह कभी न पाओगे कि अल्लाह की रीति बदल दी गई हो,[34] और तुम यह कभी न पाओगे कि अल्लाह की रीति टाल दी गई हो।

43. (Shown in their) behaving arrogantly in the land and plotting evil; and the evil plot encloseth but the men who make it. Then, can they except aught save the treatment any substitute, nor wilt thou find for Allah's way of treatment aught of power to change.

اِسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

४४. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे, और वे शक्ति में इन से बढ़ कर थे? अल्लाह ऐसा नहीं जिस से कोई चीज़ बच निकले आकाशों में और न धरती में। निस्सन्देह वह जानने वाला और सामर्थ्यवान् है।

44. Have they not travelled in the land and seen the nature of the consequence for those who were before them, and they were mightier than these in power? Allah is not such that aught in the heavens or in the earth escapeth Him. Lo! He is the Wise, the Mighty.

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾

४५. यदि अल्लाह लोगों को उस पर पकड़ता जो कुछ कि वे (बुराई) कमाते हैं, तो इस धरती की पीठ पर किसी जीवधारी को भी (जीवित) न छोड़ता; परन्तु वह उन्हें एक नियत समय तक के लिए मुहलत दे रहा है,[35] फिर जब उन का नियत समय आ जायेगा, तो जान रक्खो अल्लाह की निगाह में हैं उस के सब बन्दे।

45. If Allah took mankind to task by that which they deserve, He would not leave a living creature on the surface of the earth; but He reprieveth them unto an appointed term, and when their term cometh — then verily (they will know that) Allah is ever Seer of His slaves.

* * * *

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

३२. दे० आयत १०।

३३. अर्थात् अल्लाह का वही क़ानून इन पर भी जारी हो जाये जो इन से पहले की 'काफ़िर' जातियों पर जारी होता रहा है और ये बिल्कुल तबाह कर दिये जायें।

३४. 'अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि'-(ऋ० १-२४-१०) अर्थात् ईश्वर के नियम अटल हैं। 'न किरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि' (अथर्व० १८-१-५) अर्थात् ईश्वर के नियमों को कोई बदल नहीं सकता।

३५. दे० सूरा अन-नह्ल आयत ६१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६—या सीन०

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' के आरम्भ के दो अक्षरों को इस सूरा का नाम ठहराया गया है। कुछ लोगों की दृष्टि में सूरा के आरम्भ के दो अक्षर 'या सीन०' का अर्थ है : "हे मनुष्य" या "हे व्यक्ति"। और कुछ लोग इसे "हे सय्यिद" का संक्षिप्त रूप (Short form) समझते हैं। इन अर्थों की दृष्टि से इन शब्दों का सम्बोधन नबी सल्ल० की ओर होगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा या तो मक्का के अन्तिम कालावधि की सूरतों में से है; या फिर यह मक्का के मध्य-काल के अन्तिम समय में उतरी है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में 'क़ियामत', कर्म-फल, दुनिया और 'आख़िरत' की यातनाका उल्लेख किया गया है और वास्तविक स्रष्टा की 'इबादत' और बन्दगी पर ज़ोर देते हुये अल्लाह के सिवा दूसरों की बन्दगी का निषेध कियागया है। 'काफ़िरों' की जड़ता का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि 'काफ़िरों' की सदा से यही नीति रही है कि वे अल्लाह के 'रसूलों' की हँसी उड़ाते रहे हैं। इस सूरा की वर्णन-शैली ऐसी है कि उस से 'रिसालत' की पुष्टि होती है।

प्रस्तुत 'सूरा' पिछली सूरा का विस्तार और पोषक है। जिस प्रकार सूरा अल-फ़ातिहा को 'उम्म' अथवा मातृ, उद्गम (The Mother of the Book) कहा गया है उसी प्रकार सूरा 'या सीन०' को नबी सल्ल० ने "क़ुरआन का हृदय" की उपाधि दी है। सूरा अल-फ़ातिहा में क़ुरआन की पूरी शिक्षा का सारांश आ गया है; प्रस्तुत सूरा क़ुरआन का वास्तव में धड़कता हुआ दिल है। यह सूरा ज़ोरदार तरीक़े से लोगों को सत्य की ओर आमन्त्रित करती है। जिस से केवल वही लोग प्रभावित होने से वंचित रह सकते हैं जिन के दिल अत्यन्त कठोर हो गये हों। नबी सल्ल० ने कहा है : "सूरा या सीन० को अपने मरने वाले पर पढ़ा करो।" इस सूरा के सुन लेने से इस्लामी धारणाओं और विचारों की पुनरावृत्ति हो जाती है और 'आख़िरत' (परलोक) का पूरा चित्र सामने आ जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' या सीन (मक्का में उतरी---'आयतें' ८३)	**YASIN** Revea'ed at Mecca	سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
१. या सीन०[1]।	1. Ya Sin.	يٰسٓ ۝١
२. क़सम है 'हिकमत' वाले इस 'क़ुरआन' की,	2. By the wise Qur'an.	وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝٢
३. निश्चय ही तुम 'रसूलों' में से हो[2]	3. Lo! thou art of those	اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٣
४. सीधे मार्ग पर हो,	4. On a straight path.	عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤
५. (और यह क़ुरआन) प्रभुत्वशाली और दयावान् का उतारा हुआ है.	5. A revelation of the Mighty, the Merciful.	تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٥
६. ताकि तुम सचेत करो एक ऐसी जाति को जिन के बाप-दादों को सचेत नहीं किया गया था. इस लिए वे बे-खबर हैं[3]।	6. That thou mayst warn a folk whose fathers were not warned, so they are heedless.	لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَاۤؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٦
७. इन में अधिकांश पर (यातना की) बात साबित हो चुकी है, तो वे 'ईमान' नहीं लायेंगे[4]।	7. Already hath the word proved true of most of them, for they believe not.	لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٧
८. हम ने उन की गर्दनों में तौक़ डाल दिये हैं जो ठोड़ियों से लगे हुये हैं, जिस से उन के सिर ऊपर को उलल गये हैं।	8. Lo! We have put on their necks carcans reaching unto the chins, so that they are made stiff-necket.	اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝٨

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

२. अर्थात् क़ुरआन जो 'हिकमत' और तत्त्वज्ञान (Wisdom) से परिपूर्ण है इस बात का साक्षी है कि नबी सल्ल० अल्लाह के 'रसूल' हैं। किसी मनुष्य के बस की बात नहीं कि वह क़ुरआन जैसे ग्रन्थ की रचना कर सके। अतः यह अल्लाह की 'किताब' है जो उसने अपने 'रसूल' पर उतारी है।

३. नबी सल्ल० से पहले अरब मे दीर्घ काल से कोई नबी नहीं आया था परन्तु इस का अर्थ यह नहीं है कि नबियों की शिक्षाओं के चिन्ह अरब देश में बिल्कुल ही मिट चुके थे। नबी सल्ल० से पहले अरब में हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसमाईल अ०, हज़रत शुऐब अ०, हज़रत मूसा अ० और हज़रत मसीह अ० की शिक्षाओं से सम्बन्धित बातें हर ओर फैली हुई थीं। और कभी-न-कभी इस जाति में ऐसे लोग अवश्य उठते या बाहर से आते रहे जो उन बातों को ताज़ा करते रहे हैं। परन्तु जब 'नबियों' की बातों को लोगों ने भुला दिया और उनकी मूल शिक्षाओं को बदल डाला, तो अल्लाह ने नबी सल्ल० को 'रसूल' बना कर भेजा। और आप (सल्ल०) केवल अरब देश के लिए रसूल बना कर नहीं भेजे गए बल्कि आप (सल्ल०) को सम्पूर्ण संसार के लिए 'रसूल' बनाया गया। दे० सूरा० अल-फ़ुरक़ान आयत १।

४. अर्थात् उन्हों ने हठधर्मी की नीति अपना ली है, वे 'ईमान' की दौलत कैसे पा सकते हैं। वे तो इसी बात का हक़ रखते हैं कि उन के लिए यातना का फ़ैसला कर दिया जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और हम ने एक दीवार उन के आगे खड़ी कर दी है और एक दीवार उन के पीछे, और हम ने उन्हें ढांक दिया है अब उन्हें कुछ नहीं सूझता।

9. And We have set a bar before them and a bar behind them, and (thus) have covered them so that they see not.

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ⑨

१०. और उन के लिए बराबर है, चाहे तुम उन्हें सचेत करो या तुम उन्हें सचेत न करो, ये मानेंगे नहीं।

10. Whether thou warn them or thou warn them not, it is alike for them, for they believe not.

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑩

११. तुम तो उसी व्यक्ति को सचेत कर सकते हो जो अनुस्मारक का अनुसरण करे[५] और बे देखे 'रहमान' (अत्यन्त कृपाशील अल्लाह) से डरे। तो ऐसे व्यक्ति को क्षमा और बदले की शुभ-सूचना दे दो।

11. Thou warnest only him who followeth the Reminder and feareth the Beneficent in secret. To him bear tidings of forgiveness and a rich reward.

إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑪

१२. निश्चय ही हम (एक दिन) मुरदों को जीवित करने वाले हैं। और हम लिखते जाते हैं जो कुछ उन्हों ने आगे भेजा, और जो कुछ पीछे छोड़ा। और हर चीज़ को हम ने एक स्पष्ट 'किताब' में अंकित कर रक्खा है।

12. Lo! We it is Who bring the dead to life. We record that which they send before (them), and their footprints. And all things We have kept in a clear register.

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ⑫

१३. और मिसाल के लिए इन के सामने बस्ती वालों को रक्खो जब कि वहाँ रसूल आये;

13. Coin for them a similitude: The people of the city when those sent (from Allah) came unto them;

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ⑬

१४. हम ने उन की ओर दो को भेजा, तो उन्हों ने उन को झुठला दिया. फिर हम ने तीसरा मदद के लिए भेजा, उन्हों ने कहा : हम तुम्हारी ओर 'रसूल' बना कर भेजे गये हैं।

14. When We sent unto them twain, and they denied them both, so We reinforced them with a third, and they said: Lo! we have been sent unto you.

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ⑭

१५. (बस्ती वालों ने) कहा : तुम तो बस हम जैसे मनुष्य हो। और 'रहमान' ने कोई चीज़ उतारी नहीं है। तुम केवल झूठ बोलते हो[६]!

15. They said: Ye are but mortals like unto us. The Beneficent hath naught revealed. Ye do but lie!

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ⑮

१६. ('रसूलों' ने) कहा : हमारा 'रब' जानता है कि हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

16. They answered: Our Lord knoweth that we are indeed sent unto you.

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑯

१७. और हम पर साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

17. And our duty is but plain conveyance (of the message).

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ⑰

५. दे० सूरा फ़ातिर आयत २६।

६. अर्थात् तुमतो मनुष्य हो भला यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें अल्लाह अपना 'रसूल' बनाये। यही बात मक्का के लोगों ने भी नबी सल्ल० की 'नुबूवत' का इन्कार करते हुये कही। और यही बात प्राचीन काल से ज्ञानहीन जातियाँ अपने 'नबियों' से कहती रही हैं। हालांकि मनुष्य के लिए मनुष्य ही 'रसूल' हो सकता है। मनुष्य के लिए मनुष्य का जीवन ही आदर्शजीवन हो सकता है न कि किसी 'फ़रिश्ते' का जीवन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. (बस्ती वालों ने) कहा : हम तो तुम्हें अपशकुन समझते हैं[७]। यदि तुम बाज़ न आये, तो हम तुम पर पथराव कर देंगे, और हम से तुम्हें दुःख देने वाली यातना पहुँचेगी।

18. (The people of the city) said: We augur ill of you. If ye desist not, we shall surely stone you, and grievous torture will befall at your hands.

قَالُوٓا۟ إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا۟ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾

१९. ('रसूलों' ने) कहा : तुम्हारा शकुन-अपशकुन तो तुम्हारे अपने साथ है[८]! क्या यह इस लिए कि तुम्हें चेताया गया ? नहीं, बल्कि तुम मर्यादा-हीन लोग हो ?

19. They said: Your evil augury be with you! Is it because ye are reminded (of the truth)? Nay, but ye are froward folk!

قَالُوا۟ طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ أَئِن ذُكِّرْتُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾

२०. इतने में नगर के दूरस्थ भाग से एक आदमी दौड़ता हुआ आया। बोला : हे मेरी जाति के लोगो ! 'रसूलों' के पीछे चलो !

20. And there came from the uttermost part of the city a man running. He cried: O my people! Follow those who have been sent!

وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا ٱلْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُوا۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾

२१. उन के पीछे चलो जो तुम से कोई बदला नहीं माँगते और सीधे मार्ग पर हैं[९]।

21. Follow those who ask of you no fee, and who are rightly guided.

ٱتَّبِعُوا۟ مَن لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

* २२. और मैं क्यों न उस (सत्ता) की 'इबादत' करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है, और उसी की ओर तुम्हें पलट कर जाना है[१०] ?

22. For what cause should I not serve Him Who hath created me, and unto Whom ye will be brought back?

وَمَا لِىَ لَآ أَعْبُدُ ٱلَّذِى فَطَرَنِى وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾

२३. क्या मैं उसे छोड़ कर दूसरे 'इलाह' (पूज्य) बना लूँ, यदि 'रहमान' मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे, तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम नहीं आने की, और न वे मुझे छुड़ा ही सकते हैं ?

23. Shall I take (other) gods in place of Him when, if the Beneficent should wish me any harm, their intercession will avail me naught, nor can they save?

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ ٱلرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّى شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾

२४. (यदि मैं ऐसा करूँ) तब तो मैं खुली गुमराही में जा पड़ा।

24. Then truly I should be in error manifest.

إِنِّىٓ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

२५. मैं तो तुम्हारे 'रब' पर 'ईमान' ले आया, तो मुझ से सुन लो।

25. Lo! I have believed in your Lord, so hear me!

إِنِّىٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَٱسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾

७. इस तरह की बातें मक्का के 'काफ़िर' भी नबी सल्ल० के बारे में कहते थे। दे० सूरा अन-निसा आयत ७८।

८. अर्थात् कोई किसी के लिए अशुभ और मनहूस नहीं। हर व्यक्ति जो बुराई या भलाई देखता है अपने ही नसीब की देखता है। दे० सूरा बनी इसराईल आयत १३।

९. अर्थात् जब इन की बातों से मालूम होता है कि ये सीधे मार्ग पर हैं ये जो कुछ कहते हैं वह अत्यन्त उचित और बुद्धिसंगत है और जो दौड़-धूप ये लोग कर रहे हैं उस के पीछे नाममात्र को भी इन का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं दिखाई देता फिर इन की 'नुबूवत' के बारे में किसी प्रकार का सन्देह कैसे किया जा सकता है।

* यहाँ से तेईसवाँ पारा (Part XXIII) शुरू होता है।

१०. अर्थात् जिस 'रब' पर मैं 'ईमान' लाया हूँ वही तुम्हारा 'रब' भी है। तुम यदि उस पर 'ईमान' नहीं ला रहे हो, तो अपना ही बुरा कर रहे हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. (हुआ यह कि लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया और उस से) कहा गया : प्रवेश करो 'जन्नत' में उस ने कहा : क्या हीं अच्छा होता कि मेरी जाति के लोग जानते

26. It was said (unto him): Enter Paradise. He said: Would that my people knew.

قيل ادخل الجنة قال يليت قومي
يعلمون ٢٦

२७. कि मेरे 'रब' ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे सम्मानित लोगों में सम्मिलित कर दिया" !

27. With what (munificence) my Lord hath pardoned me and made me of the honoured ones!

بما غفر لي ربي وجعلني من المكرمين ٢٧

२८. उस के बाद उस की जाति वालों पर हम ने आकाश से कोई सेना नहीं उतारी, और न हम उतारने वाले ही थे।

28. We sent not down against his people after him a host from heaven, nor do We ever send.

وما انزلنا على قومه من بعده من
جند من السماء وما كنا منزلين ٢٨

२९. वह तो केवल एक (प्रचण्ड) चीख़ थी, तो क्या देखते हैं कि वे बुझ कर रह गये।

29. It was but one Shout, and lo! they were extinct.

ان كانت الا صيحة واحدة فاذا
هم خامدون ٢٩

३०. अफ़सोस बन्दों (के हाल) पर ! जो 'रसूल' भी उन के पास आया वे उस की हँसी ही उड़ाते रहे।

30. Ah, the anguish for the bondmen! Never came there unto them a messenger but they did mock him!

يحسرة على العباد ما يأتيهم من
رسول الا كانوا به يستهزءون ٣٠

३१. क्या उन्हों ने देखा नहीं कि उन से पहले कितनी ही नस्लों को हम विनष्ट कर चुके हैं कि वे उन की ओर पलट कर नहीं आते;

31. Have they not seen how many generations We destroyed before them, which indeed return not unto them?

الم يروا كم اهلكنا قبلهم من القرون
انهم اليهم لا يرجعون ٣١

३२. और सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर किये जायेंगे।

32. But all, without exception, will be brought before Us.

وان كل لما جميع لدينا محضرون ٣٢

३३. और इन लोगों के लिए मुर्दा भूमि एक निशानी है। हम ने उसे जीवित किया, और उस से अनाज निकाला जिसे ये खाते हैं;

33. A token unto them is the dead earth. We revive it, and We bring forth from it grain so that they eat thereof;

واية لهم الارض الميتة احيينها
واخرجنا منها حبا فمنه ياكلون ٣٣

३४. और हम ने उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये, और उस में स्रोत फोड़ निकाले,

34. And We have placed therein gardens of the date-palm and grapes, and We have caused springs of water to gush forth therein.

وجعلنا فيها جنت من نخيل واعناب
وفجرنا فيها من العيون ٣٤

३५. ताकि ये उस के फल खायें—इसे इन के हाथों ने नहीं बनाया—तो क्या ये कृतज्ञता नहीं दिखलायेंगे।

35. That they may eat of the fruit thereof, and their hands made it not. Will they not, then, give thanks?

لياكلوا من ثمره وما عملته ايديهم
افلا يشكرون ٣٥

११. उस सज्जन व्यक्ति के मन में अपने हत्यारों के लिए कोई द्वेष, क्रोध या बदला लेने की भावना उत्पन्न न हुई। वह मरने से पूर्व भी अपनी जाति वालों का हितैषी था और मरने के बाद भी। उस ने यही चाहा कि किसी तरह मेरी जाति के लोगों को मेरे अच्छे परिणाम की ख़बर हो जाये और वे भी सीधे मार्ग को अपना कर 'जन्नत' के अधिकारी बन सकें।

'क़ुरआन' की और बहुत सी दूसरी 'आयतों' के अतिरिक्त इस आयत से भी यह बात मालूम होती है कि मरने के बाद मनुष्य का बिल्कुल अन्त नहीं हो जाता। मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा बिना शरीर के भी जीवित रहती है। बात-चीत करती और सुनती है, चेतनाओं और इच्छाओं आदि से युक्त होती है, प्रसन्नता और दुःख दोनों का उसे अनुभव होता है। दुनिया वालों के साथ उस का लगाव भी बाक़ी रहता है। यदि ऐसा न होता तो न तो उसे 'जन्नत' की शुभ-सूचना दी जाती और न उस की यह कामना होती कि उस की जाति वालों को उस के अच्छे परिणाम की ख़बर हो जाये। दे० सूरा अल-मोमिन आयत ४५-४६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. महिमावान् है वह (अल्लाह) जिस ने सब प्रकार के जोड़े पैदा किये, धरती जो कुछ उगाती है उस में से, और स्वयं इन की अपनी जाति (मानव-जाति) में से और उन चीज़ों में से जिन्हें ये जानते नहीं !

36. Glory be to Him Who created all the sexual pairs, of that which the earth groweth, and of themselves, and of that which they know not!

سُبْحٰنَ الَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾

३७. और इन के लिए एक निशानी रात है। हम उसके ऊपर से दिन को हटाते हैं और उन पर अँधेरा छा जाता है[१२]।

37. A token unto them is night. We strip it of the day and lo! they are in darkness

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾

३८. और सूर्य अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है[१३]। यह प्रभुत्त्वशाली और सर्वज्ञ (अल्लाह) का बाँधा हुआ अन्दाज़ा (हिसाब) है।

38. And the sun runneth on unto a resting-place for him. That is the measuring of the Mighty, the Wise.

وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾

३९. और चन्द्रमा के लिए हम ने मंज़िलें नियत कर दी हैं यहाँ तक कि (उन में गुज़रता हुआ) वह फिर खजूर की पुरानी टहनी जैसा हो जाता है[१४]।

39. And for the moon We have appointed mansions till she return like an old shrivelled palm-leaf.

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾

४०. न सूर्य के वश में है कि वह चन्द्रमा को जा ले, और न रात दिन से आगे बढ़ने वाली है। और सब एक-एक कक्षा (ग्रह-पथ) में तैर रहे हैं[१५]।

40. It is not for the sun to overtake the moon, nor doth the night outstrip the day They float each in an orbit.

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾

४१. और इन के लिए एक निशानी यह है कि हम ने इन की सन्तति को भरी हुई नौका में सवार कर दिया,

41. And a token unto them is that We bear their offspring in the laden ship,

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۴۱﴾

१२. जो निशानियाँ यहाँ बयान की गई हैं यदि मनुष्य इन निशानियों पर विचार करे तो उसे यह मानना पड़ेगा कि यह धरती से ले कर आकाशों तक फैली हुई दुनिया न तो अपने-आप बन गई है और न इस को बहुत से खुदाओं और प्रभुओं ने मिल कर बनाया है। अल्लाह के अस्तित्व और उस के एक होने और उस की 'हिकमतों' का प्रत्यक्ष प्रमाण इस विस्तृत एवं विशाल जगत से बढ़ कर और क्या हो सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि मनुष्य अपने खुले नेत्रों से विशाल विश्व का निरीक्षण करे और अपनी विचार-शक्ति से काम लें।

१३. ठिकाने से अभिप्रेत वह स्थान भी हो सकता है जहाँ सूर्य को अन्त में जा कर ठहर जाना है और इस से अभिप्रेत वह नियत समय भी हो सकता है जब वह ठहर जायेगा। इस 'आयत' का ठीक-ठीक अर्थ तो उसी समय समझ में आ सकता है जबकि हमें विशाल विश्व के रहस्यों का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त हो जाये। प्राचीन समय में लोग समझते थे कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है फिर जब मनुष्य ने खोज और अनुसन्धान में कुछ उन्नति की तो उस ने यह समझा कि सूर्य अपने स्थान पर स्थिर है और सौर-जगत (Solar system) के नक्षत्र उस की परिक्रमा करते हैं; परन्तु बाद के अनुसन्धानों और निरीक्षणों से पता चला कि सूर्य ही नहीं बल्कि वे समस्त तारागण जो अचल समझे जाते थे एक रुख पर चले जा रहे हैं। ऐसे तारों की चाल के बारे में १० से १०० मील प्रति सेकण्ड का अनुमान लगाया गया है। सूर्य के बारे में यह अनुमान है कि वह सौर-जगत को लिये हुये लगभग १२ मील प्रति सेकण्ड की चाल से गतिशील है।

१४. यह संकेत द्वितीया के चन्द्रमा की ओर है।

१५. "सब एक-एक कक्षा (Orbit) में तैर रहे हैं" इस से मालूम हुआ कि समस्त ग्रह, नक्षत्र आदि गतिशील हैं और इन में से प्रत्येक का मार्ग अलग है। ये नभ में इस प्रकार चल रहे हैं जैसे किसी तरल पदार्थ में कोई चीज़ तैर रही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. और हम ने वैसी ही और चीज़ भी पैदा की जिस पर ये सवार होते हैं।

42. And have created for them of the like thereof whereon they ride.

وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾

४३. और यदि हम चाहें, तो इन्हें डुबो दें, फिर न कोई इन की फ़रियाद सुनने वाला हो, और न ये बचाये जा सकें;

43. And if We will, We drown them, and there is no help for them, neither can they be saved:

وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ﴿٤٣﴾

४४. यह तो बस हमारी दयालुता है और एक समय के लिए जीवन-आनन्द लेने का अवसर है।

44. Unless by mercy from Us and as comfort for a while.

إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

४५. और इन से जब कहा जाता है: बचो उस से जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है,[१६] कदाचित् तुम पर दया की जाये (तो ये कुछ भी ध्यान नहीं देते)।

45. When it is said unto them: Beware of that which is before you and that which is behind you, that haply ye may find mercy (they are heedless).

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾

४६. इन के पास इन के 'रब' की 'आयतों' में से जो 'आयत' भी आती है ये उस से मुँह मोड़े ही रहते हैं!

46. Never came a token of the tokens of their Lord to them, but they did turn away from it!

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾

४७. और जब इन से कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया उस में से ख़र्च करो, तो ये लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है 'ईमान' लाने वालों से कहते हैं: क्या हम उस को खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिला देता? तुम तो बस खुली गुमराही में पड़े हो।

47. And when it is said unto them: Spend of that wherewith Allah hath provided you, those who disbelieve say unto those who believe: Shall we feed those whom Allah, if He willed, would feed? Ye are in naught else than error manifest.

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾

४८. और ये कहते हैं: यह ('क़ियामत' का) वादा कब (पूरा होगा), यदि तुम सच्चे हो?

48. And they say: When will this promise be fulfilled, if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

४९. बस ये लोग केवल एक ज़ोर की आवाज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो इन्हें इस दशा में धर लेगी जब ये (परस्पर लौकिक विषयों में) झगड़ रहे होंगे।

49. They await but one Shout, which will surprise them while they are disputing.

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

५०. फिर न ये वसीयत कर सकेंगे, और न अपने घर वालों की ओर पलट सकेंगे।

50. Then they cannot make bequest, nor can they return to their own folk.

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

५१. और 'सूर' में फूँक मारी गई क्या देखेंगे कि वे क़बरों से निकल-निकल कर अपने 'रब' की ओर दौड़े जा रहे हैं[१७]।

51. And the trumpet is blown and lo! from the graves they hie unto their Lord.

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾

१६. दे० सूरः सबा आयत ९।

१७. 'सूर' तीन बार फूँका जायेगा। पहली बार जब 'सूर' में फूँक मारी जायेगी तो धरती और आकाश के बसने वाले जितने हैं सब डर जायेंगे। दूसरी बार 'सूर' फूँका जायेगा तो सब-के-सब विनष्ट हो कर गिर जायेंगे। फिर धरती और आकाश बदल कर कुछ-से-कुछ कर दिये जायेंगे। धरती ऐसी सपाट कर दी जायेगी कि उस में कोई सलवट तक न रहेगी। फिर अल्लाह इस बदली हुई धरती पर लोगों को जीवित कर के उठायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. कहेंगे हाय मेरी मुसीबत ! किस ने हमें सोते से उठा दिया[१८] ? यह वह चीज़ है जिस का 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) ने वादा किया था, और 'रसूलों' ने सच कहा था,

52. Crying: Woe upon us! Who hath raised us from our place of sleep? This is that which the Beneficent did promise, and the messengers spoke truth.

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

५३. बस एक ज़ोर की आवाज़ हुई, और तुरन्त वे सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर कर दिये गये !

53. It is but one Shout, and behold them brought together before Us!

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

५४. अब आज किसी जीव (व्यक्ति) पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा; और तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे।

54. This day no soul is wronged in aught: nor are ye requited aught save what ye used to do.

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

५५. निश्चय ही 'जन्नत' वाले आज आनन्द लेने में मग्न हैं,[१९]

55. Lo! those who merit paradise this day are happily employed.

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ﴿٥٥﴾

५६. वे और उन की पत्नियाँ, (घने) सायों में हैं, मसनदों पर तकिये लगाए हुये;

56. They and their wives, in pleasant shade , on thrones recl'ning;

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾

५७. उन के लिए वहाँ स्वादिष्ट चीज़ें हैं और वे जो भी माँगें मिलता है;

57. Theirs the fruit (of their good deeds) and theirs (all) that they ask;

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾

५८. सलाम ! शब्द दयावन्त 'रब' का !!

58. The word from a Merciful Lord (for them) is: Peace!

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

५९. और हे अपराधियो ! आज तुम छँट कर अलग हो जाओ !

59. But avaunt ye, O ye guilty, this day!

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

६०. क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं की थी, हे आदम के बेटो, कि तुम 'शैतान' की बन्दगी न करो निश्चय ही वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

60. Did I not charge you, O ye sons of Adam, that ye worship not the devil — Lo! he is your open foe! —

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾

६१. और यह कि मेरी ही बन्दगी करो ? यह सीधा मार्ग है।

61. But that ye worship Me? That was the right path.

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

६२. और उसने तो तुम में से एक भारी गरोह को गुमराह कर दिया है। क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे ?

62. Yet he hath led astray of you a great multitude. Had ye then no sense?

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

६३. यह वही 'जहन्नम' है जिस की तुम्हें धमकी दी जाती थी।

63. This is hell which ye were promised (if ye followed him).

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

१८. अपने बारे में वे समझेंगे कि मरे नहीं थे बल्कि सो रहे थे; किसी भयानक घटना ने उन्हें सोने से जगा दिया है। और वे भागे जा रहे हैं।

१९. उन्हें 'हश्र' के मैदान में रोका नहीं गया बल्कि बिना हिसाब या हल्के हिसाब के बाद 'जन्नत' में भेज दिया गया। इस लिए कि वे दुनिया में 'ईमान' लाये थे और उन्हों ने अनुकूल कर्म किया था। दे० सूरा फ़ातिर फ़ुटनोट २६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४. तुम जो 'कुफ़' करते थे उसके बदले में आज इस ('जहन्नम') का ईंधन बनो।

64. Burn therein this day for that ye disbelieved.

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾

६५. आज हम इन के मुँह पर ठप्पा लगाये देते हैं,[20] और इन के हाथ हम से बोलेंगे और इन के पाँव गवाही देंगे कि ये क्या कमाई करते रहे हैं[21]।

65. This day We seal up mouths, and hands speak out and feet bear witness as to what they used to earn.

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

६६. और यदि हम चाहें तो, इन की आँखें मेट दें फिर ये मार्ग के लिए लपकें। फिर कहाँ से इन्हें सुझाई देगा।

66. And had We willed, We verily could have quenched their eyesight so that they should struggle for the way. Then how could they have seen?

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾

६७. और यदि चाहें, तो इन्हें इन के स्थान ही पर विकृत कर के रख दें, कि न आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।

67. And had We willed, We verily could have fixed them in their place, making them powerless to go forward or turn back.*

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ ع

६८. और जिस को हम दीर्घायु देते हैं, उस की आकृति उलटा फेर देते हैं[22]। क्या फिर ये बुद्धि से काम नहीं लेते?

68. He whom We bring unto old age, We reverse him in creation (making him go back to weakness after strength). Have ye then no sense?

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

६९. और हम ने इस ('नबी') को कविता नहीं सिखाई, और न वह इसे शोभा देती है। यह तो केवल एक अनुस्मारक है और स्पष्ट 'क़ुरआन' है,[23]

69. And We have not taught him (Muhammad) poetry, nor is it meet for him. This is naught else than a Reminder and a Lecture making plain.

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾

७०. ताकि उस व्यक्ति को सचेत कर दे जो जीवित हो,[24] और 'काफ़िरों' पर बात साबित हो जाये।

70. To warn whosoever liveth, and that the word may be fulfilled against the disbelievers.

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

७१. क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हम ने इन के लिए चौपाये पैदा किये, जिन्हें हमारे हाथों ने बनाया,[25] और अब ये उन के मालिक हैं,

71. Have they not seen how We have created for them of Our handiwork the cattle, so that they are their owners.

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

२०. दे० सूरा अर-रहमान आयत ३९।

२१. यहाँ केवल उन के हाथों और पैरों की गवाही का उल्लेख किया गया है दूसरे स्थानों पर बताया गया है कि उन की आँखें, उन के कान, उन की ज़बानें और उन के शरीर की खालें भी इस बात की गवाह होंगी कि वे दुनिया में क्या कुछ करते रहे हैं (दे० सूरा अन-नूर आयत २४ और सूरा हा० मीम० सजदा आयत २०)। एक ओर तो अल्लाह उन के मुँह पर ठप्पा लगा सकता है जैसा कि इस 'आयत' से मालूम हुआ दूसरी ओर अल्लाह के हुक्म से उन की ज़बानें खुद इस बात की गवाही देने लग जायेंगी कि उन्हों ने अपनी ज़बानों से दुनिया में क्या काम लिया था और संसार में क्या कुछ बिगाड़ फैलाते और अल्लाह की अवज्ञा करते रहे हैं।

२२. अर्थात् मनुष्य की दशा बच्चों की-सी कर देते हैं। जिस तरह वह बालावस्था में दूसरों का मुहताज था उसी तरह वह फिर दूसरों का मुहताज हो जाता है। उसी तरह वह भी नासमझी की बातें करने लगता है जिस तरह बच्चे करते हैं।

२३. यह 'काफ़िरों' की बात का उत्तर दिया गया जो 'क़ुरआन' की 'आयतों' और सूरतों को कविता कह कर 'क़ुरआन' के आसमानी 'किताब' होने का इन्कार करते थे।

२४. अर्थात् जिस की दशा पत्थर की-सी न हो बल्कि वह अपनी समझ-बूझ से काम लेता हो। जो सत्य से प्रभावित होता हो।

२५. अर्थात् अपनी बनाई हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. और उन्हें इन के वश में कर दिया, कि उन में से कोई तो इन की सवारी है, और उन में से किसी (के मांस) को ये खाते हैं ?

72. And have subdued them unto them, so that some of them they have for riding, some for food?

وذللناها لهم فمنها ركوبهم ومنها يأكلون ٧٢

७३. और इन के लिए उन में और भी फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं क्या फिर ये कृतज्ञता नहीं दिखलायेंगे ?

73. Benefits and (divers) drinks have they from them. Will they not then give thanks?

ولهم فيها منافع ومشارب أفلا يشكرون ٧٣

७४. और (ये सब कुछ होते हुये) इन्हों ने अल्लाह के सिवा (दूसरे) 'इलाह' (पूज्य) बना लिये हैं कि कदाचित् (उन से) इन्हें मदद पहुँचे।

74. And they have taken (other) gods beside Allah, in order that they may be helped.

واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ٧٤

७५. वे इन की मदद करने का सामर्थ्य नहीं रखते; बल्कि ये उन की फ़ौज हैं जिन्हें हाज़िर होना पड़ेगा।

75. It is not in their power to help them; but they (the worshippers) are unto them a host in arms.

لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ٧٥

७६. अच्छा तो इन की बात (हे 'नबी' !) तुम्हें दुःखी न करे। निस्सन्देह हम जानते हैं जो कुछ ये छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

76. So let not their speech grieve thee (O Muhammad). Lo! We know what they conceal and what proclaim.

فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون ٧٦

७७. [२६]क्या मनुष्य ने देखा नहीं कि हम ने उसे वीर्य्य से पैदा किया ? फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष झगड़ालू (अनुचित वाद-विवाद करने वाला) बन गया।

77. Hath not man seen that We have created him from a drop of seed? Yet lo! he is an open opponent.

أولم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم مبين ٧٧

७८. और उस ने हमारे लिए मिसाल दी,[२७] और अपनी सृष्टि को भूल गया,[२८] कहने लगा : कौन इन हड्डियों में जान डालेगा जब कि ये गल गई होंगी ?

78. And he hath coined for Us a similitude, and hath forgotten the fact of his creation, saying: Who will revive these bones when they have rotted away?

وضرب لنا مثلا ونسي خلقه قال من يحيي العظام وهي رميم ٧٨

७९. कहो : इन में वही जान डालेगा जिस ने इन्हें पहली बार पैदा किया, और वह पैदा करने का हर काम जानता है,

79. Say: He will revive them Who produced them at the first, for He is Knower of every creation.

قل يحييها الذي أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم ٧٩

२६. 'काफ़िर' कहते थे कि 'क़ियामत' की धमकी कब पूरी होगी (दे० आयत ४८)। उन के इसी प्रश्न का उत्तर दिया जा रहा है। मरने के बाद पुनः जीवित होने को 'काफ़िर' असम्भव समझते थे। इसी लिए उन के प्रश्न के उत्तर में मनुष्य के दोबारा जीवित किये जाने की सम्भवना को तर्कयुक्त सिद्ध किया गया है।

इस अवसर पर मक्का के सरदारों में से कोई नबी सल्ल० के पास पुरानी हड्डी ले कर आया और उस गली हुई हड्डी को तोड़ कर कहने लगा कि इन हड्डियों में कौन जान डालेगा।

२७. अर्थात् दूसरे प्राणियों की तरह हमें विवश समझता है और इस तरह का विचार रखता है कि जिस प्रकार मनुष्य किसी मरे हुये व्यक्ति को जीवित करने में असमर्थ है उसी प्रकार हम भी किसी को जीवन प्रदान नहीं कर सकते।

२८. अर्थात् वह इस बात को भूल जाता है कि निर्जीव पदार्थ से ही उस की सृष्टि हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८०. वही जिस ने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बना दी, अब यह है कि तुम उस से आग दहकाते हो।

80. Who hath appointed for you fire from the green tree, and behold! ye kindle from it.

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُم مِّنَ ٱلشَّجَرِ ٱلْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَآ أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

८१. क्या वह जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया इस का सामर्थ्य नहीं रखता कि इन जैसे को पैदा कर दे ? क्यों नहीं ! जब कि वह कुशल स्रष्टा और ज्ञाता है,

81. Is not He Who created the heavens and the earth Able to create the like of them? Aye, that He is! for He is the All-Wise Creator.

أَوَلَيْسَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ بِقَٰدِرٍ عَلَىٰٓ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ ٱلْخَلَّٰقُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

८२. वह तो जब किसी चीज का इरादा करता है, तो उस का काम बस यह है कि उसे कह दे कि हो जा ! और वह हो जाती है।

82. But His command, when He intendeth a thing, is only that he saith unto it: Be! and it is.

إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

८३. तो महिमावान् है वह जिस के हाथ में हर चीज का पूर्ण अधिकार है ! और उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा।

83. Therefor glory be to Him in Whose hand is the dominion over all things! Unto Him ye will be brought back.

فَسُبْحَٰنَ ٱلَّذِى بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

* * * *

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७—अस-साफ़्फ़ात

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अस-साफ़्फ़ात' (Those Who Set the Ranks) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि इस सूरा का अवतरण मक्का के मध्यकाल में हुआ है। जब कि विरोधियों का विरोध बहुत बढ़ चुका था।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' की वार्त्तायें विशेष रूप से 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'क़ियामत' के विषयों पर अवलम्बित हैं। 'ईमान' वालों से मदद का वादा किया गया है[1]। मक्का वालों को साफ़-साफ़ चेतावनी दे दी गई है कि तुम जिस 'रसूल' की हँसी उड़ा रहे हो उसे तुम पर विजय प्राप्त होगी, अल्लाह की सेना को तुम स्वयं देख लोगे। अल्लाह अपने 'रसूल' और 'ईमान' वालों की सहायता अवश्य करेगा। यह चेतावनी उस समय दी गई थी जब कि 'मुसलमान' जिन्हें अल्लाह ने अपना दल कहा है, बुरी तरह सताये जा रहे थे। उन के विजयी होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था। परन्तु कुछ ही बर्षों के बाद[2] लोगों ने वही कुछ देखा जिस की सूचना अल्लाह ने अपनी 'किताब' में दी थी।

इस 'सूरा' में इतिहास से कुछ मिसालें पेश की गई हैं जिन से मालूम होता है कि अल्लाह ने सदैव अपने 'नबियों' की सहायता की है। जिन जातियों ने 'नबियों' को मानने से इन्कार किया उन्हें अपने इन्कार की सज़ा भुगतनी पड़ी। इस सूरा में जहाँ एक ओर 'काफ़िरों' और 'मुशिरकों' की धारणाओं और उन के विचारों का तर्कयुक्त खण्डन करते हुए अल्लाह को यातना से डराया गया है वहीं दूसरी ओर 'ईमान' वालों को तसल्ली दी गई है और उन्हें इसकी हर्षजनक सूचना दे दी गई है कि अन्त में वही विजयी होंगे, 'काफ़िर' परास्त हो कर रहेंगे।

इस 'सूरा' में 'ईमान' वालों और 'ईमान' न लाने वालों दोनों के परिणामों पर पूर्णतः प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत 'सूरा' में जो ऐतिहासिक क़िस्से बयान हुये हैं उन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना वह है जिस का सम्बन्ध हज़रत इबराहीम अ० के पवित्र जीवन से है। हज़रत इबराहीम अ० अल्लाह के संकेत पर अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान (बलिदान) करने पर तैयार हो जाते हैं। और बेटा भी खुशी-खुशी क़ुरबानी के लिए अपने को पेश कर देता है। इस में प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा है। हज़रत इबराहीम अ० के इस अनुपम बलिदान से हर व्यक्ति इस बात को भली-भाँति समझ सकता है कि 'इस्लाम' का अर्थ क्या है। हज़रत इबराहीम अ० की क़ुरबानी के विषय में एक सवाल यह उठाया गया है कि आप ने अपने जिस बेटे को क़ुरबान करने का निश्चय किया था वह हज़रत इसमाईल अ० हैं या हज़रत इसहाक़ अ० ? विचार करने से साफ़ मालूम होता है कि वह हज़रत इसमाईल अ० हैं जिन्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हज़रत इबराहीम अ० ने क़ुरबान कर देने का निश्चय किया था। इसके कई प्रमाण प्रस्तुत

१. दे० आयत १–५; ११–२१; १४९–१८२।
२. जब मुसलमानों को मक्का पर विजय प्राप्त हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किये जा सकते हैं। हम यहाँ कुछ प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं:—

१—सूरा साफ़्फ़ात पर विचार करने से मालूम होता है कि अपने देश को छोड़ते समय हज़रत इबराहीम अ० ने अल्लाह से एक बेटे के लिए प्रार्थना की थी जिस पर अल्लाह ने उन्हें एक बेटे की शुभ-सूचना दी थी। आप की प्रार्थना और जो शुभ-सूचना आप को दी गई है उस से विदित होता है कि जिस बेटे को खुशखबरी दी गई थी वह आप का पहलौठा बेटा था। फिर वही बच्चा जब दौड़ने चलने की आयु को पहुँचा तो उसे ज़ब्ह करने का संकेत हुआ। आप के पहलौठे बेटे हज़रत इसमाईल अ० ही थे; हज़रत इसहाक़ (अ०) उन के बाद पैदा हुये हैं।

२—अल्लाह ने क़ुरबानी का पूरा क़िस्सा बयान करने के बाद कहा है: "हम ने उसे इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक 'नबी', नेक लोगों में" (आयत ११२) इस से साफ़ मालूम होता है कि जब हज़रत इबराहीम अ० महान् परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये, तो उन्हें एक दूसरे बेटे हज़रत इसहाक़ के पैदा होने की शुभ-सूचना दी गई। इस लिए जिस बेटे को ज़ब्ह करने का संकेत हुआ था वह हज़रत इसमाईल अ० ही थे, हज़रत इसहाक़ अ० नहीं।

३—क़ुरआन में एक जगह हज़रत इसहाक़ के पैदा होने की ख़बर देते हुए यह शुभ-सूचना भी दी गई है कि उन के यहाँ याक़ूब नामक बेटा होगा[१] अब यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि जिस बेटे के पैदा होने के साथ ही यह सूचना भी दे दी गई हो कि उस के यहाँ एक बेटा होगा, यदि हज़रत इबराहीम अ० स्वप्न में देखते कि उसे ज़ब्ह कर रहे हैं तो आप यह कैसे समझ सकते थे कि उसे क़ुरबान करने का संकेत किया जा रहा है।

४—क़ुरआन में हज़रत इसहाक़ अ० को "ज्ञानी बेटा" कहा गया है[२] परन्तु जिस बेटे के ज़ब्ह करने का संकेत हज़रत इबराहीम अ० को हुआ है उसे "सहनशील बेटा" कहा है इस से भी मालूम होता है कि ज़ब्ह करने का आदेश हज़रत इसमाईल अ० ही के लिए हुआ था।

५—जन-श्रुतियों से यह बात मालूम है कि हज़रत इसमाईल अ० के 'फ़िदया' के रूप में जो मेंढा क़ुरबान किया गया था उस के सींग हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ज़ुबैर के समय तक काबा में मौजूद थे। ये सींग हज्जाज बिन यूसुफ़ के समय में खो गये जब कि उस ने काबा का घेरा डाला था। इस से सिद्ध होता है कि क़ुरबानी की घटना का सम्बन्ध शाम (Syria) से नहीं बल्कि मक्का से है जहाँ हज़रत इबराहीम ने इसमाईल अ० को बसाया था।

अरब के लोग शताब्दियों से यह बात जानते चले आ रहे हैं कि यह अनुपम क़ुरबानी हज़रत इबराहीम अ० ने 'मिना' के स्थान पर पेश की थी। शुरू से ले कर आज तक 'हज्ज' के अवसर पर यहाँ क़ुरबानियाँ की जाती हैं; और इसे हज़रत इबराहीम अ० की यादगार समझा जाता है। इस के विपरीत हम देखते हैं कि हज़रत इसहाक़ अ० की नस्ल में कोई ऐसी प्रथा कभी प्रचलित नहीं रही है जिस में उन की जाति के लोग हज़रत इबराहीम अ० की यादगार के रूप में एक साथ क़ुरबानी करते रहे हों।

बाइबिल में इस सिलसिले में परस्पर विरोधी बातें बयान हुई हैं। बाइबिल में एक ओर तो यह कहा गया है कि अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० से जिस बेटे की क़ुरबानी माँगी थी वह हज़रत इसहाक़ अ० थे और साथ ही यह भी कहा गया है कि वह इकलौते थे[३]। हालाँकि हज़रत इसहाक़ अ० इकलौते न थे। बाइबिल के अपने उल्लेखों से भी निश्चित रूप से यह मालूम होता है कि हज़रत इसहाक़ अ० इकलौते नहीं थे; इकलौते हज़रत इसमाईल ही थे[४]।

१. दे० सूरा हूद आयत ७१।
२. दे० सूरा अल-हिज्र आयत ५३; अज़-ज़ारियात आयत २८।
३. दे० बाइबिल 'पैदाइश' (Gen.) २२ ; १–२।
४. इस के लिए देखिए 'पैदाइश' १६ : १–३, ११, १६ और १७ : १५–२५ और २१ : ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अस-साफ़्फ़ात

(मक्का में उतरी—'आयतें' १८२)

THOSE WHO SET THE RANKS

Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَانِ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है उन की जो परा जमा कर पंक्ति-बद्ध होते हैं[1]

1. By those who set the ranks in battle order.

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝١

२. फिर डाँटते-झिड़कते हैं

2. And those who drive away (the wicket) with reproof.

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝٢

३. फिर 'ज़िक्र' का पाठ करते हैं,[2]

3. And those who read (the Word) for a reminder.

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝٣

४. तुम्हारा इलाह (पूज्य) तो निश्चय ही अकेला है;

4. Lo! thy Lord is surely One;

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝٤

५. जो आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उन सब का 'रब' है और समस्त उदय-स्थलों[3] का 'रब' (स्वामी) है।

5. Lord of the heavens and of the earth and all that is between them, and Lord of the sun's risings.

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥

६. हम नें दुनिया के आकाश[4] (निकटवर्ती आकाश) को एक शोभा से सुशोभित किया, तारों से,

6. Lo! We have adorned the lowest heaven with an ornament, the plants;

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ۝٦

१. दे० आयत १६५।

२. ये विशेषतायें 'फ़िरिश्तों' से सम्बन्ध रखती हैं जैसा कि 'क़ुरआन' के अधिकतर टीकाकारों का मत है। उन की क़सम खाने का अर्थ वास्तव में उन्हें ग़वाह ठहराना या प्रमाण के रूप में उन का उल्लेख करना है। 'फ़िरिश्तों' को यहाँ इस बात का गवाह ठहराया गया है कि मनुष्यों का 'इलाह' (पूज्य) एक ही है (दे० आयत ४)। 'फ़िरिश्तों' को यद्यपि हम अपनी आँखों से नहीं देखते परन्तु यह संसार और इस की व्यवस्था हमारे सामने है; सांसारिक घटनाओं से हम भली-भाँति परिचित हैं। 'फ़िरिश्ते' अल्लाह की बन्दगी मे लगे हुये हैं (दे० आयत १–३, १६५)। वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते और उस के हुक्म से दुनिया के इन्तज़ाम में लगे रहते हैं। 'फ़िरिश्तों' की क़सम खा कर दूसरे शब्दों में यह बात कही गई है कि संसार का इन्तज़ाम जो अल्लाह की बन्दगी में चल रहा है और अल्लाह की बन्दगी से विमुख होने के जो बुरे परिणाम हमारे सामने आते हैं और शुरू से ले कर आज तक निरन्तर जिस प्रकार एक ही सच्चाई की याददिहानी विभिन्न ढंग से कराई जा रही है ये सब चीज़ें इसी बात की गवाही देती हैं कि मनुष्य का पूज्य एक अल्लाह के सिवा कोई दूसरा नहीं है।

३. उदय-स्थल अथवा पूर्व को यहाँ बहुवचन प्रयोग किया गया है। सूर्य सदा एक ही स्थल से उदय नहीं होता बल्कि हर एक दिन वह अपने उदय-स्थलों को बदलता रहता है। इसके अलावा वह सम्पूर्ण भू-मण्डल पर एक ही समय में उदय नहीं होता। पृथ्वी के विभिन्न भागों पर वह विभिन्न समयों में उदय होता है।

अल्लाह जिस तरह उदय-स्थलों का स्वामी है उसी प्रकार वह अस्त होने के स्थलों का भी मालिक है (दे० सूरा अल-मआरिज आयत ४०)।

४. अर्थात् निकटवर्ती आकाश, जिस का निरीक्षण हम बिना किसी दूरदर्शी यन्त्र की सहायता से करते रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और इस तरह उसे हर सरकश 'शैतान' से सुरक्षित भी कर दिया।

7. With security from every froward devil.

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧

८. ये ('शैतान') 'मलये आला'[५] (सब से ऊँचे दरबार वालों) की ओर कान नहीं लगा सकते, हर ओर से फेंके जाते हैं,

8. They cannot listen to the Highest Chiefs for they are pelted from every side.

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝٨

९. हांक देने को, और उन के लिए स्थायी यातना है;

9. Outcast, and theirs is a perpetual torment;

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝٩

१०. परन्तु जो कोई उचक कर (उन में से) कुछ ले उड़े, तो एक चमकती हुई अग्नि-शिखा उस का पीछा करती है[६]।

10. Save him who snatcheth a fragment, and there pursueth him a piercing flame.

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠

११. अब इन से पूछो कि इनकी बनावट ज़्यादा मज़बूत है[७] या उन की जिन्हें हम ने पैदा कर रक्खा है? इनको तो हम ने लेसदार गारे से पैदा किया है[८]।

11. Then ask them (O Muhammad): Are they stronger as a creation, or those (others) whom We have created? Lo! We created them of plastic clay.

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝١١

१२. बात यह है कि तुम तो अचम्भे में हो और ये हंसी उड़ाते हैं

12. Nay, but thou dost marvel when they mock.

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝١٢

१३. और जब इन्हें चेताया जाता है तो ये नहीं चेतते,[९]

13. And heed not when they are reminded.

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝١٣

१४. और जब कोई निशानी देखते हैं तो परस्पर उसे ठट्ठों में उड़ाते हैं।

14. And seek to scoff when they behold a portent.

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝١٤

१५. और कहते हैं: यह तो बस खुला हुआ जादू है;

15. And they say: Lo! this is mere magic;

وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥

५. अर्थात् (The Highest Chiefs.) 'फ़िरिश्तों' का गरोह।

६. दे० सूरा अल-हिज्र फ़ुटनोट १२। इन आयतों से मालूम होता है कि 'शैतानों' और 'जिन्नों' की पहुँच ऊपरी लोक तक नहीं हो सकती न वे इस का सामर्थ्य रखते हैं कि ऊपरी लोक की बातें सुन कर उन से दूसरों को सूचित कर सकें। यदि इन के कानों में कोई भनक पड़ भी जावे तो अन्धकार को भेदने वाली अग्नि-शिखा इन के पीछे लग जाती है। ऊपरी लोक और परोक्ष की बातें यदि मालूम हो सकती हैं और मनुष्य को यथार्थ का ज्ञान यदि प्राप्त हो सकता है तो केवल 'वह्य' के द्वारा। अतः यह 'क़ुरआन' जिसे 'रसूल' पेश कर रहा है उन 'काहिनों' (Soothsayers) और तान्त्रिकों की वाणी नहीं है जो अपना नाता किसी 'शैतान' 'जिन्न' आदि से जोड़ रखते हैं और वे 'शैतान' ऊपरी लोक से उन के पास कुछ सुन-गुन ले कर आने की चेष्टा करते हैं। 'क़ुरआन' का इन्कार करने वाले जहां नबी सल्ल० के बारे में यह कहते थे कि यह व्यक्ति जादू का मारा हुआ है या इसे उन्माद हो गया है वहीं वे यह भी कहते थे कि क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' नहीं है बल्कि यह 'काहिन' (Diviner) अथवा दैवज्ञ की वाणी है (दे० सूरा अल-हाक़्क़ा आयत ४२)। इन 'आयतों' से इस तरह के विचारों का पूर्णतः खण्डन हो जाता है।

७. अर्थात् इन की हैसियत ही क्या है जो ये घमण्ड में पड़े हुये हैं और 'आख़िरत' का इन्कार किये जा रहे हैं (दे० आयत १६)।

८. अल्लाह ने मनुष्य की रचना मिट्टी से की फिर उस की नस्ल को वीर्य्य द्वारा चलाया। वीर्य्य भी मिट्टी ही से बनाता है। जब मिट्टी में जीवन-संचार सम्भव है तो कल इसी मिट्टी से मनुष्य का दोबारा जीवित कर के उठाया जाना असम्भव कैसे हो गया।

९. दे० आयत १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. भला जब हम मर चुके हों और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायें, तो फिर वास्तव में हम (पुनः जीवित कर के) उठा खड़े किये जायेंगे[१०] ?	16. When we are dead and have become dust and bones, shall we then, forsooth, be raised (again)?	ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾
१७. और क्या हमारे अगले पूर्वज भी ?	17. And our forefathers?	اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾
१८. कहो : हाँ और तुम हीन (अपमानित) होगे।	18. Say (O Muhammad): Yea, in truth; and ye will be brought low.	قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿١٨﴾
१९. वह तो बस एक ही झिड़की होगी, फिर ये होंगे कि देखने लगेंगे,	19. There is but one Shout, and lo! they behold.	فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾
२०. और कहेंगे : हाय, हमारा दुर्भाग्य ! यह तो बदले (प्रतिकार) का दिन है।	20. And say: Ah, woe for us! This is the Day of Judgement.	وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾
२१. यह वही फ़ैसले का दिन है, जिसे तुम झुठलाते थे।	21. This is the Day of Separation, which ye used to deny.	هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ ع
२२. (कहा जायेगा) : घेर लाओ उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया,[११] और उन के जोड़ी वालों (संघाती) को और उस को जिसे ये पूजते थे	22. (And it is said unto the angels): Assemble those who did wrong, together with their wives and what they used to worship;	اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾
२३. अल्लाह के सिवा, फिर उन सब को भड़कती आग ('जहन्नम') का मार्ग दिखाओ;[१२]	23. Instead of Allah, and lead them to the path to hell;	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾
२४. और तनिक इन्हें ठहराओ, इन से पूछना है।	24. And stop them, for they must be questioned.	وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾
२५. तुम एक-दूसरे की सहायता क्यों नहीं करते ?	25. What aileth you that ye help not one another?	مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾
२६. बल्कि ये तो अपने-आप को हवाले किये दे रहे हैं।	26. Nay, but this day they make full submission.	بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾
२७. और ये परस्पर एक-दूसरे से प्रश्न करने लगे।	27. And some of them draw near unto others, mutually questioning.	وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

१०. दे० आयत ५३।

११. इन का सब से बड़ा ज़ुल्म यह था कि इन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी की और उस के साथ दूसरों को शरीक ठहराया।

१२. ज़ालिम लोगों के साथ उन के दो प्रकार के पूज्य 'जहन्नम' में डाले जायेंगे एक तो वे मनुष्य और 'शैतान' जिन की यह इच्छा रही है और वे इस के लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि लोग अल्लाह को छोड़ कर उन्हीं की बन्दगी में लग जायें। दूसरे पूज्य उन के पत्थर, वृक्ष और मूर्तियाँ आदि हैं जिन्हें दुनिया में लोग पूजते रहे हैं उन्हें 'जहन्नम' में इस लिए डाला जायेगा ताकि उन्हें देख कर अपराधी लोगों का दुःख और सन्ताप और बढ़ जाये और वे अपनी मूर्खता पर विलाप करते रहें। रहे वे 'नबी', महापुरुष और 'फ़रिश्ते' जिन्हें लोग अपना उपास्य और देवता बना कर पूजते रहे हैं हालाँकि उन्हों ने यह कभी नहीं कहा कि लोग उन की पूजा करें बल्कि वे तो लोगों को 'शिर्क' से रोकते ही रहे, ज़ाहिर है वे 'नबी', महापुरुष और 'फ़रिश्ते' 'जहन्नम' में अपराधियों के साथ नहीं जलेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. बोले : तुम हमारे पास आते थे दायें से......

28. They say: Lo! ye used to come unto us, imposing, (swearing that ye spoke the truth.)

قَالُوٓا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

२९. उन्हों[13] ने कहा : नहीं, बल्कि तुम स्वयं 'ईमान' वाले न थे।

29. They answer: Nay, but ye (yourselves) were not believers.

قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

३०. हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे।

30. We had no power over you, but ye were wayward folk.

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾

३१. तो अब हम पर हमारे 'रब' की बात साबित हो गई। निश्चय ही हम (यातना का) मज़ा चखने वाले हैं।

31. Now the Word of our Lord hath been fulfilled concerning us. Lo! we are about to taste (the doom).

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ إِنَّا لَذَآئِقُونَ ﴿٣١﴾

३२. तो हम ने तुम्हें बहकाया। हम स्वयं बहके हुये थे।

32. Thus we misled you. Lo! we were (ourselves) astray.

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

३३. इस तरह वे सब उस दिन यातना में (बराबर के) शरीक होंगे।

33. Then lo! this day they (both) are sharers in the doom.

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

३४. हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते हैं।

34. Lo! thus deal We with the guilty.

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

३५. ये लोग थे कि जब इन से कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है, तो बड़े बनने लगते थे

35. For when it was said unto them, There is no god save Allah, they were scornful.

إِنَّهُمْ كَانُوٓا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

३६. और कहते थे : क्या हम एक कवि उन्मादी के लिए अपने देवताओं को छोड़ सकते हैं?

36. And said: Shall we forsake our gods for a mad poet?

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوٓا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾

३७. नहीं, बल्कि वह हक़ ले कर आया है, और उस ने 'रसूलों' की तसदीक़ की[14]।

37. Nay, but he brought the Truth, and he confirmed those sent (before him).

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

३८. निश्चय ही तुम दुःख देने वाली यातना का मज़ा चखने वाले हो—

38. Lo! (now) verily ye tasty the painful doom —

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

३९. और तुम्हें वही बदला दिया जायेगा जो कुछ तुम करते थे—

39. Ye are required naught save what ye did —

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

१३. ऐसा लगता है कि बात पूरी होने से पहले ही जवाब देने लगे।

१४. उस ने पिछले किसी 'रसूल' का विरोध नहीं किया बल्कि उस ने पिछले सभी 'रसूलों' का समर्थन किया इस लिए उसे 'रसूल' मानने में किसी पक्षपात को बाधक नहीं होना चाहिए। उस ने उस सत्य की ओर लोगों को बुलाया जिस की ओर आरम्भ से सब 'नबी' बुलाते आ रहे थे। फिर तुम्हारे पास उस के आने से पिछले 'नबियों' की दी हुई उन सूचनाओं की पुष्टि हुई जो उन्हों ने उस के बारे में दी थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के[१५] (कि उन्हें यह बुरा दिन न देखना पड़ेगा);

40. Save single-minded slaves of Allah;

إلا عباد الله المخلصين ﴿٤٠﴾

४१. उन के लिए जानी-बूझी रोज़ी है,[१६]

41. For them there is a known provision,

أولئك لهم رزق معلوم ﴿٤١﴾

४२. मेवे[१७]। और उन का सम्मान किया जायेगा

42. Fruits. And they will be honoured,

فواكه وهم مكرمون ﴿٤٢﴾

४३. नेमत-भरी 'जन्नतों' में,

43. In the Gardens of delight,

في جنت النعيم ﴿٤٣﴾

४४. तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे;

44. On couches facing one another;

على سرر متقبلين ﴿٤٤﴾

४५. निथरी बहती (शराब के स्रोत) से मद्य-पात्र भर-भर कर उन के बीच फिराये जायेंगे,

45. A cup from a gushing spring is brought round for them,

يطاف عليهم بكأس من معين ﴿٤٥﴾

४६. उज्ज्वल, पीने वालों के लिये आस्वाद,

46. White, delicious to the drinkers,

بيضاء لذة للشربين ﴿٤٦﴾

४७. न उस में कोई ख़राबी होगी और न वे उस से मतवाले होंगे[१८]।

47. Wherein there is no headache nor are they made mad thereby.

لا فيها غول ولا هم عنها ينزفون ﴿٤٧﴾

४८. और उन के पास निगाहें बचाने वाली,[१९] सुन्दर आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी,

48. And with them are those of modest gaze, with lovely eyes.

وعندهم قصرت الطرف عين ﴿٤٨﴾

४९. ऐसी (निर्मल) मानो छिपे हुए अण्डे हैं[२०]।

49. (Pure) as they were hidden eggs (of the ostrich).

كأنهن بيض مكنون ﴿٤٩﴾

५०. फिर वे एक-दूसरे से परस्पर प्रश्न करने लगे।

50. And some of them draw near unto others, mutually questioning.

فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ﴿٥٠﴾

५१. उन में से एक कहने वाले ने कहा : (दुनिया में) मेरा एक मिलने वाला था

51. A speaker of them saith: Lo! I had a comrade,

قال قائل منهم إني كان لي قرين ﴿٥١﴾

५२. जो (मुझ से) कहा करता था : क्या तुम भी तसदीक़ करने वालों में से हो ?

52. Who used to say: Art thou in truth of those who put faith (in his words)?

يقول أإنك لمن المصدقين ﴿٥٢﴾

१५. दे० आयत ७४।

१६. अर्थात् जिस के बारे में हमें पहले से सूचित किया गया था और जिस के मिलने पर हमें पूरा विश्वास था।

१७. अर्थात् हर प्रकार की स्वादिष्ट खाने की चीज़ें वहाँ मिलेंगी।

१८. अर्थात् 'जन्नत' की शराब में आनन्द तो पूरा मिलेगा परन्तु उस के पीने से न तो कोई शारीरिक हानि पहुँचेगी कि आदमी का स्वास्थ्य बिगड़ जाये और न मनुष्य के मस्तिष्क पर उस का कोई बुरा प्रभाव पड़ेगा।

१९. अर्थात् वे अपने पति के सिवा किसी दूसरे की ओर निगाह नहीं करेंगी।

२०. अर्थात् वे अत्यन्त सुन्दर होंगी। नबी सल्ल० ने बताया है कि उन की कोमलता एवं सुकुमारता उस झिल्ली जैसी होगी जो अण्डे के छिलके और उस के गूदे के बीच होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. क्या वास्तव में, जब हम मर चुके हों और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायें—तो क्या हमें (हमारे कर्मों का) बदला दिया जायेगा ?	53. Can we, when we are dead and have become mere dust and bones — can we (then verily be brought to book?	ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾
५४. उस ने कहा : क्या तुम (उसे) झाँक कर देखोगे ?	54. He saith: Will ye look?	قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾
५५. फिर झाँका तो देखा उसे भड़कती आग ('जहन्नम') की गहराई में।	55. Then looketh he and seeth him in the depth of hell.	فَاطَّلَعَ فَرَءَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾
५६. कहा : अल्लाह की क़सम, तू तो क़रीब था कि मुझे तबाह ही कर देता,	56. He saith: By Allah, thou verily didst all but cause my ruin,	قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾
५७. और यदि मेरे 'रब' की कृपा न होती, तो मैं भी उन में से होता जो (यातना के लिए) हाजिर किये गये[२१]।	57. And had it not been for the favour of my Lord, I too had been of those haled forth (to doom).	وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾
५८. अच्छा तो क्या अब हमें मरना नहीं है	58. Are we then not to die:	أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾
५९. सिवाय हमारी पहली मृत्यु के, और न हमें कोई यातना दी जायेगी !	59. Saving our former death, and are we not to be punished?	إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾
६०. निश्चय ही यही बड़ी सफलता है।	60. Lo! this is the supreme triumph.	إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾
६१. ऐसी ही चीज़ के लिए, फिर तो कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए।	61. For the like of this, then, let the workers work.	لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿٦١﴾
६२. क्या यह अच्छी आव-भगत है, या 'ज़क़्क़ूम'[२२] का वृक्ष ?	62. Is this better as a welcome, or the tree of Zaqqum?	أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾
६३. निश्चय ही हम ने उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए यातना बना दिया है।	63. Lo! We have appointed it a torment for wrong-doers.	إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾
६४. वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग ('जहन्नम') की तह से निकलता है[२३]	64. Lo! it is a tree that springeth in the heart of hell,	إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾
६५. उस के गाभे ऐसे हैं जैसे 'शैतानों' के सिर[२४]	65. Its crop is as it were the heads of devils.	طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿٦٥﴾

२१. इस से मालूम होता है कि 'आखिरत' में मनुष्य को देखने, सुनने और बोलने की असाधारण शक्ति प्राप्त होगी। जन्नत में बैठा हुआ एक व्यक्ति सरलतापूर्वक बिना किसी यन्त्र की सहायता के एक ऐसे व्यक्ति को देख लेगा और उससे बात-चीत कर लेगा जो उस से बहुत दूर 'जहन्नम' में पड़ा होगा।

२२. यह एक प्रकार का वृक्ष है इस का मजा कड़ुवा और इस की गन्ध अत्यन्त अप्रिय होती है। इस का दूध यदि शरीर में लग जाये तो सूजन आ जाती है। यह वृक्ष तिहामा के क्षेत्र में होता है। सम्भवत: यह थूहर का वृक्ष या इसी प्रकार का कोई वृक्ष है।

२३. यह 'जहन्नम' का वृक्ष है इस से लाभ की अपेक्षा तकलीफ़ ही होगी।

२४. अर्थात् अत्यन्त कुरूप।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६६. तो ये ('जहन्नम' के लोग) उसे खायेंगे, और उसी से (अपने) पेट भरेंगे।

66. And lo! they verily must eat thereof, and fill (their) bellies therewith.

فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ٦٦

६७. फिर इस के ऊपर से पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा[२५]

67. And afterward, lo! thereupon they have a drink of boiling water.

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ٦٧

६८. और इस के बाद, इन की वापसी उसी भड़कती हुई आग ('जहन्नम') की ओर होगी[२६]।

68. And afterward, lo! their return is surely unto hell.

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ٦٨

६९. निश्चय ही इन्हों ने अपने पूर्वजों को पथ-भ्रष्ट पाया;

69. They indeed found their fathers astray.

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ٦٩

७०. फिर ये उन्हीं के पद-चिह्नों पर दौड़ चले[२७]

70. But they make haste (to follow) in their footsteps.

فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ٧٠

७१. और इन से पहले बहुत से अगले लोग पथ-भ्रष्ट हो चुके हैं,

71. And verily most of the men of old went astray before them.

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ٧١

७२. और उन में हम ने सचेत करने वाले ('रसूल') भेजे थे।

72. And verily We sent among them warners.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ٧٢

७३. फिर देख लो उन सचेत किये जाने वालों का कैसा परिणाम हुआ,

73. Then see the nature of the consequence for those warned.

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ٧٣

७४. सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के (कि उन्हें यह बुरा दिन नहीं देखना पड़ा)।

74. Save single-minded slaves of Allah.

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ٧٤

७५. पुकारा था हमें (इस से पहले) नूह ने[२८] तो (देखो) हम कैसे अच्छे जवाब देने वाले[२९] थे।

75. And Noah verily prayed unto Us, and gracious was the Hearer of his prayer.

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ٧٥

७६. हम ने उसे और उस के लोगों को बहुत बड़ी घुटन से[३०] बचा लिया,

76. And We saved him and his household from the great distress.

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ٧٦

२५. इस सूरा की आयत ६२-६७ और सूरा अल-वाक़िआ की आयत ५२-५५ में बड़ी समानता पाई जाती है।

२६. 'जहन्नम' वालों को जब भूख और प्यास सतायेगी तो उन्हें 'ज़क़्क़ूम' के वृक्षों और खौलते हुये पानी के स्रोतों की ओर हाँक देंगे जब वे खा-पी चुकेंगे तो उन्हें फिर 'जहन्नम' में उन के स्थानों की ओर लौटा दिया जायेगा।

२७. अल्लाह की दी हुई बुद्धि से कुछ काम न लिया और न समझाने वालों की बात सुनी। जिस मार्ग पर चलते हुये अपने बड़ों को पाया स्वयं भी उसी मार्ग पर आँखें बन्द कर के चल पड़े।

२८. हज़रत नूह अ० लम्बी अवधि तक अपनी जाति वालों को सत्य की ओर बुलाते रहे अन्त में निराश हो कर उन्हों ने अल्लाह से फ़रियाद की थी (दे० सूरा अल-क़मर आयत १०)।

२९. अर्थात् उस की पुकार पर पहुँचने वाले थे।

३०. अर्थात् उस कष्ट और दुःख से जो हज़रत नूह अ० को अत्याचारी जाति से निरन्तर पहुँच रहा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. और हम ने उस की नस्ल को ही बाक़ी रक्खा,[३१]

77. And made his seed the survivors.

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾

७८. और उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा

78. And left for him among the later folk (the salutation):

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

७९. सलाम है नूह पर ! समस्त संसार वालों में।

79. Peace be unto Noah among the people!

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾

८० निस्सन्देह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।

80. Lo! thus do We reward the good.

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

८१. निश्चय ही वह हमारे 'ईमान' वाले बन्दों में स था।

81. Lo! he is one of Our believing slaves.

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾

८२. फिर दूसरों को हम ने डुबो दिया।

82. Then We did drown the others.

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

८३. और उसी के पन्थ पर चलने वालों में से इबराहीम[३२] था

83. And lo! of his persuasion verily was Abraham.

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾

८४. जब वह अपने 'रब' के पास भले-चंगे हृदय[३३] के साथ आया;[३४]

84. When he came unto his Lord with a whole heart;

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

८५. जब उस ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : तुम क्या पूजते हो ?

85. When he said unto his father and his folk: What is it that ye worship?

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾

८६. क्या गढ़े हुए 'इलाह' (पूज्य) अल्लाह के सिवा चाहते हो ?

86. Is it a falsehood — gods beside Allah — that ye desire?

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

८७. आखिर अल्लाह, सम्पूर्ण संसार के 'रब' के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है ?

87. What then is your opinion of the Lord of the Worlds?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

८८. फिर उस ने तारों पर एक निगाह डाली[३५]

88. And he glanced a glance at the stars.

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

८९. और कहा : मैं बीमार हूँ[३६] !

86. Then said: Lo! I feel sick!

فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾

३१. जो लोग हज़रत नूह अ० का विरोध कर रहे थे उन का सर्वनाश हो गया। इस आयत का एक अर्थ यह भी लिया जाता है कि अल्लाह ने केवल हज़रत नूह अ० की नस्ल को बाक़ी रक्खा दूसरी समस्त नस्लों का अन्त हो गया।

३२. हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा क़ुरआन में कई जगहों पर बयान हुआ है। क़ुरआन के दूसरे स्थान भी सामने रहें।

३३. शुद्ध हृदय के साथ एकाग्रचित्त हो कर।

३४. अर्थात् सब से कट कर एक अल्लाह की ओर प्रवृत्त हुआ।

३५. यह अरब वालों का मुहावरा है अर्थात् उस ने सोचा या वह विचार करने लगा।

३६. हज़रत इबराहीम अ० को वास्तव में कोई तकलीफ़ रही होगी। हज़रत इबराहीम अ० की इस बात को झूठ कहने के लिए पहले यह मालूम होना चाहिए कि आप को उस समय कोई तकलीफ़ नहीं थी केवल बहाने के रूप में उन्हों ने उस समय एक बात कही थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९०. इस पर वे उस के पास से पीठ फेरे चले गये।	90. And they turned their backs and went away from him.	فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾
९१. फिर वह चुप-चाप उनके देवताओं (मूर्तियों) की ओर गया और कहा : तुम खाते नहीं !	91. Then turned he to their gods and said: Will ye not eat?	فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾
९२. तुम बोलते क्यों नहीं ?	92. What aileth you that ye speak not?	مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾
९३. फिर वह उन पर पिल पड़ा ! और सीधे हाथ से चोटें लगाईं।	93. Then he attacked them, striking with his right hand.	فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾
९४. फिर वे लोग भागे-भागे उस के पास आये।	94. And (his people) came towards him, hastening.	فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾
९५. उस ने कहा : क्या तुम उस चीज़ को पूजते हो जिसे स्वयं तराशते हो	95. He said: Worship ye that which ye yourselves do carve.	قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾
९६. जब कि अल्लाह ही ने तुम्हें भी पदा किया है और जो कुछ तुम बनाते हो उसे भी ?	96. When Allah hath created you and what ye make?	وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾
९७. उन्हों ने कहा : इस के लिए एक (अग्नि-) गृह तैयार करो और इसे भड़कती हुई आग में डाल दो।	97. They said: Build for him a building and fling him in the red-hot fire.	قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾
९८. उन्हों ने उस के साथ एक चाल चलनी चाही, परन्तु हम ने उन्हीं को नीचा दिखा दिया[३७]।	98. And they designed a snare for him, but We made them the undermost.	فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾
९९. (इबराहीम ने) कहा : मैं अपने 'रब' की ओर जाता हूँ[३८] वह मुझे मार्ग दिखायेगा[३९]	99. And he said: Lo! I am going unto my Lord Who will guide me.	وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾
१००. 'रब' ! मुझे नेकों में से कोई (बेटा) प्रदान कर[४०]।	100. My Lord! Vouchsafe me of the righteous.	رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾
१०१. तो हम ने उसे एक सहनशील लड़के की शुभ-सूचना दी।	101. So We gave him tidings of a gentle son.	فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

३७. अर्थात् हज़रत इबराहीम अ० के वैरी अपने ध्येय में सफल नहीं हो सके अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० को आग में जलने से बचा लिया (दे० सूरा अल-अंबिया आयत ६९; अल-अनकबूत आयत २४)।

३८. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत २६।

३९. यह बात हज़रत इबराहीम अ० ने अपना देश त्यागते समय कही।

४०. उस समय आप के कोई औलाद न थी; आप अपनी पत्नी और अपने भतीजे को ले कर निकले थ। औलाद की शुभ-सूचना हज़रत इबराहीम अ० को प्रार्थना करते ही नहीं दी गई। आप को अल्लाह ने दीर्घायु में औलाद प्रदान की है (दे० सूरा इबराहीम आयत ३९)। बाइबिल से मालूम होता है कि हज़रत इबराहीम अ० के बड़े बेटे हज़रत इसमाईल अ० के जन्म के समय हज़रत इबराहीम अ० की अवस्था ८६ वर्ष की थी और दूसरे बेटे हज़रत इसहाक़ का जन्म उस समय हुआ है जब आप १०० वर्ष के हो चुके थे (दे० पैदाइश (Gen.) १६ : १६ और २१ : ५)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२. और जब वह (लड़का) उस के साथ दौड़-धूप करने की अवस्था को पहुँचा, तो (एक दिन इबराहीम ने) कहा : हे मेरे बेटे ! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझे ज़ब्ह कर रहा हूँ[४१]। अब तू सोच ले कि तेरा क्या विचार है ?

उस ने कहा : हे मेरे बाप ! जो कुछ आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा, तो आप मुझे 'सब्र' करने वालों में से पायेंगे।

102. And when (his son) was old enough to walk with him, (Abraham) said: O my dear son I have seen in a dream that I must sacrifice thee. So look, what thinkest thou? He said: O my father! Do that which thou art commanded. Allah willing, thou shalt find me of the steadfast.

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّيٓ
أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيٓ أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ
مَاذَا تَرٰى ۚ قَالَ يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ
سَتَجِدُنِيٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِينَ ﴿١٠٢﴾

१०३. फिर, जब दोनों ने अपने-आप को अर्पण कर दिया, और उस ने (इबराहीम ने) उस को माथे के बल डाल दिया[४२]

103. Then, when they had both surrendered (to Allah), and he had flung him down upon his face,

فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾

१०४. और (ज्यों ही यह हुआ) हम ने उसे पुकारा : हे इबराहीम !

104. We called unto him: O Abraham!

وَنٰدَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيمُ ﴿١٠٤﴾

१०५. तू ने स्वप्न को सच्चा कर दिखाया। निस्सन्देह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं[४३]।

105. Thou hast already fulfilled the vision. Lo! thus do We reward the good.

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾

१०६. निश्चय ही यह खुली हुई परीक्षा थी।

106. Lo! that verily was a clear test.

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾

१०७. और हम ने उस (लड़के) की जान बचाने के लिए एक बड़ी क़ुरबानी दी[४४]।

107. Then We ransomed him with a tremendous victim.

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾

४१. आप ने स्वप्न में यही देखा था कि बेटे को ज़ब्ह कर रहे हैं यह नहीं देखा था कि ज़ब्ह कर दिया है। यद्यपि आप ने उस समय स्वप्न का अर्थ यही समझा कि हम बेटे को ज़ब्ह कर दें परन्तु अल्लाह तो केवल उतना ही देखना चाहता था जो कुछ कि उन्हें स्वप्न में दिखाया गया था। अल्लाह को हज़रत इबराहीम अ० की परीक्षा अभीष्ट थी और यह बात कि बाप की तरह बेटे का भी जीवन और मृत्यु सब-कुछ अल्लाह के लिए हो जाये। बेटे को अल्लाह के 'दीन' और उस के घर ('काबा') के सेवा-कार्य के लिये अर्पण कर दिया जावे। हज़रत इबराहीम अ० इस महान् परीक्षा में पूरे उतरे। उन्हों ने सिद्ध कर दिया कि अल्लाह के आदेश पर वे अपनी प्रिय-से-प्रिय चीज़ भी निछावर कर सकते हैं यहाँ तक कि वे बुढ़ापे की औलाद को बलिदान करने का भी साहस रखते हैं।

४२. कल्पना कीजिए उस दृश्य की जब हज़रत इबराहीम बेटे को माथे के बल ज़मीन पर डाल कर क़ुरबान करने को तैयार हो गये।

४३. अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० को परीक्षा में पूरा उतरने का श्रेय प्रदान किया बेटे की जान भी बचा दी और उन्हें ऊँचा दरजा भी प्रदान किया। उत्तमकरों पर अल्लाह की ऐसी ही कृपा-दृष्टि होती है।

४४. बाइबिल और इस्लामी कथनों से मालूम होता कि "बड़ी क़ुरबानी" से अभिप्रेत यहाँ वह मेंढा है जो उस समय 'फ़िरिश्ते' ने हज़रत इबराहीम अ० के सामने इस लिए प्रस्तुत किया था ताकि बेटे के स्थान पर उसे ज़ब्ह कर दें। उस मेंढे को एक अनुपम बलिदान की पूर्ति का साधन, और हज़रत इबराहीम अ० के सत्यनिष्ठ बेटे का 'फ़िदया' ठहराया गया था इसी लिए उसे "बड़ी क़ुरबानी" कहा गया। इस के अतिरिक्त उसे "बड़ी क़ुरबानी" कहने का एक कारण यह भी है कि अल्लाह ने 'क़ियामत' तक के लिए यह रीति प्रचलित कर दी कि उसी तिथि को सम्पूर्ण संसार के मुस्लिम जानवरों की क़ुरबानी करें और हज़रत इबराहीम अ० के अनुपम संकल्प और बलिदान की शुभ-स्मृति को ताज़ा करते रहें ताकि इस प्रकार उन के हृदयों में भी उच्च भावनाओं और पवित्र संकल्पों तथा अनुपम भक्ति-भाव की जाग्रति हो सके। वे भी अल्लाह के लिए अपने प्राण तक अर्पण कर देने का साहस कर सकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०८. और उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा :	108. And We left for him among the later folk (the salutation):	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾
१०९. सलाम है इबराहीम पर।	109. Peace be unto Abraham!	سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾
११०. उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।	110. Thus do We reward the good.	كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾
१११. निश्चय ही वह हमारे 'ईमान' वाले बन्दों में से था।	111. Lo! he is one of Our believing slaves.	إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾
११२. और हम ने उसे इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक 'नबी' नेक लोगों में से।	112. And We gave him tidings of the birth of Issac, a Prophet of the righteous.	وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾
११३. और हम ने उसे और इसहाक़ को बरकत दी[४५]। और इन दोनों की सन्तति में से कोई तो उत्तमकार है, और कोई अपने हक़ में खुला ज़ुल्म करने वाला है।	113. And We blessed him and Issac. And of their seed are some who do good, and some who plainly wrong themselves.	وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾
११४. और हम ने मूसा और हारून पर एहसान किया,	114. And We verily gave grace unto Moses and Aaron,	وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾
११५. और उन्हें और उन की जाति वालों को बड़ी घुटन[४६] से छुटकारा दिया,[४७]	115. And saved them and their people from the great distress,	وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾
११६. और उन की सहायता की तो वही विजयी रहे।	116. And helped them so that they became the victors.	وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٦﴾
११७. और हम ने उन दोनों को स्पष्ट 'किताब' दी	117. And We gave them the clear Scripture	وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٧﴾
११८. और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।	118. And showed them the right path.	وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾
११९. और उन के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा :	119. And We left for them among the later folk (the salutation):	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿١١٩﴾
१२०. सलाम है मूसा और हारून पर !	120. Peace be unto Moses and Aaron!	سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٠﴾
१२१. निस्सन्देह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।	121. Lo! thus do We reward the good.	إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾

४५. हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के दूसरे बेटे थे जिन की नस्ल से 'बनी इसराईल' हैं। आप के पहले बेटे हज़रत इसमाईल अ० थे। उन्हीं को क़ुरबान करने का निश्चय आप ने किया था। पिता के स्वप्न को सुन कर हज़रत इसमाईल अ० स्वयं भी क़ुरबानी के लिए तैयार हो गये थे। यह विचार सही नहीं है कि हज़रत इबराहीम अ० ने अपने जिस बेटे को क़ुरबानी के लिए पेश किया था वह हज़रत इसहाक़ थे। विस्तारपूर्वक समालोचना के लिए देखिए सूरा का परिचय।

४६. ऐसी मुसीबत जिस में आदमी घिर गया हो और तंग आ गया हो।

४७. यह संकेत उन कष्टों और तकलीफ़ों की ओर है जिन में उन को फ़िरऔन और उस की जाति के लोगों ने डाल रखा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२२. निश्चय ही वे दोनों (हमारे 'ईमान') वाले बन्दों में से थे।	122. Lo! they are two of Our believing slaves	إنهما من عبادنا المؤمنين ﴿١٢٢﴾
१२३. और इलयास[४८] भी निश्चय ही उन्हीं लोगों में से था जो 'रसूल' बना कर भेजे गये थे,	123. And lo! Elias was of those sent (to warn);	وإن إلياس لمن المرسلين ﴿١٢٣﴾
१२४. याद करो जब उस ने अपनी जाति वालों से कहा : क्या तुम लोग डर नहीं रखते ?	124. When he said unto his folk: Will ye not ward off (evil)?	إذ قال لقومه ألا تتقون ﴿١٢٤﴾
१२५. क्या तुम 'बअ्ल'[४९] को पुकारते हो और सब से अच्छे पैदा करने वाले को छोड़ देते हो,	125. Will ye cry unto Baal and forsake the best of Creators,	أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ﴿١٢٥﴾
१२६. अल्लाह को, जो तुम्हारा भी 'रब' है और तुम्हारे अगले पूर्वजों का भी 'रब' है ?	126. Allah, your Lord and Lord of your forefathers?	الله ربكم ورب آبائكم الأولين ﴿١٢٦﴾
१२७. परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, तो वे निश्चय ही (यातना के लिए) पेश किये जायेंगे	127. But they denied him, so they surely will be haled forth (to the doom)	فكذبوه فإنهم لمحضرون ﴿١٢٧﴾
१२८. सिवाय अल्लाह के चुने हुये बन्दों के (कि उन्हें यह बुरा दिन नहीं देखना पड़ेगा)।	128. Save single-minded slaves of Allah.	إلا عباد الله المخلصين ﴿١٢٨﴾
१२९. और हम ने उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा[५०] :	129. And We left for him among the later folk (the salutation):	وتركنا عليه في الآخرين ﴿١٢٩﴾

४८. आप 'बनी इसराईल' के 'नबियों' में से हैं। वर्त्तमान अनुसन्धानकर्त्ताओं के विचार में आप का समय सन् ८७५ और ८५० ई० पू० के मध्य में है। आप जिलआद (Gilead) (यरमूक नदी के दक्षिण वर्त्तमान उरदुन राज्य के उत्तरी जिलों का क्षेत्र) के निवासी थे (दे० (1 Kings 17 : 1)। बाइबिल में हज़रत इलयास अ० का उल्लेख इलयाह तिशबी (Elijah Tishbite) के नाम से मिलता है। आप के जीवन-वृत्तान्त के सिलसिले में बाइबिल के निम्न अध्यायों का अध्ययन कीजिए:—
'१ सलातीन' (1 Kings) अध्याय १७, १८, १९, २१ और '२ सलातीन' अध्याय १, २ और '२ तवारीख' (2 chr) अध्याय २१।

४९. 'सामी' जातियाँ 'बअ्ल' शब्द 'इलाह' (पूज्य) के अर्थ में प्रयोग करती थीं। उन्हों ने एक विशेष देवता का नाम भी 'बअ्ल' रख छोड़ा था। यों 'बअ्ल' का अर्थ है स्वामी, सरदार, नायक आदि। पति के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होता है। परन्तु प्राचीन समय में यह शब्द सामी जातियों के यहाँ देवता और ख़ुदा (god) के अर्थ में प्रयोग होता रहा है एक समय में बाबिल से ले कर मिस्र तक 'बअ्ल' की पूजा होती थी। सीरिया, लबनान, और फ़लिस्तीन के 'मुश्रिक' लोग विशेष रूप से 'बअ्ल' की उपासना में लिप्त थे। बनी इसराईल भी जब मिस्र से निकल कर फ़लिस्तीन और शर्क़ उरदुन में आबाद हुये तो 'मुश्रिक' जातियों के प्रभाव से इन के यहाँ भी बअ्ल-पूजा प्रचलित हो गई। और यह रोग बढ़ता ही गया। फिर हज़रत समोइल, तालूत, दाऊद अ० और सुलैमान अ० की कोशिशों से इन का सुधार हुआ परन्तु हज़रत सुलैमान अ० के बाद 'शिर्क' ने फिर सिर उठाया और 'बअ्ल' की पूजा जिसे ये त्याग चुके थे फिर इन के यहाँ होने लगी। 'बअ्ल' से अभिप्रेत सूर्य है या बृहस्पति, इस के बारे में विद्वानों में मतभेद है।

५०. हज़रत इलयास अ० के साथ उन के जीवन-काल में तो 'बनी इसराईल' ने अच्छा व्यवहार नहीं किया परन्तु आगे चल कर वे उन के अत्यन्त प्रेमी बन गये। उन के यहाँ यह बात मशहूर हो गई इलयास अ० आकाश पर जीवित उठा लिए गये हैं और वे पुनः संसार में पधारेंगे। हज़रत यहया अ० और हज़रत ईसा अ० की 'नुबूवत' के समय में यहूदी तीन आने वालों की प्रतिक्षा कर रहे थे। जिन में से एक हज़रत इलयास अ० थे। यहूदियों को हज़रत मसीह अ० का भी इन्तज़ार था। हज़रत मसीह अ० के अतिरिक्त एक और 'नबी' की (अर्थात् मुहम्मद सल्ल० की) भी वे राह देख रहे थे जिस के आने का वादा उन से उन के धर्म-ग्रन्थों में किया गया था। हज़रत यहया अ० जब 'नबी' हो कर उठे तो यहूदियों के धर्म-गुरु जा कर उन से पूछने लगे कि तुम मसीह हो ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर पूछा कि क्या तुम इलियाह हो ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर पूछा कि क्या तुम "वह नबी" हो ? उन्हों ने कह : नहीं (दे० यूहन्ना १ : १९-२५)। इसी तरह हज़रत मसीह अ० की 'नुबूवत' का समय आया और वे लोगों में प्रसिद्ध हुये तो फिर लोगों में यह बात फैल गई की इलियाह नबी आ गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३०. सलाम है इलयासीन पर[५१] !	130. Peace be unto Elias!	سلام على إل ياسين
१३१. निस्सन्देह हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।	131. Lo! thus do We reward the good.	إنا كذلك نجزي المحسنين
१३२. निश्चय ही वह हमारे 'ईमान' वाले बन्दों में से था।	132. Lo! he is one of Our believing slaves.	إنه من عبادنا المؤمنين
१३३. और लूत भी निश्चय ही उन्हीं लोगों में से था जो 'रसूल' बना कर भेजे गये थे,	133. And lo! Lot verily was of those sent (to warn),	وإن لوطا لمن المرسلين
१३४ याद करो जब हम ने उसे और उस के लोगों को सब को बचाया,	134. When We saved him and his household, every one,	إذ نجيناه وأهله أجمعين
१३५. सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रही;[५२]	135. Save an old woman among those who stayed behind;	إلا عجوزا في الغابرين
१३६. फिर दूसरों को हम ने तहस-नहस कर दिया।	136. Then We destroyed the others.	ثم دمرنا الآخرين
१३७. और तुम प्रातः समय उन की (उजड़ी बस्तियों) पर से गुज़रते हो[५३]	137. And lo! ye verily pass by (the ruin of) them in the morning	وإنكم لتمرون عليهم مصبحين
१३८. और रात को भी; तो क्या फिर तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?	138. And at night-time; have ye then no sense?	وبالليل أفلا تعقلون
१३९. और यूनुस भी निश्चय ही उन्हीं लोगों में से था जो 'रसूल' बना कर भेजे गये थे[५४]	139. And lo! Jonah verily was of those sent (to warn)	وإن يونس لمن المرسلين
१४०. याद करो जब वह एक भरी नौका की ओर भाग निकला,[५५]	140. When he fled unto the laden ship,	إذ أبق إلى الفلك المشحون
१४१. फिर चिट्ठी डाली और मात खाई;	141. And then drew lots and was of those rejected;	فساهم فكان من المدحضين

५१. हज़रत इलयास अ० ही को यहाँ इलयासीन कहा गया है जिस प्रकार क़ुरआन में एक पर्वत को तूरे सीना भी कहा गया है और तूरे सीनीन भी। क़ुरआन के कुछ भाष्यकारों का यही मत है कि अरब के लोगों में इबरानी नामों के विभिन्न उच्चारण प्रचलित थे। कुछ दूसरे टीकाकारों का विचार है कि 'इलयासीन' हज़रत इलयास अ० का दूसरा नाम है।

५२. यह संकेत हज़रत लूत अ० की पत्नी की ओर है जिस ने अपने पति का साथ नहीं दिया और अपनी जाति वालों ही के साथ रही, जब अल्लाह की यातना आई तो दूसरे लोगों के साथ वह भी हलाक हो गई।

५३. व्यापार के लिए फ़लिस्तीन और सीरिया की ओर जाते हुये मक्का वालों का गुज़र उस जगह से होता था जहाँ हज़रत लूत अ० की जाति वालों की उजड़ी हुई बस्तियाँ पड़ती थीं।

५४. दे० सूरा यूनुस फ़ुटनोट २२; सूरा अल-अंबिया आयत ८७—८८।

५५. यहाँ क़ुरआन में जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह उस अवसर पर बोला जाता है जब कोई ग़ुलाम अपने मालिक के यहाँ से भाग जाये। हज़रत यूनुस अ० अल्लाह की अनुमति के बिना बस्ती से निकल पड़े थे इसी कारण उन के लिए यहाँ उस शब्द का प्रयोग हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४२. फिर मछली ने उसे निगल लिया और वह स्वयं क़सूरवार (दोषी) था;[५६]

142. And the fish swallowed him while he was blameworthy;

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾

१४३. तो यदि वह 'तसबीह' करने वालों में से न होता[५७]

143. And had he not been one of those who glorify (Allah)

فَلَوْلَآ أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾

१४४. तो उसी (मछली) के पेट में उस दिन तक रहता जबकि लोग (पुन: जीवित कर के) उठाये जायेंगे;[५८]

144. He would have tarried in its belly till the day when they are ra sed.

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾

१४५. आखिरकार हम ने उसे अस्वस्थ अवस्था में एक चटियल भूमि पर फेंक दिया;

145. Then We cast him on a desert short while he was sick;

فَنَبَذْنَٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾

१४६. और उस पर एक बेलदार (लताओं वाला) वृक्ष उगाया;

146. And We caused a tree of gourd to grow above him;

وَأَنۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾

१४७. और हम नें उसे एक लाख या (उस से) अधिक (लोगों) की ओर भेजा[५९]

147. And We sent him to a hundred thousand (folk) or more.

وَأَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾

१४८. और वे 'ईमान' लाये, और हम ने एक निश्चित समय तक उन्हें जीवन-सुख प्रदान किया।

148. And they believed, therefor We gave them comfort for a while.

فَـَٔامَنُوا۟ فَمَتَّعْنَٰهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾

१४९. फिर अब इन लोगों से पूछो[६०] : क्या (तुम्हारे दिल को यह बात लगती है कि) तुम्हारे 'रब' के लिए तो बेटियां हों और इन के लिए बेटे[६१]?

149. Now ask them (O Muhammad): Hath thy Lord daughters whereas they have sons?

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾

१५०. क्या हम ने 'फ़िरिश्तों' को स्त्रियां बनाया[६२] और ये साक्षी थे ?

150 Or created We the angels females while they were present?

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَٰٓئِكَةَ إِنَٰثًا وَهُمْ شَٰهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

५६. अर्थात् उस से एक अनिष्ट कार्य हो गया था। ऐसा मालूम होता है कि जिस नाव पर हज़रत यूनुस अ० सवार हुये वह बहुत अधिक भर चुकी थी। जब यात्रियों के डूब जाने का भय हुआ तो चिट्ठी डाली गई कि जिस के नाम चिट्ठी निकले उसे पानी में फेंक कर नाव को डूबने से बचा लिया जाये। जब चिट्ठी डाली गई तो हज़रत यूनुस अ० का नाम निकल आया। उन को समुद्र में फेंक दिया गया। और एक बड़ी मछली ने उन्हें निगल लिया। उन्हें इस कष्ट का सहन इस लिए करना पड़ा कि वे अपने वास्तविक स्वामी, अल्लाह की आज्ञा के बिना अपनी बस्ती छोड़ कर भाग खड़े हुयें थे।

५७. हज़रत यूनुस अ० अल्लाह की 'तसबीह' करने वाले थे जब मछली के पेट में पहुँचे तो उन्हों ने वहाँ भी अपने अल्लाह की 'तसबीह' की और उस की ओर रुजू हुये (दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८७)।

५८. अर्थात् मछली का पेट ही उन की क़ब्र बनता; वे मछली के पेट से छुटकारा न पा सकते।

५९. अर्थात् कोई उस बस्ती को देखता तो उस का अनुमान यही होता कि इस बस्ती की जन-संख्या एक लाख से कम न होगी, अधिक ही होगी। अनुमान है कि यह बस्ती वही है जिसे छोड़ कर हज़रत यूनुस अ० भागे थे। आप को दोबारा अल्लाह ने लोगों की शिक्षा-दीक्षा के लिए भेजा।

६०. यह दूसरा सवाल है जो मक्का के 'काफ़िरों' से किया जा रहा है। इस से पहले आयत ११ में भी उन के सामने एक सवाल रक्खा गया था।

६१. अरब के कुछ क़बीलों का यह विचार था कि 'फ़िरिश्ते' अल्लाह की बेटियाँ हैं उन की इसी धारणा का यहाँ खण्डन अभीष्ट है।

६२. दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत १९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५१. सुन लो ! वास्तव में ये अपनी मन-गढ़न्त कहते हैं

151. Lo! it is of their falsehood that they say:

أَلَآ إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾

१५२. कि अल्लाह् के औलाद हुई । और निश्चय ही ये झूठे हैं ।

152. Allah hath begotten. And lo! verily they tell a lie.

وَلَدَ ٱللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

१५३. क्या उस ने बेटों की अपेक्षा बेटियाँ (अपने लिए) पसन्द कर लीं ?

153. (And again of their falsehood): He hath preferred daughters to sons.

أَصْطَفَى ٱلْبَنَاتِ عَلَى ٱلْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

१५४. तुम्हें क्या हो गया है ? कैसे सोचते हो ?

154. What aileth ye? How judge ye?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

१५५. क्या तुम ध्यान नहीं देते ?

155. Will ye not then reflect?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

१५६. या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है ?

156. Or have ye a clear warrant?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَٰنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾

१५७. तो लाओ अपनी 'किताब', यदि तुम सच्चे हो ।

157. Then produce your writ, if ye are truthful.

فَأْتُوا بِكِتَٰبِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾

१५८. इन्हों ने अल्लाह् और 'जिन्नों' के बीच गोत्र का नाता बना रक्खा है, हालाँकि 'जिन्न' भली भाँति जानते हैं कि वे लोग पेश होने वाले हैं—

158. And they imagine kinship between Him and the jinn, whereas the jinn know well that they will be brought before (Him).

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ ٱلْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ ٱلْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

१५९. अल्लाह् की महिमा के प्रतिकूल है जो कुछ ये गुण (अल्लाह् के लिए) बयान करते हैं—

159. Glorified be Allah from that which they attribute (unto Him),

سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾

१६०. सिवाय अल्लाह् के चुने हुए बन्दों के ।

160. Save single-minded slaves of Allah.

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾

१६१. तो (हे 'मुश्रिको' !) तुम और जिस-जिस को तुम पूजते हो वे भी,

161. Lo! verily, ye and that which ye worship,

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

१६२ तुम सब किसी को उस से नहीं बहका सकते

162. Ye cannot excite (anyone) against him.

مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَٰتِنِينَ ﴿١٦٢﴾

१६३. सिवाय उस के जो ('जहन्नम' की) भड़कती हुई आग ही का ईंधन बनने वाला हो[६३] ।

163. Save him who is to burn in hell.

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ ٱلْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾

१६४. और हम[६४] में जो भी है उस का एक जाना-बूझा स्थान है ।

164. There is not one of Us but hath his known position.

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾

१६५. और हम तो (हर समय अल्लाह् की बन्दगी और उस के आदेशों के पालन में) पंक्तिबद्ध रहने वाले हैं ।

165. Lo! We even We are they who set the ranks.

وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلصَّافُّونَ ﴿١٦٥﴾

६३. अर्थात् 'जहन्नम' (नरक) ही में गिरना चाहता हो ।

६४. यहाँ हम से अभिप्रेत 'फ़िरिश्ते' हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६६. और हम तो (उस की) 'तसबीह' करने वाले हैं।

166. Lo! We, even We are they who hymn His praise.

وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾

१६७. और निश्चय ही ये लोग कहा करते थे :

167. And indeed they used to say:

وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

१६८. यदि हमारे पास अगले लोगों का कोई अनुस्मारक[९५] होता,

168. If we had but a reminder from the men of old,

لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

१६९. तो हम अवश्य अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते[९६]।

169. We would be single-minded slaves of Allah.

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾

१७०. परन्तु (जब वह आ गया तो) इन्हों ने उस का इन्कार कर दिया; अब जल्द इन्हें (इस का नतीजा) मालूम हो जायेगा।

170. Yet (now that it is come) they disbelieve therein; but they will come to know.

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

१७१. और हमारे अपने उन बन्दों के हक़ में जो 'रसूल' बना कर भेजे गये हमारी बात पहले निश्चित हो चुकी है

171. And verily Our word went forth of old unto Our bondmen sent (to warn).

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

१७२. कि अवश्य उन की सहायता की जायेगी,

172. That they verily would be helped.

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

१७३. और निश्चय ही हमारा दल[९७] विजय प्राप्त करने वाला है[९८]।

173. And that Our host, they verily would be the victors.

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

१७४. अतः कुछ समय तक के लिए उन की ओर से पलट आओ,[९९]

174. So withdraw from them (O Muhammad) awhile,

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

१७५. और उन्हें देखते रहो, वे जल्द देख लेंगे।

175. And watch, for they will (soon) see.

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾

१७६. क्या ये हमारी यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

176. Would they hasten on Our doom?

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾

९५. अर्थात् 'हिदायत', मार्ग-दर्शन।

९६. दे० सूरा फ़ातिर ४२।

९७. यहाँ अल्लाह ने 'ईमान' वालों को जो 'नबी' सल्ल० पर 'ईमान' ला कर उन के आदेशों का पालन करें और उन अदृष्ट शक्तियों ("फ़िरिश्तों") को जिन से वह अपने आज्ञाकारी बन्दों की सहायता करता है अपना दल कहा है।

९८. इस का यह अर्थ नहीं होता कि हर युग में अल्लाह के प्रत्येक 'नबी' और उस के अनुयायी राज्य-सत्ता के अधिकारी ही हो गये हों जहाँ उन्हें अधिकार प्राप्त नहीं हुआ वहाँ भी नैतिकता के क्षेत्र में वही विजयी रहे। उन की बात न मानने वाली जातियाँ अन्त में तबाह हो कर रहीं। 'नबियों' की शिक्षाओं के प्रतिकूल जीवनपद्धति ग्रहण करने का परिणाम सदा बुरा ही हुआ है।

९९. अर्थात् कुछ समय के लिए उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७७. जब वह इन के आँगन में आ उतरेगा, तो वह बहुत बुरी सुबह होगी डराये गये लोगों की।

177. But when it cometh home to them, then it will be a hapless morn for those who have been warned.

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٧﴾

१७८. एक समय तक के लिए उन की ओर से पलट आओ

178. Withdraw from them awhile.

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾

१७९. और देखते रहो, वे जल्द ही देख लेंगे[७०]।

179. And watch, for they will (soon) see.

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾

१८०. तेरे 'रब' की महिमा के, जो इज़्ज़त का मालिक है, प्रतिकूल है, जो कुछ ये लोग (उस के बारे में) बयान करते हैं।

180. Glorified be thy Lord, the Lord of Majesty, from that which they attribute (unto Him).

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾

१८१. और सलाम है उन लोगों पर जो 'रसूल' बना कर भेजे गये।

181. And peace be unto those (sent to warn).

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾

१८२. और प्रशंसा है अल्लाह के लिए, जो सारे संसार का 'रब' है!

182. And praise be to Allah, Lord of the Worlds!

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

* * * *

७०. क़ुरआन की बात पूरी हो कर रही। कुछ ही वर्षों के बाद 'काफ़िरों' ने अपनी आँखों से देख लिया कि वे परास्त हो कर रहे और 'इस्लाम' को न केवल अरब पर बल्कि ईरान और रूम जैसे राज्यों पर विजय प्राप्त हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८--सॉद०

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' के आरम्भ में जो अरबी अक्षर (Arabic Alphabet) आया है उसी को इस 'सूरा' का नाम निर्धारित किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब उतरी है निश्चित रूप से इस के बारे में कुछ कहना कठिन है। कुछ उल्लेखों से अनुमान होता है कि इस सूरा का अवतरण उस समय हुआ है जब 'नबी' सल्ल० ने मक्का में लोगों को सत्य की ओर बुलाना आरम्भ कर दिया था। जिस के कारण 'क़ुरैश' के सरदार घबरा उठे थे। इस तरह नुबूवत के चौथे वर्ष में यह सूरा उतरी होगी। परन्तु कुछ उल्लेखों से मालूम होता है कि यह सूरा 'नबी' सल्ल० के चचा अबू तालिब की उस बीमारी के समय की है जिस के बाद अबू तालिब का देहान्त हो गया। और यह 'नुबूवत' के दसवें-ग्यारहवें वर्ष की बात है।

जन-श्रुतियों से मालूम होता है कि जब नबी सल्ल० के चचा अबू तालिब बीमार हुये और 'क़ुरैश' के सरदारों ने समझा कि यह इन का अन्तिम समय है तो उन लोगों ने परस्पर विचार-विमर्श के बाद यह निश्चय किया कि हमें अबू तालिब के पास चल कर बात करनी चाहिए। यदि वे हमारा और अपने भतीजे-का झगड़ा अपनें जीवन ही में चुका देते हैं तो अच्छा है। कहीं उन का देहान्त हो गया और उन के बाद हम मुहम्मद (सल्ल०) के साथ सख़्ती से पेश आये, तो अरब के लोग हम पर चोटें करेंगे कि जब तक अबू तालिब जीवित थे, ये लोग उन का आदर करते रहे उन की मृत्यु के पश्चात् इन लोगों को उन के भतीजे पर हाथ डालने का अवसर मिला है। लगभग 'क़ुरैश' के २५ सरादार जिन में अबूजह्ल, अबूसुफ़यान, उमय्या बिन ख़ल्फ़ आदि सम्मिलित थे, अबू तालिब के पास पहुँचे। पहले इन लोगों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध अपनी शिकायतें बयान कीं फिर कहा कि हम आप के सामने एक न्यायानुकूल बात रखनी चाहते हैं। आप का भतीजा हमारे देवताओं की निन्दा न करे और न यह कोशिश करे कि हम अपने देवताओं को छोड़ दें। हम आप के भतीजे को उस के 'दीन' पर छोड़ देते हैं वह जिस की 'इबादत' और उपासना करनी चाहे करे हमें कोई आपत्ति न होगी, परन्तु वह हम को हमारे 'दीन' (धर्म) पर रहने दे।

सरदारों की बात सुन कर अबू तालिब ने नबी सल्ल० को बुला कर कहा कि भतीजे! ये तुम्हारी जाति के सरदार मेरे पास आये हुये हैं, ये चाहते हैं कि एक न्यायानुकूल बात पर तुम इन से सहमत हो जाओ। ताकि तुम्हारा और इन का कोई झगड़ा न रहे। फिर उन्हों ने 'क़ुरैश' के सरदारों की बात आप (सल्ल०) के सामने रक्खी। आप ने कहा कि मैं तो इन के सामने एक ऐसा 'कलमा' (बात) पेश करता हूँ जिसे यदि ये मान लें तो अरब इन के अधीन हो जाये और 'अजम' (अर्थात् अरब के अतिरिक्त दूसरे देश) इन का बाजगुज़ार हो जाये। यह सुन कर पहले तो वे संकोच में पड़ गये फिर कहा कि तुम एक 'कलमा' कहते हो हम दस कलमे को मानने के लिए तैयार हैं, बताओ यह 'कलमा' क्या है। आप (सल्ल०) ने कहा: "ला इलाह इललल्लाह" अर्थात् 'इलाह' (पूज्य) कोई नहीं सिवाय अल्लाह के। यह सुन कर वे सब खड़े हो गये और वह कुछ कहते हुये निकल गये जिस का उल्लेख अल्लाह ने सूरा के आरम्भिक भाग में किया है। इस से मालूम होता है कि यह 'सूरा' 'नुबूवत' के दसवें या ग्यारहवें वर्ष उतरी होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन के कुछ भाष्यकारों का कहना है कि यह मामला उस समय पेश आया था जब हज़रत उमर रज़ि० 'ईमान' लाये हैं जिस के कारण 'क़ुरैश' के सरदार बौखला गये थे। और यह मालूम है कि हज़रत उमर रज़ि० 'हब्शा' (Abyssinia) की 'हिजरत' के बाद 'ईमान' लाये थे।

वार्त्तायें (Subject-matter)

यह 'सूरा' विशेष रूप से 'तौबा' के फ़ायदों और विरोध की हानियों को व्यक्त करती है।

नबी सल्ल० और 'काफ़िरों' के बीच जो बात-चीत हुई थी जिस का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है उस के आधार पर अल्लाह ने बताया है कि ये लोग यदि 'ईमान' नहीं लाते हैं, तो इस का कारण केवल इन का गर्व, ईर्ष्या, जड़ता और रूढ़िवाद है। ये लोग उसी अज्ञान पर आरूढ़ रहना चाहते हैं जिस पर इन्हों ने दूसरों को पाया है। सूरा के आरम्भ में भी और अन्त में भी 'काफ़िरों' को चेतावनी दी गई है कि तुम लोग जिस व्यक्ति की हँसी उड़ा रहे हो वह समय दूर नहीं कि वही विजयी होगा।

इस के बाद कई 'नबियों' का किस्सा बयान किया गया है, जिनमें हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० का क़िस्सा सविस्तार बयान हुआ है। 'नबियों' के क़िस्से बयान कर के वास्तव में अल्लाह ने यह बात बताई है कि उस का नियम बेलाग है। अनुचित नीति जो व्यक्ति भी अपनायेगा चाहे वह कोई भी हो उसकी पकड़ अवश्य होगी। अल्लाह को वही लोग प्रिय हैं जो अपनी ग़लती पर तुरन्त अल्लाह की ओर रुजू करते हैं, दुराग्रह जिन की नीति नहीं है।

'काफ़िरों' और अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों के उस परिणाम का जो 'आखिरत' में उन के सामने आने वाला है, उल्लेख किया गया है और अन्त में आदम अ० और 'इबलीस' का किस्सा बयान किया गया है। इस क़िस्से में भी 'क़ुरैश' के लिए चेतावनी है। ईर्ष्या और अहंकार के कारण इबलीस लानत और फिटकार का भागी हुआ, इसी तरह जो लोग अहंकार और ईर्ष्या के कारण सत्य का तिरस्कार कर रहे हैं वे यदि 'ईमान' नहीं लाते हैं तो उन का परिणाम भी वही होगा जो परिणाम 'इबलीस' का हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' सॉद०

(मक्का में उतरी—'आयतें' ८८)

SAD
Revealed at Mecca

سورة ص مكية وهي ثمان وثمانون آية وخمس ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. सॉद०,[1] क़सम है नसीहत-भरे[2] 'क़ुरआन' की,

1. Sad. By the renowned Qur'an,

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ①

२. (कोई और बात नहीं) बल्कि जिन्हों ने 'कुफ़' किया वे अभिमान और विरोध में पड़े हुये हैं।

2. Nay, but those who disbelieve are in false pride and schism.

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ②

३. इन से पहले हम ने कितनी ही नस्लों को विनष्ट किया, (जब उन पर यातना आई) तब वे लगे पुकारने परन्तु वह छुटकारा का समय था नहीं!

3. How many a generation We destroyed before them, and they cried out when it was no longer the time for escape!

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ③

४. और इन्हों ने इस पर आश्चर्य किया कि एक सचेत करने वाला इन्हीं में से इन के पास आ गया। और 'काफ़िर' कहने लगे : यह एक जादूगर है,[3] बड़ा झूठा है।

4. And they marvel that a warner from among themselves hath come unto them, and the disbelievers say: This is a wizard, a charlatan.

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۡ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ④

५. क्या इस ने इन 'इलाहों' (पूज्यों) को एक ही 'इलाह' कर दिया? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है।

5. Maketh he the gods One God? Lo! that is an astounding thing.

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ⑤

६. और सरदार इन में के निकल पड़े[4] कि चलो और डटे रहो अपने 'इलाहों' पर! निस्सन्देह यह एक ऐसी ही चीज़ है जिसे चाहा जाये

6. The chiefs among them go about, exhorting: Go and be staunch to your gods. Lo! this is a thing designed.

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ⑥

७. यह बात तो हम ने पिछले पन्थ में नहीं सुनी। यह कुछ नहीं केवल मन-गढ़न्त बात है।

7. We have not heard of this in later religion. This is naught but an invention.

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ⑦

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० आयत ४६।
३. 'काफ़िर' नबी सल्ल० के बारे में कहते थे कि यह जादूगर है कि लोग इसकी बातों से प्रभावित हो कर इस के अनुयायी हो जाते हैं।
४. यह संकेत उन सरदारों की ओर है जो नबी सल्ल० की बात सुन कर अबू तालिब के पास से उठ गये थे दे० सूरा का परिचय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. क्या हम सब में से इस पर अनुस्मारक उतारा गया है ? नहीं, बल्कि ये मेरे अनुस्मारक के बारे में सन्देह में हैं; नहीं, बल्कि इन्हों ने अभी मेरी यातना का मज़ा चखा नहीं है।

8. Hath the reminder been revealed unto him (alone) among us? Nay, but they are in doubt concerning My reminder; nay but they have not yet tasted My doom.

أَؤُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِن بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي ۖ بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ﴿٨﴾

९. क्या इन के पास तेरे 'रब' की दयालुता के ख़ज़ाने हैं, जो प्रभुत्वशाली और बड़ा दाता है ?

9. Or are theirs the treasures of the mercy of thy Lord, the Mighty, the Bestower?

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾

१०. क्या इन्हीं का है राज्य आकाशों और धरती का और जो कुछ उन के बीच है ? तो अब ये (आकाश में पहुँचने को) सीढ़ियों पर चढ़ जायें[५]।

10. Or. is the kingdom of the heavens and the earth and all that is between them theirs? Then let them ascend by ropes!

أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١٠﴾

११. यहाँ विरोधी पक्षों के कैसे-कैसे दल हैं जो मात खा चुके हैं।

11. A defeated host are (all) the factions that are there.

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾

१२. इन से पहले झुठला चुके हैं नूह को जाति वाले और 'आद', और मेख़ों वाला[६] फ़िरऔन,

12. The folk of Noah before them denied (their messenger) and (so did the tribe of) Aad, and Pharaoh firmly planted.

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾

१३. और 'समूद', और लूत को जाति वाले, और 'ऐका' वाले ये हैं वे पक्ष।

13. And (the tribe of) Thamud, and the folk of Lot, and the dwellers in the wood: these were the factions.

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾

१४. इन में से हर एक ने 'रसूलों' को झुठलाया, तो मेरी ओर से सज़ा मिल गई,

14. Not one of them but did deny the messengers, therefor My doom was justified.

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾

१५. इन लोगों को बस एक ज़ोर की आवाज़ की प्रतीक्षा है, जिस के पश्चात् कुछ भी मुहलत न होगी।

15. These wait for but one shout, there will be no second thereto.

وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ﴿١٥﴾

१६. और ये कहते हैं : हमारे 'रब' ! हमें हमारे हिस्से का जल्दी से दे दे हिसाब के दिन से पहले-पहले।

16. They say: Our Lord! Hasten on for us our fate before the Day of Reckoning.

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

१७. (हे 'नबी' !) ये लोग जो कुछ कहते हैं उस पर 'सब्र' करो, और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो हाथों वाला (बड़ी ताक़तों का मालिक) था। निश्चय ही वह (अल्लाह की ओर) बहुत रुजू करने वाला था।

17. Bear with what they say, and remember Our bondman David, lord of might. Lo! he was ever turning in repentance (toward Allah).

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾

५. यह 'काफ़िरों' की इस बात का जवाब है कि क्या हमारे बीच केवल इसी पर अनुस्मारक (Reminder) उतारा गया है ? क्या और कोई नहीं था जिसे अल्लाह अपना 'नबी' बनाता (दे० आयत ८) ? उन की इस बात पर अल्लाह कह रहा है कि किसे 'नबी' बनाया जाये और किस को न बनाया जाये इस का फ़ैसला करना इन का काम नहीं है बल्कि यह काम केवल हमारा है। यदि ये इस के अधिकारी होना चाहते हैं तो विश्व को अपने अधिकार के अन्तर्गत लायें और 'अर्श' पर अधिकार जमा लें ताकि यही जिसे अपनी दयालुता का पात्र समझें उसी पर 'वह्य' आये और उस व्यक्ति पर वह्य न आये जिसे हम ने 'नबी' बनाया है।

एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अल्लाह की यातना बस आने ही वाली है अब ये उस से बचने का उपाय करें यदि कर सकते हों।

६. ऐसा लगता है कि मेख़ों से अभिप्रेत ख़ेमों के मेख़ हैं। मतलब यह है कि उस के पास अधिक ख़ेमे थे और यह संकेत है उस की सेनाओं की अधिकता की ओर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. हम ने पहाड़ों को उस के साथ लगा दिया था कि सन्ध्या समय और प्रातःकाल 'तसबीह' करते रहें,

18. Lo! We subdued the hills to hymn the praises (of their Lord) with him at nightfall and sunrise.

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

१९. और पक्षियों को भी कि सिमट आते, सब-के-सब उस के आगे रुजू रहते थे

19. And the birds assembled; all were turning unto Him.

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾

२०. हम ने उस के राज्य को दृढ़ कर दिया था उसे 'तत्त्वदर्शिता' और दो टूक बात करने का सामर्थ्य प्रदान किया था[७]।

20. We made his kingdom strong and gave him wisdom and decisive speech.

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ
الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

२१. और क्या तुम्हें उन विवादियों की खबर पहुँची है ? जब वे दीवार चढ़ कर (उस के) एकान्त भवन में घुस आये;

21. And hath the story of litigants come unto thee? How they climbed the wall into the royal chamber;

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا
الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

२२. जब वे दाऊद के पास पहुँचे, तो वह उन्हें देख कर घबरा गया। उन्हों ने कहा : डरिए नहीं ! (हम) दो विवादी हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है, तो आप हमारे बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए; और बेइन्साफ़ी न कीजिए; और हमें सीधा मार्ग बता दीजिए।

22. How they burst in upon David, and he was afraid of them. They said: Be not afraid! (We are) two litigants, one of whom hath wronged the other, therefor judge aright between us; be not unjust; and show us the fair way.

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا
لَا تَخَفْ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ
فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا
إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

२३. यह मेरा भाई है[८] इस के पास निन्यानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास एक दुंबी है; इस ने (मुझ से) कहा : यह (एक दुंबी भी) मुझे सौंप दे, और इस ने बात-चीत में मुझे दबा लिया[९]।

23. Lo! this my brother hath ninety and nine ewes while I had one ewe; and he said: Entrust it to me, and he conquered me in speech.

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً
وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا
وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

२४. (दाऊद ने) कहा : इस व्यक्ति ने अपनी दुंबियों के साथ तेरी दुंबी मिला लेने की माँग कर के निश्चय ही तुझ पर ज़ुल्म किया, और सच यह है कि बहुत से एक साथ मिल कर रहने वाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, और ऐसे लोग कम हैं।

(यह कहते हुये) दाऊद समझ गया कि यह तो हम ने उस की परीक्षा की है,[१०] तो उस ने अपने 'रब' से क्षमा के लिए प्रार्थना की, और सजदे में गिर गया और रुजू किया।

24. (David) said: He hath wronged thee in demanding thine ewe in addition to his ewes, and lo! many partners oppress one another, save such as believe and do good works, and they are few. And David guessed that We had tried him, and he sought forgiveness of his Lord, and he bowed himself and fell down prostrate and repented.

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ
لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ
مَا هُمْ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ
فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَ
أَنَابَ ﴿٢٤﴾

७. अर्थात् अल्लाह ने उन्हें ज्ञान और समझ-बूझ दी थी। वे हर मामले का फ़ैसला ठीक-ठीक उचित रूप से कर दिया करते थे। उन की बातों में किसी प्रकार का उलझाव नहीं होता था।

८. अर्थात् जाति और धर्म के सम्बन्ध से यह मेरा भाई है।

९. आगे जो बात बयान हुई है उसे समझने के लिए यह बात सामने रहनी चाहिए कि अभियोगी का दावा यह नहीं है कि मेरी दुंबी इस ने छीन कर अपनी दुंबियों में मिला ली बल्कि वह यह कह रहा है कि यह माँग रहा है कि मैं अपनी दुंबी इस के हवाले कर दूँ। मैं ग़रीब आदमी हूँ बात-चीत में इस ने मुझे दबा लिया है। मुझ में इतनी ताक़त कहाँ कि इस की बात को ठुकरा दूँ।

१०. हज़रत दाऊद अ० को मामले का फ़ैसला सुनाते हुये अपनी कोई ऐसी भूल याद आ गई जिस में और इस दुंबियों वाले मुक़द्दमे में किसी प्रकार की समानता थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. तब हम ने इस बारे में उसे क्षमा कर दिया; निश्चय ही हमारे यहाँ उस के लिए समीपता का स्थान और अच्छा ठिकाना है[११]।

25. So We forgive him that and lo! he had access to Our presence and a happy journey's end.

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾

२६. (हम ने कहा) हे दाऊद! हम ने तुझे धरती में 'खलीफ़ा' बनाया है; अतः तू लोगों के बीच हक़ के साथ हुकूमत कर, और (अपनी) इच्छा का अनुपालन न कर कि वह तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका दे। जो लोग अल्लाह के मार्ग से भटकते हैं निश्चय ही उन के लिए कठोर यातना है इस लिए कि वे हिसाब के दिन को भूल गये[१२]—

26. (And it was said unto him): O David! Lo! We have set thee as a viceroy in the earth; therefor judge aright between mankind, and follow not desire that it beguile thee from the way of Allah. Lo! those who wander from the way of Allah have an awful doom, forasmuch as they forgot the Day of Reckoning.

يَا دَاوُودُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

११. इस से मालूम होता है कि हज़रत दाऊद अ० से कोई इस प्रकार की भूल नहीं हुई थी जो क्षमा किये जाने योग्य न समझी जाती या यदि उसे अल्लाह क्षमा भी कर देता तो भी वे अपने उच्च पद से वंचित कर दिये जाते।

१२. इस चेतावनी से मालूम होता है कि हज़रत दाऊद अ० से जो भूल हुई थी वह कोई ऐसी भूल थी जिस का कुछ-न-कुछ सम्पर्क उन के मनोरथ से भी था; और वह काम ऐसा था जो किसी ऐसे शासनाधिकारी के लिए उचित न था जो न्यायप्रिय और अल्लाह का आज्ञाकारी हो।

बाइबिल में हज़रत दाऊद अ० पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्हों ने ऊरीयाह हित्ती (Uriah the Hittite) की पत्नी से ज़िना किया और ऊरीयाह को जान-बूझ कर एक युद्ध में मरवा डाला और उस की पत्नी से विवाह कर लिया दे० २ समोईल (2 Samuel) अध्याय ११–१२। क़ुरआन के उतरने से सैकड़ों वर्ष पूर्व यह क़िस्सा बाइबिल में लिखा जा चुका था। 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' ने इस क़िस्से को दुनिया-भर में फैलाया। क़ुरआन ने यहाँ यहूदियों के गढ़े हुये क़िस्से और हज़रत दाऊद अ० पर लगाये गये आरोप का खण्डन किया और साथ ही यह भी बता दिया कि वास्तव में हज़रत दाऊद अ० से क्या चूक हुई थी जिसे 'यहूदियों' ने अत्यन्त घिनावना रूप दे कर दुनिया के सामने पेश किया है। 'यहूदियों' ने केवल यही नहीं कि हज़रत दाऊद अ० पर आरोप लगाया बल्कि उन के दुर्व्यवहार से हज़रत नूह, हज़रत इबराहीम, हज़रत लूत, हज़रत इसहाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा और हज़रत हारून कोई नहीं बच सका है। 'यहूदियों' ने अपनी किताब में किस की निन्दा नहीं की। किसी को दोषी ठहराने से ये बाज़ नहीं रहे। हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० को जो अल्लाह के 'नबी' थे केवल साधारण सम्राट के रूप में दिखाया है। 'यहूदियों' ने यह व्यवहार अपने पूर्वजों के साथ किया इस से यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि 'यहूद' नैतिक दृष्टि से कितने गिर चुके थे। यदि क़ुरआन न आता तो हमें 'नबियों' के पवित्र जीवन और उन की शुभ कीर्ति का ज्ञान न हो सकता।

क़ुरआन के बयान से हज़रत दाऊद अ० के बारे में जो बात समझ में आती है वह यह कि हज़रत दाऊद अ० ने ऊरीयाह (या जो भी उस व्यक्ति का नाम रहा हो) के सामने केवल अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि वह अपनी पत्नी को उन के लिए तलाक़ दे दे। 'बनी इसराईल' में लोग इसे कोई ऐब की बात नहीं समझते थे कि कोई किसी की पत्नी को पसन्द कर के उस से यह कहे कि इसे मेरे लिए छोड़ दे। इसे लोग बुरा नहीं मानते थे। हज़रत दाऊद अ० को जब उस स्त्री की योग्यताओं और गुणों का ज्ञान हुआ होगा तो स्वभावतः उन के मन में यह बात आई होगी कि यह योग्य स्त्री तो इस से कहीं ज़्यादा की हक़दार है कि एक साधारण सैनिक की पत्नी हो। उन्हों ने अपनी इच्छा उस के पति के सामने प्रकट कर दी। परन्तु अपनी इच्छा प्रकट करने वाला कोई साधारण व्यक्ति न था जिस की इच्छा के विरुद्ध फ़ैसला करने का साहस उस के पति को हो सकता। हज़रत

(शेष अगले पृष्ठ पर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. हम ने इस आकाश और धरती को और जो कुछ इन दोनों के बीच है व्यर्थ नहीं पैदा किया। यह तो उन लोगों का गुमान है जिन्हों ने 'कुफ़' किया है। और उन लोगों के लिए जिन्हों ने 'कुफ़' किया है बरबादी है ('जहन्नम' की) आग से !

27. And We created not the heaven and the earth and all that is between them in vain. That is the opinion of those who disbelieve. And woe unto those who disbelieve, from the Fire!

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بَاطِلًا ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ٢٧

२८. क्या हम उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन के समान कर देंगे जो धरती में बिगाड़ पैदा करने वाले हैं; या (अल्लाह का) डर रखने वालों को हम दुस्साहसी लोगों के समान कर देंगे ?

28. Shall We treat those who believe and do good works as those who spread corruption in the earth; or shall We treat the pious as the wicked?

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ٢٨

२९. एक 'किताब' है जो हम ने तुम्हारी ओर उतारी है बरकत वाली ताकि लोग इस की 'आयतों, पर सोच-विचार करें, और बुद्धि वाले नसीहत हासिल करें —

29. (This is) a Scripture that We have revealed unto thee, full of blessing, that they may ponder its revelations, and that men of understanding may reflect.

كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ إِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْا
اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ٢٩

३०. और हम ने दाऊद को सुलैमान (जैसा बेटा) प्रदान किया। कितना अच्छा बन्दा ! निश्चय ही वह (अपने 'रब' की ओर) बहुत रुजू करने वाला था।

30. And We bestowed on David, Solomon. How excellent a slave! Lo! he was ever turning in repentance (toward Allah).

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ
إِنَّهٗٓ أَوَّابٌ ٣٠

३१. याद करो जब सन्ध्या समय उस के सामने सधे हुये द्रुतगामी घोड़े लाये गये

31. When there were shown to him at eventide lightfooted coursers:

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ
الْجِيَادُ ٣١

दाऊद अ० एक प्रभावशाली शासनाधिकारी और एक महान् व्यक्तित्व के मालिक थे। वह व्यक्ति अपने को इस के लिए मजबूर पा रहा था कि शासक की बात क़बूल कर ले और यह उस पर एक तरह का जब्र था जिस की ओर हज़रत दाऊद अ० का ध्यान नहीं गया। अभी उस स्त्री की तलाक़ की नौबत नहीं आई थी कि वह क़िस्सा पेश आया जिस का उल्लेख यहाँ क़ुरआन में किया गया है। हज़रत दाऊद अ० को अपनी भूल का ज्ञान हो गया और वे 'सजदे' मे गिर पड़े। और अपने 'रब' से अपनी इस चूक पर क्षमा की प्रार्थना करने लगे।

ऐसा लगता है कि आगे चल कर किसी युद्ध में संयोग से वह सैनिक वीर गति को प्राप्त हुआ और फिर हज़रत दाऊद अ० ने उस की विधवा से विवाह कर लिया जिस को यहूद की मनोवृत्ति ने कुछ-से-कुछ बना दिया।

हज़रत दाऊद अ० के सामने दो व्यक्तियों ने जो मुक़द्दमा पेश किया था उस में अभियोगी ने यह जो कहा कि इस के पास ९९ दुंबियाँ हैं और मेरे पास एक दुंबी है जिसे यह मुझ से माँग रहा है, इस से यह नतीजा निकालना सही न होगा कि हज़रत दाऊद अ० के पास ९९ पत्नियाँ थीं। उपमा की हर बात का हज़रत दाउद अ० के मामले पर चस्पाँ होना ज़रूरी नहीं। यहाँ ९९ की संख्या से अभिप्रेत वास्तव में केवल अधिकता है। जिस का अर्थ बस यह होता है कि हज़रत दाऊद अ० के कई पत्नियाँ थीं।

हज़रत दाऊद अ० का क़िस्सा यहाँ इस लिए बयान हुआ है ताकि नबी सल्ल० को सब्र हो कि उन्हें तो आज केवल झूठा और जादूगर कहा जा रहा है इस से पहले अल्लाह के एक विशेष बन्दे पर ज़ालिम लोग ज़िनां और साज़िश कर के एक व्यक्ति की जान लेने तक का आरोप लगा चुके हैं। इस क़िस्से में 'काफ़िरों' के लिए भी चेतावनी है कि तुम जिस अल्लाह की अवज्ञा कर रहे हो उस की पकड़ से तुम अपने को बचा नहीं सकते। हज़रत दाऊद अ० अल्लाह के प्रिय बन्दों में से थे परन्तु जब उन से एक चूक हो गई तो उन की भी पकड़ हुई, अल्लाह की पकड़ से वह भी न बच सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. तो उस ने कहा : अपने 'रब' की याद को छोड़ कर मैं माल[13] के प्रेम में लग गया; यहाँ तक कि वह ओट में छिप गया।

३३. उन्हें मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की पिंडलियों और गरदनों पर फेरने लगा[14]।

३४. और निश्चय ही हम ने सुलैमान को भी आज़माइश में डाला, और उस की कुरसी पर एक धड़ डाल दिया। फिर उस ने रुजू किया।

३५. उस ने कहा : मेरे 'रब' ! मुझे क्षमा कर दे और मुझे वह राज्य प्रदान कर जो मेरे बाद किसी के लिए शोभनीय न हो। निस्सन्देह तू ही बड़ा दाता है[15]।

32. And he said: Lo! I have preferred the good things (of the world) to the remembrance of my Lord; till they were taken out of sight behind the curtain.

33. (then he said): Bring them back to me, and fell to slashing (with his sword their) legs and necks.

34. And verily We tried Solomon, and set upon his throne a (mere) body. Then did he repent..

35. He said: My Lord! Forgive me and bestow on me sovereignty such as shall not belong to any after me. Lo! Thou art the Bestower.

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

१३. क़ुरआन में "ख़ैर" शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है 'भलाई'। अधिकतर माल के लिए और कभी घोड़ों के लिए भी यह शब्द प्रयोग होता है।

१४. क़ुरआन के इस टुकड़े का अर्थ क्या है ? इस में भाष्यकारों के बीच मतभेद हुआ है। कुछ लोगों का कहना है कि हज़रत सुलैमान अ० घोड़ों की देख-रेख में कुछ ऐसे लग गये कि सूर्य छुप गया और अल्लाह को याद करने और उसे भजने का एक विशेष समय निकल गया। वे अत्यन्त दुःखी हुये और हुक्म दिया, घोड़े वापस लाये जायें। घोड़े वापस लाये गये तो तलवार से उन की गरदनों और पिंडलियों पर प्रहार करने लगे कि इन्हीं के प्रेम में पड़ कर मैं अपने 'रब' और वास्तविक स्वामी की याद से ग़ाफ़िल हो गया।

इन 'आयतों' का एक अर्थ यह भी समझा गया है कि हज़रत सुलैमान अ० घोड़ों के प्रेम में अपने 'रब' की याद से ग़ाफ़िल नहीं हुये बल्कि माल (घोड़े) का प्रेम उन्हों ने अपने 'रब' की याद के कारण अंगीकार किया, घोड़े उन्हें अपनी बड़ाई के लिए नहीं बल्कि अपने 'रब' ही के लिए प्रिय थे, इस लिए कि घोड़े 'जिहाद' में काम देते थे। हज़रत सुलैमान ने घोड़ों की दौड़ कराई यहाँ तक कि सूर्य नहीं बल्कि घोड़े आँखों से ओझल हो गये। उन्हों ने घोड़ों को वापस लाने को कहा। जब घोड़े वापस लाये गये तो आप उन की गरदनों और पिंडलियों पर तलवार नहीं बल्कि अपने हाथ फेरने लगे जैसा कि ऐसे अवसर पर लोग अपना प्रेम और लगाव प्रकट करने के लिए करते हैं।

१५. इन 'आयतों' के अर्थ में टीकाकारों के बीच मतभेद हुआ है। एक अर्थ इन का यह लिया गया है कि हज़रत सुलैमान अ० को इस की इच्छा हुई थी कि उन का बेटा उन का उत्तराधिकारी हो और शासनाधिकार उन्हीं के वंश में शेष रहे। अनुमान है कि इसी बात को अल्लाह ने उन के लिए "आज़माइश" कहा है। जब उन का बेटा रहुबआम (Rehoboam) युवावस्था को प्राप्त हुआ तो उन्हें मालूम हुआ कि उस में किसी राज्य को सँभालने की योग्यता नहीं है। उन की कुरसी पर एक धड़ ला कर डालने का अर्थ यह हुआ कि अपने जिस बेटे को अपनी कुरसी पर बिठाने की इच्छा उन के मन में थी वह निरा धड़ था वह शासनाधिकार के योग्य कदापि न था। हज़रत सुलैमान अ० को अपनी भूल का ज्ञान हुआ तो, उन्हों ने अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना की और कहा कि यह राज्य मुझ ही पर समाप्त हो जाये। 'बनी इसराईल' का इतिहास साक्षी है कि हज़रत सुलैमान अ० ने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया। हज़रत सुलैमान अ० के बाद लोगों ने उन के बेटे को राज्यसिंहासन पर बिठाने को तो बिठा दिया परन्तु थोड़े ही समय में 'बनी इसराईल' के दस क़बीले (Tribes) उत्तरी फ़लिस्तीन का अधिक्षेत्र ले कर अलग हो गये केवल एक ही क़बीला यहूदा (Judah) साथ रह गया दे० '१ सलातीन' (1 Kings) १२ : १७।

इन 'आयतों' का एक सीधा-सादा अर्थ यह मालूम होता है कि हज़रत सुलैमान अ० से कोई चूक हो गई थी जिस के कारण उन का राज्य कुछ समय के लिए छिन गया था या उस के छिन जाने का खतरा पैदा हो गया था जैसा कि "उस की कुरसी पर धड़ डाल देने" से समझ में आता है। यह देख कर हज़रत सुलैमान अ० अपने 'रब' की ओर रुजू हुये और क्षमा की प्रार्थना की, और कहा कि मेरे 'रब' ! मुझे ऐसा राज्य दे जिसका मुझ से बढ़ कर कोई दूसरा अधिकारी न हो। ताकि मुझ से उस के छिन जाने की नौबत न आये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. तब हम ने हवा को उस के लिए अधीन कर दिया, जो उस के हुक्म से चलती थी धीमी होती जहाँ वह पहुँचना चाहता[१६]।

३७. और 'शैतानों' को[१७] (अधीन किया) हर तरह के निर्माण करने वाले और ग़ोता लगाने वाले,

३८. और दूसरे जो ज़ंजीरों में जकड़े हुये थे,[१८]

३९. (हम ने कहा) : यह हमारी देन है, अब एहसान करो या रोक रक्खो, कोई हिसाब नहीं।

४०. निश्चय ही उस के लिए हमारे यहाँ समीपता का स्थान, और अच्छा ठिकाना है।

४१. और हमारे बन्दे अय्यूब की याद करो,[१९] जब उस ने अपने 'रब' को पुकारा कि 'शैतान' ने मुझे दुःख और यातना पहुँचा रक्खी है[२०]।

४२. (हम ने उस से कहा) : अपना पाँव (धरती पर) मार। यह लो ठण्ढा-ठण्ढा नहाने को और पीने को[२१]।

४३. और हम ने उसे उस का परिवार (वापस) दिया, और उन के साथ उतने ही और[२२] कि हमारी ओर से दयालुता हो, और बुद्धि वालों के लिए यादगार रहे[२३]।

36. So We made the wind subservient unto him, setting fair by his command whithersoever he intended.

37. And the unruly, every builder and diver (made We subservient),

38. And others linked together in chains,

39. (Saying): This is Our gift, so bestow thou, or withhold, without reckoning.

40. And lo! he hath favour with Us, and a happy journey's end.

41. And make mention (O Muhammad) of Our bondman Job, when he cried unto his Lord (saying): Lo! the devil doth afflict me with distress and torment.

42. (And it was said unto him): Strike the ground with thy foot. This (spring) is a cool bath and a refreshing drink.

43. And We bestowed on him (again) his household and therewith the like thereof, a mercy from Us, and a memorial for men of understanding.

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾

ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

१६. सूरा अल-अंबिया में इस का उल्लेख हुआ है कि वह हवा जिसे अल्लाह ने हज़रत सुलैमान के लिए अधीन किया था तेज़ हवा थी। कुछ लोगों के विचार में अल्लाह ने इस अर्थ में उसे नर्म कर दिया था कि जिस ओर हज़रत सुलैमान अ० के व्यापारिक बेड़ों को जाना होता था हवा उसी ओर चलती थी परन्तु ज़्यादा सही अर्थ इस का यह मालूम होता है कि हवा हज़रत सुलैमान के हुक्म से तेज़ चलती थी लेकिन जहाँ उन्हें पहुँचना होता वहाँ पहुँच जाने पर बिल्कुल धीमी पड़ जाती।

१७. 'शैतान' से अभिप्रेत 'जिन्न' हैं।

१८. जो सेवक शैतान शरारत करते उन्हें जकड़ दिया जाता ताकि वे भाग न सकें। यह ज़रूरी नहीं कि जिन बेड़ियों और ज़ंजीर में उन्हें बाँधा जाता था, वे लोहे की ही बनी रही हों; और मनुष्यों की तरह हर एक उन शैतानों को देखता रहा हो।

१९. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८३–८४।

२०. अर्थात् मुझे बीमारी, धन-धान्य के नष्ट हो जाने और अपने लोगों के विमुख होने से भी अधिक कष्ट 'शैतान' पहुँचा रहा है। वह तरह-तरह की शंका मन में डालता है। वह चाहता है कि मैं अधीर हो कर अपने 'रब' से निराश हो जाऊँ। उस की कोशिश है कि मैं अपने 'रब' का कृतज्ञ न रहूँ।

२१. हज़रत अय्यूब अ० ने पाँव मारा तो एक स्रोत बह निकला। उस में नहाना और उस का पानी पीना यही उन की बीमारी का इलाज था। बाइबिल का बयान है कि हज़रत अय्यूब अ० के शरीर भर में फोड़े निकल आये थे।

२२. हज़रत अय्यूब अ० जब अल्लाह की कृपा से स्वस्थ हो गये तो सारा परिवार जो उन से विमुख हो गया था उन के पास पलट आया। फिर अल्लाह ने उन्हें और भी औलाद दी। पुरातन कथनों से मालूम होता है कि बीमारी की दशा में केवल पत्नी ने हज़रत अय्यूब का साथ दिया था और सब लोग उन से अलग हो गये थे।

२३. हज़रत अय्यूब अ० के क़िस्से से सबसे बड़ी शिक्षा हमें यह मिलती है कि मनुष्य को दुःख और कष्ट में अल्लाह से निराश नहीं होना चाहिए और न सुख और आराम में सरकश बनना चाहिए। बुद्धिमान लोग वही हैं जो हर हाल में अल्लाह पर भरोसा रखते और उस के आदेशों का पालन करते हैं। दुःख में धैर्य से काम लेते हैं और अपने 'रब' की शिकायत नहीं करते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. और (हम ने उस से कहा) : अपने हाथ से तिनकों का एक मुट्ठा ले, और उस से मार दे और अपनी क़सम न तोड़[२४]। निस्चय ही हम ने उसे 'सब्र' करने वाला पाया, क्या ही अच्छा बन्दा था ! निस्सन्देह वह (अपने 'रब' की ओर) बहुत रुजू करने वाला था।

44. And (it was said unto him): Take in thine hand a branch and smite therewith, and break not thine oath! Lo! We found him steadfast: how excellent a slave! Lo! he was everturning in repentance (to his Lord).

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾

४५. और हमारे बन्दों, इबराहीम, और इसहाक़ और याक़ूब को याद करो, जो हाथों वाले और आँखों वाले थे[२५]।

45. And make mention of our bondmen, Abraham, Issac and Jacob, men of parts and vision.

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾

४६. हम ने उन्हें एक प्रमुख विशेषता प्रदान की—घर की चर्चा[२६]।

46. Lo! We purified them with a pure thought, remembrance of the Home (of the Hereafter).

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۚ ﴿۴۶﴾

४७. निस्सन्देह वे हमारे यहाँ चुने हुये नेक लोगों में से हैं।

47. Lo! in Our sight they are ver'ly of the elect, the excellent.

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ؕ ﴿۴۷﴾

४८. और इसमाईल और अल्‌यसअ्[२७] और ज़ुलकिफ़्ल[२८] को याद करो ये सब नेक लोगों में हैं।

48. And make mention of Ishmael and Elisha and Dhu'l-Kifl. All are of the chosen.

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ؕ ﴿۴۸﴾

४९. यह एक अनुस्मारक है। और डर रखने वालों के लिए निश्चय ही अच्छा ठिकाना है,

49. This is a reminder. And lo! for those who ward off (evil) is a happy journey's end.

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۙ ﴿۴۹﴾

५०. सदैव रहने की 'जन्नतें', जिन के द्वार उन के लिए खुले होंगे,

50. Gardens of Eden, whereof the gates are opened for them,

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۚ ﴿۵۰﴾

५१. उन में, वे तकिया लगाये बैठे होंगे, वहाँ वे ख़ूब-ख़ूब मेवे[२९] और पेय मँगवाते होंगे।

51. Wherein, reclining, they call for plenteous fruit and cool drink (that is) therein.

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿۵۱﴾

२४. पुरातन कथनों से मालूम होता है कि बीमारी में हज़रत अय्यूब अ० ने क्रुद्ध हो कर अपनी पत्नी को मारने की क़सम खा ली थी। उन्हों ने क़सम खा कर कहा था कि मैं इतने कोड़े मारूँगा। जब अच्छे हुये तो उन्हें चिन्ता हुई कि पत्नी का कोई दोष नहीं है यदि मैं क़सम पूरी करता हूँ तो एक बे-गुनाह को मारना पड़ेगा। और यदि नहीं मारता तो क़सम तोड़नी पड़ेगी यह भी गुनाह की बात होगी। अल्लाह ने उन की कठिनाई दूर कर दी। हुक्म दिया कि जितने कोड़े मारने की क़सम खाई है उतने तिनकों की एक झाड़ू ले लो और उस झाड़ू से एक बार मार दो तुम्हारी क़सम पूरी हो जायेगी।

२५. अर्थात् कार्य-शक्ति और अन्तर्दृष्टि रखने वाले थे। उन की साधना अधूरी न थी, वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते थे और गुनाहों से दूर रहने का सामर्थ्य उन्हें प्राप्त था। वे पूर्ण प्रकाश में थे। सत्य और असत्य का उन्हें पूरा ज्ञान था।

२६. अर्थात् संसार में उन्हें शुभप्रशंसा और नेकनामी प्राप्त हुई और वे अमर हो गये।

इस का यह अर्थ भी किया जाता है कि परलोक को याद करने या लोगों में उस की चर्चा करने में उन्हें विशेषता प्राप्त हुई।

२७. हज़रत अल्‌यसअ् अ० 'बनी इसराईल' के 'नबियों', में से थे। यहूदी और ईसाई इन्हें इलीशअ (Elisha) कहते हैं। इन के जीवन-वृत्तान्त के लिए देखिए बाइबिल की किताब '१ सलातीन' (1 Kings) १ : १५–२१ और '२ सलातीन' (2 Kings) अध्याय २–१३।

२८. दे० सूरा अल-अंबिया फ़ुटनोट २९।

२९. मेवे और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. और उन के पास निगाहें बचाये रखने वाली (लजीली) समायु, स्त्रियाँ होंगी।

५३. यह है वह कुछ जिस का, हिसाब के दिन के लिए तुम से वादा किया जा रहा है।

५४. यह हमारा दिया हुआ है, जिस का कभी अन्त न होगा।

५५. एक ओर यह है। और (दूसरी ओर) सरकशों के लिए निश्चय ही बुरा ठिकाना है,

५६. 'जहन्नम', जिस में वे प्रवेश करेंगे, क्या ही बुरी आरामगाह है।

५७. यह लो चखो—खौलता हुआ पानी और पीप-रक्त,[३०]

५८. साथ ही कुछ और इसी से मिलता-जुलता, भिन्न-भिन्न प्रकार का !

५९. लो यह एक पूरा गरोह तुम्हारे साथ घुसा चला आ रहा है। न मिले कोई जगह इन को। ये आग में जलने वाले हैं !

६०. उन्हों ने कहा : नहीं, बल्कि तुम्हें कोई जगह न मिले। तुम ही तो यह हमारे आगे लाये हो। कितनी बुरी जगह है यह ठहरने की !

६१. उन्हों ने कहा : हमारे 'रब' ! जो कोई हमारे आगे यह (आपत्ति) ले आया, उसे आग में दोहरी यातना दे !

६२. और उन्हों ने कहा : क्या बात है कि हम बहुत से लोगों को नहीं देखते जिन को हम बुरे लोगों में गिनते थे[३१] ?

52. And with them are those of modest gaze, companions.

53. This it is that ye are promised for the Day of Reckoning.

54. Lo! this in truth is Our provision, which will never waste away.

55. This (is for the righteous). And lo! for the transgressors there will be an evil journey's end.

56. Hell where they will burn, an evil resting place.

57. Here is a boiling and an ice-cold draught, so let them taste it,

58. And other (torment) of the kind in pairs (the two extremes)!

59. Here is an army rushing blindly with you. (Those who are already in the fire say) No word of welcome for them. Lo! they will roast at the Fire.

60. They say: Nay, but you (misleaders), for you there is no word of welcome. Ye prepared this for us (by your misleading). Now hapless is the plight.

61. They say: Our Lord! Whoever did prepare this for us, Oh, give him double portion of the Fire!

62. And they say: What aileth us that we behold not men whom we were wont to count among the wicked?

وَعِندَهُمْ قَٰصِرَٰتُ ٱلطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ ٱلْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُۥ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّٰغِينَ لَشَرَّ مَـَٔابٍ ﴿٥٥﴾

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ ﴿٥٨﴾

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًۢا
بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا۟ ٱلنَّارِ ﴿٥٩﴾

قَالُوا۟ بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ
قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ ٱلْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

قَالُوا۟ رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ
عَذَابًا ضِعْفًا فِى ٱلنَّارِ ﴿٦١﴾

وَقَالُوا۟ مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا
نَعُدُّهُم مِّنَ ٱلْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

३०. इस के लिए मूल ग्रन्थ में 'ग़स्साक़' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के कई अर्थ होते हैं। साधारणतः शरीर से निकलने वाली तरी को जो पीप, रक्त, कच-लुहू आदि के रूप में हो "ग़स्साक़" कहते हैं, आँसू भी इसी में सम्मिलित है। "ग़स्साक़" का दूसरा अर्थ होता है अति अधिक ठण्डी वस्तु। इस के अतिरिक्त अत्यन्त बदबूदार और दुर्गन्धित वस्तु को भी "ग़स्साक़" कहते हैं।

३१. इस से अभिप्रेत वे 'ईमान' वाले लोग हैं जिन्हें 'काफ़िर' लोग दुनिया में बुरा जानते थे और उन की बातों की हँसी उड़ाया करते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३. क्या हमने उन का मज़ाक़ बनाया था ! कहीं ऐसा तो नहीं कि (वे यहाँ हों किन्तु हमारी) निगाहें उन पर पड़ने से रह गई हों ?

63. Did we take them (wrongly) for a laughing-stock, or have our eyes missed them?

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ٦٣

६४. निस्सन्देह यह तो होना ही है—आग ('जहन्नम' में जाने) वालों का परस्पर झगड़ना।

64.. Lo! that is very truth: the wrangling of the dwellers in the Fire.

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ٦٤

६५. [३२](हे 'नबी' !) कहो : मैं तो बस एक सचेत करने वाला हूँ, और कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, प्रभुत्वशाली,

65. Say (unto them, O Muhammad): I am only warner, and there is no God save Allah, the One; the Absolute:

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ٦٥

६६. आकाशों और धरती का 'रब' और जो कुछ उन के बीच है उस का, प्रभुत्वशाली और बड़ा क्षमाशील।

66. Lord of the heavens and the earth and all that is between them; the Mighty, the Pardon'ng.

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ٦٦

६७. कहो : यह एक बड़ी ख़बर है

67. Say: It is tremendous tidings.

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ٦٧

६८. तुम जिसे ध्यान में नहीं लाते हो[३३] !

68. Whence ye turn away!

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ٦٨

६९. (कहो) : मुझे 'मलए आला'[३४] (सब से ऊँचे दरबार वालों) की जब वे झगड़ रहे थे कुछ ख़बर न थी;

69. I had no knowledge of the Highest Chiefs when they disputed;

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ٦٩

७०. मेरी ओर तो केवल इस लिए 'वह्य' की जाती है कि मैं खुला-खुला सचेत करने वाला हूँ।

70. It is revealed unto me only that I may be a plain warner.

إِنْ يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ٧٠

७१. [३५]जब तेरे 'रब' ने 'फ़िरिश्तों' से कहा : निश्चय ही मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनाने वाला हूँ,

71. When thy Lord said unto the angels: lo! I am about to create a mortal out of mire.

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ٧١

७२. फिर जब मैं उसे नख-शिख से दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूँक दूँ,[३६] तो तुम उस के आगे 'सजदे' में गिर जाओ,[३७]

72. And when I have fasioned him and breathed into him of My spir.t, then fall down before him prostrate.

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ٧٢

७३. अत: सब-के-सब 'फ़िरिश्तों' ने 'सजदा' किया।

73. The angels fell down prostrate, every one,

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ٧٣

३२. दे० सूरा की आरम्भिक आयतें।

३३. 'काफ़िर' कहते थे : "क्या इस व्यक्ति ने सब 'इलाहों' (पूज्यों) को एक ही 'इलाह' बना डाला ?" (दे० आयत ५) यहाँ उन की इसी बात का उत्तर दिया गया है। इस उत्तर में केवल सत्य को उन के सामने रक्खा ही नहीं गया है बल्कि 'शिर्क' (सहवाद) का तर्कयुक्त खण्डन भी कर दिया गया है।

३४. दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात फ़ुटनोट ५।

३५. जिस झगड़े की ओर ऊपर की 'आयत' में संकेत किया गया है उस झगड़े का अब सविस्तार उल्लेख किया जा रहा है। 'शैतान' ने अपने 'रब' से जो झगड़ा किया था वह 'फ़िरिश्तों' की सभा में किया था। "मलए आला" से अभिप्रेत 'फ़िरिश्ते' ही हैं। अल्लाह से 'शैतान' की बात-चीत साक्षात नहीं हुई थी वह वार्त्तालाप वास्तव में 'फ़िरिश्तों' के वास्ते से हुआ था।

३६. दे० अल-हिज्र फ़ुटनोट १७।

३७. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ३४; सूरा अल-आराफ़ आयत ११।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४. सिवाय 'इबलीस' के; उस ने अपने को बड़ा समझा और 'काफ़िरों' में से हो गया ।

74. Saving Iblis; he was scornful and became one of the disbelievers.

إِلَّآ إِبْلِيسَ ۖ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

७५. ('रब' ने) कहा : हे 'इबलीस' ! तुझे किस चीज़ ने उसे 'सजदा' करने से रोका जिसे मैं ने अपने हाथों से बनाया है ? तू ने अपने को बड़ा समझा या तू सिर उठाने वालों में से है ?

75. He said: O Iblis! What hindereth thee from falling prostrate before that which I have created with both My hands? Art thou too proud or art thou of the high exalted?

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾

७६. उस ने कहा : मैं उस से उत्तम हूँ । आप ने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से पैदा किया है ।

76. He said: I am better than him. Thou createdst me of fire, whilst him Thou didst create of clay.

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾

७७. (अल्लाह ने) कहा : अच्छा यहाँ से[३८] निकल जा, तू पतित है,

77. He said: Go forth from hence, for lo! thou art outcast,

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۖ ﴿٧٧﴾

७८. और तेरे ऊपर उस दिन तक मेरी लानत (फिटकार) है जबकि (लोगों को उन के कर्मों का) बदला दिया जायेगा ।

78. And lo! My curse is on thee till the Day of Judgement.

وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾

७९. बोला : मेरे 'रब' ! यह बात है तो मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे दे जबकि लोग (जीवित कर के दोबारा) उठाये जायेंगे ।

79. He said: My Lord! Reprieve me till the day when they are raised.

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾

८०. (अल्लाह ने) कहा : अच्छा तुझे मुहलत है

80. He said: Lo! thou art of those reprieved.

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾

३८. उस स्थान से जहाँ उस ने अल्लाह की अवज्ञा की थी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१. निश्चित समय के दिन तक।

81. Until the day of the time appointed.

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

८२. उस ने कहा : तो तेरी इज़्ज़त (प्रताप) की क़सम मैं इन सब लोगों को बहका कर रहूँगा,

82. He said: Then, by Thy might, I surely will beguile them every one,

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

८३. सिवाय उन के जो उन में तेरे ख़ालिस बन्दे होंगे[३९]।

83. Save Thy single-minded slaves among them.

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾

८४. (अल्लाह ने) कहा : यह अटल है—और मैं अटल ही कहता हूँ—

84. He said: The Truth is, and the Truth I speak,

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾

८५. कि मैं 'जहन्नम' को तुझ से[४०] और उन सब से भर दूँगा जो इन लोगों में से तेरे पीछे चलेंगे।

85. That I shall fill hell with thee and with such of them as follow thee, together,

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾

८६. (हे 'नबी' !) कह दो : मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं माँगता, और न मैं बनावटी लोगों में से हूँ[४१]।

86. Say (O Muhammad, unto mankind): I ask of you no fee for this, and I am no impostor.

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾

८७. यह तो बस एक अनुस्मारक है संसार वालों के लिए।

87. Lo! it is naught else than a reminder for all peoples.

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

८८. और कुछ ही समय में तुम्हें इस का हाल मालूम हो जायेगा।

88. And ye will come in time to know the truth thereof.

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

* * * *

३९. वे मेरे बहकाने में नहीं आयेंगे उन्हें मैं पथविचलित करने में असमर्थ रहूँगा।

४०. तुझ से अभिप्रेत 'इबलीस' और उस का वह पूरा गरोह है जो मनुष्य को बहकाने में लगेगा।

४१. मैं जो कुछ कर रहा हूँ निष्कामभावना से कर रहा हूँ। मुझे उन लोगों में से न समझो जो तुच्छ उद्देश्यों के लिए झूठे दावे ले कर उठते हैं। मैं तुम से जो कुछ कहता हूँ वह अपनी ओर से नहीं कहता हूँ उस की सच्चाई पर मेरा सम्पूर्ण जीवन साक्षी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९—अज़्-ज़ुमर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अज़-ज़ुमर' (The Troops) 'आयत' ७१ और ७३ से लिया गया है। प्रस्तुत सूरा में दो गरोहों का उल्लेख किया गया है। एक गरोह 'ईमान' वालों का है, दूसरा उन लोगों का जिन्हों ने सच्चाई को झुठला दिया और 'कुफ़्र' का मार्ग ग्रहण किया। इस सूरा में इन दोनों गरोहों के परिणामों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है कि 'जन्नत' और 'जहन्नम' को कल्पना-लोक में हम अपनी आँखों से देखने लगते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

आयत १० से पता चलता है कि यह सूरा 'हब्शा' (Abyssinia) की 'हिजरत' से पूर्व उतरी है। कुछ ऐतिहासिक कथनों से भी इसी की होती पुष्टि है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में बताया गया है कि नबी सल्ल० जिस बात की ओर लोगों को बुला रहे हैं उस का मूल उद्देश्य क्या है। बताया गया कि आप (सल्ल०) लोगों को इसी बात का निमन्त्रण दे रहे हैं कि लोग खालिस अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी करें; बन्दगी और 'इबादत' में अल्लाह के साथ किसी और को सहभागी न ठहरायें। यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है[1]। इस मौलिक बात को 'सूरा' में बार-बार दोहराया गया है। 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की सत्यता और उसे अपनाने के अच्छे परिणामों के उल्लेख के साथ-साथ 'शिर्क' का निषेध किया गया है और बताया गया है कि 'शिर्क' पर आरूढ़ रहने का परिणाम कितना भयंकर है।

इस्लाम-विरोधी दल के सामने यह बातें रक्खी गईं कि वे अपनी नीति को बदलें और अल्लाह की दयालुता से अपने-आप को वंचित न करें।

मक्का वालों का विरोध और अत्याचार बहुत बढ़ चुका था; 'ईमान' वालों को तरह-तरह से सताया जा रहा था। इस सिलसिले में 'ईमान' वालों से कहा गया कि अल्लाह की धरती विशाल है यदि अल्लाह के शत्रुओं ने तुम्हारे लिए किसी जगह को तंग कर दिया है, तो तुम अपने 'दीन' और धर्म की रक्षा के लिए कहीं और चले जाओ; अल्लाह तुम्हारे 'सब्र' का बदला तुम्हें अवश्य देगा। नबी सल्ल० को हुक्म दिया गया कि आप (सल्ल०) 'काफ़िरों' से साफ़-साफ़ दो टूक बात कह दें कि तुम अल्लाह के सिवा जिस की चाहो बन्दगी और उपासना करो परन्तु हम 'तौहीद' के सिवा कोई और मार्ग नहीं अपना सकते।

१. दे० आयत १-२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अज़्-ज़ुमर

(मक्का में उतरी—'आयतें' ७५)

THE TROOPS
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّثَمَانِيْ رُكُوْعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. इस 'किताब' का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

1. The revelation of the Scripture is from Allah, the Mighty, the Wise.

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

२. यह 'किताब' हम ने तुम्हारी ओर 'हक़' के साथ उतारी है; अतः तुम अल्लाह ही की 'इबादत' (बन्दगी) करो, 'दीन' को उसी के लिए ख़ालिस करते हुये।

2. Lo! We have revealed the Scripture unto thee (Muhammad) with truth; so worship Allah, making religion pure for Him (only).

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ
اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ②

३. जान रक्खो ख़ालिस 'दीन' अल्लाह ही के लिए है। और वे लोग जिन्हों ने उस के सिवा दूसरे संरक्षक-मित्र बना रक्खे हैं (कहते हैं) : हम तो उन की 'बन्दगी' केवल इस लिए करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह के अधिक-से-अधिक समीप कर दें[1]। निश्चय ही अल्लाह उन के बीच उस का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे हैं।

निस्सन्देह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और अत्यन्त 'कुफ़्र' करने वाला हो[2]।

3. Surely pure religion is for Allah only. And those who choose protecting friends beside Him (say): We worship them only that they may bring us near unto Allah. Lo! Allah will judge between them concerning that wherein they differ. Lo! Allah guideth not him who is a liar, an ingrate.

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ
اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③

१. साधारणत: यही समस्त संसार के 'मुश्रिक' कहते हैं कि हम अल्लाह के अलावा दूसरों की उपासना तो केवल इस लिए करते हैं कि इन के ही सहारे अल्लाह तक हमारी पहुँच हो सकती हैं; यही हैं जो हमारी याचना को उस तक पहुँचाते हैं; देवी-देवताओं के बिना अल्लाह के दरबार तक भला हमारी पहुँच कैसे हो सकती है।

इस तरह की बातें कहने वाले वास्तव में अल्लाह के गुणों से परिचित नहीं अल्लाह तो सर्वज्ञ और अन्तर्यामी है वह तो उन बातों को भी जानता है जो हमारे मन में छिपी होती हैं। उसे प्रसन्न करने का एक-मात्र साधन यही है कि मनुष्य उस की पूजा और बन्दगी करे उस के सिवा किसी और के शरणागत् न हो। 'य एक इत् । तमुष्टिहि'। (ऋ० वेद ६–४५–१६) वह एक ही है। उसी की पूजा करो। 'मा चिदन्यद् विशंसत' (ऋ० ८–१–१) किसी दूसरे को न पूजो।

२. उन्हें झूठा इस लिए कहा कि उन्हों ने झूठ-मूठ यह धारणा अपने मन में स्थिर कर रक्खी है कि कुछ दूसरे भी हैं सफल होने के लिए जिन की उपासना अनिवार्य है। तथ्यहीन विचारों और मन्तव्यों का वे केवल स्वयं पालन नहीं करते बल्कि दूसरों को भी इस की ओर बुलावा देते हैं। उन्हें घोर 'कुफ़्र' में ग्रस्त इस लिए कहा गया कि वे सत्य का इन्कार करते हैं और उन की कृतघ्नता भी सीमा से आगे बढ़ चुकी है। विभिन्न प्रकार की नेमतें और उत्तम वस्तुयें तो उन्हें अल्लाह दे रहा है और कृतज्ञता वे दूसरों के आगे प्रकट कर रहे हैं जिन के बारे में उन्हों ने यह कल्पना कर रक्खी है कि उन्हीं की कृपा से ये नेमतें मिल रही हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. यदि अल्लाह कोई बेटा बनाना चाहता, तो जो वह पैदा करता है उस में से जो चाहता चुन लेता। महिमावान् है वह! वह अल्लाह है, अकेला और प्रभुत्वशाली[३]।

4. If Allah had willed to choose a son, He could have chosen what He would of that which He hath created. Be He glorified! He is Allah, the One the Absolute

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

५. उस ने आकाशों और धरती को 'हक़' के साथ पैदा किया[४]। रात को दिन पर लपेटता है, और दिन को रात पर लपेटता है, और सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगाया, हर एक एक निश्चित समय तक चला जा रहा है। जान रक्खो वह प्रभुत्वशाली और बड़ा क्षमाशील है[५]।

5. He hath created the heavens and the earth with truth. He maketh night to succeed day, and He maketh day to succeed night, and He constraineth the sun and the moon to give service, each running on for an appointed term. Is not He the Mighty, the Forgiver?

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ⑤

६. उस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, फिर उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर-मादा[६] उतारे। वह तुम्हारी माओं के पेटों में, तीन अँधेरियों के बीच,[७] तुम्हें एक के बाद एक सृजन-रूप देता चला जाता है। यही अल्लाह तुम्हारा 'रब' है। राज्य उसी का है[८]। कोई 'इलाह' (पूज्य) उस के सिवा नहीं। फिर तुम कहाँ से फिरे जाते हो?

6. He created you from one being, then from that (being) He made its mate; and He hath provided for you of cattle eight kinds. He created you in the wombs of your mothers, creation after creation, in a threefold gloom. Such is Allah, your Lord. His is the Sovereignty. There is no God save Him. How then are ye turned away?

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ⑥

३. उस के औलाद हो यह उस की महिमा, अनुपमता और यकताई के प्रतिकूल बात है, उस का न कोई सहजातीय है और न हो सकता है इस लिए उस के लिए औलाद ठहराना 'कुफ़्र' और अन्याय है।

४. अर्थात् धरती और आकाश की सृष्टि यों ही खेल के रूप में नहीं हुई है बल्कि यह सारा कारखाना एक उच्च लक्ष्य एवं उद्देश्य के अन्तर्गत चल रहा है।

५. इसी लिए लोगों को उन के अपराधों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन्हें मुहलत-पर-मुहलत दिये जाता है।

६. अर्थात् ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी और इन के जोड़े दे० सूरा अल-अनआम आयत १४३-१४४।

७. तीन अँधेरियों से अभिप्रेत तीन परदे हैं : पेट, गर्भाशय और वह झिल्ली जिस में बच्चा लिपटा हुआ होता है।

८. सम्पूर्ण विश्व में उसी का हुक्म चल रहा है। जगत का सृष्टि-कर्त्ता, संचालक और स्वामी वही है। 'एक इद्राजा जगतो बभूव' (ऋ० १०-१२१-४)। जगत का स्वामी एक ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. यदि तुम 'कुफ़्र' करोगे, तो अल्लाह तुम से बेपरवाह है,[९] और वह अपने बन्दों के लिए 'कुफ़्र' को पसन्द नहीं करता और यदि तुम कृतज्ञता दिखलाओ तो[१०] उसे वह तुम्हारे लिए पसन्द करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा[११]। फिर तुम्हें अपने 'रब' की ओर पलटना है; तो वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते थे। निस्सन्देह वह सीनों की बात जानने वाला (अन्तर्यामी) है।

7. If ye are thankless, yet Allah is Independent of you, though He is not pleased with thanklessness for His bondmen; and if ye are thankful, He is pleased therewith for you. No laden soul will bear another's load. Then unto your Lord is your return; and He will tell you what ye used to do. Lo! He knoweth what is in the breasts (of men).

إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ وَلَا
يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِن تَشْكُرُوا
يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

८. और मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है,[१२] तो वह अपने 'रब' को, उस की ओर रुजू कर के पुकारता है। फिर जब वह उसे अपनी ओर से नेमत प्रदान कर देता है तो वह उसे भूल जाता है जिस के लिए वह पहले पुकार रहा था, और दूसरों को अल्लाह का प्रतिद्वन्दी ठहराता है[१३] ताकि उस के मार्ग से भटकाए[१४]। कहो : अपने 'कुफ़्र' का थोड़ा सा फ़ायदा उठा ले। निश्चय ही तू आग ('जहन्नम' में जाने) वालों में से है।

8. And when some hurt toucheth man, he crieth unto his Lord, turning unto Him (repentant). Then, when He granteth him a boon from Him he forgetteth that for which he cried unto Him before, and setteth up rivals to Allah that he may beguile (men) from His way. Say (O Muhammad, unto such an one): Take pleasure in thy disbelief a while. Lo! thou art of the owners of the fire.

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ
مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ
نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَ
جَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ
قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا إِنَّكَ مِنْ
أَصْحَابِ النَّارِ ⑧

९. क्या (यह व्यक्ति और वह व्यक्ति बराबर होंगे) जो बन्दगी में लगा रहता है रात की घड़ियों में, 'सजदा' करता और खड़ा रहता है, 'आख़िरत' से डरता और अपने 'रब' की दयालुता की आशा रखता है? कहो : क्या बराबर होते हैं वे लोग जो जानते हैं और वे लोग जो नहीं जानते[१५]? चेतते तो वही हैं जो बुद्धि वाले[१६] हैं।

9. Is he who payeth adoration in the watches of the night, prostrate and standing, bewaring of the Hereafter and hoping for the mercy of his Lord, (to be accounted equal with a disbeliever)? Say (unto them, O Muhammad): Are those who know equal with those who know not? But only men of understanding will pay heed.

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَ
قَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑨ ع

९. तुम्हारे 'कुफ़्र' से उसे कोई हानि नहीं पहुँच सकती। नबी सल्ल० ने कहा है कि अल्लाह कहता है : हे मेरे बन्दो! यदि तुम सब-के-सब अगले और पिछले, मनुष्य और 'जिन्न' अपने में से किसी दुस्साहसी-से-दुस्साहसी व्यक्ति के हृदय की तरह हो जाओ जब भी मेरे राज्य में कुछ भी कमी न होगी।

१०. 'कुफ़्र' के मुक़ाबले में यहाँ 'कृतज्ञता' शब्द प्रयोग किया गया है इस से यह बात मालूम होती है कि 'कुफ़्र' की नीति ग्रहण करना वास्तव में अल्लाह के उपकारों को भूलना है। नमकहरामी से बढ़ कर अधमता और नीचता की बात दूसरी नहीं हो सकती।

११. हर एक अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है। इस लिए सत्य के प्रति निष्पक्ष भाव से विचार करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है।

१२. मनुष्य से अभिप्रेत वह मनुष्य है जिस ने अकृतज्ञता की नीति अपनाई हो दे० आयत ३८, ४९।

१३. अर्थात् अल्लाह के सिवा दूसरों की बन्दगी और पूजा आदि में लग जाता है अल्लाह को छोड़कर उन्हीं से याचनायें करता और उन्हीं के आगे नज़्र और भेंट प्रस्तुत करने लगता है।

१४. उस की गुमराही उसी तक नहीं रहती वह दूसरों के पथविचलित होने का भी कारण बनता है। वह लोगों से कहता है कि मैं कष्ट में घिर गया था परन्तु अमुक पूज्य या अमुक देवी-देवताओं की मुझ पर कृपा हुई और उन की दया से मेरे सब कष्ट दूर हो गये।

१५. अर्थात् सत्य का ज्ञान रखने वाले और सत्य से अनभिज्ञ दोनों कभी बराबर नहीं हो सकते।

१६. दे० सूरा सॉद० आयत २९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. (हमारी ओर से) कहो : हे मेरे बन्दो जो 'ईमान' लाये हो ! अपने 'रब' का डर रक्खो[१७], जिन लोगों ने इस संसार में भलाई की उन के लिए भलाई है,[१८] और अल्लाह की धरती विशाल है[१९]। 'सब्र' करने वालों को तो उन का बदला बेहिसाब दिया जायेगा।

10. Say: O My bondmen who believe! Observe your duty to your Lord. For those who do good in this world there is good, and Allah's earth is spacious. Verily the steadfast will be paid their wages without stint.

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ؕ
لِلَّذِينَ اَحْسَنُوا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ
وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُونَ
اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

११. कहो : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की 'इबादत' (बन्दगी) करूँ, 'दीन' को उस के लिए खालिस कर के

11. Say (O Muhammad): Lo! I am commanded to worship Allah, making religion pure for Him (only).

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا
لَّهُ الدِّيْنَ ⑪

१२. और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सब से पहले 'मुस्लिम' बनूँ।

12. And I am commanded to be the first of those who surrender (unto Him).

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ⑫

१३. कहो : यदि मैं अपने 'रब' की अवज्ञा करूँ, तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।

13. Say: Lo! if I should disobey my Lord, I fear the doom of a tremendous Day.

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑬

१४. कहो : मैं तो अल्लाह ही की 'बन्दगी' करता हूँ, अपने 'दीन' को उस के लिए खालिस कर के।

14. Say: Allah I worship, making my religion pure for Him (only).

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ ⑭

१५. तो तुम उस के सिवा जिस की चाहो 'बन्दगी' करो[२०]। कहो : वास्तव में घाटा उठाने वाले तो वही लोग हैं जिन्हों ने 'क़ियामत' के दिन अपने-आप को और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया। सुन लो यही खुला घाटा है[२१] !

15. Then worship what ye will beside Him. Say: The losers will be those who lose themselves and their housefolk on the Day of Resurrection. Ah, that will be the manifest loss!

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ
اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑮

१६. उन के ऊपर आग की छतरियाँ होंगी और उन के नीचे से भी (आग की) छतरियाँ होंगी। यही है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। तो हे मेरे बन्दो, मेरा डर रक्खो !

16. They have an awning of fire above them and beneath them a dais (of fire). With this doth Allah appal His bondman. O my bondmen, therefor fear Me!

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ
مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ
بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ⑯

१७. अर्थात् उस की अवज्ञा से बचो और उस की अप्रसन्नता से डरते रहो।

१८. लोक-परलोक में कल्याण और भलाई ऐसे ही लोगों के लिए है। संसार में उत्तम जीवन ऐसे ही लोगों का होता है चाहे वे झोपड़ों में ही क्यों न रहते हों; और उन के यहाँ उपवास और फ़ाक़ा ही क्यों न होता हो। सच्ची खुशी और परितोष इन्हीं लोगों को प्राप्त होता है। संसार इन्हीं का आदर करता है।

१९. अर्थात् किसी नगर या भू-भाग में अल्लाह की बन्दगी करने वालों का रहना दूभर कर दिया गया हो तो वे वहाँ से 'हिजरत' कर के ऐसी जगह चले जायें जहाँ यह कठिनाई न हो।

२०. इस का यह अर्थ कदापि नहीं कि लोगों को यह छूट दी जा रही है कि वे जिस की चाहें बन्दगी करें बल्कि यहाँ 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को सचेत किया गया है कि उन की भलाई इसी में है कि वे केवल अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी करें; परन्तु यदि वे इस के लिए तैयार नहीं हैं तो 'नबी' और नबी के अनुयायियों का काम यह नहीं है कि उन के लिए ये भी बन्दगी के मार्ग को छोड़ कर 'कुफ़्र' और 'शिर्क' को अपनाने लग जायें।

२१. दे० सूरा अश-शूरा आयत ४५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. और जो लोग 'तागूत' की 'इबादत' से बचे और अल्लाह् की ओर रुजू किया,[22] उन के लिए शुभसूचना है। तो मेरे बन्दों को शुभसूचना दे दो

१८. जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो अच्छी-से-अच्छी बात है उस का पालन करते हैं[23]। ये वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह् ने मार्ग दिखाया, और यही बुद्धि वाले[24] हैं

१९. तो क्या वह व्यक्ति जिस के लिए यातना का फ़ैसला हो चुका है (यातना से बचाया जा सकता है) तो क्या तुम बचा लोगे उसे जो आग में पड़ चुका है[25]?

२०. परन्तु जो लोग अपने 'रब' से डर कर रहे, उन के लिए ऊंचे भवन हैं मंज़िल-पर-मंज़िल बनी हुई, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। यह वादा अल्लाह् का है। अल्लाह् अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता।

२१. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह् ने आकाश से पानी बरसाया फिर धरती में उस की धारायें चलाईं, फिर उस (पानी) के द्वारा विभिन्न रंग की खेती निकालता है; फिर वह (खेती पक कर) सूख जाती है फिर तू उसे देखता है कि पीली पड़ गई; फिर उसे भुस बना देता है। निश्चय ही इस में अनुस्मारक[26] है बुद्धि वालों[27] के लिए।

२२. तो क्या (कहना उस व्यक्ति का) जिस का सीना अल्लाह् ने 'इस्लाम' के लिए खोल दिया,[28] तो उसे अपने 'रब' की ओर से प्रकाश प्राप्त है! तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन के दिल अल्लाह् के ज़िक्र से ख़ाली रह कर सख़्त हो गये हैं। यह लोग खुली गुमराही में ड़ेप हुये हैं।

17. And those who put away false gods lest they should worsh p them and turn to Allah in repentance, for them there are glad tidings. Therefor give good tidings (O Muhammad) to My bondmen,

18. Who hear advice and follow the best thereof. Such and those whom Allah guideth, and such are men of understanding.

19. Is he on whom the word of doom is fulfilled (to be helped), and canst thou (O Muhammad) rescue him who is in the Fire?

20. But those who keep their duty to their Lord, for them are lofty halls with lofty halls above them, built (for them), beneath which rivers flow. (It is) a promise of Allah. Allah faileth not His promise.

21. Hast thou not seen how Allah hath sent down water from the sky and hath caused it to penetrate the earth as water-springs, and afterward thereby produceth crops of divers hues; and afterward they wither and thou seest them turn yellow then He maketh them chaff. Lo! herein ver ly is a reminder for men of understanding.

22. Is he whose bosom Allah hath expanded for the Surrender (unto Him), so that he followeth a light from His Lord (as he who disbelieveth)? Then woe unto those whose hearts are hardened against remembrance of Allah. Such are in plain error.

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾
الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾
أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾

२२. दे० आयत ५४।
२३. दे० आयत ५५।
२४. दे० आयत ९, २१।
२५. अर्थात् जो अपने कर्म से यातना का भागी बन चुका हो और जिस के बारे में अल्लाह ने यह फ़ैसला कर लिया हो कि उसे उस के किये का दण्ड देना है।
२६. दे० आयत २१।
२७. दे० आयत ९, १८।
२८. अर्थात् 'इस्लाम' के बारे में जिसे समाधान हो गया कि यही सत्यधर्म है। इस के बारे में उसे कोई सन्देह और संशय न हो। 'इस्लाम' उस के लिए आनन्दप्रद और आत्म-परितोष का कारण बन जाये। उस के सब काम शान्ति, कल्याण और आनन्द से प्रेरित और आनन्द से परिपूर्ण हो जायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसी 'किताब' जिस के सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं, और बार-बार दोहराये गये हैं,[२९] उस से उन लोगों के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने 'रब' से डरने वाले हैं, फ़िर उन के शरीर और उन के दिल नर्म पड़ कर अल्लाह के 'ज़िक्र'[३०] की ओर लग जाते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन[३१] है, जिस से वह (सीधे) मार्ग पर ले आता है जिसे चाहता है और जिसे अल्लाह ही पथभ्रष्ट कर दे, उस के लिए कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है।

23. Allah hath (now) revealed the fairest of statements, a Scripture consistent (wherein promises of reward are), paired (with threats of punishment, whereat doth creep the flesh of those who fear their Lord, so that their flesh and their hearts soften to Allah's reminder. Such is Allah's guidance, wherewith He guideth whom He will. And him whom Allah sendeth astray, for him there is no guide.

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

२४. क्या (हाल होगा उस व्यक्ति का) जो क़ियामत के दिन बुरी यातना से अपने मुँह को बचाता होगा? और ज़ालिमों से कहा जायेगा: अब चखो मज़ा उस का जो कमाई तुम करते थे।

24. Is he then, who will strike his face against the awful doom upon the Day of Resurrection (as he who doth right)? And it will be said unto the wrong-doers: Taste what ye used to earn.

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾

२५. जो लोग इन से पहले थे वे भी झुठला चुके हैं, आख़िर उन पर वहाँ से यातना आई जिस की उन्हें ख़बर भी न थी।

25. Those before them denied, and so the doom came on them whence they knew not.

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾

२६. फिर अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में रुसवाई का मज़ा चखाया, और 'आख़िरत' की यातना तो बहुत बड़ी है। क्या ही अच्छा होता कि ये लोग जानते।

26. Thus Allah made them taste humiliation in the life of the world, and verily the doom of the Hereafter will be greater if they did but know.

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

२७. हम ने इस 'क़ुरआन' में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें दी हैं, कदाचित् ये सोचें;

27. And verily We have coined for mankind in this Qur'an all kinds of similitudes, that haply they may reflect;

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

२८. क़ुरआन भी ऐसा जो अरबी (भाषा) में है, और कुछ भी टेढ़ नहीं रखता, कदाचित् ये बचें।

28. A Lecture in Arabic, containing no crookedness, that haply they may ward off (evil).

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾

२९. अर्थात् उस में किसी प्रकार का विभेद और परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं बल्कि पूरी किताब में आरम्भ से अन्त तक बड़ी समता पाई जाती है।

वह एक समतायुक्त किताब है उस में बड़ी एकरसता और अनुरूपता पाई जाती है। उस की वर्णन-शैली ऐसी है कि उस के टुकड़ों में लय (Rhythm) और अनुप्रास पाया जाता है। उस के बयान में किसी दृष्टिकोण से भी कोई कमी नहीं पाई जाती है।

३०. दे० आयत २१, २२।

३१. दे० आयत १८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. अल्लाह एक मिसाल देता है : एक व्यक्ति तो वह है जिस में कई साझी हैं आपस में खींचा-तानी करने वाले, और एक व्यक्ति वह है जो समूचा एक ही का है। क्या दोनों का हाल एक-सा हो सकता है[३२] ? प्रशंसा अल्लाह के लिए है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

29. Allah coineth a similitude. A man in relation to whom are several part-owners, quarrelling, and a man belonging wholly to one man. Are the two equal in similitude? Praise be to Allah! But most of them know not.

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ
هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

३० तुम्हें भी मरना है, और इन लोगों को भी मरना है;[३३]

30. Lo! thou wilt die, and lo! they will die;

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾

३१. फिर 'क़ियामत' के दिन, तुम सब अपने 'रब' के सामने झगड़ोगे।

31. Then lo! on the Day of Resurrection, before your Lord ye will dispute.

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

* ३२. फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ बाँधा, और सच्चाई को जब उस के सामने आई झुठला दिया ? क्या 'काफ़िरों' का 'जहन्नम' में ठिकाना नहीं है ?

32. And who doth greater wrong than he who telleth a lie against Allah, and denieth the truth when it reacheth him? Will not the home of disbelievers be in hell?

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى
اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

३३. और जो व्यक्ति सच्चाई ले कर आया और उस की तसदीक़ की तो ऐसे ही लोग डर रखने वाले हैं।

33. And whoso bringeth the truth and believeth therein—Such are the dutiful.

وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾

३४. उन के लिए उन के 'रब' के पास वह सब कुछ है जो वे चाहेंगे[३४]। यह है उत्तमकार लोगों का बदला :

34. They shall have what they will of their Lord's bounty. That is the reward of the good:

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ
جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾

३५. ताकि जो निकृष्टतम कर्म उन्हों ने किये थे उन्हें अल्लाह उन से दूर कर दे,[३५] और जो सर्वोत्तम कार्य वे करते थे उस का उन्हें बदला प्रदान करे।

35. That Allah will remit from them the worst of what they did, and will pay them for reward the best they used to do.

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا
وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

३२. इस मिसाल से यह बात भली-भाँति समझी जा सकती है कि 'शिर्क' (सहवाद) और 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) में कितना बड़ा अन्तर है। मनुष्य को चैन और आराम 'तौहीद' में ही मिल सकता है बहुत से पूज्यों और देवताओं की दासता में उसे कदापि कोई सुख और शान्ति नहीं मिल सकती।

३३. आज यदि ये तुम्हारी बात नहीं मानते तो न मानें यहाँ सदैव रहने वाला कोई नहीं है। नतीजा कल सब के सामने आ जायेगा।

* यहाँ से चौबीसवाँ पारा (Part XXIV) शुरू होता है।

३४. अपने 'रब' के पास बन्दा मरने के बाद ही पहुँच जाता है। मरने के बाद ही से अल्लाह की उस पर विशेष दया होने लगती है।

३५. नबी सल्ल० पर जो लोग 'ईमान' ला कर अपने जीवन में पूर्ण रूप से अल्लाह के आज्ञाकारी बन गये उन्हें शुभसूचना दी जा रही है कि अज्ञान-काल में उन से जो-जो गुनाह हुये हैं अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है ? ये लोग उस के सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं[३६]। और अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे, उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं।

36. Will not Allah defend His slave? Yet they would frighten thee with those beside Him. He whom Allah sendeth astray, for him there is no guide.

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

३७. और जिसे अल्लाह मार्ग दिखाये, उसे कोई भटकाने वाला नहीं। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली और (अपकर्म का) बदला लेने वाला नहीं है ?

37. And he whom Allah guideth, for him there can be no misleader. Is not Allah Mighty, Able to Requite (the wrong)?

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

३८. और यदि तुम इन लोगों से पूछो : आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया है ? कहेंगे : अल्लाह ने। कहो : देखो तो यदि अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे, तो क्या जिन (देवी-देवताओं) को तुम पुकारते हो वे उस की पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं; या वह मुझ पर दयालुता दर्शानी चाहें, तो क्या ये उस की दयालुता को रोक सकेंगे ? कह दो : मुझे अल्लाह काफ़ी है। भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

38. And verily, if thou shouldst ask them: Who created the heavens and the earth? they will say: Allah. Say: Bethink you then of those ye worship beside Allah, if Allah willed some hurt for me, could they remove from me His hurt; or if He willed some mercy for me, could they restrain His mercy? Say: Allah is my all. In Him do (all) the trusting put their trust.

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

३९. कहो : हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अपनी जगह काम करो। मैं भी (अपनी जगह) काम करता हूँ। अब जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा

39. Say: O my people! Act in your manner. I too am acting. Thus ye will come to know:

قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

४०. कि किस पर यातना आती है जो उसे रुसवा कर देगी, और किस पर स्थिर रहने वाली यातना आ पड़ती है।

40. Who it is unto whom cometh a doom that will abase him, and on whom there falleth everlasting doom.

مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

४१. (हे 'नबी' !) हम ने तुम पर यह 'किताब' लोगों के लिए हक़ के साथ उतारी है। अब जो (सीधा) मार्ग ग्रहण करेगा अपने लिए करेगा, और जो भटकेगा, उस के भटकने का बवाल उसी पर होगा। तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो।

41. Lo! We have revealed unto thee (Muhammad) the Scripture for mankind with truth. Then whosoever goeth right, it is for his soul, and whosoever strayeth, strayeth only to its hurt. And thou art not a warder over them.

إِنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾

३६. मक्का के 'काफ़िर' लोग नबी सल्ल० से कहते थे : तुम हमारे देवताओं का खण्डन करते हो तुम पर उन की फिटकार पड़ जायेगी। जिस किसी ने भी उन की निन्दा की उस का सत्तानाश हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. अल्लाह प्राणों को उन की मृत्यु के समय पूर्णतः ग्रस्त लेता है, और जो अभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ है, उसे उस के सोने की अवस्था में (ग्रस्त लेता है)[३७] । फिर जिस के लिए मृत्यु का फ़ैसला दे चुका होता है उसे रोक लेता है और दूसरों को एक नियत समय तक के लिए छोड़ देता है। निश्चय ही इस में विचारशील लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

42. Allah receiveth (men's) souls at the time of their death, and that (soul) which dieth not (yet) in its sleep He keepeth that (soul) for which He hath ordained death and dismisseth the rest till an appointed term. Lo! herein verily are portents for people who take thought.

اللہ یتوفی الانفس حین موتہا والتی لم تمت فی منامہا فیمسک التی قضی علیہا الموت ویرسل الاخری الی اجل مسمی ان فی ذلک لایت لقوم یتفکرون ٤٢

४३. क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरों को सिफ़ारिशी बना रक्खा है ? कहो : क्या ! चाहे वे किसी चीज़ का अधिकार न रखते हों और न समझते हों ?

43. Or choose they intercessors other than Allah? Say: What! Even though they have power over nothing and have no intelligence?

ام اتخذوا من دون اللہ شفعاء قل اولو کانوا لا یملکون شیئا ولا یعقلون ٤٣

४४. कहो : सिफ़ारिश तो सब-की-सब अल्लाह के लिए है[३८] । उसी के लिए है राज्य आकाशों और धरती का। फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है।

44 Say: Unto Allah belongeth all intercession. His is the Sovereignty of the heavens and the earth. And afterward unto Him ye will be brought back.

قل للہ الشفاعۃ جمیعا لہ ملک السموت والارض ثم الیہ ترجعون ٤٤

४५. और जब अकेले अल्लाह का 'ज़िक्र' किया जाता है, तो जो लोग 'आख़िरत' पर 'ईमान' नहीं रखते उनके दिल भिंचने लगते हैं, और उस के सिवा दूसरों का 'ज़िक्र' किया जाता है, तो उस समय वे ख़ुशी से खिल जाते हैं।

45. And when Allah alone is mentioned, the hearts of those who bel'eve not in the Hereafter, are repelled, and when those (whom they worship) beside Him are mentioned, behold! they are glad.

واذا ذکر اللہ وحدہ اشمازت قلوب الذین لا یؤمنون بالاخرۃ واذا ذکر الذین من دونہ اذا ہم یستبشرون ٤٥

४६. कहो : हे अल्लाह ! आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले ! तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिस में वे विभेद करते रहे हैं।

46. Say: O Allah! Creator of the heavens and the earth! Knower of the invisible and the visible! Thou wilt judge between Thy slaves concerning that wherein they used to differ.

قل اللہم فاطر السموت والارض علم الغیب والشہادۃ انت تحکم بین عبادک فی ما کانوا فیہ یختلفون ٤٦

४७. और यदि उन लोगों के पास जो ज़ालिम हैं वह सब कुछ होता जो धरती में है, और उतना ही उस के साथ और भी, तो ये 'क़ियामत' के दिन बुरी यातना से बचने के लिए दे डालते और उन के सामने अल्लाह की ओर से वह कुछ आयेगा, जिस का उन्हें गुमान भी न था।

47. And though those who do wrong possess all that is in the earth, and therewith as much again, they verily will seek to ransom themselves therewith on the Day of Resurrection from the awful doom; and there will appear unto them, from their Lord, that wherewith they never reckoned.

ولو ان للذین ظلموا ما فی الارض جمیعا ومثلہ معہ لافتدوا بہ من سوء العذاب یوم القیمۃ وبدا لہم من اللہ ما لم یکونوا یحتسبون ٤٧

३७. नींद की अवस्था में प्राणियों की चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं। चेतन वृत्तियों के निश्चेष्ट हो कर रुक जाने के प्रति कहा जा रहा है कि सोने की हालत में अल्लाह तुम्हारे प्राणों को ग्रस्त लेता है, जिस तरह वह मृत्यु के समय लोगों के प्राणों को ग्रस्त लेता है। इस से मालूम होता है कि निद्रा एक प्रकार की मृत्यु है। सोने में मनुष्य के प्राण लुप्त नहीं हो जाते बल्कि केवल उन की दशा में परिवर्तन आ जाता है मनुष्य बाह्य जगत से बेख़बर हो कर रह जाता है। इसी प्रकार मृत्यु से भी मनुष्य के प्राण विलुप्त नहीं होते केवल उन की दशा में परिवर्तन आ जाता है। शरीर के अवयव और इन्द्रियों से उन का सम्पर्क शेष नहीं रहता।

३८. दे० सूरा अल-बक़रा आयत २५५; सूरा अल-अनआम आयत ५१; सूरा युनुस आयत ३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. जो कुछ उन्हों ने कमाया[३९] उस की बुराइयाँ उन पर खुल जायेंगी और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिस की वे हँसी उड़ाते थे।

48. And the evils that they earned will appear unto them, and that whereat they used to scoff will surround them.

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾

४९. जब मनुष्य[४०] को कोई तकलीफ़ पहुँचाती है तो हमें पुकारने लगता है, फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई नेमत दे देते हैं तो कहता है : यह जो मुझे मिला है मालूम ही था[४१]। यह बात नहीं है, बल्कि यह आज़माइश है। परन्तु इन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

49. Now when hurt toucheth a man he crieth unto Us, and afterward when We have granted him a boon from Us, he saith: Only by force of knowledge I obtained it. Nay, but it is a test. But most of them know not.

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ؗ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾

५०. यह बात वे लोग भी कह चुके हैं जो इन से पहले थे, तो जो कुछ कमाई वे करते थे वह उन के कुछ काम न आई;

50. Those before them said it, yet (all) that they had earned availed them not;

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

५१. फिर जो कुछ उन्हों ने कमाया उस की बुराइयाँ ही उन पर आ पड़ीं; और इन (मक्का वाले) लोगों में जो ज़ालिम हैं, इन पर भी जो कुछ इन्हों ने कमाया उस की बुराइयाँ आ पड़ने ही वाली हैं; और ये बच निकलने वाले नहीं हैं।

51. But the evils that they earned smote them; and such of these as do wrong, the evils that they earn will smite them; they cannot escape.

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾

५२. क्या इन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है[४२]। निश्चय ही इस में 'ईमान' लाने वाले लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

52. Know they not that Allah enlargeth providence for whom He will, and straiteneth it (for whom he will). Lo! herein verily are portents for people who believe.

اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع

३९. हर कर्म का एक परिणाम होता है उसी को यहाँ 'कस्ब' अथवा कमाई कहा गया है। कर्म का एक नतीजा वह है जो भौतिक रूप से इस संसार में हमारे सामने आता है और एक नतीजा वह है जो 'आख़िरत' की दृष्टि से तर्तीब पाता है। वास्तविक महत्व यहाँ की कमाई का नहीं बल्कि उस नतीजे और परिणाम का है जो 'आख़िरत' में हमारे सामने आने वाला है।

४०. यहाँ मनुष्य से अभिप्रेत वे लोग हैं जिन्हों ने 'कुफ़्र' की नीति अपना रक्खी है। दुःख में उन्हें भी अल्लाह याद आता है; परन्तु जब अल्लाह की उन पर दया होती है तो वे अल्लाह को भूल जाते हैं। हालाँकि जो कुछ उन्हें मिला होता है उस में उन की परीक्षा होती है परन्तु इस बात को उन के अधिकतर लोग समझते नहीं।

४१. यह भी एक धोखा है कि वह यह समझता है कि हमें जो कुछ मिला है वह तो मिलने ही वाला था। हालाँकि दुनिया में जो कुछ दिया जा रहा है वह मनुष्य की परीक्षा के लिए दिया जा रहा है कि वह दुनिया में सरकश बन कर रहता है या अल्लाह की दासता में जीवन व्यतीत करता है। धन-वैभव और राज्य-सत्ता मिलते ही मनुष्य की नेकी और बदी खुल कर सामने आ जाती है।

४२. दे० सूरा अर-रूम आयत ३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. (मेरी ओर से) कह दो : हे मेरे वे बन्दो जिन्हों ने अपने-आप पर ज़्यादती की है ! अल्लाह की दयालुता से निराश न हो,[४३] निस्सन्देह अल्लाह सब गुनाहों को क्षमा कर देता है[४४] । निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[४५] ।

53. Say: O My slaves who have been prodigal to their own hurt! Despair not of the mercy of Allah, Who forgiveth all sins. Lo! He is the Forgiving, the Merciful.

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾

५४. और तुम अपने 'रब' की ओर रुजू करो, और अपने को उस के अर्पण कर दो, इस से पहले कि तुम पर यातना आ पहुँचे, फिर तुम्हें मदद न मिलेगी ।

54. Turn unto Him repentant, and surrender unto Him, before there come unto you the doom, when ye cannot be helped.

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

५५. तुम्हारे 'रब' की ओर से जो सर्वोत्तम चीज़ तुम्हारी ओर उतारी गई है उस पर चलो, इस से पहले कि तुम पर अचानक यातना आ पहुँचे और तुम्हें ख़बर भी न हो,

55. And follow the better (guidance) of that which is revealed unto you from your Lord, before the doom cometh on you suddenly when ye know not.

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

५६. ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : हाय, अफ़सोस, उस पर जो कोताही मैंने अल्लाह के हक़ में की, और मैं तो हँसी उड़ाने वालों ही में सम्मिलित रहा !

56. Lest any soul should say: Alas, my grief that I was unmindful of Allah, and I was indeed among the scoffers!

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

५७. या कहने लगे : यदि अल्लाह मुझे मार्ग दिखाता तो मैं भी डर रखने वालों में से होता !

57. Or should say: If Allah had but guided me I should have been among the dutiful!

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾

५८. या जब यातना देख ले, तो कहने लगे : क्या ही अच्छा हो कि मेरा (संसार में) फिर जाना हो तो मैं उत्तमकारों में से हो जाऊँ ।

58. Or should say, when it seeth the doom: Oh, that I had but a second chance that I might be among the righteous!

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. (परन्तु उस समय यही कहा जायेगा) : क्यों नहीं, मेरी 'आयतें' तेरे पास पहुँच चुकी थीं, परन्तु तू ने उन्हें झुठला दिया और अपने को बड़ा समझा और 'काफ़िरों' में सम्मिलित रहा ।

59. (But now the answer will be): Nay, for My revelations came unto thee, but thou didst deny them and wast scornful and wast among the disbelievers.

بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾

४३. अर्थात् यह न समझो कि 'ईमान' लाने के बाद तुम्हारे पिछले 'कुफ़्र' और 'शिर्क' और दूसरे गुनाहों के कारण तुम्हें यातना दी जायेगी, 'ईमान' लाने के बाद तुम्हारे सब पिछले गुनाहों को अल्लाह क्षमा कर देगा। परन्तु यदि तुम 'ईमान' नहीं लाते तो कोई न होगा जो तुम्हें अल्लाह की पकड़ से बचा सके।

४४. दे० आयत ३, ४४।

४५. अर्थात् यदि तुम अपनी नीति को बदल कर नेक बन जाओ, तो तुम्हारी पिछली समस्त ज़्यादतियों को अल्लाह क्षमा कर देगा। यह बात नहीं है कि यदि मनुष्य से कोई गुनाह हो गया हो तो फिर उस के माफ़ होने का कोई उपाय ही न हो। नबी सल्ल० ने कहा है कि यदि तुम इतनी ख़तायें करो कि जो धरती और आकाशों को भर दें फिर भी यदि तुम क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह की ओर रुजू करो तो अल्लाह क्षमा कर देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६० और 'क़ियामत' के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्हों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा, उन के चेहरे सियाह होंगे। क्या अहंकारियों के लिए 'जहन्नम' में ठिकाना नहीं है?

60. And on the Day of Resurrection thou (Muhammad) seest those who lied concerning Allah with their faces blackened. Is not the home of the scorners in hell?

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللّٰهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦٠﴾

६१. और अल्लाह उन लोगों को उन की सफलता के साथ बचा लेगा जो डरते रहे। न तो उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, और न वे कभी दुःखी होंगे।

६२. अल्लाह हर चीज़ को पैदा करने वाला है, और वही हर चीज़ का निगहबान है[४६]।

61. And Allah delivereth those who ward off (evil) because of their deserts. Evil toucheth them not, nor do they grieve.

62. Allah is Creator of all things, and He is Guardian over all things.

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦١﴾ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾

६३. आकाशों और धरती की कुञ्जियाँ उसी की हैं,[४७] और जो लोग अल्लाह की 'आयतों' को नहीं मानते—वही घाटा उठाने वाले हैं।

63. His are the keys of the heavens and the earth, and they who disbelieve the revelations of Allah — such are they who are the losers.

لَّهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيٰتِ اللّٰهِ أُولٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٣﴾

६४. (हे 'नबी'!) कहो: हे नादानो! क्या अब भी तुम मुझ से कहते हो कि मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी की 'इबादत (वन्दगी) करने लगूँ?

64. Say (O Muhammad, to the disbelievers): Do ye bid me serve other than Allah? O ye fools!

قُلْ أَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجٰهِلُونَ ﴿٦٤﴾

६५. (हे 'नबी'!) निश्चय ही यह तुम्हारी ओर 'वह्य' की जा चुकी है और उन की ओर भी जो तुम से पहले थे कि यदि तुम ने 'शिर्क' किया तो तुम्हारा किया-धरा अकारथ जायेगा और निश्चय ही तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे।

65. And verily it hath been revealed unto thee as unto those before thee (saying): If thou ascribe a partner to Allah thy work will fail and thou indeed wilt be among the losers.

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٦٥﴾

६६. नहीं, बल्कि अल्लाह ही की 'इबादत' करो, और कृतज्ञता दिखलाने वालों में से हो!

66. Nay, but Allah must thou serve, and be among the thankful!

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشّٰكِرِينَ ﴿٦٦﴾

६७. अल्लाह जैसा कुछ है ये लोग उस का अन्दाज़ा नहीं कर सके, उस का हाल तो यह है कि 'क़ियामत' के दिन यह धरती पूरी-की-पूरी उस की मुट्ठी में होगी, और आकाश उस के दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे[४८]। महिमावान् है वह और उच्च है उस 'शिर्क' से जो ये लोग करते हैं।

67. And they esteem not Allah as He hath the right to be esteemed, when the whole earth is His handful on the Day of Resurrection, and the heavens are rolled in His right hand. Glorified is He and High Exalted from all that they ascribe as partner (unto Him).

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

४६. दे० आयत ६७।

४७. अल्लाह ही आकाशों और धरती का स्वामी है. वही समस्त जगत का स्रष्टा, रक्षक और संचालक है। इस लिए किसी को उस का सहभागी समझना सर्वथा सत्य के विरुद्ध है। 'शिर्क' को वह क्षमा नहीं कर सकता जब तक कि कोई 'शिर्क' को त्याग कर 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) को न अपनाये।

४८. दे० सूरा अल-अंबिया का अन्तिम भाग। इस आयत में अल्लाह के सामर्थ्य, उस की शक्ति, प्रभुत्व और अधिकार का अछूता वर्णन है। 'क़ियामत' के दिन लोग देख लेंगे कि धरती और आकाश सब कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८. और 'सूर' में फूँक मारी गई कि बेहोश हो गया जो भी था आकाशों में और जो भी था धरती में सिवाय उस के जिसे अल्लाह ने चाहा (कि बेहोश न हो)। फिर उस ('सूर') में दोबारा फूँक मारी गई, तो अब वे सब खड़े ताक रहे हैं!

68. And the trumpet is blown, and all who are in the heavens and the earth swoon away, save him whom Allah willeth. Then it is blown a second time, and behold them standing waiting!

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّمٰوٰتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللّٰهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ ﴿٦٨﴾

६९. और जग-मगा उठी धरती अपने 'रब' के प्रकाश से,[४९] और (ला कर) रख दी गई 'किताब' और लाया गया 'नबियों' और गवाहों को, और कर दिया गया लोगों के बीच फ़ैसला ठीक-ठीक, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

69. And the earth shineth with the light of her Lord, and the Book is set up, and the Prophets and the witnesses are brought, and it is judged between them with truth, and they are not wronged.

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

७०. और चुका दिया गया हर व्यक्ति को जो कुछ उस ने किया उस का पूरा-पूरा बदला और वह भली-भाँति जानता है जो कुछ ये करते हैं।

70. And each soul is paid in full of what it did. And He is best aware of what they do.

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ ع

७१. और हाँके गये वे लोग जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया था 'जहन्नम' की ओर गरोह-के-गरोह, यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचे तो खोल दिये गये उस के दरवाज़े और उस के अवधायक उन से कहने लगे: क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से 'रसूल' नहीं आये थे, जो तुम्हें तुम्हारे 'रब' को 'आयतें' पढ़ कर सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन के पेश आने से सचेत करते? कहेंगे: क्यों नहीं, (अवश्य आये थे) परन्तु यातना का फ़ैसला 'काफ़िरों' के लिए हो चुका।

71. And those who disbelieve are driven unto hell in troops till, when they reach it and the gates thereof are opened, and the warders thereof say unto them: Came there not unto you messengers of your own, reciting unto you the revelations of your Lord and warning you of the meeting of this your Day? they say: Yes, verily. But the word of doom for disbelievers is fulfilled

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتّٰى إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٧١﴾

४९. सूर्य के प्रकाश से लौकिक वस्तुयें प्रकट हो जाती हैं। जब धरती अपने 'रब' के प्रकाश से चमक उठेगी तो उस समय लोकोत्तर और आन्तरिक वस्तुयें प्रकट हो जायेंगी (दे० सूरा अज़-ज़िलज़ाल आयत ४-५), पर-जगत लोगों के समक्ष होगा जैसा कि आगे कहा गया है कि 'किताब' रख दी जायेगी और 'नबियों' और गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा। धरती तो इस समय भी अपने 'रब' के प्रकाश से चमक रही है (दे० सूरा अन-नूर आयत ३५) परन्तु लोगों के नेत्रों पर परदा पड़ा हुआ है, उन्हें उस का अनुभव नहीं हो पाता। उस दिन यह परदा उठा दिया जायेगा और सच्चाई खुल कर सामने आ जायेगी (दे० सूरा क़ाफ़० आयत २२)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२. (उन से) कहा जायेगा : जाओ 'जहन्नम' के दरवाज़ों के भीतर हमेशा रहो। उस में बहुत बुरा ठिकाना है अहंकार करने वालों का।

72. It is said (unto them): Enter ye the gates of hell to dwell therein. Thus hapless is the journey's end of the scorners.

قِيلَ ادْخُلُوٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾

७३. और ले जाये गये वे लोग जो अपने 'रब' से डर कर रहे गरोह-के-गरोह 'जन्नत' की ओर, यहाँ तक कि वहाँ पहुँचे और पहुँचते ही उस के दरवाज़े खोल दिये गये, और उस के अवधायक उन से कहने लगे : तुम पर सलाम हो ! तुम बहुत अच्छे रहे, अब जाओ इस में सदैव रहो।

73. And those who keep their duty to their Lord are driven unto the Garden in troops till, when they reach it, and the gates thereof are opened, and the warders thereof say unto them: Peace be unto you! Ye are good, so enter ye (the Garden of delight), to dwell therein;

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ
زُمَرًا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ
فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

७४. उन्हों ने कहा : प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हमें इस ('जन्नत' को) धरती का वारिस बनाया कि हम इस 'जन्नत' में जहाँ चाहें रहें-सहें : तो क्या अच्छा बदला है कर्म करने वालों का !

74. They say: Praise be to Allah, Who hath fulfilled His promise unto us and hath made us inherit the land, sojourning in the Garden where we will! So bounteous is the wage of workers.

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ
وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ
حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

७५. और (हे 'नबी' !) तुम 'फ़िरिश्तों' को देखोगे कि वे सिंहासन ('अर्श')के चारों ओर घेरा बाँधे हुये हैं[५०] अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' कर रहे हैं। और फ़ैसला कर दिया गया लोगों के बीच ठीक-ठीक और कहा गया : प्रशंसा ('हम्द') अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का 'रब' है[५१]।

75. And thou (O Muhammad) seest the angels thronging round the Throne, hymning the praises of their Lord. And they are judged aright. And it is said: Praise be to Allah, the Lord of the Worlds!

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ
الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

५०. दे० सूरा अल-मोमिन आयत ७।

५१. दे० सूरा अल-मोमिन आयत ७। इस आयत का सम्पर्क आयत ६९ से है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०—अल-मोमिन

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में एक जगह एक 'मोमिन' ('ईमान' वाले व्यक्ति) का क़िस्सा बयान हुआ है, इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अल-मोमिन' रक्खा गया है। यह 'इमान' वाला व्यक्ति फ़िरऔन के लोगों में से था और अपने 'ईमान' को छिपाये हुये था। परन्तु जब उस ने देखा कि फ़िरऔन हज़रत मूसा अ० के लाये हुये सन्देश को ठुकरा रहा है और उन्हें क़त्ल की धमकी दे रहा है तो उस से इस का सहन न हो सका; उस ने न केवल यह कि फ़िरऔन को इस हरकत से रोका बल्कि इस साहसी व्यक्ति ने अपने अमर भाषण में अपनी जाति वालों को खुल कर इस बात का निमन्त्रण दिया कि वे 'ईमान' लायें और अपनी 'आखि-रत' को तबाह होने से बचायें। और वह नीति कदापि न अपनायें जो उन के लिए किसी भी तरह उचित नहीं।

इस 'सूरा' का एक दूसरा नाम 'ग़ाफ़िर' भी है। ग़ाफ़िर का अर्थ होता है क्षमा करने वाला। सूरा की आयत ३ में गुनाहों को क्षमा करने वाले अल्लाह की महिमा का उल्लेख हुआ है, यह नाम इसी 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' से ले कर सूरा अल-अहक़ाफ़ तक सूरतों का एक विशेष वर्ग (group) है। इस वर्ग की प्रत्येक सूरा का आरम्भ अरबी के हुरूफ़ 'मुक़त्तआत' 'हा० मीम०' से हुआ है। ये समकालीन सूरतें हैं। ये सूरतें मक्का में उस समय अवतीर्ण हुई हैं जबकि विरोधियों का विरोध बढ़ता ही जा रहा था। मुसलमान सताये जा रहे थे यहाँ तक कि मुसलमानों को अपना देश त्याग कर 'हब्शा' (Abyssinia) की ओर 'हिजरत' करनी पड़ी।

इब्न अब्बास और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से मालूम होता है कि इस सूरा का अवतरण सूरा अज-ज़ुमर के बाद ही हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' में इस बात की पुष्टि की गई है कि नबी सल्ल० जो कुछ ले कर आये हैं वह सत्य है और लोगों को, यदि वे 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर नहीं पलटते, एक आने वाले समय ('क़िया-मत') से डराया गया है। इस प्रकार इस 'सूरा' में तीनों बातें इकट्ठी हो गई हैं और यही सूरा के मूल विषय को व्यक्त कर रही हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' और इस के बाद की छः समकालीन 'सूरतों' में 'ईमान' वालों के लिए तसल्ली और आश्वासन है इन सूरतों के द्वारा उन की घबराहट, बेचैनी और डर को दूर किया गया है। विरोधी दल के लिए इन सूरतों में डरावा और धमकी है। इन 'सूरतों में बता दिया गया है कि सफलता सत्य को प्राप्त होगी, असत्य के अनुयायी मुँह की खायेंगे।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हुये कहा गया है कि देश में 'काफ़िरों' के स्वतन्त्र रूप से चलने-फिरने से धोखा नहीं खाना चाहिए। पहले भी अल्लाह की 'आयतों' का लोगों ने इन्कार किया है परन्तु अन्त में उन्हें अपने इन्कार का मज़ा चखना पड़ा। और 'आखिरत' में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'काफ़िरों' का 'जहन्नम' के सिवा कोई और ठिकाना न होगा। फिर आगे चल कर 'काफ़िरों को सचेत करते हुये कहा गया है कि क्या इन लोगों ने धरती में चल-फिर कर देखा नहीं कि उन प्राचीन जातियों का क्या परिणाम हुआ जो इन से शक्ति, वैभव आदि में कहीं बढ़-चढ़ कर थीं; परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया, तो कोई न था जो उन्हें अल्लाह की यातना से बचा लेता।

फिर फ़िरऔन और मूसा अ० का क़िस्सा बयान हुआ है। और एक 'ईमान' वाले साहसी व्यक्ति के साहस और उस के अनुपम व्याख्यान का उल्लेख किया गया है। जिस में 'ईमान' वालों के सान्त्वना और तसल्ली और 'काफ़िरों' के लिए डरावा है। आगे चल कर अल्लाह ने खोल कर इस बात को घोषणा कर दी है कि हम सांसारिक जीवन में भी अपने 'रसूलों' और 'ईमान' लाने वाले लोगों के सहायक हैं और 'क़ियामत' के कठिन समय में भी हम उन के सहायक होंगे।

प्रस्तुत 'सूरा' में मुसलमानों से कहा गया है कि वे 'सब्र' से काम लें और 'काफ़िरों की धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। अल्लाह के चमत्कारों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुये 'तौहीद' पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मोमिन

(मक्का में उतरी—'आयतें' ८५)

THE BELIEVER
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَتِسْعُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा० मीम०[1]।

1 Ha Mim.

حٰمٓ ۝١

२. इस 'किताब' का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली और (सब कुछ) जानने वाला है,

2. The revelation of the Scripture is from Allah, the Mighty, the Knower.

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ۝٢

३. गुनाह को क्षमा करने वाला, 'तौबा' क़बूल करने वाला, कठोर दण्डदेने वाला, सामर्थ्यवान् है। 'इलाह' (पूज्य) कोई नहीं सिवाय उस के। उसी की ओर जाना है।

3. The Forgiver of sin, the Acceptor of repentance, the Stern in punishment, the Bountiful. There is no God save Him. Unto Him is the journeying.

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ
الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣

४. अल्लाह की 'आयतों' के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया, तो नगरों में उन की चलत-फिरत तुम्हें धोखे में न डाले।

4. None argue concerning the revelations of Allah save those who disbelieve, so let not their turn of fortune in the land deceive thee (O Muhammad)

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي
الْبِلَادِ ۝٤

५. इन से पहले नूह की जाति वालों ने और उन के बाद दूसरे गरोहों ने भी (अपने 'रसूलों' को) झुठलाया था, और हर एक समुदाय ने अपने 'रसूल' के प्रति इरादा किया कि उसे पकड़ लें और वे ग़लत बातों के आधार पर झगड़े, ताकि उस के द्वारा सत्य को नीचा दिखा दें। फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया तो कैसी रही मेरी सज़ा।

5. The folk of Noah and the factions after them denied (their messengers) before these, and every nation purposed to seize their messenger and argued falsely, (thinking) thereby to refute the truth. Then I seized them, and how (awful) was My punishment!

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ
لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا
بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٥

६. इसी तरह तेरे 'रब' की बात 'कुफ़्र' करने वालों पर साबित हो चुकी[2] कि ये ('जहन्नम' की) आग (में पड़ने) वाले हैं।

6. Thus was the word of thy Lord concerning those who disbelieve fulfilled: that they are owners of the Fire.

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٦

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा सॉद० आयत ८४-८५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. वे जो सिंहासन[३] को उठाये हुये हैं, और जो उस के गिर्द (घेरा बांधे हुये) हैं[४] अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते हैं[५] और उस पर 'ईमान' रखते हैं और 'ईमान' लाने वालों के लिए क्षमा कीप्रार्थना करते हैं[६] (कहते हैं) : हमारे 'रब'! तू दयालुता और ज्ञान से हर चीज़ को व्याप्त है, तो जिन लोगों ने 'तौबा' की और तेरे मार्ग पर चले उन्हें क्षमा कर दे। और उन्हें भड़कती हुई आग ('जहन्नम') की यातना से बचा ले।

7. Those who bear the Throne, and all who are round about it, hymn the praises of their Lord and believe in Him and ask forgiveness for those who believe (saying): Our Lord! Thou comprehendest all things in mercy and knowledge, therefor forgive those who repent and follow Thy way. Ward off from them the punishment of hell.

ٱلَّذِينَ يَحْمِلُونَ ٱلْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُۥ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِۦ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۖ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَىْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَٱغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا۟ وَٱتَّبَعُوا۟ سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ ﴿٧﴾

८. हमारे 'रब'! और उन्हें सदैव रहने के बाग़ों में दाखिल कर जिन का तू ने उन से वादा किया है, और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तति में जो कोई नेक हो उसे भी (उन बाग़ों में दाखिल कर)[७] निस्सन्देह तू प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है[८]।

8. Our Lord! And make them enter the Gardens of Eden which Thou hast promised them with such of their fathers and their wives and their descendants as do right. Lo! Thou, only Thou, art the Mighty, the Wise.

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّٰتِ عَدْنٍ ٱلَّتِى وَعَدتَّهُمْ وَمَن صَلَحَ مِنْ ءَابَآئِهِمْ وَأَزْوَٰجِهِمْ وَذُرِّيَّٰتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٨﴾

९. और उन्हें बुरी चीज़ों से बचा; और जिसे उस दिन तू ने तकलीफ़ों से बचा लिया, तो निश्चय ही तू ने उस पर दया की। और यही बड़ी सफलता है[९]।

9. And ward off from them ill deeds; and he from whom Thou wardest off ill deeds that day, him verily hast Thou taken into mercy. That is the supreme triumph.

وَقِهِمُ ٱلسَّيِّـَٔاتِ ۚ وَمَن تَقِ ٱلسَّيِّـَٔاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُۥ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٩﴾

३. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।

४. दे० सूरा अज़-ज़ुमर आयत ७५।

५. सिंहासन को उठाने वालों से अभिप्रेत वे 'फ़रिश्ते' हैं जो अल्लाह के राज्य के स्तम्भ हैं। उन के आधीन बहुत से 'फ़रिश्ते' हैं जो इस राज्य के कर्मचारी हैं। अल्लाह अपने राज्य-प्रबन्ध के लिए 'फ़रिश्तों' का मुहताज नहीं है। 'फ़रिश्तों' को उसी ने पैदा किया और उन्हें शक्ति और सामर्थ्य उसी ने प्रदान किया है। 'फ़रिश्तों' को उस ने केवल अपनी 'हिकमत' और उच्चउद्देश्यों के अन्तर्गत काम में लगा रक्खा है।

६. 'ईमान' ही का सम्बन्ध है जिस ने 'फ़रिश्तों' और 'ईमान' वालों को परस्पर जोड़ दिया है।

७. इस से मालूम होता है कि 'जन्नत' में वही नातेदार परस्पर मिल सकेंगे जो नेक होंगे। माता-पिता, पत्नी, बच्चे इन में से जो नेक होंगे केवल वही 'जन्नत' में 'ईमान' वालों के साथ रह सकेंगे।

८. अर्थात् इस का ज्ञान तुझी को है कि कौन 'जन्नत' में रहने के योग्य है, कौन इस के योग्य नहीं है। तेरा फ़ैसला ज्ञान और बुद्धिमत्ता के अनुकूल होता है। किसी के बस में नहीं कि तेरे फ़ैसले को टाल सके। कोई नहीं जिसे तेरे सामने दम मारने का साहस हो सके। तेरी अनुमति के बिना न कोई 'जन्नत' में जा सकता है और न किसी को 'जन्नत' में दाखिल कर सकता है।

९. ऐसे लोगों को जो सत्यप्रिय होते हैं और जानते-बूझते अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते, अल्लाह की ओर से उन्हें बुराइयों से बचाया जाता है। नेकी करने में उन्हें योग दिया जाता है। अन्तःकरण की कसक के द्वारा उन्हें बुराइ से रोका जाता है। अल्लाह की उन पर कुछ ऐसी दया होती है कि उन्हें बुराई का अवसर ही नहीं मिलता। परन्तु जो लोग अपने 'ईमान' और भक्ति में सच्चे नहीं होते उन्हें निरन्तर इस का अवसर मिलता रहता है कि वे बुरे कर्म कर सकें।

बुराइयों से बचने का एक पहलू यह भी है कि अल्लाह 'ईमान' वालों को बुराई के बुरे परिणामों से बचाता है। 'आख़िरत' में जिसे बुरे परिणामों से बचा लिया गया वास्तव में सफलता उसी को प्राप्त हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया उन्हें पुकार कर कहा जायेगा : तुम्हारी अपने से जो बेज़ारी है अल्लाह की बेज़ारी उस से बढ़ कर है कि तुम्हें 'ईमान' की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे[१०]।

10. Lo! (on that day) those who disbelieve are informed by proclamation: Verily Allah's abhorrence is more terrible than your abhorrence one of another, when ye are called unto the faith but did refuse

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾

११. वे कहेंगे : हमारे 'रब' ! तू हमें दो बार मौत दे चुका, और दो बार तू ने हमें जीवित किया,[११] अब हम ने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या यहाँ से निकलने का कोई मार्ग है[१२] ?

11. They say: Our Lord! Twice hast Thou made us die, and twice hast Thou made us live. Now we confess our sins. Is there any way to go out?

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿١١﴾

१२. (कहा जायेगा) : यह (तुम्हारी दुर्दशा) इस लिए है कि जब अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे, और यदि उस का कोई साझी ठहराया जाता तो तुम मान लेते। अब हुक्म अल्लाह ही का है, सब से उच्च और महान् का।

12. (It is said unto them). This is (your plight) because when Allah only was invoked, ye disbelieved, but when some partner was ascribed to Him ye were believing. But the command belongeth only to Allah, the Sublime, the Majestic.

ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾

१३. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, और तुम्हारे लिए आकाश से रोज़ी उतारता है। परन्तु सोचता तो वही है जो (उस की ओर) रुजू करता है।

13. He it is Who showeth you His portents, and sendeth down for you provision from the sky. None payeth heed save him who turneth (unto Him) repentant.

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾

१४. अत: (हे 'ईमान' वालो !) तुम अल्लाह ही को पुकारो, 'दीन' को उस के लिए ख़ालिस कर के,[१३] । चाहे 'काफ़िर' बुरा ही मानें—

14. Therefor (O believers) pray unto Allah, making religion pure for Him (only), however much the disbelievers be averse—

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾

१५. वह ऊँचे दरजों वाला, और सिंहासन[१४] का स्वामी है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह ('वह्य') भेजता है, ताकि सामना होने के दिन से (लोगों को) सचेत कर दे।

15. The Exalter of Ranks, the Lord of the Throne: He casteth the Spirit of His command upon whom He will of His slaves, that He may warn of the Day of Meeting:

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾

---

१०. जब 'काफ़िर' उस दिन अपने करतूतों के बुरे परिणाम को अपनी आँखों से देख लेंगे तो अपने-आप को कोसने लगेंगे और अपने-आप से बेज़ार होंगे। इस पर उन से कहा जायेगा कि जब तुम्हें 'ईमान' लाने के लिए बुलाया जाता था तब तो तुम इन्कार पर तुले हुये थे अल्लाह उस से कहीं ज़्यादा तुम से बेज़ार है जितना तुम अपने-आप से बेज़ार हो रहे हो।

११. मनुष्य पहले बेजान था अल्लाह ने उसे जीवन प्रदान किया फिर उस की मृत्यु होती है; अल्लाह अन्त में उसे फिर जीवित कर के उठायेगा। दे० सूरा अल-बक़रा आयत २८।

१२. अर्थात् क्या इस का अब भी कोई अवसर है कि हमें दुनिया में दोबारा भेज दिया जाये। अब हम 'ईमान' लायेंगे और अच्छे कर्म करेंगे।

१३. दे० सूरा अज़-ज़ुमर आयत ३।

१४. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. जिस दिन वे निकल खड़े होंगे,[१५] उन की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य है ? अल्लाह का, जो अकेला और प्रभुत्व-शाली है।

16. The day when they come forth, nothing of them being hidden from Allah. Whose is the sovereignty this day? It is Allah's, the One, the Almighty.

يَوْمَ هُمْ بَارِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلّٰهِ
الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

१७. आज हर जीव को उस के किये का बदला दिया जायेगा आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा। निस्सन्देह अल्लाह को हिसाब लेते देर नहीं लगती।

17. This day is each soul requited that which it hath earned: no wrong (is done) this day. Lo! Allah is swift at reckoning.

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ
لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ
الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

१८. (हे 'नबी' !) इन लोगों को उस दिन से जो क़रीब आ लगा है[१६] सचेत कर दो, जबकि हृदय घाँटी को आ रहे होंगे और लोग अन्दर-ही-अन्दर घुट रहे होंगे। ज़ालिमों का न कोई मित्र होगा, और न कोई सिफ़ारिशी जिस की बात मानी जाये[१७]।

18. Warn them (O Muhammad) of the Day of the approaching (doom), when the hearts will be choking the throats, (when) there will be no friend for the wrong-doers, nor any intercessor who will be heard.

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ
لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۗ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿١٨﴾

१९. वह निगाहों की चोरी को जानता है, और उस को भी जो सीने छिपाये होते हैं[१८]।

19. He knoweth the traitor of the eyes, and that which the bosoms hide.

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

२०. अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला करता है,[१९] जब कि उस के सिवा जिन को ये लोग पुकारते हैं वे किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं कर सकते। निस्सन्देह अल्लाह ही सुनने वाला और देखने वाला है।

20. Allah judgeth with truth while those to whom they cry instead of Him judge not at all. Lo! Allah, He is the Hearer, the Seer.

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾

२१. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? वे इन (मक्का वालों) से बढ़-चढ़ कर थे शक्ति में और निशानियों (स्मृति-चिह्नों) की दृष्टि से भी (जो वे छोड़ गये) भूमि में। फिर भी अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों के कारण पकड़ लिया, और कोई न हुआ अल्लाह से उन का बचाने वाला।

21. Have they not travelled in the land to see the nature of the consequence for those who disbelieved before them? They were mightier than these in power and in the traces (which they left behind them) in the earth. Yet Allah seized them for their sins, and they had no protector from Allah.

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ
كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى
الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۗ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾

२२. यह इस लिए कि उन के 'रसूल' उन के पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आते थे परन्तु उन्हों ने 'कुफ़' किया; तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निस्सन्देह वह प्रबल और कठोर दण्ड देने वाला है।

22. That was because their messengers kept bringing them clear proofs (of Allah's Sovereignty) but they disbelieved; so Allah seized them. Lo! He is Strong, Severe in punishment.

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّهٗ
قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

२३. और उस ने मूसा को अपनी निशानियों और प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ भेजा

23. And verily We sent Moses with Our revelations and a clear warrant

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾

१५. अर्थात् 'क़ियामत' के दिन जब कि मरे हुये लोगों को जीवित कर दिया जायेगा।

१६. अर्थात् 'आख़िरत' के दिन से।

१७. वे अत्यन्त घबराये और डरे हुये होंगे। वे अत्यन्त व्याकुल होंगे परन्तु उस समय उन का कोई मित्र और सिफ़ारिश करने वाला न होगा जो इस संकट से उन्हें छुटकारा दिला सके।

१८. अर्थात् जो बातें सीनों (दिलों) में छिपी होती हैं उन्हें भी वह जानता है। मनुष्य अपना कोई दोष और खोट भी अल्लाह से छिपा नहीं सकता। नबी सल्ल० दुआ किया करते थे : "हे अल्लाह ! तू मेरे दिल को 'निफ़ाक़' (कपट) से पाक रख और मेरे काम को 'रिया' (दिखावा और पाखण्ड) से और मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँखों को चोरी से। निश्चय ही तू नेत्रों की चोरी को जानता है और उस को भी जो सीने (दिल) छिपाते हैं।"

१९. दे० आयत २१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास, परन्तु उन्हों ने कहा : जादूगर है बड़ा झूठा है !

24. Unto Pharaoh and Haman and Korah, but they said: A lying sorcerer!

إلى فرعون وهامن وقارون فقالوا
سحر كذاب ﴿٢٤﴾

२५. और जब वह उन के पास हमारे यहाँ से हक़ ले कर पहुँचा, तो उन लोगों ने कहा : जो लोग इस के साथ 'ईमान' लाये हैं[२०] उन के बेटों को क़त्ल करो, और उन की स्त्रियों (बेटियों) को जीवित रहने दो। परन्तु 'काफ़िरों' की चाल तो बस गुम हो कर रह जाने वाली है[२१]।

25. And when he brought them the Truth from Our presence they said: Slay the sons of those who believe with him, and spare their women. But the plot of disbelievers is in naught but error.

فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا
اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه و
استحيوا نساءهم وما كيد الكفرين
إلا في ضلل ﴿٢٥﴾

२६. [२२]फ़िरऔन ने कहा : मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ, वह अपने 'रब' को पुकारे। मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे 'दीन' को बदल डाले या देश में बिगाड़ पैदा करे।

26. And Pharaoh said: Suffer me to kill Moses, and let him cry unto his Lord. Lo! I fear that he will alter your religion or that he will cause confusion in the land.

وقال فرعون ذروني أقتل موسى
وليدع ربه إني أخاف أن يبدل
دينكم أو أن يظهر في الأرض الفساد ﴿٢٦﴾

२७. मूसा ने कहा : मैं ने हर अहंकारी से जो हिसाब के दिन पर 'ईमान' नहीं लाता अपने 'रब' और तुम्हारे 'रब' की पनाह ली[२३]।

27. Moses said: I seek refuge in my Lord and your Lord from every scorner who believeth not in a Day of Reckoning.

وقال موسى إني عذت بربي وربكم
من كل متكبر لا يؤمن بيوم
ع الحساب ﴿٢٧﴾

२८. एक 'ईमान' वाले व्यक्ति ने, जो फ़िरऔन के लोगों में से था और अपने 'ईमान' को छुपा रहा था, कहा : क्या तुम एक आदमी को इस लिए क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा 'रब' अल्लाह है, और तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से स्पष्ट प्रमाण ले कर आया है ? यदि वह झूठा है, तो उस के झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा; और यदि वह सच्चा है, तो जिस की वह तुम्हें धमकी दे रहा है उस का कुछ न कुछ हिस्सा तुम पर आ कर रहेगा। निस्सन्देह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादाहीन, और बड़ा झूठा हो।

28. And a believing man of Pharaoh's family, who hid his faith, said: Would ye kill a man because he saith: My Lord is Allah, and hath brought you clear proofs from your Lord? If he is lying, then his lie is upon him; and if he is truthful, then some of that wherewith he threateneth you will strike you. Lo! Allah guideth not one who is a prodigal, a liar.

وقال رجل مؤمن من آل فرعون
يكتم إيمانه أتقتلون رجلا أن
يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينت
من ربكم وإن يك كاذبا فعليه كذبه
وإن يك صادقا يصبكم بعض الذي يعدكم
إن الله لا يهدي من هو مسرف كذاب ﴿٢٨﴾

२९. हे मेरी जाति वालो ! तुम्हारा राज्य है आज, देश में प्रभावपूर्ण अधिकार तुम्हें प्राप्त है। परन्तु यदि अल्लाह की यातना हम पर आ गई तो फिर कौन हमारी सहायता करेगा ?

फ़िरऔन ने कहा : मैं तुम्हारे सामने वही राय रखता हूँ जो मेरी अपनी समझ में आती है, और तुम्हें वही मार्ग दिखाता हूँ जो ठीक है।

29. O my people! Yours is the kingdom to-day, ye being uppermost in the land. But who would save us from the wrath of Allah should it reach us? Pharaoh said: I do but show you what I think, and I do but guide you to wise policy.

يقوم لكم الملك اليوم ظاهرين
في الأرض فمن ينصرنا من بأس
الله إن جاءنا قال فرعون ما أريكم
إلا ما أرى وما أهديكم إلا
سبيل الرشاد ﴿٢٩﴾

२०. अर्थात् 'ईमान ला कर उस के साथ हो गये।

२१. फ़िरऔन को अन्त में बुरा दिन देखना ही पड़ा। वह अपनी चालों और उपायों से अल्लाह के फ़ैसले को बदल नहीं सका। हज़रत मूसा अ० के अनुयायियों को अल्लाह ने उस के ज़ुल्म और अत्याचारों से बचा लिया।

२२. यहाँ से उस वृत्तान्त का उल्लेख हुआ है जो 'बनी इसराईल' के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त है जिसे 'बनी इसराईल' ने बिल्कुल भुला दिया था। बाइबिल और तलमूद दोनों में से किसी में इस का उल्लेख नहीं हुआ है।

२३. जब मैं अपने को अल्लाह की शरण में दे चुका हूँ तो वही मेरी रक्षा करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. और उस व्यक्ति ने जो 'ईमान' लाया था कहा : हे मेरी जाति वालो ! मुझे डर है कि कहीं तुम पर वह दिन न आ आये जो दूसरे समुदायों पर आ चुका है;

30. And he who believed said: O my people! Lo! I fear for you a fate like that of the factions (of old);

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

३१. कहीं वही हाल न हो जो नूह की जाति, और 'आद' और 'समूद', और उन के बाद वालों का हुआ, अल्लाह बन्दों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं चाहता ।

31. A plight like that of Noah's folk, and A'ad and Thamud, and those after them and Allah willeth no injustice for (His) slaves.

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ
وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ
ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

३२. और हे मेरी जाति वालो ! मुझे डर है कि कहीं तुम पर वह दिन न आ जाये जबकि हर ओर पुकार पड़ी होगी ।

32. And, O my people! Lo! I fear for a Day of Summoning:

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

३३. जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम्हें कोई अल्लाह से बचाने वाला न होगा : और जिसे अल्लाह ही पथभ्रष्ट करे,[२४] उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है ।

33. A day when ye will turn to flee, having no preserver from Allah: and he whom Allah sendeth astray, for him there is no guide.

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

३४. और इस से पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ स्पष्ट प्रमाण ले कर आ चुके हैं, इस पर भी तुम्हें उस के बारे में सदा सन्देह ही रहा जो कुछ कि वे ले कर तुम्हारे पास आये थे, यहाँ तक कि जब उस का देहान्त हो गया, तो तुम ने कहा : अल्लाह उन के बाद कोई 'रसूल' कदापि न भेजेगा[२५] । इसी तरह अल्लाह उस व्यक्ति को पथभ्रष्ट करता है जो मर्यादा-हीन और (सत्यधर्म के प्रति) सन्देह करने वाला हो,

34. And verily Joseph brought you of old clear proofs, yet ye ceased not to be in doubt concerning what he brought you till, when he died, he said: Allah will not send any messenger after him. Thus Allah deceiveth him who is a prodigal, a doubter.

وَلَقَدْ جَاۗءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ
فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَاۗءَكُمْ بِهٖ ۭ
حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ
مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُۨ ﴿٣٤﴾

३५. वे जो अल्लाह की 'आयतों' में झगड़ते हैं बिना किसी सनद के जो उन के पास आई हो, अल्लाह की दृष्टि में और 'ईमान' वालों की दृष्टि में यह अत्यन्त अप्रिय है । इसी तरह अल्लाह हर अहंकारी, और ज़ब्र करने वाले (सरकश) के दिल पर ठप्पा लगा देता है ।

35. Those who wrangle concerning the revelation of Allah without any warrant that hath come unto them, it is greatly hateful in the sight of Allah and in the sight of those who believe. Thus doth Allah print on every arrogant, disdainful heart.

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ
سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَ
عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ
عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

३६. और फ़िरऔन ने कहा : हे हामान ! मेरे लिए एक ऊँचा-सा भवन बना कदाचित् मैं मार्गों पर पहुँच जाऊँ,

36. And Pharaoh said: O Haman! Build for me a tower that haply I may reach the roads—

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ
صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾

२४. अल्लाह जिन लोगों को भटकने के लिए छोड़ देता है, जिन्हें सत्य के पथ पर चलने का सौभाग्य प्रदान नहीं करता वे वही लोग होते हैं जिन के हृदय में सत्य के प्रति कोई आदर और सम्मान नहीं होता । अल्लाह सत्यप्रिय व्यक्तियों को ही जीवन का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाता है । दे० सूरा अन-निसा फ़ुटनोट ४९; सूरा अल-अनआम फ़ुटनोट १३, ३५ ।

२५. ऐसा लगता है कि इस के आगे के कुछ वाक्य अल्लाह ने उस 'ईमान' वाले व्यक्ति के क़ौल पर बढ़ा दिये हैं ताकि लोगों के सामने हर पहलू स्पष्ट रूप से आ जाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. आकाशों के मार्गों पर, फिर ऊपर जा कर मूसा के 'इलाह्' (पूज्य) को देखूँ, और मैं तो उस को झूठा समझता हूँ[२६]।

इस तरह फ़िरऔन के लिए उस के बुरे कर्म को शोभायमान बना दिया गया, और उसे मार्ग से रोक दिया गया। फ़िरऔन की चाल अकारथ ही गई।

37. The roads of the heavens, and may look upon the God of Moses, though verily I think him a liar. Thus was the evil that he did made fair-seeming unto Pharaoh, and he was debarred from the (right) way. The plot of Pharaoh ended but in ruin.

أَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰٓ إِلٰهِ مُوسٰى وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوٓءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

३८. उस व्यक्ति ने जो 'ईमान' लाया था कहा : हे मेरी जाति वालो! मेरे पीछे आओ। मैं तुम्हें ठीक मार्ग बताऊँ।

38. And he who believed, said: O my people! Follow me. I will show you the way of right conduct.

وَقَالَ الَّذِيٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

३९. हे मेरी जाति वालो! यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी सुख-सामग्री है, और वास्तव में 'आख़िरत' ही है, जो ठहरने का घर है।

39. O my people! Lo! this life of the world is but a passing comfort, and lo! the Hereafter, that is the enduring home.

يٰقَوْمِ إِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّإِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

४०. जिस किसी ने बुराई की, तो उसे केवल वैसा ही बदला मिलेगा, और जिस किसी ने अनुकूल कर्म किया—चाहे पुरुष हो या स्त्री—और वह 'ईमान' वाला हो, तो ऐसे लोग 'जन्नत' में प्रवेश करेंगे, वहाँ उन्हें बेहिसाब दिया जायेगा।

40. Whoso doth an ill-deed, he will be repaid the like thereof, while whoso doth right, whether male or female, and is a believer, (all) such will enter the Garden, where they will be nourished without stint.

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

४१. और हे मेरी जाति वालो! क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात (मुक्ति) की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे ('जहन्नम' की) आग की ओर बुलाते हो?

41. And, O my people! What aileth me that I call you unto deliverance when ye call me unto the Fire.

وَيٰقَوْمِ مَا لِيٓ أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُونَنِيٓ إِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

४२. तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह् के साथ 'कुफ़्र' करूँ और उस चीज़ को सहभागी ठहराऊँ जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं, और मैं तुम्हें उस (अल्लाह्) की ओर बुलाता हूँ जो प्रभुत्वशाली और बड़ा क्षमाशील है।

42. Ye call me to disbelieve in Allah and ascribe unto Him as partners that whereof I have no knowledge, while I call you unto the Mighty, the Forgiver.

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۫ وَّأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

४३. निस्सन्देह बात है यही कि तुम मुझे जिस की ओर बुलाते हो उस का पुकारना कुछ भी नहीं न दुनिया में न 'आख़िरत' में,[२७] और यह भी है कि हमें लौटना अल्लाह् ही की ओर है, और यह भी कि मर्यादा हीन लोग ही ('जहन्नम' की) आग वाले हैं।

43. Assuredly that whereunto ye call me hath no claim in the world or in the Hereafter, and our return will be unto Allah, and the prodigals will be owners of the Fire.

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِيٓ إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَآ إِلَى اللّٰهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

४४. तो आगे चल कर तुम याद करोगे जो कुछ मैं तुम से कह रहा हूँ[२८]। मैं अपना मामला अल्लाह् को सौंपता हूँ। निस्सन्देह अल्लाह् बन्दों का देखने वाला है।

44. And ye will remember what I say unto you. I confide my cause unto Allah. Lo! Allah is Seer of (His) slaves.

فَسَتَذْكُرُونَ مَآ أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِيٓ إِلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

२६. इस प्रकार वह हज़रत मूसा की हँसी उड़ाने लगा।
२७. दे० आयत ७४; सूरा अर-रअ़्द आयत १४।
२८. परन्तु उस समय का याद करना कुछ भी लाभदायक न होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. तो जो चाल वे चल रहे थे उस की बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया, और फ़िरऔन के लोगों को बुरी यातना ने आ घेरा।

45. So Allah warded off from him the evils which they plotted, while a dreadful doom encompassed Pharaoh's folk.

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ
بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

४६. आग है; जिस के सामने वे प्रातःकाल और सन्ध्या समय पेश किये जाते हैं[२९] और जिस दिन वह घड़ी ('क़ियामत') क़ायम होगी (कहा जायेगा) : फ़िरऔन के लोगों को कठोर यातना में दाखिल करो।

46. The Fire; they are exposed to it morning and evening; and on the day when the Hour upriseth (it is said): Cause Pharaoh's folk to enter the most awful doom.

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ
فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

४७. और जब वे ('जहन्नम' को) आग में परस्पर झगड़ेंगे, तो निर्बल लोग उन लोगों से जो बड़े बने हुये थे कहेंगे : हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे तो क्या तुम हम पर से आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?

47. And when they wrangle in the fire, the weak say unto those who were proud: Lo! we were a following unto you: will ye therefor rid us of a portion of the Fire?

وَاِذْ يَتَحَاۗجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰۗؤُا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ
النَّارِ ﴿٤٧﴾

४८. जो लोग बड़े बने हुये थे वे कहेंगे : हम सब ही इस (आग) में पड़े हैं। निश्चय ही अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका[३०]।

48. Those who were proud say: Lo! we are all (together) herein. Lo! Allah hath judged between (His) slaves.

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ
اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

४९. और जो लोग आग ('जहन्नम') में होंगे वे 'जहन्नम' के अवधायक से कहेंगे : अपने 'रब' से दुआ करो कि वह किसी दिन तो हम पर से यातना कुछ हल्की कर दे।

49. And those in the Fire say unto the guards of hell: Entreat your Lord that He relieve us of a day of the torment!

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

५०. वे कहेंगे : क्या तुम्हारे पास तुम्हारे 'रसूल' स्पष्ट प्रमाणों के साथ नहीं आये थे? वे क़हेंगे : क्यों नहीं (अवश्य आये), ('फ़िरिश्ते') कहेंगे : तो अब तुम ही दुआ करो[३१] और 'काफ़िरों' की दुआ तो बस गुम हो कर रह जाने वाली है।

50. They say: Came not your messengers unto you with clear proofs? They say: Yea, verily. They say: Then do ye pray, although the prayer of disbelievers is in vain.

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
قَالُوْا بَلٰى قَالُوْا فَادْعُوْا وَمَا دُعٰۗؤُا
الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾

२९. इस से मालूम हुआ कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य बिल्कुल विलुप्त नहीं हो जाता केवल उस से उस का वर्त्तमान शरीर छिन जाता है, उस का व्यक्तित्व मृत्यु के पश्चात् भी शेष रहता है, उसे दुःख-सुख का अनुभव होता है, दे० सूरा या सीन० फ़ुटनोट ११।

३०. उस लोक में कोई किसी के काम न आ सकेगा। लोगों को गुमराह और पथभ्रष्ट करने वाले नेता और गुरु अपने सेवकों और अनुयायियों को साफ़ जवाब दे देंगे कि हम न तो तुम्हें अल्लाह की यन्त्रणाओं से बचा सकते हैं और न अपने-आप को अल्लाह की पकड़ से छुटकारा दिलाने का हमें सामर्थ्य प्राप्त है।

३१. हम ऐसे 'काफ़िरों' के लिए दुआ नहीं कर सकते और न हमारी दुआ से ऐसे लोग यातना से छूट सकते हैं। 'काफ़िरों' की चीख-पुकार का भी उस दिन कोई नतीजा न निकलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१. निस्सन्देह हम अपने 'रसूलों' की और 'ईमान' लाने वालों की सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में[३२] और उस दिन भी करेंगे जबकि गवाह खड़े होंगे,

51. Lo! We verily do help Our messengers, and those who believe in the life of the world and on the day when the witnesses arise,

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

५२. जिस दिन ज़ालिमों के काम न आयेगा उन का उज्र (बहाना), और उनके लिए फिटकार है, और उन के लिए बुरा घर है।

52. The day when their excuse availeth not the evil-doers, and theirs is the curse, and theirs the ill abode.

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَ
لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

५३. और निश्चय ही हम ने मूसा को मार्ग-दर्शन प्रदान किया, और 'बनी इसराईल' को 'किताब' का वारिस बनाया,[३३]

53. And We verily gave Moses the guidance and We caused the Children of Israel to inherit the Scripture,

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

५४. मार्ग-दर्शन और अनुस्मारक बुद्धि वालों के लिए।

54. A guide and a reminder for men of understanding.

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

५५. तो (हे 'नबी') 'सब्र' से काम लो। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपने गुनाह के लिए क्षमा की प्रार्थना करो,[३४] और सन्ध्या समय और प्रातःकाल अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करो[३५]।

55. Then have patience (O Muhammad). Lo! the promise of Allah is true. And ask forgiveness of thy sin, and hymn the praise of thy Lord at fall of night and in the early hours.

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

३२. 'नबी' की सहायता का तात्पर्य उन के धर्म कार्य और मेशन (Mission) की सहायता है। 'नबियों' की सहायता कई प्रकार से की जाती है। उन की सब से बड़ी सहायता यह है कि वे जिस सच्चाई और जिन विचारों को ले कर आये उन का प्रचार हो। हम देखते हैं कि दुनिया में आज जहाँ कहीं नेकी की भावनायें पाई जाती हैं वे वास्तव में 'नबियों' की ही देन हैं। जिन बातों को 'नबियों' ने नकी कहा दुनिया आज भी उन्हें नेकी मानती है। और जिन बातों को उन्हों ने बुराई कहा उन्हें आज भी बुराई समझा जाता है। मानव-लोक में 'नबियों' के मेशन की अमिट छाप पड़ चुकी है उसे मिटाना सम्भव नहीं। 'नबियों' की मूल शिक्षा 'तौहीद' थी। दुनिया यह मानने पर विवश है कि 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही सत्य है। 'मुशिरकों' को मानना पड़ा कि अल्लाह एक ही है। 'मुशिरकों' को भी अपने अनेकेश्वरवादी विचारों की ऐसी व्याख्या करनी पड़ती है जिस से उन का एकेश्वरवादी होना सिद्ध हो सके।

'रसूलों' की सहायता का एक पहलू यह भी है कि अल्लाह उन्हें या उन के मानने वालों को राज्य-सत्ता प्रदान करता है और उन के विरोधियों को पराजित कर देता है। दे० सूरा अस-सफ़्फ़ अन्तिम आयत।

३३. अर्थात् हम ने मूसा (अ०) की सहायता केवल इसी रूप में नहीं की कि फ़िरऔन को समुद्र में डुबो दिया और उस से मूसा (अ०) और 'बनी इसराईल' को छुटकारा मिल गया, बल्कि हम ने 'बनी इसराईल' को बरकत दी और उन्हें अपनी 'किताब' का वारिस बनाया।

३४. मतलब यह है कि कोई बड़े-से-बड़ा कर्म करने के बाद भी मनुष्य को यह न सोचना चाहिए कि उस ने अल्लाह का हक़ अदा कर दिया। उसे सदैव क्षमा ही की प्रार्थना करते रहना चाहिए कि अल्लाह उस की नेकी को क़बूल करे और जो कोताही हुई हो उसे अपनी दया से क्षमा कर दे। साधारण लोगों के मामले में गुनाह शब्द का जो अर्थ होता है 'नबियों' के मामले में उस का वह अर्थ नहीं होता। 'नबी' अत्यन्त उच्च पद पर नियुक्त होते हैं, उन से जो छोटी-मोटी कोताही या भूल-चूक हो जाती है वह भी उन के हक़ में गुनाह की हैसियत रखती है। उसे वे अपने दरजे से गिरी हुई चीज़ समझते हैं।

३५. बन्दा जब तक हर समय अल्लाह के साथ जुड़ा न रहे और उस की याद में लगा न रहे न वह सब्र कर सकता है और न सत्य-मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चल सकता है। इस के लिए यह भी ज़रूरी है कि अल्लाह ने जो वादा किया है उस पर उसे पूरा-पूरा विश्वास हो। इस 'आयत' में इन सभी बातों की ओर संक्षिप्त रूप से संकेत कर दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا
كِبْرٌ مَا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

56. Lo! those who wrangle concerning the revelat ons of Allah without a warrant having come unto them, there is naught else in their breasts save pride which they will never attain. So take thou refuge in Allah, Lo! He, only He, is the Hearer, the Seer.

५६. जो लोग बिना किसी सनद के जो उन्हें पहुँची हो, अल्लाह् की 'आयतों' में झगड़ते हैं,[३६] उन के सोनों (दिलों) में केवल अभिमान है जिस को वे प्राप्त होने वाले नहीं[३७]। तो तुम अल्लाह् की पनाह लो। निस्सन्देह वही सुनने वाला और देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ
النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

57. Assuredly the creation of the heavens and the earth is greater than the creation of mankind; but most of mankind know not

५७. निश्चय ही आकाशों और धरती का बनाना मानव-जाति के बनाने से बड़ा काम है; परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ قَلِيلًا
مَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

58. And the blind man and the seer are not equal, neither are those who believe and do good works (equal with) the evil-doer. Little do ye reflect!

५८. अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं होते,[३८] और न वे लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये और बुरे कर्म करने वाला (बराबर होते हैं)[३९]। तुम लोग कम ही सोचते हो!

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

59. Lo! the Hour is surely coming, there is no doubt thereof; yet most of mankind bel'eve not.

५९. निश्चय ही वह घड़ी ('क़ियामत') आने वाली है, इस में कुछ सन्देह नहीं है; परन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

60. And your Lord hath said: Pray unto Me and I will hear your prayer. Lo! those who scorn My service, they will enter hell, disgraced.

६०. और तुम्हारे 'रब' ने कहा है: तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार का उत्तर दूँगा। जो लोग मेरी 'इबादत' से अहंकारवश कनियाते हैं, जल्द ही वे अपमानित हो कर, 'जहन्नम' में प्रवेश करेंगे[४०]।

३६. यह संकेत मक्का के 'काफ़िरों' की ओर है। वे केवल अहंकार के कारण बिना दलील के सत्य के विरोधी बने हुये थे।

३७. अर्थात् 'काफ़िरों' की इच्छा भी पूरी नहीं हो सकतीं। वे न सत्य को नीचा दिखा सकते हैं और न उन्हें उच्चता प्राप्त हो सकती है। वे इसी लिए हैं कि ज़लील और अपमानित हो कर रहें। यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही, मक्का के 'काफ़िर' अन्त में पराजित हुये; वे अल्लाह् के 'रसूल' (सल्ल०) और उस के अनुयायियों का कुछ भी बिगाड़ न सके।

३८. मालूम हुआ कि 'कुफ़्र' की नीति ग्रहण करना वास्तव में अपने को अन्धा बना लेना है। हालाँकि अन्धा बनना किसी को पसन्द नहीं।

३९. इस लिए अवश्य हर एक को अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है जहाँ वह अपने कर्मों का फल पायेगा। यदि यह माना जाये कि 'आख़िरत' न होगी तो इस का अर्थ यह होता है कि अच्छे-बुरे दोनों मर कर अन्त में मिट्टी हो जायेंगे और दोनों का परिणाम एक होगा।

४०. इस 'आयत' से मालूल हुआ कि अल्लाह् से माँगना और दुआ करना खुद एक 'इबादत' है। बल्कि दुआ 'इबादत' का सत्त और निचोड़ है जैसा कि नबी सल्ल० के कथन से मालूम होता है। दुआओं का क़बूल करने वाला केवल अल्लाह् है जिस तरह 'इबादत' केवल एक अल्लाह् की करनी चाहिए उसी तरह दुआ भी केवल उसी से माँगनी चाहिए। उसी को दुख और कठिन समय में पुकारना चाहिए। किसी और को न तो सजदा करना चाहिए और न किसी और को संकट, दुःख आदि में पुकारना दुरुस्त है। जो व्यक्ति अल्लाह् को छोड़ कर किसी और को पूकारता और उसे अपना दाता और कष्ट-निवारक समझता है वह ईश्वरत्व में दूसरे को शरीक ठहराता है; 'शिर्क' के इस अपराध को अल्लाह् कभी क्षमा नहीं करेगा। बन्दा जब अपने अल्लाह् से दुआ करता और उस से माँगता है तो अल्लाह् यदि उचित समझता है तो उस की इच्छा पूरी कर देता है (दे० सूरा अल-अनआम आयत ४१)। मनुष्य की दुआ ईश्वरीय इच्छा और हिकमत' के अन्तर्गत ही क़बूल होती है। जिस तरह आप बच्चे की हर माँग पूरी नहीं करते बल्कि उस की वही माँग पूरी करते हैं जिस में उस के लिए भलाई होती है, उसी तरह अल्लाह् भी अपने बन्दों का हित चाहने वाला है वह बन्दों के लिए वही कुछ क़बूल करता है जिस में उस की भलाई होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उस में आराम (और चैन) पाओ, और दिन को प्रकाशमान बनाया। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा अनुग्रह वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते।

61. Allah it is Who hath appointed for you night that ye may rest therein, and day for seeing. Lo! Allah is a Lord of bounty for mankind, yet most of mankind give not thanks.

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَشْكُرُونَ ٦١

६२. यह है अल्लाह, तुम्हारा 'रब', हर चीज़ का पैदा करने वाला। कोई 'इलाह (इष्ट पूज्य) नहीं सिवाय उस के। फिर तुम कहां से बहकाये जा रहे हो[४१] ?

62. Such is Allah, your Lord, the Creator of all things There is no God save Him. How then are ye perverted?

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ٦٢

६३. इसी तरह वे लोग बहकाये जाते रहे हैं जो अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करते थे।

63. Thus are they perverted who deny the revelations of Allah.

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ يَجْحَدُونَ ٦٣

६४. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने की जगह बनाई[४२] और आकाश को छत (के समान) बनाया,[४३] और तुम्हारा रूप बनाया तो क्या ही अच्छे बनाये तुम्हारे रूप, और अच्छी चीज़ों की तुम्हें रोज़ी दी। यह है अल्लाह, 'रब' तुम्हारा। तो क्या ही बरकत वाला है अल्लाह सारे संसार का 'रब'!

64. Allah it is Who appointed for you the earth for a dwelling-place and the sky for a canopy, and fashioned you and perfected your shapes, and hath provided you with good things. Such is Allah, your Lord. Then blessed be Allah, the Lord of the Worlds!

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا
وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ٦٤

६५. वह सजीव[४४] है। कोई 'इलाह' (पूज्य) उस के सिवा नहीं। अतः उसी को पुकारो 'दीन' को उसी के लिए ख़ालिस कर के। प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का 'रब' है!

65. He is the Living One. There is no God save Him. So pray unto Him, making religion pure for Him (only). Praise be to Allah, the Lord of the Worlds!

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٦٥

६६. (हे 'नबी'!) कहो: मुझे इस से रोका गया है कि मैं उन की 'इबादत' करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो[४५] जबकि मुझे मेरे 'रब' की ओर से स्पष्ट प्रमाण पहुँच चुके हैं, और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं अपने को सारे संसार के 'रब' के अर्पण कर दूं।

66. Say (O Muhammad): I am forbidden to worship those unto whom ye cry beside Allah since there have come unto me clear proofs from my Lord, and I am commanded to surrender to the Lord of the Worlds.

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ
الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٦٦

४१. अल्लाह ही तुम्हारी पुकार सुनने वाला और तुम्हारा पूज्य है। यदि तुम उस के सिवा दूसरों से विनय करते हो तो तुम अपने वास्तविक स्वामी को छोड़ रहे हो।

४२. पृथ्वी को इस योग्य बनाया कि मनुष्य उस पर जीवन व्यतीत कर सके। पृथ्वी में अत्यन्त उचित मात्रा में आकर्षण शक्ति रक्खी गई है जिस से मनुष्य और जानवर सभी सरलतापूर्वक उस में बस रहे हैं। फिर पृथ्वी को वायुमण्डल से घेर दिया जिस के कारण उल्कापात से भूमि तबाह होने से बची रहती है। यह और इस तरह की अनेक युक्तियों से इस भूमि को रहने योग्य बनाया गया है। यह कोई खेल नहीं है बल्कि एक महान् सृष्टि-कर्त्ता की रचना है।

४३. अर्थात् पृथ्वी के ऊपर ऐसी आकाशीय व्यवस्था का निर्माण कर दिया है कि कोई विनाशकारी वस्तु उस से हो कर तुम तक नहीं पहुँच पाती और तुम निश्चिन्त हो कर धरती में रहते-बसते हो।

४४. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ७८।

४५. दे० सूरा अल-अनआम आयत ५६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६७. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर तुम्हें एक बच्चे का रूप दे कर निकालता है, फिर तुम्हें अपनी प्रौढ़ता (युवावस्था) को प्राप्त होने देता है, फिर तुम्हें बूढ़ा होने देता है—और तुम में किसी (के प्राण) को इस से पहले ही ग्रस्त लिया जाता है—और तुम्हें एक निश्चित समय तक पहुँचने देता है और यह भी है कि कदाचित् तुम समझो।

67. He it is Who created you from dust, then from a drop (of seed), then from a clot, then bringeth you forth as a child, then (ordaineth) that ye attain full strength and afterwards that ye become old men — though some among you die before — and that ye reach an appointed term, that haply ye may understand.

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ٦٧

६८ वही है जो जिलाता और मारता है। और जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है, तो बस उस को इतना कह देता है : हो जा और वह हो जाती है।

68. He it is Who quickeneth and giveth death. When He ordaineth a thing, He saith unto it only: Be! and it is.

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ٦٨

६९. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की 'आयतों' में झगड़ते हैं,[४६] ये लोग कहाँ से उलटे फिरे जाते हैं ?—

69. Hast thou not seen those who wrangle concerning the revelations of Allah, how they are turned away?—

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ٦٩

७०. ये वे लोग हैं जिन्हों ने 'किताब' को झुठलाया और उस को भी जो कुछ हम ने अपने 'रसूलों' को दे कर भेजा था। तो इन्हें मालूम हो जायेगा,

70. Those who deny the Scripture and that wherewith We send Our messengers. But they will come to know,

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ٧٠

७१. जबकि इन की गरदनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरें। ये घसीटे जा रहे होंगे

71. When carcans are about their necks and chains. They are dragged

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ٧١

७२. खौलते पानी में; फिर ये लोग ('जहन्नम' की) आग में झोंके जायेंगे।

72. Through boiling waters; then they are thrust into the Fire.

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ٧٢

७३. फिर इन से कहा जायेगा : कहाँ हैं वे जिन्हें तुम प्रभुत्त्व में शरीक ठहराते थे

73. Then it is said unto them Where are (all) that ye used to make partners (in the Sovereignty)

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ٧٣

७४. अल्लाह के सिवा ? कहेंगे : वे तो हम से खोये गये, बल्कि हम तो पहले किसी को पुकारते ही न थे[४७]। इसी तरह अल्लाह 'काफ़िरों' को पथभ्रष्ट करता है।

74. Beside Allah? They say: They have failed us; but we used not to pray to anything before. Thus doth Allah send astray the disbelievers (in His guidance).

مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ٧٤

७५. (और इन से कहा जायेगा) : यह इस लिए है कि तुम धरती में नाहक़ इतराते फिरते थे, और इस लिए कि तुम अकड़ते थे।

75. (And it is said unto them): This is because ye exulted in the earth without right, and because ye were petulant.

ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ ٧٥

७६. चलो 'जहन्नम' के दरवाज़ों के भीतर, सदा रहने को उस में। बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकार करने वालों का।

76. Enter ye the gates of hell, to dwell therein. Evil is the habitation of the scornful.

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ٧٦

४६. न 'तौहीद' को मानते हैं और न 'रिसालत' को; अल्लाह के आदेशों में टेढ़ निकालने में लगे रहते हैं। बात को समझने की कोशिश नहीं करते, उलटे उलझाव पैदा करने लगते हैं। वास्तव में इन्हें सच्चाई की तलाश नहीं, इन्हें अपनी गुमराही ही प्रिय है।

४७. अर्थात् जिन को हम पुकारते थे वे वास्तव में कुछ भी न थे। उन की कोई हस्ती न थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. तो (हे 'नबी' !) तुम धैर्य्य से काम लो। निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर जिस (बुरे परिणाम) की हम इन्हें धमकी दे रहे हैं उस में से कुछ तुझे दिखा दें, या (इस से पहले) हम तुम्हें उठा लें, इन्हें तो हमारी ओर पलटना होगा।

77. Then have patience (O Muhammad). Lo! the promise of Allah is true And whether We let thee see a part of that which We promise them, or (whether) We cause thee to die, still unto Us they will be brought back.

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

७८. और हम तुम से पहले कितने ही 'रसूल' भेज चुके हैं, उन में कुछ तो वे हैं जिन के वृत्तान्त हम ने तुम्हें सुना दिये हैं, और उन में कुछ ऐसे हैं जिन के वृत्तान्त हम ने तुम्हें नहीं सुनाये, और किसी 'रसूल' को यह सामर्थ्य प्राप्त न था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी ले आता,[४८] फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो ठीक-ठीक फ़ैसला चुका दिया गया, और उस समय टोटे में रह गये मिथ्यावादी।

78. Verily We sent messengers before thee, among them those of whom We have told thee, and some of whom We have not told thee; and it was not given to any messenger that he should br ng a portent save by Allah's leave, but when Allah's commandment cometh (the cause) is judged aright, and the followers of vanity will then be lost.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

७९. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाये बनाये, ताकि उन में से कुछ पर तुम सवारी करो, और उन में से कुछ (के मांस) को तुम खाते हो—

79. Allah it is Who hath appointed for you cattle, that ye may ride on some of them, and eat of some—

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾

८०. और तुम्हारे लिए उन में और भी फ़ायदे हैं—और ताकि उन के द्वारा तुम उस प्रयोजन की पूर्ति कर सको जो तुम्हारे सीनों (दिलों) में हो, और तुम्हें उन पर और नौका (और जहाज़ों) पर भी सवारी करने को मिलता है।

80. (Many) benefits ye have from them — and that ye may satisfy by their means a need that is in your breasts, and may be borne upon them as upon the ship.

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

४८. निशानी से अभिप्रेत यहाँ ऐसा चमत्कार है जो 'नबी' की 'नुबूवत' का खुला प्रमाण हो। 'नबी' स्वयं चमत्कार नहीं दिखाता। यह अल्लाह का काम है कि वह जब उचित समझे चमत्कार दिखा दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१. वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। फिर तुम अल्लाह की कौन-कौन सी निशानियों का इन्कार करोगे ?

81. And He showeth you His tokens. Which, then, of the tokens of Allah do ye deny?

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ
تُنكِرُونَ ﴿٨١﴾

८२. [४९]क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे? वे इन (मक्का वालों) से अधिक थे, और बढ़-चढ़ कर थे शक्ति में और निशानियों (स्मृति चिह्नों) की दृष्टि से भी (जो वे छोड़ गये) भूमि में। परन्तु जो कुछ कि वे कमाते थे वह उन के कुछ भी काम न आया।

82. Have they not travelled in the land to see the nature of the consequence for those before them? They were more numerous than these, and mightier in power and (in the) traces (which they left behind them) in the earth. But all that they used to earn availed them not.

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَ
آثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

८३. और जब उन के पास उन के 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण ले कर आये तो जो ज्ञान उन के पास था उस पर वे इतराते रहे और उसी यातना ने उन्हें घेर लिया जिस की वे हँसी उड़ाते थे।

83. And when their messenger brought them clear proofs (of Allah's Sovereignty) they exulted in the knowledge they (themselves) possessed. And that which they were wont to mock befell them.

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا
بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾

८४. फिर जब उन्हों ने हमारी यातना देखी, तो कहने लगे : हम अल्लाह पर जो अकेला है 'ईमान' लाये और जिस (किसी) को हम उस का सहभागी ठहराते थे उस को हम ने छोड़ दिया।

84. Then, when they saw Our doom, they said: We believe in Allah only and reject (all) that we used to associate (with Him).

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

८५. परन्तु ऐसा न था कि उन का 'ईमान' लाना उन के काम आता जबकि उन्हों ने हमारी यातना को देख लिया—यह अल्लाह की रीति है जो उस के बन्दों में पहले से चली आई है—और उस समय 'क़ाफ़िर' टोटे में पड़ गये।

85. But their faith could not avail them when they saw Our doom. This is Allah's law which hath ever taken course for His bondmen. And then the disbelievers will be ruined.

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا
بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ
فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

४९. यह समाप्ति-सम्बन्धी वार्त्ता है। इस के अध्ययन के समय सूरा की आयत ४-५ और २१ भी सामने रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१—हा० मीम० अस-सजदा

(परिचय)

नाम (The title)

प्रस्तुत 'सूरा' को हा० मीम० अस-सजदा कहा जाता है। सूरा की 'आयत' ३७ में 'अस-सजदा' शब्द प्रयुक्त हुआ है उसी से यह नाम लिया गया है। 'अस-सजदा' शब्द के साथ हा० मीम० के अरबी अक्षर (जो सूरा के आरम्भ में आये हैं) बढ़ा दिये गये हैं ताकि प्रस्तुत सूरा ३२ क़ुरआन की सूरा से जिस का नाम 'अस-सजदा' है अलग पहचानी जा सके।

इस 'सूरा' का एक दूसरा नाम 'फ़ुस्सिलत' भी है जो सूरा की आयत २ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा कब अवतीर्ण हुई है, इस के लिए सूरा अल-मोमिन के परिचय का देखना काफ़ी है। ऐतिहासिक उल्लेखों से अनुमान होता है कि यह सूरा उस समय उतरी है जबकि हज़रत हमज़ा रज़ि० 'ईमान' ला चुके थे परन्तु अभी हज़रत उमर रज़ि० ने 'इस्लाम' क़बूल नहीं किया था। काफ़िरों को बड़ी परेशानी थी कि लोग इस्लाम की ओर बढ़ते जा रहे हैं। उतबा बिन रबीआ ने 'क़ुरैश' के सरदारों से कहा यदि आप लोग पसन्द करें तो मैं मुहम्मद (सल्ल०) से बात चीत करूँ। और उन के सामने कुछ बातें रक्खूँ। हो सकता है कि वे उन में से किसी बात को मान लें और इस प्रकार वे हमारा विरोध न करें।

सब ने इस से अपनी सहमति प्रकट की। उतबा नबी सल्ल० के पास गया और कहा: भतीजे! तुम्हें अपनी जाति में अपने वंश और कुल की दृष्टि से जो स्थान प्राप्त है वह तुम्हें मालूम है। परन्तु तुम अपनी ज़ाति वालों पर एक बड़ी मुसीबत लाये हो। तुम ने समुदाय में फूट डाल दी है। समस्त जाति वालों को मूर्ख ठहराया है। जातीय धर्म और उस के देवताओं की बुराई करते हो। ऐसी बातें करने लगे हो जिन का अर्थ यह है कि हमारे पूर्वज काफ़िर थे। मैं तुम्हारे सामने कुछ प्रस्ताव रखता हूँ इन पर विचार करो। शायद तुम इन में से कोई बात स्वीकार कर सको। नबी सल्ल० ने कहा: अबुल वलीद! आप कहें, मैं सुनूँगा। उतबा ने कहा: भतीजे! यह काम जो तुम ने शुरू किया है इस से यदि तुम्हारा ध्येय धन की प्राप्ति है, तो हम सब मिल कर तुम्हें इतना धन दिये देते हैं कि तुम सब से बढ़ कर धन-वान् हो जाओगे। और यदि तुम बड़ाई के इच्छुक हो, तो हम तुम्हें सरदार बना लेते हैं; बिना तुम्हारे किसी मामले का फ़ैसला न करेंगे। यदि तुम बादशाही के इच्छुक हो, तो हम तुम्हें बादशाह बना लेंगे। और यदि तुम पर कोई 'जिन्न' आता है जिसे तुम हटा नहीं सकते, तो हम अपने ख़र्च से तुम्हारा इलाज कराने को तैयार हैं। जब उतबा अपनी बातें कह चुका तो आप (सल्ल०) ने कहा: अब मेरी सुनो। इस के बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह का नाम ले कर प्रस्तुत सूरा पढ़नी शुरू की। उतबा सुनता रहा। आप (सल्ल०) ने आयत ३८ पर पहुँच कर सजदा किया फिर सिर उठा कर उतबा से कहा: अबुल वलीद! मेरा उत्तर आप ने सुन लिया, अब आप जानें और आप का काम। उतबा जब क़ुरैश के सरदारों की ओर लौटा तो लोगों ने उसे दूर ही से देख कर कहा: ख़ुदा की क़सम उतबा का चेहरा बदला हुआ है। यह वह सूरत नहीं है जिसे ले कर यह गया था। उतबा ने आ कर कहा: "ख़ुदा की क़सम, मैं ने ऐसा 'कलाम' सुना जो इस से पहले कभी नहीं सुना था। न यह काव्य है, न जादू, न 'काहिनों' का कलाम। मेरी बात मानो उसे उस के अपने हाल पर छोड़ दो। यह 'कलाम' कुछ रंग ला कर रहेगा। यदि अरब के लोग उस पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विजय पा गये, तो तुम अपने भाई के विरुद्ध हाथ उठाने (के अपराध) से बच जाओगे। और यदि वह विजयी हुआ तो उस की बादशाही तुम्हारी बादशाही है।" क़ुरैश के सरदारों ने कहा: तुम पर उस का जादू चल ही गया।

वार्त्तायें (Subject-matter)

'सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है कि इस 'सूरा' का मूल आशय 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) है। यही 'तौहीद' समस्त अनुकूल कर्मों का मूल आधार है। अतः उन लोगों के लिए मंगल-सूचना है जो उस चीज़ पर 'ईमान' लाये जो अल्लाह की ओर से उतारी गई; और उन लोगों के लिए तबाही और विनाश है जिन्हों ने उस से मुँह फेरा और 'शिर्क' की ओर झुक गये। और 'आख़िरत' के मुक़ाबले में दुनिया को पसन्द किया।

इस सूरा में 'काफ़िरों' को आमन्त्रित किया गया है कि वे क़ुरआन सुनें। और नबी सल्ल० को सब्र से काम लेने का हुक्म दिया गया है।

प्रस्तुत 'सूरा' हा० मी०-सिलसिले की उन ७ सूरतों में से दूसरी सूरा है जिन का आरम्भ सूरा अल-मोमिन से हुआ है। सूरा अल-मोमिन की तरह प्रस्तुत सूरा भी 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' के लिए डरावा और 'ईमान' वालों के लिए सफलता की शुभ-सूचना है।

इस 'सूरा' में 'मुश्रिकों' के बारे में कहा गया है कि वे ऐसे हैं कि 'ज़कात' नहीं देते और 'आख़िरत' का इन्कार करते हैं। ऐसे लोगों को तबाही की सूचना देने के बाद 'ईमान' लाने वालों और भले कर्म करने वालों को यह शुभ-सूचना दी गई है कि अल्लाह उन्हें ऐसा बदला प्रदान करेगा जो कभी विच्छिन्न न होगा।

प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये 'कुफ़्र' और 'शिर्क' का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। फिर 'आद' और 'समूद' का क़िस्सा बयान करके बताया गया है कि अल्लाह ने किस प्रकार उन्हें उन के 'कुफ़्र' और इन्कार के कारण विनष्ट कर दिया। 'आद' ने भूमि में यदि अपनी बड़ाई का दावा किया था तो उन्हों ने अपने अहंकार का मज़ा चख लिया। और 'समूद' ने यदि सच्चाई के सीधे मार्ग को छोड़ कर अन्धता को अपनाया था, तो उन्हें भी अपनी कमाई का बदला मिल गया। उन का अन्तिम ठिकाना आग है जिस में वे सदा जलते रहेंगे। यह उन के करतूतों का बदला होगा; अल्लाह के शत्रुओं का इस के सिवा दूसरा क्या बदला हो सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' हा० मीम० अस-सजदा

(मक्का में उतरी—'आयतें' ५४)

FUSILAT ("THEY ARE EXPOUNDED")

Revealed at Mecca

سورة حم السجدة مكية وهي أربع وخمسون آية وست ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा० मीम०[1]।

1. Ha, Mim.

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾

२. अवतरण है अत्यन्त कृपाशील और दयावान् की ओर से,

2. A revelation from the Beneficent, the Merciful.

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾

३. एक किताब है जिस की 'आयतें' खोल-खोल कर बयान हुई हैं, 'क़ुरआन' है अरबी में उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं।

3. A Scripture whereof the verses are expounded, a Lecture in Arabic for people who have knowledge:

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

४. शुभ-सूचना देने वाला और सचेतकर्त्ता है। फिर भी उन में से अधिकतर लोगों ने किनारा खींच लिया तो वे सुनते नहीं।

4. Good tidings and a warning. But most of them turn away so that they hear not.

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾

५. और कहते हैं : जिस बात की ओर[2] तुम हमें बुलाते हो उस की ओर से तो हमारे दिल परदों में हैं,[3] और हमारे कानों में डाट है, और हमारे और तुम्हारे बीच ओट है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं।

5. And they say: Our hearts are protected from that unto which thou (O Muhammad) callest us, and in our ears there is a deafness, and between us and thee there is a veil. Act, then. Lo! we also shall be acting.

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾

६. (हे 'नबी' !) कहो : मैं तो बस तुम ही जैसा एक आदमी हूँ। मेरी ओर 'वह्य' की जाती है कि तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य) केवल अकेला 'इलाह' है, तो तुम सीधे उसी की ओर रुख करो और उस से क्षमा की प्रार्थना करो। और तबाही है 'शिर्क' करने वालों के लिए,

6. Say (unto them O Muhammad): I am only a mortal like you. It is inspired in me that your God is One God, therefor take the straight path unto Him and seek forgiveness of Him. And woe unto the idolaters,

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾

७. जो 'जकात' नहीं देते, और वे 'आखिरत' का इन्कार करते हैं।

7. Who give not the poor-due, and who are disbelievers in the Hereafter.

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾

८. लोग जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी रुकेगा नहीं।

8. Lo! as for those who believe and do good works, for them is a reward enduring.

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १।
२. अर्थात् 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर (दे० आयत ६)।
३. अर्थात् उस का हमारे दिलों तक पहुँचना सम्भव नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. (हे 'नबी'!) कहो : क्या तुम उस (अल्लाह) का इन्कार करते हो जिस ने धरती को दो दिन में[४] पैदा किया, और तुम उस के प्रतिद्वन्दी ठहराते हो ! वह सारे संसार का 'रब' है !

9. Say (O Muhammad, untc the idolaters): Disbelieve ye verily in Him Who created the earth in two Days, and ascribe ye unto Him rivals? He (and none else) is the Lord of the Worlds.

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ﴿۹﴾

१०. और उस ने उस में ऊपर से पहाड़ जमाये, और उस में बरकत रक्खी और उस में उस की खूराकें ठहराईं (सब) चार दिन में, बराबर है मांगने वालों के लिए,[५]

10. He placed therein firm hills rising above it, and blessed it and measured therein its sustenance in four Days, alike for (all) who ask;

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿۱۰﴾

११. फिर आकाश की ओर रुख किया[६] और वह एक धुवां (जैसा) था,[७] और उस से और धरती से कहा : तुम दोनों आओ स्वेच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक[८] ! उन्हों ने कहा : हम स्वेच्छापूर्वक हाज़िर हैं।

11. Then turned He to the heaven when it was smoke, and said unto it and unto the earth: Come both of you, willingly or loth. They said: We come, obedient.

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾

४. अर्थात् दो दौर (Periods or Stages)। दे० सूरा अल-हज्ज आयत ४७; अस-सजदा आयत ५; अल-मआरिज आयत ४।

५. मनुष्य शताब्दियों से धरती की बरकतों और उस की उत्पत्ति आदि से फ़ायदा उठाता आ रहा है। अल्लाह ने भूमि में जीवन के साधन फैला दिये हैं। संसार में पांच लाख प्रकार के जीवधारी बताये जाते हैं, हर एक का आहार भिन्न है। अल्लाह ने हर एक की आवश्यकतानुसार खाद्य पदार्थ और दूसरी ज़रूरत की चीज़ें संचित कर दी हैं।

६. यहाँ समय सम्बन्धी क्रम का उल्लेख नहीं किया गया है कि पहले धरती की रचना की गई फिर आकाश की रचना हुई बल्कि आशय यह है कि धरती को भी अल्लाह ने बनाया है और आकाश भी उसी की रचना है। किसी और ने इस में से किसी को नहीं बनाया है (दे० सूरा अन-नाज़ियात आयत ३०; सूरा अल-बक़रा आयत २९)।

ऐसा लगता है कि पहले दो दिनों (Periods) में धरती बनाई फिर दो दिनों में उसे ठीक-ठाक कर के उस में हर तरह के खज़ाने रख दिये। और इस प्रकार उस में लोगों की ज़रूरतों की पूरी सामग्री संचित कर दी। इस प्रकार सब चार दिन हुये। इस के बाद आकाश की ओर रुख किया जिस की सृष्टि हो चुकी थी जैसा कि आगे कहा गया है कि वह एक धुवां (जैसा) था। ऐसा मालूम होता है कि जिन दो दिनों में धरती बनी थी उन्हीं दिनों में आकाश की भी सृष्टि हुई थी और उसे प्रारम्भिक रूप दिया जा चुका था। फिर दो दिनों में आकाश को वर्त्तमान रूप दे कर पूरा किया गया। आकाश को सात भागों में विभक्त कर के उन को उचित रूप से व्यवस्थित किया गया।

७. ऐसा लगता है कि पहले सृष्टि-पदार्थ की रचना की, जो बिल्कुल एक जगह था (दे० सूरा अल-अंबिया आयत ३०) फिर यह पदार्थ, भाप (Gases) द्रव (Liquids) और ठोस (Solids) आदि रूपों में परिवर्तित हुआ है। अल्लाह ने उसी पदार्थ (Primal matter) से अगणित तारा-पुञ्ज (galaxies) सौर जगत (Solar system) बना दिये। हर ग्रह और नक्षत्र उन्हीं तत्वों से बना है जिन से हमारी धरती और हमारे शरीर का निर्माण हुआ है। आज उन तारों में भी जो पृथ्वी से अत्यन्त दूरी पर हैं वे तत्व पहचाने गये हैं जो इस भूमि पर सामान्य रूप से पाये जाते हैं।

आकाश के बारे में कहा जा रहा है वह पहले धुवां था। समस्त विश्व नीहारिका (Nebula) था। अल्लाह ने अपनी योजना के अन्तर्गत धरती और आकाश की रचना की।

८. अर्थात् तुम्हें ईश्वरीय आदेश का पालन करना है चाहे दबाव के कारण करो या स्वेच्छापूर्वक (Willingly)। आकाशों और धरती के लिए अल्लाह ने जिस विधि, नियम आदि की व्यवस्था की वह उन की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल है इस लिए वे स्वभावतः उस के पालन में लग गये। मनुष्य को भी इसी तरह स्वतन्त्र इच्छा के साथ और मुक्त भाव से अल्लाह के आदेशों का पालन करना चाहिए। यही नीति मनुष्य के सरल स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल है। यदि वह इसके विरुद्ध आचरण करता है तो उसे अपनी प्रकृति से वैर है। वह अपना शत्रु आप है।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि इस आयत और बाद वाली आयतों में उस समय का उल्लेख हुआ है जबकि धरती और आकाश ने वर्त्तमान रूप धारण नहीं किया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. फिर उस ने दो दिन में[९] इन सात आकाशों को पूरा कर दिया और हर आकाश में जो कुछ हुक्म देना था भेज दिया;[१०] और हम ने दुनिया के आकाश (निकटवर्ती आकाश)[११] को दीपकों (तारों और नक्षत्रों) से सुशोभित किया, और इस तरह सुरक्षित भी कर दिया। यह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ (अल्लाह) का बाँधा हुआ अन्दाज़ा है।

12. Then He ordained them seven heavens in two Days and inspired in each heaven its mandate; and We decked the neither heaven with lamps, and rendered it inviolable. That is the measuring of the Mighty, the Knower.

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ
وَأَوْحٰى فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا
السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ وَحِفْظًا ۚ
ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

१३. फिर यदि ये (काफ़िर) लोग किनारा खींचें तो कह दो : मैं ने तुम्हें वज्रपात से सावधान कर दिया है वैसा ही वज्रपात जैसा 'आद' और 'समूद' पर हुआ;[१२]

13. But if they turn away, then say: I warn you of a thunderbolt like the thunderbolt (which fell of old upon the tribes) of A'ad and Thamud;

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾

१४. जब उन के पास 'रसूल' उन के सामने से और उन के पीछे से आये कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो ! उन्हों ने कहा : यदि हमारा 'रब' चाहता तो 'फ़िरिश्ते' उतार देता, तो जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो हम तो उसे नहीं मानते[१३]।

14. When their messengers came unto them from before them and behind them, saying: Worship none but Allah! they said: If our Lord had willed, He surely would have sent down angels (unto us), so lo! we are disbelievers in that wherewith ye have been sent.

إِذْ جَاءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللّٰهَ ۖ
قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلٰئِكَةً
فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كٰفِرُونَ ﴿١٤﴾

१५. तो 'आद' जो थे वे नाहक़ भूमि (देश) में बड़े बने, और कहा : कौन शक्ति में हम से बढ़ कर है ? क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह उन से शक्ति में बढ़ कर है ? वे हमारी 'आयतों' का इन्कार ही करते रहे[१४]।

15. As for A'ad, they were arrogant in the land without right, and they said: Who is mightier than us in power? Could they not see that Allah Who created them, He was mightier than them in power? And they denied Our revelations.

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ
هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيٰتِنَا
يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾

९. अर्थात् दो कालावधि (Periods) में।

१०. अर्थात् आकाश अथवा पर-जगत के प्रत्येक क्षेत्र के लिए उस के अनुकूल नियम निर्धारित कर दिये और एक उचित व्यवस्था स्थापित कर दी।

११. अर्थात् वह आकाश जिसे हम अपनी आँखों से देखते हैं। यह अत्यन्त निकटवर्ती क्षेत्र है। प्रत्येक क्षेत्र की विशालता की कल्पना करना भी मनुष्य के लिए नितान्त कठिन है।

१२. 'सूरा' के परिचय में बताया जा चुका है कि उतबा बिन रबीआ आप (सल्ल०) की सेवा में आया था ताकि आप (सल्ल०) को 'तौहीद' की ओर बुलाने से बाज़ रक्खे। आप (सल्ल०) ने उस के जवाब में इस 'सूरा' को पढ़ना आरम्भ किया। जब आप (सल्ल०) इस 'आयत' पर पहुँचे तो उतबा डर गया उसे ऐसा लगा जैसे वह आने वाली यातना को उतरते देख रहा है। उस ने नबी सल्ल० के मुँह पर हाथ रख दिये और कहा : मुहम्मद (सल्ल०) अपनी जाति के लोगों पर दया करो।

१३. लोगों की यह एक खास गुमराही है जो शुरू से चली आ रही है कि जब किसी ने उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया तो कहा कि तुम तो एक साधारण मनुष्य हो हम तुम्हारी बात नहीं मानते और जब वह गुज़र जाता है तो श्रद्धा रखने वाले उस के बारे में यह भावना प्रकट करने लगते हैं कि वह तो मनुष्य नहीं था बल्कि ईश्वर या कोई अलौकिक व्यक्ति था जो इस भूमि पर उतर आया था।

१४. उन्हों ने हमारी 'आयतों' का इन्कार किया। हमारे आदेशों को ठुकराया। और उन सारी निशानियों की ओर से अन्धे हो गये जो हम ने धरती और आकाश में फैला रक्खी हैं। जिन में प्रत्येक निशानी इस बात की खबर देती है कि अल्लाह है और वही अकेला इस का हक़ रखता है कि उस की 'इबादत' की जाये। स्वयं मनुष्य का अपना अस्तित्व और उस की अपनी योग्यतायें बताती हैं कि उस की कोई पालन-कर्त्ता और स्वामी है। इस के साथ मानव-इतिहास की निशानियाँ हैं जिन से इस बात का प्रमाण मिलता है कि अल्लाह को मानने और न मानने के परिणाम कभी एक-से नहीं रहे हैं। अल्लाह की अवज्ञा करने वाली और 'रसूलों' को झुठलाने वाली जातियों को सदैव बुरे दिन देखने पड़े हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. तो हम ने उन पर अशुभ दिनों में एक प्रचण्ड वायु भेजी,[१५] ताकि उन्हें सांसारिक जीवन में रुसवाई की यातना का मज़ा चखायें । और 'आख़िरत' की यातना तो और ज़्यादा रुसवा करने वाली है, और उन की कुछ भी मदद न की जायेगी ।

16. Therefor We let loose on them a raging wind in evil days, that We make them taste the torment of disgrace in the life of the world. And verily the doom of the Hereafter will be more shameful. and they will not be helped.

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝١٦

१७. और 'समूद' जो थे, उन्हें हम ने मार्ग दिखाया, परन्तु मार्ग-दर्शन की अपेक्षा उन्हों ने अन्धता को पसन्द किया, तो जो कुछ वे कमाते थे उस के कारण उन्हें अपमान की यातना के वज्रपात ने आ लिया[१६] ।

17. And as for Thamud, We gave them guidance, but they preferred blindness to the guidance, so the bolt of the doom of humiliation overtook them because of what they used to earn.

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٧

१८. और उन लोगों को हम ने बचा लिया जो 'ईमान' लाये थे[१७] और डरते थे ।

18. And We delivered those who believed and used to keep their duty to Allah.

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝١٨ ع

१९. और (याद करो) जिस दिन अल्लाह के शत्रु ('जहन्नम' की) आग की ओर घेर कर इकट्ठे किये जायेंगे, फिर उन्हें (श्रेणियों के अनुसार) क्रम में रक्खा जायेगा ।

19. And (make mention of) the day when the enemies of Allah are gathered unto the Fire, they are driven on

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝١٩

२०. यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँच जायेंगे, तो जो कुछ वे करते थे उस के कारण उन के कान और उन की आँखें और उन की खालें उन के विरुद्ध गवाही देंगी[१८] ।

20. Till, when they reach it, their ears and their eyes and their skins testify against them as to what they used to do.

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٠

२१. और वे अपनी खालों से कहेंगे : तुम ने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी ? वे कहेंगी : हमें अल्लाह ने बोलता किया जिस ने हर चीज़ को बोलता किया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया, और उसी की ओर तुम्हें लौटना है ।

21. And they say unto their skins: Why testify ye against us? They say: Allah hath given us speech Who giveth speech to all things. and Who created you at the first, and unto Whom ye are returned.

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٢١

१५. अर्थात् उन दिनों में जो उन के हक़ में मनहूस (Unlucky) और अशुभ थे । जिन दिनों में उन पर यातना आनी निश्चय हुई थी । यों कोई दिन भी अशुभ और बुरा नहीं होता मनुष्य के अपने कर्म ही शुभ और अशुभ होते हैं ।

अरबों में उत्तरी वायु अत्यन्त दुःखदायक होती है यह अत्यन्त ठण्डी और शुष्क होती है । वह हवा निरन्तर चलाई गई जिस से 'आद' तबाह हो कर रह गये ।

१६. क़ुरआन में दूसरी जगहों पर बताया गया है कि एक भूकंप आया था जिससे सब कुछ तबाह हो गया । आज भी समूद के अधिक्षेत्र के निरीक्षण से ऐसा लगता है कि किसी बड़े भूकंप ने पहाड़ों को भूमि से ले कर चोटी तक झँझोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है । पहाड़ बिल्कुल खील-खील हो गये हैं ।

१७. 'ईमान' वालों को 'नबियों' के द्वारा सावधान कर दिया कि वे यातना आने से पहले ही उस भू-भाग से निकल जायें जिसे तबाह करने का फ़ैसला हो चुका है ।

१८. नबी सल्ल० ने कहा है कि जब अपराधी लोग अपने गुनाहों का इन्कार करेंगे तो उन के कान, उन की आँखें और उन के दूसरे अङ्ग गवाही देंगे कि हम से इन्हों ने यह काम कराये थे । उस दिन शरीर का एक-एक अङ्ग वह सब कुछ बता देगा जो वह जीवन भर करता रहा है । जैसे टेप रिकार्ड में एक-एक शब्द का रिकार्ड मौजूद होता है इसी प्रकार आँख, कान, हाथ पाँव आदि अंग में रिकार्ड मौजूद होगा कि वह क्या करता रहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. और तुम इस से नहीं छिपते थे कि तुम पर गवाही देंगे तुम्हारे कान न इस से कि (गवाही देंगी) तुम्हारी आँखें और न इस से कि (गवाही देंगो) तुम्हारी खालें, बल्कि तुम ने यह समझ रक्खा था कि बहुत से कर्मों को जो तुम करते हो अल्लाह नहीं जानता।

22. Ye did not hide yourselves lest your ears and your eyes and your skins should test fy against you, but ye deemed that Allah knew not much of what ye did.

وما كنتم تستترون ان يشهد عليكم
سمعكم ولا ابصاركم ولا جلودكم ولكن
ظننتم ان الله لا يعلم كثيرا مما تعملون ﴿٢٢﴾

२३. और तुम्हारे इसी गुमान ने जो तुम ने अपने 'रब' के साथ किया था, तुम्हें विनष्ट किया; और तुम घाटा उठाने वालों में से हो गये।

23. That, your thought which ye did think about your Lord, hath ruined you; and ye find yourselves (this day) among the lost.

وذلكم ظنكم الذي ظننتم بربكم
اردىكم فاصبحتم من الخسرين ﴿٢٣﴾

२४. अब यदि वे सब्र करें, तो भी उन का ठिकाना ('जहन्नम' की) आग है; और यदि वे उसे मनाना चाहेंगे तो उन्हें मनाने को भी न मिलेगा।

24. And though they are resigned, yet the Fire is still their home; and if they ask for favour, yet they are not of those unto whom favour can be shown.

فان يصبروا فالنار مثوى لهم وان
يستعتبوا فما هم من المعتبين ﴿٢٤﴾

२५. और हम ने उन के लिए ऐसे पार्श्ववर्त्ती (साथी) नियुक्त कर दिये थे, जिन्हों ने उस को शोभायमान बना दिया जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है। और उन पर भी (अल्लाह की) बात साबित हो कर रही 'जिन्न' और मानव-जाति के दूसरे समुदायों के साथ-साथ जो उन से पहले गुज़र चुके। निश्चय ही वे घाटा उठाने वाले थे।

25. And We assigned them comrades (in the world), who made their present and their past fairseeming unto them. And the world concerning nations of the jinn and humankind who passed away before them hath effect for them. Verily they are the losers.

وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين
ايديهم وما خلفهم وحق عليهم القول
في امم قد خلت من قبلهم من الجن
والانس انهم كانوا خسرين ﴿٢٥﴾

२६. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया उन्हों ने कहा : इस 'क़ुरआन' को सुनो ही मत और गड़बड़ी मचाओ इस के बीच; कदाचित् तुम दबा सको[१६]।

26. Those who disbelieve say: Heed not this Qur'an, and drown the hearing of it; haply ye may conquer.

وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا
القران والغوا فيه لعلكم تغلبون ﴿٢٦﴾

२७. तो अवश्य हम 'कुफ़्र' करने वालों को यातना का मज़ा चखायेंगे, और अवश्य ही हम उन्हें सब से बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे।

27. But verily We shall cause those who disbelieve to taste an awful doom, and verily We shall requite them the worst of what they used to do.

فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا
ولنجزينهم اسوا الذي كانوا يعملون ﴿٢٧﴾

२८. यह बदला है अल्लाह के शत्रुओं का : ('जहन्नम' की) आग। इसी में उन का सदा का घर है, इस के बदले में कि हमारी 'आयतों' का इन्कार करते थे।

28. That is the reward of Allah's enemies: the Fire. Therein is their immortal home, payment forasmuch as they denied Our revelations.

ذلك جزاء اعداء الله النار لهم
فيها دار الخلد جزاء بما كانوا
باياتنا يجحدون ﴿٢٨﴾

१६. अर्थात् जब 'क़ुरआन' पढ़ा जाये तो कदापि न सुनो बल्कि उस के पढ़े जाने के समय खूब शोर मचाओ और गुल-गपाड़ा करो कि दूसरे लोग भी न सुन सकें इस तरह क़ुरआन की आवाज़ दब कर रह जायेगी।

क़ुरआन की आवाज़ बिजली के समान अपना काम करती थी; लोग क़ुरआन से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकते थे। 'काफ़िरों' ने सोचा कि शोर-गुल से इस की आवाज़ को दबा दिया जाये हालाँकि यह चिराग़ उन की फूँकों से बुझने वाला न था। क़ुरआन की आवाज़ एक जिन्दा आवाज़ (Strong living voice) थी इसे दबाना उन के लिए सम्भव न था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया उन्हों ने कहा : हमारे 'रब' ! 'जिन्न' और मानव-जाति में से जिन लोगों ने हमें भटकाया उन को हमें दिखा। हम उन्हें अपने पैरों तले (रौंद) डालें ताकि वे नीचे वालों (निकृष्टतम धरातल तक पहुँचे हुये लोगों) में से हो जायें।

29. And those who disbelieve will say: Our Lord! Show us those who beguiled us of the jinn and humankind. We will place them underneath our feet that they may be among the nethermost.

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾

३०. जिन लोगों ने कहा : हमारा 'रब' अल्लाह है, फिर जमे रहे,[२०] उन पर 'फ़रिश्ते' उतरते हैं, और कहते हैं) कि डरो नहीं और न दुःखी हो, बल्कि उस 'जन्नत' की शुभ-सूचना लो जिस का तुम से वादा किया गया था[२१]।

30. Lo! those who say: Our Lord is Allah, and afterward are upright, the angels descend upon them, saying: Fear not nor grieve, but hear good tidings of the paradise which ye are promised.

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

३१. हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और 'आखिरत' में भी[२२]। वहाँ तुम्हारे लिए वह कुछ है जिस को तुम्हारे जी चाहें, और वहाँ तुम्हारे लिए वह कुछ है जिस को तुम तलब करो।

31. We are your protecting friends in the life of the world and in the Hereafter. There ye will have (all) that your souls desire, and there ye will have (all) for which ye pray.

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾

३२. यह अतिथि-सत्कार है अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् की ओर से।

32. A gift of welcome from the Forgiving, the Merciful.

نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾

३३. और उस व्यक्ति से बात का अच्छा कौन हो सकता है जिस ने अल्लाह की ओर बुलाया और अनुकूल कर्म किया, और कहा : निश्चय ही मैं 'मुस्लिमों' में से हूँ।

33. And who is better in speech than him who prayeth unto his Lord and doth right, and saith: Lo! I am of those who surrender (unto Him).

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

३४. बराबर हो ही नहीं सकती भलाई और बुराई। तुम (बुराई को) उस चीज़ से टालो जो उत्तम हो[२३] फिर तुम क्या देखोगे कि तुम्हारे और जिस के बीच वैर था (वह ऐसा हो जायेगा) मानो वह कोई आत्मीय मित्र है[२४]।

34. The good deed and the evil deed are not alike. Repel the evil deed with one which is better then lo! he, between whom and thee there was enmity (will become) as though he was a bosom friend.

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

२०. दे० आयत ६।

२१. 'फ़रिश्ते' मृत्यु के समय या मृत्यु के पश्चात् और 'आखिरत' में तो शुभ-सूचना और तसल्ली देते ही हैं, इस सांसारिक जीवन में भी एक प्रकार से उन का अवतरण होता है। अल्लाह के हुक्म से वे 'ईमान' वालों को भलाई और शुभ बातों की प्रेरणा देते हैं जिस से 'ईमान' वालों को शान्ति मिलती है और कठिनाइयों को हँसी-खुशी झेल लेने का सामर्थ्य उन्हें प्राप्त हो जाता है।

२२. सांसारिक जीवन में भी 'फ़रिश्ते' 'ईमान' वालों के साथी हैं आन्तरिक रूप से उन्हें 'फ़रिश्तों' का योग प्राप्त होता है और 'आखिरत' में भी 'फ़रिश्ते' उन के साथ होंगे।

२३. दे० सूरा बनी इसराईल आयत ५३।

२४. अल्लाह की ओर बुलावा देने वाले व्यक्ति को नैतिक दृष्टि से अत्यन्त उच्च होना चाहिए। वह बुराई का जवाब बुराई से नहीं भलाई से दे। उसे अत्यन्त सहनशील और कोमल स्वभाव वाला होना चाहिए। ऐसे उदार और लोक-हित चाहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार से बड़े-से-बड़ा वैरी भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. और यह बात केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जिन्हों ने 'सब्र' किया, और यह बात केवल उस को प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यवान् होता है[२५]।

35. But none is granted it save those who are steadfast, and none is granted it save the owner of great happiness.

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

३६. और यदि 'शैतान' के उकसाने से कभी तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा हो, तो अल्लाह की पनाह माँगो[२६]। निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

36. And if a whisper from the devil reach thee (O Muhammad) then seek refuge in Allah. Lo! He is the Hearer, the Knower.

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

३७. और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा। न सूर्य को 'सजदा' करो और न चन्द्रमा को; बल्कि अल्लाह को 'सजदा' करो जिस ने इन्हें पैदा किया, यदि (वास्तव में) तुम्हें उसी की 'इबादत' करनी है।

37. And of His portents are the night and the day and the sun and the moon. Adore not the sun nor the moon; but adore Allah Who created them, if it is in truth Him Whom ye worship.

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾

३८. परन्तु यदि ये लोग अकड़ें तो (अल्लाह के यहाँ 'इबादत' करने वालों की कमी नहीं) जो ('फ़िरिश्ते') तुम्हारे 'रब' के यहाँ हैं वे रात और दिन उस की 'तसबीह' करते हैं, और वे उकताते नहीं।

38. But if they are too proud — still those who are with thy Lord glorify Him night and day, and tire not.

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ سجدة

३९. और यह उस की निशानियों में है कि तुम देखते हो कि धरती सूनी पड़ी हुई है, फिर जहाँ हम ने उस पर पानी बरसाया कि वह लहलहा उठी। निश्चय ही जिस ने इस (भूमि) को जिलाया वही मुरदों को जीवित करने वाला है। निस्सन्देह उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

39. And of His portents (is this): that thou seest the earth lowly, but when We send down water thereon it thrilleth and groweth. Lo! He who quickeneth it is verily the Quickener of the dead. Lo! He is Able to do all things.

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

४०. जो लोग हमारी 'आयतों' में कुटिलता की नीति अपनाते हैं[२७] वे हम से छिपे हुये नहीं हैं। भला वह व्यक्ति जो आग में डाला जाये अच्छा है, या वह व्यक्ति जो 'क़ियामत' के दिन निश्चिन्त हो कर आये ? जो चाहो करो निस्सन्देह वह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

40. Lo! those who distort Our revelations are not hid from Us. Is he who is hurled into the Fire better, or he who cometh secure on the Day of Resurrection? Do what ye will. Lo! He is Seer of what ye do.

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾

२५. मतलब यह है कि कहने के लिए तो यह बहुत आसान है कि बुराई का जवाब भलाई से दो परन्तु इसे व्यवहार में लाना अत्यन्त कठिन है। इस के लिए बड़े साहस और धैर्य्य की आवश्यकता होती है। यह उन व्यक्तियों का काम है जिन्हें अल्लाह 'हिकमत' (Wisdom) प्रदान करता है। जो बड़े भाग्य वाले होते हैं।

२६. अर्थात् जब 'शैतान' इस उत्तम नीति से कि तुम बुराई का जवाब भलाई से दो तुम्हें फेरने की चेष्टा करे तो अल्लाह की ओर रुजू करो। उस की पनाह चाहो और यह समझ लो कि अल्लाह हमारा रक्षक है बुरे आदमी की बुराई हमें कोई हानि नहीं पहुँचा सकती।

२७. अर्थात् उस के साथ सही नीति नहीं अपनाते सीधी सी बात में टेढ़ निकालने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों को सत्य से फेर दें। अल्लाह की 'आयतों' की हँसी उड़ाते हैं। उन का उलटा अर्थ करते हैं। उन की ओर ध्यान नहीं देते। ओछे आक्षेप करते हैं। और यह सब कुछ इस लिए करते हैं कि उन्हें सत्य से बढ़ कर अपनी झूठी मान-मर्यादा प्रिय है। वे अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने हुये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. जिन लोगों ने अनुस्मारक का इन्कार किया जब वह उन के पास आया—और निश्चय ही वह एक प्रताप वाली किताब है ।

41. Lo! those who disbelieve in the Reminder when it cometh unto them (are guilty), for lo! it is an unassailable Scripture.

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

४२. अनृत उस तक न उस के आगे से आ सकता है और न उस के पीछे से[28] । अवतरण है उस की ओर से जो तत्त्वदर्शी और अपने-आप प्रशंसा का अधिकारी है —

42. Falsehood cannot come at it from before it or behind it (It is) a revelation from the Wise, the Owner of Praise.

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

४३. (उन के इन्कार पर) तुम से वही बात कही जा रही है जो उन 'रसूलों' से कही जा चुकी है जो तुम से पहले थे : "निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' क्षमा वाला है और दुःखद दण्ड देने वाला भी ।"

43. Naught is said unto thee (Muhammad) save what was said unto the messengers before thee. Lo! thy Lord is owner of forgiveness, and owner (also) of dire punishment.

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

४४. और यदि हम इसे 'अजमी'[29] 'क़ुरआन' रखते तो ये (काफ़िर लोग) कहते : इस की 'आयतें' क्यों नहीं खोल-खोल कर बयान की गईं ? यह क्या कि एक 'अजमी' और एक अरबी[30] ! कहो : जो लोग 'ईमान' लाये उन के लिए यह मार्ग-दर्शन है और शिफ़ा (आरोग्यकर) और जो 'ईमान' नहीं लाते उन के कानों में डाट है, और यह ('क़ुरआन') उन के लिए अन्धता है । ये लोग (ऐसे हैं मानो) किसी दूर के स्थान से पुकारे जाते हैं[31] ।

44 And if We had appointed it a Lecture in a forgive tongue they would assuredly have said: If only its verses were expounded (so that we m ght understand)! What! A foreign tongue and an Arab? — Say unto them (O Mohammad): For those who believe it is a guidance and a healing; and as for those who disbelieve, there is a deafness in their ears, and it is bl ndness for them. Such are called to from afar.

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

४५. निश्चय ही हम ने मूसा को 'किताब' दी थी, फिर उस में विभेद किया गया; (हे 'नबी' !) यदि तुम्हारे 'रब' की ओर से एक बात पहले निश्चय न हो चुकी होती, तो उन के बीच फ़ैसला हो चुका होता;[32] और निश्चय ही वे एक दुविधा एवं विकलताजनक सन्देह में पड़े हुये हैं[33] ।

45. And We verily gave Moses the Scripture, but there hath been dispute concerning it; and but for a Word that had already gone forth from thy Lord, it would ere now have been judged between them: but lo! they are in hopeless doubt concerning it.

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

२८. जिस किताब का रक्षक स्वयं अल्लाह है उस में असत्य का समावेश कदापि नहीं हो सकता । अतः इस किताब की शिक्षायें अटल हैं । उन में कोई बात भी सत्य के विरुद्ध नहीं । इस की शिक्षाओं के विरुद्ध कोई चाल भी सफल नहीं हो सकती । न कोई व्यक्ति आज क़ुरआन की किसी बात को सत्य के प्रतिकूल सिद्ध कर सकता है और न भविष्य में क़ुरआन की किसी बात को झुठलाया जा सकता है । (दे० बनी इसराईल आयत ८१) ।

२९. 'अजमी' से अभिप्रेत वह व्यक्ति है जो अरब का न हो इसी प्रकार उस भाषा को भी 'अजमी' कहते हैं जो अरबी के अतिरिक्त कोई और भाषा हो ।

३०. अर्थात् आज मक्का के 'काफ़िर' यह कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल० अरब के रहने वाले हैं इन्हों ने स्वयं अरबी में क़ुरआन गढ़ लिया है हम इसे अल्लाह की वाणी उस हालत में समझते जबकि यह अरबी से भिन्न किसी और भाषा में होता । हालांकि यदि क़ुरआन किसी दूसरी भाषा में उतरता तो फिर यही लोग कहते कि हम अरब हैं और मुहम्मद (सल्ल०) भी अरब के रहने वाले हैं अल्लाह अपना कलाम क्यों ऐसी भाषा में उतार रहा है जिसे न हम समझ सकें और न जिसे मुहम्मद (सल्ल०) समझ सकें । तात्पर्य यह है कि इन्कार करने वाले अपने हठ-धर्म के लिए कोई-न-कोई बात बना ही लेते हैं ।

३१. अर्थात् जैसे कोई व्यक्ति किसी को दूर से पुकारे तो वह उस की बात नहीं समझ पाता और उस की बात पर कान नहीं धरता यही हाल इन 'काफ़िरों' का है कि हक़ की आवाज़ इन्हें सुनाई ही नहीं देती ये बिल्कुल बहरे हो गये हैं ।

३२. दे० सूरा अश-शूरा आयत १४ ।

३३. दे० सूरा हूद आयत ११०; सूरा अल-हज्ज आयत ५५; सूरा अश-शूरा आयत १४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. जिस किसी ने भलाई की तो अपने लिए, और जिस किसी ने बुराई की तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा[३४]। तुम्हारा 'रब' बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं[३५]।

46. Whoso doth right it is for his soul, and whoso doth wrong it is against it. And thy Lord is not at all a tyrant to His slaves.

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

* ४७. उसी की ओर उस घड़ी ('क़ियामत') का ज्ञान फेरा जाता है[३६]। न तो फल अपने गाभों से निकलते हैं और न कोई स्त्री जाति गर्भवती होती है और न जनती है परन्तु उस के (अल्लाह) के ज्ञान से[३७]।

जिस दिन वह इन ('मुशिरकों') को पुकारेगा कि मेरे सहभागी कहाँ हैं[३८] ? ये कहेंगे : हम ने तुझे बता दिया कि हम में कोई (इस बात का) साक्षी नहीं[३९]।

47. Unto Him is referred (all) knowledge of the Hour. And no fruits burst forth from their sheaths, and no female carrieth or bringeth forth but with His knowledge. And on the day when He calleth unto them; Where are now My partners? they will say: We confess unto Thee, not one of us is a witness (for them).

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

४८. और जिन्हें ये पहले पुकारा करते थे वे इन से खो गये होंगे, और यह समझ लेंगे कि इन के लिए बचने की कोई जगह नहीं है।

48. And those to whom they used to cry of old have failed them, and they perceive they have no place of refuge.

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

४९. मनुष्य भलाई की दुआ माँगने से नहीं उकताता, और यदि उसे तकलीफ़ पहुँचे तो निराश हो जाता है और जी तोड़ बैठता है[४०]।

49. Man tireth not of praying for good, and if ill toucheth him, then he is disheartened, desperate.

لَا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾

---

३४. अर्थात् हर एक व्यक्ति की अपनी ज़िम्मेदारी है उस का कर्तव्य है कि वह अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करने की कोशिश करे।

३५. अर्थात् वह ऐसा नहीं है कि बुराई तो कोई और करे और सज़ा वह किसी और को देने लग जाये।

* यहाँ से पच्चीसवाँ पारा (Part xxv) शुरू होता है।

३६. अर्थात् 'क़ियामत' का ज्ञान केवल अल्लाह को है। अंग्रेज़ी में इसे इस तरह कहेंगे : To Him is referred the Knowledge of the Hour. अल्लाह ही उस घड़ी के बारे में कुछ बताये तो मालूम हो सकता है। उस का ज्ञान अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। यदि कोई बात उस के बारे में कही जा सकती है तो अल्लाह ही के हवाले से।

३७. बताया जा रहा है कि 'क़ियामत' की घड़ी का ज्ञान केवल अल्लाह को है। वृक्षों में जो फल लगते हैं और स्त्री जाति के गर्भाशयों में जो कुछ होता है उसे उस का पूरा ज्ञान होता है वह यह भी जानता है कि किस गर्भवती के बच्चा जनने का समय कौन सा है इसी प्रकार अल्लाह को कर्मों के परिणामों का भी पूरा ज्ञान है। जो कुछ तुम करते हो उसे मालूम है; वह जानता है जब लोगों के कर्मों का नतीजा उन के सामने आयेगा।

३८. मनुष्य पर सब से पहला और बुनियादी हक़ अल्लाह का होता है इस लिए सब से पहला सवाल यही होगा कि अपने पैदा करने वाले (अल्लाह) के साथ तुम्हारा क्या व्यवहार रहा है। तुम उस पर 'ईमान' लाये थे और उसे एक जाना था या उस का इन्कार कर दिया था या उस के साथ दूसरों को भी पुकारने और उन की वन्दना तथा पूजा करने लग गये थे।

अरब वाले नास्तिक न थे परन्तु 'मुशिरक' थे इस लिए उन से पूछा जायेगा कि तुम ने अल्लाह के जो शरीक ठहराये थे अब वे कहाँ हैं ?

३९. उस दिन वह 'शिर्क' का खण्डन और अपने देवताओं का इन्कार कर देंगे, वे यह नहीं कह सकेंगे कि अमुक देवतागण अल्लाह के हक़ में शरीक और हिस्सेदार हैं।

४०. मनुष्य स्वार्थ-प्रधान है वह भलाई, धन-दौलत और सांसारिक वैभव के माँगने से नहीं थकता परन्तु जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह की दयालुता से निराश हो जाता है। यह उस का छिछोरापन है इस से वह उसी समय छुटकारा पा सकता है जबकि वह 'ईमान' लाये और 'कुफ़्र' की नीति को छोड़ दे। दे० सूरा अल-मआरिज आयत १९-३४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. और यदि उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुँची थी हम उसे अपनी किसी दयालुता का रसास्वादन करा दें, तो कह देगा : यह तो मुझे मिलना ही था;[४१] और मैं नहीं समझता कि वह ('क़ियामत' की) घड़ी क़ायम होगी, और यदि मुझे मेरे 'रब' की ओर पलटाया भी गया, तो भी मेरे लिए उस के यहाँ अच्छाई है[४२]—तो हम अवश्य बता देंगे 'कुफ़्र' करने वालों को जो कुछ उन्हों ने किया है, और हम चखा देंगे उन्हें कठिन यातना का मज़ा।

50. And verily, if We cause him to taste mercy after some hurt that hath touched him, he will say: This is my own; and I deem not that the Hour will ever rise, and if I am brought back to my Lord, I surely shall be better off with Him — But We verily shall tell those who disbelieve (all) that they did, and We verily shall make them taste hard punishment.

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ
ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ وَمَآ
اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ
اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى
فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا
وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۞٥٠

५१. और जब हम मनुष्य पर कृपा करते हैं, तो वह किनारा खींच लेता है, और अपना पहलू फेर लेता है, और जब उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लम्बी-चौड़ी दुआ माँगने लगता है।

51. When We show favour unto man, he withdraweth and turneth aside, but when ill toucheth him then he aboundeth inprayer.

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ
وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ
دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ۞٥١

५२. कहो : देखो यदि यह ('क़ुरआन') अल्लाह की ओर से है फिर तुम ने इसका इन्कार किया तो कौन उस से बढ़ कर पथभ्रष्ट हो सकता है जो परले दरजे के विरोध में पड़ा हो[४३]।

52. Bethink ye: If it is from Allah and ye reject it — who is further astray than one who is at open feud (with Allah)?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ
كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ
شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۞٥٢

४१. अर्थात् वह यह नहीं समझता कि यह अल्लाह की कृपा और दया है बल्कि इसे अपना हक़ समझता और गर्व करने लगता है।

४२. वह इस भ्रम में पड़ा हुआ है कि इस लोक में वह सम्पन्न है तो 'आख़िरत' में भी सम्पन्न और ख़ुशहाल होगा। हालाँकि वहाँ अल्लाह का फ़ैसला लोगों के अपने कर्मों के अनुसार होगा। वहाँ यह नहीं पूछा जायेगा कि संसार में तुम्हारे पास कितना धन था और तुम कितने बड़े राज्य के अधिकारी थे बल्कि वहाँ सवाल इस बात का होगा कि तुम ने दुनिया में कर्म कैसे किये अच्छे या बुरे, अल्लाह के भक्त और आज्ञाकारी बन कर रहे या अवज्ञाकारी और सरकश।

४३. मतलब यह है कि आज तुम जिस चीज़ को मानने से इन्कार कर रहे हो यदि वह असत्य है तो उस के मानने वालों और न मानने वालों का परिणाम एक ही होगा; परन्तु यदि वह वास्तव में अल्लाह का कलाम (वाणी) है और यह 'नबी' अल्लाह ही का भेजा हुआ है तो तुम्हारा क्या परिणाम होगा। क्या तुम्हारी समझ में इतनी बात भी नहीं आ रही है कि कमज़ोर पहलू तुम्हारा है या 'ईमान' वालों का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. हम इन्हें अपनी निशानियाँ दिखायेंगे बाह्य जगत में और स्वयं इन की आत्माओं में यहाँ तक कि इन पर खुल जाये कि यह सत्य है[४४]। क्या (हे 'नबी'!) तुम्हारे 'रब' की यह बात काफ़ी नहीं है कि वह हर चीज़ का साक्षी है ?

53. We shall show them Our portents on the horizons and within themselves until it will be manifest unto them that it is the Truth. Doth not thy Lord suffice, since He is Witness over all things?

سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾

५४. जान रक्खो ! ये लोग अपने 'रब' से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुये हैं, जान रक्खो ! निश्चय ही वह हर चीज़ को घेरे हुये है[४५]।

54. How! Are they still in doubt about the meeting with their Lord? Lo! Is not He surrounding all things?

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

४४. विश्व की प्रत्येक वस्तु से सत्य की पुष्टि होती है; दुनिया की हर चीज़ अल्लाह की निशानियों में से है। आप एक कण और अणु का निरीक्षण करें या सूर्य-चन्द्र और अन्य नक्षत्रों का हर एक इसी बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि संसार का कोई सृष्टि-कर्त्ता और ईश्वर है और उस ने इस सृष्टि की रचना किसी महान् उद्देश्य के अन्तर्गत की है। मनुष्य यदि स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करे जब भी वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि वह अपने-आप नहीं पैदा हो गया है उस का कोई पैदा करने वाला अवश्य है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस चीज़ की ओर बुला रहे हैं उस के सत्य होने पर मनुष्य के अपने अस्तित्व से ले कर इस विशाल जगत की प्रत्येक वस्तु साक्षी है। अल्लाह अपने भेजे हुये 'दीन' की सत्यता की पुष्टि के लिए निरन्तर प्रमाण प्रस्तुत करता रहेगा यहाँ तक कि लोग पूर्ण रूप से अनुभव कर सकेंगे कि वही सत्य है जिस की ओर 'क़ुरआन' मानव-जाति को आमन्त्रित करता है। क़ुरआन की इस घोषणा के सत्य होने पर 'इस्लाम' का इतिहास गवाह है कि वह बहुत जल्द दुनिया के बड़े हिस्से पर छा गया। फिर मनुष्य का ज्ञान अपने बारे में और विश्व के बारे में जितना विस्तृत होता जा रहा है 'नबियों' की प्रस्तुत की हुई सच्चाई की पुष्टि के लिए उतने ही अधिक प्रमाण मिलते जा रहे हैं। बुद्धि और विज्ञान (Science) धर्म के विरोधी नहीं हैं बल्कि वास्तव में इन से अधर्म और नास्तिकता का ही निषेध होता है।

४५. अल्लाह से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है। जो जैसा कर्म करता है उसे उस का ज्ञान है। हर एक को उस के सामने जाना है। वह हर एक को घेरे हुये है कोई भी उस के राज्य-क्षेत्र से निकल कर नहीं जा सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२—अश-शूरा

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' की आयत ३८ में 'ईमान' वाले लोगों के गुणों का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि उन का काम आपस की मंत्रणा से होता है। इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अश-शूरा' (The Counsel) रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब उतरी है इस के लिए सूरा अल-मोमिन का परिचय देख लेना काफ़ी है। अनुमान है कि यह सूरा हा० मीम० अस-सजदा के बाद ही अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह 'तौहीद' की सूरा है, इस पहलू से कि अल्लाह ही हमारा संरक्षक-मित्र और वली है।

यह 'सूरा' हा० मीम० सिलसिले की उन ७ 'सूरतों' में से तीसरी सूरा है जिन का आरम्भ सूरा अल-मोमिन से हुआ है।

'सूरा' के आरम्भ में अल्लाह की महिमा का उल्लेख करते हुये 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित किया गया है कि जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना वली और संरक्षक बना लिया है उन की आप (सल्ल०) पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं वे अपने करतूतों के स्वयं उत्तरदायी हैं। आप का काम तो केवल लोगों को एक ऐसे दिन से सचेत कर देना है जिस दिन सारे लोग इकट्ठा किये जायेंगे और उन के भाग्य का अन्तिम निर्णय होगा। लोग दो गरोहों में बँट जायेंगे एक गरोह 'जन्नत' में जायेगा, दूसरा नारकी होगा।

फिर इस 'सूरा' में एक विशेष बात यह कही गई है कि अल्लाह यदि चाहता तो सारे मनुष्यों को एक ही गरोह बना देता फिर उन में कोई विभेद न होता, सब एक मार्ग पर चलते। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया ताकि लोगों की परीक्षा हो सके। आगे चल कर एक महत्त्वपूर्ण बात यह कही गई है कि अल्लाह की ओर से आया हुआ 'दीन' (धर्म) सदा से एक रहा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को वही 'दीन' दिया गया है जो पिछले 'नबियों' और 'रसूलों' का 'दीन' रहा है। जो नूह, इबराहीम, मूसा और ईसा मसीह आदि 'नबियों' का 'दीन' रहा है (इन सब पर अल्लाह की कृपा हो)। लोगों में जो कुछ विभेद हुआ है वह उन की अपनी दुष्टता का परिणाम है। अल्लाह की ओर से तो सदा एक ही मार्ग पर चलने का आदेश दिया जाता रहा है। न तो जीवन में मौलिक सच्चाइयों में भिन्नता पाई जाती है और न सच्चे धर्म कभी दो हो सकते हैं। मनुष्य की सफलता का मार्ग सदा से एक रहा है और सदा एक ही रहेगा। मनुष्य अपनी मंज़िल पर केवल उस रूप में पहुँच सकता है जबकि वह उस सीधे और सच्चे मार्ग को अपनाये जिसे दिखाने के लिए दुनिया में अल्लाह के 'नबी' आते रहे हैं।

पिछली 'सूरा' की तरह इस सूरा में भी 'शिर्क' का निषेध किया गया है और अल्लाह के अनेक चमत्कारों को निशानी तथा प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस 'सूरा' में 'ईमान' वालों के दस गुणों का उल्लेख करते हुये[1] उन के आदर्श-जीवन की

१. दे० आयत ३६-४३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। इन दस विशेषताओं में पाँच विशेषतायें ऐसी हैं जिन का सम्बन्ध मनुष्य के हृदय और उस के अन्तर से है; शेष पाँच का सम्पर्क कर्म से है।

यह बात इस 'सूरा' में खोल कर समझा दी गई है कि अल्लाह ने सारे मनुष्यों को क्यों नहीं सत्यप्रिय बना दिया; लोगों को सत्य के प्रति विभेद करने का अवसर क्यों मिला है जिस के कारण लोग उलटे-सीधे विभिन्न मार्गों पर चल पड़ते हैं। बताया गया है कि इसी के कारण मनुष्य अल्लाह की उस विशेष दयालुता की छाया में प्रवेश पा सकता है जो केवल स्वतन्त्र मानव ही के लिए हैं, उस के लिए जो सोच-समझ कर पूरे ज्ञान के प्रकाश में अल्लाह के मार्ग को अपनाये; और अल्लाह ही को अपना संरक्षक और सहायक समझे। ऐसे मनुष्य को जो स्वेच्छापूर्वक अल्लाह को अपना 'वली' और सरपरस्त बनाता है, अल्लाह अपने योग-दान से सीधे मार्ग पर चलाता है ऐसे व्यक्ति को अच्छे कर्म करने का श्रेय प्राप्त होता है। अल्लाह उसे अपनी विशेष दयालुता की छाया में ले लेता है। रहे वे लोग जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना स्वामी और संरक्षक समझते हैं वे अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करते हैं। अल्लाह उन्हें कभी अपनी 'रहमत' में दाखिल नहीं करेगा।

'सूरा' के अन्त में दो महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख हुआ है :

एक यह कि मुहम्मद सल्ल० अपने आरम्भिक ४० वर्षों तक 'किताब' और 'ईमान' की समस्याओं, वार्त्ताओं आदि से बिल्कुल अपरिचित थे। फिर सहसा इन चीज़ों के साथ आप (सल्ल०) का दुनिया के सामने आना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आप को अल्लाह ने अपना 'नबी' बनाया है और आप को 'किताब' और 'ईमान' का ज्ञान प्रदान किया है।

दूसरे यह कि अल्लाह ने आप (सल्ल०) को शिक्षा उन्हीं तरीक़ों से दी है जिन तरीक़ों से दूसरे समस्त 'नबियों' को शिक्षा दी गई थी। एक 'वह्य', दूसरे परदे के पीछे से आवाज़ और तीसरे 'फ़रिश्ते' के द्वारा। यह बात खोल कर इस लिए बता दी गई ताकि लोग इस बात को भली-भाँति जान लें कि 'नबियों' को अल्लाह की ओर से आदेश किन तरीक़ों से दिये जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अश-शूरा

(मक्का में उतरी—'आयतें' ५३)

COUNSEL
Revealed at Mecca

سورة الشورى مكية وهي ثلث وخمسون آية وخمس ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा० मीम०।

1. Ha. Mim.

حٰمٓ ①

२. ऐन० सीन० क़ाफ़०[1]।

2. 'Ain Sin. Qaf.

عٓسٓقٓ ②

३. इसी तरह अल्लाह, प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी तुम्हारी ओर (हे मुहम्मद !) 'वह्य' कर रहा है और उन ('रसूलों') की ओर भी ('वह्य') करता रहा है जो तुम से पहले थे।

3. Thus Allah the Mighty the Knower inspireth thee (Muhammad) as (He inspired) those before thee.

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ③

४. उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और वही सर्वोच्च और अत्यन्त महिमाशाली है।

4. Unto Him belongeth all that is in the heavens and all that is in the earth, and He is the Sublime, the Tremendous.

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ④

५. क़रीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े[2] और 'फ़िरिश्ते' अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते हैं और धरती में जो लोग हैं उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं[3]। जान रक्खो ! अल्लाह ही बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

5. Almost might the heavens above be rent asunder while the angels hymn the praise of their Lord and ask forgiveness for those on the earth. Lo! Allah is the Forgiver, the Merciful.

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑤

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

२. दे० सूरा मरयम आयत ८८-९१।

मतलब यह है कि 'शिर्क' इतना बड़ा ज़ुल्म है कि यदि इस पर आकाश फट पड़े तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। यह कोई साधारण बात नहीं है कि किसी को अल्लाह के प्रभुत्व में साझी ठहराया जाये। अल्लाह के सिवा दूसरों को संकट में पुकारा जाये और उस से प्रार्थनायें की जायें; उन्हें कार्य-साधक और अपना दुःख-निवारक समझा जाये। दूसरों को अल्लाह का बेटा या बेटी बना कर उन्हें ईश्वर का समकक्ष ठहराया जाये। यह तो अल्लाह की कृपा है कि वह लोगों को दुनिया में सँभलने का मौक़ा देता है। यह अपराध तो ऐसा है कि आकाश से बिजली टूट पड़े, ऐसा वज्रपात हो कि अपराधी-जन विनष्ट हो कर रह जायें।

३. धरती पर यदि अल्लाह के अवज्ञाकारी अपने 'रब' की शान में गुस्ताख़ी करते और उस का शरीक ठहराते हैं, तो 'फ़िरिश्ते' रब का गुणगान करते हैं वे जानते हैं कि भूमि पर यदि मनुष्य अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना अभीष्ट पूज्य समझ रहा है तो यह उस का अपने 'रब' के साथ विद्रोह है। वे समझते हैं कि मनुष्य के इस घोर अन्याय और अत्याचार पर किसी समय भी अल्लाह की यातना उतर सकती है इस लिए वे धरती पर बसने वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं कि इन पर अभी यातना न उतारी जाये इन्हें सँभलने की मुहलत दी जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. और जिन लोगों ने उस के सिवा (दूसरों को) संरक्षक-मित्र बना रक्खा है, अल्लाह उन की निगरानी कर रहा है.[४] और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो[५]।

6. And as for those who choose protecting friends beside Him, Allah is Warden over them, and thou art in no wise a guardian over them.

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿٦﴾

७. और इसी तरह (हे 'नबी'!) हम ने तुम्हारी ओर अरबी क़ुरआन 'वह्य' किया है, ताकि तुम बस्तियों के केन्द्र[६] को और उस के चारों ओर रहने वालों को सचेत करो, और सचेत करो एक इकट्ठा होने के दिन से जिस में कोई सन्देह नहीं। एक गरोह 'जन्नत' में (जायेगा), और एक गरोह ('जहन्नम' की) दहकती आग में[७]।

7. And thus We have inspired thee a Lecture in Arabic, that thou mayest warn the mothertown and those around it, and mayest warn of a day of assembling where of there is no doubt. A host will be in the Garden, and a host of them in the Flame.

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿٧﴾

८. और यदि अल्लाह चाहता तो उन को एक ही समुदाय कर देता,[८] परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी 'रहमत' (दयालुता की छाया) में दाख़िल करता है। और जो ज़ालिम हैं उन का न कोई संरक्षक-मित्र है और न सहायक[९]।

8. Had Allah willed, He could have made them one community, but Allah bringeth whom He will into His mercy. And the wrong-doers have no friend nor helper.

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٨﴾

९. क्या इन्हों ने उस के सिवा (दूसरों को) संरक्षक-मित्र बना रक्खा है ? तो अल्लाह ही (कार्य-साधक और) संरक्षक-मित्र है। और वही मुरदों को जीवित करता है, और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

9. Or have they chosen protecting friends besides Him? But Allah, He (alone) is the Protecting Friend. He quickeneth the dead, and He is Able to do all things.

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩﴾

१०. (कह दो) जिस चीज़ में ('मुश्रिको'!) तुम विभेद करते हो, उस का फ़ैसला अल्लाह ही के हवाले है। वही अल्लाह मेरा 'रब' है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है, और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ।

10. And in whatsoever ye differ, the verdict therein belongeth to Allah. Such is my Lord, in Whom I put my trust, and unto Whom I turn.

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾

४. दे० आयत ४८।

५. तुम्हारा काम तो केवल यह है कि पूरा-पूरा हमारा सन्देश पहुँचा दो। समय आने पर हम उन का हिसाब चुका देंगे। हम लोगों के करतूतों से बेख़बर नहीं हैं। उन के अच्छे-बुरे काम हमारे सामने हैं।

६. अर्थात् मक्का।

७. उस दिन समस्त लोग दो गरोहों में विभक्त होंगे। एक गरोह 'जन्नत' में दाखिल होगा दूसरा गरोह 'जहन्नम' में जायेगा।

८. दे० सूरा यूनुस आयत १९; सूरा अस-सजदा आयत १३।

९. अल्लाह की 'रहमत' जिस में वह अपने बन्दों को दाखिल करना चाहता है कोई मामूली दरजे की चीज नहीं है यह तो ऊँचे दरजे की चीज है, जो उन्हीं लोगों के हिस्से में आयेगी जो स्वेच्छापूर्वक बन्दगी का मार्ग अपनायें। अल्लाह ही को अपना 'वली' समझें और उस परीक्षा में पूरे उतरें जिस में उत्तीर्ण हुये बिना कोई व्यक्ति अल्लाह की विशेष 'रहमत' में दाखिल नहीं हो सकता। जो लोग अल्लाह को छोड़ दूसरों को अपना 'वली' (संरक्षक-मित्र) बनाते हैं उन का वास्तव में कोई वली और सहायक नहीं। अल्लाह के सिवा जिन को वे वली बनाते हैं उन्हें यह सामर्थ्य ही प्राप्त नहीं कि वे किसी को सफलता प्रदान कर सकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. आकाशों और धरती का बनाने वाला है। उसी ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम से[१०] जोड़े बनाये, और चौपायों के जोड़े भी, वह तुम्हें इस प्रकार फैलाता और बढ़ाता है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं; और वह सुनने और देखने वाला है।

१२. आकाशों और धरती (के खज़ानों) की कुञ्जियाँ उसी के पास हैं। जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है[११]। निस्सन्देह वह हर चीज का जानने वाला है।

१३. उस ने तुम्हारे लिए वही 'दीन'[१२] (धर्म) निर्धारित किया है जिस की ताकीद उस ने नूह को की थी, और जिस की 'वह्य' (हे मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी ओर की है, और जिस को ताकीद हम ने इबराहीम और मूसा और ईसा को की (इस हुक्म के साथ) कि 'दीन' को क़ायम रक्खो, और इस में फूट न डालो। 'मुश्रिकों' पर वह चीज़ भारी है जिस की ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है, और जो उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होता है उसे अपनी ओर (आने का) मार्ग दिखाता है।

11. The Creator of the heavens and the earth: He hath made for you pairs of yourselves, and of the cattle also pairs, whereby He multiplieth you. Naught is as His likeness; and He is the Hearer, the Seer.

12. His are the keys of the heavens and the earth He enlargeth providence for whom He will and straiteneth (it for whom He will). Lo! He is Knower of all things.

13. He hath ordained for you that religion which He commanded unto Noah, and that which We inspire in thee (Muhammad), and that which We commanded unto Abraham and Moses and Jesus saying: Establish the religion, and be not divided therein. Dreadful for the idolaters is that unto which thou callest them. Allah chooseth for Himself whom He will, and guideth unto Himself him who turneth (toward Him).

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ
اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ
شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾
لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى
بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى
وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا
فِيْهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ
اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ
اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

१०. दे० सूरा अन-निसा फुटनोट २।
११. और यह सब कुछ उस की 'हिकमत' के अन्तर्गत होता है।
१२. अर्थात् 'तौहीद' का 'दीन' जो सभी 'नबियों' का 'दीन' रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. और उन लोगों ने विभेद इस के बाद किया कि उन के पास ज्ञान पहुँच चुका था,[१३] परस्पर ज़्यादती करने के लिए (उन्हों ने ऐसा किया);[१४] और (हे 'नबी' !) यदि तुम्हारे 'रब' की ओर से एक नियत समय के लिए बात पहले से निश्चित न हो चुकी होती, तो उन के बीच फ़ैसला कर दिया गया होता[१५]। और जो लोग उन के बाद 'किताब' के वारिस हुये वे उस की ओर से एक दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़े हुये हैं।

14. And they were not divided until after the knowledge came unto them, through rivalry among themselves; and had it not been for a Word that had already gone forth from thy Lord for an appointed term, it surely had been judged between them. And those who were made to inherit the Scripture after them are verily in hopeless doubt concerning it.

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ
وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن بَعْدِهِمْ
لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾

१५. तो इसी ('दीन') की ओर (हे 'मुहम्मद' !) बुलाओ। और जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है, और उन की इच्छाओं का पालन न करो, और कहो : अल्लाह ने जो 'किताब' भी उतारी है मैं उस पर 'ईमान' लाया, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच इन्साफ़ करूँ। अल्लाह हमारा 'रब' है और तुम्हारा 'रब' भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म;[१६] हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं[१७]। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा, और उसी की ओर (सब को) जाना है[१८]।

15. Unto this, then, summon (O Muhammad). And be thou upright as thou art commanded, and follow not their lusts, but say: I believe in whatever Scripture Allah hath sent down, and I am commanded to be just among you. Allah is our Lord and your Lord. Unto us our works and you your works; no argument between us and you. Allah will bring us together, and unto Him is the journeying.

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۖ
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنتُ بِمَا
أَنزَلَ اللَّهُ مِن كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ
بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

१३. अर्थात् उन के पास अल्लाह की किताब आ चुकी थी (दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ४५)। अब वे अपने करतूतों के खुद जिम्मेदार हैं। इस से बढ़ कर अत्याचार क्या होगा कि 'दीन' के स्पष्ट नियमों और शिक्षाओं से हट कर नये-नये धर्म और पन्थ बना लिये जायें।

१४. अर्थात् उन्हों ने जो विभेद किया और सत्य को छोड कर विभिन्न मार्गों पर चल पड़े तो इस के पीछे कोई नेक इरादा नहीं काम कर रहा था, यह उन के जुल्म, ज़्यादती और पारस्परिक द्वेष और शत्रुता ही का परिणाम था। 'दीन' और धर्म को स्वार्थवश उन्हों ने भ्रष्ट किया।

१५. अर्थात् दुनिया ही में उन सब लोगों को यातना उतार कर विनष्ट कर दिया जाता जिन्हों ने तरह-तरह की गुमराहियाँ निकालीं या जिन्हों ने जानते-बूझते उन का साथ दिया। केवल उन्हीं लोगों को बचाया जाता जो सत्य पर चलने वाले होते। और दुनिया देख लेती कि कौन हक़ पर है और कौन असत्य का पुजारी था। परन्तु यह दो टूक फ़ैसला तो 'आखिरत' ही में होगा। इस लोक में तो लोगों की परीक्षा अभीष्ट है।

१६. अर्थात् हम में से प्रत्येक अपने कर्मों का जिम्मेदार है। जो भला करेगा अपना ही भला करेगा और जो व्यक्ति बुराई का मार्ग अपनायेगा वह अपना ही बुरा करेगा दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

१७. समझाने का जो हक़ था वह हम ने अदा कर दिया अब अपना भला-बुरा तुम खुद समझ सकते हो, हम व्यर्थ में तुम से उलझना नहीं चाहते।

१८. वह स्वयं फ़ैसला कर देगा कि कौन दुनिया में सत्य-मार्ग पर चला है और कौन सचाई को छोड़ कर असत्य का ग्राहक हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. और जो लोग अल्लाह के ('दीन' के) बारे में हुज्जत (झगड़ा) करते हैं[१९] जबकि उस की पुकार सुनी जा चुकी है[२०] उन की हुज्जत उन के 'रब' की दृष्टि में डग रही है,[२१] प्रकोप है उन पर और उन के लिए कठोर यातना है।

16. And those who argue concerning Allah after He hath been acknowledged, their argument hath no weight with their Lord, and wrath is upon them and theirs will be an awful doom.

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ⑯

१७. अल्लाह ही है जिस ने हक़ के साथ 'किताब' उतारी, और तुला[२२]। तुम्हें क्या मालूम? कदाचित् वह (फ़ैसले की) घड़ी क़रीब ही हो[२३]।

17. Allah it is Who hath revealed the Scripture with truth, and the Balance. How canst thou know? It may be that the Hour is nigh.

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
قَرِيبٌ ⑰

१८. उस की जल्दी वही लोग मचाते हैं जो उस पर 'ईमान' नहीं रखते, और जो लोग उस पर 'ईमान' रखते हैं वे उस से डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। जान रक्खो! जो लोग उस ('क़ियामत' की) घड़ी के बारे में झगड़ते हैं, वे परले दरजे की गुमराही में पड़े हुये हैं।

18. Those who believe not therein seek to hasten it, while those who believe are fearful of it and know that it is the Truth. Are not they who dispute, in doubt concerning the Hour far astray?

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ
وَالَّذِينَ اٰمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ
يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ ⑱

१९. अल्लाह अपने बन्दों की ज़रा-ज़रा सी चीज़ का ख़याल रखता है[२४]। जिसे (जितनी) चाहता है रोज़ी देता है। और वह बलवान् और प्रभुत्त्वशाली है।

19. Allah is gracious unto His slaves. He provideth for whom He will. And He is the Strong, the Mighty.

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ⑲

२०. जो कोई 'आख़िरत' की खेती चाहता होगा, हम उसे उस की खेती में बढ़ोत्तरी प्रदान करेंगे। और जो कोई दुनिया की खेती चाहता होगा, उसे उस में से देंगे, और उस का 'आख़िरत' में कोई हिस्सा नहीं।

20. Whoso desireth the harvest of the Hereafter, We give him increase in its harvest. And Whoso desireth the harvest of the world, We give him thereof, and he hath no portion in the Hereafter.

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهُ
فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا
نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ⑳

१९. यह संकेत मक्का वालों की ओर है जो 'ईमान' लाने वालों के शत्रु बने हुये थे। और चाहते थे कि किसी तरह वे 'कुफ़्र' और अज्ञान की ओर पलट आयें और मुहम्मद (सल्ल०) का साथ छोड़ दें।

२०. अर्थात् जबकि बहुत से लोग 'ईमान' ला चुके हैं और अल्लाह का 'दीन' कोई नया 'दीन' नहीं रह गया है फिर भी ये उस में झगड़े निकाले चले जा रहे हैं।

२१. अल्लाह के यहाँ उस का कोई मान नहीं है। वह बिलकुल कमज़ोर और व्यर्थ है।

२२. अर्थात् न्याय और इन्साफ़ के क़ानून और नियम। धर्म विधान को तुला इस लिए कहा गया कि वह तराज़ू की तरह तोल कर हक़ और नाहक़, सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय के अन्तर को खोल कर बता देता है।

२३. इस लिए जिस किसी को सँभलना हो सँभल जाये। फ़ैसले की घड़ी को दूर समझ कर ग़ाफ़िल रहना ठीक नहीं।

२४. इस 'सूरा' की आयत २०-२२ और सूरा बनी इसराईल की 'आयत' १८-२१ में बड़ी अनुरूपता पाई जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. क्या इन लोगों के कुछ (गढ़े हुये) सहभागी हैं जिन्हों ने इन के लिए कोई ऐसा 'दीन' (धर्म) निर्धारित कर दिया है[२५] जिस की अनुज्ञा अल्लाह ने नहीं दी ? और यदि फ़ैसले की बात न हो गई होती तो इन के बीच फ़ैसला हो जाता। और निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुःखदायिदनी यातना है।

21. Or have they partners (of Allah) who have made lawful for them in religion that which Allah allowed not? And but for a decisive word (gone forth already), it would have been judged between them. Lo! for wrong-doers is a painful doom.

أَمْ لَهُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ شَرَعُوا۟ لَهُم مِّنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنۢ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾

२२. (हे 'नबी' !) तुम इन ज़ालिमों को देखोगे कि इन्हों ने जो कुछ कमाया उस से डर रहे होंगे, और वह इन पर पड़ कर रहेगा; और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये वे 'जन्नत' के हरे-भरे (ललित) चमनों में होंगे, उन के लिए उन के 'रब' के यहाँ वह सब कुछ है जो वे चाहेंगे यही बड़ा अनुग्रह है।

22. Thou seest the wrong-doers tearful of that which they have earned, and it will surely befall them; while those who believe and do good works (will be) in flowering meadows of the Gardens, having what they wish from their Lord. This is the great preferment.

تَرَى الظَّٰلِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا۟ وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ الصَّٰلِحَٰتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ ۖ لَهُم مَّا يَشَآءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾

२५. अर्थात् अल्लाह तो सदैव से सत्य धर्म की शिक्षा देता रहा है, जिन को ये 'मुश्रिक' पूजते हैं क्या उन्हों ने भी इन के लिए कोई 'दीन' निर्धारित किया है ? ज़ाहिर है कि उन्हों ने किसी 'दीन' और धर्म की शिक्षा नहीं दी फिर क्यों ये अल्लाह के मार्ग को छोड़ कर अँधेरे में भटके जा रहे हैं ?

अल्लाह के सिवा दूसरे मनुष्यों के गढ़े हुये धर्म, विधान और नियम आदि को—जो अल्लाह के दिये हुये आदेशों के विरुद्ध हैं जिन को अल्लाह की आज्ञा के बिना गढ़ लिया गया है— स्वीकार करना भी उसी तरह 'शिर्क' है जैसे अल्लाह को छोड़ कर दूसरों के आगे 'सजदा' करना और उन्हें संकट में पुकारना 'शिर्क' है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. यही है वह शुभ सूचना जो अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो 'ईमान' लायें और अनुकूल कर्म करें। (हे 'नबी'!) कहो : मैं इस का तुम से कोई बदला नहीं माँगता यदि कुछ चाहता हूँ तो रिश्ते-नाते का प्रेम-भाव[२६] जो कोई नेकी कमायेगा हम उस के लिए उस में और अच्छाई बढ़ा देंगे। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुणग्राहक) है।

23. This it is which Allah announceth unto His bondmen who believe and do good works. Say (O Muhammad, unto mankind): I ask of you no fee therefor, save loving kindness among kinsfolk. And whoso scoreth a good deed We add unto its good for him. Lo! Allah is Forgiving, Responsive.

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ
وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا
حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾

२४. क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर एक झूठ गढ़ा है? तो यदि अल्लाह चाहे, तो (हे 'नबी'!) तुम्हारे दिल पर ठप्पा लगा दे[२७]। और अल्लाह अनृत को मिटाता और सत्य को जमाव प्रदान करता है अपने शब्दों से! निस्सन्देह वह सीनों (दिलों) की बात को जानने वाला (अन्तर्यामी) है।

24. Or say they: He hath invented a lie concerning Allah? If Allah willed, He could have sealed thy heart (against them). And Allah will wipe out the lie and will vindicate the truth by His words. Lo! He is aware of what is hidden in the breasts (of men).

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ
اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾

२५. वही है जो अपने बन्दों की 'तौबा' क़बूल करता है, और बुराइयों (गुनाहों) को क्षमा कर देता हैं, और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

25. And He it is Who accepteth repentance from His bondmen, and pardoneth the evil deeds, and knoweth what ye do.

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ
وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾

२६. अर्थात् मैं तुम से कुछ नहीं माँगता, मैं तो बस यह चाहता हूँ कि तुम उस चीज़ को अपना लो जिसे ले कर मैं अल्लाह की ओर से आया हूँ। अल्लाह की ओर से मैं तुम्हें जिस चीज़ की ओर बुलाता हूँ वह यह है कि तुम नाते-रिश्ते का ख़याल रक्खो। नातेदारों में एक का दूसरे पर हक़ होता है, जिसे अदा करना ज़रूरी है। नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। दुःख और संकट में उन के काम आओ। उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती न होने पाये।

नबी सल्ल० जिस 'दीन' की ओर लोगों को बुला रहे थे उस की एक मौलिक शिक्षा तो यह है कि अल्लाह को एक माना जाये और केवल उसी एक की बन्दगी और 'इबादत' की जाये। दूसरी शिक्षा उस की यह है कि अल्लाह के बन्दों के साथ हमारा व्यवहार अच्छा हो; हम उन के हक़ पहचानें। उन से हमें प्रेम हो। फिर जन-साधारण में जो हमारे नातेदार और क़रीबी लोग हैं उन का हक़ और ज़्यादा है।

इस 'आयत' में 'दीन' की एक मौलिक शिक्षा का उल्लेख हुआ है। एक दूसरी जगह इन्हीं शब्दों में 'दीन' (धर्म) की दूसरी मौलिक शिक्षा पर भी प्रकाश डाला गया है। सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ५७ में कहा गया है : कह दो : "मैं इस (काम) पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय इस के कि जो कोई चाहे अपने 'रब' की ओर (जाने का) रास्ता ग्रहण कर ले।" 'दीन' की दोनों शिक्षाओं में गहरा सम्पर्क है। यही दोनों मौलिक शिक्षायें 'काबा' के निर्माण का भी मूल उद्देश्य हैं।

नबी सल्ल० से एक मौके पर अम्रबिन अबसा ने पूछा : आप कौन हैं? आप ने कहा कि मैं 'नबी' हूँ। पूछाः नबी क्या होता है? आप (सल्ल०) ने कहा : अल्लाह ने मुझे सन्देशवाहक बना कर भेजा है। पूछा क्या सन्देश दे कर भेजा है? आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया : "नाते-रिश्ते का ख़याल रक्खा जाये, मूर्तियाँ तोड़ दी जायें और अकेले अल्लाह की 'इबादत' हो। किसी को उस का साझी न बनाया जाये।" नबी सल्ल० के इस कथन से विदित है कि आप की 'नुबूवत' के दो मुख्य उद्देश्य थे। एक यह कि लोग अपने 'रब' को पहचान लें, उस के सिवा किसी और की उपासना और बन्दगी न करें, दूसरे यह कि नाते-रिश्ते आदि का लिहाज़ रक्खा जाये।

२७. और तुम सफल न हो सको; परन्तु तुम सच्चे 'नबी' हो। अल्लाह तुम्हारे दिल पर ठप्पा नहीं लगा सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. और वे लोग स्वीकार करते हैं[२८] जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, और वह उन पर अपना और अधिक अनुग्रह करता है। और जो 'काफ़िर' हैं उन के लिए कठोर यातना है।

26. And accepteth those who do good works, and giveth increase unto them of His bounty. And as for disbelievers, theirs will be an awful doom.

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

२७. अल्लाह यदि अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो वे अवश्य धरती में सरकशी करने लगते, परन्तु वह एक अन्दाज़े से जो चाहता है उतारता है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन्हें देखने वाला है।

27. And if Allah were to enlarge the provision for His slaves they would surely rebel in the earth, but He sendeth down by measure as He willeth. Lo! He is Informed, a Seer of His bondmen.

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا
فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ
إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

२८. वही है जो लोगों के निराश हो जाने के पश्चात् मेंह बरसाता, और अपनी दयालुता को फैला देता है[२९]। और वही है संरक्षक-मित्र[३०] और अपने आप प्रशंसा का अधिकारी।

28. And He it is Who sendeth down the saving rain after they have despaired, and spreadeth out His mercy. He is the Protecting Friend, the Praiseworthy.

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ
مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ
الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾

२९. उस की निशानियों में से है पैदा करना आकाशों और धरती का, और जो प्राणधारी उस ने दोनों जगह (आकाशों और धरती) में फैला रक्खे हैं[31]। और जब चाहे सब को इकट्ठा कर सकता है[३२]।

29. And of His portents is the creation of the heaven and the earth and of whatever beasts He hath dispersed therein. And He is Able to gather them when He will.

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَثَّ فِيهِمَا مِن دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ
إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

३०. और जो मुसीबत तुम्हें पहुँची, तो वह तुम्हारे हाथों की कमाई के कारण। और वह बहुत से (गुनाह) तो क्षमा कर देता है[33]।

30. Whatever of misfortune striketh you, it is what your right hands have earned. And He forgiveth much.

وَمَا أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ
أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

२८. इस का अर्थ यह भी किया गया है कि अल्लाह उन लोगों की दुआओं को क़बूल करता है जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये।

२९. अर्थात् ऐसा होता है कि लोग वर्षा से बिल्कुल निराश हो चुके होते हैं कि हम वर्षा कर के अपनी दयालुता के चिह्न हर ओर बिखेर देते हैं। भूमि हरी-भरी हो जाती है। फल-फूल अधिक मात्रा में पैदा होते हैं।

३०. अर्थात् वही है जो सृष्टि के जीव आदि की ज़रूरतों को पूरी करता है उस के सिवा कोई दूसरा नहीं है जो किसी का 'वली' और सरपरस्त बन सके।

३१. इस से मालूम होता है कि धरती की तरह आकाशों में भी प्राणधारी पाये जाते हैं।

३२. अर्थात् जो सब को फैलाने का सामर्थ्य रखता है वह इकट्ठा भी कर सकता है।

३३. अर्थात् जो मुसीबतें तुम पर आ रही हैं, वह इस लिए कि तुम सँभल जाओ। अल्लाह यदि तुम्हारे सब अपराधों पर तुम्हें पकड़ने लग जाता तो तुम्हें विनष्ट ही कर देता।

यहाँ यह बात भी समझ लेने की है कि सच्चे 'ईमान' वालों और अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों पर जो संकट और मुसीबत आती है वह अल्लाह के दूसरे नियम के अन्तर्गत आती है। अल्लाह उन मुसीबतों के कारण अपने सच्चे बन्दों की ख़ताओं और कोताहियों को क्षमा कर देता है। और जो मुसीबतें अल्लाह के मार्ग में पेश आती हैं वे न केवल यह कि गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) बनती हैं बल्कि उन के द्वारा अल्लाह अपने बन्दों के दरजे भी बढ़ाता है।

नबी सल्ल० ने कहा है कि मुस्लिम व्यक्ति को जो दुःख, चिन्ता, तकलीफ़ और परेशानी पेश आती है, यहाँ तक कि एक काँटा भी यदि उसे चुभता है तो अल्लाह उस को उस की किसी-न-किसी ख़ता का 'कफ़्फ़ारा' बना देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. तुम धरती में बच निकलने वाले नहीं हो, और न अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक[३४]।

31. Ye cannot escape in the earth, for beside Allah ye have no protecting friend nor any helper.

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾

३२. और उस की निशानियों में से समुद्र में चलते जहाज़ हैं, जो पहाड़ों जैसे लगते हैं,

32. And of His portents are the ship, like banners on the sea;

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾

३३. यदि वह चाहे तो हवा को ठहरा दे और वे उस (समुद्र) की पीठ पर खड़े-के-खड़े रह जायें[३५] —निश्चय ही इस में हर धैर्य्यवान् और कृतज्ञता दिखलाने वाले के लिए बड़ी निशानियाँ हैं—

33. If He will He calmeth the wind so that they keep still upon its surface — Lo! here'n verily are signs for every steadfast, grateful (heart), —

إِن يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾

३४. या (चाहे तो) उन (जहाज़ों) को उन (जहाज़ वालों) की कमाई के कारण तबाह कर दे और बहुतों को क्षमा भी कर दे—

34. Or He causeth them to perish on account of that which they have earned — And He forgiveth much —

أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾

३५. और वे लोग जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं जान लें कि उन के लिए बचने की कोई जगह नहीं।

35. And that those who argue concerning Our revelations may know they have no refuge.

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٣٥﴾

३६. तो (लोगो !) तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह तो सांसारिक जीवन की अल्पकालिक सुख-सामग्री है, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और अधिक स्थायी है उन लोगों के लिए जो 'ईमान' लाये और अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं,

36. Now whatever ye have been given is but a passing comfort for the life of the world, and that which Allah hath is better and more lasting for those who believe and put the'r trust in their Lord.

فَمَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾

३७. और जो बड़े-बड़े गुनाहों[३६] और अश्लील बातों से बचते हैं, और जब उन्हें क्रोध आता है, तो वे क्षमा कर देते हैं,

37. And those who shun the worst of sins and indecencies and, when they are worth, forgive.

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. और जिन्हों ने अपने 'रब' की सुनी और 'नमाज़' क़ायम की, और जिन का कार्य आपस की मंत्रणा (सलाह) से होता है,[३७] और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते हैं,

38. And those who answer the call of their Lord and establish worship, and whose affairs are a matter of counsel, and who spend of what We have bestowed on them.

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾

३४. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत २२।

३५. आज के भाप से चलने वाले जहाज भी उसी की दया से चलते हैं वह चाहे तो भाप को बेकार कर दे और जहाज समुद्र में खड़े-के-खड़े रह जायें।

३६. अर्थात् वे गुनाह जिन से अल्लाह ने सख्ती से रोका है; और जिन के बारे में सख्त धमकी दी गई है। और वह गुनाह भी बड़ा गुनाह है जो सरकशी और विद्रोह की भावना से किया जाये चाहे देखने में वह छोटा ही क्यों न लगता हो। बड़े गुनाहों के अलावा 'ईमान' वाले छोटे गुनाहों से भी बचते हैं।

३७. यह 'ईमान' वालों की विशेषता है कि वे अहंकारी और अभिमानी नहीं होते जीवन सम्बन्धी मामलों में और विशेष रूप से उन मामलों में जो सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं वे अपनी सम्मति और राय पर आग्रह नहीं करते बल्कि लोगों की सलाह और परामर्श से काम करते हैं। डिक्टेटर बनने की भावना 'ईमान' वाला व्यक्ति कदापि नहीं रखता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़्यादती होती है, तो उस का मुक़ाबला करते हैं,[३८]

39. And those who, when great wrong is done to them, defend themselves.

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ
يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

४०. बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है[३९]। फिर जो क्षमा कर दे और सुधार करे, तो उस का बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। निस्सन्देह वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

40. The guerdon of an ill-deed is an ill the like thereof. But whosoever pardoneth and amendeth, his wage is the affair of Allah. Lo! He loveth not the wrong-doers.

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ
عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا
يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

४१. और जो अपने ऊपर ज़ुल्म किये जाने के बाद बदला ले ले तो ऐसे लोगों के विरुद्ध (उलाहना का) कोई मार्ग नहीं।

41. And whoso defendeth himself after he hath suffered wrong — for such, there is no way (of blame) against them.

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا
عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾ ط

४२. (उलाहना का) मार्ग तो केवल उन के विरुद्ध है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और धरती में नाहक़ उपद्रव मचाते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए दुःखदायिनी यातना है।

42. The way (of blame) is only against those who oppress mankind, and wrongly rebel in the earth. For such there is a painful doom.

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ
وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾

४३. और जो 'सब्र' करे और क्षमा कर दे तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से है[४०]।

43. And verily whoso is patient and forgiveth — lo! that, verily, is (of) the steadfast heart of things.

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ
عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع

४४. और जिस व्यक्ति को अल्लाह ही पथ-भ्रष्ट कर दे, तो उस के बाद उस का कोई संरक्षक-मित्र नहीं[४१]। और तुम ज़ालिमों को देखोगे जब वे यातना को देखेंगे, तो कहेंगे : क्या लौटने का भी कोई मार्ग है ?

44. He whom Allah sendeth astray, for him there is no protecting friend after Him. And thou (Muhammad) wilt see the evil-doers when they see the doom, (how) they say: Is there any way of return?

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ
مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ
مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾

३८. अर्थात् वे 'सब्र' करते और क्षमा से काम लेते हैं परन्तु ज़ालिमों और अत्याचारियों के आगे वे कभी झुकने वाले नहीं। यदि कोई अपनी शक्ति के गर्व में उन पर हाथ बढ़ाता है तो डट कर उस का मुक़ाबला करते हैं। वे कमज़ोरों के लिए क्षमाशील और दयावान् हैं परन्तु ज़ालिमों से वे कभी दबते नहीं।

३९. अर्थात् वे बदला लेते हैं तो बस उतना ही जितनी किसी ने उन के साथ बुराई की होती है उस से ज़्यादा बदला वे नहीं लेते। बुराई और ज़ुल्म का बदला लेना जायज तो है परन्तु जैसा कि आगे आ रहा है यदि कोई बुराई का जवाब भलाई से दे, तो यह अल्लाह को अधिक प्रिय है। इस से वह बुरा आदमी भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता।

४०. आयत ३६ से आयत ४३ तक 'ईमान' वालों के दस गुणों का उल्लेख हुआ है। ये दस गुण वास्तव में इस्लामी सभ्यता के आधार-स्तम्भ हैं। इन के बिना न किसी सुखमय एवं निर्मल जीवन की कल्पना की जा सकती है और न इन के बिना किसी उत्तम एवं श्रेष्ठ राजनीति की कल्पना ही सम्भव है। 'किताब' वालों ने जब विभेद किया और धर्म के विषय में विभिन्न मार्गों पर चल पड़े तो अल्लाह ने उन से ये गुण छीन लिये। 'ईमान' वालों को इस सिलसिले में सावधान रहना चाहिए। इन दस विशेषताओं में मौलिक गुण सब्र और धैर्य है। धैर्य से विभिन्न गुणों और विशेषताओं का आविर्भाव होता है।

४१. जो उसे सँभाल सके। दे० सूरा अन-निसा फ़ुटनोट ४६; अल-अनआम फ़ुटनोट ८, १३, ३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. और तुम उन्हें देखोगे कि वे इस (आग) के सामने इस दशा में लाये जायेंगे कि अपमान से झुके होंगे, दबी-दबी निगाहों से देखते होंगे । और 'ईमान' लाने वाले कहेंगे : निश्चय ही घाटे में पड़ने वाले वही लोग हैं जो 'क़ियामत' के दिन अपने-आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाल बैठे[४२] । जान रक्खो ! निश्चय ही ज़ालिम स्थायी यातना में पड़े रहेंगे ।

45. And thou wilt see them exposed to (the Fire), made humble by disgrace, and looking with veiled eyes. And those who believe will say: Lo! the (eternal) losers are they who lose themselves and their housefolk on the Day of Resurrection. Lo! are not the wrong-doers in perpetual torment?

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ
مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ
وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ
اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾

४६. और उन के कोई संरक्षक-मित्र न होंगे जो उन को सहायता कर सकें सिवाय अल्लाह के[४३] । जिसे अल्लाह पथ-भ्रष्ट करे, उस के लिए कोई मार्ग नहीं ।

46. And they will have no protecting friends to help them instead of Allah. He whom Allah sendeth astray, for him there is no road.

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَاۗءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾

४७. अपने 'रब' की मानो[४४] इस से पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाये जो टलने वाला नहीं । उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह की जगह होगी, और न तुम कोई आवाज़ उठा सकोगे ।

47. Answer the call of your Lord before there cometh unto you from Allah a Day wh ch there is no averting. Ye have no refuge on that Day, nor have ye any (power of) refusal.

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ
يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ
مَّلْجَاٍ يَّوْمَىِٕذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾

४८. फिर यदि ये मुँह मोड़ें, तो हम ने तुम्हें इन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा है[४५] । तुम्हारे ज़िम्मे तो बस (सन्देश) पहुँचा देना है[४६] ।

और हम जब मनुष्य को अपनी ओर से दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वह फूला नहीं समाता—और यदि उन्हें उस के कारण जो कुछ कि उन्हों ने अपने हाथों आगे भेजा है, कोई मुसीबत पहुँच जाती है, तो (वे निराश हो जाते हैं, मनुष्य कितना अधीर है)—निस्सन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है[४७] ।

48. But if they are averse, We have not sent thee as a warder over them. Thine is only to convey (the message) And lo! when We cause man to taste of mercy from Us he exulteth therefor. And if some evil striketh them because of that which their own hands have sent before, then lo! man is an ingrate.

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ۗ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاِنَّآ
اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ
بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾

४२. दे० सूरा अज़-ज़ुमर आयत १५ ।

४३. अर्थात् वहाँ अल्लाह के सिवा कोई किसी के काम आने वाला नहीं । ये 'मुश्रिक' लोग अल्लाह को छोड़ कर जिस किसी को पुकारते और पूजते हैं वे उन की कुछ भी सहायता न कर सकेंगे । दे० आयत ८ ।

४४. अर्थात् अपने 'रब' का कहना मान लो; अपने 'रब' से मामला दुरुस्त कर लो । मृत्यु की घड़ी आ जाने के बाद तुम्हारी कोई चीज़ क़बूल न होगी । अपने पकड़े जाने से पहले अल्लाह की ओर पलट आओ बाद में तुम्हारा क्षमा की प्रार्थना करना बिल्कुल व्यर्थ होगा ।

४५. अर्थात् तुम पर यह ज़िम्मेदारी नहीं डाली गई है कि तुम इन्हें अवश्य सत्य-मार्ग पर ला कर रहो यदि ये मार्ग पर नहीं आते तो इस के बारे में तुम नहीं पकड़े जाओगे बल्कि ये ज़ालिम स्वयं अपने करतूतों का मज़ा चखेंगे ।

४६. अर्थात् तुम्हारा काम केवल यह है कि तुम हमारा सन्देश लोगों तक पहुँचा दो । तुम्हारी ज़िम्मेदारी यह कदापि नहीं है कि तुम इन्हें सीधे मार्ग पर ला कर ही रहो ।

४७. यहाँ छिछोरे और नीच प्रकृति के मनुष्यों की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी बयान की गई है । सुख में तो वे अल्लाह को भूल जाते हैं और समझते हैं कि हमें जो कुछ प्राप्त है वह हरारी अपनी योग्यता का फल है । ऐसा व्यक्ति अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाने के बदले इतराने लगता है; परन्तु उस पर उसी के कर्मों के परिणामस्वरूप कोई मुसीबत आ जाती है तो फिर अल्लाह से निराश हो जाता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९. आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। जो चाहता है पैदा करता है। जिसे चाहता है बेटियाँ देता है, और जिसे चाहता है बेटे देता है;

49. Unto Allah belongeth the sovereignty of the heavens and the earth. He createth what He will. He bestoweth female (off-spring) upon whom He will, and bestowed male (offspring) upon whom He will;

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾

५०. या उन्हें बेटे और बेटियाँ दोनों देता है, और जिसे चाहता है बाँझ कर देता है। निस्सन्देह वह बड़ा ज्ञान वाला और सामर्थ्यवान् है[४८]।

50. Or He mingleth them, males and females, and He maketh barren whom He will. Lo! He is Knower, Powerful.

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

५१. [४९]और कोई मनुष्य ऐसा नहीं कि अल्लाह (उस के सम्मुख हो कर) उस से बातें करे किन्तु 'वह्य' के द्वारा (ऐसा सम्भवहै) या परदे के पीछे से, या किसी सन्देशवाहक ('फ़िरिश्ते') को भेज दे तो वह उस की अनुमति से जो वह चाहे 'वह्य' कर दे[५०]। निस्सन्देह वह सर्वोच्च और तत्त्वदर्शी है।

51. And it was not (vouchsafed) to any mortal that Allah should speak to him unless (it be) by revelation or from behind a veil, or (that) He sendeth a messenger to reveal what He will by His leave. Lo! He is Exalted, Wise.

وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۵۱﴾

४८. इस लिए उसे छोड़ कर दूसरे के आगे झुकना उस से अपनी मुरादें माँगना और उसे संकट मे टेरना घोर अन्याय नहीं तो और क्या है।

४९. 'सूरा' को समाप्त करते हुये फिर उसी विषय पर प्रकाश डाला गया है जिस का उल्लेख आरम्भ में किया गया है। दे० आयत १।

५०. अर्थात् यह किताब इस तरह नहीं उतर रही है कि 'नबी' सल्ल० से अल्लाह साक्षात रूप से बातें करता है। मनुष्य में यह शक्ति नहीं। बल्कि 'किताब' के अवतीर्ण होने की तीन शक्लें हैं:

(१) 'वह्य' अथवा दैवी प्रकाशन के द्वारा। 'वह्य' सूक्ष्म संकेत को कहते हैं। अर्थात् जिसे इशारा किया गया हो वही समझे दूसरा न समझे। 'वह्य' वह चीज़ है जो अल्लाह की ओर से बन्दे के दिल में डाली जाती है या स्वप्न में कुछ बताया जाता है। 'नबियों' की 'वह्य' कुछ इस प्रकार की होती है कि उस के सत्य और अल्लाह की ओर से होने में कोई सन्देह नहीं रहता।

(२) परदे के पीछे से आवाज आये। सामने कोई दिखाई न दे जैसे तूर पर्वत पर हज़रत मूसा अ० से अल्लाह ने बातें की थीं। एक वृक्ष से अचानक आवाज़ आनी शुरू हो गई परन्तु बोलने वाला उन की निगाह से ओझल था।

(३) अल्लाह की ओर से कोई 'फ़िरिश्ता' आ कर अल्लाह का सन्देश पहुँचाये जैसे नबी सल्ल० के पास हज़रत जिबरील अ० अल्लाह का सन्देश ले कर आते थे। 'फ़िरिश्ता' आ कर 'नबी' को बताता है कि अल्लाह की ओर से ये बातें अवतीर्ण हुई हैं। यह 'वह्य' की वह शक्ल है जिस के द्वारा समस्त आसमानी किताबें 'नबियों' तक पहुँची हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२ और इसी तरह हम ने (हे मुहम्मद !) 'रूह' ('क़ुरआन') अपने हुक्म से तुम्हारी ओर 'वह्य' की[५१]। तुम नहीं जानते थे कि 'किताब' क्या चीज़ है, और न 'ईमान'[५२] (के बारे में जानते थे कि वह क्या है)। परन्तु हम ने इसे प्रकाश बनाया है कि इस के द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं मार्ग दिखाते हैं। और निस्सन्देह तुम तो (हे मुहम्मद !) एक सीधा मार्ग दिखा रहे हो[५३]।

52. And thus have We inspireth in thee (Muhammad) a Spirit of Our command. Thou knowest not what the Scripture was, nor what the Faith. But We have made it a light whereby We guide whom We will of Our bondmen. And lo! thou verily dost guide unto a right path —

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿۵۲﴾

५३. उस अल्लाह का मार्ग जिस का वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है। जान रक्खो ! सारे मामले अल्लाह ही की ओर पहुँचते हैं।

53. The Path of Allah, unto Whom belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth. Do not all things reach Allah at last?

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾ ع

५१. 'सूरा' के अन्त में फिर वह बात दोहरायी जा रही है जो सूरा के आरम्भ में कही गई थी अर्थात् इस क़ुरआन के उतारने वाले हम हैं।

५२. यहाँ 'ईमान' से अभिप्रेत वह 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) है जो अल्लाह की ओर से 'नबियों' को प्रदान होती है। 'हिकमत' का सम्पर्क ज्ञान, कर्म और हृदयावस्था तीनों से है।

नबी सल्ल० को 'नबी' होने से एक क्षण पहले भी यह नहीं मालूम था कि 'किताब' और 'इमान' की वास्तविकता क्या है। यह आप के सच्चे होने का सब से बड़ा प्रमाण है। जो व्यक्ति स्वयं 'नबी' बनना चाहता है वह बहुत पहले से इस की तैयारी में लग जाता है; परन्तु इस के विपरीत 'नबी' सल्ल० की ज़बान से ४० वर्ष की आयु तक कोई ऐसी बात किसी ने नहीं सुनी जिस से यह अनुमान किया जा सके कि आप (सल्ल०) अपने मन में 'नबी' होने की कामना कर रहे थे या यह कि आप इस के लिए उचित समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। आप (सल्ल०) के 'नबी' होने का यह एक बड़ा प्रमाण है कि आप (सल्ल०) सहसा अपने 'नबी' होने की घोषणा करते हैं और लोगों को सत्य की ओर बुलाने लग जाते हैं।

५३. नबी सल्ल० ने दुनिया को जो मार्ग दिखाया है वही अल्लाह का बताया हुआ ऐसा मार्ग है जिस पर चल कर मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है। इसी मार्ग पर चलने का आमन्त्रण समस्त 'नबियों' और महापुरुषों ने दिया है। दूसरे मार्गों पर चल कर मनुष्य कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच सकता। दूसरे मार्ग मनुष्य को भटकाते और विपरीत दिशा में ले जाते हैं उसे उस की वास्तविक मंज़िल तक नहीं पहुँचाते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३—अज़्-ज़ुख़रुफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अज़-ज़ुख़रुफ़' सूरा की 'आयत' ३५से लिया गया है। 'सूरा' का यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब अवतीर्ण हुई है, इस का उल्लेख सूरा ४० (अल-मोमिन) के परिचय में किया जा चुका है। यह वह समय था जबकि लोग नबी सल्ल० की जान के शत्रु हो गये थे। रात-दिन 'काफ़िर' इसी चिन्ता में पड़े हुये थे कि किसी तरह आप (सल्ल०) के जीवन का अन्त कर दिया जाये (दे० आयत ७९-८०)।

वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' 'तौहीद' की सूरा है, इस पहलू से कि अल्लाह् को दयालुता पूर्ण है। उस के मुक़ाबले में न कोई मित्रता काम आने वाली है और न किसी की सिफ़ारिश काम देगी। इस 'सूरा' में उन लोगों के लिए डरावा और चेतावनी है जो दुनियां में ग़लत नीति अपना कर अल्लाह् के आदेशों का तिरस्कार करते हैं।

यह 'सूरा' हा० मीम० सिलसिले की चौथी सूरा है। यह सिलसिला सूरा ४० से आरम्भ हो कर सूरा ४६ पर समाप्त होता है। इन सात सूरतों के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है।

प्रस्तुत सूरा जैसा कि ऊपर आ चुका 'तौहीद' की सूरा है। इस सूरा में क़ुरआन और 'क़ियामत' आदि का उल्लेख करते हुये 'मुश्रिकों' की धारणाओं और विचारों का खण्डन किया गया है। एक ओर यदि अरब के 'मुश्रिकों' की इस धारणा का कि 'फ़रिश्ते' अल्लाह् की बेटियाँ हैं निषेध किया गया है तो दूसरी ओर 'ईसाइयों' के इस विचार का कि मसीह (अ०) अल्लाह के बेटे हैं, तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। इस 'सूरा' में अल्लाह् का एक विशेष नाम 'रह्मान' (अत्यन्त कृपाशील) बार-बार आया है। इस प्रकार लोगों को इस बात को शिक्षा दी गई है कि अल्लाह् सब से बढ़ कर कृपाशील और दयावान् है उसी से लोगों को अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। उसे छोड़कर दूसरों पर भरोसा करना मूर्खता और भ्रम है।

प्रस्तुत 'सूरा' में मक्का के 'काफ़िरों' की उस नीति का उल्लेख करते हुये जो उन्हों ने अल्लाह् के 'रसूल' के मुक़ाबले में अपना रक्खी थी चेतावनी दी गई है। उन्हें सचेत करने और 'ईमान' वालों को ढारस देने के लिए ऐतिहासिक दृष्टान्त भी दिये गये हैं। इस सिलसिले में हज़रत इबराहीम, हज़रत मूसा और फ़िरऔन और हज़रत ईसा और उन की जाति वालों का क़िस्सा बयान किया गया है फिर लोगों को एक ऐसे दिन से डराया गया है जो ज़ालिमों के लिए अत्यन्त दुःख का दिन होगा। उस दिन वही लोग आराम पायेंगे जो दुनिया में अल्लाह् का डर रखते थे। रहे 'काफ़िर' और 'मुश्रिक' तो वे उस दिन यातना का मज़ा चखने के लिए होंगे और उन के आपस के सारे सम्बन्ध और नाते टूट चुके होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अज़-ज़ुखरुफ़

(मक्का में उतरी—'आयतें' ८९)

ORNAMENTS OF GOLD

Revealed at Mecca

سورة الزخرف مكية وهي تسع وثمانون آية وسبع ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा० मीम०[1]।

1. Ha. Mim.

حٰمٓ ﴿١﴾

२. क़सम है इस स्पष्ट 'किताब' की,[2]

2. By the Scripture which maketh plain,

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾

३. निश्चय ही हम ने इसे अरबी क़ुरआन बनाया है ताकि तुम समझो।

3. Lo! We have appointed it a Lecture in Arabic that haply ye may understand.

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾

४. और निश्चय ही यह (क़ुरआन) जो हमारे यहाँ मूल किताब में (अंकित) है[3] बड़े ऊँचे दरजे का और 'हिकमत' से भरा है,

4. And lo! in the Source of Decrees, which We possess, it is indeed sublime, decisive.

وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾

५. तो क्या इस लिए कि तुम मर्यादाहीन लोग हो हम इस अनुस्मारक ('क़ुरआन') का रुख तुम से हटा लेंगे?

5. Shall We utterly ignore you because ye are a wanton folk?

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾

६. और कितने 'रसूल' हम ने पहले लोगों में भेजे!

6. How many a prophet did We send among the men of old!

وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾

७. और जो 'नबी' भी उन के पास आया उन्हों ने उस की हँसी ही उड़ाई।

7. And never came there unto them a prophet but they used to mock him.

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾

८. तो हम ने विनष्ट कर दिया इन से अधिक प्रबल लोगों को;[4] और पहलों की मिसाल गुज़र चुकी है।

8. Then We destroyed men mightier than these in prowess; and the example of the men of old hath gone (before them).

فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

१. दे० सूरा अल-क़ारिआ फ़ुटनोट १।

२. यहाँ क़ुरआन की क़सम इस बात पर खाई गई है कि यह किताब किसी मनुष्य की रचना नहीं है बल्कि यह अल्लाह की ओर से उतरी है और इस का सबूत यह किताब खुद है आवश्यकता केवल इस बात की है कि आदमी समझ-बूझ से काम ले।

३. अस्ल या मूल किताब से अभिप्रेत 'लौह महफ़ूज़' अथवा अमर पट्टिका है (दे० सूरा अल-बुरूज अन्तिम आयत) जो सम्पूर्ण ज्ञान और समस्त आसमानी किताबों का उद्गम (Original source) है, जहाँ 'शैतान' की पहुँच नहीं हो सकती। क़ुरआन का रक्षक स्वयं अल्लाह है इस लिए क़ुरआन सुरक्षित रहेगा। इसे न कोई लुप्त कर सकता है और न इस में कोई परिवर्तन ही सम्भव है। 'लौह महफ़ूज़' की वास्तविकता को हम नहीं समझ सकते। इसका सम्बन्ध परोक्ष लोक से है।

४. अर्थात् वे लोग भी हमारी यातना से बच न सके जो मक्का वालों से अधिक प्रबल थे। जब उन्हों ने 'कुफ़्र' का मार्ग अपनाया तो अल्लाह की पकड़ से उन्हें कोई बचा न सका। इन को चाहिए कि तबाह होने वाली जातियों के वृत्तान्तों से शिक्षा ग्रहण करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और यदि तुम (हे मुहम्मद !) इन से पूछो : आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया, ये अवश्य कहेंगे : इन्हें उसी प्रभुत्वशाली और जानने वाले ने पैदा किया है;

9. And if thou (Muhammad) ask them: Who created the heavens and the earth, they will surely answer: The Mighty, the Knower created them;

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑨

१०. वही जिस ने तुम्हारे लिए धरती को गहवारा (पालना) बनाया,[५] और उस में तुम्हारे लिए मार्ग बनाये, कदाचित् तुम मार्ग पाओ;

10. Who made the earth a resting-place for you, and placed roads for you therein, that haply ye may find your way.

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑩

११. और जिस ने आकाश से एक अन्दाज़े से पानी बरसाया, फिर हम ने उस से निर्जीव भू-भाग को जिला उठाया।

11. And who sendeth down water from the sky in (due) measures, and We revive a dead land therewith. Even so will ye be brought forth.

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ⑪

१२. इसी तरह तुम (क़ियामत में) निकाले जाओगे; और जिस ने हर प्रकार की चीज़ें पैदा कीं, और तुम्हारे लिए नौकायें और चौपाये बनाये जिन पर तुम सवारी करते हो।

12. He Who created all the pairs, and appointed for you ships and cattle whereupon ye ride:

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ⑫

१३. ताकि तुम उन की पीठ पर जम कर बैठो, फिर जब तुम उन पर बैठो तो अपने 'रब' का एहसान याद करो, और कहो : महिमावान् है वह जिस ने हमारे लिए इन्हें काम पर लगाया, और हम इन्हें बस में करने की शक्ति नहीं रखते थे;

13. That ye may mount upon their backs, and may remember your Lord's favour when ye mount thereon, and may say: Glorified be He Who hath subdued these unto us, and we were not capable (of subduing them)!

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ⑬

१४. और निश्चय ही हम अपने 'रब' की ओर लौटने वाले हैं[६]।

14. And lo! unto our Lord we are returning.

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ⑭

१५. और इन्हों ने उस के बन्दों में से उस का अंश (औलाद) बना डाला[७] ! निश्चय ही मनुष्य खुला कृतघ्न है।

15. And they allot to Him a portion of His bondmen! Lo! man is verily a mere ingrate.

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ⑮

५. दूसरी जगहों पर धरती को फ़र्श कहा गया है। यहाँ पालना कहा गया है। अर्थात् जैसे एक बच्चा आराम से पालने में लेटा हुआ होता है ऐसे ही इस पृथ्वी को अल्लाह ने तुम्हारे लिए आराम की जगह बना दिया है जो वायुमण्डल में विलम्बित है, जो १००० मील प्रति घण्टा की चाल से अपनी धुरी पर घूम रही है और इस के साथ ६६६०० मील प्रति घण्टा की चाल से सूर्य का चक्कर लगा रही है यह भ्रमण-मार्ग १९ करोड़ मील है।

६. इस में इस बात की ओर संकेत है कि दुनिया में हर सफ़र पर जाते हुये याद कर लेना चाहिए कि आगे एक और सफ़र, 'आखिरत' का सफ़र भी है।

नबी सल्ल० जब सफ़र पर जाने के लिए सवारी पर बैठते तो अल्लाह की महिमा का वर्णन करते फिर यह 'आयत' पढ़ते और अपने 'रब' से दुआयें भी माँगते।

७. अर्थात् अल्लाह के बन्दे को उस की औलाद ठहरा लिया है। अल्लाह के गुण और अधिकार में दूसरों को शरीक किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. क्या जो कुछ उस ने पैदा किया है उस में से स्वयं तो बेटियाँ लीं, और बेटे सब-के-सब तुम्हें दे दिये[८] !

१७. जिस चीज़ का सम्बन्ध ये 'रहमान' से जोड़ते हैं उसी की मंगलसूचना जब इन में से किसी को दी जाती है, तो उस के मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह जी-ही-जी में घुटता रहता है[९] :

१८. क्या वह जो आभूषणों (के शृंगार) में पलती है वादाविवाद में ठीक से बोल भी नहीं पाती[१०] !

१९. और इन्हों ने 'फ़िरिश्तों' को जो 'रहमान' के बन्दे हैं स्त्री जाति ठहरा रक्खा है। क्या ये उन की सृष्टि के समय मौजूद थे[११] ? इन की गवाही लिख ली जायेगी और इन से पूछ होगी[१२]।

२०. और ये कहते हैं : यदि 'रहमान' चाहता; तो हम उन 'फ़िरिश्तों' को न पूजते[१३] इन्हें इस का कुछ ज्ञान नहीं। ये तो बस अटकल दौड़ाते हैं[१४]।

16. Or chooseth He daughters of all that He hath created, and honoureth He you with sons?

17. And if one of them hath tidings of that which he likeneth to the Beneficent One, his countenance becometh black and he is full inward rage.

18. (Liken they then to Allah) that which is bred up in outward show, and in dispute cannot make itself plain?

19. And they make the angels, who are the slaves of the Beneficent, females. Did they witness their creation? Their testimony will be recorded and they will be questioned.

20. And they say: If the Beneficent One had (so) willed, we should not have worshipped them. They have no knowledge whatsoever of that. They do but guess.

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّأَصْفٰكُم بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

أَوَمَن يُنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ إِنٰثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهٰدَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُونَ ﴿١٩﴾

وَقَالُوا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُم ۗ مَّا لَهُم بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

८. अल्लाह का सहजातीय कोई नहीं हो सकता इस लिए उस के लिए औलाद ठहराना अज्ञान की बात है। फिर ये 'मुश्रिक' लोग अल्लाह के लिए औलाद भी ठहराते हैं तो बेटियाँ, हालाँकि स्वयं ये बेटियों की अपेक्षा अपने लिए बेटे ही पसन्द करते हैं। नैतिक दृष्टि से ये कितने गिर चुके हैं।

९. अरब लोग लड़की पैदा होने पर खुश नहीं होते थे। किसी को दामाद बनाना भी उन के विचार में लज्जा की बात थी।

१०. अरब में अधिकतर पूजा देवियों की होती थी। 'लात', 'मनात' और 'उज़्ज़ा' सब देवियाँ थीं जिन को अरब वाले पूजते थे। 'फ़िरिश्तों' को स्त्री जाति समझते थे और कहते थे कि वे अल्लाह की बेटियाँ हैं। इन आयतों में उन्हें मलामत की जा रही है कि तुम अल्लाह के लिए औलाद ही नहीं ठहराते हो बल्कि उस से ऐसी औलाद का सम्बन्ध जोड़ते हो जिसे तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते। तुम 'शिर्क' ही नहीं करते बल्कि अपनी बुद्धि और सूझ-बूझ को भी खो बैठे हो।

११. दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत १५०।

१२. अर्थात् ये लोग 'फ़िरिश्तों' को स्त्री कैसे समझते हैं ? क्या ये लोग उस समय मौजूद थे जब 'फ़िरिश्तों' को पैदा किया गया था या इन्हों ने 'फ़िरिश्तों' को कहीं देख लिया है ? जैसे कुछ इन के विचार और इन की भावनायें हैं वे रिकॉर्ड कर ली जा रही हैं। एक दिन अवश्य इन्हें अपने इस भारी अपराध की जवाबदेही करनी होगी।

१३. दे० सूरा अन-नह्ल आयत ३५; सूरा अल-अनआम आयत १४८।

१४. अर्थात् ये जो कुछ कहते हैं वह किसी ज्ञान पर अवलम्बित नहीं होता बस अटकल के तीर हैं जो ये लोग चला रहे हैं। यह सही है कि बिना अल्लाह के चाहे कुछ नहीं हो सकता परन्तु इस से यह नतीजा निकालना घोर अन्याय है कि हम जो कुछ भी करें वह ठीक ही होगा। चोर चोरी कर ही नहीं सकता जब तक अल्लाह की दी हुई शक्ति उस का साथ न दे और इस के लिए अल्लाह उसे मुहलत न दे; परन्तु इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि अल्लाह चोरी को पसन्द करता है और उस ने चोरी की इजाज़त दी है। वास्तव में मनुष्य को यहाँ जो कुछ साधन और सामर्थ्य प्राप्त है उस में उस की अपनी परीक्षा है। अल्लाह ने मनुष्य को स्वतन्त्र रक्खा है ताकि लोग स्वतन्त्र भाव से सत्यमार्ग को अपनायें, बलपूर्वक लोगों को सत्य-मार्ग पर चलाना उसे अभीष्ट नहीं। यदि हमें इस लोक में स्वतन्त्र न रक्खा गया होता तो हमारे जीवन में चरित्र का अभाव होता। पशुओं का जीवन चरित्रहीन होता है इस लिए कि उन का एक लगा-बँधा मार्ग होता है जिस पर चलने को वे बाध्य होते हैं। परन्तु मनुष्य का जीवन चरित्रहीन नहीं होता। मनुष्य यदि हो सकता है तो चरित्र-भ्रष्ट अथवा दुश्चरित्र ही हो सकता है। उसे ईश्वर की ओर से जो चरित्र-बल प्रदान हुआ है वह उसी के दुरुपयोग से पुण्य के बदले पाप भी कमा लेता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. क्या हम ने इन ('मुश्रिकों') को इस (क़ुरआन) से पहले कोई 'किताब' दी है कि ये उसे दृढ़तापूर्वक पकड़े हुये हैं ?

21. Or have We given them any Scripture before (this Qur'an), so that they are holding fast thereto.

أَمْ آتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾

२२. नहीं, बल्कि ये कहते हैं : हम ने तो अपने पूर्वजों को एक पन्थ पर पाया है, और हम उन के पीछे-पीछे चल कर सीधा मार्ग पाने वाले हैं।

22. Nay, for they say only: Lo! we found our fathers following a religion, and we are guided by their footprints.

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

२३. इसी तरह हम ने तुम से पहले (हे मुहम्मद !) जिस किसी बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला ('रसूल') भेजा वहाँ के सुख-भोगी लोगों ने यही कहा : हम ने तो अपने पूर्वजों को एक पन्थ पर पाया है, और हम उन्हीं के पीछे चलते रहेंगे।

23. And even so We sent not a warner before thee (Muhammad) into any township but its luxurious ones said: Lo! we found our fathers following a religion, and we are following their footprints.

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

२४. (उन के 'रसूल' ने) कहा : क्या ! यदि मैं उस से उत्तम मार्ग-दर्शन ले कर आया हूँ जिस पर तुम ने अपने पूर्वजों को पाया है[१५] तब भी ? उन्हों ने कहा : तुम्हें जो कुछ भी दे कर भेजा गया है हम उस को मानने वाले नहीं।

24. (And the warner) said: What! Even though I bring you better guidance than that ye found your fathers following? They answered: Lo! in what ye bring we are disbelievers.

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾

२५. फिर हम ने उन से बदला लिया[१६] तो देख लो झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ !

25. So We requited them. Then see the nature of the cosequence for the rejecters!

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾

२६. याद करो जब इबराहीम ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम पूजते हो

26 And when Abraham said unto his father and his folk: Lo! I am innocent of what ye worship,

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾

२७. सिवाय उस के जिस ने मुझे पैदा किया, तो वह मुझे मार्ग दिखायेगा[१७]।

27. Save Him Who did create me, for He will surely guide me.

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

२८. और इस बात को उस के पीछे उस की औलाद में बाक़ी रक्खा, ताकि वे पलट आवें।

28. And he made it a word enduring among his seed, that haply they might return.

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

२९. नहीं, बल्कि मैं ने इन (मक्का वालों) को और इन के पूर्वजों को जीवन-सुख भोगने दिया यहाँ तक कि इन के पास सत्य आ गया[१८] और खुला 'रसूल'।

29. Nay, but I let these and their fathers enjoy life (only) till there should come unto them the Truth and a messenger making plain.

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

१५. अर्थात् जिस तरह उन के पूर्वजों का उज्र व्यर्थ था उसी तरह तुम्हारा उज्र भी व्यर्थ है। 'शिर्क' के हक़ में न उन के पास कोई दलील थी और न तुम इस के हक़ में कोई प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हो।

१६. दे० आयत ४१, ५५।

१७. यहाँ हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा बयान किया गया कि उन्हों ने जब देखा है कि बाप सत्यमार्ग पर नहीं चल रहा है तो उन्हों ने बाप के मार्ग को नहीं अपनाया। सत्यप्रिय व्यक्ति आँखें बन्द कर के बाप-दादा के मार्ग पर नहीं चलते बल्कि पहले उन्हें सत्य की खोज होती है। सत्यमार्ग पाने के बाद वे उसी पर चलते हैं चाहे वह बाप-दादा के पन्थ के विपरीत ही क्यों न हो।

१८. अर्थात् क़ुरआन, 'बह्म' दे० सूरा अद-दुख़ान आयत १३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०. और जब इन के पास सत्य (क़ुरआन) आया तो कहने लगे : यह जादू है, और हम तो इस को मानने से इन्कार करते हैं।

30. And now that the Truth hath come unto them they say: This is mere magic, and lo! we are disbelievers therein.

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

३१. और कहा : यह 'क़ुरआन' इन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया[१९] ?

31. And they say: If only this Qur'an had been revealed to some great man of the two towns !

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

३२. क्या तुम्हारे 'रब' की दयालुता को बाँटते हैं[२०] ? हम ने सांसारिक जीवन में इन के बीच इन की जीविका बाँटी है, और हम ने इन में एक को दूसरे पर दरजों में उच्चता प्रदान की ताकि इन में एक दूसरे से काम लेता रहे;[२१] और तुम्हारे 'रब' की दयालुता ('नुबूवत') उस से उत्तम है जिसे ये समेट रहे हैं।

32. Is it they who apportion their Lord's mercy? We have apportioned among them their livelihood in the life of the world, and raised some of them above others in rank that some of them may take labour from others; and the mercy of thy Lord is better than (the wealth) that they amass.

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

३३. और यदि यह बात न होती कि सब लोग एक गरोह हो जायेंगे, तो जो लोग रहमान' को नहीं मानते उन के लिए हम उन के घरों की छतें, चाँदी की कर देते और सीढ़ियाँ जिन से वे ऊपर चढ़ते,

33. And were it not that mankind would have become one community, We might well have appointed, for those who disbelieve in the Beneficent, roofs of silver for their houses and stairs (of silver) whereby to mount,

وَلَوْلَا اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾

३४. और उन के घरों के दरवाज़े होते (चाँदी के) और तख़्त जिन पर वे तकिया लगा कर बैठते,

34. And for their houses doors (of silver) and couches of silver whereon to recline,

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾

१९. अर्थात् यदि अल्लाह को क़ुरआन उतारना था तो वह 'मक्का' या 'तायफ़' के किसी बड़े सरदार पर उतारता। यह कैसे हो सकता है कि धनी और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को छोड़ कर वह एक ऐसे व्यक्ति को 'नबी' बनाये जिस के पास न अधिक धन है और न कोई बड़ी सम्पत्ति है।

२०. दयालुता से अभिप्रेत यहाँ 'नुबूवत' है। मतलब यह कि 'नुबूवत' तक़सीम करना अल्लाह ही का काम है किसी और का नहीं। जब दुनिया की रोज़ी और जीविका तक की तक़सीम किसी दूसरे के ज़िम्मे अल्लाह ने नहीं की तो 'नुबूवत' की तक़सीम को वह लोगों की राय पर कैसे छोड़ देगा। वही है जिसे चाहता अधिक रोज़ी प्रदान करता है और जिस की रोज़ी चाहता है तंग कर देता है। उसी ने जिसे 'नुबूवत' के योग्य समझा उसे 'नबी' बना दिया।

२१. मालूम हुआ कि आर्थिक दृष्टि से दुनिया में लोगों के बीच जो अन्तर पाया जाता है यह अन्तर यों ही निरुद्देश्य नहीं है। यदि आर्थिक दृष्टि से सब लोग एक हैसियत के होते, तो दुनिया का काम न चल सकता। फिर कोई किसी के काम न आ सकता। हर व्यक्ति यही चाहता कि उसे ऊँची जगह दी जाये। जो काम मेहनत और मशक़्क़त के हैं उन्हें कौन करता ? फिर न सड़कें और नहरें निकाली जा सकती थीं और न धरती पर रेल-गाड़ियाँ दौड़ सकती थीं। नैतिक दृष्टि से उन्नति करने का अवसर भी न मिलता। दीन-दुखियों और निर्धनों की सहायता कर के मनुष्य नैतिक दृष्टि से अपने को ऊँचा उठाता है। ग़रीबों की परीक्षा इस में है कि वे ग़रीबी में सब्र और सन्तोष से काम ले कर अल्लाह को याद करते हैं या नहीं। धनवान् लोगों की परीक्षा इस बात में है कि वे धन पा कर अभिमानी बन जाते हैं और ग़रीबों और दुःखियों की ख़बर नहीं लेते या वे दुनिया में अल्लाह के कृतज्ञ बन कर रहते हैं और अच्छे कार्य में अपना धन लगाते और ग़रीबों और मुहताजों के काम आते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. और शोभा एवं सजावट का आयोजन[२२]। और ये सबकुछ, नहीं केवल सांसारिक जीवन की सामग्री है। और 'आख़िरत' तुम्हारे 'रब' के यहाँ डरने वालों के लिए है।

35. And ornaments of gold. Yet all that would have been but a provision of the life of the world. And the Hereafter with your Lord would have been for those who keep from evil.

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

३६. और जो व्यक्ति 'रहमान' के 'ज़िक्र' की ओर से अन्धा बना रहे, हम उस पर एक 'शैतान' नियुक्त कर देते हैं तो वह उस का पार्श्ववर्ती (साथी) बन जाता है;

36. And he whose sight is dim to the remembrance of the Beneficent, We assign unto him a devil who becometh his comrade:

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

३७. और निश्चय ही वे ('शैतान') उन्हें मार्ग से रोकते हैं, और वे ('काफ़िर') समझते हैं कि हम मार्ग पर हैं;[२३]

37. And lo! they surely turn them from the way of Allah, and yet they deem that they are rightly guided;

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

३८. यहाँ तक कि जब (ऐसा व्यक्ति) हमारे पास आयेगा, तो (अपने 'शैतान' से) कहेगा : क्या ही अच्छा होता कि मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम की दूरी होती[२४]—क्या ही बुरा पार्श्ववर्ती है।

38. Till, when he cometh unto Us, he saith (unto his comrade): Ah, would that between me and thee there were the distance of the two horizons — an evil comrade!

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

३९. और जबकि तुम ने ज़ुल्म किया, तो आज यह बात तुम्हें कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकती कि तुम सब यातना में एक साथ हो।

39. And it profiteth you not this day, because ye did wrong, that ye will be sharer in the doom.

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾

४०. क्या तुम (हे मुहम्मद!) बहरों को सुनाओगे? या अन्धों को और उस को जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो मार्ग दिखाओगे[२५]?

40. Canst thou (Muhammad) make the deaf to hear, or canst thou guide the blind or him who is in error manifest?

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

४१. फिर यदि हम तुम्हें (हे मुहम्मद!) उठा भी लें, जब भी हम इन ('काफ़िरों') से अवश्य बदला लेंगे,

41. And if We take thee away, We surely take vengeance on them.

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

४२. या तुम्हें दिखा दें जो (यातना का) वादा इन से हम ने किया है; हमें इन पर पूरा सामर्थ्य प्राप्त है[२६]।

42. Or (if) We show thee that wherewith We threaten them; for lo! We have complete command of them.

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾

२२. अर्थात् जिस धन को 'काफ़िर' बड़ाई का चिह्न समझते हैं अल्लाह की निगाह में उस की कोई क़ीमत नहीं है नबी सल्ल० ने कहा है कि यदि अल्लाह की दृष्टि में दुनिया का मूल्य मच्छर के पंर के बराबर भी होता तो वह 'काफ़िरों' को पानी का एक घूँट भी न देता। अल्लाह तो 'काफ़िरों' के घर, दरवाज़े सब सोने-चाँदी के बना देता परन्तु यदि ऐसा करता तो लोग बड़ी आज़माइश में पड़ जाते; अधिकतर लोग सोने-चाँदी के लिए 'कुफ़्र' का मार्ग अपना लेते।

२३. अर्थात् 'शैतान' को हम केवल ऐसे लोगों पर नियुक्त करते हैं जो हम से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। उन लोगों पर 'शैतान' का बस नहीं चल सकता जो ग़ाफ़िल न हों। 'शैतान' जिन लोगों पर अधिकार पा लेता है उन्हें वह भुलावे में रखने की कोशिश करता है। वह लोगों को खुल्लमखुल्ला धोखा नहीं देता।

२४. अर्थात् हम दोनों का कभी साथ न हुआ होता।

२५. यद्यपि यह बात 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित कर के कही जा रही है पर वास्तव में सुनाना 'काफ़िरों' को अभीष्ट है।

२६. अर्थात् यदि 'रसूल' दुनिया से रुख़सत भी हो जाये फिर भी 'काफ़िर' अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकते। चाहे उन्हें अपने करतूतों की सज़ा 'नबी' सल्ल० के सामने मिले या 'नबी' के बाद मिले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३. तो उस चीज़ को दृढ़ता के साथ पकड़े रहो जो तुम्हारी ओर 'वह्य' की गई। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो।

43. So hold thou fast to that which is inspired in thee. Lo! thou art on a right path.

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

४४. और निश्चय ही यह ('क़ुरआन') नसीहत है तुम्हारे लिए और तुम्हारी जाति वालों के लिए; और आगे तुम से पूछा जायेगा[२७]।

44. And lo! it is in truth a Reminder for thee and for thy folk; and we will be questioned

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾

४५. और तुम (हे मुहम्मद !) हमारे 'रसूलों' से जिन्हें हम ने तुम से पहले भेजा है पूछ लो[२८] कि क्या हम ने 'रहमान' के सिवा कुछ दूसरे 'इलाह' (पूज्य) ठहराये थे कि उन की 'इबादत' की जाये[२९]?

45. And ask those of Our messengers whom We sent before thee: Did We ever appoint gods to be worshipped beside the Beneficent?

وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

४६. हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उस ने (मूसा ने) कहा: मैं संसार के 'रब' का भेजा हुआ ('रसूल') हूँ।

46. And verily We sent Moses with Our revelations unto Pharaoh and his chiefs, and he said: I am a messenger of the Lord of the Worlds.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

४७. तो उस का उन के पास हमारी निशानियाँ ले कर आना था कि वे लगे उन (निशानियों) की हँसी उड़ाने।

47. But when he brought them Our tokens, behold! they laughed at them.

فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और हम उन्हें जो निशानी भी दिखाते तो वह अपनी बहिन से बढ़-चढ़ कर होती,[३०] और उन्हें यातना में डाल दिया[३१] ताकि (किसी तरह) बाज़ आ जायें।

48. And every token that We showed them was greater than its sister (token), and we grasped them with the torment, that haply they might turn again.

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

४९. उन्हों ने (मूसा से) कहा: हे जादूगर! अपने 'रब' से हमारे लिए प्रार्थना कर, इस सम्पर्क से कि उस ने तुझ से प्रतिज्ञा कर रक्खी है। निश्चय ही हम मार्ग पर आ जायेंगे।

49. And they said: O wizard! Entreat thy Lord for us by the pact that He hath made with thee. Lo! we verily walk aright.

وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

२७. अर्थात् इन से पूछा जायेगा कि इस बड़ी नेमत से तुम ने क्या फ़ायदा उठाया।

२८. अर्थात् उन की लाई हुई 'किताबों' से तुम्हें मालूम करना चाहिए कि अगले 'नबियों' में से क्या किसी को हम ने सिवाय एक 'रहमान' के किसी और की पूजा और बन्दगी का आदेश दिया था। खुली हुई बात है कि किसी 'नबी' को भी 'शिर्क' का हुक्म नहीं दिया गया था।

२९. अर्थात् आज मुहम्मद (सल्ल०) पर 'तौहीद' की जो शिक्षा उतारी गई है वह कोई नई बात नहीं है जो आज तुम लोगों के सामने प्रस्तुत की जा रही है बल्कि यही पिछले सभी 'रसूलों' की शिक्षा थी। सब ने लोगों से यही कहा था कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो इस का अधिकारी हो कि लोग उस की उपासना और बन्दगी करें। 'इबादत' और बन्दगी केवल अल्लाह की होनी चाहिए।

३०. अर्थात् एक-से-एक बढ़ कर निशानी उन्हें दिखाते।

३१. यहाँ यातना से अभिप्रेत अन्तिम यातना नहीं है बल्कि उस से पहले की आपदायें हैं जिन्हों ने फ़िरऔन और उस की जाति वालों को अपनी लपेट में ले लिया था। उदाहरणतः रक्त, टिड्डी, मेंढक आदि की यातना में अल्लाह ने फ़िरऔनियों को ग्रस्त लिया था। दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट २७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. फिर जैसे हम ने उन पर से यातना को हटाया[३२] वे लगे प्रतिज्ञा भंग करने[३३]।

50. But when We eased them of the torment, behold! they broke their word.

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

५१. और फ़िरऔन ने अपनी जाति वालों के बीच पुकार कर कहा : हे मेरी जाति वालो ! क्या ऐसा नहीं कि मुझे मिस्र का राज्य प्राप्त है और ये नहरें मेरे नीचे बह रही हैं ? क्या तुम देख नहीं रहे हो ?

51. And Pharaoh caused a proclamation to be made among his people saying: O my people! Is not mine the sovereignty of Egypt and these rivers flowing under me? Can ye not then discern?

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

५२. या ऐसा नहीं कि मैं इस व्यक्ति से उत्तम हूँ, जो कि हीन है और जो साफ़ बोल भी नहीं पाता[३४] ?

52. I am surely batter than this fellow, who is despicable, and can hardly make (his meaning) plain!

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

५३. (यदि यह अल्लाह का भेजा हुआ है) फिर क्यों नहीं इसे सोने के कंगन मिले, या इस के साथ 'फ़िरिश्ते' आये होते जो साथ-साथ रहते[३५] ?

53. Why then have armlets of gold not been set upon him, or angels sent along with him?

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

५४. इस तरह उस ने अपनी जाति वालों को बेवक़ूफ़ बनाया और उन्हों ने उस की बात मान ली[३६]। निश्चय ही वे अवज्ञा करने वाले लोग थे।

54. Thus he persuaded his people to make light (of Moses), and they obeyed him. Lo! they were a wanton folk.

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾

५५. फिर जब उन्हों ने हमें अप्रसन्न किया, तो हम ने बदला लिया उन से और डुबो दिया उन सब को (समुद्र में)।

55. So, when they angered Us, We punished them and drowned them every one:

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

५६. और हम ने उन्हें पूर्वज बना दिया, और (शिक्षाप्रद) मिसाल पिछलों के लिए।

56. And We made them a thing past, and an example for those after (them).

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

५७. और जब मरयम के बेटे (ईसा मसीह) की मिसाल दी गई, तो तुम्हारी जाति के लोग लगे तालालियाँ पीटने,

57. And when the son of Mary is quoted as an example, behold! the folk laugh out,

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

३२. दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १३३-१३५।

३३. दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) अध्याय ८।

३४. अर्थात् मूसा (अ०) के पास न तो धन और वैभव है, न वह किसी राज्य का अधिकारी है। यहाँ तक कि वह खोल कर अपनी बातें भी बयान नहीं कर सकता, वह मालूम नहीं कैसी उलझी-उलझी बातें करता है। ऐसा लगता है कि मूसा अ० की शिक्षा और उन के दिखाये हुए चमत्कारों और निशानियों से बहुत से लोग प्रभावित होने लगे थे। फ़िरऔन को डर हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि जनता मूसा (अ०) के साथ हो जाये और हमारी दाल न गल सके।

३५. अर्थात् हम तो जब इस व्यक्ति को 'नबी' मानते कि यह राजसी ठाठ-बाट के साथ आता; 'फ़िरिश्ते' इस के साथ परा बाँधे हुये होते। 'राजाओं की तरह हाथों में सोने के कंगन होते।

प्राचीन काल में जब किसी को राजदूत बना कर भेजा जाता या किसी व्यक्ति को कहीं का गवर्नर नियुक्त किया जाता तो बादशाह की ओर से सम्मानार्थ उसे जो कुछ मिलता उस में सोने के कंगन या कड़े भी होते और उस के साथ सिपाही और चोबदार भी होते। फ़िरऔन का कहना यह था कि यह कैसा ईश्वर का भेजा हुआ दूत या 'रसूल' है कि बिल्कुल एक साधारण व्यक्ति की तरह सामने आ खड़ा हुआ। फ़िरऔन यदि बुद्धि से काम लेता तो वह समझ सकता था कि मूसा (अ०) उस के पास जिन चमत्कारों और निशानियों के साथ आये हैं वे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि मूसा (अ०) साधारण व्यक्ति नहीं हैं वे अल्लाह ही के भेजे हुये हैं।

३६. मूर्ख जातियों की यही दशा होती है, वे आँखें बन्द कर के अपने गुरुओं, नेताओं और सरदारों के पीछे चलती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८. और कहने लगे : हमारे 'इलाह्' (देवता) अच्छे हैं या वह[३७] ? यह मिसाल उन्हों ने तुम्हारे सामने केवल झगड़ने के लिए दी। बल्कि ये हैं ही झगड़ालू लोग।

58. And say: Are our gods better, or is he? They raise not the objection save for argument. Nay! but they are a contentious folk.

وَقَالُوْٓاءَ اٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾

५९. वह (ईसा मसीह) तो बस एक बन्दा है जिस पर हम ने कृपा की, और उसे 'बनी इसराईल' के लिए (अपने चमत्कार का) एक नमूना बनाया[३८]।

59. He is nothing but a slave on whom We bestowed favour, and We made him a pattern for the Children of Israel.

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿٥٩﴾ ۭ

६०. और यदि हम चाहें तो तुम में से 'फ़िरिश्ते' बना दें जो धरती में तुम्हारी जगह लें।

60. And had We willed We could have set among you angels to be viceroys in the earth.

وَلَوْ نَشَاۗءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۗىِٕكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾

६१. और निश्चय ही वह उस घड़ी ('क़ियामत') की एक निशानी है[३९]। तो तुम उस में सन्देह न करो, और तुम मेरा कहा मानो। यही सीधा मार्ग है।

61. And lo! verily there is knowledge of the hour. So doubt ye not concerning it, but follow Me. This is the right path.

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

६२. और 'शैतान' तुम्हें रोक न दे। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

62. And let not Satan turn you aside. Lo! he is an open enemy for you.

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾

६३. और जब ईसा खुले-खुले प्रमाण ले कर आया, उस ने कहा : मैं तुम्हारे पास 'हिकमत' (तत्त्वदर्शिता) ले कर आया हूँ, और इस लिए (आया हूँ) कि कतिपय उन बातों को तुम पर खोल दूँ[४०] जिन में तुम विभेद करते हो। तो अल्लाह से डरो, और मेरा कहा मानो।

63. When Jesus came with clear proofs (of Allah's sovereignty) he said: I have come unto you with wisdom, and to make plain some of that concerning which ye differ. So keep your duty to Allah, and obey me.

وَلَمَّا جَاۗءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

६४. निस्सन्देह अल्लाह ही मेरा 'रब' है और तुम्हारा 'रब' भी। तो उस की 'इबादत' करो, यही सीधा मार्ग है[४१]।

64. Lo! Allah, He is my Lord and your Lord. So worship Him. This is a r ght path.

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

३७. अर्थात् मसीह (अ०) जिसे ईसाई अल्लाह् का बेटा बना कर पूजते हैं।

३८. अर्थात् मरयम के बेटे मसीह (अ०) अल्लाह् के बेटे या 'इलाह्' (पूज्य) न थे वे तो अल्लाह् ही के बन्दे थें। बस इतनी बात है कि अल्लाह् ने उन्हें अपनी क़ुदरत और चमत्कार का एक नमूना बनाया था। हज़रत मसीह (अ०) को अल्लाह् ने अपनी क़ुदरत का नमूना इस लिए कहा कि उन्हें अल्लाह् ने बे-बाप के केवल अपने चमत्कार के रूप में पैदा किया' फिर उन्हें ऐसे विशेष चमत्कार प्रदान किये जो न उस से पहले किसी को दिये गये थें और न उन के बाद किसी को दिये गये। गहवारे में उन्हों ने लोगों से बात-चीत की। वह मिट्टी का पक्षी बना कर उस में फूँक मारते तो वह वास्तव में पक्षी बन कर उड़ने लगता, जन्मान्ध को आँखों वाला कर देते थे, कोढ़ के रोगी को स्वस्थ कर देते यहाँ तक कि मुरदे को भी जीवित कर देते थें। दे० सूरा आले इमरान आयत ४६, ४९, ५९; अल-माइदा आयत ७५, ११०; सूरा मरयम आयत २१; अल-अंबिया आयत ९१; अल-मोमिनून आयत ५०।

३९. हज़रत मसीह अ० को 'क़ियामत' की निशानी इस लिए कहा गया कि अल्लाह् ने उन्हें बे बाप के पैदा किया था, वे मिट्टी का जीता-जागता पक्षी बना देते थे और मुरदे को जीवित कर देते थे। जो अल्लाह् बिना बाप के बच्चा पैदा कर सकता है और जिस का एक बन्दा मिट्टी के पक्षी में जीवन संचार कर सकता और मुरदों को जीवित कर सकता है उस अल्लाह् के लिए यह कुछ भी असम्भव नहीं कि वह सारे लोगों को उन की मृत्यु के पश्चात् 'क़ियामत' में दोबारा जीवित कर दे।

४०. अर्थात् तुम्हें बता दूँ कि उन बातों की वास्तविकता क्या है जिन में तुम लोग विभेद करते हो।

४१. दे० सूरा आलेइमरान आयत ५१; सूरा मरयम आयत ३६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५. फिर उन में के कितने ही गरोहों ने विभेद किया[४२]। तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दुःखद दिन की यातना से।

65. But the factions among them differed. Then woe unto those who do wrong from the doom of a painful day.

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ٦٥

६६. क्या ये लोग बस उस घड़ी ('क़ियामत') की प्रतीक्षा करते हैं कि वह अचानक इन पर आ जाये, जबकि ये बेख़बर हों ?

66. Await they aught save the Hour, that it shall come upon them suddenly, when they know not?

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ٦٦

६७. घनिष्ठ मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु होंगे, सिवाय उन लोगों के जो डरते हैं[४३]—

67. Friends on that day will be foes one to another, save those who kept their duty (to Allah).

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ٦٧

६८. हे मेरे बन्दो ! आज न तुम्हें कोई भय है, और न तुम दुःखी होगे—

68. O My slaves! For you there is no fear this day, nor is it ye who grieve;

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ٦٨

६९. जो हमारी 'आयतों' पर 'ईमान' लाये और 'मुस्लिम' थे—

69. (Ye) who believed Our revelations and were self-surrendered:

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ٦٩

७०. दाख़िल हो जाओ 'जन्नत' में पूरी ख़ुशियों के साथ तुम और तुम्हारे संघाती।

70. Enter the Garden, ye and your wives, to be made glad.

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ٧٠

७१. उन ('जन्नत' वालों) के आगे सोने की तश्तरियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे,- और वहाँ हर वह चीज़ होगी आत्मायें जिसे चाहें और आँखें जिस से लज़्ज़त पायें। और तुम उस में सदैव रहोगे।

71. Therein are brought round for them trays of gold and goblets, and therein is all that souls desire and eyes find sweet. And ye are immortal therein.

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ٧١

७२. और यह वह 'जन्नत' है जिस के तुम वारिस बनाये गये उन कर्मों के बदले में जो तुम करते थे।

72. This is the Garden which ye are made to inherit because of what ye used to do.

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٧٢

७३. तुम्हारे लिए यहाँ बहुत से मेवे[४४] हैं जिन्हें तुम खाओगे।

73. Therein for you is fruit in plenty whence to eat.

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ ٧٣

७४. रहे अपराधी जन तो वे सदा 'जहन्नम' की यातना में रहेंगे।

74. Lo! the guilty are immortal in hell's torment.

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ٧٤

४२. एक गरोह ने उन का इन्कार किया तो उन की माता हज़रत मरयम पर तोहमत तक लगाने से बाज़ न रहा और दूसरा गरोह उन्हें अल्लाह का बेटा बना बैठा। फिर यह समस्या कि एक मनुष्य अल्लाह का बेटा कैसे हो सकता है एक ऐसी गुत्थी थी जिसे सुलझाने में उस के अगणित समुदाय बन गये। यह गुत्थी फिर भी सुलझ न सकी।

४३. अर्थात् वहाँ केवल उन लोगों की मित्रता और दोस्ती बाक़ी रहेगी जो दुनिया में अल्लाह का डर रखते हैं जिन की मित्रता धर्म-परायणता और भलाई पर अवलम्बित है। जालिमों और अल्लाह के शत्रुओं की पारस्पारिक मित्रता तो बस इसी लोक के लिए है वहाँ वे एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे।

४४. फल और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७५. कभी उन को इस यातना में कमी नहीं होगी और वे उसी में निराश होकर पड़े रहेंगे।

७६. हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे।

७७. और वे ('जहन्नम' में) पुकारेंगे : हे मालिक[४५]! तुम्हारा 'रब' हमारा काम ही तमाम कर दे[४६]। वह कहेगा तुम यों ही पड़े रहोगे।

७८. निश्चय ही हम तुम्हारे पास 'हक़' ले कर आये हैं; परन्तु तुम में अधिकतर 'हक़' से नफ़रत रखते हैं।

७९. क्या इन्हों ने कोई बात ठान रक्खी है? तो हम ने भी ठान लिया है।

८०. क्या ये समझते हैं कि हम इन की छिपी बातों और इन की कानाफूसियों को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं, और हमारे दूत (अर्थात् 'फ़िरिश्ते') उन के पास ही लिखते रहते हैं[४७]।

८१. (हे 'नबी'!) कहो : यदि 'रहमान' (कृपाशील अल्लाह) की कोई औलाद हो तो सब से पहले मैं 'इबादत' करने वाला हूँ।

८२. आकाशों और धरती के 'रब' और राजसिंहासन के 'रब' की महिमा के प्रतिकूल है जो कुछ गुण ये लोग बयान करते हैं।

८३. अब छोड़ो इन्हें कि ये दलील (बाज़ियों) (कुतर्क) और खेल में लगे रहें यहाँ तक कि इन की अपने उस दिन से भेंट हो जिस की इन्हें धमकी दी जा रही है।

75. It is not relaxed for them, and they despair therein.

76. We wronged them not, but they it was who did the wrong.

77. And they cry: O master! Let thy Lord make an end of us. He saith: Lo! here ye must remain.

78. We verily brought the Truth unto you, but ye were, most of you, averse to the Truth.

79. Or do they determine any thing (against the Prophet)? Lo! We (also) are determining.

80. Or deem they that We cannot hear their secret thoughts and private confidences? Nay, but Our envoys, present with them, do record.

81. Say (O Muhammad): The Beneficent One hath no son. I am among the worshippers.

82. Glorified be the Lord of the heavens and the earth, the Lord of the Throne, from that which they ascribe (unto Him)!

83. So let them flounder (in their talk) and play until they meet the Day which they are promised.

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ٧٥

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ٧٦

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ
إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ٧٧

لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ
لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ٧٨

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ٧٩

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُم
بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ٨٠

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ
الْعَابِدِينَ ٨١

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ
الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ٨٢

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ٨٣

४५. अर्थात् 'जहन्नम' के दरोग़ा (Keeper of hell)।

४६. 'हमारा काम तमाम कर दे' अर्थात् हमें ऐसी मृत्यु दे दे कि हमारा अस्तित्व शेष न रहे ताकि हम यातना से छुटकारा पा जायें।

४७. उन के कर्मों का रिकॉर्ड रखते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४. वही है जो आकाश में भी 'इलाह' (पूज्य) है, और धरती में भी 'इलाह' है। और वही तत्त्व-दर्शी और (सबकुछ) जानने वाला है।

84. And He it is Who in the heaven is God, and in the earth God. He is the Wise, the Knower.

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

८५. और बरकत वाला है वह जिस का है राज्य धरती और आकाश का और जो कुछ इन के बीच है, और उसी को उस घड़ी ('क़ियामत') का ज्ञान है, और उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है।

85. And blessed be He unto Whom belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth and all that is between them, and with Whom is knowledge of the Hour, and unto Whom ye will be returned.

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

८६. और वे उस के सिवा जिन को पुकारते हैं उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार नहीं[४८] सिवाय इस के कि कोई हक़ बात की गवाही दे और वे जानते हैं—

86. And those unto whom they cry instead of Him possess no power of intercess on, sees no power of 'ntercession, ness unto the Truth knowingly.

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

८७. और यदि तुम उन से पूछो कि उन्हें किस ने पैदा किया तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। तो फिर वे कहाँ से मतिभ्रम हो जाते हैं !—

87. And if thou ask them who created them, they will surely say: Allāh. How then are they turned away?

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

८८. और उस का यह कहना हो : हे 'रब'! ये वे लोग हैं जो 'ईमान' नहीं रखते हैं[४९]।

88. And he saith, O my Lord! Lo! those are folk who believe not.

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ

८९. तो इन (ज़ालिमों) पर ध्यान न दो और कहो : सलाम है[५०]। इन्हें जल्द ही ज्ञात हो जायेगा[५१]।

89. Then bear with them (O Muhammad) and say: Peace! But they will come to know.

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

४८. दे० सूरा अन-नबा आयत ३७-३८; अल-बक़रा २५५; आयतअल-अंबिया आयत २८; अन-नज्म आयत २६; अल-इनफ़ितार आयत १९; अल-माइदा आयत ११८; अल़-मोमिन आयत ७।

४९. मालूम हुआ है कि अल्लाह के यहाँ किसी के हक़ में सिफ़ारिश वही व्यक्ति कर सकता है जिस को अल्लाह इस की इजाज़त दे और जो ठीक-ठीक हक़ बात की गवाही दे, जो 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का समर्थक हो। जो इस बात का गवाह हो कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है जिस का इन्कार 'मुश्रिक' लोग भी नहीं कर रहे हैं। ऐसा व्यक्ति 'मुश्रिकों' के बारे में वहाँ कुछ कहेगा तो वह इस के सिवा और क्या कहेगा कि ये वे लोग हैं जो 'ईमान' नहीं रखते। ये 'तौहीद' से फिरे हुये हैं। ऐसी दशा में यदि 'मुश्रिक' किसी सिफ़ारिशी से कोई आशा रखते हैं तो वह व्यर्थ है इन के बारे में बोलने वाला वहाँ जो कुछ बोलेगा वह इन के खिलाफ़ ही पड़ेगा।

५०. अर्थात् इन से उलझो नहीं, सलाम कर के अलग हो जाओ।

५१. दे आयत ८३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४---अद-दुख़ान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' की आयत १० में 'दुख़ान' अर्थात् धुवें की यातना का उल्लेख हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अद-दुख़ान' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब उतरी है इस का उल्लेख सूरा ४० (अल-मोमिन) के परिचय में हो चुका है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत 'सूरा' में 'काफ़िरों' के सरदारों के लिए इस बात की धमकी और डरावा है कि विजय 'इस्लाम' की होगी और वे परास्त हो कर रहेंगे।

यह 'सूरा' हा० मीम० सिलसिले की सात सूरतों में से जिन का आरम्भ सूरा ४० (अल-मोमिन) से हुआ है पाँचवीं 'सूरा' है। इस सूरा में बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर वास्तव में अल्लाह ने अपनी किताब उतारी है। यह किताब सर्वथा अल्लाह की दयालुता और एक बड़ी नेमत है, इस की क़द्र करनी चाहिए। यह किताब इस बात की खुली दलील है कि यह किसी मनुष्य की रचना नहीं है बल्कि यह अल्लाह की उतारी हुई किताब है। वह एक बरकत वाली घड़ी थी जब अल्लाह ने इस किताब के उतारने और 'रसूल' भेजने का फ़ैसला किया। यह किताब 'रहमत' (सर्वथा दयालुता) बन कर उतरी है इसे अपने लिए कोई आपदा न समझो। इस किताब का अवतरण उस विशेष समय में हुआ है जब कि अल्लाह भाग्य और क़िस्मतों के फ़ैसले किया करता है। अल्लाह के फ़ैसले अटल हुआ करते हैं। तुम अल्लाह का मुक़ाबला नहीं कर सकते। जो लोग इस किताब का आदर करेंगे वे अपना ही भला करेंगे। जो लोग इस की अवहेलना करेंगे वही घाटे में रहेंगे। यह अल्लाह की कृपा है कि उस ने लोगों को अज्ञान के अन्धकार से निकालने और उन्हें सीधा मार्ग दिखाने के लिए अपनी किताब उतारी और अपना 'रसूल' भेजा। अब जो लोग सन्देह में पड़े रहेंगे उन्हें अल्लाह की यातना से दुनिया और 'आख़िरत' में कोई नहीं बचा सकता। प्राचीन इतिहास भी इसी बात का साक्षी है। फ़िरऔन और उस की जाति वालों ने जब अल्लाह के 'रसूल' का इन्कार किया तो इस के परिणाम (स्वरूप) अल्लाह ने उसे उस की सेना सहित दरिया में डुबो दिया। उन के बाग़ और उन की खेतियाँ पड़ी रह गईं जिन के वारिस दूसरे लोग हुये। उन पर न तो आकाश को रोना आया और न धरती को और न उन्हें कोई मुहलत मिल सकी। 'बनी इसराईल' को जिन के लिए फ़िरऔन यातना बना हुआ था अल्लाह ने स्वतन्त्र किया।

फ़िरऔन के अतिरिक्त तुब्बअ की जाति को भी मिसाल में प्रस्तुत किया गया है कि किस तरह अल्लाह ने उन्हें उन के अपराध के कारण तबाह कर दिया। यह दुनिया कोई खेल-तमाशे के लिए नहीं बनाई गई है कि जिस के जी में जो आये करे।

'आख़िरत' की पुष्टि करते हुये कहा गया है कि अल्लाह ने आकाश और धरती को खेल-तमाशे के रूप में नहीं पैदा किया है बल्कि इन की सृष्टि महान् उद्देश्य के अन्तर्गत हुई है। इन की सृष्टि इस लिए हुई है कि लोगों की परीक्षा हो फ़ैसले का एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जबकि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' के अन्तिम भाग में फ़ैसले के दिन का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि 'आख़िरत' में सतत सुखमय जीवन उन्हीं लोगों को प्राप्त होगा जो दुनिया में अल्लाह् की अवज्ञा से बचने वाले और उस के प्रकोप से डरने वाले होंगे। और झूठी इज़्ज़त के दावेदारों और अल्लाह् के शत्रुओं के हिस्से में उस दिन दु:खदायिनी और अपमानजनक यातना के अतिरिक्त और कुछ न आ सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अद-दुख़ान

(मक्का में उतरी—'आयतें' ५९)

SMOKE

Revealed at Mecca

سورة الدخان مكية وهي تسع وخمسون آية وثلث ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा० मीम०[1]।

1. Ha. Mim.

حٰمٓ ۝١

२. क़सम है इस स्पष्ट 'किताब' की[2]।

2. By the Scripture that maketh plain:

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢

३. निस्सन्देह हम ने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है[3]—निस्सन्देह हम सचेत करने वाले थे—

3. Lo! We revealed it on a blessed night — Lo! We are ever warning —

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝٣

४. इस (रात) में हर तरह का 'हिकमत' भरा आदेश दिया जाता है।

4. Whereupon every wise command is made clear.

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝٤

५. हमारे यहाँ से दिया हुआ आदेश!—निस्सन्देह हम ही 'रसूल' भेजने वाले थे—

5. As a command from Our Presence — Lo! We are ever sending.

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٥

६. दयालुता है तेरे 'रब' की—निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है—

6. A mercy from thy Lord. Lo! He is the Hearer, the Knower,

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦

७. आकाशों और धरती के और जो कुछ उन के बीच है उस के 'रब' की यदि तुम्हें विश्वास हो[4]।

7. Lord of the heavens and the earth and all that is between them, if ye would be sure.

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٧

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।

२. क़ुरआन की क़सम यहाँ जिस बात पर खाई गई है वह यह कि क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताब है। यह मुहम्मद (सल्ल०) की रचना नहीं है। इस का सबूत यह किताब ख़ुद है।

३. अर्थात् 'लैलतुल क़द्र' अथवा दिव्य रात्रि में यह किताब उतरनी आरम्भ हुई (दे० सूरा अल-क़द्र आयत १)। कुछ टीकाकारों का विचार है कि इस रात में पूरा क़ुरआन 'वह्य' के 'फ़िरिश्तों' के हवाले कर दिया गया फिर आवश्यकतानुसार नबी सल्ल० पर २३ वर्ष तक उतारा जाता रहा।

'लैलतुल क़द्र' के बारे में सूरा अल-क़द्र में कहा गया है कि उस रात 'फ़िरिश्ते' और 'जिबरील' अपने 'रब' की अनुज्ञा से हर तरह का हुक्म ले कर उतरते हैं। इस से मालूम होता है कि यह ऐसी रात है जिस में अल्लाह व्यक्तियों, जातियों आदि के फ़ैसले कर के अपने 'फ़िरिश्तों' के हवाले कर देता है फिर वे 'फ़िरिश्ते' उन को कार्य-रूप में लाते हैं।

४. अर्थात् यदि वास्तव में तुम्हें यह विश्वास हो जाये कि आकाशों और धरती का कोई 'रब' है और वही हर एक की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है, सब का पालन-कर्त्ता वही है, तो यह बात भी सरलतापूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि उस की दयालुता और 'रहमत' का तक़ाज़ा यह भी है कि वह लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए अपना 'रसूल' भेजे। और फिर जबकि तुम उस के पैदा किये हुये हो और वह तुम्हारा स्वामी है तो तुम्हारा यह परम कर्त्तव्य है कि उस के आदेशों का पालन करो और उस के हुक्म से मुँह न मोड़ो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे अगले पूर्वजों का 'रब'[५]।

8. There is no God save Him. He quickeneth and giveth death; your Lord and Lord of your forefathers.

لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ٨

९. (इन्हें विश्वास नहीं) बल्कि ये लोग सन्देह में पड़े खेल रहे हैं[६]।

9. Nay, but they play in doubt.

بَلْ هُمْ فِى شَكٍّ يَلْعَبُونَ ٩

१०. अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो जब आकाश प्रत्यक्ष धुआँ लिये हुये आयेगा[७]।

10. But watch thou (O Muhammad) for the day when the sky will produce visible smoke:

فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِى ٱلسَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ١٠

११. वह लोगों पर छा जायेगा, यह है दुःख देने वाली यातना।

11. That will envelop the people. This will be a painful torment.

يَغْشَى ٱلنَّاسَ ۖ هَٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ١١

१२. (लोग कहेंगे) : हमारे 'रब'! हम पर से इस यातना को हटा दे। निश्चय ही हम 'ईमान' वाले हैं।

12. (Then they will say): Our Lord! relieve us of the torment. Lo! we are believers.

رَّبَّنَا ٱكْشِفْ عَنَّا ٱلْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ١٢

१३. ये कहाँ होश में आने वाले, इन के पास तो खुला 'रसूल' आ चुका है,[८]

13. How can there be remembrance for them, when a messenger making plain (the truth) had already come unto them,

أَنَّىٰ لَهُمُ ٱلذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ١٣

१४. फिर भी इन्हों ने उस ('रसूल') की ओर से मुँह मोड़ लिया, और कहा : सिखाया-पढ़ाया बावला है[९]।

14. And they had turned away from him and said: One taught (by others), a madman!

ثُمَّ تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَقَالُوا۟ مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ١٤

५. अर्थात् 'रब तो सब का एक ही है। यदि तुम्हारे बाप-दादा ने 'शिर्क' किया और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को अपना उपास्य ('इलाह') समझा, तो उन्हों ने बुरा किया और यदि आज तुम 'शिर्क' कर रहे हो तो तुम भी ग़लती पर हो।

६. इस से मालूम हुआ कि 'मुशरिकों' को अपने 'शिर्क' के सत्य होने पर पूर्ण विश्वास नहीं होता कभी-न-कभी ऐसा अवश्य होता है कि उन का दिल अन्दर से गवाही देता है कि हम ने जो नीति अपनाई है वह ठीक नहीं है। स्वामी और प्रभु तो एक ही है। यही हाल नास्तिकों का भी है। वे भी चाहे कितनी दृढ़ता के साथ अल्लाह का इन्कार करें परन्तु उन का दिल भी कभी-न-कभी कहने लगता है कि यह दुनिया अपने-आप नहीं बन गई है अवश्य इस का कोई सृष्टि-कर्त्ता है। 'मुशरिक' और नास्तिक जो नीति अपनाये हुये होते हैं वह वास्तव में दुविधा एवं सन्देह पर अवलम्बित होती है, दुनिया के काम और भोग-विलास में वे इतने लीन होते हैं कि उन्हें इस का अवसर कहाँ कि वे गंभीरता पूर्वक अपना कुछ समय सोच-विचार में लगा सकें और सोचें कि कहीं हम सत्य के विरुद्ध तो नहीं जा रहे हैं। उन के वाद-विवाद का ध्येय भी खेल और मनोरंजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।

७. अर्थात् आकाश में प्रत्यक्ष धुआँ ज़ाहिर होगा। यह संकेत अल्लाह की यातना की ओर है।

८. दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत २९।

९. दे० सूरा अन-नह्ल आयत १०३; सूरा अल-फ़ुरक़ान आयत ४।

उन का मतलब यह था कि इस व्यक्ति को कोई सिखा-पढ़ा देता है जिसे यह लोगों को क़ुरआन के रूप सुनाता है। वे यह नहीं सोचते थे कि हम यह क्या बक रहे हैं और यह बे बुनियाद इलज़ाम किस व्यक्ति के ऊपर लगा रहे हैं। इलज़ाम लगाने को तो उन्हों ने लगाया और आज भी इस्लाम-विरोधी इस तरह का इलज़ाम लगाते हैं परन्तु इस सिलसिले में कोई एक दलील भी पेश नहीं की जा सकी। सोचने की बात यह है कि यदि किसी के सिखाने-पढ़ाने से 'नुबूवत' का कारोबार चलाया गया होता तो यह चीज़ उन लोगों से कदापि छिप नहीं सकती थीं जिन का आप (सल्ल०) का हर समय का साथ था। और हम देखते हैं कि वही सब से पहले आप के अनुयायी हो गये हैं। इस सिलसिले में हज़रत ख़दीजा रज़ि०, हज़रत अबू बक्र रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत ज़ैद रज़ि० का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. हम थोड़े समय के लिए यातना हटाये देते हैं। तुम लोग तो फिर वही करने लगोगे।

15. Lo! We withdraw the torment a little. Lo! ye return (to disbelief).

إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾

१६. जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ के साथ (अपराधियों को) पकड़ेंगे, तो निश्चय ही हम बदला ले कर रहेंगे।

16. On the day when We shall seize them with the greater seizure (then), in truth We shall punish.

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ﴿١٦﴾

१७. और हम इन से पहले फ़िरऔन की जाति वालों को आज़माइश में डाल चुके हैं, जबकि उन के पास एक भला 'रसूल' आया था,

17. And verily We tried before them Pharaoh's folk, when there came unto them a noble messenger,

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

१८. (और उस ने कहा था) कि तुम अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो[10]। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय 'रसूल' हूँ[11]।

18. Saying: Give up to me the slaves of Allah Lo! I am faithful messenger unto you.

أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾

१९. और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो। मैं तुम्हारे सामने एक खुली सनद (और प्रमाण) प्रस्तुत करता हूँ[12]।

19. And saying: Be not proud against Allah. Lo! I bring you a clear warrant.

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿١٩﴾

२०. और मैं अपने 'रब' और तुम्हारे 'रब' की पनाह ले चुका हूँ इस से कि तुम मुझ पर पथराव करो[13]।

20. And lo! I have sought refuge in my Lord and your Lord lest ye stone me to death.

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

२१. और यदि तुम मुझ पर 'ईमान' नहीं लाते तो मुझ से अलग ही हो जाओ[14]।

21. And if ye put no faith in me, then let me go.

وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾

२२. फिर (मूसा ने) अपने 'रब' को पुकारा कि ये अपराधी लोग हैं।

22. And he cried unto his Lord (saying): These are guilty folk.

فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

२३. तो (उस के 'रब' ने हुक्म दिया) : मेरे बन्दों को रातों-रात ले कर चल पड़[15]। निश्चय ही तुम लोगों का पीछा किया जायेगा,[16]

23. Then (his Lord commanded): Take away My slaves by night. Lo! ye will be followed,

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾

१०. अर्थात् 'बनी इसराईल' को मेरे साथ जाने दो। दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १०५ ता० हा० आयत ४७, अश-शु,अरा आयत १७।

११. अर्थात् मैं 'रसूल' हूँ जिस पर भरोसा किया जा सके। मैं अल्लाह का भेजा हुआ हूँ, जो कुछ कहता हूँ उसी की ओर से कहता हूँ।

१२. यह संकेत उन चमत्कारों की ओर है जो हज़रत मूसा अ० को अल्लाह की ओर से प्रदान हुये थे।

१३. वही मेरी रक्षा करेगा। यह उस समय की बात है जब फ़िरऔन हज़रत मूसा अ० की पेश की हुई निशानियों के मुक़ाबले में अड़ा ही रहा और हज़रत मूसा अ० को क़त्ल की धमकी देने लगा। दे० सूरा अल-मोमिन आयत २६-२७।

१४. अर्थात् मेरा रास्ता न रोको, मुझे तकलीफ़ न पहुँचाओ; मुझ से अलग ही हो जाओ।

१५. अर्थात् उन सभी लोगों को लेकर चल पड़ो जो 'ईमान' लाये हों चाहे वे क़िब्ती जाति के वे लोग हों जो हज़रत यूसुफ़ अ० के समय से इस समय तक 'ईमान' वालों में शामिल हुये हों या वे लोग हों जो अल्लाह की निशानियों से प्रभावित हो कर 'ईमान' लाये हों।

१६. अर्थात् फ़िरऔन अपनी सेना ले कर तुम्हारा पीछा करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. और दरिया को थमा छोड़, ये सारी सेना डुबो दी जाने वाली है[१७]।

२५. वे छोड़ गये (अपने पीछे) कितने ही बाग़ और जल-स्रोत (और झरने),

२६. और खेतियाँ और अच्छा स्थान

२७ सुख-सामग्री जिस में वे मज़े करते थे !

२८. यह होता है ! और हम ने दूसरे लोगों को इन चीज़ों का वारिस बना दिया,

२९. फिर न तो उन पर आकाश और धरती ने विलाप किया[१८] और न उन्हें मुहलत दी गई।

३०. और हम ने 'इसराईल' की सन्तान को छुटकारा दिलाया अपमान जनक यातना से,

३१. (अर्थात्) फ़िरऔन से[१९]। निश्चय ही उस ने सिर उठा रक्खा था और हद से बढ़ा हुआ था।

३२. और हम ने जान-बूझ कर उन्हें संसार वालों के मुक़ाबले में पसन्द किया[२०]।

३३. और उन्हें ऐसी निशानियाँ दीं जिस में खुली आज़माइश थी[२१]।

३४. ये लोग कहते हैं :

३५. बस यही हमारा पहली बार का मरना है, और हम फिर (जीवित कर के) दोबारा उठाये जाने वाले नहीं हैं[२२]।

24. And leave the sea behind at rest, for lo! they are a drowned host.

25. How many were the gardens and the water-springs that they left behind,

26. And the cornlands and the goodly sites,

27. And pleasant things wherein they took delight!

28. Even so (it was), and We made it an inheritance for other folk;

29. And the heaven and the earth wept not for them, nor were they reprieved.

30. And We delivered the Children of Israel from the shameful doom;

31. (We delivered them) from Pharaoh. Lo! he was a tyrant of the wanton ones.

32. And We chose them, purposely, above (all) creatures.

33. And We gave them portents wherein was a clear trial,

34. Lo! these, forsooth, are saying:

35. There is naught but our first death, and we shall not be raised again.

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ٢٤

كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ٢٥

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ٢٦

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ٢٧

كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ٢٨

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ٢٩

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ٣٠

مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ٣١

وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ٣٢

وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ٣٣

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ٣٤

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ٣٥

१७. तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० बाइबिल 'ख़ुरुज' (Exodus) १४ : २१, १५ : १०; 'इस्तिस्ना' (Denteronmy) ११ : १४, सूरा ता० हा० फ़ुटनोट १६।

१८. किसी को उन पर रोना नहीं आया। न धरती वाले उन पर रोये और न आकाश वालों को उन की तबाही का दुःख हुआ। उन्हों ने अल्लाह के बन्दों के साथ कब कोई भलाई ही की थी कि कोई उन के लिए रोता और उन्हों ने कब अल्लाह को प्रसन्न किया था कि आकाश वालों को उन की तबाही का ग़म होता।

१९. अर्थात् फ़िरऔन से छुटकारा दिलाया जो 'बनी इसराईल' के लिए यातना बना हुआ था।

२०. अर्थात् उस समय की जातियों में अपने विशेष काम के लिए हम ने 'बनी इसराईल' को चुना।

२१. दे० सूरा अल-बक़रा आयत ४९-७२; अन-निसा आयत १५३-१६०; अल-माइदा आयत १९-२६; अल-आराफ़ आयत १३७-१७१; ता० हा० आयत ८०-९७।

२२. 'क़ुरैश' के लोग कहते थे कि पहली बार जब हम मरेंगे तो सदैव के लिए हमारा अन्त हो जायेगा, पुनः हमें कोई जीवन मिलने वाला नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. तो ले आओ (जीवित कर के) हमारे पूर्वजों को, यदि तुम सच्चे हो।

36. Bring back our fathers, if ye speak the truth!

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

३७. क्या ये ('मुश्रिक' लोग) अच्छे हैं, या तुब्बअ्[23] की जाति वाले और वे लोग जो उन से पहले हो चुके हैं[24] ? हम ने उन्हें विनष्ट कर दिया, निश्चय ही वे अपराधी थे।

37. Are they better, or the folk of Tubb'a and those before them? We destroyed them, for surely they were guilty.

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

३८. और हम ने आकाशों और धरती को और जो कुछ इन के बीच है उसे खेल-खेल में नहीं बना दिया है[25]।

38. And We created not the heavens and the earth, and all that is between them, in play.

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾

३९. हम ने इन्हें बस हक़ के साथ पैदा किया;[26] परन्तु इन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

39. We created them not save with truth; but most of them know not.

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

४०. निश्चय ही फ़ैसले का दिन इन सब का नियत समय है;

40. Assuredly the Day of Decision is the term of all of them,

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

४१. जिस दिन कोई अपना[27] किसी अपने के कुछ काम न आयेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिलेगी,

41. A day when friend can in naught avail friend, nor can they be helped,

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

४२. सिवाय उस व्यक्ति के जिस पर अल्लाह दया करे। निस्सन्देह वही प्रभुत्त्वशाली और दया करने वाला है।

42. Save him on whom Allah hath mercy. Lo! He is the Mighty, the Merciful.

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

२३; 'तुब्बअ्' वास्तव में 'हिमयर' क़बीला के बादशाहों की उपाधि या लक़ब था। तुब्बअ् के लोग 'सबा' जाति की एक शाखा से सम्बन्ध रखते थे। ११५ ई० पू० से ले कर ३०० ई० तक सबा के देश पर इन्हीं की हुकूमत रही है। शताब्दियों तक दुनिया में इन की बड़ाई के डंके बजते रहे हैं। इन्हीं के समय में मआरिब को उजाड़ कर रैदान को राजधानी बनाया गया। यह हिमयर क़बीला का केन्द्र था। यही नगर बाद में ज़ुफ़ार के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान नगर यरीम के निकट एक पहाड़ी पर इस के खंडहर मिलते हैं। और इसी के क़रीब एक छोटा-सा क़बीला हिमयर के नाम से आज भी आबाद है जो वास्तव में एक गुज़री हुई क़ौम की यादगार है।

२४. यह संकेत सबा जाति, फ़िरऔन की जाति आदि की ओर है। मतलब यह है कि जो धन-वैभव और सांसारिक शक्ति और भव्यता इन जातियों को प्राप्त थी वह इन मक्का वालों को कहाँ मिली है परन्तु इन जातियों को जब अल्लाह ने इन के अपराध के कारण विनष्ट करना चाहा तो कोई चीज़ इन्हें तबाही से बचा न सकी फिर मक्का के लोग आख़िर किस चीज़ पर फूले हुये हैं।

२५. अर्थात् हम ने विश्व की रचना निरुद्देश्य नहीं की है। हम ने जो कुछ पैदा किया है 'हिकमत' और उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया है: इस लिए वर्तमान लोक का अवश्य कोई वास्तविक परिणाम सामने आयेगा। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि मनुष्य का अस्तित्व सर्वथा अर्थहीन हो कि वह कुछ दिन इस लोक में जीवन व्यतीत कर के सर्वदा के लिए विलुप्त हो कर रह जाये।

२६. अर्थात् संसार की रचना इस लिए हुई है कि लोगों की परीक्षा हो और उन्हें उन के कर्मों का बदला दिया जाये। इस विश्व की रचना निरुद्देश्य नहीं हुई है (दे० सूरा अल-जासिया आयत २१-२२)। इस आयत में वास्तव में 'काफ़िरों' की इस बात का कि मरने के बाद कोई जीवन नहीं है, उत्तर दिया गया है।

२७. यहाँ मूल ग्रन्थ में 'मौला' (مولیٰ) शब्द प्रयुक्त हुआ है। मौला अरबी में ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो किसी सम्बन्ध के कारण किसी की सहायता करे, वह सम्बन्ध चाहे मित्रता का हो, या रिश्तेदारी का या और किसी प्रकार का सम्बन्ध हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३. निश्चय ही 'ज़क़्क़ूम'[२८] का वृक्ष	43. Lo! the tree of Zaqqum,	إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ٤٣
४४. गुनहगार (पापी व्यक्ति) का भोजन होगा !	44. The food of the sinner!	طَعَامُ الْأَثِيمِ ٤٤
४५. जैसे पिघली हुई धातु,[२९] वह पेटों में खौलता होगा	45. Like molten brass, it seetheth in their bellies	كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ٤٥
४६. जैसे पानी खौले।	46. As the seething of boiling water.	كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ٤٦
४७. (कहा जायेगा) : पकड़ो इसें बीच भड़कती हुई अग्नि ('जहन्नम') के ढकेल ले जाओ,	47. (And it will be said): Take him and drag him to the midst of hell.	خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ٤٧
४८. फिर इस के सिर पर खौलते पानी की यातना उँडेल दो[३०]।	48. Then pour upon his head the torment of boiling water.	ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ٤٨
४९. (कहा जायेगा) : मज़ा चख, तू ही तो है बड़ा ज़बरदस्त और इज़्ज़तदार[३१] !	49. (Saying): Taste! Lo! thou wast forsooth the mighty, the noble!	ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ٤٩
५०. निश्चय ही यह वही चीज़ है जिस के बारे में तुम सन्देह किया करते थे।	50. Lo! this is that whereof ye used to doubt.	إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ٥٠
५१. निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले ऐसे स्थान में होंगे जहाँ कोई खटका न होगा[३२]।	51. Lo! those who kept their duty will be in a place secure,	إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ٥١
५२. बाग़ों और जल-स्रोतों के बीच,	52. Amid gardens and watersprings:	فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ٥٢
५३. पतले और गाढ़े रेशमी वस्त्र पहनेंगे, और एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे[३३]।	53. Attired in silk and silk embroidery, facing one another:	يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ٥٣
५४. यह होगा ! और हम उन का विवाह बड़ी और सुन्दर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे।	54. Even so (it will be). And We shall wed them unto fair ones with wide, lovely eyes.	كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ٥٤

२८. दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ६२; सूरा वाक़िआ आयत ५२।

२९. यहाँ 'मुह्ल' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिस के कई अर्थ होते हैं पिघली हुई धातु, पिघला हुआ नारकोल, तेल की तलछट, पीप, रक्त आदि। दे० सूरा अल-कहफ़ फ़ुटनोट १९।

३०. अल्लाह हम सब को इस यातना से बचाये।

३१. अर्थात् तू बड़ा इज़्ज़त वाला और प्रतापवान् था, आज तेरा यह आदर हो रहा है। कहाँ गई तेरी वह सरदारी और तेरा वह गर्व !

३२. नबी सल्ल० ने भी कहा है कि 'जन्नत' वालों से कह दिया जायेगा : यहाँ तुम स्वस्थ रहोगे, कभी बीमार न होगे, सदैव जीवित रहोगे कभी मरोगे नहीं, हमेशा खुशहाल रहोगे कभी बदहाल न होगे, सदैव जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे।

३३. और आपस में आसानी के साथ बात-चीत करते होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५. वे वहाँ निश्चिन्तता पूर्वक हर प्रकार के मेवे[३४] तलब करते होंगे।

55. They call therein for every fruit in safety:

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

५६. वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे बस पहली मृत्यु (दुनिया में) जो आ चुकी वह आ चुकी। और वह उन्हें भड़कती अग्नि ('जहन्नम') की यातना से बचा देगा,

56. They taste not death therein, save the first death. And He hath saved them from the doom of hell,

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

५७. यह सब अनुग्रह होगा तेरे 'रब' का। यही बड़ी सफलता है।

57. A bounty from thy Lord. That is the supreme triump.

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

५८. तो (हे 'नबी' !) हम ने बस इस ('क़ुरआन') को तुम्हारी भाषा में सुगम कर दिया है[३५] कदाचित् ये लोग नसीहत हासिल करें।

58. And We have made (this Scripture) easy in thy language only that they may heed.

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

५९. तो तुम भी प्रतीक्षा करो। ये लोग भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

59. Wait then (O Muhammad). Lo! they (too) are waiting.

فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

* * *

३४. हर प्रकार की स्वादिष्ट वस्तुयें वहाँ प्राप्त होंगी।

३५. अर्थात् क़ुरआन को हर पहलू से बिल्कुल इस के अनुकूल रक्खा है कि यदि कोई चाहे तो इस से शिक्षा ग्रहण कर सकता है। क़ुरआन बिल्कुल सहज औरस्वभाविक रूप से सत्य की प्रेरणा देता है। दे० सूरा मरयम फुटनोट २९; सूरा अल-क़मर आयत १७, २२, ३२, ४०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५—अल-जासिया

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम अल-जासिया' सूरा की आयत २८ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब उतरी इस का उल्लेख सूरा. ४० (अल-मोमिन) में किया जा चुका है। अनुमान है कि यह सूरा अद-दुख़ान के बाद ही उतरी है। इन दोनों सूरतों में बड़ी अनुरूपता पाई जाती है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस 'सूरा' में उन 'काफ़िरों' और हठधर्म लोगों के प्रति निराशा प्रकट की गई है जो अल्लाह की 'आयतों' को सुनने के बाद भी गर्व से (अपनी जगह) अड़े रहते हैं। ऐसे लोगों के बारे में कहा गया है कि अल्लाह स्वयं उन्हें उन के किये का मज़ा चखायेगा।

प्रस्तुत सूरा हा० मीम० सिलसिले की उन सात सूरतों में से छठवीं सूरा है जिन का आरम्भ सूरा ४० (अल-मोमिन) से हुआ है।

'सूरा' के आरम्भ में किताब के अवतरण का उल्लेख करने के पश्चात् अल्लाह की बड़ी-बड़ी निशानियों और चमत्कारों का उल्लेख किया गया है जिन से 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और 'आख़िरत' दोनों की पुष्टि होती है। अल्लाह की इन निशानियों को यदि कोई आँखें खोल कर देखे और पक्षपात से हट कर इन पर विचार करे तो उसे साफ़ मालूम होगा कि यह संसार बिना ईश्वर के नहीं है और न इस के बहुत से ईश्वर और प्रभु हैं। एक ही ईश्वर इस का सृष्टि-कर्त्ता है और वही अकेला इस का नियन्ता भी है। मनुष्य को जो कुछ मिला है वह अल्लाह ही का दिया हुआ है। अल्लाह ही के हुक्म से धरती और आकाश की अगणित चीज़ें और शक्तियाँ मनुष्य की सेवा में लगी हुई हैं। मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह ही का कृतज्ञ हो किसी और को अपना पूज्य और आराध्य न बनाये।

इस के बाद 'कुफ़्र' करने वालों और अपनी हठधर्मी पर अड़े रहने वालों को यातना की सूचना दी गई है; फिर 'ईमान' वालों से कहा गया है कि वे ऐसे 'काफ़िरों' के पीछे न पड़ें। जो व्यक्ति जैसाकुछ कर रहा है अपने ही लिए कर रहा है; अन्त में हर एक को अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है।

फिर उन बड़े एहसानों का उल्लेख किया गया है जो अल्लाह ने 'इसराईल' की सन्तान पर किये थे परन्तु 'बनी इसराईल' ने अल्लाह की ओर से ज्ञान पाने के पश्चात् भी उस में विभेद किया। 'बनी इसराईल' के पारस्पारिक विभेदों के बारे में कहा गया कि 'क़ियामत' के दिन अल्लाह उन का फ़ैसला कर देगा। 'बनी इसराईल' की मिसाल दे कर वास्तव में यह समझाना अभीष्ट है कि यह क़ुरआन जो नेमत ले कर उतरा है वह वही है जो कभी 'बनी इसराईल' को दी गई थी जिस के कारण संसार में उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त हुई थी। परन्तु जब उन्होंने धर्म में विभेद किया और अल्लाह की दी हुई नेमत को खो दिया, तो अब यह नेमत और अमूल्य निधि अल्लाह ने तुम्हारे यहाँ भेजी है। यह क़ुरआन धर्म का स्पष्ट मार्ग दिखाता है, जो लोग इस से मुँह मोड़ेंगे वह अपना ही बुरा करेंगे।

फिर 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) धर्म के स्पष्ट मार्ग से विचलित न हों। उन लोगों की इच्छाओं का पालन करना आप का काम नहीं जो ज्ञान नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रखते ।येलोग अल्लाह के मुक़ाबले में किसी के काम आने वाले नहीं हैं। यद्यपि यह बात नबी सल्ल० से कही गई है परन्तु वास्तव में यह आदेश सभी 'ईमान' वाले व्यक्तियों के लिए है।

आगे चल कर 'क़ियामत' के मानने से इन्कार करने वालों की धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन करते हुये बताया गया है कि किस तरह 'क़ियामत' के दिन प्रत्येक समुदाय (भय और डर से) घुटनों के बल पड़ा होगा। हर गरोह से कहा जायेगा कि आज तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम दुनिया में करते रहे हो। और 'काफ़िरों' से कहा जायेगा कि तुम अपराधी हो, आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुम ने इस दिन को भुला रक्खा था। तुम्हारा ठिकाना 'जहन्नम' है। तुम्हारा कोई सहायक नहीं। सांसारिक जीवन ने तुम्हें भुलावे में डाल रक्खा था। तुम हमारी 'आयतों' की हँसी ही उड़ाते रहे।

'सूरा' अल्लाह की बड़ाई और प्रशंसा के साथ समाप्त हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-जासिया
(मक्का में उतरी—'आयतें' ३७)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. हा० मीम०[1]।

२. इस 'किताब' का अवतरण अल्लाह, प्रभुत्त्व-शाली और तत्त्वदर्शी की ओर से है[2]।

३. निस्सन्देह आकाशों और धरती में बड़ी निशानियाँ हैं 'ईमान' वालों के लिए।

४. और तुम्हारी अपनी सृष्टि में, और उन प्राणधारियों में जिन्हें वह धरती में बखेरता रहता है, बड़ी निशानियाँ हैं विश्वास करने वाले लोगों के लिए[3]।

५. और रात और दिन के आगे-पीछे आने में और उस रोज़ी (वर्षा) में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा फिर उस से भूमि को उस के मुरदो (शुष्क) हो जाने के पश्चात् जीवित किया, और हवाओं के उलट-फेर में, निशानियाँ हैं बुद्धि से काम लेने वालों के लिए।

CROUCHING
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Ha. Mim.

2. The revelation of the Scripture is from Allah, the Mighty, the Wise.

3. Lo! in the heavens and the earth are portents for believers.

4. And in your creation, and all the beasts that scattereth in the earth, are portents for a folk whose faith is sure:

5. And the difference of night and day and the provision that Allah sendeth down from the sky and thereby quickeneth the earth after her death, and the ordering of the winds, are portents for a people who have sense.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ①

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ③

وَفِىْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ④

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ⑤

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १।

२. दे० आयत ३७।

'सूरतों' का आरम्भ प्रायः इसी तरह के वाक्यों से होता है। मनुष्य का रेडियो तो केवल यह बताता है कि बोलने वाला कहाँ से बोल रहा है परन्तु क़ुरआन की यह उद्घोषणा कि वह अल्लाह की ओर से है बड़ा महत्व रखता है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उसे ध्यानपूर्वक सुने और उस पर विचार करे। इस लिए कि अल्लाह की ओर से किसी सन्देह का प्रसारण मनोरंजन के लिए नहीं है बल्कि इसी के मानने, न मानने पर जीवन की सफलता या असफलता निर्भर है।

३. दे० सूरा अल-बक़रा आयत १६४; अर-रूम आयत २०।

जो लोग इन्कार ही की नीति अपनाये हुये हैं उन का मामला तो दूसरा है परन्तु जिन्हों ने अपने दिल के दरवाज़े बन्द नहीं किये हैं उन्हें तो हर ओर ऐसी निशानियाँ दिखाई देती हैं जो मनुष्य को यह विश्वास दिलाती है कि इस दुनिया का कोई स्वामी है और वही अकेला सब का पालनकर्ता और पूज्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को हम तुम्हें ठीक-ठीक सुना रहे हैं। अब अल्लाह और उस की 'आयतों' के बाद, किस बात पर ये 'ईमान' लायेंगे[४] ?

6. These are the portents of Allah which We recite unto thee (Muhammad) with truth. Then in what fact after Allah and His portents, will they believe?

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ⑥

७. तबाही है हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए,

7. Woe unto each sinful liar!

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ⑦

८. जो अल्लाह की 'आयतों' को सुनता है जो उसे सुनाई जाती हैं, फ़िर पूरे गर्व से (अपने 'कुफ़्र' पर) अड़ा रहता है मानो उस ने उन को सुना ही नहीं। तो ऐसे व्यक्ति को दुःख देने वाली यातना की मंगलसूचना दे दो।

8. Who heareth the revelations of Allah receive unto him, and then continueth in pride as though he heard them not. Give him tidings of a painful doom.

يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑧

९. और जब हमारी 'आयतों' में से कुछ जान लेता है तो उस को हँसी उड़ाने लगता है[५]। ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है।

9. And when he knoweth aught of Our revelations he maketh it a jest. For such there is a shameful doom.

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑨

१०. उन के उस ओर 'जहन्नम है,[६] जो कुछ उन्हों ने कमाया कुछ भी उन के काम न आयेगा, और न वे (कुछ कर सकेंगे) जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा वली (संरक्षक-मित्र) बना रक्खा है और उन के लिए बड़ी यातना है।

10. Beyond them there is hell, and that which they have earned will naught avail them, nor those whom they have chosen for protecting friends beside Allah. Theirs will be an awful doom.

مِّن وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑩

११. यह मार्ग-दर्शन[७] है। और जिन लोगों ने अपने 'रब' की 'आयतों' का इन्कार किया, उन के लिए बहुत ही बुरी यातना है दुःख भरी।

11. This is guidance. And those who disbelieve the revelations of their Lord, for them there is painful doom of wrath.

هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ⑪

१२. वह अल्लाह ही तो है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को काम में लगाया ताकि उस के हुक्म से नौकायें उस में चलें, (ताकि तुम अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँचो) और ताकि तुम उस का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ:

12. Allah it is Who hath made the sea of service unto you that the ships may run thereon by His command, and that ye may seek of His bounty, and that haply ye may be thankful;

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑫

४. अर्थात् जब अल्लाह की बयान की हुई निशानियों और दलीलों के सामने आ जाने के बाद भी ये लोग 'ईमान' नहीं ला रहे हैं तो अब क्या चीज आयेगी जिस से इन्हें विश्वास होगा। अल्लाह का 'कलाम' सुन कर भी जिस को 'ईमान' की दौलत न मिल सकी उस की अन्धता का इलाज आखिर क्या हो सकता है ?

५. दे० आयत ३५।

६. यहाँ 'वरा' (وراء) शब्द प्रयुक्त हुआ है। जो हर उस चीज के लिए बोला जाता है जो आदमी की आँखों से ओझल हो चाहे वह आगे हो या पीछे।

७. दे० आयत २०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. और उस ने तुम्हारे लिए कार्य में लगाया जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, सब को अपनी ओर से—निस्सन्देह इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करने वाले हैं।

13. And hath made of service unto you whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth; it is all from Him. Lo! herein verily are portents for people who reflect.

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

१४. कह दो उन लोगों से जो 'ईमान' लाये हैं कि वे उन लोगों को क्षमा करें[8] जिन्हें अल्लाह के दिवसों की आशंका नहीं;[9] ताकि वह लोगों को उस चीज़ का बदला दे जो कुछ कि वे कमाते हैं।

14. Tell those who believe to forgive those who hope not for the days of Allah; in order that He may require folk what they used to earn.

قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

१५. जो भला करेगा अपना ही भला करेगा और जो बुरा करेगा अपना ही बुरा करेगा। फिर तुम्हें अपने 'रब' की ओर पलटना होगा।

15. Whoso doth right, it is for his soul, and whoso doth wrong, it is against it. And afterward unto your Lord ye will be brought back.

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

१६. और निश्चय ही 'इसराईल' की सन्तान को हम ने 'किताब' और 'हुक्म'[10] और 'नुबूवत' प्रदान की थी, और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी और उन्हें सारे संसार पर बड़ाई दी।[11]

16. And verily We gave the Children of Israel the Scripture and the Command and the Prophethood, and provided them with good things and favoured them above (all) peoples.

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَ
الْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ
وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

१७. और उन्हें इस सिलसिले में खुले-खुले निर्देश प्रदान किये। फिर उन में जो विभेद हुआ वह ज्ञान पा लेने के बाद ही हुआ केवल एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' 'क़ियामत' के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद करते थे।

17. And gave them plain commandments. And they differed not until after the knowledge came unto them, through rivalry among themselves. Lo! thy Lord will judge between them on the Day of Resurrection concerning that wherein they used to differ.

وَآتَيْنَاهُم بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا
إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

८. अर्थात् उन्हें और उन की कुनीतियों को ध्यान में न लायें अल्लाह स्वयं समय आने पर उन से बदला ले लेगा।

९. दे० सूरा इबराहीम आयत ५।

क़ुरआन में इस के लिए पारिभाषिक शब्द 'अय्यामुल्लाह' (أيام الله) प्रयुक्त हुआ है। इस से अभिप्रेत वे यादगार दिन होते हैं जिन में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें घटित हुई हों जिन में अल्लाह 'काफ़िरों' को कोई विशेष सज़ा दे, या 'ईमान' वालों पर उस की कोई विशेष कृपा हो। उन्हें विजय प्राप्त हो। यहाँ अल्लाह के दिवस से अभिप्रेत किसी जाति के बुरे दिन हैं जबकि अल्लाह का उस पर प्रकोप हो और वह अपने करतूतों के कारण तबाह कर दी जाये। बाइबिल में भी अल्लाह के दिवस (day of the Lord) का उल्लेख जगह-जगह हुआ है उदाहरणार्थ दे० Isa. 2 : 12; 13 : 6, 9; 34 : 8; Jer. 46 : 10; Ezek. 30 : 3; Zeck. 14 : 1; 1 Thes. 5 : 2; 2 Pet. 3 : 10.

१०. हुक्म से अभिप्रेत तीन चीज़ें हैं : एक 'किताब' का ज्ञान और 'दीन' की समझ, दूसरे 'किताब' के आशय के अनुसार काम करने की युक्ति, तीसरे मामलों में फ़ैसला करने की क्षमता।

११. अर्थात् अल्लाह ने उस समय की जातियों में 'बनी इसराईल' को श्रेष्ठता प्रदान की। 'बनी इसराईल' को 'किताब' दी और उन्हें इस के लिए चुना कि वे लोगों को अल्लाह के 'दीन' की ओर आमन्त्रित करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. फिर इस सिलसिले में (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हें एक स्पष्ट मार्ग पर कर दिया है; तो तुम उसी मार्ग पर चलो, उन लोगों की इच्छाओं पर न चलना जो जानते नहीं[१२]।

18. And now have We set thee (O Muhammad) on a clear road of (Our) commandment; so follow it, and follow not the whims of those who know not.

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

१९. अल्लाह के मुक़ाबले में वे तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आ सकते[१३]। और निश्चय ही ज़ालिम लोग[१४] एक-दूसरे के साथी (और मित्र) हैं; और अल्लाह उन का साथी है जो डरते हैं।

19. Lo! they can avail thee naught against Allah. And lo! as for the wrong-doers, some of them are friends of others; and Allah is the Friend of those who ward off (evil).

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

२०. ये सूझ की बातें हैं लोगों के लिए, और मार्ग-दर्शन और दयालुता उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं[१५]।

20. This is clear indication for mankind, and a guidance and a mercy for a folk whose faith is sure.

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

२१. क्या उन लोगों ने जिन्होंने बुराइयाँ की हैं यह समझ रक्खा है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, [१६]उन का जीना और मरना बराबर हो ? बुरा है जो हुक्म वे लगाते हैं !

21. Or do those who commit ill-deeds suppose that We shall make them as those who believe and do good works, the same in life and death? Bad is their judgement!

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

१२. अर्थात् तुम्हें जो राह दिखाई गई है और जिस 'शरीअत' अथवा धर्म-विधान की शिक्षा तुम्हें दी गई है तुम को उसी का पालन करना चाहिए। इन 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' में से किसी की बात को न मानो। तुम्हारा मामला केवल अल्लाह से है इन लोगों से नहीं है। जो काम 'बनी इसराईल' को सौंपा गया था वह तुम्हें सौंपा जा रहा है, परन्तु वे विभिन्न मार्गों पर चल पड़े और विभिन्न गरोह में बँट गये, अब 'दीन' के उसी सीधे और स्पष्ट मार्ग पर तुम खड़े किये गये हो ताकि तुम उस काम को पूरा करो जिस को 'बनी इसराईल' ने छोड़ दिया।

१३. अर्थात् यदि तुम ने इन की तुच्छ इच्छाओं का पालन किया और सत्य की ओर बुलाने और उन गुमराहियों से रोकने में कोई कमी की जिन से रोकने का आदेश तुम्हें दिया गया है, तो अल्लाह तुम्हें सख़्ती के साथ पकड़ेगा और ये लोग तुम्हें उस दिन की पकड़ से नहीं बचा सकेंगे।

१४. 'ज़ालिम' से यहाँ संकेत 'यहूद', 'नसारा' और 'मुश्रिकों' की ओर है।

१५. इस लिए 'ईमान' वालों को निश्चिन्त हो कर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए अल्लाह का सहारा उन के लिए बहुत है। सत्य के मामले में जाति, बिरादरी और नाते की परवा न होनी चाहिए।

१६. यह 'काफ़िरों' के एक विशेष आक्षेप का उत्तर दिया गया है। वे कहते थे कि यह आश्चर्य की बात तो हमारी समझ में नहीं आती कि जब हम मर कर मिट्टी में मिल जायेंगे तो हम को दोबारा खड़ा किया जायेगा और हम से हमारे कर्मों का हिसाब लिया जायेगा। हम ने तो किसी को मर कर जीवित होते नहीं देखा, यही थी उन की सब से बड़ी दलील और आज भी 'आख़िरत' के न मानने वालों की सब से बड़ी और आख़िरी दलील यही है।

"काफ़िरों" की बात का जवाब देते हुये कहा जा रहा है कि यदि मरने के बाद कोई जीवन नहीं है तो इस का मतलब यह हुआ कि अच्छे लोग हों या बुरे सब का परिणाम एक ही होने वाला है। अल्लाह को मानने वाले और भलाई के मार्ग पर चलने वाले भी मर कर सदैव के लिए विलुप्त हो जायेंगे और बुरे लोग भी। न नेक लोगों को उन के शुभ कर्मों का कोई बदला मिलने वाला है और न बुरे लोगों को कोई सज़ा दी जायेगी। यदि मनुष्य कुछ भी बुद्धि से काम ले तो वह कभी भी इस तरह नहीं सोच सकता। भलाई और बुराई दोनों समान नहीं तो उन का परिणाम एक कैसे हो सकता है। इस लिए न्याय, युक्ति और बुद्धि-संगत बात यही है कि वर्तमान जीवन के बाद भी कोई जीवन है जिस में मनुष्य अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला पायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. और अल्लाह ने आकाशों और धरती को 'हक़' के साथ पैदा किया,[१७] (ताकि उच्च उद्देश्यों की पूर्ति हो) और ताकि हर जीव को उस के किये का बदला दिया जाये। और लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा[१८]।

22. And Allah hath created the heavens and the earth with truth, and that every soul may be repaid what it hath earned. And they will not be wronged.

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

२३. क्या तुम ने उस व्यक्ति को भी देखा जिस ने अपना 'इलाह' (पूज्य) अपनी इच्छा को बना रक्खा है, और अल्लाह ने उसे जानते-बूझते मार्ग से भटका दिया,[१९] और उस के कान और दिल पर ठप्पा लगा दिया, और उस की आँख पर परदा डाल दिया[२०] ? फिर अल्लाह के बाद कौन उसे मार्ग पर ला सकता है ? तो क्या तुम सोचते नहीं।

23. Hast thou seen him who maketh his desire his god, and Allah sendeth him astray purposely, and sealeth up his hearing and his heart, and setteth on his sight a covering? Then who will lead him after Allah (hath condemned him)? Will ye not then heed?

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾

२४. ये लोग कहते हैं : जो कुछ भी है बस हमारा यह सांसारिक जीवन है: हम मरते और जीते हैं, और हमें तो बस समय (काल) विनष्ट करता है;[२१] इन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं; ये लोग केवल अटकलें दौड़ाते हैं।

24. And they say: There is naught but our life of the world; we die and we live, and naught destroyeth us save time; when they have no knowledge whatsoever of (all) that; they do but guess.

وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾

२५. और जब हमारी खुली-खुली 'आयतें' इन के सामने पढ़ी जाती हैं तो इन की हुज्जत बस यही होती है कि कहते हैं : लाओ हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) यदि तुम सच्चे हो[२२]।

25. And when Our clear revelations are recited unto them, their only argument is that they say: Bring (back) our fathers then, if ye are truthful.

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

२६. कहो : अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है, फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है,[२३] फिर वही तुम्हें 'क़ियामत' के दिन जिस में सन्देह नहीं इकट्ठा करेगा। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते[२४]।

26. Say (unto them, O Muhammad): Allah giveth life to you, then causeth you to die, then gathereth you unto the Day of Resurrection whereof there is no doubt. But most of mankind know not.

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع

१७. ये धरती और आकाश बच्चों का कोई घरौंदा नहीं हैं बल्कि अल्लाह ने इन्हें उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया है। ये हक़ और इन्साफ़ पर क़ायम हैं। जो लोग यह समझते हैं कि मनुष्य नेकी करे या बुराई अन्त में वह मिट्टी में मिल जायेगा, ऐसा कोई समय नहीं आने का कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जाये, तो उन की इस धारणा का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं कि यह विशाल विश्व उद्देश्यहीन है और इस की व्यवस्था सर्वथा अनृत पर आधारित है। ज़ाहिर है ऐसा सोचना घोर अन्याय और अन्धता की बात है।

१८. अर्थात् लोगों का हक़ कदापि मारा नहीं जायेगा। उन्हें उन की कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। यहाँ कमाई से अभिप्रेत धन-संपत्ति नहीं बल्कि वास्तविक कमाई वही है जिस के कारण मनुष्य अल्लाह के यहाँ या तो सज़ा का भागी होगा या पुरस्कार का अधिकारी ठहरेगा।

१९. दे० सूरा अन-निसा फ़ुटनोट ४९; अल-अनआम फ़ुटनोट १३, ३५।

२०. आँख, कान सब-कुछ पाने के बाद भी उस ने गुमराही को अपनाया।

२१. अर्थात् मरना-जीना यह समय का चक्र है, न 'आख़िरत' आने वाली है और न हमें कोई दोबारा जीवित कर के उठाने वाला है।

२२. हालाँकि जब नियत समय आ जायेगा, तो उन्हें और उन के बाप-दादा सभी को उठा खड़ा किया जायेगा।

२३. अर्थात् जीवन और मरण का मालिक समय नहीं है बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है जीवित रखता है और जिसे मारना चाहता है मौत देता है।

२४. 'काफ़िरों' का कहना था कि हम तो उस समय मानेंगे कि मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन है जबकि तुम हमारे पूर्वजों को ले आओ (दे० आयत २५) यहाँ जवाब में यह बात कही जा रही है कि 'क़ियामत' में तुम सब को इकट्ठा कर दिया जायेगा। यह मृत्यु और जीवन तो इस लिए है कि मनुष्य की परीक्षा हो, जब अल्लाह मुरदों को जीवित कर के उठायेगा तो चमत्कार दिखाने के लिए नहीं बल्कि वह तो फ़ैसले का दिन होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. और अल्लाह ही का है राज्य आकाशों और धरती का;[२५] और जिस दिन वह घड़ी ('क़ियमत') कायम होगी, उस दिन मिथ्यावादी घाटा उठायेंगे।

27. And unto Allah belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth; and on the day when the Hour riseth, on that day those who follow falsehood will be lost.

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٢٧

२८. और तुम प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल पड़ा हुआ देखोगे,[२६] हर समुदाय अपनी किताब (कर्म-पत्र) की ओर बुलाया जायेगा[२७] (कहा जायेगा) : आज तुम्हें बदला दिया जायेगा जैसा कुछ तुम करते थे।

28. And thou wilt see each nation crouching each nation summoned to its record, (And it will be said unto them): This day ye are requited what ye used to do.

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٨

२९. यह हमारी किताब (जिस में तुम्हारे कर्म अंकित हैं) तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रही है। निस्सन्देह हम लिखवाते जाते थे जो कुछ तुम करते थे[२८]।

29. This Our Book pronounceth against you with truth. Lord! We have caused (all) that ye did to be recorded.

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٩

३०. तो जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूलकर्म किये, उन्हें उन का 'रब' अपनी 'रहमत' (दयालुता की छाया) में दाखिल करेगा। यही स्पष्ट सफलता है।

30. Then, as for those who believed and did good works, their Lord will bring them in unto His mercy. That is the evident triumph.

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝٣٠

३१. और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया (उन से कहा जायेगा) : क्या हमारी 'आयतें' तुम्हारे सामने नहीं पढ़ी जाती थीं ? तो तुम ने अपने को बड़ा समझा और तुम अपराधी लोग थे[२९]।

31. And as for those who disbelieved (it will be said unto them): Were not Our revelations recited unto you? But ye were scornful and became a guilty folk.

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٣١

२५. धरती और आकाश पर उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त है। ऐसा कोई नहीं जो अल्लाह को न्याय और अदालत करने से रोक सके।

२६. यहाँ मूल ग्रन्थ में 'जासिया' (جاثية) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है इकट्ठा होना और घुटनों के बल गिर जाना। उस दिन सब इकट्ठे होंगे और बिल्कुल विवश होंगे।

२७. हर गरोह और उस के हर व्यक्ति को उस के कर्मों का अभिलेख जिस में उस के भले-बुरे कर्मों का उल्लेख होगा दे दिया जायेगा।

२८. अर्थात् तुम्हारा यह कर्म-लेख तुम्हारे कर्मों की ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। तुम्हारे कर्म, तुम्हारी भावनायें और विचार इस में अंकित हैं। तुम्हारी नेकी-बदी सब कुछ रिकार्ड (Record) हो रही थी। उसी के अनुसार आज के दिन तुम्हारा फैसला होगा।

२९. यहाँ अपराधी उन लोगों को कहा गया है जो अल्लाह की धरती पर अल्लाह का दिया हुआ खाते हैं परन्तु उस के आगे सिर नहीं झुकाते, उस के आदेशों से मुँह मोड़ते हैं। ऐसे लोग अपराधी हैं चाहे उन्हों ने दुनिया में कोई ऐसा काम किया हो या न किया हो जिसे लोग अपराध कहते हैं जैसे चोरी, क़त्ल आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. और जब कहा गया : निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है, और उस (क़ियामत की) घड़ी में सन्देह नहीं, तो तुम कहते थे : हम नहीं जानते कि वह ('क़ियामत' की) घड़ी क्या है। हमें तो बस एक ख़याल सा होता है, और हमें विश्वास नहीं।

32. And when it was said: Lo! Allah's promise is the truth, and there is no doubt of the Hour's coming, ye said: We know not what the Hour is. We deem it naught but a conjecture, and we are by no means convinced.

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ
إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ٣٢

३३. और ज़ाहिर हो गईं उन पर बुराइयां उन कर्मों की जो वे करते थे, और उसी चीज़ ने उन्हें आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे।

33. And the evils of what they did will appear unto them and that which they used to deride will befall them.

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم
مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ٣٣

३४. और कहा जायेगा : आज हम तुम्हें भुला देंगे, जिस तरह तुम ने अपने इस दिन की भेंट (मुलाक़ात) को भुला रक्खा था;[30] और तुम्हारा ठिकाना ('जहन्नम' की) आग है, और तुम्हारा कोई सहायक नहीं।

34. And it will be said: This day We forget you, even as ye forgot the meeting of this your day; and your habitation is the Fire, and there is none to help you.

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ
هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ٣٤

३५. यह इस लिए कि तुम ने अल्लाह की 'आयतों' का माज़क़ बनाया था, और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाला[31]। तो आज ये लोग न उस (आग) से निकाले जायेंगे, और न इन्हें इस का अवसर मिलेगा कि मना लें।

35. This, forasmuch as ye made the revelations of Allah a jest, and the life of the world beguiled you. Therefor this day they come not forth from thence, nor can they make amends.

ذَٰلِكُم بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا
وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا
يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ٣٥

३६. तो प्रशंसा अल्लाह, आकाशों के 'रब' और धरती के 'रब' और सारे संसार के 'रब' के लिए है।

36. Then praise be to Allah, Lord of the heavens and Lord of the earth, the Lord of the Worlds!

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ٣٦

३७. और उसी के लिए बड़ाई है आकाशों और धरती में, और वही प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

37. And unto Him (alone) belongeth majesty in the heavens and the earth, and He is the Mighty, the Wise.

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٣٧

३०. उन्हें भुला देने का अर्थ यह है कि उस दिन अल्लाह उन पर दया-दृष्टि नहीं डालेगा, उन के साथ ऐसा मामला करेगा जैसे भूले हुये किसी व्यक्ति के साथ किया जाता है।

३१. अर्थात् तुम ने दुनिया ही को सब-कुछ समझा, 'आखिरत' को भूले रहे। हालांकि असल चीज़ सांसारिक सुख और आराम नहीं बल्कि वे नैतिक मान्यतायें ही थीं जिन की तुम उपेक्षा करते रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६–अल-अह़क़ाफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' की 'आयत' २१ में 'अल-अह़क़ाफ़' का नाम आया है इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अल-अह़क़ाफ़' रक्खा गया। 'अल-अह़क़ाफ़' से अभिप्रेत अरब का दक्षिणी भू-भाग है। यह मरुभूमि है। किसी समय में यह हरा-भरा मैदान था इस में 'आद' जाति के लोग आबाद थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब अवतीर्ण हुई इस का उल्लेख सूरा ४० (अल-मोमिन) में किया जा चुका है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत 'सूरा' में अहंकारी लोगों के लिए इस बात की चेतावनी है कि उन्हें अपने करतूतों का बदला मिल कर रहेगा; क़ुरआन ऐसे लोगों के लिए सर्वथा डरावा और चेतावनी है। इस 'सूरा' का मूल विषय यही है।[1]

यह 'सूरा' हा० मीम० सिलसिले की अन्तिम सूरा है। इस सिलसिले (Series) की सर्वप्रथम सूरा, अल-मोमिन है।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में 'किताब' के अवतरण का उल्लेख है फिर 'शिर्क' का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है फिर उस नीति का वर्णन किया गया है जो 'मुश्रिक' और 'काफ़िर' लोगों ने अल्लाह की 'आयतों' और उस के 'रसूल' के साथ अपना रक्खी थी। और फिर उन के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है और उन के सामने मानवीय जीवन के दो नमूनें प्रस्तुत किये गये है। यदि धर्म-विरोधी न्याय और बुद्धि से काम लें तो सरलतापूर्वक इस का निर्णय कर सकते हैं कि दोनों में से कौन-सा चरित्र अपनाने योग्य है।

फिर इस के बाद ह़ज़रत हूद अ० की जाति वालों की तबाही का क़िस्सा बयान किया गया है कि किस तरह से उन के अहंकार और उन की सरकशी ने उन्हें मिटा कर रख दिया। जब उन पर अल्लाह की यातना आई तो उन की सूझ-बूझ और उन की समस्त युक्तियाँ निरर्थक सिद्ध हुईं।

फिर उन 'जिन्नों' के 'ईमान' लाने का उल्लेख किया गया है जिन्हों ने नबी सल्ल० को किसी जगह क़ुरआन पढ़ते देखा था। जब आप (सल्ल०) क़ुरआन पढ़ चुके, तो उन्हों ने अपनी जाति वालों को जा कर वह सन्देश सुनाया जो उन्हें क़ुरआन में मिला था।

अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप धैर्य्य से काम लें जिस तरह अगले 'रसूलों' ने धैर्य्य और साहस से काम लिया था। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिस का इन से वादा किया जा रहा है और ये इन्कार किये चले जा रहे हैं तो इन्हें ऐसा लगेगा मानो ये केवल दिन में से एक घड़ी ही ठहरे रहे हैं।

१. दे० आयत ३, ३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अह्क़ाफ़
(मक्का में उतरी—'आयतें' ३५)

THE WIND-CURVED SANDHILLS
Revealed at Mecca

سورة الاحقاف

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

* १. हा० मीम०।[1]

1. Ha. Mim.

حٰمٓ ①

२. इस 'किताब' का अवतरण अल्लाह, प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी की ओर से है।[2]

2. The revelation of the Scripture is from Allah, the Mighty, the Wise.

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

३. हम ने आकाशों और धरती को और जो-कुछ इन के बीच है केवल हक़ के साथ, और एक नियत समय के लिए पैदा किया है[3] और जिन लोगों ने 'कुफ़' (का मार्ग) अपनाया है उन्हें जिस चीज़ से डराया जाता है उस से वे किनारा ही खींचते हैं।

3. We created not the heavens and the earth and all that is between them save with truth, and for a term appointed. But those who disbelieve turn away from that whereof they are warned.

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا
مُعْرِضُوْنَ ③

४. कहो (उन से, हे मुहम्मद!) : क्या तुम ने उन्हें देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्हों ने धरती का कौन-सा भाग बनाया है। या आकाशों (के बनाने) में उन की कोई शिरकत है[4]? मेरे पास (सबूत में) इस ('क़ुरआन') से पहले की कोई 'किताब' लाओ,[5] या कोई और इल्मी सबूत,[6] यदि तुम सच्चे हो।

4. Say (unto them, O Muhammad): Have ye thought on all that ye invoke beside Allah? Show me what they have created of the earth. Or have they any portion in the heavens? Bring me a Scripture before this (Scripture), or some vestige of knowledge (in support of what ye say), if ye are truthful.

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ اِيْتُوْنِيْ
بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ
عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ④

* यहाँ से छब्बीसवाँ पारा (Part XXVI) शुरू होता है।

१. दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १।
२. दे० सूरा अल-जासिया फ़ुटनोट २।
३. दे० सूरा अल-जासिया आयत २२।
यह दुनिया निष्प्रयोजन और बे नतीजा नहीं पैदा की गई है। विश्व की विशाल व्यवस्था बड़ी ही 'हिकमत' और युक्ति से चल रही है। यह इस बात का खुला प्रमाण है कि यह विश्व-व्यवस्था निरुद्देश्य कदापि नहीं है।
दूसरी बात यह बताई गई कि यह सृष्टि सदा बनी रहने वाली नहीं है। एक दिन इस विश्व का अन्त हो जायेगा और वह समय आ जायेगा जब कि अल्लाह लोगों से उन के कर्मों का हिसाब लेगा। भौतिकवादियों (Materialists) का यह मत रहा है कि यह विश्व सदैव से है और सदैव रहेगा। परन्तु धर्म के अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान ने भी यह बात सिद्ध कर दी है कि यह विश्व-व्यवस्था सार्वकालिक कदापि नहीं है। यहाँ की समस्त शक्तियाँ सीमित हैं एक दिन इन का लोप हो जायेगा। यह सृष्टि सदैव से नहीं है यदि ऐसा होता तो यह कभी की शक्तिहीन हो चुकी होती। यह दुनिया आज से बहुत पहले नष्ट हो जाती।
४. अर्थात् जिन देवी-देवताओं पर तुम्हें भरोसा है कि वे तुम्हारे काम आते हैं और तुम उन्हें पुकारते और उन की पूजा करते हो, बताओ धरती और आकाश में उन्हों ने क्या पैदा किया है? आखिर तुम उन को किस वजह से अल्लाह का शरीक ठहराते हो?
५. दे० आयत १२।
मतलब यह है कि क़ुरआन से पहले जो 'किताबें' अल्लाह की ओर से उतरी हैं क्या उन में से तुम कोई ऐसी किताब ला सकते हो जिन में बताया गया हो कि इन तुम्हारे देवी-देवताओं में ईश्वरीय गुण पाये जाते हैं और ये अल्लाह के प्रभुत्व में शरीक हैं।
६. वास्तविकता के जानने के दो ही साधन हैं या तो आदमी के पास अल्लाह की कोई किताब हो या फिर उसे उस का ज्ञान प्राप्त हो। केवल अनुमान और अटकल से वास्तविकता के बारे में कोई बात नहीं कही जा सकती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. और उस व्यक्ति से बढ़ कर कौन पथभ्रष्ट हो सकता है, जो अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारता है जो 'क़ियामत' तक भी उस की दुआ को पूरी करने वाले नहीं,[७] और वे तो उन की दुआ से बे-ख़बर रहते हैं,

5. And who is further astray than those who, instead of Allah, pray unto such as hear not their prayer until the Day of Resurrection, and are unconscious of their prayer:

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ
اللّٰهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غٰفِلُونَ ⑤

६. और जब ('क़ियामत' के दिन) इकट्ठा किये जायेंगे तो वे उन ('मुश्रिकों') के शत्रु होंगे, और उन की 'इबादत' का इन्कार करेंगे[८]।

6. And when mankind are gathered (to the Judgement) will become enemies for them, and will become deniers of having been worshipped.

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَ
كَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِينَ ⑥

७. और जब हमारी खुली-खुली 'आयतें' उन्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वे 'कुफ़्' करने वाले सत्य के प्रति, जब कि वह उन के पास आ चुका, कहते हैं : यह खुला जादू है[९]।

7. And when Our clear revelations are recited unto them, those who disbelieve say of the Truth when it reacheth them: This is mere magic.

وَإِذَا تُتْلَى عَلَيْهِمْ آيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هٰذَا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑦

८. क्या कहते हैं : उस ने इसे स्वयं गढ़ लिया है ? कहो (हे मुहम्मद !) : यदि मैंने इसे स्वयं गढ़ा है,[१०] तो अल्लाह के आगे तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते[११]। इस ('क़ुरआन') के बारे में जो बातें तुम बनाते हो वह भली-भांति जानता है। और वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से काफ़ी है। और वह बड़ा ही क्षमाशील और दयामय है।

8. Or say they: He hath invented it! Say (O Muhammad): If I have invented it, still ye have no power to support me against Allah. He is best aware of what ye say among yourselves concerning it. He sufficeth for a witness between me and you. And He is the Forgiving, the Merciful.

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا
تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا
تُفِيضُونَ فِيهِ كَفٰى بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَ
بَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

९. कहो (हे मुहम्मद !) : मैं कोई नया 'रसूल' नहीं हूँ, और न मैं यह जानता हूँ कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और न यह कि क्या किया जायेगा तुम्हारे साथ[१२]। मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी ओर 'वह्य' की जाती है और मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ।

9. Say: I am no new thing among the messengers (of Allah), nor know I what will be done with me or with you. I do but follow that which is inspired in me, and I am but a plain warner.

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي
مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا
يُوحٰى إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑨

७. अर्थात् इस से बढ़ कर मूर्खता और पथ-भ्रष्टता की बात और क्या होगी कि आदमी उन को पुकारता रहे जिन्हें यह भी ख़बर न हो कि उन्हें कोई पुकार रहा है और जिन्हें यह अधिकार ही न हो कि वे कोई कार्रवाई कर सकें।

८. 'क़ियामत' के दिन वे सभी 'मुश्रिकों' के दुश्मन होंगे। जिन को उन्होंने पूज्य समझा था वे कहेंगे कि हम पर इन के करतूतों की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

९. दे० सूरः सबा आयत ४३।
इन का कहना यह है कि क़ुरआन सुन कर लोग यदि प्रभावित होते हैं तो यह इस लिए नहीं कि वह अल्लाह का 'कलाम' है बल्कि इस लिए कि वह जादू है।

१०. एक तरफ़ तो नबी सल्ल० के बारे में 'काफ़िरों' का यह कहना था कि यह व्यक्ति बावला और दीवाना हो गया है दूसरी तरफ़ वे यह भी कहते कि इस व्यक्ति ने स्वयं यह कलाम गढ़ लिया है और कभी कहते कि कोई और गढ़ कर इस को देता है। हालांकि विक्षिप्त या बावला व्यक्ति कलाम गढ़ने का सामर्थ्य नहीं रखता। और यदि कोई गढ़ कर देने वाला होता तो वह स्वयं छिपा कैसे रह सकता था। झूठा इलज़ाम लगाने वाले ऐसी ही परस्पर विरोधी बातें किया करते हैं।

११. अर्थात् यदि मैं यों ही झूठ-मूठ अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर कहता हूँ कि यह अल्लाह का कलाम है तो इस से बड़ा अपराध और क्या हो सकता है फिर तो कोई न होगा जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचा सके। परन्तु यदि यह 'कलाम' अल्लाह की ओर से है और तुम इसे मानने से इन्कार करते हो, तो यह भी बहुत बड़ा अपराध है। इस लिए तुम्हें गम्भीरतापूर्वक उस 'सत्य' पर विचार करना चाहिए जिसे ले कर मैं तुम्हारे पास आया हूँ।

१२. अर्थात् मुझे परोक्ष का ज्ञान नहीं। मैं नहीं जानता कि अल्लाह जल्द 'ईमान' वालों को विजय प्रदान करेगा या अभी ज़्यादा दिनों तक तकलीफ़ों और संकटों का सामना करना होगा। परोक्ष का ज्ञान केवल अल्लाह को है, मैं तो केवल एक 'रसूल' हूँ। तुम्हारी यह धारणा सही नहीं कि जो अल्लाह का 'रसूल' हो उसे परोक्ष का ज्ञान भी होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. कहो : तुम ने कुछ सोचा भी : यदि यह ('क़ुरआन') अल्लाह ही के यहाँ का हुआ फिर तुम ने इसे मानने से इन्कार कर दिया, और 'इसराईल' की सन्तान में से एक गवाह ने ऐसी ही ('किताब') की गवाही भी दे दी और वह 'ईमान' भी ले आया, और तुम घमण्ड में पड़े रह गये तब[13] ? अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता[14]।

10. Bethink ye: If it is from Allah and ye disbelieve therein, and a witness of the Children of Israel hath already testified to the like thereof and hath believed, and ye are too proud (what plight is yours)? Lo! Allah guideth not wrong-doing folk.

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَ
كَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِي
إِسْرَاءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

११. और 'कुफ़्' करने वाले 'ईमान' लाने वालों के प्रति कहते हैं : यदि यह उत्तम होता, तो ये लोग इस की ओर हम से अग्रसर न रहते[15]। और जब वे इस ('क़ुरआन') से मार्ग पर नहीं आये, तो अब कहेंगे ही : यह तो पुराना ढकोसला है।

11. And those who disbelieve say of those who believe: If it had been (any) good, they would not have been before us in attaining it. And since they will not be guided by it, they say: This is an ancient lie;

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ
كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا
بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾

१२. और इस से पहले मूसा की 'किताब' रही है, नायक और दयालुता; और यह ('क़ुरआन' उस की) तसदीक़ करने वाली 'किताब' है अरबी भाषा में,[16] ताकि ज़ुल्म करने वालों को सचेत करे[17] और शुभसूचना[18] है उत्तमकारों के लिए।

12. When before there was the Scripture of Moses, an example and a mercy; and this is a confirming Scripture in the Arabic language, that it may warn those who do wrong and bring good tidings for the righteous.

وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ
وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾

१३. निश्चय ही जिन लोगों ने कहा : हमारा 'रब' अल्लाह है, फिर वे क़ायम रहे,[19] तो उन्हें न तो कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।

13. Lo! those who say: Our Lord is Allah, and thereafter walk aright, there shall no fear come upon them neither shall they grieve.

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾

१४. ये 'जन्नत' (में रहने) वाले लोग हैं, उस में सदैव रहेंगे, यह बदला होगा उस का जो वे करते थे।

14. Such are rightful owners of the Garden, immortal therein, as a reward for what they used to do.

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

१३. अर्थात् तुम्हें सोचना चाहिए कि यदि यह वास्तव में अल्लाह की किताब हुई और तुम ने इस का इन्कार कर दिया तो तुम्हारा परिणाम क्या होगा ? इस किताब की सच्चाई पर 'बनी इसराईल' के एक व्यक्ति ने गवाही भी दे दी जिस से मालूम हुआ कि पिछली आसमानी किताब से भी इस किताब की पुष्टि होती है।

१४. अर्थात् ज़ालिमों को अल्लाह उन के ज़ुल्म के कारण गुमराही में भटकने के लिए छोड़ देता है वह जबरदस्ती किसी को सीधे मार्ग पर नहीं लाता।

१५. मक्का के सरदार कहते थे कि यदि यह 'इस्लाम' कोई अच्छा धर्म होता तो सब से पहले हम इस की ओर बढ़ते। हम बड़े आदमी हैं, भले-बुरे की सब से अधिक परख हमें हैं।

१६. अर्थात् तुम इस किताब को पुराना ढकोसला कहते हो हालांकि यह कोई अनोखी किताब नहीं है। इस की शिक्षायें वही हैं जो मूसा (अ०) पर उतरी थीं।

१७. दे० आयत १७-२०।

१८. दे० आयत १३-१६।

१९. दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा आयत ३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. और[२०] हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। उस की माँ उसे (पेट में) लिये-लिये कष्ट उठाती रही, और कष्ट के साथ उसे जना, और उस का गर्भ की अवस्था में रहना और उस का दूध छूटना (कम-से-कम) तीस मास (ढाई वर्ष) में होता है,[२१] यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और चालीस वर्ष (की आयु) को पहुँचा, तो कहा : 'रब' ! मुझे इसमें लगाये रख कि तेरी उस कृपा पर जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की है कृतज्ञता दिखलाऊँ, और यह कि अच्छा काम करूँ जो तुझे पसन्द आये। और मेरे लिए मेरी सन्तति में भी भलाई रखदे[२२] मैंने तेरी सेवा में 'तौबा' की, और निश्चय ही मैं 'मुस्लिमों' में से हूँ।

15. And We have commanded unto man kindness toward parents. His mother beareth him with reluctance, and bringeth him forth with reluctance, and the bearing of him and the weaning of him is thirty months, till, when he attaineth full strength and reacheth forty years, he saith: My Lord! Arouse me that I may give thanks for the favour wherewith Thou hast favoured me and my parents, and that I may do right acceptable unto Thee. And be gracious unto me in the matter of my seed. Lo! I have turned unto Thee repentant, and lo! I am of those who surrender (unto Thee).

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ
وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ
إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي
ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

१६. ये वे लोग हैं कि हम उन के अच्छे कामों को जो उन्होंने किये क़बूल कर लेंगे, और उन की बुराइयों को टाल जायेंगे[२३]। वे 'जन्नत' वालों में होंगे। बिल्कुल सच्चा वादा है जो उन से किया जाता है।

16. Those are they from whom We accept the best of what they do and overlook their evil deeds. (They are) among the owners of the Garden. This is the true promise which they were promised (in the world).

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا
عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ
وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

१७. और[२४] वह व्यक्ति जिस ने अपने माता-पिता को कहा : धिक् है तुम पर ! क्या तुम मुझे वादा देते हो कि मैं (जीवित कर के दोबारा) निकाला जाऊँगा हालांकि मुझ से पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं (और किसी को मर कर जीते नहीं देखा गया) ? और वे दोनों (उस के माता-पिता) अल्लाह से फ़रियाद करते हैं (और लड़के से कहते हैं) : अफ़सोस है तेरे हाल पर ! तू 'ईमान' ले आ ! निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। तो वह कहता है : ये तो बस अगले लोगों की कहानियाँ हैं :

17. And whoso saith unto his parents: Fie upon you both! Do ye threaten me that I shall be brought forth (again) when generations before me have passed away? And they twain cry unto Allah for help (and say): Woe unto thee! Believe! Lo! the promise of Allah is true. But he saith: This is naught save fables of the men of old.

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا
أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ
الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ
اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ
فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

२०. मक्का वालों को सत्य का आमन्त्रण देने और उन के आक्षेपों का उत्तर देने के बाद अब उन के सामने मानवीय जीवन के दो नमूने प्रस्तुत किये जा रहे हैं। अब यह लोगों का अपना काम है कि वे फ़ैसला करें कि दोनों में से कौन-सा चरित्र उत्कृष्ट और उत्तम है।

२१. दे० सूरा लुक़मान फ़टनोट ११।

२२. नेक आदमी अपनी औलाद को भी नेक ही देखना चाहेगा। वह यही कामना करेगा कि उस की औलाद भी नेक रास्ते पर चले। वह अल्लाह से प्रार्थना भी करेगा कि उसे अपने ध्येय में सफलता प्राप्त हो।

२३. अर्थात् उन्हें क्षमा कर देते हैं।

२४. यहाँ से मानवीय चरित्र का दूसरा नमूना पेश किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. ये वे लोग हैं जिन पर उन गरोहों के साथ (यातना की) बात साबित हो कर रही जो 'जिन्न' और मनुष्य में से इन से पहले गुज़र चुके हैं[२५]। निश्चय ही ये घाटा उठाने वाले हैं[२६]।

18. Such are those on whom the Word concerning nations of the Jinn and mankind which have passed away before them hath effect. Lo! they are the losers.

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

१९. लोगों ने जैसा काम किया होगा उस के अनुसार हर एक के दरजे होंगे, और यह इस लिये कि उस को उन्हें उन के समस्त कर्म चुका देना है; और उन के साथ अन्याय न होगा।

19. And for all there will be ranks from what they do, that He may pay them for their deeds! and they will not be wronged.

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

२०. और जिस दिन 'कुफ़्' करने वाले ('जहन्नम' की) आग के सामने पेश किये जायेंगे (तो उन से कहा जायेगा) : तुम ने अपने सांसारिक जीवन में अपनी अच्छी-अच्छी चीज़ें गँवा दीं और उन का मज़ा लूट चुके। तो आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जायेगी इस के बदले में कि तुम धरती में नाहक़ अपने को बड़ा समझते थे और इस के बदले में कि तुम अवज्ञा करते थे।

20. And on the day when those who disbelieve are exposed to the Fire (it will be said): Ye squandered your good things in the life of the world and sought comfort therein Now this day ye are rewarded with the doom of ignominy because ye were disdainful in the land without a right, and because ye used to transgress.

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

२१. याद करो 'आद' के भाई को[२७] जब उस ने अपनी जाति वालों को 'अल-अहक़ाफ़' में सचेत किया[२८]—और उस के आगे और उस के पीछे भी सचेत करने वाले गुज़र चुके हैं—(उस ने कहा) कि अल्लाह के सिवा किसी की 'इबादत' न करो। मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।

21. And make mention (O Muhammad) of the brother of 'Aad' when he warned his folk among the wind-curved sandhills — and verily warners came and went before and after him — saying: Serve none but Allah. Lo! I fear for you the doom of a tremendous Day.

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾

२२. उन्हों ने कहा : क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम को हमारे 'इलाहों' (पूज्य देवताओं) से फेर दे? अच्छा तो हम पर ले आ जिस (यातना) की तू हमें धमकी देता है यदि तू सच्चे लोगों में से है[२९]।

22. They said: Hast thou come to turn us away from our gods? Then bring upon us that wherewith thou threatenest us, if thou art of the truthful.

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٢﴾

२५. अर्थात् ऐसे लोगों का परिणाम वही होगा जो इस नीति के अपनाने वालों के लिए, चाहे वे मनुष्य हो या 'जिन्न' निश्चित हो चुका है।

२६. इस लिए कि सांसारिक जीवन का तो अन्त हो चुका होगा और अपनी 'आख़िरत' भी उन्हें तबाह मिलेगी।

२७. अर्थात् हज़रत हूद अ०। अरबी भाषा के मुहावरे में किसी क़बीले के आदमी को उस क़बीले का भाई कहते हैं। यहाँ मक्का के 'काफ़िरों' को बताया जा रहा है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई नये 'नबी' नहीं हैं इस से पहले भी बिगड़े हुये लोगों को राह पर लाने के लिये 'नबी' आते रहे हैं।

२८. 'अल-अहक़ाफ़' से अभिप्रेत अरब का दक्षिणी भू-भाग है। यह मरु-भूमि है। किसी समय में यह हरा-भरा मैदान था। इस में 'आद' जाति के लोग आबाद थे। अरब के लोग 'आद' से भली-भाँति परिचित थे; 'आद' के क़िस्से इन के यहाँ मशहूर थे। 'आद' को अल्लाह ने मिटा कर रख दिया केवल उन के क़िस्से और कहानियाँ शेष रह गईं।

२९. जब तू यातना नहीं ला रहा है, तो यह इस बात का सबूत है कि तू झूठा है और यों ही झूठ-मूठ कहता है कि मुझे 'रसूल' बना कर भेजा गया है। दे० सूरा हूद आयत ३२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. उस ने कहा : ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तो तुम्हें (वह सन्देश) पहुँचाता हूँ जो दे कर मुझे भेजा गया है, परन्तु मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम नादानी करने वाले लोग हो।

23. He said: The knowledge is with Allah only. I convey unto you that wherewith I have been sent, but I see you are a folk that know not.

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

२४. फिर जब उन्हों ने उसे एक घटा के रूप में अपने मैदानों की ओर आते देखा, तो कहने लगे : यह घटा उठी है जो हम पर वर्षा करेगी। जी नहीं, यह तो वह है जिस की तुम ने जल्दी मचा रक्खी थी, आँधी है दुःखदायिनी यातना लिये हुये।

24. Then, when they beheld it as a dense cloud coming toward their valleys, they said: Here is a cloud bringing us rain. Noy, but it is that which ye did seek to hasten, a wind wherein is painful torment,

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

२५. हर चीज़ को अपने 'रब' के हुक्म से तहस-नहस किये डाल रही है। तो वे ऐसे हो गये कि उन के निवास-स्थानों के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई देता[३०]। इस तरह हम बदला देते हैं अपराधी लोगों को।

25. Destroying all things by commandment of its Lord. And morning found them so that naught could be seen save their dwellings. Thus do We reward the guilty folk.

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

२६. और हम ने उन के बस में वह-कुछ कर रक्खा था जो (हे मक्का वालो !) तुम्हारे बस में नहीं किया, और हम ने उन्हें कान और आँखें और दिल दे रक्खे थे; फिर न तो उन के कान उन के कुछ काम आये और न उन की आँखें और न उन के दिल[३१] जब कि वे अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार करते थे; और उसी चीज़ ने उन्हें आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाते थे।

26. And verily We had empowered them with that wherewith We have not empowered you, and had assigned them ears and eyes and hearts; but their ears and eyes and hearts availed them naught since they denied the revelations of Allah; and what they used to mock befell them.

وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُم مِّن شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٢٦﴾

२७. और हम बस्तियों को जो तुम्हारे गिर्द थीं तबाह कर चुके हैं,[३२] और हम ने तरह-तरह से अपनी 'आयतें' पेश कीं, कदाचित् वे पलटें।

27. And verily We have destroyed townships round about you, and displayed (for them) Our revelations, that haply they might return.

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

३०. अर्थात् अज़ाब बादल के रूप में आया। 'आद' जाति के लोग बहुत खुश हुये, समझे कि ज़ोर की घटा उठी है अवश्य वर्षा होगी। परन्तु वह प्रचण्ड वायु और आँधी थी जो निरन्तर सात दिन और सात रात चलती रही। जिस चीज़ पर से उस का गुज़र हुआ वह सूख कर रह गई। खेती, वृक्ष और मनुष्य सब तबाह हो कर रह गये।

३१. मक्का वालों को अपने धन-वैभव और अपनी बड़ाई का बड़ा गर्व था। यहाँ उन से कहा जा रहा है कि 'आद' तुम से कहीं ज्यादा शक्तिशाली थे परन्तु जब उन्हों ने अल्लाह की 'आयतों' का इन्कार किया, तो उन्हें अल्लाह की पकड़ से कोई चीज़ न बचा सकी। उन का धन-वैभव उन के कुछ काम न आ सका। उन की सूझ-बूझ और उन की समस्त युक्तियां धरी-की-धरी रह गईं।

३२. अर्थात् हमारा यह मामला केवल 'आद' के साथ नहीं हुआ है बल्कि तुम्हारे आस-पास की कितनी ही जातियों के साथ यह मामला पेश आ चुका है। सबा, फिर 'समूद' वाले, उन के बाद मदयन के लोगों और फिर लूत (अ०) की जाति वालों के साथ यही-कुछ पेश आया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. फिर क्यों उन्हों ने उस की सहायता नहीं की जिन को उन लोगों ने इस ध्येय से 'इलाह' (पूज्य) बना रक्खा था कि उन से अल्लाह के यहाँ पहुँच हो सकती है ? बल्कि वे उन से खो गये[३३]। और यह उन का ढकोसला था,[३४] और वह-कुछ जो वे गढ़ते थे।

28. Then why did those whom they had chosen for gods as a way of approach (unto Allah) not help them? Nay, but they did fail them utterly. And (all) that was their lie, and what they used to invent.

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾

२९. और याद करो जब हम ने कुछ 'जिन्नों' का रुख़ तुम्हारी ओर फेर दिया कि वे 'क़ुरआन' सुन लें, तो जब वे उस के पास पहुँचे, तो (आपस में) कहने लगे : चुपके रहो (और कान लगा कर सुनो) ! फिर जब पाठ समाप्त हो चुका, तो वे अपनी जाति वालों की ओर सचेत करने वाले बन कर लौटे[३५]।

29. And when We inclined towards thee (Muhammad) certain of the Jinn, who wished to hear the Qur'an and, when they were in its presence, said: Give ear! and when it was finished, turned back to their people, warning.

وَاِذْ صَرَفْنَا اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا اَنْصِتُوا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٢٩﴾

३०. उन्हों ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! हम ने एक 'किताब' सुनी जो मूसा के बाद उतरी है, उस की तसदीक़ करती है जो उस से आगे है,[३६] सत्य की ओर और सीधे मार्ग की ओर ले जाती है[३७]।

30. They said: O our people! Lo! we have heard a Scripture which hath been revealed after Moses, confirming that which was before it, guiding unto the truth and a right road.

قَالُوا يٰقَوْمَنَا اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾

३१. हे हमारी जाति के लोगो ! अल्लाह के आवाहक (बुलानें वाले) की[३८] बात मानो और उस पर 'ईमान' लाओ। वह (अल्लाह) तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें दुःख देने वाली यातना से पनाह देगा।

31. O our people! respond to Allah's summoner and believe in Him. He will forgive you some of your sins and guard you from a painful doom.

يٰقَوْمَنَا اَجِيبُوا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيمٍ ﴿٣١﴾

३३. मक्का के 'काफ़िरों' को सचेत किया जा रहा है कि तुम्हारी तरह पिछले लोगों ने भी बहुत से 'इलाह' (gods) गढ़ रक्खे थे और वे समझते थे कि कठिन समय में वे हमारे काम आयेंगे; उन के द्वारा हमारी अल्लाह तक पहुँच हो सकेगी। वे अल्लाह से कहेंगे कि इन्हें कुछ न कहा जाये ये हमारे उपासक हैं—परन्तु जब अज़ाब (अल्लाह की यातना) आया तो उन के देवी-देवताओं में से कोई भी अज़ाब को न रोक सका। आखिर वे उस समय कहाँ चले गये थे। इस से साफ़ मालूम होता है कि समस्त अधिकार अल्लाह ही को प्राप्त हैं, दूसरे जितने हैं सब उसी के मुहताज हैं।

३४. वास्तव में पुराना ढकोसला तो यही 'मुश्रिकों' का था न कि वह जिस को धर्म-विरोधी ढकोसला कहतेथे। दे० आयत ११।

३५. नबी सल्ल० किसी जगह क़ुरआन पढ़ रहे थे, कुछ 'जिन्नों' का उधर से गुज़र हुआ। वे आप (सल्ल०) को क़ुरआन पढ़ता देख कर रुके और एक-दूसरे से कहने लगे कि शान्तिपूर्वक सुनो। जब नबी सल्ल० क़ुरआन पढ़ चुके, तो वे 'जिन्न' अपनी जाति वालों में वह सन्देश ले कर गये जो उन्हें क़ुरआन से मिला था। ऐतिहासिक उल्लेखों सें मालूम होता है कि यह घटना नखला नामक घाटी की है। यह घाटी मक्का से क़रीब थी।

'जिन्नों' के प्रभावित होने का उल्लेख कर के नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है कि आप निराश न हों जिस सच्चाई की ओर आप दुनिया वालों को बुला रहे हैं उस से सत्यप्रिय 'जिन्न' भी प्रभावित हुये हैं। वह समय अवश्य आयेगा कि सत्य की विजय होगी।

३६. अर्थात् उस से अगली किताबों को जो पहले अल्लाह की ओर से उतर चुकी हैं पुष्टि होती है, जो किताब हम ने सुनी है वह पिछली किताबों की दी हुई खबरों के बिल्कुल मुताबिक़ है।

३७. इस 'आयत' से मालूम होता है कि ये, क़ुरआन सुनने वाले 'जिन्न' विद्वान् थे और पिछले 'नबियों' पर 'ईमान' रखते थे।

३८. अर्थात् 'नबी' की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. और जो कोई अल्लाह के आवाहक की बात न मानेगा तो धरती में वह बच निकलने वाला नहीं है और न उस के सिवा उस के संरक्षक-मित्र होंगे : यही लोग हैं जो खुली गुमराही में पड़े हुये हैं[३९]।

32. And whoso respondeth not to Allah's summoner he can nowise escape in the earth, and ye (can find) no protecting friends instead of Him. Such are in error manifest.

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ
اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

३३. क्या इन्हों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उन के पैदा करने में असमर्थ नहीं रहा, वह इस का सामर्थ्य रखता है कि मुरदों को जीवित कर दे[४०] ? क्यों नहीं, निस्संदेह उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

33. Have they not seen that Allah, Who created the heavens and the earth and was not wearied by their creation, is Able to give life to the dead? Aye, He verily is Able to do all things.

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ
عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

३४. और जिस दिन 'कुफ़्' करने वाले ('जहन्नम' की) आग के सामने पेश किये जायेंगे (कहा जायेगा) : क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे : क्यों नहीं, हमारे 'रब' की क़सम (सत्य है)। वह कहेगा : तो अब चखो मज़ा यातना का उस 'कुफ़्' के बदले में जो तुम करते थे।

34. And on the day when those who disbelieve are exposed to the Fire (they will be asked): Is not this real? They will say: Yea, by our Lord. He will say: Then taste the doom for that ye disbelieved.

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ
اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ
قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾

३५. तो (हे 'नबी' !) धैर्य्य से काम लो जैसे साहसी 'रसूलों' ने धैर्य्य से काम लिया; और इन के लिए जल्दी न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिस का इन से वादा किया जाता है तो (इन्हें ऐसा लगेगा) मानो ये केवल दिन में से एक घड़ी ठहरे हैं। यह (हमारी ओर से सन्देश) पहुँचा देना है। तो अब वही विनष्ट किये जायेंगे जो अवज्ञाकारी लोग हैं।

35. Then have patience (O Muhammad) even as the stout of heart among the messengers (of old) had patience, and seek not to hasten on the doom for them. On the day when they see that which they are promised (it will seem to them) as though they had tarried but an hour of daylight. A clear message. Shall any be destroyed save evil-living folk?

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا
يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

---

३९. अरब के लोग 'जिन्नों' को प्रभुत्व में शरीक समझते थे। उन के बारे में उन की धारणा थी कि वे परोक्ष का ज्ञान रखते हैं और अल्लाह ने उन्हें विभिन्न भू-भाग सौंप दिये है जिन के वे मालिक हैं। अरब के लोग रेगिस्तानों में सफ़र करते, तो रात के समय 'जिन्नों' से इस तरह पनाह माँगते जैसे कोई अल्लाह से पनाह माँगता हो, कहते : मैं इस घाटी के 'रब' की पनाह माँगता हूँ। घाटी के 'रब' से अभिप्रेत 'जिन्न' होते। क़ुरआन ने इस विशेष घटना का उल्लेख कर के अरबों की धारणाओं का खण्डन किया है और बताया है कि 'जिन्नों' को भी अल्लाह ही ने पैदा किया है। उन की और तुम्हारी हैसियत एक है। तुम्हारा और उन का सभी का कर्तव्य है कि 'नबी' (सल्ल०) पर 'ईमान' लाओ और उस के आदेशों का पालन करो। और 'शिर्क' की गन्दगी से अपने-आप को बचाओ।

४०. तात्पर्य यह है कि अल्लाह जब रचना-कार्य में कुशल और सर्वशक्तिमान् है उसी ने इस सम्पूर्ण विश्व की रचना की है और तुम इसे मानते भी हो, तो यह सीधी-सी बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती कि अल्लाह तुम्हें मरने के बाद दोबारा जीवित करके खड़ा करेगा। जिस ने पहली बार तुम्हारी सृष्टि रची है वही दोबारा पैदा करने का भी सामर्थ्य रखता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७–मुहम्मद
(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' की दूसरी 'आयत' में अल्लाह के 'रसूल' हज़रत मुहम्मद सल्ल० का शुभ नाम आया है। इसी सम्पर्क से इस 'सूरा' का नाम मुहम्मद रक्खा गया है। इस सूरा का एक दूसरा नाम 'क़िताल' (युद्ध) भी है। इस नाम का सम्पर्क सूरा के केन्द्रीय विषय से है। इस सूरा से विदित है कि जिस सज़ा की धमकी 'काफ़िरों' को दी गई थी दुनिया में वह सज़ा इन्हें युद्ध के रूप में दी जायेगी जिस में इन के बड़े-बड़े सरदार मारे जायेंगे और दूसरे बहुत से लोग क़ैद होंगे। इन्हें ये बुरा दिन अवश्य देखना पड़ेगा। रही 'आख़िरत' की यातना तो वह इन्हें अलग भुगतनी होगी।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह मदीना की आरम्भिक 'सूरा' है। 'हिजरत' के बाद उतरी है[1]। यह वह समय है जब कि अभी मक्का वालों के साथ युद्ध का आरम्भ नहीं हुआ है। परन्तु परिस्थिति कुछ ऐसी हो चुकी है कि लड़ाई का छिड़ जाना अवश्यम्भावी प्रतीत होता है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत 'सूरा' से उस विषय की पुष्टि होती है जिस का उल्लेख सूरा अल-अह्क़ाफ़ के अन्तिम भाग में हुआ है। पिछली सूरतों में जिस विशेष दण्ड की चेतावनी 'काफ़िरों' को दी गई है उसे इस सूरा में खोल कर बयान किया गया है। इस सूरा से विदित है कि अल्लाह 'ईमान' वालों के हाथों अपने शत्रुओं को सज़ा देनी चाहता है और युद्ध में उन्हें उन के करतूतों का मज़ा चखाना चाहता है।

हा० मीम० सिलसिले की सूरतों से[2] इस सूरा का गहरा सम्पर्क है। इसी तरह आगे आने वाली सूरा से भी इस सूरा का गहरा सम्बन्ध है। इस सूरा की बहुत-सी बातों का स्पष्टीकरण आगे आने वाली सूरा से होता है।

प्रस्तुत 'सूरा' में साफ़-साफ़ बता दिया गया है कि एक 'ईमान' वाले व्यक्ति और 'काफ़िर' के बीच वास्तविक अन्तर क्या है? इसी तरह इस सूरा में उस अन्तर को भी व्यक्त किया गया है जो 'ईमान' वाले व्यक्ति और 'मुनाफ़िक़ों' और 'दीन' (धर्म) से फिर जाने वालों के बीच पाया जाता है।

प्रस्तुत 'सूरा' का आरम्भ इस घोषणा के साथ हुआ है कि उन लोगों का सब किया-धरा अकारथ गया जिन्हों ने 'कुफ़्' किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका। रहे वे लोग जो 'ईमान' लाये हैं और अनुकूल कर्म किये और जो-कुछ (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा गया है उसे मानते हैं, तो ऐसे ही लोगों के लिए सफलता है। अल्लाह इन की बुराइयों को दूर कर देगा और इन के चित्त को शान्ति देगा। यह घोषणा वास्तव में एक भविष्य-कथन था जो आगे चल कर पूर्णतः पूरा हो कर रहा।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'ईमान' वालों को 'काफ़िरों' से युद्ध करने का आदेश देते हुये कहा गया है कि अब जब 'काफ़िरों' से (लड़ाई में) मुठ-भेड़ हो तो उन की गरदनें मारो यहाँ तक कि उन्हें अच्छी तरह कुचल कर रख दो फिर बचे हुए लोगों को क़ैद करो और फिर बाद में उचित समझो तो, उन पर एहसान करके रिहा कर दो या 'फ़िदया' ले कर उन्हें छोड़ दो। ये लड़ाई के बारे में प्रारम्भिक आदेश हैं

१. दे० आयत १३।
२. अर्थात सूरा अल-मोमिन से ले कर सूरा अल-अह्क़ाफ़ तक की सूरतों से, यह सब सात सूरतें हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो 'ईमान' वालों को इस सूरा में दिये गये हैं। यह 'जिहाद' का आदेश क्यों दिया गया? इस पर प्रकाश डालते हुये बताया गया कि अल्लाह अपने दुश्मनों से स्वयं बदला ले सकता था परन्तु उस ने तुम्हें उन से लड़ने की आज्ञा इस लिए दी ताकि वह अपने बन्दों की परीक्षा करे कि कौन उस के मार्ग में अपनी जान लड़ाता और अपने माल से धर्म की सेवा करता है। मुसलमानों को यह शुभ सूचना दी गई कि यदि तुम अल्लाह की मदद करोगे (अर्थात् उस की राह में जान-माल के साथ लग जाओगे) तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें जमाव और शक्ति प्रदान करेगा। रहे 'कुफ़्र' करने वाले, तो वे तबाह हो कर रहने वाले हैं। और उनका क्रिया-धरा सब अकारथ जायेगा। अल्लाह ने कितनी ही ऐसी बस्तियों को विनष्ट किया है जो इन मक्का वालों से शक्ति में कहीं बढ़-चढ़ कर थीं, जिन्हों ने नबी (सल्ल०) को देश छोड़ कर 'हिजरत' करने पर विवश किया है। पहले भी यही हुआ है आज भी यही होगा, अल्लाह का नियम बदला नहीं करता। 'काफ़िरों' का वास्तव में कोई संरक्षक और सहायक नहीं है जबकि 'ईमान' वालों का करता-धरता अल्लाह है।

फिर इस के बाद 'जन्नत' और उस की नेमतों का उल्लेख हुआ है जो उन लोगों के हिस्से में आयेंगी जो इस लोक में अल्लाह से डरते हुये अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

आगे चल कर 'काफ़िरों' को सचेत करते हुए बताया गया है कि 'क़ियामत' कोई दूर नहीं है उस की निशानियाँ सामने आ चुकी हैं। फिर उन लोगों की दशा बयान की गई है जिन के दिलों में ('निफ़ाक़' का) रोग था और जो 'ईमान' से उलटे फिर गये थे हालाँकि यह बात स्पष्ट रूप से उन पर खुल चुकी थी कि सत्य का सीधा मार्ग कौन-सा है।

'सूरा' के अन्तिम भाग में बताया गया है कि 'काफ़िर' और धर्म-विरोधी लोग अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, इन की सारी योजनायें असफल हो कर रहेंगी। 'ईमान' वालों को चाहिए कि वे अल्लाह और उस के 'रसूल' के आदेशों का पालन करते रहें और किसी तरह की कमज़ोरी न दिखायें। साहस छोड़ कर 'काफ़िरों' से सन्धि और सुलह की बात-चीत न करें। विजय 'ईमान' वालों को ही प्राप्त होगी अल्लाह उन्हें प्रभावपूर्ण अधिकार प्रदान करेगा; 'काफ़िर' और धर्म-विरोधी परास्त होकर रहेंगे। 'ईमान' वालों को सावधान करते हुए बताया गया है कि यदि तुम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करोगे और मुँह मोड़ लोगे, तो अल्लाह को यह सामर्थ्य प्राप्त है कि वह तुम्हारी जगह दूसरों को खड़ा कर दे और उन से अपना काम ले।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' मुहम्मद
(मदीना में उतरी -- 'आयतें' ३८)

MUHAMMAD
Revealed at Al-Madinah

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और अल्लाह की राह से रोका, उन के कर्मों को उस ने अकारथ कर दिया[1]।

२. और जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये और ईमान लाये उस पर जो मुहम्मद पर उतारा गया है—और वह सर्वथा सत्य है, उन के 'रब' की ओर से है—उस ने उन से उन की बुराइयाँ दूर कर दीं और उन के चित्त को शान्ति दी।

३. यह इस लिए कि 'कुफ़्' करने वाले असत्य पर चले और 'ईमान' लाने वाले सत्य पर चले जो उन के 'रब' की ओर से है। इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है।

४. अब जब 'कुफ़्' करने वालों से तुम्हारी मुठ-भेड़ हो तो गरदनें मारना, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें कुचल चुको, तो बन्धनों में जकड़ो;[2] फिर बाद में या तो एहसान कर देना है या 'फ़िदया' लेना है[3] यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे[4]। यह बात अलग रही कि यदि अल्लाह चाहता होता तो उन से बदला ले लेता परन्तु उसे तुम्हारी एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा करनी थी[5]। और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये, वह उन के कर्मों को कदापि अकारथ नहीं करेगा[6]।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Those who disbel eve and turn (men) from the way of Allah, He rendereth their actions vain.

2. And those who believe and do good works and believe in that which is revealed unto Muhammad — and it is the truth from their Lord — He riddeth them of their ill-deeds and improveth their state.

3. That is because those who disbelieve fellow falsehood and because those who believe follow the truth from their Lord. Thus Allah coineth their similitudes for mankind.

4. Now when ye meet in battle those who disbelieve, then it is smit ng of the necks until, when ye have routed them, then making fast of bonds; and afterwards either grace or ransom till the war lay down its burdens. That (is the ordinance). And if Allah willed He could have punished them (without you) but (thus it is ordained) that He may try some of you by means of others. And those who are slain in the way of Allah, He rendereth not their actions vain.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ①

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ②

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ③

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ذٰلِكَ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ④

१. अर्थात् उन का किया-धरा अकारथ गया। वे अपनी कोशिशों में असफल रहे। अल्लाह उन के तीर को निशाने पर कभी लगने न देगा।

२. अर्थात् जब सत्य और असत्य का मुक़ाबला हो और 'ईमान' वालों और अल्लाह के दुश्मनों में लड़ाई छिड़ जाये, तो डट कर मुक़ाबला करो यहाँ तक कि उन की ताक़त टूट जाये और वे बिल्कुल परास्त हो जायें। फिर तुम उन्हें क़ैद करो।

३. अर्थात् तुम्हें अधिकार है उचित समझो तो क़ैदियों को बिना 'फ़िदया' लिये छोड़ दो और चाहो तो उन्हें 'फ़िदया' ले कर रिहा करो।

४. अर्थात् लड़ाई बन्द हो जाये; लड़ने वाले हथियार डाल दें। यहाँ युद्ध के बारे में प्रारम्भिक आदेश दिये गये। दूसरी 'सूरतों' में इस विषय में सविस्तार आदेश दिये गये हैं।

५. अर्थात् उसे अपने बन्दों की परीक्षा अभीष्ट है इसी लिए उस ने लड़ने का आदेश दिया है ताकि यह मालूम हो जाये कि कौन उस की राह में अपनी जान लड़ाता है और अपने माल से धर्म की सेवा करता है? यदि अल्लाह को अपने दुश्मनों से केवल बदला लेना होता, लोगों की परीक्षा करनी न होती, तो वह बदला लेने के लिए अकेला काफ़ी था। वह चाहे तो एक क्षण में अपने दुश्मनों को विनष्ट कर के रख दे।

६. अर्थात् वे अपने शुभ कर्मों का फल अल्लाह के यहाँ पायेंगे। अल्लाह उन की मेहनत को ठिकाने लगायेगा। उन का किया-धरा अकारथ नहीं होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. वह उन्हें मार्ग दिखायेगा और उन के चित्त को शान्ति देगा[७]।

5. He will guide them and improve their state,

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ⑤

६. और उन्हें 'जन्नत' में दाखिल करेगा जिस से उन्हें परिचित कर दिया है[८]।

6. And bring them in unto the Garden which He hath made known to them.

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ⑥

७. हे वे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! यदि तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा।

7. O ye who believe! If you help Allah, He will help you and will make your foothold firm.

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ
يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ⑦

८. और जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया, वे बर्बाद हों, और उस ने उन के कर्मों को अकारथ कर दिया[९]।

8. And those who disbelieve, perdition is for them, and He will make their actions vain.

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ
أَعْمَالَهُمْ ⑧

९. यह इस लिए कि उन्हों ने उस चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह ने उतारा, तो उस ने उन का किया-धरा बेकार कर दिया।

9. That is because they are averse to that which Allah hath revealed, therefor maketh He their actions fruitless.

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَآ أَنزَلَ اللَّهُ
فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ⑨

१०. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे[१०]? अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी और 'काफ़िरों' के लिए यही सब है।

10. Have they not travelled in the land to see the nature of the consequence for those who were before them? Allah wiped them out. And for the disbelievers there will be the like thereof.

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ دَمَّرَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ⑩

११. यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का करता-धरता[११] है जो 'ईमान' लाये, और 'काफ़िरों' का कोई करता-धरता नहीं।

11. That is because Allah is patron of those who believe, and because the disbelievers have no patron.

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَ
أَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ⑪

१२. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, और 'कुफ़्' करने वाले सुख भोग रहे हैं और खाते हैं जैसे जानवर खाते है,[१२] और ('जहन्नम' की) आग उन का ठिकाना है।

12. Lo! Allah will cause those who believe and do good works to enter Gardens underneath which rivers flow; while those who disbelieve take their comfort in this life and eat even as the cattle eat, and the Fire is their habitation.

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ
كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ⑫

७. अर्थात् अल्लाह उन का सहायक होगा। आने वाली दुनिया में हर अवसर पर वह उन्हें सँभालेगा।

८. वे भली-भाँति जानते हैं कि 'जन्नत' कैसी अच्छी जगह है, आगे 'जन्नत' का हाल बयान भी किया जा रहा है। उन के लिए यह सुन लेना काफ़ी है कि 'जन्नत' मिलेगी।

९. दे० फुटनोट १।

१०. अर्थात् 'आद', 'समूद' आदि जातियाँ।

११. दे० सूरा अद-दुख़ान फुटनोट २७।

१२. अर्थात् बिल्कुल जानवरों की तरह दुनिया में रह रहे हैं। केवल खाने-पीने और भोग-विलास ही को जीवन का उद्देश्य बना लिया है। जीवन का वास्तविक अर्थ क्या है? इस से ये सर्वथा अनभिज्ञ हैं। ये अल्लाह की अवज्ञा कर के कभी सफल नहीं हो सकते। इन का ठिकाना नरक ही होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. (हे मुहम्मद !) कितनी ही बस्तियाँ थीं जो शक्ति में तुम्हारी इस बस्ती से[१३] बढ़ कर थीं जिन से तुम्हें निकाल दिया, फिर कोई उन का सहायक न हुआ !

13. And how many a township stronger than thy township (O Muhammad) which hath cast thee out, have We destroyed, and they had no helper!

وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ
قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ
فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

१४. क्या वह व्यक्ति जो अपने 'रब' की ओर से स्पष्ट मार्ग-दर्शन पर हो उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जिस के लिए उस का बुरा कर्म शोभायमान बना दिया गया हो और वे अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हों[१४] —

14. Is he who relieth on a clear proof from his Lord like those for whom the evil that they do is beautified while they follow their on lusts?

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ كَمَنْ
زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾

१५. उस 'जन्नत' का हाल यह है जिस का वादा डर रखने वालों से किया गया है : उस में पानी की नहरें हैं जिस में सड़ायँध नहीं,[१५] और दूध की नहरें हैं जिन का मज़ा बदला नहीं, और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट हैं, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें है; और उन के लिए वहाँ हर प्रकार के फल हैं, और क्षमा उन के 'रब' की ओर से—उस व्यक्ति-जैसा हो सकता है जो सदा आग में रहने वाला है और उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया गया जिस ने उन की अँतड़ियों को काट डाला ?

15. A similitude of the Garden which those who keep their duty (to Allah) are promised: Therein are rivers of water unpolluted, and rivers of milk whereof the flavour changeth not, and rivers of wine delicious to the drinkers, and rivers of clear-run honey; therein for them is every kind of fruit, with pardon from their Lord. (Are those who enjoy all this) like those who are immortal in the Fire and are given boil'ng water to drink so that it teareth their bowels?

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا
أَنْهَارٌ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّنْ
لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ
خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ
مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي
النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

१६. और उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं, तो जिन लोगों को ज्ञान मिला है उन से कहते हैं : इस व्यक्ति ने अभी अभी क्या कहा[१६] ? यही वे लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है, और वे अपनी इच्छाओं पर चलते हैं।

16. Among them are some who give ear unto thee (Muhammad) till, when they go forth from thy presence, they say unto those who have been given knowledge: What was that he said just now? Those are they whose hearts Allah hath sealed, and they follow their own lusts.

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا
مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
مَاذَا قَالَ آنِفًا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ
اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

१७. और जिन लोगो ने 'हिदायत' पाई, उन्हें और ज़्यादा 'हिदायत' दी, और उन्हें परहेज़गार बनना नसीब किया[१७]।

17. While as for those who walk aright, He addeth to their guidance, and giveth them their protection (against evil).

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّ
آتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ﴿١٧﴾

१३. इस से अभिप्रेत मक्का है जहाँ के निवासियों ने 'नबी' सल्ल० को घर-बार छोड़ने पर मजबूर किया और आप (सल्ल०) वहाँ से मदीना 'हिजरत' कर के चले आये।

१४. जब उन के आचार और विचार में इतना अन्तर है, तो उन के परिणाम में भी अवश्य अन्तर होना चाहिए। सत्य के उपासकों और मिथ्यावादियों का परिणाम एक कैसे हो सकता है ?

१५. महक, रंग, स्वाद आदि किसी चीज़ में भी खराबी पैदा नहीं होगी।

१६ अर्थात् 'मुनाफ़िक़ों' का हाल यह है कि वे भलाई और नेकी की बातें सुनना नहीं चाहते और कभी सुनते भी हैं तो बस यों ही, उन के दिल में कोई बात उतरती नहीं।

१७. अर्थात् सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों पर अल्लाह की बड़ी कृपा होती है वह उन्हें और अधिक समझ-बूझ प्रदान करता है और वे अपनी धर्म-निष्ठा और 'तक़्वा' में उन्नति ही करते जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. अब क्या इन लोगों को 'क़ियामत' ही की प्रतीक्षा है कि वह इन पर अचानक आ पड़े ? क्यों कि उस के लक्षण सामने ज़ाहिर हो चुके हैं[१८]। जब वह इन पर आ जायेगी, तो फिर इन्हें होश में आने को कहाँ मिलेगा।

18. Await they aught save the Hour, that it should come upon them unawares? And the beginnings thereof have already come. But how, when it hath come upon them, can they take their warning?

فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم
بَغْتَةً فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّىٰ لَهُمْ
إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ﴿١٨﴾

१९. तो (हे मुहम्मद !) जान लो कि कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं सिवाय अल्लाह के, और अपने गुनाहों के लिए क्षमा की प्रार्थना करो 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों के लिए भी[१९]। अल्लाह जानता है जहाँ तुम्हारी चलत-फिरत होती है और जहाँ तुम ठहरते हो।

19. So know (O Muhammad) that there is no God save Allah, and ask forgiveness for thy sin and for believing men and believing women. Allah knoweth (both) your place of turmoil and your place of rest.

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ﴿١٩﴾

२०. और 'ईमान' लाने वाले कहते हैं : कोई 'सूरा' क्यों नहीं उतारी गई ? फिर जब कोई असन्दिग्ध सूरा उतारी जाती है और उस में युद्ध करने की बात होती है, तो तुम उन लोगों को देखते हो जिन के दिलों में ('निफ़ाक़' का) रोग है कि वे तुम्हारी ओर ताकते हैं जैसे वह ताके जिस पर मौत की बेहोशी छाई हो[२०]। तो अफ़सोस है उन पर !

20. And those who believe say: If only a Surah were revealed! But when a decisive Surah is revealed and war is mentioned therein, thou seest those in whose hearts is a disease looking at thee with the look of men fainting unto death. Therefore woe unto them!

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ
فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا
الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾

२१. कहा मानना है और भली बात कहनी है। फिर जब बात निश्चय हो जाये, उस समय यदि लोग अल्लाह के समक्ष सच्चे साबित होते तो इन के लिए अच्छा रहता[२१]।

21. Obedience and a civil word. Then, when the matter is determined, if they are loyal to Allah it will be well for them.

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ
فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

२२. तो क्या तुम इस पर लगे हो कि अलग हो कर धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने रिश्ते-नातों को काट डालो ?

22. Would ye then, if ye were given the command, work corruption in the land and sever your ties of kinship?

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

२३. ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की फिर उन्हें बहरा कर दिया और उन की आँखों को अन्धा कर दिया।

23. Such are they whom Allah curseth so that He deafeneth them and maketh blind their eyes.

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَ
أَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

१८. अर्थात् 'क़ियामत' के लक्षण तो सामने आ चुके हैं अब तो यही चीज़ बाक़ी है कि 'क़ियामत' ही आ जाये। क़ियामत की सब से बड़ी निशानी स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। नबी सल्ल० ने कहा है कि मैं और 'क़ियामत' दो उँगलियों की तरह हैं जो पास-पास हैं। इन के बीच और कोई चीज़ नहीं। आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम 'नबी' हैं। आप (सल्ल०) के बाद 'क़ियामत' ही आयेगी, कोई नया 'नबी' आने वाला अब नहीं है।

१९. अर्थात् अल्लाह से प्रार्थना करो कि यदि कोई कोताही हो गई हो, तो वह क्षमा कर दे। बन्दे का काम यही है कि वह अल्लाह की बन्दगी में पूरी-पूरी कोशिश करे और फिर भी अल्लाह से क्षमा की प्रार्थनायें करता रहे, अल्लाह की बन्दगी का हक़ कभी अदा नहीं होता। नबी सल्ल० ने कहा है कि मैं प्रति दिन सौ बार अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करता हूँ।

२०. अर्थात् 'मुनाफ़िक़ों' का हाल तो यह है कि लड़ाई के आदेश से, भय के कारण उन की जान निकली जाती है। वह यह नहीं चाहते कि उन्हें मैदान में जान की बाज़ी लगाने के लिए उतरना पड़े।

२१. अर्थात् यदि ये लोग सँभल जायें और 'जिहाद' के अवसर पर यह सिद्ध कर दें कि ये सच्चे दिल से अल्लाह और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' रखते हैं, और अल्लाह के हुक्म पर अपने प्राणों की बाज़ी लगा सकते हैं, तो इस में इन्हीं की भलाई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. तो क्या ये लोग 'क़ुरआन' में विचार नहीं करते, या कुछ दिलों पर ताले पड़े हुए हैं ?

24. Will they then not meditate on the Qur'an, or are there locks on their hearts?

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

२५. जो लोग इस के बाद कि उन पर मार्ग स्पष्ट रूप से खुल चुका था, अपनी पीठ फेर कर लौट गये, तो 'शैतान' ने उन्हें पट्टी पढ़ाई। और उस ने उन्हें ढील दे दी।

25. Lo! those who turn back after the guidance hath been manifested unto them, Satan hath seduced them, and He giveth them the rein.

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

२६. यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से, जिन्हों ने उस चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह ने उतारा है कहा : कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे; और अल्लाह उन की गुप्त कार्रवाई को जानता है।

26. That is because they say unto those who hate what Allah hath revealed: We will obey you in some matters; and Allah knoweth their secret talk.

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

२७. तो क्या हाल होगा जब 'फ़िरिश्ते' उन की जान निकालेंगे, और उन के मुँह और उन की पीठों पर मारते जाते होंगे !

27. Then how (will it be with them) when the angels gather them, smiting their faces and their backs!

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

२८. यह इस लिए कि उन्हों ने उस चीज़ की पैरवी की जिस ने अल्लाह को अप्रसन्न कर दिया, और उन्हों ने अल्लाह की ख़ुशी को नापसन्द किया। तो उसने उन का किया-धरा बेकार कर दिया।

28. That will be because they followed that which angereth Allah, and hated that which pleaseth Him. Therefor He hath made their actions vain.

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

२९. क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है यह समझ रक्खा है कि अल्लाह उन के मन के चोर को प्रकट ही न करेगा ?

29. Or do those in whose hearts is a disease deem that Allah will not bring to light their secret (hates)?

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

३०. और यदि हम चाहते, तो उन लोगों को तुम्हें दिखा देते, फिर तुम उन्हें उन की सूरत से पहचान लेते। और तुम तो उन्हें बात-चीत के ढब से पहचान ही लोगे। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है[२२]।

30. And if We would, we could show them unto thee (Muhammad) so that thou shouldst know them surely by their marks. And thou shalt know them, by the burden of their talk. And Allah knoweth your deeds.

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

३१. और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेंगे ताकि तुम में जो 'जिहाद' करने वाले हैं और 'सब्र' करने वाले उन्हें हम जान लें, और तुम्हारे बारे में सुनी जाने वाली बातों की परीक्षा कर लें।

31. And verily We shall try you till We know those of you who strive hard (for the cause of Allah) and the steadfast, and till We test your record.

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

२२. इस लिए वह अवश्य अपने सेवकों को उन के शुभ कर्मों का बदला प्रदान करेगा और 'मुनाफ़िक़ों' को कठिन दण्ड देगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. जिन लोगों ने इस के बाद भी कि सीधी राह खुल कर उन के सामने आ गई, 'कुफ़्' किया, और अल्लाह के मार्ग से रोका और 'रसूल' का विरोध किया, वह अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ेंगे[२३] और वह उन का किया-धरा बेकार कर देगा।

32. Lo! those who disbelieve and turn from the way of Allah and oppose the messenger after the guidance hath been manifested unto them, they hurt Allah not a jot, and He will make their actions fruitless.

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَ
سَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

३३. हे वे लोगो जो 'ईमान' लाये हो ! अल्लाह का हुक्म मानो और 'रसूल' का हुक्म मानो, और अपना किया-धरा बरबाद न करो।

33. O ye who believe! obey the messenger, and render not your actions vain.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

३४. जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और 'काफ़िर' ही रह कर मर गये, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा।

34. Lo! those who disbelieve and turn from the way of Allah and then die disbelievers, Allah surely will not pardon them.

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ
اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

३५. तो तुम ऐसा न करो कि साहस छोड़ बैठो और सुलह की ओर बुलाने लगो और तुम ही जीतने वाले हो,[२४] और अल्लाह तुम्हारे साथ है, और वह तुम्हारे कर्मों को दबा न लेगा।

35. So do not falter and cry out for peace when ye (will be) the uppermost, and Allah is with you, and He will not grudge (the reward of) your actions.

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ
الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

३६. सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है[२५]। और यदि तुम 'ईमान' लाओगे और परहेज़गार बनोगे तो वह तुम्हें तुम्हारे किये का फल प्रदान करेगा, और तुम से तुम्हारे माल न माँगेगा।

36. The life of the world is but a sport and a pastime. And if ye believe and ward off (evil), He will give you your wages, and will not ask of you your worldly wealth.

إِنَّمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِنْ
تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا
يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

३७. यदि वह तुम से उस को माँगे और तुम्हारे पास जो कुछ है सब माँग ले तो तुम कन्जूसी करोगे और वह तुम्हारे मन के चोर को प्रकट कर देगा।

37. If He should ask it of you and importune you, ye would hoard it, and He would bring to light your (secret) hates.

إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَ
يُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

२३. अल्लाह का 'दीन' पूरा हो कर रहेगा। अन्त में ऐसा ही हुआ 'कुफ़्' परास्त हुआ और सत्य की विजय हुई।

२४. अर्थात् कमज़ोरी न दिखाओ। साहस छोड़ कर सुलह और समझौते की बात-चीत न करो। हर सन्धि और समझौते को यहाँ बुरा नहीं कहा गया है केवल उस सुलह को निन्दनीय कहा जा रहा है जो भय के कारण दब कर की जाये। इस्लामी इतिहास में जहाँ 'काफ़िरों' से लड़ाइयाँ हुई हैं वहाँ सन्धि की मिसालें भी मिलती हैं। सूरा अल-अनफ़ाल में इस विषय पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। अगली सूरा में हुदैबिया की सन्धि का उल्लेख किया गया है। दे० सूरा आले इमरान आयत १३९।

२५. दे० सूरा अल-अनआम फुटनोट ९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८. यह तुम ही लोग तो हो कि तुम से अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने को कहा जाता है तो तुम में से कुछ लोग हैं जो कन्जूसी करते हैं। और जो कन्जूसी करेगा वह अपने ही साथ कन्जूसी करेगा। और अल्लाह किसी चीज़ का मुहताज नहीं है और तुम बिल्कुल ही मुहताज हो। और यदि तुम मुँह मोड़ोगे[२६] तो वह तुम्हारी जगह किसी दूसरे गरोह को दे देगा, फिर वे तुम्हारे जैसे न होंगे[२७]।

38. Lo! ye are those who are called to spend in the way of Allah, yet among you there are some who hoard. And as for him who hoardeth, he hoardeth only from his soul And Allah is the Rich, and ye are the poor. And if ye turn away He will exchange you for some other folk, and they will not be the likes of you.

هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴿٣٨﴾ ع

---

२६. दे० सूरा अल-फ़त्ह आयत १६।

२७. ईमान वालों को यहाँ बताया गया कि यदि तुम अल्लाह के 'दीन' के लिए जानें लड़ाते हो और अल्लाह की राह में अपना माल ख़र्च करते हो, तो इस में तुम्हारा ही फ़ायदा है। अल्लाह तुम्हारा मुहताज कदापि नहीं है। यदि तुम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते और अपना मुंह मोड़ लोगे, तो उसे इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि तुम्हारी जगह दूसरों को खड़ा कर दे और उन से धर्म का काम ले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८—अल-फ़त्ह
(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत 'सूरा' का नाम 'अल-फ़त्ह' (विजय) सूरा के मूल विषय के अनुकूल है। इस सूरा में 'इस्लाम' की विजय (Victory) और उस की सफलताओं का उल्लेख किया गया है। 'फ़त्ह' शब्द इस सूरा में कई बार आया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' सन् ६ हिज० में हुदैबिया की सन्धि के पश्चात् अवतीर्ण हुई है।

किस परिस्थिति में उतरी

अरब के लोग यों तो साल भर लड़ते-भिड़ते रहते थे, परन्तु 'हज्ज' का सयय आ जाने पर वे चार महीने के लिए लड़ाई बन्द कर दिया करते थे ताकि लोग निश्चिन्त होकर 'हज्ज' के लिए सफ़र कर सकें। नबी सल्ल० ने मदीना में यह स्वप्न देखा कि हम मक्का में दाखिल हुये और सिर मुड़ाया और बाल कतरवाये। मुसलमानों को ख़ुशी हुई कि अब हमें 'उमरा' करने का अवसर मिलने वाला है। आप (सल्ल०) उसी साल सन् ६ हिज० में लगभग डेढ़ हज़ार मुसलमानों को ले कर 'उमरा' करने के इरादे से मक्का की ओर चल पड़े। क़ुरबानी के जानवर भी साथ ले लिये। मक्का के निकट हुदैबिया के स्थान पर आप (सल्ल०) की ऊँटनी बैठ गई। आप ने हज़रत उस्मान रज़ि० को मक्का वालों के पास यह सन्देश दे कर भेजा कि हम केवल 'उमरा' के ध्येय से आये हैं, लड़ने नहीं आये हैं, 'उमरा' कर के वापस चले जायेंगे हमारी राह में रुकावट न डाली जाये।

हज़रत उस्मान रज़ि० को 'क़ुरैश' के लोगों ने रोक लिया। और यह अफ़वाह उड़ गई कि हज़रत उस्मान रज़ि० को मक्का के 'मुश्रिकों' ने शहीद कर डाला। इस पर नबी सल्ल० ने एक वृक्ष के नीचे बैठ कर मुसलमानों से लड़ने और जान देने की बैअत (بیعت) ली। 'क़ुरैश' को जब मालूम हुआ कि मुसलमानों ने अपने 'रसूल' के आगे जान दे देने की प्रतिज्ञा की है, तो वे सन्धि के लिए तैयार हो गये इधर यह सूचना मिल गई कि हज़रत उस्मान रज़ि० के बारे मे जो ख़बर मिली थी वह ग़लत थी। 'क़ुरैश' ने सुहैल इब्न अम्र को अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा ताकि वे सन्धि के बारे में आप (सल्ल०) से बात-चीत करें। देर तक बात-चीत रही और सन्धि की शर्तें तै पा गईं। सन्धि-पत्र लिखने के लिए हज़रत अली रज़ि० को बुलाया गया उन्होंने जब सन्धि-पत्र में लिखा कि यह सन्धि (Truce) अल्लाह के 'रसूल' मुहम्मद की ओर से है तो 'क़ुरैश' के प्रतिनिधि ने यह आक्षेप किया कि इसी को तो हम नहीं मानते। नबी सल्ल० ने क़ुरैश के प्रतिनिधि की इस बात को मान लिया और अपने हाथ से "अल्लाह के रसूल" शब्द मिटा दिये और कहा : "तुम नहीं मानते तो क्या हुआ परन्तु मैं तो ख़ुदा की क़सम अल्लाह का 'रसूल' ही हूँ"। जिन शर्तों पर समझौता हुआ था वे ये थीं :—

१—मुसलमान इस साल बिना 'उमरा' किये वापस चले जायें।

२—अगले वर्ष आयें और केवल तीन दिन ठहर कर चले जायें।

३—हथियार लगा कर न आयें केवल तलवार अपने साथ रख सकते हैं परन्तु वह भी म्यान के भीतर रहेगी बाहर न निकाली जाये।

४—मक्के में जो मुसलमान शेष रह गये हैं उन में से किसी को अपने साथ न ले जायें और यदि कोई मुसलमान मक्का लौटना चाहे तो उसे भी न रोकें।

५—यदि ग़ैर-मुस्लिमों या मुसलमानों में से कोई व्यक्ति मदीना चला जाये तो उसे वापस कर दिया जाये, परन्तु यदि कोई मुसलमान मक्का जाये तो उसे वापस नहीं किया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६—अरब के क़बीलों को यह आज़ादी होगी कि वे मुसलमानों या ग़ैर-मुस्लिमों में से जिस के साथ चाहें समझौता कर लें।

७—यह समझौता दस वर्ष तक वर्तमान रहेगा।

सन्धि की इन शर्तों से साफ़ जान पड़ता था कि यह सन्धि मुसलमानों ने दब कर की है। मुसलमान परेशान थे कि सन्धि दब कर क्यों की जा रही है जब कि हम सत्य पर हैं। मुसलमानों के लिए इस सन्धि की सब से अधिक अप्रिय शर्त्त यह थी कि जो 'काफ़िर' मुसलमान हो कर मदीना मुसलमानों के पास चला जाये उसे मुसलमान वापस कर देंगे परन्तु जो मुसलमान धर्म त्याग कर मक्का आ जायेगा उसे 'मुश्रिक' लोग वापस न करेंगे। देखने में यह शर्त अत्यन्त विषम थी परन्तु आगे चल कर जो परिणाम सामने आये उन से विदित हुआ कि यही शर्त जो 'मुसलमानों' को अत्यन्त अप्रिय थी 'मुश्रिकों' के लिए अत्यन्त हानिकारक और मुसलमानों के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुई।

हुदैबिया की इस सन्धि के बाद 'नबी' सल्ल० मदीना की ओर वापस हुये तो रास्ते में सूरा 'अल-फ़त्ह' अवतीर्ण हुई। इस सूरा में अल्लाह ने हुदैबिया की सन्धि को 'प्रत्यक्ष विजय' की उपाधि दी। इस सन्धि से 'इस्लाम' को बहुत फ़ायदा पहुँचा। अब तक मुसलमानों और 'काफ़िरों' में लड़ाई छिड़ी हुई थी परन्तु इस सन्धि से मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों को एक-दूसरे से मिलने-जुलने का अवसर मिला। ग़ैर-मुस्लिमों ने क़रीब से जब मुसलमानों को देखा, तो वे उनके आचार-विचार और उन के व्यवहार से प्रभावित हुये बिना न रह सके। 'इस्लाम' के बारे में उन की बहुत-सी शंकायें आपस की बात-चीत से दूर हो गईं। वे 'इस्लाम' की ओर खिंचने लगे। इस सन्धि के बाद केवल दो-डेढ़ वर्ष के भीतर बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने 'इस्लाम' ग्रहण किया। इस सन्धि से पहले जितने लोग मुसलमान हुये थे उतने या उस से अधिक लोग केवल दो वर्ष में 'इस्लाम' में दाख़िल हुये। क़ुरैश के प्रसिद्ध सरदार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद 'रज़ि०' और अम्र बिन आस रज़ि० इसी मुद्दत में 'इस्लाम' में दाख़िल हुये हैं।

हुदैबिया की सन्धि के बाद मुसलमानों को इस का मौक़ा मिल गया कि वे अपने दूसरे दुश्मनों से निमट सकें। हुदैबिया से वापस आ कर नबी सल्ल० ने पहला काम यह किया कि 'ख़ैबर' पर हमला कर दिया। ख़ैबर 'यहूदियों' का सब से बड़ा गढ़ था। यहाँ से वे 'इस्लाम' के उन्मूलन के लिए तरह-तरह की साज़िशें करते रहते थे। 'यहूदी' लोग हिजाज़ के उत्तरी क्षेत्र के प्रत्येक हरे-भरे भू-भाग पर अधिकार जमाये हुये थे। अहज़ाब के युद्ध के अवसर पर विभिन्न क़बीलों को वे यहीं से भड़का कर मुसलमानों के विरुद्ध चढ़ा लाये थे। ख़ैबर की विजय से बहुत से फ़ायदे हासिल हुये, 'यहूदियों' की शक्ति क्षीण हो कर रह गई।

हुदैबिया की सन्धि के पश्चात् नबी सल्ल० ने उस समय के बड़े-बड़े सम्राटों के नाम पत्र लिखे और उन्हें 'इस्लाम' की ओर आमन्त्रित किया।

वार्त्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत 'सूरा' से सूरा मुहम्मद के विषय की पूर्ति होती है। सूरा मुहम्मद में बताया गया है कि अल्लाह 'ईमान' वालों के साथ है विजय 'इस्लाम' की होगी। 'ईमान' वालों को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त होगा। धर्म-विरोधी अधीन हो कर रहेंगे।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में ही नबी सल्ल० को प्रत्यक्ष विजय की सूचना दी गई है। हुदैबिया की सन्धि के बाद नबी सल्ल० मदीना लौट रहे थे कि यह विजय की शुभ-सूचना आप (सल्ल०) को दी गई। इस में इस बात की ओर संकेत था कि इस सन्धि का परिणाम अच्छा होगा। इस के फलस्वरूप 'इस्लाम' की शक्ति बढ़ेगी। और उसे महान् विजय प्राप्त होगी। धर्म-विरोधी दल परास्त हो कर रहेगा।

'सूरा' के आरम्भिक भाग में अल्लाह ने 'ईमान' वालों और अपने 'रसूल' पर किये हुये अपने एहसानों को याद दिलाया है और उस उपकार का भी उल्लेख किया है जो वह उन पर करना चाहता है। 'मुनाफ़िक़ों' और 'मुश्रिकों' को युद्ध की धमकी दी गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर उस प्रतिज्ञा अथवा 'बैअत' का उल्लेख किया गया है जो हुदैबिया के स्थान पर मुसलमानों ने अपनें 'नबी' (सल्ल०) से की थी। और फिर कहा गया है कि जो लोग इस प्रतिज्ञा को भंग कर देंगे वे अपना ही बुरा करेंगे और जो लोग इसे पूरा करेंगे अल्लाह उन्हें इस का बड़ा बदला देगा।

फिर नबी सल्ल० को यह ख़बर दी गई है कि अब जब कि आप (सल्ल०) कुशलतापूर्वक मदीना वापस हो रहे हैं तो वे बद्दू जो टाल-मटोल कर के पीछे रह गये थे और 'उमरा' के लिए घर से आप (सल्ल०) के साथ निकले थे—तरह-उरह के वहाने करेंगे, वे कहेंगे कि हम मजबूर थे, नहीं तो अवश्य आप के साथ 'उमरा' को चलते।

नबी सल्ल० से कहा गया है कि उन की बातों के जवाब में साफ़-साफ़ कह देना कि अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बेखबर नहीं है। आप (सल्ल०) को इस की सूचना भी दे दी गई है कि घर बैठ रहने वाले उन मुहिमों पर जहाँ उन्हें ग़नीमतों के मिलने की आशा होगी आप (सल्ल०) के साथ चलने के लिए आग्रह करेंगे। परन्तु उन्हें साथ चलने की इजाज़त कदापि न दी जाये। उन से कह दिया जाये कि आगे चल कर तुम्हारे 'ईमान' और सत्यप्रियता की परीक्षा होगी। और यह परीक्षा उस समय होगी जब कि बड़ी-बड़ी मुहिमें पेश आयेंगी उस अवसर पर यदि तुम ने अपने 'ईमान' का परिचय दिया तो तुम्हारी पिछली ग़लती को अल्लाह क्षमा कर देगा। और तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा परन्तु यदि उस समय भी तुम अपनी पहली नीति पर जमे रहे, तो अल्लाह तुम्हें यातना दे कर रहेगा।

फिर बताया गया है कि वे कौन से लोग हैं जो वास्तव में विवश हैं, 'जिहाद' के लिए यदि वे नहीं निकलते तो इस में उन का कोई दोष नहीं।

फिर उन लोगों को जिन्हों ने पेड़ के नीचे नबी सल्ल० के हाथ पर 'बैअत' की थी इस बात की शुभसूचना दी गई है कि अल्लाह उन से राज़ी और ख़ुश हुआ उन पर शान्ति उतारी और बदले में उन्हें एक ऐसी विजय प्रदान की जो जल्द प्राप्त होगी (दे० आयत १८) और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे।

इस के वाद 'ईमान' वालों से कहा गया है कि यदि हुदैबिया की सन्धि न होती और 'काफ़िरों' से तुम्हारी लड़ाई हो जाती तो भी विजय तुम्हारी ही होती, 'काफ़िर' पीठ फेर कर मैदान से भाग निकलते परन्तु अल्लाह ने युद्ध नहीं होने दिया। क्योंकि मक्के में बहुत से ऐसे स्त्री-पुरुष भी थे जो मुसलमान हो चुके थे परन्तु अपने 'ईमान' को छिपाये हुये थे। वस्ती में इन के घर 'काफ़िरों' के घरों से मिले-जुले थे यदि लड़ाई होती तो ये मुसलमान भी मारे जाते। इन के बारे में यही समझा जाता कि ये 'काफ़िर' हैं, अल्लाह ने उन्हें अपनी दयालुता से बचा लिया।

'सूरा' के अन्तिम भाग में यह हर्षजनक सूचना दी गई है कि मुसलमान अब मक्का में दाख़िल होंगे, उन्हें कोई भय न होगा, वे 'उमरा' करेंगे इस प्रकार नबी सल्ल० के उस स्वप्न को अल्लाह पूरा कर देगा जो आप (सल्ल०) ने मदीना में देखा था। साथ ही मुसलमानों को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि नबी सल्ल० के नेतृत्व में अल्लाह के 'दीन' को विजय और प्रभावपूर्ण शक्ति प्राप्त होगी। इतिहास इस का साक्षी है कि अल्लाह का यह वादा पूरा हो कर रहा।

फिर नबी सल्ल० की 'रिसालत' की घोषणा करते हुये आप (सल्ल०) के साथियों की विशेषताओं और उन के अनुपम गुणों का वर्णन किया गया है। और उस वादे को दोहराते हुये जो अल्लाह ने ईमान' वालों से कर रखा है इस 'सूरा' को समाप्त किया गया है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़त्ह
(मदीना में उतरी–'आयतें' २९)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. निस्सन्देह हम ने तुम्हें (हे मुहम्मद !) विजय प्रदान की एक खुली विजय,[1]

२. ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले गुनाह और पिछले सब क्षमा कर दे,[2] और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दे, और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाये,

३. और अल्लाह तुम्हारी प्रभावपूर्ण सहायता करे।

४. वही है जिस ने 'ईमान' वालों के दिलों में शान्ति उतारी[3] ताकि उन का 'ईमान' और बढ़ जाये[4]। अल्लाह की हैं आकाशों और धरती की सेनायें,[5] और अल्लाह जानने वाला और तत्वदर्शी है।

५. ताकि वह 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों को ऐसे बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी पहुँचा दे कि उन में सदैव रहें, और उन की बुराइयों को उन से दूर कर दे[6]—और यह अल्लाह की दृष्टि में बहुत बड़ी सफलता है—

VICTORY
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Lo! We have given thee (O Muhammad) a signal victory.

2. That Allah may forgive thee of thy sin that which is past and that which is to come, and may perfect His favour unto thee, and may guide thee on a right path.

3. And that Allah may help thee with strong help —

4. He it is Who sent down peace of reassurance into the hearts of the believers that they might add faith unto their faith. Allah's are the hosts of the heavens and the earth, and Allah is ever Knower, Wise —

5. That He may bring the believing women into Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide, and may remit from them their evil deeds — That, in the sight of Allah, is the supreme triumph —

سورة الفتح مدنية وهي تسع وعشرون آية وأربع ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ①

لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ②

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ③

هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ④

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ⑤

१. यह संकेत 'हुदैबिया' की सन्धि की ओर है (दे० सूरा का परिचय)। यह वास्तव में इस बात की शुभ सूचना थी कि इस सन्धि के फलस्वरूप अच्छे परिणाम सामने आयेंगे। इस के नतीजे में 'इस्लाम' की शक्ति बढ़ेगी और उसे महान् विजय प्राप्त होगी।

२. दे० सूरा अन-नस्र आयत ३।

३. अर्थात् आत्म-सन्तोष, इत्मीनान (Conviction) और स्थिरता। जब 'ईमान' वाले अल्लाह और उस के 'रसूल' की बात मान लेते हैं तो अल्लाह उन के दिलों को सन्तुष्ट और निश्चिन्त कर देता है। दिलों में कोई संशय और सन्देह शेष नहीं रहता। वे समझते हैं कि हम जिस मार्ग पर हैं वही सच्चाई का मार्ग है। सत्य के लिए अपने प्राण तक निछावर करने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होता। यही कारण है कि हम देखते हैं कि जब 'नबी' सल्ल० ने मुसलमानों को 'उमरा' के लिए मक्का चलने को कहा तो वे तैयार हो गये हालांकि उन्हें मालूम था कि वे दुश्मनों के गढ़ में जा रहे हैं जो उन के ख़ून के प्यासे हैं। दे० आयत १८, २६।

४. जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में अल्लाह के आदेशों का पालन करता और उस की अवज्ञा से बचता है तो इस से उस का 'ईमान' बढ़ता और मज़बूत होता है; परन्तु यदि वह अल्लाह की अवज्ञा करने लगता है, तो इस से उस का 'ईमान' घटता और कमज़ोर होता है।

५. अर्थात् आकाशों और धरती की समस्त शक्तियाँ अल्लाह ही के हाथ में हैं। समस्त साधनों का वही मालिक है। वह चाहे तो क्षण-भर में 'काफ़िरों' को परास्त कर दे। किसी की मजाल नहीं जो उस के फ़ैसले को रोक सके।

६. अर्थात् अल्लाह उन की ख़ताओं को क्षमा कर दे और उन से राज़ी हो जाये। आदमी से कोई-न-कोई भूल हो ही जाती है और कोई-न-कोई ख़राबी तो मनुष्य में रह ही जाती है, अल्लाह 'ईमान' वालों की ख़ताओं को क्षमा कर देगा और उन की ख़राबियों को उन से दूर कर देगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. और 'मुनाफ़िक़' पुरुषों और 'मुनाफ़िक़' स्त्रियों, और 'मुश्रिक' पुरुषों और 'मुश्रिक' स्त्रियों को यातना दे, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं। उन्हीं पर बुरा चक्कर आ पड़ा है, और अल्लाह उन पर क्रुद्ध हुआ और उन पर लानत की, और उस ने उन के लिए 'जहन्नम' तैयार कर रक्खा है, और वह पहुंचने की बुरी जगह है[७]।

6. And may punish the hypocritical men and the hypocritical women, and the idolatrous men and the idolatrous women, who think an evil thought concerning Allah. For them is the evil turn of fortune, and Allah is wroth against them and made ready for them hell, a hapless journey's end.

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾

७. और अल्लाह की हैं आकाशों और धरती की सेनायें,[८] और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

7. Allah's are the hosts of the heavens and the earth, and Allah is ever Mighty, Wise.

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

८. निस्सन्देह हम ने (हे मुहम्मद !) तुम्हें साक्षी[९] और शुभ सूचना देने वाला और सचेत-कर्त्ता बना कर भेजा है,[१०]

8. Lo! We have sent thee (O Muhammad) as a witness and a bearer of good tidings and a warner.

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٨﴾

९. ताकि तुम लोग अल्लाह और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' लाओ, और उसे मदद पहुँचाओ, और उस की प्रतिष्ठा करो, और प्रातः-काल और सन्ध्या समय उस की (अल्लाह की) 'तसबीह' करो।

9. That ye (mankind) may believe in Allah and His messenger, and may honour Him, and may revere Him, and may glorify Him at early dawn and at the close of day.

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۚ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

१०. जो लोग तुम से (हे मुहम्मद !) 'बैअत' करते हैं वे अल्लाह ही से 'बैअत' करते हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। अब जिस ने तोड़ दिया, वह तोड़ कर अपना ही बुरा करेगा; और जिस ने उसे पूरा किया जिस की प्रतिज्ञा अल्लाह से की है,[११] उसे वह बहुत बड़ा बदला प्रदान करेगा।

10. Lo! those who swear allegiance unto thee (Muhammad), swear allegiance only unto Allah. The Hand of Allah is above their hands. So whosoever breaketh his oath, breaketh it only to his soul's hurt; while whosoever keepeth his covenant with Allah, on him will He bestow immense reward.

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۗ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾

७. अर्थात् यह सारा संघर्ष इसलिए है कि मानव की परीक्षा ली जाये और यह फ़ैसला कर दिया जाये कि कौन अल्लाह का आज्ञाकारी है और कौन उस का अवज्ञाकारी है। वह 'ईमान' वालों के द्वारा इस का फ़ैसला करना चाहता है कि अल्लाह के मानने वालों का परिणाम दूसरा है और उस के दुश्मनों का परिणाम दूसरा है। ऐसा नहीं हो सकता कि दोनों गरोहों का परिणाम एक हो।

८. दे० फ़ुटनोट ५।

९. अर्थात् सत्य की गवाही देने वाला, हक़ को पेश करने वाला।

१०. जिस काम के लिए अल्लाह ने 'रसूल' को खड़ा किया है उस काम में उस का साथ देना 'ईमान' वालों का परम कर्तव्य है। और यह 'क़ियामत' तक मुसलमानों के लिए अनिवार्य है।

११. दूसरे शब्दों में यहाँ यह बात कही जा रही है कि जिस ने 'रसूल' का हुक्म माना उस ने अल्लाह का हुक्म माना। इस लिए कि 'रसूल' अल्लाह ही के हुक्म पर चलने के लिए लोगों को आमन्त्रित करता है। अरब में हाथ पर हाथ मारने या हाथ में हाथ देने का अर्थ दृढ़ प्रतिज्ञा करना होता था। जब कोई व्यक्ति हाथ में हाथ दे देता तो यही समझा जाता कि सौदा हो चुका; इस व्यक्ति ने अपने वचन दे दिये। दे० आयत १८।

वृक्ष के नीचे 'ईमान' वालों ने नबी सल्ल० के हाथ पर जो 'बैअत' (بيعت) की थी उस का अर्थ यही था कि वे इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं कि नबी सल्ल० के आदेशों का पालन करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. (हे 'नबी' !) जो बद्दू पीछे रह गये थे[12] वे अब तुम से कहेंगे : हमारे माल और हमारे घर वालों ने हमें फँसा रक्खा था, आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना कीजिए[13]। ये लोग अपनी जबानों से ऐसी बात कहते हैं जो इन के दिलों में नहीं है। कहो : कौन है जो अल्लाह के यहाँ तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हो, यदि वह तुम्हें कोई हानि पहुँचाना चाहे या तुम्हें कोई लाभ पहुँचाना चाहे ? अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

11. Those of the wandering Arabs who were left behind will tell thee: Our possessions and our households occupied us, so ask forgiveness for us! They speak with their tongues that which is not in their hearts. Say: Who can avail ye aught against Allah, if He intend you hurt or intend you profit? Nay, but Allah is ever Aware of what ye do.

سيقول لك المخلفون من الاعراب
شغلتنا اموالنا واهلونا فاستغفر لنا
يقولون بالسنتهم ما ليس في قلوبهم
قل فمن يملك لكم من الله
شيئا ان اراد بكم ضرا او اراد بكم
نفعا بل كان الله بما تعملون
خبيرا ﴿١١﴾

१२. ऐसा नहीं था बल्कि तुम ने यह समझ लिया था कि 'रसूल' और 'ईमान' वाले अपने घर वालों में लौट कर कभी आयेंगे ही नहीं, और यह बात तुम्हारे दिलों को भली लगी, और तुम ने जो कुछ समझा बुरा समझा, और तुम थे बरबाद होने वाले लोग।

12. Nay, but ye deemed that the mesesnger and the believers would never return to their own folk, and that was made fair-seeming in your hearts, and ye did think an evil thought, and ye were worthless folk.

بل ظننتم ان لن ينقلب الرسول
والمؤمنون الى اهليهم ابدا وزين
ذلك في قلوبكم وظننتم ظن السوء
وكنتم قوما بورا ﴿١٢﴾

१३. और जो कोई अल्लाह पर और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' न लाया तो जान लो कि हम ने 'काफ़िरों' के लिए दहकती आग तैयार कर रक्खी है।

13. And as for him who believeth not in Allah and His Messenger — Lo! We have prepared a flame for disbelievers.

ومن لم يؤمن بالله ورسوله فانا
اعتدنا للكفرين سعيرا ﴿١٣﴾

१४. और आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

14. And Allah s is the Sovereignty of the heavens and the earth. He forgiveth whom He will, and punisheth whom He will, And Allah is ever Forgiving, Merciful.

ولله ملك السموت والارض يغفر
لمن يشاء ويعذب من يشاء وكان
الله غفورا رحيما ﴿١٤﴾

१५. जल्द ही जब तुम 'ग़नीमतें' लेने चलोगे तो ये पीछे रहने वाले कहेंगे : हमें अपने साथ चलने दो। ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह की कही बात बदल दें। कहो : तुम हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले से ऐसा ही कह दिया है। तो वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम हम से ईर्ष्या करते हो"। नहीं, बल्कि ये लोग समझते थोड़ा ही हैं[14]।

15. Those who were left behind will say, when ye set forth to capture booty: Let us go with you. They fain would change the verdict of Allah. Say (unto them, O Muhammad): Ye shall not go with us. Thus hath Allah said beforehand. Then they will say: Ye are envious of us. Nay, but they understand not, save a little.

سيقول المخلفون اذا انطلقتم الى
مغانم لتاخذوها ذرونا نتبعكم
يريدون ان يبدلوا كلم الله
قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من
قبل فسيقولون بل تحسدوننا
بل كانوا لا يفقهون الا قليلا ﴿١٥﴾

१२. अर्थात् जो टाल-मटोल कर के पीछे रह गये थे और नबी सल्ल० के साथ 'उमरा' के लिए घर से नहीं निकले थे, वे यह समझते थे कि मुसलमान तबाही की ओर जा रहे हैं, ये लौट कर नहीं आ सकते। मक्का के लोग जो इन के खून के प्यासे हैं इन्हें कब लौटने देंगे। पीछे रह जाने वालों में से एक गरोह मदीना में मौजूद था। और दूसरा गरोह उन बद्दुओं का था जो मदीना के आस-पास देहातों में रहते थे।

१३. अर्थात् वे अपने दिल के खोट को छिपाने के लिए इस तरह के बहाने करेंगे।

१४. नबी सल्ल० को पहले से सूचित किया जा रहा है कि जो लोग 'उमरा' करने के लिए आप (सल्ल०) के साथ नहीं निकले और अपने घरों में ही टाल-मटोल कर के रह गये वही उन मुहिमों पर आप (सल्ल०) के साथ चलने को कहेंगे जहाँ उन्हें 'ग़नीमतों' के मिलने की आशा होगी। ऐसे लोगों को कदापि अपने साथ न चलने दें। उन से कह दिया जाये कि अल्लाह हम से कह चुका है कि तुम हमारे साथ नहीं जाओगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. पीछे रह जाने वाले बद्दुओं से कहो : जल्द ही तुम्हें ऐसे लोगों की तरफ़ चलने को कहा जायेगा जो बड़े ही लड़ाका होंगे,[१५] तुम उन से लड़ोगे या वे अधीन हो जायेंगे; तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे, तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा; और यदि तुम फिर गये जैसे पहले फिर गये थे, तो वह तुम्हें दुखदायिनी यातना देगा।

16. Say unto those of the wandering Arabs who were left behind: Ye will be called against a folk of mighty prowess, to fight them until they surrender; and if ye obey, Allah will give you a fair reward; but if ye turn away as ye did turn away before, He will punish you with a painful doom.

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ
إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ
أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ
أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ
مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾

१७. न अन्धे पर कोई दोष है, और न लँगड़े पर कोई दोष है, और न बीमार पर कोई दोष है[१६] (क्योंकि ये लड़ने के योग्य नहीं)। और जो कोई अल्लाह का और उस के 'रसूल' का हुक्म मानेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी; और जो कोई पलट जायेगा, उसे वह दुखदायिनी यातना देगा।

17. There is no blame for the blind, nor is there blame for the lame, nor is there blame for the sick (that they go not forth to war). And whoso obeyeth Allah and His messenger, He will make him enter Gardens underneath which rivers flow; and whoso turneth back, him will He punish with a painful doom.

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ
يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ
يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾

१८. निश्चय ही अल्लाह 'ईमान' वालों से राज़ी हुआ जब कि (हे मुहम्मद !) वे एक वृक्ष के नीचे (तुम्हारे हाथ में हाथ दे कर) तुम से 'बैअत' कर रहे थे,[१७] और उस ने जान लिया जो कुछ उन के दिलों में था, फिर उस ने उन ('ईमान' वालों) पर शान्ति उतारी, और बदले में उन्हें विजय दी जो जल्द ही प्राप्त होने वाली है[१८]।

18. Allah was well pleased with the believers when they swore allegiance unto thee beneath the tree and He knew what was in their hearts, and He sent down peace of reassurance on them, and hath rewarded them with a near victory;

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ
يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَ
أَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾

१९. और बहुत सी 'ग़नीमतें' जो तुम्हारे हाथ आयेंगी। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

19. And much booty that they will capture. Allah is ever Mighty, Wise.

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾

१५. अर्थात् जो लोग नबी (सल्ल०) के साथ मक्का नहीं गये और उन मुहिमों पर जाने के लिए कहेंगे उन के 'ईमान' और सत्य-निष्ठा की परीक्षा होगी। और उन की यह परीक्षा उस समय होगी जब बड़ी-बड़ी मुहिमें पेश आयेंगी, जब रूम और ईरान जैसे राज्यों से लड़ना होगा उस अवसर पर यदि उन्हों ने अपने 'ईमान' और निष्ठा का परिचय दिया तो उन की पिछली ग़लती को क्षमा कर दिया जायेगा और उन्हें अच्छा बदला दिया जायेगा परन्तु यदि वे अपनी पहली ही नीति पर जमे रहे, तो वे अल्लाह की यातना से न बच सकेंगे।

१६. अर्थात् जो लोग विवश हैं वे यदि 'जिहाद' के लिए नहीं निकलते तो उन पर कोई दोष नहीं।

१७. यह संकेत हुदैबिया की सन्धि से पहले की एक विशेष घटना की ओर है। नबी सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ि० को अपना राजदूत बना कर क़ुरैश वालों के पास यह सन्देश दे कर भेजा था कि हम 'उमरा' के लिए आये हैं। लड़ने नहीं आये हैं। 'उमरा' करके हम हट जायेंगे। हमारी राह में रुकावट न डाली जाये। हज़रत उस्मान रज़ि० के लौटने में देर हुई। आप (सल्ल०) को यह सूचना मिली कि हज़रत उस्मान रज़ि० को शहीद (क़त्ल) कर दिया गया। इस पर आप (सल्ल०) ने अपने साथियों से मरने-मारने पर 'बैअत' ली। यह 'बैअत' आप (सल्ल०) ने एक वृक्ष के नीचे ली थी। यह 'बैअत' इतिहास में 'बैअतुर्रिज़वान' के नाम से प्रसिद्ध है (दे० सूरा का परिचय)।

१८. जल्द ही प्राप्त होने वाली विजय से अभिप्रेत 'ख़ैबर' की विजय है (दे० सूरा का परिचय)। जो इस सन्धि के बाद ही प्राप्त हुई है। अभी ख़ैबर की विजय नहीं हुई थी कि अल्लाह ने पहले से ही इस की शुभसूचना मुसलमानों को दे दी ताकि अल्लाह पर उन का भरोसा और अधिक बढ़ जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. अल्लाह ने तुम से बहुत सी 'ग़नीमतों' का वादा किया है जो तुम्हारे हाथ आयेंगी,[१९] अब यह तो उस ने तुम्हें पहले दे दिया,[२०] और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये, और यह इस लिए कि 'ईमान' वालों के लिए एक निशानी हो, और वह तुम्हें एक सीधे मार्ग पर लगा दे।

20. Allah promiseth you much booty that ye will capture, and hath given you this in advance, and hath withheld men's hands from you, that it may be a token for the believers, and that He may guide you on a right path.

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ
عَنْكُمْ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾

२१. और दूसरी भी हैं जिन पर तुम क़ुदरत नहीं पा सके हो, अल्लाह ने उन्हें क़ब्ज़े में कर रक्खा है और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है[२१]।

21. And other (gain) which ye have not been able to achieve, Allah will compass it. Allah is Able to do all things.

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ
اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾

२२. और यदि ये 'कुफ़्र' करने वाले तुम से लड़ते तो तुमको पीठ दिखा देते, फिर वे न कोई यार पायेंगे और न मददगार[२२]।

22. And if those who disbelieve join battle with you they will take to flight, and afterward they will find no protecting friend nor helper.

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ
ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾

२३. यह अल्लाह की रीति है जो पहले से चली आई है। और तुम कभी अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन होता न पाओगे।

23. It is the law of Allah which hath taken course aforetime. Thou wilt not find for the law of Allah aught of power to change.

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

२४. और वही है जिस ने उन के हाथों को तुम से[२३] और तुम्हारे हाथों को उन से मक्का के भीतर रोके रक्खा, इस के बाद कि उस ने तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

24. And He it is Who hath withheld men's hands from you, and hath withheld your hands from them, in the valley of Mecca after He had made you victors over them. Allah is Seer of what ye do.

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ
اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ
اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

१९. अर्थात् आगे तो अल्लाह तुम्हें बहुत कुछ प्रदान करने वाला है।

२०. यह संकेत ख़ैबर की विजय की ओर है।

२१. आगे चल कर 'ईमान' वालों को मक्का पर भी विजय प्राप्त हुई और फिर कुछ ही वर्षों के पश्चात् उन्हों ने इराक़, मिस्र, ईरान और रूम आदि बड़े-बड़े राज्यों का तख़्ता उलट दिया, हालांकि जिस समय उन्हें इस की सूचना दी जा रही थी वे इस की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

२२. अर्थात् यदि हुदैबिया की सन्धि न होती और 'काफ़िरों' से लड़ाई छिड़ जाती तो इस में विजय तुम्हारी ही होती, 'काफ़िर' कदापि विजयी नहीं हो सकते थे। अल्लाह का सदा से यह नियम रहा है कि यदि 'काफ़िरों' और 'ईमान' वालों का मुक़ाबला हो तो विजय 'ईमान' वालों को ही प्राप्त होती है चाहे वे संख्या में कम ही क्यों न हों। इस लिए कि नैतिक शक्ति में यदि कोई गरोह बढ़ा हुआ है तो चाहे और दूसरे सामान और साधन उस के पास कम ही हों विजय उसी की होती है। परन्तु यदि नैतिक शक्ति और चरित्र-बल किसी गरोह को प्राप्त नहीं है तो वह कदापि विजयी नहीं हो सकता (दे० सूरा अल-अनफाल आयत ६५-६६)। तुम्हें यदि लड़ने से रोक दिया गया तो इस लिए नहीं कि युद्ध में तुम्हारी विजय न होती बल्कि कुछ दूसरे उद्देश्यों के अन्तर्गत यह फ़ैसला किया गया।

२३. 'काफ़िर' भयभीत हो गये और उन्हें तुम से लड़ने का साहस न हो सका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. ये वही तो हैं जिन्हों ने 'कुफ़्' किया और तुम्हें 'मस्जिदे हराम' (काबा) से रोक दिया, और 'क़ुरबानी' के जानवर भी रुके पड़े रहे अपने ठिकाने तक पहुँचने न पाये[२४]। यदि यह बात न होती कि बहुत से 'ईमान' वाले पुरुष और 'ईमान' वाली स्त्रियाँ हैं जिन्हें तुम जानते नहीं बेख़बरी में तुम उन्हें कुचल देते फिर उन के कारण तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती[२५] (तब देखते), अब इस से यह होगा कि अल्लाह जिसे चाहे 'रहमत' (दयालुता की छाया) में दाख़िल कर ले, कहीं वे अलग-अलग रहे होते तब तो हम उन में से 'कुफ़्' करने वालों को बड़ी ही दुःख भरी यातना देते।

25. These it was who disbelieved and debarred you from the Inviolable Place of Worship, and debarred the offering from reaching its goal. And if it had not been for believing men and believing women, whom ye know not — lest ye should tread them underfoot and thus incur guilt for them unknowingly; that Allah might bring into His mercy whom He will — If (the believers and the disbelievers) had been clearly separated, We verily had punished those of them who disbelieved with painful punishment.

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾

२६. जब 'कुफ़्' करने वालों ने अपने दिलों में पक्ष को जगह दी, अज्ञान के पक्ष को,[२६] तो अल्लाह ने अपने 'रसूल' पर और 'ईमान' वालों पर अपनी विशेष शान्ति उतारी और उन्हें परहेज़गारी की बात पर जमाये रक्खा, और वे इसी के हक़दार थे और इसी के योग्य[२७]। और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है।

26. When those who disbelieve had set up in their hearts zealotry, the zealotry of the Age of Ignorance, then Allah sent down His peace of reassurance upon His messenger and upon the believers and imposed on them the word of self-restraint, for they were worthy of it and meet for it. And Allah is Aware of all things.

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾

२४. अर्थात् क़ुरबानी के जानवर जिन्हें मुसलमान अपने साथ ले आये थे उस स्थान तक नहीं पहुँच सके जहाँ उन्हें ज़ब्ह करने की रीति चली आ रही है।

२५. यहाँ उस परिस्थिति का उल्लेख किया गया है जिस में अल्लाह ने लड़ाई की नौबत नहीं आने दी। एक ओर क़ुरबानी के जानवर रुके खड़े थे; मुसलमानों को क़ुरबानी से रोक दिया गया था, मुसलमान थे कि 'काबा' के दर्शन और 'उमरा' के लिए व्याकुल हो रहे थे। दूसरी ओर 'काफ़िरों' के दिलों में डर समा गया था यदि वे लड़ते भी तो मुँह की खाते। परन्तु अल्लाह ने मुसलमानों ही के हित के लिए लडाई नहीं होने दी। मक्के में ऐसे बहुत से स्त्री-पुरुष थे जो मुसलमान हो चुके थे परन्तु वे अपने 'ईमान' को छिपाये हुये थे। बस्ती में इन के घर 'काफ़िरों' के घरों से अलग नहीं थे बल्कि बस्ती में 'काफ़िर' और मुसलमान बिल्कुल मिलें-जुले थे। यदि लड़ाई होती तो ये मुसलमान भी मारे जाते। अल्लाह ने अपनी दयालुता से इन्हें बचा लिया।

२६. यहाँ अज्ञान का शब्द 'इस्लाम' के मुक़ाबले में प्रयुक्त हुआ है। इस्लाम उस सभ्यता और संस्कृति का नाम है जो वास्तविक ज्ञान पर आधारित है और 'अज्ञान' वह सभ्यता है जिस का मूल आधार जड़ता, तात्कालिक जोश और आवेश तथा ज्ञान के अभाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अरब में सैकड़ों वर्ष से इस बात को मान्यता प्राप्त थी कि ऐसे व्यक्ति के रोकने का अधिकार किसी को नहीं है जिस ने 'इहराम' बाँध लिया हो और 'हज्ज' या 'उमरा' के इरादे से मक्का आना चाहता हो। ऐसे व्यक्ति को रोकना तो अलग रहा उसे किसी प्रकार की हानि भी नहीं पहुँचाई जा सकती थी और 'क़ुरैश' के लोग इस बात को अच्छी तरह जानते भी थे परन्तु यह उन का जाहिलाना पक्षपात और अज्ञानतापूर्ण हठ-धर्मी ही थी कि वे हक़ और नाहक़ को नहीं देख सके।

२७. 'काफ़िरों' के विपरीत मुसलमानों की नीति कुछ और ही रही। अल्लाह ने उन पर शान्ति (Peace or cool headedness) उतारी। वे बिफरे नहीं। ठण्डे दिल-दिमाग़ से काम लिया। अल्लाह और उस के 'रसूल' की ओर से उन्हें जो आदेश मिला उन्हों ने उस का पालन किया। अनुशासन (Discipline) का पूर्ण रूप से आदर किया। इसी को यहाँ परहेज़गारी कहा गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. निस्सन्देह अल्लाह नें अपने 'रसूल' को स्वप्न सच्चा दिखाया जिस में 'हिकमत' थी। तुम 'मस्जिदे हराम' में ज़रूर दाख़िल होगे—यदि अल्लाह ने चाहा—बेखटके, अपने सिर के बाल मूंडे हुये और कतरे हुये, तुम्हें कोई डर न होगा[२८]। हुआ यह कि वह जानता था जो कुछ कि तुम नहीं जानते थे, तो उस ने उस के अतिरिक्त एक जल्द ही प्राप्त होने वाली विजय ठहरा दी।

27. Allah hath fulfilled the vision for His messenger in very truth. Ye shall indeed enter the Inviolable Place of Worship, if Allah will, secure, (having your hair) shaven and cut, not fearing. But He knoweth that which ye know not, and hath given you a near victory beforehand.

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ
مُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا
قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

२८. वही है जिस ने अपने 'रसूल' को मार्गदर्शन और सच्चे दीन (सत्य धर्म) के साथ भेजा, ताकि वह उसे पूरे-के-पूरे 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे[२९]। और अल्लाह का गवाह होना बहुत है।

28. He it is Who hath sent His messenger with the guidance and the religion of truth, that He may cause it to prevail over all religion. And Allah sufficeth as a witness.

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهُ بِالْهُدٰى وَ
دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

२९. मुहम्मद अल्लाह के 'रसूल' हैं। और जो लोग उन के साथ हैं वे 'काफ़िरों' के मुक़ाबले में कठोर[३०] और आपस में दयालु हैं। तुम उन्हें देखोगे 'रुकूअ' में और 'सजदे' में, अल्लाह का अनुग्रह और प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं। वे अपने चेहरों से पहचाने जाते हैं जिन पर 'सजदों' का प्रभाव है[३१]। यह है उन का चित्र 'तौरात' में और उन का चित्र 'इन्जील' में यह[३२] है कि जैसे कोई खेती हो जिस ने अपना अंकुर निकाला फिर उसे पुष्ट किया फिर वह मोटा हुआ और फिर अपनी नाल पर सीधा खड़ा हो कर खेती वालों का दिल लुभा रहा है——ताकि वह उन से 'क़ाफ़िरों' का जी जलाये। अल्लाह नें इन लोगों से जो कि 'ईमान' लाये हैं और अनुकूल कर्म किये हैं, क्षमा और बड़े बदले का वादा कर रक्खा है।

29. Muhammad is the messenger of Allah. And those with him are hard against the disbelievers and merciful among themselves. Thou (O Muhammad) seest them bowing and falling prostrate (in worship), seeking bounty from Allah and (His) acceptance. The mark of them is on their foreheads from the traces of prostration. Such is their likeness in the Torah and their likeness in the Gospel — like as sown corn that sendeth forth is shoot and strengtheneth it and riseth firm upon its stalk, delighting the sowers — that He may enrage the disbelievers with (the sight of) them. Allah hath promised, unto such of them as believe and do good works, forgiveness and immense reward.

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ
عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا
سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا
سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ
ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَمَثَلُهُمْ فِي
الْاِنْجِيْلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ
الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ
مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

———

२८. नबी सल्ल० ने मदीना में यह स्वप्न देखा था कि हम मदीना में दाखिल हुये और सिर का मुंडन कराया और बाल कतरवाये जैसा कि 'उमरा' करने वाला अपने सिर का मुण्डन कराता और बाल कतरवाता है। नबी सल्ल० ने जब 'उमरा' का इरादा किया तो आप (सल्ल०) के साथियों ने समझा कि हम इसी साल मक्का पहुँच कर उमरा करेंगे। परन्तु हुदैबिया में जो सन्धि हुई उस में यह बात तै हुई कि मुसलमान अगले वर्ष 'उमरा' करेंगे और तीन दिन के लिए 'काफ़िर' मक्का से बाहर चले जायेंगे (दे० सूरा का परिचय)। 'मुनाफ़िक़ों' ने इस मौक़े पर मज़ाक़ उड़ाया कि यह कैसा स्वप्न था। आप (सल्ल०) ने कहा: क्या मैं ने यह भी कहा था कि इसी साल ऐसा होगा? निश्चय ही ऐसा हो कर रहेगा तुम बेखटके मक्का पहुँच कर 'काबा' का 'तवाफ़' करोगे और तुम में कोई सिर मुँडा कर और बाल कतरवा कर 'इहराम' खोलेगा। और वहाँ जाने के बाद किसी प्रकार का भय न होगा। अगले साल ऐसा ही हुआ, मुसलमानों ने निश्चिन्त हो कर 'उमरा' किया। इसी की सूचना आगे दी गई है।

२९. यहाँ मुसलमानों को शुभसूचना दी गई है कि नबी सल्ल० के नेतृत्व में अल्लाह के 'दीन' को विजय प्राप्त हो कर रहेगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अल्लाह का यह वादा पूरा हो कर रहा।

३०. दे० सूरा अल-माइदा फ़ुटनोट १७।

३१. अर्थात् उन के चेहरे इस बात की गवाही देते हैं कि शुद्धात्मा, पुण्यशील और अल्लाह के सेवक हैं। उन के 'ईमान' का प्रकाश और तेज उन के चेहरों से प्रस्फुटित होता है।

३२. दे० ज़बूर (Ps.) ७२ : १६; मत्ता (Matt,) १३ : २४; मुरक़ुस (Mark.) ४ : २८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९–अल-हुजुरात
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में मुसलमानों को बहुत से नैतिक तथा आचार से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं। सूरा की आयत ४ में उन लोगों को टोका गया है जो 'नबी' सल्ल० के कमरों (Apartments) के बाहर खड़े हो कर आप (सल्ल०) को पुकारने लगते थे। हालाँकि उन के लिए उचित बात यह थी कि वे आप (सल्ल०) की प्रतीक्षा करते जब आप (सल्ल०) बाहर निकलते तो उस समय आप से मिलते। अल्लाह के रसूल सल्ल० को इस तरह बाहर खड़े हो कर पुकारने लगना सभ्यता और आप (सल्ल०) की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था; इस से आप के दूसरे आवश्यक कामों में भी रुकावट पड़ सकती थी। इस 'सूरा' की आयत ४ में कमरों के लिए 'अल-हुजुरात' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अल-हुजुरात' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' के उतरने का समय सूरा अन-नूर के अवतरण काल के बाद है। अनुमान है कि यह सूरा सन् ६ हि० या सन् ७ हि० के अन्त में उतरी है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

यह झिड़की (Reprimand) की 'सूरा' है परन्तु सख़्ती को कम करने के लिए एक विशेष वर्णन-शैली अपनाई गई है और सम्बोधित किया गया है तो 'ईमान वाले' कह कर। और उन लोगों की प्रशंसा की गई है जो आचारवान् थे। और यह कह कर कि "तुम्हारे बीच अल्लाह का 'रसूल' है" उन के सम्मान को बढ़ाया गया है। इस तरह डर और ख़ुशी, प्रशंसा और शुभसूचना सब की झलक इस 'सूरा' में मिलती है।

पिछली 'सूरा' (सूरा अल-फ़त्ह) में नबी सल्ल० के साथियों की प्रशंसा की गई है और उन के गुणों का वर्णन किया गया है, प्रस्तुत 'सूरा' में विस्तारपूर्वक अच्छे गुणों और विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जिन्हें जीवन में अपनाना 'ईमान' वालों का परम कर्तव्य है। पिछली 'सूरा' में नबी सल्ल० के साथियों के प्रति कहा गया है : "वे 'काफ़िरों' के मुक़ाबले में कठोर और आपस में दयालु हैं" (आयत २९)। उन के बारे में यह भी कहा गया है कि वे अल्लाह के अनुग्रह और उस की प्रसन्नता के इच्छुक हैं (आयत २९); प्रस्तुत सूरा में इन अभीष्ट गुणों की व्याख्या और विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

इस 'सूरा' में मुसलमानों को महत्वपूर्ण नैतिक आदेश दिये गये हैं। उन्हें बताया गया है कि उन का व्यवहार नबी सल्ल० के साथ कैसा होना चाहिए। आप (सल्ल०) के साथ व्यवहार करने में शिष्टता के किन नियमों का पालन करना आवश्यक है। इस सिलसिले में पहली बात यह कही गई है कि अल्लाह और उस के 'रसूल' के मुक़ाबले में आगे न बढ़ो। हर बात में यह देख लेना चाहिए कि अल्लाह और उस के 'रसूल' का आदेश क्या है। जब अल्लाह और उस के 'रसूल' किसी बात का फ़ैसला कर दें तो 'ईमान' वालों को अपने तौर पर फ़ैसला करने का कोई हक़ नहीं रहता।

फिर कहा गया है कि 'रसूल' के मुक़ाबले में अपनी आवाज़ ऊँची न करो। यह केवल शिष्टता की बात नहीं है बल्कि यह 'ईमान' का तक़ाज़ा है। इस आदेश की अवहेलना से मनुष्य का सारा किया-धरा अकारथ हो जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बताया गया है कि जब नबी सल्ल० घर के भीतर हों तो उन्हें पुकारना न शुरू कर दो तुम्हें उन की प्रतीक्षा करनी चाहिए। जब वे बाहर आयें तो उन से मिल लो। नबी सल्ल० का सम्पर्क सभी लोगों से है यदि इसी तरह से हर व्यक्ति आ कर आप (सल्ल०) को पुकारने लग जाये तो दूसरे आवश्यक काम आप (सल्ल०) कैसे कर सकेंगे।

इस के बाद मुसलमानों को बताया गया है कि उन का व्यवहार आपस में कैसा होना चाहिए ? आपस के मामलों में किन बातों का ध्यान रखना उन के लिए आवश्यक है ? इस सिलसिले में यह आदेश दिया गया है कि यदि किसी गरोह के बारे में कोई सूचना मिले तो ज़रूरी कार्रवाई करने से पहले तुम्हें यह देखना चाहिए कि सूचना तुम्हें किस के द्वारा मिली है, उस पर विश्वास किया जा सकता है या नहीं। यदि सूचना किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा मिली हो जो ग़ैर ज़िम्मेदार और अल्लाह और उस के 'रसूल' का अवज्ञाकारी है तो कोई कार्रवाई करने से पहले मिली हुई सूचना के बारे में भली-भाँति छान-बीन कर लेनी चाहिए।

इस के बाद बताया गया है कि यदि अल्लाह का 'रसूल' तुम्हारी हर बात मान ले तो तुम्हारी बहुत सी बातें ऐसी हो सकती हैं कि उन के कारण तुम परेशानी में पड़ जाओ। विचार-विमर्श के अवसर पर तुम अल्लाह के 'रसूल' को या अपने नायक और अधिकारी व्यक्ति को अच्छी-से-अच्छी राय और परामर्श अवश्य दो परन्तु तुम्हारा यह आग्रह करना कि तुम्हारी हर बात मान ली जाये उचित नहीं।

फिर बताया गया है कि यदि मुसलमानों के दो गरोहों में लड़ाई हो जाये तो तुम्हें ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए। यह बात भी खोल कर बताई गई है कि वे कौन-कौन सी बातें हैं जो किसी समाज में कलह-विग्रह का कारण बनती हैं। इस सिलसिले में मुसलमानों को जो आदेश दिये गये हैं सामाजिक जीवन में उन का बड़ा महत्व है। संक्षेप में उन आदेशों का विवरण यह है:

एक-दूसरे की हँसी न उड़ाओ, किसी पर चोटें न करो, किसी पर दोष न लगाओ, दुर्वचनों से बचो, एक-दूसरे को बुरे नामों से न पुकारो। बदगुमानी से बचो। लोगों के ऐबों और बुराइयों की टोह में न रहो, किसी की पीठ-पीछे निन्दा न करो।

मुसलमानों को सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के प्रति नैतिक आदेश देने के पश्चात् समस्त मनुष्यों को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि सारे ही मनुष्य मानव-जाति से सम्बन्ध रखते हैं। क़बीलों, नस्लों आदि की दृष्टि से जो प्रकीर्णता और भिन्नता पाई जाती है वह तो केवल पहचान के लिए है। इस के आधार पर परस्पर भेद-भाव करना और किसी को श्रेष्ठ और किसी को तुच्छ और अधम जानना उचित नहीं। मनुष्य होने में सब बराबर हैं। लोगों में श्रेष्ठ और आदरणीय व्यक्ति वही है जो चरित्र और आचरण की दृष्टि से सब से बढ़ा हुआ हो; और जो सब से अधिक अल्लाह से डरता हो।

'सूरा' के अन्त में यह बताते हुये कि वास्तव में सच्चे 'ईमान' वाले कौन होते हैं बद्दुओं की उस नीति को निन्दनीय ठहराया गया है जो उन्हों ने अपना रक्खी थी। वे दावा तो इस बात का करते थे कि हम 'ईमान' लाये हैं परन्तु वास्तव में 'ईमान' अभी उन के दिलों में उतर नहीं सका था। यही कारण है कि जब नबी सल्ल० मुसलमानों को ले कर 'उमरा' के ध्येय से मक्का गये तो ये लोग पीछे रह गये और आप सल्ल० के साथ मक्का जाने पर तैयार नहीं हुये। ये लोग समझ रहे थे कि इस समय मक्का जाना अपने को काल के गाल में दे देना है। हालाँकि इन लोगों को 'रसूल' के फ़ैसले पर राज़ी हो कर आप (सल्ल०) के साथ निकल पड़ना चाहिए था।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हुजुरात
(मक्का में उतरी — 'आयतें' १८)

THE PRIVATE APARTMENTS
Revealed at Al-Madinah

سورة الحجرات مدنية وهي ثماني عشرة آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह और उस के 'रसूल' के आगे न बढ़ो,[1] और अल्लाह से डरते रहो निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

1. O ye who believe! Be not forward in the presence of Allah and His messenger, and keep your duty to Allah. Lo! Allah is Hearer, Knower.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ
يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

२. हे 'ईमान' लाने वालो ! अपनी आवाज़ें 'नबी' की आवाज़ से ऊँची न करो, और न तुम उन से बेधड़क बात करो जिस तरह एक-दूसरे से करते हो, कहीं तुम्हारा किया-धरा बरबाद हो जाये और तुम्हें खबर भी न हो[2]।

2. O ye who believe! Lift not up your voices above the voice of the Prophet, nor shout when speaking to him as ye shout one to another, lest your works be rendered vain while ye perceive not.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ
كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ
وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②

३. जो लोग अल्लाह के 'रसूल' के पास अपनी आवाज़ें दबी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए सिद्ध कर दिया है[3]। इन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

3. Lo! they who subdue their voices in the presence of the messenger of Allah, those are they whose hearts Allah hath proven unto righteousness. Theirs will be forgiveness and immense reward.

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۤئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ
عَظِيْمٌ ③

४. जो लोग तुम्हें 'हुजरों' (कमरों) के बाहर ही से पुकारते हैं, उन में अधिकतर बुद्धि नहीं रखते[4]।

4. Lo! those who call thee from behind the private apartments, most of them have no sense.

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۤءِ الْحُجُرٰتِ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④

१. अर्थात् अल्लाह और उस के 'रसूल' की इजाज़त के बिना किसी काम में आगे न बढ़ो। जब कोई बात पेश आये तो सब से पहले यह मालूम करना चाहिए कि इस में अल्लाह और उस के 'रसूल' का क्या हुक्म है। जब अल्लाह और 'रसूल' किसी बात का फ़ैसला कर दें, तो फिर 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों का यह काम नहीं होता कि वे मनमानी करें (दे० सूरा अल-अहज़ाब आयत ३६)।

२. इस 'आयत' में 'ईमान' वालों को शिष्टता एवं सभ्यता की शिक्षा दी गई है। उन्हें सिखाया गया है कि 'नबी' सल्ल० की मज्लिस में किस तरह रहें। सोचने की बात है कि जब 'रसूल' के सामनें ज़ोर से बोलने में सब किया-धरा अकारथ जाता है, तो उस की अवज्ञा करने के बाद हमारे पास क्या शेष रह सकता है। फिर उन लोगों का परिणाम क्या होगा जो अपने को इस का पाबन्द ही नहीं समझते कि उन्हें अल्लाह और उस के आदेशों का पालन करना है।

साबित बिन क़ैस रज़ि० इस 'आयत' को सुन कर घर बैठ गये और रोना शुरू कर दिया। जब उन से इस का कारण पूछा गया तो बताया कि मैं तो 'जहन्नमी' (नारकी) हो गया, मेरा तो सब किया-धरा नष्ट हो गया क्योंकि मैं 'नबी' सल्ल० के सामने ऊँची आवाज़ से बोला करता हूँ। जब उन्हें नबी सल्ल० की ओर से इस बात की शुभसूचना मिली कि वे 'जन्नत' (स्वर्ग) में स्थान पाने वाले हैं तब उन की बेचैनी और व्याकुलता दूर हुई और वे आप (सल्ल०) की मज्लिस में आये।

३. अर्थात् जो लोग 'नबी' सल्ल० का आदर करते और आप (सल्ल०) के सामने शिष्टतापूर्वक रहते हैं; ढीठ और दुस्साहसी लोगों की तरह नहीं रहते, वही लोग हैं जो 'तक़वा' (धर्म-परायणता) में पूरे उतरे। 'नबी' के सामने दुस्साहस दिखाना ऐसा ही है जैसे कोई अल्लाह के सामने दुस्साहस से काम ले। 'नबी' अल्लाह का ही प्रतिनिधि अथवा दूत होता है। उस का अनादर और अपमान ऐसा ही है जैसे कोई अल्लाह के साथ शत्रुता का व्यवहार करने लग जाये।

४. यह बात उन लोगों के बारे में कही गई है जो मदीना के आस-पास रहते थे या मदीना के रहने वाले थे परन्तु उन का आचार बद्दुओं जैसा था, वे आप (सल्ल०) के दरवाज़ों के बाहर खड़े हो कर आप (सल्ल०) को पुकारने लगते। इस आयत में उन्हें टोका गया है कि वे अपनी इस हरकत से बाज़ आयें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. और यदि ये लोग 'सब्र' से काम लेते इतनी देर कि तुम निकल कर इन की ओर आते, तो यह इन के लिए अच्छा होता[५]। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

5. And if they had had patience till thou camest forth unto them, it had been better for them. And Allah is Forgiving, Merciful.

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

६. हे 'ईमान' लाने वालो! यदि तुम्हारे पास कोई अवज्ञाकारी कोई खबर ले कर आये, तो छान-बीन कर लो, ऐसा न हो कि तुम किसी गरोह के साथ बेजा हरकत कर बैठो, फिर तुम्हें अपने किये पर पछतावा हो[६]।

6. O ye who believe! If an evil-liver bring you tidings, verify it, lest ye smite some folk in ignorance and afterwards repent of what ye did.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

७. और जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का 'रसूल' मौजूद है। बहुत सी बातें ऐसी हैं कि यदि वह उन में तुम्हारे कहने पर चलता, तो तुम संकट में पड़ जाते;[७] परन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए 'ईमान' को प्रिय कर दिया और उसे तुम्हारे दिलों में रचा-बसा दिया और 'कुफ़्र' और पापाचार और अवज्ञा को तुम्हारे लिए अप्रिय बना दिया। यही लोग सीधे-मार्ग पर चलने वाले हैं।

7. And know that the messenger of Allah is among you. If he were to obey you in much of the government, ye would surely be in trobule; but Allah hath endeared the faith to you and hath beautified it in your hearts, and hath made disbelief and lewdness and rebellion hateful unto you. Such are they who are rightly guided.

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧

८. यह सब अल्लाह का अनुग्रह और एहसान है; और अल्लाह जानने वाला और तत्त्वदर्शी है।

8. (It is) a bounty and a grace from Allah; and Allah is Knower, Wise.

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

---

५. नबी सल्ल० बेकार तो बैठते नहीं, आप (सल्ल०) अपना पूरा समय अल्लाह ही के काम में लगाते हैं, आप (सल्ल०) का सम्पर्क बहुत से लोगों से है, यदि सवेरे से शाम तक बराबर लोग आप (सल्ल०) से मिलने के लिए आते रहें तो आप (सल्ल०) और दूसरा काम कैसे कर सकते हैं। इस लिए यदि तुम नबी (सल्ल०) से मिलने जाओ तो आप के दरवाज़े पर पहुँच कर पुकारने न लग जाओ बल्कि इन्तज़ार करो जब वे बाहर निकलें तो उन से मिल लो। यह तो बड़ी नादानी की बात होगी कि कोई यह समझने लग जाये कि वह जिस समय भी आप (सल्ल०) के पास जाये आप (सल्ल०) को उस से मिलने के लिए बाहर आ जाना चाहिए।

६. अर्थात् यदि किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा तुम्हें कोई सूचना मिले जो ग़ैर-ज़िम्मेदार और अल्लाह और 'रसूल' के आदेशों का उल्लंघन करने वाला हो तो कोई कार्रवाई करने से पहले मिली हुई सूचना के बारे में भली-भाँति छान-बीन कर लो। जब तक उस की तसदीक़ न हो जाये कोई कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। हाँ, यदि वह सूचना किसी ऐसे साधन या किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा प्राप्त हुई हो जिस का विश्वास किया जा सके तो उस पर विश्वास कर के कार्रवाई की जा सकती है। एक अवज्ञाकारी व्यक्ति तुम्हें किसी गरोह के बारे में झूठी खबर दे सकता है। यदि तुम उस पर विश्वास कर के उस गरोह के विरुद्ध कोई कार्रवाई कर बैठे तो बाद में तुम्हें अपने किये पर पछताना पड़ेगा।

७. अर्थात् तुम में से किसी व्यक्ति को यह चाहने का हक़ नहीं है कि उस की हर बात मान ली जाये। यदि तुम्हारी हर बात को अल्लाह का 'रसूल' कार्य-रूप में लाने लग जाये तो इस से बड़ी दुश्वारी पेश आये। विचार-विमर्श के अवसर पर 'रसूल' को या अपने नायक को अच्छी-से-अच्छी राय और परामर्श अवश्य दो। परन्तु तुम्हें यह आग्रह नहीं करना चाहिए कि तुम्हारी बात मान ही ली जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और यदि 'ईमान' वालों के दो गरोह परस्पर लड़ पड़ें, तो उन के बीच सुलह-सफ़ाई करा दो। फिर यदि उन में से एक (गरोह) दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो ज़्यादती करता है तुम उस से लड़ो[८] यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर पलट आये,[९] अब यदि वह पलट आये, तो उन दोनों के बीच न्याय के साथ सुलह-सफ़ाई करा दो, और इन्साफ़ से काम लो[१०]। निस्सन्देह अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से प्रेम रखता है[११]।

9. And, if two parties of believers fall to fighting, then make peace between them. And if one party of them doth wrong to the other, fight ye that which doth wrong till it return unto the ordinance of Allah; then, if it return, make peace between them justly, and act equitably. Lo! Allah loveth the equitable.

وَإِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى
الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ
اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا
بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ⑨

१०. 'ईमान' वाले तो भाई-भाई हैं। तो अपने दो भाइयों के बीच सुलह-सफ़ाई करा दो और अल्लाह का डर रक्खो ताकि तुम पर दया की जाये।

10. The believers are naught else than brothers. Therefore make peace between your brethern and observe your duty to Allah that haply ye may obtain mercy.

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ
اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ⑩

११. हे 'ईमान' लाने वालो ! कोई गरोह किसी गरोह की हँसी न उड़ाये, हो सकता है कि वे उन से अच्छे हों, और न स्त्रियाँ दूसरी स्त्रियों की (हँसी उड़ायें) हो सकता है कि वे उन से अच्छी हों; और न अपनों पर चोटें करो, और न एक-दूसरे को बुरा नाम दो। 'ईमान' के बाद पापाचार का नाम भी बुरा है[१२]। और जो कोई बाज़ न आये, तो ऐसे लोग ज़ुल्म करने वाले हैं।

11. O ye who believe! Let not a folk deride a folk who may be better than they (are) nor let women (deride) women who may be better than they are; neither defame one another, nor insult one another by nicknames. Bad is the name of lewdness after faith. And whoso turneth not in repentance, such are evil-doers.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ
قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا
نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا
مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا
بِالْاَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ
الْاِيْمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑪

८. मुसलमानों को परस्पर लड़ना नहीं चाहिए परन्तु यदि उन में लड़ाई हो ही जाये तो सब से पहले तुम्हें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि उन में मेल-मिलाप और समझौता हो जाये। यदि तुम इस में सफल न हो सको तो यह देखो कि ज़्यादती किस की ओर से हो रही है और हक़ पर कौन है। जो हक़ पर हो उस का साथ दो। तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम सदा सत्य और न्याय का समर्थन करो। हाँ, यह बात अवश्य सामने रहनी चाहिए कि 'काफ़िरों' से युद्ध करने और मुसलमानों से लड़ने में बड़ा अन्तर है। तुम्हारी यह लड़ाई केवल शान्ति की स्थापना के लिए होनी चाहिए न कि किसी और उद्देश्य के अन्तर्गत। 'सहाबा' के समय में पारस्परिक लड़ाइयों के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम निर्धारित हुये थे :

(क) जो घायल या ज़ख़्मी हो जाये उसे क़त्ल न किया जाये। (ख) उन लोगों को भी क़त्ल न किया जाये जो मैदान छोड़ कर भाग जावें। (ग) जीतने वाले लोग उन मुसलमानों के माल को 'ग़नीमत' का माल न समझें जो लड़ाई में हार गये हों। (घ) हारने वाले मुसलमानों के बच्चों को लौंडी-गुलाम न बनाया जाये।

९. अर्थात् तुम ज़्यादती करने वाले से उस समय तक लड़ो जब तक कि वह अल्लाह की ओर न पलटे। जब वह बाज़ आ जाये तो फिर यह लड़ाई बन्द हो जानी चाहिए।

१०. अर्थात् लड़ाई बन्द हो जाने के बाद दोनों गरोहों के बीच न्याय और इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर देना चाहिए। जिन लोगों को फ़ैसले के लिए नियुक्त किया जाये वे कदापि किसी प्रकार के पक्षपात से काम न लें। वे वही फ़ैसला करें जो न्याय-संगत और सत्यानुकूल हो।

११. दे० सूरा अल-मुमतहिना आयत ८।

१२. अर्थात् किसी का अपमान करना, किसी पर चोटें करना, बुरा नाम रखना और किसी पर दोष लगाना और दुर्वचनों का प्रयोग करना 'ईमान' वालों का काम नहीं। 'ईमान' के बाद तो दुराचार का नाम भी नहीं आना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. हे 'ईमान' वालो ! बहुत से गुमान से बचा करो—निस्सन्देह कोई-कोई गुमान गुनाह होता है[१३]—और न टोह में पड़ो,[१४] और न तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुये भाई का मांस खाये[१५] ? यह तो तुम्हें अप्रिय है—और अल्लाह से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह 'तौबा' क़बूल करने वाला और दयावान् है।

12. O ye who believe! Shun much suspicion; for lo! some suspicion is a crime. And spy not, neither backbite one another. Would one of you love to eat the flesh of his dead brother? Ye abhor that (so abhor the other)! And keep your duty (to Allah). Lo! Allah is Relenting, Merciful.

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ
الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا
تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا
اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ
مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ
تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

१३. हे लोगो ! हम ने तुम्हें पैदा किया एक पुरुष और स्त्री से,[१६] और तुम्हारी बहुत सी जातियाँ और वंश बनाये, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के यहाँ तो तुम में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सब से अधिक डर रखता है। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है[१७]।

13. O mankind! Lo! We have created you male and female, and have made you nations and tribes that ye may know one another. Lo! the noblest of you, in the sight of Allah, is the best in conduct. Lo! Allah is Knower, Aware.

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ
وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ
لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾

१३. जिस व्यक्ति के बारे में कुछ मालूम न हो उस के प्रति अच्छा गुमान ही करना चाहिए । बिना किसी वजह के बदगुमानी से काम लेना उचित नहीं, इस से आपस के सम्बन्धों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दिलों में एक-दूसरे के प्रति नफ़रत और घृणा पैदा होने लगती है, समाज में कटुता आ जाती है। आदमी के स्वभाव में सरलता शेष नहीं रहती।

१४. अर्थात् तुम्हें लोगों के ऐबों और बुराइयों की टोह में नहीं रहना चाहिए इस से भी सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
हज़रत उमर रज़ि० गश्त करते हुये एक बार एक घर के पास से गुज़र रहे थे, उन्हों ने ऐसी आवाज़ें सुनीं जिन से यह शंका होती थी जैसे घर में शराबी इकट्ठे हो कर मदिरा-पान कर रहे हों। आप ने दरवाज़ा खटखटाया जब दरवाज़ा न खुला तो दीवार फाँद कर अन्दर दाखिल हुये। जो लोग घर के भीतर थे उन्हों ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि आप ने तीन ऐसे काम किये जो वैध (Lawful) नहीं। एक तो बुराइयों की टोह में लगना, दूसरे दीवार फाँदना और तीसरे बिना वजह की पकड़। हज़रत उमर रज़ि० ने जब यह बात सुनी तो उन लोगों को छोड़ कर बाहर चले आये और कोई रोक-टोक नहीं की।

१५. किसी की अनुपस्थिति में उस की बुराई करना धर्म के प्रतिकूल है इसे 'ग़ीबत' अथवा परोक्ष निन्दा कहते हैं और यदि वह बुराई जो बयान की जाये उस में न हो तो वह ग़ीबत नहीं बल्कि तोहमत या मिथ्यारोपण है। ग़ीबत से पारस्परिक प्रेम-भाव का सत्तानाश हो जाता है। ग़ीबत में लोगों को मज़ा मिलता है इसी लिए मांस खाने से इस की उपमा दी गई; परन्तु है यह मरे हुये भाई के शरीर का मांस। जिस तरह मुरदा विवश होता है कुछ कर नहीं सकता उसी तरह वह व्यक्ति भी विवश होता है जिस की अनुपस्थिति में कोई उस की बुराई बयान करता है। वह बेख़बर होता है कुछ कर नहीं सकता।

१६. इस का यह अनुवाद भी किया गया है "हे लोगो ! हम ने तुम्हें पैदा किया पुरुष और स्त्री"।

१७. अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ और आदरणीय व्यक्ति वही है जो चरित्र और आचरण की दृष्टि से सब से बढ़ कर हो, और जो सब से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हो। रंग-रूप, वेष-भूषा, जाति, वंश, देश आदि में जलवायु, भौगोलिक परिस्थिति आदि के कारण जो प्रकीर्णता पाई जाती है वह तो केवल पहचान के लिए है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. बद्दू कहते हैं : हम 'ईमान' लाये। कह दो : तुम 'ईमान' नहीं लाये, परन्तु यों कहो, "हम इस्लाम लाये" और अभी 'ईमान' तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ है[१८]। और यदि तुम अल्लाह और उस के 'रसूल' के कहने पर चलोगे, तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ काट न लेगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

14. The wandering Arabs say: We believe. Say (unto them, O Muhammad): Ye believe not, but rather say "We submit," for the faith hath not yet entered into your hearts. Yet, if ye obey Allah and His messenger, He will not withhold from you aught of (the reward of) your deeds. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا
وَلَٰكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ
فِي قُلُوبِكُمْ وَإِن تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾

१५. 'ईमान' वाले तो बस वे हैं जो अल्लाह पर और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' लाये फिर सन्देह में नहीं पड़े, और अपने मालों और अपनी जानों को अल्लाह की राह में लगा दिया। यही लोग सच्चे हैं।

15. The (true) believers are those only who believe in Allah and His messenger and afterward doubt not, but strive with their wealth and their lives for the cause of Allah. Such are the sincere.

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَ
رَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾

१६. (इन बद्दुओं से) कहो : क्या तुम अल्लाह को अपने 'दीन' (धर्म) का परिचय देते हो, अल्लाह तो जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

16. Say (unto them, O Muhammad): Would ye teach Allah your religion, when Allah knoweth all that is in the heavens and all that is in the earth, and Allah is Aware of all things?

قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

१७. (हे 'नबी'!) ये लोग तुम पर यह एहसान रखते हैं कि 'इस्लाम' लाये हैं। कहो : तुम मुझ पर अपने 'इस्लाम' लाने का एहसान न रक्खो; बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें 'ईमान' की राह दिखाई, यदि तुम (अपने दावे में) सच्चे हो।

17. They make it a favour unto thee (Muhammad) that they have surrendered (unto Him). Say: Deem not your Surrender a favour unto me; nay, but Allah doth confer a favour on you, inasmuch as He hath led you to the Faith, if ye are earnest.

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُل لَّا تَمُنُّوا
عَلَيَّ إِسْلَامَكُم بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ
هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

१८. निस्सन्देह अल्लाह आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

18. Lo! Allah knoweth the Unseen of the heavens and the earth. And Allah is Seer of what ye do.

* * *

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

———

१८. मदीना के आस-पास के बहुत से बद्दू केवल इस लिए मुसलमान हो गये थे कि उन्हों ने यह समझ लिया था कि 'इस्लाम' की उभरती हुई ताक़त का मुक़ाबला करना उन के बस में नहीं। वे सच्चे दिल से 'ईमान' नहीं लाये थे केवल उन की गणना मुसलमानों में होने लगी थी। 'ईमान' उन के दिलों में अभी उतरा नहीं था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०–क़ाफ़०

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' के आरम्भ में जो अरवी अक्षर (Arabic Alphabate) आया है उसी को इस सूरा का नाम निर्धारित किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा क़ाफ़०' 'इस्लाम' के आरम्भिक काल की सूरा है। परन्तु यह सूरा उस समय की है जब खुल कर लोगों को 'इस्लाम' की ओर बुलाया जाने लगा था : आरम्भ में लगभग तीन वर्ष तक गुप्त रूप से लोगों को 'इस्लाम' की ओर आमन्त्रित किया जाता रहा है, खुले तौर से लोगों के सामने भाषण नहीं दिया जाता था। इस तरह एक छोटा सा गरोह 'ईमान' वालों का पैदा हो गया। वे व्यक्ति जिन्हें उन के जीवन-काल ही में 'जन्नती' होने की हर्षजनक सूचना नबी सल्ल० ने दी थी इसी समय में 'ईमान' लाये थे। यह मुद्दत लगभग तीन वर्ष तक रही। इस के वाद लोगों को खुल कर 'इस्लाम' की ओर बुलाने का सिलसिला शुरू हो गया। परन्तु इस समय में भी यह नौबत नहीं आई थी कि विरोधी दल मरने-मारने पर तुल जाये, इस समय में सूरा क़ाफ़० और इस जैसी दूसरी सूरतें उतरनी शुरू हुईं। यह सिलसिला लगभग दो वर्ष तक रहा फिर इस के वाद 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' का विरोध बढ़ता ही गया यहाँ तक कि नवी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को मक्का छोड़ कर 'हिजरत' करनी पड़ी।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अत-तहरीम पर समाप्त होता है।

प्रस्तुत 'सूरा' से ले कर सूरा अल-वाक़िआ तक की सूरतें हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'रिसा-लत' और क़ुरआन को एक विशेष पहलू से प्रस्तुत करती हैं। वह पहलू यह है कि क़ुरआन एक ऐसे दिन की सूचना देता है जब लोगों को उन के अच्छे कर्मों का बदला दिया जायेगा। और उन लोगों को वह यातना की धमकी देता है जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराते हैं या उस के 'नबियों' और उस की भेजी हुई किताबों को मानने से इन्कार करते हैं। इन सातों सूरतों का केन्द्रीय विषय एक ही है परन्तु केन्द्रीय विषय पर विवेचन विभिन्न सूरतों में विभिन्न पहलुओं से हुआ है। प्रस्तुत सूरा में मरने के पश्चात् लोगों को दोवारा जीवित किये जाने (Resurrection) को प्रमाणित किया गया है और विरोधियों के सन्देहों को दूर किया गया है। और आने वाली 'सूरा' में इस की पुष्टि की गई है कि 'क़ियामत' के दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा और इस से सम्बन्ध रखने वाले सन्देहों को दूर किया गया है।

'सूरा' के आरम्भ में इस बात का उल्लेख किया गया है कि जब अल्लाह की ओर से लोगों को एक सचेत करने वाला 'रसूल' आया तो वे आश्चर्य में पड़ गये और कहने लगे कि यह एक आश्चर्य की बात है। क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे तो हमें पुनः जीवित किया जायेगा ? यह लौटाया जाना तो बहुत दूर की बात है। इस के बाद अल्लाह की अगणित निशानियों को पेश कर के साबित किया गया है कि मरने के बाद 'क़ियामत' में लोगों को दोबारा जीवित किया जायेगा। फिर संक्षेप में विभिन्न जातियों का उल्लेख कर के बताया गया है कि इन्कार करने वालों का क्या परिणाम हुआ करता है। आगे चल कर मौत और 'क़ियामत' का नक़्शा पेश किया गया है, बताया गया है कि किस तरह उस दिन लोगों की आंखों पर से परदे उठ जायेंगे और वे उस चीज़ को देख रहे होंगे जिस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के मानने से आज इन्कार करते हैं। 'जहन्नम' का पेट 'काफ़िरों' से भरा जायेगा और 'जन्नत' उन लोगों के निकट कर दी जायेगी जो अल्लाह का डर रखते हैं।

'सूरा' के अन्त में नबी सल्ल० को ताकीद की गई कि आप (सल्ल०) धैर्य्य से काम लें और जो कुछ लोग कहते हैं उस प र ध्यान न दें। प्रातः काल और सन्ध्या समय और रात में 'नमाज़' पढ़ें, और क़ुरआन के द्वारा लोगों को समझाते और याददिहानी कराते रहें। रहा मरने के बाद दोबारा जीवित कर के लोगों को एकत्रित करना तो जिस दिन धरती फटेगी वे क़ब्रों से तेज़ी से निकल पड़ेंगे। यह इकट्ठा करना अल्लाह के लिए बहुत सहज है (आयत ४४)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' क़ाफ़०

(मक्का में उतरी – 'आयतें' ४५)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. क़ाफ़०[1] क़सम है 'क़ुरआन' मजीद की[2]—
२. कहाँ इन्हें तो इस पर आश्चर्य हुआ कि इन के पास इन्हीं में से एक सचेतकर्त्ता आया;[3] तो 'काफ़िरों' ने कहा : यह बड़े आश्चर्य की बात है।
३. क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे···? यह पलटना तो बहुत दूर की बात है।

४. हम जानते हैं जो कुछ धरती उन में से घटाती है[4] और हमारे पास एक परिरक्षक किताब है[5]।

५. (वह आश्चर्य की बात नहीं) बल्कि इन लोगों ने सत्य को झुठलाया जब वह इन के पास आया अब ये उलझाव में पड़े हैं।

६. क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आकाश की ओर नहीं देखा, हम ने उसे कैसा बनाया और उसे सजाया और उस में कहीं कोई त्रुटि नहीं।

QAF

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Qaf. By the glorious Qur'an,
2. Nay, but they marvel that a warner of their own hath come unto them; and the disbelievers say: This is a strange thing:
3. When we are dead and have become dust (shall we be brought back again)? That would be a far return!
4. We know that which the earth taketh of them, and with Us is a recording Book.

5. Nay, but they have denied the truth when it came unto them, therefor they are now in troubled case.

6. Have they not then observed the sky above them, how We have constructed it and beautified it, and how there are no rifts therein?

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝١
بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝٢
ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ
بَعِيْدٌ ۝٣
قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَ
عِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝٤
بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ
اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝٥
اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ
بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝٦

---

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १।
२. दे० आयत ४५।
३. अर्थात् इन्हें इस पर आश्चर्य हुआ हालाँकि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि एक सचेत करने वाला आया और उस ने इन्हें सचेत किया और इन से कहा कि तुम्हें दोबारा जीवित कर के उठाया जायेगा बल्कि आश्चर्य की बात यह है कि इन्हों ने उसे मानने से इन्कार कर दिया और पुनः जीवित हो कर उठने पर आश्चर्य करने लगे। जब कि सचेत करने वाला कहीं बाहर का नहीं है वह तो इन का जाना-पहचाना आदमी है। ये लोग आसानी से मालूम कर सकते हैं कि वह सच्चा है या झूठा।
अल्लाह ने मनुष्य को ज़रूरत की सभी चीज़ें प्रदान की हैं। फिर यह कैसे सम्भव था कि वह उसे जीवन का सच्चा मार्ग दिखलाने का प्रबन्ध न करता। अल्लाह की ओर से यदि कोई राह दिखाने वाला 'रसूल' आया है तो यह आश्चर्य की बात नहीं है। और न यह कोई आश्चर्य की बात है कि मनुष्य को मरने के बाद दोबारा उठाया जायेगा। आश्चर्य की बात तो यह होती कि मनुष्य को दुनिया में स्वतन्त्रता प्रदान करने के बाद फिर उस से पूछा ही न जाता कि उस ने दुनिया में क्या काम किये। अल्लाह के आदेशों का पालन किया या उस का आज्ञाकारी बन कर रहा।
४. अर्थात् तुम यह सोचते हो कि जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो किस तरह हमें दोबारा जीवित कर के खड़ा किया जायेगा हालाँकि अल्लाह के लिए यह कुछ भी मुश्किल नहीं। धरती जो कुछ तुम्हारे शरीर के साथ करती है, तुम्हारे शरीर का एक-एक अंश जिस तरह बिखर कर मिट्टी में मिल जाता है अल्लाह को सब मालूम है। तुम्हें दोबारा उठाने का वह पूरा सामर्थ्य रखता है।
५. अर्थात् हर चीज़ हमारे यहाँ लिखी हुई समझो। किसी चीज़ से हम बेखबर रह जायें यह सम्भव नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और धरती को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमा दिये और हम ने उस में हर प्रकार की शोभित चीज़ें उगाईं—

7. And the earth have We spread out, and have flung firm hills therein, and have caused of every lovely kind to grow thereon,

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑦

८. आँखें खोल देने का सामान है और ध्यान दिलाने का हर एक रुजू रहने वाले वन्दे के लिए[६]—

8. A vision and a reminder for every penitent slave.

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ⑧

९. और हम ने आकाश से वरकत वाला पानी उतारा फिर उस से बाग़ उगाये और अनाज, जिस की कि फ़स्ल कटती है—

9. And We send down from the sky blessed water whereby We give growth unto gardens and the grain of crops:

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا
فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ⑨

१०. और खजूरों के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष (उगाये) जिन में गुथे हुए गाभे लगे होते हैं।

10. And lofty date-palms with ranged cluster,

وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ ⑩

११. वन्दों के लिए रोज़ी का सामान—और उस (पानी) से हम ने मुर्दा धरती में जान डाल दी—इसी तरह (क़बरों से) निकलना है[७]।

11. Provision (made) for men; and therewith We quicken a dead land. Even so will be the resurrection of the dead.

رِزْقًا لِلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً
مَيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ⑪

१२. इन से पहले झुठलाया था 'नूह' की जाति वालों ने और 'अर-रस्स' वालों ने और 'समूद' ने

12. The folk of Noah denied (the truth) before them, and (so did) the dwellers at Ar-Rass and (the tribe of) Thamud,

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ
وَثَمُودُ ⑫

१३. और 'आद' और फ़िरऔन ने और लूत के भाइयों ने

13. And (the tribe of) 'Aad, and Pharaoh, and the brethren of Lot,

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ⑬

१४. और 'ऐका' वालों ने और 'तुव्वअ्' की जाति वालों ने, हर एक ने 'रसूलों' को झुठलाया तो मेरी (यातना की) धमकी पूरी हो कर रही।

14. And the dwellers in the wood, and the folk of Tubb'a: every one denied their messengers, therefor My threat took effect.

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ
كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ⑭

१५. क्या पहली वार पैदा करने में हम असमर्थ रहे,[८] नहीं, वल्कि ये लोग नवीन सृष्टि के वारे में सन्देह में हैं।

15. Were We then worn out by the first creation? Yet they are in doubt about a new creation.

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ
مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ⑮

६. जिस किसी व्यक्ति की यहाँ आँख न खुलीं और वास्तविकता तक उसे पहुँच प्राप्त न हो सकी, उस से बढ़ कर अन्धा कोई नहीं कि वह अपने चारों ओर फैली हुई अल्लाह की निशानियों को देखने में असमर्थ रहा।

७. अर्थात् जिस प्रकार हम सूखी हुई धरती में वर्षा कर के जान डाल देते हैं और वह लहलहा उठती है चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली दिखाई देने लग जाती है और हमारा यह काम निरर्थक नहीं होता। वल्कि मुरदा धरती को हम इस लिए जीवित करते हैं ताकि लोगों की आवश्यकतायें पूरी हों, ठीक इसी प्रकार अल्लाह मरने के पश्चात् मनुष्य को दोबारा जीवन प्रदान करेगा ताकि उस के जीवन का वास्तविक परिणाम उस के सामने आ सके। और यह उस की सब से बड़ी आवश्यकता है। यह उन आवश्यकताओं से भी बड़ी आवश्यकता है जिन की पूर्ति के लिए उस का सृष्टिकर्त्ता आकाश से पानी बरसाता है।

८. जब हम ने पहली बार सबकुछ पैदा कर दिया है जैसा कि तुम अपनी खुली आँखों से देख रहे हो तो दोबारा पैदा करना हमारे लिए क्या मुश्किल है। दे० सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत ३३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. हम ने मनुष्य को पैदा किया है और हम जानते हैं जो-कुछ उस के जी में आता है[९]। और हम शाहरग से भी अधिक उस के निकट हैं[१०]।

16. We verily created a man and We know what his soul whispereth to him, and We are nearer to him than his jugular vein.

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾

१७. जब कि दो वसूल करने वाले वसूल करते रहते हैं दाईं ओर से और बाईं ओर से साथ लगे रहते हैं।

17. When the two Receivers receive (him), seated on the right hand and on the left:

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾

१८. जहाँ कोई बात उस के मुँह से निकलती है उस के पास एक ताक में रहने वाला तैयार रहता है।[११]

18. He uttereth no word but there is with him an observer ready.

مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

१९. और मौत की बेहोशी हक़ को साथ लिये आ पहुँची, यही है जिस से तू कतराता था।

19. And the agony of death cometh in truth. (And it is said unto him): This is that which thou wast wont to shun.

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾

२०. और 'सूर' में फूँक मारी गई। यही है वह दिन जिस की धमकी दी गई थी।

20. And the trumpet is blown. This is the threatened Day.

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾

२१. और प्रत्येक जीव इस तरह आया कि उस के साथ हाज़िर करने वाला और एक गवाही देने वाला है[१२]।

21. And every soul cometh, along with it a driver and a witness.

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾

२२. तू इस की ओर से ग़फ़लत में पड़ा था अब हम ने तुझ पर से तेरा परदा हटा दिया तो आज तेरी दृष्टि बड़ी तेज़ है[१३]।

22. (And unto the evil-doer it is said): Thou wast in heedlessness of this. Now We have removed from thee thy covering, and piercing is thy sight this day.

لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾

२३. और उस के पार्श्ववर्त्ती ने कहा : मेरे पास जो-कुछ है यह हाज़िर है[१४]।

23. And (unto the evil-doer) his comrade saith: This is that which I have ready (as testimony).

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾

९. जब उसी ने मनुष्य को पैदा किया है फिर उस से मनुष्य की कोई चीज़ कैसे छिपी रह सकती है। वह मनुष्य के मन में उठने वाली भावनाओं तक को जानता है। मनुष्य अपने इरादों और अपनी धारणाओं और अपने कृत्य आदि किसी चीज़ को भी अल्लाह से छिपा नहीं सकता।

१०. उस से मनुष्य की कोई वस्तु भी छिपी हुई नहीं है। वह हमारे दिल की धड़कनों और हमारी मनोवृत्ति तक से परिचित है।

११. मनुष्य के दायें-बायें दो 'फ़िरिश्ते' नियुक्त होते हैं जो उस की बातों को नोट करते जाते हैं। आदमी के मुँह से कोई बात निकली नहीं कि वे उसे नोट कर लेते हैं उसी तरह जैसे टेप रिकार्ड (Tape Record) में आदमी की हर बात रिकॉर्ड हो जाती है, अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है फिर भी 'फ़िरिश्तों' को लगा दिया कि वे आदमियों के कामों का रिकॉर्ड करते रहें। ताकि 'आखिरत' में जब लोगों के बारे में फ़ैसला किया जाये तो पूरी गवाहियाँ पेश की जा सकें और सब प्रमाण संचित कर दिये जायें फिर कोई व्यक्ति यह न कह सके कि उस के साथ इन्साफ़ नहीं हुआ।

१२. अर्थात् एक-एक आदमी को दो-दो 'फ़िरिश्ते' लायेंगे। एक उसे अदालत में ले जायेगा और दूसरा गवाही देने वाला होगा।

१३. अर्थात् जिस का तू दुनिया में इन्कार करता था अब वह सब-कुछ तेरे सामने है। दुनिया में तू ग़फ़लत में पड़ा रहा और अन्धों की तरह जीवन व्यतीत किया परन्तु अब तू किसी चीज़ का इन्कार नहीं कर सकता। आज तेरी आँखों पर कोई परदा नहीं है। दुनिया में तू ने तरह-तरह के अनुसन्धान किये, प्रकृति के कितने रहस्यों पर से तू ने परदे उठाये। यदि तू नहीं देख सका तो 'आखिरत' के सत्य होने की उन अगणित निशानियों को जो दुनिया में फैली हुई थीं। वास्तविकता क्या है ? मनुष्य क्या है ? ये सब-कुछ बताने के लिए हम ने अपने 'नबियों' को भी भेजा था परन्तु तू ने तो उन की बातों पर ध्यान ही नहीं दिया।

१४. अधिकतर टीकारों का विचार है कि यहाँ पार्श्ववर्ती से अभिप्रेत 'फ़िरिश्ता' है जो अल्लाह के सामने आदमी के कर्मों का रिकॉर्ड पेश करेगा। एक विचार यह भी है कि यहाँ पार्श्ववर्ती 'शैतान' को कहा गया है (दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ३६) 'शैतानों' में एक तो 'इबलीस' है जो समस्त शैतानों का नायक है दूसरा 'शैतान' प्रत्येक आदमी का अलग-अलग होता है जो आदमी के पैदा होने के बाद बहकाने के लिए उस के साथ लग जाता है। वह 'शैतान' कहेगा कि लीजिए मैं इसे बिगाड़ कर और 'जहन्नम' के लिए तैयार कर के लाया हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. डाल दो 'जहन्नम' में हर कृतघ्न द्वेष रखने वाले को,

24. (And it is said): Do ye twain hurl to hell each rebel ingrate,

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾

२५. भलाई को रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले और सन्देह करने वाले को,

25. Hinderer of good, transgressor, doubter,

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾

२६. जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा 'इलाह' (पूज्य) ठहराया डाल दो उसे कठोर यातना में।

26. Who setteth up another god along with Allah? Do ye twain hurl him to the dreadful doom?

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

२७. उस का पार्श्ववर्त्ती बोला : हमारे रब ! इसे मैंने नहीं सरकश बनाया था बल्कि यही परले दरजे की गुमराही में था[१५]।

27. His comrade saith: Our Lord! I did not cause him to rebel, but he was (himself) far gone in error.

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾

२८. (अल्लाह ने) कहा : मेरे सामने झगड़ो मत, मैं तुम्हें पहले ही (यातना की) धमकी दे चुका हूँ।

28. He saith: Contend not in My presence, when I had already proffered unto you the warning.

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾

२९. मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और न मैं बन्दों पर कुछ जुल्म करता हूँ[१६]।

29. The sentence that cometh from Me cannot be changed, and I am in no wise a tyrant unto the slaves.

ع مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾

३०. यह वह दिन होगा जब हम 'जहन्नम' से कहेंगे : क्या तू भर गई ? और वह कहेगी : क्या कुछ और है[१७] ?

30. On the day when We say unto hell: Art thou filled? and it saith: Can there be more to come?

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

३१. और 'जन्नत' डर रखने वालों के समीप कर दी गई कि कुछ भी दूर न रही—

31. And the Garden is brought nigh for those who kept from evil, no longer distant.

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

३२. यह है जिस का तुम से वादा किया जाता था हर उस व्यक्ति के लिए जो रुजू रहने वाला और कर्त्तव्य का पालन करने वाला हो।

32. (And it is said): That is that which ye were promised. (It is) for every penitent and heedful one,

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾

३३. जो बिना देखे 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) से डरा और रुजू रहने वाला दिल ले कर आया।

33. Who feareth the Beneficent in secret and cometh with a contrite heart:

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾

१५. 'जहन्नम' में डाले जाने का समय आ जाने पर आदमी को गुमराह करने वाला 'शैतान' भी उज्र पेश करने लगेगा। कहेगा कि यह व्यक्ति तो स्वयं गुमराह हुआ इस की गुमराही की सज़ा केवल इसी को दी जाये। मुझे इस की गुमराही में न पकड़ा जाये। मैंने इसे गुनाह के लिए मजबूर नहीं किया था यह तो स्वयं गुनाह के मार्ग पर चलना चाहता था।

१६. अर्थात् आज तुम्हारा झगड़ा और वाद-विवाद करना व्यर्थ है। हम ने पहले ही चेतावनी दे दी थी कि जो मेरे आदेशों का उल्लंघन करेगा उसे सज़ा मिल कर रहेगी। अब जो फ़ैसला किया गया वह न्याय के अनुकूल है। बुराई करने वाला और बुराई पर उकसाने वाला दोनों-के-दोनों अदालत की निगाह में अपराधी और दण्ड के भागी हैं।

१७. इस आयत में 'जहन्नम' के विस्तृत क्षेत्र का वर्णन किया गया है। और इस के लिए जो वर्णन-शैली अपनाई गई वह अनुपम है। कोई यदि सोचे कि प्रलय तक जो अरबों लोग 'जहन्नम' के भागी होंगे वे किस 'जहन्नम' में समा सकेंगे तो बताया गया कि 'जहन्नम' में तो ऐसी समाई होगी कि समस्त नारकी लोगों को भक्ष लेने के बाद भी वह यही कहेगी कि और हो तो लाओ मेरा पेट अब भी ख़ाली है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. प्रवेश करो, जाओ इस में सलामती के साथ[१८], यह अमरता का दिन है[१९]।

34. Enter it in peace! This is the Day of immortality.

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

३५. इन के लिए इस में वह सब-कुछ है जो ये चाहें और हमारे यहाँ और भी है[२०]।

35. There they have all that they desire, and there is more with Us.

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾

३६. और कितनी ही नस्लों[२१] को इन से[२२] पहले हम ने विनष्ट किया जो इन से ज़्यादा ज़बरदस्त थीं फिर उन्होंने भूमि को छान मारा, है कहीं बच निकलने की जगह[२३]?

36. And how many a generation We destroyed before them, who were mightier than these in prowess so that they overran the lands! Had they any place of refuge (when the judgement came)?

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾

३७. निश्चय ही इस में उस व्यक्ति के लिए बड़ा अनुस्मारक है जिस के पास दिल हो या वह कान धरे ध्यान के साथ।

37. Lo! therein verily is a reminder for him who hath a heart, or giveth ear with full intelligence.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾

३८. निश्चय ही हम ने आकाशों और धरती को और जो-कुछ इन के बीच है छः दिनों में पैदा किया[२४] और हमें थकान ने छुआ तक नहीं[२५]।

38. And verily We created the heavens and the earth, and all that is between them, in six Days, and naught of weariness touched Us.

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾

३९. तो (हे 'नबी'!) जो-कुछ ये लोग कहते हैं उस पर 'सब्र' करो[२६] और अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करो[२७] सूर्य के निकलने से पहले और डूबने से पहले।

39. Therefor (O Muhammad) bear with what they say, and hymn the praise of thy Lord before the rising and before the setting of the sun;

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾

४०. और रात में भी उस की तसबीह करो[२८] और 'सजदों' (नमाज़ों) के पीछे भी[२९]।

40. And in the night-time hymn His praise, and after the (prescribed) prostrations.

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾

१८. अर्थात् अब तुम्हें हर तरह की सलामती है। न यहाँ कोई बीमारी है, न बुढ़ापा है और न किसी दुर्घटना और न मृत्यु का भय। यहाँ किसी प्रकार का कष्ट और दुःख नहीं, यहाँ आनन्द-ही-आनन्द है।

१९. अर्थात् वह दिन आ गया जो तुम्हारे लिए अमरता का सन्देश लिये हुये है। इस से पहले तो किसी बात में ठहराव न था हर चीज़ नाशवान् थी। अब तुम्हारा कोई सुख और आनन्द छीना नहीं जायेगा। यहाँ दिनों का उलट-फेर नहीं। यहाँ का जीवन भी अमर है और यहाँ का आनन्द भी स्थायी है। तुम अपनी मंज़िल पर पहुँच गये; तुम्हे अब पूर्णता प्राप्त हो गई।

२०. यहाँ तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी होगी। जो-कुछ माँगोगे मिलेगा। और तुम्हें वे नेमतें भी प्रदान की जायेंगी जिन की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

२१. दे० आयत १२-१४।

२२. यह संकेत मक्का वालों की ओर है।

२३. यहाँ बताया जा रहा है कि पहले भी कितनी ही जातियों ने सरकशी की, अल्लाह ने दुनिया ही में उन्हें उन के किये का मज़ा चखा दिया, वे विनष्ट कर दी गईं। इस से तुम उस यातना के बारे में भी अन्दाज़ा कर सकते हो जो अल्लाह के दुश्मनों को 'आख़िरत' में दी जाने वाली है।

२४. दे० सूरा अल-आराफ़ फ़ुटनोट १५।

२५. यह विशाल विश्व जिस के फैलाव और विस्तार का अन्दाज़ा भी नहीं किया जा सका—जिस अल्लाह की रचना है उस के बारे में यह सोचना कि वह दोबारा सृष्टि की रचना नहीं कर सकता मूर्खता है।

२६. दे० सूरा अत-तूर आयत ४८।

२७. यहाँ 'तसबीह' से अभिप्रेत 'नमाज़' है।

२८. इस हुक्म में पाँचों नमाज़ें आ जाती हैं।

२९. अर्थात् केवल 'नमाज़' को ही काफ़ी न समझो, 'नमाज़' अदा करने के बाद भी अल्लाह की 'तसबीह' करते रहना चाहिए। जीवन में अल्लाह का निरन्तर स्मरण करते रहने की आवश्यकता है ताकि बन्दा अपने 'रब' से हर समय जुड़ा रह सके। इस के बिना जीवन अनर्थ और तेजहीन हो जाता है। इस के बिना मनुष्य के लिए जीवन-संघर्ष में सत्य पर दृढ़तापूर्वक जमा रहना सम्भव नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. और कान लगाये रहो उस दिन पर[३०] जब पुकारनें वाला पास ही से पुकारेगा,

41. And listen on the day when the crier crieth from a near place,

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾

४२. जिस दिन लोग चीख़ सुनेंगे जिस के साथ साथ हक़ होगा—यह है (क़बरों से) निकलनें का दिन[३१]।

42. The day when they will hear the (Awful) Cry in truth. That is the day of coming forth (from the graves).

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾

४३. हम ही जीवन प्रदान करते और मृत्यु देते हैं और हमारी ही ओर पहुंचना है—

43. Lo! We it is Who quicken and give death, and unto Us is the journeying:

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾

४४. जिस दिन धरती फटेगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे यह (जीवित कर के लोगों को) इकट्ठा करना हमारे लिए सत्य है।

44. On the day when the earth splitteth asunder from them hastening forth (they come). That is a gathering easy for Us (to make).

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾

४५. हम जानते हैं जो-कुछ ये लोग कहते हैं और तुम उन के साथ ज़बरदस्ती करने के लिए नहीं हो[३२]। तुम तो क़ुरआन के द्वारा उसे समझाते रहो जो मेरी यातना के वादे से डरे।

45. We are best aware of what they say, and thou (O Muhammad) art in no wise a compeller over them. But warn by the Qur'an him who feareth My threat.

* * *

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

---

३०. अर्थात् उस दिन का इन्तज़ार करो।

३१. यह 'क़ियामत' का दिन होगा। जब मरे हुये लोग अचानक उठेंगे तो वे सुन रहे होंगे कि कोई उन्हें क़रीब से पुकार रहा है। हर व्यक्ति को यह पुकार की आवाज़ करीब से सुनाई देगी। दे० आयत ११।

३२. अर्थात् हम इन से निबट लेंगे। ये यदि तुम्हारी बात नहीं मानते हैं तो तुम्हें इस की चिन्ता नहीं होनी चाहिए, तुम्हारा काम यह नहीं कि तुम इन्हें बलपूर्वक राह पर लाओ, तुम्हारा काम केवल समझाना और लोगों को सत्य की ओर बुलाते रहना है। तुम क़ुरआन के द्वारा यह काम करते रहो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१–अज़-ज़ारियात

(परिचय)

नाम (The Title)

'सूरा' की पहली 'आयत' में 'अज़-ज़ारियात' अर्थात् गुबार उड़ानें वाली हवाओं को इस बात की पुष्टि करने के लिए पेश किया गया है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा। इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'अज़-ज़ारियात' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरा के उतरने का समय वही है जो सूरा 'क़ाफ़०' का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा 'क़ाफ़०' का है। सूरा 'क़ाफ़' में मरने के पश्चात् दोबारा जीवित किये जाने (Resurrection) को प्रमाणित किया गया है और प्रस्तुत सूरा में इस बात की पुष्टि की गई है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा[1]। अच्छे लोग अपने कर्मों का बदला पायेंगे और झगड़ालू और हठधर्मी लोगों को उन के हठ और दुष्टता की सज़ा दी जायेगी।

'सूरा' के आरम्भ में इस बात को प्रमाणित किया गया है कि 'कियामत' में लोगों को अवश्य उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। फिर उन लोगों की वर्त्तमान दशा, मनोवृत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है जो केवल अटकलें दौड़ाते और उस दिन का इन्कार करते थे जिस दिन लोग अपने कर्मों का बदला पायेंगे। 'फिर बताया गया है कि 'आख़िरत' में उन का ठिकाना कहाँ होगा।

इस के बाद अल्लाह से डरनें वालों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। और उन्हें इस बात की शुभसूचना दी गई है कि वे 'आख़िरत' में बाग़ों और स्रोतों के बीच होंगे।

आगे चल कर हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा बयान हुआ है, जिस से मालूम होता है कि हज़रत इबराहीम अ० के पास अल्लाह के भेजे हुए जो 'फ़िरिश्ते' आये थे वे यदि एक जाति के लिए जीवन का शुभसन्देश ले कर आये थे तो दूसरी जाति के लिए वे मृत्यु और विनाश ले कर पहुँचे थे। इस प्रकार इस सूरा में अल्लाह की दयालुता और प्रकोप दोनों का वर्णन हुआ है। परन्तु चेतावनी और डरावा का पहलू इस सूरा में उभरा हुआ है। इस सूरा में उन जातियों की तबाही का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है, जिन्हों ने हठधर्मी दिखाई थी और 'नबियों' की बात नहीं मानी थी।

फिर बताया गया है कि अल्लाह नें हर चीज़ को अपनी शक्ति और 'हिकमत' से पैदा किया है। हर चीज़ की रचना इस प्रकार हुई है कि वह अपने अस्तित्व सम्बन्धी उद्देश्य की पूर्ति अपनें जोड़े से मिल कर करती है। इस से यह ज्ञात होता है कि इस सृष्टि की रचना व्यर्थ नहीं हुई है और न मनुष्य को निरुद्देश्य पैदा किया गया है। वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अवश्य एक दिन नियत है जिस में हर एक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला मिलेगा। अन्त में 'तौहीद' को इस तरह से पेश किया गया है कि उस से 'क़ियामत' के दिन बदला दिये जाने की पुष्टि भी होती है। 'क़ियामत' और 'रिसालत' की पुष्टि वास्तव में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही से नतीजे के तौर पर होती है। इसी लिए 'क़ियामत' में बदला दिये जाने की पुष्टि करने के पश्चात् 'तौहीद' को प्रमाणित किया गया है और 'तौहीद' ही

१. दे० आयत ५-६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर इस सिलसिले को समाप्त किया गया है। 'तौहीद' के अन्तर्गत 'रिसालत' का उल्लेख भी किया गया है।

'तौहीद,' 'आखिरत' 'रिसालत' के प्रत्यक्ष प्रमाणों की ओर संकेत करनें और 'तौहीद' की ओर आमन्त्रित करनें के पश्चात् नबी सल्ल० को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि पहले भी 'नबियों' को जादूगर और दीवाना कहा गया है, इस लिए आप (सल्ल०) इस तरह की बातों पर ध्यान न दें। आप (सल्ल०) का काम केवल समझाना है। यदि लोग नहीं मानते तो इस के लिए उन के पीछे पड़नें की आवश्यकता नहीं। इन लोगों को जो मुहलत और समय प्राप्त है यदि वे उस से फ़ायदा नहीं उठाते तो अपना ही बुरा करेंगे। मुहलत की मुद्दत पूरी हो जानें के बाद अल्लाह की यातना इन पर टूट पड़ेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अज़-ज़ारियात (मक्का में उतरी — 'आयतें' ६०)	**THE WINNOWING WINDS** Revealed at Mecca	سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
१. क़सम है उन (हवाओं) की जो उड़ाती फिरती हैं (गर्द-गुबार),	1. By those that winnow with a winnowing:	وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝١
२. फिर उठा लेती हैं बोझ,	2. And those that bear the burden (of the rain):	فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝٢
३. फिर चलने लगती हैं नर्मी के साथ,	3. And those that glide with ease (upon the sea):	فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝٣
४. फिर अलग-अलग करती हैं मामला[1]।	4. And those who distribute (blessings) by command,	فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝٤
५. निस्सन्देह तुम लोगों से जो-कुछ वादा किया जाता है, वह सच है।	5. Lo! that wherewith ye are threatened is indeed true,	اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝٥
६. और निस्सन्देह कर्मों का फल मिल कर रहेगा।	6. And lo! the judgement will indeed befall.	وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝٦
७. और क़सम है धारियों वाले आकाश की[2]।	7. By the heaven full of paths,	وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧
८. निश्चय ही तुम लोग बेतुकी बात में पड़े हुये हो।	8. Lo! ye, forsooth, are of various opinion (concerning the truth).	اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨
९. इस से कोई सिरफिरा ही फेरा जा सकता है।	9. He is made to turn away from it who is (himself) averse.	يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝٩

१. इस क़सम का उद्देश्य वास्तव में एक बड़ी सच्चाई अर्थात् 'आखिरत' को प्रमाणित करना है। जैसा कि आगे कहा गया : तुम से जो-कुछ वादा किया जाता है वह सच है, और कर्मों का फल मिल कर रहेगा ये हवायें इस बात की गवाही देती हैं कि 'आखिरत' होने वाली है। हवाओं की क़सम खाने का अर्थ केवल यह है कि अल्लाह उन्हें प्रमाण और दलील के तौर पर पेश कर रहा है। हवाओं से अल्लाह की दयालुता और प्रकोप दोनों का प्रदर्शन होता है। हवायें ज़मीन के किसी हिस्से को हरा-भरा कर जाती हैं और किसी भाग को बिल्कुल शुष्क छोड़ देती हैं। यही हवायें कहीं तो ईश-दयालुता बन कर जल बरसाती हैं और किसी भू-भाग को तूफ़ानों और ओलों से तबाह कर जाती हैं। साफ़ मालूम होता है कि ये हवायें किसी के अधीन हैं उस के हुक्म से कहीं तो वर्षा का हर्षजनक सन्देश लाती हैं और कहीं विनाश का कारण बनती हैं, जैसा कि हज़रत लूत अ० की जाति वालों, 'आद' 'नूह' और 'समूद' आदि के क़िस्से में हम देखते हैं। यह इस बात का खुला प्रमाण है कि एक ऐसा दिन अल्लाह अवश्य लायेगा जब कि भले और बुरे हर व्यक्ति को उस के किये का पूरा-पूरा बदला चुकाया जा सके। उस दिन अच्छे लोगों पर अल्लाह की कृपा होगी और बुरे लोगों पर उस का प्रकोप होगा।

२. ऊपर हवाओं की क़सम खाई थी, यहाँ धारियों वाले आकाश की क़सम खाई है। यह क़सम भी 'आखिरत' ही की पुष्टि के लिए खाई जा रही है। आकाश में बादल रूई के समान धुनके हुये जगह-जगह फैले हुये होते हैं। उन्हीं बादलों को यहाँ एक प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन बादलों से अभिप्रेत शीत ऋतु के धारियों वाले रक्त वर्ण के बादल हैं जो ओलों और बिजली की कड़क और गरज के साथ ज़ाहिर होते हैं। शीत ऋतु में जब तेज़ हवायें चलती हैं तो अपने साथ ये आपत्तियाँ लाती हैं। इस तरह इस क़सम में डरावा का पहलू उभरा हुआ है। इसी सम्पर्क से आगे 'काफ़िरों' की दशा का उल्लेख किया गया है और फिर उस के बाद अल्लाह से डरने वाले लोगों का हाल बयान हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. नाश हो अटकल दौड़ाने वालों का,

10. Accursed be the conjecturers

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾

११. जो ग़फ़लत में डूबे हुये हैं !

11. Who are careless in an abyss!

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾

१२. पूछते हैं : वह दिन कब आयेगा जब कर्मों का फल दिया जायेगा ?

12. They ask: When is the Day of Judgement?

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾

१३. जिस दिन ये लोग आग पर तपाये जायेंगे,[३]

13. (It is) the day when they will be tormented at the Fire;

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾

१४. (कहा जायेगा) : चखो मज़ा अपनी गुमराही[४] का[५], यही है जिस के लिए तुम जल्दी मचाये हुये थे।

14. (And it will be said unto them): Taste your torment (which ye inflicted). This is what ye sought to hasten.

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾

१५. निस्सन्देह अल्लाह का डर रखने वाले बाग़ों और (जल) स्रोतों के बीच होंगे,[६]

15. Lo! those who keep from evil will dwell amid gardens and watersprings,

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾

१६. ले रहे हैं जो-कुछ उन के 'रब' ने उन्हें दिया; वे इस से पहले (सांसारिक जीवन में) उत्तमकार थे।

16. Taking that which their Lord giveth them; for lo! aforetime they were doers of good;

اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾

१७. रातों को सोते कम थे,[७]

17. They used to sleep but little of the night,

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

१८. और भोर के समयों में क्षमा की प्रार्थना करते थे

18. And ere the dawning of each day would seek forgiveness.

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾

१९. और उन के मालों में माँगने वालों का और उन का हक़ था जो पाने से रह गये हों[८]।

19. And in their wealth the beggar and the outcast had due share.

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

२०. और धरती में निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिए,[९]

20. And in the earth are portents for those whose faith is sure,

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

२१. और तुम्हारे अपने भीतर भी। तो क्या तुम्हें सूझता नहीं ?

21. And (also) in yourselves. Can ye then not see?

وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾

३. प्रश्न वे केवल लोगों की हँसी उड़ाने के लिए करते थे, इस लिए जवाब भी उन के प्रश्न के अनुसार दिया गया कि वह दिन तो वही है जब तुम्हें आग में जलाया जायेगा; जब तुम अपने किये का मज़ा चखोगे।

४. यहाँ 'फ़ितना' (فتنة) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का दूसरा अर्थ यातना भी होता है।

५. अर्थात् दुनिया में जिन चीज़ों पर तुम रीझे हुये थे उन की वास्तविकता अब तुम पर खुल चुकी है। तुम्हें उन का असली मज़ा मालूम नहीं हो सका था इस लिये तुम भूल में पड़े हुए थे; परन्तु अब समय आ गया है कि उन का असली मज़ा तुम चखो।

६. ये वे लोग हैं जो अटकल पर नहीं चलते बल्कि 'नबियों' के दिखाये मार्ग को अपनाते हैं।

७. अर्थात् वे रातों में अल्लाह को भी याद करते और उस की सेवा में खड़े होते थे, केवल आराम ही नहीं करते थे।

८. अर्थात् वे जो-कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते थे उसे दण्ड अथवा टैक्स नहीं समझते थे बल्कि माँगने वालों और मुहताजों को अपने माल का हक़दार समझते हुये उन पर ख़र्च करते थे। उन का विचार यह था कि जो माल हमारे पास अपनी आवश्यकता से अधिक है उस में दूसरों का हक़ है। बल्कि वे स्वयं भूखे रह जाते थे और दूसरों को खिला देते थे।

९. अर्थात् यदि तुम सोचो तो 'आख़िरत' की निशानियाँ हर जगह फैली हुई हैं। दे० आयत ३५, ३६, ३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. और आकाश में तुम्हारी रोज़ी है और वह-कुछ, जिस का तुम से वादा किया जाता है[१०],

22. And in the heaven is your providence and that which ye are promised;

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

२३. तो आकाश और धरती के 'रब' की क़सम ! यह बात 'हक़' है,[११] जिस तरह कि तुम बोलते हो।

23. And by the Lord of the heaven and the earth, it is the truth, even as (it is true) that ye speak.

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ﴿٢٣﴾

२४. क्या इबराहीम के प्रतिष्ठित अतिथियों की बात तुम तक पहुँची ?

24. Hath the story of Abraham's honoured guests reached thee (O Muhammad?)

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

२५. जब कि वे उस के पास आये तो कहा : "सलाम"। उस ने कहा : सलाम ! ये अपरिचित लोग हैं।

25. When they came in unto him and said: Peace! he answered Peace! (and thought): Folk unknown (to me).

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ﴿٢٥﴾

२६. फिर वह चुपके से अपने घर वालों के पास गया और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (भुना हुआ) ले आया।

26. Then he went apart unto his housefolk so that they brought a fatted calf;

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

२७. और उसे उन के आगे रख दिया, कहा : क्यों आप लोग खाते नहीं ?

27. And he set it before them, saying: Will ye not eat?

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

२८. तो उन को उन से कुछ भय प्रतीत हुआ[१२]। उन्हों ने कहा : डरिए नहीं ! और उन्हों ने उसे एक ज्ञानी लड़के (के पैदा होने) की शुभ-सूचना दी।

28. Then he conceived a fear of them. They said: Fear not! and gave him tidings of (the birth of) a wise son.

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

२९. फिर उस की स्त्री चौंक पड़ी, उस ने अपना मुँह पीट लिया,[१३] और बोली : एक बुढ़िया बाँझ (के बच्चा पैदा होगा) !

29. Then his wife came forward, making moan, and smote her face, and cried: A barren old woman!

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

३०. वे बोले : ऐसा ही तेरे 'रब' ने कहा है। निस्सन्देह वह तत्वदर्शी और जानने वाला है।

30. They said: Even so saith thy Lord. Lo! He is the Wise, the Knower.

قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

*३१. उस ने कहा : हे दूतो ! तुम्हारे सामने क्या मुहिम है[१४]।

31. (Abraham) said: And (Afterward) what is your errand, O ye sent (from Allah)?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

१०. अर्थात् अल्लाह ही है जो हमारी रोज़ी का फ़ैसला करता है वही हमारे लिए रोज़ी उतारता है। 'आख़िरत' का फ़ैसला भी वही करेगा। आकाश के अन्दर हमारे लिए एक वादा छिपा हुआ है। इसी तरह धरती के अन्दर भी (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १८७)। सारांश यह है कि 'आख़िरत' हो कर रहेगी। तुम मरने के पश्चात् दोबारा उठाये जाओगे और तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायेगा।

११. अर्थात् आकाश और धरती के 'रब' की 'हिकमत' और कुशलता इस बात की साक्षी है कि 'आख़िरत' हो कर रहेगी।

१२. अर्थात् जब देखा कि वे खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ा रहे हैं तो हज़रत इबराहीम अ० को भय हुआ कि मालूम नहीं ये लोग किस इरादे से आये हैं।

१३. जैसा कि स्त्रियाँ साधारणत: आश्चर्य के समय ऐसा करती हैं।

* यहाँ से सत्ताइसवाँ पारा (Part XXVII) शुरू होता है।

१४. हज़रत इबराहीम अ० को जब मालूम हो गया कि ये 'फ़िरिश्ते' हैं जो मानवीय रूप में आये हैं, तो पूछा तुम्हारी मुहिम क्या है ? इस लिए कि 'फ़िरिश्ते' जब मानवीय रूप में आते हैं तो वे किसी बड़ी मुहिम पर ही आते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. उन्हों ने कहा : हमें एक अपराधी जाति[१५] की ओर भेजा गया है,	32. They said: Lo! we are sent unto a guilty folk,	قَالُوٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾
३३. ताकि उन के ऊपर मिट्टी के पत्थर (कंकड़) की वर्षा करें,	33. That we may send upon them stones of clay,	لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾
३४. जो निशान लगे रक्खे हैं आप के 'रब' के पास, मर्यादाहीन लोगों के लिए।	34. Marked by thy Lord for (the destruction of) the wanton.	مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾
३५. फिर वहाँ जो भी 'ईमान' वाले थे उन्हें हम ने निकाल लिया।	35. Then We brought forth such believers as were there.	فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾
३६. और हम ने वहाँ केवल एक घर 'मुस्लिम' पाया[१६]।	36. But We found there but one house of those surrendered (to Allah).	فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾
३७. और हम ने वहाँ एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दुःख भरी यातना से डरते हैं[१७]।	37. And We left behind therein a portent for those who fear a painful doom.	وَتَرَكْنَا فِيهَآ آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾
३८. और मूसा (के वृत्तान्त) में[१८] (भी निशानी है) जब कि हमनें उसे फ़िरऔन की ओर एक खुली सनद के साथ भेजा।	38. And in Moses (too, there is a portent) when We sent him unto Pharaoh with clear warrant.	وَفِي مُوسَىٰٓ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾
३९. तो वह अकड़ बैठा, और कहा : जादूगर है या उन्मादी।	39. But he withdrew (confiding) in his might, and said: A wizard or a madman!	فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾
४०. फिर हम ने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें दरिया में फेंक दिया, और वही था निन्दनीय।	40. So We seized him and his hosts and flung them in the sea, for he was reprobate.	فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾
४१. और 'आद' (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि हम ने उन पर उजाड़ देनें वाली आँधी भेजी[१९]।	41. And in (the tribe of) Aad (there is a portent) when We sent the fatal wind against them.	وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

१५. यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की ओर है।

१६. अर्थात् केवल हज़रत लूत अ० का एक घर उस बस्ती में 'ईमान' लाया था उसे अल्लाह ने अज़ाब से बचा लिया; शेष सभी लोग विनष्ट कर दिये गये।

१७. हज़रत लूत अ० की बस्ती, तबाह होने के बाद आने वाली जातियों के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बन गई। आज भी हम इस बस्ती से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इतिहासकारों और विशेषज्ञों का बयान है कि हज़रत लूत अ० की जाति वालों की असली बस्तियाँ उस जगह थीं जहाँ इस समय मृत सागर (Dead sea) स्थित है। जब ये बस्तियाँ धँसा दी गई तो यहाँ पानी भर आया। यह पानी इतना खारी है कि इस में कोई जानदार जीवित नहीं रह सकता। यह भी अल्लाह के अज़ाब और यातना ही की एक निशानी है।

हज़रत लूत अ० की जाति वालों के वृत्तान्त से मालूम हुआ कि अल्लाह के यहाँ बुराई के लिए दण्ड और भलाई के लिए अच्छा बदला है। इस लिए यह ज़रूरी है कि 'आखिरत' हो और हर व्यक्ति को उस के किये का पूरा-पूरा बदला मिल जाये और किसी के साथ बे इन्साफ़ी न हो। सांसारिक जीवन में भलाई और बुराई का पूरा बदला किसी को नहीं मिलता। मृत्यु या सांसारिक अजाब और तबाही की हैसियत तो बस ऐसी ही है जैसे अपराधी को पकड़ लिया जाये और उसे हवालात भेज दिया जाये।

१८. अर्थात् मूसा अ० के क़िस्से में।

१९. यहाँ क़ुरआन में 'रीहल अक़ीम' (الريح العقيم) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है ऐसी आँधी जो बाँझ हो। जो न तो वर्षा लाये और न जिस से कोई और लाभ पहुँच सके। बल्कि जहाँ पहुँचे उजाड़ कर रख दे जैसा कि आगे आ रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. वह जिस चीज़ पर से भी गुज़रती उसे चूरा-चूरा[20] कर के छोड़ती।

42. It spared naught that it reached, but made in (all) as dust.

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾

४३. और 'समूद' (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि उन से कहा गया: कुछ समय तक मज़े कर लो।

43. And in (the tribe of) Thamud (there is a portent) when it was told them: Take your ease awhile.

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾

४४. तो उन्हों ने पूरी ढिठाई के साथ अपने 'रब' के हुक्म की अवहेलना की, फिर उन्हें कड़क ने आ पकड़ा[21] और वे देखते रहे;

44. But they rebelled against their Lord's decree, and so the thunderbolt overtook them even while they gazed;

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾

४५. फिर वे खड़े ही न रह सके और न अपना बचाव कर सके।

45. And they were unable to rise up, nor could they help themselves.

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

४६. और 'नूह' की जाति को भी इस से पहले (हम ने पकड़ा)। वे सीमोल्लंघन करने वाले लोग थे।

46. And the folk of Noah aforetime. Lo! they were licentious folk.

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾

४७. और[22] आकाश को हम ने मज़बूती के साथ बनाया, और हम बड़ी समाई रखते हैं।

47. We have built the heaven with might, and We it is Who make the vast extent (thereof).

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और धरती को हम ने बिछाया, तो क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं !

48. And the earth have We laid out, how gracious was the Spreader (thereof)!

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾

४९. और हम ने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, ताकि तुम नसीहत हासिल करो[23]।

49. And all things We have created by pairs, that haply ye may reflect.

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

५०. तो तुम अल्लाह की ओर भागो; निस्संदेह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेतकर्त्ता हूँ।

50. Therefor flee unto Allah; lo! I am a plain warner unto you from Him.

فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

५१. और अल्लाह के साथ किसी दूसरे 'इलाह' (पूज्य) को सहभागी न बनाओ; निस्सन्देह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेतकर्त्ता हूँ।

51. And set not any other god along with Allah; lo! I am a plain warner unto you from Him.

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥١﴾

२०. यहाँ क़ुरआन में 'करमीम' كالرميم शब्द आया है जिस का अर्थ होता है 'रमीम की तरह'। 'रमीम' रस्सी, लकड़ी और हड्डी आदि के जीर्ण टुकड़ों को कहते हैं।

२१. क़ुरआन के संकेतों से मालूम होता है कि 'आद' पर अल्लाह ने गरज-चमक वाले बादल भेजे थे इसी तरह 'समूद' पर भी धारियों वाले बादल भेजे जिन के अन्दर प्रचण्ड कड़क और कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ भी थी। और बादलों को लाने वाली वास्तव में शीतकाल की तेज़ हवायें थीं। 'आद' के क़िस्से में हवा का उल्लेख बार-बार हुआ है।

२२. यहाँ विशेष रूप से 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की दलीलें पेश की जा रही हैं। यद्यपि जो निशानियाँ यहाँ प्रस्तुत की गई हैं, उन से 'आख़िरत' और 'रिसालत' की भी पुष्टि होती है।

२३. अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना ऐसी हिकमत के साथ की है कि यहाँ की समस्त चीज़ों में परस्पर एकीकरण (Co-ordination), संगति और अनुकूलता पाई जाती है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह कारख़ाना अपने-आप बन कर नहीं चल पड़ा है और न कई ईश्वरों ने इस का निर्माण किया है। किसी एक ही सत्ता का इरादा इस कारख़ाने को चला रहा है। दो या अधिक ईश्वर कभी एक नहीं हो सकते कि सिरे से उन के इरादों और फ़ैसलों में कोई मतभेद ही न हो सके।

हर जोड़े में जो सम्पर्क और गहरा सम्बन्ध पाया जाता है वह इस वास्तविकता को यथेष्ट रूप से व्यक्त करता है कि दोनों एक ही सृष्टिकर्त्ता की रचना हैं, जो दोनों की आवश्यकताओं और मनोवृत्ति से परिचित है। हर चीज़ के जोड़ा-जोड़ा पाये जाने में 'तौहीद' के अलावा 'आख़िरत' की भी निशानी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. ऐसे ही इन से पहले के लोगों के पास भी जो भी 'रसूल' आया उन्हों ने यही कहा : जादूगर है या उन्मादी !

52. Even so there came no messenger unto those before them but they said: A wizard or a madman!

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾

५३. क्या उन्हों ने एक-दूसरे को इस की वसीयत कर दी है[२४] ?—बल्कि ये सरकश लोग हैं[२५] ।

53. Have they handed down (the saying) as an heirloom one unto another? Nay, but they are froward folk.

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾

५४. तो तुम उन्हें छोड़ो अब तुम्हें कोई उलाहना नहीं दिया जा सकता[२६],

54. So withdraw from them (O Muhammad), for thou art in no wise blameworthy,

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

५५. और समझाते रहो,[२७] क्यों कि समझाना 'ईमान' वालों को फ़ायदा पहुँचाता है ।

55. And warn, for warning profiteth believers.

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

५६. और हम ने 'जिन्न' और मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वे मेरी 'इबादत' करें[२८] ।

56. I created the jinn and humankind only that they might worship Me.

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

५७. मैं उन से कोई रोज़ी नहीं चाहता, और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें[२९] ।

57. I seek no livelihood from them, nor do I ask that they should feed Me.

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

५८. निस्सन्देह अल्लाह ही रोज़ी देने वाला दृढ़ शक्ति वाला है ।

58. Lo! Allah! He it is that giveth livelihood, the Lord of unbreakable might.

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

५९. निस्सन्देह इन ज़ुल्म करने वालों[३०] के लिए भी एक पैमाना है (बस उस के भरने की देर है) जैसे इन के (अगले) साथियों का पैमाना था;[३१] तो जल्दी न मचायें ।

59. And lo! for those who (now) do wrong there is an evil day like unto the evil day (which came for) their likes (of old); so let them not ask Me to hasten on (that day).

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

६०. तो इन 'कुफ़्र' करने वालों के लिए ख़राबी है उस दिन के आने पर जिस की इन्हें धमकी दी जा रही है ।

60. And woe unto those who disbelieve, from (that) their day which they are promised!

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

* * *

———

२४. इस बात की वसीयत कि 'रसूलों' की बात पर ध्यान न दिया जाये, उन्हें जादूगर और दीवाना कह कर टाल दिया ज़ाये ।

२५. दे० सूरा अत-तूर आयत ३२ ।

२६. अर्थात् यदि ये लोग तुम्हारी बात नहीं मानते हैं तो इन के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं । तुम्हारी जिम्मेदारी यह नहीं है कि तुम इन्हें सीधे मार्ग पर खींच ही लाओ, तुम्हारा काम केवल समझना-बुझाना और नसीहत करना है । यदि ये नहीं मानते तो इस के लिए परेशान होने की ज़रूरत नहीं । जहाँ तक समझाने-बुझाने की बात है तो यह काम तुम्हें उचित अवसरों पर करते रहना चाहिए । इस से 'ईमान' वाले विशेष रूप से फ़ायदा उठायेंगे ।

२७. अर्थात् इन्हें नसीहत करते रहो विशेष रूप से 'आख़िरत' की याददिहानी होती रहनी चाहिए ।

२८. अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी के बिना मनुष्य का जीवन सर्वथा असफल रह जाता है । उस का जीवन पूर्ण और सफल यदि हो सकता है तो केवल अल्लाह की 'इबादत' और उस के आदेशों के पालन से ।

२९. अर्थात् अल्लाह 'मुश्रिकों' के ख़ुदाओं और देवी-देवताओं की तरह तुम से रोज़ी और चढ़ावा नहीं माँगता । वह स्वयं अपने बन्दों को खिलाता-पिलाता है, वह कमज़ोर और मुहताज नहीं । 'अनशनन्नयो अभिचाकशीति' (ऋ० १-१६४-२०) वह खाता नहीं । जीवों को खिलाने की व्यवस्था करता है ।

३०. यहाँ अल्लाह से मुँह मोड़ कर दूसरों को अपना 'इलाह' (पूज्य) बना लेने वालों को ज़ालिम कहा गया है । 'शिर्क' से बढ़ कर दूसरा कोई ज़ुल्म नहीं हो सकता ।

३१. अर्थात् अल्लाह ने हर ज़ालिम के हिस्से का एक-एक डोल अर्थात् पैमाना रखा है । पिछली जातियों की तरह मक्का के 'काफ़िरों' का भी एक पैमाना है । इन्हें जो मुहलत और समय प्राप्त है यदि ये लोग उस से फ़ायदा नहीं उठाते तो ये अपना बुरा करेंगे, किसी और का इस से क्या बिगड़ेगा । इन्हें जो आनन्द लेना है ले लें; जो बुराइयाँ करनी चाहते हों कर लें, यहाँ तक कि मुहलत की मुद्दत बीत जाये । और अल्लाह की यातना इन पर टूट पड़े ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२–अत-तूर
(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत 'सूरा' का नाम 'अत-तूर' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। 'तूर' पर्वत को कहते हैं। 'अत-तूर' (The mount) से अभिप्रेत वह पर्वत है जहाँ हज़रत मूसा अ० को अल्लाह ने 'तौरात' प्रदान की थी। 'तूर' का सम्बम्ध हज़रत मूसा अ० और 'बनी इसराईल' के एक पूरे इतिहास से है; 'तूर' शब्द से वास्तव में उस पूरे इतिहास की ओर संकेत किया गया है। हज़रत मूसा अ० को फ़िरऔन की ओर भेजा जाता है। हज़रत मूसा अ० उसे एक अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाते हैं; परन्तु वह अपनी सरकशी से बाज़ नहीं आता। सत्य और असत्य का संघर्ष आरम्भ हो जाता है। अन्त में हज़रत मूसा अ० को सफलता प्राप्त होती है। 'बनी इसराईल' को कष्टों और यातनाओं से छुटकारा मिलता है। फ़िरऔन सेना सहित समुद्र में डुबा दिया जाता है। 'बनी इसराईल' को प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है। 'तूर' पर हज़रत मूसा अ० को 'तौरात' प्रदान की जाती है।

'तूर' को इस 'सूरा' में साक्षी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'तूर' इस बात का साक्षी है कि यह दुनिया कोई अन्धेर नगरी नहीं है बल्कि यहाँ ईश्वरीय नियम के अन्तर्गत मानव को उस के किये का फल मिलता रहता है। फ़िरऔन कितना शक्तिशाली सम्राट् था परन्तु जब उस ने अल्लाह की बन्दगी की अवहेलना की और सरकश बन कर खड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे उस के अहंकार और अत्याचार के कारण विनष्ट कर दिया। इस से मालूम होता है कि अल्लाह ने मनुष्य को यों ही निरुद्देश्य नहीं बनाया है और न वह मनुष्यों के भले-बुरे कर्मों से अनभिज्ञ रहता है। इस लोक में उस की दया और उस के प्रकोप का प्रत्यक्ष प्रदर्शन इस बात का खुला प्रमाण है कि 'आख़िरत' अवश्य होगी और उस दिन हर एक व्यक्ति और हर एक जाति को उस के कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिल जायेगा। यह संसार तो केवल परीक्षा के लिए है, जीवन का वास्तविक परिणाम तो 'आख़िरत' ही में सामने आयेगा।

'तूर' के अतिरिक्त दूसरी जिन चीज़ों को 'सूरा' के आरम्भ में प्रमाण और गवाही के रूप में प्रस्तुत किया गया है उन सब से यही सिद्ध होता है कि 'आख़िरत' होने वाली है और हर एक को अपने कर्मों का पूरा बदला मिल कर रहेगा। प्रस्तुत सूरा इस पहलू से 'रिसालत' और क़ुरआन की पुष्टि करती है कि क़ुरआन एक ऐसे दिन की सूचना देता है जिस दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' के उतरने का समय वही है जो सूरा क़ाफ़० का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा क़ाफ़० और अज़-ज़ारियात का है।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में तर्कयुक्त सिद्ध किया गया है कि 'आख़िरत' होने वाली है और उस दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला मिल कर रहेगा। इसे कोई टाल नहीं सकता। फिर यह दिखाया गया है कि किस तरह उस दिन उन लोगों को अपमानजनक यातना दी जायेगी जो आज सत्य को मानने से इन्कार करते हैं। इस के बाद उस सुखमय जीवन का उल्लेख किया गया है जो 'जन्नत' में उन लोगों को प्राप्त होगा जो दुनिया में अल्लाह से डरेंगे।

आगे चल कर 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) न तो 'काहिन' हैं और न आप कोई उन्मादी व्यक्ति हैं, जो लोग इस तरह की बातें आप (सल्ल०) के बारे में कहते हैं, वे झूठे हैं। आप जो-कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह का 'कलाम' है; वह आप की अपनी कोई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचना नहीं है। जो लोग आप को कवि समझते हैं और उनका विचार है कि आप अपने ध्येय में सफल नहीं हो सकते, उन से कह दीजिए कि प्रतीक्षा करो मैं भी प्रतीक्षा करता हूँ।

फिर 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' के विचारों और धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन करते हुये बताया गया है कि 'क़ुरआन' अल्लाह का 'कलाम' है और 'तौहीद' के प्रतिकूल जितनी धारणायें हैं वे सर्वथा असत्य हैं। अकेला अल्लाह ही 'इलाह' (पूज्य) है।

'सूरा' के अन्तिम भाग में बताया गया है कि विरोधी लोग अपनी चालबाज़ियों से 'इस्लाम' की राह नहीं रोक सकते। उन की चालों से उलटे उन्हीं को हानि पहुँचेगी। फिर नबी सल्ल० से कहा गया है कि आप (सल्ल०) विरोधियों के पीछे न पड़िए; ये यदि आप की बात का इन्कार करते हैं तो 'आख़िरत' में स्वयं अपने किये का मज़ा चखेंगे, उस दिन न इन की मक्कारी काम आ सकेगी और न कहीं से इन्हें कोई सहायता मिल सकेगी। इन ज़ालिमों को 'आख़िरत' की बड़ी यातना के अतिरिक्त दुनिया में भी यातना दी जायेगी। दुनिया में भी ये आपत्ति से बच नहीं सकते। फिर नबी सल्ल० को सान्त्वना देते हुये कहा गया है कि धैर्य्य से काम लीजिए और अपने 'रब' के फ़ैसले की प्रतीक्षा कीजिए। आप हमारी आँखों के सामने हैं। हम आप से बे ख़बर नहीं हैं। प्रातःकाल और रात्रि को और रात के पिछले हिस्से में 'नमाज़' में अपने 'रब' का गुण-गान कीजिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तूर
(मक्का में उतरी—'आयतें' ४९)

THE MOUNT
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. क़सम है तूर[1] की,

1. By the Mount.

وَالطُّوْرِ ①

२. और किताब की जो लिखी हुई है

2. And a Scripture inscribed

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ②

३. खुले हुये पर्ण में[2],

3. On fine parchment unrolled,

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ③

४. और आबाद घर[3] की,

4. And the House frequented,

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ④

५. और ऊँची छत की[4],

5. And the roof exalted,

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ⑤

६. और उमड़ते दरियों की[5],

6. And the sea kept filled,

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ⑥

७. निश्चय ही तुम्हारे 'रब' की यातना आ कर रहेगी[6];

7. Lo! the doom of thy Lord will surely come to pass;

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ⑦

८. कोई नहीं जो उसे टाल सके[7]।

8. There is none that can ward it off:

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ⑧

९. जिस दिन आकाश थरथरा रहा होगा।

9. On the day when the heaven will heave with (awful) heaving,

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ⑨

१०. और पहाड़ चलते-फिरते होंगे,

10. And the mountains move away with (awful) movement.

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ⑩

११. तो तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए

11. Then woe that day unto the deniers

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑪

१. यह संकेत 'तूर सीना' की ओर है। यह वह पर्वत है जहाँ हज़रत मूसा अ० को 'तौरात' प्रदान की गई थी। यही वह स्थान है जहाँ अल्लाह ने एक उत्पीड़ित जाति ('बनी इसराईल') पर अपनी दया-दृष्टि डाली और उस के दुश्मनों की धाक मिटाई। 'तूर' शब्द से वास्तव में हज़रत मूसा अ० और उन के आवाहन और उस के परिणाम के पूरे इतिहास की ओर संकेत किया गया है। दे० सूरा का परिचय।

२. यह संकेत उन आसमानी किताबों की ओर है जो पहले उतर चुकी हैं। ये किताबें एक विशेष प्रकार के काग़ज़ या जानवरों की झिल्ली पर लिखी जाती थीं। और तूमार अथवा पंजी (Roll) के रूप में उन्हें लपेट कर रखते थे।

३. अर्थात् धरती जिस पर मनुष्य आबाद है और जहाँ उस के लिए जीवन व्यतीत करने की समस्त सामग्री संचित कर दी गई है।

४. अर्थात् आकाश।

५. अर्थात् समुद्र।

६. दे० सूरा अज़-ज़ारियात आयत ६।

७. ऊपर जिन चीज़ों की क़समें खाई गई हैं वे वास्तव में इस बात की गवाह और प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि 'आखिरत' होने वाली है। बदला दिये जाने का दिन आने वाला है। ज़ालिम अपने करतूतों की सज़ा पा कर रहेंगे। इसे कोई टाल नहीं सकता। 'तूर' का इतिहास भी इसी बात का साक्षी है कि बदला दिये जाने का नियम इस संसार में काम कर रहा है। फ़िरऔन ने यदि मूसा अ० की बात नहीं मानी और सरकशी पर उतर आया तो अल्लाह ने उसे हलाक कर दिया। 'बनी इसराईल' को उसकी दासता से छुड़ाया और उन्हें 'तौरात' जैसी किताब प्रदान की। समस्त आसमानी किताबों की गवाही भी यही है कि मनुष्य निरंकुश नहीं है उसे अपने कर्मों का फल मिलकर रहेगा, इसी तरह धरती, आकाश और समुद्र सभी इस बात के साक्षी हैं कि 'आखिरत' का होना कदापि असम्भव नहीं है। जिस अल्लाह ने सृष्टि की रचना की है उस के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं कि वह इसे विनष्ट करके दोबारा सृष्टि की रचना करे। समुद्र और दरियाओं से जो तबाहियाँ आती हैं उन में 'आखिरत' के होने की एक बड़ी मिसाल पाई जाती है। फिर हम देखते हैं कि फ़िरऔन को सेना सहित अल्लाह ने लाल सागर में डुबो कर उसे उस के किये का मज़ा चखाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. जो इधर-उधर की बहसों में पड़े खेलते हैं;	12. Who play in talk of grave matters;	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾
१३. जिस दिन ये लोग 'जहन्नम' की आग की ओर धक्के दे दे कर ले जाये जायेंगे।	13. The day when they are thrust with a (disdainful) thrust, into the fire of hell.	يَوْمَ يُدَعُّوْنَ إِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾
१४. यही है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे।	14. (And it is said unto them): This is the Fire which ye were wont to deny.	هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾
१५. तो क्या यह कोई जादू है, या तुम्हें सूझ नहीं रहा है?	15. Is this magic, or do ye not see?	أَفَسِحْرٌ هٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾
१६. जाओ जलो इस में, अब 'सब्र' करो या न करो। तुम्हारे लिए सब बराबर है, तुम्हें बदला वैसा ही तो मिलेगा जैसा तुम करते थे।	16. Endure the heat thereof, and whether ye are patient of it or impatient of it is all one for you. Ye are only being paid for what ye used to do.	اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْا أَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾
१७. निस्सन्देह अल्लाह का डर रखने वाले बाग़ों और आनन्द-मंगल में हैं।	17. Lo! those who kept their duty dwell in gardens and delight,	إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾
१८. जो-कुछ उन्हें उन के 'रब' ने दिया उस से आनन्दित हो रहे हैं, और उन्हें उन के 'रब' ने भड़कती आग की यातना से बचा लिया।	18. Happy because of what their Lord hath given them, and (because) their Lord hath warded off from them the torment of hell-fire.	فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾
१९. मज़े से खाओ-पियो जो-कुछ तुम करते थे उस के बदले में।	19. (And it is said unto them): Eat and drink in health (as reward) for what ye used to do:	كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾
२०. ये पंक्ति में बिछे हुये तख़्तों पर तकिया लगाये हुये हैं। और हम ने बड़ी और सुन्दर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से इन का विवाह कर दिया है।	20. Reclining on ranged couches. And We wed them unto fair ones with wide, lovely eyes.	مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾
२१. और वे लोग जो 'ईमान' ले आये और उन की सन्तति 'ईमान' ला कर उन की राह पर चली हम ने उन को उन की सन्तति से मिला दिया, और हम ने उन्हें उन के कर्मों में से कुछ भी घटा कर नहीं दिया, हर व्यक्ति अपनी कमाई के साथ बँधा हुआ है[८]।	21. And they who believe and whose seed follows them in faith, We cause their seed to join them (there), and We deprive them of naught of their (life's) work. Every man is a pledge for that which he hath earned.	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيْمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾
२२. और हम ने दे रक्खा है उन्हें मेवे और मांस जैसा वे चाहते हैं।	22. And We provide them with fruit and meat such as they desire.	وَأَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

८. अर्थात् हर व्यक्ति को उस के कर्मों का फल मिल कर रहेगा, यह अल्लाह का अटल फ़ैसला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. वे वहाँ आपस में प्याले छीन-झपट रहे हैं उस में न बेहूदगी है और न कोई गुनाह की बात।[९]

23. There they pass from hand to hand a cup where'n is neither vanity nor cause of sin.

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

२४. और उन के पास उन के (सेवक) लड़के आ जा रहे हैं, वे ऐसे (सुन्दर) हैं, जैसे धराऊ मोती।

24. And there go round, waiting on them, men-servants of their own, as they were Hidden pearls.

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

२५. और वे आपस में एक-दूसरे से बात-चीत करने लगे।

25. And some of them draw near unto others, questioning,

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

२६. बोले : पहले जब कि हम अपने घर वालों में थे हमें डर लगा रहता था;

26. Saying: Lo! of old, when we were with our families we were ever anxious;

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

२७. अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें झुलसा देने वाली यातना से बचा लिया।

27. But Allah hath been gracious unto us and hath preserved us from torment of the breath of Fire.

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

२८. हम इस से पहले उसे पुकारा करते थे। निस्सन्देह वह वादों को पूरा करने वाला और दयावान् है।

28. Lo! we used to pray unto Him of old. Lo! He is the Benign, the Merciful.

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

२९. तो (हे 'नबी'!) तुम समझाते रहो। अपने 'रब' की कृपा से न तो तुम 'काहिन' हो और न उन्मादी[१०]।

29. Therefor warn (men; O Muhammad). By the grace of Allah thou art neither soothsayer nor madman.

فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

३०. क्या ये लोग कहते हैं कि कवि है,[११] जिस के काल-चक्र में पड़ने की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं[१२]:

30. Or say they: (he is) a poet, (one) for whom we may expect the accident of time?

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ﴿٣٠﴾

३१. कह दो : प्रतीक्षा करो! तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा करता हूँ[१३]।

31. Say (unto them): Expect (your fill)! Lo! I am with you among the expectant.

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

९. अर्थात् वहाँ की शराब में केवल आनन्द-ही-आनन्द होगा यहाँ की शराब की तरह उस में कोई खराबी न होगी।

१०. 'काफ़िर' लोग 'नबी' सल्ल० के बारे में कहते थे कि यह व्यक्ति 'काहिन' है, अपने 'नबी' होने का ढोंग रचाता है। पागल और झक्की (Cracked) है, जो बहकी बातें करता है।

नबी सल्ल० के बारे में उन का यह कहना कि वह 'काहिन' तान्त्रिक (Sooth sayer) और दीवाना है प्रत्यक्षतः झूठ था। इसी लिए केवल इतना कहा गया कि अल्लाह की कृपा से न तो आप (सल्ल०) 'काहिन' हैं और न उन्मादी। जिन लोगों के बीच आप (सल्ल०) रहते थे वे भली-भाँति जानते थे कि आप (सल्ल०) अत्यन्त ज्ञानी और तत्वदर्शी व्यक्ति थे। फिर आप का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त सरल और सत्यवादिता पर आधारित था, कहीं उँगली नहीं रखी जा सकती थी कि किसी को यह सन्देह हो कि आप (सल्ल०) 'काहिनों' की तरह अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए एक ढोंग खड़ा किये हुये हैं। आप का जीवन त्याग का जीवन था आप ने अपना सब-कुछ धर्म के लिए लुटा दिया। और अपने पीछे न धन छोड़ा और न औलाद के लिए कोई सम्पत्ति छोड़ी। क्या किसी ढोंग रचाने वाले का जीवन इतना पवित्र और उसका चरित्र इतना महान् हो सकता है।

११. विरोधी लोग नबी सल्ल० को 'काहिन' और पागल कहते थे परन्तु जब इस से बात न बनती थी तो कहते थे कि ये कवि हैं अपनी काव्य-कुशलता के कारण ही ये ऐसा 'कलाम' पेश करने में सफल हुए हैं जिस की भाषा अत्यन्त मधुर और ललित है। इन की गद्य-रचना में काव्य-कुशलता का परिचय मिलता है। हालाँकि यदि वे सोच-विचार से काम लेते तो उन की समझ में यह बात आ सकती थी कि क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' है, किसी कवि की रचना नहीं है।

१२. अर्थात् यह थोड़े दिनों की बात है। काव्य के प्रभाव का अन्त हो जायेगा। इन के मानने वाले इन से विरक्त हो जायेंगे। बस समय पलटने की देर है।

१३. और मैं भी देखता हूँ कि शामत किस की आती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. क्या इन्हें इन की बुद्धि यही सुझाव देती है, या ये सरकश लोग हैं[१४] ?

32. Do their minds command them to do this, or are they an outrageous folk?

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

३३. क्या ये कहते हैं : इस ने यह बात अपनी ओर से बना ली है ? नहीं, बल्कि ये 'ईमान' नहीं लाते !

33. Or say they: He hath invented it? Nay, but they will not believe!

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

३४. अच्छा यदि ये सच्चे हैं, तो इस जैसी कोई बात ले आवें।

34. Then let them produce speech the like thereof, if they are truthful.

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

३५. क्या ये बिना किसी चीज़ के पैदा हो गये[१५] हैं ? या यही हैं पैदा करने वाले ?

35. Or were they created out of naught? Or are they the creators?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

३६. या इन्हों ने आकाशों और धरती को पैदा किया है ? नहीं, बल्कि ये लोग विश्वास नहीं करते !

36. Or did they create the heavens and the earth? Nay, but they are sure of nothing!

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾

३७. क्या इन लोगों के पास तुम्हारे 'रब' के ख़ज़ाने हैं ? या यही अवधायक अधिकारी हैं[१६] ?

37. Or do they own the treasures of thy Lord? Or have they been given charge (thereof)?

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. क्या इन के पास कोई सीढ़ी है जिस के द्वारा ये (आकाश की बातें) सुन आते हैं ? तो इन में से जो सुन आया हो वह कोई खुली सनद पेश करे[१७] !

38. Or have they any stairway (unto heaven) by means of which they overhear (decrease). Then let their listener produce some warrant manifest!

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

३९. क्या उस के लिए (अल्लाह के लिए) तो बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे[१८] ?

39. Or hath He daughters whereas ye have sons?

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

१४. अर्थात् तनिक सोचो तो क्या वास्तव में तुम ऐसा ही समझते हो जैसा कह रहे हो या यह तुम्हारी सरकशी है ? तुम दिल में तो जानते हो कि यह व्यक्ति कवि और 'काहिन' या बावला नहीं है परन्तु तुम नबी सल्ल० की बात को मानना नहीं चाहते, इसी लिए तरह-तरह के हीले-बहाने कर रहे हो।

१५. अर्थात् क्या ये आप-से-आप बिना किसी पैदा करने वाले के पैदा हो गये हैं या अपने स्रष्टा ये स्वयं हैं। ये दोनों बातें प्रत्यक्षतः असम्भव हैं। कोई व्यक्ति यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि वह यों ही बिना किसी के बनाये बन गया है या वह स्वयं अपना रचयिता है।

यह भी असम्भव है कि अल्लाह के साथ कोई और भी स्रष्टा हो विश्व की प्रत्येक चीज़ इस बात की साक्षी है कि अल्लाह का कोई शरीक नहीं।

१६. यहाँ बताया यह जा रहा है कि जिस तरह इस सृष्टि का निर्माणकर्त्ता अल्लाह के सिवा और कोई नहीं है उसी तरह किसी चीज़ का वास्तविक स्वामी भी उस के सिवा और कोई नहीं हो सकता। उसी ने सब-कुछ बनाया है; और वही सब की ज़रूरतें भी पूरी करता है। फिर यह कैसी उलटी बात होगी कि पैदा करने वाला तो वह हो, पालने वाला वह हो, दाता वह हो परन्तु 'इलाह' (पूज्य) कोई दूसरा हो जाये।

१७. यदि तुम इस तरह की बातें करते हो कि अल्लाह के सिवा दूसरे देवी-देवता भी पूज्य हैं और इस व्यक्ति को अल्लाह ने 'नबी' नहीं बनाया है, यह यों ही झूठ-मूठ अपने 'नबी' होने का दावा करता है तो आख़िर इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है ? क्या तुम किसी सीढ़ी पर चढ़ कर अल्लाह के पास गये हो और वहाँ से यह सूचना ले कर लौटे हो। यदि यह बात है तो सबूत पेश करो, केवल दावा कर देने से तो कोई बात सिद्ध नहीं हो जाती।

१८. 'काफ़िर' और 'मुश्रिक' कहते थे कि 'फ़िरिश्ते' अल्लाह की बेटियाँ हैं। यों भी उन के यहाँ अधिकतर देवियों की ही पूजा होती थी। उन की इस धारणा की तथ्यहीनता को स्पष्ट करने के लिए कहा गया कि सोचो तो कि तुम अपने लिए तो बेटे पसन्द करते हो, बेटियों से तुम्हें नफ़रत है और अल्लाह के बारे में तुम्हारा विचार यह है कि उस ने अपने लिए बेटियाँ पसन्द की हैं। जिसे तुम अपने लिए कलंक समझते हो उस का नाता अल्लाह से जोड़ने में तुम्हें कुछ भी संकोच नहीं होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. क्या (हे 'नबी'!) तुम इन से कोई बदला माँगते हो कि ये भुगतान के (बोझ) से दबे जा रहे हैं[१९]।

40. Or askest thou (O Muhammad) a fee from them so that they are plunged in debt?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾

४१. क्या इन के पास परोक्ष का ज्ञान है कि ये लिख लेते हैं[२०]।

41. Or possess they the Unseen so that they can write (it) down?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

४२. या कोई दाँव खेलना चाहते हैं? तो जिन लोगों ने 'कुफ़्' किया वही दाँव पर चढ़े हुये हैं[२१]!

42. Or seek they to ensnare (the messenger)? But those who disbelieve, they are the ensnared!

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

४३. क्या अल्लाह् के सिवा कोई और इन का 'इलाह' (पूज्य) है? अल्लाह् की महिमा के प्रतिकूल है जो कुछ 'शिर्क' ये करते हैं!

43. Or have they any god beside Allah? Glorified be Allah from all that they ascribe as partner (unto Him)!

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

४४. और यदि ये आकाश का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें, तो कहेंगे : ऊपर तले जमा हुआ घना बादल है[२२]।

44. And if they were to see a fragment of the heaven falling, they would say: A heap of clouds.

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

४५. तो इन्हें छोड़ो, यहाँ तक कि इन की अपने उस दिन से भेंट हो, जिस में ये बेहोश हो जायेंगे,

45. Then let them be (O Muhammad), till they meet their day, in which they will be thunderstricken,

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

४६. जिस दिन इन का दाँव इन के काम न आयेगा, और न इन्हें कोई सहायता मिलेगी।

46. A day in which their guile will naught avail them, nor will they be helped.

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

४७. और निश्चय ही उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया, इस से पहले और यातना भी है[२३]। परन्तु उन में अधिकतर लोग जानते नहीं।

47. And verily, for those who do wrong, there is a punishment beyond that. But most of them know not.

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

१९. अर्थात् 'नबी' तो निष्काम भावना से तुम्हें सत्य की ओर बुला रहा है, धर्म-सेवा के बदले में तुम से कुछ माँग नहीं रहा है कि तुम्हें यह सन्देह हो कि यह व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ढोंग रचाये हुये है। फिर तुम 'नबी' की बातों पर क्यों सोच-विचार से काम नहीं लेते।

२०. अर्थात् यदि तुम आसमान पर नहीं गये तो क्या यहीं बैठे-बैठे तुम्हें परोक्ष का ज्ञान हो गया कि तुम समझने लगे हो कि 'नबी' जो कुछ कहता है वह वास्तविकता के प्रतिकूल है? 'आख़िरत' नहीं होगी और अल्लाह् के प्रभुत्व में दूसरे भी शरीक हैं? यदि तुम्हें परोक्ष का ज्ञान नहीं है और न तुम्हारे पास कोई ऐसा साधन है जिस से तुम परोक्ष की बातें जान सको, तो फिर हठधर्मी क्यों करते हो? 'नबी' की बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार क्यों नहीं करते, जब कि 'नबी' जो कुछ कहता है अटकल से नहीं कहता बल्कि उस का दावा है कि वह जो-कुछ कहता है वह ज्ञान पर आधारित है और उस की बातें तर्क-संगत हैं?

२१. अर्थात् क्या वे गुप्त उपायों और छिपी चालों से 'इस्लाम' की राह रोकना चाहते हैं इन की चालबाज़ियों से स्वयं इन्हीं को हानि पहुँचेगी। मक्का के 'काफ़िर' 'नबी' सल्ल० को नीचा दिखाने के लिए तरह-तरह की चालबाज़ियों से काम लेते थे। ताकि लोग 'नबी' सल्ल० की बातें न सुनें। बाहर से आने वाले 'हाजियों' के पास जाकर कहते कि मुहम्मद (सल्ल०) के निकट न जाना और न उन की बातें सुनना, नहीं तो तुम पर जादू हो जायेगा। वे तो ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे बीच फूट डालने वाली हैं; कभी वे लोग कहते कि उस की न सुनो वह दीवाना है। ऐसी बातें कहता है जो समझ में आने की नहीं हैं। इतिहास साक्षी है कि 'काफ़िरों' की इन चालों से 'इस्लाम' का कुछ भी बिगड़ न सका, उन की चालें ख़ुद उन ही के ख़िलाफ़ पड़ीं।

२२. अर्थात् इन की हठधर्मी का यह हाल है कि अपनी आँखों देखी चीज़ के बारे में भी कोई-न-कोई बहाना बना लेंगे। यदि आसमान को भी गिरता हुआ देख लें तो भी यही कहेंगे कि यह दलदार गहरा बादल है।

२३. अर्थात् बड़ी यातना से पहले अल्लाह् लोगों को सचेत करने के लिए छोटे-छोटे अज़ाब भेजता है जैसे अकाल, रोग, क़त्ल, आपत्ति आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. और (हे 'नबी') अपनें 'रब' के फ़ैसले तक सब्र से काम लो, तुम तो हमारी आँखों के सामनें हो,[२४] और 'तसबीह' करो प्रशंसा के साथ अपनें 'रब' की, जिस समय उठते हो,

48. So wait patiently (O Muhammad) for thy Lord's decree, for surely thou art in Our sight; and hymn the praise of thy Lord when thou uprisest,

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

४९. और रात में भी उस की 'तसबीह' करो, और सितारों के पीठ देते समय भी।[२५]

49. And in the night-time also hymn His praise, and at the setting of the stars.

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾ ع

* * *

———

२४. अर्थात् तुम्हारी तसल्ली के लिए यह बहुत है कि तुम हमारी निगाहों के सामने हो। हम तुम्हारी रक्षा के लिए काफ़ी हैं, तुम धैर्य्य से काम लो।

२५ अर्थात् सितारों के ढलने के समय भी। यहाँ 'नमाज़' के तीन वक़्तों का उल्लेख किया गया है। यह आरम्भ काल की 'सूरा' है जब कि पाँच वक़्त की नमाज का हुक्म नहीं हुआ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३–अन-नज्म
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नज्म' (The Star) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। ऐसे तारे को जो डूबने के क़रीब हो इस सूरा में एक साक्षी और प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है (दे० फुटनोट १)।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' के अवतरित होने का समय वही है जो सूरा क़ाफ़० का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

मध्य बिन्दु या केन्द्रीय विषय इस 'सूरा' का वही है जो सूरा 'क़ाफ़' का है।

इस 'सूरा' में अल्लाह ने बताया है कि नबी सल्ल० जो-कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की ओर से है। आप (सल्ल०) जो कुछ कहते हैं वह कोई काल्पनिक चीज़ नहीं है बल्कि आप की आँखों देखी वास्तविकता है। आप के मुक़ाबले में 'काफ़िरों' की जो विचार-धारा है वह सर्वथा अनुमान और अटकल पर आधारित है। वे जिन देवी-देवताओं की उपासना करते हैं उन की कोई वास्तविकता नहीं, वे निरे नाम हैं जो उन के पूर्वजों ने और स्वयं उन्हों ने रख छोड़े हैं। विचार की दृष्टि से ये इतने गिर चुके हैं कि 'फ़िरिश्तों' को अल्लाह की बेटियाँ समझते हैं; हालाँकि ये स्वयं अपने लिए कभी बेटियाँ पसन्द नहीं करेंगे।

फिर नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) इन लोगों के पीछे न पड़िये जो हमारे 'ज़िक्र' से विमुख हो गये हैं। ये केवल सांसारिक जीवन के अभिलाषी हैं इन के ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है। इस वर्तमान जीवन के अतिरिक्त भी कुछ है, इस की ओर से बिल्कुल अन्धे हैं।

फिर अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि उस ने दुनिया को निरुद्देश्य नहीं बनाया है। अच्छे लोगों को अच्छा बुरों को बुरा बदला मिल कर रहेगा। जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह तुम्हें दोबारा पैदा करने का भी सामर्थ्य रखता है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शिक्षा वही है जो इस से पहले मूसा अ० और इबराहीम अ० की किताबों में दी जा चुकी है। फिर बताया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति आप अपना उत्तरदायी है, कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा। मनुष्य को वही मिलेगा जो उस ने कोशिश की होगी। फिर उन जातियों को मिसाल में पेश किया गया है जिन्हें अल्लाह ने उन की सरकशी के कारण विनष्ट कर दिया।

'सूरा' के अन्त में 'काफ़िरों' को चेतावनी देते हुए नबी सल्ल० के बारे में कहा गया है कि आप उसी तरह अल्लाह की ओर से लोगों के लिए सचेतकर्त्ता हैं जिस तरह इस से पहले दूसरे सचेत करने वाले 'नबी' आ चुके हैं। 'क़ियामत' की घड़ी दूर नहीं वह आया ही चाहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे हटा सके। तुम्हें अल्लाह ही के आगे झुकना चाहिए और केवल उसी की 'इबादत' और बन्दगी करनी चाहिए।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नज्म
(मक्का में उतरी—'आयतें' ६२)

THE STAR
Revealed at Mecca

سورة النجم مكية وهي اثنتان وستون آية وثلاث ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
१. क़सम है तारे की जब वह नीचे को आये[1],	1. By the Star when it setteth,	وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ①
२. यह तुम्हारे संग रहने वाला[2] न भटका, और न मार्ग से फिरा;	2. Your comrade erreth not, nor is deceived;	مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ②
३. और ऐसा नहीं कि जो मन चाहता है वह कह देता है।	3. Nor doth he speak of (his own) desire.	وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ③
४. वह तो बस 'वह्य' होती है, जो (उस पर) की जाती है,	4. It is naught save an inspiration that is inspired,	اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ④
५. उसे सिखाया प्रबल शक्तियों वाले ने[3],	5. Which one of mighty powers hath taught him,	عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ⑤
६. जो सुदृढ़ है; पूर्णरूप में प्रकट हुआ	6. One vigorous; and he grew clear to view	ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ⑥
७. जब कि वह आकाश के सब से ऊँचे किनारे पर था।	7. When he was on the uppermost horizon.	وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ⑦
८. फिर वह निकट हुआ और उतरता चला आया	8. Then he drew nigh and came down.	ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ⑧

१. यहाँ ऐसे सितारे को जो डूबने के क़रीब हो इस बात का साक्षी ठहराया है (जैसा कि आगे की 'आयतों' से विदित है) कि 'नबी' सल्ल० न तो कभी भटके और न लोगों को ग़लत मार्ग दिखाया। आप (सल्ल०) ने लोगों को जो सन्देश पहुँचाया वह अल्लाह की ओर से था जिसे 'वह्य' के द्वारा अल्लाह ने आप (सल्ल०) के पास भेजा था। और जिबरील अ० जैसे 'फ़िरिश्ते' को इस काम पर नियुक्त किया था कि वे आप (सल्ल०) तक अल्लाह का सन्देश पहुँचायें। हज़रत जिबरील अ० एक शक्तिशाली, ओजस्वी और विश्वसनीय 'फ़िरिश्ता' हैं (आयत ४-५)। जिबरील अ० को आप ने कई बार देखा है। आप ने उन्हें उन के वास्तविक रूप में भी देखा है। दूर से ही नहीं बिल्कुल निकट से देखने का अवसर भी आपको मिला है (आयत ७-९)। और आप (सल्ल०) को इस में किसी प्रकार का धोखा नहीं हुआ है। डूबने वाले तारों के सूक्ष्म संकेतों को समझने वाला कभी क़ुरआन के इस दावे का इन्कार नहीं कर सकता। विचार कीजिए तारे ने अपनी यात्रा पूरी कर ली यहाँ तक कि अब वह डूबने के क़रीब है, परन्तु उस ने न तो अपना मार्ग छोड़ा और न पथभ्रष्ट हुआ। अपनी यात्रा उस ने अपने निश्चित मार्ग पर चल कर पूरी की। आकाश के तारों की इस गगन-यात्रा का वह महत्व नहीं है जो महत्व उस कर्त्तव्यपालन का है जो एक 'रसूल' का दायित्व होता है। जब एक तारा अपने मार्ग से नहीं हटता तो फिर उस 'रसूल' के पथभ्रष्ट होने की सम्भावना कैसे हो सकती है जो अल्लाह का प्रतिनिधि होता है, जिसे अल्लाह इस महत्वपूर्ण कार्य पर नियुक्त करता है कि वह लोगों को सत्य का मार्ग दिखाये और उन्हें पथभ्रट होने से बचाये। इस लिए निस्सन्देह उस का जीवन अत्यन्त पवित्र होता है; वह कभी भी लोगों को ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता। यदि उस का दावा है कि उस के पास अल्लाह की ओर से 'वह्य' आती है तो वह अपने इस दावे में सच्चा है। और यदि वह कहता है कि हम ने अल्लाह के उस 'फ़िरिश्ते' को देखा है जो अल्लाह की ओर से 'वह्य' लाने पर नियुक्त था तो वह सच कहता है। जिस तरह आँख रखने वाला व्यक्ति चमकते हुये तारों को देखता है और तारों को देखने में उसे कोई सन्देह नहीं होता उसी तरह ऐसे व्यक्ति के लिए जिस की अन्तर्दृष्टि पूर्ण है यह कोई असम्भव बात नहीं है कि वह किसी ऐसे तारे को देख ले जो आन्तरिक (Spiritual) प्रकाश से युक्त हो। फिर जिस तरह साधारण तारे अपने देखने वाले को प्रकाश देते हैं ठीक उसी तरह जिस ने आन्तरिक तारे (अर्थात् अल्लाह के विशेष 'फ़िरिश्ते' जिबरील अ०) को देखा उस को उस से भी विशेष प्रकाश मिलेगा।

२. यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है।

३. अर्थात् जिबरील अ० ने। दे० सूरा अत-तकवीर आयत १९-२०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. अब दो कमान के फ़ासिले पर था बल्कि और निकट,

9. Till he was distant two bows' length or even nearer

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ⑨

१०. फिर उस नें 'वह्य' की अपने बन्दे की ओर जो कुछ भी की।

10. And He revealed unto His slave that which He revealed.

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ⑩

११. दिल ने उस में धोखा नहीं दिया जो कुछ उस नें देखा।

11. The heart lied not (in seeing) what it saw.

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ⑪

१२. तो क्या तुम उस से झगड़ते हो उस पर जो वह देखता है[४] ?

12. Will ye then dispute with him concerning what he seeth?

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ⑫

१३. और वह उसे एक बार और देख चुका है[५]

13. And verily he saw him yet another time

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ⑬

१४. परली सीमा की बेर के पास[६],

14. By the lote-tree of the utmost boundary,

عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ ⑭

१५. जिस के निकट 'जन्नत' है जो सदा का ठिकाना है।

15. Nigh unto which is the Garden of Abode.

عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ⑮

१६. जब कि छाया हुआ था उस बेर पर जो कुछ कि छाया हुआ था,

16. When that which shroudeth did enshroud the lote-tree,

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ⑯

१७. न तो निगाह[७] इधर-उधर हटी और न आगे बढ़ी।

17. The eye turned not aside nor yet was over-bold.

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ⑰

१८. निश्चय ही उस नें अपने 'रब' की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।

18. Verily he saw one of the greater revelations of his Lord.

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ⑱

१९. तो क्या तुम ने देखा है 'लात' और 'उज़्ज़ा',

19. Have ye thought upon Al-Lat and Al-Uzza

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ⑲

२०. और तीसरा एक और जो है—'मनात[८]' ?

20. And Manat, the third, the other?

وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ ⑳

२१. क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और उस के लिए बेटियाँ[९] ?

21. Are yours the males and His the females?

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ㉑

२२. तब तो यह बहुत ग़लत हिस्सा लगा !

22. That indeed were an unfair division!

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ㉒

४. अर्थात् क्या तुम लोग उस चीज़ के बारे में उस से झगड़ रहे हो और उसे मानने से इन्कार कर रहे हो जो उस की अपनी आँखों-देखी वास्तविकता है। वह अटकल और अनुमान से कोई दावा नहीं कर रहा है वह जो-कुछ बयान कर रहा है वह उस के ज्ञान और निरीक्षण पर आधारित होता है।

५. अर्थात् इस 'रसूल' (सल्ल०) ने जिबरील (अ०) को एक बार और 'मेअ्राज' के अवसर पर देखा है (दे० सूरा बनी इसराईल का परिचय)।

६. यह स्थान सातवें आसमान से ऊपर है जहाँ बेर का वृक्ष है। अल्लाह ही जानता है कि यह बेर का वृक्ष किस प्रकार का है। इस स्थान को अल्लाह की पेशगाह और दूसरे लोकों के बीच सीमान्तर की हैसियत हासिल है। नीचे से जाने वाले यहाँ रुक जाते हैं। ऊपर से आने वाले आदेश, फ़रमान आदि सीधे यहाँ आते हैं। इस स्थान के निकट नबी सल्ल० को 'जन्नत' दिखाई गई। आप (सल्ल०) ने देखा कि अल्लाह ने अपने आज्ञाकारी बन्दों के लिए वह-कुछ सञ्चित कर रक्खा है जो न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है और न कोई उस की कल्पना ही कर सका है।

७. अर्थात् नबी सल्ल० की निगाह।

८. ये अरबों की देवियों के नाम हैं जिन की मूर्तियों को अरब के 'मुश्रिक' पूजते थे।

९. दे० सूरा अत-तूर फ़ुटनोट १८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. ये तो बस कुछ नाम हैं जिन को तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिया है, इन के लिए अल्लाह ने कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग तो बस गुमान पर और जो जी चाहता है उस पर चल रहे हैं। जब कि इन के पास इन के 'रब' की ओर से मार्ग-दर्शन आ चुका है।

23. They are but names which ye have named, ye and your fathers, for which Allah hath revealed no warrant. They follow but a guess and that which (they) themselves desire. And now the guidance from their Lord hath come unto them.

إِنْ هِيَ إِلَّآ أَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوهَآ أَنتُمْ وَآبَآؤُكُم مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَٰنٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَمَا تَهْوَى ٱلْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَآءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ ٱلْهُدَىٰٓ ﴿٢٣﴾

२४. कहीं मनुष्य को प्राप्त है वह कुछ जिस की वह कामना करता है ?

24. Or shall man have what he coveteth?

أَمْ لِلْإِنسَٰنِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾

२५. तो अल्लाह ही के हाथ में है पिछला भी और पहला भी[१०]।

25. But unto Allah belongeth the after (life), and the former.

فَلِلَّهِ ٱلْآخِرَةُ وَٱلْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

२६. और कितने ही 'फ़िरिश्ते' हैं आकाशों में जिन की सिफ़ारिश कुछ काम नहीं दे सकती, यदि काम दे सकती है तो इस के बाद ही कि अल्लाह इजाज़त दे जिसे चाहे और पसन्द भी करे !

26. And how many angels are in the heavens whose intercession availeth naught save after Allah giveth leave to whom He chooseth and accepteth!

وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ لَا تُغْنِى شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا إِلَّا مِنۢ بَعْدِ أَن يَأْذَنَ ٱللَّهُ لِمَن يَشَآءُ وَيَرْضَىٰٓ ﴿٢٦﴾

२७. जो लोग 'आख़िरत' को नहीं मानते वे 'फ़िरिश्तों' के स्त्रियों जैसे नाम रखते हैं।[११]

27. Lo! it is those who disbelieve in the Hereafter who name the angels with the names of females.

إِنَّ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ ٱلْأُنثَىٰ ﴿٢٧﴾

२८. और उन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं। वे तो बस गुमान पर चलते हैं, और गुमान हक़ बात के सामने कुछ काम नहीं देता।

28. And they have no knowledge thereof. They follow but a guess, and lo! a guess can never take the place of the truth.

وَمَا لَهُم بِهِۦ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ ۖ وَإِنَّ ٱلظَّنَّ لَا يُغْنِى مِنَ ٱلْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾

२९. तो (हे 'नबी' !) तुम ऐसे व्यक्ति से किनारा खींच लो जो हमारे 'ज़िक्र' से मुँह मोड़े और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ न चाहे।

29. Then withdraw (O Muhammad) from him who fleeth from Our remembrance and desireth but the life of the world.

فَأَعْرِضْ عَن مَّن تَوَلَّىٰ عَن ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا ﴿٢٩﴾

३०. उन के ज्ञान की पहुँच यहीं तक है। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटक गया, और वह उस व्यक्ति को भी भली-भाँति जानता है जिस ने सीधा मार्ग अपनाया।

30. Such is their sum of knowledge. Lo! thy Lord is best aware of him who strayeth, and He is best aware of him who goeth right.

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ ٱهْتَدَىٰ ﴿٣٠﴾

३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के किये का बदला दे, और जिन लोगों ने भलाई की उन्हें अच्छा बदला प्रदान करे।

31. And unto Allah belongeth whatsoever is in the heavens and whatsoever is in the earth, that He may reward those who do evil with that which they have done, and reward those who do good with goodness.

وَلِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ لِيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ أَسَٰٓـُٔوا۟ بِمَا عَمِلُوا۟ وَيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ أَحْسَنُوا۟ بِٱلْحُسْنَى ﴿٣١﴾

१०. आरम्भ से अन्त तक सब कुछ अल्लाह ही के अधिकार में है। दे० सूरा अल-लैल आयत १३।
११. अरब के 'मुश्रिक' लोग 'फ़िरिश्तों' को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. वे लोग जो बड़े-बड़े गुनाहों[१२] और अश्लील बातों से बचते हैं यह और बात है कि कोई साधारण गुनाह संयोगवश हो जाये[१३]। निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' विस्तीर्ण क्षमा वाला है। वह तुम्हें भली-भाँति जानता है (उस समय से) जब कि उस ने तुम्हें धरती से पैदा किया और जब कि तुम भ्रूण अवस्था में अपनी मांओं के पेट में थे। तो अपने-आप को पवित्रात्मा न ठहराओ। वह भली-भाँति जानता है कि कौन डर रखने वाला है[१४]।

32. Those who avoid enormities of sin and abominations, save the unwilled offences — (for them) lo! thy Lord is of vast mercy. He is best aware of you (from the time) when He created you from the earth, and when ye were hidden in the bellies of your mothers. Therefore ascribe not purity unto your selves. He is best aware of him who wardeth off (evil).

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَٰٓئِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَٰحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَٰسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَٰتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوٓا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰٓ ﴿٣٢﴾

३३. क्या तुम ने उस व्यक्ति को देखा जिस ने मुँह फेरा,

33. Didst thou (O Muhammad) observe him who turned away,

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾

३४. और थोड़ा-सा दे कर बन्द कर दिया[१५] ?

34. And gave a little, then was grudging?

وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰٓ ﴿٣٤﴾

३५. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह देख रहा है[१६] ?

35. Hath he knowledge of the Unseen so that he seeth?

أَعِندَهُۥ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰٓ ﴿٣٥﴾

३६. क्या उस को उस की ख़बर नहीं हुई जो कुछ कि मूसा के 'सहीफ़ों' (किताबों) में है

36. Or hath he not had news of what is in the books of Moses,

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

३७. और इबराहीम के ('सहीफ़ों' में) जिस ने हक़ अदा कर दिया :

37. And Abraham who paid his debt:

وَإِبْرَٰهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰٓ ﴿٣٧﴾

३८. इस बात की ख़बर कि कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा[१७],

38. That no laden one shall bear another's load,

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾

३९. और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जो कि उस ने चेष्टा की,

39. And that man hath only that for which he maketh effort,

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

४०. और यह कि उस की चेष्टा जल्द ही देखी जायेगी[१८].

40. And that his effort will be seen.

وَأَنَّ سَعْيَهُۥ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾

४१. फिर उसे भरपूर बदला दिया जायेगा[१९];

41. And afterward he will be repaid for it with fullest payment;

ثُمَّ يُجْزَىٰهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾

१२. जैसे क़त्ल, ज़िना, चोरी आदि।

१३. अर्थात् साधारण भूल-चूक उन से भी हो सकती है जिस के लिये वे अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थनायें किया करते हैं।

१४. अर्थात् अपने पुण्यात्मा होने का दावा करना बहुत बुरा है। कौन व्यक्ति कैसा है, अल्लाह इस बात को भली-भाँति जानता है।

१५. यहाँ एक व्यक्ति को मिसाल में पेश किया गया है जो थोड़ी भलाई का काम कर के रुक जाता है। यह भलाई की राह नहीं है। नेकी के मार्ग को तो यह समझ कर अपनाना चाहिए कि हमें इसी मार्ग पर चलना है चाहे लाभ हो या हानि। दृढ़ संकल्प का आदमी ही वास्तव में नेकी की राह पर चल सकता है।

१६. अर्थात् मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि क्या उस ने परोक्ष को देख कर यह जान लिया है कि न कोई नेकी का बदला देने वाला है और न बुराई की सज़ा मिलने वाली है, इस लिए वह नेकी से रुक गया।

१७. अर्थात् हर व्यक्ति अपने कर्मों का उत्तरदायी है। कोई दूसरा उस के गुनाहों के बोझ को नहीं उठायेगा। गुनाह करने वाले के गुनाह के सिलसिले में उन लोगों की पकड़ अवश्य होगी जिन्हों ने उसे गुनाह के कामों पर उभारा होगा।

१८. अर्थात् आदमी की कोशिश अकारथ नहीं जायेगी। एक दिन ऐसा आने वाला है जब कि लोगों की कोशिशों का हिसाब लिया जायेगा कि उन्हों ने अपना समय और अपनी शक्ति कहाँ लगाई।

१९. हर एक को उस के कर्मों का पूरा-पूरा बदला 'आख़िरत' में दिया जायेगा। वर्तमान लोक में तो यह सम्भव ही नहीं है कि लोगों को उन के कर्मों का पूरा बदला या पूरी सज़ा मिल सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२. और यह कि तुम्हारे 'रब' ही पर अन्त है;

42. And that thy Lord, He is the goal;

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

४३. और यह कि उस ने हँसाया, और रुलाया,

43. And that He it is Who maketh weep.

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾

४४. और यह कि उस ने मारा और जिलाया;

44. And that He it is Who giveth death and giveth life;

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾

४५. और यह कि उस ने दोनों जाति बनाये, स्त्री जाति, पुरुष जाति,

45. And that He createth the two spouses, the male and the female:

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ﴿٤٥﴾

४६. वीर्य्य से जब कि वह (गर्भाशय में) डाला जाता है;

46. From a drop (of seed) when it is poured forth;

مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

४७. और यह कि उस के ज़िम्मे है दोबारा उठाना।[२०]

47. And that He hath dained the second bringing forth;

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾

४८. और यह कि उस ने मुहताजी दूर की और पूँजीपति बनाया :

48. And that He it is Who enricheth and contenteth:

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾

४९. और यह कि वह 'शेअ्रा' (नामक तारे) का 'रब' है[२१];

49. And that He it is Who is the Lord of Sirius;

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿٤٩﴾

५०. और[२२] यह कि उस ने अगले 'आद' को विनष्ट किया,

50. And that He destroyed the former (tribe of) 'Aad

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾

५१. और 'समूद' को भी फिर बाक़ी न छोड़ा;

51. And (the tribe of) Thamud He spared not;

وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾

५२. और उन से पहले नूह की जाति वालो को भी (विनष्ट किया), निश्चय ही वे बड़े ज़ालिम और सरकश थे;

52. And the folk of Noah aforetime. Lo! they were more unjust and more rebellious;

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٥٢﴾

५३. और 'उल्टी हुई बस्तियों' को[२३] भी उस ने उठा फेंका,

53. And Al-mu'tafikah He destroyed,

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾

५४. फिर उन्हें ढक दिया जिस चीज़ से ढक दिया[२४] !

54. So that there covered them that which did cover.

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾

५५. फिर तू अपने 'रब' के कौन से चमत्कार के बारे में झगड़ता है ?

55. Concerning which then, of the bounties of the Lord, canst thou dispute?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾

२०. अर्थात् जिस अल्लाह ने वीर्य्य से मनुष्य को पैदा किया वह दोबारा उठा खड़ा करने का सामर्थ्य भी रखता है। मनुष्य अल्लाह ही का चमत्कार है। जिस सत्ता ने एक बार अपना चमत्कार दिखाया है वह दोबारा भी दिखा सकती है।

२१. 'शेअ्रा' (Sirius) एक सितारे का नाम है। अरब के 'मुश्रिक' समझते थे कि लोगों की क़िसमत बनाने और बिगाड़ने में इस तारे का भी हाथ है। अल्लाह ने कहा कि इस तारे का मालिक भी अल्लाह ही है। लाभ-हानि, सुख-दुःख सब अल्लाह के हाथ में है। इस लिए तारों को या किसी भी दूसरी चीज को पूजना व्यर्थ है।

२२. यहाँ से इतिहास की मिसालें प्रस्तुत की गई हैं कि अल्लाह के आदेशों को ठुकराने वाली जातियों को किस प्रकार तबाह कर दिया गया है।

२३. यह संकेत हज़रत लूत अ० की बस्तियों की ओर है।

२४. दे० सूरा हूद आयत ८२; अल-हिज्र आयत ७४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६. यह [२५] अगले सचेत करने वालों में से एक सचेत करने वाला है।

56. This is a warner of the warners of old.

هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾

५७. वह आने वाली आ पहुँची [२६]।

57. The threatened Hour is nigh.

أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾

५८. अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं।

58. None beside Allah can disclose it.

لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾

५९. तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो,

59. Marvel ye then at this statement,

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾

६०. और हँसते हो, रोते नहीं,

60. And laugh and not weep.

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾

६१. और तुम मद के माते हो ?

61. While ye amuse yourselves!

وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾

६२. अच्छा अब अल्लाह को 'सजदा' करो और 'इबादत' करो [२७]।

62. Rather prostrate yourselves before Allah and serve Him.

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾

* * *

---

२५. यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है। आप (सल्ल०) भी पहले 'नबियों' की तरह लोगों को सचेत करने वाले हैं।

२६. अर्थात् 'क़ियामत' दूर नहीं। इस विश्व की व्यवस्था से यह बात सिद्ध है कि अल्लाह चाहे तो क्षण-भर में 'क़ियामत' आ जाये। यदि एक सितारा भी अपने निश्चित मार्ग से विचलित हो जाये तो विश्व की सारी व्यवस्था बिगड़ कर रह जाये। आदमी हज़ार दो हज़ार की मुद्दत को समझता है कि यह बड़ी मुद्दत है हालाँकि अल्लाह की दृष्टि में यह क्षण के बराबर भी नहीं। बुद्धिमान् व्यक्ति वही है जो यह समझ कर जीवन व्यतीत करे कि वह बहुत जल्द अल्लाह के सामने हाज़िर होने वाला है।

२७. सूरा अन-नज्म पढ़ कर नबी सल्ल० ने 'सजदा' किया, जितने मुसलमान और 'मुश्रिक' उस समय वहाँ मौजूद थे सब सजदे में गिर पड़े, केवल एक 'मुश्रिक' ने सजदा नहीं किया; उस ने थोड़ी सी मिट्टी उठा कर ललाट पर लगा ली और कहा कि मुझे इतना ही काफ़ी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४—अल-क़मर
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। सूरा की पहली 'आयत' में चाँद के फट जाने को 'क़ियामत' के निकट आ जाने की निशानी ठहराया गया है। कहा गया है : "वह ('क़ियामत' की) घड़ी निकट आ पहुँची और चाँद फट गया"। 'क़ियामत' में विश्व की यह वर्त्तमान व्यवस्था शेष नहीं रहेगी। यह व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जायेगी। तारे परस्पर टकरा कर तबाह हो जायेंगे और चाँद फट जायेगा। यहाँ इस सूरा में कहा यह गया है कि 'क़ियामत' का समय दूर नहीं है; 'क़ियामत' को बिल्कुल निकट समझो; चाँद भी समझ लो कि फट चुका है। उस के फटने में कुछ देर नहीं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में से है। 'सूरा' के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा उस समय अवतरित हुई है जब 'काफ़िरों' का विरोध बढ़ने लगा था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय इस 'सूरा' का वही है जो सूरा क़ाफ़० का है। प्रस्तुत सूरा में यह वाक्य कई बार आया है : "हम ने 'क़ुरआन' को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया है तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला"? इस प्रकार इस सूरा में बार-बार इस वास्तविकता का उल्लेख किया गया है कि क़ुरआन में किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं पाई जाती; यह अल्लाह का महान् ग्रन्थ है जो हर पहलू से पूर्ण है। यह किताब शिक्षा और याददिहानी के लिए सर्वथा उपयुक्त है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में शिक्षा ग्रहण करना चाहता है तो क़ुरआन के द्वारा वह सरलतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

'सूरा' के आरम्भ में लोगों को सूचित किया गया है कि, "'क़ियामत' क़रीब आ पहुँची और चाँद फट गया"। भविष्य के बदले भूत काल का प्रयोग कर के बताया गया कि 'क़ियामत' के दिन को आया हुआ समझो, उस के आने में देर नहीं है। वह बहुत जल्द आया चाहता है चाँद जो 'क़ियामत' में फट जायेगा उसे भी समझ लो कि फट चुका है।

नबी सल्ल० के कई एक साथियों के बयान से मालूम होता है कि 'क़ियामत' की एक बड़ी निशानी और नमूना चाँद के फट जाने के चमत्कार (A strange appearance) के रूप में मक्का वालों को दिखाया भी जा चुका है। परन्तु जो लोग चाँद फटने की घटना के अवसर पर मौजूद थे वे इस से शिक्षा तो क्या ग्रहण करते, कहने लगे: यह एक जादू है। उन में से कुछ लोगों ने कहा कि यदि यह जादू है तो इस का प्रभाव केवल हमारी आँखों तक ही सीमिति रहेगा। बाहर के लोगों की आँखें इस जादू से प्रभावित नहीं हो सकतीं। बाहर से आने वालों से जब पूछा गया तो उन्हों ने कहा कि चाँद को फटते हुए तो हम ने भी देखा है। इतिहास से पता चलता है कि भारत के पश्चिमी तट पर मालाबार के राजा ने भी चाँद को फटते देखा था और जाँच-पड़ताल के लिए उस ने आदमी भेजे थे। चाँद फटने की घटना का सारांश यह है कि चाँद के दो टुकड़े हुये और फिर वे आपस में मिल गये। और इस में ज्यादा देर नहीं लगी। जो लोग वहाँ मौजूद थे नबी सल्ल० ने उन्हें पहले से सूचित कर दिया था इस लिए उन्हों ने चाँद को फटते हुये देख लिया। दूसरे लोग तो संयोग से ही देख सकते थे। पूरी दुनिया में एक साथ रात भी नहीं होती। फिर कुछ जगहों पर तो अर्धरात्रि का समय रहा होगा जब कि लोग सो रहे होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस 'सूरा' में एक ओर तो यह बात कही गई है कि आने वाली घड़ी ('क़ियामत') अत्यन्त निकट है, दूसरी ओर उस नीति का उल्लेख किया गया है जो 'काफ़िरों' ने अपना रक्खी थी। 'काफ़िरों' का हाल यह था कि वे 'क़ियामत' और उस की निशानियों का इन्कार करते थे, और नबी सल्ल० की हँसी उड़ाते थे। और कहते थे कि आख़िर हम पर 'क़ियामत' क्यों नहीं आ जाती। बताया गया कि हर चीज़ का एक नतीजा और हर मामले की एक हद है। 'काफ़िरों' को जो मुहलत हासिल है यदि ये उस में सँभलते नहीं हैं तो फिर वह दिन दूर नहीं कि 'कुफ़्र' का नतीजा इन के सामने आ जायेगा। पिछली जातियों के वृत्तान्त में इन के लिए बड़ी चेतावनी और शिक्षा-सामग्री है। परन्तु ये हैं कि इस से कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

फिर 'नबी' सल्ल० से कहा गया है कि आप (सल्ल०) इन के पीछे न पड़िए, अब ये 'क़ियामत' ही के दिन होश में आयेंगे। फिर संक्षेप में 'क़ियामत' की सख़्ती और 'काफ़िरों' की उस दिन की विवशता का हाल बयान हुआ है।

इस के बाद इतिहास से कुछ दृष्टान्त प्रस्तुत कर के बताया गया है कि अल्लाह की अवज्ञा का क्या परिणाम हुआ करता है।

'सूरा' के अन्त में कहा गया है कि विरोधियों का जत्था परास्त हो कर रहेगा। ये पीठ फेर भागेंगे। और 'क़ियामत' के दिन 'जहन्नम' की आग में ये मुँह के बल घसीटे जायेंगे। किसी का किया धरा भुलाया नहीं जायेगा। अल्लाह के पास हर चीज़ का अभिलेख (Record) मौजूद है जिस में छोटी-बड़ी सब बातें अंकित हैं। यदि बुरे लोगों का ठिकाना उस दिन 'जहन्नम' होगा तो अल्लाह से डरने वालों को अपने 'रब' के पास जो परम सम्राट और प्रभुत्वशाली है, श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-क़मर
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ५५)

THE MOON
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. वह घड़ी निकट आ पहुँची और चाँद फट गया[1]।

1. The hour drew nigh and the moon was rent in twain.

اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

२. और यदि ये कोई निशानी[2] देखें तो टाल जायेंगे और कहेंगे: यह एक जादू है जो सदा से चला आता है[3]।

2. And if they behold a portent they turn away and say: Prolonged illusion.

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ ②

३. और इन्हों ने झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले। और हर काम अपने समय पर हो कर रहता है[4]।

3. They denied (the Truth) and followed their own lusts. Yet everything will come to a decision.

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ ③

४. इन लोगों के पास ऐसी खबरें आ चुकी हैं जिन में ताड़ना है:

4. And surely there hath come unto them news whereof the purport should deter,

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ④

५. भरपूर तत्वदर्शिता है; परन्तु डरावे काम नहीं दे रहे हैं[5]।

5. Effective wisdom; but warnings avail not.

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑤

६. तो तुम उन से किनारा खींच लो।

जिस दिन बुलाने वाला एक अनिष्ट चीज़ की ओर बुलायेगा[6]।

6. So withdraw from them (O Muhammad) on the day when the Summoner summoneth unto a painful thing:

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ ⑥

७. उन की निगाहें झुकी हुई होंगी, क़बरों से निकल रहे होंगे जैसे बिखरी हुई टिड्डियाँ हों।

7. With downcast eyes, they come forth from the graves as they were locusts spread abroad,

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ⑦

---

१. अर्थात् 'क़ियामत' की घड़ी दूर नहीं है; 'क़ियामत' बिल्कुल क़रीब आ लगी है। चाँद भी समझ लो कि फट चुका है। 'क़ियामत' में विश्व की वर्तमान व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायेगी, तारे टूट-फूट जायेंगे, चाँद फट जायेगा। यहाँ भविष्य के बदले भूत काल का प्रयोग कर के यह बताना अभीष्ट है कि 'क़ियामत' के आने में कुछ भी सन्देह नहीं है, 'क़ियामत' को आया हुआ समझो।

ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि मक्का वालों को 'क़ियामत' की एक निशानी और नमूना चाँद फट जाने के चमत्कार के रूप में दिखाया भी जा चुका है (दे० सूरा का परिचय)।

२. अर्थात् 'क़ियामत' की कोई निशानी।

३. अर्थात् यह तो पुराना जादू है इस तरह के जादू पहले भी वे लोग कर चुके हैं जो अपने 'नबी' होने के दावे करते थे।

४. अर्थात् हर मामले की एक हद है। हर चीज का कोई परिणाम है जो सामने आ कर रहेगा। 'काफ़िर' यदि सत्य का इन्कार करते हैं तो उन्हें एक दिन अवश्य अल्लाह की यातना का सामना करना पड़ेगा।

५. अर्थात् ये डरावे से शिक्षा ग्रहण ही कब करते हैं।

६. जिस की ओर ये जाना पसन्द नहीं करेंगे। दे० सूरा क़ाफ़० आयत ४१; अत-तूर आयत ४५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. लपके जा रहे होंगे। बुलाने वाले की ओर; 'काफ़िर' कहेंगे : यह बड़ा कठिन दिन है।

8. Hastening toward the Summoner; the disbelievers say: This is a hard day.

مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ٨

९. इन से पहले नूह की जाति वालों ने झुठलाया था,[७] उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और उन्मादी कहा; और उसे ताड़ना दी गई।

9. The folk of Noah denied before them, yea, they denied Our slave and said: A madman, and he was repulsed.

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ٩

१०. फिर उस ने अपने 'रब्ब' को पुकारा कि मैं दबा लिया गया हूँ, अब तू निमट ले।

10. So he cried unto his Lord, saying: I am vanquished, so give help.

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ١٠

११. फिर हम ने आकाश के द्वार खोल दिये जिस से मूसलाधार पानी गिरने लगा

11. Then opened We the gates of heaven with pouring water.

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ١١

१२. और धरती में स्रोत-ही-स्रोत प्रवाहित कर दिये, फिर पानी एक ऐसे प्रयोजन के अन्तर्गत जो निश्चित हो चुका था आपस में मिल गया[८]।

12. And caused the earth to gush forth springs so that the waters met for a predestined purpose.

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ١٢

१३. और हम ने उसे[९] एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया,

13. And We carried him upon a thing of planks and nails,

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ١٣

१४. वह (नौका) हमारी निगाहों के सामने चल रही थी[१०]। यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिस की बेक़दरी की गई थी[११]।

14. That ran (upon the waters) in Our sight, as a reward for him who was rejected

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ١٤

१५. और हम ने इसे एक निशानी बना कर छोड़ दिया[१२], तो क्या कोई है शिक्षा ग्रहण करने वाला?

15. And verily We left it as a token; but is there any that remembereth?

وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ١٥

१६. तो कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे!

16. Then see how (dreadful) was My punishment after My warnings!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ١٦

१७. और हम ने 'क़ुरआन' को शिक्षा के लिये सुगम बना दिया है[१३] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

17. And in truth We have made the Qur'an easy to remember: but is there any that remembereth?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ١٧

१८. 'आद'[१४] ने झुठलाया। फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे!

18. (The tribe of) 'Aad rejected warnings. Then how (dreadful) was My punishment after My warnings!

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ١٨

७. दे० सूरा अश-शु, अरा फ़ुटनोट ३७।
८. अर्थात् आकाश से भी घोर वर्षा हुई और धरती से भी पानी के स्रोत फूट पड़े। पानी से भूमि भर गई और 'काफ़िर' उस में डूब कर रह गये।
९. यह संकेत हज़रत नूह अ० की ओर है।
१०. "हमारी निगाहों के सामने" अर्थात् हमारी हिफ़ाज़त और निगरानी में।
११. अर्थात् जिस की बात सुनने और जिसे अल्लाह का 'रसूल' मानने से उस की जाति वालों ने इन्कार कर दिया था। यह संकेत हज़रत नूह की ओर है।
१२. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत १५।
१३. अर्थात् क़ुरआन शिक्षा और याददिहानी के लिए हर पहलू से उपयुक्त है। यदि कोई वास्तव में शिक्षा ग्रहण करनी चाहता हो तो वह 'क़ुरआन' द्वारा सरलतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इस किताब में बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक आदि किसी दृष्टिकोण से भी कोई त्रुटि नहीं पाई जाती है।
१४. दे० सूरा अश-शु, अरा फ़ुटनोट ४१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. हम ने उन पर तेज़ ठण्डी हवा चलाई एक बराबर क़ायम रहने वाली नहूसत के दिन में[१५]।

19. Lo! We let loose on them a raging wind on a day constant calamity,

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِى يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

२०. वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी मानो वे खजूर के उखड़े हुये तने हैं।

20. Sweeping men away as though they were uprooted trunks of palm-trees.

تَنزِعُ ٱلنَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

२१. तो कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे !

21. Then see how (dreadful) was My punishment after My warnings!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

२२. और हम ने क़ुरआन को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया है[१६] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

22. And in truth We have made the Qur'an easy to remember; but is there any that remembereth?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

२३. समूद[१७] ने डरावों को झुठलाया,

23. (The tribe of) Thamud rejected warnings.

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِٱلنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

२४. उन्हों ने कहा : क्या हम अपने ही में के अकेले एक व्यक्ति के पीछे चलेंगे[१८] ? तब तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़े।

24. For they said: It is a mortal man, alone among us that we are to follow? Then indeed we should fall into error and madness.

فَقَالُوٓا۟ أَبَشَرًا مِّنَّا وَٰحِدًا نَّتَّبِعُهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

२५. क्या हम सब में इसी पर 'ज़िक्र' उतारा गया ? नहीं, बल्कि यह झूठा और अपनी बड़ाई जताने वाला है।

25. Hath the remembrance been given unto him alone among us? Nay, but he is a rash liar.

أَءُلْقِىَ ٱلذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾

२६. उन्हें कल ही मालूम हो जायेगा कि कौन झूठा और अपनी बड़ाई जताने वाला है।

26. (Unto their warner it was said): To-morrow they will know who is the rash liar.

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ ٱلْكَذَّابُ ٱلْأَشِرُ ﴿٢٦﴾

२७. हम उन की आज़माइश के लिए एक ऊँटनी भेज रहे हैं तो तुम उन्हें देखते रहो[१९] और धैर्य्य से काम लो;

27. Lo! We are sending the she-camel as a test for them; so watch them and have patience;

إِنَّا مُرْسِلُوا۟ ٱلنَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَٱرْتَقِبْهُمْ وَٱصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

२८. और उन्हें सूचित कर दो कि पानी को उन में बाँट दिया गया है। पानी की हर बारी पर बारी वाला हाज़िर हुआ करेगा[२०]।

28. And inform them that the water is to be shared between (her and) them. Every drinking will be witnessed.

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ ٱلْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

२९. फिर उन्हों ने अपने साथी को पुकारा और उस ने (उस ऊँटनी पर) हाथ चलाया और (उसे उस की) कूँचें काट कर मार डाला।

29. But they called their comrade and he took and hamstrung (her).

فَنَادَوْا۟ صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

३०. फिर कैसी रही मेरी यातना और मेरे डरावे !

30. Then see how (dreadful) was My punishment after My warnings!

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

१५. दे० हा० मीम० अस्-सजदा आयत १६।
१६. दे० फुटनोट १३।
१७. दे० सूर अश-शु, अरा फुटनोट ४३।
१८. अर्थात् क्या हम एक ऐसे व्यक्ति का अनुवर्त्तन करेंगे जो हमारे ही जैसा एक मनुष्य है; वह कोई 'फ़रिश्ता' नहीं। यदि हम ने इस की बात मान ली तो हम से बढ़ कर बहका हुआ और पागल व्यक्ति दूसरा और कौन हो सकता है।
१९. देखते रहो कि क्या नतीजा निकलता है।
२०. दे० सूरा अश-शु, अरा आयत १५४-१५८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. हम ने उन पर बस एक (भयंकर) चीख भेजी, फिर वे ऐसे हो गये जैसे किसी बाढ़ रूँधने वाले का खर-पतवार[२१]।

31. Lo! We sent upon them on Shout, and they became as the dry twigs (rejected by) the builder of a cattle-fold.

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

३२. और हम ने 'क़ुरआन' को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया[२२] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

32. And in truth We have made the Qur'an easy to remember; but is there any that remembereth?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

३३. लूत[२३] की जाति वालों ने डरावों को झुठलाया।

33. The folk of Lot rejected warnings.

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

३४. हम ने उन पर पथराव करने वाली आँधी भेज दी सिवाय लूत के लोगों के, उन्हें हम ने भोर में बचा निकाला[२४],

34. Lo! We sent a storm of stones upon them (all) save the family of Lot, whom We rescued in the last watch of the night,

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

३५. यह हमारी ओर से एहसान था। हम इसी तरह बदला देते हैं उस व्यक्ति को जो कृतज्ञता दिखलाता है।

35. As grace from Us. Thus We reward him who giveth thanks.

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾

३६. और उस ने हमारी पकड़ से उन्हें सचेत कर दिया था, परन्तु वे डरावों के बारे में उलझते रहे[२५]।

36. And he indeed had warned them of Our blow but they did doubt the warnings.

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

३७. और उस के (लूत के) पीछे पड़ गये कि वह अपने अतिथियों को हवाले कर दे। तो हम ने उन की आँखें मेट दीं : लो चखो मजा मेरी यातना का और डरावों का !

37. They even asked of him his guests for an ill purpose. Then we blinded their eyes (and said): Taste now My punishment after My warnings!

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

३८. और प्रातःकाल उन पर एक न टलने वाली यातना आ पहुँची।

38. And in truth and punishment decreed befall them early in morning.

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

३९. अब चखो मजा मेरी यातना का और डरावों का !

39. Now taste My punishment after My warnings!

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾

४०. और हम ने 'क़ुरआन' को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया[२६]। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

40. And in truth We have made the Qur'an easy to remember; but is there any that remembereth?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

२१. अर्थात् वह खर-पतवार और झाड़-झंकाड़ जो बेकार समझ कर छोड़ दिया गया हो; या फिर इस से अभिप्रेत वह खर-पतवार है जिस को किसी बाढ़ रूँधने वाले ने काट-पीट कर रक्खा हो।

२२. दे० फुटनोट १३।

२३. दे० सूरा अश-शु, अरा फुटनोट ५०।

२४. अर्थात् लूत (अ०) और उस के लोगों को हम ने बचा लिया। वे हमारे हुक्म से रात के पिछले हिस्से में बस्ती छोड़ कर निकल गये।

२५. अर्थात् उस ने तुम्हें सचेत कर दिया था कि यदि तुम बुराई से बाज नहीं आ रहे हो, तो तुम अल्लाह की यातना से बच नहीं सकते; परन्तु उन की समझ में यह सीधी और सच्ची बात न आ सकी। उन की आँखें उस समय खुलीं जब अल्लाह की यातना ने उन्हें अपनी लपेट में ले लिया।

२६. दे० फुटनोट १३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. और फ़िरऔन[२७] वालों के पास डरावे पहुँचे।

41. And warnings came in truth unto the house of Pharaoh:

وَلَقَدْ جَاۤءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

४२. उन्हों ने हमारी समस्त निशानियों को झुठलाया तो हम ने उन्हें पकड़ लिया जिस तरह एक ज़बरदस्त और प्रभुत्वशाली पकड़ता है।

42. Who denied Our revelations, every one. Therefore We grasped them with the grasp of the Mighty, the Powerful.

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

४३. क्या तुम्हारे 'काफ़िर' इन लोगों से अच्छे हैं या तुम्हारे लिए छुटकारा है 'ज़बूरों' में (लिखा हुआ)[२८]?

43. Are your disbelievers better than those, or have ye some immunity in the Scriptures?

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰۤئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَاۤءَةٌ فِى الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

४४. या ये लोग कहते हैं : हमारा एक पूरा जत्था है जिस पर किसी का बस चलने वाला नहीं है।

45. The hosts will all be routed and will turn and flee.

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

४५. जल्द ही यह जत्था परास्त होगा और ये लोग पीठ दिखा देंगे[२९]।

44. Or say they: We are a host victorious?

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

४६. यह नहीं बल्कि वह घड़ी ('क़ियामत') है जिस का समय इन के लिए रक्खा गया है,[३०] और वह घड़ी बड़ी ही आपत्ति वाली और बड़ी ही कड़ुवी है।

46. Nay, but the Hour (of doom) is their appointed tryst, and the Hour will be more wretched and more bitter (than their earthly failure).

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

४७. निश्चय ही अपराधी लोग गुमराही और दीवानगी में पड़े हुये हैं।

47. Lo! the guilty are in error and madness.

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

४८. जिस दिन वे लोग मुँह के बल आग में घसीटे जायेंगे : चखो मज़ा 'जहन्नम' में झुलसने का।

48. On the day when they are dragged into the Fire upon their faces (it is said unto them): Feel the touch of hell!

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

४९. निश्चय ही हम ने हर चीज़ एक नियत अन्दाज़े के साथ पैदा की है।

49. Lo! We have created every thing by measure.

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

५०. और हमारा हुक्म तो बस एक ही बार होता है, जैसे निगाह उठा कर देख लेना[३१]।

50. And Our commandment is but one (commandment), as the twinkling of an eye.

وَمَاۤ اَمْرُنَاۤ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍۢ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

२७. दे० सूरा अश-शु, अरा फ़ुटनोट ७।
२८. अर्थात् जब तुम देखते हो कि पिछले 'काफ़िरों' को अल्लाह की यातना से कोई चीज़ बचा नहीं सकी, तो क्या तुम उन 'काफ़िरों' से अच्छे हो कि अल्लाह की यातना और अज़ाब से बिल्कुल निश्चिन्त हो या तुम्हें छुटकारे का परवाना मिल गया है कि निर्भय हो कर 'कुफ़्र' की नीति अपनाये हुये हो।
२९. अर्थात् वह जत्था जिस पर इन्हें गर्व है परास्त हो कर रहेगा। समय आने पर वे ठहर नहीं सकते। वे पीठ देकर मैदान से भाग खड़े होंगे। 'बद्र' और 'अहज़ाब' के युद्ध के अवसर पर यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही। दे० सूरा अल-अनफ़ाल का परिचय।
३०. अर्थात् ये अपने किये का पूरा मज़ा तो 'आख़िरत' में चखेंगे।
३१. अर्थात् जैसे निगाह उठने में कुछ देर नहीं लगती उसी प्रकार हमारे हुक्म के कार्य रूप में आने में देर नहीं होती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१. और हम तुम्हारे सहपन्थियों को[32] विनष्ट कर चुके हैं; तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?	51. And verily We have destroyed your fellows; but is there any that remembereth?	وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾
५२. और जो कुछ उन्हों ने किया है वह पत्रों में मौजूद है,	52. And every thing they did is in the Scriptures,	وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾
५३. और हर छोटी और बड़ी चीज़ अंकित हुई है।	53. And every small and great thing is recorded.	وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾
५४. निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे,	54. Lo! the righteous will dwell among gardens and rivers,	إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾
५५. प्रतिष्ठित स्थान में, प्रभुत्वशाली सम्राट के पास[33]।	55. Firmly established in the favour of a Mighty King.	فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

* * *

———

३२. अर्थात् तुम्हारे ही जैसे लोगों को; जिन्होंने अपने जीवन में वही नीति अपनाई थी जो नीति तुम्हारी है। तुम्हारी तरह वे भी अल्लाह से विमुख थे।

३३. अर्थात् अल्लाह के पास। उन्हें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त होगा, जो अल्लाह की सब से बड़ी नेमत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५–अर-रहमान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अर-रहमान' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा क़ाफ़० का है।

इस 'सूरा' में अल्लाह के चमत्कारों और अद्भुत कार्यों का उल्लेख हुआ है। उस के यहाँ प्रधानता उस की दयालुता ही को प्राप्त है। उस के चमत्कारों का प्रदर्शन प्रायः दयालुता और अनुकम्पा ही के रूप में होता है। इस सूरा में उस के जिन चमत्कारों का वर्णन किया गया है उन में भी उस के प्रकोप की अपेक्षा उस की दयालुता को व्यक्त करने वाले चमत्कारों का ही आधिक्य है। प्रस्तुत 'सूरा' में एक विशेष 'आयत' : "बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कारों को झुठलाते हो ?" ठेका (Refrain) के रूप में ३१ बार दोहराई गई है जिस से सूरा की वर्णनशैली में एक विशेष प्रकार का लालित्य और सौन्दर्य आ गया है।

'सूरा' का आरम्भ अल्लाह के दयामय चमत्कारों से किया गया है। अल्लाह का सब से बड़ा उपकार मानव-जाति पर यह है कि उस ने मनुष्य को अपनी 'किताब' की शिक्षा दी, यहीं से सभ्यता का उदय होता है। मानव-जीवन में अल्लाह की 'किताब' का बड़ा महत्व है; इसी लिए उस का उल्लेख पहले किया गया। इस के बाद मनुष्य की सृष्टि का उल्लेख किया गया और फिर उस की वाक्शक्ति का। इस के बाद बाह्य जगत की ओर रुख़ किया गया, भूमि और आकाश में फैली निशानियों का उल्लेख करते हुये मनुष्य को ध्यान दिलाया गया कि किस प्रकार सम्पूर्ण जगत की व्यवस्था न्याय पर आधारित है। जिस ग्रह और सितारे के लिए जो मार्ग निश्चित कर दिया गया है वह उसी मार्ग पर चल रहा है। न्याय और सत्य ही के बल पर यह संसार थमा हुआ है। मनुष्य का भी कर्त्तव्य है कि वह न्याय और सत्य से न हटे, किसी के साथ अन्याय न करे। लोगों के बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करे।

आगे चल कर अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये कहा गया कि सारा संसार अल्लाह ही के द्वार का भिखारी है, सब की आवश्यकतायें वही पूरी करता है। नित उस की नई शान ज़ाहिर होती है।

फिर बताया गया कि किस प्रकार 'आख़िरत' में मनुष्य या तो 'जहन्नम' की घोरतम यातना में पड़ने वाला है या उसे शाश्वत सुख और आनन्द मिलने वाला है। उस का अन्तिम परिणाम इस पर निर्भर है कि वह संसार में किस प्रकार जीवन व्यतीत करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अर-रहमान
(मक्का में उतरी – 'आयतें' ७८)

THE BENEFICENT
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

'अल्लाह्' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

१. 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) है।

1. The Beneficent

اَلرَّحْمٰنُ ۝١

२. उस ने 'क़ुरआन' सिखाया।

2. Hath made known the Qur'an.

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝٢

३. मनुष्य को पैदा किया[1]।

3. He hath created man:

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝٣

४. उसे बोलना सिखाया।

4. He hath taught him utterance.

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝٤

५. सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब में बँधे हुये हैं।

5. The sun and the moon are made punctual .

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥

६. और तारे और वृक्ष 'सजदा' करते हैं[2]।

6. The stars and the trees adore.

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦

७. और आकाश को ऊँचा उठाया; और तुला रक्खी

7. And the sky He hath uplifted; and He hath set the measures,

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧

८. कि तुम तुला में सीमोल्लंघन न करो[3],

8. That ye exceed not the measure,

اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝٨

९. और इन्साफ़ के साथ ठीक तौलो, और तौल में कम न दो।

9. But observe the measure strictly, nor fall short thereof.

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩

१०. और धरती को बिछा दिया खिलक़त के लिए,

10. And the earth hath He appointed for (His) creatures,

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠

११. उस में हैं मेवे और खजूर के वृक्ष बन्द गुच्छों वाले,

11. Wherein are fruit and sheathed palm-trees,

فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١

१२. और अनाज भुस वाले और महकते फूल-पौधे।

12. Husked grain and scented herbs.

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝١٢

१. इस से मालूम हुआ कि मनुष्य की सृष्टि की तरह 'क़ुरआन' भी अल्लाह् की दयालुता का सूचक है। मनुष्य की सृष्टि यदि उत्तम रीति से हुई है तो उसे क़ुरआन जैसी नेमत भी प्रदान की गई; इस के द्वारा उस की विशेषता और परिपूर्णता का प्रदर्शन होता है।

२. अर्थात् सभी चीज़ें अल्लाह् के आगे झुक रही हैं। चाहे ज़मीन के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, छोटे झाड़ और लतायें हों या आकाश के चमकते तारे, सब एक प्रभु के अधीन हैं।

३. अर्थात् धरती से ले कर आकाश तक हर चीज़ न्याय और सत्य पर, समता और सन्तुलन के साथ अवलम्बित है। यदि यह न्याय शेष न रहे तो विश्व की व्यवस्था बिगड़ कर रह जाये। नबी सल्ल० ने कहा है कि न्याय ही से धरती और आकाश क़ायम हैं। बन्दों का भी कर्तव्य है कि वे न्याय से न हटें। किसी वर्ग या व्यक्ति पर ज़्यादती न होने पाये (दे० सूरा अल-हदीद आयत २५)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार[४] को झुठलाते हो ?

13. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٣﴾

१४. मनुष्य को ठीकरे जैसी खनकती मिट्टी से पैदा किया[५],

14. He created man of clay like the potter's,

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

१५. और 'जिन्न' को अग्नि-ज्वाला से पैदा किया।

15. And the Jinn did He create of smokeless fire.

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ ﴿١٥﴾

१६. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

16. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٦﴾

१७. दोनों पूर्व का 'रब' है, और दोनों पश्चिम का 'रब'[६] !

17. Lord of the two Easts, nd Lord of the two Wests!

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

१८. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

18. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾

१९. दोनों दरियाओं को बहता छोड़ दिया जो परस्पर मिले रहते हैं।

19. He hath loosed the two seas. The meet:

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾

२०. दोनों के बीच एक आड़ है जिसे पार नहीं करते[७]।

20. There is a barrier between them. They encroach not (one upon the other).

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

२१. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

21. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢١﴾

२२. उन (दरियाओं) से मोती और मूंगा निकलता है।

22. There cometh forth from both of them the pear and coral-stone.

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

२३. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

23. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾

२४. उसी के हैं दरिया में चलने वाले ऊँचे-ऊँचे जहाज़ जैसे पहाड़ हों।

24. His are the ships displayed upon the sea, like banners.

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

४. यहाँ 'आलाऽ' (آلاء) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'आलाऽ' का अनुवाद साधारणतः 'नेमत' (Favours or bounties) किया जाता है। क़ुरआन के बयान और अरब-साहित्य के अध्ययन से मालूम होता है कि इस शब्द का मूल अर्थ है अद्भुत कार्य अथवा चमत्कार, जैसा कि मुहलहिल कवि कहता है :—

الحزم والعزم كان من طبائعه   ما كل آلاءه يا قوم احصيها

अर्थात् विवेक और संकल्प उस के स्वभाव में सम्मिलित थे, लोगो ! मैं उस के सब 'आलाऽ' (कमाल और गुण) नहीं गिना सकता।

अल्लाह के प्रत्येक कार्य अद्भुत हैं। और उस के यहाँ जिस चीज़ को प्रधानता प्राप्त है वह उस की दयालुता है (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १५६)। उस के चमत्कारों का प्रदर्शन प्रायः दयालुता और नेमतों ही के रूप में होता है इस तरह 'नेमत' और 'आलाऽ' समानार्थक शब्द समझे जाने लगे।

५. दे० सूरा अल-हिज्र फ़ुटनोट १६।

६. शीत ऋतु में सूर्य जिस जगह से उदय होता और जिस जगह अस्त होता है ग्रीष्म ऋतु में वह उस से भिन्न स्थान से उदय होता और उस से भिन्न स्थान पर अस्त होता है। यों तो सूर्य प्रत्येक दिन नई रेखा पर उदय और अस्त होता है इस तरह उसे उदय और अस्त होने के दो स्थानों का ही नहीं बल्कि उसे उदय और अस्त होने के अनेक स्थानों का 'रब' भी कहा जा सकता है (दे० सूरा अल-मआरिज आयत ४०)।

७. दे० सूरा अल-फ़ुरक़ान फ़ुटनोट ३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

25. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾

२६. जो कोई इस (धरती) पर है विनाशवान् है;

26. Every one that is thereon will pass away:

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

२७. और तुम्हारे 'रब' का प्रतापवान् एवं उदार स्वरूप शेष रहेगा।

27. There remaineth but the countenance of thy Lord of Might and Glory.

وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

२८. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

28. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٨﴾

२९. जो भी आकाशों और धरती में है उस से माँगता है[८]। उस की नित नई शान है[९]।

29. All that are in the heavens and the earth entreat Him. Every day He exerciseth (universal) power.

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

३०. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

30. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾

३१. हे दोनों भारी-भरकम गरोहो ! जल्द ही हम तुम्हारे लिए समय निकाल रहे हैं[१०]।

31. We shall dispose of you, O ye two dependents (man and jinni).

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾

३२. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

32. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾

३३. हे गरोह मनुष्य और 'जिन्न' के ! यदि तुम में सामर्थ्य हो कि आकाशों और धरती की सीमाओं से बाहर निकल जाओ तो निकलो। तुम बिना किसी सनद (या बल) के नहीं निकल सकते[११]।

33. O company of jinn and men, if ye have power to penetrate (all) regions of the heavens and the earth, then penetrate (them) Ye will never penetrate them save with (Our) sanction.

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾

३४. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

34. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾

३५. तुम दोनों पर अग्नि-ज्वाला और पिघला हुआ ताँबा छोड़ दिया जायेगा, फिर तुम अपना बचाव न कर सकोगे।

35. There will be sent, against you both, heat of fire and flash or brass, and ye will not escape.

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾

८. अर्थात् सम्पूर्ण संसार उसी के द्वार का भिखारी है; सब की आवश्यकतायें वही पूरी करता है।

९. अर्थात् वह किसी समय अपनी सृष्टि से बेख़बर नहीं रहता। इस संसार का इन्तज़ाम वही चला रहा है। जो कुछ परिवर्तन धरती और आकाश में होते रहते हैं उस के पीछे उसी का हाथ काम करता है। किसी को मारना, किसी को जीवन प्रदान करना, किसी को धनवान और किसी को निर्धन करना उसी का काम है। वही जिसे चाहता है आदर और सम्मान प्रदान करता है जिस से चाहता है छीन लेता है। इन सब में उसी की शान ज़ाहिर होती है।

१०. अर्थात् जल्द ही दूसरा दौर शुरू होने वाला है जब कि तुम्हारा हिसाब लिया जायेगा, जब कि अपराधी लोगों की पूरी तरह ख़बर ली जायेगी और भले लोग अच्छा बदला पायेंगे।

११. यह बात चैलेंज के रूप में कही गई है कि तुम अल्लाह के राज्य से निकल सकते हो तो निकल कर दिखाओ। तुम अल्लाह के राज्य से भाग नहीं सकते। इस के लिए बड़ा बल चाहिए जो तुम्हें प्राप्त नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	36. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾
३७. फिर जब आकाश फट जायेगा[१२] और तेल की तरह लाल[१३] हो जायेगा—	37. And when the heaven splitteth asunder and becometh rosy like red hide —	فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾
३८. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो—	38. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny? —	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾
३९. तो उस दिन न किसी मनुष्य से और न किसी 'जिन्न' से उस के गुनाह के विषय में पूछा जायेगा[१४]।	39. On that day neither man nor jinni will be questioned of his sin.	فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾
४०. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	40. Which is it, of the favours of your Lord that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾
४१. अपराधी अपनी सूरत से पहचान लिये जायेंगे, फिर पकड़ लिये जायेंगे माथे के बाल और पाँव।	41. The guilty will be known by their marks and will be taken by the forelocks and the feet.	يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾
४२. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	42. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾
४३. यह है वह 'जहन्नम' जिस को अपराधी झुठलाते हैं[१५]।	43. This is Hell which the guilty deny.	هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾
४४. वे इस के और खौलते पानी के बीच चक्कर काट रहे हैं।	44. They go circling round between it and fierce, boiling water.	يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾
४५. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	45. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾
४६. और जो कोई अपने 'रब' के आगे खड़े होने से डरा उस के लिए दो उद्यान हैं[१६]।	46. But for him who feareth the standing before his Lord here are two gardens.	وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾

१२. 'क़ियामत' आयेगी तो विश्व की व्यवस्था में महान् परिवर्त्तन होगा यह संकेत इसी की ओर है। दे० सूरा अल-इनफ़ितार आयत १; अल-इनशिक़ाक़ आयत १।

१३. अर्थात् बहुत गहरा लाल। यहाँ 'दिहान (الدهان) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का एक अर्थ लाल चमड़ा भी होता है। ऐसा लगेगा जैसे ऊपरी लोक में एक आग-सी लगी हुई है।

१४. अर्थात् अपराधी व्यक्ति के गुनाहों को जानने के लिए अल्लाह को पूछने की आवश्यकता न होगी। यदि उस से पूछ होगी तो ताड़ना और डाँट-डपट के लिए और उन के गुनाहों को साबित करने के ध्येय से ही होगी। दे० सूरा या सीन० आयत ६५; सूरा अल-मुरलात आयत ३५-३६।

१५. अर्थात् यही 'जहन्नम' है जिसे अपराधी लोग दुनिया में मानने से इन्कार करते थे।

१६. अर्थात् जिस किसी को इस की चिन्ता हुई कि उसे एक दिन अपने 'रब' के सामने हाज़िर होना और अपने कामों का हिसाब देना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	47. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٧
४८. वे फैली हुई टहनियों वाले हैं।	48. Of spreading branches.	ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ٤٨
४९. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	49. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٤٩
५०. इन में दो स्रोत प्रवाहित हैं।	50. Wherein are two fountains flowing.	فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ٥٠
५१. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	51. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥١
५२. इन में हर मेवे दो-दो प्रकार के हैं।	52. Wherein is every kind of fruit in pairs.	فِيهِمَا مِن كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ٥٢
५३. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	53. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٣
५४. वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाये हैं जिनके अन्दर के हिस्से दबीज़ रेशम के हैं, और इन उद्यानों के फल नीचे लटक रहे हैं[१७]।	54. Reclining upon couches lined with silk brocade, the fruit of both gardens near to hand.	مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ٥٤
५५. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	55. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٥
५६. इन में निगाह बचाये रखने वाली (लज्जावती) स्त्रियाँ हैं, जिन्हें इन से पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी 'जिन्न' ने,	56. Therein are those of modest gaze, whom neither man nor jinn' will have touched before them.	فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ٥٦
५७. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	57. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٧
५८. (सुन्दरता में) मानो वे लालमणि और प्रवाल हैं।	58. (In beauty) like the jacnth and the coral stone.	كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ٥٨
५९. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	59. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٩
६०. भलाई का बदला भलाई के सिवा और हो भी क्या सकता है ?	60. Is the reward of goodness aught save goodness?	هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ٦٠
६१. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?	61. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٦١

१७. जिन्हें 'जन्नत' वाले आसानी से तोड़ कर खायेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२. इन के सिवा दो उद्यान और भी हैं,

62. And beside them are two other gardens,

وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾

६३. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

63. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٣﴾

६४. वे बहुत ही हरे-भरे[१८] हैं।

64. Dark green with foliage.

مُدْهَامَّتَانِ ﴿٦٤﴾

६५. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

65. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٥﴾

६६. इन में दो उबलते स्रोत हैं।

66. Wherein are two abundant springs.

فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ﴿٦٦﴾

६७. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

67. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٧﴾

६८. इन में मेवे, और खजूर और अनार हैं।

68. Wherein is fruit, the date-palm and pomegranate.

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

६९. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

69. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٩﴾

७०. इन में भली और सुन्दर स्त्रियाँ हैं।

70. Wherein (are found) the good and beautiful —

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

७१. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो—

71. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧١﴾

७२. सुन्दर आँखों वाली (मृगनैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ हैं ख़ेमों के भीतर ठहरी रहने वाली—

72. Fair ones , close-guarded in pavilions —

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

७३. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो—

73. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٣﴾

७४. जिन्हें इन से पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी 'जिन्न' ने—

74. Whom neither man nor jinni will have touched before them —

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾

७५. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

75. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٥﴾

७६. वे हरी-हरी मसनदों और अच्छे-अच्छे क़ालीनों पर टेक लगाये हुये हैं।

76. Reclining on green cushions and fair carpets.

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

७७. बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?

77. Which is it, of the favours of your Lord, that ye deny?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾

७८. बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे 'रब' का नाम जो प्रतापवान और उदार है !

78. Blessed be the name of thy Lord, Mighty and Glorious!

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

———

१८. इतने हरे कि उन में श्यामलता आ गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६—अल-वाक़िआ

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-वाक़िआ' अर्थात् 'आ पड़ने वाली' (The event) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। 'अल-वाक़िआ' से अभिप्रेत 'क़ियामत' है जो आ कर रहने वाली है। 'क़ियामत' का इस सूरा की वार्त्ताओं से मौलिक सम्पर्क है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय इस सूरा का वही है जो सूरा क़ाफ़० का है।

इस सूरा में 'क़ियामत' की सूचना देते हुये बताया गया है कि लोग उस दिन तीन वर्गों में बँट जायेंगे। जिन में एक गरोह तो उन लोगों का होगा जिन का स्थान सब से ऊँचा होगा। वे अल्लाह के अत्यन्त क़रीबी बन्दे होंगे; उन पर अल्लाह की विशेष कृपा होगी। उंन्हें 'जन्नत' में परम सुख और आनन्द प्राप्त होगा।

दूसरा गरोह साधारण 'ईमान' वालों का होगा। इन पर मी अल्लाह की कृपा होगी और ये भी सदाबहार 'जन्नत' के अधिकारी होंगे।

तीसरा गरोह बुरे लोगों का होगा जो दुनिया में 'आख़िरत' का इन्कार करते हैं और भटके हुये लोगों में से हैं। 'जहन्नम' की यातना के अतिरिक्त 'आख़िरत' में इन के हिस्से में कुछ न आयेगा।

इन तीनों गरोहों के परिणामों का उल्लेख करने के पश्चात् 'काफ़िरों' को समझाया गया है कि वे बुद्धि से काम लें और 'आख़िरत' का इन्कार न करें और न अल्लाह के उपकारों को भूलें।

फिर 'क़ुरआन' के बारे में कहागया है कि यह संसार के पालनकर्त्ता की ओर से उतरा है। इस की पुष्टि के लिए सितारों की स्थितियों को पेश किया गया है। जिस से विभिन्न तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। सितारों का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में प्रवेश करना, उनका ढलना और डूबना एक प्रकार से अपने 'रब' के आगे 'सजदा' करना है इस में इस ओर संकेत है कि हम भी अपने 'रब' के आगे झुकें और उसे 'सजदा' करें। फिर जिस प्रकार सितारों का प्रकाश हम तक पहुँचता है उसी प्रकार 'वह्य' का प्रकाश और 'फ़िरिश्ता' 'वह्य' के साथ 'नबी' की ओर उतरता है। फिर सितारों का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में प्रवेश करना 'क़ुरआन' के उतरने की एक प्रत्यक्ष उपमा है। जब सितारे विभिन्न उद्देश्यों और हिकमतों के अन्तर्गत एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाख़िल होते रहते हैं तो यदि अल्लाह की ओर से मानव लोक में किसी मार्गदर्शक ग्रन्थ का अवतरण हुआ हो, तो इस में आश्चर्य की कौन सी बात हो सकती है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-वाक़िआ **(मक्का में उतरी -- 'आयतें' ९६)**	**THE EVENT** Revealed at Mecca	سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है ।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
१. जब आ पड़ेगी आ पड़ने वाली[1]	1. When the event befalleth—	إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ①
२. उस के आ पड़ने पर कोई भ्रान्ति न होगी	2. There is no denying that it will befall—	لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ②
३. नीचा कर देने वाली है और ऊँचा कर देने वाली[2];	3. Abasing (some), exalting (others);	خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ③
४. जब धरती हिला डाली जायेगी	4. When the earth is shaken with a shock,	إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ④
५. और पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जायेंगे ।	5. And the hills are ground to powder,	وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑤
६. फ़िर वे ग़ुबार बन कर उड़ते फिरेंगे ।	6. So that they become a scattered dust,	فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ⑥
७. और तुम्हारी तीन क़िस्में होंगी :	7. And ye will be three kinds:	وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ⑦
८. तो दाहिनी ओर वाले[3]; क्या समझते हो दाहिनी ओर वालों को ?	8. (First) those on the right hand; what of those on the right hand?	فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ⑧
९. और बाईं ओर वाले; क्या समझते हो बाईं ओर वालों को ?	9. And (then) those on the left hand; what of those on the left hand?	وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ⑨
१०. और अग्रसर रहने वाले तो हैं ही अग्रसर रहने वाले[4] :	10. And the foremost in the race, the foremost in the race:	وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ⑩
११. ये हैं पास रक्खे जाने वाले ।	11. Those are they who will be brought nigh.	أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ⑪
१२. रमणीय उद्यानों में ;	12. In gardens of delight;	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ⑫
१३. एक पूरा गरोह अगले लोगों में से	13. A multitude of those of old,	ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ⑬
१४. और थोड़े से पिछले लोगों में से ।	14. And a few of those of later time,	وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ⑭
१५. जड़ाऊ तख़्तों पर हैं,	15. On lined couches,	عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ⑮
१६. टेक लगाये उन पर आमने-सामने बैठे हैं ।	16. Recalling therein face to face.	مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ⑯

१. अर्थात् 'क़ियामत', दे० सूरा अल-हाक़्क़ा आयत १३-१५ ।
२. अर्थात् उस दिन कुछ लोग अपमानजनक यातना में ग्रस्त होंगे और कुछ लोगों को ऊँचा स्थान प्राप्त होगा ।
३. यह संकेत साधारण 'ईमान' वालों की ओर है ।
४. यह संकेत उन ख़ास लोगों की ओर है जिन का अल्लाह के यहाँ सब से ऊँचा दरजा है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. फिर रहे हैं उन के पास ऐसे किशोर जिन की अवस्था सदा एक ही रहेगी[५]	17. There wait on them immortal youths.	يطوف عليهم ولدان مخلدون ١٧
१८. आबख़ोरे[६] और आफ़ताबे[७] लिये और प्याला निथरी बहती शराब से भरा हुआ	18. With bowls and ewers and a cup from a pure spring,	بأكواب وأباريق وكأس من معين ١٨
१९. जिस से न उन का सिर दुःखे और न उन की बुद्धि में विकार आये।	19. Wherefrom they get no aching of the head nor any madness:	لا يصدعون عنها ولا ينزفون ١٩
२०. और मेवे जो पसन्द करें।	20. And fruit that they prefer.	وفاكهة مما يتخيرون ٢٠
२१. और पक्षी का मांस जिस की इच्छा हो।	21. And flesh of fowls that they desire.	ولحم طير مما يشتهون ٢١
२२. और बड़ी और सुन्दर आँखों वाली (मृगनैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ,	22. And (there are) fair ones with wide, lovely eyes,	وحور عين ٢٢
२३. जैसे धराऊ मोती हों,	23. Like unto hidden pearls,	كأمثال اللؤلؤ المكنون ٢٣
२४. जो-कुछ वे करते थे यह उस का बदला है।	24. Reward for what they used to do.	جزاء بما كانوا يعملون ٢٤
२५. वे उस में न कोई बकवाद सुनते हैं और न कोई गुनाह की बात[८]	25. There hear they no vain speaking nor recrimination,	لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما ٢٥
२६. बस यही कहते सुनते हैं : सलाम है ! सलाम है[९] !	26. (Naught) but the saying: Peace, (and again) Peace.	إلا قيلا سلاما سلاما ٢٦
२७. और दाहिनी ओर वाले; क्या समझते हो दाहिनी ओर वालों को ?	27. And those on the right hand; what of those on the right hand?	وأصحاب اليمين ما أصحاب اليمين ٢٧
२८. वे वहाँ हैं जहाँ बिन काँटों के बेर हैं	28. Among thornless lote trees,	في سدر مخضود ٢٨
२९. और बराबर से लगे हुये 'तल्ह' (के वृक्ष) हैं,	29. And clustered plantains,	وطلح منضود ٢٩
३०. और दूर-दूर तक फैली हुई छाँव है	30. And spreading shade,	وظل ممدود ٣٠
३१. और बहता हुआ पानी है,	31. And water gushing,	وماء مسكوب ٣١
३२ और बहुत सा मेवा है	32. And fruit in plenty;	وفاكهة كثيرة ٣٢
३३. जिस का न सिलसिला टूटने वाला है और न उस पर कोई रोक-टोक है,	33. Neither out of reach nor yet forbidden,	لا مقطوعة ولا ممنوعة ٣٣

५. अर्थात् जो सदा किशोर ही रहेंगे।
६. अर्थात् ऐसा जल-पात्र (Bowl) जिस में टोंटी और दस्ता नहीं होता।
७. ऐसा बरतन जिस में टोंटी और दस्ता हो।
८. वहाँ बेहूदा और अश्लील बातें सुनने में नहीं आयेंगी और न कोई गुनाह की बात वहाँ होगी।
९. हर ओर से सलाम की आवाज़ें आती होंगी। 'जन्नत' वाले आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, 'फ़रिश्ते' उन पर सलाम भेजेंगे, खुद अल्लाह का सलाम उन्हें पहुँचेगा (दे० सूरा या सीन० आयत ५८)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. और ऊपर लगे हुये बिछौने हैं ;	34. And raised couches.	وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾
३५. हम ने उन स्त्रियों को एक विशेष उठान पर उठाया है	35. Lo! We have created them a (new) creation,	اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾
३६. और हम ने उन्हें कुमारी बनाया है,	36. And made them virgins,	فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾
३७. प्रेयसी और समायु,	37. Lovers, friends,	عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾
३८. दाहिनी ओर वालों के लिए।	38. For those on the right hand;	لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾
३९. एक पूरा गरोह है अगले लोगों में से	39. A multitude of those of old;	ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾
४०. और एक पूरा गरोह है पिछले लोगों में से।	40. And a multitude of those of later time.	وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾
४१. और बाईं ओर वाले, क्या समझते हो बाईं ओर वालों को ?	41. And those on the left hand: What of those on the left hand?	وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾
४२. गर्म हवा और खौलते हुये पानी में हैं	42. In scorching wind and scalding water.	فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾
४३. और स्याह धुवें की छाँव में[10],	43. And shadow of black smcke,	وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾
४४. जो न शीतल है और न सुखदायक।	44. Neither cool nor refreshing.	لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾
४५. निश्चय ही वे इस से पहले सुखभोगी थे	45. Lo! hereto for they were effete with luxury.	اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾
४६. और वे महा पाप पर जमे रहते थे।	46. And used to persist in the awful sin.	وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾
४७. और कहते थे : क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायेंगे, तो क्या हम फिर (जीवित कर के) उठाये जाने वाले हैं,	47. And they used to say: When we are dead and have become dust and bones, shall we then, forsooth, be raised again,	وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾
४८. क्या हमारे अगले पूर्वज भी ?	48. And also our forefathers ?	اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾
४९. कह दो : हाँ अगले और पिछले सभी	49. Say (unto them, O Muhammad): Lo! those of old and those of later time.	قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾
५०. इकट्ठा किये जायेंगे एक विशेष समय पर जिस का दिन निश्चित है।	50. Will all be brought together to the tryst of an appointed day.	لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾
५१. फिर तुम हे गुमराहो, झुठलाने वालो,	51. Then lo! ye, the erring, the deniers,	ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾
५२. तुम अवश्य 'ज़क़्क़ूम'[11] के वृक्ष से खाओगे	52. Ye verily will eat of a tree called Zaqqum:	لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾

१०. दे० सूरा अद-दुख़ान आयत १०।
११. सूरा अस-साफ़्फ़ात फ़ुटनोट २२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३. और उस से पेट भरोगे ;	53. And will fill your bellies therewith;	فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾
५४. फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे[12],	54. And thereon ye will drink of boiling water,	فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾
५५. और पियोगे जैसे प्यास से व्याकुल ऊंट पिये ।	55. Drinking even as the camel drinketh.	فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ ﴿٥٥﴾
५६. कर्मों का फल पाने के दिन इस से होगी उन की आवभगत ।	56. This will be their welcome on the Day of Judgement.	هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾
५७. हम ने तुम्हें पैदा किया है । फिर तुम क्यों सच नहीं मानते[13] ?	57. We created you. Will ye then admit the truth?	نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾
५८. फिर क्या तुम ने देखा जो वीर्य्य तुम टपकाते हो ?	58. Have ye seen that which ye emit?	أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾
५९. उसे आकार तुम देते हो, या हम हैं आकार देने वाले ?	59. Do you create it or are We the Creator?	ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾
६०. हम ने तुम्हारे बीच मरने की रीति ठहराई, और हमारे बस से बाहर नहीं	60. We mete out death among you, and We are not to be outrun,	نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾
६१. कि हम तुम्हारा आकार बदल दें और तुम्हें किसी ऐसे रूप[14] में उठा खड़ा करें जिसे तुम जानते नहीं ।	61. That We may transfigure you and make you what ye know not.	عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾
६२. और तुम अपनी पहली सृष्टि को तो जान ही चुके हो । फिर क्यों नहीं शिक्षा ग्रहण करते ?	62. And verily ye know the first creation. Why, then, do ye not reflect?	وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾
६३. फिर क्या तुम ने देखा यह जो तुम खेती करते हो ?	63. Have ye seen that which ye cultivate?	أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾
६४. उस से खेती तुम तैयार करते हो, या हम हैं तैयार करने वाले ?	64. Is it ye who foster it, or are We the Fosterer?	ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾
६५. यदि हम चाहते, तो उसे चूरा-चूरा कर देते, और तुम चकित हो कर रह जाते :	65. If We willed, We verily could make it chaff, then would ye cease not to exclaim: -	لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾
६६. हमें तो सब डाँड़ हो गया !	66. Lo! we are laden with debt!	إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾
६७. बल्कि हम तो कंगाल हो गये !	67. Nay, but we are deprived!	بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

१२. तुम प्यासे ऊंट की तरह उस पानी पर गिरोगे परन्तु उस से प्यास नहीं बुझेगी । वह पानी इतना तेज और गर्म होगा कि तुम्हारी आँतें तक कट जायेंगी (दे० सूरा मुहम्मद आयत १५) ।

१३. अर्थात् तुम्हें क्यों विश्वास नहीं होता कि जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया वह तुम्हें दोबारा भी पैदा कर सकता है ।

१४. दे० सूरा अद-दह्र आयत २८; अल-मआरिज आयत ४१; मुहम्मद आयत ३८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८. फिर तुम ने यह पानी देखा जिसे तुम पीते हो ?	68. Have ye observed the water which ye drink?	أفرءيتم الماء الذي تشربون ﴿٦٨﴾
६९. उसे मेघ से तुम ने उतारा है, या हम हैं उतारने वाले ?	69 Is it ye who shed it from the raincloud, or are We the shedder?	ءأنتم أنزلتموه من المزن أم نحن المنزلون ﴿٦٩﴾
७०. यदि हम चाहते, तो उसे कड़ुवा बना देते। फिर क्यों नहीं तुम कृतज्ञता दिखलाते ?	70. If We willed We verily could make it bitter. Why, then, give ye not thanks?	لو نشاء جعلنه أجاجا فلولا تشكرون ﴿٧٠﴾
७१. फिर क्या तुम ने यह आग देखी जिसे तुम सुलगाते हो ?	71. Have ye observed the fire which ye strike out;	أفرءيتم النار التي تورون ﴿٧١﴾
७२. तुम ने उस के वृक्ष को उगाया है, या हम हैं उगाने वाले[१५] ?	72. Was it ye who made the tree thereof to grow, or were We the grower?	ءأنتم أنشأتم شجرتها أم نحن المنشئون ﴿٧٢﴾
७३. हम ने उस (वृक्ष) को अनुस्मारक बनाया और जंगल वालों के लिए उपभोग्य।	73. We, even We, appointed it a memorial and a comfort for the dwellers in the wilderness.	نحن جعلنها تذكرة ومتعا للمقوين ﴿٧٣﴾
७४. तो तुम अपने महिमाशाली 'रब' के नाम की 'तसबीह' करो।	74. Therefor (O Muhammad), praise the name of thy Lord, the Tremendous.	فسبح باسم ربك العظيم ﴿٧٤﴾
७५. कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की[१६]—	75. Nay, I swear bythe places the stars—	فلا أقسم بموقع النجوم ﴿٧٥﴾
७६. और यह बहुत बड़ी क़सम है यदि तुम जानते होते—	76. And lo! that verily is a tremendous oath, if ye but knew—	وإنه لقسم لو تعلمون عظيم ﴿٧٦﴾
७७. निस्सन्देह यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है	77. That (this) is indeed a noble Qur'an,	إنه لقرءان كريم ﴿٧٧﴾
७८. एक सुरक्षित किताब में[१७]	78. In a Book kept hidden,	في كتب مكنون ﴿٧٨﴾
७९. उसे पवित्र लोग ही हाथ लगाते हैं,	79 Which none toucheth save the purified.	لا يمسه إلا المطهرون ﴿٧٩﴾
८०. अवतरण है सारे संसार के 'रब' की ओर से।	80. Revelation from the Lord of the Worlds.	تنزيل من رب العلمين ﴿٨٠﴾
८१. तो क्या इस बात[१८] को तुम टाल रहे हो,	81. Ts it this Statement that ye scorn,	أفبهذا الحديث أنتم مدهنون ﴿٨١﴾

१५. दे० सूरा या सीन० आयत ८० ।

१६. अर्थात् सितारों की स्थितियाँ इसी बात की गवाही देती हैं कि यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है और यह संसार के 'रब' की ओर से अवतरित हुआ है (आयत ७६-८०)। सितारों की विभिन्न स्थितियाँ (Positions), उन की गर्दिश, उन का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाखिल होना क़ुरआन के अवतरण की एक खुली मिसाल है। जब सितारे सृष्टि और मनुष्यों की आवश्यकताओं और ज्ञात व अज्ञात अगणित उद्देश्यों के अन्तर्गत अपनी विभिन्न मंज़िलों में दाखिल होते और नवीन स्थिति ग्रहण करते रहते हैं तो यदि अल्लाह की ओर से जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए कोई किताब उतरी है तो इस में आश्चर्य की क्या बात हो सकती है। आश्चर्य की बात तो यह होती कि अल्लाह लोगों को जल, प्रकाश आदि से तो वंचित न करता किन्तु किताब और सच्चे ज्ञान से बंचित कर देता और 'आख़िरत' के बारे में उन्हें अँधेरे ही में रहने देता। क़ुरआन का विशेष गुण यह है कि वह लोगों को आने वाले दिन से सचेत करता है।

१७. दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ फ़ुटनोट ३।

१८. अर्थात् क़ुरआन की दी हुई इस ख़बर की तुम्हें परवाह नहीं है कि एक दिन तुम्हें अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है और अपने किये का बदला पाना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८२. और अपनी वृत्ति यह बना रहे हो कि तुम झुठलाते हो ?	82. And make denial thereof your livelihood?	وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾
८३. फिर क्यों नहीं—जब वह[19] पहुँच जाती है घाँटी तक	83. Why, then, when (the soul) cometh up to the throat (of the dying),	فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾
८४. और तुम उस समय देख रहे होते हो	84. And ye are at that moment looking:	وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾
८५. और हम तुम से भी अधिक उस (मरने वाले) के निकट होते हैं, परन्तु तुम्हें सुझाई नहीं देता—	85.—And We are nearer unto him than ye are, but ye see not—	وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَٰكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾
८६. फिर क्यों नहीं, यदि तुम अधीन नहीं हो,	86. Why then, if ye are not in bondage (unto Us),	فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾
८७. तो उसे फेर लेते, यदि तुम सच्चे हो ?	87. Do ye not force it back, if ye are truthful?	تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾
८८. फिर यदि वह (मरने वाला) पास रक्खे जाने वालों में से हुआ,[20]	88. Thus if he is of those brought nigh,	فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾
८९. तो आनन्द है और सुगन्ध है और रमणीय उद्यान।	89. Then breath of life, and plenty, and a Garden of delight	فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾
९०. और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से[21] हुआ,	90. And if he is of those on the right hand,	وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾
९१. तो सलाम है तुझे कि तू दाहिनी ओर वालों में से है।	91. Then (the greeting) "Peace be unto thee" from of those on the right hand.	فَسَلَامٌ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾
९२. और यदि वह झुठलानें वालों और गुमराहों[22] में से हुआ,	92. But if he is of the rejecters, the erring,	وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾
९३. तो खौलते हुये पानी से आवभगत है	93. Then the welcome will be boiling water,	فَنُزُلٌ مِنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾
९४. और प्रवेश भड़कती आग में।	94. And roasting at hell-fire.	وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ﴿٩٤﴾
९५. यह है सच, बिल्कुल यक़ीनी।	95. Lo! this is certain truth	إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٥﴾
९६. तो करो अपनें महिमाशाली 'रब' (पालनकर्त्ता) के नाम की 'तसबीह'।	96. Therefor (O Muhammad) praise the name of thy Lord, the Tremendous.	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٦﴾

१९. अर्थात् आदमी की जान।
२०. अर्थात् अल्लाह के क़रीबी और विशेष बन्दों में से हुआ (दे० आयत ११)।
२१. दे० आयत ८।
२२. दे० आयत ९, ५१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In.Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७—अल-हदीद

(परिचय)

नाम (The Title)

'इस 'सूरा' का नाम 'अल-हदीद' (Iron) सूरा की 'आयत' २५ से लिया गया है। 'अल-हदीद' सूरा का केन्द्रीय विषय नहीं है। 'सूरा' का यह नाम दूसरी बहुत सी 'सूरतों' की तरह केवल एक चिन्ह के रूप में रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह 'सूरा' मक्का की विजय के पश्चात् अर्थात् 'हिजरत' के आठवें या नवें वर्ष उतरी है[1]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' से सूरतों का एक खास सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अततहरीम तक चला गया है।

सूरा अल-हदीद से ले कर सूरा अत-तहरीम तक की सूरतों का मध्य विन्दु एक ही है। 'ईमान वालों को आज्ञापालन और 'इस्लाम' में पूर्ण और सिद्ध करना यही इन सूरतों का केन्द्रीय विषय है। यही चीज़ है जिसे 'तक़वा' और धर्म-परायणता कहते हैं और 'नबी' के अनुकरण और आज्ञापालन का भी यही अर्थ होता है कि आदमी 'इस्लाम' और ईश-भक्ति में पूर्णता प्राप्त करें[2]।

प्रस्तुत 'सूरा' से ले कर सूरा 'अत-तहरीम' तक की सूरतों में, जो संख्या में दस हैं बड़ी समानता और एकात्मता पाई जाती है। इन सूरतों में मुसलमानों को ताकीद की गई है कि वे 'मुनाफ़िक़ों' की आदतों से बचें और उन से मित्रता का सम्बन्ध कदापि न जोड़ें।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में अल्लाह के गुणों का उल्लेख किया गया है फिर इस के बाद विशेष रूप से अल्लाह पर और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' लाने का आदेश दिया गया है। इस प्रकार लोगों को 'नबी' सल्ल० के आदेशों के पालन करने पर उभारा गया है। अल्लाह की आज्ञा का पालन करना सम्भव ही नहीं है जब तक मनुष्य अल्लाह के 'रसूल' पर 'ईमान' ला कर उस का अनुगामी न हो जाये।

फिर इस 'सूरा' में कृपणता और सांसारिक सुख-सामग्री, धन-सम्पत्ति आदि के मोह से रोका गया है। और बताया गया है कि सांसारिक वस्तुओं की प्रकृति और उन का मूल गुण (Nature) नश्वरता और अनित्यता (Temporariness) है। यहाँ की समस्त वस्तुयें नश्वर हैं। उन की प्राप्ति को जीवन-लक्ष्य समझना भूल ही नहीं घोर अन्याय भी है। अल्लाह के मार्ग में अपना माल ख़र्च करना आत्मिक विकास और उन्नति का मार्ग है। लोगों को अल्लाह की क्षमा और उस की 'जन्नत' की ओर बढ़ना चाहिए जिस के मुक़ाबले में सांसारिक वस्तुयें कोई मूल्य नहीं रखतीं।

फिर मुसलमानों को यह शुभ सूचना दी गई है कि अल्लाह की मदद उन्हें हासिल होगी और वह उन्हें शक्ति, अधिकार और राज्य-सत्ता प्रदान करेगा। शक्ति और अधिकार न्याय की स्थापना के

१. दे० आयत १०।
२. दे० आयत २८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए आवश्यक है। वैराग्य (Monasticism) का इस 'सूरा' में निषेध किया गया है। और कहा गया है कि वैराग्य की प्रथा ईसाइयों ने स्वयं निकाली है इस का आदेश अल्लाह ने उन्हें नहीं दिया था। अल्लाह को अपने बन्दों से जो चीज़ अभीष्ट है वह वैराग्य नहीं वल्कि यह है कि उस के बन्दे उस की प्रसन्नता (Allah's pleasure) चाहें और इस के लिए प्रयत्नशील हों।

सूरा के अन्त में 'ईमान' वालों को यह शुभ सूचना दी गई है कि यदि वे 'ईमान' लाने का हक़ अदा करते हैं तो उन के लिए अल्लाह के यहाँ दोहरा वदला है। और यह अल्लाह का अनुग्रह है वह जिसे चाहे प्रदान करे।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हदीद
(मदीना में उतरी–'आयतें' २९)

IRON
Revealed at Al-Madinah

سورة الحديد مدنية وهي تسع وعشرون آية وأربع ركوعات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merc ful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

१. अल्लाह की 'तसबीह' की हर उस चीज़ ने जो आकाशों और धरती में है; और वह प्रभुत्व-शाली और तत्वदर्शी है।

1. All that is in the heavens and the earth glorifieth Allah; and He is the Mighty, the Wise.

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١

२. आकाशों और धरती का राज्य उसी का है; वह जिलाता और मारता है; और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

2. His is the Sovere gnty of the heavens and the earth; He quickeneth and He giveth death; and He is Able to do all things.

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢

३. वही आदि है और वही अन्त है,[1] वही भीतर है और वही बाहर है;[2] और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

3. He is the First and the Last, and the Outward and the Inward; and He is Knower of all things.

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٣

४. वही है जिस ने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया;[3] फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ[4]। वह जानता है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उस से निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उस में चढ़ता है; और वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ-कहीं हो। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

4. He it is Who created the heavens and the earth in six days; then He mounted the Throne. He knoweth all that entereth the earth and all that emergeth therefrom and all that cometh down from the sky and all that ascendeth therein; and He is with you wheresoever ye may be. And Allah is Seer of what ye do.

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤

५. आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं।

5. His the Sovereignty of the heavens and the earth, and unto Allah (all) things are brought back.

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥

६. वह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है, और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है, और वह सीनों (दिलों) की बातों का जानने वाला (अन्तर्यामी) है।

6. He causeth the night to pass into the day, and He causeth the day to pass into the night, and He is Knower of all that is in the breasts.

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۭ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

१. अर्थात् वही आरम्भ में है और वही अन्त में है (विचैति चान्ते विश्वमादौ)। जब कुछ नहीं था तो वह था। वह सदा से है और सदा रहेगा।

२. अर्थात् वह हर जगह है। वह विश्व में व्याप्त है और वह आदमी की शह रग से भी ज़्यादा क़रीब है (क़ाफ़, आयत १६)। आँखें उसे देख नहीं पातीं (अल-अनआम आयत १३०)। ज्ञानी उस के चमत्कारों द्वारा उस का परिचय पाते हैं।

नबी सल्ल० सोने के समय की दुआ में अल्लाह से कहते थे : तू 'औवल' (आदि) है तुझ से पहले कुछ नहीं था तू ही 'आखिर' (अन्त) है कि तेरे बाद कुछ नहीं। तू 'ज़ाहिर' है तुझ से ऊँची कोई चीज़ नहीं, तू 'बातिन' (भीतर) है कि तुझ से छुपी कोई चीज़ नहीं।

३. अर्थात् छः कालावधि (Period) में।

४. दे० सूरा अल-आराफ़ फुटनोट १६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. 'ईमान' लाओ अल्लाह और उस के 'रसूल' पर, और ख़र्च करो उस (माल) में से जिस का उस ने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया है इस लिए कि जो लोग तुम में से 'ईमान' ले आये और ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा बदला है।

7. Believe in Allah and His messenger, and spend of that whereof. He hath made you trustees; and such of you as believe and spend (aright), theirs will be a great reward

آمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾

८. और तुम क्यों नहीं अल्लाह पर 'ईमान' लाते, और 'रसूल' तुम्हें बुलाता है कि तुम अपने 'रब' पर 'ईमान' लाओ, और तुम से वह दृढ़ वचन भी ले चुका है,[५] यदि तुम 'ईमान' वाले हो?

8. What aileth you that ye believe not in Allah, when the messenger calleth you to believe in your Lord, and He hath already made a covenant with you, if ye are believers?

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

९. वही है जो अपने बन्दों पर खुली-खुली 'आयतें' उतारता है, ताकि वह तुम्हें अँधियारियों से प्रकाश की ओर निकाल लाये; और निस्सन्देह अल्लाह तुम पर अत्यन्त करुणामय और दयावन्त है।

9. He it is Who sendeth down clear revelations unto His slave, that He may bring you forth from darkness unto light, and lo! for you, Allah is full of Pity, Merciful.

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٩﴾

१०. और तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च क्यों न करो, जब कि आकाशों और धरती की विरासत अल्लाह ही के लिए है[६]? तुम में से जिन लोगों ने भी विजय से पूर्व ख़र्च किया और लड़े वे बराबर नहीं, वे लोग तो दरजे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में ख़र्च किया और लड़े।[७] और अल्लाह ने सभी से भलाई का वादा कर रक्खा है। और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

10. And what aileth you that ye spend not in the way of Allah, when unto Allah belongeth the inheritance of the heavens and the earth? Those who spent and fought before the victory are not upon a level (with the rest of you) Such are greater in rank than those who spent and fought afterwards. Unto each hath Allah promised good. And Allah is informed of what ye do.

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٠﴾ ع

११. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़,[८] कि वह उसे उस के लिए कई गुना कर दे और उस के लिए अत्यन्त भला बदला है?

11. Who is he that will lend unto Allah a goodly loan, that He may double it for him and his may be a rich reward?

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾

५. जैसा कि 'तौरात' में बयान हुआ है। वचन यह लिया गया था कि आज जो शिक्षा और ज्ञान तुम्हें प्रदान किया जा रहा है कल ऐसी ही शिक्षा और ज्ञान के साथ कोई 'रसूल' तुम्हारे पास आये तो तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम उस पर 'ईमान' लाओ और उस की सहायता करो। दे० सूरा आले इमरान आयत ८१। अल्लाह ने उस के वादे को जो उस ने वचन लेते समय किया था पूरा कर दिया। उस ने 'रसूल' भेज कर तुम्हारे मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध किया; तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी अपने वादे को पूरा करो और 'रसूल' का साथ दो।

६. अर्थात् तुम्हें अपने धन और वैभव को एक दिन छोड़ना ही पड़ेगा फिर क्यों नहीं अल्लाह की राह में ख़र्च करते?

७. अर्थात् विजय प्राप्त होने से पूर्व जो लोग अल्लाह की राह में लड़े हैं और अपना माल उस की राह में ख़र्च किया है उन का दरजा बहुत बढ़ा हुआ है। इस लिए कि उन्हों ने उस समय सत्य का साथ दिया है जब कि वह बिल्कुल दबा हुआ था और सत्य के अनुयायियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी और उन्नति की कोई आशा नहीं दीख पड़ती थी। 'इस्लाम' के ज़ोर पकड़ने के पश्चात् जिन लोगों ने लड़ाइयों में हिस्सा लिया और धन से भी अल्लाह के 'दीन' की सहायता की उन से पहले लोगों का दरजे में आगे होना एक स्वाभाविक बात है; यों तो भलाई का वादा अल्लाह ने दोनों गरोहों से किया है।

८. अल्लाह की राह में ख़र्च करने को क़र्ज़ देना इस लिए कहा गया कि जो माल अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाता है वह नष्ट नहीं होता बल्कि अल्लाह उस का कई गुना बदला ख़र्च करने वाले को देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. जिस दिन तुम 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों को देखोगे कि उन का प्रकाश उन के आगे-आगे दौड़ रहा है और उन के दाहिने हाथ में है, आज तुम्हें ऐसे उद्यानों की शुभ-सूचना है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में सदैव रहना है। यही है सब से बड़ी सफलता।

12. On the day when thou (Muhammad) wilt see the believers, men and women, their light shining forth before them and on their right hands, (and wilt hear it said unto them): Glad news for you this day: Gardens underneath which rivers flow, wherein ye are immortal. That is the supreme triumph.

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى
نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمٰنِهِمْ بُشْرٰىكُمُ
الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ
خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

१३. जिस दिन 'मुनाफ़िक़' पुरुष और 'मुनाफ़िक़' स्त्रियाँ उन लोगों से जो 'ईमान' लाये कहेंगे : तनिक ठहर जाओ हम भी तुम्हारे प्रकाश में से कुछ ले लें[१०]! कहा गया : पीछे लौट जाओ और ढूँढ़ो प्रकाश[११]? इतने में उन के बीच एक दीवार खड़ी कर दी गई जिस में एक दरवाज़ा है, उस के भीतर का जो भाग है उस में दयालुता है, और उस के बाहर का जो भाग है उस की ओर यातना है।

13. On the day when the hypocritical men and the hypocritical women will say unto those who believe: Look on us that we may borrow from your light! It will be said: Go back and seek for light! Then there will separate them a wall wherein is a gate, inner side where of containeth the mercy, while the outer side thereof toward the doom.

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِينَ
اٰمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ ۚ
قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا ۖ
فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُورٍ لَهُ بَابٌ ۖ بَاطِنُهُ
فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظٰهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

१४. ये उन को पुकार-पुकार कर कह रहे हैं : क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे ? उन्हों ने कहा: हाँ थे तो; परन्तु तुम ने अपने आप को फ़ितने में डाला और राह देखते रहे, और सन्देह करते रहे, और व्यर्थ कामनाओं ने तुम्हें धोखे में डाले रक्खा यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया; और धोखेबाज़ नें तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में डाला[१२];

14. They will cry unto them (saying): Were we not with you? They will say: Yea, verily; but ye tempted one another, and hesitated, and doubted, and vain desires beguiled you till the ordinance of Allah came to pass; and the deceiver deceived you concerning Allah.

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۖ قَالُوا بَلٰى
وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَ
ارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَاءَ أَمْرُ
اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُورُ ﴿١٤﴾

१५. अब आज न तुम से कोई 'फ़िदया' (मुक्ति प्रतिदान) लिया जायेगा और न उन लोगों से जिन्हों ने 'कुफ़्' किया[१३]। तुम्हारा ठिकाना आग है; वही तुम्हारा आश्रय है, और वह बड़ी ही बुरी जगह है जहाँ वे पहुँचे।

15. So this day no ransom can be taken from you nor from those who disbelieved. Your home is the Fire; that is your patron, and a hapless journey's end.

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۖ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

१६. क्या अभी 'ईमान' लाने वालों के लिए इस का समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद और जो सत्य उतरा है उस के आगे झुक जावें; और वे उन लोगों की तरह न हो जायें जिन्हें पहले किताब दी गई थी फिर उन पर मुद्दत लम्बी हुई और उन के हृदय कठोर हो गये, और उन में बहुत से अवज्ञाकारी हैं।

16. Is not the time ripe for the hearts of those who believe to submit to Allah's reminder and to the truth which is revealed, that they become not as those who received the Scripture of old but the term was prolonged for them and so their hearts were hardened, and many of them are evil-livers.

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ
لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُونُوا
كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ
عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ
مِنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿١٦﴾

९. दे० सूरा अत-तहरीम आयत ८। यह प्रकाश जो वास्तव में 'ईमान' का प्रकाश है उन्हीं लोगों को प्रदान किया जायेगा जो अपने को अल्लाह के अर्पण कर के उस की आज्ञा के पालन करने में लग जाते हैं।

१०. अर्थात् ठहरो हमें भी आ लेने दो ताकि तुम्हारे प्रकाश से हम भी फ़ायदा उठा सकें; हमें अँधेरे में छोड़ कर आगे न बढ़ जाओ।

११. जब सांसारिक जीवन में तुमने प्रकाश प्राप्त नहीं किया तो तुम्हारे लिए यहाँ कोई प्रकाश नहीं है।

१२. दे० 'इन्जील' (मत्ता २५ : १—१३) में कुमारियों और दीपकों की उपमा।

१३. अर्थात् 'काफ़िर' कुछ दे कर भी अपने को यातना और अज़ाब से नहीं छुड़ा सकते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७. जान रक्खो कि अल्लाह धरती को उस के मुरदा हो जाने के पश्चात् जीवित करता है[१४]। हम ने तुम से खोल-खोल कर 'आयतें' बयान कर दी हैं, कदाचित् तुम बुद्धि से काम लो।

17 Know that Allah quickeneth the earth after death. We have made clear Our revelations for you, that haply ye may understand.

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ⑰

१८. निश्चय ही जो 'सदक़ा' करने वाले पुरुष और 'सदक़ा' करने वाली स्त्रियाँ हैं, और उन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, उन के लिए कई गुना कर दिया जायेगा, और उन के लिए भला बदला है।

18. Lo! those who give alms, both men and women, and lend unto Allah a goodly loan, it will be doubled for them, and theirs will be a rich reward.

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ⑱

१९. और जो लोग अल्लाह और उस के 'रसूलों' पर 'ईमान' लाये, वही लोग 'सिद्दीक़' हैं और 'शहीद' अपने 'रब' के यहाँ; उन के लिए उन का बदला है और उन का प्रकाश; और जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, वही लोग भड़कती आग (में पड़ने) वाले हैं।

19. And those who believe in Allah and His messengers, they are the loyal; and the martyrs are with their Lord; they have their reward and their light; while as for those who disbelieve and deny Our revelations, they are owners of hell-fire.

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑲

२०. जान रक्खो कि सांसारिक जीवन तो बस खेल है, और तमाशा, और सजावट, और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में ज़्यादा-से-ज़्यादा बढ़ने की लालसा; जैसे वृष्टि-उत्पत्ति हो जिस की वनस्पति ने 'काफ़िरों' का दिल लुभा लिया हो फिर वह ज़ोर पर आये फिर तू उसे देखे कि वह पीली पड़ गई, फिर वह चूरा-चूरा हो जाये।

और 'आख़िरत' में कठोर यातना है, और अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता, और सांसारिक जीवन तो माया-सामग्री के अतिरिक्त कुछ नहीं।

20. Know that the life of this world is only play, and idle talk and pageantry, and boasting among you, and rivalry in respect of wealth and children; as the likeness of vegetation after rain, whereof the growth is pleasing to the husbandman, but afterward it drieth up and thou seest it turning yellow, then it becometh straw. And in the Hereafter there is grievous punishment, and (also) forgiveness from Allah and His good pleasure, where as the life of the world is but matter of illusion.

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ⑳

२१. बढ़ो अपने 'रब' की क्षमा और उस 'जन्नत' की ओर जिस का विस्तार आकाशों और धरती के विस्तार के सदृश है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उस के 'रसूलों' पर 'ईमान' लाये। यह अल्लाह का अनुग्रह है, जिसे चाहता है, प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

21. Race one with another for forgiveness from your Lord and a Garden whereof the breadth is as the breadth of the heaven and the earth, which is in store for those who believe in Allah and His messengers. Such is the bounty of Allah, which He bestoeth upon whom He will, and Allah is of infinite bounty.

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ㉑

१४. जिस प्रकार वह भूमि के सूख जाने के पश्चात् वर्षा कर के उसे नया जीवन प्रदान करता है उसी प्रकार वह धर्म के पतन के पश्चात् 'वह्य' की वर्षा कर के 'ईमान' वालों का एक नया गरोह खड़ा करता और उन्हें कल्याणमय जीवन प्रदान करता है; फिर इसी तरह वह 'क़ियामत' के दिन मरे हुये लोगों को जीवित कर देगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. जो मुसीबत भी धरती पर पड़ी या तुम्हारे अपने ऊपर वह एक किताब में अंकित थी[१५] इस से पहले कि हम उसे पैदा करें—निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल काम है—

22. Naught of disaster befalleth in the earth or in yourselves but it is in a Book before We bring it into being—Lo! that is easy for Allah—

مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا
فِىٓ أَنفُسِكُمْ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مِّن قَبْلِ أَن
نَّبْرَأَهَآ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

२३. (तुम्हें यह बात इस लिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रहे, और न उस पर इतरा जाओ जो कुछ कि तुम्हें दिया जाये। अल्लाह किसी डींगें मारने वाले इतराने वाले व्यक्ति को पसन्द नहीं करता,

23. That ye grieve not for the sake of that which hath escaped you, nor yet exult because of that which hath been given. Allah loveth not all prideful boasters.

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا۟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا۟
بِمَآ ءَاتَىٰكُمْ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ
فَخُورٍ ﴿٢٣﴾

२४. वे जो कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी करने को कहते हैं। और जो कोई मुँह मोड़ेगा, तो अल्लाह अपेक्षारहित (परम स्वतन्त्र) और प्रशंसा का अधिकारी है।

24. Who hoard and who enjoin upon the people avarice. And whosoever turneth away, still Allah is the Absolute, the Owner of praise.

ٱلَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ ٱلنَّاسَ
بِٱلْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ ٱللَّهَ هُوَ
ٱلْغَنِىُّ ٱلْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾

२५. निश्चय ही हम ने अपने 'रसूलों' को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा, और उन के साथ 'किताब' और तुला[१६] उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और हम ने लोहा उतारा,[१७] जिस में मार-काट की अत्यन्त शक्ति है और लोगों के लिए बहुत से लाभ हैं, और इस लिए कि अल्लाह यह जान ले कि कौन बिना देखे उस की और उस के रसूलों की सहायता करता है, निस्सन्देह अल्लाह बलिष्ठ और प्रभुत्वशाली है।

25. We verily sent Our messengers with clear proofs and revealed with them the Scripture and the Balance, that mankind may observe right measure; and He revealed iron, wherein is mighty power and (many) uses for mankind, and that Allah may know him who helpeth Him and His messengers though unseen. Lo! Allah is Strong, Almighty.

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ
ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ ۖ
وَأَنزَلْنَا ٱلْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَ
مَنَٰفِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ ٱللَّهُ مَن يَنصُرُهُۥ
وَرُسُلَهُۥ بِٱلْغَيْبِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

२६. और निश्चय ही हम ने नूह और इबराहीम को 'रसूल' बना कर भेजा और उस की सन्तति में 'नुबूवत' और 'किताब' रक्खी,[१८] तो कुछ तो उन में से मार्ग पर रहे, और उन में से बहुत से अवज्ञाकारी हैं।

26. And We verily sent Noah and Abraham and placed the Prophethood and the Scripture among their seed, and among them there is he who goeth right, but many of them are evil-livers.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَٰهِيمَ وَجَعَلْنَا
فِى ذُرِّيَّتِهِمَا ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَٰبَ ۖ فَمِنْهُم
مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٦﴾

१५. अकाल, भूकम्प, बीमारी, दुःख, पीड़ा आदि जो मुसीबतें भी आती हैं उन का आना पहले से निश्चित है, तुम्हें केवल वही कष्ट पहुँच सकता है जिस का फ़ैसला अल्लाह ने कर दिया होगा (दे० सूरा अत-तग़ाबुन आयत ११)। और तुम्हें केवल वही सुख और आनन्द प्राप्त होता है जो उस ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। मनुष्य का कर्तव्य है कि अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहे; अल्लाह जो कुछ करता है उस में अपेक्षित भलाई ही होती है। एक बड़ी योजना और स्कीम (Scheme) को सामने रखते हुये वह इस दुनिया को चला रहा है। जिस प्रकार सम्पूर्ण विश्व और उस के विभिन्न भागों और अंशों में परस्पर एकरसता पाई जाती है उसी तरह इस संसार में छोटी-बड़ी जो घटना भी घटित होती है वह स्थायी रूप से कोई अलग घटना नहीं होती बल्कि वह विश्व की घटनाओं के सिलसिले की एक कड़ी होती है और वह उस सार्विक उद्देश्य के अन्तर्गत घटित होती है जिस की पूर्ति के लिये इस विश्व का सृष्टिकर्त्ता इस दुनिया को चला रहा है। यदि उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्तमान व्यवस्था से उत्तम कोई व्यवस्था हो सकती, तो निश्चय ही अल्लाह उसी को अपनाता।

१६. अर्थात् सन्तुलित (Well balanced) जीवन-व्यवस्था, ताकि लोगों के बीच न्याय किया जा सके (दे० सूरा अर-रहमान आयत ७-९)।

१७. लोह से अभिप्रेत यहाँ सैनिक तथा शासन-शक्ति है। न्याय की स्थापना के लिए शासन-शक्ति की भी आवश्यकता होती है। इस के बिना पूर्ण रूप से बुराइयों और अत्याचार का दमन नहीं किया जा सकता।

१८. अर्थात् उन की औलाद में 'किताब' और 'नुबूवत' का सिलसिला जारी रक्खा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. फिर इन ('रसूलों') के पद चिन्हों पर हम अपने और 'रसूल' भेजते रहे और फिर ईसा सुत मरयम को भेजा, और हम ने उसे 'इञ्जील' प्रदान की, और जो लोग उस के पीछे चले उन के हृदयों में हम ने करुणा और दयालुता रख दी। और संसार त्याग (वैराग्य) की प्रथा उन्हों ने स्वयं निकाली हम ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया था[१९] दिया था तो बस अल्लाह की प्रसन्नता चाहने का, तो उन्हों ने उस का जैसा पालन करना चाहिए था नहीं किया। फिर उन में से जो 'ईमान' लाये थे उन्हें हम ने उन का बदला दिया, और उन में बहुत से अवज्ञाकारी हैं।

27. Then We caused Our messengers to follow in their footsteps; and We caused Jesus, son of Mary, to follow, and gave him the Gospel, and placed compassion and mercy in the hearts of those who followed him. But monasticism they invented — We ordained it not for them — only seeking Allah's pleasure, and they observed it not with right observance. So We give those of them who believe their reward, but many of them are evil-livers.

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ وَءَاتَيْنَٰهُ ٱلْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِى قُلُوبِ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ٱبْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ رِضْوَٰنِ ٱللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَـَٔاتَيْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٧﴾

२८. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का डर रक्खो और उस के 'रसूल' पर 'ईमान' लाओ। वह तुम्हें अपनी दयालुता से दो हिस्से देगा[२०] और तुम्हारे लिए एक प्रकाश उपलब्ध करेगा जिस के साथ तुम चलो फिरोगे, और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमांशील और दयावान् है।

28. O ye who believe! Be mindful of your duty to Allah and put faith in His messenger. He will give you twofold of His Mercy and will appoint for you a light wherein ye shall walk, and will forgive you. Allah is Forgiving, Merciful;

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَءَامِنُوا۟ بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾

२९. यह इस लिए कि 'किताब' वाले अच्छी तरह जान ले कि उन्हें अल्लाह के कुछ भी अनुग्रह पर सामर्थ्य प्राप्त नहीं है, और बात यह है कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

29. That the People of the Scripture* may know that they control naught of the bounty of Allah, but that the bounty is in Allah's hand to give to whom He will. And Allah is of infinite bounty.

* * *

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

———

१९. अर्थात् अल्लाह ने वैराग्य (Monasticism) का आदेश 'ईसाइयों' को कदापि नहीं दिया था बल्कि यह प्रथा उन्हों ने स्वयं गढ़ ली थी। वैराग्य मानव-स्वभाव के प्रतिकूल है; इस का आदेश अल्लाह कैसे दे सकता है। अच्छे लोग यदि दुनिया से मुख मोड़ कर वनों और गुफ़ाओं में जा कर रहने लगें तो संसार में अराजकता का ही राज्य हो जाये। फिर इस तरह तो मनुष्य उस उच्च पद को भी प्राप्त नहीं कर सकता है जिसे प्राप्त करने का एकमात्र साधन कर्म है। मनुष्य को जिस त्याग का आदेश दिया गया है वह अहंकार, वासना, कुविचार, अज्ञान आदि का त्याग है न कि किसी और चीज का त्याग।

२०. ईसाइयों में जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 'ईमान' लाये उन के लिए 'यहूदियों' की अपेक्षा दोहरा बदला है, इस लिए कि ये हज़रत ईसा अ० पर भी 'ईमान' लाये और हज़रत मुहम्मद सल्ल० को भी अल्लाह का 'रसूल' माना।

मुसलमानों को किताब वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के मुक़ाबले में दोहरा बदला मिलेगा। अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से अपने अन्तिम 'रसूल' के अनुयायियों के लिए दो हिस्सा रक्खा है। जैसा कि नबी सल्ल० ने अपने कथनों में मुसलमानों और इस से पहले के दो गरोहों (यहूदियों और ईसाइयों) की मिसाल देते हुये यह बात बयान की है। आप (सल्ल०) ने कहा: (हे 'ईमान' वालो!) तुम्हारी और 'यहूद' और 'नसारा' की मिसाल ऐसी ही है जैसे एक आदमी ने कुछ मज़दूरों को काम पर लगाया और कहा कि कौन प्रातःकाल की 'नमाज़' से दोपहर तक एक-एक 'क़ीरात' (एक सिक्का) की उजरत पर मेरा काम करेगा ? तो 'यहूद' ने काम किया। फिर उस ने कहा कि कौन 'ज़ुह्र' की नमाज़ से 'अस्र' की 'नमाज़' तक एक-एक 'क़ीरात' की उजरत पर मेरा काम करेगा तो 'नसारा' ने काम किया। फिर कहा कि कौन है जो 'अस्र' की 'नमाज़' से सूर्य अस्त होने तक दो-दो 'क़ीरात' की उजरत पर मेरा काम करेगा, तो यह तुम मुस्लिम लोग हो जिन्हों ने काम किया, तो 'नसारा' और 'यहूद' नाख़ुश हुये और कहा कि हमारा काम ज़्यादा है और मिला कम, तो उस ने कहा कि क्या हम ने तुम्हें उजरत कुछ कम दी है ? उन्हों ने कहा: नहीं। उस ने कहा कि वह तो मेरा फ़ज़्ल है, जिसे चाहूँ दूँ।

'इञ्जील' उपमा में भी इस की ओर खुला इशारा मिलता है, दे० मत्ता (Mtt.) २० : १—१६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८—अल-मुजादला

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुजादला' 'सूरा' की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह 'सूरा' हिजरत के चौथे या पाँचवें वर्ष उतरी होगी; यद्यपि कुछ लोगों के विचार में यह सूरा हिजरत के छठे वर्ष के अन्त में या सातवें वर्ष के प्रारम्भ में अवतरित हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

'सूरा' का आरम्भ एक विशेष घटना के उल्लेख से हुआ है। सूरा के आरम्भ में 'ज़िहार' की प्रथा के सम्बन्ध में नबी सल्ल० से एक स्त्री के झगड़ने का उल्लेख हुआ है[1]। उस स्त्री का आप (सल्ल०) से झगड़ना किसी वैर-भाव और कपट-नीति के अन्तर्गत कदापि न था। वह आप (सल्ल०) की सेवा में जो व्यथा सुनाने आई थी उस के पीछे न तो किसी प्रकार का द्वेष था और न वह अपने पति के प्रति कोई अहित भावना रखती थी। बल्कि उस के हृदय में अल्लाह के 'रसूल' के प्रति पूर्ण श्रद्धा और आदर था। उस का झगड़ा केवल भलाई और नाते-रिश्ते के हित और प्रेम के अन्तर्गत था। इस के ठीक विरुद्ध उन लोगों की नीति थी जो 'मुनाफ़िक़ों' में से थे। इसी सम्पर्क से आयत ५ से 'मुनाफ़िक़ों' के विरोध और उन के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि अल्लाह से किसी का कोई भेद छिपा नहीं रह सकता। उन की गुप्त वार्त्ताओं से वह भली-भाँति परिचित है।

फिर कहा गया है कि गुप्त वार्त्ता से उन को वर्जित किया गया परन्तु उन्हों ने अपनी नीति नहीं बदली। उनकी गुप्त वार्त्तायें नेकी, भलाई और 'रसूल' के आदेशों के पालन के लिए नहीं होतीं बल्कि जुल्म, ज़्यादती और 'रसूल' की अवज्ञा के लिए ही होती हैं। ये 'नबी' (सल्ल०) के शत्रु हैं। 'नबी' की सेवा में आते हैं तो सभ्यता और शिष्टता से गिरी हुई हरकतें करते हैं।

इस के बाद मुसलमानों को सचेत किया गया है कि वे भूल कर भी उन की नीति न अपनायें। उन की कोई गुप्तवार्त्ता यदि हो भी तो नेकी और परहेज़गारी के लिए हो। फिर 'ईमान' वालों को बताया गया है कि 'शैतान' के मित्रों की गुप्तवार्त्ताओं से उन का कुछ नहीं बिगड़ेगा; होता वही है जो अल्लाह चाहता है, अतः उन्हें अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए। फिर मजलिस के उचित और शिष्टतानुकूल नियमों का उल्लेख किया गया है[2]। इस पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है कि अपरिवर्त्तनीय आदेश 'नमाज़', 'ज़कात' आदि का पूर्णतः पालन किया जाये।

'सूरा' के अन्तिम भाग में दो गरोहों का उल्लेख किया गया है। एक गरोह 'मुनाफ़िक़ों' का है दूसरा गरोह उन लोगों का है जो अल्लाह और 'आख़िरत' को मानने वाले हैं। यदि 'मुनाफ़िक़' 'शैतान' की पार्टी के लोग हैं तो ये अल्लाह की पार्टी वाले हैं: 'शैतान' का जत्था यदि तबाह होने को है तो अल्लाह के जत्थे को सफलता प्राप्त होने वाली है।

———

१. दे० प्रस्तुत सूरा का फुटनोट १।
२. दे० आयत १२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुजादला
(मदीना में उतरी—'आयतें' २२)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

*१. सुन ली अल्लाह ने उस (स्त्री) की बात जो तुम से (हे 'नबी'!) अपने पति के प्रति झगड़ती है, और अल्लाह के आगे दुखड़ा रो रही हैं[1]। और अल्लाह तुम दोनों की बात-चीत सुनता रहा है, निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।

२. तुम में से जो लोग अपनी स्त्रियों से 'ज़िहार' करते हैं उन की मातायें वे नहीं हैं, उन की मातायें तो वही हैं जिन्हों ने उन्हें जन्म दिया है और यह ज़रूर है कि ये लोग एक बुरी और झूठी बात कहते हैं।

निस्सन्देह अल्लाह माफ़ करने वाला और अत्यन्त क्षमाशील है।

३. और जो लोग अपनी स्त्रियों से 'ज़िहार' करते हैं फिर जो कुछ उन्होंने कहा उस की ओर फिर लौटते हैं, तो एक गरदन आज़ाद करनी होगी[2] इस से पहले कि उन दोनों में समागम हो। इस से तुम्हें नसीहत की जाती है; और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

४. फिर जिसे (आज़ाद करने को ग़ुलाम) प्राप्त न हो, तो लगातार दो महीने 'रोज़ा' रखना होगा इस से पहले कि उन दोनों में समागम हो; फिर जिस से यह न हो सके तो (उसे) साठ मुहताजों को भोजन कराना होगा। यह, इस लिए कि तुम 'ईमान' लाओ अल्लाह पर और उस के 'रसूल' पर[3]। और यह अल्लाह की (नियत की हुई) सीमायें हैं; और 'काफ़िरों' के लिए दुःखभरी यातना है।

SHE THAT DISPUTETH
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Allah hath heard the saying of her that disputeth with thee (Muhammad) concerning her husband, and complaineth unto Allah. And Allah heareth your colloquy. Lo! Allah is Hearer, Knower.

2. Such of you as put away your wives (by saying they are as their mothers)—They are not their mothers; none are their mothers except those who gave them birth—they indeed utter an ill word and a lie. And lo! Allah is Forgiving, Merciful.

3. Those who put away their wives (by saying they are as their mothers) and afterwards would go back on that which they have said, (the penalty) in that case (is) the freeing of a slave before they touch one another. Unto this ye are exhorted; and Allah is Informed of what ye do.

4. And he who findeth not (the wherewithal), let him fast for two successive months before they touch one another; and for him who is unable to do so (the penance is) the feeding of sixty needy ones. This, that ye may put trust in Allah and His messenger. Such are the limits (imposed by Allah); and for disbelievers is a painful doom.

سورة المجادلة مدنية وهي اثنتان وعشرون آية وثلث ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الجزء الثامن والعشرون

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ
فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ
يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ
مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۗ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ
وَلَدْنَهُمْ ۗ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ
الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۗ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۗ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۗ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ④

* यहाँ से अट्ठाईसवाँ पारा (Part XXVIII) शुरू होता है।

१. औस बिन सामित ने क्रुद्ध हो कर अपनी पत्नी ख़ौला से 'ज़िहार' कर लिया था। 'इस्लाम' से पहले यदि पुरुष अपनी पत्नी से 'ज़िहार' कर लेता तो समझते थे कि उस की पत्नी सदा के लिए उस पर हराम हो गई। ख़ौला बहुत परेशान हुईं; नबी सल्ल० की सेवा में पहुँचीं। आप (अ०) ने इस सिलसिले में अपनी विवशता प्रकट की। वह अपनी मुसीबत दोहराने लगीं। और अल्लाह से फ़रियाद करने लगीं। 'ज़िहार' से अभिप्रेत क्या है इस के लिए देखिए सूरा अल-अहज़ाब फुटनोट ४।

२. अर्थात् 'कफ़्फ़ारा' (प्रायश्चित्त) के रूप में एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा।

३. अर्थात् ताकि अपने व्यवहार द्वारा इस की तसदीक़ करने वाले बनो कि तुम अल्लाह और 'रसूल' पर 'ईमान' रखते हो और जानते हो कि तुम्हारा 'रब' बड़ी ग़ैरत वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. जो लोग विरोध करते हैं अल्लाह का और उस के 'रसूल' का वे बुरी तरह परास्त[४] हुये जैसे वे लोग परास्त हुये जो इन से पहले थे।

और हम ने खुली-खुली 'आयतें' उतार दी हैं, और 'काफ़िरों' के लिए अपमानजनक यातना है।

5. Those who oppose Allah and His messenger will be abased even as those before them were abased; and We have sent down clear tokens and for disbelievers is a shameful doom.

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا
كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥

६. जिस दिन कि अल्लाह उन सब को (मृत्यु के पश्चात्) उठा खड़ा करेगा फिर जो कुछ उन्हों ने किया है उस से उन्हें सूचित कर देगा। अल्लाह ने उसे गिन रक्खा है और ये उसे भूल गये। और अल्लाह के सामने हर चीज़ है।

6. On the day when Allah will raise them all together and inform them of what they did. Allah hath kept account of it while they forgot it. And Allah is Witness over all things.

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ
اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
شَهِيْدٌ ۝٦

७. क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है? कोई गुप्त वार्त्ता तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिस में चौथा वह न हो और न कोई पाँच आदमियों की ऐसी होती है जिस में छठा वह न हो, और न कोई इस से कम की और न ज़्यादा की ऐसी होती है जिस में वह न हो, जहाँ कहीं भी वे लोग हों;[५] फिर जो कुछ भी उन्हों ने किया है उस से वह 'क़ियामत' के दिन उन्हें सूचित कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

7. Hast thou not seen that Allah knoweth all that is in the heavens and all that is in the earth? There is no secret conference of three but He is their fourth, nor of five but He is their sixth, nor of less than that or more but He is with them wheresoever they may be; and afterwards, on the Day of Resurrection, He will inform them of what they did. Lo! Allah is Knower of all things.

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ
مَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ
وَلَاۤ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ
اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧

८. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें गुप्त वार्त्ता करने से रोका गया फिर वे वही काम करते हैं जिस से उन्हें रोका गया था, और परस्पर गुनाह और ज़्यादती और 'रसूल' की अवज्ञा की गुप्त वार्त्ता किया करते हैं? और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो उस चीज़ के साथ तुम्हारा अभिवादन करते हैं जिस के साथ अल्लाह ने तुम्हारा अभिवादन नहीं किया,[६] और अपने जी में कहते हैं: जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें दण्ड नहीं देता? उन के लिए 'जहन्नम' काफ़ी है; जिस में वे प्रवेश करेंगे तो वह बहुत ही बुरी जगह है पहुँचने की!

8. Hast thou not observed those who were forbidden conspiracy and afterward returned to that which they had been forbidden, and (now) conspire together for crime and wrong-doing and disobedience toward the messenger? And when they come unto thee they greet thee with a greeting wherewith Allah greeteth thee not, and say within themselves: Why should Allah punish us for what we say? Hell will suffice them; they will feel the heat thereof—a hapless journey's end!

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا
جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ
وَيَقُوْلُوْنَ فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ
بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨

४. यह संकेत यहूदी 'मुनाफ़िक़ों' और यहूदी 'काफ़िरों' की ओर है। एक नीति तो हज़रत ख़ौला की थी जिस का उल्लेख इस से पहले किया गया, इसके मुक़ाबले में एक नीति 'मुनाफ़िक़ों' की है जो अत्यन्त निन्दनीय है। वे अल्लाह और 'रसूल' के शत्रु हैं। उन का यह स्वभाव बन चुका है कि उन्हें जब भी अवसर मिल जाये वे नबी सल्ल० के आदेशों की अवहेलना और विरोध करेंगे। सूरा अल-हश्र और अल-मुमतहना में स्पष्ट रूप से उन की इस नीति का उल्लेख किया गया है।

५. अर्थात् अल्लाह से किसी की कोई बात छिपी नहीं रह सकती।

६. यह संकेत 'यहूदियों' की ओर है। जब वे आप (सल्ल०) की सेवा में आते तो 'अस-सलामु अलैक' (आप पर सलामती हो) कहने के बदले 'अस-सामु अलैक' (तुझे मौत आये) कहते। फिर जैसा कि आगे आ रहा है कहते कि यदि वास्तव में यह अल्लाह का 'रसूल' है तो हम पर अज़ाब क्यों नहीं आ जाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम परस्पर गुप्त वार्त्ता करो, तो गुनाह और ज़्यादती और 'रसूल' की अवज्ञा की गुप्त वार्त्ता न करो,[७] और परस्पर नेकी और अल्लाह् से डर की बात करो और उस अल्लाह् का डर रक्खो, जिस के पास तुम इकट्ठा किये जाओगे।

9. O ye who believe! When ye conspire together, conspire not together for crime and wrongdoing and disobedience toward the messenger, but conspire together for righteousness and piety, and keep your duty toward Allah, unto Whom ye will be gathered.

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ⑨

१०. यह गुप्त वार्त्ता तो बस 'शैतान' की ओर से है, ताकि वह 'ईमान' लाने वालों को दुःख पहुँचाये; और वह अल्लाह् की अनुज्ञा के बिना उन का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। और अल्लाह् ही पर 'ईमान' वालों को भरोसा रखना चाहिए।

10. Lo! Conspiracy is only of the devil that he may vex those who believe; but he can harm them not at all unless by Allah's leave. In Allah let believers put their trust.

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩

११. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब तुम से कहा जाये कि मजलिसों में जगह कुशादा कर दो,[८] तो कुशादा कर दो; अल्लाह् तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा। और जब तुम से कहा जाये कि उठ खड़े हो ! तो उठ खड़े हो;[९] अल्लाह् उन लोगों के दरजे ऊँचे कर देगा जो तुम में से 'ईमान' ले आये, और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है। और अल्लाह् उस की ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

11. O ye who believe! When it is said, Make room! in assemblies, then make room; Allah will make way for you (hereafter). And when it is said, Come up higher! go up higher; Allah will exalt those who believe among you, and those who have knowledge, to high ranks, Allah is informed of what ye do.

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا
فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ
وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ
دَرَجٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑪

१२. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब 'रसूल' से गुप्त वार्त्ता करो, तो अपनी गुप्त वार्त्ता से पहले कुछ 'सदक़ा' कर दिया करो। यह तुम्हारे लिए उत्तम और अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम न कर पाओ तो निस्सन्देह अल्लाह् बड़ा ही क्षमाशील और दयावान् है[१०]—

12. O ye who believe! When ye hold conference with the messenger, offer an alms before your conference. That is better and purer for you. But if ye cannot find (the wherewithal) then lo! Allah is Forgiving, Merciful.

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ
فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۗ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۗ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑫

७. अर्थात् जब आपस में तुम कोई गुप्त वार्त्ता या विचार-विमर्श करो तो इस का ध्यान रक्खो कि तुम्हारी कोई बात गुनाह, ज़ुल्म या 'रसूल' की अवज्ञा की कदापि न हो।

८. अर्थात् इस तरह बैठो कि दूसरों के लिए भी जगह निकल आये।

९. नबी सल्ल० की मजलिस में हर एक आप (सल्ल०) के निकट रहना चाहता था जिस के कारण कभी मजलिस में तंगी पेश आती इस लिए ये आदेश दिये गये ताकि प्रत्येक को आप (सल्ल०) से फ़ायदा उठाने का अवसर मिल सके।

१०. इस हुक्म से कि नबी सल्ल० से गुप्त रूप से बातें करनी चाहो तो कुछ सदक़ा (ख़ैरात, दान) किया करो कई उद्देश्यों की पूर्ति हुई सदक़ा करने वालों की आत्मा की शुद्धता, सच्चे मुसलमानों और 'मुनाफ़िक़ों' की पहचान और गुप्त वार्त्ता करने वालों की कमी। जब यह हुक्म उतरा तो 'मुनाफ़िक़' कृपणता और कंजूसी के कारण गुप्त वार्त्ता से रुक गये; मुसलमानों ने भी समझ लिया कि गुप्त वार्त्ताओं की अधिकता उचित नहीं। गुप्त वार्त्ता तो परस्पर आवश्यक विचार-विमर्श के लिए होनी चाहिए। जब अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हो गई तो यह पाबन्दी उठा ली गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. क्या तुम इस से डर गये कि अपनी गुप्त-वार्त्ता से पहले 'सदक़े' करो ? तो जब तुम ने यह न किया और अल्लाह ने तुम पर मेहरबानी की, तो अब 'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' दिया करो और अल्लाह और उस के 'रसूल' का कहना मानो । और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो[११] ।

13. Fear ye to offer alms before your conference? Then, when ye do it not and Allah hath forgiven you, establish worship and pay the poor-due and obey Allah and His messenger. And Allah is Aware of what ye do.

ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ
اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَاللّٰهُ خَبِيرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

१४. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने ऐसे लोगों से सम्बन्ध जोड़ा जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ ? ये लोग न तुम्हारे हैं और न उन के और ये लोग जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं[१२] ।

14. Hast thou not seen those who take for friends a folk with whom Allah is wroth? They are neither of you nor of them, and they swear a false oath knowingly.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ۖ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُونَ
عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

१५. अल्लाह ने इन के लिए कठोर यातना तैयार कर रक्खी है । निश्चय ही बुरा है जो कुछ ये कर रहे हैं ।

15. Allah hath prepared for them a dredful doom. Ev'l indeed is that which they are wont to do.

أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

१६. इन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है फिर अल्लाह के मार्ग से रोका तो इन के लिए अपमानजनक यातना है ।

16. They make a shelter of their oaths and turn (men) from the way of Allah; so theirs will be a shameful doom.

اِتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٦﴾

१७. अल्लाह के आगे न तो इन के माल कुछ काम आयेंगे और न इन की औलाद । ये लोग आग वाले हैं; सदा उस में पड़े रहेंगे ।

17. Their wealth and their children will avail them naught against Allah. Such are rightful owners of the Fire; they will ab'de therein.

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ
مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۚ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ
هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿١٧﴾

१८. जिस दिन अल्लाह इन सब को (दोबारा जीवित कर के) उठायेगा, तो ये उस के आगे उसी तरह क़सम खायेंगे जैसे तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं, और ये समझते हैं कि ये किसी बुनियाद पर हैं । सुन लो ये बिल्कुल झूठे हैं ।

18. On the day when Allah will raise them all together, then will they swear unto Him as they (now) swear unto you, and they will fancy that they have some standing. Lo! is it not they who are the liars?

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ
كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ
عَلٰى شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿١٨﴾

१९. इन पर 'शैतान' छा गया है और उस ने ऐसा कर दिया कि ये अल्लाह की याद को भुला बैठे । ये 'शैतान' के जत्थे वाले हैं । सुन लो 'शैतान' का जत्था ही घाटा उठाने वाला है ।

19. The devil hath engrossed them and so hath caused them to forget remebrance of Allah. They are the devil's party. Lo! is it not the devil's party who will be the losers?

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ
اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَا إِنَّ
حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٩﴾

२०. जो लोग विरोध करते हैं अल्लाह और उस के 'रसूल' का, वही सब से अधिक अपमानित लोगों में हैं ।

20. Lo! those who oppose Allah and His messenger, they will be among the lowest.

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ
أُولٰٓئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾

११. यह 'आयत' ऊपर वाली आयत के अवतीर्ण होने के कुछ समय बाद अवतीर्ण हुई है ।
१२. यह संकेत यहूदी 'मुनाफ़िक़ों' की ओर है जो 'यहूदियों' और 'काफ़िरों' से नाते-रिश्ते का सम्बन्ध जोड़ते थे और अपनी क़समों को अपने बचाव के लिए आड़ बनाते थे । क़समें खा कर झूठे बहाने पेश करते और लोगों को सत्य धर्म से रोकते थे । (दे० आयत २२) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. लिख चुका है अल्लाह कि मैं विजयी हो कर रहूँगा, और मेरे 'रसूल'। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त बलवान् और प्रभुत्वशाली है।

21. Allah hath decreed: Lo! I verily shall conquer, I and My messengers. Lo! Allah is Strong, Almighty.

كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله
قوي عزيز ﴿٢١﴾

२२. तुम ऐसा कहीं नहीं पाओगे कि वे लोग जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर 'ईमान' रखते हैं ऐसे लोगों से मित्रता रखते हों जो अल्लाह और उस के 'रसूल' का विरोध करें, भले ही वे उन के बाप या उन के बेटे या उन के भाई या उन के घराने के लोग ही क्यों न हों"।

वही लोग हैं जिन के दिलों में उसने 'ईमान' को अंकित कर दिया है[१४] और अपनी ओर से एक आत्मा द्वारा उन्हें योग दिया है,[१५] और उन्हें ऐसे उद्यानों में दाखिल करेगा जिन में नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वे उस से राज़ी हुये। ये अल्लाह के जत्थे वाले हैं। सुन लो, अल्लाह का जत्था ही सफलता पाने वाला है।

22. Thou wilt not find folk who believe in Allah and the Last Day loving those who oppose Allah and His messenger, even though they be their fathers or their sons or their brethren or their clan. As for such, He hath written faith upon their hearts and hath strengthened them with a Spirit from Him, and He will bring them into Gardens underneath which rivers flow, wherein they will abide. Allah is well pleased with them, and they are well pleased with Him. They are Allah's party. Lo! is it not Allah's party who are the successful?

لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر
يوادون من حاد الله ورسوله ولو كانوا
آباءهم أو أبناءهم أو إخوانهم أو عشيرتهم
أولئك كتب في قلوبهم الإيمان وأيدهم
بروح منه ويدخلهم جنات تجري من
تحتها الأنهار خالدين فيها رضي الله
عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله
ألا إن حزب الله هم المفلحون ﴿٢٢﴾

---

१३. जैसा कि हम देखते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपने बेटे के मुक़ाबले में निकलते हैं। मुसइब बिन उमैर रज़ि० ने अपने भाई-उबैद बिन उमैर को, और हज़रत उमर रज़ि० ने अपने मामूँ आस बिन हश्शाम को क़त्ल किया। इसी प्रकार अबू उबैदा, अली, हमज़ा और उबैदा बिन हारिस ने (अल्लाह इन सब से राज़ी हो) अपने रिश्तेदारों को क़त्ल किया। धर्म और सत्यता के मुक़ाबले में नाते-रिश्ते की कोई परवाह नहीं की।

१४. जो मिट नहीं सकता; 'ईमान' इन के दिलों में बैठ गया है।

१५. कोई 'ईमान' वाला गरोह जब अपने हृदय की पूर्ण पवित्रता और आत्मा की पूर्ण शुद्धता के साथ अपने 'रब' का हो जाता है और उन समस्त रास्तों को बन्द कर देता है जिन से उस के अन्दर बुराई को घुसने का मौक़ा मिल सकता हो, तो उस पर अल्लाह की कृपा होती है। अल्लाह के 'फ़रिश्ते' उस पर शान्ति, उत्तम जीविका और सहयोग और विजय की शुभसूचना लिये हुये उतरते हैं। फिर 'ईमान' वालों को वह परितोष और आत्मिक बल और वह भावमय जीवन मिलता है जिस का शब्दों में उल्लेख सम्भव नहीं। हज़रत मरयम के जीवन में पूर्णतः इस की झलक देखी जा सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६–अल-हश्र

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-हश्र' सूरा की 'आयत' २-१७ से लिया गया है जिस में 'यहूदियों' के एक विशेष क़बीले (Tribe) 'बनू नज़ीर' के देश-निकाला दिये जाने का उल्लेख किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' में 'बनू नज़ीर' के देश-निकाला दिये जाने का उल्लेख किया गया है जिस से सरलतापूर्वक सूरा के अवतरित होने का समय निर्धारित होता है। बनू नज़ीर के निर्वासित किये जाने की घटना सन् ४ हिज० की है।

'बनू नज़ीर' 'यहूदियों' का एक क़बीला था जो सैंकड़ों वर्ष से यसरिब़ (मदीना) में आवाद था। जब नबी सल्ल० मक्का से 'हिजरत' कर के मदीना पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने यहूदियों के दूसरे क़बीलों की तरह 'बनू नज़ीर' से भी एक समझौता किया था। 'बनू नज़ीर' ने यह वचन दिया था कि न वे आप (सल्ल०) से युद्ध करेंगे और न आप (सल्ल०) के विरुद्ध आप के शत्रुओं की सहायता करेंगे। नबी सल्ल० 'वनू नज़ीर' की ओर से निश्चिन्त हो गये। और उन से मेल-जोल शुरू कर दिया; परन्तु वे सन्धि के विरुद्ध मक्का के 'काफ़िरों' से साज़-बाज़ करते रहे। गुप्त रूप से उन्हें मुसलमानों के बारे में सूचनायें देते और नबी सल्ल० के विरुद्ध उन्हें लड़ाई पर उभारते रहे। इतने ही पर बस नहीं किया बल्कि उन्होंने आप (सल्ल०) को शहीद कर देने तक का यत्न किया; परन्तु अल्लाह ने उन की साज़िश को विफल कर दिया। फिर भी नबी सल्ल० ने अचानक उन पर चढ़ाई नहीं की, आप (सल्ल०) नें उन्हें सूचित कर दिया कि वे दस दिन के भीतर मदीना छोड़ कर निकल जायें। परन्तु 'मुनाफ़िक़ों' के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई के बहलावे में आ कर उन्हों ने कहला भेजा कि हम अपना अधिक्षेत्र छोड़ कर नहीं जा सकते आप से जो हो सके कर लीजिए। बनू नज़ीर को यह आशा थी कि लड़ाई हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबई अपने आदमियों से उन की मदद करेगा। वह दो हज़ार आदमियों से सहायता करने का उन्हें वचन दे भी चुका था। और कहा था कि बनू क़ुरैज़ा भी सहायता करेंगे और नज्द से बनू ग़तफ़ान भी सहायता के लिए आयेंगे, दस दिन की मुद्दत समाप्त होने के बाद आप (सल्ल०) नें उन्हें चारों ओर से घेरे में ले लिया। इस कठिन अवसर पर उन का कोई भी सहायक न हुआ। उन के दिलों में भय समा गया। वे विवश थे। उन्हों ने इस शर्त पर हथियार डाल दिया कि उन में से हर तीन व्यक्ति एक ऊँट पर जो कुछ लाद कर ले जा सकेंगे, ले जायेंगे, शेष सब कुछ मदीना ही में छोड़ देंगे। इस प्रकार मदीना के किनारे का वह पूरा भू-भाग जिस में बनू नज़ीर के लोग रहते थे मुसलमानों के हाथ आ गया। उन के बाग़ों और गढ़ियों पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। इस क़बीले के लोग ख़ैबर, वादिलक़ुरा और सीरिया में तितर-बितर हो कर रह गये।

यदि नबी सल्ल० चाहते तो उन से पूरा-पूरा बदला ले सकते थे परन्तु न केवल यह कि आप (सल्ल०) ने उन्हें कुशलतापूर्वक अपनी जानें ले कर जाने दिया बल्कि आप (सल्ल०) ने उन्हें इस की भी इजाज़त दे दी कि वे अपने साथ अपने माल भी ले जा सकते हैं। वे अपने घरों के कड़ी-तख़्ते तक उखेड़ने लगे ताकि जो चीज़ भी वे अपने साथ ले जा सकते हैं रह न जाये; मुसलमानों ने भी इस काम में उन का हाथ बटाया। मदीना से निकल कर इन्हों ने नबी सल्ल० के उपकार का बदला यह दिया कि सम्पूर्ण अरब में इन्हों ने आप (सल्ल०) के विरुद्ध साज़िश का जाल फैलाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

पिछली 'सूरा' में दो जत्थों का उल्लेख किया गया है। जिन में एक अल्लाह का जत्था है और दूसरा 'शैतान' का। प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह के जत्थे की विजय और 'शैतान' के जत्थे की दुर्गति और पराजय का उल्लेख किया गया है।

'सूरा' के आरम्भ में बनू नज़ीर के निर्वासन का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने उन्हें उन के करतूतों का मज़ा चखाया। फिर इस के बाद 'फ़ै' के बारे में आदेश दिया गया है और बताया गया है कि 'ग़नीमत' के माल में और 'फ़ै' के रूप में हाथ आने वाले माल में अन्तर है। 'फ़ै' के रूप में मिलने वाला माल पूरा का पूरा राज्य (state) का है जो राज्य और समाज की भलाई में खर्च किया जायेगा। फिर विस्तारपूर्वक इस पर प्रकाश डाला गया है कि समाज के किन लोगों को 'फ़ै' के माल से हिस्सा दिया जा सकता है। और इस सिलसिले में एक विशेष बात यह बताई गई है कि सफल और कृतार्थ होने वाले लोग वही हैं जिन के हृदय में कृपणता और लोभ नहीं।

आगे चल कर 'मुनाफ़िक़ों' (Hypocrites) के बारे में बताया गया है कि किस प्रकार 'किताब' वाले 'काफ़िरों' को उन्हों ने वचन दिया है कि हम तुम्हारे सहायक हैं, लड़ाई में हम तुम्हारा साथ देंगे और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे। फिर बताया गया है कि ये झूठे हैं कभी भी अपने वादे को पूरा नहीं कर सकते। ऐसा ही हुआ, न तो इन्हों ने बनू नज़ीर की सहायता की और न ये उस समय उन के साथ निकल सके जब उन्हें देश निकाला दिया गया।

'सूरा' के अन्तिम भाग में 'ईमान' वालों को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि उन्हें अल्लाह का डर रखना चाहिये और प्रत्येक व्यक्ति को आज ही सोच लेना चाहिए कि उस ने कल के लिए क्या भेजा है। इस के बाद एक मिसाल बयान कर के शिक्षा ग्रहण करने पर लोगों को उभारा गया है। मिसाल यह बयान की गई है: यदि यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतरा होता तो वह भी अल्लाह के भय से टुकड़े-टुकड़े हो जाता परन्तु लोगों की ग़फ़लत का हाल यह है कि वह अल्लाह का कलाम सुनते हैं फिर भी प्रभावित नहीं होते, फिर अल्लाह के अच्छे नामों और गुणों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उस के सिवा दूसरा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हश्र

(मदीना में उतरी — 'आयतें' २४)

EXILE

Revealed at Al-Madinah

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. अल्लाह की 'तसबीह' की हर उस चीज़ नें जो आकाशों में है, और जो धरती में है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

1. All that is in the heavens and all that is in the earth glorifieth Allah, and He is the Mighty, the Wise.

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

२. वही है जिस ने उन लोगों को जो 'किताब' वालों में से 'काफ़िर' हुये उन के घरों से पहले ही जमावड़े पर निकाल दिया[1]। तुम्हें गुमान न था कि वे निकलेंगे, और उन्हें भी यह गुमान था कि उन्हें अल्लाह से उन की गढ़ियाँ बचा लेंगी। फिर अल्लाह ने उन्हें आ लिया जिधर से उन्हें गुमान भी न था, और उन के दिलों में रोब डाल दिया, वे अपने घरों को अपने हाथों और 'ईमान' वालों के हाथों से उजाड़ने लगे। तो हे आँखों वालो! इस से शिक्षा ग्रहण करो[2]!

2. He it is Who hath caused those of the People of the Scripture* who disbelieved to go forth from their homes unto the first exile. Ye deemed not that they would go forth, while they deemed that their strongholds would protect them from Allah. But Allah reached them from a place whereof they recked not, and cast terror in their hearts so that they ruined their houses with their own hands and the hands of the believers. So learn a lesson, O ye who have eyes!

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ②

३. और यदि अल्लाह उन के लिए देश-निकाला न लिख चुका होता, तो उन्हें दुनिया ही में यातना दे देता,[3] और 'आखिरत' में उन के लिए आग की यातना है।

3. And if Allah had not decreed migration for them, He verily would have punished them in this world, and theirs in the Hereafter is the punishment of the Fire.

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۗ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③

४. यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के 'रसूल' का विरोध किया; और जो कोई अल्लाह का विरोध करेगा, तो जान लेना चाहिए कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।

4. That is because they were opposed to Allah and His messenger; and whoso is opposed to Allah, (for him) verily Allah is stern in reprisal.

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ④

५. खजूर का जो वृक्ष भी तुम ने काटा या उसे उस की जड़ों पर खड़ा रहने दिया, तो यह अल्लाह की अनुज्ञा से था, और इस लिए था कि वह अवज्ञाकारियों को रुसवा करे[4]।

5. Whatsoever palm-trees ye cut down or left standing on their roots, it was by Allah's leave, in order that He might confound the evil-livers.

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤

१. यह संकेत 'यहूदियों' के एक विशेष क़बीला 'बनू नज़ीर' की ओर है (दे० सूरा का परिचय)।
२. दे० सूरा का परिचय।
३. अर्थात् बनू क़ुरैज़ा की तरह मारे जाते। दे० सूरा अल-अहज़ाब का परिचय।
४. जब बनू नज़ीर क़िलाबन्द हो गये तो उस समय मुसलमानों ने अल्लाह के हुक्म से उन के कुछ वृक्ष काटे थे। इस पर कुछ लोगों ने एतराज़ किया कि ये वृक्ष क्यों काटे गये जब कि हरे-भरे वृक्षों का काटना जायज़ नहीं। उन के इसी आक्षेप का यहाँ उत्तर दिया गया है कि ये वृक्ष अल्लाह के हुक्म से काटे गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. और अल्लाह ने उन से अपने 'रसूल' को जो कुछ 'फ़ै'[५] प्राप्त कराया उस के लिए न तो तुम ने घोड़े दौड़ाये और न ऊँट, परन्तु अल्लाह अपने 'रसूलों' को जिस पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है[६]। और अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

७. अल्लाह अपने 'रसूल' को बस्ती वालों से जो कुछ 'फ़ै' प्राप्त कराये, वह अल्लाह का हक़ है और 'रसूल' का[७] और ('रसूल' के) नातेदारों[८] और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों का,[९] ताकि वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही के बीच न चक्कर खाता रहे[१०]—और 'रसूल' तुम्हें जो कुछ दे, उसे ले लो। और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दे, उस से रुक जाओ। और अल्लाह का डर रक्खो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है—

८. 'हिजरत' करने वाले ग़रीबों का है जो अपने घरों से निकाल दिये गये हैं और अपने मालों से, वे अल्लाह का अनुग्रह और रज़ामन्दी चाहते हैं और अल्लाह और उस के 'रसूल' की मदद करते हैं। यही लोग सच्चे हैं।

6. And that which Allah gave as spoil unto His messenger from them, ye urged not any horse or riding-camel for the sake thereof, but Allah giveth His messenger lordship over whom He will. Allah is Able to do all things.

7. That which Allah giveth as spoil unto His messenger from the people of the townships it is for Allah and His messenger* and for the near of kin and the orphans and the needy and the wayfarer, that it become not a commodity between the rich among you. And whatsoever the messenger giveth you, take it. And whatsoever he forbiddeth, abstain (from it). And keep your duty to Allah. Lo Allah is stern in reprisal.

8. And (it is) for the poor fugitives who have been driven out from their homes and their belongings, who seek bounty from Allah and help Allah and His messenger. They are the loyal.

وَمَا أَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَا
أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّ
لٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَاءُ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

مَا أَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ أَهْلِ الْقُرٰى
فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ
دُوْلَةً ۢ بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَا آتٰىكُمُ
الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ﴿٧﴾
لِلْفُقَرَاءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ أُخْرِجُوْا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا
مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ ۭ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾

५. 'फ़ै' उस माल को कहते हैं जो विरोधी दल से बिना लड़े प्राप्त हो। बनू नज़ीर पर चढ़ाई की गई परन्तु लड़ने की नौबत नहीं आई थी। इस अवसर पर मुसलमानों के क़ब्ज़े में जो माल आया उसे 'फ़ै' कहा गया।

६. यह उन के जवाब में कहा गया जो कहते थे कि आख़िर 'ग़नीमत' की तरह बनू नज़ीर के माल को लोगों में क्यों नहीं बाँटा गया? युद्ध में जो माल सैनिकों के हाथ आता है उसे 'ग़नीमत' कहते हैं। ग़नीमत में ४ हिस्से सेना के लिए और एक हिस्सा अल्लाह और रसूल' और 'रसूल' के नातेदार और मुहताजों आदि का होता है (दे० सूरा अल-अनफ़ाल आयत ४१)।

७. अल्लाह और 'रसूल' के हिस्से से अभिप्रेत राज्य (State) का भाग है। यह हिस्सा सामाजिक आवश्यक़ताओं और उद्देश्यों के अन्तर्गत व्यय होता है।

८. 'रसूल' के रिश्तेदारों का 'ज़कात' में कोई हिस्सा नहीं रक्खा गया है इस लिए 'फ़ै' और 'ग़नीमत' के माल में उन का हिस्सा ठहराया गया। इस के अतिरिक्त यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि नबी सल्ल० का पूरा समय इस्लाम ही की सेवा में व्यय होता था। आप जीविकोपार्जन के लिए कोई और काम नहीं कर सकते थे।

९. इस हुक्म में विधवा स्त्रियाँ, अपाहिज और बीमार जिन का कोई ज़िम्मेदार न हो सभी आ जाते हैं।

१०. "वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही में चक्कर न लगाता रहे" यह वह मौलिक उद्देश्य है जिसे 'इस्लाम' ने न केवल 'फ़ै' की तक़सीम में सामने रक्खा है बल्कि इस्लाम की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था में इसे एक मौलिक नियम की हैसियत प्राप्त है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. और जो लोग इन से पहले से इस घर (मदीना) में बसे हुये हैं[11] और 'ईमान' रखते हैं, वे उन से प्रेम करते हैं जो 'हिजरत' कर के उन के यहाँ आये; और अपने सीनों (दिलों) में उस से कोई खटक नहीं पाते जो कुछ उन ('हिजरत' कर के आने वालों) को दिया जाये, और (उन्हें) अपने से प्रथम रखते हैं चाहे उन्हें मुहताजी ही क्यों न हो और जो लोग अपने मन के लोभ से बचे रहे वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं[12]।

9. Those who entered the city and the faith before them, love those who flee unto them for refuge, and find in their breasts no need for that which hath been given them, but prefer the (fugitives) above themselves though poverty become their lot. And whoso is saved from his own avarice—such are they who are successful.

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِن قَبْلِهِمْ
يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ
فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ
وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٩

१०. और जो इन के बाद आये कहते हैं : हमारे 'रब'! क्षमा कर दे हमें और हमारे भाइयों को जो 'ईमान' लाने में हम से अग्रसर रहे, और उन लोगों की ओर से जो 'ईमान' लाये हैं हमारे दिलों में विद्वेष को जगह न दे। हमारे 'रब'! निस्सन्देह तू करुणामय और दयावान् है।

10. And those who came (into the faith) after them, say: Our Lord! Forgive us and our brethren who were before us in the faith, and place not in our hearts any rancour toward those who believe Our Lord! Thou art Full of Pity, Merciful.

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا
بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ
آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ١٠

११. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो 'मुनाफ़िक़' हैं, वे अपने 'कुफ़्र' करने वाले भाइयों से जो 'किताब' वालों में से हैं कहते हैं : यदि तुम्हें निकाला गया, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे, और हम तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहना नहीं मानेंगे, और यदि तुम से युद्ध किया गया तो अवश्य हम तुम्हारी सहायता करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं।

11. Hast thou not observed those who are hypocrites (how) they tell their brethren who disbelieve among the People of the Scripture: If ye are driven out, we surely will go out with you, and we will never obey anyone against you, and if ye are attacked we verily will help you. And Allah beareth witness that they verily are liars.

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ
أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ
أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ
وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ١١

१२. है यही कि यदि उन्हें निकाला गया तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे, और यदि उन से युद्ध किया गया तो ये उनकी सहायता नहीं करेंगे, और यदि उन की सहायता करें भी तो पीठ फेर कर भागेंगे, फिर उन्हें कोई सहायता न मिलेगी।

12. (For) indeed if they are driven out they go not out with them, and indeed if they are attacked they help not, and indeed if they had helped them they would have turned and fled, and then they would have been victorious.

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن
قُوتِلُوا لَا يَنصُرُونَهُمْ وَلَئِن نَّصَرُوهُمْ
لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ١٢

१३. अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा भय इन के सीनों में बैठा हुआ है। यह इस लिए कि ये ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

13. Ye are more awful as a fear in their bosoms than Allah. That is because they are a folk who understand not.

لَأَنتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِم مِّنَ
اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ١٣

११. यह संकेत उन गरीब मुसलमानों की ओर है जो मदीना ही के रहने वाले थे।

१२. दे० सूरा अत-तग़ाबुन आयत १६। मनुष्य के दिल से जब तक कृपणता और लोभ निकल न जाये नैतिकता तथा आध्यात्मिकता की दृष्टि से उसे उच्च स्थान प्राप्त नहीं हो सकता। फिर उस का कल्याण कैसे हो सकता है? यही बात इञ्जील में इन शब्दों में कही गई है : मैं तुम से सच कहता हूँ कि (कंजूस) धनी का स्वर्ग के राज्य (The kingdom of heaven) में प्रवेश करना कठिन है। और फिर तुम से कहता हूँ कि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इस से आसान है कि (कृपण) धनी अल्लाह के राज्य में प्रवेश करे। दे० मत्ता (Mtt.) १९ : २३-२४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. ये सब मिल कर भी तुम से नहीं लड़ेंगे, सुरक्षित वस्तियों में या दीवारों की आड़ में हों तो और बात है। इन की लड़ाई आपस में बड़ी सख़्त है। तुम समझते हो कि इन में एकता है हालाँकि इन के दिल आपस में फटे हुए हैं। यह इस लिए कि ये ऐसे लोग हैं जो बुद्धि नहीं रखते।

१५. जैसे उन लोगों का हाल हुआ जिन्हों ने इन से कुछ ही पहले अपनी हरकत के ववाल का मज़ा चखा,[13] और उन के लिए दुःखभरी यातना है।

१६. 'शै. .न' का सा हाल कि उस ने मनुष्य से कहा[14] कि 'कुफ़्' कर फिर जव उस ने 'कुफ़्' किया तो कहा : मैं तुझ से अलग हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का 'रव' है[15]।

१७. इन दोनों का[16] परिणाम यह हुआ कि दोनों आग मे गये, जहाँ वे दोनों सदा रहेंगे। और यही वदला है ज़ुल्म करने वालों का।

१८. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह का डर रक्खो। और कोई भी व्यक्ति हो वह देख ले कि उस ने कल के लिए[17] क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रक्खो ! निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखता है।

१९. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, तो उस ने ऐसा किया कि उन्हों ने अपने आप को भुला दिया। यही लोग अवज्ञाकारी हैं।

२०. बराबर नहीं आग वाले और 'जन्नत' वाले। 'जन्नत' वाले ही सफल होने वाले हैं।

14. They will not fight against you in a body, save in fortified villages or from behind walls. Their adversity among themselves is very great. Ye think of them as a whole whereas their hearts are divers. That is because they are a folk who have no sense.

15. On the likeness of those (who suffered) a short time before them, they taste the ill-effects of their conduct, and theirs is a painful punishment.

16. (And the hypocrites are) on the likeness of the devil when he telleth man to disbelieve, then, when he disbelieveth, saith: Lo! I am quit of thee. Lo! I fear Allah, the Lord of the Worlds.

17. And the consequence for both will be that they are in the Fire, therein abiding. Such is the reward of evil doers.

18. O ye who believe! Observe your duty to Allah. And let every soul look to that which it sendeth on before for the morrow. And observe your duty to Allah! Lo! Allah is informed of what ye do.

19. And be not ye as those who forgot Allah, therefore He caused them to forget their souls. Such are the evil doers.

20. Not equal are the owners of the Fire and the owners of the Garden. They are the victorious.

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
أَوْ مِن وَرَاءِ جُدُرٍ ۚ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ
تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ۖ ذَاقُوا
وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنسَانِ اكْفُرْ
فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ
فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ
أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

१३. यह संकेत या तो 'बद्र' की लड़ाई में मारे जाने वाले 'मुश्रिकों' की ओर है (दे० सूरा अल-अनफ़ाल का परिचय); या 'बनू क़ैनुक़ाअ' की ओर है। 'बनू क़ैनुक़ाअ' 'यहूदियों' का ही एक क़बीला था। नबी सल्ल० ने इस क़बीले को इस के विद्रोह करने के कारण देश निकाला दिया था।

१४. 'कहना' से अभिप्रेत हुक्म देना, पुकारना, प्रेरित करना, तैयार करना, किसी काम की ओर ले जाना आदि है।

१५. दे० सूरा अल-अनफ़ाल आयत ४८।

१६. 'शैतान' और उस का अनुसरण करने वाले मनुष्य का।

१७. अर्थात् आगामी जीवन के लिए; 'आख़िरत' के लिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. यदि हम इस 'क़ुरआन' को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उस (पहाड़) को देखते कि सहमा हुआ है और फटा जाता है अल्लाह के भय से[१८]। और हम ये मिसालें लोगों से बयान करते हैं ताकि वे सोच-विचार करें।

21. If We had caused this Qur'an to descend upon a mountain, thou (O Muhammad) verily hadst seen it humbled, rent asunder by the fear of Allah. Such similitudes coin We for mankind that haply they may reflect.

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

२२. वह अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई 'इलाह' नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है। वह अत्यन्त कृपाशील ('रहमान') और दयावान् है।

22. He is Allah, than Whom there is no other God, the Knower of the invisible and the visible. He is the Beneficent, the Merciful.

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

२३. वह अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं, सर्व-शासक है, अत्यन्त गुणवान्, शान्तिस्वरूप, शरणदाता, संरक्षक,[१९] प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली, अत्यन्त महान्। अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है वह 'शिर्क' जो ये लोग करते हैं।

23. He is Allah, than Whom there is no other God, the Sovereign Lord, the Holy One, Peace, the keeper of Faith, the Guardian, the Majestic, the Compeller, the Superb. Glorified be Allah from all that they ascribe as partner (unto Him)!

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾

२४. वह अल्लाह है, परिरूपक, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूपकार, उसी के लिए अच्छे नाम हैं। जो वस्तु भी आकाशों और धरती में है उस की 'तसबीह' करती है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

24. He is Allah, the Creator, the Shaper out of naught, the Fashioner, His are the most beautiful names. All that is in the heavens and the earth glorifieth Him, and He is the Mighty, the Wise.

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع

* * *

१८. दे० सूरा अल-अहज़ाब आयत ७२।
१९. क़ुरआन में 'अस-सलाम' (السلام) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के अर्थ में अत्यन्त व्यापकता पाई जाती है।
२०. मूल ग्रन्थ में 'अल-मुहैमिन' (المهيمن) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के अर्थ में अत्यन्त व्यापकता पाई जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०--अल-मुम्तहना
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुम्तहना' सूरा की 'आयत' १० से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Realation)

'सूरा' की वार्त्ताओं से मालूम होता है कि यह सूरा 'हुदैबिया' की सन्धि के पश्चात् और मक्का की विजय के निकट अर्थात् सन् ८ हिज० में अवतीर्ण हुई है। सूरा की प्रारम्भिक 'आयतों' का सम्पर्क एक विशेष घटना से है, उस घटना से भी सूरा के अवतीर्ण होने के समय का निर्धारण होता है।

जब मक्का के 'क़ुरैश' ने उस सन्धि की अवहेलना की जो इतिहास में हुदैबिया की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है, तो नबी सल्ल० ने मक्का पर क़ब्ज़ा करने के लिए फ़ौजी तैयारी शुरू कर दी। आप (सल्ल०) चाहते थे कि इस की सूचना मक्का वालों को न मिले ताकि रक्तपात की नौबत न आये और मक्का पर विजय प्राप्त हो जाये। हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ि० उन लोगों में से थे जो 'हिजरत' कर के मदीना पहुँचे थे। उनके बाल-बच्चे मक्का ही में थे। उन्हें डर हुआ कि लड़ाई छिड़ जाने के बाद मक्के के 'काफ़िर' लोग उनके बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे। उन्हों ने पत्र लिखकर 'क़ुरैश' को सूचित करना चाहा कि नबी सल्ल० मक्का पर आक्रमण करने का निश्चय कर चुके हैं। हज़रत हातिब रज़ि० ने सोचा कि इस तरह मक्का के लोग उन के आभारी हो जायेंगे और उन के बाल-बच्चों के साथ बुरा व्यवहार न करेंगे। हज़रत हातिब रज़ि० ने पत्र एक स्त्री के हाथ भेज दिया। नबी सल्ल० को अल्लाह ने 'वह्य' के द्वारा इस से सूचित कर दिया। नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और कुछ दूसरे लोगों को हुक्म दिया कि जाओ अमुक स्थान पर वह स्त्री मिलेगी उस से पत्र ले लो। ये लोग गये तो वास्तव में उन्हें वहाँ वह स्त्री मिली। परन्तु पत्र के बारे में उस ने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती, मेरे पास कोई पत्र नहीं है। आखिर डाँटने-धमकाने पर उस ने वह पत्र हवाले कर दिया। वह पत्र नबी सल्ल० की सेवा में लाया गया। उस के पढ़ने से मालूम हुआ कि वह पत्र हज़रत हातिब रज़ि० ने क़ुरैश के नाम लिखा है और मक्का के 'काफ़िरों' को इस बात की सूचना दी है कि नबी सल्ल० मक्का पर चढ़ाई करने का इरादा रखते हैं।

नबी सल्ल० ने हज़रत हातिब रज़ि० से पूछा तो उन्हों ने कहा कि न तो मैं 'इस्लाम' से फिरा हूँ और न मैं ने 'क़ुफ़्र' ग्रहण किया है। मैं ने केवल इस ध्येय से यह पत्र लिखा था कि मक्का वाले मेरे इस एहसान के कारण मेरे बाल-बच्चों पर हाथ न उठायें। हज़रत उमर रज़ि० ने क्रोध में आ कर कहा कि हे अल्लाह के 'रसूल'! मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं इस की गरदन उड़ा दूँ। परन्तु नबी सल्ल० ने हज़रत हातिब रज़ि० के उज्र को क़बूल कर के उन्हें क्षमा कर दिया।

हज़रत हातिब रज़ि० समझते थे कि उन के पत्र भेज देने से 'इस्लाम' को कोई हानि नहीं पहुँच सकती; अल्लाह ने अपने 'रसूल' से 'इस्लाम' की विजय का जो वादा किया है वह अवश्य पूरा हो कर रहेगा। उन्हों ने अपने उस पत्र में भी जो उन्हों ने 'क़ुरैश' को भेजा था लिख दिया था कि अल्लाह की क़सम! यदि अल्लाह के 'रसूल' सल्ल० अकेले भी तुम पर चढ़ाई करें तो अल्लाह उन की सहायता करेगा और उन से जो वादे किये हैं पूरे कर के छोड़ेगा।

हज़रत हातिब रज़ि० के मन में इस्लाम के प्रति कोई खोट और कपट नहीं था फिर भी यह उन से बड़ी भूल हुई थी कि उन्हों ने इस्लाम-विरोधियों के नाम इस प्रकार का पत्र लिखा। सूरा अल-मुम्तहना का बड़ा हिस्सा इसी सिलसिले में उतरा है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय अथवा मध्य विन्दु वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' के प्रारम्भ में मुसलमानों को इस बात से वर्जित किया गया है कि वे उन लोगों से सम्बन्ध जोड़ने लग जायें जिन की शत्रुता और द्वेष कोई ढकी-छिपी चीज़ नहीं रही, जिन्हों ने अल्लाह के 'रसूल' और उनके साथियों को केवल इस लिए घरबार छोड़ने पर विवश किया कि वे अल्लाह पर 'ईमान' लाये थे। मुसलमानों को सचेत किया गया कि 'इस्लाम, के विरोधी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर सकते, वे तुम्हें कष्ट ही पहुँचायेंगे; वे तो यही इच्छा करेंगे कि उन की तरह तुम भी 'काफ़िर' बन जाओ।

फिर हज़रत इबराहीम अ० और उन के साथियों के जीवन को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है कि किस तरह उन्हों ने अपनी जाति वालों से साफ़-साफ़ कह दिया था कि हम न तुम्हारे देवी-देवताओं को मानते हैं और न तुम्हें मानते हैं, हमारे तुम्हारे बीच जो शत्रुता और दूरी पैदा हो गई है वह तो उसी समय दूर हो सकती है जब कि तुम एक अल्लाह के मानने वाले बन जाओ।

फिर मुसलमानों को बताया गया है कि अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से सम्बन्ध रखने से रोकता है जिन्हों ने तुम पर ज्यादती और ज़ुल्म किया है; जिन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और 'दीन' (धर्म) के बारे में तुम से युद्ध किया है। रहे वे लोग जिन्हों ने तुम पर ज़ुल्म नहीं किया है उन पर यदि तुम एहसान करो और इन्साफ़ से पेश आओ तो इस में तुम पर कोई दोष नहीं। तुम इन्साफ़ सब के साथ करो; शत्रुओं के साथ भी इन्साफ़ करने से तुम्हें नहीं रोका गया है; परन्तु अल्लाह के शत्रुओं के साथ तुम्हारा हार्दिक लगाव और प्रेम नहीं हो सकता।

इस के बाद उन स्त्रियों के बारे में विशेष आदेश दिये गये हैं जो 'ईमान' ला कर 'काफ़िरों के यहाँ से मुसलमानों की ओर 'हिजरत' कर के आयें। इस के साथ मुसलमानों की उन स्त्रियों के बारे में भी आदेश दिये गये हैं जो 'काफ़िर' हों और 'ईमान' न लाई हों।

'सूरा' के अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है कि जब 'ईमान' वाली स्त्रियाँ 'बैअत' करने के लिए आयें तो उन से इन बातों पर 'बैअत' कर ली जाये कि वे न तो 'शिर्क' करेंगी और न चोरी करेंगी, न ज़िना (व्यभिचार) करेंगी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न अपवाद गढ़ेंगी और न भले कर्मों में नबी सल्ल० के आदेशों की अवहेलना करेंगी।

'सूरा' को समाप्त करते हुए मुसलमानों से फिर वही बात कही गई है जो सूरा के आरम्भ में कही गई है कि वे उन लोगों को अपना न बनायें जिन पर अल्लाह का प्रकोप हो चुका है; और जो 'आख़िरत' की ओर से बिल्कुल निराश हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुम्तहना
(मदीना में उतरी—'आयतें' १३)

SHE THAT IS TO BE EXAMINED
Revealed at al-Madinah

سورة الممتحنة مدنية وهي ثلاث عشرة آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name ot Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

१. हे 'ईमान' लाने वालो ! तुम मेरे दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को अपना न बनाओ—तुम उन की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाओ और वे हैं कि उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है इन्कार कर चुके हैं, 'रसूल' को और तुम्हें भी निकालते हैं इस पर कि तुम अपने 'रब' अल्लाह पर 'ईमान' लाते हो ?—यदि तुम मेरी राह में 'जिहाद' के लिए और मेरी प्रसन्नता की चाह में निकले हो। तुम चुपके-चुपके उन से दोस्ती करते हो,[१] और मैं भली-भाँति जानता हूँ जो-कुछ तुम ने छुपाया और जो-कुछ ज़ाहिर किया और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा, तो निश्चय ही वह सीधे मार्ग से भटक गया[२]।

1. O ye yho believe! Choose not My enemy and your enemy for friends. Do ye give them friendship when they disbelieve in that truth which hath come unto you, driving out the messenger and you because ye believe in Allah, your Lord? If ye have come forth to strive in My way and seeking My good pleasure, (show them not friendship). Do ye show friendship unto them in secret, when I am best Aware of what ye hide and what ye proclaim? And whosoever doth it among you, he verily hath strayed from the right way.

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ عَدُوِّى
وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَآءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِٱلْمَوَدَّةِ
وَقَدْ كَفَرُوا۟ بِمَا جَآءَكُم مِّنَ ٱلْحَقِّ يُخْرِجُونَ
ٱلرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَن تُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ رَبِّكُمْ
إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَٰدًا فِى سَبِيلِى وَ
ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِى تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِٱلْمَوَدَّةِ
وَأَنَا۠ أَعْلَمُ بِمَآ أَخْفَيْتُمْ وَمَآ أَعْلَنتُمْ وَمَن
يَفْعَلْهُ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ①

२. यदि वे तुम्हें पा जायें, तो तुम्हारे दुश्मन होंगे, और तकलीफ़ देने के लिए अपने हाथ और अपनी ज़बान चलायेंगे, और वे चाहते हैं कि तुम भी 'कुफ़्र' करने लगो।

2. If they have the upper-hand of you, they will be your foes, and will stretch out their hands and their tongues toward you with evil (intent) and they long for you to disbelieve.

إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا۟ لَكُمْ أَعْدَآءً وَيَبْسُطُوٓا۟
إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِٱلسُّوٓءِ وَوَدُّوا۟
لَوْ تَكْفُرُونَ ②

३. तुम्हारे नाते-रिश्ते 'क़ियामत' के दिन काम न आयेंगे और न तुम्हारी औलाद। वह तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

3. Your ties of kindred and your children will avail you naught upon the Day of Resurrection. He will part you. Allah is Seer of what ye do

لَن تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُمْ ۚ يَوْمَ
ٱلْقِيَٰمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ③

१. दे० सूरा आले इमरान आयत १८-१९।
२. इस सूरा की आरम्भिक 'आयतों' का सम्बन्ध एक विशेष घटना से है (दे० सूरा का परिचय)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. तुम्हारे लिए इबराहीम और उन लोगों में जो उस के साथ थे एक उत्तम आदर्श मौजूद है, जब कि उन्हों ने अपनी जाति वालों से कहा : हम तुम से और अल्लाह के सिवा जिसे भी तुम पूजते हो उस से अलग हैं। हम तुम्हें नहीं मानते। और हमारे और तुम्हारे बीच सदा के लिए शत्रुता और विद्वेष उभर आया है जब तक कि तुम अकेले अल्लाह पर 'ईमान' न लाओ—बस यह है कि इबराहीम ने अपने बाप से इतनी बात कह दी थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना अवश्य कर दूंगा,[३] और अल्लाह के आगे तुम्हारे लिए कुछ भी करना मेरे बस में नहीं है—हमारे 'रब'! हम ने तुझी पर भरोसा किया, और तेरी ही ओर रुजू हुये, और तेरी ही ओर पहुँचना है।

4. There is a goodly pattern for you in Abraham and those with him, when they told their folk: Lo! we are guiltless of you and all that ye worship besides Allah. We have done with you. And there hath arisen between us and you hostility and hate for ever until ye believe in Allah only—save that which Abraham promised his father (when he said): I will ask forgiveness for thee, though I know nothing for thee from Allah—Our Lord! In Thee we put our trust, and unto Thee we turn repentant, and unto Thee is the journeying.

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيٓ إِبْرٰهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهٗ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءٰٓؤُا
مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ كَفَرْنَا
بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ
أَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ إِلَّا قَوْلَ
إِبْرٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ أَمْلِكُ
لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ④

५. हमारे 'रब'! हमें 'कुफ़्र' करने वालों के लिए आज़माइश न बना, और हमारे 'रब'! हमें क्षमा कर दे, निस्सन्देह तू ही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है :

5. Our Lord! Make us not a prey for those who disbelieve, and forgive us, our Lord! Lo! Thou, only Thou, art the Mighty, the Wise.

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا
وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ⑤

६. निश्चय ही तुम्हारे लिए उन में अच्छा आदर्श मौजूद है—हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो। और जो कोई मुँह मोड़े, तो समझ रखना चाहिए कि अल्लाह अपेक्षारहित (परम स्वतन्त्र) और प्रशंसा का अधिकारी है।

6. Verily ye have in them a goodly pattern for everyone who looketh to Allah and the Last Day. And whosoever may turn away, lo! still Allah, He is the Absolute, the Owner of Praise.

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ
يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑥

७. हो सकता है कि अल्लाह तुम में और उन लोगों में जिन से तुम्हारी दुश्मनी है दोस्ती कर दे[४] और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान् है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान् है।

7. It may be that Allah will ordain love between you and those of them with whom ye are at enmity. Allah is Mighty, and Allah is Forgiving, Merciful.

عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ
الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً وَاللّٰهُ قَدِيرٌ
وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑦

८. जिन लोगों ने तुम से 'दीन' (धर्म) के बारे में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, अल्लाह तुम्हें उन पर एहसान करने और उन के साथ इन्साफ़ करने से नहीं रोकता[५] अल्लाह तो इन्साफ़ करने वालों से प्रेम रखता है।

8. Allah forbiddeth you not those who warred not against you on account of religion and drove you not out from your homes, that ye should show them kindness and deal justly with them Lo. Allah loveth the just dealers.

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ
فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ
تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوٓا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ⑧

३. परन्तु जब यह बात उन पर खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वे अपने बाप से विरक्त हो गये (दे० सूरा मरयम आयत ४७; अत-तौबा आयत ११४)।

४. ऐसा ही हुआ मक्का की विजय के पश्चात् लगभग सभी लोग मुसलमान हो गये और जो लोग एक-दूसरे के दुश्मन हो गये थे परस्पर भाई-भाई बन गये।

५. दे० सूरा अल-माइदा आयत २।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. अल्लाह तुम्हें बस उन लोगों से रोकता है जिन्होंने तुम से 'दीन' (धर्म) के बारे में युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने में मदद की, इस से कि तुम उन्हें अपना बनाओ। और जो कोई उन्हें अपना बनाये तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

9. Allah forbiddeth you only those who warred against you on account of religion and have driven you out from your homes and helped to drive you out, that ye make friends of them. Whosoever maketh friends of them—(All) such are wrongdoers.

إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ
فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَ
ظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ
وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑨

१०. हे 'ईमान' लाने वालो! जब तुम्हारे पास 'ईमान' वाली स्त्रियाँ 'हिजरत' कर के आयें, तो तुम उनकी परीक्षा कर लो[६]—अल्लाह उन के 'ईमान' को भली-भाँति जानता है—फिर यदि वे तुम्हें 'ईमान' वाली मालूम हों, तो उन्हें 'काफ़िरों' की ओर वापस न करो। न तो वे उन ('काफ़िरों') के लिए 'हलाल' हैं, और न वे उन (स्त्रियों) के लिए हलाल हैं। और जो कुछ उन्हों ने (उन स्त्रियों पर) ख़र्च किया हो तुम उन्हें दे दो[७]। और इस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं कि तुम उन से विवाह कर लो जब कि तुम उन (स्त्रियों) का हक़ ('मह्र') अदा कर दो। और 'काफ़िर' स्त्रियों के सतीत्व को अपने अधिकार में न रक्खो जो कुछ तुम ने ख़र्च किया हो माँग लो;[८] और जो-कुछ उन्हों ने ख़र्च किया हो वह भी माँग लें। यह अल्लाह का फ़ैसला है। वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है। और अल्लाह जानने वाला और तत्व-दर्शी है।

10. O ye who believe! When believing women come unto you as fugitives, examine them. Allah is best aware of their faith. Then, if ye know them for true believers, send them not back unto the disbelievers. They are not lawful for the disbelievers, nor are the disbelievers lawful for them. And give the disbelievers that which they have spent (upon them). And it is no sin for you to marry such women when ye have given them their dues. And hold not to the ties of disbelieving women; and ask for (the return of) that which ye have spent; and let the disbelievers ask for that which they have spent. That is the judgment of Allah. He judgeth between you. Allah is Knower, Wise.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ
مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ
فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ
إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ
وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآتُوهُم
مَّا أَنفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن
تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا
أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ذَٰلِكُمْ
حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ⑩

११. और यदि तुम्हारी पत्नियों के सिलसिले का कुछ 'काफ़िरों' के पास रह जाये, तुम्हें न मिले, फिर तुम्हारी बारी आये तो तुम उन लोगों को जिन की पत्नियाँ चली गई हैं जितना उन्हों ने ख़र्च किया हो दे दो[९]। और उस अल्लाह का डर रक्खो[१०] जिस पर तुम 'ईमान' रखते हो।

11. And if any of your wives have gone from you unto the disbelievers and afterward ye have your turn (of triumph), then give unto those whose wives have gone the like of that which they have spent, and keep your duty to Allah in Whom ye are believers.

وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى
الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ
أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑪

६. अर्थात् इस की जांच कर लो कि वे वास्तव में 'ईमान' ला चुकी हैं या नहीं। इस से मालूम हुआ कि बाहर से आने वाले व्यक्ति को जो इस बात का दावा कर रहा है कि वह 'मुस्लिम' है और 'हिजरत' कर के आया है 'दारुलइस्लाम' में (अर्थात् इस्लामी राज्य के क्षेत्र में) क़बूल करने से पूर्व उस के 'मुस्लिम' और 'मुहाजिर होने का अच्छी तरह इतमीनान कर लेना चाहिए ताकि 'हिजरत' के बहाने कुछ दूसरा इरादा रखने वाले लोग न घुस आयें। किसी के वास्तविक 'ईमान' का ज्ञान तो केवल अल्लाह ही को हो सकता है परन्तु जहां तक जाँच-पड़ताल सम्भव है कर लेनी आवश्यक है।

७. अर्थात् 'हिजरत' कर के आने वाली मुस्लिम स्त्रियों के 'काफ़िर' पतियों ने उन पर जो ख़र्च किया हो वह तुम उन्हें वापस कर दो। यह रक़म वह वापस करे जो 'हिजरत' कर के आने वाली स्त्रियों से विवाह करे, नहीं तो राज्य-कोष से यह रक़म अदा कर दी जाये। विवाह करने वाला व्यक्ति स्त्री के पहले पति को रक़म वापस करे और नये विवाह का 'मह्र' भी अदा करे।

८. अर्थात् जिस मुसलमान की स्त्री 'काफ़िर' ही रहे वह उसे अपनी पत्नी न बनाये रक्खे बल्कि उसे छोड़ दे फिर जो 'काफ़िर' उस स्त्री से विवाह करे उस से अपना ख़र्च ले ले। इसी तरह से वे 'काफ़िर' जिन की स्त्रियां 'मुस्लिम' हो गई हों अपना ख़र्च उन मुसलमानों से ले लें जिन से उन स्त्रियों का विवाह हुआ हो।

९. अर्थात् यदि तुम्हारी कोई स्त्री 'काफ़िरों' की ओर चली जाये और 'काफ़िर' उस का 'मह्र' तुम्हें न लौटायें तो जिस 'काफ़िर' की स्त्री मुसलमानों के यहाँ आ जाये उस 'काफ़िर' का ख़र्च उसे न लौटायें बल्कि उस मुसलमान को दें जिस का हक़ 'काफ़िरों' ने मारा हो, हाँ यदि उस मुसलमान का हक़ अदा करने के बाद कुछ बच रहता है तो उसे वापस कर दें।

१०. अर्थात् बे इन्साफ़ी और अन्याय से बचो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. हे 'नबी' ! जब 'ईमान' वाली स्त्रियाँ तुम्हारे पास आ कर तुम से इस पर 'बैअत' करें[11] —कि वे अल्लाह का किसी चीज़ को सहभागी नहीं बनाएँगी, न चोरी करेंगी, न ज़िना (व्यभिचार) करेंगी, न अपनी औलाद की हत्या करेंगी,[12] और न अपने हाथों और पैरों के बीच कोई अपवाद गढ़ लायेंगी,[13] और न किसी भी भले काम में तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन करेंगी—तो तुम उन से 'बैअत' ले लो और उन के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान् है।

12. O Prophet! If believing women come unto thee, taking oath of allegiance unto thee that they will ascribe nothing as partner unto Allah, and will neither steal nor commit adultery nor kill their children, nor produce any lie that they have devised between their hands and feet, nor disobey thee in what is right then accept their allegiance and ask Allah to forgive them. Lo! Allah is forgiving, Merciful.

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

१३. हे 'ईमान' लाने वालो ! ऐसे लोगों को अपना न बनाओ जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ है, वे 'आख़िरत' की ओर से निराश हो चुके हैं जैसे क़ब्र वाले 'काफ़िर' निराश हो चुके हैं।

13. O ye who believe! Be not friendly with a folk with whom Allah is wroth, (a folk) who have despaired of the Hereafter as the disbelievers despair of those who are in the graves.

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾

———

११. अर्थात् वचन देने आयें।

१२. इस्लाम से पहले अरब में लोग प्रायः लड़कियों को ज़ीवित गाड़ दिया करते थे। लड़की का पैदा होना उन के लिए बड़ी लज्जा की बात समझी जाती थी। झूठी इज़्ज़त के लिए वे अपने हाथों अपनी औलाद को मिट्टी में दबा आते थे। कभी-कभी ग़रीबी और फ़ाक़े के भय से भी वे औलाद को क़त्ल कर डालते थे। आज भी आर्थिक कष्टों का भय समाज को सन्तान-निरोध की ओर परिवार-नियोजन के नाम से ले जा रहा है। यह अज्ञान की बात है कि आदमी आर्थिक कष्टों के भय से अपनी औलाद को क़त्ल करने लग जाये या औलाद की पैदाइश को रोकने के उपाय करने लगे। यह दुर्भावना वास्तव में नास्तिकता की पैदावार है।

१३. अर्थात बैठे-बैठे अपनी ओर से अपवाद नहीं गढ़ेंगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१—अस-सफ़्फ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अस-सफ़्फ़' (The Ranks) सूरा की 'आयत' ४ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं पर विचार करने से मालूम होता है कि यह सूरा 'उहुद' की लड़ाई के पश्चात् उतरी है। 'उहुद' की लड़ाई सन् ३ हिज० में हुई थी। कुछ उल्लेखों से मालूम होता है कि यह सूरा मक्का में उतरी है। सम्भव है यह सूरा उस समय उतरी हो जब कि नबी सल्ल० हुदैबिया की सन्धि के अवसर पर अपने साथियों के साथ मक्का की घाटी में ठहरे हुये थे। यदि ऐसा ही है तो इस सूरा के अवतरित होने का समय सन् ६ हिज० मानना पड़ेगा।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

प्रस्तुत 'सूरा' 'जिहाद' की ताकीद के सम्बन्ध में है और इस के बाद आने वाली सूरा में जुमा की 'नमाज़' की ताकीद की गई है। प्रस्तुत सूरा में उस शुभ सूचना का उल्लेख किया गया है जो हज़रत ईसा मसीह अ० ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० के प्रति दी थी। और आगे आने वाली सूरा में उस नबी[1] की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जिस के लिए हज़रत इबराहीम अ० ने अल्लाह से प्रार्थना की थी (दे० सूरा अल-जुमुआ आयत २; सूरा अल-बक़रा आयत १२९)। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत सूरा से विजय और 'इस्लाम' को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त होने की शुभ सूचना भी मिलती है।

'सूरा' का आरम्भ इस वाक्य से हुआ है: "अकाश और धरती की सभी चीज़ें अल्लाह की 'तसबीह' कर रही हैं, वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।" यह वास्तव में इस सूरा की प्रस्तावना है। इस के बाद मुसलमानों से कहा गया है कि तुम्हारे कर्म और वचन में कदापि अन्तर नहीं होना चाहिए।

प्रस्तुत 'सूरा' में ऐतिहासिक दृष्टान्त प्रस्तुत कर के बताया गया है कि 'रसूल' की आज्ञा का पालन करना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य होता है। अल्लाह के 'रसूल' को दुःख देना उचित नहीं। कुटिलता की नीति अपनाने वालों के दिल टेढ़े हो जाते हैं फिर सीधे मार्ग पर चलना उन्हें नसीब नहीं होता। इस जीवन का सब से बड़ा व्यापार यही है कि मनुष्य अल्लाह और 'रसूल' पर 'ईमान' लाये और अल्लाह के मार्ग में अपना सब कुछ लगा दे फिर तो दुनिया में भी उसे विजय प्राप्त होगी और 'आख़िरत' में वह सदाबहार 'जन्नतों' का वारिस होगा।

———

१. यह संकेत हज़रत मुहम्मद सल्ल० की ओर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अस-सफ्फ़
(मदीना में उतरी—'आयतें' १४)

THE RANKS
Revealed at Al-Madinah

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

१. अल्लाह की 'तसबीह' की हर उस चीज़ ने जो आकाशों में है और जो धरती में है, और वह है प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी।

1. All that is in the heavens and all that is in the earth glorifieth Allah, and He is the Mighty, the Wise.

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١

२. हे 'ईमान' लाने वालो! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं ?

2. O ye who believe! Why say ye that which ye do not?

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢

३. अल्लाह को यह बात बहुत ही अप्रिय है कि तुम ऐसी बात कहो जो करो नहीं।

3. It is most hateful in the sight of Allah that ye say that which ye do not.

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣

४. निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम रखता है जो उस के मार्ग में पंक्तिबद्ध हो कर लड़ते हैं, मानो वे सीसा पिलाई हुई (मज़बूत) दीवार हैं।

4. Lo! Allah loveth those who battle for His cause in ranks, as if they were a solid structure.

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤

५. और याद करो जब कि मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा : हे मेरी जाति वालो! मुझे क्यों सताते हो, जब कि तुम जानते हो कि मुझे अल्लाह ने अपना 'रसूल' बना कर तुम्हारे पास भेजा है ? तो जब वे टेढ़े हुये तो अल्लाह ने उन के दिलों को टेढ़ा कर दिया[1]। और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता।

5. And (remember) when Moses said unto his people: O my people! Why persecute ye me, when ye well know that I am Allah's messenger unto you? So when they went astray, Allah sent their hearts astray. And Allah guideth not the evil-living folk.

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

६. और याद करो जब कि ईसा सुत मरयम ने कहा : हे इसराईल की सन्तान ! मुझे अल्लाह ने अपना 'रसूल' बना कर तुम्हारे पास भेजा है, यह जो मेरे आगे 'तौरात' है उसकी तसदीक़ करता हूँ और एक 'रसूल' की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा, नाम उसका अहमद है।[2] फिर जब वह ('रसूल') उन के पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया, तो बोले : यह तो स्पष्ट जादू है।

6. And when Jesus son of Mary said: O Children of Israel! Lo! I am the messenger of Allah unto you, confirming that which was (revealed) before me in the Torah and bringing good tidings of a messenger who cometh after me, whose nam is the Praised One. Yet when he hath come unto them with clear proofs, they say: This is mere magic.

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۗ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦

१. यह उन की टेढ़ का स्वाभाविक परिणाम था। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मामले में भी उन्होंने कुटिलता ही की नीति अपनाई तो इस का परिणाम भी यही हुआ कि उनके दिल कज हो गये।
२. दे० इन्जील 'यूहन्ना' (John.) १४: १७; १६: ७। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का एक नाम अहमद भी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बाँधे जब कि उसे 'इस्लाम' की ओर बुलाया जा रहा है ?[३] और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।

7. And who doth greater wrong than he who inventeth a lie against Allah when he is summoned unto Al-Islam? And Allah guideth not wrong-doing folk.

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝٧

८. चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह (की फूंकों) से बुझा दें, और अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा कर के रहेगा चाहे 'काफ़िरों' को बुरा ही क्यों न लगे।

8. Fain would they put out the light of Allah with their mouths, but Allah will perfect His light, however much the disbelievers are averse.

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝٨

९. वही है जिस ने अपने 'रसूल' को मार्गदर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य धर्म) के साथ भेजा, ताकि वह उसे पूरे-के-पूरे 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे चाहे 'मुश्रिकों' को बुरा ही क्यों न लगे।[४]

9. He it is Who hath sent His messenger with the guidance and the religion of truth, that He may make it conqueror of all religion however much idolaters may be averse.

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَ
دِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ
كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝٩

१०. हे 'ईमान' लाने वालो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम को एक दुःख भरी यातना से बचा ले ?[५]

10. O ye who believe! Shall I show you a commerce that will save you from a painful doom?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ
تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝١٠

११. 'ईमान' रक्खो अल्लाह और उस के 'रसूल' पर और 'जिहाद' करो अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से। यह तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

11. Ye should believe in Allah and His messenger, and should strive for the cause of Allah with your wealth and your lives. That is better for you, if ye did but know.

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝١١

१२. वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी और अच्छे-अच्छे घरों में जो सदा रहने के बाग़ों में होंगे। यह है बड़ी सफलता।

12. He will forgive you your sins and bring you into Gardens underneath which rivers flow, and pleasant dwellings in Gardens of Eden, that is the supreme triumph.

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ
طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝١٢

१३. एक दूसरी चीज़ भी जिस की तुम चाहत रखते हो : सहायता अल्लाह की ओर से और विजय जो दूर नहीं। और (हे 'नबी' !) 'ईमान' वालों को शुभ सूचना दे दो।[६]

13. And (He will give you) another blessing which ye love: help from Allah and present victory. Give good tidings (O Muhammad) to believers.

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَ
فَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝١٣

३. यह संकेत 'काफ़िरों' के नायकों और सरदारों की ओर है जो लोगों को अल्लाह के 'रसूल' सल्ल० की बात मानने और आप (सल्ल०) के पीछे चलने से रोकते थे।
४. दे० सूरा अत-तौबा फुटनोट १६; सूरा अल-फ़त्ह फुटनोट २६।
५. तुलनात्मक अध्ययन के लिए दे० सूरा अल-हज्ज आयत ६-११।
६. इस 'आयत' से सूरा के अवतरित होने के समय का पता चलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह के सहायक बनो[७], जैसा कि ईसा सुत मरयम ने 'हवारियों' (अपने साथियों) से कहा : कौन हैं अल्लाह के मार्ग में मेरे सहायक ? 'हवारियों' ने कहा : हम हैं अल्लाह के सहायक।

फिर 'इसराईल' की सन्तान में से एक गरोह 'ईमान' ले आया, और एक गरोह ने 'कुफ़्' किया। तो हम ने उन लोगों को जो 'ईमान' लाये थे उन के शत्रुओं के मुक़ाबले में मदद दी फिर वे छा गये।

14. O ye who believe! Be Allah's helpers, even as Jesus son of Mary said unto the disciples: Who are my helpers for Allah? They said: We are Allah's helpers. And a party of the Children of Israel believed, while a party disbelieved. Then We strengthened those who believed against their foe, and they came the uppermost.

* * *

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ
اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ
قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَت
طَّائِفَةٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت
طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ١٤

---

७. अर्थात् अल्लाह के 'दीन' की सेवा में हाथ बटाओ। अल्लाह के प्रकाश को फैलाओ। लोगों को 'इस्लाम' की ओर बुलाओ। और अल्लाह की राह में जान-तोड़ कोशिश करो। उस की राह में अपने माल खपाओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२–अल–जुमुआ
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम अल-जुमुआ (The Congregation) 'आयत' ९ से लिया गया है। 'अल-जुमुआ' जमा होने के दिन को कहते हैं। इस दिन 'ईमान' वाले मस्जिद में होते हैं। 'नमाज़' के अतिरिक्त मुसलमानों के समक्ष 'खुतबा' (विशेष धार्मिक भाषण और उपदेश) दिया जाता है। पहले जुमा के दिन को 'अरूबा' कहते थे। यह वही दिन है जिसे शुक्रवार (Friday) कहते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की अन्तिम 'आयत' में जिस घटना की ओर संकेत किया गया है उस के सिलसिले में यदि वह बात सही है जैसा कि ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि जिस तिजारती क़ाफ़िले के आ जाने पर लोग मस्जिद से निकल कर दौड़ पड़े थे उस का नायक दह्‌या कलबी नामक व्यक्ति था तो निश्चय ही यह सूरा सन् ५ हिज० से पहले की होगी। इस लिए कि दह्‌या सन् ५ हिज० में मुसलमान हो चुके थे। यह सूरा मदीना में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है। अनुमान है कि यह सन् २ और ४ हिज० के बीच उतरी होगी।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय अथवा मध्य विन्दु वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

प्रस्तुत 'सूरा' विशेष रूप से जिस चीज़ की ताकिद करती है वह अल्लाह की याद है। सांसारिक सामग्री, जीवन-वृत्ति (Worldly occupation) और आर्थिक चेष्टाओं के मुक़ाबले में उत्तम वह है जो अल्लाह के पास है। आर्थिक चेष्टाओं और जीवनोपार्जन के समय भी निरन्तर अल्लाह को स्मरण करते रहना चाहिए। ऐसी आर्थिक चेष्टा जो अल्लाह की याद और उसके आदेशों के पालन का हमें अवसर ही न दे वह आर्थिक चेष्टा नहीं मानव-जीवन के लिए अभिशाप है। आगे आने वाली सूरा में विशेष रूप से अल्लाह के मार्ग में खर्च करने पर ज़ोर दिया गया है।

'सूरा' के आरम्भ में प्रस्तावना के रूप में अल्लाह के गुणों और इस वास्तविकता का उल्लेख किया गया है कि विश्व की प्रकृति अल्लाह की 'तसबीह' है। फिर अल्लाह के उस विशेष उपकार का उल्लेख किया गया है जो उस ने मुस्लिम गरोह पर किया है। फिर 'यहूद' की अवनति (Downfall) और उनकी गिरी हुई दशा की ओर संकेत करते हुये बताया गया है कि वे इस दशा को इस लिए पहुँचे हैं कि उन्होंने अल्लाह के आदेशों की अवहेलना की।

'यहूद' की मिसाल में 'ईमान' वालों के लिए बड़ी शिक्षा है, 'ईमान' वालों को वह नीति कदापि नहीं अपनानी चाहिए जिसे इस से पहले 'यहूद' अपना कर बुरी दशा को पहुँचे हैं। 'यहूद' ने 'सब्त' के दिन की मर्यादाओं का उल्लंघन किया था[1] 'ईमान' वालों के लिए जो दिन अल्लाह ने पसन्द किया है वह जुमा का दिन है। इस के प्रति 'ईमान' वालों को जो सन्देश दिये गये हैं उनका उन्हें पूर्णतः पालन करना चाहिए।

———

१. दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १६३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-जुमुआ
(मदीना में उतरी -- 'आयतें' ११)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. जो भी आकाशों में है और जो भी धरती में है 'तसबीह' करता है अल्लाह की, जो सर्व-शासक, अत्यन्त गुणवान्, प्रभुत्वशाली, और तत्व दर्शी है।

२. वही है जिस ने 'उम्मी' लोगों के बीच उन्हीं मे से एक 'रसूल' उठाया, जो उन को उस की 'आयतें' सुनाता और उन्हें निखारता है, और उन्हें 'किताब' और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता है, और वे पहले तो स्पष्ट गुमराही में थे,

३. और दूसरों को भी जो उन्हीं में के हैं अभी उन से मिले नहीं हैं[1]। और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

४. यह अल्लाह का अनुग्रह है; वह इसे जिस को चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ा अनुग्रह वाला है।

५. उन लोगों की मिसाल जिन पर 'तौरात' का बोझ डाला गया[2] फिर उन्हों ने उस का बोझ नहीं उठाया[3] ऐसी ही है जैसे कोई गदहा किताबें लादे हुये हो। बड़ी बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने अल्लाह की 'आयतों' को झुठलाया। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

THE CONGREGATION
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. All that is in the heaven and all that is in the earth glorifieth Allah, the Sovereign Lord, the Holy One, the Mighty, the Wise.

2. He it is Who hath sent among the unlettered ones a messenger of their own, to recite unto them His revelations and to make them grow, and to teach them the Scripture and Wisdom, though heretofore they were indeed in error manifest.

3. Along with others of them who have not yet joined them. He is the Mighty, the Wise.

4. That is the bounty of Allah which He giveth unto whom He will. Allah is of infinite bounty.

5. The likeness of those who are entrusted with the Law of Moses, yet apply it not, is as the likeness of the ass carrying books. Wretched is the likeness of folk who deny the revelations of Allah. And Allah guideth not wrongdoing folk.

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا
مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ②
وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ③

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ④

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ
لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ
اَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ⑤

१. अर्थात् यह 'रसूल' (सल्ल०) उन दूसरे लोगों के लिए भी 'रसूल' बना कर उठाया गया है जो आगे चल कर इस 'रसूल' के अनुयायी होंगे। इस 'आयत' में नबी सल्ल० के बाद के 'ईमान' वालों के लिए शुभ सूचना है (दे० बाइबिल यूहन्ना १७: २०)।

२. 'तौरात' के बोझ से अभिप्रेत 'तौरात' का ज्ञान और उस में दिये गये आदेशों के पालन करने की ज़िम्मेदारी है।

३. अर्थात् 'तौरात' में दिये गये आदेशों का पालन नहीं किया। उन्हों ने यों तो सभी आदेशों का उल्लंघन किया परन्तु विशेष रूप से उन्हों ने 'सब्त' की मर्यादा और 'जिहाद' के आदेश का उल्लंघन किया। 'सब्त' (शनिवार) के आदेश में विशेष रूप से आजीविका के सम्बन्ध में उन की धर्म परायणता की परीक्षा थी। इस परीक्षा में वे असफल ही रहे (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ६२)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. कह दो : हे वे लोगो, जो 'यहूदी' हुये ! यदि तुम को यह दावा है कि सारे लोगों के अतिरिक्त तुम अल्लाह के मित्र हो[4] तो मृत्यु की कामना करो[5] यदि तुम सच्चे हो।

6. Say (O Muhammad): O ye who are Jews! if ye claim that ye are favoured of Allah apart from (all) mankind, then long for death if ye are truthful.

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ
أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾

७. ये इस की कभी भी कामना नहीं करेंगे जो कुछ इन के हाथों ने कर रक्खा है उस के कारण, और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।

7. But they will never long for it because of all that their own hands have sent before, and Allah is Aware of evil-doers.

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٧﴾

८. कह दो : मृत्यु जिस से तुम भागते हो वह तो तुम पर आ कर रहेगी, फिर तुम उस की ओर लौटाये जाओगे जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, फिर वह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

8. Say (unto them, O Muhammad): Lo! the death from which ye shrink will surely meet you and afterward ye will be returned unto the Knower of the invisible and the visible and He will tell you what ye used to do.

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ
فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ ع

९. हे 'ईमान' लाने वालो ! जब जुमा के दिन 'नमाज़' के लिए पुकारा जाये, तो तुम अल्लाह की याद की ओर दौड़ो[6] और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम ज्ञान रखते हो।

9. O ye who believe! When the call is heard for the prayer of the day of congregation, haste unto remembrance of Allah and leave your trading. That is better for you if ye did but know.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ
مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ
وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

१०. फिर जब 'नमाज़' पूरी हो जाये, तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो।

10. And when the prayer is ended, then disperse in the land and seek of Allah's bounty and remember Allah much, that ye may be successful.

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي
الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا
اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

४. दे० सूरा अल-माइदा आयत १८।

५. यह संकेत 'जिहाद' की ओर है। यहूदियों ने अपनी अवज्ञा से हज़रत मूसा अ० को दुःख पहुँचाया था। उन्हों ने हज़रत मूसा अ० से एक 'जिहाद' के अवसर पर कहा था कि तुम और तुम्हारा 'रब' दोनों जा कर लड़ो हम तो यहीं बैठे हैं (दे० सूरा अल-माइदा आयत २४)।

६. अर्थात् जब जुमा की 'अज़ान' हो तो कारोबार छोड़ कर अल्लाह की याद के लिए मस्जिद की ओर चल पड़ो। कुछ लोगों पर जुमा की नमाज़ वाजिब नहीं है जैसे मुसाफ़िर, बीमार और स्त्री आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. और वे कोई तिजारत या कोई तमाशा देखते हैं तो उस की ओर निकल पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ जाते हैं।[१] (हे 'नबी'!) कह दो : जो-कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और तिजारत से उत्तम है, और अल्लाह बहुत ही अच्छा रोज़ी देने वाला है।

11. But when they spy some merchandise or pastime they break away to it and leave thee standing. Say: That which Allah hath is better than pastime and than merchandise, and Allah is the best of providers.

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا
وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ
اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

———

१. यह बात उन लोगों के बारे में कही गई है जो नबी सल्ल० को छोड़ कर मस्जिद के बाहर चले गये थे जब कि नबी सल्ल० जुमा का 'खुतबा' (धार्मिक भाषण एवं उपदेश) दे रहे थे। हुआ यह कि उसी समय जब कि आप (सल्ल०) खुतबा' दे रहे थे तिजारती क़ाफ़िला मदीना में अनाज ले कर आ गया। उसके साथ नक़्क़ारा बज रहा था ताकि लोगों को क़ाफ़िले की ख़बर हो जाये। कुछ ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि यह क़ाफ़िला दहया कलबी का था। मदीना में अनाज की कमी थी। क़ाफ़िले के आने की सूचना मिलते ही बहुत से लोग उसकी ओर दौड़ पड़े। उन्हों ने यह सोचा कि 'खुतबा' का सुनना अनिवार्य नहीं है। हालांकि यह उन की भूल थी। जुमा का 'खुतबा' साधारण भाषण की तरह नहीं होता कि उस का सुनना अनिवार्य न हो।

यह आरम्भ काल की बात थी। और यह भूल भी सब से नहीं हुई। नबी सल्ल० के बड़े-बड़े साथी नक़्क़ारे की आवाज़ पर मस्जिद छोड़ कर नहीं गये बल्कि आप (सल्ल०) का 'खुतबा' सुनते रहे। आगे चल कर तो क़ुरआन में नबी सल्ल० के साथियों की यह विशेषता बयान की गई कि न अल्लाह की याद और 'नमाज़' से उन्हें तिजारत ग़ाफ़िल करती है और न सौदा करना (दे० सूरा अन-नूर आयत ३७)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३—अल-मुनाफ़िक़ून

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुनाफ़िक़ून' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है। इस सूरा का अधिकांश 'मुनाफ़िक़ों' ही के विषय में है जिस में उन की कृपणता और कपट-नीति की निन्दा की गई है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

प्रस्तुत 'सूरा' में 'मुनाफ़िक़ों' के सरदार अब्दुल्लाह इब्न उबई के कहे हुये उन अपशब्दों का का उल्लेख हुआ है[1] जो उस ने 'बनू-मुस्तलिक़' की मुहिम के अवसर पर कहे थे। इस से अनुमान होता है कि यह 'सूरा' 'बनू-मुस्तलिक़' की मुहिम के बाद ही उतरी होगी। 'बनू-मुस्तलिक़' की मुहिम सन् ६ हि० में पेश आई थी।

बनू-मुस्तलिक़ वास्तव में क़बीला ख़ुज़ाआ की एक शाखा थे। यह लाल सागर के तट पर क़ुदैद के अधिक्षेत्र में रहते थे। इस क़बीले के लोग 'मुरैसीअ' नामक स्रोत के आस-पास आबाद थे।

शाबान सन् ६ हि० में नबी सल्ल० को सूचना मिली कि बनु-मुस्तलिक़ के लोग मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाई की तैयारियों में लगे हुये हैं और दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने के लिए इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।

इस की सूचना मिलते ही नबी सल्ल० सेना ले कर उन की ओर चल पड़े। अब्दुल्लाह इब्न उबई 'मुनाफ़िक़ों' की एक बड़ी संख्या के साथ आप (सल्ल०) के साथ हो गया। 'मुरैसीअ' के स्थान पर अचानक नबी सल्ल० ने शत्रुओं को जा लिया। बनू-मुस्तलिक़ के सभी लोग क़ैद कर लिये गये। इस मुहिम के अवसर पर अब्दुल्लाह इब्न उबई ने वे अपशब्द कहे थे जिस का उल्लेख 'सूरा' की 'आयत' ८ में किया गया है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरा अल-हदीद का है।

प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने पर ज़ोर दिया गया है और 'मुनाफ़िक़ों' की उन की बुराइयों पर निन्दा की गई है। 'मुनाफ़िक़ों' में कृपणता का रोग था। दुनिया की मोह-माया में उन्हों ने अल्लाह को भुला दिया था। इस का उल्लेख इस से पहले की सूरा के अन्त में भी मिलता है।

सूरा के अन्तिम भाग में मुसलमानों को सचेत किया गया है कि वे उन अवगुणों से बचें जो 'मुनाफ़िक़ों' में पाये जा रहे हैं। उन्हें चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करें इस से पहले कि वह समय आ जाये जब कि उन्हें इस का अवसर न मिलेगा।

———

१. दे० आयत ८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुनाफ़िक़ून
(मदीना में उतरी – 'आयतें' ११)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. (हे 'नबी'!) जब 'मुनाफ़िक़' तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं : हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के 'रसूल' हैं। और अल्लाह भी जानता है तुम उस के 'रसूल' हो, और अल्लाह गवाही देता है कि 'मुनाफ़िक़' झूठे हैं[१]।

२. इन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है[२] फिर अल्लाह के मार्ग से रोका। ये लोग बहुत ही बुरा कर रहे हैं,

३. यह इस कारण है कि ये 'ईमान' लाये, फिर 'कुफ़' किया[३] तो इन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया गया[४] अब ये समझते नहीं।

४. और जब तुम इन्हें देखोगे तो इन के शरीर (बाह्य रूप) तुम्हें बहुत भले लगेंगे; और यदि ये बोलें तो तुम इन की बात पर कान धरोगे। मानो ये लकड़ियाँ हैं सहारे से खड़ी कर दी गई। कोई भी हल्ला हो उसे अपने ऊपर समझते हैं। ये पक्के दुश्मन हैं, इन से बचते रहो इन पर अल्लाह की मार पड़े! ये कहाँ से बहक जाते हैं!

५. और जब इन से कहा जाता है : आओ! अल्लाह का 'रसूल' तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे! तो ये अपने सिर मटकाते हैं और तुम देखते हो कि ये खिंचे रहते हैं और अपने को बड़ा समझते हैं।

THE HYPOCRITES
Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. When the hypocrites come unto thee (O Muhammad), they say: We bear witness that thou art indeed Allah's messenger. And Allah knoweth that thou art indeed His messenger, and Allah beareth witness that the Hypocrites are speaking falsely.

2. They make their faith a pretext so that they may turn (men) from the way of Allah. Verily evil is that which they are wont to do.

3. That is because they believed, then disbelieved, therefore their hearts are sealed so that they understand not.

4. And when thou seest them their figures please thee; and if they speak thou givest ear unto their speech. (They are) as though they were blocks of wood in strided cloaks They deem every shout to be against them. They are the enemy, so beware of them. Allah confound them! How they are perverted!

5. And when it is said unto them: Come! The messenger of Allah will ask forgiveness for you! they avert their faces and thou seest them turning away disdainful.

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ إِحْدٰى عَشْرَةَ آيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ
لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَكٰذِبُوْنَ ①

اِتَّخَذُوْٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ②

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ③

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۭ
وَإِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۭ كَأَنَّهُمْ
خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۭ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ
صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۭ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۭ
قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ④

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ
يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ⑤

१. अर्थात् ये अपने मुँह से तो कहते हैं कि तुम अल्लाह के 'रसूल' हो परन्तु वास्तव में ये तुम्हें 'रसूल' मानते नहीं।
२. अर्थात् झूठी क़समें खा-खा कर ये 'मुनाफ़िक़' लोग अपने कपट को छुपाना चाहते हैं।
३. अर्थात् माल और औलाद के मोह में पड़ कर इन्हों ने फिर 'कुफ़' अपनाया (दे० आयत ६ और १०)। 'कुफ़' से अभिप्रेत यहाँ अवज्ञा और मर्यादाओं का उल्लंघन है। वास्तव में 'ईमान' तो ये लाये ही न थे। फिर सीधी राह पर इन के आने की आशा कैसे की जा सकती है।
४. यह इन के करतूत का स्वाभाविक परिणाम था दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ४; सूरा अत – ततफ़ीफ़ आयत १४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. इन के हक़ मे वरावर है चाहे तुम इन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या इन के लिए क्षमा की प्रार्थना न करो, अल्लाह इन को कदापि क्षमा न करेगा[५]। निस्सन्देह अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को राह नहीं दिखाता।

6. Whether thou ask forgiveness for them or ask not forgiveness for them, Allah will not forgive them. Lo! Allah guideth not the evil-living folk.

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

७. ये वही लोग हैं जो कहते हैं कि उन लोगों पर जो अल्लाह के 'रसूल' के पास हैं ख़र्च न करो ताकि वे तितर-वितर हो जायें;[६] और आकाशों और धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु 'मुनाफ़िक़' समझते नहीं।

7. They it is who say: Spend not on behalf of those (who dwell) with Allah's messenger that they may disperse (and go away from you); when Allah's are the treasures of the heavens and the earth; but the hypocrites comprehend not.

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى
مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ
وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

८. कहते हैं : यदि हम मदीना वापस पहुँच गये तो जो अधिक प्रभुत्वशाली है वह (अपने से) अधिक हीन को निकाल बाहर करेगा।;[७] और प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है और उस के 'रसूल' के लिए और 'ईमान' वालों के लिए; परन्तु 'मुनाफ़िक़' जानते नहीं।

8. They say: Surely, if we return to Al-Madinah the mightier will soon drive out the weaker; when might belongeth to Allah and to His messenger and the believers; but the hypocrites know not.

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ
لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ
الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ
ع الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨

९. हे 'ईमान' लाने वालो! तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करें और न तुम्हारी औलाद[८]। और जो कोई ऐसा करेगा, तो ऐसे ही लोग घाटा उठाने वाले हैं।

9. O ye who believe! Let not your wealth nor your children distract you from remembrance of Allah. Those who do so, they are the losers.

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ
وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩

१०. और जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से ख़र्च करो इस से पहले कि तुम में से किसी की मृत्यु आ जाये फिर वह कहे : 'रब'! तू ने मुझे थोड़ी सी मुहलत और दी होती कि मैं 'सदक़ा' दे लेता और मैं अच्छे लोगों में से हो जाता।

10. And spend of that wherewith We have provided you before death cometh unto one of you and he saith: My Lord! If only Thou wouldst reprieve me for a little while, then I would give alms and be among the righteous.

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ
فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠

११. और अल्लाह किसी को जब कि उस का समय आ जाये कदापि मुहलत नहीं देगा, और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखता है।

11. But Allah reprieveth no soul when its term cometh, and Allah is Aware of what ye do.

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ
ع وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١١

———

५. दे० सूरा मुहम्मद आयत ३४।

६. नवी सल्ल० और मक्का से 'हिजरत' कर के आने वाले मुसलमानों को 'अनसार' के बाग़ों में चलते-फिरते देख कर 'मुनाफ़िक़' जलते थे। अब्दुल्लाह इब्न उबई जो 'मुनाफ़िक़ों' का सरदार था कहा करता था कि ये 'क़ुरैश' के फ़क़ीर हमारे देश में आ कर फल-फूल गये हैं। वह 'अनसार' से कहता : तुम ने इन्हें अपने सिर चढ़ा लिया है। अपने देश में इन्हें जगह दी और अपने माल में इन्हें हिस्सा दिया। क़सम अल्लाह की यदि आज तुम इन से हाथ रोक लो तो ये स्वयं तंग आ कर मदीना से निकल भागेंगे। इन की बातों का जवाब आगे इन शब्दों में दिया गया : आकाशों और धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं परन्तु ये 'मुनाफ़िक़' समझते नहीं।

७. यह बात अब्दुल्लाह इब्न उबई ने बनू-मुस्तलिक़ की मुहिम के अवसर पर कही थी (दे० सूरा का परिचय)।

८. दे० सूरा अल-हश्र आयत १९।

यहाँ 'ईमान' वालों को उन बातों की ओर से सचेत किया गया है जिन के कारण 'मुनाफ़िक़' 'कुफ़्र' में जा पड़े हैं। सांसारिक मोह-माया में पड़ कर 'मुनाफ़िक़ों' ने अपनी 'नमाज़' गँवाई; हृदय की विनम्रता नष्ट हुई तो उन के दिलों में कृपणता की भावना भर गई। यही दशा 'यहूद' की भी थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४–अत-तग़ाबुन

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तग़ाबुन' सूरा की 'आयत' ६ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

कुछ लोगों का विचार है कि प्रस्तुत 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण हुई है परन्तु अधिकतर लोगों के विचार में यह सूरा मदीना में उतरी है। अनुमान है कि यह मदीना की बिल्कुल आरम्भिक 'सूरा' है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय इस 'सूरा' का वही है जो सूरा अल-हदीद का है। इस सूरा में अल्लाह के मार्ग में खर्च करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है (दे० आयत ६-१८)।

'सूरा' के आरम्भ में कहा गया है कि सारा संसार अल्लाह की 'तसबीह' करता है। राज्य उसी का है समस्त प्रशंसायें उसी के लिए हैं; वह सर्वशक्तिमान् हैं। तुम्हारा सृष्टिकर्त्ता वही है परन्तु तुम हो कि दो वर्गों में विभक्त हो। तुम में जहाँ 'ईमान' वाले हैं वहीं ऐसे लोग भी हैं जिन्हों ने 'कुफ़्र' की नीति अपना रक्खी है। अल्लाह ने इस संसार को निरुद्देश्य नहीं बनाया है और न मनुष्यों को उस ने निरुद्देश्य पैदा किया है। इस से पहले जिन लोगों ने 'कुफ़्र' की नीति अपनाई है और अल्लाह के 'रसूलों' को मानने से इन्कार किया है वे अपने करतूतों का मज़ा दुनिया में भी चख चुके हैं और 'आखिरत' में ऐसे लोगों के लिए दुःख भरी यातना है।

इस के बाद 'काफ़िरों' की इस धारणा का कि मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन नहीं है तर्क-युक्त खण्डन किया गया है। फिर लोगों को निमंत्रित किया गया है कि वे अल्लाह और उस के 'रसूल' पर और उस प्रकाश पर 'ईमान' लायें जो अल्लाह ने अपने बन्दों के पथ-प्रदर्शन के लिए उतारा है। और फिर 'आख़िरत' का हाल बयान हुआ है।

आगे चल कर बताया गया है कि जो मुसीबत भी आती है वह अल्लाह ही के हुक्म से आती है। अल्लाह ऐसे लोगों के दिल को राह दिखा देता है जो उस पर 'ईमान' रखते हैं। अल्लाह से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है।

फिर 'ईमान' वालों को सावधान किया गया है कि अपनी स्त्री हो या औलाद जो भी आदमी को उस के 'रब' से ग़ाफ़िल करे और अल्लाह की राह में बाधक बने वह दुश्मन है। अतः उस से सदा सतर्क रहना चाहिए :

'सूरा' के अन्तिम भाग में 'सूरा' के केन्द्रीय विषय को खुले शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। कहा गया है कि अल्लाह का डर रक्खो जहाँ तक तुम से हो सके। सुनो और कहना मानो और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो। सफलता प्राप्त करने वाले वही हैं जिन में लोभ की बीमारी नहीं है। जो कुछ तुम खर्च करोगे वह अकारथ नहीं जायेगा अल्लाह उसे कई गुना कर के लौटायेगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तग़ाबुन
(मदीना में उतरी—'आयतें' १८)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. अल्लाह की 'तसबीह' करता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ भी धरती में है; उसी का राज्य है और उसी की प्रशंसा है, और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

२. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर कोई तुम में से 'काफ़िर' है और कोई तुम में से 'ईमान' वाला है, और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह देखता है।

३. उस ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया,[१] और तुम्हारा रूप बनाया तो तुम्हें अच्छा सा रूप दिया, और उसी की ओर पहुँचना है[२]।

४. वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है, और जानता है जो कुछ तुम छिपाये रखते हो और जो कुछ खोल देते हो। और अल्लाह सीनों (दिलों) की बात जानता है।

५. क्या तुम्हें उन लोगों (के वृत्तान्त) की खबर नहीं पहुँची जिन्हों ने पूर्वकाल में 'कुफ़्' किया तो उन्हों ने अपनी नीति का मज़ा चख लिया, और उन के लिए दुःख भरी यातना है।

६. यह इस कारण कि उन के पास उन के 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण ले कर आते थे तो वे कहते : क्या मनुष्य हमें मार्ग दिखायेंगे[३]! तो उन्हों ने 'कुफ़्' किया और मुँह मोड़ा, अल्लाह को परवा न हुई। और अल्लाह अपेक्षारहित और प्रशंसा का अधिकारी है।

MUTUAL DISILLUSION

Revealed at Al-Madinah

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. All that is in the heavens and all that is in the earth glorifieth Allah; unto Him belongeth sovereignty and unto Him belongeth praise, and He is Able to do all things.

2. He it is who created you, but one of you is a disbeliever and one of you is a believer, and Allah is Seer of what ye do.

3. He created the heavens and the earth with truth, and He shaped you and made good your shapes, and unto Him is the journeying.

4. He knoweth all that is in the heavens and all that is in the earth, and He knoweth what ye conceal and what ye publish. And Allah is Aware of what is in the breasts (of men)!

5. Hath not the story reached you of those who disbeleived of old and so did taste the ill-effects of their conduct, and theirs will be a painful doom.

6. That was because their messengers (from Allah) kept coming unto them with clear proofs (of Allah's sovereignty) but they said: Shall mere mortals guide us? So they disbelieved and turned away, and Allah was Independent (of them). Allah is Absolute, Owner of Praise.

سورة التغابن مدنية وهي ثماني عشرة آية وفيها ركوعان

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ
مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ②

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ
فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ
فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑤

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَقَالُوْا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا
وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑥

१. अर्थात् विश्व की रचना उस ने निरुद्देश्य कदापि नहीं की है।

२. जब उस ने तुम्हारे शारीरिक रंग-रूप को सुन्दरता प्रदान की है तो फिर यह कैसे हो सकता है कि वह तुम्हें आत्मिक एवं आन्तरिक सौन्दर्य से वंचित रक्खे। अतः अवश्य तुम्हारे जीवन का लक्ष्य महान् और शोभामय होगा। मनुष्य के वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति अपने 'रब' से मिल कर ही हो सकती है।

३ अर्थात् हम तो मनुष्य को अल्लाह का भेजा हुआ नहीं मान सकते, हमारे पास तो कोई अलौकिक हस्ती को 'रसूल' बन कर उतरना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. 'कुफ़्र' करने वालों का कहना है कि वे (मृत्यु के पश्चात्) कदापि उठाये नहीं जायेंगे। कह दो : क्यों नहीं, क़सम है मेरे 'रब' की तुम अवश्य उठाये जाओगे फिर जो कुछ तुम ने किया है वह तुम्हें जता दिया जायेगा; और यह अल्लाह के लिए सरल बात है।

7. Those who disbelieve assert that they will not be raised again. Say (unto them, (O Muhammad): Yea, verily, by my Lord! ye will be raised again and then ye will be informed of what ye did; and that is easy for Allah.

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑦

८. तो 'ईमान' लाओ अल्लाह और उसके 'रसूल' पर और उस प्रकाश पर जिसे हम ने उतारा है। और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है[४]।

8. So believe in Allah and His messenger and the light which We have revealed. And Allah is Aware of what ye do.

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑧

९. [५]इकट्ठा होने के दिन जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वही दिन है हार-जीत का[६]। और जो कोई अल्लाह पर 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म करे, वह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे ऐसे उद्यानों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे अनन्त तक। यही बड़ी सफलता है।

9. The day when He shall gather you unto the Day of Assembling, that will be a day of mutual disillusion And whoso believeth in Allah and doth right, He will remit from him his evil deeds and will bring him into Gardens underneath which rivers flow, therein to abide for ever. That is the supreme triumph.

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑨

१०. और जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया, वे लोग आग में रहने वाले हैं; जिस में वे सदा रहेंगे— और वह बहुत बुरी जगह है पहुँचने की!

10. But those who disbelieve and deny Our revelations, such are owners of the Fire; they will abide therein— a hapless journey's end!

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑩

११. कोई भी मुसीबत अल्लाह की अनुज्ञा के बिना नहीं आती। और जो कोई अल्लाह पर 'ईमान' लाये, वह उस के दिल को राह दिखा देगा। और अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

11. No calmity befalleth save by Allah's leave. And whosoever believeth in Allah, He guideth his heart. And Allah is Knower of all things.

مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑪

१२. अल्लाह की आज्ञा मानो, और 'रसूल' की आज्ञा मानो; और यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो हमारे 'रसूल' के ज़िम्मे बस साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है।

12. Obey Allah and obey His messenger; but if ye turn away, then the duty of Our messenger is only to convey (the message) plainly.

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ⑫

१३. अल्लाह है उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं। और अल्लाह ही पर 'ईमान' वालों को भरोसा रखना चाहिए।

13. Allah! There is no God save Him. In Allah, therefore, let believers put their trust.

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑬

४. इस 'आयत' में बड़ी व्यापकता है आगे जो कुछ बयान हुआ है उस के लिए यह आयत प्राक्कथन की हैसियत रखती है।
५. यहाँ से ले कर 'आयत' १८ तक लोगों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर उभारा गया है।
६. अर्थात् 'आख़िरत' का दिन ही वास्तव में घाटे और प्राप्ति का दिन है। उस दिन जो घाटे में रहा उसी का जीवन अकारथ गया। और उस दिन की प्राप्ति ही वास्तव में लाभ और प्राप्ति है। कितने इस लोक में सुख भोगने वाले उस दिन नरकगामी होंगे और कितने ही ऐसे लोग जिन की दशा इस वर्तमान जीवन में दयनीय रही वे वहाँ सुख और आनन्द भरी 'जन्नतों' में वास करेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४, हे 'ईमान' लाने वालो ! निश्चय ही तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलाद में ऐसे लोग भी हैं जो तुम्हारे शत्रु हैं,[७] तो उन से बच कर रहो। और यदि तुम माफ़ कर दो और छोड़ दो और क्षमा कर कर दो[८] तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

14. O ye who believe! Lo! among your wives and your children there are enemies for you, therefor beware of them And if ye efface and overlook and forgive then lo! Allah is Forgiving Merciful.

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِنَّ مِنْ أَزْوَٰجِكُمْ
وَأَوْلَٰدِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَٱحْذَرُوهُمْ
وَإِن تَعْفُواْ وَتَصْفَحُواْ وَتَغْفِرُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾

१५. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो बस आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा बदला है।

15. Your wealth and your children are only a temptation, whereas Allah! with Him is an immense reward.

إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَٱللَّهُ
عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

१६. तो जहाँ तक हो सके अल्लाह का डर रक्खो, और (उस का हुक्म) सुनो, और मानो, और ख़र्च करो कि तुम्हारा भला हो। और जो कोई अपने मन के लोभ से बचा रहे, तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

16. So keep your duty to Allah as best ye can, and listen, and obey, and spend; that is better for your souls. And whoso is saved from his own greed, such are the successful.

فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ مَا ٱسْتَطَعْتُمْ وَٱسْمَعُواْ وَأَطِيعُواْ
وَأَنفِقُواْ خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ ۗ وَمَن يُوقَ شُحَّ
نَفْسِهِۦ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾

१७. यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़ दो, अच्छा क़र्ज़, तो वह तुम्हारे लिए उसे कई गुना कर देगा, और तुम्हें क्षमा कर देगा, अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला (गुणग्राहक) और सहनशील है।

17. If ye lend unto Allah a goodly loan, He will double it for you and will forgive you, for Allah is Responsive, Clement.

إِن تُقْرِضُواْ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعِفْهُ
لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾

१८. परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी।

18. Knower of the invisible and the visible, the Mighty, the Wise.

عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

* * *

———

७. अर्थात् उन की पत्नी या औलाद यदि अल्लाह को आज्ञा के पालन में रुकावट बनती है तो वास्तव में वह दुश्मन है। अल्लाह का आदेश है कि उस के मार्ग में माल ख़र्च किया जाये परन्तु औलाद या स्त्रियाँ यदि कृपणता पर उभारती हैं तो उन का यह व्यवहार मित्रता का नहीं दुश्मनी का है।

८. अर्थात् उन की निर्बल भावना के कारण क्रुद्ध न हो। क्षमा से काम लो और नर्मी से उन्हें राह पर लाने की कोशिश करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५—अत-तलाक़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' में आयत १ से ७ तक तलाक़ (Divorce) के सम्बन्ध में कुछ आदेश दिये गये हैं इसी सम्पर्क से प्रस्तुत सूरा का नाम 'अत-तलाक़' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह 'सूरा' सन् ६ हिज० में या इस से कुछ ही पहले अवतीर्ण हुई होगी।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय इस 'सूरा' का वही है जो सूरा अल-हदीद का है। 'अल्लाह की आज्ञा का पालन करना, उस के दामन को मज़बूती से पकड़े रहना और उस पर पूरा भरोसा रखना' यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है। यही वह चीज़ है जिसे 'तक़्वा' (ईश-भय) और धर्म-परायणता कहते हैं। 'तक़्वा' का उल्लेख प्रस्तुत सूरा में बार-बार किया गया है।

'सूरा' के आरम्भ में आयत १ से ७ तक 'तलाक़' और उस से सम्बन्धित दूसरी समस्याओं के प्रति आदेश दिये गये हैं। 'तलाक़' के सम्बन्ध में सूरा अल-अहज़ाब और अल-बक़रा में भी कुछ आदेश दिये गये हैं। प्रस्तुत सूरा में आदेश ही नहीं दिये गये हैं बल्कि उन के पालन करने पर विभिन्न रूप से लोगों को उभारा भी गया है। बताया गया है कि अल्लाह तुम पर उतना ही बोझ डालता है जो तुम सहार सको। 'इद्दत' की हिकमत और हेतु का उल्लेख किया गया है और अल्लाह का डर रखने वालों से ऐसी सुविधा, कुशादगी और रोज़ी का वादा किया गया है जिस की वे पहले से कल्पना भी नहीं कर सकते।

आगे चल कर पिछली जातियों के बुरे परिणाम की ओर संकेत करते हुये 'ईमान' वालों को सतर्क रहने का हुक्म दिया गया है। फिर अल्लाह ने अपने इस महान् उपकार का उल्लेख किया है कि उस ने अपना 'ज़िक्र' और 'रसूल' भेजा ताकि लोगों को अँधियारियों से प्रकाश की ओर ले जाये। फिर 'ईमान' वालों को सदा बहार 'जन्नत' की शुभसूचना दी गई है।

'सूरा' को समाप्त करते हुये अल्लाह की शक्ति और उस के ज्ञान का स्मरण कराया गया है। बताया गया कि उसी का हुक्म आकाशों और धरती में चल रहा है। वह सर्वशक्तिमान् है और अपने ज्ञान से हर चीज़ को अपने घेरे में लिये हुये है। इन सारी बातों का अर्थ यही है कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और उस का डर रखना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। उसे अल्लाह से अपना नाता मज़बूत रखना चाहिए और उसी पर उस का भरोसा होना चाहिए।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तलाक़
(मदीना में उतरी—'आयतें' १२)

DIVORCE.
Revealed at Al-Madinah

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे 'नवी' ! जब तुम लोग स्त्रियों को 'तलाक़' दो,[१] तो उन्हें 'तलाक़' उन की 'इद्दत' के समय पर दो[२] और 'इद्दत' का पूरा ख़याल रक्खो, और अल्लाह, अपने 'रब' का डर रक्खो। तुम उन को उन के घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें[३] सिवाय इस के कि वे प्रत्यक्ष अश्लील कर्म कर बैठें। और ये अल्लाह की निश्चित की हुई सीमायें हैं—और जो कोई अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़े, तो उस ने अपने आप पर ज़ुल्म किया—तू नहीं जानता कदाचित् अल्लाह इस (तलाक़) के पश्चात् कोई नई बात पैदा कर दे[४]।

1. O Prophet! When ye (men) put away women, put them away for their (legal) period and reckon the period, and keep your duty to Allah, Your Lord. Expel them not from their houses nor let them go forth unless they commit open immorality. Such are the limits (imposed by) Allah; and whoso transgresseth Allah's limits, he verily wrongeth his soul. Thou knowest not: it may be that Allah will afterward bring some new thing to pass.

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ
فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ
مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ
يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ
حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ
يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝١

२. फिर, जब वे (तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ) अपनी निश्चित अवधि ('इद्दत') को पहुँच जायें, तो या तो उन्हें भली रीति से रोक लो या उन्हें भली रीति से अलग कर दो, और अपने में से दो न्यायी व्यक्तियों को गवाह कर लो, और अल्लाह के लिए गवाही को दुरुस्त रक्खो। इस की नसीहत हर उस व्यक्ति को की जाती है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर[५] 'ईमान' रखता हो। और जो कोई अल्लाह का डर रक्खेगा अल्लाह उस के लिए निकलने की राह पैदा कर देगा[६],

2. Then, when they have reached their term, take them back in kindness or part from them in kindness, and call to witness two just men among you, and keep your testimony upright for Allah. Whoso believeth in Allah and the Last Day is exhausted to act thus, And whosoever keepeth his duty to Allah, Allah will appoint a way out for him:

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢

३ और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ का उसे गुमान भी न होगा।

3. And will provide for him from (a quarter) whence he hath no expectation. And

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ

१. 'नबी' सल्ल० को सम्बोधित कर के यह बात वास्तव में सारे मुसलमानों से कही जा रही है।
२. अर्थात् 'तलाक़' देने का निश्चय कर लो तो उन की 'इद्दत' (Legal period) का ध्यान रखते हुये तलाक़ दो। जब वे माहवारी से पाक हों उस समय उन्हें तलाक़ दो ताकि वे माहवारी से 'इद्दत' शुरू करें और तीन माहवारियों के बाद उन की 'इद्दत' पूरी हो जाये। 'लौंडी' (बाँदी) की 'इद्दत' की मुद्दत रजवती होने की अवस्था में दो माहवारी है और माहवारी न होने पर केवल डेढ़ महीने की मुद्दत है।
३. दे० सूरा अल-बक़रा आयत २२८।
४. अर्थात् हो सकता है कि अल्लाह तलाक़ के बाद तुम्हारे बीच फिर मेल करा दे। या तुम्हें तलाक़ देने पर अफ़सोस हो और तुम रुजू कर लो। यह भी सम्भव है कि यदि तंगी के कारण तलाक़ दिया है तो अल्लाह रोज़ी में कुशादगी पैदा कर दे। इसी लिए यह हुक्म दिया गया कि 'इद्दत' की जो मुद्दत है (तीन महीने) इस मुद्दत में स्त्री को अपने घर से न भेजो बल्कि साथ रक्खो, सम्भव है दिल मिलने की कोई शक्ल पैदा हो जाये।
५. दे० सूरा अल-बक़रा.फुटनोट ५।
६. अल्लाह उस के लिए कठिनाइयों से निकलने की कोई राह निकाल देगा।
७. आयत २ और ३ से मालूम होता है कि तलाक़ की नौबत अधिकतर ग़रीबी और तंगी के कारण आती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और जो क़ोई अल्लाह पर भरोसा रक्खे तो वह (अल्लाह) उस के लिए बहुत है। निस्सन्देह अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहरा रक्खा है।

whosoever putteth his trust in Allah, He will suffice him. Lo! Allah bringeth His command to pass. Allah hath set a measure for all things.

يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ
اَمْرِهٖ ۭ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

४. और तुम्हारी स्त्रियों में से जो (बड़ी आयु हो जाने के कारण) ऋतु-स्राव से निराश हो गई हों, यदि तुम्हें दुविधा है,[८] तो उन की 'इद्दत' तीन मास है, ऐसे ही उन की भी जो अभी रजस्वला नहीं हुईं।

और जो गर्भवती स्त्रियां हों उन की 'इद्दत' बच्चा जनने तक है[९]। और जो कोई अल्लाह का डर रक्खेगा, तो वह (अल्लाह) उस के काम में आसानी कर देगा।

4. And for such of your women as despair of menstruation, if ye doubt, their period (of waiting) shall be three months, along with those who have it not. And for those with child, their period shall be till they bring forth their burden. And whosoever keepeth his duty to Allah, He maketh his course easy for him.

وَالّٰۗـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ
اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰۗـِٔيْ
لَمْ يَحِضْنَ ۭ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ
اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ④

५. यह अल्लाह का आदेश है जो उस ने तुम्हारी ओर उतारा है और जो कोई अल्लाह का डर रक्खेगा, तो वह (अल्लाह) उस की बुराइयों को उस से दूर कर देगा। और उसे बड़ा बदला प्रदान करेगा।

5. That is the commandment of Allah which He revealeth unto you. And whoso keepeth his duty to Allah, He will remit from him his evil deeds and magnify reward for him.

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ
اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ⑤

६. उन्हें ('तलाक़' पाई हुई स्त्रियों को) रहने को दो अपनी हैसियत के अनुसार जिस तरह तुम रहते हो, और उन्हें तकलीफ़ न पहुँचाओ कि उन के लिए रहना दूभर कर दो। और यदि वे गर्भवती हों, तो उन के बच्चा जनने तक उन पर ख़र्च करते रहो। फिर, यदि वे तुम्हारे लिए (तुम्हारे बच्चे को) दूध पिलायें, तो तुम उन्हें उन की उजरत दो और परस्पर बात-चीत करके भली रीति से कुछ तै कर लो; और यदि तुम में आपस में न पट सकी, तो उस (बच्चे के बाप) के लिए कोई दूसरी स्त्री दूध पिला देगी।

6. Lodge them where ye dwell, according to your wealth, and harass them not so as to straiten life for them. And if they are with child, then spend for them till they bring forth their burden. Then, if they give suck for you, give them their due payment and consult together in kindness; but if ye make difficulties for one another, then let some other woman give suck for him (the father of the child).

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ
وَلَا تُضَاۗرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۭ وَاِنْ
كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ
وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۭ ⑥

७. समाई रखने वाले अपनी समाई के अनुसार ख़र्च करें, और जिस किसी को रोज़ी नपी-तुली दी गई हो, तो उसे अल्लाह ने जो-कुछ दिया है वह उस के अनुसार ख़र्च करे। जितना कुछ दिया है उससे बढ़ कर अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। अल्लाह जल्द ही तंगी के बाद आसानी कर देगा।

7. Let him who hath abundance, spend of his abundance, and he whose provision is measured, let him spend of that which Allah hath given him. Allah asketh naught of any soul save that which He hath given it. Allah will vouchsafe, after hardship, ease.

لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَمَنْ قُدِرَ
عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۭ
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۭ
ع سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ⑦

८ अर्थात् यदि तुम्हें उन की 'इद्दत निश्चित करने में दुविधा है।
९. बच्चा पैदा होने के बाद उन की 'इद्दत' पूरी हो जायेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. और कितनी ही बस्तियों ने पूरी ढिठाई के साथ अपने 'रब' के और उस के 'रसूलों' के हुक्म की अवहेलना की, तो हम ने उन से सख़्त हिसाब लिया और उन्हें यातना दी बड़ी बेढब यातना,

8. And how many a community revolted against the ordinance of its Lord and His messengers, and we called it to a stern account and punished it with dire punishment

وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَٰهَا حِسَابًا شَدِيدًا
وَعَذَّبْنَٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ⑧

९. तो उन्हों ने अपनी नीति का मज़ा चख लिया, और उन की नीति का परिणाम घाटा रहा।

9. So that it tasted the ill effects of its conduct, and the consequence of its conduct was loss.

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَٰقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ⑨

१०. अल्लाह ने उन के लिए कठोर यातना तैयार कर रक्खी है; तो अल्लाह का डर रक्खो, हे बुद्धि वालो जो 'ईमान' लाये हो! अल्लाह ने तुम्हारी ओर 'ज़िक्र' उतार दिया है,

10. Allah hath prepared for them stern punishment; so keep your duty to Allah, O men of understanding! O ye who believe! Now Allah hath sent down unto you a reminder:

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَٰأُولِي الْأَلْبَٰبِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ
قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩

११. एक 'रसूल' है जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली 'आयतें' सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये अँधियारियों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले आये। और जो कोई अल्लाह पर 'ईमान' लायेगा और अनुकूल कर्म करेगा उसे वह ऐसे उद्यानों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे अनन्त तक। अल्लाह ने उस के लिए बहुत ही अच्छी रोज़ी रक्खी है।

11. A messenger reciting unto you the revelations of Allah made plain, that He may bring forth those who believe and do good works from darkness unto light. And whosoever believeth in Allah and doth right, He will bring him into Gardens underneath which rivers flow, therein to abide for ever. Allah hath made good provision for him.

رَّسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَٰتِ اللَّهِ مُبَيِّنَٰتٍ
لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ
مِنَ الظُّلُمَٰتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَن يُؤْمِن
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَٰلِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ⑪

१२. अल्लाह ही है जिस ने सात आकाश पैदा किये, और उन्हीं की तरह (कई) धरती भी। उन के बीच (उस का) आदेश उतरता रहता है,[१०] इस से तुम जान लोगे कि अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है, और यह कि ज्ञान की दृष्टि से अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुये है।

12. Allah it is Who hath created seven heavens, and of the earth the like thereof. The commandment cometh down among them slowly, that ye may know that Allah is Able to do all things, and that Allah surroundeth all things in knowledge.

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ وَمِنَ
الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ
لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ⑫

———

१०. उसी का हुक्म आकाशों और धरती में चल रहा है। वही इस विशाल कारख़ाने का चालक है। उसे हर चीज़ का ज्ञान है। उसी को यह हक़ पहुँचता है कि वह लोगों को जीवन का सच्चा मार्ग दिखाये और उन्हें धर्म-विधान और क़ानून दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६६—अत-तहरीम

(परिचय)

नाम (The title)

प्रस्तुत 'सूरा' का नाम 'अत-तहरीम' (Banning) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह 'सूरा' सन् ७ हिज० में उतरी है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

केन्द्रीय विषय इस 'सूरा' का वही है जो सूरा अल-हदीद का है। सूरा अल-हदीद से उन 'सूरतों' का सिलसला शुरू हुआ है जिन को अल्लाह ने मुसलमानों के व्यक्तिगत और सामाजिक सुधार और शुद्धता के लिए उतारा है, प्रस्तुत सूरा इस सिलसिले की अन्तिम कड़ी है, इस के अतिरिक्त जिन 'सूरतों में नियम और धर्म-विधान का उल्लेख हुआ है उन में यह अन्तिम सूरा है।

इन दसों 'सूरतों' में जो अल-हदीद से प्रारम्भ हो कर सूरा अत-तहरीम पर समाप्त होती हैं इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपना, अपने लोगों और अपने परिवार की जाँच और अवलोकन करते रहना चाहिए। 'आख़िरत' में कोई किसी का बोझ न उठा सकेगा। प्रस्तुत सूरा से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम बिल्कुल सख़्ती के साथ अपनी और उन लोगों की जाँच करते रहें जो हम से सम्बन्ध रखते हों। सूरा का प्रारम्भ नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुए किया गया है और आप (सल्ल०) की पकड़ एक ऐसी बात पर हुई है जो अत्यन्त साधारण सी प्रतीत होती है। इस से मालूम होता है कि 'दीन' (धर्म) के मामले में मनुष्य को बहुत ही सतर्क रहना चाहिए।

फिर सामान्य रूप से सभी मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए ताकीद की गई है कि वे अपने लोगों और अपने परिवार की ओर से असावधान न हों। उन का कर्त्तव्य है कि वे उन लोगों को जो उन से सम्बन्ध रखते हैं 'जहन्नम' की आग और 'आख़िरत' के बुरे परिणाम से बचाने की कोशिश करें।

फिर 'नबी' सल्ल० को शुभ सूचना दी गई है कि अल्लाह आप (सल्ल०) को और आप के साथियों को 'आख़िरत' में रुसवा नहीं करेगा। अल्लाह को यह अभीष्ट नहीं है कि वह लोगों को तंगी में डाले वल्कि वह तो यह चाहता है कि लोगों को पाक और शुद्ध करके उन्हें पूर्ण रूप से अपनी दयालुता की छाया में ले ले।

फिर इस के बाद 'नबी' सल्ल० को हुक्म दिया गया है कि आप (सल्ल०) 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' के साथ 'जिहाद' करें और उन के साथ सख़्ती का मामला करें ताकि उन में जिन को 'तौबा' करनी हो वह इसी जीवन में तौबा कर लें और 'आख़िरत' की यातना से छुटकारा पा लें। इस तरह खरा और खोटा बिल्कुल अलग-अलग हो जाये।

'सूरा' के अन्त में चार मिसालें पेश की गई हैं जो वास्तव में इस बात को प्रमाणित करती हैं कि मनुष्य अपने कर्मों का स्वय उत्तरदायी है। 'आख़िरत' में रिश्ता-नाता काम नहीं आ सकता। वहाँ जो चीज़ काम आने वाली है वह है आदमी का अपना 'ईमान' और उस का कर्म। सफलता और विजय उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है जो सुकर्मी होते हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तहरीम

(मदीना में उतरी—'आयतें' १२)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. हे 'नबी'! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए 'हलाल' किया है उसे अपनी पत्नियों को खुश करने के लिए क्यों 'हराम' करते हो[१]? और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है।

२. अल्लाह ने तुम पर तुम्हारी क़समों को खोलना जरुरी कर दिया है,[२] और अल्लाह तुम्हारा करता-धरता है। और वह ज्ञान वाला और तत्वदर्शी है।

३. और जब 'नबी' ने अपनी पत्नियों में से किसी से चुपके से एक बात कही फिर जब उस ने उस की खबर कर दी[३] और अल्लाह ने उसे उस पर ('नबी' पर) ज़ाहिर कर दिया,[४] तो उस ने उस का कुछ हिस्सा जता दिया और कुछ को टाल गया[५]। तो जब उस ने ('नबी' ने) उसे इस की खबर की तो वह बोली: आप को इस की खबर किस ने दी? कहा: मुझे खबर दी ज्ञान रखने वाले और खबर ... वाले (अल्लाह) ने।

BANNING

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. O Prophet! Why bannest thou that which Allah hath made lawful for thee, seeking to please thy wives? And Allah is Forgiving, Merciful

2. Allah hath made lawful for you (Muslims) absolution from your oaths (of such a kind), and Allah is your Protector. He is the Knower, the Wise.

3. When the Prophet confided a fact unto one of his wives and when she afterward divulged it and Allah apprised him thereof, he made known (to her) part thereof and passed over part. And when he told her she said: Who hath told thee? He said: The Knower, the Aware hath told me.

سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ
لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ
حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ
عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ
قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③

१. ऐतिहासिक कथनों और इस सूरा की आयतों पर विचार करने से अनुमान होता है कि नबी सल्ल० की पत्नियों को या आप (सल्ल०) की किसी एक पत्नी को कोई चीज़ पसन्द नहीं थी। हो सकता है कि वह शहद (मधु) रहा हो जैसा कि कथनों (Traditions) से मालूम होता है। शहद की कुछ क़िसमें गन्ध और स्वाद में ऐसी होती हैं कि हर व्यक्ति उन्हें पसन्द नहीं कर सकता। नबी सल्ल० शहद को पसन्द करते थे परन्तु जब आप (सल्ल०) को मालम हुआ कि आप (सल्ल०) की पत्नियों में कुछ को शहद पसन्द नहीं है, तो आप (सल्ल०) ने भी इस खयाल से कि कहीं उन्हें तकलीफ़ न पहुँचे शहद का सेवन छोड़ दिया। इस पर अल्लाह ने क़सम तोड़ने का हुक्म दिया जैसा कि आगे आ रहा है। अल्लाह को यह बात पसन्द न थी कि एक हलाल और जायज़ चीज़ से नबी सल्ल० या आप (सल्ल०) के साथी बाज़ रहें इस लिए कि आप (सल्ल०) का तरीक़ा बाद में आने वालों के लिए नमूना बन सकता था।

२. अर्थात् तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि ऐसी क़समों को तोड़ दो।

३. यह पहले से मिलता-जुलता दूसरा वाक़आ है। इस आयत से मालूम होता है कि नबी सल्ल० अत्यन्त सुशील थे। आप (सल्ल०)
अपनी पत्नियों का मन रखते थे। जो व्यक्ति अपनी अर्द्धाङ्गिनी को अपने मन की बात नहीं बताता वास्तव में वह उसका मान
घटाता है। आप (सल्ल०) ने अपनी जिन पत्नी से चुपके से कोई बात कही थी उन्हों ने उसे छुपाया नहीं बल्कि अपनी सपत्नी से
कह दिया। इस पर अल्लाह ने उन्हें सचेत किया है। आप (सल्ल०) की पत्नियों में परस्पर बड़ा मेल-मिलाप था। हज़रत
आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ि० के बीच तो विशेष रूप से मेल-जोल और प्रेम-भाव पाया जाता था। यह प्रेम ही था जिस
के कारण एक ने दूसरे से यह बात कह दी जो कहने की नहीं थी। यह वास्तव में एक चूक थी जो उन से हो गई इस के पीछे कोई
छल-कपट या और कोई बुरी भावना नहीं काम कर रही थी।

४. अर्थात् अल्लाह ने नबी सल्ल० को इस की खबर कर दी कि तुम्हारी पत्नी ने यह बात दूसरे से कह दी जो तुम ने उसे बताई थी।

५. आप (सल्ल०) ने अपनी पत्नी को नसीहत करने में सख्ती से काम नहीं लिया केवल इशारा कर दिया कि तुम ने मेरी बात को छुपाया नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. यदि तुम दोनों अल्लाह की ओर रुजू हो, तो क्या है तुम्हारे दिल तो झुक चुके हैं,[६] और यदि तुम उस के विरुद्ध एका करोगी तो अल्लाह है उस का साथी, और 'जिबरील' और नेक 'ईमान' वाले और 'फ़िरिश्ते' इस के साथ-साथ उस के सहायक हैं[७]।

4. If ye twain turn unto Allah repentant, (ye have cause to do so) for your hearts desired (the ban); and if ye aid one another against him (Muhammad) then lo! Allah, even He, is his protecting Friend, and Gabriel and the righteous among the believers; and furthermore the angels are his helpers.

إِن تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِن تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ④

५. उस के 'रब' को क्या देर लगेगी यदि वह तुम्हें 'तलाक़' दे दे इस में कि वह तुम्हारे बदले तुम से अच्छी पत्नियाँ उसे प्रदान करे,[८] 'मुस्लिम,' 'ईमान' वाली, भक्ति और विनय-भाव से रहने वाली, 'तौबा' करने वाली, 'इबादत' करने वाली, 'सियाहत' करने वाली,[९] पति से परिचित (अर्थात् विधवा आदि) और कुमारियाँ।

5. It may happen that his Lord, if he divorce you, will give him in your stead wives better than you, submissive (to Allah), believing, pious penitent, inclined to fasting, widows and maids.

عَسَىٰ رَبُّهُ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ⑤

६. [१०]हे 'ईमान' लाने वालो! अपने आप को और अपने लोगों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जिस पर कठोर और प्रबल 'फ़िरिश्ते' नियुक्त हैं, वे अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते जो हुक्म भी वह उन्हें दे, और करते हैं जो कुछ कि उन्हें हुक्म दिया जाये।

6. O ye who believe! Ward off from yourselves and your families a Fire whereof the fuel is men and stones, over which are set angels strong, severe, who resist not Allah in that which He commandeth them, but do that which they are commanded.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ⑥

७. हे 'कुफ़्' करने वालो! आज उज्र पेश न करो। तुम तो बस उसी का बदला पाओगे जो करते थे।

7. (Then it will be said): O ye who disbelieve! Make no excuses for yourselves this day. Ye are only beeings paid for what ye used to do.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑦ ع

६. इस में आप (सल्ल०) की पत्नियों हज़रत आइशा (रज़ि०) और हज़रत हफ़सा (रज़ि०) की 'तौबा' का उल्लेख किया गया है।

७. नबी सल्ल० ने अपनी पत्नी की उस भूल पर जिसका उल्लेख ऊपर की 'आयत' में हो चुका है जब अपनी कुछ नाराज़ी ज़ाहिर की और कुछ खिंचे-खिंचे से मालूम हुये, तो आप (सल्ल०) की उन दोनों पत्नियों के लिए यह बात असह्य हुई। उन में स्वाभिमान की भावना जाग उठी हालांकि यह इस का मौक़ा न था। आप की ये दोनों पत्नियाँ भी आप से रुष्ट हो गईं। इस पर अल्लाह ने उन्हें चेतावनी दी कि 'नबी' से रूठ कर तुम अपना ही बुरा करोगी 'नबी' को इस से कोई हानि न पहुँचेगी।

८. यद्यपि भूल केवल दो से हुई थी परन्तु सम्बोधित यहाँ आप (सल्ल०) की सभी पत्नियों को किया गया है ताकि सब के लिए चेतावनी हो और सख़्ती में भी कमी आ जाये।

९. 'सियाहत' से अभिप्रेत यहाँ अल्लाह की प्रसन्नता और पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए भूमि में चलना या सफ़र करना है जैसे 'जिहाद,' 'हिजरत,' 'हज्ज' लोगों को अल्लाह के 'दीन' की ओर बुलाने आदि के लिए सफ़र करना। फिर 'सियाहत' में त्याग का अर्थ भी पाया जाता है। यह त्याग ही है कि अल्लाह का बन्दा अल्लाह के लिए ज़रूरत पड़ने पर घर-बार सब छोड़ कर 'हिजरत' कर जाता है। इसी प्रकार 'रोज़ा' और व्रत भी एक प्रकार का त्याग है कि आदमी अपने 'रब' की ख़ुशी के लिए खाना पीना छोड़ देता है।

१०. यहाँ से सभी 'ईमान' वालों को सम्बोधित करते हुये उन्हें उन की ज़िम्मेदारियाँ याद दिलाई हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. हे 'ईमान' लाने वालो ! अल्लाह के आगे 'तौबा' करो सच्ची 'तौबा' दूर नहीं कि तुम्हारा 'रब' तुम से तुम्हारी बुराइयों को दूर कर दे और तुम्हें ऐसे उद्यानों में दाखिल करे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस दिन कि अल्लाह 'नबी' को और उन लोगों को जो उस के साथ 'ईमान' लाये रुसवा न करेगा। उन का प्रकाश उन के आगे-आगे दौड़ता होगा और उन के दाहिने हाथ में होगा[११] वे कह रहे होंगे : हमारे 'रब'! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे, और हमें क्षमा कर दे। निस्सन्देह तुझे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

8. O ye who believe! Turn unto Allah in sincere repentance! It may be that your Lord will remit from you your evil deeds and bring you unto Gardens underneath which rivers flow, on the day when Allah will not abase the Prophet and those who believe with him. Their light will run before them and on their right hands: they will say: Our Lord! Perfect our light for us, and forgive us! Lo! Thou art Able to do all things.

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑧

९. हे 'नबी' ! 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' के साथ 'जिहाद' करो, और उन पर सख़्ती करो[१२] और उन का ठिकाना 'जहन्नम' है, और बुरी जगह है जहाँ पहुँचे।

9. O Prophet! Strive against the disbelievers and the hypocrites, and be stern with them. Hell will be their home, a hapless journey's end.

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑨

१०. अल्लाह 'कुफ़्' करने वालों के लिए नूह की स्त्री को और लूत की स्त्री को मिसाल में पेश करता है, दोनों (स्त्रियाँ) हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के मातहत थीं। फिर उन्हों ने उन के साथ विश्वासघात किया तो वे अल्लाह के आगे उन के कुछ काम न आये और कहा गया : दोनों दाखिल हो जाओ आग में दाखिल होने वालों के साथ[१३]।

10. Allah citeth an example for those who disbelieve: the wife of Noah and the wife of Lot, who were under two of our righteous slaves yet betrayed them so that they (the husbands) availed them naught against Allah and it was said (unto them): Enter the Fire along with those who enter.

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑩

११. और अल्लाह 'ईमान' लाने वालों के लिए फ़िरऔन की स्त्री को मिसाल में पेश करता है[१४] जब उस ने कहा : 'रब' ! मेरे लिए अपने पास 'जन्नत' में एक घर बना, और मुझे फ़िरऔन और उस के कर्म से छुटकारा दे, और छुटकारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से;

11. And Allah citeth an example for those who believe: the wife of Pharaoh when she said: My Lord! Build for me a home with thee in the Garden, and deliver me from Pharaoh and his work, and deliver me from evildoing folk:

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ⑪

११. दे० सूरा अल-हदीद फ़ुटनोट ९।
१२. इस 'आयत' में आप (सल्ल०) को सख़्ती का हुक्म दिया गया ताकि जिन में कुछ भी सत्यप्रियता हो वे अल्लाह की ओर पलटें और केवल वही लोग रह जायें जिन्हें 'जहन्नम' ही का ईंधन बनना है (दे० सूरा अत-तौबा आयत ७३-७४)।
इस 'आयत' से 'नबी' सल्ल० की उस विशेषता पर प्रकाश पड़ता है जिस की ओर पिछले 'नबियों' ने भी संकेत किया है। हज़रत यहया अ० आप (सल्ल०) के बारे में कहते हैं :—
"उस का छाज उस के हाथ में है और वह अपने खलियान को ख़ूब साफ़ करेगा और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलायेगा जो बुझने की नहीं"। दे० बाइबिल 'मत्ता' (Matt.) ३ : १२।
१३. मालूम हुआ कि आदमी के पास यदि 'ईमान' नहीं है तो 'आख़िरत' में रिश्ते-नाते उस के कुछ काम नहीं आयेंगे।
१४. फ़िरऔन ज़ालिम था मगर उस की स्त्री 'ईमान' वाली और अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाली थी। इसी लिए 'ईमान' वालों के लिए उस की कीर्ति को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और इमरान की बेटी मरयम को (मिसाल में पेश करता है) जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की,[१५] फिर हम ने उस में अपनी आत्मा फूँकी[१६]। और उस ने अपने 'रब' की बातों और उस की 'किताबों' की तसदीक़ की और वह भक्ति और विनय-भाव से रहने वालों में से थी।

12. And Mary, daughter of 'Imran, whose body was chaste, therefor We breathed therein something of Our Spirit. And she put faith in the words of her Lord and His Scriptures, and was of the obedient.

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾ ع

---

१५. अर्थात् बुराइयों से बची रही। दे० सूरा अल-अंबिया फ़ुटनोट ४१।

१६. हज़रत आदम अ० की तरह हज़रत मसीह अ० भी केवल अपने 'रब' के हुक्म से पैदा हो गये थे (दे० सूरा आले इमरान आयत ५९)। हज़रत आदम अ० को अल्लाह ने बिना माता-पिता के पैदा किया था; और हज़रत मसीह अ० को बिना पिता के। हज़रत मरयम (हज़रत मसीह की माता) को भी एक निशानी बनाना अभीष्ट था। उन में अपना हुक्म या 'कलमा' डाला और वे गर्भवती हो गईं। हुक्म या 'कलमा' डालना, 'रूह' फूँकना, या अल्लाह की उक्ति 'हो जा' (दे० आले इमरान आयत ५९) सब एक ही चीज़ की विभिन्न अभिव्यजनायें हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६७—अल-मुल्क

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुल्क' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। इस नाम का 'सूरा' के केन्द्रीय विषय से गहरा सम्बन्ध है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि प्रस्तुत 'सूरा' मक्का के मध्य काल में उतरी है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

इस 'सूरा' से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है जो सूरा अन-नास पर समाप्त होता है।

प्रस्तुत 'सूरा' वास्तव में अल्लाह् के प्रभुत्व को व्यक्त करने वाली सूरा है फिर इस से 'नुबूवत' के सम्पर्क का उल्लेख किया गया है और फिर इस तरह 'आखिरत' की सत्यता को सिद्ध किया गया है[1]। 'नुबूवत' का इन्कार वास्तव में अल्लाह् के प्रभुत्व, उस की हुकूमत और उस की हिकमत (तत्वदर्शिता) और तदबीर का इन्कार है।

इस 'सूरा' में अल्लाह् के गुणों और चमत्कारों का उल्लेख[2] कर के 'आखिरत' की पुष्टि की गई है। अल्लाह् के एक विशेष नाम 'रहमान' का उल्लेख विशेष रूप से इस सूरा में हुआ है। यदि मनुष्य को अल्लाह् की दयालुता का पूर्ण विश्वास हो जाये तो वह अल्लाह् के न्याय और उस के निर्णय आदि के बारे में किसी प्रकार का सन्देह नहीं कर सकता। 'आख़िरत' पर उस का 'ईमान' दृढ़ हो जायेगा।

इस 'सूरा' में एक ओर 'काफ़िरों' की यातना और उन के निस्सहाय होने का उल्लेख हुआ है; दूसरी ओर उन लोगों की सफलता का वर्णन किया गया है जो संसार में बिन देखे अपने 'रब' से डरते हैं। फिर लोगों को सचेत किया गया है कि अल्लाह् अपने बन्दों से बेख़बर नहीं है। धरती पर बसने वालों को निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। आकाशों का मालिक चाहे तो धरती को हिला डाले या लोगों को हवा के द्वारा विनष्ट कर के रख दे। अल्लाह् यदि रोज़ी रोक ले, तो कौन है जो लोगों के लिए रोज़ी का प्रबन्ध कर सके? लोगों को जो चीज़ 'ईमान' लाने से रोक रही है वह उन की सरकशी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

———

१. दे० आयत ८-१०, २३-२६।
२. दे० आयत १, ३, १५, २६, २३, २४, ३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुल्क
(मक्का में उतरी–'आयतें' ३०)

THE SOVEREIGNTY
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

*१. बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिस के हाथ में राज्य है, और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।

1. Blessed is He in Whose hand is the Sovereignty, and He is Able to do all things.

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ ①

२. जिस ने मृत्यु और जीवन बनाया ताकि वह तुम्हें आज़माये कि तुम में कौन अच्छे-से-अच्छा कर्म करने वाला है;[1] और वह प्रभुत्वशाली और क्षमाशील है,

2. Who hath created life and death that He may try you, which of you is best in conduct; and He is the Mighty, the Forgiving.

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ②

३. जिस ने ऊपर-तले सात आकाश बनाये। तू 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) की रचना में कोई त्रुटि नहीं देखता; अब निगाह डाल: क्या तू कोई दर्ज़ देखता है?

3. Who hath created seven heavens in harmony. Thou (Muhammad) canst see no fault in the Beneficent One's creation; then look again: Canst thou see any rifts?

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③

४. फिर बार-बार निगाह डाल, निगाह थकी-हारी तेरी ओर पलट आयेगी[2]।

4. Then look again and yet again, thy sight will return unto thee weakened and made dim.

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④

*यहाँ से उन्तीसवाँ पारा (Part XXIX) शुरू होता है।

१. अर्थात् यह सांसारिक जीवन तो केवल इस लिए है कि लोग अच्छे कर्म कर के ईश्वर की दयालुता के पात्र बनें। यह जीवन तो केवल परीक्षा मात्र है कि कौन अच्छे कर्म करता है।

२. अल्लाह ने विश्व की ओर संकेत किया है कि क्या मनुष्य को उस में कहीं कोई कमी, त्रुटि (Defect) बिगाड़ और ख़लल दीख पड़ता है। यह ब्रह्माण्ड अत्यन्त विशाल और अपने स्रष्टा की कुशलता, सामर्थ्य और उस के ज्ञान की पूर्णता का सूचक है, इस का आभास हर विचारशील व्यक्ति को हो सकता है। हमारी पृथ्वी से सूर्य १२ लाख गुणा बड़ा है और सूर्य से हमारी पृथ्वी साढ़े नौ करोड़ मील की दूरी पर है। विश्व के विराट विस्तार का इस से अन्दाज़ा कीजिए कि जिस सौर्य जगत् में हमारी पृथ्वी सम्मिलित है उस की विशालता का यह हाल है कि उस के दूरस्थ ग्रह (Neptune) की दूरी सूर्य से कम-से-कम २ अरब ७९ करोड़ ३० लाख मील होगी। यह भी याद रहे कि यह सौर्य जगत् जिस में हमारी पृथ्वी अवस्थित है वह एक आकाश गङ्गा (Galaxy) का एक लघु अंश मात्र है। उस आकाश गङ्गा में जिस से हमारे सौर्य जगत् का सम्बन्ध है लगभग ३ हज़ार मिलयन (३ अरब) सूर्य वर्तमान हैं। जिन में से निकटतम सूर्य भी हमारी धरती से इतनी दूरी पर है कि उस का प्रकाश हम तक ४ वर्ष में पहुँच पाता है। प्रकाश की गति तो आप को मालूम है कि प्रतिसे॰१८६००० मील है। फिर यह आकाशगङ्गा जिस में हमारी पृथ्वी, हमारा सूर्य और हमारे ही ग्रहोपग्रह अवस्थित हैं वही पूरा ब्रह्माण्ड नहीं है बल्कि वह लगभग २० लाख निहारिकाओं (Spkral Nebulas) में से एक है। इन में से निकटतम निहारिका की दूरी भी इतनी है कि उस के प्रकाश को हम तक पहुँचने में १० लाख वर्ष लग जाते हैं, रहे वे अत्यन्त दूरी पर अवस्थित पिण्ड जिन्हें अधिकाधिक शक्तिसम्पन्न दूरदर्शियों से देखा जा सका है उन का प्रकाश हम तक १० करोड़ वर्षों में पहुँचता है। मनुष्य अब तक जो कुछ देख सका है—विशेषतः जब कि रेडियो-दूरदर्शी ने दर्शक की दृष्टि-सीमा को अत्यधिक बढ़ा दिया है— वह अल्लाह के राज्य का बहुत छोटा-सा भाग है परन्तु जो कुछ हम जान सके हैं वह विश्व की विराटता का अनुमान लगाने के लिए काफ़ी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. और हम ने दुनिया के आकाश (निकटवर्ती आकाश) को प्रदीपकों (तारों और नक्षत्रों) से सजाया, और उन से 'शैतानों' को मार भगाने का काम लिया,[३] और उन ('शैतानों') के लिए हम ने दहकती आग ('जहन्नम') की यातना तैयार कर रक्खी है।

5. And verily We have beautified the world's heaven with lamps, and We have made them missiles for the devils, and for them We have prepared the doom of flame.

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُومًا لِّلشَّيٰطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿٥﴾

६. और उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने 'रब' के साथ 'कुफ़्र' किया 'जहन्नम' की यातना है, और बहुत ही बुरी जगह है जहाँ पहुँचे !

6. And for those who disbelieve in their Lord there is the doom of hell, a hapless journey's end!

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٦﴾

७. जब ये उस ('जहन्नम') में डाले जावेंगे तो ये उस की भीषण गूँज सुनेंगे और वह भड़क रही होगी,

7. When they are flung therein they hear its roaring as it boileth up,

إِذَآ أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِىَ تَفُورُ ﴿٧﴾

८. ऐसा लगता है कि जोश के मारे फट पड़ेगी।

जब भी उस में कोई गरोह डाला गया उस ('जहन्नम') के अध्यक्ष ('फ़िरिश्ते') ने उन से पूछा : क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया ?

8. As it would burst with rage. Whenever a (fresh) host is flung therein the wardens thereof ask them: Came there unto you no warner?

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَآ أُلْقِىَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾

९. बोले : क्यों नहीं, अवश्य हमारे पास सचेत करने वाला आया था; फिर हम ने झुठला दिया और कहा : अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा है; तुम तो बस बड़ी गुमराही में पड़े हुये हो।

9. They say: Yea, verily, a warner came unto us; but we denied and said: Allah hath naught revealed: ye are in naught but a great error.

قَالُوا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَىْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِى ضَلٰلٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾

१०. और कहा : यदि हम सुनते होते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़ने वालों में न होते।

10. And they say: Had we been wont to listen or have sense, we had not been among the dwellers in the flames.

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِىٓ أَصْحٰبِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾

११. इस प्रकार उन्हों ने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया; तो दूर हों दहकती आग (में पड़ने) वाले।

11. So they acknowledge their sins; but far removed (from mercy) are the dwellers in the flams.

فَاعْتَرَفُوا بِذَنۢبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحٰبِ السَّعِيرِ ﴿١١﴾

१२. निस्सन्देह जो लोग बिन देखे अपने 'रब' से डरते हैं, उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है।

12. Lo! those who fea their Lord in secret, theirs will be forgivenses and a great reward.

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

१३. और तुम अपनी बात छिपा कर कहो या उसे खोल कर कहो, निस्सन्देह वह सीनों (दिलों) तक की बात जानता है।

13. And keep your opinion secret or proclaim it, lo! He is Knower of all that is in the breasts (of men).

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِۦٓ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾

३. दे० सूरा अल-हिज्र आयत १७-१८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. क्या वह न जानेगा जिस ने पैदा किया[४] ? और वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।

14. Should He not know what He created? And He is the Subtile, the Aware.

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۗ وَهُوَ اللَّطِيفُ
ع الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

१५. वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को अधीन कर दिया, तो उस के स्कन्धों पर चलो-फिरो और उस की दी हुई रोज़ी में से खाओ और उसी की ओर (मृत्यु के पश्चात्) दोबारा जीवित हो कर जाना है।

15. He it is Who hath made the earth subservient unto you, so walk in the paths thereof and eat of His providence. And unto Him will be the resurrection (of the dead).

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا
فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۖ
وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

१६. क्या तुम उस से निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि तुम्हें धरती में धँसा दे और वह डगमगाने लगे ?

16. Have ye taken security from Him Who is in the heaven that He will not cause the earth to swallow you when lo! it is convulsed?

ءَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ
بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾

१७. क्या तुम उस से निश्चिन्त हो जो आकाश में है कि वह तुम पर पथराव करने वाली आँधी भेज दे[५] ? अब जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मेरा डरावा कैसा है[६]।

17. Or have ye taken security from Him Who is in the heaven that He will not let loose on you a hurricane? But ye shall know the manner of My warning.

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾

१८. और वे लोग झुठला चुके हैं जो इन से पहले थे, तो देखो कैसी रही मेरी सज़ा[७] !

18. And Verily those before them denied, then (see) the manner of My wrath (with them)!

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾

१९. क्या इन्हों ने अपने ऊपर पक्षियों को पंख फैलाये हुये समेटते हुये नहीं देखा ? उन्हें 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) ही थामे रहता है। निस्सन्देह वह हर चीज़ को देखता है[८]।

19. Have they not seen the birds above them spreading out their wings and closing them? Naught upholdeth them save the Beneficent. Lo! He is Seer of all things.

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ
وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ
إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

२०. वह कौन है जो तुम्हारी सेना बन कर तुम्हारी सहायता करे 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) के सिवा ? 'काफ़िर' तो निरे धोखे में पड़े हुये हैं।

20. Or who is he that will be an army unto you to help you instead of the Beneficent? The disbelievers are in naught but illusion.

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم
مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا
فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾

२१. वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे यदि वह (अल्लाह) अपनी रोज़ी को रोक ले[९] ? कहाँ ! ये ('काफ़िर') तो सरकशी करते और बिदकते ही जा रहे हैं।

21. Or who is he that will provide for you if He should withhold His providnece? Nay, but they are set in pride and forwardness.

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

४. मतलब यह है कि जिस अल्लाह ने पैदा किया है उस से कोई चीज कैसे छिपी रह सकती है।

५. जैसा कि इस से पहले इस तरह का अज़ाब और यातना हम भेज भी चुके हैं।

६. अर्थात् इन्हें जो मुहलत मिली है उस से ये निश्चिन्त न हों यदि ये हमारी अवज्ञा और 'कुफ़्र' से बाज़ नहीं आते तो हमारे प्रकोप से ये बच नहीं सकते।

७. इन्हें उन जातियों के वृत्तान्त से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए जो इन से पहले अपने 'कुफ़्र' और इन्कार के कारण तबाह की जा चुकी हैं।

८. अर्थात् यह अल्लाह की दयालुता ही है जिस से चिड़ियाँ हवा में उड़ती और मछलियाँ पानी में तैरती हैं। वह किसी से ग़ाफ़िल नहीं है, सब उस की निगाह में हैं।

९. अर्थात् यदि वह वर्षा न होने दे तो है कोई जो वर्षा लाये और धरती से फल और अन्न आदि उपजाये ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. क्या जो व्यक्ति अपना मुँह औंधाये हुये चला जा रहा हो वह 'हिदायत' (मार्ग-दर्शन) पर होगा, या वह जो सीधा हो कर एक सीधे मार्ग पर चल रहा हो[१०] ?

22. Is he who goeth groping on his face more rightly guided, or he who walketh upright on a beaten road?

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِۦٓ أَهْدَىٰٓ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ٢٢

२३. कह दो : वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाये। तुम बहुत कम कृतज्ञता दिखलाते हो[११] !

23. Say (unto them, O Muhammad): He it is Who gave you being, and hath assigned unto you ears and eyes and hearts. Small thanks give ye!

قُلْ هُوَ ٱلَّذِيٓ أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَٱلْأَفْـِٔدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ٢٣

२४. कह दो : वही है जिस ने तुम्हें धरती में फैलाया, और उसी की ओर तुम इक्ट्ठे किये जाओगे।

24. Say: He it is Who multiplieth you in the earth, and unto Whom ye will be gathered.

قُلْ هُوَ ٱلَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي ٱلْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٢٤

२५. और ये कहते हैं : यह वादा कब पूरा होगा, (बताओ) यदि तुम सच्चे हो ?

25. And they say: When (will) this promise (be fulfilled), if ye are truthful?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ٢٥

२६. कह दो : (इस का) ज्ञान तो बस अल्लाह ही को है, और मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ;

26. Say: The knowledge is with Allah only, and I am but a plain warner;

قُلْ إِنَّمَا ٱلْعِلْمُ عِندَ ٱللَّهِ وَإِنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ٢٦

२७. फिर जब ये उसे देखेंगे कि पास आ लगा, तो 'कुफ़्' करने वालों के चेहरे बिगड़ जायेंगे, और कहा जायेगा : यही है जिसे तुम तलब करते थे।

27. But when they see it nigh, the faces of those who disbelieve will be awry, and it will be said (unto them): This is that for which ye used to call.

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيٓـَٔتْ وُجُوهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَقِيلَ هَٰذَا ٱلَّذِي كُنتُم بِهِۦ تَدَّعُونَ ٢٧

२८. कह दो : क्या तुम ने सोचा : अल्लाह मुझे विनष्ट करे और उन्हें भी जो मेरे साथ हैं या हम पर दया करे, जो भी हो 'काफ़िरों' को दुःख भरी यातना से कौन बचायेगा ?

28. Say (O Muhammad): Have ye thought: Whether Allah causeth me (Muhammad) and those with me to perish or hath mercy on us, still, who will protect the disbelievers from a painful doom?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ ٱللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ ٱلْكَٰفِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ٢٨

२९. कह दो : वह 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) है। हम उस पर 'ईमान' लाये हैं और उसी पर हम ने भरोसा किया। तो जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि कौन खुली गुमराही में पड़ा हुआ है।

29. Say: He is the Beneficent. In Him we believe and in Him we put our trust. And ye will soon know who it is that is in error manifest.

قُلْ هُوَ ٱلرَّحْمَٰنُ ءَامَنَّا بِهِۦ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ٢٩

३०. कह दो : क्या तुम ने सोचा : यदि तुम्हारा यह पानी धरती में उतर जाये, तो फिर कौन ला कर देगा निथरा हुआ प्रवाहित पानी[१२] ?

30. Say: Have ye thought: If (all) your water were to disappear into the earth, who then could bring you gushing water?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَآءٍ مَّعِينٍۭ ٣٠

———

१०. चौपायों और मनुष्यों में बड़ा अन्तर है फिर भी बहुत से लोग जानवरों की तरह चलते हैं, सीधा मार्ग नहीं अपनाते।

११. अर्थात् अल्लाह की तो तुम पर ये कृपायें हैं कि उस ने न केवल यह कि तुम्हें पैदा किया बल्कि तुम्हें सुनने-देखने और सोचने की शक्ति प्रदान की; परन्तु तुम हो कि उस का उपकार नहीं मानते। यदि तुम अल्लाह के दिये हुए दिल, कान और आँख से काम लेते, तो सच्चाई तुम से छिपी नहीं रह सकती थी।

१२. तुम एक क्षण के लिए भी अल्लाह की कृपा-दृष्टि के बिना जीवित नहीं रह सकते; यदि वह तुम से केवल अपना पानी छीन ले तो कोई नहीं जो इस अवसर पर तुम्हारे काम आ सके, फिर आख़िर तुम ऐसे 'रहमान (कृपाशील)' से कैसे विमुख होते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८—अल-क़लम

(परिचय)

नाम (The title)

प्रस्तुत 'सूरा' का नाम 'अल-क़लम' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह मक्का की अत्यन्त आरम्भिक सूरा है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्ताएँ

प्रस्तुत 'सूरा' में उन सत्य के झुठलाने वालों के लिए झिड़की और ताड़ना है जो कृपणता और अधमता की प्रतिमा थे।

प्रस्तुत 'सूरा' नबी सल्ल० के महान् चरित्र और स्वभाव पर प्रकाश डालती है। इस सूरा से इस का भी अनुमान होता है कि आप (सल्ल०) को झुठलाने वाले नैतिक दृष्टि से कितने गिर चुके थे और मनुष्यत्व से वे कितने दूर जा पड़े थे।

इस से पहले जो सूरा गुज़र चुकी है उस से हमें अपने 'रब' का ज्ञान प्राप्त होता है; उस में अल्लाह के गुणों और सौन्दर्य की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत सूरा 'रसूल' के महान् एवं मनोरम स्वभाव की सूचक है।

'सूरा' के आरम्भ में नबी सल्ल० को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) अत्यन्त उच्च स्वभाव (Nature) वाले हैं। आप (सल्ल०) कोई उन्मादी व्यक्ति नहीं हैं जैसा कि 'काफ़िरों' का विचार है। फिर इस के बाद 'काफिरों' के अवगुणों का उल्लेख किया गया है कि नैतिक एवं मानसिक दृष्टि से कितने गिर चुके हैं।

इस के बाद बाग़ वालों का क़िस्सा बयान हुआ है। इस क़िस्से से इस बात का अनुभव कराया गया है कि कृपणता का परिणाम कितना बुरा होता है। अपने 'रब' को भुला देने का परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। अच्छे और समझदार लोग वही हैं कि जब उन्हें अपनी भूल का आभास हो जाता है तो वे तुरन्त अपने 'रब' की ओर पलटते हैं और अपने 'रब' से सदा अच्छी आशा रखते हैं।

फिर 'काफ़िरों' की नीति पर आलोचना करते हुये बताया गया है कि 'आख़िरत' में अपमान के अतिरिक्त उन के हिस्से में और कुछ न आयेगा। दुनिया में उन्हें बुलाया जाता है कि अपने 'रब' को 'सजदा' करें; परन्तु वे इस से मुँह मोड़ते हैं 'आख़िरत' में वे 'सजदा' करना चाहेंगे परन्तु अपने 'रब' को 'सजदा' न क़र सकेंगे। इस बड़ी नेमत से वे वंचित ही रहेंगे।

'सूरा' के अन्त में हज़रत यूनुस अ० के जीवन-वृत्तान्त की ओर संकेत करते हुये नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है। और सत्य पर जमे रहने और धैर्य्य से काम लेने का आदेश दिया गया है। यद्यपि अल-क़लम बिल्कुल आरम्भिक समय की सूरा है फिर भी इस में साफ़ तौर पर घोषित कर दिया गया है कि 'क़ुरआन' सम्पूर्ण संसार के लिए अनुस्मारक बन कर उतरा है। किसी जाति विशेष के लिए नहीं बल्कि सारे मनुष्यों के पथ-प्रदर्शन के लिए अल्लाह ने इसे उतारा है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-क़लम
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५२)

THE PEN
Revealed at Mecca

سورة القلم مكية وهي اثنتان وخمسون آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. नून०[१] क़सम है क़लम की और जो वे लिखते हैं[२] उस की,

1. Nun. By the pen and that which they write (therewith).

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ (1)

२. (हे 'नबी' !) तुम अपने 'रब' की कृपा से उन्मादी नहीं हो[३]।

2. Thou art not, for thy Lord's favour unto thee, a madman.

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ (2)

३. और निश्चय ही तुम्हारे लिए कभी समाप्त न होने वाला बदला है।

3. And lo! thine verily will be a reward unfailing.

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ (3)

४. और निस्सन्देह तुम महान् स्वभाव वाले हो[४]।

4. And lo! thou art of a tremendous nature.

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (4)

५. तो जल्द ही तुम देख लोगे और ये ('काफ़िर') भी देख लेंगे

5. And thou wilt see and they will see.

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ (5)

६. कि तुम में से कौन भ्रम में पड़ा हुआ है[५]।

6. Which of you is the demented.

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ (6)

७. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' ही उसे भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटक गया, और वही उन लोगों को भी भली-भाँति जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं।

7. Lo! thy Lord is best aware of him who strayeth from his way, and He is best aware of those who walk aright.

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (7)

८. तो तुम झुठलाने वालों का कहना न मानना

8. Therefor obey not thou the rejecters.

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ (8)

९. वे चाहते हैं कि किसी तरह तुम ढीले पड़ो, फिर वे भी ढीले पड़ जायेंगे[६]।

9. Who would have had thee compromise, that they may compromise:

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ (9)

१. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट १।
२. "क़लम और जो वे लिखते हैं" यह सम्पूर्ण सृष्टि आदि की एक व्यापक अभिव्यंजना है। विचार करने से ऐसा ही मालूम होता है। इस कलम के बनाये हुये चिन्हों और चित्रों में सब से सुन्दर और मनोरम चित्र अच्छे स्वभाव और सदाचार ही हैं। जिस प्रकार अँधेरे में रौशनी जगमगा उठती है उसी प्रकार 'रसूल' के स्वभाव और उस के चरित्र का प्रकाश धर्म-विरोधियों के निकृष्टतम आचार और बुरे व्यवहार के बीच अपनी शोभा और सौन्दर्य दिखाता है। आप (सल्ल०) का महान् चरित्र और स्वभाव इस बात का खुला प्रमाण है कि आप सत्य पर हैं और वास्तव में आप अल्लाह के 'रसूल' हैं। आप के विरोधियों का यह कहना कि आपको उन्माद है सर्वथा सत्य के विरुद्ध है। आप के विरोधी भ्रम में पड़े हुये हैं; आप के विरोधियों को ही बुरे दिन देखने होंगे (दे० आयत २, १६-१७)।
३. जैसा कि ये 'काफ़िर' और 'मुश्रिक' लोग कह रहे है। दे० आयत ५१।
४. अर्थात् तुम्हारा स्वभाव और चरित्र अत्यन्त उच्च और महान् है।
५. अर्थात् कौन दीवाना है, किस की बुद्धि मारी गई है।
६. अर्थात् वे चाहते हैं कि यदि तुम नर्म पॉलिसी अपना लो और उन की कुरीतियों, उन के अधर्म और और उनके 'कुफ़्र' और 'शिर्क' के निषेध में नर्मी से काम लो तो वे भी नर्म पड़ जायें और तुम्हारा विरोध न करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. और तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति का कहना न मानना जो बढ़-बढ़ कर क़समें खाने वाला और हीन हो,

10. Neither obey thou each feeble oath-monger,

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ١٠

११. चुटकी लेने वाला हो, चुग़लियाँ खाता फिरता हो,

11. Detracter, spreader abroad of slanders,

هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ١١

१२. भलाई को रोकने वाला, हद से आगे बढ़ने वाला हो, गुनहगार,

12. Hinderer of the good, ransgressor, malefactor:

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ١٢

१३. क्रूर हो, फिर साथ ही नक्कू भी।

13. Greedy therewithal, intrusive:

عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ١٣

१४. इस लिए कि वह माल और बेटों वाला है।

14. It is because he is possessed of wealth and children.

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ١٤

१५. जब उस के आगे हमारी 'आयतें' पढ़ी जाती हैं, तो कहता है : ये अगलों की कहानियाँ हैं।

15. That, when Our revelations are recited unto him, he saith: Mere fables of the men of old.

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ١٥

१६. जल्द ही हम उस की सूंड (नाक) पर दाग़ देंगे।

16. We shall brand him on the nose.

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ١٦

१७. निश्चय ही हम ने इन (मक्का वालों) को आज़माया जैसा कि हम ने बाग़ वालों को आज़माया था जब कि उन्हों ने क़सम खाई थी कि प्रातःकाल होते-होते उस के फल अवश्य तोड़ लेंगे।

17. Lo! We have tried them as We tried the owners of the garden when they vowed they would pluck its fruit next morning:

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ١٧

१८. और कोई छूट (अपवाद) नहीं रखते थे;[७]

18. And made no exception (for) the will of Allah.

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ١٨

१९. अभी ये सो ही रहे थे कि तुम्हारे 'रब' की ओर से एक चक्कर लगाने वाला चक्कर लगा गया[८]

19. Then a visitation came upon it while they slept.

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ١٩

२०. तो वह ऐसा हो गया जैसे तोड़ी हुई फ़सल

20. And in the morning it was as if plucked:

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ٢٠

२१. फिर प्रातःकाल होते ही उन्हों ने एक-दूसरे को आवाज़ दी

21. And they cried out one unto another in the morning.

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ٢١

२२. कि अपनी खेती पर सवेरे पहुँचो यदि तुम्हें फल तोड़ना है।

22. Saying: Run unto your field if ye would pluck (the fruit).

أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ٢٢

७. अर्थात् उन्हों ने यह निश्चय कर रक्खा था कि बाग़ के फल कल प्रातः समय अवश्य तोड़ लेंगे, यह नहीं हो सकता कि समय टल जाये या कुछ फल टूटने से रह जायें या तमाम फल न तोड़ सकें।
८. अर्थात् कोई घोर आपत्ति (प्रचण्ड वायु का बगोला, आँधी आदि) उन के बाग़ को तबाह कर गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. फिर ये चुपके-चुपके बात करते हुये चले

23. So they went off, saying one unto another in low tones:

فانطلقوا وهم يتخافتون ﴿٢٣﴾

२४. कि आज वहाँ कोई मुहताज तुम्हारे पास न आने पाये।

24. No needy man shall enter it to-day against you.1.

أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين ﴿٢٤﴾

२५. और गर्व के साथ बढ़े जैसे उन के हाथ से जा ही नहीं सकता।

25. They went betimes, strong in (this) purpose.

وغدوا على حرد قادرين ﴿٢٥﴾

२६. फिर जब उस (बाग़) को देखा, कहने लगे : हम तो-रास्ता भटक गये हैं!

26. But when they saw it, they said: Lo! we are in error!

فلما رأوها قالوا إنا لضالون ﴿٢٦﴾

२७. नहीं, बल्कि हम बे-नसीब हैं!

27. Nay, but we are desolate!

بل نحن محرومون ﴿٢٧﴾

२८. उन में जो सब से भला था बोला : क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था ? तुम क्यों नहीं (अल्लाह की) 'तसबीह' करते ?

28. The best among them said: Said I not unto you: Why glorify ye not (Allah)?

قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون ﴿٢٨﴾

२९. वे बोले : महिमावान् है हमारा 'रब'! निश्चय ही हम ज़ालिम हैं।

29. They said: Glorified be our lord! Lo! we have been wrong-doers.

قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ﴿٢٩﴾

३०. फिर वे एक-दूसरे को उलाहना देने लगे।

30. Then some of them drew near unto others, self-reproaching.

فأقبل بعضهم على بعض يتلاومون ﴿٣٠﴾

३१. उन्हों ने कहा : अफ़सोस हम पर! निस्सन्देह हम सरकश हैं[९]।

31. They said: Alas for us! In truth we were outrageous.

قالوا يا ويلنا إنا كنا طاغين ﴿٣١﴾

३२. हो सकता है कि हमारा 'रब' बदले में इस से अच्छा (बाग़) हमें प्रदान करे। हम अपने 'रब' से आस लगाये हुये हैं।

32. It may be that our Lord will give us better than this in place thereof. Lo! we beseech our Lord.

عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون ﴿٣٢﴾

३३. ऐसी होती है यातना। और 'आख़िरत' की यातना तो और बढ़ कर है, कहीं ये लोग जानते होते।

33. Such was the punishment. And verily the punishment of the Hereafter is greater if they did not know.

كذلك العذاب ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ﴿٣٣﴾

३४. निश्चय ही (अल्लाह का) डर रखने वालों के लिए उन के 'रब' के यहाँ बाग़ हैं जहाँ आनन्द-ही-आनन्द है।

34. Lo! for those who keep from evil are gardens of bliss with their Lord.

إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم ﴿٣٤﴾

३५. क्या हम 'मुस्लिमों' को अपराधियों जैसा कर देंगे ?[१०]

35. Shall We then treat those who have surrendered* as We treat the guilty?

أفنجعل المسلمين كالمجرمين ﴿٣٥﴾

३६. तुम्हें क्या हुआ है ? कैसा फ़ैसला करते हो!

36. What aileth you? How foolishly ye judge!

ما لكم كيف تحكمون ﴿٣٦﴾

९. अर्थात् हमारी सरकशी के कारण यह तबाही हम पर आई है।
१०. अर्थात् यह कदापि नहीं हो सकता कि हम अपने आज्ञाकारी बन्दों को अवज्ञाकारी लोगों के बराबर कर दें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७. या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो ?

37. Or have ye a Scripture wherein ye learn.

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾

३८. उस में तुम्हारे लिए है जो-कुछ तुम पसन्द कर लो ?

38. That ye shall indeed have all that ye choose?

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾

३९. या तुम ने हम से क़समें ले रक्खी हैं जो 'क़ियामत' के दिन तक चलती रहेंगी कि तुम्हारे लिए है जैसा-कुछ तुम कह दो ?

39. Or have ye a covenant on oath from Us that reacheth to the Day of Judgement, that yours shall be all that ye ordain?

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾

४०. इन से पूछो : इन में से कौन है इस का ज़िम्मेदार !

40. Ask them (O Muhammad) which of them will vouch for that!

سَلْهُمْ أَيُّهُمْ بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾

४१. या इन को कुछ (अल्लाह के) सहभागी मिल गये हैं ? तो ले आवें अपने सहभागियों को यदि ये सच्चे हैं ।

41. Or have they other gods? Then let them bring their other gods if they are truthful.

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

४२. जिस दिन हलचल पड़ेगी,[11] और ये 'सजदे' के लिए बुलाये जायेंगे तो न कर सकेंगे,

42. On the day when it befalleth in earnest, and they are ordered to prostrate themselves but are not able

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾

४३. इन की निगाहें झुकी होंगी, और इन पर ज़िल्लत छा रही होगी । और ये उस समय भी 'सजदा' करने के लिए बुलाये जाते रहे थे जब कि ये भले-चंगे थे ।

43. With eyes downcast, abasement stupefying them. And they had been summoned to prostrate themselves while they were yet unhurt.

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

४४. तो मुझे और उन को जो इस बात को झुठलाते हों छोड़ दो । हम उन्हें धीरे-धीरे (विनाश की ओर) ले जायेंगे इस तरह कि उन्हें ख़बर तक न होगी ।

44. Leave me (to deal) with those who give the lie to this pronouncement. We shall lead them on by steps from whence they know not:

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهَٰذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾

४५. और मैं उन्हें ढील देता हूँ, निस्सन्देह मेरा दाँव बड़ा मज़बूत है (उस का कोई तोड़ नहीं) ।

45. Yet I bear with them, for lo! My scheme is firm.

وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾

४६. (हे मुहम्मद !) क्या तुम उन से कोई बदला माँगते हो कि वे भुगतान के बोझ से दबे जाते हैं ?

46. Or dost thou (Muhammad) ask a fee from them so that they are heavily taxed?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾

४७. या इन के पास परोक्ष का ज्ञान है कि ये लिख लेते हों ?

47. Or is the Unseen theirs that they can write (thereof)?

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾

११. दे० सूरा अल-मआरिज आयत ४३-४४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८. तो अपने 'रब' के फ़ैसले तक धैर्य्य से काम लो, और मछली वाले[१२] की तरह न हो जाना[१३]। जब कि उस ने (अपने 'रब' को) पुकारा और हालत यह थी कि वह घुट रहा था।

48. But wait thou for thy Lord's decree, and be not like him of the fish,[1] who cried out in despair.

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

४९. यदि तुम्हारे 'रब' की कृपा नें उसे न सँभाल लिया होता[१४] तो वह निन्दित अवस्था में चटियल मैदान में फेंक दिया जाता।

49. Had it not been that favour from his Lord had reached him he surely had been cast into the wilderness while he was reprobate.

لَّوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

५०. फिर उस के 'रब' ने उसे चुन लिया और उसे अच्छे लोगों में से कर दिया।

50. But his Lord chose him and placed him among the righteous.

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

५१. और ये 'कुफ़्' करने वाले जब 'ज़िक्र' (क़ुरआन) सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि ये अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला ही देंगे और कहते हैं : वह तो उन्मादी है;

51. And lo! those who disbelieve would fain disconcert thee with their eyes when they hear the Reminder, and they say: Lo! he is indeed mad:

وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

५२. और वह[१५] तो बस एक 'ज़िक्र' (अनुस्मारक) है सारे संसार के लिए।

52. When it is naught else than a Reminder to creation.

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

———

१२. यह संकेत हज़रत यूनुस अ० की ओर है जिन्हें एक मछली ने निगल लिया था। दे० सूरा अल-अंबिया आयत ८७-८८; सूरा यूनुस फ़ुटनोट २२।

१३. उन्हों ने जल्दी की थी अपने 'रब' के आदेश की प्रतीक्षा किये बिना अपनी जाति वालों को छोड़ कर चले गये थे। दे० सूरा यूनुस फ़ुटनोट २२।

१४. अल्लाह की उन पर कृपा हुई और उन्हें दुआ सुझाई गई फिर उन्हों ने अपने 'रब' से प्रार्थना की। अल्लाह ने उन की प्रार्थना सुन ली और उन्हें संकट से छुटकारा दिया। दे० सूरा अल-साफ़्फ़ात आयत १३९-१४७।

१५. अर्थात् क़ुरआन जिसे सुन कर वे 'रसूल' को उन्मादी और दीवाना कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६९—अल-हाक़्क़ा

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-हाक़्क़ा' सूरा की आरम्भिक आयत से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

'सूरा' की वार्त्ताओं से अनुमान होता है कि यह मक्का के मध्यकाल की सूरतों में से है। कुछ कथनों से मालूम होता है कि यह सूरा हज़रत उमर रज़ि० के 'ईमान' लाने से पहले उतरी है। हज़रत उमर रज़ि० अपने 'इस्लाम' क़बूल करने से पहले की घटना का उल्लेख करते हैं कि मैं एक बार आप (सल्ल०) के पास गया, देखा कि आप 'हरम' (काबा) में पहुँच गये हैं। मैं भी पहुँचा और आप के पीछे खड़ा हो गया। आप ने सूरा 'अल-हाक़्क़ा' पढ़नी शुरू की। मुझे उस के साहित्य-लालित्य पर आश्चर्य होने लगा। मैं ने सोचा 'क़ुरैश' ठीक ही कहते हैं कि यह व्यक्ति कवि है। मैं यही सोच रहा था कि आप (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी : "यह किसी कवि का कलाम नहीं—तुम बहुत कम 'ईमान' लाते हो" (आयत ४१)। मैं ने सोचा यह कवि नहीं तो 'काहिन' अवश्य है। आप ने यह आयत पढ़ी : "और न किसी 'काहिन' (तान्त्रिक और देवज्ञ आदि) का 'कलाम' है—तुम बहुत कम चेतते हो!" (आयत ४२)। आप सूरा का पाठ करते चले गये यहाँ तक कि सूरा समाप्त हो गई। यह पहला अवसर था कि मेरे दिल में 'इस्लाम' घर कर गया।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताऐं

प्रस्तुत सूरा में 'रिसालत' को झुठलाने वालों और 'रसूल' की अवज्ञा करने वालों को उनके 'कुफ़्' और कृपणता के कारण धमकी दी गई है[1]। इस सूरा से 'रिसालत' की पुष्टि इस पहलू से होती है कि 'रसूल' लोगों को 'आख़िरत' की सूचना देता है।

प्रस्तुत 'सूरा' और सूरा 'अल-वाक़िआ' में बड़ी समानता पाई जाती है।

सूरा के आरम्भ में 'क़ियामत' की सूचना देते हुये बताया गया है कि उन जातियों का क्या परिणाम हुआ है जिन्हों ने अपनी सरकशी के कारण उसे झुठलाया था। फिर 'आख़िरत' का नक़्शा पेश किया गया है कि किस तरह उस दिन लोगों का किया-धरा उन के सामने आयेगा। लोग दो गरोहों में विभक्त हो जायेंगे। वे लोग 'जन्नत' में जायेंगे जिन्हें उन का 'आमालनामा' (कर्म-पत्र) दायें हाथ में दिया गया। और वे लोग नरकगामी होंगे जिन्हें उन का कर्म-पत्र बायें हाथ में दिया गया।

फिर क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने पर प्रत्यक्ष और परोक्ष समस्त वस्तुओं को गवाह ठहराया गया है कि यदि यह 'रसूल' हम से सम्बन्ध लगा कर झूठी बातें गढ़ता तो हम इस की सख़्त पकड़ करते और इसे विनष्ट कर देते।

यह क़ुरआन 'तज़किरा' है परन्तु इस से वही लोग लाभान्वित होते हैं जिन के दिल में अल्लाह का डर है।

———

१. दे० आयत ३३-३४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हाक़्क़ा
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५२)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. वह हो कर रहने वाली[1] !

२. क्या है वह हो कर रहने वाली ?

३. और तू क्या जाने कि क्या है वह हो कर रहने वाली !

४. झुठलाया 'समूद' और 'आद' ने खड़-खड़ा देने वाली को।

५. तो 'समूद' जो थे वे तो उग्रतम (यातना) से विनष्ट कर दिये गये।

६. रहे 'आद,' तो वे एक तेज़ हद से बढ़ी हुई वायु के द्वारा विनष्ट किये गये,

७. जिसे उन पर सात रात और आठ दिन तक लगाये रक्खा जिन में सत्तानाश होता रहा फिर देखते हो कि वे लोग उस में ढेर हो गये जैसे खोखली खजूरों के तने हों।

८. क्या अब उन का कुछ बचा हुआ देखते हो ?

९. और फ़िरऔन और जो लोग उस से पहले थे, और जो बस्तियाँ उलट दी गईं[2] सब अपराध करते आये।

१०. तो उन्हों ने अपने 'रब' के 'रसूल' की अवज्ञा की, तो उस ने (अल्लाह ने) उन्हें ऐसी पकड़ में ले लिया जो बड़ी ही कठोर थी।

११. जब पानी उमँड़ आया, तो हम ने तुम्हें[3] नौका में सवार किया

THE REALITY
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. The Reality!

2. What is the Reality?

3. Ah, what will convey unto thee what the reality is!

4. (The tribes of) Thamud and A'ad disbelieved in the judgement to come.

5. As for Thamud, they were destroyed by the lightning.

6. And as for A'ad, they were destroyed by a fierce roaring wind,

7. Which He imposed on them for seven long nights and eight long days so that thou mightest have seen men lying overthrown, as if they were hollow trunks of palm-trees.

8. Canst thou (O Muhammad) see any remnant of them?

9. And Pharaoh and those before him, and the community that were destroyed, brought error.

10. And they disobeyed the messenger of their Lord, therefor did He grip them with a tightening grip.

11. Lo! when the waters rose, We carried you upon the ship:

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثِنْتَانِ وَخَمْسُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الْحَاقَّةُ ① مَا الْحَاقَّةُ ② وَمَا أَدْرٰىكَ مَا الْحَاقَّةُ ③ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ④ فَأَمَّا ثَمُوْدُ فَأُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ⑤ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑥ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ⑦ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ⑧ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ⑨ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ⑩ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ⑪

१. यह संकेत 'क़ियामत' की ओर है जिस के होने में कोई सन्देह नहीं।
२. यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की ओर है जिन की बस्तियों को अल्लाह की यातना ने तलपट कर दिया था।
३. अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों को, यदि वे लोग बचा न लिये गये होते, तो मानवीय नस्ल न चल सकती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. ताकि इसे तुम्हारे लिए यादगार बनायें[४] और सुन रखने वाले कान इसे सुन रक्खें[५]।

12. That We might make it a memorial for you, and that remembering ears (that heard the story) might remember.

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

१३. फिर जब 'सूर' में फूंक मारी जायेगी केवल एक फूंक

13. And when the trumpet shall sound one blast,

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

१४. और धरती और पहाड़ उठा कर चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जायेंगे एक ही बार में,

14. And the earth with the mountains shall be lifted up and crushed with one crash,

وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

१५. तो उस दिन आ पड़ेगी वह आ पड़ने वाली[६]।

15. Then, on that day will the Event befall,

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

१६. और आकाश फट जायेगा, और वह उस दिन बिल्कुल कमज़ोर होगा[७]।

16. And the heaven will split asunder, for that day it will be frail.

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

१७. और 'फ़िरिश्ते' उस के किनारों पर होंगे, और उस दिन तुम्हारे 'रब' के सिंहासन को आठ ('फ़िरिश्ते') अपने ऊपर उठाये होंगे।

17. And the angels will be on the sides thereof, and eight will uphold the Throne of their Lord that day, above them.

وَّالْمَلَكُ عَلَىٰٓ أَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾

१८. उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे; तुम्हारी कोई चीज़ छिपी न रहेगी।

18. On that day ye will be exposed; not a secret of you will be hidden.

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

१९. तो, जिसे उस का (कर्म-) पत्र[८] उस के दाहिने हाथ में दिया गया, तो वह (लोगों से) कहेगा : लो मेरा (कर्म-) पत्र पढ़ो !

19. Then, as for him who is given his record, in his right hand, he will say: Take, read my book!

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَآؤُمُ اقْرَءُوا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

२०. मैं समझता ही था कि मेरे सामने मेरा हिसाब आने वाला है।

20. Surely I knew that I should have to meet my reckoning.

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

२१. तो अब उसे मन-भाता जीवन प्राप्त है।

21. Then he will be in blissful state,

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

२२. एक ऊँचे बाग़ में

22. In a high Garden:

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

२३. जिस के गुच्छे नीचे लटक रहे हैं[९] :

23. Whereof the clusters are in easy reach.

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

२४. मज़े से खाओ, पियो बीते हुये दिनों में जो कुछ तुम भेज चुके हो उस के बदले में।

24. (And it will be said unto those therein): Eat and drink at ease for that which ye sent on before you in past days.

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

४. दे० सूरा अल-अनकबूत आयत १५; सूरा अल-क़मर आयत १३-१५।
५. अर्थात् इस को याद रक्खें।
६. अर्थात् वह 'क़ियामत' का दिन आ जायेगा जिस की सूचना अल्लाह का 'रसूल' दे रहा है और जिसे आज ये 'काफ़िर' लोग मानने से इन्कार कर रहे हैं।
७. अर्थात् विश्व की यह व्यवस्था बिगड़ जायेगी।
८. अर्थात् पत्र जिस पर उसके अच्छे-बुरे कर्मों का विवरण अंकित होगा। यह कर्म-पत्र दाहिने हाथ में उसी को मिलेगा जिस के कर्म अच्छे होंगे। दे० सूरा अल-इनशिक़ाक़ आयत ८।
९. अर्थात् वह ऐसे बाग़ों में होगा जिन में खजूर, अंगूर, अनार आदि होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५. रहा वह जिसे उस का (कर्म-) पत्र उस के बायें हाथ में दिया गया, वह कहेगा : हाय, क्या अच्छा होता कि मुझे मेरा (कर्म-) पत्र न दिया गया होता	25. But as for him who is given his record in his left hand, he will say: Oh, would that I had not been given my Book!	وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ٢٥
२६. और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है !	26. And knew not what my reckoning!	وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ٢٦
२७. हाय, क्या अच्छा होता कि यह ख़त्म ही कर देने वाली (मृत्यु) होती !	27. Oh, would that it had been death!	يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ٢٧
२८. मेरा माल मेरे कुछ काम न आया,[१०]	28. My wealth hath not availed me,	مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ٢٨
२९. मेरा प्रभुत्व (शक्ति और अधिकार) मुझ से जाता रहा।	29. My power hath gone from me.	هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ٢٩
३०. पकड़ो इस को और इसे जकड़ लो	30. (It will be said): Take him and fetter him.	خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ٣٠
३१. फिर ('जहन्नम' की) भड़कती हुई आग में इसे डाल दो	31. And then expose him to hell-fire.	ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ٣١
३२. फिर एक ज़ंजीर में जो सत्तर हाथ लम्बी है इसे बाँध दो।	32. And then insert him in a chain whereof the length is seventy cubits.	ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ٣٢
३३. यह महिमाशाली अल्लाह पर 'ईमान' नहीं रखता था,	33. Lo! he used not to believe in Allah the Tremendous,	إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ٣٣
३४. और न ही मुहताज को खिलाने पर उभारता था,	34. And urged not on the feeding of the wretched,	وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ٣٤
३५. तो आज यहाँ इस का कोई दोस्त नहीं;	35. Therefor hath he no lover here this day.	فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ٣٥
३६. और न ही कुछ खाने को है सिवाय धोवन के	36. Nor any food save filth.	وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ٣٦
३७. जिसे ख़ताकारों के अतिरिक्त कोई न खाये।	37. Which none but sinners eat.	لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ٣٧
३८. तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जो तुम्हें दिखाई देती हैं	38. But nay! I swear by all that ye see,	فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ٣٨
३९. और उन चीज़ों की जो तुम्हें दिखाई नहीं देतीं[११]	39. And all that ye see not,	وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ٣٩

१०. अर्थात् वह माल आज मेरे कुछ काम नहीं आ रहा है जिस के इकट्ठा करने और सँभाल-सँभाल कर रखने में मैं जीवन भर लगा रहा।

११. मतलब यह कि सम्पूर्ण विश्व और परोक्ष जगत और उस की चीज़ें इस बात की साक्षी हैं कि क़ुरआन की दी हुई ख़बर सच्ची है, 'क़ियामत' आ कर रहेगी, क़ुरआन सत्य और ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०. निश्चय ही यह (क़ुरआन) एक प्रतिष्ठित सन्देशवाहक[१२] की वाणी है।

40. That it is indeed the speech of an illustrious messenger.

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾

४१. और यह किसी कवि की वाणी नहीं—तुम बहुत ही कम 'ईमान' लाते हो !—

41. It is not poet's speech—little it is that ye believe!

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

४२. और न किसी 'काहिन'[१३] (तान्त्रिक और दैवज्ञ) की वाणी है—तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो !—

42. Nor diviner's speech—little it is that ye remember!

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

४३. अवतरण है सारे संसार के 'रब' की ओर से—

43. It is revelation from the Lord of the Worlds.

تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾

४४. और यदि यह (नबी) हम से सम्बन्ध लगा कर कोई बात गढ़ता,[१४]

44. And if he had invented false sayings concerning Us.

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾

४५. तो हम इस का दाहिना हाथ पकड़ लेते।

45. We assuredly had taken him by the right hand,

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾

४६. फिर इस की गरदन की रग काट देते,

46. And then severed his lifeartery,

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾

४७. फिर तुम में से कोई नहीं है जो इस से रोक देता—

47. And not one of you could have held Us off from him.

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾

४८. और निस्सन्देह यह (क़ुरआन) डर रखने वालों के लिए सर्वथा अनुस्मारक है[१५]—

48. And lo! it is a warrant unto those who ward off (evil).

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

४९. और निस्सन्देह हम जानते हैं कि तुम में से कुछ लोग झुठलाते हैं।

49. And lo! We know that some among you will deny (it).

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

१२. यह संकेत अल्लाह के विशेष फ़रिश्ता हज़रत जिब्रील अ० की ओर है जो अल्लाह की ओर से नबी सल्ल० के पास 'वह्य' पहुँचाते थे।

१३. इस क़ुरआन का किसी 'काहिन' की अटकल-पच्चू बातों से भी कोई सम्पर्क नहीं; यह तो ईश्वरीय वाणी और अल्लाह का कलाम है।

१४. ऐसे व्यक्ति को जो अपने 'नबी' होने का झूठा दावा करता है हो सकता है दुनिया में मुहलत मिल जाये और उसकी पकड़ न हो; परन्तु यह किसी तरह सम्भव नहीं कि ऐसा व्यक्ति अल्लाह की पकड़ से बच जाये जो वास्तव में अल्लाह की ओर से इस बात पर नियुक्ति हुआ है कि लोगों तक सत्य का सन्देश पहुँचाये और वह अल्लाह की स्कीम को असफल बनाने लग जाये, और अल्लाह का नाम लेकर ऐसी बातें कहने लगे जो अल्लाह ने उस से न कहीं हों।

१५. मूल ग्रन्थ में 'तज़्किरा' (تذكرة) शब्द प्रयुक्त हुआ है। तज़किरा उसे कहेंगे जिस से गुज़री हुई चीज़ उभर कर सामने आ जाये। क़ुरआन को उन लोगों के लिए 'तज़किरा' कहा जो अल्लाह का डर रखने वाले हैं। क़ुरआन वही चीज़ उन्हें याद दिलाता है जो उन के दिलों में छिपी होती है। क़ुरआन उन के दिल की आवाज़ है, वे उसे क़बूल कर लेते हैं। सुक़रात (Socrate) का आशय भी यही था जब वह अपने शिष्यों से कहता था कि मैं तुम्हें सिखाता नहीं बल्कि तुम जो कुछ जानते हो मैं उसी को याद दिलाता हूँ। क़ुरआन मानवीय प्रकृति की अवाज़ है। इस लिए यह समस्त मानव-जाति के लिए 'ज़िक्र' और 'तज़किरा' है परन्तु इस से लाभ उन्हीं लोगों को पहुँचता है जिन के दिल में अल्लाह का भय और डर होता है। दूसरे लोग सच्चाई से ग़ाफ़िल होने और अपने गर्व के कारण क़ुरआन की आवाज़ पर ध्यान ही नहीं देते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. और निश्चय ही यह (क़ुरआन) 'काफ़िरों' के लिए सर्वथा पछतावा है[16]	50. And lo! it is indeed an anguish for the disbelievers.	وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾
५१. और यह सच है बिल्कुल यक़ीनी।	51. And lo! it is absolute truth.	وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾
५२. तो करो 'तसबीह' अपने महिमाशाली 'रब' के नाम की।	52. So glorify the name of thy Tremendous Lord.	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

१६. इस लिए कि वह अज़ाब (यातना) इन पर आ कर रहेगा जिस की सूचना क़ुरआन दे रहा है। इस के अलावा 'इस्लाम' और 'क़ुरआन' पर 'ईमान' लाने वालों की सफलता से दुनिया में भी ये जलते हैं और 'आख़िरत' में जब ये देखेंगे कि क़ुरआन पर 'ईमान' लाने वाले आज 'जन्नत' के वारिस ठहराये जा रहे हैं और क़ुरआन के इन्कार करने वालों का ठिकाना 'जहन्नम' है, तो इस से उन्हें जो मानसिक दुःख और कष्ट पहुँचेगा उस की कल्पना करनी भी आज हमारे लिए सम्भव नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०—अल-मआरिज़

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मआरिज' सूरा की 'आयत' ३ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' में 'काफ़िरों' के सत्य को झुठलाने और यातना की जल्दी मचाने पर उत्तम रीति से सब्र करने का हुक्म दिया गया है¹। आगे आने वाली सूरा (सूरा नूह) में हज़रत नूह अ० की मिसाल पेश की गई है कि किस तरह उन्हों ने दीर्घ काल तक अपनी जाति वालों के विरोध पर सब्र किया अन्त में जब उन लोगों का अत्याचार, 'कुफ़्र' और सरकशी बढ़ती गई तो फिर वह समय आ गया कि अल्लाह ने विरोधियों को उन के किये का मज़ा चखाया। उन्हें अल्लाह की यातना ने विनष्ट कर के रख दिया; अच्छे और नेक लोगों को अल्लाह ने अपनी यातना से बचा लिया।

'सूरा' के आरम्भ में कहा गया है कि जिस चीज़ को ये 'काफ़िर' दूर और असम्भव समझ रहे हैं वह कदापि दूर नहीं है। अल्लाह उन्हें मुहलत दे रहा है। वह समय दूर नहीं कि वे उस चीज़ को अपनी आँखों से देख लेंगे जिस का आज उपहास कर रहे हैं।

इस के बाद 'क़ियामत' का नक़्शा पेश किया गया है कि उस दिन किस तरह हर एक को अपनी-अपनी पड़ी होगी। अपराधी लोगों को यही चिन्ता होगी कि किसी तरह वे यातना से छुटकारा पा जायें परन्तु वे यातना से कदापि छुटकारा न पा सकेंगे।

फिर मनुष्य की दुर्बलता का उल्लेख किया गया है कि वह जी का कितना कच्चा है। तकलीफ़ में वह बिलबिला उठता है परन्तु जब उसे सुख और आराम मिलता है तो बुरे दिन को भूल जाता है और कृपणता से काम लेने लगता हैं। दीन-दुखियों पर अपना माल ख़र्च नहीं करता। फिर बताया गया है कि यह दुर्बलता उन लोगों में नहीं पाई जाती जो 'ईमान' वाले हैं फिर विस्तारपूर्वक उन के गुणों और विशेषताओं का उल्लेख किया है।

'सूरा' के अन्तिम भाग में 'काफ़िरों' की मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह क़ुरआन की आवाज़ से उन्हें चोट लगती है और वे नबी सल्ल० के पास सत्य का इन्कार करने और अपनी बड़ाई जताने के लिए उमड़े आते हैं हालांकि वे भली भाँति जानते हैं कि अल्लाह ने उन्हें किस चीज़ से पैदा किया है। अल्लाह जो पूर्व और पश्चिम अर्थात् सारे संसार का स्वामी है वह यह सामर्थ्य रखता है कि इन की जगह इन से अच्छे बना दे।

फिर कहा गया है कि इन के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं, इन्हें इन के हाल पर छोड़ दो, ये बातें बनाते और खेलते रहें यहाँ तक कि अपना बुरा परिणाम देख लें।

---

१. दे० आयत १-७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मआरिज

(मक्का में उतरी — 'आयतें' ४४)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. माँगी एक माँगने वाले ने यातना जो आ कर रहेगी

२. 'काफ़िरों' के लिए है, कोई नहीं उस (यातना) को टालने वाला,

३. अल्लाह की ओर से होगा, जो ऊँचे दरजों वाला है

४. 'फ़िरिश्ते' और 'रूह' उस की ओर चढ़ते हैं एक ऐसे दिन में जो पचास हज़ार वर्ष के बराबर है[1]।

५. तो सब्र करो श्रीवान् सब्र।

६. ये लोग उस को दूर देखते हैं

७. और हम उसे क़रीब देख रहे हैं।

८. जिस दिन आकाश पिघली हुई धातु जैसा होगा,

९. और पहाड़ रंजित ऊन जैसे होंगे[2]

१०. और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा

११. उन्हें वे भली-भाँति दिखाई दे रहे होंगे। अपराधी चाहेगा कि क्या अच्छा हो यदि वह उस दिन की यातना से छुटकारा पाने के लिए दे दे अपने बेटों को

THE ASCENDING STAIRWAYS

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. A questioner questioned concerning the doom about to fall:

2. Upon the disbelievers, which none can repel:

3. From Allah, Lord of the Ascending Stairways.

4. (Whereby) the angels and the Spirit ascend unto him in a Day whereof the span is fifty thousand years.

5. But be patient (O Muhammad) with a patience fair to see.

6. Lo! they behold it afar off,

7. While We behold it nigh:

8. The day when the sky will become as molten copper,

9. And the hills become as flakes of wool,

10. And no familiar friend will ask a question of his friend.

11. Though they will be given sight of them. The guilty man will long be able to ransom himself from the punishment of that day at the price of his children:

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ①

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ②

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ③

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ④

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ⑤

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ⑥

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ⑦

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ⑧

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ⑨

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ⑩

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ⑪

१. दे० सूरा अस-सजदा आयत ५; अल-हज्ज आयत ४७।

२. दे० सूरा अल-क़ारिआ आयत ५। जिस प्रकार ऊन विभिन्न रंगों के होते हैं उसी प्रकार पहाड़ों के रंग भी विभिन्न होते हैं (दे० सूरा फ़ातिर आयत ४)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और अपनी सहवासिनी (पत्नी) और अपने भाई को

12. And his spouse and his brother,

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ⑫

१३. और अपने कुटुम्ब को जो उसे अपने आश्रय में रखता है

13. And his kin that harboured him,

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ⑬

१४. और जितने भी धरती में रहते हैं सब को, फिर इस तरह उसे छुटकारा मिल जाये।

14. And all that are in the earth, if then it might deliver him.

وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ ⑭

१५. कदापि नहीं ! निस्सन्देह वह ('जहन्नम') ज्वाला फेंकने वाली है

15. But nay! for lo! it is the fire of hell.

كَلَّا إِنَّهَا لَظَىٰ ⑮

१६. जो खींच लेने वाली है (पिंडली के) मांस को;

16. Eager to roast;

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ⑯

१७. वह हर उस व्यक्ति को बुलायेगी[३] जिस ने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा,

17. It calleth him who turned and fled (from truth),

تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ⑰

१८. और इकट्ठा किया और सैंत कर रक्खा।

18. And hoarded (wealth) and withheld it.

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ⑱

१९. मनुष्य बड़े ही कच्चे दिल का बना हुआ है[४],

19. Lo! man was created anxious,

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ⑲

२०. जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है

20. Fretful when evil befalleth him.

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ⑳

२१. और जब उसे भलाई पहुँचती है, तो रोक रखता है[५];

21. And, when good befalleth him, grudging;

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ㉑

२२. नमाज़ियों की बात और ही है

22. Save worshippers,

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ㉒

२३. जो अपनी नमाज़ पर बराबर जमे रहते हैं

23. Who are constant at their worship,

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ㉓

२४. और जिन के मालों में एक जाना-बूझा हक़ है

24. And in whose wealth there is a right acknowledged,

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ㉔

२५. माँगने वाले का और जो पाने से रह गया हो उस का;

25. For the beggar and the destitute;

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ㉕

२६. और जो उस दिन को सच मानते हैं जिस दिन बदला दिया जायेगा[६],

26. And those who believe in the Day of Judgement,

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ㉖

३. बुलायेगी कि यहाँ आओ तुम्हारा ठिकाना यह है।
४. दे० सूरा अल-अंबिया आयत ३७।
५. अल्लाह की राह में और भलाई के कामों में ख़र्च नहीं करता। और अल्लाह के आगे कृतज्ञता नहीं दिखलाता।
६. दे० सूरा अल-फ़ातिहा फुटनोट १।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७. और जो अपने 'रब' की यातना से कांपते रहते हैं—

27. And those who are fearful of their Lord's doom—

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

२८. उन के 'रब' की यातना है ही ऐसी कि उस से निश्चिन्त न रहा जाये—

28. Lo! the doom of their Lord is that before which none can feel secure—

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

२९. और जो अपनी शर्मगाहों (गुह्य इन्द्रियों) की रक्षा करते हैं—

29. And those who preserve their chastity:

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

३०. सिवाय अपनी पत्नियों और उन ('लौंडियों') के जो उन की मिल्क में हों, कि इस पर वे कुछ भी निन्दनीय नहीं हैं;

30. Save with their wives and those whom their right hands possess, for thus they are not blameworthy;

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

३१. परन्तु जो कोई इस के आगे कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं—

31. But whoso seeketh more than that, those are they who are transgressors;

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

३२. और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं[७]।

32. And those who keep their pledges and their covenant,

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

३३. और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं

33. And those who stand by their testimony.

وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

३४. और जो अपनी 'नमाज़' की रक्षा करते रहते हैं,

34. And those who are attentive at their worship.

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

३५. यही लोग हैं जो 'जन्नतों' में प्रतिष्ठापूर्वक रहेंगे[८]।

35. These will dwell in Gardens, honoured.

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

३६. तो इन 'काफ़िरों' को क्या हुआ है कि (हे मुहम्मद!) ये तुम्हारी ओर लपके चले आ रहे हैं,

36. What aileth those who disbelieve, that they keep starting toward thee (O Muhammad), open-eyed,

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

३७. दायें से भी और बायें से भी टोलियाँ की टोलियाँ ?

37. On the right and on the left, in groups?

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

३८. क्या इन में से हर एक इस बात का लालच रखता है कि वह नेमत भरी 'जन्नत' में दाखिल कर दिया जायेगा ?

38. Doth every man among them hope to enter the Garden of Delight?

أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾

७. और वे उस गवाही का भी ध्यान रखते हैं जो उन्हों ने अपने 'रब' के 'रब' होने का इक़रार करते हुये दी थी।

८. यहाँ अल्लाह ने 'ईमान' वालों के जिन गुणों का उल्लेख किया है उन में 'नमाज़' को प्रमुखता प्राप्त है। 'ईमान' वालों की विशेषताओं के उल्लेख का प्रारम्भ 'नमाज़' से किया और 'नमाज़' ही पर उस को समाप्त किया। सूरा अल-मूमिनून के आरम्भ में भी ऐसे ही 'नमाज़' से 'ईमान' वालों के गुणों के उल्लेख का आरम्भ किया गया है और 'नमाज़' ही पर उसे समाप्त भी किया गया है। 'नमाज़' वास्तव में 'ईमान' वालों के जीवन का सारांश और समस्त भलाइयों का उद्गम और स्रोत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९. कदापि नहीं ! हम ने जिस चीज़ से इन को बनाया है उसे वे जानते हैं[९] ।

39. Nay, verily. Lo! We created them from what they know.

كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

४०. कुछ नहीं, मैं तो क़सम खाता हूँ उदय होने के स्थानों की और अस्त होने के स्थानों की[१०] निस्सन्देह हमारे बस में है

49. But nay! I swear by the Lord of the rising-places and the setting-places of the planets that We are Able.

فَلَآ أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ إِنَّا لَقٰدِرُونَ ﴿٤٠﴾

४१. कि इन की जगह इन से अच्छे लोग बना दें[११] । और हमारे बस से बाहर नहीं ।

41. To replace them by (others) better than them. And We are not to be outrun.

عَلٰٓى أَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾

४२. अब छोड़ दो इन्हें बातें बनायें और खेले यहाँ तक कि वह दिन इन के सामने आ जाये जिस का इन से वादा किया जाता है,

42. So let them chat and play until they meet their Day which they are promised,

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِى يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾

४३. वह दिन जब कि ये क़बरों से तेज़ी से निकलेंगे, जैसे किसी निशाने पर दौड़े जा रहे हों,

43. The day when they come forth from the graves in haste as racing to a goal,

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلٰى نُصُبٍ يُّوفِضُونَ ﴿٤٣﴾

४४. इन की निगाहें झुकी हुई हैं, और इन पर ज़िल्लत छाई हुई है : यह है वह दिन जिस का इन से वादा किया जाता रहा है[१२] ।

44. With eyes aghast, abasement stupefying them: Such is the Day which they are promised.

خٰشِعَةً أَبْصٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِى كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

———

९. अर्थात ये जानते हैं कि इन की सृष्टि मिट्टी से हुई है। इन्हें दोबारा पैदा करना हमारे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है । इन के लिए यह कदापि उचित नहीं कि अपनी बड़ाई का घमण्ड करें । बड़ाई और इज़्ज़त तो उसी के लिए है ।

१०. सूर्य सदा न एक ही स्थान से उदय होता है और न वह एक ही स्थान पर अस्त होता है । इस के अतिरिक्त वह पृथ्वी के विभिन्न भागों में विभिन्न समयों में उदय और अस्त होता है । इसी लिये पूर्व दिशा और पश्चिम को बहुवचन प्रयोग किया गया है। दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत ५ ।

११. अर्थात जब हमें इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि सूर्य को हर दिन नवीन बिन्दु से उदय करें तो हम इन की जगह इन से अच्छे बना सकते हैं ।

१२. और जिस की ये जल्दी मचाते रहे हैं, जिसे ये दूर और असम्भव समझ रहे थे आज वह क़रीब और सम्भव हो गया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१–नूह
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' में हज़रत नूह अ० के धर्म-प्रचार और उन की जाति वालों के धर्म-विरोध आदि का उल्लेख हुआ है। इसी सम्पर्क से इस सूरा का नाम 'नूह' रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह मक्का के आरम्भिक काल की 'सूरतों' में से है। सूरा की वार्त्ताओं से पता चलता है कि इस सूरा के अवतीर्ण होने के समय 'काफ़िरों' का विरोध बहुत बढ़ चुका था और वे अवज्ञा और बुराई पर जमे हुये थे। 'रसूल' की बात मानने की अपेक्षा उस का विरोध ही किये जा रहे थे।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

यह 'सूरा' उन लोगों के बारे में है जो अवज्ञा पर आरूढ़ हों और 'रसूल' का विरोध ही किये जा रहे हों।

प्रस्तुत 'सूरा' में हज़रत नूह अ० का क़िस्सा बयान कर के एक ओर मक्का के 'काफ़िरों' को चेतावनी दी गई है कि उन्हों ने अल्लाह के 'रसूल' के बारे में जो नीति अपना रक्खी है वह उन के लिए कदापि हितकर नहीं हो सकती। इस से पहले नूह (अ०) की जाति वालों ने अपने 'नबी' का विरोध किया था इस का परिणाम यह हुआ कि अल्लाह की यातना ने उन्हें आ घेरा और वे जलमग्न हो कर रह गये। प्रस्तुत सूरा में मुसलमानों और स्वयं नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है कि वे 'काफ़िरों' के विरोध पर धैर्य्य से काम लें, अल्लाह उसी तरह से सत्य के अनुगामियों का सहायक है जिस तरह पूर्व काल में वह सहायक रहा है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' नूह

(मक्का में उतरी — 'आयतें' २८)

NOAH

Revealed at Mecca

سورة نوح مكية وهي ثمان وعشرون آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर भेजा कि अपनी जाति वालों को सचेत कर दो इस से पहले कि उन पर दुःख भरी यातना आ जाये।

1. Lo We sent Noah unto his people (saying): Warn thy people ere the painful doom come unto them.

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾

२. उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! मैं तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला (नबी) हूँ

2. He said: O my people! Lo! I am a plain warner unto you.

قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

३. (कहता हूँ) कि अल्लाह की बन्दगी करो और उस का डर रक्खो और मेरा कहना मानो,

3. (Bidding you): Serve Allah and keep your duty unto Him and obey me,

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ﴿٣﴾

४. वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और एक नियत समय तक तुम्हें मुहलत प्रदान करेगा। निस्सन्देह जब अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय आ जाता है, तो फिर टाला नहीं जाता; कहीं तुम जानते होते।

4. That He may forgive you somewhat of your sins and respite you to an appointed term. Lo! the term of Allah, when it cometh, cannot be delayed, if ye but knew.

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

५ उस ने कहा : 'रब' ! मैं ने अपनी जाति वालों को रात-दिन (तेरी ओर) बुलाया

5. He said: My Lord! Lo! I have called unto my people night and day:

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾

६. तो मेरे बुलाने पर वे भागते ही रहे और कुछ न हुआ;

6. But all my calling doth but add to their repugnance;

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

७. और मैंने जब भी उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे[1] तो उन्हों ने अपने कानों में अपनी उँगलियाँ दे लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिये और अड़े रहे और घमण्ड ही करते रहे।

7. And lo! whenever I call unto them that Thou mayest pardon them they thrust their fingers in their ears and cover themselves with their garments and persist (in their refusal) and magnify themselves in pride.

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾

८. फिर मैं ने उन्हें खुल कर बुलाया,

8. And lo! I have called unto them aloud,

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾

९. फिर मैं ने उन्हें खुल्लमखुल्ला समझाया, और चुपके-चुपके भी[2]।

9. And lo! I have made public proclamation unto them, and I have appealed to them in private.

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿٩﴾

१. दे० सूरा अल-कह्फ़ आयत ५५।
हज़रत नूह अ० अपनी जाति वालों को साढ़े नौ सौ वर्ष तक सत्य धर्म की ओर बुलाते रहे, जब वे उन से बिल्कुल निराश हो गये तब उन्हों ने अपने 'रब' से यह निवेदन किया।

२. अर्थात् उन्हें हर प्रकार से समझने की कोशिश की कि वे किसी तरह सत्य को ग्रहण कर लें और 'शिर्क' से बाज़ आ जायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. तो मैं ने कहा : तुम अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थना करो, निस्सन्देह वह अत्यन्त क्षमाशील है।

10. And I have said: Seek pardon of your Lord. Lo! He was ever Forgiving.

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾

११. वह आकाश को तुम पर ख़ूब बरसता छोड़ेगा,

11. He will let loose the sky for you in plenteous rain,

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿١١﴾

१२. और तुम्हें और ज्यादा माल और बेटे देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।

12. And will help you with wealth and sons, and will assign unto you Gardens and will assign unto you rivers.

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾

१३. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए गौरव को स्वीकार नहीं करते

13. What aileth you that ye hope not toward Allah for dignity:

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

१४. जब कि उस ने विभिन्न अवस्थाओं में तुम्हारी सृष्टि की ?—

14. When He created you by (divers) stages?

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾

१५. 'क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने किस प्रकार से सात आकाश ऊपर-तले पैदा किये,

15. See ye not how Allah hath created seven heavens in harmony,

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

१६. और उन के बीच चन्द्रमा को प्रकाश बनाया, और सूर्य को प्रदीप ?

16. And hath made the moon a light therein, and made the sun a lamp?

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

१७. और अल्लाह ने तुम्हें भूमि से विशेष रूप में विकसित किया,

17. And Allah hath caused you to grow as a growth from the earth.

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾

१८. फिर तुम्हें उस (भूमि) में लौटा देगा, और फिर ('क़ियामत' में) तुम्हें विशेष रूप से निकालेगा[४]।

18. And afterward He maketh you return thereto, and He will bring you forth again, a (new) forthbringing.

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

१९. और अल्लाह नें तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया

19. And Allah hath made the earth a wide expanse for you.

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾

२०. ताकि तुम उस की कुशादा राहों में चलो—

20. That ye may thread the valley-ways thereof.

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

२१. नूह ने कहा 'रब' ! इन्हों ने मेरी अवज्ञा की और ऐसे लोगों के पीछे चले[५] जिन्हें उन के माल और उन की औलाद ने बस घाटा-ही-घाटा दिया;

21. Noah said: My Lord! Lo! they have disobeyed me and followed one whose wealth and children increase him in naught save ruin;

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

३. ऐसा मालूम होता है कि यहाँ से आयत २० तक अल्लाह ने अपने बन्दों को सम्बोधित किया है। यही कारण है कि यहाँ से मूल ग्रन्थ में आयतों का क़ाफ़िया (सज) बदल गया है।

४. अर्थात मृत्यु के पश्चात् फिर वह तुम्हें जीवित कर के उठावेगा। और फिर आदि से अन्त तक के समस्त लोगों का अन्तिम फ़ैसला कर दिया जायेगा।

५. अर्थात् इन्हों ने मेरी बात नहीं मानी। ये उन 'काफ़िर' सरदारों के पीछे चलते और उन की बातों का पालन करते रहे जो धूर्त, घमण्डी और भोग-विलास में ग्रस्त थे। वे स्वयं पथभ्रष्ट थे, इन को भी ले डूबे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. और जो बहुत बड़ी चाल चले,

२३. और कहा : कभी भी अपने 'इलाहों' (देवताओं) को न छोड़ना। और न 'वद्द' को छोड़ना, और न 'सुवाअ' को, और न 'यग़ूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' को[६]।

२४. और उन्होंने बहुतों को गुमराह कर दिया है, तो अब तू इन ज़ालिमों को गुमराह ही होने दे[७]।

२५. वे अपनी ख़ताओं के कारण डुबो दिये गये,[८] फिर आग में दाखिल कर दिये गये। और वे अपने लिए अल्लाह के सिवा किसी प्रकार के सहायक न पा सके।

२६. और नूह ने कहा : 'रब्ब'! तू धरती पर इन 'काफ़िरों' में से किसी बसने वाले को न छोड़।

२७. यदि तू इन्हें छोड़ देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इन के यहाँ दुस्साहसी और कृतघ्न ही औलाद पैदा होगी[९]।

२८. 'रब्ब'! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माता-पिता को और जो भी मेरे घर में 'ईमान' के साथ दाखिल हो, और (समस्त) 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों को, और इन ज़ालिमों को अब विनष्ट ही कर दे।

22. And they have plotted a mighty plot,

23. And they have said: Forsake not your gods. Forsake not Wadd, nor Suw'a, nor Yaghuth and Ya'uq and Nasr.

24. And they have led many astray, and Thou increasest the wrong-doers in naught save error.

25. Because of their sins they were drowned, then made to enter a Fire. And they found they had no helpers in place of Allah.

26. And Noah said: My Lord! Leave not one of the disbelievers in the land.

27. If Thou shouldst leave them, they will mislead Thy slaves and will beget none save lewd ingrates.

28. My Lord! forgive me and my parents and him who entereth my house believing, and believing men and believing women, and increase not the wrong-doers in aught save ruin.

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾
وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ
وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾
وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾
مِمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ
يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾
وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ
مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾
إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا
يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾
رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ
وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

———

६. 'वद्द', 'सुवाअ', 'यग़ूस', 'यऊक़', और 'नस्र' वास्तव में अरब के 'मुश्रिकों' के देवताओं के नाम हैं जिन की मूर्तियाँ बना कर अरब के 'मुश्रिक' पूजते थे। क़बीला कल्ब के लोग 'वद्द' के उपासक थे। हुज़ैल क़बीला 'सुवाअ' की पूजा करता था। इस की मूर्ति मदीना के एक ग्राम यंबूअ के निकट स्थापित थी। बनू लहयान के लोग इस के मन्दिर के प्रबन्धक थे। क़बीला मज़हज और जुरश वालों का सम्बन्ध 'यग़ूस' देवता से था। इसी तरह क़बीला ख़ैवान के लोग 'यऊक़' के आगे झुकते थे। क़बीला हिमयर का बुत 'नस्र' था (दे० किताबुल असनाम)।

जिस तरह अरब के लोग विभिन्न देवी-देवताओं के उपासक थे उसी तरह नूह अ० की जाति वाले भी अल्लाह को छोड़ कर विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना में लगे हुये थे। नूह अ० के क़िस्से में 'वद्द', 'सुवाअ' आदि के उल्लेख का अर्थ यह नहीं है कि ये नूह अ० की जाति वालों के बुतों के नाम हैं बल्कि इस का अर्थ केवल यह है कि अरबों के देवी-देवताओं की तरह उन के भी विभिन्न देवी-देवता थे। यहाँ अरबों के बुतों का उल्लेख कर के वास्तव में अरब के 'मुश्रिकों' पर व्यंग्य किया गया है।

७. यह प्रार्थना हज़रत नूह अ० ने उस समय की जब कि वे अपनी जाति के लोगों से बिल्कुल निराश हो गये। और उन्होंने समझ लिया कि बिगाड़, उपद्रव और 'कुफ़्र' और 'शिर्क' के अतिरिक्त इन से किसी दूसरी बात की आशा नहीं की जा सकती।

८. दे० सूरा हूद आयत ३७-४५; सूरा अल-अनकबूत आयत १४; अल-क़मर आयत ११-१५।

९. अर्थात् इन से भलाई की अब कोई भी आशा नहीं है। दे० सूरा हूद आयत ३६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२ – अल-जिन्न
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-जिन्न' सूरा की 'आयत' १ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

साधारणतया इस 'सूरा' के बारे में यह विचार प्रकट किया गया है कि यह सूरा नबी सल्ल० के तायफ़ की बस्ती से लौटनें पर उतरी है अर्थात् 'हिजरत' से दो वर्ष पूर्व। मक्का वालों ने जब नबी सल्ल० की बात मानने से इन्कार कर दिया और कम ही लोगों ने आप (सल्ल०) के दिखाये हुए मार्ग को ग्रहण किया तो आप तायफ़ नामक बस्ती में लोगों को सत्य का आमन्त्रण देने के लिये गये। तायफ़ वालों ने आप (सल्ल०) के साथ अच्छा व्यवहार नयीं किया। वहाँ आप (सल्ल०) का उपहास किया गया और आप (सल्ल०) पर पत्थर फेंके गये। मक्का में विरोधियों का अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था; आप के कितने ही साथी 'हिजरत' कर के हब्शा (Abyssinia) जा चुके थे, जो रह गये थे उन्हें अत्यन्त कष्टों और मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसी परिस्थिति में आप (सल्ल०) और आप के अनुयायियों के लिए यह बात बड़ी ही तसल्ली की थी कि आप पर 'ईमान' ला कर कुछ 'जिन्नों' ने अपनी जाति वालों तक सत्य का सन्देश पहुँचाया, जब कि नबी सल्ल० की अपनी जाति और कुल के लोग आप के दुश्मन बने हुये थे। फिर अधिक समय नहीं लगा कि मदीना से कुछ लोग आ कर आप (सल्ल०) से मिले और आप के लिए मदीना 'हिजरत' कर जानें की राह पैदा हुई। यही 'हिजरत' है जो दुनिया के इतिहास में एक क्रांति और महान् परिवर्त्तन का कारण सिद्ध हुई।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

प्रस्तुत सूरा इस वास्तविकता को भली-भाँति खोल कर सामने रखती है कि 'क़ुरआन' 'शिर्क' को ढाने और उस का पूर्ण रूप से उन्मूलन करने के लिए उतरा है।

प्रस्तुत 'सूरा' में उन 'जिन्नों' के कथनों का उल्लेख हुआ है जो क़ुरआन सुन कर उस पर 'ईमान' ला चुके थे और 'शिर्क' से बिल्कुल बेज़ार थे। 'जिन्नों' के जिन कथनों और आलोचनाओं का उल्लेख इस सूरा में हुआ है उस से 'शिर्क' का तर्कयुक्त खण्डन हो जाता है। और यह बात खुल कर सामने आ जाती है कि 'जिन्न' भी अल्लाह के पैदा किये हुये हैं अल्लाह के प्रभुत्व में वे कदापि शरीक नहीं कि कोई अल्लाह के सिवा उन की पनाह ढूंढ़नें लगे।

फिर इस 'सूरा' से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह की स्कीम को कोई असफल नहीं बना सकता। कल्याण का एक मात्र साधन यही है कि लोग अपने को अल्लाह के अर्पण कर के उस के आदेशों के पालन में लग जावें।

अल्लाह के 'रसूल' का क्या स्थान होता है इस सूरा सें इस विषय पर भी भली-भाँति प्रकाश पड़ता है। 'रसूल' का कर्त्तव्य भी यही है कि वह एक अल्लाह को पुकारे और केवल उसी की 'इबादत' और उपासना करे। अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराये। जिस तरह दूसरे लोग अल्लाह के पैदा किये हुये और उस के बन्दे हैं ठीक उसी तरह 'रसूल' और 'नबी' भी अल्लाह ही के पैदा किये हुये और उस के बन्दे होते हैं। वे न अल्लाह के अवतार होते हैं और न अल्लाह के बेटे और पुत्र होते हैं। ग़ैब की उन बातों से जो अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं वे भी अपरिचित होते हैं। लोगों की हानि और लाभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के मालिक भी वे नहीं होते। उन का काम केवल लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचा देना है। लोगों को सीधे मार्ग पर लाना यह अल्लाह का काम है[1]।

प्रस्तुत 'सूरा' से यह बात भी मालूम होती है कि अल्लाह अपने 'रसूल' पर कितनी निगाह रखता है। 'नबी' के सारे काम अल्लाह के निर्देशन के अन्तर्गत होते हैं। अल्लाह यह चाहता है कि उस का सन्देश सुरक्षित रूप में उस के बन्दों तक पहुँच जाये और वह इस के लिए पूरी व्यवस्था करता है। उस की दृष्टि से कोई भी चीज़ ओझल नहीं हो सकती। उसे हर चीज़ की पूरी ख़बर होती है। इस लिए किसी काम और किसी उद्देश्य की पूर्ति में उसे किसी प्रकार का धोखा नहीं हो सकता।

———

१. अल्लाह उन्हीं लोगों को राह दिखाता है जो सत्य-प्रिय और अल्लाह से डरने वाले होते हैं, जिन्हें वास्तव में सत्य की खोज होती है। जो हर प्रकार के पक्षपात से रहित हो कर सत्य की आवाज़ पर कान धरते और उस पर विचार करते हैं। जो अल्लाह की दी हुई बुद्धि से काम लेते हैं। अनुचित पक्षपात, तुच्छ अभिलाषाओं, गर्व और अहंकार में पड़ कर अन्धे नहीं बन जाते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-जिन्न

(मक्का में उतरी—'आयतें' २८)

THE JINN

Revealed at Mecca

سورة الجن مكية وهي ثمان وعشرون آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. (हे मुहम्मद ! लोगों से) कह दो : मेरी ओर 'वह्य' की गई है कि 'जिन्नों' में से कुछ लोगों ने (इस 'किताब' को) सुना, तो कहा : हम ने एक अद्‌भुत 'क़ुरआन' सुना है[1],

1. Say (O Muhammad): It is revealed unto me that a company of the Jinn gave ear, and they said: Lo! it is a marvellous Qur'an,

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝١

२. वह सीधा मार्ग दिखाता है, तो हम उस पर 'ईमान' ले आये और हम कदापि किसी को अपने 'रब' का सहभागी न ठहरायेंगे।

2. Which guideth unto righteousness, so we believe in it and we ascribe unto our Lord.

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢

३. और यह कि हमारे 'रब' का गौरव अत्यन्त ऊँचा है—उस ने न तो किसी को अपनी पत्नी बनाया और न किसी को अपनी औलाद[2],

3. And (we believe) that He—exalted be the glory of our Lord!—hath taken neither wife nor son,

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣

४. और यह कि हम में का मूर्ख[3] अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर बहुत दूर की बात कहता था।

4. And that the foolish one among us used to speak concerning Allah an atrocious lie:

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤

५. और यह कि हम ने समझ रक्खा था कि मनुष्य और 'जिन्न' अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर कदापि झूठी बात न कहेंगे।

5. And lo! we had supposed that humankind and Jinn would not speak a lie concerning Allah—

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝٥

६. और यह कि मनुष्यों में से कुछ ऐसे लोग रहे हैं जो 'जिन्न' में से कुछ लोगों की शरण लेते, तो उन्हों ने उन्हें और चढ़ा दिया[4];

6. And indeed (O Muhammad) individuals of humankind used to invoke the protection of individuals of the Jinn, so that they increased them in revolt (against Allah);

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٦

१. सूरा अल-अहक़ाफ़ में 'जिन्नों' के 'क़ुरआन' सुनने और उन के अपनी जाति वालों के पास जा कर उन्हें 'इस्लाम' की ओर आमन्त्रित करने का उल्लेख हुआ है (दे० सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत २९-३२)। सम्भव है जब वे दूसरी बार नबी (सल्ल०) के पास आये हों तो आप (सल्ल०) ने उन्हें सूरा अल-अहक़ाफ़ पढ़ कर सुनाई हो, जिस में उन के क़ुरआन सुनने और अपनी जाति वालों को 'ईमान' की ओर बुलाने का उल्लेख हुआ है। उस के सुनने से स्वभावतः उन्हें आश्चर्य हुआ हो और उन का 'ईमान' और बढ़ गया हो।

२. अर्थात् यह अल्लाह की महानता और उस के गौरव के सर्वथा प्रतिकूल है कि उस का कोई बेटा या उस की कोई पत्नी हो और इस प्रकार प्रभुत्व में उस के साथ दूसरे भी शरीक हों। यह धरती और आकाश और अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि इसी बात की साक्षी है कि वह एक और परम स्वतन्त्र है।

३. अर्थात् हमारे सरदार और नायक जिन्हें अपनी बुधिमत्ता और समझदारी का बड़ा दावा है हालांकि वास्तव में वे मूढ़ और कमीने क़िस्म के लोग हैं।

४. अर्थात् मनुष्यों में गुमराह और भटके हुये लोग अल्लाह को छोड़ कर 'जिन्नों' की पनाह लेते थे इस से उन 'जिन्नों' की सरकशी और ढिठाई और बढ़ गई। 'जिन्नों' से पनाह माँगने की विभिन्न रीति थी। ऐसा भी होता कि सफ़र में जब क़ाफ़िला किसी घाटी में ठहरता, तो क़ाफ़िले का सरदार वहाँ खड़ा हो कर कहता : "मैं इस घाटी के ('जिन्न') सरदार की पनाह चाहता हूँ उस की जाति के कमीने लोगों के मुक़ाबले में"। यह तो एक तरीक़ा था इसी तरह और बहुत से तरीक़े प्रचलित थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. और यह कि उन्हों ने समझ लिया था जैसे तुम ने समझ लिया था कि अल्लाह किसी को न उठायेगा।[५]

7. And indeed they supposed, even as ye suppose, that Allah would not raise anyone (from the dead)—

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾

८. और यह कि हम ने आकाश को टटोला तो पाया कि उसें सख़्त चौकीदार और अग्नि-शिखाओं से भर दिया है।

8. And (the Jinn who had listened to the Qur'an said): We had sought the heaven but had found it filled with strong warders and meteors.

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾

९. और यह कि हम उस के अवस्थानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। परन्तु अब कोई सुनने जाये तो अपने लिए एक अग्निशिखा को घात में लगा पायेगा[६];

9. And we used to sit on places (high) therein to listen. But he who listened now findeth a flame in wait for him;

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾

१०. और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के लिए जो धरती में हैं बुराई का इरादा किया गया है, या उन के 'रब' ने उन्हें भलाई के मार्ग पर लगाने का इरादा किया है।

10. And we know not whether harm is boded unto all who are in the earth, or whether their Lord intendeth guidance for them.

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾

११. और यह कि हम में कुछ नेक लोग हैं और हमीं में और तरह के भी, हम अलग-अलग मार्गों पर थे।

11. And among us there are righteous folk and among us there are far from that. We are sects having different rules:

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾

१२. और यह कि हम ने समझ लिया कि हम अल्लाह को धरती में रह कर हरा नहीं सकते, और न उसे भाग कर हरा सकते हैं।

12. And we know that we cannot escape from Allah in the earth, nor can we escape by flight.

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ﴿١٢﴾

१३. और यह कि हम ने जब 'हिदायत' (मार्ग दर्शन) की बात सुन ली, तो उसे मान लिया, तो जो कोई अपने 'रब' पर 'ईमान' ले आयेगा, उसे न इस का कोई भय होगा कि उस का हक़ मारा जायेगा और न इस का कि उस के साथ कोई अत्याचार होगा।

13. And when we heard the guidance, we believe therein, and whose believeth in his Lord, he feareth loss nor oppression.

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾

१४. और हम में कुछ तो 'मुस्लिम' हैं और हम में कुछ मार्ग से फिरे हुये हैं। तो जो 'मुस्लिम' हुये, उन्हों ने तो भलाई का मार्ग पसन्द कर लिया[७]।

14. And there are among us some who have surrendered (to Allah) and there are among us some who are unjust. And whoso hath surrendered to Allah, such have taken the right path purposefully.

وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾

१५. रहे वे लोग जो मार्ग से फिरे हुये हैं, तो वे 'जहन्नम' का ईंधन हुये।

15. And as for those who are unjust, they are firewood for hell.

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

५. अर्थात् वे समझते थे कि कोई 'रसूल' आने वाला नहीं है।
६. मतलब यह है कि अब हम देखते हैं कि आसमान पर सख़्त पहरे लगे हुये हैं, अब हम उधर की कोई ख़बर भी नहीं सुन सकते (दे० सूरा अल-हिज्र फ़ुटनोट १०-११)।
७. अर्थात् यही लोग हैं जो चेतनाशील कहे जाने के योग्य हैं। इन्हों ने भलाई का सीधा मार्ग अपनाया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. और यह कि यदि वे मार्ग पर ठीक-ठीक लग जाते तो हम उन्हें भली-भाँति जल-सम्पन्न कर देते[८]।

16. If they (the idolaters) tread the right path, We shall give them to drink of water in abundance.

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

१७. ताकि हम उस में उन की परीक्षा करें, और जो कोई अपने 'रब' के 'ज़िक्र' से मुँह मोड़ेगा तो वह उसे यातना में चढ़ाता चला जावेगा।

17. That We may test them thereby, and whoso turneth away from the remembrance of his Lord, He will thrust him unto ever-growing torment.

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

१८. और यह कि 'सजदे' अल्लाह के हैं तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।

18. And the places of worship are only for Allah, so pray not unto anyone along with Allah.

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾

१९. और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारने खड़ा हुआ, तो वे उस पर टूटे पड़ते थे।

19. And when the slave! of Allah stood up in prayer to Him, they crowded on him, almost stifling.

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

२०. (हे मुहम्मद!) कह दो : मैं तो केवल अपने 'रब' को पुकारता हूँ और उस के साथ किसी को शरीक नहीं करता।

20. Say (unto them, O Muhammad): I pray unto Allah only, and ascribe unto Him no partner.

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾

२१. कह दो : मेरे वस में न तुम्हें हानि पहुँचानी है और न मार्ग पर लाना[९]—

21. Say: Lo! I control not hurt nor benefit for you.

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

२२. कह दो : अल्लाह से मुझे कोई नहीं बचा सकता, और मैं उस के सिवा कहीं शरण लेने की जगह नहीं पा सकता—

22. Say: Lo! none can protect me from Allah, nor can I find any refuge beside Him.

قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

२३. बस अल्लाह की ओर से पहुँचा देना है; और जो कोई अल्लाह और उस के 'रसूल' की अवज्ञा करेगा, उस के लिए 'जहन्नम' की आग है, जिस में ऐसे लोग अनन्त तक पड़े रहेंगे।

23 (Mine is) but conveyance (of the truth) from Allah, and His messages; and whoso disobeyeth Allah and His messenger, lo! his is fire of hell wherein such dwell for ever.

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿٢٣﴾

२४. जब ये उसे देख लेंगे जिस का इन से वादा किया जाता है, तो इन्हें मालूम हो जायेगा कि कौन है कमज़ोर सहायक वाला और कम संख्या वाला[१०]।

24. Till (the day) when they shall behold that which they are promised (they may doubt); but then they will know (for certain) who is weaker in allies and less in multitude.

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

२५. (हे मुहम्मद!) कह दो : मैं नहीं जानता कि जिस का तुम से वादा किया जाता है वह निकट है या मेरा 'रब' उस के लिए कोई लम्बी मुद्दत ठहरा देगा[११]।

25. Say (O Muhammad, unto the disbelievers): I know not whether that which ye promised is nigh, or if my Lord hath set a distant term for it.

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿٢٥﴾

८. अर्थात हर तरफ़ हरियाली-ही-हरियाली हो जाती। उन्हें खूब रोज़ी देते। दे० सूरा अज़-ज़ारियात आयत २२।

९. अर्थात मैं तुम्हारे लाभ-हानि का मालिक नहीं, यह अधिकार तो एक अल्लाह ही को प्राप्त है। वही जिसे चाहे सीधे मार्ग पर चलाये और जिसे चाहे भटकने दे। हमारा काम तो केवल सन्देश पहुँचा देना है।

१०. अर्थात आज 'काफ़िर' और 'मुश्रिक' लोग समझते हैं कि उन का जत्था भारी है और मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथी बहुत थोड़े हैं, उस दिन इन 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को अपने दावे की वास्तविकता मालूम हो जायेगी; उन्हें मालूम हो जायेगा कि वे दुनिया में सर्वथा धोखे में रहे और उन्हों ने व्यर्थ अभिमान किया। जिन पर वे भरोसा करते थे उन्हें स्वयं अपनी पड़ी होगी।

११. अर्थात् हमें इस का भी ज्ञान नहीं है कि आने वाला समय जिस का वादा किया गया है क़रीब है या उस के आने में देर है। ग़ैब और परोक्ष का जानने वाला अल्लाह ही है। हम तो वही जान सकते हैं जिस का ज्ञान वह हमें दे दे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. वह परोक्ष का जानने वाला है, और अपने परोक्ष को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता[१२]।

26. (He is) the Knower of the Unseen, and He revealeth unto none His secret,

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

२७. हाँ, जो उस ने कोई 'रसूल' पसन्द कर लिया तो उस के आगे और उस के पीछे चौकीदार लगाये रखता है[१३]।

27. Save unto every messenger whom He hath chosen, and then He maketh a guard to go before him and a guard behind him.

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

२८. ताकि वह जान ले[१४] कि उन्हों ने अपने 'रब' के सन्देश पहुँचा दिये। और (यों तो) जो कुछ उन के पास है उसे उस ने घेर रक्खा है, और हर चीज़ को गिन रक्खा है[१५]।

28. That He may know that they have indeed conveyed the messages of their Lord. He surroundeth all their doings, and He keepeth count of all things.

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

---

१२. अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) की जो बातें उस ने अपने लिए ख़ास कर ली हैं उस का ज्ञान वह किसी और को प्रदान नहीं करता।

१३. अर्थात् जिसे वह 'रसूल' चुनता है उस की पूरी निगरानी करता है। उस के प्रत्येक काम, उस की गतिविधि और उस के मामले की पूरी ख़बर रखता है। 'नबी' के लिए उस ग़ैब के जानने की आवश्यकता भी नहीं जिसे अल्लाह ने अपने लिए ख़ास कर रक्खा है। 'रसूल' के लिए बस यही काफ़ी है कि उस के 'रब' को हर चीज़ का ज्ञान है और वह उस के मामले से बेख़बर नहीं है। वह अपने 'रसूल' को जो हुक्म भी दे रहा है भलाई उसी में है।

१४. अर्थात् देख ले :

१५. अर्थात् सब कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। कोई चीज़ भी उस से छुपी हुई नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३-अल-मुज़्ज़म्मिल
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुज़्ज़म्मिल' (The enshrouded one) सूरा की 'आयत' १ से लिया गया है। 'अल-मुज़्ज़मिल' से संकेत नबी सल्ल० की ओर है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

साधारणत: इस 'सूरा' की गणना मक्का की प्रारम्भिक 'सूरतों' में होती है। सूरा की आरम्भिक १९ 'आयतों' पर विचार करने से अनुमान होता है कि ये 'आयतें' उस समय उतरी होंगी जब कि न केवल यह कि क़ुरआन का बहुत-कुछ भाग उतर चुका था बल्कि 'काफ़िरों' का विरोध भी बढ़ चुका था।

'सूरा' की अन्तिम 'आयत'[1] के बारे में साधारणत: यह समझा जाना है कि यह मदीना में अवतीर्ण हुई है। इस में लड़ाई, ज़मीन में सफ़र करने आदि का उल्लेख हुआ है। ये चीज़ें इस्लाम के प्रारम्भिक काल में न थीं। इस के अतिरिक्त हज़रत आइशा रज़ि० के उल्लेख से भी मालूम होता है कि यह 'आयत' बाद में उतरी है और विषय के सम्पर्क से इस सूरा में सम्मिलित कर दी गई है। इस नियम के अन्तर्गत क़ुरआन में बहुत सी 'आयतें' विभिन्न 'सूरतों' में सम्मिलित हैं।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' और आगे आने वाली सूरा (अल-मुद्दस्सिर) में बड़ी समानता पाई जाती है। दोनों ही 'सूरतों' में नबी सल्ल० को इस बात पर उभारा गया है कि आप (सल्ल०) लोगों को सचेत करें और उन्हें सत्य धर्म की ओर बुलावें। धैर्य्य से काम लें और 'नमाज़' पर जमें और समझ लें कि क़ुरआन के द्वारा अल्लाह जिसे चाहेगा सीधा मार्ग दिखा देगा[2]।

प्रस्तुत 'सूरा' के प्रारम्भिक भाग में नबी सल्ल० को 'नमाज़' का विशेष आदेश दिया गया है[3]। और बताया गया है कि अल्लाह आप (सल्ल०) पर एक भारी बात (का बोझ) डालने वाला है। यह वास्तव में इस बात की ओर संकेत है कि आप को एक बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाने वाली है। यह ज़िम्मेदारी वही है जिस का सूरा अल-मुद्दस्सिर की दूसरी 'आयत' में अल्लेख किया गया है अर्थात् लोगों को डराने, सचेत करने और उन्हें सत्य की ओर बुलाने की ज़िम्मेदारी। इस भारी ज़िम्मेदारी के बोझ को वही व्यक्ति उठा सकता है जिस ने अपने को इस के लिए तैयार कर लिया हो। इस तैयारी के लिए आवश्यक है कि आदमी रात में उठ कर 'नमाज़' में अल्लाह के आगे खड़ा हो और 'क़ुरआन' पढ़े। इस प्रकार 'नमाज़' उसे उस के 'रब' से जोड़ देगी। और उस में यह शक्ति उत्पन्न करेगी कि वह अपने 'रब' की डाली हुई ज़िम्मेदारी को सहार सके। रात में उठना अत्यन्त कठिन होता है। इस से एक ओर मन का नियन्त्रण होता है दूसरी ओर रात के समय का वातावरण अत्यन्त शान्तिमय होता है। इस समय जो कुछ पढ़ा जाये वह हृदयांकित होता चला जाता है। रात में उठ कर अल्लाह के आगे खड़ा होना तामस मन के दमन का एक अचूक साधन है।

१. दे० आयत २०।
२. दे० सूरा अल-मुज़्ज़मिल आयत ४, १९; सूरा अल-मुद्दस्सिर आयत ३१, ५४।
३. दे० आयत १—४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरा के आरम्भ में यद्यपि नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है परन्तु आज भी यह सम्बोधन हर उस व्यक्ति से है जो नबी सल्ल० के मिशन को ले कर चलना चाहे। यद्यपि 'नमाज़' का यह विशेष आदेश नबी सल्ल० को सम्बोधित कर के दिया गया था, परन्तु आप (सल्ल०) के साथ आप के साथियों की एक जमात भी रात की 'नमाज़' में खड़ी रहती थी[1]। आगे चल कर अल्लाह ने मुसलमानों की कठिनाइयों को देखते हुये इस हुक्म में नर्मी पैदा कर दी[2]।

इस 'सूरा' में नबी सल्ल० को यह आदेश दिया गया है कि आप (सल्ल०) सब से टूट कर अपने 'रब' के हो जायें। और उसी पर भरोसा रक्खें। वह सम्पूर्ण संसार का 'रब' है, उस के सिवा कोई नहीं जिसे आदमी 'इलाह' और अपना इष्ट बनाये। उन की बातों पर 'सब्र' से काम लें जो आप को झुठलाते और सत्य को मानने मे इन्कार करते हैं।

फिर उदाहरणार्थ फ़िरऔन को पेश किया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने उस के पास अपना 'रसूल' भेजा था परन्तु फ़िरऔन ने इन्कार की नीति अपनाई तो अल्लाह की पकड़ से कोई उसे बचा न सका।

'सूरा' के अन्त में 'ईमान' वालों को आदेश दिया गया है कि वे 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें[3]। और अपने 'रब' से क्षमा की प्रार्थना करते रहें। मनुष्य कितनी ही कोशिश क्यों न करे अल्लाह की बन्दगी का हक़ कहाँ अदा होता है? ऐसी हालत में मनुष्य का यही कर्त्तव्य है कि वह क्षमा की प्रार्थना करते हुये अपने 'रब' की शरण में आ जाये। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है, वह उसे अपनी दया का पात्र बना लेगा।

———

१. दे० आयत २०।
२. दे० आयत २०।
३. यह घाटे का सौदा कदापि नहीं है। अल्लाह इस का भरपूर बदला प्रदान करने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुज़्ज़म्मिल
(मक्का में उतरी — 'आयतें' २०)

THE ENSHROUDED ONE
Revealed at Mecca.

سُورَةُ المُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ عِشْرُونَ آيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे कपड़े में लिपटने वाले[१] !

1. O thou wrapped up in thy raiment!

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝١

२. रात को खड़े रहा करो,[२] थोड़ा समय छोड़ कर[३]—

2. Keep vigil the night long, save a little—

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٢

३. आधी रात, या उस में से कुछ कम कर लो

3. A half thereof, or abate a little thereof.

نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۝٣

४. या उस से कुछ बढ़ा लो—और 'क़ुरआन' पढ़ो सँभाल-सँभाल कर—

4. Or add (a little) thereto — and chant the Qur'an in measure.

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۝٤

५. हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं[४]।

5. For We shall charge thee with a word of weight.

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝٥

६. रात का समाँ जो है वह अत्यन्त अनुकुलता रखता है और उस की बात अत्यन्त सधी हुई होती है[५]।

6. Lo! the vigil of the night is (a time) when impression is more keen and speech more certain.

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۝٦

७. तुम्हारे लिए दिन में बड़ी गुन्जाइश है[६]—

7. Lo! thou hast by day a chain of business.

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۝٧

८. और अपने 'रब' का नाम लो और सब कुछ त्याग कर उस की ओर लग जाओ[७]—

8. So remember the name of thy Lord and devote thyself with a complete devotion—

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝٨

१. यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है। आगे की 'आयतों' में जिस समय उठ कर अल्लाह के आगे खड़े होने का आदेश दिया गया है वह सोने का समय होता है, साधारणतया लोग उस समय कपड़ों में लिपटे हुये सो रहे होते हैं। इस सम्पर्क से इस 'सूरा' में आप (सल्ल०) को "हे कपड़े में लिपटने वाले" कह कर सम्बोधित किया गया है। लोगों का यह भी कहना है कि जिस समय यह सूरा उतरी है आप चादर ओढ़े हुये थे। पहली बार जब आप पर 'वह्य' उतरी है उस समय भी आप ने कहा था कि मुझे कुछ उढ़ा दो, आप घबराये हुये थे।

२. अर्थात रात्रि के समय अल्लाह की इबादत करो और 'नमाज़' पढ़ा करो।

३. अर्थात थोड़ी देर आराम भी कर लिया करो।

४. भारी बात से अभिप्रेत लोगों को सचेत करने और उन्हें सच्चाई की ओर बुलाने की भारी ज़िम्मेदारी है जैसा कि आगे आने वाली सूरा में आदेश दिया गया है कि उठो और लोगों को सचेत करो (दे० सूरा अल-मुद्दस्सिर आयत २)।

५. यह वह समय होता है जब कि पूर्णतः शान्ति होती है। अल्लाह को याद करने और क़ुरआन के पढ़ने का यह अत्यन्त उत्तम समय होता है। आदमी रात के प्रारम्भिक भाग में एक नींद पूरी कर के इस समय उठता है; शान्तिमय वातावरण में वह जो चीज़ भी पढ़ता है वह दिल में बैठती जाती है।

६. अर्थात दूसरे कामों और आराम आदि के लिए दिन का समय है। इस 'आयत' का एक अर्थ यह भी लिया जाता है कि तुम्हारे लिए दिन में बहुत काम हैं इस लिए सब से कट कर एकाग्रचित्त हो कर अल्लाह की ओर प्रवृत्त होने के लिए रात्रि का समय निकालो।

७. अर्थात अल्लाह को याद करते रहो, उसे किसी समय न भूलो। दिन में भी जब कि तुम कोई कार्य कर रहे हो तुम्हारी ज़बान पर अल्लाह ही का नाम हो और तुम्हारे दिल में उसी की याद बसी हुई हो। सब से कट कर वास्तव में तुम उसी एक अल्लाह के हो रहो। तुम्हारा 'इलाह' (पूज्य) वही एक है उस के अतिरिक्त कोई नहीं जिसे आदमी अपनी कामनाओं और चेष्टाओं का लक्ष्य बना सके।

इस 'आयत' को समझने के लिए सूरा अल-आला आयत १५ और सूरा अल-इनशिराह आयत ७ ८ भी सामने रहनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. पूर्व और पश्चिम का रब है; उस के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं तो उसे तुम अपना करता-धरता बना लो[८]।

9. Lord of the East and the West; there is no God save Him; so choose thou Him alone for thy defender—

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ٩

१०. और ये ('काफ़िर' लोग) जो कुछ कहें उस पर सब्र करो, और भले तरीक़े से इन से अलग हो जाओ[९]।

10. And bear with patience what they utter, and part from them with a fair leave-taking.

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ١٠

११. और मुझे और इन झुठलाने वाले, सुख-सम्पन्न लोगों को छोड़ दो;[१०] और इन्हें थोड़ी-सी मुहलत दे दो[११]।

11. Leave Me to deal with the deniers, lords of ease and comfort (in this life); and do thou respite them awhile.

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ١١

१२. हमारे पास भारी-भारी बेड़ियाँ हैं और भड़कती आग,

12. Lo! with Us are heavy fetters and a raging fire,

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ١٢

१३. और भोजन है गले में फँसने वाला, और दु:ख-भरी यातना।

13. And food which choketh (the partaker), and a painful doom.

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ١٣

१४. जिस दिन धरती और पहाड़ थरथरायेंगे, और पहाड़ रेत के भुर-भुरे तूदे हो रहे होंगे।

14. On the day when the earth and the hills rock, and the hills become a heap of running sand.

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ١٤

१५. हम ने तुम्हारी ओर एक 'रसूल' भेजा तुम पर गवाह बना कर, जैसा कि हम ने फ़िरऔन की ओर एक 'रसूल' भेजा था।

15. Lo We have sent unto you a messenger as witness against you, even as We sent unto Pharaoh a messenger.

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ١٥

१६. तो फ़िरऔन ने उस 'रसूल' की अवज्ञा की, फिर हम ने उसे सख़्त पकड़ में ले लिया[१२]।

16. But Pharaoh rebelled against the messenger, whereupon We seized him with no gentle grip.

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ١٦

१७. तो कैसे बचोगे—यदि तुम ने 'कुफ़्' किया—उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा[१३],

17. Then how, if ye disbelieve, will ye protect yourselves upon the day which will turn children grey,

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ١٧

१८. आकाश उस को ले कर फट पड़ेगा। उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है।

18. The very heaven being then rent asunder. His promise is to be fulfilled.

السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ١٨

१९. यह एक अनुस्मारक[१४] है। तो जो कोई चाहे अपने 'रब' की राह ले।

19. Lo! This is a Reminder. Let him who will, then choose a way unto his Lord.

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ١٩

८. उस के सिवा तुम्हारा कार्य-साधक कोई दूसरा नहीं हो सकता तुम्हें उसी पर भरोसा करना चाहिए और उसी को सहायता के लिए पुकारना चाहिए। तुम्हें सफल करने वाला, कष्टों का दूर करने वाला केवल वही है। प्रभुत्व में कोई दूसरा शरीक नहीं है उसके सिवा जो हैं सब उस के मुहताज और उस के पैदा किये हुये हैं।

९. दे० सूरा अल-मुद्दस्सिर आयत ११-१२।

१०. हम इन से निबट लेंगे, तुम कुछ चिन्ता न करो।

११. अर्थात इन के अज़ाब (यातना) के लिए जल्दी न करो। यदि ये बाज़ न आये तो इन के करतूतों का परिणाम जल्द ही इन के सामने आ जायेगा।

१२. इसी तरह यदि तुम भी हमारे 'रसूल' की अवज्ञा करोगे तो तुम्हें हमारी पकड़ से कोई बचा नहीं सकता।

१३. अर्थात 'क़ियामत' का दिन ऐसा होगा कि उस की भीषणता से बच्चे बूढ़े हो जावें।

१४. दे० सूरा अल-हाक़्क़ा फ़ुटनोट १५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0,In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. (हे मुहम्मद !) तुम्हारा 'रब' जानता है कि तुम (नमाज़ में) खड़े रहते हो दो तिहाई रात के लगभग, और कभी आधी रात और कभी तिहाई रात, और एक जमात भी उन लोगों की जो तुम्हारे साथ है। और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा रखता है। उसे मालूम था कि तुम इस की पूरी-पूरी पाबन्दी नहीं कर सकोगे, तो वह तुम पर मेहरबान हुआ[१५]।

तो अब, पढ़ो, जितना क़ुरआन आसानी से हो सके। उसे मालूम था कि तुम में कुछ बीमार भी होंगे, और कुछ लोग अल्लाह का अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करने के लिए धरती में सफ़र करेंगे और कुछ लोग अल्लाह के मार्ग में लड़ेंगे। तो पढ़ो उस में से जितना आसानी से हो जाये, और 'नमाज़' क़ायम करो और 'ज़कात' देते रहो, और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़र्ज़—और जो भी नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के यहाँ अच्छा ही पाओगे और उस का बदला बहुत बढ़ा हुआ—और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावन्त है।

20. Lo! thy Lord knoweth how thou keepest vigil sometimes nearly two-thirds of the night, or (sometimes) half or a third thereof, as do a party of those with thee. Allah measureth the night and the day. He knoweth that ye count it not, and turneth unto you in mercy. Recite, then, of the Qur'an that which is easy for you. He knoweth that there are sick folk among you, while others travel in the land in search of Allah's bounty, and others (still) are fighting for the cause of Allah. So recite of it that which is easy (for you), and establish worship and pay the poor-due, and (so) lend unto Allah a goodly loan. Whatsoever good ye send before you for your souls, ye will surely find it with Allah, better and greater in the recompense. And seek forgiveness of Allah. Lo! Allah is Forgiving, Merciful.

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ
الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ
فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن
سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ
فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَ
آخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا
مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا
لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ
هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا
اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٢٠

---

१५. अर्थात् वह तुम लोगों पर मेहरबान हो गया और रात में उठ कर 'इबादत' करने के बारे में उस ने अपने 'नबी' को जो विशेष आदेश दिये थे (दे० आयत १-८) तुम लोगों की कठिनाई को देखते हुये उस में आसानी पैदा कर दी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७४–अल-मुद्दस्सिर

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुद्दस्सिर' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। 'अल-मुद्दस्सिर' से अभिप्रेत नबी सल्ल० हैं। सूरा के आरम्भ में आयत १ से ले कर आयत ७ तक आप (सल्ल०) को सम्बोधित किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा मक्का में 'नुबूवत' के अत्यन्त आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई है। उल्लेखों (Traditions) से मालूम होता है कि सर्वप्रथम 'वह्य' के पश्चात् कुछ दिनों तक—लगभग छः महीने तक—आप (सल्ल०) को 'वह्य' नहीं हुई। इस के बाद आप (सल्ल०) पर प्रस्तुत 'सूरा' की आरम्भिक 'आयतों' का अवतरण हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह 'सूरा' डरावा, अनुस्मारक, और सब्र की सूरा है। सूरा अल-मुज़्ज़म्मिल की तरह प्रस्तुत 'सूरा' में भी नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये इस बात पर उभारा गया है कि आप (सल्ल०) लोगों को सत्य की ओर बुलायें, अल्लाह की बड़ाई करें (जिस की उत्तम रीति 'नमाज़' है) अल्लाह के मार्ग में पेश आने वाली मुसीबतों और कठिनाइयों में सब्र और धैर्य्य से काम लें। अल्लाह जिसे चाहेगा क़ुरआन के द्वारा सीधे मार्ग पर लगा देगा।

प्रस्तुत सूरा में 'तौहीद' और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने का उल्लेख एक साथ हुआ है, इस से 'सदक़ा' और दान के महत्व का अनुमान किया जा सकता है।

फिर उस व्यक्ति की नीति और मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है जो सत्य का विरोधी और अल्लाह का कृतघ्न है और बताया गया है कि अल्लाह का फ़ैसला उस के बारे में क्या है। नबी सल्ल० को सब्र करने का आदेश दिया गया है और फिर कहा गया है कि अल्लाह उस से निबटने के लिए काफ़ी है जो उस की 'आयतों' का विरोधी है और गर्व के कारण सत्य से विमुख हो रहा है। और 'क़ुरआन' को अल्लाह की किताब मानने से इन्कार करता है, और कहता है कि यह मनुष्य का कलाम है, ईश्वर प्रदत्त ग्रन्थ नहीं है।

फिर आगे चल कर बताया गया है कि किस तरह एक ही चीज़ किसी के लिए विश्वास और 'ईमान' का कारण बनती है और किसी के लिए पथ-भ्रष्टता का कारण होती है। अल्लाह ऐसे लोगों को सीधा मार्ग कदापि नहीं दिखाता जिन के दिलों में रोग हो। और जो सत्य के इन्कार करने पर ही तुले हुये हों।

'क़ुरआन' के बारे में बताया गया कि यह तो एक याददिहानी और नसीहत है, अब जिस का जी चाहे इस के द्वारा शिक्षा ग्रहण करे।

'क़ुरआन' जिस 'आख़िरत' की ख़बर देता है उस के लिए मनुष्य की जानी-पहचानी चीज़ों को साक्षी ठहराया गया है। पहले प्रमाण के रूप में चाँद को पेश किया गया है। सोचने की बात है कि मनुष्य हमेशा अन्धकार में रहना पसन्द नहीं करता वह स्वभावतः प्रकाश चाहता है। अल्लाह उस के लिए प्रकाश का प्रबन्ध करता है। चाँद निकलता है और अंधेरी रात को चाँदनी रात में बदल देता है। हमारी रातें हमेशा अँधेरी नहीं रहतीं और न रात हमेशा के लिए आती है। रात ढलती है और प्रातः का समय आ जाता है। सोचने वालों के लिए प्रकाशमान् चन्द्रमा में, रात के गुज़रने में, प्रातःकाल के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाश में इस बात की ओर प्रत्यक्ष संकेत पाया जाता है कि जीवन की वास्तविकता और उस की सच्चाइयों पर सदैव रहस्य का आवरण नहीं पड़ा रहेगा'। इन पर से भी एक-न-एक दिन परदा हटेगा। और जो चीज़ें आज हमारी निगाहों से ओझल हैं वे सामने आ जायेंगी। हमारा 'रब' जो प्रकाश का सृष्टिकर्त्ता है, जो अंधेरी रातों के बाद उजाली रातें लाता है, और जो रात्रि के पश्चात् अरुणोदय और प्रातःकाल के दर्शन कराता है वह अवश्य एक ऐसा दिन लायेगा जिस दिन धरती और आकाश दिव्य-प्रकाश से चमक उठेंगे और वे सारी चीज़ें जिन पर आज रहस्य का आवरण पड़ा हुआ है प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने आ जायेंगी। और उस दिन हमारे समस्त कर्मों, धारणाओं और विचारों के सत्य और असत्य होने का निर्णय हो जायेगा। उस दिन हर व्यक्ति यह जान लेगा कि सांसारिक जीवन में कौन सत्य का अनुयायी था और कौन अपनी वासनाओं और तुच्छ इच्छाओं का पुजारी बना हुआ था।

फिर आगे चल कर बताया गया है कि अपराधी अपने करतूतों के बवाल से कदापि नहीं बच सकेंगे। उस दिन वे स्वीकार करेंगे कि वास्तव में वे अपराधी थे। उन्हों ने न तो 'नमाज़' पढ़ी और न मुहताजों की ख़बर ली। बातें ही बनाते रहे और 'आख़िरत' के इन्कार पर जमे रहे'।

'सूरा' के अन्तिम भाग में 'काफ़िरों' को सचेत करते हुए उन के बिगाड़ का वास्तविक कारण यह बताया गया है कि वे 'आख़िरत' की ओर से निश्चिन्त हैं, 'आख़िरत' का कुछ भी भय नहीं रखते। हालाँकि मनुष्य को अल्लाह से डरना चाहिए और अल्लाह ही है जो डरने वालों को क्षमा करता, और उन्हें अपनी कृपा का पात्र बनाता है।

———

१. दे० आयत ३२-३७।
२. प्रस्तुत 'सूरा' की आयत ४३-४४ और क़ुरआन की दूसरी बहुत-सी आयतों से मालूम होता है कि अल्लाह का हक़ और उस के बन्दों का हक़ पहचानना और उसे अदा करना यही 'दीन' की मौलिक शिक्षा है। उदाहरणार्थ दे० सूरा अल-बय्यिना आयत ५; सूरा मरयम आयत ३१।

पुरातन ग्रन्थों में भी इस मौलिक शिक्षा का उल्लेख मिलता है। हम यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं: "धर्म-शास्त्र के ज्ञाता ने परीक्षा के लिए उस से पूछा हे गुरु! 'तौरात' में कौन-सा आदेश महान् है उस ने कहा खुदावन्द (प्रभु) अपने खुदा से अपने सम्पूर्ण हृदय और अपने सम्पूर्ण प्राण और अपनी सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम रख। महान् और प्रथम आदेश यही है। दूसरा इस के समान यह है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। इन दो आदेशों पर 'तौरात' और 'नबियों' के 'सहीफ़े' आधारित हैं"। मत्ता (Mtt.) २२ : ३५-४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुद्दस्सिर
(मक्का में उतरी -- 'आयतें' ५६)

THE CLOAKED ONE
Revealed at Mecca

سورة المدثر مكية وهي ست وخمسون آية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हे चादर लपेटने वाले[१],

1. O thou enveloped in thy cloak,

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝١

२. उठो और (लोगों को) सचेत करो[२]!

2. Arise and warn!

قُمْ فَاَنْذِرْ ۝٢

३. और अपने 'रब्ब' की बड़ाई करो[३],

3. Thy Lord magnify.

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣

४. और अपने कपड़ों को पाक (स्वच्छ) रक्खो[४].

4. Thy raiment purify.

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤

५. और गन्दगी से अलग रहो[५]!

5. Pollution shun!

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥

६. और ज़्यादा समझ कर एहसान न करो!

6. And show not favour, seeking worldly gain!

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

७. और अपने 'रब्ब' के लिए 'सब्र' करो[६]!

7. For the sake of thy Lord, be patient!

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

८. फिर जब वह 'नाक़ूर' (सूर) बजाया जायेगा[७],

8. For when the trumpet shall sound.

فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ ۝٨

९. तो वह दिन एक कठिन दिन होगा,

9. Surely that day will be a day of anguish,

فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝٩

१०. 'काफ़िरों' पर कुछ आसान न होगा।

10. Not of ease, for disbelievers.

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١٠

११. छोड़ दो मुझे और उस को जिसे मैं ने अकेला पैदा किया[८],

11. Leave Me (to deal) with him whom I created lonely.

ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝١١

---

१. यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है। इस 'सूरा' की आरम्भिक 'आयतें' 'नुबूवत' के अत्यन्त आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई हैं। जब कि नबी सल्ल० निजी तौर पर सोच-विचार और अपने 'रब्ब' की याद में लगे रहते थे और इस हालत में आप (सल्ल०) चादर या कम्बल ओढ़ लेते थे। इस सम्पर्क से आप को "हे चादर लपेटने वाले" कह कर पुकारा गया है।

२. अर्थात् लोगों को डराओ कि वे 'आख़िरत' की तैयारी करें और ग़फ़लत से बाज़ आ जायें।

३. अर्थात् उस की 'तौहीद' और उस की महानता का वर्णन करो। और अपने 'रब्ब' को अपने जीवन में सब से ऊँचा स्थान दो, ज़बान से भी उस की बड़ाई करो और दिल से भी उसी को बड़ा जानो।

४. यह एक मुहावरा है, मतलब यह है कि अपने आचरण और चरित्र को अच्छा बनाओ; अपनी आत्मा को शुद्ध रक्खो।

५. हर वह चीज़ जो अल्लाह को नापसन्द और मनुष्य के वास्तविक स्वभाव और प्रकृति के प्रतिकूल और उसे दूषित करने वाली हो वह गन्दगी में शामिल है। गन्दे कार्य भी होते हैं और गन्दे विचार, और भावनायें भी। इसी लिए क़ुरआन में 'शिर्क' को गन्दगी कहा गया है (दे० सूरा अल-हज्ज आयत ३०-३१)।

६. सत्य मार्ग में जो कठिनाइयाँ और तकलीफ़ें पेश आयें उन में धैर्य्य से काम लो।
सूरा की आयत १ से ले कर आयत ७ तक नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है।

७. अर्थात् जब 'सूर' में फूंक मारी जायेगी। 'नक़रा' वास्तव में आवाज़ देने को कहते हैं यहाँ इस की ओर संकेत है कि 'सूर' के द्वारा लोगों को आवाज़ दी जायेगी और उन्हें इकट्ठा किया जायेगा।

८. मैं उस से निबटने के लिए काफ़ी हूँ। उसे उस के करतूतों का मज़ा चखा दूंगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और उसे धन दे रक्खा है दूर तक फैला हुआ,	12. And then bestowed upon him ample means,	وَجَعَلْتُ لَهُۥ مَالًا مَّمْدُودًا ١٢
१३. और (पास) हाज़िर रहने वाले बेटे	13. And sons abiding in his presence,	وَبَنِينَ شُهُودًا ١٣
१४. और मैं ने उस के लिए अच्छी तरह से ज़मीन हमवार कर दी।	14. And made (life) smooth for him,	وَمَهَّدتُّ لَهُۥ تَمْهِيدًا ١٤
१५. फिर भी लालसा करता है कि और दूँ।	15. Yet he desireth that I should give more.	ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ١٥
१६. कदापि नहीं! वह तो हमारी 'आयतों' से वैर रखता है।	16. Nay! For lo he hath been stubborn to Our revelations.	كَلَّآ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ لِءَايَـٰتِنَا عَنِيدًا ١٦
१७. जल्द ही मैं उस से एक सख़्त चढ़ाई चढ़वाऊँगा[९]।	17. On him I shall impose a fearful doom.	سَأُرْهِقُهُۥ صَعُودًا ١٧
१८. उस ने सोचा और विचार किया—	18. For lo! he did consider; then he planned—	إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ١٨
१९. तो उस का नाश हो, कैसा विचार किया!	19. (Self-) destroyed is he, how he planned!	فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ١٩
२०. फिर उस का नाश हो, उस ने कैसा विचार किया!—	20. Again (self-) destroyed is he how he planned!	ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ٢٠
२१. फिर निगाह डाली,	21. Then looked he,	ثُمَّ نَظَرَ ٢١
२२. फिर उस ने तेवर चढ़ाये और मुँह बनाया।	22. Then forwned he and showed displeasure.	ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ٢٢
२३. फिर पीठ फेरी और गर्व किया	23. Then turned he away in pride,	ثُمَّ أَدْبَرَ وَٱسْتَكْبَرَ ٢٣
२४. फिर कहा : यह (क़ुरआन) तो एक जादू है[१०] जो होता चला आ रहा है;	24. And said: This is naught else than magic from of old;	فَقَالَ إِنْ هَـٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ٢٤
२५. वह तो आदमी ही का कलाम है[११]।	25. This is naught else than speech of mortal man.	إِنْ هَـٰذَآ إِلَّا قَوْلُ ٱلْبَشَرِ ٢٥

९. अर्थात् सख़्त अज़ाब और तकलीफ़ में डालूँगा।

१०. क़ुरआन की भाषा अत्यन्त प्रभाव डालने वाली, ललित और मधुर है, लोग आकर्षित हुये बिना नहीं रहते थे इस लिए 'काफ़िर' लोग 'क़ुरआन' को जादू कहने लगे थे।

११. अर्थात् अपराधी ने क़ुरआन के बारे में फ़ैसला करने में कदापि न्याय से काम नहीं लिया। यदि वह पक्षपात से रहित और शान्ति-चित्त हो कर सोच-विचार करे तो वह कभी भी यह नहीं कह सकता कि 'क़ुरआन' अल्लाह का कलाम नहीं है। क़ुरआन के टीकाकारों और भाष्यकारों (Commentators) ने साधारणतः इस का उल्लेख किया है कि ये 'आयतें' वलीद बिन मुग़ीरा के विषय में उतरी हैं जो इस्लाम का विरोधी था। वह 'क़ुरआन' से प्रभावित हो कर क़ुरआन की प्रशंसा करने लगा था फिर अबू जिह्ल के भड़काने से उसे जादू और मनुष्य की रचना निर्धारित करने लगा। यह बड़ा धनवान् था अल्लाह ने इसे बेटे भी कई दिये थें। क़ुरैश के क़बीले में इसे ऊँचा स्थान भी प्राप्त था।

परन्तु इन 'आयतों' में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। इन से हर उस व्यक्ति की नीति और मनोवृत्ति पर प्रकाश पड़ता है जो अल्लाह की 'आयतों' के विरोधी हैं। जिन्हें सत्य से वैमनस्य है। वलीद और अबू जह्ल हर युग में होते हैं और उन की नीतियाँ भी वही होती हैं जो पिछले फ़िरऔनों और वलीदों की रही हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. मैं जल्द ही उसे 'सक़र' (दाह) में झोंक दूँगा।

26. Him shall I fling unto the burning.

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

२७. और तुम्हें क्या ख़बर कि 'सक़र' ('जहन्नम') क्या है!

27.—Ah, what will convey unto thee what that burning is!—

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

२८. न रहने देगी न जाने देगी

28. It leaveth naught; it spareth naught.

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

२९. शरीर को झुलसा देने वाली है।

29. It shrivelleth the man.

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

३०. उस पर उन्नीस नियुक्त हैं।

30. Above it are nineteen.

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

३१. और हम ने उस आग पर रहने वालों को 'फ़िरिश्ते' ही बनाया है, और हम ने उन की संख्या को केवल आज़माइश बनाया है उन लोगों के लिए जिन्हों ने 'कुफ़्र' किया है; ताकि उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई है[12] विश्वास हो जाये,[13] और जो लोग 'ईमान' लाये हैं उन का 'ईमान' और बढ़ जाये; और जिन्हें 'किताब' दी गई वे और 'ईमान' वाले सन्देह में न पड़ें; और ताकि जिन के दिलों में रोग है वे और 'काफ़िर', कहें: इस के वर्णन से अल्लाह का अभिप्राय क्या है?

इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है, और जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है[14]। और तुम्हारे 'रब' की सेनाओं को बस वही जानता है। और यह तो[15] मनुष्य के लिए बस एक अनुस्मारक है।

31. We have appointed only angels to be wardens of the fire, and their number have We made to be a stumbling-block for those who disbelieve; that those to whom the Scripture hath been given may have certainty, and that believers may increase in faith; and that those to whom the Scripture hath been given and believers may not doubt and that those in whose hearts there is disease, and disbelievers may say: What meaneth Allah by this similitude? Thus Allah sendeth astray whom He will, and whom He will He guideth. None knoweth the hosts of thy Lord save Him. This is naught else than a Reminder unto mortals.

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً
وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ
كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ
الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا
مَثَلًا كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ
إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

३२. कुछ नहीं, क़सम है चाँद की

32. Nay, by the Moon.

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

३३. और रात की जब वह पीठ फेरे

33. And the night when it withdraweth.

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

३४. और प्रातःकाल की जब वह प्रकाशमान् हो जावे[16],

34. And the dawn when it shineth forth.

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

१२. इस से अभिप्रेत 'किताब वाले' हैं। किताब वालों में बहुत से लोग क़ुरआन पर 'ईमान' ले आये। क़ुरआन ने उन के सामने उसी सच्चाई को पेश किया जिस की ओर पूर्वकाल के 'नबियों' ने लोगों को बुलाया था।

१३. 'फ़िरिश्तों' और 'फ़िरिश्तों' की शक्ति का उल्लेख पिछली आसमानी किताबों में भी किया गया है। क़ुरआन में फ़िरिश्तों का उल्लेख किताब वालों के लिए विश्वास ही का कारण बना न कि गुमराह होने का।

१४. अर्थात् गुमराह होने वाले इसी तरह गुमराह होते और राह पाने वाले इसी तरह सीधी राह पा लेते हैं। अल्लाह उन्हीं लोगों को मार्ग दिखाता है जो सीधे मार्ग पर चलना चाहते हैं रहे वे लोग जिन्हें सत्य से ज़्यादा अपनी झूठी मान-मर्यादा और गौरव का ख़्याल होता है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए ही छोड़ देता है। यही कारण है कि किताब वालों में जहाँ बहुत से लोग क़ुरआन पर 'ईमान' लाये वहीं उन के बहुत से लोगों ने 'क़ुरआन' को मानने से इन्कार कर दिया। इस इन्कार का कारण पक्षपात और उन के दुस्संकल्प के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

१५. अर्थात् यह 'जहन्नम' का हाल।

१६. यहाँ जिन चीज़ों की क़सम खाई गई है या दूसरे शब्दों में जिन्हें साक्षी बना कर लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया वे सब एक ऐसे दिन के आने पर गवाह हैं जब कि लोगों से उन के किये का हिसाब लिया जायेगा (विस्तृत व्याख्या के लिए देखिए सूरा का परिचय)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. वह[१७] बड़ी चीज़ों में एक है	35. Lo! this is one of the greatest (portents).	إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ۝٣٥
३६. चेतावनी है मनुष्य के लिए।	36. As a warning unto men.	نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦
३७. उस के लिए जो तुम से आगे बढ़ना और पीछे हटना चाहे[१८]।	37. Unto him of you who will advance or hang back.	لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝٣٧
३८. प्रत्येक जीव अपनी कमाई के साथ बँधा हुआ है[१९];	38. Every soul is a pledge for its own deeds:	كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝٣٨
३९. सिवाय दाहिने वालों के[२०]।	39. Save those who will stand on the right hand.	إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝٣٩
४०. बाग़ों में होंगे एक-दूसरे से पूछते होंगे	40. In gardens they will ask one another.	فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝٤٠
४१. अपराधियों के बारे में :	41. Concerning the guilty:	عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۝٤١
४२. क्या चीज़ तुम्हें 'सक़र' 'जहन्नम' में ले आई?	42. What hath brought you to this burning?	مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۝٤٢
४३. उन्हों ने कहा : हम 'नमाज़ियों' में से न थे	43. They will answer: We were not of those who prayed:	قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝٤٣
४४. और मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे[२१]।	44. Nor did we feed the wretched:	وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۝٤٤
४५. और इधर-उधर की बातें बनाने वालों के साथ हम भी बातें बनाया करते थे,	45. We used to wade (in vain dispute) with (all) waders.	وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۝٤٥
४६. और हम बदला पाने के दिन[२२] को झुठलाते थे,	46. And we used to deny the Day of Judgement.	وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝٤٦
४७. यहाँ तक कि हम पर वह यक़ीनी चीज़[२३] आ गई।	47. Till the inevitable came unto us.	حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ۝٤٧
४८. अब सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के काम न आयेगी।	48. The mediation of no mediators will avail them then.	فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۝٤٨
४९. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस अनुस्मारक से मुँह मोड़े हुये हैं,	49. Why now turn they away from the Admonishment.	فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ۝٤٩

१७. इस से अभिप्रेत 'आख़िरत' और वहाँ के अज़ाब (यातना) आदि से सचेत करने वाली 'आयतें' हैं।

१८. अर्थात् चेतावनी उस के लिए है जो आगे या पीछे हटना चाहे बुराई से बचना और भलाई की ओर बढ़ना चाहे। जो व्यक्ति टस से मस ही न हो वह इस से कुछ भी प्रभावित नहीं हो सकता।

१९. अर्थात् उस के कारण उस की पकड़ होगी वह पकड़ से बच नहीं सकता।

२०. इन्हों ने अच्छे काम किये थे इस लिए ये अल्लाह की पकड़ और सज़ा से बच जायेंगे। दे० सूरा अल-वाक़िआ आयत ८, ९१।

२१. अर्थात् न हम ने अल्लाह का हक़ पहचाना और न अल्लाह के बन्दों का ही हक़ अदा किया। हालाँकि अल्लाह और उस के बन्दों का हक़ पहचानना ही वास्तविक धर्म था।

२२. दे० सूरा अल-फ़ातिहा फ़ुटनोट ३।

२३. अर्थात् मृत्यु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०. मानो वे बिदके हुये गदहे हैं

50. As they were frightened asses.

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

५१. शेर से भागे हैं ?

51. Fleeing from a lion?

فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾

५२. बात तो यह है कि उन में से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे खुले-खुले 'सहीफ़े' दिये जायें[२४]।

52. Nay but everyone of them desireth that he should be given open pages (from Allah).

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

५३. नहीं, नहीं, बल्कि वे 'आख़िरत' से डरते नहीं।

53. Nay, verily, they fear not the Hereafter.

كَلَّا ۖ بَل لَّا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾

५४. कुछ नहीं, यह तो एक अनुस्मारक है।

54. Nay, verily, Lo! this is an Admonishment.

كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾

५५. तो जो कोई चाहे उस पर ध्यान दे।

55. So whosoever will may heed.

فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾

५६. और वे ध्यान नहीं देंगे बिना इस के कि अल्लाह चाहे[२५]। वह इस योग्य है कि उस का डर रक्खा जाये। और इस योग्य कि क्षमा करे।

56. And they will not heed unless Allah willeth (it). He is the fount of fear. He is the fount of mercy.

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

---

२४. दे० सूरा अल-अनआम आयत १२४, सूरा बनी इसराईल आयत ९३।
यदि इन के हाथों में खुली हुई किताब थमा भी दी जाये तो भी ये मानने के नहीं हैं। ये बातें तो ये लोग यों ही टाँग अड़ाने के लिए कर रहे हैं (दे० सूरा अल-अनआम आयत ७)।

२५. दे० सूरा अद-दह्र आयत ३०। ऊपर यह बात कही जा चुकी है कि वे 'आख़िरत' से नहीं डरते यही कारण है कि वे ध्यान नहीं देते। क़ुरआन से नसीहत तो वही हासिल कर सकते हैं जिन के अन्दर डर हो; जो स्वच्छन्द या निरंकुश न हो। क़ुरआन में एक दूसरी जगह नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये यह बात कही गई है : तुम तो उसी को सचेत कर सकते हो जो उस (क़ियामत) से डरता हो (दे० सूरा अल-नाज़िआत आयत ४५)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Vāranasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७५–अल-क़ियामा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-क़ियामा' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। इस सूरा में 'क़ियामत' से सम्बन्धित सन्देहों का निषेध किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में से है। जब कि 'दीन' (धर्म) की मौलिक शिक्षाओं की ओर लोगों को आमन्त्रित किया जा रहा था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस सूरा में 'क़ियामत' के आने, 'आखिरत' में लोगों को अपने किये का बदला पाने आदि का इन्कार करने वालों के सन्देहों का निषेध किया गया है। यही इस सूरा का केन्द्रीय विषय है।

प्रस्तुत 'सूरा' और आगे आने वाली सूरा में गहरा सम्पर्क और बड़ी समानता पाई जाती है। प्रस्तुत सूरा में विस्तारपूर्वक 'काफ़िरों' का वर्णन किया गया है और दूसरी सूरा में विशेष रूप से 'ईमान' वालों का उल्लेख हुआ है। प्रस्तुत सूरा में 'क़ियामत' की आरम्भिक चीज़ों पर प्रकाश डाला गया है और दूसरी सूरा में उस के बाद की बातों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत सूरा की कुछ बातों को दूसरी सूरा में और अधिक स्पष्ट किया गया है। पहली सूरा में यदि 'काफ़िरों' को सम्बोधित किया गया है तो दूसरी सूरा में उन की ओर से रुख फेर लिया गया है मानो वे दुराग्रह से काम ले रहे हैं ऐसी दशा में उन से 'ईमान' लाने की अधिक आशा नहीं की जा सकती।

प्रस्तुत सूरा के आरम्भ में 'क़ियामत' के सत्य होने पर मनुष्य की उस आत्मा को साक्षी ठहराया गया है जो उसे किसी-न-किसी अवसर पर अवश्य टोकती और मलामत करती है। 'क़ियामत' का इन्कार करने वालों को सख्ती के साथ झिड़का गया है और 'क़ियामत' का चित्र उन के सामने खींच दिया गया है। इस प्रकार उस 'क़ियामत' की जिसे वे असम्भव और दूर समझते हैं उन्हें एक झाँकी दिखा दी गई है। और फिर इस वास्तविकता का उल्लेख किया गया है कि मनुष्य चाहे कितने बहाने पेश करे लेकिन वह अपनी अन्तरात्मा को नहीं झुठला सकता। लोगों के 'आखिरत' का इन्कार करने और 'ईमान' न लाने का कारण वास्तव में कुछ और है। वे दुनिया पर रीझे हुये हैं आगे क्या होगा इस की उन्हें चिन्ता ही नहीं है। धन-दौलत का लोभ और संसार की झूठी प्रतिष्ठा की कामना ही है जो उन्हें अल्लाह से विमुख किये हुये है। न तो उन्हें अल्लाह की आज्ञा के पालन का ध्यान है और न उन्हें उस की नाखुशी की कोई चिन्ता है। ऐसी हालत में नबी सल्ल० को आदेश दिया गया है कि आप 'क़ुरआन के लिए जल्दी न करें इसे इकट्ठा कर देना और इसे पढ़ कर सुना देना हमारे जिम्मे है। हमारा 'फ़िरिश्ता' (जिबरील) हमारी ओर से इसे तुम्हें सुना देगा। और यदि किसी आदेश को अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता होगी तो हम उसे स्पष्ट कर देंगे। रही 'काफ़िरों' के मानने, न मानने की बात तो यह क़ुरआन के जल्द-जल्द उतरने पर निर्भर नहीं है। इन का रोग तो कुछ और है। ये वास्तव में 'आखिरत' के मुक़ाबले में दुनिया के पुजारी हैं।

फिर दिखाया गया है कि किस तरह 'क़ियामत' में कुछ लोग अपने 'रब' की ओर देख रहे होंगे और कुछ लोग ऐसे दण्ड के भागी होंगे जो उन की कमर को तोड़ कर रख देगा। इस के बाद मनुष्य के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस समय की विवशता का नक़्शा पेश किया गया है जब कि वह मरण-शय्या पर पड़ा हुआ होता है, और लोग उस के जीवन से निराश हो चुके होते हैं। उस की सारी तेज़ी और फुरती जवाब दे चुकी होती है। हालाँकि इस के पहले वह अकड़ता और सत्य को झुठलाता रहता है, अल्लाह के आगे नहीं झुकता। ऐसे मनुष्य पर सिवाय अफ़सोस के और क्या किया जा सकता है।

'सूरा' को समाप्त करते हुये इस बात का खुला हुआ प्रमाण दिया गया है कि अल्लाह को इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि मरे हुये लोगों को पुनः जीवित कर के उठा दे।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-क़ियामा

(मक्का में उतरी—'आयतें' ४०)

THE RISING OF THE DEAD

Revealed at Mecca

سورة القيمة مكية وهي اربعون اية وفيها ركوعان

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. नहीं[1]! क़सम खाता हूँ मैं 'क़ियामत' के दिन की[2];

1. Nay, I swear by the Day of Resurrection;

لا أقسم بيوم القيمة ①

२. और नहीं[3]! क़सम खाता हूँ मैं मलामत करने वाली आत्मा की[4]।

2. Nay, I swear by the accusing soul (that this Scripture is true).

ولا أقسم بالنفس اللوامة ②

३. क्या मनुष्य यह समझता है कि हम उस की हड्डियों को कभी एकत्र न करेंगे?

3. Thinketh man that We shall not assemble his bones?

أيحسب الإنسان ألن نجمع عظامه ③

४. क्यों नहीं, इस सामर्थ्य के साथ कि हम उस की पोर-पोर को ठीक कर दें!

4. Yea, verily. Yea, We are able to restore his very fingers!

بلى قادرين على أن نسوي بنانه ④

५. बल्कि मनुष्य चाहता है कि उस के आगे दुस्साहस दिखाये।

5. But man would fa deny what is before him.

بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ⑤

६. पूछता है: 'क़ियामत' का दिन कब आयेगा?

6. He asketh: When will be this Day of Resurrection?

يسئل أيان يوم القيمة ⑥

७. तो जब निगाह चौंधिया जायेगी

7. But when sight is confounded,

فإذا برق البصر ⑦

८. और चन्द्रमा को ग्रहण लग जायेगा

8. And the moon is eclipsed,

وخسف القمر ⑧

९. और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठा कर दिये जायेंगे,

9. And sun and moon are united,

وجمع الشمس والقمر ⑨

---

१. अर्थात् मनुष्य की यह धारणा सही नहीं है कि 'क़ियामत' नहीं आयेगी, 'क़ियामत' आ कर रहेगी।

२. यहाँ 'क़ियामत' को प्रमाणित करने के लिए 'क़ियामत' ही की क़सम खाई गई है जिस का अर्थ यह हुआ कि 'क़ियामत' अपनी दलील आप है। वह ऐसी जानी-पहचानी और खुली हुई वास्तविकता है कि उसे सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

३. दे० फुटनोट १।

४. यहाँ 'क़ियामत' के सत्य होने पर एक मनोवैज्ञानिक (Psychological) प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। हम जानते हैं कि मनुष्य की आत्मा कुछ कामों पर उसे रोकती और धिक्कारती है। इस से पता चलता है कि मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी है। उसे अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान होना चाहिए वह कोई निरंकुश प्राणी नहीं है कि जो चाहे करे जो चाहे न करे। उस के कर्मों का बुरा-भला परिणाम अवश्य उस के सामने आ कर रहेगा। 'क़ियामत' और मनुष्य को टोकने वाली आत्मा में गहरा सम्पर्क है इसी कारण दोनों का एक साथ उल्लेख हुआ है और मलामत करने वाली आत्मा को 'क़ियामत' के साक्षी के रूप में पेश किया गया है। हमारी आत्मा हमारा खरा-खोटा हमारे सामने रख देती है। हम अपनी बुराइयों को दूसरों से तो छुपा सकते हैं, अपनी अन्तरात्मा से नहीं छुपा सकते। ठीक इसी तरह 'क़ियामत' भी एक दिन दुनिया के सामने वह सब-कुछ रख देगी जो-कुछ कि उस ने किया होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. मनुष्य उस दिन कहेगा : कहाँ जाऊँ भाग कर[५] !

10. On that day man will cry: Whither to flee!

يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ⑩

११. कहीं नहीं ! कोई शरण नहीं !

11. Alas! No refuge!

كَلَّا لَا وَزَرَ ⑪

१२. उस दिन तुम्हारे 'रब' ही के पास जाकर ठहरना है ।

12. Unto thy Lord is the recourse that day.

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ⑫

१३. उस दिन मनुष्य को बता दिया जायेगा जो-कुछ उस ने किया-धरा होगा ।

13. On that day man is told the tale of that which he hath sent before and left behind.

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ⑬

१४. बल्कि मनुष्य अपने लिए आप प्रमाण है,

14. Oh, but man is a telling witness against himself:

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ⑭

१५. वह अपने लिए बहाने ही क्यों न पेश करे ।

15. Although he tender his excuses.

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ⑮

१६. इस के साथ-साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो कि इस में जल्दी करो ।

16. Stir not thy tongue herewith to hasten it.

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ⑯

१७. हमारे ज़िम्मे है इसे एकत्र करना और इसे पढ़ देना[६] ;

17. Lo upon Us (resteth) the putting together thereof and the reading thereof.

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ⑰

१८. तो जब हम इसे पढ़ें तो तुम इस के पढ़ने का अनुसरण करो ;

18. And when We read it, follow thou the reading;

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ⑱

१९. फिर इसे स्पष्ट करना हमारे ज़िम्मे है[७] ।

19. Then lo upon Us (resteth) the explanation thereof.

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ⑲

५. आयत ८ से ले कर आयत १५ तक 'क़ियामत' का नक़्शा पेश किया गया है । उस दिन संसार की वर्त्तमान व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायेगी । मनुष्य की निगाहें चौंधिया जायेंगी । वह अत्यन्त घबराया हुआ होगा । रहा यह प्रश्न कि चन्द्रमा को किस प्रकार ग्रहण लगेगा ? और सूर्य और चन्द्रमा किस तरह एकत्र हो जायेंगे तो इस का ठीक-ठीक अनुमान करना हमारे लिए कठिन है । ऐसा लगता है कि 'क़ियामत' में चन्द्रमा और पृथ्वी दोनों सूर्य की ओर खिंच जायेंगे । परन्तु सूर्य का तापमान वह नहीं रहेगा जो आज है, इस लिए सूर्य से निकट होने पर भी मनुष्य जीवित रह सकेगा । उस की चमक से उस की निगाहें चकाचौंध हो जायेंगी । ऐसा लगेगा कि सूर्य क़रीब आता जा रहा है और क़रीब है कि पृथ्वी उस में जा पड़े । आदमी भागना चाहेगा लेकिन भागने की कोई राह न होगी । वह पुकार उठेगा कि कहाँ भाग जाऊँ ? पृथ्वी के सूर्य के निकट पहुँच जाने के कारण चाँद प्रकाशहीन हो जायेगा । और फिर सूर्य में जा पड़ेगा । क़ुरआन में 'ख़सफ़' शब्द प्रयुक्त हुआ है । जिस का अर्थ गहन में आने के अतिरिक्त धँसाया जाना भी होता है ।

६. नबी सल्ल० पर जब क़ुरआन की 'आयतें' उतरतीं तो समझते कि यह एक भारी अमानत है जो आप को सौंपी जा रही है यदि इस का कोई अंश भी खो गया तो आप इस के उत्तरदायी होंगे । इस के साथ ही आप (सल्ल०) की कामना यह रहती थी कि अल्लाह की ओर से ज़्यादा-से-ज़्यादा 'आयतों' का अवतरण हो कदाचित लोग 'क़ुरआन' की बरकतों से सीधा मार्ग अपना लें और सच्चे 'दीन' पर 'ईमान' ले आयें । आयत १६ और १७ में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप 'वह्य' के सीखने के लिए इतना व्याकुल क्यों हो रहे हैं । क़ुरआन को सुरक्षित करने और उसे एकत्र करने के ज़िम्मेदार हम हैं । रहा लोगों के 'ईमान' लाने और राह पाने का मामला तो उन के 'ईमान' न लाने का कारण यह कदापि नहीं है कि क़ुरआन ठहर-ठहर कर उतर रहा है । बल्कि उन का वास्तविक रोग यह है कि वे दुनिया के पीछे रीझे हुये हैं; 'आख़िरत' और भविष्य से उन्हें कोई लगाव नहीं है (दे० आयत २१) । क़ुरआन को शीघ्र उतारने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उस का आवश्यकतानुसार समय-समय और थोड़ा-थोड़ा कर के उतरना ही उचित है । लोगों को शिक्षा-दीक्षा में क्रम का ध्यान रखना आवश्यक है ।

७. अल्लाह ने अपना यह वायदा पूर्णतः पूरा किया । नबी सल्ल० के जीवन ही में अल्लाह ने क़ुरआन को एक विशेष व्यवस्थित क्रम में संगठित कर दिया । और उसी के अनुसार आप (सल्ल०) के साथियों ने 'क़ुरआन' को याद किया और लिखा । स्पष्टीकरण के लिए कोई 'आयत' उतरती तो नबी सल्ल० उसे क़ुरआन में लिखा देते । जब कोई सूरा पूरी हो जाती तो अल्लाह स्वयं उस की आयतों को इकट्ठा कर के सूरा को व्यवस्थित रूप दे देना और यदि उस में किसी प्रकार की व्याख्या या स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती तो इस ध्येय से कुछ आयतें बढ़ा भी देना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०. कुछ नहीं ! तुम तो जल्द मिलने वाली (दुनिया) को प्रिय रखते हो[८]	20. Nay, but ye do love the fleeting Now,	كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾
२१. और बाद में आने वाली ('आख़िरत') को छोड़ रखते हो[९] ।	21. And neglect the Hereafter.	وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾
२२. कितने चेहरे उस दिन खिले हुये होंगे,	22. That day will faces be resplendent,	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾
२३. अपने 'रब' की ओर देख रहे होंगे;	23. Looking towards their Lord;	إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾
२४. और कितने चेहरे उस दिन उदास होंगे,	24. And that day will other faces be despondent,	وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾
२५. गुमान करते होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जावेगा ।	25. Thou wilt know that some great disaster is about to fall on them.	تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾
२६. कुछ नहीं, जब वह (जान) हँसली तक आ पहुँचेगी,	26. Nay, but when the life cometh up to the throat,	كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾
२७. और कहा जायेगा : कौन है झाड़ने फूंकने वाला[१०] ?	27. And men say: Where is the wizard (who can save him now)?	وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾
२८. और समझ लेगा कि जुदाई की घड़ी आ पहुँची;	28. And he knoweth that it is the parting;	وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾
२९. और पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी[११];	29. And agony is heaped on agony;	وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾
३०. तुम्हारे 'रब' की ओर उस दिन चलना पड़ेगा ।	30. Unto thy Lord that day will be the driving.	إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع
३१. तो उस ने न तो तसदीक़ की, और न 'नमाज़' पढ़ी ।	31. For he neither trusted, nor prayed.	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾
३२. बल्कि उस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा ।	32. But he denied and flouted.	
३३. फिर ऐंठता हुआ अपने लोगों की ओर चल दिया ।	33. Then went to his folk with glee.	ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿٣٣﴾
३४. अफ़सोस है तुझ पर अफसोस-ही-अफ़सोस,	34. Nearer unto thee and nearer,	أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾

८. यहाँ 'काफ़िरों' को सम्बोधित किया गया है । दे० सूरा अद-दह्र आयत २७ ।
९. अर्थात् इन के 'ईमान' न लाने का कारण यह नहीं है कि 'क़ुरआन' ठहर-ठहर कर उतर रहा है बल्कि इन के पथ-भ्रष्ट होने का वास्तविक कारण यह है कि ये दुनिया के पुजारी हैं । जो कुछ इन्हें आँखों से सुझाई देता है ये उसी पर रीझे हैं और जो-कुछ इन की निगाहों से ओझल है उस की ओर से ये अन्धे बन गये हैं ।
१०. अर्थात् अब उसे कोई बचाने वाला नहीं । कोई नहीं जो मौत की दवा ला सके ।
११. यहाँ उस के विवश और निर्बल हो जाने का चित्र खींचा गया है । इस से पहले वह दौड़-धूप करता और अपनी वेगता का प्रदर्शन करता था; परन्तु आज उस की दशा यह हो रही है कि बिल्कुल चल-फिर नहीं सकता । ऐसा लगता है कि उस की पिंडलियाँ लिपट गई हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५. फिर अफ़सोस है तुझ पर अफ़सो-ही-अफ़सोस।

35. Again nearer unto thee and nearer (is the doom).

ثُمَّ أَوْلٰى لَكَ فَأَوْلٰى ﴿٣٥﴾

३६. क्या मनुष्य समझता है कि उसे यों ही छोड़ दिया जायेगा[१२]।

36. Thinketh man that he is to be left aimless?

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

३७. क्या वह टपकाई हुई वीर्य्य की एक बूंद न था ?

37. Was he not a drop of fluid which gushed forth?

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنٰى ﴿٣٧﴾

३८. फिर हुआ एक लोथड़ा; फिर उसे आकार दिया; फिर नख-शिख से दुरुस्त किया

38. Then he became a clot; then (Allah) shaped and fashioned.

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾

३९. फिर उस से दोनों जातियाँ बनाईं, पुरुष जाति और स्त्री जाति[१३]।

39. And made of him a pair, the male and female.

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ﴿٣٩﴾

४०. क्या वह इस का सामर्थ्य नहीं रखता कि मुरदों को जीवित कर दे ?

40. Is not He (Who doth so) able to bring the dead to life?

أَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

———

१२. अर्थात् क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे बेकार पैदा किया गया है और उसे निरंकुश छोड़ दिया जायेगा; उस पर कोई ज़िम्मेदारी न डाली जायेगी और उस से उस के किये का हिसाब न लिया जायेगा।

१३. अर्थात् जिस अल्लाह ने मनुष्य को वीर्य्य से पूरा मनुष्य बनाया और स्त्री-पुरुष के जोड़े बनाये क्या वह मृत्यु के पश्चात् लोगों को पुनः जीवित नहीं कर सकेगा। वह मरने के बाद लोगों को अवश्य जीवित करेगा। जो लोग इस का इन्कार करते हैं वे अल्लाह के सर्वशक्तिमान् होने को नहीं मानते हालांकि वे अल्लाह के चमत्कारों का निरीक्षण खुली आँखों से कर रहे हैं।
जिस तरह अल्लाह ने महान उद्देश्य के अन्तर्गत मनुष्य के जोड़े बनाये है उसी तरह महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस जीवन के पश्चात् एक दूसरे शाश्वत जीवन का होना भी अनिवार्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७६–अद-दह्
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अद-दह्र' (The time) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। प्रस्तुत सूरा का एक दूसरा नाम 'अल-इन्सान' (The man) भी है यह नाम भी सूरा की पहली 'आयत' ही से उद्धृत है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' भी पिछली सूरा की तरह मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

'क़ुरआन' की अन्तिम 'सूरतों' में अधिकतर 'दीन' की मौलिक शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है। लोगों को सत्य धर्म की ओर आमन्त्रित करने के प्रारम्भिक काल में इन मौलिक शिक्षाओं का बड़ा महत्व था। इन मौलिक शिक्षाओं में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। यही मौलिक शिक्षायें आगे चल कर अपने विस्तृत रूप में सम्पूर्ण 'दीन' (धर्म) बन गई हैं। 'इस्लाम' की मौलिक शिक्षाओं में एक तो ईश-भय है जो 'तौहीद' और 'नमाज़' का वास्तविक आधार है, दूसरी मौलिक शिक्षा 'क़ियामत' अथवा आख़िरत पर विश्वास करना है। 'क़ुरआन' का सब से उभरा हुआ पहलू यही है कि वह हमें एक ऐसे बड़े दिन के आने की खबर देता है जो अदालत और फ़ैसले का दिन होगा। जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। 'इस्लाम' की तीसरी मौलिक शिक्षा यह है कि अल्लाह के बन्दों के प्रति हम में संवेदना और सहानुभूति हो। 'इस्लाम' के बहुत से क़ानून और आदेश इसी मौलिक शिक्षा पर अवलम्बित हैं। ईश-भय, भविष्य अथवा परिणाम की चिन्ता और दूसरों के प्रति संवेदना और सहानुभूति की प्रेरणा ये सब वास्तव में मनुष्य की स्वाभाविक और सहज प्रवृत्ति (Instinct) के अन्तर्गत आते हैं। इस से भली-भाँति इस का पता चलता है कि 'क़ुरआन' जिस 'दीन' या धर्म की ओर लोगों को आमन्त्रित करता है वह उन का स्वाभाविक धर्म है। मनुष्य यदि इस धर्म का विरोध करता है तो वास्तव में वह अपनी ही सहज प्रकृति के विरुद्ध आचरण करता है; दूसरे शब्दों में वह अपना बैरी आप बनता है।

'क़ुरआन' की अन्तिम 'सूरतों' का मध्य विन्दु साधारणतः 'इस्लाम' की मौलिक शिक्षायें ही हैं। यह और बात है कि किसी सूरा में कोई पहलू उभर कर सामने आता है, किसी में कोई पहलू। फिर इस के अन्तर्गत किसी सूरा में किसी गरोह को सम्बोधित किया गया है किसी में किसी को। कभी मनुष्य की बुद्धि और उस की सूझ-बूझ से अपील की गई है तो कभी उस की चेतना और अन्तरात्मा को जगाने की चेष्टा की गई है।

प्रस्तुत 'सूरा' में मौलिक रूप से 'आख़िरत', 'क़ुरआन' और 'नमाज़' का उल्लेख किया गया है। इन्हीं चीज़ों का उल्लेख आगे आने वाली सूरा में भी हुआ है। परन्तु वर्णन-शैली इस से भिन्न है। जिन पहलुओं का प्रस्तुत सूरा में विस्तार नहीं हो सका है उन्हें उस में खोल दिया गया है। प्रस्तुत सूरा में यदि विशेष रूप से लोगों को शुभ सूचना दे कर सत्य की ओर प्रेरित किया गया है, तो उस सूरा में डरावा और चेतावनी का पहलू विशेष रूप से उभरा हुआ है।

इस सूरा में मनुष्य को अपने-आप पर गवाह बनाया है। यह मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करे। एक समय था कि वह बिल्कुल अन्धकार में था, उस की कोई चर्चा न थी। फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया। ठीक इसी तरह एक दिन वह 'क़ियामत' भी सामने आ जायेगी जो आज लोगों को दिखाई नहीं दे रही है। फिर मनुष्य को निरुद्देश्य नहीं पैदा किया। बल्कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्लाह को उस की परीक्षा अभीष्ट है। अल्लाह ने उसे देखने और सुनने की शक्ति प्रदान की। उस के मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध किया। उसे कृतज्ञता की चेतना और विवेक प्रदान किया। अब चाहे वह कृतज्ञता दिखलाये या कृतघ्न बन कर जीवन व्यतीत करे। यदि वह कृतज्ञ बनता है तो उसे अपने सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह के आदेशों का पालन करना होगा। क़ुरआन के अध्ययन और स्वयं इस 'सूरा' से मालूम होता है कि कृतज्ञता का अर्थ अत्यन्त व्यापक है इस का सम्पर्क केवल मनुष्य के हृदय से नहीं बल्कि इस में मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन आ जाता है[1]। एक कृतज्ञ व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह के हक़ को भी पहचाने और उस के बन्दों के हक़ को भी न भूले। अल्लाह के कृतज्ञ होने का एक अर्थ यह भी है कि हम उस की दी हुई शक्तियों को उचित रूप से काम में लायें। उस के आदेशों को सुनें और उन का पालन करें। सत्य और असत्य में भेद करें। अल्लाह ने हमें देखने की शक्ति दी है तो हम उस से उस की निशानियों और चमत्कारों की देखें और सत्य को पाने की चेष्टा करें। अल्लाह ने दिल दिया है तो हम भक्ति, न्याय और सत्कर्म की ओर बढ़ें। परन्तु यदि हम आँख, कान और दिल रखते हुये भी अन्धे, बहरे और अचेत ही बने रहे तो हम ने अल्लाह की इन नेमतों की क़द्र नहीं पहचानी। फिर तो हम से बढ़ कर कृतघ्न और कोई न होगा। 'शैतान' मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु है। उस की कोशिश यही है कि वह मनुष्य को अल्लाह का कृतज्ञ बन्दा न बनने दे[2]।

इस 'सूरा' में विशेष रूप से 'ईमान' वालों का और उन की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। फिर 'जन्नत' की एक झाँकी प्रस्तुत की गई है।

'सूरा' के अन्तिम भाग में धर्म-विरोधियों के मुक़ाबले में नबी० सल्ल० को सब्र से काम लेने का आदेश दिया गया है। और आप (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि आप (सल्ल०) अपने 'रब' का स्मरण करें, रात की लम्बी घड़ियों में 'नमाज़ें' पढ़ें और अपने 'रब' का गुणगान करें। सब्र के लिए अल्लाह के स्मरण और उस के गुणगान का आश्रय लेने की शिक्षा अत्यन्त महान् है। फिर अल्लाह ने अपने चमत्कार का उल्लेख करते हुए कहा है कि लोगों को याद दिला दिया गया अब यह लोगों की अपनी ज़िम्मेदारी है कि वे अपने 'रब' का मार्ग ग्रहण करते हैं या वे किसी और मार्ग पर चलने का फ़ैसला करते हैं।

———

१. दे० आयत २६; सूरा अस-सजदा आयत ६; अल-आराफ़ आयत १७, १४४ आदि।
२. दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अद-दह्र
(मक्का में उतरी—'आयतें' ३१)

"TIME" OR "MAN"
Revealed at Mecca

سُورَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. क्या मनुष्य पर कोई ऐसा समय भी बीता है जब कि वह कोई चीज़ न था जिस का नाम लिया जाये?

1. Hath there come upon man (ever) any period of time in which he was a thing unremembered?

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ①

२. हम ने मनुष्य को मिले-जुले वीर्य्य से पैदा किया कि उस की परीक्षा करें;[1] तो हम ने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।

2. Lo! We created man from a drop of thickened fluid to test him; so We make him hearing, knowing.

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ②

३. हम ने उसे मार्ग दिखाया अब या तो कृतज्ञ हो या कृतघ्न।

3. Lo! We have shown him the way, whether he be grateful or disbelieveing.

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ③

४. हम ने 'काफ़िरों' के लिए[2] ज़ंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है।

4. Lo! We have prepared for disbelievers manacles and carcans and a raging fire.

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ④

५. नेक लोग ऐसे मद्य-पात्र का पान करेंगे जो काफ़ूर (कपूर) मिला कर तैयार किया गया होगा[3],

5. Lo! the righteous shall drink of a cup whereof the mixture is of water of Kafur.

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ⑤

६. यह एक स्रोत है जिस से अल्लाह के बन्दे पियेंगे, उसे बहा-बहा कर ले जायेंगे।

6. A spring wherefrom the slaves of Allah drink, making it gush forth abundantly.

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ⑥

७. वे नज़्र को पूरा करते हैं[4] और उस दिन से डरते हैं जिस की मुसीबत हर ओर फैली हुई होगी,

7. (Because) they perform the vow and fear a day whereof the evil is wide-spreading,

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ⑦

८. और खाना खिलाते हैं उस की चाह होते हुये, मुहताज और अनाथ और क़ैदी को[5],

8. And feed with food the needy wretch, the orphan and the prisoner, for love of Him,

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ⑧

९. हम तो बस अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए तुम्हें खिलाते हैं। न हम तुम से कोई बदला चाहते हैं और न धन्यवाद[6];

9. (Saying): We feed you, for the sake of Allah only. We wish for no reward nor thanks from you;

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ⑨

१. दे० सूरा अन-नम्ल आयत ४०।
२. दे० सूरा अस-सजदा आयत ६।
३. यह 'जन्नत' का काफ़ूर होगा दुनिया के काफ़ूर से इस की कोई निसबत नहीं। शायद इसे काफ़ूर इस लिए कहा गया है कि यह अत्यन्त आनन्दप्रद (Refreshing) स्वादिष्ट, शीतल, सुगन्धित और शान्तिदायक होगा।
४. अर्थात् 'जन्नत' में आनन्द लेने वाले वही होंगे जो वर्त्तमान जीवन में अल्लाह के कृतज्ञ और उस के आज्ञाकारी हैं। मानी हुई मन्नत को पूरा करते हैं, जो अपनी प्रतिज्ञा और व्रत (Vow) का ध्यान रखते हैं।
५. अर्थात् वे अपनी इच्छा और ज़रूरत के मुक़ाबले में दूसरों की आवश्यकता का ध्यान रखते हैं।
६. दे० आयत २२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. हम अपने 'रब' की ओर से एक ऐसे दिन का भय रखते हैं जिस का मुँह सिकुड़ा हुआ होगा और माथे पर बल पड़े होंगे[७]।

10. Lo! we fear from our Lord a day of frowning and of fate.

إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ⑩

११. तो अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपत्ति से बचा लिया, और उन्हें प्रफुल्लता और प्रसन्नता से सम्पन्न किया[८];

11. Therefor Allah hath warded off from them the evil of that day, and hath made them find brightness and joy;

فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ⑪

१२. और जो सब्र उन्हों ने किया था[९] उस के बदले में उन्हें 'जन्नत' और रेशमी कपड़े प्रदान किये;

12. And hath awarded them for that all they endured, a Garden and silk attire;

وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ⑫

१३. वे वहाँ ऊँची मसनदों पर तकिया लगाये हुये हैं, वहाँ न सूर्य का तपन देखते हैं और न कड़ाके का जाड़ा।

13. Reclining therein upon couches, they will find there neither (heat of) a sun nor bitter cold.

مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ⑬

१४. और वहाँ उन पर छाया पड़ रही है और उस के मेवे झुका कर बिल्कुल वश में कर दिये गये हैं।

14. The shade thereof is close upon them and the clustered fruits thereof bow down.

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ⑭

१५. और उन के पास गर्दिश कर रहे हैं चाँदी के बरतन और आबखोरे बिल्कुल शीशे हो रहे हैं

15. Goblets of silver are brought round for them, and beakers (as) of glass.

وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ⑮

१६. शीशे चाँदी के[१०]! जिन्हें ठीक-ठीक अन्दाज़े से रक्खा है।

16. (Bright as) glass but (made) of silver, which they (themselves) have measured to the measure (of their deeds).

قَوَارِيرَا مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ⑯

१७. और उन्हें वहाँ ऐसे मद्य का पान कराया जा रहा है जो 'ज़न्जबील' (सोंठ) मिला कर तैयार किया गया है[११],

17. There are they watered with a cup whereof the mixture is of Zanjabil,

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ⑰

१८. यह वहाँ का एक स्रोत है, जिस का नाम 'सल्सबील'[१२] है।

18. The water of a spring therein, named Salsabil.

عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ⑱

१९. और उन के पास ऐसे लड़के आ-जा रहे हैं जिन की अवस्था सदा एक ही रहेगी, तुम उन्हें देखो, तो समझोगे कि मोती बिखरे हुये हैं।

19. There serve them youths of everlasting youth, whom, when thou seest, thou wouldst take for scattered pearls.

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ⑲

२०. और वहाँ देखो तो तुम्हें दिखाई देगा परम सुख और महान् राज्य।

20. When thou seest, thou wilt see there bliss and high estate.

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ⑳

७. अर्थात् हमें तो उस 'क़ियामत' के दिन का डर लगा हुआ है जिस की सख़्ती बहुत ज़्यादा बढ़ी हुई होगी।

८. अर्थात् उन्हें उस दिन कोई दुःख और कष्ट नहीं पहुँच सकता।

९. दे० आयात २७।

१०. अर्थात् वे होंगे चाँदी के परन्तु इतने साफ़ और चमकते होंगे मानो वे शीशे के बने हुये हैं।

११. यह दूसरा मद्य-पात्र होगा जो 'ज़न्जबील' (सोंठ) से मिला कर तैयार किया गया होगा। वहाँ के 'ज़न्जबील' को सांसारिक 'ज़न्जबील' से क्या निसबत ! 'ज़न्जबील की तासीर (गुण, स्वभाव) गर्म होती है। ऐसा लगता है कि 'ज़न्जबील' इस लिए मिलाया जायेगा ताकि 'जन्नत' वाले जन्नत में जहाँ शीतलता का आनन्द उठायें वहीं इस सन्तोषप्रद, शक्तिदायक और स्वादिष्ट चीज़ का भी आनन्द ले सकें।

१२. 'सलसबील' का अर्थ है मृदुता से बहने वाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१. उन पर बारीक हरे रेशमी कपड़े हैं और दबीज़ रेशमी कपड़े भी। और चाँदी के कङ्गनों से आभूषित किये गये हैं। और उन्हें उन के 'रब' ने स्वच्छ पेय पिलाया।

21. Their raiment will be fine green silk and gold embriodery. Bracelets of silver will they wear. Their Lord will slake their thirst with a pure drink.

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

२२. यह तुम्हारा प्रतिफल है। और तुम्हारी कोशिशों की क़द्र की गई।

22. (And it will be said unto them) : Lo! this is a reward for you. Your endeavour (upon earth) hath found acceptance.

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾

२३. (हे 'नबी' !) हम ही तुम पर 'क़ुरआन' एक विशेष ढंग से उतारते रहे हैं,

23. Lo! We, even We, have revealed unto thee the Qur'an, a revelation.

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾

२४. तो तुम अपने 'रब' के फ़ैसले तक सब्र से काम लो, और उन में से किसी पापी या कृतघ्न के कहने में न आना।

24. So submit patiently to thy Lord's command, and obey not of them any guilty one or disbeliever.

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

२५. और प्रातः और सन्ध्या समय अपने 'रब' का नाम लो[१३]।

25. Remember the name of thy Lord at morn and evening.

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

२६. और रात में भी उसे 'सजदा' करो और उस की 'तसबीह' करो लम्बी-लम्बी रात तक।

26. And worship Him (a portion) of the night. And glorify Him through the livelong night.

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

२७. ये लोग जल्द मिलने वाली को प्रिय रखते हैं, और अपने परे एक भारी दिन को छोड़ रक्खा है।

27. Lo! these love fleeting life, and put behind them (the remembrance of) a grievous day.

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

२८ हमीं ने इन को पैदा किया है, और इन के जोड़-बन्द मज़बूत किये। और हम जब चाहें ये जैसे-कुछ हैं इन्हें बिल्कुल बदल डालें।

28. We, even We, created them, and strengthened their frame. And when We will, We can replace them, bringing others like them in their stead.

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

२९. यह एक अनुस्मारक है, तो जो कोई चाहे अपने 'रब' की राह ले[१४]।

29. Lo! this is an admomishment, that whosoever will, may choose a way unto his Lord.

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

३०. और तुम कुछ नहीं चाह सकते बिना इस के कि अल्लाह चाहे। अल्लाह ज्ञान रखने वाला और तत्वदर्शी है।

30. Yet ye will not, unless Allah willeth. Lo! Allah is Knower, Wise.

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

३१. वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल कर लेता है, जो लोग ज़ालिम हैं उन के लिए उस ने दुःख-भरी यातना तैयार कर रक्खी है।

31. He maketh whom He will to enter His mercy, and for evil-doers hath prepared a painful doom.

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۗ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

———

१३. यह संकेत 'नमाज़' की ओर है (दे० सूरा अल-अलक़, अल-आला)। मतलब यह है कि तुम्हारे विरोधी लोर वैरी लोग इस नाशवान् दुनिया के अभिलाषी हैं तुम उन का मुक़ाबला इस प्रकार करो कि उस चीज़ की चाह में लग जाओ जो दुनिया और दुनिया की सब चीज़ों से उत्तम है अर्थात् अपने 'रब' के स्मरण और उस की उपासना में लगो। उस का गुणगान करो, उस के गुणगान का सब से अच्छा तरीक़ा 'नमाज़' है।

१४. आयत २९ सूरा की समाप्ति की आयत है। फिर दो आयतें अल्लाह ने इस सूरा मे उसी प्रकार मिलाई हैं जिस प्रकार सूरा अल-मुज़्ज़म्मिल के अन्त में एक लम्बी आयत का समावेश हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७—अल-मुरसलात
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-मुरसलात' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण होने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

प्रस्तुत 'सूरा' का केन्द्रीय विषय वही है जो पिछली सूरा (अद-दह्र) का है। 'दीन' की जिन मौलिक शिक्षाओं का उल्लेख पिछली सूरा में हुआ है ,उन्हीं का उल्लेख प्रस्तुत सूरा में भी हुआ है। पिछली सूरा में 'आखिरत', 'क़ुरआन' और 'नमाज़' का उल्लेख किया गया है इन्हीं चीज़ों का उल्लेख हमें प्रस्तुत सूरा में भी मिलता है। वर्णन-शैली अवश्य पिछली सूरा से भिन्न है। पिछली सूरा में विशेष रूप से शुभ सूचना दे कर लोगों को सत्य की ओर प्रेरित किया गया है; प्रस्तुत सूरा में हमें डरावा और चेतावनी का पहलू उभरा हुआ दीख पड़ता है। जिन बातों का वर्णन पिछली सूरा में संक्षिप्त रूप में हुआ है उन्हें प्रस्तुत सूरा में स्पष्ट रूप से सामने लाया गया है।

प्रस्तुत 'सूरा' में हवाओं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हुये इस बात को प्रमाणित किया गया है कि अल्लाह ने जो फ़ैसले का वादा किया है वह सत्य है। 'क़ियामत' अवश्य आयेगी और लोगों को अपने कर्मों का अच्छा या बुरा बदला मिल कर रहेगा। इस सूरा में हवाओं के अतिरिक्त अपनी दूसरी निशानियों को भी अल्लाह ने 'आखिरत' को प्रमाणित रूप देने के लिए पेश किया है। इस सूरा से ले कर सूरा अत-तारिक़ तक की 'सूरतों' का 'क़ियामत' से विशेष सम्पर्क है।

इस 'सूरा' में इन्कार करने वाले 'काफ़िरों' और अल्लाह से डरने वालों के बीच मुक़ाबला किया गया है और दोनों गरोहों के परिणाम हमारे सामने रक्खे गये हैं। इस सूरा में एक विशेष वाक्य "तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की" १० बार आया है। यह वाक्य अपने अन्दर विभिन्न पहलू रखता है। यही कारण है कि यह वाक्य इस सूरा में विभिन्न स्थानों पर अनुकूल रूप से प्रयुक्त हो सका है। झुठलाने वालों से अभिप्रेत वे 'काफ़िर' लोग हैं जो 'आखिरत' को नहीं मानते और उन आयतों का इन्कार करते हैं जिन से 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की पुष्टि होती है। फिर 'आखिरत' और 'तौहीद' के अन्तर्गत वे अल्लाह के 'रसूल' और उस की लाई हुई 'किताब' को भी झुठलाते हैं। ऐसे झुठलाने वालों को इस की धमकी दी गई है कि उन के हिस्से में खराबी और बरबादी के अतिरिक्त और कुछ न आ सकेगा। वे 'क़ियामत' के दिन बिल्कुल विवश होंगे उन की कोई चाल भी उन के लिए उपयोगी न होगी। 'जहन्नम' की लपटों की ओर उन्हें चलना होगा। जहाँ न उन्हें शीतल छाया मिलेगी और न आग की चिंगारियों और लपटों से वे अपने-आप को बचा सकेंगे। रहे वे लोग जिन्होंने सत्य का इन्कार नहीं किया, जो अल्लाह से डरते और उस की अवज्ञा से बचते रहे उन के लिए वहाँ शीतल छाया भी होगी, स्रोत, मनचाहे फल और मेवे भी।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-मुरसलात
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५०)

THE EMISSARIES
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है उन (हवाओं) की[1] जिन के झोंके चलाये जाते हैं[2]

1. By the emissary winds, (sent) one after another,

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝١

२. फिर जो (कभी) झक्कड़ बन कर चलती हैं[3],

2. By the raging hurricanes,

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۝٢

३. और (कभी) विकसित करती फिरती हैं[4];

3. By those which cause earth's vegetation to revive;

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۝٣

४. फिर अलग-अलग कर देती हैं[5],

4. By those who winnow with a winnowing,

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝٤

५. फिर अनुस्मारक छोड़ देती हैं[6],

5. By those who bring down the Reminder,

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝٥

६. उज्र बने या चेतावनी बने[7],

6. To excuse or to warn,

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝٦

७. जिस का तुम से वादा किया जाता है वह हो कर रहेगा[8]।

7. Surely that which ye are promised will befall.

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝٧

८. तो जब सितारे मिट जायेंगे,

8. So when the stars are put out,

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝٨

९. और आकाश फट जायेगा,

9. And when the sky is riven asunder.

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝٩

१. अर्थात् वे (हवायें) गवाह और साक्षी हैं। वे इस बात की साक्षी हैं कि अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। क़ियामत' अवश्य आयेगी (दे० आयत ७)।

२. इस आयत में 'उर्फ़' (عرف) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'उर्फ़' से अभिप्रेत घोड़े की अयाल (केसर) के बाल हैं जो उस के मस्तक पर लटके हुये होते हैं। यहाँ हवाओं को घोड़े से उपमा दी गई है और उन के चलने और रुकने को घोड़ों के मस्तक के बाल पकड़ने और छोड़ने से।

३. हवाओं का चलना लाभदायक और उपयोगी भी होता है और कभी हानिकारक भी। जो हवायें चलने के पश्चात् सख़्त और तुन्द हो जाती हैं वे साधारणतः हानि पहुँचाने वाली होती हैं।

४. हवायें एक ओर तो बादलों को उभारती और उन्हें वायुमण्डल में फैला देती हैं दूसरी ओर वर्षा के रूप में वे अपने 'रब' की दयालुता का प्रसारण करती हैं और विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को उगा कर भूमि को हरी-भरी और सुसज्जित कर देती हैं।

५. इन हवाओं का कार्य भिन्न होता है कभी तो ये हवायें वर्षा लाती हैं और कभी बादलों को उड़ा कर कहीं और ले जाती हैं। किसी गरोह को ओलों, बाढ़ आदि से हानि पहुँचाती हैं तो किसी गरोह के लिए लाभदायक सिद्ध होती हैं। दे० सूरा अज़-ज़ारियात आयत ४।

६. हवाओं के चलने में अल्लाह की निशानी और याददिहानी पाई जाती है। मनुष्य इन से बहुत-कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

७. जो याददिहानी और चेतावनी हवाओं के चलने से होती है, उस से उन लोगों को सचेत करना अभीष्ट है जो समझ-बूझ से काम लेने वाले हैं और इस से उन लोगों पर हुज्जत भी क़ायम होती है जो अचेत ही रहना चाहते हैं, वे कल 'क़ियामत' के दिन यह नहीं कह सकते कि मुझे सचेत करने के लिये कोई निशानी क्यों नहीं भेजी गई।

८. अर्थात् वर्त्तमान लोक में अल्लाह अपनी दयालुता और अपने प्रकोप की निशानियाँ दिखाता है जब यह सब-कुछ इस जीवन में हम अपनी आँखों से देख रहे हैं, तो फिर एक ऐसा दिन क्यों नहीं आ सकता जब कि लोगों को अपने-अपने कर्मों के अनुसार बदला दिया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जायेंगे,	10. And when the mountains are blown away,	وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ⑩
११. और जब 'रसूलों' के लिए समय नियत होगा[९]—	11. And when the messengers are brought unto their time appointed—	وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ⑪
१२. देर किस दिन की है ?	12. For what day is the time appointed?	لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ⑫
१३. फ़ैसले के दिन की।	13. For the day of Decision.	لِيَوْمِ الْفَصْلِ ⑬
१४. और तुम क्या जानो कि क्या है फ़ैसले का दिन !—	14. And what will convey unto thee what the Day of Decision is !—	وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ⑭
१५. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	15. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ⑮
१६. क्या हम ने अगलों को विनष्ट नहीं किया[१०],	16. Destroyed We not the former folk,	أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ⑯
१७. फिर पिछलों को भी उन के पीछे भेजते रहे ?	17. Then caused the latter folk to follow after?	ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ⑰
१८. ऐसा ही करते हैं हम अपराधियों के साथ।	18. Thus deal We ever with the guilty.	كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ⑱
१९. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	19. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ⑲
२०. क्या हम ने तुम्हें एक तुच्छ पानी से नहीं पैदा किया	20. Did We not create you from a base fluid,	أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ⑳
२१. फिर उसे एक सुरक्षित जगह में रक्खा	21. Which We laid up in a safe abode.	فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ㉑
२२. एक जाने-बूझे अन्दाज़े तक ?	22. For a known term?	إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ㉒
२३. हम ने अन्दाज़ा ठहराया तो हम कैसे अंन्दाज़ा ठहराने वाले हैं[११] !	23. Thus We arranged. How excellent is Our arranging!	فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ㉓
२४. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	24. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ㉔
२५. क्या हम ने धरती को समेटे रखने वाली नहीं बनाया	25. Have We not made the earth a receptacle.	أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ㉕

९. अर्थात् 'रसूलों' के हाज़िर होने का एक समय निश्चित किया जायेगा और उन से उन की जाति वालों के विषय में पूछा जायेगा और उन की गवाही के अनुसार उन की जातियों के बारे में निर्णय किया जायेगा।

१०. अरब के लोग भली-भाँति इस बात को जानते थे कि किस प्रकार पिछली बहुत सी जातियाँ विनष्ट कर दी गई हैं। 'आद' और लूत (अ०) की जाति को तो अल्लाह ने हवा ही की यातना से तबाह किया।

११. मनुष्य को सोचना चाहिए कि जिस अल्लाह ने उसे पहली बार पैदा किया है वह दूसरी बार भी उसे पैदा करने का सामर्थ्य रखता है। जो उस के जीवन से सम्बन्धित छोटी-से-छोटी बातों का पूरा ध्यान रखता है वह मानव-जीवन की मौलिक और महान् समस्याओं की उपेक्षा कैसे कर सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. ज़िन्दों को भी और मुरदों को भी,	26. Both for the living and the dead,	أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾
२७. और उस में गड़े हुये ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बनाये और तुम्हें पीने को मीठा-मीठा पानी दिया[१२]?	27. And placed therein high mountains and given you to drink sweet water therein?	وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾
२८. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों को !	28. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾
२९. चलो उस की ओर जिसे तुम झुठलाते थे;	29. (It will be said unto them): Depart unto that (doom) which ye used to deny;	انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾
३०. चलो तीन शाखाओं वाली छाया[१३] की ओर,	30. Depart unto the shadow falling threefold,	انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾
३१. जो न घनी है और न लपट से बचने के काम आवे।	31. (Which yet is) no relief nor shelter from the flame.	لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾
३२. वह चिनगारियाँ फेंकती है महल जैसी-जैसी[१४],	32. Lo! it throweth up sparks like the castles,	إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾
३३. मानो वे पीत वर्ण के ऊँट हैं[१५]।	33. (Or) as it might be camels of bright yellow hue.	كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾
३४. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	34. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾
३५. यह वह दिन है कि उन से बात नहीं निकलती,	35. This is a day wherein they speak not.	هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿٣٥﴾
३६. और न उन्हें इजाज़त है कि उज्र ही पेश करें।	36. Nor are they suffered to put forth excuses.	وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾
३७. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	37. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾
३८. यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें और अगलों को एकत्र कर दिया है।	38. This is the Day of Decision. We have brought you and the men of old together.	هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾
३९. अब यदि तुम्हारे पास कोई दाँव है, तो चलाओ मुझ पर।	39. If now ye have any wit, outwit Me.	فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾
४०. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	40. Woe unto the repudiators on that day!	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

१२. पैदा होने से पहले जिस प्रकार अल्लाह ने माता के पेट (गर्भाशय) में मनुष्य के लिए उस की आवश्यकता की समस्त चीज़ें संचित कीं उसी प्रकार पैदा होने के पश्चात् धरती में भी वह मनुष्य की जरूरतों को पूरी करता है। जिस पालनकर्ता ने उसे माँ के पेट से इस विस्तृत धरती में उतारा है वह उसे इस लोक के बाद दूसरे लोक में भी बसा सकता है।

१३. इस से अभिप्रेत धुयें की छाया है। जब धुआँ उठता है तो उस से विभिन्न शाखायें फूटती हैं। दे० सूरा अल-वाक़िआ आयत ४३-४४।

१४. इस उपमा से अग्नि-शिखाओं और लपटों के फैलाव, उन की ऊँचाई और रंग आदि पर प्रकाश पड़ता है। महलों का निर्माण साधारणतः ऊँचे स्थानों पर होता है। दूर से उन का रंग चमकता हुआ दिखाई देता है। महलों को दूर से देखने से उन की जो आकृति दीख पड़ती है उसी को सामने रखते हुये यह उपमा दी गई है।

१५. इस उपमा से लपटों और चिनगारियों के रंग और उन की बड़ाई दोनों पर प्रकाश पड़ता है। धुयें की आड़ से लपटों का रंग ऐसा ही दिखाई देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. निस्सन्देह डर रखने वाले छाँवों और स्रोतों के बीच होंगे[१६]

41. Lo! those who kept their duty are amid shade and fountains,

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾

४२. और वहाँ मेवे हैं जैसे पसन्द करें।

42. And fruits such as they desire.

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

४३. मज़े से खाओ, और पियो जो-कुछ तुम करते थे उस के बदले में।

43. (Unto them it is said): Eat, drink and welcome, O ye blessed, in return for what ye did.

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

४४. हम ऐसा ही बदला देते हैं उत्तमकारों को।

44. Thus do We reward the good.

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

४५. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !

45. Woe unto the repudiators on that day!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

४६. खा लो और सुख भोग लो थोड़ा सा। (हे झुठलाने वालो!) तुम तो अपराधी हो।

46. Eat and take ease (on earth) a little. Lo! ye are guilty.

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾

४७. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !

47. Woe unto the repudiators on that day!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

४८. और जब उन से कहा जाता है : झुको, तो नहीं झुकते !

48. When it is said unto them: Bow down, they bow not down!

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾

४९. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !

49. Woe unto the repudiators on that day!

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

५०. तो अब इस के बाद, कौन-सी बात होगी जिस पर ये 'ईमान' लायेंगे[१७]।

50. In what statement, after this, will they believe?

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

———

१६. दे० सूरा अल-वाक़िआ आयत २७-३३।

१७. इस से बढ़ कर कौन-सी बात स्पष्ट और दिलों में घर करने वाली हो सकती है जिस को ये मानेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८–अन–नबा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नबा' (The tidings) सूरा की दूसरी 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है जब कि लोगों के सामने 'दीन' (धर्म) की मौलिक शिक्षायें ही प्रस्तुत की जा रही थीं।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' का मूल विषय 'क़ियामत' और 'आख़िरत' है। प्रस्तुत सूरा में सरकश लोगों और उन लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है जो अल्लाह का डर रखते और उस की अवज्ञा से बचते हैं।

'सूरा' के आरम्भ में कहा गया है कि जो लोग 'आख़िरत' के विषय में विभिन्न मत रखते हैं उन्हें 'आख़िरत' की वास्तविकता का जल्द ही ज्ञान हो जायेगा। फिर आयत ६ से ले कर आयत १६ तक अल्लाह ने अपने उन चमत्कारों का उल्लेख किया है जिन से 'आख़िरत' और 'क़ियामत' की पुष्टि होती है। इन 'आयतों' में जिन निशानियों का उल्लेख किया गया है उन से मालूम होता है कि इस विश्व का कोई सृष्टिकर्त्ता और निर्माता है जो अत्यन्त उचित रूप से हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। वह हम सब का पालनकर्त्ता है। वह अत्यन्त दयावन्त है विश्व का निर्माण कर के उस ने अपनी दयालुता का ही परिचय दिया है। उस ने हर चीज़ का निर्माण 'हिकमत' और उद्देश्य के अन्तर्गत किया है। अतः अवश्य ही वर्त्तमान लोक का भी कोई वास्तविक उद्देश्य होगा। और अवश्य ही इस वर्त्तमान लोक की एक निश्चित अवधि होगी। अल्लाह हमारी ज़रूरतों को पूरी कर रहा है उस से यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेगा और यों ही सदा के लिए मनुष्य के जीवन का अन्त हो जावेगा। ऐसा कदापि नहीं होने का। एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जब कि उस के कर्मों का उसे बदला दिया जायेगा।

आगे चल कर संक्षेप रूप में 'क़ियामत' का नक़शा पेश कर के बताया गया है कि उस दिन ज़ालिम और सरकश लोग किस प्रकार 'जहन्नम' का ईंधन बनेंगे और किस प्रकार उस दिन अल्लाह से डरने वाले सफल होंगे और उन्हें हर प्रकार की सुख-सामग्री प्राप्त होगी। अल्लाह उन के कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा।

'आख़िरत' के अन्तर्गत इस सूरा में 'तौहीद' का भी उल्लेख किया गया और बताया गया है कि 'आख़िरत' में किस प्रकार हर एक उस के आगे विवश होगा।

सूरा को समाप्त करते हुये लोगों को सावधान किया गया है कि फ़ैसले का दिन आ कर रहेगा। वह यातना जिस से लोगों को डराया जाता है दूर नहीं है। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपना किया-धरा देख लेगा। काफ़िर कहेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मिट्टी होते और यातना से छुटकारा पा लेते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नबा **(मक्का में उतरी–'आयतें' ४०)**	**THE TIDINGS** *Revealed at Mecca*	سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
*१. किस चीज़ के विषय में ये लोग पूछते रहते हैं ?[1]	1. Whereof do they question one another?	عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾
२. उस बड़ी ख़बर के विषय में,[1]	2. (It is) of the awful tidings,	عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾
३. जिस में विभेद रखते हैं।	3. Concerning which they are in disagreement.	الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾
४. कुछ नहीं, जल्द ही इन्हें ज्ञात हो जायेगा[2] !	4. Nay but they will come to know!	كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾
५. फिर (सुन लो) कुछ नहीं, जल्द ही इन्हें ज्ञात हो जायेगा !	5. Nay, again but they will come to know!	ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾
६. क्या नहीं बनाया हम ने धरती को बिछौना,	6. Have We not made the earth an expanse,	اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾
७. और पहाड़ों को मेखें[3] ?	7. And the high hills bulwarks?	وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾
८. और पैदा किया तुम्हें जोड़ा-जोड़ा,	8. And We have created you in pairs,	وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿٨﴾
९. और बनाया तुम्हारी नींद को विश्राम,[4]	9. And have appointed your sleep for repose,	وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾
१०. और बनाया रात को लिबास,[5]	10. And have appointed the night as a cloak,	وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾
११. और बनाया दिन को जीवन-वृत्ति के लिए[6]।	11. And have appointed the day for livelihood.	وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾
१२. बनाये तुम्हारे ऊपर सप्त सुदृढ़ (आकाश),[7]	12. And We have built above you seven strong (heavens),	وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

الجزء الثلاثون ٣٠

* यहाँ से तीसवाँ पारा (Part XXX) शुरू होता है।

१. अर्थात् 'आख़िरत' के बारे में।

२. अर्थात् जिस की ये लोग हँसी उड़ाते और जिस का इन्कार करते हैं उस के आने में देर नहीं है जल्द ही इन्हें उस की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

३. दे० सूरा अन-नह्ल फुटनोट ८।

४. अर्थात् सोने से तुम्हारी थकान दूर हो जाती है और तुम्हें एक प्रकार से नवीन जीवन प्राप्त होता है।

५. रात हर चीज़ को ढक लेती है। रात अपने अँधेरे में हर चीज़ को छुपा लेती है। सब कामों से छुट्टी पा कर आदमी रात के लिबास में आराम पाता है।

६. साधारणतः मनुष्य दिन में दौड़-धूप करता और अपनी रोज़ी कमाता है। जीवन सम्बन्धी दूसरे कार्य भी साधारणतः दिन में ही होते हैं।

७. दे० सूरा अल-बक़रा फुटनोट ७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. और बनाया एक जगमगाता प्रदीप,[८]	13. And have appointed a dazzling lamp,	وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝١٣
१४. और बरसाया निचोड़ने वालों (बादलों) से मूसलाधार पानी	14. And have sent down from the rainy clouds abundant water,	وَّأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝١٤
१५. ताकि पैदा करें उस के द्वारा अनाज और वनस्पति,	15. Thereby to produce grain and plant,	لِّنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝١٥
१६. और घने-घने बाग़[९]।	16. And gardens of thick foliage.	وَّجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ۝١٦
१७. फ़ैसले का दिन एक निश्चित समय है,[१०]	17. Lo! the Day of Decision is a fixed time,	إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝١٧
१८. जिस दिन कि 'सूर' में फूंक मारी जायेगी, और तुम गरोह-के-गरोह चले आ रहे होगे,	18. A day when the trumpet is blown, and ye come in multitudes,	يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝١٨
१९. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उस के दरवाज़े-ही-दरवाज़े हो जायेंगे,	19. And the heaven is opened and becometh as gates.	وَّفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝١٩
२०. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वे मरीचिका हो रहे होंगे[११]।	20. And the hills are set in motion and become as a mirage.	وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢٠
२१. 'जहन्नम' घात में है,	21. Lo! hell lurketh in ambush,	إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢١
२२. सरकश लोगों का ठिकाना है।	22. A home for the rebellious,	لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ۝٢٢
२३. जिस में वे मुद्दत-पर-मुद्दत बिताते रहेंगे[१२]।	23. They will abide therein for ages.	لَّابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝٢٣
२४. न वहाँ किसी ठण्डक का आस्वादन करेंगे और न किसी पीने की चीज़ का[१३]	24. Therein taste they neither coolness nor (any) drink.	لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝٢٤
२५. सिवाय खौलते पानी और पीप-रक्त[१४] के :	25. Save boiling water and a paralysing cold:	إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ۝٢٥
२६. बदला है ठीक-ठीक।	26. Reward proportioned (to their evil deeds).	جَزَاءً وِفَاقًا ۝٢٦
२७. वे तो किसी प्रकार हिसाब की आशा ही नहीं रखते थे;	27. For lo! they looked not for a reckoning;	إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝٢٧

८. अर्थात् सूर्य।

९. आयत ६ से ले कर आयत १६ तक उन निशानियों का उल्लेख किया गया है जिन में सोच-विचार करने से 'आख़िरत' की पुष्टि होती है। वास्तव में अल्लाह ने अपनी निशानियों के रूप में ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किये हैं जिन से प्रत्यक्ष रूप में यह बात सिद्ध हो जाती है कि एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जब लोगों को उन का 'रब' दोबारा जीवन प्रदान करेगा और उन्हें अपने कर्मों का बदला दिया जायेगा (दे० सूरा की भूमिका)।

१०. आयत ६ से ले कर आयत १६ तक अल्लाह ने अपने जिन चमत्कारों का उल्लेख किया है उन से प्रत्यक्षतः सिद्ध हो जाता है कि फ़ैसले का दिन अटल है, वह आ कर ही रहेगा।

११. अर्थात् पहाड़ धुनी हुई रोई के समान उड़ जायेंगे, उन का अस्तित्व शेष न रहेगा, धरती चटियल मैदान हो जायेगी।

१२. अर्थात् युग-पर-युग बीतते चले जायेंगे परन्तु उन्हें 'जहन्नम' से छुटकारा न मिलेगा।

१३. अर्थात् न तो उन्हें शीतलता का आनन्द मिल सकेगा और न कोई आनन्ददायक चीज़ उन्हें पीने को मिलेगी।

१४. दे० सूरा सॉद० फुटनोट ३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. और हमारी 'आयतों' को झुठलाते ही रहे।

२९. और हम ने हर चीज़ लिख रक्खी है।

३०. तो मज़ा चखो। अब हम तुम्हें और कुछ नहीं बस यातना देते रहेंगे।

३१. निस्सन्देह डर रखने वालों के लिए सफलता है—

३२. बाग़ हैं और अंगूर,

३३. और नवयुवतियाँ समान आयु वाली,

३४. और छलकता मद्य-पात्र।

३५. वे वहाँ कोई बकवाद नहीं सुनेंगे और न कोई झूठ—

३६. बदला है तुम्हारे 'रब' की ओर से—पुरस्कार हिसाब से—

३७. 'रब' आकाशों और धरती का, और जो कुछ उन के बीच है उस का, अत्यन्त कृपाशील; उन के बस में नहीं कि उस से कोई बात कर सकें।

३८. जिस दिन रूह और 'फ़िरिश्ते' पंक्तिबद्ध हो कर खड़े होंगे, वे बोलेंगे नहीं, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे 'रहमान' (कृपाशील ईश्वर) अनुज्ञा दे दे और वह बात भी ठीक कहे[१५]।

३९. यह वह बिल्कुल यक़ीनी दिन है। तो जो कोई चाहे अपने 'रब' के पास ठिकाना बना ले।

४०. हम ने तुम्हें एक ऐसी यातना[१६] से सचेत कर दिया जो दूर नहीं, जिस दिन मनुष्य देखेगा कि उस के हाथों ने क्या कुछ भेजा, और 'काफ़िर' कहेगा : "क्या अच्छा होता कि मैं मिट्टी होता[१७]!"

---

28. They called Our revelations false with strong denial

29. Everything We have recorded in a Book:

30. So taste (of that which ye have earned). No increase do We give you save of torment.

31. Lo! for the duteous is achievement—

32. Gardens enclosed and vineyards,

33. And maidens for companions,

34. And a full cup.

35. There hear they never vain discourse, nor lying—

36. Requital from thy Lord—a gift in payment—

37. Lord of the heavens and the earth, and (all) that is between them, the Beneficent; with Whom none can converse.

38. On the day when the angels and the Spirit stand arrayed, they speak not, save him whom the Beneficent alloweth and who speaketh right.

39. That is true Day. So whoso will should seek recourse unto his Lord.

40. Lo! We warn you of a doom at hand, a day whereon a man will look on that which his own hands have sent before, and the disbeliever will cry: "Would that I were dust!"

وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

حَدَآئِقَ وَأَعْنٰبًا ﴿٣٢﴾

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

---

१५. अर्थात् उस दिन उस से वही बात कर सकेगा जिसे उस की अनुज्ञा प्राप्त होगी और वह बात भी ठीक कहेगा। दूसरा कोई उस से बात नहीं कर सकेगा और न किसी के लिए सिफ़ारिश कर सकेगा। दे० सूरा अल-मुरसलात आयत ३५-३६।

१६. अर्थात् ऐसी यातना से जो दूर नहीं है जब वह आ जायेगी तो तुम देखोगे कि जिस चीज़ को लोग दूर समझ रहे थे वह तो अत्यन्त निकट थी। दे० सूरा अन-नाज़िआत आयत ४६।

१७. और इस तरह से मैं 'जहन्नम' की यातना से बच जाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७९—अन-नाज़िआत
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नाज़िआत' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में से है जो मक्का में उस समय अवतीर्ण हुई हैं जब कि नबी सल्ल० लोगों को खुल कर सत्य की ओर आमन्त्रित कर रहे थे और मक्का के 'काफ़िर' आप (सल्ल०) की बातों का उपहास कर रहे थे।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस सूरा में विशेष रूप से 'क़ियामत' का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत 'सूरा' में सरकशों और उन लोगों के बीच जो अल्लाह से डरने वाले हैं मुक़ाबला किया गया है। और बताया गया है कि सफलता उन्हीं लोगों के लिए है जो दुनिया में अल्लाह से डरते और 'आख़िरत' की तैयारी में लगे रहते हैं।

'सूरा' के आरम्भ में क़समों के रूप में 'क़ियामत' का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। परन्तु क़सम जिस चीज़ की खाई गई है उस के बारे में लोगों के विभिन्न मत हैं, उदाहरणार्थ 'फ़िरिश्ते', सितारे, हवायें, घोड़े आदि। साधारणतया लोगों का विचार है कि यहां क़सम 'फ़िरिश्तों' की खाई गई है। 'फ़िरिश्ते' रग-रग में उतर कर प्राण खींच निकालते हैं फिर वे प्राण को ले कर एक लोक से दूसरे लोक में जाते हैं। 'फ़िरिश्ते' अल्लाह के आदेशों का पालन करने के लिए तेज़ी दिखाते हैं। 'फ़िरिश्ते' जो काम अनजाम देते हैं वे हमारे सामने हैं। 'फ़िरिश्तों' के कामों से यही मालूम होता है कि संसार निरर्थक नहीं है अतः 'क़ियामत' अवश्य आयेगी और लोग जीवित कर के उठाये जायेंगे। साधारणतया लोगों का विचार तो यही है कि यहाँ 'फ़िरिश्तों' की क़सम खाई गई है परन्तु हम अभी स्वय किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सके हैं। वास्तविक ज्ञान अल्लाह को है।

'क़ियामत' के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात् फ़िरऔन का क़िस्सा सुनाया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने दुनिया ही में उसे उस की सरकशी का मज़ा चखाया था। इस क़िस्से के द्वारा मक्का वालों को सचेत किया गया है कि किसी को अपनी सरदारी और शक्ति पर कदापि गर्व नहीं होना चाहिए। जो अल्लाह मूसा के साथ था वही आज मुहम्मद (सल्ल०) का भी सहायक है।

फ़िरऔन का हाल बयान करने के बाद अल्लाह ने फिर अपने कुछ चमत्कारों का उल्लेख किया है, जिन से 'आख़िरत' की पुष्टि होती है। बताया गया है कि जिस अल्लाह ने इस विशाल जगत की सृष्टि की है उस के लिए क्या मुश्किल बात है कि वह तुम्हें मरने के बाद दोबारा जीवित कर के उठाये। जो इस लोक में मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है वह अवश्य उस की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसे पुनः जीवन प्रदान करेगा। जो अल्लाह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को नहीं भूलता वह हमारी उन आवश्यकताओं की उपेक्षा कैसे कर सकता है जिन का सम्बन्ध हमारी आत्मा और हमारी उन कामनाओं से है जो जीवन की मूल निधि हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नाज़िआत

(मक्का में उतरी—'आयतें' ४६)

THOSE WHO DRAG FORTH

Revealed at Mecca

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है[1] उन की जो अन्तिम सीमा तक जा लेते हैं,

1. By those who drag forth to destruction,

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١

२. और जो इधर से उधर निकल जाते हैं,

2. By the meteors rushing,

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢

३. और जो तैरते होते हैं,

3. By the lone stars floating,

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٣

४. फिर आगे बढ़ते हैं,

4. By the angels hastening,

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝٤

५. फिर [illegible]ाम चलाते हैं,

5. And those who govern the event,

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥

६. जिस दिन हिला डालने वाली हिला डालेगी[2]

6. On the day when the first trumpet resoundeth.

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦

७. उस के पीछे-पीछे आयेगी बाद वाली,[3]

7. And the second followeth it,

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٧

८. कितने ही दिल उस दिन धड़क रहे होंगे

8. On that day hearts beat painfully,

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨

९. उन की निगाहें झुकी हुई होंगी

9. While eyes are downcast.

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩

१०. कहते हैं: क्या हम फिर पहली हालत में कर दिये जायेंगे[4] ?

10. (Now) they are saying: Shall we really be restored to our first state:

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۝١٠

११. क्या उस समय जब कि हम खोखली हड्डियाँ हो जायेंगे ?

11. Even after we are crumbled bones?

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١

१२. कहा: फिर तो इस पलटने में घाटा-ही-घाटा है[5] ।

12. They say: Then that would be a vain proceeding.

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢

१३. वह तो बस एक झिड़की होगी,

13. Surely it will need but one shout,

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣

१४. फिर तत्काल वे एक जागते मैदान में होंगे[6] । —

14. And lo! they will be awakened.

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤

१. क़सम वास्तव में किसी प्रमाण और दलील को ज़ोरदार तरीक़े से पेश करने की एक विशेष शैली है। इस सूरा में क़सम किस चीज़ की खाई गई है इस के बारे में विभिन्न मत हैं। यहां क़सम खा कर वास्तव में इस बात की पुष्टि की गई है कि एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा जब कि विश्व की यह व्यवस्था बिगाड़ दी जायेगी; उस के बाद अल्लाह एक नई दुनिया बसायेगा और लोगों को पुनः जीवित कर के उठायेगा और उन के मामले का निपटारा करेगा (दे० परिचय)।

२. अर्थात् सब कुछ तहस-नहस हो जायेगा।

३. अर्थात् वह घड़ी जिस में लोग दोबारा हिसाब के लिए हाज़िर होंगे।

४. अर्थात् क्या हमें मरने के पश्चात् फिर जीवन प्रदान किया जायेगा ?

५. अर्थात् तब तो हम लोग बड़े ही घाटे में रहेंगे।

६. अर्थात् जहां हर ओर कोलाहल होगा और ऐसा भयानक दृश्य होगा कि नींद उड़ जायेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. क्या तुम तक मूसा का समाचार पहुँचा

15. Hath there come unto thee the history of Moses?

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⑮

१६. जब उस के 'रब' ने उसे 'तुवा'[७] की पवित्र घाटी में पुकारा :

16. How his Lord called him in the holy vale of Tuwa,

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ⑯

१७. जाओ फ़िरऔन के पास—उस ने सिर उठा रक्खा है—

17. (Saying:) Go thou into Pharaoh—Lo! he hath rebelled—

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ⑰

१८. और कहो : क्या तुम्हें सवँरना है ?

18. And say (unto him): Hast thou (will) to grow (in grace)?

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ⑱

१९. और मैं तुम्हें अपने 'रब' की ओर जाने का मार्ग दिखाऊँ तुम डरोगे ?

19. Then I will guide thee to thy Lord and thou shalt fear (Him).

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ⑲

२०. फिर उसे बहुत बड़ा चमत्कार दिखाया।

20. And he showed him the tremendous token.

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ⑳

२१. तो उस ने झुठला दिया और बात न मानी,

21. But he denied and disobeyed,

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ㉑

२२. फिर पलटकर वह भाग-दौड़ करने लगा,

22. Then turned he away in haste.

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ㉒

२३. फिर (लोगों को) इकट्ठा किया और पुकारा,

23. Then gathered he and summoned,

فَحَشَرَ فَنَادٰى ㉓

२४. बोला : "मैं हूँ तुम्हारा सर्वोच्च 'रब'।"

24. And proclaimed: "I (Pharaoh) am your Lord the Highest."

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ㉔

२५. तो उसे अल्लाह ने पकड़ लिया ऐसी पकड़ जो भयोत्पादक है पिछले (काल) में भी और पहले (काल) में भी।

25. So Allah seized him (and made him) an example for the after (life) and for the former.

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ㉕

२६. निस्सन्देह इस में उस व्यक्ति के लिए बड़ी शिक्षा-सामग्री है जो डरे।

26. Lo! herein is indeed a lesson for him who feareth.

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ㉖

२७. क्या तुम्हारा पैदा करना अधिक कठिन है या आकाश का उस को उसनें बनाया[८] ?

27. Are ye the harder to create, or is the heaven that He built?

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰىهَا ㉗

२८. उसे ऊँचा उठाया और उसे ठीक-ठाक किया;

28. He raised the height thereof and ordered it;

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ㉘

२९. और उस की यह अँधेरी रात बनाई, और उस में दिन का प्रकाश प्रकट किया।

29. And He made dark the night thereof, and He brought forth the morn thereof.

وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ㉙

३०. और इस के बाद धरती को बिछाया,[९]

30. And after that He spread the earth,

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ㉚

७. अर्थात् तूर सीना की वह घाटी जहाँ हज़रत मूसा अ० को अल्लाह ने 'नुबूवत' प्रदान की थी।

८. अर्थात् जो अल्लाह इस विशाल विश्व का निर्माता है जिस ने बड़े-बड़े ग्रहों और उपग्रहों को अपने नियम में जकड़ रखा है। जो ऐसा सर्वशक्तिमान् है कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों को ऐसे अदृश्य सहारों पर स्थापित कर रखा है कि मनुष्य चकित हो कर रहा जाता है उस महान् ईश्वर के प्रति यह गुमान करना कि मनुष्य को एक बार बनाकर पुन: जीवित करने का सामर्थ्य नहीं रखता कैसी मूर्खता की बात है।

९. विचार करने से मालूम होता है कि यहाँ सामयिक क्रम का उल्लेख नहीं किया गया है कि धरती की रचना पहले की गई या आकाश की रचना पहले हुई, बल्कि आशय यह है कि आकाश को भी अल्लाह ने बनाया है और धरती की रचना भी उसी ने की है। दे० सूरा हा० मीम० अस-सजदा फुटनोट ७, ८; सूरा अल-बक़रा आयत २९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१. उस में से यह पानी और यह चारा निकाला।

31. And produced therefrom the water thereof and the pasture thereof,

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

३२. और पहाड़ों को जमा दिया,

32. And He made fast the hills,

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

३३. तुम्हारी और तुम्हारे चौपायों की गुज़र-बसर के लिए।

33. A provision for you and for your cattle.

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

३४. फिर जब वह बड़ी वाली आपत्ति आयेगी,

34. But when the great disaster cometh,

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

३५. जिस दिन मनुष्य याद करेगा जो-कुछ चेष्टा उस ने की होगी,

35. The day when man will call to mind his (whole) endeavour,

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

३६. और भड़कती आग सामने कर दी जायेगी कि जो देखता हो देखे।

36. And hell will stand forth visible to him who seeth,

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

३७. तो जिस किसी ने सरकशी की होगी

37. Then, as for him who rebelled,

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

३८. और सांसारिक जीवन ही को पसन्द कर लिया होगा,

38. And chose the life of world,

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

३९. (उस का) तो भड़कती आग ही ठिकाना है।

39. Lo! hell will be his home.

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

४०. और जो कोई अपने 'रब' के आगे खड़े होने से डरा होगा और अपने जी को वासनाओं से रोका होगा,

40. But as for him who feared to stand before his Lord and restrained his soul from lust,

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

४१. (उस का) तो ठिकाना 'जन्नत' ही है।

41. Lo! the Garden will be his home.

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

४२. वे तुम से उस घड़ी के बारे में पूछते हैं कि वह कब आ कर ठहरेगी[१०] ?

42. They ask thee of the Hour: when will it come to port?

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

४३. तुम कहाँ तक उस की याददिहानी कर रहे हो[११] ?

43. Why (ask they): What hast thou to tell thereof?

فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

४४. वह सर्वथा तुम्हारे 'रब' ही पर अवलम्बित है :

44. Unto thy Lord belongeth (knowledge of) the term thereof.

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

१०. अर्थात् वे 'क़ियामत' का उपहास करते हुये पूछते हैं कि वह 'क़ियामत' जिस के बारे में कहा जा रहा है कि आ रही है, आ रही है तो आख़िर वह कब पहुँचेगी।

११. अर्थात् तुम्हारा कर्त्तव्य तो बस उस की याददिहानी कराना है तुम तो यह देखो कि तुम यह कर्त्तव्य कहाँ तक पूरा कर रहे हो। इस 'आयत' का एक अर्थ यह भी किया जाता है कि इस (के समय) के बताने से तुम्हें क्या सरोकार ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५. तुम तो बस उस को सचेत करने वाले हो जो उस (घड़ी) से डरे[१२]।

45. Thou art but a warner unto him who feareth it.

إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخۡشَىٰهَا ﴿٤٥﴾

४६. जिस दिन वे उस को देखेंगे ऐसा लगेगा कि वे (दुनिया में) एक शाम या उस की सुबह से ज़्यादा नहीं ठहरे[१३]।

46. On the day when they behold it, it will be as if they had but tarried for an evening or the morn thereof.

كَأَنَّهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَهَا لَمۡ يَلۡبَثُوٓاْ إِلَّا عَشِيَّةً أَوۡ ضُحَىٰهَا ﴿٤٦﴾

———

१२. 'रसूल' का काम यह नहीं है कि वह यह बताये कि 'क़ियायत' किस सन् या सम्वत में आ रही है। उस का काम तो यह है कि वह लोगों को उस दिन से सचेत कर दे ताकि डरने वाले उस दिन की तैयारी में लगें। रहे वे लोग जो अत्यन्त नीच प्रकृति के हैं, जिन्हें अपना विनाश ही प्रिय है वे 'रसूल' की बात पर ध्यान नहीं दे सकते। और न यह 'रसूल' की ज़िम्मेदारी ही है कि वह ऐसे लोगों के दिलों में ज़बरदस्ती 'ईमान' उतार दे।

१३. आज वे पूछ रहे हैं कि 'क़ियामत' कब आयेगी जब वह आ जायेगी तो उन्हें पता चल जायेगा कि उस के आने में कुछ देर नहीं थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८०—अ ब स

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अ ब स' (He frowned) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। यह नाम केवल एक चिन्ह के रूप में रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की प्रारम्भिक 'सूरतों' में से हैं।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

आरम्भ में क़ुरआन की अधिकतर वे सूरतें उतरी हैं जो लोगों को झँझोड़ने और चेतावनी देने के लिए हैं। इतनी बात अवश्य है कि उन की शैली भिन्न है। प्रस्तुत सूरा भी उन्हीं सूरतों में से है जिन का अवतरण लोगों को जगाने और सचेत करने के लिए हुआ है। यह सूरा ऐसे समय में अवतरित हुई है जब कि क़ुरैश के लोगों की सरकशी फ़िरऔन की तरह बढ़ी हुई थी। इस सूरा में दो गरोहों के बीच मुक़ाबला किया गया है। एक गरोह उन लोगों का है जो सत्य से बे परवाह और 'कुफ़' और सरकशी में पड़ा हुआ है और दूसरा गरोह अल्लाह के उन नेक बन्दों का है जो सच्चाई पर 'ईमान' ला चुके हैं।

'सूरा' के आरम्भ में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है फिर सम्बोधन का रुख लोगों की तरफ़ फिर गया है। और यह सिलसिला आगे की कई 'सूरतों' तक चला गया है। सूरा इन-शिक़ाक़, अत-तारिक़ और अल-बुरूज के अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है। और 'काफ़िरों' को छोड़ दिया गया है।

'सूरा' के प्रारम्भिक भाग में नबी सल्ल० को इन लोगों के पीछे अपना समय नष्ट करने से रोका गया है जो 'कुफ़' और अवज्ञा पर जमे हुये थे।

इस के बाद क़ुरआन की बड़ाई और महानता का वर्णन किया गया है। 'क़ुरआन' की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है उन से साफ़ मालूम होता है कि क़ुरआन बहुत बड़ी नेमत है जिसे अल्लाह ने केवल अपनी कृपा से उतारा है। यदि कोई इस की उपेक्षा करता है तो उस से बढ़ कर कृतघ्न कौन हो सकता है। यह किताब तो उन लोगों के लिए उतरी है जो इस की क़द्र पहचानें। 'क़ुरआन' इस लिए नहीं उतरा है कि लोगों से इसे मनवानें के लिए प्रार्थनायें की जायें। ऐसा करना क़ुरआन की प्रतिष्ठा और महानंता के सर्वथा प्रतिकूल है।

इस के बाद अल्लाह ने अपनी नेमतों और चमत्कारों का उल्लेख किया है। इस से जहाँ यह मालूम होता है कि मनुष्य कितना कमज़ोर और मुहताज है वहीं यह बात भी मालूम होती है कि ऐसे लोगों से बढ़ कर कृतघ्न और कोई नहीं हो सकता जो अल्लाह के इन उपकारों के होते हुये उन की ओर से मुँह मोड़ते हैं। और उस के आदेशों को मानने से इन्कार करते हैं। मनुष्य को अल्लाह की ओर से जितनी नेमतें भी मिली हैं जिन के अन्दर वह अपने को घिरा हुआ पाता है वे नेमतें साफ़ बोल रही हैं कि एक दिन मनुष्य को अवश्य उठाया जायेगा ताकि उस का 'रब' उस के कर्मों का उस से हिसाब ले।

'सूरा' के अन्त में 'कुफ़' और इन्कार पर अड़ने वालों के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार 'क़ियामत' के दिन उन के मुँह पर सियाही छा रही होगी जब कि 'ईमान' वालों के चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

'सूरा' अबस

(मक्का में उतरी — 'आयतें' ४२)

'अल्लाह्' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. उस ने त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया[1]

२. इस पर कि उसके पास अन्धा आया।

३. और तुम्हें क्या मालूम शायद वह सँवरे

४. या नसीहत हासिल करे तो नसीहत करना उसे फ़ायदा दे ?

५. जो बेपरवाही करता है,

६. उस के तो तुम पीछे पड़ते हो।

७. और तुम पर क्या (दोष) है इस से कि वह न संवरे।

८. और जो तुम्हारे पास दौड़ता आया

९. और वह डर भी रखता है,

१०. उसे छोड़ कर तुम और ही धुन में लगे रहते हो।

११. कुछ नहीं,[2] यह एक याददिहानी है—

१२. तो जो कोई चाहे इसे याद रक्खे—

१३. ऐसे पत्रों में है जो प्रतिष्ठित हैं

१४. उच्च[3] और सर्वथा पवित्र हैं,

१५. पाठकों[4] के हाथों में

"HE FROWNED"

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. He frowned and turned away,
2. Because the blind man came unto him.
3. What could inform thee but that he might grow (in grace).
4. Or take heed and so the reminder might avail him?
5. As for him who thinketh himself independent,
6. Unto him thou payest regard.
7. Yet it is not thy concern if he grow not (in grace).
8. But as for him who cometh unto thee with earnest purpose,
9. And hath fear,
10. From him thou art distracted.
11. Nay, but verily it is an Admonishment,
12. So let whosoever will pay heed to it,
13. On honoured leaves,
14. Exalted, purified,
15. (Set down) by scribes.

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعٌ وَّاحِدٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ۝١

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝٢

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ۝٣

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝٧

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝٨

وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١١

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۝١٥

---

१. नबी सल्ल० 'कुरैश' के किसी सरदार या कुछ सरदारों से बातें कर रहे थे। इसी बीच उम्मे मकतूम के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि० आ गये। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० नेत्रहीन थे। उन का आना क़ुरैश को बुरा लगा और उन्हों ने मुंह फेर लिया। नबी सल्ल० ने भी उस समय उन की ओर ध्यान नहीं दिया। इस अवसर पर क़ुरआन की ये 'आयतें' उतरी हैं। साधारणतः 'सूरा' की पहली आयत का अर्थ यह समझा जाता है कि नबी सल्ल० को हज़रत अब्दुल्लाह का उस समय आना नागवार हुआ था। इस लिए कि आप समझते थे कि उन के आने से क़ुरैश के सरदार बिदक जावेंगे और धर्म की बातें न सुनेंगे।

२. अर्थात् तुम्हारे लिए यह कदापि उचित नहीं कि तुम 'काफ़िरों' से चिमटे रहो।

३. दे० सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ४; सूरा क़ाफ़ आयत १ सूरा अल-वाक़िया. आयत ७८-७९; सूरा अल-बुरूज आयत २१-२२।

४. क़ुरआन में 'सफ़रा' (سفرة) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह बहुवचन है जिस का एक वचन साफ़िर है जो लिपिकार के लिए भी प्रयुक्त होता है और पढ़ने वाले के लिए भी।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. जो आदरणीय और निष्ठावान् है[५]।	16. Noble and righteous.	كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ⑯
१७. नाश हो मनुष्य का : कितना कृतघ्न है !	17. Man is (self-) destroyed; how ungrateful !	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ⑰
१८. उसे किस चीज़ से बनाया ?	18. From what thing doth He create him?	مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ⑱
१९. एक बूंद से। उसे बनाया तो उस का अन्दाज़ा ठहराया,[६]	19. From a drop of seed He createth him and proportioneth him,	مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ⑲
२०. फिर (उस के लिए उसका) मार्ग सुगम कर दिया,[७]	20. Then maketh the way easy for him,	ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ⑳
२१. फिर उसे मुरदा किया, फिर उसे क़ब्र में रखवा दिया	21. Then causeth him to die, and burieth him;	ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ㉑
२२. फिर जब चाहेगा उसे जिला उठायेगा ।	22. Then, when He will, He bingeth him again to life.	ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ㉒
२३. कुछ नहीं, उस ने पूरा किया ही नहीं, जो-कुछ उस ने उसे हुक्म दिया था[८]।	23. Nay, but (man) hath not done what He commanded him.	كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ㉓
२४. मनुष्य अपने खाने को तो देखे :	24. Let man consider his food:	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ㉔
२५. हमने पानी बरसाया	25. How We pour water in showers:	اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ㉕
२६. फिर धरती को फाड़ा[९]	26. Then split the earth in clefts,	ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ㉖
२७. फिर उगाये उस में अनाज	27. And cause the grain to grow therein.	فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ㉗
२८. और अंगूर और भाजी[१०]	28. And grapes and green fodder,	وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ㉘
२९. और ज़ैतून और खजूर	29. And olive-trees and palm-trees,	وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ㉙
३०. और घने बाग़	30. And garden-closes of thick foliage,	وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ㉚
३१. और मेवे और घास-पात :	31. And fruits and grasses:	وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ㉛

५. इन आयतों में क़ुरआन की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। उदाहरणार्थ वह अल्लाह के पास लिखित है पढ़ा जाता है। वह बिल्कुल पाक है और दुष्टात्माओं की उस तक पहुँच नहीं होती, उस में किसी प्रकार की मिलावट नहीं है। क़ुरआन के विषय में जो बातें यहाँ कही गई हैं उन का सम्बन्ध परोक्ष लोक से है जिस का पूर्ण ज्ञान हमें नहीं हो सकता। उन पत्रों और पन्नों की वास्तविकता क्या है और 'फ़िरिश्तों' का पढ़ना और लिखना किस प्रकार का होता है इस का पूर्ण ज्ञान अल्लाह ही को है। क़ुरआन की इन विशेषताओं के बताने का उद्देश्य वास्तव में यह है कि लोग इस बात को भली-भाँति समझ लें कि क़ुरआन जैसा पवित्र और उच्च ग्रन्थ इस लिए नहीं है कि उस का निरादार किया जाये।

६. अर्थात् उस के अंगों, अवयवों और शक्तियों की उन्नति और विकास के लिए एक अन्दाज़ा ठहराया।

७. अर्थात् उस ने मनुष्य को केवल शरीर और विभिन्न शक्तियाँ ही नहीं दीं बल्कि उन को प्रयोग में लाने और बरतने का ढंग भी सिखाया और इस के लिए वे सभी साधन जुटा दिये जिन की मनुष्य को आवश्यकता थी (दे० सुरा ता० हा० आयत ५०; अद-दह्र आयत २-३; अल-आला आयत २-३; अश-शम्स आयत ७-१०)। फिर अल्लाह का यह भी क़ानून है कि आदमी अपने लिए जो मार्ग पसन्द कर लेता है वह उस के लिए उसी मार्ग को सुगम बना देता है (दे० सूरा अल-लैल आयत ५-१०)।

८. अर्थात् अल्लाह ने प्राकृतिक प्रेरणाओं और 'वह्य' और अपनी किताब के द्वारा उसे जो आदेश भी दिये उस का पालन करने से उस ने इन्कार कर दिया।

९. अर्थात् धरती को फाड़ कर जहाँ उस ने उस में नहरें और नदियाँ जारी कीं वहीं धरती को फाड़ कर उस के अन्दर से तरह-तरह के पेड़-पौधे उगाता है और अनाज, फल, तरकारी आदि पैदा करता है।

१०. क़ुरआन में "क़ज़ब" (قَضْب) शब्द प्रयुक्त हुआ है इस में वे सभी चीज़ें आ जाती हैं जो कच्ची और हरित दशा में खाई जाती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. तुम्हारी और तुम्हारे चौपायों की गुज़र-बसर के लिए।

32. Provision for you and your cattle.

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ

३३. फिर जब वह कान बहरे कर देने वाली आयेगी

33. But when the Shout cometh,

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ

३४. जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से

34. On the day when a man fleeth from his brother,

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ

३५. और अपनी माँ और अपने बाप से

35. And his mother and his father,

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ

३६. और अपनी संगिनी (पत्नी) और अपने बेटे से,

36. And his wife and his children.

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ

३७. उन में से हर एक व्यक्ति को उस दिन ऐसी पड़ी होगी कि वही उसके लिए काफ़ी होगी[११]।

37. Every man that day will have concern enough to make him heedless (of others).

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ

३८. कितने ही चेहरे उस दिन उज्ज्वल होंगे,

38. On that day faces will be bright as dawn,

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ

३९. हँस रहे होंगे और प्रसन्न हो रहे होंगे;

39. Laughing, rejoicing at good news;

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ

४०. और कितने चेहरे होंगे, उस दिन, जिन पर धूल पड़ी होगी,

40. And other faces, on that day, with dust upon them,

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ

४१. उन पर कलौंस छा रही होगी,

41. Veiled in darkness.

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ

४२. ये वही 'काफ़िर' और दुराचारी लोग हैं।

42. Those are the disbelievers, the wicked.

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ

———

११. अर्थात् उस दिन हर एक को अपनी-अपनी पड़ी होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१-अत-तकवीर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तकवीर' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' में लोगों को इस बात की ओर बुलाया गया है कि वे 'आख़िरत' पर 'ईमान' लायें। यही इस सूरा का मूल विषय है। सूरा की आयत १ से लेकर आयत १४ तक 'क़ियामत' का नक़्शा पेश किया गया है। प्रस्तुत सूरा और सूरा अल-इनफ़ितार और अश-शम्स के बारे में नबी सल्ल० ने कहा है कि जो व्यक्ति 'क़ियामत' को अपनी आँखों से देखना चाहे तो इन 'सूरतों' को पढ़ ले।

प्रस्तुत 'सूरा' की प्रारम्भिक छः 'आयतों' में उस समय से पूर्व की घटनाओं का उल्लेख किया गया है जब कि लोगों को उन का 'रब' उनकी मृत्यु के पश्चात् दोबारा जीवित कर के उठायेगा और उन से उनके कर्मों का हिसाब लेगा। आगे आयत ७ से आयत १४ तक उन बातों का उल्लेख है जो उस समय पेश आयेंगी जब कि मनुष्य को मरने के बाद दोबारा जीवित कर के उठाया जा चुका होगा।

क़ुरआन मे 'क़ियामत' और 'आख़िरत' के सम्बन्ध में जो बातें बयान हो रही थीं 'क़ुरैश' के लोग उन की हँसी उड़ाते और बराबर उन का इन्कार करते जा रहे थे। इस सूरा की आयत १५ से आयत १८ तक कुछ ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं जिन से क़ुरआन के बयान की पुष्टि और 'काफ़िरों' के विचारों का पूर्णतः निषेध होता है फिर खोल कर लोगों से यह बात कही गई है कि अल्लाह का नबी तुम्हारे सामने जो बातें पेश कर रहा है वह न तो दीवाने की बड़ है और न किसी 'शैतान' और दुष्टात्मा की प्रेरणा से यह बातें कही जा रही हैं बल्कि जो-कुछ कहा जा रहा है वह संसार के 'रब' की ओर से है जिसे अल्लाह का महान् और प्रतिष्ठित 'फ़िरिश्ता' ले कर उतरा है ऐसा 'फ़िरिश्ता' जिसे अल्लाह के 'रसूल' ने आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है फिर आख़िर लोग सत्य को छोड़ कर किधर भटके जा रहे हैं।

अन्त में कहा गया है कि यह तो अल्लाह की ओर से एक अनुस्मारक (Reminder) और उपदेश है। इस से केवल वही लोग फ़ायदा उठा सकते हैं जो सीधे मार्ग पर चलना चाहें। रहे वे लोग जिन्हें सत्य की अपेक्षा अपनी तुच्छ इच्छायें ही प्रिय हैं, उन्हें सत्य के दिव्य प्रकाश में आने का सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तकवीर
(मक्का में उतरी — 'आयतें' २९)

THE OVERTHROWING
Revealed at Mecca

سورة التكوير مكية وهي تسع وعشرون آية

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
१. जब कि सूर्य को लपेट लिया जायेगा,	1. When the sun is overthrown,	إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾
२. और जब तारे धूमिल पड़ जायेंगे,[1].	2. And when the stars fall,	وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿٢﴾
३. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे,[2]	3. And when the hills are moved,	وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾
४. और जब दस मास की गाभिन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी[3]	4. And when the camels big with young are abandoned,	وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾
५. और जब जंगली जानवर (घबरा कर) इकट्ठे हो जायेंगे,	5. And when the wild beasts are herded together,	وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾
६. और जब समुद्र उबल पड़ेंगे,	6. And when the seas rise,	وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾
७. [4]और जब लोगों को (उन के सहजातियों के) साथ लगा दिया जायेगा,[5]	7. And when souls are reunited;	وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾
८. और जब जीवित गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा	8. And when the girl-child that was buried alive is asked,	وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾
९. कि किस गुनाह पर मार डाली गई,[6]	9. For what sin she was slain,	بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾
१०. और जब (कर्म-) पत्र खोले जायेंगे[7]	10. And when the pages are laid open,	وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾

१. इन 'आयतों' से साफ़ मालूम होता है कि वर्तमान लोक की एक निश्चित अवधि है। एक समय आयेगा कि यह वर्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सब एक-दूसरे से टकरा कर छिन्न-भिन्न हो जायेंगे। सब की दशा बिगड़ चुकी होगी।

२. अर्थात् पहाड़ अपनी जगह से उखड़ जायेंगे और हवा में उड़ते फिरेंगे।

३. अर्थात् उन्हें कोई न पूछेगा। घबराहट और परेशानी की हालत में कोई अच्छे-से-अच्छे माल की भी परवाह नहीं करेगा। ऐसी ऊँटनी की जो बच्चा देने के क़रीब हो अरब के लोग बड़ी देख-भाल करते थे और उसे अपना विशेष धन समझते थे।

४. आयत १ से ६ तक लोगों के दोबारा जीवित कर के उठाये जाने के पूर्व की घटनाओं की ओर संकेत किया गया है। 'आयत' ७ से उन बातों का उल्लेख किया जा रहा है जो उस समय सामने आयेंगी जबकि लोगों को मरने के पश्चात् जीवित कर के खड़ा किया जायेगा।

५. इस 'आयत' का एक अर्थ यह लिया गया है कि उस दिन अच्छे लोग अच्छों के साथ और बुरे लोग बुरों के साथ कर दिये जायेंगे।

६. अरब में यह रिवाज था कि बाप अपनी बेटी को जीवित गाड़ देता था। कभी तो अरब के लोग ग़रीबी के कारण ऐसा करते थे और कभी झूठी इज़्ज़त के लिए यह अपराध किया जाता था। वे बेटी को अपने लिए लज्जा की बात समझते थे। 'क़ियामत' के दिन ऐसे लोगों की सख़्त पकड़ होगी जिन्हों ने बे गुनाह लड़कियों को जीवित गाड़ा होगा (दे० अल-अनआम आयत १३७; सूरा अन-नह्ल आयत ५९)। इस 'आयत' से मालूम हुआ कि 'क़ियामत' के दिन लोगों से केवल अल्लाह के हक़ के बारे में ही नहीं पूछा जायेगा बल्कि यह भी देखा जायेगा कि आपस में एक-दूसरे के साथ उन का कैसा व्यवहार रहा है।

७. ताकि लोग देख लें कि उन्हों ने दुनिया में क्या-कुछ किया था। दे० सूरा अल-इनशिक़ाक़ आयत ७-१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी,	11. And when the sky is torn away,	وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾
१२. और जब भड़कती आग ('जहन्नम') दहकाई जायेगी,	12. And when hell is lighted,	وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾
१३. और जब 'जन्नत' पास लाई जायेगी,	13. And when the garden is brought nigh,	وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾
१४. तो हर व्यक्ति जान लेगा जो कुछ वह ले कर पहुँचा होगा।	14. (Then) every soul will know what it hath made ready.	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾
१५. तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उन की जो पीछे हो रहते हैं,	15. Oh, but I call to witness the planets,	فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾
१६. चलते-चलते जा छुपते हैं,[८]	16. The stars which rise and set,	الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾
१७. और क़सम है रात की जब वह जाने लगे,	17. And the close of night,	وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾
१८. और क़सम है सुबह की जब वह साँस ले[९]	18. And the breath of morning	وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾
१९. निस्सन्देह वह एक[१०] आदरणीय सन्देश-वाहक ('फ़िरिश्ते') की (पहुँचाई हुई) बात है,	19. That this is in truth the word of an honoured messenger,	إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾
२०. जो शक्तिशाली है, सिंहासन के स्वामी के यहाँ बड़ा ही मरतबे वाला है,	20. Mighty, established in the presences of the Lord of the Throne,	ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾
२१. वहाँ उस की बात मानी जाती है, विश्वास	21. (One) to be obeyed, and trustworthy;	مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾
२२. और यह तुम्हारे संग रहने वाला उन्मादी नहीं है।	22. And your comrade is not mad.	وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾

८. यहाँ ऐसे तारों की क़सम खाई गई है जो हमें चलते हुये, पीछे हटते हुये दिखाई देते हैं और जो हमारी निगाहों से ओझल हो जाते हैं। आगे की 'आयतों' में रात और प्रातः काल की क़सम खाई गई है। इन चीज़ों की क़सम खाने का अर्थ इन्हें प्रमाण के रूप में पेश करना है। अल्लाह ने इन आयतों में जिन चीज़ों की क़सम खाई है उन से क़ुरआन के बयान की पुष्टि होती है और 'काफ़िरों' के विचारों का पूर्णतः निषेध होता है। अल्लाह के जिस ज्ञान और उसकी जिस 'हिकमत' का परिचय हमें इन तारों के द्वारा मिलता है उस से साफ़ मालूम होता है कि यह वर्त्तमान लोक उद्देश्यरहित नहीं है बल्कि इस का कोई वास्तविक परिणाम अवश्य सामने आने वाला है। इस संसार की सृष्टि एक सोचे-समझे विशेष योजना के अन्तर्गत हुई है। इस वर्तमान लोक में अवश्य कोई महान् परिवर्तन होने वाला है ताकि वह अन्तिम परिणाम सामने आये। क़ुरआन अपने बयान में सच्चा है। क़ुरआन जिस 'क़ियामत' के आने की सूचना देता है वह सत्य है।

सितारों के पीछे हटने और उनके छुपने में असत्य की कजी, उस के पीछे हट जाने, उस के बदलते रहने, उसकेधोखा देने की भी निशानी पाई जाती है। इस तरह असत्य के अवगुणों की ओर संकेत करते हुये उस का निषेध किया गया है।

९. अन्धकार दूर होने के पश्चात् प्रातः काल का होना इस का प्रयत्क्ष प्रमाण है कि अन्धकार मिटने के लिए होता है। अल्लाह ने समय-समय पर अपने 'रसूलों' को भेज कर सत्य के प्रकाश को फैलाया है। फिर जिस तरह सच्चाई अधिक समय तक छिपी नहीं रहती अल्लाह उसे प्रकाश में लाने का प्रबन्ध करता है उसी प्रकार वह परदा और आवरण भी एक दिन उठा दिया जायेगा जिस के कारण लोग 'नबियों' की दी हुई सूचनाओं को मानने से इन्कार करते हैं। वह समय दूर नहीं कि जो आज परोक्ष (Unseen) है वह प्रत्यक्ष हो चुका होगा। वह 'क़ियायत' का दिन और वह अल्लाह की अदालत सामने होगी जिस के मानने में आज लोगों को तरह-तरह की आपत्ति दिखाई देती है।

१०. अर्थात् यह 'क़ुरआन' का बयान, यह 'क़ियामत' का डरावा।

११. आयत १९ से २१ तक अल्लाह के विशेष 'फ़िरिश्ता' हज़रत जिब्रील अ० के गुणों का उल्लेख हुआ है जो नबी सल्ल० के पास अल्लाह का सन्देश और उसका कलाम ले कर आते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. और उस ने उसे[१२] आकाश के खुले किनारे पर देखा है ।

23. Surely he beheld him on the clear horizon.

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ۝

२४. और वह परोक्ष का प्रलोभी नहीं है ।

24. And he is not avid of the Unseen.

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۝

२५. और यह किसी धुतकारे हुये 'शैतान' की (पहुँचाई हुई) बात नहीं है[१३] ।

25. Nor is this the utterance of a devil worthy to be stoned

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝

२६. तो तुम कहाँ चले जा रहे हो[१४] ?

26. Whither then go ye?

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ۝

२७. यह तो बस एक अनुस्मारक है सारे संसार के लिए,

27. This is naught else than a reminder unto creation,

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

२८. उस के लिए जो तुम में से ठीक-ठीक नीति अपनानी चाहे ।

28. Unto whomsoever of you willeth to walk straight.

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ۝

२९. और तुम नहीं चाहनें के, बिना इस के कि अल्लाह चाहे जो सारे संसार का 'रब' है[१५] ।

29. And ye will not, unless (it be) that Allah willeth, the Lord of Creation.

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

---

१२. अर्थात् अल्लाह के 'फ़िरिश्ते' जिबरील अ० को । दे० सूरा अन-नज्म आयत १-१८ ।
१३. अर्थात् नबी सल्ल० जो कुछ कह रहे हैं वह किसी दुष्टात्मा या 'शैतान' के असर से कदापि नहीं कह रहे हैं बल्कि वे तुम्हारे सामने जो कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की ओर से पेश कर रहे हैं ।
१४. अर्थात् सच्चाई तुम्हारे सामने खुल कर आ गई है, फिर तुम कहाँ भटके जाते हो ।
१५. अर्थात् हर चीज़ वास्तव में अल्लाह ही के हाथ में है । उस के चाहे बिना कुछ नहीं हो सकता । अल्लाह उन्हीं लोगों को सीधे मार्ग पर लगाता है जो सीधे मार्ग पर चलने के इच्छुक होते हैं । जिन्हें सत्य से वैर ही होता है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए यों ही छोड़ देता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८२—अल-इनफ़ितार

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-इनफ़ितार' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का की प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

इस 'सूरा' में विशेष रूप से 'क़ियामत' का उल्लेख हुआ है।

विचार करने से मालूम होता है कि प्रस्तुत 'सूरा' में तंगदिली और कृपणता को निन्दनीय ठहराया गया है और आगे आने वाली सूरा में हराम की कमाई का उल्लेख हुआ है।

'सूरा' की आरम्भिक ४ आयतों में संक्षिप्त रूप से 'क़ियामत' का नक़शा खींचा गया है। और आयत ५ में खोल कर बता दिया गया है कि 'क़ियामत' का दिन ऐसा दिन है कि लोगों का सब किया-धरा उनके सामने आ जायेगा। फिर अल्लाह ने अपने उन उपकारों का उल्लेख करते हुए जो उस ने मानव-जाति पर किये हैं लोगों को सचेत किया है कि वे सँभलें और जो नीति अपनाई है उसे छोड़ कर अपने 'रब' के कृतज्ञ बनें। फिर बताया गया है कि मनुष्य के 'कुफ़्र' और उसकी कृपणता का मौलिक कारण यह है कि वह उस दिन को नहीं मानता जब कि लोगों को अपने अच्छे-बुरे कर्मों का बदला दिया जायेगा। मनुष्य का भी अज़ीब हाल है कि वह 'आख़िरत' को झुठला रहा है और 'फ़िरिश्ते' उस के कर्मों का अभिलेख (Record) तैयार करने में लगे हुये हैं ताकि उस की चेष्टाओं और उस के कर्मों का बदला दिया जाये।

'सूरा' की आयत १३-१४ में नेक लोगों और दुस्साहसी और दुराचारी लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है। नेक लोग वही हैं जो न केवल यह कि 'आख़िरत' पर 'ईमान' रखते हैं बल्कि 'ईमान' लाने के पश्चात् वे अल्लाह की राह में ख़र्च करते और लोगों का हक़ अदा करते हैं। कृपणता से काम नहीं लेते। रहे दुस्साहसी लोग तो ये वही लोग हैं जो न 'आख़िरत' को मानते हैं और न अपने कर्त्तव्यों को पहचानते हैं। अल्लाह की अवज्ञा में बहुत आगे निकल चुके होते हैं।

'सूरा' को समाप्त करते हुये कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चिन्ता करनी चाहिए जब वह दिन आ जायेगा जो बदले और न्याय का दिन है तो कोई किसी का काम न बना सकेगा। उस दिन समस्त झूठे सहारे टूट चुके होंगे। उस दिन मामला केवल अल्लाह के हाथ में होगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-इनफ़ितार
(मक्का में उतरी—'आयतें' १९)

THE CLEAVING
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. जब कि आकाश फट जायेगा,

1. When the heaven is cleft asunder,

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝١

२. और जब सितारे बिखर जावेंगे,

2. When the planets are dispersed,

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢

३. और जब समुद्र फूट निकलेंगे,[1]

3. When the seas are poured forth,

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣

४. और जब क़बरें उखाड़ दी जायेंगी,

4. And the sepulchres are overturned,

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝٤

५. तब प्रत्येक जीव जान लेगा जो-कुछ उस ने आगे भेजा और पीछे छोड़ा।

5. A soul will know what it hath sent before (it) and what left behind.

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝٥

६. हे मनुष्य ! किस चीज़ ने तुझे धोखे में डाल रक्खा है अपने उदार 'रब' के बारे में,

6. O man! What hath made thee careless concerning thy Lord, the Bountiful,

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝٦

७. जिस ने तुझे बनाया, तो तुझे ठीक-ठीक और सन्तुलित बनाया ?

7. Who created thee, then fashioned, then proportioned thee?

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝٧

८. फिर जिस प्रकार के रूप में चाहा, तेरी रचना की।

8. Into whatsoever form He will, He casteth thee.

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝٨

९. कुछ नहीं, तुम तो बदला दिये जाने को झुठलाते हो[2]।

9. Nay, but they deny the Judgement.

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝٩

१०. हालांकि तुम पर लगे हुये हैं निगरानी करने वाले,[3]

10. Lo! there are above you guardians,

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝١٠

११. प्रतिष्ठावान हैं लिखते जाते हैं,[4]

11. Generous and recording,

كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝١١

१२. जानते हैं ज़ो-कुछ तुम करते हो।

12. Who know (all) that ye do.

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝١٢

१३. नेक लोग आनन्द में होंगे।

13. Lo! the righteous verily will be in delight.

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝١٣

१४. और दुराचारी भड़कती आग में;

14. And lo! the wicked verily will be in hell.

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝١٤

१. अर्थात् जब 'क़ियामत' आ जायेगी और विश्व की वर्त्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। द्रे० सूरा अल-इनशिक़ाक़ आयत १।
२. अर्थात् तुम्हारी अकृतज्ञता, कृपणता आदि का मूल कारण यह है कि तुम उस दिन को मानते ही नहीं जब कि लोग अपने कर्मों का फल पायेंगे।
३. अर्थात् 'तुम्हारे इन्कार करने से होता क्या है तुम्हारे कर्मों का अभिलेख (Record) तैयार हो रहा है।
४. यद्यपि अल्लाह को तुम्हारे कर्मों की पूरी ख़बर है फिर भी 'फ़िरिश्ते' तुम्हारा कर्म-पत्र तैयार कर रहे हैं। और 'फ़िरिश्तों' की हैसियत मशीन की नहीं बल्कि उन 'फ़िरिश्तों' को तुम्हारे कर्मों का ज्ञान भी होता रहता है। मनुष्य चाहे कितने ही एकान्त में छुप कर बुरा कर्म करे वह अकेला नहीं होता उस को जहाँ उस का 'रब' देख रहा होता है वहीं उस के 'फ़िरिश्ते' भी उसे देख रहे होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. जिस में वे प्रवेश करेंगे बदला दिये जाने के दिन,[५]

15. They will burn therein on the Day of Judgement.

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝١٥

१६. और उस से वे बच रहने वाले नहीं।

16. And will not be absent thence.

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝١٦

१७. और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन !

17. Ah, what will convey unto thee what the Day of Judgement is!

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝١٧

१८. फिर (कहता हूँ), तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन !

18. Again, what will convey unto thee what the Day of Judgement is!

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝١٨

१९. जिस दिन कोई जीव किसी जीव के लिए कुछ न कर सकेगा[६]। और अधिकार उस दिन उल्लाह का होगा।

19. A day on which no soul hath power at all for any (other) soul. The (absolute) command on that day is Allah's.

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝١٩

———

५. दे० आयत २, १५, १७।

६. अर्थात् उस दिन किसी व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त न होगा कि दूसरे के काम आ सके। हर एक अपना आप उत्तरदायी होगा। कोई किसी का बोझ न उठा सकेगा। बिना अल्लाह की अनुज्ञा के सिफ़ारिश के लिए भी कोई ज़बान न खोल सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८३–अत-ततफ़ीफ़
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-ततफ़ीफ़' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' की गणना मक्का की आरम्भिक 'सूरतों' में होती है। कुछ लोगों के विचार में इस सूरा का सम्पर्क मक्का से नहीं बल्कि मदीना से है। उनके विचार में इस सूरा का अवतरण 'हिजरत' के पश्चात हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस 'सूरा' में उन लोगों के लिए डरावा है जो दुनिया के पुजारी हैं। सांसारिक वैभव और धन-सम्पत्ति ही को जिन्हों ने सब-कुछ समझ रक्खा है और उसी में मग्न हैं। और उन लोगों की हँसी उड़ाते हैं जो दुनिया के मुक़ाबले में 'आखिरत' को अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं; दुनिया के लिए अपनी 'आखिरत' को तबाह नहीं करते।

पिछली 'सूरा' और प्रस्तुत सूरा में गहरा सपर्म्क है। यह सूरा पिछली सूरा की पूरक है। पिछली सूरा में नेक लोगों और दुस्साहसी लोगों के परिणामों के अन्तर का उल्लेख हुआ था इस सूरा में इन दोनों गरोहों के बीच विस्तारपूर्वक मुक़ाबला किया गया है।

इस 'सूरा' में उन लोगों को तबाही की सूचना दी गई है जो लेन-देन में एक-दूसरे को धोखा देते हैं। अन्याय और बेईमानी से दूसरे के माल को लेने में जिन्हें कोई झिझक नहीं होती। जिन की नीचता इस सीमा को पहुँच चुकी है कि जब किसी से कुछ लेते हैं तो नाप-तौल में पूरा-पूरा लेते हैं; परन्तु जब किसी को कुछ देना होता है तो नाप-तौल में कमी कर देते हैं। ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुये कहा गया है कि क्या ये लोग यह समझते हैं कि इन्हें दोबारा जीवित कर के उठाया नहीं जायेगा जब कि लोग अपने 'रब' के सामने अपने अच्छे-बुरे कर्मों का हिसाब देने के लिए खड़े किये जायेंगे।

फिर अच्छे लोगों के अच्छे परिणाम और बुरे लोगों के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है जो उन के सामनें आने वाला है। हर एक के कर्मों का रिकार्ड तैयार हो रहा है। आज जो सच्चाई के मार्ग को नहीं अपनाते हैं उन का ठिकाना 'जहन्नम' के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वे उस दिन हर प्रकार की भलाइयों और सफलताओं से वंचित रह जायेंगे। न तो उन्हें अपने 'रब' की दयालुता प्राप्त होगी और न उन्हें अपने 'रब' के दर्शन हो सकेंगे। रहे वे लोग जो नेक हैं उन्हें वहाँ परम सुख और आनन्द प्राप्त होगा। उन का 'रब' उन्हें नेमत-भरी 'जन्नत' में जगह देगा। सांसारिक जीवन में यदि 'काफ़िर' उन पर हँसते हैं तो उस दिन 'काफ़िरों' पर वे हँसेंगे। 'काफ़िरों' को उस दिन अपने किये का भरपूर बदला मिल जायेगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-ततफ़ीफ़ (मक्का में उतरी—'आयतें' ३६)	**DEFRAUDING** *Revealed at Mecca*	سورة المطففين مكية وهي ست وثلثون اية
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بسم الله الرحمن الرحيم ○
१. तबाही[1] है डंडी मारने वालों की :	1. Woe unto the defrauders:	ويل للمطففين ①
२. जो नाप कर लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं,	2. Those who when they take the measure from mankind demand it full,	الذين اذا اكتالوا على الناس يستوفون ②
३. और जब उन्हें नाप या तौल कर देते हैं, तो घटा कर देते हैं।	3. But if they measure unto them or weigh for them, they cause them loss.	واذا كالوهم او وزنوهم يخسرون ③
४. क्या ये लोग नहीं समझते कि इन्हें जी उठना है[2] ?	4. Do such (men) not consider that they will be raised again,	الا يظن اولئك انهم مبعوثون ④
५. एक बड़े दिन[3] के अवसर पर,	5. Unto an awful Day—	ليوم عظيم ⑤
६. जिस दिन लोग सारे संसार के 'रब' के सामने खड़े होंगे।	6. The day when (all) mankind stand before the Lord of the Worlds?	يوم يقوم الناس لرب العلمين ⑥
७. कुछ नहीं, दुराचारी लोगों का अभिलेख 'सिज्जीन'[4] में रहता है—	7. Nay, but the record of the vile is in Sijjin—	كلا ان كتب الفجار لفي سجين ⑦
८. और तुम्हें क्या मालूम कि 'सिज्जीन' क्या है !—	8. Ah! what will convey unto thee what Sijjin is!—	وما ادراك ما سجين ⑧
९. एक अंकित अभिलेख है।	9. A written record.	كتب مرقوم ⑨
१०. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की !	10. Woe unto the repudiators on that day!	ويل يومئذ للمكذبين ⑩
११. जो बदला दिये जाने के दिन को झुठलाते हैं	11. Those who deny the Day of Judgement,	الذين يكذبون بيوم الدين ⑪
१२. और उसे झुठलाता वही है जो परले दरजे का अत्याचारी और पापी हो,	12. Which name denieth save each criminal transgressor,	وما يكذب به الا كل معتد اثيم ⑫
१३. जब उसे हमारी 'आयतें' पढ़ कर सुनाई जाती हैं, कहता है: पहले लोगों की कहानियाँ (निराधार बातें) हैं।	13. Who, when thou readest unto him Our revelations, saith: (Mere) fables of the men of old.	اذا تتلى عليه ايتنا قال اساطير الاولين ⑬

१. इसी शब्द से क़ुरआन की एक और सूरा (अल-हुमज़ा) का भी आरम्भ हुआ है। उस सूरा में भी गुनाह के रूप में धन संचित करने को निन्दनीय ठहराया गया है।
२. यदि ये समझते कि मरने के पश्चात् एक दिन इन्हें फिर उठना और अपने 'रब' के सामने अपने कामों का हिसाब देना है, तो ये कदापि ऐसा कार्य न करते जो आज कर रहे हैं।
३. अर्थात् उस दिन जब कि लोगों को उन का बदला चुकाने के लिए जीवित कर के उठाया जायेगा।
४. सिज्जीन 'सिज्न' से है जिस का अर्थ है तंगी, बन्दीघर आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. नहीं, नहीं, बात यह है कि जो कुछ ये कमाते रहे हैं वह इन के दिलों पर चढ़ गया है[५]।

14. Nay, but that which they earned is rust upon their hearts.

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

१५. कुछ नहीं, ये लोग उस दिन अपने 'रब' (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे,[६]

15. Nay, but surely on that day they will be covered from (the mercy of) their Lord.

كَلَّا إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾

१६. फिर ये लोग भड़कती आग में जलेंगे,

16. Then lo! they verily will burn in hell.

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾

१७. फिर कहा जायेगा : यही है जिसे तुम झुठलाते थे।

17. And it will be said (unto them): This is that which ye used to deny.

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

१८. कुछ नहीं, नेक लोगों का अभिलेख 'इल्लीयीन'[७] में रहता है—

18. Nay, but the record of the righteous is in 'Illiyyin—

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

१९. और तुम्हें क्या मालूम कि 'इल्लीयीन' क्या है!—

19. Ah, what will convey unto thee what 'Illiyyin is!—

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾

२०. एक अंकित अभिलेख है,

20. A written record,

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾

२१. पहुँच रखने वाले उस के पास होते हैं[८]।

21. Attested by those who are brought near (unto their Lord).

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾

२२. निस्सन्देह नेक लोग आनन्द में होंगे,

22. Lo! the righteous verily are in delight,

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

२३. ऊँची मसनदों पर से देख रहे होंगे,[९]

23. On couches, gazing,

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾

२४. तुम्हें उन के चेहरों से आनन्द-सुख की ताजगी का अनुभव हो जायेगा[१०]।

24. Thou wilt know in their faces the radiance of delight.

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

२५. उन्हें ख़ालिस शराब पिलाई जा रही होगी जो मुहरबन्द होगी,

25. They are given to drink of a pure wine, sealed,

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾

२६. मुहर उसकी मुश्क की होगी— बढ़-चढ़ कर अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिए[११]—

26. Whose seal is musk— For this let (all) those strive who strive for bliss—

خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

२७. और वह 'तसनीम' से तैयार की गई होगी,

27. And mixed with water of Tasnim,

وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

५. अर्थात् इन के बुरे कर्मों के प्रभाव से इन के दिलों की दशा बिगड़ गई है, यही कारण है कि सच्ची बात इन के दिलों में उतरती ही नहीं।

६. मुक़ाबले के लिए दे० आयत २८; सूरा इन-शिक़ाक़ आयत १०।

७. 'इल्लीयीन' का (عليين) अर्थ होता है 'बहुत ही ऊँचे लोग' यहाँ इस से अभिप्रेत उन का स्थान है।

८. मुक़ाबले के लिए दे० आयत १५।

९. दे० आयत ३५। नेक लोगों को परम सुख प्राप्त होगा। वे नेमतें उन के सामने होंगी जिन्हें अल्लाह ने उन के लिए तैयार कर रक्खा है। अल्लाह ने उनके लिए क्या कुछ तैयार कर रक्खा है इस की तो वर्त्तमान लोक में कल्पना भी नहीं की जा सकती (दे० सूरा अस-सजदा आयत १७)।

१०. दे० सूरा अल-क़ियामा आयत २२-२३।

११. अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि उसी का इच्छुक हो न कि दुनिया की शराब का जिस से आदमी की बुद्धि भंग हो जाती है और जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। 'आख़िरत' की नेमतों के मुक़ाबले में दुनिया की नेमतें कुछ भी नहीं। वह व्यक्ति अत्यन्त मूर्ख है जो दुनिया के पीछे पड़ कर अपनी 'आख़िरत' को भूल जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८. एक स्रोत है जिस में से (अल्लाह के यहाँ) पहुँच रखने वाले[१२] पियेंगे ।

28. A spring whence those brought near to Allah drink.

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾

२९. जो अपराधी हैं वे 'ईमान' लाने वालों पर हँसते थे,

29. Lo! the guilty used to laugh at those who believed,

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾

३०. और जब उन पर से गुज़रते तो आपस में इशारे करते थे;

30. And wink one to another when they passed them;

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

३१. और जब अपने घर वालों की ओर पलटते, तो चहकते हुये पलटते थे,

31. And when they returned to their own folk, they returned jesting;

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾

३२. और जब उन्हें देखते तो कहते : ये लोग तो भटके हुये हैं ।

32. And when they saw them they said: Lo! these have gone astray.

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾

३३. हालाँकि ये उन पर निगरानी करने वाले बना कर नहीं भेजे गये थे[१३] ।

33. Yet they were not sent as guardians over them.

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٣﴾

३४. तो आज के दिन 'ईमान' लाने वाले 'काफ़िरों' पर हँस रहे हैं,[१४]

34. This day it is those who believe who have the laugh of disbelievers,

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

३५. ऊँची मसनदों पर से, देख रहे हैं ।

35. On high couches, gazing.

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾

३६. क्या 'काफ़िरों' को जो कुछ वे करते थे उस का बदला मिल गया !

36. Are not the disbelievers paid for what they used to do?

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

---

१२. अर्थात् अल्लाह के क़रीबी और प्रिय बन्दे । मुक़ाबले के लिए दे० आयत १५ ।

१३. इन्हें अपनी चिन्ता नहीं थी, नेक लोगों के पीछे पड़े हुये थे । उन का उपहास करते और उन पर फब्ती कसते थे, उन की आलोचना करते रहते थे हालाँकि इन्हें उन का निगहबान नहीं बनाया गया था । इन्हें तो चिन्ता अपनी होनी चाहिए थी ।

१४. जिस तरह सांसारिक जीवन में 'काफ़िर' लोग इन पर हँसते थे आज ये उन 'काफ़िरों' पर हँस रहे हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४—अल-इनशिक़ाक़
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-इनशिक़ाक़' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस 'सूरा' में बताया गया है कि यह दुनिया सदैव इसी प्रकार रहने वाली नहीं है एक समय आयेगा कि यह दुनिया बिल्कुल बदल चुकी होगी। संसार की इस वर्त्तमान व्यवस्था में एक महान् परिवर्त्तन होगा। आकाश और धरती सब की हालत बदल जायेगी। फिर वह समय आ जायेगा जब कि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला दिया जायेगा। इस सूरा में इस बात से सूचित कर दिया गया है कि 'क़ियामत' के दिन सारे भेद खुल जायेंगे। हमारा 'रब' हम से ग़ाफ़िल नहीं है। वह हमें और हमारे कर्मों को देख रहा है। वह अवश्य हम से हमारे कर्मों के बारे में पूछेगा।

पिछली 'सूरा' में अच्छे और बुरे लोगों का उल्लेख हुआ था प्रस्तुत सूरा में कुछ और बातें भी बताई गई हैं। अच्छे लोगों के बारे में इस की ख़बर दी गई है कि उनका आमाल नामा (कर्म-पत्र) उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा और वह हँसी-ख़ुशी के साथ अपने लोगों से मिलेंगे। उन से अत्यन्त आसान हिसाब लिया जायेगा[1]। बुरे लोगों को उन का लेखा उनकी पीठ की ओर से पकड़ाया जायेगा वह दिन उन के लिए तबाही का दिन होगा, वे 'जहन्नम' की आग में डाल दिये जायेंगे।

इस 'सूरा' के अन्तिम भाग में 'ईमान' न लाने वालों और उन लोगों के बीच जो 'ईमान' ला कर अच्छे कार्य करते हैं मुक़ाबला किया गया है। जिस से भली-भाँति यह बात समझी जा सकती है कि वर्त्तमान जीवन और अन्तिम परिणाम दोनों ही दृष्टि से सफल वही लोग हैं जो सच्चाई को मानते और उस के अनुसार अपने जीवन को ढालने की चेष्टा करते हैं। वास्तव में यही वे लोग हैं जो पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं। यही अपने ध्येय में सफल होने वाले हैं।

---

१. हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है मैं ने एक बार कहा हे अल्लाह के 'रसूल'! मेरे नज़दीक अल्लाह की किताब में सब से अधिक भयप्रद 'आयत' वह है जिस में कहा गया है : "जो व्यक्ति कोई बुराई करेगा वह उस की सज़ा पायेगा (सूरा अन-निसा आयत १२३)"। इस पर नबी सल्ल० ने कहा : आइशा! क्या तुम्हें नहीं मालूम की अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दे को दुनिया में जो तकलीफ़ भी पहुँचती है यहाँ तक कि यदि उसे कोई काँटा भी चुभता है, तो अल्लाह उसे उस की किसी-न-किसी ख़ता और ग़लती की सज़ा ठहरा कर दुनिया ही में उस का हिसाब साफ़ कर देता है? 'आख़िरत' में तो जिस से भी पूछ-गछ हुई उसे तो सज़ा मिल कर रहेगी। हज़रत आइशा ने कहा : फिर अल्लाह ने जो यह कहा है कि "जिस का कर्म-पत्र उस के सीधे हाथ में दिया जायेगा उस से आसान हिसाब लिया जायेगा"—इस का अर्थ क्या है? नबी सल्ल० ने कहा : इस से अभिप्रेत केवल पेशी है (भलाइयों के साथ आदमी की बुराइयाँ भी अल्लाह के सामने पेश होंगी) परन्तु जिस किसी से पूछ-गछ हुई वह तो बस समझ लो कि विनष्ट हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-इनशिक़ाक़
(मक्का में उतरी – 'आयतें' २५)

THE SUNDERING
Revealed at Mecca

سُورَةُ الانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent the Merciful.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

१. जब आकाश फट जायेगा[1]

1. When the heaven is split asunder.

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾

२. और अपने 'रब' की सुनेगा और उसे यही चाहिए भी !

2. And attentive to her Lord in fear,

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾

३. और जब धरती फैला दी जायेगी

3. And when the earth is spread out,

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

४. और जो कुछ उस में है उसे बाहर डाल देगी, और बिल्कुल ख़ाली हो जायेगी

4. And hath cast out all that was in her, and is empty,

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾

५. और अपने 'रब' की सुनेगी और उसे यही चाहिए भी !

5. And attentive to her Lord in fear!

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾

६. हे मनुष्य ! तू अपने 'रब' की ओर परिश्रम कर (के भेज) रहा है जैसा कुछ भी परिश्रम हो तो तू उस से मिलने वाला है।

6. Thou, verily, O man, art working toward thy Lord a work which thou wilt meet (in His presence).

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ﴿٦﴾

७. तो जिस किसी को उस का (कर्म-) पत्र उस के दाहिने हाथ में दिया गया

7. Then whoso is given his account in his right hand.

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾

८. उस से आसान हिसाब लिया जायेगा

8. He truly will receive an easy reckoning.

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾

९. और वह अपने लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश पलटेगा।

9. And will return unto his folk in joy.

وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾

१०. और जिस किसी को उस का (कर्म-) पत्र उस की पीठ के पीछे से दिया गया,

10. But whoso is given his account behind his back,

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾

११. तो वह विनाश को पुकारेगा

11. He surely will invoke destruction.

فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ﴿١١﴾

१२. और दहकती आग में दाख़िल होगा।

12. And be thrown to scorching fire.

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾

१३. वह अपने लोगों में ख़ुश-ख़ुश रहता था,

13. He verily lived joyous with his folk,

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾

१४. उस ने समझ रक्खा था कि वह कभी पलट कर न आयेगा।

14. He verily deemed that he would never return (unto Allah).

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ﴿١٤﴾

१५. क्यों नहीं, उस का 'रब' उसे देखता रहा है !

15. Nay, but lo! his Lord is ever looking on him!

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾

१. दे० सूरा अल-इनफ़ितार आयत १।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सान्ध्य-लालिमा की,	16. Oh, I swear by the afterglow of sunset.	فَلَآ أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ⑯
१७. और रात की और जो वह समेट लेती है,	17. And by the night and all that it ensroudeth,	وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ⑰
१८. और चाँद की जब कि वह पूरा हो जावे,	18. And by the moon when she is at the full,	وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ⑱
१९. निश्चय ही तुम्हें एक के पीछे एक चढ़ाई चढ़ना है[२]।	19. That ye shall journey on from plane to plane.	لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ⑲
२०. तो उन्हें क्या हुआ है कि 'ईमान' नहीं लाते	20. What aileth them, then, that they believe not.	فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑳
२१. और जब उन्हें क़ुरआन सुनाया जाता है, तो 'सजदा' नहीं करते ?	21. And, when the Qur'an is recited unto them, worship not (Allah)?	وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ㉑
२२. बल्कि 'कुफ़्' करने वाले तो झुठलाते हैं;	22. Nay, but those who disbelieve will deny;	بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ㉒
२३. और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो-कुछ वे सँत कर रखते हैं।	23. And Allah knoweth best what they are hiding.	وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ㉓
२४. तो उन्हें दुःख-भरी यातना की मंगल-सूचना दे दो,	24. So give them tidings of a painful doom.	فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ㉔
२५ परन्तु जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए बदला है कभी समाप्त न होने वाला।	25. Save those who believe and do good works, for theirs is a reward unfailing.	إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ㉕

———

२. अर्थात् तुम्हें 'आख़िरत' में लगातार कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

एक विचार यह भी है कि आयत १६-१८ में क़सम के रूप में इस बात की पुष्टि की गई है कि मनुष्य के जीवन में क्रमशः महान् परिवर्तन होने वाला है यहाँ तक कि मनुष्य का जीवन एक ऐसे जीवन में परिवर्तित हो जायेगा जो पूर्ण होगा। जिस प्रकार आकाश की लाली क्रमशः बढ़ती जाती है, जिस तरह रात आती है और पूरे तौर पर छा जाती है और जिस तरह चन्द्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा का चन्द्र बन जाता है, उसी तरह मनुष्य को भी पूर्णता प्राप्त होगी, उस का प्रकाश भी पूर्ण हो जायेगा।

एक विचार के अनुसार इन 'आयतों' में अन्तरिक्ष-यात्राओं की ओर संकेत पाया जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८५—अल-बुरूज
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-बुरूज' सूरा की प्रारम्भिक 'आयत' से चिह्न के रूप में लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है। सूरा के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरा मक्का में उस समय उतरी है जब कि सत्य धर्म से विचलित करने के लिए मक्का वाले 'ईमान' वालों को सताने लग गये थे।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताएँ

प्रस्तुत 'सूरा' में इस का उल्लेख हुआ है कि लोगों को अपने अच्छे या बुरे कर्मों का बदला अवश्य मिलेगा। इस वर्त्तमान लोक में भी अल्लाह के न्याय का प्रदर्शन होता रहा है और 'क़ियामत' के दिन भी वह लोगों का फ़ैसला करेगा। इस की गवाही यह बुर्जों वाला आकाश भी देता है और दूसरी चीज़ें भी इसी बात की साक्षी हैं कि वह दिन आ कर रहेगा जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। अल्लाह अपार शक्ति वाला है। वह हर चीज़ को देख रहा है कोई चीज़ भी उस से छुपी नहीं रह सकती। वह अत्यन्त क्षमाशील है 'ईमान' वालों को उस का प्यार मिलता है; परन्तु उन लोगों के लिए वह कठोर है जो लोगों को सत्य धर्म से विचलित करने के लिए सताते और उन पर अत्याचार करते हैं। इतिहास गवाह है कि अल्लाह ने ऐसे लोगों को जिन्हों ने 'ईमान' वालों को केवल इस लिए सताया कि वे 'ईमान' वाले थे, विनष्ट कर के रख दिया।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'ईमान' ला कर अच्छे काम करने वालों और उन लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है जो सत्य को झुठलाते और 'ईमान' वालों को सत्य से विचलित करने के लिए सताते और तकलीफ़ें पहुँचाते हैं।

इस 'सूरा' में जहाँ इस का उल्लेख किया गया है कि अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है और उस की पकड़ सख्त है, वह सरकश लोगों से बदला ले कर रहेगा, वहीं इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि वह अपराधियों को उन के अत्याचारों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन्हें इस की पूरी मुहलत देता है कि वे सोच-विचार से काम लें और सँभलना चाहें तो सँभल जायें।

प्रस्तुत 'सूरा' में फ़िरऔन और 'समूद' आदि के विनाश की ओर संकेत कर के वास्तव में मक्का वालों को सचेत किया गया है कि वे सरकशी छोड़ दें अन्यथा उन का परिणाम भी उस से भिन्न न होगा जो आज से पहले सरकश लोगों का हुआ है।

'सूरा' के अन्त में कहा गया है कि 'काफ़िर' लोग इस बात को झुठला रहे हैं कि अल्लाह लोगों को उन के कर्मों का बदला देता है। वह फ़िरऔन और 'समूद' को दुनिया में भी उन के करतूतों का मज़ा चखा चुका है। क़ुरआन की दी हुई सूचना को झुठला कर वे अपना ही बुरा कर रहे हैं। क़ुरआन को और उस सत्य को जिसे क़ुरआन लोगों के सामने रख रहा है मेटा नहीं जा सकता। क़ुरआन का रक्षक कोई और ही है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-बुरूज

(मक्का में उतरी—'आयतें' २२)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

१. क़सम है बुर्जों[१] वाले आकाश की,

२. और उस दिन की जिस का वादा है[२],

३. और साक्षी की और जिस का साक्षी हो,[३]

४. नाश हुआ खाई वालों का

५. ईंधन भरी आग वालों का,[४]

६. जब कि वे उस पर बैठे हुये हैं,[५]

७. और वे जो कुछ 'ईमान' वालों के साथ कर रहे हैं उस के साक्षी हैं।

८. और उन्हें उन ('ईमान' वालों) की केवल यह बात बुरी लगी कि वे अल्लाह पर 'ईमान' रक्खें,

जो प्रभुत्वशाली और प्रशंसा का अधिकारी है,

९. वह जो आकाशों और धरती के राज्य का मालिक है;

और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है।

THE MANSIONS OF THE STARS

Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. By the heaven, holding mansion of the stars,
2. And by the Promised Day,
3. And by the witness and that whereunto he beareth testimony:
4. (Self-) destroyed were the owners of the ditch.
5. Of the fuel-fed fire,
6. When they sat by it,
7. And were themselves the witnesses of what they did to the believers.
8. They had naught against them save that they believed in Allah, the Mighty, the Owner of Praise,
9. Him unto Whom belongeth the Sovereignty of the heavens and the earth; and Allah is of all things the witness.

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝٦

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝٧

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩

---

१. दे० सूरा अल-हिज्र फुटनोट ६।

२. अर्थात् 'क़ियामत' के दिन की। पहली क़सम दूसरी क़सम की दलील है। बुर्जों वाले आसमान की क़सम खा कर आसमानी दुनिया की आश्चर्यजनक व्यवस्था को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

३. यह संकेत उस दिन की ओर है जब कि अदालत क़ायम होगी और गवाह पेश होंगे।

४. यह सकेत उन लोगों की ओर है जो 'जहन्नम' में डाले जायेंगे, यहाँ खाई से अभिप्रेत 'जहन्नम' है।

साधारणतः समझा जाता है कि यहाँ किसी ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है जब कि 'काफ़िरों' ने 'ईमान' वालों को आग में जलाया था। ऐतिहासिक उल्लेखों से विदित होता है कि सन् ५२३ ई० में यमन के यहूदी सम्राट् जूनवास (Dhu Nawas) ने नजरान के ईसाइयों पर बड़ा अत्याचार किया था (दे० Gibbon's Decline and Fall, chap. xii. Pocock Sp. Hist. Ar. p. 62.)।

जूनवास का अत्याचार इतना अधिक बढ़ गया था कि उस ने खन्दक़ खुदवा कर आग भरवा दी थी और ईसाइयों को उस में झोंकने लगा था। इस के अत्याचार का परिणाम यह हुआ कि हब्श (Abyssinia) के ईसाई राज्य ने बदला लेने के लिए यमन पर आक्रमण कर दिया और सम्पूर्ण राज्य को जीत लिया। जूनवास हार कर भागा और समुद्र में कूद कर आत्महत्या कर ली।

५. अर्थात् 'जहन्नम' में जाने ही वाले हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. जिन लोगों ने 'ईमान' वाले पुरुषों और 'ईमान' वाली स्त्रियों को 'दीन' से विचलित करने के लिए सताया फिर 'तौबा' न की, उन के लिए यातना है 'जहन्नम' की, और उन के लिए यातना है भड़कती आग की।

10. Lo! they who persecute believing men and believing women and repent not, theirs verily will be the doom of burning.

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾

११. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये, उन के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, यही बड़ी सफलता है।

11. Lo! those who believe and do good works, theirs will be Gardens underneath which rivers flow. That is the Great Success.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾

१२. निस्सन्देह तुम्हारे 'रब' की पकड़ बड़ी सख़्त है।

12. Lo! the punishment of thy Lord is stern.

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾

१३ वही आरम्भ करता है और वही दोहराता है,[६]

13. Lo! He it is Who produceth, then reproduceth,

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾

१४. और वह अत्यन्त क्षमाशील और प्रेम करने वाला है,

14. And He is the Forgiving, the Loving,

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾

१५. राज्य-सिंहासन का स्वामी गौरव वाला,

15. Lord of the Throne of Glory,

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾

१६. जो चाहे उसे कर डाले।

16. Doer of what He will.

فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾

१७. क्या तुम तक सेनाओं का समाचार पहुँचा

17. Hath there come unto thee the story of the hosts.

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

१८. फ़िरऔन और 'समूद' का[७] ?

18. Of Pharaoh and (the ribe of) Thamud?

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

१९. परन्तु 'कुफ़्' करने वाले तो झुठलाने में लगे हुये हैं

19. Nay, but those who disbelieve live in denial.

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

२०. और अल्लाह उन्हें हर ओर से घेरे हुये है।

20. And Allah, all unseen, surroundeth them.

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ﴿٢٠﴾

२१ [illegible] झुठलाते हैं) वह तो क़ुरआन है गौरव वाला।

21. Nay, but it is a glorious Qur'an.

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ﴿٢١﴾

२२. सुरक्षित (अमर) पट्टिका में (अंकित) है[८]।

22. On a guarded tablet.

فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

———

६. अर्थात् सब कुछ वही करता है।

७. अर्थात् फ़िरऔन और समूद का कुछ हाल मालूम हुआ ? ये कितने सरकश थे। अन्त में अल्लाह ने इन्हें विनष्ट कर दिया। और 'ईमान' वालों को इन के अत्याचारों से छुटकारा दिलाया।

८. मूल ग्रन्थ में 'लौहे महफ़ूज़' (لوح محفوظ) शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन हर तरह से सुरक्षित है, वह अमर पट्टिका पर अंकित है। क़ुरआन में किसी प्रकार की मिलावट और गड़बड़ी नहीं हो सकती। 'लौहे महफ़ूज़' की वास्तविकता क्या है इस का वास्तविक ज्ञान अल्लाह ही को है। परोक्ष के रहस्यों को न हम सविस्तार पूर्ण रूप से समझ सकते हैं और न वर्तमान जीवन में इस की कोई आवश्यकता है कि मनुष्य को परोक्ष की समस्त बातों का पूर्ण ज्ञान हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८६-अत-तारिक

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तारिक़' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है। सूरा के अध्ययन से अनुमान होता है कि इस सूरा के उतरने के समय 'काफ़िरों' और धर्म-विरोधियों का विरोध बढ़ गया था। वे सत्य के विरुद्ध तरह-तरह की चाल चल रहे थे।

आगे आने वाली सूरा से विशेष रूप से नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है और यह सिलसिला सूरा अल-अलक़ तक चला गया है[1]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस से पहले की सूरतों की तरह इस सूरा का सम्बन्ध भी विशेष रूप से 'क़ियामत' से है। इस सूरा में खोल कर यह बात लोगों के सामने रक्खी गई है कि कोई व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जिस पर निगहबान नियुक्त न हों। यह आकाश और दमकता सितारा इस पर गवाह है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगहबानी हो रही है। एक समय ऐसा आने वाला है जबकि छुपी बातों की जाँच होगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का बदला मिल कर रहेगा। उस दिन अल्लाह के मुक़ाबले में न तो किसी को कोई शक्ति प्राप्त होगी और न कोई किसी का सहायक होगा। झूठे सहारे सब टूट चुके होंगे।

मनुष्य यदि सोच-विचार से काम ले तो वह देखेगा कि क़ुरआन जिस सच्चाई की ओर उसे बुलाता है उस का साक्षी स्वयं उस का अस्तित्व और सम्पूर्ण विश्व है। आकाश भी अपनी विशेषताओं के साथ उसी की गवाही दे रहा है और यह धरती भी। क़ुरआन को झुठलाने और 'क़ियामत' के दिन का इन्कार करने का अर्थ यह होता है कि आदमी उन चमत्कारों को झुठला रहा है जिन्हें वह अपनी आँखों से देख रहा है।

'सूरा' के अन्त में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को तसल्ली दी गई है कि अल्लाह 'काफ़िरों' की चालों और उन की शत्रुता से बेखबर नहीं। वह उन की चालों का तोड़ कर रहा है। वे अल्लाह का मुक़ाबला नहीं कर सकते। उन्हें थोड़ी मुहलत दी जा रही है ताकि उन में यदि कोई सँभलना चाहे तो सँभल जाये। अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा हो कर रहने वाला है उसे टाला नहीं जा सकता। 'कुफ़्र' का ज़ोर टूट कर रहेगा।

---

१. 'नुबूवत' के आरम्भ में जब कि क़ुरआन उतरना शुरू हुआ, तो लोग बड़े अहंकार में पड़े हुये थे। यही कारण है कि आरम्भ की सूरतों में अचानक उन्हें सम्बोधित नहीं किया गया है बल्कि अधिकतर या तो नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है या फिर क्रमानुसार चेतावनी और याददिहानी आदि की वे बातें लाई गई हैं जो लोगों को सुनानी अभीष्ट थीं या फिर सामान्य रीति से बात पेश करते हुये कलाम का रुख उन की ओर हो गया है। और कभी सामान्य सम्बोधन पर ही बस कर दिया गया है। ऐसा इस लिए किया गया ताकि इन्कार करने वालों को ठण्डे दिल से सोचने-समझने का अवसर मिल सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तारिक़
(मक्का में उतरी—'आयतें' १७)

THE MORNING STAR
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है आकाश की और रात को आने वाले की—

1. By the heaven and the Morning Star

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ①

२. ओर तुम क्या जानो कि रात को आने वाला क्या है !

2. —Ah, what will tell thee what the Morning Star is!

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ②

३. दमकता सितारा ! —

3. —The piercing Star!

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ③

४. कोई ऐसा जीव नहीं जिस पर एक निगहवान न हो[1]।

4. No human soul but hath a guard'an over it.

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ④

५. तो मनुष्य देखे कि वह किस चीज़ से बना है।

5. So let man consider from what he is created.

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑤

६. एक उछलते पानी से बना है

6. He is created from a gushing fluid.

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ⑥

७. जो निकलता है रीढ़ और हँसलियों के बीच में से[2]।

7. That issued from between the loins and ribs.

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ⑦

८. निश्चय ही वह (अल्लाह) उस के लौटा देने का सामर्थ्य रखता है[3]।

8. Lo! He verily is Able tc return him (unto l'fe).

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ⑧

९. जिस दिन छुपी वातें परखी जायेंगी।

9. On the day when hidden thoughts shall be searched out.

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ⑨

१०. तो उसे (मनुष्य को) न तो कोई शक्ति प्राप्त होगी और न कोई सहायक।

10. Then will he have no might nor any helper.

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ⑩

११. क़सम है लौट-फेर[4] वाले आकाश की,

11. By the heaven which giveth the returning rain,

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ⑪

१. दमकते सितारे की क़सम खा कर उसे इस बात का गवाह ठहराया है कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निगहबान नियुक्त है। जिस अल्लाह के हुक्म से रात में तारे निकलते और मनुष्य के ऊपर आकाश में चमकते हैं वह अल्लाह मनुष्य को यों ही नहीं छोड़ सकता, अवश्य ही उस की ओर से मनुष्य की निगरानी करने वाले नियुक्त हैं जो उस के कर्मों का रिकार्ड तैयार कर रहे हैं। यह कैसे सम्भव है कि तारों की आँखें तो मनुष्य को देखें परन्तु अल्लाह और उस की ओर से नियुक्त निगहबानों की आँखों से वह छुपा रहे।

२. अर्थात् मनुष्य को इस पर विचार करना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते हुये पानी से पैदा हुआ है जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से खिंच कर आता है।

३. जिस अल्लाह ने मनुष्य को वीर्य से बना खड़ा किया है उस के लिए यह कुछ भी मुश्किल नहीं कि मनुष्य को उस के मरने के पश्चात् पुनः जीवन प्रदान करे।

४. यहाँ 'रजुअ' (الرجع) शब्द प्रयुक्त हुआ है, इस से अभिप्रेत क्या है ? इस सिलसिले में टीकाकारों के विभिन्न मत हैं। उदाहरणार्थ वर्षा, रात-दिन का आना-जाना, आकाश का सुसज्जित होना आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और फटने वाली धरती की[५]

१३. निस्सन्देह यह[६] एक दोटूक बात है,

१४. यह कोई हँसने-हँसाने की बात नहीं है।

१५. वे एक चाल चल रहे हैं

१६. और मैं एक चाल चल रहा हूँ।

१७. तो काफ़िरों को छूट दे दो, थोड़ी देर की छूट[७]।

12. And the earth which splitteth (with the growth of trees and plants).

13. Lo! this (Qur'an) is a conclusive word,

14. It is no pleasantry.

15. Lo! they plot a plot (against thee, O Muhammad).

16. And I plot a plot (against them).

17. So give a respite to the disbelievers. Deal thou gently with them for a while.

وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

———

५. अर्थात् वह ज़मीन जो फटती है और उस से पेड़-पौधे निकलते हैं। आयत ११-१२ में आकाश और धरती की विशेषता का उल्लेख कर के उन्हें हमारे सामने 'आख़िरत' की पुष्टि के लिये पेश किया गया है।

६. अर्थात् यह क़ुरआन और जो 'क़ियामत' आदि की सूचना वह दे रहा है वह।

७. अर्थात् 'काफ़िर' लोग सत्य के विरुद्ध जो चालें चल रहे हैं और अल्लाह के 'रसूल' को सताने के लिए जो हथकण्डे इस्तेमाल कर रहे हैं उस से अल्लाह बेख़बर नहीं है। वह भी उन की चालों का तोड़ कर रहा है। अल्लाह के दुश्मनों को मुंह की खानी पड़ेगी वे कभी भी अल्लाह की स्कीम को असफल नहीं बना सकते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८७—अल-आला
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-आला' सूरा की प्रारम्भिक 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक सूरतों में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सुरा' में लोगों को उस सीधे और स्पष्ट मार्ग की ओर बुलाया गया है जो मानव-कल्याण का एक ही मार्ग है। फिर इस सूरा में इस का हुक्म दिया गया है कि लोगों को डराया जाये ताकि वे अल्लाह की यातना से बच सकें। अल्लाह की यातना और प्रतिदान का विस्तृत वर्णन आगे आने वाली सूरा में किया गया है। प्रस्तुत सूरा से विशेष रूप से नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है और यह सिससिला सूरा अल-अलक़ तक चला गया है।

'सुरा' के प्रारम्भ में अल्लाह के जिन चमत्कारों का उल्लेख किया गया है उन से कई मौलिक तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। इस लोक में जो चीज़ें भी हैं वे इस बात की साक्षी हैं कि उन का कोई स्रष्टा है जो दयावन्त और तत्वदर्शी है। उस का कोई काम भी उद्देश्यरहित नहीं हो सकता। फिर हम देखते हैं कि निभिन्न वस्तुयें परस्पर गहरा सम्बन्ध रखती हैं। इस से मालूम होता है कि इन सब का पैदा करने वाला एक ही है। जिस ने एक सोची-समझी स्कीम के अन्तर्गत सब की सृष्टि की है। फिर हर व्यक्ति के भीतर उसके अपने उद्देश्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा रक्खी गई है। यह इस बात का प्रमाण है कि लोगों का जीवन अभी अपूर्ण है उसे अभी पूर्ण और विकसित होना है। फिर इस से एक ओर 'नुबूवत' की पुष्टि होती है दूसरी ओर यही चीज़ 'आख़िरत' की दलील बनती है।

फिर क़ुरआन के बारे में नबी सल्ल० की तसल्ली दी गई है कि हम इसे इस तरह पढ़ा देंगे कि आप इसे भूलेंगे नहीं। और अल्लाह आप के लिए आसानी पैदा करेगा; वह अपने 'दीन' (धर्म) को ऊंचा कर के रहेगा। उस का प्रकाश प्रकट हो कर रहने वाला है। आप को अपने कर्त्तव्य-पथ पर जमे रहना चाहिए। जिन लोगों के दिल में डर होगा वे अवश्य सीधे मार्ग को अपना लेंगे।

फिर बताया गया है कि सफलता तो उन लोगों के लिए है जिन्हों ने शुद्धता और सुथराई को अपनाया जिस से उन की आत्मा और उन के जीवन को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हों ने अपने 'रब' को याद किया और अपने 'रब' के स्मरण के लिए 'नमाज़' पढ़ी। वास्तव में 'नमाज़' ही आत्मा की परिपूर्णता और जीवन का कल्याण है। 'नमाज़' एक श्रेष्ठतम और सर्वव्यापक सत्ता की अनुभूति और उस का स्मरण है। नमाज़ हमें अपने अभीष्ट से निकट करती है। नमाज़ हो हमारे वास्तविक आनन्द की द्योतक है।

'सूरा' के अन्त में उस चीज़ का उल्लेख किया गया है जो मनुष्य से उस के अभीष्ट उद्देश्य को दूरस्थ किये रहती है। वह है मनुष्य का सांसारिक जीवन पर रीझना और 'आख़िरत' के शाश्वत जीवन को भुला बैठना।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-आला
(मक्का में उतरी—'आयतें' १९)

THE MOST HIGH
Revealed at Mecca

سورة الأعلى مكية وهي تسع عشرة آية

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. 'तसबीह' करो अपने सर्वोच्च 'रब' के नाम की,

1. Praise the name of thy Lord the Most High,

سبح اسم ربك الأعلى ①

२. जिस ने पैदा किया, फिर नख-शिख से दुरुस्त किया;

2. Who createth, then disposeth;

الذي خلق فسوى ②

३. और जिस ने अन्दाजा ठहराया, फिर राह दिखाई;[1]

3. Who measureth, then guideth;

والذي قدر فهدى ③

४. जिस ने चारा उगाया

4. Who bringeth forth the pasturage,

والذي أخرج المرعى ④

५. फिर उसे घना और हरा-भरा कर दिया[2]

5. Then turneth it to russet stubble.

فجعله غثاء أحوى ⑤

६. (हे 'नबी' !) हम तुम्हें पढ़ा देंगे फिर तुम भूलोगे नहीं

6. We shall make thee read (O Muhammad) so that thou shalt not forget.

سنقرئك فلا تنسى ⑥

७. जो अल्लाह चाहे उस की बात और है। निस्सन्देह वह जानता है उसे जिसे खोल दिया जाये और उसे जो छिपा रहे;

7. Save that which Allah willeth. Lo! He knoweth the disclosed and that which still is hidden;

إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى ⑦

८. और हम तुम पर आसानी (सुखसाध्य) को प्राप्त होना आसान कर देंगे[3]।

8. And We shall ease thy way unto the state of ease.

ونيسرك لليسرى ⑧

९. तो तुम याद दिलाओ यदि याद दिलाना फ़ायदा दे[4]।

9. Therefor remind (men), for of use is the reminder.

فذكر إن نفعت الذكرى ⑨

१. दे० सूरा अश-शुअरा आयत ७८; सूर ता० हा० आयत ५० फुटनोट १३१।

२. अर्थात् भूमि से केवल उस ने चारा ही नहीं उगाया बल्कि पूर्ण रूप से उस के फैलने, बढ़ने और लहलहा उठने की भी पूरी व्यवस्था की। इसी प्रकार वह मनुष्य को पैदा कर के यों ही नहीं छोड़ देगा बल्कि उसे आत्मिक विकास और पूर्णता का मार्ग भी दिखायेगा। इसी के लिए अल्लाह ने अपनी किताब उतारी और लोगों को अपने नाम से परिचित किया।

३. नबी सल्ल० को शुभ-सूचना दी जा रही है कि अल्लाह आप (सल्ल०) के लिए 'दीन' पर चलना आसान कर देगा, आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

आत्मा की शुद्धता और विकास के बाद बहुत सी रुकावटें अपने-आप दूर हो जाती हैं। नबी सल्ल० का दिखाया हुआ मार्ग अत्यन्त सहज और स्वाभाविक है। कठिनाइयाँ और रुकावटें हमारी अपनी ओर से होती हैं।

इञ्जील में कहा गया है : मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो। क्योंकि मैं सहनशील हूँ और हृदय का नम्र। तो तुम्हारी जानें आराम पायेंगी। क्योंकि मेरा जुआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का है (Mtt.११ : २८-३०)। क़ुरआन और हदीस का भी बयान है कि इस्लाम सहज और स्वाभाविक 'दीन' है।

४. यदि देखो कि लोग उस से फ़ायदा नहीं उठा रहे हैं तो उन को छोड़ दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. यादददिहानी हासिल कर लेगा जो कोई डर रखता होगा,	10. He will heed who feareth,	سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾
११. और उस से बचता रहेगा जो बिल्कुल ही अभागा होगा,	11. But the most hapless will flout it,	وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾
१२. जो बड़ी वाली आग में पड़ेगा	12. He who will be flung to the great fire.	الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾
१३. फिर उस में न तो मरेगा और न जियेगा।	13. Wherein he will neither die nor live.	ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾
१४. सफलता को प्राप्त हो गया जिस ने अपने को सँवारा,[५]	14. He is successful who groweth,,	قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾
१५. और अपने 'रब' के नाम का स्मरण किया तो नमाज़ पढ़ी।	15. And remembereth the name of his Lord, so prayeth.	وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾
१६. परन्तु तुम लोग तो सांसारिक जीवन ही को पसन्द करते हो	16. But ye prefer the life of the world.	بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾
१७. हालाँकि 'आख़िरत' (का जीवन) कहीं ज़्यादा उत्तम और स्थायी है।	17. Althohgh the Hereafter is better and more lasting.	وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾
१८. निस्सन्देह यह पहले के 'सहीफ़ों' में भी है,	18. Lo! This is in the former scrolls,	اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾
१९. इबराहीम और मसा के 'सहीफ़ों' में।	19. The Books of Abraham and Moses.	صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

———

५. दे० सूरा अश-शम्स आयत ९। मनुष्य की आत्मा की शुद्धता और विकास अल्लाह के स्मरण से ही प्राप्त होता है, जिस का उल्लेख अगली 'आयत' में किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८—अल-ग़ाशिया
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-ग़ाशिया' सूरा की प्रारम्भिक 'आयत' से लिया गया है। सूरा के विषय से इस नाम का विशेष सम्पर्क है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण होने वाली आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली 'सूरा' (अल-आला) में लोगों को सचेत करने का हुक्म दिया गया है प्रस्तुत सूरा में यातना और शुभ कर्मों के फल का जो आख़िरत में मिलेगा उल्लेख हुआ है और यह बात खोल कर बयान की गई है कि उन्हें अपने 'रब' की ओर लौटना है और फिर अपने किये का हिसाब देना है।

प्रस्तुत 'सूरा' में दो गरोहों का मुक़ाबला किया गया है एक गरोह के लिए तो 'क़ियामत' का दिन रुसवाई का दिन होगा। दूसरे गरोह को अल्लाह उस दिन अपनी नेमतों भरी 'जन्नतों' में बसायेगा।

इन दोनों गरोहों के परिणामों के उल्लेख के पश्चात् अल्लाह ने अपनी कुछ निशानियों और चमत्कारों का उल्लेख किया है।

आदमी को सोचना चाहिए कि जिस अल्लाह ने यह दुनिया बनाई है जिस के प्रत्येक कार्य में हिकमत ही दिखाई देती है उस के बारे में यह कैसे सोचा जा सकता है कि उस ने यह सब कुछ यों ही निरुद्देश्य बनाया होगा और यह दुनिया यों ही बिना किसी वास्तविक परिणाम के ख़तम हो जायेगी। हम देखते हैं कि किस तरह से ऊँट जैसा परिश्रमी और कष्ट सहने वाला ज़ानवर अल्लाह ने बनाया है। 'ज़रीअ' (काँटेदार झाड़) जैसी चीज़ उस की ख़ोराक है। फिर यह कैसे असम्भव है कि वह 'काफ़िरों' और अवज्ञाकारी लोगों को 'क़ियामत' के दिन सख़्ती और विपत्ति में डाले और उन्हें 'ज़रीअ' और 'ज़क्कूम' आदि खाने को दे। फिर जिस अल्लाह ने आकाश को ऊँचाई दी जिस में बादल दौड़ते फिरते हैं, जिस में उस ने अगणित तारे चमकाये हैं वह यदि सुकर्मी लोगों को 'आख़िरत' में ऊंची 'जन्नतों' में ऊँचे तख़्तों पर जगह दे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं बल्कि ऐसा तो होना ही चाहिए। मनुष्य अपनी आँखों से देखता है कि अल्लाह ने किस तरह पहाड़ खड़े किये हैं और उनमें पानी के स्रोत बहाये हैं। ज़मीन को फ़र्श की तरह बिछाया है। जिस में हरे-भरे वन और उपवन हैं, चरागाहें हैं फिर मनुष्य के लिए इस में आश्चर्य की कौन-सी बात है कि उस का 'रब' 'जन्नत' में उस के लिए सुख और आराम के लिए अत्यन्त नफ़ीस क़िस्म के फ़र्शों, गावतकियों आदि का प्रबन्ध करेगा। उस के लिए 'जन्नत' में स्रोत बहायेगा और आबख़ोरे सजायेगा।

'सूरा' के अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप का काम केवल लोगों को याद दिलाना और सचेत करना है। यह सांसारिक जीवन तो केवल 'आख़िरत' की तैयारी के लिए है अन्त में सब को अल्लाह के पास लौट कर जाना है जहाँ उस से उस के कामों का हिसाब लिया जायेगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-ग़ाशिया
(मक्का में उतरी -- 'आयतें' २६)

THE OVERWHELMING
Revealed at Mecca

سورة الغاشية مكية وهي ست وعشرون آية

हिन्दी	English	العربية
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بسم الله الرحمن الرحيم
१. क्या तुम तक उस छा जाने वाली ('क़ियामत') का समाचार पहुँचा ?	1. Hath there come unto thee tidings of the Overwhelming?	هل أتاك حديث الغاشية ١
२. कितने ही चेहरे उस दिन सहमे हुये होंगे,[1]	2. On that day (many) faces will be downcast,	وجوه يومئذ خاشعة ٢
३. परिश्रम करते थके-थके,	3. Toiling, weary,	عاملة ناصبة ٣
४. दहकती आग में पड़ेंगे,	4. Scorched by burning fire,	تصلى نارا حامية ٤
५. उन्हें एक खौलते स्रोत का पिलाया जायेगा,	5. Drinking from a boiling,	تسقى من عين آنية ٥
६. उन के लिए खाने को कुछ न होगा बस एक 'ज़रीअ'[2] होगा	6. No feed for them save bitter thorn-fruit,	ليس لهم طعام إلا من ضريع ٦
७. जो न (शरीर को) पुष्ट करेगा और न भूख में कुछ काम आयेगा।	7. Which doth not nourish nor release from hunger.	لا يسمن ولا يغني من جوع ٧
८. कितने ही चेहरे उस दिन खिले हुये होंगे,[3]	8. In that day other faces will be calm,	وجوه يومئذ ناعمة ٨
९. अपनी चेष्टाओं पर प्रसन्न,	9. Glad for their effort past,	لسعيها راضية ٩
१०. एक ऊँचे बाग़ में	10. In a high garden.	في جنة عالية ١٠
११. जिस में कोई बकवाद न सुनेंगे,[4]	11. Where they hear no idle speech,	لا تسمع فيها لاغية ١١
१२. उस में वह स्रोत बह रहा होगा,	12. Wherein is a gushing spring,	فيها عين جارية ١٢
१३. ऊँचे-ऊँचे तख़्त बिछे होंगे	13. Wherein are couches raised.	فيها سرر مرفوعة ١٣
१४. आबख़ोरे सजे होंगे	14. And goblets set at hand.	وأكواب موضوعة ١٤
१५. बराबर से गावतकिये लगे होंगे	15. And cushions ranged.	ونمارق مصفوفة ١٥
१६. और हर तरफ़ मख़मली समनदें फैली होंगी।	16. And silken carpets spread.	وزرابي مبثوثة ١٦
१७. तो क्या ये लोग ऊँटों की ओर नहीं देखते, वे कैसे बनाये गये हैं ?	17. Will they not regard the camels, how they are created?	أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت ١٧

१. यह संकेत उन लोगों की ओर है जो दुनिया में 'कुफ़्र' की नीति अपनाते और सत्य का इन्कार करते हैं।
२. अरब में एक कांटेदार पौधा होता है। यह जब तक हरा रहता है उसे ऊँट खाते हैं जब वह सूख जाता है तो इसे 'ज़रीअ' कहते हैं। सूखने पर ज़हरीला और बदबूदार हो जाता है।
३. ये वही लोग होंगे जो दुनिया में सच्चाई पर 'ईमान' लाये और अल्लाह की दासता में जीवन व्यतीत किया।
४. दे० सूरा अल-वाक़िया आयत २५; सूरा अन-नबा आयत ३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८. और आकाश की ओर, वह कैसा ऊँचा उठाया गया है ?

18. And the heaven, how it is raised?

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾

१९. और पहाड़ों की ओर, वे कैसे खड़े किये गये हैं ?

19. And the hills, how they are set up?

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾

२०. और धरती की ओर, वह कैसे बिछाई गई है[५] ?

20. And the earth, how it is spread?

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

२१. तो तुम याद दिलाओ, तुम तो बस एक याद दिलाने वाले हो,

21. Remind them, for thou art but a remembrancer,

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

२२. तुम उन पर कोई दारोग़ा नहीं हो[६]।

22. Thou art not at all a warder over them.

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

२३. हाँ यह है कि जिस किसी ने मुँह मोड़ा और 'कुफ़' किया,

23. But whoso is averse and disbelieveth,

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

२४. तो अल्लाह उसे बड़ी वाली यातना देगा[७]।

24. Allah will punish him with direst punishment.

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

२५. उन्हें हमारी ओर लौट कर आना है

25. Lo! unto Us is their return,

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

२६. फिर हमें उन से हिसाब लेना है[८]

26. And Ours their reckoning.

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

५. आयत १७-२० में अल्लाह की जिन निशानियों और चमत्कारों का उल्लेख हुआ है यदि आदमी उन पर विचार करे तो उसे 'आख़िरत' की उन बातों के मानने में कोई कठिनाई न होगी जिनका उल्लेख इस सूरा में किया गया है (दे० परिचय)।

६. अर्थात् तुम्हारा काम केवल लोगों को उन का भूला हुआ सबक़ याद दिलाना है।

७. अर्थात् ऐसा नहीं है कि 'ईमान' लाने और न लाने का परिणाम एक होगा। यदि कोई सत्य से मुंह मोड़ता और 'कुफ़' पर ही जमा रहता है, तो अल्लाह उसे बड़ी यातना दिये बिना नहीं रहेगा।

८. अर्थात् हम 'आख़िरत' में तुम्हारे कर्मों का हिसाब ले कर रहेंगे। हम यह देखेंगे कि कौन है जो हमारी कृपा का पात्र है और कौन है जो हमारी यातना का भागी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९–अल-फ़ज्र
(परिचय)

नाम (The Title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-फ़ज्र' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक सूरतों में से है जब कि लोगों को धर्म की मौलिक शिक्षाओं का आमन्त्रण दिया जा रहा था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

'सूरा' के आरम्भ में क़समों के रूप में कुछ ऐसे प्राकृतिक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं जिन से अल्लाह के एक महत्वपूर्ण नियम पर प्रकाश पड़ता है। अल्लाह ने विभिन्न और विपरीत चीज़ों को मिला कर उन में संगति और सामंजस्य पैदा किया है। उस सम्मेलन और सामंजस्य के बिना जो विश्व में दीख पड़ता है हम किसी भलाई और हित की आशा वर्त्तमान लोक से नहीं कर सकते थे। इस लोक की प्रतिकूल चीज़ों में परस्पर जिस अनुकूलता और सामंजस्य का नियम हमें दिखाई देता है उसी नियम को मानव-लोक में भी मान्यता प्राप्त हो, अल्लाह को यही अभीष्ट है। मानव-समाज विभिन्न वर्गों में विभक्त है, इस में धनी भी हैं और निर्धन भी, बलिष्ट भी हैं और निर्बल भी। समाज के विभिन्न वर्गों में पाये जाने वाले भेद और अन्तर का अर्थ यह होता है कि लोगों को एक-दूसरे का सहायक होना चाहिए, समस्त मानव जन एक ही अल्लाह के बन्दे हैं, मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह के हक़ को पहचाने, 'शिर्क' और 'कुफ़' की गन्दगी से अपने दामन को बचाये और अल्लाह के बन्दों के साथ उस का व्यवहार अच्छा हो। समाज में असंगति और असामंजस्य की जगह संगति और सामंजस्य हो। दया-भाव, जन-सेवा और पुण्य-कार्य के बिना न तो मनुष्य में अच्छे गुण पैदा होते हैं और न नैतिक विकास की दृष्टि से वह कभी सफल हो सकता है। ज़ालिम और सरकश जातियों ने यदि सहज और स्वाभाविक नियम का उल्लघंन कर के समाज में बिगाड़ पैदा किया है तो इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन जातियों को बुरे दिन देखने पड़े हैं, अल्लाह की यातना ने उन्हें दुनिया में भी विनष्ट कर के रख दिया और 'आख़िरत' में भी उन के लिए दुःख और 'जहन्नम' की अग्नि के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दुनिया में जातियों को फलने फूलने का जो अवसर भी मिलता है उस में उन की परीक्षा होती है। अल्लाह जो रात्रों को प्रकाशित कर के अपनी अपार लीला का प्रदर्शन करता है, जो रात के बाद उषा काल और अरुणोदय का समय लाता है उस से यह कैसे सम्भव है कि वह सरकशों और ज़ालिमों की सरकशी और ज़ुल्म के पश्चात् कोई न्याय और इन्साफ़ का दिन न लाये? वह अवश्य इन्साफ़ करेगा। फ़रियादियों की फ़रियाद सुनी जायेगी, ज़ालिमों को अपने करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा।

प्रस्तुत सूरा में मनुष्य की एक बड़ी दुर्बलता का उल्लेख किया गया है, मनुष्य यह नहीं सोचता कि यहाँ का सुख-दुःख तंगी और कुशादगी सब-कुछ केवल परीक्षा के लिए है। वह अल्लाह से शिकायतें करता है।

सूरा के अन्त में 'आख़िरत' को झाँकी प्रस्तुत की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़ज्र (मक्का में उतरी—'आयतें' ३०)	THE DAWN *Revealed at Mecca*	سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ اٰيَةً
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
१. क़सम है अरुणोदय की	1. By the Dawn,	وَالْفَجْرِ ①
२. और दस रातों की,[1]	2. And ten nights,	وَلَيَالٍ عَشْرٍ ②
३. और युग्म की और अयुग्म की,	3. And the Even and the Odd,	وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ③
४. और रात की जब कि वह गुज़र रही हो,	4. And the night when it departeth,	وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ④
५. है इस में कोई क़सम किसी बुद्धि वाले के लिए[2] ?	5. There surely is an oath for thinking man.	هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ⑤
६. क्या तुम ने देखा नहीं कि तुम्हारे 'रब' ने क्या किया 'आद' के साथ,	6. Dost thou not consider how thy Lord dealt with (the tribe of) A'ad,	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ⑥
७. स्तम्भों वाले 'इरम' के साथ	7. With many-columned Iram,	اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ⑦
८. वह जिस के सदृश देशों में नहीं बनाया गया;[3]	8. The like of which was not created in the lands;	الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ⑧
९. और 'समूद' के साथ, जिन्हों ने चट्टानों को काट रक्खा था घाटी में;[4]	9. And with (the tribe of) Thamud, who clove the rocks in the valley;	وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ⑨
१०. और मेखों वाले फ़िरऔन के साथ,[5]	10. And with Pharaoh, firm of might,	وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ⑩

१. दस रातों से अभिप्रेत यहाँ महीने की वे दस रातें हैं जिन में चाँद अपेक्षतः अधिक बड़ा होता है और देर तक चमकता रहता है।

२. क़सम के रूप में अल्लाह ने यहाँ कुछ निशानियाँ प्रस्तुत की हैं। अल्लाह ने प्रातः का समय बनाया, रातों को प्रकाशित किया फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अपने बन्दों से बेख़बर रहे और उन्हें न देखे। फिर उजाला और अँधेरा, दिन और रात, युग्म (Even) और अयुग्म (Odd) ये और इस तरह की कितनी ही परस्पर विरोधी चीज़ें संसार में आलिंगनबद्ध दीख पड़ती हैं। यदि परस्पर रिरोधी चीज़ों में एकता न लाई जाती तो फिर इस संसार में संगति और सम्मेलन की जगह असामंजस्य और संघर्ष का राज्य होता और हम किसी भलाई और हित से संसार का सम्पर्क स्थापित करने में असमर्थ रहते। प्रतिकूल वस्तुओं में अनुकूलता और सामंजस्य का जो नियम हमें इस संसार में दिखाई देता है उसी नियम के अन्तर्गत अल्लाह ने मनुष्य के भी विभिन्न वर्ग बनाये हैं। शक्तिशाली और निर्बल, धनी और मुहताज, हर श्रेणी के लोग समाज में पाये जाते हैं। ऐसा इस लिए है ताकि लोग एक-दूसरे के सहायक हों और उन में अच्छे गुण पैदा हो सकें, उन के स्वभाव में उच्चता और व्यापकता आये। परन्तु ज़ालिम और सरकश लोगों ने हमेशा इस के विरुद्ध आचरण किया।

३. अर्थात् स्तम्भों वाले 'आद, इरम' के साथ जो अपनी सभ्यता में बहुत आगे थे ऊँचे-ऊँचे स्तम्भों के भवनों का निर्माण करना उन की ऐसी विशेषता थी जिस के लिए वे उस समय सब में प्रसिद्ध थे। परन्तु उन के ज़ुल्म और अत्याचार के कारण जब उन पर अल्लाह का अज़ाब आया तो न उन की रक्षा उन की सभ्यता कर सकी और न उन के ऊँचे-ऊँचे भवनों ने उन्हें शरण दी।

४. वे इतने कुशल थे कि पहाड़ों और पत्थरों को काट-काट कर सुन्दर और मज़बूत भवनों का निर्माण करते थे।

५. दे० सूरा साँद आयत १२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. जिन्हों ने देशों में सिर उठाया,

१२. और उन में बहुत बिगाड़ फैला रक्खा था[६] ?

11. Who (all were rebellious to Allah) in these lands,
12. And multiplied iniquity therein?

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ (١١)
فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ (١٢)

१३. तो तुम्हारे 'रब' ने उन पर यातना का कोड़ा बरसाया।

13. Therefor thy Lord poured on them the disaster of His punishment.

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ (١٣)

१४. निस्सन्देह तुम्हारा 'रब' ताक में रहता है[७]।

14. Lo! thy Lord is ever watchful.

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (١٤)

१५. अब रहा मनुष्य, तो जब उस का 'रब' उस की परीक्षा करता है इस प्रकार कि उसे सम्मानित करता और सुख में रखता है, तो वह कहता है : मेरे 'रब' ने मुझे सम्मानित किया[८]

15. As for man, whenever his Lord trieth him by honouring him, and is gracious unto him, he saith: My Lord honoureth me.

فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ (١٥)

१६. और जब वह उस की परीक्षा करता है इस प्रकार कि उस के लिए उस की रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो कहता है : मेरे 'रब' ने मुझे अपमानित किया[९]।

16. But whenever He trieth him by straitening his means of life, he saith: My Lord despiseth me.

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ (١٦)

१७. कुछ नहीं, तुम तो अनाथ का सम्मान नहीं करते,

17. Nay, but ye (for your part) honour not the orphan.

كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ (١٧)

१८. और न एक-दूसरे को मुहताज के खिलाने पर उभारते हो,

18. And urge not on the feeding of the poor.

وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ (١٨)

१९. और मीरास को समेट-समेट कर खाते हो[१०]

19. And ye devour heritages with devouring greed.

وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا (١٩)

२०. और माल को जी भर कर प्रिय रखते हो[११]।

20. And love wealth with abounding love.

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا (٢٠)

२१. कुछ नहीं, जब धरती कूट कर चूर्ण-विचूर्ण कर डाली जायेगी;[१२]

21. Nay, but when the earth is ground to atoms, grinding, grinding.

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا (٢١)

६. अर्थात् इन सब ने अपनी शक्ति के गर्व में आ कर केवल अल्लाह के आदेशों ही को नहीं ठुकराया बल्कि अल्लाह के बन्दों और कमज़ोरों पर ज़ुल्म भी किया।

७. अर्थात् वह लोगों से बेखबर नहीं है। लोगों को आज़माने और उनकी परीक्षा करने के लिए उन्हें मुहलत अवश्य देता है। दे० सूरा अत-तारिक़ आयत ४; सूरा अल-बलद आयत ५, ७।

८. और इधर उस का ध्यान नहीं जाता कि अल्लाह नेमतों के द्वारा उस की परीक्षा कर रहा है। वह गर्व करता और इतराता है यतीमों, अनाथों और मुहताजों को भूल जाता है। उन की खबर नहीं लेता।

९. जब तंगी आती है उस समय भी मनुष्य यह नहीं सोचता कि वास्तव में उस का 'रब' उस की परीक्षा कर रहा है, वह घबरा उठता है और अपने रब की निन्दा करने लगता है। दे० सूरा अल-मआरिज आयत १९-२१।

१०. अर्थात् हक़-नाहक़ कुछ नहीं देखते हो, मरे हुये लोगों के माल और उन की सम्पत्ति को उड़ा लेते हो। यह नहीं सोचते हो कि उस में कितनों का हक़ है जिन में यतीम भी होंगे, विधवा स्त्रियां भी हो सकती हैं और दूसरे लोग भी।

११. वास्तव में तुम्हारा रोग यह है कि तुम धन-दौलत के पुजारी हो। सत्य-असत्य का तुम कोई विचार नहीं करते। धन के लोभ में तुम अत्यन्त नीचे गिर चुके हो।

१२. अर्थात् परीक्षालय का अन्त हो जायेगा और वह समय आ जायेगा जब कि तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२. और पदार्पण करेगा तेरा 'रब' और 'फ़िरिश्ते' पंक्ति-पंक्ति,[१३]

22. And thy Lord shall come with angels, rank on rank.

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

२३. और लाया जायेगा उस दिन 'जहन्नम'; उस दिन मनुष्य चेतेगा[१४] परन्तु उसे चेतने को कहाँ मिलता है ?

23. And hell is brought near that day: on that day man will remember, but how will the remembrance (then avail him)?

وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

२४. कहेगा : हाय, क्या ही अच्छा होता कि मैं ने अपने जीवन के लिए पहले से कुछ कर लिया होता[१५] !

24. He will say: Ah, would that I had sent before me (some provision) for my life!

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾

२५. तो उस दिन कोई नहीं जो उस की जैसी यातना दे

25. None punisheth as He will punish on that day!

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾

२६. और कोई नहीं जो उस की जैसी जकड़-बन्दी करे।

26. None bindeth as He then will bind.

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾

२७. हे शान्त आत्मा ![१६]

27. But ah! thou soul at peace!

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

२८. लौट चल अपने 'रब' की ओर, तू (उस से) खुश (वह) तुझ से खुश !

28. Return unto thy Lord, content in His good pleasure!

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

२९. अब पहुँच जा मेरे बन्दों में[१७] !

29. Enter thou among My bondmen!

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾

३०. और पहुँच जा मेरी 'जन्नत' में !

30. Enter thou My Garden!

وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

---

१३. अर्थात् परोक्ष पर से परदा हटा दिया जायेगा। तुम 'फ़िरिश्तों' को आते देखोगे और देखोगे कि उस दिन केवल तुम्हारे 'रब' का हुक्म चल रहा है। उस के प्रताप के सामने किसी को दम मारने की मजाल न होगी।

१४. उस समय मनुष्य चेतेगा कि वह कितनी भूल में था।

१५. कुछ नेकियाँ की होतीं, कुछ अल्लाह की राह में खर्च किया होता और मुहताजों, गरीबों और यतीमों की सहायता की होती, तो आज के दिन हम तबाही से बच सकते।

१६. अर्थात् वह आत्मा, जो दुख-सुख और तकलीफ़ और आराम प्रत्येक अवस्था में अपने 'रब' से सन्तुष्ट और उस के फ़ैसले पर राज़ी रही और अपने अन्दर कोई टेढ़ पैदा न होने दिया। तंगी और कुशादगी, भय और लालच कोई चीज़ भी जिसे उस राह से विचलित न कर सकी जिस राह पर चलने का आदेश उसे अपने 'रब' की ओर से मिला था।

१७. अर्थात् मेरे नेक बन्दों में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९०—अल—बलद
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-बलद' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है। सूरा के नाम का उस की वार्त्ताओं से विशेष सम्पर्क है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली 'सूरा' (अल-फ़ज्र) की तरह प्रस्तुत सूरा में भी इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि लोग कमज़ोरों के साथ अच्छा व्यवहार करें, उन के हक़ को पहचानें।

प्रस्तुत 'सूरा' में लोगों को उभारा गया है कि वे अपने कर्त्तव्य का पालन करें। उन्हें सोचना चाहिए कि अल्लाह ने उन पर कितना उपकार किया है। मनुष्य कितनी कमज़ोरी और बेचारगी की हालत में पैदा होता है। अब उस का यह परम कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाये और कमज़ोरों और मुहताजों पर दया करे। उसे कभी भी अपनी दुर्बलता को भूल कर गर्व और अहं-कार की नीति नहीं अपनानी चाहिए। मक्का नगर और 'काबा' का इतिहास भी इसी बात का साक्षी है कि उसे अल्लाह ने 'तौहीद', मानवीय एकता, दया और प्यार की शिक्षा का केन्द्र बनाया था। अत: लोगों का और विशेष रूप से मक्का वालों का परम कर्त्तव्य है कि वे उस सीधे और स्वाभाविक मार्ग को अपनायें जिस के अपनाने में स्वयं उन का और सम्पूर्ण मानव-जाति का कल्याण है।

मनुष्य को इस भ्रम में कदापि नहीं पड़ना चाहिए कि वह जो चाहे करे उस की कोई पकड़ न होगी। मनुष्य को सांसारिक मोह-माया, झूठी प्रतिष्ठा का ख़्याल, तकलीफ़ और संकट का भय कर्त्तव्य पथ से विचलित न करे। वह इस बात को कभी न भूले कि वह अल्लाह का बन्दा और दास है। बन्दगी का हक़ इस के बिना नहीं अदा हो सकता कि वह उन घाटियों से गुज़रे जिन से गुज़रने के बाद ही मनुष्य का जीवन सफल और उस का मान ऊँचा होता है। उस का कर्त्तव्य है कि वह ग़ुलामों की गर-दनों को ग़ुलामी से आज़ाद कराये, अनाथों और बे-सहारा लोगों के काम आये। वास्तव में वह 'ईमान' वाला बने और दूसरों को उसी बात का आमन्त्रण दे जिसे वह स्वयं अपना चुका है।

इस 'सूरा' के अध्ययन से पूर्ण रूप से विदित होता है कि क़ुरआन लोगों को जिस चीज़ की ओर बुलाता है उस का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से ही नहीं बल्कि उस का सम्बन्ध सम्पूर्ण मानव-समाज से है। और वह मानव-जीवन के प्रत्येक भाग को एक विशेष सांचे में ढालना चाहता है। अल्लाह को यह पसन्द नहीं कि मनुष्य विभिन्न वर्गों में इस प्रकार विभक्त हो जिन के बीच न्याय, सहानुभूति, प्रेम आदि का कोई सम्पर्क न हो। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह मानव के प्रति अपने कर्त्तव्य को पहचाने और यह उसी समय सम्भव है जब कि उस ने अपने 'रब' को पहचान लिया हो और यह समझ गया हो कि अल्लाह की बन्दगी ही मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-बलद
(मक्का में उतरी–'आयतें' २०)

THE CITY
Revealed at Mecca

سورة البلد مكية وهي عشرون آية

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. नहीं,[1] क़सम खाता हूँ इस नगर की (मक्का की)—

1. Nay, I swear by this city—

لا أقسم بهذا البلد ①

२. और तू इस नगर में रह रहा है—

2. And thou art an indweller of this city—

وأنت حل بهذا البلد ②

३. और जनने वाले की और जो-कुछ उस ने जना,[2]

3. And the begetter and that which he begat,

ووالد وما ولد ③

४. निस्सन्देह हम ने मनुष्य को कष्ट में घिरा हुआ बनाया है :

4. We verily have created man in an atmosphere.

لقد خلقنا الإنسان في كبد ④

५. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बस न चलेगा ?

5. Thinketh he that none hath power over him?

أيحسب أن لن يقدر عليه أحد ⑤

६. कहता है : मैं ने ढेरों माल खपा दिया :

6. And he saith: I have destroyed vast wealth:

يقول أهلكت مالا لبدا ⑥

७. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा ?

7. Thinketh he that none beholdeth him?

أيحسب أن لم يره أحد ⑦

८. क्या नहीं दीं हम ने उसे दो आँखें

8. Did We not assign unto him two eyes,

ألم نجعل له عينين ⑧

९. और एक ज़बान और दो होंठ,

9. And a tongue and two lips,

ولسانا وشفتين ⑨

१०. और दिखाई उसे दोनों चढ़ाइयाँ[3] ?

10. And guide him to the parting of the mountain ways?

وهدينه النجدين ⑩

११. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं—

11. But he hath not attempted the Ascent—

فلا اقتحم العقبة ⑪

१. अर्थात् 'काफ़िरों' ने जो-कुछ अपनी जगह पर समझ रक्खा है वह असत्य है।

२. क़सम के रूप में यहाँ अल्लाह की निशानियों का उल्लेख हुआ है। मक्का का भू-भाग न खेती के लिए उपयोगी है और न जानवरों के लिए, यहाँ हरे-भरे मैदान पाये जाते हैं। यहाँ की भूमि मशक़्क़त से भरी हुई थी। मनुष्य की पैदाइश और उस की निर्बलता जहाँ इस बात की साक्षी है कि मनुष्य की मशक़्क़तों और तकलीफ़ों से गुज़रना है वहीं मक्का का भू-भाग और उस के इतिहास से भी इसी बात का पता चलता है। जिस प्रकार निर्बल बच्चे पर अल्लाह की कृपा होती है और अल्लाह उत्तम रीति से उस के लिए आवश्यक वस्तुयें जुटाता है, माता-पिता के हृदयों में उस के लिए प्रेम-भावना भरता है, उसी प्रकार मक्का के इतिहास से भी मालूम होता है कि किस प्रकार अल्लाह की कृपा और दया इस भू-भाग पर हुई है अल्लाह की कृपा और उस के घर('काबा') की बरकत से यह मशक़्क़त से भरी हुई ज़मीन नेमतों और बरकतों का उद्गम और शान्ति-निकेतन बन गई (दे० अल-क़सस आयत ५७; सूरा क़ुरैश)। अल्लाह ने यहाँ मनुष्य को उस की दुर्बलता और दीनता और अपनी कृपा और उपकार याद दिला कर उसे गर्व और अभिमान से रोका है और इस पर उभारा है कि वह अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाये और दीन-दुखियों और कमज़ोरों पर दया करे।

३. दो चढ़ाइयों से अभिप्रेत 'सब्र' और 'दया करना' है जिस का उल्लेख आयत १७ में हुआ है। एक विचार यह भी है कि इस से अभिप्रेत अल्लाह और उस के बन्दों का हक़ अदा करना है। इन का पालन मनुष्य उसी समय कर सकता है जब कि उस में संकल्प की दृढ़ता और बलिदान और त्याग की भावना पाई जाती हो इस के बाद ही वह उच्चता को प्राप्त कर सकता है, इसी लिए इन्हें दो चढ़ाइयां कहा गया। आगे की 'आयत' में इसे घाटी कहा गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है !	12. Ah, what will convey unto thee what the Ascent is!—	وما ادرىك ما العقبة ﴿١٢﴾
१३. किसी गरदन (ग़ुलाम की गरदन) का छुड़ा देना,	13. (It is) to free a slave,	فك رقبة ﴿١٣﴾
१४. या भूख (अकाल) के दिन में खाना खिला देना	14. And to feed in the day of hunger,	او اطعم في يوم ذي مسغبة ﴿١٤﴾
१५. किसी नातेदार यतीम को,	15. An orphan near of kin,	يتيما ذا مقربة ﴿١٥﴾
१६. या धूल-धूसरित (दुर्दशाग्रस्त) मुहताज को।	16. Or some poor wretch in misery,	او مسكينا ذا متربة ﴿١٦﴾
१७. फिर उन लोगों में से होता जो 'ईमान' लाये और एक-दूसरे को 'सब्र' की ताकीद की और दया करने की ताकीद की।	17. And to be of those who believe and exhort one another to perseverance and exhort one another to pity.	ثم كان من الذين امنوا وتواصوا بالصبر وتواصوا بالمرحمة ﴿١٧﴾
१८. ये लोग हैं सौभाग्य वाले।	18. Their place will be on the right hand.	اولئك اصحب الميمنة ﴿١٨﴾
१९. और जिन्हों ने हमारी 'आयतों' के साथ 'कुफ़्र' किया, वे दुर्भाग्य वाले हैं।	19. But those who disbelieve Our revelations, their place will be on the left hand.	والذين كفروا بايتنا هم اصحب المشئمة ﴿١٩﴾
२०. वे आग में बन्द रहेंगे।	20. Fire will be an awning over them.	عليهم نار مؤصدة ﴿٢٠﴾

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९१–अश-शम्स

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अश-शम्श' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों में से है। यह वह समय था जब कि मक्के के सरदार नबी सल्ल० की शिक्षा का इन्कार कर रहे थें।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्ताऐं

इस 'सूरा' में क़ुरैश' और उन के सरदारों को उन के बुरे परिणाम से डराया गया है। वे उस चीज़ को झुठला रहे थे जिस की ओर अल्लाह का 'रसूल' उन्हें बुला रहा था। अल्लाह का 'रसूल' जो बात उन के सामने पेश कर रहा था वे सीधी और सच्ची बातें थीं। वह उन्हें एक अल्लाह की ओर बुला रहा था। वह उन से कहता था कि वे कमज़ोरों की सहायत्ता करें उन के दुःख को अपना दुःख समझें। और इस को सच जानें कि उन्हें एक दिन अपने 'रब' के सामनें हाज़िर होना है।

पिछली 'सूरा' में बताया गया था कि 'काबा' के निर्माण के कुछ उद्देश्य हैं जिन्हें उस सूरा में 'ईमान', सब्र, दया-कृपा और सब्र, और दया की वसीयत आदि शब्दों द्वारा व्यक्त किय गया है। जो लोग इन चीज़ों को अपनायेंगे उन के बारे में कहा गया है कि वही सौभाग्यशाली होंगे। प्रस्तुत 'सूरा' में लोगों के सामने 'समूद' के उस बद नसीब लीडर को पेश किया गया है जिस नें अपनी सरकशी से अपनी जाति वालों को तबाही के गढ़े में ला गिराया। 'समूद' को उदाहरण के रूप में इस लिए पेश किया गया है ताकि 'क़ुरैश' को मालूम हो जाये कि उन्हों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध जो नीति अपनाई है वह वही है जो 'समूद' के एक अत्याचारी व्यक्ति ने अपनाई थी। इन्हों नें अल्लाह के घर (काबा) के वास्तविक उद्देश्य का सत्तानाश किया है और अल्लाह के 'रसूल' के साथ वही व्यवहार करनें वाले हैं जो समूद नें अपने 'रसूल' के साथ किया था। समूद की सरकशी यहाँ तक बढ़ गई थी कि उन्हों ने केवल यही नहीं कि अपनें 'रसूल' को झुठलाया बल्कि उस ऊँटनी को भी मार डाला जिसे अल्लाह नें चमत्कार के रूप में पैदा किया था, जिस के बारे में उन्हें ताकीद कर दी गई थी कि उसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे। ऊँटनी को मार डालनें के बाद उन्हों नें 'रसूल' को क़त्ल करनें का भी निश्चय किया (दे० सूरा अन-नम्ल आयत ४९—५१)। 'क़ुरैश' के सामने समूद के करतूत के उल्लेख का उद्देश्य यही है कि लोगों को मालूम हो जाये कि 'क़ुरैश' नें जो नीति अपनाई है उस का परिणाम क्या होगा। 'समुद' की तरह ये भी अपने 'रसूल' को क़त्ल करनें की साज़िश करेंगे। फिर समूद की तरह इन्हें भी बुरा दिन देखना पड़ेगा। इस प्रकार यह पूरी सूरा आयत १० का विस्तार है। सूरा की आयत ९ का विस्तृत वर्णन अगली सूरा (अल-लैल) में मिलता है। सूरा के आरम्भ में जिस चीज़ की पुष्टि प्राकृतिक प्रमाण द्वारा की गई है उसी के लिए सूरा के अन्तिम भाग में ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया गया है, जिस से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह लोगों के कर्मों का पूरा बदला देता है।

—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अश-शम्स
(मक्का में उतरी—'आयतें' १५)

THE SUN
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ اٰيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है सूर्य की और उस के चढ़ते तेज की,[१]

1. By the sun and his brightness,

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿١﴾

२. और चाँद की जब कि वह उस के पीछे पीछे आये,

2. And the moon when she followeth him,

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿٢﴾

३. और दिन की जब कि वह उसे (सूर्य को) उजागर कर दे,

3. And the day when it revealeth him,

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿٣﴾

४. और रात की जब कि वह उस पर (सूर्य पर) छाई हुई हो,[२]

4. And the night when it enshroudeth him,

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ﴿٤﴾

५. और आकाश की और जैसा उसे बनाया,

5. And the heaven and Him Who built it,

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ﴿٥﴾

६. और धरती की और जैसा उसे फैलाया,

6. And the earth and Him Who spread it,

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ﴿٦﴾

७. और आत्मा की और जैसा उसे रचा

7. And a soul and Him Who perfected it.

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ﴿٧﴾

८. फिर उसे प्रेरणा दी दुराचार की और बच-बच कर चलने की।

8. And inspired it (with conscience of) what is wrong for it and (what is) right for it.

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ﴿٨﴾

१. जब धूप फैल जाती है और उस में तेज़ी आ जाती है।
२. दिन में सूर्य चमक रहा होता है, तो रात में वह छुप जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. सफल हो गया जिस ने उसे (आत्मा को) निखारा,[3]

9. He is indeed successful who causeth it to grow,

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهَا ۝٩

१०. और असफल हुआ जिस ने उसे खराब किया।

10. And he is indeed a failure who stunteth it.

وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ۝١٠

११. [4]झुठलाया 'समूद' ने अपनी सरकशी के साथ।

11. (The tribe of) Thamud denied (the truth) in their rebellious pride.

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝١١

१२. जब उठ खड़ा हुआ जो उन में सब से बदनसीब था

12. When the basest of them broke forth.

إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝١٢

३. मनुष्य में भलाई और बुराई दोनों की अभिरुचि पाई जाती है। उस पर दोनों बातें खोल दी गई हैं। वे बातें भी जो उस की प्रकृति के विरुद्ध और अल्लाह को अप्रिय हैं और वे बातें भी उस पर खोली गईं जो आत्मा की शुद्धता और पवित्रता से सम्बन्ध रखती हैं, अल्लाह का डर रखने वालों को जिन का ध्यान रखना ज़रूरी है।

ऊपर की 'आयतों' पर सोच-विचार करने से कई बातें हमारे सामने आती हैं :

(१) क़सम के रूप में जितने प्रमाण इस सूरा में हमारे सामने लाये गये हैं उन से इस की पुष्टि होती है कि एक दिन अवश्य मनुष्य को अपनी कोशिशों और चेष्टाओं का बदला मिल कर रहेगा, वह दुनिया में यों ही निरुद्देश्य नहीं पैदा किया गया है। यह सम्भव नहीं कि यह दुनिया जो अल्लाह के सामर्थ्य, उस की कृपा और दया और उस की 'हिकमत' और तत्वदर्शिता (Wisdom) का प्रत्यक्ष रूप है, यों ही बिना किसी वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य के बनाई गई हो।

(२) फिर मनुष्य को भले-बुरे की समझ दी गई। मनुष्य भलाई और बुराई दोनों को एक नहीं समझता। वह दोनों में अन्तर करता है। नेकी और बदी, भलाई और बुराई में यदि अन्तर है, तो इन का परिणाम एक कैसे हो सकता है।

(३) फिर जिन चीज़ों को अल्लाह ने प्रमाण के रूप में इस सूरा में पेश किया है उन्हें उन के जोड़ के साथ पेश किया है। सूर्य के साथ चाँद का उल्लेख किया गया और रात के साथ दिन का और इसी प्रकार आकाश के साथ धरती का उल्लेख हुआ है। इस संसार में जो चीज़ें हमें एक दूसरे के विपरीत दिखाई देती हैं वे भी वास्तव में एक दूसरे की सहायक और पूरक हैं। परस्पर विरोधी चीजों के पारस्परिक सम्पर्क और सम्बन्ध से कितने ही उद्देश्यों की पूर्ति होती है स्वयं मनुष्य को भी विपरीत अभिरुचि और इच्छाओं के बीच संघर्ष करना पड़ता है। यदि भलाई उसे अपनी ओर खींचती है तो बुराई भी उसे अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है। मनुष्य की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति और विकास का रहस्य उस की साधना, तप और परिश्रम और संघर्ष में ही निहित है।

(४) यह सम्पूर्ण विश्व मनुष्य की आन्तरिक दुनिया का ही प्रत्यक्ष रूप है। जो व्यवस्था इस भौतिक जगत में पाई जाती है उसी प्रकार की व्यवस्था आन्तरिक जगत में भी दीख पड़ती है। जिस प्रकार बाह्य जगत में विभिन्न उद्देश्यों के अन्तर्गत प्रकाश भी पाया जाता है और अन्धकार भी, ऊँचाई भी है और अधस्थल भी। और यह सब-कुछ मनुष्य के पालन-पोषण और उस की भलाई के लिए ही है। ठीक यही दशा मनुष्य के आन्तरिक जगत की भी है। इस में भी धरती और आकाश रात और दिन पाये जाते हैं। जिस प्रकार बाह्य जगत में विभिन्न और परस्पर विरोधी चीज़ों के सम्बन्ध और संघर्ष से अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति होती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी विभिन्न और विपरीत इच्छाओं, कामनाओं और अभिरुचियों के संघर्ष और सम्पर्क में आध्यात्मिक और नैतिक विकास की राह पैदा करनी है। यदि वह इस सिलसिले में अपने दायित्व को भुला देता है तो इस का परिणाम विनाश के रूप में ही उस के सामने आयेगा। सफलता उसी के लिए है जो अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और उसे पूरा करने की कोशिश करे। यही बात है जो आगे की दो आयतों में खोल कर बयान कर दी गई है। बरगसाँ (Bergson) जो बीसवीं शताब्दी का एक बड़ा दार्शनिक गुज़रा है वह भी इस बात को मानने पर मजबूर हुआ है : "जीवन की समस्त चेष्टाओं और दौड़-भाग का अभिप्राय मानव-जाति की पूर्णता (Perfection) है अर्थात् मनुष्यत्व (Humanity) को वह-कुछ बना देना जो वह तत्काल बन जाता यदि उसे अपना रूप धारण कर लेने में मनुष्यों की सहायता आवश्यक न होती।"—The Two sources of Morality and Religion

सूरा के आरम्भ से ले कर 'आयत' ८ तक क़समों के रूप में जो बात प्रमाणित की गई है वह वही है जो 'आयत' ९-१० में बयान हुई है।

४. ऊपर जिस चीज़ की पुष्टि प्राकृतिक प्रमाणों के द्वारा की गई है उस के लिए आगे की आयतों में एक ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३. तो उन से अल्लाह के 'रसूल' नें कहा : ख़बरदार अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीनें की बारी से[५] !

13. And the messenger of Allah said: It is the she-camel of Allah, so let her drink!

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَ
سُقْيٰهَا ﴿١٣﴾

१४. परन्तु उन्हों नें उसे झुठलाया, और उस (ऊँटनी) को उस की कूँचें काट कर मार डाला,[६] तो उन के 'रब' नें उन के गुनाह के कारण उन पर तबाही डाली और उस (बस्ती) को बराबर कर दिया।

14. But they denied him, and they hamstrung her, so Allah doomed them for their sin and razed (their dwellings).

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۪ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾

१५. और उसे डर नहीं कि इस के पीछे क्या होगा[७]।

15. He dreadeth not the sequel (of events).

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾ ع

५. दे० सूरा अश; शुअरा आयत १५४-१५८; हूद आयत ६४-६८।

६. यद्यपि 'समूद' के एक व्यक्ति ने ऊँटनी को क़त्ल किया था (दे० आयत १२) परन्तु क़ुरआन पूरी जाति को क़त्ल का अपराधी ठहरा रहा है क्योंकि समूद जाति के लोग इस अन्याय और अपराध पर चुप रहे, उन्हों ने अपने आदमी के इस अपराध को बुरा नहीं समझा।

७. क़ुरआन जहाँ पिछली आसमानी किताबों की बहुत-सी बातों की तसदीक़ करता है वहीं वह उन बहुत-सी ऐसी बातों का निषेध भी करता है जो 'यहूद' ने उनमें अपनी ओर से मिला दी हैं (दे० सूरा अल-माइदा आयत ४८; सूरा अन-नम्ल आयत ७६)। अल्लाह के बारे में जहाँ और बहुत-सी भ्रमपूर्ण बातें फैली हुई थीं वहीं एक ग़लत बात यह भी थी कि कभी-कभी वह अपने कामों पर पछताता है। उदाहरणार्थ देखिए तौरात की किताब पैदाइश (Gen.) ६ : ५-६; ८ : २१। क़ुरआन कहता है कि अल्लाह जो-कुछ करता है 'हिकमत' और दयालुता के अन्तर्गत करता है। वह यदि किसी जाति को विनष्ट करता है तो अपने निश्चित नियम के अन्तर्गत ही विनष्ट करता है। इसी प्रकार जब वह किसी जाति को फलने-फूलने का अवसर प्रदान करता है तो उस का यह काम भी उस के नियम और क़ानून के अन्तर्गत ही होता है। उसे न कोई भय है और न उस में कोई दुर्बलता पाई जाती है। इस लिए यह बात उस की महिमा के सर्वथा प्रतिकल है कि वह अपने किसी काम पर पछताये या लज्जित हो। यही बात है जो आयत १५ से विदित होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९२—अल-लैल

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-लैल' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक सूरतों में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस से पहले की 'सूरा' में सरकशों के बुरे परिणाम का उल्लेख हुआ है, प्रस्तुत सूरा और इस के बाद आने वाली सूरा में 'ईमान' वालों के अच्छे परिणाम और उन की सफलता का वर्णन हुआ है। प्रस्तुत सूरा वास्तव में इस से पहले की सूरा (अश-शम्स) की आयत ९ का विस्तार है।

इस 'सूरा' का मूल विषय है अल्लाह के मार्ग में खर्च करना और इस के द्वारा शुद्धता एवं पवित्रता प्राप्त करना। प्रस्तुत सूरा में 'ईमान' वालों के लिए शुभ सूचनायें हैं और इस बात का वादा किया गया है कि उन्हें उन का 'रब' खुश कर देगा।

'सूरा' के आरम्भ में क़सम के रूप में अल्लाह ने अपनी कुछ निशानियों का उल्लेख किया है जिन से मालूम होता है कि जिस प्रकार रात, दिन और नर, मादा में हम प्रत्यक्षत: भेद और अन्तर पाते हैं, ठीक उसी प्रकार लोगों की हालत और उन की दशा भी भिन्न है। लोग एक हालत पर नहीं हैं। लोगों की चेष्टाओं का हाल यह है कि कोई सत्य का प्रेमी है तो कोई असत्य का पुजारी है। कोई भलाई के लिए दौड़-धूप करता है तो कोई भलाई का विरोधी बन कर खड़ा होता है, रात का छा जाना यदि माल के लोभ और मोह के छा जाने के समान है तो दिन का प्रकाशमान होना उस प्रकाश के सदृश है जो अल्लाह के मार्ग में माल खर्च करने से प्राप्त होता है।

अल्लाह का यह नियम है कि वह दो मुक़ाबिल की चीज़ों के मेंल और सन्धान से एक नतीजा निकालता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उस ने रात, दिन और नर, मादा आदि मुक़ाबिल की चीज़ों से उन उद्देश्यों की पूर्ति की है जिन से सभी लोग परिचित हैं, माल में भी दो पहलू एकत्र कर के उसे मनुष्य के लिए परीक्षा का साधन बना दिया है। मनुष्य चाहे तो माल को अल्लाह की राह में खर्च कर के अपनी आत्मा को शुद्ध और विकसित कर सकता है और चाहे तो माल का पुजारी बन कर अपने को तबाही के गड्ढे में गिरा सकता है।

प्रस्तुत सूरा में बताया गया है कि सारा मामला अल्लाह ही के हाथ में है। और उस का कोई काम न्याय के विरुद्ध नहीं। उस नें लोगों को बुरे परिणाम से सचेत कर दिया है अब यह लोगों का अपना कर्त्तव्य है कि वे उस से बचने की कोशिश करें। तो जो कोई डरता है और बुरे परिणाम से बचनें की कोशिश करता है; अल्लाह की राह में केवल अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए अपना माल खर्च करता है, ऐसे व्यक्ति के लिए अल्लाह उस की पसन्द को आसान कर देता है। और जो व्यक्ति मुँह मोड़ता और बेपरवाई करता है ऐसे व्यक्ति को सीधे मार्ग पर चलने के लिए अल्लाह विवश नहीं करता, उस के लिए उस की अपनी पसन्द के मार्ग को ही आसान कर दिया जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-लैल
(मक्का में उतरी—'आयतें' २१)

THE NIGHT
Revealed at Mecca

سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى وَعِشْرُونَ آيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. क़सम है रात की जब कि छाई हुई हो

1. By the night enshrouding,

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ①

२. और दिन की जब कि चमक उठे

2. And the day resplendent.

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ②

३. और इस की कि उस ने पैदा किये स्त्री-जाति और पुरुष-जाति,

3. And Him Who hath created male and female,

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ③

४. निस्सन्देह तुम्हारी चेष्टा अलग-अलग है[1]।

4. Lo! your effort is dispersed (toward divers ends).

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ④

५. तो जिस किसी ने दिया और डर रक्खा

5. As for him who giveth and is dutiful (toward Allah)

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ⑤

६. और भली बात को सच माना;

6. And believeth in goodness;

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ⑥

७. तो हम उस के लिए आसानी (सुख-साध्य) को प्राप्त होना आसान कर देंगे[2]।

7. Surely We will ease his way unto the state of ease.

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ⑦

८. और जिस किसी ने कृपणता दिखाई और बेपरवाह रहा,

8. But as for him who hoardeth and deemeth himself independent,

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ⑧

९. और भली बात को झुठलाया;

9. And disbelieveth in goodness;

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ⑨

१०. तो हम उस के लिए कठिनाई (दुस्साध्य) को प्राप्त होना आसान कर देंगे।

10. Surely We will ease his way unto adversity.

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ⑩

११. उस का माल उस के काम न आयेगा जब वह गड्ढे में गिरेगा।

11. His riches will not save him when he perisheth.

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ⑪

१२. निस्सन्देह हमारे जिम्मे है मार्ग दिखाना

12. Lo! Ours it is (to give) the guidance.

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ⑫

१३. और हमारी ही है पिछली और पहली[3]।

13. And lo! unto Us belong the latter portion and the former.

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ⑬

१. ऊपर की 'आयतों' में क़सम के रूप में अल्लाह ने अपनी जिन निशानियों को पेश किया है उन से मालूम होता है कि अल्लाह परस्पर विरोधी चीज़ों के मेल से एक नतीजा ज़ाहिर करता है। मानव-लोक में भी अल्लाह का यह नियम काम कर रहा है। यहाँ भी विभिन्न प्रकार के लोग पाये जाते हैं जिन के रास्ते और जिन की चेष्टायें भिन्न हैं, इस भिन्नता से भी एक नतीजा ज़ाहिर होता है (दे० परिचय)।

२. मनुष्य अपनी इच्छा से जो मार्ग भी ग्रहण करता है चाहे वह भलाई का मार्ग हो या बुराई का, अल्लाह उसी को उस के लिए आसान और सुगम कर देता है। उस की समस्त प्राकृतिक शक्तियों और यथासम्भव बाह्य कारण-समूह को भी उस के अधीन कर देता है और वह राह उस के लिए आसान कर दी जाती है।

३. अर्थात् आरम्भ से अन्त तक सब-कुछ अल्लाह ही का है। सारा मामला उसी के हाथ में है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४. तो मैं ने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सचेत कर दिया है	14. Therefor have I warned you of the flaming Fire,	فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿١٤﴾
१५. बदनसीब ही होगा जो उस में पड़ेगा,	15. Which only the most wretched must endure,	لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٥﴾
१६. जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा।	16. He who denieth and turneth away.	الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٦﴾
१७. और उस से बचा लिया जायेगा बड़ा डर रखने वाला	17. Far removed from it will be the righteous.	وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾
१८. जो अपना माल देता है कि अपने को निखारे,	18. Who giveth his wealth that he may grow (in goodness),	الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾
१९. किसी का उस के सामने कोई एहसान नहीं है जिस का बदला दिया जा रहा हो,	19. And none hath with him any favour for reward,	وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿١٩﴾
२०. इस से बस अपने सर्वोच्च 'रब' की ख़ुशी हासिल करनी है।	20. Except as seeking (to fulfil) the purpose of his Lord Most High.	اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾
२१. और वह जल्द ही राज़ी हो जायेगा[४]।	21. He verily will be content.	وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

* * *

———

४. दे० सूरा अल-माइदा आयत ११९; अत-तौबा आयत १००; अल-मुजादला आयत २२; अल-बय्यिना आयत ८; सूरा अज़-ज़ुहा आयत ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९३—अज़-ज़ुहा
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अज़-ज़ुहा' सूरा की पहली आयत से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण होने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक 'सूरतों' में से है। आरम्भ में लोगों को वही आदेश दिये गये हैं जिन की उस समय आवश्यकता थी। रसूल को इस की शिक्षा दी गई है कि वह किस प्रकार अपने-आप को 'रिसालत' के महान् कार्य के लिए तैयार करे। इस के साथ वास्तविकता के बारे में बुनियादी बातों की शिक्षा दी गई है और उन भ्रान्तियों का निषेध किया गया है जो वास्तविकता (Reality) के बारे में लोगों में पाई जाती थी। और लोगों को आमन्त्रित किया गया है कि वे जीवन में वही नीति अपनायें जो उचित और वास्तविकता के अनुकूल हो। उन्हें नैतिकता के उन मूल नियमों का ज्ञान कराया गया है जिन के पालन करने में मानव का कल्याण है। आरम्भ काल में दिये गये दिव्य सन्देश वास्तव में छोटे-छोटे संक्षिप्त बोल हैं, जिन की भाषा अत्यन्त मधुर और साहित्यिक रंग लिये हुये है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' और इस से पहले की सूरा (अल-लैल) में 'ईमान' वालों के लिए शुभ-सूचनायें हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह के लिए ख़र्च करने का उल्लेख स्पष्ट रूप से हुआ है और आगे आने वाली सूरा में स्पष्ट रूप से 'नमाज़' का उल्लेख हुआ है। वास्तव में यही दोनों चीज़ें धर्म और दूसरी समस्त भलाइयों का मूल स्रोत हैं।

'नुबूवत' के आरम्भिक समय में कुछ दिनों के लिए 'वह्य' का सिलसिला बन्द हो गया था। नबी सल्ल० इस अवसर पर अत्यन्त उदास और विकल थे। विरोधी लोग कहने लगे कि मुहम्मद (सल्ल०) से उन का 'रब' विमुख हो गया। प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह ने आप (सल्ल०) को तसल्ली दी है कि आप का 'रब' आपको बेसहारा नहीं छोड़ सकता, 'काफ़िरों' की बातों पर आप दुःखी न हों। क़सम के रूप में रात और दिन की निशानियों का उल्लेख किया गया कि जिस प्रकार रात के पश्चात् दिन आता है उसी प्रकार 'नुबूवत' का सूर्य भी पूर्ण प्रकाश के साथ चमकेगा। तंगी दूर होगी आसानी आयेगी। प्रस्तुत सूरा उन लोगों के लिए आश्वासन है जो किसी बिगड़े हुये वातावरण में सत्य का प्रचार करते हों और उन्हें पग-पग पर मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हो।

इस सूरा में नबी सल्ल० को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आप (सल्ल०) की हर हालत अपनी पहली हालत से अच्छी होगी। इतिहास साक्षी है कि क़ुरआन की यह भविष्यवाणी पूरी होकर रही। नबी सल्ल० और आप के साथी जो आरम्भ में तरह-तरह के संकटों का सामना कर रहे थे अन्त में विजय उन्हीं को प्राप्त हुई। 'आख़िरत' में तो अल्लाह का वादा और अधिक पूरा हो कर रहने वाला है।

'सूरा' के अन्तिम भाग में अल्लाह ने अपने उन उपकारों का उल्लेख करते हुये जो उस की ओर से नबी सल्ल० पर हुये हैं कुछ मौलिक आदेश दिये हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अज़-ज़ुहा (मक्का में उतरी—'आयतें' ११)

THE MORNING HOURS
Revealed at Mecca

سورة الضحى مكية وهي احدى عشرة اية

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بسم الله الرحمن الرحيم

१. क़सम है दिन चढ़े की

1. By the morning hours,

وَالضُّحَىٰ ﴿١﴾

२. और रात की जब उस का सन्नाटा छा जाये,

2. And by the night when it is stillest,

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ﴿٢﴾

३. तुम्हारे 'रब' ने न तो तुम्हें छोड़ा ही है और न बेज़ार हुआ है[1]

3. Thy Lord hath not forsaken thee nor doth He hate thee.

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ﴿٣﴾

४. निश्चय ही बाद में आने वाली तुम्हारे लिए पहले वाली से उत्तम है[2],

4. And verily the latter portion will be better for thee than the former,

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ﴿٤﴾

५. जल्द ही तुम्हारा 'रब' तुम्हें देगा इतना कि तुम राज़ी हो जाओगे[3]।

5. And verily thy Lord will give unto thee so that thou will be content.

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ﴿٥﴾

६. क्या ऐसा नहीं कि उस ने तुम्हें यतीम पाया तो ठिकाना दिया ?

6. Did He not find thee an orphan and protect (thee)?

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ﴿٦﴾

७. और उस ने तुम्हें बेराह पाया तो राह दिखाई[4] ?

7. Did He not find thee wandering and direct (thee)?

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ﴿٧﴾

१. 'नुबूवत' के आरम्भिक समय में कुछ दिनों के लिए 'वह्य' का सिलसिला बन्द हो गया था। प्रारम्भिक 'आयतों' में आप को तसल्ली दी गई है कि आप के 'रब' ने आप को छोड़ा नहीं है। 'काफ़िरों' की बातों से आप दुःखी न हों। दिन के उजाले के पश्चात् रात का आना यदि अल्लाह् की अप्रसन्नता और रुष्टता का प्रमाण नहीं है तो 'वह्य' के कुछ दिन रुक जाने से यह कैसे समझ लिया गया कि अल्लाह् अपने 'रसूल' से रूठ गया है। रात छा जाने के बाद दिन आता है, इसी प्रकार थोड़े अन्तर (Interval) के पश्चात् 'नुबूवत' का सूर्य भी चमक उठेगा तंगी के बाद कुशादगी पैदा होगी। हमारा 'रब' हमें किसी समय नहीं भूलता वह कभी हमारी दुनिया में दिन लाता है ताकि हम दिन के प्रकाश में काम करें, और कभी वह रात लाता है ताकि रात्रि के शान्तिपूर्ण वातावरण में हमें आराम मिले। जब हमारा 'रब' जन-साधारण की ज़रूरतों का इतना ख्याल रखता है, तो फिर वह अपने 'रसूल' को कैसे बेसहारा छोड़ सकता है।

इस 'आयत' से ईसाइयों की इस धारणा का निषेध होता है कि अल्लाह् कभी-कभी अपने 'रसूलों' को छोड़ देता है (दे० Mark, १५ : ३४)।

२. अर्थात् आप (सल्ल०) के मामले को अल्लाह् ने विकासोन्मुख रक्खा है। आप (सल्ल०) की हर हालत अपनी पहली हालत से अच्छी होगी।

३. अर्थात् आगे आप (सल्ल०) पर अल्लाह् के ऐसे उपकार होने वाले हैं और आप (सल्ल०) को दुनिया और 'आख़िरत' में ऐसी नेमतें प्रदान की जायेंगी कि आप (सल्ल०) प्रसन्न हो जायेंगे।

४. आप (सल्ल०) यतीम थे अल्लाह् ने आप को ठिकाना दिया, इस का अर्थ यह नहीं होता कि कुछ दिन तक आप मारे-मारे फ़िरे हैं। बल्कि आशय यह है कि आप को यतीमी की हालत में जो ठिकाना मिला वह अल्लाह् ही की कृपा से मिला। इसी प्रकार आप को जो सच्चाई और सत्य मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ वह अपने-आप नहीं बल्कि अल्लाह् ही की ओर से प्राप्त हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. और उस ने तुम्हें निर्धन पाया तो धनवान् बना दिया ?	8. Did He not find thee destitute and enrich (thee)?	وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿٨﴾
९. तो जो यतीम (अनाथ) हो उस पर ज़ोर न दिखाना,[५]	9. Therefor the orphan oppress not,	فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾
१०. और जो माँगने वाला हो उसे झिड़कना मत	10. Therefor the beggar drive not away,	وَأَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾
११. और जो तुम्हारे 'रब' का एहसान है उस की चर्चा करना।	11. Therefor of the bounty of thy Lord be thy discourse.	وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

———

५. जिस तरह अल्लाह ने उस समय जब कि आप यतीम थे आप पर दया की है उसी प्रकार आप भी यतीमों और अनाथों के साथ अच्छा व्यवहार करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९४—अल-इनशिराह
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-इनशिराह' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। सूरा के विषय से इस नाम का गहरा सम्पर्क है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

प्रस्तुत 'सूरा' की गणना मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों में होती है, परन्तु सूरा की वार्त्ता से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूरा 'हिजरत' के पश्चात् अवतीर्ण हुई है। जब कि 'इस्लाम' को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त हो चुका था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' से इस से पहले की सूरा (अज़-ज़ुहा) के विषय पर प्रकाश पड़ता है। पिछली सूरा में जिन बातों का वादा किया गया था उन की पूर्ति का उल्लेख प्रस्तुत 'सूरा' में हुआ है। पिछली सूरा में नबी सल्ल० को यह सूचना दी गई थी कि आप (सल्ल०) की पिछली हालत पहली से अच्छी होगी। इस सूरा में बताया गया है कि अल्लाह ने आप (सल्ल०) को अपने मामले में सफलता प्रदान कर के आप के बोझ को हल्का कर दिया। आप की एक-एक कठिनाई और मुश्किल को आसान किया। एक समय था कि चारों ओर फैली हुई गुमराही के कारण आप घुटे जा रहे थे अल्लाह ने उस घुटन को दूर किया। आप को वह ज्ञान, विश्वास और प्रकाश प्रदान किया जिस के बिना सत्य-मार्ग पर दृढ़ता-पूर्वक चलना सम्भव न था। समस्त संकोचों और संशयों को दूर कर के आप के हृदय के लिए शीतलता और परितोष की सामग्री संचित कर दी गई। प्रत्येक अवसर पर अल्लाह ने आप की सहायता की और आप (सल्ल०) के बोझ को हल्का किया। विजय सत्य की हुई। आप का सम्पूर्ण जीवन इस बात का साक्षी है कि किस प्रकार अल्लाह ने कठिनाइयों और मुश्किलों में से आप (सल्ल०) के लिए आसानी पैदा की।

प्रस्तुत 'सूरा' में उन लोगों के लिए बड़ी शिक्षा है जो धर्म के मार्ग में कठिनाइयों और आपत्तियों का मुक़ाबला कर रहे हों। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि यदि वे अल्लाह के शुभ सन्देश को लोगों तक पहुँचाना और संसार को गुमराही के अन्धकार से निकालना चाहते हैं तो अल्लाह उन का अवश्य सहायक होगा। उस की सहायता उन्हें प्राप्त होगी और वे अपने ध्येय में सफल होंगे।

'सूरा' के अन्त में यह हुक्म दिया गया है कि जब अल्लाह की डाली हुई जिम्मेदारियों को पूरा करके कुछ फ़ुरसत मिले तो अल्लाह की याद और उस की 'इबादत' में लग जाना चाहिए। अल्लाह का स्मरण और उस की ओर रुख करना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य और अन्तिम अर्थ है। इस के अतिरिक्त अल्लाह की याद और उस के स्मरण से मनुष्य को वह शक्ति प्राप्त होती है जिस के बिना वह सत्य-मार्ग में पेश आने वाली कठिनाइयों और आज़माइशों का मुक़ाबला नहीं कर सकता। फिर अल्लाह की याद, 'नमाज़' और सब्र ऐसी चीज़ें हैं जिन से आदमी के अन्तःकरण की संकीर्णता दूर होती है और समस्त आन्तरिक बाधायें और रुकावटें दूर हो जाती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-इनशिराह
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ८)

SOLACE
Revealed at Mecca

سُورَةُ الانْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١

1. Have We not caused thy bosom to dilate,

१. क्या ऐसा नहीं कि हम ने तुम्हारा सीना खोल दिया,[१]

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢

2. And eased thee of the burden,

२. और तुम पर से तुम्हारा बोझ उतार दिया,[२]

الَّذِيْٓ أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣

3. Which weighed down thy back;

३. जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था;

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

4. And exalted thy fame.

४. और ऊँचा कर दिया तुम्हारा ज़िक्र[३] ?

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥

5. But Lo! with hardship goeth ease,

५. तो निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है;

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦

6. Lo! with hardship goeth ease:

६. निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है;[४]

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧

7. So when thou art relieved, still toil.

७. तो जब तुम फ़ुरसत पाओ, तो परिश्रम करो[५]

وَإِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

8. And strive to please thy Lord.

८. और अपने 'रब' की ओर लौ लगाओ[६]।

* * *

१. सत्य मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने के लिए जिस संकल्प और जिस सूझ-बूझ और ज्ञान की आवश्यकता थी वह सब-कुछ तुम्हें प्रदान की गई। वह अवस्था जिस की व्यंजना इस आयत में "सीना खोल देने" के शब्दों में की गई है वह अवस्था 'ईमान' की पूर्णता से प्राप्त होती है। 'ईमान' की पूर्णता से मनुष्य को सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। फिर उसे सत्य में वह आनन्द मिलने लगता है जिस का वर्णन शब्दों द्वारा सम्भव नहीं है। उस की आँखें खुल जाती हैं उस का सारा भय और संकोच दूर हो जाता है। उसे अपने 'रब' पर पूर्ण विश्वास और भरोसा हो जाता है। वह उसी का आश्रय लेता है और पूर्णरूप से सत्य पर जम जाता है।

२. अर्थात् लोगों की गुमराही से तुम अपनी दया-भावना और अनुकम्पा के कारण अत्यन्त दुःखी थे। तुम्हें चिन्ता थी कि भटके हुये और अपने 'रब' को भूले हुये लोग सीधे मार्ग पर कैसे आयेंगे, यह चिन्ता तुम्हारे लिए एक बड़ा बोझ थी जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रही थी। अल्लाह ने मार्ग-दर्शन के मामले को आसान किया। सत्य के प्रचार की राहें खुलीं, सत्य को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ, इस प्रकार अल्लाह ने तुम्हारे बोझ को हल्का कर दिया।

३. ज़िक्र ऊँचा करने का अर्थ यह है कि आप (सल्ल०) को दोनों लोक में सच्ची ख्याति प्रदान की। सदैव आप का नाम आदर के साथ लिया जायेगा। आप का सन्देश संसार के कोने-कोने में फैलेगा और आप का नाम ऊँचा होगा।

४. अतः मनुष्य को कठिनाइयों में अधीर और निराश नहीं होना चाहिए। तुम स्वयं अपने हाल पर विचार करो कि तुम्हें किन-किन मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ रही। वह कठिनाइयों में से तुम्हारे लिए आसानियाँ पैदा करता रहा। और तुम अपने महान् उद्देश्य में सफल हुये।

'सीना खुल जाना' जिस का पहली 'आयत' में उल्लेख हुआ है स्वयं आसानी की पहली मंज़िल है। जैसा कि हज़रत मूसा अ० की दुआ से इस पर प्रकाश पड़ता है। हज़रत मूसा अ० ने अपने 'रब' से दुआ की थी : 'रब'! मेरा सीना खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए सहज कर दे। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे (दे० सूरा ता० हा० आयत २४-२७)।

५. अर्थात् जब लोगों को समझाने-बुझाने और दूसरे सेवा-कार्य आदि जरूरी कामों से फ़ुरसत मिले, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने को अल्लाह की उपासना और 'इबादत' में लगाओ। और इस राह में जहाँ तक हो सके मेहनत और परिश्रम करो।

फिर अब जब कि तुम्हारा बोझ हल्का हो गया है, 'दीन' को प्रभुत्वपूर्ण अधिकार मिल गया है, तुम्हें ज़्यादा-से-ज़्यादा अल्लाह की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। दे० सूरा अल-नह्ल आयत ३।

६. अर्थात् एकाग्र-चित्त और मनोयोग के साथ अपने 'रब' से लौ और आस लगाओ। उस का ज्ञान और स्मरण ही जीवन की सच्चाई है। सब से महान् और अन्तिम कार्य यही है कि मनुष्य प्रेम-प्रेरित हो कर उस की ओर पलटे। उस का ज्ञान और ध्यान ही अपने जीवन की पूर्णता है। केवल तर्क द्वारा हम उसे नहीं जान सकते और अन्तर्ज्ञान की प्राप्ति प्रेम के बिना सम्भव नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९५–अत-तीन

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तीन' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरा मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों में से है।

अल्लाह लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का बदला देगा। 'क़ियामत' अवश्य आयेगी जब कि लोग अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला पायेंगे। यही प्रस्तुत 'सूरा का केन्द्रीय विषय है। इस की पुष्टि के लिए सूरा के आरम्भ में क़सम के रूप में चार प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं[1]। इन चारों प्रमाणों या गवाहियों से संकेत इतिहास की उन महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर है जिन से यह बात पूर्ण रूप से सिद्ध होती है कि अल्लाह लोगों को उन के कर्मों का बदला देता है।

इस से पहले की दो सूरतों में उन ज़िम्मेदारियों का उल्लेख हुआ है जो नबी सल्ल० पर डाली गई थीं। और उन उद्देश्यों का उल्लेख हुआ है जिन के लिए हज़रत इब्राहीम अ० ने अपनी औलाद को मक्का में आबाद किया था और यहाँ अल्लाह के घर काबा का निर्माण किया था। प्रस्तुत सूरा में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जो इस पवित्र नगर में प्रकट हुईं। इस वास्तविकता का उल्लेख स्पष्ट रूप से प्रस्तुत सूरा में हुआ है कि अल्लाह लोगों के बीच अदालत करता है। उन के बीच एक गरोह के बाद दूसरा गरोह खड़ा करता है और उसे अपनी अमानत सौंपता है। एक जाति यदि तिरस्कृत होती है तो दूसरी को श्रेष्ठता प्रदान की जाती है और यह सब-कुछ इस लिए होता है कि हर एक को उस का बदला मिल जाये।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' से हज़रत मुहम्मद सल्ल० की 'नुबूवत' की भी पुष्टि होती है। अल्लाह ने अपने नियम के अनुसार यहूद की सरकशी के कारण उन से अपनी अमानत छीन ली और उसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अनुयायियों को सौंप दिया और उन से अपनी बन्दगी का वादा लिया।

प्रस्तुत 'सूरा' से मालूम होता है कि मनुष्य जब स्वयं नीचे गिरना चाहता है तो अल्लाह भी उसे निकृष्टतम धरातल पर पहुँचा देता है। इस के बाद भी मनुष्य के लिए इस का अवसर शेष रहता है कि वह संभले और तौबा कर के उस गड्ढे से निकल आये जिस में वह स्वयं गिरा है। यदि वह अपने 'रब' की ओर पलटता है तो अल्लाह भी उसे अक्षय पुरस्कार प्रदान करेगा।

१. प्रमाण के रूप में 'सूरा' के आरम्भ में चार स्थानों का उल्लेख किया गया है जिन का सम्पर्क इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं से है। ये चारों स्थान क्रमशः ये हैं : तीन, ज़ैतून, तूर सीनीन और शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का)। इस सूरा के प्रारम्भिक भाग से 'तौरात' के एक स्थान का स्मरण होता है : "खुदावन्द सीना (तूर सीनीन) से आया और शईर (तीन) से उन पर प्रकट हुआ, फ़ारान के पर्वत (मक्का का पर्वत) से आलोकित हुआ और क़ुद्स की पहाड़ियों (ज़ैतून पर्वत) से आया। उस के दाहिने हाथ में उन के लिए अग्निमय धर्म-विधान (Fiery law) था" (दे० Deut, ३३ : २)। खुदावन्द के आने और प्रकट होने का अर्थ है उस की अदालत का ज़ाहिर होना। 'तौरात' के इस उल्लेख से भी नबी सल्ल० की 'नुबूवत' की पूर्ण रूप से तसदीक़ होती है। 'क़ुद्स की पहाड़ियों से आया' यह वाक्य 'तौरात' के अरबी अनुवाद में मिलता है। साधारणतः 'तौरात' के अनुवादों में इस के स्थान पर जो वाक्य मिलता है उस का अर्थ इस से भिन्न है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तीन
(मक्का में उतरी—'आयतें' ८)

THE FIG
Revealed at Mecca

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है तीन की और ज़ैतून की,

1. By the fig and the olive,

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۙ﴿١﴾

२. और तूर सीनीन की,

2. By Mount Sinai,

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۙ﴿٢﴾

३. और इस शान्तिपूर्ण (और भयरहित) भूमि की;[1]

3. And by this land made safe;

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۙ﴿٣﴾

१. 'तीन' से अभिप्रेत या तो जूदी पर्वत है या उस का निकटवर्ती कोई और पर्वत है। यहाँ तीन (इंजीर) की पैदावार अधिक थी। ज़ैतून वही पर्वत है जिस पर हज़रत मसीह अ० ने बार-बार प्रार्थनायें की हैं और जिस का उल्लेख इंजील में कई स्थानों पर हुआ है। 'तूर सीनीन' (तूर सीना) भी प्रसिद्ध स्थान है। तौरात में इसे कहीं 'सीना' कहा गया है और कहीं पर 'सीनीम' आया है। 'सीनीन' और 'सीनीम' वास्तव में बहु वचन का रूप हैं। 'शान्तिपूर्ण भूमि' से अभिप्रेत मक्का है। इन चारों स्थानों से (जिन की क़सम प्रस्तुत सूरा में खाई गई है) बदला दिये जाने की महत्वपूर्ण घटनाओं का सम्बन्ध है। इन घटनाओं से इस की पुष्टि होती है कि अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के अनुसार बदला देता है।

मौलाना फ़राही के विचार में 'तीन' वह पहला स्थान है जहाँ अल्लाह की ओर से प्रतिकार और दंड का मामला पेश आया है। हज़रत आदम अ० ने जब उस प्रतिज्ञा को भुला दिया जो उन्हों ने अपने 'रब' से की थी तो अल्लाह उनसे अप्रसन्न हुआ और 'जन्नत' का लिबास उन से छिन गया फिर जब उन्हों नें 'तौबा' की तो अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया और इस बात का वादा किया कि उन्हें मार्ग-दर्शन से सम्मानित किया जायेगा, जो लोग अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग पर चलेंगे उन्हें उन का 'रब' बदला प्रदान करेगा। तीन पर्वत के निकट दूसरी घटना हज़रत नूह अ० के समय में घटी। यही वह स्थान है जहाँ अल्लाह ने ज़ालिमों को तबाह किया और अपने नेक बन्दों को तूफ़ान के अज़ाब से बचा लिया। इन घटनाओं के अतिरिक्त इंजीर के वृक्ष से यों भी मनुष्य शिक्षा ग्रहण कर सकता है। हज़रत मसीह अ० ने भी इंजीर के वृक्ष की मिसाल बयान की है। पतझड़ में उस की जो दशा होती है उसे अपने प्रस्थान करने और अपने समुदाय के दुर्भाग्य के समय से उपमा दी है। दे० Mtt. २१ : १८, १९; Mark. ११ : ११-१९; Luke. १३ : ६-९। इंजीर के हरे-भरे होने की हालत को उन्हों ने अपने आगमन और अपने समुदाय के सौभाग्य और सफलता के समय से उपमा दी है। दे० Mtt. २४ : ३२-३३; Mark. १३ : २८-२९; Luke २१ : २९-३१।

ज़ैतून पर्वत पर अल्लाह ने 'यहूद' से अपनी 'शरीअत' (धर्म-विधान) छीन ली और यह अमानत हज़रत इबराहीम अ० के वंश की एक दूसरी शाखा को सौंपी। इस घटना का सम्पर्क हज़रत मसीह अ० के अन्तिम समय से है। यह वही घटना थी जिस की सूचना पहले दी जा चुकी थी : जिस पत्थर को राज लोगों ने रद्द (निरस्त) किया वही कोने का पत्थर हो गया। यह ख़ुदावन्द की ओर से हुआ और हमारी दृष्टि में आश्चर्यपूर्ण।" दे० ज़बूर (Ps. ११८ : २२-२३)। यहूद की सरकशी जब बहुत बढ़ गई तो हज़रत मसीह ने उन्हें मिसालें दे दे कर समझाया परन्तु वे मानने वाले कहाँ थे। आप ने कहा : "मैं तुम से सच कहता हूँ कि ख़ुदा की बादशाही (The kingdom of God) तुम से ले ली जायेगी और उस जाति को जो उस के फल लाये, दे दी जायेगी और जो इस पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा किन्तु जिस पर यह गिरेगा उसे पीस डालेगा। (मत्ता २१ : ४३-४४)"। यह आसमानी बादशाही छीनने की घटना ज़ैतून पर्वत पर घटी है, विस्तृत वर्णन के लिए दे० Luke. २२:३९-५२; Mark. १४ : ३३-४१; John. १२ : २३-३६; १६ : ५-१, २०-२१।

'तूर सीनीन' वह स्थान है जहाँ अल्लाह ने एक पीड़ित जाति ('बनी इसराईल') पर कृपा की, उसे ज़ालिम फ़िरऔनियों से छुटकारा दिलाया। उसे 'शरीअत' (धर्म-विधान) प्रदान की। उसे ऊँचा उठाया। दे० सूरा अल-आराफ़ आयत १३७; बाइबिल Deut. ७ : ७-१०।

'शान्तिपूर्ण भूमि' (मक्का) का सम्बन्ध भी विशेष घटना से है। हज़रत इबराहीम अ० की, वफ़ादारी के बदले में अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और उन्हें हज़रत इसहाक़ के पैदा होने की शुभ सूचना दी, और उन से दो बड़े वादे किये। एक वादा आप के बड़े लड़के हज़रत इस्माईल अ० की सन्तान से सम्बन्धित था और दूसरे वादे का सम्बन्ध हज़रत इसहाक़ की औलाद से था। वह वादा जो हज़रत इसहाक़ की औलाद से सम्बन्ध रखता था उस समय पूरा हुआ जब कि अल्लाह ने 'बनी इसराईल' की

(शेष अगले पृष्ठ पर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. निश्चय ही हम ने मनुष्य को अच्छी-से-अच्छी प्रकृति का बनाया[२]

4. Surely We created man of the best stature.

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ④

५. फिर उसे नीचे-से-नीचे गिराते चले गये,

5. Then We reduced him to the lowest of the low,

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ⑤

६. हाँ, परन्तु जो 'इमान' लाये और अनुकूल कर्म किये उन के लिए तो ऐसा बदला है जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा[३]।

6. Save those who believe and do good works, and theirs is a reward unfailing.

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ⑥

७. तो क्या है जो अब भी तुम्हें झुठलाये बदला दिये जाने के बारे में[४] ?

7. So who henceforth will give the lie to thee about the judgement?

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ⑦

८. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं ?

8. Is not Allah the most conclusive of all judges?

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ⑧

* * *

———

निरन्तर सरकशी के बाद भी अपनी नेमत इसहाक़ की सन्तान में बाक़ी रक्खी। हज़रत मूसा अ० जैसा रसूल उन में पैदा किया और तूर पर उन्हें किताब और 'शरीअत' प्रदान की। हज़रत इबराहीम अ० की नस्ल की इस शाखा से अपनी प्रदान की हुई नेमत उस समय छीनी जब उस ने हज़रत मसीह अ० को क़त्ल कर देने का निश्चय किया जो उस के पास शिक्षा और उपदेश का अन्तिम दिव्य सन्देश ले कर आये थे।

हज़रत इस्माईल अ० की सन्तान से सम्बन्धित जो वादा अल्लाह ने किया था उसे एक विशेष दिन के लिए उठा रक्खा था। अल्लाह का यह वादा मक्का में पूरा हुआ। हज़रत इस्माईल की सन्तान में अल्लाह ने अपना अन्तिम रसूल भेजा। और उस के साथ एक ऐसा गरोह उठाया जो अल्लाह की धरती में सत्य का गवाह हो। वह अमानत जो इस से पूर्व यहूद को सौंपी गई थी इस गरोह के हिस्से में आई। यह दुनिया में अल्लाह की अन्तिम अदालत थी। सम्पूर्ण संसार के लिये अल्लाह का अन्तिम 'रसूल' अल्लाह का अन्तिम सन्देश ले कर प्रकट हुआ। अल्लाह ने इस नबी के द्वारा 'दीन' को पूर्णता प्रदान की। और अपने आज्ञाकारी बन्दों पर अपनी नेमत पूरी कर दी। अब मनुष्य की सफलता केवल इसी में है कि वह सत्य के उस मार्ग को अपना ले जिस पर चलने की शिक्षा अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने दी है।

सारांश यह कि अल्लाह ने प्रस्तुत सूरा में जिन स्थानों का उल्लेख किया है उन स्थानों से जिन घटनाओं की ओर संकेत है उन से स्पष्ट रूप में यह सिद्ध होता है कि अल्लाह लोगों के साथ न्याय करता है। वह उन के कर्मों का बदला देता है।

२. "मनुष्य की अच्छी-से अच्छी प्रकृति का बनाने" का अर्थ यह है कि उस की वास्तविक प्रकृति को भलाई और सत्य-प्रियता के साँचे में ही ढाला गया है। बुराई से उस की वास्तविक प्रकृति का कोई जोड़ नहीं है। उसे अल्लाह ने भलाई और बुराई का ज्ञान प्रदान किया और स्वतन्त्र रक्खा कि जिस मार्ग को चाहे अपनाये। उस में इस प्रकार की अभिरुचि रक्खी कि यदि वह भलाई को अपने लिए पसन्द करे, तो उस की ओर बढ़ सके और यदि वह बुरे मार्ग को ही अपनाना चाहे तो उस मार्ग पर भी वह चल सके। इसी में मनुष्य की परीक्षा है। मनुष्य के लिए पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग भी यही है कि वह सिद्ध कर दिखाये कि वह ज्ञान, कर्म और पवित्रता का एक उत्तम प्राणी है। इस के लिए यह ज़रूरी था कि वह संकल्प और कर्म के विषय में स्वतन्त्र हो। वह अपनी स्वतन्त्र इच्छा से जिस मार्ग को चाहे अपनाये। यही कारण है कि मनुष्य से इस बात की प्रतिज्ञा तो अवश्य कराई गई कि वह एक अल्लाह ही की बन्दगी करे, परन्तु उसे इस के लिए विवश नहीं किया गया।

३. मालूम हुआ कि मनुष्य की तीन हालतें हैं। अल्लाह ने उसे उत्तम प्रकृति के साथ पैदा किया। उसे ज्ञान और कर्म और संकल्प की स्वतन्त्रता प्रदान की और उस से अपनी बन्दगी का वादा लिया। फिर यदि वह अपने वादे को भुला देता है तो इस का बुरा परिणाम उस के सामने आता है। जैसा कि हम देखते हैं कि जब आदम अ० से भूल हुई और वे उस प्रतिज्ञा को भूल बैठे जो उन्हों ने अपने 'रब' से की थी, तो इस का जो परिणाम होना चाहिए था वही हुआ। फिर जब हज़रत आदम अ० अपने 'रब' की ओर पलटे और 'तौबा' की तो अल्लाह ने उन की 'तौबा' क़बूल कर ली, उन्हें अल्लाह ने अपना बना लिया और उन्हें सम्मान और श्रेष्ठता का स्थान प्रदान किया। इस से मालूम हुआ कि गड्ढे में गिरने के बाद मनुष्य यदि सँभलना चाहे तो सँभल सकता है। यदि वह 'ईमान' ले आये और अच्छे कर्म करने लग जाये तो अल्लाह उसे ऐसा बदला प्रदान करेगा जो समाप्त न होगा।

४. इन प्रमाणों और गवाहियों के बाद कौन-सी चीज़ रह जाती है जिस से बदला दिये जाने का निषेध होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६—अल-अलक़

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-अलक़' सूरा की दूसरी 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अत्यन्त प्रारम्भिक समय में उतरी है बल्कि इस सूरा की प्रथम ५ 'आयत' क़ुरआन की वे 'आयतें' हैं जो नबी सल्ल० पर सब से पहले अवतीर्ण हुई हैं। नबी सल्ल० पर 'वह्य' का आरम्भ सच्चे स्वप्नों द्वारा हुआ। आप (सल्ल०) जो स्वप्न देखते वह तदनुरूप ज्यों-का-त्यों पूरा होता। फिर आप एकान्त में रहने लगे। मक्का नगर से बाहर पहाड़ की एक गुफा में जिस का नाम हिरा था चले जाते और कई-कई रातें वहीं गुज़ारते। खाने की सामग्री जब समाप्त हो जाती तो घर आ कर फिर ले जाते और वहीं अपनी समझ-बूझ के अनुसार अल्लाह की याद और ध्यान में अपना समय विताते। एक दिन अचानक वहाँ अल्लाह के भेजे हुये 'फ़िरिश्ते' हज़रत जिबरील अ० प्रकट हुये। उस समय इस सूरा की प्रारम्भिक पाँच आयतों का अवतरण हुआ। आयत पाँच से आगे की आयतें भी अत्यन्त प्रारम्भिक समय की हैं।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस'सूरा'से हमें क़ुरआन पढ़ने का आदेश मिलता है। इस सूरा से मालूम होता है कि मनुष्य की सृष्टि ही व्यर्थ होती यदि वह क़ुरआन जैसी नेमत पाने का अधिकारी न-होता। अल्लाह ने यदि उसे सृष्टि की दृष्टि से उत्तमता प्रदान की तो साथ ही उस ने मनुष्य के मार्ग-दर्शन का भी प्रबन्ध किया और उसे क़ुरआन जैसी किताब प्रदान की।

पिछली 'सूरा' (अत-तीन) और प्रस्तुत सूरा में गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरा में शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का) का उल्लेख हुआ है जो वास्तव में अल्लाह की याद, सहानुभूति और दया का स्थान है। 'काबा' का निर्माण इन्हीं उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ था। इस के अतिरिक्त यह शान्तिपूर्ण भूमि अल्लाह की अदालत का चिन्ह भी है जिस से इस बात की पुष्टि होती है कि अल्लाह अवश्य लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का बदला देगा। प्रस्तुत सूरा और इस के वाद की दो सूरतों में क़ुरआन और 'नमाज़' का उल्लेख हुआ है। 'नमाज' अल्लाह की याद के लिए है। 'काबा' का निर्माण जिन उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ है उन्हीं उद्देश्यों के अन्तर्गत क़ुरआन का अवतरण भी हुआ है (अल-बक़रा १२८-१२९; अन-नम्ल ९१-९२)। क़ुरआन में भी जहाँ 'नमाज़' की ताकीद की गई है और अल्लाह के स्मरण को जीवन की परम सम्पत्ति अर्थात् सुख, शान्ति और परितोष का कारण बताया गया है वहीं अल्लाह के हक़ के वाद हमारा कर्त्तव्य यह ठहराया गया है कि हम परस्पर एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रक्खें और आपस में एक-दूसरे के सहायक हों। प्रस्तुत सूरा में आयत १ से ८ तक वास्तव में भूमिका है उस वार्त्ता की जिस का उल्लेख आगे की'आयतों'में हुआ है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अलक़ **(मक्का में उतरी — 'आयतें' १९)**	**THE CLOT** *Revealed at Mecca*	سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. पढ़ो अपने 'रब' का नाम ले कर, जिस ने पैदा किया[1]	1. Read: In the name of thy Lord Who createth,	اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿١﴾
२. पैदा किया मनुष्य को एक लोथड़े से।[2]	2. Createth man from a clot.	خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾
३. पढ़ो, और तुम्हारा 'रब' बड़ा ही उदार है	3. Read: And thy Lord is the most Bounteous,	اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿٣﴾
४. जिस ने क़लम द्वारा ज्ञान दिया,[3]	4. Who teacheth by the pen,	الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾
५. ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज़ का जिसे वह नहीं जानता था।	5. Teacheth man that which he knew not.	عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾
६. कुछ नहीं, मनुष्य तो सरकशी करता है	6. Nay, but verily man is rebellious.	كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَىٰ ﴿٦﴾
७. इस से कि उस ने देखा कि वह पूर्णकाम हो गया[4] !	7. That he thinketh himself independent!	أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَىٰ ﴿٧﴾
८. निस्सन्देह तुम्हारे 'रब' की ओर पलट कर जाना है[5]।	8. Lo! unto thy Lord is the return.	إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ﴿٨﴾
९. देखते हो उसे जो रोकता है	9. Hast thou seen him who dissuadeth,	أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ﴿٩﴾
१०. एक बन्दे को जब वह 'नमाज़' पढ़ता है[6] ?	10. A slave when he prayeth?	عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ﴿١٠﴾
११. देखते हो यदि वह सीधे मार्ग पर होता	11. Hast thou seen if he (relieth) on the guidance (of Allah).	أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ﴿١١﴾

१. यदि मनुष्य को क़ुरआन प्रदान न किया जाता तो उस की सृष्टि ही व्यर्थ होती है। दे० आयत ५; सूरा अर-रहमान आयत १-४।

२. माँ के पेट में मनुष्य गर्भ की प्रारम्भिक अवस्था में केवल एक लोथड़ा-सा होता है फिर अल्लाह उसे हाथ-पाँव, रूप आदि प्रदान करता है।

३. इस में संकेत इस बात की ओर है कि अल्लाह ने मनुष्य को लिखने-पढ़ने का ज्ञान दिया। लेखनी द्वारा मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है, फिर क़लम के द्वारा ज्ञान का प्रचार भी होता है और रक्षा भी।

४. मनुष्य की बेपरवाही ही उसे सरकश और ज़ालिम बनाती है। यदि उसे अपनी मुहताजी का एहसास हो और यह बात उस के सामने हो कि उसे एक दिन अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है तो फिर वह कभी सरकश नहीं हो सकता।

५. 'सूरा' के आरम्भ से यहाँ तक वास्तव में प्रस्तावना है उस आदेश की जो 'नमाज़' के बारे में आगे दिया गया है और उस व्यक्ति को मूर्ख और नीच ठहराने की जो 'नमाज़' का विरोधी हो।

६. विचार करने से मालूम होता है कि यह संकेत अबू लहब की ओर है जो 'काफ़िरों' का नेता था (दे० सूरा अल-लहब)। साधारणतः लोगों का विचार है कि 'नमाज़' से रोकने वाले व्यक्ति से संकेत अबू जह्ल की ओर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२. या (अल्लाह से) डर कर रहने को कहता…! ७

12. Or enjoineth piety?

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾

१३. देखते हो यदि वह झुठलाता और मुँह मोड़ता है

13. Hast thou seen if he denieth (Allah's guidance) and is forward?

أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾

१४. क्या उस ने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है ?

14. Is he then unaware that Allah seeth?

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾

१५. कुछ नहीं, यदि वह (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो हम चोटी पकड़ कर घसीटेंगे—

15. Nay, but if he cease not, We will seize him by the forelock—

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾

१६. झूठी, और ख़ताकार चोटी

16. The lying, sinful forelock—

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾

१७. तो बुला ले वह अपनी सभा !

17. Then let him call upon his henchmen!

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ﴿١٧﴾

१८. हम बुलाते हैं 'ज़बानिया'८ को ।

18. We will call the guards of hell.

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

१९. कुछ नहीं, तुम उस का कहना न मानो । और 'सजदा' करो, और पास पहुँचो ।

19. Nay! Obey not thou him. But prostrate thyself, and draw near (unto Allah).

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ﴿١٩﴾

* * *

———

७. अर्थात् यदि वह सच्चाई को अपना लेता और 'नमाज़' से रोकने के बजाय लोगों को अल्लाह के आदेशों का पालन करने और उस की अवज्ञा से बचने को कहता तो क्या ही अच्छा होता ।

८. 'ज़बानिया' का अर्थ पुलिस (Police) शब्द के अर्थ से मिलता-जुलता है । 'ज़बानिया' से अभिप्रेत वे 'फ़िरिश्ते' हैं जो अल्लाह के हुक्म से सरकशों को पकड़ कर ले जायेंगे और सज़ा देंगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७–अल-क़द्र
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-क़द्र' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों में से है।

सूरा अत-तीन में शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का) का उल्लेख हुआ है। उस के बाद निरन्तर तीन सूरतों—अल-अलक़, प्रस्तुत सूरा और इस के बाद आने वाली सूरा—में क़ुरआन का उल्लेख किया गया है। 'काबा' से क़ुरआन का जो सम्बन्ध है वह विदित है। जिस ध्येय से 'काबा' का निर्माण हुआ है ठीक उसी ध्येय के अन्तर्गत अल्लाह ने क़ुरआन उतारा है। इस प्रकार इन सूरतों में गहरा सम्पर्क पाया जाता है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' में बताया गया है कि क़ुरआन 'क़द्र' वाली रात में उतरा है। यह एक शुभ रात है जिस में क़ुरआन उतरना आरम्भ हुआ। यह ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से उत्तम है। इस दिव्य रात्रि का उल्लेख कर के अल्लाह ने हमारे समक्ष ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया है जिस से क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने और नबी सल्ल० के सच्चे 'रसूल' होने की पुष्टि होती है। 'क़द्र' वाली रात के उल्लेख सें मालूम हुआ कि अल्लाह बन्दों के मामलों की तदबीर करता और 'फ़िरिश्तों' और रूह को भेजता है तो फिर यदि उस ने लोगों की भलाई और मामलों का फ़ैसला करने के लिए अपनी 'किताब' उतारी और अपना नबी भेजा तो यह कौन-सी आश्चर्य की बात है।

'क़द्र' वाली रात शान्ति और सलामती की रात है। इस रात में मनुष्य की प्रकृति इस के लिए पूर्णतः तैयार होती है कि वह अलौकिक एवं दिव्य प्रकाश को ग्रहण कर सके। उन व्यक्तियों पर 'फ़िरिश्तों' और रूह का अवतरण होता है जो ग़ाफ़िल नहीं होते बल्कि अल्लाह के आगे पूर्ण रूप से झुके होते हैं। 'फ़िरिश्तों' के अवतरण के लिए ज़रूरी नहीं कि आदमी उन्हें अपनी आँखों से उतरते देखे बल्कि जिसे 'फ़िरिश्ते' स्पर्श करते हैं उसका हृदय अत्यन्त कोमल और नम्र हो जाता है और उस की आँखें आँसू बहाने लगती हैं। 'ईमान' वालों के लिए सब से बड़ा सौभाग्य यह है कि वे इन शुभ घड़ियों में अल्लाह की इबादत में लगे हों। इस रात में शान्ति और दया-कृपा की वर्षा होती रहती है यहाँ तक कि उषा काल का उदय हो जाता है।

—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-क़द्र
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५)

POWER
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हम ने इसे[1] क़द्र वाली रात में उतारा है।[2]

1. Lo! We revealed it on the Night of Power.

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①

२. और तुम्हें क्या मालूम कि क़द्र वाली रात क्या है!

2. Ah, what will convey unto thee what the Night of Power is!

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ②

३. क़द्र वाली रात उत्तम है हज़ार महीनों से।

3. The Night of Power is better than a thousand months.

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ③

४. उस में 'फ़िरिश्ते' और रूह[3] अपने 'रब' की अनुज्ञा से उतर रहे होते हैं, प्रत्येक कार्य के सम्बन्ध से[4]।

4. The angels and the Spirit descend therein, by the permission of their Lord, with all decrees.

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ④

५. सलामती-ही-सलामती है वह उषा-काल के उदय होने तक।

5. (That night is) Peace until the rising of the dawn.

سَلٰمٌ ۛ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑤

* * *

———

१. अर्थात् 'क़ुरआन' को।

२. अर्थात् 'क़ुरआन' का अवतरण एक शुभ और दिव्य रात्रि में हुआ है। इस रात का बड़ा महत्व है। यह वह रात है जिसमें उन बातों का फ़ैसला होता है जो ज्ञान और 'हिकमत' पर अवलम्बित होती हैं और जिन में दुनिया की भलाई होती है। दुनिया के मामलों का फ़ैसला इसी रात में होता है (दे० आयत ४; सूरा अद-दुख़ान आयत ३-५)। इसी रात में वह महान् ग्रन्थ उतरना आरम्भ हुआ जो अरब ही के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण संसार के लिए कल्याणकारी और दिव्य ज्योति है। जिस के द्वारा संसार के सभी लोग अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। जिस के मानने से इन्कार करना इतना बड़ा अपराध है जो किसी प्रकार क्षमा नहीं हो सकता। क़ुरआन का इन्कार वास्तव में अल्लाह की 'हिकमत' का इन्कार है, उस महान् उद्देश्य का इन्कार है जिस के अन्तर्गत इस जगत की सृष्टि हुई है।

वह रात जिस में क़ुरआन उतरा है साधारण रात नहीं है। यह रात तो हज़ार महीनों से उत्तम है। कभी हज़ार महीनों में भी मानव-कल्याण के लिए वह काम नहीं हुआ जो इस एक रात में हुआ। इस दिव्य रात्रि का उल्लेख इस लिए किया गया ताकि लोग भली-भाँति समझ लें कि अल्लाह लोगों के मामलों की तदबीर करता है, इस के लिए अपने 'फ़िरिश्तों' और रूह को भेजता है। फिर यदि उस ने 'रसूल' भेजा और अपनी किताब उतारी तो इस में आश्चर्य की कौन-सी बात है।

३. 'रूह' से संकेत हज़रत जिबरील अ० की ओर है, यह भी सम्भव है कि इस से अभिप्रेत हज़रत जिबरील अ० के अतिरिक्त कोई और भी हो।

४. दे० सूरा अद-दुख़ान आयत ३-५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८—अल-बय्यिना
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-बय्यिना' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' कब अवतीर्ण हुई ? इस के बारे में विद्वानों के बीच मत-भेद है। कुछ लोगों के विचार में यह 'सूरा' मक्का के अन्तिम काल में उतरी है। कुछ लोगों के विचार में यह सूरा 'हिजरत' के पश्चात् मदीना में अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' उन लोगों के जवाब में है जिन की माँग यह थी कि एक 'किताब' प्रत्यक्ष रूप से आकाश से उतरे जिसे वे अपनी आँखों से देख और पढ़ सकें, यह ऐसी 'किताब' हो जो मनुष्य के अपने हाथ की लिखी हुई न हो। वे कहते थे कि यदि ऐसी किताब आ गई तो हम अवश्य मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का 'रसूल' मान लेंगे। नबी सल्ल० से यह माँग जिन लोगों की ओर से की जा रही थी वे वही लोग थे जिन्हों ने 'कुफ़्' की नीति अपना रक्खी थी। उन में 'मुश्रिक' भी थे और वे लोग भी जिन्हें इस से पहले अल्लाह की ओर से 'किताब' मिल चुकी थी। इन को उत्तर देते हुये इस सूरा में कहा गया है कि इस से पहले प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की 'किताब' उन्हें मिल चुकी है। 'तौरात' लिखित रूप में ही प्रदान की गई थी फिर आखिर क्यों 'बनी इसराईल' सीधे मार्ग से विचलित हुये। इस से मालूम हुआ कि सत्य को पाने के लिए मनुष्य को स्वयं अल्लाह के नबी की शिक्षाओं और उस के जीवन-चरित्र आदि पर विचार करना चाहिए।

'किताब' वालों को अल्लाह ने अपनी निशानी दिखाई थी उन्हें लिखित रूप में 'तौरात' प्रदान हुई थी फिर भी वे अपनी सरकशी के कारण गरोहों में बँट गये। हालाँकि उन्हें ऐसी चीज़ का आदेश मिला था जो उन्हें जोड़ने वाली थी। उन्हें 'तौहीद' की शिक्षा दी गई थी और इस बात का हुक्म उन्हें मिला था कि 'नमाज़' क़ायम करें और ज़कात देते रहें। 'नमाज़' और 'ज़कात' सत्य-धर्म का मूल आधार हैं और दोनों तौहीद की ही शाखायें हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' में खोल कर बता दिया गया है कि सब से बुरे वही हैं जिन्हों ने 'कुफ़्' की राह अपनाई, चाहे वे 'किताब' वालों में से हों या 'मुश्रिकों' में से हों। इन का ठिकाना 'जहन्नम' है जिस की आग में ये सदैव जलते रहेंगे। अल्लाह की दृष्टि में सब से अच्छे वे लोग हैं जिन्हों ने 'कुफ़्' को नीति नहीं अपनाई बल्कि 'ईमान' लाये, 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) को अपना धर्म बनाया और अपने जीवन में अच्छे काम किये। न अल्लाह के हक़ को भुलाया और न उस के बन्दों का हक़ मारा। 'नमाज़' भी क़ायम की और 'ज़कात' भी देते रहे। अल्लाह इन से राज़ी है और ये भी अपने 'रब' से राज़ी हैं। इन का ठिकाना 'जन्नत' है जहाँ ये सदैव सुख और आनन्द में रहेंगे इस लिए कि ये दुनिया में बेपरवाह हो कर नहीं रहे बल्कि अपने 'रब' से डरते रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-बय्यिना
(मदीना में उतरी—'आयतें' ८)

THE CLEAR PROOF
Revealed at al-Madinah

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِي آيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१ जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है 'किताब' वालों और 'मुशिरकों' में से वे तो बाज़ आते नहीं जब तक कि उन के पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाये,[१]

1. Those who disbelieve among the people of the Scripture and the idolaters could not have left off (erring) till the clear proof came unto them,

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى
تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①

२. अल्लाह का एक 'रसूल' हो जो पवित्र 'सहीफ़ों' को पढ़ कर सुनाये

2. A messenger from Allah, reading purified pages:

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ②

३. जिन में ठोस और सिद्ध आदेश लिखे हों[२]।

3. Containing correct scriptures.

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③

४. और जिन लोगों को 'किताब' दी गई थी उन में जो फूट पड़ी है वह उन के पास स्पष्ट प्रमाण आ जाने के बाद ही तो पड़ी है[३]।

4. Nor were the People of the Scripture divided until after the clear proof came unto them.

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ④

५. और उन्हें हुक्म इसी का तो दिया गया था कि अल्लाह की 'इबादत' करें, 'दीन' को उसी के लिए ख़ालिस कर के, एकाग्र हो कर, और 'नमाज़' क़ायम करें, और 'ज़कात' दिया करें[४]। और यह है ठोस और सिद्ध वाला दीन[५]।

5. And they are ordered naught else than to serve Allah, keeping religion pure for Him, as men by nature upright, and to establish worship and to pay the poor-due. That is true religion.

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ⑤

६. निस्सन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया है 'किताब' वालों और 'मुशिरकों' में से वे 'जहन्नम' की आग में होंगे। जहाँ वे सदा रहेंगे। यही लोग दुष्टतम जन हैं।

6. Lo! those who disbelieve, among the people of the Scripture and the idolaters, will abide in fire of hell. They are the worth of created beings.

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ⑥

१. यहाँ 'मुशिरकों' और 'किताब' वालों की उस नीति की ओर संकेत है जो उन्हों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध अपना रक्खी थी। वे कहते थे कि हम तो आप को अल्लाह का भेजा हुआ 'रसूल' नहीं मान सकते जब तक आप आकाश से हमारे लिए ऐसी 'किताब' न उतार लायें जिसे हम स्वयं पढ़ सकें। दे० सूरा अन-निसा आयत १५३; बनी इसराईल आयत ९३; अल-मुद्दस्सिर आयत ५२)।

२. अर्थात् अल्लाह की ओर से कोई 'रसूल' ऐसी किताब ले कर आये जो मनुष्य के हाथ की लिखी हुई न हो। जो आकाश से लिखी-लिखाई उतरी हो। वह उस 'किताब' को पढ़ कर सुनाये और उस में ठोस आदेश हों जिन के बारे में कोई संकोच न हो। जब तक ऐसा नहीं हो जाता हम नहीं मान सकते।

३. मतलब यह है कि यदि 'ईमान' लाने के लिए यह ज़रूरी है कि खुली हुई दलील सामने आ जाये तो आख़िर अल्लाह की ओर से लिखित रूप में 'तौरात' पाने के बाद लोगों ने 'कुफ़्र' की नीति क्यों अपनाई। 'तौहीद' को छोड़ कर वे 'कुफ़्र' में क्यों पड़े। अल्लाह की खुली निशानी देख लेने के बाद भी उन्हों ने क्यों सरकशी की और विभिन्न टोलियों में बँट गये।

४. अर्थात् उन्हें ऐसी चीज़ का हुक्म दिया गया था जो उन्हें परस्पर जोड़े रखने वाली थी। परन्तु जब वे कज हुये तो अल्लाह ने भी उन के दिलों को टेढ़ा कर दिया (दे० सूरा अस-सफ़्फ़ आयत ५)।

५. 'दीन' और धर्म का सारांश यही है कि मनुष्य केवल एक अल्लाह की 'इबादत' और बन्दगी में लग जाये और उस के बन्दों का हक़ पहचाने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. निस्सन्देह जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये[६] वही लोग सर्वश्रेष्ठ जन हैं।

८. उन का बदला उन के 'रब' के यहाँ सदा-बहार बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे सदैव अनन्त तक रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी और वे उस से राज़ी। यह उस के लिए है जो अपने 'रब' से डरे।

———

7. (And) lo! those who believe and do good works are the best of created beings.

8. Their reward is with their Lord: Gardens of Eden underneath which rivers flow, wherein they dwell for ever. Allah hath pleasure in them and they have pleasure in Him. This is (in store) for him who feareth his Lord.

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾
جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ
ع ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ﴿٨﴾

६. ऊपर 'आयत' ५ में 'तौहीद' और 'नमाज़' और 'ज़कात' का उल्लेख हुआ है। इस आयत में 'ईमान' से तौहीद की ओर संकेत है और 'नमाज़' और 'ज़कात' की अभिव्यञ्जना 'भले काम' के शब्दों से की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९-अज़्-ज़िलज़ाल
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम अज़्-ज़िलज़ाल' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' से ले कर सूरा अल-क़ारिआ तक वास्तव में मनुष्य को मिलने वाले उस बदले का वर्णन है जिस का उल्लेख सूरा अल-बय्यिना में हुआ है। इस के अतिरिक्त इन सूरतों में इस का उल्लेख भी हुआ है कि 'क़ियामत' के दिन अल्लाह का क्या आदेश होगा। और धरती पर क्या बातें पेश आने वाली हैं।

'नुबूवत' के आरम्भ काल में नबी सल्ल० लोगों को 'इस्लाम' की मौलिक शिक्षाओं की ओर बुलाते रहे हैं। 'आख़िरत' पर 'ईमान' लाने का आदेश इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं में से है। अल्लाह पर विश्वास करने का वास्तव में कोई अर्थ नहीं है जब तक कि मनुष्य क़ियामत और आख़िरत पर 'ईमान' न लाये। यही करण है कि क़ुरआन का शायद ही कोई ऐसा पृष्ठ हो जिस में किसी-न-किसी रूप में 'आख़िरत' का उल्लेख न हुआ हो। कुछ स्थानों पर तो 'क़ियामत' और 'आख़िरत' का चित्रण इस प्रक़ार किया गया है कि थोड़ी देर के लिए मनुष्य अपने को 'आख़िरत' के लोक में पहुँचा हुआ अनुभव करने लगता है। जब तक मनुष्य के हृदय में यह बात अच्छी तरह बैठ न जाये कि यह दुनिया सदैव रहने वाली नहीं है। एक दिन ऐसा आयेगा कि संसार की वर्त्तमान व्यवस्था बिगाड़ दी जायेगी और फिर नये सिरे से संसार का निर्माण होगा। लोगों को जीवित कर के उठाया जायेगा। उन्हें उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

'क़ियामत' क़िस प्रकार आयेगी ? इस का भयप्रद दृश्य क़ुरआन के विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत सूरा में भी उस का एक दृश्य हमारे सामनें आता है। कितनें भय का समय होगा। धरती हिला डाली जायेगी। धरती उन बातों को जो दुनिया में गुज़री होंगी, बतायेगी। प्रत्येक व्यक्ति के भले-बुरे कर्मों का परिणाम उस के सामने होगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अज़-ज़िलज़ाल
(मक्का में उतरी—'आयतें' ८)

THE EARTHQUAKE
Revealed at Mecca

سُورَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
१. जब हिला डाली जायेगी धरती जैसा उसे हिलाया जाना है[1]	1. When Earth is shaken with her (final) earthquake.	إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾
२. और बाहर डाल देगी धरती अपने बोझ,[2]	2. And Earth yieldeth up her burdens,	وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾
३. और मनुष्य कहेगा : इसे क्या हो गया !	3. And man saith: What aileth her?	وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾
४. उस दिन बयान करेगी वह अपने समचार,[3]	4. That day she will relate her chronicles,	يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾
५. क्यों कि तुम्हारे रब्ब ने उसे इस की प्रेरणा दी होगी।	5. Because thy Lord inspireth her	بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾
६. उस दिन लोग निकल-निकल कर अलग-अलग जा रहे होंगे कि उन्हें उन के कर्म दिखाये जायें[4]।	6. That day mankind will issue forth in scattered groups to be shown their deeds.	يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾
७. तो जो कण-भर भी कोई भलाई करेगा वह उसे देख लेगा,	7. And whoso doth good an atom's weight will see it then,	فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ﴿٧﴾
८. और जो कण-भर भी कोई बुराई करेगा वह उसे देख लेगा[5]।	8. And whoso doth ill an atom's weight will see it then.	وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ﴿٨﴾ ع

———

१. दे० सूरा अल-हज्ज आयत १।
२. दे० सूरा अल-इनशिक़ाक़ आयत ३-४।
३. अर्थात् मनुष्य ने जो-कुछ उस की पीठ पर किया होगा वह सब बयान करेगी। इस से मालूम हुआ कि मनुष्य जो-कुछ भला-बुरा ज़मीन पर कर रहा है वह ज़मीन में रिकार्ड होता जा रहा है।
४. अर्थात् लोग अपनी क़बरों और समाधियों आदि से प्रलय-क्षेत्र में लाये जायेंगे। फिर उनका किया-धरा उन के सामने आ जायेगा। अपने सांसारिक जीवन में जिस ने जैसा-कुछ किया होगा उस का नतीजा उन के सामने आ जायेगा। लोग अपने कर्म के अनुसार विभिन्न गरोहों में बंटे हुये होंगे।
५. अल्लाह से मनुष्य का कोई काम भी छिपा हुआ नहीं है चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। मनुष्य ने यदि कण-भर भी भलाई की होगी तो वह उस के सामने आ जायेगी। यह और बात है कि उस ने कोई बड़ी बुराई कर के उस भलाई को खो दिया हो। इसी प्रकार छोटी-से-छोटी बुराई भी उस के सामने आ जायेगी, यह और बात है कि अल्लाह उसे क्षमा कर दे या मनुष्य के भले कामों के कारण उस की वह बुराई धुल गई हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१००—अल-आदियात

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-आदियात' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' और आगे आने वाली सूरा में मनुष्य को मिलने वाले उस बदले का उल्लेख है जिसका वर्णन सूरा अल-बय्यिना में हुआ है। इस के अतिरिक्त इस का उल्लेख भी इन सूरतों में हुआ है कि 'क़ियामत' में अल्लाह का क्या आदेश होगा और धरती पर क्या बातें पेश आने वाली हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' के आरम्भ में अल्लाह ने घोड़ों की मिसाल में पेश कर के यह बात सिद्ध की है कि किस प्रकार घोड़े अपने मालिक के वफ़ादार होते हैं। वे मनुष्य को अपनी पीठ पर सवार कर के तेज़ी से दौड़ते हैं। पथरीली भूमि पर इस प्रकार टाप मारते हैं कि चिनगारियाँ उड़ने लगती हैं। प्रातः समय शत्रु की सेना पर जा टूटते हैं[1]। इस के मुक़ाबले में मनुष्य का हाल यह है कि वह धरती में अपने 'रब' को भूल जाता है। उस की बन्दगी और 'इबादत' से ग़ाफ़िल रहता है। हालाँकि उस पर उस के 'रब' ने अगणित उपकार किये हैं। माल के मोह में मनुष्य पीछे नहीं रहता। अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करता और न ग़रीबों और दुखियों की सहायता करता है। परन्तु उसे जान लेना चाहिए कि एक दिन अवश्य आयेगा जब कि सब लोगों को दोबारा जीवित किया जायेगा। यह वह दिन होगा जब कि दिलों तक के भेद खुल जायेंगे। उस दिन मनुष्य अपने 'रब' से कोई बात न छुपा सकेगा। प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन उस के अच्छे-बुरे कर्मों का बदला मिल जायेगा।

---

१. युद्ध के अवसर पर अरब के लोग रात में घरों से निकलते और सफ़र करते थे। और सवेरे झुटपुट में ही दुश्मन पर धावा बोल देते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-आदियात
(मक्का में उतरी — 'आयतें' ११)

THE COURSERS
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है उन की जो हिंकरते हुये दौड़ते होते हैं,

1. By the snorting coursers,

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ ١

२. फिर आग झाड़ते होते हैं।

2. Striking sparks of fire,

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ ٢

३. फिर प्रातःकाल छापा मारते होते हैं,

3. And scouring to the raid at dawn,

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ ٣

४. वहाँ धूल उड़ाते हैं,

4. Then therewith, with their trail of dust,

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ ٤

५. फिर वहाँ दल में जा घुसते हैं।[1]

5. Cleaving, as one, the centre (of the foe),

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ ٥

६. निस्सन्देह मनुष्य अपने 'रब' के लिए बड़ा ही निकम्मा है

6. Lo! man is an ingrate unto his Lord.

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ ٦

७. और वह इस का साक्षी है,[2]

7. And lo! he is a witness unto that;

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ ٧

८. और वह धन के मोह के लिए बड़ा ही प्रबल है[3]।

8. And lo! in the love of wealth he is violent.

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ ٨

९. तो क्या वह जानता नहीं, जब उगलवा दिया जायेगा जो-कुछ क़ब्रों में है

9. Knoweth he not that, when the contents of the graves are poured forth:

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ ٩

१०. और अर्जित कर लिया जायेगा जो-कुछ सीनों (दिलों) में है[4]

10. And the secrets of the breasts are made known:

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ ١٠

११. निस्सन्देह उन का 'रब' उस दिन उन कि पूरी ख़बर रखता होगा[5]।

11. On that day will their Lord be perfectly informed concerning them.

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ١١

१. आयत १ से ले कर आयत ५ तक घोड़ों की क़सम खा कर मनुष्य के निकम्मेपन का उल्लेख किया गया है। घोड़ों की क़सम खाने का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं है कि अल्लाह ने उन्हें उन की विशेषताओं के कारण गवाही में पेश किया है। घोड़े अपने मालिक के इशारे पर सरपट दौड़ते हैं। जब वे पथरीली ज़मीन पर से गुज़रते हैं तो उन की टापों से चिनगारियां उड़ती हैं। यही घोड़े हैं जिन की मदद से मनुष्य प्रातः समय दुश्मनों पर छापा मारता है। और वे धूल उड़ाते हुये दुश्मन के दल में जा घुसते हैं। यह तो है घोड़ों की वफ़ादारी का हाल, दूसरी तरफ़ मनुष्य को देखिए जिस पर उस के 'रब' के इतने उपकार हैं कि उन की गणना भी नहीं की जा सकती, फिर भी वह उस की बन्दगी का हक़ अदा नहीं करता।

२. ऊपर की 'आयतों' में घोड़े की वफ़ादारी और अपने मालिक के इशारों पर उस के जान तक की बाज़ी लगा देने का उल्लेख हुआ है। घोड़ों की विशेषताओं और उन की वफ़ादारी को पेश करके इस 'आयत' में मनुष्य के निकम्मेपन का उल्लेख किया गया है। घोड़ा जानवर होते हुये भी अपने मालिक का वफ़ादार है परन्तु मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करता।

३. घोड़ों का हाल यह है कि लड़ाई के नतीजे में जो-कुछ धन प्राप्त होता है वह सब अपने मालिक के लिए छोड़ देते हैं। अपने स्वामी की सेवा ही उन के जीवन का ध्येय होता है; इस के विपरीत मनुष्य का हाल यह है कि वह अपने 'रब' के लिए तो निकम्मा है परन्तु धन के मोह में प्रबल है। वह धन का पुजारी बन जाता है और अपने 'रब' को भूल जाता है। वह कृपणता से काम लेता है और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करता।

४. अर्थात् मनुष्य यह न समझ ले कि यह जीवन केवल आनन्द लेने के लिए है फिर आगे कुछ न होगा। एक दिन अवश्य सब को अपनी क़ब्रों से उठना है। 'क़ियामत' में प्रत्येक व्यक्ति जीवित किया जायेगा। उस दिन दिलों की बातें सामने लाई जायेंगी। सारे भेद खोल दिये जायेंगे। अल्लाह से कोई बात छुपी न होगी।

५. वह हर एक को उस के किये का बदला प्रदान करेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१–अल-क़ारिआ
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-क़ारिआ' सूरा की प्रारम्भिक 'आयतों' से लिया गया है। इस नाम का सूरा के विषय से विशेष सम्पर्क है जैसा कि 'सूरा' के अध्ययन से मालूम होता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' और इस से पहले की दो 'सूरतों' (सूरा अज़-ज़िलज़ाल और अल-आदियात) में बड़ी समानता पाई जाती है। इन 'सूरतों' में एक ओर उस बदले का वर्णन है जो मनुष्य को 'क़ियामत' में मिलने वाला है दूसरी ओर 'क़ियामत' में धरती पर जो-कुछ पेश आने वाला है उस पर प्रकाश डाला गया है।

सूरा अल-आदियात के आरम्भ में घोड़ों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण का उल्लेख हुआ है। इस आक्रमण के नतीजे में एक छोटी-सी 'क़ियामत' खड़ी हो जाती है। घोड़े अपनी ठोकरों से चिनगारियाँ उड़ाते, ग़ुबार उठाते हुये दुश्मन की फ़ौज में जा घुसते हैं। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप एक गरोह की विजय होती है और दूसरा गरोह पराजित होता है। प्रस्तुत सूरा (अल-क़ारिआ) में एक वास्तविक 'क़ियामत' (प्रलय) का चित्रण किया गया है, जिसे हम एक प्रकार के आक्रमण से उपमा दे सकते हैं जब कि पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण हो कर उड़ेंगे। फिर लोग जीवित हो कर उठेंगे। कुछ लोगों के लिए वह सफलता का दिन होगा और कुछ लोगों के लिए वह दिन तबाही ले कर आया होगा।

'क़ियामत' की भयंकरता और 'आख़िरत' के परिणाम का क़ुरआन में बार-बार उल्लेख किया गया है ताकि मनुष्य इस बात को कभी भूले नहीं कि यह दुनिया जिस में वह रहता-बसता है सदैव रहने वाली नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन का अन्त हो जाता है उसी प्रकार यह वर्त्तमान जगत भी एक दिन नष्ट-विनष्ट हो जायेगा। और फिर वह समय आ जायेगा जिस के आने की सूचना जगत के कण-कण से मिल रही है। यह वह समय होगा जब कि लोगों का किया-धरा तोला जायेगा। सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन के अच्छे कर्मों का पल्ला उस दिन भारी होगा। तबाही होगी उस दिन उन लोगों के लिए जिन का पल्ला उस दिन हल्का होगा।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-क़ारिआ (मक्का में उतरी—'आयतें' ११)

THE CALAMITY
Revealed at Mecca

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○
१. वह खड़-खड़ा देने वाली [1]!	1. The Calamity!	الْقَارِعَةُ ①
२. क्या है वह खड़-खड़ा देने वाली ?	2. What is the Calamity?	مَا الْقَارِعَةُ ②
३. और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह खड़-खड़ा देने वाली !	3. Ah, what will convey unto thee what the Calamity is!	وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ③
४. जिस दिन लोगों का हाल यह होगा जैसे बिखरे हुये पतंगे हों[2]	4. A day wherein mankind will be as thickly-scattered moths:	يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ④
५. और पहाड़ों का हाल यह होगा जैसे धुना हुआ रंगीन ऊन हो[3]।	5. And the mountains will become as carded wool.	وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ⑤
६. तो जिस किसी की तोलें भारी रहीं,	6. Then, as for him whose scales are heavy (with good works).	فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ⑥
७. उसे तो एक मन-भाता जीवन प्राप्त होगा[4]।	7. He will live a pleasant Life.	فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ⑦
८. और रहा वह जिस की तोलें हल्की रहीं,	8. But as for him whose scales are light,	وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ⑧
९. तो उस की माता (ठिकाना) 'हाविया' होगी[5]।	9. The Bereft and Hungry One will be his mother.	فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ⑨
१०. और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है !	10. Ah, what will convey unto thee what she is!—	وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ⑩
११. आग है दहकती हुई।	11. Raging fire.	نَارٌ حَامِيَةٌ ⑪

———

१. यहाँ 'क़ियामत' को 'खड़-खड़ा देने वाली' कहा गया है। 'क़ियामत' की घड़ी बड़ी सख़्त होगी। यह ऐसी मुसीबत होगी जो अचानक सिर पर आ पड़ेगी। धरती और आकाश की वर्त्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। वह बड़ा ही कठिन समय होगा। क़ुरआन ने जगह-जगह 'क़ियामत' का नक़्शा खींचा है जिस से मनुष्य अन्दाज़ा कर सकता है कि आने वाला दिन कितना सख़्त है (दे० आयत ४-५)।

२. आने वाली मुसीबत की घड़ी में मनुष्य की क्या दशा होगी इस का पूरा चित्र इस 'आयत' में खिंच गया है। उस समय मनुष्य पर कितनी घबराहट होगी, वह कितना व्याकुल होगा, इस 'आयत' ने इस का नक़्शा हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है।

३. पहाड़ उड़े-उड़े फिरेंगे। उस दिन वे धुने हुये रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे। संसार की वर्त्तमान व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाने के पश्चात् अल्लाह फिर से नये नियमों के अन्तर्गत संसार का निर्माण करेगा, मरे हुये लोग पुनः जीवित कर के उठाये जायेंगे और उन का हिसाब-किताब होगा जैसा कि आगे आ रहा है।

४. अर्थात् जिन्हों ने दुनिया में अच्छे कर्म किये होंगे उन्हें अच्छा जीवन (Pleasant life) प्राप्त होगा। वे सुखमय और सुन्दर बाग़ों में होंगे। दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ८; सूरा अल-मोमिनून आयत १०२।

५. अर्थात् जिन लोगों का पलड़ा हल्का होगा वे 'जहन्नम' में डाले जायेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०२—अत-तकासुर
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अत-तकासुर' (Rivalry in worldly increase) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। यह नाम सूरा के विषय से गहरा सम्पर्क रखता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरनें वाली अत्यन्त आरम्भिक 'सूरतों' से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' में उन लोगों को चेतावनी दी गई है जो नबी सल्ल० की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे रहे थे, सांसारिक सुख-सामग्री, धन-सन्तान आदि की तलब में इतनें खोये हुये थे कि उन्हें इस का ध्यान ही न था कि एक दिन उन्हें मरना है और मरने के बाद भी कोई जीवन है जिस में उन्हें अपनें किये का बदला पाना है। ऐसे ग़ाफ़िल लोगों को इस सूरा में झँझोड़ा गया है कि तुम्हारी दशा कितनी शोचनीय है कि तुम मरने और क़ब्र में जाने तक माल आदि के समेटने में ही व्यस्त रहते हो हालाँकि ये चीज़ें तुम्हारे लिए लाभप्रद सिद्ध न होंगी, तुम्हें अपनी इस नीति का परिणाम जल्द ही मालूम हो जायेगा। तुम अपनी आँखों से वह सब-कुछ देख लोगे जिस पर ध्यान देने का तुम्हें आज अवसर नहीं मिल रहा है। सांसारिक प्रेम और मोह ने तुम को वास्तविक ज्ञान से दूर कर रक्खा है। वह दिन जल्द आने वाला है कि 'जहन्नम' की भड़कती हुई अग्नि की लपटें तुम्हें घेर रही होंगी और तुम्हें उस से बचने की कोई राह सुझाई न देती होगी। तुम से पूछा जायेगा कि संसार में तुम्हें जो सुख और आनन्द मिला था उस में तुम नें कहाँ तक अपने 'रब' को याद किया। अपने माल में से कितना अल्लाह के मार्ग में या दीन-दुखियों की सेवा में ख़र्च किया।

क़ुरआन माल और औलाद को बुरा नहीं कहता वह जिस चीज़ से लोगों को रोकना चाहता है वह यह है कि मनुष्य माल और औलाद के मोह में इतना न पड़े कि सत्य और असत्य, उचित और अनुचित का उसे ध्यान ही न रहे, सांसारिक धन और वैभव का ऐसा पुजारी न बन जाये कि उसे अपनें कर्त्तव्यों के प्रति सोचने और उन का पालन करनें का अवसर ही न मिल सके।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अत-तकासुर (मक्का में उतरी — 'आयतें' ८)

RIVALRY IN WORLDLY INCREASE
Revealed at Mecca

سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. बहलाये रक्खा तुम्हें अधिक-से-अधिक की तलब ने	1. Rivalry in worldly increase distracteth ye.	أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ①
२. जब तक तुम ने क़ब्रिस्तानों के दर्शन कर लिये।[1]	2. Until ye come to the graves.	حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ②
३. कुछ नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे !	3. Nay, but ye will come to know !	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ③
४. फिर (सुन लो) कुछ नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे[2] !	4. Nay, but ye will come to know !	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④
५. कुछ नहीं, कहीं तुम जानते होते ऐसा कि विश्वास होता !	5. Nay, would that ye knew (now) with a sure knowledge !	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑤
६. अवश्य ही तुम भड़कती हुई अग्नि को देखोगे।	6. For ye will behold hell-fire.	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ⑥
७. फिर अवश्य ही तुम उसे ऐसा देखोगे कि पूरा विश्वास हो जायेगा[3]।	7. Aye, ye will behold it with sure vision.	ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑦
८. फिर तुम से उस दिन सुख-समृद्धि के विषय में अवश्य पूछा जायेगा[4]।	8. Then, on that day, ye will be asked concerning pleasure.	ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ⑧

———

१. अर्थात् हे वे लोगो, जिन्हें इस लोभ ने कि वे सांसारिक धन-सम्पत्ति आदि में ज्यादा-से-ज्यादा बढ़े हो, बेसुध बना रक्खा है ! तुम ऐसे बेसुध हो गये हो कि क़ब्र में जाने तक तुम्हें होश नहीं आता कि इस जीवन के बाद भी कोई जीवन है जिस में तुम्हें अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है। तुम यह नहीं सोचते कि जो नीति तुम ने अपना रक्खी है वह कदापि तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं हो सकती।

२. अर्थात् तुम्हें जल्द ही अपनी अपनाई हुई नीति का परिणाम मालूम हो जायेगा। मरने के पश्चात और फिर 'क़ियामत' में वे सारी बातें समझ में आ जायेंगी जिन की ओर आज तुम ध्यान नहीं देते हो। उस दिन तुम उन चीज़ों को भूल जाओगे जिन में आज तुम भूले हुये हो। उस दिन तुम्हारी कमाई का परिणाम तुम्हारे सामने होगा। तुम्हें भली-भाँति ज्ञात हो जायेगा कि तुम ने दुनिया में घाटे का सौदा किया या तुम अपने जीवन में सफल रहे।

३. अर्थात् जिस बुरे परिणाम से आज तुम्हें सचेत किया जा रहा है यदि तुम सँभले नहीं तो उस बुरे परिणाम को तुम देख लोगे। 'जहन्नम' की अग्नि तुम्हारी आँखो के सामने होगी। और तुम्हें उसी में जलना होगा। तुम्हें इस में कोई सन्देह नहीं रहेगा कि अल्लाह के 'रसूल' का सन्देश बिल्कुल सच्चा था।

४. अर्थात् तुम से यह हिसाब लिया जायेगा कि अल्लाह ने तुम्हें सांसारिक जीवन में जो सुख और आनन्द प्रदान किया था उस में तुम ने कहाँ तक अल्लाह को याद रक्खा कहाँ तक उस के हक़ को अदा किया और जो माल तुम्हें दुनिया में मिला था उस में से तुम ने कितना अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किया। दे० सूरा अल-मुनाफ़िक़ून आयत ९-११।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०३—अल-अस्र
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-अस्र' सूरा की पहली आयंत से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण होने वाली आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस से पहले जो सूरा गुज़री है उस में इस का उल्लेख हुआ है कि जो सुखभोगी लोग माल और सांसारिक सुखों की तलब में खोये हुये हैं उन के जीवन का ध्येय केवल दुनिया है। वे सांसारिक मोह-माया में अपने जीवन को नष्ट किये दे रहे हैं। इस से बढ़ कर तबाही और कोई नहीं हो सकती। प्रस्तुत सूरा में ऐसे लोगों को चेतावनी दी गई है जो नाशवान् वस्तुओं के उपासक बने हुये हैं और सांसारिक मोह-माया में डूबे हुये हैं। इस सूरा में इस ओर संकेत किया गया है कि मनुष्य यदि चाहे तो इसी जीवन की सीमित अवधि में सच्चाई को अपना कर शाश्वत सुख और शान्ति प्राप्त कर सकता है। यदि आज लोग समय के मूल्य को नहीं पहचानते और उस चीज़ को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते जो वास्तव में चाहने की है तो वह समय दूर नहीं जब वे अपने किये पर पछता रहे होंगे और यह पछ-ताना उन के किसी काम न आयेगा।

प्रस्तुत 'सूरा' यद्यपि एक छोटी-सी सूरा है परन्तु वास्तव में ज्ञान का एक विस्तृत संसार इस में समाया हुआ है।

प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह ने ढलते हुये समय को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर के कहा है कि लोग घाटे में हैं, घाटा उठाने वालों में यदि शामिल नहीं हैं तो वे लोग जो 'ईमान' ले आये और भले काम किये और दूसरों को भी हक़ और सब्र की ताकीद करते रहे।

प्रस्तुत सूरा से मालूम होता है कि अच्छे कर्म के बिना आदमी का 'ईमान' अपूर्ण ही रहता है। अच्छा कर्म 'ईमान' ही का विस्तार है। उस से भिन्न कोई दूसरी चीज़ नहीं है। इसी प्रकार एक-दूसरे को 'हक़' और 'सब्र' की ताकीद करना यह अच्छे कर्म में ही सम्मिलित है। आदमी का जहाँ यह कर्त्तव्य है कि वह अच्छे काम करे वहीं उस का यह कर्त्तव्य भी होता है कि वह दूसरों को उसी मार्ग पर लाने की चेष्टा करे, जिस मार्ग पर चलना उस की दृष्टि से मानव-हित और कल्याण के लिए आवश्यक है। उस व्यक्ति को वास्तव में सत्य का उपासक नहीं कहा जा सकता जो अपनी आँखों से देख रहा हो कि सत्य की अवहेलना हो रही है फिर भी उसे इस की चिन्ता न हो कि किस प्रकार सत्य को विजयी देखे। किस प्रकार अल्लाह के उतारे हुये विधान का प्रचलन हो और किस प्रकार उन विधानों से जो धर्म के विरुद्ध और मानव-जाति के लिए अकल्याणकारी हैं समाज सुरक्षित रहे। मनुष्य सब्र और धैर्य्य ही के द्वारा बुराइयों का मुक़ाबला कर सकता है। सब्र के बिना सत्य-मार्ग पर एक क़दम भी चलना कठिन बल्कि असम्भव है। इस लिए जहाँ हम एक-दूसरे को 'हक़' की नसीहत करें वहीं उन्हें सब्र की ताकीद भी करें।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-अस्र
(मक्का में उतरी–'आयतें' ३)

THE DECLINING DAY
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. ढलते समय की क़सम,[१]

1. By the declining day,

وَالْعَصْرِ ①

२. मनुष्य तो घाटे ही में है,

2. Lo! man is in a state of loss,

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ②

३. सिवाय उन लोगों के जो 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किये,[२] और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद करते रहे[३] और सब्र की ताकीद करते रहे[४]।

3. Save those who believe and do good works, and exhort one another to truth and exhort one another to endurance.

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ③ ع

---

१. 'ढलते समय' की क़सम खाने का अर्थ इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि इसे उस बात का गवाह ठहराया जा रहा है जो 'आयत २ में बयान हुई है। बीते दिन इस बात की गवाही देते हैं कि पिछली जातियों के बारे में जो भी फ़ैसले हुये हैं वे उन के कर्म के अनुसार ही हुये हैं। जिन जातियों ने भलाइयाँ कीं वे संसार में उन्नति की चरम सीमा तक पहुँची परन्तु जिन लोगों ने जुल्म, अत्याचार और बिगाड़ का मार्ग अपनाया अल्लाह ने उन्हें विनष्ट कर के रख दिया। इस लिए लोगों को इतिहास से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। इस के अतिरिक्त जमाने (समय) पर इस पहलू से भी विचार करना चाहिए कि वही मनुष्य का मूल धन है और वह बहुत तेज़ी के साथ गुज़रता जा रहा है। मनुष्य चाहे तो गुज़र जाने वाली मुद्दत में सदैव के लिए आनन्द और सुख प्राप्त कर ले और चाहे तो नाशवान् जीवन पर रीझ कर परम और शाश्वत सुख और शान्ति से अपने को वंचित कर ले।

२. अर्थात् घाटे में वही लोग नहीं हैं जो 'ईमान' लाये और सच्चाई को मान लिया और अच्छे कर्म करते रहे और उन में वह विशेषता भी थी जिस का उल्लेख आगे आ रहा है। 'ईमान' और भले काम में गहरा सम्बन्ध है। अच्छा कर्म वास्तव में 'ईमान' ही का विस्तृत रूप है। उस से भिन्न कोई दूसरी चीज़ नहीं है। 'ईमान' वाला व्यक्ति वही है जो अल्लाह पर उस की 'आयतों' पर और उस के समस्त आदेशों पर 'ईमान' ले आये; उन्हें स्वीकार करे और अपना सब-कुछ अल्लाह के अर्पण कर के उसी का हो जाये। फिर उस के 'रब' का जो फ़ैसला भी हो उस पर राज़ी हो जाये। 'ईमान' का सम्पर्क केवल मनुष्य के मस्तिष्क से नहीं है बल्कि इस का सम्पर्क मनुष्य की बुद्धि और उस के हृदय दोनों से है।

३. अर्थात् यही नहीं कि वे सत्य के अनुयायी हैं बल्कि वे दूसरों को भी सत्य पर देखना चाहते हैं। ऐसा इस लिए भी आवश्यक है कि वे सत्यप्रिय हैं और इस लिए भी कि वे लोगों से सहानुभूति रखते हैं। 'हक़' व्यापक अर्थ में उस चीज़ को कहेंगे जो बुद्धि और हृदय दोनों को एक साथ प्रिय हो, जिस से बुद्धि और हृदय दोनों की तृप्ति होती हो। जिस का सम्पर्क ज्ञान से भी हो और कर्म से भी। जो अन्याय और बिगाड़ के प्रतिकूल हो। जो नैतिकता की दृष्टि से मनुष्य के लिए अनिवार्य हो और जिस का होना असम्भव न हो बल्कि जो सम्भव हो। इस प्रकार 'हक़' शब्द समस्त भलाइयों का पर्यायवाची हुआ। इस में वे सभी चीज़ें आ गईं जिन पर एक 'मुस्लिम' 'ईमान' लाता है। और वे समस्त काम इस में शामिल हैं जिन का करना मनुष्य के लिए आवश्यक है। एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखना और दीन-दुखियों की सहायता करना भी सब से बड़ा 'हक़' है।

४. 'हक़' और सब्र में गहरा सम्पर्क है। इस लिए जहाँ वे एक दूसरे को 'हक़' की नसीहत करते हैं वहीं सब्र की भी ताकीद करते हैं। सच्चाई के मार्ग में जितनी भी कठिनाइयाँ सामने आयें आदमी उन्हें झेल ले और सच्चाई से विचलित न हो और दूसरों को भी इसी की ताकीद करे। बिना धैर्य के सफलता सम्भव ही नहीं। सब्र ऐसी चीज़ है जिस से बुराइयों के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं और आदमी के लिए भलाइयों के द्वार खुल जाते हैं। भलाइयों और जीवन सम्बन्धी मान्यताओं की प्राप्ति के बाद सब से बड़ी चीज़ है उन पर जमे रहना। इसी का नाम सब्र है। सब्र के बाद ही सफलता मनुष्य के क़दम चूमती है (सूरा अल-अहक़ाफ़ आयत १३)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४—अल—हुमज़ा
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-हुमज़ा' सूरा की प्रथम 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में अवतीर्ण होनें वाली आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

'सूरा' अत-तकासुर में इस का उल्लेख हुआ है कि वे लोग घाटा उठानें वाले हैं जो सांसारिक धन-वैभव आदि की तलब में खोये हुये हैं, आगामी जीवन का जिन्हें कुछ ध्यान ही नहीं है। प्रस्तुत 'सूरा' में उस यातना की तसवीर खींची गई है जिस में ये सांसारिक धन और ऐश्वर्य के पुजारी ग्रस्त होंगे[1]।

प्रस्तुत 'सूरा' से यह बात मालूम होती है कि धन पा कर ओछे और सरकश लोगों की क्या दशा होती है। धन पा-कर उन का अहंकार और उन की सरकशी और बढ़ जाती है। वे धन के मद में इतनें मात जाते हैं कि न वे अपने कर्त्तव्यों को समझते हैं और न अपने 'रब' का आभार स्वीकार ररते हैं। उन का सब से प्रिय कार्य बस यह होता है कि वे अपनें माल को बार-बार गिनते रहें और ऐसे उपाय सोचें जिस से उन के यहाँ धन की वृद्धि ही होती रहे। वे धन के उपासक होते हैं उन्हें इस का अवसर कब प्राप्त है कि ईश्वर की उपासना करें और संसार में उस के सेवक बन कर रहें। उन की नीति से ऐसा लगता है मानो उन के धन नें उन्हें अमर बना दिया है और वे कभी मरेंगे नहीं, सदा अपने धन का सुख भोगते रहेंगे। परन्तु यह भ्रम जितनी ही शीघ्र दूर हो जाये अच्छा है। प्रत्येक व्यक्ति को मरना है और मरने के पश्चात् एक ऐसे जीवन में प्रवेश करना है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने किये का बदला मिल कर रहेगा। ऐसे लोग जो आज 'कुफ़्' और गर्व में पड़े हुये हैं, दूसरों का अपमान करते और उन पर कीचड़ उछालते हैं और केवल मृत्युलोक के पुजारी हो कर रह गये हैं—ऐसी अग्नि में डाले जाने वाले हैं जो उन के समस्त अहंकार और गर्व को नष्ट कर देगी। उस की लपटें उन के दिलों तक को जलायेंगी। वे आग में इस प्रकार घिरे होंगे कि उस से बच निकलनें का कोई मार्ग भी नहीं पा सकेंगे, बस वे होंगे और अग्नि की यातना होगी जो उन्हें तबाह किये दे रही होगी।

---

१. बीच की 'सूरा' अल-अस्र में ऐसे लोगों को चेतावनी दी गई है कि उन की कामनायें और चेष्टायें असफल हो कर रहने वाली हैं। फिर इस के साथ ही यह बात भी खोल कर बता दी गई है कि सफलता का मार्ग कौन-सा है, वे कौन लोग हैं जिन का जीवन सफल है; जो घाटे में नहीं पड़ेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-हुमज़ा
(मक्का में उतरी—'आयतें' ९)

THE TRADUCER
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो कचोके लगाता रहता है, चोटें करता रहता है,

1. Woe unto every slandering traducer.

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ﴿١﴾

२. जिसने माल इकट्ठा किया और उसे बार-बार गिनता रहा[१]।

2. Who hath gathered wealth (of this world) and arranged it.

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ﴿٢﴾

३. समझता है कि उस के माल ने उसे अमर कर दिया[२]।

3. He thinketh that his wealth will render him immortal.

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۚ ﴿٣﴾

४. कुछ नहीं, वह अवश्य फेंक दिया जायेगा 'हुतमा' (हड़प कर जाने वाली) में[३]।

4. Nay, but verily he will be flung to the Consuming One.

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۖ ﴿٤﴾

५. और तुम्हें क्या मालूम 'हुतमा' क्या है !

5. Ah, what will convey unto thee what the Consuming One is!

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۗ ﴿٥﴾

६. अल्लाह की आग है भड़काई हुई,

6. (It is) the fire of Allah, kindled.

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ﴿٦﴾

७. जो दिलों तक जा पहुँचती है[४]।

7. Which leapeth up over the hearts (of men).

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۗ ﴿٧﴾

८. वे उस में बन्द होंगे

8. Lo! it is closed in on them,

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ ﴿٨﴾

९. लम्बे-लम्बे स्तम्भों में घेर दिये गये होंगे।

9. In outstretched columns.

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾

———

समझता है कि उस के समान कोई नहीं है। दूसरों का अप-
१. अर्थात् प्रत्येक-सरकश अपने माल के कारण अहंकार में डूबा हुआ है। समझता है कि उस के समान कोई नहीं है। दूसरों का अप- कृतज्ञता दिखलाता; दीन-दुखियों की सहा-
मान करता है। चाहिए तो यह था कि संसार में धन-सम्पत्ति पा कर अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाता; दीन-दुखियों की सहा- से अपनी नीचता और कमीनेपन
यता करता परन्तु अपनी नीचता और ओछेपन के कारण यह गर्व में पड़ गया और अपने व्यवहार से अपनी नीचता और कमीनेपन
का प्रदर्शन करने लगा।

२. धन के मद में इतना मात गया है कि उसे इस का ध्यान ही नहीं है कि यह धन उसे मृत्यु से नहीं बचा सकता। यह, धन और
झूठा सम्मान सदैव रहने वाला नहीं है।

३. 'हुतमा' (حطمه) कहते हैं ऐसी चीज़ को जो तोड़ने वाली और दुर्दशा को पहुँचा देने वाली हो। बाद की 'आयतों' से
ज़ाहिर है कि यहाँ 'हुतमा' 'जहन्नम' की अग्नि को कहा गया है जो अपराधियों को तबाह और हज़म कर के रख देगी।

४. अर्थात् उस अग्नि की लपटें दिलों तक पर छा जायेंगी और ऊँचे-ऊँचे स्तम्भों के रूप में उन्हें घेर लेंगी। तो वे उस अग्नि की
यातना से बच निकलने की कोई राह न पा सकेंगे। उतः अहंकारी लोगों को जो आज सच्ची बातों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं सोचना
चाहिए कि यदि वे 'कुफ़्' और अहंकार ही की नीति पर जमे रहते हैं तो वे किस दशा को प्राप्त होने वाले हैं। आग ही उन का
ठिकाना होगी। जहाँ उन्हें किसी प्रकार का आराम न होगा। उन्हें अपने गर्व और सरकशी के कारण वहाँ अपमानजनक और
दुःख-भरे अज़ाब का मज़ा चखना होगा। आग की लपटें उन के दिलों तक को जलायेंगी जिन में 'कुफ़्' और गर्व, सांसारिक
वस्तुओं की चाह के अतिरिक्त और किसी ऊँची और पवित्र भावना का वास न था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०५—अल-फ़ील
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-फ़ील' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' वास्तव में अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाने और उस का आभार स्वीकार करने के कर्त्तव्य को स्मरण कराने की भूमिका है। अल्लाह के पवित्र घर ('काबा') की बरकत से अरब वालों को प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, शान्ति आदि जो-कुछ प्राप्त है, प्रस्तूत सूरा में उस की ओर संकेत किया गया है। अतः उन्हें अपने 'रब' का कृतज्ञ होना चाहिए। 'कावा' की महानता के कई कारण हैं। 'काबा' पहला घर है जो संसार में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और दीन-दुखियों की सहायता का केन्द्र वना। इस घर का निर्माण दो महान् पुरुषों हज़रत इबराहीम अ० और हज़रत इस्माईल अ० के हाथों हुआ। इस घर के निर्माण का आदेश हज़रत इबराहीम अ० को अल्लाह की ओर से मिला था। 'काबा' की जगह भी अल्लाह ही की निश्चित की हुई है। अल्लाह की ओर से इस वात की घोषणा की गई थी कि जो लोग इस घर में अधर्म और 'शिर्क' के अपराधी होंगे और इस घर का निरादर करेंगे अल्लाह उन्हें विनष्ट कर देगा।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'काबा' की वड़ाई का उल्लेख किया गया है। इस सूरा के बाद आने वाली सूरा में 'काबा' की महानता और उस की बरकतों का उल्लेख हुआ है और साथ ही लोगों को उनका कर्त्तव्य याद दिलाया गया है कि वे अपने 'रब' के कृतज्ञ हों और उस की बन्दगी करें।

प्रस्तुत 'सूरा' में अब्रहा की सेना की तबाही का उल्लेख कर के जो 'काबा' को ढाने के लिए मक्का पर चढ़ आया था[1]—मक्का वालों को झँझोड़ा गया है कि तुम इस घर ('कावा') के 'रब' की बन्दगी से क्यों कतराते हो और 'शिर्क' को छोड़ कर एक अल्लाह पर भरोसा क्यों नहीं करते जिस ने कठिन अवसर पर सदा तुम्हारी सहायता की। तुम स्वयं 'शिर्क' की गन्दगी में पड़े हुये हो और 'ईमान' वालों को भी 'काबा' में अल्लाह की 'इबादत' से रोकते हो। दूसरे पहलू से इस घटना के उल्लेख में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के लिए तसल्ली का बड़ा सामान है। जिस अल्लाह ने कठिन समय में मक्का वालों की सहायता की और अपने घर को तबाह होने से बचा लिया वही अल्लाह मुसलमानों की मदद के लिए काफ़ी है वह अपने आज्ञाकारी बन्दों का अवश्य सहायक होगा, विजय अन्त में 'ईमान' वालों को ही प्राप्त होगी। इस प्रकार यह सूरा 'काफ़िरों' के लिए चेता-वनी और डरावा और 'ईमान' वालों के लिए तसल्ली की सूरा है।

———

१. दे० प्रस्तुत सूरा आयत १।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़ील
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५)

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है ।

१. क्यों तुम ने देखा नहीं तुम्हारे 'रब' ने हाथी वालों के साथ क्या किया' ?

२. क्या उन के दाँव को बेकार नहीं कर दिया,'

३. और भेजे उन पर पक्षी झुण्ड-के-झुण्ड,

४. मारते थे उन्हें पत्थर, कंकड़ की तरह के

५. फिर उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खाने का भुस हो' ?

THE ELEPHANT
Revealed at Mecca

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

1. Hast thou not seen how thy Lord dealt with the owners of the Elephant ?

2. Did He not bring their stratagem to naught,

3. And send against them swarms of flying creatures,

4. Which pelted them with stones of baked clay,

5. And made them like green crops devoured (by cattle)?

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ①

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ②

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ③

تَرْمِيهِم بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ④

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ⑤

———

१. यह संकेत उस अज़ाब की ओर है जो यमन के हब्शी वाइसराय (The Abyssinian ruler of Yaman) अब्रहा की सेना पर टूटा था। अब्रहा ने सन् ५७० ई० या ५७१ ई० में मक्का पर आक्रमण किया था। उस का ध्येय यह था कि 'काबा' को जो केन्द्रीयता प्राप्त है उसे नष्ट कर दे और ऐसा कर दे कि अरब का सम्पूर्ण पश्चिमी क्षेत्र रूमी और हब्शी प्रभाव के अधीन हो जाये। उस ने 'काबा' को ढा देने का निश्चय किया परन्तु वह अपने ध्येय में सफल न हो सका। अब्रहा की सेना को अल्लाह के अज़ाब ने विनष्ट कर के रख दिया। इस घटना के कुछ ही दिनों के पश्चात् नबी सल्ल० का जन्म हुआ है। जब नबी सल्ल० पर यह 'सूरा' उतरी तो उस समय बहुत से ऐसे लोग मौजूद थे जिन्हों ने अब्रहा की सेना की तबाही को अपनी आँखों से देखा था।

२. अर्थात् उन्हों ने 'काबा' की केन्द्रीयता को नष्ट करने के लिए जो चाल चली थी उस में उन्हें असफल कर दिया। उन्हों ने मक्का पर ऐसे महीनों में आक्रमण करना चाहा जिन में अरब के लोग लड़ाई और रक्तपात आदि से बचते थे। मक्का में वे ऐसे समय में दाखिल होना चाहते थे जब कि मक्का वाले और अरब के दूसरे लोग 'हज्ज' कर रहे होते हैं। इस तरह के उपायों से काम ले कर वे चाहते थे कि अपने ध्येय में सफल हों परन्तु अल्लाह का फ़ैसला कुछ और था। उन की कोई तदबीर उन्हें तबाही से न बचा सकी।

३. अर्थात् उन पर पकी मिट्टी की ऐसी वर्षा हुई कि वे तबाह हो कर रह गये। इस से पहले हज़रत लूत अ० की जाति वालों पर भी पत्थरों की वर्षा हुई थी जब कि वे बुराई में बहुत आगे निकल चुके थे (दे० सूरा अल-हिज्र आयत ७४)।
अब्रहा की सेना अभी मक्का से कुछ दूर पर एक मैदान में थी कि समुद्र की ओर से झुण्ड-के-झुण्ड पक्षी आये और अब्रहा की सेना पर छा गये। उन पर हर ओर से गर्द और ग़ुबार के साथ कंकरों और पत्थरों की वर्षा होने लगी। फिर वे लोग बिल्कुल तबाह हो गये। पत्थरों की वह वर्षा अज़ाब के अतिरिक्त अल्लाह की ओर से लानत और फिटकार की सूचना भी दे रही थी। इस आसमानी अज़ाब के कुछ ही दिनों के बाद उन की हुकूमत की भी धज्जियाँ उड़ गईं। सन् ५७५ ई० में यमन पर ईरानियों का क़ब्ज़ा हो गया। और इस का अन्त उस समय हुआ जब सन् ६२८ ई० में ईरानी गवर्नर ने 'इस्लाम' धर्म ग्रहण कर लिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६—क़ुरैश
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'क़ुरैश' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक 'सूरतों' में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' और इस से पहले की सूरा (अल-फ़ील) में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। इन दोनों सूरतों में अल्लाह के घर ('काबा') की महानता का उल्लेख है। सूरा अल-फ़ील में अल्लाह ने अपने इस एहसान का उल्लेख किया है कि उस ने किस तरह अपने घर की रक्षा की और दुश्मनों को तबाह कर के रख दिया। प्रस्तुत 'सूरा' में अल्लाह ने अपना यह एहसान याद दिलाया है कि अल्लाह के घर के कारण क़ुरैश को कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है और वे किस प्रकार निश्चिन्त हो कर सफ़र करते और व्यापार में अधिक-से-अधिक लाभ उठाते हैं। अब यह 'क़ुरैश' के लोगों का कर्त्तव्य है कि अपने दायित्व को पहचानें और अपने 'रब' के कृतज्ञ हों और उस की 'इबादत' और बन्दगी में लग जायें। अल्लाह का 'रसूल' उन्हें 'तौहीद' की ओर बुला रहा है और इस बात की शिक्षा देता है कि लोग एक दूसरे के काम आयें और ग़रीबों और दुखियों की सेवा करें। 'काबा' के निर्माण का मूल उद्देश्य भी यही है[1]। इस लिए उन लोगों को अल्लाह के 'रसूल' की बात माननी चाहिए और उस मार्ग को अपनाना चाहिए, जिस पर चलने के लिए अल्लाह का 'रसूल' उन्हें आमन्त्रित कर रहा है।

———

१. आगे आने वाली सूरा में 'काबा' के निर्माण के मूल उद्देश्य का ही उल्लेख हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' क़ुरैश
(मक्का में उतरी—'आयतें' ४)

"WINTER" OR "QUREYSH"
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْقُرَيْشِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. इस लिए कि क़ुरैश का सम्बन्ध रक्खा[1]

1. For the taming of Qureysh.

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١

२. उन का सम्बन्ध रक्खा जाड़े और गर्मी के सफ़र में[2]।

2. For their taming (We cause) the caravans to set forth in winter and summer.

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

३. अत: उन्हें चाहिए कि इस घर के 'रब' की 'इबादत' करें,

3. So let them worship the Lord of this House,

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣

४. जिस ने उन्हें भूख में खिलाया और भय से उन्हें निश्चिन्त किया[3]।

4. Who hath fed them against hunger; and hath made them safe from fear.

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

———

१. अर्थात् अरब के सारे क़बीलों से क़ुरैश के लोगों का सम्बन्ध स्थापित कर दिया। जाड़े में क़ुरैश के क़ाफ़िले व्यापार के ध्येय से यमन की ओर जाते थे और गर्मी के दिनों में उन का सफ़र शाम (सीरिया) की ओर होता था। इस प्रकार अरब में दक्षिण से ले कर उत्तर तक क़ुरैश का विभिन्न क़बीलों से सम्बन्ध और समझौता था। क़ुरैश के लोग निश्चिन्त हो कर सफ़र करते थे। सभी लोग क़ुरैश का आदर और सम्मान करते थे। क़ुरैश की इस प्रतिष्ठा का कारण यह था कि वे 'काबा' के प्रबन्धक थे।

२. अरब के आर्थिक जीवन में व्यापार का बड़ा महत्व था। क़ुरैश (अरब का विशेष क़बीला) के लोग व्यापार करते थे। इस सिलसिले में गर्मी और जाड़े दोनों ही ऋतुओं में इन का सफ़र होता था। 'क़ुरैश' के लोग 'काबा' के प्रबन्धक और सेवक थे। 'काबा' का आदर सभी लोग करते थे। इस लिए क़ुरैश के क़ाफ़िले को कोई लूटता नहीं था। ये निश्चिन्त हो कर व्यापर करते और फ़ायदा उठाते थे। यह सब-कुछ अल्लाह के घर की बरकत थी। अब आगे उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि उन का कर्त्तव्य क्या है।

३. अर्थात् जिस घर के कारण उन्हें सम्मान, प्रतिष्ठा और निश्चिन्तता प्राप्त है। और उन्हें रोज़ी मिल रही है उस घर के 'रब' को भूलना किसी तरह भी उन के लिए उचित नहीं है। उन्हें चाहिए कि वे उस के आगे कृतज्ञता दिखलायें और उस की बन्दगी में लग जायें। 'शिर्क' की गन्दगी से अपने दामन को बचायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०७—अल-माऊन
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' ~~काऊन~~ अल-माऊन' सूरा की सातवीं 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस से पहले की दो सूरतों में 'काबा' की महानता का उल्लेख हुआ है। और इस से पहले की सूरा (क़ुरैश) में क़ुरैश को उन के कर्त्तव्य का स्मरण भी कराया गया है। उन का यह परम कर्त्तव्य ठहराया गया है कि वे उस 'रब' की बन्दगी करें जिस के नाम पर 'काबा' का निर्माण हुआ है। प्रस्तुत सूरा से 'काबा' के मूल उद्देश्यों पर प्रकाश पड़ता है। 'नमाज़' और ग़रीबों की सेवा 'काबा' के मूल उद्देश्यों में से है। 'काबा' का निर्माण ही इन उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ था कि लोग अपने 'रब' को पहचानें और केवल उसी की 'इबादत' और बन्दगी करें किसी और के आगे सिर न झुकायें। अल्लाह का हक़ अदा करने के साथ-साथ अल्लाह के बन्दों का हक़ भी पहचानें, दीन-दुखियों के सहायक बनें।

प्रस्तुत 'सूरा' में उन लोगों का चरित्र सामने लाया गया है जो 'काबा' के प्रबन्धक थे। परन्तु उन्हों ने न्यास-भंग किया। जो चीज़ उन्हें सौंपी गई थी उस का उन्हों ने दुरुपयोग किया। उन्हों ने 'हज्ज' और उस की रीतियों को बिगाड़ डाला, 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) से मुँह मोड़ा, 'शिर्क' में जा पड़े। 'तौहीद' और ग़रीबों और मुहताजों की सेवा की रीति को मिटाया इस प्रकार उन्हों ने 'नमाज़' और 'क़ुरबानी' की वास्तविकता का अनर्थ किया, जिस के कारण उन पर फिटकार पड़ी। और अल्लाह ने उन से अपनी अमानत[1] छीन ली ताकि उसे उन लोगों को सौंपे जो वास्तव में इस का हक़ रखते हैं।

प्रस्तुत 'सूरा' से मालूम होता है कि मानव-जीवन में बिगाड़ का कारण यह है कि मनुष्य इस बात को भूल जाये कि उसे एक दिन अपने 'रब' के यहाँ अपने कर्मों का फल पाना है। 'आख़िरत' का डर दिल से निकल जाने के बाद मनुष्य के चरित्र-निर्माण के लिए कोई मूल आधार शेष नहीं रहता। फिर तो वह स्वेच्छाचारी बन कर जो उत्पात भी चाहे मचा सकता है।

फिर इस 'सूरा' से यह बात भी सामने आती है कि 'नमाज़' का हमारे जीवन से गहरा सम्पर्क है। यदि कोई अपनी 'नमाज़' से ग़ाफ़िल है और अल्लाह के हक़ को नहीं पहचानता तो हम उस से यह आशा भी नहीं रख सकते कि वह अल्लाह के बन्दों का हक़ पहचानेगा और उसे अदा करेगा। स्वार्थ-परता ही ऐसे व्यक्ति का स्वभाव होता है। वह अनाथों और असहाय लोगों को धक्के दे देगा। ग़रीबों को भोजन कराने पर लोगों को नहीं उभार सकता। छोटी-से-छोटी चीज़ देते हुये भी उस का दिल दुखने लगेगा। ऐसे व्यक्ति के जीवन में मानवता और सज्जनता नाम की कोई चीज़ भी नहीं मिल सकती।

———

१. अर्थात् 'काबा' की सेवा और प्रबन्ध का शुभ कार्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-माऊन

(मक्का में उतरी—'आयतें' ७)

SMALL KINDNESSES

Revealed at Mecca

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعُ آيَاتٍ

अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. क्यों, तुम ने देखा उस व्यक्ति को जो कर्मों का बदला दिये जाने को झुठलाता है¹ ?

1. Hast thou observed him who belieth religion ?

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ①

२. वही तो है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है।

2. That is he who repelleth the orphan,

فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ②

३. और मुहताज के खिलाने को नहीं कहता²।

3. And urgeth no the feeding of the needy.

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ③

४. तो तबाही है ऐसे नमाज़ियों के लिए

4. Ah, woe unto worshippers,

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ④

५. जो अपनी 'नमाज़' से बेखबर हैं³;

5. Who are heedless of their prayer;

الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ⑤

६. जो दिखावे का कार्य करते हैं⁴

6. Who would be seen (at worship,)

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ⑥

७. और मामूली-मामूली चीज़ माँगे नहीं देते⁵ !

7. Yet refused small kindnesses !

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ⑦

---

१. अर्थात् क्या तुम ने उस व्यक्ति के चरित्र पर विचार किया जो इस बात को नहीं मानता कि उसे एक दिन अपने 'रब' के पास हाज़िर होना है। जहाँ उसे अपने भले-बुरे सब कामों का बदला मिलेगा। जो व्यक्ति इस पर विश्वास ही नहीं रखता कि उसे एक दिन अपने कामों का बदला पाना है उस के चरित्र-निर्माण के लिए कोई वास्तविक आधार नहीं। वह दुनिया में जो उपद्रव मचाये थोड़ा है। ऐसे व्यक्ति के चरित्र का एक चित्र आगे की 'आयतों' में पेश किया गया है।

२. 'आखिरत' पर विश्वास न रखने वाला ही अनाथों और असहाय लोगों को बुरी तरह धक्के देता है। और दीन-दुखी व्यक्तियों को स्वयं तो क्या भोजन कराता यह भी पसन्द नहीं करता कि दूसरे लोग ही उन्हें भोजन करा दें। उसे दूसरों से कोई सहानुभूति नहीं होती।

३. अर्थात् ऐसे लोगों पर तबाही और फिटकार है जो अल्लाह का हक़ अदा नहीं करते अर्थात् अपनी 'नमाज़ों' से ग़ाफ़िल रहते है। 'नमाज़' अदा भी करते हैं तो उन की 'नमाज़' बस दिखावे की नमाज़ होती है। उन की नमाज़ें 'नमाज़' की विशेषताओं से बिल्कुल खाली होती हैं। उन की 'नमाज़ों' में न अल्लाह की ओर दिल का झुकाव पाया जाता है और न अल्लाह की याद पाई जाती है। 'क़ुरैश' जो 'काबा' के प्रबन्धक और सेवक थे वे भी अपने ढंग से 'नमाज़' पढ़ते थे, परन्तु उन की 'नमाज़' खेल और तमाशे से अधिक और कुछ नहीं थी (दे० सूरा अल-अनफ़ाल आयत ३५)।

४. अर्थात् उन का नेक काम केवल लोगों को दिखाने के लिए होता है अल्लाह के लिए नहीं। यह भी एक प्रकार का 'शिर्क' है कि आदमी नेक काम इस लिए करे ताकि लोग उसे नेक समझें। नबी सल्ल० ने कहा है कि जिस किसी ने दिखावे के लिए 'नमाज़' पढ़ी उस ने 'शिर्क' किया।

५. जो व्यक्ति अल्लाह का हक़ अदा नहीं करता उस से इस की भी आशा नहीं की जा सकती कि वह अल्लाह के बन्दों का हक़ पहचानेगा। ऐसे व्यक्ति की स्वार्थपरता का यह हाल होता है कि वह लोगों को छोटी-छोटी चीज़ें भी देनी पसन्द नहीं करता कि वे उन से अपनी जरूरतें पूरी कर लें।

यहाँ यह बात सामने रखनी चाहिए कि 'नमाज़' और ग़रीबों की सेवा यह 'काबा' के मूल उद्देश्यों में से है। इस 'सूरा' में उन लोगों का चरित्र हमारे सामने आता है जिन्हों ने 'काबा' के मूल उद्देश्यों की उपेक्षा की। वे इसी योग्य थे कि उन पर अल्लाह की फिटकार हो और उन से यह नेमत छीन ली जाये और इसे ऐसे लोगों के हाथ में सौंपी जाये जो वास्तव में यह नेमत पाने के हक़दार हों।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०९–अल–काफ़िरून

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-काफ़िरून' सूरा की पहली आयत से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' 'हिजरत' से कुछ पहले अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस से पहले की 'सूरा' (अल-कौसर) में अल्लाह ने अपने 'नबी' को शुभ सूचना दी है कि हर प्रकार की भलाई आप को प्रदान की गई। सफलता आप (सल्ल०) ही को प्राप्त होगी। जो आप के वैरी हैं वे तबाह और बरबाद होंगे। प्रस्तुत 'सूरा' 'काफ़िरों' से विरक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की सूरा है। इस प्रकार यह सूरा 'हिजरत' की और 'काफ़िरों' के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की सूरा है।

मक्का में नबी सल्ल० एक समय तक लोगों को सत्य की ओर बुलाते रहे। विरोधियों की ओर से आप (सल्ल०) के साथियों को जो तकलीफ़ें भी पहुँचाई गई आप (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के साथी उसे सहते रहे और सत्य मार्ग पर जमे रहे। आप को दुश्मनों की ओर से डराया भी गया और लालच भी दिलाया गया। समझौते (Compromise) की स्कीम रक्खी गई परन्तु वे आप को और आप (सल्ल०) के साथियों को सत्य से विचलित नहीं कर सके। आप (सल्ल०) धर्म-प्रचार का शुभ कार्य करते रहे। लोगों को समझाते-बुझाते और उन्हें सत्य की ओर बुलाते रहे। जब 'काफ़िरों' की शत्रुता अपनी चरम सीमा को पहुँच गई और वातावरण में साँस लेना भी सम्भव नहीं रहा तो अल्लाह की ओर से 'हिजरत' करने का आदेश हुआ। 'हिजरत' से पूर्व प्रस्तुत सूरा का अवतरण हुआ जिस में 'काफ़िरों' से विरक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा कर दी गई। और साफ़-साफ़ कह दिया गया कि तुम से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम्हारा मार्ग अलग है और हमारा मार्ग अलग है। यह वास्तव में इस बात की घोषणा थी कि अब फ़ैसले का समय बिल्कुल निकट आ गया है। अल्लाह बहुत जल्द 'कुफ़्र' और 'इस्लाम' के बीच निर्णय करने वाला है। इस प्रकार प्रस्तुत सूरा में 'ईमान' वालों के लिए सफलता और विजय की सूचना है। आगे आने वाली सूरा (अन-नस्र) विजय की सूचक हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-काफ़िरून
(मक्का में उतरी—आयतें ६)

THE DISBELIEVERS
Revealed at Mecca

سورة الكافرون مكية وهي ست آيات

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. कह दो : हे 'काफ़िरो'[१] !

1. Say: O disbelievers!

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾

२. मैं उस की 'इबादत' करता नहीं जिस की 'इबादत' तुम करते हो;

2. I worship not that which ye worship;

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾

३. और न तुम ही उस की 'इबादत' करते हो जिस की 'इबादत' मैं करता हूँ।

3. Nor worship ye that which I worship.

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٣﴾

४. और न मैं उस की 'इबादत' करने का जिस की 'इबादत' तुम करते आये।

4. And I shall not worship that which ye worship.

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿٤﴾

५. और न तुम उस की 'इबादत' करने के जिस की 'इबादत' मैं करता हूँ।

5. Nor will ye worship that which I worship.

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٥﴾

६. तुम्हें तुम्हारा 'दीन,' और मुझे मेरा 'दीन'[२]।

6. Unto you your religion, and unto me my religion.

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾

---

१. इस 'आयत' में इस्लाम-विरोधियों को 'काफ़िर' कहा गया है। 'काफ़िर' का अर्थ है इन्कार करने वाला, न मानने वाला। आरम्भ
में 'इस्लाम' को न मानने वालों को 'काफ़िर' कह कर नहीं पुकारा गया। लोगों को समझाने-बुझाने का पूरा हक़ अदा किया गया
और धर्म की समस्त मौलिक शिक्षायें खोल-खोल कर बयान की गईं और सन्देहों एवं शंकाओं को दूर किया गया, फिर भी जो
लोग अधर्म पर अड़े रहे और सत्य का विरोध ही करते रहे उन्हें 'काफ़िर' कह कर सम्बोधित किया गया। यहाँ यह बात सामने
रहनी चाहिए कि यह सूरा उस समय उतरी है जब कि 'हिजरत' का समय अत्यन्त निकट आ चुका था और 'इस्लाम' विरोधियों
का विरोध चरम सीमा को पहुँच चुका था।
'नबी' पहले लोगों को सत्य की ओर बुलाते हैं और लोगों की पहुँचाई हुई तकलीफ़ों पर सब्र से काम लेते हैं। परन्तु जब
लोगों को समझाने-बुझाने का हक़ अदा हो जाता है और वातावरण में साँस लेना 'नबी' के लिए असम्भव हो जाता है तब 'हिजरत'
का समय आ जाता है। उस समय 'नबी' विरोधियों से अपनी विरक्ति की घोषणा कर के उन से अलग हो जाते हैं और किसी
दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। नबी की हिजरत के बाद भी यदि लोग 'तौबा' न करें तो वह समय अत्यन्त निकट आ जाता है जब
कि अल्लाह सत्य और असत्य का फ़ैसला कर देता है। सत्य के विरोधियों पर उस का अज़ाब आ जाता है (दे० सूरा अल-
अनफ़ाल आयत ३३-३४)।

२. ऊपर की 'आयतों' से साफ़ मालूम होता है कि यह सूरा 'हिजरत' और विरक्ति की उद्घोषणा की 'सूरा' है। इन 'आयतों' में खुले
रूप में 'मुश्रिकों' के देवी-देवताओं और उन के अज्ञान पर आधारित रीति-रिवाजों से बेज़ारी ज़ाहिर की गई है। सम्बन्ध-विच्छेद
की इस घोषणा का अर्थ यह होता है कि 'ईमान' वाले न केवल यह कि 'मुश्रिकों' के देवी-देवताओं से विरक्त हैं बल्कि वे समस्त
'मुश्रिकों' से अपना नाता तोड़ रहे हैं इस लिए कि 'मुश्रिकों' के समस्त सामाजिक सम्बन्धों की आधार-शिला यही उन के काल्प-
निक देवी-देवता ही थे। इसी प्रकार की विरक्ति-घोषणा हज़रत इबराहीम अ० ने भी अपने समय में की थी (दे० सूरा अश-शु,
अरा आयत ७५-७७; सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत २६-२८)। इन 'आयतों' से यह भी मालूम होता है कि 'कुफ़्र' और 'इस्लाम' के
बीच या 'शिर्क' और 'तौहीद' के बीच समझौता नहीं हो सकता; न कोई भय 'इस्लाम' के अनुयायियों को 'इस्लाम' से फेर सकता
है और न कोई लालच। उन का पूज्य केवल अल्लाह है, वे केवल उसी की बन्दगी करते हैं उसी के आगे झुकते हैं और उसी के
दिखाये हुये मार्ग पर चलते हैं। जीवन के प्रत्येक कार्य में उसी के आदेशों का पालन करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११०—अन-नस्र

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नस्र' (Succour) सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। इस नाम का सूरा के विषय से विशेष सम्बन्ध है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' में मक्का की विजय का उल्लेख है इस से पता चलता है कि इस सूरा के अवतीर्ण होने के अवसर पर या तो मक्का पर मुसलमानों को विजय प्राप्त हो चुकी थी या विजय के कुछ ही पूर्व यह सूरा अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस से पहले की 'सूरा' (अल-काफ़िरून) 'हिजरत' और विरक्ति की सूरा थी। प्रस्तुत सूरा विजय की सूरा है। इस सूरा में मक्का की विजय का उल्लेख है। इस के बाद आने वाली 'सूरा' अल-लहब वास्तव में विजय से ही सम्बद्ध है। इस में शत्रु के विनाश का उल्लेख़ हुआ है।

नबी सल्ल० ने जब मक्का में लोगों को 'इस्लाम' की ओर बुलाना आरम्भ किया तो हर ओर से आप (सल्ल०) का विरोध होने लगा। बहुत से लोग आप (सल्ल०) के शत्रु हो गये। यहाँ तक कि आप को मक्का त्याग कर मदीना की ओर 'हिजरत' करनी पड़ी। वहाँ पर भी आप (सल्ल०) को तरह-तरह की आपत्तियों और संकटों का सामना करना पड़ा। फिर वह समय आया कि उसी मक्का पर आप को विजय प्राप्त होती है जहाँ से आप को निकलना पड़ा था।

प्रस्तुत 'सूरा' में एक ओर तो यह शुभ सूचना दी गई है कि मक्का पर मुसलमानों को विजय प्राप्त होगी और फिर गरोह-के-गरोह लोग 'इस्लाम' ग्रहण करेंगे, दूसरी ओर यह शिक्षा भी दी गई है कि इस अवसर पर मुसलमानों को क्या नीति अपनानी चाहिए। सफलता और विजय के अवसर पर मुसलमानों का कर्त्तव्य है कि वे अल्लाह का गुणगान करें और गर्व और अभिमान आदि दुर्भावनाओं से दूर रहें। और यह समझें कि सफलता और विजय सब अल्लाह ही की ओर से है। इस लिए 'ईमान' वालों को उस का कृतज्ञ होना चाहिए और कोई ऐसा तरीक़ा न अपनाना चाहिए जो अल्लाह की इच्छा के प्रतिकूल हो।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नस्र
(मक्का में उतरी—'आयतें' ३)

SUCCOUR
Revealed at Mecca

سُورَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. जब अल्लाह की मदद आ जाये और विजय हो,

1. When Allah's succour and the triumph cometh:

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ①

२. और तुम देखो कि लोग अल्लाह के 'दीन' में दल-के-दल दाखिल हो रहे हैं,[1]

2. And thou seest mankind entering the religion of Allah, in troops,

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ②

३. तो 'तसबीह' करो अपने 'रब' की 'हम्द' (प्रशंसा) के साथ, और उस से क्षमा की प्रार्थना करो।[2] वह तो है ही ज़्यादा-से-ज़्यादा 'तौबा' क़बूल करने वाला।

3. Then hymn the praises of thy Lord, and seek forgiveness of Him. Lo! He is ever ready to show mercy.

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ③

———

१. इन 'आयतों' में मक्का के विजय का शुभ उल्लेख है। मक्का में जब नबी सल्ल० ने 'इस्लाम' की ओर लोगों को आमन्त्रित करना आरम्भ किया तो चारों ओर से 'इस्लाम' का विरोध किया जाने लगा। 'इस्लाम' धर्म के प्रचार के प्रारम्भिक १३ वर्ष अत्यन्त कठिन थे। मुसलमानों को अपना घर-बार छोड़ कर दूसरी जगह पनाह लेनी पड़ी। स्वयं नबी सल्ल० को भी मक्का छोड़ कर मदीना जाना पड़ा। मदीना में भी सात, आठ वर्ष तक चैन से बैठना नसीब न हो सका। तरह-तरह के संकटों और आपत्तियों का सामना करना पड़ा। मदीना में विशेष रूप से 'यहूदी' लोग इस्लाम-दुश्मनी पर तुले हुये थे परन्तु वह समय निकट आ गया जब कि 'इस्लाम' को प्रभुत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त होने वाला था और उसी मक्का में. जहाँ से मुसलमानों को निकलना पड़ा था उन्हें विजयी ही कर प्रवेश करना था। यह विजय 'हिजरत' के आठवें वर्ष रमज़ान के महीने में हुई है। इस विजय के पश्चात् 'कुफ़्र' की कमर बिल्कुल टूट गई। मक्का की विजय के पश्चात् गरोह-के-गरोह लोग 'इस्लाम' क़बूल करने लगे और थोड़े ही दिनों में पूरे देश से 'शिर्क' मिट गया।

२. 'ईमान' वालों का यह तरीक़ा नहीं कि इस विजय के अवसर पर वे गर्व करने लगें या अपने विरोधियों के साथ अनुचित व्यवहार करने लग जायें। 'ईमान' वाले तो यह समझते हैं कि विजय और सफलता सब-कुछ अल्लाह की ओर से प्राप्त होती है। इस लिए वे ऐसे अवसर पर अल्लाह ही का गुण गाते हैं। और अपनी भूल-चूक के लिए उसी से क्षमा की प्रार्थना करते हैं। अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील है वह लोगों की भूल-चूक को क्षमा कर देता है। और उन्हें इस का अवसर प्रदान करता है कि वे सीधे मार्ग पर चल सकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११—अल-लहब
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-लहब' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है। इस नाम का सूरा के विषय से विशेष सम्बन्ध है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस 'सूरा' पर विचार करनें से अनुमान होता है कि यह सूरा उस समय उतरी है जब कि 'इस्लाम' का विरोध बहुत बढ़ चुका था। अबू लहब की दुश्मनी प्रत्यक्ष रूप से सामनें आ चुकी थी।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस से पहले की 'सूरा' (अन-नस्र) में जिस विजय का उल्लेख हुआ है प्रस्तुत सूरा उसी का विस्तार है।

प्रस्तुत 'सूरा' में 'इस्लाम' के जिस दुश्मन की तबाही का उल्लेख किया गया है वह अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और नबी सल्ल० का चचा था।

यों तो 'इस्लाम' के दुश्मन बहुत से लोग थे जिन में बहुत से अपनें क़बीले के सरदार थे फिर भी क़ुरआन ने विशेष रूप से अबू लहब ही का उल्लेख किया। इस के कुछ विशेष कारण हैं। अबू लहब 'काबा' का प्रबन्धक था। 'काबा' अल्लाह की 'इबादत' और जन-सेवा का केन्द्र था; परन्तु अबू लहब ने अपनें पद का दुरुपयोग किया। वैध-अवैध का विचार किये बिना उस ने अपने घर में बहुत सा धन एकत्र कर लिया। दीन-दुखियों की सहायता और अल्लाह के घर के दर्शन के लिए आने वालों की सेवा आदि से अपना हाथ खींच लिया। इस प्रकार एक ओर तो उस नें 'शिर्क' में पड़ कर 'काबा' के प्रथम मूल उद्देश्य 'तौहीद' को ढा दिया और दूसरी ओर उस की बढ़ी हुई धन-लिप्सा नें 'काबा' के दूसरे मूल उद्देश्य को क्षति पहुँचाई जो क़ुरबानी का वास्तविक उद्देश्य था। नबी सल्ल० की 'रिसालत' का एक बड़ा मूल उद्देश्य यह था कि 'काबा' को 'काफ़िरों' से छीन लें और उसे 'शिर्क' और 'कुफ़्' की गन्दगियों से पाक करें। अपने पद की दृष्टि से 'इस्लाम' का वास्तविक शत्रु अबू लहब ही था दूसरे सभी लोग इसी के अनुवर्ती थे।

फिर अरबों की यह विशेषता रही है कि वे नाते-रिश्ते का बड़ा ख़्याल रखते थे। परन्तु अबू लहब ने भाई-बन्धुओं का साथ छोड़ दिया और दुश्मनों के साथ रहा।

अबू लहब ने हर अवसर पर नबी सल्ल० का विरोध किया।

अबू लहब को नबी सल्ल० से जो वैर था उस का मूल कारण नबी सल्ल० की शिक्षायें थीं। अबू लहब धन का लोभी और प्रेमी था। नबी सल्ल० कृपणता की निन्दा करते और लोगों को दान, जन-सेवा, मुहताजों की सहायता, आदि पुण्य कार्यों पर उभारते और ग़ुलामों को आज़ाद करने को महान् पुण्य कार्य बताते थे। अकाल के समय में बनी हाशिम की ओर से ग़रीबों और मुहताजों को खाना खिलाने की जो प्रथा चली आ रही थी और जो हज़रत इबराहीम की यादगार थी, आप इस प्रथा को बाक़ी रखने का उपदेश देते थे। अब ज़ाहिर है कि यह बातें अबू लहब को कैसे प्रिय हो सकती थीं जब कि वह केवल 'मुश्रिक' ही नहीं बल्कि हर भलाई का दुश्मन था। उस नें सांसारिक जीवन को ही सब कुछ समझ रक्खा था।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-लहब
(मक्का में उतरी—'आयतें' ५)

PALM FIBRE

Revealed at Al-Madinah

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. नष्ट हो गये अबू लहब के हाथ, और वह आप नष्ट हो गया[१]।

1. The power of Abu Lahab will perish, and he will perish.

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ﴿١﴾

२. उस का माल और जो कुछ उस ने कमाया उस के काम न आया[२]।

2. His wealth and gains will not exempt him.

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ﴿٢﴾

३. वह भड़कती आग में पड़ने ही वाला है,[३]

3. He will be plunged in flaming fire,

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾

४. और उस की स्त्री भी, ईंधन लादे-लादे,

4. And his wife, the wood-carrier.

وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾

५. उस के गले में रस्सी पड़ी होगी मजबूत बटी हुई[४]।

5. Will have upon her neck a halter of palm fibre.

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ﴿٥﴾

---

१. अर्थात् अबू लहब जो 'इस्लाम' का सब से बड़ा दुश्मन है और जिस की शत्रुता आज बहुत बढ़ी हुई है उस का ज़ोर टूट जायेगा। वह समय दूर नहीं कि सत्य की विजय होगी और 'कुफ़्र' की दीवारें ढह जायेंगी।

२. अर्थात् जब उस के विनष्ट होने का समय आ जायेगा तो कोई भी उस की रक्षा न कर सकेगा। हम देखते हैं कि क़ुरआन की यह भविष्यवाणी पूर्णतः पूरी होकर रही। बद्र की लड़ाई में उस के सारे साथी और सहायक मारे गये। अपनी जान बचाने के लिए वह स्वयं लड़ाई के मैदान में न गया फिर भी वह अल्लाह की यातना और अज़ाब से अपने को न बचा सका। उस ने अपने बदले में एक-दूसरे व्यक्ति को लड़ाई के मैदान में भेज दिया। आस पर अबू लहब के ४००० दिरहम क़र्ज़ थे। अबू लहब ने इस रक़म के बदले आस को लड़ाई के मैदान में भेज कर अपनी जान बचानी चाही, परन्तु इस उपाय से वह अपने को बचाने में असमर्थ रहा। 'बद्र' की लड़ाई के सातवें दिन चेचक में बीमार हुआ और इसी में हलाक हुआ। छूत लग जाने के भय से उस के बेटों ने दो-तीन दिन तक उस के शव को हाथ नहीं लगाया। यहाँ तक कि उस का शरीर सड़ गया। लोगों के शर्म दिलाने से उसे दफ़न भी किया तो इस प्रकार कि एक दीवार के पास उसे डाल कर दूर ही से पत्थर आदि फेंक कर उसे ढक दिया। अबू लहब के काम न उस का माल आ सका जिस के लोभ में उस ने वह सब-कुछ किया जो नैतिकता, मनुष्यता और सत्य के सर्वथा प्रतिकूल था और न उस की औलाद ही उस के काम आ सकी।

३. यह उस अज़ाब और यातना की सूचना है जिस में वह 'आख़िरत' के दिन पड़ेगा। दुनिया में भी वह अपमानित और असफल हो कर मरा, 'आख़िरत' में 'जहन्नम' की भड़कती हुई आग उस का ठिकाना होगी।

४. अर्थात् उस की पत्नी भी जो अबू लहब की बुराइयों में शरीक है अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकती। वह अपने पति को बुराइयों और अल्लाह और उस के 'रसूल' की दुश्मनी पर उभार रही है। आज तो वह एक धनवान् व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य आभूषण हैं परन्तु 'आख़िरत' में उस की दशा कुछ और होगी। उस दिन वह एक ईंधन ढोने वाली लौंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई रस्सी पड़ी होगी, जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लौंडियों के गले में पड़ी होती है। इस से मालूम हुआ कि यद्यपि दुनिया में उसे मान और प्रतिष्ठा प्राप्त है परन्तु 'आख़िरत' में वह इन चीज़ों से वंचित होगी और अपमान-जनक यातना उसे घेरे हुये होगी। 'क़ियामत' के दिन वह ईंधन ढोने वाली लौंडी के रूप में उठाई जायेगी और यह उस के अपने करतूतों का ही परिणाम होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११२—अल-इख़लास

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-इख़लास' सूरा के मूल विषय और उद्देश्य पर प्रकाश डालता है। इस सूरा में ख़ालिस 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) को निखार पर पेश किया गया है। ख़ालिस 'तौहीद' और इख़लास का अर्थ यह है कि बन्दा अपना सब कुछ अल्लाह ही के लिए ख़ालिस कर दे। अपने सम्पूर्ण हृदय से उस से प्रेम करे और सच्चे दिल से उस की बड़ाई और महानता के आगे झुक जाये। उसी को अपना पूज्य समझे, उस के सिवा हर एक की बन्दगी से इन्कार कर दे। यह इख़लास और निष्ठा 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के बिना सम्भव ही नहीं। प्रस्तुत सूरा में ख़ालिस 'तौहीद' का उल्लेख है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

कुछ लोगों के विचार में यह 'सूरा' मदीना में उतरी है। यहूदियों ने नबी सल्ल० से अल्लाह के बारे में कुछ प्रश्न किये थे यह सूरा उन्हीं के प्रश्न के उत्तर में अवतीर्ण हुई है। परन्तु साधारणतः इस सूरा की गणना मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में होती है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली 'सूरा' में अल्लाह के दुश्मन की तबाही का उल्लेख हुआ है जिस में अल्लाह के दुश्मनों से कटने और एक अल्लाह से नाता जोड़ने का संकेत मिलता है। इस तरह पिछली सूरा प्रस्तुत सूरा की एक प्रकार से भूमिका है। प्रस्तुत सूरा ख़ालिस 'तौहीद' (The Unity) की सूरा है। इस लिए इस सूरा का क़ुरआन में विशेष महत्व है। नबी सल्ल० ने इस सूरा को तिहाई क़ुरआन कहा है। 'तौहीद' की जो शिक्षा क़ुरआन में मिलती है वह इस सूरा में सिमट आई है।

"वह अल्लाह" यही इस 'सूरा' का मध्य विन्दु है। अल्लाह के गुणों का उल्लेख कर के इस सूरा में अल्लाह के प्रति जो शिक्षा दी गई है वह अत्यन्त पवित्र और महान् है।

'सूरा' के आरम्भ में कहा गया है कि कहो कि वह अल्लाह जिस के हम उपासक हैं अकेला और निराला है। उस का कोई सहभागी नहीं है। प्रत्येक दृष्टि से वह अनुपम है। उस के सदृश कोई नहीं। वह अनादि है। जब कुछ न था तो वह था। उस के अतिरिक्त जो कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है।

फिर वह स्वयं अनपेक्ष है परन्तु सब का वही आधार है। वही है जिस से विनती की जाये; जिस से सहायता चाही जाये। दुःखों में जिस को पुकारा जाये। वही सब का आश्रयदाता है। वही सब का पूज्य और अभीष्ट है।

उसे न हम किसी का बाप कह सकते हैं और न बेटा। जब उस के सदृश कोई नहीं तो फिर हम उसे किसी का बाप या बेटा कैसे कह सकते हैं। वह किसी का बाप नहीं सब का 'रब' है, कोई उस का बेटा नहीं सब उस के बन्दे और दास हैं; सब उस के पैदा किये हुये हैं।

फिर उस की बराबरी का कोई नहीं। कोई भी उस का समकक्ष नहीं। सब उस के मुहताज हैं और वह परम स्वतन्त्र है। वह सत्य है उस के मुक़ाबले में सब असत्य हैं।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-इख़लास **(मक्का में उतरी — 'आयतें' ४)**	**THE UNITY** *Revealed at Mecca*	سُورَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُ آيَاتٍ
'अल्लाह' के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. कह दो : वह[1] अल्लाह है,[2] यकता[3] !	1. Say: He is Allah, the One!	قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ①
२. अल्लाह निराधार एवं सर्वाधार है[4] !	2. Allah, the eternally Besought of all!	اللَّهُ الصَّمَدُ ②
३. उस के कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है[5]।	3. He begetteth not nor was begotten.	لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ③
४. और कोई नहीं जो उस के बराबर का हो[6]।	4. And there is non comparable unto Him.	وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ④

---

१. अर्थात् जिस की हम बन्दगी और 'इबादत' करते हैं।
२. "वह अल्लाह है" यही इस 'सूरा' का केन्द्र है। "वह अल्लाह है" इस वाक्य के विषय में मौलाना फ़राही (क़ुरआन के एक विशेष
टीकाकार) लिखते हैं कि यह एक वाक्य हज़ार वाक्य के बराबर है। यदि यह बता दिया गया हो कि सम्राट के क्या गुण हैं, तो
यह कहने के बदले कि वह ऐसा और ऐसा है यह कह देना काफ़ी है कि वह सम्राट है।
३. अर्थात् वह अकेला और निराला है। वह एक सत्ता है, बहुत से अंशों का योग नहीं। उस के सदृश कोई नहीं। उस का कोई सह-
जातीय नहीं। जब कोई नहीं था तब भी वह था। वह सदैव से है। उस के सिवा जो कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है, वह
एक है दो या अधिक नहीं। दो या अधिक मानने का अर्थ तो यह होगा कि कोई भी अपार और असीम शक्ति का स्वामी नहीं।
यदि कोई अपार शक्ति और प्रभुत्व का स्वामी नहीं तो फिर कोई अनादि नहीं हो सकता। इस लिए कि अनादि होने के लिए
असीम अधिकार और असीम शक्ति एवं प्रभुत्व की आवश्यकता है। अतः यह मानना पड़ेगा कि अल्लाह एक ही है, उस के अति-
रिक्त जो कुछ है उसी की रचना है।
इस 'आयत' से नास्तिकों के विचारों का निषेध होता है और मजूस के इस विचार का निषेध भी हो जाता है कि खुदा
दो हैं एक बुराई का, दूसरा भलाई का। इसी प्रकार इस 'आयत' से 'मुश्रिकों' के विचार का खंडन भी होता है जो सैकड़ों देवी-
देवताओं को अल्लाह के प्रभुत्व में शरीक समझते और उन की उपासना करते हैं।
४. यहाँ मूल ग्रन्थ में 'समद' (الصمد) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'समद' का मूल अर्थ 'चट्टान' है। दुश्मन के आक्रमण के समय
चट्टान की पनाह ली जाती है। ज़बूर आदि में अल्लाह को प्रायः 'चट्टान' और 'मदद की चट्टान' कहा गया है। उदाहरणार्थ
दे० ज़बूर (Ps.) १८ : २; ६२ : २, ६; ७१ : ३; ९४ : २२।
'समद' उस सरदार को भी कहते हैं जिस के ऊपर कोई सरदार न हो। अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जिस की
ओर सब दौड़ते हों और वह किसी से माँगने के लिये न जाता हो। अल्लाह के 'समद' होने का अर्थ यह है कि वह किसी का
मुहताज नहीं है परन्तु दूसरे सभी उस के मुहताज और आश्रित हैं। वह स्वयं निराधार और अनपेक्ष है; परन्तु वह सब का आधार
और सब का सहायक है। वही सब का सृष्टि कर्त्ता, दाता और रक्षक है और सब का अभीष्ट है। अतः विनती और प्रार्थना उसी
से करनी चाहिए। सहायता के लिए उसी को पुकारना चाहिए। दुःखों को वही दूर करता है। वही है जिस पर भरोसा किया जाये,
वही वास्तव में अपना सब से बड़ा सहारा है। उसे छोड़ कर जो लोग किसी और को पुकारते हैं और उस के सिवा किसी और की
वन्दना करते हैं वे 'मुश्रिक' हैं, भटके हुये हैं, वे अपने 'रब' को पहचानते नहीं।
५. यह बात कि वह न किसी का पिता है और न किसी का पुत्र है ऊपर की 'आयतों' से सिद्ध है। जो अनादि है और जिस के समान
कोई नहीं वह किसी का पिता या पुत्र कैसे हो सकता है। इस 'आयत' से मालूम हुआ कि जो लोग अल्लाह के लिए बेटा या बेटी
ठहराते हैं वे गुमराही में पड़े हुये हैं। चाहे वे ईसाई हों जो मसीह अ० को अल्लाह का बेटा कहते हैं या यहूदी जो उज़ैर को
अल्लाह का बेटा कहते थे या अरब के 'मुश्रिक' लोग हों जो 'फ़रिश्तों' को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।
६. जब अल्लाह ही सब का पैदा करने वाला है और गुण और अस्तित्व में कोई उस का समकक्ष नहीं तो फिर उस की बराबरी का
कौन हो सकता है कि उसे वह अधिकार और हक़ प्राप्त हो सके जिस का मालिक केवल अल्लाह है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११३–अल-फ़लक़
(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अल-फ़लक़' सूरा की पहली 'आयत' से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह 'सूरा' मक्का में आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई है। यह वह समय था जब कि नबी 'सल्ल०' के धर्म-प्रचार के कारण मक्का में खलबली मच गई थी और बहुत से लोग आप (सल्ल०) के शत्रु हो गये थे। नबी सल्ल० की पुकार पर जहाँ स्त्रियाँ 'ईमान' ला रही थीं वहीं पुरुष और नवयुवक भी 'इस्लाम' की ओर बढ़ रहे थे। जो व्यक्ति भी 'ईमान' लाता वह 'ईमान' के मुक़ाबले में किसी चीज़ की परवाह नहीं करता था। यदि पत्नी ने 'इस्लाम' धर्म को ग्रहण कर लिया तो उसे इस की चिन्ता नहीं होती थी कि उस का पति प्रसन्न होगा या अप्रसन्न। वह समझती थी कि जब 'इस्लाम' सत्य है तो फिर हमें सत्य ही का पालन करना है चाहे इस के लिए कितने ही कष्टों का सामना करना पड़े। हज़रत उम्मे हबीबा का पूरा घराना 'इस्लाम' का शत्रु था। ये 'ईमान' ले आईं और 'ईमान' लाने के पश्चात् हर तकलीफ़ उठाने के लिए तैयार हो गईं। घर-बार छुट गया। आप को 'हिजरत' करनी पड़ी; परन्तु 'ईमान' की दौलत को हाथ से न जाने दिया। यही हाल नवयुवकों का भी था। वे 'इस्लाम' क़बूल कर लेते थे। 'इस्लाम' ग्रहण करने के बाद उन्हें किसी की परवाह न होती थी। चाहे माँ नाख़ुश हो या बाप। समझते थे कि अल्लाह को नाख़ुश करने के बाद माँ-बाप की ख़ुशी ले कर क्या करेंगे।

इस का परिणाम यह हुआ कि लोग नबी सल्ल० के शत्रु हो गये कि इसी व्यक्ति के कारण हमारे घरों में फूट पड़ गई है। लोग आप (सल्ल०) को तरह-तरह से सताने और तकलीफ़ें पहुँचाने लगे। इसी समय में प्रस्तुत 'सूरा' और इस के बाद आने वाली सूरा (अन-नास) उतरी है। दोनों सूरतों का अवतरण काल लगभग एक ही है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह 'सूरा' अपने अर्थों और वर्णन शैली की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक है। इस सूरा से पहले सूरा अल-इख़लास 'तौहीद' की सूरा है। सूरा अल-इख़लास में इस की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह तो बस एक है। बन्दगी उसी की होनी चाहिए। बन्दे को चाहिए कि उसी को अपना आखिरी सहारा और रक्षक समझे। प्रस्तुत 'सूरा' और आगे आने वाली सूरा में बन्दे को अपने 'रब' की शरण लेने की शिक्षा दी गई है। यह शिक्षा वास्तव में उस 'तौहीद' के अन्तर्गत है जिस का उल्लेख सूरा अल-इख़लास में किया गया है। जब अल्लाह के सिवा जितने हैं सब उसी के मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं, तो फिर अपनी रक्षा के लिए उसी की शरण लेनी चाहिए। उस के सिवा कौन है जहाँ आदमी को शरण मिल सके।

प्रस्तुत 'सूरा' और आगे आने वाली 'सूरा' में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि आप हर बुराई के मुक़ाबले में अल्लाह की पनाह ले कर निश्चिन्त हो जाइए। किसी चीज़ से आप (सल्ल०) को हानि नहीं पहुँच सकती।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अल-फ़लक़ (मक्का में उतरी—'आयतें' ५)

THE DAYBREAK
Revealed at Mecca

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. कहो : मैं पनाह लेता हूँ 'फ़लक़' वाले 'रब' की[1]

1. Say: I Seek refuge in the Lord of Daybreak.

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١

२. जो कुछ उस ने पैदा किया उस की बुराई से;[2]

2. From the evil of that which He created;

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢

३. और अन्धकार की बुराई से जब कि वह घुस जाये,[3]

3. From the evil of the darkness when it is intense;

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣

४. और गिरहों में फूंकने वालों की बुराई से,[4]

4. And from the evil of malignant witchcraft,

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝٤

५. और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से जब वह ईर्ष्या करे।[5]

5. And from the evil of the envier when he envieth.

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

१. 'फ़लक़' (فلق) अरबी भाषा में फाड़ने को कहते हैं। प्रातः समय के लिए भी 'फ़लक़' शब्द प्रयुक्त होता है इस लिए कि रात के अन्धकार को फाड़ कर प्रातःकाल का उदय होता है। इस 'आयत' का अर्थ यह हुआ कि कहो : मैं उस 'रब' की पनाह लेता हूँ जो अन्धकार को फाड़ कर उस में से प्रकाश लाता है। दाने और गुठली को फाड़ कर कोंपलें निकालता है। भूमि को फाड़ कर उस में से वनस्पति उगाता है। अनस्तित्व को फाड़ कर वस्तुओं को अस्तित्व प्रदान करता है। जो सब को पैदा करने वाला है; जिस के अधिकार में सब कुछ है।

२. जब सारी चीज़ें उसी की पैदा की हुई हैं, तो वही उन की बुराइयों और उन से पहुँचने वाली तकलीफ़ों से भी बचा सकता है।

३. जिस शब्द का अनुवाद हम ने अन्धकार किया है उस के लिए मूल ग्रन्थ में 'ग़ासिक़' (غاسق) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के अर्थ
में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। अन्धकार में सब प्रकार के अन्धकार आ जाते हैं चाहे उन का सम्पर्क बाह्य जगत से हो या
अज्ञान, गुमराही आदि अन्तर्जगत की चीज़ों से। नबी सल्ल० की कोशिशों से मक्का में जो लोग 'ईमान' ले आये थे उन के घराने
के लोग नबी सल्ल० के दुश्मन बन गये और आप (सल्ल०) को हर प्रकार की हानि पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। 'काफ़िरों' ने
जहाँ इस के लिए और स्कीमें बनाईं वहीं उन की एक स्कीम यह भी थी कि आप (सल्ल०) को रात में क़त्ल कर दिया जाये।
ऐसे काम साधारणतः रात ही के समय किये जाते हैं। नबी सल्ल० एक बड़े क़बीले से सम्बन्ध रखते थे। इस लिए भी दुश्मन
चाहते थे कि आप (सल्ल०) को रात में क़त्ल किया जाये ताकि यह मालूम न हो सके कि किस क़बीले के लोगों ने आप
(सल्ल०) को क़त्ल किया है। अतः कहा जा रहा है कि तुम अन्धकार की बुराई से 'रब' की पनाह ले कर निश्चिन्त हो जाओ वह
तुम्हारी रक्षा करने के लिए काफ़ी है।

४. अर्थात् उन लोगों की बुराई से भी अल्लाह की पनाह लो जो आप (सल्ल०) को या आप (सल्ल०) पर 'ईमान' लाने वालों को
अपने जादू और टोने-टोटके आदि के द्वारा हानि पहुँचाना चाहते हैं। यदि तुम अल्लाह की पनाह में हो तो फ़िर तुम्हें किसी के
जादू और टोने की परवाह नहीं होनी चाहिए।

इस 'आयत' में गिरहों (गाँठों) से अभिप्रेत वे गिरहें हैं जो जादूगर या जादू करने वाली स्त्रियाँ बाँधती हैं। कुछ लोगों
के विचार में गिरहों से अभिप्रेत यहाँ वे गिरहें हैं जो मनुष्य के इरादे और संकल्पों में पड़ जाती हैं और मनुष्य दूसरे के हाथों
विवश हो कर रह जाता है। दूसरे जिधर चाहते हैं उसे ले जाते और गुमराह करते हैं। फिर मनुष्य का अपना इरादा कोई इरादा
नहीं रहता; उस के इरादे बदलते रहते हैं। उदाहरणार्थ सुन्दर स्त्रियाँ अपनी सुन्दरता के कारण पुरुषों के दिलों में उतर जाती हैं
फिर उन्हें अपने वश में कर के जिधर चाहती हैं घुमाती हैं।

५. नबी सल्ल० के विरोध का कारण एक तो यह था कि आप (सल्ल०) लोगों को सत्य की ओर बुला रहे थे। और दूसरा कारण यह
था कि जो लोग आप (सल्ल०) पर 'ईमान' लाते थे वे दुनिया की प्रत्येक वस्तु से, यहाँ तक कि अपने प्राणों से भी बढ़ कर आप
को प्रिय समझते थे। यह ऐसी चीज़ थी जो आप के दुश्मनों में ईर्ष्या की भावना जगाने वाली थी। वे आप (सल्ल०) से और
अधिक जलने लगते थे और अपने दिल की जलन निकालने के लिए विभिन्न उपाय करते थे। इस 'आयत' में नबी सल्ल० से कहा
जा रहा है कि यदि ईर्ष्या करने वाला ईर्ष्या करता है, तो तुम्हें इस की कदापि चिन्ता न होनी चाहिए। तुम अपने सभी शत्रुओं
के मुक़ाबले में हमारी पनाह में आ जाओ और निश्चिन्त और निर्भय हो कर धर्म-सेवा और धर्म-प्रचार के कार्य में लगे रहो।
तुम्हारा दुश्मन तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११४—अन-नास

(परिचय)

नाम (The title)

इस 'सूरा' का नाम 'अन-नास' है। 'अन-नास' शब्द इस सूरा में कई बार आया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

पिछली सूरा' (अल-फ़लक़) और प्रस्तुत सूरा के उतरने का समय एक ही है। दोनों मक्का के आरम्भिक समय मे अवतीर्ण हुई हैं। यह वह समय था जब की लोग नबी सल्ल० के विरोध में हर प्रकार के हथकण्डे अपना रहे थे। आप (सल्ल०) के विरोध में आप (सल्ल०) के शत्रु जो कुछ कर रहे थे उस की एक शक्ल तो वह थी जिस का उल्लेख हमें पिछली सूरा में मिलता है। विरोध की दूसरी शक्ल यह थी कि कुछ लोग इस बात के पीछे पड़े हुये थे कि जिस तरह भी हो लोगों के मन में 'रसूल' (सल्ल०) के विरूद्ध विभिन्न प्रकार के सन्देह और शंका उत्पन्न करें। और उन्हें अल्लाह के रसूल की ओर से 'कुफ़' की ओर फेर ले जायें। इस के लिए वे तरह-तरह के इलज़ाम गढ़ते थे। और लोगों के मन में बार-बार और तरह-तरह के वसवास डालते थे ताकि लोग नबी सल्ल० की ओर से फिर जायें और आप (सल्ल०) के पास जा कर धर्म की बातें और क़ुरआन न सुनें। इस अवसर पर इस सूरा का अवतरण हुआ।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

प्रस्तुत 'सूरा' अल्लाह का यह आदेश ले कर उतरी कि शत्रुओं की चालों और धूर्त्तता के मुक़ाबले में तुम अल्लाह की शरण लो जो लोगों का पालनकर्त्ता, लोगों का स्वामी, सम्राट और पूज्य है। वह तुम्हारी रक्षा करेगा; तुम उस की पनाह में आ कर निश्चिन्त हो जाओ, किसी की परवाह न करो। बहकाने वाले बहकाते रहें और लोगों के मन में वसवास डालते रहें, उन को चालों से 'इस्लामी' आन्दोलन को निष्फल नहीं बनाया जा सकता।

जिस किसी ने अल्लाह की पनाह पकड़ी, अल्लाह उसे हर प्रकार के वसवास और सन्देहों से बचायेगा। चाहे उस वसवास का कारण मनुष्य का अपना विकृत मन हो या दूसरे मनुष्यों की चालें हों या उन 'शैतानों' के बहकावे हों जो 'जिन्नों' में से होते हैं।

प्रस्तुत सूरा पवित्र क़ुरआन की अन्तिम सूरा है। क़ुरआन का प्रारम्भ अल्लाह ही के नाम से हुआ है और अल्लाह की शरण लेने की प्रार्थना के साथ वह समाप्त होता है। पिछली सूरा (अल-फ़लक़) और प्रस्तुत सूरा को 'अल-मुअव्वज़तैन' (The two cries for refuge and protection) भी कहते हैं। इन दोनों सूरतों में हमें अल्लाह से पनाह माँगने और उस की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। अल्लाह के सिवा जितने भी सहारे हैं, सब झूठे और कमज़ोर हैं। बुद्धिमान वही हैं जो कमज़ोर सहारों को छोड़ कर अल्लाह को अपना संरक्षक समझते हैं। जिस की रक्षा करने वाला अल्लाह हो उसे किस बात की चिन्ता हो सकती है। ऐसा व्यक्ति निश्चिन्त हो कर सत्य मार्ग पर चलता है, उसे कोई चीज़ भी सत्य से विचलित नहीं कर सकती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सूरा' अन-नास **(मक्का में उतरी — 'आयतें' ६)**	**MANKIND** ***Revealed at Mecca***	سُورَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّ آيَاتٍ
अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।	In the name of Allah, the Beneficent the Merciful.	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. कहो : मैं पनाह लेता हूँ लोगों के पालन-कर्त्ता की,[1]	1. Say: I seek refuge in the Lord of mankind,	قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ①
२. लोगों के सम्राट की,[2]	2. The King of man kind;	مَلِكِ النَّاسِ ②
३. लोगों के इलाह (पूज्य) की,[3]	3. The God of mankind,	إِلَٰهِ النَّاسِ ③
४. उस की बुराई से जो वसवास डालता और दबक रहता है,[4]	4. From the evil of the sneaking whisperer,	مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ④
५. जो लोगों के सीनों (दिलों) में वसवास डालता है,	5. Who whispereth in the hearts of mankind,	الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ⑤
६. 'जिन्नों' में से भी और मनुष्यों में से भी[5]।	6. Of the jinn and of mankind.	مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

---

१. अर्थात् उस की पनाह लेता हूँ जो लोगों का पालनकर्त्ता है। वही है जिस ने हमारे लिए सारी चीज़ें पैदा कीं। और वे सभी वस्तुयें संचित कीं जिन की हमें आवश्यकता थी। संसार की समस्त वस्तुओं पर उसी का अधिकार है। यदि वह हमारा पालन करने वाला है, तो वही हमारी रक्षा भी कर सकता है अतः हमें उसी की पनाह लेनी चाहिए।

२. वह केवल हमारा पालनकर्त्ता ही नहीं है बल्कि वही वास्तव में हमारा स्वामी और मालिक भी है। जिस प्रकार वह सम्पूर्ण विश्व का सम्राट है उसी प्रकार मनुष्य का सम्राट भी वही है। उस के सिवा दूसरा कोई नहीं जिसे वास्तव में सम्राट होने का अधिकार प्राप्त हो। फिर उसे छोड़ कर जो लोग कहीं और पनाह ढूँढते हैं उन से बढ़ कर मूर्ख दूसरा कोई नहीं हो सकता।

३. जिस प्रकार वह सम्पूर्ण विश्व का पूज्य है उसी प्रकार मनुष्य का पूज्य भी है। वही है जिस से हमें शान्ति मिल सकती है। वही है जो सब का अभीष्ट और जीवन का अन्तिम उद्देश्य है। जिस ने उसे न जाना उस ने कुछ न जाना; जो उसे न पा सका उसे संसार में कुछ भी न मिल सका। वही है जिस की पूजा और उपासना की जाये। उस के सिवा और कोई नहीं जिस के सामने मनुष्य अपना सिर झुकाये। जिसे सहायता के लिए पुकारे। अतः मनुष्य को उसी के पास पनाह ढूँढनी चाहिए।

४. अर्थात् मनुष्य के 'रब,' स्वामी और पूज्य से पनाह माँगो उस की बुराई से बचने के लिए जो दिलों में वसवास और बुरी भावनायें पैदा करता है- जो पीछे हट जाता है, छिप जाता है और फिर पलट कर आता है। कभी मन में कोई वसवास डालता है, कभी सत्य धर्म के विरुद्ध मन में कोई बुरी भावना उत्पन्न करता है और कभी कोई सन्देह और शंका पैदा करता है।

५. अर्थात् दिलों में वसवास डालने वाला और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें और शंका उत्पन्न करने वाला चाहे 'जिन्न' हो या कोई मनुष्य हो इन सब की चालों और धूर्त्तता से हम अल्लाह की पनाह लेते हैं जो सब का 'रब,' स्वामी और पूज्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन-समाप्ति की दुआ

دعائے ماثورہ برائے ختم قرآن مجید

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ
ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْ
اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ
ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ
مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَاءَ اللَّیْلِ
وَاٰنَاءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَا
رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ۔

My Lord, I implore Thee to change my dread of the grave with a liking for it. Be Merciful to me by virtue of the great Quran and make it my Guide, My Light and a mercy for me.

My Lord, I invoke thy Help to restore to memory what I have lfaied to retain, as also in learing what I know not of it yet.

Make it my share to recite Quran, by day and by night, and also make it a witness (over my actions on the Day of Reckoning), Thou cherisher of the Worlds !

हे अल्लाह ! मेरी क़ब्र की घबराहट को लगाव से बदल दे। हे अल्लाह ! मुझ पर महान क़ुरआन के द्वारा दया कर और उसे मेरा नायक, प्रकाश, मार्ग-दर्शन एवं दयालुता बना। हे अल्लाह ! उसमें से जो मैं भूल गया हूँ मुझे याद दिला। जो नहीं जानता मुझे सिखा। और रात और दिन की घड़ियों में मुझे उसके पढ़ने का सौभाग्य प्रदान कर। हे सारे संसार के पालनकर्त्ता स्वामी ! उसे मेरे लिए दलील बना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारिभाषिक शब्दावली

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्लाह—ईश्वर, परमात्मा, खुदा।

'अल्लाह' शब्द वास्तव में 'अल-इलाह' था जो साधारण परिवर्तन के बाद 'अल्लाह' हो गया। 'अल-इलाह' (अल्लाह) में 'अल' शब्द उसी प्रकार प्रयुक्त हुआ है जैसे अंग्रेज़ी में किसी शब्द से पहले The शब्द लगाकर उसे जातिवाचक से व्यक्तिवाचक बना लेते हैं। इस प्रकार 'अल-इलाह' या 'अल्लाह' से अभिप्रेत एक विशिष्ट सत्ता ही हो सकती है। इसलिए 'अल्लाह' का अर्थ हुआ एक प्रमुख और विशिष्ट 'इलाह' (पूज्य)। 'इलाह' की व्याख्या शब्द-सूची में 'इलाह' शब्द के अन्तर्गत देखिये।

अल्लाह आरम्भ से ही उस सत्ता का नाम रहा है जो समस्त गुणों और विशेषताओं से युक्त है; जिसमें कोई दोष या अवगुण नहीं पाया जाता। सम्पूर्ण विश्व जिसकी रचना है। अल्लाह ही संसार का स्वामी और सब का पालनकर्त्ता है। उस जैसा कोई नहीं।

क़ुरआन के अवतरण से पहले भी अरब के लोग यह नाम इसी अर्थ में लेते थे। वे अपने देवी-देवताओं में से किसी को भी अल्लाह का समकक्ष नहीं समझते थे। दूसरे देवताओं की पूजा वे इस विचार से करते थे कि उनके द्वारा अल्लाह तक मनुष्य की पहुँच होती है। अल्लाह से ये लोगों की सिफ़ारिश करते हैं, हालाँकि उनकी यह धारणा सत्य के सर्वथा प्रतिकूल थी। क़ुरआन ने उनकी धारणा और विचार का स्पष्ट शब्दों में खण्डन किया है।

अज़ाब—१. दण्ड, सज़ा, संकट, विपत्ति, कष्ट, दुख, यातना आदि।

२. अल्लाह की सीमाओं और उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले लोगों पर सांसारिक जीवन में आने वाली तबाही।

३. परलोक-दण्ड, 'काफ़िरों', 'मुश्रिकों', 'बहुदेववादियों' और अल्लाह के अवज्ञाकारी लोगों को उनके 'कुफ्र', 'शिर्क' और 'दुष्कर्म' के कारण 'जहन्नम' में मिलने वाली सज़ा।

अनसार—१. 'नासिर' का बहुवचन है। सहायक, मददगार। २. मदीना के वे मुसलमान जिन्होंने नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के उन साथियों की हर प्रकार से सहायता की जो 'हिज्रत' करके वहाँ पहुँचे थे।

अन्तिम दिन—क़ुरआन में इसके लिए 'योमुल आख़िर' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इससे अभिप्रेत वह दिन है जब कि लोगों को उनके उन भले-बुरे कामों का बदला दिया जायेगा जो उन्होंने अपने सांसारिक जीवन में किये होंगे। इस दिन अल्लाह लोगों के बीच उनके उन सभी मामलों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे हैं। इस दिन के आने की सूचना सभी 'नबियों' ने दी है और इसका उल्लेख समस्त ईश्वरीय ग्रंथों में हुआ है।

अरफ़ात—मक्का से ६ मील की दूरी पर स्थित एक ऊँची जगह का नाम है। 'ज़िल हिज्जा'[1] की ९वीं तारीख़ को तमाम 'हज्ज' करने वालों के लिए यहां पहुँचकर ठहरना आवश्यक है।

अर-रस्स वाले—'रस्स' अरबी भाषा में पुराने कुवें (कूप) या अन्धे कुवें को कहते हैं। अर-रस्स वाले कौन थे। इसके बारे में कुछ कहना कठिन है। सम्भवतः यह एक ऐसी जाति थी जिसने अपने नबी को कुवें में

१. एक अरबी महीने का नाम है। इस महीने में 'हज्ज' किया जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लटकाकर या फेंककर मारा था। क़ुरआन में 'अर-रस्स' वालों का उल्लेख 'आद' और 'समूद' जातियों के साथ हुआ है। एक जगह हज़रत नूह अ० की जाति का उल्लेख भी 'अर-रस्स' वालों के साथ किया गया है। कुछ लोगों के विचार में 'अर-रस्स' किसी विशेष स्थान का नाम है।

अर्श—राजसिंहासन (Throne) ईश्वरीय सिंहासन।

अर्श या राजसिंहासन और इस पर अल्लाह के विराजमान होने की वास्तविकता को पूर्ण रूप से समझना अत्यन्त कठिन है। यह भी सम्भव है कि अल्लाह ने किसी विशेष स्थान को अपने विशाल राज्य का केन्द्र ठहराया हो और वहीं से सम्पूर्ण विश्व में शक्ति और सत्ता की व्याप्ति होती हो; और विश्व के प्रबन्ध और व्यवस्था का सम्बन्ध उसी स्थान से हो। और इसकी सम्भावना भी है कि 'अर्श' से अभिप्रेत राज-सत्ता एव शासन हो। और उसपर विराजमान होने का अर्थ यह हो कि अल्लाह केवल यही नहीं कि सम्पूर्ण विश्व का निर्माणकर्त्ता है बल्कि सम्पूर्ण विश्व उसी के अधीन है, वही इस कारखाने को चला भी रहा है। वह विश्व का निर्माण करके उससे अलग नहीं हो गया है।

अल-आराफ़—'आराफ़' वास्तव में ऊँचाइयों को कहते हैं। 'अल-आराफ़' (The Heights) से अभिप्रेत विशिष्ट ऊँचे स्थान हैं जिनपर अल्लाह के विशेष बन्दे पदासीन होंगे। ये नेक लोगों को देखकर पहचान लेंगे कि ये 'जन्नत' में जाने वाले हैं; हालाँकि अभी वे 'जन्नत' में दाखिल न हुए होंगे। ये 'जन्नत' वालों पर सलामती भेजेंगे (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ४६-४८)।

अल्लाह—दे० पृष्ठ १२०।

अल-हिज्र—यह समूद जाति का केन्द्रीय नगर था। इस नगर के अवशेष चिह्न और खंडहर आज भी मिलते हैं। मदीना से तबूक जाते हुए रास्ते में यह स्थान पड़ता है। दे० 'समूद'।

अस्र—१. दिन का चौथा पहर। २. वह 'नमाज़' जो 'ज़ुह्र' के बाद थोड़ा दिन रह जाने पर पढ़ी जाती है। इस नमाज़ का समय दिन डूबने तक रहता है।

'अस्र' वास्तव में ज़माने (समय) को कहते हैं। इसमें उसके तेज़ी से गुज़रने की ओर संकेत होता है। यही कारण है कि प्रायः यह शब्द गुज़रे हुए ज़माने के लिए प्रयुक्त होता है। इसी सम्पर्क से दिन के आखिरी हिस्से को जब दिन गुज़रकर मानो बिल्कुल निचुड़ जाता है 'अस्र' कहा जाता है।

आद—यह अरब की एक प्राचीन जाति का नाम है। आद के किस्से अरबों में मशहूर थे। आद के नाम से उनका बच्चा-बच्चा परिचित था। अरब के प्राचीन काव्य में भी आद का अधिक उल्लेख हुआ है। आद की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी हुई थी फिर संसार से इस जाति का मिट जाना भी लोकोक्ति बन कर रह गया।

यह जाति 'अहक़ाफ़' के क्षेत्र में बसती थी। 'अहक़ाफ़' का क्षत्र हिजाज, यमन और यमामा के बीच पड़ता है। यहाँ आज कल कोई आबादी नहीं है। इसे देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि कभी यहाँ कोई सभ्य और शक्तिशाली जाति आबाद रही होगी। आज यह एक ऐसा मरुस्थल है जिस के भीतरी भाग में जाने का साहस किसी को नहीं होता दे० The Empty Quarter, Philby, London 1933. यहीं से यह जाति फैली है। इसने यमन के पश्चिमी तट से लेकर ईराक़ तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। हज़रत नूह अ० की जाति के विनष्ट होने के पश्चात् यही जाति हर प्रकार से उसकी उत्तराधिकारिणी थी। इस जाति की एक विशेषता यह थी कि यह ऊँचे-ऊँचे स्तम्भों वाले भवनों का निर्माण करती थी। १८३७ ई० में एक अंग्रेज़ को एक प्राचीन शिलालेख मिला था जिसमें हज़रत हूद अ० का उल्लेख है। यह लेख उन लोगों का मालूम होता है जो हज़रत हूद अ० के अनुयायी थे। इस जाति को अल्लाह ने सब-कुछ दिया था परन्तु इस जाति के लोग भी दूसरी गुमराह जातियों की तरह 'शिर्क' (बहुदेववाद) की गन्दगी में जा गिरे। अल्लाह ने इसी जाति के पथ-प्रदर्शन के लिए हज़रत हूद अ० को नबी बनाकर भेजा। परन्तु आद ने हज़रत हूद अ० का इन्कार किया और कहा कि यदि तुम सच्चे हो तो हम पर वह अज़ाब ले आओ जिसकी धमकी तुम हमें दे रहे हो।

अन्त में आद पर अल्लाह का अज़ाब प्रचण्ड वायु के रूप में आ कर रहा और इस जाति का सत्यानाश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गया। (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ६५-७२; हूद आयत ५०-६०; अश-शुअरा आयत १२३-१४०; अल-क़मर आयत १८-२१।)

आख़िरत (Here after)—१. परलोक। २. 'आख़िरत' से अभिप्रेत परलोक भी है और पारलौकिक जीवन भी। यह बात 'इस्लाम' की मौलिक शिक्षाओं में से है कि वर्तमान लोक की आयु सीमित और निश्चित है। एक समय आयेगा कि इस सृष्टि की व्यवस्था बिगड़ जायेगी। फिर अल्लाह एक नये लोक का निर्माण करेगा। जिसके नियम वर्तमान लोक से बहुत-कुछ भिन्न होंगे। जो कुछ आज अप्रत्यक्ष है उस लोक में प्रत्यक्ष हो जायेगा। वास्तविकता उस दिन आँखों से ओझल नहीं रहेगी। उस समय सत्य को मानने पर प्रत्येक व्यक्ति विवश होगा। सच्चाई आँखों के सामने खुल कर आ चुकी होगी। अल्लाह अगली-पिछली तमाम नस्लों को पुनः जीवित करके इकट्ठा करेगा और उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा। संसार में लोगों ने जो-कुछ भला-बुरा किया होगा वह उनके सामने आ जायेगा। उस दिन फ़ैसले का पूरा अधिकार अल्लाह ही को होगा। अल्लाह अपने उन बन्दों को जो दुनिया में उसके आज्ञाकारी बनकर रहे होंगे सदा-बहार 'जन्नतों' में दाख़िल करेगा। 'क़ाफ़िर,' 'मुश्रिक' और अल्लाह के अवज्ञाकारी लोग 'जहन्नम' में डाल दिये जायेंगे। इस आने वाले समय की चिन्ता हमें आज ही करनी चाहिए। यह जीवन हमें मिला ही इसलिए है कि हम इसे 'आख़िरत' की तैयारी में व्यतीत करें।

आयत (Sign)—'आयत' का मौलिक अर्थ है निशानी, चिह्न, संकेत आदि। 'आयत' से हम किसी चीज़ को प्रमाणित रूप देते हैं। 'आयतों' से प्रमाण की ओर संकेत मिलता है। 'आयतें' हमारी चिन्तन शक्ति को उभारती हैं, दिल में सवाल पैदा करती हैं, और हमें उस चीज़ का स्मरण कराती हैं जिसे हम भूले हुये होते हैं। वे हमारे प्राकृतिक स्वभाव को जागृत करती हैं। 'आयत' और दलील (प्रमाण) में अन्तर है। दलील वास्तव में आयत ही पर आधारित होती है।

'आयत' शब्द अपने मौलिक अर्थों में भी क़ुरआन में प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द तीन विशेष अर्थों में क़ुरआन में आया है।

१. क़ुरआन ने प्राकृतिक लक्षणों और प्राकृतिक वास्तविकताओं (facts) के अतिरिक्त ऐतिहासिक घटनाओं को भी 'आयत' कहा है। इसलिए कि ये हमें उन सच्चाइयों का पता देती हैं जो इस भौतिक जगत के पीछे काम कर रही हैं; जिनकी झलक हमें प्रकृति की लीलाओं और मानव-इतिहास के उत्थान और पतन में दिखाई देती हैं।

२. क़ुरआन ने उन चमत्कारों को भी 'आयत' कहा है जिन्हें अल्लाह के 'नबी' अपने नबी होने के सबूत में अल्लाह की ओर से दिखाते थे।

३. क़ुरआन में कहीं-कहीं 'आयत' से अभिप्रेत क़ुरआन का टुकड़ा या 'क़ुरआन' का वाक्य होता है।

क़ुरआन के वाक्यों में जो विशेषतायें पाई जाती हैं वे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से उतरा है और वह अल्लाह का 'कलाम' है।

इन्जील—इन्जील यूनानी शब्द है। यूनानी शब्द Euanggliow है। इसका शब्दार्थ शुभ-सूचना होता है। ईसाइयों के मतानुसार इन्जील शुभ सूचना इसलिए है कि हज़रत मसीह ख़ुदा की बादशाहत की शुभ सूचना सुनाते थे। मुसलमानों के विचार में इन्जील शुभ सूचना और ख़ुशख़बरी इसलिए है कि उसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की सूचना दी गई है। ख़ुदा की बादशाहत का सम्बन्ध भी वास्तव में आपके आगमन से ही है। इन्जील अल्लाह की वह किताब है जो हज़रत ईसा मसीह अ० पर उतरी थी। इन्जील वास्तव में हज़रत मसीह अ० के अन्तिम समय के ढाई-तीन वर्ष के उन कथनों और भाषणों का संग्रह है जो उन्होंने अल्लाह की ओर से दिये थे। आपके जीवन-काल में उन्हें लिपिबद्ध किया जा सका था या नहीं इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। एक समय के पश्चात् जब आपके जीवन-चरित्र पर विभिन्न पुस्तकें लिखी गईं तो इनमें आपके उन भाषणों और आपके उन वचनों को भी जगह-जगह अंकित कर दिया गया जो उन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तकों के लेखकों तक जन-श्रुतियों या स्मृति-पत्रों द्वारा पहुँचे थे। आज जो इञ्जीलें मत्ता (Mathew) मरक़ुस (Mark.) लूक़ा (Luka.) और यूहन्ना (John.) के नाम से पाई जाती हैं वे वास्तव में इञ्जील नहीं हैं; बल्कि इञ्जील हज़रत मसीह के उन कथनों और वचनों को कहेंगे जो इन में जगह-जगह मिलते हैं।

'इञ्जील' अपने से पहले की आसमानी किताब की तसदीक़ करती है। क़ुरआन की भी पुष्टि इञ्जील से होती है। नबी सल्ल० के आगमन के बारे में प्रत्यक्ष संकेत भी इञ्जील में मिलते हैं। इञ्जील में अधिकतर धर्म के तत्वों और रहस्यों का उल्लेख हुआ है। इसके विपरीत 'तौरात' में धर्म-विधान और नियमों का विशेष रूप से उल्लेख हुआ है।

'इद्दत'—'इद्दत' शब्द का अर्थ है गिनती। परिभाषा में उस निश्चित समय को 'इद्दत' कहते हैं जिससे पहले विधवा या तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकतीं।

जिस स्त्री के पति का देहान्त हो जाये उसकी 'इद्दत' की मुद्दत ४ महीने १० दिन हैं। जब तक यह मुद्दत पूरी न हो वह दूसरा विवाह नहीं कर सकती। 'तलाक़' पाई हुई स्त्रियों की 'इद्दत' की मुद्दत तीन बार माहवारी आने तक है। इसके साथ यह हुक्म भी है कि तीन महीनों की इस मुद्दत में स्त्री को अपने घर से भेजा न जाये बल्कि उसे अपने साथ रखा जाये। सम्भव है साथ रहने-बसने से मेल-मिलाप की कोई शक्ल निकल आये।

उन बूढ़ी स्त्रियों की इद्दत ३ महीने है जो ऋतु स्राव से निराश हो चुकी हों; इसी प्रकार उन लड़कियों की इद्दत भी ३ महीने रक्खी गई है जो अभी रजवती नहीं हुई हैं। जो स्त्रियाँ गर्भवती हों उनकी 'इद्दत' बच्चा पैदा होने तक है। शिशु प्रसव के पश्चात् उनकी 'इद्दत' पूरी हो जायेगी

'इद्दत' की जो मुद्दत निश्चित की गई है उसमें बड़ी मसलहत और बड़ा रहस्य है।

इबलीस—'इबलीस' शब्द का अर्थ होता है अत्यन्त निराश, शोकग्रस्त और इन्कार करने वाला। 'इबलीस' उस 'जिन्न' का लक़ब (उपनाम) है जिसने अल्लाह का हुक्म नहीं माना और आदम अ० के आगे झुकने से इन्कार कर दिया। और इस बात का बीड़ा उठाया कि वह आदम अ० की सन्तान को बहकायेगा और उन्हें सत्य-मार्ग से विचलित करने की पूरी चेष्टा करेगा।

इबादत—'इबादत' का मौलिक अर्थ है दास्यभाव, विनम्रता, विनीति, किसी के आगे पूर्ण रूप से झुक जाना, बिछ जाना आदि। फिर इसमें प्रेम, लगाव और चाह का अर्थ भी सम्मिलित है। विनम्रता के साथ जब तक प्रेम-भावना भी न हो उसे 'इबादत' नहीं कह सकते। इस्लाम में 'इबादत' का सम्बन्ध मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से है। इस प्रकार 'इबादत' के अर्थ में बड़ी व्यापकता आ गई है। क़ुरआन ने जहाँ यह शब्द पूजा, (Worship) उपासना और विनय के अर्थ में प्रयोग किया है वहीं यह शब्द क़ुरआन में आज्ञा-पालन (Obedience) भक्ति, बन्दगी और दासता आदि अर्थों में भी प्रयुक्त हुआ है।

वास्तव में, अल्लाह की 'इबादत' करने वाला, उपासक वही है जो केवल उसके आगे विनम्रता ही प्रकट न करता हो बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन उसी की दासता में व्यतीत करता हो। उसी को अपना स्वामी और शासक मानता हो। जीवन के प्रत्येक विभाग में अल्लाह के आदर्शों का आदर और पालन करता हो चाहे उसका सम्बन्ध राजनीति से हो या अर्थ और समाज से; या किसी और विभाग से।

'इबादत' केवल अल्लाह का हक़ है। अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करना 'शिर्क' (बहुदेववाद) है, जो उसी प्रकार घृणित है जैसे ज़िना (व्यभिचार) को हम घृणित कर्म समझते हैं। ऐसे व्यक्ति को अल्लाह कभी क्षमा न करेगा जो अपने जीवन में अल्लाह के सिवा औरों का भी उपासक हो।

इलाह—पूज्य, ईश्वर, ख़ुदा।

धात्वर्थ की दृष्टि से 'इलाह' उसे कहेंगे जो सर्वोच्च और रहस्यमय हो। हमारी आँखें जिसे देख न पाती हों। हमारी कल्पना-शक्ति जिसकी पूर्ण रूप से कल्पना करने में असमर्थ हो। जिसके भेदों को पूरे तौर पर जानना हमारे लिए सम्भव न हो। जिसे मनुष्य अपना शरणदाता समझे; जिसकी ओर वह प्रबल अभिलाषा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के साथ लपकता हो। जो मनुष्य का अभीष्ट और प्रिय हो। जो शान्ति प्रदान कर सकता हो। जिसे मनुष्य संकटों में पुकार सके जिसे वह अपना आराध्य और पूज्य बना सके।

इससे विदित है कि 'इलाह' उसी को बनाया जा सकता है जिसे प्रभुत्व के सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हों। इसलिए कि जो सत्ता प्रभुत्व से वञ्चित होगी वह किसी की क्या सहायता कर सकती है। यह अरबों और दूसरे 'मुश्रिक', 'बहुदेववादी' लोगों की गुमराही थी कि वे अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को भी अपना 'इलाह' ठहराते थे, हालाँकि अल्लाह के अतिरिक्त किसी को वे अधिकार और गुण प्राप्त ही नहीं हैं जो 'इलाह' होने के लिए आवश्यक हैं।

वेद में 'ईल्य' शब्द विशेषतया ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'ईल्य' का धात्वर्थ पूजनीय ही होता है। उदाहरणार्थ दे० वेदमंत्र ऋग्वेद १।१।२ जिसका अर्थ है: "ईश्वर! तू पूर्व और नूतन या छोटे और बड़े सभी के लिए पूजनीय है। तूझे विद्वान ही समझ सकते हैं।"

इशा—१. रात का पहला पहर, रात का अन्धकार। २. वह 'नमाज़' जो 'मग़रिब' का समय समाप्त हाने के बाद पढ़ी जाती है।

'इशा' की 'नमाज़ रात के पहले पहर में पढ़नी उत्तम है, यों इसका समय प्रातःकाल के पौ फटने से पहले तक रहता है।

इस्लाम—'इस्लाम' का प्रारम्भिक और मौलिक अर्थ है विनम्रता, विनीति आदि। अरब के साहित्य में यह विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। इसके दो विशेष अर्थ होते हैं। 'इस्लाम' का एक अर्थ है आज्ञापालन (Obedience) हुक्म मानना, झुक जाना, आत्म-समर्पण (Surrender), पूर्णरूप से किसी दूसरे के लिए हो जाना (Complete submission), त्याग, स्वेच्छापूर्वक अधीनता स्वीकार करना आदि। 'इस्लाम' धर्म का नाम 'इस्लाम' इसलिए पड़ा है कि यह हमें इस बात की शिक्षा देता है कि हम एक अल्लाह के हो जायें, उसके आगे झुक जायें और उसके आदेशों का पालन करें। अल्लाह के आगे अपने को डाल देने और उसकी आज्ञा पर चलने ही का दूसरा नाम 'इस्लाम' है।

'इस्लाम' का दूसरा प्रसिद्ध अर्थ है—सुलह, शान्ति, कुशलता, संरक्षण, शरण आदि। नबी सल्ल० ने कहा है: "इस्लाम" लाओ (तबाही से) बच जाओगे"। आप (सल्ल०) ने यह भी कहा है: "जो व्यक्ति भी इस (इस्लाम) में आया सलामत रहा।"

'इस्लाम' ही उन सभी 'नबियों' का 'दीन' (धर्म) रहा है जो अल्लाह की ओर से लोगों के पथ-प्रदर्शन के लिए आए थे, चाहे वे किसी भी समय और किसी भी जाति में आए हों, 'दीन' (धर्म) सबका एक था।

इहराम—मक्का पहुँचने से पहले एक निश्चित स्थान पर पहुँचकर 'हज्ज' करने वाले स्नान करके एक विशेष प्रकार का फ़क़ीराना वस्त्र पहन लेते हैं—और 'तलबिया'[1] कहते हैं—यही 'इहराम' है। इस वस्त्र में केवल एक तहमत होता है और एक चादर जिसे ऊपर से ओढ़ लेते हैं। इसे 'इहराम' इसलिए कहते हैं कि इसके धारण करने के पश्चात् बहुत-सी ऐसी चीज़ें आदमी के लिए हराम हो जाती हैं जो साधारण अवस्था में उसके लिए हराम नहीं हैं। जैसे बाल कटवाना, सुगन्ध का प्रयोग, हर प्रकार की सज्जा और स्त्री-प्रसंग आदि। इन पाबन्दियों में यह भी है कि किसी जीव का वध न किया जाये और न किसी जानवर का शिकार किया जाये और न किसी को शिकार का पता बताया जाये।

जिस स्थान पर 'हज्ज' करने वाले 'इहराम' बाँधते हैं, उसे 'मीक़ात' कहा जाता है। यदि कोई यहाँ 'इहराम' न बाँधे तो उसे वापस होकर फिर यहाँ से 'इहराम' बाँधना पड़ेगा। विभिन्न देशों से आने वालों के लिए अलग-अलग 'मीक़ात' हैं। उदाहरणार्थ भारत और पकिस्तान से आने वालों की मीक़ात यलमलम की पहाड़ी है। बसरा, बग़दाद और ईरान से आने वालों की मीक़ात ज़ातेइर्क़ है।

---

१. तलबिया वह दुआ है जिसे 'हज्ज' करने वाले इहराम बाँधने के समय से लेकर जब तक 'हज्ज' समाप्त नहीं हो जाता, उठते, बैठते और 'हज्ज' से सम्बन्धित विभिन्न कार्यों को पूरा करते हुए पढ़ते रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईमान—विश्वास, आस्था, श्रद्धा, मानना।

'ईमान' उस विश्वास को कहते हैं जिसके साथ श्रद्धा भी हो और विनम्रता और भय भी, और साथ ही आस्था और भरोसा भी। 'ईमान' वास्तव में तसदीक़ करने और मानने को कहते हैं। इसका विलोम है 'कुफ़्' इन्कार, झुठलाना आदि। यक़ीन या विश्वास का विलोम सन्देह, शंका आदि है। यह ज़रूरी नहीं है कि आदमी को जिस चीज़ का विश्वास हो वह उसे माने भी। फ़िरऔन ने अल्लाह की खुली निशानियों को देखने के बाद भी उन का इन्कार कर दिया और कहा कि यह तो जादू है। हालांकि मन में वह भली-भाँति जानता था कि वह जिस चीज़ का इन्कार कर रहा है वह जादू नहीं ईश्वरीय चमत्कार है। परन्तु सरकशी के कारण वह इन्कार ही करता रहा। 'ईमान' की एक विशेषता यह भी है कि वह मनुष्य के मन और मस्तिष्क के लिए शान्ति और सन्तोष का कारण है।

'इस्लाम' में जिन चीज़ों के मानने और उन पर ईमान लाने की शिक्षा दी गई है उनमें ये तीन महत्त्वपूर्ण हैं :

१. अल्लाह है और वह एक है। उसी ने सबको पैदा किया और वही सब का मालिक है।

२. उसने मानव-जाति के मार्ग-दर्शन के लिए नबियों और रसूलों को भेजा। हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं और सारे संसार के मार्ग-दर्शन के लिए भेजे गये हैं।

३. आख़िरत सत्य है। एक दिन वर्तमान लोक नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। उसके पश्चात् अल्लाह फिर अपनी कृपा से एक नये संसार का निर्माण करेगा। फिर सबको पुनः जीवित करके उठायेगा और उन्हें उनके अच्छे-बुरे कर्मों का बदला देगा। अच्छे और अल्लाह के आज्ञाकारी लोग 'जन्नत' में दाखिल किए जाएंगे। बुरे लोगों और अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करने वालों और 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को 'जहन्नम' की अग्नि में डाला जायेगा।

ईमान लाना—विश्वास करना, मानना, उन बातों को मानना और स्वीकार करना जिन्हें मानने की शिक्षा 'इस्लाम' ने दी है। दे० 'ईमान'।

ईमान वाले—वह व्यक्ति जो ईमान लाये, उन बातों को माने और स्वीकार करे जिन्हें मानने की शिक्षा 'ईस्लाम' ने दी है। दे० 'ईमान'।

ईमान लाने वाला—वे लोग जिनमें 'ईमान' हो। जो उन सभी बातों को मानते हों जिनके मानने की शिक्षा 'इस्लाम' ने दी है। जो व्यक्ति अल्लाह पर उसकी उतारी हुई किताबों और उसके आदेशों पर ईमान लाये और सब-कुछ उसे सौंपकर उसके फ़ैसले पर राज़ी हो जाये, वही क़ुरआन की दृष्टि से 'ईमान' वाला है। दे० 'ईमान'।

ईसाई—ईसाई धर्म के मानने वाले, वे लोग जो हज़रत ईसा मसीह अ० के अनुयायी होने का दावा करते हैं।

उमरा—'उमरा' में निर्माण, शोभा और आबादी का अर्थ पाया जाता है। 'उमरा' का उद्देश्य जहाँ अल्लाह के घर ('काबा') की शोभा और उसकी आबादी है वहीं वह मनुष्य के आत्मिक जीवन और जागृति का कारण भी है। इन दोनों में गहरा सम्पर्क है।

'हज्ज' की तरह 'उमरा' भी एक 'इबादत' है जो 'काबा' की ज़ियारत (दर्शन) के साथ अदा की जाती है। 'हज्ज' और 'उमरा' में कुछ बातों में अन्तर है। 'हज्ज' को अल्लाह ने उन लोगों के लिए ज़रूरी ठहराया है जिन्हें 'हज्ज' करने का सामर्थ्य प्राप्त हो परन्तु 'उमरा' का अदा करना अनिवार्य नहीं है। 'हज्ज' सामूहिक रूप से अदा किया जाता है; 'उमरा' अकेले अदा करते हैं। फिर 'उमरा' में 'हज्ज' की कुछ ही परिपाटियों का पालन किया जाता है। 'हज्ज' का समय निश्चित है, 'उमरा' किसी भी समय कर सकते हैं।

उम्मी—१. अशिक्षित, वह व्यक्ति या जाति जो अशिक्षित हो। २. जिस जाति के पास कोई आसमानी (अल्लाह की उतारी हुई) किताब न हो।। ३. हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उपाधि इसलिए कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप (सल्ल०) पढ़े-लिखे व्यक्ति न थे।

एतकाफ़—१. एकान्तवास, २. कुछ दिन, विशेष रूप से 'रमज़ान' के अन्तिम् दस दिन, मस्जिद में एकातन्वास करना और सबसे कटकर अल्लाह की याद और उसकी 'इबादत' में लग जाना 'एतकाफ़' कहलाता है। 'एतकाफ़' की हालत में केवल आवश्यक ज़रूरतों के लिए ही थोड़ी देर के लिए बाहर निकल सकते हैं।

ऐका वाले—ऐका घने जंगल को कहते हैं। यह 'तबूक' का प्राचीन नाम है। ऐका वालों से अभिप्रेत हज़रत शुऐब अ० की जाति के लोग हैं। मदयन वाले और ऐका वाले एक ही नस्ल के दो क़बीले थे। दोनों के लिए अल्लाह ने हज़रत शुऐब अ० को नबी बनाकर भेजा था। सम्भवतः इसका कारण यही था कि इन दोनों का सम्बन्ध एक ही नस्ल से था। इनकी भाषा एक थी और इनके इलाक़े एक-दूसरे से मिले हुए थे। ये व्यापार करते थे। इन दोनों कबीलों में एक ही प्रकार की बुराइयाँ पाई जाती थीं। दे० मदयन वाले।

कफ़्फ़ारा (Expiation)—प्रायश्चित। किसी पाप के दोष से मुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक कार्य या अच्छा काम। 'कफ़्फ़ारा' का शाब्दिक अर्थ है 'छुपाने वाली वस्तु'। किसी शुभ कार्य को पाप या गुनाह का 'कफ़्फ़ारा' ठहराने का अर्थ यह है कि वह नेकी उस गुनाह पर छा जाती है और उसे ढक लेती है; और उसका असर मिटा देती है। 'कफ़्फ़ारा' आत्मा को शुद्ध करने का एक उत्तम साधन है। क़ुरआन में विभिन्न गुनाहों का 'कफ़्फ़ारा' नियत किया गया है। उदाहरणार्थ दे० सूरा अन-निसा आयत ९२।

काफ़िर—१. 'कुफ़्र' करनेवाला, इन्कार करनेवाला, धर्म-विरोधी। जो उन सच्चाइयों को मानने और स्वीकार करने से इन्कार करे जिनकी शिक्षा 'इस्लाम' में दी गई है। २. अकृतज्ञ। दे० 'कुफ़्र'।

काबा—मक्का नगर में स्थित अल्लाह का वह पवित्र घर जिसकी दीवारें अल्लाह के हुक्म से हज़रत इबराहीम अ० और हज़रत इस्माईल अ० ने चुनी थीं। जिसे अल्लाह ने मानवजाति के वास्तविक धर्म का केन्द्र ठहराया है। जिसकी ओर मुँह करके नमाज़ अदा की जाती है।

किताब—'किताब' शब्द का प्रयोग क़ुरआन में कई अर्थों में हुआ है।

१. अल्लाह का कलाम जो उसने अपने रसूलों पर उतारा। 'किताब' से अभिप्रेत अल्लाह की पूरी किताब भी होती है और किताब का कोई भाग भी।

२. अल्लाह का फ़ैसला जो उसने स्वयं जारी करने के लिए किया हो। जैसे किसी को मिलने वाली मुहलत या उसके विनष्ट किये जाने का फ़ैसला।

३. आदेश, हुक्म। अल्लाह की ओर से अनिवार्य निर्धारित किया हुआ धर्म-विधान। जिसे 'शरीअत' कहते हैं।

४. वह किताब जिसमें उसके फ़ैसले अंकित हों।

५. पत्र (दे० सूरा अन-नम्ल आयत २९)।

६. अल्लाह का वह अभिलेख (Record) जिसमें प्रत्येक चीज़ें अंकित होती हैं।

किताब वाले—वे लोग जिन्हें अल्लाह की ओर से किताब प्रदान हुई हो। 'किताब वालों' से संकेत उन ईसाइयों और यहूदियों की ओर है जिन्हें अल्लाह की ओर से किताब मिली थी।

क़िबला—'क़िबला' उसे कहते हैं जो आदमी के मुँह के सामने हो और जिसकी ओर उसका ध्यान आकर्षित हो। परिभाषा में इससे अभिप्रेत वह दिशा है जिसकी ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

क़िब्ती—क़िब्ती मिस्र के प्राचीन निवासी थे। ये मुश्रिक थे; मूर्तियों की पूजा करते थे। बनीइसराईल, जब मिस्र में दासता का जीवन व्यतीत कर रहे थे उस समय जो गरोह देश पर शासन कर रहा था उसका सम्बन्ध इसी क़िब्ती जाति से ही था।

क़ियामत (Resurrection)—पुनरुत्थान, प्रलय।

एक दिन ऐसा आने वाला है जब अल्लाह वर्तमान लोक को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा, सारे मनुष्य और जीवधारी मर जायेंगे। फिर इसके पश्चात् वह एक दूसरी सृष्टि की रचना करेगा। सभी लोगों को पुनः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवित करके उठायेगा। और उन्हें उनके कर्मों का बदला दिया जायेगा। यही 'क़ियामत' का दिन होगा।

क़िसास (Retaliation)—हत्यादण्ड, प्रतिहत्या।

'क़िसास' का अर्थ है ख़ून का बदला। अर्थात् आदमी के साथ वही किया जाये जो उसने दूसरे के साथ किया हो।

समाज की यह सबसे बड़ी आवश्यकता है कि मनुष्य के प्राणों की रक्षा हो। यदि कोई व्यक्ति किसी का अकारण वध कर देता है तो इसका अर्थ यह है कि वह समाज की उस मर्यादा का उल्लंघन कर रहा है जिससे मानव-प्राण की रक्षा होती है। वध करने वाले व्यक्ति को 'क़िसास' में क़त्ल कर देना या क्षमा कर देने के रूप में मारे गये व्यक्ति के वारिसों को उससे कुछ माल दिलाना वास्तव में समाज के सभी प्राणियों का आदर करना है। 'क़िसास' का नियम ऐसा नहीं है कि उसे बुरा समझा जाये। 'क़िसास' के नियम को त्याग देने मे पूरा समाज ख़तरे में पड़ता है। लोगों के प्राणों की रक्षा के लिए 'क़िसास' के नियम का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। यही बात क़ुरआन में इन शब्दों में बयान हुई है: " 'क़िसास' में तुम्हारे लिए जीवन है"।

कुफ़्र—१. अधर्म, इन्कार। २. अकृतज्ञता; कृतज्ञता:

'कुफ़्र' का अर्थ होता है: ढांकना, छिपाना, परदा डालना, 'इस्लाम' का इन्कार करना। 'इस्लाम' के इन्कार करने वाले व्यक्ति को 'कुफ़्र' का अपराधी इसलिए ठहराते हैं कि वह अपनी उस सहज प्रकृति पर अज्ञान का परदा डालता है जिसे लेकर वह पैदा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति इस्लामी प्रकृति के साथ इस लोक में जन्म लेता है। जिस संसार में वह अपनी आँखें खोलता है उसकी समस्त वस्तुएँ अल्लाह की आज्ञा का पालन कर रही होती हैं परन्तु जब मनुष्य सत्य को मानने से इन्कार करता है: अल्लाह के आगे नहीं झुकता और अल्लाह की ओर से आये हुए दिव्य सन्देश की अवहेलना करता है, तो इसका अर्थ इसके सिवा और क्या होगा कि उसने अपने नेत्रों पर परदा डाल लिया; उसे कुछ सुझाई नहीं देता। वह अन्धकार ही में भटकना चाहता है। 'कुफ़्र' का कारण आदमी की सरकशी, पक्षपात और अन्धता ही होती है। 'कुफ़्र' की पुष्टि के लिए कोई प्रमाण भी प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

क़ुरआन में 'कुफ़्र' शब्द शुक्र (कृतज्ञता) और 'ईमान' दोनों के विलोम के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार 'कुफ़्र' का अर्थ अकृतज्ञता और इन्कार दोनों होता है। वास्तविकता का इन्कार और उपकार करने वाली सत्ता का आभारी न होना ये ऐसे अपराध हैं जिनमें आदमी सत्य को झुठलाता और उस पर परदा डालता है। इससे बढ़कर घृणित कर्म और क्या हो सकता है। क़ुरआन में जहाँ यह शब्द अपने कर्म (Object) के साथ प्रयुक्त नहीं हुआ है बल्कि स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ 'कुफ़्र' से अभिप्रेत उन सभी चीज़ों का इन्कार है जिनके मानने की शिक्षा इस्लाम में दी गई है। कहीं-कहीं ऐसे स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग अकृतज्ञता के अर्थ में भी हुआ है जिसका पता वर्णन-शैली और प्रयुक्त स्थान आदि से लगाया जा सकता है।

'कुफ़्र' शब्द जहाँ अपने कर्म के साथ प्रयुक्त हुआ है वहाँ तो निश्चित रूप से 'कुफ़्र' से अभिप्रेत उस कर्म का कुफ़्र या इन्कार होगा।

क़ुरआन—'क़ुरआन' का अर्थ होता है 'पढ़ना'। अल्लाह की वह अन्तिम किताब जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर अवतीर्ण हुई। इस किताब को क़ुरआन कहने का अर्थ यह है कि यह किताब सब लोगों के पढ़ने के लिए अवतीर्ण हुई है। और यह ऐसी है कि अधिक-से अधिक पढ़ी जाये। इस किताब को क़ुरआन कहना ऐसा ही है जैसे किसी अतिरूपवान व्यक्ति को 'सौन्दर्य' की उपाधि दे दी जाये।

क़ुरबानी—१. बलिदान। जानवर को अल्लाह के नाम पर क़ुरबान करने की क्रिया। वह चीज़ जिसके द्वारा बन्दा अल्लाह के क़रीब हो। अल्लाह की दी हुई चीज़ को विनम्रता और कृतज्ञता के साथ उसके अर्पण करना।[1] यह क्रिया वास्तव में अपने प्राण अल्लाह के समर्पण करने का प्रदर्शन है। जानवर का ख़ून बहा

---

१. इस्लाम भी क़ुरबानी ही है इसमें बन्दा अपने आप को अर्पण करता है, दे० 'इस्लाम'।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर मनुष्य इस बात का प्रण करता है कि यदि अल्लाह की राह में अपनी जान की क़ुरबानी देने की आवश्यकता होगी तो हमें इसमें कोई संकोच न होगा। 'क़ुरबानी' दास्यभाव और आत्मसमर्पण की एक सफल अभिव्यक्ति है। 'क़ुरबानी' वास्तव में आत्मा के शुद्ध करने का एक उत्तम साधन है। यही कारण है कि 'क़ुरबानी' या बलिदान को समस्त प्राचीन जातियों में अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का एक विशेष साधन समझा जाता रहा है।

'क़ुरबानी' हज़रत इबराहीम अ० की यादगार भी है। हज़रत इबराहीम अ० ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अ० को अल्लाह की प्रसन्नता के लिए क़ुरबान करना चाहा तो अल्लाह ने हज़रत इबराहीम की यह भेंट दूसरे रूप में क़बूल की (दे० सूरा अस-साफ़्फ़ात आयत १००-१०९)। अल्लाह ने हज़रत इस्माईल अ० को अपने घर (काबा) की सेवा के लिए ख़ास कर लिया। इसी प्रकार हम भी 'फ़िदया' देकर अर्थात् अपने बदले जानवर क़ुरबान करके अपनी जानों को छुड़ा लेते हैं; परन्तु हमारी जानें हमें लौटाई नहीं जातीं बल्कि हमारी अमानत में दे दी जाती हैं ताकि आवश्यकता हो तो हम उन्हें अल्लाह के नाम पर निछावर कर सकें।

क़ुरैश—अरब का विशेष प्रतिष्ठित क़बीला जिसमें नबी सल्ल० पैदा हुए। 'क़ुरैश' इस्माईल अ० की सन्तान में नज़्र बिन कनाना की नस्ल से हैं।

ख़लीफ़ा—१. प्रतिनिधि, स्थानापन्न, नायब। २. किसी के बाद आने वाला, उत्तराधिकारी।

'ख़लीफ़ा' (प्रतिनिधि के अर्थ में) उसे कहते हैं जो किसी की दी हुई मिल्क में उसके दिये हुए अधिकारों का प्रयोग उसके आदेशानुसार करे। 'ख़लीफ़ा' स्वामी और मालिक नहीं होता उसका काम केवल मालिक के आदेशों का पालन करना और उसकी इच्छा को पूरा करना होता है। मनुष्य को अल्लाह ने भूमि पर यदि कुछ अधिकार प्रदान किये हैं तो वास्तव में इसमें मनुष्य की परीक्षा है। अल्लाह यह देखना चाहता है कि वह अल्लाह के दिए हुए अधिकारों का प्रयोग उसकी इच्छा के अनुसार करता है या स्वच्छन्दतापूर्वक वह अपने सब कार्य करता है। क़ुरआन में एक जगह कहा गया है : "हे दाऊद ! हमने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है, तो तुम लोगों के बीच हक़ के साथ हुकूमत करो और वासना का अनुपालन न करो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देगी" (सूरा सॉद० आयत २६)।

ख़ुल्अ—इस्लाम ने जिस तरह पुरुष को यह हक़ दिया है कि जिस स्त्री को वह पसन्द नहीं करता, और जिसके साथ उसका निर्वाह नहीं हो सकता, उसे 'तलाक़' दे दे; उसी तरह उसने स्त्री को भी यह हक़ दिया है कि जिस पुरुष को वह पसन्द नहीं करती, और जिसके साथ किसी तरह वह गुज़र-बसर न कर सकती हो, उससे 'ख़ुल्अ' कर ले। अर्थात् उससे छुटकारा प्राप्त कर ले। 'तलाक़' या 'ख़ुल्अ' को खेल बना लेना कदापि सही नहीं है। इसका प्रयोग तो एक अन्तिम उपाय के रूप में ही होना चाहिए जबकि परस्पर निर्वाह होना असम्भव हो। और अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाओं के टूट जाने का भय हो। स्त्री 'ख़ुल्अ' करना चाहती है तो उसे पुरुष को वह माल या उसका एक हिस्सा वापस करना होगा जो उसे पति से 'मह्र' के रूप मिला था। नबी सल्ल० ने इसे पसन्द नहीं किया है कि पति 'ख़ुल्अ' के बदले में अपने दिये हुए 'मह्र' से अधिक माल ले। बल्कि यदि स्त्री पति के अन्याय के कारण 'ख़ुल्अ' चाहती हो तो पति को सिरे से माल ही लेना उचित नहीं है।

ग़नीमत—शत्रुधन। अल्लाह के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई में धर्म-विरोधियों का जो माल इस्लामी सेना के क़ब्ज़े में आता है उसे 'ग़नीमत' कहते हैं। पिछली जातियों में 'ग़नीमत' हलाल न थी परन्तु इसे अल्लाह ने हलाल कर दिया। इस सिलसिले में 'इस्लाम' की जो शिक्षायें हैं उनका बड़ा महत्त्व है। इस्लाम की शिक्षा है कि जो व्यक्ति 'ग़नीमत' हासिल करने के इरादे से युद्ध करेगा उसे 'जिहाद' का सवाब (पुण्य) नहीं मिलेगा। 'जिहाद' का सवाब तो केवल उन लोगों के लिए है जो शुद्ध हृदय के साथ केवल अल्लाह के लिए रणक्षेत्र में उतरेंगे। इस शिक्षा के कारण मुसलमानों में 'ग़नीमत' की इच्छा से कहीं बढ़कर 'आख़िरत' में मिलने वाले सवाब की कामना उभर आई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर 'ग़नीमत' के माल में मुहताजों, ग़रीबों, मजबूरों, असहाय लोगों और सर्वसाधारण जनता की भलाई के कामों के लिए १/५ भाग निश्चित कर दिया गया। (दे० सूरा अल-अनफ़ाल आयत ४१)। इस प्रकार 'ग़नीमत' का एक खास हिस्सा नेक कामों के लिए निश्चित हो गया।

पहले हर उस माल को 'ग़नीमत' का माल कहते थे जो कोई सेना शत्रु के देश से लूट ले चाहे वह किसी प्रकार से लूटे; परन्तु 'इस्लाम' ने केवल उसी माल को 'ग़नीमत' निर्धारित किया है जो रणक्षेत्र में शत्रु की सेना से विजय पाने वालों के हाथ में आये।

गुनाह (Sin)—पाप, दोष, अपराध, दुष्कर्म, अधर्म; वे कर्म, जो अल्लाह की इच्छा और उसके आदेशों के प्रतिकूल हों। अल्लाह की इच्छा और उसके आदेशों के पालन ही में मनुष्य का कल्याण है। अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध जाना वास्तव में अपने वास्तविक स्वभाव और प्रकृति के विरुद्ध आचरण करना है।

ग़ुलाम (दास)—प्राचीन काल से १८वीं शताब्दी के आरम्भ तक युद्ध में जो लोग क़ैद होते थे उन्हें ग़ुलाम बनाकर रखने और उन्हें बेचने और खरीदने का प्रचलन था। अधिकतर ऐसा ही होता था कि जो लोग क़ैद होते वे उसी राज्य के क़ब्जे में रहते जिसकी सेना उन्हें क़ैद करती। इस प्रकार अत्यधिक संख्या में लोग एक देश से दूसरे देश में चले जाते थे जिन्हें क़ैद करके रखना और उनके खाने-कपड़े का प्रबन्ध करना किसी राज्य के लिए सरल कार्य न था। इसलिए अधिक क़ैदियों को—जिनमें पुरुष भी होते और स्त्रियाँ भी—सेना के व्यक्तियों में बाँट दिया जाता और इस प्रकार वे उनके पास लौंडी-ग़ुलाम के रूप में रहते थे।

'इस्लाम' ने यह नियम प्रस्तुत किया कि क़ैदियों को रिहा किया जाये चाहे उपकार के रूप में या 'फ़िदया' लेकर या अपने क़ैदियों के बदले में दूसरे फ़रीक़ के क़ैदियों को छोड़ा जाये। परन्तु जब अमुस्लिम जातियाँ इसे मानने पर तैयार न हों तो इस्लाम ने मुसलमानों को इसकी इजाज़त दे दी कि विरोधी दल के क़ैदियों को ग़ुलाम बनाया जाये। परन्तु 'इस्लाम' ने इसके साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया कि ग़ुलामों के साथ यथासम्भव अच्छे-से-अच्छा व्यवहार किया जाये और ऐसी स्थिति पैदा की जाये कि वे समाज में कोई नीच वर्ग बनकर न रहें बल्कि धीरे-धीरे वे इस्लामी समाज में विलीन हो जायें। 'इस्लाम' ने युद्ध में क़ैद होने वालों को ग़ुलाम बनाने की केवल इजाज़त दी है, हुक्म नहीं दिया है। कितनी ही बार युद्धों में लाखों आदमी पकड़े गये परन्तु अल्पसंख्यकों के सिवा किसी को ग़ुलाम नहीं बनाया गया। इस्लामी क़ानून ने भी ग़ुलामों को बहुत से हक़ प्रदान किये हैं। उनका माल चुराने वाले, उन्हें क़त्ल करने वाले, उनकी स्त्रियां का सतीत्व भंग करने वाले और उन्हें कोई शारीरिक हानि पहुँचाने वाले के लिए वही दण्ड है जो दण्ड स्वतन्त्र व्यक्ति के साथ इन अपराधों के करने वाले के लिए नियत है। ग़ुलामों को अपने व्यक्तिगत धन-सम्पत्ति पर मालिकाना अधिकार प्राप्त है। इतिहास साक्षी है कि इस्लाम में धर्म, समाज और राजनीति आदि प्रत्येक विभाग में ग़ुलामों के लिए उन्नति की राहें खुली रही हैं। ग़ुलाम होना उन्नति की राह में कभी बाधक नहीं रहा। लौंडियों के प्रति इस्लामी नियम आदि के लिए दे० 'लौंडी'।

ग़ैब (Invisible)—१. परोक्ष, अदृष्ट, छुपा हुआ। 'ग़ैब' वह चीज़ जो हमसे ग़ायब हो। २. जिसके जानने का कोई साधन न हो। ३. वह स्थान जो हमारे सामने न हो, वह दिशा जो निश्चित न हो। ४. यह शब्द रहस्य के लिए भी प्रयुक्त हुआ है।

'ग़ैब' से अभिप्रेत वे वास्तविकतायें हैं जिन तक मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों और उसकी अनुभव शक्ति की पहुँच नहीं। जैसे अल्लाह का अस्तित्व 'फ़िरिश्ते,' 'वह्य', 'जन्नत', 'जहन्नम' और 'आख़िरत' से सम्बन्ध रखने वाली दूसरी बहुत-सी चीज़ें।

अल्लाह ने अपने 'नबियों' के द्वारा इन वास्तविकताओं से हमें सूचित किया है और विशुद्ध तर्कपूर्ण युक्तियों से इनकी पुष्टि की है। अल्लाह ने परोक्ष की जिन बातों की सूचना हमें दी है उनका जानना हमारे लिए आवश्यक था। क्योंकि इसके बिना मानव-जीवन की कोई व्याख्या नहीं की जा सकती थी। परन्तु परोक्ष की समस्त बातों को विस्तृत रूप से जानना वर्तमान अवस्था में न सम्भव है और न इसकी आवश्यकता ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़कात—अरबी भाषा में 'ज़कात' का अर्थ होता है : १. पाक और शुद्ध होना, २. बढ़ना, विकसित होना। पारिभाषिक रूप में 'ज़कात' उस निश्चित धन को कहते हैं जिसका अपनी कमाई और अपने माल में स निकालना और उसे अल्लाह् के बताये हुए शुभ कार्यों में व्यय करना आवश्यक है। जैसे मुसाफ़िरों, मुहताजों और दीन-दुखियों की सेवा करना, ऋणी व्यक्तियों को ऋण के बोझ से छुटकारा दिलाना, अल्लाह् के दीन के लिए की जाने वाली चेष्टाओं में ख़र्च करना आदि।

'ज़कात' को 'ज़कात' इसलिए कहा जाता है कि इसके द्वारा मनुष्य की आत्मा शुद्ध होती है और उसे विकसित होने का अवसर मिलता है। मनुष्य का मन बढ़ी हुई सांसारिक मोह-माया से छुटकारा पाता है और उसका माल भी पाक हो जाता है और उसमें बरकत होती है। 'ज़कात' की व्यवस्था में पूरे समाज का कल्याण है।

'ज़कात' देना 'आख़िरत' को याद रखने का एक उत्तम उपाय है। आदमी अपना माल ख़र्च करके उसे उसकी ओर लौटाता है जिसने उसे यह माल दिया था। इसी प्रकार उसे अपनी जान को भी उसी की ओर लौटाना है, अतः इसके साथ विनम्रता का होना भी आवश्यक है। इस पहलू से इसमें 'नमाज़' की विशेषता आ जाती है।

जो व्यक्ति अल्लाह् के दिये हुए धन में से अल्लाह् के बन्दों का हक़ नहीं निकालता उसका धन भी अपवित्र ही रहता है और उसके मन और आत्मा को भी शुद्धता प्राप्त नहीं होती। अल्लाह ने तो उसे उसकी आवश्यकताओं से अधिक धन इसलिए दिया था कि वह अल्लाह् के आगे कृतज्ञता दिखलाये और उसके दिये हुये माल में से दूसरों पर ख़र्च करके उसके एहसान का हक़ अदा करे। परन्तु वह इतना स्वार्थी और तंग-दिल बन गया कि अल्लाह् और उसके बन्दों का हक़ अदा करते हुये उसका दिल दुखने लगता है।

जन्नत—बाग़, स्वर्ग। सुख और आनन्द का वह स्थान जहाँ 'आख़िरत' में अल्लाह् के आज्ञाकारी लोगों को रहने की जगह मिलेगी।

ज़बूर (Psalms)—१. पट्टिका, पर्ण, २. पत्र, किताब, ३. वह किताब जो अल्लाह के 'नबी' हज़रत दाऊद अ० पर अवतीर्ण हुई थी। एक विचार के अनुसार 'ज़बूर' शब्द वास्तव में मज़मूरे, या ज़मूर है। अरबी में ज़मूर की मीम बा से बदल गई है। ज़मूर गति को कहते हैं। ज़बूर को मज़ागीर दाऊद भी कहते हैं। जबूर में हज़रत दाऊद की प्रार्थनायें आ गई हैं इसीलिए इसका नाम जबूर पड़ा।

जहन्नम (Hell)—नरक। जहाँ 'आख़िरत' में अल्लाह् के अवज्ञाकारी लोगों, 'काफ़िरों' और 'मुश्रिकों' को अज़ाब और यातना के लिए डाला जायेगा। जिसमें आग भड़क रही होगी, आग में जलाये जाने के अतिरिक्त उन्हें वहाँ और भी तरह-तरह की यातनायें दी जायेंगी।

ज़िक्र—१. स्मरण, याद। २. याद-दिहानी (Reminder)। ३. उपदेश, नसीहत। ४. इतिहास। ५. हर वह चीज़ जो किसी चीज़ का स्मरण कराये। क़ुरआन में यह शब्द क़ुरआन के लिए भी प्रयुक्त हुआ है और पिछली आसमानी किताबों के लिए भी। इसके अतिरिक्त अपने दूसरे अर्थों में भी यह शब्द क़ुरआन में प्रयुक्त हुआ है।

'ज़िक्र' और 'फ़िक्र' (चिन्तन) में अन्तर है। चिन्तन किसी चीज़ के परिणाम और या उसकी वास्तविकता के बारे में सोच-विचार करने का नाम है। रहा, 'ज़िक्र' तो यह किसी चीज़ की निगरानी और हिफ़ाज़त करने, उसकी ज़िम्मेदारी लेने और उसके लिए एकाग्रचित हो जाने का नाम है। 'ज़िक्र' में स्थिरता पाई जाती है और 'फ़िक्र' में गति और अस्थिरता।

जिज़या—रक्षा-कर। वह टैक्स जो इस्लामी राज्य में बसने वाले अमुस्लिम लोगों से उनकी जान-माल की रक्षा करने के बदले में लिया जाता है। यह टैक्स उस राज्य-प्रबन्ध के कामों में ख़र्च होता है जो उनकी रक्षा का उत्तरदायी होता है। इसके अतिरिक्त 'जिज़या' इस बात की भी पहचान है कि उन्हें इस्लामी राज्य की अधीनता स्वीकार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस्लामी राज्य में बसने वाले मुस्लिमों को भी अपने धन का एक हिस्सा निकालना पड़ता है जिसे 'ज़कात' कहते हैं। 'ज़कात' की हैसियत साधारण टैक्स की नहीं है। 'ज़कात' देने का वास्तविक उद्देश्य तो यह होता है कि इसके द्वारा हृदय की शुद्धता और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त हो। हमारे मन से धन-दौलत का अनुचित मोह निकल जाता है। हमारे उन भाइयों की ज़रूरतें पूरी होती हैं जो मोहताज है। और इससे धर्म और सर्व-साधारण जनता की भलाई के कामों में मदद मिलती है।

ग़रीब और निर्धन 'मुस्लिम' व्यक्ति से न 'ज़कात' ली जायेगी और न ऐसे अमुस्लिम से 'जिज़या' लिया जायेगा जो स्वयं मुहताज हों; बल्कि एसे लोगों की सेवा करना स्वयं राज्य का कर्त्तव्य है।

जिन्न—'जिन्न' शब्द के धात्वर्थ में गुप्त और छिपे होने का अर्थ पाया जाता है। 'जिन्न' एक प्रकार का मखलूक़ प्राणी है जो मनुष्यों और 'फ़िरिश्तों' से भिन्न है। जिन्न आँखों से छिपे होते हैं दिखाई नहीं देते, इसी कारण उन्हें 'जिन्न' कहते हैं। क़ुरआन से मालूम होता है कि 'जिन्न' अग्नि से पैदा किये गये हैं जबकि मनुष्य की शारीरिक रचना मिट्टी से हुई है।

जिबरील—यह इबरानी (Hebrew) भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "अल्लाह का बन्दा", जिबरील अल्लाह के एक प्रमुख फ़िरिश्ते का नाम है जिन्हें क़ुरआन में "रूह" भी कहा गया है। हज़रत जिबरील का विशेष कार्य यह रहा है कि वे अल्लाह का आदेश और उसका कलाम नबियों तक पहुँचाते थे।

जिहाद—किसी ध्येय की सिद्धि के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देने और जान तोड़ कोशिश करने का नाम 'जिहाद' है। 'जिहाद' केवल युद्ध करने का नाम नहीं है। युद्ध के लिए तो क़ुरआन में 'क़िताल' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'जिहाद' का अर्थ 'क़िताल' से कहीं विस्तृत और व्यापक है। जो व्यक्ति हर समय अपने उद्देश्य की धुन में लगा हो, अपने धन, अपनी वाणी और अपनी लेखनी आदि से उसके लिए प्रयत्न करता और अपने आप को थकाता हो, वह वास्तव में 'जिहाद' ही कर रहा है।

'जिहाद' में हर उस विरोध और शत्रुता का पूर्ण रूप से मुक़ाबला किया जाता है जिससे अभीष्ट मार्ग में रुकावट पेश आती हो। इसके लिए 'क़िताल' (युद्ध) भी किया जा सकता है और इसके लिए प्राणों तक की बाज़ी भी लगाई जा सकती है।

फिर जब 'जिहाद' अल्लाह की राह में हो तो इसका अर्थ यह होगा कि हमारी सारी दौड़-धूप और हमारी समस्त चेष्टायें केवल अल्लाह की प्रसन्नता और उसके 'दीन' (धर्म) और उसके नाम की प्रतिष्ठा के लिए हों। 'जिहाद' से उसके 'दीन' का समर्थन और उसका बोल-बाला ही अभीष्ट हो न कि धन और वैभव आदि की प्राप्ति। संसार को अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की गुलामी से छुटकारा दिलाना और धर्म के पालन में जो रुकावटें पेश आती हों उन्हें दूर करना 'जिहाद' के मुख्य उद्देश्यों में से है।

जुह्र—१—दिन ढलने का समय, तीसरा पहर।

२—वह नमाज़ जो दिन ढलने के पश्चात् पढ़ी जाती है।

तक़वा (Devotion)—परहेज़गारी, धर्मपरायणता, धर्मनिष्ठा, संयम, डर रखना।

'तक़वा' का धात्वर्थ है बचना, परहेज करना, किसी चीज़ से पहुँचने वाली हानि से अपने-आपको बचाना। 'तक़वा' क़ुरआन में कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है : १. जिस चीज़ से हानि पहुँचने का भय हो उससे बचना। २. किसी आपदा से डरना। ३. अल्लाह के आगे विनम्रता और भय का प्रदर्शन जो खुले-छुपे सबको जानने वाला है, जो अकृतज्ञता और अवज्ञा को पसन्द नहीं करता। जो अपने उन बन्दों पर दिया करता है जो उसके कृतज्ञ और आज्ञाकारी हैं। ४. 'तक़वा' का चौथा अर्थ अत्यन्त व्यापक है; इसमें ऊपर के तीनों अर्थ सम्मिलित हैं। अर्थात् अल्लाह की अवज्ञा से बचना और उसकी नाख़ुशी से डरना : इसलिए कि अल्लाह की अवज्ञा और उसकी निश्चित की हुई सीमाओं के तोड़ने का परिणाम अल्लाह के प्रकोप के रूप में सामने आने वाला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़ुरआन में जहाँ कहीं 'तक़वा' शब्द कर्म (Object) के बिना आया है वहाँ साधारणतया वह अपने व्यापक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

'तक़वा' वास्तव में उस एहसास (मनोभाव) का नाम है जो अल्लाह की बड़ाई और उसके भय से आदमी के दिल में पैदा होता है और जिसके कारण मनुष्य अल्लाह के आदेशों का पालन करता और उसकी अवज्ञा से बचता है। 'तक़वा' के बिना मनुष्य की आत्मा को न शुद्धता प्राप्त होती है न मनुष्य इस योग्य बनता है कि वह अपनी मंज़िल तक पहुँच सके। अपने दामन को समेटकर कँटीली झाड़ियों से बचाते हुये मंज़िल की ओर सीधे चले जाने का ही नाम वास्तव में 'तक़वा' है। जिस प्रकार अच्छा वस्त्र मनुष्य के सौन्दर्य को बढ़ाता है उसी प्रकार 'तक़वा' से मनुष्य के जीवन में सुन्दरता और पवित्रता आ जाती है।

तयम्मुम—दे० सूरा अल-माइदा फ़ुटनोट ६।

तवाफ़—परिक्रमा। 'तवाफ़' शब्द का अर्थ है चक्कर लगाना। 'हज्ज' करने वाले 'काबा' के चारों ओर चक्कर लगाते हैं इसे 'तवाफ़' कहते हैं।

'तवाफ़' वास्तव में नाम है अपने को अल्लाह की सेवा में दे देने और उसके प्रति अपने प्रेम-भाव के प्रकट करने का।

तलाक़ (Divorce)—'छुटकारा'। पारिभाषिक रूप में इससे अभिप्रेत पति का पत्नी को परित्याग करना है। पति को इसका अधिकार प्राप्त है कि वह जब चाहे अपनी पत्नी को जुदा कर सकता है; परन्तु 'इस्लाम' ने 'तलाक़' को पसन्द नहीं किया है। 'तलाक़' उसी समय देना चाहिए जबकि पति-पत्नी में निर्वाह असम्भव हो। क़ुरआन की शिक्षा तो यह है कि यदि स्त्री तुम्हें नापसन्द हो तो भी जहाँ तक हो सके उसके साथ निबाहने की कोशिश करो (दे० सूरा अन-निसा आयत १९)। और यदि निर्वाह असम्भव हो, तो 'तलाक' दे सकते हैं; परन्तु एकदम छोड़ देना ठीक नहीं है। एक-एक महीने के फ़ासिले से एक-एक 'तलाक' देना चाहिए। इस तरह तीसरे महीने के अन्त तक सोचने-समझने का अवसर मिल सकेगा। सम्भव है कोई शक्ल मेल-मिलाप की पैदा हो जाये। परन्तु यदि इस मुद्दत में फ़ैसला यही हो कि स्त्री को छोड़ देना चाहिए, तो तीसरे महीने के अन्त में अन्तिम 'तलाक' दे सकते हैं; परन्तु उत्तम यह है कि अन्तिम 'तलाक़' न दे, यों ही मुद्दत गुज़र जाने दे। इस तरह इसका अवसर शेष रहेगा कि यदि (स्त्री-पुरुष) दोनों परस्पर दोबारा विवाह करना चाहें तो कर सकते हैं।

तस्बीह (Glorification)—अल्लाह की महानता का वर्णन।

'तस्बीह' का धात्वर्थ है चेहरे के बल बिछ जाना। यहीं से यह शब्द तैरने के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा और यहीं से दौड़-धूप के अर्थ में भी इसका प्रयोग हुआ है। 'नमाज़' को भी 'तसबीह' का नाम दिया गया है इसलिए कि 'नमाज' में बन्दा अल्लाह के आगे सजदे में चेहरे के बल बिछ जाता है और उसकी महानता का वर्णन करता है।

क़ुरआन से मालूम होता है कि संसार की समस्त वस्तुयें 'तस्बीह' करती हैं। अर्थात् संसार में जो चीज़ें भी हैं सब अल्लाह की महानता की साक्षी हैं, और उसके हुक्म और उसकी बड़ाई के आगे बिछी हुई हैं।

तहज्जुद—इसका अर्थ है नींद तोड़कर उठना। पारिभाषिक अर्थ में इससे अभिप्रेत वह 'नमाज़' है जो रात का एक हिस्सा सोने के पश्चात् उठकर पढ़ी जाती है। इस 'नमाज़' का चरित्र-निर्माण और आत्मा के विकास में बड़ा महत्व है।

ताग़ूत—'ताग़ूत' शब्द 'तुग़यान' से निकला है। 'तुग़यान का अर्थ होता है हद से आगे बढ़ना, 'सरकशी करना'। अतः हर वह चीज ताग़ूत है जिसमें अल्लाह से सरकशी पाई जाती हो और जो लोगों को अल्लाह की सरकशी पर उभारती हो। चाहे वह मनुष्य की अपनी इच्छा हो या संसार के दूसरे लोग हों (जैसे कोई नेता या लीडर) या कोई राज्य और संस्था हो और चाहे 'इबलीस' हो जो सारे ही सरकशों का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नायक और सरदार है। अल्लाह् के सिवा जिस किसी की उपासना की जाये और अल्लाह् और उसके 'रसूल' के बताये हुए तरीक़े के विरुद्ध जिन तरीकों को अपनाया जाये उन सबकी गणना 'ताग़ूत' में होगी। 'क़ुरआन' की दृष्टि से अल्लाह् पर 'ईमान' लाने के लिए यह आवश्यक है कि आदमी 'ताग़ूत' का इन्कार करे। इसके बिना आदमी का ईमान पूर्ण नहीं हो सकता।

तूर—१. पहाड़। २. एक विशेष पहाड़ का नाम। सीना पर्वत, मूसा पर्वत, जो क़ुरआन के अवतरण के समय तूर के नाम से प्रसिद्ध था। इसकी ऊँचाई ७३५९ फिट है। यह पर्वत प्रायद्वीप सीना के दक्षिण में पड़ता है।

तौबा (Repentance)—१. पश्चात्ताप, क्षमायाचना, गुनाह् और अनुचित कर्मों को भविष्य में न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा। अल्लाह् की अवज्ञा के कर्मों से बाज़ आना। 'तौबा' का मौलिक अर्थ है लौटना, पलटना। बन्दे की ओर से 'तौबा' का अर्थ यह है कि वह अल्लाह् की अवज्ञा और उसकी ना-ख़ुशी के कामों को छोड़ दे और उसकी भक्ति और आज्ञापालन के काम में लग जाये। अल्लाह् की ओर से 'तौबा' का अर्थ यह होगा कि वह अपने उस बन्दे को जो अपने गुनाह् पर लज्जित है और पश्चाताप कर रहा है फिर दया-दृष्टि से देखे और उसकी भूल को क्षमा कर दे।

तौरात—'तौरात' इबरानी शब्द है। तौरात का अर्थ होता है आदेश और क़ानून। तौरात को तौरात इसलिए कहा गया है कि इसमें अधिकतर कानून और आदेशों का उल्लेख हुआ है।

तौरात वह आसमानी किताब है जो 'बनी इसराईल' के सुप्रसिद्ध 'रसूल' हज़रत मूसा अ० पर उतरी थी। हज़रत मूसा अ० के रसूल होने से लेकर उनके स्वर्गवास तक लगभग ४० वर्ष के बीच जो आदेश उन पर उतरे हैं उन्हीं को क़ुरआन 'तौरात' कहता है। उनमें दस आदेश वे थे जो पट्टिकाओं पर अंकित करके उन्हें दिये गये थे। 'तौरात' किताब के रूप में 'बैतुलमक़दिस' की पहली तबाही तक मौजूद थी। बैतुलमक़दिस की तबाही में तौरात की प्रतियां सदैव के लिए लुप्त हो गईं। यह तबाही बाबिल (Babel) के सम्राट बख़्तनस्सर (Nebuchad nezzar) के हाथों आई थी। इस सम्राट ने नगर की ईंट-से-ईंट बजा दी थी। और 'बनी इसराईल' को क़ैद करके बाबिल ले गया था। बाद में जब बनी इसराईल के बचे-खुचे लोग क़ैद से छूटकर युरुशलेम वापस आये और बैतुलमक़दिस का पुनः निर्माण हुआ, तो हज़रत उज़ैर ने अपनी जाति के कुछ महापुरुषों की सहायता से बनी इसराईल का इतिहास लिखा। जो अब बाइबिल की पहली १७ किताबों के रूप में हमारे सामने है।

इतिहास की चार किताबें—ख़ुरूज (Exodus), अह्बार, (Leviticus), गिन्ती (Numbers) और इस्तिस्ना (Deuteronomy),—हज़रत मूसा अ० की जीवनी से सम्बन्ध रखती हैं। इन किताबों में हज़रत उज़ैर और उनके साथियों ने जगह-जगह 'तौरात' की उन आयतों को लिख दिया है जो उन्हें प्राप्त हो सकी थीं। उन आयतों को इस तरह पहचाना जा सकता है कि जहाँ कहीं किताब में यह मिलता है कि ख़ुदा ने मूसा से कहा या मूसा ने कहा कि ख़ुदाबन्द तुम्हारा ख़ुदा कहता है, वहाँ से 'तौरात' का एक हिस्सा बयान होता है। 'तौरात' के यही वे बिखरे हुए अंश हैं जिन्हें क़ुरआन 'तौरात' कहता है और उन्हीं की वह तसदीक़ करता है।

तौहीद (Devine Unity)—एकेश्वरवाद। अल्लाह् को एक मानना और किसी को उसका शरीक न ठहराना। 'तौहीद' ही 'इस्लाम' का मूल आधार है। समस्त 'नबियों' की शिक्षाएँ 'तौहीद' पर ही अवलम्बित हैं, 'तौहीद' केवल एक धारणा नहीं है बल्कि इसका हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध है। अल्लाह् को एक मानने का अर्थ है कि बन्दा अपने को बिलकुल अल्लाह् के अर्पण कर दे। उसी को अपना सृष्टिकर्त्ता, स्वामी, शासक और सब-कुछ समझे। उसी की बन्दगी और 'इबादत' को अपना परम कर्तव्य जाने। उसके आदेशों का पालन करे। उसी पर भरोसा रक्खे। उसी को सहायता के लिए पुकारे। मुसीबत में उसी से फ़रियाद करे। हर हाल में उसी की ओर ध्यान रहे। सच्चे दिल से उससे प्रेम करे। उसके अस्तित्व और उसके गुणों में किसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को साझी न समझे। जो हक़ अल्लाह के हैं उनमें किसी को शरीक न करे। 'तौहीद' धर्म का केवल एक अंश नहीं है वल्कि वह सम्पूर्ण धर्म को घेरे हुये है। 'तौहीद' से अलग होकर सच्चे धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती।

फिर 'तौहीद' की पुष्टि सम्पूण जगत और हमारी अन्तर्रात्मा से होती है। 'तौहीद' के विरुद्ध कोई एक प्रमाण भी प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

दीन—१. धर्म। २. जीवन-प्रणाली। ३. जीवन-व्यवस्था। वह विधान जिस पर मनुष्य की विचार-पद्धति और कार्य-प्रणाली आदि सब-कुछ आधारित हो।

'दीन' शब्द के मौलिक अर्थ में आधीनता और विनीत का भाव सम्मिलित हैं। 'दीन' शब्द का मौलिक अर्थ है 'अधीन करना', 'अधीन होना'। फिर इसमें चार अर्थों का आविर्भाव हुआ है। १. प्रभुत्व (उस सत्ता की ओर से जिसे सब पर प्रभुत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हो)। २. आज्ञापालन, अधीनता, वन्दगी (उसकी ओर से जो उस सत्ता के आगे झुके)। ३. विधि, विधान, प्रणाली, नियम (जिसका पालन किया जाये)। ४. जाँच-पड़ताल, फैसला, अच्छे-बुरे कर्मों का वदला।

क़ुरआन में 'दीन' शब्द इन सब अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। कहीं तो वह इसके एक या दो अर्थों में ही नहीं बलिक इसके समस्त अर्थों को समेट कर इसे ऐसी जीवन-व्यवस्था के अर्थ में प्रयोग करता है जिसके अन्तर्गत मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन आ जाता है, चाहे उसका सम्वन्ध उसके व्यक्तिगत जीवन से हो या उसका सम्पर्क समाज, अर्थ, राजनीति आदि से हो।

नज्र—भेंट, प्रण, मन्नत।

'नज्र' केवल अल्लाह के आगे पेश की जाती है। किसी और के आगे 'नज्र' गुज़ारना जायज़ नहीं चाहे वह कोई मूर्ति हो या कोई देवी-देवता। हम दूसरे मनुष्यों को प्रेम-भाव से यदि कोई चीज़ पेश करना चाहें तो पेश कर सकते हैं उसे 'हृदया' या उपहार कहेगे। आजकल उपहार को 'नज्र' कहने लगे हैं परन्तु क़ुरआन ने 'नज्र' जिस चीज़ को कहा है वह अल्लाह ही के लिए खास है। क़ुरबानी के रूप मे भी 'नज्र' गुज़ारी जा सकता है और रोजा आदि की नज्र भी मानी जा सकती है।

नबी—पैग़म्बर, ईश-दूत, जो 'नुबूवत' के पद पर नियुक्त हो। जिसके पास अल्लाह की 'वह्य' आती हो और जो अल्लाह का सन्देश लोगों तक पहुँचाता और लोगों को सत्य की ओर बुलाता हो।

मनुष्य अपनी चेष्टा से 'नवी' नहीं हो सकता वल्कि जिसे अल्लाह चाहता है उसे अपना नवी बना लेता है। साधारणतया नवी को स्वयं नवी होने से पूर्व इसकी खबर नहीं होती कि उसे अल्लाह की ओर से एक महान् पद प्राप्त होने वाला है। दुनिया में जितने 'नवी' हुए सव मनुष्य थे। अल्लाह ने मनुष्यों के पास मनुष्य को ही 'नवी' बनाकर भेजा ताकि 'नवी' का जीवन लोगों के लिए आदर्श वन सके। दुनिया में बहुत से नबी आये। ये 'नवी' विभिन्न जातियों में आये। कुछ के वृत्तान्तों का उल्लेख क़ुरआन में हुआ है। सबसे अन्तिम नवी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। आप (सल्ल०) के वाद कोई नया नवी नहीं आयेगा (दे० सूरा अल-अहज़ाव आयत ४०)। स्वयं नवी सल्ल० ने भी कहा है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है। आप (सल्ल०) के बाद किसी और नबी के आने की आवश्यकता भी नहीं इसलिए कि वह सन्देश जो आप (सल्ल०) ने अल्लाह की ओर से लोगों तक पहुँचाया है 'क़ियामत' तक सुरक्षित रहेगा इसकी ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह ने ली है (दे० सूरा अल-हिज्र आयत ९)। और आप (सल्ल०) का जीवन भी स्पष्ट रूप में हमारे सामने है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो आप (सल्ल०) आज भी हमारे बीच मौजूद हैं।

नमाज़—क़ुरआन में 'नमाज़' के लिए 'सलात' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'सलात' का अर्थ होता है किसी चीज़ की ओर वढ़ना और उसमें दाखिल हो जाना; किसी चीज़ की ओर ध्यान देना। यहीं से यह शब्द झुकने के अर्थ में और फिर गिड़गिड़ाने और प्रार्थना करने के अर्थों में प्रयुक्त होने लगा। 'इबादत' पूजा और उपासना के लिए इस शब्द का प्रयोग प्राचीन समय से होता आ रहा है। जिस प्रकार क़ुरबानी बन्दे को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसके 'रब' से क़रीब करती है उसी प्रकार नमाज़ भी बन्दे को उसके 'रब' से मिलाती और उससे जोड़ती है। इस तरह 'नमाज़' के लिए 'सलात' शब्द का प्रयोग अत्यन्त उचित मालूम होता है।

'नमाज़' नित्य ५ बार अदा करनी ज़रूरी है। 'नमाज़' का मूल उद्देश्य अल्लाह का स्मरण और उसकी याद है। 'नमाज़' के द्वारा बन्दा अपने 'रब' की ओर लपकता है, उसे याद करता है। उसके सामने अपनी दीनता और विनम्रता प्रकट करता और उससे प्रार्थनायें करता है। 'नमाज़' के द्वारा मनुष्य को वह शक्ति मिलती है जिससे वह अल्लाह की राह में चल सके और उस ज़िम्मेदारी का बोझ उठा सके जो अल्लाह की ओर से उस पर डाली गई है। 'नमाज़' जीवन के लिए सांस की तरह ज़रूरी है। जो 'नमाज़' से दूर है वह जीवन की वास्तविकता से अनभिज्ञ है; उसे जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त नहीं। ऐसा व्यक्ति अल्लाह का अवज्ञाकारी और अकृतज्ञ ही नहीं बल्कि स्वयं अपना घातक भी है।

नमाज़ क़ायम करना—'नमाज़' क़ायम करने का अर्थ यह है कि उसे ठीक ढंग से उसके सब नियमों के साथ अदा किया जाये। दे० 'नमाज़'।

नसारा—ईसाई।

'नसारा' वास्तव में 'नसरान' का बहुवचन है। हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों का यह नाम आरम्भ से ही था। ईसाइयों के पूर्वजों ने इसका इन्कार नहीं किया; परन्तु बाद के ईसाइयों ने इस नाम का तिरस्कार किया। हज़रत मसीह के अनुयायी दो समुदायों में विभक्त हो गये थे। एक समुदाय ने तो शमऊन (Simon) का अनुसरण किया और अपने को 'नसारा' कहा। ईसाइयों का यही समुदाय है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाया। क़ुरआन ने इन्हीं ईमान लाने वालों की प्रशंसा की है। दूसरा समुदाय वह था जो पोलोस का अनुयायी हुआ। यह समुदाय हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान नहीं लाया। आज इसी समुदाय के लोग पाये जाते हैं। ये लोग 'नसारा' नाम का इन्कार करते हैं और इसे अपने लिए अपमानसूचक शब्द समझते हैं। उनके विचार में 'नसारा' नाम का सम्बन्ध नासरह (Nazareth) से है और यह इनकी दृष्टि में साधारण बस्ती है। हालांकि यह नाम इनका अत्यन्त आरम्भिक काल का है, और यह नाम इन्होंने स्वयं रक्खा था[1]। ज़ाहिर है कोई अपने लिए तिरस्कृत नाम कैसे पसन्द कर सकता है।

निफ़ाक़—भीतरी वैर या छल-कपट, 'मुनाफ़िक़' होना। 'निफ़ाक़' शब्द निकला है 'निफ़्क़' से जिसका मौलिक अर्थ है 'गुज़रकर पार हो जाना'। परिभाषा के रूप में 'निफ़ाक़' यह है कि आदमी एक दरवाज़े से तो धर्म में दाखिल हो परन्तु दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल जावे। ज़ाहिर में तो अपने को मुसलमान कहे परन्तु इस्लाम से उसका सच्चा सम्पर्क न हो, तो इस स्थिति और मनोगत को 'निफ़ाक़' कहेंगे।

'निफ़ाक़' कई प्रकार का होता है (दे० 'मुनाफ़िक़')।

नुबूवत—पैग़म्बरी, ईशदूतत्व। नबी होने का भाव। दे० 'नबी'।

नूह की जाति वाले—क़ुरआन के इशारों और बाइबिल के बयान से मालूम होता है कि हज़रत नूह अ० की जाति वाले उस भू-भाग में रहते थे जिसे आज ईराक़ कहा जाता है। इसकी पुष्टि उन शिलालेखों से भी होती है जो बाइबिल के पुरातन अवशेषों में मिले हैं जो बाइबिल से भी अधिक प्राचीन हैं। उन में उसी तरह जलप्लावन का किस्सा भी बयान हुआ है जिसका उल्लेख क़ुरआन और तौरात में मिलता है। हज़रत नूह अ० के क़िस्से से मिलती-जुलती पुरातन कथाओं का उल्लेख यूनान, मिस्र, भारत और चीन के साहित्य में भी हुआ है। बल्कि बर्मा, मलाया, आस्ट्रेलिया, न्यूगनी अमेरिका और यूरोप के विभिन्न भागों में भी ऐसी ही जनश्रुतियाँ प्राचीन समय से चली आ रही हैं। जिससे अनुमान किया जाता है कि यह उस युग का क़िस्सा है जब समस्त मानव-जाति भूमि के किसी एक ही भाग में रहती थी फिर वहां से निकल कर मनुष्य संसार के विभिन्न भागों में फैला है।

---

१. दे० सूरा अल-माइदा आयत १४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हज़रत नूह अ० की जाति वाले 'शिर्क' की गन्दगी में गिर गए थे। वे विभिन्न देवी-देवताओं को पूजते थे। फिर इस 'शिर्क' (बहुदेववाद) के कारण उनके यहां और बहुत सी ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं। समाज में अत्यन्त बिगाड़ पैदा हो गया था। अत्याचार और अन्याय का प्रचलन था। हज़रत नूह अ० उन्हें सीधे मार्ग पर लाने के लिए दीर्घकाल तक यथाशक्ति प्रयत्नशील रहे। जब 'काफ़िर' किसी तरह राह पर न आ सके, तो आपने अल्लाह से प्रार्थना की कि इन 'काफ़िरों' में से किसी को भूमि पर जीवित न रहने दे क्योंकि यदि ये जीवित रहे तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा वह मर्यादाहीन और सीमाओं का उल्लंघन करने वाला ही होगा। अन्त में एक बड़े तूफ़ान के रूप में अल्लाह की यातना आ गई। हज़रत नूह अ० और उन लोगों को जो उन पर 'ईमान' लाये थे अल्लाह ने एक नाव में बचा लिया बाक़ी सभी लोग डूबकर रह गये।

बाइबिल में उस नाव के टिकने की जगह अरारात बताई गई है। 'अरारात' अरमीनिया के एक पर्वत का नाम भी है और एक पर्वतमाला का नाम भी अरारात है, जिसका आरम्भ अरमीनिया के उच्च धरातल से हुआ है और इसका सिलसिला दक्षिण में कुर्दिस्तान तक चला गया है। 'जूदी' इसी सिलसिले का पर्वत है और आज जूदी ही के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचीन इतिहासों में जूदी ही को हज़रत नूह अ० की नाव के ठहरने का स्थान बताया गया है।

रहा यह प्रश्न कि हज़रत नूह अ० के समय में जो तूफ़ान आया था वह सार्वभौमिक था, या वह केवल उसी भू-भाग में आया था जहाँ हज़रत नूह अ० की जाति के लोग रहते थे, तो क़ुरआन से केवल इतना मालूम होता है कि बाद की नस्लें उन्हीं लोगों की सन्तान हैं जिन्हें अल्लाह ने इस तूफ़ान से बचा लिया था। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि यह तूफ़ान सार्वभौमिक था। सम्भव है कि उस समय तक मनुष्यों की आबादी उसी भू-भाग तक सीमित रही हो, जहाँ यह तूफ़ान आया था। दजला और फ़रात के भू-भाग में तो तूफ़ान आने का प्रमाण इतिहास से भी मिलता है, और पुरातन अवशेषों और भू-गर्भ विज्ञान द्वारा भी इसकी पुष्टि होती है। जबकि ज़मीन के दूसरे भागों में इस प्रकार का प्रमाण नहीं मिलता।

नेमत—१. अलभ्य पदार्थ, सुख-सामग्री। २. कृपा, उपकार, एहसान।

क़ुरआन में अल्लाह ने विशेष रूप से अपनी कृपा और उस मार्ग-दर्शन को अपनी नेमत कहा है जिसका प्रबन्ध उसने 'वह्य' और 'नुबूवत' के द्वारा किया है।

पारा (Part)—खण्ड।

'क़ुरआन' को तीस भागों में बाँट दिया गया है। और यह विभाजन महीने के दिनों को सामने रख कर किया गया है। इस प्रकार यदि कोई प्रत्येक दिन एक भाग का पाठ कर ले, तो एक महीने में पूरे क़ुरआन का पाठ हो जायेगा।

पैग़म्बर—'नबी', 'रसूल' मनुष्यों के पास अल्लाह का सन्देश लाने वाला। वह व्यक्ति जो पैग़म्बरी के पद पर नियुक्त हो। दे० 'नबी', 'रसूल'।

फ़ज्र (The dawn)—अरुणोदय, तड़का, प्रातःकाल।

१. 'फ़ज्र' का शब्दार्थ है 'पौ फटना'। वह समय जब पहले-पहल पूर्व दिशा में उषा या पौ फटने की लाली दिखाई देने लगती है।

२. वह 'नमाज़' जो सबेरे पौ फटने के बाद पढ़ी जाती है। इस 'नमाज़' का समय सूर्य उदय होने तक रहता है।

फ़साद—बिगाड़।

मानव-समाज की व्यवस्था और ज़मीन का प्रबन्ध यदि अल्लाह की आज्ञा और उसके आदेशों के अनुसार न हो और मनुष्य अपनी तुच्छ इच्छाओं का ही दास बनकर रहे, तो यह बहुत बड़े बिगाड़ की बात है। जब मनुष्य अल्लाह के आदेशों और उसके दिये हुए क़ानून और नियम को छोड़कर दूसरों के गढ़े हुए नियमों और जीवन-पद्धति को अपनाता और अल्लाह के मार्ग का परित्याग करता है तो इसके परिणामस्वरूप ज़मीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुराइयों से भर जाती है। ज़मीन में न्याय और शान्ति की स्थापना सम्भव नहीं जब तक कि मनुष्य अल्लाह का पूर्णरूप से आज्ञाकारी न बन जाये और जीवन के प्रत्येक विभाग में उसी के आदेशों का पालन न करने लगे।

फ़ितना (Persecution)—दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट ५४।

फ़िदया—मुक्ति प्रतिदान, अर्थ दण्ड।

१. वह धन जिसके बदले में किसी अपराधी को कारागार से छुड़ाया जाये अथवा प्राण-दण्ड से मुक्त कराया जाये। २. वह माल जो आदमी अपनी किसी कोताही के बदले में मुहताजों पर ख़र्च करे। यह 'फ़िदया' अदा करके आदमी अपने-आपको अल्लाह की पकड़ से बचा लेता है।

फ़िरदौस (Paradise)—बैकुण्ठ, स्वर्ग, 'जन्नत'।

'फ़िरदौस' शब्द क़रीब-क़रीब समस्त भाषाओं में पाया जाता है चाहे वह संस्कृत हो या ईरानी; इबरानी हो या यूनानी या लातीनी, अरबी आदि भाषायें। सभी भाषाओं में यह शब्द ऐसे बाग़ के लिए प्रयुक्त होता है जिसके चारों ओर प्राचीर (घेरा, चहार दीवारी) हो, जो विस्तृत हो। आदमी के निवास स्थान से दूर न हो बल्कि उससे मिला हुआ हो। उसमें हर प्रकार के फल, विशेष रूप से अंगूर, पाये जायें।

'आख़िरत' में वही लोग 'फ़िरदौस' में दाख़िल किये जायेंगे और वही उसके वारिस होंगे जो आज 'ईमान' लायें, अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग को अपनायें और अल्लाह के आदेशों का पालन करने लग जायें। दे० 'जन्नत'।

फ़िरिश्ता (Angel)—क़ुरआन में इसके लिए 'मलक' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'मलक' का अर्थ होता है सन्देश लाने वाला। 'फ़िरिश्ते' अल्लाह की ओर से 'नबियों' और 'रसूलों' के पास 'वह्य' और सन्देश लाते थे। इनमें इसकी योग्यता होती है कि ये अल्लाह की ओर से उतरने वाले आदेशों को मनुष्यों तक पहुँचा सकें। 'फ़िरिश्ते' अल्लाह के बन्दे हैं; वे वही काम करते हैं जिसका उन्हें हुक्म होता है। वे सदैव अल्लाह की 'तस्बीह' और उसके गुणगान में लगे रहते हैं।

अल्लाह ने बहुत से 'फ़िरिश्तों' को अपने इस बड़े राज्य के प्रबन्ध-कार्य में लगा रक्खा है। इसके अतिरिक्त बहुत से काम हैं जो फ़िरिश्तों से लिये जाते हैं। 'फ़िरिश्ते' ज़रूरत पड़ने पर जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं। गुमराह लोग 'फ़िरश्तों' को देवी-देवता बनाकर उनकी पूजा करने लगे। किसी ने उन्हें अल्लाह की औलाद समझ लिया, किसी ने उन्हें कष्टनिवारक और सिफ़ारिशी समझ लिया और उनसे प्रार्थनायें करने लगा। फ़िरिश्तों के बारे में विभिन्न कल्पनायें की गईं जिनके कारण 'शिर्क' (अनेकेश्वरवाद) को ख़ूब फूलने-फलने का अवसर मिला। कुरआन ने यह बता कर कि 'फ़िरिश्तों' की हैसियत क्या है, 'शिर्क' का दरवाज़ा बन्द किया है।

बैअत—(Taking oath of allegiance)—वचन देना, आज्ञा-पालन की प्रतिज्ञा करना, वचनबद्ध होना आदि।

बनी इस्माईल—हज़रत इस्माईल अ० की नस्ल के लोग। इस्माईल हज़रत इबराहीम अ० के बड़े बेटे का नाम है। अल्लाह के हुक्म से हज़रत इबराहीम अ० ने आप को मक्का में बसाया था। अरब का विशेष क़बीला 'कुरैश' के अतिरिक्त कुछ और क़बीले भी हज़रत इस्माईल की सन्तान से हैं। अरब के दूसरे कबीले जो हज़रत इस्माईल अ० की सन्तान से न थे परन्तु वे भी उनके फैलाये हुये धर्म से कुछ-न-कुछ प्रभावित होने के नाते अपना सिलसिला उन ही से जोड़ते थे।

अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० का जन्म इस्माईल अ० ही के वंश में हुआ है।

बनी इसराईल (Israelites)—इसराईल की सन्तान, यहूदी।

'इसराईल' इबरानी (Hebrew) का एक शब्द है। इसका अर्थ है 'अल्लाह का बन्दा'। 'इसराईल' हज़रत याक़ूब अ० का दूसरा नाम था। हज़रत याक़ूब अ० हज़रत इसहाक़ अ० के बेटे और हज़रत इबराहीम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ० के पोते थे; यहूदी इन्हीं के वंश से हैं इसीलिए वे बनी इसराईल कहलाते हैं।

हज़रत आदम अ० समस्त मानव-जाति के पितामह और सबसे पहले नबी हैं। उनके बाद प्रसिद्ध नबी हज़रत नूह अ० हैं। हज़रत नूह अ० के बाद हज़रत इबराहीम अ० वह पहले 'नबी' हैं जिन्हें अल्लाह ने 'इस्लाम' के सार्वभौमिक निमन्त्रण के लिए चुना। इस पवित्र कार्य में हज़रत इबराहीम अ० ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। आपके बाद यह प्रतिष्ठा आप की सन्तान की उस शाखा को प्राप्त हुई, जो हज़रत इसहाक़ और हज़रत याक़ूब अ० से चलती है, अर्थात् बनी इसराईल को। अल्लाह ने बनी इसराईल में हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान, हज़रत ज़क़रिया, हज़रत यहया, हज़रत ईसा और दूसरे बहुत-से 'नबी' भेजे (अल्लाह की इन सब पर कृपा हो)। बनी इसराईल को जो पद प्राप्त था वह सबसे बड़ी श्रेष्ठता और अल्लाह की दी हुई नेमत थी। अपना यह एहसान अल्लाह ने बार-बार बनी इसराईल को याद दिलाया है।

'बनी इसराईल' जब अपनी नैतिक अवनति के कारण इस उच्च पद के योग्य न रहे, तो अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० के दूसरे बेटे इस्माईल अ० की सन्तान में वह 'रसूल' उठाया जिसके लिए हज़रत इबराहीम अ० और हज़रत इस्माईल अ० ने दुआ की थी। और 'इमामत' (नेतृत्व) का वह उच्च पद जो बनी इसराईल को प्राप्त था इस 'रसूल' और इसके अनुयायियों को प्रदान किया। अब 'क़ियामत' तक इस उच्च पद के योग्य वही समझे जायेंगे जो इस 'रसूल' के अनुयायी होंगे चाहे उनका सम्बन्ध किसी जाति और देश से क्यों न हो।

'बनी इसराईल' का वृत्तान्त क़ुरआन में जगह-जगह आया है उसमें हमारे लिए बड़ी शिक्षा है।

बनू नज़ीर—यह यहूदियों के एक क़बीले का नाम है। यह क़बीला शताब्दियों से यसरिब (मदीना) में आबाद था। जब 'हिजरत' करके नबी सल्ल० मदीना पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने जहाँ यहूदियों के दूसरे क़बीलों से समझौता किया वहीं बनू नज़ीर से भी आप (सल्ल०) का समझौता हुआ। परन्तु जब बनू नज़ीर ने आपके साथ विश्वासघात किया तो नबी सल्ल० ने कहला दिया कि वे दस दिन में मदीना खाली कर दें। अब्दुल्लाह इब्न उबई ने जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था बनू नज़ीर को कहला भेजा कि तुम कदापि मदीना न छोड़ना; हम तुम्हारी सहायता करेंगे। अब नबी सल्ल० लड़ने के लिए निकले और उन्हें घेरे में ले लिया। 'बनू नज़ीर' घबरा गये। उन्होंने कहा हमें मारा न जाये हम मदीना से निकल जायेंगे। जो माल ले जा सकेंगे ले जायेंगे बाक़ी छोड़ देंगे। आप (सल्ल०) ने उनकी बात मान ली। वे इस्लामी क्षेत्र से निकले कर शाम (Syria) की ओर चले गये। उन्होंने आप (सल्ल०) के एहसान का बदला यह दिया कि मदीना से निकलने के बाद आप (सल्ल०)[1] के विरुद्ध अरब भर में साज़िश का जाल फैलाया और दो वर्ष के पश्चात् ही २४००० की टिड्डी दल सेना लेकर मदीना पर आ धमके।

बन्दगी—१. दासता, गुलामी। २. 'इबादत'।

बैतुल मक़दिस—पवित्र घर, मसजिदे अक़्सा, अल्लाह का वह पाक घर जो युरुशलेम में है जिसके निर्माण का इरादा हज़रत दाऊद अ० ने किया था। अल्लाह ने कहा कि यह काम सुलैमान (अ०) के हाथों पूरा होगा। हज़रत सुलैमान अ० के समय में बनी इसराईल ने बैतुल मक़दिस को अपना केन्द्र बनाया था। जब तक बनी इसराईल 'इमामत' (नेतृत्व) के पद से हटाये नहीं गये बैतुल मक़दिस ही सत्यवादियों का क़िबला रहा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी भी उस समय तक बैतुल मक़दिस को ही अपना क़िबला बनाये रहे जब तक बनी इसराईल विधिपूर्वक 'इमामत' के पद से हटा नहीं दिये गये। इसके बाद काबा के 'धर्म-केन्द्र और 'क़िबला' होने की घोषणा कर दी गई। आरम्भ में 'काबा' ही हज़रत इबराहीम अ० के निमन्त्रण का केन्द्र था। अतः 'क़िबला' होने का हक़ 'काबा' ही को पहुँचता था।

मजूस—मजूस से अभिप्रेत ईरान के अग्नि-पूजक हैं जो प्रकाश और अन्धकार के दो खुदा मानते थे।

---

१. अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये अपने को ज़रदुश्त का अनुयायी बताते थे। मुज़्दक की गुमराही ने उनके धर्म को बुरी तरह बिगाड़ डाला। यहाँ तक कि सगी बहिन तक से वे विवाह करने लग गये।

मदयन वाले—मदयन वालों से अरब के लोग भली-भाँति परिचित थे। इनकी आबादी उत्तरीय हिजाज़ से फ़लिस्तीन के दक्षिण तक और वहाँ से प्रायद्वीप सीना के अन्तिम सिरे तक लाल सागर और अक़बा की खाड़ी के तट तक फैल गई थी। इनका केन्द्र मदयन नगर था। मदयन वालों का मूल व्यवसाय व्यापार था। प्राचीन समय में व्यापार का जो विशेष मार्ग लाल सागर के किनारे-किनारे यमन से मक्का और यंबूअ होता हुआ शाम (Syria) तक चला गया था और दूसरा मार्ग जो ईराक़ से मिस्र की ओर जाता था उसके चौराहे पर मदयन वालों की बस्तियों के खँडहर पड़ते थे। यही कारण है कि अरब के सभी लोग मदयन से भली-भाँति परिचित थे। मदयन वाले हज़रत इबराहीम अ० के बेटे मिदयान की नस्ल से माने जाते हैं। मिदयान हज़रत इबराहीम अ० की तीसरी पत्नी या लौंडी क़तूरा से थे।

अल्लाह ने मदयन वालों के मार्ग-दर्शन के लिए हज़रत शुऐब अ० को भेजा। मदयन वालों की हैसियत बिगड़े हुए मुसलमान की थी। इनके यहाँ 'शिर्क' भी घुस आया था और नैतिक दृष्टि से भी ये लोग बहुत गिर चुके थे। ये बटमारी भी करते थे और लेन-देन में भी ज़्यादती करते थे। और दूसरी बुराइयां भी इनमें पैदा हो गई थीं। हज़रत शुऐब अ० ने इन्हें बहुत समझाया परन्तु ये राह पर न आ सके। अन्त में इन पर अज़ाब उतरा और दहला देने वाली आपत्ति ने इन्हें आ लिया। ये अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये। अल्लाह ने इन्हें ऐसा मिटाया मानो ये कभी ज़मीन पर बसे ही न थे। (दे० सूरा अल-अराफ़ आयत—८५-९३; हूद आयत ८४-९५)।

मदयन वाले और अल-ऐका वाले एक ही नस्ल के दो क़बीले थे। दोनों के लिए अल्लाह ने एक ही 'नबी' भेजा।

मन्न—'मन्न' और 'सलवा' प्राकृतिक खाद्य पदार्थ थे जो बनी इसराईल को ४० वर्ष तक बेघर-बार होने की दशा में मिलते रहे। यह अल्लाह का उन पर एक विशेष उपकार था। 'मन्न' एक प्रकार का मीठा और स्वादिष्ट मधु था जो ओस की भाँति गिरता और जम जाता। 'सलवा' बटेर की तरह के पक्षी थे।

'मन्न' और 'सलवा' का उल्लेख बाइबिल में भी मिलता है (दे० सूरा अल-बक़रा फ़ुटनोट १८)।

मस्जिदे हराम—(Inviolable Place of Worship)—आदर और इज़्ज़त वाली मस्जिद। अल्लाह का प्रतिष्ठित घर। इससे अभिप्रेत वह मस्जिद है जिसके बीच काबा स्थित है।

मस्ह—दे० सूरा अल-माइदा फ़ुटनोट ६; सूरा अन-निसा फ़ुटनोट २१।

मह्र—वह रक़म या माल जो पति को विवाह के नाते से अपनी पत्नी को देना पड़ता है या वह उसके देने का वादा करता है। क़ुरआन में इसके लिए 'सदक़ात' शब्द आया है जो 'सदक़ा' का बहुवचन है। 'सदक़ा' शब्द 'सिद्क़' से निकला है जिसके सच्चाई, दुरुस्ती और मित्रता आदि बहुत से अर्थ होते हैं। मानो यह 'मह्र' स्त्री-पुरुष की मित्रता और उनके पारस्परिक सम्बन्धों के ठीक और दुरुस्त होने का चिह्न है।

मीकाईल—यह अल्लाह के एक प्रसिद्ध 'फ़िरिश्ते' का नाम है। आप जगत के विभिन्न कामों पर नियुक्त फ़िरिश्तों में से एक हैं। आप अल्लाह की ओर से वर्षा का प्रबन्ध करने और सृष्टि के जीव आदि को रोज़ी पहुँचाने के काम पर नियुक्त हैं।

मुनाफ़िक़ (Hypocrite)—छली-कपटी, कपटाचारी। 'निफ़ाक़' रखने वाला। जो व्यक्ति ज़ाहिर में तो अपने को मुसलमान कहता हो, परन्तु इस्लाम से उसका सच्चा सम्पर्क न हो। मुनाफ़िक़ कई प्रकार के होते हैं।

१. वे लोग जिनको 'इस्लाम' से कोई लगाव न हो बल्कि वे इस्लाम के शत्रु हों परन्तु वे मुसलमानों में इस लिए घुसे हों ताकि उन्हें इस्लाम को हानि पहुँचाने का अधिक-से-अधिक अवसर मिल सके।

२. वे लोग जो 'इस्लाम' के विरोधी तो हों परन्तु उनके मुसलमान बने रहने का विशेष कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस्लाम को हानि पहुँचाना न हो बल्कि वे भौतिक और सांसारिक लाभों की प्राप्ति के ध्येय से मुसलमान बने हों।

३. वे लोग जो हों तो मुसलमानों में से परन्तु 'दीन' (धर्म) का पूर्ण ज्ञान उन्हें प्राप्त न हो।

४. वे लोग जो हों तो मुसलमानों में से ही परन्तु उनका 'ईमान' अत्यन्त कमज़ोर हो। जब आज़माइशें पेश आयें, तो वे कमज़ोरी दिखा जायें।

मुश्रिक—अनेकश्वरवादी, बहुदेववादी। 'शिर्क' (बहुदेववाद) करने वाला।

'मुश्रिक' (बहुदेववादी) वह है जो अल्लाह के अस्तित्व, गुणों या उसके हक़ में दूसरों को शरीक ठहराये। अल्लाह के अस्तित्व में शरीक ठहराने का अर्थ यह है कि किसी को उससे या किसी से उसको उत्पन्न होने का विश्वास रक्खा जाये। किसी को उसका बाप या बेटा समझा जाये। जैसे ईसाई हज़रत मसीह अ० को अल्लाह का बेटा समझते हैं या जैसे अरब के लोग 'फ़िरिश्तों' को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।

अल्लाह के गुणों में दूसरों को शरीक ठहराने का अर्थ यह होता है कि जिन गुणों का मालिक अल्लाह ही है उन गुणों का सम्बन्ध अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों से जोड़ा जाये जैसे जगत का सृष्टिकर्त्ता अल्लाह ही है परन्तु कोई यह समझने लगे कि अल्लाह के अतिरिक्त कुछ और ईश्वर या देवी-देवता हैं जिन्होंने यह काम किया है या जैसे पूर्ण अधिकार और प्रभुत्व अल्लाह ही को प्राप्त है, दूसरा कोई नहीं जो उसके फ़ैसले को टाल सके या उसके विरुद्ध जा सके। परन्तु अब कोई यह मानने लग जाये कि अल्लाह के साथ कुछ और हस्तियाँ भी हैं जो अल्लाह के कामों और उसके इरादों में हस्तक्षेप कर सकती हैं या उन्हें भी अल्लाह की तरह स्वतन्त्र अधिकार प्राप्त हैं कि जो चाहें करें; कोई उनके कामों में रुकावट नहीं डाल सकता, तो यह खुला हुआ 'शिर्क' (बहुदेववाद) है। ऐसा व्यक्ति अल्लाह के गुणों में दूसरों को शरीक कर रहा है। उसके 'मुश्रिक' होने में कोई सन्देह नहीं।

अल्लाह के हक़ (स्वत्व) में शरीक ठहराने का अर्थ यह है कि अल्लाह के जो हक़ हम पर होते हैं उनमें हम किसी और को शरीक करने लगें। जैसे जगत का सृष्टिकर्त्ता अल्लाह है जब सृष्टि उसकी है तो जगत में हुक्म और इन्तज़ाम भी उसी का होगा। अब यदि कोई यह मानता हो कि संसार की व्यवस्था और उसका इन्तज़ाम किसी और के हाथ में है तो यह खुला 'शिर्क' होगा। ऐसा व्यक्ति अल्लाह के हक़ में दूसरे को शरीक ठहाराने का अपराधी है। इसी प्रकार यदि जगत का स्वामी और उसका इन्तज़ाम चलाने वाला अल्लाह है तो बन्दगी भी उसी की होनी चाहिए। यदि कोई अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की बन्दगी करता हो, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को अपना पूज्य समझता हो, तो उसके 'मुश्रिक' होने में कोई सन्देह नहीं। वह अल्लाह के हक़ में दूसरे को शरीक कर रहा है।

मुसलमान—वह व्यक्ति जो 'इस्लाम' का अनुयायी हो। अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला। हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 'ईमान' लाने वाला और आप (सल्ल०) के दिखाये हुए मार्ग पर चलने वाला। दे० 'मुस्लिम'।

मुस्लिम—आज्ञाकारी, 'इस्लाम' का अनुयायी।

जो व्यक्ति अल्लाह को अपना 'रब', स्वामी, शासक और पूज्य सब-कुछ माने और अपने को उसके अर्पण कर दे। उसी के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करे, उसे 'मुस्लिम' कहते हैं। दे० 'इस्लाम'।

संसार की समस्त वस्तुएँ 'मुस्लिम' हैं। इसीलिए कि वे अल्लाह के नियमों के अधीन हैं। चाँद और सूर्य हवायें आदि सब अल्लाह ही की आज्ञाकारी हैं अतः ये सब 'मुस्लिम' हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह भी 'मुस्लिम' बने और अल्लाह के आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करे। इसी में उसका कल्याण है। यदि वह व्यापक सत्यता का विरोध करता है, तो इसके बुरे परिणाम से वह बच नहीं सकता।

मुहाजिर—हिजरत करने वाला। 'दीन' (धर्म) के लिए अपना घर-बार छोड़ने वाला। वे लोग जिन्होंने अल्लाह के लिए अपना वतन मक्का छोड़ा और मदीना चले गए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोमिन—'ईमान' वाला व्यक्ति, वह व्यक्ति जो अल्लाह पर, उसके 'नबियों', 'पैग़म्बरों' पर और उन सच्चाइयों पर जिनकी शिक्षा 'नबियों' ने दी है पूर्ण विश्वास रखता और उन्हें दिल से मानता हो। दे० 'ईमान'।

यहूद—यहूदी लोग। दे० 'यहूदी'

यतीम—अनाथ। वह बच्चा जिसके पिता का देहान्त हो चुका हो।

यहूदी—उस समुदाय के लोग जो अपना सम्बन्ध हज़रत मूसा अ० से जोड़ते हैं। 'यहूदी' मत एक विशेष क़बीले में उत्पन्न हुआ जिसका नाम 'यहूदाह' (Judah) था। यहूदाह शब्द 'हूद' से निकला है जिसका अर्थ है लौटना, पलटना, तौबा करना। यहूदी यदि अपने यहूदी कहलाने की ही लाज रखनी चाहें तो उन्हें अपने रब की ओर पलटना चाहिए और उस सच्चाई को ग्रहण करना चाहिए जिसकी ओर उन्हें अल्लाह के अन्तिम नबी ने बुलावा दिया है और यह वही सच्चाई है जिसे लेकर हज़रत इबराहीम अ० उठे थे जो यहूदी और ईसाई सभी के पितामह हैं। जिनका आदर सभी करते हैं।

रब (Preserver; Lord; Providence)—'रब' का मौलिक अर्थ है पालने वाला। फिर स्वाभाविक रूप से इसमें कई अर्थों का प्रादुर्भाव हुआ और इस प्रकार इस शब्द में बड़ी व्यापकता आ गई है। क़ुरआन में यह शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जिनमें परस्पर गहरा सम्पर्क है।

१. पालन-कर्त्ता, संरक्षक, देख-रेख करने वाला।

२. मालिक, प्रभु और स्वामी।

३. हाकिम, शासक, व्यवस्थापक, विधाता और प्रबन्धकर्त्ता।

अल्लाह इन सब अर्थों में जगत का 'रब' है।

रब्बानी (Rabbani)—धर्माधिकारी। 'यहूद' के यहाँ जो धर्म-ज्ञाता धार्मिक पदों पर नियुक्त होते थे और जिनका काम यह होता था कि वे धार्मिक विषयों में लोगों के पथ-प्रदर्शक बनें। उपासना और 'इबादत' का प्रबन्ध करें और लोगों को धार्मिक आदेश दें उन्हें 'रब्बानी' कहा जाता था। क़ुरआन में भी इसकी ओर संकेत मिलता है। दे० अल-माइदा आयत ६३।

तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरा आले इमरान आयत ७९; अल-माइदा आयत ४४, ६३। बाइबिल, यूहन्ना (John) २० : १६; १ : ३८, मत्ता (Mtt.) २३ : ७-८।

रसूल—दूत, पैग़म्बर, वह व्यक्ति जो 'रिसालत' के पद पर नियुक्त हो।

मनुष्य किस प्रकार संसार में अपना जीवन व्यतीत करे? सत्य और जीवन का वह वास्तविक मार्ग कौन-सा है जिस पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है? अल्लाह की इच्छा के अनुसार जीवन-यापन का नियम क्या है? ये समस्त बातें बताने और मनुष्य को वास्तविकता का ज्ञान प्रदान करने के लिए अल्लाह मनुष्यों में से किसी व्यक्ति को चुन लेता है और उसके द्वारा लोगों को यथार्थ का ज्ञान कराता और उन्हें अँधेरे से निकाल कर सत्य के प्रकाश में लाता है। जिस व्यक्ति के द्वारा अल्लाह लोगों को सीधा मार्ग दिखाता है और उन तक अपना सन्देश पहुँचाता है उन्हें 'रसूल' या 'नबी' कहते हैं। अल्लाह 'वह्य' के द्वारा अपने रसूलों तक अपना सन्देश भेजता है।

'रसूल' और नबी में थोड़ा अन्तर है। 'रसूल' उस पैग़म्बर को कहते हैं जिसे अल्लाह की ओर से नई 'शरीअत' (धर्म-विधान या आचार शास्त्र) और किताब मिली हो। नबी हर पैग़म्बर को कहते हैं चाहे उसे पूर्वकालिक किताब और 'शरीअत' पर लोगों को चलाने के लिए नियुक्त किया गया हो या उसे नई 'शरीअत' और किताब दी गई हो।

'रसूल' का जीवन अत्यन्त पवित्र होता है। वे सच्चे होते हैं। अल्लाह का पूरा-पूरा सन्देश लोगों तक पहुँचाते हैं। किसी बात को छिपाते नहीं। संसार में बहुत-से नबी और रसूल आये हैं उनकी ठीक संख्या अल्लाह ही को मालूम है। ये रसूल और नबी संसार की विभिन्न जातियों और विभिन्न कालों में आये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्लाह की ओर से जितने भी 'रसूल' या नबी आये उन सब पर ईमान लाना हमारे लिए ज़रूरी है। मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं। आप (सल्ल०) के बाद 'क़ियामत' तक कोई नया नबी या रसूल आने वाला नहीं है। दे० 'नबी'।

रस्स वाले—दे० अर-रस्स वाले।

रहमान—अत्यन्त कृपाशील ईश्वर, अल्लाह का एक विशेष नाम। इस नाम के पहले 'हर्फ़ तारीफ़' अल लगाने से यह नाम अल्लाह के लिए ख़ास हो जाता है। अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को अर-रहमान नहीं कहा जा सकता। अरब के लोग अल्लाह के इस नाम से परिचित थे।

रिब्बी (Devoted men)—अल्लाह वाले, ईश-भक्त। दे० 'रब्बानी'।

रिसालत—'रसूल' होने का भाव, पैग़म्बरी, ईस-दौत्य। दे० 'रसूल'।

रुकूअ—१. सिर झुकाना। २. 'नमाज़ का एक अंग है, जिसमें बन्दा अल्लाह की बड़ाई और उसकी महानता का ध्यान करते हुये अपना सिर उसके आगे झुका देता है।

रूहुल क़ुदुस (The holy spirit)—पवित्र आत्मा। 'रूहुल क़ुदुस' से अभिप्रेत 'वह्य' का ज्ञान भी है जो हज़रत मसीह अ० को दिया गया था और इससे अभिप्रेत अल्लाह के विशेष 'फ़िरिश्ता' हज़रत जिबरील अ० भी हैं, जो अल्लाह की ओर से वह्य लाते थे। और स्वयं हज़रत मसीह अ० की पवित्र आत्मा को भी 'रूहुल क़ुदस' कहा जा सकता है।

क़ुरआन में एक जगह आया है कि 'रूहुल क़ुदुस' से अल्लाह ने हज़रत मसीह अ० की सहायता की। सहायता करने का अर्थ विशेष रूप से यह है कि संकटों और कठिनाइयों में उनके दिल को ढारस, शान्ति, सन्तोष और धैर्य्य प्रदान किया गया।

रोज़ा (Fast)—व्रत। क़ुरआन में इसके लिए 'सियाम' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका मौलिक अर्थ है 'रुक जाना'।[1] 'रोज़े' में मनुष्य प्रातःकाल पौ फटने के समय से लेकर सन्ध्या तक खाने-पीने और स्त्री प्रसंग से रुका रहता है।

हृदय और आत्मा की शुद्धता और आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास के लिए 'रोज़ा' रखना अत्यन्त आवश्यक है। 'रोज़े' से मनुष्य में धर्मपरायणता आती है, वह संयमी और अल्लाह से डरने वाला बन जाता है और उसकी अवज्ञा से बचने लगता है।

लूत (अ०) की जाति वाले—हज़रत लूत अ० की जाति के लोग जिस भाग में बसते थे वह वही है जो शर्क़ उरदुन (Trans Jordan) कहलाता है। यह ईराक़ और फ़लिस्तीन के मध्य में पड़ता है। बाइबिल में इनकी राजधानी का नाम सदूम बताया गया है। तलमूद से मालूम होता है कि सदूम के अतिरिक्त इनके चार और बड़े-बड़े नगर थे। इन नगरों के बीच बाग़-ही-बाग़ दिखाई देते थे। जिनके सौंदर्य से मनुष्य पर मस्ती छा जाती थी। परन्तु आज इस जाति का नाम व निशान तक शेष नहीं रहा। अब केवल Dead sea ही एक निशानी रह गया है जिसे लूत सागर के नाम से याद किया जाता है। प्राचीन काल में Dead sea दक्षिण में इतना फैला हुआ न था जितना अब फैला हुआ है। पहले पानी केवल प्रायद्वीप अललिसान (Ellison) तक ही फैला हुआ था। इसके नीचे हा हिस्सा जो अब पानी में डूब गया है पहले एक हरा-भरा क्षेत्र था जिस में लूत (अ०) की जाति वालों के बड़े-बड़े नगर बसे हुये थे। दो हजार वर्ष ईसा पूर्व एक भू-कम्प के कारण यह भू-भाग फट कर दब गया और Dead sea का पानी उस पर चढ़ आया। इस हिस्से में पेट्रोल और गैसों का पता चलता है। अनुमान है कि भू-कम्प के समय पेट्रोल और गैस भूमि से निकल कर भड़क उठे हैं।

यहाँ के लोग बड़े निर्लज्ज और दुश्चरित्र थे। यों तो इनके यहाँ और बहुत-सी बुराइयाँ पाई जाती

---

१. दे० सूरा अन-नह्ल आयत १०२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थीं, परन्तु एक सबसे बड़ी बुराई इनके यहाँ यह पैदा हो गई थी कि ये लोग स्त्रियों को छोड़कर अपनी काम-तृष्णा की तृप्ति पुरुषो से करते थे। इस घृणित अपराध को वे कोई बुराई ही नहीं समझते थे।

अल्लाह ने इस जाति को सीधे मार्ग पर लाने के लिए हज़रत लूत अ० को भेजा। हज़रत लूत अ० हज़रत इबराहीम अ० के भतीजे होते थे। अपने चचा के साथ ईराक़ से निकल कर आपने कुछ समय तक शाम (Syria) फ़लिस्तीन और मिस्र में घूम-घूम कर धर्म-प्रचार का अभ्यास प्राप्त किया। फिर अल्लाह ने आपको 'नबी' बनाया। आपने अपनी जाति वालों को बुराइयों से रोका और उन्हें अल्लाह से डरने का हुक्म दिया। परन्तु वे लोग इतने गिर चुके थे कि राह पर न आ सके। उलटे हज़रत लूत अ० के दुश्मन बन गये और उन्हें अपनी बस्ती से निकाल देना चाहा। अन्त में उन पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहा। अल्लाह ने उनकी बस्तियों को तल-पट करके रख दिया। जब अल्लाह का फ़ैसला हो गया कि ज़ालिमों की बस्तियों को तबाह कर दिया जाये तो अल्लाह ने 'फ़िरिश्तों' को भेजा जो पहले हज़रत इबराहीम अ० के पास आये और उन्हें लड़के की शुभ सूचना दी। फिर वहाँ से हज़रत लूत अ० के यहाँ गये। क़ुरआन से मालूम होता है कि फ़िरिश्ते हज़रत लूत अ० के यहाँ सुन्दर लड़कों के रूप में पहुँचे थे। हज़रत लूत अ० घबराये। इसलिए कि वे अपनी जाति वालों की चरित्र-हीनता से भली भाँति परिचित थे। जब बस्ती वालों को खबर मिली, तो वे हज़रत लूत अ० की ओर दौड़ पड़े। हज़रत लूत अ० ने बहुत समझाया कि ये मेरे मेहमान हैं मुझे रुसवा न करो। परन्तु वे मानने वाले कहाँ थे। फ़िरिश्तों ने हज़रत लूत अ० से कहा कि हम तुम्हारे 'रब' के भेजे हुये फ़िरिश्ते हैं ये तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। आखिर वही हुआ। अल्लाह के अज़ाब ने पूरी बस्ती को तबाह व बरबाद करके रख दिया (दे० सूर, अल-आराफ़ आयत ८०-८४; हूद आयत ७७-८३; अश-शु, अरा १६०-१७४; अन नम्ल आयत ५४-५८; अल-क़मर आयत ३३-३९)।

लौंडी—'लौंडी' से अभिप्रेत वे स्त्रियाँ हैं जो इस्लामी युद्ध में पकड़कर आयें और राज्य की ओर से लोगों में बाँट दी जायें।

युद्ध में जो स्त्रियाँ क़ैद होकर आयेंगी उनके बारे में इस्लामी क़ानून यह है कि पहले उन्हें राज्य के हवाले कर दिया जायेगा। राज्य को यह अधिकार प्राप्त है कि चाहे तो वह उन्हें रिहा कर दे या उनसे बदले के रूप में कुछ लेकर जिसे 'फ़िदया' कहते हैं, उन्हें छोड़ दे। या उन्हें उन मुसलमान क़ैदियो की रिहाई के बदले में रिहा करे जो शत्रु के क़ब्ज़े में हों। या फिर उन्हें सैनिकों में बाँट दें। इस प्रकार जो स्त्री जिस व्यक्ति के हिस्से में आयेगी केवल वही उससे सम्भोग कर सकता है। किसी दूसरे को उसे हाथ लगाने का अधिकार प्राप्त न होगा। और उसे भी उस समय तक हाथ लगाने का हक़ नहीं है जब तक कि एक बार माहवारी न आ जाये। और यह विश्वास न हो जाये कि उसे गर्भ नहीं है। और यदि उसे गर्भ हो तो जब तक बच्चा पैदा न हो जाये हाथ नहीं लगा सकता। राज्य की ओर से विधिपूर्वक स्त्री को किसी व्यक्ति की मिलकियत में दिया जाना वैसी ही धर्मसंगत बात है जैसे कि विवाह एक धर्मानुकूल कार्य है। लौंडी से जो औलाद होगी वह उस व्यक्ति की जायज़ औलाद होगी जिसकी मिलकियत में वह स्त्री होगी। और उस औलाद को वही हक़ प्राप्त होगा जो दूसरी औलाद को प्राप्त होगा। औलाद पैदा होने के बाद उस स्त्री को बेचा नहीं जा सकता। अपने मालिक के बाद वह स्वतन्त्र समझी जायेगी।

इस्लाम में उत्तम इस बात को समझा गया है कि लौंडियों को स्वतन्त्र करके उनसे विवाह कर लिया जाये, या फिर उनका विवाह उन ग़रीबों के साथ कर दिया जाये जो ग़रीबी के कारण बड़े घरों में विवाह नहीं कर सकते।

लड़ाई में क़ैद होकर आने वाली स्त्रियाँ राज्य के लिए एक समस्या होती हैं जिसे हर समझदार व्यक्ति भली-भाँति समझ सकता है। इस्लाम ने इस समस्या का समाधान बिलकुल स्वाभाविक रूप से किया है। दे० गुलाम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वज़ू—नमाज़ अदा करने से पूर्व शुद्धि के लिए हाथ-पाँव, मुँह आदि धोना।

वसीयत—नसीहत, ताकीद, मरते समय की नसीहत और उपदेश। वसीयत अच्छे काम की नसीहत और ताकीद को कहते हैं। पारिभाषिक रूप में वसीयत उन आदेशों या उपदेशों को कहते हैं जो मरते समय या सफ़र पर जाते समय कोई व्यक्ति लोगों को और विशेष रूप से अपने घर वालों को देता है। वसीयत के विषय में क़ुरआन में उचित और उत्तम नियमों की शिक्षा दी गई है, और वसीयत की सीमायें निर्धारित कर दी गई हैं। दे० सूरा अल-बकरा आयत १८०-१८२; सूरा अन-निसा आयत ११-१२; सूरा अल-माइदा आयत १०६-१०८।

वह्य—(Revelation)—आकाशवाणी, दैवी प्रकाशन, ईश्वरीय संकेत। 'वह्य' शब्द का अर्थ होता है तीव्र संकेत, गुप्त संकेत अर्थात् ऐसा इशारा जो तेजी के साथ इस तरह किया जाये कि बस इशारा करने वाला जाने या वह व्यक्ति जिसे इशारा किया गया हो, किसी अन्य व्यक्ति को इसका पता न चले।

अल्लाह सृष्टि के जीव आदि को जो शिक्षा देता है वह किसी स्कूल में नहीं दी जाती, बल्कि ऐसे सूक्ष्म रूप से दी जाती है कि देखनें में न कोई शिक्षा देने वाला दिखाई देता है और न कोई शिक्षा पाता दीख पड़ता है। इसलिए क़ुरआन ने इसके लिए 'वह्य' शब्द प्रयोग किया है। क़ुरआन में इसके लिए 'इलहाम' (गुप्त शिक्षा) और 'इलक़ा' (मन में बात डाल देना) के शब्द भी प्रयुक्त हुए है। यह 'वह्य' ही है जिससे मछलियों को तैरना और चिड़ियों को उड़ना आता है। और नवजात शिशु इससे दूध पीना सीख जाते हैं। हम देखते हैं कि कभी बिना सोच-विचार किये बैठे-बैठे आदमी के मन में बिजली की कौंध के समान एक बात आ जाती है या उसे कोई उपाय सूझ जाता है। कभी-कभी मनुष्य स्वप्न में कुछ देख लेता है और बाद में उसे पता चलता है कि यह एक सुझाव था जो स्वप्न में उसे प्राप्त हुआ था। ये सब काम एक प्रकार की 'वह्य' के द्वारा ही होता है।

'वह्य' की इन बहुत सी क़िस्मों में से एक विशेष 'वह्य' वह है जिसके द्वारा अल्लाह नबियों को ज्ञान प्रदान करता है। और उन पर अपनी 'किताब' उतारता है। यह 'वह्य' दूसरी समस्त वह्यों से भिन्न होती है। यह 'वह्य' 'नबियों पर ही उतरती है। 'नबी' को पूरा ज्ञान होता है कि यह अल्लाह की ओर से 'वह्य' उतर रही है। इस 'वह्य' का उद्देश्य भी महान् और उच्च होता है। 'नबी' इस 'वह्य' के द्वारा लोगों को जीवन के सच्चे और सीधे मार्ग की ओर बुलाता है। क़ुरआन और दूसरी ईश्वरीय ग्रंथों का अवतरण 'वह्य' द्वारा ही हुआ है।

शहीद—गवाह, साक्षी, हाज़िर, निहत, वीर गति को प्राप्त।

१. जो किसी जाति की ओर से किसी मामले की गवाही दें और उनकी गवाही पूरी जाति की गवाही मानी जाये। जो जाति के प्रतिनिधि और सरदार की हैसियत रखते हों। उदाहरणार्थ दे० सूरा अल-क़सस आयत ७५।

२. बादशाह के यहाँ जिनकी हैसियत लोगों की ओर से सिफ़ारिशी और प्रतिनिधि की होती हो।

३. जिस चीज़ की गवाही दी जा रही हो उसके और उन लोगों के बीच जिन्हें सूचित किया जा रहा हो जिसे वास्ते या माध्यम का पद प्राप्त हो। दे० सूरा अल-बक़रा आयत १४३।

४. जो किसी बड़े मामले की गवाही प्रमाण सहित दें और अपनी गवाही को सच कर दिखायें। जो अपने सम्पूर्ण जीवन और चरित्र से इस बात की गवाही दें कि वे जीवन के जिन मूल तथ्यों पर विश्वास रखते हैं वे सत्य हैं। अल्लाह की राह में जान देने वाले को इसीलिए 'शहीद' कहते हैं कि वह अपनी जान देकर इस बात की गवाही देता है कि उसने जिस चीज़ पर 'ईमान' लाने का दावा किया था उसे वह वास्तव में दिल से सत्य समझता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. जो किसी चीज़ को पूर्ण रूप से जानता हो और इस बारे में वही सनद और गवाह हो। दे० सूरा अल-अनकबूत आयत ५२।

शिर्क (Polytheism)—अनेकेश्वरवाद। किसी को अल्लाह का शरीक ठहराना। अल्लाह की सत्ता, उसके गुणों, उसके अधिकारों और स्वत्व में किसी को शरीक समझना।

क़ुरआन 'शिर्क' को घोर पाप और अन्याय ठहराता है। क़ुरआन की शिक्षा यह है कि अल्लाह ही है जो सारे संसार का सृष्टिकर्ता है, और वही उसका प्रबन्धक और नियंता भी है। उसके सिवा जो कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है। अतः उसके सिवा और कोई नहीं जिसकी पूजा और बन्दगी की जाये; जिसे संकट में पुकारा जाये। जिससे विनय और प्रार्थना की जाये। जिसे अपना शासक और हाकिम मान कर उसके दिये हुये क़ानून और नियमों का पालन किया जाये। अल्लाह सब का पूज्य और स्वामी है। यदि कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को वह स्थान देता है जो स्थान केवल अल्लाह को प्राप्त है, तो वह 'शिर्क' का रास्ता अपनाता है। यदि किसी की मृत्यु, 'शिर्क' की हालत में हुई है तो अल्लाह उसे कभी क्षमा न करेगा। वह सदा 'जहन्नम' की आग में जलता रहेगा। दे० 'मुश्रिक'।

शैतान—'शैतान' शब्द का अर्थ है जल्दबाज़, अग्नि स्वभाव वाला, अशान्त। फिर इसमें क्रूरता, सरकशी आदि का अर्थ भी सम्मिलित हो गया। ये दुर्गुण 'जिन्न' में भी हो सकते हैं और मनुष्यों में भी। अतः इस शब्द का प्रयोग दोनों के लिए होता है। क़ुरआन में अधिकतर यह शब्द 'जिन्न' शैतान के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

सजदा—१. झुकना। २. साष्टांग प्रणाम, दंडवत।

'सजदा' का अर्थ है सिर ज़मीन पर रख देना, चेहरे के बल बिछ जाना। 'सजदा' नमाज़ का एक विशेष अंग है जिसमें आदमी अल्लाह की बड़ाई और उसकी महानता का ध्यान करते हुए अपना सिर उसके आगे ज़मीन पर रख देता है।

सदक़ा—दान, ख़ैरात, अल्लाह की राह पर खर्च करना। क़ुरआन में ज़कात और और 'नफ़्ल ख़ैरात'[1] दोनों के लिए इस शब्द का प्रयोग हुआ है। 'सदक़ा' सिद्क़ से निकला है जिसका अर्थ है, सच्चाई एवं निष्ठा। 'सदक़ा' से आदमी के 'ईमान' में सच्चाई आती है। अल्लाह की राह में खर्च करने वाला व्यक्ति अपने कर्म से यह सिद्ध कर देता है कि वह अल्लाह का सच्चा बन्दा है। इसलिए उसके इस कर्म को 'सदक़ा' कहना अत्यन्त उचित है। 'सदक़ा' मन और मस्तिष्क की शुद्धता एवं पवित्रता का एक उत्तम साधन है, इससे बुद्धि आभायुक्त और मन पवित्र होता है। दे० सूरा अल-मुजादला आयत १२; सूरा अल-हदीद आयत ११, १२; सूरा अत-तौबा आयत १०३।

सब्र—धैर्य, दृढ़ता, जम जाना, अविचल होना।

'सब्र' का शब्दार्थ है रोकना, बाँधना। 'सब्र' के भाव में अत्यन्त व्यापकता पाई जाती है। इससे अभिप्रेत संकल्प की वह दृढ़ता और मन की वह अविचलता है जिससे मनुष्य अपने पसन्द किए हुए मार्ग पर बढ़ता चला जाये। हानि-लाभ की कोई सम्भावना उसे अपने मार्ग से हटा न सके। और मन की प्रबल-से-प्रबल इच्छा भी उसे पथ-विचलित न कर सके।

क़ुरआन अपने मानने वालों को सब्र की शिक्षा देता है। जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य अल्लाह के रास्ते पर इस तरह जम जाए कि कोई भी उसे वहाँ से हटा न सके। वह कठिनाइयों और तकलीफ़ों को झेलता हुआ अपने कर्त्तव्य-पथ पर जमा रहे।

समूद—अरब की प्राचीन जातियों में आद के बाद 'समूद' जाति ही प्रसिद्ध है। 'क़ुरआन' के अवतरण से पहले अरबों में 'समूद' के क़िस्से मशहूर थे। 'समूद' का उल्लेख असीरिया के शिलालेखों में भी मिलता है

---

१. वह ख़ैरात जो अल्लाह की ओर से अनिवार्य तो न हो परन्तु उसे बन्दा अल्लाह की प्रसन्नता के लिए करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसके अतिरिक्त यूनान, अस्कन्दरिया और रूम के इतिहासकारों और भूगोल लेखकों ने भी इस जाति का उल्लेख किया है। यह जाति अरब के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बसती थी। जो वर्तमान समय में अलहिज्र कहलाता है। मदीना और तबूक के बीच एक स्थान मदायने सालेह है। प्राचीन समय में यह 'हिज्र' कहलाता था और यही 'समूद' की राजधानी थी। हजारों एकड़ भूमि में आज भी यहाँ ऐसे भवन पाये जाते हैं जिन्हें 'समूद' ने पहाड़ों को काट-काटकर बनाया था। क़ुरआन के उतरने के समय हिजाज़ के तिजारती क़ाफ़िले यहाँ से गुज़रते थे। तबूक की मुहिम के अवसर पर नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों का भी यहाँ से गुज़र हुआ था।

'समूद' को सीधे मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह ने हज़रत सालेह अ० को नबी बनाकर भेजा। दूसरी गुमराह जातियों की तरह, समूद के यहाँ भी 'शिर्क' (अनेकेश्वरवादी) की गन्दगी और दूसरी बुराइयाँ घुस आई थीं। हज़रत सालेह अ० ने उन्हें एक अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया। पर उन्होंने आपकी ओर से मुँह मोड़ लिया और आप पर 'ईमान' लाने से इन्कार कर दिया। और कहा कि तुम तो बस एक साधारण मनुष्य हो; तुम्हें हम अल्लाह का 'नबी' कैसे मान सकते हैं। यदि तुम अपनी बात में सच्चे हो तो कोई चमत्कार दिखाओ जिससे हमें विश्वास हो जाये कि तुम वास्तव में अल्लाह के भेजे हुए हो। हज़रत सालेह अ० ने निशानी और चमत्कार के रूप में एक ऊँटनी पेश की और कहा कि यह ऊँटनी तुम्हारी ज़मीन में चलती फिरेगी। एक दिन यह पानी पियेगी दूसरे दिन सबके जानवर पानी पियेंगे। यदि तुमने इस ऊँटनी पर हाथ लगाया तो फिर तुम पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़ेगा और अल्लाह के अज़ाब से तुम्हें बचाने वाला कोई न होगा। पर उन्होंने उस ऊँटनी को अपने एक व्यक्ति के द्वारा मरवा डाला और पूरी ढिठाई के साथ कहा कि तुम वास्तव में अल्लाह के रसूल हो तो अब हम पर वह अज़ाब ले आओ जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे थे। हज़रत सालेह अ० ने कहा : तीन दिन अपने घरो में और रह लो। तीन दिन बीतते ही एक भयंकर दहला देने वाली आपत्ति ने उन्हें आ लिया और वे अपनी बस्तियों मे औंधे मुँह पड़े रह गये। अल्लाह ने हज़रत सालेह अ० और आप पर 'ईमान' लाने वालों को इस अज़ाब से बचा लिया (दे० सूरा अल-आराफ़ आयत ७३-७९; सूरा हूद आयत ६१-६८; अश-शुअरा आयत १४१-१५९; अन-नम्ल आयत ४५-५३; अल-क़मर आयत २३-३०)।

सलवा—दे० 'मन्न'।

सहाबा—१. साथी, मित्र। २. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के साथी। आप (सल्ल०) को मानने वाले वे लोग जिन्हें आप (सल्ल०) को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

सहीफ़ा—'सहीफ़ा' का अर्थ है लिखा हुआ पर्ण। बहुवचन के रूप में यह 'किताब' के लिए आता है। किताब पन्नों का समूह ही होती है।

साबिई—प्राचीन काल में इस नाम के दो समुदाय थे। एक तो हज़रत यह्या अ० का अनुयायी था। इस समुदाय के लोग अल जज़ीरह के भू-भाग में अधिक संख्या में पाये जाते थे और हज़रत यह्या के अनुसरण में बपतिस्मा (Baptism) का तरीक़ा अपनाये हुये थे। दूसरा गरोह उन नक्षत्र पूजकों का था जो अपने धर्म का नाता हज़रत शीस (अ०) और हज़रत इदरीस अ० से जोड़ते थे। इनका केन्द्र हर्रान था। ईराक़ के विभिन्न भागों में ये लोग फैले हुये थे। यह दूसरा गरोह विज्ञान, चिकित्सा-शास्त्र और दर्शन-शास्त्र में बहुत बढ़ा हुआ था और इसी कारण यह अधिक प्रसिद्ध हुआ। क़ुरआन के अवतरण-काल में यह गरोह साबिई नहीं कहलाता था। ऐसा लगता है कि क़ुरआन में 'साबिई' से अभिप्रेत इसका पहला गिरोह ही है।

सिद्दीक़—(Loyal) बहुत ही सच्चा, परम सत्य, निष्ठ, सत्यवान, भक्त। सिद्दीक़ उस व्यक्ति को कहते हैं जो अत्यन्त सच्चा हो। जिसमें सत्यप्रियता एवं सत्यवादिता के अतिरिक्त कोई दूसरी भावना न पाई जाती हो। जो सत्य और न्याय का साथ देने वाला हो, जिस चीज़ को हक़ जाने उसे दिल से अपना ले। असत्य का डटकर मुक़ाबला करे। सच्चाई की राह में तनिक भी कमज़ोरी न दिखाये। उसका चरित्र इतना पवित्र, महान और स्वार्थरहित हो कि उसके अपने लोगों को ही नहीं बल्कि परायों को भी इस बारे में कोई सन्देह न हो कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह जिस चीज़ को सच जानता है उसके विरुद्ध नहीं जा सकता।

सूर (Trumpet)—सूर बिगुल को कहते हैं। जिस 'सूर' का उल्लेख क़ुरआन में हुआ है उसकी वास्तविकता क्या है? इसका पूर्ण ज्ञान अल्लाह ही को है। 'आख़िरत' और परोक्ष लोक की बातों के सम्बन्ध में क़ुरआन में वही शब्द प्रयुक्त हुए हैं जो हमारी समझ से क़रीब हैं और मानवीय भाषा में जिनकी कल्पना की जा सकती है।

'सूर' तीन बार फूंका जायेगा। पहली बार जब सूर फूँकेंगे तो लोग घबरा उठेंगे। सब पर भय छा जायेगा (दे० सूरा नम्ल आयत ८७)। दूसरी बार जब सूर में फूँक मारी जायेगी तो सब लोग मर जायेंगे। इसके बाद इसकी तीसरी आवाज़ पर सब लोग जी उठेंगे और अपने 'रब' के सामने पेश होने के लिए निकल आयेंगे। जैसे नक़्क़ारा या बिगुल आदि फ़ौज को इकट्ठा करने के लिए बजाते हैं उसी तरह इस ध्वनि से सब लोग मैदान में एकत्र हो जायेंगे (दे० सूरा अज़-ज़ुमर आयत ६८)।

सूरा—क़ुरआन ११४ भागों में विभक्त है। जिनमें से प्रत्येक भाग को क़ुरआन ने सूरा कहा है। क़ुरआन के इन भागों की हैसियत अध्याय की समझना चाहिए। प्रत्येक सूरा का एक मध्यबिन्दु या केन्द्रीय विषय होता है। प्रत्येक सूरा अपनी जगह पूर्ण होती है। फिर प्रत्येक सूरा का उसकी अगली और पिछली सूरा से गहरा सम्पर्क होता है जिसे समझने के लिए गहरे अध्ययन और गहरे सोच-विचार की आवश्यकता होती है।

'सूरा' शब्द 'सूर' से निकला है जिसका अर्थ होता है शहर पनाह (नगर कोट, प्राचीर)। 'सूरा' का बहुवचन 'सुवर' होता है, परन्तु हिन्दी नियम के अनुसार इस किताब में सूरा का बहुवचन 'सूरतें' या 'सूरतों' ही लिखा गया है।

हक़्क़—'हक़्क़' वास्तव में मौजूद और क़ायम को कहते हैं; फिर यह कई अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है :

१. जिसका होना सत्य हो। उदाहरणार्थ दे० सूरा साद० आयत ६४।

२. जो नैतिक दृष्टिकोण से अनिवार्य हो। दे० सूरा अज़-ज़ारियात आयत १९।

३. जो बात बिल्कुल खुली हुई, स्पष्ट और बुद्धिसंगत हो। दे० सूरा अल-अनआम आयत ६२; सूरा अल-वक़रा आयत ७१।

अल्लाह और 'क़ियामत' दोनों पहले और तीसरे अर्थ के अनुसार 'हक़्क़' हैं। न्याय और इन्साफ़ को दूसरे अर्थ के अनुसार हक़्क़ कहा जाएगा। 'हिकमत' (Wisdom) तीसरे अर्थ के अनुसार 'हक़्क़' है।

सारांश यह कि व्यापक अर्थ में 'हक़्क़' उस चीज़ को कहते हैं जो बुद्धि और हृदय दोनों को प्रिय हो; जिसका सम्पर्क ज्ञान और कर्म दोनों से हो और जो बिगाड़ और अन्याय के सर्वथा प्रतिकूल हो।

हम्द—गुणगान, प्रशंसा, सराहना, ईश-प्रशंसा।

किसी की ख़ूबियों, विशेषताओं और गुणों का प्रेमपूर्वक वर्णन। अल्लाह के गुणों और उसकी परिपूर्णता का प्रेम एवं श्रद्धापूर्वक वर्णन। चूंकि अल्लाह के हम पर असीम उपकार और कृपायें हैं, अतः जब हम इस पहलू से उसकी प्रशंसा करेंगे तो इस प्रशंसा और गुणगान में कृतज्ञता-प्रकाशन का अर्थ भी सम्मिलित हो जायेगा। यही कारण है कि नबी सल्ल० ने 'हम्द' को कृतज्ञता-प्रकाशन का सिरा कहा है। 'हम्द' अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखाने का एक उत्तम साधन है।

हज्ज—'हज्ज' का अर्थ है इरादा करना, ज़ियारत (तीर्थ-दर्शन का इरादा करना)। पारिभाषिक रूप में 'हज्ज' एक 'इबादत' है जिसमें मनुष्य अल्लाह के घर ('काबा') के दर्शन का इरादा रखता है। 'हज्ज' के द्वारा अल्लाह की बड़ाई और उसका प्रेम स्थायी रूप से मन में बैठ जाता है। 'हज्ज' में मनुष्य सब कामों को छोड़ कर अल्लाह की पुकार पर उसकी ओर दौड़ कर इस बात का परिचय देता है कि वह अल्लाह ही को अपना स्वामी और पूज्य मानता है। 'हज्ज' वास्तव में बन्दे की ओर से इस बात की घोषणा है कि उसका प्रेम और श्रद्धा, उसकी पूजा और बन्दगी सब-कुछ अल्लाह ही के लिए है। वह केवल उसी की ड्योढ़ी और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्ताने पर अपना सिर रख सकता है और उसे चूम सकता है। 'हज्ज' का मूल उद्देश्य यह है कि आदमी अल्लाह की चाह में उन्मत्त हो कर अपना सर्वस्व उसकी राह में लगा दे। 'हज्ज' के नियम और उससे सम्बन्धित कार्य क्या हैं ? इस पर क़ुरआन में प्रकाश डाला गया है। इसके लिए विद्वानों ने अलग पुस्तकें भी लिखी हैं जिनका अध्ययन अत्यन्त लाभदायक होगा।

हरम—प्रतिष्ठित स्थान, आदर योग्य। मक्का का भू-भाग जो बस्ती से बाहर भी दूर तक फैला हुआ है 'हरम' कहलाता है। 'हरम' की सीमा में बहुत सी बातें जो 'हरम' की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हैं वर्जित हैं। जैसे वृक्ष काटना, जानवर का शिकार, उत्पात और मार-काट, हथियार लगा कर चलना आदि।

हराम (Forbidden)—निषिद्ध, अवैध, वर्जित, जो धर्मसंगत न हो। इस्लामी धर्म-शास्त्र से जिसका निषेध होता हो, जिसे अल्लाह ने या उसकी ओर से उसके रसूल ने नाजायज़ ठहराया हो। जैसे शराब पीना 'हराम' है इसलिए कि अल्लाह ने इससे रोक दिया है (दे० सूरा अल-माइदा आयत ९०)।

जिस चीज़ को अल्लाह ने 'हराम' ठहरा दिया हो उसे हलाल (जायज़) ठहराने का अधिकार किसी को भी प्राप्त नहीं है।

हलाल (Lawful)—वैध, ग्राह्य, अवर्जित; जायज़, धर्म-संगत। जो इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुकूल हो। जिसे अल्लाह ने या उसकी ओर से उसके 'रसूल' ने जायज़ रक्खा हो जिस चीज़ को अल्लाह ने 'हलाल' ठहराया हो उसे 'हराम' ठहराने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

हवारी—सच्चा साथी, सहायक। हज़रत मसीह अ० के साथियों की उपाधि या पदवी जो सब से पहले आप पर 'ईमान' लाये थे। बाइबिल में हज़रत ईसा अ० के साथियों के लिए 'शागिर्द' शब्द प्रयुक्त हुआ है। बाद में उनके लिए ईसाइयों में 'रसूल' (Apostles) की उपाधि प्रचलित हो गई। इस अर्थ में कि हज़रत मसीह उन्हें धर्म-प्रचार के लिए विभिन्न स्थानों पर भेजा करते थे। क़ुरआन उन्हें 'हवारी' कहता है। जो सबसे उचित शब्द है। 'हौर' का अर्थ होता है सफ़ेदी। धोबी को हवारी इसलिए कहते हैं कि वह कपड़े धो कर सफ़ेद कर देता है। शुद्ध और और ख़ालिस चीज़ को भी हवारी कहते हैं। इस अर्थ में ख़ालिस दोस्त और निस्वार्थ सहायक को भी हवारी कहा जाता है। जो व्यक्ति किसी की सहायता करने में अत्युक्ति से काम ले वह उस का 'हवारी' है (दे० लिसानुल अरब)।

हिकमत (Wisdom)—तत्व ज्ञान, बुद्धिमत्ता, तत्वदर्शिता, विवेक।

'हिक्मत' का मूल अर्थ है 'फ़ैसला' करना।' इसके अतिरिक्त सूझ-बूझ की शक्ति के लिए भी 'हिकमत' शब्द प्रयुक्त होता है जिसके अन्तर्गत आदमी फ़ैसले करता है। उस शक्ति को भी हिकमत का नाम देते हैं जो शुद्ध और ठीक निर्णयों का स्रोत है। इसके अतिरिक्त चरित्र की पवित्रता की गणना भी 'हिकमत' के लक्षणों में होती है। अरब के लोग बुद्धि और सम्मति की पूर्णता और सज्जनता की मिली-जुली शक्ति को 'हिकमत' और बुद्धिमान एवं शिष्ट व्यक्ति को 'हकीम' कहते थे। 'हिकमत' वास्तव में ईमान और कर्म की वह दृढ़ता है जो गहरी सूझ-बूझ पर आधारित हो। ज्ञान और बुद्धि द्वारा उत्तम ढंग से सत्य की प्राप्ति ही 'हिकमत' है।

सारांश यह है कि 'हिकमत' का स्रोत शुद्ध विवेक और सही सूझ-बूझ है जिसके द्वारा मनुष्य फ़ैसले करता है। जब विवेक में पूर्णता आ जाती है और वह प्रतिभा एवं विचक्षणता का रूप धारण कर लेता है तो उसे 'हिकमत' कहते हैं। हिकमत' का सम्बन्ध मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से है। जिसे 'हिकमत' की दौलत मिल गई उसके जीवन का स्वरूप विशुद्ध और निर्मल होगा।

'हिकमत' शब्द जब अल्लाह के लिए प्रयुक्त होगा तो इसका विशेष अर्थ यह होगा कि अल्लाह तत्व-ज्ञानी है उसे प्रत्येक वस्तु का पूर्ण ज्ञान है और जो निर्माण भी उसने किया है उत्तम ढंग से किया है। उसके काम में कोई त्रुटि नहीं, उसका कोई काम भी व्यर्थ और उद्देश्य-रहित नहीं।

हिजरत—स्वदेश त्याग। अल्लाह की राह में अपना घर-बार छोड़ देना। हज़रत मुहम्मद सल्ल०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का मक्का छोड़कर मदीना जाना।

स्वदेश हरएक व्यक्ति को प्यारा होता है, परन्तु कभी सत्य और धर्म की रक्षा के लिए उसे त्यागना भी पड़ता है। ऐसे अवसर पर मनुष्य का परम कर्तव्य यही होता है कि वह सत्य और धर्म को अपनाये; देश और जाति का प्रेम उसे सत्य मार्ग से विचलित न करने पाये।

हिदायत (Guidance)—मार्ग-दर्शन, पथ-प्रदर्शन, राह दिखाना, सीधा रास्ता दिखाना। जीवन व्यतीत करने का वह तरीक़ा बताना जिस पर चल कर आदमी अपने जीवन को सफल बना सके और अपने 'रब' को प्रसन्न कर सके। क़ुरआन में इसके लिए 'हुदा' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसके कई अर्थ होते हैं और जिनमें परस्पर गहरा सम्बन्ध पाया जाता है।

१. अन्तर्दृष्टि, हृदय-ज्योति। दे० सूरा मुहम्मद आयत १७; सूरा अस-सजदा आयत १३।

२. प्रमाण, निशानी, खुली दलील और वह चीज़ जिसके द्वारा राह मिल सके। दे० सूरा ता० हा० आयत १०; अल-बक़रा आयत १८५; सूरा अल-हज्ज आयत ८।

३. स्पष्ट मार्ग, मंज़िल (अभीष्टि स्थान) तक पहुँचाने वाला मार्ग (दे० सूरा अल-हज्ज आयत ६७)। यहीं से यह शब्द 'शरीअत' (धर्म-विधान) और प्रथा एवं प्रणाली के लिए भी प्रयुक्त होने लगा। दे० सूरा अल-अनआम आयत ६०; आले इमरान आयत ७३।

४. 'हिदायत' क्रिया की संज्ञा का रूप (दे० सरा अन-नह्ल आयत ३७) अरबों का यह नियम है कि वे किसी चीज़ के स्पष्ट गुण ही को उस चीज़ का नाम दे देते हैं। इसी नियम के अन्तर्गत क़ुरआन को 'अल-हूदा' कहा गया है (दे० सूरा अल-जिन्न आयत १३)।

हुक्म—निर्णय शक्ति, 'दीन' (धर्म) में सूझ-बूझ मामलों में सही राय क़ायम करने की क्षमता। बुद्धिमत्ता अल्लाह की ओर से मामलों में फ़ैसला देने का अधिकार। 'हुक्म' में प्रभुत्व एवं अधिकार का अर्थ भी सम्मिलित है। क़ुरआन में साधारणतया 'हुक्म' और 'इल्म' (ज्ञान) से अभिप्रेत 'नूबूवत' है।

'हुक्म' वास्तव में नाम है शुद्ध विवेक और सही सूझ-बूझ का। यह निर्णय-शक्ति है, फ़ैसला इसी के द्वारा होता है। 'हुक्म' ही हिकमत (Wisdom) का उद्‌गम है। जब विवेक में पूर्णता आ जाती है और वह प्रतिभा एवं विचक्षणता का रूप धारण कर लेता है तो उसे 'हिकमत' कहते हैं।

हुरूफ़ मुक़त्तआत—मुक़त्तआत का अर्थ है 'कटा हुआ', अलग-अलग किया हुआ। क़ुरआन की कुछ सूरतों का आरम्भ अरबी वर्णमाला के कुछ अक्षरों से हुआ है। ये अक्षर परस्पर मिला कर शब्द के रूप में नहीं पढ़े जाते बल्कि एक-एक अक्षर अलग-अलग पढ़ा जाता है। इन अक्षरों को 'हुरूफ़ मुक़त्तआत' कहते हैं। क़ुरआन जिस समय अवतीर्ण हुआ है उस समय की अरबी भाषा की वर्णन शैली में साधारणतया 'हुरूफ़ मुक़त्तआत' का प्रयोग होता था। यह प्रयोग भाषण और काव्य दोनों में समान रूप से होता था। सभी लोग इसका अर्थ समझते थे। यही कारण है कि क़ुरआन का विरोध करने वालों ने कभी यह नहीं कहा कि क़ुरआन की 'सूरतों' के आरम्भ में अक्षर क्यों लाये गये हैं। बाद में अरबी भाषा में यह विशेष वर्णन शैली प्रचलित नहीं रही जिसके कारण इनका अर्थ निश्चित करना अत्यन्त कठिन हो गया।

यहाँ यह बात जान लेनी चहिए कि क़ुरआन का समझना कुछ इन अक्षरों के ज्ञान पर निर्भर नहीं है। ऐसा कदापि नहीं है कि यदि हम इन अक्षरों को न समझ सकें तो हम सत्य-धर्म के ज्ञान से वञ्चित रह जायेंगे और हम अपने जीवन को सफल न बना पायेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

شاہ کلید

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودی

جاہلیت کے زمانے میں میں نے بہت کچھ پڑھا ہے۔ قدیم و جدید فلسفہ، سائنس، معاشیات، سیاسیات وغیرہ پر اچھی خاصی ایک لائبریری دماغ میں اُتار چکا ہوں، مگر جب آنکھ کھول کر قرآن کو پڑھا تو بخدا یوں محسوس ہوا کہ جو کچھ پڑھا تھا سب ہیچ تھا، علم کی جڑ اب ہاتھ آئی ہے۔ کانٹ، ہیگل، نٹشے، مارکس اور دُنیا کے تمام بڑے بڑے مفکرین اب مجھے بچے نظر آتے ہیں، بے چاروں پر ترس آتا ہے کہ ساری عمر جن گتھیوں کے سلجھانے میں اُلجھتے رہے اور جن مسائل پر بڑی بڑی کتابیں تصنیف کر ڈالیں، پھر بھی حل نہ کر سکے، ان کو اس کتاب نے ایک ایک دو دو فقروں میں حل کر کے رکھ دیا ہے اگر یہ غریب اس کتاب سے ناواقف نہ ہوتے تو کیوں اپنی عمریں اس طرح ضائع کرتے میری اصلی محسن بس یہی ایک کتاب ہے۔ اس نے مجھے بدل کر رکھ دیا، حیوان سے انسان بنا دیا، تاریکیوں سے نکال کر روشنی میں لے آئی، ایسا چراغ میرے ہاتھ میں دے دیا کہ زندگی کے جس معاملے کی طرف نظر ڈالتا ہوں حقیقت اِس طرح برملا مجھے دکھائی دیتی ہے کہ گویا اس پر کوئی پردہ ہی نہیں ہے۔ انگریزی میں اس کُنجی کو شاہ کلید (MASTER-KEY) کہتے ہیں جس سے ہر قفل کُھل جائے سو میرے لیے یہ قرآن "شاہ کلید" ہے مسائلِ حیات کے جس قفل پر اسے لگاتا ہوں وہ کُھل جاتا ہے جس خُدا نے یہ کتاب بخشی ہے اس کا شکر ادا کرنے سے میری زبان عاجز ہے۔

(सैयद अबुल आला मौदूदी)

अज्ञान के समय में मैंने बहुत कुछ पढ़ा है, प्राचीन व आधुनिक दर्शनशास्त्र, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि पर अच्छी-खासी एक लायब्रेरी दिमाग़ में उतार चुका हूँ, परन्तु जब आँख खोलकर क़ुरआन को पढ़ा तो, ईश्वर जानता है, ऐसा लगा कि जो कुछ पढ़ा था सब तुच्छ था, ज्ञान की जड़ अब हाथ आई है। काण्ट, हेगल, निटशे, मार्क्स और संसार के समस्त बड़े-बड़े विचारक अब मुझे बच्चे दीख पड़ते हैं। बेचारों पर दया आती है कि जीवन-भर जिन गुत्थियों को सुलझाने में उलझते रहे और जिन समस्याओं पर बड़े-बड़े ग्रन्थों की रचना कर डाली, फिर भी हल न कर सके, उनको इस ग्रन्थ ने एक-एक, दो-दो पदों में हल करके रख दिया है। यदि ये ग़रीब इस ग्रन्थ से अनभिज्ञ न होते तो क्यों अपने जीवन को इस तरह से नष्ट करते, मेरा वास्तविक उपकारी बस यही ग्रन्थ है, इसने मुझे बदलकर रख दिया पशु से मनुष्य बना दिया, अँधेरों से निकाल कर प्रकाश में ले आया। ऐसा प्रदीप मेरे हाथ में दे दिया कि जीवन के जिस मामले की ओर दृष्टि डालता हूँ वास्तविकता इस प्रकार प्रकटत्या मुझे दिखाई देती है कि मानो उस पर कोई आवरण ही नहीं है। अंग्रेजी में उस कुन्जी को रास तालिका (Master Key) कहते हैं जिससे प्रत्येक ताला खुल जाये, तो मेरे लिये यह क़ुरआन "रास तालिका" है, जीवन की समस्याओं के जिस ताले पर इसे लगाता हूँ वह खुल जाता है। जिस ईश्वर ने यह ग्रन्थ प्रदान किया है उसे धन्यवाद देने में मेरी जिह्वा असमर्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi